सपादक

डा. भोलानाथ तिवारी

सहभागी संपादक

नूर नबी अब्बासी

डॉ. किरण बाला

शब्दकार

2203, गली डकोतान, तुर्कमान गेट, दिल्ली-110006

VRIHAT HINDI LOKOKTI KOSH

(A COMPREHENSIVE DICTIONARY OF HINDI PROVERBS)

प्रकाशक : शब्दकार
2203, गली इकौतान
तुर्कमान गेट, दिल्ली-110006

मुद्रक : शान प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली-110032
सज्जा : चेतन दास
आवरण-मुद्रक : विमल ऑफ़सेट, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032
पुस्तक-बंध : खुराना बुक बाइंडिंग हाउस, दिल्ली-110006

संकेत-सूची

अं०	अँग्रेज़ी	बंग०	बंगाली
अर०	अरबी	बघे०	बघेली
अव०	अवधी	बुंद०	बुंदेलखंडी
अस०	असमी	ब्रज०	ब्रजभाषा
उ०	उर्दू	भीली	भीली
उज़०	उज़बेक	भोज०	भोजपुरी
कनौ०	कन्नौजी	मग०	मगही
कन्न०	कन्नड	मरा०	मराठी
कश्म०	कश्मीरी	मल०	मलयालम
कौर०	कौरवी	मार०	मारवाड़ी
गढ़०	गढ़वाली	माल०	मालवी
गुज०	गुजराती	मेवा०	मेवाती
छत्तीस०	छत्तीसगढ़ी	मैथ०	मैथिली
तमि०	तमिल	राज०	राजस्थानी
तु०	तुर्की	रू०	रूसी
तेलु०	तेलुगु	सं०	संस्कृत
नीम०	नीमाड़ी	सि०	सिंधी
पंज०	पंजाबी	सिंह०	सिंहली
पश०	पश्तो	हरि०	हरियाणवी
प्र०	प्रयोग	हाड़०	हाड़ौती
फ़ा०	फ़ारसी		

दो शब्द

सन् 1949 में मैं एम० ए० अन्तिम वर्ष का छात्र था। उसी समय मैंने हिन्दी मुहावरों का एक कोश बनाने की सोची। मुहावरों के प्रसंग में स्वभावत: लोकोक्तियों की ओर भी मेरा ध्यान गया। मैंने पाया कि मुहावरा कोश बनाना तो अपेक्षाकृत आसान है, क्योंकि काफ़ी सारे मुहावरे साहित्य में तथा हिन्दी और उर्दू के विभिन्न शब्दकोशों में मिल जाते हैं, किन्तु लोकोक्तियों के विषय में ऐसी बात नहीं है। वस्तुत: साहित्य में प्राय: थोड़ी ही लोकोक्तियों का प्रयोग मिलता है। आगे 'भूमिका' में मैंने हिन्दी साहित्य में प्रयुक्त लोकोक्तियों में सामान्य विकासात्मक सर्वेक्षण दिया भी है। हिन्दी-उर्दू के शब्दकोशों में शब्द तथा मुहावरे तो लिए जाते रहे है, किन्तु लोकोक्तियाँ नहीं। अंग्रेज़ी आदि यूरोपीय भाषाओं के कोशों में भी यही बात मिलती है। पश्चिमी कोशकारों में प्लाट्स के प्रसिद्ध हिन्दी-उर्दू कोश में भी मुहावरे तो बहुत सारे हैं, किन्तु लोकोक्तियाँ प्राय: नहीं-सी है। हाँ फैलन ने अवश्य लोकोक्तियों का अच्छा संग्रह किया था।

'लोकोक्ति' वस्तुत: मूलत: या प्रयोगत: 'लोक की उक्ति' होती है, अत: मैंने यह निश्चय किया कि हिन्दी का लोकोक्ति कोश तैयार करने के लिए पूरे हिन्दी प्रदेश से लोकोक्तियाँ एकत्र की जाएँ धीरे-धीरे काम शुरू हुआ। पत्नी दुलारी, बहिन शारदा, भाई कुबेर नाथ, श्री विलास तथा परिचय के कई अन्य लोगों ने काफ़ी सारी भोजपुरी और अवधी की लोकोक्तियाँ एकत्र कीं। इलाहाबाद में मैं इस निश्चय के बाद 4-5 वर्ष और रहा तथा इस दिशा में काम करता रहा। दिल्ली आने पर भी विभिन्न क्षेत्रों में जाकर यह काम मैंने किया। लगभग बीस वर्षों में 1970 तक मेरे पास हिन्दी प्रदेश की प्राय: सभी बोलियों की पचास हज़ार से ऊपर लोकोक्तियाँ एकत्र हो गईं। उसके बाद मेरी दो बड़ी बेटियों (डॉ०) शशि प्रभा (अलका) तथा (डॉ०) किरण बाला (जोती) का इसमें मुझे सक्रिय सहयोग मिला। मुख्यत: किरण ने लगभग एक वर्ष इस काम पर मेरे निर्देशन में लगाया। धीरे-धीरे मैंने बोलियों से सामग्री तो एकत्र की ही, कुछ भारतीय और विदेशी भाषाओं से भी तुलनात्मक लोकोक्तियाँ एकत्र कीं। इस काम में भी किरण ने मेरी बहुत सहायता की। उसके बाद किरण की सहायता से मैंने कोश के संपादन का काम प्रारंभ किया और जुलाई 1978 तक यह कोश पूरा हो गया— लगभग साठ हज़ार लोकोक्तियों (मूल और तुलनात्मक) का। अकस्मात् अगस्त 1978 में दिल्ली में भयंकर बाढ़ आ गई जिसमें मेरे घर के नीचे की प्राय: पूरी मंज़िल एक सप्ताह तक डूबी रही और उसी के साथ यह कोश भी डूबा रहा। अधिकांशत: स्याही से लिखे और संपादित इस पूरे कोश की क्या स्थिति हुई, कहने की आवश्यकता नहीं। बाढ़ के बाद अन्य पांडुलिपियों के साथ इसे भी सुखाया गया, किन्तु काफ़ी सारे अंश कहीं अपठ्य और कहीं अल्पपठ्य हो गए थे। बीच में कहीं-कहीं यदि पेंसिल या बॉलपेन से लिखा गया था तो वह अपेक्षाकृत पठ्य रहा। अपने प्राय: अट्ठाईस वर्षों के परिश्रम की यह गत देखकर मेरे दिल पर क्या गुज़री, कोई भुक्तभोगी ही इसका अनुमान लगा सकता है—हालाँकि ऐसे भुक्तभोगी कितने होंगे या होंगे भी या नहीं कहना कठिन है।

अन्त मे एक अत्यन्त परिश्रमी व्यक्ति श्री रामकँवल जी प्राय: डेढ़ वर्ष तक इसे नई चिटों पर उतारने का काम करते रहे। वे लोकोक्तियाँ जो स्वयं भी अपठ्य हो गई थीं तथा जिनके अर्थ भी अपठ्य हो गए थे, छोड़ देनी पड़ी। इस तरह संग्रह का एक बड़ा भाग छूट गया। कुछ संग्रहों को फिर से उतारने का काम कुछ अन्य लोगो ने भी समय-समय पर किया। मैंने तथा किरण ने जिस मनोयोग से अर्थ लिखे थे तथा तुलनात्मक सामग्री एकत्र की थी, उस रूप मे तो पांडुलिपि नही तैयार हो सकी, किन्तु कामचलाऊ काफ़ी ठीक-ठाक बन गई। आगे चलकर लगभग साढ़े छब्बीस सौ पृष्ठों पर पूरी सामग्री टाइप कराई गई। मेरी आँखे अब ऐसी नही रह गई है कि वे मेरी सारी ज्यादतियो को बर्दाश्त कर सकें। अन्त में बहुत सोच-विचार कर मैने टंकित सामग्री मूल के साथ अपने मित्र श्री नूर नबी अब्बासी को दी। उन्होने कृपापूर्वक पूरा अर्थ फिर से देखा, कुछ संशोधन किए, क्रम में भी यथावश्यकता परिवर्तन किए, क्रॉस-रेफ़रेंसिंग की दृष्टि से शोधन किए तथा तुलना के लिए फ़ारसी तथा अँग्रेजी की कुछ लोकोक्तियां जोड़ी और कुछ ऐसी लोकोक्तिया भी जोड़ी जो हिन्दी में चलती है, किन्तु कोश में नही थी। इस तरह लगभग पाँच-छः महीने उन्होने इस कोश पर लगाए।

इस प्रकार मैने तो इसमे काम किया ही, अब्बासी साहब ने तथा किरण ने भी इसमे काफ़ी समय लगाया। वस्तुत: इन दोनो के सक्रिय सहयोग के बिना मेरे लिए अब इस काम को पूरा करना प्राय: असंभव-सा होता जा रहा था क्योंकि जलप्लावित होने के बाद मैं काफ़ी क्षुब्ध और कुछ हताश हो चला था, यद्यपि निराश नही था। इन अमूल्य सहयोग के लिए ही मै ये दोनो नाम अपने साथ दे रहा हूँ। ये दोनो मेरे काफ़ी अपने है, किन्तु मै इनके प्रति आभार न सही कृतज्ञता का ज्ञापन न कर पाने की स्थिति मे अपने को नही पा रहा हूँ। भाई नबी साहब के प्रति मै विशेष कृतज्ञ हूँ, जिनकी देख-रेख मे प्रेस ने इसे मुद्रित किया है और जिनके कारण ही यह कोश इस रूप मे प्रयोक्ताओ के सामने आ सका है। रामकँवल जी को धन्यवाद। यों दुलारी, कबेरनाथ, श्री विलास तथा राजेश्वर और शारदा आदि से भी मुझे समय-समय पर सहायता मिली है किन्तु इनके लिए धन्यवाद की कंजूसी ही अच्छी।

भूमिका

लोकोक्ति : परिभाषा

'अनुभव का सागर जब कुछ शब्दो की गागर मे समा जाता है तो लोकोक्ति बन जाता है।' लोकोक्तियाँ जन-मानस की हार होती हैं तथा वे हर वक्त, हर समय जन-जन के साथ गुरु, शुभचिंतक, मित्र, तथा वैद्य आदि बनकर उनका मार्ग-दर्शन करती है। जब भी कोई समस्या आई, कोई-न-कोई लोकोक्ति उसका समाधान करने के लिए तैयार मिलेगी, शर्त यह है कि लोकोक्तियाँ आपको याद हो। इस तरह प्रत्येक भाषा मे पाया जाने वाला लोकोक्तियों का भंडार, उसके बोलने वालो के साथ-साथ चलने वाला ज्ञान का वह अक्षय भंडार है, जो आडे-से-आडे वक्त मे साथ देता है, परेशानियो से बचाता है और यह बताता है कि हम कैसे सफल बने, कैसे सुखी और स्वस्थ रहे, कब क्या करे, कहे और कब क्या न करे, न कहे। लोकोक्तियो मे सचमुच ही वह शक्ति है जिसमे अपने जानने और मानने वालो को वे अर्थ, धर्म, काम ओर मोक्ष चारो की प्राप्ति करा सकती है। उनमे थोथा पुस्तकीय ज्ञान नही होता। 'जीवन के ज्ञान का असली सोना जन-जन के अनुभव की आँच मे तपकर जब कुदन बन जाता है तो उसे लोकोक्ति कहने लगते है।' लोकोक्ति को थोडे विस्तार मे इस रूप मे परिभाषित किया जा सकता है .

'विभिन्न प्रकार के अनुभवो, पौराणिक तथा ऐतिहासिक व्यक्तियो एव कथाओ प्राकृतिक नियमो और लोकविश्वासो आदि पर आधारित चुटीली, सारगर्भित सजीव, संक्षिप्त लोकप्रचलित ऐसी उक्तियो को लोकोक्ति कहते है, जिनका प्रयोग बात की पुष्टि या विरोध, सीख तथा भविष्य-कथन आदि के लिए किया जाता है।'

यह परिभाषा मेरी उस परिभाषा का थोडा-सा परिवर्तित रूप है जो अपने भाषाविज्ञान कोश मे आज से लगभग पच्चीस वर्ष पूर्व मैने दी थी। यह परिभाषा थोडी बडी तो है किन्तु मोटे रूप से लोकोक्ति की सभी मुख्य विशेषताओ को अपने मे समाहित कर लेता है। पश्चिमी विद्वानो ने लोकोक्ति की छोटी-छोटी अनेक परिभाषाएँ दी है किन्तु वे प्राय आकर्षक अधिक है, लोकोक्ति की सभी मुख्य विशेषताओ को व्यक्त नही कर पाती। साथ ही उनमे अतिव्याप्ति ओर अव्याप्ति दोष भी है। उदाहरण के लिए अग्रेजी मे लोकोक्ति की एक बहु प्रचलित परिभाषा है 'A proverb is a saying without an author'। यह ठीक है कि काफी लोकोक्तियो के लेखक नही होते किन्तु कबीर, शेक्सपियर, तुलसी आदि की बहुत-सी पक्तियाँ आज लोकोक्तिया बन चुकी है, और हमे पता है कि वे किस लेखक या कवि की है, तो क्या इस आधार पर कि वे ज्ञात रचयिता की है, उन्हे लोकोक्ति की श्रेणी से निकाला जा सकता है ? दूसरी ओर क्या अज्ञातनामिता ही लोकोक्ति का मूल आधार है ? क्या हर अज्ञातनाम कथन लोकोक्ति सज्ञा का अधिकारी हो सकता है ? शायद नही। कुछ अन्य परिभाषाएँ है :

A proverb is **the wit** of one and wisdom of many.—लॉर्ड रसेल

Short sentences drawn from long experience.—सर वेंटिम

Proverbs are wisdom of street.—अज्ञात

A brief epigrammatic saying which is a popular by word.—अज्ञात

Proverbs are ocean of experience expressed in a drop of word.—केलिसन

'लोकोक्ति' का अर्थ

'लोकोक्ति' शब्द अपनी शाब्दिक रचना की दृष्टि से तो 'लोक की उक्ति' है, किंतु लोक की प्रत्येक उक्ति 'लोकोक्ति' नहीं होती। अब यह शब्द विशिष्ट अर्थ में सीमित और रूढ़ हो गया है। लोक-प्रचलित कुछ विशिष्ट प्रकार की उक्तियों को ही लोकोक्ति कहते है।

'लोकोक्ति' शब्द संस्कृत में भी मिलता है। प्रारंभ में तो इसका अर्थ लोक-प्रचलित कोई भी उक्ति था, किन्तु बाद मे इसका वही अर्थ हो गया जो आज हिन्दी में है। आज के अर्थ मे यह शब्द पंचतंत्र तथा कुछ अन्य संस्कृत ग्रंथों में मिलता है। काव्यशास्त्र के ग्रंथो में 'लोकोक्ति' का प्रयोग अलंकार के एक नाम के रूप में हुआ है। कुवलयानंद (117) मे आता है 'लोकप्रवादानुकृति-लोकोक्तिरिति मन्यते'। जब किसी छन्द में किसी लोकोक्ति का प्रयोग किया जाए तो लोकोक्ति अलंकार होता है। उदाहरण के लिए निम्नांकित छंदों में यह अलंकार है :

(क) **करम प्रधान बिस्व करि राखा।**
जो जस करइ सो तस फलु चाखा।

—तुलसी

(ख) सुख दुख सब कहँ होत है पौरुष तजहु न मीत।
मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।

—स्फुट

इस तरह 'लोकोक्ति' शब्द संस्कृत से हिंदी मे इसी अर्थ में आया है। जसवंत सिंह अपने 'भाषाभूषण' (186) मे कहते है :

लोकोक्ति कछु बचन जो लीन्हे लोकप्रवाद

ऐसे ही पद्माकर 'पद्माभरण' (257) मे कहते है :

लोकोक्ति जहँ लोक की कहनावति ठहराउ।

कहावत

'कहावत' शब्द की व्युत्पत्ति विवादास्पद है। प्लाट्स इसे संस्कृत 'कथावत्' से विकसित मानते हैं तो टर्नर इसका संबंध 'कथावार्त्ता' से जोड़ते है। डॉ० सुनीति कुमार चटर्जी ने इसके लिए संस्कृत में 'कथापयन्त' शब्द की कल्पना की है, तथा कथापयन्त>कथावयन्त>कहावअन्त>कहावन्त>कहावत रूप मे इसका विकास माना है। डॉ० सिद्धेश्वर वर्मा 'कह्' धातु+आव (जैसे सुझाव में)+त (संक्षिप्तता अर्थ मे) से 'कहावत' को बना मानते हैं। भोजपुरी आदि में कहावत को 'कहनउत' भी कहते है जो कदाचित् कथन+वत् से संबद्ध है। इसी आधार पर पहले मैं 'कह्' धातु से 'आवत' प्रत्यय के योग से 'कहावत' मानता रहा हूँ (दे० मेरे 'भाषाविज्ञान कोश' में 'लोकोक्ति' शब्द)। यह 'आवत' संस्कृत 'त्व' प्रत्यय से संबद्ध है। बुनावट, घबराहट, पहनावा,

पड़ाव आदि का आवट, आवा, आव भी यही है ।

अब मुझे लगता है कि हिंदी 'कह्' धातु से इसको जोड़ना बहुत उचित नहीं है । मूलतः इस शब्द का संबंध 'कथा' से बने किसी शब्द से होना चाहिए, क्योंकि कई भाषाओं और बोलियों में 'कहावत' के लिए जो शब्द चलते हैं, उनमें मूलतः कथा या लघुकथा का भाव है । उदाहरणार्थ : प्राकृत आहाणक, आहाण (सं० आभाणक), अपभ्रंश अहाणउ (सं० आभाणक), गुजराती उखाणु (सं० उपाख्यान), लहँदा अखाण (सं० आख्यान), बँगला प्रवाद, राजस्थानी ओखानो (सं० उपख्यान), गढ़वाली अखाणो (सं० आख्यानक), भोजपुरी खीसा, खिस्सा (अरबी क़िस्सा) आदि । इसीलिए 'कहावत' का संबंध सस्कृत कथावत्, कथावार्ता, कथापयन्त (कल्पित शब्द) या कथावृत्त से होना चाहिए । इनमें अधिक संभावना प्रथम शब्द से ही 'कहावत' के विकसित होने की है । इसका कारण यह है कि 'कहावत' कथा या कथावार्ता या कथावृत्त न होकर 'कथावत्' ही होती हैं, जैसा कि हम आगे देखेंगे । जहाँ तक डॉ० चटर्जी द्वारा कल्पित शब्द 'कथापयन्त' का प्रश्न है, अन्य तीन शब्दो के होते 'कहावत' के लिए किसी शब्द की कल्पना करने की आवश्यकता नही प्रतीत होती ।

'कहावत' की व्युत्पत्ति 'कथावत्' से मानने से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि मूलतः 'कहावत' नाम का प्रयोग सभी लोकोक्तियों के लिए न होकर, केवल उनके लिए होता था, जिनमें कोई कथा होती थी, या जो किसी कथा पर आधारित होती थी । इसीलिए 'कहावत' कथा न होकर कथावत् है, उसमे कथा नहीं होती कथा-संकेत होता है । उदाहरण के लिए 'नाच न आवे आँगन टेढ़ा' या 'न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी' जैसी लोकोक्तियाँ इस रूप मे 'कथावत्' हैं कि इनका आधार कोई-न-कोई कथा ही है । उदाहरण के लिए किसी नाचने वाली को किसी के आँगन मे नाचने को कहा गया किन्तु वह नाचना अच्छी तरह से नही जानती थी, अतः वह ठीक से न नाच सकी । इस पर अपना अज्ञान छिपाने के लिए वह बोली, 'ठीक से मै नाचूँ तो कैसे ? यह तो आँगन ही टेढ़ा है ।' इस पर किसी ने कहा 'नाच न जाने आँगन टेढ़ा' ।

परकोसला (परसोकरा)

इस प्रसंग में एक दूसरा शब्द 'परकोसला' भी उल्लेख्य है । यह शब्द ब्रज प्रदेश में प्रचलित रहा है । इसका अर्थ है कोई शिक्षाप्रद लघु कथा जिसका अंत किसी शिक्षाप्रद वाक्य, लोकोक्ति या सूत्र मे हो । उदाहरण के लिए 'सूत न कपास जुलाहे मे लट्ठमलट्ठा' (बिना बात का झगड़ा) को ब्रज मे 'सूत न पोनी कोरिया ते लठालठ' कहते है, जिससे संबद्ध परकोसरा इस प्रकार है : एक कोरी (हिंदू जुलाहा) के पास एक ठाकुर गए और बोले कि मेरे लिए खद्दर की एक चद्दर बुन दो । कोरी ने कहा कि सूत दे दो, तो मैं बुन दूँ । ठाकुर ने कहा कि मेरे पास सूत नहीं है । इस पर कोरी बोला कि फिर पोनी दे दो, सूत मैं खुद कात लूँगा । ठाकुर ने उत्तर दिया कि पोनी भी मेरे पास नही है । यह सुनकर कोरी ने कहा कि फिर मैं कहाँ से लाऊँ । इस पर ठाकुर अपने हाथ की लाठी उठाते हुए नाराज़ होकर बोले कि यदि तू नही देगा तो मैं तुझे इस लट्ठ से ठीक कर दूँगा । इतने में कोई वहाँ आ गया । इस झगड़े को सुनकर उसने कहा, 'सूत न पोनी कोरिया ते लठालठ' । तो इस प्रकार हो सकता है कहावत मूलतः 'परकोसला' रहा हो ।

लोकोक्ति और कहावत

सामान्यतः आजकल 'लोकोक्ति' और 'कहावत' शब्द समानार्थी रूप में हिंदी में प्रयुक्त हो

रहे हैं, किंतु मूलतः दोनों एक हैं नहीं, ऐसे अनुमान के लिए काफ़ी आधार हैं। 1951 में 'अमृत-पत्रिका' (इलाहाबाद के हिंदी दैनिक) में प्रकाशित अपने एक लेख में मैंने इन दोनों शब्दों में कुछ अंतर स्पष्ट करने का प्रयास किया था। स्पष्ट ही 'लोकोक्ति' शब्द तत्सम है, अतः इसके प्रयोग का संबंध मुख्यतः शिक्षित समाज से है जो 'लोक' न होकर 'लोक' का एक अंश है, इसके विपरीत 'कहावत' शब्द तद्भव होने के कारण अपेक्षाकृत पूरे 'लोक' का है। किसी ग्रामीण अनपढ़ के मुँह से 'लोकोक्ति' शब्द सुनने को प्रायः नहीं मिलता। बहुत-से ग्रामीण तो 'लोकोक्ति' शब्द को समझते भी नहीं, किंतु 'कहावत' शब्द शिक्षित, अर्धशिक्षित, अशिक्षित, शहरी तथा ग्रामीण सभी में प्रचलित है, सभी के द्वारा समझा और प्रयुक्त किया जाता है। यह अंतर तो दोनों शब्दों की प्रकृति तथा उनके प्रयोग-क्षेत्र का है। एक दूसरी बात यह भी असंभव नहीं है कि जब विभिन्न ग्रन्थों में प्रयुक्त कुछ उक्तियाँ (सूत्र, सूक्ति, सूक्ति-अंश, छंदांश आदि) लोक में प्रचलित होकर लोक की संपत्ति बन गई तो उन्हें 'लोकोक्ति' नाम से अभिहित किया गया, किंतु 'कहावत' 'जनता में बनी', 'जनता में प्रचलित हुई।' इस तरह 'कहावत' ऐसी उक्तियों को कहा गया जिनका स्रोत कोई ज्ञात ग्रंथ या ज्ञात व्यक्ति न हो।

उपर्युक्त बातें मैंने अपने उपर्युक्त लेख में कही थी, किंतु जैसा कि इसी भूमिका में अन्यत्र संकेतित है अब जब इस शब्द के 'कथावत्' से विकसित होने की संभावना है तो स्पष्ट ही 'कहावत' केवल उन लोकोक्तियों को कहा जाना चाहिए जिनका आधार कोई-न-कोई कथा हो। हालाँकि अब जब ये दोनों शब्द समानार्थी शब्द के रूप में प्रयुक्त हो रहे हैं तो मूलार्थ के आधार पर आज इनमें अंतर करना या दोनों के प्रयोग को अपने मूलार्थ की दृष्टि से सीमित करना प्रायः असंभव-सा है।

निष्कर्षतः 'लोकोक्ति' और 'कहावत' शब्द यद्यपि आज सामान्यतः पर्याय रूप में प्रयुक्त हो रहे हैं, किंतु उनमें इस रूप में अंतर किया जा सकता है कि 'कहावत' वे हैं जिनका संबंध किसी कथा से हो, अर्थात् कथायुक्त लोकोक्तियाँ ही कहावत हैं। इसके विपरीत 'लोकोक्ति' सभी है, चाहे उनका संबंध किसी कथा से हो या न हो। दूसरे शब्दों में सभी कहावतें लोकोक्तियाँ हैं किंतु सभी लोकोक्तियाँ कहावतें नही हैं।

इसीलिए प्रस्तुत कोश लोकोक्ति कोश है, कहावत कोश नही। यों इसका आशय यह नही है कि अब 'कहावत' और 'लोकोक्ति' में अंतर किया जाए। ऐसा अंतर मूलतः रहा होगा, किंतु अब वह प्रयोग में प्रायः नहीं है।

लोकोक्तियों की विशेषताएँ

(क) प्रभविष्णुता तथा चुटीलापन—लोकोक्तियाँ प्रायः बहुत ही प्रभविष्णु तथा चुटीली होती हैं। किसी बात को बहुत विस्तार से व्यवस्थित रूप से समझाइए, किंतु ऐसा प्रायः देखा जाता है कि लोगों पर वह प्रभाव नहीं पड़ता, लोगों की समझ में उतनी गहराई से बात नही आती, जितनी अच्छी तरह कोई लोकोक्ति उन्हें समझा देती है। वस्तुतः लोकोक्ति का एक स्थायी प्रभाव पड़ता है क्योंकि, अपने पैनेपन के कारण लोकोक्ति चित्त में प्रायः ऐसी चुभती है कि निकल नहीं पाती, अतः स्वभावतः उसका स्थायी अथवा देर तक ठहरनेवाला प्रभाव पड़ता है। मुझे भूलता नहीं, एक बार कोई व्यक्ति बात देकर उससे हट रहा था। मेरे एक मित्र उसे समझा रहे थे, किंतु वह था कि टस-से-मस नही हो रहा था। मैं भी वही था। मेरे मुँह से निकल गया, 'अरे भाई, सुना नही, जिसकी बात नही उसका बाप नही, लोग तुमको क्या कहेंगे ?' उस पर इसका बहुत ही प्रभाव पड़ा। वह मुस्कराकर बोला, 'आपने बात तो बहुत ठीक कही, चलिए···।'

लोकोक्तियों की प्रभविष्णुता बहुत कुछ उनकी शैली पर निर्भर करती है। **इसके लिए कभी तो एक ही शब्द का दो बार प्रयोग करते हैं** जिसे शैलीविज्ञान में समतामूलक **समानांतरता (दे० शैलीविज्ञान**—भोलानाथ तिवारी में 'समानांतरता' शीर्षक अध्याय) कहा जाता है। उदाहरणार्थ :

बड़े लोगों की **बड़ी** बातें

दूसरे का आटा **दूसरे** का घी

साबस साबस बाबाजी

काफ़ी लोकोक्तियों की प्रभविष्णुता विरोधी शब्दों के प्रयोग पर आधारित होती है। शैली-विज्ञान की शब्दावली में इसे विरोधमूलक समानांतरता (दे० शैलीविज्ञान—भोलानाथ तिवारी में 'समानांतरता' शीर्षक अध्याय) कहा जा सकता है। उदाहरणार्थ :

नाम **बड़े** दर्शन **थोड़े**

कौआ पढ़ाने से **हंस** नहीं होता

एक मिनट की ग़लती **ज़िंदगी-भर का** रोना

कभी-कभी विरोधी शब्दों के दो जोड़े भी मिलते हैं :

सोएगा सो **खोएगा जागेगा** सो **पाएगा**

पैसा **कमाना कठिन है, लुटाना आसान** है

ऊधो का **लेना** न **माधो** का **देना**

Marry in **haste**, repent in **leisure**.

इनमें सोएगा-जागेगा, खोएगा-पाएगा, कमाना-लुटाना, कठिन-आसान, ऊधो-माधो, लेना-देना, haste-leisure विरोधी शब्द हैं।

काफ़ी लोकोक्तियों में शब्द प्रतीक भी होते है, जैसे :

गदहा नहलाने से **घोड़ा** नहीं होता

इसमें 'गदहा' तथा 'घोड़ा' दोनों प्रतीक हैं। पहला बुरे का और दूसरा अच्छे का। निम्नांकित लोकोक्तियाँ भी प्रायः यही भाव दे रही हैं :

कोयला होय न **ऊजरा** सौ मन साबुन खाय

कौवा पढ़ाने से **हंस** नही होता

इस प्रकार 'गदहा', 'कोयला' तथा 'कौवा' तीनों एक ही कथ्य के प्रतीक है। दूसरी ओर 'घोड़ा', 'उजला' तथा 'हंस' भी एक ही भाव व्यक्त कर रहे हैं। कभी-कभी विरोधी व्याकरणिक शब्द :

जैसे नागनाथ **वैसे** सांपनाथ

जहाँ सेर **तहाँ** सवा सेर

तो कभी स्थितिसूचक विरोध :

कभी गाड़ी नाव पर, कभी नाव गाड़ी पर

भी विरोधमूलकता द्वारा लोकोक्ति को प्रभावी बनाते हैं।

(ख) **अपरिवर्तनीयता** : प्रयोग करने पर भी लोकोक्तियाँ अपने मूल रूप में ही रहती हैं। मुहावरे की तरह उनमें लिंग, वचन, काल आदि की दृष्टि से परिवर्तन नही होता। उदाहरणार्थ 'नौ नकद न तेरह उधार' को हमेशा इसी रूप में प्रयुक्त करेंगे किंतु 'नौ दो ग्यारह होना' (मुहावरा) प्रयुक्त होने पर ('चोर **नौ दो ग्यारह हो गया**', 'जल्दी करो नही तो चोर **नौ दो ग्यारह हो जाएँगे**',

'वह लड़की देखते ही देखते नौ दो ग्यारह हो गई'।) अनेक रूप धारण करेगा। वैसे लोकोक्तियों के कालीय और स्थानीय रूपांतर अवश्य मिलते है, किंतु उन्हें उस अर्थ में परिवर्तनीय या रूपांतरणीय नहीं कहा जा सकता।

(ग) पूर्णवाक्यता : लोकोक्तियाँ व्याकरणिक दृष्टि से पूरा वाक्य हो या न हों आभिव्यक्तिक दृष्टि मे पूरा वाक्य होती हैं। श्रोता उन्हें सुनकर उनके पूर्णवाक्यीय अर्थ को सरलता से समझ लेता है। उदाहरण के लिए 'नौ नगद न तेरह उधार' या 'नया नौ दिन पुराना सौ दिन' व्याकरणिक दृष्टि से पूर्ण वाक्य नही है, किंतु आभिव्यक्तिक दृष्टि से ये अपूर्ण या अधूरे वाक्य नही हैं।

(घ) संक्षिप्तता : लोकोक्तियाँ प्रायः बहुत संक्षिप्त तथा कसी हुई होती है। ऐसी कसी हुई कि उनमें कोई शब्द निरर्थक नही होता जिसे निकाल देने से भी काम चल सके। उदाहरणार्थ— 'नया नौ दिन, पुराना सौ दिन' इसमें क्रिया नहीं है, क्योंकि उसकी यहाँ आवश्यकता नही है। ऐसे ही 'नाच न आवे आँगन टेढ़ा' इसमे कर्ता नही है तथा 'कहती है आँगन टेढ़ा' में से 'कहती है' को छोड़ दिया गया है, क्योंकि बिना उसके भी अर्थ स्पष्ट है।

इस प्रसंग में यह भी उल्लेख्य है कि अपने स्वरूप में ही लोकोक्ति संक्षिप्त होती है, किंतु उसमे अर्थ काफ़ी होता है। इस दृष्टि से लोकोक्तियों को 'गागर में सागर' कहा जा सकता है।

(ङ) सारगर्भितता : सभी लोकोक्तियाँ सारगर्भित होती हैं। यह सारगर्भितता ही उन्हें प्रभावशाली, लोकप्रिय तथा लोकप्रचलित बनाती है। यदि लोकोक्तियाँ सारगर्भित न हों तो कोई उनका प्रयोग न करे।

(च) सप्राणता : लोकोक्तियाँ अपने सत्योद्घाटी कथ्य तथा अपनी आकर्षक अभिव्यक्ति-शैली के कारण बहुत ही सप्राण होती हैं। यदि उनमें जीवंतता न हो तो वे न तो लोगों की ज़बान पर आसानी से चढ़ सकें और न उचित संदर्भ में याद आ सके। उनका बहुप्रयोग तथा उनकी लोकप्रियता ही उनकी सप्राणता का सबसे बड़ा प्रमाण है। इस प्रसंग में यह भी उल्लेख्य है कि समाज-विशेष में, समय-विशेष मे जिस लोकोक्ति की उपयोगिता समाप्त हो जाती है, वह उस समाज के लिए प्राणहीन हो जाती है तथा प्रायः प्रयोग से निकल भी जाती है।

(छ) लोकप्रियता : लोकप्रियता भी लोकोक्तियों की एक मुख्य विशेषता है। यही उन्हें समाज में पग-पग पर प्रयुक्त होने का कारण बनती है। इस लोकप्रियता का कारण उनके कथ्य की उपयोगिता तथा उनकी शैली का चुटीलापन है। यों यह अवश्य है कि सभी लोकोक्तियाँ समान रूप से लोकप्रिय नही होती। वस्तुतः उनकी लोकप्रियता समाज विशेष के जीवन-दर्शन से जुड़ी होती है। उदाहरण के लिए आज हिंदी समाज मे शकुन-विषयक लोकोक्तियाँ काफ़ी लोकप्रिय है, किंतु यदि जनता का विश्वास शकुन से उठ जाए तो उनकी लोकप्रियता कम तथा धीरे-धीरे समाप्त हो जाएगी। रूस में एक लोकप्रिय लोकोक्ति है 'बिना भगवान, रास्ता आसान' (बेस बोगा दोरो दरोगा।) किंतु भारत जैसे आस्तिक देश में ऐसी लोकोक्ति के लोकप्रिय होने की संभावना नही है, कम-से-कम अभी तो नही ही है।

लोकोक्ति और मुहावरे

प्रायः लोग इन दोनों मे अंतर नही कर पाते। इन दोनों को निम्नांकित बिंदु अलगाते हैं :

(1) मुहावरे पूरा वाक्य नही होते, इसीलिए प्रयुक्त होने पर वे वाक्य का अंग बन जाते हैं : 'चोर नौ-दो ग्यारह हो गया'; 'अभी-अभी उसकी आँख लगी है, अभी मत जगाओ'; 'पता नही उसी

दिन से वह कहाँ गोल हो गया है' । इसके विपरीत लोकोक्तियाँ अपने आप में पूरी होती हैं, अतः प्रयुक्त होने पर भी उनकी सत्ता अलग रहती है । इसीलिए 'ठीक ही कहा है, आम के आम गुठलियों के दाम' जैसे प्रयोग सुनने में आते हैं ।

(2) मुहावरों में लिंग-वचन-पुरुष-निषेध, प्रश्न आदि के अनुसार परिवर्तन होते हैं । उदाहरण के लिए 'लड़की नौ दो ग्यारह हो गई', 'लड़का नौ दो ग्यारह हो गया', 'लड़के नौ दो ग्यारह हो गए', 'लड़कियाँ नौ दो ग्यारह हो गई', 'कही नौ दो ग्यारह न हो जाना', 'तुम नौ दो ग्यारह हो जाओ', या 'नौ दो ग्यारह हो गया क्या' जैसे प्रयोग मिलते हैं । किंतु लोकोक्तियों मे कोई परिवर्तन नही होता । 'कहा राजा भोज कहाँ भोजवा तेली' लोकोक्ति कैसे भी, कही भी प्रयुक्त हो, ऐसे ही रहेगी ।

(3) मुहावरे प्रायः 'ना' अंत होते हैं, उनके अंत में क्रिया होती है (जैसे नौ दो ग्यारह होना), किंतु लोकोक्तियों के लिए यह अनिवार्यता नही है ।

(4) लोकोक्ति में कोई सत्य या अनुभव आदि होते है किंतु मुहावरे मे प्रायः क्रिया, दशा या व्यापार की अभिव्यक्ति मात्र होती है ।

(5) लोकोक्ति द्वारा किसी कथ्य का समर्थन या खंडन होता है, किंतु मुहावरों के द्वारा ऐसा नहीं होता । वह तो प्रायः सामान्य क्रिया का चुटीला, चुस्त, प्रभावी स्थानापन्न होता है : वह भाग गया वह नौ दो ग्यारह हो गया; वह मर गया-- वह चल बसा ।

(6) कभी-कभी कुछ लोकोक्तियों का मुहावरे की तरह प्रयोग मिल जाता है (आँखें कही और दिल कही और- -आँखें कहीं और होना दिल कही और होना; नौ दिन चल अढ़ाई कोस -नौ दिन में अढाई कोस चलना) किंतु ऐसे प्रयोग सामान्य न होकर अपवाद हैं ।

(7) मुहावरे पूरी तरह पिष्टोक्ति (क्लीशे) नही बने होते, लोकोक्तियाँ बन गई होती है । इसीलिए मुहावरों को प्राय. खुला (ओपेन) तथा लोकोक्तियों को बंद (क्लोज्ड) कहते है ।

(8) लोकोक्तियों में प्रायः व्यंजना की प्रधानता होती है (जैसे 'रोम एक दिन में नहीं बना', 'सभी सड़के रोम को जाती है', 'कहाँ राजा भोज कहाँ भोजवा (गंगू) तेली', 'रहे करीमना तो घर गया', 'गया करीमना तो घर गया' आदि), किंतु मुहावरो मे लक्षणा की (जैसे तीन-तेरह होना, डेढ़ ईंट की मस्जिद उठाना, दुकान बढ़ाना, नीला-पीला होना, नमक-मिर्च लगाना, नाक का बाल होना, आँख का बाल होना, दाल-भात में मूसरचंद होना, आदि) ।

(9) मुहावरों में कभी तो तर्कपूर्णता नही होती (जैसे आसमान के तारे गिनना), और कभी होती है (नौ दो ग्यारह होना) । इस दृष्टि से लोकोक्तियाँ भी प्राय तर्कपूर्ण होती हैं और अतर्कपूर्ण भी : घोडा घास से यारी करे तो खाय क्या (तर्कपूर्ण), सभी सड़कें रोम को जाती है (अतर्कपूर्ण) । किंतु मुहावरों मे प्रायः रूढ़ि लक्षणा के कारण लोकोक्तियो की तुलना में अतर्कपूर्णता अधिक होती है ।

लोकोक्ति और सूक्ति

'सूक्ति' का अर्थ है 'सुंदर उक्ति', किसी लेखक, चिंतक या नेता आदि द्वारा कही गई सुंदर उक्ति । 'सूक्ति' और 'लोकोक्ति' में कई अंतर हैं : (1) सूक्ति प्रायः किसी ज्ञात निश्चित लेखक की होती है, किंतु लोकोक्तियों के विषय में यह आवश्यक नही है । (2) सूक्तियाँ बड़ी भी हो सकती हैं, किंतु लोकोक्तियाँ प्रायः छोटी होती हैं । (3) सूक्तियां क्लिष्ट भी हो सकती है (जैसे 'बैर क्रोध का अचार या मुरब्बा है'— आचार्य रामचद्र शुक्ल) किंतु लोक-उक्ति होने के कारण

लोकोक्तियाँ प्राय: सरल होती हैं । (4) **सूक्तियों में कथन के सौंदर्य पर विशेष बल होता है, किंतु लोकोक्तियों में यह** आवश्यक नही है । (5) लोकोक्तियाँ लोकप्रचलित होती हैं किंतु सूक्तियाँ नहीं। **इस तरह** 'सूक्ति' और 'लोकोक्ति' एक नहीं होती । यों बहुत-सी लोकोक्तियाँ सूक्ति भी हो सकती हैं, किंतु सभी सूक्तियाँ लोकोक्ति नहीं हो सकतीं ।

लोकोक्ति और पहेली

कुछ लोगों ने पहेली को भी लोकोक्ति माना है (ब्रज लोक साहित्य का अध्ययन, डॉ० सत्येन्द्र, पृ० 493-94), किंतु इस मान्यता को उचित नही कहा जा सकता । पहेली स्पष्टतः अलग है । उसे बूझना होता है, उसका प्रयोग लोकोक्ति की तरह किसी बात के समर्थन या खंडन आदि के लिए नहीं होता, जबकि लोकोक्ति का प्रयोग बूझने के लिए नही, अपितु, समर्थन या खंडन आदि के लिए होता है ।

लोकोक्ति और उद्धरण

सामान्य जनता में तथा पढ़े-लिखे लोगों में भी 'लोकोक्ति' शब्द का प्रयोग बहुत निश्चित रूप से एक अर्थ में नहीं होता । 'नौ दिन चले अढ़ाई कोस', 'हाथ कंगन को आरसी क्या', या 'न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी' जैसी सामान्य लोकोक्तियों की बात छोड़ दें तो लोगों में चार प्रकार की धारणाएँ हैं : (क) काफ़ी लोग उपर्युक्त प्रकार की सामान्य लोकोक्तियों के अतिरिक्त कबीर, तुलसी, बिहारी, वृंद, गिरिधर आदि कवियों के ऐसे छंदांशों को भी लोकोक्ति कहते हैं जो लोकोक्तियों की तरह ही प्रयुक्त होते हैं । उदाहरणार्थ : एकै साधे सब सधे सब साधे सब जाइ—कबीर; ऊधो मन माने की बात—सूर; दैव दैव आलसी पुकारा—तुलसी; गुन के गाहक सहस नर, बिनु गुन लहै न कोय—गिरिधर कविराय । (ख) इनमें कुछ कम लोग ऐसे भी हैं जो सामान्य लोकोक्तियों तथा उपर्युक्त प्रकार के छंदांशो के अतिरिक्त विभिन्न कवियों के पूरे छंदों (दोहा, सोरठा, चौपाई आदि) को भी लोकोक्ति कहते हैं । उदाहरणार्थ :

केसन कहा बिगारिया जो मूँड़ै सौ बार ।
मन को काहे न मूँड़ता जामें बड़ो विकार ॥ —कबीर

रहिमन देखि बड़ेन को लघु न दीजिए डारि ।
जहाँ काम आवै सुई कहा करै तरवारि ॥ —रहीम

आवत ही हरसे नहीं, नैनन नही सनेह ।
तुलसी तहाँ न जाइए कंचन बरसे मेह ॥ —तुलसी

इस वर्ग में कुंडलियाँ (जैसे गिरिधर की—साँई ये न विरुद्धिये गुरु पंडित कवि यार बेटा बनिता पौरिया······), कवित्त तथा सवैया जैसे बड़े-बडे छंद भी आते हैं । इन्हें लोकोक्ति की परिधि में लेने वालों का कहना यह है कि ऐसे छंद भी लोगों द्वारा अपनी बात के समर्थन, किसी अन्य की बात के खंडन तथा उपदेश आदि के लिए खूब प्रयुक्त होते हैं, अतः ये भी लोकप्रचलित उक्तियाँ हैं अतः लोकोक्तियाँ है । (ग) कुछ कवियों के कुछ ऐसे भी छंद मिलते हैं जो पूरे के पूरे भी लोकोक्ति की तरह लोक में प्रचलित हैं, तथा उनके अंश भी प्रचलित हैं । तीसरे वर्ग के लोग ऐसे पूरे छंद को भी लोकोक्ति मानते हैं तथा उस छंदांश को भी लोकोक्ति मानते हैं । उदाहरणार्थ :

मूरख हृदय न चेत जो गुरु मिलहिं बिरंचि सम ।
फूलै फलै न बेत जदपि सुधा बरसहिं जलद ।। —तुलसी

कहना न होगा कि लोग इस पूरे छंद का भी लोकोक्ति रूप में प्रयोग करते हैं तथा इसकी केवल प्रथम पंक्ति का भी । (घ) कुछ लोग, यद्यपि उनकी संख्या बहुत नहीं है, छंदावली (जिसमे एकाधिक छंद हों) को भी लोकोक्ति मानते हैं, क्योंकि ऐसी छंदावली भी लोकोक्ति के रूप में प्रयुक्त होती है । मुख्यतः मानस की कई चौपाइयों का समूह इस प्रकार प्रयुक्त होता है । उदाहरणार्थ :

अगुनहिं सगुनहिं नहिं कछु भेदा । गावहिं मुनि पुरान बुध बेदा ।
अगुन अरूप अलख अग जोई । भगत प्रेम बस सगुन सो होई ।
जो गुन रहित सगुन सोइ कैसे । जलु हिम उपल बिलगु नहिं जैसे ।

—तुलसी

यहाँ स्वभावतः यह प्रश्न उठता है कि क्या ये सभी लोकोक्तियाँ हैं । मेरे विचार में यह मान्यता बहुत उपयुक्त नही है कि हर लोकोपयोगी उक्ति लोकोक्ति है या जो भी छंदांश, छंद, छंदावली लोग अपनी बातचीत के बीच में उद्धृत करें वह लोकोक्ति है । उचित यह लगता है कि विभिन्न कवियों के प्रचलित छंदांशों को तो लोकोक्ति माना जा सकता है, किंतु पूरा छंद या छंदावली लोकोक्ति नही हैं, उन्हें उद्धरण कहा जाना चाहिए । वस्तुतः सामान्य लोकोक्तियों में भी काफ़ी ऐसी होंगी जो मूलतः किसी कवि के किसी छंद का अंश होंगी किंतु अब हमें उनके मूल रचयिता का पता नहीं है । इसलिए उनमें तथा छंदांशों में बहुत अंतर करना न बहुत वैज्ञानिक है और न व्यावहारिक । इन्ही बातों के कारण इस संग्रह में प्रायः छंदों या छंदावलियों को नही लिया गया है । वस्तुतः यदि ऐसे छंदों और छंदावलियों को लेने लगें तो कोई अंत नही होगा और हिंदी के अधिकांश लोकप्रिय कवियों के छंद हमें लेने पड़ेंगे, जिन्हें समाहित करने के लिए कई हज़ार पृष्ठों का कोश अपेक्षित होगा । यों इस सबंध में एक अपवाद भी है । घाघ और भड्डरी के नाम से प्रचलित स्वास्थ्य, खेती तथा शकुन-संबंधी छंदों तथा छंदावलियों को इसमें अवश्य लिया गया है, क्योंकि उन्हें सभी लोग लोकोक्तियाँ ही मानते हैं । यों घाघ और भड्डरी सचमुच कभी थे यह भी विवादास्पद है । (देखिए आगे पृष्ठ 20) अंत मे यह सकेत्य है कि अपवादों की बात छोड़ दें तो पूरा छंद उद्धरण नाम का अधिकारी नहीं है, और इस दृष्टि से उद्धरण और लोकोक्ति मे अंतर किया जाना चाहिए, चाहे वह अंतर कितना ही धुंधला क्यों न हो ।

लोकोक्तियों का वर्गीकरण

अनेकानेक आधारों पर लोकोक्तियों के अनेकानेक वर्ग बनाए जा सकते है । यहाँ कुछ मुख्य आधारों पर बनाए जा सकने वाले कुछ वर्गों का उल्लेख किया जा रहा है :

(क) कथात्मकता के आधार पर : इस आधार पर लोकोक्तियों के दो वर्ग बनाए जा सकते हैं : पहला वर्ग तो कथात्मक लोकोक्तियों का है जिनका आधार कोई कथा होती है । जैसे 'देखें ऊँट किस करवट बैठता है', 'हनोज़ दिल्ली दूर अस्त', 'न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी' । इसके विपरीत कुछ लोकोक्तियाँ ऐसी होती हैं जिनका संबध किसी कथा से नही होता । जैसे 'जिसकी बात नहीं, उसका बाप नहीं', 'मुँह से निकली बात और कमान से निकला तीर वापस नही आते' या 'विनाशकाले विपरीत बुद्धिः' आदि । आगे कथात्मक लोकोक्तियाँ भी कई प्रकार की हो सकती हैं : पौराणिक (जैसे 'लंका में सब बावन हाथ के', 'घर का भेदी लंका ढावे' या 'खाएँ भीम हगें

शकुनि' आदि), ऐतिहासिक (जैसे 'हनोज दिल्ली दूर अस्त' या 'अंग्रेज़ी राज में सूरज नहीं डूबता' आदि) तथा सामान्य (जैसे 'न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी' या 'जो सहरी खाय सो रोज़ा रक्खे' आदि)।

(ख) कालिकता के आधार पर : इस आधार पर कुछ लोकोक्तियों को सार्वकालिक तथा कुछ को एककालिक कहा जा सकता है। उदाहरण के लिए 'एक और एक ग्यारह होते हैं' सार्वकालिक लोकोक्ति है। एकता में सर्वदा शक्ति रही है, आज भी है, और आगे भी रहेगी। इसके विपरीत अनेकानेक जातियों के संबंध में प्रचलित लोकोक्तियाँ अब प्रभावी नहीं रह गई हैं, क्योंकि एक ओर तो उनके व्यवसाय अब अन्य लोगों ने भी अपना लिए हैं, और दूसरी ओर उनमें से अनेक ने अन्य व्यवसाय अपना लिए हैं। उदाहरण के लिए 'नाई धोबी दरज़ी, तीन जाति अलगरज़ी' जैसी लोकोक्तियाँ न तो इन जातियों के अस्तित्व में आने के पहले थीं और न अंतर्जातीय विवाह की आँधी में जाति-पाँति की समाप्ति के बाद इनकी सार्थकता या इनके प्रयोग की संभावना ही है। इस तरह इस वर्ग की लोकोक्तियों की आयु सीमित होती है, अतः इन्हें एककालिक या विशिष्टकालिक ही कहा जा सकता है, सार्वकालिक नहीं।

(ग) क्षेत्र या देश के आधार पर : इसके आधार पर सर्वक्षेत्रीय या एकक्षेत्रीय तथा एकदेशीय, बहुदेशीय या सर्वदेशीय आदि वर्ग बनाए जा सकते हैं। उदाहरण के लिए कुछ लोकोक्तियाँ जो सार्वभौम सत्य को अभिव्यक्ति देती है सर्वक्षेत्रीय या सर्वदेशीय हैं, इसके विपरीत कुछ 'सर्व' न होते हुए 'बहु' या 'कईदेशीय' होती हैं। उदाहरण के लिए तक़दीर में विश्वास रखने वाले देश या क्षेत्र के लोगों में 'तक़दीर का लिखा मिटता नहीं' या What is lotted can not be blotted जैसी लोकोक्तियाँ चलती हैं। समाजवादी देशों में कर्मवादिता ने ऐसी लोकोक्तियों को निरस्त कर दिया है। इसके विपरीत 'बिना भगवान रास्ता आसान' (एक रूसी लोकोक्ति) जैसी लोकोक्तियाँ आस्तिक देशों में न बन सकती हैं, न प्रचलित हो सकती हैं। ऐसे ही 'गुरु कीजै जानकर पानी पीजै छानकर' सार्वकालिक भी है, सार्वदेशिक भी है, किन्तु 'कै चोर खादर में कै खद्दर मे' (या तो चोर नदी की घाटियों के बीहड़ों में रहता है या फिर खद्दर की पोशाक में) केवल तब से प्रचलित हुई जब भारत में स्वतंत्रता मिलने के बाद खद्दरधारियों के चरित्र ने तरह-तरह की चोरी करके खद्दर को बदनाम कर दिया, तथा तभी तक यह लोकोक्ति चलेगी, जब तक उनका यह चरित्र अपरिवर्तित रहता है। इस तरह यह सार्वकालिक नहीं है और सार्वदेशिक भी नहीं है, क्योंकि यह भारत के लिए ही सत्य है, किसी और देश के लिए नहीं। ऐसे ही 'मजबूरी का नाम गांधीवाद है' या 'मजबूरी का नाम महात्मा गांधी है' 'गांधी' के नाम के दुरुपयोग से जनित आधुनिक भारत में ही अनुभूत और प्रयुक्त लोकोक्ति है। अर्थात् न तो यह सार्वदेशिक है और न सार्वकालिक।

(घ) विषय के आधार पर : संबद्ध विषय के आधार पर लोकोक्तियों के अनंत भेद हो सकते है। जैसे नीति-संबंधी, व्यवहार-संबंधी, स्वास्थ्य-संबंधी, शकुन-संबंधी, खान-पान-संबंधी, जाति-संबंधी, धर्म-संबंधी, भगवान-संबंधी, ईमान-संबंधी, व्यापार-संबंधी, खेती-संबंधी, स्त्री-संबंधी, पुरुष-संबंधी तथा बालक-संबंधी इत्यादि। आगे कोश के मूल भाग पर एक दृष्टि दौड़ाकर विषयों के आधार पर लोकोक्तियों के अनेकानेक वर्ग किए जा सकने का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है।

(ङ) रचयिता के ज्ञात-अज्ञात होने के आधार पर : इस आधार पर दो वर्ग बनाए जा सकते हैं : ज्ञातनामा, अज्ञातनामा। कबीर, तुलसी आदि विभिन्न कवियों की जो पंक्तियाँ लोकोक्ति बन चुकी है वे ज्ञातनामा हैं, तथा जिनके बारे में यह ज्ञात नहीं है, वे अज्ञातनामा हैं। उदाहरण के

लिए 'बिन भय होय न प्रीत' तुलसी की है तो 'कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली' अज्ञातनामा है।

(च) निर्माण-काल के आधार पर : इस आधार पर मोटे रूप से प्राचीन, मध्यकालीन तथा आधुनिक—ये तीन प्रकार की लोकोक्तियाँ हो सकती हैं। उदाहरण के लिए 'विनाशकाले विपरीत बुद्धिः' प्राचीन लोकोक्ति है तो ग़यासुद्दीन तुग़लक से संबद्ध लोकोक्ति 'हनोज़ दिल्ली दूर अस्त' जिसे हिंदी मे 'अभी दिल्ली दूर है' भी कहते हैं, मध्यकालीन लोकोक्ति है तथा 'कि चोर खादर मे कि खद्दर में' या 'मजबूरी का नाम महात्मा गांधी है' आधुनिक है।

(छ) संवादात्मकता के आधार पर : इस आधार पर कुछ थोड़ी-सी लोकोक्तियो को संवादात्मक (जैसे 'नाऊ ठाकुर सिर पर कितने बाल हैं, बाबू सामने आएँगे') कहा जा सकता है। शेष काफ़ी सारी असंवादात्मक (जैसे 'हँसिया अपनी ओर ही खीचता है') होती हैं।

(ज) क्रिया के आधार पर : इस आधार पर कुछ तो क्रियायुक्त (जैसे 'तेल देखो तेल की धार देखो' या 'देखें ऊँट किस करवट बैठता है' आदि) होती है तथा कुछ क्रियाविहीन (जैसे 'जैसे नागनाथ वैसे साँपनाथ', 'नाम बड़े दर्शन थोडे', 'बड़ों की बड़ी बातें', 'नौ नक़द न तेरह उधार' आदि)।

(झ) वाक्य-रचना के आधार पर : इसके आधार पर साधारण वाक्यवाली (जैसे 'नौ दिन चले अढ़ाई कोस'), मिश्रित-वाक्यवाली (जैसे 'जो करेगा सो भरेगा'), संयुक्त वाक्यवाली (जैसे 'न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी' तथा 'घाव भर जाता है पर निशान नही मिटता' आदि), आज्ञा-वाक्यवाली (जैसे 'तेल देखो तेल की धार देखो), प्रश्न-वाक्यवाली (जैसे 'अब पछताए होत क्या जब चिडियाँ चुग गई खेत ?'), निषेध-वाक्यवाली (जैसे 'रोम एक दिन में नही बना', या 'न बुरा कहो न बुरा सुनो' आदि), क्रियायुक्त वाक्यवाली (जैसे 'गदहा नहलाने से घोड़ा नहीं होना'), क्रियाविहीन वाक्यवाली (जैसे 'नाम बड़े दर्शन थोड़े', या 'बड़े लोगों की बड़ी बातें' आदि), भूतकालिक क्रियावाली (जैसे 'दमड़ी की हँड़िया गई कुत्ते की जात पहचानी गई'), 'वर्तमानकालिक क्रियावाली (जैसे 'पैसा कमाना कठिन है, गँवाना आसान है', 'घाव भर जाता है पर निशान नही जाता' आदि) तथा भविष्य-कालिक क्रियावाली (जैसे 'न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी') आदि अनेकानेक भेद हो सकते हैं।

(ञ) तुक के आधार पर : कुछ लोकोक्तियों में तुक होती है (जैसे 'कर नही तो डर नही', या 'सौ सुनार की एक लुहार की') तथा कुछ में नहीं (जैसे 'घर का भेदी लंका ढाए' या 'घर से दे दे पर जमानती न बने') होती।

(ट) स्रोत के आधार पर : भाषा-विशेष की लोकोक्तियाँ स्रोत के आधार पर अनेक प्रकार की हो सकती हैं। उदाहरण के लिए हिंदी की लोकोक्तियों में कुछ तो संस्कृत से आई हैं (जैसे 'विनाशकाले विपरीत बुद्धिः', 'मौन स्वीकार का लक्षण', 'अति सर्वत्र वर्जयेत्' तथा 'लोभ पाप की जड़' आदि), कुछ फ़ारसी से ('ख़ामोशी नीम रज़ा', 'खोदा पहाड़ निकला चुहिया' ('कोह कंदन व मूश बरावुर्दन'), तथा 'नादान दोस्त से दाना दुश्मन अच्छा' ('दुश्मने-दाना बेह अज़ दोस्ते-नादाँ' आदि) तथा कुछ अंग्रेज़ी से ('आवश्यकता आविष्कार की जननी है', 'एक हाथ से ताली नही बजती' तथा 'ख़ाली दिमाग़ शैतान का घर' आदि)। यों काफी सारी देशज (जैसे 'चोर-चोरी करके जेल जाता है तो नेता जेल जाकर चोरी करता है', या 'कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली' आदि) भी हैं। कुछ लोकोक्तियाँ अपभ्रंश, पश्तो, तुर्की, अरबी आदि से भी आई हो सकती हैं, क्योंकि इन भाषाओं तथा इनके भाषियों का भी हिंदी भाषियों से कम-व-बेश संपर्क रहा है।

(ठ) व्यक्ति और जाति के आधार पर : इस आधार पर कुछ लोकोक्तियाँ व्यक्तिवाचक संज्ञा पर आधारित होती हैं (जैसे 'रोम एक दिन में नहीं बना' या 'कहाँ राजा भोज कहाँ भोजवा

तेली' आदि) तो कुछ जातिवाचक संज्ञा पर आधारित (जैसे 'सौ सुनार की एक लुहार की', 'हँसिया अपनी ओर ही खींचता है' आदि)। यों कुछ भाववाचक संज्ञा पर भी आधारित होती हैं।

इसी प्रकार अन्य अनेकानेक आधारों पर भी लोकोक्तियों के अनेकानेक वर्ग-उपवर्ग बनाए जा सकते हैं।

लोकोक्तियों के रचयिता

रचयिता की दृष्टि से विश्व की सभी भाषाओं की लोकोक्तियों को दो वर्गों में रखा जा सकता है। एक वर्ग तो उन लोकोक्तियों का है जिनके रचयिता के विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं है तथा दूसरा वर्ग उन लोकोक्तियों का है जिनके रचयिता का पता है। उदाहरण के लिए हिंदी में 'न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी' या 'सौ सुनार की एक लुहार की' अज्ञातनामा लोकोक्तियाँ है तो 'मन चंगा तो कठौती मे गंगा' (गोरखनाथ) या 'पर उपदेस कुसल बहुतेरे' (तुलसीदास) जैसी लोकोक्तियाँ ज्ञातनामा हैं, अर्थात् उनके मूल रचयिता का हमें पता है। कहना न होगा कि अधिकांश लोकोक्तियाँ पहले वर्ग में ही आती हैं और केवल थोड़ी ही दूसरे वर्ग की हैं।

यों यदि गहराई से विचार करें तो अज्ञातनामा लोकोक्तियों को भी जनता ने मिल-बैठकर नहीं बनाया होगा। ऐसी लोकोक्तियाँ भी मूलत: किसी एक व्यक्ति के मुँह से निकली होंगी, तथा उससे सुनकर लोगों ने उसका प्रयोग प्रारंभ किया होगा और इस प्रकार 'व्यक्ति की उक्ति' 'लोक की उक्ति' बन गई होगी और धीरे-धीरे वह लोकोक्ति ज्ञातनामा से अज्ञातनामा हो गई होगी। लार्ड रसेल ने ठीक ही कहा है :

A proverb is the wit of one and the wisdom of many.

इस प्रकार सभी लोकोक्तियाँ मूलत: 'व्यक्ति-उक्ति' होती हैं, 'ज्ञातनामा' होती हैं, किंतु धीरे-धीरे वे एक ओर तो 'लोक-उक्ति' अर्थात् 'लोकोक्ति' बन जाती हैं, दूसरी ओर उन्हें बनानेवाले का नाम लोग भूल जाते है तो 'ज्ञातनामा' से 'अज्ञातामा' बन जाती हैं। केवल वे लोकोक्तियाँ ही अंत तक ज्ञातनामा बनी रहती हैं जो प्रसिद्ध कवियों की प्रसिद्ध कृतियों के छंदों का अंश होती है।

इस प्रसग मे घाघ और भड्डरी के नाम से प्रचलित लोकोक्तियों के संबंध में भी कुछ विचार कर लेना अप्रासंगिक न होगा। प्राय: इन दोनों को ऐतिहासिक व्यक्ति माना जाता है, किंतु मेरे विचार मे ऐसा है नही। घाघ की लोकोक्तियाँ विभिन्न रूपांतरों तथा भाषा-भेदों के साथ उड़ीसा, बगाल, असम, बिहार, उत्तर प्रदेश तथा राजस्थान आदि में प्रचलित है तथा 'घाघ' का नाम भी अलग-अलग स्थानों पर 'घाघ' तथा 'डाक' आदि कई रूपों में मिलता है। यही नहीं, प्रत्येक प्रदेशवाले अपने 'घाघ' या 'डाक' का स्थान अपने प्रदेश में ही कहीं-न-कहीं मानते हैं, तथा उनके जीवन की कहानी भी सभी प्रदेशों में एक नही है। इस प्रसंग में यह भी उल्लेख्य है कि 'घाघ' या 'डाक' शब्द का अर्थ विभिन्न क्षेत्रों में 'अनुभवी', 'होशियार', 'चालाक', 'चलता-पुरज़ा' या 'अपनी बात अपने मन में रखने वाला' आदि है। मुझे लगता है कि घाघ कोई ऐतिहासिक व्यक्ति नही थे तथा इनकी खेती, मौसम तथा स्वास्थ्य-विषयक कहावतें विभिन्न लोगों ने अलग-अलग कहीं हैं जो अब 'अनुभवी-अर्थी' घाघ' के साथ जुड़ गई हैं।

यही स्थिति 'भड्डरी' की भी है। संस्कृत में 'भद्र' का एक अर्थ 'एक निम्न श्रेणी का ब्राह्मण' मिलता है। ये ब्राह्मण हाथ देखकर तथा शकुन बताकर अपनी रोजी-रोटी कमाते थे। ये एक प्रकार के अत्यंत सामान्य स्तर के 'फलित ज्योतिषी' थे। प्राकृत में आकर 'भद्र' शब्द 'भद्दर'
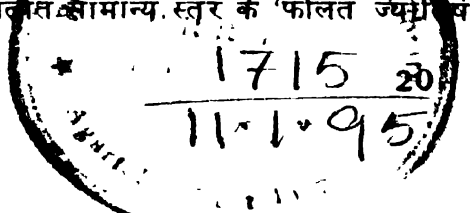
हो गया तथा फिर यही 'भड्डर' रूप में परिवर्तित हो गया । परवर्ती संस्कृत ग्रंथों में इस 'भड्डर' का संस्कृतीकरण 'भड्डरि' रूप में किया गया । आगे चलकर 'भड्डरि', 'सामुद्रिक के द्वारा भविष्य बताने वाले व्यक्ति को कहने लगे । यही 'भड्डर' या 'भड्डरि' शब्द आधुनिक भाषाओं में 'भड्डरी', 'भड्डली', 'भंडर'. 'भंडेरिया', 'भँड्डर' आदि रूपों में मिलता है । लगता है कि और आगे चलकर जनता के फलित ज्योतिष-विषयक विश्वासों की उक्तियाँ इसी नाम के साथ जोड़ दी गई तथा लोग 'भड्डरी' को ऐतिहासिक व्यक्ति और फलित-ज्योतिष-विषयक लोकोक्तियों को उनकी रचना मानने लगे ।

इस तरह घाघ तथा भड्डरी के नाम से प्रचलित लोकोक्तियाँ मूलतः तो ज्ञातनामा रही होंगी, फिर अज्ञातनामा हो गई होंगी तथा उसके बाद इन कल्पित व्यक्तियों से उन्हें जोड़कर जनता ने पुनः उन्हें ज्ञातनामा बना लिया है । लगता है कि 'लोकोक्ति' के साथ लोक को सब कुछ करने का पूरा अधिकार है ।

लोकोक्ति-भाव की असीमता

कुछ अनुभव किसी विशेष जाति, देश, क्षेत्र तथा काल के न होकर बहुजातीय, बहुदेशीय, बहुक्षेत्रीय तथा बहुकालिक होते है, अतः बहुत-सी ऐसी लोकोक्तियाँ है, जो अपने शब्दों मे अलग-अलग होकर भी अपने भाव मे विभिन्न भाषाओं में एक होती है । उदाहरण के लिए हिंदी 'नया नौ दिन पुराना सौ दिन' तथा अंग्रेज़ी 'Old is gold'; भोजपुरी 'नो गिहथिन मंठा पातर', अंग्रेज़ी 'Too many cooks spoil the broth'; संस्कृत 'कर्णिनी वै भूमिः (धरती के भी कान होते है—जैमिनी ब्राह्मण 1-126) हिंदी 'दिवाल के भी कान होते हैं'; अंग्रेजी 'A bad carpenter quarrels with his tools', हिंदी 'नाच न जाने आँगन टेढ़ा'; हिंदी 'घूरे (कूड़े) के दिन भी फिरते है', अंग्रेज़ी 'Every dog has his day'; संस्कृत 'दूरतः पर्वताः रम्याः', फ़ारसी 'आवाज़े दुहुल अज दूर ख़ुश मी नुमायद', हिंदी 'दूर के ढोल सुहावने'; हिंदी 'ढाक के तीन पात', तेलुगु 'गोरे [illegible] वेन्तेड़े' (भैंस की पूंछ हमेशा एक बित्ते की); अंग्रेज़ी 'Hunger is the best sauce', हिंदी 'भूखे को कुछ नही सूझता', 'भूखे को किवाड़ पापड', 'भूख में गूलर पकवान' तथा अंग्रेज़ी 'Might is right', हिंदी 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' ।

यहाँ तो केवल कुछ भाषाओं से उदाहरण लिए गए । यदि संग्रह किया जाए तो सभी काल की सभी भाषाओं की लोकोक्तियों के भावों में इस प्रकार की समानताएँ मिलेंगी. जिसका कारण है मानव मात्र की बाह्य और आंतरिक समानता ।

हिंदी लोकोक्तियों के स्रोत

हिंदी में लोकोक्तियाँ कुछ तो अपनी हैं—हिंदी और उसकी विभिन्न बोलियों की (कुछ लोक में बनी, कुछ साहित्यकारों द्वारा बनाई गई), कुछ संस्कृत से सीधे या परंपरा से आई हैं, कुछ फ़ारसी से आई हैं, कुछ पश्तो और तुर्की से आई हैं । कुछ अंग्रेज़ी से आई है तथा कुछ सीमावर्ती भाषाओं (जैसे बंगला, मराठी, गुजराती, पंजाबी आदि) से भी आई हैं, जिनका प्रयोग उन हिंदी-भाषियों की भाषा में मिलता है, जो हिंदी और इन अन्य भाषाओं की सीमाओं पर रहते हैं । इस तरह हिंदी की लोकोक्तियों के सात-आठ स्रोत हैं ।

हिंदी लोकोक्तियों के अर्थ

लोकोक्तियों में यों तो अभिधावाली भी काफ़ी मिलती हैं (जैसे 'नेकी और पूछ-पूछ', 'भादों का घाम और साझे का काम', 'हँसते घर बसते', तथा 'दैव-दैव आलसी पुकारा' आदि) किंतु काफ़ी ऐसी भी मिलती हैं जो अपनी अभिव्यक्ति में ध्वनिकाव्य से टक्कर लेती हैं (जैसे 'सौ दिल्ली उजड़ गई तब भी सवा लाख की') । कुछ अभिधा में भी ठीक होती हैं तथा ध्वनि में भी, जैसे 'फूंक से पहाड़ नहीं उड़ता', 'कोयला होय न ऊजरा, सौ मन साबुन खाय' । ऐसे ही कुछ हिंदी लोकोक्तियाँ अभिधार्थी है (जैसे 'मुंडे मुंडे मतिर्भिन्ना') तो कुछ लक्ष्यार्थी (जैसे 'कोयला होय न ऊजरा सौ मन साबुन खाय') तथा कुछ व्यंग्यार्थी (जैसे 'लंका में सब बावन हाथ के') ।

हिंदी लोकोक्तियाँ और कथाएँ

कुछ लोकोक्तिया ऐतिहासिक, पौराणिक तथा काल्पनिक कथाओं से भी संबद्ध होती हैं । उदाहरण के लिए 'बहादुरशाह के समय मे नादिरशाही' या 'अभी दिल्ली दूर है' (हनोज़ दिल्ली दूर अस्त) ऐतिहासिक कथाओं अथवा घटनाओं से संबद्ध हैं तो 'खाएँ भीम हगें शकुनी', 'अश्वत्थामा हतो नरो वा कुंजरो वा' या 'घर का भेदी लंका ढावे' पौराणिक कथाओं से संबद्ध हैं और 'न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी', 'तेल देखो तेल की धार देखो', 'यह मुंह मसूर की दाल', 'सहरी खाए तो रोजा रखे', 'भागते चोर की लँगोटी ही सही' या 'सोना सुनार का गहना संसार का' आदि या तो काल्पनिक या वास्तविक घटनाओं पर आधारित है । इस तरह कुछ लोकोक्तियाँ कथाओं से संबद्ध होती है ।

हिंदी लोकोक्तियों में छंद

कुछ लोकोक्तियाँ तो गद्यात्मक होती है किंतु कुछ पद्यात्मक होती है जिनमें कई छंदों का प्रयोग मिलता है । इसका कारण यह है कि ये तरह-तरह के छंदों (दोहा, चौपाई, सोरठा, कवित्त, सवैया, कुंडलिया, छप्पय) के अंश होते हैं । जैसे :

(क) एकै साधे सब सधै सब साधे सब जाय ।
(ख) पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं ।
(ग) मूरख हृदय न चेत जो गुरु मिलें विरंचि सम ।

हिंदी लोकोक्तियों में अलंकार

लोकोक्तियों में कई प्रकार के शब्दालंकार तथा अर्थालंकार मिलते हैं । उदाहरण के लिए :

अनुप्रास : (1) **बात** और **बाप** एक होते है ।
(2) **जाकी** लाठी **ताकी** भैंस ।
(3) **सांच** को **आंच** कहाँ ।
(4) **दान** की बछिया के **दांत** नहीं **देखे** जाते ।
(5) **माई** का जी **गाई** अस पूत का जी **कसाई** अस ।

यमक : संगत ही गुन ऊपजै संगत ही गुन जाय ।

वीप्सा : नाई की बारात में ठाकुर-ही-ठाकुर ।

उपमा : सच्ची बात चूने-सी लगती है ।

सम : (1) जैसा देव वैसी पूजा ।
(2) यथा राजा तथा प्रजा ।
(3) जो जस करइ सो तस फल चाखा ।
(4) बड़ों की बड़ी बातें ।

विषम : कहाँ राजा भोज कहाँ भोजवा तेली ।

विरोधाभास : (1) मेहरी जैसा बैरी न मेहरी जैसा मीत ।
(2) संगत ही गुन ऊपजै संगत ही गुन जाय ।
(3) नाम बड़े दर्शन थोड़े ।

वक्रोक्ति : (1) सीधे का मुंह कुत्ता चाटे ।
(2) दिल्ली में रहे पर भाड़ ही झोंका किए ।

अर्थान्तरन्यास : राजा करे सो न्याय, पासा परे सो दाव ।

स्वभावोक्ति : (1) तिरिया तेल हमीर हठ चढ़ै न दूजी बार ।
(2) फूटी सहै पर आँजी ना सहै ।

इनके अतिरिक्त अपह्नुति, दृष्टांत, निदर्शना, अन्योक्ति, दीपक, तुल्ययोगिता, तथा काव्यलिंग आदि अलंकार भी मिलते है ।

लोकोक्तियों की मानकता का प्रश्न

हिंदी की लोकोक्तियों में कुछ तो क्षेत्रीय हैं, अर्थात् कुछ केवल बोली-विशेष के क्षेत्र में ही प्रचलित हैं, किंतु कुछ बिना शब्दांतर के या शब्दांतर के साथ (जैसे 'कहां राजा भोज कहाँ भोजवा तेली'—'कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली'—'कहाँ राजा भोज कहाँ गंगुवा तेली', 'कहा राजा भोज कहाँ गांगला तेली') पूरे हिंदी प्रदेश में प्रचलित है । जो लोकोक्तियां प्राय: ज्यों-की-त्यों (जैसे 'न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी') पूरे हिंदी प्रदेश में प्रचलित हैं, उन्हें मानक कहा जा सकता है । किंतु इसका अर्थ यह नहीं कि हिंदी के मानक लेखन में या मानक हिंदी में किए गए भाषण या बातचीत में केवल मानक लोकोक्तियों का ही प्रयोग होता है । वास्तविकता यह है कि प्रत्येक बोली का बोलनेवाला अपने मानक हिंदी के प्रयोग में भी अपनी बोली की लोकोक्तियों का प्रयोग धड़ल्ले से करता है । इस तरह जो आज प्रयोग की स्थिति है, उसे देखते हुए लोकोक्तियों के क्षेत्र में मानकता की समस्या का समाधान कठिन है ।

हिंदी लोकोक्तियों की परंपरा

सभी पुरानी संस्कृतियों के लोगों का जीवन-अनुभव लोकोक्ति बनकर उनके जीवन-दर्शन पर छाया हुआ मिलता है । यही कारण है कि प्रत्येक प्राचीन साहित्य लोकोक्तियों से भरा-पूरा है । वैदिक संस्कृत और लौकिक संस्कृत का साहित्य भी इसका अपवाद नहीं है । 'अतिसर्वत्र वर्जयेत्'; 'अव्यवस्थित चित्तानां प्रसादोपि भयंकर:'; 'उद्योगं पुरुष लक्षणम्' 'खल: करोति दुर्वृत्तम्': 'न वारिणा शुद्धति चांतरात्मा'; 'विनाशकाले विपरीत बुद्धि:' 'मौनं सर्वार्थ साधनम्'; 'मौनं स्वीकृति लक्षणं'; 'लोभ: पापस्य कारणम्'; 'साधवो नहि सर्वत्र'; 'सर्वे गुणा: कांचनमाश्रयन्ति'; 'स्वार्थी दोषन्न पश्यन्ति'; 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वच:'; 'क्षमा वीरस्य भूषणम्' तथा 'मूलं नास्ति कुत: शाखा' जैसी लोकोक्तियाँ वहाँ भरी पड़ी हैं । इसी परंपरा में आगे चलकर पालि, प्राकृत, अपभ्रंश से होते हुए

हिंदी अपने आदि तथा मध्यकाल में लोकोक्तियों से अत्यंत समृद्ध मिलती है। प्रायः सभी आधुनिक भाषाओं की तरह आधुनिक हिंदी भाषा भी लोकोक्तियो में उतनी समृद्ध नहीं है जितनी आदि-कालीन तथा मध्यकालीन हिंदी थी। हाँ, बोलियाँ इसका अपवाद है। उनमें लोकोक्तियों का प्रयोग खब होता है किंतु मानक हिंदी मे नही और न मानक हिंदी के आधुनिक साहित्य में ही। यहाँ हिंदी के कुछ साहित्यकारो द्वारा प्रयुक्त लोकोक्तियाँ इस दृष्टि से समृद्ध परपरा से परिचित होने के लिए देखी जा सकती है।

गोरखनाथ : 'जैसा करे सो तैसा पाय', 'गुरु कीजै गहिला निगुरा न रहिला'; 'जोग का मूल है दया दाण', 'दरवेस गोइ जो दर की जाणै'; 'मन काहू के न आवै हाथि'; 'जरणा जोगी जुगि जुगि जीवै झरणा मरि मरि जाय'; 'सत गुरु मिलै तौ उबरै बाबू, नही तौ परलै हूवा'; 'गुरु बिन ग्यान न पायला रे भाईला'; 'मन चगा त कठौती गंगा'; 'गिरही होय करि कथै ग्यान'; 'अमली होय करि धरे ध्यान', 'बैरागी होय करै आसा'; 'जे आसा तो आपदा, जे ससा तो सोग'; 'तीन जणै का सग निवारो नकटा बूचा काणा', 'जब तब कलक लगा इसी काली हाँडी हाथि'; 'मूरिष सभा न बैसिबा अवधू', 'पंडित सौ न करिबा बाद'; 'कनक कामनी त्यागें दोइ, सो जोगेस्वर निरभै होइ', 'यहु जगु है काँटे की बाडी देषि-देषि पग धरणाँ', 'आँषै देषिबा काने सुणिबा मुष थैं कछू न कहणा', 'अपनी करणी उतरिबा पार'; 'नया नौ दिन पुराना सौ दिन', 'मधि निरतर कीजै वास' (मध्यम मार्ग ही सर्वोत्तम होता है); 'थोड़ा बोले थोड़ा खाइ' (थोड़ा ही बोलना चाहिए तथा थोड़ा ही खाना चाहिए); 'भर्या ते थीर झलझलति आधा' (जिसे पूरा ज्ञान हो वह चुप रहता है, वही बहुत बोलता है जिसका ज्ञान अधूरा होता है); 'कोई वादी कोई विवादी जोगी कौ बाद न करना' (व्यर्थ का वाद-विवाद अच्छा नही)।

मुल्ला दाऊद (चांदायन) : 'पिरम घाउ ओखदि नहि मानइ' (प्रेम की कोई दवा नही); 'जो जस करइ पाव तस सोई', 'तिरियहि कर हिय होय मयारू' (स्त्रियों के हृदय मे ममता होती है), 'बिरहु जेहि तेहि नीद न आवा'; 'कोउ न जान दुख काहू केरा' (दूसरे का दुख दूसरा नही जानता); जेहि यह चोट लागि सो जानी' (जिसे चोट लगती है, वही जानता है); 'जरमि न छूटि पिरम कर बाधा' (प्रेम मे एक बार बँधकर व्यक्ति जन्म-भर उससे नही छूटता); 'जो जस करइ पाव तस सोइ' (जो जैसा करता है, वह वैसा ही फल पाता है); 'जो बाउर मनुसहँ चित बाँधइ सो अइसहि पछिताइ', 'जस कीन्हेंउ तस पाएउँ', 'सवन न सुनइ नैन नहिं देखइ जउ न होइ मन हाथि' (यदि अपना मन हाथ मे न हो तो न तो कान सुनता है, न आँखें देखती है, अर्थात् इद्रियो पर अपना अधिकार नही होता); 'मागति पान तउ पानी आनई' (पान माँगने पर पानी देता है); 'हरुई बात जाइ गरुवाई' (हलकी बात कहने से गंभीरता नष्ट हो जाती है); 'मुएँजो मारइ सो कस आहा' (मरे को क्या मारना ?), 'भल जो करइ सो भलई पावा' (जो दूसरों के लिए भला करता है, उसका भला ही होता है); 'धनु सो जननि असइ जेइँ जनाँ'; 'लाभ न बिसवा मूर गँवावा' (लाभ तो कमाया नही, उलटे मूल गँवा बैठा)'; 'मुइउँ पियास नाँक लहि पानी'; 'बिनु दहि मथें कि निसरइ घीऊ'।

चंद बरदायी : 'सा जीवन जन्तह बयनु वायन गए मृत होइ' (मनुष्य तभी तक जीवित माना जाता है, जब तक वह अपने वचन की रक्षा करे, अन्यथा वह मृत है); 'जुब्बनु धन अस्थिर रहै अभुकि अजुरियाहँ' (यौवन अस्थिर है, क्या अँजुरी में पानी रह सकता है ?); 'दैवो विचित्रा गति' (दैवगति विचित्र है); 'मरण लग्ग बिधि हत्थु' (मृत्यु और विवाह विधाता के हाथ होते हैं); 'को मेटइ विधिपत्त' (विधाता के लेख (पत्र) को कौन मिटा सकता है ?); 'जिहि प्रिय तन ऊँगलि

फिरइ निहि प्रियजन कह कज्ज' (जिस प्रियजन की ओर लोग उँगली उठाएँ वह किस काम का ?); **'यतौ** नीरं तता नलिनी यतौ नलिनी ततो नीर' (जहाँ नीर होता है वहीं नलिनी होती है तथा **जहाँ नलिनी** होती है, वहीं नीर होता है । अटूट सबध पर कहते है), 'सूर मरण मगली स्याल मगल घरि आए' (वीर का भला रणभूमि मे मरने मे है तो कायर (स्याल) का घर भाग आने मे), 'कृपन लोभ मगली दानि मगल कछु दिन्नइ' (कृपण का भला लोभ करने मे है तो दानी का कुछ देने मे), 'जस भावी नर भोगवइ तस बिधि अप्पहि मत्त' (मनुष्य की जैसी भावी होती है, वि ..ना उसी के अनुरूप उसे मति भी देता है । तुलनीय विनाश काले विपरीत बुद्धि), 'नट नाटक डभी डमरु नहि बुज्झिय सुरतान' (नट, नाटक, पाखडी तथा डमरू भीतर मे खोखले, अत अविश्वसनीय होते है) ।

नरपति नाल्ह : 'राज नी नीति जिसी षडा नी धार' (राजनीति तलवार की धार जैसी होती ह), 'आकुली बोलि पाछइ पछिताइ' (बिना सोचे-समझे बोलने पर आदमी पछताता है), 'दवका दाधा हो कूपल लेइ, जीभ का दाधा न पाल्हवइ' (दावाग्नि का जला वृक्ष नए पत्ते लेता है किंतु जीभ :। जला मनुष्य पल्लवित नही होता । तलवार का घाव मिट जाता है पर बात का घाव नहीं मिटता) । 'चद कूडइ किउँ ढाँकियउ जाइ' (चद्रमा को भला किस प्रकार कूडे से ढका जा सकता ह ?) 'जलह विहूणा किम जीयइ माछ' (पानी के बिना मछली भला कैसे जीएगी ?), 'कीरी ऊपर कटरी किसी' (कीडी के ऊपर सेना कैसी ? छोटे पर क्रोध व्यर्थ है), 'पगरी पाणही-स्यउँ किसउ रोप' (पैर की पनही से रोष कैसा ? छोटे पर क्रोध नही करना चाहिए) ।

छिताईवार्ताकार : 'बचन बडे कहियह सँभालि', 'मिटे न अक्खिर लिखे ज सीस' 'सपति बिपति होइ फण जाइ', 'जोबन रयण पाहुणो आहि', 'जोबनु गयो बहुरि नहि होइ', 'बाले बचन करइ प्रतिपाल', 'ठाकुर अत न होई मित्त', मंगल ते मैगल बस होइ', 'मिध्र सर्प आपनो न होइ', 'ठाकुर खन बैरी खन मित्त', 'थिरु न रहै ठाकुर को चित्त' 'आसा बैरी न कीजिए, ठाकुर न कीजै मित्त', 'श्रवण स्वाद रग मरै कुरग नयन स्वाद रग मरै पतग', अति स्नेह ते होइ वियोग, अधिक भोग न बाढे रोग', 'अति हासी ते होइ बिगारू', ब्याह बैर मित्रता प्रमान, ये निन चाहि आप समान' 'काम न होइ खेल ते रारु 'बाला बेलि नवहि कुम्हिलाइ जो न सीचई अवसरि पाइ', 'मिटे न अक्खर लिखे छ सीस', 'मोहये सो ज सहावै दयौ', 'गुनी होइ गुन का सग्रहइ', 'लोभी सुकृत गवावइ सबै' 'कामी तो चाहै कामनी', 'गन कौ सग्रह करहइ गनी', 'बिन नायक नहि चलिहै राज'; 'हम रजपूत मरे रज काजि, भागै गोत बस को लाज' 'ठाकर मित कहो जनि कोइ', 'तिय को भेदु त्रिया पै लहै', 'घर कन्या रिन व्यापै पीर' ।

विद्यापति : 'समय पाय तरु फरे रे कतबो सीच नीर', 'धनिक क आदर सब तहँ होय, निरधन बापुर पुछय न कोय'; 'सुपुरुष बचन अफल नहि होय', 'बारि बिहून सर केओ नहि पूछ', जोबन रूप अछ त दिन चारि', 'आनक दुख आन नहि जान', 'रस बूझए रसमत ।

कबीर : 'बाँझ न जानै पराई पीर', 'कबीर आप ठगाइए और न ठगिए कोइ', 'मागन मरन समान है', 'कबीर सगत साध की कदे न निरफल होइ', 'उज्जवल देखि न मानिए बग ज्यूँ धारे ध्यान' 'नीद न माँगै साँथरा भूख न मागै स्वाद', 'पोथी पढि-पढि जग मुवा पडित भया न कोइ', 'पर नारी पर सुदरी बिरला बचै कोइ', 'नरनारी सब नरक हे जब लगि देह सकाभ', 'माला फेरत जुग भया गया न मन का फेर'; 'केसो कहा बिगाडिया जे मूडै सौ बार'; 'तन कौ जोगी सब करै मन कौ बिरला कोइ', 'कहै कबीर एक राम जपहु रे हिदू तुरक न कोई', 'राम नाम बिनु बुडि है कनक कामिनी कूप'; 'कथनी कथी तौ क्या भया जे करणी ना ठहराइ'; 'मनिषा जनम दुर्लभ है देह न

बारंबार'; 'नारी कुंड नरक का बिरला थामे बाग';**'बैस्नो भया तो का भया बूझा नहीं विवेक'**; **'संत न छोड़ै संतई** कोटिक मिलै असंत'; 'संत न बाँधै गाठड़ी पेठ समाता लेइ'; 'सरपहि दूध पिलाइये दूधै विष है जाइ' ।

मंझन : धरम पंथ दुहु जग उजियारा'; 'लिखा को मेट लिलार'; 'म्रिग्र मद प्रेम सो जा न छपाई'; 'पाप केर घर तिरिया जाती'; 'नासे बहुत कुल धिय के नासे'; 'ओस पियास न त्रिखा बुझाई'; 'पानिप उतरि चढ़े नहि काऊ'; 'मिग्र मद पेम रहै नहिं गोवा'; 'तिरिया भई जगत केहि केरी'; 'कोइ न सका तिरिया जग साधी'; 'विरह कठिन कोइ जान न पीरा'; 'दुख मानुस कर आदि गरासा' (दुख ही मनुष्य का प्रथम ग्रास है); 'गुण के पीछें दोष लुकाइहि' (व्यक्ति में कुछ गुण हों तो दोष छिप जाते है ।); 'करता हरता एक बिधाता' (भगवान् विश्व का कर्त्ता भी है, हर्त्ता भी है) ।

जायसी : 'गुनी न कोई आपु सराहा'; 'मारि न जाय चहै जेहि स्वामी'; 'घर अँधियार पूत जो नाही'; 'दादुर कतहुँ कँवल कहँ पेखा'; 'केइ न जगत जस बेंचा, केइ न लीन्ह जस मोल'; 'जहँ अँकोर तहँ नीक न राजू'; 'जग बूडा सब कहि कहि मोरा'; 'दान पुन्न तें होइ कल्यानू'; 'जहाँ लोभ तहँ पाप संघाती'; 'दगध न सहिय जीउ बरु दीजै'; 'जो तप करै सो पावै भोगू'; 'जेहि गुन होइ सो पावै तीम्ह'; 'मेटि न जाइ लिखा पुरबिला'; 'साहस जहाँ सिद्ध तहँ होई'; 'का भा जोग कथनि के कथे'; 'किछु न कोइ लेइ जाइहि दिया जाइ पै साथ'; 'नेह न जानै साँव कि सेता'; 'मृगमद प्रेम न आछै छपा'; 'दिया बराबर जग कुछ नाही' (दान के बराबर दुनिया मे कुछ भी नही), 'सह सरार सपन कर लेखा'; 'का भा जोग कथनि के कथे', 'प्रेम घाव दुख जान न कोई'; 'जो रे उवा सो अथवा रहा न कोइ समार', 'सिंघ के मोंछ हाथ को मेला'; 'जियत सिंघ के गह का मोछा'; 'पुरुष न आपन नारि सराहा'; 'घर के भेद लंक अस टूटी'; 'जौ पीसत धुन जाइहि पीसा'; 'मरै जो जल पर लै नेहि तबहीं'; 'कान टूटै जेहि परि के का लेइ करब सो सोन'; 'लोनी सोइ कंत जेहि चहै' ।

सूर : 'हरिजन मारे हत्या होइ'; 'इहां कोउ काहू को नाहिं'; 'उधो मनमाने की बात'; 'जाकै लागी होइ सु जानै';'सूरदास जाकौ मन जासौ सोइ ताहि सुहाइ'; 'काके मीत अहीर' ।

तुलसी : 'परहित सरिस धर्म नहि भाई'; 'पर पीडा सम नहिं अधमाई'; 'मोह सकल व्याधिन कर मूला'; 'जो करता है करम को सो भोगत नहि आन'; 'नारि चरित जलनिधि अवगाहू'; 'का न करइ अबला प्रबल'; 'अधम ते अधम अधम अति नारी'; 'मूरख हृदय न चेत जो गुर मिलहि बिरंचि सम'; 'मृगलोचनि के नैन सर का अस लाग न जाहि'; 'तुलसी मीठे बचन ते सुख उपजत चहुँ ओर'; 'नहि दरिद्र सम दुख जग माही'; 'पर उपदेस कुसल बहुतेरे'; 'प्रीति बिरोध समान सन करिय नीति असि आहि'; 'स्वारथ लागि करहिं सब प्रीती'; 'हित अनहित पसु पच्छिहु जाना'; 'अरध तजहि बुध सरबसु जाता'; 'सबते कठिन राजमदु भाई'; 'जग बौराइ राजपदु पाएँ'; 'आरत काह न करइ कुकरमू'; 'नीति न तजिय राजपदु पाएँ'; 'को न कुसंगति पाइ नसाई'; 'निज हित-अनहित पसु पहिचाना'; 'बड़े सनेह लघुन पर करहीं'; 'तुलसी देखि सुबेसु भूलहिं मूढ न चतुर नर'; 'बाँझ कि जान प्रसव कै पीरा'; 'पराधीन सपनेहु सुख नाही'; 'होइहि सोइ जो राम रचि राखा'; 'जहाँ सुमति तहँ संपति नाना', 'जहा कुमति तहँ बिपति निधाना'; 'करम प्रधान बिस्व करि राखा'; 'धरमु न दूसर सत्य समाना'; 'काहु न कोउ सुख दुख कर दाता'; 'सठ सुधरहिं सतसंगति पाई'; 'करे जो करमु पाव फल सोई'; 'बिनु सतसंग बिवेक न होई'; 'जैसी होइ भवितव्यता तैसी मिलत सहाइ'; 'हरि इच्छा भावी बलवाना'; 'नारि धरमु पतिदेव न दूजा' ।

रहीम : 'रहिमन नीचन संग बसि लगत कलंक न काहि'; 'रहिमन असमय के परे हित

अनहित ह्वै जाय'; 'माँगे घटत रहीम पद कितो करो बढ़ि काम'; 'दुरदिन परे रहीम कहि भूलत सब पहिचानि'; 'जो रहीम उत्तम प्रकृति का करि सकै कुसंग'; 'जो रहीम ओछो बढ़ै तो तैसो ही इतराय'; 'जहाँ गाँठ तहँ रस नहीं'; 'छिमा बड़न को चाहिए छोटिन को उतपात'; 'कहि रहिम कैसे निभै बेर-केर को संग'; 'एकै साधे सब सधै सब साधे सब जाय'; 'जैसी संगति बैठिए तैसोइ फल दीन'; 'रहिमन लाख भली करो अगुनी अगुन न जाय'; 'बड़े बड़ाई ना करै बड़े न बोलैं बोल'; 'नहि रहीम कोऊ लख्यो गाढ़े दिन को मित्त'।

केशव : 'अधिक गर्व मार्‍यो सिसुपाल'; 'दीजई जु बात हाथ भूलिहू न लीजई'; 'जोई अति-हित की कहै सोई परम अमित्र'; 'सोभति सो न सभा जहँ वृद्ध न'; 'मित्र मत्र मंत्री दल होय'; 'जैसा सेवक तैसो नाथ'; 'लोभी कहा न लेइ आग पुनि कहा न जरई'; 'दानी कहा न देइ चोर पुनि कहा न हरई'; 'है अदड भुवदेव सदाई'; 'जारति है नर को परनारी'; 'बृद्ध न ते जु पढ़े कुछ नाही'; 'होनहार है रहै मिटै मेटी न मिटाई'; 'राजश्री अति चंचल तात'; 'धर्म कर्म कछु कीजई, सफल तरुनि के साथ'; 'नोनहार जग बात कछु है ही रहै निदान'; 'मनसा बाचा कर्मना पत्नी के पतिदेव'।

बिहारी : 'को कहि सकत बड़ेन सों लखे बड़ी हू भूल'; 'दुसह दुराज प्रजानि कौं क्यों न बढ़े दुख दुंद', 'बड़े न हूजै गुननु बिनु बिरद बड़ाई पाइ'; 'जप माला छापा तिलक सरै न एकौ कामु', 'कनकु कनकु ते सौ गुनी मादकता अधिकाय'; 'कोटि जतन कोऊ करै परै न प्रकृतिहिं बीचु'।

बृंद : 'सेवक सोई जानिये रहै बिपति मे संग'; 'जामे हित सो कीजिए कोऊ कहै हजार'; 'काहू को हँसिये नहीं हँसी कलंक को मूल', 'जोरावर की होति है सबके सिर पर राह'; 'उत्तम बिद्या लीजिए जदपि नीच पै होय'; 'खाय न खरचै सूम धन चोर सबै लै जाय'; 'अपनी प्रभुता को सबै बोलत झूठ बनाय'; 'नीचहु उत्तम संग मिलि उत्तम ही ह्वै जाय', 'होत भले कै सुत बुरौ भलौ बुरे कै होय', 'बिनसत बार न लागई ओछे जन की प्रीति'; 'अरि छोटो गनिए नहीं जाते होत बिगार'; 'दुर्जन के संसर्ग ते सज्जन लहत कलेस'; 'बहुत निबल मिलि बल करै करै जु चाहे सोय'; 'जाको जहँ स्वारथ सधै सोई ताहि सुहात', 'पर घर कबहुँ न जाइए गए घटत है जोत'; 'सुख बीते दुख होत है दुख बीते सुख होत'; 'स्वारथ के सबही सगे बिनु स्वारथ कोउ नाहि'; 'बनिक पुत्र जान कहा गढ़ लेबे की बात'; 'होय कछू समझे कछू जाकी मति बिपरीत'; 'मान होत है गुननि ते गुन बिनु होत न मान'; 'सबै सहायक सबल के कोउ न निबल सहाय'; 'जैसी चले बयार तब तैसी दीजे ओट'; 'अपनी पहुँच बिचारि कै करतब करिए दौर'; 'हितहू की कहिए न तिहि जे नर होत अबोध'; 'भले बुरे जहँ एक से तहाँ न बसिए जाय'; 'भले बुरे सब एक से जौलों बोलत नाहि'; 'आप बुरे जग है बुरो भलो भले जग जानि'; 'अति परिचय तें होत है अरुचि अनादर भाय'; 'रागी अवगुन ना गनै यहै जगत की चाल', 'नीकी पै फीकी लगै बिनु अवसर की बात'; 'प्रेम निबाहन कठिन है समझ कीजियो कोय'; 'जैसी हो भवतव्यता तैसी बुद्धि प्रभास'; 'अति ही सरल न हूजिये देखौ ज्यों बनराय'; 'यह निश्चय करि मानिये जानहार सो जाय'।

गिरिधर : 'क्षीर पिवैया सकस जो सो नहिं खावत घास'; 'यारी ता संग कीजिए गहे हाथ सो हाथ'; 'साई अपने चित्त की भूलि न कहिए कोइ'; 'बीती ताहि बिसारि दे आगे की सुधि लेइ'; 'बिना बिचारै जो करै सो पाछै पछिताय'; 'केहरि तृण नहिं चरि सके जो ब्रत करै पचास'; 'साई सब संसार में मतलब को ब्यौहार'; 'गुन के गाहक सकल नर बिनु गुन लहै न कोय'; 'दौलत पाय न कीजिए सपने में अभिमान'; 'नारी अति बल होत है अपनो कुल को नास'; 'समय पर्‍यौ है आय बाप से झगरत बेटा'; 'बनियाँ अपने बाप को ठगत न लावै बार'; 'मरा पुरुष जिय जानि जबै पर

घर गई नारी'; 'वे नर कैसे जियें जाहि तन व्यापै चिंता'; 'होनी होइ सो ना मिटै अनहोनी ना होइ'; **'माँगत गये सो मर रहे मरे से माँगन जाय'** ।

जैसा कि पीछे संकेत किया गया है आधुनिक साहित्यकारों में लोकोक्तियों का प्रयोग अपेक्षाकृत बहुत कम है । हरिऔध, गुप्त जी तथा दिनकर के कुछ प्रयोग हैं :

हरिऔध : 'जननि के जिय की सकला व्यथा जननि ही जिय है कुछ जानता'; 'जननी केवल है जन जननी ही नही, उसका पद है जीवन का भी जनयिता' ।

मैथिलीशरण गुप्त : 'साँप के सँपेलुए भी छोड़े नहीं जाते हैं'; 'ले डूबता है एक पापी नाव को मझधार में', 'चोरी न करेगा चोर किंतु क्या छोड़ेगा हेरा-फेरी'; 'दिन बारह वर्षो मे घूरे के भी सुने गए है फिरते'; 'नर क्या करेगा त्याग करती है नारी ही'; 'रो-रोकर मरना ही नारी लिखा लाई है'; 'अश्वदोष रत्नदोष होता नही राजा को'; 'ललना तो छलना है'; 'एक नही दो-दो मात्राएँ नर से भारी नारी'; 'मानिए तो शंकर है कंकर है अन्यथा' ।

दिनकर : 'प्रण करना है सहज कठिन है लेकिन उसे निभाना'; 'सह सकता जो कठिन वेदना पी सकता अपमान वही'; 'सबसे श्रेष्ठ वही ब्राह्मण है हो जिसमें तप त्याग' ।

हाँ, आधुनिक गद्य लेखकों में अपेक्षाकृत कुछ अधिक लोकोक्तियों का प्रयोग मिलता है । मुख्यतः भारतेंदु काल के गद्य लेखकों ने लोकोक्तियों का बहुत अधिक प्रयोग किया है । एक सरसरी दृष्टि डालने पर ही लगता है कि उनकी संख्या एक हज़ार से ऊपर होगी । उदाहरण के लिए :

भारतेंदु हरिश्चंद्र : 'अच्छे काम मे विलंब नहीं'; 'आलसी पड़ा कूएँ में वहीं चैन है'; 'गरजना इधर बरसना कहीं'; 'गुदगुदाना वहाँ तक जहाँ तक रुलाई न आवे'; 'जंगल में मोर नाचा देखा किसने'; 'जब तक साँस तब तक आस'; 'जहां तक खाट होगी पाँव वहीं तक फैलेंगे'; 'जैसे काजी वैसे पाजी' ।

बालकृष्ण भट्ट : 'अंधे के अंधे होते हैं'; 'उद्योगी के घर पर झड़ी, लक्ष्मी झूमे खड़ी-खड़ी'; 'ऊँची दुकान फीका पकवान'; 'एक ईर घाट दूसरी मीर घाट'; 'कर नहीं तो डर क्या'; 'किसी को बैंगन बावले किसी को बैंगन पथ्य'; 'खरा खेल फरक्काबादी'; 'खाना गेहूँ या रहना एहूँ'; 'गिरा क्या गिरेगा'; 'घी खाइए शक्कर से दुनिया ठगिए मक्कर से'; 'चोर का धन बटमार लूटे'; 'चोर चोर मौसेरे भाई'; 'चौबे मे छब्बे होने गए दुब्बे ही रह गए'; 'जिसकी लाठी उसकी भैंस'; 'जिसने मुँह चीरा है झख मारेगा खाने को देगा'; 'जैसी रूह वैसे फरिश्ते' ।

प्रतापनारायण मिश्र : 'अपना भला अपने हाथ'; 'अपनी-अपनी ढपली अपना-अपना राग'; 'अपनी इज़्ज़त अपने हाथ'; 'आज मरे कल दूसरा दिन'; 'उपदेश समझने को समझ चाहिए'; 'उलटा चोर कोतवाल को डाँटे'; 'एक और एक ग्यारह होते हैं'; 'एक का घर जले और दूसरा तमाशा देखे'; 'एक की दवा दो'; 'एक हाथ से ताली नहीं बजती'; 'कभी गाड़ी नाव पर कभी नाव गाड़ी पर'; 'काला अक्षर भैंस बराबर'; 'कुछ दिन टाँय-टाँय पीछे फिस्स'; 'कुत्ते की पूँछ सीधी तो होती नहीं'; 'ख़रबूज़े को देखकर ख़रबूज़ा रंग पकड़ता है' ।

श्रीनिवास दास : 'उद्योग की माता आवश्यकता है'; 'गाली खाने को बनी है'; 'गुड़ का हँसिया न निगलते बने न उगलते बने'; 'गुरु गुड़ ही रहा चेला शक्कर हो गया'; 'गौवें बचेंगी तो मुसलमानों को कड़वा दूध न देंगी'; 'घर का पर्सैया अँधेरी रात'; 'घर का भेदिया लंका दाह'; 'घर-घर मिट्टी के चूल्हे हैं'; 'जल में रहकर मगर से बैर'; 'जै मुँह तै बातें' ।

मध्यकाल में भारत में फ़ारसी का प्रचार काफ़ी था, जिसका परिणाम यह हुआ कि हिंदी में फ़ारसी परंपरा से भी काफ़ी लोकोक्तियाँ आईं तथा हिंदी साहित्य में जैसे संस्कृत की लोकोक्तियों का ख़ूब प्रयोग हुआ, ठीक उसी प्रकार फ़ारसी की लोकोक्तियों का भी हुआ। हिंदी में प्रयुक्त कुछ फ़ारसी लोकोक्तियाँ हैं: 'अव्वल ख़ेश बाद दरवेश' (पहले अपना पीछे पराया); 'आवाज़े दुहुल अज़ दूर ख़ुश मी नुमायद' (दूर के ढोल सुहावने); 'करदये ख़ेश, आयद पेश' (जो करेगा सो आगे आएगा); 'कोह कंदन व मूश बरावुर्दन' (खोदा पहाड़ निकली चुहिया); 'ख़ामोशी नीम रज़ा' (मौन आधी स्वीकृति है); 'तंदुरुस्ती हज़ार नियामत'; 'तुख़्म तासीर सुहबत असर'; 'दुश्मने दाना बेह अज़ दोस्त नादाँ' (नादान दोस्त से दाना दुश्मन अच्छा होता है); 'नीम हकीम ख़तर-ए-जान'; 'माले-मुफ़्त दिले बेरहम' तथा 'हिम्मते मरदाँ मदद-ए-ख़ुदा' आदि।

आधुनिक काल में अंग्रेज़ी के संपर्क ने भी कुछ लोकोक्तियाँ हिंदी को दी है. 'आवश्यकता आविष्कार की जननी है' (Necessity is the mother of invention); 'एक हाथ से ताली नहीं बजती' (It requires two hands to clap); 'भूंकनेवाले काटते नहीं' (Barking dogs seldom bite) तथा 'ख़ाली दिमाग़ शैतान का घर' (Empty mind is devil's workshop) आदि।

और अंत में यह कह देना भी आवश्यक है कि किसी भी जीवित भाषा और उसकी बोलियों की सभी लोकोक्तियों का संग्रह करना असंभव-सा है। हिंदी भी इसका अपवाद नहीं। यह संग्रह तैंतीस वर्षों में तैयार हुआ है, किंतु जैसे-जैसे इसे पूरा करने का प्रयास मैं करता गया, इसका अधूरापन मेरे सामने स्पष्टतर होता गया। मुझे विश्वास है कि हिंदी में अभी प्रायः इतनी ही लोकोक्तियां और है। यों हिंदी ही नहीं, विश्व में किसी भी भाषा की तुलनात्मक लोकोक्तियों का कदाचित् यह बृहत्तम संग्रह है और यही इसकी उपलब्धि है।

—**भोलानाथ तिवारी**

अ

अँकटी थैली में, बजार चले दिल्ली—अपनी थैली में कुछ भी नहीं है और जाना चाहते हैं दिल्ली के बाज़ार में। जब कोई व्यक्ति धन या साधन न होने पर भी बड़े-बड़े मंसूबे बाँधे तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। (अँकटी—ईट की ककरी)। तुलनीय : उ० घर मे नही खाने को और अम्माँ चली भुनाने को; पंज० करें विच नई दाने बीबी चली पुनाने; ब्रज० घर में नायें दाने बीबी चली भुजाने।

अँकरा-बथुआ बाप का नाम, पूत का नाम गेहूँ—बाप का नाम तो साधारण है, किन्तु पुत्र का नाम बहुत बड़ा (महान्) है। (क) कुल के स्तर या कुल के नामो के अनुसार नाम न होकर उच्च कुल की भाँति नाम रखनेवालो के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। (ख) किसी निर्धन या साधारण परिवार का कोई व्यक्ति असाधारण उन्नति कर जाय तो उसके प्रति भी कहते हैं। (ग) निर्धन परिवार का लड़का जब अपने को बहुत बड़ा आदमी समझने लगता है तब उसके प्रति भी व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : पंज० अंकरा बाथु पिऊ दा नां पुतर दा नाँ कनकं।

अंक लिख्यो न टरै विधि को यह वेद-पुरानन माँहि सही है—ब्रह्मा का लिखा या भाग्य का लिखा कभी नही टलता, पुराणों में जो यह बात लिखी है ठीक ही है। तुलनीय : पंज० विधिदा लिख्या कोई नईं मेट सकदा इह वेद पुराण विच लिख्या है।

अंकुस सीस पैर में कान, तब होवे पूरा हथिबान—(क) सिर पर ठीक से अंकुश रखना तथा पैरो को कान के पीछे रखना जिसे आता है वही अच्छा महावत हो सकता है। (ख) दुष्ट को वही वश में कर सकता है जो उनके सिर (दिमाग) और कान (जिनसे वह आदेश या बातें सुनता है) पर अधिकार रखे। या दुष्टों को वश में करने के लिए सख्त रुख अपनाना पड़ता है।

अँखियन ओट पहाड़ ओट—आंखों से दूर हुए तो जैसे पहाड़ की ओट में चले गए, अर्थात् उसे याद रखना कठिन है। (क) जो व्यक्ति दूर रहता है उसके लिए हृदय में प्रेम कम रहता है। (ख) कोई भी कार्य अच्छा हो या बुरा यदि अपनी आंखो के सम्मुख नहीं होता तो उसके प्रति किसी तरह की ज़िम्मेदारी नही होती। तुलनीय : मरा० काडी आड गेला तो पर्वता आड गेला; पंज० अखां तो दूर पहाड़ दे पिछें, ब्रज० आँख ओझल पहाड़ ओझल।

अंग उपजा स्वभाव नहीं जाता—बाल्यावस्था से जो स्वभाव बन जाता है वह उम्र भर नहीं जाता। तुलनीय : गढ़० अंग उपज्यो स्वभाव; पंज० बचपन दियां आदतां नईं जादिया।

अंग लगी मक्खियाँ पीछा नहीं छोड़तीं—मक्खियाँ भगाने से जल्दी नहीं भागती। (क) प्रायः जब घर के बच्चे बड़े-बूढ़ों को घेर लेते है और अपनी मनवाए बिना पीछा नहीं छोड़ते तो उनके प्रति ऐसा कहते हैं। (ख) जब कोई व्यक्ति किसी से पीछा छुड़ाना चाहे किंतु वह व्यक्ति वहाँ से न टले तो उसके प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : बुंद० आँगे लगी माँछी; पंज० पिछे पैंदे छेती नईं पिछा छडदे।

अंगा न टोपी, सिपाही नाम—पूरी पोशाक तक तो है नहीं किंतु अपने को समझते हैं सिपाही। जब कोई व्यक्ति यों ही बिना किसी आधार के डींग हाँके या अपने को बहुत बड़ा बनाये तो व्यंग्य से ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मैथ०, भोज०, मग० अंगा न टोपी सिपहिया नांव; पंज० कपड़े नाँ टोपी नां सिपाही।

अँगिया का ही ओढ़ना, अँगिया का ही बिछौना—अँगिया जैसे छोटे वस्त्र से ओढ़ने और बिछाने दोनों का काम लिया जाता है। (क) जब कोई व्यक्ति किसी छोटी वस्तु या थोड़ी सी पूँजी से बड़ा काम लेना चाहे तो उसके प्रति कहते है। (ख) निर्धन व्यक्ति जब निर्धनता के कारण एक ही वस्तु से कई प्रकार के काम ले जो उस वस्तु से न हो सकते हों तो उसके प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : गढ़० ओगड़ा की अडेसी क ख छई; पंज० तैमत लैणी तैमत बछाणी।

अँगिया फटी क्या देखे बेटी तो दौराले की—मेरी फटी क़मीज़ को क्या देख रहे हो, मैं दोराले ग्राम की लड़की हूँ। जब कोई दीन अवस्था में भी बड़प्पन की बातें करता है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : कौर० अँगिया फटी के देक्खै बेट्टी तो दुराले की; पंज० फटे कुरते नूँ की देखदे हो ती ना दोराले पिंड दी है।

अंगुलिदीपिकया ध्वान्तध्वंस विधि—उँगली के समान छोटे दीपक से अंधकार दूर करने की विधि का न्याय।

लघुतर साधनों से महत्तर परिणाम प्राप्त करने के प्रयास पर कहते हैं ।

अंगुल्यग्रं न तेनैवांगुल्यग्रेण स्पृश्यते—उंगली का अगला भाग (नोक) उंगली के उसी अगले भाग से छूआ नहीं जा सकता ।

अंग्रेज की नौकरी और बंदर नचाना बराबर है—बंदर एक चंचल और क्रोधी स्वभाव का जानवर है । वह ज़रा से नाराज़ हो जाय तो या तो मदारी को मारने लगेगा या नाच दिखाना बंद कर देगा । आशय यह है कि अंग्रेज की नौकरी बड़ी सावधानी से करनी पड़ती है क्योंकि ज़रा-ज़रा सी बातों में अपमानित होने का भय रहता है। तुलनीय : पंज० अंग्रेज दी नौकरी अते बांदर नचाना इको जिहा है ।

अंग्रेज भी अक्ल के पुतले हैं—अंग्रेज़ बहुत बुद्धिमान होते हैं ।

अंग्रेजी न फारसी, बाबू जी (भैया जी, मियाँ जी) बनारसी—जब कोई मूर्ख या गुणहीन व्यक्ति डींग हाँकता है तो व्यंग्य में ऐसा कहते हैं । मूलत: यह लोकोक्ति मध्य युग की है जब इसका रूप था, 'अरबी न फ़ारसी बाबू जी बनारसी' । आधुनिक काल में अंग्रेज़ी के प्रयोग ने इसे यह नया रूप दे दिया है । तुलनीय : पंज० अंग्रेजी नां फ़ारसी बाबू जी बनारसी ।

अंग्रेजी राज, न तन को कपड़ा, न पेट को नाज—अंग्रेज़ों के शासन-काल में प्रजा बहुत दुःखी थी । जनता को न तो भर पेट भोजन मिलता था और न तन ढँकने को कपड़ा । आजकल इसके स्थान पर 'कांग्रेसी राज न तन को कपड़ा न पेट को नाज' कहते हैं । तुलनीय : अव० अँगरेजवा कइ राजमा न रोटी अहै न कपरै अहै; गढ़० अँगरेजों राज गत्यू कपड़ा न पेटो नाज; पंज० अंग्रेजी राज न पाण नूं कपड़ा न टिड नूं खाना ।

अंग्रेजों ने चरसा भर जमीन से सारा हिंदुस्तान अपना कर लिया—बुद्धिमान और साहसी मनुष्य थोड़ा-सा सहारा पाकर अपनी चतुराई और साहस से बड़े-बड़े कार्य कर लेते हैं । बड़ों-बड़ों पर अपना अधिकार जमा लेते हैं । तुलनीय : पंज० अंग्रेजा ने चप्पा पर जमीन नाल सारा हिंदुस्तान अपना बना लया ।

अंजन नहीं सहा जाता, आँख का फूटना सहा जाता है—प्राय: वर्तमान के कष्ट से लोग दूर भागते हैं, यद्यपि उससे दूर भागने या बचने से भविष्य में कहीं अधिक कष्ट उठाना पड़ जाता है । तुलनीय : भोज० आँजन ना सहाला फूटल सहाला; पंज० सुरमा नईं सखांदा अख अन्नी होना सखादा है ।

अंटी तर, दिल चाहे सो कर—अंटी में माल हो तो मनुष्य जो चाहे सो कर सकता है । धन से सब कुछ किया जा सकता है । तुलनीय : राज० खीसा तर, तो भावे ज्यूँ कर; पंज० गड बिच पैहा होवे ता जो करना सो कर ।

अंडा कितना भी बड़ा क्यों न हो जाय पर रहेगा तो छुन्नी के नीचे ही—अंडकोश कितने भी बड़े हो जायें किंतु रहेंगे तो लिंग के नीचे ही । छोटे (निम्न जाति, छोटा भाई आदि) कितनी भी उन्नति कर जायें किंतु बड़ों के बराबर नहीं पहुंच पाते । जो मनुष्य अपने से बड़ों की बराबरी करने का प्रयत्न करते हैं उनके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं । तुलनीय : अव० अँडवा केतनौ बड़ा होय जाई छुन्नियाँ के तरेन रही; भोज० आँडी केतनो बड़ होई त पेल्हड़ के निचहीं रही; पंज० अंडे किन्ने वी वड्डे हो जान पर रैण गे ते उथे ही ।

अंडा कोई सेवे, बच्चा कोई लेवे—काम करे कोई और फल भोगे दूसरा । तुलनीय : अंडा सेवे कोई, बच्चा लेवे कोई; अस० कणि पारे हाँहे, खाय भकनुदाहे; भोज० अंडा सेवे केहू, आ बच्चा लेवे केहू; मरा० अंडी उठवितो एक, पिलें नेतो दूसराच; पंज० अंडा कोई सेवे बच्चा कोई लेवे; अं० The blood of a soldier makes the glory of the general.

अंडा खिलावे बच्चे को—अंडा जिसमें हिलने-डुलने की भी ताकत नहीं है, वह बच्चों को खिला रहा है । (क) जब कोई छोटा बच्चा बड़े आदमियों को मूर्ख बनाना चाहे तो उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं । (ख) जब कोई मूर्ख व्यक्ति विद्वान् को शिक्षा देना चाहे तो उसके प्रति भी कहते हैं । तुलनीय : भोज० अंडा खेलावे बच्चा के; पंज० आंडा खिलाण बच्चे नूं ।

अंडा पेट में ही और बच्चा उड़ गया—असम्भव या असंगत कार्य करने या बात कहने पर ऐसा कहा जाता है । तुलनीय : मैथ० अंडा पेट में रहल ताक्त बच्चा उड़िया गेल; भोज० अंडा पेटे में रहल तबले बच्चा उड़ गइल; पंज० अंडा टिड बिच ही ते बच्चा उड़ गया ।

अंडा सिखावे बच्चे को कि चीं-चीं कर—जब छोटे बड़ों को कुछ सिखावें तो कहते हैं । तुलनीय : भोज०, मैथ० अंडा सिखावे बच्चा के कि चीं-ची कर; पंज० : अंडा सखावे बच्चे नूं की ची चीं कर ।

अंडा सिखावे बच्चे को कि चीं-ची मत कर—जब छोटे

बड़ों को उपदेश दें तो कहा जाता है। तुलनीय : मल० इलन्तनय्क्क कातलू; भोज० अंडा सिखावे बच्चा के कि चे-चें जिन कर; अव० अंडा सिखावै बचवा कै कि चीं ची मत कर; मरा० अंडे साँगते (शिकवितें) पिल्लाला ची-चीं (गडबड) करूं नकोस; पंज० अंडा सखावे बच्चे नूं की चीं चीं नां कर; अ० An old head on young shoulders.

अंडा सुनावे बच्चे को चीं-चीं मत कर—दे० 'अंडा सिखावे बच्चे को ची-ची···।'

अंडा सेवे कोई, बच्चा लेवे कोई—दे० 'अंडा कोई सेवे, बच्चा···।'

अंडी के जंगल में बिलौटा ही बाघ—अरंड के जंगल में बिल्ली (बिलौटा) ही बाघ होती है। साधारण स्थान पर कम पढ़े-लिखे या थोड़ी शक्ति वाले ही महान् समझे जाते है। तुलनीय : छत्तीस० अंडा बन माँ बिलरा बाघ।

अंडे खूब होंगे तो बच्चे भी खूब होंगे—कारण यदि अनेक हो तो कार्य भी बहुत से होंगे। तुलनीय : कनौ० अण्डा खूब होएँ, बच्चाऊ खूब हुइ हैं; मरा० अंडी असतील तर पिलें हवी तेवढी होतील, पंज० जिन्ने अंडे होण उन्ने बच्चे होण।

अंडे बबूल में, बच्चे खजूर में—वस्तुओं के अव्यवस्थित या अस्तव्यस्त होने पर कहते हैं।

अंडे में भटा—असंभव काम। अंडा चूंकि छोटा होता है, इसलिए उसमें बैंगन नहीं समा सकता। तुलनीय : कनौ० अंड में भटा; पंज० आंडे विच बतऊँ।

अंडे सेवे कोई, बच्चे लेवे कोई—दे० 'अंडा कोई सेवे, बच्चा···।'

अंडे सेवे फ़ाख्ता और कौवे बच्चे खायें—दे० 'अंडा कोई सेवे, बच्चा···।'

अंडे होंगे तो बच्चे बहुतेरे होंगे—दे० 'अंडे खूब होंगे तो···।'

अँडुवा बैल जी का जंजाल (या जवाल)—जो बैल बधिया नहीं किए जाते वे प्रायः मरखने, क्रोधी या अड़ियल स्वभाव के होते हैं। तुलनीय : अव० अँडुआ बैल जिये क पाप; भोज० अँडुवा बैल जीव क जवाल; पंज० अंडुवा टग्गे (बलद) दी जाण दा जंजाल।

अँडुवा बैल हल के लिए मुसीबत—(क) अंडुवा बैल हल में ठीक से नहीं चलता। (ख) झंझटी व्यक्ति के प्रति भी व्यंग्य से ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० अंडुआ बरध हरक जवाल; पंज० अंडुवा टग्गा (बलद) हल लई मुसीबत।

अंत गता सो मता—दे० 'मता सो गता'।

अँतड़ी का गोश्त गोश्त नहीं, खुशामदी दोस्त दोस्त नहीं—दोनों व्यर्थ हैं।

अंतड़ी में रूप, बुकची में छब—अँतड़ी (पेट) भरी हो तो रूप है और बुकची (कपड़ों की गठरी या पेटी) भरी हो तो शरीर की छवि है। अर्थात् अच्छे भोजन से ही मनुष्य का रूप-रंग निकलता है और अच्छे वस्त्रों से शरीर सुंदर बनता है।

अंत बुरे का बुरा—बुरे काम करने वाले का अंत बुरा ही होता है। तुलनीय : मरा० वाइटाचा शेवट वाईट; अव० अंत माँ बुरे क बुरै होत है; ब्रज० बुरे कौ बुरौइ अंत; पंज० अंत बुरे दा बुरा।

अंत भले का भला—भले काम करने वाले की अंत में भलाई ही होती है, चाहे आरम्भ में उसको कितनी भी कठिनाइयों का सामना क्यों न करना पड़े। तुलनीय : अव० अंत भल क भलै होय के रही; मरा० भल्याचा शेवट भला होतो; मल० नन्मयुटे फलम् नन्म; पंज० अंत पले दा पला।

अंत भला तो सब भला; अंत भला सो भला—यदि अंत में भला हो जाय तो भला ही समझना चाहिए। लक्ष्य-प्राप्ति के लिए किए गए प्रयास यदि आरंभ में सफल न हो पाएँ किन्तु अंत में सफल हो जाएँ तो अच्छा ही समझना चाहिए। तुलनीय : मरा० भोज० अंत भला त सब भला; गुज० अंते भलानुं भलुं थाय; पंज० अंत पला ते सारा पला, अंत पला सो पला; ब्रज० अंत भलौ तौ सब भलौ; अं० All's well that ends well.

अंत मता सो गता—अंत समय अथवा मृत्यु के समय जिसकी जैसी मति रहती है वैसी ही उसकी गति होती है। यही कारण है कि हिन्दू मरते समय भगवान् का स्मरण करते हुए शांति से मरना चाहते हैं और काशी आदि तीर्थों को चले जाते हैं। तुलनीय : सं० अंते मतिः सा गतिः।

अंत महीने अच्छे मेहमान, पिछले पहर सुंदर सपने—मास के अंत में जब धन समाप्त हो चुका हो, अच्छे-अच्छे अतिथियों का आना और प्रातःकाल सुंदर सपनों का दिखाई पड़ना, आवश्यकता होने पर और प्रयत्न करने पर भी न मिलने और आवश्यकता न होने पर अधिकता से मिलने वाली वस्तु के प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० निबड़दा नाज का भल भला पौणा, रात ब्याँदी दौ का भला भला स्वैणा।

अंतरंग बहिरंगयोरन्तरंगः बलीय—आंतरिक और

बाह्य में आंतरिक अधिक बलवान् होता है।

अंतर अँगुरी चार को, साँच झूठ में होय—दे० 'अच्छे-बुरे में चार अंगुल... ।'

अंतर देके कसरत करे, राम न मारे आपहि मरे—व्यायाम प्रतिदिन करना चाहिए। बीच-बीच में कुछ दिन छोड़ कर व्यायाम करने वाले व्यक्ति के स्वास्थ्य पर उसका बुरा प्रभाव पड़ता है। तुलनीय : भोज० बेर-बागर कसरत करे, दई न मारे अपने मरे।

अंतर बजे तो जंतर बजे—जब तक गायक या वादक हृदय से गायन-वादन न करे तब तक संगीत जमता नहीं। गाने वालों के लिए इस लोकोक्ति का प्रयोग किया जाता है। तुलनीय : मरा० अंतःकरणांत वाजले तर यंत्रांत उमटेल; पंज० अंतर बजे ते तपला बजे।

अंतर राखै जो मिले, तासों मिले बलाय—जो व्यक्ति दिल में मैल रखकर ऊपरी तौर पर मिले, उससे मिलने में कोई लाभ नहीं है। जो व्यक्ति स्वयं को बड़ा और दूसरे को छोटा या क्षुद्र समझता हो उससे मिलना हानिकर है।

अंतरे खोतरे डंड करे, ताल नहाय ओस में परे, देव न मारे अपने मरे—जो व्यक्ति प्रतिदिन कसरत न करके कुछ दिन करके छोड़ देते है और कुछ दिन पश्चात् फिर आरंभ करते है तथा तालाब में स्नान करके ओस में सोते है उन्हे भगवान् नही मारता बल्कि वे ही स्वयं को नष्ट करते है। आशय यह है कि ये दोनों कार्य स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद है। तुलनीय : अव० अंतरे खोतरे दंडै करे, ताल नहाय ओस माँ परै, दइव न मारै अपुवइ मरै; भोज० बेर-बागर कसरत करे दइव न मारे अपने मुवे, आंतर देके कसरत करे, दइव न मारे आपुवे मरे।

अंतर्दीपिकान्याय—मध्य स्थान में स्थित दीप का न्याय। इस न्याय का संबंध उस वस्तु से है जो एक साथ ही दुहरे उद्देश्य की पूर्ति करे। यह न्याय देहली-दीपन्याय तथा मध्यदीपन्याय के समान है।

अंतर्शाक्ता वहिर्शैव्या सभा मध्ये च वैष्णवा—गुप्त रूप से मद्य-मांस का सेवन करने वाले, बाहर त्रिपुंड-रुद्राक्ष धारण करने वाले और सभा में तिलक-छाप लगाकर वैष्णव बनने वाले। जिनके आचार-व्यवहार में एकरूपता नही होती उनके प्रति ऐसा कहते हैं।

अंत लोभी महादुःखी—बहुत अधिक लोभ करने वाला व्यक्ति बहुत दुःखी रहता है। तुलनीय. पंज० अंत दा लोभी महादुखी।

अंत सो तंत खेह सिर भरना—विश्व का तत्त्व यही है कि अंत में सभी के सिर पर धूल भरती है, अर्थात् सभी मर (क़ब्र अथवा श्मशान) जाते हैं। यह लोकोक्ति मूलतः जायसी के दोहे की एक पंक्ति है—कहेसि अंत अब भा भुइ परना, अंत सो तंत खेह सिर भरना। तुलनीय : अं० Dust thou art and unto dust shalt thou return.

अंतहु कीच तहाँ जहँ पानी—जहाँ पानी होता है, वहाँ अंततः कीचड भी होना है। अच्छाई के साथ बुराई भी रहती है। तुलनीय : पंज० जिथे पाणी हुंदा है उथे किचड़ वी हुंदा है।

अंते धर्मो जय, पापो क्षय—प्रारंभ में पाप को चाहे कितनी भी विजय क्यों न प्राप्त हो जाय, किंतु अंतिम विजय धर्म की ही होती है।

अंदर छूत नहीं बाहर कहे दुर-दुर—अंदर से तो गंदा है और बाहर से सबको दुतकारना है। जो व्यक्ति ऊपर से सफाई और सदाचार का आडंबर करे किंतु हृदय से कुटिल और भ्रष्ट हो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : मरा० अंतःकरण पवित्र नाहीं, बाहेर म्हणतो दूर-दूर; भोज० भीतराँ छूत नाँ बहराँ काहे दुर दुर; पंज० अंदरो पैड़े बाहरों आखे दूर दूर।

अंदर छूत नहीं, बाहर क्यों दुर-दुर—ऊपर देखिए।

अंदर पाप कमावे चहुँदिसि जाना जावे—ऐसे लोगों के प्रति कहते हैं जो गुप्त रूप से बुरा कर्म करते हैं और बाहर समाज में काफी इज्जत पाते हैं। तुलनीय : लहं० अंदर बड़ के पाप कमावें सै गहूं कूटी जाणियें।

अंदर होवे साच, तो कोठी चढ़ के नाच—सच्च व्यक्ति को क्या डर? वह जो चाहे करे। उसे इसकी चिन्ता नही होती कि कोई उसे गलत समझेगा। तुलनीय : भोज० भित्तर साच, त कोठा चढ़ के नाच, पंज० अंदर होवे सच्च ते कोठे चड़ के नच्च।

अंध कंध चढ़ि पंग ज्यों सबे सुधारत काज—यदि लँगड़ा अंधे के कंधे पर चढ़कर चले तो दोनों के कार्य सिद्ध हो जाते है अर्थात् अंधे की कमी लँगड़ा और लँगड़े की चलने की अक्षमता अंधा दूर कर देता है। (क) मेल से असंभव कार्य भी संभव हो जाते है। (ख) बुद्धि तथा युक्ति से सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं। इसमें एक अंधे और लँगड़े की अंतर्कथा है। ये दोनों एक गाँव में रहते थे। एक बार गाँव में आग लगी और गाँव के सभी निवासी भाग गए। किंतु अंधा देख न सकने के कारण तथा लँगडा चल न सकने के कारण आग में घिर गये। अंत में दोनों ने एक-दूसरे की सहायता की। लँगड़ा अंधे के कंधे पर बैठ गया और उसे राह बताने

लगा और दोनों आग से बाहर निकल आए।

अंधक-वर्तकीय न्याय —अंधे आदमी और बटेर का न्याय। अजाकृपाणीय न्याय तथा ऐसे ही अन्य अनेक न्यायों की तरह इसका प्रयोग अकस्मात् हाथ लगी सफलता के लिए किया जाता है। देखिए 'अंधे के हाथ बटेर।'

अंधकूप-पतन न्याय—एक अंधे ने किसी से कहीं का रास्ता पूछा। उसने अंधे को ठीक रास्ता बता दिया और अंधा चल पड़ा। किंतु कुछ दूर जाने पर वह कुएँ में गिर गया। जब कोई सज्जन किसी अज्ञानी या अनधिकारी को उपदेश दे और वह मनुष्य अपने अज्ञान के कारण उससे लाभ के स्थान पर हानि उठाए तो इसका प्रयोग होता है। तुलनीय : पंज० अन्ने नूँ राह पुछना खू बिच पैणा।

अंध-गज न्याय—एक बार कई जन्मांधों ने हाथी के संबंध में जानना चाहा। चूंकि वे देख नहीं सकते थे इसलिए उसका स्वरूप जानने के लिए सबने उसे छूना शुरू किया और जिसके हाथ में हाथी का जो अंग आया उसने उसका वैसा ही आकार समझा। जिसके हाथ में पूँछ आई, उसने हाथी को रस्सी जैसा समझा, जिसने टाँग पकड़ी उसने खंभे जैसा समझा, जिसने कान पकड़ा उसने सूप जैसा समझा इत्यादि। जब कोई व्यक्ति किसी वस्तु का पूर्ण ज्ञान न होने के कारण उसके संबंध में इस तरह की ग़लत और अधूरी बात कहे तो इसका प्रयोग करते हैं।

अंध-गोलांगूल न्याय—एक अंधा अपने घर जा रहा था कि रास्ते में भटक गया। एक दुष्ट ने उसे एक गाय की पूँछ पकड़ा दी और कहा कि इसको पकड़े चले जाओ, यह तुम्हें घर पहुंचा देगी। घर तो वह क्या पहुचता, उस गाय ने उसे खूब दौड़ाया। जब कोई लाचार व्यक्ति किसी दुष्ट के सिखाये में आकर कष्ट उठाए तो कहते हैं।

अंध-चटक-न्याय —दे० 'अंधे के हाथ बटेर।'

अंध-दर्पण न्याय—अंधे आदमी और दर्पण का न्याय। जब कोई आदमी किसी बात को सैद्धांतिक दृष्टि से स्वीकार करके व्यवहार में उसका प्रयोग नहीं करता तो उस बात का महत्त्व उसके जीवन में वैसा ही है जैसे अंधे के हाथ में दर्पण का। ऐसे प्रसंगों में इस न्याय का प्रयोग संस्कृत-साहित्य में हुआ है। हिन्दी में 'अंधे को आरसी' का प्रयोग होता है।

अंध-पंगु न्याय—अंधा और लँगड़ा एक-दूसरे की सहायता से कहीं भी जा सकते हैं। लँगड़ा अंधे के कंधे पर बैठकर रास्ता बतलायेगा तथा अंधा चलेगा। (क) सांख्य में इसका प्रयोग जड़ प्रकृति और चेतन पुरुष के संयोग से उत्पन्न सृष्टि का दृष्टांत देने के लिए किया गया है। (ख) दो असहाय भी आपसी मेल से अपना काम चला सकते हैं।

अंध-परंपरा न्याय—किसी व्यक्ति का बिना सोचे-समझे किसी की देखा-देखी कुछ करना।

अँधरी गैया, धरम रखवार—अंधी गाय का रखवाला भगवान् ही है। असहाय की रक्षा भवगान् करते हैं। तुलनीय : मरा० आँधळी गाय, तिचा रक्षक धर्म आहे; भोज० अन्हरी गइया धरम (दइव) सहाय; मैथ० आन्हर गइया के राम रखवइया; पंज० अन्नी गां दा रब राखा।

अँधरे सूझे बहराइच—अंधे को बहराइच की ही सूझती है। ऐसा अंधविश्वास रहा है कि बहराइच में मसऊद ग़ाज़ी की दरगाह में जेठ के महीने में श्रद्धापूर्वक जाने वाले अंधे ठीक हो जाते हैं। अपने ही स्वार्थ पर यदि किसी का ध्यान केन्द्रित हो तो उसके प्रति व्यंग्य में इस लोकोक्ति का प्रयोग करते हैं। यह अंध विश्वास तुलसीदास के समय में भी था। उन्होंने लिखा है :

> लही आँखि कब आँधरें, बाँझ पूत कब ल्याइ।
> कब कोढ़ी काया लही, जग बहराइच जाइ॥
>
> (दोहावली 496)

महमूद ग़ज़नवी का भानजा सैयद सालारजंग मसऊद ग़ाज़ी (ग़ाज़ी मियाँ) बहराइच में ही श्रावस्ती के राजा सुहृददेव के हाथों मारा गया। उसकी दरगाह पर जेठ के महीने में मेला लगता है और तरह-तरह की कामनाएँ लेकर लोग वहाँ जाते है। तुलनीय : भोज० अन्हरे सूझे बहराइच; गुज० अंधे की गावडी अे अल्ला रखवाल; हरि० आँध्या की माक्खी राम उड़ावे; पंज० अन्ने नूँ लब्बे बोला।

अंधस्येवान्धलग्नस्य विनिपातः पदे पदे—अंधे का सहारा लेकर चलने वाला अंधा पग-पग पर गिरता है। अर्थात् जब अज्ञानी अज्ञानी का मार्गदर्शन करते हैं तो दोनों ही मार्गभ्रष्ट हो जाते हैं। यह लोकोक्ति वैदिक साहित्य में भी कुछ दूसरे रूप में उपलब्ध है। कठोपनिषद में आता है—दन्द्रम्यमाणा, परियन्ति मूढ़ा अंधेनैव नीयमाना यथाऽन्धाः (कठोपनिषद् 1/2)

अंधहिं लोचन लाभु सुहावा—अंधे को आँखों से अधिक और कौन सी लाभदायक वस्तु चाहिए ? जो चीज़ जिसके पास नहीं होती वही उसे अपने लिए सर्वाधिक लाभकारी प्रतीत होती है। दे० 'अंधा क्या चाहे⋯।'

'अंधा' से प्रारंभ होने वाली अन्य लोकोक्तियों के लिए कोश में 'आन्हर' भी देखिए।

अंधा आँख पाए ही पतियाय—दे० 'अंधा देखे तब पतियाय'।

अंधा आँखों को ही रोता है—अंधे को आँखों की आवश्यकता सबसे अधिक होती है, इसलिए वह उन्हें सबसे अधिक चाहता है।(क) जो व्यक्ति अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए ही प्रयत्न करे और किसी दूसरे का हानि-लाभ न देखे उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। (ख) अत्यंत आवश्यक वस्तु के लिए ही व्यक्ति काफी परेशान होता है या कष्ट उठाता ह। तुलनीय : माल० आँधो तो आँख्यानेज रोवे; गुज० आँधड़ो तो आँखों ने रौवै; पंज० अन्ना अखाँ नूँ वी रोंदा है।

अंधा कब पतियाय, जब आँखों देखे—दे० 'अंधा देखे तब पतियाय।'

अंधा किसकी ओर उँगली उठाए—जिसे दिखाई ही नही देता वह उँगली के इशारे मे क्या दिखा सकता है? जिस व्यक्ति के पास जो वस्तु नही है वह उसका प्रयोग कैसे कर सकता है? (क) जब किसी व्यक्ति को कोई ऐसा काम करने को कहा जाय जिसके साधन उसके पास न हों तो वह व्यग्य से कहता है। (ख) जिस व्यक्ति ने किसी को अपराध करते न देखा हो और उससे उस अपराध के संबंध में गवाही ली जाय तो वह ऐसा कहता है। तुलनीय : भीली० आँधौ कणाए आँगली करनी न भाले; पंज० अन्ना किस दे पासे उगल चुकै।

अंधा कुत्ता बतासे भूँके—अंधा कुत्ता हवा की आवाज़ पर ही भौकने लगता है। जब कोई मूर्ख बिना कारण ही नाराज़ होने लगे तो उसके प्रति कहा जाता है। मूर्ख के यों ही बोलने पर भी कहते है। तुलनीय : भोज० आन्हर कुकुर बतासे भूँके; मग० आँधर कुत्ता बतासे भुक्के; पंज० अन्ना कुत्ता डरदा मारा पौके।

अंधा कुत्ता यों ही भूँके—ऊपर देखिए।

अंधा क्या चाहे दो आँखें—जिस वस्तु की जिसके पास कमी रहती है वह उसकी ही कामना करता है। तुलनीय : मग० अँधरा चाहे दु आँख; भोज० अन्हरा के दुगो अँखिए चाहि, अन्हरा के का चाही, दुगो आँखि; छत्तीस० अंधवा खोजे दू आँखी; राज० आधै ने कोई जोई जै दो आख्या; मेवा० आँधा के तो दो आँख्याँ चावे; मरा० आंधळयास काय पाहिजे, दोन डोले; अव० अंधरा का चाही दुइ आँखी; तेलु० गुड्डिवाडु कन्नु रागोरुना; हरि० आंद्धा के चाहवै दो आंख; हाड़० आँधाई काँई छाइजे? दो आँख्या; पंज० अन्ने नूँ की चाइदा दो अखाँ।

अंधा क्या जाने बरसात की बहार—नीचे देखिए।

अंधा क्या जाने बसन्त की बहार—अंधे को दिखाई नहीं पड़ता, इसलिए उसे बसन्त और पतझड़ के अन्तर का क्या पता? (क) जिस वस्तु को देखा न हो उसकी अच्छाई तथा बुराई का पता नहीं लगता। (ख) बिना देखी हुई वस्तु का जिसके बारे में कोई जानकारी नहीं है रसास्वादन करना असंभव है। तुलनीय : मरा० वसंताला आला बहर आंधळ्याला काय कळणार; अव० अंधा का जाने फागुन क बहार; भोज० आन्हर का जाने बरसात क बहार; हरि० बांदर के जाणै अदरक का स्वाद, भेड़ के जाणै बिनौला का भा, गंजी के जाणै नाल्यां का स्वाद; पंज० बंदर नूँ की पता गुड़ दा स्वाद।

अंधा क्या जाने लाले की बहार—ऊपर देखिए।

अंधा क्या जाने सोने का रंग—ऊपर देखिए। तुलनीय : तेलु० गुड्डि वेरुगुना कुदनपुछाय।

अंधा खोदे काँदी, मेह गिरे न आँधी—अंधा जब काँदी (एक प्रकार की घास) खोदता है तो वह आँधी या पानी की परवाह नही करता। जो व्यक्ति काम में जुट जाने के पश्चात् किसी की परवाह न करे और काम समाप्त करके ही दम ले, ऐसे परिश्रमी व्यक्ति पर मज़ाक़ में कहते हैं।

अंधा गाए बहरा बजाए—अंधा देख नहीं सकता और बहरा सुन नहीं सकता। दोनों एक जैसे ही हैं। (क) जब दो ऐसे ही अधूरे या अपूर्ण व्यक्ति मिलते हैं तो उनके प्रति व्यंग्य से इसका प्रयोग करते हैं। (ख) दो बेमेल व्यक्तियों के मेल पर भी कहते हैं। तुलनीय : भोज० अन्हरा गावे, बहिरा बजावे; माल० आँधा बेरा वारी हानी; हरि० तूंह कांणी में कूब्बा दो घर डूबते एक्कै डूल्या, पंज० अन्ना गावे बौला बजावे।

अंधा गुरु बहरा चेला, माँगे गुड़ दे ढेला—जब मूर्ख को मूर्ख या जैसे को तैसा (बुरा) मिले तब व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : भोज० आन्हर गुरु बहिर चेला माँगे गुरु (भेली) उठावें ढेल.; मैथ० आँधर गुरु बहिर चेला, दोनों नरक में ठेलमठेला; पंज० अन्ना गुरु बौला चेला मंगे गुड़ देवे ढेला।

अंधा गुरु बहरा चेला, मांगे भेली उठावे ढेला—ऊपर देखिए।

अंधा गुरु बहरा चेला, माँगे हड़ दे बहेड़ा—ऊपर देखिए।

अंधा घोड़ा बहिर सवार, दे परमेसुर ढूंढ़नहार—

अंधा घोड़ा और बहरा सवार कौन जाने कहाँ पहुंच जायँ। अंधे घोड़े को रास्ता दिखाई नही देता और न वह रास्ता पहचानता है तथा उसका सवार बहरा है, अतः उसे कोई रास्ता बता भी दे तो वह सुन नही सकेगा। इस प्रकार इनके लिए एक ढूँढ़ने वाला भी चाहिए। असहाय व्यक्तियो या मूर्खों के लिए सहायक आवश्यक होते है।

अंधा चाहे दो आँखें—दे० 'अंधा क्या चाहे···।'

अंधा चूहा थोथे धान—दे० 'अंधी घोड़ी थोथे···।'

अंधा जाने, अंधे की बला जाने—अंधे को दिखाई नही पड़ता इसलिए वह किसी भी घटना के सबध में वैसी सही जानकारी नही रख सकता जैसी आँखवाला रखता है। अंधो के प्रति व्यग्य मे कहते है। तुलनीय : राज० आँधो जाणै आँधैरी बलाय जाणै; पंज० अन्ने नूं अन्ने दी बला जाणे।

अंधा जाने आँखों की सार—आँखों की क़द्र अंधा ही जान सकता है। अर्थात् जो व्यक्ति जिस वस्तु से वंचित रहता है उसका महत्त्व वही समझ सकता है। तुलनीय : पंज० अन्ना जाणे अखां दी कदर।

अंधा देखे आरसी कानी काजल देय—अंधे को दर्पण में देखने से तथा कानी को काजल लगाने से कोई लाभ नहीं होता। अनमेल बात या असंगत कार्य करने पर यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : भोज० आन्हर देखे ऐना आ कानी देय काजर; व्रज० आँधरी देखै आरसी कानी काजर देय; पंज० अन्ना दिखे मीसा कानी सुरमा पावे।

अंधा देखे तब पतियाय—अंधा देखकर ही विश्वास कर सकता है, किंतु उसके आँख तो है नही, अतः वह विश्वास नही कर सकता। इस लोकोक्ति का प्रयोग कई अर्थों मे होता है—(क) जब कोई व्यक्ति ऐसी शर्त लगाये जिसका पूरा होना असभव हो। (ख) बिना पूरी तरह जाने विश्वास नही होता। (ग) बिना देखे विश्वास नही होता।

अंधाधुंध की साहबी घटाटोप का राज—ऐसे राज्य के संबध में कहते है जहाँ अराजकता हो।

अंधाधुंध दरबार में गधा पंजीरी खाय—अविवेकी शासक के राज्य मे या अराजकता की स्थिति में मूर्ख और अयोग्य व्यक्ति मौज उड़ाते है। कुव्यवस्था के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते है।

अंधाधुंध मनोहर गाइयां—कोई देखने-सुनने वाला न हो तो जो चाहे सो करो। तुलनीय : पंज० अंधातुंद गाना गावो।

अंधा न्योतो, दो जन आवें—अंधे को न्योता देने से उसे लाने-ले जाने के लिए एक आदमी और आयेगा। ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए जिसमें लाभ कम और हानि अधिक होने की संभावना हो। तुलनीय : ब्रज० आँधरे यै न्यौते दो जने आवै; पंज० अन्ना सद्दे दो जणे आण; मेवा० आँधा ने नूंतणों, दो ने जीमांणा; राज० आंधो नूंतै दोय जिमामै, क्यूं आंधो नूंतै र क्यू दो दिमावै; बुंद० न अँदरा न्योतो न दो बुलाओ।

अंधा परसे अपना गोत—जो व्यक्ति अपनी जातिवालों या अपने संबंधियों की ही अधिक ख़ातिर करे उसके प्रति कहते है। तुलनीय : अव० अंधरा परसै आपन गोत; भोज० अन्हरा चीन्हे आपन गोत; पंज० अन्ना देवे अपने कर।

अंधा पादे बहरा जुहार करे—अंधा पादता है तो बहरा नमस्कार (जुहार) करता है। जब कोई व्यक्ति किसी बात को कुछ का कुछ समझता है तब ऐसा कहते है। तुलनीय : छत्तीस० अंधरा पादै भैरा जाहारे; पंज० अन्ना पद मारे बौला नमस्कार करे। पादे=अधोवायु छोड़े। जुहार=नमस्कार करना।

अंधा पीसे कुत्ता खाय—दे० 'अंधी पीसे कुत्ता खाय।'

अंधा बगला कीचड़ खाय—न दीखने के कारण अंधा बगुला मछली तो पा नहीं सकता इसलिए कीचड़ ही खा लेता है। अर्थात् असमर्थ व्यक्ति जो कुछ भी मिल जाय उसी से संतोष करता है। तुलनीय : भोज० आन्हर बकुला कनई खाय, आन्हर मूस लेड़ी खाय; राज० आँधो बगुलो कादो खा; हरि० गधा कुरड़ियां पै ऐ रंजै; पंज० अन्ना बगल मिट्टी खावे।

अंधा बाँटे जेवरी पीछे बछड़ा खाय—अंधा रस्सी (जेवरी) बँट रहा है और पीछे उसे बछड़ा खा रहा है। जब कोई व्यक्ति अपने उपार्जित धन की रक्षा न कर सके और दूसरे उसका उपभोग करें या लाभ उठावें तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : बुंद० अंदरा बाँटे जेवरी पाछें बछरा खाय; मरा० आँधळी दोरी वळते मागें कुत्रे खातें।

अंधा बांटे रेवड़ी (सीरनी) फिर-फिर अपने को दे—जब कोई व्यक्ति सभी प्रकार की सुख-सुविधाएं आदि अपनों को ही दे या पक्षपातपूर्ण व्यवहार करे तो ऐसा कहते हैं। अंधा तो असमर्थता के कारण ऐसा कर सकता है क्योंकि उसे दीखता नहीं, किंतु अन्य लोग बेईमानी से ऐसा करते हैं। कुनबा परवरी या भाई-भतीजावाद बरतने वालों पर व्यंग्योक्ति। तुलनीय : मेवा० आँधों बाँटे सीरनी

फर-फर घरकाने देवे, सूझता की फूटगी जो माँग क्यूं नी लेवे; हरि० आँधा बाटअ सीरनी अप-अपने ने दे, अंधला बाँटे रेवड़ी फिर-फिर अपनों दे; लहं० अन्हा वंटे रयोड़ियाँ मुड़-मुड़ अपने घर; भोज० अन्हरा बाँटे रेवड़ी (या सीरनी) फिर-फिर अपने को दे; मरा० आँधळा रेवड़ीचा प्रसाद वांटतो, पुनः-पुनः आपळ्या चमाणसांना देतो; अव० अन्हरा परसे आपन गोत; राज० आंधो बाँटे सीरणी घर-घराँ नैं देय; पंज० अन्ना वडे शीरनी (रेवड़ी) मुड़ घिड़ आपणियाँ; ब्रज० अंधो बाँटे रेवड़ी फिर-फिर अपने कूं देई; बुंद० अंदरा बाँटे रेवड़ी चीन-चीन के देय; कौर० अंधा बाँटे रेवड़ी फेर-फेर अपनों कूं दे।

अंधा बुलावे लँगड़ा के—जब एक विकलांग असमर्थ व्यक्ति दूसरे असमर्थ से सहायता लेना चाहे तब कहते है। तुलनीय : भोज० अन्हरा गोहरावैं लँगड़ा के; पज० अन्ना सद्दे लगे नं।

अंधा बेईमान—(क) अंधा सब घटनाएँ देख नही पाता अतः उसे डर रहता है कि लोग उसे धोखा देंगे और वह शक्की स्वभाव का हो जाता है और यही बात धीरे-धीरे उसे बेईमान बना देती है। (ख) बेईमान मनुष्य अंधों के समान होता है। उसे अपने स्वार्थ के आगे कुछ नहीं सूझता। तुलनीय : पज० अन्ना बेइमान।

अंधा बेईमान, बहरा बहिश्ती—अंधा व्यक्ति देख नही पाता इसलिए उसे दूसरों से धोखा खाने की आशंका हमेशा बनी रहती है और वह बेईमान बनता जाता है किंतु दूसरी ओर बहरा चूंकि सुन नही सकता इसलिए अनेक बुराइयों से बचा रहता है और अपेक्षातः भला होता है। तुलनीय : अव० अंधा बेईमान बहिरा देउता; भोज० अन्हरा राकस बहिरा देवता।

अंधा बैल घुमा के जोता जाता है—मूर्ख और गंवार व्यक्ति सीधी तरह से कही गई बात नहीं समझते। उन्हें समझाने के लिये बात को घुमा-फिराकर कहना पड़ता है। तुलनीय : पंज० अन्ना टग्गा (बलद) फेर के जोत्या जांदा है।

अंधा मानुष ले गयो, जन देखत की जोय—आँखवाले की पत्नी को अंधा भगा ले गया। जब कोई असंभव या आश्चर्यजनक घटना घटे तो कहते हैं।

अंधा मुनि स्वर्ग जाय, कहे मुझे कोई न देखे—अंधा मुनि स्वर्ग जा रहा है और चाहता है कि उसे कोई न देखे। जब कोई अनुपयुक्त पात्र अच्छी वस्तु पा जाय और घमंड से फूल उठे तो व्यंग्य से उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : हरि० अंधला मुनी सुरग चढ़े, मन्ने कोई न देखे; पंज० अन्ना मुनि स्वर्ग विच जावे आखे मैनूं कोई नई देखदा।

अंधा मुर्गा सड़ा धान, जैसा नाई वैसा जजमान—अंधे मुर्गे को जो कुछ मिल जाय वह उसी पर संतोष कर लेता है तथा मूर्ख नाई को यजमान भी उसी जैसे मिलते है। (क) लाचार व्यक्ति को थोड़े पर ही संतोष करना पड़ता है। (ख) जैसे को तैसा ही मिलता है। तुलनीय : मेवा० आँधो कूकड़ो अर सूल्यो धान, जस्या नाई उस्याई जजमान।

अंधा मुल्ला टूटी मसजिद—दोनों ही निकम्मे। जैसा मुल्ला वैसी मसजिद। जैसे को तैसा मिलने पर कहते हैं। तुलनीय : हरि० अंधला मुल्ला फूटी मसीत; भोज० आन्हर मुल्ला, ढहल महजीद; पंज० अन्ना मुल्ला टुटी मसजिद।

अंधा रस्सी बटता जाय, पीछे बछड़ा खाता जाय—दे० 'अंधा बाटे जेवरी…।'

अंधा रस्सी बटे, बछड़ा चबाता जाय—दे० 'अंधा बाटे जेवरी…' तुलनीय : भोज० अन्हरा बरे रसरी बछरु चबइले जाय।

अंधा राजा चौपट नगरी…अंधे राजा के राज्य में नगर की अव्यवस्था ही होगी। जैसा राजा होगा वैसी प्रजा होगी, या अयोग्य शासक का प्रबन्ध दोषपूर्ण ही होगा। तुलनीय : अव० अंधेर नगरी चउपट राज; भोज० आन्हर राजा अन्हेर नगरी या चउपट नगरी; पज० अन्ना राजा अन्नी नगरी।

अंधा राजा बहिर पतुरिया, नाचे जा सारी रात—अंधे राजा के सामने बहरी नर्तकी सारी रात नाचती रहती है। राजा के आगे चाहे नाचो या कूदो, उसे कुछ दीखता नही। दूसरी ओर नर्तकी बहरी है अतः उससे जो कहा जाता है सुनाई नही पड़ता। फलतः वह नाचती रहती है। जब जैसे को तैसा मिलता है तो कहते है। तुलनीय : पंज० राजा अन्ना बौली नाचनी नचैं जा सारी रात।

अंधा लकड़ी एक बार खोता है—अर्थात् बुद्धिमान व्यक्ति एक बार की हानि से सदा-सर्वदा के लिए सावधान हो जाते हैं और दुबारा वही भूल नहीं करते। तुलनीय : भोज० अन्हरे क सोटा एक्के हाली हेराला; अव० अंधरे कइ लाठी एक बार हेरात है; पंज० अन्ना लाठी इक बार गवांदा है।

अंधा सिपाही कानी घोड़ी, बिधना खूब मिलाई जोड़ी—एक जैसे बुरे व्यक्तियों की मैत्री या उनके सहयोग पर कहते हैं। तुलनीय : भोज० आन्हर सिपाही कान घोड़ी, बिधने

अजब मिलाई जोड़ी; मरा० सैनिक काणी घोड़ी, ब्रह्मदेवानें खूप जमविली जोड़ी; अव० एक ठउ आँधर दूसर कोढ़ी, खूबै मिलाइन राम जोड़ी; हरि० राम मिलाई एक आंद्धा एक कोढ़ी; पंज० रब्ब मिलाई जोड़ी इक अन्ना इक कौड़ी ।

अंधा हँसे काना राजा—काने राजा पर अंधा हँस रहा है । (क) अवगुणी व्यक्ति ही दूसरे के अवगुणों पर हँसता है । (ख) काना अंधे से अच्छा होता है, क्योंकि उसे कुछ तो दिखाई पड़ता है । जब अधिक अयोग्य व्यक्ति अपने पर ध्यान न देकर कम अयोग्य व्यक्ति पर हँसे तो व्यंग्य में कहते है । तुलनीय : भोज० कनवाँ के अन्हरा हँसे अथवा अन्हरा हँसे कनवाँ के; पंज० अन्ना हस्से काणा राजा; अं० The pot calls the kettle black.

अंधा हाथी अपनी ही फौज को मारे—अंधा हाथी अपने ही दल को कुचलता है । मूर्ख अपने हितैषियों की ही हानि करता है । तुलनीय : भोज० आन्हर हाथी अपने ओर रौंदे; पंज० अन्ना हाथी अपनी ही फौज नूं मारे ।

अंधा हादी, बहरा मुर्शिद—हादी (गुरु) अंधा है और मुर्शिद (शिष्य) बहरा । जब गुरु और शिष्य एक-से अयोग्य हों तो कहते है । 'हादी' के स्थान पर कहीं-कहीं 'हाजी' भी कहते हैं । तुलनीय : भोज० आन्हर गुरु बहिर चेला, माँगे भेली उठावे ढेला; पंज० अन्ना गुरु बहरा चेला ।

अँधियारी गई कि चोर—अँधेरी रात चली गई, अब चोर का क्या भय ? दुर्दिन बीत जाने पर अपनी हानि का भय नही रह जाता । अपराध का अभ्यस्त व्यक्ति उचित समय पर अपराध करने से बाज़ नही आता—इस अर्थ मे भी इस लोकोक्ति का प्रयोग होता है । तुलनीय : बुद० अंधियारी गई कै चोर ।

अंधी—'अंधी' से प्रारंभ होने वाली अन्य लोकोक्तियों के लिए कोश मे 'आन्हर' भी देखिए ।

अंधी आँख में काजल सोहे, लँगड़े पांव में जूता—न अंधी आँख में काजल शोभा देता है और न ही लँगड़े पाँव मे जूता अच्छा लगता है, अर्थात् दोनों ही बुरे लगते हैं । बेढंग कार्य पर कहते हैं । तुलयीय : भोज० अन्हरा की आँख की काजर लँगड़ा की गोड़े पनही । पंज० अन्नी आँख विच सुरमा न मज्जे लगे पैर विच जुत्ती ।

अंधी गाय का रक्षक धर्म—दे०'अंधरी गैया धरम···।'

अंधी गाय का राम रखवाला—दे० 'अंधरी गैया धरम···।'

अंधी गाय के रक्षक रक्षक राम—दे० 'अंधरी गैया धरम···।'

अंधी गैया राम रखवैया—दे० 'अंधरी गैया धरम···।'

अंधी गौरेया घुड़साले में खोंता—अंधी गौरैया अपने बच्चों के लिए चारा दूर से नहीं ला सकती, घुड़साल में उसे नजदीक ही दाना मिल जाता है, अत: परेशान नहीं होना पड़ता । तात्पर्य यह है कि (क) लोग अपने साधन आदि देखकर ही अपना काम करते है । (ख) काम से जी चुराने वाले यदि बिना कुछ किए आवश्यक पदार्थ पा जाते हैं तो बहुत प्रसन्न होते हैं । तुलनीय : भोज० आन्हर गवरइया घुड़सारे में खोंता । (घुडसाल=घोड़े बाँधने का स्थान, खोंता=घोंसला)

अंधी घोड़ी थोथे चने—अंधी घोड़ी को खाने के लिए थोथे चने ही दिये जाते है । (क) जैसा आदमी हो उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए । (ख) मूर्ख व्यक्ति को किसी वस्तु के गुण-अवगुण का पता नही होता । इसलिए उसको बुरी वस्तु भी अच्छी लगती है । (ग) असहायों के प्रति लोग ध्यान नही देते । तुलनीय : बुद० आँदरी घुरिया, फँफूड़े चना, चले आउन दो धना के धना ।

अंधी घोड़ी सड़े चना : ऊपर देखिए । तुलनीय : बुंद० आँदरी घुरिया फंफड़े चना, चले आउन दो घना के घना; ब्रज० जैसी नकटी देवी वैसे ऊत पुँजारी; पंज० अन्नी कौड़ी सड़े छोले ।

अंधी देवी गंदे पुजारी—जो व्यक्ति बुरा होगा उसके पास-पडोस के लोग या उस पर श्रद्धा रखने वाले भी बुरे ही होंगे । तुलनीय : भोज० आन्हर देवी बहिर पुजारी; पंज० अन्ही देवी नक्क बड्डे पुजारी, अन्नी देवी गंदे पुजारी ।

अंधी दाई उलटा हाथ—असमर्थ व्यक्ति की कार्य-पद्धति ही सदोष होगी, फिर उस कार्य की सफलता का तो प्रश्न ही नही उठता । तुलनीय : कौर० अंधी दाई गांड में हात्थ ।

अंधी नाइन आइने की तलाश—जब कोई व्यक्ति ऐसी वस्तु की इच्छा करे जिसका वह पात्र न हो और न उसे उसकी कोई आवश्यकता ही हो तो व्यंग्य से कहते हैं । तुलनीय : पंज० अन्नी नैण नूं सीसे दी तलास ।

अंधी नाइन झावें का बल—अंधी नाइन को यदि बर्तन मांजने का काम सौंपा जाए तो उसमें झाँवा ही घिसता है क्योंकि बर्तन साफ हुआ या नही यह तो वह देख नहीं सकती । (झाँवा=बर्तन माँजने के काम आनेवाली ईंट, बल=बलिदान, हानि) अयोग्य व्यक्ति कोई कार्य कुशलता से नहीं कर सकता, बल्कि कार्य में लगा उपकरण और उसका

परिश्रम नष्ट हो जाता है। तुलनीय : अव० आंधर नाउन झाँवा कइ बल।

अंधी पीसे, कुत्ता खाय—(क) अयोग्य व्यक्ति का श्रम बेकार चला जाता है। (ख) यदि अपने अर्जित धन की रक्षा न कर सके तो कमाने का क्या लाभ ? अव्यवस्था और फूहड़पन की स्थिति में भी इसका प्रयोग होता है। तुलनीय : लह० अन्ही पीहे ते कुत्ता चट्टे; कनौ० अँधरी पीसै औ कुत्ता खाय; भोज० अन्हरी पिसले जाय, कुक्कुर खइले जाय; राज० आंधी पीसै कुत्ता खाय; मरा० आंधळी दळते कुत्रे पीठ खातें; अव० अँधरी कइ पीसा कूकुर खाय; मेवा० आँधी पीसे कुत्ता खाय; सि० अंधन आँदो कुत्तन खादो, अंधन आँदो बिल्लन चट्यो; हरि० आंद्धी पीस्सै कुत्ता खा; ब्रज० आँधरी पीसैं पीसनौ फिरि फिरि कूकर खाय।

अंधी पीसैं कुत्ते खावें—ऊपर देखिए।

अंधी बटे जेवरी पीछे बकरी खाय -दे० 'अंधा बाँटे जेवरी···।'

अंधी बिल्ली कोने में शिकार करे—धूर्त व्यक्ति की धूर्तता जब बाहर सफल नहीं होती तो वह चुपके-चुपके घर में ही अपनी हरकत शुरू कर देता है। तुलनीय : भोज० अन्हरी बिलाई कोने में सिकार खेले; पंज० अन्नी बिल्ली नुक्कर विच सिकार करै।

अंधी बिल्ली मांड पीकर ही तृप्त हुई- दूध-दही तो छिपाकर रखा जाता है अतः अंधी बिल्ली को चावल के माँड से ही संतोष करना पड़ता है। तात्पर्य यह है कि लाचार व्यक्ति को जो कुछ भी मिल जाता है, उसी से संतोष करना पड़ता है। तुलनीय : मैथ० अन्हरी बिलाई माँड़े तिरपित; भोज० आन्हर बिलार के माँड़े मेवा।

अंधी भैंस बरू में चरे—अंधी भैंस एक घास विशेष (बरू) में चर रही है। उसे यह पता नहीं कि यह घास कैसी है और उसने कितनी घास चर ली है। बिना सोचे-समझे कार्य करने वाले के प्रति कहते है। तुलनीय : हरि० आँद्धी भैंस्य बरु मैं चरै।

अंधी माँ निज पूतों का मुँह कभी न देखे—अंधी अपने पुत्र का मुँह कभी नहीं देख पाती। (क) अयोग्य या असमर्थ व्यक्ति साधारण और आवश्यक काम भी नहीं कर पाता। (ख) किसी बात के असंभव होने पर भी कहते हैं अर्थात् यह इतना ही असंभव है जितना एक अंधी का अपने पुत्र का मुँह देखना। तुलनीय : भोज० आन्हर माई पूतक मूँहों न देख पावे; पंज० अन्नी मां अपणे पुतरां दा मुंह कदी न देखे।

अंधी रूह गंदे फ़रिश्ते—बुरे को बुरे ही मिलते हैं। 'जैसी रूह वैसे फ़रिश्ते' भी कहा जाता है। तुलनीय : पंज० अन्नी रूह ते गंदे फरिश्ते।

अंधे आगे रोना, अपने दीदे खोना—अंधे के सामने रोने से अपनी ही आँखें ख़राब होती है, क्योंकि उसे तो पता भी नहीं चलता। जब कोई अपना दुःख किसी ऐसे को सुनाए जो उस पर ध्यान न दे या जिसे सुनाना व्यर्थ हो तो कहते हैं। तुलनीय : अव० अँधरे के आगे रवावै आपन दीदा ख्वावै; राज० आंधै आगे रोवै नैण गमावै; भोज० अन्हरा आगे रोवे आपन दीदा खोवे; मग० अंधा आगे रोये, आपन दीदा खोय; राज० आंधै आगै रोणो, रो-रो दीदा खोणो, आंधै आगै रोवै, नैण गंवावै, अंधे आग्गे रोव्वै, अपणो नैणा खोव्वै; मल० पन्नियुटे मुन्पिल् मुत्तेरिञ्जतु पोले; हरि० आंद्धे आग्गे रोवे अपणे दीद्दे खोवै, भैंस आग्गै बीन बजावे मट्टर मटर जुँगाळ ; पंज० अन्नी अग्गे रोणा ते अखां दा खो; अं० May cry your eyes out ere ye melt the heart of a wheat harrow or casting pearl before swine,

अंधे आगे रोवे अपना दीदा खोवे—ऊपर देखिए।

अंधे का ईश्वर सहायक—असहाय की रक्षा ईश्वर करता है। तुलनीय : छत्तीस० अंधरा बर दइ सहाय; पंज० अन्ने दा रब राखा।

अंधे का जागना, पुआल का तापना—अंधा रात भर जागता भी रहे तो न देखने के कारण वह किसी भी चीज की उचित रखवाली नहीं कर सकता। इसी प्रकार पुआल की आग क्षणिक होती है अतः सर्दी से बचने के लिए उसके तापने का विशेष उपयोग नहीं। आशय यह है कि अयोग्य व्यक्ति किसी काम के नहीं होते। तुलनीय : मैथि० अन्हरा के जगने की, धधरा के तपने की; भोज० अन्हरा क जागल, पुवरा क तापल; पंज० अन्ने दा जागणा अग्ग सेकणा।

अंधे का तंबूरा रामदेवजी बजाते हैं—अंधे व्यक्ति का तंबूरा (एक वाद्य यंत्र जो भजन गाते समय बजाया जाता है) रामदेवजी बजाते हैं अर्थात् असहाय और अपंग व्यक्तियों की सहायता भगवान ही करते है। तुलनीय : राज० आँधैरो तंबूरो रामदेवजी बजावै; ब्रज० आँधरे की तूमरी ऐ रामई बजावै।

अंधे का नाम नहीं, दम का काम नहीं—किसी मूर्ख व्यक्ति से जब खूब काम लिया जाय किंतु बदले में उसे कुछ भी यश न मिले तो ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मैथ० अंधा के नाँव ना काम से उभहाँव ना; पंज० अन्ने दा नाँ नईं दम दा कम नईं।

अंधे का निशाना लग गया लग गया—अंधा देख तो

सकता नही, यदि उसने तीर चलाया और वह लक्ष्य पर ठीक लग गया **तो** यह मात्र सयोग होता है। उसे उसका कोई श्रेय नही होना। जब किसी अयोग्य या मूर्ख व्यक्ति से अचानक ही कोई बडा काम हो जाय तो ऐसा कहते है। तुलनीय : पंज० अन्ने दा नशाना लग गया लग गया।

अंधे का हाथ कंधे पर—रास्ते में जाने वाले अंधे का हाथ अचानक आगे चलने वाले के कंधे पर चला गया और उसके सहारे वह सरलता से आगे बढ़ता गया। अचानक किसी को जब किसी दूसरे के सहारे से सफलता की प्राप्ति होती है तो कहते हैं। तुलनीय : पंज० अन्ने दा हथ मोंडे उत्ते।

अंधे की आंख में काजल, लँगड़े के पैर में जूता—दे० 'अंधी आँख में काजल सोहे...।'

अंधे की गुलेल—अंधे के लिए गुलेल बेकार है। जब किसी व्यक्ति के पास कोई ऐसी वस्तु हो जिसका लाभ वह न उठा सकता हो तो कहते है। तुलनीय : भोज० अन्हरा क गुरदेल।

अंधे की गुलेल कहीं भी लगे—अंधे को यदि गुलेल मिल जाए तो वह कहीं भी मार सकता है। अयोग्य या मूर्ख व्यक्ति किसी वस्तु का सही प्रयोग नही कर सकता। तुलनीय : पंज० अन्ने दी गलेल किते वी लग्गै।

अंधे की गैया, राम रखवैया—दे० 'अंधी गाय का राम...।' तुलनीय : पंज० अन्ने दी गाँ राम चारै।

अंधे की जोरू का खुदा (राम) रखवाला—असहाय की रक्षा भगवान् ही करते है। तुलनीय : भोज० अन्हरा क मेहरी राम के सहारे; राज० आँधा री जोरू री रखवारो अल्ला; पंज० अन्ने दी जोरू रब रखवाला।

अंधे की दोस्ती जी का जंजाल—अयोग्य या असमर्थ के साथ की गई मैत्री परेशानी का कारण होती है। तुलनीय : गुज० आंधणा साथे मैत्री ते लेवा जवु ने पूकवा जवुं; पंज० अन्ने नाल यारी जाण दा खौ। दे० 'नादान की दोस्ती...'

अंधे की बीवी देवर रखवाला—अनुपयुक्त व्यक्ति को कोई काम सौंपने पर गलती की सम्भावना रहती है। तुलनीय : भोज० अन्हरा क मेहरारू आ देवर रखवार; पंज० अन्ने दी वौटी देओर रखवाला। दे० 'चाम का जूता कुत्ता रखवार', और चौट्टी कुतिया जलेबियो की रखवाली'।

अंधे की मक्खी राम उड़ाए—दे० 'अंधी गाय का राम...।'

अंधे की लकड़ी ही आंखें है—क्योंकि वह लकड़ी के सहारे चलता है। असमर्थ व्यक्ति को साधारण से साधारण चीज का भी बड़ा सहारा रहता है। तुलनीय : पंज० अन्ने दी आँख उसदी लकड़ी ही है।

अंधे की लाठी एक बार खोती है—जब कोई व्यक्ति एक बार क्षति उठाने के बाद सतर्क हो जाता है तो कहते है। तुलनीय : भोज० अन्हरा क बांड़ी एक्के बेर खोवे।

अंधे की सीध—ऐसा काम जिसका कोई अता-पता ही न हो कि उसका परिणाम क्या होगा। तुलनीय : बुंद० अँदरा की सूद; ब्रज० ऑधरे की अन्दधुन्द।

अंधे के आगे दीपक—अंधे को प्रकाश और अंधकार से कुछ अंतर नही पड़ता क्योंकि उसको कुछ दिखाई नही देता। अयोग्य व्यक्ति को अच्छी वस्तु देने से कुछ लाभ नही होता। तुलनीय : भोज० अन्हरा के आगे सेरा क अँजोर; पंज० अन्ने अग्गे दीवा।

अंधे के आगे रोना अपनी आंखें खोना—दे० 'अंधे आगे रोना...।'

अंधे के आगे रोना, अपने दीदे खोना—दे० 'अंधे आगे रोना...।'

अंधे के आगे रोवे, अपने दीदे खोवे—दे० 'अंधे आगे रोना...।'

अंधे के आगे हीरा कंकड़ समान—अंधे के लिए हीरे और कंकड़ में कोई अंतर नही। आशय यह है कि मूर्ख को गुण-अवगुण या अच्छे और बुरे की पहचान नही होती। तुलनीय : पंज० अन्ने अग्गे हीरा पत्थर इको जिहे।

अंधे के घर भैंस ब्याई, बर्तन लेकर सभी दौड़े—असमर्थ या मूर्ख को ठगने या उससे अनुचित रूप से लाभ उठाने का प्रयास सभी करते है। तुलनीय : मग० अंधरा घर में भँइस बियाना, टेहरी ले के दउड़अ हो; भोज० अन्हरा क घरे भँइस बियाइल, सगरो गांव घूंच लेके दउरल; पंज० अन्ने दे कर मझ सूई सारे पांडे लैके नट्ठे।

अंधे के धन का राम रखवाला—अंधे के धन की रक्षा ईश्वर ही करता है। अर्थात् असहाय का सहायक भगवान् ही होता है। तुलनीय : पंज० अन्ने दे पैहे दा रब राखा।

अंधे के भावे रात दिन बराबर है—दे० 'अंधे के लिए दिन रात...।'

अंधे के लिए जैसा दिन वैसी रात—नीचे देखिए।

अंधे के लिए दिन-रात बराबर—मूर्ख के लिए भले-बुरे में कोई अन्तर नही है। तुलनीय : मग० अँधरा लेखे जइसन दिन ओइसन रात; भोज० अन्हरा खातिन जइसने दिन ओइसने रात; ब्रज० आँधरे कूं दिन-रात एक से; असमी० कणार कि दिन् राति ?; सं० लोचनाभ्याम् विहीनस्य दर्पण किं करिष्यति ?; अव० अंधा लेखे रात दिन बराबर; पंज० अन्ने लई रात दिन इको जिहे।

अंधे के लेखे रात-दिन बराबर—ऊपर देखिए। तुलनीय : हरि आंद्धे तीन पहर एक बराबर,

अंधे के साथ घाट करे घर तक पहुँचावे—अंधे के साथ घाट (संभोग) करने पर उसे घर तक पहुँचाना भी पड़ता है। बुरों या असमर्थ लोगों के साथ तरह-तरह की परेशानी उठानी पड़ती है। तुलनीय : पंज० अन्ने कोलों यवाना ते छड़न उनूँ घर जाणा।

अंधे के सामने आरसी, बहरे के सामने गीत—दोनों व्यर्थ है। अयोग्य व्यक्ति के लिए अच्छी चीज का कोई मूल्य नहीं। तुलनीय : गुज० अंधा आगण आरसी, ने बहेरा आगण गान।

अंधे के हाथ बटेर—जब किसी अयोग्य व्यक्ति को संयोगवश कोई अच्छी चीज़ मिल जाय तो कहते है। अधा स्वयं बटेर मार या पकड़ नहीं सकता। तुलनीय : अव० अंधरे कइ हाथ बटेर; मरा० आँधळ्याला लावा पक्षी साँपडला वोला फुलाला गाँठ; गढ़० अंधा का हाथ बुटेर भोज० अन्हरे के हाथे बटेर; मल० पोट्टक्कण्णन् माङ्ङ एरिञ्ञु वीणियतुपोले; पंज० अन्ने दे हाथ बटेर; अं० A blind man sometimes hits the mark. दे० 'अंध-वर्तकीय न्याय।'

अंधे के हों आंखों वाले—अंधे व्यक्ति के बच्चे आँखों वाले ही पैदा होते है। (क) जब किसी असुंदर व्यक्ति के सुंदर संतान हो तो उसके प्रति ऐसा कहते हैं। (ख) जब किसी अकर्मण्य व्यक्ति की संतान परिश्रमी हो तो उसके प्रति भी ऐसे कहा जाता है। (ग) कभी-कभी इस अर्थ में भी इस लोकोक्ति का प्रयोग होता है कि प्रायः अयोग्य की योग्य और योग्य की अयोग्य संतान होती है। तुलनीय : गढ़० डुंडा गोरू का सापना बाछरू; पंज० अन्ने दे सुजारुखे।

अंधे को अंधा कहने से बुरा मानता है—अंधा अपने को अंधा कहलाना पसंद नहीं करता। कटु वचन सत्य होते हुए भी बुरे लगते हैं। तुलनीय : मरा० आँधळ्याला आंधळा म्हटलेलें खपत नाहीं; अव० अंधरे का आंधर कहब्या त ऊ गुस्साई; पंज० अन्ने (काणे) नूँ अन्ना (काणा) आखो तां रोंदा है।

अंधे को अंधा मिला कौन दिखावे राह—अंधा व्यक्ति अंधे को राह नहीं दिखा सकता अर्थात् एक असमर्थ व्यक्ति का दूसरा असमर्थ व्यक्ति पथ-प्रदर्शन नहीं कर सकता। तुलनीय : भोज० आन्हर के आन्हर मिलल राह के बताई; सं० अन्धेनैव नीयमाना यथान्धाः; पंज० अन्ने नूँ अन्ना लबया राह कौण दस्से।

अंधे को अंधेरे में बहुत (बड़ी) दूर की सूझी—जब कोई मूर्ख व्यक्ति बहुत दूरअंदेशी की बात करे तो प्रायः उसका उपहास करने के लिए कहते हैं। तुलनीय : मरा० आँधळ्याला अन्धारांत फार दूर चें सुचलें; अव० अंधरे का दूर की सूझति अहै; मल० मठयनुम् दूरदर्शित्वम् उण्टावुक।

अंधे को अपना घर दूर से सूझे—सभी को अपना स्वार्थ बहुत दूर से दिखाई पड़ता है। तुलनीय : हरि० अंधेले को अपना घर कोसों ते सूझे; भोज० अन्हरो के आपन घर दूरे से लौकेला; पंज० अन्ने नूँ अपणा कर वी दूर तो लब्बे।

अंधे को आरसी—अंधा आरसी से क्या लाभ उठा सकता है? जब किसी (अयोग्य) व्यक्ति को कोई ऐसी वस्तु दी जाय जिसके योग्य वह न हो तो व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : भोज० आन्हर के ऐना; अव० अंधरे क आगे सीसा; पंज० अन्ने अग्गे सीसा।

अंधे को काना सौ चक्कर काट के मिलता है—बुरे आदमी किसी न किसी तरह एक दूसरे से मिल ही जाते हैं। तुलनीय : पंज० अन्ने नूँ काना सौ वल पा के मिलदा है।

अंधे को क्या चाहिए दो आंखें—दे० 'अंधा क्या चाहे…।'

अंधे को क्या दिन, क्या रात दे० 'अंधे के लिए दिन-रात…।'

अंधे को क्या चिराग़ दिखाना और क्या न दिखाना?—(1) मूर्ख व्यक्ति को अच्छी सीख देना और न देना एक जैसा है। (2) जो व्यक्ति जिसे देख-समझ नहीं सकता, उसके लिए उसका कोई महत्व नहीं। तुलनीय : अव० अंधरे के दीया; पंज० अन्ने अग्गे की दीवा बालना की दसणा।

अंधे को गड्ढा मिला, अंधे को ही सांप—अंधे व्यक्ति की राह में ही गड्ढे पड़ते हैं तथा उसी की राह में सांप भी मिलते हैं। भाग्यहीन के ही जीवन में विपत्ति पर विपत्ति आती है, भाग्यवान के जीवन में नहीं। तुलनीय : गढ़० डुंडा कू ही भेल अर डुंडा कू ही बाघ; भोज० सरप बिच्छी अन्हो के मिले ला; पंज० अन्ने नूँ ही टोया लबया अन्ने नूँ ही सँप।

अंधे को जुआ माफ़ है—जब लिखने में कोई रकम भूल से छूट जाए तो लिखने वाले के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : पंज० अन्ने नूँ जुआ माफ़ है।

अंधे को दिखाय तो कहे दो दांत हैं—बैल की आयु का पता उसके दांतों से चलता है। किसी ने अंधे से पूछा कि

बैल कैसा है तो उसने कहा अच्छा नया है। अभी तो दो ही दाँत हैं। जब कोई व्यक्ति किसी ऐसी वस्तु के संबंध में बताए या उसकी तारीफ़ करे जिसके संबंध में वह कुछ न जानता हो तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

अंधे को दो आँखें चाहिए—दे० 'अंधा का चाहे…।'

अंधे को न्योते दो को बुलाएँ—दे० 'अंधा न्योतो…।'

अंधे को न्योतो न दो जनें आएँ—दे० 'अंधा न्योतो…।'

अंधे को सब अंधे दिखते हैं—अंधा अपनी ही तरह सब को अंधा समझता है। आशय यह है कि जो जैसा होता है उसे सब वैसे ही दिखाई देते हैं। तुलनीय : पंज० अन्ने नूं सारे अन्ने लबदे हन।

अंधे को सूझे कंधेरे का घर—अंधे को कंधेरे (जो व्यक्ति उसका हाथ अपने कंधे पर रखकर उसे कहीं ले जाता है) का ही घर सूझता है। अपना स्वार्थ सभी को दिखाई पड़ता है। तुलनीय : हरि० अंधले को सूझे कंधेरे का घर।

अंधे को सूझे बहराइच—दे० 'अंधरे सूझे बहराइच'।

अंधे को हज़ारीबाग़ ही दीखता है—दे० 'अंधरे सूझे…।'

अंधे को हरा ही हरा सूझता है—मूर्ख को अच्छी ही अच्छी बातें दिखाई पड़ती है। जब कोई यथार्थ परिस्थिति के अनुकूल न सोचे या न बात करे बल्कि आदर्श, उच्च, अच्छी या आशापूर्ण स्थिति पर ही उसका ध्यान केन्द्रित हो तो कहते हैं। मूलतः इस लोकोक्ति में कदाचित् ऐसे अंधे का उल्लेख है जो हरे रंग से परिचित है और जन्मांध न होकर बाद में अंधा हुआ है। तुलनीय : पंज० अन्ने नूं हरा ही हरा लबदा है।

अंधे गांव में काना राजा—मूर्खों के बीच कोई अल्पज्ञान वाला राजा होता है तो वही उनमें सबसे श्रेष्ठ समझा जाता है। तुलनीय : मैथ० भोज० अन्हरा गांव में कनवां राजा।

अंधे घर में भूत का वास—जहाँ अंधकार हो वहां भय लगना स्वाभाविक है। तुलनीय : भोज० अन्हारे घरे भूत डेरा; अव० अंधियारे घरे मां भूतन कह वास; पंज० अन्ने कर विच भूत दा डेरा।

अंधे घर में सांप-ही-सांप—जिस घर में प्रायः अंधेरा रहता है, उसमें सांपों के अधिक होने की आशंका होती है। (क) जिस वस्तु के विषय में हमारी जानकारी नहीं होती उसके विषय में अनेक शंकाएँ सहज ही उठा करती हैं। (ख) जहाँ अच्छी व्यवस्था नहीं होती वहां सभी बदमाश हो जाते हैं। तुलनीय : भोज० अन्हार घर में कीरे-कीटा; पंज० अन्ने कर विच सँप ही सँप।

अंधे ने चोर पकड़ा, दौड़ियो मियां लँगड़े—अंधा चोर नहीं पकड़ सकता और न लँगड़ा दौड़ सकता है। (क) जब कोई व्यक्ति असंभव बात करे तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। (ख) यदि कोई व्यक्ति ऐसे आदमी से सहायता करने की प्रार्थना करे जो स्वयं असमर्थ हो तब भी इस लोकोक्ति का प्रयोग होता है, यद्यपि ऐसी स्थिति में केवल आधी लोकोक्ति ही लागू होती है। तुलनीय : पंज० अन्ने ने चोर फड़्या लंगे मियां नट्ठे।

अंधे ने पाई पनही घूमे राह-कुराह—अंधे को जूता मिल गया तो वह इच्छानुसार घूमता फिरता है अर्थात् जूता दिखाता फिरता है। (क) जब किसी अयोग्य व्यक्ति को अच्छी वस्तु मिल जाय और वह उसका प्रदर्शन करने का प्रयत्न करे या उसका दुरुपयोग करे तो कहते हैं। (ख) जब कोई थोड़ा सा धन पाकर इतराने लगता है तब व्यंग्य में उसके प्रति ऐसा कहते हैं।

अंधे ने रोज़ा रक्खा तो दिन बड़े हो गए—अभागे के लिए परिस्थितियां भी प्रतिकूल हो जाती हैं। तुलनीय : मि० अंधा रखन रोजा त दिहँ बि येन बड़ा; भोज० अन्हरा रखलस रोजा त दिन हो गयल डेढ़ा।

अंधेरनगरी अबूझ राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा—नीचे देखिए।

अंधेर नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा—राजा के अयोग्य होने पर उसके राज्य में टके सेर साग और टके सेर मिठाई बिकती है। अर्थात् मालिक के अयोग्य होने पर अच्छे और बुरे का विचार नहीं रह जाता। सभी समान समझे जाते हैं। ऐसी व्यवस्था या ऐसे शासन पर कहते हैं जिसमें बहुत अन्याय हो। कुछ लोगों के अनुसार इलाहाबाद के समीप झूँसी के आसपास एक ऐसा राज्य था जहाँ 'भाजी' और 'खाजा' एक भाव बिकते थे। इस लोकोक्ति का आधार वही है। तुलनीय : मेवा० अंधेर नगरी अनबूज राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा; माल० अधाधंध की साहबी, घटाटोप का राज; राज० अंधेर नगरी अणबूझ राजा टकै सेर भाजी टकै सेर खाजा; अव० अंधेर नगरी अंधेर राजा टका सेर भाजी टका सेर खाजा; मरा० अंधेराची(अन्यायाची)नगरी, सर्वनाश गाडू(पागल) राजा, टक्क्याला भाजी निटक्यालाच खाजा; हरि० अंधेर नगरी चौपट राजा टेके सेर भाजी टेके सेर खाजा।

अंधेर नगरी, बेबूझ राजा—ऊपर देखिए।

अंधे रसिया आइने पर मरें : ऐसी चीज़ का शौक़

करना जिससे अपना किसी भी तरह का लाभ न हो। मूर्खतापूर्ण कार्य करने पर व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० अन्ने रसिया मीसे उत्ते मरे।

अँधेरी रात और साथ में रँड़ुआ—दोनों ही स्त्री के लिए खतरनाक हैं। जब कोई व्यक्ति किसी ऐसी विपत्ति में फँस जाय जिसमें से उसे निकलने का कोई मार्ग न सूझे तो कहते है। तुलनीय : पंज० अन्नी रात अते नाल रंडा।

अँधेरी रात में जेवरी साँप—अज्ञान अनेक काल्पनिक विपत्तियों का कारण होता है। यह लोकोक्ति दर्शनशास्त्र के 'रज्जु-सर्प न्याय' के प्रसिद्ध उदाहरण पर आधारित है। तुलनीय : पज० हनेरी रात बिच सँप बी रस्सी।

अँधेरे घर में धींगर नाचे—दे० 'अँधेरे घर में भूत…।'

अँधेरे घर में बुढ़वा नाचे—बड़े लोग बुरे काम करते है पर छिपकर। जब कोई वयोवृद्ध या बड़ा आदमी चुपके-चुपके कोई बुरा काम करे तो कहते है। तुलनीय : पंज० हनेरे कर बिच बुड्डा नचै।

अँधेरे घर में साँप-ही-साँप—दे० 'अंधे घर में …'।

अँधेरे में चोर का बल—अँधेरी रात में चोर का बल बढ़ जाता है क्योंकि उस समय वह आराम से चोरी कर सकता है। सामान्य जनों के लिए जो कुसमय है वही कुकर्मियों के लिए सहायक बन जाता है। तुलनीय : पंज० चोर दा जोर अनेरे विच।

अँधेरे में सब एक समान—ठीक से दिखाई न पड़ने के कारण अँधेरे में सभी चीज़ें काली या एक-सी दिखाई पड़ती है। अज्ञान की स्थिति में भले-बुरे की पहचान नहीं होती। तुलनीय : राज० इँधारी रात मे मूंग काला; पंज० हनेरे बिच सब इकों जिहे।

अंधे लेखे दिन-रात बराबर—दे० 'अंधे के लिए दिन-रात…'।

अंधे सियार को गोदा भी मीठा—अंधे सियार को गोदा (बरगद, पकुहा या पीपल का फल) भी बहुत स्वादिष्ट लगता है। (क) मूर्ख लोगों को साधारण वस्तुओं से प्रसन्न किया जा सकता है। (ख) लाचार या असहाय व्यक्ति साधारण वस्तु पाकर ही प्रसन्न हो जाते है। तुलनीय : बुंद० अँधरे सियार का पिपरं मेवा; भोज० आन्हर सियार के गोदवे मेवा; मैथ० अन्हरा सियार के पकुहा मेवा।

अंधे सियार को पकुहा मेवा—ऊपर देखिए।

अंधे सियार को पीपल मिठाई—दे० 'अंधे सियार को गोदा…'

अंधे सियार को महुआ मिठाई या महुआ मेवा—दे० 'अंधे सियार को गोदा…'।

अंधे से गाँड़ मराओ, घर तक पहुँचाने जाओ—दे० 'अंधे के साथ घाट करे…'।

अंधे से दोस्ती करें तो दर-दर घूमना पड़े—ऐसे व्यक्ति के लिए कहते हैं जिसकी मित्रता मे केवल हानि ही हो। तुलनीय : मेवा० आंधा सू अन्याई कीदी सो खाँद लेर काड़णो पड़यो; पंज० अन्ने नाल यारी करो कर-कर फिरना पवै।

अंधे हाफिज़ काने नवाब—अंधों और कानों के प्रति कहते हैं। हाफ़िज़ उसको कहते हैं जिसे कुरान कंठस्थ हो। अंधों की स्मरण शक्ति बहुत अच्छी होती है तथा काने प्राय: बहुत चालाक होते हैं।

अंधों की मक्खियाँ राम ही उड़ावे—दे० 'अंधी गाय का राम …'।

अंधों ने गाँव मारा, दौड़ियो बे लँगड़े—दे० 'अंधे ने चोर पकड़ा …'।

अंधों में काना राजा—मूर्खों या अनपढ़ों में साधारण या कम पढ़े-लिखे व्यक्ति भी आदर पाते हैं। तुलनीय : सं० निरस्त पादपे देशे एरण्डोऽपि द्रुमायते; गुज० ऊजड गाममां एरण्डो प्रधान; मरा० आंधळ्यांत काणा राजा; भोज० अन्हरन में कनवें राजा; राज० अधों में काणों राव; मेवा० आधा मे काणो राजा। ब्रज० आंधरेन में कानों ई राजा; गढ़० अधों मां काणो राजा; अव० अंधरन माँ कनवा राजा; मैथ० अंधरा में काना मँडर; सिं० अंधन में काणो राजा; छत्तीस० अंधवा माँ कनवा राजा; हाड़० आँधा मँ काणो राजो; निमाड़ी—अन्धा मड काँणो राजा; कन्न० कुरुउलल्लि मेड़ु गण्णु श्रेष्ट; कश्म० अन्यन मज कोन्य मोदर; पंज० अन्ने बिच काणा राजा; गुज० आँधका माँ काणो राजा, तमिल—आलै इल्ला ऊरुक्कु इलप्पै पुशकरै; बंग० कानार देशे एक चोखाइ राजा; उड़ि० अंध देश रे कणा रजा; मल० मूक्किल्ला राज्यत्तु मुरिमूक्कन् राजावुँ; हरि० आंध्यां में कांणा राज्जा, आंद्धे सिपाही काणां सरदार; तेलु० अंधुल लो ऐकादि गोप्प; मग० अँधरा में कान राजा; भोज० अँन्हरा में कनवें राजा; बुंद० अँदरन में काने राजा; ब्रज० अधेराम कान्टे मुकदम; अं० If all the world were ugly, deformity would be no monster, A figure among cyphers.

अंबर से गिरा धरती को पकड़े—नव प्राप्त वस्तु आकर्षक होती है। एक वस्तु हाथ से जाने पर दूसरी वस्तु

चाहे जैसी भी हो, खोने के लिए कोई तैयार नहीं होता। तुलनीय : पंज० अंबरो ते डिग्गी धरत पउच्छी।

अंबा झोर चलै पुरवाई, तब जानौ बरखा ऋतु आई—यदि आमों को गिरा देने वाली पुरवा हवा चले तो समझ लेना चाहिए कि वर्षा ऋतु का आगमन हो गया। किसी बात के लक्षण प्रकट होने पर उसके बाद की स्थिति का सहज अनुमान हो जाता है। तुलनीय : अं० If winter comes can spring be far behind—Shelley.

अंबा, नीबू, बानियाँ गर दाबे रस देयँ—आम, नीबू और बनिया गला दबाने से ही रस देते हैं। (क) बनियों के प्रति कहते हैं क्योंकि वे बहुत कंजूस होते है, और जब तक उन पर कोई दबाव न पड़े जेब या तिजोरी से पैसा नहीं निकालते। (ख) संसार में ऐसी भी वस्तुएं हैं जिन्हें अनायास प्राप्त नहीं किया जा सकता। (ग) संसार में ज़ोर-दबाव से ही काम बनते हैं। पूरा दोहा इस प्रकार है :

अंबा नीबू बानियाँ, गर दाबे रस देयँ।
कायथ कौवा करहटा, मुर्दा हूँ सों लेयँ॥

तुलनीय : भोज० आम नीबू बनिया गर दाबे रस देयँ।

अकटे काटे, अचले चले—न काटने योग्य वस्तु को काटना तथा न चलने योग्य मार्ग पर चलना। समाज तथा धर्म-विरुद्ध कार्य करने वाले के लिए ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० अकट्ट काट अबट्ट बाट।

अकड़ चूड़े की लेस लसूड़े की—बहुत अधिक होती है। अर्थात् नीच लोग बहुत अकड़ते है। तुलनीय : पंज० आकड़ चूड़े दी, लेस लसूड़े दी।

अकल उधारी ना मिलै हेत न हाट बिकाय—बुद्धि किसी से उधार नहीं मिलती और प्रेम भी बाज़ार में नहीं बिकता अर्थात् बुद्धि और प्रेम स्वाभाविक हैं, इन्हें अर्जित नहीं किया जा सकता। न हर व्यक्ति बुद्धिमान होता है और न हरेक प्रेम कर सकता है। किसी व्यक्ति में आवश्यक गुणों के अभाव पर व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : अव० अकिल न मिले उधार, प्रेम न बिके बजार।

अकल खुरा, जग से बुरा—स्वार्थी और द्वेषी मनुष्य सबसे बुरे होते हैं। तुलनीय : पंज० अकल गयी ते जग तों गया।

अकल न शकल, मूसल के वस टका—मूर्ख तथा बदसूरत व्यक्ति पर कहते हैं जो किसी भी योग्य न हो। तुलनीय : अव० अक्किल न सक्किल मूसर के दम टका; पंज० अकल नां सकल मुसल दे दम टका।

अकल बड़ी या नकल—अपनी बुद्धि अच्छी होती है या दूसरों का अनुकरण? अपनी बुद्धि से कार्य करना दूसरों की नकल करने से अच्छा है। दूसरों की नकल करने वालों के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। भीली—अक्कल बड़ी के नक़ल; पंज० अकल बड़ी या नकल; ब्रज० अक्कलि बड़ी कै भैंसि।

अकल बड़ी या भैंस—आशय यह है कि व्यक्ति की इज़्ज़त उसके गुणों से होती है न कि धन और बल से। तुलनीय : पंज० अकल बड़ी या ऊँट।

अकल बिना ऊँट उभाने फिरते हैं—बुद्धि के अभाव में ऊँट नंगे पाँव घूमते हैं। मूर्खों के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं जो अपने आवश्यक कामों को भी नहीं कर पाते।

अकल बिना कुआँ खाली—बुद्धि न हो तो कुएँ से पानी भी नहीं निकाला जा सकता अर्थात बुद्धि के अभाव में साधारण काम भी नहीं किया जा सकता। जो व्यक्ति मूर्खतावश साधारण कार्य भी न कर सके उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० अकल बगैर खू खाली।

अक़लमंद को इशारा काफी—चालाक लोग संकेत से ही किसी बात को समझ जाते हैं। तुलनीय : बुंद० चतुर होय सो चेते।

अकाल के दिन बड़े—दे० 'अकाल में अधिक···'।

अकाल भी आया और बाप भी मरा—दोनों मुसीबतें एक साथ ही आईं। कई विपत्तियों के एक साथ आने पर कहते हैं। तुलनीय : मेवा० काल को पड़बो अर बाप को मरबो; पंज० काल वी पैया अते पिओ वी मर्‌या।

अकाल मरी सासू, सुकाल आया आँसू—सास तो मरी थी पिछले साल जबकि अकाल पड़ा था और आँसू इस साल आ रहे हैं। (क) कृत्रिम समवेदना प्रकट करने वालों के प्रति व्यंग्योक्ति। (ख) स्वार्थी व्यक्तियों के प्रति भी इसका प्रयोग करते हैं, क्योंकि बुरे दिनों में वे तुरंत साथ छोड़ देते हैं। तुलनीय : गढ़० अकाल मरी सासू, समौ आया आँसू; पंज० परार मरी सस्स रो अज्ज भरी अक्ख; गढ़० सौण मरी सासू भादो आया आँसू; भोज० काल्ह मरली सासु आ आज आयल आँसु।

अकाल में अधिक मास—अकाल के वर्ष में महीने अधिक हो गए या मलमास आ गया। अर्थात् कष्ट के दिन जल्दी नहीं कटते। तुलनीय : राज० काल में दूधक मासो; पंज० काल विच मते महीने अथवा काल दे दिन वडे; अं० It never rains but it pours.

अकाल में क्या नहीं खाया जाता और क्रोध में क्या नहीं कहा जाता—क्रोध में मनुष्य अकथनीय भी कह जाता है और

अकाल में खाद्य-अखाद्य सभी कुछ खाना पड़ता है। क्रोध में कही हुई किसी अनुचित बात की क्षमा माँगते हुए ऐसा कहा जाता है। तुलनीय : गढ़० गुस्सा मां क्या नि बोलेंद अर अकाल मां क्या नि खायेंद; पंज० काल बिच अते गुस्से बिच सब कुज हो जांदा है।

अकाल में जर जोरू भी बुरे-- अकाल में धन और स्त्री भी सहायक नहीं होते। बुरे समय में कोई सहायक नही होता। तुलनीय : भीली—जमाना में जमी जेलू खोटी; पंज० काल बिच रन अते पैसा वी नई होंदे।

अकाल मृत्यु की मुक्ति नहीं आत्महत्या से मरनेवाले की मुक्ति नहीं होती। अर्थात् (क) अपने किये का फल भी भुगतना पड़ना है। (ख) प्रकृति के नियमों का उल्लंघन करने पर दण्ड मिलता है। तुलनीय : पंज० बेमौत मौत नई।

अकाल या सुकाल, अनाज निकाल -अकाल हो या सकाल मुझे अपने अनाज से मतलब है। (क) समय-असमय का विचार किये बिना अपने स्वार्थ पर ही ध्यान केन्द्रित रखने वालों के प्रति व्यंग्य। (ख) डाकुओं के प्रति भी ऐसा कहते हैं, क्योंकि उन्हें भी अपने स्वार्थ से ही मतलब रहता है, दूसरा मरे या जीए उनको कोई परवाह नहीं रहती। तुलनीय : गढ़० अकाली सकाली नाज दाणी निकाली।

अकाले कृतमकृतं स्यात् —समय का विचार किए बिना किया हुआ काम न किए हुए के समान है। अर्थात् कार्य वही ठीक है जो समय का विचार करके किया गया हो।

अकिल न मिले उधार—दे० 'अकाल उधारी ना मिले···'।

अकुलाए खेती, सुस्ताए व्यापार—निश्चिन्त न बैठकर अवसरानुकूल बुआई-सिंचाई करते रहने पर खेती अच्छी होती है तथा बिना घबड़ाए धीरज से करते रहने पर व्यापार अच्छा होता है। व्यापार में चूँकि उतार-चढ़ाव आते रहते हैं या लाभ-हानि दोनों ही होने की सम्भावना रहती है, इसलिए उसमें धैर्य और लगन दोनों की आवश्यकता होती है। तुलनीय : पंज० नीवीं खेती ढीला वयापार।

अकुलाया लोनो चूतड़ से माटी खोवे-- घबड़ाहट में आदमी उल्टे-सीधे काम कर बैठता है। जब कोई व्यक्ति घबराहट में उल्टे-सीधे काम करता है तब कहते हैं। तुलनीय: भोज० अगुताइल नोनिया चूतरे से माटी खन्ने।

अकेला खाय सो मट्टी, बाँट खाय सो गुड़—कोई भी वस्तु अकेले हड़प नही करनी चाहिए, मिल-बाँट कर लेनी चाहिए। आशय यह है कि मनुष्य को स्वार्थी नहीं होना चाहिए। तुलनीय : पंज० कल्ला खाए बिल्ला खाए, बंड खाए खंड खाए।

अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता—अकेले कुछ नहीं होता। या अकेला व्यक्ति कुछ नहीं करता। तुलनीय : गुज० एक धाये कूवो खोदाय नही; मरा० एकट्यानें हरवऱ्याची भट्टी फुटत नाहीं; भोज० अकेल रहिला से भरसाँय नाँ फूटे, अथवा अकेले चना भाड़ ना फोरी; बुंद० अकेलो चना भार नईं फोरत; अव० अकेले चना भार नहीं फोर सकता; मैथ० एकसरि बृहस्पतियो झूठ; हरि० एकला चंणा भाड़ नहीं फोड़ सकता; ब्रज० इकिलौ चना का भारै फोरि देगो; मेवा० एकलो चणो भाड़ नी फोड़े; मल० तनिये वन्निए कार्य्यङ्ङळ् ओन्नुम् तन्ने चेय्यान साद्धचमल्ल; अं० One swallow does not make a spring.

अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता--ऊपर देखिए।

अकेला चले न बाट, झाड़ बैठे खाट-- यात्रा में अकेले नहीं जाना चाहिए तथा बैठने से पहले खाट को झाड़ लेना चाहिए।

अकेला पूत कमाई करे, घर का करे या कचहरी करे – एक ही व्यक्ति कमाने वाला है वह घर का खर्च उठाए या मुक़दमेबाजी का। यदि एक ही व्यक्ति पर बहुत से कामों का बोझ हो तब कहते हैं। तुलनीय : मरा० एकटा मुलगा कमाई करील, घरचें करील की कोर्ट-कचेरी साभा कील; पंज० कल्ला पुतर कमावे, कर रखे या कचैरी जावे।

अकेला बैल किस काम का -अकेले बैल से खेती नहीं होती। अर्थात् अकेला आदमी कुछ नही कर पाता। तुलनीय : पंज० कल्ला टग्गा (बलद) किस कम दा।

अकेला सुअर, पुड़िया जहर-- सुअर यदि अपने झुंड में न रहकर अकेला रहे तो बहुत चिड़चिड़ा या कटु स्वभाव का हो (जहर की पुड़िया) जाता है। क्रोधी मनुष्य के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : पंज० कल्ला सूर पुडी जहर।

अकेला हँसना भला, न रोना --अकेले न तो हँसना अच्छा लगता है और न रोना। दुःख-सुख दोनों ही में साथियों की अपेक्षा होती है। साथी के साथ होने पर दुख आधा या सुख दूना हो जाता है। अकेले कुछ भी करना अच्छा नहीं। तुलनीय: पंज० कल्ले हँसना चंगा नां रोणा।

अकेला हसनू रोवे या क़ब्र खोदे-- दे० 'अकेले मियाँ क़ब्र खोदेंगे···'।

अकेली कहानी गुड़ से भी मीठी -एक पक्ष की बात सुनकर उस पर कोई विश्वास कर ले तो कहते हैं। दोनों पक्षों को सुने बिना विश्वास नही करना चाहिए। तुलनीय :

पंज० इक पासे दी गल गुड़ तो वी मिट्ठी।

अकेली गई मैदान, लोग कहें भाग गई—स्त्री शौच के लिए अकेली गई और लोगों ने समझा कि भाग गई। (क) स्त्री पर सहज ही संदेह हो जाता है; इसलिए उसे अकेला नहीं छोड़ना चाहिए। (ख) व्यर्थ में संदेह करने पर व्यंग्य में भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० कल्ली गयी बाहर लोकी कैण नट्ठ गयी।

अकेली लकड़ी न जले न बले—अकेली लकड़ी न जलती है न बरती है। अर्थात् अकेले कोई भी काम नहीं होता।

अकेली लकड़ी कहाँ तक जले- (क) एक आदमी इतना अधिक नहीं कमा सकता कि सब का खर्च चल सके। (ख) बड़े काम अकेले नहीं किए जा सकते। तुलनीय पंज० कल्ली लकड़ी किथों तक बलै।

अकेली हरदसिया सारा गाँव रसिया- अकेली हरदसिया (एक स्त्री) है, और गाँव भर उसको चाहने वाला है। जब वस्तु थोड़ी और उसे चाहने वाले बहुत अधिक हों तो कहते हैं। तुलनीय : फ़ा० यक अनार सद बीमार; पंज० इक रन सारा पिंड पिछे।

अकेले तुम्हारी माँ ने सोंठ नहीं खाई है—प्रसव होने पर स्त्रियों को सोंठ खिलाई जाती है। जब कोई व्यक्ति बहुत धौंस (रोब) जमाए तो ऐसा कहते है। आशय यह है कि हम तुमसे किसी बात में कम नहीं है। तुलनीय . पंज० कल्ले तेरी माँ ने ही मुंड नई खादी।

अकेले-दुकेले का अल्लाह बेली असहाय का रक्षक भगवान है। आशय यह है कि किसी व्यक्ति की अगर उसके साथी-संगी या रिश्तेदार सहायता न करें तो उसे निराश न होना चाहिए बल्कि ईश्वर पर भरोसा रखना चाहिए।

अकेले मियाँ क़ब्र खोदेंगे या रोयेंगे—एक आदमी एक साथ कई काम नहीं कर सकता। तुलनीय : मैथ० एक सरे मियाँ कबर खोदिहें कि कनीहें; भोज० अकसरे मियाँ कबर खोदिहें कि रोइहें।

अकेले रहे और भाड़ फोड़े—अर्थात् अकेला आदमी कुछ नहीं कर सकता। तुलनीय : भोज० अकेले रहिला का भाड़ फोड़ी।

अकेले बृहस्पति भी झूठे—छोटों को कौन कहे, बड़ा व्यक्ति भी अकेले कुछ नहीं कर सकता। तुलनीय : मैथ० अकेला बृहस्पतियो झूठ; पंज० कल्ला बृस्पति वी चूठा।

अकेले से झमेला भला—अकेले रहने से कई व्यक्तियों के साथ रहना कहीं अच्छा है, चाहे लड़ना-झगड़ना हो क्यों न पड़े। तुलनीय: भोज० अकेल से झमेल भल; पंज० कल्ला तो फसया ही चंगा; अं० The more the merries.

अक्कल खोई ना मिले, और सभी मिल जायँ—अन्य चीज़ें तो खोने के बाद पुनः प्राप्त की जा सकती हैं पर खोई हुई बुद्धि पुनः प्राप्त नहीं की जा सकती। तुलनीय : गढ़० बाटो भूल्यू मिल जाँद पर अक्कल भूली नि मिलदी; भोज० अकिल हेरानी ना मिले अउर सकल मिल जायँ; पंज० गुआची दी अकल नई मिलदी और सारा मिल जांदा है।

अक्कल बिन पूत लठेंगर से, लड़के बिन बहू डेंगन सी— मूर्ख पुत्र लठेंगर (लड़की का कुंदा) जैसा और बिना पुत्र की स्त्री डेंगन (पशुओं के गले में बंधा हुआ लकड़ी का टुकड़ा जिससे वह भाग न सके) के समान होती है, अर्थात् दोनों ही बेकार होते हैं। तुलनीय : बुंद० अक्कल बिन पूत लठेंगर से, लरका बिन बऊ डेंगुर सी; अव०, भोज० अक्कल बिन पूत कठेंगुर से, बुढ़ी बिन बिटिया डँगुर सी।

अक्रोध जीते क्रोध, असाधु जीते साधु—क्रोध पर विनम्रता से और दुष्ट पर सज्जनता से अधिकार पाया जा सकता है।

अक्ल आप ही ऊपजे, दिए न आवे सीख—बुद्धि स्वयं ही आती है किसी के समझाने से नहीं। जो व्यक्ति समझाने-बुझाने पर भी काम ठीक से न करे उस पर व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० अकल सरीरा ऊपजे, दियाँ न आवे सीख; पंज० अकल अपने आप आंदी है किसे दे दित्ते नई।

अक्ल कहीं बिकती नहीं—स्पष्ट है। तुलनीय : भोज० कुल बिकाय त बिकाय अकिकल ना बिकाय; पंज० अक्कल हीये ऊपजे दीया आवे डाभ; पंज० अकल नई विक सकदी।

अक्ल किसी के बाप की नहीं बुद्धि पर किसी का एकाधिकार नहीं है। वह किसी के भी पास हो सकती है। तुलनीय : गुज० अक्कल कोई ना बाप नी छे; पंज० अकल किसे दे पिओ दी नई; भोज० अकिकल पर केकरा बाप क इजारा; भीली अक्कल कणानी बाप नी है।

अक्ल की कोताही है, और सब कुछ है और सब कुछ तो है किन्तु अक्ल की कमी है। मूर्खों पर या धनी मूर्खों पर कहते हैं। तुलनीय पंज० है सब कुज सिरफ अकल दा काटा है।

अक्ल के धनी मूसला के नौ टका—जो व्यक्ति बातें तो खूब बनाये किन्तु काम कुछ न करे उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : कनौ० अकिकल के धनी मूसर के नौ टका।

अक्ल के पीछे लाठी लिये फिरते हैं- मूर्खों के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते है। तुलनीय : अक्कल कै पाच्छै लाट्ठी लियां फिरणां।

अक़्ल को पूछें सब, शक्ल न पूछे कोय—जिस व्यक्ति में बुद्धि नहीं होती उसे कोई नहीं पूछता चाहे वह कितना भी सुंदर क्यों न हो। यह लोकोक्ति प्रायः सौंदर्य पर गर्व करने वाले मूर्खों के प्रति कही जाती है। यों अन्य बहुत-सी लोकोक्तियों की तरह यह भी पूर्णतः सत्य नहीं कही जा सकती। तुलनीय : भीली— अक्कल ए पूचे आदमी ए कोयनी पूचे; पंज० अकल न पुछण मारे सकल न कोई नई; अं० Handsome is he who handsome does.

अक़्ल न मोल बिकाय—दे० 'अक़्ल कहीं बिकती नहीं';

अक़्ल न शक्ल, मूसल के दस टके—दे० 'अकल न शकल ...'।

अक़्ल बड़ी कि बहस—दे० 'अकल बड़ी या बहस...'।

अक़्ल बड़ी कि भैंस—दे० 'अक़्ल बड़ी या भैंस।'

अक़्ल बड़ी कि वैस—वैस (वयस आयु) में बड़ा होने से ही कोई वास्तव में बड़ा नहीं बन सकता। बड़ा वह होता है जिसकी बुद्धि बड़ी होती है। 'अक़्ल बड़ी या भैंस' का शब्द इस 'वैस' का विकार हो सकता है। तुलनीय : पंज० अकल बडी या उमर।

अक़्ल बड़ी या पैसा—अक़्ल बड़ी है, पैसा नहीं। अक़्ल से पैसा कमाया जा सकता है, किन्तु पैसे से अक़्ल नहीं खरीदी जा सकती। तुलनीय : गुज० अक्कल वळ के पैसा करतां वधारे उपयोगी छे; पंज० अकल बडी या पैहा।

अक़्ल बड़ी या बहस—किसी बात को ठीक समझना या बेकार की बहस करना। जो व्यक्ति समझते हुए भी ज़बरदस्ती बहस करते रहें उनके प्रति कहते हैं। 'अक़्ल बड़ी की भैंस' लोकोक्ति कदाचित् इसी का विकृत रूप है। 'बहस' का विकसित रूप 'भस' भ्रामक व्युत्पत्ति से 'भैंस' हो गया है। यों 'अक़्ल बड़ी या वयस' से भी उसके विकसित होने की संभावना कम नहीं है। तुलनीय : मरा० ज्याची अक्कल मोठी त्याचें व्याख्यान मोठें (त्याची म्हैस मोठी), हरि० अक्कल बड्डी के भैंस; पंज० अकल बडी या गल्लां बनाणां।

अक़्ल बड़ी या भैंस—कोई आवश्यक नहीं कि जो वस्तु ऊपर से देखने में बड़ी हो, वास्तव में भी वही बड़ी होती हो। बुद्धि भैंस जैसी बड़ी न होने पर भी वस्तुतः सबसे बड़ी है, क्योंकि उसकी सहायता से बड़े से बड़े काम हो सकते हैं। आशय यह है कि शारीरिक शक्ति से मानसिक शक्ति कहीं बड़ी है। तुलनीय : मरा० ज्याची अक्कल मोठी त्याची म्हैस मोठी; अव० अकिल बड़ी कि भइँस; भोज० अक्किल बड़ कि भइँस; गढ़० अक्कल बड़ी कि भैंस; मेवा० अक्कल बड़ी के भैंस; मल० पटवाळिनेक्काळ कूटुतल शक्ति तूलिकटक्काणुं; पंज० अकल वड्डी कि मज्ज; बुंद० अक्कल बड़ी कै भैंस; ब्रज० अक्ल बडी कि बहस; छत्तीस० अक्कल बड़े के भैंस; हाड़० अक्कल बड़ी क भैंस; निमाड़ी—अक्कल बड़ी की भैंस; अं० Knowledge is more powerful than mere strength.

अक़्ल बड़ी या लाठी—ऊपर देखिए।

अक़्ल बिना ऊँट उभाने फिरते हैं—दे० 'अक़्ल बिना ऊँट...'। (उभाने = नंगे पाँव)।

अक़्ल बिना कुआँ खाली—बिना बुद्धि के कोई काम नहीं होता, यहाँ तक कि कुएँ से पानी भी नहीं निकलता। तुलनीय : पंज० अक्लां बाझों खूह खाली।

अक़्ल बिना जीना मुश्किल—बिना बुद्धि के संसार में जीना कठिन है। तुलनीय : भीली—वगर अकले वगड़ गयो जमारो मनका नो; पंज० अकल बगैर रैणा औखा।

अक़्ल बिना राज भंग—छोटी-मोटी चीजों की कौन कहे, अक़्ल के बिना राज्य भंग (नष्ट) हो जाता है। तुलनीय: पंज० अकल बगैर राज खाली।

अक़्ल बेच कर खा ली है—बिल्कुल मूर्ख के प्रति कहते हैं कि इसने अपनी अक़्ल बेच दी है और अब इसके पास ज़रा भी बुद्धि नहीं है, इसीलिए मूर्खतापूर्ण कार्य करता है। तुलनीय : पंज० अकल बेच के खालई है।

अक़्लमंद को इशारा, अहमक़ को फिटकार—नीचे देखिए।

अक़्लमंद को इशारा काफ़ी—यह फ़ारसी लोकोक्ति का अनुवाद है। फारसी लोकोक्ति है—अक़्लमदांरा इशारा काफ़ी अस्त। अर्थात् बुद्धिमान के लिए इशारा काफ़ी है। तुलनीय : हरि० अकलमंद (बंद) ने इशारो काफ़ी; पंज० अकलमंद नूँ इशारा बड़ा; अं० A word to the wise.

अक़्लमंद को इशारा, मूर्ख को तमाचा—बुद्धिमान तो संकेत देने से ही समझ जाता है किन्तु मूर्ख की समझ में कोई बात बड़ी कठिनाई से आती है या वह बिना मारे नहीं समझता। तुलनीय : राज० अकलमंद नै इसारो घणो; पंज० अकलमंद नूँ इशारा काफ़ी; भोज० अकिलमन्न के इसारे बहुत; मरा० शहाण्याला सूचना मूर्खाच्या मुस्कटीत, शहाण्याला शब्दांचा मार; मूर्खाला होणाऱ्याचा, पंज० अकलमंद नूँ शारा मूरख नूँ चंड।

अक़्लमंद सदा दुःख पाय—बुद्धिमान व्यक्ति सदा दुःख पाते हैं। बुद्धि से ही सुख और दुःख जाना जाता है। मूर्ख व्यक्तियों को चाहे कुछ भी कहा जाय या उनसे कराया जाय उन्हें कोई परवाह नहीं होती। बुद्धिमान प्रत्येक बात को

सोचता है और समझता है इसी कारण दुःख पाता है। तुलसीदास ने कहा है 'सबसे भले विमूढ़ जिन्हिं न व्यापत जगत गति। तुलनीय : राज० विचारनै मार है; पंज० अकल-मंद सदा रोवे। दे० 'समझदार की मौत है'।

अक्ल विरासत में नहीं मिलती—यह आवश्यक नहीं कि बुद्धिमान माँ-बाप की संतान भी बुद्धिमान ही हो। तुलनीय : भीली—अक्कल कणानी बापनी नी है; गुज० अक्कल कोई ना बाप नी छे; पंज० अकल जमदे नई आंदी।

अक्ल से बकरी भी नौ बच्चे देती है—अर्थात् अक्ल या युक्ति से काम करने पर असंभव कार्य भी संभव हो सकते हैं। तुलनीय : अव० अकिल ते बोकरी नौ बच्चा देति।

अक्ल से खुदा को पहचाते हैं—नीचे देखिए।

अक्ल से भगवान मिलते हैं—बुद्धि से भगवान भी मिल जाते हैं। बुद्धि से असंभव कार्य संभव हो जाते हैं। तुलनीय : राज० अकल सूं खुदा पिछाणीजै; पंज० अकल नाल ही रब मिलदा है।

अक्ल से ही खाना मिलता है—मूर्ख व्यक्ति भूखों मरते हैं तथा जो जितना बुद्धिमान होता है वह उतना ही अधिक धन कमाता है या कमा सकता है। तुलनीय : भीली—अक्कलन् खावो है; पंज० अकल नाल ही रोटी मिलदी है।

अखाड़े का लतमरुवा पहलवान होता है—किसी भी क्षेत्र में लगातार लगा आदमी, प्रारंभ में बहुत कमज़ोर या पिछड़ा होने पर भी अन्त में सफल हो जाता है। (लतमरुवा = लातें खाने वाला) तुलनीय : भोज० अखाड़ा का लतमरुओ पहलवान हो जाला।

अखै तीज तिथि के दिना, गुरु होवै संजूत; तो भाखैं यों भड्डरी निपजै नाज बहूत—भड्डरी के अनुसार यदि वैशाख की अक्षय-तृतीया के दिन गुरुवार पड़ जाय तो अन्न बहुत होता है।

अखै तीज रोहिणी न होई, पौष अमावस मूल न जोई; राखी श्रवणों हीन बिचारो, कातिक पूनो कृतिका टारो। महि माहि खल बलहि प्रकासे, कहे भड्डरी सालि बिनासे—भड्डरी कहते हैं कि यदि रोहिणी नक्षत्र वैशाख मास की अक्षय तृतीया को न हो, मूल नक्षत्र पूस की अमावस्या को न हो, श्रवण नक्षत्र रक्षाबंधन को न हो और कृत्तिका नक्षत्र कार्तिक मास की पूर्णिमा तिथि को न हो तो धान की फ़सल नष्ट हो जाएगी तथा दुष्ट मनुष्य बलशाली होंगे। अर्थात प्रकृति के नियम मनुष्य मात्र के हित के लिए हैं।

अगर चावल न हो तो भात पका दो—हास्यास्पद या बहुत मूर्खतापूर्ण बात करने पर कहते हैं। तुलनीय : असमी—नाइ नाइ चाउल् पात्, बहाइ दे शूदा भात; पंज० चौल नईं है ते पत्त ही बना देओ।

अगर मानद शबे-मानद शबे-दीगर नमे मानद—थोड़ी देर की रौनक़ है, अगर रही तो एक रात, दूसरी रात नहीं रहेगी। अस्थायी महत्त्व की वस्तु पर कहते हैं।

अगला आग तो पछिला पानी—यदि कोई व्यक्ति क्रोध में हो तो दूसरे को शांत हो जाना चाहिए। एक शांत रहेगा तो दूसरा भी धीरे-धीरे शांत हो जाएगा। तुलनीय : भीली—आगलो आग तो आपा पाणी।

अगला करे पिछले पर आवे—(क) अगलों की भूल के लिए पिछलों को परेशानी उठानी पड़ती है। (ख) जब किसी के क़सूर का दंड बाद में किसी दूसरे को दिया जाय तो भी कहते हैं। (ग) बड़ों के कर्मों का प्रभाव छोटों पर भी पड़ता है। तुलनीय : पंज० अगला करे पिछला पर्रै।

अगला कहता हो तो आप चुप रहिए—दूसरे की बात नहीं काटनी चाहिए।

अगला लिया गया सहारा, अबका लिया आगे आया—अपने द्वारा किए गए पुराने कामों की प्रशंसा करने वालों से कहते हैं। आशय यह है कि जो किया सो किया, अब जो सामने है उसे करो। तुलनीय : पंज० अगला लिया गया सारा हुणदा लेदा अग्गे आवे।

अगला हल जैसे चलेगा पिछला भी वैसे ही चलेगा—समाज या घर के बड़े व्यक्ति, अगुआ या नेता आदि जैसा करेंगे उनके अनुयायी भी वैसा ही करेंगे। तुलनीय : भोज० जइसे अगिला हर चली वोइसही पछिलो चली। पंज० अगला चक्का जिवें चलेगा पिछला वी उवें ही चलेगा।

अगला हुआ पीछे, पिछला हुआ आगे—आगे वाला पिछड़ गया तथा पीछे वाला आगे हो गया। (क) संयोग से क्रम उलट जाने पर कहते हैं। (ख) जब अधिक आयु के व्यक्ति से कम आयु का व्यक्ति उन्नति कर जाय तो कहते हैं। तुलनीय : मैथ० अगिला भइली पछिला, पछिलो भइली अगिलो; भोज० अगिली भइल हेठ, पछिली भइल जेठ; पंज० अगला होया पिच्छे पिछला होया अग्गे।

अगली खेती आगे-आगे, पिछली खेती भागे जोगे—पहले बोए गए खेत या समय पर की गई खेती में लाभ होता है। देर की खेती कभी-कभार भाग्य से ही ठीक होती है, नहीं तो प्रायः उसमें पैदावार कम होती है। तात्पर्य यह है कि खेती या किसी भी काम में पिछड़ना ठीक नहीं। तुलनीय : भोज० आगे क खेती आगे-आगे पाछे क भागे जोगे।

अगली भई पिछली, पिछली परधान—दे० 'अगला

हुआ पिछला•••'।

अगली सोचें, पिछली बिगाड़ें -भविष्य के लिए वर्तमान का ध्यान न रखने वालों या भविष्य की रक्षा में वर्तमान को बिगाड़ने वालों के प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० अग्गे सोचो पिछली नूं छड्डो । दे० 'आगे पाठ, पीछे सपाट'।

अगली हेठ, पिछली जेठ दो पत्नियों में प्राय: बड़ी छोटी समझी जाती है (कम आदर पाती है) और नई होने के कारण छोटी पत्नी पति को अधिक प्रिय होती है अत: जेठी बन जाती है। बड़ी पत्नी का आदर कम तथा छोटी का अधिक होने पर कहते हैं।

अगले को घास नहीं, पिछले को पानी स्वार्थी या कंजूस के प्रति कहते है। अर्थात् वह न तो अपने परिवार के जीवित लोगों को खाना देता है, और न मरे लोगों को पानी (तर्पण)। तुलनीय : पंज० अगले नूँ का नई पिछले नूँ पाणी।

अगले पानी, पिछले कीच- कुएँ पर जो पहले जाता है पानी पाता है जो बाद मे जाता है पानी समाप्त हो जाने के कारण उसके हाथ कीचड लगती है। देर के कारण अपेक्षित वस्तु न मिलने या हानि होने पर कहते है। तुलनीय : अव० अगुआ के पानी पिछुवा के कीचड; पंज० उत्ते-उत्ते पाणी थल्ले गारा।

अगसर खेती अगसर मार, कहैं घाघ ते कबहुँ न हार कवि 'घाघ' के अनुसार सबसे पहले खेत बोने वाला और मारपीट में सबसे पहले हाथ उठाने वाला सदा लाभ मे रहते है।

अगस्त ऊगा मेह न मंडे, जो मंडे तो धार न खंडे—अगस्त नक्षत्र के उदय होने पर वर्षा की सम्भावना समाप्त हो जाती है, किंतु यदि वर्षा होने लगे तो रुकने का नाम नही लेती, अर्थात् काफ़ी पानी बरसता है।

अगस्त ऊगा, मेह पूगा - अगस्त नक्षत्र का उदय होना वर्षा ऋतु की समाप्ति मानी जाती है।

अगहन उपवास हो अकाल का क्या डर - यदि अगहन में ही उपवास की स्थिति आ गई तो अकाल से क्या डरना? वह तो आएगा ही। यह लोकोक्ति धान वाले इलाकों मे ही विशेष प्रचलित है जहाँ की प्रमुख फसल अगहन में ही होती है। तुलनीय : मैथ० अगहन उपास काल क कोन डर।

अगहन जो कोउ बोवें जौवा, होई तो होई नहिं खावें कौआ -- जौ यदि अगहन मास में बोया जाय तो उसके उत्पन्न होने की कोई आशा नही रहती और यदि थोड़े-बहुत हो भी तो कौवे उसे खा जाते हैं। अर्थात् अगहन में जौ नहीं बोना चाहिए।

अगहन दाल का, अदहन—अगहन मास के दिन उसी तरह शीघ्रता से निकल जाते हैं जैसे दाल का अदहन बहुत जल्दी उबल जाता है। अर्थात् दिन बहुत छोटे होते हैं। तुलनीय : बुंद० अगहन दार को अदहन। (अदहन —खौलता हुआ पानी)।

अगहन दूना, पूस सवाई, माघ मास घर से भी जाई—अगहन के महीने में वर्षा होने से दुगुनी पैदावार होती है, पूस में होने से सवाई होती है और यदि माघ में वर्षा हो तो घर से भी देना पड़ता है, अर्थात् बीज के बराबर अन्न भी घर नहीं आता। तुलनीय : मैथ० मास घरहूँ से जाई; भोज० अगहन बरसे दूना, पूस बरसे सवाई, माघ मे बरसे घरहूँ से गँवाई।

अगहन द्वादश मेघ उखाड़, असाढ़ बरसे अछना धार—अगहन मास की द्वादशी को यदि आकाश में बादल छाए रहें तो आषाढ़ मास में बहुत वर्षा होती है।

अगहन बवा, कहूँ मन कहूँ सवा—अगहन मास में बोने से गेहूँ और जौ की फसल खराब हो जाती है और पैदावार बहुत कम होती है।

अगहन में उपवास का क्या डर?—दे० 'अगहन उपवास हो•••'।

अगहन में चूहे भी सात जोरू रखते हैं—अगहन में खाने की कमी नही रहती। यह लोकोक्ति उन प्रदेशों में प्रचलित है जहाँ की प्रमुख पैदावार धान है। धान की फ़सल प्राय: अगहन में ही कटती है। उस समय इतना खाने को हो जाता है कि चूहा भी संपन्न व्यक्ति की भाँति सात पत्नियों का भरण-पोषण कर सकता है। तुलनीय . मैथ० अगहन में मुसवो के सात जोरू; भोज० अगहन में मूसवो सातगो मेहरारू रखेला; पंज० अगहन बिच चूहे वी सत रनां रखदे हन।

अगहन में छोटे भी मोटे हो जाते हैं -- (क) अगहन महीने में धान की फ़सल कटती है, इसलिए ग़रीब-से-ग़रीब व्यक्ति का भी पेट भर जाता है और खाने की तकलीफ़ नही होती। (ख) क्षुद्र व्यक्ति थोड़ी ही संपत्ति पाने पर जब इठलाने लगता है तो भी इस लोकोक्ति का प्रयोग करते हैं। तुलनीय : भोज० आइल अगहन रांड़ मोटइली; पंज० अगहन बिच निक्के वी वड्डे हो जांदे हन।

अगहन में ना दो थी कोर, तेरे बैल क्या लेगए थे चोर—तुमने अगहन मास में अपने ईख के खेत को क्यों नहीं जोता? क्या उस समय तुम्हारे बैलों को चोर ले गए थे? अर्थात् क्या उस समय तुम्हारे पास बैल नही थे। आशय यह है कि अगहन में खेत की जुताई न करने से ईख की खेती अच्छी नही होती।

अगहन में सरवा भर, फिर करवा भर— फ़सल के लिए

अगहन के महीने का एक कटोरा पानी उतना ही लाभप्रद होता है जितना दूसरे महीने का एक लोटा। अर्थात् अगहन महीने का पानी फ़सल के लिए काफी लाभदायक होता है। तुलनीय : पंज० अगहन बिच कटोरा फिर गड़ुवा। (सरवा = कटोरा, करवा = गड़ुआ)।

अगाई सो सवाई—पहले बोई जाने वाली फ़सल से अधिक अन्न उत्पन्न होता है। तुलनीय : भोज० आगे खेती जागे।

अगाड़ी तुम्हारी, पिछाड़ी हमारी—आगे का हिस्सा तुम्हारा और पीछे का हमारा। ऐसे स्वार्थी व्यक्ति के प्रति कहते हैं जो लाभ की चीज़ तो स्वयं लेना चाहे और व्यर्थ की चीज़ दूसरों को देना चाहे या दूसरों को दे। इस संबंध में एक कहानी है जो इस प्रकार है : दो भाइयों ने साझे में भैंस खरीदी। उनमें से एक बड़ा चालाक था। उसने दूसरे से कहा - हम लोग भैंस का बँटवारा कर लें तो काफी अच्छा रहेगा। ऐसा करने से हम लोगों में कभी झगड़ा नहीं होगा। भैंस का अगला भाग तुम ले लो और पीछे वाला मुझे दे दो। दूसरे ने इस बँटवारे को स्वीकार कर लिया। इस प्रकार वह भैंस को खिलाता-पिलाता और दूसरा भाई दूध निकाल (दुह) लिया करता। तुलनीय : बुंद० अगारी तुमाई पछारी हमाई; ब्रज० अगाई तुम्हारी पिछाई हमारी; पंज० अगली माड़ी पिछली तुआड़ी; ब्रज० अगारी तेरी पिछारी मेरी।

अगिन कोन जो बहे समीरा, पड़े काल दुख सहे सरीरा—अग्नि कोण (दक्षिण-पूर्व) से वायु चलने पर अकाल पड़ता है, अतः खाने को नहीं मिलता और जीवन कष्टमय हो जाता है।

अगिनि धूम गिरि सिर तृण धरहीं—महान् व्यक्ति साधारण जनों का भी आदर करते हैं, जैसे आग अपने सर पर धुएँ तथा पर्वत घास-फूस को स्थान देते हैं।

अग्गम बुद्धि बानिया पच्छस बुद्धि जाट नीचे देखिए।

अग्रम बुद्धि बनिया, पच्छम बुद्धि जाट -बनिये की तीव्र होती है और जाट की मंद। अर्थात् बनिया दूरदर्शी होता है और जाट में दूरदर्शिता का अभाव होता है। तुलनीय : हरि० अगम् बुद्धि बाणिया पच्छिम् बुद्धि जाट; राज० अग्गम बुद्धी बाणियो पिच्छम बुद्धी जाट, तुरत बुद्धि तुरकड़ो, बाँमण सपम पाट; बुंद० अग्गम मांचे बानियाँ।

(1) **अग्रसोची सदा सुखी**—पहले से सोच-विचार कर काम करने वाला सदा सुखी रहता है।

अघाई केवटिन मछली से चूतड़ पोंछे—किसी वस्तु से तृप्त हो जाने या उसे अत्यधिक मात्रा में प्राप्त कर लेने पर उसका दुरुपयोग करनेवाले के प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : छत्तीस० अघाय केवटिन चिंगरी माँ कुला पोछै (चिंगरी = एक छोटी मछली; कुला = चूतड़।)

अघाई बिल्ली पूंछ से खीर टारे—पेट भर जाने पर बिल्ली खीर को भी पूँछ से टाल देती है। मन जब तृप्त हो जाता है तब अच्छी से अच्छी वस्तु भी पसंद नहीं आती। तुलनीय : भोज० उमठली बिलार तऽ पोंछी से जाउर टरली; पंज० रज्जी दी बिल खीर नू वी दुंब नाल परे करे; सं० अपांहि तृप्ताय न वारिधारा स्वादुः सुगन्धिः स्वदते तुषारा - नैषधीय चरितम्

अघाना बगुला पोठिया तीत—बगुले का पेट जब भर जाता है तो उसे पोठिया (एक छोटी जाति की मछली) कड़वी लगती है। पेट भरे को अच्छी से अच्छी चीज़ भी कड़वी लगती है। तुलनीय : भोज० अघाइल बकुली के मछरी तीन; मग०, भोज० अघाइल बकुला पोठिया तीत।

अघाया बगुला तीस मछली का कलेवा - पेट भरा होने पर भी तीस मछली का नाश्ता करता है। अधिक भोजन करने वालों के लिए मज़ाक में कहते है। तुलनीय : भोज० अघइलो भँइँसा नौ कट्ठा चरे।

अघाया भैंसा तब भी नौ कट्ठा- ऊपर देखिए।

अचार के से घड़े—वह मनुष्य जिसकी किसी से भी नही पटती और जो सर्वदा उसी कारण बहिष्कृत रहता है। (अचार का बर्तन अलग रखा जाने के कारण उसके फूटने का, तथा फूटने पर उसकी हानि का भय रहता है)। फूटने पर अचार तो खराब होगा ही, आसपास की चीजें भी तेल के कारण खराब हो जाएँगी। उल्लेखनीय है कि यह लोकोक्ति तब की है जब लोग मिट्टी के घड़े में अचार रखते थे। अब तो टिन, शीशे आदि में भी रखने हैं। तुलनीय : पज० चाटी जिहे दो कड़े।

अच्छत थोड़ा, देवता अधिक--कम सामान और चाहने वाले अधिक। तुलनीय : मैथ० अछत थोर देवता बहुत; भोज० तनकी सा अछत एक लेहँड़ा देवते; पंज० अक्षत कट देवता मते।

अच्छा करो अच्छा पाओ- जो अच्छा काम करता है उसी को अच्छा फल भी मिलता है। तुलनीय : मल० वित-च्चते कोच्यू; पंज० चंगा करो चंगा लवो; अं० As you sow, so must you reap.

अच्छा करो तो भी लोग जानें बुरा करो तो भी – व्यक्ति का नाम बुरे तथा अच्छे दोनों ही तरह के कामों से होता है। तुलनीय : मैथ० कुकुरिय नाँव कि सुकुरिय नाँव; भोज० नीक

करऽ तबो नाँव, जबू न करऽ तबो नाँव; पंज० चंगा (नेकी) करो तां वी लोकी जानण बुरा करो तां वी ।

अच्छा किया खुदा ने, बुरा किया बन्दे ने — (क) ईश्वर-कृत सभी कार्य अच्छे होते हैं । (ख) कृतघ्न के प्रति भी कहा जाता है जो किसी का अहसान नहीं मानता । तुलनीय : पंज० चंगा कीता रब ने माड़ा कीता मनुख ने; मरा० देवानें चांगलें केलें भक्तानें वाईट केलें ।

अच्छी नीयत अच्छी बरकत — जिस व्यक्ति के विचार अच्छे होते हैं उसका जीवन अच्छे ढंग से व्यतीत हो जाता है । तुलनीय : हरि० नीत साब्बत्य तै मजयल आसान; उर्दू — नीयत साबित, मंज़िल आसान; पंज० चंगी नीत चंगी बरगत ।

अच्छा भया गुड़ सत्रह सेर — जब कोई वस्तु बहुत सस्ती हो जाय तो कहते हैं ।

अच्छा हो या बुरा हमारी कौन सगाई करेगा — जिस व्यक्ति से अपना कोई संबंध न हो वह अच्छा हो या बुरा हो उससे हमें क्या अंतर पड़ता है ? तुलनीय : भीली — हाऊ भूडा कई धोई ने थोड़ू पीवे; पंज० चंगा होवे या माड़ा साडी कुडमाई कौण करेगा ।

अच्छी-अच्छी मेरे भाग बुरी-बुरी बाम्हन के लाग — जब कोई व्यक्ति किसी अच्छे काम का कारण स्वयं को बताये और यदि कोई काम बिगड़ जाय तो उसका दोष दूसरों पर थोप दे तो उसके प्रति कहते हैं । तुलनीय : हरि० आच्छी आच्छी मिरी के भाग ना मरियो नाई बाह्म्मण ।

अच्छी मेरी झोंपड़ी, जहाँ मिले घी औ रोटी — ऊपर देखिए ।

अच्छी मेरी टाटी, जहाँ मिले घी औ बाटी — खाने-पीने का सुख हो तो झोंपड़ी में रहना सुखकर है । इसके विपरीत महल में रहना भी कष्टकर है यदि वहाँ खाने-पीने का आराम न हो । तुलनीय : मार० आछी मारी टाटी, जठे मले घी बाटी ।

अच्छे आदमी को एक बात और अच्छे घोड़े को एक चाबुक — भला आदमी एक बार कहने से काम कर देता है और अच्छा घोड़ा एक चाबुक मारने से दौड़ने लगता है । अर्थात् नीचों या बुरों को बार-बार कहना पड़ता है पर अच्छों को एक बार । तुलनीय : भोज० भल मनई के एगो बात, भल घोड़ा के एगो लात; पंज० चंगे मनुख अग्गे इक गल, चंगे कोड़े अग्गे इक लत्त ?

अच्छे का भाई, बुरे का जमाई — अर्थात् मैं अच्छे के लिए भाई के समान सहायक हूँ किंतु बुरे के लिए जमाई के समान चूसनेवाला हूँ । जब किसी सज्जन से दुष्ट व्यक्ति उलझता है तो धमकी के रूप में सज्जन व्यक्ति दुष्ट से यह कहता है । तुलनीय : पंज० चंगे दा परा पैड़े दा जवाई । भोज० नीकक भाई जबून क जमाई; अथवा अच्छा के भाई खराब क जमाई ।

अच्छे को भगवान भी पूछते हैं — भले या सज्जन व्यक्ति अधिक दिन तक नहीं जीवित रहते । तुलनीय : हरि० स्याह पुरस्याँ का जीवणा थोड़े दिन का हो ।

अच्छे घर बयाना दिया — अच्छे (इस प्रसंग में बुरे) आदमी से उलझ पड़े । (क) जब कोई भला आदमी किसी दुष्ट से उलझ पड़े तो व्यंग्य में कहते हैं । (ख) जब कोई व्यक्ति अपने से काफी सबल या संपन्न व्यक्ति से शत्रुता कर लेता है तब भी ऐसा कहते हैं । यहाँ 'बयाना देने' का अर्थ है झगड़े के लिए बुलाना । तुलनीय : भोज० नीक घरे बैना दिहला; मरा० चांगल्या घरी बयाणा दिला; पंज० चंगे कर बयाना दिता ।

अच्छे दर्पण में भी बुरा मुँह अच्छा नहीं दीखता — आशय यह है कि लाख प्रयत्न करने पर भी दुष्ट मनुष्यों की दुष्टता नहीं जाती जिस प्रकार कि दर्पण चाहे कितना भी अच्छा क्यों न हो फिर भी उसमें कुरूप व्यक्ति सुंदर नहीं दीख सकता । तुलनीय : पंज० साफ सीसे बिच वी मुह सोहणा नई लबदा ।

अच्छे फूल महादेवजी पर चढ़ें — भगवान शंकर पर अच्छे फूल चढ़ाए जाते हैं । (क) अच्छी चीज़ों के ग्राहक बड़े लोग होते हैं । (ख) बड़े लोगों को भेंट भी अच्छी मिलती है । तुलनीय : राज० आछा फूल महेश चढे; पंज० सोहणे फुल महादेव उत्ते चढण ।

अच्छे-बुरे में चार अंगुल का फ़र्क़ है — आँख और कान में चार अंगुल की दूरी है, इसीलिए देखने-सुनने में भी चार अंगुल का अंतर है । केवल सुनकर किसी के बारे में अच्छी या बुरी धारणा नहीं बनानी चाहिए जब तक कि उसे देखकर आज़मा न लिया जाए । तुलनीय : भोज० नीक जबून में चार अँगुर का फ़रक होला अथवा नीक जबून में थोरिके आँतर; पंज० चंगे माड़े बिच चार उंगल दा फर्क है ।

अच्छों के अच्छे ही होते हैं — नेक लोगों की संतान भी नेक होती है ।

अज़ खुर्दां ख़ता ओ अज़ बुज़ुर्गां अता — छोटों का काम ग़लती करना और बड़ों का काम क्षमा कर देना है । देखिए 'क्षमा बड़न को चाहिए...' ।

अजगर करे न चाकरी पंछी करे न काम — अजगर किसी की चाकरी (ग़ुलामी) नहीं करता तथा पक्षी कोई

काम नहीं करते फिर भी भगवान उनको भोजन देते हैं। प्रायः आलसियों या निकम्मों के प्रति व्यंग्य से ऐसा कहते हैं, क्योंकि वे भी बिना काम किए ही खाते-पीते हैं। मलूकदास का पूरा दोहा इस प्रकार है :

अजगर करे न चाकरी पंछी करे न काम।
दास मलूका कह गए सबके दाता राम।।

इस अर्थ में भी यह लोकोक्ति प्रयुक्त होती है कि भगवान् ही सबका दाता है।

अजगर के दाता राम —ऊपर दिए गए छंद का संक्षिप्त रूप। अजगर एक ही स्थान पर पड़ा रहता है। उससे चला-फिरा नहीं जाता, फिर भी उसको भगवान् भोजन देता है। अर्थात् जो संसार में आया है उसके भोजन का प्रबंध भगवान करते हैं। तुलनीय : भोज० अजगर के दाता राम; राज० अजगर पड़ी उजाड़ में दाता देवणहार; अव० अजगरे क दाता राम; बंग० अजगरेर दाता राम, पंज० अजगर दा दाता राम।

अजगर के भछ राम दिवैया —ऊपर देखिए। (भछ= भक्षण करने की चीज़, अर्थात् भोजन)।

अजगर को कौन आहार देता है ?— अर्थात् भगवान ही सबका प्रबंध करते हैं। तुलनीय : भोज० का अजगर के केहू अहार देला ? पंज० अजगर नूं रोटी कौण देंदा है।

अजगर को भख राम देवैया—दे० 'अजगर के दाता राम।'

अज़दीदा दूर अज़ दिल दूर —नज़र से दूर होने पर दिल से दूर हो जाता है।

अजब तेरी क़ुदरत अजब तेरा खेल भगवान की लीला विचित्र है। संसार की विचित्रता पर या कोई विचित्र बात देखकर ऐसा कहते हैं। यह एक शेर की प्रथम पंक्ति है। दूसरी पंक्ति है 'छछूंदर के सिर में चमेली का तेल'। तुलनीय : बग० वा तेरा कुदरत वा तेरा खेल, छछूंदर लगाये चमेली का तेल, पंज० रब तेरी लीला न्यारी।

अजा-कृपाणीय न्याय —एक बार एक बकरा कहीं जा रहा था। राह में कहीं एक कृपाण लटक रही थी। अचानक कृपाण गिरी और बकरे की गर्दन कट गई। किसी पर अचानक ही कोई विपत्ति आ जाने पर ऐसा कहते हैं।

अजा-गलस्तन न्याय —बकरी के गले के थन की तरह जो वस्तु किसी काम भी न आये और व्यर्थ में भार भी हो उस पर कहते हैं।

अजातपुत्र नामोत्कीर्तन न्याय— बिना पुत्र के पैदा हुए ही उसके नामकरण का उत्सव मनाया जा रहा है। जब किसी कार्य के होने की आशा में ही उत्सव के बहुत से आयोजन किए जाएँ तो व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : भोज० पेड़ पर कटहर मुँह में तेल।

अजीरन को अजीरन ठेले, नहीं तो सिर चौहट्टे खेले— बलवान का सामना बलवान ही कर सकता है। निर्बल बलवान का सामना करे तो बेमौत मारा जाय। इस लोकोक्ति का आधार यह लोक विश्वास है कि ज़्यादा खाने से अजीर्ण रोग दूर हो जाता है। तुलनीय : सं० विषस्य विषमौषधम।

अजी राम का नाम लो— जिस कार्य के होने की संभावना न हो और किसी को उसके होने की पूरी आशा हो तो उसके भ्रम को तोड़ने के लिए कहते है, 'अजी राम का नाम लो' अर्थात् यह काम कभी नहीं हो सकता। तुलनीय : पंज० रब दा नां लो जी।

अज्ञानी और अंधे बराबर —मूर्खों के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गुज० अजाण्यो ने आँधणो बराबर; भोज० आन्हर अज्ञानी से नीक होला; पंज० अन्ने अते अग्यानी इको जिहे।

अज्ञानी किसी से नहीं डरते मूर्खों के पास बुद्धि नहीं होती इसलिए वे किसी भी व्यक्ति से डरते नहीं। तुलनीय : मल० अज्ञन् अभीतनाणु; अं० They that know nothing fear nothing.

अज्ञानी धन चाहता है और ज्ञानी गुण—मूर्ख व्यक्ति धन को अधिक महत्त्व देते हैं और बुद्धिमान लोग गुण को। तुलनीय : मल० अज्ञनाशिप्पू धनम् विज्ञनो गुणम् मात्रम्; पंज० अज्ञानी नूं पैहा चाइदा अते ग्यानी नूं गुण; अं० The foolish seek wealth, the wise perfection.

अटक पर आए कार, वही है सच्चा यार -अटक या कठिनाई में जो काम आए वही सच्चा दोस्त है। अच्छे दिनों में तो सभी अपने होते हैं किंतु विपत्ति में जो काम आए वही यथार्थतः अपना है। रहीम ने लिखा है :

रहिमन बिपदा हूँ भली जो थोड़े दिन होय।
हित-अनहित या जगत में जान परत सब कोय।।

तुलनीय : भीली—अड़्य्ये भड़्य्ये आडो आवे जो हगो है; पंज० मौके उत्ते आवे कम ओ ही सच्चा यार; अं० A friend in need is a friend indeed; Adversity is the touchstone of friendship.

अटकल का फ़ातिहा—फ़ातिहा (क़ुरान की पहली सूरत या अध्याय) मुसलमान मृत्यु के समय पढ़ते हैं। जब कोई

अता-पता न हो और यों ही ऊटपटाँग कल्पनाएँ की जायँ तो व्यंग्य से कहते है।

अटकलपच्चू ग़ैर मुक़र्रर—अटकल से कही गई बात निश्चित नही होती।

अटकलपच्चू डेढ़ सौ—जब कोई व्यक्ति बिना किसी आधार के टेढ़ा-सीधा अनुमान लगाए तो कहते हैं। तुलनीय: मैथ० उटकर पंचे डेढ़ सौ; भोज० अंटकर पच्चे डेढ़ सौ; बुद० अटककर पच्चूँ डेढ़ सौ। कभी-कभी 'अटकलपच्चू डेढ़ सौ हाँकना' का मुहावरे के रूप में भी प्रयोग होता है।

अटकलपच्चे साढ़े बाइस—ऊपर देखिए।

अटका बनियाँ देय उधार—बनिया तभी उधार देता है जब वह फँसा होता है। या तो इसे बनिये के ऊपर कहते है, या तब कहते है जब कोई स्वार्थी व्यक्ति अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए किसी की सहायता करता है। तुलनीय: भोज अटकल बनियाँ देय उधार; अटकल बनिया लटकल तउले; मरा० अडला वाणी उधार देई; व्रज० कनौ० अटको बनिया देय उधार; छत्तीस० अटके बनिया नौ सेरिया; हरि० अटक्या बाणिया दे उधार्य; : पंज० फसया बनियाँ देवे उधार।

अटका बनिया लटका तौले—ऊपर देखिए।

अटका बनिया सौदा करे—दे० 'अटका बनियाँ देय···'।

अटकेगा सो भटकेगा—शक्की आदमी अपने शक के कारण हानि उठाता है। तुलनीय: मरा० जो अटकेल तो भटकेल; पंज० फसेगा सो मरेगा।

अटक्या बनियाँ देय उधार—दे० 'अटका बनियाँ···'।

अठारह से ऊपर दाँव नहीं, माणा से ऊपर गाँव नहीं—('माण' गाँव बद्रीनाथ से भी आगे गढ़वाल की सीमा का अंतिम गाँव है)। यदि किसी कार्य को सिद्ध करने के लिए एड़ी-चोटी का ज़ोर लगा दिया जाय तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय: गढ़० अठारा माथ दौ नी, माणा माथ गौं नी; पंज० अठारां तो उत्ते दां नई माणा तो उत्ते पिंड नई।

अड़ते से अड़ जाइए, चलते से चल दूर—जो जैसा हो उसके साथ वैसा ही बर्ताव भी करना चाहिए। तुलनीय: भोज० अड़े से अड़ जा, नवे से नव जा; पंज० अड़या ते अड़या चलया ते चलया।

अड़सठ तीरथ कर आई तोमड़ी, तो भी न गई कड़वाई—अच्छी संगत करने पर भी जन्मगत दोष नही मिटते। तोमड़ी (तितलौकी का बना कमंडल जिसका साधु लोग प्रयोग करते हैं) सदा कड़वी ही रहती है।

अड़हा के लिए रोक ही रोक—रुकने वालों के लिए रुकावटों की कमी नही। तुलनीय: छत्तीस० अड़हा के लेखे डडहे डडहा; हरि० साब्बण तै न्हवाए तै के काळा धौळा बणै सै; पंज० अडण वाले लई कंडे ही कंडे।

अड़ी-धड़ी क़ाज़ी के सिर पड़ी—क़ाज़ी या न्यायाधीश पर ही भलाई-बुराई पड़ती है। अर्थात् जो सोचता-विचारता है दुःख उसी के हिस्से आता है। तुलसी ने लिखा है—सबते भले विमूढ़ जिनहिं न व्यापत जगत-गति। तुलनीय: पंज० आजा के काजी दे सिर उत्ते पैयी।

अड़े तो अड़िए, हँसे तो हँसिए—जो जैसा करे उसके साथ वैसा ही करना चाहिए। तुलनीय: पंज० जिवें कोई आखें उवें रहो।

अढ़ाई दिन की बादशाहत—(1) कम दिन की प्रभुता या अस्थायी प्रभुता। (2) दे० नीचे। यह लोकोक्ति बंगाली में भी इसी रूप मे प्रयुक्त होती है जो स्पष्टतः हिन्दी का प्रभाव है। तुलनीय: पंज० ढाई दिनां दा राज।

अढ़ाई दिन की सक्के ने भी बादशाहत कर ली—इस लोकोक्ति का आधार एक कहानी है जो इस प्रकार है: एक बार बादशाह हुमायूँ की प्राण-रक्षा बच्चा सक्का नामक भिश्ती ने की थी। हुमायूँ ने इसके बदले उससे कुछ माँगने को कहा तो सक्के ने उत्तर दिया कि 'हुजूर मैं भी बादशाह बनना चाहता हूँ।' कुछ दिनो बाद हुमायूँ ने उसे थोड़े समय के लिए बादशाह बनाया था। (क) जब कोई व्यक्ति संयोगवश थोड़े समय के लिए किसी ऊँचे पद पर पहुँच जाए और सब पर अपना रौब जमाए तो उस पर व्यग्य में ऐसा कहते हैं। (ख) किसी व्यक्ति के अस्थायी उत्कर्ष पर भी व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय: बंग० अढ़ाई दिनेर बादशाही अढाई दिन की बादशाही; हरि० गधा अढ़ै ढाई दिन।

अढ़ाई हाथ की ककड़ी, नौ हाथ का बीज—बेतुकी या असंभव बात पर कहते है। तुलनीय: भोज० अढ़ाई हाथ क ककरी, नौ हाथ क बीया।

अणुरपि विशेषोऽध्यवसाय करः—दो या दो से अधिक वस्तुओं में रहने वाला थोड़ा अंतर भी इस तथ्य को सूचित कर देता है कि संबधित वस्तुओं में क्या और कितना अलगाव है।

अताई नाख़ताई, जब जी में आई तोड़ खाई—ऐसी चीज़ पर कहा जाता है जो अपने अधिकार में हो तथा जिसका इच्छानुसार कभी भी उपभोग किया जा सके। तुलनीय: पंज० कर दी खेती है जदों जी करे वड लवो।

अति और नारायण से बैर है—सीमा का अतिक्रमण

अच्छा नहीं होता। ऐसा करने वालों से भगवान भी रुष्ट हो जाते हैं। तुलनीय : मरा० अतिशयेतशी नारायणचें वैर आहे; अव० अत्त रामौ से नाँय सहि जात; सं० अति सर्वत्र वर्जयेत्; गुज० अतिशय माँ सार नहीं; राज० अंत खुदा बैर है; पंज० मीमा अते नरायण विच बैर है।

अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप—अधिक वर्षा भी हानिप्रद है और अधिक धूप भी। कोई भी कार्य सीमा से अधिक होने पर हानि पहुँचाता है। पूरा छंद है :

अति का भला न बरसना, अति की भली न धुप्प।
अति का भला न बोलना, अति की भली न चुप्प।।

तुलनीय : अव०

अत का भला न बरसना, अत का भला न धूप।
अत का भला न बोलना, अत का भला न चूप।।

मरा० अतिशयोक्तिनीचे बोलणें चांगले नाही, आणि अगदी गप्प बसणेंही चांगले नाही; गढ़० अत्ती जो खत्ती; गुज० अतिशय मां सार नही; पंज० मता बरना चंगा नई मती तुप वी चंगी नई; ब्रज० अति कौमलौ न बरसिबो अति की भली न चुप्प; मल० अधिकमायाल् अमृतुम् विषम्; अं० Extremes are ever bad; Too much of anything is good for nothing; Excess of everything is bad.

अति का भला न बोलना अति की भली न चूप—ऊपर देखिए।

अति की इज्जत भगवान बचाए—अति करने वाले की इज़्ज़त का बचना मुश्किल है। तुलनीय : भोज० अति क पन भगवाने राखसें; पंज० मती इज्ज़त वाले नूं रब बचाए!

अति दर्पण हता लंका—अधिक अभिमान करने से अभिमानी का नाश उसी प्रकार हो जाता है जैसे लंका का हुआ था। तुलनीय : अव० अती किहे से लंको गारद होय गवा; भोज० अतिये से लंको ढहल।

अति दुखिया को दुख नहीं—दुख अधिक पड़ने पर सहन करने की आदत पड़ जाती है, अतः अधिक से अधिक कष्ट का भी अनुभव नहीं होता। 'ग़ालिब' का शेर है :

रंज से खूगर हुआ इन्साँ तो मिट जाता है रंज।
मुश्किलें मुझ पर पड़ी इतनी कि आसाँ हो गईं।

अति परिचय अनादर का कारण है—नीचे देखिए।

अति परिचय ते होत है सदा अनादर भाय—अधिक परिचय से अनादर होने लगता है। तुलनीय : सं० अति-परिचयादवज्ञा; अति परिचय अनादरों भवति; राज० आधा रह्याँसूं हेत वधै; गुज० अहुभेणा साराथी अनादर थाय छै; मल० एरे प्रियम् अप्रियम; पंज० मते मिलण नाल पयार कट हो जांदा है; अं० Too much Familiarity breeds contempt.

अति परिचयादवज्ञा ऊपर देखिए।

अति प्यार, लड़का बिगाड़—अधिक प्यार से लड़का बिगड़ जाता है। तुलनीय. गुज० अतिशे लाड़थी छोकरां बगड़े; पंज० मता पयार मुंडे दा बगाड़; अं० Spare the rod and spoil the child.

अति बड़ि घरनी को घर नहीं, अति बड़ि सुंदरि को बर नहीं—किसी के लिए बिल्कुल उपयुक्त चीज संसार में कभी नहीं मिलती।

अति भक्ति चोर के लक्षण—किसी के प्रति अत्यधिक भक्ति-भाव दिखाकर उसका विश्वास प्राप्त कर लेना चोर का लक्षण है। अति अच्छी चीज नहीं है। तुलनीय : बंग० अति भक्ति चोरे लक्षन; असमी अति भक्ति चोरर लक्षण; सं० अति सर्वत्र वर्जयेत्, कनो०, ब्रज० अति की भगताई चोर को लच्छन; मरा० अतिशय भक्ति चोराचे लक्षण; भोज० बहुत भगताई चोर क लच्छन; पंज० मती पगती चोर दे लषण; अं० Too much courtesy, too much craft.

अति लाड़, बड़ी खाड़—अधिक प्यार करने से बच्चे हों या बड़े, बिगड़ जाते हैं। तुलनीय : गढ़० अतीलाड़, बड़ी खाड़; पंज० मता लाड अकल दा खो।

अति संघर्ष करै जो कोई अनल प्रगट चंदन ते होई—बहुत अधिक रगड़ने से चंदन जैसे शीतल पदार्थ से भी अग्नि उत्पन्न हो जाती है। (क) अधिक परेशान करने से शांत और सज्जन पुरुष भी क्रोधित हो जाते हैं। (ख) किसी काम को करने पर उतारू हो जाने से असंभव भी संभव हो जाता है। यह लोकोक्ति तुलसी के दोहे की एक अर्धाली है।

अतिसय रगर करे जो कोई अनल प्रगट चंदन ते होई—ऊपर देखिए।

अतिसय रग्र करे जो कोई, अनल प्रगट चंदन ते होई—दे० 'अति संघर्ष करे जो…'।

अति सर्वत्र वर्जयेत्—किसी भी काम में अति या मर्यादा का उल्लंघन नहीं करना चाहिए। तुलनीय : असमी अति हाँहि अति कान्ना, कै गैछे रामचन्ना; गुज० अतिशय मां सार नहीं; भोज० अत का पत भगवान राखसु; मल० अधिकमायाल् अमृतुम् विषम् (दोषम्); माल० घणा हेत

टूटवाने मोटी आँख फूटवाने; कन्न० अति स्नेह मति केडिसितु; अं० Excess of everything is bad; Too much of everything is bad; Too much of everything is good for nothing.

अति सोए रंग पीत हो, अति बोले पछितात—अधिक बोलने से मनुष्य को पछताना पड़ता है और अधिक सोने से मनुष्य का रंग पीला पड़ जाता है। अर्थात बहुत बोलना और सोना अच्छी बात नहीं है। तुलनीय : पंज० मता सोण नाल रंग पीला पै जांदा है, मता बोलण वाला पछतांदा है।

अतीथ न फ़कीर, झूठे आडम्बर—न कोई अतिथि आया है और न ही कोई भिखारी और आतिथ्य का ढोंग रच रखा है। व्यर्थ का ढोंग करने पर ऐसा कहते है। तुलनीय : मैथ० अथीथ न फ़कीर परपोंगा; भोज० अतीथ न फँकीर झूठ-मूठ क टंट-घंट; अतीथ न फकीर परपोंगा। ('अतीथ' जाति विशेष है जो 'गोसाई' भी कहलाती है तथा प्रायः गेरुवा वस्त्र पहनती है। परपोंगा—बहुत (प्र) पोंगा। एक मत के अनुसार 'परपोंगा' 'पुरुषपुंगव' का विकास है। 'पोंगा' तो 'पुंगव' से ज्ञात होता है पर 'पर' 'पुरुष' का विकास नहीं लगता। मेरे विचार में यह 'प्र' से संबद्ध है।)

अतीथ मंत्री कड़वी लौकी ही बोने को कहेगा—'अतीथ' जाति विशेष है जिसके साधु गेरुआ वस्त्र पहनते है तथा कड़वी लौकी को खोखला करके तुंबा बना लेते है जिसमें जल रखते हैं। अर्थात् व्यक्ति का जातिगत स्वभाव नही जाता, या जिसे जो चीज प्रिय होती है, वह चाहता है कि सब को वही प्रिय हो। तुलनीय : मैथ०, भोज० अथीथ या अतीथ मंत्री बोआवे तितलौकी।

अतो भ्रष्टस्ततो भ्रष्ट—जो अब भ्रष्ट है वह तब भी भ्रष्ट रहेगा अर्थात् जो एक बार भ्रष्ट हो गया उसमें जल्दी सुधार नहीं हो सकता।

अत्यन्त पराजयाद्वरं संशयोऽपि—बुरी तरह हारने की अपेक्षा संशयात्मक स्थिति में रहना कहीं श्रेयस्कर है।

अत्यन्त बलवन्तोऽपि पौर जान पदाः जनाः दुर्बलैरपि बाध्यन्ते पुरुषैः पार्थिवाश्रितैः—नगर और ग्राम के नितान्त बलशाली पुरुष भी राजा के आश्रय में रहने वाले दुर्बल लोगों के द्वारा रोक दिए जाते हैं। अर्थात् बड़ों के संग से निर्बल भी बलवान हो जाते हैं।

अथवा नौमी निर्मली, बादर रेख न जोय, तो सरवर भी सूखहीं, महि में जल नहिं होय—माघसुदी नवमी को यदि बादल न हों और मौसम साफ़ हो तो पानी नहीं बरसता तथा सरोवर आदि सूख जाते हैं। अर्थात् घोर अकाल पड़ जाता है। आशय यह है कि लक्षण विशेष से होनहार का आभास हो जाता है।

अदरक का स्वाद बन्दर क्या जाने (क) अच्छी चीज़ के मज़े या आनन्द को बुरे या गँवार नहीं जानते। (ख) सभी लोग अपने स्तर की चीज़ का ही मजा या स्वाद जान सकते हैं। तुलनीय : भोज० बानर का जाने आदी क सवाद; मरा० गाढवाला गुळाची चव काय ? पंज० अदरक दे सुआद दा बांदर नूँ की पता।

अदरा गैल तीनि गेल सन साठी कपास, हथिया गैल सब गैल आगिल पाछिल चास—आद्रा नक्षत्र में वर्षा न होने से सन, साठी और कपास की फ़सल नष्ट हो जाती है, और यदि हस्ति नक्षत्र में वर्षा न हो तो आगे-पीछे की सभी फ़सलें चौपट हो जाती हैं।

अदरा माँहि जो बोवै साठी, दुख का मार भगावै लाठी- आद्रा नक्षत्र में यदि साठी (धान की एक किस्म) बोया जाए तो इतनी अधिक पैदावार होती है कि दुःख को लाठी से मार-मार के भगाया जा सकता है। आशय यह है कि आद्रा नक्षत्र मे बोए साठी की बहुत भरपूर फ़सल होती है। इस धान का साठी नाम इसलिए है कि यह साठ दिन में हो जाता है। कहा गया है—सों वों साठी साठ दिन बरखा बरिसे रात-दिन।

अदले का बदला—जैसे को तैसा अर्थात जैसा व्यवहार तुम दूसरों के साथ करोगे वैसा ही तुम्हारे साथ भी होगा। तुलनीय : भोज० व्यवहार त अदला क बदला; सं० शठे-शाठ्यं समाचरेत; पंज० अदले दा बदला; ब्रज० अदले कौ बदलौ; अं० Tit for tat.

अदालत की मिट्टी भी रुपए की भट्टी—मुकद्दमेबाज़ी में बहुत धन नष्ट होता है।

अदालत में जीता सो हारा, हारा सो मरा—मुक़द्दमे-बाज़ी से वादो और प्रतिवादी दोनों को ही हानि उठानी पड़ती है। जो जीतता है वह तो हारे के बराबर है ही और जो हारता है वह जैसे मर ही जाता है। कहीं-कहीं 'हारा सो डूबा' भी कहा जाता है। तुलनीय : पंज० कचैरी बिच जितण वाला वी हारया हारण वाला मरया।

आदित्सोर्वणिजः प्रतिदिनं पत्र लिखित श्वस्तन दिन भणन न्याय—देने की इच्छा न रखने वाले व्यापारी का प्रतिदिन पत्र लिखकर अगले दिन के लिए कहने का न्याय। जब किसी चीज़ को देने की इच्छा नहीं होती तो लोग भविष्य में देने की बात कह या लिख कर टाल-मटोल करते हैं।

अदृष्ट बलवान है –होनहार बहुत बलवान होती है, वह किसी के टाले नहीं टलती। तुलनीय : ब्रज० होनी बड़ी बलवान है।

अदोखे दोख गति न मोख-- जो निर्दोष पर दोष लगाता है उसे मोक्ष नहीं मिलता। दूसरों पर झूठा कलंक लगाने वाले के प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय . गढ़० अदोखा दोख, गती न मोख। (अदोख=अदोष; दोख=दोष; मोख=मोक्ष)।

अद्रा गया तो तीन चीजें गई यदि आद्रा नक्षत्र में वर्षा न हो तो तीन फ़सलें (सन, साठी, कपास) नष्ट हो जाती हैं। तुलनीय : मग० अदरा गेला तऽ तीन लेले गेला; भोज० अदरा जाई त तीन चीज़ लेले जाई। दे० 'अदरा माँहि जो बोवै···'।

अद्रा धान पुनर्वस पैया, गया किसान जो बोवै चिरैया आद्रा नक्षत्र में बोने से धान अच्छा होता है; पुनर्वसु में बोने से पैया (हलका धान जिसमें चावल न हो या पतला हो) हो जाता है, तथा चिरैया नक्षत्र में बोने से बिल्कुल नहीं होता है।

अद्रा भद्रा कृत्तिका असरेखा जो मघाहि, चंदा ऊगै दूज को सुख से नरा अघाहिं -यदि आद्रा, भद्रा, अश्लेषा या मघा नक्षत्रों में द्वितीया चाँद उदित हो तो मनुष्य बहुत सुखी रहेगा।

अद्रा रेड़ पुनरवस पाती, लाग चिरैया दिया न बाती -- धान यदि आद्रा नक्षत्र में बोयें तो धान कम, डंठल अधिक होगा, पुनर्वसु नक्षत्र में बोने से पत्ती अधिक होगी तथा चिरैया नक्षत्र में बोने से अंधकार हो जाएगा, अर्थात कुछ भी नहीं होगा।

अद्धी के नोन को जाऊँ, ला मेरी पालकी एक अधेले के नमक के लिए जा रही हूँ, मेरी पालकी लाना। (क) जब कोई व्यक्ति किसी अत्यन्त साधारण काम के लिए बहुत आडंबर या टीम-टाम दिखाये तो कहते हैं। (ख) जब किसी काम के करने पर अपेक्षित लाभ के बजाय हानि होती हो तब भी कहते हैं।

अधकचरी विद्या दहे, राजा दहे अचेत; ओछे कुल तिरिया दहे, दहे कलर का खेत –अपूर्ण विद्या, असावधान शासक, नीच कुल की स्त्री तथा कपास का खेत (खेत में एक बार कपास बोने से उसकी उत्पादन-शक्ति क्षीण हो जाती है) सदा दुःख देते है। इसकी प्रथम पंक्ति भी कभी-कभी अकेले प्रयुक्त होती है।

अधजल गगरी छलकत जाय—कम ज्ञान वाला आदमी बहुत बोलता है या अपने ज्ञान का डंका पीटता है अथवा बहुत बनता है। ओछा आदमी इतराता है। तुलनीय : गोरख० भर्या ते थीरं झलझलंति आधा; मरा० पाण्या ने अर्धी भरलेली घागर हिसळत जाते; उथळ पाण्याला खळ खळाट फार; कनौ० अधजल गगरी ढरकत जाय; बंग० आधगगरी जल। रे छलछल; उड़ि० फम्पा माठिआर बेशी आबाज; हरि० घणा मारा सोवै, थोड़ा मारा रोवै (इस अर्थ में भी कभी-कभी प्रयुक्त) मल० निरकुटम् तुळम्बुक-यिल्ल; सं० अर्धो घटो घोष मुपैति नित्यम्, पंज० ऊना होय सो खड़-खड़ बोले, भरया होये सो कदी न डोले; तेलु० निंडु कुड तोण कदु; अं० Empty vessels make much noise; Deep rivers move with silent majesty, shallow brooks are noisy;

अधजल गगरी छलकत जाय, भरी गगरिया चुप्पे जाय - ऊपर देखिए।

अध पढ्यो घर को खाय—अधूरा पढ़ा-लिखा व्यक्ति घर वालों को भी कष्ट देता है। तुलनीय . पंज० कर दा बैद कडे जाण। दे० 'नीम हकीम खतरा-ए-जान, नीम मुल्ला खतरा-ए-ईमान'।

अधम जाति मैं विद्या पाए, भयउँ जथा अहि दूध पिआए—नीच व्यक्ति को विद्या पढ़ाने से वही प्रभाव होता है जो साँप को दूध पिलाने से। दुष्ट व्यक्ति विद्या का दुरु-पयोग करता है। तुलनीय : स० भुजगाना पय पान केवल विषवर्धनम्।

अधर्म का धन पाँच बरस या सात बरस बेईमानी या ज़ोर-जबरदस्ती से कमाया हुआ धन अधिक समय तक नहीं टिकता। तुलनीय : पंज० अदर्म दा पँज पज साल या सत साल।

अधिक खाद औ गहरी फाल, ढो-ढो नाज होय बेहाल—खेत में अधिक खाद दी जाय और हल को खूब गहरा चलाया जाय तो अन्न इतना अधिक होता है कि उसे ढोना कठिन हो जाता है। अर्थात बहुत अधिक अन्न होता है। तुलनीय : गढ़० गैरी छल बकलो मोल।

अधिक खेत खेत को ही खाता है - जब किसी व्यक्ति के पास ज़मीन बहुत अधिक होती है तो उसकी जुताई-बुआई अच्छी तरह नही हो पाती, जिसके कारण फ़सल नही होती और लाभ के बदले हानि होती है। तुलनीय : भोज० ढेर खेत खेतवे के खाला; पज० मती जमीण जमीण नूं ही खांदी है।

अधिक जोगी मठ उजाड़—अधिक जोगी हों तो मठ

उजड़ जाता है। एक स्थान पर बहुत से मुफ़्तखोर इकट्ठे हो जायँ तो वह स्थान शीघ्र नष्ट हो जाता है। एक काम को करने में बहुत से लोग लग जायें तो काम बिगड़ जाता है। आशय यह है कि हर व्यक्ति अपनी राय को दूसरे की राय से बढ़कर बताएगा और परस्पर मतभेद के कारण कार्य उचित ढंग से संपन्न नही होगा। तुलनीय : भोज० ढेर गिहथिनी माठा पातर, अधिक जोगी मठ उजार; बंग० अनेर संन्यासी ते गाजन नष्ट; पंज० मत जोगी मठ दे रोगी; अं० Too many cooks spoil the broth.

अधिक बोलना मूर्खता का लक्षण अधिक बोलना अच्छा नही समझा जाता। तुलनीय : मल० वायु चक्कर कै कोक्कर; पंज० मता बोलना चगा नई हुदा; अं० A long tongue is the sign of a short hand.

अधिक बोले तो धूर्त कहावे, कम बोले तो मूर्ख—जब किसी व्यक्ति को हर प्रकार से दोषी ठहराया जाय तो उसके प्रति कहते है। बेचारे के लिए बोलना और न बोलना दोनों अभिशाप बना रहता है। तुलनीय : गढ़० माठु माठु चल्दी त मीली रांड, दौड़ी दौड़ी चल्दी वधुर्या राड; भोज० बोली तब्बो पिटाई ना बोली तब्बो पिटाई।

अधिक योगी मठ का उजार—दे० 'अधिक जोगी···'।

अधिक लोभ विनाश की जड़—अधिक लालच बुरी चीज़ है। तुलनीय : मैथ० अतिशय लोभ बकुलवे कीन्हा, छन में प्राण कोकड़वे लीन्हा; भोज० ढेर लोभ बिनास के जर; पंज० मता लालच पैहे दा खौ।

अधिक सयाने पर धूल पड़ती है—अधिक चतुराई करने वाला प्रायः धोखा खा जाता है। तुलनीय : राज० घणी सैणप में किरकिर पड़ै; भोज० ढेर चलाक तीन जगह चिपरे; पंज० सरप्पा कर कर सुत्ती आटा खा गयी कुत्ती; अं० Too much wise too much foolish. दे० 'सयाना कौवा गू···'।

अधिकस्य अधिकं फलं—पुण्यकार्य या अच्छा काम जितना ही अधिक किया जाय उसका फल भी उतना ही अधिक मिलेगा।

अधिक होशियार तीन जगह चुपड़े—जो अपने को अधिक होशियार समझता है अधिक धोखा खाता है। इस संबंध में एक कहानी है : दो मित्र कहीं जा रहे थे। उनके पैर में कुछ लग गया। उनमें जो कम मूर्ख था उसने पैर ज़मीन पर रगड़ा और वह साफ़ हो गया किन्तु जो चालाक उसने हाथ से उस चीज़ को उठाया यह देखने के लिए कि क्या है? किन्तु जब हाथ से उठाकर देखने पर भी निश्चित पता नहीं चला कि क्या है तो हाथ नाक के पास ले जाकर सूँघने लगा। सूँघते समय वह चीज़ नाक में भी लग गई, और तब पता चला कि वह टट्टी है। इस तरह उसने टट्टी पैर, हाथ, नाक तीनों में लगा ली। तुलनीय : भोज० ढेर चलाक तीन जगह चिपरे; मग० अधिका अकिला तीन जगे माखे; पंज० मती अकल वाला कई जगह मरया; दे० 'डेढ़ अक्ल वाला तीन जगह···'।

अधिका भला न बोलना, अधिका भली न चुप—दे० 'अति का भला न बोलना···'।

अधिकार-न्याय—अधिकार का न्याय। आशय है जिस कार्य को करने की योग्यता (अधिकार) हो, वही कार्य करना मनुष्य के लिए उपयुक्त है।

अधूरा छोड़े सो पड़ा रहे—जो कार्य बीच में छोड़ दिया जाता है वह प्रायः अपूर्ण ही रह जाता है। जिस कार्य को हाथ में लिया जाय उसे पूर्ण करके ही छोड़ना चाहिए। तुलनीय : भीली—रेग्या काम रावण ना रेग्या; पंज० अद्दा छड्डे सो पैया रवै। दे० 'रहा काम तो रावण से भी···'।

अधेला न दे अधेली दे—(क) ऐसे कंजूस पर व्यंग्य से कहते हैं जो पहले तो अधेला (दो पैसे) भी न ख़र्च करे और काम बिगड़ जाने पर अधेली (आधा रुपया) व्यय करे। (ख) मूर्ख व्यक्तियों के प्रति भी कहते हैं क्योंकि वे भी धन का मूल्य नही जानते। तुलनीय : मरा० अधेला देणार नाहींम, अधेली देशील; हरि० गँवार गंडा नांह दे भेली दे दे; पंज० पैहा दे ना तली दे।

अध्यारोप-न्याय—जो वस्तु वस्तुतः जैसी हो वैसी न दीखे बल्कि कुछ और दीख पड़े तो कहते है। जैसे रस्सी का साँप लगना।

अनंतरस्य विधिर्वा भवति प्रतिषेधो वा—समीपतम के लिए ही किसी नियम का विधि अथवा निषेध होता है।

अनकर गोड़ धोवे नोनियाँ, आपन धोवत लजाय—दूसरों के पाँव धोने में नाइन लज्जा का अनुभव नहीं करती किंतु अपने पाँव धोने में शरमाती है। (क) जब कोई व्यक्ति दूसरों को जो उपदेश दे स्वयं उसका पालन न करे तो कहते हैं। (ख) जब कोई व्यक्ति दूसरे के यहाँ तो काम करे किंतु वही काम अपने यहाँ करते शरमाए तब भी व्यंग्य से कहते हैं।

अनकर सेंदुर देख आपन कपार फोड़ें—दूसरे की उन्नति देख ईर्ष्या करने वाले के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० दूजे दा संदुर देख के अपणा सिर पन्ने।

अनके धन पर चोर राजा—(क) किसी दूसरे की दौलत को हड़प कर कोई उसका स्वामी बन बैठे तो कहते हैं। (ख) दूसरे के धन पर मौज उड़ाने वाले के प्रति कहते हैं।

अन के धन लक्ष्मीनारायण—ऊपर देखिए।

अनखाती बहुरिया पसेरी भर का कौर—वैसे तो बहू न खाने वाली है किंतु एक कौर पाँच सेर का करती है। बहुत अधिक खाने वाले के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते है। तुलनीय : भोज० कनिया अनखाती पसेरी भर क कवर, अनखाती कनिया कलेवा करे तीन बेर।

अनखाती बहू के तीन कलेवा—ऊपर देखिए।

अनचाहे पाहुने की कोउ न पूछे बात—ऐसे अतिथि का कोई स्वागत-सत्कार नही करता जिसे घर में कोई न चाहता हो। अर्थात् किसी के घर ज़बरदस्ती मेहमान नहीं बनना चाहिए। तुलनीय : माल० वगर मन का पामणा, घने घी गालूं के गोर; पंज० बगैर गल दे परौणे दी कोई बात नई पुछदा।

अनचीन्ह काठ की थून्ही भी नहीं लगाते—जिस वस्तु के बारे में देखा-सुना न हो उसका उपयोग ठीक नहीं। अनजान व्यक्ति पर भरोसा नही करना चाहिए। तुलनीय : असमी— अचिन् काठर् थोराको न लगावा, भोज० वेजानल काठे क थून्हिओं ना लगावे के; सं० अज्ञातकुलशीलस्य वासो देयो न कस्यचित; अं० If you trust before you try, you may repent before you die.

अनजान और अंधा दोनों बराबर होते हैं—जो व्यक्ति किसी कार्य के संबंध मे कुछ न जानता हो वह अंधे के समान होता है। अनजान व्यक्ति से कोई काम नही कराना चाहिए। तुलनीय : राज० अजाण'र आंधो बराबर हुवै; भोज० अनजान अ आन्हर बरोबरे; पंज० अनजाण अते अन्ना दोवें इको जिहे हुंदे हन।

अनजान किसके सामने रोये ?—जिससे जान-पहचान न हो उसको दिल की बात नही बताई जा सकती। अपना दुःख-दर्द परिचितों को बताकर ही दिल हल्का किया जा सकता है। आशय यह है कि ऐसे स्थान पर जहाँ अपने जानने वाले न हों रहना बड़ा कष्टप्रद होता है। तुलनीय : भीली० अणजाणन्यों कणाने आंगणे रोये; पंज० अजाण किस दे सामने रोवे।

अनजान की आँगने मौत—अनजान व्यक्ति के लिए (किसी अज्ञात स्थान में) सर्वदा भय रहता है चाहे वह स्थान आँगन ही या आँगन जैसा ही सुरक्षित क्यों न हो। तुलनीय : मेवा० आणजाण री आंगणे मौत।

अनजान की मौत है—अनजान व्यक्ति के लिए बड़ी परेशानी होती है। तुलनीय : पंज० अनजाण दी मौत है।

अनजान को दोष नहीं, अथवा अनजानता (ते) को दोष नहीं—किसी व्यक्ति से यदि ऐसा काम बिगड़ जाये जिसके संबंध में वह कुछ न जानता हो तो उसका कोई दोष नहीं होता। तुलनीय : राज० अजाण्यै नै दोस नहीं; अव० अनजाने का दोस नाहीं चीन जात।

अनजान सुजान सदा कल्यान—अज्ञानी और परमज्ञानी दोनों का कल्याण होता है। ज्ञानी ज्ञानवश तथा अज्ञानी अज्ञानवश किसी का बुरा नहीं करते अतः उनका भी कोई अहित नहीं करता। तुलसी ने कहा है : सबसे भले विमूढ़ जिनहिं न व्यापत जगत गति। तुलनीय : पंज० अनजाण सुजान सदा कलयाण।

अनतौला पकाय अनगिनती खायं, घटे की बढ़े पता न पायँ—अनगिनत आदमी निमंत्रित हैं, और बिना नाप-तौल के भोजन पक रहा है तो कम या अधिक का पता कैसे लगाया जा सकता है। (क) दोनों ओर प्रतिकूल परिस्थिति हो तो सच्चाई का पता लगाना बहुत कठिन होता है। (ख) कुप्रबन्ध होने पर भी कहा जाता है। तुलनीय : भीली—अण नूंद्यी जात अण नूंद्यी भात, हूं खबर पड़े।

अनदेखा चोर बाप बराबर—यदि चोरी करते देखा न हो, या प्रमाण के बिना, किसी को चोर नहीं कहा जा सकता, चाहे उसने चोरी की ही हो। और ऐसी स्थिति मे अन्य आदमियो की तरह अनदेखा चोर भी आदर का पात्र है। अर्थात् बिना प्रमाण के किसी को दोषी ठहराना ठीक नहीं। तुलनीय : पंज० दिखे बगैर चोर पिओ बराबर; अं० Let a hundred guilty men be acquitted if one innocent person is to be punished.

अनदेखा चोर राजा समान—ऊपर देखिए। तुलनीय : कौर० अण देक्खे राजा चोर।

अनदेखा चोर साले बराबर—जिसे किसी ने चोरी करते देखा नही उसे साले की तरह घर में आने-जाने की पूरी स्वतंत्रता होती है : तुलनीय : पंज० दिखे बगैर चोर साले बराबर।

अनदोषी को दोष, जिसकी गति न मोष—दे० 'अदोखे दोख...'।

अनधीते महाभाष्ये व्यर्था स्यात् पदम-जरी अधीतेऽपि महाभाष्ये व्यर्था सा पद मञ्जरी—महाभाष्य को न पढ़ने वाले के लिए पदमंजरी का पढ़ना व्यर्थ है और जिसने महा भाष्य का स्वाध्याय कर लिया है उसके लिए भी इसका पढ़ना

निरर्थक ही है। किसी काम के किए जाने या न किए जाने अथवा होने या न होने, दोनों में निष्कर्ष एक ही निकले तो कहते हैं।

अनयलभ्यः शब्दार्थः शब्द का अर्थ वह है जो किसी दूसरे स्रोत से न ज्ञात हो सके। जब कोई बात किसी और स्रोत से ज्ञात न हो तो ऐसा कहते हैं।

अनपढ़ कमाय और जूता खाय—अशिक्षित व्यक्ति कमाकर भी देता है और मार भी खाता है। अशिक्षित व्यक्ति बहुत सताए जाते है। तुलनीय : भीली—अण भणिया भील मन जाणिया पलाणे; पंज० अनपढ़ कमावे जुती खावे।

अनपढ़ घोड़े चढ़ते है, पढ़े भीख मांगते हैं—भाग्य और सयोग के आगे किसी का बस नही चलता। विद्वान् बहुधा ग़रीब होते हैं और अनपढ़ लोग धनवान होते हैं। लक्ष्मी और सरस्वती का बैर प्रसिद्ध है। तुलनीय : राज० अण भणिया घोड़ै चढ़ै, भणिया माँगै भीख; पंज० अनपढ़ कोड़े चढ़दे हन, पढ़े मगदे हन।

अनपढ़या जाट पढ़्या बराबर, पढ़्या जाट खुदा बराबर—अनपढ़ जाट पढ़े हुए के बराबर और पढ़ा जाट ईश्वर के बराबर होता है। अर्थात् जाट बड़े चतुर होते है। तुलनीय : ब्रज० बे पढ़्यौ जाट पढ़्यौ जैसौ, पढ़्यौ जाट खुदा जैसौ; पंज० अनपढ़या जट्ट पढ़या बराबर पढ़या जट्ट खुदा बराबर।

अनबितरक बिरत घमलोड़ बजाई—बिना वृत्ति का ब्राह्मण यों ही शोर मचाता है। जब कोई व्यक्ति बिना काम के यों ही ऐसा शोर करे जिससे लगे कि उसके पास बहुत काम है तो कहते हैं।

अनबींध्यों सांड है—(क) अधिक हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति के प्रति व्यंग्य से कहा जाता है। (ख) जो व्यक्ति बिना कारण ही सबसे लड़ता-झगड़ता रहे उसके प्रति भी कहते हैं।

अनमन बियाह कनपटी में सिंदूर—अनिच्छा से किए विवाह में सिंदूर माँग के स्थान पर कनपटी मे पड जाता है। बिना मन से किया हुआ काम ठीक ढग का नही होता। तुलनीय : मैथ० अनमनो बिहा कोंकड़ी सिंदूर; भोज० बेमन क बियाह कनपटी में सेनुर।

अनमाँगे मोती मिले माँगे मिले न भीख—बिना माँगे बड़ी से बड़ी चीज़ मिल जाती है, किंतु माँगने पर छोटी से छोटी चीज़ भी नही मिलती। तुलनीय : मल० वीट्टिकुण्टेन्किल् विरुन्नु चोरूम् उण्टुं; मरा० न मागणाऱ्याला मोती मिळेल मागून भीक सुद्धां मिळणार नाही; ब्रज० बिन माँगे मिलें माँगी मिलै न भीख; पंज० बिन मंगे मोती मिलण मंगे मिले न पीख।

अनमिले की कुशल है—(क) दुष्टों से न मिलना ही अच्छा है। (ख) अकेले रहना अच्छा है। (ग) दो ऐसे व्यक्ति जिनकी आपस में बनती न हो, जब एक दूसरे से मिलते है तब भी ऐसा कहा जाता है। (घ) किसी ख़तरनाक जगह को बिना विघ्न-बाधा के पार कर लेने पर भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० पैंड़ा चगा ही हुंदा है।

अनमिले के त्यागी, राँड़ मिले बैरागी—यह 'बैरागी' जाति के लोगों पर व्यंग्य है। वे 'बैरागी' कहलाते है, किंतु स्त्री रखते हैं। केवल अवसर न मिलने के कारण वे त्यागी या ब्रह्मचारी बने रहते हैं। तुलनीय : हरि० ब्रह्मचारी इतणें ब्रह्मचारी मिलगी जब दे मारी।

अनरूच बहू के कड़वे बोल—(क) जो व्यक्ति अपने को पसद नही है उसकी सभी बातें बुरी लगती हैं। (ख) अपने को अच्छी न लगने वाली वस्तु में केवल दोष देखने वालों के प्रति भी व्यंग्य से कहते हैं। (ग) ईर्ष्यावश किसी मित्रादि के दोष बताने वाले के प्रति भी कहा जाता है। तुलनीय : पंज० पैंड़ी बौटी दिआं कौडियां गल्लां।

अनहोत में औलाद—(क) निर्धनों के ही अधिक संतान उत्पन्न होती है। (ख) ग़रीबी में संतान का आधिक्य दुखदायी होता है। तुलनीय : मरा० खायला नाही तेथें मुले फार; पंज० बगैर मंगे बच्चे।

अनहोनी होती नहीं, होती होवनहार—जिसे होना है वह हो के रहता है और जिसे नहीं होना है वह प्रयत्न करने से भी नहीं होता। तुलनीय : राज० अणहोणी होवै नहीं होणी हो सो होय; पंज० अनहोणी होवे नई होवे होणी।

अनहोनी होवे नहीं होवे होवनहार— ऊपर देखिए।

अनाज खाओ पर बीज बचाओ—वह अनाज जो खाने के लिए रखा गया हो उसे खाना चाहिए और जो बीज के लिए रखा गया हो उसे सँभाल कर रखना चाहिए। जो वस्तु जिसके लिए हो, उसका वही प्रयोग करना श्रेयस्कर है। तुलनीय : गढ़० खाज खाणो, पीज पांजणो; पंज० कनक खावो, बी बचावो।

अनाज जला के भाड़ा खातिर मार करे—भड़भूँजे ने भाड़ में अनाज तो जला दिया, अब पारिश्रमिक के लिए लड़ाई करने को तैयार है। जो व्यक्ति काम भी बिगाड़े और उलटे शरारतभरी बातें भी करे उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : भोज० अनाज जराइ के भार खातिन रौरा करे।

अनाज बिखरे मुर्गी खुश—अनाज बिखरने से मुर्गी

प्रसन्न हो जाती है। एक की हानि दूसरे के लाभ का कारण बन जाती है। तुलनीय : मेवा० कूकड़ा के तो बगेरा में ही लाभ; पंज० दाणे डिगे कुकड़ी खुम।

अनाड़ी करवैया सामान की खराबी—दे० 'अनाड़ी चुदवैया…'।

अनाड़ी का सौदा बाराबाट—मूर्ख व्यक्ति को कुछ भी खरीदना नहीं आता। जब भी वह खरीदता है, ठगा जाता है। तुलनीय : पंज० नवें दा सौदा रुड़या।

अनाड़ी चुदवैया चूत की खराबी—अनाड़ी और मूर्ख व्यक्तियों को कुछ भी करना नहीं आता। वे जो भी काम करेंगे संबद्ध चीज़ों को ख़राब कर देंगे। तुलनीय : अव० अनाड़ी चदवइय्या बुर कै खराबी।

अनाथ गाय के राम रखवार—दे० 'अंधरी गैया धरम…'।

अनिषिद्ध मनुमतम—जिसका निषेध नही किया जाय उसे मान्य माना जाता है।

अनी चूकी, धार टूटी—ज़रा सी भी नज़र चूकी तो काम बिगड़ जाता है। जिस कार्य को भी करना हो उसे ध्यान से करना चाहिए। तुलनीय : राज० इणी चूकी, धार भागी।

अनी मनी तीन जनी—(क) जहाँ काम करने वालों की संख्या सीमित तथा काम अधिक हो वहाँ ऐसा कहा जाता है। (ख) छोटे परिवार के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : गढ़० अणी मणी तीन झणी।

अनुचित उचित बिचार तजि पालहु पितु को बैन—उचित-अनुचित का विचार न करके पिता के वचन को मानना चाहिए। यह लोकोक्ति :

अनुचित उचित विचार तजि जे पालहिं पितु बैन।
ते भाजन सुख सुजस के बसहे अमर पति ऐन॥

की प्रथम पंक्ति का थोड़ा परिवर्तित रूप है।

अनुचित-उचित रहीम लघु, करहिं बड़न के जोर—निर्बल और छोटे आदमी भी बलबान और बड़े आदमी का बल पाकर भला-बुरा सब तरह का कार्य कर डालते हैं। यह मूलतः रहीम के दोहे की एक पंक्ति है।

अनुचित छमब जानि लरिकाई छोटों के अपराध बड़ों को क्षमा कर देने चाहिए। यह मूलतः एक अर्द्धाली की प्रथम पंक्ति है।

अनोखी के हाथ लगी कटोरी, पानी पी-पी मरी पवोड़ी—नीच और ओछे व्यक्ति साधारण वस्तु पाकर भी घमंड से फूले नहीं समाते और उसके अत्यधिक प्रयोग से हानि उठाते हैं। अनोखी नमक स्त्री के हाथ कटोरी लगी तो उसने इतना पानी पीया कि मर गई। तुलनीय : अव० अनोखी रानी पवली कटोरिया त पियते-पियते चल बसली; पंज० माड़े जट्ट कटोरा लभया पानी पी पी आफर्या; अव० नोखे कइं पाइन टेटे लाइ झुलाइन; राज० अनोखै हाथ कटोरा आया पाणी पी-पी आफरिया; अं० Set a beggar on horse-back and he will ride to the Devil.

अनोखी भगतिन गरारी की माल—अनोखी भगतिन गरारी (गिर्री) की माला जपती है। अर्थात् दिखावे के लिए मनिया की तुलना में बड़ी-बड़ी गरारियों की। जब कोई अपनी महत्ता विशेष दिखाने के लिए विचित्र प्रकार का आचरण करे तो कहते हैं। तुलनीय : अव० नोखे कै भगतिनि गरारी कै माला; भोज० अनोखी भगतिन गड़ारी क माला। दे० 'नई नाइन बाँस का निहन्ना'।

अनोखे गांव में ऊँट आया, लोगों ने जाना परमेश्वर आया—मूर्खो का ज्ञान इतना सीमित होता है कि वे साधारण चीज को भी आश्चर्य से देखते है। जब कोई मूर्ख ऐसी मूर्खता करता है तो कहते है। तुलनीय : मरा० ज्या गांवी पूर्वी कधी उंट आला नाही अशा गांवी उट आल्यावर लोकांना वाटले परमेश्वरच आला; पंज० पिड बिच नवां ऊंट आया लोकां ने आखया रब आया।

अनोखे घर का नोकर चूनी खाय न चोकर—नीचे देखिए।

अनोखे घर का बोकरा चूनी खाय न चोंकरा—अनोखे घर का बकरा चूनी या चोकर नहीं खाता। जब कोई खाने में 'यह नही', 'वह नही' करे तो कहते है। तुलनीय : अव० नोखे घर का नोकर चूनी खाय न चोकर; भोज० अनोखे घर का नोकर चुन्नी खाय न चोकर।

अन्न अछते करें उपास—अन्न तो है मगर उपवास करते हैं। जब कोई व्यक्ति किसी चीज़ के अपने पास होते हुए भी उसका उपयोग न करे और कष्ट सहे तो कहते है। तुलनीय : मैथ० अछैते अन्ने रहे उपास; भोज० अनाज अछदूत करे उपास; पंज० अन्न होदे पुखे रैण।

अन्न अमृत अन्न विष—दे० 'अन्न तोर, अन्न कोर।'

अन्न को कोई न पूछे, पकाने वाली को सभी पूछें—भोजन स्वादिष्ट बना होने पर अन्न को नहीं, पकाने वाली को सराहा जाता है। भोजन का स्वादिष्ट होना पकाने वाले पर निर्भर है, अनाज पर नहीं। गुणी की प्रशंसा सभी करते हैं। तुलनीय : भीली—धान नी बकाये केलवणाबाली वकादे; ब्रज० घी बनावे सालना अरु बड़ी बहू को नाम; पंज०

अन्न नूं कोई नां पुच्छे पकाण वाली नूं पुछण ।

अन्न खाता है, कुछ अक्ल तो होगी ही—अनाज खाने वालों में थोड़ी-बहुत बुद्धि तो होती ही है। जब किसी व्यक्ति को निपट मूर्ख कहा जाय तो मज़ाक में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भीली—धान खाहां थोड़ूज तो हमजता ओहां, पंज० अन्न खादा है कुछ अकल ते होवेगी ।

अन्न खाय मन भर, घी खाय दम भर—अधिक अन्न खाने से हानि की संभावना नही रहती, किंतु अधिक घी खाना स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद है। घी उतना ही खाना चाहिए जितना पचाने की सामर्थ्य हो। तुलनीय : राज० अन्न मुक्ता, घी जुक्ता; पंज० अन्न खादा मुगता, घी खादा जुगता ।

अन्न तारे, अन्न मारे—अन्न प्राण की रक्षा भी करता है और प्राण लेता भी है, क्योंकि अन्न के लिए ही मनुष्य उचित-अनुचित कार्य करता है। अर्थात् अन्न यदि ठीक से खाया जाय तो रक्षक है किंतु यदि अनुचित रूप में (ज़्यादा, पड़ा, अधपका आदि) खा लिया जाय तो वह घातक भी हो जाता है। तुलनीय : बुंद० अन्न तारे, अन्नई मारें; भोज० अन्ने अमरित, अन्ने बिख, अन्ने बिख आ अमृत दूनो है; पंज० अन्न रखे अन्न मारे ।

अन्नदान महादान—अन्न का दान सब दानों में श्रेष्ठ है, क्योंकि उससे भूखे का पेट भरता है। भोजन मनुष्य की पहली आवश्यकता है। तुलनीय : पंज० अन्नदान महा कल्याण ।

अन्न धन अनेक धन, सोना-रूपा कतेक धन—अन्न, सोना, चाँदी से बड़ा धन है। तुलनीय : भोज० अन्न कुल धनन क राजा ह; भीली—धान तो हगरो हदा हाऊ ।

अन्न न कपड़ा सेंतीहें के भतरा—नीचे देखिए ।

अन्न न मिले तो सतुआ खाय, आदमी न मिले तो अहीर से बतलाय—सत्तू तभी खाने चाहिए जब कोई दूसरा अन्न न मिले, और अहीर से तभी बातचीत करनी चाहिए जब कोई और मनुष्य न मिले। आशय यह कि ये दोनों अच्छे नहीं हैं। तुलनीय : भोज० कुछ न मिले त सतुवा खाय, मनई न मिले अहीर से बतलाय ।

अन्न न वस्त्र मुफ़्त का भतार—जब कोई व्यक्ति किसी पर अपना अधिकार तो जताए किंतु अपने कर्त्तव्यों का ध्यान न रखे तो ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० कपड़ा लत्ता सेंतमेंत क भतार; सेंती क भतार न अनाज न लगा; खिआवे न पिआवे दउर-दउर के माँग टीके। (भतार=भर्तार=स्वामी) ।

अन्न से संग नहीं, तीन सेर से कम नहीं—ऐसे व्यक्तियों के प्रति यह लोकोक्ति कही जाती है, जो न खाने का ढोंग करते हैं और जब खाने बैठते हैं तो बहुत अधिक खाते हैं। तुलनीय : मैथ० अन से सग ने आ तीन सेर से कम ने; भोज० अनाज से त संगें ना आ खाए बइठलँ त तीन सेर; पंज० अन्न खादा नई वैठा ते तिन सेर ।

अन्नुख घर में नाती भतार—अनोखे घर में नाती ही भतार अर्थात् मालिक है। जब किसी परिवार या राज्य आदि में वह स्वामी न हो जिसे वास्तविक रूप में होना चाहिए और कोई दूसरा हो तो ऐसा कहते हैं ।

अन्यवेश्मस्थिताद्धूमात्र वेश्मान्तरमग्निमत्—एक घर से उठे धुएँ को देखकर हम यह अनुमान नही करते कि किसी दूसरे घर में आग है। किसी एक के आधार पर दूसरे के बारे में कुछ अनुमान लगाना उचित नही ।

अन्यार्थमपि प्रकृतमन्यार्थं भवति—एक उद्देश्य के लिए बनाई गई वस्तु अन्य उद्देश्यों की पूर्ति भी कर सकती है ।

अपग / पराया हँसाए, अपना रुलाए—बच्चा यदि अपंग अर्थात् लूला, लँगड़ा, गूँगा या बहरा हो तो उसे देखकर रोना आता है और इसके विपरीत दूसरे के हो तो देखकर हँसी आती है। तुलनीय : गढ़० बिराणा लाटा हँसौन, अपणा लाटा रूवौन; पंज० लगा लूला हसावे अपणा रुलावे ।

अपकार के बदले उपकार—बुराई के बदले भलाई करनी चाहिए। कहा गया है :

जो तोको काँटा बुवै ताहि बोउ तू फूल ।
तोको फूल को फूल है वाको है तिरसूल ॥

तुलनीय : पंज० नेकी दे बदले बदी ।

अपत भये बिन पाइ है, को नव दल फल फूल—जब तक पेड़ के पुराने पत्ते झड़ नही जाते उसमें नए पत्ते, फूल, फल नहीं आते। आशय यह है कि बिना तकलीफ के आराम नहीं मिलता। कष्ट सहने से ही लाभ होता है। तुलनीय : भोज० बे झरने भरे ना ।

अपना-अपना कमाना अपना-अपना खाना—किसी परिवार में जब अनबन हो जाती है और सभी अपनी-अपनी में मस्त रहते हैं, अर्थात् किसी से कोई मतलब न रखने पर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मरा० आपण आपलें मिळाविणें नि आपण आपलें खाणें; पंज० अपणा अपणा कमाणा अपणा-अपणा खाना ।

अपना-अपना घोलो, अपना-अपना पीओ—ऊपर

देखिए ।

अपना-अपना दुखड़ा सब रोते हैं—अपने दुखों की शिकायत सभी करते हैं, पर दूसरों की कोई नही करता । अर्थात् सभी को अपना ही ध्यान रहता है । तुलनीय : हरि० अप-अपणां दुख सब रोवैं सैं ।

अपना अपना, पराया पराया—अपना अपना ही है और पराया पराया ही । समय पर अपने ही लोग काम आते है । तुलनीय : ब्रज० अपनों अपनो परायों परायो; बुंद० अपनो से अपनो पराओ सो सपनो; पंज० अपणे दुख सारे रोंदे हन ।

अपना-अपना लहनियां है—अपना-अपना भाग्य साथ है । जब किसी एक ही परिस्थिति मे एक का बुरा और दूसरे का भला हो या एक को लाभ और दूसरे को हानि हो तो कहा जाता है । तुलनीय : हरि० अप-अपणां लहणां, अप-अपणे करमा का लहणा सै ।

अपना उल्लू कहीं नहीं गया--अपना मतलब तो सध ही जाएगा । (क) स्वार्थियों पर कहा जाता है । (ख) कभी मात न खानेवाला व्यक्ति जब ऐसी परिस्थिति में हो कि सभी यह समझें कि उसकी हानि हो गई है किंतु वस्तुतः ऐसा होता नही तो वह शेखी बघारते हुए भी ऐसा कहता है । इस सबंध मे एक कहानी है : किसी राजा के यहाँ घोड़ों का व्यापारी आया । राजा ने उसे एक लाख रुपए दिए कि हमारे लिए अरब से घोड़े ले आना । व्यापारी रुपए लेकर चला गया । लेकिन उस राजा के नगर मे एक इतिहासकार था जिसने इतिहास मे लिखा, 'राजा उल्लू है ।' राजा को पता चला तो उसने इतिहासकार को बुला कर राजा को उल्लू लिखने का कारण पूछा । इतिहासकार ने उत्तर दिया, 'यों ही एक अजनबी को एक लाख रुपए दे देना उल्लूपन नही तो क्या बुद्धिमानी है ? व्यापारी ऐसा मूर्ख न होगा जो घर बैठकर एक लाख रुपया न खाए और आपको घोड़े लाकर दे ।' राजा ने कहा, 'अगर वह घोड़े ले आया ?' इतिहासकार ने उत्तर दिया, 'फिर आपका नाम काटकर उसकी जगह उसका नाम लिख दूँगा । लिहाजा अपना उल्लू कही नही गया, वह तो अपनी जगह ही रहा ।' तुलनीय : पंज० अपना उल्लू सिद हो जावेगा ।

अपना कमाना अपना खाना--जहाँ सभी लोग अलग-अलग कमाते-खाते है और किसी से कोई संबंध नही रखते, वहाँ ऐसा कहते है । तुलनीय : ब्रज० अपनो-अपनो कमाइबो अपनो-अपनो खाइबो; बुंद० अपनो-अपनो कमाओ अपनो अपनो खाओ ।

अपना काम आप भला—अपना काम तभी अच्छा होता है जब अपने हाथ से किया जाय । दूसरे का काम कोई भी दिल लगाकर नही करता । तुलनीय : भीली० आपणा हाथ नूं काम हाथेज करवू ।

अपना क़ायदा अपने हाथ—अपने क़ायदे की रक्षा अपने से ही होती है । यदि मैं दूसरों के क़ायदों को तोड़ूंगा तो वे मेरे भी क़ायदों को तोड़ेंगे । तुलनीय : पंज० अपणे कायदे दी आप रखया; अं० Do as you desire to be done by others.

अपना कुत्ता बरजो / बांधो हम भीख से बाज़ आए—कोई किसी के घर भीख माँगने गया, किंतु वहाँ घरवाले का कुत्ता उसे काटने दौडा, इस भीख माँगने वाले ने यह लोकोक्ति कही । जब कोई दूसरे के यहाँ लाभ के लिए जाय किंतु वहाँ उलटे उसकी हानि होने लगे तो वह कहता है ।

अपना के जुरे ना दूसरे को दानी--अपने लिए तो मिलता नही, दूसरों के लिए दानी बनते हैं । जब कोई व्यक्ति यों ही अपने को बडा या दानी दिखाने के लिए बढ़-चढ़कर बातें करे किंतु वस्तुतः उसके पास अपेक्षित साधन का नितांत अभाव हो तो ऐसा कहते हैं । तुलनीय : पंज० आप जुड़े नां दूजे नं दान ।

अपना कोढ़ बढ़ता जाय, औरों को दवा बताय—(क) जब कोई व्यक्ति दूसरों से जो कहे स्वयं उसका लाभ न उठाए या वह स्वयं न करे तो कहते हैं । (ख) अपनी चिंता न कर दूसरों की ही चिंता करने वालों पर भी कहते हैं । तुलनीय : गढ़० अफू कोढ़ी गिंज गिंज पाको, औरुक दवै बतौ; भोज० आपन कोढ़ त गलल जाय दुसरा क दवाई करें; पंज० अपणा कोढ़ वददा जावे दूजयां नूं दवा दस्से ।

अपना खट्टा भी मीठा—अपनी वस्तु बुरी हो तो भी अच्छी लगती है । तुलनीय : हरि० अपना खट्टा सीत भी मीठा; पंज० अपणा खट्टा वी मिट्ठा ।

अपना खाओ, पड़ोसी से डरो—अपने द्वारा उपार्जित ही खाना चाहिए और पड़ोसियों से डर कर रहना चाहिए अर्थात् उनसे मित्रता रखनी चाहिए । तुलनीय : बुंद० अपनों खाओ, परोसी खों डराओ; पंज० अपणा खावो गुआंडी तों डरो ।

अपना खा मन भर, दूसरों का न कन भर—अपनी वस्तु का उपयोग मनमाना किया जा सकता है, किंतु दूसरे की वस्तु का तनिक भी नही । तुलनीय : भीली० हक नो

मण खवाये, बेहक नो कण नी खवाये; पंज० अपण खा मण भर दूजियाँ दा ना खा दाणा वी ।

अपना खिलावे और निहोरा करके—एक तो अपना अन्न भी खिलावे और वह भी प्रार्थना करके । जिसका लाभ हो यदि वह भी खुशामद कराए तो ऐसा कहते है । तुलनीय : भोज० एक त ऽ आपन अनाज खियावे के, दूसरे मनावन करे के, पज० अपणा खलावे हूरे पर पर के ।

अपना खेत पराए बरदा, खेती करे मरदी-मरदा—स्वार्थी के प्रति कहते है । यदि अपना खेत हो और दूसरे का बैल हो तो जी-जान से खेती की जाती है ।

अपना गुड चुरा कर खाना, दूसरे का लड़का न रुलाना—अपना गुड छिपे-पिपे खाना चाहिए ताकि दूसरो के लडके उसे देखकर खाने के लिए रोवे नही । अपना काम बिना ढिढोरा पीटे हो करना चाहिए । तुलनीय . भोज० काहेके आनक लड़का रोवाई, आपन गुर चोराके खाई, अपना गुर चोराय के खायब, अनकर लइका ना रोआएब, पज० अपणा गुड चरा के खाणा दूजे दा मुडा ना रुआणा ।

अपना गुड सभी के लिए मिश्री अपनी बुरी चीज भी खुद को अच्छी ही लगती है । तुलनीय कनौ० अपनो गुड सबै मिसरी दिखात, पज० अपणा गुड सारिया लई मिसरी ।

अपना गुह भोजन बराबर– अपने अवगुण भी लोग गुण ही समझते हे । तुलनीय पज० अपणे दोष गुण जिहे ।

अपना घर अपना बाहर—अपना घर भीतर और बाहर दोनों ओर से अपना ही है । तुलनीय पज० अपणा कर अपना बार ।

अपना घर कोई नहीं भूलता– अर्थ स्पष्ट है । तुलनीय : कनौ० घर को घर दूरई तें सूझन लगत, पज० अपणा कर कोई नई पुलदा ।

अपना घर चाहे जल जाय पर पड़ोसी का जरूर जलाऊँगा—पडौसी का घर अवश्य जलाऊँगा चाहे साथ मे अपना घर भी जल जाय । बदला लेने की इच्छा होने पर जब अपना भी भला-बुरा न सूझे तो कहते है । तुलनीय : राज० घर तो घाँचीरो ही बकसी पर सोरा तो ऊँदरा ई को रहैनी, पज० अपणा कर पावे फकौ जावे पर गुआडी जरूर फूकणा ।

अपना घर चाहे हग भर, दूसरे का घर थूक का डर—'अपना घर हग भर, दूसरे···'।

अपना घर जो चाहे सो कर—अपने घर मे कुछ भी करने की छूट होती है । दूसरे के घर में हजार तरह के बंधन होते है । तुलनीय · पज० अपणा कर जो चाहे कर ।

अपना घर दिल्ली से भी सूझता है दे० 'अपना घर दूर से ही···'। तुलनीय · गढ० अपणो घर दिल्ली से सूझ ।

अपना घर दूर से ही सूझता है (क) अपना लाभ अवश्य दिखाई पड जाता है । (ख) अपना घर कोई नही भूलता । तुलनीय · मरा० आपले (आपल्या चे घर) लाबून सुचते ।

अपना घर देखो अपने काम को देखो कि उसमे तुम्हे क्या कुछ हानि-लाभ हो रहा है । अपने घर जाइए यहाँ आपकी आवश्यकता नही है या यहाँ आपका गुजर नही होगा । तुलनीय : पज० अपणा कर दिखो ।

अपना घर संझौत ना अनका घर मूसर एसन नाती — दे० 'अपने घर सझौती नहीं... ।

अपना घर सबको सूझता है अपना लाभ सभी देखते हे । तुलनीय · पज० अपणा कर सब नूँ लबदा हे ।

अपना घर हग भर, दूसरे का घर थूक का डर- -अपने घर मे तो चाहे जो भी करे पर दूसरे के घर मे थूकने से भी डर लगता है । आशय यह है कि अपना अपना ही है, उस पर अपना हर तरह से अधिकार रहता हे पर दूसरे का घर दूसरे का ही है । उस पर अपना कोई अधिकार नही । अपने तथा दूसरे के मकान के अतिरिक्त अन्य चीजो के विषय मे भी इस लोकोक्ति का प्रयोग करते है । तुलनीय पज० अपणा कर ते हग हग भर, पराए कर ते थुक दा वी डर, कौर० अपणा घर हग भर ।

अपना घर हग भर, पराया घर थूकने का डर– ऊपर देखिए ।

अपना चोकर दूसरा खाय, अपने खरीदें चोकर... अपनी चीज का उपयोग तो और लोग कर रहे है, और स्वय वह चीज खरीद कर प्रयोग मे ला रहे है । ऐसी मूर्खता, अव्यवस्था या अजीब स्थिति पर कहते है । तुलनीय : मैथ० अपन चोकर आन खाय चोकर ला बेसाह जाय, भोज० आपन चोकर त दूसर केहू खाय आ अपने खरीदे बजारे जाय । (चोकर—आटे मे से निकलने वाली भूसी) ।

अपना छप्पर तो टपकता ही है, दूसरे का भी टपकाना है—जो व्यक्ति अपनी जैसी बुरी स्थिति दूसरे के लिए भी चाहे या उसके लिए प्रयत्न करे, उस पर कहते है । तुलनीय : भोज० आपन घर त चुवते बा पडोसियो क चवावे के चाही, पज० अपणा छप्पर ते चोदा ही है दूजे बिच मौर कर ।

अपना जीवन-जीवन दूसरे का जीवन तीवन—अपने जीवन को तो जीवन समझते है, और दूसरे के जीवन को तीवन (तरकारी) की भाँति, जिसके साथ मनमानी की जा सके। स्वार्थी व्यक्ति पर कहते है। तुलनीय : मैथ० अपना जीवन जीवन अनकर जीवन तीमन।

अपना टेटर ना देखे दूसरे की फुल्ली देखे— दे० 'अपना ढेंढ़र…'।

अपना ठीक नहीं, दूसर की नीक नहीं—जो अपनी और दूसरे की, दोनों ही सलाहों को अच्छी न समझे और कोई निर्णय न करे उस पर कहते हैं। तुलनीय: भोज० आपन ठीक ना, आनकर नीक ना; पंज० अपणी चंगी नई दूजे दी वी माड़ी।

अपना ठेंठ न देखें, दूसरे की फूली निहारें— दे० 'अपना ढेंढर…'।

अपना डाँटा भीतर भागे, बिगाना डाँटा बाहर भागे— बच्चो को डाँटने पर अपने घर के बच्चे तो घर के भीतर भाग जाते है और बाहर वाले अपने घर की तरफ भागते है। (क) विपत्ति के समय ही जिनको घर की याद आती हो उनके प्रति व्यंग्योक्ति। (ख) विपत्ति मे ही अपने और पराए का पता लगता है। तुलनीय : गढ़० अपणो मारिक भिननै, विराणो मारिक भैनै।

अपना ढेंढ़र न निहारे और दूसरे की फूली देखे— नीचे देखिए।

अपना ढेंढ़र ना निहारे दूसरे की फुल्ली निहारे— जब कोई व्यक्ति अपने बड़े अवगुण की ओर तो ध्यान न दे और दूसरे के सामान्य अवगुण को बहुत बुरा समझे तो कहते है। तुलनीय : मैथ० अपने टेटर निहारबे नहि करब दोसर के फुल्ला निहारब; भोज० आपन ढेंढ़र ना निहारें, आन क फुल्ली निहारें; अव० आपन टेंटा ना देखे नहि आन के फूला हांमथे। (ढेंढर = चोट आदि के कारण आँख के भीतर उभरा हुआ भाग। फुल्ली—आँख का एक रोग जिसमें पुतली पर सफेद दाग (फूल) पड़ जाते हैं। पहली बीमारी असाध्य है और दूसरी साध्य)।

अपना तन पहले ढाँको, दूसरे को नंगा पीछे कहना— पहले अपने दोष दूर करो फिर दूसरों के दोष ढूँढ़ना।

अपना तोसा अपना भरोसा—अपने ही धन या अपनी ही शक्ति का भरोसा होता है। तुलनीय : मल० तनिक्कु तानुम् पुरयक्कु तूणुम्; पंज० आपणा तोसा आपणा परोसा; अं० Every one must stand on one's own legs.

अपना दबको, दूसरे का हड़पो अपनी वस्तु देने में आनाकानी करने या चुप्पी साधने तथा दूसरे की चीज लेने में शील-संकोच छोड़कर हड़पने को तैयार होने पर ऐसा कहा जाता है। तुलनीय : भोज० अपनी बेर दबकी आन क बेर हबकी; पंज० अपणा दबा के दूजे दा मारो।

अपना दाम खोटा तो परखैया का क्या दोष—अपनी चीज में या अपने व्यक्ति में कोई दोष है तो कहने वाले या इस बात का निर्णय करने वाले का क्या दोष? तुलनीय : मरा० आपला पैशा खोटा पारखणाऱ्याचा काय दोष; हरि० अपना दाम खोटा तो परखा को क्या दोस; भोज० अपना पइसा खराब बात देखवइया कहने कहि; बुंद० अपने दाम खोटे तौ परखैये का दोस?; ब्रज० अपनौई दाँमु खोटो न होइ तौ परखनहारे कूं कश दोष; अपनो दाम खोटौ न होय तौ परखिबे बारे मैं कहा लग्यौ ऐ; पंज० अपणा सिक्का खोटा, लेणवाले नू की दोख।

अपना दिल हाथ में नहीं, तो दूसरे का क्या होगा— अपना ही दिल अपने नियंत्रण में नही है तो दूसरे का कैसे हो सकता है। दूसरो को अपने वश में करने से पूर्व अपने हृदय को वश में करना चाहिए। दूसरों को उपदेश देने से पूर्व स्वयं भी उनका पालन करना चाहिए। तुलनीय : भीली आपणो मन हातो मांथे नी है ते बीजू हातो मायें नी आवे। पंज० अपणा दिल हथ बिच नई तां दूजे दा की होवेगा।

अपना दीजे दुश्मन कीजे- किसी को उधार देना दुश्मनी मोल लेना है। तुलनीय : भोज० आपन दा दुस्मन ला; पंज० उदार देओ ते दुसमणी लौ।

अपने दुवारे कुत्ता बाघ—अपने घर सभी बलवान होते हैं। तुलनीय : भोज० अपने दुवारे कुकुरो बाघ; पंज० अपणे बुए विच कीड़ी वी मेर।

अपना दूर से ही सूझता है—दे० 'अपना घर दूर से ही…'।

अपना धन गँवाइ कै दर-दर मांगे भीख- अपना धन खोकर भीख माँगते फिरने पर कहते हैं। तुलनीय : भोज० आपन धन गँवाय के दर-दर माँगे भीख; पंज० अपणा पैहा गवा कै कर कर मंगे अन्न।

अपना धन सपना पड़ोसी का धन कलपना – अपने पास तो कुछ है नही, पड़ोसी की संपत्ति देखकर कलपते रहते या ललचाते रहते हैं। तुलनीय : भोज० आपन धन सपना गोतिया क धन कलपना; पंज० अपणा कर सुखना गुआंडी दा कर दुखना।

अपना नयना मुझे दे तू घूम-फिर कर देख—(क) ऐसे

स्वार्थी मनुष्य के लिए कहते हैं जो स्वयं दूसरे की चीज़ माँगे और उसे किसी तरह काम चलाने को कहे। (ख) दूसरे के लाभ-हानि की चिंता किए बिना सदा अपने स्वार्थ की बात करने वालों के प्रति व्यंग्य मे ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० आपन वरधा हमके दा, आ तू चला अगवार करै।

अपना निकाल मुझे डालने दे—स्वार्थी मनुष्य पर कहते हैं जो दूसरे का काम रोककर अपना काम करना चाहे। तुलनीय : पंज० अपणा कड मैनूं पाण दे।

अपना नींगर, पराया ढींगर—सभी को अपनी चीज़ अच्छी लगती है, और दूसरे की बुरी। तुलनीय : मल० काक्कय्क्कुम् तन् पिळ्ळ पोन् पिळ्ळ; पंज० अपणां निंगर, पराया ढिंगर; अं० Owl thinks all her young ones beauties, A crow-owner thinks his own bird fairest.

अपना पूत पराया ढटींगड़—नीचे देखिए।

अपना पूत पराया धत्तिगड़—अपने लड़के पर जैसा प्यार होता है वैसा दूसरे के लड़के पर नही। इसी कारण अपनी संतान बुरी होने पर भी भली लगती है, किंतु दूसरों की भली होने पर भी बुरी। तुलनीय : पंज० अपणा निंगर, पराया ढिंगर। (धत्तिगड़ =नालायक मोटा-ताजा लड़का)

अपना पूत लाते दूसरे का भाते—(क) अपना पुत्र लात से भी मारे तो अच्छा है, दूसरे का पुत्र भात भी खिलाए तो अच्छा नही। (ख) अपने लड़के को लात से भी मारा जाय तो अपना ही रहेगा, दूसरे के पुत्र को भात भी खिलाया जाय तो अपना नहीं हो सकता। अपना अपना ही होता है और पराया पराया। तुलनीय : भोज० आपन पूत लाते आन क पूत भाते, आपन पूत लाते आ पर क पूत भाते।

अपना पेट तो कुत्ता भी पालता है—कुत्ता भी अपना पेट भर लेता है अर्थात् अपना स्वार्थ तो सभी पूरा कर लेते हैं, किंतु सच्चे मनुष्य वही हैं जो पराये की भी चिंता करते हैं। तुलनीय : राज० आपरो पेट तो कुत्तो भी भर लेवे; गढ़० अपणो पेट कुत्ता भी पालद; भोज० आपन पेट त ऽ कुक्कुरो भर लेला; ब्रज० अपनों पेट तौ कुत्ताआ भरि लेय; पंज० अपणा टिड तां कुत्ता वी परदा है।

अपना पेट तो कुत्ते-बिल्ली भी भर लेते हैं—ऊपर देखिए।

अपना पेट हाऊ, मैं न देहौं काहू—(क) जब पेट भरा हो तो व्यक्ति किसी की परवाह नहीं करता। आशय यह है कि धनवान किसी की परवाह नहीं करते और निर्धन एक दूसरे के दु:ख-दर्द में हिस्सा बटाते हैं। (ख) जब कोई व्यक्ति किसी को कुछ न दे, और सारा ख़ुद ही हड़पले या हड़पना चाहे तब भी कहते हैं। तुलनीय : मरा० मला माझें पोट भरावयाचे आहे, मी दुसऱ्याला कांहीं देणार नाही; ब्रज० अपनों पेट हाऊ, मैं न गिनूं काऊ।

अपना पैसा खोटा तो परखने वाले का क्या दोष?—दे० 'अपना दाम खोटा···'।

अपना फटा सियें नहीं, दूसरों के में पैर दें—अपना फटा तो सीते नहीं उलटे दूसरों का थोड़ा सा फटा और अधिक फाड़ रहे हैं। जो व्यक्ति अपनी बुरी आदतें दूसरों में भी डालने का प्रयत्न करे उसके प्रति कहा जाता है। तुलनीय : पंज० अपणा फटा सीण नां दूजे बिच पैर दैण।

अपना फ़ायदा अपने हाथ—जैसा काम किया जाता है वैसा ही उसका फल भी मिलता है।

अपना बिसमिल्ला, दूसरे का नऊज़ बिल्ला—अपनी चीज़ की सराहना तथा दूसरे की चीज़ की बुराई करने पर कहते हैं। तुलनीय : अव० अपने क बिसमिल्ला दुसरे क नेउज; भोज० आपन बिसमिल्ला दुसरे क नउजी लगन करे।

अपना बैल कुल्हाड़ी नाथूं—बैल सूए से नाथा जाता है। कोई व्यक्ति कह रहा है कि यह बैल मेरा है, मैं इसे सूए से न नाथ कर कुल्हाडी से ही नाथूंगा। आशय यह है कि अपनी चीज़ के साथ कुछ भी किया जा सकता है। तुलनीय : भोज० आपन बरध हम रगे से नाथब; पंज० अपण टग्गा कुआड़ी नाल नथ।

अपना बैल मुझे दो, तुम चलो अगवार करने—दे० 'अपना नयना मुझे दे···'।

अपना भला बोले ना, बुरा तके ना—असली शुभचिंतक मुंह से चापलूसी की मीठी-मीठी बाते न करके कड़वी किंतु लाभ पहुँचाने वाली बातें करता है, और बुरा नहीं चाहता। (क) आवश्यक नहीं कि कटुभाषी बुरा चाहने वाला हो। (ख) शुभचिंतक कटु आलोचक होते हैं। (ग) मुंह से बुरी बात कहो, किंतु दिल से किसी का बुरा न चाहो। तुलनीय : गढ़० अपणो भलो त बोल नी, बुरो त तको नी; पंज० अपणा पला बोले नां बुरा दिखे नां।

अपना भाई हुआ नहीं, बहन कौन कहे—अर्थात् जब अपना कोई नहीं है तो संबंधी होने की इच्छा कैसे पूरी हो। तुलनीय : मैथ० अपना ने मेल भाई पर ने कहलक दाई; भोज० आपना भाई भइल ना बहिन केहू कहल ना; पंज० अपणा परा नईं होया पैण कौण आखें।

अपना भी खाऊँ और तेरा भी खाऊँ, तो क्या इनाम पाऊँ ?—अपने हिस्से के साथ-साथ तुम्हारा हिस्सा भी खा जाऊँ तो क्या पुरस्कार दोगे ? स्वार्थी व्यक्ति के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : मार० थारी भी खाऊं मारी खाऊं ने कई इनाम पाऊं ?

अपना मकान कोट समान—अपना मकान क़िले के समान लगता है। अपनी चीज़ अधिक अच्छी लगती है। तुलनीय : भोज० आपन मकान कोट समान; मल० अवनवन्टे कुटिळ् अवनवनु् कोट्टारम्; पंज० अपणा कर कोट बरगा, अपना मकान, कोट समान; अं० Every man's house is his castle.

अपना मरन जगत की हँसी—असावधानी करने पर अपनी तो हानि होती है और ससार को उस पर हँसी का मौका मिल जाता है। (क) असावधानी सभी दृष्टियों से बुरी है। (ख) दूसरे के दुःख पर संसार हँसता है। तुलनीय ; हरि० अपणां मरण जगत की हांस्सी; ब्रज० अपनों मरन जगत की हाँसी।

अपना मरने से मित्र का मरना भला—जो लोग अपने स्वार्थ के सामने अपने मित्रों के लाभ को लात मार देते हैं, उनके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : गढ़० अपणा का मन्न ते मीत को मन्नो भलो। पंज० अपणा मरण तों मितर दा मरना चंगा।

अपना मारेगा तो छांव में तो डालेगा—अपना ही हमेशा दूसरों से अच्छा होता है। वह मारेगा भी तो मरने के लिए धूप में न डालकर छाँय में डालेगा। अपना हर दशा में कुछ दया भाव दिखाएगा। तुलनीय : भोज० आपन मारी त पानी त पिआई; हरि० अपणा मारैगा तै छांह मैं ए गेरैगा; कौर० अपणा मारै छांह गेरे; ब्रज० अपनों मोरैगौ तौ छाया में ई डारैगौ।

अपना मारेगा तो छांह में डालेगा—ऊपर देखिए।

अपना मारेगा तो पानी तो पिलाएगा—दे० 'अपना मारेगा तो छाँव में···'।

अपना मारे तो छांह में गिरावे—दे० 'अपना मारेगा तो छाँव में···'।

अपना मारे भी तो अपना ही है—अपना यदि मारे भी तो वह अपना ही है, और पराया प्यार भी करे तो वह अंततः पराया ही है। तुलनीय : मैथ० अपन पिया मारत आ त ऽ मारत आ भान के नर छाग्नी देबैन्ह से गुन त ऽ मानत आ; भोज० आपन पियवा मारी तब्बो भात क नीचे सार्ही देहला पर गुन त मनबे करी; पंज० अपणा मारे तां वी आपणा ही है।

अपना माल अपनी छाती तले—(क) अपनी वस्तु अपनी देख-रेख में ही सुरक्षित रहती है। (ख) कंजूसों के प्रति भी कहते हैं क्योंकि वे अपना धन अपने पास रखते हैं और किसी पर विश्वास नहीं करते। तुलनीय : पंज० अपना गुड़ अपने कोड़े कडे।

अपना मिले ओ काम सिद्ध—अपना व्यक्ति जब मिल जाता है तो सभी काम सिद्ध हो जाते हैं। (क) अपनों के अतिरिक्त और कोई काम नहीं आता। (ख) बिना पहुँच के कोई काम नहीं बनता। तुलनीय : राज० काकैरा ज्योड़ा मिलै जद ही काम देवै; पंज० आपणा मिले तां कम सिद्दा।

अपना मीठा दूसरे का तीता—अपनी वस्तु सबको प्रिय लगती है तथा दूसरे की अप्रिय। तुलनीय : भोज० आपन मीठ आन क तीत; पंज० अपना मिठा दूजे दा फिका; अं० All his geese are swans.

अपना मुंह गढ़ैया में धो/अपना मुंह धो रखो—जब कोई व्यक्ति किसी काम के लिए सक्षम न हो तो कहते है, अर्थात् तुम इस काम के योग्य नही हो।

अपना रख पराया चख—अपने सामान को बचाने तथा दूसरे के ख़र्च करने वाले स्वार्थी के लिए ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० आपन रक्खे के पराया चाखे के; पंज० अपना रख दूजे दा चख।

अपना रत्न गँवाय के घर घर मांगे भीख—दे० 'अपना लाल गँवाय के···'।

अपना रूप और पराया धन बहुत दिखता है—प्रायः लोग अपने को सुन्दर समझते हैं, तथा दूसरे के धन को यथार्थ से अधिक आँकते है। तुलनीय : मार० आपणां रूपरो ने पराया धनरो थाह नी लागे; पंज० अपणा रंग अते दूजे दा पैहा बड़ा लबदा है।

अपना रोग अपने हाथ से नहीं जाता—रोग का इलाज दूसरे से ही कराना पड़ता है। चिकित्सक भी अपनी चिकित्सा स्वयं नही करते। तुलनीय : पंज० अपणी बमारी अपणे हत्थ नाल नईं जांदी।

अपना लँगड़ा पैर फिर घास से दब गया—(क) जहाँ अपनी किसी कमी या कमज़ोरी के कारण चुप रह जाना पड़े वहाँ अपने ही प्रति ऐसा कहते हैं। (ख) किसी लड़ाई-झगड़े आदि में जब सत्य पक्ष की हार हो रही हो और चाहते हुए भी कोई व्यक्ति किसी कमज़ोरी के कारण कुछ न कह सके तो उसके प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : गढ़०

अपणो डुंडो खुट्टो अलसा मूड़े ।

अपना लाल गँवाय के दर-दर मांगे भीख--(क) अधिक खर्च करने के कारण जब कोई कंगाल हो जाता है तो कहते हैं। (ख) मूर्खतावश अपनी चीज़ खोकर जब कोई ग़रीब हो जाता है तब भी कहते हैं। (ग) अपने इकलौते पुत्र के मर जाने पर जब कोई असहाय होकर दर-दर की ठोकरें खाता फिरता है, तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मरा० आपला लाल (रत्न) घालवून दारोदारी भीक मागतो; माल० घर की चून गंडकड़ा खाय ले चापड़ा हाटे पीसवा जाय; कौर० अपणा रतन गमाके घर घर मांगी भीक ।

अपना लेना क्या पराया देना क्या--(क) अपनी चीज़ किसी से ले लेना कोई लेना नहीं है, और न दूसरे की चीज़ उसे दे देना कोई देना है। (ख) इसका भला क्या अहसान ? तुलनीय : हरि० अपणां लेना ओगह का देना; पंज० अपणा लेणां की दूजे दा देणा की ।

अपना वही जो आवे काम - अपना वही है जो समय पर काम आवे। यदि कोई व्यक्ति अपना संबंधो है किंतु वक़्त पर काम नही आता तो उसे अपना नही कहा जा सकता। इसके विपरीत यदि कोई व्यक्ति अपना सबंधी नहीं है, किंतु वक़्त पर काम आता है तो वह सच्चे अर्थो में अपना है। तुलनीय : भोज० आपन ऊहे जे मोका पर काम आवे; मरा० प्रसंगी उपयोगी पडेल तोच आपला; पंज० आपणा ओह जिहड़ा मौके ते कम आवे ।

अपना वही जो वक़्त पर काम आवे ऊपर देखिए।

अपना सत्तू न दूसरे का दूध अपना सत्तू दूसरे के दूध से कहीं अच्छा है। अपने लिए अपनी बुरी चीज़ भी दूसरे की अच्छी चीज से बढ़कर है। तुलनीय : अव० अपने घर कै माठा न दुसरे घरे कै दूध; भोज० आपन सत्तुआ त आनकर लेडुआ ।

अपना सा मुंह लेकर रह गये -- जब कोई व्यक्ति किसी बात को बहुत बल लगाकर कहे और वही बात ग़लत सिद्ध हो जाए और वह लज्जित हो तो उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : हरि० अपणां सा मुँह लेकै रहगें ।

अपना सिक्का खोटा तो परखने वाले का क्या दोष— दे० 'अपना पैसा खोटा तो···'।

अपना सिर अपने हाथ से नहीं मूंडा जाता—अपना प्रत्येक कार्य स्वयं नही किया जा सकता। जब कोई व्यक्ति ऐसा कोई काम कर रहा हो तो कहते हैं। तुलनीय : गढ़० अपणो मुंड अपुही नि मुडेंद; पंज० अपने मुंडन आपइ नईं कसे जा सकदे ।

अपना सूप मुझ दे, तू हाथों से फटक अपना सूप मुझे दे और तुम हाथ से ही (बिना सूप के) अपने फटकने का काम कर ले। स्वार्थी व्यक्तियों के प्रति कहते हैं। तुलनीय : बुंद० अपनों सूप मोय दै तै हातन फटक ।

अपना सेर सवा सेर का – (क) अपनी बात सभी को बज़नी या अधिक तर्कपूर्ण ज्ञात होती है। (ख) अपनी चीज़ सभी को अच्छी लगती है। तुलनीय : पंज० अपणा सेर सवा सेर दा ।

अपना सो अपना, पराया सो पराया— अपना अपना ही रहता है और पराया, पराया ही। जो जो है, वह वही रहेगा। तुलनीय : भोज० जौन आपन तौन आपन, जौन पर तौन पर ।

अपना सो अपना बाक़ी पानी का ढपना—(क) जब कोई दूसरों की अपेक्षा अपनों के साथ अधिक पक्षपात करे तब कहा जाता है। (ख) समय पर अपना ही काम आता है, और सब चीज़ें व्यर्थ हैं।

अपना सो नवेड़ा, पराया सो धटकेड़ा—अपना सहज ही प्रिय होता है, किंतु पराये के साथ यह भावना नहीं होती। जब कोई यों ही अपनी चीज़ को तारीफ़ करे तथा पराई की बुराई तो कहते है।

अपना सोना अच्छा तो सोनार क्या करेगा ?—आशय यह है कि यदि अपनी चीज़ अच्छी हो तो कोई कुछ नहीं कर सकता। तुलनीय : तेलु० मन बंगारु मंचिदैतै कमसालि येमिचेस्ताडु ।

अपना हाथ खुद नहीं काटा जाता—कोई व्यक्ति जानबूझकर स्वयं अपनी हानि नहीं करता। तुलनीय : माल० हाथ ती हाथ नी कटे; पज० हत्थ हत्थ नूं नईं वडदा ।

अपना हाथ गया तो ताजा भात गया- -अपना हाथ नहीं रहा अत: ताज़ा भोजन नही मिल पा रहा है, अर्थात् अधिकार न रहने पर सुविधाएँ कम हो जाती है, या नही रह जाती। तुलनीय : मैथ० अपन हाथ गेल तपत भात गेल; पंज० अपणा हत्थ गया ते ताजा पत्त गया ।

अपना हाथ जगन्नाथ—अपने हाथ से किया काम अच्छा होता है। तुलनीय : गढ़० अपणो हाथ जगन्नाथ; मरा० आपला हाथ जगन्नाथ; भोज० आपन हाथ जगरनाथ; असम० आपोन् हात् जगन्नाथ्; स० आत्मबलं परं नलम्; बंग० आपन हाथ जगन्नाथ; हाड़० अपणा हात जगन्नाथ का भात; ब्रज० अपनो हाथ जगन्ना

र्जै को भात; बुंद० अपनों हात जगन्नाथ कौ भात; छत्तीस० अपन हाथ जगन्नाथ; अं० Every tub must stand on its bottom.

अपना हाथ महा काज—ऊपर देखिए।

अपना हारा, मेहरी का मारा कौन कहता है—जब कोई अपनी स्त्री द्वारा मारा जाता है या स्वयं अपने से हारता है तो दूसरे से कहने नही जाता। अर्थात् इन दो चीजों की दूसरे से शिकायत नहीं की जा सकती। तुलनीय: पंज० अपणे तों हारया अते रन तीं मारया किसे नूं नई कैंदा।

अपना ही पेट सब देखते हैं—संसार में प्रत्येक व्यक्ति अपना लाभ ही (या अपनी ही जीविका) देखता है, दूसरे का कोई नहीं देखता। तुलनीय: भीली० आपणी आपणी हवारध हारां ताके; भोज० अपने पेट सबके लड़के ला; भीली० आपणू आपणूं हाड हारा जोवे; पंज० अपणा टिड सारे देखदे हन।

अपना ही भला सब देखते हैं—ऊपर देखिए।

अपना ही माल जाय आप ही चोर कहलाय—जब किसी की कोई वस्तु चोरी चली जाय और लोग उसी पर शक करें तो ऐसा कहते हैं। दोहरे नुक़सान का संकेत है। तुलनीय: भोज० अपने चीज़ जाय, अपने चोर कहाय; अव० एक तउ आपन माल गवा दूसरे चोरी कहै; पंज० अपणा माल जावे आप चोर खुआवे।

अपनी अक्ल और पराई दौलत बड़ी दिखती है—दे० 'अपनी अक्ल और पराई दौलत बहुत...'।

अपनी अक्ल और पराई की थाह नहीं मिलती—नीचे देखिए।

अपनी अक्ल और पराई दौलत बहुत बड़ी मालूम होती है—लोग प्रायः अपनी अक्ल और दूसरे की दौलत को अथाह समझते हैं। तुलनीय: गढ़० अपणी अक्कल और विराणो धन क्वे कम नी समझद; मरा० आपली बुद्धि नि दुरयाचें धन नेहमी मोठीच वाटतात; भोज० आपन अकिल पराई दौलत; पंज० अपनी अक्ल ते पराया धन बहुत जायदा है।

अपनी अपनी खाल में सब मस्त हैं—सभी अपने में मस्त हैं। दूसरे से कोई ख़ास मतलब नहीं है। तुलनीय: मरा० आपापल्या आवरणांत सर्व धुद आहेत; ब्रज० अपनी अपनी खाल में सब कोई रहै खुस्याल; पंज० सब अपणे अपणे विच मस्त हन।

अपनी-अपनी ग़रज को, अरज करे सब कोय—अपना ही मतलब सब कहते है। अपनी अटकने पर ही लोग प्रार्थना करते हैं। तुलनीय: भोज० आपन अटके त गर्दन लटके। उपर्युक्त लोकोक्ति वृन्द के यहां आती है: अपनी अपनी गरज सब बोलत करत निहोर, बिन गरजै बोलै नहीं गिरवरहू को मोर।

अपनी अपनी चाल में गधा भी मस्ताना—गधे को भी अपना ढंग अच्छा लगता है। आशय यह है कि अपनी चाल-ढाल सभी को प्रिय लगती है। तुलनीय: पंज० अपनी चाल बिच खोता वी मस्ताना।

अपनी अपनी डफली अपना अपना राग—(क) जब सभी अपनी मनमानी करें और कोई भी किसी व्यवस्था को स्वीकार न करे तो कहा जाता है। (ख) आपस में मेल से काम न करने पर भी कहा जाता है। तुलनीय: गढ़० अपणी डफड़ी अपणों राग; मरा० आपली टिमकी अन् आपलाच राग; कौर० अपणी-अपणी तूमडी अपणे-अपणे राग; ब्रज० अपनी अपनी तूमरी अपनौ अपनौं राग; हरि० अपणी-अपणी तूमड़ी अपना-अपना राग; बुंद० अपनी-अपनी ढपली अअनो अपनो राग; पंज० अपनी अपनी बकरी अपनी अपनी में।

अपनी अपनी ढपली, अपना अपना राग—ऊपर देखिए।

अपनी-अपनी तक़दीर सबके साथ है—अपना भाग्य सबके साथ है। जब कोई व्यक्ति कहे कि मेरे बिना तुम भूखे मर जाओगे या तुम्हारा काम नही चल सकता तो कहते है। आशय यह है कि मेरी तकदीर मेरे साथ है ही, कोई आवश्यक नही कि तुम्हारे बिना काम चले ही नही। तुलनीय: हरि० अपनी अपनी तकदीर हो सै। पंज० अपनी तकदीर सब दे नाल है।

अपनी-अपनी तुनतुनी अपना-अपना राग—दे० 'अपनी अपनी डफली...'।

अपनी-अपनी पड़ी आन, कौन खुजाने जाए कान—अपना काम छोड़कर दूसरे का काम करने कोई नही जाता। सबको अपनी ही पड़ी रहती है।

अपनी-अपनी बकरियों को दूध-दही—अपनी बकरियों को लोग दूध-दही तक देना चाहते हैं, यद्यपि वे घास-पात की पात्र है। अपनों को ही सब चाहते हैं और जरूरत से ज़्यादा चाहते है। दूसरो की कोई बात भी नही पूछता। तुलनीय: राज० म्हारी-म्हारी छाकियाँ दूधो-दहियो पाऊं।

अपनी आसा कैलासा, दूसरे की आसा निरासा—अपना काम अपने आप करना चाहिए। दूसरे के भरोसे बैठने पर निराशा ही हाथ लगती है। तुलनीय: मग० अनकर आस परे उपास, अपन आस कर कबिलास; भोज०

आंम के आंस, करे उपांस।

अपनी इज्ज़त अपने हाथ—अपना मान-अपमान अपने ही हाथ होता है। व्यक्ति स्वयं अपने किए कर्मों से ही इज्ज़त पाता है या बेइज्ज़त होता है। तुलनीय: भोज० आपन इज्ज़त अपने हाथ; गढ़० अपणी इज्जत अपणा हाथ; मरा० आपली पगड़ी आपल्या हातीं; राज० आपरो कायदो आपरै हाथ; भोज० आपन पगरी, अपने हाथ; मल० अवरवरुटे मानमू अवरवरूटे कैयिल; पंज० अपणा पग्ग अपणे हत्थ, अपनी इज्ज़त अपणे हत्थ; ब्रज० अपनी पाग अपने हातै; अं० One's honour is in one's own hands.

और भी कई बोलियों एवं भाषाओं में यह लोकोक्ति प्रायः इसी रूप में प्रयुक्त होती है।

अपनी ओर निवाहिए बाकी बह जाने—अपनी ओर से किसी भी प्रकार की त्रुटि न होने देनी चाहिए, दूसरा चाहे जो करे।

अपनी कगुनी का पिसान, अपना मान, अपना जान—अपनी मेहनत की कमाई ही अपनी समझो। दूसरे का भरोसा मत करो। तुलनीय: गढ़० अपणी कौण्यू पिठलो। (कगुनी=एक अनाज; पिसान=आटा)।

अपनी कमाई, मन भाती खाई—अपने धन का चाहे जिस प्रकार उपयोग करें कोई कुछ कह नहीं सकता। तुलनीय: माल० आपणी भैंस को घी हो को पर खावां; पंज० अपणी कमायी जिवें दिल कीत्ता उवें खादी।

अपनी करनी अपना भोग—जैसा कार्य किया जाता है उसका वैसा ही फल भी मिलता है। तुलनीय: राज० हाथ कमाया कामणा किणने दीजै दोस; भोली—आपणी भूले खांडां खाए ते बीजो हूँ करे; पंज० अपनी करनी अपनी वरनी।

अपनी करनी परधान, क्या हिन्दू क्या मुसलमान—अपने कर्म ही प्रधान होते हैं चाहे धर्म कोई भी हो। सदाचार का सभी धर्मों में महत्व है इसलिए धर्म कोई भी हो मनुष्य को अपना आचरण अच्छा रखना चाहिए।

अपनी करनी पार उतरनी—(क) अपना काम खुद करने से ही ठीक रहता है। (ख) अपना बेड़ा अपने किये कामों से ही पार होता है। अपने ही कामों से अपने को सफलता मिलती है। (ग) आवागमन से मुक्ति अपने किए (भले) कामों से ही मिलती है। तुलनीम: मरा० करावें तसें भरावें; गढ़०, मेवा० अपणी करणी पार उतरणी; राज० अपणी करणी पार उतरणी; भोज० आपन करनी पार उतरनी।

अपनी काई दूसरे के सिर—अपना अवगुण दूसरे के ऊपर थोपने पर कहते हैं। जब कोई व्यक्ति अपनी कमी का कारण दूसरे को बतलाता है तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय: भोज० आपन काई आन क कपारे; ब्रज० अपनी कारोंडी दूसरे के सिर; पंज० अपने पाप दूजे दे सिर।

अपनी कुटिया घी की पुड़िया—अपना घर चाहे जैसा भी हो, बहुत प्रिय होता है। तुलनीय: छत्तीस० अपन कुरिया घी के पुरिया।

अपनी कोख का पूत नौसादर—अपनी ही संतान अपने कुल का दीपक हो सकती है, जैसे नौसादर ही सोने को साफ़ कर सकता है तुलनीय: मरा० पोय्चा सख्खा मुलगाच पांग फेडिल।

अपनी खाट देखकर ही पांव फैलाने चाहिए—अपनी हैसियत देखकर ही व्यय करना चाहिए। तुलनीय: गढ़० अपणी खाट देखी क खुट्टा पसार; पंजा० मंजी देख केई लत्ताँ पसारनियाँ चाइदियाने।

अपनी गई का दुख नहीं, जेठ की रही का है—ऐसे दुष्ट व्यक्तियों के लिए कहते है जिन्हे अपनी हानि की उतनी चिंता नहीं होती जितनी दूसरों को हानि पहुंचाने की चिंता रहती है। इस संबंध मे एक कहानी है: किसी स्त्री की गाय खो गई जबकि उसके जेठ (पति का बड़ा भाई) की गायें सुरक्षित थी। लोगों के पूछने पर वह कहती थी कि जितनी चिंता मुझे अपनी गायों के खोने की नहीं है उससे अधिक चिंता मुझे जेठ की गायों के सुरक्षित रहने की है। तुलनीय: हरि अपणी गइया का दुख कोन्या जेठ की रहिया का सै।

अपनी गट्टी भर पनबट्टी—अपना अधिकार (गट्टी) है तो पनडब्बा (पनबट्टी) भरते जाओ। अधिकार मिलने पर जब कोई व्यक्ति स्वार्थ साधन में ही लग जाय तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय: मैथ० अपन गट्टी भरि पनबट्टी।

अपनी गरज को लोग गधा चराते हैं—मतलब के लिए लोग निकृष्ट और हास्यास्पद काम भी करते हैं। तुलनीय: मरा० स्वतः ला गरज असली म्हणजे लोक गाढ़वाला चारा घालतात; अव० अपने गरजी का मामा कहे का परत है; भोज० अपनी गरज गदहा के मामा कहल जाला; हरि० अपनी गरजने गधा बी बाप बणावणा पड़्या करै; राज० आपरी गरज गधैनै बाप कुवावै; पंज० अपनी गौं नूं गधे नूं वी बाप आखीदा है; पंज० अपनी गरज नूं लोकी खोते नूं चारदे हन।

अपनी गरज ग़ज़ब की बावली —ग़रज़मंद को भला-बुरा कुछ भी नहीं सूझता। आवश्यकता पड़ने पर किसी मूर्ख या नीच की खुशामद करनी पड़े तो कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० गरज बावली हुआ करै।

अपनी गरज गधे को भी बाप कहावे—ऊपर देखिए।

अपनी ग़रज पर गधे को बाप कहना पड़ता है—मतलब के लिए गधे को बाप भी कहना पड़ता है। तुलनीय : ब्रज० अपने मतलब कूँ गधाऊऐ बाप बनावैं।

अपनी ग़रज बावली- दे० 'अपनी ग़रज़ ग़ज़ब की…'।

अपनी गली में कुत्ता भी शेर --अपनी गली मे कुत्ता भी अपने को शेर समझता है। अपने घर मे साधारण या कमज़ोर व्यक्ति भी बलवान् बनते हैं। जब कोई अपने घर, क्षेत्र या विषय आदि में अपने को बड़ा समझे या धौंस ज्माए तो कहते है। तुलनीय : राज० आपरी गली में कुत्तो ही सेर; मरा० स्वतः च्या गल्लीत कुत्रा सुद्धां वाघ बनतो; माल० आपणी गरी में कुत्ता भी सेर; गढ़० अपणी देली कुकूर सैंक; अव० आपन गली माँ कुकरौ बरियार; भोज० आपन गली मे कुकुरो सेर; मल० तन्टे पटिक्कल चेन्नाल् ऐतु पट्टिक्कुम् चुण कुट्टम्; उड़ि० निज गलिरे कुकुट मध सछरि; गुज० शेरी माहेनां मिह (कुतरो); तेलु० स्थान वलिमियै गानि तन बलिमि लेदु; हरि० अपणी गाळ मे कुत्ता बी सेर हो सै। ब्रज० अपनें घर पै कुत्ताऊ मरद; पंज अपनी गली विच कुत्ता वी शेर हुदा; अ० Every dog is a lion at home.

अपनी गांठ न हो पैसा तो पराया आसरा कैसा —समय पर अपना ही पैसा काम आता है दूसरे की गिरह का नही।

अपनी गौं ते ससा अहेरी -अपनी गौ या मौक़े पर खरगोश (शशक) भी शिकारी (अहेरी) बन जाता है। (क) अपनी आवश्यकता पर निर्बल व्यक्ति को भी बलवान बनना पड़ता है। (ख) भूख सब कुछ कराती है। भूख मिटाने के लिए ख़तरनाक से ख़तरनाक काम करना पड़ता हैं।

अपनी घानी उतर जाय, बैल मरे चाहे कोल्हू जाय—तेल की अपनी घानी उतर जाय, उसके बाद चाहे बैल मर जाय या कोल्हू नष्ट हो जाय। स्वार्थी व्यक्ति अपना मतलब निकल जाने के बाद किसी की भी खोज-ख़बर नही लेता।

अपनी घोंटी भांग ज्यादा नशा नहीं करती है—अपना किया काम ही अपने लिए अच्छा होता है, या अपने को अधिक पसंद आता है। दूसरे के किये काम मे कोई-न-कोई त्रुटि अवश्य दिखाई पड़ती है। तुलनीय : सि० अपनी घोट त नश्यो थ्येइ; पंज० अपणी कुटी दी पंग मता नशा करदी है।

अपनी चिलम भरने दो दूसरे की झोपड़ी जलने दो—जब कोई व्यक्ति अपने थोड़े से लाभ के लिए दूसरे की बहुत अधिक हानि की भी परवाह न करे तो कहते हैं। तुलनीय : हरि० अपनी चिलम भरण ने दूसरे की झूंपड़ी फूकणां।

अपनी चीज, पराए बस —अपनी वस्तु दूसरे के पास हो और समय पर वापस न मिले तो ऐसा कहते है। तुलनीय : गढ़० अपणी चीज पराया की भौंदी; पंज० अपणी चीज दूजे दे हत्थ।

अपनी छाछ को कोई खट्टा नहीं कहता -अपना मट्ठा किसी को भी खट्टा नही लगता। आशय यह है कि अपनी चीज सबको अच्छी लगती है, चाहे वह बुरी ही क्यों न हो? तुलनीय : बंग० आपनार घोल केउ टके वले ना; ब्रज० अपनी छाछि यैं को खट्टी बतावै; पंज० अपनी छाह नूं कोई खट्टी नही कहँदा; अपनी लस्सी नूं कोई खट्टा नईं आखदा।

अपनी छाछ कौन को खट्टी ऊपर देखिए।

अपनी छाती पर कोदो दलवाना अपनी आँखो से अत्याचार होते देखना और कुछ न कह सकना।

अपनी छानो, अपनी पिओ - ख़ुद अपने हाथ पीस-छान कर भाँग पीओ। (क) अपना कार्य ख़ुद ही करना चाहिए। (ख) अपनी कमाई ही खानी चाहिए। तुलनीय : राज० आवो भाई जीया, अबै घोट्यार पीया; पंज० आप छानो आप पिओ।

अपनी जर्राहिं उखारिहै परजा खेवनहार- प्रजा की भलाई न करने वाला राजा अपने को समूल नष्ट करता है। यह किसी दोहे की एक पंक्ति है।

अपनी जांघ उघाड़िए, अपने मरिए लाज अपनी जाँघ पर से जो कपड़ा हटाएगी वह ख़ुद ही लाज से मरेगी। अर्थात् अपनी या अपनों की बुराई करना अपनी ही लज्जा का कारण बनता है। तुलनीय : मरा० आपली मांडी उघड़ी टाकानि आपण लाजेनें मान खालीघाला; राज० आपरी जाँघ जघाड़यां आपने ही लाज; माल० आपणी जांघ उघाड़ी ने आपणेज लाजौ मरनो; भोज० जे आपन जाँघ उघारी ऊ अपने लजाई।

अपनी जान सबको प्यारी—अपनी जान का मोह सभी को होता है। तुलनीय : पंज० अपणी जाण सारियां नूं

प्यारी।

अपनी टांग उघारिए, आपहि लाजों मरिए—दे० 'अपनी जाँघ उघारिए'''।

अपनी टेक भँजाई, बालम की मूंछ कटाई—अपनी हठ को पूरा करने के लिए अपनी ही हानि करने वालों या अपनी ही बेइज्जती कराने वालों के प्रति कहते है। इस संबंध में एक कहानी है: एक बार एक गाँव में पति-पत्नी में विवाद होने लगा कि पुरुष और स्त्री दोनों में कौन बुद्धिमान है। स्त्री स्त्रियों को बुद्धिमान बतलाती रही और पति पुरुषों को। लेकिन विवाद मे इसका कोई हल नहीं निकला और स्त्री एक दिन बीमारी का बहाना बनाकर चारपाई पर लेट गई। इलाज किया गया किंतु ठीक तो वह तब होती जब उसे कोई रोग होता। पति महोदय बहुत चिंतित हो गए तो एक दिन पत्नी ने कहा कि मैं तुरंत ठीक हो जाऊँ यदि तुम मूंछे काट दो। पति ने फौरन ही मूंछे काट दीं और पत्नी ने जब यह देखा तो चारपाई से उठकर गाने लगी—अपनी टेक भँजाई, बालम की मूंछ कटाई। पति महोदय यह सुनकर समझ गए कि इसने मुझे मूर्ख बनाया। अब पति को भी ताव आया और वे अपनी ससुराल पहुंचे। जमाई को अचानक आया देख सास घबरा गई और उसने कुशल पूछी। जमाई ने कहा कि तुम्हारी लड़की मरणासन्न है, और यदि तुम उसको बचाना चाहती हो तो एक ही रास्ता है। तुम सपरिवार सिर मुड़ा कर गधे पर सवार होकर चलो। माँ को अपनी पुत्री जितनी प्रिय होती है कदाचित् ही कोई दूसरी वस्तु हो। वह तुरंत ही सबके साथ सर घुटवा कर, गधे पर सवार हो पहुंची। बीबी जी चक्की पर बैठी वही गीत गा रहीं थीं तभी पति ने आगे की लाईन पूरी कर दी, 'देखरी लुगाई, जा मुंडियन की पलटन आई।' पत्नी यह सब देखकर बहुत लज्जित हुई। तुलनीय: ब्रज०

> मैंने अपनी टेक निभाई। बालम की गौंछ मुडाई,
> तू इतकूं देखि लुगाई। मुड़ियन की पलटनि आई॥

अपनी तरफ़ न देखें, अइड़ी-बइड़ी जायें—अपनी शक्ल की तरफ़ नहीं देखती और बल खाते हुए इठलाते चली जा रही है। (क) जो स्त्री सुंदर न हो लेकिन अपने को बहुत सुंदर समझती हो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। (ख) कुरूप, कमजोर या अयोग्य व्यक्ति अपने को रूपवान, बलवान या योग्य समझकर गर्व करे तो भी कहते हैं। तुलनीय: पंज० अपणे नूं दिखण इदर उदर जाण।

अपनी तो यह देह भी नहीं—दुनिया में कोई भी चीज अपनी नहीं है। और तो और यह शरीर भी अपना नहीं है: तुलनीय: ब्रज० अपनों तौ इ सरीर ऊ नायें; पंज० अपणी तां इह सरीर बी नई।

अपनी दवाई, अपना ही दाम—दवा भी दो और दाम भी। जब दूसरे से कुछ लेने के स्थान पर कुछ देना पड़ जाय या दूसरे को फँसाने के प्रयास में कोई स्वयं फँस जाय तो व्यंग्य मे कहा जाता है। तुलनीय: गढ़० अपणी दवाई अपणा काम; पंज० अपणी दवा अपणा पैंहा।

अपनी दही को कोई खट्टा नहीं कहता—नीचे देखिए।

अपनी दही कौन खट्टी कहता है—दे० 'अपनी छाछ को कोई...'। तुलनीय: ब्रज० अपनी दही ए कोई खट्टी नायें बतावै।

अपनी दाढ़ी जलने दो, हमारा दीया बलने दो—दूसरों की हानि की कुछ भी परवाह न करने वाले स्वार्थी व्यक्तियों के प्रति कहा जाता है। तुलनीय: पंज० अपणी दाड़ी सड़ण देओ साडा दीवा बलण दो।

अपनी दाढ़ी सब पहले बुझाते हैं—यदि कई व्यक्तियों की दाढ़ियों में आग लग जाय तो सब अपनी ही दाढ़ी पहले बुझाएँगे। आशय यह है कि सब अपना ही स्वार्थ पहले देखते हैं, या पहले अपना संकट टाला जाता है और फिर दूसरे का। इस लोकोक्ति के संबंध में एक रोचक चुटकुला है: एक बार अकबर और बीरबल बैठे बातचीत कर रहे थे। अचानक अकबर ने पूछा, 'बीरबल यदि हम दोनों की दाढ़ी में एक साथ आग लग जाय तो तुम किसकी दाढ़ी बझाओगे।' बीरबल ने तुरंत उत्तर दिया, 'जहाँपनाह, अपनी ही दाढ़ी सब पहले बुझाते है।' तुलनीय: भोज० अपने दाढ़ी क आगि नहिले बुझावल जाला; ब्रज० सब अपनी ई डाढी ऐ पहलें बुझावै; पंज० अपणी दाड़ी सारे पैंले बुझांदे हन।

अपनी नाक कटे तो कटे, दूसरे का सगुन तो बिगड़े—दूसरों की छोटी हानि करने के लिए अपनी बड़ी हानि करने वालों के प्रति व्यंग्य से कहते है। तुलनीय: मरा० आपलें नाक कापून घेऊन (कापलें गेले तर गेले) दुसऱ्याचा अपशकुन साजरा करणें (दुसऱ्याला शुभ शकुन तर होणार नाहीं); बंग० निजेर नाक केटे परेर यात्रा भंग; बुंद० अपनी नाक कटा के दुसरन खों असगुन करबो; भोज० आपन नाक कटे त कटे दूसर के सगुन त बिगरे; मल० मूक्कु मुरिच्चुम् शकुनम मुटक्कुक; ब्रज० अपनी नाक कटै तौ कटै, दूसरे कौ सौंन तौ बिगरै; अं० Cut one's nose and spite one's face.

अपनी नींद सोये, अपनी नींद उठे—(क) अपने मन की करे। मनमौजी के प्रति कहते है। (ख) जो व्यक्ति किसी से वास्ता न रखे, अकेला रहे उसके प्रति भी कहा जाता है। तुलनीय : राज० आपरी नींद मा सोउबै अपने नींद मा उठबै; भोज० आपन उड्हाई सोवब, आपन उड्हाई जागव; पंज० अपणी नीद सोंवो अपणी नींद उठो। यह लोकोक्ति मूलतः मुहावरे पर आधारित है।

अपनी पगड़ी अपने हाथ—दे० 'अपनी इज्जत अपने…'।

अपनी पतरी भोज बखाने—पत्तल सामने आते ही भोज का पता चल जाता है। (क) जब तक अपने सामने कोई वस्तु न आये तब तक उसके संबंध में कुछ कहा नहीं जा सकता। (ख) जो वस्तु सामने आने वाली हो उसके संबंध में दूसरों से सुनकर कोई निश्चय नहीं करना चाहिए। तुलनीय : अं० The proof of the pudding is in the eating.

अपनी पत अपने हाथ—दे० 'अपनी इज्जत अपने…'।

अनी पीठ अपने को दिखाई नहीं देती—अपने दोषों का पता खुद को नही चलता। केवल दूसरों को ही वे दिखाई पड़ते है। जो व्यक्ति स्वयं दोषी होते हुए भी उसी दोष के दोषी को बुरा भला कहे, उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० अपणी पिठ अपणे नूं नई लबदी।

अपनी पीठ अपने हाथ से नहीं खुजलाई जाती—अपनी पीठ दूसरा व्यक्ति ही खुजला सकता है। जो काम दूसरों के करने के होते हैं उन्हें लाख प्रयत्न करने पर भी नही किया जा सकता। तुलनीय : पंज० अपणी पीठ अपणे हत्थ नाल नई खुरकी जांदी।

अपनी पीढ़ी के नीचे भी सोटा—अपने अवगुणो की परवाह न कर दूसरों का दोष निकालने पर कहते है। तुलनीय : पज० अपणी पीढ़ी हेठ तोट फेर।

अपनी पूंछ समेटी नहीं जाती औरों का क्या कर सकता है ?—जो अपने ही काम को नही संभाल सकता, वह दूसरे की सहायता क्या करेगा ?

अपनी प्रतिष्ठा अपने हाथ—दे० 'अपनी पत अपने हाथ…'।

अपनी फूटी न देखे दूसरे की फूटी निहारे—नीचे देखिए।

अपनी फूली न देखे, दूसरे का ढेंढ़र देखे—अपना बड़ा दोष नही दीखता किंतु दूसरों के छोटे-छोटे दोष भी दीखते हैं। (फूली=आँख में सफेद दाग,'ढेंढ़र=आँख का कोया)। तुलनीय : भोज० आपन फुल्ली न देखें, दूसरा के ढेंढ़र निहारें।

अपनी फूली न देखे दूसरे की टेंट देखे—ऊपर देखिए। तुलनीय : बघे० आपन फूली निहारई, दूसरे के टेटरा पर-पर झांकई।

अपना बला और के सिर—अपने अपराध को दूसरे के सिर मढ़ने पर कहते हैं। तुलनीय : अव० अपने मूड़े क बलाय दुसरे के मूड़े फेंकै; भोज० आपन बलाय आने के सीरे; पंज० अपणी बला दूजे दे सिर।

अपनी बात अपने हाथ—अपनी इज्जत अपने हाथ या वश में होती है।

अपनी बात गुड़ सी मीठी—(क) अपना स्वार्थ बहुत अच्छा लगता है। (ख) अपनी बात बहुत अच्छी लगती है।

अपनी बारी खरी पियारी—अपने हिस्से और अपनी बारी से मिली वस्तु ही वास्तविक रूप में अच्छी होती हैं। तुलनीय : गढ़० अपणी बारी खरी प्यारी।

अपनी बीती कहूँ कि जग बीती—(क) अनुभव की बात जानना चाहते हो अथवा सुनी-सुनाई ? (ख) अपने साथ बीतने वाली सुनना चाहते हो या दुनिया के साथ बीतने वाली ? आशय यह है कि पहली निश्चित रूप से सत्य होगी और दूसरी असत्य भी हो सकती है। तुलनीय : भोज० आप बीतल कही कि जग बीतल; ब्रज० आप बीती कहूं कै जगबीती; पंज० आप बीती दसां यां जग बीती।

अपनी बुद्धि, पराया धन कई गुना दीखता है—दे० 'अपनी अक्ल और पराई दौलत…'।

अपनी बेटी देवी, बाबा की सेवी—अर्थात् अपनी लड़की को देवी के समान समझना भले ही उसमें दुर्गुण हों, किंतु दूसरे की बेटी को दासी के समान समझना भले ही वह गुणों की खान हो। जब कोई आँख मूंदकर अपनी वस्तु को अच्छी तथा दूसरों की वस्तु को बुरी कहे तो कहते हैं। तुलनीय : मैथ० अपन बेटी दाई आ बाबा क बेटी राई छाई; भोज० आपना बेटी सोना, आनक बेटी लोना।

अपनी बेटी सोना, दूसरे की नोना—(नोन=नमकीन मिट्टी, या मिट्टी पर का नमक या शोरा) जब कोई अपनी चीज को बहुत अच्छी और दूसरे की चीज को बहुत बुरी समझे तो कहते हैं। तुलनीय : पंज० अपणी ती सोना दूजे दी लूण।

अपनी बेर को घोलम घाला, हमारी बेर को भूखम भाखा—दे० 'आने को धाम घोला…'।

अपनी ब्याहता को लाने क्या जाना ?—अपनी पत्नी

तो स्वयं ही घर चली जायगी उसे लेने जाने की क्या आवश्यकता? (क) अपनी वस्तु तो अपनी ही रहती है उसकी चिन्ता नही करनी चाहिए। (ख) अपनी वस्तु के प्रति अधिक आकर्षण नहीं रहता। तुलनीय : पंज० अपणी बीटी नूं लैण की जाना।

अपनी भरी आँत, सइयाँ के खोजे जाँत--अपना पेट भर गया तो पत्नी पति की रोटी के लिए आटा पीसने के लिए चक्की (जाँता) खोजने लगी, अर्थात् अपने स्वार्थ की पूर्ति के बाद ही दूसरे की चिन्ता होती है। तुलनीय : भोज० आपन भरके आँत सइयाँ खातिर खोजें जाँत; मैथ० अपन भरल आँत, मांयना जो हथि जाँत।

अपनी भरी थाली छोड़ें, दूसरे की जूठी पत्तल निहारें—(क) लालची व्यक्ति के लिए कहते हैं जिसे अपनी अच्छी चीज़ भी अच्छी नही लगती पर दूसरे की बुरी भी देखता है तो लालच करता है। (ख) अपनी पत्नी छोड-कर पराई औरतों से प्यार करने वालों के प्रति भी व्यंग्य मे ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० अपनी टाठी छोरि कं दूसरे क जूठ पतरी चाटें।

अपनी भूमि पर घास जामे, दूसरे की करें गोड़ाई—अपनी चीज़ तो सँभलती नहीं और दूसरे की सँभालने चले हैं। तुलनीय : भोज० अपना भुँई भाँग लोटे पाही जोते जाई, अपना खेते तितली जामे पाही जोत जाई।

अपनी भैंस का दूध सौ कोस पर जाकर भी पिया जा सकता है-- यदि कोई व्यक्ति किसी को अपनी भैंस का दूध पिलाएगा तो वह उसके घर जाकर, चाहे वह सैकड़ों कोस पर क्यों न रहता हो, उस व्यक्ति की भैंस का दूध भी पी सकता है। अर्थात् यदि आप दूसरों की खातिर करेगे तो वे भी आपकी खातिर करेंगे। चाहे उनके और आपके बीच दूरी सैकडों कोस की क्यों न हो। तुलनीय : पंज० अपनी मज्जदा दुद्ध सै कोह ते वी पिया जांदा।

अपनी माँ को डायन कौन कहता है अपनी माँ को कोई भी बुरा नही कहता। अपनी बुरी वस्तु या बुरे सम्बन्धी को कोई बुरा नहीं कहता। तुलनीय: राज० आपरी माँ नै डाकण कुण कै वै; भोज० आपन माई के डाइन के कहे; पंज० अपणी माँ नूं डैण कौण कंदा है।

अपनी मारी हुई हलाल--अपनी मारी मुर्गी ही अपने लिए वास्तविक रूप में हलाल होती है, क्योंकि दूसरे द्वारा मारी गई मुर्गी के सम्बन्ध में हम निश्चित रूप से नहीं कह सकते कि वह हराम है या हलाल। (क) अपने आप करने से ही काम ठीक होता है। (ख) अपना काम बुरा भी हो तो भी अच्छा लगता है। तुलनीय : राज० आपरी मारी हलाल।

अपनी मूड़ी बाँचे तो दूसरे को मूड़ी गेंद बराबर—सब लोग अपनी ही रक्षा करना चाहते हैं। दूसरे की कोई चिन्ता नही करता। तुलनीय : मग० अपन मूड़ी बाँचे तअ अनकर मूड़ी बेल बराबर; भोज० आपन मूड़ी बाँचीत आनक मूड़ी बेल बरोब्बर। (मूड़ी=सिर)।

अपनी राधा को याद करो—(क) कोई व्यक्ति जब किसी का कहना नही मानता तो कहते हैं। आशय यह है कि जो तुम्हें अच्छा लगे वही करो। (ख) जाओ, अपना काम करो, दूसरे से क्या मतलब? तुलनीय : ब्रज० राधा कूं यादि करो, पंज० अपणा कम करो दूजे नाल की मतलब।

अपनी राह जाओ, अपनी राह आओ--अपनी राह से जाओ और अपनी ही राह से आओ। अर्थात् किसी से कोई मतलब मत रखो या अपने काम से काम रखो। तुलनीय : राज० रस्तै आवणे रस्तै जावणे; पंज० अपणे राह जावो अपणे राह आवो।

अपनी रोटी सभी सेंकना चाहते हैं---अपना स्वार्थ सिद्ध करना सभी चाहते हैं।

अपनी लगी हीक/पीठ में और के लगे भीत में—जो अपने दुःख को बहुत बड़ा समझे और दूसरे के दुःख की कोई चिन्ता न करे उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : हरि० अपणो लाग्गै हीक मैं और के लाग्गै भीत मैं।

अपनी लड़की भली होती तो दूसरा क्यों गाली देता?- अर्थात् यदि हम स्वयं अच्छे होंगे तो दूसरे हमें बुरी निगाह से नही देख सकते। दोष अपने ही अन्दर देखना चाहिए। तुलनीय : भोज० आपन धीया नीक (नीमन) रहती त दूसर काहे के हँसित (अथवा त दूसर का गरिआइन?); पं० अपणी ती चंगी हुंदी तां दूजे क्यों गाल दें दे।

अपनी लाज अपने हाथ—दे० 'अपनी इज्ज़त अपने...'।

अपनी लार तो सिमटती नहीं, उठायेंगे जगत का भार—अपना साधारण काम भी नहीं सँवरता और दूसरों के बड़े-बड़े काम करने को तैयार हैं। गप्पे हाँकने और शेखी बघारने वालों पर व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : बुंद० अपनी लार तौ सिमटत नइयाँ जगत्तर कौ भारौ बाँदें; पंज० अपणा मींड ते संबलोंदा नई जग नूं चुकण गे।

अपनी लिट्टी पर सब आग रखते हैं -अपनी रोटी सभी पकाते हैं। अर्थात् अपना स्वार्थ सभी सिद्ध करते हैं।

अपनी लिट्टी सब आगे रखते हैं—ऊपर देखिए।

अपनी लो और सुख से सो—अपनी वस्तु जब तक न ली जाए अर्थात् उधार माँगकर काम चलाया जाय, तब तक सुख नही मिलता। तुलनीय : गढ़० मोल लेणी सुख सेणी; पंज० अपणी लै सुख नाल सौ।

अपनी समुझि साधु सुचि को भा—अपने को स्वयं अच्छा कहने से कोई अच्छा नहीं होता। जिसे दूसरे व्यक्ति अच्छा कहें, वही अच्छा होता है। जो व्यक्ति स्वयं अपने को बहुत अच्छा और पवित्र बताए उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

अपनी साध अपने से मिटती है—दूसरे की वस्तु अपने काम नही आ सकती, अपनी चीज़ ही अपने को संतुष्ट कर सकती है। (साध=श्रद्धा, इच्छा, आकांक्षा)। तुलनीय : मैथ० अनका पाबनि अपना की अतेक देतन हैत की; भोज० आन क चीजु कवन काम जब आइत अपने काम।

अपनी हँसी हँसें, पराई हँसी रोवें—जो दूसरों की हँसी उड़ाने में आनंद लेता है और अपनी हँसी होने पर बुरा मानता है, उस पर यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : पंज० अपनी हँसी हँसण दूजे हँसण ते रोण।

अपनी हाई और पर गँवाई—दोष अपना हो और उसे दूसरे के सिर पर मढ़ने पर कहते है।

अपनी हराई मराई कोई नहीं भूलता—अपने कष्ट और मुसीबत के दिन कोई नही भूलता।

अपनी हार बहू की मार कहते नहीं—अपनी असफलता तथा अपनी पत्नी द्वारा पीटे जाने की बात कोई नही कहता। ऐसे व्यक्ति के प्रति कहते है जो लज्जा के कारण अपनी असफलता आदि नही कहता। तुलनीय : मैथ० अपन हारल बहुअल मारल दोसरा के नहिं कही; भोज० आपन हारल मेहरारू का मारल ना कहल जाला; पंज० अपणी हार अत बौटीदी मार दसदे नईं।

अपनी हार मेहरी की मार कहते नहीं—ऊपर देखिए। (मेहरी=पत्नी)। तुलनीय : मग० अपना हारल मेहरी के मारल।

अपनी हारी किससे कहें—अपनी हार, असफलता या कमी, किसी से भी नहीं कही जाती।

अपनी ही पगड़ी से न्याय करो—अर्थात् हे न्याय कर्त्ता! स्वयं को मेरी परिस्थिति में रखकर ही न्याय करना। जैसे इस समय मेरी पगड़ी समाज के सम्मान की दृष्टि से कसौटी पर है वैसे ही यदि आपकी हो तो आप कैसा न्याय चाहेंगे? तुलनीय : अव० अपनी ही पगिया ते नियाओ केले ओ; पंज० अपनी पग नाल नयाय करै।

अपने-अपने घर सभी ठाकुर—अपने घर सभी बडे और शक्तिशाली होते हैं। आशय यह है कि अपने घर कोई नहीं दबता। तुलनीय : राज० आप आप रै घरै सै ठाकर; भोज० अपने घरे सभे बरियार, अपने घरे कुकुरो बरियार; पंज० अपने कर बिच सारे राजे।

अपने आम दूसरे के बाग़ में नहीं खाए जाते—दूसरे के बाग़ में अपने आम भी खाए तो लोग यही समझेंगे कि बाग़ में से तोड़कर खा रहा है। अर्थात् कोई ऐसा काम नहीं करना चाहिए जिसमें व्यय अपना हो और नाम दूसरे का। तुलनीय : भोज० आन के बगइचा में आपन आम ना खाइल जाला; पंज० अपणे अंब दूजे दे बाग बिच नईं खादे जांदे।

अपने उढ़री जाय भगवान को दोष दें—स्त्री स्वयं तो किसी के साथ भागी जा रही है और दोष दे रही है भगवान को। स्वयं ग़लती करके जब कोई व्यक्ति दूसरे को दोष देता इस लोकोक्ति का प्रयोग करते हैं। तुलनीय : मैथ० अपने उढ़रल जाई तऽ बिध-बिधाता उढ़ारने जाय; भोज० अपने उढ़रल जाय बरम्हा के दोस दे।

अपने ऊपर आवे घात बाम्हन मारे नहीं पाप—यद्यपि ब्राह्मण पूज्य होते हैं उन्हें मारा नही जाता, लेकिन यदि वे क्षति पहुँचाएँ तो उन्हें मारने से कोई अपराध नही होता। आशय यह है कि चाहे कोई कितना ही प्रिय हो लेकिन यदि हानि पहुँचाता है तो उसे अवश्य दंड देना चाहिए। तुलनीय : छत्तीस० अपन ऊपर आवं घात, बाँमन मारे नइ ए पाप।

अपने एक रोटी पौतीं, त तीन गीत गौतीं—यदि मैं एक रोटी भी पाता तो तीन का गीत गाता। अर्थात् कोई व्यक्ति मेरा थोड़ा भी भला करता तो मैं उसकी ख़ूब तारीफ़ करता। जब कोई व्यक्ति किसी की बुराई कर रहा हो, और कोई दूसरा उसे ऐसा न करने को कहे तो वह बुराई करने का कारण समझाता हुआ ऐसा कहता है। इस लोकोक्ति का एक अर्थ यह भी है कि यदि मैं एक रोटी पाता तो तीन गीन गाता। अर्थात् काफी प्रसन्न होता। जब कोई व्यक्ति किसी ऐसे व्यक्ति से कोई चीज़ माँगे जो उसके पास न हो और वह ख़ुद उसे पाने की इच्छा रखता हो तो वह ऐसा कहता है। तुलनीय : भोज० अपना के एक रोटी पवतीं त तीन गीत गवतीं।

अपने ऐब सब लीपते हैं—अपने अवगुण सभी छिपाते हैं। तुलनीय : मरा० आप लें उणें सर्वच लपवितात;

भोज० आपन फाटल सब ढाँपेला।

अपने करनी करे दोस दूसरे को दे—जो स्वयं अपराध करे और उसे दूसरे के ऊपर थोपे, उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : छत्तीस० अपन करनी करँ, दूसर ला दोस दै।

अपने कान अपने हाथ से नहीं छेदे जाते—(क) अपने हाथ से अपने को कष्ट नहीं दिया जा सकता। (ख) जो जिसका काम होता है, वही उसे कुशलता से कर सकता है। (ग) अपने सभी काम स्वयं नहीं किए जा सकते। तुलनीय : बुंद० अपने कान अपने हातन नईं छेदे जात; भोज० आपन कान अपने हाथे ना छेदाला; पंज० अपणे कन्नां बिच आप छेद नईं कर दे।

अपने काने लड़के को भी माँ लाल कहती है- माँ को अपना काना लड़का भी प्रिय होता है। आशय यह है कि अपनी बुरी चीज़ भी अपने को प्रिय होती है। तुलनीय : भोज० आपन अन्हरो पूत पूते होला; पंज० अपने काणे मुंडे नूं वी माँ लाल कैदी है।

अपने किए का क्या इलाज-- अपना किया कोई काम बिगड़ जाय तो भला क्या किया जा सकता है? तुलनीय : भोज० अपने बिगरला क कौनो इलाज ना; फ़ा० खुद कर्दारा इलाज नेस्त; पंज० अपणे कीते दा की लाज।

अपने को घामघोला और की बार को टाल्मटोला—स्वार्थी व्यक्ति के प्रति कहते हैं जो अपना काम कराने के के लिए जल्दी बरते और दूसरे के काम के समय टाल-मटोल करे।

अपने को जुरे नहीं जग के लिए दानी-- नीचे देखिए।

अपने को जुरे नहीं दूसरे को दानी—अपने लिए तो कुछ है नही या जुटता नहीं और दूसरे को देने को तैयार हैं। यों ही अपने को दानी प्रदर्शित करने वाले पर कहते हैं। तुलनीय : भोज० अपना के आँटे नाँ, भइल बान अ दानी; अव० अपने जुरे ना बने बड़े पुन्नी; माल० घर रा तो घुट्टी चाटे ले उपाध्या ने आटो घाले।

अपने को जुरे ना, दूसरे को दान - ऊपर देखिए। अपनी हैसियत का विचार न कर यश के लिए स्वयं कष्ट उठाकर दान करने वाले पर भी व्यंग्य से ऐसा कहते हैं।

अपने को जैसे-तैसे दुनिया को दानी— दे० 'अपने को जुरे नहीं दूसरे···'। तुलनीय : मग० अपना के जेही सेही जगत्तर ला दानी; भोज० अपना के ल ल ल जग खातिन दानी।

अपने को भगई बिलारी को गाँती—अपने लिए तो केवल भगई या छोटी धोती मिलती है, किन्तु बिल्ली के गले में लम्बा कपड़ा बाँध रहे हैं। व्यर्थ में आडम्बर करने वाले, या अपने पर खर्च न कर व्यर्थ के कामों में पैसा फूंकने वाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : भोज० अपना के भगई बिलाई के गाँती। (भगई=बहुत छोटी धोती; गाँती=गले में बँधा लम्बा कपड़ा। जाड़े से बचाने के लिए गाँती (सं० गात्रिका) बाँधते हैं)।

अपने को रोई-धोई, आन को अढ़ाई पोई—अपने लिए तो केवल रोना-धोना है, अर्थात् कुछ भी नहीं है। पर दूसरे को ढाई रोटी (पोई) देना चाहते हैं। इस प्रकार के स्वभाव वाले या इस प्रकार करना चाहने वाले पर कहा जाता है। तुलनीय : भोज० अपना के रोई धोई, दोसरा के अढ़ाई पोई।

अपने को रोटी, तीन-तीन गोती--देखिए 'अपने को एक रोटी···'।

अपने को साग-सत्तू पर को मिठाई—आदमी को अपना गुज़ारा तो कैसे भी कर लेना चाहिए किन्तु दूसरे की खातिर अवश्य करनी चाहिए। तुलनीय : मैथ० अपना ला लीरी बीरी, दीदिया लाखीर पूरी; भोज० अपना के साग-पात, पर के परोरा।

अपने खेत का पटुवा तीता—अपने घर की चीजें अक्सर पसन्द नही आती। (पटुवा=पटसन जिसके पत्तों का साग बनता है)। तुलनीय : भोज० अपने खेत क पटुवा तीत।

अपने गंदा दूसरे की निन्दा—स्वयं तो गंदे हैं और दूसरे की निन्दा करते हैं। अपनी कमी या बुराई पर ध्यान न देकर दूसरे की हँसी या शिकायत करने वाले के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : मैथ० अनका दूम गे लरबरही अपने काँचे बड़ी; भोज० अपने त फूहर दोस दे दूसरा क; पंज० आप गंदा दूजे दी निंदा।

अपने गाँव आग लगी, धुआँ दूसरे गाँव---आग तो लगी है अपने गाँव में और धुआँ देखते हैं दूसरे गाँव में। जब कोई असंगत बात करे तो उसके प्रति कहते हैं। जिसे सामने की वस्तु नही दीखती और वह उसे अन्यत्र खोजता है तब भी कहते हैं। तुलनीय : भोज० अपना गाँवे आग लागे आन गाँवें धूआँ; पंज० अग्ग अपणे पिंड लग्गी तुँआ दूजे पिंड।

अपने घर अन्न नहीं दूसरे के घर पेड़ा—अपने घर तो सत्तू भी खाने को नहीं पाते और दूसरे के घर जाते हैं तो पेड़ा माँगते हैं। जब कोई निर्धन व्यक्ति बहुत नज़ाकत दिखाता है तो उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

अपने घर का छेद क्यों कहें---अपने घर की बुराई

किसी से नहीं करनी चाहिए। तुलनीय : मैथ० अपना घर क छिद्र ककरो न कही; भोज० आपन छेद केहु से ना कहे के; पंज० अपणे कर दा पैड़ कयों दासिये।

अपने घर का सत्तू न आन के घर का पेड़ा--अपने घर की छोटी या साधारण चीज़ भी दूसरों के घर की बड़ी या अच्छी चीज़ से अपने लिए अच्छी होती है। तुलनीय : भोज० अपने घर क सतुवा न आन के घर क लेडुवा।

अपने घर की आग दूसरे घर का वैश्वानर--अपने घर आग लगती है तो लोग कहते हैं कि आग लगी है, बुझाओ पर जब दूसरे के घर आग लगती है तो लोग कहते हैं कि वैश्वानर अर्थात् अग्नि देव हैं, मत छुओ। आशय यह है कि अपनी हानि ही मनुष्य को दिखाई पड़ती है, दूसरे की नहीं। तुलनीय : पंज० अपणे घर लग्गे तां अग्ग दूजे दे कर लग्गे ता बसन्तर।

अपने घर की घरनी, घर में चोरनी--अपने घर की स्त्री अपने ही घर में चोरी कर रही है। जब कोई अपना आदमी अपने ही साथ धोखा करे तो कहते हैं। तुलनीय : मैथ० अपना घर के घरनी अपना चाउर के चोरनी; पंज० अपने कर दी रन अपने कर दी चोर।

अपने घर कुतिया भी बली--दे० 'अपने घर कुत्ता…'। तुलनीय : मैथ० अपना घर पर कुतियो बरियो; भोज० अपने घरे कुतियो बरियार; पंज० अपणे कर कुत्ती वी चंगी।

अपने घर कुत्ता भी बली--दे० 'अपने दरवाज़े का...'।

अपने घर कुत्ता भी शेर--दे० 'अपने दरवाज़े का…'।

अपने घर के सब बादशाह हैं--अपने घर में सभी बादशाह के समान हैं। अर्थात् अपने घर में सबका पूर्ण अधिकार होना है। तुलनीय : भोज० अपना घरे सभे राजा; हरि० अपणें घरां सब सेर; पंज० अपणे कर बिच सब राजा।

अपने घर के सभी राजा--ऊपर देखिए।

अपने घर खाइए नहीं, बिना बुलाए आइए नहीं--अपने घर खाओ मत, और जब तक मैं बुलाऊँ नहीं तब तक मेरे घर भी मत आना। (क) जब कोई व्यक्ति ऐसा प्रतिबन्ध या ऐसी शर्त लगाए कि किसी काम का होना असंभव हो जाय या किसी व्यक्ति के लिए कोई मार्ग न रह जाय तो व्यंग्य से कहते है। (ख) जब कोई व्यक्ति न खुद कोई काम करे और न दूसरे को करने दे तो उसके प्रति भी व्यंग्य से कहते हैं; तुलनीय : पंज० अपणे कर खाना नई सद्दे बगैर आना नई; ब्रज० अपने ह्याँ खइयौ मति, बिना बुलायें अइयौ मति।

अपने घर दिया न बाती, दूसरे के घर मूसल जैसी बाती--अपने घर तो दीपक जलाती नहीं और दूसरे के घर मूसल जैसी मोटी बत्ती का दीपक (दिया) जलाती है। जो अपना काम कुछ भी न करे और दूसरे के लिए काफी श्रम करे, उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० अपना घरे अन्हारा मटकीं, आन क घरे मूसर जस बाती।

अपने घर पर कुत्ता शेर--दे० 'अपने दरवाज़े का…।' तुलनीय : ब्रज० अपने घर पै तौ कुताऊ सेर ऐ।

अपने घर बसना, अपने घर रसना--अपने घर में जो सुख मिलता है वह दूसरे के घर कभी नहीं मिल सकता।

अपने घर में आना किसको बुरा लगता है--सभी चाहते हैं कि अपना लाभ हो। तुलनीय : मरा० आपल्या घरीं येण्याला कोणास वाईट वाटतें; भोज० अपने घरे आवल के के जबून लागे; पंज० अपणे कर बिच आना किस नूं माड़ा लगदा है।

अपने घर में दीया पहले, मन्दिर में बाद में--अपने घर मे दीपक पहले जलाया जाता है और मन्दिर मे बाद में। अर्थात् (क) पहले आत्मा को देखा जाता है और फिर परमात्मा को। (ख) पहले अपना काम किया जाता है उसके बाद दूसरे का। तुलनीय : भोज० अपना घरे पहिले दीआ सिवलला में बाद में; पंज० अपने कर बिच दीवा पहिलां मंदर बिच मगरों।

अपने घर सँझौती नहीं दूसरे के घर मूसर जैसी बत्ती--देखिए 'अपने घर दिया न बत्ती…'। तुलनीय : भोज० अपने घर सँझवती नाँ आन के घरे मूसर अइसन बाती; मैथ० अपना घरे दिआ न बाती अनका घरे मूसर अस बाती।

अपने घर सत्तू आन के घर पेड़ा--अपने घर का सत्तू भी दूसरे के घर के पेड़ों से अच्छा होता है। अपनी साधारण चीज़ भी दूसरे की अच्छी चीज़ से बेहतर होती है।

अपने चने न चबाने दो तो हरामज़ादा कहाओ--अपनी वस्तु दूसरे को लेने दें तो सभी सज्जन कहते हैं, और न लेने दे तो गालियाँ देते हैं।

अपने चूतड़ झाड़ते हैं--पास में कुछ नहीं है। (क) जो व्यक्ति बहुत निर्धन हो उसके प्रति कहते हैं। (ख) कामचोर और निकम्मो के प्रति भी कहा जाता है। तुलनीय : पंज० अपना टुआ फंडदे हन।

अपने छिपकर खाना दूसरे का हँस गाकर--पराए के घर हँस-गाकर खाना तथा अपने घर के किवाड़ बंद करके

छीना ताकि कोई देख न सके। केवल अपना ही स्वार्थ चाहने वाले व्यक्तियों पर व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : भोज० आन क खाई गा बजा के, अपने खाई टाटी लगा के।

अपने तो जैसे-तैसे जग के लिए दानी - दे० 'अपने को जुरे नहीं···'। तुलनीय : मैथ० अपना के जेही-सेही जगत्तर ला दानी; भोज० अपने त अइसन-ओइसन दुनिया खातिन दानी।

अपने तो सूई भी न जाने दे और दूसरे के भाला घुसेड़े — अपनी रक्षा और दूसरे की हानि चाहने वाले पर कहते हैं।

अपने दरवाज़े का कुत्ता भी शेर -दे० 'कुत्ता भी अपने दरवाज़े पर ··'। तुलनीय : भोज० अपना दुआर पर कुकरो सेर; मग० अप्पन दुआरी पर कुतओ बरियार होवस है; भोज० कक्कुरो अपना दुआरे बड़ियार होला; बुंद० अपनी देरी पै कुता नाहर।

अपने दही को कोई खट्टा नहीं कहता -नीचे देखिए।

अपने दही को खट्टा कौन कहता है ? अपनी दही को सभी मीठा समझते हैं- अपनी चीज़ को कोई बुरा नही कहता। अपनी वस्तु को सभी अच्छा समझते है। तुलनीय : मरा० आपल्या दह्याला आंवट कोण म्हणतो ; अव० अपने दही का कौन खट्टा नाही कहत; मल० काक्करक्कुम तन कुञ्ञु पोन कुञ्ञु; हरि० अपणे मीतने कूण खाट्टा बतावै सै; अं० Every Potter praises his pot, Every cook praises his own stew, Every man thinks his own geese are swans.

अपने दिन काटे न कटे और दूसरों को दान दें -खुद तो भूखे मरते हैं, किन्तु दूसरों की सहायता करना चाहते हैं। (क) सज्जन पुरुषों के प्रति कहते हैं जो स्वयं निर्धन होते हुए भी दूसरों की सहायता करना चाहते हैं। (ख) जो व्यक्ति निर्धन हों किंतु दूसरों के सामने बहुत धनवान बनें, उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : हरि० अपने दिन ना काटे जाते य तो रईसों की होड़ करैं सैं।

अपने दिल की गवाही सच जान- -(क) जो अंत:-करण कहे उसे अवश्य मानना चाहिए। (ख) अंत:करण का कहा सच होता है। तुलनीय : पंज० अपने दिल दी गवाही सच मन।

अपने दिल से जानिए पराए दिल का हाल -- अपने अनुभव के आधार पर दूसरे की स्थिति समझनी चाहिए। किसी परिस्थिति में अपने दिल को जो अनुभव हो, उसके आधार पर दूसरों को कैसा लगेगा, समझना चाहिए। तुलनीय : पंज० अपणे दिल तो दूजे दे दिल दा हाल पुच्छो।

अपने दुःख अन्धा—दूसरों पर विपत्ति आने पर लोग तरह-तरह के रास्ते सुझाते हैं पर अपने ऊपर विपत्ति आने पर मनुष्य को कुछ नही सूझता। तुलनीय : मैथ० अपने ब्यग्रे आन्हर; भोज० अपने मरत दुखे मरतबानी, अपने दुखे आन्हर, पराए दुखे डिठहर।

अपने दुखे पागल, कौन कूटे सरकारी चावल—अपने ही दुख से पागल हूँ, सरकारी चावल कौन कूटे। अर्थात् अपनी ही परेशानियों से तंग हूँ दूसरे का काम कौन करे। तुलनीय : मग० अपने दुख भेलूँ बाउर के कूटे सरकारी चाउर; भोज० अपने दुख से भइलीं बाउर के कूटी सरकारी चाउर।

अपने दूर पड़ोसी नेरे —अपने सगे-संबंधी दूर रहते हैं और उनकी तुलना में तो पड़ोसी ही निकट होते हैं। अपने सगे-सम्बन्धियों से तो पड़ोसी ही कहीं अधिक काम आते हैं। तुलनीय : अव० सौ गोती न एक परोसी, पंज० अपणे दूर गुआंडी कोल।

अपने द्वार आये सो मेहमान -अपने द्वार चाहे शत्रु भी आ जाय उसे अतिथि समझना चाहिए। तुलनीय : पंज० अपणे बुये आवे ओ परौणा।

अपने द्वार कुत्ता भी बली -दे० 'अपने दरवाजे का ········'।

अपने द्वार पर कुत्ता भी शेर—दे० 'अपने दरवाज़े का········ ···'।

अपने धन्धे मन लगा, दूसरे चर्चा छोड़—दूसरे की चर्चा छोड़कर अपने काम को करना ही श्रेयस्कर है। तुलनीय : बंग० अपनार चटकार भेल दाओ; पंज० अपणे कम बिच दिल ला दूजे दी छड; अं० Mind your own business or paddle your own canoe.

अपने नंगा जग के वरदान---स्वयं तो नंगे हैं अर्थात् पास में कुछ नही है और दूसरो को वरदान देते फिरते हैं। (क) समाज सेवी व्यक्तियों के प्रति कहते है जो स्वयं कष्ट सहते है पर दूसरों की भलाई करते है। (ख) ऐसे लोगों के प्रति भी व्यंग्य से कहते हैं जो स्वयं तो कुछ नही करते और दूसरों को उपदेश देते फिरते हैं। तुलनीय : भोज० अपने लांगट जग वरदान: असमी—आपुनि लाङठ जगतक बर।

अपने पर पड़ें तो रोएँ और दूसरे पर पड़ें तो गावें—दूसरे की हानि पर सभी हँसते हैं किन्तु अपने पर जब कष्ट आ पड़ता है तो रोने लगते हैं। दुनिया बड़ी स्वार्थी है। दूसरों की चिन्ता कोई नहीं करता। तुलनीय : भोज० आन क बिगरल देखके सबका हँसी आवेला, अपने प परेला त कंठे

बैंइस जाला; पंज० अपणे उते पै तां रौण दूजे उते पै तां गाण।

अपने पादें उड़द के दोष—उर्द की बनी चीजें खुद तो खूब ठूंस-ठूंस कर खा चुके हैं और पेट में गैस बन रही है और बार-बार पादते हैं तो उड़द को दोष देते हैं। अपना दोष या अपनी बुराई दूसरे के सिर मढ़ने वाले के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० आपन पदनी उरदन दोखु।

अपने पाँव कुल्हाड़ी—स्वयं अपनी हानि करने वाले पर कहते हैं। मुहावरा भी है अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मारना। तुलनीय : भोज० अपने गोंड़ कुल्हारी; अव० अपनेन गोड़े मा कुल्हारी; मरा० स्वतः च्या पायावर स्वतः कुर्हाड।

अपने पास पैसा, तो पराया आसरा कैसा—अपने पास पैसा है तो दूसरे का मुँह क्या जोहना ? अपने पास धन हो तो किसी की परवाह नही रहती। तुलनीय : अव० अपने पास पइसा होय तो दूसरे कै कउनो जरूरत नाही।

अपने पुत्र न पूरी आस पोसी ले के गया जात—अपने पुत्र से तो इच्छा पूरी नही हुई, पोष्य पुत्र लेकर गया (स्थान) जाते है। अर्थात् अपनी इच्छा की पूर्ति जब अपनों से नही होती तो दूसरे भला क्या कर सकते हैं ? तुलनीय : मग० अप्पन पूत न पूरल आम पोसिया लेके गया जात; भोज० अपना पूत से ना आम पूजल तऽ पोसिया क पूजी।

अपने पूत कुंवारे फिरें, पड़ोसिन के फेरे—दे० 'अपने पूत क्वारें फिरें…'। तुलनीय : हरि० अपणे छप्पर में तै दो जेबड़ी लागती कोन्या आकाम-पाताळ बाँधता फिरै।

अपने पूत को कोई काना नहीं कहता—अपना पुत्र काना हो भी तो उसे लोग काना नही कहते। अपनी सतान कुरूप भी हो तो माँ-बाप को अच्छी लगती है। अपनी चीज को कोई बुरी नही कहता। तुलनीय : मरा० आपल्या मुलाला कोणी चकणा म्हणत नाही।

अपने पूत क्वारे फिरें, पड़ोसिन के फेरे—दे० 'अपने पूत कुँवारे…'।

अपने पूत सपूत, पराये पूत कपूत—अपनी संतान बुरी होने पर भी भली लगती है और दूसरे की अच्छी होने पर भी अपनी के सामने बुरी लगती है, अर्थात् अपनी जैसी नही लगती। अपनी चीज अपने को अच्छी लगती है चाहे वह दूसरे की चीज से बुरी ही क्यों न हो। और इसके विपरीत दूसरे की अच्छी चीज़ भी बुरी लगती है। तुलनीय : भोज० आपन पूत सोना-रूपा आन क पूत कांकर-पाथर; अव० अपने पूत पतंगड़ पराए पूत धितंगड; पंज० अपने पुतर चंगे पराये पुतर माड़े।

अपने पेट में आप चाकू नहीं मारा जाता—(क) अपनी हानि जान-बूझकर नहीं की जाती। (ख) वह कार्य जिससे शरीर को कष्ट हो स्वयं नहीं किया जाता। तुलनीय : भोज० अपने पेट में चाकू ना मारल जाला; पंज० अपणे टिड बिच आप चाकू नईं मारया जांदा।

अपने पैर में कुल्हाड़ी आप नहीं मारी जाती…दे० 'अपने पाँव कुल्हाड़ी…'। तुलनीय : गढ़० अपणा खुट्टा अफुई कुल्हाड़ी।

अपने फूहड़ पड़ोसी का दोष—स्वयं तो फूहड़ हैं और दोष देते हैं पड़ोसी को। जो अपना दोष दूसरे के ऊपर लगाए उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : भोज० अपने फूहर पड़ोसिये दोस; पंज० आप पैड़े गुआंडी दा दोस।

अपने बच्चे के दाँत हर कोई जानता है—(क) अपने को सभी पहचानते हैं। (ख) अपनी चीज़ों की पूरी जानकारी सभी रखते हैं।

अपने बछड़े के दाँत सबको मालूम होते हैं—ऊपर देखिए। पंज० अपने बच्चे दे दंद हर कोई जानदा है।

अपने बल के समान बल नहीं, मेघजल के समान जल नहीं—स्पष्ट है। तुलनीय : गुज० आप समान बल नही, ने मेघ समान जल नही।

अपने बाल स्वयं नहीं काटे जाते—(क) सभी कार्य अपने हाथ से नही किए जा सकते। (ख) जो जिसका काम होता है वही उसे कर सकता है। तुलनीय : पंज० अपने बाल आप नई काटे जांदे।

अपने बावले रोइये दूसरों बावले हँसिये—अपनी बुरी सन्तति पर मनुष्य दुखी रहता है पर दूसरे की अयोग्य संतान पर हँसता है। दूसरे की खिल्ली उड़ाने में सबको आनंद आता है।

अपने बिना सुख सपना—अपनी वस्तु ही हमेशा काम आती है, दूसरे की चीज स्वप्न के समान होती है। अर्थात् वह हमेशा काम नहीं आ सकती। तुलनीय : मैथ० अपना बिनु सपना; भोज० अपने बिनु सुख सपना।

अपने बिल में साँप भी सीधा हो जाता है—अपने घर में सभी को निष्कपट भाव से रहना चाहिए। तुलनीय : पंज० अपनी रूड बिच सँप वी सीदा हो जांदा है।

अपने भले नहीं पर कहें गाली—स्वयं तो अच्छे नहीं हैं, दूसरे जब बुरी बातें कहते हैं तो गालियाँ देते हैं। जो व्यक्ति स्वयं बुरा व्यवहार करे पर बदले में अच्छा व्यवहार चाहे उस पर कहते हैं। तुलनीय : मैथ० अपन भल ने पर पढ़े गारी।

अपने बेटे को गांडू कौन कहता है ?—अपना पुत्र बुरा

भी हो तो भी कोई बुरा नहीं कहता। तुलनीय : अव० अपने बेटे कै गड़ुंवा के कहै; पंज० अपने पुतर नँ गांडू कौण आखदा है।

अपने बेरों को कुंजड़ा खट्टे नहीं बताता – दे० 'अपनी दही को...'।

अपने बैल के पैने सींग—अपनी वस्तु की सभी तारीफ़ करते हैं। तुलनीय : गढ़० अपणा बल्दो पैनी सिंग।

अपने भाग कछू न भयो, भगिनी भाग तुरंग चढ़े—अपने भाग्य से तो कुछ नहीं हुआ बहिन के कारण घोड़े पर चढ़े। जब कोई व्यक्ति दूसरे के कारण प्रतिष्ठा पाये तो कहते हैं।

अपने भूखे चूल्हा फूंके, पर के भूखे सिर दुखे—ऐसी स्त्री है कि स्वयं भूखी होती है तो खाना बनाती है, किंतु यदि कोई और भूखा हो और स्वयं भूखी न हो तो कहती है सर में दर्द हो रहा है। स्वार्थी व्यक्ति पर कहते है। तुलनीय : भोज० अपने भूख चूल्ह फूंके, सइयाँ क भूख कपार दुखे, मैथ० अपना भूख त चूल्हा फूंक, सइयाँ क भूख त कपारे दूख।

अपने मट्ठे को कोई पतला नहीं कहता- अपनी वस्तु को कोई भी बुरी नही कहता। तुलनीय : भोज० अपना माठा के पातर के कहे; पंज० अपनी लस्सी नूं कोई बुरा नई आखदा।

अपने मन कछु और है कर्ता के कछु और- जब कोई व्यक्ति कुछ करना चाहे, किंतु संयोग से कुछ और हो जाय तो कहते हैं। तुलनीय : मैथ० अपना मन कछु और है कर्त्ता के मन और; भोज० अपना मने कुछ अउर आ करे-वाला क कुछ आउर। पंज० अपणे दिल बिच कुज होर है करब वाले दे दिल बिच कुछ होर; अं० Man proposes God disposes.

अपने मन का भौजी, सास को कहे भौजी—अपने मन से प्रायः काम उल्टा करने वालों के प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मग० अपना मन के मउजी, सास के कहलन भउजी।

अपने मन की बात, फ़क़ीर रोटी बनावे या भात—स्वच्छंद स्वभाव का व्यक्ति मनमाना काम करता है, जिस पर कोई बंधन नहीं है, वह जब जो चाहे करता है। तुलनीय : भोज० आपन मन क बात, फ़क़ीरवा भौरी बनावे चाहे भात; पंज० अपणे दिल दी गल फ़क़ीर रोटी बनावे या पत्त।

अपने मन से जानिए, पराए मन की बात—(क) जो जैसा होता है, वह दूसरों को भी वैसा ही समझता है। (ख) आत्मानुभव एवं आत्मसंस्कार के आधार पर दूसरों को समझा जाता है या जाना जा सकता है। (ग) जो अपने लिए उचित न हो वह दूसरे के लिए भी नहीं होगा। (घ) जो बात अपने को अच्छी या बुरी लगती है, वह दूसरों को भी प्रायः वैसी ही लगेगी। तुलनीय : सं० आत्मनः प्रति-कूलानि परेषां न समाचरेत्; पंज० अपणे दिल तो दसो दूजे दे दिल दी गल।

अपने मन से बाबू खेदू राय—आपने आपको बड़ा समझने वाले पर कहते हैं। तुलनीय : भोज० अपनामने लक्खू माह, अपना मने खीरू राय।

अपने मन से बिल्ली प्रधान—मूर्ख व्यक्ति अपने आप को बड़ा समझता है। दूसरे उसे बड़ा मानें या न मानें इसकी उसे चिंता नहीं होती। तुलनीय : मग० अपन मन के बिलइये पुरधान। भोज० अपना मने बिलरियो परधान; पंज० अपने दिलों बिल्ली गबड़ी।

अपने मरे बिना स्वर्ग नहीं दीखता—बिना अपने किये काम नहीं होता। तुलनीय : गढ़० अफू मरयां बिना स्वर्ग नि देखेद। अव० अपनेन मरे सरग देखै का मिलौ; मरा० आपण मेल्यावांचून स्वर्ग दिसत नाही; पंज० आप मरे बगैर सवर्ग नई लबदा; ब्रज० बिना अपने मरें सरग नायें दीखै।

अपने माथ में मैं सौ चुटिया रक्खूंगा—अपने व्यक्ति-गत मामले में जो जैसा चाहे कर सकता है, दूसरे से उससे कोई मतलब नहीं। तुलनीय : भोज० अपना माथ में हम सौ गो चिरुकी राखब तोहरा के का; पंज० अपने सिर बिच सौ बोदियां रखांगा।

अपने मामा मरे, जुलाहे-धुनिए मामा भये—जब अपने सगे-सम्बन्धियों के अभाव में कोई व्यक्ति, सामान्य जाति के लोगो को अपना मान बैठता है तो कहते हैं। तुलनीय : भोज० आपन मामा मर-हर गइले जुलहा-धुनिया मामा भइले।

अपने मियाँ दर-दरबार, अपने मियाँ चूल्हेवार—एक ही मनुष्य जब छोटा और बड़ा दोनों तरह के काम करे तो कहते हैं। तुलनीय : पंज० आप मियाँ दर-दरबार आप मियाँ चूल्हेदार।

अपने मियाँ मंगते द्वार खड़े दरवेश—जो व्यक्ति स्वयं भीख माँग कर गुज़ारा करता हो या दूसरों पर आश्रित हो वह भला दूसरों की क्या सहायता कर सकता है? जब कोई व्यक्ति स्वयं बुरी स्थिति में होकर भी अपने को बड़ा दिखाने का यत्न करे तो कहते हैं। जब किसी असहाय व्यक्ति से कोई सहायता चाहे तब भी कहते हैं। तुलनीय :

भोज० खुद मियाँ मंगन दुवारे दरबेस।

अपने मियाँ मंगन दुवारे दरवेश—ऊपर देखिए।

अपने मुँह धन्ना बाई—नीचे देखिए।

अपने मुँह बहूरानी—दे० 'अपने मुँह मियाँ मिट्ठू'।

अपने मुँह मियाँ मिट्ठू—अपनी प्रशंसा आप करने वाले के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : भोज० अपने मुहें मियाँ मिट्ठू; मरा० आपणच आपली स्तुति करी; गढ़० अपणा गिच्चे की बौराण; पंज० अपने मुँह मियाँ मिट्ठू।

अपने मुँह शादी मुबारिक—ऊपर देखिए।

अपने में गया तो गाँड़ में गया दूसरे के गया तो भूसे में गया—दूसरे की हानि को बहुत मामूली और अपनी हानि को बहुत बड़ा समझने वाले के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। शब्दार्थ है : अपने में गया तो इतना कष्ट हुआ जैसे गुदा में गया किंतु दूसरे में गया तो समझते हैं जैसे भूसे में गया। तुलनीय : अव० अपने मा गै तो गाँडी मा गै दुसरे के गै तौ कहिन भूसौले मा गै; भोज० आपन में गयल त गाँड़ी में गइल, पर मे गयल त कहें कि भूसा मे गइल।

अपने राम को इससे क्या—मेरा इससे कोई सरोकार नहीं है, चाहे कोई मरे चाहे जिए। जब किसी बात में अपनी रुचि या उसमें अपना संबंध न हो तो कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० अपने राम कूँ कहा; पंज० अपने राम नूँ इसदे नाल की।

अपने राम के रीझ भजो चाहे खीझ—अच्छा काम चाहे किसी भी भाव से किया जाय अच्छा ही फल देता है। तुलनीय : ब्रज० अपने राम को रीज भजो चाहे खीज; पंज० अपने राम नाल हसो पावें रोवो।

अपने रूप और पराए धन की थाह नहीं लगती—दे० 'अपना रूप और पराया धन············'।

अपने लगे तो देह में और के लगे तो भीत में—अपने पर डंडा लगा तो बहुत कष्ट हुआ किंतु दूसरे को लगा तो समझते हैं जैसे आदमी को न लगकर दीवार को लगा। दे० 'अपने में गया तो गाँड में गया··········'। तुलनीय : ब्रज० अपनें लगै तौ हीक मे, और के लगै तौ भीति में।

अपने लिए जो-सो, पंच के लिए सौ-सौ—अपना ध्यान न रखकर दूसरों का ध्यान रखने वालों पर व्यंग्य है। तुलनीय : मैथ० अपना जला जेहो सेही पच लोग के दीउ। अपना के जेही सेही जगन्नर ला दानी, पंज० अपने लई रो सो पंच लई सौ-सौ।

अपने सत्तू ना दूसरे के घर पेड़ा—कोई साधन-हीन व्यक्ति जब दूसरे के घर जाकर अच्छी-अच्छी चीजें माँगता है तो व्यंग्य से ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० आन क घरे पेड़ा अपना घरे सतुओ के मोहाल; पंज० अपने कर सत्तू नई दूजे दे कर पेडे।

अपने समझना अपने कहना—जब कोई व्यक्ति अस्पष्ट बात कहता है तो ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० कहैं ईसा, समझैं मूसा; भोज० अपने कहे अपने समझे।

अपने सूई न जाने दें, दूसरों के भाला घुसेड़ें—अपना छोटा-सा नुक़सान भी न होने दें और दूसरों का बड़ा नुक़सान करने को तैयार हों। तुलनीय : पंज० अपनी सूई वी नां जाण देवे दूजे विच बरछी बाड़े।

अपने से जलें पड़ोसी से नाता, ऐसो बुद्धि न देय बिधाता—अर्थात् अपने सगे-सम्बन्धियों को देखकर जलने किंतु पड़ोसियों से अच्छे सम्बन्ध रखने वालों के प्रति कहते हैं। तुलनीय : मैथ० अपना सँ जर पड़ोसिया सँ नाता यहन बुद्धि जनि दिहा विधाना; भोज० अपना से जर पडोसिया से नाता अइसन बुद्धि जनि दिह बिधाता; पंज० अपणे कोलो सड़ण गुआंडी नाल नाता ऐसी अकल न देवे रब।

अपने से बचे तो और को दें—अत्यंत स्वार्थी व्यक्ति पर कहते हैं। तुलनीय : अव० अपने बचै तो दुसरे का देय; पंज० अपने कोलों बचे ते दूजे नूँ देवो; ब्रज० अपनें बचै तौ औरै दें।

अपने से बेगाने भेल—दुख में अपनों से अधिक ग़ैरों से सहायता मिले तो कहते हैं। तुलनीय : हरि० घर के दूर पड़ोसी नेड़े; पंज० अपने तों पराए चंगे।

अपने से बैर जो करे, उसकी बुद्धि विधाता हरे—अर्थात् ऐसे लोग बुद्धिहीन होते है जो अपने सगे-सम्बन्धियों से बैर-भाव रखते हैं। तुलनीय : मग० अपना से बैर परोसिया से नाता सेकर सब बुध लेलन विधाता।

अपने से ही खेती—खेती अपने हाथों करने पर ही होती है। तुलनीय : भोज० खेती आ धोती अपने हाथे; पंज० अपने नाल ही खेती।

अपने हरामजादे को समझा नहीं तो तेरे ग़रीब को खालूंगी—बलवान पर जोर न चलने पर लोग निर्बल को ही सताते हैं। इस सम्बन्ध में एक कहानी है : एक आदमी के दो लड़के थे, एक सीधा और दूसरा उत्पाती। उत्पाती के उत्पात से परेशान होकर शीतला देवी ने एक रात बाप को स्वप्न दिखाया और उक्त बात कही।

अपने हाथ बल जल जाय जैसा मन चाहे वैसा खाय—अपने हाथ की बलिहारी है जैसी इच्छा हुई बनाया और खा लिया। दूसरे का सहारा लिये बिना जो काम हो जाए वह बेहतर है।

अपने हाथ से अपने पेट में छुरी नहीं मारी जाती—अपना नुक़सान अपने आप कोई नहीं करता। तुलनीय : भोज० अपने हाथे अपना के छूरी ना मराय; पंज० अपणे हत्थ नाल अपने टिड विच छुरी नईं मारी जांदी।

अपने हाथों अपनी आरती--अपनी तारीफ़ स्वयं ही करने वाले पर व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : पंज० अपने हाथ नाल अपनी आरती।

अपने हारे बहू को मारे—स्वयं ग़लती करनेवाला जब व्यर्थ में दूसरों पर क्रोध करे तो कहते है। तुलनीय: मैथ० अपने हरलन बहू के मरलन; भोज० अपने हारँम मेहरारू के मारँस; पंज० आप हारया वौटी नूँ मारया।

अपने ही तन का फोड़ा सताता है-- (क) अपनों ही से दुःख पहुँचता है। (ख) अपनों ही के प्रति स्नेह उमड़ता है।

अपनों की आड़ कोई नहीं उठाता - अपने संबंधियों का एहसान कोई नही लेता अथवा कोई नही लेना चाहता। तुलनीय : पंज० अपनयांदा इहसान कोई नईं लेंदा।

अपमान का जीवन मृत्यु से भी बुरा—स्पष्ट है। तुलनीय : मल० मानक्केटिलुम् नल्लतुँ मरणम्; पंज० बेइज़्जती दा जीणा मौत नालों वी पैड़ा।

अपराध्देष्योरिव धानुष्कस्य कण्ठाडम्बरः—चूके निशाने वाले के लक्ष्यहीन बाणों की तरह आत्मश्लाघी की तीव्र-स्वर वाली वाणी होती है। तात्पर्य यह है कि विषय विशेष की जानकारी न रखते हुए भी उस संबंध में आत्म-श्लाघा करने वाले आदमी की वागाडम्बरयुक्त वाणी उसी प्रकार व्यर्थ है जैसे उस धनुर्धारी के बाण जो छोड़े जाने पर लक्ष्य पर नही पहुँच पाते।

अपरान्हच्छाया-न्याय—जैसे दोपहर के बाद पेड़ों की छाया बढती जाती है, वैसे ही भले आदमियों की प्रीति और मित्रता भी दिनोंदिन बढ़ती जाती है।

अपवादैरुत्सर्गा बाध्यन्ते—विशेष नियम साधारण नियमों को बाँध लेते हैं।

अपसारिताग्नि भूतल-न्याय - जिस प्रकार भूमि से आग हटा लेने पर भी भूमि कुछ समय तक गर्म रहती है, उसी प्रकार धनी व्यक्ति निर्धन हो जाने पर भी कुछ समय तक अपने को निर्धन नहीं समझता और न दूसरों को पता ही लगने देता है। परिस्थितियाँ बदल जाने पर भी स्वभाव शीघ्र नहीं बदला जा सकता।

अफरी गाय, बीघा खेत खाय—पेट भरा होने पर भी गाय एक बीघा खेत खा सकती है। अधिक भोजन करने वालों के लिए कहते हैं।

अफ़लातून के नाती बने हैं—ऐसे अभिमानी के प्रति कहते हैं जो अपने को बड़ा विद्वान या विचारक समझता है। तुलनीय : अव० अफ़लातूने के भतीज बना अहैं।

अफ़सर के आगे और घोड़े के पीछे--अधिकारी क्रोध में हो तो जो कोई भी उसके सामने पड़ जायेगा उसकी खैर नहीं तथा घोड़े की दुलत्ती जिसके लग गई उसका भी बेड़ा पार ही है। आशय यह है कि अफ़सर के आगे और घोड़े के पीछे भरसक नहीं जाना चाहिए। तुलनीय : अव० अफ़सर के अगाड़ी घोड़े के पिछाड़ी; भोज० अफ़सर की अगाड़ी, घोड़ा की पछाड़ी; पंज० अफ़सर दे अग्गे अने कोडे दे पिछछे।

अफ़सर चून का भी बुरा - अफ़सर चाहे जिसका भी हो, जैसा भी हो, बुरा होता है। तुलनीय : ब्रज० हाकिम चून कौऊ बुरौ।

अफ़सोस दिल गड्ढे में – जब मनुष्य पर बहुत कष्ट आ पड़ता है या वह किसी बेबसी में रहता है तो कहता है। तुलनीय : अव० अपसोच दिल गढ़वा मा; पंज० दुखी दिल टोये विच।

अफ़ीम अमीर खाय या फ़कीर--क्योंकि ये ही दोनों स्वतंत्र रहते हैं। अफ़ीम मँहगी होने के कारण, अमीर खरीद कर और फ़कीर माँगकर खा सकते हैं। औरों के लिए प्रायः सभव नही होता। तुलनीय : पंज० अफ़ीम अमीर खावे या फ़कीर।

अफीमची तीन मंज़िल से पहचान लिया जाता है—अफ़ीमची छिपता नही, वह दूर से ही पहचान लिया जाता है। तुलनीय : पंज० अफ़ीमची सत कौ तो पछाणया जादा है।

अब उस बूँद से भेंट नहीं होगी—एक बार एक इत्र बेचने वाला एक रईस के यहाँ गया। इत्र दिखाते समय एक बूंद इत्र ज़मीन पर गिर गया। रईस ने उसको उँगली से पोंछकर अपने कपड़ों पर लगा लिया। यह देखकर अत्तार मुस्करा दिया। रईस ने सब इत्र खरीद लिया और उसके सामने ही सब इत्र फिंकवा दिया। अत्तार ने यह देखकर व्यंग्य से उक्त लोकोक्ति कही। आशय यह है कि मामूली बात भी बिगड़ जाय तो उसे सँवारना बहुत कठिन होता है। तुलनीय: भोज० अब ओ बून से भेंट कहा; ब्रज० बूँद तेऊ भेटा नायें।

अब का नीलाम से तिलाम होगा—जिसका बिगड़ चुका है, उसका कोई क्या बिगाड़ेगा ? तुलनीय : भोज० अब का नीलाम से तिलाम होइ; पंज० बिगड़े दा कोई की बिगाड़ेगा।

अब की चढ़ी कमान, जाने फिर कब चढ़े--जो काम

सामने हो उसे कर डालना चाहिए जाने फिर कब अवसर मिले।

अब की बार, बेड़ा पार—बस एक बार और हिम्मत करने की ज़रूरत है फिर तो बेड़ा पार है। तुलनीय : मरा० या वेळी निघालांच उद्गार; अव० अबकी बेरिया बेड़ा पार करौ; पंज० इस बार बेड़ा पार।

अब की माघे जाड़ न जाय—अर्थात् संकट से केवल एक बार ही नहीं, हमेशा बचने की कोशिश करनी चाहिए। तुलनीय : मैथ० अबकिहै माघे जाड़ नै जाय; भोज० अब्बे क माघ ले जाड नइखे।

अब की मारे तो जानूं—डरपोक के प्रति कहते हैं जो मारने का उत्तर मार से न देकर यही कहता है। तुलनीय : बंग० मारली तो मारली, एबार मार देखी; पंज० हुण मार ते दसां; ब्रज० अबकैं मारे तौ जानं।

अब की होली ऐसे गई—अर्थात् इस वर्ष होली में कुछ भी आनन्द नहीं आया। किसी आनन्ददायक अवसर पर भी जब आनन्द न आए तो पछताते हुए कहते है। तुलनीय : मैथ० अबकी फगुआ ऐसहि गेल; भोज० अगो क फगुव अइसेही बितल; पंज० इस बार दी होली इदां ही गई।

अब की छई की निराली बातें—नये छोकरों की बातें तो विचित्र ही हैं। समय बदलता है तो लोग भी बदल जाते हैं। तुलनीय : पंज० नवे मुड्यां दी बखरियां गलां।

अब के बचे तो सब घर रचे—इस बार आफ़त से बचना बहुत कठिन है। और यदि बच जायें तो सब ठीक कर ले। जब कोई बहुत बड़ी आफ़त आए तो कहते है। तुलनीय : पंज० हुण बचे तो सबकुछ बचे।

अब के राहे हमलर ब्याहे, फिट्ट पड़े वह साहे—जो वस्तु अपने काम न आए वह नष्ट भी हो जाय तो कोई दुःख नहीं होता।

अब क्या मियाँ मुहल्लेदार—जब कोई व्यक्ति किसी ऐसे बड़े अफ़सर के बल पर डींग हांके जो अपने पद से हट गया हो तो व्यंग्य में कहते है। तुलनीय: पंज० हुण की मियाँ मुहल्लेदार; ब्रज० मियाँ मुहल्लेदार, अब डर काये की।

अब तब काल सीस पर नाचा—मृत्यु का कुछ पता नहीं। वह किसी भी क्षण आ सकती है।

अब तब हो रही है—मरणासन्न है। किसी रोगी की मृत्यु निकट होने पर कहते है कि वह अब मरा या तब मरा।

अब तो पत्थर के नीचे हाथ दबा है—किसी के फन्दे या दबाव मे किसी भी तरह आ जाने पर कहा जाता है। तुलनीय : अव० अब तौ पथरा के तरे हाथ दबा अहै; पंज० हुण तां बट्टे दे थल्ले हत्थ दबया है।

अब तो रुपये की ही जात है—आजकल धन होने पर छोटी जाति वाले भी बड़ी जाति वालों से अधिक सम्मान पाते हैं। अर्थात रुपये में वह शक्ति है कि नीची जाति के व्यक्ति को ऊँची जाति का बना दे।

अब तो रुपये की माया है—आजकल रुपये से सब कुछ किया जा सकता है। तुलनीय : पंज० हुण तां पैहे दी माया है।

अब तो पानी सर पर आन पहुँचा है—किसी काम या विपत्ति के समीप आ जाने पर कहते हैं। तुलनीय : भीली० एवां आवी लाग है रगे टगे; पंज० हुणतां पाणी सिर उत्ते आ गया है।

अब पछताये होत क्या जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत—समय निकल जाने पर पछताना व्यर्थ है। पूरा दोहा इस प्रकार है—आछे दिन पाछे गए, हरि सों किया न हेत। अब पछताए होत क्या, जो चिड़िया चुग गई खेत। तुलनीय : भोज० अब पछितइले का होई जब चिरई चुंग गइल खेत; भील० जाई ने ते फायले फरी ने नी जोय्यू एवा पडी-पड़ी ने बात करे; राज० अब पिसतायाँ होत क्या जब चिड़िया चुगगी खेत; का बरखा जब कृषी सुखाने—तुलसी। मरा० आतां पस्तावून काय होणहार पक्षी रोप खाउन गेले; अव० अब पसताये का होई जब चिरैय्या चुन लिहेन खेत; मल० कार्य्यम् कपि पश्चात्तपिच्चाल फलमिल्ल; गढ़० चड़ेई खेत खुटि गला परे पस्तेइ करि लाभ क्या; अं० It is no use crying over spilt milk.

अब बिलंब कर कारन काहा?—समय पर सब काम करने चाहिए। विलंब करना उचित नहीं। जब कोई व्यर्थ विलंब करे तो कहते है।

अब बिलंबु केहि काम, करहु सेतु उतरइ कटक—देर न करो, पुल बनाओ जिससे सेना पार उतरे। राम की सेना के समुद्र पार करने से सबद्ध यह पंक्ति है। जब कुछ कर या बनाकर अपना कोई काम सिद्ध करना हो तो शीघ्र वैसा करने के लिए इस पंक्ति का लोकोक्ति के रूप में प्रयोग करते हैं।

अब बिलंबु केहि कारन कीजे—बिना कारण देर नहीं करनी चाहिए। कोई काम करने में कोई व्यक्ति व्यर्थ में देर कर रहा हो तो ऐसा कहते है।

अब भी मेरा मुर्दा तेरे जिन्दे पर (से) भारी है—बिगड़ने पर भी मेरी दशा तुमसे कहीं अच्छी है। दे० 'मरा हाथी सवा लाख का'।

अब मौसी-सी मर गई—जो व्यक्ति पहले तो बहुत बढ़-

चढ़कर बाले किन्तु काम देखते ही भागने की सोचे, उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

अब रहीम चुप करि रहो देखि दिनन को फेर -समय का फेर या बुरे दिन देखकर कुछ भी न करना चाहिए, चुप बैठना चाहिए नहीं तो बहुत हानि होती है। यह पंक्ति रहीम की है।

अबरा की जोरू गाँव भर की सरहज —नीचे देखिए।

अबरा की जोरू सबकी भौजाई- कमज़ोर की पत्नी को सब भाभी कहते हैं, अर्थात् उससे मज़ाक करते हैं। निर्बल की वस्तु पर सहज ही सब अधिकार जताने लगते हैं। तुलनीय : भोज० अबरा (या निबरा) क मेहरारू गाँव भर क भउजाई (सरहज); मरा० दुर्बलाची (गरिबाची) बायको सगळ्यांची वहिनी; अव० निमरे क मेहरारू सगल गाँव क भौजाई; ब्रज० निबरा की बहू, सब की भाभी।

अबरा की भेंस बियाय तो गाँव चले दूहे -कमज़ोर को सभी दबाते या चूसते हैं।

अबरा की भेंस बियाय, सारा गाँव मेटिया लेके दौड़े—कमज़ोर को सभी सताना चाहते हैं या उससे लाभ उठाना चाहते हैं। तुलनीय: भोज० निबरा क भइँस बियाइल त सगरो गाँव ति री लेके दौरल; अव० निमरे कइ भइँस बियान सगल गाँव माटा का दउरीन; पंज० माड़े दी मझ सूई सारा पिंज कटोरा ले के नठ्या; ब्रज० निबरे की भैंसे ब्याय, सब गाम दोहिनी लै कै भागे।

अबरा के उनचास बयार- कमज़ोर को प्रत्येक प्रकार का कष्ट होता है। उसके रास्ते में अनेक व्याघात आते हैं।

अब राम का ही भरोसा है—जब व्यक्ति सभी प्रकार के उपाय करके थक जाता है तो राम के सहारे छोड़ देता है। ऐसा करने के लिए या करने पर कहते हैं। तुलनीय : राज० राम भरोसे खेती है; पंज० हुण राम दा ही परोसा है; ब्रज० अब राम कोई आसरो।

अबरे की जोय गाँव भर की भौजाई- दे० 'अबरा की जोरू…'।

अबल पर सभी सबल कमज़ोर को सभी कष्ट दे सकते हैं। तुलनीय : मैथ० अबल पर सितुआ चोख; भोज० अबरा के सब बड़ियार; पंज० माड़े नूं सारे मारण।

अबला अबल सहज जड़ जाती—अबला (स्त्री) जन्म से या सहज रूप से ही दुर्बल और जड़ या मूर्ख होती है।

अब लौं नसानी अब ना नसैहों—अब तक तो बर्बाद हुआ किन्तु अब बर्बाद न होऊँगा। तुलनीय : मरा० बहुत सोशिले मागें न कळतां।

अब मतवंती होकर बैठी लूटकर (खाया) संसार—आजन्म बुरा काम कर अन्त में अच्छे काम में लगने पर कहा जाता है। दे० 'सौ-सौ चूहे खाए के बिलाई…'।

अब्बर के हम अब्बर हैं और जब्बर के हम दास—कमज़ोर के लिए तो सभी बली बनते हैं पर बली के सामने सभी उसके नौकर बन जाते हैं। अर्थात् कमज़ोर को सभी सताते हैं और बली से सभी डरते हैं। डरपोक व्यक्ति पर भी कहते है।

अब्बर खेत जो जुट्ठी खाय, सड़ै बहुत तो बहुत मोटाय-- नील का डंठल खेत में सड़ाने से कमज़ोर खेत भी अधिक अन्न उत्पन्न करता है।

अब्बर घोड़ी साँझे पयान—कमज़ोर घोड़ी पर यदि कहीं जाना हो तो शाम को ही चल देना चाहिए ताकि समय से पहुँच जायँ। ऐसा करने पर या करते समय लोकोक्ति का प्रयोग करते हैं। तुलनीय : पंज० माड़ी घोड़ी उते जाना होवे तां सामनूं जावो।

अब्बर देबी जब्बर बोका देवी तो दुर्बल है और उसके लिए बलिदान किया जाने वाला बकरा बलवान। दंड देनेवाले से जब दंड पानेवाला मज़बूत होता है तब ऐसा कहते हैं।

अभागा कमाय, भाग्यवान खाय—(क) कंजूस व्यक्तियों पर कहते है, क्योंकि वे कौड़ी-कौड़ी जमा करते है और उनके पश्चात् दूसरे ही उसका उपयोग या दुरुपयोग करते हैं। (ख) धनवान व्यक्तियों के प्रति भी ऐसा कहते हैं क्योंकि वे भी हाथ से कोई काम नहीं करते और उनके लिए मज़दूर-किसान ही धन कमाते है। तुलनीय : गढ़० अभागी कमौला, भागी खालो, नकर्मे कमाण कर्म खाण; पंज० अबागा कमावे पैह वाला खावे।

अभागा जहाँ-जहाँ जाय विपत्ति तहाँ-तहाँ आय—स्पष्ट है। तुलनीय : असम० अभागा यलै याय, हुले विन्धे बरले खाय; भोज० भाग क मारा जहँ जहँ जाय, बिपत पहिले से तहँ तहँ आय; पंज० अबागा जिथे जिथे जावे मुसीबत उत्थे उत्थे आवे।

अभागे की पत्री में छेद (क) अभागे व्यक्ति की जन्मपत्री में छेद होता है अर्थात् उसे दुःख ही मिलना है चाहे वह कुछ भी करे। (ख) अभागे की पतरी में (अर्थात् पत्तल में) छेद अवश्य होता है, और उसका खाना बह जाता है। आशय यह है कि दुःख एवं अभाव से उसकी क़िस्मत जुड़ी हुई है।

अभागे को मारे भाग, सुभागा देख उठे जाग—अभागा

सोता ही रहा और भाग्य ने उसे चौपट कर दिया लेकिन अभागे का दु:ख देखकर भाग्यवान सचेत हो गया और उसकी कुछ भी हानि नहीं हुई। बुद्धिमान दूसरों की हानि से सबक़ लेते हैं और स्वयं ऐसा काम नहीं करते जिसमें हानि हो। तुलनीय : गढ़० निर्भागी, लीगे बाछ भाग्वानौं, पड़े जाग; पंज० अवागे नूं मारण पाग पागवाला देख के जाग उठया।

अभागे को ससुराल में भी मट्ठा-भात ही मिला—अर्थात् अभागे का प्रत्येक जगह अनादर ही होता है। आशय यह है कि ससुराल में सामान्यत: अच्छे से अच्छे खाने मिलते हैं किन्तु अभागे को नही। तुलनीय : मग० अभागा गइलन ससुरार त ओतहू मट्ठा-भात; भोज० अभागा के ससुररियो माठे-भात मिलल; पंज० अवागे नूं सौहरे वी लस्सी पत ही मिलदा है।

अभावे शालि चूर्णं वा – समय पर अच्छी या अपेक्षित वस्तु के अभाव में ख़राब या अनपेक्षित वस्तु से ही काम चला लेते हैं।

अभावे स्वभाव नष्ट—ग़रीबी से मनुष्य की मूल प्रवृत्ति भी समाप्त हो जाती है। तुलनीय : असम० अभावे स्वभाव नष्ट; सं० दारिद्रदोषो गुणराशिनाशी।

अभी एक चने की दो दालें नहीं हुईं—(क) अभी सम्मिलित हैं, अलग नहीं हुए। (ख) अभी कुछ भी काम नही हुआ। तुलनीय : अव० अबही एक चना मा दुइ दाल ना भई।

अभी कच्चा बरतन है / अभी कच्ची लकड़ी है—कम उम्र और नातजुर्बेकार है।

अभी कच्चे घड़े पानी भरने हैं—अभी तो बहुत से कठिन काम होने या करने शेष हैं।

अभी कल की बात है—अभी कुछ ही दिन पहले की घटना है।

अभी के दिन के रात—जब कोई थोड़े दिन सुखी रहने पर ही इतराने लगे और यह समझे कि सर्वदा ऐसा ही रहेगा तो कहते हैं।

अभी क्या पुरबिया बूढ़ा हो गया ?—पुरबिये अपनी ताक़त के लिए प्रसिद्ध होते हैं। आशय यह है कि अभी सामर्थ्य है, शक्ति समाप्त नही हुई है।

अभी क्या मियाँ मर गए या रोज़े घट गए—दोनों में से कुछ भी नही हुआ। आशय यह है कि स्थिति पहले जैसी ही है, जो चाहे कर लो। तुलनीय : राज० अबै किसा मियाँ मरग्या क रोजा घट गया; पंज० अजे की मियाँ मर गये या रोजे कट गये।

अभी तक तुम माँ का दूध पीते हो ?—जब कोई जान-बूझकर नादान या अनजान बने तो व्यंग्य से कहते हैं। अर्थात् तुम बच्चे नहीं हो, ऐसा मत कहो या मत करो। तुलनीय : अव० अबहीं तू तौ महतारी कै दूँ पिअत अहा; पंज० अजे तक ते तूँ माँ दा दुद पीदे हो।

अभी तो तुम्हारे ओठों का दूध भी नहीं सूखा—अभी तो तुम बच्चे हो। जब कोई छोटी आयु का बहुत डींग हाँके तो व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : मरा० अजून तुमच्या ओठावरचे दूधहि सुकलें नाहीं; पंज० अजे ते तेरे बुलांदा दुद वी नईं सुकयाँ।

अभी तो दूध के दाँत भी नहीं टूटे हैं—अब भी लड़के हो या अक़्ल की कमी है। जब कोई बालिग़ होते हुए भी नादानी की बात करे तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : मरा० अजून तुमचे दूधाचे दाँतहि पडले नाहीत; अव० अबही तो त्वहार दूधे के दाँत नही टूटेन; भोज० अबहीं त दूध क दाँते न टूटल; पंज० अजे तां दुद दे दंद वी नईं टुटे।

अभी तो बथुआ हाट में ही पहुँचा है—अभी बिका नही है, चाहो तो रोक सकते हो। (क) अभी तो कार्य आरंभ भी नही हुआ। (ख) अभी कुछ नहीं बिगड़ा, चाहो तो रोक सकते हो। तुलनीय : राज० हाल तां हळदी हाटाँ में ही ज बोलै है; भोज० अबही त बथुवा हाट मे पहुँचले ह; पंज० अजे तां वाथु बजार बिच ही गया है।

अभी तो बेटी बाप की है—अब भी कुछ हो सकता है, काम बहुत नही बिगड़ा है। हिन्दुओं के धर्म के अनुसार जब तक सात भाँवरें न पड़ जायँ तब तक विवाह नही माना जाता और कन्या पर पिता का ही अधिकार रहता है। जब किसी कार्य के संपन्न होने से पहले ही उसके दुष्परिणाम के लक्षण प्रकट हो जाएँ तो कहते हैं। तुलनीय : अव० अबहीं तौ बिटिया बाप की अहै; बुदे० अबै तो बिटिया बापई की; भोज० अबही त धिया बाप की हई; पंज० अजे तां ती पियो दी है।

अभी तो मुँह की राल नहीं झड़ी—दे० 'अभी तो दूध के दाँत···'।

अभी तो रात बाकी है—अभी सुबह नहीं हुई रात बाक़ी है। अर्थात् कार्य करने के लिए बहुत समय है। तुलनीय : राज० हाल रात आड़ी है; पंज० अजे तां रात बाकी है।

अभी तो श्री गणेश है—अभी तो शुरुवात है। आगे देखिए क्या-क्या होता है। कोई कार्य प्रारंभ करने पर ही

यदि कोई निराश हो जाए और पछतावा करने लगे तो उसे प्रोत्साहित करने के लिए कहते हैं। तुलनीय : गुज० हजु तो गणेशाय नमः छे; पंज० अजे तां सिरी गणेश कीता है।

अभी तो होंठों का दूध भी नहीं सूखा- दे० 'अभी तो तुम्हारे होंठों का दूध…'।

अभी दिल्ली दूर है—अभी थोड़ा-सा काम हुआ है और बहुत बाक़ी है। तुलनीय : सं० दिल्ली दूरस्थ; फ़ा० हनोज़ दिल्ली दूर अस्त; अव० अबहीं डिल्ली दूर अहै; भोज० अब्बे दिल्ली आ गइल; अबही दिल्ली दूर बा; पंज० अजे दिल्ली दूर है; ब्रज० अबई दिल्ली दूरि ऐ।

अभी पराई माँ का मुँह नहीं देखा है—पराई माँ लिहाज़ नहीं करती। इतराने या किसी काम में नखरे दिखाने पर लड़कियों को कहते है। आशय यह है कि शादी के बाद सास के पल्ले पड़ोगी तो पता चलेगा। तुलनीय : पंज० अजे बगानी माँ दा मुँह नईं दिखया।

अभी भूत आया नहीं है अर्थात् अभी अनिष्ट होने में कुछ देर है। तुलनीय : भोज० अवहीं देबी कँवरुए बाड़ी (कँवरुए = कामरूप में); पंज० अजे पूत नईं आया।

अभी मन में से पाव भी नहीं पिया—अभी तक तो कुछ भी नहीं हुआ, सब कुछ बाक़ी है। जो काम अभी आरंभ ही किया गया हो उसके प्रति कहते है। तुलनीय राज० हाल तो पायली में पाव ही को पीसीज्यो नी।

अभी सेर में पूनी भी नहीं कती- अभी बहुत काम बाक़ी है। तुलनीय : पंज० अजे तां सेर बिचों पूनी वी नइ कत्ती; ब्रज० अबई सेर मे पौनी ऊ नायें कती।

अभ्यर्हितं पूर्वम्—योग्यतरों को पहले (आना चाहिए)।

अभ्यास सबसे बड़ा-अभ्यास सबसे बड़ी चीज़ है। तुलनीय : राज० अभ्यास बतो है; पंज० अबयास सब तों बडा है; अं० Practice makes a man perfect.

अभ्यास कारिणी विद्या—विद्या अभ्यास से ही आती है और जब तक अभ्यास किया जाता है तभी तक रहती है, अभ्यास छोड़ने पर भूल जाती है।

अभ्युपगम सिद्धान्त-न्याय—सैद्धान्तिक परिणाम का न्याय।

अमरसिंह तो मर गए, भीख माँगें धनपाल, लक्ष्मी तो गोबर बेचे भले बिचारे ठन-ठन पाल—(क) कंडा बीने लक्ष्मी भीख माँगे धनपाल, अमरसिंह तो मर गए रह गए ठन-ठन पाल। (ख) जिनका नाम अमरसिंह था मर गए, धनपाल भीख माँगते हैं और लक्ष्मी उपले बेचकर पेट पालती है। इन सबसे भले ठन ठनपाल हैं जो अपने नाम के अनुसार ही हैं। आशय यह है कि नाम से किसी व्यक्ति के भाग्य, चरित्र और व्यक्तित्व का पता नहीं चलता और न नाम के अनुसार गुण आदि ही होते हैं।

अमर होके कोई नहीं आया संसार में जो भी आया है वह अवश्य ही जायेगा। तुलनीय : भोज० अमर होके केहू ना आइल ह; पंज० अमर होके कोई नईं आयाँ।

अमरौती खाकर कोई नहीं आया संसार में कोई भी अमर नहीं है। सबको मरना है। तुलनीय : राज० अमराईरा बीज खार कोई जो आयो नीं; अव० अमरौती खाइकै नाहीं कोउ आवा; ब्रज० अमरौती खायकें कौन आयौ ऐ।

अमली के ढिग अमली राज़ी- आशय यह है कि जो जैसा होता है उसको वैसी ही संगति अच्छी लगती है। तुलनीय : भोज० घूर के लग्गे गोबर खुसी।

अमली मिश्री छाँड़ि के अफ़ू खात सराह -(क) जिस प्रकृति अथवा स्तर का जो मनुष्य होता है उसको उसी प्रकार की वस्तु भी अच्छी लगती है। अफ़ीमची मिश्री छोड़कर अफीम ही बड़े चाव से खाता है (ख) जिसे जिस वस्तु की आदत होती है उसे वही चीज़ अच्छी लगती है, चाहे वह बुरी ही क्यों न हो।

अमहा जवहा जोतहु जाय, भीख माँगि के जाहु बिलाय—जो किसान अमहा तथा जवहा बैलों से कृषि करता है वह भीख माँगता है। आशय यह है कि उपरोक्त दोषवाले बैल ठीक नहीं होते। कुछ लोगों के अनुसार अमहा, जवहा दो जातियाँ हैं।

अमानत में ख़यानत--धरोहर या अमानत में बेईमानी करने पर कहते हैं।

अमीर का उगाल ग़रीब का आधार—अमीर के द्वारा उगली या फेंकी गई वस्तु भी ग़रीबों के लिए बड़े काम की होती है। तुलनीय : पंज० अमीर दा उगाल गरीब दी रोटी।

अमीर की बकरी मरे तो गाँव भर रोये, ग़रीब की लड़की मरे कोई जाने भी नहीं—धनवान व्यक्ति की सभी खुशामद करते हैं और ग़रीब से कोई सहानुभूति भी नहीं करता। अमीर समाज में जितना ही महत्वपूर्ण समझा जाता है ग़रीब उतना ही महत्वहीन। तुलनीय : पंज० अमीर दी बकरी मरे तां सारा पिंड रोवे गरीब दी कुड़ी मरे तां कोई ना जावे।

अमीर को जान प्यारी, ग़रीब को दम भारी—धनवान के पास सभी सुख-सुविधाएँ होती हैं, इसलिए उसे अपना

जीवन प्रिय होता है और ग़रीब धन के अभाव में कष्टों और दुःख से भरे जीवन से छुटकारा पाना चाहता है, अतः उसे अपना जीवन भारी लगता है। तुलनीय : मरा० श्रीमंताला जीव प्यारा गरिबाला श्वास भारी; गढ़० छंदी को छबलाट निछंदी की रोई; अव० अमीरे का आपन जान पियार लागै, फकीरे का भारी लागै; मल० जीवितम् धनिकनुँ सुखम्, दरिद्रनुँ दुखम्; पंज० अमीर नूं जाण पयारी गरीब नूं साँ।

अमीर ने पादा सेहत हुई, ग़रीब ने पादा बेअदबी हुई- ऊपर देखिए।

अमीर पादे—हुजूर की हवा खुली, ग़रीब पादे मारो साले को पादता है—वही काम अमीर करें तो कोई कुछ नहीं कहता और ग़रीब करता है तो गाली सुनता है। आशय यह है कि अमीरों के भारी दोषों को भी कोई नहीं पूछता और ग़रीबों को साधारण ग़लतियों पर गालियाँ दी जाती हैं। तुलनीय : भोज० अमीर पदलें त हजूर का हवा खुलल, गरीब पदलस त मारा ससुरा पादत ह।

अमीरी और फक़ीरी की बू चालीस बरस तक नहीं जाती—धनी या निर्धन होने का प्रभाव सहज नष्ट नहीं होता। मनुष्य का स्वभाव मुश्किल से बदलता है।

अमृत पीते दाँत कोट- अच्छी वस्तु ग्रहण करने में भी आना-कानी करने पर कहते हैं। तुलनीय : मग० अमरित पीत दांत कोथ; भोज० अमरित पीयत दाँत कोट।

अयमपरो गण्डस्योपरि स्फोट— व्रण (फोड़े) के ऊपर यह दूसरा व्रण हो गया। एक कठिनाई के पश्चात् दूसरी कठिनाई के आ जाने के सन्दर्भ में प्रस्तुत न्याय का प्रयोग किया जाता है। दे० 'कोढ़ में खाज'।

अयाल न दुम, नाम पंचकल्यान- घोड़े की न तो दुम है न अयाल, किन्तु नाम पंचकल्याण' अर्थात् बहुत अच्छा है। नाम के अनुसार रूप, रंग, गुण आदि न होने पर व्यंग्य में ऐसा कहा जाता है। तुलनीय : भोज० पोंछ न बार नाम सुकुमार।

अरज़ाँ बइल्लत, गिराँ बहिकमत—सस्ती चीज़ ख़राब होती है, और महँगी अच्छी। दे० 'सस्ता रोवे बार बार···'।

अरण्यरोदन-न्याय जंगल में रोने से क्या लाभ? ऐसे कार्य पर यह न्याय चरितार्थ होता है जो व्यर्थ हो। किसी ऐसे व्यक्ति के सामने रोने-गिड़गिड़ाने या प्रार्थना करने पर इस न्याय का प्रयोग करते हैं जो कुछ न सुने या दया-रहम न करे। इस तरह प्रार्थना करना या गिड़गिड़ाना व्यर्थ है। तुलनीय : अं० Cry in the wilderness.

अरथी में कंधा देगा तो खाकर ही आयगा, कुछ देकर नहीं—मुर्दे की अरथी में कंधा देकर श्मशान पहुँचायगा तो मृत्यु भोज में भोजन ही करेगा, अपने पास से तो कुछ देकर नहीं जायगा। व्यक्ति लाभ की आशा में ही प्रत्येक कार्य करता है, चाहे वह अच्छा हो या बुरा। तुलनीय : भो० खान्द्यो खाँद दिए ते खाइन जाय, खवड़ावीने ने जाय; पंज० अरथी बिच मोंडा देवेंगा ते खाके ही जावेंगा कुछ देके नहीं।

अरध तर्जाहं बुध सरबस जाता जो वस्तु पूर्ण रूप से हाथ से जा रही हो, उसे आधा देकर आधी अपने लिए बचा लेना। बुद्धिमान बड़ी हानि को बचाने के लिए छोटी हानि सहन कर लेते हैं। दे० 'आधी जाती देखकर···'।

अरबी न फ़ारसी, बाबूजी (मियाँजी, भैयाजी) बनारसी—दे० 'अँगरेज़ी न फ़ारसी···'।

अरबी न फ़ारसी भैयाजी बनारसी— दे० 'अँगरेज़ी न फ़ारसी···'।

अरहर की टट्टी गुजराती ताला कम दाम की चीज़ से संबंधित चीज पर बहुत अधिक व्यय करना। किसी चीज़ की रखवाली पर उसकी क़ीमत से बहुत अधिक खर्च करना। तुलनीय : मरा० तुराट्याची पडवी (झोपड़ी) गुजराती कुलुप; मल० चुण्टङ्ङा काल् पणम् चुमट्टु कूलि मुक्काल् पणम्, पंज० पैहे दी गुड्डी रुपया मनाई; ब्रज० अरहरि की टटिया, गुजराती तारो। दे० 'दमड़ी की गुड़िया टके सेर मुँड़ाई'।

अरि छोटो गनिये नहीं, जाते होत बिगार- शत्रु को कभी निर्बल या अपने से कम नहीं समझना चाहिए नहीं तो हानि की संभावना रहती है।

अरिबस दैव जियावत जाही, मरनु नीक तेहि जीव न चाही- शत्रु के अधीन जीने से मरना अच्छा है। शत्रु की अधीनता स्वीकार करने से लड़कर मर जाना कहीं अच्छा है।

अरे पागल! गाँव में आग मत लगा देना, कहा—अच्छी याद दिलाई किसी ने पागल से कहा कि गाँव में आग मत लगा देना तो उसने उत्तर दिया कि तुमने अच्छा याद दिलाया, अब तो मैं अवश्य लगाऊँगा। मूर्ख और नीच व्यक्तियों को जिस कार्य से रोका जाय वे उसको अवश्य करते हैं। तुलनीय : राज० गैला-गैला, गाँव मती बाळ्ये के भली चितारी।

अरे हंस या नगर में जैयो आप विचारि—मूर्खों के गाँव या मंडली में बुद्धिमान को समझ-बूझकर जाना

चाहिए।

अर्क तरू की डार से कहुँ गज बाँधे जाँय— (क) छोटी चीज़ में बड़ा काम नही हो सकता। (ख) छोटों से बड़ा काम नहीं हो पाता।

अर्क-मधु-न्याय—यदि शहद मदार (आक) से प्राप्त हो जाय तो बड़े पेड़ पर चढ़ने की क्या आवश्यकता? जो काम सहज ही में बन जाय उसके लिए अधिक परिश्रम करना व्यर्थ है।

अर्के चेन्मधु विन्देत किमर्थं पर्वतं व्रजेत् यदि अर्क के वृक्ष (समीप) से ही मधु की प्राप्ति हो जाय तो पहाड़ पर उसके लिए क्यों जाया जाय। यदि किसी कार्य को सरल साधनों से पूरा किया जा सके तो कठिन साधनों का उपयोग व्यर्थ है।

अर्थ अनर्थ का मूल है धन अनर्थ की जड़ है। तुलनीय : असम० अर्थइ अनर्थर् मूल्; सं० अर्थम्, अनर्थम्, भावय नित्यम्; पंज० पैंहा विनाश दी जड़ है!

अर्द्धजरतीय-न्याय- एक ब्राह्मण निर्धनता से दुखी होकर अपनी गाय को बेचने के लिए बाजार गया। किंतु कई दिन लगातार लेकर जाने पर भी उसको कोई ग्राहक न मिला। एक दिन एक पड़ोसी ने पूछा कि आप रोज़ गाय को लेकर कहां जाते है? पंडितजी ने सब किस्सा बता दिया। बाद में उस व्यक्ति के पूछने पर पंडितजी ने बताया कि वे उस गाय की आयु उसकी वास्तविक आयु से अधिक बताते हैं क्योंकि उनका विचार है कि जिस प्रकार मनुष्य की आयु अधिक होने से वह बुद्धिमान और अधिक धन उपार्जित करने वाला बन जाता है, उसी प्रकार गाय का भी अधिक मूल्य मिलना चाहिए। सब सुनकर उस व्यक्ति ने उन्हें बताया कि पशु आयु के बढ़ने से कम मूल्य के होते जाते हैं, इसलिए तुम गाय को कम आयु बताकर बेच आओ। ब्राह्मण ने सोचा कि इसे एक बार बुड्ढा बता चुका हूँ और यदि इसे कम आयु की बताऊँगा तो लोग क्या कहेंगे? सोच-विचार कर उन्होंने तय किया कि मैं न तो बुड्ढी कहूँगा और न जवान, कहूँगा कि आधी बूढ़ी है और आधी जवान। जब कोई व्यक्ति किसी भी पक्ष की बात न करे तो कहा जाता है।

अर्ध तर्जहिं बुध सर्बसु जाता—दे० 'अरध तर्जहिं बुध…' तथा 'आधा तजे पंडित…'।

अर्धरोग हरे निद्रा, सर्व रोग हरे क्षुधा—नींद आने पर रोगी का आधा रोग अच्छा हो जाता है, और जब उसे ठीक से भूख भी लगे तो उसे बिल्कुल चंगा समझना चाहिए।

अर्धवैशस-न्याय—शरीर के आधे भाग को काटने का न्याय। यह न्याय विवेक-शून्यता और अनुपयुक्तता का द्योतक है।

अलख पुरुख की माया, कहीं धूप कहीं छाया—ईश्वर की माया अपार है, कोई सुखी है तो कोई दुखी। तुलनीय : राज० अलख पुरखरी माया, कठै धूप कतहैं छाया; अव० राम कै माया कतहूँ धूप कतहूँ छाया; भोज० रामजी क माया कतहूँ धूप कतहूँ छाया; पंज० रब दी माया किते धुप किते छां; ब्रज० राम तेरी माया, कहूँ धूप कहूँ छाया।

अलखामोशी नीम रज़ा—चुप रहना आधी रज़ामन्दी है। तुलनीय : सं० मौनं सम्मति लक्षणम्।

अल गई, बल गई, जलवे के वक्त टल गई—ज़रूरत पर किसी के न रहने या काम न आने या खिसक जाने पर कहते हैं।

अलग बिल्ली का अलग डेरा—स्वभाव से भिन्न व्यक्ति कभी साथ नही रह सकते। तुलनीय : मैथ० अलगी बिलरिया के अलगे डेरा; भोज० अलग बिलाई क अलगे डेरा; पंज० वखरी बिल्लीदा वखरा डेरा।

अलग भाई, पड़ोसी दाखिल— भाई-भाई अलग हो जायँ तो उनमें मेल-मुहब्बत की भावना नहीं रहती। वे पड़ोसियों की भाँति रहने लगते है। तुलनीय: गढ़० बेगल्या भाई मोरा बराबर; पंज० वखरा परा गुआंडी बिच।

अल जाऊँ बल जाऊँ जल्वे के वक्त टल जाऊँ— संकट के समय साथ छोड़ देने वाले के प्रति कहते हैं।

अलबल खुदा बल—ईश्वर का बल ही यथार्थ बल है।

अलबेली गंजरिया बड़हर कै झुमका- बहुत शौकीन व्यक्ति अपने शौक़ के उत्साह में सीमा का उल्लंघन कर हास्यास्पद बन जाता है।

अलबेली ने पकायी खीर, दूध की जगह डाला नीर— (क) मूर्ख एवं अनाड़ी द्वारा किया गया हर काम बिगड़ जाता है। वह साधारण काम भी ठीक ढंग से नही कर पाता। तुलनीय : पंज० अलबेली ने रिन्नी खीर दुद दी थां पाया पाणी।

अला-बला बन्दर के सिर—कमजोर के सिर ही दोष मढ़े जाते हैं, बली को कोई कुछ नहीं कहता। तुलनीय : अव० अलाय बलाय हमरेन मुड़े।

अलाभे मत्त काशिन्या दृष्टा तिर्यक्षु कामिता— सुन्दर स्त्री के न मिलने पर पशु ही प्रेम का पात्र हो जाता है।

अधिक धन की प्राप्ति न होने पर थोड़ा ग्रहण करने में भी दोष नही है।

अला लूं बला लूं, सहनक सरका लूं—स्वार्थी या कपटी के प्रति कहा जाता है जो बातों ही बातों में अपना काम निकाल लेता है।

अलिफ़ के नाम बे नहीं जानते—जो व्यक्ति ज़रा भी पढ़े-लिखे न हों अर्थात् 'निरक्षर भट्टाचार्य' हों उनके प्रति कहा जाता है। तुलनीय : भोज० करिया अच्छर भैंस बराबर।

अलील की राय भी अलील—बीमार व्यक्ति की राय भी बीमार अर्थात् न मानने योग्य होती है।

अली हिम्मत सदा मुफ़लिस—दे० 'आली हिम्मत···'।

अल्प विद्या भयंकरी—थोड़ी विद्या या किसी विषय का अधकचरा ज्ञान ख़तरनाक होता है। तुलनीय : फ़ा० नीम हकीम ख़तर-ए-जान; भोज० कम पढ़ल काल का घर; असम० अल्प विद्या भयंकरी; मल० मुरि वैद्यन् आळे वकोल्लुम्; मेवा० अदभण्यो घरकां ने खावे; अं० A little knowledge is always dangerous.

अल्पाहारी सदा सुखी—कम खाने वाला कभी बीमार नही पड़ता। तुलनीय : उ० कम खाना और ग़म खाना अच्छा होता है; तेलु० रुचियनि येक्कुव तिनराद; पंज० कट खा सदा सुख पा।

अल्ला अल्ला ख़ैर सल्ला—दे० 'अल्लाह-अल्लाह ख़ैर सल्लाह'।

अल्ला करे बाँका पकड़ा जाय, लाल खाँ लकड़े जकड़ा जाय—यह एक शाप है। खुदा करे बुरे का बुरा हो।

अल्ला की माँ का चालीसा—चालीसा अर्थात् मृत्यु के चालीस दिन बाद का भोज। ऐसे के प्रति व्यंग्य मे कहते हैं जिसका प्रबंध ठीक न हो। तुलनीय : राज० अल्ला माँ रो चालीसो; पंज० अल्ला दी मां दा चालीसा।

अल्ला तेरी आस औ नज़र चूल्हे के पास—कहने को तो भगवान के भरोसे है किन्तु निगाह रोटी की ओर है। भगवान का यदि सहारा लेना हो तो दिखावटी रूप मे नही बल्कि पूर्णत: उन्ही के भरोसे रहना चाहिए, नही तो वे सहायता नहीं करते। यह लोकोक्ति ऐसे लोगों के प्रति कहते हैं जो केवल ऊपर से भगवान पर भरोसा करते हैं। तुलनीय : पंज० अल्ला तेरी आस नजर चूल्हे दे कोल।

अल्ला दे खाने को, तो जाये कौन कमाने को—निकम्मे और मुफ्तखोर के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : उ० जिसे मिले यों वह खेती करे क्यों; पंज० अल्ला देवे खाण नूं जावे कौण कमाण नूं।

अल्लाह अल्लाह ख़ैर सल्लाह—(क) जब कोई काम निर्विघ्न समाप्त हो जाता है तो कहते हैं। (ख) जो हुआ अच्छा ही हुआ, इस अर्थ में भी प्रयोग किया जाता है। तुलनीय : राज० अल्ला-अल्ला ख़ैर सल्ला; अव० नेकी सलाहे से गुजरिगा; ब्रज० अल्ला-अल्ला खैर सल्ला; अं० All is well that ends well.

अल्ला करे बाँका पकड़ा जाय, लालखाँ के लकड़े जकड़ा जाय—दे० 'अल्ला करे···'।

अल्लाह का दिया सर पर—जो कुछ भी परमात्मा दे उसे ख़ुशी से स्वीकार करना चाहिए, या उसे स्वीकार करना ही पड़ता है। तुलनीय : पंज० अल्ला दा दिता सिर उत्ते।

अल्लाह का नाम लो—झूठ बोलने वाले से कहा जाता है, 'अजी अल्लाह का नाम लो'। तुलनीय : अव० राम का नाव लेव; पंज० वाहिगुरु दा नां लो।

अल्लाह की चोरी नहीं तो बन्दे का क्या डर—यदि अपने से कोई अपराध नही हुआ तो इन्सान से क्या डरना ? तुलनीय : मरा० देवाची चोरी नाही तर भक्ताचें काय भय; भोज० भगवान क चोरी ना कइली त अदमी से का डरी। पंज० रब दी चोरी नईं ताँ बंदे दा की डर।

अल्लाह दे अल्लाह दिलावे, बंदा दे मुराद पावे—देने वाला केवल ईश्वर ही है, आदमी तो कुछ पाने के लिए देता है।

अल्लाह दो सींग दे तो वह भी कबूल है—भगवान जो कुछ दे स्वीकार ही है। राजी से नही तो ज़बरदस्ती स्वीकार करना ही पड़ेगा।

अल्लाह यार है तो, बेड़ा पार है—ईश्वर मददगार है तो काम अवश्य पूरा होगा। तुलनीय : फ़ा० हिम्मते-मर्दां, मददे-ख़ुदा; पंज० रब यार है तां बेड़ा पार है; अं० God helps them that help themselves.

अल्लाह रे, दीदे की सफाई—चंचल नेत्रवाली स्त्री के प्रति कहा जाता है क्योंकि वह प्राय: बदचलन होती है। तुलनीय : अव० हे राम ! दीद कै बड़ी चोखि अहै; पंज० हे रब अख (हत्थां) दी सफाई।

अल्हड़ यौवन भीत से लगाने को नहीं होता—यौवन दीवारों पर चित्रों की तरह नही लगाया जाता। किसी अच्छी वस्तु की अधिकता होने पर भी उसका दुरुपयोग नहीं किया जाता। तुलनीय : राज० अलड़ो जोबण भीतांरे लगावणनै को हुवै नी; पंज० जवानी कदां उत्ते फोटो

लगाण बरगा नई लगदा।

अवगुण तब अजमाइए, जब गुण न पूछे कोय—गुण की क़द्र करने वाले जब न मिलें तभी अवगुणों को आज़माना चाहिए। बुरे काम भरसक नहीं करने चाहिए। तुलनीय : पंज० अवगुण अदों करो जदों गुणां नूं काई न पुच्छे।

अवतप्ते, नकुलस्थितम्—तपती हुई भूमि पर नेवले का खड़ा होना। अर्थात् जलती भूमि पर नेवला देर तक खड़ा न रहकर इधर-उधर भागता है। प्रस्तुत न्याय का प्रयोग अव्यवस्थित चित्त वाले व्यक्ति के लिए किया जाता है।

अवयव प्रसिद्धेः समुदाय प्रसिद्धिर्बलीयसी—समुदाय (समाज) की ख्याति व्यक्ति की ख्याति से अधिक बलवती होती है।

अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्—किए हुए अच्छे या बुरे कामों का फल सभी को भोगना पड़ता है।

अवसर के ही गीत गाए जाते हैं—(क) जैसा अवसर हो वैसा ही काम करना चाहिए। (ख) जैसा अवसर हो वैसी ही बात करनी चाहिए। तुलनीय : पंज० मौके दे ही गीत गाये जांदे हन।

अवसर चूको डोमनी गावे ताल-बेताल—डोम की स्त्री ताल चूक जाने पर ठीक से गा नहीं पाती। (क) अवसर निकल जाने पर कोई कार्य ठीक नहीं हो पाता। (ख) किसी भी कारण घबड़ा जाने पर कोई कार्य ठीक नहीं हो पाता। तुलनीय : राज० औसर चूकी डूमणी गावै ताल-बेताल; ब्रज० औसर चूकी बेड़िनी गावे सरग-पताल।

अवसर चूके क्या पछताना?—अवसर निकल जाने पर पछताना मूर्खता है। बुद्धिमान अवसर आते ही काम काम कर लेते है, चूक जाने पर पछताते नहीं। तुलनीय : गुज० अवसर खोये कुछ क्या करनी; पंज० मौका गया ते की पछताना।

अवसर पर हाथ आए सो ही हथियार—(क) मौके पर जो भी वस्तु हाथ में आ जाय उसे ही हथियार समझना चाहिए। (ख) मौके पर जो भी वस्तु काम आए वही सबसे अच्छी होती है। तुलनीय : राज० औसाण आवै जको ही हथियार। पंज० मौके उत्ते जो हाथ आवे हो हथियार।

अवसि देखिअहि देखन जोगू—देखने योग्य वस्तु है, अवश्य देखिए। यह तुलसी की चौपाई की एक पंक्ति है।

अवाँ अनल इव सुलगइ छाती—असह्य दुःख के लिए कहते हैं। आशय यह है कि हृदय आवें भाँति सुलग रहा है।

अव्वल ख़ेश बाद हू दरवेश—पहले अपने आपको फिर फ़क़ीर को। यह फ़ारसी की कहावत है। आशय यह है कि अपने भले का ध्यान रखकर ही दूसरे का ध्यान रखना उचित है।

आँख ओझल पहाड़ ओझल—नीचे देखिए।

आँख ओट पहाड़ ओट—आँख के पीछे (ओट) का व्यक्ति पहाड़ के पीछे हो जाता है। अर्थात् जब तक व्यक्ति आँख के सामने होता है उसका स्मरण रहता है, किन्तु जब वह आँख के सामने से हट जाता है, प्रायः लोग उसे भूल जाते हैं। तुलनीय : बुंद० अँखियन ओट पहाड़ ओट; ब्रज० आँख से बाहर मरे बराबर; भोज० आँखि क आड़ पहाड़ क आड़; अं० Out of sight, out of mind.

आँख का अंधा गाँठ का पूरा—सम्पन्न (गाँठ का पूरा) परंतु मूर्ख (आँख का अँधा) व्यक्ति। ऐसे सम्पन्न पर मूर्ख व्यक्ति के लिए भी कहते हैं जिसका पैसा आसानी से उड़ाया जा सके। तुलनीय : भोज० आँखि क आन्हर गाँठ क पूर; पंज० अख दा अन्ना जिद दा पूरा; ब्रज० आँखिनि कौ अंधौ और गठरी कौ पूरौ।

आँख का अंधा, नाम नैनसुख—आँख के अंधे हैं किन्तु नाम है नयनसुख (जिसे आँख का सुख प्राप्त हो)। इस लोकोक्ति का प्रयोग ऐसे व्यक्ति के लिए किया जाता है जिसकी योग्यता, गुण अथवा विशेषता के प्रतिकूल उसका नाम हो। तुलनीय : भोज० आँख का आन्हर नाँव नयनसुख; ब्रज० आँखों के अंधे नाम नैनसुख; बुंद० आँखन आँदरे, नाँव नैनसुख; नाँव लखेसुरी, मों कुतिया सो, काँठे से पूछ नइयाँ, चेंरिया नाँव; जनम के आँदरे, नाव नैनसुख; बघे० आँख केर अंधा, नाम नयनसुख, नाँव तीरंदाज, हइ तीरउ भर नही; असम० चकुटो फूटा नाम है छे पद्मलोचन; कौर० करम दिलद्री नाम चैनसुख; गुज० पेटमाँ पावलुं पाणी नहि ने नाम दरियाव खाँ; बंग० काना पूतेर नाम पद्मलोचन; मणि० मगुणदगी ममिग-ना हेनबा; हाड़० आँख्या का आँधा नाव नणसुख। रूपा० आँख के अंधे नाम नयनसुख; पंज० अन्ना पुतर नाँ नैणसुख; अव० आँखिन कौ अँधौ नाम नैनसुख।

आँख-कान में चार अंगुल का फ़र्क़ है—अनदेखी चीज़ पर विश्वास नहीं करना चाहिए। अर्थात् यह निश्चित नहीं है कि जो बात कान से सुनी जाय वह सत्य ही हो, वह झूठी भी हो सकती है। इसलिए कान से सुनी हुई बातों की अपेक्षा आँख से देखी हुई चीज़ों पर अधिक विश्वास करना चाहिए। तुलनीय : राज० आँख-कान में च्यार आँगळरो आंतरो है; हरि० आंख्यां का अर कान्नाँ का चार आंगल

कासला से; भोज० आँखि आ कान में चार अँगुर क फरक होला; पंज० आँख कन बिच चार अँगुल दा फर्क है।

आँख का पानी ढल गया—निर्लज्ज हो गए। यह लोकोक्ति ऐसे व्यक्ति के प्रति कही जाती है जो लोक-लज्जा को त्याग कर कोई अशोभनीय कर्म करता है। तुलनीय : भोज० आँखि क पानी ढह गइल; पंज० अख दा पानी ढल गया।

आँख की बदी भौंह के आगे/सामने— किसी के परिचित व्यक्ति से उसकी बुराई उसी प्रकार छिपती नहीं है जिस प्रकार भौंह से आँख। तुलनीय : आँखि क बदी भौंह के समने; रूपां० आँख की बदी भौंह के सामने; पंज० अखाँ दी बदी भौहां दे अग्गे।

आँख के आगे नाक, सूझे क्या खाक—(व्यंग्य में) आँख पर जो परदा पड़ा है, दिखाई कैसे देगा? जो अपनी कमी स्वयं पूरी नहीं कर सकते और दूसरों के दोषरहित होने पर द्वेष करते है वे उन्हें भी अपने जैसा बनाने के लिए छल से ऐसा कहते हैं। इस लोकोक्ति के साथ एक कहानी जुड़ी हुई है, जो इस प्रकार है : किसी समय एक नकटे ने अपना संप्रदाय बढ़ाने के लिए लोगों से कहना शुरू कर दिया कि मुझे ईश्वर के दर्शन होते हैं। तब लोगों ने आपत्ति उठाई कि हमारे भी तो आँखें है, हम लोगों को ईश्वर क्यों नहीं दिखाई पड़ते? इस पर नकटे ने उक्त लोकोक्ति कही। अन्त में उसकी बात में फँसकर लोगों ने अपनी नाक कटवानी शुरू कर दी। परन्तु उन्हें ईश्वर के दर्शन नहीं हुए। इस प्रकार अपनी मूर्खता पर लज्जित होकर उन्होंने भी कहना शुरू कर दिया कि नाक के कारण ही हमें ईश्वर के दर्शन नहीं होते। इस तरह नकटों की संख्या बढ़ने लगी। तुलनीय : भोज० आँखि के आगे नाक, सूझी का खाक।

आँख के लिए पीठ पिछवाड़ा— आँख के लिए पीठ पिछवाड़े के सदृश है। (क) यदि किसी व्यक्ति से किसी ऐसी वस्तु के विषय में पूछा जाय जिसे उसने देखा न हो तो उसके लिए ऐसा कहा जाता है। (ख) सामने खड़े हुए व्यक्ति को स्वयं न देखकर किसी दूसरे से जानने के लिए जिज्ञासा करने पर ऐसा व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : भोज० आँखि खातिन पीठिये पिछवार; मैथ० आँखि क लेखे पीठ पछुआर; पंज० अख लई पिठ पिछवाडे बरगी; ब्रज० आँखिन कूँ पीठि पिछवारौ।

आँख के प्रमाण फूला नहीं पड़ता— आँख के कहने से फूला नहीं पड़ता। अर्थात् मनचाही बात नहीं होती। तुलनीय : राज० आँखर परमाण तो फूलो पड़ै ही कोनी; पंज० अँख दे कैण नाल फोला नईं पैंदा।

आँख गड्ड, नाक भद्द, नाम सोहनी—नीचे देखिए।

आँख गड्ड, नाक भद्द, नाम सोहनी—आँख अन्दर को धँसी हुई है, नाक भद्दी है और नाम सोहनी (सुन्दर लगने वाली) है। अर्थात् नाम रूप-रंग के सर्वथा विपरीत है। नाम के विपरीत गुण होने पर व्यंग्य से ऐसा कहा जाता है। तुलनीय: पंज० अख विच गड्डे नक मोटी नां सोहणी।

आँख चले भौं चले चले पपनी, सात रंग के बात बाजे वही कुटनी- जिस स्त्री की आँखें, भौंहें तथा आँख की पलकें चलें, और वह तरह-तरह की बातें करे उसे कुटनी (दुष्टा) समझना चाहिए। यानी चंचल स्वभाव एवं अनेक तरह की बातें करने वाली औरतें अच्छी नहीं होती।

आँख चूकी माल यारों का— (क) आँख चूकने पर या असावधान होने पर मित्र भी हाथ साफ करने से बाज़ नहीं आते। (ख) अपनी चीज़ की खबरदारी आप करनी चाहिए। असावधानी के कारण किसी वस्तु के चोरी चले जाने पर कहते हैं। तुलनीय : राज० निजर चूकी'र माल चेतन; रूपां० आँख झपकी और माल यारों का; मरा० लक्ष नसलें की माल मित्राचा; पंज० अंख परनी माल यारां दा; ब्रज० आँखि बची और माल दोस्तन कौ।

आँख चौपट अँधेरे नफ़रत (क) आँख से न देख सकने के कारण अँधेरे से खीझना। (ख) आँख से न देख सकना और अँधेरे से नफ़रत करना। आशय यह है कि देख सकने वाला अँधेरे से नफ़रत करे तो ठीक है क्योंकि वह देख सकता है पर यदि अंधा नफ़रत करे तो व्यर्थ है क्योंकि उसके आगे तो कोई चारा नहीं। तुलनीय : पंज० अख गयी ता हनेरे तों नफ़रत।

आँख झपी और अवसर बीता—अवसर थोड़ी-सी असावधानी से भी निकल जाता है। समय का मूल्य न जानने वाले व्यक्तियों के प्रति शिक्षार्थ ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ० ताल चुक्यो औसर बीत्यो; पंज० अख मीटी रात कसीटी।

आँख देख के साख क्या पूछना जो चीज़ प्रत्यक्ष है उसके लिए प्रमाण की कोई आवश्यकता नहीं। तुलनीय : भोज० आँख देख के साख का पूछे के; ब्रज० पानी पीकै जाति का पूछिवा; सं० प्रत्यक्षं किं प्रमाणम्; पंज० अखी देख के की पुछणा।

आँख देखी चेतना, मुँह देखे व्यवहार—देखने से विश्वास और परिचय होने पर व्यवहार होता है। तुलनीय : पंज० मूँहाँ नूँ मुलाजे, सिराँ नूँ सलामाँ; मरा० डोळ्यानी

पाहिलें तर विश्वास, तोंड पाहिले तर व्यवहार।

आँख न कान, करें दुकान— दुकान (व्यापार) करने के लिए बड़ी कुशलता, सतर्कता तथा चुस्ती की आवश्यकता होती है। नेत्रहीन तथा कम सुनने वाले से दुकान का काम ठीक ढंग से नही हो सकता। अर्थात् जिस कार्य के लिए जो योग्यता अपेक्षित है उसके न होने पर वह कार्य संपन्न होना असंभव होता है। तुलनीय : भोज० आँख न कान बीच हीं दुकान; मैथ० आँखि ने कान बीच में दुकान; पंज० अख नां कन करण हट्टी।

आँख न कान, दीपचंद नाम— आँख और कान है नहीं परन्तु नाम दीपचंद है। अर्थात् नाम के अनुसार रूप का न होना। तुलनीय : भोज० आँख न कान दीपवा नाँव; पंज० अख नाँ कन नां दीपचंद।

आँख न ताँख नौ कजरौटा— आँख तो है नही परन्तु कजरौटे नौ रखे है। अर्थात् जब बिना प्रयोजन के बाह्य प्रदर्शन के लिए कुछ किया जाता है, तब ऐसा कहते हैं। (कजरौटा—काजल रखने की एक विशेष प्रकार की डिबिया) तुलनीय : अव० आँखी एको नही कजरौटा नौ-नौ ठई; मेवा० काजल घालवाऊँ कई व्हे चोमवा का लखणं; रूपा० आँख न ताँख नौ गो कजरौटा।

आँख न दीदा, काढ़ें कसीदा— न तो आँख है न दीदा, कशीदाकारी करने चले। अर्थात् अपनी योग्यता या सामर्थ्य का ध्यान न रखकर जब कोई ऐसा काम करना चाहे जो उसके लिए असंभव हो तो (व्यंग्य में या मज़ाक से) कहते हैं। तुलनीय : अव० आँखी न दीदा काढ़े कसीदा; कन्नौ० आँखी न दीदा, काढ़ै कसीदा; मरा० डोळे न दृष्टि, म्हणे कशिदा काढते; रूपा० आँख न दीदा पकावे मलीदा; पंज० अख नाँ दिमदा कढ़ण कसीदा।

आँख न नाक, बन्नो चाँद-सी— (क) सूरत भद्दी होने के बावजूद भी चटक-मटक से रहने पर (ख) नाम के अनुरूप रूप या गुण न होने पर और (ग) किसी के द्वारा किसी वस्तु की झूठी प्रशंसा की जाने पर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : रूपा० आँख न साँख बन्नो चादसी; पंज० अख नां नक बन्नो चंदरमा बरगी।

आँख नहीं पर काजल दीन्हें—दे० 'आँख न ताँख नौ···'। व्यर्थ आडम्बर करने पर कहते हैं।

आंख नाक में चार अंगुल का फ़र्क़ होता है—दे० 'आँख और कान में चार······ ·····'।

आँख फड़के दहिनी, मैया मिले कि बहिनी—दाईं आँख फड़कने से माता या बहिन का मिलना सम्भावित होता है। तुलनीय : पंज० सज्जी अख फड़कन नाल माँ या पैण दा मेल हुंदा है।

आँख फड़के बाईं, भैया मिले कि साईं—स्त्रियों की बाईं आँख का फड़कना शुभ माना जाता है। फड़कने पर भाई या पति से भेंट होती है। तुलनीय : पंज० खब्बी अख फड़कन परा या खसम मिलदा है।

आँख फूटी तो फूटी पर पड़ोसिन का असगुन तो हुआ—(क) जो व्यक्ति दूसरे की छोटी हानि करने के लिए अपनी बड़ी हानि की कोई चिंता नही करते उनके प्रति ऐसा कहते हैं। (ख) निर्लज्ज व्यक्ति के लिए भी कहते हैं।

आँख फूटी पीर गई—किसी कष्ट से अधिक व्यथित होने पर लोग कहते हैं। आँख में बहुत तकलीफ़ होने से अच्छा तो उस आँख का फूट जाना है क्योंकि उसके बाद कष्ट नहीं होना। तुलनीय : भोज० आँखि फूटल पीड़ा गइल; ब्रज० फोरा फूटौ पीर गई; अव० आँखी फूटि पीरा गय; बुंद० आँख फूटी पीर निजानी; राज० आँख फूटी, पीड़ मिटी; मरा० डोळा फुटला दुखणें गेले; छतीस० आँखी फूटिस, पीरा हटिस; पंज० अख पज्जी पीड़ गयी।

आँख फूटी पीर नहीं— आँख फूट गई, कष्ट समाप्त हो गया। किसी दुःख के समूल नष्ट हो जाने पर कहते है।

आँख फूटेगी तो क्या भौंह से देखेंगे?—(क) सबका काम सबसे नही हो सकता। (ख) बड़ों का काम को छोटे कदापि नही कर सकते।

आँख फूटे तो फूटे पड़ोसिन का असगुन तो करना है— दे० 'आँख फूटी तो फूटी··············'।

आँख फेरे तोतों की-सी बातें करे मैना की-सी— (क) बदचलन स्त्री के लिए कहा जाता है। (ख) ऐसे व्यक्ति के लिए भी कहा जाता है जो बात मीठी करे पर भीतर से तोताचश्म हो। तुलनीय : पंज० अख केरे तोतियां बरगी गलां करे मैना बरगी।

आँख बंद डिब्बा ग़ायब—चोर की पटुता के विषय में ऐसा कहते है। तुलनीय : पंज० अख बंद डब्बा गोल।

आँख बची और माल दोस्तों का—दे० 'आँख चूकी माल··'।

आँख बची और माल यारों का—दे० 'आँख चूकी माल···'।

आँख बिरानी खोभरो, मानो भुस में जाय— दूसरे की आँख में काँटा (खोमरो) चुभाया मानो भुस में चुभाया। (क) दूसरे को तकलीफ़ देने से देने वाले को कष्ट नहीं

होता। (ख) दूसरे पर पड़ने वाला कष्ट अपने लिए कुछ भी नहीं है।

आँख मिची, अँधेरा हुआ—आँख बंद करते ही अँधेरा हो जाता है। अर्थात् अपना काम अपने सामने ही ठीक होता है, पीठ पीछे लोग उसे ठीक से नहीं करते। तुलनीय : भोज० आँखि बंद, अन्हार भइल; राज० आँख्याँ भ.चीरं इँधारो हुयो; पंज० अख मीटी हनेरा होया।

आँख भींच अँधेरा करे, उसका कोई क्या करे—जो व्यक्ति जानबूझकर अनजान बने या काम न करना चाहे उसके लिए कुछ नही किया जा सकता। तुलनीय : राज० आँख्यां भीचऽ इँधारो करै जकरो कोई काँई करै; पंज० अख मीट के हनेरा करे उस दा कोई की करे।

आँख भींची तो सदा अँधेरा—(क) आँखें बंद हो जाने के बाद अर्थात् मृत्यु के पश्चात् सदा के लिए अँधेरा हो जाता है। (ख) काम न करने वाले के लिए हज़ारों बहाने होते हैं। तुलनीय : पंज० अख भीची अते सदा हनेरा।

आँख भी है कि फूटेगी—आँख होगी तब तो फूटेगी। अर्थात् जो वस्तु अपने पास है ही नही उसके नष्ट होने की चिंता करना व्यर्थ है। तुलनीय : भोज० अँखियो बा कि फूटी; पंज० अख होवेगी तां पज्जे गी।

आँख भौं चोन्हर बंगा में चरवाही—कुरूप होने पर भी प्यार का राग अलापना।

आँख मूँदी और दिन निकला—सोने के पश्चात् सुबह ही आँख खुलती है। परिश्रमी व्यक्ति और बच्चों की नीद बहुत गहरी होती है।

आँख में अंजन, दाँत में मंजन नित कर, नित कर, नित कर; कान में तिनका तिनका नाक में अँगुली मत कर, मत कर, मत कर—आँखों में अंजन और दाँतों में मंजन रोज़ करना चाहिए लेकिन कान में तिनका और नाक में अँगुली कभी नहीं करनी चाहिए।

आँख में किरकिरी नहीं सही जाती—आँख में यदि छोटा-सा कण (किरकिरी) पड जाता है तो काफी कष्ट होता है। जब तक उसे निकाल नहीं दिया जाता, तब तक आराम नहीं मिलता। अर्थात् शत्रु को, चाहे वह छोटा ही क्यों न हो, जब तक परास्त नहीं कर दिया जाता तब तक आँखों में खटकता रहता है। तुलनीय : भीली—आँखां माँ अणी को नी खटे।

आँख में थी शर्म दिल की थी नर्म—न मानने की बात मान जाना। ऐसे व्यक्तियों के प्रति ऐसा कहते हैं जो अपने स्वभाव और आचार-व्यवहार में बड़े शिष्ट और मृदु होते हैं और दूसरों का लिहाज़ करते हैं। तुलनीय : पंज० अख बिच सी सरम दिल दी सी नरम।

आँख में पड़ा तिनका बना बहाना दिल का—(क) कामचोर व्यक्तियों के प्रति ऐसा कहते हैं क्योंकि वे सदैव काम से बचने के लिए बहाना ढूँढ़ते हैं। (ख) जब कोई मनचाहा काम हो जाय तो भी कहते हैं। तुलनीय : राज० आँख में पड़्यो तुस, ओही लाधो मिस; पंज० अख बिच पया तीला बाना बनया दिल दा।

आँख में फूली नाम कमल नयन—आँख में तो फूली है पर नाम कमल नयन है, यानी जब नाम के अनुरूप गुण नहीं होता तो ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० आँखि में फुल्ली नाँव कमल नयन; अव० आँखि माँ फूली नाम कमल नयन; पंज० अख बिच फौला नां कमल नैण।

आँख में मैल और इसमें मैल नहीं—बहुत सुन्दर व्यक्ति के लिए कहा जाता है।

आँख में लोर, दाँत निपोर—भद्दे स्वरूप वाले को कहा जाता है।

आँख रहती और चोट ठीक हो जाती—आँख भी सलामत रहती है और चोट भी धीरे-धीरे ठीक हो जाती है। विपत्ति आती है और चली जाती है तथा उसकी याद भी धीरे-धीरे भूल जाती है। अर्थात् विपत्तियों से घबड़ाना नही चाहिए। तुलनीय : भीली—आँख ते रेई जाये ने धोखो निकली जाये; पंज० अख होंदी तां सट्ट ठीक हो जांदी।

आँख लजाई, धी हुई पराई—कन्या पक्ष के लोग वर-पक्ष के प्रस्ताव को सुनकर नज़रें झुका लेते हैं जिससे प्रकट हो जाता है कि उन्हें प्रस्ताव स्वीकार है (मुस्लिम संप्रदाय में वर की ओर से कन्या के लिए प्रस्ताव जाता है)। तुलनीय : पंज० अख सरमायी ती होयी पराई।

आँख सामने की बीबी और गाँठ का धन—पत्नी और धन का साथ रहना ही अच्छा होता है। अर्थात् जब पत्नी सदा साथ रहती है तभी वैवाहिक जीवन का वास्तविक आनन्द प्राप्त होता है और जो धन अपना तथा अपने पास होना है, वही समय पर काम आता है। तुलनीय : गढ़० दिट्ठा की ज्वै, अर मुट्ठी को धनु; भोज० सामने क मेहँरी अगाँठी क धन; पंज० अख सामने दी रन अते गंड दा पैहा।

आँख से ओझल मन से दूर—दूर रहने से प्रेम कम हो जाता है। तुलनीय : भोज० आँखी से भइल ओट मन से भइल खोट, अरनघट माया परनघट छोह, जब देखीं तब लागे मोह; मल० दूरम् विट्टाल् खेदम् विट्टु, दूरम् विट्टाल्

स्नेहम् विट्टु; पंज० अख तो परे दिल तों दूर; अं० Out of s ght, out of mind.

आँख से दूर दिल से दूर—दे० 'आँख से ओझल···'। तुलनीय : मरा० डोळ्या पासून दूर, मनापासून दूर।

आँख से देखकर जहर नहीं खाया जाता कोई व्यक्ति जान-बूझकर अपना अहित नहीं करता। या कोई व्यक्ति जान-बूझकर अपने को महान् संकट में नही डालता। तुलनीय : पंज० अक्खी वेख के महुरा नही खादा जांदा।

आँख से पता नहीं लगेगा तो वक्त से लगेगा -यदि किसी की वास्तविकता का पता देखने से नहीं लगता तो धीरे-धीरे समय व्यतीत होने पर उसकी वास्तविकता स्वयं सबके सम्मुख प्रकट हो जाती है। अर्थात् किसी भी व्यक्ति की वास्तविकता अधिक समय तक छिपी नहीं रहती। तुलनीय : भीली --आँखां हूँ खबर ने पड़े हैं, ते नाका हूँ तो पड़े हैं; पंज० अख नाल पता नई लगेगा तां वक्त नाल लगेगा।

आँख से सूर नाम कमल नयन- आँख तो है नही परन्तु नाम है कमल नयन। इस लोकोक्ति का प्रयोग ऐसे व्यक्ति के लिए किया जाता है जिसकी योग्यता, गुण अथवा विशेषता के प्रतिकूल उसका नाम हो। तुलनीय : भोज० आँखि क आन्हर नाँव कमल नयन।

आँखिन देखी चेतना मुख देखा व्यवहार--दे० 'आँख देखी चेतना मुँह···'।

आँखी न दीदा काढ़ै कसीदा—दे० 'आँख न दीदा···'।

आँखी न साँखी कजरौटा नौ-नौ दे० 'आँख न साँख कजरौटा···'।

आँख का प्रयोग हमने भोज० में आँखि किया है। कही-कही पर आँख और आँखी के रूप में भी प्रयोग हुआ है।

आँखी फूटी तो फूटी पड़ोसिन का असगुन तो करब—दे० 'आँख फूटी तो फूटी···'।

आँखे अंजन, दाँते मंजन नित दे, नित दे, नित दे; काने लकड़ी, नाके उँगली मत दे, मत दे, मत दे— दे० 'आँख में अंजन दाँत में मंजन ···'।

आँखें तो खुली रह गईं और मर गई बकरी—अप्रत्याशित रूप से किसी घटना के घटित होने पर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० अखाँ ते खुलियाँ रहियं अते मर गयी बकरी।

आँखें हुईं ओट तो जी में आया खोट—जो व्यक्ति सामने प्रशंसा करे और पीठ पीछे बुराई, उसके लिए ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० पिठ पिछे पैड़।

आँखें हुईं चार तो जी में आया प्यार— (क) देखने से ही प्यार होता है, बिना मिले-जुले आपस में प्यार नही रहता। (ख) जो व्यक्ति सामने प्रशंसा करे और पीठ पीछे बुराई, उसके लिए भी व्यंग्य से कहते है। दूसरी पंक्ति है : आँखें हुई ओट तो दिल में आया खोट। तुलनीय : पंज० अखां होइयाँ चार तो दिल बिच आया पयार।

आँखें हैं या बटन?-- आंख होते हुए भी पास की वस्तु जिसे न दिखाई पड़े उसे लक्ष्य करके ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० आँखि हऽ कि बटाम; पंज० अखां है यां बटन।

आँखें हैं या भैंस के चूतड़---जो व्यक्ति सामने की वस्तु को न देख सके उस पर व्यंग्य से कहा जाता है। तुलनीय : भोज० आँखि हऽ की भइंसी क चुत्तर; अव० आँखी अहै की भइंसी कै चुत्तर, हरि० आँख से अक बट्टण; पंज० अखां है या मझ दा टुआ।

आँखें हों चार तो जाग उठे प्यार---आँख से आँख मिलने पर प्यार जाग उठता है। अर्थात् प्रेम एक दूसरे के मिलने-देखने पर होता है। तुलनीय : भोज० आँखि होखे चार तऽ मन में जागे पियार। कवि बिहारी की भी एक उक्ति इसी आशय की है— 'लगालगी लोयन करहिं, नाहक मन बँधि जाय।'

आँख का अंधा नाम नयनसुख- दे० 'आँख का अंधा···'। तुलनीय : राज० आँख्याँ को आँधो, नाँव नैणसुख; अव० आँखी कै अँधरा नाँव नयनसुख।

आँखों का काजल चुराता है—(क) बहुत चालाक व्यक्ति को कहते हैं। (ख) बहुत होशियार चोर के लिए भी कहा जाता है।

आँखों का तारा---बहुत प्यारी वस्तु। प्रायः पुत्र के लिए कहा जाता है। तुलनीय : अव० आँखिन कै पुतरी; भोज० आँखि क पुतरी; पंज० अखाँ दा तारा।

आँखों का देखा दूर कर, भले मानुस का कहना कर--भले आदमी के कहने के आगे एक बार आँख का देखा भी झूठ मान लेना चाहिए।

आँखों का नूर दिल की ठंडक— पुत्र के लिए कहा जाता है।

आँखों का स्नेह है—जो व्यक्ति अपने निकट रहता है उसी से प्रेम रहता है। दूर रहने वाले से प्रेम धीरे-धीरे समाप्त हो जाता है। तुलनीय : पंज० अखाँ दा पयार है।

आँखों की सुइयाँ निकालना बाक़ी है—किसी काम का अधिक भाग हो जाय, केवल थोड़ा ही करने को शेष रह

जाए, तब ऐसा कहते हैं। इस संबंध में एक कहानी कही जाती है। एक स्त्री ने अपने पति के सारे शरीर में सुइयां चुभोकर उसे मार डाला। फिर कुछ सोचकर सारी सुइयां निकाल डाली केवल आँखों की बाकी रह गई। उसी समय उसकी दासी आ गई और उसने आँख की सुइयाँ निकाल दी। ऐसा करते ही वह मनुष्य जीवित हो गया। उसने समझा कि दासी ने ही मेरी प्राण रक्षा की है। उसने दासी से शादी कर ली। तुलनीय : पंज० अखाँ दियां सुइयां कडना बाकी है।

आँखों देखा प्यार, मुँह देखा व्यवहार—जो व्यक्ति आँखों के सामने रहता है उसी से प्यार होता है और जो व्यक्ति जैसा होता है उसके साथ वैसा ही व्यवहार किया जाता है। तुलनीय : पंज० अखी देखया पयार मुँह देखया व्यवहार।

आँखों देखी कानों सुनी—सही, निश्चित रूप से सही। तुलनीय : अव० आँखिन देखी कानन सुनी; भीली—आँखाँ दाठी ने काना हामली जे हांची; पंज० अखाँ दिखी कनों सुनी।

आँखों देखी चेतना मुँह देखे व्यवहार—दे० 'आँख देखी चेतना...'।

आँखों देखी झूठी हुई, तेरी कही सच्ची—(क) जब कोई बात अप्रत्याशित रूप से झूठी सिद्ध हो जाय तो कहते है। (ख) जब किसी के दबाव में आकर झूठ बोलना पड़े तो भी कहते है। तुलनीय : पंज० अखी देखी चूठ होयी तेरी आखी सच्च।

आँखों देखी न कानों सुनी—(क) किसी असंभव बात के हो जाने पर कहा जाता है। (ख) जब कोई व्यक्ति बहुत बड़ी गप्प हाँके तो भी कहते हैं। तुलनीय : भोज० आँखे देखल न काने सुनल; मरा० न डोळा देखिले, न कानी ऐकिलें; पंज० अखाँ देखी न कन्नों सुनी।

आँखों देखी मक्खी नहीं निगलते—जान बूझकर कोई बुरा या हानिकर काम नही करते। तुलनीय : पंज० अखी देखी मक्खी नई खांदे।

आँखों देखी मानिए, कानों सुनी न मान—देखी हुई बातों पर विश्वास करना चाहिए, सुनी हुई बातों पर नही। तुलनीय : पंज० अक्खाँ देक्खी मन्निए, कन्न सुनी ना मन्न।

आँखों देखी मानूं, कानों सुनी न मानूं—केवल देखी हुई बात को मानना चाहिए सुनी हुई को नही। तुलनीय : अव० आँखिन देखी मानै चाही, कानन सुनी नाही; माल० आंखा देखी परशराम कदीनी झूठी होय; पंज० अखी देखी मनां कनों सुनी नां मन्नां।

आँखों देखी माने या कानों सुनी—(क) जब कोई अपनी देखी हुई घटना को अनेक लोगों द्वारा झूठ सिद्ध होते देखता है तो विवशता से कहता है। (ख) जब किसी दुविधा में कोई फँस जाता है तो कहता है। तुलनीय : ब्रज० आँखिन देखी सच कानौ सुनी झूंठ; बुंद० आँखन देखी माने, कै कानन सुनी; पंज० अखी देखी मनिये या कानों सुनी।

आँखों देखी सच्ची, कानों सुनी झूठी—आँखो से देखी हुई बात सत्य होती है, कानों से सुनी नही। सुनी हुई बात झूठ भी हो सकती है। इसलिए देखी हुई बात पर विश्वास करना चाहिए सुनी हुई पर नही। तुलनीय : पंज० अक्खाँ देखी सच्ची, कन्नाँ सुनी झूठी।

आँखों देखी सदा सच—आँखों से देखी हुई बात सदैव सत्य होती है। तुलनीय : राज० आंख्यां देखी परसराम कदे न झूठी होय।

आँखों पर ठीकरी रखना—(क) किसी बात पर जान बूझकर ध्यान न देना। (ख) निर्लज्ज व्यक्ति के लिए भी ऐसा कहते है। तुलनीय : हरि० आंख्या पै पट्टी बान्धणा। पंज० अखां उते पट्टी बनणा।

आँखों पर पलकों का बोझ नहीं होता—(क) अपनी वस्तु किसी को भारी नही मालूम होती। (ख) उपयोगी वस्तु अच्छी न लगने पर भी सब चाहते है।

आँखों में खाक—किसी वस्तु को नज़र न लग जाय, इसलिए स्वयं को कहते है। इसका प्रयोग प्रायः स्त्रियां किया करती है। तुलनीय : पंज० अखां विच मिट्टी।

आँखों में चर्बी छाई है—अहंकारी या घमंडी मनुष्य को कहा जाता है। तुलनीय : अव० आँखिन मा चर्बी छाई अहै; मरा० डोळयांत चरबी पसरली आहे।

आँखों में मेंहदी छाई है—ऊपर देखिए। तुलनीय : हरि० आँख्या मैं गरुर भरा सै।

आँखों में हरियाली छाई है—जिसे दुख अधिक न भोगना पड़ा हो उसके लिए कहते है। तुलनीय : अव० आँखिन मा हरियरी छाई अहै।

आँखों सुख कलेजे ठंढक—पुत्र के लिए कहा जाता है। उसे देखकर आँखों को सुख होता है और कलेजे को शीतलता मिलती है। तुलनीय : अव० आँखिन देखे सुख।

आँखों से दूर सो दिल से दूर—जब तक कोई पास रहता है तभी तक उससे प्रेम रहता है। जब वह दूर हो जाता है तो धीरे-धीरे उसके प्रति प्रेम समाप्त हो जाता है। तुलनीय : अव० आँखिन से दूरि त ऽ दिल से दूरि; पंज०

अखाँ तों दूर ते दिल तों दूर।

आँखों से देखकर कुएँ में कौन गिरता है?—अर्थात् कोई नहीं। अपनी हानि कोई जान-बूझकर नही करता। तुलनीय : पंज० अक्खी देख कै खू विच कौण डिगदा है।

आँखों से देखकर मक्खी नहीं निगली जाती- कोई बुरा या हानिकर काम जान-बूझकर नही किया जाता।

आँखों से सुखी नाम हाफ़िज़ जी—मुसलमानों मे प्रायः अंधे क़ुरान कण्ठस्थ कर लेते हैं और इसी कारण दूसरे अंधो को भी हाफ़िज़ जी कह दिया जाता है, जैसे महाकवि सूर अंधे थे और अब किसी भी अंधे को सूरदास कह देते है। गुण के विरुद्ध नाम होने पर कहते है।

आँत भारी तो माथ भारी- अधिक खाने पर आलस्य आता है या सिर में दर्द होने लगता है। तुलनीय : मरा० आंतडें जड तर डोकें जड।

आँत भारी तो शीश भारी- ऊपर देखिए।

आँता तीता दांता नोन, पेट भरे को तीन ही कोन; आँखें पानी काने तेल, कहे घाघ बैदाई गेल- कड़वी चीज खाना, दाँतों मे नमक लगाना, कम खाना, आँखों को पानी से धोना और कानों में तेल डालना इतना करे तो वैद्य की कोई जरूरत नही। यह घाघ का मत है।

आंधर कूकर बतासे भूंके - (क) अंधा कुत्ता हवा की आहट पर ही भौंकने लगता है। (ख) मूर्ख व्यक्ति छोटी-सी बात के लिए ही लडाई करने लगते हैं।

आंधर कूटे, बहिर कूटे, चावल से काम—चाहे अंधे ने कूटा हो या बहरे ने हमे तो चावल से काम है। अर्थात् कोई भी करे काम होना चाहिए।

आंधर के गाय बयाइल, टहरी लेके दौरलन, (भोज०)- अंधे की गाय ने बच्चा दिया तो लोग मटकी लेकर दूध के लिए दौड़े। अर्थात् सीधे की सिधाई से सभी लाभ उठाते है।

आंधर से गाँड़ मराओ, घर तक पहुँचाने जाओ -दे० 'अंधे से घाट कराओ ...'।

आंधरि घोड़ी फोकली का दाना—अंधी घोडी को सड़ा दाना ही दिया जाता है। अर्थात् जो जैसा होता है उसे उसी तरह का सम्मान दिया जाता है या मूर्ख व्यक्ति असल और नक़ल की पहचान नही कर पाते। तुलनीय : पंज० अन्नी कौड़ी फोका दाना।

आंधरी घोड़ी खोखले चना—ऊपर देखिए।

आंधी आवे बैठ जाय, मेह आवे भाग जाय—आंधी आने पर बैठ जाना और पानी बरसने पर भाग जाना चाहिए। तुलनीय: अव० आँधी आवै बैठ गंवावै पानी आवै भाग बचावै।

आँधी का मेह, बैरी का स्नेह—ये दोनों ही खतरनाक होते हैं। आशय यह है कि आँधी के साथ आने वाली बारिश कब तक होगी और शत्रु का प्रेम कब समाप्त हो जाएगा कुछ नही कहा जा सकता। अर्थात् शत्रु का कभी विश्वास नहीं करना चाहिए।

आँधी के आगे पंखा—किसी समर्थ व्यक्ति का मुक़ाबला जब कोई कमज़ोर करता है, तब ऐसा कहते है। तुलनीय : भोज० आन्ही क आगे बेना क बतास; मैथ० अन्हरक आगा बियनि; पंज० अंधी अग्गे पखा।

आँधी के आगे पंखे की हवा—पंखे की हवा का कुछ भी असर आँधी के सामने नही हो सकता। अर्थात् शक्तिशाली के आगे दुर्बल कुछ नही कर सकता। तुलनीय: भोज० आन्ही क आगे बेना क बतास।

आँधी के आगे बेने का बतास— ऊपर देखिए। तुलनीय: माल० आँधी रे आगे भूनारिया रो कई थाग।

आँधी के आम (क) बहुत सस्ती और अधिक मात्रा में मिलने वाली वस्तु के लिए कहते हैं। (ख) जो वस्तु बहुत दिन तक न रह सके, उसके लिए भी कहते हैं। तुलनीय : मरा० वावटळीनें पडलले आंबे; पंज० अंधी दे अंब।

आँधी के बाद मेह आवे - (क) दुःख के बाद सुख आता है। (ख) कन्या के पश्चात पुत्र उत्पन्न होता है। तुलनीय : राज० आंधी पछै मेह आवै, पंज० अंधी मगरों मींह आवे।

आँधी बाटै जेवरी पाछे बकरी खाय—जो व्यक्ति अपने उपार्जित धन को उचित ढंग से न रख सके और दूसरे लोग उस धन से लाभ प्राप्त करें तो उस पर ऐसा कहते हैं।

आं रा कि हिसाब पाक अस्त अज मुहासिबा चे पाक—जिसका हिसाब साफ हो उसे पड़ताल का क्या डर है। जिस व्यक्ति ने कोई अपराध नहीं किया वह अधिकारी से क्यों डरेगा? (ख) जिसमें कोई दोष नहीं, उसे दूसरों की चुग़ली या शिकायत से कोई हानि नही हो सकती।

आँवले का खाया बड़े का कहा बाद में मजा देता है—आँवला खाने में कसैला और बड़ों की सीख सुनने में कड़वी लगती है किन्तु कुछ समय बाद दोनों का लाभ होता है।

आँसुओं के दाम कौन दे?— आँसू खरीदे या बेचे नहीं जाते। आँसू हृदय में दुख होने पर ही टपकते हैं। तुलनीय : पंज० अथरुआँ दा मुल कौण दे।

आँसू आँख से निकलते हैं कि घुटनों से?—(क) जो

जिसका कार्य होता है वही उसको कर सकता है। (ख) भले लोग भले काम करते हैं और बुरे लोग बुरे। तुलनीय: गढ़० आँसू आँख्यूँ ही औंदा घुँडू थोडा ही औंदा; पंज० अथरू अक्खाँ चों निकल देने, गोड्याँ चों नईं।

आँसू आँख से बहें, लड्डू दिल में फूटें --कपटी व्यक्ति के लिए कहते है जो कि ऊपर से बहुत महानुभूति जताए किन्तु हृदय में दूसरे की हानि या दुःख से प्रसन्न हो। तुलनीय : पंज० अथरु अक्ख बिचों वगण लड्डू दिल विच पजण।

आँसू एक नहीं, कलेजा टूक-टूक – बनावटी रुलाई पर ऐसा कहते है। झूठी तथा ऊपरी सहानुभूति दिखाने पर भी कहते हैं। तुलनीय : हरि० आख्या में थूक लगाणा; मरा० एकहि अश्रु नाहीं न घडघडतें आहे।

आँसू औरत का हथियार -(क) स्त्री के आँसुओं के सम्मुख बड़े-बड़े वीर नहीं ठहरते। (ख) यदि किसी स्त्री पर किसी को क्रोध आता है और वह उसे दंड देना चाहता है परन्तु जब वह स्त्री उसके सामने रोने लगती है तो उस व्यक्ति का क्रोध शान्त हो जाता है और स्त्री दंड पाने से बच जाती है।

आँसू क्या मोल मिलते है ?-- अर्थात् आँसू मोल नही मिलते। किसी के साथ सहानुभूति दर्शाने में कुछ खर्च नहीं करना पड़ता। तुलनीय . पंज० अथरुआं दा मुल नई हुंदा।

आँसू पर बड़े-बड़े सूरमा फिसल जाते हैं---स्त्रियों के आँसू कठोर हृदय को भी झुका देते हैं। तुलनीय : पंज० अथरुआँ उते बडे-बडे सूरमा तिल्कक जांदे हन।

आँसू पहले बात बाद में -प्राय. स्त्रियाँ रोने मे बहुत प्रवीण होती है और ज़रा-ज़रा-सी बात पर रोने लगती हैं। स्त्रियों के प्रति व्यंग्य मे कहते है। तुलनीय : पंज० अथरू पहिला गल मगरो।

आँसू बहें तो आँखें धुलें---आँसुओं मे आँखें धुल जाती है। बिना किसी खास वजह के किसी के रोने पर व्यंग्य में कहते है। तुलनीय : पंज० अथरु वगण ते अखां तुलण।

आँसू बहें तो ग़म आधा हो जाता है --- बड़े से बड़ा दुःख भी आँसू बहने से कम हो जाता है। तुलनीय : पंज० रोण नाल अद्धा गम दूर हो जांदा है।

आइब फागुन जाइब अषाढ़ का करिहे तुतिया हरताल खुजली फाल्गुन मे होती है और आषाढ़ से पहले ठीक नहीं होती चाहे कितनी भी तुतिया और हरताल लगाई जाय। (तुतिया---नीला थोथा; हरताल—गंधक और संखिया के योग से बना खनिज द्रव्य)।

आई बाई दे गई झाँई इधर से आई और उधर से घूमकर चली गई। जो स्त्री काम न करने के लिए इधर-उधर की बातें करके धता बताए उसके लिए कहते हैं।

आई आम नहिं जाई लबेदा -डंडा (लबेदा) मारूँगा चाहे आम गिरे या डंडा पेड़ पर ही अटक जाय। तात्पर्य यह है कि यदि काम बन गया तो अच्छा है, नहीं तो कोई विशेष हानि भी नही। तुलनीय: भोज० आई आम नहिं जाई लबेदा; मैथ० आम आई न तऽ जाई लबेदा।

आई बी आक़िला सब कामों में दाख़िला— जो किसी बात में सहमत न हो और हर काम में बिना जाने-बूझे हस्तक्षेप करे ऐसी स्त्री के प्रति कहते है।

आई की दवा नहीं --मौत की कोई दवा नही होती। जिस व्यक्ति को मरना होता है उस पर मूल्यवान से मूल्यवान ओषधि का भी कोई प्रभाव नही पड़ता। तुलनीय : राज० खूटी में बूंटी कोनी; पंज० मौत दी कोई दवा नई; दे० 'टूटी की बूटी'।

आई गई पार पड़ी-- जो बात बीत गई उस पर चिंता करना व्यर्थ है। तुलनीय : पंज० आई गई पार पई; गढ़० आई गई पार उतरी।

आई छाछ लेने, बन गई पटरानी -- आई तो छाछ लेने थी परन्तु घर की मालकिन ही बन बैठी। अर्थात् जहाँ पर कोई अनधिकार चेष्टा करके अपना प्रभुत्व जमाने लगता है वहाँ इस लोकोक्ति का प्रयोग होता है। तुलनीय : हरि० आई सीत लेण, घर की पटराणी ए हो बेट्ठी; पंज० आई सी लस्सी लैण बन गई सौत।

आई तीज बिखर गई बीज -जब तीज आती है तो वह अन्य त्यौहारों का बीज बिखेर जाती है, अर्थात् तीज के पश्चात् अनेक त्यौहार आते हैं। तुलनीय पंज० आई तीज बिखर गए बी।

आई तो रमाई, नहीं तो फ़क़त चारपाई- कुछ नही से कुछ तो अच्छा ही है। तात्पर्य यह है कि संतोष बहुत बड़ी चीज़ है।

आई तो रोजी नही तो रोजा--कमाना तो खाना, नहीं तो रोज़ा (उपवास) रखना। मस्त आदमियों के लिए कहते हैं जो खाने तक की विशेष चिंता नही करते। तुलनीय : अव० आवा तौ रोजी नाही तौ रोजा; मरा० मिळाली तर रोजी नाही तर रोजा; पंज० आई तां रोजी नई तां रोजा।

आई थी छाछ को, बन बैठी घर की मालकिन --जो व्यक्ति थोड़ी सी वस्तु ले और बाद में सम्पूर्ण वस्तु पर अपना अधिकार जमा ले तो उसके प्रति व्यंग्य से ऐसा कहते

हैं। तुलनीय : राज० आयी ही छाछ नै, वण बैठा घर री धणियाणी।

आई थी माँड़ को थिरकन लागी भात को—जब कोई छोटी वस्तु माँगने आए और किसी अच्छी वस्तु को देखकर उसे प्राप्त करने के लिए अनेक तरह की बातें करे तो ऐसा कहते हैं।

आई दाढ़ी, बात बिगाड़ी; आई मोंछ, पड़ी सोच—दाढ़ी-मूंछ आ जाने पर व्यक्ति को दुनियादारी की चिन्ता हो जाती है या दुनियादारी में फँसना पड़ जाता है। निठल्ले युवकों के शिक्षार्थ ऐसा कहा जाता है। तुलनीय : गढ़० आई दाड़ी बात बिगाड़ी, मोंच पड़ी आई सोच; पंज० आई दाड़ी गल बिगाड़ी, आई मुंछ पड़ी फिकर।

आई न गई, कौन नाते बहिन—जबरदस्ती रिश्ता (संबंध) निकालने पर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० आई नां गयी भैण केडी; दे० 'मान न मान मैं तेरा मेहमान'।

आई न गई, कौले लग गाभिन भई?—बदचलन स्त्री के गर्भ रह जाने पर कहा जाता है। यदि उसने कहीं कुछ किया नहीं तो क्या खंभे से गाभिन हुई? तुलनीय : अव० आई न गई कइसेन गाभिन भई; पंज० आयी न गयी कौले लग गबिन होयी।

आई न गई, छो-छो घर ही में रही—जो स्त्री सदा से घर में रहती आई हो उसके लिए कहते हैं। (यह विशेषत: मुसलमान स्त्रियों के प्रयोग में आता है।)

आई न गई, फ़लाँ बहू भई—बिना किसी परिचय के ही अपने को बड़े का संबंधी बतलाना। तुलनीय : भोज० अइली न गइली दुके बो कहइली; मंथ० अइली न गेली, दुके बो कहवली; मग० अयली न गेली फलना बहू कहौली; पंज० आयी न गयी फलां दी बौटी होयी।

आई बहू आया काम, गई बहू गया काम—आदमी के बढ़ने पर काम बढ़ता जाता है और घटने पर कम हो जाता है। तुलनीय : अव० आई बहुरिया तौ भवा काम, गई गवा काम; राज० आई बहू आयो काम, गई बहू गयो काम; गढ़० आयो मनखी आई धाण, गई मनखी गई धाण; पंज० आयी बौटी आया कम गयी बौटी गया कम; ब्रज० आई बहू आयौ काम, गई बहू गयौ काम।

आई बात का रखना कुंदजहन होना—(क) मुँह में आई हुई बात को कह देना अच्छा होता है। (ख) मन में उत्पन्न विचार को प्रकट न करना मूर्खता की निशानी है।

आई बात रुकती नहीं—दिल जो बात कहना चाहता है उसे कहे बिना नहीं रहता। तुलनीय : अव० आई बात रोके से नाहीं रुकी; पंज० आई गल रुकदी नईं।

आई माई को काजर नहीं, बिलाई को भर मांग—मां के लिए काजल नहीं और बिल्ली के लिए मांग भर सिंदूर। अर्थात् जरूरत वाले को कुछ न देकर बिना जरूरत वाले को जो सब कुछ दे दे उसके प्रति ऐसा कहते हैं।

आई मुझको ले गई तुझको—एक की बला दूसरे के सिर जाने पर कहते हैं। तुलनीय : अव० आई मोहँका लइगै तोहँका; पंज० आयी मैनूं लै गयी तिनूं।

आई मुझे ले गई तुझे—ऊपर देखिए।

आई मौज फ़क़ीर की दिया झोंपड़ा फूंक—विरक्त या फक्कड़ व्यक्ति को किसी भी चीज का मोह नहीं रहता। तुलनीय : राज० आई मोज फकीर को दिया झूंपड़ा फूंक; ब्रज० आई मौज फकीर की दियौ झोंपड़ा फूकि।

आई मौत को टाले कौन?—जिसकी मृत्यु निश्चित है उसे कोई बचा नहीं सकता, यानी जो घटना घटित होने वाली होती है उसे कोई टाल नहीं सकता। तुलनीय : भीली-आधी मौत कूंण फेरवे; पंज० आयी मौत नूं कौण टाल सकदा है।

आई लक्ष्मी को नहीं फेरते—मिले हुए धन का तिरस्कार नहीं करना चाहिए। तुलनीय : मेवा० आई लक्ष्मी ने पाछी नी फेरणी; पंज० आई लख्मी नूं नई मोड़ दे; ब्रज० आई लच्छिमी ऐ नायें फेरे।

आई लेने छाछ को बनी भैंस की मालकिन—जब कोई थोड़ा-सा सहारा पाने पर पूरे पर अधिकार जमाता है तब यह लोकोक्ति कही जाती है।

आई सतुअन की बहार, बालम मूछें मुड़ाय डालो—सतुआ मूँछों में लग जाता है अत: उसे खाने के मौसम में मूँछ न रखना अच्छा है। जब जिस काम से बाधा हो उसे समाप्त कर देना उचित है। तुलनीय : पंज० आई सत्तु दी बहार, सैंयां मुछ मुना दिओ।

आई सौत करो सिंगार—दो अर्थों में प्रयुक्त: (1) सौत घर में आ गई, अब शृंगार करना व्यर्थ है क्योंकि पति सौत को नई समझकर उसी की ओर आकर्षित होगा। (2) अब और अधिक शृंगार करो जिससे पति सौत की ओर से विमुख हो जाय। तुलनीय : भोज० आइल सवत करऽ सिंगार, अइली सौतिन करऽ सिंगार; पंज० आई सौत करो सिगार।

आई है जान के साथ, जायगी जनाज़े के साथ—जो आफ़त मरते दम तक न छूटे उसके लिए कहते हैं। तुलनीय : मरा० (काया) प्राणासंगे आली ती तिरडीसंगे

जाईल ।

आई होली भर गई झोली—इस लोकोक्ति का दो अर्थों में प्रयोग किया जाता है : (1) होली के त्यौहार का आगमन एक प्रकार से अन्य त्यौहारों की इतिश्री मानी जाती है, क्योंकि प्रायः होली के पश्चात् बहुत ही कम त्यौहार आते हैं। इस प्रकार लोगों का खर्च कुछ कम हो जाता है। (2) होली के त्यौहार के पश्चात् रबी की फ़सलें कटने लगती हैं और किसानों के घर अनाज से भर जाते हैं। तुलनीय : हरि० आई होळी, भर लेगी झोळी; पंज० आयी होली पर गयी झोली; ब्रज० आई होरी भरि गई झोरी।

आऊँ न जाऊँ, घर बैठी मंगल गाऊँ—आलसी या अकर्मण्य के प्रति व्यंग्य में कहते है। तुलनीय : कौर० आँऊ न जाँऊ, घर्मैं बेट्ठी मंगळ गाँऊ; पंज० आँवा जा जावाँ कर बैठी गीत गाँवा।

आउ दरिद्दर कान्ह चढ़ बैठ—जान-बूझकर आफ़त मोल लेने वाले के प्रति कहते हैं। दे० 'आ बैल मुझे मार'।

आए कनागत फूली कास, बामन उछलें नौ-नौ बाँस—ब्राह्मणों की खिल्ली उड़ाई गई है। पितृपक्ष में ब्राह्मणों को खाने के आमंत्रण मिलते है अतः उन्हें बड़ी प्रसन्नता होती है। तुलनीय : अव० आए कनागत फूले कास बाम्हन उछलैं नौ-नौ बाँस; ब्रज० आये कनागत फूले कांस, बाँभन उछरें नौ-नौ बाँस। (आये कनागत आई आस, बाँभन कूदें नौ-नौ बाँस)।

आए की खुशी, न गए का ग़म—संतोषी मनुष्य के प्रति कहते है जिसे न तो धन प्राप्त होने पर बहुत खुशी होती है और न ही खोने या नष्ट पर बहुत दुःख। तुलनीय : मरा० आल्याचा आनन्द नाही गेल्याचे दुःख नाही; पंज० आए दी खुसी नां गये दा गम।

आए की शादी न गए का ग़म—ऊपर देखिए।

आएगा सो जाएगा—जन्म और मृत्यु के विषय में कहा जाता है। किसी की मृत्यु के पश्चात् उसके शोकाकुल परिवार एवं सम्बन्धियों को सांत्वना दिलाने के लिए लोग कहते हैं। तुलनीय : तेलु० पेट्टिनवाडु गिट्टक मानडु; पंज० आवेगा सो जावेगा।

आए उल्लो के दसेरे—निरुद्देश्य इधर-उधर मारे-मारे फिरने वाले व्यक्ति के लिए कहते हैं।

आए चैत सुहावन, फूहड़ मैल छुड़ावन—फूहड़ स्त्रियों के प्रति कहा जाता है जो जाड़े में ठंडक के भय से स्नान नहीं करतीं और चैत आने पर नहाना शुरू कर मैल छुड़ाती हैं।

आए तो पर जाते शरमाते हैं—ऐसा व्यक्ति जो किसी काम के लिए हाथ तो लगाता है पर पूरा न होने के कारण शर्म में पड़ जाता है और उसे उस काम को छोड़ते नहीं बनता, तब ऐसा उपालंभ में कहते हैं। तुलनीय : भोज० अइलँ तऽ बाकी लजात बानऽ; मैथ० अबैत अयलाह जाइत होइ छन्हि लाज; पंज० आय ते शोक नाल जांदें सरमांदे हन।

आए तो लाख का, ना आए तो सवा लाख का—मेहमान के लिए कहा जाता है। मेहमान आ जाए तो अच्छा ही है और न आवे तो उससे भी अच्छा है क्योंकि कुछ बचत ही होगी। तुलनीय : मेवा० आया तो लाख का, नी आया तो सवा लाख का; पंज० आवे ते लखदा न आवे तां सवा लख दा।

आए थे हरि भजन को ओटन लगे कपास—जिस काम के लिए आए थे उसे न करके दूसरा काम करने लगे। जो व्यक्ति अपने मतलब के काम को छोड़कर कोई ऊटपटाँग काम करे तो उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० आए रहै हरी भजन का ओटै लागे कपास, आएन हरी भजन का ओटन लागे कपास; राज० आया था हर भजण कूँ, औटण लग्या कपास; कन्नौ० आए ते हरि भजन कौं, औटन लगे कपास; मरा० हरि भजना साठी आले कापूस पिंजू लागले।

आए न गए, घर ही रहे—जो व्यक्ति घर के अतिरिक्त कहीं भी न गया हो अर्थात् मूर्ख व्यक्ति को कहते है जिसे दीन-दुनिया का कुछ भी ज्ञान न हो। तुलनीय : पंज० आया न गया कर ही रह्या।

आए न जाए पंडित कहाए—जो मूर्ख होने के बावजूद अपने को ज्ञानी समझे, उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० आवे न जावे पंडत खुआवे।

आए पीछे और बैठे आगे—(क) आए तो हैं बाद में परन्तु जाकर बैठे हैं आगे की पंक्ति में। (ख) जब कोई कम आयु का व्यक्ति अपने से अधिक आयु के और अनुभवी व्यक्तियों से उच्च पद पर पहुँच जाता है या पहुँचना चाहता है तो कहते है। तुलनीय : मेवा० आया पछे अर बैठा बचे; पंज० मगरो आवो अग्गे बैठो।

आए बहिन का भाई, रहे सिकन्दर साई—जब भाई अपनी बहन के घर जाता है तो उसे काफ़ी इज़्ज़त मिलती है।

आए बाए खाट के पाए—निरर्थक तथा हास्यास्पद बातें।

आए मीर, भागे पीर—मीर के आने पर पीर नहीं रुकते। तात्पर्य यह है कि बड़ों के सामने छोटों का प्रभाव

कर पड़ता है और वे अपना स्थान उन्हीं के लिए छोड़ देते हैं।

आए मूधे हरी न देख—यदि चैत माह में फ़सल अच्छी तरह पकी न हो तो भी उसे काट लेना चाहिए।

आए हैं सो जायँगे, राजा, रंक, फ़क़ीर—कोई भी मृत्यु से बच नहीं सकता चाहे वह निर्बल हो या सबल, ग़रीब हो या अमीर। सभी की मृत्यु निश्चित है। तुलनीय : पंज० आय ने सो जाणगे राजा रंक फ़क़ीर।

आओ-जाओ घर तुम्हारा, खाना माँगे दुश्मन हमारा—कोरा सम्मान प्रदान करने वाले के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : अव० आवा जावा करा त्वहरै घर अहै।

आओ तो सर-आँखों, न आओ तो ठेंगे से—यदि आओगे तो स्वागत करूँगा और नहीं आओगे तो बुलाने भी नहीं जाऊँगा। जो व्यक्ति स्वयं मिलने का इच्छुक न हो तो उसे बाध्य नहीं करना चाहिए। तुलनीय : राज० आवो तो घर है, जावो मारग है; भीली - हाऊ देखाये ते आवज्यो नी ते जाज्यो।

आओ दुगाना चुटकी खेलें, बैठे से बेगार भली—आओ पड़ोसी (दुगाना) चुटकी बजाएँ, बैठे रहने से तो बेगार अच्छी है। व्यर्थ में समय नष्ट करने वाले से व्यंग्य मे ऐसा कहते हैं।

आओ पड़ोसी हम तुम लड़ें—ऐसे लड़ाके व्यक्ति के प्रति कहते हैं जो व्यर्थ में खोज-खोजकर झगड़ा करे। तुलनीय : पंज० आओ गुआँडी असी तुसी लड़िए।

आओ पीर घर का भी ले जाओ—(क) बुरे लड़के से जो घर का नाश कर देते हैं कहा जाता है। (ख) लाभ के बदले जब हानि हो तब भी कहते हैं।

आओ पूत सुलच्छने घर ही का ले जाओ—नालायक लड़कों के लिए कहा जाता है जो घर की दौलत ही गँवाते हैं। 'सुलच्छने' (अच्छे लक्षण वाला) का प्रयोग व्यंग्य में किया गया है।

आओ बे पत्थर, पड़ मेरे पाँव—अपने हाथों अपने लिए दु:ख मोल लेने पर कहते हैं। तुलनीय : पंज० आ वे बट्टे मेरे पैर उत्ते पैण।

आओ बैठो गाओ गीत, नहीं माँ के बतासा की रीत—बताशे के लालच से ही औरतें गीत गाने जाती हैं। मुफ्त में कोई काम नहीं करता। जो व्यक्ति खर्च किए बिना ही काम करना चाहे उसके प्रति ऐसा कहते हैं।

आओ बैठो गाओ गीत, बतासा नहीं हमारी रीत—किसी उत्सव पर स्त्रियों को गाने-बजाने के पश्चात् बताशे आदि बाँटे जाते हैं। जब कोई व्यक्ति बिना कुछ व्यय किए ही काम कराना चाहे तो उसके प्रति इस लोकोक्ति का प्रयोग किया जाता है। तुलनीय : मेवा० आओ बैठो गावो गीत, नहीं माँ के पतासां की रीत।

आओ बैठो पीओ पानी, तीन बात को मोल नी आनी—'आओ, बैठो और पानी पीओ' इन तीनों बातों में पैसा नहीं खर्च होता। अपने घर आए का यथोचित स्वागत अवश्य करना चाहिए। तुलनीय : मेवा० आओ बेठो पीओ पाणी, तीन बात नो मोल नी आणी।

आओ भाई भूरा, लेखा है पूरा—जब किसी काम में कुछ भी लाभ नहीं होता तो व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० आओ भाई भूरा, लेखा पूरा; पंज० आ परा पूरा लेखा है पूरा।

आक का कीड़ा आक से राजी—आक (मदार) में विष होता है फिर भी उसमें रहने वाला कीड़ा उसी में खुश रहता है। (क) दुष्ट व्यक्ति बुरी जगह में ही प्रसन्न रहता है। (ख) प्रत्येक प्राणी अपने को परिस्थितियों के अनुरूप बना लेना है। तुलनीय : राज० आक रो कीड़ो आक सूं राजी; पंज० अँक दा कीड़ा अँक बिच राजी।

आक में आम फला—किसी असभव अथवा आश्चर्य-जनक घटना घटित होने पर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० आक में आँबो नीपज्यो; पंज० अक बिच अब फल्या।

आकर कोदो, नीम जवा, गाडर गेहूँ, बेर चना—आकर (मदार) अधिक उपजें तो कोदों की फ़सल, नीम अधिक उपजे तो जौ, गाडर अधिक होने से गेहूँ तथा बेर अधिक फले तो चने की फ़सल अच्छी होती है।

आक से हाथी नहीं बँधता—छोटे व्यक्तियों से बड़े काम नहीं हो सकते। तुलनीय : पंज० अक नाल हाथी नई बनाया जांदा। दे० 'ओस से प्यास नहीं बुझती'।

आकाश का थूका मुँह पर आता है—(क) किसी बड़े या बलशाली व्यक्ति से लड़कर सिवाय पराजय के कुछ नहीं मिलता। (ख) किसी भले व्यक्ति पर दोषारोपण करने से खुद की बदनामी होती है। (ग) अपने से बड़े का अपमान अपनी ही बेइज़्ज़ती का कारण बन जाता है। (घ) अधिक गर्व करने वाले का अपमानपूर्ण पतन होता है। तुलनीय : कौर० अगास का थूक्का मूं पै आवै; असमी—आकाशलै थुइ पेलाले मुखत् परे; सं० महद्भि: स्पर्द्धमानेषु बिपदेव गरीयसी; पंज० असमान उते थुकया मुँह उते आंदा है। अं० Spitting against the wind spitting on one's face.

आकाश ने गिराई और जमीन ने झेली—(क) बड़े लोगों द्वारा ठुकराए गए व्यक्तियों को छोटे लोग ही सहारा देते हैं। (ख) ऐसे निर्धन व्यक्ति के प्रति भी कहते हैं जिसे कोई सहारा देने वाला न हो। तुलनीय : राज० आभै पटकीर' र जमी झाली; पंज० असमान तो सुट्टी ते तरती ने झेली; ब्रज० ऊपर कौ थूक्यौ ऊपर ई परै।

आकाश पर थूके मुंह पर पड़े—दे० 'आकाश का थूका···'।

आकाश पाताल बाँध दिए जो व्यक्ति बहुत अधिक झूठ बोले उसके प्रति व्यंग्य मे ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० अकास पताल बाँध दिहेन; पज० अकास पताल बन दित्ते।

आकाश बाँधे पाताल बाँधे, घर की टट्टी खुली- जो दूसरों का दोष दिखाते है लेकिन अपना नहीं देखते उनके लिए ऐसा कहते हैं। तुलनीय : हरि० और तै सभ बेईमान अपणे आप साहपुरुष; पंज० अकास बन्ने पताल बन्ने कर दी टट्टी खुली।

आकाशमुष्टि हनन-न्याय— मुट्ठी से आकाश को मारना। असंभव कार्य के लिए व्यर्थ में परिश्रम करना या प्रयास करना व्यर्थ है।

आकाश में बास नहीं, काओ को ग्रास नहीं उनसे कोई आस नहीं— जिस घर अथवा गाँव मे आकाश मे यज्ञ की सुगंध न फलती हो, जहाँ पितरों के लिए कौओं को ग्रास न दिया जाय उस घर या गाँव से किसी प्रकार की आशा नही करनी चाहिए। जिस घर या व्यक्ति से कोई कुछ न पावे उसके प्रति व्यंग्य मे यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : गढ़० आगाश निजो बास, कौआ निपौ गास, तैंगों की नि करनी आस।

आकाश से गिर पड़ी और पृथ्वी ने ग्रहण नहीं किया बहुत बड़ी आपत्ति में पड़ जाने वाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० आकास ते गिरी और धरती नें झेली।

आक़िल को एक हर्फ़ बहुत है- -बुद्धिमान व्यक्ति थोड़े मे ही किसी बात को समझ जाता है। तुलनीय: पंज० अकल नूं इक लबज बड़ा है।

आक़िलां पैरवी-ए नुक़्ता न कुनंद पढ़े-लिखे नुक्तों की परवाह नहीं करते, वे बिना नुक्तों के ही पढ़ लेते हैं। फ़ारसी में जो शिकिस्ता लिखते है वे अक्सर नुक्ते लगाना छोड़ देते हैं, उन पर व्यंग्य मे कहते है।

आख़ थू खट्टे हैं प्रयास करने पर जब कोई वस्तु प्राप्त न हो तो मन की शान्ति के लिए उसे बुरा बताना। तुलनीय : पंज० मिली नई तां थू कौड़ी; अं० Grapes are sour.

आखर की गति का खर जाने--अज्ञानी विद्या का मूल्य नही जानता।

आखर टाँका काजरा, देउ टका भर आगरा—दे० 'आखर टाँका काजला···'।

आखर टाँका काजला, करे तबीयत साथ-- अक्षर या लिखाई, सिलाई और काजल में जल्दबाजी करने से ये बिगड़ जाते है। तुलनीय : बुंद० आँक, टाँक अर काजरे; देव टका भर आगरे।

आखा रोहन बायरी राखी स्रवन न होय, पोही मूल न होय तौ मही डोलंती जोय---रोहिणी नक्षत्र तृतीया को न हो, सावन मे रक्षा बधन न हो और पौष की पूर्णिमा को मूल न हो तो पृथ्वी काँप उठेगी। अर्थात् इनका इन दिनों में न होना असंभव है। यदि न हों तो संसार का अनिष्ट होगा।

आखिन नींद किसानै नासै - अधिक सोना किसान के लिए हानिप्रद है, क्योंकि वह समय से अपने सभी कार्यों को नही कर सकता। तुलनीय : पंज० मता सोणा जमीदार लई काटे दा सौदा है।

आखिर अपनी औक़ात पर उतर आए-- किसी नीच मनुष्य की नीचता प्रकट हो जाने पर कहते हैं।

आखिर अपनी जात पर आ गया---ऊपर देखिए।

आखिर इन्सान ही तो है--मनुष्य ग़लतियाँ करता ही है। इन्सान देवता कभी नहीं बन सकता। तुलनीय : पंज० है ता मनुख ही; अं० No flower without thorn.

आखिर तो अहीर है—अहीर कोई न कोई ऐसा काम/ऐसी बात कर देते है जिससे लोग परेशानी मे पड़ जाते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि अहीर प्रायः मूर्ख होते हैं। तुलनीय : राज० आखर जात अहीर।

आखिर मरोगे, रुपया जोड़-जोड़ क्या करोगे ?—अंत में मर जाना है, इसलिए रुपया इकट्ठा करना व्यर्थ है। अर्थात् रुपये का सदुपयोग करना चाहिए। इस लोकोक्ति का प्रयोग कंजूसों के शिक्षार्थ किया जाता है।

आखिरी बतिया टेढ़ी—जो व्यक्ति आरंभ में अच्छी बातें करे और अन्त में ऐसी, जिनसे बना हुआ काम बिगड़ जाय तो उसके प्रति इस लोकोक्ति का प्रयोग किया जाता है।

आखिरी बेड़ा पार---अनेक प्रयास के बाद सफलता मिलने पर ऐसा कहते हैं।

आख्यातानामर्थं ब्रुवतां शक्तिः सहकारिणी— किसी

भाव को अभिव्यक्त करने वाली क्रियाओं के साथ (श्रोता के समझने की) शक्ति सहयोग करती है। तात्पर्य यह है कि श्रोता की अपनी शक्ति होती है, जो सुन्दर अभिव्यक्ति को ग्रहण कर लेती है। यदि किसी बात को बहुत ही समीचीन रूप में अभिव्यक्त किया जाय, पर सुनने वाले में उसे समझने की शक्ति नही है तो वहाँ सुन्दर भावाभिव्यक्ति निरर्थक हो जाती है।

आग और काल कुछ नहीं छोड़ते—आग और मृत्यु किसी को नहीं छोड़ते अर्थात् सबको समाप्त कर देते हैं। तुलनीय : भीली- आगने ने काल ने मूड़े कई नी रे; पंज० अग्ग अते मौत कुछ नई छड्दी।

आग और दुश्मन को छोटा मत समझो—ये दोनों छोटे होने पर भी बहुत हानि पहुँचा सकते हैं। तुलनीय : उज० दुश्मन छोटे-बड़े नहीं होते, दोस्त हजार हों तब भी कम है और दुश्मन एक भी हो तब भी अधिक है। तुलनीय : पंज० अग्ग अते दुसमण नं निक्का न मन्नो।

आग और पानी को कम न समझे—इनको बढ़ते देर नहीं लगती। इनकी स्वतंत्रता सर्वनाश कर देती है। इनसे सदा सतर्क रहना चाहिए। तुलनीय : अव० आगी औ पानी का कम जिन जान्या; हरि० दुसमन आग बिमारी करजा, इनका होता न छोट्टा दरजा; पंज० अग्ग अते पाणी नूं कट नां मन्नो।

आग और फूस का बैर है—(क) कुसंग से बचने के लिए कहते हैं। (ख) स्त्रियों का संग न करने के लिए भी कहते है। तुलनीय : अव० आगी फूस कै बैर अहै; पंज० अग्ग अते काह दा बैर है; ब्रज० आग और फूस बैर ऐ।

आग और बैरी को कम न समझो—दे० 'आग और दुश्मन को ... '।

आग कहते मुँह नहीं जलता—(क) केवल नाम लेने से कोई असर नहीं होता। (ख) राम का नाम यदि दिल से न लिया जाय तो कोई प्रभाव नहीं पड़ता। तुलनीय : पंज० अग्ग कैंदे मूँह नई सड़दा।

आग का जला आदमी आग ही से अच्छा होता है—(क) जो जैसा होता है वह वैसे ही बर्ताव से खुश रहता है। (ख) जिस काम मे हानि होती है, उसी से वह पूरी भी होती है। तुलनीय : अव आगी का जरा मनई आगिन से अच्छा होए।

आग का पुतला आग को धाये—आग का बना हुआ आग में जाता है। प्रत्येक वस्तु अपने मूल तत्त्व की ओर प्रवृत्त होती है। तात्पर्य यह कि मनुष्य जिन तत्त्वों से बना है उन्हीं में विलीन हो जाता है।

आग के आगे सब भस्म है—(क) आग का परिणाम ही भस्म है। वह सबको जला देती है। (ख) क्रोधी के सामने कोई नहीं ठहरता। (ग) प्रबल के समक्ष दुर्बल नहीं टिकते। तुलनीय : पंज० अग्ग दे अग्गे सारे पसम।

आग के पास घी पिघल ही जाता है—(क) आग की गर्मी से घी पिघल जाता है। यह प्रकृति का नियम है। (ख) स्त्री-पुरुष के इकट्ठा रहने से उनमें काम-भाव उत्पन्न हो ही जाता है। (ग) पुत्र को कष्ट में देखकर माँ का हृदय वात्सल्य के कारण द्रवित हो जाता है। तुलनीय : पं० अग्ग नेड़े घ्यो पिग्गल जांदा है; राज० वास्ती कनै घी थोड़ो ही खटावै।

आग को आग मारती है—दुष्ट लोग दुष्टों के ही वश में आते है।

आग को दामन से ढँकते हैं—किसी के रहस्य को इस प्रकार (मूर्खतापूर्ण ढंग से) छिपाने पर कहते है कि वह प्रकट हो जाए। असंभव बात करने पर भी कहते हैं।

आग को दिये से देखता है—आग तो स्वयं ही प्रकाश उत्पन्न करती है, उसे दीपक से देखने की क्या आवश्यकता? जो व्यक्ति अपनी मूर्खता के कारण किसी स्पष्ट बात को भी समझना चाहे तो उसके प्रति व्यंग्य मे कहते हैं। तुलनीय : राज० लायनं दीयो ले'र देखै है; पंज० अग्ग नूं दीवेनाल देखदा है।

आग खायगा सो अंगार हगेगा—बुरा करने वाला बुरा फल भी पाता है। तुलनीय : अव० आगी खाय अंगार हगै; मरा० आग खावी निखारे लगावे; पंज० अग्ग खावेंगा ते अंगार हग्गेंगा; अं० They that sow the wind will reap the whirlwind.

आग खाय ते अंगार उगलै—ऊपर देखिए।

आग खाय तो अंगार उगलै—ऊपर देखिए।

आग खाये अंगारा हगे—दे० 'आग खायेगा सो....'।

आग खाये मुँह जरे, उधार खाये पेट जरे—उधार खाने से आग खाना कहीं अच्छा है, क्योंकि हमेशा ऋण चुकाने की चिंता से व्यक्ति परेशान रहता है। तुलनीय : पंज० अग्ग खाके मुँह सड़े उदार खाके टिड सड़े।

आग खौलते पानी से भी बुझ जाती है—पानी चाहे कितना भी गर्म क्यों न हो, किन्तु वह आग को बुझा ही देगा। अर्थात् जन्मजात संस्कार कभी नही मिटते। तुलनीय : पंज० अग्ग उबलदे पानी नाल वी बुझ जांदी हैं।

आग घास साथ हों तो कुछ होके रहेगा—आग तथा

घास यदि साथ हों तो अवश्य आग लगेगी। ऐसे ही यदि स्त्री-पुरुष साथ होंगे तो काम अवश्य उदीप्त होगा। तुलनीय : भोज० आगी आ खर एक संगें रही तऽ जरूर बरी; राज० आगी अर फूस एक जगाँ थोड़ाई खटावैं; पंज० अग्ग अते काह नाल होण तां कुछ होके रवैगा।

आग जले तो जल को कहूँ, जल जले तो किसको कहूँ—(क) जो व्यक्ति सर्वसम्पन्न है वह तो अन्य लोगों की सहायता कर सकता है पर यदि वह स्वयं किसी परेशानी में पड़ जाय तो उसकी कौन सहायता कर सकता है? यानी कोई नहीं। (ख) यदि छोटे लोग ग़लत काम करते है तो उसकी शिकायत बड़ों से की जा सकती है पर यदि बड़े लोग ही ग़लत काम करना शुरू कर दें तो उन्हें कौन कुछ कह सकता है? अर्थात् बड़ो की ग़लती पर उन्हें कोई कुछ नही कहना। तुलनीय : पंज० अग्ग बले ते पाणी नूं आखां पाणी बले तां किमनूं आखां।

आग जहाँ ही राखिए जारि करे तेहि छार—आग में अच्छा-बुरा जो कुछ भी पड़ता है सब जल जाता है। आशय यह है कि दुष्ट जहाँ भी रहता है वही बिगाड़ करता है।

आग जाने, लुहार जाने, धौंकने वाले की बला जाने—(क) जिस कार्य से अपना लाभ-हानि न हो, उसके प्रति कोई ध्यान नहीं देता। (ख) जिसका जो कार्य होता है वही उसके संबंध में जानकारी रखता है।

आग न उगल लाल उगल—जली-कटी बातें क्यों करते हो, मीठी-मीठी और दूसरों को प्रसन्न करने वाले वचन मुँह से निकालो।

आग पानी का बैर है—(क) विपरीत वस्तुओं का मेल नहीं होता। (ख) बहुत पुराना या जन्मजात बैर है। तुलनीय : पंज० अग्ग पाणी दा वैर है।

आग पानी से और भड़कती है—आग पर यदि पानी डाला जाय तो वह और भी तेज़ हो जाती है। अर्थात् दुष्ट समझाने से और भड़क जाता है। तुलनीय : पंज० अग्ग पाणी नाल और बलदी है।

आग फूंके चिनगारी पाए—(क) जो वस्तु काफी परिश्रम से प्राप्त की जाय और उसे हिफ़ाज़त से रखा जाय तो ऐसा कहते हैं। (ख) दुर्जन को छेड़ने से बुरी बात ही सुनने को मिलती है। तुलनीय : गढ़० आग फूकीक फिलंगारो पायूँछ।

आग फूंके, राख चाटे, सो तापे—आग फूंकने पर राख उड़कर मुँह में चली जाती है। किसी चीज़ को प्राप्त करने के लिए कुछ हानि सहनी पड़ती है।

आग बिना धुआँ नहीं—बिना कारण के कोई बात फैलती नहीं। प्रत्येक कार्य का कोई-न-कोई कारण अवश्य होता है। तुलनीय : अव० आगी बिना धुआँ नाही होत; पंज० अग्ग बग़ैर तुआ नईं।

आग बिना साग कच्चा—आग के अभाव में साग कच्चा रह जाता है। साधन के अभाव मे कार्य पूर्ण नहीं होता। तुलनीय : भोज० आगि बिना सगवे कांच; मग० आग बिनु साग धेन्न; पंज० अग्ग बगैर साग कच्चा।

आग बोई है तो आग ही उपजेगी—(क) जैसा कार्य होता है वैसा ही परिणाम प्राप्त होता है। (ख) बुरे कर्म का फल बुरा ही मिलता है। तुलनीय : पंज० अग्ग रिन्नोगे तां अग्ग ही उग्गेगी।

आग में गई हाथ नहीं आती—जल जाने के पश्चात् कुछ बचता नहीं। चोरी गया सामान प्रायः मिलता नही। तुलनीय : पंज० अग्ग विच गयी हत्थ नई आंदी।

आग में बाग—असंभव काम या बात। आग में बाग लगाना संभव नही या आग में बाग नहीं होता। तुलनीय : पंज० अग्ग बिच बाग।

आग में मूत या मुसलमान हो—यह मसल मुग़ल काल से चली है, जब हिन्दुओं को मुसलमान बनाया जाता या उन्हे आग (जो उनका देवता है) में मूतने को कहा जाता था। जब ऐसी आफ़त आवे कि किसी भी तरह से मुक्ति न हो तो कहते है।

आगरा जाने का काम करते हो—पागल का-सा व्यवहार करने पर कहते है। आगरे में पागलखाना है। तुलनीय : पंज० आगरे जाण दा कम करद हो।

आगरा-दिल्ली कमाने चलेंगे—अब यहाँ कुछ भी नही रखा है, आगरा या दिल्ली कमाने चलेंगे। जो व्यक्ति अपने शहर में नौकरी मिलने पर भी न करे और दूसरे शहर में नौकरी खोजने जाय तो उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० आगरा-दिल्ली कमाय चला अहै।

आग रूई का मेल क्या—बैरियों में प्रीति नही होती।

आगरे के लाला, पेट भरा मुँह काला—आगरे के लोग पहनिने से अधिक खाने के शौक़ीन होते हैं। तुलनीय : पंज० आगरे दा लाला टिड परया मुंह काला।

आग रोज ले गई, उपला कभी नहीं दे गई—जो व्यक्ति दूसरों से सदा माँगते रहे और स्वयं कभी किसी को कुछ न दे, उसके प्रति व्यंग्य से कहते।

आग लगते झोंपड़ा जो निकले सो लाभ—झोंपड़ी में आग लगने पर जो बच जाय वही ग़नीमत है। हानि होते-

होते बच जाय वही लाभ है। तुलनीय : मरा० आग लागली झोपड्याम जरी, ने निधालें तेंचि बहुपरि।

आग लगते झोंपड़ा जो निकले सो सार—ऊपर देखिए।

आग लगाकर जमालो दूर खड़ी आग लगाकर दूर हट जाना। ऐसे दुष्ट व्यक्ति के प्रति कहते हैं जो दो आदमियों में परस्पर झगड़ा कराकर स्वयं दूर से तमाशा देखता है। तुलनीय : भोज० अगिया लगाय छँउँड़ी बर तर ठाढ़; अव० आगि लगाय जमालो दूर खड़ी; पंज० अग्ग ला कै जमालो दूर खलौती (जमालो—स्त्री का नाम)।

आग लगाकर पानी को दौड़े दुष्ट लोग स्वयं आग लगाकर दिखावे के लिए स्वयं पानी को दौड़ते है। ऐसे व्यक्ति के लिए कहते हैं जो स्वयं चुपके झगडा कराए फिर शान्त कराने का श्रेय भी प्राप्त करना चाहे। तुलनीय : अव० आगि लगाय पानी का दौरें, आगी लगाई कै पानी का दउरेन; पंज० अग्ग लाकै पाणी नूँ नट्ठे।

आग लगाय तमाशा देखे—दे० 'आग लगाकर जमालो···'।

आग लगाय पानी को दौड़े दे० 'आग लगाकर पानी ···'।

आग लगाय मियाँ बड़ तले गए—दे० 'आग लगाकर जमालो···'।

आग लगे कहँ पैये मेह—आग लगने पर पानी कहाँ मिलता है ? आवश्यकता के समय प्रायः अभीष्ट चीज़ नही मिलती।

आग लगे तेरी पोथी में, दिल है मेरा रोटी में—(क) भूख लगने पर कोई काम अच्छा नहीं लगता। (ख) सब अपने-अपने स्वार्थ के प्रति सचेष्ट रहते हैं, कोई रोटी में और कोई पोथी मे। तुलनीय: छत्तीस० आग लगै तोर पोथी माँ, जीव लगै मोर रोटी माँ; पंज० अग्ग लग्गी तेरी पोथी विच दिल है मेरा रोटी विच।

आग लगे तो धूल बतावे—आग लगने के कारण धुआँ उठ रहा है, पर कहते हैं कि धूल है। जानबूझकर किसी को धोखे में रखना अथवा स्वयं धोखे में रहने पर ऐसा कहते हैं।

आग लगे तो बुझे जल से, जल में जो लगे तो बुझे कैसे ?—(क) शुरू में खोटा आदमी समझाने से मान सकता है, पर जिसकी जन्म से आदत पड़ी हुई है वह नहीं मान सकता। (ख) मनुष्य, मनुष्य से लड़ सकता है किन्तु प्रकृति या ईश्वर से नहीं लड़ सकता।

आग लगे पर खोवे कुआँ—आग लगने पर कुआँ खोदने से आग नहीं बुझती, अर्थात् किसी काम के करने का समय आ जाने पर उसके लिए उपाय या साधन ढूंढ़ने से वह नहीं होता। तुलनीय : राज० लाय लाग्याँ कूवा खोदै, वो काम कद पार पड़ै ? मरा० आग लागल्यावर विहीर खोदणें; अव० आगी लागि तउ कुआँ खोदै लागेन; पंज० अग्ग लग्गी ते खू कडया।

आग लगे पर पानी कहाँ क्रोध के समय बुद्धि, चेतना, सहिष्णुता आदि साथ नही देते। अर्थात् जब मनुष्य को क्रोध आता है तो वह अपने ऊपर नियंत्रण नही रख पाता।

आग लगे मढ़े बज्जर पड़े बरात—यह एक शाप है। तुलनीय : अव० आग लागै मड़ये बजर परै बराते।

आग लगे मड़वा धुंधुआय दुलहा-दुलही सरगे जाय—(क) अपने से कुछ मतलब नही मरो या जीओ। (ख) तटस्थ रहने वाले के प्रति भी कहते हैं।

आगस्तिक यात्रा—ऐसा जाय कि पुनः लौट कर न आए। पुराण में प्रसिद्ध है कि अगस्त ऋषि जब विन्ध्याचल पर्वत के पास पहुँचे तो उसने मुनि को दण्डवत किया। मुनि ने उससे कहा कि जब तक मैं वापस न आऊँ तब तक इसी प्रकार रहना। कहा जाता है कि आज तक वे लौटकर न आए और वह उसी प्रकार पड़ा हुआ है। सचमुच विंध्याचल पर्वत की बढ़ती बहुत दिन से रुक गई है।

आगा मीर की दाई सब सीखी-सिखाई—ऐसी स्त्री के प्रति कहते हैं जो बड़ी ऐयार और चालाक हो। अर्थात् जो स्वयं चतुर हो उसे सिखाने की क्या आवश्यकता ?

आगा से पीछा भारी होता है किसी काम का आरंभ करना आसान होता है, किन्तु उसे पूर्ण करना कठिन। किसी कार्य को आरंभ करने से पूर्व उसके विषय मे अच्छी तरह विचार कर लेना चाहिए। तुलनीय : अव० अगाड़ी से पिछाड़ी जबर होत है ; पं० अग्गे तो पिछे पारी हुंदा है।

आगिल खेती आगे-आगे, पाछिल खेती भागे जागे—पहले बोई हुई खेती सफल होती है और पीछे की यदि हो गई तो समझना चाहिए कि भाग्य से हुई। अर्थात् सामान्यतः उसके होने की बहुत आशा नही रखनी चाहिए। तुलनीय : अव० अगहर खेती अगहर मार, घाघ कहैं तौ कनहुँ न हार आगे कै खेती आगे-आगे पाछे कै खेती भागिन जागै; भोज० आगे क खेती आगे-आगे पीछे क भागे-जोगे ; अं० Offence is the best defence.

आगिल गिरे पाछिल हुशियार—दो व्यक्तियों में आगे वाले के गिरने पर पीछे वाला सचेत हो जाता है। आशय यह है कि पराई हानि देखकर स्वयं सचेत हो जाना चाहिए।

तुलनीय : पंज० अगला ङिगया पिछला होशियार ।

आगे आगरा पीछे लाहौर उलटे रास्ते चलने वालों पर या गुमराहों पर कहा जाता है। तुलनीय : पंज० अग्गे आगरा पिछे लहौर ।

आगे-आगे गुरु पीछे-पीछे चेला --आगे गुरु और उसके पीछे शिष्य चलता है। जितना विद्वान गुरु होता है उसी के अनुरूप उसका शिष्य भी होता है।

आगे-आगे गोरख जागे --गुप्त बातें आगे खुलेंगी ।

आगे आत्मा पीछे परमात्मा --पेट भरने पर ही ईश्वर याद आता है। आशय यह है कि पेट भरे रहने पर ही सभी चीज़ें अच्छी लगती है। तुलनीय : पंज० पहलें आत्मा मगरों परमात्मा ।

आगे का गिरते ही पीछे का होशियार --दे० 'आगिल गिरे पाछिल '।

आगे की खेती आगे-आगे पीछे की खेती भागे जागे-- दे० 'आगिल खेती आगे···' ।

आगे की भैंस पानी पिए पीछे की पिए कीचड़ (क) आगे की भैंस पानी पीती है और पीछे की भैंस को कीचड़ पीने को मिलती है। (ख) खाने-पीने में जो आगे रहते हैं उन्हें अच्छा भोजन मिलता है और बाद में आने वाले बचा-खुचा पाते हैं। आशय यह है कि सचेत लोग ही किसी चीज़ का अच्छा लाभ उठाते है। तुलनीय छत्तीस० आगू के भैंसा पानी पीए, पिछू के चिखला; पंज० अग्गे दी मझ पानी पीवे पिछे दी पीवे किचड़; (चिखला--कीचड़) अं० Bones for the late comers.

आगे कुआँ पीछे खाई जब दोनों ओर विपत्ति दिखाई दे तो कहते हैं। तुलनीय: हरि० आगै कूआ पाच्छै खाई दोनू ओड़ मरण आई, अथवा न्यूंवे नें पड़ू तै कूआ न्यूं धेने पड़ू तै झेरा; राज० आगे कूवै, लारै खाड; अव० आगू तौ कुआं अहै पीछू खाई; तेलु० मुदु गोय्यि वेनुक नुय्यि; मरा० पुढें विहीर मागें खंदक; प० अग्गे खू पिछछे खड्ड; अं० Between the devil and the deep sea.

आगे के आगे पीछे के भागे अर्थात् किसी काम में आगे रहने वाले हो सर्वप्रथम लाभान्वित होते है, पीछे वाले तो भाग्यवश ही कुछ पाते हैं। तुलनीय : भोज० आगे के आगे पिछला के भागे; मैथ० आगा के आगे पाछा के भागे।

आगे खाई पीछे कुआँ—दे० 'आगे कुआँ पीछे '।

आगे खुदा का नाम— जो कुछ किया जा सकता था सो किया, आगे ईश्वर मालिक है।

आगे खेती पीछे लड़की-- आगे (पहले) बोई गई खेती तथा बाद में पैदा हुई लड़की अच्छी होती है। तुलनीय : भोज० अगिली खेती पिछली लड़की (बेटी) अथवा पीछे क लइकी आगे क खेती; पंज० पैले खेती मगरों कुड़ी ?

आगे गेहूँ पीछे धान वाको कहिए बड़ा किसान --वही किसान बुद्धिमान है जो गेहूँ पहले और धान बाद में बोता है।

आगे चलकर गुल खिलेंगे --गुप्त बातें कुछ समय पश्चात् प्रकाश मे आ जाती है। तुलनीय : अव० आगू चलकै गुल खिले; हरि० आगै जाकै भांडा फूट जाणा; पंज० अग्गे जा के पांडा वज्जैगा ।

आगे चलते हैं पीछे की खबर नहीं—असावधान व्यक्ति पर कहते हैं। तुलतीय : अव० आगे चला जात अहै पीछू की तनिकौ खबर नाहीं ।

आगे चलें तो भँड़ुवा पीछे चलें तो गँड़ुवा —जब प्रत्येक दशा में बेइज़्ज़ती का प्रश्न हो तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० आगे पीछे दुनों ओर गँड़ुआ-भड़ुआ केन्नी जाईं; मैथ० आगे चले तऽ भँड़ुआ आ पाछे चले तऽ गँड़ुआ ।

आगे चिकना पीछे रूख, यह देखो ठाकुर का रूप— झूठा रौब दिखाने वाले, मुख्यत: ठाकुरों पर कहते हैं। रौब दिखाने के लिए घर का फाटक तो रोबीला बना रखा है पर भीतर बिल्कुल रूखा है। ठाकुर लोग प्राय: ऐसा करते है। तुलनीय : अव० आगे चीकन पीछे रूख यह देखो बसन का रूप। (बैसन=ठाकुर, बैसो) ।

आगे जाय घुटनें टूटें, पीछे देखें आँखें फूटें --दे० 'आगे कुआँ '। तुलनीय : अव० आगे जायं तउ गेटुना टूटैं पाछे देखैं तउ आँखी फूटैं ।

आगे दुख पीछे सुख--(क) पहले कष्ट सहने वाले ही बाद मे सुख प्राप्त करते है। (ख) त्याग करनेवाला व्यक्ति ही महान बनता है।

आगे देखकर पाँव रखना चाहिए--किसी कार्य को करने के पूर्व उस पर अच्छी तरह विचार कर लेना चाहिए। तुलनीय : पज० अग्गे देख के पैर रखना चाइदा है।

आगे दौड़, पीछे चौड़ जब कोई नया काम करता जाय और उसका पीछे का काम बिगड़ जाय तो उसी पर व्यंग्य में कहते है। तुलनीय : पं० अग्गे दौड़ ते पिच्छों चौड़; हरि० अगों दौड़ पीछों चौड़ा; मरा० पुढें धांव मागें सत्यानाश; गढ़० अगाड़ी दौड़ पिकाड़ी चौड़ ।

आगे धंधा पीछे धंधा— हर तरह से व्यस्त रहने वाले के प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० आगै धंधा, पीछै

धंधा ; पंज० अग्गे तंदा पिछै तंदा ।

आगे नदी पीछे नाला, नहीं विपत्ति का पारा— चारो ओर से संकट में घिरे रहने पर ऐसा कहते हैं । तुलनीय : भोज० एन्नी नदी ओन्नी नाला नाहीं कहीं विपत क पारा ।

आगे नाथ न पीछे पगहा, खाय मोटाय के हुये गदहा — जिसके आगे-पीछे कोई नहीं है वह निश्चिंतता से खाता और मस्त रहता है, अतः मोटा-ताज़ा अवश्य हो जाता है। तुलनीय : अव० आगे नाथ न पाछे पगहा; कौर० आगै नाथ, पीछे, पगहा ।

आगे नाथ न पीछे पगहा, सबसे भला कुम्हार का गदहा— जिसका अपना कोई न हो वह सबसे भला है। तुलनीय : मरा० पुढें वेसण नाहीं, मागें नाही दावें कुंमाराचें गाढव उजवें ।

आगे पग रखे पत बढ़े, पाछे पग रखे पत जाय— (क) उन्नति से इज़्ज़त बढ़ती है और अवनति से घटती है। (ख) जो रण मे जूझते हैं उनकी इज़्ज़त बढ़ती है और जो भागते है उनकी घटती है ।

आगे पीछे नीम तले —आगे पीछे घूम-घुमाकर एक ही नीम के नीचे आ जाना, अर्थात् बार-बार अपने निराधार तर्क को दोहराना । तुलनीय : हरि० आग्गै, पाच्छै, नीम तळे ।

आगे पीछे सब चल बसेंगे—एक न एक दिन सभी को मरना है । तुलनीय : अव० आगे पाछे सबै चल बसही; पंज० अगले पिछले सब चल बसणगे ।

आगे फ़रक़ पीछे बात, जिसका नाम फ़र्रुख़ाबाद— फ़र्रुख़ाबादियों पर व्यंग्य है। वे धोखेबाज़ होते हैं ।

आगे बढ़ें, न पीछे हटें- जो स्वयं न तो किसी काम को करते हैं और न दूसरों को उसे करने देते हैं उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय : गढ़० मैत जवाई न ससुराल खाई; पंज० अग्गे वदण न पिछै होण ।

आगे बेटा न पीछे बेटी —जिस व्यक्ति को न तो कोई पुत्र ही हो और न ही पुत्री तो उसके प्रति ऐसा कहा जाता है। तुलनीय : हरि० आग्गै बाट, नांह पाच्छै बट्टी; पंज० अग्गे पुतर नां पिछै ती ।

आगे मंगल पीछे भान, बरसा होवै ओस समान— यदि मंगल ग्रह आगे और सूर्य पीछे हो तो वर्षा बहुत कम होती है ।

आगे मंगल पीठ रवि जो असाढ़ के मास, चौपट नासै बहुँ दिसा बिरले जीवन आस—यदि आषाढ़ मास में मंगल ग्रह आगे और सूर्य पीछे हो तो घोर प्रलय होता है जिससे बहुत कम लोगो के बचने की संभावना रहती है ।

आगे मेघा पीछे भान, पानी-पानी रटै किसान— यदि सूर्य बादलों के पीछे-पीछे चलें अथवा बादल सूर्य के आगे-आगे चलें तो वर्षा नहीं होती और अकाल पड़ने का भय हो जाता है ।

आगे रवि पीछे चलै मंगल जो आसाढ़, तौ बरसै अनमोल ही पृथ्वी अनंदै बाढ़ —यदि आषाढ़ मास में सूर्य आगे और मंगल ग्रह पीछे हो तो बहुत वर्षा होती है और फ़सल भी अच्छी होती है ।

आगे राह बताय के पीछे गोता दे—धोखेबाज़ लोगों पर कहा जाता है ।

आगे रोक, पीछे टोक —जब किसी तरफ से भी भागने का रास्ता न मिले तो कहते हैं । तुलनीय : मरा० पुढें बंद दार, मागें हग्या मार; अव० आगे मारै पाछे भागै; पंज० अग्गे रोक पिछै टोक ।

आगे लगाम पीछे दाढ़ी—जब किसी व्यक्ति को चारों तरफ से विवश कर दिया जाता है तब ऐसा कहते हैं । तुलनीय : पंज० अग्गे लगाम पिछ्छे दाड़ी ।

आगे हाथ पीछे पात— घोर निर्धन के लिए कहा जाता है जिसके पास शरीर ढँकने को कपड़े तक न हों ।

आचारः प्रथम. धर्मः -आचार ही प्रथम धर्म है ।

आज अमीर कल फ़क़ीर जो आज धनी है वह कल निर्धन भी हो सकता है । आशय यह कि समय बदलता रहता है। तुलनीय : पंज० अज अमीर कल फ़क़ीर ।

आज इधर, तो कल उधर, परसों पराये देस - लड़कियों के विषय में ऐसा कहते हैं, क्योंकि विवाह के पश्चात् वे माता-पिता से दूर हो जाती हैं । तुलनीय : पंज० अज इत्थे कल उत्थे परसों परदेस ।

आजकल की कन्या अपने मुँह से वर माँगती है— आजकल बेशर्मी बढ़ती जा रही है । तुलनीय : पंज० अज दी कुड़ी अपणे मुओ खसम मंगदी है ।

आजकल तुम्हारे ही नाम कमान चढ़ी है —बहुत रौबदाब वाले आदमो पर कहते हैं। तुलनीय : पंज० अजकल तु आडे नां दी गुड्डी चड़ी है ।

आजकल तो पैसे का खेल है—आजकल सभी काम पैसे से किए जा सकते हैं । तुलनीय : हरि० आजकल तो पैसे का खेल सै; पंज० अजकल ताँ पैहे दी खेड है ।

आजकल रोज़गार उनका है —आजकल रोज़गार

नाममात्र का है। सब वस्तुओं का बाज़ार भाव मंद चलता है तो व्यापारी लोग ऐसा कहते हैं। या जब व्यापारियों को फ़ायदा कम होता है तब कहते हैं। (उन्क़ा (अन्क़ा) एक काल्पनिक पक्षी है जिसका कोई अस्तित्व नहीं और इसीलिए जो वस्तु सुलभ न हो उसके लिए इस शब्द का प्रयोग किया जाता है)।

आजकल शेर-बकरी एक घाट पानी पीते हैं—(क) जब समाज में एक-दूसरे के प्रति प्रेम एवं सद्भाव पैदा होता है तो ऐसा कहते हैं। (ख) जब शासक के कठोर दंड के भय से लोग शान्त रहते हैं तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० अजकल शेर-बकरी इक थाँ पाणी पीदे हन।

आज का काम कल पर मत छोड़ो—जो भी काम करने को हो, उसे तुरंत कर डालना चाहिए। तुलनीय : अव० आज कै काम काल्हि पर जि छोड़ौ; मि० अज जो कम्म सुबह ते न विजजे; मल० इन्नाकुन्नतॅ नाळेय्क्कॅ नीट्टरुतॅ; पंज० अज दा कम कल लई नां छडौ; अं० Never put off till tomorrow what you can do today.

आज का काम कल पर मत डालो—ऊपर देखिए।

आज का खाया याद रहा, और पिछला खाया याद नहीं—जो व्यक्ति किसी के पहले किए हुए उपकारों को भूल जाय और किसी छोटी-सी बात पर भला-बुरा कहे, तो उसके प्रति ऐसा कहते है। तुलनीय : गढ़० सद्दै खाया कि याद रैंद बासि कि नि रैंदि; पंज० अज दा खादा याद रहया अते पिछला याद नईं।

आज का थापा आज ही नहीं जलता—(क) किसी काम का फल (परिणाम) तुरंत नहीं मिलता। (ख) उतावली में कोई काम नहीं होता। तुलनीय : अव० आज का पाथा आजै नाहीं जरी; भोज० अगुनइले गुल्लर ना पाके; अं० Rome was not built in a day.

आज का लड़का कल का बाप—जब थोड़े ही दिनों में कोई छोटा व्यक्ति बड़ों जैसी बात करने लगता है या देखते ही देखते अधिक ऊँचा उठ जाता है तब बड़े-बूढ़े व्यंग्य में ऐसा कहते है। तुलनीय : आज का बबुई काल्ह क नानी; राज० आ तो मासू आगली बहू; पंज० अज दा मुंडा कल दा पिओ; अं० Child is the father of man.

आज किधर का चाँद निकला है—किसी के बहुत दिन बाद मिलने पर लोग कहते है। तुलनीय : भोज० आज केंधिर से चाँद निकल गइल; अव० आज चाँद पच्छूँ कै निकसा अहै; मरा० आज कुठें चन्द्र उगवला; हरि० आज क्यूकर राह भूलग्या; पंज० अज दिन किदरों चड़या है।

आज की आज, आज की बरस दिन में—संसार में दो तरह के आदमी होते हैं। एक तो कर्मठ होते हैं जो आज का काम आज ही कर डालते हैं और दूसरे आलसी होते हैं जो आज के काम को वर्ष-भर में करते हैं।

आज की आज के साथ, कल की कल के साथ—(क) किसी के आज का काम कल के लिए छोड़ने पर कहते हैं। (ख) आज की बात आज और कल की बात कल करनी चाहिए। (ग) कल जो समस्या आने वाली है उसे कल देखेंगे, अभी से उसके लिए क्यों परेशान हों। तुलनीय : अव० आजू कै आजु कै साथ कालिह कै कालिह कै साथ; पंज० अज दी अज दे नाल कल दी कल दे नाल।

आज के गड़ियाँ खड्ड में और कल के भी—आज जो मित्र हैं वह खड्ड में गिर चुके है और जो कल होंगे वह भी उसी खड्ड (खाई) में गिरेंगे। (क) किसी व्यक्ति की विपत्ति के समय में जब उसके मित्र उसकी सहायता नहीं करते तो वह दुखी होकर अपने मित्रों के प्रति ऐसा कहता है। (ख) जब किसी व्यक्ति के ऊपर व्यय का बोझ बढ़ता जाता है तो वह अपनी आय के प्रति ऐसा कहता है। (ग) किसी दंपति के बच्चे पैदा होकर मर जाते है तब वे बच्चों के प्रति दुखी होकर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० आज का पिंडालू तैड़ खाडैं भोल का पिंडालू तैड़ खाडै।

आज के थापे आज नहीं जलते—दे० 'आज का थापा...'। तुलनीय : व्रज० हाल के थापे हालई नायें उचिलें।

आज के बनिये कल के सेठ—(क) जिसकी व्यवस्था बदलती रहे, उसे कहा जाता है। (ख) व्यापार में इतना अधिक लाभ होता है कि जो आज छोटा (बनिया) है कल बड़ा (सेठ) हो जाता है। (ग) व्यापार में कुछ निश्चित नहीं रहता। यदि घाटा होना है तो इतना ज़बरदस्त कि कल का सेठ (बड़ा) आज बनिया (छोटा) हो जाता है। तुलनीय : अव० आजै बानिन कालै सेठ; मरा० आजचा वाणी उद्याचे शेठ; पंज० अज दे बणिये कल दे सेठ।

आज के बाद गेहूँ नहीं या चक्की नहीं—(क) किसी व्यक्ति के दृढ़ संकल्प करने पर उसके प्रति ऐसा कहते हैं। (ख) जब कोई परिचित व्यक्ति धोखा देकर चला जाता है तो उसके प्रति भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० आज विटी जौ नी कि दांदरो नी; पंज० अज्ज तो बाद चक्की नईं या मक्की नईं।

आज के लड़के कल के बाप होंगे—जो आज छोटे हैं वही कल बड़े होंगे।

आज क्या कल हो गया है ?—अर्थात् अभी समय नहीं निकला है। जब किसी को किसी कारणवश उसकी अभीष्ट वस्तु प्राप्त न हो तो उसे ढाढ़स बँधाने के लिए ऐसा कहते हैं। तुलनीय : माल० आज ती कइ काल वइ गइ है ?

आज क्या घोड़े बेचकर सोए हो—जो निश्चिन्त होकर सोते हैं उनके प्रति ऐसा कहते हैं।

आज चाँदी है तो कल कोयला भी है—आज जो संपन्न है कल वह विपन्न भी हो सकता है। मनुष्य के जीवन में सुख और दुख आते रहते हैं। अपनी सपत्ति पर गर्व करने वालों के प्रति भी कहते हैं। तुलनील: भीली—आज वार है ते काले कवार भी है।

आज जबान खुली है कल बंद—जीवन का कोई विश्वास नहीं। प्राय: अपनी ईमानदारी जताते हुए लोग ऐसा कहते हैं।

आज जो मिला है, वह दूसरे जन्म में ही मिलेगा—जो सुख या लाभ आज पाया है, वह दूसरे जन्म मे मिले तो मिले इस जन्म में तो मिलने की आशा नहीं। जब किसी व्यक्ति को एकाएक ही कोई अनुपम सुख या बहुत बड़ा लाभ प्राप्त हो जाय, और जिसके पुन: भविष्य में मिलने की कोई आशा न हो तो वह स्वयं के प्रति कहता है। तुलनीय : भीली—आज ते सुख दीठो एवा देखां नत्रा माँ-बाप ने पेटे; पंज० अज जो मिलया है ओह दूजे जनम बिच मिलेगा।

आज जो राज—आज जो शासन है वही राजा माना जाता है। तुलनीय : ब्रज० आजै जायँ राजं।

आज तक पड़े हींग हगते हैं—(क) अब भी अपने कुकर्मो का फल भोग रहे है। (ख) अब भी बीमार हैं। तुलनीय : अव० आजु तक पडा-पडा का हींग हगत अहा।

आज तुम्हारी तो कल हमारी—समय परिवर्तनशील है जो आज बलवान है वह कल निर्बल और जो आज कमज़ोर है वह कल ताक़तवर हो सकता है। तुलनीय: पंज० अज तुआड़ी ते कल साडी।

आज तेरी बारी है जो चाहे सो कर—इस समय तुम शक्ति एवं साधन संपन्न हो, जो चाहो कर सकते हो। जो व्यक्ति अपनी शक्ति और साधनों का दुरुपयोग करे उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भीली—आज अणाने वार है, धारे जो करे; पंज० अज तेरी बारी है जो करना है औ कर।

आज तो भगवान ही मालिक है—आज तो ईश्वर ही रक्षा कर सकते हैं। अचानक कोई आपत्ति आ जाय और उससे बचने का कोई रास्ता दिखाई न पड़े तो ऐसा कहा जाता है। तुलनीय : भीली—आज ते राम रखवाली है; पंज० अज तां रब ही राखा है।

आज तो मैंने काम बहुत किया, कहा—अपने लिए ही न—किसी ने कहा कि आज मैंने काम बहुत किया है तो उसे उत्तर मिला कि अपने ही लिए किया है, किसी और के लिए तो नहीं ? अपना काम थोड़ा करो या अधिक उससे दूसरे को क्या ? प्रत्येक व्यक्ति अपने लिए ही परिश्रम करता है। तुलनीय : भीली—आज ते मैं काम घणूं कीदूं, तो के कणानी ठोड़ नी कीदूं।

आज नपूती कल नपूती, टेसू फूला सदा नपूत—किसी की निराशापूर्ण अवस्था पर लोग कहते हैं। सब वृक्षों के पतझड़ हो जाने के बाद टेसू फूलता है। (इसका प्रयोग स्त्रियाँ ही करती हैं।)

आज नहीं कल—टालमटोल करने वाले पर कहते हैं। या टालमटोल करने वाला कहता है। इस लोकोक्ति का सम्बन्ध एक कहानी से है जो इस प्रकार है : किसी समय एक कट्टर मुसलमान ईश्वर की आराधना में यह कहा करता था कि 'खुदा अपनी मुहब्बत में मुझे खींच।' एक दिन किसी मसखरे ने रात को एक डोर लटकाई और बोला कि 'आ'। इस पर उसने कहा, 'आज नहीं कल'। इसी प्रकार आज-कल कहने पर कहते हैं।

आज नाच मेरे, तो कल मैं नाचूं तेरे—आज मेरा काम कर तो कल मैं भी तेरा काम कर दूंगा। अपनी सहायता करने वाले की सहायता करनी ही पड़ती है। तुलनीय : अव० आज नचबे मोरे घुमारे के नाचब तोरे; पंज० अज मेरे नच्च ते कल मैं तेरे नच्चांगी।

आज बरस के फिर न बरसूंगा—लगातार बारिश होने पर कहते हैं। जब कोई व्यक्ति अपने साथ किए गए अन्याय का एक ही बार प्रतिकार करने का संकल्प कर लेता है तब वह भी ऐसा ही कहता है।

आज बसेरवा नियर, कल बसेरवा दूर—आज का घर पास है और कल का घर दूर है। आज के बसेरे का अर्थ संसार और कल के बसेरे का अर्थ परलोक है। आशय यह है कि इस लोक का ध्यान पहले रखना चाहिए।

आज बिगारि कालि की सोचें—जो सामने आए हुए कामों को न करे और भविष्य की कल्पना करे उसके प्रति ऐसा कहते हैं।

आज भिखमंगिन कल पटरानी—जो आज भिखारिन है, वह कल रानी भी हो सकती है। आशय यह है कि समय परिवर्तनशील होता है। प्रत्येक के जीवन में सुख-दुख आता है। तुलनीय : असमी—आजि भिखारिनी, कालि पाट्‌राणी;

सं० चक्रवात् परिवर्त्तन्ते सुखानि च दु:खानि च; पंज० अज मंगती कल पटरानी।

आज मरी सासू तो कल आया आँसू—दिखावटी सहानुभूति दिखाने वाले के लिए व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय: पंज० अज मरी सस कल निकले अथरु।

आज मरे कल दूसरा दिन—आज मरने पर कल दो दिन बीतेंगे। (क) मरने के बाद कुछ भी होता रहे हमें क्या चिंता? मरने पर कुटुम्ब क्या साथ जाएगा? (ख) जब किसी व्यक्ति को भावी सुख का लोभ दिया जाए और समय पर उसे कुछ न मिले तब वह अपने प्रति कहता है। तुलनीय: ब्रज० आज मरि कै कल्लि दूसरों दिन है; बुंद० आज मरे काल दूसरो दिन; पंज० अज मरया कल दूजा दिन।

आज मरे कल पितरों में—मरने के पश्चात् कोई किसी की चिंता नहीं करता। तुलनीय: बुंद० आज मरे काल पितरन में।

आज़माये को आज़मावे, नामाक़ूल कहावे—जो कई बार आज़माया जा चुका हो उसे पुन: आज़माना मूर्खता है। अच्छे सदा अच्छे रहते हैं और बुरे सदा बुरे। तुलनीय: फ़ा० आज़मूदा रा आज़मूदन जेहल अस्त।

आज मुए कल दूसरा दिन—दे० 'आज मरे कल···'।

आज मेरी मंगनी, कल मेरा ब्याह, परसों लौंडिया कोई ले जाय—भविष्य अनिश्चित हुआ करता है, इसलिए उसके सम्बन्ध में कोई निश्चित बात नहीं करनी चाहिए। तुलनीय: अव० आजु मंगनी कालिह बिआह, परौ लउडियवा का लइजा।

आज मैं कल तू—आज मैं विपत्ति में हूँ तो कल तुम भी विपत्ति में पड़ सकते हो या पड़ोगे। आशय यह है कि विपत्ति सभी पर पड़ती है।

आज मैं रहूँगा या वह रहेगा—कुछ भी हो, आज उससे निपटकर ही रहूँगा। जब कोई व्यक्ति अपने दुश्मन की हरकतों से ऊब जाता है तब ऐसा कहता है। तुलनीय: पंज० अज मैं रहांगा या ओह रहेगा।

आज लपके ककरी, कल लपके बकरी—चोर आरम्भ में छोटी-छोटी वस्तुओं की ही चोरी करता है, किन्तु बाद में वह बड़ी-बड़ी वस्तुओं की चोरी करने लगता है। तात्पर्य यह है कि मनुष्य में छोटी बुराइयों से ही धीरे-धीरे बड़ी बुराइयाँ आ जाती हैं। तुलनीय: गढ़० आज गीज्यो काखड़ी, भोल गीज्यो बाखरी।

आज सास की तो कल बहू की—आज सास की चलती है तो कल बहू की भी चलेगी। आशय यह है कि समय हमेशा एक-सा नहीं रहता। तुलनीय: भीली—अवला फेरा है आज हाहू नो काले वउ नो; पंज० अज सस दी ते कल बौटी दी।

आज से कल नेरे है—आज से कल का दिन नज़दीक है, क्योंकि वह आने वाला है। अर्थात् वर्तमान से अधिक भविष्य की चिन्ता करनी चाहिए। तुलनीय: अव० आजु से कालिह कै दिन नियर अहै; पंज० अज तो कल नेड़े है।

आज सोलहों दंड एकादशी है—अर्थात् सुबह से भूखे हैं, भोजन से भेंट नहीं हुई है।

आज हमारी कल तुम्हारी, देखो लोगों फेरा-फारी—सुख-दु:ख सभी पर पड़ते हैं, संसार में इनसे कोई बचा नहीं है। वे कभी किसी पर आते हैं तो कभी किसी पर। तुलनीय: अव० आजु हमार कालिह त्वहार।

आज है सो कल नहीं—समय परिवर्तनशील है। हरेक व्यक्ति की दशा सर्वदा एक-सी नहीं रहती। तुलनीय: अव० आजु जौन अहै तौन कालिह नाहीं; हरि० बारह बरस मं तै कुरड़ी की भी उघड्या करै; पंज० अज है सो कल नईं।

आज़ादी ख़ुदा की नियामत है—स्वतंत्रता ईश्वर की देन है। तुलनीय: मरा० स्वातंत्र्य परमात्म्याची दुर्लभ देणगी आहे; पंज० अजादी रब दी देन है।

आजिज़ी सबको प्यारी है—विनम्रता सबको पसंद है।

आजे न बाजे, दुल्हा आन बिराजे—बिना साज़-सामान के काम करने वालों के प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

आजे बनिया काल्हे सेठ—दे० 'आज के बनिये कल के सेठ।'

आटा खाते भौंकते नहीं बनता—दो काम एक साथ नहीं किए जा सकते। तुलनीय: पंज० आटा खंदे पौंकया नईं जांदा।

आटा न पिसान रोटी के लिए परेशान—आटा तो है नहीं रोटी की रट लगाए हैं। व्यर्थ की ज़िद या रट पर कहते हैं। तुलनीय: भोज० तेल न कराही, बारा-बारा चिल्लाई; छत्तीस० तेल न तेलाई, बरा-बरा नरियाई; पंज० आटा न पिसान रोटी लई परेशान; (तेलाई = कड़ाही, नरियाई = चिल्लाते हैं)।

आटा नहीं तो दलिया हो ही जायेगा—यदि कोई जौ या गेहूँ पीसे और आटा न हो तो कम से कम दलिया तो हो

ही जायगा। आशय यह है कि परिश्रम करने पर कुछ-न-कुछ सफलता अवश्य मिलती है। कहीं इस कहावत का एक यह भी रूप मिलता है—आटा नहीं तो दलिया जब भी हो जायगा।

आटा निबड़ा बूचा सटका—मुफ़्तखोर या चापलूस ग़रीबी में साथ छोड़ देता है।

आटा माड़े चावल कूटे—आटा खूब गूँधने से तथा चावल अच्छी तरह कूटने से अच्छा होता है। तुलनीय : भोज० आँटा मँड़ले चाउर छँटले; पंज० आटा गुन्ने चौल कुटे।

आटा हो ढीला बनत नहीं लोई, जोबन हो ढीला पूछत नहीं कोई—अर्थात् आटा गीला हो जाने पर रोटी नहीं बनती और जवानी ढल जाने पर कोई प्यार नहीं करता। तुलनीय : पंज० आटा होवे ढीला पके नां रोटी जवानी होवे ढीली पुछदा नहीं कोई।

आटे का चिराग़ घर पर रक्खूं तो चूहा खाय, बाहर रक्खूं तो कौवा/कौआ ले जाय—जब दोनों ओर मुश्किल हो और कोई भी रास्ता न हो तो कहा जाता है। तुलनीय : मरा० कणकेचा दिवा घरात ठेवला तर उंदीर खाईल, बाहेर ठेवला तर कावळा नेईल; पंज० आटे दा दीवा कर रखां ते चूहा खावे बाहर रखां ते कॉं ले जावे।

आटे का दिया, नाम घी का—दिया तो आटे का बनाया जाता है, किन्तु कहते हैं घी का दिया है। अर्थात् जब काम कोई करे और नाम किसी दूसरे का हो तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० आटे दा दिवा नां घी दा। दे० 'घी बनावे सालना और बड़ी बहू का नाम'।

आटे की क्या कमी है?—भारत में अतिथि-सत्कार का जो महत्त्व है उसी की द्योतक यह कहावत है। धनी और निर्धन दोनों ही अतिथि-सत्कार करने में प्रसन्न होते हैं। तुलनीय : माल० आटा रो कई घाटो; पंज० आटे दा की काटा है।

आटे के साथ घुन भी पिसता है—दोषी की संगति में रहने से निर्दोष की भी हानि होती है। तुलनीय : अव० पिसाने के साथ घुनौ पिसा; मरा० कण के बरोबर किडेहि दळले जातात; झोट्टे झोट्यां की लड़ाई भाड़ा का खोह; मल० बलवानोटोप्पम् बलहीननुम् नशिक्कुन्नु दुर्जन संसर्गम् कोण्टुं सज्जनड्ङळ्क्कुम् दोषम् वरुम; पंज० पैड़े नाल चंगा वी मरदा है; अं० With the fall of mighty the feeble also fall.

आटे दाल का भाव—गृहस्थी की फ़िक्र। ब्याह हो जाने के बाद ही गृहस्थी की चिंता सताती है। तुलनीय : अव० आटा दाल कै भाव मालुम पड़ जाई; मरा० कणिक डालीची चिंता; पंज० आटे लूण दा पा।

आटे दाल की फ़िक्र—ऊपर देखिए।

आटे में नमक, सच में झूठ—झूठ उतना ही खप सकता है जितना आटे में नमक।

आटे में नमक समा जाता है, पर नमक में आटा नहीं समाता—थोड़ा झूठ तो छिप जाता है, किन्तु कोरा केवल झूठ नहीं छिपता। तुलनीय : पं० आटे बिच लूण समा जांदा है पर लूण बिच आटा नईं।

आटे में नोन, सच में झूठ—दे० 'आटे में नमक, सच...'।

आठ कठौती माठ पिये, सोलह मकुनी खाय; उसके मरे न रोइये, घरे का दलिद्दर जाय—जो बहुत अधिक खाता है उसके प्रति लोग कहते हैं। तुलनीय : अव० आठ कठौती माठा पियै, सोला मकुनी खाय; ओह के मरे न रोवैं, घरे का दलिद्दर जाय।

आठ कनौजिया नौ चूल्हे—(क) आपस में बहुत अन-बन रहने पर कहा जाता है। (ख) कनौजियों में खाने-पीने का विचार बहुत रहता है कोई किसी का छुआ नहीं खाता, इस पर भी कहते हैं। तुलनीय : कन्नौ० आठ कनौजिया नौ हुक्का; पंज० आठ पुरबिये नौं चुल्हे।

आठ गाँव का चौधरी, बारह गाँव का राव; अपने काम न आयौ तौ ऐसी तैसी में जाव—जो अपने काम न आवे उसके बहुत बड़े होने से अपने को क्या करना। तुलनीय : अव० आठ गाँव के चौधरी, बारह गाँव के राव; अपने काम न आवै तौ ऐसी-तैसी माँ जायँ।

आठ जुलाहे नौ हुक्का तिस पर भी थुक्कम-थुक्का—जुलाहों की मूर्खता तथा उनके झगड़ालू स्वभाव पर कहा जाता है।

आठ जुलाहे नौ हुक्के इस पर भी धक्कम धक्के—ऊपर देखिए।

आठ बार नौ त्यौहार—हिन्दुओं के त्योहारों के ऊपर कहा जाता है। आशय यह है कि हिंदुओं के यहाँ त्योहारों की संख्या बहुत अधिक है।

आठ हाथ ककड़ी नौ हाथ बीज—असंभव बात पर कहते हैं। तुलनीय : अव० आठ हाथ ककरी नौ हाथ बिया; मरा० आठ हाथ काकड़ी नऊ हाथ बी; बुंद० आठ हाथ ककरी, नौ हात बीजा; निमाड़ी—आठ हात काकड़ी, वाको नौ हात बीज; पंज० अठ हाथ ककड़ी नौं

हत्थ बी।

आठ हाथ लकड़ी नौ हाथ बीजी—ऊपर देखिए।

आठे बरध पराते मरद—अर्थात् बैल को यदि आठ दिन तथा आदमी को एक दिन भी अच्छा भोजन मिले तो उनके चेहरे में अंतर पड़ जाएगा।

आठों गाँठ कुम्मेत—बहुत चालाक तथा कर्मठ व्यक्ति को कहते हैं।

आठों पहर काल का घंटा सिर पर बजता है—मौत हर समय सिर पर नाच रही है। तुलनीय : पंज० अठों पहर काल दा कटा सिर उते बजदा है।

आढ़त धर्म की, बात मर्म की—आढत (व्यापार) ईमानदारी से फलता-फूलता है और अच्छी तथा बुद्धिमत्ता-पूर्ण बातें ही दिल पर असर करती हैं।

आता है हाथी के मुंह, जाता है चींटी के मुंह—धन कठिनाई से आता है और उसे आते सब देखते हैं पर जाता बड़ी सहजता से है तथा उसे जाते कोई नहीं देखता। तुलनीय : अव० आवै हाथी मुहें, जाय च्यूंटी के मुहें; पंज० आंदा है हाथी दे मूह जंदा है कीड़ी दे मूंह।

आता हो उसे हाथ से न दीजे, जाता हो उसका ग़म न कीजे—आई हुई चीज़ को छोड़ना नहीं चाहिए और जाती हुई चीज़ के लिए अफ़सोस नहीं करना चाहिए। तुलनीय : मरा० येत असेल त्याला हातून जाऊं देऊं नये, जात असेल त्याचें दुःख करू नये; पंज आंदे नूं हत्थो देओ नां जांदे दा गम न करो।

आती के धोती जाती के लँगोटी—जब मनुष्य के अच्छे दिन आते हैं तो उसे अनायास बड़ी-बड़ी वस्तुएँ प्राप्त हो जाती हैं और जब बुरे दिन आते हैं तो छोटी-छोटी वस्तुएँ भी नहीं रह पाती। सुदिन-दुर्दिन में किसी व्यक्ति को प्रसन्न और अप्रसन्न देखकर यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : छत्तीस० आती के धोती, जाती के लिंगोटी; पंज० आंदी दी धोती जांदी दी लंगोटी।

आती बहू जनमता पूत—ये सभी को बहुत प्रिय होते हैं। बाद में नालायक सिद्ध होने पर चाहे भले अप्रिय हो जायँ। तुलनीय : माल० आवती वऊ ने जनमतो पूत सब ने हाऊ लागे; पंज० आंदी वौटी जमया पुत्तर।

आती लक्ष्मी को किवाड़ नहीं देते—घर आ रहे धन को ठुकराते नहीं। तुलनीय : हौं मिखऊँ अपनें सपनें हूँ तो आवत लच्छि किवार न दीजे—केशवदास। पंज० आंदी लसमी नूं बार नई कढदे।

आती लक्ष्मी को कौन लात मारता है?—प्राप्त धन को कोई छोड़ता नहीं। तुलनीय : पंज० आये पैहे नूं कौण मोड़दा है।

आती लक्ष्मी को लात मारना ठीक नहीं—मिलते धन को छोड़ना या ठुकराना बुद्धिमानी नहीं है। तुलनीय : अव० आवत लछिमी का लगाउब टीक नाही; गढ़० औंदी लछमी लात नि मारनी; मरा० येत्या लक्ष्मीला कोण लाथ मारतो; पंज० आंदी लसमी नूं लत मारना चंगा नईं।

आतुर खेती, आतुर भोजन, आतुर करिये बेटी ब्याह—खेती, भोजन और बेटी के ब्याह में शीघ्रता करनी चाहिए। इनमें आलस्य करने से बाद में पश्चाताप करना पड़ता है।

आतुरे नियमो नास्ति—आतुर (व्यग्र, उतावला) के लिए कोई भी नियम नहीं होता। तुलनीय : अं० Necessity dispenses with decorum, Necessity knows no law.

आते आओ, जाते जाओ—आना हो तो आओ और जाना हो तो जाओ। इसमें रुचि का अभाव व्यक्त होता है। तुलनीय : हरि० आंवते आओ, जात्ते जाओ; पंज० आणा है ते आओ जाणा है ते जाओ।

आते का आदर, जाते का सत्कार—अतिथि का सत्कार करना मनुष्य का धर्म है। तुलनीय : गढ़० औंदा को आदर, जांदा को सत्कार; पंज० आंदे दा माण जांदे दा सम्माण।

आते का नाम सहजा, जाते का नाम मुक्ता—दुख का सामना शान्तिपूर्वक करना चाहिए क्योंकि उसके चले जाने पर मुक्ति मिलती है।

आते का बोलबाला, जाते का मुंह काला—अफ़सर की क़द्र तभी तक होती है जब तक वह अपने पद पर रहता है, उसके बाद उसे कोई नहीं पूछता। तुलनीय : माल० आवता रो बोलबालो, जाता रो मुंडो कालो, पंज० आंदे दा बोल-बाला जांदे दा मुँह काला।

आते को देवता, जाते को चमार—जिस व्यक्ति से कुछ लाभ की आशा हो उसे स्वार्थी लोग देवता अर्थात् बहुत अच्छा मनुष्य कहते हैं, किन्तु जब उससे अपना स्वार्थ सिद्ध हो जाता है तो उसे चमार यानी बुरा कहते हैं। तुलनीय : पं० आंदे नू शाह, जांदे नू चोर; गढ़० औंदी दौ बामण, जांदी दौ भाट।

आते जाते मैना न फँसी, तू फँसा रे कौवे—सीधे आदमी जल्दी नहीं फँसते पर सयाने फँस जाते हैं।

आते हाय-हाय जाते संतोष—धन जब आने लगता है

तब किसी को संतोष नहीं होता और जब चला जाता है तो सभी को संतोष हो जाता है, क्योंकि तब संतोष के सिवाय कोई चारा ही नहीं रहता। तुलनीय : भोज० आवत हाय-हाय जात संतोख; पंज० आंदे हाय हाय जांदे संतोस।

आते हाही जाते संतोष—ऊपर देखिए।

आते हुओं के भाई, जाते हुओं के जमाई—जो प्रेम से हमारे घर आएँ, वे भाई समान हैं और जो अभिमान से आना चाहें तो उनके हम जमाई जैसे हैं। आशय यह है कि प्रेम से मिलने वालों के प्रति प्रेम रखना चाहिए और जो मिलना नहीं चाहें उनसे बात भी नहीं करनी चाहिए। तुलनीय : राज० आँवतारा भाई, जाँवताँरा जँवाई; पंज० आंदेआ दे परा जांदिआं दे जवाई।

आत्मवत् सर्वभूतानि—सबको अपने जैसा समझना चाहिए।

आत्मा की बैरी जीभ—(क) जब अपनी ही कही हुई बात से किसी को दुख उठाना पड़े तो उसके प्रति ऐसा कहते है। (ख) जब कोई केवल जीभ के स्वाद के लिए बाजार की गंदी वस्तुओं को खाकर बीमार पड़ता है तो उसके प्रति भी लोग ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० आत्मा को बैरी जिभ्या; पंज० आतमा दी बैरी जीब।

आत्मा तब परमात्मा—(क) पेट भरा होने पर ही कोई काम सूझता या अच्छा लगता है। (ख) पेट भरा रहने पर ही ईश्वर भी सूझता है। तुलनीय : मरा० आत्म्याला मिळालें तर परमात्मा सुचेल; दे० 'भूखे भजन न होंहि गोपाला···'।

आत्मा परमात्मा—आत्मा ईश्वर का ही रूप है। तुलनीय : हरि० आतमा सो परमात्मा।

आत्मा में पड़े तो परमात्मा को सूझे—दे० 'आत्मा तब···'।

आत्मा सुखी तो परमात्मा सुखी—दे० 'आत्मा तब···'।

आत्मा सो परमात्मा—दे० 'आत्मा परमात्मा।'

आदत प्रकृति बन जाती है—आदतें ही मनुष्य का स्वभाव बन जाती हैं। जब किसी व्यक्ति में बुरी आदतें पड़ जाती हैं तो उन्हें दूर करने के लिए उस व्यक्ति के प्रति ऐसा कहते हैं। यह लोकोक्ति शिक्षार्थ कही जाती है। तुलनीय : मल० नायुँ नटुक्कटलिळ चेन्नालुम् नक्किये कटिक्कु, कयुळ्ळ; अं० Habit is the second nature.

आदम आया दम आया—आदम से ही सृष्टि का श्री गणेश हुआ।

आदम रा गंदुमे-बहिश्त न साजद—आदमी के लिए स्वर्ग (बहिश्त) का गेहूँ अनुकूल नहीं है। तात्पर्य यह है कि अच्छा या स्वादिष्ट भोजन आदमी को पचता नहीं।

आदमियत और शै है, इल्म है कुछ और चीज—पद लिख लेने से कोई आदमी नहीं बनता। दोनों में बहुत अन्तर है।

आदमियों में नौआ, पक्षियों में क़ौआ/कौवा—मनुष्यों में नाई और पक्षियों में कौआ, ये दोनों बहुत चालाक होते है। तुलनीय : गढ़० डोम डाली खस्म खाती।

आदमी अनाज का कीड़ा है—आदमी का जीवन अनाज पर ही निर्भर है। तुलनीय : पंज० मनुख अन्न दा कीड़ा है।

आदमी अपने मतलब में अंधा है—स्वार्थ के कारण इन्सान को कुछ नहीं सूझता। तुलनीय : पंज० आदमी (मनुख) अपने मतलब दा अन्ना है।

आदमी अशरफ़-उल-मखलूक़ात है—मनुष्य सब प्राणियों में श्रेष्ठ है।

आदमी-आदमी अंतर, कोई हीरा कोई कंकर—सब व्यक्ति समान नहीं होते। कोई बुरा और कोई भला होता है। तुलनीय : छत्तीस० आदमी-आदमी अंतर, कोनो हीरा कोनो कंकर।

आदमी-आदमी का साथ, जानवर-जानवर का साथ—मनुष्य के साथ मनुष्य पशु के साथ पशु रहता है। अर्थात् नेक व्यक्ति नेक लोगों के साथ और बुरा व्यक्ति बुरे लोगों के साथ ही रहता है। विपरीत स्वभाव के व्यक्तियों की परस्पर मित्रता नहीं होती है और यदि होती भी है तो वह अस्थायी होती है। तुलनीय : भीली—मनख भेलो मनख, ढे'' भेलो चोपो; पंज० मनुख मनुख दा साथ डंगर डंगर दा साथी।

आदमी-आदमी है, भगवान नहीं—मनुष्य और ईश्वर में बहुत अन्तर है। ईश्वर से मनुष्य समता नहीं कर सकता; क्योंकि मनुष्य में कोई न कोई अवगुण अवश्य होता है जबकि ईश्वर अवगुणरहित है। तुलनीय : भीली— मन देवता नी है, मन वे जठे जाई ने बेहे; पंज० मनुख मनुख है पगवान नईं।

आदमी इज्जत बिन कौड़ी का—जिस व्यक्ति की इज्जत न हो उसका जीवन व्यर्थ है। तुलनीय : राज० एक रती बिन पा वरती; पंज० इज्जत बगैर मनुख दा कोई मुल नईं।

आदमी का आदमी गुरु है—मनुष्य, मनुष्य से ही

सीखता है।

आदमी का काम आदमी से पड़ता है—किसी मनुष्य को छोटा समझकर उसकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। सभी से प्रेम करना चाहिए न जाने कब किसकी आवश्यकता पड़ जाय। तुलनीय : राज० मिनखरो काम मिनखसूं पड़ै; पंज० मनुख दा कम मनुख नाल पैंदा है।

आदमी का पखेरू कोई नहीं—आदमी बहुत दूर-दूर देशों में घूमता है।

आदमी का शैतान आदमी है—मनुष्य को मनुष्य ही बुरा बनाता है।

आदमी की क़द्र मरने पर होती है—मरने के बाद मनुष्य के अच्छे कामों को याद कर लोग उसकी इज़्ज़त या प्रशंसा करते हैं। तुलनीय : अव० मनई कै कदर मरे पर होत है; पंज० मनुख दी कद्र मरण उते हुंदी है।

आदमी की कसौटी मामला है—आदमी के स्वभाव या ज्ञान का पता काम पड़ने पर ही चलता है।

आदमी की दवा आदमी है—मनुष्य को मनुष्य ही सद्मार्ग पर चलना सिखाता है। तुलनीय : मरा० माणमाचें औषध माणूस; हरि० हाथ न हाथ धोवै सै; पंज० मनुख दी दवा मनुख है।

आदमी की परेशानी दिल का आईना है—मनुष्य को देखकर ही उसके मन की दशा का पता चल जाता है। या मनुष्य के चेहरे से ही उसकी मनोदशा प्रकट हो जाती है। तुलनीय : मल० मनस्सिळ्ळतु मुखम् परयुम्; मरा० माणसाचें कपाल हृदयाचा आरसा आहे; पंज० मनुखदी परेशानी दिल दा सीसा है; अं० Face is the mirror of mind, Face is the true reflection of heart.

आदमी की माया पेड़ की छाया— (आदमियों की ही माया होती है और वृक्षों की छाया होती है), इस लोकोक्ति में 'माया' से तात्पर्य धन-दौलत है। जिस परिवार में अधिक मनुष्य होते हैं वहाँ धन भी अधिक होता है, ऐसा लोगों का विश्वास है। तुलनीय : राज० मिनखाँरी माया, रूंखांरी छांया; हरि० आदमियाँ की माया, अर रूक्खाँ की छयावा; पंज० मनुख दी माया दरखत दी छाँ।

आदमी कुछ खोकर सीखता है—मनुष्य कुछ हानि उठाकर ही सीखता या उन्नति करता है। तुलनीय : अव० मनई कुछ खोय कर सीखत है; हरि० पड़-पड़ कै सवार होया करै; पंज० डिग के मनुख सिद्दा हुंदा है।

आदमी कुछ नहीं करता, समय सब कराता है—समयानुसार ही मनुष्य सब काम करता है। उसकी इच्छा या अनिच्छा से कुछ भी नहीं होता। समय सबसे बलवान होता है, उसके सम्मुख सबको घुटने टेकने पड़ते हैं। किसी विद्वान ने कहा है- 'मनुष्य परिस्थिति का दास होता है।' तुलनीय : भीली—मनख हूँ करे जमानो करे; पंज० मनुख कुज नईं करदा मौका सब करांदा है।

आदमी कुत्तों को लड़ाकर दूर खड़ा हो जाता है—जब कोई व्यक्ति दो व्यक्तियों या दो दलों को आपस में लड़ाकर स्वयं तमाशा देखता है तो लड़ने वाले के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भीली—मनख कूतरा माते कूतरा पाड़ी ने बेगला हरखी जाय; पंज० मनुख कुत्तया नू लड़वा के दूर खलो जांदा है।

आदमी के दो हाथ भगवान के हजार—मनुष्य के केवल दो हाथ होते हैं जबकि ईश्वर के हज़ार, अर्थात् ईश्वर मनुष्य से बहुत शक्तिशाली है। तुलनीय : भीली—मनख नो एक हाथ, राम ना हज़ार हाथ; पंज० मनुख दे दो हत्थ रब दे हज़ार।

आदमी के मारे कोई नहीं मरता—अर्थात मनुष्य किसी का कुछ नहीं करता, ईश्वर ही सब कुछ ही करता है। तुलनीय : भीली—दन्या कोपे ते कई नी थाय; पंज० मनुख दे मारे कोई नईं मरदा।

आदमी के मुंह से आग निकलती है—मनुष्य की छोटी-सी बात से बहुत नुकसान हो जाता है। इसलिए प्रत्येक बात को सोच-समझकर कहना चाहिए। तुलनीय : भीली—मनखां ने गाल मे गोला उठे; पंज० मनुख दे मूंह विचों अग्ग निकलदी है।

आदमी को अढ़ाई गज कफ़न काफ़ी है—हिन्दुओं के लिए कहा जाता है। उन्हें मरने के बाद ढाई गज कफ़न की आवश्यकता पड़ती है। अर्थात् इन्सान को और कुछ न चाहिए। तुलनीय : अव० मनई के बरे अढ़ाई गज कफ्फन बहुत अहै; पंज० मनुख लई ढाई गिरां कफ़न बडा है।

आदमी को अढ़ाई गज ज़मीन काफ़ी है—मुसलमानों की कहावत है। उन्हें क़ब्र के लिए ढाई गज़ ज़मीन की आवश्यकता होती है। अर्थात् इन्सान को और कुछ न चाहिए। तुलनीय : मनई का अढ़ाई हाथ भुई बहुत अहै; पंज० मनुख लई ढाई गज थां वडा है।

आदमी को आगे से हाँकते हैं—अर्थात् नेता लोगों को समाज में खुलकर सामने आना चाहिए तथा पथ-प्रदर्शन करना चाहिए। तुलनीय : भोज० अदमी के आगे से हाँकल जाला; मैथ० आदमी हाँकू आगू से; पंज० मनुख नूं अग्गे

तो खिड़े हन।

आदमी को आदमियत लाजिम है– मनुष्य में मनुष्यत्व का होना जरूरी है, क्योंकि यही पशु से मनुष्य को जुदा करती है। तुलनीय : पंज० मनुख नूं उस दी इंसानियत रखना ज़रूरी है।

आदमी को आदमी से सौ दफ़ा काम पड़ता है— इन्सान को एक-दूसरे की सहायता अवश्य लेनी पड़ती है। तुलनीय : पंज० मनुख नूं मनुख नाल सौ दफ़ा कम पैंदा है।

आदमी को सभी पा लेते हैं, पर भगवान को नहीं— मनुष्य पर किसी न किसी प्रकार अधिकार किया जा सकता है, किन्तु ईश्वर पर नहीं। तुलनीय : भीली— दनियां ये हारई पूगे, रामें नी पूगे; पंज० मनुख सारियां नूं मिल जांदा है पर रब नईं।

आदमी को सौ माफ़, औरत को एक नहीं—आदमी के सौ दोष माफ़ कर दिये जाते हैं, किन्तु औरत का एक भी दोष माफ़ नहीं किया जाता। आशय यह है कि मर्द के अन्दर चाहे अनेक अवगुण क्यों न हों परन्तु उस पर कोई विशेष ध्यान नहीं देता लेकिन औरत की थोड़ी-सी भी बुराई उसकी मान-मर्यादा को सदा के लिए नष्ट कर देती है। तुलनीय : भीली –आदमी ना हो कायदा, लुगाई नो एक कायदो; पंज० मनुख नूं सौ माफ जनानी नूं इक नईं।

आदमी क्या जो आदमी को न पहचाने—वह इन्सान नहीं जो इन्सान की क़द्र न करे या जो भले-बुरे का फ़र्क न जाने।

आदमी क्या है आबनूस का कुंदा है—बहुत काले शरीर वाले पर कहते हैं।

आदमी क्या है, सरांचे का बांस है—बहुत लंबे और बेडौल व्यक्ति के लिए कहते हैं।

आदमी चने का मारा मरता है—इस मनुष्य जीवन का कोई ठीक नहीं, जाने कब खत्म हो जाय। तुलनीय : हरि० मरे ओउ का के मारणा।

आदमी चमड़े से नहीं पहचाना जाता—आदमी अच्छा है या बुरा, इसका पता उसके चमड़े से नहीं बल्कि उसकी अंदरूनी बातों से चलता है। उजबेक भाषा में कहा जाता है कि मवेशी की अच्छाई-बुराई ऊपर से जान ली जाती है, लेकिन इन्सान की अच्छाई-बुराई भीतर होती है। उसे पहचानना मवेशी-जैसा आसान नहीं है।

आदमी चला जाता है, बात रह जाती है—मनुष्य के मरने के बाद उसके कर्म ही इस संसार में रह जाते हैं। उसके कर्मों के अनुसार ही लोग उसकी प्रशंसा या भर्त्सना करते हैं। तुलनीय : पंज० मनुख चला जांदा है अते गलां रहिजांदियां हन।

आदमी जाने बसे सोना जाने कसे—आदमी पास बसने से तथा सोना कसौटी पर कसने से परखा जाता है। आशय यह है कि मनुष्य से संबंध करने पर ही उसकी वास्तविकता का पता चलता है। तुलनीय : मरा० मनुष्याची परीक्षा वसत्यानें (संगतीत राहिल्यानें), सोना पारखावें कसल्यानें (कसोटीनें); मल० संसर्गम् कोण्टुं मनुष्यन्टेयुम् चाण घर्षम् कोण्टुं स्वर्णत्तिण्टेयुम् माट्टरियाम्; छत्तीस० आदमी ला जाने बसे माँ, सोना ला जाने कसे माँ।

आदमी ठान ले तो कर दिखाय—यदि कोई व्यक्ति दृढ़ संकल्प कर ले तो ऐसा कोइ कार्य नही जिसे वह कर न पाए। अर्थात् संकल्प और उद्यमशीलता के ही बल पर व्यक्ति पक्का तथा पुरुषार्थी समझा जाता है। तुलनीय : भीली – मनख धारे जो करे; पंज० मनुख जिद कर ले तां करके दस्से।

आदमी ठोकर खाकर सम्हलता है—दे० 'आदमी कुछ खोकर...'।

आदमी तो वही है जो देखकर चले—वह व्यक्ति बुद्धिमान है जो प्रत्येक काम सोच-समझकर करता है। तुलनीय : हरि० आदमी तै वही सै जो देख कै चालै; पंज० मनुख ओह है जिहड़ा देख के चले।

आदमी दो दिन का मेहमान है—मनुष्य दो दिन के लिए संसार में आता है। आशय यह है कि मनुष्य का जीवन क्षणभंगुर होता है। तुलनीय : भीली –मनख नो मूठी भरद्यो जमारो, काले निकली आए; पंज० मनुख दो दिनां दा परौण है।

आदमी नहीं, उसकी सूरत है—बनावट तो आदमी जैसी है, पर आदमी नहीं। मूर्ख, आलसी और अकर्मण्य व्यक्ति के प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : माल० आदमी नी, खाली तसवीर है। पंज० मनुख नई उस दी फोटो है।

आदमी ने आखिर कच्चा शीर/दूध पीया है—इन्सान की कमज़ोरी पर कहा जाता है। तुलनीय : ब्रज० आदिमी नें कच्चौ दूध पियौ ऐ, कच्ची ई मति आवै।

आदमी पागल होता है तो पूरब जाता है—(क) पूरब में आबादी अधिक है जिसके कारण वहाँ के निवासी अधिकतर निर्धन होते हैं, इसलिए ऐसा कहते हैं। (ख) पूरब के लोगों की मूर्खता पर भी व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० मनुख पागल हुंदा है तां पूरब जांदा है!

आदमी पानी का बुलबुला है—आदमी का जीवन

उतना ही अस्थायी है जितना पानी का बुलबुला। अर्थात् आदमी नश्वर है। तुलनीय : पंज० मनुख पाणी दा बुलबला है; अं० Man is mostal.

आदमी पेट का कुत्ता है—आदमी को पेट के पीछे ग़ुलाम बना रहना पड़ता है। पेट के लिए ही उसे नीच से नीच काम करना पड़ता है। तुलनीय : अव० मनई पेट का कूकुर अहै; मरा० मनुष्य पोटाचा दास आहे; पंज० मनुख टिड दा कुत्ता है।

आदमी बसे से सोना कसे से—दे० 'आदमी जाने बसे ...'।

आदमी बातों में ही बना देता है—आदमी बात करके ही दूसरों को मूर्ख बना देता है। इसलिए किसी के साथ बात-चीत करने में सावधानी रखनी चाहिए। तुलनीय : भीली—मनख वातां वातां मांये वलुम्बावी दिये; पंज० मनुख गलाँ नाल ही मूरख बना देंदा है!

आदमी मर जाता है, पर तृष्णा नहीं मरती—आदमी मर जाता है लेकिन उसकी तृष्णा नहीं मरती। आशय यह है कि मनुष्य की इच्छाएँ कभी पूर्ण नहीं होतीं। तुलनीय : अव०जौ लगि ऊपर छार न परई, तब लगि नाहिं जो तिस्ना मरई; माया तिस्ना ना मरे मरि-मरि जाय सरीर—कबीर; पंज० मनुख मर जांदा है पर उस दी आस नईं मरदी।

आदमी मान के लिए पहाड़ उठाता है—प्रतिष्ठा के लिए इन्सान अपनी शक्ति से अधिक काम करता है। तुलनीय : पंज० मनुख इज्जत लई पहाड़ चुकदा है।

आदमी माल की खातिर पहाड़ सर पर उठाता है—फ़ायदे के लिए आदमी सभी काम करता है या तरह-तरह के कष्ट झेलता है। तुलनीय : अव० मनई माल के बारे पहाड़व उटाय लेत है; पज० मनुख नफ़े लई पहाड़ सिर उत्ते चुकदा है।

आदमी मुश्किल से मिलता है—अच्छे या सच्चे आदमी का मिलना अत्यंत दुर्लभ है। तुलनीय : अव० मनई मुश्किल से मिलत है; पंज० मनुख ओखे ही लबदा हे।

आदमी में नौआ, पंछी में कौआ, पानी में कछुआ, तीनों दग़ाबाज़—मनुष्यों में नाई, पक्षियों में कौआ और जलचरों में कछुआ ये तीनों बड़े धोखेबाज़ होते हैं। तुलनीय : भोज० आदमी में नउवा पंक्षी में कउवा; राज० मिनखां में नाई, पखेरुवां में काग, पाणी मायलो काछबो तीनूं दगैबाज; मैथ० आदमी में एक नौआ देखा पंक्षी में एक कौआ, गाछी में एक छौआ देखा नौआ कौआ छौआ; सं० नराणां नापितो धूर्तः पक्षिणां चैव वायसः।

आदमी समझाए न समझे, पशु समझ जाय—पशु को समझाया जाय तो समझ जाता है, किन्तु मनुष्य नहीं समझता। जब कोई मूर्ख व्यक्ति किसी के समझाने पर उसकी अच्छी बातों को न समझकर उलटे समझाने वाले को ही मूर्ख साबित करे तो उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भीली जानवर हमजावणो हाऊ, मनख हमजावणो खोटू; पंज० मनुख समझाय नां समझे डंगर समझ जावे।

आदमी सा पखेरू कोई नहीं—क्योंकि वह बहुत दूर देशों में भ्रमण करता है। तुलनीय : अव० मनई जस जीव कौनौ नाही; पंज० मनुख जिहा जीव कोई नईं।

आदमी से आवाज़ सुंदर—मनुष्य के रूप से वाणी का माधुर्य अधिक आकर्षक होता है। आशय यह है कि मनुष्य की रूप से नहीं बल्कि उसके आचार-व्यवहार से इज्जत होती है। तुलनीय : भीली—वाणी रूपाली है, मनख रूपाली नी है; पंज० मनुखनालों उसदी अवाज मोहणी।

आदमी से बातें की जाती हैं, रुपयों से नहीं—धनी व्यक्ति से नहीं बल्कि अच्छे स्वभाव के व्यक्ति से प्रेम किया जाता है। सपन्न परन्तु मूर्ख व्यक्ति के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० बंदया नाल गल्लाँ करीदियाँने, रुपय्यां नाल नईं।

आदमी ही आदमी का दुश्मन है—मनुष्य ही मनुष्य का सबसे बड़ा दुश्मन है, क्योंकि वह उसे अनेक तरह की यातनाएँ देता है या दे सकता है। तुलनीय : पज० बंदा ही बंदे दा दुसमणा है।

आदमी है या बिजली—बहुत तेज़ आदमी को कहते हैं।

आदमी होना बहुत मुश्किल है—जिसमें मानवता नहीं होती, उसे कहते है। तुलनीय : अव० मनई होब बड़ मुश्किल अहै; पंज० बंदा बनणा बड़ा ओखा है।

आदमी हो या घनचक्कर—नालायक़, दुष्ट या आवारा व्यक्ति के प्रति यह कहावत कही जाती है। तुलनीय : अव० मनई अहै कि घनचक्कर; पज० बंदा है या बन्दूक।

आदमी हो या बेदाल के बूदम—मूर्ख को कहा जाता है। फ़ारसी में 'बूदम' से 'दाल' निकाल लेने पर शेष 'बूम' बचता है जिसका अर्थ उल्लू होता है। तुलनीय : अव० आदमी अहा कि पाइजामा।

आदमी हो या संगे बेनून—फ़ारसी में 'संग' शब्द में से 'नून' अक्षर निकालने पर 'सग' रह जाता है जिसका अर्थ कुत्ता है। आशय यह है कि आदमी हो या कुत्ते। कुत्ते की

प्रवृत्ति वाले आदमी के प्रति कहते हैं।

आदर का सत्तू निरादर का हलवा—आदर का सत्तू निरादर के हलवे से अच्छा होता है। अर्थात् प्रेमपूर्वक प्राप्त मोटा अन्न भी स्वादिष्ट लगता है किन्तु बिना प्रेम का पकवान भी फीका। तुलनीय : भोज० आदर कऽ सतुआ नीक निरादर कऽ हलुवा ना; पंज० मान दा सत्तू बेइज़्ज़ती दा कड़ा।

आदर दिए कुजात को नाहिन होत सुजात—बुरा आदमी आदर देने से अच्छा नहीं हो सकता। तुलनीय : पंज० पैड़े बंदे नू आदर देण नाल ओह् चंगा नई हुंदा।

आदर न भाव, झूठे माल खाव—झूठे सत्कार करने वाले या कोरा सम्मान देने वाले के प्रति यह कहावत कही जाती है। तुलनीय : भोज० आदर न मान सात बेर सलाम।

आदर न मान बार-बार सलाम—ऊपर देखिए।

आदर बढ़ल, गजाधर बहू के—(क) बड़े आदमी की स्त्री का बहुत आदर होना है। (ख) जब किसी की स्त्री का उस स्तर की स्त्रियों से अधिक आदर हो तो भी व्यंग्य में कहते हैं।

आदर-मान की चुटकी ही काफी होती है—सम्मान से प्राप्त अधिक वस्तु की अपेक्षा सम्मान से मिली हुई थोड़ी चीज़ ही काफी होती है। तुलनीय : पंज० इज़्ज़त मान दी चुटकी बड़ी हुंदी है।

आदर से सभी आते हैं और निरादर से चले जाते हैं—इज्जत करने वाले के पास अनेक लोग आते हैं और जो इज्जत नहीं करता उससे कोई बात तक नहीं करता। आशय यह है कि प्रेम से ही आदमी सबको अपना बना सकता है, बिना प्रेम के नहीं। तुलनीय : पंज० प्रेम करो तां सब आंदेहन नई करो तां कोई नईं।

आद हिन्द बाद मुसलमान—पहले हिन्दू और तब मुसलमान।

आदि न बरसे अदरा, हस्त न बरसे निदान; कहैं घाघ सुन भड्डरी, भए किसान पिसान—'घाघ' भड्डरी से कहते हैं कि यदि आद्रा नक्षत्र प्रारंभ में तथा हथिया अंत में न बरसे तो समस्त किसान धूल में मिल जाएँगे।

आदि रोग खट्टा, सर्व रोग भट्टा—बैंगन (भटा) और खटाई ही सब रोगों की जड़ है। तुलनीय : गढ़० आदि रोग खट्टा, सर्व रोग भट्टा।

आदी के चंदन ललाट चरचराय—चंदन के स्थान पर यदि अदरक ललाट पर लगाया जाय तो कष्ट होगा। सभी चीज़ें अपने स्थान पर ही शोभा पाती हैं। एक चीज़ का स्थान दूसरी नहीं ले सकती।

आदी मिरचा का कौन साथ—अदरक और मिर्च का क्या साथ? बेमेल वस्तुओं या दो स्वभाव के व्यक्तियों में मैत्री नहीं होती। तुलनीय : अव० आदी और मरिचा कै कवन साथ।

आद्रा तो बरसै नहीं, मृगसिर पौन न जोय; तौ जानौ ये भड्डरी, बरखा बूँद न होय—भड्डरी कहते हैं कि यदि आद्रा नक्षत्र में वर्षा न हो और मृगशिर नक्षत्र में हवा न बहे तो बिल्कुल वर्षा नहीं होगी।

आद्रा भरणी रोहिणी, मघा उत्तरा तीन; इन मंगल आँधी चलै, तबलौं बरखा छीन—यदि मंगल के दिन आद्रा, भरणी, रोहिणी, मघा और तीनों उत्तरा नक्षत्रों में तेज़ आँधी चले तो वर्षा बहुत कम होती है।

आध पाव आटा, चौपाल में रसोई—दे० 'आध सेर कोदों ...'।

आध पाव की लोमड़ी ढाई पाव की पूंछ—लोमड़ी आकार की छोटी होती है, किन्तु उसकी पूंछ भारी होती है (क) किसी के द्वारा अनावश्यक (हानिकर) उपादान का भारी संग्रह करने पर ऐसा कहते हैं। (ख) हीन व्यक्ति के स्वयं को संपन्न प्रदर्शित करने पर भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : कौर० आध पा की लोमड़ी, ढाई पा की पूँछ; पंज० दो उंगला दी लोमड़ी ढाई हत्थ दी दुम।

आध सेर के पात्र में कैसे सेर समाय—(क) जब छोटे आदमी को ज्यादा धन-लाभ होता है तो वह अवश्य ही अपव्यय करने लगता है। (ख) छोटी जगह में बड़ी चीज़ या छोटी बुद्धि में बड़ी बात नहीं अँटती। तुलनीय : अव० आध सेर बसने में कइसेन सेर समाई।

आध सेर कोदों, मिरजापुर का हाट—छोटे काम के लिए बड़ा आडंबर करने वालों के प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

आधा आप घर, आधा सब घर—लालची या स्वार्थी के लिए कहते हैं जो औरों से अधिक पाना चाहता है। तुलनीय : पंज० अद्दा अपने अद्दा सारियां दे कर।

आधा कहे तो मर्द समझे, पूरा कहे तो बरद समझे—जो सचमुच इन्सान है वह तो आधी बात सुनकर ही पूरी समझ लेता है। जो पूरी सुने बिना नहीं समझते वे बैल या मूर्ख हैं।

आधा घर देउकुर आधा भरसाइ—किसी प्रबन्ध, काम आदि का कुछ भाग तो अच्छा करना और कुछ खराब।

किसी की कुव्यवस्था पर ऐसा कहते हैं।

आधा तजे पंडित सर्बस तजे गँवार—समयानुसार बुद्धिमान थोड़ा व्यय करके या थोड़ा खोकर शेष को बचा लेता है, पर मूर्ख मूर्खतावश थोड़ा खर्च नहीं करते या थोड़ा नहीं छोड़ते, अतः उन्हें कुछ भी नहीं मिलता। तुलनीय : पंज० अद्दा छडे पंडत सारा छडे गँवार।

आधा तीतर आधा बटेर—बेतुकी बात, बेढंगे काम या बिना मेल की पोशाक आदि पर कहते है। तुलनीय : अव० आधा तीतुर आधा बटेर; मरा० अर्धा तीतर पक्षी अर्धा लावा पक्षी; हरि० बिणा हाथ पायाँ की सरकाणा; मैथ० आधा घर टिटड आधा घर भितउ; पंज० अद्दा तितर अद्दा बटेर; ब्रज० आधौ तीतुर आधौ बटेर।

आधा ना तियाव, बाबा का बियाव—जो बिना किसी साधन के बहुत बड़ा काम करना चाहता है उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

आधा पाव चून, पुल पर रसोई--(क) थोड़ी वस्तु का अधिक प्रदर्शन करने पर या अशोभन विज्ञापन पर ऐसा कहते हैं। (ख) आत्म-प्रदर्शन की प्रवृत्ति वालों के प्रति भी व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : कौर० आध पा चून, पुल पै रसोई; पंज० अद्दा पा आटा पुल उते रसोई; ब्रज० पाउ सेर चून पुल पै रसोई।

आधा पाव भात लाई, बाहर से ही गाती आई--जब कोई किसी को थोड़ी-सी चीज़ देता है और उसका बहुत अधिक प्रचार करता है, तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : कौर० आध पा का भात लाई, भूड़ों पै सू गाती आई; पंज० अदद पा चौल लयाई बाहरों गीत गांदी आयी।

आधा बगुला आधा सुआ—अनमेल काम पर कहा जाता है। तुलनीय : पंज० अद्दा बगला अद्दा सूए।

आधा बैल भीतर आधा बैल बाहर- किसी धूर्त की धूर्तता पर व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० अद्दा बलद अंदर अद्दा बाहर।

आधा माघे कांबर कांधे (क) आधा माघ बीत जाने पर जाड़ा कुछ कम हो जाना है इसलिए लोग कंबल को ओढ़ते नहीं, केवल कंधे पर रखते है। (ख) आधा माघ बीत जाने पर पंडे प्रयाग से वैद्यनाथ धाम को, जल काँविर से लेकर जाते हैं।

आधा मियाँ शेख शरफ़ुद्दीन, आधा सारा गाँव—(क) जब किसी बड़े आदमी को किसी चीज़ में सबसे ज़्यादा हिस्सा दिया जाय तो कहते है। (ख) किसी को भी औरों से ज़्यादा या उचित से ज़्यादा दिया जाय तो भी कहते हैं। इसी कहावत का यह रूप में प्रचलित है : 'आधे में मियाँ मौज, आधे में सारी फ़ौज'।

आधा में एक घर, आधा में पूरा गाँव—ऊपर देखिए।

आधा साधे कँवर बाँधे - जब कोई व्यक्ति किसी काम को पूर्ण लगन (तन, मन और धन) से आरंभ करे, तभी समझ लेना चाहिए कि उसका आधा काम हो गया। अर्थात् लगन से करने पर काम अवश्य पूरा हो जाता है। तुलनीय : अं० Well begun is half done.

आधी आप घर, आधी सब घर—लालची या स्वार्थी व्यक्ति पर कहते हैं जो किसी वस्तु का अधिक भाग स्वयं लेना चाहता है।

आधा का साझी बराबर की चोट--हिस्सा या साझा तो आधे का है किन्तु स्वामित्व पूरे के साझी होने का दिखाता है। जहाँ कहीं विरोधी या प्रतिद्वन्द्वी को समान महत्त्व देना हो वहाँ ऐसा कहते हैं।

आधी छोड़ सारी को धावे, आधी रहे न सारी पावे—अधिक लालच करना अच्छा नहीं, जो मिले उसी में संतोष करना चाहिए। तुलनीय : भोज० आधा छोड़ सगरो के धावे आधा रहे न सगरो पावे, आधा छोड़ जो सर्बस धावे अइसन डूबे कि थाहो न पावे; अव० आधी छोड़ सारी का धावै, आधी रहै न सारी पावै; भीली—आखा के भरोसे आधो चूकी जाहो, मरा० अर्धी सोडून सगळीचा मागें धांवे, अर्धी जाते नि सगळीहि मिळत नाही; तेलु० लेनि दानिकि पोगा उन्नदि पोइंदट; मल० पलमरम् कष्टवन् ओरु मरम् वेट्टान, अत्याग्रहिक्कुं उळ्ळतुम् नशिक्कुम; सि० अद्ध खे छडे जो सजे पुठ्याँ दौरे, ते जो अद्ध बे वञे; पंज० अद्दी छड़ के सारी लब्बे अददी रहे नां सारी पावे; अं० The greedy lose all, He who grasps all things will lose all.

आधी छोड़ सारी को धावे, ऐसा डूबे थाह न पावे—ऊपर देखिए। तुलनीय : ब्रज. आधी छोड़ि साजी कूं धावै, ऐसी डूबै पार न पावै।

आधी मार धरहरिया को—जब दो व्यक्ति आपस में लड़ते हों और तीसरा कोई छुड़ाने जाता है तब उसे भी कुछ न कुछ चोट लग ही जाती है। आशय यह है कि दूसरों के मामले में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। तुलनीय : भोज० आधा मार धरहरियो खाला।

आधी मुर्गी, आधी बटेर—दे० 'आधा तीतर…'।

आधी रात को जँभाई आय, शाम से मुंह फैलाय—

(क) जो बहुत बाद में होने वाले काम की तैयारी आवश्यकता से बहुत पहले करे उसके प्रति कहा जाता है। (ख) बेवक्त काम करने वाले के लिए भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० अद्दी रात नूँ उबासी आयी तरकाँला नूँ मूँह फाड़या।

आधी रोटी गांव भर का बुलावा—यद्यपि रोटी तो आधी ही है तथापि उसको बाँटने के लिए गाँव-भर को निमंत्रित कर दिया है। जहाँ एक ओर परम उदारता का द्योतक है वहाँ दूसरी ओर आडम्बर को भी प्रदर्शित करता है। तुलनीय : हरि० आद्धी रोट्टी बगड़ बुलावा; पंज० अद्दी रोटी पिंड नूँ सादा।

आधी रोटी घर की अच्छी—घर की आधी रोटी बाहर की पूरी से कहीं अच्छी होती है। आशय यह है कि अपनी किसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए किसी से कुछ माँगने की अपेक्षा अपने पास जो चीज़ है उसी पर संतोष कर लेना श्रेयस्कर होता है। तुलनीय : राज० आधी रोटी घररी भली; पंज० अद्दी रोटी घर दी चंगी।

आधी रोटी बस, कायथ है कि पस—कायस्थ लोग कम खाने वाले होते हैं। तुलनीय : अव० आधी रोटी से बस, कायथ हयें कि पस।

आधे अषाढ़ तो बैरी के भी बरसे—आधे आषाढ़ तक अवश्य वर्षा होती है।

आधे क़ाज़ी क़िदूह, आधे बाबा आदम—ज़्यादा औलाद वालों के प्रति कहा जाता है। (क़ाज़ी क़िदूह के 70 लड़के थे।)

आधे गाँव दिवाली आधे गाँव फाग—जिस वर्ग, गाँव या समाज में मेल नहीं होता उस पर कहते हैं। तुलनीय : गढ़० आधा गौं संगराद आधा गौं मंगराद; पज० अद्दे पिंड दिवाली अद्दे पिंड सगरांद।

आधे जेठ अमावसी, रवि आथिम तो जोय; बीज जो चंदो ऊगसी, तो साख भरेला सोय। उत्तर होय तो अति भलो, दक्खिन होय दुकाल; रवि माथे रासि आथये, तो आधो एक सुगाल—जेठ की अमावस्या को जहाँ सूर्य उदय हो यदि वहीं जेठ की द्वितीया को चाँद उदय हो तो समय साधारण रहेगा, यदि उत्तर में हो तो समय अच्छा रहेगा और यदि दक्षिण में हो तो अकाल पड़ेगा।

आधे दादा, आधे काका, काम को कौन किससे कहे?—जब अनेक व्यक्ति लगभग एक ही आयु के होने के कारण एक-दूसरे से कोई काम करने को संकोचवश न कह सकें और न स्वयं ही करें, तो उनके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : भीली—आदा ते बाबा ने आदा काका कूंण कणये कै; पंज० अद्दे बाबे अते अद्दे पिओ कम नूं कौन किस दे नाल आखे। दे० 'तू भी रानी मैं भी रानी कौन भरेगा पानी'।

आधे माघे कामरि काँधे—दे० 'आधा माघे…'।

आधे में आध घर, आधे में सब घर—लालची या स्वार्थी व्यक्ति को कहते हैं, क्योंकि वह किसी वस्तु का सबसे अधिक भाग स्वयं लेना चाहता है। तुलनीय : बुंद० अदियाँ आप घर, अदियाँ सब घर; छत्तीस० आधा माँ जगघर, आधा माँ घर भर; पंज० अददे विच अद्दा कर अददे बिच सारा कर।

आधे में आप, आधे में घर भर—ऊपर देखिए।

आधे में जगधर, आधे में घर भर—ऊपर देखिए।

आधे वैद्य प्राण के घातक—अज्ञानी वैद्य की दवा से प्राण जाने का भय रहता है। आशय यह है कि अल्पगुणी से कार्य बिगड़ जाने की संभावना रहती है। तुलनीय : फ़ा० नीम हकीम ख़तरा-ए-जान।

आधे हथिया मूरि मुराई, आधे हथिया सरसों राई—हस्ति नक्षत्र के पहिले आधे समय में मूली आदि तथा बाद के आधे समय मे सरसों, राई आदि बोना चाहिए।

आन क आटा आन क घी चाबस-चाबस बाबाजी—दूसरे की चीज़ को खाने या ख़र्च करने में लोग संकोच नहीं करते।

आन क पहिरिक साजो बड़, छीन लेलक त लाजो बड़—मँगनी की चीज़ पहनकर शान-शौकत दिखाने वालों पर कहा जाता है।

आन कर खेती आनकर गाय, वह पापी जो मारन जाय—दूसरे के काम में व्यर्थ दखल देने वाला अच्छा नहीं कहा जाता। तुलनीय : पंज० किसे दी खेती किसे दी गां ओह पापी जो मारण जावे।

आन का आटा आन का घी शाबास-शाबास बाबा जी—दे० 'आन क आटा आन क घी…'।

आन का चुक्कर आन का घी, पांडे बाप का लागा की—ऊपर देखिए।

आन का सिन्दुर देख आपन कपाड़ फोड़े—दूसरे की उन्नति देखकर जब कोई जलता है तो कहा जाता है। तुलनीय : पंज० दूजे दा संदुर देख के अपना मत्था पन्ने।

आन का सिर कद्दू बराबर—दूसरे का सिर कद्दू जैसा होता है, उसे पटको चाहे फोड़ो। अर्थात् दूसरे को कष्ट देने में स्वयं को कोई तकलीफ़ नहीं होती। तुलनीय : पंज० दूजे दा सिर कदूं बराबर।

आन की आसा, नित उपासा—दूसरे के भरोसे रहने पर

रोज़ाना उपवास रहना पड़ता है। अर्थात् जो दूसरे के बल पर रहता है वह कभी उन्नति नहीं कर पाता, बल्कि सदा कष्ट ही झेलता है।

आन की पतरी का बड़ा-बड़ा भात—दूसरे की चीज़ बड़ी अच्छी और आकर्षक होती है। तुलनीय : अव० आने के पतरी के बड़-बड़ भतवा; पंज० दूजे दी पतल बिच बडे बडे चौल।

आन की बेटी आन, अपनी बेटी प्राण—पराई वस्तु उतनी प्यारी नहीं होती जितनी अपनी।

आन के बेटा-बेटी मँगरू गुड़हत्थे—जब किसी के बच्चे को कोई अन्य डाँटे-डपटे तो ऐसा कहते हैं। अर्थात् जब किसी काम में मुख्य व्यक्ति या मालिक के रहते हुए भी अन्य लोग दखल देने लगते हैं, तब ऐसा कहते हैं। (गुड़हथना = विवाह के समय का एक संस्कार)।

आन की बेटी-बेटा मँगरू गुड़ेरे—जब किसी के बच्चे को कोई दूसरा व्यक्ति डांटता या मारता है, तब ऐसा कहा जाता है। प्राय: इसका प्रयोग स्त्रियाँ ही करती है।

आन के मियाँ मतबुध दें, आप डुबकियाँ खायें—जब कोई व्यक्ति दूसरों को किसी कार्य को न करने की सलाह दे और स्वयं उसी कार्य को करे, तब उसके प्रति ऐसा कहते हैं।

आन फँसे भई आन फँसे—जब कोई बुद्धिमान व्यक्ति किसी निन्दनीय कर्म करने वालों से घृणा करे और बाद में उनकी संगति में आकर स्वयं भी वही कर्म करे तो वे उसके प्रति परिहास से ऐसा कहते है।

आन बनी सर आपने, छोड़ पराई आस—अपने ऊपर यदि कुछ आ पड़े तो दूसरों का आसरा देखना बेकार है, अर्थात् मुसीबत के समय अपनी सहायता स्वयं करनी चाहिए या हिम्मत से काम लेना चाहिए। तुलनीय : पंज० आ पयी सिर अपने छड बगानी आस।

आन से मारे, तान से मारे, फिर भी न मरे तो रान से मारे—औरतों के प्रति यह कहा गया है। पहले बातों से फिर आँखो से, उस पर भी न मरे तो जाँघों से मारती हैं। अर्थात् किसी न किसी तरह पुरुष को अपने चंगुल में कर ही लेती हैं।

आने का एक और जाने के हजार रास्ते—धन आता है एक ही रास्ते से और खर्च होता है अनेक रास्तो से। जब आय का मात्र एक साधन होता है और खर्च अधिक रहता है तब ऐसा कहते हैं।

आने-जाने से काम बनता है—(क) जब तक किसी व्यक्ति से किसी का अच्छा संपर्क नहीं होता तब तक उससे वह कोई काम नहीं करा पाता। (ख) परिश्रम या दौड़-धूप करने से कठिन कार्य भी आसान हो जाते हैं। (ग) मिलते-जुलते रहने से संपर्क गाढ़ा हो जाता है। तुलनीय : पंज० आन जान नाल कम बणदा है।

आन्हर आँख में काजल, लँगड़े पैर में जूता—दोनों ही अच्छे नहीं लगते। बेमेल काम पर कहते हैं। तुलनीय : पंज० कानी अख बिच काजल लंगे पैर बिच जुत्ती।

आन्हर का जाने बसन्त-बहार—अंधा बसन्त की बहार को क्या समझे? अर्थात् (क) जिसने जिस चीज़ को कभी देखा नहीं वह उसके महत्त्व को नहीं समझता। (ख) मूर्ख व्यक्ति अच्छी चीज़ों की परख नहीं कर पाते। तुलनीय : पंज० अन्ने नूं बसन्त दा की पता।

आन्हर कूकुर बतासे भूँके—अंधा कुत्ता हवा पर भी भूँकता / भौंकता है। मूर्ख मनुष्य ज़रा-सी बात पर भी लड़ बैठता है।

आन्हर कूटे, बहिर कूटे, चावल से काम—दे० 'आँधर कूटे, बहिर कूटे ...'।

आन्हर क्या जाने बसन्त की बहार—दे० 'आन्हर का जाने...'।

आन्हर गई भुँजावे, खोपड़ी फूट गई लागी गावे—अयोग्य व्यक्ति साधारण से साधारण काम भी नहीं कर पाता और उलटे हानि उठाता है; तुलनीय : पंज० अन्नी गयी फुनाण सिर फटया लग्गी गाला।

आन्हर गाय धर्म रखवार—असहायों की रक्षा ईश्वर करता है। तुलनीय : पंज० अन्नी गां रब राखा।

आन्हर गुरु बहिर चेला, माँगे भेली ले आवे ढेला—अर्थात् जब गुरु और शिष्य दोनों मूर्ख होते हैं तब वे अनुचित कार्य ही करते हैं।

आन्हरन हाथी देख झगड़ा मचाया है—जब किसी विषय से अपरिचित व्यक्ति आपस में उस विषय पर विवाद करें, तब यह लोकोक्ति कही जाती है।

आन्हर नाऊ झाँवे के बल—जब कोई कम बुद्धि का आदमी एक ही चीज़ पर अधिक बल देता है तो उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

आन्हर नेउते दुइजन साथ—(क) अंधे को निमंत्रण देने से दो आदमियों को भोजन कराना पड़ता है, क्योंकि अंधे के साथ एक आदमी उसे रास्ता दिखाने के लिए आता है। (ख) मूर्ख के परस्पर संबंध से हानि ही होती है।

आन्हर पीसे पीसना कुत्ते घुस-घुस खायें—जो अपने

उपार्जित धन के रखने की व्यवस्था न कर सके और दूसरे उस धन का उपभोग करें, उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० अन्ना पीसे कुत्ता चट चट खावे।

आन्हर बैल घुमा के जोते—अंधे बैल को घुमाकर जोतना पड़ता है। आशय यह है कि मूर्ख को मनाने के लिए बहुत इधर-उधर की बातें करनी पड़ती हैं। तुलनीय : पंज० अन्ना टग्गा फेर के जोतो।

आन्हर माई पूत का मुँह कभी न देखे—दे० अंधी पूतों का मुँह···'।

आप आए भाग आए—आप क्या आए हमारे नसीब जाग उठे। किसी हितैषी के विपत्ति के समय आ जाने पर उसके स्वागतार्थ कहते हैं।

आप करे उपकार अति, प्रति उपकार न चाह—यदि किसी का कुछ उपकार करें तो बदले में उससे उपकार की इच्छा नहीं रखनी चाहिए, क्योंकि यह अच्छी चीज़ नहीं है।

आप करे मोहि दोष लगावे, ऐसा स्वामी नहीं सुहावे—जो स्वयं करके दोष दूसरों के सिर मढ़ दे वह किसी को अच्छा नही लगता।

आप करै सो काम, पल्ला होय सो दाम—जो स्वयं किया जाय वही अपना काम है तथा जो अपने पास हो वही अपना धन है।

आप काज महाकाज—जो कार्य स्वयं किया जाता है वही महान कार्य होता है, अर्थात् किसी कार्य में अच्छी सफलता तभी मिलती है जब उसे स्वयं किया जाय। तुलनीय : अव० आपन काज बड़ा काज; हरि० आप काम सो महा काम; मरा० आपलें आपण काम केले तरच तें उत्तम होतें; मल० आलेरे पोकुन्नतिनेक्काल तानेरे पोकुन्नताण् नल्लतु; पंज० अपणा कम बड़ा कम; अं० Better do a thing than wish it to be done.

आप काम महा काम—ऊपर देखिए।

आप की खिजालत मेरे सिर आँखों पर—आपके लिए मैं शर्मिंदा हूँ। आपने जो किया उसे मैं भुगतूंगा। (खिजालत = शर्मिन्दगी)।

आपकी जूतियों का सदक़ा है—किसी बड़े आदमी के सामने उसकी बड़ाई और अपनी छोटाई प्रकट करने के लिए कहा जाता है।

आप की लापसी, पराई सो कुक्की—अपनी चीज़ को अच्छी और दूसरों की चीज़ को बुरी कहने वाले के प्रति कहा जाता है तुलनीय : हरि० अपणे सीत न कूणा खाट्टा बतावै सै।

आप के पीसे का क्या छानना? अपने किए हुए काम की क्या बड़ाई करना? अर्थात् यह उचित नहीं। तुलनीय : पंज० अपने कीते दी की वड़ाई करनी।

आपके मुँह का उगाल, हमारे पेट का उधार—तुम्हारे आगे का बचा हुआ हमारे लिए पर्याप्त है। धनवान की साधारण-सी कृपा से दरिद्र का कल्याण हो जाता है।

आपको न चाहे ताके बाप को न चाहिए—जो अपने से प्रेम न करे उससे कभी प्रेम नही करना चाहिए। तुलनीय : अव० अपुआ का न मानै तउ ओकरे बाप का नाहि मानै; पंज० जो अपणे नाल पयार नां करे उस दे नाल कदी पयार नईं करना चाइदा।

आप को फ़ज़ीहत ग़ैर को नसीहत—जिस बुरे कर्म को स्वयं करें दूसरों को वही न करने की शिक्षा दें। दूसरों को शिक्षा देने वाले और स्वयं उस पर न चलने वाले के प्रति कहा जाता है। तुलनीय : हरि० आप मियाँ फ़ज़ीहत ओरांने नसीहत।

आप को सराहै ताहि आपहू सराहिए—जो अपनी सराहना करे उसकी हमें भी सराहना करनी चाहिए। आशय यह है कि जो अपनी इज़्ज़त करे उसकी हमें भी इज़्ज़त करनी चाहिए।

आप कौन? कहा—खामख्वाह—जो व्यक्ति बिना बुलाए या बिना जान-पहचान के दूसरों की बातों में बोले उसके लिए व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : पंज० तुसीं कौण आखया खामखाह।

आप खाय, बिलाई बताय—जब कोई अपराध स्वयं करें और दूसरे के सिर मढ़ें तो ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० खाण आप कैण बिल्ली ने खादा।

आप खायें उलटा-सीधा, वैद्य जी को दोष—स्वयं ग़लत ढंग से दवा का इस्तेमाल करें और फ़ायदा न होने पर वैद्यजी को दोषी ठहरावें। अर्थात् जो व्यक्ति अपने से बुद्धिमान एवं अनुभवी व्यक्ति की सलाह को न मानकर स्वयं मनमाने ढंग से कोई कार्य करे और उसमें हानि होने पर सलाहकार को ही उलटे दोषी बतलावे, उसके प्रति ऐसा कहा जाता है। तुलनीय : पं० सिद्-पुट्ठा आप खान, बैद जी नू दोख; गढ़० आरूबेड़ू अफू खौ, बैदू मगार लगौ; पंज० आप खाण माड़ा चंगा बैद दा दोस।

आप खायें हरकत, बाँट खायें बरकत—अकेले खाने वाला दुख पाता है। तथा मिलकर आपस में बाँट कर खाने वाला उन्नति करता है अर्थात् व्यवहार कुशल व्यक्ति ही

उन्नति करते हैं स्वार्थी नहीं। स्वार्थी व्यक्ति सदा कष्ट ही भोगते हैं। तुलनीय: पंज० कल्ले खादा नई पचदा बंड के खाण नाल बरकत हुंदी है।

आप खुरादी आप मुरादी --जो केवल अपनी ही फ़िक्र करें और किसी से कुछ वास्ता न रक्खें, उन पर कहा जाता है।

आप गए और आस-पास --यदि कोई स्वयं बरबाद हो तथा साथ में दूसरों को भी बरबाद करे तो कहते हैं। तुलनीय: अव० आप गएन अधियां, परोसी लै गयें सझिया; भीली—अ ते जोगी थाद्यो पण मांइ हाते! हो जोगी की दो!

आप घातक, महा पातक -आत्महत्या सबसे बड़ा पाप है। तुलनीय: गढ़० आप घातिक, महा पातिक; पंज० अपणे आप नू मारना महापाप है।

आप घोड़ा ना बाप घोड़ा लातों से सिर फोड़ा—न अपने पास घोड़ा है न बाप के पास घोड़ा है, किन्तु सिर्फ़ दिखाने के लिए कि मेरे पास घोड़ा है, सिर फोड़ लिया। अर्थात् अपनी सामर्थ्य से बाहर काम या दिखावा करने वालों की हानि ही होती है। तुलनीय: गढ़० आप घोड़ा न बाप घोड़ा, लत्ती लत्यू न थोथरू फोड़ा।

आप चलें तो चिट्ठी काहे की (क) स्वयं जाना हो तो पत्र देने से क्या लाभ? (ख) व्यर्थ काम करने पर या दोहरे काम करने पर कहा जाता है। तुलनीय: पंज० आप चलया ते खत काद।।

आप चलें भुइयाँ शेखी चले गाड़ी पर—बहुत अधिक शेखी मारने वाले के लिए कहा जाता है। तुलनीय: पंज० आप जाण तुरदे शेखी मारण गड्डी दा।

आप जायँ आधे, पड़ौसी जायँ पूरे —जो अपने कार्य को स्वयं ठीक ढंग से न करें या न करना चाहें और दूसरों से उसे पूरा करने की आशा करें तो उनके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते है।

आप जिंदा, जहान जिंदा – (क) मनुष्य जब तक स्वयं जीता है तभी तक उसके लिए दुनिया भी जिंदा है। (ख) जो स्वयं सुखी है वह सारे संसार को सुखी समझता है। तुलनीय: पंज० आप जिंदा जहान जिंदा।

आप ठगे सुख ऊपजै, और ठगे दुख होय—(क) जब कोई व्यक्ति किसी को ठग लेता है या किसी से कुछ प्राप्त कर लेता है तो काफ़ी प्रसन्न होता है किन्तु जब उसे कोई ठग लेता है या उसका कुछ खो जाता है तो भारी कष्ट होता है। (ख) स्वार्थी व्यक्ति के प्रति भी ऐसा कहते है। तुलनीय: राज० आप ठग्यां सुख उपजै, और ठग्यां दुख होय।

आप डूबते पांड़े, ले डूबे जजमान—दे० 'आप डूबे बाम्हना...'।

आप डूबा जग डूबा—(क) जो स्वयं डूबता है सारे संसार को डूबा समझता है। (ख) जो मर गया उसके लिए सारा संसार ही मर गया। तुलनीय: भोज० अपने डूबा तS जग डूबा; पंज० खुद डुबया जग डुबया।

आप डूबा सो डूबा, और को भी ले डूबा--जो व्यक्ति अपनी हानि के साथ दूसरों की भी हानि करता है, उसके प्रति व्यग्य में ऐसा कहते है। तुलनीय: पंज० आप तो डुबया ही ओरनां नू वी लै डुबगा।

आप डूबे तो जग डूबा -दे० 'आप डूबा...'।

आप डूबे तो डूबे और को भी ले डूबे - नीचे देखिए।

आप, डूबे बाम्हना ले डूबे जजमान- आज का ब्राह्मण स्वयं तो अपने कुकर्मो के कारण डूब ही रहा है, अपने जजमानों को भी डुबा रहा है। जो व्यक्ति अपने दुर्गुणों के कारण अपनी हानि तो करता ही है, दूसरों का लाभ कराने का प्रयास करते हुए भी हानि कराता है उसके प्रति कहते हैं।

आ पड़ोसिन मुझ सी हो जा –जो दूसरों को भी अपनी ही तरह बनाना (प्राय: बुरा) या देखना चाहता हो उसके प्रति कहते है। तुलनीय: कौर० आ पडोस्सण मुज्झ सी हो; पंज० आ गुआंढन मेरी वरगी हो जा।

आ पड़ोसिन हम तुम लड़ें झगड़ालू औरत के लिए कहते हैं जो खोज-खोज कर या बुला-बुला कर झगड़ा करना चाहती है। तुलनीय: पज० आ गुआंढने असी तुसी लडिये।

आप तो आप और बगल में चाप स्वयं जो खाया सो तो खाया ही कुछ छिपा कर घर भी ले गया। जब कोई लालची व्यक्ति कोई ओछा या हास्यास्पद काम करता है, तो उसकी खिल्ली उड़ाने के लिए ऐसा कहते है।

आप तो मियाँ हफ्तहजारी, घर में रोवें कर्मों मारी—स्वयं तो बना-ठना रहे और घरवाली की दुर्दशा हो तो कहते हैं।

आपत्तिकाले मर्यादा नास्ति -विपत्ति के समय मर्यादा नहीं रहती।

आपत्सु मित्रं जानीयात--विपत्ति के समय मित्रों की परख हो जाती है कि कौन सच्चा मित्र है और कौन झूठा (नक़ली)। तुलनीय: अं० A friend in need is a friend indeed.

आप धनी तो जग धनी— जो स्वयं धनी है वह संसार को भी वैसा ही समझता है। तुलनीय : अव० आप धनी तो जग धनी ; पंज० खुद पैहेवाला ते जग पैहेवाला।

आपन-आपन कमाय, आपन-आपन खाय—प्रत्येक व्यक्ति स्वयं कमाए और अपना भरण-पोषण करे। आशय यह है कि किसी से कोई मतलब न रखे। तुलनीय : भोज० आपन-आपन कमाइल, आपन-आपन खाइल; पंज० आप कमा के आप खावो।

आपन-आपन सब कोउ होई, दुख माँ नाहिं संघाती कोई; अन्न वस्त्र खातिर झगड़ंत, कहैं घाघ ई विपति क अंत—'घाघ' कवि के अनुसार सुख के समय सब साथ देते हैं परन्तु दुख (विपत्ति) के समय कोई साथ नहीं देता, यानी सहायता नहीं करता। जहां पर अन्न और वस्त्र के लिए लोग आपस में झगड़ते रहते हैं वहां पर इससे बड़ी कोई दूसरी विपत्ति नहीं हो सकती। अर्थात् जिन्हें अन्न और वस्त्र जैसी जीवन की प्रारंभिक आवश्यकता की वस्तुएँ भी प्राप्त नहीं होती उनका जीवन कष्टमय है।

आप न करे दूसरों को उपदेश दे—जब कोई व्यक्ति स्वयं किसी कार्य को न करे और उसी कार्य को करने के लिए दूसरों को शिक्षा दे तो उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० आप डुकरियाँ सिख विधि देइ अपनी खाट भीतरी लेइ; बुंद० आप न जावे सासरे औरन खाँ सिख देय; पंज० खुद करना नई दूजियां नू उपदेस देणा।

आपन गँवाय के सीखे—(क) ज्ञान प्राप्त करने के लिए मनुष्य को कुछ हानि भी उठानी पड़ती है। (ख) अपनी गलती से ही मनुष्य को सीख भी मिलती है।

आपन गरज बावली—लोग अपनी गरज़ में पागल हो जाते हैं। आशय यह है कि लोग अपनी किसी खास आवश्यकता की पूर्ति के लिए हानि सहने को भी तैयार हो जाते हैं। तुलनीय : पंज० अपणी गरज़ बावली।

आपन गुड़ ढीला तो बनिये का क्या दोष ?—जब अपनी वस्तु खराब है तो लेने वाले को क्या दोष दिया जा सकता है ? आशय यह है कि जब अपनी वस्तु खराब है तो उसे खरीदने के लिए कम लोग तैयार होते हैं और यदि तैयार भी होते हैं तो उसकी क़ीमत कम देते हैं। तुलनीय : अव० अपन गुड़ ढील बनिया के दोस देंय; पंज० अपना पांजा खराब ते कमैंर दा की कसूर; ब्रज० अपनों गुर ढीलौ, बनियाँ कौ कहा दोस।

आपन घानी निकलि जाय, तेली क बैल चाहे मरै चाहे बँचै— स्वार्थी मनुष्यों पर कहा गया है जो अपने स्वार्थ के आगे दूसरे की हानि का ज़रा भी ख्याल नहीं करते।

आपन छूटे न पराया जूटे—अपने सगे-संबंधी लाख बुरे हों तब भी उनसे साथ नहीं छूटता यानी उनके साथ रहना ही पड़ता है और पराए कितने भी अच्छे क्यों न हों हर समय साथ नहीं देते। आशय यह है कि समय पर अपने सगे-संबंधी लोग ही काम आते हैं, पराए लोग नहीं। तुलनीय : भोज० नऽ आपन कबहीं छुटी नऽ पराया कबहीं जूटी; मग० अप्पन छुटे न पराया जुटे न; पंज० अपण छुटया ते बगाना जुटया।

आपन छोड़े साथ जब, ता दिन हितू न कोय—जब अपने सगे लोग साथ छोड़ देते हैं तब कोई सहायता करने वाला नहीं मिलता। अर्थात् अपने परिवार और सम्बन्धियों से बढ़कर कोई सहायक नहीं होता।

आपन ढेंढ़र ना देखें, दूसरे की फूली निहारें—अपना ढेंढ़र नहीं देखते पर दूसरे की फूली (आँख का धब्बा) निहारते हैं। जब कोई व्यक्ति अपने बड़े दोष की तरफ कोई ध्यान नहीं देता और दूसरे की छोटी-सी गलती या बुराई की चारों ओर चर्चा करता फिरता है तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० अपनों टेंट न देखें, दूसरे की फुली ऐ उघटै।

आपन दही का कौन खट्टा कहे ?—अपनी दही को कोई खट्टा नहीं कहता। अर्थात् अपनी वस्तु को कोई बुरा नहीं कहता चाहे वह बुरी ही क्यों न हो। अपनी वस्तु की प्रशंसा सभी लोग करते हैं। तुलनीय : भोज० आपन दही के केहू खट्ट ना कहेला; पंज० अपने दई नूं कौण खट्टा आखेगा; ब्रज० अपनी छाछियै कौन खट्टी बतावै।

आपन दे के बुड़बक बने के ?—ऐसा कौन है जो अपनी वस्तु दूसरे को देकर मूर्ख बने ? अर्थात् कोई नहीं।

आपन बलाय दूसरे के माथे—(क) अपना दोष दूसरे के सिर मढ़ने पर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० अपनी बला दूजे दे सिर; ब्रज० अपनी बला दूसरे के सिर।

आपन मामा मर-खप गइलन, जुलहा, धुनिया मामा भइलन—अपने मामा तो मर गए, कभी उनकी बात नहीं पूछी और अब धुनियों, जुलाहों को मामा बना लिया। घर वालों का आदर न करके बाहर के लोगों से संबंध जोड़ने पर कहते हैं।

आपन लड़िका नकफ़ोसरौ भी अच्छा होता है—अपनी वस्तु बुरी ही क्यों न हो प्यारी होती है।

आपन लाज अपने हाथ— अपनी इज़्ज़त अपने हाथों में होती है (क) अच्छा कर्म करने से मनुष्य की प्रतिष्ठा बनी रहती है और बुरा कर्म करने से प्रतिष्ठा समाप्त हो जाती

है। (ख) ओछे के मुँह लगने से प्रतिष्ठा पर आँच आती है। तुलनीय : पंज० अपनी सरम अपणे हत्थ; ब्रज० अपनी सरम अपने हाथ।

आपन लाल गँवाय के दर-दर माँगे भीख—(क) ऐसे मूर्ख व्यक्ति के प्रति कहते हैं जो अपनी मूल्यवान वस्तु को खोकर छोटी-छोटी-सी चीज के वास्ते दूसरे लोगों के सामने हाथ फैलाए फिरता है। (ख) जब कोई निर्धन व्यक्ति अपने इकलौते पुत्र की मृत्यु के पश्चात् असहाय हो जाने पर घूम-घूम कर भीख माँगता है तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मग० अप्पन लाल गँवाय के दर-दर माँगे भीख; पंज० अपनी चीज़ गवा के दर-दर मंगे भीख; ब्रज० अपनों लाल गमाय कें घर-घर माँगै भीख।

आपन लोह खोट तो लोहारे कौन दोष ?—अपनी वस्तु खराब होने पर दूसरे को दोष नहीं देना चाहिए। तुलनीय : पंज० अपना लोहा खोटा ते लुहार दी की दोष।

आपन सूरत पराई लक्ष्मी—अपने सौन्दर्य और दूसरे के धन का अनुमान ठीक नहीं लगता। तुलनीय : पंज० अपनी सूरत अते पराई लछमी।

आपन हाथ आपन कुल्हाड़ी, जान-बूझ के पैर में मारी—स्वयं अपना अहित करने वाले के लिए कहते हैं। तुलनीय : पंज० अपने पैर उते आप कुआड़ी मारना।

आपनी जरूर जा-ए-जरूरत जाइतु है—अपनी जरूरत के लिए पाखाने में भी जाना पड़ता है। अर्थात् जब आवश्यकतावश कोई निन्दित कर्म किया जाए या नीच की खुशामद करनी पड़े तब ऐसा कहते हैं।

आप पड़े हैं राह में करें और की बात—अपने रहने को न घर है और न खाने को रोटी, पर दूसरों की चिंता करते हैं। शेखी मारने वालों के लिए व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : पंज० आप रस्ते विच पयै नें औरना दी गला करणा।

आप पांडेजी बेंगन खावें, औरों को परमोध बतावें—दूसरों को नसीहत देना और स्वयं उस पर न चलना। इस संबंध में एक कहानी है : कोई पंडित जी थे जो स्वयं बैंगन खाते थे पर दूसरों से कहते थे कि बैंगन शास्त्रों के अनुसार निषिद्ध है।

आप बीती कहूँ या जग बीती—मैं अपनी दुख-भरी कहानी कहूँ या सारे संसार की। तुलनीय : पंज० अपने दुख नूँ जगदी कहानी कैणा।

आप बीती कै पर बीती—ऊपर देखिए।

आप बुरा तो जग बुरा—(क) बुरा आदमी सबको बुरा समझता है। (ख) बुरे के लिए सारा संसार बुरा है। तुलनीय : अव० आप बुरा तो जग बुरा; भोज० अपने बाउर तऽ जग बाउर; पंज० आप बुरा तां जग बुरा; ब्रज० आप बुरौ तौ जग बुरौ।

आप बेईमान तो जग बेईमान—बेईमान व्यक्ति स्वयं तो बेईमान होता ही है दूसरों को भी बेईमान समझता है। तुलनीय : भोज० अपने बेईमान तऽ सारी दुनिया बेईमान; पंज० आप बेईमान तां जग बेईमान।

आप भला तो जग भला (क) भले को सभी कुछ भला दिखाई पड़ता है। (ख) भले के साथ सभी भलाई करते हैं। तुलनीय : अव० आप भला तो जग भला; बुंद० आप भला तौ जग भला; राज०आप भला तो जग भला,आप पसंद कँ जग पसंद है; मैथ० आप भला तऽ जगत्तर भला; भोज० अपने भल तऽ दुनियाँ भल; असमी—आपोन भालेइ जगत् भाल; सं० उदारचरितानातु वसुधैव कुटुम्बकम्; मल० स्वयम् नन्नेन्किल् लोकवुम् नन्नुँ; मरा० आपण भले तर जग भलें; गढ़० अफू भला त जग भलो; पंज० आप चंगा ते जग चंगा; ब्रज० आप भलौ तौ जग भलौ; अं० Good mind good find.

आप भुलाई मेहरी को मारे—स्वयं कोई वस्तु कहीं पर रख कर भूल गए है और मार रहे है पत्नी को। जो व्यक्ति स्वयं ग़लती करे और दोष या दंड दूसरे को दे उसके प्रति कहते है।

आप भूले उस्ताद को लगाय—अपनी भूल दूसरे के सिर मढ़ने वाले के प्रति ऐसा कहा जाता है।

आपम धाप कड़ाकड़ बीते, जो मारे से जीते—जो पहले ही धड़ाधड़ मार दे उसी की जीत मानी जाती है। तुलनीय : अं० Offence is the best defence.

आप मरे जग डूबा—अपने मरने के बाद अपने लिए संसार डूबा ही है। तुलनीय : पंज० आप मरे जग डुबया।

आप मरे जग परलै—अपने मरने के बाद संसार में अपने लिए प्रलय हो जाता है। जान से ही जहान है। तुलनीय : अव० आप मर गएन दुनिया मा परलै कइ गएन; मरा० आपण मेलो जग बुडालें; बुंद० आज मरे काल पितरन में; मेवा० आप मर्‌या जग परलं; हरि० आप मर्‌या जग पर लै; मल० तनक्कुशेषम् प्रलयम्; ब्रज० आप मरे जग पल्लै; अं० When I am dead, the world is gone; After me, the deluge.

आप मरे जग लोक—ऊपर देखिए। तुलनीय : मल० मरणत्तिन्टे तलेन्नुँ काळरात्रि; अं० Death's day is a doomsday.

आप मरे बिना स्वर्ग नहीं मिलता—अपने किए बिना कोई काम नही होता। तुलनीय : मरा० स्वत: मेल्यावांचून स्वर्ग दिसत नाही; पंज० आप मरे बगैर स्वर्ग नईं मिलदा; ब्रज० अपने मरे बिना सरग नाये दीखै।

आप मरे सब मर गई दुनिया – दे० 'आप मरे जग परलै'।

आप मियाँ उल्लू, पढ़ाएँ तोते को—जब कोई कम बुद्धि का व्यक्ति किसी बुद्धिमान को कुछ समझाने का प्रयत्न करता है तो उसके प्रति व्यंग्य मे ऐसा कहते है। तुलनीय : भोज० अपने मियाँ उल्लू पढावे चल्लैं तोता; पज० आप मियाँ उल्लू पढाण तोते नूं!

आप मियाँ मंगते बाहर खड़े दरवेश—जो स्वयं माँग कर खाता-पीता है उसके द्वार पर माँगनेवाले खडे है। आशय यह है कि जो स्वयं दूसरो की सहायता चाहता है, वह किसी की सहायता क्या कर सकता है? तुलनीय : राज० आप मियाँ मँगता, बार खड्या दरवेस।

आप मियाँ सूबेदार, घर में बीबी झोंके भाड़ जो स्वयं तो खूब बना-ठना रहे और घर मे स्त्री की दुर्दशा हो, उसके प्रति ऐसा कहते है। तुलनीय पज० आप मियाँ सूबेदार कर बिच बीबी फूके चुल्हा।

आप मिले सो दूध बराबर, माँग मिले सो पानी; कहें कबीर वह रक्त बराबर जामें ऐचा तानी 'कबीर' के मतानुसार जो बिना माँगे मिले वह दूध बराबर है, जो माँगने से मिले वह पानी बराबर है तथा जो जबरदस्ती करने से मिले वह खून के बराबर है। जबरदस्ती किसी से नही माँगना चाहिए। तुलनीय राज० आप मिलै सो दूध बराबर माँग मिलै सो पाणी।

आप मुए तो जग मुआ—दे० 'आप मरे जग···'।

आप रहें उत्तर काम करे दक्खिन--अनाड़ी या मूर्ख के प्रति कहा जाता है, जिसे कुछ करने-धरने का भी ढग न हो। तुलनीय : पंज०आप रैण उत्तर कम करण दखण।

आप राह-राह दुम खेत-खेत - किसी के काम के बहुत फैल जाने पर कहा जाता है। तुलनीय : पंज० आप राह राह दुब खेत बिच।

आप रुच भोजन पराए रुच सिंगार-- भोजन मे अपनी रुचि तथा कपड़ा-लत्ता पहनने मे या शृंगार करने में दूसरो की रुचि का ध्यान रखना चाहिए। तुलनीय : भोज० अपने मन क खाइल आन के मन क सिगार; मैथ०आप रुच भोजन पर रुच सिगार; छत्तीस० आप रूप भोजन, पर रूप सिगार।

आप लगा के आग पानी को दौड़े—दे० 'आग लगाकर पानी···'। तुलनीय : गढ़० अफुई आग लगौ अफुइ पाणिकु दौड़; ब्रज०आपई आगि दैकें पानी कूं भगै।

आप लगावे आप बुझावे, आप ही करे बहाना; आग लगा पानी को दौड़े, उसका कौन ठिकाना – (क) पाखंडी आदमी के प्रति कहते है जो व्यर्थ ही अपने को मुसीबत में दिखाना चाहता है। (ख) उस मूर्ख के लिए भी कहते हैं जो जान-बूझकर परेशानी मोल लेता है और फिर उसके शमन का उपाय करता है।

आप लिखें खुदा बाँचे—जब अपना ही लिखा खुद न पढ़ा जाय तो व्यंग्य मे कहते है। तुलनीय : पज० आप लिखण खुदा नूं दसण।

आपस की फूट, कहो कौन को भला भयो--आपस के बैर से संसार मे किसी का भला नही हुआ।

आपस की लड़ाई में तीसरे का लाभ—आपस मे झगडने से अन्य लोग उसका फ़ायदा उठाते है। तुलनीय : पज० आपस दी लड़ाई तीजेदा नफा; ब्रज० आपस की लडाई मे तीसरे कौ लाभ।

आप समान बल नहीं, मेघ समान जल नहीं—अपने बल के समान कोई बल नही, क्योंकि समय पर वही काम आता है। वर्षा-जल से अच्छा कोई जल नही, क्योंकि वह भी बिना किसी भेद-भाव के सबको समान रूप से लाभ पहुँचाता है। तुलनीय : राज० आप समान बल नही मेघ समान जल नही।

आप सुने राग से, फकीर सुने भाग से - आप पैसा खर्च करके गाना सुनते हैं पर फ़क़ीर अपने भाग्य से सुनता हैं। जब कोई उसी आनन्द को पैसा खर्च करके पावे और दूसरा मुफ्त मे पावे तो यह लोकोक्ति कही जाती है।

आप से आवे तो आने दो—इस लोकोक्ति से संबंधित दो कहानियाँ है (क) एक मुसलमान मास नही खाता था। एक दिन स्त्री के कहने पर उसने थोड़ा-सा शोरबा चख लिया। खाने पर कुछ दिल ललचाया तो स्त्री से बोला — थोड़ा और शोरबा दो पर यदि गोश्त के टुकडे शोरबे में अपने आप आ जाएँ तो आ जाने देना, यों जानकर न लाना। स्त्री ने ऐसा ही किया और कुछ टुकडे आए जिन्हें उसने खाया। आशय यह है कि लालच मे पड़कर उसने 'आप से आवे तो आने दो' की आड़ मे यह बुराई की। इसी प्रकार यदि कोई लालच में किसी बहाने कुछ करे तो इस कहावत का प्रयोग करते है। (ख) एक पडित जी सबको उपदेश दिया करते थे कि बैगन खाना हिन्दुओं के लिए निषिद्ध है। एक दिन किसी ने एक टोकरी बैंगन लाकर उन्हें दिया। जब उन्होंने लेना

स्वीकार न किया, तब उनकी स्त्री ने कहा, जो चीज आप से आवे उसे आने दीजिए। इस प्रकार वह राज़ी हो गए और बैंगन से भरी टोकरी घर में रख ली।

आप से गया जहान से गया—(क) जो अपनों से अलग हुआ वह सारे संसार से अलग हुआ। (ख) जो अपनी फ़िक्र नहीं करता दुनिया भी उसकी फ़िक्र नहीं करती। तुलनीय : अव० अपुना से गएन तउ दुनिया से गएन; हरि० अपणै तै गया तै जगत तै गया; पंज० अपने तों गया ते जहाणतों गया।

आप से बने नहीं, दूसरे का रुचे नहीं—खुद करना नही आता और दूसरे का किया पसंद नही आता। उन निकम्मे और फूहड़ व्यक्तियों पर कहते है जो स्वयं तो कुछ करते नही या करना जानते नही परन्तु दूसरों के कार्यों में कुछ न कुछ दोष निकालते रहते है। तुलनीय : पंज० आप किसे जई नई, ते गल्ल करन तों रई नई।

आप से भला खुदा से भला—जो अपनी दृष्टि में भला है वह ईश्वर के सामने भी भला ही है। व्यक्ति को अपनी दृष्टि से कभी बुरा न होना चाहिए। तुलनीय : अव० अपुवा से भला तऊ भगवान से भला; पंज० अपणे तों पला रब तो पला।

आप सों न बोले ताके बाप सों न बोलिए—दे० 'आप को न चाहे···'। तुलनीय : अव० अपुवा से न बोलै तउ ओ करे बापौ से नाही बोलै; ब्रज० आप ते न बोलैं वाके बाप ते न बोलिये।

आप हानि जग हाँसी—अपनी हानि पर दूसरे प्रसन्न होते है। तुलनीय : पज० अपना काटा जग दी हस्सो।

आप हारे बहू को मारे—जो अपने गुस्से को दूसरे किसी बेक़सूर आदमी पर उतारे उस पर कहा जाता है। तुलनीय : भोज० अपने हारी तऽ मेहरी के मारी, हरि० हांड़ी का छोह बरोली पर तारणा; अव० आप हारै बहू को मारै; तेलु० अत्त मीदकोप दुत्त मीद चूपिनट्लु; पंज० आप हार के बौटी नूं मारे।

आप हि बाबा माँगते बाहर खड़े दरवेश—दे० 'आप मियाँ मगते···'।

आप ही अपनी क़ब्र खोदते हैं—जो अपनी बुराई अपने हाथों से करे, उस पर कहा जाता है। तुलनीय : पंज० अपनी कब्र आप खोददे हन।

आप ही क़ाज़ी, आप ही मुल्ला—(क) ऐसे व्यक्ति के प्रति कहते हैं जो अकेला ही किसी कार्य या संस्था आदि का सब कुछ हो। (ख) ऐसे के लिए भी कहते हैं जो खुद ही सब कुछ करना या बनना चाहे। तुलनीय : पंज० आप ही काजी आप ही मुल्ला।

आप ही की जूतियों का सदक़ा है—किसी बड़े आदमी के सामने उसकी बड़ाई और अपनी छोटाई प्रगट करने के लिए कहा जाता है। इस लोकोक्ति का संबंध एक कहानी से है जो इस प्रकार है : किसी मुसलमान मसख़रे ने सुन्नत के उपलक्ष्य में अपने बंधु-बांधवों को निमंत्रित किया। जब वे खाने को गए तब उसने अपने नौकर से उनके सब जूते बेंच डालने को कहा। नौकर ने भी उसके कहने के अनुसार जूते बेंच कर उसे दाम दे दिए। खाते समय लोगों ने उसकी प्रशंसा करते हुए कहा, 'भाई साहब, आपने बड़ी तकलीफ़ की।' उस मसख़रे ने हाथ जोड़ कर विनीत भाव से कहा, 'सब आप ही की जूतियों का सदक़ा है, मैं भला इस क़ाबिल कहाँ था कि आप लोगों की ख़ातिर कर सकता?' तुलनोय : पंज० तुआड़ी जुतियां दा साया है; ब्रज० आपकी पनहान की महरबानी है।

आप ही देवता आप ही पुजारी—दे० 'आप ही क़ाज़ी···'। तुलनीय : गढ़० अफुइ औतारो अफुइ पुजारो।

आप ही नाक चोटी गिरफ़्तार है—खुद ही मुसीबत में पड़े है। तुलनीय : पंज० अपनी नक दोबी विच गंड है।

आप ही मारे, आप ही चिल्लाए- खुद ही दूसरे पर अत्याचार करता है और फिर खुद ही शोर मचाता है। कुटिल और कपटी व्यक्तियो के प्रति कहते है।

आप ही मियाँ मंगते बाहर खड़े दरवेश—दे० 'आप मियाँ मंगते···'। तुलनीय : हरि० आप मिया पाच्छा पड़ायां हांडै ओरांह ने दवाई बांट्टै; मरा० स्वतः भिकारी, दाराशी उभा दरवेशी।

आप ही हारे बहू को मारे—दे० 'आप हारे बहू···'। तुलनीय : मरा० स्वतः हरले नि सुनेला मारलें; ब्रज० अपनी रिस बहू पै उतारै।

आपा तजे सो हरि को भजे—जो अभिमान को छोड़ दे वही ईश्वर की आराधना करे। आशय यह है कि अभिमान को त्याग कर विनम्र भाव से ईश्वर की उपासना करनी चाहिए। तुलनीय : पंज० अपणे नूँ छड के रब नूं पजे।

आपा बस में, जापा नहीं—(क) व्यक्ति अपने पर नियंत्रण कर सकता है, पर संतान पर नियंत्रण करना कठिन होता है। (ख) मनुष्य अपने पर नियंत्रण कर सकता है' पर संतानोत्पत्ति उसके वश की चीज नहीं है। तुलनीय : कौर० आप बस में जापा बस में नहीं (जापा = प्रजनन); पंज० आप बस विच नई पजन नई; ब्रज० आपो तौ बस में

कर्यो है, जापी नायें कर्यो,

आपे-आपे जगत व्यापे, ना कोई माई ना कोई बापे—संसार में कोई किसी का नहीं, सब अपने-अपने स्वार्थ के साथी हैं।

आ फँसे का मामला है --जब संयोगवश किसी को बुरी तरह फँस जाने पर अपनी इच्छा के विरुद्ध किसी को खुश करना पड़े तो लोग कहते हैं।

आ फँसे को कौन पूछता है ? --जान बूझकर झंझट मोल लेने या परेशानी बढ़ाने वाले की कोई सहायता नहीं करता। तुलनीय : माल० आ फस्या रा मोल कस्यां; पंज० फसे नूँ कौण पुछदा है।

आ फँसे भाई आ फँसे - किसी के किसी को संयोगवश अपनी इच्छा के विरुद्ध प्रसन्न करने पर कहा जाता है। इस पर एक कहानी है - एक बार कोई हिन्दू मुहर्रम के दिनों में मुसलमानों में जा मिला। जब मुसलमान लोग कहते थे, 'हाय हुसैन' 'हाय हुसैन' तो वह कहता था 'आ फँसे भाई आ फँसे'। इस पर मुसलमान बहुत खुश हुए कि वह उनका साथ दे रहा है यद्यपि वह ऐसा कर नहीं रहा था।

आफ़त का मारा पैर पड़े—(क) मुसीबत में फंसा व्यक्ति अपने उद्धार के लिए लाज-शर्म को त्यागकर सब कुछ करने को तैयार हो जाता है। यहाँ तक कि लोगों के पैर भी छूता है, ताकि लोग उसकी सहायता कर दें। तुलनीय : पंज० फसया पैरां बिच डिगे।

आफ़त काल न छोड़हीं कुल स्त्री निज सत्त—विपत्ति काल में भी कुलीन स्त्रियाँ सतीत्व नहीं छोड़तीं। तुलनीय : सं० आपद्यपि सतीवृतं किं मुंचंति कुलस्त्रियः।

आफ़त चारों ओर से आती है --अनेक तरह से विपत्तियों में घिर जाना। जब कोई व्यक्ति एक साथ अनेक परेशानियों में फँस जाता है तब वह कहता है या उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : भोज० आफ़त चारों ओर आवेले; पंज० आफत चारों पासयों आंदी है; ब्रज० आफति सब ओर ते आवै; अं० Difficultils come in train.

आफ़त ने किसी को नहीं छोड़ा —अर्थात् विपत्ति सभी पर आती है। तुलनीय : आफ़त केहू के ना छोड़लसि; पंज० आफ़त ने किसी नूँ नई छडया।

आफ़त बता कर नहीं आती —विपत्ति अचानक ही आती है। तुलनीय : पंज० मौत दसके नईं आंदी; ब्रज० आफति बताइकें नायें आवै।

आफ़त भी भगवान की देन है --विपत्ति भी ईश्वर की देन है। आशय यह है कि ईश्वर ही मनुष्य को सुख और दुख दोनों देता है। इसलिए विपत्ति आने पर मनुष्य को घबड़ाना नहीं चाहिए। तुलनीय : पंज० आफत रब दी देण है; ब्रज० आफति ऊ भगवान देयै।

आफ़त में अरु दुक्ख में बुध नहिं तजहिं उछाह बुद्धिमान या विद्वान् लोग दुख तथा आपत्ति में उत्साह नहीं छोड़ते। तुलनीय : सं० आपत्काले च कष्टेऽपि नोत्साहः त्यज्यते बुधैः।

आफ़त में दुश्मन भी न फँसे—ईश्वर करे विपत्ति किसी पर न आए।

आफ़त में दोस्त-दुश्मन का पता चलता है - विपत्ति के समय ही मित्र और शत्रु की पहचान की जाती है या पहचान हो जाती है, क्योंकि अच्छे दिनों या सुख के दिनों में तो सभी साथी होते हैं। तुलनीय : पंज० आफ़त बिच मितर-दुसमण दा पता लगदा है; ब्रज० आफति में ई दोस्त और दुसमन कौ पतौ चलै।

आफ़त में भगवान याद आते हैं --विपत्ति में ही लोग ईश्वर की आराधना करते है। सुख में कोई ईश्वर का नाम भी नहीं लेता है। तुलनीय : पंज०आफत बिच रब याद आंदा है; ब्रज० आफति में ई राम यादि आवै।

आफ़त मोल लेनेवाले को कौन छुड़ा सकता है ?—जान बूझकर परेशानी में फँसने वाले की कोई मदद नहीं करता या जान-बूझकर परेशानी में फँसने वाले को कोई बचा नहीं सकता। तुलनीय : अव० अप्पे फाथड़िये तैंक कौन छुड़ाए।

आफ़त यार परेखिए—आपत्ति में मित्र की परीक्षा होती है। तुलनीय : उर्दू० कठिनाई दोस्ती की परीक्षा है; अं० Adversity is the touch-stone of friendship.

आफ़त सब पर आती है—दे० 'आफ़त किसी को नहीं ......'। तुलनीय : ब्रज० आपत्ति सब पै आवै।

आफ़ताब पर थूकने से अपने ही ऊपर पड़ता है—(क) अच्छे की निंदा से अपनी ही निंदा होती है। (ख) बड़ों की निंदा से उनका कुछ नहीं बिगड़ता, स्वयं को ही हानि उठानी पड़ती है।

आब-आब कर मर गया सिरहाने रहा पानी --विदेशी भाषा-भाषियों पर व्यंग्य है। आशय यह है कि ऐसे लोगों के सामने विदेशी भाषा बोलना जो उसे समझते न हों मूर्खता है। इस पर एक कहानी है : एक बार कोई काबुल पढ़ने गया था। वहाँ से आकर बीमार पड़ा। बीमारी में एक दिन वह 'आब-आब' रटने लगा। घर में कोई भी समझ न सका कि उसे पानी चाहिए। इसी पर यह कहावत है जो इस प्रकार है : 'काबुल गये मुग़ल हो आये, बोलें अटपट बानी, आब-

आब कर प्राण निकल गये, पास धरा रहा पानी।' तुलनीय : मरा० आब-आब बोबलत राहिले, पाणी उशाशी तसेंच राहिले; अव० आब-आब करि मरि गए सिरहाने रखा पानी; पंज० आब-आब करदा मर गया सरैणे पाणी रखे दा।

आ बड़े बाप की बेटी है तो पंजा कर ले— जो अपने बल पर अभिमान करता है उसके प्रति कहते हैं।

आबदार झुक कर चलता है —महान् व्यक्ति गर्व नहीं करते।

आबदार मुंह से नहीं कहता—विद्वान, बुद्धिमान, गुणवान या इज्ज़तदार व्यक्ति अपनी बड़ाई या प्रशंसा स्वयं नहीं करते। तुलनीय : पंज० चंगा मुंह नाल नई आखदा।

आब न दीदा मोज़ा कशीदा--बिना किसी बात के जब कोई किसी पर क्रोधित हो जाय तो कहते हैं।

आबरू का रोवे बेआबरू वा हँसे— इज़्ज़तदार व्यक्ति अपनी इज्ज़त के लिए अनेक मुसीबतें झेलता है, और बिना इज़्ज़त वाला बेफ़िक्र घूमता रहता है या पड़ा रहता है। तुलनीय : पज० सरमदार रोवे बेसरम हँसे।

आबरू जग में रहे तो जान जाना पश्म है —दुनिया में इज्ज़त के सामने और कोई चीज़ नहीं। यहाँ तक कि जान भी तुच्छ है।

आबरू जग में रहे तो बादशाही जानिए— ऊपर देखिए।

आबरू बचे तो जान जाना तुच्छ है—मर्यादा की रक्षा में यदि प्राण भी चले जायँ तो भी ठीक है। मर्यादा सर्वोपरि होती है।

आबरू बड़ी मुश्किल से मिलती है —सम्मान पाने के लिए तपस्या करनी पड़ती है, इसलिए कोई ऐसा काम नहीं करना चाहिए जिससे बनी हुई मर्यादा बिगड़ जाय। तुलनीय : पंज० इज्ज़त बड़ी औखी मिलदी है।

आबरू बाज़ार में बिकती नहीं—सम्मान प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को अच्छे कर्म करने पड़ते हैं। धन से आदर नहीं मिलता।

आबरू बेचे सो भड़ुआ कहाय— किसी वस्तु के पाने के लालच में इज्ज़त को खोने वाला महामूर्ख कहलाता है तथा समाज द्वारा ठुकरा दिया जाता है। तुलनीय : पंज० सरम बेचे ओ पड़ुआ खुआवे; ब्रज० आबरू बेचै सो भड़ुआ।

आबरू रंडी ही बेच सकती है—रंडियाँ (वेश्याएँ) पैसे की खातिर अपनी इज्ज़त गँवा देती हैं। कोई भला व्यक्ति ऐसा नहीं करता। जब कोई आदमी धन के लालच में अपनी इज्ज़त को भी खोने को तत्पर हो जाता है तो उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहा जाता है। तुलनीय : पंज० सरम रंडी ही बेच सकदी है; ब्रज० आबरू ऐ तौ रंडी ई बेचै।

आबरू वाले को एक बात ही बहुत— इज्ज़तदार व्यक्ति थोड़ी सी ही बात से काफी शर्मिन्दा हो जाता है और निर्लज्ज को कुछ भी क्यों न कहा जाय, उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। तुलनीय : पंज० सरमवाले नूँ इक गल ही बड़ी; ब्रज० आबरू बारे कूँ तौ एक ई बात बौहत ऐ।

आबरू सबकी बराबर है —छोटे-बड़े, गरीब-अमीर सबकी इज्ज़त समान होती है। तुलनीय : पंज० सरम सब दी इको जिही है।

आ बला गले लग जा--जान-बूझकर आफ़त में पड़ने पर कहा जाता है। तुलनीय : मार० येरे येरे भुता, माइया गलां पड़; हरि० घरां बैठे लड़ाई मोल लेणा।

आ बे सोंटे तेरी बारी कान छोड़ कनपट्टी मारी— किसी काम में निरंतर असफल रहकर अंतिम उपाय के समय कहते हैं।

आ बैल मुझे मार—अपने आप ही जब कोई दुख में फँसता है तब यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : राज० आव बलद मनै मार; कौर० आ बैल मन्ने मार; भोज० आ बैल मोइ मारि; बुंद० आ बैल मोय मार; गढ़० ले कुकूर मेरो खुट्टो खा; मेवा० आवरे बलद मने मार सीग सूनी तो पूछ सूई मार; पंज० आ बलद मैंनू मार; ब्रज० आ बरध मोयँ मारि।

आभा पीला मेह सीला - आकाश पीला हो तो मेह की आशा कम रहती है।

आभा राता, मेह माता—आकाशलाल हो तो वर्षा बहुत होती है। तुलनीय : राज० आभो रातो मेह मातो; पंज० असमान लाल मींह मता।

आम इमली का साथ है -- दोनों ही खट्टे हैं। जब एक ही स्वभाव के दो व्यक्ति साथ दीखें तो कहते है। तुलनीय : पंज० अंब इमलीदा मेल है!

आम ईख नीबू बणिक, गारे ही रस देत—आम, ईख, नीबू और बनिया इनको दबाने से ही रस निकलता है। प्राय: बनियों के लिए कहा जाता है, क्योंकि वे बहुत कंजूस होते है और बिना किसी दबाव के कुछ नहीं देते। तुलनीय : मरा० आंबा, ऊस, लिंबू, वाणी, ह्यांना पिळलें तरच रस देतात; मेवा० आँबो, नीबू बाणियों गल भीच्यों रस देत; पंज० अब, गन्ना, निबू अते बनिये नूं जिला दबाओ उन्ना ही नफा; ब्रज० आम और बनियाँ यै जितनों निचोरौगे बितनों

ई रस देतें।

आम का बौर कलवार की माया, जैसे आया वैसे गँवाया— आम में बहुत अधिक बौर लगता है, किंतु वह सभी आम नही बनता। इसी प्रकार कलवार का शराब से कमाया हुआ धन किसी काम नही आता। वह जिस प्रकार आता है उसी प्रकार व्यय भी हो जाता है। आशय यह है कि बुरे काम से कमाया गया धन किसी के काम नहीं आता, वह व्यर्थ के कार्यों में ही खर्च हो जाता है। तुलनीय : भीली -- आंबे मोर कलाली लेखो, धन वेतो पाहले फरी न देखो; पंज० अब दा बौर शराब दी माया जिंदा आयी उसी तरह गवाई।

आम की भूख मनार से नहीं जाती — किसी वस्तु की इच्छा (भूख) वास्तविक रूप में उसकी प्राप्ति पर ही पूर्ण होती है, किसी दूसरी वस्तु की प्राप्ति से नही। तुलनीय : पंज० अम्बा दी भुक्ख अम्बाकड़ियाँ नाल नही लहिंदी।

आम की साध इमली से नहीं जाती —ऊपर देखिए। 'सुन्दर स्याम बिराम करौ कछु आम की साध न आमिली पूजै'। —केशवदास।

आम के आम गुठलियों के दाम—किसी काम या वस्तु में दोहरा लाभ उठाने पर कहते हैं। तुलनीय : अव० आम के आम गुठिलिउ कै दाम; पंज० अम्ब दे अम्ब ते गुठलियाँ दे दम; राज० गाजररी पूंगी वाजी पछे तोड़ खायी; मेवा० आम का आम अर गुठली का दाम; गढ़० आम का आम गुठली का दाम, मरा० आंबेच्या आंबे निवर कोयांचे पैशे; हरि० आम्ब के आम्ब गुठलियाँ (ह) के दाम; ब्रज० आम के आम और गुठिलिन के दाम।

आम के चूमे मुँह भर लाल —संगति का असर अवश्य पड़ता है।

आम खाने कि पेड़ गिनने — जब कोई मतलब का काम न कर व्यर्थ की बातें करे, तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० अंब खाने की पेड़ गिनणे; ब्रज० आम खाने कै पेड़ गिनने; राज० आम खावण करूँख गिणना।

आम खाने या पेड़ गिनने—ऊपर देखिए।

आम खाने से काम, गिनने से क्या —दे० 'आम खाने कि ······'। तुलनीय : गुज० टपटप नुं शुं काम, रोटलाथी काम।

आम खाने से काम, पेड़ गिनने से क्या काम ?—दे० आम खाने कि···'। तुलनीय : हरि० आम खांण तै मतलब अक पेड गिणन तैं; ब्रज० आम खाइबे ते काम, पेड़ गिनिबे ते कहा काम।

आम खाने से काम या पेड़ गिनने से—दे० 'आम खाने कि···'। तुलनीय : राज० आम खावण सूं काम कै रूँख गिणन मँ; गढ़० आम खाणा कि पेड़ गणना; अव० आम खाये से मतलब अहै कि पेड़ गिने से; मरा० आंबे खाण्याशीं काम, झाड़े भोजण्याचें काय काम; माल० आम खावाती काम गठल्या गणवाती कई; भोज० आम खइला से काम कि पेड़ गिनला से, आम खइला से काम वा कि गाछ गनला से।

आम खाने हैं या पेड़ गिनने हैं--दे० 'आम खाने कि····'। तुलनीय : ब्रज० तोइ आम खाने या पेड़ गिनने; बुंद० आम खानें कै पेड़े गिनने।

आम खाय पाल का 'खरबूजा खाय डाल का, पानी पिये ताल का—दे० 'आम पाल का···'।

आम झड़े पताई लड़का रोवे दाई-दाई— अभी बौर ही झड़े कि लड़का आम के लिए रोने लगा। जब कोई उचित समय से बहुत पहले किसी चीज़ के पाने के लिए हठ करने लगे तो कहते हैं।

आमदनी से सिर सेहरा— धन से ही प्रतिष्ठा होती है। तुलनीय : गढ़० छंदी की बलिहारी; माल० नफा आगे पूजी रो कई थाग; पंज० कमायी दे सिर सैरा; ब्रज० कमाई के सिर सेहरौ।

आम बोओ आम खाओ, इमली बोओ इमली खाओ— जो बोओगे वही काटोगे। जैसा व्यवहार दूसरों के साथ करोगे वही तुम्हारे साथ भी होगा।

आमने-सामने घर करूँ और बीच करूँ मैदान— बेशर्म औरतों के लिए कहते हैं।

आम पाल का खरबूजा डाल का, बेटा छिनार का— पाल का पकाया आम, डाल का पका खरबूजा तथा छिनाल (कुलटा) औरत का लड़का—ये तीनों उत्तम समझे जाते है।

आम पाल के कटहल डाल के—पाल के पके आम तथा डाल के पके कटहल बहुत मीठे होते हैं।

आम फले तो नत चले अरंड फले इतराय—अच्छे लोग धन पाने पर विनम्र हो जाते हैं और ओछे इतराने लगते हैं। तुलनीय : राज० आम फलै नीचो चलै, एरंड फलै इतराय; माल० आम फलै नीचो लुकै एरंड अकासां जाय; अं० The wise man in office is humble, jack in office is offensive

आम फले तो नीचा दबे—जब आम में फल लगते हैं तो उसकी टहनियाँ नीचे को झुक जाती हैं। आशय यह है कि बुद्धिमान धनी या विद्वान होने पर और विनम्र हो जाते हैं। तुलनीय : पंज० अंब फले ते नींवा होवे।

आम फले पत राखे, महू फले पत खोय--नये पत्ते निकल आने पर आम फलता है और पतझड़ हो जाने पर महुआ फलता है। अर्थात् अच्छे लोग इज्ज़त रखकर काम करते है और बुरे इज्ज़त खोकर। तुलनीय : मेवा० आम फले पर वार सूं मुवां फले पत खोय, वांको पाणी जो पीवे मत कटा सू होत।

आम बो आम खाओ, इमली बो इमली खाओ--जैसा जो करता है वैसा उसे फल भी मिलता है। तुलनीय : पंज० अंब रायो अंब खावो, इमली रावो इमली खावो; अं० As you sow so you reap.

आमाझोर बहै पुरवाई तौ जानौ बरखा रितु आई--यदि आम के वृक्ष को झकझोर देने वाली तेज़ हवा पूरब की ओर से चले तो समझ जाना चाहिए कि वर्षा ऋतु आने वाली है।

आ मेरे जाये तुझे न कोई चाहे--ऐ पुत्र! तुम मेरे पास आ जाओ मेरे सिवाय और कोई तुम्हें प्यार नहीं कर सकता। (क) मूर्ख अथवा दुष्ट व्यक्ति को उसकी माँ ही प्यार दे सकती है। (ख) कोई ऐसी वस्तु जिसे उसके मालिक के अतिरिक्त और कोई न चाहे उस पर भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : आवए मारी काणी थू कठेई नी खटाणी।

आमों की कमाई, नीबू में गँवाई--एक आमदनी जब दूसरे काम में खर्च हो जाय या एक सौदे का नफ़ा दूसरे के घाटे (हानि) में चला जाय तो ऐसा कहते है। तुलनीय : मरा० आंब्यान कमवले, ते लिंबान गमवले; पंज० अंबा दी कमायी निंबू विच गवायी।

आम्रवण न्याय--जब किसी बन में आम के पेड़ों की संख्या अधिक होती है तो उसे आमों का ही बन कहते हैं यद्यपि उस वन में आम के वृक्षों के अतिरिक्त अन्य चीज़ों के भी पेड़ होते हैं। जब किसी प्रधान वस्तु का ही उल्लेख किया जाय और उसकी सहायक वस्तुओं का नाम भी न लिया जाय तो कहते हैं।

आम्रसेक पितृतर्पण न्याय--आम के वृक्षों को सींचने और पितरों का तर्पण करने का न्याय। आशय यह है कि एक कार्य से दो लाभ प्राप्त करना।

आम्रान् पृष्टः कोविदारानाचष्टे--आम बताने के लिए पूछे जाने पर कोविदार वृक्षों के विषय में बताना। आशय यह है कि जब कोई किसी प्रश्न का वास्तविक जवाब न देकर भिन्न प्रकार का जवाब देता है तो उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : फ़ा० सवाल गंदुम जवाब चीनम।

आम्रे फलार्थे निमित्ते छाया गंध इत्यनूत्पद्यते--यद्यपि आम का वृक्ष फलों की प्राप्ति के हेतु लगाया जाता है, तथापि उसमें छाया और गंध भी बाद में उत्पन्न हो जाते है। अर्थात् जब किसी एक कार्य के करने से अनेक लाभ हों तब ऐसा कहते हैं।

आय तो जाय कहाँ--(क) किसी कार्य के परिणाम के विषय में निश्चय न होने पर कहते हैं। (ख) व्यर्थ में किसी बात के पीछे पड़ जाने पर भी कहते है। तुलनीय : पंज० आया ते जायँगा किथे।

आय न जाय चतुर कहाय--ऐसा व्यक्ति जो किसी काम के विषय में कुछ भी नहीं जानता है, परन्तु फिर भी अपने को वह उस कार्य में दक्ष बताता है तो उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते है। तुलनीय : छत्तीस० आय न जाय, चतुरा कहाय; पंज० आया न गया चलाक खोआया।

आया कर तू जाया कर, टट्टी मत खड़काया कर--किसी को व्यर्थ में तंग करने वाले के प्रति उपेक्षा से कहा जाता है। तुलनीय : पंज० आया कर तू जाया कर टट्टी नां खड़काया कर।

आया कार्तिक उठी कुतिया--निर्लज्ज या व्यभिचारिणी स्त्री के लिए कहते है।

आया कुत्ता खा गया तू बैठी ढोल बजा--जब किसी मनुष्य का ध्यान एक ही तरफ़ रहे और दूसरी तरफ से नुक़-सान हो जाय तो कहते है। तुलनीय : मरा० कुत्रा आऊन गेला तू बसलीस ढोल के वाजवीत (गाणे गात)।

आया चैत फूले गाल, गया चैत वही हवाल--किसानों के चैत मास में फ़सल कटने पर खूब अनाज होता है, किंतु वह लगान आदि देने के बाद शीघ्र समाप्त हो जाता है और किसान फिर ग़रीब के ग़रीब ही रह जाते हैं।

आया तजे तो हरि को भजे--अभिमान छोड़ने पर ही ईश्वरोपासना ठीक से होती है।

आया तो नोश, नहीं तो फ़रामोश--मिला तो खा लिया नहीं तो चुप रह गए। उस संतोषी व्यक्ति या साधु पर कहते है जो कहीं मुँह खोलने नहीं जाता; तुलनीय : पंज० मिलाया ते खादा नईं तां चुप।

आया तो भोजन नहीं तो उपास--मिल गया तो खा लिए नहीं तो बिना खाए ही रह गए। ग़रीब पर कहा जाता है। तुलनीय : पंज० मिलया ते रोटी नईं तां पुरवै।

आया बंदा आई रोज़ी, गया बंदा गई रोज़ी--दुनिया में आदमी से ही सब काम लगा है। तुलनीय : पंज० आया

बंदा आयी रोजी गया बंदा गयी रोजी।

आया मंगसिर, जाड़ा रंगसिर– अगहन का जाड़ा बड़ा आनंददायी होता है।

आया रमजान भागा शैतान—रमज़ान में शैतान भाग जाता है। रमज़ान मुसलमानों के लिए पवित्र महीना है। और यह मान्यता है कि इस महीने में शैतान को बंद कर दिया जाता है। आशय यह है कि पवित्रता के समीप पाप नहीं आता।

आया राजा पोह, जाड़े को चढ़ा छोह—पूस में जाड़ा अपने पूरे ज़ोर पर रहता है।

आया है त्यों जायगा, होकर ख़ाली हाथ—जिस प्रकार ख़ाली हाथ पैदा हुआ है उसी प्रकार मर भी जायगा। तात्पर्य यह है कि मरने पर कुछ साथ नहीं जाता, इसलिए लोभ-मोह और माया से बचना ही श्रेयस्कर है। तुलनीय : पंज० आया है ते जावेंगा होके ख़ाली हत्थ; ब्रज० आयौ है वो जायगौ लै कें खाली हाथ।

आया है सो जायगा राजा, रंक, फ़क़ीर— ग़रीब-अमीर सभी को मरना है। तुलनीय : मल० जनिच्चालोरिक्कल् मरणम्; पंज० आये ने ओह जाणगे राजा रंक फ़कीर; ब्रज० आयौ है सो जायगौ, राजा रंक फकीर; अं० Death follows birth.

आरजू ऐब है—लालसा (इच्छा) बुरी वस्तु है।

आरत कहा न करहिं कुकरमू—दुःखी अवस्था में मनुष्य को अच्छे-बुरे का विचार नहीं रहता। विपत्ति में मनुष्य भले-बुरे सभी काम कर बैठता है। तुलनीय : सं० आपत्ति काले मर्यादा नास्ति।

आरत के चित रहै न चेतू—आर्त या दुःखी मनुष्य का मस्तिष्क सामान्य नहीं रह पाता। परेशानी के कारण उसका चित्त अव्यवस्थित रहता है, इसलिए उससे संयम की अपेक्षा करना व्यर्थ है।

आरती के वक़्त सो गए, माल भोग के वक़्त जाग उठे—काम के समय ग़ायब है लेकिन खाने के वक़्त हाज़िर। स्वार्थी लोगों के प्रति कहा जाता है।

आरसी न फ़ारसी, निकास सोंटा आरसी—झूठा आडम्बर दिखाने वाले के प्रति क्रोध में लोग ऐसा कहते हैं।

आरा के डाकू, बनारस के ठग—'आरा' पूर्वी उत्तर प्रदेश का एक ज़िला है, जहाँ दिन-दहाड़े डकैतियाँ होती रहती हैं और बनारस के ठग देश-भर में प्रसिद्ध हैं। आशय यह है कि आरा ज़िले में अधिक डाकू तथा बनारस में अधिक ठग पाये जाते हैं।

आरा जाय सो जान गँवाय—आरा ज़िले में अधिक डाकू होने के कारण बाहर के व्यक्ति प्रायः लुट जाते हैं साथ ही उनकी जान जाने का भी भय बना रहता है। तुलनीय : पंज० आरा जावे ओह मर के आवे।

आराम करे सो भूखा मरे—कामचोर या निठल्ले पड़े रहने वाले व्यक्तियों की दुर्दशा पर व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० अराम करे ओ पुखा मरे; ब्रज० आराम करै सो भूखौ मरै।

आराम करे सो मुटाय या दुबलाय—शारीरिक श्रम न करने वाले या तो बहुत मोटे हो जाते हैं या बिल्कुल पतले हो जाते हैं। इसलिए अच्छे स्वास्थ्य के लिए शारीरिक श्रम आवश्यक है।

आराम तो रईस करते हैं—सुखमय जीवन संपन्न लोगों का ही होता है। निर्धन लोग तो रोटी-कपड़ा जुटाने में ही परेशान रहते हैं, उन्हें सुख कहाँ से मिले। तुलनीय : पंज० बेले नां रीस बैंदे हन।

आराम थोड़ा भी बहुत—थोड़े समय का सुख भी बड़ा आनन्ददायी होता है। तुलनीय : राज० आराम घड़ी रो ही चोखो; पंज० बेले बैणा कड़ी वी वड़ी।

आराम बड़ी चीज़ है मुँह ढक के सोइए—आलसी और कामचोर व्यक्ति ऐसा कहते हैं। यह शेर की दूसरी पंक्ति है, पहली यह है : किस किसको याद कीजिए किस किसको रोइए। तुलनीय : माल० केरों केरों होच कराने, कणने कणने रोवाँ, अराम बड़ी चीज है मुंडो ढांकी ने होवाँ; पंज० अराम बड़ी चीज है मूँह ढक के सोवो।

आराम सबके भाग्य में नहीं होता—(क) जब कोई व्यक्ति संपन्न होते हुए भी अच्छी तरह से खाता-पहनता नहीं तो उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। (ख) किसी की अधिक दीन-हीन अवस्था को देखकर भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० अराम करना सारियां दे पाग बिच नईं हुंदा।

आराम हराम है—(क) दिन-रात कामों में लगे रहने वाले के प्रति ऐसा कहते हैं। (ख) हमेशा कामों में लगा रहने वाला व्यक्ति स्वयं के प्रति भी ऐसा कहता है। तुलनीय : पंज० बैल कबैल है।

आरी केरि चलावनों, नहिं बंदर को काम—आरी चलाना बंदर का काम नहीं। आशय यह है कि सावधानी का काम चंचल मनुष्य नहीं कर सकते।

आरोग्य महाभाग्य—अच्छा स्वास्थ्य बड़ी क़िस्मत से मिलता है। तुलनीय : उ० तंदुरुस्ती हज़ार नियामत है; तेलु० आरोग्यम् महाभाग्यमु।

आर्द्रं वस्त्रं समन्ताद्वातानीतं रेणुजात मुपादत्ते—गीला वस्त्र वायु द्वारा प्रत्येक दिशा से लायी हुई धूल को ग्रहण कर लेता है।

आर्द्र चौथ, मघ पंचक—आर्द्रा नक्षत्र में पानी बरसने से चार नक्षत्रों (आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य तथा अश्लेषा) में पानी होता है और मघा में पानी होने से पाँच नक्षत्रों (मघा, पूर्वा, उत्तरा, हस्त तथा चित्रा) में भी पानी बरसता है।

आलगा मुरमुरे वाला—बातूनी आदमी के लिए कहते हैं कि वह फिर आ गया फ़ालतू बातें करने के लिए।

आलमगीर सानी चूल्हे आग न घड़े पानी—औरंगजेब के शासन में लोगों को बड़ा कष्ट था। जब किसी की अमलदारी में लोगों को कष्ट होता है तो इस कहावत का प्रयोग करते हैं।

आलस निद्रा और जँभाई, ये तीनों हैं कास के भाई—आलस्य, नींद तथा जँभाई—ये तीनों मनुष्य के लिए काल तुल्य है।

आलस नींद किसाने नासै, चोरे नासै खाँसी; अँखिया लीचर बेसवै नासै, बाबै नासे दासी—आलस्य और अधिक निद्रा से किसान का, खाँसी चोर का, जिसकी आँखों में कीचड़ भरा हो उस वेश्या का और दासी रखने वाले साधु का नाश हो जाता है।

आलसी का कुत्ता और मेहनती का बैल—सुस्त मनुष्य का कुत्ता तथा चुस्त मनुष्य का बैल मोटा होता है, क्योंकि सुस्त व्यक्ति भोजन करने के बाद बचा हुआ भोजन आलस्यवश दरवाज़े पर कुत्ते के पास फेंक देता है जबकि चुस्त व्यक्ति उसी भोजन को गौशाला में ले जाकर बैलों को खिला देता है। आलसी व्यक्ति की निंदा करने के लिए ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० अलसी को कुत्ता मोटो, किसाण को बल्द मोटो; पंज० आलसी दा कुत्ता मेहनती दा बलद।

आलसी की मूंछें टेढ़ी—आलसियों के प्रति व्यंग्य में कहते है। तुलनीय : गढ़० आलसी का जोंगा बांगा।

आलसी कुनबा खाट तले भीगे—आलस्य की चरम सीमा जिसके कारण उचित प्रबंध के न होने पर हानि की भी चिन्ता नहीं की जाती। परिश्रम न करके उठाई गई हानि पर कहते हैं। तुलनीय : कौर० आलसी कुनबा, खाट तले भिज्जै।

आलसी को टोपी बजनी—आलसी व्यक्ति के लिए हर काम भारी पड़ता है। यहाँ तक कि उसके सिर की टोपी भी उसे भारस्वरूप लगती है। तुलनीय : छत्तीस० आंतिहा ला धोतिया गरु; पंज० आलसी नूं टोपी भारी।

आलसी गिरे कुएँ में कहे बड़े मज़े में हूँ—बहुत बड़े आलसी के लिए कहा जाता है। आलसी बड़े-से-बड़े कष्ट में पड़ने पर भी कुछ काम करने या कष्ट उठा कर उससे छुटकारा पाने की कोशिश नहीं करते। तुलनीय : पंज० आलसी डिगे खूं बिच आखे बड़े मज़े बिच हाँ।

आलसी ग्वाला दूर गई गाय मोड़े—आलसी ग्वाला गाय जब नज़दीक होती है तब उसे नहीं मोड़ता है और जब दूर निकल जाती है तब उसके पीछे भागता है। जो व्यक्ति मूर्खतावश किसी कार्य को आरंभ में ही बिगाड़ दे और अंत में जब उसका सुधारना कठिन हो जाय तो उसे सुधारने का प्रयत्न करे उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० आलसी ग्वीर का जरजरा भौं नेड़ू नेड़ू नि जौ दुरुं-दुरुं जौं; पंज० आलसी गुआला दूर गँदी गां नूँ मोड़े।

आलसी बटोही असगुन की राह देखे—आलसी व्यक्ति आलस्यवश अपने लाभ का काम भी नहीं करना चाहते।

आलसी सदा रोगी आलसी व्यक्ति श्रम न करने के कारण शरीर का रोगी तथा आलस से पैसा न कमा सकने से मस्तिष्क का रोगी—इस प्रकार दोनों प्रकार का रोगी होता है।

आलस्य दरिद्रता की जड़ है—आलस्य मनुष्य का पतन के गर्त में ढकेल देती है। आलस्य करने वाला जीवन में कभी उन्नति नहीं कर पाता बल्कि सदा मुसीबतें ही झेलता है। तुलनीय : पंज० आलस गरीबी दी जड़ है।

आला दे निवाला—ऐ ताक़! तू मुझे रोटी का टुकड़ा दे। इस कहावत पर एक कहानी इस प्रकार है : कोई राजा एक खूबसूरत भिखारिन को देखकर उस पर मोहित हो गया और उससे शादी कर ली। धनी घर में आकर भी उसकी भीख माँगने की आदत न छूटी और वह अपने कमरे के ताक़ों में रोटी रखकर भीख माँगा करती। आशय यह है कि लाख कोशिश करने पर भी किसी की बचपन की पुरानी या संस्कार-जन्य आदतें नहीं छूटतीं। (आला=ताक़)।

आला से सुकुमार घी परसत भार—पहले तो कामकाज में अच्छी (आला) थी, पर अब प्रशंसा से बहू को ऐसा बिगाड़ दिया कि और किसी काम को कौन कहे, घी परसना भी उसे भार लगता है। तुलनीय : अव० आला ते सुकुआर भईं, घिउ परसत माँ फाँसे गईं।

आलिम वह क्या अमल न हो जिसका किताब पर—जिस पर पढ़ने का कुछ असर न हो या जो अपनी पढ़ी विद्या का जीवन में उपयोग न करे वह विद्वान ही कैसा? आशय यह है कि उसका पढ़ना बेकार है जो उसका जीवन में प्रयोग

नहीं करता।

आली हिम्मत सदा मुफ़लिस—दानवीर सदा निर्धन होते हैं।

आल्हा को क्या गाइए, सुघड़ लबाड़ चाहिए—आल्हा (एक प्रसिद्ध वीर काव्य) गाने में क्या रखा है, केवल एक अच्छा-सा गप्पी (लबाड़) चाहिए। आशय यह है कि बुद्धिमान व्यक्ति कठिन कार्य को भी अपनी बुद्धि द्वारा सरल बना देते हैं।

आल्हा गाऊँ या परमाल—आल्हा गाऊँ कि परमाल (परमाल रासो जिसमें महोबे के राजा चंदेलराज परमाल की वीरता का वर्णन है)। (क) एक व्यक्ति एक समय में एक ही काम कर सकता है। (ख) ऐसे व्यक्ति के लिए भी कहते है जिसे कई कामों की जानकारी हो। तुलनीय : पंज० आल्हा गांवा या परमाल; ब्रज० आल्हा गाऊँ कै परिमाल।

आव गया, आदर गया, गया सुपारी पान; लै लुगड़ी ठाढ़े भये, खुशी भये जजमान—कजूस की मेहमानदारी पर कहा जाता है। तुलनीय : ब्रज० आव गई आदर गयौ गयौ सुपाड़ी पान, लै लौठी ठाड़ौ भयौ, खुसी रही जिजमान।

आवत हाही जात संतोष—धन जब किसी के पास आने लगता है तो उसे 'हाही' आ जाती है, अर्थात् उसका पेट ही नहीं भरता। अधिक से अधिक धन पाने की इच्छा बढ़ती जाती है, पर जब आदमी के पास से धन जाने लगता है तो उसकी दशा उलटी हो जाती है, अर्थात् उसमें संतोष आ जाता है।

आवत ही आदर नहीं, जात न लाग्यो हस्त; ते दोनों भूखे मरें पंडित और गृहस्थ—(क) आते समय आदर नहीं और जाते समय कुछ न पाने पर पंडित लोग भूखे मरते हैं। (ख) आर्द्रा के आरंभ में और हस्त के अन्त मे यदि पानी न बरसे तो खेती नही होती, अतः गृहस्थ मरते है।

आवत ही हरषे नहीं, नैनन नहीं सनेह, तुलसी तहाँ न जाइए कंचन बरसे मेह—यदि आते ही लोग प्रसन्न न हो तथा उनकी आँखों से प्रेम न टपके तो वहाँ चाहे सोने की वर्षा क्यों न हो, कभी नही जाना चाहिए। आशय यह है कि जहाँ मनुष्य को प्रेम और सम्मान न मिले वहाँ जाना मूर्खता है।

आव भाव तेरा है जैसा मेरा आशिर्वाद है तैसा—जैसा तुम्हारा आव-भाव है उसी प्रकार मेरा आशीर्वाद भी है। आशय यह है कि जो जैसा व्यवहार करे उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए।

आवश्यकता आविष्कार की जननी है—जब किसी वस्तु की आवश्यकता होती है तभी उसकी पूर्ति करने के लिए उपाय ढूंढ़े जाते हैं। तुलनीय : पंज० जरूरत खोज नूं जन्म देंदी है; अं० Necerssity is the mother of invention.

आवाजाही गाजीपुर चूड़ावही हाजीपुर—आना-जाना तो कहीं किंतु खाना कहीं और। किसी के अत्यंत व्यस्त जीवन को लक्ष्य करके ऐसा कहते हैं।

आवाजे-सगाँ कम न कुनद रिज़्क़े-गदा रा—कुत्तों के भौंकने से भिखारी की रोटी कम नही होती। विरोधियों या शत्रुओं के विरोध से जिसका जो प्राप्तव्य है वह समाप्त नहीं हो जाता। जब किसी की शत्रुता के बावजूद दूसरे को अपने काम में वांछित सफलता न मिले तब ऐसा कहते हैं।

आवारा यार करे न कार—आवारा व्यक्ति कोई काम नहीं करते। जो व्यक्ति दिन-भर मारा-मारा फिरे वह किसी काम के योग्य नहीं समझा जाता। तुलनीय : भीली—फोट्यो है-हूं का नो; पंज० वैला यार करे न कम।

आवे का आवा ही बिगड़ा / खराब है—जब किसी परिवार या गाँव के सभी व्यक्ति एक से बढ़कर एक दुष्ट हो तो वहाँ व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय: पंज० आवा दा आवा ऊन गया है; ब्रज० अभा कौ अभा ई खराबै।

आवे जो गावे, भावे सो खावे—शक्ति के अनुसार या जितना आता रहे गाना चाहिए और रुचि के अनुसार खाना चाहिए। तुलनीय : पंज० आवे ओ गावो, चंगा लगे ओ खावो; ब्रज० आवै सो गावै, भावै सो खावै।

आवे न जावे, चतुर कहावे—(क) जब कोई व्यक्ति किसी काम के संबंध में बहुत कम या कुछ भी न जानता हो, फिर भी वह थोड़ा-बहुत करके नाम कमाना या चतुर कहलाना चाहे तो उसके प्रति ऐसा कहते है। (ख) कोई व्यक्ति यदि कोई काम करे किंतु अन्य लोगों को वह कार्य संतोषजनक न लगे तो भी वे इसका प्रयोग कर उसके प्रति व्यंग्य करते हैं। तुलनीय : पंज० आए न जाए चतर कहाए; अव० आवै न जाय मोरी नउना लिखल्या।

आवे न जावे, बृहस्पति कहावे—आता-जाता कुछ नही और समझते है अपने को बृहस्पति के समान बुद्धिमान। जो व्यक्ति मूर्ख होते हुए भी अपने को बहुत विद्वान समझे उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

आवे सो गा, भावे सो खा—दे० 'आवे जो गावे ⋯'।

आवै न जावै बच्चे की बूआ—कोई मनुष्य जब जबरदस्ती किसी विषय में अपनी टाँग अड़ाए तब कहते है। तुलनीय : ब्रज० गिनू न गूंठ मैं दुल्हा की भूआ; बुंद० कोऊ गिनें न गूंथे, मैं लालन की बूआ; राज० आवै न जावै हूँ

लाडैरी भूवा; पंज० आया न गया बच्चे दी बुआ।

आशनाइ-ए-मुल्ला ता सबक़—मुल्ला (शिक्षक) की दोस्ती सबक़ तक ही सीमित है। स्वार्थी लोगों के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

आशा का मरे निराशा का जिए—आशा में रहने वाला आशा पूरी होने पर कष्ट पाता है परंतु निराशा में रहने वाले को वह कष्ट नही उठाना पड़ता वह असफलता और दु:ख झेलने का आदी हो जाता है। तुलनीय : पंज० आशा दा मरे निरासा दा जीवे।

आशा की बेल पहाड़ चढ़ती है—आशा में बड़ी शक्ति है। आशावान व्यक्ति बड़े से बड़ा कार्य संपन्न कर लेते हैं। तुलनीय : बुद० आसा की बेल पहाड़े चढ़त; पंज० आस दी बेल पहाड़ उत्ते चढ़ दी है।

आशा / उम्मीद पर दुनिया क़ायम है—भविष्य की आशा पर ही प्रत्येक व्यक्ति वर्तमान की कठिनाइयों को झेलता है। तुलनीय: राज० आसा ही आसा में मिनख जीवै; पंज० आसा उत्ते दुनियां टिकी है।

आशा में मरे, निराशा में जिए— दे० 'आशा का मरे······'।

आशामोदक तृप्तन्याय—काल्पनिक मोदकों (लड्डुओं) से संतुष्ट होने का न्याय। तात्पर्य यह है कि बहुत से आदमी ऐसे देखे जाते हैं जो विविध कल्पनाएँ करके सुख का अनुभव करते है, पर उन्हें सफलता नही मिलती। वे अहर्निश आशा के दास बन कर ही आत्मतृप्ति कर लेते हैं।

आशा से ही आकाश टँगा है— दे० 'आशा पर दुनिया क़ायम है।'

आशिक़ का ख़ुदा माशूक़—(क) प्रेम करने वाले की सहायता ईश्वर करते हैं। (ख) कुछ मनुष्य ईश्वर से भी उसी तरह प्रेम करते है जिस तरह अपनी प्रेयसी से। अर्थात् बहुत अधिक प्रेम करते है।

आशिक़ की दुनिया दुश्मन—प्रेमियों के बहुत अधिक दुश्मन होते हैं। अर्थात् आशिक़ों से प्राय: लोग दूर रहना पसंद करते हैं।

आशिक़ की दोस्ती, जूतों से भेंट—किसी आशिक़ से मित्रता करने पर उसके साथ जूते भी खाने पड़ते हैं। आशय यह है कि बुरे व्यक्ति की संगति हानिकारक होती है। तुलनीय : पंज० आशिक दी दोसती जूती दा हार।

आशिक़ की मंजिल बहुत दूर—प्रेमियों को अपने काम में सफलता पाने के लिए काफ़ी मुसीबतें झेलनी पड़ती है। तुलनीय : पंज० आशिक दी मंजल बड़ी दूर।

आशिक़ की मिट्टी पलीत—प्रेमियों की बड़ी दुर्दशा होती है। तुलनीय : पंज० आशिक दी मिट्टी पलीत।

आशिक़ की राह काँटों-भरी—प्रेमियों की राह में समाज बहुत रुकावटें पैदा करता है। प्रेम का मार्ग बड़ा जटिल होता है।

आशिक़ को ख़ुदा ज़र दे, नहीं कर दे मर्ज़ी के परवे—प्रेमी (उदार) को या तो ईश्वर ख़ूब दौलत दे या फिर मौत दे दे। इसके विपरीत होने से उसे कष्ट होता है और वह इच्छानुसार संसार की सेवा नहीं कर पाता।

आशिक़ वही जो मौत से न डरे—सच्चा प्रेमी वही कहलाता है जो प्राण की बाज़ी लगाने में भी संकोच नहीं करता।

आशिक़ हुलिए से पहचाना जाय—देखने से ही प्रेमी पहचान में आ जाते हैं। तुलनीय : पंज० आशिक सकलों पछानया जांदा है।

आशिक़ी और मामा जी का डर—दो उलटे काम एक साथ नही हो सकते। तुलनीय: हरि० जब उखल मं सर दिया त मुसल त के डर; पंज० आशिकी अते मामे दा डर।

आशिक़ी ख़ाली जेब नहीं होती—(क) इश्क़ करने के लिए धन की आवश्यकता होती है। (ख) जब कोई निर्धन व्यक्ति भी इश्क़ के मार्ग पर आता है और उसे सफलता नहीं मिलती तो उसके प्रति भी व्यंग्य में लोग ऐसा कहते हैं। तुलनीय :

आश्विन की मेह बेर कपास की खेह—आश्विन (क्वार) में वर्षा होने से बेर और कपास की फ़सल नष्ट हो जाती है। तुलनीय : राज० आसोजाँ रा मेहड़ा दोय बात बिनास, बोरड़िया बोर नहिं बिणयाँ नही कपास।

आषाढ़ मास आठें अंधियारी जो निकले चंदा जलधारी; चंदा निकले बादल फोड़, साढ़े तीन मास बरखा का जोग—आषाढ़ के कृष्ण पक्ष अष्टमी को यदि चंद्रमा बादलों के बीच से निकले तो समझना चाहिए कि साढ़े तीन महीने तक पानी बरसने का योग है।

आषाढ़ वातेचलति द्विपेन्द्रे चक्रीवतोवारिधिरेव काष्टाः—आशय यह है कि वायु के जिस प्रखर प्रवाह को हाथी नहीं सहन कर सकता, उस वेग का सामना करना गधे के लिए बहुत कठिन है।

आसकती गिरा कुएँ में, कहा यहीं चैन है—दे० 'आलसी गिरे कुएँ में······'।

आस का नाम दुनिया है—दे० 'आस पर दुनिया···'।

आस की बेल पहाड़ चढ़ती है—दे० 'आशा की बेल···'।

आसन था धर्मराज का विराज गए यमराज—जब किसी दुष्ट प्रकृति के व्यक्ति को कोई बड़ा पद मिल जाता है तो उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : पंज० आसन सी धरम राज दा बैठ गये यमराज दा; ब्रज० आसन धरमराज कौ बैठि गयौ जमराज।

आसन मारे क्या भया, मुई न मन की आस—यदि मन की वासनाएँ नहीं बुझीं तो आसन पर बैठने से कोई लाभ नहीं होता। यह आज के योगियों पर व्यंग्य है।

आस पराई जो तके, वह जीवत मर जाय—दूसरे के भरोसे की प्रतीक्षा करना मरने के बराबर है, क्योंकि दूसरे की सहायता कोई नहीं करता। तुलनीय : पंज० दूजे दी आस ते जीण वाला जींदा मर जांदा है; ब्रज० आस पराई जो करै, जीमत ई मर जाय।

आस पास बरसे, दिल्ली पड़ी तरसे—जिसे आवश्यकता हो उसे न मिलकर दूसरों को कोई चीज़ मिले तब ऐसा कहते है।

आस पास रबी बीच में ख़रीफ़, नोन मिर्च डाल के खा गया हरीफ़—ख़रीफ़ की फ़सल के चारों ओर रबी की फ़सल बोने से उपज बहुत कम होती है। (हरीफ़—प्रतिद्वन्द्वी)।

आस बाणी, भाग बाणी—भाग्यवानों के यहाँ ही आश्विन में वर्षा होती है। आशय यह है कि आश्विन में वर्षा बहुत कम होती है और जहाँ होती है वहाँ फ़सलें बहुत अच्छी होती हे।

आस बिगानी जो तके वह जीवित ही मर जाए—नीचे देखिए।

आस बिरानी जो करे, होते ही मर जाय—दूसरे की आशा पर निर्भर रहने वाला बेमौत मरता है। अर्थात् दूसरों के बल पर रहने से आदमी को कभी सफलता नहीं मिलती।

आसमान का थूका मुंह पर आता है—बड़ों की निंदा करने से अपनी ही निंदा होती है। उनका कुछ नहीं बिगड़ता। तुलनीय : अव० आसमाने कै थूंका मुंहे पर गिरी; हरि० आकाश का थूक्या मुँह प पड्या कर स; सि० उभ में थुक उछलाय सो मुँह में पाए; मल० काट्टारियाते तुप्पियाल् चेविटरियाते अटि कोळ्ळुम्; अं० Who spits against the wind spits in his own face

आसमान की चील, ज़मीन की असील—आसमान में चील पक्षी और ज़मीन में ख़रीदी हुई नौकरानी दोनों ही बराबर हैं।

आसमान ज़मीन के क़ुलाबे मिलाते हैं—जब कोई किसी बात का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन करता है या करने को सोचता है तब कहते हैं।

आसमान ने डाला धरती ने झेला—(क) ऐसे आदमी या बालक पर कहते हैं जिसकी खोज-ख़बर लेने वाला कोई न हो। (ख) नालायक़ या दुष्ट आदमी के लिए भी कहते हैं। तुलनीय : हरि० राम जी ने गेर दिया धरती ने ओट लिया; ब्रज० अम्बर नें डार्‌यौ, धरती नें झेल्यौ।

आसमान फटे तो कहाँ तक थिगली लगे—(क) कोई बड़ा काम बिगड़ता है तो उसका सुधार संभव नहीं होता। (ख) थोड़ा बिगड़ा काम सुधर जाता है, पर अधिक बिगड़ा नहीं। तुलनीय : पंज० असमान फट्टे तां टाकी कियों तक लग सकदी है।

आसमान फटे तो कहाँ तक पैबंद लगे—ऊपर देखिए।

आसमान फटे तो दर्ज़ी कहाँ तक सीवे—दे० 'आसमान फटे तो कहाँ······'।

आसमान में सूराख़ कर दिया—(क) असंभव कार्य हो जाने पर कहते हैं। (ख) जब कोई व्यक्ति साधारण काम करके ज्यादा डींग मारे तो उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते है। तुलनीय : पंज० आसमान बिच मोर कर दिता।

आसमान से गिरा खजूर में अटका—(क) किसी मिलती हुई चीज़ में अन्त में कोई छोटी-सी बाधा पड़ जाने पर कहा जाता है। (ख) बड़े लोगों से तो कोई चीज़ मिल जाय पर बीच में छोटे-मोटे बाबू दबा बैठें तो भी कहते हैं। तुलनीय : माल० आकाश ती पड्यो ने खजूर में अटक्यो; गढ़० मुंड की कांधी मां ऐगे; राज० अकास सूँ पड़ी तो खजूर में अटकी; अव० ताड़ से गिरा खजूरे में अटकिगा; भोजा०—अलमांथी नीकणी चूलमां पड्या; पंज० आसमान ते डिगया खजूर बिच अड़या; ब्रज० आकास ते गिर्‌यौ और खिजूरि में अटकि गयौ।

आसमान से गिरा धरती ने झेला नहीं—जब कोई बहुत बड़ी विपत्ति में फँस जाता है तो कहते हैं। तुलनीय : राज०आकास सूँ पडी, धरती झाली कोनी।

आसमान ही टूट पड़े तो कहाँ तक सँभाला जाय—जब कोई काम बहुत अधिक बिगड़ जाता है तो उसे सुधारना बड़ा मुश्किल हो जाता है।

आसमानी गिर परे, शरमीला भूखा मरे—आसमान की तरफ देखते हुए चलने वाला ठोकर खाता है तथा भोजन करने में शरमाने वाला भूखा ही मरता है। (क) घमंडी व्यक्तियों का घमंड टूटने पर ऐसा कहते हैं। (ख) कोई

व्यक्ति अपनी गलती या लापरवाही से हानि उठाए तो उसके प्रति भी कहते हैं। (ग) जब कोई व्यक्ति व्यर्थ संकोच में अपनी हानि करा लेता है तो उसके प्रति भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० आसमान्यूँ लोटि पड़, बड़गान्यूँ भूख मर।

आसाढ़ की धूप से जोगी बन गया—आषाढ़ की धूप से डर कर खेती का काम छोड़ कर साधु बन गया। आशय यह है कि आषाढ़ में धूप बहुत कड़ी होती है। तुलनीय : राज० आसोजाँरा तावड़ा जोगी हुग्या जाट; पंज० हाड़ दी धुप नाल जोगी बन गया।

आसाढ़ में खाद खेत में जावे, तब मुट्ठी भर दाना पावे—आषाढ़ में खेत में खाद डालने से फ़सल अच्छी होती है। तुलनीय : मरा० आषाढांत खत पडे शेती, तेव्हाँ मूठभर दाणे येतील हाती।

आसाढ़ सूखा न सावन हरा—सदा एक जैसा रहने वाले पर कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० असाढ़ सूख्यौ न सावन हर्यौ।

आसाढ़ी पूनो दिना बादर भीनो चंद सो भड्डरी जोसी कहें सकल नरां अनंद—आषाढ़ की पूर्णिमा को यदि चाद बादलों में छिपा रहे तो भड्डरी के अनुसार वर्षा अधिक होती है और सभी मनुष्य प्रसन्न रहते हैं।

आसाढ़े धुर अष्टमी चंद उगतो जोय, कालो वै तो करवरो धोलो वै तो सुगाल; जे चंदो निर्मल हवै तो पड़े अचित्याकाल—आषाढ़ की अष्टमी को चाँद उगते समय यदि काले रंग के बादलों में है तो समय साधारण, सफ़ेद रंग के बादलों में है तो अच्छा और यदि बादल न हों तो समय बुरा रहता है। अकाल की भी संभावना रहती है।

आसाढ़ै सुद नवमी नै बादल नै बीज, हल फाड़ो इंधन करो बैठा चाबो बीज—आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की नवमी को यदि बादल न हों और न ही बिजली चमके तो वर्षा नहीं होती जिससे खेती भी नहीं होती। इसलिए हल को जलाने तथा बीज के अन्न को खाने के काम में लाया जा सकता है। अर्थात् फ़सल नहीं होती है और काफी बुरा समय आने की संभावना होती है।

आसिन के टूटे मरद चइत के टूटे बरध ना सहुरे—आश्विन महीने में जो व्यक्ति कमजोर हो जाते है, वे जल्दी स्वस्थ नहीं होते तथा चैत महीने में दाँय चलने के कारण दुबले हुए बैल भी जल्दी स्वस्थ नहीं होते।

आस्तीन का साँप—घर का वैरी या छिपा हुआ शत्रु।

आश्विन बदी अमावसी जो आवे सनिवार, समयो होवे किरगरो जोसी करो विचार—आश्विन की अमावस्या को यदि शनिवार पड़े तो समय साधारण होगा। अर्थात् न तो बहुत बुरा होगा और न बहुत अच्छा होगा।

आह-ए-मरदां न ऊह-ए-जनां—कायर या डरपोक मनुष्य को कहते हैं जो न मर्दों की तरह 'आह' कहता है और न औरतों-सी 'ऊह'।

आहार चूके वह गये, व्यवहार चूके वह गए; दरबार चूके वह गए, ससुरार चूके वह गए—इन चारों के संबंध में चूकना भूल है। एक बार चूकने पर इनको सँवारना कठिन हो जाता है। तुलनीय : ब्रज० आहार चूकै सो गयौ, ब्यौहार चूकै सो गयौ।

आहार व्यवहार में लज्जा क्या ?—भोजन और लेन-देन में शर्म नहीं करनी चाहिए। तुलनीय। मल० आहारात्तिलुम् पेरुमाट्टप्तिलुम् लज्जयो ? तेलु० आहार मन्दु व्यवहार मन्दुसिग्गु पडकूडदु; गढ़० अहारे व्योहारे लज्जा न कारे; राज० अहारे व्योहारे लज्जा न कारे; मरा० आहारांत नि व्यवहारांत संकोच करूं नये; सं० आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्ज: सुखी भवेत्; अं० Fair exchange is no robbery.

आहारे व्यवहारे लज्जा न कारे—ऊपर देखिए। तुलनीय : पंज० खाणपीण बिच सरम कादी; ब्रज० आहार और ब्यौहार में कहा सरम।

आहार मारे या भार मारे—अच्छा भोजन न मिलने या अधिक परिश्रम करने से स्वास्थ्य खराब हो जाता है। तुलनीय : राज०आहार मारै का भार मारै; पंज० पुख मारे या कम मारे।

इ

इंचा खिंचा वह फिरे, जो परराये बीच में पड़े—दूसरों के या दूसरों के झगड़े के बीच में पड़ने वाला बहुत परेशान होता है। तुलनीय : हरि० दोआं कै विचाळै पड़ै खिच्या-खिच्या फिरै।

इंजन को भी कोयला-पानी चाहिए—बेजान चीजें बिना कुछ लिए-दिए काम नहीं करतीं। अर्थात किसी व्यक्ति से कुछ काम कराने के लिए कुछ लेना-देना आवश्यक है। तुलनीय : पंज० इंजन नूं वी कोला पाणी चाइदा; ब्रज० अंजन ऊ तौ क्यौला, पानी ते चलै।

इंदर राजा गरजा मोरा जीया लरजा—बनियों का कहना है जो लाभ के लिए बहुत अन्न जमा करके रखते हैं। बादल गरजने से उनको भय होता है कि वर्षा होगी

तो अनाज का दाम गिर जायेगा।

इंदरायन का फल देखने का है चखने का नहीं—जिसका बाहरी रूप अच्छा किन्तु जो अंदर से खराब हो उसके प्रति कहते है। सूरत से अच्छे परन्तु दिल से कुटिल व्यक्तियो के लिए भी कहते है।

इंद्र का बरसा, माँ का परसा –वर्षा होने से खेती की और माता के हाथ का परोसा हुआ भोजन पाने से ही संतान की तृप्ति होती है।

इंद्र की टीका बिडोजा—एक छात्र ने गुरु से इंद्र का अर्थ पूछा तो उन्होने 'बिडोजा' बताया। जब कोई व्यक्ति किसी शब्द या अर्थ और भी कठिन बताता है तो उसके प्रति व्यग्य मे कहते है।

इंद्र नहीं मघवा – एक ही बात। चाहे वह कहो या यह।

इक अहसान और इक नुक़सान—(क) उस व्यक्ति के प्रति कहते है जो एक ओर तो कुछ फायदा करे और दूसरी ओर कुछ हानि पहुँचा दे। (ख) यदि किसी से किसी वस्तु के बदले मे कोई वस्तु ली जाय और दोनो वस्तुओ की ही आवश्यकता हो तब भी ऐसा कहते है। (ग) किसी व्यक्ति से कोई वस्तु माँगकर ली जाय और उससे लाभ की जगह हानि हो तब भी ऐसा कहते है। तुलनीय गढ० एक आसान और एक नुकसान, पज० इक अहसान अते इक नुकसान।

इक कंचन इक कुचन पे को न पसारे हाथ— धन और स्त्री किसे आकर्षित नही करते ? या इन दोनो की प्राप्ति के लिए कौन प्रयास नही करता ? अर्थात् इन दोनो को पाने की इच्छा या पाने का प्रयास सभी करते है।

इक चुप्प सौ सुख- चुप रहने से अपार सुख मिलता। अर्थात् शान्त प्रकृति के व्यक्ति सदा सुखी रहते है।

इक ते इक बई के लाल—एक से एक पुरुष-रत्न इस रती पर पडे है। तुलनीय मरा० एकापरीस एक भाग्याचे र; पज० इक तो इक माई दे लाल, ब्रज० एक ते एक ही माई को लाल पर्यौ है।

इक तो नागिन दूजे पंख लगाए—एक तो वैसे ही नागिन दूसरे उडनेवाली। जब किसी दुष्ट व्यक्ति के पास कोई असाधारण शक्ति आ जाय तो कहते है। तुलनीय : ० इकले नागन दूजे पख लाये दे।

इक तो बुढ़िया नाचनी दूजे घर भा नाती—बुढ़िया तो पहले से ही नाचने वाली थी, इस पर जब उसके घर नाती (पुत्री का पुत्र) हुआ तो फिर भला वह नाचने से बाज आती। (क) खुशी पर खुशी होने पर यह उक्ति कही जाती है। (ख) किसी काम को करने के लिए जब दो-दो कारण उपस्थित हो जायँ तब भी इसका प्रयोग करते है। तुलनीय ब्रज० एक तो डोकरी नाचनी हती, नाती और है गयौ।

इक दूबर अरु दो अषाढ़— एक तो ऊँट दुबला दूसरे दो आषाढ। कहा जाता है कि ऊँट को बरसात मे बहुत कष्ट होता है। किसी निर्धन व्यक्ति पर जब कोई बड़ी आफ़त आ जाती है तो ऐसा कहते है। तुलनीय : ब्रज० एक तो लटी और दो असाढ।

इक नागिन अरु पंख लगाई —दे० 'इक तो नागिन···'।

इक़रारे-जुर्म इसलाहे-जुर्म –अपराध स्वीकार कर लेने पर अपराधी का सुधार हो जाता है।

इक लख पूत सवा लख नाती, ते रावण घर दिया न बाती इतने बडे परिवार वाले रावण के घर मे कोई चिराग जलानेवाला भी नही रह गया। आशय यह है कि (क) गर्व करने वाले का सर्वस्व नष्ट हो जाता है। (ख) बडे परिवार पर गर्व करने वालो के प्रति भी ऐसा कहते है। तुलनीय अव० इक लख पूत सवा लाख नाती, रावन के घर दिया न बाती, राज० इक लख पूत सवा लाख नाती, ज्याँ रावण घर दिया न बाती, माल० एक लाख पूत सवा लाख नाती, रावण रे घरे दीवो न बाती, ब्रज० इक लख पूत सवा लख नाती, रामन के घर दियौ न बाती।

इक्का चढ़ के जाय, पैसे देकर धक्का खाय– इक्के पर चढ़कर जाने से झटके लगते है और परेशानी उठानी पडती है। इक्के की सवारी अच्छी नही होती। तुलनीय : अव० एक्का चढि कै जाय, पैसा दै कै धक्का खाय, पज० गड्डे उत्ते चड के जावे पैहे दे के धक्का खाये।

इक्का ते दुक्का भलो, तिक्का करे बिगार दो आदमियो तक बात गुप्त रहती है पर तीसरे के जानते ही सारा भेद खुल जाता है। तुलनीय . पज० इक ते दो पले तीजा करे बिगाड, ब्रज० इकले ते दुकिलौ भलौ।

इक्का, वकील, गधा, पटना शहर में सधा ये तीनो चीज़े पटना मे बहुत है।

इक्के चढ़कर जहाँ जाय, पैसे दे के धक्के खाय —दे० 'इक्का चढ के जाय···'।

इज़ारबंद की ढीली -दुश्चरित्र स्त्री के प्रति कहते है।

इजारा उजारा— ज़मीदार की ज़मीन जोत पर लेने से किसान बर्बाद हो जाता है।

इज्ज़त की आधी भली, बेइज्ज़त की सारी बुरी—सम्मान से प्राप्त थोड़ी चीज़ ही अपमान से मिली अधिक चीज़ से अच्छी होती है।

इज्जत के आगे माल क्या चीज है ?- प्रतिष्ठा के सामने धन कुछ नही। तुलनीय : पंज० इज्ज़त अग्गे पैहेदा सुल नई हुंदा।

इज्जत रखोगे, इज्जत मिलेगी—जो दूसरों का सम्मान करता है, उसे दूसरे भी सम्मान देते हैं। तुलनीय : छत्तीस० राख पत त रखा पत' पंज० इज्ज़त करोगे इज्ज़त मिलेगी।

इज्जत वाले की कमबख्ती है—क्योंकि उसे अनेक खर्चे या झंझट लगे रहते हैं।

इज्जत से आदमी बेइज्जती से पशु -जिस व्यक्ति की समाज में प्रतिष्ठा होती है, वही मनुष्य समझा जाता है और जिसकी समाज में कोई प्रतिष्ठा नही होती है वह पशु तुल्य होता है। तुलनीय : भीली--ईज़त नू मनख वगर ईज़त ढांढ़; पंज० इज्जत तो बंदा बेजत तो डंगर।

इज्जत से दिया पान भी बहुत—आदर से मिला पान भी बहुत समझना चाहिए। आशय यह है कि सम्मान से मिली थोड़ी चीज़ ही काफ़ी होती है। तुलनीय : पंज० इज्जत दा पान वी बड़ा।

इतना झूठ बोले जितना आटे में नोन--झूठ उतना ही बोलना चाहिए जितना खप सके। अर्थात् बहुत कम झूठ बोलना चाहिए। अधिक झूठ छिपता नही। तुलनीय : मरा० खोटें किती बोलावे, जितकें कणकेंत मीठ; पंज० चूठ इन्ना बोलो जिन्ना आटे विच लूण, ब्रज० इतनों झूठ बोलौ जितनों आटे में नौन।

इतना नफ़ा खाओ जितना आटे में नोन—नफ़ा बहुत अधिक नही कमाना चाहिए। यह व्यापार का गुर है। तुलनीय : अव० एतना नफ़ा खा जइसेन दाली मां नोन; मरा० लाभ किती घ्यावा, जितकें कणकेंत मीठ; हरि० आटे म नून त निभजा, पंज० इन्ना नफ़ा खाओ जिन्ना आटे विच लूण; ब्रज० इतनों नफ़ा खाओ जितनों आटे मे नौन।

इतना पका कि बासी थका—नीचे देखिए।

इतना पक्का कि बासी टिक्का- इतना भोजन बना कि बासी बच रहा। (क) ऐसी फूहड़ औरतों के प्रति कहते हैं जिन्हें अपने परिवार के लिए भोजन बनाने का भी अंदाज नहीं रहता कि कितना बनावे जिससे बेकार न हो या बासी बचे। (ख) बात इतनी बढ़ जाए कि झगड़ा होने लगे तब भी कहते हैं।

इतना भरा कि छलक गया—(क) इतनी घूस ली कि उसे छिपाना दूभर हो गया। (ख) इतना मज़ाक किया जो असह्य हो गया। (ग) इतना नफ़ा कमाया कि बदनामी हो गई।

इतना सोना क्यों पहने जिससे कान टूटे—इतने अधिक सोने के आभूषण नहीं पहनने चाहिए जिससे कान टूट जाय। आशय यह है कि अच्छी वस्तुओं को भी आवश्यकता से अधिक नही खाना-पहनना चाहिए वरना वे लाभ की जगह हानि पहुँचाने लगती हैं। तुलनीय : गुज० एवुं सोनुं शुं पहरीये के कान तूटे ? पंज० इन्ना सोणा न पाओ की कन टुटण।

इतनी अक्ल भी अजीरन होती है—बुद्धि की अति भी कभी-कभी हानि का कारण बन जाती है। अधिक होशियारी से भी काम बिगड़ जाता है।

इतनी तो कमाई नहीं जितने का लहँगा फट गया—जब किसी काम में लाभ से अधिक हानि हो तो ऐसा कहते हैं। तुलनीय : हरि० इतणो की तै कमाई भी नाह् थी जितणो की घागरी पाटगी; पंज० इन्ने दी ते कमायी वी नई जिन्ने दा लहंगा फट गया।

इतनी तो राई होगी जो रायते में पड़े—अपने काम के लिए तो हमारे पास सामान काफ़ी है। किसी चीज़ के बारे में कोई पूछे और यह कहना हो कि काम के लिए काफ़ी है तो यह लोकोक्ति कही जाती है।

इतनी-सी जान, गज भर की जबान—जब कोई लड़का बड़ों के सामने बढ़-चढ़कर बातें करता है, प्राय: तब कहते हैं। तुलनीय : तेलु० पिट्ट कोंचमु कूत धनमु; मरा० इवलासा जीव नि दोन हात जीभ; पंज० निक्की जिहीजाण गज लम्मी जबान।

इतने का प्रसाद नहीं मिला, जितने के मजीरे फूट गए-- जितना लाभ नहीं हुआ उससे अधिक की हानि हो गई।

इतने की कमाई नहीं, जितने का लहँगा फट गया—दे० 'इतनी तो कमाई नहीं ...'।

इतने की बुढ़िया नहीं जितने का लहँगा फट गया—दे० 'इतनी तो कमाई नहीं ...'।

इतने साल दिल्ली में रहकर भाड़ ही झोंका—जो व्यक्ति किसी अच्छे स्थान पर रहकर या अच्छे व्यक्ति की संगति में रहकर भी कुछ ज्ञान न प्राप्त कर सके उसके प्रति व्यंग्य से ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० इत्ता बरस दिल्ली में रह र भाड़ ही भूँजी; पंज० इन्ने साल दिल्ली विच रह के पट्ठी वाली; ब्रज० इतने दिनां दिल्ली में रहे, भार भूंज्यौ और खायौ।

इतवार करै धनवंतरि होय, सोम करै सेवा फल होय; बुध बिहफै सुक्रै भरै बखार, सनि मंगर बीज न आवै द्वार--यदि किसान खेती के कार्य को रविवार को प्रारंभ करता है तो धनवान होता है, सोमवार को आरंभ करता है तो सेवा

फल अर्थात् परिश्रम का फल मात्र मिलता है, बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार को आरंभ करता है तो बहुत अन्न पैदा होता है। परन्तु यदि शनिवार और मंगलवार को प्रारंभ करता है तो बीज तक भी घर नहीं आता अर्थात् कुछ भी पैदा नहीं होता।

इतवार तब जानिए, जब हट्टी लीपें बानिए—पंजाब आदि में रविवार को वे बनिए अपनी दुकानें लीपते है जिनकी दुकानें कच्ची होती हैं। आशय यह है कि जिस दिन जो काम सर्वदा से होता आ रहा हो, उस दिन का अनुमान उस काम के होने से लगाया जा सकता है। इस प्रकार और बातो मे भी परंपरा के आधार पर अनुमान लगाने के संबंध में इसका प्रयोग करते हैं। तुलनीय : पंज० इतवार अदों समझों जदों बनिए हट्टी लिपण; ब्रज० ऐंतबार तब जानों जब बनिया लीपे हाट।

इतो व्याघ्रः ततस्तटी - इधर बाघ और उधर करारा पर्वत की चट्टान। जब आदमी किसी महान संकट में फँस जाता है तथा जब उससे बचने का कोई उपाय नज़र नही आता है तो ऐसा कहता है। तुलनीय : अं० Between the devil and the deep sea; Between scylla and charybdis.

इतो व्याघ्रः ततो नदी—ऊपर देखिए।

इत्तफ़ाक़ बड़ी चीज है—एकता में ही बल है। तुलनीय : पंज० एकता बिच जोर है!

इत्तफ़ाक़ ही में क़ुव्वत है—ऊपर देखिए।

इत्तफ़ाक़ी में क़ुव्वत है—ऊपर देखिए।

इत्तिफ़ाक़ बड़ी चीज है—एकता का बड़ा महत्त्व है। उसके कारण असंभव भी संभव और संभव भी असंभव हो जाता है।

इधर-उधर क्या देखे यार, इसमें गया माघ का फार—हे मित्र! इधर-उधर क्या देखते हो, इस खेत में माघ महीने में फार गया है अर्थात् माघ में यह खेत जोता गया है। आशय यह है कि माघ महीने में खेत की जुताई करने से उसमें फ़सल अच्छी होती है। तुलनीय : मैथ० इन्ने उन्ने की देखै छ यार ऐ में गेल छै माधक फार; एन्नी-ओन्नी का देखत बाड़ यार एम्मे माघ में गइल ह फार।

इधर का घाटा उधर गया—एक काम की हानि दूसरे काम से पूरी हो जाती है। कर्मठ व्यक्ति हिम्मत नहीं हारते बल्कि अपनी हानि को किसी-न-किसी तरह पूरा कर लेते हैं। तुलनीय : राज० ईनलो घाटो ऊँनै गयो; पंज० इदर दा काटा उदर गया।

इधर काटा उधर पलट गया—सर्प की तरह चालाक और धोखेबाज़ आदमी के प्रति कहते हैं।

इधर क़िबला उधर क़ुतब औ ख़वीजा सोवे किधर—दोनों ही तरह मुश्किल हो और किसी भी तरह गुज़ारा न हो, या किसी भी सूरत से अपना काम बनाने की गुंजाइश न हो तो कहते हैं।

इधर की उधर, उधर की इधर नहीं करनी चाहिए—किसी की चुग़ली नही करनी चाहिए। इससे दोनों का अहित होता है। अर्थात् जो किसी की चुग़ली करता है उसका तो नुकसान होता ही है, साथ-ही-साथ वह अपनी प्रतिष्ठा भी खो देता है। चुग़लखोरों के प्रति शिक्षार्थ ऐसा कहा जाता है। तुलनीय : भीली --कणानी हाँची झूठी ने करवी, कणांक नु गेर नेंकली जाट्टै; पंज० इदर दी उदर उदर दी इदर नईं करनी चाइदी; ब्रज० इनकी बितकूँ करनो बुरौ।

इधर की छाया उधर जाती है--सूर्य के साथ-साथ छाया भी दिशा बदलती रहती है। आशय यह है कि समय बदलता रहता है, मनुष्य को सदा न तो कष्ट ही मिलता है और न सदा सुख ही मिलता है। तुलनीय : राज० ईनली छियाँ ऊँनै आयां सरै; पंज० इदर दी छां उदर जांदी है।

इधर कुआँ उधर खाई--दे० 'इतो व्याघ्रः ततस्तटी।' तुलनीय : गढ़० पूंडी वल्या भेल जाँदी नी बचदी, पल्या भेल जांदी नी बचदी; राज० इणगी कुवो उणगी खाड, गत कठैही कोनी; भोज० एने जाईं तऽ कुआँ ओने जाईं तऽ खाईं; पंज० इदर खूं उदर खड्ड; ब्रज० इत कूआ बित खाई; अं० Between scylla and charybdis.

इधर के बराती न उधर के घराती--न तो वर पक्ष के साथ हैं और न कन्या पक्ष के साथ। (क) जिस व्यक्ति की कहीं पर भी पूछ न हो उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। (ख) तटस्थ व्यक्ति के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : अं० Neither fish, flesh nor fowl.

इधर के रहे न उधर के--जब कोई दोनों तरफ से जाय तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० नां इदर दे रहे न उदर दे; ब्रज० इतके रहे न बितके रहे।

इधर खाई उधर कुआँ—जब कोई हर तरफ़ से परेशानियों से घिर जाता है और उनसे मुक्ति पाने का कोई उपाय नहीं दिखता है तो उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : असमी --तले गो वध्, ओपरे ब्रह्म वध्; ब्रज० इत खाई, बित कूआ।

इधर खाई उधर खंदक—ऊपर देखिए।

इधर गला काटा और उधर प्राण निकले—गला

काटते ही प्राण निकल जाता है। जब किसी कार्य के सफल होने में कोई संदेह न हो तो विश्वास दिलाने के लिए ऐसा कहते हैं। तुलनीय : वाड़्यो गलो ने फीटो हा; पंज० इदर गला बडया उदर जाण निकली।

इरध गिरूँ तो कुआँ उधर गिरूँ तो खाईं दोनों ही ओर से मुश्किल मे पड़ने और किसी तरह उद्धार दिखाई न देने पर कहा जाता है।

इधर न उधर यह बला किधर -(क) जब कोई ऐसी परीशानी आ जाय जिससे किसी भी तरह से छुटकारा न मिले तब भी कहते है।

इधर पुकारा और उधर भूत बोला – पुकारने पर भूत तुरंत उत्तर देता है। जब किसी को पुकारा जाय और वह तुरंत बोल पड़े या उपस्थित हो जाय तो उसके प्रति परिहास मे कहते है। तुलनीय : राज० बकार्‌यो भूत बोले; अं० Talk of the Devil and he is bound to appear.

इधर बाघ उधर नदी-- दे० 'इतो व्याघ्र: ततस्तटी'।

इधर भ्रष्ट उधर नष्ट— दोनों ओर गड़बड़। जब दोनों ओर से काम न बने तो कहा जाता है। तुलनीय : सं० इतो भ्रष्ट : ततो नष्ट:; पंज० इदर भ्रष्ट उदर नष्ट; ब्रज० इत भ्रष्ट उत नष्ट।

इन कांटों से बहुत उलझे हैं और बहुत उलझेंगे--- झगड़ालू व्यक्तियों के लिए कहते है जो बिना मतलब ही सबसे झगडते रहते हैं। तुलनीय : पंज० इनां कंडिया विच बड़े फसेहन अते होर बड़े फसणगे।

इनकी उड़ाई वापस नहीं लौटती (क) किसी बड़े चोर, डाकू या ठग के प्रति कहते है। (ख) अधिक गप्प हाँकने वाले के प्रति भी ऐसा कहते है। तुलनीय : राज० आँरी उडायोड़ी चिड़या रूंखा पर ही को बैठेनी; पंज० इनां दी उडाई पिछेडी नई आदी।

इनकी नाक पर गुस्सा रक्खा ही रहता है -ज़रा-ज़रा-सी बात पर क्रोधित हो जानेवाले के प्रति कहते है। तुलनीय: अव० इनके नाक पर गुस्सा रहत है; हरि० इनकी तै मारी हाणी त्योड़ी चढ़ी रहत सै; पंज० गुस्सा ते इसदी नक उत्ते रखया है।

इनकी नाक पर गुस्से का मस्सा इनकी नाक पर जैसे गुस्से का ही मस्सा (मांस की छोटी ग्रंथि) है। ऐसे व्यक्ति के लिए कहते है जो बहुत चिड़चिड़ा हो और बात-बात पर गुस्सा करे।

इनके चाटे रूख नहीं जमते —बहुत ही धूर्त और धोखे-बाज़ व्यक्ति के प्रति कहते है। तुलनीय : हरि० इनका मारा तै पाणी भी नाह मांगता; पंज० इस दा मारया तां पाणी वी नई मंगदा।

इनके चाटे रोंगटे नहीं जमते— ऊपर देखिए। तुलनीय : ब्रज० इनके चाटे रोंगटा ऊ नायें।

इनके यहाँ चमड़े का जहाज चलता है—वेश्याओं के प्रति ऐसा कहते हैं।

इनको पत्थर मारे मौत नहीं—बेहया या निर्लज्ज व्यक्ति के लिए कहते हैं। तुलनीय : हरि० इन्है तै डूब कै मर ज्याणा चाहिए; पंज० इसनूं ता चुली पाणी बिच डुब मरना चाइदा; ब्रज० इनकूं पत्थर मारी मौति नायें।

इनको भी लिखो—मूर्ख के प्रति कहते हैं। इस लोकोक्ति का संबंध एक कहानी से है जो इस प्रकार है : एक दिन अकबर बादशाह ने बीरबल से पूछा कि संसार मे आँख वालों की सख्या अधिक है या अंधों की? बीरबल ने उत्तर दिया कि संसार में अंधे ही अधिक हैं। इस बात को प्रमाणित करने के लिए बीरबल साथ मे एक मुंशी लेकर निकल पड़े और रास्ते मे कंकड़ चुनने लगे। जो भी उस रास्ते से गुज़रता था, वह बीरबल को ककड़ चुनते देखकर पूछता था, 'बीरबल! यह क्या कर रहे हो?' इस पर बीरबल अपने मुंशी से कहते थे, 'इनको भी लिखो'। और मुंशी उनका नाम अंधों की सूची में लिख लेता था। इस तरह एक लंबी सूची तैयार हो जाने के बाद जब बीरबल ने उसे बादशाह को दिखाया तो वह उनकी बुद्धिमत्ता देखकर बहुत प्रसन्न हुए। तुलनीय : पंज० इस नूँ वी लिखो; ब्रज० याऊ ऐ लिखि।

इन चूतड़ों ने बहुत लहंगे फाड़े हैं और बहुत फाड़ेंगे— दुष्ट व्यक्तियों के प्रति कहते है जो बिना मतलब लोगों को हमेशा परीशान किया करते है। तुलनीय : गढ़० यू पुठुन कत्ती घाघरा फाड़्या अर कत्ती फाड़णन; पंज० इनां चुतडां बड़े लंगे फाड़ेहन और वी फाड़नगे।

इन तिलों तेल नहीं निकलता--कंजूसों या चालाकों के प्रति कहा जाता है। अर्थात् इनसे कुछ मिलने की आशा नही है। तुलनीय : अव० ई तिले से तेल नाही निकरी; राज० इन तिल्याँ में तेल कोण; गढ़० यूं तिलू तेल न यूं तिथ्यू सराध; पंज० इनां तिलां बिचों तेल नईं निकलदा; ब्रज० इन तिलीनने का तेल निकरै।

इन तिलों में तेल कहाँ—ऊपर देखिए। तुलनीय : राज० इयाँ तिलां में तेल कठै।

इन तिलों में तेल नहीं—दे० 'इन तिलों तेल·····।' तुलनीय : पं० इन्हां तिलां विच तेल नहीं; हरि० इन्ह

तिल्लाहं में तेल कोन्यां; भोज० ए तीसी तेल नइखे।

इन दोनों का क़ारूरा खूब मिल रहा है—इन दोनों में खूब पट रही है या ये दोनों एक हो रहे हैं। (क़ारूरा-पेशाब, पेशाब रखने की शीशी)।

इन नयनों का यही विशेष वह भी देखा यह भी देख अच्छी के बाद बुरी अवस्था आने पर लोग कहते है। आशय यह है कि मनुष्य के जीवन में सुख और दुःख दोनों ही तरह के समय आते रहते हैं। तुलनीय : पंज० इह अखां सब कुछ देख दियां हन।

इन बातों से तो घर बिगड़ जाते हैं - (क) जब किसी परिवार के सदस्य ऐसी बातें करते है जिनसे परिवार में वैमनस्य बढ़ने या परिवार की एकता के भंग होने की संभावना होती है तो ऐसा कहते हैं। (ख) जब परिवार के लोगों की छोटी-छोटी गल्तियों पर ध्यान नही दिया जाता है तब भी ऐसा कहते है। तुलनीय : हरि० इन बातां में तै घर बिगड़ जाया करै सैं; पंज० इनां गल्लां नाल ते कर टुट जांदे हन; ब्रज० इन बातन तौ घर बिगरि जातें।

इन विचारों ने हींग कहाँ पाई, जो बग़ल में लगाई—ऐसे नेक व्यक्तियों से ऐसा दुष्कर्म भला कैसे संभव है ? जब किसी सज्जन व्यक्ति पर कोई व्यर्थ में झूठा आरोप लगाता तो उस (सज्जन व्यक्ति) के पक्ष में यह लोकोक्ति कही जाती है।

इनमें सब एक से एक बढ़कर हैं-- जहाँ सभी दुष्ट हों और कोई ज़रा-सा भी किसी से कम न हो तो उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० इयाँ में रांड नही जिण्या जिका ही चोखा है; पंज० इह सब इक तो वद के इक हन; ब्रज० इन सब में एक ते एक बढ़ि कै।

इनायते-शाही किसी की मीरास नहीं—राजा की कृपा किसी की बपौती नही है। आशय यह है कि वह राजा की इच्छा पर निर्भर करती है।

इनारे की कमाई, इनारे में लगाई जब किसी चीज़ का लाभ पुन: उसी में खर्च हो जाय तो ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० इनारा क कमाइल इनारे में लागेला। (इनारा कुआँ)।

इन्हीं आँखों से बरसात काटोगे---इस तरह काम करने से गुज़र नहीं होगा। जब कोई व्यक्ति अच्छी तरह से काम न करे, लेकिन मंसूबे बड़े-बड़े बाँधे तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : पंज० इना अखां नाल बरसात कटोगे; ब्रज० इन ई आंखिनि ते चौमासे काटैगौ।

इब्तिदा-इ-इश्क़ है रोता है क्या—अभी तो प्रेम का श्री गणेश ही हुआ है और इसके कष्टों से दु:खी होने लगा। काम शुरू करते ही जो उसकी कठिनाइयों से घबरा जाए उसके लिए व्यंग्य से कहते हैं। यह ग़ालिब के एक शेर की पंक्ति है, दूसरी पंक्ति है : आगे-आगे देखिए होता है क्या।

इमली के पत्ते पर चाट खाओ—मूर्ख बनाने के लिए कहते हैं, क्योंकि इमली का पत्ता बहुत छोटा होता है उस पर कुछ खाया नही जा सकता। तुलनीय : पंज० इमली दे पतर चट के खाओ।

इराक़ी पर जोर न चला, गधी के कान उमेठे—बलवान पर वश न चलने पर जब कोई निर्बल पर अपना क्रोध ठंडा करता है तो ऐसा कहते हैं। (इराक़ी = इराक़ का घोड़ा) तुलनीय : पंज० इराकी उत्ते ज़ोर नई चलया खोती दे कन मरोड़े; ब्रज० ऐराखी पै जोर न चल्यौ, गधैया के कान मेंठे।

इलाज से बचाव अच्छा—दवा से परहेज अच्छा होता है। आशय यह है कि हानिकारक खाद्य-पदार्थों को नहीं खाना चाहिए। ऐसा करने से मनुष्य स्वस्थ रहता है और उसे दवा की आवश्यकता नहीं पड़ती। तुलनीय : मल० सूक्षिच्चाल् दुखिक्केण्ट; पंज० इलाज तो परेज चंगा; अं० Prevention is better than cure.

इल्म का परखना लोहे के चने चबाना है--विद्वान की परख या जाँच करना बड़ा मुश्किल है।

इल्म थोड़ा ग़रूर ज्यादा—जो पढ़े-लिखे तो कम होते हैं पर गर्व ज्यादा करते हैं उनके प्रति ऐसा कहते है। तुलनीय : अव० इल्लिम तनी के गरूर एतना; पंज० अकल कट कमंड मता; ब्रज० इलम थोरौ, गरूर जादा।

इल्म दर सीना, ना दर सफ़ीना -विद्या का वास हृदय में होता है न कि ग्रंथों या पुस्तकों में। प्राप्त की हुई विद्या का उतना ही अंश अपना कहा जा सकता है जो अपने को याद है, पुस्तक में रखा ज्ञान अपने लिए किसी काम का नहीं।

इल्लत जाय धोए-धोए, आदत कहाँ जाय—ऐब प्रयास करने पर छूट जाता है, पर आदत नही छूटती।

इश्क़ अन्धा है—इश्क़ करने वाले किसी तरह का भेद-भाव नही रखते। वे किसी भी जाति-धर्म के लोगों से संपर्क स्थापित कर लेते हैं। यहाँ तक कि वे रूप-रंग का भी ध्यान नहीं रखते। तुलनीय : राज० इश्क आंधणो छे; पंज० प्रेम अन्ना है; अं० Love is blind.

इश्क़ का मारा दुतकारा जाय— प्रेमियों से सभी नफ़रत करते हैं। समाज मे उनका कोई आदर नही करता। तुलनीय : राज० इसकरो मारियो फिरै ठिठकारियो; पंज० प्रेम दा मारया दुतकारया जावे।

इश्क़ की मारी गधी धूल में लोटे—आशय यह है कि प्रेम पशु-पक्षियों को भी पागल बना देता है। तुलनीय : राज०इसकरी मारो कुत्ती कादै में लुटै; पंज०इसक दी मारी खोती तूड़ विच बिलै।

इश्क़ के कूचे में आशिक़ की हजामत—प्रेम में प्रेमी की दुर्दशा होती है। प्रेम का मार्ग बड़ा टेढ़ा होता है। तुलनीय : पंज० इसक दे पिछै आशिक दी हजामत।

इश्क़ के शौक़ीन खर्च के कोताह—बिना धन के प्रेम नही किया जाता और यदि किया भी जाय तो सफलता नहीं मिलती।

इश्क़ छिपाए ना छिपे— प्रेम छिपाने से नही छिपता। तुलनीय : पंज० इक लुकान नई लुकदा।

इश्क़ न देखे जात-कुजात, भूख न देखे जूठा भात— प्रेम में जाति-पाँति, अमीर-ग़रीब का ध्यान नहीं रखा जाता और भूखे व्यक्ति को जो भी चीज मिल जाती है या जैसा भी भोजन मिल जाता है, खा लेता है। तुलनीय : पंज० इसक जात नुं नई देखता पुख जूठे पत नूं नई देखदी।

इश्क़, मुश्क, खाँसी, ख़ुशी छिपे नहीं ये चार—प्रेम, ख़ुशबू, खाँसी तथा ख़ुशी, ये चार चीजें छिपाने से नहीं छिपतीं। तुलनीय : पंज० इसक मुसक खग अते खुसी लुकाण नाल नई लुकदी।

इश्क़, मुश्क़, खांसी ख़ुश्क, ख़ून ख़राबा छिपता नहीं— प्रेम, कस्तूरी, सूखी खाँसी और खून ये चार चीजें छिपाने से नहीं छिपतीं।

इश्क़ में आदमी के टांके उड़ते है- अर्थात् प्रेम में व्यक्ति को इतने कष्ट झेलने पड़ते है कि उसकी अक्ल दुरुस्त हो जाती है। तुलनीय : पंज० इसक बिच बंदे दी अकल सही हो जांदी है।

इश्क़ में शाह और गदा बराबर— प्रेम में राजा और रंक बराबर होते हैं। प्रेम गली में सभी समान है। तुलनीय पंज० इसक बिच राजा रंक इको जिहे।

इश्क़ या करे अमीर, या करे फ़कीर—प्रेम अमीर या फ़क़ीर केवल दो ही कर सकते है। अमीर इसलिए कि उसके पास खर्च करने के लिए धन होता है, और फ़क़ीर इसलिए कि उसे किसी बात की चिंता या भय नहीं होता। बीच के लोग प्रेम करने के लिए अनुपयुक्त समझे जाते है। तुलनीय : पंज० इसक करे अमीर या फकीर।

इश्क़े-मजाज़ी से इश्क़े-हक़ीक़ी हासिल होता है—मनुष्य से प्रेम करते-करते ईश्वर से भी प्रेम हो जाता है। मानव-प्रेम ईश्वर-प्रेम की सीढ़ी है।

इषुकार न्याय— बाण-निर्माता का न्याय। इसका प्रयोग उस व्यक्ति के संबंध में किया जाता है। जो पूर्णतया अपने कार्य में लीन रहता है और अपने आस-पास घटित घटनाओं को अपने काम में तल्लीन होने के कारण नहीं जान पाता। प्रस्तुत न्याय का संबंध एक कहानी से है जो इस प्रकार है : कोई इषुकार बाण-निर्माण में इतना लीन था कि उसके पास से ही एक राजा अपने गंतव्य स्थान की ओर जाता हुआ गुज़रा, पर इषुकार को राजा के जाने के विषय में कोई जानकारी नहीं हो सकी।

इषुवेगक्षय न्याय—बाण के वेग की समाप्ति का न्याय। जिस प्रकार प्रक्षिप्त बाण का वेग क्रमश: समाप्त हो जाता है, उसी प्रकार युवावस्था में मानस-जगत के उत्ताल विचार धीरे-धीरे शिथिल हो जाते है।

इष्यमाणस्यैव प्राधान्यं न त्विच्छाया—अभिलषित वस्तु, अभिलाषा से अधिक महत्वपूर्ण होती है। तात्पर्य यह है कि ज्ञान जिज्ञासा की तुलना में महत्तर है।

इसका दुःख दिखावे मुख—चेहरा देखने से ही दुःख का पता चल जाता है। तुलनीय : पंज० सकल देख के दुख दा पता लग जांदा है।

इस कान सुनी, उस कान उड़ाई - ऐसे व्यक्ति के लिए कहते है जो उपदेश या सीख की बातें सुनता तो है, पर उनके अनुसार काम नहीं करता। तुलनीय : माल० अणी कान हुणी ने अणी कान काड़ी; अव० इ कान से सुना, उ कान से निकारा; हरि० ईह कान सुणी उस कान तैं काढ़ दी, इस कान तै सुन कै उस कान तै काढ़ देणा; राज० इयै कान सुणी बियै कान काढ़ी; पंज०इस कन्नों सुनी अते उस कन्नों कडी; ब्रज० जा कान सुनी, वा कान उड़ाई।

इस कान सुनी उस कान निकाली—दे०'इस कान सुनी उस···'।तुलनीय : ब्रज० जा कान सुनी, वा कान निकारी।

इसकी माँ ने इसे ही जाना—अर्थात् इसके बराबर और कोई नहीं है। (क) किसी महान् व्यक्ति के प्रति ऐसा कहते है। (ख) शेखी बघारने वालों के प्रति भी व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय: राज० ऐरी मा ऐने ही जिण्यो है; पंज० इस दी मां ने इस नूं जाण या।

इसके पेट में दाढ़ी है—कम उम्र का होने पर भी काफ़ी होशियार है। बहुत चतुर या बुद्धिमान लड़कों के लिए ऐसा कहते है। तुलनीय : पंज०इस दे टिड़ बिच दाड़ी है, ब्रज० या के पेट में डाढ़ी से।

इसके मारे नहीं मरते—जब कोई निर्बल या कमज़ोर व्यक्ति किसी को धमकी देता है तो उसके प्रति व्यंग्य में कहते

हैं। तुलनीय : राज० इयँ राम सूँ मरे कोयनी; पंज० इस दे मारे नई मरदे।

इस गाँव में दाना नहीं, उस गाँव में पानी नहीं—इस गाँव में न खाने के लिए अन्न है और न उस गाँव में पीने के लिए पानी है। जब कोई अपनी अकर्मण्यता से ऐसी बुरी स्थिति में आ जाता है जिसमें से बच निकलना काफी मुश्किल हो जाता है तो उसके प्रति ऐसा कहा जाता है। तुलनीय : वल्या गौं जगा नी, पल्या गौं को वक्त नी; पंज० इस पिंड बिच दाना नई उस पिंड बिच पाणी नई।

इस घर का बाबा आदम ही निराला है—इस घर की सभी बातें अनोखी है। तुलनीय : मरा० या कुळाचा मूळ पुरुष कां ही निरालाच आहे।

इस घर में सब नकटे-ही-नकटे—जिस परिवार में सभी एक-दूसरे से बढ़कर दुष्ट और बेशर्म हों, उसके प्रति कहते है। तुलनीय : पंज० इस घर विच सारे नकबड़े; ब्रज० या घर में सब नकटे ई नकटे।

इस तरह काँपता है, जैसे क़साई से गाय—जब कोई किसी से काफ़ी भयभीत होता है तब कहते हैं।

इस तीन दिन की जिन्दगी में चाहे बुराई ले लो, चाहे भलाई—आशय यह है कि आदमी की उम्र बहुत कम होती है, उसे इस थोड़े से समय में कोई ऐसा कर्म नहीं करना चाहिए जिससे मरणोपरांत भी लोग उसे बुरा कहें या गाली दें, बल्कि ऐसा नेक कर्म करना चाहिए कि वह प्रशंसा का पात्र बन सके। तुलनीय : पंज० इनां तिनां दिनां दी जिंदगी विच पावें बुराई ले लो पावें भलाई।

इस पार पीठा उस पार अंगूठा—स्वार्थ सिद्ध हो जाने अथवा अवसर निकल जाने पर जो लोग किसी की परवाह नही करते, उन्हें ध्यान में रखकर यह कहावत कही जातीहै।

इस पार या उस पार—इधर चले आओ या उधर चले जाओ। (क) जब कोई व्यक्ति दोनों ओर से अच्छा बना रहना चाहता है या दोनों ओर से फ़ायदा उठाना चाहता है तब कहते हैं। (ख) जब कोई व्यक्ति कार्य करने का दृढ़ संकल्प कर लेता है और सफलता-विफलता दोनों के ही लिए तैयार रहता है तब स्वयं कहता है कि चाहे जीतूं या हारूं यह काम तो करके रहूँगा। तुलनीय : राज० इयँ पार कै परलै पार; पंज० इस पार या उस पार; ब्रज० जा पार कै वा पार।

इसबग़ोल ठंडा भी गरम भी—किसी रोगी को गरम दवा देने की सलाह में एक व्यक्ति ने उसे इसबग़ोल को गरम समझकर, सेवन करने की राय दी। रोगी ने पूछा कि इसबग़ोल तो ठंडा होता है। सलाहकार ने कहा कि 'हां' ठंडा भी होता है।' रोगी ने कहा कि अभी तो आप गरम कह रहे थे, अब ठंडा कहने लगे। इस पर उसने कहा 'दोनों है, गरम भी और ठंडा भी।' अर्थात् जब कोई व्यक्ति एक नीति पर दृढ़ न होकर द्विविधा की बात करता है तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० इसबग़ोल ठंडा गरम दुनों होला; पंज० इसबग़ोल ठंडा वी गरम वी।

इस बात पर धूल डालो—(क) जब कोई व्यक्ति किसी महत्त्वपूर्ण किन्तु बीती बात की चर्चा करता है तब कहते हैं। (ख) जब कोई व्यक्ति किसी बीती हुई दुखद घटना का जिक्र करता है तब भी ऐसा कहते हैं। (ग) किसी अकथनीय बात की चर्चा पर भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० इयँ बात नै धूड़-धोबा; पंज० इस गल उत्ते तूड़ सुटो; ब्रज० या बात पै धूरि डारौ।

इसमें कुछ भेद है—अवश्य कोई बात छिपी हुई है। तुलनीय : अव० एहमा कुछ भेद अहै; पंज० इस बिच कुज राज है; ब्रज० या में कछू भेद जरूरै।

इसलाम कुली पाँड़े—आधे हिंदू, आधे मुसलमान। जो हिंदू होकर मुसलमान या ईसाई पोशाक पहनते और कुछ चिह्न हिंदुओं के भी रखते हैं, उन पर व्यंग्य है। इस पर एक कहानी इस प्रकार है : एक बार एक मुसलमान फ़क़ीर ने देखा कि ब्राह्मणों को पूरियाँ मिल रही हैं, मुझे भी ब्राह्मण वेश पहन लेना चाहिए। ऐसा सोचकर वह धोती, जनेऊ पहन, माथे तिलक लगा तथा बग़ल में पोथी दबाकर ब्राह्मण भोज में सम्मिलित हो गया और कहा, 'धोती बिबी, पोथी बिबी दर गुलू ज़ुन्नार, इसलाम कुली पाँड़े मनम् पूरियाँ बियार।' अर्थात् मैंने धोती पहन ली है, पोथी लेली है, गले में जनेऊ भी डाल लिया है, और इस्लाम से बदलकर मैं पाँड़े हो गया हूँ, अब मेरे लिए पूरियाँ लाओ।

इस हाथ दे उस हाथ ले—(क) अच्छे और बुरे कार्यों का फल तुरंत ही मिलता है। (ख) नक़द सौदा लेने पर भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० इ हाथ दे, उ हाथ ले; राज० ईं हाथ दे ऊँ हाथ ले; माल० अणी हाथ दे; अणी हाथ ले, तेलु० ई चेत चेस्तारु आ चेत अनुभविस्तारु; मल० नेरत्ते वितच्चाल् नेरत्ते कोय्याम्; पंज० इस हत्थ दे उस हत्थ लै; ब्रज० जा हात दै, वा हात लै।

इस हाथ देना, उस हाथ लेना—ऊपर देखिए। तुलनीय : ब्रज० जा हाथ दैनो, वा हात लैनों,

इस हाथ ले, उस हाथ दे—दे० 'इस हाथ दे…'। तुलनीय : ब्रज० जा हात दैनों वा हात दै।

इस हाथ मे दे चाहे उस हाथ से दे - आशय यह कि चाहे खुशी से दो चाहे जबरदस्ती से तुम्हे देना अवश्य है। जब कोई व्यक्ति किसी का पैसा या वस्तु लेकर देने मे आना-कानी करता है तब वापस मागने वाला ऐसा कहता है। तुलनीय पज० पावे इस हत्थ नाल दे पावे उस हत्थ नाल दे; ब्रज० जा हात ते दै, चाहै वा हात ते दै।

इसे कहो या कुएँ में डालो दोनो बराबर है। जो व्यक्ति किसी की बात पर ध्यान नही देता उसके प्रति ऐसा कहा जाता है। तुलनीय राज० ऐनै कहो भावै कूवै मे नाखो पज० इस नू आखो या खू विच सुट्टो।

इसे छिपाओ उसे दिखाओ —दोनो हमशक्ल है, दोनो मे कोई अन्तर नही है।

इहां कुम्हड वतिया कोउ नाहीं—यहाँ कुम्हडे का फल कोई नही है। जब कोई किसी को नकली रोब दिखाकर डराना चाहता है तब ऐसा कहते है। कहा जाता है कि यदि कुम्हडे की बतिया (छोटे फल) को उँगली दिखा दी जाए तो वह सूख जाती है। यह लोकोक्ति इसी किवदन्ती पर आधारित है।

इहाँ न लागहिं राउर माया आपकी चालाकी यहा नही चल सकती। अर्थात आपके जाल मे यहा कोई नही फँसने वाला है। जब कोई किसी को अपने वाक्-जाल मे फँसाना चाहता है और वह पहले से ही उससे सतर्क रहता है तब ऐसा कहता है।

इहौ काम सरकारी, उहौ काम सरकारी- दो आवश्यक कामो के सम्मुख आ जाने पर जब कोई व्यक्ति इस सकट मे फस जाता है कि किसे पहले करू और किसे बाद मे करूँ तब वह ऐसा कहता है। तुलनीय पज० इह कम सरकारी ओह कम वी सरकारी ब्रज० जिऊ काम सरकारी और वऊ काम सरकारी, कौन स ऐ करूँ।

ई

ईंट और न्याय चाहे जैसे चिन लो— मकान बनाते समय जिस तरह चाहे ईंटो को जोड लीजिए और मन चाहे ढग से न्याय भी करा लीजिए। जब कोई निर्धन और असहाय व्यक्ति सही बात पर भी उचित निर्णय नही पाता है या निर्दोष होने पर भी दडित होता है तब वह ऐसा कहता है। तुलनीय राज० भाठो 'र न्या बेठाव ज्यू ही बैठे, पज० ईट अते नयाय जिवे मरजी चिन लवो।

ईंट का घर मिट्टी कर दिया —बने-बनाए काम को बरबाद करने वाले के प्रति ऐसा कहते है। तुलनीय : हरि० चिणा चिणाया डाह देणा, पज० ईट दा कर मिट्टी कर दिता।

ईंट का घर, मिट्टी का दर -ईट का मकान और मिट्टी का दरवाजा। (क) बेढगे काम या बेढगी बात पर ऐसा कहते है। (ख) जब कोई व्यक्ति किसी अच्छी चीज मे कम कीमत की या सामान्य वस्तु को लगाकर उसके सौदर्य को फीका बना देता है तब भी ऐसा कहते है। तुलनीय पज० ईट दा कर अते मिट्टी दा बुआ, ब्रज० ईटन कौ घर और माँटी कौ दरवज्जौ।

ईंट का जवाब पत्थर जब कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति की अप्रिय बातो का जवाब उससे भी अधिक अप्रिय बातो द्वारा देता है तब ऐसा कहते है। तुलनीय इट्ट चुक्दे नू पथ्थर, पज० इट्ट दा जवाब वट्टे नाल, ब्रज० ईंट कौ जुबाब पत्थर ते।

ईंट की खातिर मस्जिद ढाई ईंट पाने के लिए मस्जिद गिरा दी। (क) थोडे लाभ के लिए अधिक हानि उठाने पर कहते है। (ख) जब कोई व्यक्ति अपने थोडे से फायदे के लिए दूसरे का काफी नुकसान कर देता है तब भी ऐसा कहते है। तुलनीय पज० ईंट लई मसजिद सुट्टी, ब्रज० ईट के काजे ससजिद तोरी।

ईंट की देवी, झामे का प्रसाद जैसा देवता वैसी पूजा। जो जैसा हो उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए।

ईंट की पाँत दम मदार —जब कोई व्यक्ति अपनी शक्ति का विचार न करके किसी कार्य को करने को तैयार हो जाय, जो उसकी शक्ति के बाहर हो तब ऐसा कहते है। कहा जाता है कि मकनपुर मे शेख बदरुद्दीन उर्फ शाह मदार की कब्र के ऊपर एक पत्थर अधर मे लटक रहा है जो उनकी करामात का प्रतीक है।

ईंट की लेनी पत्थर की देनी—(क) किसी को मुंह-तोड जवाब देना। जैसा को तैसा। (ख) बदला चुकाने पर या चुकाने के सबध मे भी यह लोकोक्ति कहते है। तुलनीय . हरि० तोड का जवाब देणा, मरा० वीट घेतली तर दगड द्यायलाच हवा, पज० ईट दी लेणी बट्टे दी देनी।

ईंट खिसकी तो दीवार खिसकी- एक ईंट उखडने के बाद दीवार बडी आसानी से गिर जाती है। थोड़ी-सी फूट होने पर बहुत बडी हानि हो जाती है। तुलनीय : पज० ईंट खिसकी ते कद गयी, ब्रज० ईंट गई तौ भीति गई।

ईंट से ईंट बज गई घमासान लड़ाई होने पर ऐसा कहते है। तुलनीय : पज० ईंट नाल ईंट बज गयी; ब्रज०

ईंट ते ईंट बजि गई।

ईंट से उपला बहुत सुकुमार— क्या ईंट की तुलना में उपला ही बहुत सुकुमार होता है? अर्थात् नहीं। एक जैसी दो वस्तुओं या एक से दो व्यक्तियों में किसी को श्रेष्ठ या बहुत अच्छा कहा जाय तो व्यंग्य से ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० ईंटा से गोईठा बड़ सुकुवाँर, ईंटा से गोइँठा बड़ सुकुमार; पंज० ईट नालों गोठा बड़ा नरम हुंदा है; ब्रज० ईंट ते ऊपरा मुल्याम।

ईंधन डारे आग में कैसे आग बुझात—आग में ईंधन डालने से आग नहीं बुझती। क्रोध की बातें कहने से क्रोध शान्त नहीं होता। किसी भी चीज़ में उसे बढ़ाने वाली चीज़ डालने से वह घट नहीं सकती। चाहे वह कोई भौतिक वस्तु हो या वासना, लोभ आदि मानसिक भाव।

ईंधन पात किरात मिताई—पत्तों का ईंधन और किरातों की मित्रता से कोई फ़ायदा नहीं।

ईख और गृहस्थ—ईख गृहस्थ के लिए बहुत लाभकर चीज है। किसी को ऐसी चीज़ की प्राप्ति हो जाय जो उसके लिए बहुत लाभकर हो तो भी यह लोकोक्ति इस्तेमाल करते हैं।

ईख का रस गाँठ में नहीं होता—ईख जैसी चीज़ में भी गाँठ में रस नहीं होता। अर्थात् गाँठ (मन की गाँठ, दुश्मनी, मैत्री का टूटकर फिर जुड़ना आदि) बहुत बुरी है। इससे रस (सुख, आनंद) की प्राप्ति नहीं हो सकती। तुलनीय : पंज० गन्ने दा रस गंड विच नई हुंदा।

ईख के साथ डंठल भी पेरे जाते हैं—ईख के खेत में यदि कोई अन्य पौधा हो तो उसका डंठल भी धोखे से कोल्हू में पेर दिया जाता है। आशय यह है कि जब किसी व्यक्ति पर विपत्ति आती है तो उसके साथी-संबंधी भी पकड़ में आ जाते हैं। तुलनीय : भीली—हांठा ने भरोसे ढांड पिलाई जाहें; पंज० गन्ने नाल डंठल वी पीड़या जांदा है!

ईख जैसी खेती, हाथी जैसा व्यापार—गन्ने की खेती और हाथी का व्यापार अधिक आदर योग्य तथा लाभदायक होता है।

ईख तक खेती, हाथी तक बनीज—ऊपर देखिए।

ईख तिस्सा, गेहूँ बिस्सा—ईख की उपज (मूल या बोई गई ईख से) तीस गुनी और गेहूं की उपज (बीज से) बीस गुनी होती है।

ईंगुर हो रहा / रही है—लाल हो रहा है। ऐसे लोगों के प्रति कहा जाता है जो खा-पीकर काफ़ी तंदुरुस्त हो जाते हैं और जिनके चेहरे पर लालिमा झलकने लगती है।

ईतर के घर तीतर घड़ी बाहर घड़ी भीतर—किसी इतराने वाले (ईतर) या ओछे व्यक्ति को कोई चीज़ मिले और (चाहे वह तीतर की भाँति सामान्य ही क्यों न हो) वह (व्यक्ति) उसे दूसरों को दिखाने की ग़रज़ से कभी तो घर के बाहर रखे और कभी भीतर। अर्थात् (क) ओछा व्यक्ति अपनी चीज़ को दिखाने का प्रयास करे तो यह लोकोक्ति कही जाती है। (ख) जब किसी ओछे व्यक्ति के पेट में कोई बात न पचे और वह किसी भी प्रकार उसे कह देने का प्रयास करे तब भी कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० ईतर के घर तीतर छिन बाहर छिन भीतर।

ईतर के घर तीतर, बाहर बाँधे कि भीतर—दे० ईतर के घर तीतर, घड़ी बाहर...। तुलनीय : ब्रज० ईतर के घर तीतर, बाहर बाँधे कै भीतर।

ईद की लीद निकल गयी—ईद के अवसर पर जब बाज़ार अच्छा नहीं चलता है तब दूकानदार लोग ऐसा कहते हैं।

ईद के चाँद हो गए—जो जल्दी दिखाई न दे। जब किसी प्रिय व्यक्ति से काफी दिन के बाद भेंट हो तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० ईद कै चाँद होय गया अहै; ब्रज० ईद कौ चंदा है गयौ।

ईद खाया बक़रीद खाया, खाया सभी रोज़ा; एक दिन की होली आई, घर-घर माँगे गोझा—अपनी ईद, बक़रीद और रोज़े पर तो स्वयं खाते रहे और होली आई तो सबके घर से गुझिया माँगने लगे। (क) मुसलमानों के प्रति व्यंग्य से ऐसा कहते हैं। (ख) स्वार्थी व्यक्तियों के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : अव० ईद खाएन बकरीद खाएन खाएन सातौ रोजा, एक दिना कइ होली का, घर घर माँगे गोझा; ब्रज० ईद खाई, बकरीद खाई और खायौ रोजा, एक दिना की होरी आई घर घर माँगै गूंझा।

ईद पीछे चाँद मुबारक—बे-मौक़े का काम। जब कोई उचित अवसर बीत जाने के बाद किसी को बधाई या मुबारकबाद दे तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० ईद दे मगरों चंदरमा नूँ मुबारक; ब्रज० ईद पीछे चाँद मुबारक करनों बेकार।

ईद पीछे टर—(क) जब किसी का कोई काम या रोज़गार खूब चलकर फिर ठप्प हो जाय या मंदा पड़ जाय तब कहा जाता है। (ख) उन्नति के बाद अवनति आती ही है। (ग) मान या आदर के पश्चात् अनादर मिलने पर भी कहते हैं। 'टर' शब्द का अर्थ ईद के प्रसंग में 'ईद के दूसरे दिन होने वाला मेला' होता है, पर यहाँ अर्थ 'खुशी का न होना' या 'फीकापन' है। तुलनीय : अव० **ईद कै पाछे**

टर।

ईद पीछे टर, बरात पीछे धौंसा—ईद बीतने पर खुशी मनाना और बरात वापस जाने के बाद बाजा बजाना व्यर्थ है। आशय यह है कि अवसर बीत जाने के बाद कुछ करना बेकार है। तुलनीय : ब्रज० ईद पीछें टर्र, बरात पीछें धौंसा।

ईद बक़रीद सुब्ररात कुटनी, दाहा करे हाय-हाय फगुआ बिसनी—मुसलमानों के त्यौहारों पर व्यंग्य है।

ईद बाद रोज़ा ईद में सब धन खर्च हो जाता है, इसलिए ईद के बाद रोजे वाली स्थिति आ जाती है। आशय यह है कि सुख के बाद दुःख सहना ही पड़ता है। तुलनीय : राज० ईद पछै रोजा; पंज० ईद मगरों रोजा; ब्रज० ईद पीछें रोजा।

ईन मीन कुल साढ़े तीन—बहुत छोटे परिवार वालों के प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० ईन मीन नै साढ़ा तीन।

ई फूल महेना न चढ़ै – यह योजना सफल नहीं होगी। किसी बात के होने या योजना के सफल होने में जब कोई बाधा प्रत्यक्ष दीख पड़े तो कहते हैं। इसी अर्थ को द्योतित करनेवाली दूसरी कहावत है—यह बेल मढ़े चढ़ती नहीं दीखती। तुलनीय : ब्रज० इ का मगर बेलि चढ़ै।

ई बात ऊ बात धर टका मेरे हाथ—ब्राह्मणों के प्रति कहते हैं जो कि पूजा-पाठ के नाम पर अशिक्षित लोगों से खूब रकम ऐंठते हैं। तुलनीय : ब्रज० इ बात वु बात, धर टका मेरे हात।

ई बुढ़िया बड़ी लबलोली, चढ़े को माँगे डोली—मनचली बूढ़ी औरतों के प्रति ऐसा कहा जाता है। तुलनीय : अव० इ बुढ़िवा बड़ी लबलोली चढ़ै का मांगै डोली।

ईमान का सौदा है सच्चाई और निष्कपटता दिखाने के लिए दूकानदार ऐसा कहते हैं यद्यपि ऐसा करते बहुत कम हैं। तुलनीय : पंज० ईमान दा सौदा है।

ईमान तो सब कुछ है (क) विश्वास बहुत बड़ी चीज है। विश्वास के बल पर ही दुनिया के सब काम होते हैं। (ख) जब कोई व्यक्ति किसी के ईमान या विश्वास पर अपनी बड़ी धन-राशि छोड़कर कहीं चला जाता है तब भी ऐसा कहते है। (ग) धर्म के लिए भी ऐसा कहते है। तुलनीय : पंज० धरम सब कुज है।

ईमान है तो सब कुछ है —ऊपर देखिए।

ईर्ष्या से क्रोध भला— ईर्ष्या से क्रोध अच्छा है क्योंकि क्रोध तो किसी के प्रति थोड़े समय के लिए होता है लेकिन जब कोई किसी से ईर्ष्या करता है तो हमेशा उसके दिल में उसके प्रति ईर्ष्या बनी रहती है।

ईशर आवें दरिद्दर जाय—धन आए और दरिद्रता चली जाय। हिन्दुओं में घर की स्त्रियाँ दीपावली की रात को घर के कोने-कोने झाड़ती हुई उक्त कहावत कहती हैं। तुलनीय : पंज० पैहा आवे दलिदर जावे।

ईश रजाय सीस सबही के—ईश्वर की आज्ञा सभी को माननी चाहिए या माननी पड़ती है।

ईश आयं दलिद्दर जायं—धन आ जाने पर दरिद्रता दूर हो जाती है।

ईशर से भेंटा नहीं दलिद्दर से लट्ठम लट्ठा -जिस काम के करने से कुछ फ़ायदा न हो, बल्कि उलटे कुछ नुक़सान हो उस पर कहते हैं।

ईश्वर इच्छा के सम्मुख मानव निरुपाय है– ईश्वर जो चाहता है वही होता है, मनुष्य कुछ नहीं कर सकता। तुलनीय : ईश्वर इच्छा आगण मनुष्य निरुपाय छे; सं ईश्वरेच्छा बलीयसी; पंज० रब जो चांहदा है ओंह हुदा है।

ईश्वर उन्हीं की सहायता करता है, जो अपनी सहायता आप करते हैं परिश्रमी व्यक्तियों की ही ईश्वर सहायता करता है, आलसियों और निकम्मों की नहीं। तुलनीय : मल० तान् पाति दैवम् पाति; फा० हिम्मते-मर्दां मददे-खुदा पंज० रब उना दी मदद करदा है जिहड़े अपनी मदद आप करदे हन। अं० God helps them that help themselves.

ईश्वर की माया अपरंपार है—ईश्वर की लीला को कोई नहीं जानता। तुलनीय : भीली – राम नी कला भारी है; पंज० रब दी लीला नयारी है।

ईश्वर की माया, कहीं धूप कहीं छाया इस संसार में एक तरफ दुख है तो दूसरी तरफ सुख। यह ईश्वर की माया है कि किसी भी दृष्टि से संसार में चारों ओर एक रूपता नहीं है। तुलनीय : मरा० देवाची माया, कुठे ऊन कुठें छाया; भीली - राम नी कुदरत न्यारी बणाउं कोई नी पुगे; पंज० ईश्वर (रब) दी माया किते धुप किते छाँ; ब्रज० ईसुर की माया, कहूँ धूप कहूँ छाया।

ईश्वर के दरबार में देर है पर अंधेर नहीं है – मनुष्य को अपने भले या बुरे कर्मों का फल मिलता अवश्य है; चाहे देर से ही मिले। तुलनीय . पंज० रब दे कर बिच देर है हनेर नई है; ब्रज० ईसुर के ह्याँ देर है परि अंधेर नहीं।

ईश्वर के हाथ बहुत लंबे हैं—ईश्वर सबकी रक्षा करता है। वही सबका पालन-पोषण करता है। तुलनीय : ब्रज० ईसुर के हात बौहत लम्बेहैं।

ईश्वर को देखा नहीं पर बुद्धि से तो जाना है—यदि

कोई चीज़ स्वयं न देखी गई हो तो कम से कम बुद्धि से तो जानी ही जा सकती है। तुलनीय : पंज० रब नूं देखया नईं जानया जांदा है।

ईश्वर जाने मन, मालिक जाने धन—ईश्वर प्रत्येक व्यक्ति के मन की बात को जानता है तथा मालिक अपने सेवक की संपत्ति की जानकारी रखता है। ईश्वर और अपने मालिक से कपट करने वालों के शिक्षार्थ ऐसा कहा जाता है। तुलनीय : गढ़० देवता जाणो मन ठाकुर जाणो धन; पंज० दिल दा पता रब नूँ पैहंदा पता मालिक नूं।

ईश्वर जो करता है ठीक ही करता है—ईश्वर का प्रत्येक कार्य अच्छा ही होता है। इस पर एक कहानी है : एक राजा का मंत्री प्रत्येक घटना पर उक्त कहावत कहा करता था। एक बार किसी तरह राजा के हाथ की उँगली कट गई। मंत्री ने फिर भी कहा, 'ईश्वर जो करता है ठीक ही करता है।' राजा को बहुत क्रोध आया और उसने मंत्री को कारागार में डलवा दिया। कुछ समय पश्चात् राजा शिकार खेलते हुए अपने साथियों से बिछड़ गया और जंगलियों ने उसे पकड़ लिया। वे राजा की बलि देने के लिए उसे देवी के मंदिर में ले गए। पुजारी बलि के लिए राजा को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ, किंतु राजा की कटी उँगली को देखकर उसकी खुशी पर पानी फिर गया। पुजारी ने उन लोगों से कहा कि इसकी उँगली कटी हुई है, इसलिए इसकी बलि नहीं दी जा सकती। इस प्रकार राजा को छोड़ दिया गया। राजधानी पहुँचने पर राजा ने मंत्री को कारावास से मुक्त कर दिया और उससे क्षमा मांगी। तुलनीय : राज० हरी करी सो खरी, पंज० रब जो करदा है ठीक ही करदा है; ब्रज० ईसुर जो करै, ठीक ई करै।

ईश्वर जो करता है वह सभी के लिए करता है—ईश्वर सब पर समान दृष्टि रखता है। ईश्वर प्रदत्त चीज़ों से लाभ या हानि सबकी होती है। तुलनीय : पंज० रब जो करदा है सब लई करदा है।

ईश्वर देता है तो छप्पर फाड़ कर देता है—जब ईश्वर की दया-दृष्टि होती है तो किसी न किसी प्रकार (अप्रत्याशित रूप से भी) से प्राप्ति होती है। तुलनीय : पंज० रब देंदा है ता छत फाड़ के देंदा है; ब्रज० ईसुर दे ये तौ छप्पर फारि कै ई देयै।

ईश्वर ने चबाने के लिए दाँत दिए हैं—अर्थात् कठिनाइयों का सामना करने की क्षमता भी है। (क) जब कोई व्यक्ति किसी को धमकी देता है या किसी पर कुछ रोब दिखाता है तो उसके जवाब में वह (जिस पर रोब दिखाता है) ऐसा कहता है। (ख) जब किसी सशक्त व्यक्ति के सामने कोई छोटी कठिनाई आती है तो वह भी ऐसा कहता है।

ईश्वर सब में राज़ी है—संतोषी व्यक्तियों से ईश्वर प्रसन्न रहता है। संतोष बहुत बड़ी चीज़ है। तुलनीय : गुज० परमेश्वर सबरमां राजी छे, पंज० रब सबर बिच राजी है।

ईश्वर से भेंट नहीं दलिद्दर से लट्ठम लट्ठा—दे० 'ईश्वर से भेंटा नहीं......'। तुलनीय : अव० ईश्वर से भेंट नाही दलिद्दर से राम-राम।

ईश्वर से भेंट नहीं शैतान से लड़ाई—किसी अप्राप्त अच्छी वस्तु की आशा में प्राप्त बुरी वस्तु को भी छोड़ना व्यावहारिक दृष्टि से उचित नहीं। जब तक दूसरा सहारा न मिल जाय पहले सहारे को नहीं छोड़ना चाहिए, चाहे वह थोड़ा बुरा भी क्यों न हो।

ईश्वर ही सच्ची बात जानता है—भगवान को प्रत्येक बात का पता रहता है। (क) जब किसी सच्चे व्यक्ति को झूठा सिद्ध कर दिया जाता है तो उसको संतोष दिलाने के लिए उसके साथी संबंधी ऐसा कहते हैं। (ख) बहुत झूठे बोलने वाले के प्रति भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भीली — शेष करणालो हाकी है, बीजू कुण जाणे; पंज० रबही सच्ची गल जाणदा है, ब्रज० ईसुर ई साँची यै जानै।

ईश्वर ही सत्य है—ईश्वर के अतिरिक्त सभी सजीव अथवा निर्जीव वस्तुएँ नष्ट हो जाती हैं, इसलिए ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० सदा माई का; पंज० रब ही सच्चा है।

ईस जाय पर टीस न जाय—ईर्ष्या भले ही मिट जाय लेकिन मन की कसक दूर नहीं होती। तुलनीय : मग० इस जाय लेकिन टीस नै जाय; भोज० इस चल जाले बाकी टीस ना जाले।

ईसाई भाई किसके, माल खाया खिसके—भारतीय ईसाइयों के प्रति व्यंग्य से कहते हैं, क्योंकि वे बहुत स्वार्थी होते हैं।

ईसानी बिसानी—ईशान कोण (उत्तर-पूर्व दिशा) में यदि बिजली चमके तो पैदावार अच्छी होगी।

ईसा बदीने-खुद, मूसा बदीने-खुद—अपने-अपने मत (सिद्धांत या धर्म) के अनुसार आचरण ही सर्वोत्तम है।

उ

उँगली-उंगली से कलाई भारी होती है—एक-एक उँगली

मिलकर ही हाथ को मज़बूत बनाती है। आशय यह है कि एकता से ही शक्ति बढ़ती है। तुलनीय : पंज० उँगली उँगली नाल हत्थ पारा हुंदा है।

उँगली-उँगली से हाथ भारी होता है—ऊपर देखिए।

उँगली कटा के शहीदों में नाम—जो व्यक्ति साधारण काम करके महान व्यक्तियों में अपनी गिनती कराना चाहता है या चाहे, उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० उंगल वडा के महीदां दे नां; ब्रज० उँगरिया कटाइ कै सहीदन में नाम।

उँगली कटा नाम रख दिया—जिसके लिए लड़ाई में उँगली कटी, उसी ने 'उँगली कटा' नाम रख दिया। जो व्यक्ति किसी के अहसान को न मानकर उलटे उसकी बुराई करे तो उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० उगल वडया नां रख दिया।

उँगली पकड़ते पहुँचा पकड़ा—थोड़ा-सा सहारा पाते ही गले पड़ गया। जब कोई थोड़ा-सा मिलसिला जमाते-जमाते अपना कार्य साध लेता है तब उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय . हरि०आंगली पकड़ कै पौहचा पकडणा; अव० अँगुरी पकरि पाएन तो पहुँचा पकरि लिहेन; पंज० उँगली फड़दे पौचा फड़या; ब्रज० उँगरिया पकरि कै पौहचौ पकर्यौ।

उँघ रहा था, बिस्तर पा गया अपेक्षित या मनोवांच्छित वस्तु मिलने पर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : हाड़० उँग छोर बछावणों पायो; ब्रज० औंधि नौ रह्यौ ई हौ, खाट मिलि गई।

उँची दूकान, फीका पकवान- बाह्य आडंबर दिखाने वालों के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। दिखावट तो बहुत किंतु तत्त्व कुछ नहीं। तुलनीय : पंज० उची दुकान फिक्का पकवान, ब्रज० ऊँची दुकान, फीकौ पकवान।

उँचे चढ़के देखा तो घर-घर यही लेखा—जब चारों ओर एक जैसी बुराई नज़र आती है तो ऐसा कहते है। तुलनीय : हरि० जिम गाम नाह जावो गाम अच्छा जिम घर नाह जावो घर आच्छा; पंज० उच्ची चढ के देखयाने कर-कर इही हाल।

उई तीन बीसी उई साठ तीन बीस (3 × 20 = 60) और साठ एक ही बात है। जब एक ही वस्तु के लिए घुमा-फिरा कर कई नाम दिए जायँ तबऐसा कहते है। तुलनीय : पंज० उई तीन बीसी, उई सठ; ब्रज० बेई तीनि बीसी बेई साठि; अं० Six of one and half a dozen of the other.

उकताए काम नसाने, धीरज धरे सयाने—जल्दबाज़ी करने से काम बिगड़ जाता है, बुद्धिमान लोग सदा धैर्य से काम करते हैं।

उकतानी कुम्हारी, नाख़ून से मिट्टी खोदे—जल्दबाज़ कुम्हारिन फावड़े की जगह नाख़ून से ही मिट्टी खोदती है। (क) जब जल्दबाज़ी में कोई व्यक्ति उलटा काम कर देता है तब कहते हैं। (ख) जब कोई व्यक्ति लज्जित या दुःखी होकर ज़मीन कुरेदने लगता है तब भी कहते हैं, क्योंकि नाख़ून से मिट्टी खोदना अशुभ का सूचक है। तुलनीय : पंज० हवडाई दी कमैरी नऊँ नाल मिट्टी खोतरे।

उकताने से गूलर नहीं पकते -उकताने या जल्दबाज़ी करने से गूलर नहीं पकते। आशय यह है कि हर काम समय से ही होता है, घबड़ाने या जल्दबाज़ी करने से कोई काम नहीं होता।

उखड़ते पाँव दुनिया देखे गिरते को सभी देखते है। आशय यह है कि जब किसी व्यक्ति के बुरे दिन आते है तो कोई उसकी सहायता नहीं करता। तुलनीय : पज०डिगदे नूं मारे देख देहन।

उखड़े न टिड्डी के पर, नाम वीर सिंह - जब किसी से काम कुछ भी न हो सके और शेखी बहुत मारे तब उसके प्रति ऐसा कहते है। तुलनीय : अव० उपारी न उपरै नाम वीरभान सिंह; हरि० मरै तै माक्खी नी कोन्या नाम सेर सिंह; पज० मरे ना मक्खी नां वीर सिंह।

उखड़े बाल ना नाम बलवंत सिंह—नाम तो बलवंत सिंह है, किन्तु बाल भी नहीं उखाड़ सकते। नाम के अनुसार गुण न होने पर व्यंग्य में ऐसा कहते है। तुलनीय : मैथ० उखरे बार नै नाम बरिआर के; भोज० उखरे बार नाँ नांव बरिआर खांव।

उखली में मुसरा, माई-बाप बिसरा—पेट भरने पर माता-पिता की भी फ़िक्र नहीं रहती।

उखली में सिर दिया तो मूसलों से क्या डरना—किसी कार्य (चाहे वह भला हो या बुरा) को करने पर उतारू होने वाले व्यक्ति को उससे होने वाले दुख का भय नहीं करना चाहिए। तुलनीय : अव० कांड़ी मा मूड़ धरा तउ धमक से का डरी; हरि० जब ऊक्खळ में सिर दे लिया तै मूस्सळ तैं के डर; मरा० उखळीत डोकें ठेवले आतां मुसळांचे काय भय; ब्रज० ओखरी में सिर दियौ तौ मूसर न की धमक ते कहा डर।

उगता सूरज तपता है—उदय होते ही सूरज तपने लगता

है। आशय यह है कि प्रतिभावान व्यक्ति में बचपन में ही अच्छे गुण या लक्षण नज़र आने लगते हैं या प्रतिभावान व्यक्ति के लक्षण बचपन में ही मालूम हो जाते हैं। तुलनीय : राज० उगतो सूरज तपै; पंज० चढ़दा सूरज तपदा है।

उगते को सब सर झुकाते हैं —(क) बढ़ती शक्ति वाले से सभी दबते हैं और जिसकी शक्ति कमज़ोर या नष्ट हो जाती है उससे कोई नहीं डरता। (ख) उच्च पदों पर आसीन अधिकारियों के विषय में भी ऐसा कहते हैं। जब तक वे अपने पद पर बने रहते है तब तक उनसे कार्यालय के छोटे अधिकारी या कर्मचारी काफ़ी डरते है, किन्तु उनके स्थानांतर या अवकाश ग्रहण कर लेने पर कोई भी नही डरता। तुलनीय : पंज० चढ़दे नूँ सारे सिर झुकादे हन।

उगते को सब सर झुकाते हैं, डूबते को कोई नहीं —ऊपर देखिए।

उगते ही नहीं तपा वह अस्त होते क्या तपेगा—अर्थात् जो किशोरावस्था मे प्रतिभावान या प्रतापी न हुआ वह बाद में क्या होगा? यानी कदापि नही होगा। बल, बुद्धि आदि का पता छोटी आयु मे ही लग जाता है। तुलनीय : राज० ऊगतां ही को तप्यो नी जको आथमतां काई तपसी; पंज० चढदे नई तपया ते डुबदे की तपेगा।

उगलती तलवार और बेसवा लुगाई खसम को मार रखती है —म्यान से निकल पड़ने वाली तलवार और वेश्या मालिक की शत्रु होती है।

उगले तो अंधा निगले तो कोढ़ी—दोनों ओर से मुश्किल में पड़ जाने पर या घोर असमंजस की स्थिति में पड़ जाने पर ऐसा कहते है। लोक-विश्वास है कि यदि साँप छछूंदर को पकड़कर पुनः छोड़ देता है तो अंधा हो जाता है और यदि निगल जाता है तो कोढ़ी हो जाता है। तुलनीय : पंज० उगले ते अन्ना निगले ते कोढ़ी।

उगा सो अथवा—जो उदय होता है वह अस्त भी होता है। अर्थात् जिसकी उन्नति होनी है उसकी अवनति भी अवश्य होती है। यह एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। तुलनीय : हरि० ऊगम्या सो आथ्यमा; पंज० उगया सो ढलया।

उगेगा सो डूबेगा—दे० 'उगा सो···।' तुलनीय : राज० ऊगसी जको आथमसी।

उग्गे तारा त चले सोनारा—शुक्र उगते ही सुनार का व्यापार चालू हो जाता है। आशय यह है कि सुनार बहुत तड़के ही काम आरंभ कर देते हैं।

उघड़ी बहू बिटौडा सी, ढकी गिंदौडा सी—मुँह को ढक कर रहने वाली बहू बिटौडा (एक प्रकार की श्वेत मिठाई) जैसी होती है और मुँह को खोलकर (बिना ढके) रहने वाली बहू या स्त्री गिंदौड़ा (गोबर के उपलों पर थाप कर बनाया जाता है जो असुंदर, खुरदरा और काला होता है) जैसी होती है या समझी जाती है। आशय यह है कि लज्जा ही स्त्रियों का आभूषण है। लज्जा से ही उनकी इज़्ज़त होती है। तुलनीय : कौर० उघड़ी बहू बिटोडा सी, ढकी बहू गिंदौडा सी; ब्रज० उघरी बहू बिटौरा-सी ढकी बहू गिंदौरा-सी।

उघरे अंत न होहिं निबाहू—बुरे कर्म की पोल खुल जाने पर परिणाम भयंकर होता है।

उजड़े गाँव में अरंड ही पेड़ - जहाँ कोई पेड़ नहीं होता वहाँ अरंड को ही पेड़ मान लिया जाता है। आशय यह है कि जहाँ बुद्धिमान या विद्वान लोग नही होते हैं वहाँ मूर्ख या कम पढ़े-लिखे व्यक्ति को ही बुद्धिमान या विद्वान समझा जाता है। तुलनीय : बुंद० उजरे गाँव में अरंडई रूख।

उजड़े गाँव में मुरार महतो- दे० 'उजड़े गाँव में अरंड···'। तुलनीय : मैथ० उजाड़ गाम में मुरार महतो; भोज० उजरल गाँव में मुरार महतो; मेवा० ऊजड़ गाँव में मुरार महता।

उजड़े गाँव में सियार राजा दे० 'उजड़े गाँव में अरंड···'। तुलनीय : भोज० उजरल गाँव में सियरे राजा।

उजड़े घर का बलेंड़ा ऐसे निकम्मे व्यक्ति के लिए कहते है जिसका घर बरबाद हो चुका है।

उजबक की भेंस ब्याए, सारा गाँव दूध को धाए—मूर्ख की भैंस ने बच्चा दिया तो गाँव के सभी लोग दूध दूहने के लिए दौड़े। आशय यह है कि मूर्ख व्यक्ति की वस्तु पर सभी अधिकार कर लेते है या मूर्ख व्यक्ति की वस्तु का अन्य लोग फ़ायदा उठाते हैं। तुलनीय : भोज० बुरबकवा क भँइस बिआइल, सज्जी गाँव भरुका (घूँचा) ले के दौड़ल। (उजबक = मूर्ख); पंज० मूरख दी मझ सूई सारा पिंड दुद नूँ नठ्या।

उजर बरौनी मुँह का महुवा, ताहि देखि हरवाहा रोवा - सफेद बरौनी और पीले रंग के मुँह वाले बैलों को देखकर हलवाहा रो देता है। आशय यह है कि इस तरह के बैल चलने में (काम में) अच्छे नही होते।

उजला-उजला सभी दूध नहीं होता—सभी सफेद चीजें दूध नही होती। आशय यह है कि किसी व्यक्ति या वस्तु के बाह्य आकार-प्रकार, रंग-रूप को ही देखकर उसके संबंध में कुछ निश्चित रूप से नही कहा जा सकता है कि वह कैसा

है। प्राय: एक-सी दिखने वाली वस्तुओं के गुण-दोष परस्पर भिन्न होते हैं। तुलनीय : राज० ऊजलो-ऊजलो ही दूध को हुवैनी; पंज० चिट्टा चिट्टा सारा दुद नई हुंदा; अं० All that glitters is not gold.

उजले-उजले सब भले उजले भले न केश; नारि नवे ना रिपु दबे, आदर करे नरेश--सभी श्वेत चीज़ें अच्छी होती हैं, पर श्वेत बाल अच्छे नही होते क्योंकि बुढ़ापे में न तो स्त्री दबती है, न शत्रु डरता है और न राजा ही सम्मान करता है।

उजाड़ गाँव में अरंड ही पेड़—दे० 'उजड़े गाँव में अरंड...'।

उजाड़ू के साथ रेवड़ नाश--बुरे की संगति में पड़ने वाले सभी बरबाद हो जाते हैं। तुलनीय : पंज० उजड़े नाल वसया वी उजड़या।

उजाड़ू साँड भूखा मरे—दूसरे के धन पर गुज़र करने वाले प्राय: भूखे मरते हैं। (क) जो लोग अनुचित लाभ की आशा में कुछ परिश्रम न करके हाथ पर हाथ रखे बैठे रहते है और जिनको अंत तक कुछ नही मिलता उनके प्रति ऐसा कहते है। (ख) वृद्ध लोगों के प्रति भी ऐसा कहते हैं क्योंकि वे भी कोई काम नही कर सकते तथा दूसरों के भरोसे अपने दिन काटते है। तुलनीय : गढ़० उज्याड़का साडस ढांगो भूख मरो; पंज० अजड़या संडा पुखा मरे।

उजाला हुआ और अंधेरा गया—प्रकाश के होते ही अंधकार नष्ट हो जाता है। अच्छे दिन आने पर सभी परेशानियां दूर हो जाती हैं। तुलनीय : भीली—जोत जागी भरांत भागी; पंज० जोत जागी अते हनेरा गया।

उजाला हुआ और पेट कुलबुलाया—सुबह होने ही भूख लगने लगती है। तुलनीय : पंज० दिन चढ़या अते टिड विच चुहे नच्चै।

उज्रे गुनाह बदतर अज़ गुनाह--पाप छिपाना पाप करने से भी बुरा है।

उज्ज्वल बरन अधीनता एक चरन हो ध्यान, हम जाने तुम भगत हो, निरे कपट की खान--जो बगुला भगत होते हैं उन पर ऐसा कहते है।

उठकर फली सरीखी तो फोड़ती है ही नहीं--उठकर फली जैसी वस्तु को भी नहीं फोड़ती। अत्यंत आलस्य करने वाली औरतों के प्रति ऐसा कहते हैं।

उठ के बजरा यों हँस बोले, खाय बूढ़ जुवा हो जाय—बाजरा खाने से बूढ़ा व्यक्ति भी जवान हो जाता है। आशय यह है कि बाजरा बहुत पौष्टिक अन्न है।

उठ गई तो घड़ी भी तलवार बराबर—(क) समय पर जो वस्तु हाथ में आ जाय वही सबसे बड़ा हथियार है। (ख) अपमानजनक छोटी-सी या थोड़ी-सी बात ही बहुत कष्टदायी होती है। तुलनीय : पंज० उठ गयी तां कड़ी वी वरछी बराबर।

उठ गए ना जानिए जो टट्टी दे गए बार—जो व्यक्ति दरवाज़े पर ताला लगाकर कही चला गया हो उसे मरा नहीं समझ लेना चाहिए।

उठते लात बैठते घूंसा—(क) निर्दय व्यक्ति के लिए कहते है जो किसी को छोटी-छोटी सी बात पर मारता-पीटता है। (ख) दुष्ट व्यक्तियों पर भी कहा जाता है। तुलनीय : अव० उठत-बइठत लात घूंसा; पज० उठते लत बैंदे मुक्का।

उठते ही टाँग टूटी—बदनसीब व्यक्ति को कहते है जिसके किसी काम के आरभ करते ही विघ्न पड़ जाता है। दे० 'सिर मुड़ाते ही ओले पड़े'।

उठ दूल्हे फेरे ले, कहा कि हाय राम मौत दे—सभी काम अन्य लोग तो करते हैं केवल फेरे ही दूल्हे को लेने पड़ते हैं और वह उसमें भी बहुत कष्ट समझ रहा है। आशय यह है कि आलसी व्यक्ति अपने लाभ के काम में भी कष्ट का अनुभव करते है। तुलनीय : राज० उठ बीद फेरा ले, हाय राम मौत दे।

उठ न सकूँ साढ़े तीन नख़रे--जो व्यक्ति काम तो कुछ नहीं करता और लम्बी-चौड़ी डींग हांकता है उसके प्रति ऐसा कहते हैं।

उठ बुढ़िया साँस ले चौका छोड़ के जाँत ले—जब कोई व्यक्ति एक काम कर रहा हो और उसी बीच उसे दूसरा काम भी सौंप दिया जाय या जब किसी व्यक्ति को एक काम से छुट्टी मिलते ही दूसरा काम करने को कहा जाय तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० उठऽ दुलहिन साँस लऽ चउका छोड़ के जाँत लऽ; पंज० उठ बुडी साँह लै चौंका छड्ड ते जात लै।

उठाई छड़ी भी काम कर जाती है—यदि लड़ाई करने के लिए छड़ी ही उठा ली जाय तो वह भी कुछ सहायता कर देती है। आशय यह है कि समय पर जो वस्तु हाथ में आ जाय वही हथियार का काम करती है। तुलनीय : राज० बांगोड़ी तो हेढगी खाली को जावैनी।

उठाई जीभ और तालू से दे मारी—बिना सोचे-समझे बात करने वालों के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० चुकी दी सोटी वी कम कर जांदी है।

उठाऊ का माल बटाऊ में जाय—मुफ़्त में मिला हुआ

धन व्यर्थ के कामों में ही खर्च हो जाता है। जो धन जैसे अर्जित किया जाता है वह वैसे ही समाप्त भी हो जाता है। तुलनीय : हरि० हराम की कमाई हराम में जा सैं; फ़ा० माले-हराम बूद बजा-ए-हराम रफ़्त; पंज० हराम दी कमायी हराम बिच जावे; अं० Ill gotten ill spent

उठाऊ चूल्हा ऐसे मनुष्य के प्रति कहा जाता है जिसका कोई स्थायी निवास-स्थान नहीं होता। तुलनीय : अव० उठल्लू का चूल्हा; ब्रज० उठौ आ चूल्हौ

उठाओ मेरा मकना, मैं घर सँभालू अपना—उस स्त्री के लिए कहते है जो ससुराल में आते ही मालकिन बनना चाहती है।

उठा बबूला प्रेम का, तिनका चढ़ा अकास; तिनका तिन में मिल गया, तिनका तिनके पास—आत्मा के संबंध में कहा गया है कि मरने के पश्चात् शरीर पंच तत्त्वों में मिल जाता है और आत्मा ईश्वर में लीन हो जाती है या आत्मा जहां से आती है, वहां चली जाती है।

उठी पैठ आठवें दिन—आज का उठा हुआ बाज़ार फिर आठवें दिन ही लगेगा, अत: जो कुछ लेना हो आज ही ले लो। आशय यह है कि अवसर को हाथ से नहीं जाने देना चाहिए। तुलनीय : ब्रज० उठी पैठ आठयें दिना लगे।

उठी हाट आठवें दिन लगती है ऊपर देखिए।

उठो बूढ़ा साँस लो, चरखा छोड़ो जाँत लो—दे० 'उठ बुढ़िया साँस ले...'। तुलनीय : पंज० उठ नीनूये निस्सल हो, चरखा छड ते चक्की झो, सस्से नी मै थकी, छड चरखा ते झो चक्की।

उढ़री मेहरिया के ठनगन दुश्चरित्र स्त्री का सजना, सँवरना और नखरा सबसे अधिक होता है।

उड़ के मत पादो—अधिक बड़ा बनने का प्रयत्न मत करो। (क) जब कोई बहुत गप्प हाँकता है तब कहते हैं। (ख) झूठा बहाना बनाने वालों के प्रति भी ऐसा कहा जाता है। तुलनीय : पंज० उड के नां पद मारो।

उड़ के मुँह में खील नहीं गयी है कुछ नहीं खाया, बिलकुल खाली पेट है।

उड़ चल पंछी पी के देश—ऐ पंछी! जहाँ हमारे प्रियतम रहते हैं, वहीं पर हमें ले चलो। विरहिणी स्त्रियाँ पति वियोग में ऐसा कहती हैं। तुलनीय पंज० उड़ चल पंछी पिया दे देस

उड़ता गप्पा—जब कहीं से अनायास धन लाभ हो जाय तब ऐसा कहते हैं।

उड़ती-उड़ती ताक चढ़ी—जब कोई अफ़वाह फैल जाती है तब कहते है।

उड़ती चिड़िया परखते हैं—बुद्धिमान व्यक्ति पर कहते हैं जो किसी का चेहरा देखकर ही उसके मन की बात जान जाता है। तुलनीय : अव० हगारसों कुकरिया कै गाँड पहिचान लेउत है; हरि० सारी हाणा आदमियाँ की आँख देखणा; पंज० सकलों पछानदे हां।

उड़ते के पर काटते हैं बहुत चालाक व्यक्ति के लिए कहते हैं। तुलनीय : अव० उड़त पर काटित है; पंज० उड़दे दे पैर कटदे हां।

उड़ते पंछी का क्या भरोसा—उड़ती चिड़िया का कोई निश्चय नहीं है कि वह कहाँ बैठेगी। किसी अनिश्चित बात के लिए ऐसा कहते हैं।

उड़द कहे मेरे माथे टीका, सो बिन ब्याह न होवे नीका हिंदुओं के यहाँ विवाह में उड़द की बहुत आवश्यकता पड़ती है। 'माथे टीका' का अर्थ है कि मैं भी एक प्रधान चीज़ हूँ। उड़द के मुँह पर सफ़ेद छींटा भी होता है।

उड़द का भाव पूछे बनउर नौ पंसेरी—कोई किसी से उड़द का भाव पूछता है तो वह कहता है कि बनउर एक रुपए का नौ पसेरी बिक रहा है। अनुचित उत्तर देने पर व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० उरदी क भाव पूछीं बनउर नौ पसेरी; मैथ० उरिद के भाव पूछी बनउर नौ पसेरी; पंज० माँ दा पा पुछो बनउर नौ पसेरी।

उड़दी उड़दों की भली रस की आछी खीर; लाज जो राखे पीव की वह भी आछी बीर बड़ी उरद की और दूध की खीर अच्छी होती है। वह स्त्री वीर होती है जो अपने प्रियतम का सम्मान करती है या जो अपने प्रियतम की इज़्ज़त रखती है।

उड़नघाई न बनाओ- बहाना बनाने वालों या बेवक़ूफ़ बनाने वालों के प्रति कहते है।

उड़नहार बहू शहतीर पर साँप दिखावे—भागने वाली बहू शहतीर पर साँप दिखाती है। आशय यह है कि जिसे कहीं रुकना या रहना पसंद नहीं आता वह अनेक भय या बहाने बतलाकर वहाँ से चला जाता है। तुलनीय : कौर० उड़नहार बहू बलीन्डे स्पांपा दिखावै।

उड़ना मत सिखाओ—बहुत चालाकी दिखाने वालों के प्रति ऐसा कहते हैं।

उड़ भंभीरी, सावन आया- ऐ भंभीरी (तितली)! अब तुम उड़ो सावन आ गया। अर्थात् जिस मौक़े के इंतज़ार

में तू थी, वह आ गया। अब आनन्द मना। जब किसी मनुष्य के अच्छे दिन आते हैं तब कहते हैं। तुलनीय : पंज० उड़ बंबीरी मोण आयो।

उड़ा आटा पितरों के नाम—हवा के वेग से जो आटा उड़ गया, वह पित्रों को दिया। जब कोई कंजूस व्यक्ति मुफ़्त में ही वाह-वाही लूटना चाहे तो कहते हैं। या जब कोई किसी को ऐसी वस्तु देकर एहसान करे जो अपने काम में न आने लायक हो तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० उड्या चून पितरू का नौं; पंज० उडदा आटा पितरां दे नां। दे० 'मरी बछिया पांडे के नाम'।

उड़ा किसान पितरों के नाम—ऊपर देखिए।

उड़ा सत्तू पित्रों को—देखिए 'उड़ा आटा···।' तुलनीय : भोज० उधिआइल सतुआ पितरन के दान; मैथ० छितरायल सतुआ पितरन के।

उड़ा हुआ सत्तू पित्रों को—दे० 'उड़ा आटा···'।

उड़िहौ कैसे पंखहि नाहिं—बिना पंख के उड़ना संभव नहीं। अर्थात् बिना साधन के कुछ नहीं हो सकता। तुलनीय : पंज० उड़दा किवें फग ही नई।

उड़ी और फुर्र—चिड़िया डाल से उड़ते ही ग़ायब हो जाती है। झूठ बोलने वालों के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : राज० उडी र फर्र, पंज० उडी ते फुर्र।

उड़ी जात कितहूँ गुड़ी, तऊ उड़ायक हाथ—गुड्डी (पतंग) उड़कर चाहे कहीं भी जाय फिर भी उसकी डोर उड़ाने वाले के हाथ में ही होती है। अर्थात् जब कोई किसी के अधीन हो और वह उसे जिस तरह रखे, रहना पड़े तब कहते हैं।

उड़े चून पुरखन के नाँव—दे० 'उड़ा आटा···'। तुलनीय : तेलु० अंगडि लो वेल्लाम आलयं लो।

उत को भूल न जारे भाई, जित होती हो मार पिटाई—जहाँ मार-पीट होती हो वहाँ नहीं जाना चाहिए नहीं तो स्वयं को भी चोट लगने का भय रहता है।

उतना खेत नहीं जोता, जितनी फ़सल उजाड़ी—जब कोई व्यक्ति लाभ से अधिक हानि ही कर देता है तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : गढ़० मेरा बल्दन तथ्य बायेनी जथ्या उजाड़ खाए; पंज० उन्ना खेतर नई रायां जिन्नी फसल उजाड़ी।

उतने की मजूरी नहीं दी, जितने के कपड़े फाड़ लिए—किसी काम में लाभ की अपेक्षा हानि अधिक होने पर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० उन्ने दी मजूरी नई जिन्ने दे कपडे फाड़े।

उतने पाँव पसारिए जितनी चादर होय—चादर की लंबाई के बराबर ही पैर फैलाना चाहिए। आशय यह है कि अपनी सामर्थ्य के अंदर ही काम करना चाहिए, उसके बाहर जाने से परेशानियों में फँसने का भय रहता है। तुलनीय : मल० उरलरक्कुँ तक्कवण्णम् वायुँ तुरक्कुक; पंज० उन्ने पैर फलाओ जिन्नी चादर होवे; अं० Cut your coat according to your cloth.

उत मत गेहूँ बुवा रे चेले, जित हों थल और पाथर ढेले—कँकरीली और पथरीली भूमि में गेहूँ नहीं बोना चाहिए।

उतर गई लोई, तो क्या करेगा कोई—जब इज़्ज़त ही चली गई तो किसका डर। अर्थात् किसी का नहीं। आशय यह है कि निर्लज्ज या बेहया व्यक्ति मान-अपमान की चिंता किए बिना कुछ भी कर बैठते हैं। तुलनीय : अव० उतरि गइ लोई, तउ का करिहे कोई; मरा० एकदां आगावरची शाल निघाली खरी, मग आतां कशाला कोणाला भ्यायचें; पंज० उतर गयी लोई ते की करेगा कोई। (लोई = कंबल, उतर जाना = नंगे हो जाना अर्थात् इज़्ज़त उतर जाना)।

उतरन पहने लाज बचावे—दूसरों के उतारे हुए पुराने वस्त्रों को पहनकर भी लज्जा रखनी पड़ती है। विपत्ति में जब दूसरों की निकृष्ट सहायता लेकर मान-मर्यादा की रक्षा करनी पड़े तब कहते है। तुलनीय : भीली—लाजे लबरू ओढ़वू हे; पंज० पराने पाके लाज रखो।

उतराई जैसे टके दे रखे हैं—(क) खरा दाम लेने पर भी जब कोई किसी को रोब दिखाता है तब कहते हैं। (ख) जब कोई देना-लेना कुछ नहीं और उलटे धौंस जमाता है, तब भी ऐसा कहते हैं।

उतराई दी और बह गए—पैसा भी ख़र्च हुआ और कोई लाभ भी न हुआ, उलटे बह भी गए। सब प्रकार से हानि उठाने पर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० उतराई वी दित्ती अतेरुड़ गये।

उतरा घाटी हुआ माटी—गले के नीचे उतरते ही अन्न मिट्टी हो जाता है। आशय यह है कि जब कोई पदार्थ या मनुष्य कार्य संपन्न हो जाने के बाद निरर्थक हो जाय तब कहते हैं। तुलनीय : पंज० उतरया थल्ले होया मिट्टी।

उतरावन इत राम दुहाई, जयति जयति जय पड़ी लड़ाई—जब दोनों ओर का जोड़ बराबर होता है तब ऐसा कहते हैं।

उतरा शहना/सहना मर्दक नाम—जब मनुष्य अपने पद से हटा दिया जाता है तब उसका प्रभाव भी घट जाता है।

किसी पद पर से हटा दिए जाने पर जब उसका पहले जैसा सम्मान नहीं होता तब कहते हैं। (महना कोतवाल; मर्दक --नामद।)

उतरी नदी किनारे ढाय—(क) नदी में बाढ़ के बाद जब पानी उतरता है तो किनारों की मिट्टी अपने साथ बहा ले जाता है। (ख) हानि होने पर या भूखा होने पर मनुष्य चिड़चिड़ा हो जाता और अपने से दुर्बल व्यक्ति को भला-बुरा कहने तथा मारने लगता है।

उतरे जी से चीज जो, बाकी सार न होय; तू ऐसा न कीजियो, जगत बिसारे तोय मन से उतरी हुई चीज़ का कोई मूल्य नही रह जाता। इसलिए तुम भी ऐसा काम न करो जिससे तुमसे लोग घृणा करें।

उतरे जेठ जो बोलै दादुर, कहैं भड्डरी बरसे बादर—भड्डरी के मतानुसार यदि जेष्ठ (जेठ) के समाप्त होते ही मेंढक बोलने लगें तो शीघ्र ही वर्षा की संभावना होती है।

उतसे अंधा आय है, इतसे अंधा जाय; अंधे से अंधा मिला, कौन बतावे राय - अंधे से यदि अंधा रास्ता पूछे तो उसे नहीं मालूम हो सकता। अर्थात् जब काम करने वाले और कराने वाले दोनों को न मालूम हो कि काम कैसे किया जाय तब कहते है।

उतार दी लोई, तो क्या करेगा कोई—दे० 'उतर गई लोई···'।

उतारन बेचने से ग़रीबी नहीं जाती - (क) छोटे-मोटे साधन या उपाय से बड़ी समस्या हल नहीं होती। (ख) जब कोई छोटी या थोड़ी-सी ही पूँजी लगाकर बहुत बड़ा सेठ बनना चाहता है तब भी कहते है। तुलनीय : राज० दांतण बेच्यां दलद्दर को जावैनी; पंज० गोलिया (खाने वाली) बेचण नाल गरीबी नई जांदी,'

उतारो नाथ पार मोरी नैया—हे ईश्वर इस संसार रूपी समुद्र से मेरी नौका पार लगा दो। दुख के समय ईश्वर से प्रार्थना है।

उतावला इधर से उधर भागे—उतावला व्यक्ति इधर से उधर भागता रहता है। जब कोई व्यक्ति किसी कार्य को बहुत जल्दबाज़ी में करना चाहता है ऐसी दशा में उसका काम भी ठीक नहीं होता और उसे परेशानियाँ भी अधिक सहनी पड़ती हैं तब यह कहावत कही जाती है। तुलनीय : राज० ऊँतावलो सौ बार पाछो आव; पंज० उतावला इदर तो उदर नठ्ठे।

उतावला बावला—जल्दबाज़ व्यक्ति पागल के समान होता है और उसका कार्य भी सफल नहीं होता। जो गंभीरता से और धैर्य के साथ काम करता है उसे अवश्य सफलता मिलती है।

उतावला मारा जाय, धीरा नाम कमाय--दे० 'उतावला बावला'। तुलनीय : राज० ऊँतावलांरी देवलयां हुवै धीरांरा गाँव बसै।

उतावला सो बावला—दे० 'उतावला बावला'। तुलनीय : मल० पेण्णम् केट्टि व ण्णम् पोट्टि; पेण्णु केट्टियाल् कालुम् केट्टि; पुलन पेट्टाल् वायुम् केट्टि; हरि० तवला सो बावला; ब्रज० उतावलो सो बावलो; तेलु० आम गडिकि बुद्धि मट्टु; अ० Marry in haste repent at leisure;

उतावला से बावला, धीरा सो गंभीरा—जल्दबाज़ व्यक्ति पागल जैसा हो जाता है और उसका काम भी सफल नहीं होता और जो व्यक्ति गंभीरतापूर्वक धैर्य से काम कर सकता है, उसे सफलता प्राप्त होती है। तुलनीय : बुंद०धीरा सो गंभीरा; अव० उतावला तौ बावला धीरा तौ गंभीरा; पंज० जलदबाज सो पागल अराम वाला गंभीर।

उत्कृष्ट दृष्टि निकृष्टेऽध्यासि तव्या—लघुतर वस्तुएँ महत्तर रूप से अवलोकनीय हैं। आशय यह है कि कभी-कभी राजा के सारथी को भी समय और स्थान की उपयुक्तता के अनुसार 'राजा' शब्द का प्रयोग करके संबोधित कर लिया जाता है।

उत्खातदंष्ट्रोरग न्याय--दाढ़ (विषाक्त दंत) रहित सर्प का न्याय। विषैले दाँतों को निकालने के पश्चात् सर्प काटने की शक्ति से रहित हो जाता है। फलतः वह किसी को भी नहीं काटता।

उत्तम खेती आप सेती, मध्यम खेती भई सेती: निकृष्ट खेती नौकर सेती, बिगड़ गई तो बलाय सेती—नौकर यदि खेती करता है तो उसकी बला से कुछ उपजे या न उपजे उसे वेतन से काम। अतः नौकर से खेती कराना सबसे निकृष्ट है। भाई यदि खेती करता है तो थोड़ा-बहुत तो पैदा होगा ही क्योंकि भाई कुछ न कुछ काम अवश्य करेगा। सबसे अच्छी खेती तब होती है जब वह अपने हाथ से की जाए।

उत्तम खेती जो हरगहा, मध्यम खेती जो संग रहा, तो पूँछेसि हरवाहा कहाँ बीज बूड़िगे तिनके तहाँ—सबसे उत्तम खेती वह होती है जो अपने हाथों से की जाए। मध्यम खेती तब होती है जब नौकरों के साथ स्वयं रहकर देखभाल की जाए और सबसे खराब वह खेती है जो नौकरों के बल पर छोड़ दी जाए। मालिक को पता ही नहीं रहता कि उसके हल-बैल कहाँ पर है। आशय यह है कि नौकरों के बल पर छोड़ देने से खेती अच्छी नहीं होती।

उत्तम खेती मध्यम बान, नीच नौकरी चाकरी भीख निदान—खेती करना सबसे अच्छा काम है, खेती के बाद व्यापार अच्छा माना जाता है, पराई सेवा करना बुरा माना जाता है और भीख माँगना सबसे बुरा समझा जाता है। तुलनीय: मरा० उत्तम शेती, मध्यम व्यापार, कनिष्ट चाकरी सेवटी भिकार; गढ़० उत्तम खेती, मध्यम बणज, कठिन चाकरी विकट जोग; ब्रज० उत्तम खेती मद्धिम बान, निखद चाकरी भीख निदान।

उत्तम गाना मध्यम बजाना—कंठ संगीत सर्वश्रेष्ठ है, उसके बाद वाद्य।

उत्तम विद्या लीजिए, यदपि नीच पे होय, पर्यो अपावन ठौर में कंचन तजे न कोय—जिस प्रकार बुरे स्थान पर पड़ा हुआ सोना नहीं छोड़ा जाता अर्थात् उठा लिया जाता है, उसी प्रकार यदि विद्वान स्वभाव का नीच हो तब भी उससे विद्या ग्रहण करनी चाहिए। आशय यह है कि अच्छी चीज़ें जिस किसी रूप में मिलें अपना लेनी चाहिए।

उत्तम से उत्तम मिले और मिले नीच से नीच, पानी से पानी मिले और मिले कीच मे कीच—भले लोगों का भले और दुष्टों को दुष्ट मिल ही जाते हैं अर्थात् संसार में जैसों को तैसे ही मिलते हैं।

उत्तर उपजै बहु धन धान, खेत बात सुख करे किसान—उत्तर दिशा से हवा चलने पर फसलें अच्छी होती हैं इसलिए किसानों के दिन अच्छे बीतते हैं।

उत्तर की हो इस्तरी (स्त्री) दक्खिन ब्याही जाय, भाग लगावे जोग जब, कुछ ना पार बसाय—जहाँ जिसका संयोग होना है, वहाँ उसे जाना ही पड़ता है। उत्तर की स्त्री दक्षिण में भी ब्याही जाती है। भाग्य सबसे प्रबल है।

उत्तर गुरु दखन माँ चेला, कैसे विद्या पढ़े अकेला—विद्या बिना किसी के पढ़ाए नहीं आती। तुलनीय: पंज० उत्तर गुरु दखन चेला किवें विद्या पढ़े कल्ला।

उत्तर चमके बीजली, पूरब बहना बाउ; घाघ कहे सुन भड्डरी, बरधा भीतर लाउ—कवि 'घाघ' के अनुसार यदि उत्तर दिशा में बिजली चमके और पूरब की ओर से हवा चले तो समझना चाहिए कि शीघ्र ही वर्षा होने वाली है, अत: बैलों को भीतर बाँध देना चाहिए।

उत्तर जाव कि दक्खन, वही करम के लक्खन—उत्तर जाय या दक्षिण हर जगह भाग्य साथ ही रहता है। बदनसीब लोगों के प्रति कहते हैं जिन्हें कभी भी आराम नहीं मिलता।

उत्तर बाय बहै दड़वड़िया, पिरथी अचूक पानी पड़िया—उत्तर दिशा से लगातार हवा चलने से वर्षा बहुत अधिक होती है।

उत्तर रहे बतावे दक्खन, वाके आछे नाहीं लक्खन—जो रहे कहीं और बतावे कहीं उसके प्रति कहते हैं। अर्थात् झूठ बोलने वालों का विश्वास नहीं करना चाहिए। तुलनीय: पंज० उत्तर रह के दखण दसै।

उत्तर हर जो बरसा होवे, काल पिछोकर जाकर रोवे—उत्तर में वर्षा होने पर अकाल का भय नहीं रहता।

उत्पटित दंत नाग न्याय:—दाँत तोड़े हुए साँप के समान। जिस व्यक्ति की शक्तियाँ छीन ली जायँ उसके प्रति कहते हैं।

उत्साही धुनियाँ मूँज की ताँत—उत्साही कार्यकर्ता के अटपटे उपादान होते हैं। जब कोई शीघ्र कार्य करने की धुन में यह भी नहीं देखता कि कार्यपूर्ति के समुचित साधन हैं या नहीं तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय: कौर तना धुणा मूज की तांत। दे० 'नई नाइन बाँस का निहन्ना'।

उथली रकाबी फुलफुला भात, लो पंचों हाथों हाथ—एक तो छिछली तश्तरी है जिस पर फुला कर भात रखा है और उसे ही देने के लिए सबको बुला रहे हैं। कंजूस अथवा वाह्य आडंबर दिखाने वालों के प्रति कहते हैं।

उथले कहिके गहिरे बोरें—सरल काम बतला कर कठिन में फँसा देने वाले के प्रति कहते हैं।

उदक निमज्जन न्याय—प्राचीन काल में यह जानने के लिए कि कोई दोषी है या निर्दोष, एक प्रथा थी जिसे कि उपरोक्त न्याय कहते हैं। अपराधी को पानी में खड़ा करके बाण चलाते थे और बाण चलाने के साथ ही अपराधी पानी में डुबकी लगाता था। यदि बाण के भूमि पर गिरने के समय तक अपराधी पानी में डूबा रहता था तो उसे निर्दोष मान लिया जाता था और यदि उसका कोई भी अंग पानी से बाहर दिखाई पड़ जाता था तो उसे दोषी मान लिया जाता था। जहाँ कोई सत्यासत्य की बात हो वहाँ ऐसा कहते हैं।

उदधि पिता तऊ चन्द्र को, धोय न सक्यो कलंक—समुद्र चंद्रमा के पिता हैं फिर भी उसके कलंक को धो नहीं सके। आशय यह है कि किसी के दोष को सामर्थ्यवान व्यक्ति भी नहीं छिपा सकता

उदधि बड़ाई कौन है, जगत पियासो जाय—समुद्र की क्या प्रशंसा की जाय जब लोग उसके पास से प्यासे ही गुजर जाते हैं। वह किसी की प्यास को नहीं मिटा पाता। आशय

यह है कि ऐसे लोगों का धनी होना व्यर्थ है जो किसी की कुछ सहायता नही करते। कंजूस धनियों के प्रति व्यंग्य में कहते है।

उदधि रहे मरजाद में बहै उमड़ि नद-नीर—समुद्र न घटता है और न बढ़ता है जबकि नदी थोड़ी सी वर्षा होने पर उफन कर बहने लगती है। आशय यह है कि गंभीर पुरुष मर्यादा नही छोड़ते, परन्तु ओछे व्यक्ति थोड़े में ही इतराने लगते है। तुलनीय : राज० आम फलै नीचो लुकै, एरंड अकासां जाय; उर्दू – कह रहा है शोरे-दरिया से समदर का सकूत, जिसमे जितना ज़र्फ़ है उतना ही वो ख़ामोश है (ज़र्फ़ - पात्रता); अं० The wise man in office is humble Jack in office is offiensive.

उदय के साथ ही अस्त भी है—जो उदय होता है वह अस्त भी होता है। अर्थात् संसार की सभी वस्तुएँ एवं प्राणी नाशवान है। तुलनीय : पंज० चढ़ण नाल डुबना वी है

उदय में, न अस्त में—(क) जो बुरे-भले किसी में न रहे अर्थात् मध्यस्थ रहे उसके प्रति कहते है। (ख) जो अमीर-गरीब किसी मे न हो उसके प्रति भी कहते है। तुलनीय : गढ़० उदय माँ न अस्त मां; पंज० चढ़न बिच ना न डुबन बिच।

उदय होगा तो अस्त भी होगा दे० 'उदय के साथ······'।

उदर निमित्त बहुत कर वेषा—पेट भरने के लिए तरह-तरह के रूप धारण करने पड़ते है। उन पर व्यंग्य में भी ऐसा कहते हैं जो कमाने के लिए तरह-तरह का रूप धारण करते है। तुलनीय : तेलु० कोटि विद्यलु कूटि कोरके, पंज० टिड परण लई बहुत कुज करना पैदा है।

उदरेभृते कोशो भृतः पेट भरा है तो खजाना भी भरा है। प्रस्तुत न्याय का प्रयोग उस आलसी आदमी के लिए किया जाता है जिसकी महत्वाकांक्षा केवल उदर-पूर्ति है।

उदासीन धन धाम न जाया—त्यागी पुरुष धन, घर और स्त्री से भी संबंध नहीं रखते।

उदित अगस्त पंथ जल सोखा अगस्त तारे के उदय होने पर वर्षा का जल सूख जाता है।

उद्धव का लेना न माधव का देना--दे० 'ऊधो का लेना...'।

उद्यम कबहुँ न छाँड़िए पर आशा के मोद--दूसरे की आशा में अपना उद्यम या प्रयत्न कभी नही छोडना चाहिए, क्योंकि दूसरे की बातों का कुछ ठिकाना नहीं होता।

उद्यम कबहुँ न छाड़िए, फल के दाता राम—मनुष्य को उद्यम या प्रयत्न करते रहना चाहिए, फल देने वाला तो ईश्वर है। आशय यह है कि प्रयत्न करने पर सफलता अवश्य मिलती है। तुलनीय : स० कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

उद्यम किए दलिद्दर भागे—उद्यम (व्यापार या प्रयत्न) करने से गरीबी दूर हो जाती है। अतः मनुष्य को उद्यम अवश्य करना चाहिए। तुलनीय : पंज० उददम करो दरिदर नट्ठे।

उद्योगं पुरुष लक्षणम्--उद्योग करना ही पुरुष का लक्षण है।

उद्योग नसीब का मूल है—उद्योग से ही मनुष्य का भाग्य जुड़ा हुआ है और उसी से वह सुखमय जीवन व्यतीत करता है। तुलनीय : गुज० उद्योग सारां नसीबनुं मूल छे।

उद्योगिनं पुरुष सिंह मुपैति लक्ष्मी—उद्योगी पुरुषों के पास लक्ष्मी सदा उपस्थित रहती है।

उधड़े पर सुधरे—यदि कपड़े की सिलाई खराब हो गई है तो बिना उधेड़े वह ठीक नहीं हो सकती। आशय यह है कि बिगड़े हुए काम को ठीक करने के लिए पुनः श्रम करना पड़ता है। तुलनीय : पंज० उदड़े पर सुदरे।

उधली बहू बलैंडे साँप दिखावे--दे० 'उड़नहार बहू सहतीर···'।

उधार का खाना आग खाने के बराबर—आग खाने पर नाश अवश्यंभावी है, ठीक उसी प्रकार उधार का खाना भी मनुष्य के लिए अच्छा नहीं। तुलनीय : भोज० आग आ उधार खाइल बरोबरे ह।

उधार का खाना और फूस का तापना बराबर--जिस प्रकार फूस की आग बहुत देर तक नहीं रह सकती, उसी प्रकार उधार लिया हुआ धन बहुत दिन तक नही चल सकता। तुलनीय : भोज० उधारे क खाइल अ पुअरा क तापल बरोबरे होला; गढ़० गलका खाणा, हुलका तापणा; मरा० उधारी चे खाणे नि गवताची आग दोन्ही सारखीच; बुंद० फूस कौ तापबौ, उधार कौ खाबौ; छत्तीस० उधार के खवइ अउ भूर्री के तपइ; कनौ० उधार को खइबो और फूस को तपिबो एक सो है; पंज० उदारदा खाना अते पौ दा सेकना बराबर।

उधार का खाना फूस का तापना—ऊपर देखिए।

उधार का खाया और गाँड़ का मराया कभी नहीं भूलता—ये दो काम ऐसे हैं जिनके कारण व्यक्ति अपमानित और लज्जित रहता है, इसलिए वे आयु भर नहीं भूलते। आशय यह है कि उधार का खाना अच्छा नहीं।

होता। तुलनीय : अव० उधार के खाब, गाँड़ के मराउब नाहीं भूलत; पंज० उदार दा खादा अते गाँड दा मराया कदीं नइँ पुलदा।

उधार काढ़ि ब्यौहार चलावै, छप्पर डारै तारो; सारे के संग बहिनी पठवै तीनहुँ का मुंह कारो—उधार लेकर जीवनयापन करने वाला, छप्पर वाले घर में ताला लगाने वाला और अपने साले के संग अपनी बहन को भेजने वाला—ये तीनों बहुत मूर्ख समझे जाते हैं।

उधार का बाप तक़ाज़ा—उधार लेकर खाना तो अच्छा लगता है, पर जब देने वाला माँगने आता है तो बहुत बुरा लगता है या बहुत कष्ट होता है। तुलनीय : भोज० उधार क बाप तगादा।

उधार की क्या माँ मरी है—नक़द पास न सही उधार तो मिलेगा।

उधार के कोदों खायें, ठसक से मरी जायें—एक तो कोदों जैसा अन्न उधार लेकर खाते हैं, फिर भी ठसके (नखरा) के मारे धरती पर पैर नही रखते। जब कोई व्यक्ति ग़रीब होते हुए धनी लोगों जैसा स्वांग रचता रहता है तब उसके प्रति ऐसा कहते हैं।

उधार खाए, दुख उठाए—उधार खाने से व्यक्ति सदा दुखी रहता है। तुलनीय : मल० कटमोषिञ्ञाल् भय-मोषिञ्ञु।

उधार खाए बैठे हैं—बिल्कुल तैयार बैठे हैं। जब कोई व्यक्ति किसी कार्य को करने के लिए तुल जाता है तब कहते हैं। तुलनीय : अव० उधार खाइके बैठे अहैं; पंज० उदार खा के बैठे हन।

उधार खाना फूस तापना बराबर है—दे० 'उधार का खाना और…'।

उधार खाने की अपेक्षा भूखे सो रहना भला है—उधार लेकर खाने से उपवास कर जाना अच्छा होता है। उधार की बुराई बताने के लिए ऐसा कहते है। आशय यह है कि उधार लेकर खाना बहुत बुरा होता है। तुलनीय : मल० पिणम् चुट्टालुम् ऋणम् चुटा; पंज० उदार खाण तो पुखे रैण चंगा है। अं० Better go to bed supperless than rise in debt.

उधार घर की हार—उधार देने से धीरे-धीरे संपत्ति नष्ट हो जाती है। तुलनीय : राज० उधार घररी हार; पंज० उदार कर दी हार।

उधार चाहे तो और घर देख—उधार न देने वाले कहते हैं। तुलनीय : राज० ओधार पोधार, थारै घरे सिधार; पंज० उदार चाइदा ते होर कर देख।

उधार दिया, गाहक खोया—(क) जिस ग्राहक को सामान उधार दिया जाता है, वह देने के डर से जल्दी नहीं आता। (ख) उधार दिए हुए ग्राहक को जब दुकानदार डाँट-फटकार देता है तब ग्राहक नाराज़ होकर उसके यहाँ नहीं जाता, ऐसी दशा में भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० उधार दियो, र गिरायक गमायो; अव० उधार दइकै गाहक खोवै; पंज० उदार दिता गाहक गवाया।

उधार दिया, ग्राहक गँवाया—ऊपर देखिए।

उधार दिया मित्र खोया—यदि किसी मित्र को उधार देकर माँगा जाय तो उसे बुरा लगता है और इस प्रकार मित्रता टूट जाती है। उधार देने और लेने वालों के शिक्षार्थ ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ० तेरी मेरी कब बिगड़ी जब लेण देण होली; : पंज० उदार दिता मितर गवाया।

उधार दीजै, दुश्मन कीजै—उधार देने से माँगना पड़ता है और जब बार-बार माँगने पर नही मिलता तो वाद-विवाद हो जाता है, जिससे दुश्मनी हो जाती है। तुलनीय : राज० उधार दीजै दुसमण कीजै; अव० उधार देय दुसमनी लेय; बुंद० उधार देओ और बैर बिसाव; : पंज० उदार देके दुसमण बनाओ।

उधार देखकर सबका दिल करता है—बिना मूल्य दिए यदि कोई चीज़ मिले तो सभी लेना चाहते है। तुलनीय : पंज० उदार लैण नूं सब दा दिल करदा है।

उधार देना बैर का बढ़ाना—उधार देना बैर बढ़ाने का कारण हो सकता है। लेन-देन से प्रायः संबंध बिगड़ जाते हैं। तुलनीय : मेवा० उधार दणो ने बैर बढ़ावणों; पंज० उदार देना बैर वदाना है।

उधार देना लड़ाई मोल लेना है—उधार लेने वाला जब समय से वापस नहीं करता तो उससे माँगना पड़ता है और माँगने पर कुछ वाद-विवाद हो ही जाता है। इसी बात को ध्यान में रख कर उक्त कहावत कही गई है। तुलनीय : अव० उधार देय लड़ाई मोल लेय; हरि० उधार दे कै दुश्मण बनण सै; पंज० उदार देना लड़ाई मुल लेणा है।

उधार दो और बैर पालो—दे० 'उधार दीजै…'।

उधार बड़ी हत्या है—किसी का ऋणी होना बहुत बुरा है। तुलनीय : अव० उधार बड़ी हत्तिया अहै।

उधार मित्रता की क़ैंची है—मित्रता में पहले तो कुछ देना ही नहीं चाहिए और दिया भी जाय तो उसे माँगना नही चाहिए। देकर माँगने से ही मित्रता समाप्त हो जाती

है। तुलनीय : पंज० उधार दोसती दी कैंची है।

उधार में महँगा क्या ?—उधार लेने वाला यह नहीं देखता कि वस्तु सस्ती है या महँगी। उसे तो हर दशा में लेना ही होता है। आशय यह है कि मजबूरी या ग़रीबी में जानबूझकर इंसान को हानि बर्दाश्त करनी पड़ती है। तुलनीय : गढ़० पड़्यो नी त अकरो की को; पंज० उदार बिच मैंगा की।

उधार लेने वाला पासंग नहीं देखता—ऊपर देखिए। तुलनीय : ब्रज० उधार वारो का पासंगै देखैं।

उधार स्नेह की क़ैंची है—दे० 'उधार मित्रता की···'। तुलनीय : मल० पणम् कोटुत्तु शत्रुविने नेटुक; अं० He that does lend does lose a friend.

उधियाइल सतुआ पितरन के दान—जो सत्तू उड़ जाता है वह पित्रों के नाम पर छोड दिया जाता है। जब कोई ऐसी वस्तु को जो अपने काम में आने लायक़ नही होती किसी को देकर उस पर एहसान करना चाहता है तब ऐसा कहते हैं।

ऊधो का लेना न माधो का देना—जब कोई किसी से कुछ लेता-देता नही तब वह ऐसा कहता है। लेन-देन की परेशानियों से दूर रहकर अपने काम से काम। एक लेना न दो देना। तुलनीय : बुंद०, ब्रज० उधौ कौ लैन् न माधौ कौ दैन; पंज० ऊधो दा लेणा नां माधो दा देणा।

ऊधो मन माने की बात—यह पंक्ति सूरदास के एक पद्य की है। उद्धव जी गोपियों से निर्गुण ब्रह्म की आराधना करने के लिए कहते हैं, तब गोपियाँ उत्तर में कहती हैं कि इसे मानना या न मानना तो हम लोगों के मन की बात है। अर्थात् किसी व्यक्ति की राय मानना या न मानना अपने पर निर्भर करता है। यदि वह प्रिय होती है तो मानी जाती है और अप्रिय होती है तो नही मानी जाती। तुलनीय : सं० तस्य तदेव हि मधुरं यस्य मनों यत्र संलग्नम्; पंज० ऊधो मन माने दी गल।

उनकी तूती बोलती है—जिस व्यक्ति का बहुत रोब-दाब होता है उसके लिए कहते हैं। तुलनीय : पंज० उस दी तूती बोलदी है।

उनकी पकाई किसने खाई—(क) फूहड़ औरतों के लिए कहते हैं जिन्हें अच्छा भोजन बनाना नहीं आता। (ख) कंजूस व्यक्ति के प्रति भी कहते हैं, क्योंकि उसके जीते जी उसके धन का कोई उपयोग नहीं कर सकता। तुलनीय : पंज० उस दी पकाई किन खादी।

उनके कान न उनके आँख—जब दोनों व्यक्ति एक से मूर्ख होते हैं तब कहते हैं। तुलनीय : पंज० उसदे कन न उसदियां अखां।

उनके काटे रूख नहीं रहे—जो उसके वश में एक बार आ गया नष्ट हो गया अर्थात् वह बड़ा चालाक और धोखे-बाज़ व्यक्ति है।

उनके पेशाब में चिराग़ जलता है—दबंग आदमी के लिए कहते हैं। तुलनीय : पंज० उस दे पेशाब (मूतर) बिच तां दिया बलदा है।

उनके बिना क्या मंडप अटका है ?—उनके बिना शादी बंद नहीं होगी। जब कोई व्यक्ति महत्त्वपूर्ण न होते हुए भी नाराज़ होकर किसी काम में सम्मिलित नहीं होता तो उसकी कुछ परवाह किए बिना ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० उसदे बगैर व्याह नई होणा।

उन्नीस बीस का तो फ़र्क़ होता ही है—सभी वस्तुएँ या मनुष्य समान नहीं होते, उनमें कुछ भिन्नता होती ही है। तुलनीय : अंव० ओनइस बीस का तउ फरक होवै करी; हरि० उन्नीस बीस का तै फरक होए सै; मरा० किंचित फरक असायचाच (या जगांत अगदी सारावा स्वभाव जमणें अशक्य); पंज० उन्नी बी दा ते फर्क हुंदा ही है।

उन्नीस या बीस—थोड़ा कम या थोड़ा अधिक। बहुत कम अंतर होने पर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० उन्नी या बी।

उपकार करता मारा जाय—जब कोई अच्छा काम करने के कारण कष्ट भोगे तो कहते हैं। तुलनीय : सं० उप-कुर्वन्नेव हन्यते; पंज० पला करदा मारया जावे।

उपकार के बदले अपकार—ऊपर देखिए। तुलनीय : छासमां माखण जाय ने वहु कूवड कहेवाय।

उपकारी से सब नवें, अपकारी से सब तनें—उपकार करने वाले से सभी दबते हैं तथा अपकार (बुराई) करने वाले से कोई नहीं दबता। अर्थात् सज्जन व्यक्ति को सब लोग आदर-सम्मान देते हैं पर दुष्ट व्यक्ति को कोई सम्मान नहीं देता। तुलनीय : गढ़० गुण को मार्यूं हे रो उंदो, थप्पड़ को मार्यूं हेरो उब्बो।

उपजहिं एक संग जल माहीं, जलज, जोंक जिमि गुण बिलगाहीं—कमल और जोंक दोनों ही जल में पैदा होते हैं, परन्तु अपने-अपने गुण-दोष के कारण वे भिन्न-भिन्न हो जाते हैं। इसी प्रकार सभी मनुष्य ईश्वर के पैदा किए होते हैं, पर अपने-अपने गुण-दोष के कारण भले-बुरे कहे जाते हैं। जब सगे दो भाई भी विपरीत स्वभाव के हों तब भी ऐसा कहते हैं।

उपजीव्य विरोधस्यायुक्ततावम्— आश्रयदाता का विरोध करना उचित नहीं होता।

उपजे थे सो मर गए, बीज पड़े की आस—जो पैदा हुए थे वे तो मर गए या नष्ट हो गए और जो बोए हैं उन्ही की आशा है। (क) जब किसी के पैदा हुए बच्चे मर जायें और वह गर्भ की आशा में रहे तब कहते है। (ख) जब किसी का बना काम बिगड़ जाय और केवल भविष्य में होने वाले की आशा पर रहे तो भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० होयां उपज्यां की खाल, पेट का की आस।

उपजे यदपि सुवंश में खल तउ दुखद कराल— दुष्ट मनुष्य चाहे कितने भी उच्च कुल में उत्पन्न क्यों न हो, पर वह अपनी दुष्टता नहीं छोड़ता और इस कारण वह सबको कष्ट देता है।

उपदेश की अपेक्षा दृष्टान्त अच्छा होता है— उपदेश देने से अच्छा यह है कि उस उपदेश से संबंधित कोई उदाहरण बतला दिया जाय, क्योंकि उसकी अपेक्षा इसका अधिक प्रभाव पड़ता है। तुलनीय : मल० शास्त्रमाल् रूढ़ी बलीयसी; पंज० उपदेस नालों दसना चंगा; अं० Example is better than precept.

उपधिया जान के ब्याह किया है, पर दूसरी जाति न निकले— नीच जाति समझकर तो विवाह ही किया है लेकिन जब उसमें भी नीच न हो तो अच्छा है। जब कोई अपनी मजबूरी में जानबूझ कर किसी गलत व्यक्ति से संबंध करता है और उसके अधिक गलत होने की कामना नहीं करता या उसके अधिक ग़लत होने की संभावना होती है, तब ऐसा कहता है।

उपयन्नपयन्धर्मो विकरोतिहि धर्मिणम्—गुण का प्रकाश अथवा लोप गुणी में समान रूप से परिवर्तन कर देता है।

उपयोग करने से वस्तु ठीक रहती है— जब किसी वस्तु का हमेशा उपयोग किया जाता है तो वह अच्छी रहती है। उपयोग न करने से उसके सड़ने-गलने या उसमें जंग लगने की संभावना रहती है। तुलनीय : पंज० बरतन नाल चीज ठीक रैंदी है; अं० Better to wear out than to rust out, Used key is always bright.

उपरोहिती कर्म अति मंदा— उपरोहिती का काम सबसे निकृष्ट है।

उपले थापनी आइयां, हाथ पोंछे दरियाइयां— अपने नैहर या मायके में उपले पाथती थी और अब ब्याह होने पर ससुराल में दरियाइयाँ (एक प्रकार का रेशमी कपड़ा) से हाथ पोंछती हैं। जब किसी ग़रीब की लड़की धनी घर में ब्याही जाने के बाद अपनी पहले की स्थिति को भूल जाती है तब ऐसा कहते हैं।

उपवास से पतोहू का जूठ भला— उपवास करने से पतोहू का जूठा भोजन ही खा लेना अच्छा होता है। आशय यह है कि भूखे मरने की अपेक्षा जो कुछ भी अच्छा-बुरा मिले उसे खा लेना ही ठीक है। तुलनीय पंज० वरत रखण नालों पोते दी जूठी रोटी पली।

उपवास से बीबी का जूठा भला—ऊपर देखिए। तुलनीय : भोज० उपास से मेहरी क जूठ भल; मैथ० उपास भला कि मेहरी के जूठ भला।

उपवास से भल भीख—उपवास करने से भिक्षा माँगना कहीं अच्छा है। आशय यह है कि भूखे मरने से अच्छा है कि कोई भी छोटा-मोटा काम करके पेट भर लिया जाए। तुलनीय : सं० उपवासाद् वरं भिक्षा; पंज० भुखे तों मंगना चंगा।

उपास की रात बड़ी प्यारी— अपने सम्मान पर गर्व करने वाले व्यक्ति किसी के सामने हाथ फैलाने की अपेक्षा बिना खाए सो जाना ही अच्छा समझते हैं। तुलनीय : मैथ० उपासक राति बड़ पियार, पंज० भुखे दी रात बड़ी पयारी।

उपास के न तिरास के, फलार के जम से— उपवास तो करते नहीं लेकिन फलाहार करने के लिए यम की तरह हैं। (क) जो व्यक्ति बिना कष्ट उठाए ही अच्छी वस्तुओं या अच्छे पद को प्राप्त करना चाहता है उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते है। (ख) जो व्यक्ति केवल खाने में ही तेज़ होता है और किसी काम में नहीं, उसके प्रति भी कहते हैं।

उपास भला की पतोहू का जूठ—दोनों ही बुरे हैं। कोई पहले को अच्छा समझता है और कोई दूसरे को अच्छा समझता है। तुलनीय : अव० उपास भल की पतोहु क जूठ भल।

उफनी हँड़िया जाति से गई—मर्यादा से बाहर होने पर बेइज्ज़ती उठानी पड़ती है।

उभयतः पाश रज्जुः न्याय— जब दोनों ओर विपत्ति हो तो कहते है।

उभयतः पाश रज्जु—एक रस्सी जो दोनों किनारों को बाँधती है। व्याकुलता उत्पन्न करने वाली वस्तु के संबंध में इसका प्रयोग किया जाता है।

उमरा जो कहे रात तो हम चाँद दिखा दें—चापलूस और खुशामदियों पर कहते हैं।

उमा दारु योषित की नाईं, सबहिं नचावत राम

गोसाईं—ईश्वर कठपुतली की तरह सबको नचाते रहते हैं। (दारु = लकड़ी, योषित = पुतली)।

उरझे से सुरझे भले, जो प्रभु राखे टेक—लड़ाई-झगड़े में दूर रहना अच्छा है, पर जब ईश्वर इसे निभा दें तब।

उर्द मोथी की खेती करिहौ, कुड़िया तोर उसर में धरिहौ—उर्द और मोथी की खेती करोगे तो कूँडा (मिट्टी का घड़ा जिसमें किसान लोग अन्न रखते हैं) या कुरिया (खेत की रखवाली के लिए फूस का छोटा-सा छप्पर) तोड़ कर तुमको ऊसर में रखना पड़ेगा। क्योंकि उर्द और मोथी की खेती उसरीली ज़मीन में अधिक होती है। अथवा उर्द और मोथी के भरोसे रहोगे तो तुमको अपना कूँड़ा फोड़कर फेंकना पड़ेगा।

उर्दों अरहर दा कौन साथ—बेमेल वस्तुओं पर कहा जाता है। तुलनीय : पंज० मूग मसूर दा की मेल।

उर्दी का भाव पूछे, बनउर पाँच पसेरो—उर्द का भाव पूछने पर बिनौले का भाव बतलाते हैं। जब कोई किसी को बेतुका जवाब देता है तब ऐसा कहते हैं।

उर्दों को ही जोतते हैं—केवल उर्द का ही खेत जोतते हैं। जो व्यक्ति एक ही बात की रट लगाए रहता है उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० मां दा खेत ही रादे हन।

उलझ जायगा तो सुलझ ही रहेगा—फँस जाएगा तो सुधर जाएगा। (क) विवाह हो जाने पर सुधर जाएगा। (ख) किसी काम में लग जाने पर सुधर जाएगा। आवारा लडकों के प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० फस जावेगा तां अकल आवेगी।

उलझना आसान सुलझना मुश्किल—किसी मामले में पड़ना तो सरल होता है, पर उसे निपटा कर निकलना कठिन होता है। (क) झगड़ालू व्यक्तियों के प्रति कहते हैं। (ख) जब कोई व्यक्ति अपनी सामर्थ्य से बाहर के काम को करता है या करना चाहता है तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पज० फसना सोखा निकलना ओखा।

उलटा चोर कोतवाल को डाँटे—(क) जब कोई व्यक्ति अपराध भी करे और उलटे ऐसे व्यक्ति को डाँटे-फटकारे जो ऐसी व्यवस्था करता है जिससे अपराध न हो तब ऐसा कहते हैं। (ख) जो व्यक्ति अपना दोष स्वीकार नहीं करता है बल्कि दूसरे को डाँटने-फटकारने लगता है तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० उलटा चोर कोतवाले डाँटे; अव० उल्टा चोर कोतवाल का डाटै; मरा० उलट चोरच कोतवालास (फौजदारास) दम देतो, चोराच्या उलट्या बोंबा; गढ़० उलटो चोर कोतवाल डांडो; माल० उलटो चोर कोतवाल ने डाटे; राज० उलटो चोर कोटवाळ नै डंडै; हरि० उल्टा चोर कोतवाल न डाट; पज० उलटा चोर कोतवाल नूँ डाँटे; असमी० उल्टा चोरे गिरिक बांधे; बुंद० उल्टो चोर गुसैयें डाँटे, चोरी और सों जोरी, ब्रज० उलटो चोर कोतवाल कूँ डाँटे; गुज० उलटो चोर कोतवाल ने दंडे है, उलटो चोर कोतवाल ने दंडे; मैथ० उनटे चोरा मारा-मारी; मग० उलटे बेंगवा डपटन लागे; अं० The pot calls the kettle black.

उलटा चोर गुसाईं को डाँटे—ऊपर देखिए।

उलटा चोर बैकुंठे जाय—जब किसी अपराधी व्यक्ति को भी सम्मान मिलता है तब ऐसा कहते हैं। इस लोकोक्ति का सम्बन्ध एक कहानी से है जो इस प्रकार है : एक चोर ने किसी स्त्री को अकेला पाकर खूब लूटा। उसके पास केवल एक छल्ला रह गया था। चोर उसे भी लेना चाहता था। इस पर स्त्री ने कहा कि तू इसे यदि नहीं लेगा तो तेरा क्या बिगड़ेगा ? तूने तो मेरा सब कुछ ले लिया है। इस पर चोर ने कहा कि इस छल्ले से तो मैं चार साधुओं को भोजन कराऊँगा। चोर की इस बात को सुनकर साक्षात् विष्णु भगवान वहाँ प्रगट हो गए और उसे सदेह बैकुंठ ले गए।

उलटा नाम जपत जग जाना, बाल्मीक भए ब्रह्म समाना—यह सर्वविदित है कि 'राम' का नाम उलटा अर्थात 'मरा'-'मरा' रटते-रटते बालमीकि सिद्ध हो गए। आशय यह है कि राम का नाम चाहे जिस रूप में लिया जाय, उससे मुक्ति ही होती है। ईश्वरोपासना के लिए कोई माप-दण्ड नहीं है। तुलनीय : पंज० पुठा नां जप के जग नूं जानया वालमीकी नूं ब्रम दे समान मन्ने गये।

उलटा बयना पुलटा बयना बाँझ घर के कइसन बयना—आशय यह है कि जिस व्यक्ति से किसी को कुछ मिलने की आशा रहती है उसी को वह कुछ देता भी है। जिससे कुछ मिलने की आशा नहीं रहती उसे कुछ नहीं देता। जैसा कि उक्त लोकोक्ति में कहा गया है कि 'बाँझ घर के कइसन बयना' अर्थात् जो स्त्री निःसंतान है उसके घर विवाह आदि होगा नहीं और न उसके यहाँ से बयना मिलेगा, इसलिए उसके घर कोई बयना देने की आवश्यकता नहीं।

उलटा बादर जो चढ़े, बिधवा खड़ी नहाय, घाघ कहैं सुन भड्डरी, वह बरसे यह जाय—घाघ भड्डरी से कहते हैं

कि यदि बादल वायु की दिशा के विपरीत जाता है तो समझना चाहिए कि वर्षा अवश्य होगी और विधवा स्त्री यदि खड़ी होकर स्नान करती है तो समझना चाहिए कि वह किसी पुरुष के साथ भाग जाएगी ।

उलटी अँतड़ी गले में आई—जब कोई किसी मामले को सुलझाने जाय और स्वयं उसमें उलझ या फँस जाय तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० टिड दी गंदी गले बिच आयी ।

उलटा-पुलटा भै संसारा, नाऊ के सिर को मूँड़े लोहारा—नाई अन्य जातिवालों के समान लुहार के भी बाल काटता है। नाई के बाल दूसरा नाई काटता है । यदि नाई के बाल लुहार काटे तो यह लौकिक नियम के विरुद्ध होगा। इसी प्रकार जब कोई काम लौकिक नियम के विरुद्ध होता है तब उक्त लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : छत्तीस० उलटा-पुलटा भइ संसारा, नाउ के मूंड़ ला मूड़ै लोहारा ।

उलटी खोपड़ी अंधा ज्ञान—मूर्ख व्यक्ति के प्रति कहते हैं जिसे कहा जाए कुछ और वह समझे कुछ ।

उलटी गंगा पहाड़ को चली— किसी असंभव बात या घटना पर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० उलटी गंगा बहै लाग; पंज० पुठी गंगा पहाड़ नूं चली ।

उलटी गाँठ लग जाती है, खुलती नहीं—उलटी गाँठ लगानी आसान है, पर उसे खोलना बहुत कठिन होता है। आशय यह है कि बुरा काम करना या बुरी आदत डालना सरल होता है किन्तु उससे छुटकारा पाना बड़ा मुश्किल होता है। एक बार जो आदत पड़ जाती है वह जल्दी जाती नहीं। बुरे कामों या बुरी आदतों से बचने के लिए ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भीली—अवली गाँठ लागवोनी, छूटवानी नी, पंज० पुठी गंड लग जांदी है खुलदी नहीं ।

उलटी टाँगें गले पड़ीं—जब कोई किसी की सहायता करने जाय और उलटे स्वयं उसमें फँस जाय तब कहते है। तुलनीय : पंज० अलटी टंगा गले बिच पैयी ।

उलटी बेंट कुदारी, हो गोहरावे नारी, हँसि के माँगे दाम तीनो काम निकाम—कुदारी (फावड़ा) में उलटा बेंट लगाना, स्त्री को ही 'हो' (आदर सूचक शब्द) कहकर बुलाना, उधार दिया गया पैसा हँसकर माँगना—ये तीनों काम अच्छे नहीं होते । अर्थात् कुदारी तभी ठीक से काम करती है जब उसमें बेंट सीधा लगाया जाय, स्त्री दबाव में रखने पर ही ठीक ढंग से रहती है और कड़ाई से पेश आने पर ही रुपया वसूल होता है ।

उलटे गिरगिट ऊँचे चढ़ै, बरखा होई भूंई जल बुड़ै—ऐसा कहा जाता है कि यदि गिरगिट पूंछ ऊपर करके ऊपर चढ़े तो समझना चाहिए कि खूब पानी बरसेगा ।

उलटे बाँस बरेली को—बरेली में बाँस बहुत पैदा होता है और वहाँ से दूसरी जगहों को भेजा जाता है, इसलिए वहाँ बाँस भेजना या ले जाना मूर्खता है। जब कोई उलटा काम करता है तब ऐसा कहते हैं । तुलनीय : मरा० उलट वरेली लाच वेळू (नेता); गढ़० पिस्यां भारा घट्टा; अव० उलटा बाँस बरेली का; ब्रज० उलटे बाँस बरेली कूं ।

उलथा कहिके गहिरे बोरे—दे० 'उथले कहिके···'।

उलटा चोर कोतवाल को डाँटे—दे० 'उलटा चोर कोतवाल ' ।

उल्लू का बेटा उत्पाती का नाम—मूर्ख को पुत्र हुआ उसका नाम उत्पाती रखा गया। आशय यह है कि जैसे माता-पिता होते हैं वैसे ही बच्चे भी होते हैं। तुलनीय : भोज० उल्लू क लइका उत्पाती नाँव; मैथ० उलुआ का बेटा भेल उतपाती नाँव धरायल; पंज० उल्लू दा पुतर खोता नाँ।

उल्लू की दुम फाख्ता—किसी बेमेल काम पर अथवा मूर्ख को कहते हैं ।

उल्लू को कंकड़ लगी—थोड़ी-सी चोट लगने पर उल्लू काफ़ी शोर करता है। जब कोई व्यक्ति हलकी चोट या मामूली कष्ट होने पर ज़्यादा शोर मचाता है तो उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० घघू रे भाठेर लागी; पंज० उल्लू नूं बट्टा लगया ।

उल्लू न जान दिवस कर भाऊ—उल्लू दिन के महत्व को नहीं जानता। अर्थात मूर्ख बड़ों के महत्त्व को नहीं समझते या न समझने के कारण स्वीकार नहीं करते। तोर पुरुष रैनि को राऊ; उलू न जान दिवस कर भाऊ—जायसी। तुलनीय : पंज० उल्लू नूं दिन बार दा नईं पता हुंदा ।

उल्लू न देखे तो सूर्य का क्या दोष—सूर्य के प्रकाश में यदि उल्लू को दिखाई नहीं देता तो इसमें सूर्य का कोई दोष नहीं। जब किसी के सही सुझाव देने के बावजूद भी किसी को ज्ञान नहीं होता और वह अपनी ग़लती से हानि उठाता है तो सुझाव देने वाले का कोई दोष नहीं होता । तुलनीय : पंज० उल्लू न देखे ते सूरज दा की दोष।

उवासी यम का सन्देशा—जम्हाई आना अच्छा नहीं समझा जाता। इसका सम्बन्ध एक कहानी से है, जो इस प्रकार है : एक अमीर को जब जम्हाई आती थी तो उसके

दरबारी चुटकी बजाते थे। एक चौबे जी नए दरबारी आए। उन्होंने सबसे पूछा कि जम्हाई आने पर आप लोग चुटकी क्यों बजाते हैं? दरबारियों ने कहा कि जम्हाई यम का संदेशा है अर्थात् जब यम के दूत लेने आते हैं तब जम्हाई आती है। उनको डराने के लिए हम लोग चुटकी बजाते हैं। दूसरे दिन जब उस अमीर को जम्हाई आयी तो चौबे जी उसकी छाती पर चढ़ बैठे और कहने लगे, "चुटकी बजाने से ये नहीं जाने वाले हैं मैं अपने सोटे से इनकी खबर लूंगा।" **तुलनीय** : पंज० बामी यम दा संदेश।

उसके नाम का कुत्ता भी नहीं पालते—वह इतना घृणित और अपमानित है कि उसे कुत्ते से भी बदतर मानते हैं। तुलनीय : पंज० उसदे नां दा कुत्ता वी नईं पालदे।

उसको पत्थर मारे भी मौत नहीं आती— बहुत ही ढीठ व्यक्ति के प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० उस नूं बट्टा मारे वी मौत नई आंदी।

उस्ताद बैठे पास, काम आया रास- उस्ताद (गुरु) के पास बैठने से काम ठीक होता है अर्थात् वह न केवल शिष्य का मार्गदर्शन करता है बल्कि शिष्य में भी उसे अपने पास देखकर एक प्रकार का आत्मविश्वास जग जाता है।

ऊँघता बोले जगता चुप—जागने वाला चुप है और सोने वाला बोल रहा है अर्थात् जिसको सावधान रहना चाहिए वह तो असावधान है और जिसको आराम करना चाहिए वह सावधान है। तुलनीय : पंज० ऊंगदा बोले जागदा चुप।

ऊँघती हुई को पलंग मिल गया—मनचाही या अवसर के अनुकूल वस्तु मिल जाने पर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० ऊंघती न मांचो लाद्यो; पंज० ऊँगदी होई नूं मंजा लब गया।

ऊँघती हुई को बिछौना मिल गया- ऊपर देखिए। तुलनीय : राज० ऊँघती नै विछावणो लाद्‌ग्यो; मेवा० ऊँघता ने बछावणों लादग्यो।

ऊँघते को ठेलते का बहाना- नीचे देखिए।

ऊँघते को धक्के का बहाना—दूसरे का जरा-सा दोष देखकर अपना सारा का सारा दोष उस पर मढ़ देने पर कहते हैं। इस संबंध में एक कहानी है : कोई व्यक्ति ऊँघ रहा था और अंत में नींद में गिर पड़ा पर उसी वक्त किसी से जरा-सा धक्का लगा। अत: ऊँघने वाला यह कहने लगा कि इनके धक्के से गिरा हूँ, ऊँघने से नहीं। तुलनीय : मरा० झोंपालू माणसाला धक्का लागण्याचें निमित्त; पंज० ऊँगदे नूं तक्के दा बहाना।

ऊँघते को बिछौना मिला—दे० 'ऊँघती हुई को...'।

ऊँघते हुए को मिली चारपाई—ऊपर देखिए।

ऊँघ न देखे टूटी खाट, प्यास न देखे धोबी घाट—नींद आने पर व्यक्ति टूटी चारपाई पर सो जाता है और प्यास लगने पर धोबी के घाट का भी पानी पी लेता है। आशय यह है कि नींद आने पर व्यक्ति को जैसा भी स्थान और बिस्तर मिल जाता है उसी पर वह सो रहता है और प्यास लगने पर व्यक्ति यह नहीं देखता कि यह जल शुद्ध है या अशुद्ध। उस समय उसे जैसा भी जल मिल जाता है, पी लेता है। तुलनीय : बंग० क्षुधाय चाय न सुधा, घूमे चाय न खाट-पालंग; बुंदे० ऊँग न देखे टूटी खाट, प्यास न देखे धोबी घाट; पंज० ऊँग ने देखे टुटी मंजी तरे न देखे तोबी काट।

ऊँच अटारी मधुर बतास, कहें घाघ घर ही कैलास—यदि ऊँची अटारी हो और मंद-मंद वायु चल रही हो तो घाघ के अनुसार वह घर कैलाश या स्वर्ग के समान सुखदायी है।

ऊँच निवास नीच करतूती, देखि न सकहिं पराइ बिभूती—ऊँचे महल में रहते हैं तथा नीच कर्म करते हैं और दूसरे का ऐश्वर्य देखकर सदा जलते रहते हैं। आशय यह है कि जो लोग बाह्य दिखावा तो बहुत करते हैं, पर अन्दर से काले कारनामों की योजनाएँ बनाते रहते हैं वे दूसरे की प्रगति या सम्पत्ति को देखकर सदा ईर्ष्या करते हैं। तुलनीय : पंज० उचा लाण-पाण नीवी करतूती, देख न सकण बगाणी बभूति।

ऊँच नीच में बोई क्यारी, जो उपजी सो भई हमारी—ऊबड़-खाबड़ (ऊँची-नीची) जमीन में खेती करने से जो मिल जाय उसे ही बहुत समझना चाहिए। अर्थात् अच्छी तरह कार्य न करने पर सफलता नहीं मिलती। तुलनीय : पंज० ऊँची नीवीं बिच राई क्यारी जो उग्गी ओ होई साड़ी।

ऊँच बड़ेड़ी खोखर बाँस ऋण खैलों बारह मास—ऊँचे मकान में लगा खोखले (खोखर) बाँस का शहतीर (बड़ेड़ी, बड़ेर) तथा बारहों महीने उधार लेकर खाना ये दोनों समान हैं। अर्थात् जैसे उस शहतीर का कोई ठिकाना नहीं कि कब टूट जाए वैसे ही जीविका के इस साधन का भी कोई ठिकाना नहीं कि कब समाप्त हो जाए।

ऊँच हवेली खोखर बाँस, करजा खाय बारहो मास—ऊपर देखिए।

ऊँचा फाटक ऊँची शान, करज माँग खाय बारहो मास—मकान में फाटक ऊँचा लगा है तथा शान भी ऊँची

है, किन्तु क़र्ज़ से ही गुज़र होता है। अर्थात् बाहरी दिखावा तो खूब है, किन्तु घर की स्थिति बुरी है– क़र्ज़ पर ही दिन कटता है। तुलनीय : मैथ० ऊँच बरेड़ी फोफड़ बांस रीन खाई छथि बारहो मास; भोज० ऊँच बडेरा फोंफड़ बॉस रीन खाइं बरहो माम; पंज० उचा फाटक उची शान करजा मंग के खाण बारा महीने।

ऊँचा फाटक नीच दिवान –मकान का फाटक तो सुन्दर है, किन्तु दीवान (मंत्री) अच्छा नहो। अर्थात् सलाहकार राजा या किसी अन्य योग्य आदमी के अनुकूल नही है। **बेमेल** बात, घटना आदि के विषय में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मग० ऊँचा फाटक बाउर देवान; पंज० उचा फाटक नीवां मत्री।

ऊँची दूकान फीका पकवान –(क) नामी दूकानों पर अच्छी चीज़ नही मिलती। उनका केवल नाम ही बड़ा होता है। (ख) बड़े आदमियों में बनावट अधिक होती है असलियत कम। तुलनीय : मग० प्रसिद्ध दुकान, फिकें पक्वान्न; अव० ऊँच दूकान फीक पकवान; मेवा० ऊँची दुकान अर फीका पकवान, पंज० उची हट्टी फिक्की रोटी; अं० A great cry little wool, Great boast little roast.

ऊँची दूकान फीका पकवान बाहरी दिखावा।

ऊँची दुकान का फीका पकवान –दूकान आदि नामी हो जाने के बाद अपने नाम के अनुकूल चीजें नहीं देती या बनाती। तुलनीय : पंज० ऊची हट्टी दी फिक्की मिठाई; ब्रज० ऊँची दुकान और फीके पकमान; मल० आडम्बर मात्रम तत्वमिल्ल, सं० नि सारस्य पदार्थस्य प्रायेणा भवरोमहान अं० A goodly apple is entirely rotten at the core.

ऊँची दुकान की फीकी मिठाई –ऊपर देखिए।

ऊँचे उठकर नीचे नहीं गिरना चाहिए –जब व्यक्ति की समाज मे अच्छी प्रतिष्ठा हो जाय तो उसे काफी सावधानी से रहना चाहिए। उसे इस तरह का कोई कार्य नहीं करना चाहिए जिससे उसकी बनी हुई मर्यादा पर पानी फिर जाय। तुलनीय : भीली– उंचो लईने नीचू पड़हें; पंज० ऊचे चढ़के थल्ले नईं डिगना चाहदा।

ऊँचे उठके देख। सगरो एकके लेखा –ऊपर देखिए। तुलनीय : भोज० ऊँच चढ़ि के देखलि घर-घर एकके लेखलि; राज० ऊँचा चढ़-चढ़ देखो घर-घर ओही लेखो।

ऊँचे चढ़के देखा, तो घर-घर ये ही लेखा– –दुःख-सुख, लड़ाई-झगड़ा आदि बातें सभी घरों में या सर्वत्र हैं। तुलनीय : राज० ऊँचा चढ़-चढ़ देखो घर-घर ओही लेखो; अव० ऊँचे चढ़िकै देखा घर-घर एकै लेखा; हरि० सबके चूलहे मटिया में; पंज० ऊँचे चढ़के दिखया उते कर-कर इहही लेखा।

ऊँचे चढ़ि के बोला मड़ुवा, सब नाजों का मैं हूँ भड़ुवा; आठ दिना मुझको जो खाय, भले मर्द से उठा न जाय– आशय यह है कि मड़ुआ सबसे निकृष्ट अन्न है और उसको थोडे दिन खाने वाला व्यक्ति इतना निर्बल हो जाता है कि उसमे चलना-फिरना दूभर हो जाता है। अर्थात् मड़ुवा स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

ऊँचे पर्वत, तारों से नीचे पर्वत चाहे कितने भी ऊँचे हों किंतु तारों से तो नीचे ही रहते हैं। अर्थात् छोटे या ओछे व्यक्ति बड़े आदमियों की बराबरी कभी नहीं कर सकते। तुलनीय : गढ़० उच्ची डाडी गैण्यू तला, पंज० ऊचे पहाड़ ताइयां दे थल्ले।

ऊँचे बोल का मुंह नीचा– आशय यह है कि अभिमानी व्यक्ति को नीचा देखना पड़ता है या अपमानित होना पड़ता है। तुलनीय : सं० अत्युच्चः पतनायते, पज० ऊचा बोलण वाले दा मुंह नीदा; अं० Pride goeth before a fall.

ऊँचे से गिरा सँभल सकता है, नजरों से गिरा नहीं सँभलता निर्धन होकर मनुष्य दुबारा धनी बन सकता है, लेकिन अपमानित या निरादृत होकर दुबारा आदर-सम्मान नही पा सकता। ऊँचाई से गिरा सम्मान पा सकता है किन्तु नजरों से गिरा हुआ कभी नही उठ सकता। तुलनीय : पंज० उत्तों डिगया संबल सकदा है नजरां तो डिगया नईं संबल सकदा।

ऊँचो नाग चढ़ै तर ओडे, दिस पिछमांड़ बादला दौड़े; सारस चढ़ असमान सजोड़े, तो नदियाँ दाहा जल तोड़े– यदि साँप पेड़ की चोटी पर चढ़े, बादल पश्चिम दिशा की ओर दौड़े और सारस का जोड़ा आकाश मे उड़े तो समझना चाहिए कि नदी में पानी बढ़ेगा।

ऊँट-ऊँट किदारा गावें—(क) एक जैसी प्रकृति के व्यक्ति मिलते हैं तो बड़े प्रसन्न होते हैं। (ख) दो मूर्ख या दो दुष्ट मिलते है तो प्रसन्न होकर खूब मनमानी करते है। तुलनीय : पंज० ऊँट नाल ऊँट रल के किदारा गावण।

ऊँट का ओंठ कब गिरे और कब खाऊँ—ऊँट का ओठ (होठ) गिरने जैसा दिखाई देता है, किन्तु कभी गिरता

नहीं। जो व्यक्ति किसी ऐसे काम की आशा में बैठा रहे जिसके होने की कोई संभावना न हो तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : भीली—उटा बालू केरे पड़े ने केरे खाऊँ; पंज० ऊँट दा बुल कदों डिगे अत्ते कदों खांवा।

ऊँट का पाव न आसमान का न जमीन का—(क) निकम्मे आदमी का काम और बकवाद किसी काम की नहीं होती। (ख) ऐसे व्यक्ति के लिए भी कहते हैं जो किसी के काम न आए। तुलनीय : राज० ऊँटरी पाद जमीरो न आसमानरो; अव० ऊँट कइ पाद न जिमी कै न आसमान कै; पंज०ऊँट दा पैर न असमान दा न तरती दा।

ऊँट का पाद न जमीन का न आसमान का—ऊपर देखिए। तुलनीय : राज० ऊटरी पाद जमीरो न आसमानरो; अव० ऊँट कइ पाद न जिमीं कै न आसमान कै; भोज० ऊँट क पाद न जमीने पर न असमाने पर।

ऊँट का मुंह ऊँट चूमे— अर्थात् बड़े काम बड़े आदमी ही कर सकते हैं। तुलनीय : पंज० ऊँट दा मुँह ऊँट चुम्मे।

ऊँट का मुँह न जाने कब उठे—दुष्ट न जाने कब दुष्टता कर बैठे। तुलनीय : पंज० ऊँट दा मुँह की पता कदों उठे।

ऊँट का मुँह न जाने किधर उठे (क) उद्दंड व्यक्ति न जाने कब कौन-सी दुष्टता कर बैठे। (ख) दुष्ट व्यक्ति का पता नहीं कब किससे उलझ पड़े। अत: दुष्टों से सदा दूर रहना चाहिए। तुलनीय : मरा० ऊँटाचे तोंड कुणी कड़े वळेल काय सांगावे; पंज० ऊँट दा मुंह की पता केहड़े पासे उठे।

ऊँट किस करवट बैठता है—देखें क्या निर्णय होता है। इस पर एक बहुत रोचक कहानी है। एक बार एक घसियारे और कुम्हार ने साझे में एक ऊँट किराए पर लिया। ऊँट के एक ओर घसियारे की घास थी तो दूसरी ओर कुम्हार के मिट्टी के बरतन। राह में ऊँट को घास खाता देख कुम्हार हँसने लगा। इस पर घसियारे ने कहा, 'का हस्या कुम्हार के पूत, कौनों कर तो बैठे ऊँट।' अंत में ठिकाने पर ऊँट उसी करवट बैठ गया जिस ओर बरतन थे और बरतन चूर-चूर हो गए। तुलनीय : मरा० उंट कोणच्चा बरगडीवर बसणार; अव० ऊँट केह करवट बइठी; पंज० ऊँट केहड़े पासे बैंदा है; ब्रज० न जानें ऊँट कहा करवट बैठे।

ऊँट किस बल बैठता है—ऊपर देखिए।

ऊँट की क़ीमत ऊँट की पीठ पर, मुझ पर नहीं—ऊँट का मूल्य ऊँट की ही पीठ पर है मेरे पास नहीं। एक व्यक्ति कुछ सामान ऊँट पर लादकर जा रहा था। रास्ते में उसका ऊँट मर गया तो उसने कहा कि कोई बात नहीं, इसका मूल्य तो इसकी पीठ पर लदे हुए सामान से ही निकल आयगा। अर्थात् किसी भी कार्य में लगाया गया धन अपने मूल रूप में अवश्य ही प्राप्त हो जाता है, चाहे उसमें कितनी भी हानि क्यों न हो। तुलनीय : भीली—ऊँट नो ऊँट मोल माते, मो माते नी; पंज० ऊँट दा मुल ऊँट दी पिठ उत्ते मेरे उत्ते नईं।

ऊँट की गरदन लम्बी है तो क्या दो बार काटी जाएगी ?—ऊँट की गरदन लम्बी होने के कारण दो बार नहीं काटी जाती। अर्थात् किसी व्यक्ति के पास किसी वस्तु की अधिकता होने पर उस व्यक्ति को अधिक परेशान नहीं किया जाता। तुलनीय : भीली ऊँट नं गावड़ू लांबो वे ते बे दण ने बड़ाया; पंज० ऊँट दी गरदन लम्भी है ते की दो बार बड़ी जावेगी; ब्रज० ऊँट की नारि लम्बी है तो का ठौर ते काटी जायगी।

ऊँट की चोरी और झुके-झुके- ऊँट की चोरी झुक (छिप) कर नहीं की जा सकती। अर्थात बड़े काम छिपे-छिपे नहीं किए जा सकते। तुलनीय : मरा० उँटाची चोरी नि वाकन; निमाड़ी- ऊँट की चोरी कोई निवड़ निवड़ हो ज ? पंज० ऊँट दी चोरी अत्ते लुक लुक के।

ऊँट की चोरी निहुरे-निहुरे—ऊपर देखिए। तुलनीय : अव० ऊँट के चोरी निहुरे-निहुरे; छत्तीस० ऊँट के चोरी अउ सूपा के ओधा; बुंद० ऊँट की चोरी डुकाडुक; ब्रज० ऊँटन की चोरी का ढका ढूक।

ऊँट की चोरी सिर पर खेलना—ऊँट की चोरी करना जान जोखिम में डालना है। क्योंकि उसका छिपाना बड़ा ही कठिन है। आशय यह है कि कोई ऐसा अपराध नहीं करना चाहिए जिसे छिपाना या जिसके करने से इन्कार करना सम्भव ही न हो। तुलनीय : पंज० ऊँट दी चोरी सिर उत्ते खेडना।

ऊँट की पकड़ कुत्ते की झपट—ये दोनों ही खतरनाक होती हैं।

ऊँट की पकड़ और औरत के मकर से खुदा बचाय—ये दोनों मनुष्य के लिए घातक होती हैं।

ऊँट की पगड़ी महमूद के सिर—(क) किसी की वस्तु किसी दूसरे को दे दी जाए तो कहते हैं। (ख) किसी वस्तु का उचित उपयोग न करने पर भी कहते हैं। इस लोकोक्ति का दूसरा रूप है 'अहमद की पगड़ी महमूद के सर'। तुलनीय : पंज० ऊँट दी पग्ग महमूद दे सिर उत्ते; अं० To rob Peter and pay Paul.

ऊँट की पीड़ा से गधा नहीं दागा जाता—(क) ऊँट को पीड़ा होने पर गधा नहीं दागा जाता। अर्थात् जिसको

कष्ट हो उसका ही इलाज किया जाता है। (ख) एक का दोष दूसरे के सिर नहीं मढ़ा जाता। तुलनीय : बुंद० ऊँट की पीर गदा नई दागो जात; पंज० ऊँट दी पीड़ नाल खोता नईं फूक्या जांदा।

ऊँट की पूंछ से ऊँट बँधता है—ऊँटों के क़ाफ़िले में पहले ऊँट की नकेल आदि पकड़े रहता है और बाक़ी ऊँट एक-दूसरे की पूंछ से बँधे रहते हैं। आशय यह है कि एक के सहारे एक बँधा है। तुलनीय : बुंद० ऊँट की पूंछ से ऊँट बंदो; पंज० ऊँट दी दुंब नाल ऊँट बंददा।

ऊँट की बरसात में खराबी—बरसात का मौसम ऊँट के लिए उपयुक्त नहीं होता उसके फिसलने और टाँग टूटने का भय रहता है। तुलनीय : पंज० ऊँट दी बरसात बिच खरावी, ऊँट लई बरसात माडी।

ऊँट की लम्बी गरदन क्या कटवाने के लिए?—भगवान ने ऊँट को बड़ी गरदन इसलिए थोड़े ही दी है कि उसी को काटा जाय। (क) जब किसी बलवान से प्रत्येक कार्य इसलिए कराने को कहा जाय कि वह बलशाली है तो वह उनके प्रति इस प्रकार कहता है। (ख) जब किसी संपत्तिशाली से प्रत्येक कार्य करने के लिए धन लिया जाय तो वह माँगने वालों के प्रति इस प्रकार कहता है। तुलनीय : माल० उंट री लम्बी गरदन कइ काटवा वास्ते?

ऊँट के आगे चने का ढेर—ऊँट के सामने चने का ढेर रख दिया जाय तो वह अवश्य खाएगा, छोड़ेगा नहीं। अर्थात् जो वस्तु जिसका भोजन है वह उसे खाने से कभी भी बाज़ नहीं आएगा। तुलनीय : मैथ० ऊंटक आगा बूंट के ढेरी; भोज० घोड़ा क आगे रहिला क ढेर; पंज० ऊँट दे अग्गे छोलियाँ दा ढेर।

ऊँट के ऊँट ही रहे—मूर्ख के मूर्ख ही बने रहे। कुछ भी न सीखा। तुलनीय : मरा० उंटाचे उंटच राहिले; भीली० गवां हूँ अक्कल आवे रे ईग्योढोर नो ढोर· पंज० ऊंट दे ऊँट ही रहे।

ऊँट के गले में घंटी—ऊँट जैसे बड़े पशु के गले में छोटी-सी घंटी बँधी अच्छी नही लगती। (क) जब किसी बड़े आदमी को कोई छोटी-सी वस्तु भेंट की जाय तो व्यंग्य से कहते हैं। (ख) किसी लम्बे क़द के आदमी को यदि नाटी पत्नी मिल जाय तो भी व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : पंज० ऊँट दे गले बिच कंटी।

ऊँट के गले में बिल्ली—(क) बेमेल जोड़ या बेमेल काम पर ऐसा कहते हैं। (ख) जब कोई व्यक्ति किसी कार्य में ऐसी अड़चन डाल देता है जिससे वह कार्य नहीं हो पाता तब भी ऐसा कहते है। इस सम्बन्ध में एक कहानी है जो इस प्रकार है : एक बार एक व्यक्ति का ऊँट खो गया। उसने प्रतिज्ञा की कि यदि ऊँट मिल जाएगा तो उसे मैं दो पैसे में बेच डालूंगा। संयोगवश ऊँट मिल गया, तब उसने अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए ऊँट के गले में एक बिल्ली बाँध दी और बिल्ली का उतना ही दाम रखा जितना उस ऊँट और बिल्ली दोनों के दाम मिलाकर होता। साथ ही यह शर्त भी लगा दी कि ऊँट खरीदने वाले को बिल्ली भी खरीदनी पड़ेगी। परंतु जब वह ऊँट को बाज़ार में ले गया तो उसकी शर्त सुनकर कोई उसे खरीदने को तैयार नहीं हुआ। इस प्रकार उसका ऊँट उसके पास ही रह गया और उसकी प्रतिज्ञा भी पूरी हो गई। तुलनीय : बुंद० ऊँट के गरे में बिलाई; हरि० रोड़ा अटकाणा; पंज० ऊँट दे गले बिच बिल्ली।

ऊँट के गले में बूट—ऊँट के गले में जूता डालना सर्वथा हास्यास्पद है। (क) बेमेल काम पर ऐसा कहते है। (ख) किसी लम्बे व्यक्ति को यदि छोटी स्त्री मिल जाती है तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : हरि० ऊँट के गल में बूट; पंज० ऊँट दे गले विच बूट।

ऊँट के गले में बैल—किसी व्यक्ति द्वारा बेमेल काम किए जाने पर परिहास के रूप में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० ऊँट दे गले विच टग्गा (बलद)।

ऊँट के मुंह में जीरा—(क) किसी भोजनभट्ट को ज़रा-सी चीज़ देना। (ख) जहाँ बहुत अधिक की आवश्यकता हो, वहाँ बहुत थोड़ी मात्रा में देने पर भी कहते है। तुलनीय : मरा० उंटाच्या तोंडात जिरें; माल० उंटरे गळे बेल; पंज० ऊँट दे गल टल्ली; अव० ऊँटे के मुंह मा जीरा; राज० ऊँटरै पेट में जीर॑रो बघार; मैथ० ऊँट के मुंह में जीरा के फोरन; भोज० ऊँट क मुंह के जीरा; बुंद० ऊँट के मों में जीरो; कन्नड—कद तिन्नुववरिगे हप्पठ ईडे?; छत्तीस० ऊँट के मुंह मा जीरा; हाड़० ऊँट का मूंडा मं ज़ीरो; मेवा० ऊँट के जीरा का बगार उंकई वे; मल० आनवायिल अम्बषङ्ङ; असमी० एक् थाली आन्जात एटा जालुक्; पंज० ऊँट दे मुंह बिच जीरा; ब्रज० ऊँट के मौंह में जीरौ; अं० A drop in the ocean.

ऊँट के मुंह में जीरा चमार के मुंह में खीरा—ऊँट का पेट न तो जीरे से भर सकता है और न चमार का पेट खीरे से। तात्पर्य यह है कि (क) व्यक्ति को उचित भोजन मिलने पर ही उसे संतोष हो सकता है और वह ठीक ढंग से काम कर सकता है। (ख) किसी व्यक्ति को उसकी आवश्यकता

की वस्तु जब उचित या पर्याप्त मात्रा में मिलती है तभी उस व्यक्ति को तसल्ली होती है। तुलनीय : पंज० ऊँट दे मुँह बिच जीरा चमेर दे मुँह बिच खीरा।

ऊँट के मुँह में जीरे का फोरन---(क) छोटे से बड़ों का काम या बड़ा काम नही हो पाता। (ख) थोड़े से बड़ों का पेट नहीं भरता या उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति नही होती। तुलनीय : पंज० ऊँट दे मुँह बिच जीरे दा फ़ोरन।

ऊँट के विवाह में गधा गवैया—जैसे वर हैं वैसे ही गाने-बजाने वाले। अर्थात् जब जैसे को तैसा मिले तो कहते हैं। तुलनीय : सं० उष्ट्राणां विवाहोऽस्ति गर्दभा: गीत गायका:; पंज० ऊँट दे वयाह बिच खोता गीत गाण वाला।

ऊँट को अपनी ऊँचाई का ज्ञान पहाड़ के पास जाने पर (जाकर) होता है—ऊँट अपने आपको बहुत ऊँचा समझता है, पर जब वह पहाड़ के समीप जाता है तब उसे मालूम हो जाता है कि मुझसे भी ऊँची चीज़ें हैं। अर्थात् (क) जब कोई व्यक्ति थोड़े से ज्ञान पर इतराने लगता है, पर जब उसकी मुलाक़ात किसी विद्वान से हो जाती है तो उसे अपने ज्ञान का पता चल जाता है, साथ ही साथ वह लज्जित भी होता है, तब लोग उसकी खिल्ली उड़ाने के लिए ऐसा कहते है। (ख) जब कोई व्यक्ति थोड़े से धन या बल पर गर्व करने लगता है तब भी उसके प्रति ऐसा कहते है। तुलनीय : भोज० ऊँट के ऊँचाई क पता पहाड़ किहें गइला पर लागेला; पंज० ऊँट नूं अपनी ऊँचाई दा पता पहाड़ कोल जाण ते लगदा है; ब्रज० ऊँटै अपनी ऊँचाई कौ पतौ पहाड़ के नीचे आणकेंइ लगै।

ऊँट को ऊँट ही चूमता है—ऊँट का चूमा ऊँट ही लेता है। अर्थात् (क) बड़ों का सम्मान बड़े ही लोग करते हैं। (ख) बड़ों का काम बड़ों से ही होता है। तुलनीय : बुंद० ऊँट को चूमा ऊँटई लेत।

ऊँट को किसने छप्पर छाये हैं—(क) ग़रीब के आराम की कौन परवाह करता है ? (ख) इतना ऊँचा और लम्बा-चौड़ा छप्पर बनवाना भी तो सबके बस का नहीं है। तुलनीय : राज० ऊँटारै कण छपरा छाया हा; पंज० ऊँट लई किन छप्पर बनाय नें।

ऊँट को गुड़-घी से क्या ? -- (क) अधिक खाने वाले को बढ़िया भोजन मिले या न मिले पर भरपेट अवश्य होना चाहिए। (ख) ग़रीब आदमी दाल-रोटी में ही प्रसन्न रहता है। तुलनीय : राज० ऊँटनें गुळ पाणीसूं काई हुवै; पंज० ऊँट नूँ गुड की नाल की।

ऊँट को दगते देख, मेंढकी ने भी टाँग फैलाई---जब छोटे लोग भी अपनी सामर्थ्य के बाहर बड़े लोगों का अनुकरण करने लगते हैं तब ऐसा कहते हैं।

ऊँट खड़ा नहीं हुआ, बोरे पहले खड़े हो गए—जिसका काम है वह तैयार नहीं और जिनसे कुछ मतलब नहीं है वे शोर मचा रहे हैं। जब कोई ऐसा व्यक्ति किसी ऐसे काम के सम्बन्ध में ज़रूरत से ज्यादा दिलचस्पी दिखाए जिससे उसका कोई भी सम्बन्ध न हो तो कहते हैं। तुलनीय : राज० ऊँट कूदैही कोनी, बोरा पहली ही कूदण लाग ज्यावं; पंज० ऊँट खलौता नई बोरे पहिलां ही खड़े कर दीते।

ऊँट खड़ा होते ही नहीं भागता—आशय यह है कि (क) कोई काम आरम्भ करने पर पहले तो वह कुछ धीरे-धीरे होता है, पर बाद में वह सही तरीके से होने लगता है, क्योंकि आरंभ में उसका अनुभव नहीं होता। (ख) व्यापारी लोग भी ऐसा कहते हैं क्योंकि व्यापार शुरू करते ही उसमें अच्छा लाभ नही मिलने लगता। तुलनीय : राज० ऊँट खुड़ावै गधो डांभीजै; पंज० ऊँट खड़ा होंदे नईं नठदा।

ऊँट खेत चरे गधा मार खाय-- खेत तो ऊँट चरता है, पर मार गधा खाता है। अर्थात् जब अपराध या नुक़सान कोई करता है और उसका दंड किसी अन्य को भुगतना पड़ता है तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० ऊँट खुड़ावै गधौ डांभीजै; पंज० ऊँट खेत चरे खोता फुट खावे।

ऊँट खोने पर घड़े में हाथ जाता है-- आशय यह है कि (क) किसी बड़ी विपत्ति में फँस जाने पर व्यक्ति छोटे-बड़े सभी लोगों के पास जाता है। (ख) किसी बड़ी वस्तु के खो जाने पर लोग ऐसे स्थानों को भी तलाश करते हैं, जहाँ उसके (वस्तु के) मिलने की कोई सम्भावना नहीं रहती। यानी किसी परेशानी में फँस जाने पर या किसी वस्तु के खो जाने पर मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है। तुलनीय : अव० ऊँट हेरान मटुका माँ ढूँढ़े; पंज० ऊंट गुआण दे मगरों कड़े बिच हाथ जांदा है।

ऊँट गए सींग माँगने कान भी खो आए-- (ऊँट के कान उसके शरीर की तुलना में बहुत छोटे होते हैं।) लालचवश कुछ लेने जाना और अपने पास की भी चीज़ खो आने पर व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : अव० ऊँट गए न सींग माँगे, कानौ खोय आएँ; पंज० ऊँट गये सिंग लैण कन वी गवा आये।

ऊँट गुड़ दिए भी बर्राय, नमक दिए भी बर्राय-- (क) मूर्ख आदमी अच्छी-बुरी वस्तुओं में अन्तर नहीं समझ पाता। (ख) जिस व्यक्ति के बकने की आदत हो वह अच्छी-बुरी प्रत्येक बात में बड़बड़ाता है। तुलनीय : राज० ऊँट

फिटकड़ी दिया ही अरळावै, गुड़ दियां ही अरळावै । पंज० ऊँट गुड दिदा वी अरलांदा लूण दिदा वी अरलांदा ।

ऊँट घोड़े बहे जायें कहे कितना पानी ?— समर्थ पुरुष जिस काम को न कर सके उसे करने का कोई असमर्थ साहस करे तब कहते हैं । तुलनीय : अव० ऊँट घोड़े बहा जाय गदहा कहै केतना पानी; पंज० ऊँट कौड़े रुड जाण खोता आखे किन्ना पाणी ।

ऊँट चढ़के बूंट माँगे—असम्भव काम करने वाले को कहते हैं । ऊँट ऊँचा होता है और बूंट (चने का पौधा) बहुत छोटा अत: ऊँट पर बैठे हुए नहीं लिया जा सकता ।

ऊँट चढ़के माँगे भीख—ऊँट पर चढ़के भीख माँगता है। (क) सम्पन्न अवस्था होने पर भी भीख माँगने या सहायता माँगने वालों के प्रति व्यंग्य से कहते हैं । (ख) जो व्यक्ति ऐसे स्थान या ढंग से सहायता माँगे जिससे देने वाले ठक को नाईं हो उसके प्रति भी व्यंग्य से कहते हैं । तुलनीय : भीली—ऊँट चढ़ी ने भीख मांगे; पज० ऊँट चड़के पिख मंगे।

ऊँट चढ़े कुत्ता काटे—(क) विपत्ति में बचते रहने पर भी विपत्ति में पड़ जाने पर कहते हैं । (ख) भाग्य में यदि कष्ट लिखा रहता है तो लाख प्रयास करने पर भी व्यक्ति नहीं बच पाता । तुलनीय : अव० ऊँटे पै चढ़िकै कुना काटै; राज० ऊँट चढ्यौने कुत्तो खाय; बुंद० ऊँट चढ़ें कुत्ता नें काटो; पज० ऊँट चढण ते कुत्ते बडण ।

ऊँट चढ़े पर कूकर काटत—ऊपर देखिए । तुलनीय : अव० ऊँट चढ़े पै कूकुर काटै ।

ऊँट चरावे निहुरे-निहुरे—ऊँट जैसे बड़े जानवर को चोरी-छिपे नहीं चराया जा सकता । जब किसी ऐसे काम को कोई छिपाकर करना चाहता हो जिसका छिपना असम्भव हो तो कहते हैं । तुलनीय : पंज० ऊँट चरावे चोरी-चोरी ।

ऊँट चरावें झुके-झुके जावें - दे० 'ऊँट की चोरी ...'।

ऊँट जब तक पहाड़ के नीचे नहीं जाता, तब ही तक जानता है मुझसे ऊँचा कोई नहीं—अहंकारी के प्रति कहा जाता है । जब अहंकारी अपने से बड़े के आगे जाता है तो उसका दर्प चूर-चूर हो जाता है । तुलनीय : अव० ऊँटवा जब लग पहाड़े कह नीचे नाहीं आवत तब लग उ कहत है हमसे बड़ कौनो नाहीं; पज० ऊँट जदों तक पहाड़ दे थल्ले नई जादा उदों तक जाणदा है कि मेरे तो ऊँचा कोई नई ।

ऊँट जब तक पहाड़ नहीं देखता तब तक बलबलाता रहता है—ऊपर देखिए ।

ऊँट जब बोराय तो पच्छिम भागै—नीचे देखिए ।

ऊँट जब भागे तब पश्चिम को—(क) ऊँट की जन्म-भूमि अरब आदि रेगिस्तानी देश है और भारत में ऊँट राजस्थान में ही मरुस्थल होने के कारण अधिक पाए जाते हैं, इसलिए जब ऊँट भागता है तो अपने घर पश्चिम (राजस्थान) की ओर ही भागता है । आशय यह है कि प्रत्येक प्राणी को अपना घर बहुत प्यारा होता है । (ख) प्रायः मूर्ख व्यक्ति के उल्टे-सीधे कार्यों को देखकर या उसके द्वारा किसी एक ढंग का कार्य करने पर कहते हैं । तुलनीय : भोज० ऊँट जब बउराला त पच्छिम के भागल जाला; अव० ऊँट जबै नकेल तुड़ाये तउ पच्छुवें का भागै; पंज० ऊँट जदों नट्ठे अदों पश्चिम नूं ।

ऊँट जैसी पकड़ – ऊँट यदि किसी को मुँह से पकड़ लेता है तो चबाए बिना नहीं छोड़ता । अर्थात् (क) जब कोई व्यक्ति किसी बहुत बड़ी मुसीबत में फँस जाय तो कहते हैं । (ख) जब कोई शक्तिशाली आदमी किसी कमज़ोर को कसकर पकड़ लेता है और उसे मारने लगता है तब भी ऐसा कहते हैं । तुलनीय : पंज० ऊँट जिही पकड़ ।

ऊँट डूबे खच्चर थाह ले—जब किसी बड़े से कोई कार्य ठीक न हो सके और कोई छोटा उसे करे या करने की कोशिश करे तो व्यंग्य से कहते हैं । तुलनीय : पंज० ऊँट डुब्बे खच्चर तरे ।

ऊँट डूबे मेंढ़ की थाह ले—ऊपर देखिए ।

ऊँट डूबें भेड़ें थाह लें - ऊपर देखिए ।

ऊँट तो बुड़बुड़ाते हुए ही लादे जाते हैं—हिंदी में इस लोकोक्ति का प्रयोग विभिन्न स्थानों पर दो रूपों मे होता है—(क) धीर पुरुष अपना काम धैर्य और लगन से करते रहते हैं, उन्हें इसकी चिंता नहीं होती कि लोग उनकी आलोचना करते हैं या प्रशंसा । (ख) कामचोर या निकम्मे व्यक्ति काम करते हैं, पर बड़बड़ाते हुए अर्थात् अपनी अनिच्छा प्रदर्शित करते हुए । तुलनीय : हरि० ऊँट ते अर-डावते ए लद्या करें; राज० ऊँट तो अरड़ांवता हीज लादीजै; मेवा० ऊँट तो अरावड़ताई लदे ।

ऊँट दूल्हा गधा पुरोहित—नीच मनुष्य की प्रशंसा नीच ही मनुष्य करते हैं। तुलनीय : अव० उंटवा दुलहा गदहवा पुरोहित; पंज० ऊँट लाड़ा खोता परौत।

ऊँट निगल जाय दुम से हिचकियाँ ले—(क) जब कोई व्यक्ति कोई बड़ा काम तो कर दे किन्तु किसी छोटे से काम के लिए बहाना या टालमटोल करे तब यह लोकोक्ति कही जाती है । (ख) किसी बड़े अपराध करने के बाद साधा-रण से अपराध से घबड़ाने वाले के लिए भी कहते है।

तुलनीय : पंज० ऊँट खा जावे दुध नाल गुडकनियां मरौ।

ऊँट पर चढ़के सभी मालिक बन जाते हैं—(क) धन होने पर निर्बल व्यक्ति भी बलवान को खरीद सकता है। (ख) सामर्थ्यवान या धनवान से सभी डरते हैं।

ऊँट पागल होता है तो पश्चिम जाता है—पश्चिम से तात्पर्य राजस्थान मे है और भारत में राजस्थान ही ऊँट का घर है। आशय है कि दुःख पड़ने पर प्रत्येक को अपना ही घर याद आता है। तुलनीय : पंज० ऊँट पागल हुंदा है ता पश्चिम नूँ जांदा है।

ऊँट फ़रिश्ते की जात है—ऊँट बहुत ही नम्र, संतोष-प्रिय और सहिष्णु प्राणी है।

ऊँट बर्राना ही लादता है—दे०, 'ऊँट तो बुड़-बुडाते ···'।

ऊँट बलबलाने से लड़ता है—ऊँट शोर-गुल करते हुए लड़ता है। लड़ाई में शोरगुल अवश्य होता है। तुलनीय : अव० ऊँट अस बलबला अहै; पंज० उँट बलबला के लड़दा है।

ऊँट बहत जाय गदहा पूछे कितना पानी—विशाल पशु ऊँट तो जल की धारा में बहता जा रहा है, पर गदहा पूछ रहा है, 'कितना पानी है?' जब कोई कार्य समर्थ व्यक्ति से भी न हो और असमर्थ उसे करने का प्रयत्न करे तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० ऊँट बहाइल जाय गदहा कहे केतना पानी; अव० ऊँटवा बहा जाय गदहवा थाह लेय।

ऊँट बहा जाए, गधा थाह ले—(क) अनुचित साहस करने पर कहा जाता है। (ख) जब बड़े-बड़े किसी काम को न कर सकें और छोटे उसे करने की कोशिश करें तो भी कहते है। तुलनीय : भोज० ऊँट बहल जाय त गदहा कहे कि केतना पानी; अव० ऊँटवा बहा जाय गदहवा थाह लेय।

ऊँट बहा जाय, गाड़र थाह ले—ऊपर देखिए।

ऊँट बहे गधा कहे कितना पानी—दे० 'ऊँट बहा जाए···'।

ऊँट बिलाई ले गई, हांजी-हांजी कहना—ठकुर सुहाती करना, हाँ-में-हाँ मिलाना। (क) अपनी इच्छा के विरुद्ध सबका साथ देने के लिए कोई काम करना। (ख) खुशामद करते हुए किसी झूठी बात के लिए भी हाँ-में-हाँ मिलाना। (ऊँट बिलाई ले गई यह झूठ है)। तुलनीय : अव० ऊँट बिलैया ले गय हाँ-जी-हा जी होय; मेवा० जाट के वे जाटणी ने जणी गाँव में रेणो, ऊँट बलाई ले गई तो हाँ-जी-हाँ-जी केणो; राज० जाट कहैं जाटणी इये गांव में रहणा ऊँट बिलाई ले गयी हांजी-हाँजी कहणा।

ऊँट बुड्ढा हुआ, पर मूतना न आया—उम्र अधिक होने पर भी यदि कोई मूर्खता करे तो कहते है। तुलनीय : अव० ऊँट अस होयगा मूतै न आवा, पंज० ऊँट बुड्डा होया पर मूतरना नई आया।

ऊँट बूड़े, भेड़ थाह ले—दे० 'ऊँट डूबे खच्चर···'।

ऊँट भागता है तो पश्चिम को—दे० 'ऊँट जब भागे···'। तुलनीय : भोज० ऊँट जब भागी तब पच्छिमे ओर; मैथ० ऊँट बऽराले तऽ पच्छिमे जाले।

ऊँट भैंस का क्या मेल—(क) बेमेल वस्तुओं के प्रति कहते हैं। (ख) दो विभिन्न प्रकृति के व्यक्तियों के प्रति भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : सिं० उठ्ठन एँ मेहन जो कहरो मिलाप; पंज० उट्टाँ मेहां दा केहा मेला।

ऊँट मक्के को भागता है—ऊँट पश्चिम की ही ओर भागता है और मक्का भी पश्चिम स्थित प्रसिद्ध स्थान है। पश्चिम में राजस्थान भी है जो ऊँटों की जन्मभूमि है। आशय यह है कि अपनी जन्मभूमि सभी को प्यारी होती है। तुलनीय : अव० ऊँटवा मक्के का जात है; पंज० ऊँट मक्के नूं नठदा है।

ऊँट मक्खी को भी हाँकता है—छोटे से छोटे शत्रु को भी कमजोर न समझना चाहिए और उसे समीप न आने देना चाहिए। तुलनीय : पंज० ऊँट मक्खी नू वी खिददा

ऊँट मरा कपड़े के सिर—ऊँट के मर जाने पर सौदा-गर उसकी क़ीमत सौदे मे वसूल कर लेता है। अर्थात् जब कोई एक सौदे की हानि दूसरे में निकाले या जब एक के काम का फल दूसरे पर पडे तो कहते हैं। तुलनीय : पंज० ऊँट मरया कपड़े दे सिर।

ऊँट मरे तब मुख पश्चिम को—मरते समय ऊँट का मुँह पश्चिम की ओर हो जाता है क्योंकि उसका मूल स्थान फ़ारस तथा अरब माना जाता है। (क) आशय यह कि मरते समय मातृभूमि याद आती है। (ख) मरने पर ईश्वर का ध्यान आता है। तुलनीय : ऊँट मरया मुँह पश्चिम नूँ।

ऊँट रे ऊँट तेरी कौनसी कल सीधी—(क) उस मनुष्य के लिए कहते हैं जिसमें किसी भी तरह की अच्छाई न हो। (ख) बेडौल आदमी को भी कहते हैं। तुलनीय : मरा० उँटा के उँटा तुझी कोणची बाजू सरल; राज० ऊँटरे ऊँट तेरी कौणसी कल सीधी; हरि० ऊँट रे ऊँट तिरी कुँणासी कळ सीधी; पंज० ऊँट वे ऊँट तेरी मत किथों सिदघी।

ऊँट लंबा पूंछ छोटी—(क) जब किसी बहुत बड़े काम का अधिकांश भाग ठीक हो जाय और थोड़ा-सा बिगड़ जाय या अच्छा न हो तो कहते हैं। (ख) प्रत्येक वस्तु मनचाहे ढंग से नहीं मिल पाती, थोड़ा-बहुत दोष प्रत्येक वस्तु में होता है। तुलनीय : राज० ऊँट लांबो तो पूंछ छोटी; पंज० ऊँट लंबा दुब निक्की।

ऊँट लंगड़ाय गधा दागा जाय—जब किसी के अपराध पर दूसरा कोई दंड पाय तो व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० ऊँट खुडावै जद गधैरै डाम देवे।

ऊँट लदने से गया तो क्या पादने से भी गया—जब कोई मूर्ख या निकम्मा व्यक्ति कोई उचित काम न करके ऊटपटाँग काम करता है तब उसके प्रति व्यंग्य से ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० ऊँट लदणसूं गयो तो कोई पदणसूंही गयो; पंज० ऊँट लदण तों गया ते पद मारण तों वी गया।

ऊँट लदे गधा गिर-गिर जाय, हाय राम ये बोझ कौन ले जाय—लद तो रहा है ऊँट और चिंता गधे को हो रही है कि यह बोझा कैसे लेकर जाएगा। आशय यह है कि जब कोई व्यक्ति बिना कारण ही दूसरे की चिंता मे मरा जाय तो व्यंग्य से उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : बुंद० लदै ऊंट गदा पर-पर जाय, राम जौ बोझा को लै जाय; ब्रज० लादै बैल कमकमाइ कलीलो; पंज० ऊँट नूं लदया खोता डिग-डिग जावे हाय रब ऐ पार कौण चुके।

ऊँट, विद्यार्थी और बन्दर तीनों बहुत चंचल—ऐसा माना जाता है कि ये तीनों—ऊँट, विद्यार्थी तथा बंदर चंचल या उद्दंड प्रकृति के होते हैं। तुलनीय : पंज० ऊँट विद्यार्थी अते बंदर तिनों बडे चंचल हुंदे हन।

ऊँटसवार को कुत्ता काटे—दे० 'ऊँट चढ़े कुत्ता काटे।'

ऊँट सा क़द तो बढ़ा लिया पर शऊर ज़रा भी नहीं—यदि कोई बड़ी आयु का हो और कोई साधारण-सी ग़लती करे तो कहते हैं। तुलनीय : अव० ऊँट अस लंबा होयगा सहूर न भवा; पंज० ऊँट जिन्ना लम्मा हो गया पर शऊर मासा वी नई।

ऊँट हेराय और गगरी में हाथ डाले—जो व्यक्ति ऊँट को गगरी में खोजे उसको मूर्ख ही कहा जा सकता है। जब कोई व्यक्ति किसी वस्तु की ऐसी जगह खोज करे जहाँ उसकी कोई संभावना न हो तो उसके प्रति कहते है। तुलनीय : पंज० ऊँट गुआचा अते कड़ौली बिच हथ पावे।

ऊँटों से खेती नहीं होती—कुछ क्षेत्रों के लोगों का विचार है कि ऊँट खेती के लिए अनुपयुक्त है, वैसे राजस्थान और कतिपय अन्य स्थानों में खेती ऊँटों से ही की जाती है। आशय यह है कि जब कोई व्यक्ति किसी ऐसे व्यक्ति या साधन से कोई काम कराना या करना चाहता है जो उसके उपयुक्त न हो तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : बुंद० ऊँटन खेती नई होत; पंज० ऊँटा नाल खेती होवे।

ऊख अगोला फीकी लागे—ऊख का ऊपरी भाग फीका होता है। आशय यह है कि ऊँचा पद प्रायः सारहीन होता है। तुलनीय : पंज० कमांद दा खोर फिक्का लगदा।

ऊख और बतासों फली—एक तो वैसे ही मीठी ऊख (गन्ना) और दूसरे उसमें बतासे लगे। किसी लाभदायक काम में जब और भी लाभ मिले तो कहते हैं।

ऊख कनाई काहे से, स्वाती क पानी पाये से—स्वाति नक्षत्र में पानी बरसने से गन्ने की फ़सल कानी हो जाती है।

ऊख करे सब कोई, जो बीच में जेठन होई—(क) यदि फ़सल के मध्य में जेठ मास न पड़े तो सभी गन्ने की खेती करें। गन्ने को पानी और गुड़ाई बहुत चाहिए तथा जेठ मास की गर्मी मे यह सबके बस का नही है। (ख) लाभदायक काम सभी कर लें यदि उसमें कष्ट न उठाना पड़े। तुलनीय : मरा० मध्ये ज्येष्ठ नसता (कड़क उन्हाला नसता) तर सगळयानी ऊसच पेरला असता; पंज० कमांद राण सारे जणे जे बिच जेठ न होवे।

ऊख गोड़ि के तुरय दबावै, तो फिर ऊख बहुत सुख पावै—ऊख को जोड़ने के पश्चात् तुरंत दबा देने से फ़सल बहुत अच्छी होती है। तुलनीय : पंज० कमांद गुडण नाल कमांद छेती बददा है।

ऊख न दे, भेली ले के पीछे दौड़े—एक गन्ना नही देता है और गुड़ देने के लिए पीछे दौडता है। अर्थात् (क) जब कोई मूर्ख व्यक्ति मांगने पर सस्ती वस्तु तो नही देता और अपने-आप उससे महँगी वस्तु देने के लिए तैयार हो जाता है तब उसके प्रति ऐसा कहते हैं। (ख) स्वार्थी लोगों के प्रति भी ऐसा कहते हैं। जब उनका कोई काम नहीं रहता है तो वे अपनी साधारण-सी वस्तु भी नही देना चाहते और जब उनका कोई काम आ पड़ता है तब वे सब कुछ देने या करने के लिए तैयार हो जाते हैं। तुलनीय : भोज० खेते ऊख न दे कोल्हाडे भेली को बोलावे; पंज० कमांद देंदा नई रोड़ी ले के पिछे दौडदा।

ऊखली में सिर दिया तो चोटों को क्या गिनना—(क) जब कोई कष्टदायक काम कर ही लिया तो फिर कष्ट से क्या डरना? (ख) जिस काम में हानि निश्चित हो उसमें चिंता करना व्यर्थ है। तुलनीय : राज० ऊँखली में माथो

दियो पछै घावौरी काई गिणती; मेवा० ऊँखली में माथो दीदो तो मूसला को कई डर; पंज० ऊखल बिच सिर दिता ते सट्टां दा की गिणना ।

ऊखली में सिर दिया तो मूसल का क्या डर?--- ऊपर देखिए। तुलनीय: राज० ऊँखली में मिर घाल्यो पछै मूसलरो काई डर; पंज० ऊखल बिच सिर दिता ते मुसल तों की डरना ।

ऊख सरवती दिवला धान, इन्हें छाड़ि जनि बोओ आन सरवती नामक ऊख और दिवला नामक धान की फ़सल अच्छी होती है इसलिए किसी दूसरी जाति की ये दोनों फ़सलें नहीं बोनी चाहिए।

ऊख से गँडेरी प्यारी, गुड़ से प्यारा गांड़ा; माँ बहिन से जोरू प्यारी, जिससे होय गुजारा-- जिस वस्तु से अपना काम चले वही सबसे प्यारी होती है। तुलनीय: हरि० गंडे तै गंडीरी मिट्ठी, गुड़ तें मीट्ठा राला भाई तै भतीज्जा प्यारा सबते प्यारा साळा।

ऊगतेरो मछली, अथवतेरो मोग; डंक कहे है भड्डली, नदियाँ चढ़सी गोग---डंक भड्डरी से कहते है कि यदि प्रातः इन्द्रधनुष हो और सायंकाल सूर्य की किरणें लाल हों तो वर्षा बहुत होगी तथा नदियों में बाढ़ आ जाएगी।

ऊगी हरनी फूली कास, अब का बोए निगोड़े मास — हरणी नक्षत्र के उदय होने के पश्चात तथा कास के फूलने पर उर्द केवल मूर्ख ही बोते है क्योंकि उस समय बोने से उसकी उपज बहुत कम होती है।

ऊजड़ खेड़ा, नाव न बेड़ा---जिस गांव में न नाव हो और न बेड़ा ही हो कोरा नाम ही नाम हो उसे कहते हैं। इसी को अपभ्रंश के रूप में 'ऊजड़ खेड़ा नाम निवेड़ा' भी कहते हैं। अर्थात् व्यर्थ के व्यक्ति या बीज के लिए कहते हैं।

ऊजड़ गाँव में कुम्हार महतो --जहाँ बड़े नही होते वहाँ कोई छोटा भी बड़ा समझा जाने लगता है। यह कहावत मेवाड़ की है। भोजपुरी में 'जहाँ पेड़ न रुख तहाँ रेंड़ पर धान' कहावत भी यही अर्थ रखती है जो संस्कृत कहावत का अनुवाद है। तुलनीय: पंज० उजड़ पिंड बिच कमीर राजा।

ऊजड़ गाँव में मुरार महतो - ऊपर देखिए। तुलनीय: अव० ऊजड़ गाँव मा मुराई महतौ।

ऊजड़ नगरी सूना देस—(क) गाँव बरबाद, देश नष्ट-भ्रष्ट। (ख) अत्याचारी शासक। तुलनीय: पंज० उजड़ नगरी सुना देस।

ऊजड़ में तो गूजर नाचे, ढाक देख बैरागी; खीर देख के बामन नाचे, तन-मन हो गया राजी—गूजर एक जाति है जिसका काम गो-चारण और गो-पालन है। ढाक एक पवित्र वृक्ष है अतः उसे देखकर बैरागी नाच उठता है यानी काफ़ी प्रसन्न होता है। ब्राह्मणों की मिष्टान्न-प्रियता प्रसिद्ध ही है, वे खीर आदि मीठी चीज़ें देखकर खुश होते हैं।

ऊजड़ हो घर सास का, बैर करे सर बार; पीहर घर सूबस बसे, जब लग है संसार- इस संसार में सास और बहुओं में प्रायः नही पटती, इसी कारण बहुओं को मायके में रहना अच्छा लगता है।

ऊजर धोती मुँह में पान, घर का हाल जाने भगवान-- जब कोई व्यक्ति बाह्य दिखावा बहुत करता है, पर उसकी आन्तरिक दशा काफ़ी बिगड चुकी होती है तो उसके प्रति व्यंग्य में लोग ऐसा कहते हैं। तुलनीय: पंज ऊजर तौती मुँह बिच पान, कर दा हाल जाणे रब।

ऊत के निन्यानवे, बारह पंजे साठ—ऐसे मूर्खों पर कहा जाता है जो हिसाब कुछ नहीं समझते हैं। उनके लिए निन्यानवे और साठ बराबर होते हैं। तुलनीय: पंज० ऊत दे निड नींवे बारां पंजे सठ।

ऊत घोड़ी के चूतिया बछेरे ---बेवकूफ़ घोड़ी के बछेड़े भी वैसे ही होंगे। आशय यह है कि माँ-बाप का प्रभाव बच्चों पर भी पड़ता है। तुलनीय: पंज० ऊत घोडियां कल्लन बछेरे, फुद्दू जम्मन ते कंद्दां कम्मन।

ऊत निपूते मर गए किसको देंगे पूत---जब ऊत स्वयं अपनी वंश बेलि न चला पाए, तो मरकर (प्रेत योनि) अन्य को संतति कैसे दे सकेंगे। आशय यह है कि जिनको स्वयं अपने जीवन में कोई उपलब्धि नहीं हुई, वे दूसरों को क्या दे-दिला सकते हैं। असमर्थ व्यक्ति से सहायता की अपेक्षा किए जाने पर ऐसा कहते हैं। तुलनीय: कौर ऊत नपूते मर गए, किस्को देंगे पूत; पंज० ऊत निपूते मर गए किसनूं देण [illegible]। ऊत=निसंतान मर जाने वाला (प्रेत-योनि); निपूते=संतानविहीन या निर्वंश।

ऊतर-पातर, मैं मिया तू चाकर— लड़के खेल में जब बदला चुका देते हैं तो कहते हैं।

ऊधर कैसा जहाँ दालिद्दर न पैठा—ऐसे व्यक्ति के लिए कहते हैं जो सर्वत्र जा चुका हो, या अनेक प्रकार की ठोकरें खा चुका हो।

ऊधो को लेना न माधो को देना— किसी से किसी भी तरह का सम्बन्ध नहीं रखने वाले के लिए कहते हैं। तुलनीय: मरा० उध्दवाचें घेणें नाहीं, माधवाचें देणें नाहीं; राज० ऊधो का लेणा न माधो का देणा; अव० ऊधौ का लेनी न माधौ की देनी; बुं० ऊधौ को लेन न माधौ कौ देन;

कौर० ऊधो का लैण, न माधो का दैण; कनौ० ऊधौ को लीबो, न माधव को दीबो; हाड़० ऊधो को लेणो न माधो को देणो; पंज० ऊधौ दा लेणा ना माधो दी देणा।

ऊधो की टोपी माधो के सिर—बेढंगा काम करने पर व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय: भोज० ऊधो क टोपी माधो के मिरे; पंज० ऊधो दी टोपी माधो दे मिर।

ऊधो तुम्हें द्वारिका जाना—ऊधो! आपको द्वारिका जाना ही है। कुछ भी हो आपको यह काम करना ही है। अर्थात् जब किसी व्यक्ति को कोई व्यक्ति कुछ करने के लिए बिल्कुल बाध्य कर देता है तब ऐसा कहते है। तुलनीय: पंज० ऊधो तुहानू द्वारका जाणा।

ऊधो बतिआये की बात—ऐसे अवसर पर कहा जाता है जब किसी मनुष्य का आशातीत लाभ हो या सफलता मिले। तुलनीय: पंज० ऊधौ दमी दी गल।

ऊपर अंकवार, नीचे छुरी की मार—ऊपर से तो प्रेमपूर्वक गले लगना, किन्तु नीचे से छुरी मारकर गिरा देना। अर्थात् किसी पाखंडपूर्ण स्नेह करने वाले को लक्ष्य करके ऐसा कहते है जो ऊपर से तो प्रेम दर्शाता है, किन्तु भीतर से घात करने को तैयार रहता है। तुलनीय: भोज० भेटे अंकवार, पेट में करे (मारे) छुरा; पंज० उत्तों पयार थलों छुरी दी मार।

ऊपर-ऊपर दीठ, कौन गूलर मीठ—ऊपर देखने मात्र से ही किसी गूलर के मीठेपन का ज्ञान नहीं हो सकता। तात्पर्य यह है कि केवल कामना करने से ही किसी वस्तु की सिद्धि नहीं हो सकती, जब तक कि कर्त्तव्य का निर्वाह न किया जाय। तुलनीय: भोज० ऊपर देखला मे का पता कि कवन गूलर मीठ बा; पंज० उतों देखण नाल की पता की गूलर मिट्ठा है।

ऊपर-ऊपर माई माई मन में ससुराल जाई—इच्छा होते हुए भी संकोचवश जब कोई अपनी इच्छा न प्रकट करे तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय: मैथ० ऊपर क मने माई गे माई आ तर क मने सासुर जाई; भोज० ऊपरां क मने रे माई भीतरां ले ससुरार जाई; पंज उतो उत्तों परा परा दिल बिच सौहरे दा पा।

ऊपर का धड़ भाई और नीचे का जल खुदाई—कपटी मनुष्य के प्रति कहा जाता है जो ऊपर से कुछ और अन्दर से कुछ और आचरण करे।

ऊपर गोरे भीतर काले—ऊपर देखिए। तुलनीय: पंज० उतो गोरे अंदरों काले।

ऊपर दुपट्टा, तले वैसे ही—सिर पर तो दुपट्टा ओढ़ रखा है और नीचे नंगी ही है। (क) जो व्यक्ति केवल बड़ा होने का दिखावा करे किन्तु वास्तव में उसके पास कुछ भी न हो तो उसके प्रति कहते हैं। (ख) बेतुका काम करने वालों के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय: पंज० सिर उत्ते दपट्टा लिया थल्लों नंगी है।

ऊपर पूरी भीतर छूरी—ऊपर से प्रेम प्रकट करने वाले तथा अन्दर कपट-भाव रखने वाले के प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय: मैथ० ऊपर-ऊपर बाबी तर मे दगाबाजी, ऊपर चीकन भीतर रूखड़; भोज० देखत क बउरहिया आवे पाँचों पीर; पंज० उपरों पूरी अदरों छुरी।

ऊपर बरछी, नीचे कुआँ, तासे बनियाँ का फारखत हुआ—विवश होकर काम करने पर कहा जाता है। एक व्यक्ति को एक बनिए का बहुत-सा रुपया देना था और उसके पास कुछ भी नहीं था। तक़ाज़ों से परेशान होकर उसने एक दिन बनिए को अपने घर बुलवाया और कुएँ के पास खड़ा करके और बरछी दिखाकर उसे फारखती (बेबाकी पत्र) लिखवाली। किन्तु बनिया बहुत चालाक था और उसने रुक़्क़े के दूसरी तरफ़ उपरोक्त कहावत लिख दी तथा बाद में अदालत में नालिश करके अपनी रक़म वसूल कर ली।

ऊपर माला नीचे काला—किसी पाखंडपूर्ण व्यवहार करने वाले व्यक्ति को लक्ष्य करके यह कहावत कही जाती है। तुलनीय: मैथ० ऊपर-ऊपर जापू माला मन मे छत्तीसो कला; भोज० हाथ में माला, भीतर से काला, मुख मे राम बगल में छूरी; पंज० हथ्थ बिच माला दिल बिच काला।

ऊपर माला, पेट कुदाला—ऊपर देखिए। तुलनीय: राज० ऊपर (हाथ में) माला, पेट (या कमर) में कुदाली।

ऊपर माला भीतर भाला—ऐसे व्यक्तियों के प्रति कहते हैं जो बाहर से काफ़ी सीधे-सादे नज़र आते है पर अन्दर से बहुत दुष्ट होते हैं। तुलनीय: पंज० उत्ते माला अन्दर भाला।

ऊपर मीठ भीतर तीत—ऊपर देखिए।

ऊपर में फीट-फाट तर में मुकामाघाट—जो व्यक्ति ऊपर तो काफ़ी साफ-सुथरे वस्त्र पहने रहता है परन्तु जब उसके अन्दर (नीचे) के वस्त्र (गंजी, जांघिया आदि) फटे या गंदे होते हैं तब ऐसा कहते हैं।

ऊपर राम राम भीतर कसाई का काम—ऊपर से भक्त बनने वाले तथा भीतर से दुष्टता करने वाले के प्रति व्यंग्य से ऐसा कहते है। तुलनीय: सं० परोक्षे कार्यहन्तारं प्रत्यक्षे प्रियवादिनम्, वर्जयेत्तादृशं मित्रं विषकुम्भं पयोमुखम्; बुंद० ऊपर से राम राम, भीतर कसाई के काम; छत्तीस० ऊपर

माँ राम-राम, भीतर माँ कसइ काम; पंज० उपरों राम-राम अदरों कसाई दा कम।

ऊपर वाला दे तो ले—यदि भगवान दे तभी लेना चाहिए। अर्थात् किसी का दान या सहायता स्वीकार नहीं करनी चाहिए। अपने परिश्रम से उपार्जित धन का ही भोग करना अच्छा है। तुलनीय : भीली० तोए राम खवड़ावे जेम खाजे; पंज० ऊपर वाला दे तां लै।

ऊपर वाला हिला, न नीचे वाला डुला—न तो ऊपर वाले ने कुछ किया और न ही नीचे वाले ने। अर्थात् जब किसी व्यक्ति पर अचानक कोई विपत्ति आ जाती है तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० ऐंच कीं किटक्यो, न तला को मिटक्यो; पंज० उत्ते वाला हिलया न थल्ले बाला डुलया।

ऊपर वाले का भी उलटा न्याय—भगवान का न्याय भी कभी-कभी ग़लत हो जाता है। जब कभी सच्चा व्यक्ति झूठे के सम्मुख पराजित हो जाता है तो कहते हैं। तुलनीय : भीली० राम ना घरे ना उलटा न्याव; पंज० उपर वाले दा वी पुठा नयाय।

ऊपर से पूजा करें, भीतर माल चबायं—पुजारी लोग दिखावे के लिए ही पूजा-पाठ करते हैं, वास्तव में यह उनके पेट भरने का साधन होता है। पुजारी लोग ऊपर से बहुत धार्मिकता दिखाते हैं, किन्तु भीतर से भी वैसे ही हो यह कोई आवश्यक नहीं है। अर्थात् बाह्य आडंबर दिखाने वाले के प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भीली०—पुजारी नी पनेल मांये पाल भाले है; पंज० ऊपरों पुजा करण अन्दरों माल खाण।

ऊपर से राम-राम भीतर कसाई का काम—दे० 'ऊपर राम-राम भीतर ...'।

ऊपर से स्वाहा भीतर से कतरनी—ढोंगी साधु-संतों के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० उपरों सवाहा अदरों कतरनी।

ऊमस कर घृत मांठ जमावें, ईडा कीड़ी बाहर लावें; नीर बिना चिड़िया रज न्हावें, मेह बरसे घरमांह न मावें—यदि गर्मी से घी पिघल जावे, चीटियां अण्डे बाहर निकालें और चिड़िया धूल में नहाए तो खूब वर्षा होती है।

ऊसर का बीज—ऊसर भूमि में बीज बोने से कोई लाभ नहीं होता बल्कि श्रम, समय और बीज की हानि होती है। अर्थात् जब कोई व्यक्ति कोई ऐसा कार्य करता है या करने की तैयारी करता है जिससे उसे कुछ भी लाभ प्राप्त होने की संभावना न हो बल्कि कुछ हानि ही हो तो ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० ऊसर दा बीज।

ऊसर खेत में केसर—(क) जब कोई व्यक्ति मूर्खतापूर्ण कार्य करता है तो व्यंग्य में ऐसा कहते हैं, क्योंकि ऊसर जैसी खराब जमीन में केसर की खेती नहीं हो सकती। उसके लिए बढ़िया उपजाऊ भूमि की आवश्यकता होती है। (ख) जब किसी अयोग्य परिवार में कोई व्यक्ति योग्य हो जाता है तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० ऊसर खेते मा केसर; पंज० ऊसर खेत विच केसर।

ऊसर पर क्या बिजली पड़े—ऊसर पर बिजली पड़ने से कोई हानि नहीं है। (क) जिसके पास कुछ होता है उसी को हानि का भय रहता हैं। (ख) बुरे का कुछ नहीं बिगड़ता। तुलनीय : पंज० ऊसर उत्ते की बिजली डिगेगी।

ऊसर बरसई तृन नहिं जामा—ऊसर में वर्षा होने पर भी घास या पौधे नहीं उगते। आशय यह है कि मूर्ख व्यक्ति पर उपदेश या शिक्षा का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

ऊसर बरसे तृण नहिं जामा—ऊपर देखिए।

ऊसर में खाद, फूल न पात—ऊसर में खाद डालने से न तो पत्ते होते हैं और न ही फल। (क) मूर्ख व्यक्ति जब बहुत समझाने-बुझाने पर भी कुछ ग्रहण नहीं करता तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। (ख) बहुत परिश्रम करने पर कोई लाभ न मिले तब भी उस कार्य के प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भीली० खात पाड़ी ने खोटी थाय; पंज० ऊसर बिच हैल फूल न पात।

ऊसर वृष्टि न्याय—ऊसर में वर्षा होने पर भी कुछ उत्पन्न नहीं होता। जहाँ कोई बात करने का कुछ फल न हो वहाँ यदि वही बात हो तो कहा जाता है।

ए

एक पाख दो गहना, राजा मरे कि सेना—ऐसी जन-श्रुति है कि एक पक्ष में यदि दो ग्रहण लगें तो या तो राजा मरता है या कोई भारी लड़ाई होती है। तुलनीय : ब्रज० एक पाख दो गहना, राजा मरै कै सैना।

एक पाजामा दो भाई फेरा-फेरी कचहरी जाई—(क) एक ही चीज़ जब दो व्यक्तियों की ज़रूरत पूरी करे तब ऐसा कहते हैं। (ख) ग़रीबों के प्रति भी ऐसा कहते हैं जब वे किसी प्रकार अपना जीवन यापन करते हैं। तुलनीय : मैथ० एक पैंजामा दु भाय फेरा कचहरी जाय।

एक अंडा वह भी गंदा— किसी के एक ही लड़का हो और वह नालायक़ हो अथवा किसी के पास एक ही वस्तु हो और वह भी बेकार हो तो ऐसा कहा जाता है। तुलनीय : मरा० एकच अंडे नि तेंहि खराब; मल० उलूळ कन्जियिलुम् पाट्टबीणु; पंज० इक अंडा ओह वी गंदा; अं० But one egg and that too addled.

एक अंधा एक कोढ़ी, राम मिलाई जोड़ी—जब दो बुरे व्यक्ति या दो निकम्मे व्यक्ति इकट्ठा हो जाते हैं या परस्पर मित्र हो जाते हैं तो ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० मिया खोडा ने बीबी झमकु वोखी; ब्रज० एक कानों एक कोढ़ी, राम मिलाई जोड़ी; पंज० राम मलायी जोड़ी इक अन्ना इक कोड़ी।

एक अंधा एक कोढ़ी, बिधना खूब मिलाये जोड़ी—जब एक से बढ़कर एक दोषपूर्ण व्यक्ति मिल जाते है तब कहा जाता है।

एक अंधे को नेवता दे तो दो बुलाये—आशय यह कि असमर्थ या अयोग्य व्यक्ति को अपने यहाँ बुलाने में अवश्य परेशानी उठानी पड़ती है। तुलनीय : पंज० इक अन्ने नूं सद्य ते दो आण।

एक अकेला दो का मेला— (क) एक तो अकेला ही होता है, एक के दो हो जाने पर समुदाय हो जाता है। अर्थात् एक ही के रहने से शांति रहती है। जहाँ एक से दो हुए तो वहाँ मेला या मेले की-सा भीड़ हो जाती है। (ख) एक से दो भले होते है। तुलनीय : पंज० इक कल्ला दो दा मेला; अं० The more the merrier.

एक अकेला, दो से ग्यारह—एक-एक मिल के ग्यारह हो जाते है। अर्थात् संगठन मे शक्ति होती है। तुलनीय : पंज० इक कल्ला दो नाल गयारां।

एक अनार सौ बीमार—जब चीज़ कम हो और उसे चाहने वाले अधिक हो तो कहते हैं। तुलनीय : मरा० डाळिंब एक रोगी अनेक; गढ़० एक अनार सौ-सौ बीमार; अव० एक ठो अनार सौ ठो बीमार; मल० साधनम् कुरवु आवश्यक्कार् धाराळम्; भोज० एगो हरें क गाँछ गाव भर क खोंखी, गाँव भर रोगिहे एगो अनार; मैथ० एक अनार सौ बिमार; छत्तीस० एक ठन हर्रा, गाँव भर खोंखी; बुंद० अकेली हरर्दामिया, सबरो गाँव रसिया; हरि० एक नीम सौ कोढ़ी; पंज० इक रजाई सौ जवाई; अं० One post for one hundred candidates.

एक अनुसन्धित्सतोऽ परं प्रच्यवते—एक वस्तु को खोजने वाला दूसरी वस्तु को खो देता है। कभी-कभी ऐसा देखा जाता है कि किसी एक वस्तु को खोजने या प्राप्त करने में दूसरी वस्तु खो जाती है।

एक अरहर सब दिन बाहर—अरहर की फ़सल लगभग पूरे वर्ष में तैयार होती है, अक्सर वह खेत-खलिहान में ही रहती है। परिवार या कुल का ध्यान न करने वाले व्यक्ति के विषय में उक्त कहावत कही जाती है। तुलनीय : मैथ० एगो रहरी सब दिन बहरी।

एक अवगुण सारे गुणों को नष्ट कर देता है—मनुष्य में चाहे कितनी भी अच्छाई क्यों न हो पर जब उसमें साधारण-सी भी बुराई आ जाती है तो उसकी प्रतिष्ठा संदिग्ध हो जाती है। बुरे कर्मो से बचने के शिक्षार्थ यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : माल० ऊजड़े लूगड़े दाग लागे; पंज० इक अवगुण सारे गुणा नूं खतम कर देंदा है।

एक असामी सौ अरज़ियाँ— दे० 'एक अनार सौ ...'। तुलनीय : अव० एक असामी सौ ठौ अराजी।

एक अहारी सदा व्रती, एक नारी सदा यती— एक वक़्त खाने वाला व्रती कहलाता है और केवल अपनी स्त्री से ही प्रेम करने वाला ब्रह्मचारी होता है।

एक अहीर की एकौ गाय ना लागे तो छूछी जाय— एक अहीर के पास एक ही गाय है। जब कभी वह दूध नहीं देती तो बर्तन ख़ाली ही रह जाता है। (क) जब किसी व्यक्ति या परिवार की आजीविका का केवल एक ही साधन होता है और वह भी बेकार हो जाता है। (ख) जिस व्यक्ति के एक ही पुत्र हो और जिस दिन वह भी कुछ कमाकर न लावे तो भूखा ही रहना पड़ता है, ऐसे अवसर पर उक्त लोकोक्ति कही जाती है।

एक आँख आँख नहीं एक पूत पूत नहीं (क) एक आँख को आँख और एक पुत्र को पुत्र नही समझना चाहिए, क्योंकि इनके समाप्त हो जाने पर व्यक्ति का सब कुछ समाप्त हो जाता है और उसका जीवन कष्टमय हो जाता है। (ख) जब किसी के पास कोई चीज़ थोड़ी मात्रा मे हो तो उसकी विशेष आशा नही करनी चाहिए क्योंकि जो चीज़ थोड़ी ही मात्रा में होती है वह कभी भी समाप्त हो सकती है। इसलिए पुत्र एक से अधिक होने चाहिए और कोई वस्तु भी अधिक मात्रा में होनी चाहिए ताकि यदि कुछ नुक़सान भी हो जाय तब भी व्यक्ति के लिए कुछ सहारा रह जाय। तुलनीय : मेवा० एक आँख में आँख नी, एक पूत में पूत नी; हरि० एक आंख्या का के सुलाक्खा, एक पूत का के सपूत्ता? पंज० इक अख अख नईं इक पुतर पुतर नईं।

एक आँख को क्या खोले क्या मींचे—जब एक ही आँख

होती है तो उसे खुला रखने पर दर्द होने लगता है और उसे बन्द कर लेने पर दिखाई नहीं पड़ता। आशय यह है कि जब किसी व्यक्ति के एक ही लड़का होता है तो उसके बाहर जाने और घर रहने, दोनों ही दशा में तकलीफ़ उठानी पड़ती है। तुलनीय : राज० एक आँख में किसी खोलै किसी मीच; पंज० इक अख नूं को खोले की मीटे।

एक आँख फूटती है तो दूसरी पर हाथ रखते हैं—कहीं दूसरी भी न खत्म हो जाय, अतः उसकी रक्षा करते हैं। जो गया वह तो गया ही पर जो बाक़ी है उसकी रक्षा अवश्य करनी चाहिए। तुलनीय : पंज० इक अख खराब होवे तां दूजी उत्तें हत्थ रखदे हन।

एक आँख में किसे मीचे किसे खोले—देे० 'एक आँख को क्या···'। तुलनीय : राज० अेक आँख को काँई मीचणो ई उघाडनो।

एक आँख मटर का बिया, वह भी आँख भवानी लिया—मटर के बीज जैसी छोटी एक ही आँख थी वह भी चेचक की बीमारी (भवानी) ने समाप्त कर दी। अर्थात् जब किसी का इकलौता या कमज़ोर पुत्र होता है और वह भी मर जाता है तब ऐसा कहते हैं।

एक आँख में लहर बहर, एक आँख में खुदा का क़हर—काने व्यक्ति के प्रति कहा जाता है। ऐसे व्यक्ति के लिए भी इसका प्रयोग किया जाता है जो बाहर से भला किन्तु भीतर से दुष्ट हो।

एक आँख से रोवे, एक आँख से हँसे—(क) रंज और खुशी एक साथ होने पर कहा जाता है। (ख) संसार में ये दोनों लगे है। (ग) चालाक आदमी के लिए भी कहते। तुलनीय : पंज० इक अख् नाल रोवें इक नाल हस्से।

एक आँधर एक कोढ़ी, बिधिना आय मिलायन जोड़ी—देे० 'एक अंधा एक कोढ़ी···'।

एक आवें के बरतन है—(क) एक-सी चीज़ों या व्यक्तियों पर कहा जाता है। (ख) समान प्रकृति के लोगों के प्रति भी ऐसा कहते हैं। (प्रायः बुरे लोगों के लिए कहते हैं)। तुलनीय : अव० एके आँवाँ कै सब बसन अहैं; पंज० इक आवे दे पांडे हन।

एक आने का दूध लिया उसमें भी मक्खी? साहब इतने थोड़े दूध में मक्खी नहीं तो क्या हाथी मिलेगा?—किसी ग्राहक ने दूकानदार से एक आने का दूध लिया, किंतु उसमें मक्खी पड़ी हुई थी। ग्राहक ने कहा कि इसमें तो मक्खी पड़ी हुई है तो दूकानदार ने उत्तर दिया कि एक आने के दूध में मक्खी नहीं तो क्या हाथी मिलेगा। कंजूसों के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० खायौर परड़ोरियौ, कै काळंदर कठ्याँ सूं लाऊँ।

एक आम की दो फाँकें—(क) जब दो व्यक्ति या वस्तुएँ एक-सी हों तो कहते हैं। (ख) शारीरिक दृष्टि से अलग होने पर भी मूलतः एक होने पर कहा जाता है। तुलनीय : मरा० एकच आंब्याच्या फांका; पंज० इक अंब दी दो दलियाँ।

एक इतवार के व्रत से जन्म का कोढ़ नहीं जाता—(क) थोड़े से उद्योग से जन्म-भर की दीनता नहीं जाती। (ख) थोड़े दिन दवा करने से पुराने रोग का पूर्ण निदान नहीं होता। (ग) बहुत दिन का बिगड़ा हुआ कार्य कुछ ही देर में नहीं ठीक हो जाता। तुलनीय : अव० एकै ऐतुवार मा जनम कइ कोढ न जाई; पंज० इक इतवार दे बरत नाल जन्म दा कोढ़ नईं जांदा।

एक इतवार से कोढ़ नहीं जाता—ऊपर देखिए। तुलनीय : मग० एके अतवार से कोढ़ न जाहे; भोज० एगो अतवार भुखले कोढ़ नां जाइ।

एक इनकार सौ दुःख दूर—एक इनकार कर देने से सौ दुःख दूर हो जाते हैं। आशय यह है कि (क) किसी को देकर बाद में पछताने या परेशान होने से अच्छा है इनकार कर देना। (ख) लेन-देन न करने से आदमी झंझटों से मुक्त रहता है। तुलनीय : राज० एक नकारो सौ दुख हरै; पंज० इक वार नाँ सौ दुख दूर।

एक ईंट उठाओ तो तीन-तीन निकलते हैं—राह में पड़ी ईंट भी उठाओ तो उस के नीचे से तीन निकल पड़ते हैं। आशय यह है कि किसी वस्तु विशेष की बहुतायत है। तुलनीय : पंज० इक इट चुको ते तिन तिन निकलदे हन।

एक ईर घाट, एक बीर घाट—(क) दो व्यक्तियों में जब आपस में मेल नहीं होता तो ऐसा कहते हैं। (ख) जब किसी व्यक्ति का काम या व्यवसाय कई स्थानों पर होता है और उनकी अच्छी व्यवस्था नहीं हो पाती तब भी ऐसा कहा जाता है।

एक एक तो बात है, लम्बी नौ नौ हाथ—जब किसी छोटी-सी बात का सिलसिला जल्दी समाप्त नहीं होता तब कहा जाता है। तुलनीय : पंज० इक निक्की जिही गल है नौ हत्थ लमी।

एक-एक पैसे से लाख होते हैं—थोड़ा-थोड़ा धन इकट्ठा करने से व्यक्ति धनवान हो जाता है। तुलनीय : पंज० इक इक पैसे नाल लख बणदे हन।

एक-एक बात नौ-नौ हाथ—जब कोई बात बहुत ही बढ़ा-चढ़ाकर की जाय तो कहते हैं। तुलनीय : पंज० इक गल नौं नौं हत्थ।

एक-एक बूंद से सागर भरता है—दे० 'एक-एक पैसे से...'।

एक ओर चार वेद एक ओर चातुरी—पुस्तकीय ज्ञान से व्यावहारिक ज्ञान अच्छा होता है। तुलनीय : पंज० इक पासे चार वेद इक पासे चलाके।

एक ओर लगी रोटी भी जल जाती है—रोटी सेंकते समय उसे फेरा न जाय तो वह भी जल जाती है। अर्थात् (क) एक स्थान और दशा में व्यक्ति सुखी नहीं रहता। (ख) लड़कियों का मायके-ससुराल में आना-जाना बना रहता है जिससे उनके जीवन में सरसता बनी रहती है। ऐसा न हो तो वे ऊब जाती हैं, ऐसी स्थिति में भी इस लोकोक्ति का प्रयोग किया जाता है। तुलनीय : कौर० एक आर लगी रोट्टी बी जळ जा; पंज० इक पासे लग्गी रोटी वी सड़ जांदी है।

एक और एक ग्यारह होते हैं—एकता में बड़ी शक्ति होती है। तुलनीय : मरा० एक नि एक अकरा होतात; अव० एक औ एक गियारह होत है; हरि० बान्धी ओड़ बुहारी पंनसेरी न सख्या दे; मल० ऐकमत्यम् महाबलम्; मल० आयिरम् माकाणि अरुपन्निरण्टर; ब्रज० एक-एक ग्यारह; पंज० इक अते इक गयारां हुंदे हन०; अ० Union is strength.

एक कंकड़ से गाड़ी अटक जाती है—बड़े-बड़े कार्य भी छोटी-सी भूल से बिगड़ जाते है या उनमें रुकावट उत्पन्न हो जाती है। तुलनीय : पंज इक रोड़े नाल गड्डी अड़क जांदी है।

एक कठौती माठा पीवे, सोरह मकुनी खाई; उसके मरे न रोइए, घर दलिद्दर जाई—कठौती (एक लकड़ी का बड़ा-सा बरतन) भर के माठा पीने वाले और सोलह मोटी रोटियाँ (मकुनी) खाने वाले की यदि मृत्यु भी हो जाय तो दुःख नहीं करना चाहिए बल्कि समझना चाहिए कि घर की दरिद्रता दूर हो गई। आशय यह है कि घर का ऐसा सदस्य जिससे घर की श्री-संपत्ति नष्ट होती हो मर भी जाय तो शोक नहीं करना चाहिए।

एक कन्या सहस्र वर—एक कन्या के सहस्र वर होते है। आशय यह है कि (क) यद्यपि ईश्वर एक कन्या के लिए सहस्र वर उत्पन्न करता है तथापि कन्या का विवाह उसी वर के साथ होता है जिससे उसका पूर्व जन्म का सम्बन्ध होता है। (ख) इस लोकोक्ति से भाग्यवाद तथा पूर्वजन्म की भी व्यंजना होती है। तुलनीय : हरि० एक कन्या सहंसर वर; पंज० इक कुडी सौ करवाले (खसम)।

एक करे भात, दूजी करे दाल—मिल-जुलकर काम करने से काम जल्दी और अच्छा होता है। तुलनीय : पंज० इक करे दाल दूजी करे चौल।

एक करे सब लाजें—एक बुरे के पीछे पूरे घर, जाति या देश को लज्जित होना पड़ता है।

एक कहो और दस सुनो—जब कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति को एक अपशब्द कहता है और उसके बदले में उसे दस अपशब्द सुनने पड़ते हैं तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० इक आखो दस सुनो।

एक कहोगे तो दस सुनोगे—ऊपर देखिए। तुलनीय : भोज० एगो कहब त दस गो सुनब।

एक कहो न दस सुनो—न किसी को एक गाली या अपशब्द कहना चाहिए और न दस सुनना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से मर्यादा पर आँच आती है। यह तुच्छ लोगों का कर्म है। तुलनीय : मरा० एक बोल लें तर दहा ऐकावीं लागतात; हरि० जार कह माँचोद कहावे; पंज० इक आखो ना दस सुनो।

एक कहो न दो सुनो—ऊपर देखिए। तुलनीय : बुंद० एक कओ, न दो सुनो।

एक का इलाज दो—एक बलवान या शक्तिशाली व्यक्ति से निपटने के लिए दो व्यक्तियों की आवश्यकता होती है। या दो व्यक्ति मिलकर एक व्यक्ति को परास्त कर देते हैं। तुलनीय : राज० एकरो इलाज दो; पंज० इक दा इलाज दो।

एक का इलाज दो और दो का इलाज चार—शत्रु से दुगनी ताक़त होने पर शत्रु दबता है। तुलनीय : राज० एकरो इलाज दो, दोरो इलाज च्यार।

एक का दुख दूसरा क्या जाने—जब किसी परेशानी में फंसे व्यक्ति की मुसीबतों की तरफ कोई ध्यान न देकर उलटे खिल्ली उड़ाता है तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : असमी कमारे कि जाने दुखितर लो, यमे कि जाने बारीर एकेटि पो; सं० का कस्य परिवेदना; पंज० इक दे दुख दा दूजे नूं की पता।

एक कान बहरा करो, एक कान गूंगा—(क) ऐसे व्यक्ति के लिए कहते हैं जो किसी से अपनी बुराई सुनकर भी असमर्थता के कारण बदला न ले सके। (ख) सुनी-अनसुनी करके व्यर्थ के बतबढ़ाव से बचना अच्छा होता है।

तुलनीय : पंज० इक कन बोला करो इक कन गूँगा।

एक कान सुनी दूसरे कान उड़ाई—जब कोई किसी की बात पर ध्यान न दे तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : हरि० न्यूं (यूं) त सुणी न्यूं त उड़ादी; अव० एक काने सुनिन दुसरे ते उड़ाइन; ब्रज० या कान ते सुनी, वा काने निकासी; पंज० इक कन सुणी दूजे कनों कडी।

एक कान से दु कान, दु कान से बियाबान—कोई बात जब एक कान से दूसरे कान तक पहुँचती है तब उसे फैलते देर नहीं लगती। अर्थात् कोई बात जब एक से दो व्यक्ति जान जाते हैं तब उसे छिपाना मुश्किल होता है। तुलनीय : पंज० इक कन नाल दो कन दो कनाँ नाल बाराँ।

एक काम में सौ काम—एक काम को करने के लिए सौ काम करने पड़ते हैं। अर्थात् किसी काम में सफलता प्राप्त करने के लिए बहुत परिश्रम करना पड़ता है। तुलनीय : पंज० इक कम बिचों सौ कम।

एक का मुँह शक्कर से भरा जाता है और सौ का मुँह खाक से भी नहीं भरा जाता—कम आदमी हों तो उनकी खातिर अच्छी तरह की जा सकती है पर अधिक होने पर उनकी बात भी नहीं पूछी जा सकती। तुलनीय : पंज० इक दा मूंह घी नाल परया जांदा है सौ दा पाणी नाल वी नईं।

एक मेहमान सारे गाँव का मेहमान—एक व्यक्ति का सम्बन्धी (मेहमान) पूरे गाँव का सम्बन्धी होता है। तुलनीय : हरि० एक का महमान, सारे गाम का महमान; इक परौण सारे पिंड दा परौणा।

एक किया या सौ किया, किया तो किया ही—थोड़ा किया तो किया और ज़्यादा किया तो किया, बिना किया तो रहा नहीं। जब कोई व्यक्ति साधारण-सा अपराध करके उसे अपराध नहीं मानता तब कहते हैं।

एक की दवा दो—दे० 'एक का इलाज···'। तुलनीय : राज० एकरो दारु दो।

एक की दस या एक की सौ सुनाता है—बहुत ही मुँहज़ोर और कर्कश या कटुभाषी है।

एक की दारू दो, दो की दारू चार—कोई कैसा भी बलवान क्यों न हो, अकेला दो की बराबरी नहीं कर सकता। तुलनीय : राज० एक रो दारू दो; हरि० दो तै चून के बी बैरी हों सें; पंज० इक दा इलाज दो दां दी दवा चार।

एक की माई सुख से सोवै, बहुत की माई दुख से रोवै—एक पुत्र की माँ सुखी रहती है पर बहुत पुत्रों की माँ को दुःख भोगना पड़ता है। तुलनीय : पंज० इकदी माँ सुख नाल सोवे मतयां दी माँ दुख नाल रोवे।

एक की माँ को दाह हो जावे, सात की माँ को कुत्ते खावे—एक पुत्र की माँ का तो दाह-संस्कार हो जाता है, किन्तु सात लड़कों की माँ को सातों में कोई नहीं पूछता और उसकी लाश कुत्ते ही खाते हैं। अर्थात् जिस काम की ज़िम्मेदारी आवश्यकता से अधिक लोगों पर होती है वह ठीक से पूरा नहीं होता, क्योंकि हरेक अपनी ज़िम्मेदारी दूसरे पर डालकर निश्चिंत हो जाता है। तुलनीय : माल० एक री माने खखेरी ने बाले, सात री माँ ने सियार खावे; भोज० एक क माई खेंडा पावे, सात क माई कुक्कुर खावे; पंज० इक दी माँ दा दाग लग जावे सत दी माँ नूँ कुत्ते खाण; अं० Responsibility of all is responsibility of none.

एक की लाठी दस जने का बोझ—एक व्यक्ति जहाँ दस व्यक्तियों से अपनी आवश्यकता पूरी कराना चाहता है वहाँ इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

एक की सैर, दो का तमाशा, तीन का मेला, चार का झमेला—अकेले ही रहना अच्छा है। या अधिक से अधिक दो आदमी हों। इससे अधिक होने पर गड़बड़ी और झम्मड़ हो जाता है। तुलनीय : गढ़० एक की सैर, द्वी को मेलो, तीन को घपला, चार को झमेलो; पंज० इक दी सैर दो दा तमाशा तिन दा मेला, चार दा झमेला।

एक की सैर दो का तमाशा, तीन की फिटफिट चार का स्यापा—ऊपर देखिए।

एक कुंजड़िन नहीं आएगी तो क्या हाट नहीं भरेगा—एक कुंजड़िन नहीं भी आती तो भी बाज़ार को कोई अन्तर नहीं पड़ता। अर्थात् जब कोई व्यक्ति बिना मतलब की ज़िद करे और किसी कार्य में सम्मिलित न हो तो व्यंग्य से कहते हैं।

एक क़ुतब मीनार तो दूसरा जामा मस्जिद—यदि एक क़ुतब मीनार की तरह ऊँचा है तो दूसर जामा मस्जिद की तरह महान् और सुन्दर। जब बराबर की दो वस्तुओं या व्यक्तियों की तुलना की जाती है तो कहते हैं। तुलनीय : राज० के सौराय ऊंडो घणो तो भोंडासर ऊँचो घणो; पंज० इक कुतुब मिनार ते दूजा जामा मसजद।

एक कुत्ता घुनियान चाटे, दूसरा उसकी देह चाटे—एक कुत्ता घुनियान (धूल में गिरा आटा या आटे की झाड़न) चाट रहा है, दूसरा उसकी देह में लगा आटा चाट रहा है। जब कोई व्यक्ति किसी मामूली लाभ के लिए कोई ओछा काम करे तब ऐसा कहते हैं।

एक के इक्कीस, पाँच के पच्चीस—उपकार करने वाले

के प्रति आशीर्वाद में कहते हैं। तुलनीय : गढ़० एक की एक्की सौ, पाँच की पच्चीस; पंज० इक दे इक्की पंच दे पंजी।

एक के तीते तीनों तीत—एक के कड़वे होने पर सभी कड़वे हो जाते हैं। आशय यह है कि (क) एक का स्वभाव बुरा होने से उसकी संगति में रहने वाले अन्य भी बुरे हो जाते है। (ख) बुराई बहुत जल्दी फैलती है।

एक के दूने से सौ के सवाये भले--थोडा मुनाफ़ा लेने से बिक्री अधिक होती है, अतः कुल मिलाकर अधिक लाभ होता है। तुलनीय . मरा० एकाचे दोन होण्यापेक्षाँ शंचराचे सव्वापट बरे; अव० एक कै दूना सौ का सवाया; पंज० इक दे दूणे तो सौ दे सवाये चंगे।

एक के पाप से सब डूबें—एक व्यक्ति के पाप का दंड उसके संबंधियों-मित्रों को भी भोगना पडता है। तुलनीय : राज० एकरै पापमूं नाव डूबै; पंज० इक दे पाप नाल सारे डूबण।

एक के पुण्य से सब तरें—एक व्यक्ति के पुण्य से सबका उद्धार हो जाता है। आशय यह है कि यदि किसी परिवार, गाँव, शहर या देश में कोई महान व्यक्ति उत्पन्न होता है तो उससे सबकी (परिवार, गाँव, शहर, देश) इज्जत बढ़ जाती है। उसके सत्कर्मों का फल सबको प्राप्त होता है। तुलनीय : पंज० इक दे पुणां नाल सब तरण।

एक के बदले में एक, उसमें क्या निहोरा—एक वस्तु देकर एक ही वस्तु लेने में क्या निहोरा (निवेदन)? जो सौदा बराबरी का हो उसमें निहोरा करने की कोई आवश्यकता नही होती। जब बराबर की वस्तुओं के लेन-देन में किसी को कुछ हिचक होती है या परेशानी होती है तो कहते हैं। तुलनीय : राज० छाटी सटै बोरो जकरो कांई नोरो।

एक के लिए माँ एक के लिए मौसी—जब कोई व्यक्ति किन्हीं दो व्यक्तियों में से एक के प्रति सगे और दूसरे के प्रति पराये जैसा व्यवहार करता है तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : छत्तीस० एक ला मांय एक ला मौसी; पंज० इक लई मां इक लई मासी।

एक को गड़ही, एक को गंगा—एक व्यक्ति के लिए जो एक साधारण गड्ढा है वही दूसरे के लिए गंगा के समान पवित्र नदी है। अर्थात् जो वस्तु एक के लिए बेकार होती है वह किसी दूसरे के लिए लाभदायक भी होती है। तुलनीय : पंज० इक लई गड्ढा इक नूं गंगा।

एक को दे है रुतब-ए-आली, एक को दे है खुरपा जाली—ईश्वर की इच्छा पर कहते हैं वह किसी को धनी बनाता है और किसी को ग़रीब।

एक को पानी और एक को पीच—असमान या अन्याय-पूर्ण वितरण पर कहते हैं।

एक को साई एक को बधाई—(क) एक को देने वाली वस्तु किसी दूसरे को दे देने पर कहते हैं। (ख) जब कोई व्यक्ति दो व्यक्तियों को किसी कार्य के करने का आश्वासन देकर एक का काम करता है और एक का नही करता तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० एक कै सई दुसरे का बधाई; पंज० इक नूं साई इक नूं बधाई।

एक को रुत्बा-ए-आली, एक को दे खुरपा जाली—ईश्वर किसी को सुख और किसी को दुख देता है।

एक कौआ मरे सौ गाय खुश—एक कौए के मरने से सौ गाएं प्रसन्न हो जाती है। एक दुष्ट के मरने पर सैकड़ों सज्जनों और दुर्बल व्यक्तियों को प्रसन्नता होती है। तुलनीय : भीली—एक कागलो मरे ते हो ठाहद्याना हेंग हालें; पंज० इक कॉं मरया सौ गॉं खुश।

एक कौड़ी गांठी, चूड़ा पहिनूं कि माठी—सीमित साधन होने पर जब व्यक्ति अपनी सामर्थ्य से बाहर की वस्तु प्राप्त करने की इच्छा करने लगता है तब कहा जाता है।

एक क्या रोना आंवा ही बिगड़ गया—(क) जब किसी व्यक्ति का कोई कार्य पूरी तरह बिगड़ जाता है तब ऐसा कहते हैं। (ख) जब किसी परिवार या गाँव के सभी व्यक्ति बुरे होते हैं तब भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० इक नूं की रोनी एं ऊत गया ई आवा।

इक खता, दो खता, तीसरी खता मादरबखता—एक या दो भूल तो भूल है पर यदि इससे अधिक भूल हो तो उसे आदत समझना चाहिए। (मादर बखता = दोगला, जारज)।

एक खाय दूध मलीदा, एक खाय भुस—अपना-अपना भाग्य है। संसार में सभी बराबर नही हैं।

एक खेत हज़ार असामी—दे० 'एक अनार सौ···'।

एक ग्रह का नौ अवसान—एक ग्रह की शान्ति के लिए नौ प्रकार के उपचार अर्थात् थोड़े से कष्ट के लिए अत्यधिक उपचार या आडंबर करने वाले को लक्ष्य करके ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० एगो रोग क दस गो दवा-बीरो।

एक ग़रीब को मारा था, तो नौ मन चरबी निकली थी—ऐसे मनुष्य के प्रति कहा जाता है जो देने के डर से ग़रीब बनता है और बिना सख़्ती के कुछ नही देता। तुलनीय : अव० अस अस गरीबन का मारै तौ सौ मन चरबी निकसै; पंज० इक गरीब नूं मारया ते नौ मण चरबी निकली सी।

एक गांव मांगे तो चार रोटी, दस गांव मांगे तो चार रोटी—एक काम करो या हज़ार काम करो, जो भाग्य में है वही मिलेगा। अधिक परिश्रम से संपत्ति एकत्र नहीं होती बल्कि ईश्वर की इच्छा से होती है। जब किसी को अधिक परिश्रम के बाद भी कम लाभ प्राप्त होता है तब ऐसा कहते है। तुलनीय : कौर० एक गाँ माँगे तो चंदिया रोट्टी, सौ गाँ माँगे तो चंदिया रोट्टी; पंज० इक पिंड मंगे चार रोटियाँ दस पिंड मंगण चार रोटियाँ; ब्रज० एक गाम माँगै तौ चँदिया रोटी, दस गाम माँगै तौ चँदिया रोटी।

एक गांव में नकटा बसे, छिन में रोवे छिन में हँसे—(क) गिरगिट की तरह घड़ी-घड़ी में रंग बदलने वाले पर कहते है। (ख) निर्लज्ज व्यक्ति के कथन पर या काम पर भरोसा नहीं किया जा सकता। तुलनीय : अव० एक गाँव मा नकटा बसै छिन मा रोवै छिन मा हँसै; हरि० तोताचिश्म होणा; पंज० इक पिंड विच छिटा रवै कड़ी रोवे कड़ी बिच हस्से।

एक गाय को एक छड़ी, सौ गायों को एक छड़ी—(क) जिस व्यक्ति के यहाँ छोटे-बड़े सभी को समान अधिकार हों या किसी प्रकार का भेदभाव न हो उसके प्रति ऐसा कहते है। (ख) जिस व्यक्ति के एक काम और अधिक कामों के करने में समान परिश्रम करना पड़ता हो उसके प्रति भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० एक गोरू एक्कू सेटगो सौ गोरू एक्कू सेटगो; पंज० इक गाँ नूँ इक सोटी सौ गाँ नूँ इक सोटी।

एक गिलोइ दूजे नीम चढ़ी—गिलोइ नीम पर चढ़ने पर और भी तीत हो जाती है। अर्थात् बुरों की संगति करने के बाद बुरा और अधिक बुरा हो जाता है। तुलनीय : ब्रज० एक तौ गिलोय और नीम चढ़ी।

एक गुरु के बालके—जब दोनों या कई व्यक्ति या लड़के एक-से बुरे हों तो कहा जाता है। आशय यह है कि सभी एक ही गुरु के शिष्य हैं। तुलनीय : राज० इक गुरु दे चेले।

एक घड़ी का पता नहीं जनम भर के सौदे—मनुष्य को अपने जीवन के संबंध में इतना भी पता नहीं कि अगले क्षण मे मैं बचूंगा कि नहीं, लेकिन योजनाएँ वर्षों की बनाता है। जो व्यक्ति भविष्य के लिए अनेक योजनाएँ बनाता रहता है उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० इक कड़ी दा पता नईं जनम पर सादे। दे० 'सामान सौ बरस का है पल की खबर नहीं'।

एक घड़ी की नाक कटाई, सारे दिन की बादशाही—निर्लज्ज व्यक्ति काम करने की अपेक्षा अपमानित होकर घूमना या बैठे रहना अच्छा समझते हैं। तुलनीय : राज० एक घड़ीरी नकटाई, दिन भर री बादशाही।

एक घड़ी की ना, दिन भर का उद्धार—एक बार 'नहीं' कह देने से बार-बार के तक़ाज़े से जी छूट जाता है।

एक घड़ी की बुराई, जनम-भर का सुख—किसी को कोई वस्तु न देकर थोड़ी-बहुत निंदा तो सहनी पड़ती है किंतु जन्म-भर का आराम तो हो जाता है। ऐसे लोगों के प्रति कहते है जो किसी से कुछ लेन-देन करने की अपेक्षा दो-चार गाली सुन लेना अच्छा समझते हैं। तुलनीय : पंज० इक कड़ी दी बुराई जनम पर दा सुख।

एक घड़ी की बेहयाई दिन-भर का आधार—निर्लज्ज व्यक्ति, वेश्या और भिखारी के लिए कहते है। इन्हें मान-अपमान की कोई चिन्ता नहीं होती। तुलनीय : अव० एक घरी की बेहयाई दिन भरै का सुख; पंज० इक कड़ी दी बशरमी दिन पर दा सुख।

एक घड़ी कीर्तन, दिनभर फिरतन—एक घंटे भजन और बाक़ी समय घूमना। काम कम करना, घूमना अधिक। निकम्मे व्यक्तियों तथा पाखंडी साधुओं के प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० एक घरी जप दिन भर गप; पंज० इक कड़ी कीरतन दिन पर गलाँ।

एक घड़ी में खोजत-खाजत, दूसर घड़ी में टोवत-टावत—व्यर्थ में देर करने वाले के प्रति कहते हैं। एक घंटे में चाकू खोजा और फिर एक घंटा उसे तेज़ करने में लगाया। तुलनीय : छत्तीस० एक घरी माँ खेवत खेवत, दूसरी घरी माँ हँसिया टेवत; बैरा तो खसल गय, मुठिया बाँधे मसक के। (छत्तीसगढ़ी की लोकोक्ति में व्यर्थ में समय गंवा देने के अवसर चूक जाने की ओर संकेत है)।

एक घड़ी में घर जले, चार घड़ी में भद्रा—(क) जब कोई व्यक्ति किसी वस्तु को समय पर देने मे बहाना बनाए तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। (ख) ज्योतिषियों के प्रति भी व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : पंज० इक कड़ी बिच कर सड़े चार कड़ी मदरा।

एक घर तो डाइन टाले—एक घर तो डाइन भी छोड़ देती है। अर्थात् निजी संबध आदि के कारण कम से कम एक पर दया या एक की रक्षा तो सभी करते हैं। तुलनीय : राज० एक घर तो डाकण ही टालै; मेवा० एक घर तो डाकण ई टाले; हरि० एक घर तै डायण बी टाले; पंज० इक कर डैण नूँ टाले।

एक घर तो डायन भी छोड़ देती है—ऊपर देखिए।

एक घर तो डायन भी बख़्शती है—ऊपर देखिए।

एक घर ब्याह, एक घर मातम—एक तरफ़ खुशी है और दूसरी ओर रंज। संसार की विचित्रता पर कहा गया है। तुलनीय : पंज० इक कर वयाह इक कर रोण।

एक घर में अनेक मत, कुशल कहाँ से होय—जिस परिवार के सभी सदस्य अलग-अलग विचार रखते हैं उस परिवार के लोग कभी भी उन्नति नही कर पाते, बल्कि इस तरह के परिवार में सदा कोलाहल मचा रहता है। आशय यह है कि बिना एकमत हुए कोई काम नही होता। तुलनीय : राज० एकै घर में सात मता, कुशल काँय सूं होय; पंज० इक कर विच मते मुँह गल किथों बणे।

एक घर में दो मुखिया, कुशल कहाँ से होय—जिस घर में दो मालिक होते है वहाँ कोई काम ठीक नही हो पाता, क्योंकि दोनों अपनी-अपनी मर्ज़ी से काम करते हैं। आशय यह है कि जिस कार्य का प्रबंध कई लोगों के हाथों में होता है वह कार्य ठीक नहीं होता। तुलनीय : राज० एकै घर में दो मता, कुशल कांयकू होय; पंज० इक कर बिच दो परदान कम किवें वणे

एक घर में चार मते कुशल कहाँ ते होय—जिस घर मे लोग एकमत होकर काम नही करते वहाँ शांति नही रहती। आशय यह है कि बिना एकमत हुए कार्य ठीक नही होता।

एक चंद्रमा तम हरे नहिं तारा गण लाख—एक बड़ा व्यक्ति जिस काम के करने में समर्थ होता है उसे लाखों छोटे मिलकर नही कर सकते। तुलनीय : पंज० इक चंदरमा नाल सारा हनेरा दूर हुंदा है लखां तारियां नाल नई।

एक चंद्रमा नौ लख तारा—नौ लाख तारे अंधकार को दूर नही कर सकने पर अकेला चंद्रमा उसे नष्ट कर देता है। आशय यह है कि एक सपूत बहुत से कपूतो से अच्छा होता है। तुलनीय पंज० इक चद्रमा नौ लख तारे।

एक चना दो दाल—एक चने में दो ही दालें होती है न अधिक और न कम। किसी निश्चित बात पर कहते है।

एक चना बहुतेरी दाल—(क) एक से बहुत की उत्पत्ति संभव है। (ख) यदि पति जीवित रहेगा तो लड़के-बच्चे बहुत हो जाएँगे। तुलनीय : अव० एक ठो चना तउ बहुतेरी दाल।

एक चना भाड़ नहीं फोड़ सकता—तात्पर्य यह है कि अकेला आदमी कुछ नहीं कर सकता। तुलनीय : अव० एक चना भाड़ नहीं फोड़ सकत; पंज० कल्ला बंदा कुज नई कर सकदा।

एक चाँद और लाखों तारे, एक सती दुनिया के सारे—एक चाँद अनेक तारों से अच्छा होता है क्योंकि बिना चाँद के अंधकार नहीं मिटता। एक सती स्त्री अनेक दुश्चरित्र औरतों से अच्छी होती है। आशय यह है कि किसी परिवार के कम परन्तु अच्छे लोग किसी बड़े तथा बुरे परिवार से अच्छे समझे जाते हैं। या थोड़ी, पर अच्छी वस्तु अधिक तथा खराब वस्तु से अच्छी समझी जाती है। तुलनीय : राज० एक चंदरमा नव लख तारा, एक सती नै नगर सारा; पंज० इक चंदरमा अते लखां तारे, इक सती दुनिया दे मारे।

एक चील ज़मीन एक चील आसमान—ऐसा शोर मचाना कि कान के परदे फट जायें।

एक चुप सत्तर बला टाले—चुप रहना बड़ा श्रेयस्कर है। तुलनीय : अव० एक चुप टारै सौ बलाय; भोज० एगो चुप्पा सत्तर बलाय टालेला; मरा० (वेळेवर) चुप बसणारा हजाराना हरवतो; पंज० इक चुप सौ बला टाले।

एक चुप्प हज़ार को हरावे—ऊपर देखिए।

एक चुप हज़ार चुप—बिल्कुल चुप हो जाने वाले के प्रति कहते हैं।

एक चुप हज़ार बला टाले—ऊपर देखिए।

एक चुप्प सौ सुख—ऊपर देखिए।

एक चुप्पा सौ का हरावे—मौन रहने मे बहुत शक्ति है। एक चुप रहने वाले से सैकड़ों बोलने वाले हार जाते हैं। तुलनीय : पंज० इक चुप सौ नूं हरावे, ब्रज० एक चुप्प सौन्नें हरावै।

एक छौनी के आँचल में नोन, घड़ी-घड़ी रूठे मनावे कौन—घड़ी-घड़ी रूठने वाले पर कहते है कि उसको बार-बार कौन मनाए।

एक जंगल में दो शेर—(क) असंभव बात। कहा जाता है कि एक जंगल में दो शेर नही रहते। (ख) एक चीज़ के दो अधिकारी होने पर भी कहते हैं। (ग) प्रतिद्वन्द्वियों की विषम व्यवस्था पर भी कहा जाता है। तुलनीय : पंज० इक जगल दे दो शेर।

एक जंगल में दो शेर नहीं रहते—दो शक्तिशाली व्यक्ति एक स्थान पर नहीं रह सकते। प्रत्येक एक-दूसरे को समाप्त कर देने की कोशिश में रहता है। इसी बात को ध्यान में रखकर उक्त लोकोक्ति कही गई है। तुलनीय : असमी—एके बनत् दुटा बाध् नाथाके; छत्तीस० एक जंगल मां दू ठिन बाघ नइ रहैं; पंज० इक जंगल बिच दो शेर नई रेंदे।

एक जगह बहुत से घड़े रहेंगे तो कभी-कभी टकरायेंगे

ही— एक साथ बहुत से व्यक्ति रहेंगे तो उनमें परस्पर कभी-न-कभी कुछ विवाद हो ही जायेगा। तुलनीय : भोज० एक संगे ढेर बर्तन रही त ठक्कर लगबे करी; पंज० इक थां मते पांडे रैनगे तां बजणगे ही।

एक जना घर मुरदा भेल, चार जना मिल खटिया लेल; आप आपके सभी मालुक, बार उखाड़े मुरदा हालुक—किसी घर में कोई मर गया। चार व्यक्ति मुरदा उठाने आये। उन लोगों ने हलका करने के लिए उसके बाल मुड़वा दिए किन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। आशय यह है कि बाल उखड़ाने से मुर्दा नहीं हलका होता। किसी बड़े काम का कोई बहुत ही मामूली अंश कर देने से वह काम हो नहीं जाता।

एक जना झख मार मरे, पाँच का काम पाँच करें—जो काम पाँच व्यक्तियों के मिलकर करने का होता है उसे यदि एक ही व्यक्ति करना चाहे तो उससे कुछ नहीं हो पाता। जो व्यक्ति कंजूसी के कारण अधिक आदमियों का काम स्वयं ही कर लेना चाहे और उससे कुछ भी न हो सके तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : भीली—पाँच जणां नूं काम पाँच जणाज करहे, एक जणा हूँ कईं नी वे।

एक जने घाट करें सौ जने कहिआव डोलावें—एक व्यक्ति बलात्कार (घाट) करता है और दूसरे लोग उसमें हाँ में हाँ मिलाते हैं (कहिआव डोलाते हैं)। आशय यह है कि (क) जब कोई एक व्यक्ति बुरा कर्म करता है और दूसरे लोग भी उसे देखकर वैसा ही करने को तैयार हो जाते हैं तब ऐसा कहते हैं। (ख) अंधानुकरण पर भी ऐसा कहते हैं।

एक जने घाट करें सौ जने चुत्तर हिलावें—ऊपर देखिए।

एक जने से दो भले—यात्रा में एक की अपेक्षा दो का रहना अधिक अच्छा है। तुलनीय : अव० एक जने से दुइ भला; हरि० एक जणे का के काम हो सै; पंज० इक जणे तों दो चंगे।

एक जान दो क़ालिब—दो मनुष्यों में बहुत अधिक अभिन्नता होना। अत्यंत घनिष्ठ मित्रों के लिए कहते हैं। तुलनीय : राज० दुहुं रे काया मिलउ एक परांण—नरपति नाल्ह।

एक जान दो देह—ऊपर देखिए।

एक जान हज़ार अरमान—एक जान वाला सीमित ज़िन्दगी का मनुष्य अपने असंख्य अरमानों को भला कैसे पूरा कर सकता है? अर्थात् मनुष्य अपने सारे अरमानों को पूरा नहीं कर पाता। वे उसकी छोटी ज़िन्दगी की तुलना में बहुत होते हैं। तुलनीय : पंज० इक जाण लख मुरादां।

एक जीव, दो देह—जब दो व्यक्तियों में बहुत घनिष्ठ प्रेम हो तो कहते हैं। तुलनीय : पंज० इक जीव दो सरीर।

एक जुर्म की एक सजा, सौ जुर्म की वही सजा—जहाँ पर एक या अनेक, छोटे-बड़े सभी प्रकार के अपराधों के लिए समान रूप से दंड दिया जाता है वहाँ पर ऐसा कहते हैं। इसमें शासक की अदूरदर्शिता प्रगट होती है। तुलनीय : गढ़० एक गुना : एकी शूल, सौ गुना : एकी शूल; पंज० इक जुलम दी इक सजा सो जुलम दी ओही सजा।

एक जोरू की जोरू, एक जोरू का खसम; एक जोरू का सीसफूल, एक जोरू की पशम—कोई स्त्री का दास होता है तो कोई उसका स्वामी; कोई उसके माथे का आभूषण होता है तो कोई उसका पशम। मेहरा या स्त्रैण मनुष्य के प्रति कहा जाता है। (पशम (पश्म) = गुप्तांग के बाल)।

एक जोरू सारे कुनबे को बसहै—(क) एक स्त्री पूरे कुटुंब को सँभालती है। (ख) जिस घर में कई पुरुष हों और एक स्त्री हो तो स्त्री का चरित्र अवश्य खराब हो जाता है। तुलनीय : पंज० इक जनानी सारे टब्बर नूं बसावे।

एक जौ की सोलह रोटी, भगत खाँय, भगतानी मोटी—भगत जी एक जौ की सोलह रोटियाँ खाते हैं और भगतिन मोटी होती जाती है। एक जौ की सोलह रोटी बनाने का अर्थ है अधिक परिश्रम। आशय यह है कि अधिक परिश्रम करने वाली स्त्रियाँ स्वस्थ रहती हैं। तुलनीय : अव० एक जवा मा सोला रोटी ठाकुर से ठकुरानी मोटी; पंज० इक जौं दीयाँ सोलाँ रोटियाँ पगत खाण पगतणियाँ मोटियाँ!

एक झूठ के सबूत में, सत्तर झूठ बोलने पड़ते हैं—(क) एक पाप बहुत से पापों को जन्म देता है। (ख) एक झूठ बोलने पर उसे सत्य सिद्ध करने के लिए बहुत से झूठ बोलने पड़ते हैं। तुलनीय : अव० एक झूठ बोलबे मा सतर झूठ मिलावे परत है, पंज० इक चूठ दे सबूत लई सौ चूठ बोलणे पैंदे हन।

एक झूठ छिपाने के लिए सौ झूठ बोलने पड़ते हैं—ऊपर देखिए।

एक झूठ बोलो सौ दुःख दूर—एक झूठ बोलने से सौ मुसीबतें टल जाती हैं। प्रायः किसी वस्तु के न देने के लिए झूठ बोलने वालों के प्रति कहा जाता है। तुलनीय : पंज० इक चूठ बोलो सौ दुःख दूर।

एक झूठ में सौ झूठ—एक झूठी बात को गुप्त रखने के लिए बहुत बार झूठ बोलना पड़ता है। तुलनीय : अव०

एक झूठ बोलबे मा सत्तर झूठ मिलावे परत है; पंज० इक चूठ बिच सौ चूठ।

एक झूठा एक तरफ़, सौ सच्चे एक तरफ़—एक झूठ बोलने वाला सौ सच्चे व्यक्तियों को हरा देता है। तुलनीय : पंज० इक चूठा इक पासे सौ सच्चे इक पासे।

एक टका की फरुई नौ टका बिदाई—दे० 'एक टका दहेज़ नौ...'।

एक टका दहेज, दस टका पुरोहित—नीचे देखिए। तुलनीय : बुद० एक टका दायजो, नौ टका उपरैती।

एक टका दहेज, नौ टका दक्षिणा— दहेज़ मिला है एक टका और पंडित जी दक्षिणा माँगते है नौ टका। जब किसी काम में लाभ की अपेक्षा हानि अधिक होती है तब ऐसा कहा जाता है। तुलनीय : पंज० इक पैहा दाज सौ पैहे दपणा।

एक टका मेरी गठड़ी, लड्डू करूँ या मठड़ी—है तो केवल एक ही टका और सोच रहे हैं लड्डू लें या मठ्री? जब कोई व्यक्ति सीमित साधन मे बड़े-बड़े मंसूबे बाँधे तो व्यंग्य मे कहते हैं। या जब कोई व्यक्ति अपनी सामर्थ्य से बाहर के कार्यो को करने की कल्पना करता है तब उसके प्रति व्यंग्य मे ऐसा कहते हैं।

एक टके की हाँडी गई, कुत्ते की जात पहचानी गई— जब कोई नीच व्यक्ति किसी की कोई चीज़ चुरा लेता है या पैसे लेकर लौटाता नहीं है तब उसके प्रति ऐसा कहा जाता है। तुलनीय : भोज० एक टका क हाँड़ी गइल कुकुरे क जाति चिन्हा गइल, ब्रज० टका की हँडिया गई, कुत्ता की जाति पहचानि गई।

एक डर दो तरफ़—कुश्ती, होड़, प्रतियोगिता वाद-विवाद, युद्ध तथा मुक़दमा आदि मे दोनो ही पक्षवाले भय-भीत रहते है। इन्ही सब बातों को ध्यान में रखकर उक्त लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : पंज० इक डर दो पासे।

एक डूबे तो जग समझावे, सब जग डूबा जाय—एक आदमी का सुधार किया जा सकता है पर जब सभी बुरे रास्ते पर हो तो भला सुधार कब संभव है? यानी जब सभी बुरे रास्ते पर आ जाते हैं तो उनको सुधारना बड़ा मुश्किल हो जाना है।तुलनीय : पंज० इक डुबे ता जग समजावे सारे डुबण तां कौण समजावे।

एक तंदुरुस्ती हज़ार नियामत—स्वास्थ्य हज़ार सुखों से बढ़कर है। धन-संपत्ति स्वास्थ्य के सम्मुख कुछ मूल्य नहीं रखते। तुलनीय : मरा० एक आरोग्य, तर सहस्र दुर्लभ देणग्या; अव० एक तंदरुस्ती हज़ार नियामत; पंज० सेहत लक्खां नालो बदके है।

एक तरकश के तीर—जब सभी एक जैसे होते हैं तब कहते है।

एक तरफ़ की बात गुड़ से भी मीठी—केवल एक तरफ़ की बात बहुत सच्ची लगती है। यदि कोई इकतरफ़ा बात सुनकर फ़ैसला करे तो कहते हैं। तुलनीय : पंज० इक पासे दी गल गुड़ तो वो मिठी; ब्रज० एक ओर की बात गुरतेऊ मीठी।

एक तवे की रोटी, कोई पतली कोई मोटी—थोड़ा बहुत अंतर सभी चीजों में होता है, दो चीज़ें बिलकुल एक-सी नहीं होतीं। तुलनीय : इक तवे दी रोटी कोई पतली कोई मोटी।

एक तवे की रोटी, क्या छोटी क्या मोटी—एक वर्ग के लोग क्या छोटे क्या बड़े सभी एक से होते हैं। तुलनीय : अव० एक तवा कै रोटी का पतरी का मोटी; बुद० एक तवा की रोटी, का छोटी का मोटी; राज० अैक तवैरी रोटी, कांई छोटी कांई मोटी; पंज० इक तवे दी रोटी कोई निक्की कोई मोटी।

एक तवे की रोटी, क्या पतली क्या मोटी—मोटी-पतली से क्या होता है, है तो एक तवे की है। (क) एक ही परिवार के दो व्यक्ति शक्ल-सूरत में अलग-अलग होने पर भी स्वभाव और गुणों मे एक से ही होते है। (ख) एक ही वस्तु के दो भाग छोटे-बड़े होने पर भी गुणो मे एक से ही होते हैं। (ग) जब कोई व्यक्ति किसी परिवार के अलग होने पर एक की प्रशंसा करे और दूसरे की निंदा तो कहते हैं। तुलनीय : राज० अेक तवैरी रोटी, कांई छोटी कांई मोटी; मरा० एकाच तव्याची भाकरी जाड काय नि पातळ काय; माल० एक तवा री रोटी कोई छोटी कोई मोटी; अव० एक तवा के रोटी का पतरी का मोटी; भोज० एक तावा क रोटी का पतल का मोटी।

एक तिनका भी भारी होता है—(क) निर्बल या रोगी व्यक्ति के लिए थोड़ा-सा भी वजन ले जाना मुश्किल होता है। (ख) जब आदमी की आर्थिक दशा खराब हो जाती है तो साधारण कार्य को करना भी उसके लिए काफ़ी कठिन हो जाता है। तुलनीय : पंज० इक तीला वी पारी हुंदा है; अं० It is the last straw that breaks the camel's back.

एक तीर दो निशाने—जब एक साधन या उपाय से दो कार्यों की सिद्धि होती है तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० एक बान दूगो चिरई; तेलु० ओकटे देब्ब रेंडु

मुक्कलु; पंज० इक तीर दो नशाने; अं० To kill two birds with one stone.

एक तीर से दो निशाने—अर्थात् एक साधन या उपाय से दो कार्यों की सिद्धि होना। तुलनीय : भोज० एक पंथ दु काज; पंज० इक तीर नाल दो नशाने।

एक ते एक दई के लाल—संसार में एक से बढ़कर एक है। इस लोकोक्ति का प्रयोग अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के आदमियों के लिए किया जाता है। तुलनीय : ब्रज० एक ते एक माई कौ लाल।

एक तो अपने डाइन दूजे हाथे लुकाठा—जब किसी बुरे या दुष्ट व्यक्ति को उसके गुणों के अनुरूप साधन भी मिल जाता है जिससे वह लोगों को और अधिक भयभीत कर सके तब कहते हैं।

एक तो अमृत, दूसरे कुंडा भर—(क) जब कोई अच्छी या मूल्यवान वस्तु किसी व्यक्ति को अधिक मात्रा में मिल जाती है तब कहते हैं। (ख) जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे से बहुमूल्य वस्त्र माँगे और वह भी भारी मात्रा में तब भी व्यंग्य से ऐसा कहते हैं।

एक तो आँधी दूसरे पंखा बाँधे—जब कोई दुष्ट व्यक्ति किसी विशेष शक्ति को पाकर किसी को परेशान करे तो कहते हैं।

एक तो इंद्र, दूसरे हाथ बज्र—एक तो इंद्र देवताओं का राजा और सबसे अधिक शक्तिशाली दूसरे उसके हाथ में वज्र जिसकी मार से कोई जीवित नहीं बचता। जब कोई ऐसी मुसीबत में फँस जाय जिससे बच निकलने की कोई राह न हो तो कहते हैं।

एक तो कड़वी लौकी दूसरे नीम चढ़ी—एक तो लौकी कड़वी और फिर नीम के वृक्ष पर चढ़ी हुई, अर्थात् इतनी कड़वी कि उसकी कड़वाहट का अनुमान नहीं लगाया जा सकता। जिस व्यक्ति का चरित्र या स्वभाव पहले से ही बुरा हो और उसे बाद में बुरी संगति भी मिल जाय या उसके रहने का स्थान भी बुरा हो तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : अव० एक तौ तित लौकी दुसरे नीम चढ़ी; पंज० इक ते कौड़ी लौकी दूजी नीम चढ़ी।

एक तो करेला ऊपर से नीम चढ़ा—नीचे देखिए। तुलनीय : छत्तीस० करेला तेमां लीम चढ़े; ब्रज० एक तौ करेला और नीम चढ़्यौ।

एक तो करेला कड़वा, दूसरे नीम चढ़ा—बुरे स्वभाव वाले आदमी को कुसंगति और बुरा बना देती है। तुलनीय : मरा० आधीच कारलें कडू, धर (कडू) लिंबाचें पुट; अव० एक तौ करैला दूसर नीम चढ़ा; मैथ० एक तऽ अपने तीत करैल ताहि पर पड़ल जरल मंगरैल, एक तऽ करदूला दोसरे चढ़ल नीम पर, एक तऽ करैला अपनेंह तीत दोसरे नीम चढ़ल; भोज० एक तऽ करइला दसरे नीब चढ़ल; बुंद० करेला और नीम चढ़ो; ब्रज० एक तो गिलोइ फिर नीम चढ़ी; कौर० एक तो कड़वी और नीम पै चढगी; निमाड़ी—एक तो करेलो, न फिरी नीम चढ़ेल; हाड़० एक तो गल्वा अर दूजी नीम चढ़ी; कन्नौ० एक तौ करेला, ताऊ पै नीम चढ़े; पंज० इक ते करेला कौडा दूजा नीम उते चढ़या।

एक तो कानी थी, दूसरे पड़ गया कुनका—एक तो वैसे ही एक आँख थी उसमें भी तिनका पड़ गया जिससे देखना मुश्किल हो गया। अर्थात् (क) जब किसी कमजोर व्यक्ति को कोई रोग हो जाता है तब कहते हैं। (ख) जब किसी निर्धन व्यक्ति पर कोई आपत्ति आ जाती है तब ऐसा कहते हैं। (ग) बुरे में और बुराई आ जाने पर भी कहते हैं। तुलनीय : हरि० गंजे के सर पै ओले पड़णा; पंज० इक ते हैगी सी काणी दूजा अख बिच तीला पै गया।

एक तो कानी दूसरे चोट लग गई—ऊपर देखिए। तुलनीय : कौर० कुछ तो काणी, कुछ कुणाक ढै पड्या।

एक तो कानी बेटी की माई, दूजे पूछने वाले ने जान खाई—एक तो मेरी बेटी कानी है, दूसरे लोग उसके बारे में पूछ-पूछकर परेशान कर रहे हैं। अर्थात् (क) जब अपनी चीज स्वयं खराब हो और उसके बारे में लोग पूछ-पूछकर परेशान करें तो कहते हैं। (ख) यदि कोई खुद लज्जित हो और ऊपर से लोग पूछ-पूछकर और भी लज्जित करें तो भी कहते हैं।

एक तो कानी बेटी ब्याही, दूसरे पूछने वालों ने जान खाई—ऊपर देखिए।

एक तो गड़ेरिन ऊपर से लहसुन खाए—एक तो गड़ेरिन जाति की स्त्रियाँ वैसे ही गंदी होती है, उनके शरीर और कपड़ों से बदबू आती है तिस पर भी वे लहसुन खा लें तो उनके पास रुकना या बैठना मुश्किल हो जाता है यानी बदबू और बढ़ जाती है। अर्थात् जब किसी गंदे या बुरे आदमी में और भी गंदी या बुरी आदतें पड़ जाती हैं तब उसके प्रति व्यंग्य से ऐसा कहते हैं। तुलनीय : छत्तीस० एक तो गड़रनीन, तऊन मां लसुन खाय; छत्तीस० जनम के गड़रनीन तेमां लसुन खाय; बुंद० एक तो गड़ेरिन और लासन खायें; पंज० इक ते गुजर उतों खावे लसण।

एक तो गड़ेरिन दूजे प्याज खाये—दे० 'एक तो गड़ेरिन ऊपर…'।

एक तो गड़ेरिन दूजे लहसुन खाए—दे० 'एक तो गड़रिन ऊपर···'। तुलनीय : अव० एक तो गड़रिन दूसर लासुन खाय; बुंद० एक तो गड़ेरन, दूसर लहसुन खाये।

एक तो गरीबी दूसरे चूतड़ में घाव—एक तो पहले ही गरीबी थी और दूसरे अब चूतड़ में घाव भी हो गया, इसका इलाज कैसे कराया जाय। विपत्ति में और विपत्ति आने पर कहते हैं। तुलनीय : पंज० इक ते गरीबी दूजे टुए बिच फोड़ा।

एक तो गिलोय दूजे नीम चढ़ी—गिलोय (एक बेल जो आयुर्वेद में दवा के रूप में प्रयोग करते हैं, यह बहुत कड़वी होती है) और नीम चढ़ी। उसकी कड़ुआई का तो कहना ही क्या! जब किसी बुरी आदतों वाले व्यक्ति के संगी-साथी भी वैसे ही मिले हों तो व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : अव० एक तौ गुरुचि दूसर नीम चढी; ब्रज० एक तौ गिलोय और नीम चढ़ी।

एक तो गुड़ ढीला दूसरे मक्खियाँ बैठीं- वर्षा ऋतु में गुड़ ढीला हो जाता है और मक्खियाँ भी उस पर खूब बैठती हैं। जब किसी व्यक्ति या वस्तु में बहुत से दोष हों तो व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : पंज० इक्क ताँ गुड़ ढिल्ला दूजे मक्खियाँ बैठ्ठयाँ।

एक तो गुड़ दूजे भर गाड़ी—दे० 'एक तो अमृत···'।

एक तो गोरा गोर, दूसरे आई कम्बल ओढ़- एक तो गोरा (गोरी स्त्री) स्वयं गौरी (व्यग्य से काली) है, दूसरे कम्बल ओढ़े हुए है। अर्थात् बुरा व्यक्ति जब कोई ऐसा काम करे जिससे उसका दुर्गुण और स्पष्ट हो जाय तब व्यंग्य में ऐसा कहते है। तुलनीय : भोज० एक तऽ गउरा खुदे गोर दुसरे ओढ़ली कम्बल; मैथ० एक तऽ बउआ अपने गोर दूसरे अइली कम्मर ओढ़ि; एक तऽ बेलवा अपने गोर दोसरे कइली लूका अंजोर।

एक तो चुड़ैल दूसरे चढ़ा भूत- किसी दुष्ट की संगति जब उससे भी बुरे दुष्ट से हो जाय तब ऐसा कहते है। तुलनीय : भोज० एक तऽ चुरइल दुसरे मिलल भूत; ब्रज० एक तौ चुड़ैल और भू चढ़ाइ लियौ; पंज० इक तां चड़ैल दूजा चड़या पूत।

एक तो चोरी दूसरे/ऊपर से सीनाजोरी- -जब कोई अपराध भी करे और उल्टे आँख भी दिखावे तो कहते हैं। तुलनीय : मरा० चोर तर चोर निवर शिरजोर; अव० एक तो चोरी दूसर सीना जोरी; भोज०, मैथ० एक तऽ करेके चोरी दुसरे सीना जोरी; ब्रज० एक तौ चोरी और सीना जोरी; पंज० इक तां कीती चोरी उतों दस्से सीना जोरी।

एक तो डाइन अपने गोरी, दूसरे आई कमरी ओढ़—डायन का रंग वैसे ही काला होता है और यदि उसने कंबल भी ओढ़ लिया तब तो और भी काली या भयंकर लगेगी। (क) जब कोई भयानक सूरत का व्यक्ति कपड़े भी अपने रूप के अनुकूल पहन ले तो व्यंग्य से कहते हैं। (ख) काले रंग का व्यक्ति यदि काले रंग के या किसी गहरे रंग के कपड़े पहने तो भी व्यंग्य से कहते हैं।

एक तो डाइन दूसरे ओझा से ब्याह—किसी दुष्ट का सम्बन्ध जब किसी वैसे ही दुष्ट से हो जाय तब व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मैथ० एक तऽ अपने डाइन दुसरे ओझा से बिआह।

एक तो डाइन दूसरे हाथे लुकाठ—जब किसी दुष्ट व्यक्ति को ऐसा साधन या हथियार मिल जाय जिससे समाज के लोग पहले की अपेक्षा और अधिक भयभीत होवें तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० एक तै डाइन दुसरे हाथ लुकाठा। (लुकाठ=एक फल विशेष)।

एक तो तित लौकी दूजे नीम चढ़ी—दे० 'एक तो करेला कड़वा···'। तुलनीय : भोज० एक त तितलौकी दूसरे नीब चढ़ी।

एक तो था ही दीवाना, तिस पर आई बहार—(क) किसी बिगड़े हुए को जब कोई और भी बिगाड़ दे तो कहते हैं। (ख) जब किसी को उसके स्वभाव के अनुरूप ही परिस्थितियाँ मिल जाएँ तो भी कहते हैं।

एक तो धीया अपने डाइन, दूजे आई लूआठ लेकर—दे० 'एक तो डाइन दूसरे हाथ लुकाठ।'

एक तो धोबी का खाना, दूसरे रूखा-सूखा—धोबी निम्न जाति समझी जाती है। उसके घर यदि भोजन भी करे और रूखा-सूखा तो क्या आनन्द? तात्पर्य यह है कि कोई नीच काम करने पर भी यदि कुछ लाभ न हो तो इससे बुरा हो ही क्या सकता है? तुलनीय : भोज० एक तऽ धोबी किहें खाए के दुसरे छूछ।

एक तो पागल दूसरे रीछ ने खदेड़ा— जब किसी मूर्ख या उद्दंड व्यक्ति को इस तरह का साधन या वातावरण मिल जाय जिससे उसकी मूर्खता या उद्दंडता और बढ़ जाय तब कहते हैं। तुलनीय : पंज० इक ते पैलां ही पागल सी दूजा रिछ ने फड़या।

एक तो फूहड़ दूसरे दिल्ली में ब्याह दी— एक तो पहले से ही फूहड़ होने के कारण उसकी कोई इज्जत नहीं करता था, अब वह दिल्ली जैसे अच्छे शहर में ब्याह दी गई

भला यहाँ कौन आदर करेगा ? (क) जब कोई कुरूप और गुणहीन व्यक्ति सुसंस्कृत व्यक्तियों में जाता है तब व्यंग्य में उसके प्रति कहते हैं। (ख) पहले संकट में पड़े व्यक्ति को जब कोई और संकट में डाल देता है तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : कौर० एक तो मलूक घणी और दिल्ली ब्याह दी। पंज० इक ते गवार दूजा दिल्ली विच वयाह।

एक तो बंदर दूसरे बर्र ने काटा –बंदर वैसे ही बहुत उछल-कूद करने वाला होता है फिर जब बर्र ने काट लिया तो उसकी उछल-कूद का क्या कहना। अर्थात् जब किसी व्यक्ति को उसकी दुष्टता के अनुकूल साधन मिल जाय और उसकी गतिविधि अधिक तीव्र हो जाय तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० बांदरी हो'र विच्छू खायग्यो; पंज० इक ते बांदर दूजा बिच्छू ने बड्या।

एक तो बंदर दूसरे हाथ में लुकाठ -बंदर तो खुद उच्छृंखल होता है, हाथ में लुकाठ पा जाय तब और भी उपद्रव करेगा। आशय यह है कि किसी उपद्रवी व्यक्ति को उपद्रव का साधन प्राप्त हो जाय तो वह और वेग से उपद्रव करेगा। ऐसे व्यक्ति को ध्यान मे रखकर उक्त कहावत कहते है। तुलनीय : भोज० एक तऽ बानर दुसरे हाथ में लुआठ।

एक तो बसो सड़क पर गाँव, दूजे बड़े बड़ेन में नांव, तीजे परे दरबि से हीन, घग्घा हमको विपदा तीन —एक तो सड़क के पास अर्थात् राह में गाँव होना, दूसरा बड़े आदमियों मे नाम होना और तीसरा पास में धन न होना, घाघ के अनुसार बड़े दुःखदायी होते हैं। पहले दोनों कारणों से घर में मेहमान बहुत आते हैं और द्रव्य न होने पर तो संसार में कष्ट ही कष्ट मिलता है। आशय है कि इन तीनों का एक साथ होना विशेष कष्टकारक होता है।

एक तो बहू नाचती दूजे पैर में घुंघर बाँध—एक तो बहू का नाचना वैसे भी पसन्द नहीं है तिस पर भी वह पैर में घुंघरू बाँधकर नाच रही है जिससे दूर के लोग भी उसके इस कर्म को जान जायँ। अर्थात् जब कोई व्यक्ति बुरा कर्म भी करता है साथ ही साथ उसे समाज में फैलाने का भी यत्न करता है तब ऐसा कहते हैं।

एक तो बाई नाचनी ऊपर से पैर में पंजनी—एक तो बाई को नाचने का शौक़ पहले से ही है दूसरे अब पैर में पैंजनी (घुंघरू वाला पायल) पहन रखी है, ऐसी दशा में उसके विषय में क्या कहना ? जब किसी व्यक्ति को कोई काम करने का शौक़ होता है और उसे उसके अनुरूप साधन भी मिल जाते हैं तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : बुंद० एक तौ बाई नाचती और घुंघरू पैरें बाजनी; बंग० एके बऊ नाचती ताय खेंमटार बाजनी।

एक तो बीबी लोनी दूजे कान में उतन्ना – एक तो बीबी सुंदर (लोनी) है, दूसरे कान मे बालियाँ पहने हैं। (क) जब किसी सुंदर स्त्री या पुरुष को सौन्दर्य के प्रसाधन भी प्राप्त हो जाते हैं जिससे उसकी सुंदरता और बढ़ जाती है तब ऐसा कहते हैं। (ख) जब किसी विद्वान पुरुष में कुछ ऐसे अन्य गुण उत्पन्न हो जायँ जिनसे उसकी प्रतिष्ठा और अधिक बढ़ जाए तब भी ऐसा कहते है। (उतन्ना—कान के छेद को कहते हैं जिसमें बाली पहनी जाती है)। तुलनीय : पंज० इक तां बीबी सोणी दूजा कन विच बाली।

एक तो बुढ़िया नाचनी दूजे घर भा नाती—एक तो बुढ़िया स्वयं नाचने वाली थी दूसरे घर मे नाती की पैदाइश हुई। ऐसी स्थिति में उसका खूब नाचना स्वाभाविक है। कोई गुण किसी में रहे और यदि उसे दिखाने का मौका आ जाय तो वह बाज नही आ सकता।

एक तो बुरी और बुरे ही गीत गावें एक तो स्वभाव से बुरी हैं और दूसरे हर समय भद्दे गीत गाती है। अर्थात् जब कोई दुष्ट या उद्दंड तो हो ही साथ ही साथ हमेशा दुष्टता या उद्दंडता का ही कर्म करे तब उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० बुरी और बुरे ई गीत गावें; पंज० इक तां बुरी अते बुरे गीत गांदी।

एक तो भाल, दूसरे कांधे कुदाल— एक तो भाल और दूसरे कंधे पर कुदाल लिए है अर्थात् दोनों तरह से मज़बूत है। जब कोई व्यक्ति हर तरह से मुस्तैद या मज़बूत होता है तब ऐसा कहते हैं।

एक तो भीख दूसरे पछोर-पछोर— मुफ्त की चीज़ पर भी जब कोई उसकी बुराई बतलाते हुए और अच्छी चीज़ माँगे तो कहते हैं। दे० 'दान की बछिया के दाँत···'। तुलनीय : मरा० एक तर भिक्षा, अणि वर पाखडून पाहिजे।

एक तो मियाँ ऊँघते दूजे खाई भाँग, तले हुआ सिर और ऊपर हुई टाँग—जब कोई बुरा किसी के बहकाने में आकर और बुरा हो जाय तो कहते हैं। तुलनीय : अव० एक तौ मियाँ दूसर खातेन भाँग, तरे भवा मूँड़ ऊपर भवा टाँग।

एक तो मीठा दूसरे कठौती भर—दे० 'एक तो अमृत···'। तुलनीय : ब्रज० मीठौ और भर कठौटी।

एक तो मुआ अनखावना, दूसरे सई साँझ घर आवना —(क) एक तो उसका स्वरूप सुन्दर नही है दूसरे संध्या

होते ही घर आ जाता है। भ्रष्ट स्त्रियाँ अपने पतियों के प्रति कहा करती हैं। (ख) वेश्याएँ अपने उन प्रेमियों के प्रति भी कहती हैं जो कुछ लेते-देते नही और शाम से ही कोठे पर आ बिराजते हैं।

एक तो विदेशी दूसरे तुतलाने वाला—तुतलाकर बोलने वाले व्यक्ति की भाषा समझने में कठिनाई होती है और यदि वह भी किसी विदेशी भाषा का बोलने वाला हो तब तो समझने मे और भी कठिनाई होगी। अर्थात् एक दोष से युक्त व्यक्ति जब दूसरे दोष से भी ग्रस्त हो तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मैथ० एक तऽ बिदेसी दोसर तोतराह; पंज० इक तां बिदेसी दूजा तोतला बोलदा।

एक तो शेर दूसरे बक्तर पहिने—दे० 'एक तो भाल…'।

एक तो साँप दूजे उडना—एक तो साँप वैसे ही खतरनाक जीव होता है दूसरे वह उड़ने भी लगा है जिससे उसका और अधिक आतंक फैल गया है। अर्थात् जब किसी दुष्ट व्यक्ति को और अधिक शक्ति प्राप्त हो जाती है जिससे लोग उससे पहले की अपेक्षा अधिक भय खाने लगते है तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० इक सप्प दूजा उड़ना; मरा० आधी नागीण त्यात तिला पंख।

एक तो सैयाँ की बहू, दूसरे बेटे की माँ, धान क्यों कूटूँ—तात्पर्य यह है कि जब पूरा परिवार भरा-पूरा है तब क्यों छोटा काम करने जाऊँ। तुलनीय : मैथ० एक तऽ सांय क बहू दोसर बेटा क माय हम जायब धान कूटब, भोज० एक तऽ सइया क पियारी दुसरे लड़का क माई हम काहे क धान कूटे जाई; पंज० इक ते खसम दी रन दूजे पुतर दी मां चोना कैनूं छटटाँ।

एक थैली के चट्टे-बट्टे—एक तरह के स्वभाव या गुणावगुण वाले। जब सब एक से हो तो कहते है। तुलनीय : मरा० एकाच पिशवी तील नाणी; अव० एके थैली कइ चट्टा बट्टा अहैं; पंज० इक थैली दे चट्टे बट्टे, अं० Tweedledum and tweedledee.

एक थैली के बाट—ऊपर देखिए।

एक दम का दमामा है—थोड़े दिन की ज़िन्दगी के लिए हज़ारों बखेड़े करने पड़ते हैं।

एक दम में हज़ार दम—(क) एक व्यक्ति मे बहुत से व्यक्तियों की परवरिश होती है। (ख) एक शक्तिवान् बहुतों की शक्ति बन जाता है। तुलनीय : मरा० एका श्वासांत सहस्र श्वास; पंज० इक साह विच हज़ार साह।

एकदम हज़ार उम्मेद—एक प्राण के बल पर ही मनुष्य असंख्य आशाएँ करता है। मनुष्य के स्वभाव एवं प्राण के महत्त्व के सम्बन्ध में कहते हैं। तुलनीय : पंज० इक साह लाख उम्मीदां।

एक दर बन्द हज़ार दर खुले—किसी के यहाँ काम करने वाला वहाँ काम छूट जाने पर कहता है। आशय यह है कि केवल तुम्हारे यहाँ काम नहीं है, मेरे लिए हज़ारों दरवाज़े खुले हैं। तुलनीय : पंज० इक बूआ बन्द हज़ार बुए खुले।

एक दाढ़ खावे, दूसरी खुजलावे—उस व्यक्ति के प्रति कहा जाता है जो अपने बराबर के हिस्सेदारों में हिस्सा न बाँटकर खुद ही खा जाय और दूसरे उसका मुँह देखते रह जायँ। तुलनीय : गढ़० एक दाढ खांदी एक चमलांदी।

एक दिन का काम, सब दिन का आराम—आशय यह है कि जो व्यक्ति जीवन के शुरू के कुछ वर्षों तक परिश्रम करके अपने जीवन को बना लेता है उसका शेष जीवन सुखमय व्यतीत होता है। तुलनीय : माल० एक दन री वात ने हो दन री केणात, पंज० इक दिन दा कम सारे दिनां दा अराम।

एक दिन का पाहुना, दूसरे दिन अनखावना—मेहमान एक दिन तो मेहमान है और मेहमानदारी का हक़दार है पर यदि वह एक दिन से अधिक रुका तो उसका रहना अखरने लगता है। आशय यह है कि एक दिन से अधिक कहीं मेहमान बनकर नहीं रहना चाहिए। तुलनीय : राज० एक दिन परखणों, दूजे दिन अणखावणों; पंज० इक दिन दा परोणा दूजे दिण कपड़े ताना। अं० A constant guest is never welcome.

एक दिन के खाने से मोटा कोई नहीं हुआ—एक दिन के पौष्टिक भोजन से ही कोई मोटा नहीं हो जाता। (क) जो व्यक्ति एक दिन में ही मोटा हो जाना चाहे उसके प्रति कहते है। (ख) जो व्यक्ति थोड़े श्रम से अच्छी उपलब्धि चाहता है उसके प्रति भी व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : भीली—एक दड़ा हाऊ खावाऊ कई मातू थोड़े थवाए; पंज० इक दिन दे खाण नाल कोई मोटा नईं हुंदा।

एक दिन के पढ़े कौन पंडित बने—एक दिन के पढ़ने से ही विद्या नहीं आ जाती। आशय यह है कि किसी भी कार्य की सफलता के लिए परिश्रम और समय की आवश्यकता होती है। तुलनीय : राज० एक दिन पढर किसो पंडित हुज्यासी; पंज० इक दिन दे पड़ण नाल कोई पंडत नईं बणदा।

एक दिन के लिए दिया है, उम्र-भर के लिए नहीं—

इतना ही दिया है जिससे एक दिन का ही काम चले, सारी उम्र के लिए नहीं। (क) जो व्यक्ति छोटी-सी सहायता देकर बहुत अधिक प्रशंसा या आभार चाहे उसके प्रति कहते हैं। (ख) जो व्यक्ति कोई वस्तु लेकर लौटाना ही न चाहे उससे वापिस लेने के लिए भी कहते हैं। तुलनीय : भीली -- आलीन दाड़ो कडड़वद्यो-जमारू थोड़े कडड़ावद्यो हैं; पंज० इक दिन लई दिता है सारी उमर लई नई।

एक दिन के सौ साठ दिन---बदला लेने का निश्चय करते समय लोग कहते हैं। आशय यह है कि तुमने तो आज एक दिन ऐसा किया, अब मेरे लिए 160 दिन है, कभी-न-कभी तो बदला लेने का अवसर आ ही जायगा।

एक दिन जिउतिया नौ दिन पारन जब किसी मुख्य काम करने की अपेक्षा उसके सहायक काम में अधिक समय लग जाय तो कहते हैं।

एक दिन दो उत्सव - जब एक साथ कई लाभ होते है तब ऐसा कहते है। तुलनीय : गुज० एक दहाडे बे पर्व।

एक दिन पाहुना, दूसरे दिन ठेहुना तीसरे दिन कोई ना---पाहुन का सत्कार एक-दो दिन ही किया जाता है, फिर तो कोई नही पूछता। आशय यह है कि किसी रिश्तेदार के यहाँ अधिक दिन नही ठहरना चाहिए। तुलनीय : भोज० एक दिन पहुना दुसरा दिन ठेहुना तीसरा दिन केहुना; पंज० इक दिन परौणा दूजे दिण कपडे तोणा तीजे दिण कोई ना।

एक दिन मेहमान, दो दिन मेहमान, तीसरे दिन बला-ए-जान--ऊपर देखिए। तुलनीय : अव० एक दिना मेहमान दुसरे दिना मेहमान तिसरे दिना बेइमान; राज० दो दिन पावणो, तीजे दिन अणखावणो; माल० एक दन रो पामणो ने दूसरे दन रो पइ, तीसरे दन रेवे तो वैरी मति गई; मल० मरुन्नुम् विरुन्नुम् मून्नू नाल; अं० Fish and guests stink after three days.

एक दिन सबको मरना है---अर्थात् अमर कोई नहीं है। तुलनीय : मरा० एक दिवस सर्वानाच मरावयाचें आहे; अव० एक दिन सबै का मरना है; पंज० इक दिन सारियाँ नूं मरना है।

एक दिन सात रोटी बासी एक दिन उपवास---अनुचित प्रबन्ध या अदूरदर्शिता पर व्यंग्य से ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० एक दिन सात रोटी बासी एक एकहु नां।

एक दिल यारों में एक चौकीदारों में---कोई निश्चय न कर पाने की स्थिति में ऐसा कहते हैं।

एक दिल लगाने से हज़ार आफ़तें आती हैं--- प्रेम करने में अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ता है। तुलनीय : पंज० इक दिल लाण बड़ियाँ मसीवतां आंदियां हन।

एक देश का बगला दूसरे में बकलोल---अर्थात् अनजान स्थान पर बुद्धिमान भी मूर्ख बन जाता है। तुलनीय : भोज० आन देश क बकुलो आन देशे बकलोल हो जाला।

एक देश विकृत मनन्यवत्---कोई वस्तु जो अपने एक भाग में परिवर्तित हो जाती है, वह कोई दूसरी वस्तु नहीं बन जाती है।

एक नकटा सौ को नकटा कर देता है-- एक बुरा आदमी बहुतों को बुरा बना देता है। इस पर एक कहानी है-- एक बार एक राजा ने एक चोर की नाक कटवा दी। चोर नाक कटने के बाद खूब नाचने लगा और कहने लगा मुझे नाक कटने पर भगवान दिखाई दे रहे है। उसकी देखा-देखी एक-दूसरे आदमी ने भी अपनी नाक कटवा ली। नकटे ने उसके कान में कहा कि अब तुम भी कहो कि मुझे भगवान दिखाई दे रहे हैं, नही तो लोग तुम्हें ही मूर्ख और नकटा कहेंगे। अब वह आदमी भी खूब नाचने लगा और कहने लगा कि मुझे भगवान के दर्शन हो रहे है। इस तरह धीरे-धीरे नकटों की संख्या सैकड़ों तक जा पहुँची और राजा को भी पता लगा। राजा ने नकटों के मुखिया से पूछा कि क्या यह सच है कि नाक कटा लेने पर भगवान के दर्शन होते हैं? नकटे ने कहा आपको विश्वास न हो तो कटा कर देख लो। राजा भी तैयार हो गया, किन्तु मंत्री ने राजा को रोक दिया। मंत्री ने राजा से कहा कि पहले स्वयं मैं कटा कर देखूँगा कि इसमे कितनी सच्चाई है। मंत्री की नाक भी काट दी गई और नकटे ने उसके कान मे भी वही बात कही किन्तु मंत्री ने सिपाहियों को आज्ञा देकर सब नकटों को पकड़ कर बंदी बना लिया और राजा को नकटा होने से बचा लिया। तुलनीय : बुंद० नकटा सौ खौं नकटा कर देत; पंज० इक छेंगा सौ नूं छेंगा बना देंदा है।

एक नन्ना से सौ बलाएँ टल जाती है---दे० 'एक इनकार सौ दुःख दूर...'।

एक न शुद दो शुद---जब किसी व्यक्ति पर एक दोष लगे और उसकी अभी सफ़ाई न दे पावे तब तक सफ़ाई देने के प्रयास में दूसरा अपराध लग जाय तब कहते हैं। इस संबंध में एक कहानी है---एक आदमी ने किसी जादूगर से तीन मंत्र सीखे। एक से मुर्दे को जिलाने का, दूसरे से उससे भेद जानने का तथा तीसरे से उसे फिर से मार देने का। अपने गुरु के जीवन-काल में उसने कभी इन मंत्रों का प्रयोग नही किया, किन्तु उसके मरने के पश्चात् उसने देखने के लिए

एक मुर्दे को जिलाया और फिर उससे भेद ज्ञात किया पर मारने का मंत्र भूल गया। अब उस मुर्दे का भूत उसका पीछा करने लगा। परेशान होकर तीसरा मंत्र पूछने के लिए उसने अपने गुरु को जिलाया पर तब तक वह दूसरा मंत्र भी भूल गया अतः गुरु से भी कुछ न पूछ सका। इस प्रकार एक के स्थान पर दो भूतों ने पीछा करना आरंभ कर दिया। तुलनीय : मरा० एक पुरें झालें नाहीं दुसरें; उ० एक आफ़त से तो मर मर के हुआ था जीना; आ पड़ी और यह कैसी मिरे अल्लाह नई।

एक नहीं सत्तर बला टाले—साफ़ इनकार करने से आदमी बार-बार बहाना करने से बच जाता है। तुलनीय : हरि० सौ बै की हां ते एक बै की नाह आच्छी; मेवा० एक ननो सौ रोग टाले; पंज० इक बार दी नाँ सौ बला टाले।

एक नाँ छत्तीस रोग टाले—ऊपर देखिए।

एक नाइन पादे या चौका पूरे—आशय यह है कि एक आदमी एक समय मे दो काम नहीं कर सकता। तुलनीय : पंज० इक नैन पद मारे या चौका फेरे।

एक नाक दो छींक काम बने बहुत ठीक—किसी के सामने यदि एक ही व्यक्ति दो बार छींके तो काम बन जाता है और एक छींक से बिगड़ जाता है ऐसा लोकमत है। तुलनीय : पंज० इक बार दो छिकां कम वणे बडा चंगा; ब्रज० एक नाक दो छींक, काम बनैगो ठीक।

एक नागिन अरु पंख लगाई—दे० 'एक तो साथ दूजे···'।

एक नादान, सबकी मुश्किल में जान—जब किसी मूर्ख व्यक्ति के कारण सबको परेशान या लज्जित होना पड़े तो उस मूर्ख के प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० एक मोचू, सबू का आंखा घोचू; पंज० इक अणजान सब दी मसीबत विच जाण।

एक नार जब दो में फँसी, जैसे सत्तर वैसे असी—(क) एक बार पाप का पथ पकड़ने पर आदत पड जाती है और फिर असंख्य पाप होने लगते है। (ख) पाप थोड़ा हो या अधिक पाप ही है। तुलनीय : अव० एक नार जब दुइ से फँसी जस सत्तर ओस असी।

एक नारी ब्रह्मचारी—एक स्त्री वाला पुरुष भी ब्रह्मचारी समझा जाता है। या पराई स्त्री से संबंध न रखने वाला पुरुष ब्रह्मचारी माना जाता है। तुलनीय : बुंद० एक नारी सदा ब्रह्मचारी; पंज० इक जनानी वाला सदा बरमचारी।

एक नारी सदा ब्रह्मचारी—ऊपर देखिए।

एक ना सौ दुख हरे—एक बार 'ना' कर देने से बार-बार के तक़ाज़े से पीछा छूट जाता है। तुलनीय : ब्रज० एक नाही सौ सुख।

एक नाहर, दूजे सजे पाखर—दे० 'एक तो साँप दूजे···'।

एक निसाना, एकहि बाना—एक झंडा और एक वेश अर्थात् एक ही रास्ते पर जाने वाले या एक ही ध्येय वाले।

एक नींबू मनों दूध फाड़ देता है—(क) एक दुष्ट मनुष्य बहुतों को बिगाड़ सकता है। (ख) छोटी वस्तुओं को तुच्छ नही समझना चाहिए क्योंकि कभी-कभी छोटी वस्तुएँ भी बहुत बड़ी हानि कर देती हैं। तुलनीय : राज० एक काचररो बीज सौ मण दूध बिगाड़ै; पंज० इक निंबू मणां दुद फाड़ दा है; अं० One ill weed mars a whole pot of pottage.

एक नींबू पूरा गाँव सितलहा—दे० 'एक अनार···'। तुलनीय : अव० एकु नीमि सब गाँव सितलहा।

एक नीम सब घर शीतल—एक भी योग्य पुत्र हो तो घर-भर को आनन्द से भर देता है। तुलनीय : हरि० सौ कपूत एक सपूत; पंज० सौ पैड़े इक चंगा।

एक नीम सारा गाँव मरीज—दे० 'एक अनार···'।

एक नीम सौ कोढ़ी—दे० 'एक अनार···'।

एक नूर आदमी, हजार नूर कपड़ा—आशय यह है कि अच्छे वस्त्र पहनने से शरीर की शोभा काफ़ी बढ़ जाती है।

एक ने कही, दूजे ने मानी, नानक बोले दोनों ज्ञानी—परस्पर प्रेम-भाव रखने वाले लोग बुद्धिमान समझे जाते हैं। तुलनीय : पंज० इक ने दस्सो दूजे ने मन्नी नानक आखण दोवें गयानी।

एक पंथ दो काज—(क) जब एक काम को करते हुए अनायास ही कोई और काम भी हो जाय तो कहते हैं। (ख) जब कोई ऐसा कार्य किया जाय जिससे उस काम से मिलने वाले लाभ के अतिरिक्त और भी कोई लाभ हो तो कहते हैं। तुलनीय : राज० एक पंथ दो काज; मरा० एक क्रिया द्वयर्थ करी प्रसिद्ध; भीली—एक काम ने बे काज; पंज० नाले मुंज बगड़ नाले देवी दा दर्शन; गढ़० एक पंथ द्वी काज; अव० एक पंथ दुई काज; सं० एका क्रिया द्वयर्थकारी प्रसिद्धः; सि० एक पंथ दो काज; मेवा० एक पंथ दो काज; मल० ओरुवेटिक्कु रण्टु पक्षि; अं० To kill two birds with one stone, To catch two pigeons with one bean.

एक पड़ोसी न सौ रिश्तेदार—यदि एक पड़ोसी अच्छे

स्वभाव का हो तो वह अकेला सौ सम्बन्धियों के बराबर होता है। (क) अच्छे पड़ौसियों की प्रशंसा करने के लिए ऐसा कहते हैं। (ख) सम्बन्धी प्राय: सुख में ही साथ देते हैं, किन्तु पड़ौसी बुरे दिनों में भी सहायता करता है। तुलनीय : गढ़० जो नेड़, सो पेड; पंज० इक गुआंडी सौ रिश्तेदार।

एक पर एक ग्यारह—एक और एक मिलकर ग्यारह होते हैं। मेल में बड़ी शक्ति है। तुलनीय : पंज० इक नाल इक गयाँरा।

एक परहेज लाख दवा—आशय यह है कि किसी बीमारी की दवा कराते समय वर्जित खाद्य पदार्थों से परहेज़ करना नितांत आवश्यक है, ऐसा न करने से रोगी अच्छा नही होता। रोगी व्यक्ति के शिक्षार्थ ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मल० तापनिल नन्नेन्किल् शरीरस्थिति नन्नु; पंज० इक परेज लख दवा।

एक परहेज सौ इलाज—ऊपर देखिए। तुलनीय : मल० वैद्यनाल कषियात्तत्रु आहारत्तिनु कषियुन्नु; अं० Diet cures more than doctors.

एक पाँव उठावे दूसरे की आस नहीं—एक पैर को उठाने पर दूसरे पैर को भूमि पर रखने तक की भी आशा नही। इस लोकोक्ति में मानव-शरीर की क्षणभंगुरता को प्रदर्शित किया गया है जो भारतीय जीवन-दर्शन का एक अंग है। तुलनीय : हरि० एक पांह ठावै, दूसरे की आस कोन्या; पंज० इक पैर चुके दूजे दी आस नईं।

एक पानि जो बरिस सेवाती, कुरमिन पहिनें सोने की पाती—यदि स्वाति नक्षत्र में एक बार भी वर्षा हो जाय, तो कुरमी (एक गरीब जाति) जाति की स्त्रियाँ भी सोने जैसी बहुमूल्य धातु के गहने पहनने लगेंगी। आशय यह है कि स्वाति नक्षत्र में वर्षा होने से फ़सल काफ़ी अच्छी होती है जिससे छोटे-बड़े सभी किसान सुख का जीवन बिताते हैं।

एक पापी पूरी नाव डुबावै—नीचे देखिए।

एक पापी सारी नाव को डुबाता है—(क) एक भी नीच या बुरा व्यक्ति कुल, जाति, संघ या राष्ट्र भर की प्रतिष्ठा को समाप्त कर देता है। (ख) एक बुरा बहुतों का बुरा कर देता है। तुलनीय : माल० एक पापी आखी नाव ने डुबोवे; भोज० एगो पापी कुल नाव के बुडावेला; हरि० एक भैंस सब के गारा लगा दे स; पंज० इक पापी सारी नाव नूं डोबदा है।

एक पाव गया उड़न पुड़न, एक पाव गया पन; एक पाव गया घुन लपेटा, एक पाव लिया हम—जब कोई उलटा-सीधा करके हिसाब समझाने की कोशिश करे तो कहते हैं।

एक पाव आटा चबारे पर बोल—पास में केवल पाव भर आटा है और चौबारे पर बैठकर सबको सुना रहे हैं। अर्थात् (क) जब कोई व्यक्ति अपनी छोटी-सी या थोड़ी-सी चीज़ का अधिक दिखावा करता है तब ऐसा कहते हैं। (ख) उच्छृंखल व्यक्ति को भी कहते हैं जो मामूली-सी वस्तु पाकर इतराने लगता है। तुलनीय : मेवा० तीन पाव चून चित्तौड़ तांई चौकी; पंज० इक पाँ आटा कोठे उते बोल।

एक पिता के बिपुल कुमारा, होहिं पृथक गुन सील अचारा; कोउ पंडित कोउ तापस ज्ञाता, कोउ धनवंत सूर कोउ दाता—यद्यपि एक ही पिता के कई बच्चे होते हैं फिर भी वे आचार-व्यवहार में एक-दूसरे से भिन्न होते हैं। कोई विद्वान, कोई तपस्वी, कोई ज्ञानी, कोई धनवान, कोई वीर और कोई दानी होता है। तात्पर्य यह है कि सभी व्यक्ति समान नहीं होते।

एक पुत्र ढाई हाथ कलेजा—एक पुत्र पैदा होने पर कलेजा ढाई हाथ चौड़ा हो जाता है अर्थात् (क) पुत्र-लाभ पर अत्यधिक प्रसन्नता होती है। (ख) जब कोई एक ही लड़के पर बहुत गर्व करता है और सबसे रोब से बातें करता है तब भी व्यंग्य मे ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मैथ० एकौनिया पूत अढ़ाय हाथ करेज; भोज० एगहु लइका नबौ अढ़ाइ हाथ क करेज; पंज० इक पुत ढाई हत्थ दा कालजा।

एक पुत्र बिना जग अँधियार—एक पुत्र के बिना संसार कुछ भी नही है। वंशवृद्धि तथा मन के संतोष के लिए पुत्र का होना अत्यन्त आवश्यक है। तुलनीय : मग० एक रे पुतर बिनु जग अँधियार; भोज० एगो लइका बिना संसार अन्हार, एकठे लइका बिना दुनियाँ अन्हार; पंज० इक पुत बगैर जग हनेर।

एक पूत जनि जनियो माय, घर रहे कि बाहर जाय—अर्थात् एक व्यक्ति के लिए दो काम करना असंभव है। इसलिए एक से अधिक पुत्र होने चाहिए।

एक पूत जित जनमा माय, घर सूना जो बाहर जाय—ऊपर देखिए।

एक पूत पूत नहीं, एक आँख आँख नहीं—जिसके पास एक ही पुत्र और एक ही आँख होती है वह व्यक्ति काफ़ी भयभीत रहता है क्योंकि उनके समाप्त हो जाने पर उसका जीवन बहुत ही कष्टमय हो जाता है। इसी बात को ध्यान में रखकर उक्त लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : कौर० केल्ले (अकेले) पूत का सपूत्ता काणे जैसी आँख;

पंज० इक पृत पुत नईं इक अख अख नईं।

एक पूत से निपूत भला—ऊपर देखिए।

एक पेड़ हर्रे सगरो गाँव खाँसी—दे० 'एक अनार···'।

एक पैर क़ब्र में—अतिवृद्ध व्यक्ति के लिए कहा जाता है। तुलनीय: पंज० इक पैर मड़ी बिच।

एक पैर की चिड़िया नहीं मिलती—असम्भव बात के बारे में कहा जाता है।

एक पैसा गांठी चूड़ी पहनूँ या माठी—दे० 'एक टका मेरी गठड़ी···'।

एक पैसे की छाज, टका गँठवाई—छाज तो एक पैसे का परन्तु गमकी गँठवाई पर एक रुपया (टका) खर्च हो गया। अर्थात् जब किसी वस्तु पर क्रय-मूल्य से अधिक अन्य खर्च बैठ जाता है तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय: राज० छदा-मरी छाजली टको गंठाईर; पंज० पैहे दा छज्ज टगा गंडाई। दे० 'दमड़ी की गुड़िया टके सेर···'।

एक पैसे की खोज में चवन्नी का तेल जलावें—एक पैसे को खोजने के लिए चार आने का तेल जला देना अर्थात् छोटे लाभ के लिए बड़ी हानि कर देना। (क) जो व्यक्ति छोटे से लाभ के लिए बहुत परिश्रम करे या बहुत हानि कर बैठे तो उसके लिए कहते हैं। (ख) व्यापारी लोग भी हिसाब में एक पैसे का फ़र्क होने से रात भर या जब तक वह पैसा मिले न तब तक हिसाब-किताब मिलाते रहते हैं और उस समय में जो तेल जल जाता है वह एक पैसे से बहुत अधिक का होता है इसलिए उनके प्रति व्यंग्य से ऐसा कहते है। (ग) जो व्यक्ति सिद्धान्त पर चलते हुए हानि उठाने के लिए भी तत्पर रहते हों उनके प्रति भी कहते है। तुलनीय: माल० पइसा के वास्ते पावला को तेल बालणो; पंज० इक धेहा लवण लई तैली दा तेल बालो।

एक पैसे की दुलहिन, नौ पैसे भाड़ा—ऊपर देखिए।

एक फूल से माला नहीं बनती—माला बनाने के लिए बहुत से फूलों की आवश्यकता होती है। अर्थात् जो व्यक्ति थोड़े व्यय से या छोटी वस्तु से बडा काम लेना चाहते हों उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय: पंज० इक फुल नाल माला नईं बणदी।

एक फूहड़ फूहड़ के गई, जा कुठला-सी ठाढ़ी भई—यदि कोई मूर्ख किसी के पास भेजा जाय और वहाँ जाकर कुछ न कह पाये, चित्रवत् खड़ा रहे तो कहते हैं।

एक बंदर रूठेगा तो क्या वृन्दावन खाली हो जायगा?—वृंदावन में हज़ारों बंदर है, एक बन्दर रूठ भी जाय तो कोई अन्तर नही पड़ता। अर्थात् जब कोई ऐसा व्यक्ति रूठने या साथ छोड़ने की धमकी दे जिसके न रहने पर किसी हानि की सम्भावना न हो तो कहते हैं। तुलनीय: राज० एक बंदरिया रूस ज्याय तो किसो बंदरावल खाली हो जाय।

एक बखिया मोरे पल्ले, कौन पिनौते होंकि चल्ले—अपनी छोटी-सी चीज़ पर इतराने वाले के प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

एक बनिए से बाज़ार नहीं बसता—अर्थात् (क) कोई सामूहिक कार्य एक व्यक्ति से सम्पन्न नहीं होता। (ख) अकेला आदमी कुछ नहीं कर सकता। तुलनीय: भोज० एगो बनिया से बजार ना बसे ले; पंज० इक कराड़ नाल बजार नईं बणदा।

एक बणिक बिन काहधों लगिहैं नाहीं हाट? क्या एक बनिए के आने से बाज़ार न लगेगी? अर्थात् अवश्य लगेगी। इतराकर कहीं न जाने वाले या किसी काम में शरीक न होने वाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय: अव० एक बनिया कतहू हाट लगाय सकत है।

एक बांबी में दो सांप—जब एक ही स्थान में दो दुष्ट व्यक्ति रहते हों तो उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय: पंज० इक बरमी बिच दो सप्प।

एक बात तुम सुनहु हमारी, बूढ़े बैल से भली कुवारी—बूढ़े बैल से कुदाल अधिक लाभदायक है क्योंकि उससे थोड़ा-बहुत काम तो किया जा सकता है जबकि बूढ़ा बैल सिवा चारा खाने के और कुछ नहीं करता। आशय यह है कि काम की छोटी चीज़ बेकार की बड़ी और दिखावटी चीज़ से अच्छी है।

एक बात पर नौ नौ हाथ—छोटी-सी बात पर जब कोई व्यक्ति बहुत अधिक नाराज़ होता है तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय: पंज० इक गल उत्ते नौ नौ हथ।

एक बाना, एक निशाना—एक ही ध्येय पर चलने वाले या एक मत का अनुसरण करने वाले के प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय: अव० एक निसाना एक ही बान।

एक बार जोगी, दो बार भोगी, तीन बार रोगी—योगी दिन में एक बार और भोगी दो बार पाखाने जाते हैं, इससे अधिक बार जो जाय उसे रोगी समझना चाहिए। आशय यह है कि एक या दो बार ही पाखाने जाना अच्छा होता है। तुलनीय: अव० एकु बार जोगी, दुइ बार भोगी तीन बार रोगी; पंज० इक बार जोगी दो बार पोगी तिन बार रोगी।

एक बार पिए तो मतवाला, दो बार पिए तो मतवाला

—जब कोई व्यक्ति एक बार शराब पीता है तब भी उसे शराबी कहते हैं और जब अनेक बार पीता है तब भी उसे शराबी ही कहते हैं। आशय यह है कि बुरा कर्म करने वाला चाहे थोड़ा करे या ज़्यादा उसे बुरा ही कहते हैं। तुलनीय : छत्तीस० एक छाक पिइस त मतवार, दू छाक पिइस त मतवार; पंज० इक बार पीवे तां शराबी दो बार पीवे तां शराबी।

एक बार भूले से भूला कहाये, बार-बार भूले सो मूर्खानन्द कहाये—एक बार ग़लती करने पर सचेत हो जाना चाहिए, दुबारा फिर वही ग़लती करने पर मूर्खता होती है। तुलनीय : पंज० इक बार पुल्ले ते पुल्ला आखो बार बार पुल्ले ते मूरख आखो।

एक बार सुने समझे सो ज्ञानी—एक बार कहने से जो बात समझ ले उसे बुद्धिमान समझना चाहिए। अर्थात् बुद्धिमान व्यक्ति किसी बात को शीघ्र ही समझ लेते हैं उनको बार-बार समझाने की आवश्यकता नहीं होती। तुलनीय : राज० एक बार कथा सुणी ग्यान आपो सरड़, बार-बार कथा सुणै कान है कदरउ; पंज० एक बार सुण के समज जावे ओह ग्यानी।

एक बिगड़े तो दस समझावें, दस बिगड़े तो कौन समझावे—एक व्यक्ति यदि बिगड़ जाय तो दस व्यक्ति उसे समझाकर ठीक रास्ते पर ला सकते हैं, किन्तु दस (बहुत आदमी) बिगड़ जायँ तो उन्हें समझाना मुश्किल होगा। अर्थात् जहाँ कम बुरे लोग रहते हैं वहाँ तो काम चल जाता है पर जहाँ सभी बुरे होते हैं वहाँ कोई काम ठीक नहीं होता। तुलनीय : मैथ० एक बिगड़े त दस समझावे दस बिगड़े तऽ के समझावे; भोज० एगो बिगरी तऽ दस आदमी समझइहें, दस गो बिगरी तऽ के समझाइ; पंज० इक बिगडे दस समजान दस बिगड़ण तां कौन समजावे।

एक बिस्तर पर सोओ और अंग से अंग भी न लगे—यह तो बहुत ही मुश्किल है कि एक बिस्तर पर दो व्यक्ति सोवें और एक-दूसरे से अछूते रहें। अर्थात् जब कोई व्यक्ति किसी काम में ऐसा अड़ंगा डाल दे जिससे उसका होना असंभव हो जाय तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० इक मंजे उत्ते सौ सोण पासे नाल पासा वी नां लग्गे।

एक बुलावे चौदह धावे—एक को बुलाया चौदह चले आए अर्थात् जब आवश्यकता से अधिक व्यक्ति किसी काम पर इकट्ठे हो जाते हैं तो कहा जाता है। तुलनीय : मैथ० एक बापतेक नेवत सब बापतेक ब्योंत; भोज० एक अदमी के नेवता सबके बेंवत; पंज० इक नूं सद्दो ते इक्की आण।

एक बूंद जो चैत में परै, सहस बूंद सावन में हरै—यदि चैत्र मास में साधारण भी वर्षा हो जाय तो सावन में सूखे का भय रहेगा।

एक बूंद मट्ठे से क्षीर सागर नहीं फटता—दूध के समुद्र में एक बूंद मट्ठा डाल देने से वह (दूध) फटता नहीं है। आशय यह है कि (क) अनेक सज्जनों में एक दुष्ट व्यक्ति भी खप जाता है। (ख) बलवान या सम्पन्न व्यक्ति का कमज़ोर या निर्धन व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता। (ग) जहाँ पर अधिकांश अच्छे लोग रहते हैं वहाँ पर एक बुरे व्यक्ति का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। तुलनीय : छत्तीस० एक बूंद मट्ठा माँ क्षीर सागर नइ कल्थय।

एक बेटी दो दमाद—जब कोई व्यक्ति एक वस्तु को देने के लिए कई लोगों को आमंत्रित करता है तब ऐसा कहा जाता है। तुलनीय : भोज० एगो या एकठे बेटी दुगो दमाद; मग० एक बेटी दु दमाद; पंज० इक ती दो जवाई।

एक बेटी लाई, दूसरी मिठाई, तीसरी बला—एक लड़की लाई के समान हल्की, दूसरी मिठाई के समान मीठी तथा तीसरी माता-पिता के लिए सिर का बोझ हो जाती है। तात्पर्य यह है कि ज़्यादा लड़कियों के हो जाने पर माता-पिता काफ़ी परेशानी में फँस जाते हैं। तुलनीय : मैथ० एक बेटी लाय दोसरी मिठाय तेसरी होलऽ तऽ तीनो बलाय; पंज० एक ती लआई दूजी मठाई तीजी बला।

एक बैद्य गाँव भर रोगी—दे० 'एक अनार सौ…'।

एक बैल इक्यावन खूंटा—बैल तो एक है, किन्तु उसे बाँधने के लिए इक्यावन खूंटे गड़े है। अर्थात् (क) ज़रूरत से ज़्यादा साधन के होने पर ऐसा कहते हैं। (ख) व्यर्थ में दिखावा करने वालों के प्रति भी व्यंग्य से ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मग० एक बैल एकावन खूंटा; भोज० एगो बरघ एकावन गो खूंटे; पंज० इक टग्गा (बलद) सौ खुंडियाँ।

एक बोटी सौ कुत्ते—दे० 'एक अनार सौ…'।

एक बोली तीन काम—(क) बहुत चालाक व्यक्ति के प्रति कहते हैं जिससे एक काम करने को कहा जाय और वह तीन कर आवे। (ख) फुर्तीले व्यक्ति को भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० इक बोली तिन कम।

एक बोली, दो बोली, मेरी नकटी सटासट बोली—यदि कोई लड़की एक बात सुनते ही दस सुनावे तो कहते हैं। इससे उसकी निर्भीकता और उद्दंडता दोनों प्रदर्शित होती हैं।

एक भवानी, कुल गाँव अंधा, किसे-किसे आँख दें—

दे० 'एक अनार सौ···'।

एक भेष के आसरे जाति बरन छिप जात—छोटी जाति के लोग भी यदि अच्छा वस्त्र पहन लेते हैं तो वे उच्च जाति के मालूम होते हैं। आशय यह है कि किसी छोटी जाति में उत्पन्न व्यक्ति भी यदि उच्च पद प्राप्त कर लेता है या विद्वान हो जाता है तो उसे समाज में आदर मिलता है। ऐसी दशा में कोई उसकी जाति की तरफ़ ध्यान नहीं देता। तुलनीय: पंज० इक रंग नाल जात नूं कोई नईं पुछदा।

एक भैंस सभी को गंदा करती है—दे० 'एक मछली सारे तालाब···'।

एक मछरी नौ लाख जाल—जब साधारण कार्य के लिए बहुत बडा प्रबन्ध किया जाय तो व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय: अव० एकु मछरी नवलाख जार; पंज० इक मच्छी नौ लख जाल।

एक मछली लाखों जाल—ऊपर देखिए।

एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है—(क) एक बुरा व्यक्ति अपने आसपास के सभी लोगों को बुरा बना देता है। (ख) एक मनुष्य की बदनामी से घर भर की या पूरे समुदाय या जाति की बदनामी हो जाती है। तुलनीय: भोज० एगो मछरी सगरी ताल गंदा कइ देले; अव० एकै मछरी सगलिउ तलाव क गंहचारे देत है; राज० एक माछली मारो तलाव गिंदो करै; मरा० एक मासा (फड़फडून) सगळे पाणी गढूळ करतो; माल० एक माछली आखा तलाब ने गंदो करै; हरि० एक भैंस्य सारियाँ/सौवां के गारय लादे; गढ़० एक माछो सारो ताल गंदा कर देंद; पंज० इक मच्छी सारा जल गंदा कर देंदी है; ब्रज० एक नकटी सौ नकटा करे; एक मछली सारे जल को गन्दा करती है; अं० One fish infects the whole water.

एक मजाक़, सौ गाली—(क) एक मजाक़ सौ गालियो के बराबर बुरा है। आशय यह है कि मजाक़ करना अच्छी आदत नहो है। (ख) मजाक़ करने वालों को एक मजाक़ के बदले सौ गालियाँ सुननी पड़ती है। तुलनीय: राज० एक मसखरी सौ गाल; पंज० इक मजाक सौ गालां।

एक मन इल्म के लिए दस मन अक़्ल चाहिए—थोड़ी-सी विद्या सीखने के लिए अधिक बुद्धि की आवश्यकता होती है। आशय यह है कि विद्या बिना बुद्धि के नही आती।

एक मन बुद्धि, सौ मन विद्या—थोड़ी बुद्धि अधिक विद्या से अच्छी होती है। विद्या केवल अपने विषय तक ही रहती है किन्तु बुद्धि प्रत्येक कार्य करने की क्षमता रखती है। तुलनीय: राज० एक मण अकल, सौ मन इलम; पंज० इक मण अकल, सौ मण विद्या।

एक मन में चालीस सेर मंदा—एक मन गेहूँ में चालीस सेर मँदा नहीं हो सकता। जो व्यक्ति किसी झूठ बात को सत्य बताने के लिए कोई मूर्खतापूर्ण प्रमाण दे उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय: राज० मण में चालीस सेरई मँदो; पंज० इक मण बिच चाली सेर मंदा।

एक मास ऋतु आगे धावै, आधा जेठ आसाढ़ कहावै—मौसम एक माह पहले से ही प्रारम्भ हो जाता है, अतः आधे जेठ से ही आषाढ़ समझ लेना चाहिए।

एक मिले जो काना तो लौट के घर आ जाना—यदि कोई काना व्यक्ति राह में मिल जाय तो वहीं से घर लौट आना चाहिए। ऐसा लोकमत है कि यदि कोई व्यक्ति कहीं किसी काम से जा रहा हो और उसे रास्ते में या यात्रा के प्रारम्भ में ही काना व्यक्ति मिल जाय तो उस व्यक्ति का कार्य सिद्ध नहो होता। इसी बात को ध्यान में रखकर उक्त लोकोक्ति कही गई है। तुलनीय: पंज० जे इक लबे काणा ते पिछां कर नूं आ जाणा।

एक मुँह दो बात—परस्पर विरोधी बातें करने वाले के प्रति कहते हैं।

एक मुर्ग़ो दो जगह जबह—(क) एक व्यक्ति एक समय में बहुत से स्थानों पर कार्य नही कर सकता। (ख) जब किसी व्यक्ति को दो स्थानों पर दंडित किया जाता है तब भी कहते हैं। तुलनीय: भोज० एगो मुरगी दु जगह हलाल; मैथ० एक टा मुर्गी दुगम हलाल; पंज० एक कुकड़ी दो उसदे हलाल।

एक मुर्ग़ो दो जगह हलाल—ऊपर देखिए।

एक मुर्ग़ो नौ जगह हलाल नहीं होती—एक व्यक्ति एक समय बहुत से स्थानों पर काम नहीं कर सकता। तुलनीय: एक ठौ मुरगी नौ जगहा हलाल नाहीं होत; पंज० इक कुकडी नौ थां नईं मरदी।

एक मुश्किल को, हज़ार हज़ार आसान है—एक रोग की सैंकड़ों दवायें होती हैं। कठिन से कठिन काम को आसान बनाने या करने के अनेक उपाय हैं।

एक मेरे घर अन्ना, दूसरा खन्ना—अपने रहन-सहन को बढ़ा-चढ़ाकर बताने वाले के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। (अन्ना=दाई; खन्ना=नौकर, लड़का)।

एक मैं, एक मेरा भाई, तीसरा हज्जाम नाई—जब कोई व्यक्ति अपने साथ बहुत से लोगों को लाए और कहे यह कि मैं अकेला आया हूँ वहाँ ऐसा कहते हैं।

एक मैं, दूसरा मेरा भाई, तीसरा हज्जाम नाई—

निमन्त्रण पाने पर अपने साथ बिना बुलाए बहुत से और आदमियों को लाने वाले के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : पंज० इक मैं दूजा मेरा परा तीजा नाई।

एक मौसी-मौसी और एक अरी-अरी —मौसी-मौसी भी कहते हैं और अरी-अरी भी। अर्थात् जो आदर भी करे किन्तु साथ ही तिरस्कार भी कर दे उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० इक मासी मासी अते एक मड़िये मड़िये।

एक म्यान में दो खांड़े—(क) एक ही वस्तु पर दो का अधिकार होने पर कहते हैं। (ख) जब एक स्त्री का सम्बन्ध दो पुरुषों से होता है तब भी व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : (?) बे घोडे चडाय नहीं; माल० एक म्यानमाँ वे तलवार।

एक म्यान में दो तलवारें नहीं रहतीं—एक ही वस्तु पर दो का अधिकार नहीं हो सकता। तुलनीय : मरा० एक म्यानांत दोन तलवारी राहत नाहींत; राज० एक म्याण में दो तरवार को खटावै नी; गढ़० एक म्यान मां द्वी तलवार नि रै सकदी; भोज० एक ही मियान में दुग्गी तलवार नाहीं रखल जा सकेला; अव० एक मियाने मा दुइ तरवारि नाहीं रहत; बुंद० एक म्यान में दो तरवारें नईं रतीं; मेवा० एक म्यांन में दो तलवारां नी रे वे; पंज० इक मयान विच दो तलबारां नईं रेंदियां।

एक म्यान में दो तलवारें नहीं समा सकतीं—ऊपर देखिए। तुलनीय : मल० औरु नापि वैरोरू नायियल् कटक्कुकयिल्ल; ब्रज० एक म्यान में दो तरवारि नाहैं रहि सकें; तेलु० ओक ओरलो रेंडु कत्तिलिमुडवु; अं० Two of a trade seldom agree, Two sparrows upon one ear of corn are not likely to agree along.

एक रति बिना रत्ती का—बिना स्त्री के पुरुष का जीवन व्यर्थ होता है। उसे अनेक परेशानियाँ झेलनी पड़ती हैं। अर्थात् पुरुष के लिए स्त्री का होना अत्यन्त आवश्यक है।

एक राय राय एक उर्दा का मस्का—एक राय (सलाह) वास्तविक या उचित होती है और एक राय किसी को बहकाने के लिए या अपने पास से हटाने के लिए होती है। अर्थात् जब कोई व्यक्ति किसी को सही सलाह न देकर केवल उससे अपना पीछा छुड़ाने के लिए कुछ बतलाकर अपने पास से हटा देता है तब व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

एक लकड़ी क्या जले क्या उजाला हो—दे० अकेला चना भाड़…'।

एक लकड़ी से सबको नहीं हांका जाता—एक ही आदेश सब पर लागू नहीं होता, बड़े-छोटे, बली-निर्बल या अपने-पराये का ध्यान रखना ही पड़ता है। तुलनीय : अव० एकै लाठी से सबका नाहीं हांका जात; ब्रज० एक ई लौठी ते सब नायें हाँके जायें; पंज० इक सोटी नाल सारे हिक्के नईं जांदे।

एक लकड़ी से सबको हाँकना—जब कोई अपने-पराये, छोटे-बड़े, धनी-ग़रीब, मूर्ख-विद्वान सबके साथ एक जैसा व्यवहार करता है तब कहा जाता है। तुलनीय : हरि० एक्कै लाट्ठी सबने हांकणां; पंज० इक सोटी नाल सारियां नूं हिकणा।

एक लाख पूत सवा लख नाती, ता रावन घर दिया न बाती—इतने बड़े परिवार का होने पर भी अन्त में एक व्यक्ति 'दिया' तक जलाने के लिए भी नहीं बचा। (क) आशय यह है कि अपने बल या परिवार के बल पर गर्व करने वाला नष्ट हो जाता है। (ख) अत्याचारी का भी सर्वनाश हो जाता है। (ग) चाहे कोई किसी भी तरह का क्यों न हो, विनाश निश्चित है। तुलनीय : पंज० इक लख पुतर सवा लख रिश्तेदार मरया रावण दीवा ना बत्ती।

एक लड़का अपना और सौ लड़की के—अपना एक पुत्र लड़की के सौ पुत्रों से अच्छा होता है। आशय यह है कि अपना पुत्र ही अपने (पिता के) सम्मान को बढ़ाता है और उसी से सुख प्राप्त होता है तथा वही वास्तविक उत्तराधिकारी होता है। तुलनीय : गढ़० सौ धौती अर एक गोती; पंज० इक पुतर अपणा अते सौ कुड़ी दे।

एक लाठी से सबको नहीं हाँकते—दे० 'एक लकड़ी से सबको…'। तुलनीय : भोज० एके लाठी से सबके नां हांकल जाला।

एकला सौ बेकला—अकेला हमेशा परेशान रहता है। (क) अकेले व्यक्ति की दिन-रात की परेशानियों को देखकर ऐसा कहते हैं। (ख) उस मूर्ख के प्रति भी ऐसा कहते हैं जो अकेला होता है और मनमाना काम करता है। तुलनीय : हरि० एकला सो बेकला।

एक लिखता न सौ बकता—एक लिखने वाला सौ बकने वालों के बराबर है। (क) एक काम करने वाला सौ बक-बक करने वालों से अधिक अच्छा होता है। (ख) ज़बानी काम करने वाले सौ से एक लिखकर काम करने या लेनदेन करने वाला अधिक अच्छा समझा जाता है या अधिक फ़ायदे में रहता है।

एक लोटा सात भाई, बेरा बेरी पैखाना जाई—सात भाइयों के बीच एक ही लोटा है। बारी-बारी सभी उसी से

पाखाना जाते हैं। अर्थात् (क) आर्थिक दशा अच्छी न होने के कारण जब कई व्यक्ति विवश होकर एक ही वस्तु से अपना काम चलाते हैं तब ऐसा कहते हैं। (ख) जब किसी सम्पन्न परिवार के सदस्य भी कंजूसी के कारण कष्ट सहते हैं या एक ही वस्तु से अपना काम चला लेते हैं तब भी व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

एक वृन्तगत फल द्वय न्याय —एक डाल के दो फलों का न्याय। दे० 'एक पंथ दो काज'।

एक शेर मारता है सौ लोमड़ियाँ खाती हैं—(क) एक व्यक्ति कमाता है कई लोग खाते हैं। एक बहादुर के पीछे अनेक निर्बलों या निर्धनों की गुजर होती है। तुलनीय : हरि० एक कमावण आला सौ खावण आले; पंज० इक सेर मारदा है सौ लोमड़ियाँ खांदिया हन।

एक समय बिधना का खेल, रहा उसर में चरत अकेल, एक बटोही हर-हर कहा, ठाढ़े गिरा होस न रहा —कामचोरों के प्रति व्यंग्य से ऐसा कहते है। अर्थ यह है कि बैल अकेला ही ऊसर में चर रहा था कि एक राह चलने वाले ने हर-हर कहा तो वह 'हर' को 'हल' समझकर बेहोश होकर ऊसर मे गिर पड़ा।

एक समय में एकहि काम— (क) एक कार्य को पूरा करने के पश्चात् ही दूसरे को प्रारम्भ करना चाहिए। (ख) एक समय में केवल एक ही काम हो सकता है, दो नहीं। तुलनीय : पंज० इक वेले इक कम।

एक संबंधिदर्शनेऽन्यसम्बन्धिस्मरणम् —एक वस्तु के देखने पर उससे संबंधित अन्य वस्तुओं का स्मरण हो जाता है।

एक सवार दो घोड़ों पर सवारी नहीं कर पाता —एक घुड़सवार एक ही समय मे दो घोड़ों पर सवारी नहीं कर सकता। (क) एक ही समय मे एक व्यक्ति दो काम नहीं कर सकता। (ख) जब कोई व्यक्ति दो काम एक ही समय में करने को कहे तो असमर्थता जताने के लिए कहते हैं। तुलनीय : भीली – एक सवार बे घोड़ा नी बेहे; पंज० इक मनुख दो घोड़िया दी सवारी नईं कर सकदा।

एक सांड के हगने से गोबर का ढेर नहीं लगता— अकेला व्यक्ति कोई बड़ा काम नहीं कर सकता। किसी बड़े कार्य को करने के लिए कई व्यक्तियों का सहयोग लेना जरूरी है। तुलनीय : पंज० इक संडे दे हगन नाल गोए दा ढेर नईं लगदा।

एक साधे सब सधे, सब साधे सब जायँ— (क) केवल ईश्वर की आराधना करने से सभी देवी-देवता खुश रहते है और जो सबकी अलग-अलग पूजा-पाठ करता है वह किसी को भी खुश नहीं कर पाता। (ख) कई साधारण व्यक्तियों की अपेक्षा एक ही अच्छे व्यक्ति का साथ कर लेने से सभी काम बन जाते हैं। (ग) जो व्यक्ति एक काम को करता है उसे तो सफलता मिल जाती है, पर जो एक साथ कई कामों को करता है उसे किसी भी कार्य में सफलता नहीं प्राप्त होती। तुलनीय : अव० एकै साधे सब सधे सब साधे सब जाय।

एक सियार हुआँ-हुआँ, सब सियार हुआँ-हुआँ—किसी की बात में 'हाँ' में 'हाँ' मिलाने वालों के प्रति कहते हैं या अंधानुकरण करनेवालो के लिए कहते है। तुलनीय : छत्तीस० एक कोलिहा हुंआ-हुंआ, त सब कोलिहा हुंआ-हुंआ; पंज० इक गिदड रोण सारे रोण।

एक सिर हजार सौदा —एक आदमी पर बहुत अधिक काम लाद देने पर कहते है।

एक सुहागिन नौ लौंडे—दे० 'एक अनार सौ बीमार'।

एक से अच्छा, दो से चार- अकेला होने पर आदमी का बल आधा हो जाता है और एक साथी होने पर दुगुना। अर्थात् अकेला व्यक्ति कुछ नहीं कर पाता, कुछ करने के लिए एक से अधिक व्यक्तियों का होना आवश्यक है।

एक मे इक्कीस होते हैं थोड़े से बहुत हो जाते हैं। प्रायः किसी के एकलौते पुत्र पर यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : पंज० इक तों इक्की बणदे हन।

एक से एक आला सुब्हान रब्बिल आला- -ऐसे अवसर पर कहते है जब किसी स्थान पर नीचता मे लोग एक-दूसरे से बढ़कर हों।

एक से एक दो से ग्यारह- (क) मेल या सहयोग में बड़ी शक्ति होती है। (ख) एक व्यक्ति अकेला या निर्बल है पर दो होने से या मेल से ग्यारह हो जाते है या बड़ा बल आ जाता है।

एक से दो भले --(क) अकेले होने मे दो का रहना अच्छा है। (ख) यात्रा आदि में भी एक की अपेक्षा दो का रहना अधिक अच्छा होना है। तुलनीय : राज० एक सूं दो भला; गुज० एक थी बे भला; बुंद० एक जनें से दो भले; ब्रज० एक से दूजा भला; मेवा० एक सूं दो भला; पंज० इक नों दो चंगे।

एक से बचे, सौ से घिरे—(क) जब कोई व्यक्ति एक परेशानी से मुक्ति पाए और पुनः कई परेशानियों में उलझ या फँस जाय तो वह ऐसा कहता है। (ख) जब कोई व्यक्ति छोटी-सी विपत्ति से बचने की कोशिश में किसी बड़ी विपत्ति

में फँस जाय तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० यक रिख काडर भूड़ लूक्या तख नौ रिख लूक्या; पंज० इक तों बचे सौ तों फसे।

एक से ले, एक को दे—किसी से लेकर किसी को देना। ईश्वर के लिए कहा जाता है कि वह एक से लेकर दूसरे को देता है। तुलनीय : पंज० इस तो ले उस नूँ दे।

एक सँर दूजे तमाशा तीजे मेला चार झमेला—सैर अकेले की अच्छी होती है, तमाशा दो के साथ, मेला तीन के साथ और यदि चार हो गया तो झंझट बढ़ जाता है। आशय यह है कि दो-तीन आदमियों से अधिक हो जाने पर आनंद नहीं रहता बल्कि परेशानी बढ़ जाती है।

एक हँसना और एक दाँत निकालना—जो व्यक्ति दूसरे को प्रसन्न करने के लिए जबरदस्ती हँसे या नकली हँसी हँसे उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० एक हँसणो अर एक निकमणो; पंज० इक हस्सना अत्ते इक दंद कढना।[1]

एक हम्माम में सब नंगे—सभी जिस काम को करते हों उसके लिए कोई यदि किसी की निन्दा करे तो कहते हैं।

एक हर हत्या दो हर पाप तीन हर खेती चार हर राज—दे० 'एक हल हत्या दो हल···'।

एक हर्रे गाँव भर बीमार दे० 'एक अनार सौ बीमार'।

एक हल हत्या दो हल काज, तीन हल खेती चार हल राज—एक हल की खेती अर्थात् थोड़ी भूमि पर की जाने वाली खेती मुसीबत होती है, दो हल की खेती साधारण, तीन हल की खेती लाभदायक होती है और चार हल की खेती राज्य के समान सुखकारी है।

एक हाड़ दो कुत्ते—दो कुत्तों के बीच एक हड्डी डालें तो लड़ाई स्वाभाविक है। आशय यह है कि जब थोड़ी-सी वस्तु के चाहने वाले अधिक लोग होते हैं तो वे उसे प्राप्त करने के प्रयत्न में परस्पर झगड़ने लगते हैं। तुलनीय : अव० एकु हाड़ दुइ कूकुर; पंज० इक हड्डी सौ कुत्ते।

एक हाथ की ककड़ी, नौ हाथ का बीज—ककड़ी तो एक हाथ लम्बी है, किन्तु उसका बीज नौ हाथ का है अर्थात् काफ़ी बड़ा है। किसी वस्तु को बढ़ा-चढ़ाकर कहने पर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मैथ० एक हाथ क ककड़ी नौ हाथ का बिच्चा; छत्तीस० एक हांत खीरा के नौ हांत बीजा; पंज० इक हत्थ दी तर नौ हत्थ दा बी।

एक हाथ जिक्र पर, दूसरा हाथ फ़िक्र पर—एक हाथ से माला जपना और दूसरे से काम करना। लोक और पर-लोक दोनों पर ध्यान रखना।

एक हाथ बछिया, नौ हाथ पूँछ—(क) किसी छोटे से काम करने में बहुत समय लग जाए या बहुत हानि हो जाए तो उस काम के प्रति ऐसा कहते हैं। (ख) यदि कोई व्यक्ति ऊल-जलूल पहनावा पहने तो उसके प्रति व्यंग्य से ऐसा कहते हैं। (ग) लम्बी-चौड़ी गप्प हांकने वालों के प्रति भी व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : गढ़० बाछी चुली पूछी बड़ी; पंज० इक हथ बच्छी नौं हत्थ दुंब।

एक हाथ लुखरी नौ हाथ पूँछ—एक हाथ की लोमड़ी (लुखरी) की पूँछ नौ हाथ लम्बी नहीं हो सकती। झूठ बोलने वालों के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : गढ़० एक हाथ लुखरी नौ हाथ पूँछ।

एक हाथ लेना, एक हाथ देना—बराबर के सौदे पर या नगद भुगतान पर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० एक हाथ ले दुसरे हाथ दे; हरि० चट रोटी अर पट दाल; पंज० इक हत्थ लैणा इक हत्थ देणा।

एक हाथ से घर चले, सौ हाथ से खेती; सौ हाथ से घर जले, एक हाथ से खेती—घर-बार चलाने के लिए एक ही मालिक होना चाहिए। इसके विपरीत यदि अधिक आदमी घर के कामों में हस्तक्षेप करते हैं तो घर की अर्थ-व्यवस्था बिगड़ जाती है। खेती के लिए अधिक आदमी चाहिए क्योंकि थोड़े आदमियों से खेती नहीं हो सकती। तुलनीय : गढ़० एक हत्या घरबार सौ हत्या खेती है जौ; सौ हत्या घरबार एक हत्या खेती चल जौ।

एक हाथ से ताली नहीं बजती—झगड़े या संघर्ष में कुछ न कुछ दोष दोनों पक्षों का होता है या झगड़ा बिना दो के संभव नहीं। तुलनीय : मरा० एका हातानें टाळी वाजत नाही; गढ़० एक हाथन ताली नि बजदी; राज० एक हाथ सूँ ताली को बाजैनी; सं० एकेन पाणिना क्वापि तालिका नहि ध्वन्यते; अव० एकै हाथ से ताली नाही बाजत; हरि० एक हाथ तै हथेली नाह बाजती; मल० आरु कइ तट्टिनाल् ओसइ डंडा गुना; निमाड़ी० तालई एक हाथ सी नी बाजती; हाड़० एक हाथ सूं ताली न बाज; गुज० एक हाथे ताली न पड़े; कश्म० अकि अथअ छ नअ वज़ान चअर; बुंद० एक हात की तारी नई बजत; ब्रज० एक पाट से चले न चाखी; कन्न० औंदे कैलि चप्पाळे वारिसोदिल्ल; तेलु० ओक चैच्चि तट्टिते चप्पुडगुना; मल० रण्टु कैयुम् कूटि कूट्टि अटिच्चाले ओच्च केळक्कू; मेवा० एक हाथ सूं ताली नी बाजे· असमी० एपात् ताले नाबाजे; ब्रज० एक हात ते

तारी नायें बजै; पंज० इक हत्थ नाल ताली नईं बजदी; अं० It takes two to quarrel.

एक हाथ से देना, दूसरे हाथ से लेना—जैसी करनी वैसा फल। (क) जैसा काम किया जाता है उसका फल भी वैसा ही मिलता है, प्रायः इसका प्रयोग बुरे काम करने वाले को जब कष्ट भोगना पड़ता है तो करते हैं। (ख) नगद देकर सामान लेने पर भी कहते हैं।

एकहि बार आस सब पूजी, तब कछु कहब जीभ करि दूजी—जिसकी एक बार कहने से ही सब आशाएँ पूरी हो गई हों उसे दोबारा कहने की कोई आवश्यकता नहीं होती। लालच न करने के लिए इस लोकोक्ति का प्रयोग करते हैं।

एकहि साधे सब सधे, सब साधे सब जाय— दे० 'एक साधे सब सधे ···'।

एक ही थैली के चट्टे बट्टे—दे० 'एक थैली के चट्टे···'।

एक ही जबान पान खिलावे, एक ही जबान जूता चटावे—कोई जैसा कर्म करता हैं उसे उसी प्रकार का फल भी प्राप्त होता है।

एक हुनर और एक ऐब सब आदमियों में होता है—गुण तथा दोष मे विधाता की सृष्टि में कोई भी खाली नही है।

एक हुस्न आदमी, हजार हुस्न कपड़ा; लाख हुस्न जेवर, करोड़ हुस्न नखड़ा—(क) नखरेबाज तथा बहुत टीम-टाम मे रहने वाली स्त्रियों या वेश्याओं के लिए कहा जाता है। (ख) आदमी की अपनी सुन्दरता तो होती ही है, पर कपड़े-जेवर आदि से सुन्दरता में अधिक चमक आ जाती है।

एकांत बासा, झगड़ा न झांसा—अकेले रहना सबसे अधिक शांतिप्रद है। ऐसे रहने मे झगड़े आदि की कोई भी संभावना नहीं रहती। तुलनीय : माल० एकांतवासा ने झगड़ा ने झांसा; अव० एकांत बासा न झगरा न झांसा।

एकाकिनी प्रतिज्ञा हि प्रतिज्ञातं न साधयेत्—केवल प्रतिज्ञा से कथित एवं अभीष्ट कार्य की सिद्धि नही होती। भाव यह है कि कोई कार्य मात्र प्रतिज्ञा करने से पूर्ण नहीं होता बल्कि उसके लिए श्रम की आवश्यकता होती है। जो व्यक्ति किसी कार्य को करने की केवल प्रतिज्ञा करता है और उसे पूर्ण नही करता उसके प्रति ऐसा कहते हैं।

एकादशी के घर, द्वादशी पाहुनी—एकादशी के दिन लोग व्रत रखते हैं और द्वादशी के दिन अच्छा भोजन बनाकर खाते हैं। एकादशी के घर जब द्वादशी मेहमान बनकर पहुँच जाय तो परेशानी उत्पन्न हो जाती है। आशय यह है कि (क) जब किसी ग़रीब व्यक्ति के यहाँ कोई सम्पन्न व्यक्ति पहुँच जाता है तो वह ग़रीब उसकी सेवा में परेशान हो जाता है। (ख) जब कोई व्यक्ति बहाना बनाकर अच्छे-अच्छे पदार्थ खाता-पीता है तब भी व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० इग्यार सरै घरै बारस पावणी; पंज० कादसी दे कर दुआदसी परौणी।

एकादशी के घर शिवरात—(क) भूखे के घर भूखे के जाने पर कहते हैं। (ख) जैसे को तैसा मिलने पर कहते हैं।

एका बड़ी चीज—दे० 'एके में बहुत बल है'।

एकामसिद्धिम् परिहरतो द्वितीयापछते—एक असिद्धि (भ्रान्ति) से बेचते हैं, इतने में दूसरी आ जाती है। जब किसी पर एक के बाद एक विपत्ति आती है तब ऐसा कहते हैं।

एकाहारी सदा सुखारी—संयम से रहने वाला सदा सुखी रहता है।

ए कुक्कर तू दूबर काहीं, दस-दस घर के आवा जाहीं—(क) स्वार्थवश घर-घर दौड़ने से इज़्ज़त नही रहती। (ख) बहुत दौड़ते रहने से आदमी दुबला हो जाता है। (ग) अधिक लोभी-लालची व्यक्ति सुखी नही रहता।

एके भले सपूत तें सब कुल भलो कहाय—कुटुम्ब में यदि एक पुत्र भी लायक़ हो जाय तो पूरे खानदान की इज़्ज़त ऊंची कर सकता है। तुलनीय : सं० 'एको वरः गुणी पुत्रो निर्गुणै कि शतैरपि एकश्चन्द्रो जगच्चक्षुर्नक्षत्रै कि प्रयोजनम्; पंज० इक चंगे पुनर तो मारा टब्बर (कुल) चंगा आखे।

एके में बहुत बल है एकता में बहुत बल होता है। तुलनीय : हरि० इक्का बादशाहन मार दे से; रा० जाडा जका सदा ही जबरा; सं० सघे शक्तिः कलौयुगे; अं० Union is strength.

एकै साधे सब सधे, सब साधे सब जाहि—दे० 'एकहि साधे सब···'।

एको देवः केशवो वा शिवो वा एक ही देवता की आराधना करनी चाहिए चाहे कृष्णजी हों अथवा शंकरजी एक ही की साधना उचित है।

एक गुन रूप सहस गुन वस्त्र—दे० 'एक नूर आदमी हजार···'।

ए छूछा, तो के के पछा—छूछे अर्थात् निस्सार, धनहीन या नगण्य व्यक्ति की कोई भी पूछ नहीं करता।

उसकी क़द्र कोई नहीं करता। तुलनीय : भोज० छूंछारे तोहि कवन पूछा; मग० छूछा रे तोरा कउन पूछा; मैथ० ऐ छूंछा तोके के पूछा।

एड़ी रगड़ी और छोरी बिगड़ी -एड़ी रगड़ी अर्थात् एड़ी को पत्थर पर रगड़कर साफ करने वाली लड़की या औरत चरित्र-भ्रष्ट हो जाती है। हमारे गाँवों में साफ-सुथरे रहने और साफ कपड़े पहनने वालों पर भी लोग उँगली उठाने लगते है। तुलनीय : मेवा० एड़ी रगड़ी अर बहू बगड़ी; पंज० अड्डी रगड़ी कुड़ी विगड़ी।

एड़ी रगड़ी, बहू बिगड़ी ऊपर देखिए।

एरोके चैंरो नौआ के बराहिल -गुलामी करना और नाई के पैर दबाना। अर्थात् जब विवशतावश किसी नीच व्यक्ति की सेवा करनी पड़ती है तब ऐसा कहते है।

एवज़ मावज़ गिला नदारद मावज़ा मिल जाने पर या बदला चुका लेने पर शिकवा-शिकायत कैसी ?

एहसान लीजे जहान का, न एहसान लीजे शाहजहान का। अर्थात् संसार के विरुद्ध जाया जा सकता है पर ईश्वर के विरुद्ध नहीं जाना चाहिए। तुलनीय : पंज इहसाण लवो जहानदा न लवो शाहजहान दा।

एहि तन कर फल विषय न भाई --मनुष्य को शरीर धारण करने पर केवल विषयवासना में ही लिप्त नहीं रहना चाहिए।

एहि तें अधिक धरमु नहिं दूजा, सादर सासु ससुर पद पूजा -स्त्री के लिए सास-ससुर की सेवा से बढ़कर और कोई दूसरा धर्म नहीं है। आशय यह है कि औरतों को अपने सास-ससुर की अच्छी तरह सेवा करनी चाहिए। तुलनीय : पंज० सस सोहरे दे पैरी पैण तो बद के दूजा कोई तरम नईं है।

एहि ते कौन व्यथा बलवाना, जो दुःख पाइ तजहिं तनु प्राना --जब कोई बहुत बड़ी विपत्ति या दुःख आ जाय और उससे निकलने की कोई राह न सूझे तो कहते हैं।

ऐ

ऐंचन छोड़ घसीटन में पड़े --किसी काम को सुलझाने के प्रयत्न में स्वयं उलझ जाने पर कहते हैं। तुलनीय : मरा० पेंच सोडवायला गेले, फरफटण्यांत सांपडले।

ऐंठन दो दिन ही रहती है---अथात् गर्व अधिक समय तक नहीं रहता। जब कोई व्यक्ति बहुत अकड़ तथा गर्व से रहता है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : हरि० ऐंडापना दो दिन चाला करै से; पंज० आकड़ मत्ते दिनां तक नईं रैंदी।

ऐ कुक्कुर तू दूबर काही, दुइ घर के आवा जाही---दे० 'ए कुक्कुर तू दूबर ...'।

ऐ छूछे तुम्हें कौन पूछे --ऊपर देखिए।

ऐने के टैंने, टैंने के टिटोर (क) बहुत दूर की रिश्ते-दारी के प्रति कहते हैं, क्योंकि उनसे कोई विशेष संबंध नहीं रखा जाता। (ख) मां-बाप पर ही संतान के गुण-दोष निर्भर करते हैं। तुलनीय : राज० आणदी री जाणदी र भाणी वाई नांव।

ऐ ज़र तू ख़ुदा नेई-ओ-लेकिन बख़ुदा सत्तारे-उयूब-ओ-क़ाज़ी-उल-हाजाती - ऐ धन तू ख़ुदा तो नहीं है लेकिन क़सम है ख़ुदा की तू अवगुणों को छिपाने वाला और आवश्यकता पूरी करने वाला है जो ईश्वर के ही गुण हैं। माया के महत्त्व पर कहते हैं।

ऐब करने को भी हुनर चाहिए --बुरा काम करने के लिए भी होशियारी की जरूरत होती है। बुद्धि की हर तरह के कार्य के लिए आवश्यकता पड़ती है। (क) जब कोई व्यक्ति कोई बुरा कर्म करता है और उसका रहस्य खुल जाता है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। (ख) जब कोई बुरा कर्म करके उसे छिपा लेता है तब वह ऐसा कहता है। तुलनीय : हरि० चोरी करती हाणा भी दिल चाहिए से, अकल तां ही बी अकल की जरूरत हो से; मरा० खोडसाल-पणा करायला सुद्धां कला (डोकें) लागते; मल० तेट्टु चेय्यानुम् कौशलम् वेणम्; पंज० पैंडे कंम करण लई वी अक़ल दी लोड़ है।

ऐबी टेढ़े होते हैं --ऐबी (काने, लंगड़े आदि) बड़े दुष्ट होते है। तुलनीय : असमी- कणा कुजा मेङुर, इतिनि हारा मर लेङुर ह; सं० बक्राः बहु पापिकाः ; पंज० पैंड़े डीगे हुंदे हन।

ऐ भेड़िए ! बकरी चराएगा ? मेरा काम ही क्या है ?— भेड़िए से किसी ने पूछा --तू बकरी खाएगा ? उसने उत्तर दिया -मेरा काम ही क्या है ? अर्थात् किसी की रुचि के अनुकूल जब कोई वस्तु दी जाती है तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० ए हुंडार बकरी चरइब नड हमार कामे कवन ह; पंज० ए भेड़िए बकरी चारेंगा ? साड़ा कम ही की है।

ऐ मंगमुड़नी तू ही कौन मांग सवारे है ?—एक स्त्री जिसके सिर पर बाल नहीं हैं, उसे कोई मंगमुड़नी कहकर बुलाती है तो वह कहती है कि तुमने कौन माँग संवारी है ?

अर्थात् तुम भी तो फूहड या गंदी ही हो। जब कोई व्यक्ति स्वयं बुरा हो और अपनी बुराई पर कोई ध्यान न दे तथा दूसरे बुरे व्यक्तियों की खिल्ली उड़ावे तब ऐसी स्थिति उत्पन्न होती है। तुलनीय· पंज० ए गंजो तूं केड़ी मांग कडी है।

ऐ मियां एढ़ो तुमसे हम टेढ़ो —अर्थात् ऐ धूर्त मैं तुमसे कम बदमाश नहीं हूँ। जब एक से बढ़कर एक दुष्ट मिल जाते है तब कहते हैं। तुलनीय: भोज० ए मियां एढ़ हम तोहरो टेढ; पंज० ए पैंडे मियां तेरे कौलों आंसी पैड़े।

ऐ मेरी लाखी तूने मांगने से भी राखी--ऐ मेरी लाखी! (लाखों की मालकिन) तुमने तो मुझे माँगने से भी वंचित कर दिया। अर्थात् जब कोई व्यक्ति किसी कार्य को पूरा करने का वचन देकर उसे पूरा नहीं करता तो उस पर यह व्यंग्य किया जाता है। तुलनीय: हरि० इरी मिरी लाक्खी, तैंन मांग्गण तै बी राक्खी।

ऐ मेरे अगले, मनमाने सो कर ले--स्त्री अपन पति द्वारा परेशान किए जाने पर कहती है। तुलनीय: पंज० ओ मेरे अग्गे वाले जी बिच आंदा मो कर लै।

ऐ मेरे करम, जहां टटोलो वहीं नरम--जब किसी भी काम में भाग्य साथ नहीं देता, हर जगह हानि ही हानि होती है। तब कहते हैं। तुलनीय· अव०हाय मोर करम, जहाँ छुवौं हुंअई नरम; पंज० हाय मेरे करम जिथो दिखो उथो नरम।

ऐरे गैरे नत्थू खैरे-- देखिए नीचे।

ऐरे ग़ैरे पंच कल्यानी-- ऐसे नगण्य या निरर्थक मनुष्य के लिए कहते हैं जिसका कुछ भी मान न हो। तुलनीय: अव० ऐरे गैरे पच कलिआनी, पंज० ऐरे गैरे पंज कलयाणे।

ऐरे ग़ैरे फस्ल बहुतेरे-- ऊपर देखिए।

ऐ रौशनी-ए-तब्अ तो बर मन बला शुदी—इस कहावत का प्रयोग ऐसे अवसर पर करते है जब किसी की बुद्धिमत्ता और योग्यता उसके लिए दुःख या विपत्ति का कारण बन जाए।

ऐसन बुड़बक कौन, जो खाते नहीं अघाय—बेवक़ूफ़ से बेवक़ूफ़ भी पेट भर खा लेने पर और नहीं खाता। अर्थात् भोजन उतना ही करना चाहिए जितना पेट में समाय।

ऐसन सुहाग मोरा, नित उठ होला—(क) ऐसे शुभ कर्म तो यहाँ सर्वदा होते है। कोई नई बात नहीं है। (ख) ऐसे ही शुभ दिन हमेशा आते रहें।

ऐसन सुहाग मोरा, रात-दिन होला—ऊपर देखिए।

ऐसा अच्छा होता तो ब्याह में नहीं बनता—यदि ऐसा अच्छा अन्न होता तो इसे विवाह आदि शुभ अवसरों पर ही न पकाया जाता। इस लोकोक्ति में मूर्ख या दुष्ट व्यक्ति के प्रति व्यंग्य है। अर्थात यदि वह चालाक या सज्जन होता तो उसे अच्छे समाज में स्थान मिल जाता पर वह तो निरा मूर्ख या दुष्ट है उसकी कहीं पर पूछ नहीं है। तुलनीय: हरि० इसे चोळे भल्ले हों, तै ब्याह मैं ए रंधें; पंज० इस तों चंगा हुंदा ते वयाह बिच नहीं रिनदे।

ऐसा काम हमेशा कर, जिसमें न होवे कुछ भी डर—अर्थात जिस काम में कुछ भी डर हो उसे करना ठीक नहीं। तुलनीय: पंज० इहो जिहा कम सदा कर जिदे बिच कोई डर न होवे।

ऐसा किया दिल गुरदा, कि रुपया किया खुरदा--कंजूसों के प्रति कहते है। शब्दार्थ है, 'ऐसी उदारता की कि रुपया भुना डाला।'

ऐसा गया जैसे महफ़िल से जूता--दे० ऐसे गये जैसे...'।

ऐसा चाटा कि धोए का चाचा--(क) बिल्कुल ही साफ़ कर देने पर कहते हैं। (ख) किसी का धन बिल्कुल खा जाने पर भी कहते हैं। तुलनीय: पंज० इवें चट्या जिवें तोते दा कपड़ा। (चाचा= बढ़कर)

ऐसा चूड़ा क्यों कूटे जिसे खाते समय बीनना पड़े--किसी ऐसे काम की ओर लक्ष्य करके कहा गया है जिसके करने से आगे चलकर कष्ट उठाना पड़े या पुन. उसमें सुधार करना पड़े। तुलनीय: मैथ० एहन चूड़ा कूटब किय धान बीछि-बीछि खायब किय।

ऐसा जैसे रुपए के टके भुना लिए—जब कोई कार्य बहुत आसानी से हो जाता है तब ऐसा कहा जाता है। तुलनीय: पंज० इवे जिवें रुपै दे टके बना लये।

ऐसा पुत्र क्या मछली मारेगा और मां क्या रस पकायेगी?—किसी निकम्मे पुत्र की कमज़ोरी की ओर लक्ष्य करके ऐसा कहते है। तुलनीय: मग० अइसन पूत मारिन्हे मछरी अम्मा लगौती झोर; भोज० अइसन लइका का मछरी मारी आ का ओकर माइ जूस लगाई; पंज० इहो जिहा पुतर की मच्छी मारेगा अते मां केड़ा रस रिनेगी।

ऐसा भी क्या सच, जहां बोले वहीं तमाचा खाय—किसी नीच व्यक्ति का परिहास करने के लिए ऐसा कहते हैं जो हर जगह अपमानित होता रहता है। तुलनीय: पंज० इहो जिहा वी सच की जिथे बोले उथे चंड खावे।

ऐसा यह संसार है जैसा सेमर फूल—जिस प्रकार सेमर का फूल कुछ समय के लिए काफी अच्छा लगता है और फिर नष्ट हो जाता है उसी प्रकार संसार की वस्तुओं

और प्राणियों का आकर्षण और गतिविधियां भी कुछ समय बाद समाप्त हो जाती हैं। इस लोकोक्ति में संसार की वस्तुओं और प्राणियों की क्षणभगुरता की ओर संकेत किया गया है। तुलनीय : पंज० इह जग सेमर दे फुल बरगा है।

ऐसा बैसा भाता नहीं खाने-मलूका आता नहीं—जो उपलब्ध है वह पसंद नहीं और शाही खाना भाग्य में नही है। दरिद्रता में राजसी रुचि और शौक़ रखने वाले के प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

ऐसा व्यापार साहु न करे, दाना खाय लीद हग भरे—बनिया घोड़े का व्यापार नही करता क्योंकि घोड़ा बैठ कर दाना खाएगा और उसके बदले में लीद देगा। आशय यह है कि बनिया कोई ऐसा काम नही करता जिसमें उसे हानि की संभावना हो।

ऐसा सोना जारिए जिससे फाटे कान—ऐसे सोने को जला देना चाहिए जिससे कान फटता हो। आशय यह है कि जिस वस्तु या व्यक्ति से नुक़सान हो उसे त्याग देना चाहिए चाहे वह कितना भी मूल्यवान या अपना नज़दीकी क्यों न हो। तुलनीय : पंज०इहो जिहा सोना फूक देओ जिस दे नाल कन फटण।

ऐसा ही चूतड़ रहेगा तो सैकड़ों धोतियां फटेंगी—यदि चूतड़ इसी प्रकार के रहेंगे तो बहुत-सी धोतियां फटेंगी। यदि इसी तरह काम करते रहे तो सदा हानि उठाते रहोगे। जो व्यक्ति समझाने पर न समझे और हानि हो जाने पर रोए-पीटे उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : अव० अइसेन चूतर अहै तौ सैकड़न धोती फाटी; पंज० इहो जिहा टुआ रहेगा तो सैकड़ों तोतियां फटणगियां।

ऐसा ही चूतड़ है तो कितने ही लहंगे फटेंगे—ऊपर देखिए। तुलनीय : भोज० एइसने चुत्तर रही त केतने लहंगा फाटी।

ऐसा होता कंत तो क्यों छोड़ते अंत—यदि ऐसे ही पति होते तो अंत में क्यों छोड़ कर भाग जाते। यदि कोई व्यक्ति किसी दोषी की तारीफ़ करे और उसे निर्दोष बताए तो व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : पंज० इहो जिहां हुंदा कर-वाला ते कैनू छडदे ओनृ।

ऐसा होता ज़र क्यों छोड़ते घर—यदि संपत्ति होती तो घर छोड़कर परदेश क्यों जाते? जो व्यक्ति परदेश में अपने को बहुत धनवान बताए तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० इहो जिहा हुंदा पैहा ते कर कैनू छड़दे।

ऐसी ऐसी छटी बल-बल जायँ, नौ-नौ पतरीं भटाइन खाँय—यह एक प्रकार का आशीर्वाद है। ऐसी छठी (पुत्र उत्पन्न होने के छठे दिन होने वाला उत्सव) रोज़ हो और भटाइन को एक नहीं नौ-नौ पत्तल मिले।

ऐसी करना नकल, न चले किसी की अकल—नक़ल इस तरह करनी चाहिए कि लोग उसे समझ न सकें कि यह नक़ल है। तुलनीय: हरि० नकल करण मं भी अकल चाहिए; पंज० इहो जिही करो नकल जिथे किसे दी नाँ चले नकल।

ऐसी कही कि धोए न छूटे—जब कोई व्यक्ति किसी से इस तरह की बात कहता है जिससे उसकी आत्मा को गहरी चोट पहुँचती है तब ऐसा कहते है। तुलनीय : हरि० कालजे मं चुभणा; पंज० इहो जिहा आखो की तोण नाल वी नां छडोये।

ऐसी कहो न बात कि सबका हिले हाथ—ऐसी बात नहीं कहना चाहिए कि कोई उंगली उठावे। जब कोई उलटी बात कहता है तो उसके शिक्षार्थ ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० गल इहो जिही करो जिस दे नाल सारियां दा हथ हिल्ले।

ऐसी की नक़ल, न चले किसी की अक़ल—नक़ल को बिलकुल असल-सा बना देने पर कहते है। तुलनीय पंज० इहो जिहे दी नक़ल जिथे किसे दी अकल न चले।

ऐसी क्या तेरे ही तले गंगा बह रही है—तुझमें क्या विशेषता है? किसी के स्वय को बहुत प्रभावशाली या शक्तिशाली बताने पर उससे व्यंग्य में कहा जाता है। अर्थात तू ही ऐसा सामर्थ्यवान नहीं, दूसरे भी बहुत से तुझसे बढ़कर हैं।

ऐसी क्या क़ाजी की गधी चुराई है?—मैंने ऐसा कौन सा अपराध किया है?

ऐसी खेती करे मोर भतरा, एक दिन खाय तीन दिन अंतरा—आर्थिक स्थिति खराब होने पर, परेशानियों से ऊबकर वृद्धावस्था में स्त्री अपने निकम्मे या आलसी पति से व्यंग्य में ऐसा कहती है। तुलनीय : अव० ऐसन खेती करै मोर भतरा, एकु दिनु खाय तीनु दिनु अंतरा।

ऐसी गत संसार की ज्यों गाड़र की ठाट—जिस प्रकार भेड़ बिना देखे ही एक-दूसरे के पीछे चलती रहती है उसी प्रकार मनुष्य भी बिना सोचे-समझे एक-दूसरे के पीछे चलते हैं। लोगों की अंधानुकरण की प्रवृत्ति पर ऐसा कहते हैं।

ऐसी गाढ़ी पीजिए ज्यों मोरी की कीच, घर के जाने मर गये आप नशे के बीच—बहुत गहरी भाँग पीने वालों पर व्यंग्यपूर्ण मसल है। वे पीकर मरे से हो जाते हैं।

ऐसी तेरे ही तले गंगा बहै है?—बहुत अहंकार करने वाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : हरि० इसी के तेरेए ताण

गाड़ी चालै सै; पंज० तेरे थले ही ते गंगा बगदी है।

ऐसी दोस्ती नहीं करते—आशय यह है कि (क) जिस काम मे अपनी हानि हो या जिसमें झंझट हो उसे नहीं करना चाहिए। (ख) जब कोई व्यक्ति किसी से माथ करके बाद में उसके साथ चाल चलने लगता है तब वह ऐसा कहता है। तुलनीय : पंज० इहो जिहो मित्तरता नई करदे।

ऐसी बहू सयानी, कि पेचा माँगे पानी—ऐसी होशियार बहू है कि पानी भी उधार माँग लेती है। बहुत चालाक व्यक्ति पर कहते हैं। तुलनीय : पंज० बौरी इहो जिहो सयानी कि मंग के पीवे पाणी।

ऐसी मेख मारी कि पार निकल गई—(क) जब एक मनुष्य से दूसरे को हानि पहुँचे तब कहते हैं। (ख) किसी को गहरी चोट पहुँचाने पर भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० मार ऐसी मारो की जान निकल जावे।

ऐसी रहतीं कातने वाली तो क्या घूमती टाँग उघारी—दे० 'ऐसी होती कातनहारी...'।

ऐसी लक्ष्मी से अकेला भला—किसी दुष्ट या कर्कश स्त्री के लिए व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मग० अइसन लक्ष्मी से निगोड़े भाला; भोज० अइसन मेहरारू से बे मेहररुए क नीक; पंज० इहो जिही लछमी नों कला पला।

ऐसी लटकी कि भुई में पटकी—ऐसी अनादृत हुई कि पृथ्वी में धँस गई। जब कोई किसी को बहुत नीचा दिखाता है जिससे वह काफ़ी लज्जित हो जाता है तब ऐसा कहते है।

ऐसी सुहागिन से तो रांड़ ही भली—(क) जिस काम में कोई लाभ न हो उसे करने से न करना ही अच्छा है। (ख) जब कोई स्त्री अपने नालायक पति के कुकर्मों से तंग आ जाती है तब वह ऐसा कहती है। तुलनीय : पंज० इहो जिही सुहागण नों रंडी चंगी।

ऐसी होती कातनहारी, काहें फिरती मूंड़ उघारी—दे० 'ऐसी होती कातनहारी तो क्या...'।

ऐसी होती कातनहारी तो क्या फिरती गांड़ उघारी—नीचे देखिए।

ऐसी होती कातनहारी, तो क्या फिरती टाँग उघारी—(क) जब कोई व्यक्ति मूर्ख होते हुए भी अपने को चालाक समझता और छोटी-छोटी बातों में दूसरों से राय लेता रहता है तब उसकी उस समझदारी पर व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। (ख) जब कोई कामचोर व्यक्ति बुरी दशा में रहते हुए भी अपने को बहुत परिश्रमी बतलाता है तो उसके प्रति भी व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० अस होतिव ढेरिया तो काहे फिरतिउ गांड उघेरिया; बुं० ऐसी होती कातनहारी, तो काम-खाँ फिरतीं आंग उघारीं; छत्तीस० अइसन होतिस कातनहारी, काहे फिरतिस टांग उघारी। पंज० इहो जिही होदी कातनहारी तों टगचुक के कँनू फिरदी

ऐसी होती कातनहारी तो का रहती जांघ उघारी—ऊपर देखिए। तुलनीय : अव० ऐसी होती कातनहारी तौ का रहती गांडि उघारी।

ऐसी होती कातनहारी, तो क्यों फिरती मारी-मारी—ऐसी ही काम करनेवाली होती तो मारी-मारी क्यों फिरती, अर्थात उसकी पूछ क्यों न होती। आशय यह है कि निकम्मा आदमी ही मारा-मारा फिरता है। तुलनीय : पंज० इहो जिही हुंदी कातनहारी ते कँनू फिरदी मारी-मारी।

ऐसे आदमी के दीदे में साठी की पीच पसा दीजिए—बुरी नज़र वाले आदमी के लिए कहते है। तुलनीय : पंज० बुरे आदमी दा मुह काला, पँड़े मनुख का मुह काला।

ऐसे ऊत रिवाड़ी जाएँ, आटा बेचें गाजर खाएँ—रिवाड़ी में गेहूं अधिक पैदा होता है अत: वे उसे बाहर भेजते हैं और उसके बदले बाहर की नगण्य चीज़ों का इस्तेमाल करते हैं। यह ऊपर ही व्यंग्य है। अन्य मूर्खो पर भी कहा जाता है जो ऐसा करते हे। तुलनीय : पंज० इहो जिहे ऊत रिवाड़ी जाण आटा बेच के गाजर खाण।

ऐसे ऐसे पूत क्या बनिज करेंगे, जो गुड़ देकर पीना खायेंगे—अर्थात व्यापार वही कर सकता है जो सदा अपने स्वार्थ पर दृष्टि रखे और यारी-दोस्ती को ताक पर रख दे। तुलनीय : अव० अस अस पूत बनीजैं जइहै, जे गुड़ दइकें पीना खइहैं।

ऐसे कौन लोभ नहिं जाके—ऐसा कौन व्यक्ति है जिसके अन्दर लालच न हो अर्थात कोई नहीं। ससार के सभी व्यक्तियों मे थोड़ा या बहुत लोभ अवश्य होता है। तुलनीय : मरा० ज्याला लोभ नाही असा कोण आहे; पंज० ओह मनुख नई जिस दे विच लालच नई।

ऐसे क्या लगन बिगड़ता है ?—जब कोई साधारण व्यक्ति बिना कारण ही किसी शुभ कार्य में रूठ जाय तो उसकी उपेक्षा करने के लिए कहते है। तुलनीय : राज० ईसा कांई बात बिगड़े है; पंज० इस दे बगैर कैड़ा बयाह नई हुंदा।

ऐसे गये जैसे गदहे के सिर से सींग—किसी के एकाएक या बिना बताए जाने पर कहते हैं। तुलनीय : अव० अस बिलानिन जस गदहा के मूंड़ से सीग; हरि० इसे गए ज्यु कर गदहे के सर तै सीग; पंज० इदां गये जिदां खोते दे सिर उतों सिग; ब्रज० ऐसे जाओगे जैसे गधा के सिर ते सींग

गये।

ऐसे गये जैसे महफ़िल से जूता—किसी के चुपके से जाने पर कहते हैं। महफ़िल में जाते समय लोग जूता प्रायः बाहर उतार जाते हैं अतः वह ग़ायब हो जाता है और उसका पता भी नहीं चलता। इसी आधार पर यह कहा गया है। तुलनीय : मरा० एसे नाहीं से झालांत, जसे समेंतून जोडे; पंज० इदां गये जिदा महफिल बिचों जुती।

ऐसे घूमता है जैसे नाई बिगड़े ब्याह में—जिस प्रकार नाई बिगड़े हुए विवाह में इधर से उधर भाग-दौड़ करता है उसी प्रकार घूम रहा है। जो व्यक्ति बेकार मे ही दौड़-धूप करे उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० कियां फिरै जाण बीगड्योडे ब्यांव में नाई फिर; पंज० इदां फिरदा है जिवें नाई बिगडे दे वयाह बिच; ब्रज० ऐसे डोलै जैसे बिगरे ब्याह मे नाऊ।

ऐसे चलरे कागा, जैसे चलें तेरे भाई बबा—ऐ कौव ! तुम उसी प्रकार चलो जैसे तुम्हारे-माता पिता चलते है। (क) जब कोई व्यक्ति झूठा दिखावा करता है तो उसके प्रति व्यंग्य मे ऐसा कहते है। (ख) इस लोकोक्ति में परम्पराओं पर बल दिया गया है। इसमें यह कहा गया है कि व्यक्ति को अपने कुल, जाति या धर्म की मान्यताओं का त्याग नही करना चाहिए बल्कि उनका अनुकरण या पालन करना चाहिए। तुलनीय : कौर० ऐसे चल रे कागा, जैसे चले तेरे भाई बाब्बा; पंज० इदां चल कां जिवे तेरे पिओ मां।

ऐसे चूतिए शिकारपुर में मिलेंगे—नीचे देखिए।

ऐसे चूतिए शिकारपुर में रहते होंगे—मै मूर्ख नही हूँ। यहाँ आपकी दाल न गलेगी। ऐसे मूर्ख कही मूर्खों की बस्ती में मिलेगे। (शिकारपुर बलिया आदि की तरह अपनी मूर्खता के लिए प्रसिद्ध है) तुलनीय : राज० इसा चूतिया सिकारपुर म लाधसी; हरि० इसे चूतिया सिकारपुर में मिल्लेंगे; पंज० इहो जिहे चूतिये सिकारपुर बिच रेदे होणगे।'

ऐसे जंगल में चावल—किसी असम्भव बात के सामने आने पर कहते है। इसमें अवश्य कोई राज़ है। एक बार एक जंगल में कबूतरों का एक गिरोह उड़ रहा था। उनमे से एक ने देखा कि चावल बिखेरे गए हैं। फिर क्या था सब के सब उतर पड़े और बहेलिए की बन गई। तात्पर्य यह कि किसी असम्भव बात पर जल्दी से विश्वास न कर लें। बुद्धि से काम लेना चाहिए। वहां कुछ भेद अवश्य होता है। तुलनीय : पंज० इदां जिवें जंगल बिच चौल।

ऐसे जीने से मर जाना अच्छा—बहुत दुःख पड़ने पर लोग ऐसा कहते हैं या जब व्यक्ति परेशानियाँ झेलते-झेलते ऊब जाता है तब ऐसा कहता है। तुलनीय : गढ़० इता बचड़ चुली मन्नो ही भले; भोज० ऐसन जियला से मर गइल अच्छा; अव० अस जियब से मर जाब अच्छा अहै; हरि० इसे जीणे तै न मरण अच्छा; पंज० इदां जीण तो मर जाण चंगा।

ऐसे तो जंगल के कांटे भी न हों—जैसे हमारे घर के हैं वैसे तो जगल के भी न हों। जब कोई व्यक्ति अपने बच्चों या परिवार के सदस्यों के कामों से दुखी हो जाता है तो ऐस कहता है। तुलनीय : राज० इसो बाड़नै कांटो ही ना दिया; पंज० इहो जिहे जगल दे कंडे वी न होण।

ऐसे तो मेरी जेब में पड़े रहते हैं ऐसे तो मेरे नाखूनों में पड़े रहते हैं—मैं तुमसे कहीं बढ़कर चालाक हूँ, तुम्हारी चाल में नहीं आ सकता

ऐसे देखता है जैसे कानी भैस क़साई को देखती है—जैसे कानी भैंस एक आँख से क़साई को घूर के देखती है वैसे ही देखता है। जब कोई व्यक्ति किसी को बहुत क्रोध से देखे तो व्यंग्य से ऐसा कहते है। तुलनीय : पंज० एसरां देखदाए जिसरा काणी मज्ज कसाई नू देखदी है।

ऐसे देखता है जैसे कौआ निबोली की ओर देखता हो—कौआ निबोली की ओर ललचाई नजर से देखता है। जो व्यक्ति किसी दूसरे की वस्तु को ललचाई नज़र से देखता है उसके प्रति व्यग्य से कहते है। तुलनीय : राज० कियां देखै जाणै कागलो नीबोली का नी देखै; पंज० इदां देखदाए जिवें कां करेले नू देखदा है

ऐसे देखता है जैसे पागल बाजार को देखता है—किसी वस्तु को एकदम भौंचक्का होकर या आश्चर्यचकित होकर देखने वाले के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० कियां देखै जाणै गैली बजार कानी देखे; पंज० इदां देखदा है जिवें पागल बजार नू देखदा है।

ऐसे नहीं मरता तो जहर से क्या मरेगा ?—जो व्यक्ति बात से नहीं मरता वह किसी तरह नही मरता। बेशर्म लोगों के प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० इदां नई मरदा ते जहर नाल की मरेगा।

ऐसे नाचता है जैसे दालमंडी की रंडी—ऐसे नाच रहा है जैसे दालमंडी की रंडी। बहुत ही चंचल व्यक्ति के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० कियां नाचै जाणै हंसराज री घोड़ी नाचै; पंज० इदां नचदा है जिवें दालमंडी दी रंडी।

ऐसे पत्थर चिकने हों तो उन्हें कुत्ते ही न चाट लें— अर्थात् दुष्ट व्यक्ति का ऊपरी व्यवहार भी आडम्बर ही होता है, क्योंकि यदि दुष्ट भी सज्जन की भाँति व्यवहार करे तो उसे दुष्ट क्यों कहा जाए ? तुलनीय : हरि० इसे पात्थर चीकणे हों, तै कुत्ते ए ना चाट्य ज्यां; पंज० इदां बट्टे चिकने होंण तां उनांनूं छन्ते नां चट लेण।

ऐसे पर ऐसी तों सजे-संवरे कैसी—यदि कोई स्त्री बिना शृंगार किए ही बहुत सुंदर लगे तो इस लोकोक्ति का प्रयोग करते हैं। तुलनीय : कन्नौ० ऐसे पै ऐसीं; तौ काजर दये पै कैसी।

ऐसे बूढ़े बैल को कौन बांध भुस देय—(क) बूढ़े, अपाहिज, या नाक़ाबिल मनुष्यों को भला कौन खिला सकता है? (ख) बिना स्वार्थ कोई कुछ नहीं देता। तुलनीय : मरा० अमल्या म्हातार्‍या बैलाला बांधू ठेवून कोण कडबा घालणार; पंज० बुडडे ढग्गे (बलद) नू बन के पी तूड़ी कौन देगा।

ऐसे मियां रंगरेज होते तो अपनी ही दाढ़ी रँगते—ऐसे ही करने वाले होते तो अपना ही काम नहीं कर लेते। जब कोई व्यक्ति अपना कार्य न कर सके और दूसरे का करने जाय तो ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० अस मियां रंगरेज होतेन तौ आपन डाढ़ी रंग लेतेन; पंज० मिया इहो जिहे रंगरेज हुंदे तां अपनी दाडी न रंगदे।

ऐसे रहे जैसे आटे में नमक—(क) जिस प्रकार आटे में नमक मिला रहता है और उसे अलग करना असंभव होता है उसी प्रकार लोगों मे मिलजुलकर रहना चाहिए। जो व्यक्ति सब मे मिलजुलकर रहता है वह सदा सफलता, सुख और लाभ प्राप्त करता है। (ख) झूठ के विषय में भी कहा जाता है कि उतना ही झूठ बोलना चाहिए जितना 'आटे में नमक'। तुलनीय : भीली- आटा मांये लूण मले जेम मल्‍जि रयो हू फायदो है; पंज० इदां रहे जिवें आटे विच लूण।

ऐसे सुहाग से रंडापा भला—(क) वह स्त्री कहती है जिसका पति विदेश ही में रहे या उसमे एकचित्तता का अभाव हो। (ख) किसी भी प्रकार अपने पति से घबराकर स्त्री कहती है। तुलनीय : अव० ऐसेन सोहाग से रंडापै भल, पंज० इहो जिहे सुहाग तों रंडापा चंगा।

ऐसे ही तुमने सोंठ बेची है—बिना कुछ किए किसी से यदि कोई अधिकारपूर्वक कुछ माँगे तो माँगने वाले के प्रति कहा जाता है।

ऐसे होते कंत, तो काहे जाते अंत—यदि हमारे पतिदेव काम लायक़ होते तो अन्यत्र क्यों जाते ? अपने किसी निखट्टू आदमी के प्रति कहा जाता है।

ऐसे होते तो ईद बक़रीद को काम आते—निकम्मे या नालायक आदमी को कहते है।

ऐसे कौन लोभ नहिं जाके—ऐसा कौन है जिसके अंदर लोभ न हो ? अर्थात् कोई नहीं। सभी लोभ के शिकार हैं। किसी-न-किसी रूप में यह सभी में होता है।

ओई मियां फूंकें, ओई करें दरबार— (क) जहां पर एक ही आदमी बड़ा-छोटा सब काम करे उस पर कहते हैं। (ख) अकेले आदमी को भी कहते है क्योंकि अकेला होने के नाते उसे सब कुछ करना पड़ता है। तुलनीय : पंज० ओही मियां चूल्हा फूंके ओहीं करें राज।

औखली में सिर दिया तब मूसलों से क्या डर ?— ऊखल में सिर देने पर मूसल की चोट का क्या भय अर्थात् कठिन कार्य आरंभ कर देने पर कठिनाइयों से नहीं घबराना चाहिए। तुलनीय : सं० उलूखले शिरोदत्तं मूसलाघातस्य किं भयम्; पंज० उखल विच सिर दिया ते मूसल तों की डरना

ओखली में सिर दिया तो मूसलों का क्या डर ?— ऊपर देखिए। तुलनीय : मैथ० उखरी मे देल माथ त चोटक कौन गिनती, उखली मे मूड़ी देला चोटे डरे बत्ते डरबो; भोज० जब ओखरी में मूड़ी पर गइल तऽ चोट क कवन गिनती; तेलु० रोटिलो तल दूर्चि रोकटि पोटुकु वेरुवनेल; कौर० ओखळी में सिर दिया तो मूसळो का के डर; बुंद० चूले में मूड़ दओ तौ लूगरन को का डर; ब्रज० ओखली मे सर तो मूसली का क्या डर; गुज० खांडरीमा माथु ने धबकाराथी बीव् अे योग्य नहीं; सिं० जे उखरिन में मथ विझन से मोहरयन खा न डिजन; अं० He who would catch fish must not mind getting wet.

ओछा घट छलके सदा—आधा भरा हुआ घड़ा या हल्का घड़ा सदा छलकता है। आशय यह है कि कम धन, बल और बुद्धि आदि के व्यक्ति दिखावा अधिक करते है। ऐसे ही लोगों के संबंध में उक्त लोकोक्ति कही भी जाती है। तुलनीय· पंज० कटपरया वजजे मता ·अ Empty vessels make much noise. दे० 'अधजल गगरी छलकत जाए'।

ओछा घड़ा बाजे घना- खाली घड़े में ही आवाज होती है। अर्थात् क्षुद्र व्यक्ति अधिक बोलते हैं। तुलनीय : राज० खाली बासन घणा खड़बड़ावे।

ओछा पात्र उबलता है—छोटे या उथले बरतन में

वस्तु शीघ्र ही उबल जाती है। आशय है कि नीच व्यक्ति के पास यदि थोड़ी सी संपत्ति आ जाय तो वह फूला नहीं समाता। जब कोई नीच व्यक्ति थोड़े ही अन्न, बल या बुद्धि पर गर्व करने लगता है तब कहते हैं। तुलनीय : मरा० (पातल) उथळ भांडें उकळू लागतें; पंज० निक्के पांडे बिच चीज उबलदी है।

ओछा बोल मालिक नहीं सहता (क) स्वामी सेवक की गर्व की बात नहीं सह पाता। सेवक चाहे कितना भी बड़ा क्यों न हो जाय फिर भी स्वामी से बड़ा नहीं हो सकता। (ख) भगवान के विषय में भी कहते हैं कि वह किसी का गर्व नहीं सह सकता। तुलनीय : राज० ओछा बोल ठाकुरजी ने छाजै; पंज० पैड़ी गल मालिक नईं सुणदा।

ओछी के हाथ लगी कटोरी, पानी पी-पी मरी पदोड़ी— जब किसी व्यक्ति को कोई ऐसी वस्तु प्राप्त हो जाय जो पहले कभी उसके पास न रही हो और वह उसका बहुत उपयोग करे तब व्यंग्य में ऐसा कहते है।

ओछी खेती किसाने खाय—छोटी खेती किसान को खा जाती है। थोड़ी-सी खेती में अधिक अन्न उत्पन्न नहीं होता है और किसान मारा जाता है।। अर्थात् कोई भी कार्य छोटे पैमाने पर लाभदायक नहीं होता। तुलनीय : भीली- - चोची खेती घरना घणिए खाय; पंज० अद्दी खेती किन खादी

ओछी गर्दन तंग पेशानी, लुच्चो की है यही निशानी— छोटी गर्दन और छोटा ललाट बदमाशों या लुच्चों की निशानी है। तुलनीय : मेवा० ओछी गर्दन कम पेशानी, ये ही लुच्चों की निशानी; पंज० निक्की गर्दन अते निक्का मत्था लुच्चिया दी है इह नशानी।

ओछी डोरी कूप तें नेक न काढ़त नीर—ओछी अर्थात् छोटी रस्सी से कुएं से पानी नहीं भरा जा सकता। अर्थात् (क) नीच या ओछे व्यक्ति किसी को लाभ नहीं पहुँचा सकते। (ख) अधूरे उपाय से कोई कार्य सिद्ध नहीं होता। तुलनीय :पंज० निक्की रस्सी नाल खू विचों पाणी नईं निकल सकदा।

ओछी पूंजी खसमे खाय—नीचे देखिए।

ओछी पूंजी खसमों खाय—थोड़ी पूंजी दूकानदार को खा जाती है। आशय यह है कि थोड़ी पूंजी से लाभ कम होता है और खर्च अधिक इस प्रकार दिवालिया होने का भय रहता है। तुलनीय . राज० ओछी पूंजी धणीने खाय; हरि० ओछी पूंजी खसम न खावै; पंज० थोड़ा पैहा सेठ नूं खावे; ब्रज० ओछी पूंजी खसमें खाय।

ओछी पूंजी धनी को खाय— ऊपर देखिए।

ओछी लकड़ी फर्रास की बे ब्यारे फहराय, ओछे के संग बैठ के सुघड़ों की पत जाय— बुरों की संगत में अच्छे लोग भी बुरे हो जाते हैं।

ओछी समधिन कच्चे बड़े—संकुचित (ओछे) विचार-धारा की होने के कारण समधिन (पुत्र की मा) ने कच्चे बड़े (एक प्रकार का नमकीन खाद्य पदार्थ) ही भेज दिए। आशय यह है कि जब कोई व्यक्ति कंजूसी के कारण या संकीर्ण विचारधारा का होने के नाते अपने किसी खास व्यक्ति को भी कोई बुरी वस्तु उपहारस्वरूप देता है तब उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय . कौर० ओच्छी सिमधण काच बरोल्ला।

ओछे की कौड़ी टेंट में— ओछे मनुष्य कौड़ी को दूसरों को दिखाने के लिए टेंट में रखते है। (क) जो व्यक्ति निर्धन होते हुए भी अपने थोड़े-से वैभव का प्रदर्शन करता हो उसके प्रति व्यंग्योक्ति। (ख) निर्धन लोग अपनी थोड़ी-सी पूंजी को भी सहेज कर रखते हैं, इसलिए उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय : गढ़० ह्वांच कि तिमासी धोति की गेड़ि; पंज० निक्के दा पैहा तौती दी गंड विच।

ओछे की प्रीत, बालू की भीत—क्षुद्र की दोस्ती उसी प्रकार है जैसी बालू की दीवार, जो बहुत दिन तक नहीं ठहरती। तुच्छ आदमी जब थोड़ी बात से प्रीति तोड़ देता है तब कहा जाता है। तुलनीय : मरा० हलक्याची प्रीति नि बालूची भिंत टिकणार नाही; भोज० बालू क भीत छोट क पिरीत; हरि० ओच्छे की प्रीत, बालू की भीत।

ओछे की सेवा, नाम मिले न मेवा—ओछे व्यक्ति की सेवा या नौकरी करने से न तो नाम ही होता है और न ही धन मिलता है। नौकरी बड़े आदमी की ही करनी चाहिए जहाँ नाम और दाम दोनों ही मिलें। आशय यह है कि ओछे व्यक्ति की संगति से कोई लाभ नहीं होता। तुलनीय : भीली—चोटी चाकरी मांए सुख नी मलवानो, पंज० निक्के दी सेवा नां मिले नां मेवा।

ओछे के घर खाना, जनम-जनम का ताना—नीच के यहाँ कभी न खाना चाहिए, क्योंकि वे एक बार खिलाते हैं तो जन्म-भर उसे कहते रहते हैं। अर्थात् नीच व्यक्ति जब किसी के साथ किये हुए उपकार को थोड़ी बात में कह दे तब कहा जाता है। तुलनीय : पंज० निक्के दे कर खाना जनम-जनम दा ताना।

ओछे के बैल गिरे— नीच (ओछा) व्यक्ति के नुक़सान

पर कोई ध्यान नहीं देता। अर्थात् जब कोई व्यक्ति अपनी हानि को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कहता है तब कहते हैं।

ओछे के मुँह लगना अपनी इज्जत खोना--नीच से बहुत घनिष्ठता न रखनी चाहिए क्योंकि इससे अपनी ही बेइज्ज़ती होती है। कोई भला आदमी जब नीच से वाद-विवाद करे तब कहा जाता है। तुलनीय : मरा० हलकटाच्या तोंडी लागणे म्हणजे आपली प्रतिष्ठा घालविणें; अव० ओछा का मुँह लगावै आपन इज्जत गंवावै; पंज० निक्के दे मुँह लगणा अपणी इज्ज़त गवाना।

ओछे के संग बैठके अपनी हू पत जाय--नीच का साथ करने से अपनी भी इज्ज़त जाती है। अर्थात् नीच व्यक्ति से सदा दूर रहना चाहिए। तुलनीय : पंज० निक्के दे नाल बैठ के अपणी इज्ज़त गवावे।

ओछे के साथ एहसान करना ऐसा है जैसे बालू में मूतना--जिस प्रकार बालू में पेशाब करने से उसी वक़्त सूख जाता है उसी प्रकार ओछे के साथ भलाई करने से कोई लाभ नहीं क्योंकि वह कृतघ्न होता है और उस उपकार या भलाई को शीघ्र भूल जाता है। तुलनीय : पंज० निक्के दे नाल एहसान करना इवें जिवें रेत बिच मूतना।

ओछे को मिला कटोरा पानी-पीते पीते मर गया--दे० 'ओछी के हाथ लगी…'। तुलनीय : कौर० ओच्छे कू मिल्या कटोड़ा, पाणी पीते पीते मर गया; पंज० निक्के नूं मिलया कटोरा पाणी पींदे-पींदे मर गया।

ओछे छलके नीर-घट पूरे छलके नाहीं--भरा हुआ घड़ा ले चलने पर नहीं छलकता पर अधूरे घड़े का पानी छलक जाता है। आशय यह है कि नीच मनुष्य इतरा कर चलता है जबकि महान व्यक्ति शान्त या विनम्र होता है। तुलनीय : पंज० अद्दा कड़ा परया छलके पूरा नां छलके।

ओछे तैराक का काला मुँह--ओछे तैरने वाले खुद भी डूबते हैं और साथ में दूसरों को भी ले डूबते है। अर्थात् जब कोई दुष्ट या नीच खुद तो बरबाद होता ही है साथ ही साथ अन्य लोगों को भी बरबाद करता है तो उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० अद्दे तैरण वाले दा मुँह काला।

ओछे बड़े न ह्वै सकें, कहि सतरौंहें बैन--बड़ी-बड़ी बातों या अच्छे-अच्छे उपदेशों से नीच व्यक्ति महान् नहीं बन सकते।

ओछे बैठक ओछे काम, ओछी बातें आठों याम; घाघ बताए तीनि निकाम, भूलि न लीजो इनको नाम--नीच व्यक्तियों के साथ बैठने वाले, सदा नीच काम करने वाले, दिन-रात नीच (बुरी) बात करने वाले, निकम्मे और नीच होते हैं। घाघ कहते हैं कि इनका नाम भूलकर भी नहीं लेना चाहिए। अर्थात सदा इनसे दूर रहना चाहिए। तुलनीय : पंज० निक्की बैठक निक्के कम अद्याँ गलां अठो पैर।

ओछे संग न बैठिये, ओछा बुरी बला; पल में हो घी खीचड़ी, पल में विषधर सा--तुच्छ की संगति कभी न करनी चाहिए क्योंकि वे क्षण में रुष्ट और क्षण में तुष्ट हो जाते हैं।

ओछे सिर का जुआँ इतराय--तुच्छ व्यक्ति व्यर्थ शेखी मारता है।

ओछो के संग बैठ के सुघड़ों की पत जाय--दे० 'ओछे के संग बैठ के…'।

ओछो मंत्री राजे नासे, ताल बिनासे काई; सान साहिब फूट बिनासे, घग्घा पैर बिवाई--ओछी बुद्धि का मंत्री राजा का, काई तालाब का आपसी फूट शान-शौकत का तथा बिवाई पैर का नाश कर देती है, ऐसा घाघ का विचार है।

ओझ भरे ने रोग झड़े--(क) न पेट (ओझ) भर भोजन मिलता है और न रोग अच्छा होता है। अर्थात स्वस्थ जीवन तभी रहता है जब व्यक्ति को शुद्ध और पेट-भर भोजन मिले। (ख) न तो पेट भर भोजन ही मिलता है, न रोग ही अच्छा होता है, अर्थात किसी तरह की इच्छा पूरी न होने पर कहा जाता है। तुलनीय : पंज० टिड परे ना रोग मिटे।

ओझा के लिए गाँव पागल गाँव के लिए ओझा--दो व्यक्तियों में जब परस्पर मेल नहीं रहता तो ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मैथ० ओझा क लेखे गाम बताह गाम क लेखे ओझा बताह; भोज० ओझा खातिर गाँव मनकी गाँव खातिर ओझा।

ओझा नौकर, वैद्य किसान, आंड़ू बैल अरु खेत मसान--जो नौकर ओझागिरी करता है वह कभी ठीक काम नहीं कर पाता क्योंकि उसके पास कोई-न-कोई झाड़-फूंक कराने के लिए आता ही रहता है। जो किसान वैद्य का काम करता है उसकी खेती नष्ट हो जाती है क्योंकि उसको रोगी घेरे रहते हैं। आँड़ू बैल भी खेती के लिए अनुपयुक्त होता है और श्मशान के पास का खेत भी बेकार होता है क्योंकि श्मशान में आने वाले लोग उसे रौंदते रहते हैं।

ओट के पेट में बात नहीं पचती--मूर्ख या नीच (ओट)

व्यक्ति के अंदर किसी बात को छिपाने की शक्ति नहीं होती। वे जब तक किसी बात को दस लोगों से कह नहीं लेते तब तक उनकी आत्मा को शान्ति नहीं मिलती। तुलनीय : मल० पिळ्ळमनस्सिल कळ्ळमिल्ल; पंज० जनानी दे टिड बिच गल नई पचदी; अं० Children and fools tell the truth.

ओठ के चाटे प्यास नहीं बुझती – जब किसी मनुष्य की आवश्यकता बड़ी हो परन्तु उसकी तृप्ति बहुत थोड़ी मात्रा में हो तब कहा जाता है। तुलनीय : अव० ओठ चाटे पियास नाही बुझी, पंज० बुल चटण नाल तरें नई मिटदी।

ओढ़नी की बतास लगी –जो मनुष्य स्त्री की प्रकृति का हो जाय, अथवा वह स्त्री का गुलाम हो जाय उसे कहा जाता है। तुलनीय : पंज० बीबी दा गुलाम।

ओढ़ लीनी लोई, तो क्या करेगा कोई ? —चादर ओढ़ लेने पर हमारा कोई कुछ नहीं कर सकता। निर्लज्ज के लिए कहा जाता है। तुलनीय पंज० लै लयी लोई ते की करेगा कोई।

ओढ़ी चद्दर हुई बराबर, मैं भी शाह की साला हूँ – जब कोई ओछा या छोटा व्यक्ति किसी बड़े व्यक्ति से साथ या रिश्ता कर अपने आपको उसी के बराबर समझने लगता है तब उसके प्रति व्यंग्य से ऐसा कहते हैं।

ओढ़े का खाक नहीं तले बिछौना—(क) जो व्यक्ति आर्थिक दशा ठीक न होने पर भी बहुत दिखावा करते हैं उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। (ख) अनुचित व्यवस्था पर भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० खुट्टू खोसड़ा चुफला नांगा।

ओढ़े के कुछ नां दरी बिछौना—ऊपर देखिए। तुलनीय : मैथ० ओढ़ेला हयते न भूइया ले सौहरे।

ओढ़े को खाक नहीं, तले बिछौना—दे० 'ओढे का खाक नहीं,...।'

ओत पड़े सो काम करो—उसी काम को करना चाहिए जिससे लाभ हो। एक बार एक बनिये ने एक लड़के को गोद लिया। उसके जाति वालों ने मुक़द्दमा चला दिया कि लड़का बनिये का नहीं है। राजा ने लड़के से कहा कि 'तुम्हें कौन-सी सज़ा दी जाय, सूली दी जाय कि फाँसी ?' लड़के ने कहा कि 'ओत पड़े सो काम करो।' अर्थात् सिद्ध हो गया कि यह बनिये का लड़का है, क्योंकि बनिये का लड़का सब कामों में लाभ देखता है। तुलनीय : पंज० नफा होवे ओह कम करो।

ओनामासी धं, गुरु की टूटी टंग—छोटे लड़के जो पढ़ते नहीं उनके प्रति कहते हैं।

ओनामासी धं, बाप पढ़े ना हम—ऊपर देखिए। तुलनीय : राज० ओना मासी धम, बाप पढ्या न हम; अव० ओनामासी ढंग न बाप पढ़े न हम; ब्रज० ओनामासी धम्म, बाप पढ़े ना हम्म।

ओनामासी न आवे 'मैया पोथी ला दे'—पढ़े-लिखे नहीं हैं, पर किताब माँगते हैं। जब कोई व्यक्ति किसी से ऐसी वस्तु माँगता है जिसके उपयोग की क्षमता उसके (माँगने वाले के) अन्दर न हो तो व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

ओ पंडित ! आशीर्वाद दे, कहा —मैं क्या दूं मेरी आत्मा देती है—जब कोई दुष्ट मनुष्य किसी सज्जन से कुछ लाभ भी उठाना चाहे और धमकावे भी तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० देरे पांडया, आसीस, हूं कांई देऊं म्हारी आंतर्यां देव हैं; मेवा० देरे पांड्या आसीस, मू कई दूं मारी आत्मा देई; पंज० ओ पंडता दुआ दे, मैं की देवां मेरी आत्मा देंदी है।

ओ राहगीर ! मेरे मुँह में बेर तो डाल देना – आलसी और अकर्मण्य लोगों के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। एक आलसी आदमी बेर के वृक्ष की छांव में सो रहा था कि एक पका बेर टूट कर उसकी छाती के ऊपर गिर पड़ा। मारे आलस्य के उसने वह बेर स्वयं उठा कर मुँह में नहीं डाला अपितु दूर जा रहे बटोही को पुकारना आरम्भ किया। तुलनीय : रा० जांवतोड़ा जांवतोड़ा, म्हारे बाके में बोर मेल दिये।

ओरी का पानी बड़ेरी जाय—असम्भव बात पर कहा जाता है। क्योंकि ओरी बड़ेरी से नीचे होती है, इसलिए वहाँ का पानी बड़ेरी पर जा ही नहीं सकता।

ओरी का भूत नौ पुस्त का नाम जाने – पास (ओरी) का भूत नौ पुश्त के लोगों का नाम जानता है। तात्पर्य यह है कि पड़ोसी एक दूसरे की छोटी-छोटी बातों को भी अच्छी तरह से जानते हैं। तुलनीय : भोज० ओरियानी का भूत नौ पुस्त क नाँव जाने; मैथ० वही; पंज० ओरी दा पूत नौं जनमां दा नां दस्से।

ओरी का भूत सात पीढ़ी का नाम जानता है—ऊपर देखिए। तुलनीय : भोज० ओरी तर का भूत सात पुहूत क नाँव जाने।

ओलती का पानी बलेंडी नहीं जाता—ओरी (ओलसी) का पानी बड़ेरी (बलेंडी) पर नहीं चढ़ता। अर्थात् नियम के विरुद्ध कोई काम नहीं होता। किसी असम्भव कार्य के लिए ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मेवा० चियां को पाणी मगर्‌यां नी चढ़े।

ओलती का पानी बलेंडी पहुँचा—बात कहाँ से कहाँ

पहुँची। नीच धनवान हो गया या झूठ की विजय हो गयी।

अलोती तले का भूत सत्तर पुरखों का नाम जाने--दे० 'ओरी का भूत नौ····'।

ओल में से निकल कर चूल में पड़ना—छोटी परेशानी से मुक्ति पाकर बड़ी परेशानी में फँस जाना। जब कोई व्यक्ति किसी छोटी विपत्ति से छुटकारा पाते ही किसी बड़ी विपत्ति में फँस जाता है तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० झाड़ियां बिचों निकल के कंडया बिच फसया।

ओलामो न बोलामो चिकर-चिकर गामो—बिना किसी के कहे जोर-जोर से गाए जा रहे हैं। अर्थात् जो व्यक्ति बिना कहे अपने-आप किसी की बात में बीच में बोलने लगता है या बिना पूछे किसी को कुछ सलाह देने लगता है उसके प्रति ऐसा कहते हैं।

ओलावे न बोलावे सहदेव बहू चाची- बिना पूछे ज़बरदस्ती सम्बन्ध जोड़ने वाले पर व्यंग्य से ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० बलाया न चलाया बैठी नूं पाबी बनाया।

ओले को सोलह जूते--मूर्ख या उलटी बुद्धि वाले (ओले) को सोलह जूते लगाना चाहिए। आशय यह है कि मूर्ख व्यक्ति बिना डाँटे-फटकारे या मारे-पीटे क़ायदे से या शान्त रूप से नही रहते। तुलनीय : हरि० ओळे के, सोल्हे जूत; पंज० पुठी मत्त वाले नूँ सोलां जुतियां।

ओस के चाटे प्यास नहीं बुझती—(क) जब किसी को कोई वस्तु इतनी कम मात्रा मे मिलती है जिससे उसकी तृप्ति नहीं होती तो ऐसा कहते हैं। (ख) जब कोई कंजूस व्यक्ति थोड़े खर्च में बड़ी वस्तु को प्राप्त करना चाहता है या थोड़े खर्च से बड़ा कार्य करना चाहता है तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० ओसन का चाटे पियास न बुझे; पंज० तरेल चटण नाल तरे नईं मिटदी; ब्रज० ओस के चाटे ते प्यास नायें बुझै।

ओस चाटे प्यास नहीं जाती--ऊपर देखिए। तुलनीय : भोज० ओस चटले पियास नां जाई, ओठ चटला से पियास बुझाई; मरा० दव बिंदु चाटल्यानें तहान भागत नाहीं; गढ़० ओस का बूंदून तीस थोड़ी ही जांदी; मल० तुषारम् काण्ट् दाहम् शमिक्कुकयिल्ल। यह लोकोक्ति प्राचीन है। केशवदास के यहां आता है--लालच हाथ रहै, ब्रजनाथ पै प्यास बुझाइ न ओस के चाटे।

ओ सोना आगी पड़े जासों फाटे कान—वह सोना जला देना चाहिए जिससे कान फटे। आशय यह है कि उस व्यक्ति या वस्तु को त्याग देना चाहिए जिससे नुक़सान हो या नुक़सान होने की संभावना हो चाहे वह कितना ही घनिष्ठ या मूल्यवान क्यों न हो। तुलनीय : सि० ओह सोन घोड़यो जो कन्न छिन्ने।

ओही मियां चूल्हा फूंकें, ओही करें दरबार—जहाँ एक ही व्यक्ति सभी प्रकार के छोटे-बड़े, ऊँच-नीच काम करे वहाँ कहते हैं।

ओलों का मारा खेत, बाक़ी का मारा गाँव, चिलमों का मारा चूल्हा नहीं पनपता—जिस खेत में ओले पड़ जाएँ उनमें फ़सल नही उपजती, जिस गाँव की मालगुज़ारी का भुगतान नहीं होता कभी आबाद नही रहता और जिस चूल्हे से एक बार चिलम भरी जाए उसमें आग बाक़ी नही रहती।

औ

औंधा खाय लौंडा—(क) जो कमसमझ होता है वही धोखा खाता है। (ख) जो शक्ति के बाहर प्रयत्न करता है वही धोखा खाता है।

औंधी खोपड़ी उलटी मत मूर्ख व्यक्ति की राय या मत अच्छा नहीं होता। मूर्खों के लिए इस लोकोक्ति का प्रयोग किया जाता है। तुलनीय: अव० औंधी खोपड़ी, उलटी मति; पंज० पुठी खोपड़ी पुठी मत्त।

औंधे गिरे तो सूर्य को दंडवत—मुँह के बल गिरे तो कहने लगे कि मैं गिरा नहीं था, मैं तो सूर्य को प्रणाम कर रहा था। चालाक और अवसरवादी व्यक्ति जब अपने दोष छिपाने का प्रयत्न करते है तो कहा जाता है। तुलनीय: पंज० पुठा डिगे ते सूर्य नू प्रणाम।

औंधे घड़े का पानी, मूरख की कही कहानी—औंधे घड़े में पानी बिल्कुल नही रुकता। उसी तरह मूर्ख की कही हुई कहानी भी किसी काम की नहीं होती। निरर्थक बातों या वस्तुओं के लिए कहते हैं। तुलनीय: मरा० पालथ्या घागरीवर, मूर्खाची कहानी; पंज० पुठे घड़े दा पाणी मूरख दी आखी कहानी।

औंधे मुंह चिराग़ पाँव—उलट-पुलट हो जाना। जब कोई किसी का बुरा सोचता है तब कहा जाता है। औंधे मुँह गिरना और पाँव के नीचे चिराग़ का होना, ये दोनों एक तरह के शाप हैं।

औंधे मुंह दूध पीते हैं—बिल्कुल बच्चे हैं। अर्थात् जो बहुत भोला-भाला या अनजान बनता है उसके प्रति ऐसा कहते है। तुलनीय: पंज० पुठे मुंह दुद पींदे हो।

औंधे मुंह शैतान का धक्का—शैतान के धक्के से औंधे

मुँह गिरना। यह एक प्रकार का शाप है। किसी के बुरे सोचने पर ऐसा कहा जाता है।

औआ बौआ बहे बतास, तब होला बरखा कै आस—जब हवा बिना क्रम के इधर से उधर बहती हो तो वर्षा की आशा करनी चाहिए।

औघट चले न चौपट गिरे-- न टेढ़े चलो और न गिरने का भय रहे। अर्थात् यदि बुरा काम नहीं करोगे तो तुम में कोई बुराई नहीं आएगी।

औघड़ किस बल मोटा, लाभ गिने न टोटा औघड़ (निश्चिंत या बेपरवाह व्यक्ति) इसलिए मोटा-ताज़ा होता है कि उसे लाभ-हानि की कोई चिंता नही रहती। आशय यह है कि निश्चित व्यक्ति प्रायः हृष्ट-पुष्ट रहता है। तुलनीयः हरि० औगड़ किस बल मोट्टा, लाह्या गिणै न टोट्टा।

और अन्न खाए न गेहूँ गठिआए जितना अन्य अनाजों को खाने से फ़ायदा होता है उतना गेहूँ को केवल पास रखने (गठिआने) से होता है। आशय यह है कि गेहूँ अन्य अनाजों की अपेक्षा काफ़ी पौष्टिक होता है। तुलनीयः भोज० अवर अन्न खइले न गेहूँ गंठिअवले।

और करइ अपराध कोउ, और पाव फल भोग-- अपराध कोई और करे और दंड दूसरा पावे। अर्थात जब अपराध या ग़लती कोई करता है और उसका दंड किसी और को मिलता है या भुगतना पड़ता है तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० करे कोई परै कोई।

और करे अपराध कोउ, और पाव फल भोग—ऊपर देखिए।

और का लड़का पाऊँ तो बिल में हाथ डलाऊँ—किसी दूसरे का लड़का मिल जाता तो उससे सर्प के बिल में हाथ डालने के लिए कहता। आशय यह है कि दूसरे के दुख-दर्द या लाभ-हानि की चिंता कोई नही करता। इस लोकोक्ति में मनुष्य की स्वार्थी प्रवृत्ति की ओर संकेत है। तुलनीयः भोज० आन क लइका पाईं त बियरी में हाथ नवाईं ; पं० दूजे दा मुंडा मिले तां रुड बिच हत्थ लगवावां।

और की खुटाई, अपने आगे आई—दूसरे की बुराई करने वाले का स्वयं अनिष्ट होता है। तुलनीयः हरि० जो जड़ें काटै ओर की अपणी लेय कटाय ; पंज दूजे दी बुराई अपणे अग्गे आई।

और की फूली देखते हैं, अपना टेंटर नहीं निहारते—ऐसे मनुष्यों के लिए कहा गया है जो अपने में बड़ा दोष होते हुए भी दूसरे में छोटा ऐब ढूंढ़ते हैं। तुलनीय : अव० औरन की फूली देखत हैं, आपन ढेंढ़र नाही देखत।

और की बुराई अपने आगे आई—जब कोई मनुष्य किसी दूसरे की बुराई करता है तो स्वयं उसी का बुरा होता है। तुलनीय : अव० न कर सास बुराई तोरे व आगे आई।

और की भूक न जाने, अपनी भूक आटा साने—दूसरे की भूख की तो परवाह नहीं करते, पर अपने को भूख लगने पर आटा मानते हैं। स्वार्थी के प्रति कहते हैं जो अपने लिए सब कुछ करना, पर दूसरे का बिल्कुल ध्यान नहीं रखता। तुलनीयः पंज० दूजे दी पुख नई जाणदा अपनी पुख ते आटा गुनण।

और के नाम अंडे बच्चे हमारे नाम कुड़क—दूसरों को लाभ पहुँचाते हो, हमें नही। दूसरे आनन्द से रहें और अपने रिश्तेदार भूखे मरें।

और के माथे नौ पत्तल—जब दूसरे का खर्च करना हो तो एक पत्तल के स्थान पर नौ पत्तल लिए जाते हैं। अर्थात् स्वार्थी व्यक्ति दूसरे की हानि नहीं देता केवल अपना ही लाभ देखता है।

और को नसीहत, आप फजीहत—दूसरों को बुरे काम करने से रोकें किंतु खुद बुरे कर्म करें। जो व्यक्ति किसी काम को करने से दूसरों को मना करे और स्वयं उसी कर्म को करें तब उसके प्रति ऐसा कहते है। दे० 'पर उपदेश कुशल…'।

औरत और ककड़ी की बेल जल्दी बढ़ती है—लड़की और ककड़ी की बेल देखने-देखते बढ जाती है। तुलनीयः अव० मेहरारू औ ककरी के लता जल्दी बाढ़त है ; पंज० जनानीं अते तरां दी बेल छेती बददी है।

औरत और घोड़ा रान तले का—(क) औरत और घोड़ा जब तक अपने अधिकार में रहे तभी तक अपना समझना चाहिए। (ख) अपने अधिकार में जो चीज़ रहे वही अपनी है। तुलनीयः हरि० चीज अपणे हाथ तले की ; पंज० जनानी अते कौड़ा अपणे हत्थ दा।

औरत और शराब तेज़ ही अच्छी—तेज़ मिजाज़ की स्त्री और तेज़ नशे की शराब अच्छी समझी जाती है। तुलनीयः पंज० जनानी अते शराब तेज ही चंगी।

औरत और संयोग पुरुष के भाग्य विधाता—स्त्री और संयोग पुरुष को धरती से आकाश पर और आकाश से धरती पर पटक सकते हैं। अर्थात यदि ये दोनों अच्छे हैं तो आदमी का जीवन सुखमय व्यतीत होता है और समाज में प्रतिष्ठा भी बनी रहती है।

औरत का क्या इतबार—स्त्रियों पर विश्वास न करना चाहिए। प्राय: लोग उन पर विश्वास नहीं करते। तुलनीय: अव० मेहरिया का काउन द इतबार ; पंज० जनानी दा की परोसा।

औरत का ख़सम मरद, और मरद का ख़सम रोजगार---बिना उद्यम के मनुष्य की दशा वैसे ही है जैसे बिना पुरुष के स्त्री की। तुलनीय: पंज० औरत (जनानी) दा खसम मनुख (मरद) अते मरद दा खसम रोजगार।

औरत किसकी जो पास रखे उसकी—(क) स्त्री उसी की है जिसके पास वह रहती है। (ख) जब स्त्री अपने पास रहे तभी उसे अपना समझना चाहिए दूर रहने से औरतें दुश्चरित्र हो जाती हैं। इसी बात को ध्यान में रखकर उक्त लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय: पंज० जनानी किस दी जिहड़ा कोल रखे उस दी।

औरत की अक़्ल गुद्दी पीछे होती है—औरतों को बाद में ज्ञान होता है। तुलनीय: हरि० लुगाई की मत्त गुद्दी पीछै होसै ; कोर० औरताँ की चुरिया पिच्छै अकल; पंज० जनानी दी मत्त बालां विच।

औरत की अक़्ल तलवे में होती है- पैरों में अक़्ल होने के कारण वह चलते समय घिस जाती है, अर्थात् स्त्री में बुद्धि का अभाव होता है। औरतों की मूर्खता पर व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय: राज० लुगाई री अकल खुड़ी में हुया करै पंज० जनानी दी मत पैरां बिच।

औरत की जात बेवफ़ा होती है—स्त्रियाँ अपने मतलब की होती है, इसलिए कहा जाता है। तुलनीय: अव० मेहरारू की जात बेवफ़ा; पंज० जनानी मतलब दी यार।

औरत की जात, केला के पात---औरते केले के पत्ते की भाँति होती हैं। केले के पत्ते को जब हवा लगती है वह फट जाता है या केले के पत्ते थोड़ी-सी वायु लगने पर हिलने लगते है। आशय यह है कि (क) स्त्रियाँ काफ़ी सुकुमार होती हैं वे थोड़े से कष्ट से ही काफ़ी परेशान हो जाती हैं। (ख) जब औरतें बहुत चंचलता दिखाती है तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० औरत जात केले दे पत्ते वरगी।

औरत की बात का क्या विश्वास—दे० 'औरत का क्या इतबार'। तुलनीय. मल० शीतकालत्ते काट्टुम् स्त्रीयुटे मनवुम्; अं० A winter's wind and a woman's heart often change.

औरत की बुद्धि चोटी के पीछे—दे० 'औरत की अक़्ल गुद्दी......'। तुलनीय: निमा० औरतां की चुटिया पिच्छै अकल।

औरत की सलाह पर जो चले वह चूतिया—स्त्री की बात को मानकर सब कार्य करने वाला बेवक़ूफ़ समझा जाता है क्योंकि औरतें संकीर्ण विचारधारा की होती हैं, इसलिए उनकी सलाह मानना अच्छा नहीं होता। तुलनीय: पंज० जनानी दे इशारे जिहड़ा चले ओह चूतिया।

औरत के नाक न होती तो गू खाती- यदि दुर्गंध न आती तो स्त्रियां गू भी खा लेतीं। आशय यह है कि औरतें बुरे से बुरा कर्म करती हैं, इनका कोई विश्वास नहीं है। तुलनीय: अव० मेहरारू के नाक न होय तौ गुह खाय लेय। पंज० जनानी दी नक नई हुंदी ते ऊह गू खांदी।

औरत को न चाहिए ताजो-तख़्त, उसे चाहिए लवड़ा सख़्त—स्त्री धन-दौलत की अपेक्षा उस पुरुष को अधिक पसंद करती है जो उसकी काम-पिपासा को शान्त कर सके, चाहे वह निर्धन ही क्यों न हो। तात्पर्य यह है कि औरतों में काम-भाव अधिक होता है। तुलनीय: पंज० जनानी नू नई चाइदा ताजा-तख़्त, उसनू चाइदा लन मगन।

औरत को नादारी में जांचे—औरत की परीक्षा ग़रीबी में होती है। आशय यह है कि वही औरत प्रशंसा योग्य है जो कि विपत्तिकाल मे भी अपने पति की पूरे धैर्य के साथ सहायता करे या साथ दे। 'धीरज धर्म मित्र अरु नारी, आपद काल परखिए चारी।' तुलनीय : पंज० जनानी नू ग़रीबी विच दिखो।

औरत को मारे तो अपनी नाक कटे स्त्री को मारने मे अपनी ही बेइज़्ज़ती होती है। (क) स्त्री के ऊपर हाथ उठाना पुरुष के लिए शोभन नहीं होता। (ख) मारने पर औरतें कभी-कभी गाली दे देती है और कभी-कभी आत्म-हत्या भी कर लेती है जिससे पुरुष को बेइज़्ज़ती और परेशानी दोनों सहनी पड़ती है। तुलनीय: भीली० नार कूट न कटू थाई जाए ते हूं कटे ; पंज० जनानी नूं मारो ते अपणी नक वडाओ।

औरत को सिर न चढ़ावे—स्त्रियों का बहुत दुलार करने से वे बिगड़ जाती हैं। तात्पर्य यह कि वे स्वेच्छा-चारिणी हो जाती हैं। तुलनीय: अव० मेहरार का मूंड़े न चढ़ावै ; हरि० लुगाई सर पै न चढ़ाणी चाहिए ; पंज० जनानी नू सिर उत्ते न चढावो।

औरत, गाय और ब्राह्मण इनसे भागना भला—इन तीनों से जीतने पर भी कोई बहादुरी नही होती तथा हारने पर मुँह दिखाना कठिन हो जाता है; अत: इनसे दूर रहना अधिक उचित है। तुलनीय: राज० गायां, बायां, बामणा भागा ही भला; पंज० गां, जनानी अते पंडत इनां तो नठना

पला।

औरत जानी जाय लाजसे या पहनावे से - लज्जा और पहनावे से ही स्त्री के गुण तथा अवगुण पहचान में आ जाते हैं। सभ्य स्त्रियाँ साफ़-सुथरे वस्त्रों में गंभीरता के साथ रहती हैं। लज्जा ही नारी का गहना है। दुष्ठ, मूर्ख या बेवक़ूफ़ औरतें ठीक इसके विपरीत होती हैं। तुलनीय: भीली० लुगाई ना लक्खण लाज लूगड़ा में परकाये; पंज० जनानी दा पता लग्गे सरम तों या टल्लयां तों।

औरत न चाहे ताजो-तख़्त उसको चाहिए लवड़ा सख़्त— दे० 'औरत को न चाहिए……'।

औरत पर जहाँ हाथ फिरा, वह फैली - विवाह के बाद लड़कियों के अंगों में तेज़ी से वृद्धि होने लगती है। तुलनीय: पंज० जनानी ते जिथे हथ फिरया ओह वदी।

औरत ब्याह की, पैसा गांठ का-- विवाह करके लाई हुई स्त्री और अपने पास का धन अपना ही होता है और समय पर काम आता है। जो दूसरों के धन-बल पर पुल बाँधते है उनके शिक्षार्थ ऐसा कहते हैं। तुलनीय: गढ़० डिट्ठी की जोई, अर मुट्ठी को धन; पंज० जनानी ब्याह दी पैहा गंड दा।

औरत मनाना और आटा भिगोना रूठी स्त्री को मनाना तथा आटे को गीला करना बहुत सहज काम है। जो स्त्रियाँ सहज में ही प्रसन्न हो जाएँ उनके प्रति परिहास में ऐसा कहते हैं। तुलनीय· गढ़० जनानो बुझौणो अर कणको रुजौणे; पंज० जनानी नू मनाना अते आटे न गुन्णा।

औरत मर्द का जोड़ा है—(क) स्त्री पुरुष का अटूट संबंध होता है। (ख) जब दो व्यक्तियों का आपस में बहुत घनिष्ठ संबंध होता है तब भी ऐसा कहते है। तुलनीय: अव० मेहरारू और मनई के जोड़ी है; भीली --घणी घणिय काणी नी जोड़ी; पंज० जनानी बंदे दा जोड़ा है।

औरत रहे तो आपसे, नहीं जाय सगे बाप से -- (क) औरत स्वयं चाहे तो रह सकती है नहीं तो अपने सगे बाप के भी रोके नही रुक सकती। (ख) स्त्री पतिव्रता है तो वह अपने आप रहेगी नहीं तो अपने सगे बाप के साथ भी निकल जायगी। तुलनीय : गढ़० रै जौ त अपणा आप नीत सगा बाप; अव० मेहरार रहे तो आप, नाही जाय आपन सगे बाप से।

औरत रहेतो आप से नहीं तो न बाप से—ऊपर देखिए। तुलनीय : भोज० मेहरारू अपने से ठीक रहेले नाही त बापो से नां माने ले।

औरत से सच और मालिक से झूठ कभी न बोले— औरत से कोई भेद नहीं कहना चाहिए क्योंकि वह उसको कभी छिपा कर नहीं रख सकती और मालिक से कभी कोई भेद छुपाना नहीं चाहिए क्योंकि उसे कभी-न-कभी पता अवश्य लग जाता है। तुलनीय : गढ़ स्वेणी मूं [illegible]लाणी सच्च, ठाकुर मूं निलाणी झूठ; पंज० जनानी नाल सच अते मालिक नाल चूठ कदीनां बोलो।

औरतों का फंदा बुरा—(क) ब्याह हो जाने के बाद लगभग सभी व्यक्ति इस प्रकार की शिक्षा क्वारों को दिया करते हैं, अर्थात् ब्याह मत करना और यदि किया तो सारी उम्र नमक, तेल के चक्कर में ही रह जाओगे। (ख) जो व्यक्ति व्याभिचारिणी औरतों से संपर्क कर लेते हैं उनके शिक्षार्थ भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० जनानियां दा फंदा बुरा।

औरतों की अक्ल सिर के पीछे— दे० 'औरतों की अक़्ल गुद्दी…'।

औरतों के नाक न होती, तो गू खातीं दे० 'औरत के नाक…'।

और दिन खीर पूड़ी, उत्सव के दिन दाल निपोरी— अन्य सामान्य दिनों में तो खीर-पूड़ी मिलती है किंतु उत्सव के दिन बिना खाए रह जाना पड़ता है। (क) जिस काम को सब लोग कर रहे हों उसे न कर अपने मन की करने वाले के लिए कहा जाता है। (ख) अव्यवस्था या उलटी रीति पर कहते है। तुलनीय : भोज० अउरी दिने खीर-पूरी, परोज के दिनें दांत निपोरी; मरा० इतर दिवशीं खीर-पूरी, सणाच्या दिवशी हयं-हयं करी; पंज० बाकी दिन खीर-पूरी उत्सव दे दिन पुखे।

और दिनों खीर-पूरी, पर्व के दिन दाँत निपोरी—ऊपर दे०

और पानी तो आया नहीं, जो था वह भी सूख गया— अधिक पानी पाने की आशा में बैठे थे, लेकिन वह मिला नहीं बल्कि उनके पास जो पानी था वह भी सूख गया। आशय यह है कि जब कोई व्यक्ति किसी से कुछ पाने की आशा में हो और वह मिले नहीं तथा पास की भी चीज समाप्त हो जाय तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भीली—पाणी तो आव्यो ने, पण पेही ग्यो; पंज० और पाणी ते आया नहीं जिहड़ा सी ओह वी सुक गया।

और बात खोरी सही दाल-रोटी—दाल-रोटी सब बातों में मुख्य है। अर्थात् भोजन सबसे आवश्यक कार्य है। तुलनीय : मरा० इतर व्यर्थ गोष्ठी, खरी डालरोटी (भाजी-भाकरी); राज० और बात खोटी, सिर दाल

रोटी; पंज० और गलां कौडियां चंगी दाल-रोटी।

और मज़ाक़ भूल गये, मेरे पास आइयो—स्त्री पुरुष से कहती है। सारी दिल्लगी भूल गये। जब मारना होता है तो मुझे अपने पास बुलाते हैं।

और रंग कच्चा, मुश्की रंग पक्का—काला रंग सबसे पक्का होता है। (क) काले रंग के मनुष्यों को मज़ाक से कहते हैं। (ख) लगन के पक्के व्यक्ति के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय: राज० और रंग कच्चा, मुश्की रंग पक्का; पंज० और रंग कच्चे काला रंग पक्का।

और रंग का गिलहरा—ऐसा परिवर्तन जो कि अप्राकृतिक तथा अस्वाभाविक हो उस पर कहा जाता है।

और सांग आसान, दानी का सांग कठिन—सभी तरह के आदमियों की नक़ल उतारी जा सकती है, किन्तु दानी की नक़ल करना बहुत कठिन है। आशय यह है कि दूसरों को अपनी संपत्ति दान देना बहुत कठिन है। तुलनीय: राज० और सांग सोरा, सतीआलो सांग दोरो।

औरहि लुकरी शकुन बतावे, आपुहिं कुकुरन सों चिथवावे—दूसरों को तो शकुन बताती हैं और स्वयं कुत्तों से नोचवाती (चिथवाती) हैं। जब कोई व्यक्ति दूसरों को उपदेश देता है और स्वयं ग़लत काम करता है उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय: हरि० पंडित जी औरांह ने सौण बतावैं अपणा पाच्छा पड़ायां हांड़ै; अव० आन का लोखरी सगुन बतावै, आप कुकरन से चिथवावै।

औरां सगुन बिगाड़िया खुर कटवाई नाक—दूसरे के शकुन बिगाड़ने के लिए अपनी नाक कटवा ली। अर्थात् दूसरों की थोड़ी हानि के लिए अपनी बहुत बड़ी हानि करवाने या करने पर इसका प्रयोग होता है।

औरों का घी न मां की बात—आशय यह है कि इस संसार में मां से अधिक प्यार या सेवा करने वाला कोई नहीं है। तुलनीय: पंज० दूजियां दा की ना मां दी गल्ल।

औरों की नज़र इधर-उधर, चोर की नज़र बकरी पर—स्वार्थी व्यक्ति के प्रति ऐसा कहते हैं जो सदैव अपने स्वार्थ पर ही दृष्टि रखता है। तुलनीय: गढ़० औरू कि नज़र अथरू-बथरू, च्वर कि नज़र स्यट बखरू; पंज० दुनिया दी नज़र इदर-उदर चोरां दी नज़र बकरी उत्ते।

औरों के माल पर यारों की रोज़ दिवाली—दूसरों के धन पर मौज उड़ाने वालों या मुफ़्तख़ोरों के प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय: मेवा० ओरां का धन ऊपरै मोड्या करे मसाण; पंज० दूजियां दे माल उत्ते यारां दी रोज दिवाली।

औलती का पानी मंगरे पर नहीं चढ़ता—मंगरा ऊँचा होता है और औलती नीचा, इसलिए मंगरे पर औलाती का पानी नहीं जा सकता। अर्थात् असंभव बात नहीं हो सकती। औलाती (ओलती) = छप्पर, मंगरा = छप्पर के ऊपर की मेंड़। तुलनीय: ब्रज० औलाती कौ पानी मगरे पै नायें चढ़ै।

औलाद किसी की, पाले कोई—संतान किसी की है पालन किसी और को करना पड़ रहा है। जब किसी दूसरे के कार्य के कारण किसी को कष्ट मिले तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय: भीली-कणानू चोरु नेकणाए दोरु आवे; पंज० जमया किसने पालया किसे नै।

औषध ताको दीजिए जाके रोग शरीर—दवा उसी को देनी चाहिए जिसको कोई रोग हो अर्थात् जिसे आवश्यकता हो उसी को कोई वस्तु देनी चाहिए। तुलनीय: पंज० दवाई ओनू देओ जिहड़ा बमार होवे।

औषधि जान्हवी तोयं वैद्यो नारायणो हरिः—औषधि (दवा) गंगाजल के समान है और वैद्य साक्षात् विष्णु भगवान। अर्थात् बिना विश्वास के रोगी अच्छा नहीं होता।

औसर का चूका आदमी और डाल का चूका बन्दर भी कभी नहीं सँभलता—यदि कोई मनुष्य अवसर का सदुपयोग नहीं कर सकता तो उसे वह अवसर फिर नहीं मिलता जिस प्रकार बन्दर यदि डाल पकड़ने में चूक जाय तो उसे मृत्यु का ही सामना करना पड़ता है। तुलनीय: मरा० संधि घालवलेला माणस नि फांदी वरुन निसटलेले माकड़ सावरत नाहीं; अव० बात का चूका मनई और डार का चूका बादर नाहीं संभरत।

औसर चूकी डोमिनी, गावे ताल बेताल—गाने वाली सुर से चूक जाने पर बेसुरी गाने लगती है। जब कोई मन उत्तेजित होने पर उलटा-पुलटा बकने लगता है तो कहते हैं। तुलनीय: अव० सुर लागी डोमनी गावै ताल बे ताल।

क

कंकड़ नरम हों तो स्यार कब छोड़ें—कंकड़ यदि नरम होते तो उन्हें सियार छोड़ते नहीं यानी खा जाते। आशय यह है कि (क) यदि ज्ञान, उच्च पद, ख्याति आदि प्राप्त करने में श्रम, समय और त्याग की आवश्यकता न होती, तो सभी प्राप्त कर लेते। (ख) लाभ की वस्तु को कोई नहीं छोड़ता उसे सभी चाहते हैं। तुलनीय: राज० कांकरा कंवला हुए तो स्यालिया कद छांडे; ब्रज० कोकर नरम होय तौ

सिरकटा कब छोड़े।

कंकड़ नाच रहा है— निर्जीव कंकड़ भी देखकर नाच रहा है, अर्थात् बहुत रोबदाब वाले व्यक्ति हैं। जिस व्यक्ति को देखकर लोग काफ़ी भय खाते हैं उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० वट्टा नच रिहा हैं; ब्रज० कांकर नाचि रहियो से।

कंकड़ मारेगा पंसेरी खाएगा यदि किसी को कंकड़ से मारोगे तो बदले में पंसेरी की मार खाओगे। जो व्यक्ति किसी को थोड़ी-सी हानि पहुँचाता है और उसके बदले में उसे भारी हानि उठानी पड़ती है तब उसके शिक्षार्थ ऐसा कहते है। तुलनीय : राज० कांकरैरी देसी जको पंसेरीरी खासी; पंज० वट्टा मारेगा तो काटा खावेगा; ब्रज० कांकर मारैगौ पंसेरी खायगौ।

कंकड़ी का गवाह खीरा दो समान स्वभाव वाले व्यक्तियों की परस्पर गवाही या पक्ष में हां करने पर व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : भोज० कंकरी क यह गवाह भइलें खीरा। दे० 'चोर का गवाह गिरहकट।'

कंकड़ी के चोर को कनेठी काफ़ी—कंकरी चुराने वाले का कान उमेठना ही पर्याप्त सज़ा है अर्थात् साधारण अपराध के लिए कठोर दंड नहीं देना चाहिए। तुलनीय : भोज० कंकरी के चोर क काने अंइठल काफ़ी बा।

कंगले की बेटी रजघर परी, चीन्हें न आपन लोग— जब कोई नीच व्यक्ति उच्च पद को प्राप्त कर लेने के पश्चात गर्ववश अपने ख़ास लोगों के साथ भी ठीक ढंग से व्यवहार नहीं करता तो व्यंग्य से उसके प्रति कहते है। तुलनीय : पंज० गरीब दी धी राजे दे कर दी परी अपणे लोकां नाल नई बोल दी।

कंगाल काजी कोरा—चाहे कितनी ही अच्छी बात क्यों न होती हो पर जब तुच्छ आदमी का ध्यान बुरी बातों पर ही लगा रहे तब कहते हैं। शब्दार्थ है कंगाल क़ाज़ी का ध्यान कोरा (जो उसे थोड़ा-बहुत मिलने को है) पर ही होता है।

कंगाल का दिल कंगाल—धन न होने के कारण ग़रीब आदमी में साहस कम होता है या होता ही नहीं। तुलनीय : राज० कंगालरो काकजो पोलो; पंज० गरीब दा दिल गरीब; ब्रज० कंगाल कौ मन कंगाल।

कंगाल को कसार लड्डू—ग़रीब आदमी के लिए कासार (चावल को भून कर बनाया हुआ व्यंजन) ही लड्डू के समान होता है। आशय यह है कि ग़रीब व्यक्ति के लिए साधारण चीज़ ही बहुत बड़ी चीज़ के बराबर होती है। तुलनीय : छत्तीस० ररुहा ला कसार कलेवा; पंज० ग़रीब नूं सयूल ही लड्डू; ब्रज० कंगाल कू कसार ई लड्डू।

कंगाल को महुआ मीठा—ऊपर देखिए। तुलनीय : मैथ० कंगाल के महुआ मीठ; ब्रज० कंगाल कूं ऊ मीठौ।

कंगाल गुंडा खलीती में गाजर—(क) बेमेल बात पर कहते हैं। (ख) ग़रीबी में सामान्य वस्तुओं की भी यदि प्राप्ति हो जाय तो आदमी बहुत सम्हाल कर रखता है।

कंगाली में आटा गीला— ग़रीबी में आटा गीला हो जाता है। (क) आपत्ति के समय और भी आपत्ति आए तब यह कहावत कही जाती है। (ख) ग़रीबी में धन-हानि होने पर भी इस कहावत का प्रयोग होता है। तुलनीय : मरा० आधी दारिद्रय, त्यांत कणिक भिजली (खरकटी झाली); पंज० गरीबी बिच आट्टा ढिल्ला; अव० कंगाली में आट्टा गीला; तेलु० दरिद्रुडु चेनु पेट्टिते वडगंड्लवान; ब्रज० कंगाली में आटौ गीलौ।

कंजर की कुतिया न जाने कहाँ ब्याये कंजर (ख़ानाबदोश) की कुतिया का कुछ पता नहीं कि कहाँ जाकर बच्चे देगी क्योंकि वे लोग किसी एक स्थान पर नहीं टिकते। (क) जिस व्यक्ति के कार्यक्रम का कुछ पता न चले उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। (ख) जिस कार्य के फल का कुछ पता या निश्चय न हो उसके प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : राज० कांजर की कुत्ती कठै जाणनी ब्यावै; पंज० कुत्ती दी नी पता नई किथे सुये; ब्रज० कंजारा की कुतियां कहां ब्यावै ?

कंजा भागवान होता है—कंजी या भूरी आँखों वाला व्यक्ति भाग्यवान समझा जाता है। तुलनीय : पंज० कंजा करमांवाला हुंदा है, ब्रज० कंजौ भागवान होयै।

कंजूस आदमी और मैला कपड़ा—कंजूस व्यक्ति और गंदा वस्त्र ये दोनों शीघ्र ख़राब हो जाते है। कंजूस व्यक्ति खाने-पीने में कम ख़र्च करता है जिससे उसका स्वास्थ्य ख़राब हो जाता है और गंदा कपड़ा मैल के कारण शीघ्र फट जाता है। तुलनीय : गढ़० निदेण जौ मनखी अर निधोण जौ लत्ता; पंज० कंजूस मनुख अते गंदा कपड़ा।

कंजूस कभी संतुष्ट नहीं होता—धन का लोभी हमेशा कुछ पाने की ही इच्छा करता है, उसे कभी भी संतोष नहीं होता। तुलनीय : मग० अतन रखलका जतन लगा के गिरगिट खेलका मुड़ी डोला के; भोज० गिरगिट के केतनो खियाव मुड़ी डोलाइ देइ; पंज० कंजूस कदी नई रजदा।

कंजूस मक्खीचूस— कंजूस अथवा बहुत अधिक लालच करने वाले व्यक्ति के प्रति कहते हैं। तुलनीय : अव० कंजूस

माखी-चूस; पंज० कजूस मक्खी चूस।

कंठचामीकर न्यायः गले में धारण किए हुए आभूषण का न्याय। कभी-कभी ऐसा देखा जाता है कि गले में आभूषण धारण करने वाला इतना भूला हुआ रहता है कि वह अपने आभूषण को भूल जाता है और किसी के स्मरण कराने पर ही वह आभूषण की ओर ध्यान देता है। इसी प्रकार हम अपनी कतिपय विशेषताओं और न्यूनताओं की उपेक्षा करते हैं और दूसरों के द्वारा ध्यान दिलाए जाने पर ही उनकी ओर ध्यान देते हैं।

कंठी बाँधे हरि मिलें तो बंदा बाँधे कुन्दा—यदि कंठी बाँधने से ईश्वर-प्राप्ति होती हो तो मैं कुन्दा (लकड़ी का मोटा टुकड़ा) बाँध लूं। ऊपरी दिखावे वाले आडम्बरी संतों के लिए कहा जाता है। तुलनीय: पंज० माला गले बिच पाण नाल रब मिले तां मैं कुन्दा वन्नां।

कंत न पूछे बात, मेरा घना सुहागन नाम—(क) यदि कोई नौकर झूठे ही अपने मालिक का विश्वासपात्र होने का दावा करे तब कहते हैं। (ख) यदि किसी को कोई पद दिया जाय पर उस पद की सुविधाएँ उसे प्राप्त न हों तो भी कहते हैं। अभिधार्थ में या उससे मिलते-जुलते अन्य अर्थों में भी इस लोकोक्ति का प्रयोग होता है। तुलनीय: बुंद० कंत न पूछे बात मेरो धरो सुहागन नाम।

कंत न पूछे बात मेरी रखा सुहागन नाम—ऊपर देखिए।

कंत न पूछे बात रे मुझ घन्न सुहागन नांव—दे० 'कंत न पूछे बात मेरा...'।

कंद लुटें और कोयलों पर मुहर—(क) बड़े खर्चों में कमी न करके छोटे-छोटे खर्चों में सावधानी बरतना। (ख) जब कोई व्यक्ति मूल्यवान वस्तुओं के खो जाने पर कोई ध्यान न दे और साधारण-सी वस्तु के लिए काफ़ी परेशान हो तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय: पंज० मोया लुटोवे अते कोलियां उते मोहरे; ब्रज० मोहरें लुटी जायें, कयौलान पै छाप। दे० 'अशरफ़ियां लुटें और कोयलों पर मुहर'।

कंधा ढीला करने से काम नहीं चलता—कंधा ढीला छोड़ देने से अर्थात् हिम्मत हारने से काम नहीं चलता। सफलता पाने के लिए साहस और धैर्य की आवश्यकता होती है। जो व्यक्ति काम को कठिन देखकर बीच में ही छोड़ दें उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय: भीली खोड़ीया ढीला मेलों अदर-अदर फरय्ये काम ने चाले; पंज० मोंडा ढिल्ला करण नाल कम नई चलदा; ब्रज० कंधा ढीलो करिबे ते का ... ये चलै।

कंधे पर छोरा, गांव में ढिंढोरा—कंधे पर बैठे लड़के के लिए बेख़बरी से गांव भर ढूंढ़ना। पास की या स्पष्ट वस्तु न दिखाई पड़ने और उसके लिए दूर-दूर तक खोजने पर असावधान व्यक्ति के लिए कहते हैं। तुलनीय: पंज० मोंड़े उते मुंडा पिंड बिच रौला; ब्रज० कंधा पै छोरा, गाम में ढिंढोरा।

कंबल कंबल की गाँठ नहीं लगती—मोटा कपड़ा होने के कारण कंबल की गाँठ नही लगती। दुष्ट या नीच व्यक्ति आपस में कभी मित्रता नहीं कर सकते क्योंकि वे आपस में भी नीचता नहीं छोड़ते और एक दूसरे के विरुद्ध साज़िश करते रहते हैं। तुलनीय: पंज० कंबल कंबल दी गंड नई लगदी; ब्रज० कम्मर में गाँठि नायें लगै।

कंबल का कछौटा नब्वाब से यारी—जब कोई निर्धन व्यक्ति किसी बड़े आदमी से दोस्ती करने का प्रयत्न करे तो व्यंग्य से कहते हैं।

कम्बल का कछौटा नब्वाब सों लिवादइये—ऊपर देखिए।

कंबलनिर्णेजनन्यायः—मोटे कंबल के शुद्धीकरण का न्याय। तात्पर्य यह है कि मोटे कंबल को पैरों पर पटकने से पैर और कंबल दोनों की धूल झड़ जाती है और दोनो साफ़ हो जाते हैं।

कई बरतन होंगे तो टकराएँगे ही—तात्पर्य यह है कि एक ही जगह बहुत से लोग रहेंगे तो उनमें आपस में मन-मुटाव या झगड़ा कभी-न-कभी हो ही जाएगा। तुलनीय: भोज० जहाँ अधिक बरतन रही उहंवां ठक्कर होइबे करी; पंज० मते पाड़े होण गे तां खड़कणगे; ब्रज० ज्यादा बासन होंगे तौ टकरायिगे ई।

कई मामा का भांजा भूखा रहे—(क) जिस व्यक्ति का कोई एक निश्चित सिद्धान्त नहीं होता उसका कोई महत्त्व नहीं होता। (ख) साझे की वस्तु ख़राब हो जाती है। उस पर कोई विशेष ध्यान नहीं रखता। तुलनीय: हरि० घणे घरां का भाणजा भूक्खा ए सौवे; ब्रज० कँऊ मामान कौ भानजौ भूकौ ई रहै; पंज० मते मामयां दा पाजा पुक्खा रवै।

कउड़ि पठाओले पाब नहि छोर, घीव उधार माँग मति भोर—मूल्य भेजने पर तो मट्ठा नहीं मिला, अब मूर्ख घी माँग रहा है। मूर्खों के लिए कहते हैं। यह मैथिली लोकोक्ति है जिसका विद्यापति के यहाँ इसी रूप में प्रयोग हुआ है।

ककड़ी का वंश डूबा, हाथ-मुँह टेढ़ा—ककड़ी टेढ़ी-मेढ़ी होती है। अर्थात जिसके बच्चे अच्छे स्वभाव के न हों या

असुंदर हों उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : भोज० ककरी क बंम बूड़ल हाथ-मुँह टेढ़।

ककड़ी के चोर की गर्दन नहीं मारी जाती— छोटे अपराध पर कठोर दंड नही दिया जाता। तुलनीय : राज० काकड़ीरै चोरने मुक्कीरी मार; मेवा० काकड़ी का चोर ने मूक्यां की मार; ब्रज० कांकरी के चोर की गरदन नायें मारी जायै।

ककड़ी के चोर को तलवार की मार—ऊपर देखिए

ककड़ी के चोर को फांसी नहीं दी जाती—दे० 'ककड़ी के चोर की गर्द...'। तुलनीय : मरा० काकडीच्या चोराला फांशी देत नाहीत; ब्रज० कांकरी के चोरै का फांसी दई जायै।

ककड़ी के चोर को मुक्के की मार—ऊपर देखिए। तुलनीय : गढ़० काखड़ी को चोर, मुठक्यौ घौ; ब्रज० कांकरी के चोर में घमान की मार।

ककड़ी चोर को भाला नहीं मारा जाता—दे० 'ककड़ी के चोर को फांसी...'।

ककड़ी चोर को मुक्कों की सजा—दे० 'ककड़ी के चोर की गर्दन...'।

क ख ग आता नहीं, मांगते हैं पोथी—आता जाता कुछ नही और पोथी मांग रहे हैं। मूर्ख व्यक्ति या ऐसे व्यक्ति के प्रति कहते है जो अपनी वास्तविकता से परे की बात करता है। तुलनीय : हरि० क ख ग आवे नां द माई पोथी; पंज० क ख ग आंदा नईं मंगदे हन पौथी।

क ख ग नहिं जानहिं ह का लेवें नाम— किसी चीज़ का आरंभ तो जानते नहीं और बात करते हैं उसके अंत की। बनने वाले के प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

कचरी खाये दिन बहलाये, कपड़े फाटे घर को आए—(क) जब कोई मनुष्य ऐसा काम करे जिसमें तनिक भी लाभ न हो तो कहते हैं। (ख) कोई व्यक्ति कही बाहर नौकरी या रोज़गार करने जाए और अन्त में इधर-उधर घूम-घाम कर अपने पास का पैसा खाकर लौट आए तो भी कहते हैं। तुलनीय : भोज० कचरी खइली दिन बहलवली, लुग्गा फाटल त घरे अइली।

कचरे से कचरा बढ़े—कूड़ा जहाँ होगा वहाँ पर और कूड़ा बढ़ता ही जायगा। अर्थात् सफ़ाई रखनी चाहिए। तुलनीय :राज० कचरस् कचरो वधै; पंज० कूड़े नाल कूड़ा वधदा है।

कचहरी का दरवाज़ा खुला है— मुक़दमा चलाया जा सकता है (क) जब दो व्यक्तियों के बीच झगड़े का निपटारा आपसी बातचीत या समझाने-बुझाने से नहीं हो पाता तब एक दूसरे से कहता है कि यों नहीं मानते तो मैं अदालत में चला जाऊँगा। (ख) जब कोई बहुत कहने पर भी बात नहीं मानता तो उसके लिए भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० कचैरी दा बुआ खुला है। ब्रज० कचैरी को द्वार खुल्यों ऐं।

कचौड़ी की बू अभी तक नहीं गई—उन्नति कर जाने पर भी यदि कोई छोटा आदमी अपनी छोटाई न छोड़े या ग़रीब हो जाने पर भी कोई पुराना धनी अपनी आदतें न छोड़े तो कहते हैं। तुलनीय : पंज० गोये दी बो अजे वी नईं गयी।

कच्चा काम दो दिन तक—नक़ली चीज़ ज़्यादा दिन तक नहीं रहती या टिकती। (क) जब कोई व्यक्ति किसी काम को ठीक ढंग से न करके केवल अपनी ड्यूटी पूरी करता है तब कहते हैं। (ख) जब कोई विद्वान होने का स्वाँग रचता है तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० कच्चा कम दोआं दिनां तक।

कच्चा खेत न जोते कोई, नाहीं बीज न अकुरे कोई—(क) कच्चा खेत नहीं जोतना चाहिए क्योंकि ऐसा करने से बीज नहीं जमेगा। (ख) अनुपयुक्त समय और स्थान पर किए गए काम का कोई फल नही होता। तुलनीय : पंज० कच्चे खेत नू कोई नईं रांदा उस बिच राए बीं उगदे नईं।

कच्चा तो कचौड़ी मांगे, पूरी मांगे पूरा; नोन मिर्च तो कायथ मागे, बामन मांगे बूरा—बच्चे कचौड़ी की तरह कुरकुरी चीज़ मांगते हैं, प्रौढ़ लोग मुलायम पूड़ी चाहते हैं, कायस्थ लोग नमकीन चीज़ अधिक पसंद करते हैं और ब्राह्मणों को मिष्ठान्न प्रिय है। तुलनीय : ब्रज० कच्चौ तौ कचौरी माँगे, पूरी माँगै पूरौ।

कच्चा दूध सबने पिया है—ग़लती सभी से होती है। तुलनीय : पंज० कच्चा दुद सारियां पीता है; ब्रज० सबनें कच्चौ दूध पीयौ ऐ।

कच्चा बाँस जिधर नवावो नव जाय, पक्का कभी न टेढ़ा हो चाहे टूट जाय—बच्चों को शुरू में जैसी शिक्षा दी जाती है वे वैसे ही अच्छे या बुरे बन जाते हैं क्योंकि उनकी बुद्धि कोमल होती है। बड़े होने पर सिखाने का कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता। तुलनीय : भोज० कच्चा बांस जेधिरे नवावल जाइत नइ जाइ बाकी पाकल बांस ना नइ; पंज० कच्चा बंझ जिहड़े पासे मोड़ो मुड़ जांदा है पक्का पांवे टुट जावे पर डींगा नईं हुंदा।

कच्ची कली कचनार की तोड़त मन पछताय—(क) जब किसी चीज़ का अपरिपक्वावस्था में उपयोग किया

जाय, पर कोई लाभ न हो या आनंद न आये और चीज खराब भी हो जाय तब कहा जाता है। (ख) बहुत सुकुमार और दुर्बल व्यक्तियों के लिए भी व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० काची कली कनेर की तोड़त ही कुंमलाय।

कच्ची पेंदी दस्तरख्वान का ज़रर----शब्दार्थ यह है कि यदि खाने के बर्तन की पेंदी कच्ची हो तो उसमें सरलता से छेद हो जाता है और खाने की चादर (दस्तरख्वान) खराब हो जाती है। भावार्थ यह है कि छोटी उम्र में यदि लड़का बिगड़ जाता है या उसमें कच्ची चीजें रह जाती हैं तो बाद में वह सुधरता नही और उसमें खराबी बनी ही रहती है। वह औरों को ज़रर (हानि) पहुँचाता है।

कच्ची रोटी जिधर पाई उधर पकाई—काम आने वाली चीज जहाँ मिल जाय उसका उपयोग किया जा सकता है।

कच्ची हांड़ी पर पड़ा दाग पकने पर भी नहीं मिटता—जो बुरी आदतें अपरिपक्वावस्था या लड़कपन मे पड़ जाती हैं, वे कभी नही छूटती। तुलनीय : पंज० कच्ची कुन्नी उते लगया दाग पकान नाल वी नई मिटदा।

कच्चे घड़े को ही जोड़ लगता है - मिट्टी का घड़ा जब तक कच्चा रहता है तभी तक उसमें जोड़ लगाया या परिवर्तन किया जा सकता है, पकने के बाद कुछ भी परिवर्तन नही हो सकता। (क) किसी काम को आरम्भ में ही सुधारा जा सकता है, बाद में नहीं। (ख) बच्चों को बचपन में जैसा चाहे वैसा बना सकते है सयाना होने के पश्चात उनमें परिवर्तन लाना असंभव है। तुलनीय : राज० काचै घड़ै ही कारी लागैं; पंज० कच्चे कड़े नू ही जोड़ लगदा है।

कच्चे घड़े में पानी रहता नहीं---यदि कच्चे घड़े मे पानी डाला जायगा तो वह फूट जायगा। (क) ओछे व्यक्तियों के पास धन आ जाय तो वे अपना बड़प्पन प्रदर्शित करने के लिए उसे दोनों हाथों से लुटाकर फिर पहले की स्थिति मे आ जाते है, तब उनके प्रति व्यग्य से कहते हैं। (ख) जब कोई साधारण व्यक्ति किसी विद्वान की अच्छी सम्मति को न माने तो उसके प्रति भी व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : भीली – काचे घड़ूल्ये पानी नी ठेरे; पंज० कच्चे घड़े विच पाणी नई रैंदा; ब्रज० कच्चे घड़ा मे का पानी ठहरै।

कछु न बसाइ भए विधि बामा—भाग्य, ब्रह्मा या ईश्वर के प्रतिकूल होने पर मनुष्य का कुछ भी वश नही चलता।

क़ज़ा के आगे हकीम अहमक़—मृत्यु के आगे चिकित्सक की कुछ नहीं चलती या मौत के आगे किसी का भी वश नहीं चलता।

क़ज़ा के तीर को ढाल की हाजत नहीं--अर्थात मृत्यु को कोई नहीं रोक सकता।

कटकगवोदाहरणम्-- बाड़े की गाय का उदाहरण। प्रातःकाल गाय का दूध निकाल लेने पर उसे चरने के लिए छोड़ देते हैं। शाम को वह घर आ जाती है। उस समय यदि उसे बलात् निकाला (भगाया) जाय तो वह भागना नहीं चाहती। अर्थात (क) अपना घर सबको प्यारा होता है। (ख) मनुष्य कहीं भी रहे पर बुढ़ापे में उसे अपने घर जाना पड़ता है और वहाँ वह लोगों की दो बात बरदाश्त कर लेता है, पर वहाँ (घर) से जाता नहीं है।

कटखनी कुतिया मखमल की झूल-- (क) बेमेल काम या बात पर कहते हैं। (ख) जब किसी बुरे व्यक्ति को कोई उच्च पद या अच्छी वस्तु प्राप्त हो जाती है तो व्यंग्य में ऐसा कहते है।

कटहल पेड़ पर ओठ में तेल—कटहल पेड़ पर है और अभी से ओठ में तेल लगाने लगे। जब कोई व्यक्ति किसी कार्य की तैयारी समय से काफ़ी पहले ही शुरू कर देता है तब उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : पंज० कटहल बूटे उते अते बुलां नूं तेल; अं० Make not your sauce till you have caught your fish.

कटा सिर भी रोटी मांगे तो कोई क्या करे?—मृत व्यक्ति भी भोजन माँगे तो कोई क्या कर सकता है? अर्थात कुछ भी नहीं। (क) किसी असंभव बात या घटना पर कहते हैं। (ख) बचाव के सभी उपाय करने के बावजूद यदि कोई व्यक्ति परेशानी या विपत्ति मे फँस जाता है तो कहता है. या उसके प्रति कहते है। तुलनीय : भीली - बाड़ाय्यी मून्डी बाकला बूके-जणां हूं करां; पंज० वडोया सिर वी रोटी मंगे तां कोई की करे।

कटी उंगली पर भी नहीं मूतता---कटी उँगली पर भी पेशाब नही करता। लोगो का ऐसा विश्वास है कि कटी उंगली पर पेशाब करने से पीड़ा (दर्द) कम हो जाती है और घाव ठीक हो जाता है। अर्थात् जब कोई किसी की समय पर सहायता नही करता है या जब कोई किसी की साधारण सी भी मदद नही करता तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : बुंदे० कटी उंगरिया पै नई मूतत; मेवा० चीरी आगली पै नी मूते; राज० बाढी आंगळी पर ही को मूतैनी; पंज० वडी उंगल उते वी नई मुतरदा; ब्रज० कटी उंगरिया ऊ पै नायें मतै।

कटी नाक पर भी मक्खी नहीं बैठने देता—बहुत ही सतर्क या चालाक व्यक्ति के प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : माल० नकटो नाक है तोई नाक पे माखी नी बेठवा दे; पंज० बडी नक उते वी मक्खी नईं वैण देंदा।

कटे अहीर का, सीखे नाऊ का—बाल काटना सीखता है नाई का बेटा और अंग (गाल या सिर) कटता है अहीर का। जब कोई व्यक्ति अपने लाभ के लिए दूसरे की हानि करे तो कहते हैं। तुलनीय : भोज० कटे अहिर के सीखे बेटा नउआ का।

कटे का क्या कटेगा—जब कोई बहुत गया-गुजरा, निर्धन या अपमानित व्यक्ति कोई अपराध करे तो उसके प्रति कहते हैं क्योंकि उसके पास है ही क्या जिसकी हानि होगी। या उसका सर्वस्व लुटने पर वह कोई खतरे का काम करे और लोग उसे मना करें तो वह अपने लिए इसका प्रयोग करता है। तुलनीय : पंज० मरे दा की मरेगा।

कटेगा और का सीखेगा नाई का—दे० 'कटे अहीर का···'। तुलनीय: अव० कटै काहू की सिखै नाऊ; राज० बिगड़ैगा तो काऊ का सुधरेगा तो नाऊ का।

कटेगा काऊ का सीखेगा नाऊ का—दे० 'कटे अहीर का···'।

कटेगा बटाऊ का सीखेगा नाऊ का—दे० 'कटेगा अहीर का···'। तुलनीय : ब्रज० कटै बटाऊ, सीखै नाऊ।

कटे तो किसान का, सीखै तो नाई का—दे० 'कटेगा अहीर का···।'

कटे सिपाही नाम सरदार का—लड़ाई में सिपाही मारे जाते हैं और विजय मिलने पर नाम नायक (सरदार) का होता है अर्थात् जब कार्य कोई करे और उसकी सफलता का श्रेय किसी और को प्राप्त हो तब ऐसा कहते है। दे० 'धी बनावे सालना और बड़ी बहू का नाम।'

कटे सिर काहू का बेटा सुधरे नाऊ का—दे० 'कटेगा और का सीखेगा···'।

कठिन करम गति कछु न बसाई—अपने पूर्व जन्म के कर्म या भाग्य की गति के आगे किसी का कुछ बस नहीं चलता।

कड़कड़ बाजे थोथा बाँस—खोखले (थोथे) बाँस में आवाज़ बहुत होती है। निकम्मे व्यक्ति को कहते हैं जो बोलता बहुत है और काम कम करता हे।

कड़की तो डरी, पड़ी तो सही—विपत्ति के आने के विचार से डरना उसे सहन कर लेने से अधिक असह्य होता है लेकिन जब विपत्ति आ पड़ती है तो मनुष्य उसे झेल भी लेता है।

कड़वा बोल कभी न बोल—कड़वी बात कभी भी किसी से नहीं कहनी चाहिए। कड़वी बात हृदय में ऐसा घाव कर देती है जो कभी नही भरता। तुलनीय: भीली—ओकी वाणी कणाये नी केवी ; पंज० कौडी गल कदी नां बोल ; अं० Wounds caused by words are hard to heal.

कड़वी बेल से मीठे फल—कड़वी लता से मीठे फल नही पैदा हो सकते, अर्थात् दुष्टों से भलाई नही होती, या बुरे कुल में अच्छे व्यक्ति नहीं होते। दे० 'बोये पेड़ बबूल के आम कहाँ से खाय'।

कड़वी भेषज बिन पिए, मिटे न तन की ताप—कड़वी दवा का सेवन किए बिना रोग दूर नही होता, अर्थात बिना कठिन परिश्रम किए या कुछ दुःख सहे आनंद नही मिलता।

कड़ाही से निकला, चूल्हे में पड़ा—किसी मुसीबत से बचकर और बड़ी मुसीबत में फँस जाने पर कहते हैं। तुलनीय: मरा० कढई तून निमटल्ला, चुलीत पडला ; पंज० कडाई बिचों निकलया उते चुल्हे बिच पिया।

कड़ुवा स्वभाव डूबती नाव—(क) दोनों ही अच्छे नहीं होते। (ख) कड़वा स्वभाव डूबती नाव के समान हानिकर या विनाशकारी होता है अर्थात कटुभाषी का कहीं काम नहीं बनता।

कड़ुई ओषधि के बिना मिटे न तन की ताप—दे० 'कड़वी भेषज बिन···'।

कड़ुए से मिलिए मीठे से डरिए—कड़ुए आदमी सदा खरे होते हैं और खरे लोग दिल के साफ होते हैं अतः उनसे मिलना या सम्पर्क रखना चाहिए, तथा मीठी-मीठी बातें करने वाले लोग चापलूस और दिल के बुरे होते हैं अतः उनसे दूर रहना चाहिए या सावधान रहना चाहिए। तुलनीय: कौडे नाल मिलो अते मिट्ठे कोलों डरो।

कड़ुए से ही मीठा मिलता है—कष्ट सहने से ही सुख मिलता है। सुख पाने के लिए दुःख उठाना आवश्यक है। तुलनीय: भीली—कड़ुवा मांए मीटू है ; पंज० कौड़ा खाण नाल ही मिट्ठा मिलदा है।

कढ़ाई से गिरा चूल्हे में पड़ा—दे० 'कड़ाही से निकला···'। तुलनीय: मल० पट पेटिच्चु पन्तळत्तु चेन्नप्पोळ पन्तवुम् कोलुत्ति इङ्ङोट्टुङ।

कढ़ी का-सा उबाल आया और चला गया—जब किसी व्यक्ति को छोटी-छोटी बातों में क्रोध आ जाता है और शीघ्र ही समाप्त भी हो जाता है तब उसके प्रति कहते हैं

कढ़ी में कोयला—जब किसी अच्छी वस्तु में कोई बुरी वस्तु मिल जाती है तब कहते हैं। दे० 'कबाब में हड्डी' और 'खीर में नमक की डली'।

कढ़ी हमें खाने दो या फैलाने दो—या तो हमें भी हिस्सा दो नहीं तो हम इसे बिखेर देंगे। जब कोई व्यक्ति ज़बरदस्ती किसी वस्तु में हिस्सा बाँटना चाहे और न देने पर उसे नष्ट कर देने की धमकी दे तो उसके प्रति कहते है।

कढ़ी होठों चढ़ी कोठों—मुँह से निकली हुई बात दूर-दूर तक फैल जाती है। जब किसी व्यक्ति द्वारा कही गई बात शीघ्र अनेक लोगों तक पहुँच जाती है तब कहते हैं। तुलनीय: कौर० कढ़ी होट्टों, चढ़ी कोट्ठों।

कतरनी-सी जीभ चलती है—बहुत अधिक बोलने वाले या तेज़ बोलने वाले के लिए कहते है। तुलनीय : पंज० कैंची जिही जीव चलदी है।

क़त्ले-मूज़ी क़ब्ल अज़ ईज़ा—(क) काटने से पहले ही साँप को मार डालना चाहिए। (ख) शत्रु और रोग के लिए इस कहावत का प्रयोग करते हैं।

कतहूँ सुघरहू ते बड़ दोषू—(क) कभी-कभी बुद्धिमान मनुष्य भी बड़ी-बड़ी भूलें कर बैठते हैं। (ख) अच्छाई भी कभी-कभी दोष सिद्ध हो जाती है।

कतहुँ सुधाइहु तें बड़ दोसू—सीधा होना यों अच्छा है पर कभी-कभी या कहीं-कहीं पर सिधाई से भी बड़ी हानि होती है।

कता-बुना कपास हो गया—कपास से सूत काता और सूत से कपड़ा बुना किन्तु वह फिर कपास में परिवर्तित हो गया। जब कोई बना-बनाया कार्य बिगड़ जाय तो कहते हैं। तुलनीय: राज० कात्यो पीज्यो कपास हुग्यो ; गढ़० ओट्याँ कत्याँ की कपास ; पंज० कतया पिंजया कपा हो गया।

कते-बुने की कपास बन गई—ऊपर देखिए।

कत्थर गुद्दर सोंए, मरजादी बैठा रोंए—जिनके पास ओढ़ने को फटे-पुराने कपड़े हैं वे उसी में सुख की नींद सोते है, परन्तु बड़े आदमी या प्रतिष्ठावान् (मरजादी) बैठ कर रोते है, इसलिए कि उनके पास क़ीमती कपड़े नहीं। आशय यह है कि साधारण व्यक्ति जिसकी कोई खास प्रतिष्ठा नहीं होती निश्चिन्त रहता है पर प्रतिष्ठित व्यक्ति अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए सदैव चिंतित रहता है। तुलनीय : बुंद० कत्थर गुद्दर सोवें, मरजादी बैठे रोवें।

कत्थर गुद्दर सोंवें, मरजादू बैठे रोवें—ऊपर देखिए।

क़त्लल मूज़ी क़ब्लुल ईज़ा—दे० 'क़त्ले मूज़ी क़ब्ल अज़ ईज़ा।'

कथनी नहीं, करनी चाहिए—किसी कार्य के विषय में केवल बातें करने से कोई फ़ायदा नहीं होता जब तक कि उसे कर न दिखाया जाय। जब कोई व्यक्ति बातें तो बहुत करता है पर करता कुछ नहीं तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० किसी कँम दे बारे विच कैणा ही नई उसनूँ करना बी चाइदा है; अं० Deeds are fruits, words are but leaves

कथनी बदनी छाँड़ि कै, करनी सोचित् लाय—व्यर्थ की बकवाद करना छोड़कर काम करना चाहिए। आशय यह है कि केवल बातें करने से कुछ नहीं होता, लाभ तो काम करने से ही होता है।

कथनी से करनी बड़ी—कहने से करना बहुत अच्छा होता है। अर्थात् काम करने वाले की सभी इज्ज़त करते हैं और बातें करने वाले की कोई बात भी नहीं पूछता। तुलनीय: पंज० कैण नालों करना बडा ; ब्रज० कथनी ते करनी बड़ी।

कथरी ओढ़ै घी तोड़ै—ओढ़ते तो कथरी है और खाते हैं घी। अर्थात् (क) जब कोई व्यक्ति फटे-पुराने कपड़ों को पहनकर यह दिखाता है कि वह ग़रीब है पर उसकी स्थिति इसके विपरीत होती है तो कहते हैं। (ख) जो लोग पहनने की अपेक्षा खाने के अधिक शौक़ीन होते है उनके प्रति भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : छत्तीस० कथरी ओढ़े घी खाय।

कथरी की टोपी गुलाल का झोंका—सिर पर तो फटे-पुराने कपड़े (कथरी) की टोपी लगाए है और उस पर गुलाल लगवाना चाहते है। जब कोई व्यक्ति किसी वस्तु को प्राप्त करने की क्षमता न रखते हुए भी उसे प्राप्त करना चाहता है तब उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय: बुंद० कथरी कौ मुड़ाय छो बांदें, गुलाल खां ठिनके फिरें ; बघे० कथरी के टोपी, अबीर के झोंका मारे ; दे० 'बूढ़ी घोड़ी लाल लगाम'।

कथरी गुदड़ी सोवें, मर जादी बैठे रोवें—दे० कत्थर गुद्दर सोवें...।'

कथा सुन, भागवत सुन बहुत हुई खुसी; हृदय ज्ञान लागा नहीं, चिंता रांड़ घुसी—जब तक हृदय और मस्तिष्क शांत न हो तब तक भगवान का नाम लेने में कोई लाभ नहीं। चिंताग्रस्त व्यक्ति को कुछ भी अच्छा नहीं लगता।

कथ्थक के घरे कुकुरियो गायक—कथ्थक अर्थात् नाचने-गाने वालों के परिवार की कुतिया भी गायिका होती है। आशय यह है कि व्यक्ति जैसी संगति में रहता है वैसी ही उसकी आदतें बन जाती हैं। दे० 'क़ाज़ी के घर के कुत्ते भी सयाने।'

कदम-क़दम पर कुनबा बूड़े, आगे धरमराज दरबार—परिवार तो पग-पग पर डूबा जा रहा है और कहते हैं कि धर्मराज का दरबार आगे है। अर्थात् (क) जिस व्यक्ति का सब कुछ नष्ट हो रहा हो और वह बचाव का कोई उपाय न करके सोचे कि अब इसके बाद सुख प्राप्त होगा तो उसकी इस मूर्खता पर व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। (ख) जिस व्यक्ति को परिवार के भरण-पोषण के लिए साधन प्राप्त न हो सकें और ईश्वर के भय से वह कोई अनुचित काम भी न करे तब वह असमंजस की स्थिति में पड़कर ऐसा कहता है।

कदम-क़दम पर बाजरा, मेढ़क कुदौनी जार, ऐसे बोवै जो कोई, घर-घर भरें कोठार—बाजरे को क़दम-कदम की दूरी पर तथा ज्वार को मेढ़क की कुदान पर बोना चाहिए। जो किसान इस प्रकार बोता है उसके घर के कुठले अन्न से भर जायेंगे। बाजरा और ज्वार की विरल फ़सल ही अच्छी होती है। यह उक्ति बुवाई से संबंधित है।

कदम-कदम पर साधू बैठे किसके लागूं पाँव—यहां सैकड़ों साधु बैठे है सबके पाँव छुये नहीं जा सकते और कुछ के पाँव छुएँ तो बाक़ी अप्रसन्न हो जाते हैं। जहां पर किसी साधारण से काम के लिए भी बहुत से व्यक्तियों को प्रसन्न करना या आदर देना आवश्यक हो, किन्तु दिया न जा सके तब व्यंग्य से इस तरह कहते हैं। तुलनीय : माल० थांबे-थांबे मुणी बैठा, कीने करूं सलाम; पंज० था-थां उते साधू बैठे दे किस दे पैरी पां।

कदम्बकोरकन्याय—कदम्ब वृक्ष की कलियों का न्याय। कदम्ब की कलियों के बारे में कहा जाता है कि वे एक समय में ही विकसित हो जाती हैं। अर्थात् जब किसी व्यक्ति के कई कार्य एक साथ संपन्न हो जाएँ तो ऐसा कहते हैं।

क़द्र खो देता है हर रोज का आना-जाना—आवश्यकता से अधिक किसी के पास आने-जाने से सम्मान घट जाता है। तुलनीय : हरि० बिना बुलाये जाइये ना अपणा मान घटाइये ना; मरा० वारंवार येण्या जाण्यानें मान जातो; अं० Too much familiarity breeds contempt.

कदलीफलन्यायः—केले के फलों का न्याय। केले के फल उत्पन्न होकर उसी मिट्टी को अनुर्वर बना देते हैं। अर्थात् जब किसी व्यक्ति के बच्चे नालायक़ हो जाते हैं और माँ-बाप को कष्ट देने लगते हैं तब कहते है।

कद्दू के फूल—बहुत सुकुमार व्यक्ति के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। ऐसा कहा जाता है कि कद्दू का फूल इतना नाज़ुक होता है कि उसकी तरफ कोई उँगली भी दिखा दे तो वह मुरझा जाता है। दे० 'छुई-मुई का पेड़।'

क़द्र उल्लू की उल्लू जानता है, हुमा को कब चुग़द पहचानता है—मूर्ख बुद्धिमान की क़द्र नहीं जानता। हुमा एक कल्पित पक्षी है जो शक्ल में चुग़द (उल्लू) जैसा होता है और जिसके बारे में प्रसिद्ध है कि वह किसी को सताता नहीं और जिसके सिर के ऊपर से गुजर जाता है वह राजा हो जाता है। यह भी प्रसिद्ध है कि लोग इसी धारणा के कारण भ्रमवश उल्लू के नीचे से गुज़र जाते हैं।

क़द्र खो देता है हर वक़्त का आना-जाना—दे० 'क़दर खो देता⋯।'

क़द्रे-जौहर शाह दानद या बिदानद जौहरी—हीरे की क़द्र या तो बादशाह करता है और या जौहरी जो उसका पारखी होता है अर्थात् गुण की प्रशंसा गुणज्ञ ही करता है।

क़द्रदां के ख़ुदा पैताने बिठाये, बेक़द्र के मगर सिरहाने भी न बिठाये—क़द्र करने वाले के पैताने (पैर के पास) भी बैठना अच्छा है पर क़द्र न करने वाले के सिरहाने भी नहीं। आशय यह है कि मनुष्य को उसी से व्यवहार रखना चाहिए जो उसका सम्मान करे।

क़द्रे-आफ़ियत कसे दानद कि बमुसीबते गिरिफ़्त आयद—जो कष्ट भुगत चुका होता है वही सुख का मूल्य समझता है।

क़द्रे-आफ़ियत मालूम होगी—सुख का मूल्य मालूम पड़ेगा। जब कोई दूसरों की कमाई पर खूब मौज उड़ाता है और किसी के कष्ट या तकलीफ़ की ओर कोई ध्यान नहीं देता तब व्यंग्य में उसके प्रति ऐसा कहते है।

कनउड़ काट न माथ—जो उपकार से दबा (कनउड़) होता है वह सिर नहीं काट सकता। अर्थात् कृतज्ञ अपने उपकारी का कोई बहुत बड़ा नुकसान नहीं कर सकता। 'जो वह कहै सरै सो कीन्हे कनउड़ झार न माथ'—जायसी।

कनक-कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय—आशय यह है कि धन भी कम नशीला नहीं है। धनी लोग धन के नशे में ही बेहोश रहते हैं। धनगर्वित मदहोश धनिकों पर व्यंग्य है। बिहारी के एक दोहे का पूर्वार्द्ध जिसकी दूसरी पंक्ति है—'वह खाये बौराय नर यह पाये बौराय।'

कन-कन जोरे मन जुरे, खाते निबरे सोय—थोड़ा-थोड़ा इकट्ठा करने से बहुत हो जाता है और व्यय करने से सब समाप्त हो जाता है चाहे कितना भी अधिक क्यों न हो। तुलनीय : मेवा० कण कण जोडयां मण जुड़े; फा० क़तरा-क़तरा दरिया मी शवद; पंज० पैहा-पैहा जोड़न नाल हजार होण खाण नाल सब खतम; Each drop fills

the pitcher.

कनखजूरे का एक पैर टूट जाए तो वह लँगड़ा नहीं होता कनखजूरे या गोजर (बहुत पैरों का एक कीड़ा) की एक टाग टूट भी जाए तो उस पर कोई असर नहीं होता। आशय यह है कि या बड़े साधन-संपन्न आदमियों का थोड़े नुक़सान से कुछ नहीं बिगड़ता। तुलनीय : बुद० कान-खजूरे की एक गोड़ो टूट जाय तौं लूलौ नई हो जात; मरा० घोंणीचा एक पाय मोडला तरी लँगड़ी होत नाही; छनीस० कनखजूर के एक गोड़ टूट जुथे, तभो खोखा नइ होय; पंज० कनखजूरे दा इक पैर टुट वी जावे ते ओह लगा नई हुंदा।

कनखजूरे के पाँव टूटेंगे भी तो कितने —ऊपर देखिए।

कनवा पांडे पांय लागूं— (क) किसी की प्रशंसा की आड़ में उसके अवगुणों या दोषों को दिखाना या उसकी निन्दा करना। (ख) किसी से जान-बूझकर झगड़ा मोल लेना। तुलनीय : गढ़० काणा पांडे पै लागू, ये आया झगड़ा का लच्छन।

कनियां लरिका गांव गुहारि लड़का तो गोद में है और गाँव-भर में खोजते हैं। जब कोई व्यक्ति पास रखी हुई चीज को इधर-उधर खोजे तो कहते है। तुलनीय : अव० कनिया मा लरिका गांव मा मुनादी; हरि० घरा छोहरा बाजार में टोह; पज० कुछड़ कुड़ी टिडोरा सहरे।

कनौड़ी बिल्ली चूहों से कान कटावे—(क) जब बलवान को अपने किसी दोष, कमज़ोरी या एहसानमन्दी के कारण कमज़ोर से दबना पड़े तो कहते हैं। (ख) अधिकारी अपने मातहत से अपनी किसी कमज़ोरी के कारण दबे तब भी कहते है। (कनौड़ी एहसानमंद)। तुलनीय : अव० दबी बिल्ली मूसन से कान कटावे; पज० मरी बिल्ली चूहयां तो कन कटावे।

कन्या के लिए वर और धरती के लिए बीज मिल ही जाता है बिना वर के कोई लड़की नहीं रहती अर्थात् निर्धन व्यक्ति की लड़की का भी ब्याह हो ही जाता है और धरती में बोने के लिए बीज किसान कहीं न कहीं से अवश्य ही जुटा लेता है। तुलनीय : उ० किश्तियाँ सबकी किनारे प लग ही जाती है, नाखुदा जिनका न हो उनका खुदा होता है; पज० कुड़ी लई मुंडा अते धरती लई बी मिल ही जादा है।

कन्या धान, मीन जौ, जहाँ चाहे तहाँ लौ —धान की कन्या राशि की संक्रान्ति आने पर और जौ को मीन राशि की संक्रान्ति आने पर काटना चाहिए। अर्थात् जिस कार्य के लिए जो साइत या घड़ी उपयुक्त हो उसे उसी में करना चाहिए।

कपट चतुर नहिं होइ जनाई—चतुर व्यक्ति का कपट समझ में नहीं आता या प्रगट नहीं हो पाता।

कपटी का कुल नाश, अकपटी की देह—कपट करने वालों के कुल का नाश हो जाता है और अधिक परिश्रम तथा भूखे रहकर भी काम करने वाले सच्चे आदमी का शरीर या स्वास्थ्य नष्ट हो जाता है। आशय यह है कि कपट बहुत बुरी चीज़ है। तकलीफ़ सह लेना अच्छा पर छल-कपट नहीं करना चाहिए। तुलनीय : गढ़० कपटी को कुल नाश निरकपटी को ज्यू नाश; पज० खोटे दे कुल दा नाश चंगेदी जूण।

कपटी की प्रीत, बालू की भीत—कपटी व्यक्ति का प्रेम बालू की दीवार की भांति अस्थायी होता है। तुलनीय : पज० कपटी, खोटे दा वैर रेत दी कंद जिहा; ब्रज० कपटी की प्रीति बारू की भीत।

कपटी की प्रीति, मरन की रीति –कपटी से मैत्री-सम्बन्ध रखना मृत्यु के मार्ग पर अग्रसर होना है क्योंकि अवसर मिलते ही वह अपने स्वार्थ के लिए प्राण लेने में भी नहीं हिचकिचाएगा। तुलनीय पज० खोटे नाल पयार मौत दा यार।

कपटी जन की प्रीति है, खीरा की-सी फांक खीरे के फाँक की तरह कपटी आदमियों की मित्रता या प्रीति होती है। अर्थात् जिस प्रकार खीरा ऊपर से तो पूरा प्रतीत होता है किन्तु अन्दर तीन फाँके होती है, उसी प्रकार कपटी लोग ऊपर से तो प्रेम दिखाते हैं किन्तु उनका हृदय फटा या कपटयुक्त रहता है। उनका प्रेम मात्र दिखावटी होता है।

कपड़ा कहे तू मुझे कर तह, मै भी तुझ को कर दूं शह —जो कपड़े को ठीक तरह से रखता है कपड़ा भी उसको ठीक (सम्मान्य) बना देता है। अर्थात् साफ-सुथरे या अच्छे वस्त्रों से व्यक्ति की शोभा बढ़ जाती है। (शह =शाह= बादशाह)। तुलनीय : अव० कपड़ा कहे ते मोर इज्जत कर, तो मैं तोर करों; राज० कपड़ो कहे म्हारी इज्जत राख, हू थारी राखूँ।

कपड़ा कहे तू मेरी इज्जत कर मैं तेरी करूँ —ऊपर देखिए। तुलनीय : पंज० कपड़ा आखे तू मेरी इज्जत कर मैं वी तेरी इज्जत करां; ब्रज० कपड़ा कहै, तू मेरी हिफाजति करैगो तौ मैं तेरी करूँगो।

कपड़ा न लत्ता पान खाय अलबत्ता—पहनने को कपड़ा तक नहीं है लेकिन पान अवश्य खाते हैं। आडंबर करने वाले के प्रति कहते है।

कपड़ा पहने जग भाता, खाना खाए मन भाता—कपड़ा वही पहनना चाहिए जो सबको अच्छा लगे और भोजन वही करना चाहिए जो स्वयं को अच्छा लगे।

कपड़ा पहने तीन बार, मंगल, बुध, और शनिवार—नया वस्त्र (कपड़ा) मंगलवार, बुधवार और शनिवार को पहनना अच्छा समझा जाता है। तुलनीय: राज० कपड़ा पहरै तीन वार, मगल, बुध, अर थावरवार; पंज० कपड़ा पावो तिन वार मगल बुध अते शनिवार।

कपड़ा पहिरे तीनि बार, बुद्ध बृहस्पत शुक्रवार; हारे अबरे का इतवार, भड्डर का है यही विचार—ऊपर की कहावत में और इसमे केवल दिनों का अन्तर बताया गया है अर्थ दोनों का यही है कि कपड़ा विशेष दिनों को ही पहनना चाहिए।

कपड़ा फटा ग़रीबी आई—फटे-पुराने वस्त्र निर्धन व्यक्ति ही पहनते हैं। जब कोई व्यक्ति फटेहाल घूमता है तो लोग उसे देखकर ही उसकी स्थिति का अनुमान लगा लेते हैं और तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय: अव० कपड़ा फाट गरीबी आई; पंज० कपड़ा (टल्ला) फटया गरीबी आई; राज० कपडा फटे गरीबी आई।

कपड़ा रंगे क्या पाय, मन रंगे सब पाय—वस्त्रों को रंगने से कुछ नहीं मिलता, मन को रंगने से ही प्रभु मिलता है। जब तक हृदय शुद्ध नहीं होगा तब तक भगवान नहीं मिल सकते। ढोंगी साधुओं के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय: भीली भायलौ तो रंग्यो नी ने लबरो रंगीने फरता हिंडे; पंज० कपड़ा रंगण नाल कुछ नई मिलदा दिल रंगन नाल सब कुछ मिलदा है।

कपड़ा सफेद, घोड़ा कुम्मेत—सफेद रंग का कपड़ा सबसे सुन्दर लगता है और कुम्मेत घोड़ा सबसे अच्छा होता है। तुलनीय: राज० कपड़ा सपेतर घोड़ा कमेत। कपड़ा सपेत'र घोड़ा कमेत—(कपड़ा सफेद, घोड़ा कुम्मेत)।

कपड़े फटे और नाम सिंगारी—पहनने के कपड़े तक फटे हुए है और नाम है 'श्रृंगारी' (जिस व्यक्ति के गुण उसके नाम के अनुसार न हों तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय: राज० पहरणनै तो घाघरो ही कोनी, नांव सिणगारी; पंज० पाण नूँ कच्छा नई अते नां सिंगारी। दे० 'आँख के अन्धे, नाम नैनसुख'।

कपड़े फटे क्या देखने हो घर दिल्ली में है—जब कोई व्यक्ति फटे-पुराने कपड़े पहनने के कारण बाहर से ग़रीब मालूम पड़ता हो पर अन्दर से वह काफी सम्पन्न हो तो उसके प्रति कहते हैं। अर्थात् किसी के वस्त्रों को देखकर उसकी वास्तविक स्थिति का पता नहीं लगाया जा सकता। तुलनीय: पंज० कपड़े फटे नूँ की देखदे हो कर दिल्ली बिच है; ब्रज० कपड़ा फटे है तौ कहा, मकान तौ दिल्ली में है।

कपड़े फटे ग़रीबी आई—दे० 'कपड़ा फटा गरीबी···'।

कपड़े फटे ग़रीबी आई, जूती फटी चाल गँवाई—फटे वस्त्रों को धारण करने से आदमी गरीब समझा जाता है और जूता फट जाने पर चलने में परेशानी होती है। बहुत ही निर्धन व्यक्ति के प्रति इस लोकोक्ति का प्रयोग किया जाता है। तुलनीय: राज० कपड़ा फाट गरीबी आई जूती फाटी चाल मगाई; पंज० कपड़े फटे गरीबी आयी जूती फटी चाल गवाई।

कपास कहीं भी जाय, ओटी ही जायगी—(क) जिसका जो पेशा होता है वही उसको हर जगह करना पड़ता है। (ख) अभागा व्यक्ति जहाँ जाता है दुःख भोगता है। तुलनीय: पंज० नरमा किते वी जावे चुनी ही जावेगी; तुलनीय. ब्रज० कपास कहूँ जाय उटैगी ही।

कपास चुनाई, खेत खनाई—कपास की खेती में चुनाई करने से तथा खेत को अधिक खोदने से लाभ होता है।

कपास तो धुनने के ही लिए बनी है—दे० 'कपास कहीं भी जाय···'।

कपूत अरथी में तो कंधा देता है—बेटा कपूत (नालायक़) भी होगा तो भी अरथी में तो कंधा देगा। हिन्दुओं में कहा जाता है कि पुत्र के अरथी उठाने और तर्पण इत्यादि करने पर ही मुक्ति मिलती है। आशय यह है कि बुरे व्यक्ति या बुरी वस्तु भी कभी काम आ ही जाती है। तुलनीय: राज० कपूत पूत खांधनै काम आवे; ब्रज० कपूत कांठी में तौ कंधा देई है; पंज० कपूत अरथी बिच ता मोंढा लावेगा ही; अं० Smoething is better than nothing

कपूत के लिए क्या जोड़ना, सपूत के लिए क्या सहेजना—कपूत के लिए धन इकट्ठा करने का कोई लाभ नहीं क्योंकि वह संपत्ति का नाश कर देता है और सपूत के लिए धन एकत्र करने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि वह स्वय समर्थ होता है। तुलनीय: गढ़० कपूत कू क्या पांजणो, सपूत कू क्या सांजणो; पंज० कपूत लइ छड्डुना की, सपूत लइ रखना की। दे० 'पूत कपूत तो क्यों धन संचय, पूत सपूत तो क्यों धन संचय।'

कपूत गया चोरी, छेड़न लागा गोरी—एक मूर्ख व्यक्ति को जब कोई भी काम न मिला तो उसने चोरी करने की ठानी। एक मकान में रात्रि को जब वह गया तो एक सुंदर युवती को सोता देखकर उसी से छेड़खानी करने लगा। युवती

जाग गई और उसने शोर मचा दिया। घर वालों ने चोर की अच्छी तरह पिटाई करके पुलिस को सौंप दिया। तभी से यह कहावत चल पड़ी है। जब कोई व्यक्ति बुरा काम भी करे और मूर्खतावश उसमें भी लाभ के स्थान पर हानि हो तो उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। **तुलनीय : गढ़० पूत कपूत गयो चोरी,** असाड़ो आरुल्यायो तोड़ी; पंज० कपूत गया करण चोरी छेड़न लगा गोरी; **ब्रज०** कपूत गयौ चोरी, छेड़न लाग्यौ गोरी।

कपूत बेटा मरा भला—नालायक पुत्र का मर जाना ही अच्छा है। जब कोई व्यक्ति अपने दुष्ट पुत्र के कुकर्मों से ऊब जाता है तब ऐसा कहता है। तुलनीय : हरि० **कपूत तैं भगवान देय ना;** पंज० कपूत तो तां रब न देवे **चंगा; ब्रज०** कपूत तौ मर्यौई भलौ।

कपूत बेटा ससुराल जाय, खाना-पीना गाँठ से खाय—कपूत अपनी ससुराल में जाकर भी खाता अपने ही पास से है। (क) जो मनुष्य मनचाहे अवसर पर भी लाभ न उठाए तो उसके प्रति कहते हैं। (ख) नीच और मूर्ख लोगों के प्रति भी इस प्रकार कहते हैं क्योंकि उनको अपने या पराए कोई भी नहीं चाहते। तुलनीय : माल० कपूत बेटा जाने जाय, पान-सुपारी गाँठ री खाय।

कपूत बेटे की मौत भली—दे० 'कपूत बेटा मरा '। तुलनीय : भोज० नालायक लड़का क मरलके नीक या मल।

कपूत बेटे से निपूती रहना अच्छा—(नालायक पुत्र) से बिना पुत्र के रहना अधिक अच्छा है। **तुलनीय** : अव० कपूत बेटवा से निपूती रहब अच्छा अहै; पंज० कपूत पुतर नो बंझ रैणा चंगा।

कपूत से निपूत भले—ऊपर देखिए।

कपूत से पिंड की आस—जिस कार्य के कभी होने की संभावना न हो तो उसके होने की आशा करने वालों के प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० कपूत तो पिंड दी आस।

कफ़न की फ़िक्र कोई नहीं करता—मरने के बाद कफ़न का प्रबंध कोई न कोई कर ही देता है। कोई व्यक्ति जब साधारण से कार्य की चिंता करे तो व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : पंज० कफन दी फिकर कोई नई करदा।

कफ़न के लिए बैठे हैं—मरने के लिए तैयार हैं बस कफ़न की प्रतीक्षा है। (क) अत्यंत निर्धन व्यक्ति के लिए कहते हैं। (ख) किसी कार्य के लिए कटिबद्ध मनुष्य के लिए भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० कफ़न लई बैठे हन।

कफ़न या कफ़नी सिर में बाँधे फिरता है—मरने से तनिक भी नहीं डरता। अत्यंत निर्भीक एवं साहसी व्यक्ति के प्रति कहते हैं। **तुलनीय** : पंज० **कफ़न सिर उते बन के** फिरदा है।

कफोणिगुडन्याय—केहुनी (कुहनी) पर लगे गुड़ का न्याय। प्रस्तुत न्याय का **प्रयोग ऐसे स्थलों पर** किया जाता है जहाँ पर किसी के लिए कोई **वस्तु सुलभ न हो। यथा, जीभ** के लिए केहुनी पर लगे हुए **गुड़** की प्राप्ति **सुलभ** नहीं है।

कब उठे कब भाँवर पड़ी—शीघ्र संपन्न हो जाने वाले कार्य के प्रति कहते हैं। दे० **'चट मँगनी पट ब्याह'।**

कब के बनिया कब के सेठ—आनन-फ़ानन में बहुत अधिक या नई उन्नति करने पर लोग कहते हैं। तुलनीय : अव० कालिह बनिया आजै सेठ; पंज० कल दे बनिये अज दे सेठ।

कब के राजाई सुर भए, कोदों के दिन बिसर गए—बड़े आदमी कब से बन गए? क्या उन दिनों को भूल गए जब कोदो की रोटी खाया करते थे? जब कोई गरीब व्यक्ति अचानक धन पाकर बड़ा आदमी हो जाए और अपने गरीबी के दिनों को भूल जाए तो उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

कब छोटी पड़िया ब्याएगी, दूध-दही में खिलाएगी—भैंस की छोटी पड़िया जब ब्याएगी तब दूध-दही खाएंगे, अर्थात् जहाँ इच्छित वस्तु बहुत दूर हो और इच्छुक व्यक्ति उसी की आशा लगाकर बैठा रहे तब उसके लिए व्यंग्य में इसे प्रयुक्त करते हैं। तुलनीय : गढ़० कब थोरी ब्याली, कब खोरी खाला; पंज० जद कट्टी सूएगी ते दुद्ध पीयांगे। ब्रज० कब छोटी पड़िया ब्यावैगी, दूध-दही खवावैगी।

कब दादा मरेंगे कब बेल बंटेगी—जब कोई किसी से कुछ पाने की आशा काफ़ी दिनों से लगाए रहे तो कहते हैं। (बेल एक प्रकार का नेग (विदाई) है जो किसी के मरने पर या विवाह में नाई, भाटों आदि को दिया जाता है) तुलनीय : अव० कब मरिहैं सास कब अइहैं आँस; पंज० कदों दादा मरण गे तां बेल बंडोयेगी; ब्रज० **कब दादा मरैगौ,** कब बिनी बटैगी।

कब दादा मरेंगे, कब बैल बटेंगे—ऊपर देखिए। तुलनीय : अव० **कब मरिहैं सास कब अइहैं आँस;** ब्रज० कब दादा मरिंगे, कब बरध **बटिंगे।**

कब पैदा हुए, कब राक्षस बने—राक्षस मृत्यु के बाद बनते हैं। (क) अति शीघ्र **हो जाने वाले काम के प्रति** कहते हैं। (ख) जन्म से ही **दुष्ट प्रकृति के व्यक्ति** को भी कहते हैं। तुलनीय : भोज० **कब जनमलां कब** राकस भइल; पंज० कदों पैदा होये कदो राकस **बणे।**

कब मरी बूढ़, कब आया आँसू—बूढ़ी न जाने कब

मरी थी और अब उसके वियोग में आँसू आ रहे हैं। अर्थात् दिखावटी सहानुभूति दिखाने वाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : गढ़० कब मरी बूड, कब आया आँसू।

कब मरी सासू, कब आये आँसू—ऊपर देखिए। तुलनीय : हरि० कद्य मरी मास्सू, कद्य आई आंस्सू ? ब्रज० वही।

कब मरे कब कीड़े पड़े—बहुत जल्दी होने वाले काम पर कहते है।

कब मरे कब भूत हुए– ऊपर देखिए।

कब मरे कब राक्षस हुए—दे० 'कब मरे कब कीड़े…'।

कब सिंहनि अधरान को, कियौ स्वान मधुपान—सिंहिनी के अधरों का भला कुत्ते ने कब पान किया है ? अर्थात् कभी नही। कायर मनुष्य कभी वीरता नही दिखा सकते या वीर पुरुष की वस्तु पर कायर कभी अधिकार नही कर सकते।

कब से भैया राजा हुए, कोदों के दिन बिसर गये—नीचे देखिए।

कब से राजा ईश्वर भए, कोदों के दिन बिसर गए—सहसा स्थिति में परिवर्तन हो जाने पर जब कोई धनवान बन जाय और डींग हाँकने लगे तो उस पर कहते हैं। (कोदों एक अन्न का नाम है जिसे गरीब खाते है)।

कबही हमारी पारी, कबही तुम्हारी पारी, चलो भाई पारा-पारी (पारी =बारी) (क) बारी-बारी से काम करने के लिए कहते हैं। (ख) दो दुश्मनों में यदि कभी एक को अवसर मिल जाय तो वह बार कर ले और फिर यदि दूसरे को मिल जाय तो वह कर ले। ऐसी परिस्थिति में एक दूसरे के प्रति यह लोकोक्ति कही जाती है।

कबहूँ कि कांजी सीकरनि, छीर सिंधु बिनसाइ—कभी कांजी की एक बूँद से दूध का समुद्र फट सकता हैं ? अर्थात् नहीं फट सकता। (क) धैर्यवान का धैर्य बड़ी कठिनाई से विचलित होता है। (ख) बड़े का छोटा कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

कबहूँ कि दुख सब कर हित ताके—जो सब का हितैषी है वह कभी दुःखी नहीं रह सकता।

कबहूँ न हारे खेल जो, खेले दाँव बिचार—होशियारी से खेलने से हार नहीं होती। अर्थात् सोच-समझ कर काम करने से बाद में पछताना नहीं पड़ता।

कबहूँ नाहिन बाजि है एक हाथ तें तालि—एक हाथ से ताली नही बजती। अर्थात् एक व्यक्ति के कारण कभी कोई झगड़ा नहीं होता। दोनों का कुछ न कुछ दोष रहता है। तुलनीय : पंज० इक हत्थ नाल ताड़ी कद नईं बजदी; ब्रज० कबऊ एक हात ते तारी नायें बजै।

कबहूँ बाँझ न जानई, तन प्रसूत की पीर—बाँझ स्त्री सन्तानोत्पत्ति के समय की पीड़ा को नही जानती। अर्थात् (क) विद्वान के श्रम को कोई मूर्ख नहीं जानता। (ख) जिसके ऊपर जो दुःख न पड़ा हो, वह उसके कष्ट को नहीं जानता। तुलनीय : पंज० बंझ जनानी नू बच्चे जनमण दी पीड़ दा पता नईं हुंदा। 'बाँझ कि जान प्रसव कै पीरा' —तुलसी।

कबहूँ भगे न स्यार पर, बरु भूखो मृगराज—सिंह भूखा रह जाता है, पर वह स्यारों पर धावा नही बोलता। अर्थात् बड़े लोग कष्ट सह लेते हैं पर छोटा काम नहीं करते। तुलनीय : 'कै हंसा मोती चुगै कै लंघन करि जाय।'

कबहूँ भेक न जानहीं अमल कमल की बास—बुरा अच्छे के समीप रहकर भी उसके गुणों को नहीं जान सकता (भेक =मेढक)।

कबाड़ी को छान पर फूस नहीं—कबाड़ी कभी फलता-फूलता नही। कबाड़ी का काम खराब माना जाता है, इसी से यह कहावत कही जाती है।

कबिरा गर्व न कीजिये, इस जोबन की आस—इस क्षणभंगुर यौवन पर घमंड करना उचित नहीं। तुलनीय : पंज० इस जवानी उते कमंड नईं करन चाइदा।

कबिरा संगति साधु की ज्यों गंधी की बास—सज्जनों के साथ में रहना गंधी (इत्र बेचने वाला) के समीप रहने के समान है। अर्थात् जिस प्रकार गंधी के पास रहने से पैसा खर्च किए बिना भी अच्छी-अच्छी सुगंधि मिलती रहती है, उसी प्रकार साधु (सज्जन) पुरुषों के साथ में रहने से अनेक अच्छी बातें मालूम होती रहती हैं या उपदेश मिलते रहते हैं।

कबीरदास की उलटी बान; मूते इन्द्री बाँधे कान—(क) किसी उलटे काम पर व्यंग्य में ऐसा कहते है। (ख) जब अपराध कोई करे और उसका परिणाम दूसरे को भुगतना पड़े तब भी ऐसा कहते हैं।

कबीरदास की उलटी बानी, आँगन सूखा घर में पानी—(क) जो ज्ञानी हैं वे इस लोक मे सुख नही भोगते बल्कि परलोक के लिए उसे एकत्रित करते हैं। (ख) आदमी भोग-विलास में डूबा रहता है, पर उसका मन ईश्वर-भक्ति में सूखा ही रहता है।

कबीरदास की उलटी बानी, कम्बल भीजे पानी—आशय यह है कि इस संसार में सज्जन पुरुष दुःख भोगते हैं और दुर्जन मौज (भोग-विलास) करते हैं।

कबीरदास जहाँ जहाँ जावें, भैंस पड़वा दोनों मर जायँ—अभागे आदमी के लिए कहते हैं जिसका जाना सर्वत्र ही अशुभ सिद्ध होता है।

कबूतर अपने घर को पहचानता है—आश्रयदाता सबको प्रिय होता है। या अपने आश्रयदाता का सबको विश्वास होता है। तुलनीय : पंज० कबूतर अपने कर नू पछानदा है, ब्रज० कबूतर ऊ अपने घरैं पहचाने।

कबूतर का सूतक—कबूतर का सूतक कहाँ तक मनाया जाय, रोज़ पैदा होते हैं और रोज़ मरते हैं। सूतक 'छुतका' को कहते हैं। यह किसी के पैदा होने या मरने पर लगता है। कबूतर रोज ही सैकड़ों पैदा होते है और मरते हैं, अतः उनका सूतक नही मनाया जा सकता। किसी ऐसी मनाने या बचाने वाली बात या काम पर कहते हैं जिसका मनाना या बचाना शक्य न हो।

कबूतरखाना है एक आता है एक जाता है—संसार की क्षणभंगुरता पर कहते हैं क्योंकि यदि कहीं एक व्यक्ति जन्म लेता है तो अन्यत्र कोई मरता है।

कबौं कबौं गुन कारने उपज दुःख शरीर—कभी-कभी अच्छाई भी दुःख का कारण बन जाती है।

कबौं न ओछे नरन सों सरत बड़न को काम—छोटों से अर्थात् क्षुद्र मनोवृत्ति के लोगों से बड़ों का कार्य नहीं सिद्ध होता।

क़ब्र का मुंह झाँक कर आये हैं—मृत्यु के पंजे से निकल कर या मृत्यु से बाल-बाल बचकर आने पर कहते है। तुलनीय मरा० थड्ग्यांत डोकावून आले आहेत; पंज० जमराज तां हो के आये हो।

क़ब्र पर क़ब्र नही बनती—क़ब्र पर क़ब्र बनाने का नियम नहीं है। (क) क़र्ज़ पर दूसरा क़र्ज़ नही दिया जाता (ख) किसी विधवा के पुनर्विवाह करने पर भी लोग कहते हैं। तुलनीय : पंज० मड़ी उते मड़ी नई बनदी।

क़ब्र में पैर लटकाए बैठे हैं—बहुत वृद्ध या बीमारी के कारण मरणासन्न मनुष्य के लिए कहते है। तुलनीय : हरि० भगवान के घर जाणी तैं न्यू ए न्यू बचा से; पंज० मड़ी विच पैरा लमकाए हन; ब्रज० कबरि में पाम लटके ऐ।

क़ब्र में भी तीन दिन भारी होते हैं—मुसलमानों का विश्वास है कि क़ब्र में दफ़नाए जाने के बाद तीन दिन तक अपने कर्मों का लेखा-जोखा देना पड़ता है। अर्थात् मरने पर भी अपने किए से पीछा नहीं छूटना। तुलनीय : पंज० मड़ी विच वी तिन दिन बड़े हुंदे हन।

कभी-कभी कसरत करे देव न मारे अपने मरे—आशय यह है कि अनियमित रूप से व्यायाम करने से कोई लाभ नहीं होता। तुलनीय : भोज० बर-बागर कसरत करे दइ न मारे अपने मरे; पंज० कदी कदी कसरत करण वाले नूं रब नईं मारदा आप मरदा है।

कभी-कभी बहुत सिधाई बड़ा दोष—कभी-कभी सीधेपन के कारण व्यक्ति को भारी हानि उठानी पड़ जाती है। तुलनीय : अव० कतहूँ सुधाइहु तें बड़ दोसू।

कभी काग़ज़ की नाव भी चलती है—क़ाग़ज़ की नाव पानी में नही चलती, अर्थात् गल जाती है। (क) छल-कपट का व्यवहार अधिक दिन नहीं चलना। (ख) झूठ और अन्याय ज़्यादा दिन नही चलता और उसका परिणाम बुरा होता है। तुलनीय : 'ज़ुल्म की टहनी कभी फलती नहीं, नाव काग़ज़ की कभी चलती नहीं'; पंज० कदी कागज दी नाव वी चलदी है।

कभी के दिन बड़े और कभी की रात बड़ी—(क) कभी दुःख अधिक रहता है कभी सुख। (ख) कभी तुम्हारा दाँव और कभी हमारा दाँव। तुलनीय : हरि० आज थारी चढ़री से तैं कल म्हारी भी चढ़ैगी।

कभी गाड़ी नाव पर, कभी नाव गाड़ी पर—(क) समय परिवर्तनशील होता है। ग़रीब अमीर और अमीर ग़रीब हो जाता है। (ख) अच्छे और बुरे दिन आते-जाते रहते हैं। तुलनीय : तेलु० ओडलू बंड्लना वस्तनि वंड्लु वस्तनि; अव० कहुँ गाड़ी पर नाव कहु गाड़ी नाव पर; पंज० कदी गड्डी नाव उते कदी नाव गड्डी उते; ब्रज० कबऊ गाड़ी नाव पै, कबऊ नाव गाड़ी पै; राज० कदे गाड़ी नाव पर तो कदे नाव गाड़ी पर।

कभी घी घना, कभी मुट्ठी चना—कभी खूब घी खाने को मिलता है तो कभी थोड़ा सा-चना ही खाकर रह जाना पड़ता है। अर्थात् हमेशा किसी के दिन एक से नहीं व्यतीत होते। तुलनीय : मरा० कधीं तुपाचा मारा, कधी मूठभर हरभरा; अव० होय तौ घनो घना नाही मूठी चना; बुंद० कभऊं सक्कर घना कभऊं मुट्ठक चना; मेवा० कदी घी घणां अर कदी मूठी चणां; राज० कदे घी घणा, कदे मुट्ठी चना; पंज० कदी खान नूं की सक्कर कदी इक मुठ छोले; ब्रज० कबऊ घी घना कबऊ मुट्ठी चना।

कभी घी घना, कभी मुट्ठी चना, कभी वह भी मना—ऊपर देखिए। तुलनीय : मरा० कधी तुपाचा मारा, कधी मूठभर हरभरा, (कधी तोची नाही) कधी उपाशी मरा; भोज० कबहीं घनघना कबही मुट्ठी भर चना कबही ऊहो मना; छत्तीस० कभू घी घना, कभू मुट्ठी भर चना, कभू

उहूं मना।

कभी छक्कर घने, कभी मुट्ठी चने—दे० 'कभी घी घना···'।

कभी तेज धूप कभी तेज बरसात—कभी तेज गर्मी सहनी पड़ती है तो कभी अधिक बरसात। अर्थात् समय हमेशा एक जैसा नहीं रहता, दुःख के बाद सुख भी मिलता है। तुलनीय : गढ़० कभी तैला छाम, कभी सीला घाम; पंज० कदी हाड़ दी धुप्प, कदी सौण दी झड़ी।

कभी तो कूड़ी के भी दिन फिरते हैं—समय परिवर्तनशील है, बुरे के बाद अच्छे दिन भी आते है।

कभी दिन बड़ा कभी रात बड़ी—नीचे देखिए।

कभी दिन बड़े और कभी रात बड़ी—दे० कभी के दिन बड़े···'। तुलनीय : राज० कदे दिन बड़ा कदे रात बड़ी; ब्रज० कबऊ दिन बड़ौ, कबऊ राति बड़ी।

कभी दिन बड़े तो कभी रात—देखिए। तुलनीय : बुंदे० घटती-बढ़ती छाया है।

कभी न कभी टेसू फूले—(क) बुरा काम करने वाला जब कोई अच्छा काम करे तो कहते हैं। (ख) दुःखी के भी कभी न कभी अच्छे दिन आते हैं। तुलनीय : घूरे के भी दिन फिरते है, अं० Every dog has his day.

कभी न गांडू रन चढ़े कभी न बाजी बम—कायर (डरपोक, गांडू) कभी लड़ाई नहीं करता और न लड़ाई का बाजा (बम) ही सुनता है। कायरों के प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० कदे न गांडू रण चढ्या, कदे न भीनी भोड़; मेवा० कदी न घोड़ा हींसिया, कदे न खांच्या तंग, कदी न रांड्या रण चढ्या कदी न बाजी बंब; ब्रज० कबऊ न भडुआ रन चढ़े कबऊ न बाजी बंब।

कभी न देखा बोरिया सपने देखी/आई खाट—बोरिया (चटाई) तक तो कभी देखा नहीं और सपने देख रहे हैं खाट के। अर्थात् जब कोई निर्धन व्यक्ति बड़े-बड़े मंसूबे बाँधे तो उसे व्यंग्य से कहते हैं।

कभी न सोई साँथरी, सुपने आई खाट—ऊपर देखिए।

कभी न होने की अपेक्षा विलम्ब से होना भला—कभी न होने से देर से होना अच्छा होता है। तुलनीय : मल० ओट्टुम् इल्लाञ्ञाल ओट्टेन्किलुम् भेदम्; पंज० हनेर नालों देर चंगी; Better late than never.

कभी नाव गाड़ी पर, कभी गाड़ी नाव पर—दे० 'कभी गाड़ी नाव पर···'। तुलनीय : राज० कदे गाड़ी नाव पर तो कदे नाव गाड़ी पर; मरा० केव्हां नाव गाड़ीवर, केव्हां गाडी नावेवर; अव० कबहूं नाव गाड़ी पै, कबहुँ गाड़ी नाव पै; बुंद० कभऊं नाव गाड़ी पै, कभऊं गाड़ी नाव पै; माल० कदीक नाव गाड़ा पे, न कदीक गाड़ो नाव पे; हरि० कदे ना गाड्डी मं कदे गाड्डी ना मं; ब्रज० कबऊ नाव गाढ़ी पै, कबऊ गाढ़ी नाब पै।

कभी पांडे घी-पूरी कभी पांडे उपास—कभी पांडे जी घी में बनी पूड़ी (पूरी) खाते हैं और कभी बिना खाए (उपास) रहते हैं। अर्थात् (क) मनुष्य के जीवन में सर्वदा एक जैसा समय नहीं रहता, सुख-दुख आते रहते हैं। (ख) जब कोई व्यक्ति मूर्खतावश धन का अपव्यय करता है और धन समाप्त हो जाने पर खाने के बिना मरने लगता है तब उसके लिए व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० कबहूं पांड़े घिउ पूरी कबहुं करक उपास; पंज० कदी पंडतां नू घी पूरी कदी पंडत पुखे; ब्रज० कबऊ पाड़े घी पूरी खायँ, कबऊ उपास करे।

कभी बूढ़ा नाराज, कभी बूढ़ी—बुड्ढे को मनाओ तो बुढ़िया नाराज़ और बुढ़िया को मनाओ तो बुड्ढा नाराज। अर्थात् जो व्यक्ति किसी कार्य की सिद्धि में बहाने बनाकर बाधक बनते हों उनके लिए ऐसा कहते है। तुलनीय : गढ़० कभी बूढ़ गड़गड़ी, कभी बुड्ढा गड़गड़ो; पंज० कदी बुडा नाराज कदी बुडी।

कभी रंज कभी गंज—संसार में कभी दुःख है तो कभी सुख। तुलनीय : ब्रज० कबऊ रंज, कबऊ गंज।

कभी लाख का कभी खाक का—प्रत्येक वस्तु का मूल्य उसकी आवश्यकता पर आधारित होता है। अर्थात् (क) एक ही वस्तु का मूल्य आवश्यकता न होने पर खाक अर्थात् बहुत कम लगाया जाता है और उसी वस्तु का मूल्य आवश्यकता होने पर लाख यानी अधिक लगाया जाता है। (ख) व्यक्ति की आर्थिक स्थिति बदलने पर भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : माल० वगत वगत रा मोती; पंज० कदी लख दा कदी कख दा।

कभी शक्कर घना, कभी मूठी इक चना—दे० 'कभी घी घना, कभी मुठ्ठी चना'। तुलनीय : बुंद० कभऊं सक्कर घना, कभऊं मुट्ठक चना; ब्रज० कभी गुड़ घना, कभी मुट्ठी भर चना।

कभी हमारे भी कोई थे—किसी समय हमारी उनसे अच्छी मित्रता थी। समय बदल जाने पर जब किसी से मैत्री-संबंध नहीं रहते या शत्रुता हो जाती है तो उसके प्रति कहते हैं।

कम कम खाय तो बहुत मिले—(क) कम लाभ लेने

पर चीज बहुत बिकती है, अतः अधिक लाभ होता है। (ख) भोजन के संबंध में भी कहा जाता है कि कम भोजन करने वाला स्वस्थ रहता है इसलिए वह अधिक दिन जीता है। तुलनीय : पंज० थोड़ा-थोड़ा खावे तां बड़ा मिलदा है; अं० Small profit quick returns.

कम क़ुवत, गुस्सा बहुत—कमज़ोर आदमी बहुत क्रोधी होता है। तुलनीय : मि० कम क़ुवत ग़ुस्सा बहुत; बुंद० कम कूबत गुस्सा ज्यादा ; पंज० कमजोर मनुख बिच गुस्सा बड़ा हुंदा है।

कम खर्च बालानशीन—(क) ऐसी वस्तु के लिए कहते है जो सस्ती होने पर भी सुंदर और टिकाऊ हो। (ख) कम व्यय करने वाला सदा सुखी रहता है। तुलनीय : मरा० थोड्या खर्चात् उत्तम शोभा; अव० कम खर्च बालानशीन ; पंज० कट खरचा मती सोवा।

कम खाना, ग़म खाना और किनारे से चलना—इन तीनों बातों का ध्यान रखने से आराम रहता है। कम खाना स्वास्थ्यकर है, ग़म खाने से झगड़ा नहीं होता और किनारे होकर चलने से गाड़ी आदि के धक्के का भय नहीं रहता। तुलनीय : अव० कम खाय गम खाय।

कम खा ले पर बेकायदे न रहे—कम भोजन भले कर ले लेकिन बेक़ायदा न रहे। अर्थात् सम्मानपूर्वक कम खाना भी असम्मान के भर पेट खाने से अच्छा होता है। बेक़ायदा न रहने का तात्पर्य है कि संयत रहना उचित है। तुलनीय : हरि० कम खा ले, पर कम कायदे ना रहै।

कमज़ोर का हिमायती सदा हारे—कमज़ोर व्यक्ति का पक्ष लेने वाला व्यक्ति हमेशा ही पराजित होता है। तुलनीय : हरि० कमजोर का हिमाती सदा ए हारे ; पंज० कमजोर दा हिमायती सदा हारदा है।

कमज़ोर की जोरू सबकी सरहज—नीचे देखिए।

कमज़ोर की बीवी सबकी भाभी—दुर्बल अथवा निर्धन व्यक्ति की पत्नी से सभी मज़ाक़ करते है। आशय यह है कि दुर्बल व्यक्ति को सभी सताते हैं। तुलनीय : भोज० अबरा कऽ मेहरी गांव भर कऽ भउजी, राज० कमजोररी जोरू सगळारी भाभी; पंज० कमजोर दी वौटी सब दी परजाई; ब्रज० कमजोर की बहू, सबकी भाबी।

कमजोर की लुगाई सबकी भाभी—ऊपर देखिए। तुलनीय : हरि० कमजोर की लुगाई सभ की भाभ्भी; ब्रज० कमजोर की लुगाई, सबकी भौजाई।

कमजोर कुटवैया बार-बार फटके—कमज़ोर व्यक्ति काम करते समय जब जल्दी थक जाता है, तब जल्दी आराम का बहाना ढूंढ़ने लगता है। ऐसे व्यक्ति को लक्ष्य करके व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मैथ० अबर कुटनिहार दउर-दउर फटके।

कमजोर को गुस्सा बहुत—दुर्बल व्यक्ति बहुत क्रोधी होता है। तुलनीय : राज० कमजोर गुस्सो घणो।

कमजोर को सौ दुख—दुर्बल (कमज़ोर) व्यक्ति को अनेक तरह की परेशानियाँ होती हैं। (क) कमज़ोर व्यक्ति प्रायः बीमार या रोगी रहते हैं। (ख) ग़रीब व्यक्ति को सभी तंग करते हैं। तुलनीय : भीली—दुबलाए हो दुख; पंज० माड़े नूं सौ दुख।

कमज़ोर गुस्सा ज्यादा—दे० 'कमज़ोर को ग़ुस्सा···'।

कमजोर गोतिया श्राप की आशा—निर्बल असमर्थतावश अपने प्रतिपक्षी की बराबरी नहीं कर सकता, वह उसे केवल शाप या गाली देकर संतोष करता है। तुलनीय : भोज० अब्बर गोतिया सरापे कऽ आसा।

कमजोर घोड़ी शाम को पयान—(क) जब अपने साधन कमजोर हों तो काम पहले से ही प्रारंभ कर देना चाहिए ताकि वक़्त पर हो जाय। (ख) दुर्बल शरीर वाले व्यक्ति से ऐसे समय काम कराया जाय जबकि ख़तरा हो, तो भी कहा जाता है।

कमज़ोर, गुस्सा, ज्यादा यही पिटने का इरादा—निर्बल व्यक्ति किसी पर क्रोध करेगा तो मार ही खाएगा, क्योंकि उससे कोई दबता तो है नहीं। तुलनीय : राज० कमजोर गुस्सा ज्यादा, मार खाणे का इरादा।

कमजोर धुनिया दस्ता भारी—कमज़ोर धुनिया (रुई धुनने वाला) के लिए उसका दस्ता (जिससे रुई धुनी जाती है) भी भारी मालूम पड़ता है। अर्थात् कमज़ोर या ग़रीब के लिए साधारण वस्तुओं या कामों को संभालना या करना भी कठिन होता है। तुलनीय : भोज० अब्बर धुनिया धुनकी भारी।

कमजोर पर ही गुस्सा आता है—अपने से निर्बल व्यक्ति पर ही क्रोध (ग़ुस्सा) आता है, सबल पर नहीं। जब कोई शक्तिशाली या धनवान व्यक्ति किसी निर्बल या ग़रीब को परेशान करता है तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : माल० गुस्सो तीन पाव पे आवे, हवा हेर पे नी आवे; पंज० माड़े उते ही गुस्सा आंदा है ; ब्रज० कमजोर पै ई गुस्सा आवै।

कमज़ोर मार खाने की निशानी—निर्बलता बुरी चीज होती है। निर्बल देखकर बिना अपराध के भी लोग परेशान करने लगते हैं। तुलनीय : अव० कमजोर मार खाने की

निशानी; पंज० माड़ा कुट खाण दी निशानी।

कमजोर रस्सी को ही ज्यादा मरोड़ा जा सकता है—अर्थात् कमज़ोर या ग़रीब व्यक्ति को ही लोग अधिक परेशान करते हैं। तुलनीय : हरि० बोंद्दी जेवड़ी के एक बल आवै; पंज० माड़ी रस्सी नूं ही मता मरोड़या जा सकदा है।

कमजोर लकड़ी के कीड़ा खाय—अर्थात् कमज़ोर व्यक्ति को सभी दुःख देते हैं। तुलनीय : मैथ० कमजोर काठ कीड़ा खाय; भोज० कमजोरे लकड़ी के किरवना खाला; संस्कृत० दैवो दुर्बलघातकः ; पंज० माड़ी लकड़ी नूं कीड़े खाण।

कम दाम बालानशीन—दे० 'कम ख़र्च बालानशीन।'

कमबख्त गये हाट, न मिला तराज़ू न मिले बाट—अभागे (कमबख़्त) को संसार में कुछ नहीं मिलता। अक्षम या अकर्मण्य व्यक्ति को जब कोई काम सौंपा जाता है और वह उसमें असफल रहता है तब उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : 'रोते गए मरे की ख़बर लाए।'

कमबख्ती की निशानी, जो सूख गया कुएँ का पानी—अभागे को हर जगह निराश होना पड़ता है। संसार में सभी चीज़ें हैं, पर उसके लिए कुछ भी नहीं। सकल पदारथ इहि जग माहीं, करमहीन नर पावत नाहीं। तुलसी

कमबख्ती जब आए, ऊँट चढ़े को कुत्ता खाए—ऊपर देखिए।

कमबख्ती में आटा गीला—दे० 'कंगाली में आटा गीला।' तुलनीय : अव० गरीबी मा पिमान गील भवा।

कमर टूटे रंडी भंडुवे ओढ़े दुशाला—नाचने के कारण कष्ट उठाना पड़ता है रंडी को, पर मौज उड़ाते हैं भड़ुवे। जब परिश्रम कोई करे और आराम कोई दूसरा करे तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : हरि० कमावे कोये खावे कोये; पंज० कमाये कोई खावे कोई।

क़मर दर अक़रब है—चंद्रमा वृश्चिक में है। अर्थात् ग्रह बुरे हैं। (वृश्चिक राशि वाले के लिए चंद्रमा का उक्त राशि में होना अशुभ माना जाता है)।

कमर न पीठ, नौ जगह ढीठ—अपने पास तो न कमर है और न पीठ, पर गर्व इतना है कि किसी को अपने बराबर समझते ही नहीं। व्यर्थ में गर्व करने वालों के प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

कमर न बूता साझें सूता—अकर्मण्य, सुस्त या नपुंसक आदमी के लिए कहते हैं। (बूता=बल)।

कमर में तोशा मंज़िल का भरोसा—नीचे देखिए।

कमर में तोसा, बड़ा भरोसा—जो चीज़ अपने पास हो उसी पर निर्भर रहना चाहिए क्योंकि पास की ही चीज़ समय पर काम आती है। तुलनीय : अव० कमर मा होय तोसा तो राखो भरोसा; (तोसा=तोशा=पाथेय; खाने की सामान्य वस्तु); पंज० कमर बिच तोसा बड़ा परोसा।

कमर लंगोटी नाम पीतांबरदास—अर्थात् सामर्थ्य या गुण आदि के विपरीत नाम होने पर कहते हैं। तुलनीय : हरि० धोरे ना पीसा नाम लखपतसिंह।

कमरिज़क़े बहुत हैं बेरिज़क़ा कोई नहीं—संसार में सुख-सुविधाएँ किसी को कम और किसी को अधिक मिलती हैं किन्तु ऐसा कोई नहीं जिसे किसी प्रकार का सुख मिला ही न हो।

कमरी ही नहीं छोड़ती—जब कोई काम मनुष्य इस प्रकार पीछे लग जाय कि पीछा छुड़ाने का प्रयत्न करने पर भी न छोड़े तो कहते है। इस संबंध में एक कहानी है : एक व्यक्ति ने नदी में तैरते हुए एक भालू को कंबल समझ कर पकड़ लिया और भालू ने उसे पकड़ लिया। किनारे पर खड़े उस व्यक्ति के साथी ने परिस्थिति समझ ली। वह ज़ोर से चिल्लाया कि कमरी छोड़ दो और चले आओ। इस पर उस व्यक्ति ने उत्तर दिया—मैंने कमरी तो छोड़ दी है पर वही मुझे नहीं छोड़ती।

कम रुई धुनकी बड़ी—जब कोई व्यक्ति छोटे से काम के लिए बड़े साधन का प्रयोग करे तो उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

कमल कीचड़ में उगता है—तात्पर्य यह है कि अच्छे या महान् पुरुष प्रायः ग़रीब माता-पिता के बच्चे ही होते हैं। या तकलीफ़ में पलने वाले ही लोग आगे बढ़ते हैं। जब किसी ग़रीब माँ-बाप का लड़का किसी अच्छे पद को प्राप्त कर लेता है या महान व्यक्ति बन जाता है तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : असम० पेंकत है पद्म; सं० पङ्के पङ्कजम्; पंज० कमल गारे बिच उगदा है; अं० Roses grow in thorns.

कमल नाल के तंतु सों, को बाँधे गजराज—कमल नाल के तंतु जैसी कमज़ोर चीज़ से हाथी (गजराज) को कौन बाँध सकता है? अर्थात् कोई नहीं। आशय यह है कि साधारण मनुष्य अथवा छोटी वस्तु से बड़ा काम नहीं होता।

कमल नाल को तोरिये, तदपि न टूटे सूत—कमल नाल को तोड़ने पर भी उसका सूत उससे अलग नहीं होता। आशय यह है कि सज्जन व्यक्तियों के हृदय में संबंध टूटने पर भी प्रेम बना रहता है। तुलनीय : पंज० कमल दी नाल

तोड़न नाल वी उस दा सूत नइं टुटदा।

कमली ओढ़ने से फ़क़ीर नहीं होता—कंबल ओढ़ने से कोई फ़क़ीर (साधु) नहीं हो जाता अर्थात् ऊपरी दिखावा या आडंबर व्यर्थ है, उससे यथार्थता नहीं आती। तुलनीय : पंज० पीले कपड़े लाण नाल फकीर नई हुंदा।

कमाई न धमाई माँग टीके जाई—कमाई-धमाई (आमदनी) तो कुछ नही है पर मांग टीकने जा रही हैं। ऐसे निकम्मे व्यक्ति के प्रति कहते है जो कोई काम नहीं करना चाहता लेकिन शान-शौकत से रहना चाहता है। तुलनीय : मैथ० कमाई न धमाई धा-धा मांग टीके जाई; भोज० कमाई न धमाई दउर-दउर माँग टीके जाई।

कमाई न धमाई, मौके भूँज भूँज खाई—ऊपर देखिए। तुलनीय : अव० कमाई न धमाई हमका भूँज खाई। (मोके = मुझे)।

कमाई न धमाई रोज चाहीं मलाई—ऊपर देखिए।

कमाऊ आए चुपचाप, निखट्टू आए बर्राता—कमाने वाला तो शान्त भाव से आता है और निखट्टू (निकम्मा) बड़बड़ाते (बर्राता) हुए आता है। अकर्मण्य एवं झगड़ालू व्यक्ति के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० कमाऊ पूत आवै डरतो अणकमाऊ आवै लडतो।

कमाऊ आवे डरता, निरबहू आवे लड़ता—कमाने वाले घर में चुपचाप आते हैं और न कमाने वाले सबसे लडते हुए। अकर्मण्य किन्तु झगड़ालू व्यक्ति के लिए कहा जाता है। तुलनीय : राज० कमाऊ पूत आवै डरतो अणकमाऊ आवै लड़तो।

कमाऊ खसम कौन ना चाहे—(क) कमाने वाला पति कौन स्त्री नहीं चाहती ? अर्थात् सभी चाहती हैं। (ख) कर्मठ को सभी चाहते या पसंद करते हैं। तुलनीय : अव० कमाऊ मनई केका नीक नाही लागी; पंज० कमाऊ खसम नूँ कौण ना मंगे।

कमाऊ पूत, कलेजे सूत—कमाने वाला लड़का माँ को बहुत प्यारा होता है। तुलनीय : हरि० दुनियां में काम का प्यारा स चाम का नहीं; पंज० कमाऊ पुत दिल दा हीरा।

कमाऊ पूत किसे अच्छा नहीं लगता—(क) कर्मठ या काम करने वाले मनुष्य को सभी चाहते हैं। (ख) कमाने वाला लड़का किसे नहीं पसंद आता या अच्छा लगता ? तुलनीय : ब्रज० कमाऊ पूत कौनें अच्छौ नाये लगै।

कमाऊ पूत की दूर बला—कमाने वाले या कर्मठ व्यक्ति से विपत्ति दूर रहती है। आशय यह है कि कमानेवाले या कर्मठ व्यक्ति का जीवन सुखी रहता है।

कमाए के टका, उड़ावे के साढ़े तीन—कमाने से अधिक ख़र्च करना। प्रायः निकम्मे और आलसियों के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं जो काम तो बहुत कम करना चाहते हैं पर खाने-पहनने के काफ़ी शौक़ीन होते हैं। तुलनीय : पंज० कमाया टगा उड़ाया रपैया।

कमाए तो खसम, नहीं तो बेशरम—कमाने वाले की इज्जत की जाती है, निखट्टू व्यक्ति की पत्नी भी उसे नहीं चाहती। आशय यह है कि अकर्मण्य या न कमाने वाले की कोई इज्ज़त नहीं करता। तुलनीय : राज० कमावै तो वर, नही तो आधड़ो मर; पंज० कमावे तां ख़सम नई तां बेसरम।

कमाए मियाँ ग़ाज़ी, जल मरें क़ाज़ी—जब किसी व्यक्ति की सुख-सुविधाओं को देखकर दूसरा कोई व्यक्ति ईर्ष्या या द्वेष करता है तब ऐसा कहते है।

कमाए लंगोट वाला, खाए टोपी वाला—ग़रीब व्यक्ति श्रम करते हैं और बड़े लोग उसका फ़ायदा उठाते हैं। तुलनीय : भोज० कमाय लगोटी वाला, खाय टोपी वाला; पंज० कमावे लगोट वाला खावे टोपी वाला।

कमाता तो पति, नहीं मिट्टी की मूरत—कमाने वाले या कर्मठ व्यक्ति की ही सब इज्ज़त करते हे। अकर्मण्य या निखट्टू व्यक्ति की तो उसकी पत्नी भी इज्ज़त नही करती। तुलनीय : राज० कमावै तो वर, नहीं जणै माटीरो ही ढल।

कमा तू, खाए मेरा लाल—(क) परिश्रम करके धन कोई कमाए और स्वार्थी व्यक्ति अपने लिए उस धन को व्यय करे तो व्यंग्य में उसके लिए ऐसा कहते हैं। (ख) परिश्रम करने वाले को कुछ न मिले और चालाक व्यक्ति उसका फ़ायदा उठावें तो उनके प्रति भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० खालो पेलो मेरो मुज्जा, छौं ढोलन कु तु जा; पंज० कमा तूं खावे मेरा लाल।

कमान से निकला तीर और मुँह से निकली बात फिर हाथ नहीं आती—मुँह से बात निकल जाने पर फिर वापस नहीं आ सकती, जैसे कमान का छूटा तीर। अभिप्राय यह है कि सोच-समझ कर बोलना चाहिए। तुलनीय : मरा० धनुष्या पासून सुटलेला बाण नि तोंडातून निहला शब्द परत येत नाही; अव० तरकस से निकसा तीर अरु मुँह से निकसी बात नाहीं लौटत; पंज० कमाण तो निकलया तीर अते मुँह तों निकली गल्ल फिर हथ नई आंदी।

कमानी न पहिया, गाड़ी जोते मेरा भैया—जब कोई व्यक्ति अपने आपकी या अपने किसी खास घनिष्ठ व्यक्ति की प्रशंसा में लम्बी-चौड़ी बातें करता है या झूठी प्रशंसा

करता है तो उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : हरि० गधी मरी पड़ी कुम्हार भाड़ा करता फिरै।

कमाय कोपीनवाला, खाय टोपीवाला - दे० 'कमाए लंगोट वाला…'।

कमाय लंगोटिया खाय लमधोतिया— दे०'कमाए लंगोट वाला…'।

कमावे खानखाना, उड़ावे मियां फ़हीम - बाप कमावे और बेटा उड़ावे या मालिक कमावे और नौकर उड़ावे तो कहते है। (अकबर के मन्त्रियों में एक बहराम खाँ खान-खाना था जिसका गुलाम फ़हीम बड़ा शाहखर्च था। उसी पर यह कहावत आधारित है।) तुलनीय : राज० काम करै ऊधादास, जीम ज्याग माधोदास।

कमावे धोती वाला, उड़ाये टोपी वाला (क) हिन्दुस्तानी कमाते है और अंगरेज़ उड़ाते हैं। स्वतन्त्रता के पूर्व यह अर्थ था। अब अर्थ हो सकता है किसान-मज़दूर पैसा कमाते हैं और नेता लोग उसे पानी की तरह बहाते हैं। (ख) मेहनती पैदा करते है और शौक़ीन उड़ाते हैं। तुलनीय : राज० कमावै धोती आला, खा ज्याय टोपी आला; अव० कमाय धोती वाला उड़ावै टोपी वाला।

कमासुत पूत करेजा में सूत—दे० 'कमाऊ पूत कलेजे…'।

कमीन को लोटा मिला, पानी पी-पी कर मरा—किसी दरिद्र आदमी को कहीं से एक लोटा मिल गया। वह उससे इतना प्रसन्न हुआ कि दिन-भर पानी पीता रहा जिससे उसका पेट बहुत फूल गया और उसको बहुत कष्ट हुआ। जब किसी निम्न श्रेणी के व्यक्ति को कोई ऐसी वस्तु मिल जाती है जो उसको कभी न मिली हो तो वह उसका दुरुपयोग करने लगता है। ऐसे समय में इस लोकोक्ति का प्रयोग किया जाता है। तुलनीय : माल० हावल्या री बाटकी; पंज० माड़े कर कटोरा लब्या पानी पी-पी आफरया।

कमीने की दोस्ती जी का जंजाल – दुष्टों के साथ मैत्री करने से सदा हानि होती है। तुलनीय : पंज० माड़े दी मितरता दिल (बाण) दा खौ।

कमीने मित्र से सदा भय—दुष्ट व्यक्ति चाहे वह मित्र हो या कितना भी नज़दीकी क्यों न हो उससे सावधान रहना चाहिए। तुलनीय : मल० दुर्ज्जन संसर्गम् आपत्ताणु; अं० A friendship with a mean fellow is always dreadful.

कम्मर पर जब परै पिछौरी, जाड़ बेचारो करै चिरौरी —जब कंबल के साथ चादर या खोल (दोहर) को मिला लेते हैं तो जाड़े का कोई असर नही पड़ता या जाड़ा बिल्कुल नही लगता।

करइ जो करम पाव फल सोई जो जैसा कर्म करता है वैसा ही फल पाता है। तुलनीय : अं० As you sow, so you reap.

करक जु भीजं कांकरी, सिंह अभीनो जाय, ऐसा बोलै भड्डरी टीड़ी फिर फिर खाय सावन में जब सूर्य कर्क राशि पर हो और वर्षा इतनी कम हो कि केवल कंकड़ ही भीगें तथा सिंह राशि में वर्षा बिल्कुल ही न हो तो (भड्डरी कहते हैं कि) टिड्डियाँ इतनी उत्पन्न होंगी कि फ़सल को हर बार खा जायेंगी।

कर का मनका छाँड़ि के, मन का मनका फेर – हाथ की माला छोड़कर मन की माला फेरनी चाहिए। आशय यह है कि ढोंग छोड कर मन से भक्ति करनी चाहिए।

कर काम, ले दाम (क) जो काम करेगा उसी को पैसा मिलेगा। (ख) जो श्रम करेगा उसी को सफलता मिलेगी। तुलनीय : मल० पल्लु मुरिये पणिताल् पल्लु मुरिये तिन्नाम्; पंज० कम कर पैहा लै; ब्रज० करि काम और लै दाम; अं० A horse that will not carry a saddle must have no oats; No pains no gains.

कर खेती परदेश को जाय, वाको जनम अकारथ जाय -कोई व्यक्ति जो भी कार्य करे उसकी देखभाल उसे स्वयं करनी चाहिए वरना उसे सफलता प्राप्त नही होती। तुलनीय : अव० करै खेनी परदेश का जाय, ओकर जनम अकारथ जाय।

करघा छोड़ जुलाहा जाय, नाहक चोट बेचारा खाय - जो व्यक्ति अपना कार्य छोड़कर व्यर्थ में दूसरों के झगड़े में पड़ता है, उसे हानि उठानी पड़ती है। इस संबंध में एक कहानी है जो इस प्रकार है : एक समय किसी शहर में, जो एक छोटी नदी के किनारे बसा हुआ था ख़ूब वर्षा हुई। उससे नदी में बाढ़ आ गई। लोग बाढ़ का दृश्य देखने जा रहे थे। किसी जुलाहे से उसके मित्रों ने कहा— चलो तुम भी बाढ़ का दृश्य देख आओ। जुलाहा जाना नहीं चाहता था पर दोस्तों के बार-बार के आग्रह पर वह उनके साथ चल दिया। जिस रास्ते से वे लोग जा रहे थे उस रास्ते में एक पुराना मकान था। जब वे उस मकान के नीचे से होकर गुज़र रहे थे तो संयोग से रास्ते के तरफ की दीवार उन पर गिर पड़ी। अन्य लोग तो बच गए पर उस जुलाहे को गहरी चोट लग गई। उसे चारपाई पर लाद कर लोग घर लाए।

इस पर एक व्यक्ति ने जो सारी बातों से परिचित था उक्त कहावत कही। तुलनीय : बुंद० करघा छोड़ तमासें जाय, नाहक चोट जुलाहा खाय; सं० स्वधर्मे निधनं श्रेय: परधर्मो भयावह:।

करघा छोड़ तमाशे जाए, नाहक चोट जुलाहा खाय--ऊपर देखिए।

करघा बीच जुलाहा सोहे, हल पर सोहे हाली, फ़ौजन बीच सिपाही सोहे, बागन सोहे माली--(क) अपने-अपने स्थान पर ही लोग शोभित होते हैं। (ख) प्रत्येक स्थान की शोभा एक ही से नहीं होती। हरएक की शोभा-वृद्धि भिन्न-भिन्न व्यक्तियों या भिन्न-भिन्न चीज़ों से होती है।

करछी हाथ सैलाने ही को करते हैं--कलछुली (करछी) केवल हाथ की रक्षा के लिए ही बनाई गई है। अर्थात् बड़े या धनी लोग अपने आराम या सहायता के लिए ही छोटों या मातहतों को रखते हैं।

करछुली को पाकों से क्या स्वाद--करछुली जड़ पदार्थ है। अत: चाहे कितनी भी अच्छी चीज़ उससे बने उसका स्वाद वह नहीं ले सकती। आशय यह है कि जड़ बुद्धि सब कुछ पास होने पर भी उसका लाभ नहीं उठा पाते।

करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान—मूर्ख भी अभ्यास करते-करते चतुर बन सकता है या चतुर बन जाता है। तुलनीय : राज० भिणतां-भिणतां पिंडत हु ज्याय; पंज० भिणतां करण नाल रब वी मन जांदा है।

करत न कूकर-वृन्द की, कछु गयंद परवाह--हाथी-कुत्तों के झगड़ों की कुछ भी चिंता नहीं करता। अर्थात् बड़े लोग छोटों की या उनके विरोध की परवाह नहीं करते।

करत नीक फल अनइस पावा--भलाई करते हुए बुराई हाथ लगे तो कहते है।

करतब की विद्या है--विद्या अभ्यास और परिश्रम से ही आती है। कोई काम हो, करने से ही आता है। तुलनीय : अव० करै की विद्या है।

करतब कुछ नहीं, मनसूबे बड़े-बड़े--करते तो कुछ नहीं लेकिन बहुत बड़ी-बड़ी योजनाएँ बनाते हैं। निकम्मे व्यक्तियों के प्रति कहते हैं जो करते कुछ नहीं हैं केवल बैठे-बैठे मनसूबे बाँधते हैं। तुलनीय : मैथ० उपाय किछु ने मन बड़ पैघ; भोज० करे धरे के कुछ नां पागे के दुनियां भर क; पंज० करना कुछ नई छालां वडियां बडियां।

करतब वायस वेष मराला--जब कोई व्यक्ति कर्म तो अत्यन्त निन्दनीय करे किन्तु ऊपरी ठाट-बाट या रूप बड़ा भव्य बनाए तब कहते है।

करता उस्ताद, ना करता शागिर्द--जो काम करता रहता है वह गुरु और जो नहीं करता वह शिष्य है। अर्थात् कोई भी काम करने से ही आता है न करने से कुछ भी नहीं आता। तुलनीय : अव० करता ओस्ताद न करता चेला; राज० करता उस्ताद है।

करता गुरु अकरता चेला--ऊपर देखिये।

करता से करतार हारे--परिश्रमी और कर्मठ से भगवान भी हार मान जाता है। अर्थात् परिश्रम और लगन से प्रत्येक कार्य सिद्ध हो सकता है। तुलनीय : ब्रज० करता ते करतारऊ हार्‍यौ गे।

करते की विद्या है--अभ्यास करने से ही विद्या आती है। अर्थात् कोई भी काम करने से ही होता है।

कर तेली पति रूखा खाय--तेली से विवाह किया तब भी सूखी रोटी ही खाय। जब किसी बड़े या अच्छे व्यक्ति से साथ करने के बाद भी किसी को कोई तकलीफ़ हो तो कहते हैं।

कर तो डर, न कर तो खुदा के ग़ज़ब से डर--जो व्यक्ति बुरा काम करे उसे अपने बुरे कर्म के लिए ईश्वर से डरना चाहिए और जो व्यक्ति बुरा काम न करे उसे भी ईश्वर के प्रकोप से डरना चाहिए। तात्पर्य यह है कि ईश्वर से सभी को सदैव डरते रहना चाहिए। इस संबंध में एक कहानी है : किसी स्थान पर दो साधु रहते थे। एक ने कहा--'कर तो डर, न कर तो खुदा के ग़ज़ब से डर।' दूसरे ने कहा--'यदि मैं न करूँ तो क्यों डरूँ?' एक दिन चोरों ने राजा के यहाँ चोरी की। उन्होंने एक सोने की माला दूसरे साधु के गले में डाल दी। साधु ध्यान में मग्न था उसे इसका अनुभव नहीं हुआ। जब लोगों ने साधु के गले में माला देखी तो उसे पकड़ कर राजा के पास ले गए। राजा ने उसे चोर जानकर फाँसी की सज़ा दी। जब लोग उसे फाँसी देने चले तब उसका मित्र पहला साधु उससे मिला और उससे कहा कि 'जब तूने चोरी नहीं की तो तुझे फाँसी की सज़ा क्यों दी जा रही? इसलिए मैं कहता था न कि 'कर तो डर, न कर तो खुदा के ग़ज़ब से डर'। तुलनीय : पंज० कर ते डर नां कर ते रबदे कहर तों डर!'

करदनी खेश, आमदनी पेश, न की हो तो कर देख--जैसा करोगे वैसा पाओगे। यदि न किया हो तो करके देख लो।

करद:-ए-खेश, आमद पेश--जो जैसा करेगा उसे वैसा ही फल मिलेगा। अर्थात् सभी को अपने कर्मों का फल भुगतना पड़ता है।

कर देखो दगा, जो बच जाय सगा—धोखा देकर देख लो, जो बच जाय वही तुम्हारा खास (सगा) है। अर्थात् दगाबाज़ या धोखेबाज व्यक्ति का कोई भी व्यक्ति साथ नहीं देता। तुलनीय : पंज० दगा दे के देखो जिहड़ा बच जावे ओह सक्का है !

करना अपने वश, देना उसके बस—मनुष्य तो केवल कार्य ही कर सकता है, फल देना तो भगवान के ही हाथ मे है। प्रत्येक मनुष्य को परिश्रम और कर्तव्य करना चाहिए, फल की आशा नहीं करनी चाहिए; तुलनीय : सं० कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन:; पंज० करना अपने हथों देना उसदे हथ; भीली आपणी एक धणी कर्‌या करो-हाड़ कर त् राम कर्‌या है।

करना उस्ताद है करते की विद्या है--दे० 'करते की विद्या है।' तुलनीय : मल० नित्याभ्यासि आनये एयक्कुम; अं० Practice makes one perfect.

करना चाहें चाकरी, सोना चाहें घर—नौकरी भी करना चाहते हैं और घर पर सोना भी। जो व्यक्ति बिना परिश्रम के ही कोई लाभ प्राप्त करना चाहते हैं या बिना श्रम लाभ उठाना चाहते हैं उनके प्रति व्यंग्य से ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० कइल चाहें नौकरी, सुतल चाहें घरे।

करना चाहे आशिक़ी और मामा जी का डर--इश्क़ भी करना चाहते हैं और मामा जी से डरते भी हैं। अर्थात् जब कोई बुरा कर्म भी करना चाहता है और उसे छिपाना भी तब ऐसा कहते हैं।

करना तो डरना क्या—बुरा या अच्छा कुछ भी काम जब करना ही है तब डर किस बात का। अर्थात् किसी कार्य के विषय में पहले ही खूब सोच-समझ लेना चाहिए। जब कार्य शुरू कर दें तो उसमें संकोच करने की कोई आवश्यकता नहीं है। तुलनीय : भोज० जब करही के बा त डर केथुक, पंज० करना ते डरना की;

करना मरने के बराबर है—जो व्यक्ति मुफ़्त का खाते हों उनको यदि परिश्रम करके खाना पड़े तो उनको वह परिश्रम मौत के समान भयंकर दिखता है। तुलनीय : राज० करणो, मरणो बराबर; पंज० करना मरना इक बराबर;

करना है सो आज कर, कल कल कल ना कर, चलता फिरता आदमी छिन में जावे मर—जिस काम को करना है उसे कल के लिए नहीं टालना चाहिए। आशय यह है कि किसी भी कार्य में विलंब करना उचित नहीं।

करनी अपने मन की बेटा कहो या बाप—चाहे जो कुछ भी कहो या चाहे कितनी भी खुशामद क्यों न करो करूँगा अपने मन की ही। ऐसे व्यक्ति के प्रति कहते हैं जो लाख समझाने या खुशामद के बावजूद अपने मन की ही करता है। तुलनीय : पंज० करनी अपने दिल दी पुत आखो या पिउ; राज० करणी आपों-आपरी, कुण बेटा कुण बाप।

करनी के न करतूत के—जो व्यक्ति बातें बढ़-बढ़ के या बहुत करे और काम कुछ भी न करे उसके प्रति कहते हैं।

करनी खाक की, बात लाख की—ऐसे व्यक्ति के लिए कहते हैं जो करे कुछ नहीं पर बातें बहुत बढ़-बढ़ कर करे। तुलनीय मरा० करणी कवडीची, बातां लाखा च्या; पंज० करनी कख दी गल्ल लख दी;

करनी ना करतूत, चलियो मेरे पूत—केवल बातों से ही बड़ा बनने वाले के लिए कहते हैं। तुलनीय : अव० करनी न करतूत, आवा मोरे पूत।

करनी न करतूत, चालन ऐसी चूत--(क) निकम्मे आदमी के लिए कहते हैं। (ख) जब बहू दहेज न लाए और उसका बखान हो तो सास भी ऐसा कहती है।

करनी न करतूत, पनारा ऐसी चूत—ऊपर देखिए।

करनी न करतूत फूहड़ लड़ने को मजबूत—उस निकम्मे आदमी पर कहते है जो करे तो कुछ नहीं पर लड़ने को सर्वदा तैयार रहे।

करनी न धरनी छेरनी नांव—(क) न काम करने वाले को लक्ष्य करके ऐसा कहते हैं। (ख) नाम के अनुसार गुण, स्वभाव या चरित्र न होने पर व्यंग्य में कहते हैं।

करनी न धरनी, नाम गुलबिया—ऊपर देखिए। तुलनीय : अव० करनी न धरनी नाम गुलबिया।

करनी न धरनी सोबरनी नाँव--ऊपर देखिए।

करनी ना करतूत चामे के मजबूत—ऐसे व्यक्ति के प्रति कहते हैं जो काम नहीं करना चाहता और बैठे-बैठे अच्छी वस्तुएँ खाना चाहता है।

करनी सियार की नाम शेरसिंह—नाम के अनुरूप गुण, स्वभाव आदि न होने पर व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। दे० 'आँख का अंधा नाम का नैनसुख।'

करने की सौ राहें—जब कोई व्यक्ति किसी कार्य को करने के लिए बिल्कुल तैयार हो जाता है तो कोई न कोई उपाय अवश्य ढूंढ़ लेता है। तुलनीय : पंज० करनी नूं सौ राह ब्रज० करिबे सौ रस्ता; मल० वँणमेन्किल् चक्क वेलुम्काय्क्कुम्; अं० Where there is a will, there is a way.

करने के सौ ढंग, न करने का एक भी नहीं—यदि किसी

काम को करने का दृढ़ निश्चय कर लिया जाय तो वहाँ कोई न कोई राह निकल ही आती है। करने की नीयत न हो और सौ रास्ते हों तो भी काम नहीं हो सकता। तुलनीय : गढ़० नौड़ी मौ का नौ बांटा; पंज० करन वाले नूं सौ कम नां करन वाले नूं इक वी नइँ।

करने को चाकरी सोने को घर—दे० 'करना चाहें चाकरी...।' तुलनीय : अव० करें नौकरी, ख्वाब देखें महल का।

करने से होता है या देने से— काम या तो स्वयं करने से होता है या धन व्यय करने से। जो व्यक्ति खुद कुछ करना न चाहे और उसके पास धन भी न हो तो उसका काम नहीं होता। तुलनीय : पंज० करन नाल हुंदा है यां देन नाल।

कर पानी, न मुंह पानी—हाथ-मुंह की सफ़ाई न रखने वाले गंदे आदमी के लिए कहते हैं। तुलनीय : पंज० हथ पानी नां मुंह पानी;

कर बात, कटे रात—कोई कहानी कहो जिससे रात कटे। जब कोई चिंता हो, दिल उदास हो तो रात नहीं कटती। रात बिताने के लिए कहानी कहनी आवश्यक हो जाती है। प्राचीन क़िस्से-कहानियों तथा लोक कथाओं में इस लोकोक्ति का बहुत प्रयोग हुआ है। समय बिताने के लिए कहते हैं। तुलनीय : राज० कह बात, कटे रात।

कर बुरा, हो बुरा—बुरे कर्मों के परिणाम बुरे ही होते हैं। तुलनीय. मल०तिन वितच्चाल् तिन कोय्युम्, विन वित च्चाल् विन कोय्युम्; पंज० कर बुरा होवे बुरा; ब्रज० करि बुरो तो होय बुरो। अं० As you son so you reap.

कर भला, हो भल—जो दूसरों की भलाई करता है उसका भी भला होता है। तुलनीय : मल० नन्म वितच्चाल् नन्म्; पंज० कर पला होवे पला; ब्रज० करि भलो तो होय भलो; अं० Sight reflects light.

कर भला हो भला, अंत भले का भला—दूसरे के साथ भलाई करने वाले का भी अन्त में भला ही होता है। तुलनीय : राज० कर भला तो हो भला; अव० कर भला तो होय भला, आखिर भला का होय भला; पंज० कर पला होवे पला अंत पले दा पला।

करम कमंडल कर गहे तुलसी जहं लगि जाय, सागर सरिता कूप जल बूंद न अधिक समाय—जब बहुत परिश्रम करने पर भी लाभ न हो तो कहते है। तुलनीय : गढ़० मैं भारू फाली कर्म की द्वी नाली।

करम करें बैजू बांधे जायं बैजनाथ—जब अपराध या दोष कोई करे और उसका दंड किसी अन्य को मिले तो कहते हैं। तुलनीय : छत्तीस० करम करे बैजू, बांधे जायँ बैजनाथ; ब्रज० करै बैजू डडै बैजनाथ।

करम का हेठा है, भाग्य का नहीं—काम तो दरिद्रों या निर्धन व्यक्तियों जैसा करता है पर धनवान है। आशय यह है कि जब कोई संपन्न व्यक्ति कंजूसी के कारण फटे-पुराने कपड़ों को पहनता है और गरीब आदमी जैसे काम करता रहता है तब उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० पख-दाळदी है, जिलम-दाळदी काय नी; ब्रज० करम कोई हेटौ ऐ भागि को नायँ।

करम की ढोलकी बाजी—भाग्य के विपरीत होने पर गुप्त कार्य भी प्रकट हो जाता है। इस संबंध में एक कथा है : एक बार एक चोर ने एक ढोलक चुराई। मालिक ने पीछा किया तो वह पास के कपास के खेत में छिप गया। वहाँ कपास के फलों के लगने से ढोलकी बज गई और इस प्रकार चोर पकड़ लिया गया।

करम छिपे न भभूत रमाए— राख (भभूत) लगाने से कोई साधु नहीं बन जाता या वेश बदलने से अपराध नहीं छिपता। (क) जब कोई नीच कर्म करनेवाला व्यक्ति अपने अपराध को छिपाने के लिए भले लोगों जैसी वेश-भूषा धारण कर लेता है या वैसा आचरण करने का दिखावा करता है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते है। तुलनीय : राज० करम छिपे न भभूत रमायां।

करम दरिद्री, नाम चैनसुख—नाम के अनुरूप दशा, गुण, स्वभाव आदि न होने पर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : कौर० राज० करम दिलद्री नाम चैनसुख।

करम दौड़े आगे-आगे—(क) भाग्य सर्वदा साथ रहता है और उसका लिखा अवश्यमेव होता है। (ख) जब कोई व्यक्ति किसी स्थान पर रहकर काफी परेशान हो जाता है और अपनी परेशानी को दूर करने के लिए कहीं दूसरी जगह कमाने या व्यापार करने जाता है और वहाँ भी उसे परेशानी या घाटा उठाना पड़ता है तब वह ऐसा कहता है या तब उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० करम दौड़न अग्गे अग्गे।

करम की गति कोई न जाने—भाग्य का लिखा या भविष्य में होने वाली बात कोई नहीं जानता या जान सकता। तुलनीय : पंज० करमां दी गति कोई नइँ जानदा।

करम प्रधान सत्य कह लोगू—कर्म (या भाग्य) ही प्रमुख है, यह बात सत्य है। भाग्य के विपरीत कुछ भी नहीं होता। तुलनीय : पंज० करम जग बिच बड़ा है।

करम बिबस दुख सुख क्षति लाहू—दुःख-सुख, हानि और लाभ भाग्य के अधीन होते हैं।

करम में नहीं लत्ता, पान खाँय अलबत्ता—आर्थिक दशा खराब होने पर भी जब कोई बड़े लोगों जैसी शान-शौकत से रहता है तब उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : छतीस० करम मां नही लत्ता, पान खांय अलबत्ता।

करम रॉड़ तो का करें पांड़े- जब भाग्य खराब है तो पूजा करने वाले या आशीर्वाद देने वाले पंडितजी या ज्योतिषी क्या कर सकते हैं? आशय यह है कि भाग्य खराब होने पर दूसरा कोई कुछ नही कर सकता। तुलनीय : पंज० करम पंड़े तां की करन पंडे।

करम रेखा ना मिटे, करें कोई लाख चतुराई—विधि का विधान अमिट है। लाख चतुराई या प्रयास करने पर भी जो भाग्य में लिखा होता है वही होता है। तुलनीय : राज० करम रेख ना मिटे, करो कोई लाख चतुराई; हरि० लिखी ओउ न कूण मटे सकै; पंज० रब दी लिखी लाख करन वी नई मिटदी; ब्रज० करम रेख नायें मिटै करौ कोई लाखों चतुराई।

करम लौट जाय पर खाद न लौटे- भाग्य पलट या लौट सकता है, किंतु खेत में डाली गई खाद कभी भी व्यर्थ नहीं जाती। अर्थात् खेत में खाद डालने पर फ़सल काफी अच्छी होती है। तुलनीय : ब्रज० करम लोटि जायँ परि खात नायें लौटै।

करमहीन को भाग्यहीन ही मिलता है- अभागे को साथी भी अभागे ही मिलते है। तुलनीय : राज० करम फूट्योडैनें भाग-फूट्योड़ो मो कोमारी अंवलाई खाए मिले; पंज० फुटे करमां वाले नूँ फुटया करमां वाला ही मिलदा है।

करमहीन खेती करे बैल मरे या सूखा परे—यदि अभागा किसान खेती करता है तो या तो उसके बैल मर जाते हैं या सूखा पड़ जाता है। आशय यह है कि भाग्यहीन व्यक्ति के लिए सर्वत्र कष्ट ही है। तुलनीय : अव० करम-हीन नर खेती करै, बरधा मरै कि सूखा परे; राज० करम-हीण खेती करै, बलध मरै कै काल पड़ै; हरि० करमहीण खेती करै, कै काळ पड़ै कै बुळध मरे; बुंदे० करमहीन खेती करे, बैल मरें के सूखा परै; गुज० करम बिनानो खेती करे, बळद मरे के सुक्खण परे; कौर० करमहीन खेती करे, बळद मरे सूखा पड़े; पंज० फटे करमां वाला खेती करे टग्गे मरण या सुक्का पड़े; ब्रज० करमहीन खेती करे-बरध मरे सूखा परै।

करमे खेती करमे नारि— नीचे देखिए।

करमे खेती करमे नारि, करमे मिले सजन दुई-नारि—भाग्य से ही खेती अच्छी होती है, भाग्य से ही गुणवती स्त्री मिलती है तथा भाग्य से ही दो-चार मित्र मिलते हैं। तुलनीय : सं०—

पूर्वजन्मार्जिता विद्या पूर्वजन्मार्जित धनम्।
पूर्वजन्मार्जिता नारी अग्रे धावति धावतः॥

करमों के बलिया, पकाई खीर हो गया दलिया—अभागे के प्रति व्यंग्य से कहते हैं कि देखो कैसा 'भाग्यशाली' है कि बेचारे ने खीर पकाई थी और दलिया हो गया। आशय यह है कि अभागे व्यक्ति को किसी भी काम में सफलता नही मिलती।

कर लिया वह काम, भज लिया वह राम—जो काम समाप्त हो जाय उसी को काम समझना चाहिए, जो स्वयं पूजा-पाठ कर ली जाय वही राम नाम समझना चाहिए। आशय यह है कि काम को समाप्त करके ही दम लेना चाहिए। या कार्य करने वाले को आलस्य नही करना चाहिए। तुलनीयः राज० कियो स काम, भज्यो स राम।

कर ले सो काम, बिंध जोय सो मोती—जो काम समाप्त हो जाय उसी को किया समझना चाहिए तथा जो मोती बिंध जाय उसी को मोती समझना चाहिए। क्योंकि मोती का मूल्य उसके बिंधने पर ही लगाया जाता है। तुलनीय : राज० करयो स काम वीध्यो स मोती।

कर ले सो काम, भज ले सो राम—यह लोकोक्ति कई अर्थों में विभिन्न क्षेत्रों में प्रयुक्त होती है। (क) जो भी काम हाथ में आए, उसे कर लेना चाहिए। (ख) काम करने वाले को आलस्य नही करना चाहिए। (ग) काम वही है जो कर लिया जाए। तुलनीय : राज० कर लियो सो काम अर भज लियो सो राम; हरि० करले सो काम भज्य ले सो राम; पंज करले सौ कम जपले सौ राम; ब्रज० वही।

करवा कुम्हार का, घीव जजमान का पंडित बोले स्वाहा—(क) जब कोई दूसरे की संपत्ति या वस्तु पर खूब मौज उड़ाता है या उसे बेफ़िक्री से ख़र्च करता है तब उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : भोज० करवा कोंहार क घीव जजमान क बोल के बोल पंडित स्वाहा; फ़ा० माले-मुफ़्त, दिले-बेरहम।

करवा कोंहार के, घीव जजमान के स्वाहा-स्वाहा—ऊपर देखिए।

कर विन्यस्त बिल्वन्याय :—हाथ पर रखे हुए बेल का न्याय। प्रस्तुत न्याय का प्रयोग नितान्त स्पष्ट वस्तु के प्रसंग में किया जाता है।

कर सेवा खा मेवा—(क) बड़े लोगों की सेवा करमे

से लाभ होता है। (ख) परिश्रम करने वाला ही सुखी रहता है। तुलनीय : अव० करे सेवा खाय मेवा; मरा० सेवा कर नि मेवा घे; पंज० कर सेवा खा लै मेवा।

करहु जाइ जा कहँ जो भावा— जिसे जो अच्छा लगे करे। जहाँ कोई आदेश देने या शासन करने वाला नहीं होता वहाँ कहते हैं।

करा और कराया, फिर भी नहीं कमाया— स्वयं भी काम किया और दूसरों से भी कराया किंतु लाभ कुछ भी नही हुआ। परिश्रम करने पर भी जिसे लाभ न मिले उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : गढ़० ब्यो न स्यौ नौनी की फजिती।

करि कुचालि अंतहु पछितानी- बुरा या नीच कर्म करने वाले को अंत मे पश्चात्ताप करना पड़ता है। अर्थात् बुरा कर्म नहीं करना चाहिए।

करिगह छोड़ तमाशे जाय, नाहक चोट जुलाहा खाय दे० 'करघा छोड़ जुलाहा जाय···'।

करिगह छोड़ नहाने जाय, नाहक चोट जुलाहा खाय दे० 'करघा छोड़ जुलाहा जाय···'।

करिबृंहितन्यायः—हाथी के बृंहित (गर्जना) का न्याय। प्रस्तुत न्याय में कथित बृंहित शब्द हाथी की गर्जना का ही अर्थ रखता है, अतः करि शब्द के उल्लेख की आवश्यकता न होते हुए भी करि शब्द का प्रयोग विशेष प्रयोजन की सिद्धि के लिए किया गया है।

करिय जतन जेहि होई निवारन—वही प्रयत्न करना चाहिए जिससे आफ़त से छुटकारा मिले और कार्य सिद्ध हो।

करिया अक्षर भैंस बराबर— अनपढ़ व्यक्ति के प्रति कहते हैं जिसे रंग में समता होने के कारण भैंस और काले अक्षर मे कोई अंतर नहीं मालूम होता। तुलनीय : पंज० काला अखर मझ बराबर; अव० करिया अच्छर भैंसि बराबर; ब्रज० कारी अच्छर भैंसि बराबर; दे० 'काला अक्षर भैंस बराबर'।

करिया काछी धौरा बान, इन्हें छांडि जनि बेसह्यो आन—काली कच्छ (पूँछ की जड़ के नीचे का भाग) और सफेद रंग वाले बैल को छोड़कर दूसरा नहीं खरीदना चाहिए। आशय यह है कि जिस वस्तु के अच्छे होने के जो संकेत या लक्षण अनुभव के आधार पर स्थिर हो चुके हैं उसे खरीदते समय उनका ध्यान रखना चाहिए।

करिया बादर जी डरवावं, भूरे बदरे पानी आवे पानी बरसाने वाले तो प्रमुखत भूरे रंग के बादल होते है। काले बादलों से केवल भय ही होता है। यह एक अनुभवाश्रित लोकोक्ति है जैसे 'गरजते बादल बरसते नहीं हैं।'

करिया बाम्हन, गोर चमार, इनके साथ न उतरो पार—काले रंग के ब्राह्मण और गोरे रंग के चमार बहुत अविश्वसनीय एवं शरारती होते है। अतः इनसे सदा सावधान रहना चाहिए। तुलनीय : अव० करिया बाम्हन गोर चमार, इनका जानौ सदा लबार, पंज० काला बामन गोरा चूड़ा इनां दे नालों न उतरो पार।

करिया बाम्हन गोरिया सूद, कंजा तुरुक भुवर रजपूत— काले ब्राह्मण, गोरे शूद्र, कजी आँखों वाले मुसलमान और भूरे क्षत्रिय शरारती होते है, इनका विश्वास नही करना चाहिए।

करिये अपने मन की, पर सुनिये सबकी— यद्यपि हर-एक के परामर्श को सुन लेना चाहिए तथापि सोच-समझ कर अपने मन की ही करनी चाहिए। तुलनीय : अव० करै अपने मन की सुनै सबकी; हरि० सुनै सबकी करै मनकी; पंज० करो अपनी सुनो सारियाँ दी; ब्रज० करै मन की, सुनै सबकी।

करिहउँ बहुत कहउँ का थोरा—मैं बहुत कुछ करूँगा, इसलिए थोड़ा-बहुत क्या कहूँ। यह उस समय कहा जाता है जब कोई व्यक्ति कहे कि मैं जो करने जा रहा हूँ वह अवर्णनीय है, इसे मैं मुख से नही कह सकता; अतः जो मै करूँ उसे आप लोग देखिएगा।

करी कमाई खो बैठे—जब किसी व्यक्ति का कठिन परिश्रम व्यर्थ चला जाता है तो कहते हैं। तुलनीय : पंज० कीती कमायी गवादिती।

करी कराई सब मिट्टी करदी—जब कोई व्यक्ति मूर्खतावश या अनजाने में बना काम या बनी बात बिगाड़ दे तो कहते हैं। तुलनीय : पंज० कीता कराया सारा मिट्टी विच रला दिता; ब्रज० कर्यौ करायौ सब माटी करि दई।

करी दुकान, गँवाई जान— दूकान पर बहुत समय तक रहना पड़ता है तथा परिश्रम भी बहुत करना पड़ता है। जो व्यक्ति दूकानदारी को बहुत अच्छा और आरामदेह समझते हैं, उनको समझाने के लिए कहते हैं। तुलनीय : माल० वणज कर्‌यौ रे नाथा, पगां की झाल आई माथा; पंज० कीती हट्टी खा गयी चट्टी।

करी न खेती पड़े न फंद, घर-घर डोलें मूसरचंद— जो व्यक्ति कुछ काम-धाम नहीं करता उसे किसी बात की चिंता नहीं होती और वह आवारा लोगों के साथ घर-घर घूमा करता है। निकम्मे और आवारा व्यक्ति के प्रति कहते

हैं।

करी, पर करके न जानी—परिश्रम भी किया किंतु फल न पाया। जब कोई व्यक्ति किसी काम में बहुत परिश्रम करे और अंत में उसे सफलता न मिले तो कहते हैं।

करी बेगारी, हाथ न बिगाड़ी—बेकारी भी करनी हो तो भी मन लगाकर करनी चाहिए, हाथ बिगाड़ना उचित नहीं। अर्थात् जो भी काम करें मन लगा कर, और ठीक ढंग से करें चाहे वह बेगार ही क्यों न हो। ऐसा न करने से अपनी आदत बिगड़ जाती है।

करील का काँटा साढ़े सोलह हाथ लंबा—असंभव बात या झूठ (गप्प) के प्रति व्यंग्य से कहते हैं तुलनीय : ब्रज० करील कौ काँटौ, सोलह हाथ लंबौ।

करुवे भेषज बिन पिये, मिटै न तन को ताप (क) शरीर का कष्ट बिना कड़वी दवा पिए दूर नहीं होता। अच्छे उपदेश पहले तो बुरे लगते है किन्तु बाद में लाभप्रद होते हैं। वृन्द कवि के दोहे की पहली पंक्ति है : 'बुरे लगत सिख के वचन हिये विचारो आप'।

करे एक भरें सब—जब किसी एक व्यक्ति के कारण अनेक व्यक्तियों को कष्ट सहना पड़ता है तो कहते हैं। या जब अपराध कोई करे और उसके साथ अन्य लोग झूठे ही दंडित हों तो कहते हैं। तुलनीय : अव० करै एक भरै सब, पंज० करे इक मरण सारे; ब्रज० करै एक मरै सब।

करें हलाल, रखें एकादशी व्रत करते है हलाल (बकरे को मांस के लिए मारना) और लोगों को दिखाने के लिए एकादशी का व्रत रखते है। अर्थात् ढोंगी व्यक्तियों के लिए कहते हैं। दे० 'मुँह में राम, बगल में छुरी'। तुलनीय : पंज० खाण बकरा रखण कादसी व्रत।

करे उजेरो दीप पै तरे अंधेरा होय—दीपक सर्वत्र तो उजाला करता है, किन्तु उसके नीचे अँधेरा ही रहता है। यह लोकोक्ति ऐसे लोगों के प्रति कही जाती है जो दूसरों को ज्ञान या उपदेश देते हैं पर स्वयं बुरे कर्म करते हैं। तुलनीय : अं० The nearer the church the farther from God.

करे ऐसी कमाई जामें उमर समाई—इस तरह का काम करना चाहिए जिससे जीवन आराम से व्यतीत हो। किसी साधारण काम से कोई विशेष लाभ नहीं होता। तुलनीय : भीली—कमाई करवी तो एक दन करवी जे जमारो भूख भागी जाए।

करे कल्लू, मरे उल्लू—जब अपराध कोई करे और दंड किसी अन्य को भुगतना पड़े तो कहते हैं। तुलनीय : मेवा० परणे तो अखो ने घोड़ी में बखो; पंज० कल्लू करे उल्लू मरे।

करे कल्लू, भरे लल्लू—ऊपर देखिए। तुलनीय : मरा० कल्लू नें करावें नि लल्लू ने भरावें।

करे कसाला, खाय मसाला—जो कठिन परिश्रम (कसाला) करता है वही अच्छी-अच्छी चीजें (मसाला या मसालेदार) खाता है, अर्थात् आराम से रहता है। तुलनीय : ब्रज० करै कसालौ, खाय मसालौ।

करे कोई, भरे कोई—दे० 'करे कल्लू...'। तुलनीय : गढ़० वण सुंगरून खाया पिडाला घर सुगरू का थेच्या थोंनरा; भीली—खटके कणाने ने, खटकारे कजाए; कौर० खाया खेत गिलहरी नै, पड़्या नील के सिर; कौर० खावै कमावै गोपड़ी, मलबा भरे जाट।

करे खर्च, दे खुदा—जो खर्च करता है उसे ईश्वर देता भी है। (क) जो दूसरों की सहायता करते है या जो दान देते है उन्हें ईश्वर और सामर्थ्यवान बनाता है। (ख) धन का उपभोग करना चाहिए। सही ढंग से धन का उपभोग करने से धन समाप्त नहीं होता। ऐसे कंजूसों के प्रति कहते है जो धन रहते हुए तकलीफ़ सहते हैं। तुलनीय : राज० खावै पीवै जकेने खुदा देवै; पंज० खावो पीवो रब देगा।

करेगा पाप, सो खाएगा धाप, करेगा धरम सो फोड़ेगा करम—दे० 'करे पाप सो दाब, करे धरम तो फूट करम।'

करेगा सो आप को, न माँ को न बाप को—आशय यह है कि (क) कोई व्यक्ति जो कुछ अच्छा-बुरा करेगा उसका परिणाम वह स्वयं भोगेगा उसमें कोई दूसरा हिस्सा नहीं बँटाएगा। (ख) जब किसी लड़के का पढ़ने-लिखने में मन नहीं लगता तो उसके शिक्षार्थ कहते है। तुलनीय : पंज० करना अपने लई माँ लई नाँ पिओ लई।

करेगा सो भरेगा—जो करेगा उसी को भुगतना भी पड़ेगा। अर्थात् किसी काम को करने वाला ही उस कार्य के परिणाम का भोक्ता भी होता है। तुलनीय : राज० करसी सो भरसी; अव० जउन करी आहां भरी; हरि० करतम सो भोगतम; तेलु० चेम्मिनदंता अनुभवचालि; पंज० करेगा सो परेगा; ब्रज० करैगौ सो भरैगौ।

करेगा सो भरेगा, खोदेगा सो गिरेगा—जो जैसा करेगा वह वैसा भोगेगा। जो दूसरों के लिए खाई (गड्ढा) खोदेगा वह स्वयं गड्ढे में गिरेगा। (क) बुरे कर्मों से बचने के शिक्षार्थ ऐसा कहते है। (ख) जब किसी दुष्ट व्यक्ति को अपने बुरे कर्मों के कारण कष्ट सहना पड़ता है तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : करंता सो भुगंता, खुणंता सो पड़ंता।

करेगा सो भरेगा, बंदा माल खावेगा—जो जैसा करेगा

वैसा ही उसको फल मिलेगा, बंदा तो खाए-पीएगा अर्थात् मौज उड़ाएगा। (क) जो व्यक्ति कोई बुरा काम न करता हो उसके प्रति कहते हैं। (ख) जो स्वयं तो कोई बुरा काम न करता हो किंतु दूसरों से करवाता हो और उससे स्वयं भी लाभ उठाता हो उसके प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : राज० करैगा सो पावैगा, बंदा रोटी खावैगा।

करे तो डर, न करे तो डर—जब कोई व्यक्ति किसी ऐसी गंभीर स्थिति में फँस जाता है जिससे वह निपटना भी न चाहता हो और निपटे बिना कोई चारा भी न हो तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० करै तो डर, नहीं करै तौ डर; पंज० करे तां डर नां करे तां डर।

करे दाढ़ी वाला, पकड़ा जाय मूँछों वाला अपराध कोई करे और दंड किसी और को मिले तो कहते हैं। तुलनीय : अव० करै डाढ़ी वाला पकडा जाय मूछन वाला; हरि० ले जावै घुंघट आली झरमट्ठ आली का नाम; करै तेली मरै धोब्बी; पंज० करे दाड़ी वाला फड़्या जावे मुच्छां वाला।

करे न धरे, सनीचर को दोष – खुद तो कुछ करते नहीं और दोष देते हैं शनि (दुर्भाग्य) को। निकम्मे व्यक्तियों के प्रति कहते हैं जो कुछ काम नहीं करना चाहते और जब कष्ट या तकलीफ़ में पड़ते हैं तो कहते हैं कि हमारा तो भाग्य ही खराब है।

करे नेकी, मिले बदी -जिसके साथ नेकी (भलाई) की जाय वही अपने साथ बुरा करता है। अर्थात् जब कोई किसी का उपकार करे और उलटे वह उसे दोषी ठहराये तब कहते हैं। तुलनीय : राज० सावळ करता कावळ पडै; पंज० करे चंगी मने माड़ी; ब्रज० करै नेकी मिलै बदी।

करे परपंच कहलाये पंच—नीचे देखिए।

करे परपंच कहावे पंच प्रतिष्ठित पद पर बैठकर भी बुरे काम करने वाले के प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

करे पाप सो दाब, करे धर्म तो फूटे करम जो पाप करेगा वह मौज उड़ाएगा और जो धर्म करेगा वह भूखा मरेगा। सज्जन और ईमानदार व्यक्ति प्रायः निर्धन होते हैं और कठिन परिस्थितियों में जीवन व्यतीत करते हैं और इसके विपरीत दुष्ट और बेईमान व्यक्ति सभी प्रकार साधन-संपन्न होते हैं। तुलनीय : मेवा० करेगा पाप जो खावेगा धाप, न करेगा धरम जो फोड़ेगा करम।

करे प्यार, बिके घर-बार प्रेम में घर-द्वार तक भी बिक जाते हैं। प्रेम करना सरल नहीं है इसमें बलिदान करना पड़ता है और अपना सर्वस्व खो देना पड़ता है। प्रेम करने वालों को उसकी ऊँच-नीच से अवगत कराने के लिए कहते हैं। तुलनीय : गढ़० मोला जै मौ ढुंगा मां जो; पंज० पयार करे कर बार बेचे।

करे बिन कुछ नहीं होता—प्रत्येक कार्य करने से ही होता है, सोचने या बातें करने से नहीं। जो व्यक्ति केवल बातों से ही काम करना चाहें परिश्रम न करें उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय : भीली अद्धोरु कीदा वगर होरू नी थापे; पंज० करे बगैर कुछ नई हुंदा।

करे बुराई सुख चहै कैसे पावे कोय -कोई बुरा कर्म करते हुए सुख की कामना करे, यह सर्वथा असंभव है। (क) किसी असंभव बात या काम पर कहते हैं। (ख) जब कोई तुच्छ कर्म करे और महान लोगों की श्रेणी में गणना भी कराना चाहे तब भी कहते हैं।

करे मास्टरी दुइ जन खायँ, लरिके सब ननिअउरे जायँ—अध्यापक बनने पर इतनी कम आय होती है कि दो जनों (व्यक्तियों) का गुज़ारा मुश्किल से होता है, इसलिए बच्चों को ननिहाल भेजना पड़ता है। आशय यह है कि अध्यापन का कार्य करने वालों की आय बहुत थोड़ी होती है।

करे सेवा पावे मेवा--सेवा करने का फल अच्छा होता है। अर्थात् (क) परिश्रम करने से ही अच्छी वस्तुएँ प्राप्त होती हैं। (ख) अच्छे कर्मों का फल अच्छा ही होता है। (ग) अपने अफसरों की खुशामद करने से ही तरक्की होती है। तुलनीय : भोज० करब सेवा तऽ पाइब मेवा; पंज० कर सेवा मिलेगा मेवा।

करे सेवा, मिले मेवा ऊपर देखिए। तुलनीय : सं० सेवा धर्मो गहन विषयो योगिना मप्यगम्यः; राज० करो सेवा, पावा मेवा; ब्रज० वही।

करे सेवा सो पावे मेवा—दे० 'करे सेवा पावे···'। तुलनीय : मेवा करे सेवा सो पावे मेवा।

करे बीनती तौ करौ दुर्जन हू को काज - यदि दुर्जन या दुष्ट व्यक्ति भी प्रार्थना करे तो उसका कार्य कर देना चाहिए। अर्थात् जो अपने से झुक कर रहे या विनय करे उसकी सहायता करनी चाहिए।

करेला फिर नीम चढ़ा—एक तो करेला वैसे ही कड़वा होता है दूसरे कड़वे नीम पर चढ़ा हो तो उसकी कड़ुआई का कहना ही क्या? अर्थात् जब किसी दुष्ट व्यक्ति को साथी भी उसी की प्रकृति के मिल जायँ तो व्यंग्य से कहते हैं।

तुलनीय : पंज० इक तां करेला दूजा नीम उत्ते चढ़या; ब्रज० करेला और नीम चढ़्यौ।

करो खेती बोवो बेल—अगर ठीक प्रकार से खेती करना चाहते हो तो पहले अच्छे बैल उत्पन्न करो। आशय यह है कि विना अच्छे बैल के अच्छी खेती नहीं हो सकती।

करो खेती, भरो दंड—(क) खेती करने में बहुत झंझट होते हैं। (ख) किसान को प्रकृति भी परेशान करती है और लोग भी। अर्थात् खेती का काम अच्छा नहीं।

करो तो डर, नहीं तो कैसा डर?—जो बुरा काम करता है उसी को उसका दंड मिलता है। जो बुरा काम नहीं करता है उसे कोई भी दंड नहीं दे सकता। अर्थात् स्वच्छ विचारधारा के लोग निश्चिन्त रहते हैं उन्हें किसी बात का भय नहीं रहता। तुलनीय : राज० करै तो डर, नहीं करै तो कांयका डर?

करो तो बुरा, न करो तो बुरा—जब कोई व्यक्ति ऐसे मामले या काम में फँस जाता है जिसके करने और न करने दोनों ही दशाओं में उसे हानि उठानी पड़े या हानि उठाने की संभावना रहे तब वह ऐसा कहता है या उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय: कौर० खाओ तो बूर के लड्डू, न खाओ तो बूर के लड्डू; पंज० करो तां बुरा नां करो तां वी बुरा।

करो तो मुसीबत, न करो तो मुसीबत—ऊपर देखिए; तुलनीय : बुंद० कर तौ डर ना कर तौ डर; ब्रज० करौ तौ मुसीबत, न करौ तौ मुसीबत।

करो तो सवाब नहीं, न करो तो अज़ाब नहीं—उस काम के प्रति कहा जाता है जिसको करने से कोई लाभ न हो और न करने से कोई हानि भी न हो। (सवाब—सत्कर्म का फल; अज़ाब—पाप के बदले में मिलने वाला दुःख)।

करो बाबू मौज, बेचो बरतन खोज—घर बैठकर मौज करो और घर के बरतन तक खोज-खोज कर बेच डालो। जो व्यक्ति कोई काम-धंधा नहीं करते और घर ही बैठे-बैठे मौज करते हैं यानी निकम्मे व्यक्तियों के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय: राज० करो बेटा फाटका, बेचो घररा बाटका; पंज० मनाओ बाबू मौज कर दे पांडे बेच के।

करो बुरा, खाओ खरा—बुरा काम करो और बढ़िया खाओ। प्रायः देखा जाता है कि बुरे काम करने वाले सुख से रहते हैं तथा ईमानदार और अच्छे आदमी दुःख उठाते हैं। (लेकिन वास्तविक सुख इसमें नहीं है।) तुलनीय: राज० करो पाप, खाओ धाप।

करो या मरो—(क) या तो सही ढंग से काम करके सम्मान की ज़िन्दगी जीनी चाहिए या मर जाना चाहिए क्योंकि अपमान की ज़िन्दगी कोई ज़िन्दगी नहीं होती। (ख) या तो अपना लक्ष्य प्राप्त करके रहो अन्यथा उसी की प्राप्ति के लिए संघर्ष करते हुए प्राणों की आहुति दे दो। स्वतंत्रता-संग्राम के दौरान महात्मा गांधी का नारा भी यही था। तुलनीय: पंज० करो या मरो; अं० Do or die.

कर्क के मंगल होयं भवानी, देव घूर बरसेंगे पानी—यदि श्रावण मास में कर्क और मंगल का योग हो तो अवश्य जलवृष्टि होगी।

कर्क बुवावै काकरी, सिंह अबोनो जाय; ऐसा बोले भड्डरी कीड़ा फिर-फिर खाय—भड्डरी कहते हैं कि यदि ककड़ी सिंह राशि (नक्षत्र) में न बोकर कर्क राशि में बोयी जाती है तो उसमें कीड़ा पड़ जाता है।

कर्क राशि में मंगलवारी, ग्रहण परै दुर्भिक्ष बिचारी—यदि चन्द्रमा कर्क राशि में हो और मंगल के दिन चन्द्र-ग्रहण लगे तो अवश्य अकाल पड़ेगा।

कर्क संक्रमी मंगलवार, मकर संक्रमी सनिहिबिचार; पन्द्रह महुरत बारो होय, देस उजाड, करै यों जोय—यदि मंगलवार को कर्क की संक्रान्ति और शनिवार को मकर की संक्रान्ति पड़े और वह पन्द्रह दिन तक रहे तो इतना बड़ा अकाल पड़ेगा कि देश उजड़ जायेगा।

कर्ज काढ़ मेहमानी की, लौंडों मार दिवानी की—क़र्ज़ लेकर या निकालकर तो मेहमानों के सत्कार के लिए चीज़ें मँगाई और लड़कों ने उसे माँग-माँग कर मुझे पागल बना दिया। अर्थात् किसी ग़रीब के यहाँ मेहमान के लिए लाई हुई वस्तुओं को जब घर के बच्चे ही माँगने लगें तो कहते हैं।

क़र्ज़ की क्या माँ मरी है?—अर्थात् क्या मुझे कहीं कर्ज नहीं मिलेगा? तुम नहीं दोगे तो किसी और से ले लूँगा। जब कोई साहूकार किसी क़र्ज़ लेने वाले को क़र्ज़ नहीं देता देता और उलटे रोब-भरी बातें करता है तब वह ऐसा कहता है। तुलनीय : पंज० कर्जे दी माँ मरी दी है।

क़र्ज़ गया दुख गया—ऋण (क़र्ज़) से मुक्ति मिलने पर व्यक्ति का दुख दूर हो जाता है क्योंकि क़र्ज़ आदमी के ऊपर बहुत बड़ा भार होता है। तुलनीय : असमी—ऋण शेष् व्याधि शेष्; पंज० करजा गया दुख गया।

क़र्ज़दार, छाती पर स्वार—ऋण देने वाला अपना धन वसूल करने के लिए ऋण लेने वाले को सदा परेशान करता है। तुलनीय : मरा० घेणे करी छातीवर स्वार।

क़र्ज़दार पत्थर खाए हरबार—दूसरों से ऋण लेकर कर्ज़दार कभी प्रतिष्ठित नहीं हो पाता उसे साहूकार की भर्त्सना का सदा डर लगा रहता है। अर्थात् क़र्ज़ लेना बुरी

चीज है।

क़र्ज नरक का घर है—अर्थात् कर्ज (ऋण) लेना बहुत बुरा है। एक तो आदमी क़र्ज के भार से परेशान रहता है, दूसरे महाजन (क़र्ज देने वाला) की डाँट-फटकार सहनी पड़ती है और तीसरे महाजन की बेगार भी भी करनी पड़ती है। तुलनीय : पंज० करजा नरक दा कर है; अं० Out of debt, out of danger.

क़र्ज बाप का भी बुरा– पिता से भी ऋण (क़र्ज) लेना अच्छा नहीं होता। अर्थात् अपने किसी बहुत निकट के संबंधी या साथी से भी ऋण नहीं लेना चाहिए क्योंकि ऋण लेने से अपमानित होने का भय बना रहता है। तुलनीय : राज० लहणो बापरो ही खोटो; पंज० कर्जा पिओदा वी बुरा; ब्रज० करजा बाप कौऊ बुरौ।

क़र्ज लेकर खाना और फूस का तापना ये दोनों अच्छे नहीं होते, क्योंकि क़र्ज लेकर खाने से व्यक्ति की ग़रीबी नहीं जाती और दूसरे साहूकार का भय बना रहता है। इसी प्रकार फूस के तापने से ठंड नहीं जाती क्योंकि फूस की गर्मी बहुत थोड़ी देर तक रहती है। तुलनीय : भोज० करजा ले के खाइल अ पुअरा क तापल बरोबरे होला; पंज० करजा लेके खाना अते काह दा सेकना;

क़र्ज लेगा कर्जदार, खुदा लेगा जीव—ऋणदाता अपना धन और भगवान जान हर हालत में ले लेता है। आशय यह है कि कर्ज हर हालत में देना पड़ता है, बिना दिए छुटकारा नहीं मिलता।

क़र्ज से दबा घर, सिंगार से दबी नार कभी नहीं बचते - क़र्ज से दबा परिवार (घर) अधिक दिन तक नहीं चलता, थोड़े ही दिन बाद उसका पतन हो जाता है और अधिक शृंगार करने वाली स्त्री अधिक दिनों तक सच्चरित्र नहीं रह पाती क्योंकि उसके साज-शृंगार के कारण उसके चाहने वाले बहुत हो जाते हैं और किसी-न-किसी के सम्मुख उसे आत्मसमर्पण करना ही पड़ता है। तुलनीय : अव० क़र्ज हा घर औ लदही बुर कबहुं नहीं उबरत।

क़र्जा काढ़ करे व्यवहार, मेहरी से जो रूठे भरतार; बिना बुलाये बोले दर्बार, ये तीनों हैं पशम के बार कर्जा लेकर खर्च पूरा करना अपनी स्त्री से रूठना और बिना बुलाए कहीं बोलना बहुत अनुचित है। इस तरह के व्यक्ति मूर्ख माने जाते हैं। (पशम के बार = जननेंद्रिय के बाल)।

कर्ता एक दिसावर घड़ा करने वाला एक व्यक्ति है है और काम बहुत है। आशय यह है कि एक मनुष्य क्या-क्या करे ? अर्थात् एक व्यक्ति एक समय में कई काम नहीं कर सकता।

कर्म अभागो खेती करै, बैल मरै कि सूखा परै दे० 'करमहीन खेती करे···'।

कर्म का कर्म, धर्म का धर्म - काम और धर्म दोनों हो गए। अर्थात् जब किसी काम से स्वार्थ और परमार्थ दोनों की सिद्धि हो तो कहते हैं। तुलनीय : पंज० करम दा करम धरम दा धरम।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन कर्म में ही मनुष्य का अधिकार है फल में नहीं। अर्थात् मनुष्य को फल की आशा किए बिना अपना कर्तव्य पूरा करना चाहिए।

कर्म प्रधान विश्व करि राखा, जो जस करहिं तो तस फल चाखा संसार में कर्म ही प्रधान है, जो जैसा करेगा वह वैसा फल पायेगा। तुलनीय : मरा० कर्म प्रधान विश्व हें रचिले, फल भोगावें जैसे केले।

कर्मभूयस्त्वात् फल भूयस्त्वम्—अधिक परिश्रम करने का अधिक फल मिलता है। अर्थात् परिश्रम कभी व्यर्थ नहीं जाता। जो जितना श्रम करता है उसे उसी हिसाब से फल मिलता है।

कर्म से खेती, कर्म से नारि, कर्म से मिलें सजन दो चारि—दे० 'करमे खेती करमे नारि···'।

कर्महीन खेती करें, बरधा मरे कि सूखा पड़े—दे० 'करमहीन खेती करे···'। तुलनीय : मेवा० करमहीण खेती करे, बलद मरे कन सुखाड़ो पड़े; ब्रज० वही।

कर्महीन नर खेती करे, बैल मरे कै सूखा परै—दे० 'करमहीन खेती करे···'।

कर्मे खेती कर्मे नार, कर्मे मिलें कुटुम परिवार— भाग्य से ही खेती अच्छी होती है, भाग्य से ही अच्छी पत्नी मिलती है और भाग्य से ही अच्छा परिवार मिलता है। (कर्म = भाग्य)।

कल करना सो आज कर, आज करै सो अब– (क) काम करने में ढील (लापरवाही) नहीं करनी चाहिए क्योंकि कल पता नहीं परिस्थितियाँ कैसी हों। (ख) मनुष्य के जीवन का कुछ भरोसा नहीं है इसलिए जितना शीघ्र हो सके किसी काम को कर लेना चाहिए। पूरी कहावत इस प्रकार है—कल करना सो आज कर, आज करे सो अब; पल में परलै होत है, फेर करेगा कब। तुलनीय : पंज० कल दा कम अज कर अज दा हुण कर।

कल का क्या भरोसा– (क) भविष्य पर निर्भर नहीं होना चाहिए, वर्तमान में जो हमारे पास है वही हमारा है। (ख) काम को शीघ्रातिशीघ्र समाप्त करने का प्रयत्न

करना चाहिए, क्योंकि पता नहीं कल कौन-सा अड़ंगा लग जाय? या कल क्या होने वाला है? तुलनीय : पंज० कल दा की परोसा।

कल का खोनचावाला बन गया सेठ—(क) यदि कोई बड़ी जल्दी उन्नति करके बहुत छोटे से बहुत बड़ा बन जाय तो कहते हैं। (ख) ऐसे व्यक्ति के गर्व करने पर भी कहते हैं जो शीघ्र ही उन्नति करके एक साधारण व्यक्ति से एक बड़ा व्यक्ति बन जाता है।

कल का जोगी, आज का सिद्ध—(क) बहुत शीघ्र उन्नति करने वाले के प्रति कहते हैं। (ख) जब कोई व्यक्ति नया काम शुरू करता है तो बहुत टीमटाम दिखलाता है। (ग) जब कोई छोटी आयु का व्यक्ति बहुत ज्ञान की बातें करे तो भी व्यंग्य से कहते हैं। (घ) प्रयत्न करने पर साधारण मनुष्य भी महान बन जाते हैं। तुलनीय : मरा० अर्घ्या हळकुंडात पिवळा; गढ़० काल को जोगी आजौ सिद्ध; अव० काल्है जोगी, आजै जटा; पंज० कल दा जोगी अज दा सिद्ध।

कल का जोगी कलींदे का खप्पर—नया योगी तरबूज़े का खप्पर लेकर भीख माँगने चलता है। अर्थात् वह योगी नहीं होता, केवल योग का स्वाँग करता है। पुराने योगी के पास कपाल का खप्पर होता है। अर्थात् जब कोई तुच्छ व्यक्ति बड़ा होने का स्वांग रचता है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : बुंदे० काल के जोगी कलींदे को खप्पर; बंग० तिन दिनेर जोगी तार पा पर्यन्त जटा।

कल का जोगी, गाँड़ में जटा—ऊपर देखिए।

कल का जोगी तरबूज का खप्पर—दे० 'कल का जोगी कलींदे·····'।

कल का जोगी पाँव तक जटा—(क) कम उम्र का लड़का यदि बहुत बढ़-बढ़ कर या बड़ी बड़ी-बड़ी बातें करे तो कहते हैं। (ख) जब कोई किसी काम को पहले-पहल शुरू करता है तो बड़ी टीमटाम दिखलाता है, उस पर भी कहते हैं। तुलनीय : गढ़० ब्याले को जोगी आज को आदेस; अव० काल्है जोगी, आजै जटा; पंज० कल दा जोगी पैर तक जटा।

कल का जोगी, भाई-भाई पुकारे—ऊपर देखिए। तुलनीय : अव० कालिका जोगी भाई-भाई।

कल का बनिया आज का सेठ—कल जो बनिया (साधारण दूकानदार) था आज वह सेठ (बड़ा दूकानदार) हो गया है। अर्थात् जब कोई ग़रीब आदमी शीघ्र उन्नति करके बड़ा (धनी) आदमी बन जाता है तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० कल दा बनिया अज दा सेठ।

कल का लीपा देव बहाय, आज का लीपा देखो आय—बीती बातों को भूलकर वर्तमान पर ध्यान देना चाहिए। तुलनीय : भीली—मोरली वात गई मोरली हाथे, आज तो करो जे वात; हरि० पाछली बातां पै माटी गेर कै आज की संभालो।

कल किया आज भरो, आज किया कल भरो—कल जो काम किए थे उनका फल आज लो और जो आज कर रहे हो उसका फल कल मिलेगा। अर्थात् पूर्व-जन्म के कर्मों का फल इस जन्म में और इस जन्म के कर्मों का फल अगले जन्म में मिलता है। तुलनीय : भीली—आगले भौव खोटूं कीदू अणे भौव भगतो; पंज० कल दा आज परो अज दा कल परो।

कल किसने देखी है?—कल को किसने देखा है? अर्थात् किसी ने नहीं देखा। आशय यह है कि भविष्य के विषय में किसी को कुछ पता नहीं रहता। तुलनीय : राज० काल कण देखी है; मल० नाळे-नाळे नीळे-नीळे; पंज० कल किन देखया है; ब्रज० कल्लि कौनें देखी ऐ; अं० Tomorrow never comes.

कल की कल पर छोड़ो—भविष्य में क्या होने वाला है इसकी चिंता नहीं करनी चाहिए क्योंकि इसमें कोई फ़ायदा नहीं होता। जो काम सामने हो उसी पर ध्यान देना चाहिए। तुलनीय : पंज० कल दी कल उते छडो।

कल की कौन जानता है—दे० 'कल किसने देखी····'।

कल के जोगी कंधे पर जटा—दे० 'कल का जोगी···'।

कल के जोगी पैर में जटा—दे० 'कल का जोगी···'। तुलनीय : गढ़० काल को जोगी घुडू-घुडू जटा।

कल के बनिया आज के सेठ—दे० 'कल का बनि

कलजुग की भलाई ब्रह्म हत्या—आज के युग में दूसरे की भलाई करना ब्राह्मण की हत्या के समान बुरा है। अर्थात् आज का युग इतना बुरा है कि भलाई करना भी पाप है। तुलनीय : पंज० कलयुग दी पलाई ब्रह्म हत्या।

कलंजन्यायः—विषाक्त बाण से मारे हुए पशु के मांस का न्याय। जिस प्रकार विषाक्त बाण से मारे हुए पशु का मांस हानिकर होता है उसी प्रकार दुष्ट व्यक्तियों द्वारा किया गया कार्य भी अच्छा नहीं होता है।

कल थे सिरिया आज श्रीचंद—कल जब सिरिया कहते थे और आज धन हो जाने के कारण सभी लोग श्रीचंद कहते हैं। आशय यह है कि ग़रीब आदमी की कोई इज़्ज़त नहीं

करता और धनवान की सभी इज्जत करते हैं। तुलनीय : भोज० कालि्ह रहे सिरिया आज सिरिचन्न: भोज० काल रह चिरकुट आज लागल बन्न।

कल फिरती थी उपले चुगती, आज बन गई रानी— कल उपले चुग रही थी और आज रानी बन गई है। (क) जब कोई निर्धन व्यक्ति शीघ्र उन्नति करके बड़ा आदमी बन जाता है तो उसके प्रति कहते हैं। (ख) जब कोई व्यक्ति थोड़ा-सा धन पाकर इतराने लगता है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : कौर० कल्ल फिरै थी गोस्मे चुगती, आज हो बैट्ठी घरबारण; पंज० कल गोटे चुगदी सी अज रानी बन गयी।

कल भी कभी आता है?—अर्थात् कल कभी नहीं आता। (क) बीता हुआ समय कभी वापस नहीं आता। (ख) जो व्यक्ति बार-बार किसी काम को करने के लिए टालते रहते हैं उनके प्रति भी व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० भोल-भोल दिन गया मोल; पंज० कल वी कदी आंदा है।

क़लम या तलवार वाला कभी भूखा नहीं मरता— पढ़ा-लिखा या वीर मनुष्य कभी भूखा नही मरता। अर्थात् विद्वान अपने गुणों के कारण सभी जगह सम्मान पाता है और वीर मनुष्य अपने बल से धन अर्जित कर लेता है। तुलनीय : माल० कलम, करछी ने बरछी वालो कदी भूखो नी मरे; पंज० कलम या तलवार वाला मनुख कदी पुखा नईं मरदा।

कल मरी सास, आज निकले आँसू--सास तो कल मरी और उसके लिए आज रो रही है। (क) जब कोई किसी के प्रति झूठी महानुभूति दिखलाता है तब उसके प्रति ऐसा कहते है। (ख) समय बीत जाने पर कोई काम करने वाले के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० कल मोयी सस अज निकले अथरू।

कलयुग की भलाई ब्रह्म हत्या-- दे० 'कलयुग की भलाई···'। तुलनीय : मैथ० कलियुग क उपकार हत्या बरोबरि; भोज० कलयुग क नेकी बरह्म हत्या।

कलयुगी जीव—दुष्ट प्रकृति के मनुष्य के लिए कहते हैं।

कलवार की बेटी गिर-गिर पड़े लोग कहें मतवाली— जब किसी बुरे समाज से संबद्ध व्यक्ति विपत्ति में फँस जाता है तो लोग उसकी सहायता नहीं करते। या जब किसी दुष्ट स्वभाव का व्यक्ति अपनी दुष्टता छोड़कर सामान्य स्थिति में रहते हुए किसी विपत्ति में फँस जाता है तब भी लोग उसकी पूर्व स्थिति को ध्यान में रखकर उसकी कोई सहायता नहीं करते बल्कि परिहास करते हैं। तुलनीय : कन्नौ० कल्हार की बिटिया गिर-गिर परै, लोग कहैं मतवारी।

कलवारी की अगाड़ी और क़साई की पिछाड़ी-- कलवार अच्छी शराब पहले बेचता है और क़साई अच्छा मांस बाद में बेचता है, अत: कलवार के पास पहले और क़साई के पास बाद में जाना ठीक होता है।

कलशपुर: सरप्रासाद निर्माण तुल्यम्:--कलश के साथ वाले महल की रचना के तुल्य। इस न्याय का प्रयोग उस आदमी के लिए किया जाता है जो किसी भी काम को करते हुए यह समझता है कि शुरू किया हुआ काम सर्वथा निर्मित प्रासाद के समान है, अर्थात् काम की अच्छी शुरुआत उसके संपन्न होने की द्योतक है। तुलनीय : अं० Well begun is half done.

कल से कल दबती है-- किसी व्यक्ति पर दबाव डालने से ही काम होता है। जब किसी व्यक्ति को किसी से कोई काम कराना हो और वह उसका दबाव न मानता हो और वह किसी दूसरे व्यक्ति से कहलवाकर अपना काम बनवा ले तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० कळसूं कळ दबै।

कल से पानी गरम है, चिड़ियां न्हावें धूर; अंडा लै चींटी चढ़ै तो बरखा हो भर पूर- यदि घड़े का पानी गर्म हो, चिड़ियाँ धूल से स्नान करती हों और चींटी अपना अंडा लेकर ऊपर चढे तो पानी खूब बरसेगा अर्थात् ये सब संकेत वर्षा होने के हैं।

कलह से घड़ा सूखे- कलह से घड़े का पानी भी सूख जाता है। जिस स्थान या घर में सदा कलह होती रहती हो वहां कोई सुखी नही रहता। कलह की निंदा करने के लिए कहते हैं। तुलनीय : राज० कळहसूं कळसारो पाणी जाय परो; पंज० कला (लड़ाई-झगड़ा) नाल कड़ा सुक्के।

कलहारी कल-कल करे, छोहारी छो होय; अपनी अपनी बान से कभी न चूके कोय—संसार में कोई भी अपनी आदत से बाज़ नहीं आता, अर्थात् जन्मजात आदतें छोड़ना बहुत कठिन होता है।

कलाल की दूकान पर पानी भी पीओ तो शराब का गुमान---आशय यह है कि बदनाम जगह पर कुछ बुरे काम करना तो दूर रहा बैठने मात्र से भी बदनामी होती है। तुलनीय : मरा० कलालाच्या दुकानीं पाणी जरी प्यालांत तरी दारुचा संशय येतो; तेलु० ईत चेट्टु किंद्र पालु त्रागिना कल्ले अंटारू।

कलाल की बेटी डूबने चली, लोग कहें मतवाली— (क) किसी कष्टग्रस्त व्यक्ति के प्रति सहानुभूति न कर जब कोई हँसी उड़ाए तो कहते हैं। (ख) जिस व्यक्ति की बुरे काम करने की आदत हो और वह कोई भला काम करना चाहे तो भी लोग संशय की दृष्टि से देखते हैं।

कलियुग की भलाई ब्रह्महत्या— दे० 'कलजुग की भलाई···'।

कलियुग, करयुग है—यह कलियुग नही करयुग है। करयुग (हाथों का युग) मे जो व्यक्ति परिश्रम करेगा उसी को फल प्राप्त होगा और जो बैठे-बैठे खाना चाहेगा वह भूखा मरेगा। तुलनीय : राज० कलयुग नही करजुग है; ब्रज० कलजुग नायें करजुग है।

कलियुग नहीं, 'कल' युग है आज का युग मशीन युग है और इसमे यंत्रों के बिना कोई उन्नति नही हो सकती। (कल — यंत्र)।

कलियुग में दो भक्त हैं वैरागी अरु ऊँट; वे तुलसी बन काट ही इन किय पीपर ठूँठ- बड़ी-बड़ी माला पहिनने वाले साधुओं पर व्यंग्य है। तुलसी और पीपल ये दोनों विष्णु के प्रिय हैं और ये दोनो इन्ही को काटते हैं।

कलेजा टूट-टूक, आँसू एक भी नहीं—झूठी सहानुभूति दिखाने वाले के प्रति कहते है। तुलनीय : पंज० कालजा टुट गया अथरु इक्वी नई।

कलेवा न ब्यारी, मारने को महतारी—खिलाने-पिलाने को कुछ नही और मारने के लिए माँ बन जाती है। जो व्यक्ति काम कराने के लिए अपने को हितैषी बताए और देने के समय बात न पूछे उसके प्रति कहते हैं।

कल्लर का खेत, कपटी का हेत—ऊसर (कल्लर) की खेती ऐसी ही होती है जैसे कपटी मनुष्य की प्रीति। अर्थात् दोनों ही फलप्रद नही होती।

कल्लर खेत रहे जिस पास, वाके होय नाज ना घास—ऊसर (कल्लर) खेत में अनाज या घास कुछ भी पैदा नही होता। अर्थात् ऊसर भूमि से कोई लाभ नही मिलता।

कल्ला चलै, सत्तर बला टलै--कल्ला (जबड़ा) चलते रहने से मनुष्य की अनेक परेशानियाँ समाप्त हो जाती हैं। अर्थात् भोजन बहुत बड़ी चीज है। भोजन मिलते रहने से व्यक्ति के काफ़ी झझट दूर हो जाते हैं। कल्ला = जबड़ा, कल्ला चलने से तात्पर्य भोजन मिलने से है। तुलनीय : पंज० दंदाल चले ते सौ बला टलण।

कविता सोहावे भाट को, खेती सोहवे जाट को— प्राचीन समय में जब भाट ही कविता किया करते थे तब इस लोकोक्ति का प्रयोग किया जाता था। कविता भाट को ही शोभा देती है तथा खेती जाट ही कर सकता है, अर्थात् जिसका जो काम होता है वही उसको सफलतापूर्वक कर सकता है। तुलनीय : राज० कवित सोवै भाट नै; खेती सोवे जाट नै।

कस न गोयद कि दोगे-मन तुर्श अस्त—कोई नहीं कहता कि मेरा दही खट्टा है। अपनी वस्तु की कोई बुराई नहीं करता।

कविता सोहे भाट ने, और खेती सोहे जाट ने—ऊपर देखिए। तुलनीय : ब्रज० कविता सोहै भाट, खेती सोहै जाट।

कश्मीरी बेपीरी, लज्जत न शीरीं—कश्मीरी बड़े बेमुरव्वत होते हैं। उनमें कोई लज्जत और मिठास नहीं होती इसलिए ऐसा कहते हैं।

कश्मीरी से गोरा सो कोढ़ी—कश्मीरियों का रंग बहुत गोरा होता है इसलिए कहते हैं। कहीं-कही 'खत्री से गोरा सो कोढ़ी' भी कहते हैं।

कस न मी पुरसद कि भैया कौन हो, ढाई हो या तीन हो या पौन हो—जब कोई व्यक्ति दरिद्र हो तो उसकी बात कोई नही पूछता कि तू कौन है या तेरी क्या हैसियत है?

कसबिन लाज कसाइन दया— (क) वेश्या (कसबिन) का लाज से और क़साइयों का दया से बैर है। (ख) किसी व्यक्ति या वस्तु में प्रकृति से विरोधी गुण होने पर भी इसका प्रयोग किया जाता है।

कसबी कैसकि जरू, भेड़वा किसका साला वेश्या (कसबी) किसकी जोरू और भड़ुवा किसका साला होता है? अर्थात् ये किसी के नही होते। स्वार्थी लोगों के प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० रंडी किस दी बौटी अते-पड़ुवा किस दा साला।

क़सम और तरकारी खाने ही के लिए हैं—झूठी क़सम खाने वालों पर व्यंग्य में कहा जाता है। तुलनीय : राज० सौगन र सीरणी खावण नै हुवै; अव० कसम औ भाजी खाइन के बरे हैं; पंज० सौ अते सलूणा खाण लई है।

क़सम खाने से कस्तूरी नहीं बिकती--कस्तूरी बेचने के लिए क़सम खाने की कोई आवश्यकता नही होती क्योंकि उसकी सुगंध ही उसका प्रत्यक्ष प्रमाण होती है। (क) जिस बात का प्रमाण सामने हो और उसी को छिपाने के लिए जो व्यक्ति झूठ बोले उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। (ख) अच्छे व्यक्ति या अच्छी वस्तु को लोग वैसे ही जान जाते हैं उसके लिए किसी प्रमाण की आवश्यकता नही

होती। तुलनीय : गढ़० सौं डालिक कस्तूरी नि बिकदी; पंज० सौं खाण नाल कस्तूरी नई बिकदी।

क़साई का अनाज और पाड़ा खा जाय—दुष्ट व्यक्ति से पशु भी डरते हैं। अर्थात् दुष्ट व्यक्ति की हानि करने की किसी में हिम्मत नहीं होती।

क़साई का आटा और बैल खा जाए—ऊपर देखिए। तुलनीय: बुंद० कसाई कौ सुकनों और पड़ा खा जाय; ब्रज० कसाई को पीसनों और पड़रा खाइ।

क़साई का कुत्ता, रसोई का बाम्हन— ये दोनों मुफ़्त-खोर होने के कारण बहुत मोटे होते हैं। (क) किसी मुफ़्त-खोर आदमी के मोटे होने पर कहा जाता है। (ख) मुफ़्त-खोर पर यों भी कहते हैं। तुलनीय : अव० कसाई केर कूकुर। पंज० कसाई दा कुत्ता अते चौके दा पंडत।

क़साई का खूँटा और खाली रहे—(क) उसके यहां कोई-न-कोई जानवर आता ही रहता है। (ख) जो हमेशा कोई-न-कोई शिकार फँसाये रहे उस पर भी कहते हैं। (ग) दुष्ट व्यक्ति हमेशा कुछ-न-कुछ उपद्रव करते ही रहते हैं। तुलनीय: अव० कसाई के खूटा औ खाली रहै; ब्रज० कसाई कौ खूटा का खाली रहै; पंज० कसाई दी खुंडी खाली रहै।

क़साई का बच्चा कभी न सच्चा, जो सच्चा तो हरामी का बच्चा—क़साई की संतान कभी सत्य नहीं बोलती। यदि सत्य बोले तो समझना चाहिए कि वह क़साई की संतान नहीं है। अर्थात् क़साई की संतान हमेशा झूठ बोलती है। तुलनीय : भोज० कसाइ क बच्चा कबहु ना सच्चा, सच्चो-मच्चा त हरामी क बच्चा; अव० कसाइ कै बच्चा कभी न सच्चा, जौ सच्चा तो हरामी कै बच्चा।

क़साई का माल बाछा न खा सके—दे० 'क़साई का अनाज…'। तुलनीय : हरि० कसाई के माळ नै, के काटड़ा खा सकै सै।

क़साई की घास को कटड़ा खा जाय ?— दे० 'क़साई का अनाज…'। तुलनीय : हरि० कसाई की घास ने काटडा क्योंकर खाजा।

क़साई की घास को कटड़ा खाय ?—दे० 'क़साई का अनाज…'। तुलनीय : हरि० कसाई की घास ने काटड़ा खा जा ?

क़साई की बेटी दस वर्ष की उम्र में ही बच्चा जनती है—मनुष्य के शरीर का गठन और विकास पौष्टिक भोजन पर निर्भर करता है। चूँकि क़साई के यहां मांस आदि खाने को खूब मिलता है, इसलिए उसकी बेटी दस वर्ष की अल्पायु में ही हृष्ट-पुष्ट और वयस्क हो जाती है और जल्दी ही संतानवती भी हो जाती है। तुलनीय : अव० कसाई कै बिटिया दसे बरिस म बिआय।

क़साई के घर खस्सी की खैर— अर्थात् शत्रु के यहाँ उसका प्रतिपक्षी कैसे बच सकता है ? या जो वस्तु जिसका भोजन है वह उसके घर बच नहीं सकती। तुलनीय : ब्रज० कसाई के घर खस्सी की खैर।

क़साई के सरापे गाय नहीं मरती—किसी के चाहने से किसी का बुरा या भला नहीं होता। तुलनीय : भोज० चमार के सरपले डांगर न मरेला। पंज० कसाई दे सराप नाल गां नई मरदी।

क़साई के हाथ से गाय छूटी—बुरे लोगों के चंगुल में फँसे हुए भले आदमी के छूटने पर कहते हैं। तुलनीय : पंज० कसाई दे हथो गां छुटी (निकली)।

कस्तूरी का टाल नहीं होता— (क) बहुत अच्छी या बहुमूल्य वस्तुएँ अधिक मात्रा में नहीं होती। (ख) नेक व्यक्ति कम होते हैं। तुलनीय : पंज० कस्तूरी दा टाल नई हुंदा।

कस्तूरी की गंध से लहसुन दे न सुगंध— बुरे अच्छों की संगति से भी अच्छे नहीं होते। जब कोई बुरा व्यक्ति भले लोगों की संगति में रहकर भी नहीं सुधरता तब उसके प्रति कहते हैं।

कस्तूरी के लिए प्रमाण क्या ?— कस्तूरी के विषय में जानने के लिए किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती क्योंकि उसकी सुगंध से ही उसके विषय में पता चल जाता है। अर्थात् महानुभावों के लिए प्रमाण की आवश्यकता नहीं पड़ती, वे अपने सद्गुणों के कारण वैसे ही पहचान में आ जाते हैं। तुलनीय : सं० प्रत्यक्षं किं प्रमाणम् ? पंज० कस्तूरी लई सबूत की देना।

कहं कुम्भज कहं सिन्धु अपारा, सोखेउ सुयश सकल संसारा— तेजस्वी पुरुष छोटा होने पर भी बड़ों-बड़ों को पराजित कर सकता है।

कहकर पानी में बहाना है— बात कहकर पानी में बहाना है। (क) जब किसी व्यक्ति पर समझाने-बुझाने का का कोई असर न हो तो उसके प्रति कहते हैं। (ख) उस व्यक्ति के प्रति भी कहते हैं जो कहने के अनुसार आचरण न करके अपने मन की करता हो। तुलनीय : राज० कहर घड़ में नाखणो है।

कहत रहे थोड़े दिन पर याद रहे बहुत दिन—(क) थोड़े दिनों की भी मुसीबत बहुत दिनों तक याद रहती है।

सुख की अपेक्षा दु:ख की याद अधिक दिन तक रहती है। (ख) अकाल थोड़े दिनों तक रहता है पर उसके प्रभाव को लोग अधिक दिनों तक याद करते हैं।

कहता सो कहता, सुनता सुघड़ चाहिए—कहने वाले से सुनने वाला समझदार (सुघड़) होना चाहिए। अर्थात् किसी की बात का अंधानुकरण नहीं करना चाहिए। जब कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति की बातों में 'हां' मिलाते रहता है चाहे वे ग़लत हों या सही, या जब कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति द्वारा कही गई असंभव बात को भी मान लेता है या उसका प्रचार करता है तब ऐसा कहते हैं।

कहते हैं ऊदपुर को, लेकिन जाते हैं महमूदपुर को—जो व्यक्ति कहे कुछ और करे कुछ अर्थात् चालबाज़ व्यक्ति के प्रति कहते हैं। तुलनीय : मरा० तोंडानें म्हणतात उदेपुर ला पण जातात मात्र महमूदपुरास; ब्रज० कहैं उदयपुर, जायें महमूद पुर।

कहते हैं करते नहीं, हैं वे बड़े लबाड़—जो व्यक्ति वायदा ही करता रहे उसे पूरा कभी न करे। अर्थात् जो व्यक्ति केवल बातों से ही लोगों को ख़ुश करता या करना चाहता है उसके प्रति कहते हैं।

कहना अपना, करना उसका—हम तो केवल प्रार्थना ही कर सकते हैं काम तो ईश्वर ही बना सकता है। (क) जब कोई चारा नही रहता तो भगवान की ही प्रार्थना की जाती है। (ख) बड़े अफसरों या उच्च अधिकारियों के प्रति भी कहते हैं क्योंकि छोटे कर्मचारी या साधारण व्यक्ति उनसे केवल विनय ही कर सकते हैं, करना न करना तो उनकी (उच्च अधिकारियों) इच्छा पर निर्भर करता है। तुलनीय : भीली—करवू तो राम नूने केवू आपणू; पंज० कैणा आपणा करना उसदा।

कहना आसान है, पर करना मुश्किल—(क) किसी काम के करने की प्रतिज्ञा करना जितना आसान है, उसका पूरा करना उतना ही कठिन है। तुलनीय : राज० कैवणो सोरो, करणो दोरो; भोज० कहल आसान ह बाकी करल मुस्किल ह; अव० कहब तौ आसान है, मुला करब मुश्किल है; मेवा० केणो सोरो ने करणो दोरो; पंज० कैणा सोखा है पर करना ओखा; ब्रज० कहनों आसानें परि करिबौ कठिन।

कहना और है करना और है—दोनों में बहुत अंतर है, पहला जितना सरल है दूसरा उतना ही मुश्किल है। तुलनीय : पंज० कैण ओर है करना कुछ ओर; ब्रज० कहनों कछू करनो कछू।

कहना करना वो है—ऊपर देखिए।

कहना सरल, करना कठिन—दे० 'कहना आसान है पर...'। तुलनीय : सं० वक्तुं सुकरं कर्तुं दुस्करम्; ब्रज० कहनों सरल, करनों कठिन।

कहनी एक, न सुननी दो—न किसी को कुछ बुरा-भला कहिए और न बुरा-भला सुनिए। आशय यह है कि (क) अपनी इज़्ज़त को बचाना और खोना अपने हाथ में है। (ख) जो दूसरों के साथ बुरा व्यवहार करता है दूसरे भी उसके साथ वैसा ही करते हैं। तुलनीय : पंज० कैणी इक नईं सुननी दो; ब्रज० वही।

कहने-कहने का अन्तर है—एक ही बात को विभिन्न ढंग से कहने से उसके अर्थ भी भिन्न हो जाते हैं या उसका प्रभाव भिन्न तरह का होता है। अर्थात् जब कोई व्यक्ति प्रेम एवं विनम्रता से किसी बात को कहता है तो लोग उससे ख़ुश होते हैं और उसे आदर देते है। लेकिन जब उसी बात को कोई दूसरा व्यक्ति रुखाई से कहता है तो लोगों पर उसका अच्छा प्रभाव नही पड़ता और उसके प्रति लोगों के विचार भी अच्छे नही होते। इसी बात को ध्यान में रखकर उक्त लोकोक्ति कही गई है या कही जाती है। तुलनीय : पंज० कैण-कैण बिच फरक है; ब्रज० कहबे, कहबे कौ अंतरै।

कहने की लाज न सुनने की शरम—ऐसे बेशरम आदमी को कहते हैं जो कहने-सुनने की कुछ शर्म न करे। अर्थात् बिल्कुल पतित व्यक्ति के प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० कैण दी सरम नाँ सुनण दी सरम।

कहने को रानी चुराने को चमरख—(क) नाम के अनुसार कर्म न होने पर व्यंग्य से ऐसा कहते हैं। (ख) जब कोई उच्च कुल या जाति में जन्म लेकर भी नीच या ओछा कर्म करता है तब भी उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मैथ० कहाब ला रानी चोराब ला चमरख; भोज० चोरावे के सुई कहावे के रानी।

कहने में न सुनने में—जिस काम या वस्तु का अहसान या लाभ कोई मानने को तैयार न हो तो उसके प्रति कहते है। तुलनीय : गढ़० हाणीन गाणी; पंज० कैण बिच ना सुनण बिच।

कहने में मुलायम, टटोलने में कड़ी—(क) जो वस्तु देखने में सुन्दर लगे किंतु प्रयोग में बेकार हो उसे कहते हैं। (ख) जो व्यक्ति देखने में सज्जन लगे और वास्तव में दुष्ट हो उसके प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० दिखण बिच मलैम कड़न बिच करड़ी।

कहने वाले करते नहीं, करने वाले कहते नहीं—जो लोग बहुत लम्बी-चौड़ी बातें करते है वे कुछ भी नहीं करते पर जो लोग कुछ करते हैं, वे शान्त रहते है। आशय यह है कि छिछोरे (ओछा) व्यक्ति बातें बहुत करते हैं, पर वे किसी भी काम में सफल नहीं होते और महान व्यक्ति सदा शान्त रहते है; वे अपने कार्य के संबंध में पहले से कोई प्रचार नही करते, जब कार्य कर देते है तो लोग वैसे ही जान जाते हैं। गंभीरता ही महापुरुषों का लक्षण है। तुलनीय : पंज० कैण वाले करदे नई करण वाले कैदे नई; ब्रज० कहबे बारे करते नाहीं, करिबे बारे कहते नही।

कहने से करना कठिन है—मुँह से कह देना सहज है, किंतु उसी काम को करना बहुत कठिन होता है। जो व्यक्ति बहुत बढ़-बढ़ कर बातें करते हैं उनके प्रति कहते है। तुलनीय : राज० कहणो सोरो करणो दोरो; राज० कथनी स् करणी दोरी; पंज० कैण नालों करना ओखा है; ब्रज० कहबे ते करिबौ कठिनें।

कहने से करना भला—किसी काम के संबध में कुछ कहने की अपेक्षा उसे करके दिखा देना ही अच्छा होता है। जो लोग काफ़ी लम्बी-चौड़ी बातें करते है उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय : मरा० सांगण्यापेक्षा करणे बरें; मल० पर-ञ्ञिलि नेक्काल् प्रवृत्ति नन्नु; पंज० कैण तो करना चंगा; अं० An ounce of practice is better than tons of preaching.

कहने से कुम्हार गधे पर नहीं चढ़ता—जब कोई व्यक्ति अपना सामान्य काम कहने पर न करे तो व्यंग्य में कहते है। (गधे पर चढ़ना कुम्हार या धोबी के लिए प्राय: दैनिक काम है)। तुलनीय : राज० कयासू कूँभार गधै माथै थोड़ा ही चढ़ै; पंज० कए ते कुम्हारी खोत्ती ते नई चड़दी; भोज० कहला पर धोबी गदहा पर ना चढ़ेला; बुंदे० कये कये धोबी गदा पै नई चढ़त, ब्रज० कहे तै कुम्हार गधा पै नाइ चढ़तु; अव० कहे ते धोबी गदहा पर ना चढ़त; कौर० कहे ते कुम्हार गधे पै ना चढ़ै; ब्रज० कहे ते कुम्हार गधा पै नायें चढ़ै।

कहने से कोई कुंए में नहीं गिरता—कोई किसी के कहने मात्र से खतरे मे नहीं पड़ता या अपनी हानि नहीं करता। तुलनीय : राज० कया कोई कूवें में पड़सी; पंज० आखण नाल कोई खू बिच नई डिगदा।

कहने से क्या कुएँ में कूदेगा ?—जब कोई व्यक्ति किसी के कहने में आकर कोई मूर्खतापूर्ण कार्य कर बैठे तो उसे यह समझाने के लिए कि किसी के कहने में आना मूर्खता है ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० कयां किसी कूवे में पड़ीजै; पंज० आखण नाल की खू बिच छाल मारेंगा; ब्रज० कहबे ते का कोई कुआ में परै।

कहने से क्या कुंए में पड़ा जाता है—ऊपर देखिए।

कहने से चावल नहीं पकता—केवल कहने से ही चावल नही पक जाता है बल्कि उसके लिए जल, गर्मी, बर्तन और समय आदि की आवश्यकता होती है। आशय यह है कि कोई कार्य कहने से नहीं पूरा होता बल्कि उसके लिए श्रम, समय और साधन की आवश्यकता पड़ती है। तुलनीय : असमी० कथाते चाउल् निसिजे; सं० उद्यमेन ही सिध्यन्ति कार्य्याणि न मनोरथै:; पंज० कैण नाल चौल नई बनदे; अं० Mere wishes are bonny fishes.

कहने से धोबी गदहे पर नहीं चढ़ता—जब कोई व्यक्ति किसी कार्य को किसी के कहने पर न करे और बाद में उसी कार्य को स्वेच्छा से करे तो कहते है। तुलनीय : भोज० कहला पर धोबी गदहा पर ना चढ़ेला; छत्तीस० केहे मां धोबी गदहा मां नई चढ़ै; पंज० कैण नाल तोबी खोते उते नई चड़दा।

क़हरे-दरवेश, बर जाने-दरवेश—ग़रीब का क्रोध अपने ही ऊपर उतरता है।

कहवैया से सुनवैया हुशियार—कहने वाले से सुनने वाला चालाक (होशियार) होना चाहिए ताकि वह कहने वाले की बात को ठीक ढंग से समझ सके। जब कोई व्यक्ति किसी की उलटी-सीधी बातों को सुनकर बिना सोचे-समझे उसका प्रचार करने लगता है तब उसका परिहास करने के लिए ऐसा कहते हैं।

कह सुनाऊँ या कर दिखाऊँ—कह कर सुना दूँ या करके दिखा भी दूँ। जब कोई व्यक्ति किसी काम के विषय में पूर्ण जानकारी रखता है तो उस कार्य के संबंध में किसी के कुछ कहने या पूछने पर वह ऐसा कहता है। तुलनीय : पंज० आख के सुनावाँ यां करके दसां।

कह सुनाय विधि काह सुनावा—आशा के विपरीत कार्य होने पर कहते हैं।

कहाँ ईर घाट कहाँ वीर घाट—असम्बद्ध वस्तु, स्थान या व्यक्ति के विषय में जब कोई बात करे तब उक्त कहावत कहते हैं।

कहाँ का पंवारा लगाया—कहाँ का लम्बा-चौड़ा क़िस्सा छेड़ दिया। अर्थात् जब कोई व्यक्ति ऐसी बातचीत करे जिसमें कुछ भी तत्व न हो या अपनी दिलचस्पी न हो तो कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० कहाँ कौ पमारौ लगायौ।

कहाँ गरजा, कहाँ बरसा—गरज तो यहाँ रहा था और बरस दूसरी जगह रहा है। (क) प्रयत्न किसी के लिए किया जाए और लाभ कोई दूसरा उठाए तब प्रयत्नकर्ता के प्रति ऐसा कहते हैं। (ख) आशा के विपरीत कार्य हो जाने पर भी कहते हैं। (ग) धोखेबाज़ व्यक्ति के लिए भी कहते हैं जो कि धोखे से वार कर बैठे। तुलनीय : गढ़० कख गिड़के, कख बरखे; भोज० कहवां गरजल अ कहवां बरसल; पंज० किथे गरजया किथे वरमया; ब्रज० कहां गरज्यौ, कहां बरस्यौ।

कहाँ झगड़ा पजावे का, निकाला बाग़ का काग़ज़—अप्रासंगिक काम या बात पर कहा जाता है। (पजावा—ईंट का भट्ठा)।

कहाँ डूबे और कहाँ निकले—जो व्यक्ति किसी निश्चय पर अटल न रहे उसके प्रति कहते है। (ख) चालाक अथवा धोखेबाज़ व्यक्ति के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० किथे डुबया किथे निकलया; ब्रज० कहाँ डूबे, कहाँ उछरे।

कहाँ बसे, कहाँ घसे—(क) जब किसी व्यक्ति का जन्म स्थान कहीं और हो तथा वह कार्य कहीं और करे या किसी दूर स्थान पर जाकर जीविकोपार्जन करे तो कहते हैं। (ख) जब कोई व्यक्ति असंबद्ध बातें करता है तब भी कहते हैं। (ग) जब कोई व्यक्ति अपरिचित व्यक्तियों की बातों में बिना बुलाए या कहे हस्तक्षेप करता है तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० किथे वसया किथे फसया।

कहाँ बीबी कहाँ बाँदी—दे० 'कहां राजा भोज, कहाँ···'।

कहाँ बुढ़िया, कहाँ राजकन्या—दे० 'कहाँ राजा भोज, कहाँ ··'।

कहाँ राजा की रानी, कहाँ भगग की कानी—दे० कहाँ राजा भोज, कहाँ···'।

कहाँ राजा भोज, कहाँ गंगू तेली—जब दो व्यक्तियों या दो वस्तुओं में समानता न हो फिर भी कोई उनमें समता बतलावे तो कहते हैं। तुलनीय : भोज० कहां राजा भोज, कहां भोजवा तेली; अव० कहाँ राजा भोज औ कहाँ गंगू तेली; बुंद० कहाँ राजा भोज, कहाँ डूंठा तेली; ब्रज० कहाँ राजा भोज, कहां कंगला तेली; राज० कठै राजा भोज, कठै गाँगलो तेली; कुमा० कां राजा भोज, कां गंगवा तेली; बंग० कोथाय राजा भोज, कोथाय गंगाराम तेली; मरा० कुठें भोज राजा, कुठें गंगा तेली; हरि० कित्त राजा भोज कित्त कागंडा तेली; गढ़० कख राजा भोज, कख बन्दर चोर; कौर० कहाँ राजा भोज, कहाँ गंगू तेल्ली; कश्म० जहाँ राजा भोज, वहाँ गंगा तेली; बघे० कहाँ राजा भोज, कहाँ भंजवा तेली; तेलु० नक्केक्कड नाग लोग मेक्कड; पंज० किथे राजा भोज किथे गंगू तेली।

कहाँ राजा भोज, कहाँ गांगला तेली—दे० 'कहाँ राजा भोज, कहाँ गंगू तेली।'

कहाँ राजा भोज, कहाँ गांगू तेली—दे० 'कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली।'

कहाँ राजा भोज, कहाँ डूंठा तेली—दे० 'कहाँ राजा भोज कहां गंगू तेली।'

कहाँ राजा भोज, कहाँ भोजवा तेली—दे० 'कहाँ राजा भोज, कहाँ गंगू तेली।'

कहाँ राम-राम, कहाँ टाँय-टाँय—(क) जब कोई व्यक्ति किसी अच्छे काम को छोड़कर कोई बुरा काम करने लगता है तब कहते हैं। (ख) जब कोई किसी अच्छी वस्तु की तुलना उससे बुरी वस्तु से करता है तब भी ऐसा कहते है। (ग) बढ़े व्यक्तियों के प्रति भी कहते हैं जो बैठ कर राम का नाम नहीं लेते बल्कि दिन-रात व्यर्थ ही परिवार के लोगों को कुछ कहते रहते हैं। तुलनीय : पंज० किथे राम-राम किथे टें-टें; ब्रज० वही।

कहानी खत्म हुई—(क) जब किसी की किसी कार्य में सफलता की आशा समाप्त हो जाए तो वह स्वयं के प्रति इस प्रकार कहता है। (ख) किसी कार्य के समाप्त हो जाने पर या झगड़ा मिट जाने पर भी इस प्रकार कहते है। तुलनीय : गढ़० सरी तरी होइगे; पंज० गल मुकी; ब्रज० कहानी खतम नहीं।

कहा होय बहु बाहें, जोता न जाय थाहें—यदि खेत की गहरी जुताई नहीं की जाती तो अनेक बार जोतने से कोई लाभ नहीं होता और न ही फ़सल अच्छी होती है।

कहीं आवें में नाँद भूलेगा?—आवें (जिसमें मिट्टी के कच्चे बरतन पकाए जाते है) में नाँद (मिट्टी का एक बड़ा बरतन) नहीं खो सकता या छिप सकता। अर्थात् जब कोई किसी विख्यात वस्तु या बात को छिपाने की कोशिश करता है तब ऐसा कहते है। (ख) किसी बड़ी वस्तु के छोटे से स्थान में खो जाने पर भी कहते है। (ग) जब कोई व्यक्ति किसी बुराई को जिसे सब लोग जानते हैं छिपाने की कोशिश करता है तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० आवाँ में कहीं नादो भुलाई।

कहीं कौवों के कोसे ढोर मरते हैं?—दे० 'कसाई के

सराये गाय...'।

कहीं-कहीं गोपाल की गई चौकड़ी भूल, काबुल में मेवा कियो, ब्रज में कियो बबूल—(क) जब वस्तुएँ अपने उपयुक्त स्थान पर या आवश्यकता के स्थान पर न होकर इधर-उधर हों तो कहते हैं। (ख) कभी-कभी बड़ों की भी मनमानी नहीं चलती। बातें या परिस्थितियाँ उनके भी प्रतिकूल हो जाती हैं। (ग) कभी-कभी बड़े लोग भी भूल कर जाते हैं। तुलनीय : ब्रज०, कहूं-कहूं गोपाल जी गये चौकड़ी भूलि काबुल में मेवा करी ब्रज में करी बमूरि।

कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा, भानमती ने कुनबा जोड़ा—जब कोई इधर-उधर की अनावश्यक चीज़ों को एकत्रित कर कोई व्यर्थ की चीज़ बना देता है तब ऐसा कहते है। (भानुमती राजा भोज के समय की जादूगरनी बताई जाती है। कुछ लोग इसे राजा भोज की पत्नी भी बतलाते हैं।) तुलनीय : हरि० कितै की ईट कितै का रोड़ा भानमती ने कुनबा जोड़ा; गढ़० गाडवार लगलो गाडपार तुमड़ो; मेवा० कठा की तेलण अर कठा को पलो; मं० बादरायण संबंध; बुंद० कऊं की ईंट कऊं को रोरा, भानमती ने कुनबा जोरा; कौर० कही का ईंट कहीं का रोडा, भानमती ने कुनबा जोड़ा; मरा० कुठली वीट अर कुठला रोडा, घेऊन भानुमती ने घर बनविलें; पंज० कितों दी इट कितों दा रोड़ा पानमती ने कुनबा जोड़या, ब्रज० कहूँ की ईट कहूँ को रोरा भानमती न कुनबा जोड़ा।

कहीं की बोली, कहीं की गाली—जो बात किसी जगह पर सामान्य रूप से प्रतिदिन प्रयोग में आती है वही किसी जगह गाली (अपशब्द) समझी जाती है। आशय यह है कि किसी व्यक्ति या वस्तु के स्थान-परिवर्तन के साथ-साथ उसकी मान-मर्यादा और महत्त्व में भी अंतर आ जाता है। तुलनीय : असमी० एक् ठाइर् बुलि, एक् ठाइर् गालि; पंज० कितों दी बोली कितों दी गाल; अं० One man's meat is another man's poison.

कहीं खैर खूबी कहीं हाय-हाय—एक ओर खुशियाँ मनाई जा रही हैं तो दूसरी ओर मातम छाया हुआ है। संसार की विचित्रता पर कहा गया है।

कहीं गधा भी घोड़ा बन सकता है—अर्थात् गधा घोड़ा नहीं बन सकता। (क) मूर्ख या दुष्ट व्यक्ति के प्रति कहते हैं जिसमें काफ़ी प्रयत्न के बावजूद भी कोई सुधार नहीं आता। (ख) छोटे (नीच) व्यक्ति महान् नहीं हो सकते। तुलनीय : मल० कावक कुळिच्चाल् कोक्काकुमो; पंज० कदी खोता वी कोड़ा बन सकदा है; अं० Wash a dog, comb a dog, still a dog is a dog; You can not wash a blackman white.

कहीं गुड़ की रखवाली चींटे भी करते हैं?—(क) जो वस्तु जिसका प्रिय भोज्य पदार्थ हो और उसे उसी की देख-भाल पर रखा जाए तो वह अवश्य उसे खाएगा या खा जाएगा। (ख) किसी दुष्ट व्यक्ति को कोई ऐसी चीज़ सौंप दी जाय जो उसे प्रिय हो तो वह उसे संभाल कर नहीं रख पाएगा। (ग) उचित अवसर का लाभ सभी उठाना चाहते हैं। तुलनीय : पंज० कदी काडे वी गुड दी राखी करदे हन।

कहीं घी घना, कहीं चर्वण मना नीचे देखिए।

कहीं घी घना, कहीं मूठी चना—परिस्थिति के अनुसार कहीं तो अच्छे-अच्छे पकवान खाने को मिलते हैं और कहीं एक मुट्ठी चने से ही काम चलाना पड़ता है। तुलनीय : ब्रज० वही।

कहीं घी घना, कहीं मूठी चना, कहीं वह भी मना—परिस्थिति के अनुसार कहीं अच्छे-अच्छे पकवान खाने को मिलते हैं, कहीं थोड़ा-सा चना खाकर ही रह जाना पड़ता है और कहीं बिना खाए ही रह जाना पड़ता है। अर्थात् हर समय और हर जगह समान सुविधाएँ नहीं मिलतीं।

कहीं जूतों से भी साँप मरे हैं?—जूते से मामूली कीड़े-मकोड़े तो मर सकते हैं, किंतु साँप का मरना बहुत कठिन है। अर्थात् जब कोई व्यक्ति बड़े काम को साधारण साधन से करना चाहे तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० कदी जुती नाल वी सप मरया है।

कहीं ठाकुर, कहीं साकुर—हर जगह व्यक्ति को समान आदर नहीं मिलता। तुलनीय : असमी० एक् ठाइर् ठाकुर्, आन् ठाकुर् कुकुर्।

कहीं डूबे भी तरे हैं—(क) बिगड़ों का सुधार नहीं होता। (ख) डूबी रक़म नहीं मिलती। तुलनीय : अव० कतहूं बूड़ेव तरे हैं; पंज० कदी विगडे वी सुदरदे हन।

कहीं ढोर सूने, कहीं चोर सूने—कहीं पर तो पशुओं को कोई देखने वाला नहीं और कहीं पर चोरों को कोई पूछने वाला नहीं। या कहीं पशुओं को कोई चुराने वाला नहीं और कहीं चोरों को पशु नहीं मिलते। (क) कुप्रबन्ध पर कहते हैं। (ख) लाभ या हानि हर समय नहीं होता।

कहीं तो सूहा चूनरी औ कहीं ढेले लात—विवाहिता स्त्री के भाग्य के संबंध में कहते हैं। कहीं तो प्यार मिलता है और कहीं घृणा और ठोकर। व्यक्ति को कभी या कहीं तो प्यार मिलता है तो कभी या कहीं दुतकार। (सूहा

चूनरी - लाल रंग की साड़ी) ।

कहीं थूक में भी पकौड़े बनते हैं—अर्थात् थूक में पकौड़े नहीं बनते। पकौड़े तो तेल में ही बनते हैं। जो व्यक्ति कंजूसी के कारण मुफ्त में ही काम बनाना चाहे उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० कदी थुक बिच वी पकौड़े बनदे हन ।

कहीं दाई से पेट छिपता है--जानकार या अपने खास लोगों से कोई रहस्य छिपा नहीं रह सकता। जब कोई व्यक्ति किसी ऐसे व्यक्ति से कोई बात छिपाना चाहे जिसे उसकी पहले से जानकारी हो या जो सही अनुमान लगा सकता हो तो कहते हैं।

कहीं नाखून भी गोश्त से जुदा हुआ है ?—अर्थात् नही। आशय यह है कि (क) घर का आदमी हमेशा घर का ही रहेगा या घर का आदमी घर वालों के विपरीत नही रहेगा। (ख) दो घनिष्ठ संबंधियों में बिगाड़ होने या मन-मुटाव होने पर उनमे परस्पर संबंध या मेल कराने के लिए भी ऐसा कहते है।

कहीं बबूल से भी बेर मिलते हैं ?—अर्थात् बबूल से बेर नही मिलते। (क) बुरे व्यक्ति से कोई लाभ नही होता। (ख) बुरा कर्म करने पर अच्छा फल प्राप्त नही होता। तुलनीय : सि० बबरन खां थो बेर घुरी; अं० Look not for musk in a dog-kennel.

कहीं बूढ़े तोते भी पढ़ते हैं ? अर्थात् बूढ़े तोते नही पढ़ते। आशय यह है कि (क) बुढ़ापे मे कोई व्यक्ति किसी कार्य को नए सिरे से नही सीख सकता। (ख) समय निकल जाने पर कोई कार्य नही होता। तुलनीय : मल० वयस्सिये आट्टम् पठिप्पिक्कारुण्टो; पंज० कदी बुडे तोते वी पड़दे हन; अं० Can you teach an oldwoman to dance?

कहीं भी जाओ खीर पैसों से ही—खीर खाने के लिए तो धन खर्च करना ही पड़ेगा चाहे कही भी जाओ। (क) अर्थात् सुख या विलासिता की वस्तुओं का बिना धन व्यय किए मिलना असंभव है। (ख) जो वस्तु धन से खरीदी जाती है वह सभी जगह धन से ही मिलती है, मुफ़्त में नही। तुलनीय : राज० कठैई जावो पईसांरी खीर है; पंज० किते वी जावो खीर पैहे नाल ही मिलदी है।

कहीं भूख मरे, कहीं लड्डू सड़े—कहीं पर तो लोगों को खाने को नहीं मिलता, वे भूख के मारे तड़पते हैं और कहीं पर अच्छे-अच्छे भोज्य पदार्थ सड़-गल कर बेकार हो जाते हैं। (क) दैवी विचित्रता पर ऐसा कहते हैं। (ख) कुप्रबंध के प्रति भी व्यंग्य से ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० किते पुखे मरण किते लड्डू सडण।

कहीं मूत में भी मछलियाँ मिलती हैं—उन कंजूसों के प्रति कहते हैं जो बिना खर्च किए ही लाभ लेना या मजा उड़ाना चाहते हैं। तुलनीय : पंज० कदी मूतर बिच वी मछियां लबदियां हन।

कहीं वाहवाही, कहीं हाय-हाय—संसार विचित्र है। इसमें हर समय कही खुशी के कारण वाह-वाह है तो कहीं दुख के कारण हाय-हाय।

कहीं सूखे दरख्त भी हरे हुए हैं—(क) बरबाद कभी नहीं सुधर सकता। (ख) असंभव काम कभी नही होता। (ग) अरसिक रसिकता से प्रभावित नहीं हो सकते। तुलनीय : पंज० कदी सुकया दरख्त वी हरा होया है।

कहीं हाय-हाय, कहीं वाह-वाह—दे० 'कहीं वाह-वाह कहीं…'। तुलनीय : मैथ० कोउ घर कानन कोउ घर गीत, देखहू हे भाई नगर क रीत।

कहुँ अवगुण सोइ होत गुण, कहुँ गुण अवगुण होत—कही पर अवगुण गुण हो जाता है और कहीं पर गुण अवगुण हो जाता है। अर्थात् (क) जिस बात को हम बुरी समझते हैं, यह आवश्यक नहीं कि सारा संसार उसे बुरी समझता हो (ख) एक ही वस्तु किसी के लिए हानिकारक होती है और किसी के लिए लाभदायक।

कहु रहीम कैसे निभे बेर केर को संग—रहीम कहते हैं कि बेर और केले का साथ नहीं चल सकता या निभ सकता। अर्थात् परस्पर विरोधी स्वभाव, गुण आदि के व्यक्तियों की मित्रता निभ नही सकती या परस्पर विरोधी प्रकृति के व्यक्ति एक साथ नही रह सकते।

कहूँ-कहूँ गुन ते अधिक उपजत दोष शरीर—(क) कभी-कभी गुण के कारण भी बहुत बड़े-बड़े दोष उत्पन्न हो जाते हैं। (ख) कभी-कभी अच्छा कर्म करने पर भी मनुष्य कलंकित हो जाता है। तुलनीय : पंज० मते गुणां नाल वी कदी-कदी दोस उगदेहन।

कहूँ तो माँ मारी जाय, नहीं तो बाप कुत्ता खाय—दे० 'कहूँ तो माँ मारी जाय…'।

कहूँ तो माँ मारी जाय, नहीं तो बाप कुत्ता खाय—ऐसे संकट में पड़ने पर कहते हैं जब कोई रास्ता न हो और हर प्रकार से अपनी ही हानि हो। इस संबंध में एक कहानी है : एक बार एक स्त्री को उसके पति ने मांस पकाने के लिए दिया। स्त्री की असावधानी से उस मांस को एक कुत्ता खा गया। अब स्त्री बहुत घबड़ाई क्योंकि उसका पति बहुत क्रोधी स्वभाव का था और यदि उसे पता चल जाता तो

उसे बहुत मार पड़ती । उस स्त्री ने शीघ्रता से एक कुत्ते को मारकर उसका गोश्त पका दिया, किंतु उसके पुत्र ने यह सब कांड देख लिया था । अब पुत्र बड़ी विकट परिस्थिति में फँस गया । यदि वह पिता को बता देता कि वह मांस कुत्ते का है तो उसकी माँ मारी जाती और यदि चुप रहता तो बाप को कुत्ते का मांस खाना पड़ता । तुलनीय : गढ़० बोदू छौंत गी पड़द बैंदो, निबोदूत बबारी घाघरो लां, दी कैंदो छतीस० कहै त माय मारे जाय, नहिं त बाप कुत्ता खाय ।

कहूँ देवी, निकले रांड---कहना चाहते हैं देवी, पर मुंह से निकलता है रांड । (क) जिस व्यक्ति को बोलने की तमीज़ न हो उसके प्रति कहते हैं । (ख) जब भूल से किसी व्यक्ति के मुँह से कोई बुरा शब्द निकल जाता है तो उसके संबंधी या सहयोगी व्यक्ति उसकी इज़्ज़त को बचाने के लिए कहते हैं । तुलनीय : राज० बांई कहता रांड आवै; पंज० देवी कैंदा निकली रंडी; ब्रज० कहैं देवी निकसै रांड़ ।

कहे आम, सुने इमली- (क) किसी बहरे व्यक्ति के प्रति ऐसा कहते हैं । (ख) मूर्ख व्यक्ति के प्रति भी ऐसा कहते हैं । तुलनीय पंज० आखो अंब सनोंदा इमली; ब्रज० वही ।

कहे खेत की, सुने खलिहान की---दे० 'कहे आम सुने इमली ।' तुलनीय : भोज० कहे खेत क अ सुने खरिहान क; कौर० कहै खेत की, सुणै खलिहान की; ब्रज० व बुंद० कये खेत की सुनें खरयान की; हाड० खी खेत की, अर सुणी खलांण की; माल० कां खेतरी, हुणे खरा री ।

कहे खेल की सुने खीलों की--- कही जाती है खेल की बात और सुनते है लावा (खीलों) की बात । अर्थात् जब किसी से कहा जाय कुछ और वह सुने कुछ तब उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : मल० संभारनिनृ चुन्कम् वेण्ट; अं० Talk of chalk and hear of cheese.

कहे घर की सुने बाग़ की- ऊपर देखिए ।

कहे ज़मीन की, सुने आसमान की -- ऊपर देखिए ।

कहे ते दुख कछु घाटि न होई---सबसे कहने से या चिल्लाने से दुःख कम नहीं होता । आशय यह है कि दुःख में धैर्य से काम लेना चाहिए, व्यर्थ में उसे सब से कहते फिरना उचित नहीं है । तुलनीय : पंज० गाण नाल दुख कट नईं हुदा ।

कहे धोबी गदहा पै न चढ़े, वैसे टिक-टिक करे -- दे० 'कहने से कुम्हार गधे पर···'।

कहे से कुम्हार गधे पर नहीं चढ़ता---जब कोई व्यक्ति किसी कार्य को सदैव करता रहा हो और वही काम कहने पर न करे तो कहते हैं । तुलनीय : अव० कहे से धोबी गदहा पर नाहीं चढ़त; हरि० कहे तैं कुम्हार गधे पै थोड़ा ऐ चड्ढ्या करै; गढ़० डोम सणी जतनै मनावा ततनै कड़-कड़ो; माल० केवां ती कुमार गद्दा पे नी बैठे; राज० वकार्‌यो ढेढ सीटी को देवैं नी; पंज० कए ते घुमारी खोते ते नई चढ़ दी ।

कहे से कुम्हारी गधे पर नहीं बैठती ऊपर देखिए ।

कहे से कोई कुएँ में नहीं गिरता किसी के कहने से कोई अपना अनिष्ट नहीं करता ।

कहे से गड़रिया बाँसुरी नहीं बजाता दे० 'कहे से कुम्हार गधे···'।

कहे से धोबी गदहे पर नहीं चढ़ता---दे० 'कहने से कुम्हार '। (कुम्हार कहीं-कहीं तो गदहे पर मिट्टी लादते हैं, पर कहीं-कहीं नहीं लादते । ऐसे स्थानों पर चूंकि केवल धोबी ही गदहे का उपयोग करता है अत: 'कहे से धोबी···'। कहते हैं) ।

कहै कबीर दो नावें चढ़िये एक डूबे तो एक रहिए-- दो नाव पर सवार होना चाहिए क्योंकि उनमें से यदि एक डूब भी जायगी तो दूसरी तो बची रहेगी जिससे बेड़ा पार होगा । आशय यह है कि एक सहारे से दो अच्छे हैं । इसके उलटे भी एक कहावत है -- दे० 'दो नाव पर चढ़ना···' ।

कहो बहिन क्यों रूठी ? कहा सूप-चलनी पर---जब कोई व्यक्ति बिना किसी कारण ही नाराज़ हो जाय तो कहते हैं ।

काँख दबी हँडिया सलाम भाई चूल्हे--- भोजन बनाने के पश्चात् चूल्हे से क्या मतलब ? अर्थात् (क) जब कोई व्यक्ति अपना स्वार्थ सिद्ध हो जाने पर बात करना भी छोड़ दे तो उसके प्रति व्यंग्य में कहते है। (ख) जब कोई कार्य समाप्त हो जाय तो प्रयोग में आने वाली वस्तुएँ अपने लिए बेकार हो जाती हैं तब भी कहते हैं । तुलनीय . भोज० कांखि तर पतुकी सलाम भइया चूल्ह; ब्रज० काँख में हँडिया और चूल्हे कूं सलाम ।

काँख-पाद बहुतेरी, पथ्य माँगें डेढ़ पसेरी---काम के समय तो जी चुराते है और बीमार पड़ने पर पथ्य में दूध आदि डेढ़ पसेरी माँगते या चाहते हैं । अर्थात् कामचोर व्यक्तियों के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं जो काम तो कम करना चाहते हैं पर खाने के लिए अधिक माँगते या चाहते हैं। तुलनीय : अव० कांख-पाद बहुतेरी पथु ठयालें डेढ़ु पसेरी ।

काँख बल सो निज बल --अपनी भुजाओं का बल ही

अपना होता है, अर्थात् किसी के बल का विश्वास नहीं करना चाहिए। जो करना हो अपने बलबूते पर करना चाहिए क्योंकि समय पर अपना ही धन-बल काम आता है।

कांख में छुरी और चोर को मारे मुक्का—अपने पास वस्तु होते हुए भी समय पर उसका उपयोग न करने वाले मूर्ख के प्रति कहते हैं। तुलनीय : मेवा० खांख में छुरी र चोर ने मुक्यों की मार; पंज० बगल बिच छुरी अते चोर नूं मारे मुक्का।

कांख में लड़का गांव गुहार—दे० 'कनिया लरिका गाँव···'।

कांख में लड़का शहर में टेर दे० 'कनिया लरिका गाँव···'।

कांख में लड़का शहर में ढिंढोरा—दे० 'कनिया लरिका गाँव···'।

कांच-कलश फोरिय पट कि, पुनि न जुरे कोउ भांति शीशे का बर्तन टूट जाने पर फिर नहीं जुड़ सकता, तात्पर्य यह है कि प्रीति टूटने पर फिर सच्ची प्रीति नहीं होती।

कांच रंग ज्यों धूप में, झटक-चटक उड़ि जात—(क) झूठी बात और झूठी प्रीति अधिक दिन नहीं ठहरती यद्यपि उसमें ऊपर से बड़ी चटक होती है। (ख) नक़ली या कच्ची चीज़ ऊपर से चटकीली होती है किन्तु उसकी आयु बहुत कम होती है।

कांटा करील का, बदली का धाम; लड़का सौत का, साझे का काम—करील का कांटा, बदली का धाम (धूप), सौत का लड़का और साझे का काम, ये चारों कष्टदायक होते है।

कांटा कांटे से निकलता है—जैसे को तैसा मिलने पर ही काम चलता है। अर्थात् दुष्ट व्यक्ति दुष्ट से शांत रहते हैं। तुलनीय : बुंद० कांटे से कांटों निकरत; ब्रज० लोहे कूं लोहो काटे; जहर को जहर मारे; सं० कण्टकेनैव कण्टकम् निःकाश्यते; पंज० कंडा कंडया तो जमदा है; ब्रज० कांटे ते ई कांटो निकसै।

कांटा कांटे को निकालता है—कांटा ही कांटे को निकालता है। अर्थात् (क) शत्रु को शत्रु से लड़ाकर समाप्त करना ही बुद्धिमत्ता है। (ख) दुष्ट व्यक्ति दुष्टों से ही ठीक रहते हैं। तुलनीय : राज० कांटो कांटेने काढ; पंज० कंडा कंडे नूं कडदा है।

कांटा कांटे से ही निकलता है—दे० 'कांटा कांटे से···'।

कांटा निकल जाता है कसक बनी रहती है—कांटा निकल जाने पर भी बहुत देर तक उसकी कसक (पीड़ा) बनी रहती है। अर्थात् मुसीबत निकल जाने पर भी उसका दुःख बहुत दिनों तक याद रहता है। (ख) शत्रु के मिट जाने पर भी उसकी याद बनी रहती है। तुलनीय : पंज० कंडा तां निकल जांदा है पर उस दी पीड बनी रेंदी है; ब्रज० कांटौ निकसि जायँ परि कसके बनी रहै।

कांटा बुरा करील का औ बदली का घाम; सौत बुरी है चून की औ' साझे का काम—करील का कांटा, बदली का घाम, आटे या मिट्टी की भी सौत और साझे का काम—ये बुरे होते है। तुलनीय : ब्रज० काटौ बुरौ करील कौ और बादर की घाम, सौति बुरी ऐ चून की और साजे कौ काम।

कांटे की तोल—बिल्कुल सही चीज के लिए कहते हैं। तुलनीय : अव० काँटा कै तौल; पंज० कंडे दा तौल।

कांटे की सी तोल—ऊपर देखिए।

कांटे से कांटा निकलता है—दे० 'कांटा कांटे से···'। तुलनीय भोज० कांटे से कांटा निकलेला; सं० कंटकेनैव कंटकं निःकाश्यते; राज० कांटेसूं कांटो नीकलै; माल० कांटा ती कांटा काड़नो; भीली—दुखे ते डाम देवाड़ो; तेलु० मुल्लनु मुल्ले तीयालि; मल० एट्ट कण्टक मेट्टवकण-मेन्किल मट्टु कण्टकमत्ते मतियाकू; अं० One nail drives out another.

कांटे से कांटा बिधा है—कांटे से कांटा फँस या उलझ गया है। अर्थात् (क) जब दो समान शक्ति (धन, बल आदि) वाले व्यक्ति किसी काम या बात पर आपस में उलझ या झगड़ जाते हैं तब ऐसा कहते है। (ख) जब दो दुष्ट व्यक्ति आपस में किसी बात पर लड़ बैठते है तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० कंडे नाल कंडा फसया है।

कांद में कमल सोभो ठाड़े—कमल कीचड़ में भी सुन्दर लगता है। आशय यह है कि अच्छी वस्तु, गुणवान और विद्वान की हर जगह या हर दशा में इज़्ज़त होती है।

कांधे जुआ, गांव में खोज—दे० 'कनिया मे लरिका गांव···'। तुलनीय : गढ़० कांधी माँ जुओ गौं माँ खोज; ब्रज० कंधा पै जुआ और गाम में खोज। (जुआ = खेती का एक यंत्र)।

कांसी कूसी चौथ कचांन, अब का रोपबा धान किसान कास फूल गई और भादों की उजाली चौथ भी बीत गई, अब धान रोपने का क्या लाभ अर्थात् इस समय धान लगाना बेकार है।

कांसे का सुर कांसे में ही रहने दो—कांसे (काँसा एक

मिश्रित धातु है जो तांबा, पीतल और जस्त मिलाकर बनती है। इसको थोड़ा-सा टकराने से बहुत आवाज़ होती है) की आवाज़ कांसे में ही रहने दो, बाहर निकालने से क्या लाभ है ? अर्थात् घर की बात घर में रहे तो अच्छा है।

काई विषय मुकुर मन लागी--जो लोग सदा विषय-वासना की चिंता करते रहते हैं, वे शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं।

काकः काकः, पिकः पिकः--कौआ कौआ ही है और कोयल कोयल ही। दोनों मे कोई समता नही है। अर्थात् जब कोई व्यक्ति असमान वस्तुओं की तुलना करे तो उसके प्रति कहते हैं। या जब कोई किसी मूर्ख की तुलना किसी विद्वान से करता है तब भी ऐसा कहते हैं।

काक किं गुरुडायते--क्या कौआ भी कभी गरुड़ की बराबरी कर सकता है, अर्थात् कभी नहीं। अर्थात् नीच मनुष्य महान् व्यक्ति की बराबरी नहीं कर सकता।

काक कहहिं पिक कण्ठ कठोरा--कौआ, कोयल को कठोर स्वर वाला कहता है। आशय यह है कि मूर्ख गुणी की तथा दुष्ट सज्जनों की निन्दा करते हैं। तुलनीय : अं० Kettle calls the pot black.

काक तालीयन्यायः--कौवे और तालवृक्षक न्याय। प्रस्तुत न्याय के सम्बन्ध में एक कहानी है कि एक कौआ एक वृक्ष पर ज्योंही बैठा त्योंही कुछ फल उसके सिर पर गिर गए जिससे कौवे का प्राणान्त हो गया। इस प्रकार इस न्याय का प्रयोग विशुद्ध रूप से आकस्मिक घटनाओं का उदाहरण देने के लिए किया जाता है।

काक दंत गवेषणा न्याय--कौवे के दाँत होते ही नही इसलिए उनको ढूंढ़ना बेकार है। जब कोई व्यक्ति किसी ऐसी वस्तु की खोज करे जो हो ही न तो कहते है।

काकदन्त परीक्षा न्याय--कौवे के दाँतों की परीक्षा का न्याय। प्रस्तुत न्याय का प्रयोग व्यर्थ एवं अनावश्यक जिज्ञासा के प्रसंग में किया जाता है।

का कदधि घातक न्याय---दही नाशक कौवे का न्याय। आशय यह है यदि किसी को दही की कौओं से रक्षा करने के लिए कहा जाय तो यह भी उपलक्षित होता है कि वह दही के अन्य विघातकों से भी इसकी रक्षा करे।

काकन सों जिन प्रीति करि, कोकिल दई बिडारि--- जो कौवे से मित्रता करता है उसे कोयल की मित्रता से हाथ धोना पड़ता है। अर्थात् बुरे आदमियों का साथ करने वाले को भलों की मित्रता प्राप्त नही होती।

काक होहिं पिक बकउ मराला--कौवा कोयल के समान और बगुला हंस के समान हो सकता है यदि उन्हें सत्संगति मिले, अर्थात् सत्संग से मूर्ख विद्वान और दुरात्मा धर्मात्मा हो जाता है।

काका कहने से ककड़ी नहीं मिलती--मात्र काका (चाचा) कहने से ही ककड़ी नहीं मिल जाती। अर्थात् कोई वस्तु केवल चापलूसी करने से नही मिल जाती बल्कि उसके लिए श्रम की भी आवश्यकता पड़ती है। तुलनीय : हरि० काक्का कहें कूण काकड़ी दे सै ? पंज० काका कैण नाल ककड़ी नईं मिलदी; ब्रज० काका कहबे ते कोकरी नायें मिलै।

काका के हाथ की कुल्हाड़ी हल्की होती है--काका (चाचा) के हाथ में कुल्हाड़ी हल्की मालूम पड़ती है पर जब उसे स्वयं उठाना पड़ता है तब वास्तविकता का पता चलता है। अर्थात् (क) जब किसी कार्य में कोई व्यक्ति बहुत अधिक श्रम करता है या बहुत अधिक धन खर्च करता है तो दूसरे लोग उसे कुछ भी नही समझते पर जब वही काम उन्हें करना पड़ता है तब वास्तविकता मालूम हो जाती है। (ख) एक व्यक्ति के दुख को दूसरा व्यक्ति नहीं समझता जब तक कि उस पर भी दुख नहीं पड़ता। तुलनीय : हरि० काक्का के हाथ्य कुल्हाड़ी हळकी लागै; पंज० काका (चाचे) दे हथ दी कुआड़ी हौली हुंदी है; ब्रज० काका के हात में कुड़हारी हलकी लगै।

काका काहू के ना भए--काका (चाचा) किसी के नही होते। उनसे कोई काम नही बनता। वे सदा भतीजों का अहित सोचते हैं। तुलनीय : पंज० काका किसी दे सक्के नईं हुंदे।

काका काहू के ना मीत--ऊपर देखिए।

काका की भैंसी भतीजे की तोंद---दूसरे की चीज़ निःसंकोच और बहुत खाने या दूसरे के धन को बेमुरव्वती से खर्च करने पर कहते हैं। दूसरे की चीज़ के लिए दूसरे के दिल में कोई ख़याल नही रहता। तुलनीय : फ़ा० माले-मुफ़्त दिले-बेरहम।

काकाक्षिगोलक न्याय--कौवों के बारे में यह प्रसिद्ध है कि उनकी केवल एक ही आँख होती है जो आवश्यकता पड़ने पर एक तरफ से दूसरी तरफ चली जाती है। प्रस्तुत न्याय का प्रयोग उस शब्द के लिए किया जाता है जो वाक्य में केवल एक बार आकर दो भागों से सम्बन्ध रखता हो। इस न्याय का प्रयोग उन व्यक्तियों या वस्तुओं के लिए भी किया जाता है जिनसे दुहरे उद्देश्य की पूर्ति होती है।

काका ना करे साका--(क) काका (चाचा) का

व्यवहार भतीजे के प्रति अच्छा नहीं रहता। (ख) चाचा भतीजे का विश्वास नहीं करता।

काकोलूक निशावत्—कौवे और उल्लू की रात के समान। कौवा दिन में देखता है तो उल्लू नहीं। उल्लू रात में देखता है, कौवा नही देख सकता। दो परस्पर विरोधी गुण, स्वभाव आदि के व्यक्तियों या वस्तुओं के लिए कहावत का प्रयोग करते हैं।

कागज़ की नाव आज न डूबी कल डूबी—कागज़ की नाव नहीं चलती। आशय यह है कि (क) धोखे की चीज़ या काम अधिक दिन तक नहीं चलता या टिकता। (ख) झूठा व्यवहार अस्थायी होता है। (ग) नक़ली वस्तु कम समय तक टिकती है। तुलनीय : मरा० कागदाची नाव आज नाहीं तर उद्या बुडणारच; अव० कागद कै नाव कब तक लगी; राज० कागदरी हांडी चूल्है को चढ़ैनी; ब्रज० वही; पंज० कागद की नाव आज नई कल डूबी।

कागज़ की नाव कभी नहीं चलती—ऊपर देखिए।

कागज़ की नाव में कौन पार उतरा—कमजोर वस्तु का क्या भरोसा?

कागज़ की भस्म किन भस्मों में, किया खसम किन खसमों में—कागज़ की भस्म (आयुर्वेद में धातु को जला कर भस्म ओषधि के रूप में प्रयोग की जाती है) की गिनती भस्मों में नही की जाती और बिना विवाह का पति पति नही माना जाता। आशय यह है कि विवाहित पति ही मान्य होता है।

कागज़ के घोड़े दौड़ाते हैं—बहुत कागज़ी कार्रवाई करने वाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : अव० कागद के घोड़ा दौडावत हैं; पंज० कागद दे कौड़े दौड़ा दे हन; ब्रज० कागज के घोड़ा दौड़ायें।

कागज़ के फूल—क़ाग़ज़ के फूल देखने में तो सुन्दर लगते हैं पर उसमें कोई सुगन्ध नहीं होती। अर्थात् (क) जो व्यक्ति देखने में काफ़ी सुन्दर हो और उसके पास बुद्धि बिल्कुल न हो तो उसके प्रति कहते हैं। (ख) देखने में सुन्दर, पर तत्त्वहीन या गुणहीन वस्तु के लिए भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० कागद दे फूल।

कागज़ थोड़ा, दिल बड़ा—(क) ऐसे व्यक्ति के प्रति कहते हैं जो ग़रीब होते हुए भी उच्च विचार रखता है। (ख) जो लोग निर्धन होते हुए भी काफ़ी ऊँचे ख्वाब देखते हैं उनके प्रति भी व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० कागज कट (निक्का) दिल बड़ा।

कागज़ होय तो हर कोई बाँचे भाग न बाँचा जाय—कागज़ पर लिखा हुआ तो पढ़ा जा सकता है किन्तु भाग्य नहीं पढ़ा जा सकता। अर्थात् भाग्य के सम्बन्ध में कोई भी कुछ नहीं जानता। तुलनीय : राज० कागद होय तो वांचलूं करम न वाच्यो जाय; पंज० कागद उते लिखया तां पढ़ लेंदे हां दिल उते लिखया नई।

कागद कुसुम न कोइ चढ़ाय—कागज़ी फूलों को देवताओं पर नहीं चढ़ाया जाता। अर्थात् नक़ली तथा काल्पनिक वस्तु का कोई आदर नहीं करता।

कागद हो तो बाँचिए, करम न बाँचा जाय—दे० 'कागज़ होय तो हर कोई...'। तुलनीय : ब्रज० व बुंद० कागद होय तौ बाँचिये, करम न बाँचे जायें।

काग न कोयल ह्वै सकै, जो विधि सिखवै आय—कौए/कौवे को यदि ब्रह्मा भी आकर शिक्षा दें फिर भी वह कोयल नही बन सकता या हो सकता। अर्थात् योग्य से योग्य गुरु भी बुरे या मूर्ख को सिखा-पढ़ाकर अच्छा या बुद्धिमान नहीं बना सकता। तुलनीय :

फूलै-फलै न बेत जदपि सुधा बरसहिं जलद,
मूरख हृदय न चेत जो गुरु मिलै विरंचि सम—तुलसी

कागा का बैठना और टहनी का टूटना—टहनी टूटने को ही थी कि संयोग से उस पर कौआ बैठ गया। अर्थात् जब किसी होने वाली बात के लिए कोई कारण उपस्थित हो जाय तो कहते हैं।

कागा कौवा और खरगोस, ये तीनों नहिं मानें पोस—कागा और कौवे में फ़र्क़ होता है। कागा काला होता है और कौवे की गर्दन भूरी होती है। उपर्युक्त तीनों पोस नहीं मानते। अर्थात् इनको चाहे कितनी भी देर क्यों न पाला जाय पर ये अवसर मिलते ही भाग जाते हैं।

कागा चला हंस की चाल अपनी भी भूल गया—कौआ हंस की चाल चलने में अपनी भी चाल भूल गया। आशय यह है कि अपने से अधिक योग्य अथवा शक्तिशाली की नक़ल करने से स्वयं अपनी ही हानि होती है। तुलनीय : ब्रज० कौआ हंस की चाल चल्यौ, अपनी ऊ भूलि गयौ।

कागा बोले, पड़ गए रोले—कौओं के बोलते ही चारों ओर आवाज़ होने लगती है या सभी ओर से आवाज़ सुनाई पड़ने लगती है। आशय यह है कि जब कौवे बोलने लगते हैं तो लोग यह जान जाते हैं कि अब सुबह हो गई और उठकर सब लोग अपने-अपने काम करने लगते हैं। तुलनीय : पंज० कां बोले पाया रौला।

कागारोल या कागारोर—जहाँ बहुत से व्यक्ति शोर मचा रहे हों वहाँ ऐसा कहते हैं। (कागारोल=कौवों का

शोर या काँव-काँव)।

कागा हंस, न गधा जती—कौआ कभी हंस नहीं बन सकता और न गदहा कभी संन्यासी (जती) हो सकता है। आशय यह है कि दुष्ट व्यक्ति कभी सुधरते नहीं या जो जिसका स्वभाव होता है वह कभी नहीं बदलता। तुलनीय : हरि० काग हंस, ना गधा जती; पंज० काँ हंस नईं बण सकदा अते खोता जती नई।

कागे काग, न भिखारी भीख—कंजूस को कहते हैं। काग को बलि देना और साधुओं को भिक्षा देना हिन्दुओं का धर्म है।

काचिन्निषादी पुत्रं प्रसूते कश्चिन्निषादवस्तुकषायपायी—कोई निषादी पुत्र को जन्म देती है और कोई निषादी जड़ी बूटियों को पकाकर निर्मित काढ़े को (जो निषादी के लिए तैयार किया गया था) पी जाता है। अर्थात् जब कोई चीज़ किसी व्यक्ति के लिए रखी जाय या तैयार की जाय और उसे दूसरा कोई व्यक्ति ग्रहण कर ले या अपना ले तो कहते है।

का चुप साधि रहा बलवाना—जब कोई आदमी किसी काम से हिम्मत हार कर बैठ जाय तो उत्तेजना देने के लिए ऐसा कहा जाता है।

का चुप साधि रहेउ, बलवाना—ऊपर देखिए।

काछैं काछ और, नाचे नाच और—कपड़े पहने हैं कोई नाच नाचने के लिए, पर नाचते है कोई। अर्थात् जब तैयारी किसी काम की करे और कर बैठे कोई काम तब कहते है।

काजल की कजलौटी और फूलों का सिंगार—रग तो कजलौटी (काजल रखने की डिबिया) जैसा है लेकिन पहने हैं फूलों का हार। जब कोई कुरूप व्यक्ति अधिक शृंगार करता है तब ऐसा कहते है।

काजल की कोठरी में, कैसोहू सयानो जाय, एक लीक काजल की, लागि है पै लागि है—काजल की कोठरी में कितना भी चतुर आदमी क्यों न जाए, उस पर कुछ-न-कुछ काजल लग ही जाएगा। अर्थात् बुरी संगति में पड़ने पर चाहे कितना भी बुद्धिमान आदमी क्यों न हो, कुछ-न-कुछ दोष आ ही जाता है। तुलनीय : मरा० काजळाच्या कोठीत कितीही शाहणा गेला तरी त्याचे अगाम एक तरी काजळाची रेघ लागणारच।

काजल की कोठरी में दाग लागे ही लागे—ऊपर देखिए।

काजल की कोठरी में धब्बे का डर है—काजल की कोठरी में जाने से कुछ-न-कुछ कालिख अवश्य लग जाती है। तात्पर्य यह है कि बुरों की संगति करने से अवश्य ही कुछ बुराई आ जाती है। तुलनीय : पंज० काजल दी कोठी नूं दाग दा डर।

काजल गया बिहार, बहुरिया निहुरे ही है—काजल की प्रतीक्षा में बहू झुकी खड़ी है और काजल बिहार चला गया है। अर्थात् जब कोई व्यक्ति किसी पास की वस्तु के प्राप्त होने की आशा में प्रतीक्षा करते-करते थक जाता है तब ऐसा कहता है या कहते है।

काजल तो सब लगाते हैं पर चितवन भाँत-भाँत—काजल तो सभी लगाते हैं पर कुछ ही लोगों की आँखों में अच्छा लगता है या काजल तो सभी लगाते है लेकिन कुछ ही लोगों की आँखें अच्छी होती हैं। अर्थात् (क) शृंगार तो सभी करते हैं पर सबको अच्छा नहीं लगता। (ख) पढ़ते-लिखते तो सभी हैं लेकिन सब लोग विद्वान नहीं होते। अनियारे दीरघ नयन, किती न तरुनि समान;
वह चितवन औरे कछू, जिहि बस होत सुजान—बिहारी
तुलनीय : पंज० काजल ते सारे लगादे हन पर अखाँ वखरियाँ वखरियाँ।

काजल बिन मुंह गाजर जैसा औ' नथिया बिन चूतर जैसा—काजल और नथिया (नाक में पहनने का एक आभूषण) बिना स्त्री सुन्दर नहीं लगती। आशय यह है कि आभूषण और शृंगार के बिना स्त्रियाँ सुन्दर नहीं लगती। 'भूषन बिनु न बिराजहिं कविता, बनिता मित्त। तुलनीय : पंज० काजल बगैर मूँह गाजर वरगा नथ (नथुने) बगैर टुए जिहा।

काजल लगाते आँख फूटी—(क) जब लाभ का काम करते हानि हो जाय तो कहते है। (ख) जब अच्छा करते बुरा हो जाय तो भी कहते है। तुलनीय : बुंद० काजर लगाउतन आँख फूटी; पंज० काजल लांदे अख फटी।

क़ाज़ी काज करे, फुहरी बोलारी भरे—काम करने वाले काम करते हैं तथा निकम्मे बैठकर बातें करते हैं और दूसरों की 'हाँ' में 'हाँ' मिलाते है।

क़ाज़ी का न्याव—जब दो मनुष्यों के हिसाब में फ़र्क़ हो और आधी-आधी कसर दोनों को दी जाय तो क़ाज़ी का न्याव कहलाता है; तुलनीय : ब्रज० काजी कौ न्याव।

क़ाज़ी का प्यादा घोड़े सवार—क़ाज़ी का प्यादा भी अपने को घुड़सवार समझता है। (क) अदालत के कर्मचारियों को हर समय बहुत जल्दी रहती है। (ख) बड़े लोगों के सेवक या नौकर भी बहुत रोब दिखाते हैं।

क़ाज़ी की कुतिया न जाने कहाँ बियाएगी?—क़ाज़ी

की कुतिया न जाने किस स्थान पर बच्चे देगी। (क) जो व्यक्ति किसी तुच्छ कार्य के लिए दर-दर भटकता हो उसके प्रति व्यंग्य मे कहते हैं। (ख) जो ग्राहक पचीसों दुकानें घूम कर सौदा खरीदता हो उसके प्रति भी दुकानदार व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० काजीजीरी कुनी कँनैठा कठै जांवमी व्यामी; पंज० काजी दी कुत्ती पता नई किथे वयायेगी।

क़ाज़ी की क़ुरान में, मुल्ला की ज़बान में—जिस नियम को जानने के लिए क़ाज़ी को क़ुरान देखना पडता है, वह मुल्ला की ज़बान पर होता है, क्योंकि मुल्ला क़ुरान को कंठस्थ रखता है। जब कोई छोटा व्यक्ति अपने से बड़े से आगे निकल जाए तो बड़े के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय माल० काजी री कुरान में, मुल्ला री जबान मे। पंज० काजी दी कुरान विच मुल्ला दी जबान उते; ब्रज० काजी की कुरान में, मुल्ला की ज़ुबान में।

क़ाज़ी की घोड़ी क्या घी मूतती है?—छोटे बड़ों के यहाँ जाकर भी छोटे ही रहते हैं, उनकी आदत नहीं छूटती।

क़ाज़ी की दौड़ मसजिद तक—दे० 'मुल्ला की दौड मसजिद तक।' तुलनीय : गढ़० काजी की दौड मसजिद तक।

क़ाज़ी की मूंज—जब कोई चीज़ एक बार ली जाय, और देने वाले का अधिकार उस पर सदा बना रहे तब कहते हैं। एक बार कोई नये शासक किसी ज़िले में आए। उन्हें मूंज की रस्मी की आवश्यकता पड़ी। वस्तु तो बहुत साधारण थी पर उसकी क़ीमत खाते में लिखकर क़ाज़ी के नाम जमा कर दी गई। क़ीमत न दी गई पर उतना जमा प्रतिवर्ष खाते में नामे डाला जाता रहा।

क़ाज़ी की लौंडी मरे सारा शहर जाय, क़ाज़ी मरे कोई न जाय—क़ाज़ी के दबाव के कारण उसकी लडकी या नौकरानी के मरने पर सारे शहर के लोग जाते हैं पर जब क़ाज़ी मरे तो कोई नहीं जाता क्योंकि क़ाज़ी के भय से ही लोग उसके यहाँ जाते थे या उसका कार्य करते थे। अब क़ाज़ी नहीं है, इसलिए अब कोई भय नहीं रह गया है और न अब कोई जाता ही है। आशय यह है कि जब कोई व्यक्ति अपनी इच्छा से कोई काम न करे बल्कि भय से या दबाव से करे तो कहते हैं। तुलनीय : राज० काजीजीरी कुनी मरी जद सगळा बैसण गया, काजीजी मरया जद कोई को गयोनी; पंज० काजी दी कुड़ी मरे सारा शहर गया काजी मरया कोई नईं गया।

क़ाज़ी के घर के चूहे भी सयाने—शासक या धनी लोगों के नौकर भी होशियार होते हैं। जब घर के सभी लोग चालाक हों तब कहा जाता है। तुलनीय : पंज० काजी दे कर दे चुहे वी सयाने।

क़ाज़ी के मरने से क्या शहर सूना हो जाएगा?—एक मनुष्य के मर जाने से समाज का काम बन्द नहीं हो जाता।

क़ाज़ी के मूसल में भी नाड़ा—पायजामे मे नाड़ा डालने के लिए मूसल की कोई आवश्यकता नहीं होती लेकिन क़ाज़ी साहब कहते हैं कि मूसल मे नाड़ा डाल दो। अर्थात् छोटे काम के लिए भी बड़ी वस्तु का प्रयोग करना। जब कोई व्यक्ति अपने अधीन कर्मचारियों को अनुचित या अटपटा कार्य करने के लिए कहे या बाध्य करे तो ऐसा कहते हैं। (नाड़ा—इज़ारबन्द)।

क़ाज़ी घर क़सम खाओ, अपने घर रोटी खाओ—क़ाज़ी के घर में तो केवल क़सम ही खाने के लिए मिल सकती है, यदि भोजन करना है तो अपने घर जाकर करो। प्राय: बड़े आदमियों के यहाँ ग़रीब अतिथियों का सत्कार नहीं किया जाता तो उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : माल० काजी रो घर है कसम खाओ ने घरे जाओ; पंज० काजी कर कसमां खावो अपने कर रोटी खावो।

क़ाज़ी जी अपना आगन तो ढकें, पीछे किसी को नसीहत करें—पहले अपना दोष दूर करे, पीछे दूसरों को कहें। अर्थात् जो मनुष्य अपना दोष न देखकर दूसरे का ढूंढ़ निकालता है उसे कहते हैं; तुलनीय : अव० काजी पहिले आपन ढाकें, पाछे कौनो का नसीहत देय।

क़ाज़ी जी की कुतिया सबको प्यारी—क़ाज़ी साहब की कुतिया भी सबको प्रिय लगती है। आशय यह है कि (क) बड़े लोगों की साधारण वस्तुओं की भी इज़्ज़त की जाती है। (ख) बड़ों के साथ रहने वाले साधारण लोग भी सम्मान पाते है। तुलनीय : पंज० काजी दी कुत्ती सारियाँ नूँ पयारी।

क़ाज़ी जी क़ुरान में मुल्ला जी ज़बान में—दे० 'क़ाज़ी की क़ुरान में...'।

क़ाज़ी जी खाना आया, हमें क्या? तुम्हारे ही लिए है, फिर तुम्हें क्या?—(क) स्वार्थी मनुष्य के लिए ऐसा कहा जाता है। (ख) किसी के किसी काम मे लीन रहने पर भी कहा जाता है।

क़ाज़ी जी दुबले क्यों? शहर के अंदेशे से—(क) जब कोई अपने ऊपर ध्यान न देकर संसार-भर का सोच करता है तब कहते हैं। जब कोई व्यक्ति किसी ऐसी बात की चिंता करे जिससे उसका किसी प्रकार का भी सम्बन्ध न हो तो भी व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : मरा० काजी (न्यायाधीश)

असे मुकलात कौं ? (म्हणे) गावच्या चिन्तेनें; राज० क़ाज़ी जैसे दूबळा क्यों ? सहरै सोच मे; अव० काजी दूबर काहे, गाँव कै अंदेश मा; भोज० काहें दुबर बाड़ऽ काजी आत सहर क अरसा से; बुंद० कोरी के बियाव कड़ेरो पर जाय; ब्रज० काजी जी क्यों थके, शह्र के अंदेसे; मेवा० दुनियां के दुख काजी जी दूबला; पंज० काजी पतला कैनूं होया सहर नूं देख के ।

क़ाज़ी न्याव न करेगा, तो घर तो आने देगा—क़ाज़ी जी यदि न्याय नहीं करेंगे तो घर तो आने ही देंगे । आशय यह है कि किसी व्यक्ति से अपनी बात तो कहनी चाहिए यदि वह उसे नहीं सुनता तो भी कोई विशेष अन्तर नहीं पड़ता ।

क़ाज़ी ब दो गवाह राज़ी—दो गवाह मिल जाने से ही अदालत विश्वास कर लेती है ।

काटती है तलवार मगर हाथ चाहिए—हाथ में बल होगा तभी तलवार काटेगी । अर्थात् साधन या रुपये-पैसे का उपयोग वही कर सकता है जो बुद्धि या बल रखता हो । तुलनीय : पंज० बडदी तलवार है पर हथ चाइदा ।

काटन लागे चारा, जैसा जेठ वैसा असाढ़ा—जब घास या चारा ही खोदना है तो जेठ क्या और आषाढ़ क्या ? तात्पर्य यह है कि जब कष्टदायक काम ही करना है तो कष्टों की परवाह करने में कोई लाभ नहीं होता ।

काटना तो छोड़ दिया, फुंकारते तो जाओ—साँप यदि काटना छोड़ भी दे तो भी उसे फुकारना नहीं छोड़ना चाहिए, नहीं तो लोग उसे परेशान करना आरंभ कर देंगे । आशय यह है कि (क) किसी को कष्ट देना अच्छा नहीं है किंतु सबको डरा-धमका कर रखना लाभदायक है । (ख) आवश्यकता से अधिक विनम्र नहीं होना चाहिए । तुलनीय : पंज० बढ़ना तां छड़ दिता फुकरां मारदे जावो ।

काटने दू, न काटे बिन सहूँ—फोड़े को काटने भी नहीं देते और उसकी वेदना (पीड़ा) को बरदाश्त भी नहीं करते । अर्थात् (क) जो व्यक्ति लाभ भी प्राप्त करना चाहे और श्रम करना या कष्ट उठाना भी न चाहे तो उसके प्रति ऐसा कहते है । (ख) जो व्यक्ति स्वयं न तो किसी कार्य को करे और दूसरे का किया हुआ उसे पसंद भी न आवे तब भी ऐसा कहते हैं । तुलनीय : गढ़० कटाण द्यू न अणकटो सौं; पंज० बडन देआं नां वडे बगैर रहां ।

काटने वाला कुत्ता भौंकता नहीं—जो सचमुच कुछ करने वाले होते हैं वे बातूनी नहीं होते या व्यर्थ में इधर-उधर कहते नहीं फिरते कि वे अमुक काम करेंगे । तुलनीय : पंज० बडन वाला कुत्ता भौंकदा नईं; अं० Barking dogs seldom bite.

काटने वाले को थोड़ा, बटोरने वाले को बहुत—काटने में मेहनत अधिक होती है पर उसे थोड़ी मज़दूरी दी जाती है और बटोरने में कम मेहनत होती है पर अधिक मज़दूरी दी जाती है । अर्थात् जब कम मेहनत करने वाले को अधिक और अधिक मेहनत करने वाले को कम मज़दूरी मिले तब कहा जाता है । (अनुचित वितरण पर व्यंग्य) । तुलनीय : पंज० बडन वाले नूं कट सलण वाले नूं मता ।

काटा और उलट गया—साँप काटकर उलट जाय तो उसका विष बहुत चढ़ता है । उसी प्रकार कोई व्यक्ति बात कहकर पलट (बदल) जाय तो बहुत ही दुख होता है । तुलनीय : मरा० चावला नि उलटला; पंज० कटया (बडया) ते उल्ट गया ।

काटे कटे न मारे मरे—न तो काटने से कटती है न मारने से मरती है । अर्थात् जिस चीज़ से किसी तरह से पिंड न छूटे उसके प्रति कहते हैं । तुलनीय : पंज बडे बडोये नां, मारे मरे नां ।

काटे चाटे स्वान के, दोउ भाँति विपरीत—कुत्ता चाटे अर्थात् प्यार करे तो भी बुरा और काटे अर्थात् शत्रुता करे तो भी बुरा । आशय यह है कि नीच व्यक्तियों की मित्रता और शत्रुता दोनों ही हानिकर होती हैं ।

काटे पै कदली फरै, कोटि यतन कर सींच; विनय न मान खगेश सुन, डाँटे पै नव नीच—केला (कदली) काटने से ही फलता है, सींचने से नहीं । इसी प्रकार नीच या दुष्ट व्यक्ति डाँटने-फटकारने से ही काम करते हैं या सही रास्ते पर रहते हैं, समझाने से नहीं ।

काटे वार नाम तलवार का—नीचे देखिए ।

काटे वार नाम तलवार का, लड़े फौज नाम सरदार का—काटता है वार पर नाम होता है तलवार का, उसी तरह लड़ते हैं फ़ौज के सिपाही पर नाम होता है अफ़सर का । अर्थात् जब काम तो कोई और करे पर प्रशंसा उससे संबंध रखने वाले दूसरे व्यक्ति की की जाय तब कहते हैं । तुलनीय : पंज० बडदा है वार नां तलवार दा लड़दी फौज नां सरदार दा ।

काटो मेरी नाक औ, कान, मैं न छोडूं अपनी बान—(क) हठी के प्रति कहा जाता है । (ख) जब कोई लाख कहने-सुनने, मारने-पीटने पर भी अपनी बुरी आदत नहीं छोड़ता तब भी उसके प्रति कहते हैं ।

काटो साँप जहाँ मन भाए—ऐ साँप ! जहाँ अच्छा हो

काट लो। अर्थात् जब कोई व्यक्ति अपने शत्रु के सम्मुख आत्मसमर्पण कर देता है तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० बडो सँप जिथे दिल करदा है।

काठ का घोड़ा नहीं चलता—काठ का घोड़ा केवल देखने के लिए होता है, वह चल नही सकता। आशय यह है कि नक़ली वस्तुएँ केवल देखने के लिए होती हैं उनमे कोई फ़ायदा नहीं होता। तुलनीय : अव० काठे का घोड़ा नाहीं चलत; पंज० लकड़ी दा कौड़ा नई चलदा; ब्रज० काठ कौ घोड़ा नायें चलै।

काठ का घोड़ा लोहे की जीन, जिस पर बैठे लंगड़दीन—बैसाखी को कहते है, जिसके सहारे लँगड़े व्यक्ति चलते हैं। तुलनीय : भोज० काठेक घोड़ा लोहा क जीन जेवनापर बइठेलं लंगड़दीन।

काठ का बैरी काठ—अर्थात् जाति ही जाति की बैरी होती है। लकड़ी की सहायता के बिना लकड़ी काटना बहुत कठिन है।

काठ की तलवार क्या काम करेगी?—काठ की तलवार से कोई कार्य नही हो सकता। नक़ली चीज़ काम नहीं देती। तुलनीय : हरि० गांडू यार अर देस्सी हथियार बखत पै डोब्या करै; पंज० लकड़ दी तलवार की करेगी।

काठ की संगति से लोहा भी तर जाता है—अच्छे आदमियों की संगति मे बुरे आदमियों का भी उद्धार हो जाता है या अच्छे आदमियों की संगति से साधारण आदमी भी अपना काम बना लेता है। आशय यह है कि सत्संगति बहुत अच्छी चीज है। तुलनीय : राज० संगत सार अनेक फल लोहा काठ तिरंत; पंज० चंगे दी यारी नाल माड़ा वी तर जांदा है।

काठ की हँड़िया कब तक चले—काठ की हंडी एक बार आग पर रखने से ही जल जाती है पुनः उसे रखने का का कोई प्रश्न ही नही उठता। आशय यह है कि कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति को एक ही बार धोखा दे सकता है। छल-कपट का व्यवहार ज़्यादा दिन नही चलता। तुलनीय : कौर० काठ की हंडिया कब लों चाळेगी; पंज० लकड़ दी कुन्नी कदों तक चलदी है।

काठ की हाँड़ी बार-बार नहीं चढ़ती—दे० 'काठ की हँड़िया...'। तुलनीय : मरा० लाकडाची हंडी पुन्हा ठेवतां येत नाही; राज० काठरी हाँड़ी एक ही बार चढ़ै; माल० काठरी हाँडी चूला पे नी चड़े; पंज० लकड़ी दी हाँडी इक्क बार चड़दी है; भोज० काठ क हाड़ी एक बेरं आग पर चढ़ेले; अव० काठ कै हाँडी बेर-बेर नाही चढ़ती।

काठ छीलो तो चिकना, बात छीलो तो रूखी—लकड़ी छीलने से चिकनी होती है और बात रूखी। अर्थात् बात को जितना अधिक बहस मे लपेटा जायगा उतना ही क्रोध बढ़ेगा या झगड़े की संभावना हो जाएगी।

काढ़-कूढ़के क़र्ज देवे, फूटे घर में ताला; साले के संग बहिन पठाए, तीनों का मुँह काला—दूसरे से लेकर ऋण देने वाला, टूटे-फूटे घर मे ताला लगाने वाला तथा साले के साथ अपनी बहिन को भेजने वाला—ये तीनो मूर्ख कहलाते है। अर्थात् इस तरह का काम अच्छा नही समझा जाता।

काढ़े नीर पताल तें, जो गुणयुत घट होय—बुद्धिमान और उद्योगी जिस काम मे लगेगा, उसे पूरा करके छोड़ेगा। जैसे कुआँ कितना ही गहरा क्यों न हो यदि लोटे में लम्बी डोर है तो पानी निकल ही आएगा। (गुणयुत—गुणवान, रस्सी सहित; बुद्धिमान व उद्योगी मनुष्य को कहते हैं)।

कातन बैठी दिया बाले, दिन खोया आले बाले—जब किसी कार्य के लिए उपयुक्त समय बीत जाने के बाद उसे किया जाए तो कहते है।

कात न आवै लै-लै दौड़े—कातना तो आता नहीं और कपास ले के दौड़ती है अर्थात् दिखावा करने वाले ढोंगी या मूर्ख के प्रति कहते है।

कातना तो आता नहीं, लगी पूनियाँ बनाने—बिना सोचे-समझे किसी बात मे हस्तक्षेप करने वाले के प्रति व्यंग्य से कहते है।

काता और ले दौड़ी—सूत काता और उसी समय बाज़ार में बेचने ले दौड़ी। (क) जिसे धैर्य न हो और सब कामों की जल्दी हो उसे कहते है। तुलनीय : पंज० कत्तया ते नैके नट्ठी।

कातिक कुतिया माह बिलाई, चैत चिड़ैया सदा लुगाई—कुतिया कार्तिक में, बिल्ली माघ में, चिड़िया चैत में और स्त्रियाँ बारहों महीने कामातुर रहती हैं। तुलनीय : अव० कातिक कुतिया, माह बिलाई, चैत मा चिरैया सदा लुगाई; ब्रज० कातिक कुतिया माह बिलाई, चैत चिरैया सदा लुगाई।

कातिक कुतिया, माह बिलाई, फागुन मरदे ब्याह लुगाई—कार्तिक माह में कुतिया, माघ में बिल्ली, फाल्गुन में पुरुष तथा विवाह में स्त्रियाँ निर्लज्ज हो जाती हैं। तुलनीय : राज० काती कुत्ती, माघ बिलाई, फागण मिनख र ब्याँव लुगाई।

कातिक जो आँवर तर खाय, कुटुम सहित बैकुंठे जाय

—कार्तिक के महीने में आँवले के वृक्ष के नीचे बैठकर जो भोजन करता है वह सपरिवार स्वर्गलोक को प्राप्त करता है या स्वर्गलोक पहुँच जाता है। आशय यह है कि कार्तिक माह में आँवले के वृक्ष के नीचे बैठकर भोजन करना फलदायक होता है।

कातिक पिल्ली, माघ सियारिन, चइत चिरइया सदा कहारिन – कुतिया कार्तिक में, सियारिन माघ में, चिड़िया चैत में तथा कहारिन सदैव विषय-वासना में लिप्त रहती है।

कातिक, बात कहा तक -- (क) कार्तिक में दिन छोटा होता है, इसलिए बात कहने में ही दिन बीत जाता है। (ख) इस महीने में त्योहार अधिक होते हैं और खुशी के दिन जाते मालूम नहीं पड़ते।

कातिक बोवै अगहन भरै, ताको हाकिम फिर का करै — कार्तिक मास में खेत बोने वाले और अगहन में उसे भरने वाले (सिंचाई करने वाले) का हाकिम कुछ नहीं बिगाड़ सकता, क्योंकि फ़सल अच्छी होती है और लगान आदि किसान आसानी से दे सकता है। आशय यह है कि कार्तिक में बोने और अगहन में सिंचाई करने से फ़सल अच्छी होती है।

कातिक मावस देखै जोसी, रवि सनि सोमवार जो होसी; स्वाति नखत अरु आयुष जोगा, काल पड़ै अर नासै लोगा—कार्तिक की अमावस्या को यदि रविवार या मंगलवार हो और स्वाति नक्षत्र में यदि आयुष्य योग हो तो अकाल पड़ेगा और मनुष्यों का नाश हो जाएगा।

कातिक मास रात हर जोतो, टाँग पसारे घर मत सूतो —कार्तिक मास में दिन-रात हल जोतना चाहिए तभी फ़सल अच्छी होती है और जो उस समय चूक जाता है या आलस्य करता है वह पछताने के अतिरिक्त और कुछ नही पाता।

कातिक में जो सीत को पीये सो लाभा पाय, भादों मे जो कोई पीये, तो देवे ताप चढ़ाय—कार्तिक में मट्ठा पीने से लाभ होता है और भादों में पीने से हानि होती है।

कातिक सुद एकादशी, बादल बिजुली होय; तो अषाढ़ में भड्डरी, बरखा चोखी होय—भड्डरी का विचार है कि यदि कार्तिक की एकादशी को बादल हों और बिजली चमके तो आषाढ़ में अच्छी वर्षा होती है।

काती पूनम दिन कृति, चंद मघाने जोय; आगे-पीछे दाहिने, जिणसूं निश्चय होय; आगे है तो अन्न नहीं, पाछे हूवै तो ईत; पीठ हुयां परजा सूखी, निस दिन रह्यो नचीत —कार्तिक की पूर्णिमा को चंद्रमा का मध्य यदि आगे की ओर होगा तो अन्न उत्पन्न नहीं होगा, यदि दाहिनी ओर होगा तो ईति-भीति (अतिवृष्टि, अनावृष्टि, चूहे, टिड्डी, पक्षी, विद्रोह आदि कष्ट) होगी और यदि पीछे होगा तो प्रजा सुखी रहेगी।

काती रो मेह मटक बराबर—कार्तिक की वर्षा और सेना दोनों ही खेती के लिए हानिप्रद हैं। सेना जिधर भी जाती है सब फ़सल नष्ट कर देती है और इसी तरह कार्तिक की वर्षा भी फ़सल को नष्ट कर देती है।

काती सब साथी-- कार्तिक में सब फ़सलें साथ देती हैं। इसका प्रयोग कार्तिक के लिए या विशेष अवसर पर सभी से सहायता-सहयोग आदि पाने पर करते हैं। तुलनीय : तेलु० कार्तिक पुन्नानिकि कलक पंटलु।

काते उसका सूत, जाये उसका पूत---जो सूत कातते हैं सूत उन्हीं को मिलता है तथा जिन्होंने बेटों को जन्म दिया वे उन्ही के कहलाते हैं। अर्थात् जो परिश्रम करते हैं फल भी उन्हीं को मिलता है। तुलनीय: राज० कात्या ज्यांदा सूत, जाया ज्यांरा पूत; पंज० जिहड़ा कत्ते उस दा सूतर जिहड़ा जन्मे उसदा पुतर।

कादर बीरनु संग मिलि, भलें अलापहिं राग—कायर पुरुष वीरों के साथ रहने के कारण अपना गुणगान भी कर लेते हैं। अर्थात् अच्छे आदमियों की संगति से बुरे भी कुछ-न-कुछ आदर पा जाते हैं।

कादर भये न सूर-सुत, करि देख्यो निरधार—वीर व्यक्ति का पुत्र कायर कभी नही हो सकता। इसे अच्छी तरह विचार करके देख लीजिए। आशय यह है कि बहादुर पिता की संतान भी बहादुर होती है।

कादर मन कहुँ एक अधारा, दैव-दैव आलसी पुकारा — आलसी और निकम्मे व्यक्ति कोई काम नही करना चाहते। वे हर काम को ईश्वर पर छोड़ देते हैं। चूंकि वे अकर्मण्य होते हैं, अत: उसके लिए एक मात्र आलम्ब ईश्वर ही होता है।

कान और आँख अंचार में गुल का फ़र्क़ है—देखी और सुनी बात में बहुत अंतर है। आँखों देखी बात का विश्वास करना चाहिए, कानों सुनी का नही। तुलनीय : राज० कान अर आंख में च्यार आंगलरो फरक है; पंज० कन अते अख बिच चार उंगलां दा फरक है।

कान कहत नहिं बैन ज्यों, जीभ सुनत नहि बैन—जिस प्रकार कान का काम सुनना है बोलना नहीं, उसी प्रकार जीभ का भी काम बोलना है सुनना नही। अर्थात् जिसका

जो काम है, उसे वही कर सकता है।

कान की लौ और तोंद जितनी बढ़ाओ उतनी बढ़े—कानों में जितने भारी ज़ेवर पहने जाएँगे उनकी लौ (कान का नीचे का भाग) उतनी ही बड़ी हो जाएगी तथा भोजन जितना ही पौष्टिक किया जाएगा और परिश्रम न किया जायगा पेट उतना ही बड़ा हो जाएगा। किसी ऐसे काम के सम्बन्ध में इसका प्रयोग करते हैं जिसका बनाना और बिगाड़ना अपने सामर्थ्य के बाहर न हो। तुलनीय : मेवा० कान की लोल अर पेट की झोल बढ़ावो जतरी बढ़े।

कान कुइस कोते गर्दनियां ई तीनू संहारे दुनियां—काने (एक आँख वाले), कंजी आँख वाले (कुइस) तथा छोटी गर्दन वाले व्यक्ति दुष्ट स्वभाव के होते हैं और इनसे सभी लोग परेशान रहते हैं।

कान कुइस, कोतह गर्दनियां इनसे कांपे सारी दुनियां—ऊपर देखिए।

कान खजूरे की एक टाँग टूटने से वह लंगड़ा नहीं हो जाता—कानखजूरे (गोजर) की सैकड़ों टाँगें होती हैं, इसलिए एक-आध टाँग टूटने से उसे कोई अंतर नही पड़ता। आशय यह है कि धनवान का यदि धन आने का कोई एक रास्ता बंद भी हो जाय तो उसे कोई अंतर नहीं पडता क्योंकि उसके पास और भी बहुत से रास्ते होते है। या जिस व्यक्ति के अनेक सहायक होते हैं उनमें से यदि एक-दो नाराज़ भी हो जाते हैं तो उसके ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। तुलनीय : पंज० कनखजूरे दी इक लत टुटन नाल ओह लंगा नईं हुंदा।

कान छिदाएगा तो गुड़ खाएगा—'दे० कान छिदाय सो…'।

कान छिदाय सो गुड़ खाय—जो कान छिदाएगा वही गुड़ खाएगा। प्राय: कान छेदते समय गुड़ इत्यादि मीठी चीज़ें बच्चों को खाने के लिए दी जाती हैं ताकि उन्हें कष्ट न मालूम हो। अर्थात् जो कष्ट उठावेगा उसी को आराम मिलेगा। तुलनीय : मरा० कान टोंचील तो गूळ खाईल; भोज० कान जे छेदाई से गुड़ खाई; अव० कान छेदावौ तौ गुड़ खाव।

कान छेदौते बनी, गुड़-कोचैया खातं बनी—कान छिदवाना पड़ेगा और गुड़-कोचैया (गुड़-पूरी) खाना ही पड़ेगा। अर्थात् (क) जब कोई काम विवश होकर करना पड़े तब कहते हैं। (ख) सुख-दुख जीवन की अनिवार्य विशेषताएँ हैं।

कान टूट जेहि आभरण का लै करब सो सोन—जिस आभूषण से कान को नुक़सान पहुँचे उसे कोई लेकर क्या करेगा? आशय यह है कि कोई वस्तु या व्यक्ति कितना भी क़ीमती या प्रिय क्यों न हो पर उससे नुक़सान हो तो उसे त्याग देना चाहिए।

> माथें नहिं बैसारिअ सठहि सुआ जौं लोन;
> कान टूट जेहि आभरन का लै करब सो सोन।
>
> —जायसी

कान को कुंडल नहीं, कुंडल तो कान हीं—जब कान थे तो कुंडल नही थे और जब कुंडल हुए तो कान नहीं हैं। अर्थात् (क) जब धन हो और बच्चे न हों और जब बच्चे हों पर धन न हो तब ऐसा कहते हैं। (ख) जब आवश्यक हो तो कोई चीज़ या वस्तु न रहे और जब वस्तु रहे उस समय उसकी कोई आवश्यकता न हो तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : हरि० जाड़ थी ज्यब चणे नाह थे, चणे हुए तै जाड़ कोन्या; पंज० दंद सी तां छोले नई छोले है तां दंद नईं।

कान था तो सोना नहीं, सोना है तो कान नहीं—ऊपर देखिए।

कान पड़ी काम आती है—सुनी-सुनाई बात कभी-न-कभी काम आ ही जाती है।

कान पर जूं तक नहीं चलती—(क) जब कोई किसी का कहना न सुने तब कहते हैं। (ख) बिल्कुल निश्चित व्यक्ति को भी कहते हैं। तुलनीय : अव० कान मा जुआं नाहीं रेंगा; हरि० कान पै जूंम बी चालती हो; पंज० कोई कँणा नईं मनदा।

कान प्यारे तो बालियां, जोरू प्यारो तो सालियां—कान प्यारे होते हैं तो बालियाँ भी प्यारी (अच्छी) लगती हैं और जब पत्नी अच्छी होती है तो सालियाँ भी अच्छी लगती हैं। अर्थात् (क) जब किसी मुख्य वस्तु से स्नेह होता है तो उसकी पूरक या सहायक अन्य वस्तुओं से भी स्नेह होता है। (ख) जब कोई मुख्य व्यक्ति प्रिय होता है तो उसके साथी-सम्बन्धी भी प्रिय होते हैं। तुलनीय : पंज० कन पयारे जे बालियां, बौटी पयारी जे सालियां।

कान में ठेठियाँ दे ली हैं—कुछ सुनते ही नहीं। अर्थात् (क) जब कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति की बातों की तरफ कोई ध्यान नहीं देता तो ऐसा कहता है। (ख) जब कोई व्यक्ति गर्ववश किसी की बात या सलाह को नहीं मानता तो भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० कान में ठठी घाल राखी है; पंज० कनां बिच रूं पाया है।

कान में तेल डाले बैठे हैं—ऊपर देखिए। तुलनीय :

अव० कान मा तेल डार बइठा हैं; ब्रज० कान में तेल डारें एं।

काना कुत्ता पीच ही से आसूदा—काना कुत्ता माँड़ पाकर ही खुश रहता है क्योंकि उसे और कुछ मिलने की आशा नहीं रहती। मजबूर या असहाय व्यक्ति अथवा अयोग्य या निकम्मे को जो कुछ भी मिल जाता है वह उसी से प्रसन्न हो जाता है।

काना कौवा—काले, कुरूप व्यक्ति और कभी-कभी निन्दक को भी कहते हैं।

काना खसम भी घूरकर देखे—पति चाहे काना ही क्यों न हो वह भी घूरकर देखता है, अर्थात् (क) मूर्ख या दुर्बल मालिक भी अपने सेवकों पर क्रोध करता है। (ख) जब कोई मूर्ख या अयोग्य व्यक्ति भी रोब दिखाता है तब उसके प्रति व्यंग्य से ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० कनवां भतार मोरेह तवनो पर गिरोरला; पंज० काणा खसम कूर के देखे।

काना टट्टू बुद्धू नफ़र—काना घोड़ा और मूर्ख नौकर दोनों ही दुःखदायी होते हैं। जिसका सामान बिगड़ा या अस्त-व्यस्त रहता है उसके लिए कहते है।

काना भाई राम-राम, झगड़े की जड़—काने को काना कहा जाय तो वह नाराज़ हो जाता है और लड़ाई-झगड़ा करने को तैयार हो जाता है। आशय यह है कि प्रायः लोग अपने दोष दूसरे के मुँह से सुनना पसन्द नहीं करते। तुलनीय : भोज० काना भाई राम राम झगरा क जर; पंज० काणा पई राम-राम लडाई दी जड़।

काना मुझको भाय नहीं, काने बिन सोहाय नहीं—काना मुझको अच्छा भी नहीं लगता और उसके बिना रहा भी नहीं जाता। (क) जो स्त्री अपने पति को नहीं चाहती उसका कहना है। (ख) जब कोई वस्तु अच्छी भी न लगे और छोड़ी भी न जाय तब भी कहते हैं। तुलनीय : माल० आंधा ने देख आँख फूटे, ने आँध बना हरनी; भोज० कानी देखके हमके न भाए कानी बिना रहलो जाए।

काना, याना, लाड़ला, तीनों हठ की खान; अंधा, गूँगा, कायरा हैं पूरे शैतान—काना, याना, अर्थात् छोटा लड़का तथा लाड़ला ये हठी होते हैं पर अंधा, गूँगा तथा कायरा (कंजी आंख वाला) ये पूरे शैतान होते है। तुलनीय : माल० कांणा, खोड़ा, लूला, लँगड़ा, एक पग आतराज वे।

काना रे तू ककड़ी दे, ई लुरे तो फूट मिलेगा—किसी व्यक्ति ने किसी काने व्यक्ति से कहा—ए काने, मुझे ककड़ी दे दे। इस पर उसने (काने ने) व्यंग्य में कहा—तुम्हारे इस व्यवहार से तुम्हें ककड़ी नहीं बल्कि फूट (जो ककड़ी से अच्छा होता है) मिल जाएगा। जब कोई व्यक्ति किसी से कोई साधारण वस्तु भी अनुचित ढंग से माँगता है तो वह उसे नहीं मिलती परन्तु जब कोई व्यक्ति किसी से प्रेमभाव या उचित ढंग से माँगता है तो उसे क़ीमती वस्तु भी मिल जाती है। यानी प्रेम से सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है।

काना हो तो चिढ़ जाए—काने व्यक्ति को काना कहने से वह नाराज़ हो जाता है। किसी के अपराध, अवगुण या कमी को उसके सम्मुख कहने से वह नाराज़ होता है या बुरा मानता है। तुलनीय : अव० काना होय तौ कौचि जाय; पंज० काणा आखो ते गुस्सा आवे।

काना होय सो कौंचि जाय—ऊपर देखिए।

कानी अपनी फूटी नहीं देखती, औरों की फूली निहारती है—कानी अपनी फूटी आँख न देखकर दूसरे की फूली पर अधिक ध्यान देती है। जो व्यक्ति अपने बड़े दोष को न देखकर दूसरे के साधारण दोष पर आलोचना करे उस पर इस लोकोक्ति का प्रयोग किया जाता है।

कानी अपने मने सुहानी—कानी अपने को सुन्दर समझती है। जो मूर्ख अपने को ही बुद्धिमान समझे उसे कहते हैं।

कानी आँख, दिखे कुछ नहीं, दुःखे तो अच्छी से ज्यादा—कानी आँख से दिखाई कुछ नहीं देता पर दर्द उसमें अच्छी आँख से भी अधिक होता है। अर्थात् जब घर के किसी मनुष्य से लाभ तो कुछ न हो पर कष्ट बहुत मिले तब व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

कानी आँख मटर का बोया, वह भी आँख भवानी लीया—एक तो छोटी आंख थी वह भी चेचक के कारण खराब हो गई। (क) किसी के एकमात्र एवं दुर्बल पुत्र के मर जाने पर कहा जाता है। (ख) किसी के पास कोई एक ही वस्तु हो और वह भी किसी कारणवश नष्ट हो जाय तो कहते हैं।

कानी काकी मठा दे, बेटे के बोल तो दही लायक हैं—दे० 'काना रे तू ककड़ी दे...'।

कानी की आँख में तिनका लगा, उसे बहाना मिला—कानी को यह कहने का बहाना मिला कि इसी तिनके से मेरी आँख फूटी है। जब कोई व्यक्ति साधारण बहाने से बहुत बड़ा दोष छिपाने की कोशिश करे तो व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : पंज० काणी दी अख बिच तीला लगया उस

नूं बहाना मिलयां।

कानी की चले तो उतानी रहे—कानी का बस चले तो आसमान की ओर ही देखती रहे, जमीन को देखे ही नहीं। अर्थात् नीच व्यक्तियों का बस चले तो वे किसी की कुछ न चलने दें। तुलनीय : भोज० कानी क चले त उतानी रहै।

कानी के ब्याह में सत्रह बाधाएँ---नीचे देखिए। तुलनीय : हाड़० कांणी का ब्याह में सतरा रोवणां; ब्रज० कानी के ब्याह में सौ बाधा।

कानी के ब्याह में सौ जोखों—नीचे देखिए।

कानी के ब्याह में सौ-सौ जोखिम—कानी लड़की की शादी मे अनेक परेशानियाँ सहनी पड़ती हैं क्योंकि भेद खुल जाने के बाद उससे कोई विवाह करने के लिए तैयार नही होता। आशय यह है कि जिस काम मे पहले से ही कोई त्रुटि होती है उसके पूर्ण होने मे बड़ी परेशानियों का सामना करना पडता है। तुलनीय : कानी के बिआहे मे सौ गो आफत; राज० काणींरै ब्यावने सौ जोखम; कानी के ब्याह मे सौ-सौ जोखिम; हरि० काणी के ब्याह नै, सौ जोखिम; बुंद० नकटी के ब्याव में सौ जोखो; ब्रज० कानी की ब्याह में सौ जोखें; गुज० नंकट वां लगन मों सोलसे वघन; मरा० नकटीचे लग्नास सत्राहें विघ्ने; कौर० काणी के ब्या कू सौ जोक्खों; निमाड़ी० अंधलई का लगीण म तेरह विघन; पंज० काणी दे वयाह बिच सौ दु:ख।

कानी को अपना काना प्यारा, रानी को अपना राजा प्यारा— (क) अपना पति सबको प्रिय होता है चाहे वह अच्छा हो या बुरा। (ख) अपनी वस्तु सबको प्यारी होती है, चाहे वह अच्छी हो या बुरी। तुलनीय : भोज० कानी के कनवां पियार रानी के राजा पियार; अव० कानी का काना पियार, रानी का राजा पियार; पंज० काणी नूं अपना काणा पयारा, रानी नूं अपणा राजा।

कानी को काना प्यारा, रानी को राजा प्यारा---ऊपर देखिए।

कानी को कौन सराहे ? कानी का मियाँ—दे० 'कानी को अपना काना प्यारा रानी···'।

कानी को सराहे कानी की माँ—दे० 'कानी को अपना काना प्यारा रानी···'। तुलनीय : कानी के सराहे कानी क माई; अव० कानी के सराहे कानी क माय।

कानी को सुहाय न काजल—कानी को काजल भी नहीं सुहाता। जब किसी दुष्ट या कुरूप व्यक्ति को किसी व्यक्ति का साज-शृंगार अच्छा नहीं लगता तो कहते हैं। तुलनीय : काणीरो काजल ही को सुवावैनी; पंज० काणी नूं काजल वी सोणा नई लगदा।

कानी कौड़ी पास नहीं, चलो चलें मेला—पास में तो कौड़ी नहीं, मेला जाने की तैयारी करते हैं। जब कोई बहुत ही निर्धन व्यक्ति या साधनहीन व्यक्ति कुछ करने की योजना बनाता है तो उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पास में त कानी चितियो नां चल चली मेला; पंज० खोटा पैहा कौल नई चले मेला दिखण।

कानी कौड़ी पास नहीं, नाम करोड़ीमल---नाम के अनुसार साधन या धन न होने पर ऐसा कहते है। तुलनीय : भोज० पास मे कानी कौड़ी नाही नांव करोड़ीमल; पंज० खोटा पैहा कौल नई नां करोड़ीमल।

कानी गदही सोने की लगाम—कानी घोड़ी को सोने की लगाम लगाए है। (क) जब कोई कुरूप व्यक्ति बहुत अधिक शृंगार करता है तब उसके प्रति व्यंग्य मे ऐसा कहते हैं। (ख) जब कोई व्यक्ति बेमेल काम करता है या दो बेमेल वस्तुओं में सम्बन्ध स्थापित कराता है तब भी उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते है। तुलनीय : पंज० काणी खोती सोने दी लगाम।

कानी गाय का अलग बथान ?—क्या कानी गाय के रहने का अलग स्थान होता है ? जब किसी साधारण मनुष्य को उसके साधारण अपराध के कारण समाज से बहिष्कृत कर दिया जाय तब कहा जाता है।

कानी गाय बाम्हन के दान—जब कोई व्यक्ति किसी ऐसी वस्तु किसी को देता है जो उसके काम लायक नही होती तब उसके प्रति ऐसा कहते हैं।

कानी बिल्ली का घर में शिकार—कानी बिल्ली घर में ही शिकार करती है। तात्पर्य यह है कि नीच स्वभाव के व्यक्ति अपने ही लोगों से छल-कपट करते है। तुलनीय : मैथ० कनही बिलाई के घर ही सिकार; भोज० कान बिलार घरहीं सिकार करे ले।

कानी मनै सोहानी—कानी अपने ऊपर स्वयं रीझी है। जब कोई कुरूप अपने को सुंदर समझता या समझने लगता है तब ऐसा कहते हैं।

कानी में आँख में तुस—झूठा बहाना करके अपने दोष को छिपाना।

कानी मौसी मठा दे—एक तो मठा माँगकर लेना और दूसरे मौसी को कानी भी कहना। जब कोई व्यक्ति किसी से कुछ माँग भी रहा हो और साथ ही अकड़ भी दिखाता हो तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० काणी बाई छाछ

घाल; पंज० काणी मासी लस्सी दे ।

कानी मौसी मठा दे कही—बहुत मीठा बोले बेटा क्या दूध दूं—दे० 'काना रे तू ककड़ी···'। तुलनीय : राज० काणी राँड ! छाछ घाल, मीठो घणो बोल्यो, बेटा ! दूध घाल सूं।

क़ानूनगो की खोपड़ी मरी भी दगा दे—क़ानूनगो किसानों को ऐसा चक्कर में डालते हैं कि वे पुश्त दर पुश्त कष्ट भोगते हैं। जब किसान परेशान हो जाता है तब ऐसा कहता है ।

क़ानून न क़ायदा, जो हुजूरी में फ़ायदा—जहाँ कोई क़ायदा-क़ानून न हो और अधिकारी अपने खुशामदियों को ही उन्नति का अवसर दें वहाँ उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : मेवा० कानून न कायदे अर बड़ा हुकम में फायदो ।

काने की रोटी कुत्ता खाय—काने व्यक्ति की रोटी कुत्ता ही खा जाता है। जो व्यक्ति अपनी वस्तुओं की देख-भाल स्वयं नहीं करते, उनकी वस्तुओं का उपयोग दूसरे लोग ही करते है। तुलनीय : छत्ती० कनवा के रोटी ला कुकुर खाय; पंज० काणे दी रोटी कुत्ता खावे ।

काने कुत्ते को माँड़ ही बहुत—(क) ग़रीब व्यक्ति छोटी वस्तु से ही संतोष कर लेते हैं। (ख) मूर्ख या आलसी व्यक्ति जो कुछ भी पा जाते हैं उसी से खुश रहते हैं। तुलनीय : मैथ० कनहा कुकुर माड़ेह तिरपित; भोज० कान कुक्कुर माँड़े निरपित ।

काने के एक रग सिवा होती है—काने में एक गुण विशेष होता है, वह है कुटिलता । आशय यह है कि काने व्यक्ति बहुत बुरे होते हैं । तुलनीय : हरि० काँणे कै एक रग बत्ती हो सै ।

काने के ब्याह में अनेक आफ़त—दे० 'कानी के ब्याह में सौ-सौ···'। तुलनीय : भोज० कनवा क बिआह में कई गो आफत ।

काने के ब्याह में अशकुन ही अशकुन—बुरे व्यक्ति के सम्बन्ध में जो कुछ भी किया जाता है वह निर्विघ्न सम्पन्न नहीं होता । तुलनीय : कनौ० कानी के ब्याह में सौ असगुन; ब्रज० काने के ब्याह मे असगुन ही असगुन ।

काने के ब्याह में बीस आफ़त—दे० 'कानी के ब्याह में सौ-सौ···'। तुलनीय : मैथ० कनहा के बियाह में बीस आफत; भोज० कनवा के बियाहे बीस बयार ।

काने को काना नहीं कहना चाहिए—किसी को उसके दोष बताने पर उससे शत्रुता हो जाती है। तुलनीय : मेवा० काणा ने काणों नी कीजे, कह बतलाजे सेण, हलवे हलवे पूछजे, थंका कासूं फूट्य नेण; काने को काना कहे काना उट्ठै भक्क, सहज-सहज कर पूछले तेरी क्यूकर फूटी अंक्ख; पंज० काणे नूं काणा नई कैणा चाइदा ।

काने को क्या चाहिए—दोनों आँखें सुन्दर—काना व्यक्ति यही चाहता है कि उसकी दोनों आँखें सुन्दर हो जायँ । अर्थात् जिस व्यक्ति को जिस वस्तु की आवश्यकता होती है उसे उसी की चिन्ता लगी रहती है। तुलनीय : गढ़० काणां त्वै क्वा चेंद ? द्वी आंखा साणा; पंज० काणे नूं की चाइदा दो सोनियां अखां ।

काने, खोरे, कूबड़े, कुटिल कुचाली जान—काने, खोरे और (विकलांग) कूबड़े ये प्रायः दुर्गुणी होते हैं।

काने चोट, कनौड़े भेंट—चोट पर चोट लगती है और जिससे (काने या अपंग से) मुँह छिपाना चाहो उससे अवश्य भेंट होती है ।

काने बनिए गुड़ दे, बड़े सुनावल बोल—जब कोई किसी से कठोर वचन के साथ कोई वस्तु माँगता है तब कहते हैं ।

काने से काना कहे तुरतई जावे रूठ, धीरे-धीरे पूछिए कैसे गई थी फूट—काने को काना कहा जाय तो रूठ जाता है, किन्तु प्यार से पूछा जाए तो वह सब बता देता है कि कैसे आँख फूटी थी । तात्पर्य यह है कि प्यार से सभी काम हो जाते हैं यहाँ तक कि लोग अपनी त्रुटियों और दोषों को भी बता देते हैं ।

कानों में क्या बंदर ने मूत दिया था—कहा जाता है कि बंदर का मूत्र यदि कान में डाल दिया जाय तो मनुष्य बहरा हो जाता है। जो व्यक्ति ज़ोर से पुकारने पर भी न सुने उसके प्रति मज़ाक़ से कहते हैं। तुलनीय : भीली—कानां माए कइ बांदरा मूत्या है; पंज० कनां बिच बांदर दा मूतर पायासी ।

कानों में मुद्रा तो आदेशिया बहुत—यदि कानों में मुद्राएँ होंगी तो सत्कार करने वाले बहुत मिल जाएँगे। आशय यह है कि (क) यदि पास मे धन है तो खुशामद करने वाले बहुत मिलते हैं। (ख) यदि व्यक्ति बुद्धिमान है तो उसकी इज़्ज़त करने वाले बहुत लोग मिलते हैं। तुलनीय : हरि० कान्नां मैं मुंदरा तै आदेश कहणिया भौत ।

कान्ह पर घोरा, भर गाँव ढिंढोरा—दे० 'काँख में लड़का···'।

कान्ह पर लड़का शहर में ढिंढोरा—दे० 'काँख में लड़का···'।

कान्हा नंदकुल में आया, रात बड़ी दिन छोटे लाया—कृष्ण ने अष्टमी के दिन जन्म लिया था तथा जन्माष्टमी के पश्चात् रातें बड़ी एवं दिन छोटे होने लगते हैं। जब किसी नए व्यक्ति के आने पर कोई विशेष परिवर्तन हो जाय तो कहते हैं। तुलनीय : राज० कानूड़ो कुल में आयो, रात बड़ी दिन छोटा लायो।

का पर करूँ सिंगार पिया मोर आँधर—जब मेरे पति अंधे हैं तो मैं शृंगार किस पर करूँ। (क) जहाँ गुणी का मान नहीं होता वहाँ गुणी अपने गुणों का प्रदर्शन नहीं करना चाहता। (ख) जिस स्त्री का पति कड़े स्वभाव का होता है वह भी ऐसा कहती है। (ग) जिस घर का मालिक मूर्ख होता है उस घर वाले भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० केकरे पर करौं सिंगार, सैंया मोर आँधर; भोज० केकरा पर करी सिंगार पिया मोर आन्हर।

का पूत बात से भी गया निकम्मे या शेखीखोर के लिए कहते हैं। तुलनीय : अव० का पूत बतनौ कै भागी।

क़ाफ़िया न मिलेगा, बोझों तो मरेगा—बेतुकी और मूर्खतापूर्ण बात करने वाले पर कहते है। इस सम्बन्ध में एक कहानी है : एक बार एक जाट और तेली कहीं जा रहे थे। बातों ही बातों में तेली को पता नहीं क्या सूझा कि उसने जाट से कहा, 'जाट रे जाट, तेरे सिर पर खाट।" जाट को बहुत ताव आया और उसने तुरंत ही जोड़-जाड़ कर कहा, 'तेली रे तेली, तेरे सिर पर कोल्हू।' तेली ने कहा, 'भई इसमें क़ाफ़िया नहीं मिला।' जाट ने उत्तर दिया, 'क़ाफ़िया नहीं मिला तो क्या हुआ, कोल्हू के बोझ से तो मरोगे।' तुलनीय : ब्रज० तुक न मिली, बोझन तौ मरैगौ।

का बरसा जब कृषी सुखाने—नीचे देखिए।

का बरसा जब कृषी सुखाने, समय चूकि पुनि का पछिताने—दे० 'का वर्षा जब कृषी ''।

काबुल गये मुग़ल बन आये, बोलन लागे बानी; आब-आब कर प्रान निकल गये सिरहाने रखा पानी—अपनी भाषा छोड़कर विदेशी भाषा का प्रयोग करने वालों के प्रति व्यंग्य है। दे० 'आब-आब कर मर गए'''। तुलनीय : अव० काबुल गए मोगल वनि आए बोलैं मोगली बानी, आब आब करि मरि गए गुड़वारी धारा पानी।

काबुल गए मुगल बनि आए बोले मुगली बानी आब-आब करि मरि गए सिरहाने रखा पानी—ऊपर देखिए।

काबुल में क्या गधे नहीं होते?—काबुल घोड़ों के लिए प्रसिद्ध है, लेकिन वहाँ पर गदहे भी होते हैं। जानकारों में जब कोई मूर्ख होता है तब कहते हैं। तुलनीय : मरा० काबुल मध्यें गाढ़वें का नसतात; भोज० काबुल में गदहा न होला; अव० काबुल मा का गदहा नहीं होत; बुंद० काबुल में का गधानी नई होत।

काबुल में भी गधे होते हैं—ऊपर देखिए।

काबुल में सब घोड़े नहीं होते—ऊपर देखिए।

काबू तो बाबू—शक्ति है तो सभी सम्मान करेंगे। तुलनीय : भोज० जान वाला क सब पांव पूजे ला।

काम आपनों का कों कहिए, जोइ काम के लायक लहिए—अपने काम के लिए उसी से कहना चाहिए जो उसे करने की योग्यता रखना हो। हर किसी से कहते फिरना मूर्खता है।

काम और जीभ का चस्का छूटता नहीं—काम (संभोग) की और स्वादिष्ट भोजन की चाह कभी छूटती नहीं अपितु छोड़ने का प्रयत्न करने पर और अधिक बढ़ती है। तुलनीय : राज० दाड़-रस काड़-रस छूटै कोनी; पंज० कन रस जीव रस नईं छुटदा।

काम करने से कराना कठिन है—किसी कार्य को करने वाले से उस कार्य को कराने वाला काफ़ी चालाक होना चाहिए क्योंकि चालाक व्यक्ति ही कार्यकर्ता से सही ढंग से काम करा सकता है। तुलनीय : भोज० काम कइले से करावल कठिन हऽ; पंज० कम करन नालों कराना औखा है।

काम करने से होता है, बातों से नहीं—निकम्मे और कामचोरों के प्रति ऐसा कहते हैं जो करते कुछ नहीं और बातें बहुत लम्बी-चौड़ी करते हैं। तुलनीय : माल० कतवारी रो हदरे न वतवारी रो वगड़े।

काम करे आदमी, फल दे भगवान—मनुष्य के बस में केवल काम करना ही है, फल देना तो ईश्वर की इच्छा पर निर्भर है। मनुष्य को भगवान भरोसे रहकर ही काम करना चाहिए। तुलनीय : भीली—काम करवू आपणा हाथ में है, आलवू राम ना हाथ में है; सं० कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन:; पंज० कम करे बंदा फल देवे रब।

काम करेगी बेटी, सुख से खायेगी रोटी—(क) माँ की शिक्षा लड़की के प्रति है। (ख) परिश्रम करने वाले सदा सुख से रहते हैं।

काम करे नथवाली, पकड़ी जाये चिरकुट वाली—जब ग़लती बड़ा करे और पकड़ा जाय छोटा तब कहते हैं।

काम करे न धंधा, माँग खाएँ चंदा—ढोंगी नेता या समाज-सुधारक जो दूसरों को धोखा देकर ही अपना पेट पालते हैं उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : पंज० कम करे न काज मंग के खावे दाज।

काम करै का 'अहाँ' खाय का 'हाँ'—जो काम करने के समय आनाकानी करें और खाने-पीने को मुस्तैद रहें उनके प्रति यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : अव० काम के करे नाही, खाय के वरे हाँ।

कामकाज को थरथर काँपे खाने को मरदानी—कामचोर किंतु खाने के लिए सबसे आगे रहने वालों के प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

काम का दाम, सूरत का नहीं—काम करने का दाम मिलता है, सूरत देखने का नही। अर्थात् सुन्दरता को कोई नही पूछता जब तक कि गुण न हों। परिश्रम करने वाला असुन्दर भी प्रिय होता है। तुलनीय : भीली माल नो मोल है, जात नो मोल नी है; पंज० कम दा पैहा सकल दा नई।

काम का न काज का, ढाई सेर अनाज का—नीचे देखिए।

काम का न काज का दुश्मन अनाज का—निकम्मे आदमी को कहते हैं जो खाने के सिवा कुछ नही करता। तुलनीय : मरा० कामाचा न काजाचा शत्रु अन्नाचा; गढ़० काम न काजो, ढाई सेर नाजो; अव० काम कै न काज कै दुस्मन अनाजे कै; ब्रज० काम को न काज को, बैरी अनाज कौ।

काम काम को सिखलाता है—किसी कार्य को करने से ही व्यक्ति को उसमें दक्षता प्राप्त होती है। तुलनीय : मल० आलु अट्टुनायिणम पोन्नु अरिच्चु नोक्कणम; ब्रज० काम कामै सिखावै, पंज० कम कम नू सिखांदा है; अं० It is work that makes a workman.

काम के न काज के दुश्मन अनाज के—ऊपर देखिए।

काम के नाम, जाय जान—काम का नाम लेने से से या सुनने से ही जान जाती है। जो व्यक्ति परिश्रम करने से जी चुराते हैं उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : भीली – धारा हाटा, कुरी न खाटा; पंज० कम दे नां जाण जावे।

काम के नाम पर बुखार चढ़े—काम करने के लिए कहने पर बुखार चढ़ जाता है। कामचोरों के प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० कामरे नांव ताव चढ़ै; पंज० कम दे नां ताप चढ़े।

काम के नाम से वज्र-ज्वर चढ़ता है—ऊपर देखिए।

काम के बेले सो गई, परसाद के बेले जागी—काम करने के समय सो गई, और जब प्रसाद अर्थात् खाने का समय आया तब जाग गई। जब काम करने से जी चुरावे और खाने के समय तैयार रहे तब कहते हैं। कामचोर और निकम्मे व्यक्ति के प्रति कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० काम के समै सोइ गई, परमाद के समै जाग गई; पंज० कम दे बेले सों गयी परसाद बेले जागी।

काम को 'अहाँ' खाने को 'हाँ'—देखिए 'काम करै के अहाँ...'।

काम को और खाने को और—काम कोई करे और खाने के लिए किसी दूसरे को दिया जाय। जब परिश्रम कोई करे और लाभ किसी को दिया जाय तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० काम औ गौरू, खाणँ हौरू; पंज० खाण नू होर ते कम्म नू होर; ब्रज० काम कू और खाइबे कू और।

काम को कहा, क्या सिर में जूता मार दिया?—काम करने के लिए ही कहा है कोई जूता तो नही मारा। जो व्यक्ति किसी काम को करने में नाराजगी प्रकट करे उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० काम भोळायो जाणे माथै में मोटरी दी है।

काम को काम सिखाता है—काम करने से ही आता है। तुलनीय : मरा० कामाला काम शिकवतें; गढ़० कामसणी काम सिखौंद; पंज० कम्म नाल कम्म आंदा है; राज० कारनै कार सिखावें; भोज० कामें के काम सिखावेला; ब्रज० कामें काम सिखावै।

काम ऐसा हो कि लाठी टूटे ना घड़ा फूटे—अर्थात् इस प्रकार से कार्य करना चाहिए कि कार्य भी पूरा हो जाय और कुछ हानि भी न हो।

काम कोढ़ी मुँह बज्जर—जब कार्य करने के समय कोढ़ी बने अर्थात् असमर्थता प्रकट करे और खाने के समय सब कुछ खा जाय तब कहते हैं। ऐसे व्यक्ति के लिए इस कहावत का प्रयोग होता है जो काम कुछ नही करना चाहता और खाने के लिए अधिक चाहता है।

काम को वहाँ, खाने को गया—(क) कोई व्यक्ति काम कराता रहे और खाने-पीने को न दे अथवा पारिश्रमिक न दे तो कहते हैं। (ख) जब कोई व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिए तो सेवा करे किन्तु दूसरे के काम के लिए आनाकानी करे तो इस कहावत का प्रयोग करते हैं। तुलनीय : पंज० कम्म नूं एत्थे, खाण नू लंगर।

काम क्या खाक करता है—जो व्यक्ति काम करे या करे भी तो ढंग से न करे तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : काम क्या डले करता है; पंज० कम की सुआ करदा है।

काम, क्रोध, मद, लोभ की जौ लौं मन में खान; का पण्डित का मूरखो तुलसी एक समान—काम, क्रोध, अहं-

कार और लालच के रहते हुए पण्डित और मूर्ख दोनों बराबर हैं।

काम क्रोध मद लोभ सब, नाथ नरक के पंथ—काम, क्रोध, अभिमान और लोभ ये चारों नरक में जाने की राह दिखाते हैं। अर्थात् इनसे व्यक्ति का विनाश हो जाता है।

कामचोर निवाले को हाज़िर—जो आलसी और स्वार्थी व्यक्ति काम के वक़्त टाल-मटोल करे पर खाने के समय डटा रहे उस पर यह लोकोक्ति कही जाती है। निकम्मे या कायरों के प्रति भी कही जाती है।

कामचोरों के नाम धर्मराज—नाम के अनुरूप गुण या काम न होने पर कहते हैं।

काम जो आवे कामरी, का ले करे किमाँच—यदि कमरी से ही काम चल जाय तो किमाँच (रेशमी वस्त्र) की क्या आवश्यकता ? (क) यदि छोटी चीज़ से काम चल जाय तो बड़ी चीज़ की तलाश करना बेकार है। (ख) जब छोटे कर्मचारी से ही काम निकल जाय तो बड़े अफ़सर के पास क्यों जायें। तुलनीय : मरा० काबळें काम भागवतें रेशमी (वस्त्र) कशाला हवैंतें।

काम जो आवे कामरी, का ले करे कुमाँच—ऊपर देखिए।

काम दूल्हा दुल्हिन से ही पड़ता है—आपस का मामला आपस ही में तय होता है।

काम न काज के अढ़ाई सेर के अनाज के—दे० 'काम के न काज के...'।

काम न जानै जाति कुजाति—(क) काम करने से जाति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, कोई भी काम किसी भी जाति का सदस्य कर सकता है। (ख) काम वासना से व्याकुल व्यक्ति अपनी इच्छा की पूर्ति के लिए जाति-पाँति का कोई ध्यान नहीं रखता। तुलनीय : ब्रज० वही; पंज० कम करन वाला जाति नूं नईं पुछदां।

काम न धंधा, तीन रोटी बंधा—काम कुछ नहीं करते, खाने के लिए तीन रोटी रोज़ खाते हैं। जो काम में सुस्ती करता है और खाने के लिए तैयार रहता है उसे कहते हैं। तुलनीय : मरा० काम न धंधा तीन वेळां खायला हवें।

काम न धंधा, मूसलचंदा—जो काम-धाम कुछ नहीं करते और बैठे-बैठे खाते हैं उनके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

काम न धंधा खात रोटी बंधा—दे० 'काम न धंधा तीन रोटी...'।

काम पड़े बाँका, गधे को कहें काका—बुरा वक़्त पड़ने पर मूर्ख और नीच की भी ख़ुशामद करनी पड़ती है। तुलनीय : पंज० कम पैया खोते नूं वी पिओ किहा।

काम पड़े मउसी ओज पड़े लबार—काम पड़ने पर तो मौसी का (निकट का) सम्बन्ध रखते हैं, किन्तु काम हो जाने पर चुग़ली करते हैं।

काम परे कछु और है, काम सरे कछु और—स्वार्थ सिद्ध करते समय लोगों का व्यवहार कुछ और होता है तथा स्वार्थ पूरा हो जाने के पश्चात् कुछ और होता है। अर्थात् सब लोग मतलब के साथी होते हैं।

काम परे ही जानिये, जो नर जैसो होय—मनुष्य की परख काम पड़ने पर ही होती है।

काम प्यारा है चाम प्यारा नहीं—रूप-लावण्य से किसी की इज़्ज़त नहीं होती बल्कि उसके सुन्दर कर्मों से इज़्ज़त होती है। तुलनीय : मरा० काम प्यारें आहे, कातड़ें प्यारे नाहीं; भोज० चाम नाँ पियार होला काम पियार होला; अव० काम पियारा होत है, चाम पियारा नाहीं होत; राज० काम प्यारो है, चाम प्यारो कोनी; हरि० काम प्यारा से चाम प्यारा नहीं; मेवा० काम वाला है चाम वाला कोयने; गढ़० काम प्यारो होंद, चाम प्यारो नी होंद; पंज० कम्म प्यारा हुन्दाए, चम्म नईं; बुंद० काम प्यारो होत, चाम प्यारो नईं होत; ब्रज० काम प्यारो है, चाम नहीं; मल० अषकुलूळ नक्कयिलु चुळग्गिल्ल; अं० Handsome is as handsome does.

काम बड़ा है नाम नहीं—मनुष्य का मूल्यांकन उसके कर्मों से किया जाता है, नाम से नहीं। तुलनीय : भीली—काम मोटो है नाम मोटो नी; पंज० कम्म बडा हुंदा है नाँ नईं।

काम बने के मामा, मठा मिले की मौसी—जब तक काम बने तभी तक मामा और जब तक मठा दे तभी तक मौसी। जो व्यक्ति जब तक लाभ मिले तभी तक आदर करे और बाद में तिरस्कार कर दे, उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : मरा० कामा पुरता मामा आणि ताकी पुरती आजीबाई; बंग० जतक्षण दूध ततक्षण पूत; बुंद० जौलों भटा भाजी तौलों बिरजो काकी।

काम में काम नहीं—बहुत साधारण काम या जिससे कुछ लाभ न हो ऐसे काम के लिए कहते हैं।

काम में काम बढ़ावे, धन धरम दोनों से जावे—काम को बहुत बढ़ाकर बड़ा करने वाला धन की भी हानि उठाता है और समय न पाने के कारण धर्म-कर्म से भी जाता है। आशय है कि प्रत्येक कार्य को निश्चित समय में समाप्त

करके दूसरा काम हाथ में लेना चाहिए। एक ही काम को ज़बरदस्ती बढ़ाकर समय नष्ट करने वाला हानि में रहता है। तुलनीय : भीली—काम माँ काम नी वदावणो।

काम रहे तक क़ाज़ी, ना रहे तो पाजी—जब तक मतलब रहता है तब तक क़ाज़ी रहते हैं नहीं तो पाजी कहे जाते हैं। अर्थात् मतलब से आदर होता है। तुलनीय : राज० काम सर्‌या दुःख वीसर्‌या वैरी हुयग्या वैद।

काम सरा दुःख बीसरा, छाछन देत अहीर—काम निकल जाने पर अहीर मट्ठा भी नही देता। कृतघ्न या स्वार्थी व्यक्ति के लिए कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० काम सर्‌यौ दुख बीसर्‌यौ छाछि न देय अहीर।

काम सरा दुःख बीसरा, बैरी हो गया वैद्य—रोग ठीक हो जाने पर वैद्य शत्रु जैसा दिखता है। नीच स्वभाव के व्यक्तियों के प्रति कहते हैं।

काम होने तक काजी, हो गया तो पाजी—दे० 'काम रहे तक क़ाज़ी···'। तुलनीय० अं० Give a dog a bad name and hang him.

कामातुराणां न भय न लज्जा—कामातुर व्यक्ति को न तो भय रहता है और न उसे किसी से शर्म आती है।

कामिनी गरभ औ खेती पकी, ये दोनों हैं दुर्बल बदी—गर्भवती स्त्री और पकी फ़सल, ये दोनों बहुत दुर्बल होती हैं और छोटी-सी आफ़त से इन दोनों को क्षति पहुँचने का भय रहता है।

कामिनी तो वोही भली जो पर घर कभी न जाय—(क) स्त्री वह अच्छी मानी जाती है जो पराए पुरुष से कभी सम्पर्क नहीं रखती। (ख) स्त्री वही अच्छी समझी जाती है जो व्यर्थ में किसी के घर न जाकर अपने घर के कामों में लगी रहती है।

कामी, क्रोधी, लालची, इनसे भक्ति न होय—काम, क्रोध या लोभ में फँसा व्यक्ति भगवान की भक्ति कभी नही कर सकता। तुलनीय : पंज० कामी, क्रोधी अते लालची इनां तो पगति नईं हुंदी।

काय घेर ओझ काढ़ लिया—जब कोई किसी का बहुत अधिक या बहुत बड़ा नुक़सान कर देता है तब ऐसा कहते हैं।

कायथ अरु खटकीरा, ये जाने न पराई पीरा—कायस्थ और खटमल (खटकीरा) दूसरे के कष्टों की ओर ध्यान न देकर अपनी ही स्वार्थ-पूर्ति में लगे रहते है। आशय यह है कि स्वार्थी लोग अपने स्वार्थ के आगे दूसरे के दुख को नहीं समझते। तुलनीय : छत्तीस० कायर अनु खटकीरा, ए न जानै पर के पीरा; अव० कायेथ खटकीरा का जाने पराई पीरा।

कायथ, कागा, कूकड़ा, तीनों जात सुजात—कायस्थ, कौआ तथा कूकडा (मुर्गा) ये तीनों अच्छी जातियाँ हैं, क्योंकि ये तीनों जातियां आपस में बहुत मिलजुल कर रहती हैं। तुलनीय : राज० कायथ कागा कूकड़ा तीनूं जात सुजात।

कायथ का धान बाम्हन खाय?—कायस्थ बहुत चतुर जाति होती है, उसका धान (चावल) ब्राह्मण कैसे खा सकता है। अर्थात् चतुर का धन मूर्ख नही खा सकता या चतुर व्यक्ति की वस्तुओं का उपयोग मूर्ख व्यक्ति नहीं कर सकते। तुलनीय : मग० काइथ के लावा कोइरी खाय; भोज० कायथ क फरूही कोइरी खाई।

कायथ का बेटा पढ़ा भला या मरा भला—कायस्थ का लड़का यदि पढ़-लिख न सके तो उसका मर जाना ही अच्छा है क्योंकि कायस्थ गृहस्थी आदि परिश्रम के काम नही कर सकते। वे केवल लिखा-पढ़ी का काम ही कर सकते हैं। इस लोकोक्ति का प्रयोग अनपढ़ कायस्थों के लिए होता है। तुलनीय : अव० कयथे का बेटवा, पढ़ा भला या मरा भला।

कायथ का लावा कोइरी खाई?—दे० 'कायथ का धान···'।

कायथ का हथियार क़लम है—कायस्थ पढ़ने-लिखने के काम से ही अपनी जीविका अर्जित करते है। अतः क़लम ही उनका प्रधान साधन है। तुलनीय : अव० कायथ औजार कलम अहै; पंज० कायथ दा सब्बल कलम है।

कायथ के गाँव में गीदड़ पटवारी—जब कोई व्यक्ति किसी कार्य के करने में स्वयं दक्ष हो और उसके यहाँ उसी कार्य को करने के लिए किसी मूर्ख व्यक्ति को भेजा जाय तब ऐसा कहते है। तुलनीय : भोज० कयथे के गाँवें सियार पटवारी; मैथ० कायथ गाम क चमार पटवारी; पंज० कायथ दे पिंड बिच गिदड़ पटवारी।

कायथ खटकीरा क्या जाने पराई पीरा—दे० 'कायथ अरु खटकीरा···'।

कायथ खत्री जाति को पाले, बाह्मन कुत्ता जाति को घाले—कायस्थ तथा खत्री अपनी जाति के अन्य लोगों की रक्षा करते हैं और ब्राह्मण तथा कुत्ता अपनी जाति वालों को ही नुक़सान पहुँचाते हैं। तुलनीय : मेवा० कायथ खत्री कूकड़ा, जात जात ने पाले; बामण स्वामी सेवड़ा, जात-जात ने मारे।

कायथ पहलवान पुदीना में अलान—कायस्थ कितना भी खाए-पीए बहुत बलशाली नहीं हो सकता जैसे कि पोदीने का पौधा अलान (आधार) लगाने पर भी कोई खास मजबूत नहीं होता। आशय यह है कि कायस्थ लोग शरीर से मज़बूत नहीं होते।

कायथ, मीयाँ, बंगाली, अपनी जाति के पहचानी—कायस्थ, मुसलमान और बंगाली अपनी जाति से बड़ा प्रेम रखते हैं।

कायथ से काला सो कौवा—कायस्थ प्राय: काले होते हैं इसलिए परिहास में उनके प्रति ऐसा कहते हैं।

कायथ से धोबी भला, ठग से भला सोनार; दोनों से कुत्ता भला कहें सदा हुसियार—कायस्थ की अपेक्षा धोबी अच्छा है क्योंकि धोबी तो एक-आध कपड़े का नुक़सान कर सकता है लेकिन कायस्थ भूमि ही इधर-उधर (एक-दूसरे के नाम) कर देते हैं। उसी प्रकार सोनार ठग की अपेक्षा अच्छा होता है क्योंकि सोनार कुछ सोना-चाँदी ही चुराता है लेकिन ठग तो प्राण भी ले लेता है। इन दोनों से तो कुत्ता ही अच्छा होता है क्योंकि वह हर दशा में अपने स्वामी की रक्षा करता है चाहे उसे खाने को मिले या न मिले। तुलनीय : ब्रज० कायथ ते धोबी भलौ, ठग ते भलौ सुनार; दोनू ते कुत्ता भलौ, कहे सदा हुसियार।

कायथों का छोटा और भाँड़ों का बड़ा, दोनों की खराबी—कायस्थों में जो घर का छोटा होता है उसको अधिक काम करना पड़ता है और भाँडों में जो बड़ा होता है उसको नकल अच्छी करनी आती है अत: अधिक परिश्रम करना पड़ता है। इसलिए दोनों ही कष्ट भोगते है।

काया कष्ट है, जान-जोखों नहीं—केवल शरीर का कष्ट है, और कुछ नही। बीमारी के समय रोगी को धीरज बँधाने के लिए कहा जाता है। तुलनीय : पंज० सरीर द. दुख है और कुछ नई।

काया को डर नांहिने, माया को डर होत—लालची व्यक्ति धन के पीछे अपने शरीर का ध्यान नही रखता।

काया जितना कर्म, माया जितना धर्म—अपनी शारीरिक शक्ति के अनुसार ही कार्य करना चाहिए ताकि दुर्बलता न आने पाए और आर्थिक सामर्थ्य के अनुसार ही दान-पुण्य करना चाहिए ताकि निर्धनता न आ जाए। तुलनीय : गढ़० काया रखीक करम पैसा रखीक धरम; पंज० सरीर जिना करम पैहा जिन्ना तरम।

काया तज छाया को पकड़े—शरीर को छोड़कर परछाईं को पकड़ रहे हैं। (क) जब कोई व्यक्ति किसी मुख्य व्यक्ति को छोड़कर उसके सहायक या उससे छोटे स्तर के व्यक्तियों से संपर्क स्थापित करता है तब ऐसा कहते हैं। (ख) जब कोई व्यक्ति किसी अच्छे लाभ के काम को छोड़कर किसी साधारण कार्य को करे तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० सरीर छड के खोरे नूं फड़े।

काया पापी अच्छा, मन पापी बुरा—कर्म से बुरा करने वाला, मन से बुरा चाहने वाले से कहीं अच्छा है।

काया बड़ी कि माया ?—स्वास्थ्य के आगे धन का कोई महत्त्व नही है, अत: धन से शरीर की रक्षा करनी चाहिए। तुलनीय : पंज० सरीर बडी की माया; ब्रज० काया बड़ी कै माया।

काया माया का क्या भरोसा—धन और जीवन का कोई ठिकाना नही न जाने कब समाप्त हो जाय। धन और जीवन की क्षणभंगुरता को ध्यान में रखकर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० सरीर माया दा की परोसा।

काया रखे धरम, पूंजी रखे व्यवहार—शरीर बना रहने से ही धर्म हो सकता है और पूंजी बनी रहने से ही कारबार चल सकता है। तुलनीय : सं० शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम्; पंज० सरीर रखे तरम पैहा रखे व्यापार।

काया राखे धरम—ऊपर देखिए।

काया राखे पाप न पुन—पाप और पुण्य के चक्कर से दूर हटकर शरीर की रक्षा करनी चाहिए। शरीर ठीक रहने पर ही सब कुछ अच्छा लगता है। तुलनीय : पंज० सरीर रखे पाप न पुन।

काया से काम, नेकी से नाम—शरीर से काम होता है और भलाई करने से आदर मिलता है।

काया से ही धरम—दे० 'काया रखे धरम···'। तुलनीय : मेवा० काया राख धरम; बुंद० काया राखे धरम; सं० शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम्।

काया है तो धरम है—दे० 'काया रखे धरम···'।

कार कछोटा झबरे कान, इन्हें छाड़ि जनि लीजौ आन—काले कच्छ (पूंछ के नीचे का भाग) और झबरे कान वाले बैल को छोड़कर दूसरा बैल नहीं खरीदना चाहिए क्योंकि इस प्रकार के बैल बहुत अच्छे होते हैं।

कार कछौटा सुनरे बान, इन्हें छाड़ि जनि बेसह्यो आन—काली कच्छ और सुन्दर रूप-रंग वाले बैल को छोड़कर दूसरा नहीं खरीदना चाहिए।

कारज धीरे होत है, काहे होत अधीर; समय पाय तरुवर फलै, केतक सींचे नीर—काम अपने समय पर होता है, उसके लिए अधीर नहीं होना चाहिए। चाहे कितना ही

क्यों न सींचा जाय। बिना समय के पेड़ भी नहीं फलता, अर्थात् हर काम समय पर ही होता है। तुलनीय : दे० 'धीरे-धीरे रे मना···'।

कारण गुण प्रक्रम न्याय—कार्य में वही गुण होते हैं जो कारण में होते हैं, जैसे सूत का रूप उससे बुने गए कपड़े आदि में होता है। तात्पर्य यह है कि कारण और कार्य गुणादि में पूर्णतया भिन्न नहीं हो सकते। बाप-बेटा, गुरु-शिष्य आदि भी एक-दूसरे की तरह ही होते हैं।

कारन तें कारज कठिन—कारण से कार्य कठिन होता है।

कारबार दाई का नाँव भउजाई का—काम किसी दूसरे के करने तथा नाम किसी दूसरे का होने पर ऐसा कहते है। 'दाई' मैथिली में पति की बहिन के लिए प्रयुक्त होता है। अत: 'दाई' शब्द ननद हुई। ननद-भाभी की खींचातानी प्रसिद्ध है। प्रस्तुत कहावत इसी को ध्यान में रखकर कही गई है। तुलनीय : ब्रज० कारबार दाई को, नाम भौजाई को।

कारिंदे के पास शिकायत लेकर कोई नहीं जाता—ज़मींदार के कारिंदे (जो काम-धाम की देखभाल करते है) के पास गाँव का कोई आदमी शिकायत लेकर नहीं जाता क्योंकि वह उसकी शिकायत या बात सुनने से पहले उससे बेगार कराने लगता है। आशय यह है कि स्वार्थी और दुष्ट व्यक्ति अपना कुछ मतलब पूरा कराने के बाद ही किसी की कुछ सहायता करते हैं। तुलनीय : भीली— गमेती हाथ में कात, नी आवे रली गाय की बात।

कार्तिक सुद पूनो दिवस, जो कृतिका रिख होइ; वामें बादर बीजुरी, जो संजोग सो होइ; चार मास तो वर्षा होसी, भलीभाँति यों भाखे जोसी—कार्तिक की पूर्णिमा को यदि कृतिका नक्षत्र हो और बादल हों तथा बिजली चमके तो चार मास तक वर्षा भली प्रकार होगी।

काल कढ़ाऊ, किसान का खाऊ—अकाल और ऋण किसान को खा जाते हैं। ये दोनों चीज़ें किसान के लिए कष्टकर होती है।

काल करंते आज कर, आज करंते अब—कल कोई काम करना हो तो आज ही कर लेना चाहिए, और आज करना हो तो अभी अर्थात् किसी काम में टाल-मटोल न कर शीघ्रता करनी चाहिए क्योंकि ज़िंदगी का कोई भरोसा नही है।

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब—ऊपर देखिए।

काल का मारा, सब जग हारा—मौत से सब हारे हैं। अर्थात् मौत किसी को नहीं छोड़ती। तुलनीय : पंज० **मौता दा मारया सारा जग हारया।**

काल का साग गरीब का भाग—मौत निर्धन व्यक्तियों को ही अधिक परेशान करती है। अथवा अकाल में ग़रीबों को ही अधिक कष्ट भोगना पड़ता है। तुलनीय : पंज० **मौत दा साग माड़े दा पाग।**

काल किसने देखा है?—अर्थात् किसी ने नहीं। किसी असंभव कार्य या बात पर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मेवा० काल कणी देख्यो है? पंज० मौत नूँ किन देखया है?

काल की गति कुटिल होती है—(क) काल (मौत) बड़ी बुरी चीज़ है। (ख) दुष्ट मनुष्य का काम बड़ा टेढ़ा होता है। तुलनीय : असमी— कालरु कुटिल गति; सं० कालस्य कुटिला गतिः; ब्रज० काल की गति कुटिल होयँ; पंज० मौत दी चाल डीगी हुंदी है।

काल की चक्की से कोई नहीं बचता—मृत्यु की चक्की में सभी पिसते है। मृत्यु से न कोई बचा है और न कोई बचेगा। तुलनीय : माल० क्यारे क्यारे पाणी आई र्‌यो है; ब्रज० काल की चक्की ते कोई नाये कोलों बच्यौ; पंज० मौत दी चक्की कोलों कोई नई बचदा।

काल के आगे किसी का बस नहीं चलता—मौत के सामने सबको झुकना पड़ता है।

काल के आगे सब लाचार हैं—ऊपर देखिए।

काल के जोगी, कलींदे का खप्पर—(क) कोई कम उम्र वाला बूढ़ों जैसी बातें करे तब कहते हैं। (ख) ढोंगी साधुओं के प्रति व्यंग्य में भी ऐसा कहते हैं। (कलींदा=तरबूज़)।

काल के जोगी भाई-भाई—ऊपर देखिए।

काल के दिन गिनता है—मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहा है। असाध्य रोग से पीड़ित या अतिवृद्ध के लिए कहते हैं। तुलनीय : पंज० काल दे दिन गिनदा है।

काल के मुँह में सब हैं—मौत से कोई बच नहीं सकता। एक न एक दिन सबको मरना है। तुलनीय : पंज० काल दे मुँह बिच सब है।

काल के हाथ कमान, बूढ़ा बचे न जवान—काल (मौत) किसी को नहीं छोड़ता। तुलनीय : ब्रज० **काल के हात में कमान, बूढ़ौ बचै न ज्वान।**

काल को कौन रोक सकता है—मौत किसी के रोकने से नही रुकती। तुलनीय : मेवा० काल के ताल नी लागे; पंज० मौत नूँ कौण रोक सकदा है।

काल गया पर कहावत रह गई—(क) वक़्त निकल जाने पर भी बात सदा के लिए रह जाती है। (ख) मनुष्य मर जाता है, किन्तु उसके कर्मों की चर्चा सदियों तक होती रहती है। तुलनीय : हरि० बखत बीतग्या पर बात बाकी रहैगी।

काल जाय कलंक नहिं जाय—समय समाप्त हो जाता है, किन्तु कलंक (अपयश) नहीं मिटता।

काल टले, कलाल न टले—काल टल जाता है, पर कलाल (शराब विक्रेता) के यहाँ जाना नही टलता। शराबियों के प्रति कहते हैं।

काल दंड गहि काहु न मारा, हरे प्रथम बल बुद्धि विचारा—मौत या दुर्दिन ने किसी को नही छोड़ा। जब किसी के बुरे दिन आने होते हैं तो पहले ही उसकी शक्ति, बुद्धि और स्मरण-शक्ति समाप्त हो जाती है। तुलनीय : सं० विनाशकाले विपरीत बुद्धिः।

काल न छोड़े राजा और न छोड़े रंक—काल (मौत) किसी को नही छोड़ता चाहे वह राजा हो या भिखारी। अर्थात् काल (मौत) के सामने सभी बराबर है। तुलनीय : पंज० मौत राजा रंक किसे नूं वी नई छडदी।

काल न छोड़े राजा-रंक—ऊपर देखिए।

काल पड़े पै कुदवाँ मीठ—अकाल पड़ने पर कुदवाँ (कोदों) भी मीठा लगता है। अर्थात् (क) भूख लगने पर बुरी चीज़ भी अच्छी लगती है। (ख) निरावलंब होने पर थोड़ा सहारा भी बहुत अच्छा होता है। तुलनीय : उ० भूख में गूलर पकवान; पंज० काल पिया कोदरा मिटठा; अं० Hunger is the best sauce.

काल बंजर से, बुराई बामन से—अकाल बंजर भूमि के कारण पड़ता है क्योंकि बंजर भूमि में फ़सल नहीं होती और यदि होती भी है तो इतनी कम कि आवश्यकता पूरी नहीं होती तथा बुराई ब्राह्मणों से होती है। ब्राह्मण सब बुराइयों की जड़ होते हैं। ब्राह्मणों के प्रति व्यंग्य में इस लोकोक्ति का प्रयोग करते हैं। तुलनीय : राज० काल वागड़ सूं ऊपजै बुरो बाभण सूं होय; हरि० काळ बाग्गड़ तै ऊपजै, बाह्म्मण तै हो।

काल बाँगर में, बुरा बाम्हन में—ऊपर देखिए।

काल में कोदों मीठे—दे० 'काल पड़े पै कुदवाँ···'।

काल सबको खाए बैठा है—सभी मौत के मुँह में चले गए हैं। जब दुर्भाग्यवश किसी परिवार के सभी व्यक्ति मर जाते हैं तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० मौत सारियाँ नूँ मार के बैठी है।

कालस्य कुटिला गतिः—काल की गति टेढ़ी होती है। उसका जानना बहुत कठिन है।

काला अक्षर भैंस बराबर—(क) बिना पढ़े-लिखे व्यक्ति के प्रति कहते हैं क्योंकि काली भैंस और काला अक्षर रंग-समता के कारण उसके लिए समान होते हैं। (ख) जब कोई मूर्ख व्यक्ति रंग या रूप की समता के कारण अच्छी और बुरी वस्तुओं को समान समझने लगता है तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० करिया अच्छर भइंस बराबर; अव० करिया अच्छर भैंसि बरोबर; राज० काला आखर भैंस बराबर; गढ़० कालो आखर भैंस बराबर, माल० कालो अक्सर भैंस बरोबर; मरा० काळ अक्षर नि म्हैस सारावीच; छत्तीस० अड़हा के लेखे डड़हे डड़हा, करिया अक्षर भैंस बरोबर; हाड़० कालो आंखर भंस बराबर; बुंद० करिया अच्छर भैंस बरोबर; तेल० कि अंटे कं अनलेडु; कन्न० मंगठ गान भंगक्के आदितै; निमाड़ी– कालो अक्षर भैंस बरोबर; ब्रज० कारौ अच्छर भैंसि बराबरि; बराबरि; पंज० काला अखर अलफ बराबर।

काला-काला सभी बाप का साला—दे० 'काले-काले कृष्ण···'।

काला गोरे के पास बैठा, रंग नहीं तो अक़्ल तो आएगी ही—काले रंग का व्यक्ति गोरे रंग वाले के पास बैठेगा तो उसका रंग गोरा नही होगा, किन्तु गोरे की बुद्धि तो आ ही जायगी। अर्थात् सत्संगति का असर पड़ता ही है। तुलनीय : राज० कालियो गोरियो कनै बैठे, रंग नही तो अकल तो आवै ही; पंज० काला गोरे नाल बैठया रंग नई तो अकल ता आवेगी।

काला बाम्हन, गोर चमार, इनका कभी न करे इतबार—काले ब्राह्मण एवं गोरे चमार पर कभी विश्वास नहीं करना चाहिए। अर्थात् ये दोनों बड़े खतरनाक होते हैं इनसे सदा सावधान रहना चाहिए। तुलनीय : करिया बाभन गोर चमार, इनका कबो न करी इतबार; पंज० काले बामन गोरे चमैर दा कदी परोसा नां करो।

काला बाम्हन, गोर चमार, इनके साथ न उतरे पार—काले रंग के ब्राह्मण और गोरे रंग के चमार दोनों ही शरारती और दुष्ट होते हैं, इसलिए इनके साथ नाव से नदी पार नहीं करनी चाहिए। अर्थात् इनसे सदा सावधान रहना चाहिए। तुलनीय : तेलु० नल्ल बावनोण्णि तेल्ल भालवाण्णि नम्मरादु।

काला बाम्हन, गोरा चमार—ये दोनों बड़े बुरे होते हैं। इनसे सदा सतर्क रहना चाहिए।

काला बाम्हन गोर चमार, इनके साथ न उतरीं पार — ऊपर देखिए।

काला बाम्हन गोर चमार, इनसे बचावे सदा करतार —ऊपर देखिए। तुलनीय : बघे० काला बाम्हन गोर चमार, इनसे बचवइ करतार; ब्रज० कारौ बाम्हन भूरौ चमार, इनते बचावै करतार।

काला बाम्हन गोरा शूद्र, इन दोनों से कांपे रुद्र —काले ब्राह्मण और गोरे शूद्र दोनों खोटे होते हैं, इनका विश्वास नहीं करना चाहिए। तुलनीय : मेवा० कालो बामण गोरो शूद्र, यां सूं डरफे महारुद्र; निमाड़ी—कालो बामन, गोरो शूद्र, ओसे काय महारुद्र।

काला मुँह करजुग दिखलावे, तब लागन की लाली पावे —मनुष्य बदनामी झेलकर तथा परिश्रम करके ही यश प्राप्त करता है।

काला मुँह करील के दाँत—एक तो मुँह काला है दूसरे बड़े-बड़े दाँत : बदशक्ल आदमी को कहते है।

काले मुँह नीले हाथ पाँव —(क) जब किसी वस्तु के प्रति घृणा प्रकट की जाय तब कहते हैं। (ख) किसी को शाप देने पर कहते हैं। तुलनीय : पंज० काला मू, नीले पैर; माल० कालो मुंडो ने कनीर का दाँत, राज० काळो मूढ़ो, लीला पग; पंज० काला मुंह नीले हथ पैर।

काला या गोरा भैया का साला प्रत्येक वस्तु पर अपना अधिकार समझने वाले पर व्यंग्य से ऐसा कहते है। तुलनीय : मैथ० कार गोर भैया के सार; पंज० काला या गोरा परा दा साला।

काली कलूटी राज करे, सुघरी भतार करे—असुन्दर स्त्री पर कम लोगों की वासना-दृष्टि जाती है, अतः वह एक पति के साथ ही गृहस्थी के कार्यों मे प्रसन्न रहती है। लेकिन सुन्दर स्त्री पर अनेक कामुकों की दृष्टि पड़ती है जिससे उसके चरित्रभ्रष्ट होने की काफी गुंजाइश रहती है। तुलनीय : सं० भार्या रूपवती शत्रुः मग० कारी खोरी राज करे सुनरी भतार करे।

काली कहने से भी 'हाँ' गोरी कहने से भी 'हाँ' — गोरी कहकर भी पुकारें तो भी 'हाँ' कहती है और काली कहें तो भी 'हाँ' कहती है। जो व्यक्ति दोनों ओर रहे और सबकी हाँ-में-हाँ मिलाए उसके प्रति कहते है। तुलनीय : राज० काली कयां ही ढीके अर गोरी कयां ही ढीके, पंज० काली कैण ते वी हाँ गोरी कैण नाल वी हाँ।

काली कामरि, चढ़ै न दूजो रंग—काली कमरी पर दूसरा रंग नहीं चढ़ सकता। (क) एक बार व्यक्ति जो आदतें अपना लेता है उनसे सहज पिण्ड नहीं छूटता। (ख) दुष्ट या मूर्ख व्यक्ति के प्रति भी कहते हैं जब वे किसी के समझाने-बुझाने पर नहीं मानते। तुलनीय : पंज० काली कमरी उते दूजा रंग नईं चड़दा।

काली कुत्ती मरने वाली, बन्दे को यश — अनायास यश-लाभ होना। जब काम आप ही हो जाय और उसके करने का यश मुफ्त में मिले तब कहते हैं।

काली खाने से न तन काला, न मन काला काले रंग की वस्तु खाने से न तो शरीर का रंग काला होता है और न हृदय पर ही उसका कोई प्रभाव होता है। इस लोकोक्ति मे तात्पर्य यह है कि अस्थायी वस्तु का प्रभाव भी अस्थायी ही होता है। तुलनीय : मेवा० काली चीज खावा सूं पेट काली थोड़े ई वेवे; पंज० काली खाण नाल न सरीर काला न दिल काला।

काली गाय बाम्हन को दान आशय यह है कि श्रेष्ठ या उत्तम वस्तु दूसरे लोगों को देनी चाहिए। (काली गाय हिन्दुओं में काफ़ी अच्छी या शुभ मानी जाती है।) तुलनीय : ब्रज० कारी गैया बाह्मन कूँ दान; पंज० काली गां बामन नूं दान।

काली घटा डरावनी, धौली बरसनहार —काली घटाएँ केवल डरावनी होती हैं बरसने वाली नहीं। पानी तो केवल भूरे बादलों से ही गिरता है। अर्थात् जो गरजते हैं वे बरसते नहीं। तात्पर्य यह है कि असली और दिखावटी चीजों में बड़ा अन्तर होता है।

काली जुमेरात का वादा करना —जब कोई लम्बा वादा करे तब कहते है। काली जुमेरात कृष्णपक्ष के शेष बृहस्पतिवार को कहते है जो इस्लामी महीने के अन्त में पड़ती है।

काली बिल्ली रास्ता काट गई यात्रा के आरम्भ में काली बिल्ली रास्ता काट दे तो बहुत बड़ा अपशकुन माना जाता है। किसी कार्य के आरम्भ में ही कोई विघ्न उपस्थित होने पर कहते हैं। तुलनीय : भीली—कालो हांप आड़ो आयो है (काला सांप सामने आया है); पंज० काली बिल्ली रास्ता कट गयी।

काली भली न सेत —यदि दो बुरे व्यक्तियों या दो बुरी वस्तुओं से पाला पड़ जाय तो दोनों को त्याग देना चाहिए। इस सम्बन्ध में एक कहानी है : एक राजा की दो रानियां थीं। दोनों दुश्चरित्र और जादूगरनी थीं। एक दिन दोनो काली और सफ़ेद चील के रूप में लड़ रही थीं। अकस्मात् राजा आ पहुँचे। राजा को पता चल गया कि

दोनों मेरी रानियाँ ही हैं। उन्होंने अपने मंत्री से कहा इस समय दोनों चील के रूप में हैं स्त्री-हत्या का पाप भी नहीं लगेगा किसे मारूँ। मंत्री ने कहा, 'काली भली न सेत।' इस पर राजा ने दोनों को मार डाला। तुलनीय : गढ़० काली भली न गोरी भली, कौर० काली हो या सेत, दोनों मारो एकहि खेत।

काली माँ के गोरे बच्चे - माँ तो काले रंग की है पर बच्चे गोरे रंग के है। अर्थात् जब कोई व्यक्ति देखने में कुरूप हो पर उसके गुण काफी अच्छे हों तो ऐसा कहते हैं। (ख) जब कोई वस्तु देखने मे सुन्दर न लगे पर खाने में काफ़ी स्वादिष्ट हो तब भी ऐसा कहते है। (ग) जब किसी दुष्ट या कुलटा स्त्री के बच्चे शरीफ़ या सज्जन होते हैं तब भी ऐसा कहते है। तुलनीय : मल० अम्म करुम्बि, मकळु वेळुम्बि मकळुटे मकळ अति सुन्दरि; पंज० काली माँ दे गोरे बच्चे।

काली मुर्गी क्या सफ़ेद अंडे नहीं देती---बुरे से भी अच्छे पैदा होते है। तुलनीय : पंज० चंगियाँ दे मंदे ते मंदियाँ दे चंगे; फ़ा० अज़ आज़र पिसरे-चूँ इबराहीम मी तवानद बरामद; अर० इन्ना अल क़सीरता क़दाततीलु; अं० A black hen lays white eggs.

काली मुर्गी सफेद अंडा— दे० 'काली माँ···'.

काली रात में जो काले तिल खाए थे, उनका बदला तो चुकाना ही पड़ेगा-- (क) जब किसी कठिन और कष्टकर कार्य को स्वीकार करने के अतिरिक्त और कोई चारा न हो तो कहते हैं। (ख) जब कोई व्यक्ति बड़ी परेशानियों में फँस जाता है तब ऐसा कहता है या अन्य लोग उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : भीली-- काली रात काला तल खादाँ हैं, जे एवाँ पूरा करवा है।

काली हंडी पीछे-- (क) किसी अत्याचारी अधिकारी के चले जाने पर भी लोग कहते हैं। (ख) जब कोई मरता है तो घर की पुरानी हंडी फोड़ दी जाती है। (ऐसा कुछ ही जातियों में होता है।)

काली हो या श्वेत मारो एक ही खेत—दे० 'काली भली न सेत।'

काले का काटा पानी नहीं माँगता—काले साँप का काटा मनुष्य नहीं बचता। कपटी मनुष्य या खोटी सलाह देने वाले को कहते हैं, क्योंकि उसके चक्कर में पड़कर मनुष्य अपना सर्वस्व खो देता है। तुलनीय : पंज० काले दा डंगया पाणी नईं मंगदा।

काले कौवे खाए हैं—लोगों का विश्वास है कि जो काले कौवे का मांस खाता है उसके बाल सफेद नहीं होते। इसलिए जब वृद्धावस्था में भी किसी के बाल सफेद नहीं होते तो उसके प्रति कहते हैं।

काले-काले कृष्ण के साले---काले रंग के जितने भी आदमी हैं सभी भगवान कृष्ण के साले है, ऐसा नहीं समझना चाहिए। (क) किसी एक समानता के कारण सभी वस्तुओं को आपस में सम्बद्ध नहीं समझना चाहिए। (ख) काले रंग वालों से व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० काला-काला किसनजीरा साला; माल० कारा-कारा सब कशन जी रा हारा; पंज० काले किरसन दे साले।

काले-काले राम के भूरे-भूरे हराम के-- काला वस्तुत: कोई रंग नहीं होता; रंग का अभाव ही श्यामता है इसलिए ईश्वर को 'रंगहीन' बतलाया एवं श्याम कहा गया है। जबकि श्वेत रंग सप्त वर्णों का संकर है। अत: लोकोक्ति में संकेत है कि श्वेत रंग के लोग वर्ण-संकर होते हैं। श्वेत वर्ण वालों की खिल्ली उड़ाने के लिए ऐसा कहते हैं। तुलनीय : कौर० काले-काले राम के, भूरे-भूरे हराम के। पंज० काले-काले राम दे पूरे पूरे हराम दे।

काले-काले, सब कृष्ण जी के साले—दे० 'काले-काले कृष्ण के साले'।

काले की सी एक लहर आ जाती है -अत्याचारी के लिए कहते हैं कि काले सर्प जैसी एक लहर उसके मन में भी उठती है।

काले के आगे चिराग़ नहीं जलता -(क) काले साँप की फुंकार के सामने दिया नहीं जलता। (ख) बलवान के सामने किसी की नहीं चलती। तुलनीय : पंज० काले अग्गे चिराग नईं बलदा; ब्रज० कारे के आगे दीयौ नायें जरै।

काले के काटे का जन्तर न मन्तर—दे० 'काले का काटा··'।

काले कोसों---काफी दूर के स्थान को कहते हैं। तुलनीय : हरि० काली कोसों; भीली—काला कोहाँ जावो हैं।

काले दिल का मीठा बोले—कपटी मनुष्य बहुत मीठी-मीठी बातें करते हैं। ऐसे लोगों से सावधान रहना चाहिए। तुलनीय : भीली--माठू तियू हदा कड़बू; पंज० काले दिल वाला मिट्ठा बोले।

काले नाग के आगे दिया नहीं जलता—दे० काले के आगे दिया···'।

काले फूल न पाया पानी, धान मरा अध बीच जवानी—धान को उसका फूला काला हो जाने पर पानी

न दिया जाय तो वह आधी जवानी में ही मर जाता है। अर्थात् फूल काला हो जाने पर धान के लिए पानी अवश्य चाहिए नहीं तो फ़सल नष्ट हो जाती है।

काले मुँह अँधेरे—बड़े सवेरे के लिए कहते हैं।

काले सिर का एक न छोड़ा—सब आदमियों के साथ विलास किया है। भ्रष्ट स्त्री को कहते हैं। (काले सिर का=युवा पुरुष)। तुलनीय : पंज० काले सिरदा इक नाँ छड़या।

काले सिर की जो न करें सो थोड़ा—स्त्रियाँ सब कुछ कर सकती हैं। जब कोई स्त्री इधर-उधर की करके झगड़ा पैदा कर दे तब कहते हैं। (काले सिर की=युवा-स्त्री)। तुलनीय : ब्रज० कारे सिर की जो न करैं सो थोरौ।

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब—दे० 'काल करंते आज कर···'।

का वर्षा जब कृषी सुखाने, समय चूकि पुनि का पछताने जब खेती सूख गई तो पानी बरसने से कोई लाभ नहीं, उसी प्रकार जब समय निकल गया तब पछताना बेकार है। (क) जब किसी को सहायता लेने की शीघ्र ही आवश्यकता हो तब कहता है। (ख) जब कोई चीज आवश्यकता के समय न मिले और काम बिगड़ जाने पर मिले तब भी कहा जाता है। तुलनीय : मरा० पिकें सुकल्यावर पाउस काय कामाच; मल० चिर मुरिज्यिट्टु अण केट्टालेन्तु फलम्; अं० It is too late to shut the stable door when the horse has bolted.

काव्येषु नाटकं रम्यम्—काव्यों में नाटक मनोहर होता है।

काशकुशालम्बन न्यायः—काश, कुश आदि का सहारा लेने का न्याय। नदी या नाले आदि की धारा में गिरे हुए, तैरने की कला में अनभिज्ञ व्यक्ति द्वारा काश या कुश का सहारा लेना व्यर्थ है। प्रस्तुत न्याय का प्रयोग ऐसे विवाद-ग्रस्त विषयों में किया जाता है जहाँ किसी निर्णयात्मक स्थिति के लिए प्रबल युक्तियों के खंडित हो जाने पर दुर्बल युक्तियों का सहारा लेना व्यर्थ हो जाता है।

काशी की बेटी मथुरा की गाय, करम फूटे तो अंते जाय—काशी मे लड़कियों और मथुरा में गायों की तरफ़ काफ़ी ध्यान दिया जाता है। या इन स्थानों पर इनकी काफ़ी सेवा की जाती है। ऐसी सेवा एवं सुविधा इन्हें अन्य स्थानों पर नही मिल पाती है, इसलिए लोग इन्हें अन्यत्र भेजना नहीं चाहते; यदि संयोगवश उन्हें अन्यत्र जाना पड़ता है तो लोग इसे उनका दुर्भाग्य समझते हैं।

काशी बस के क्या किया जब घर औरंगाबाद—किसी अच्छे स्थान में रहना और न रहना बराबर है, जब उस स्थान के ऐसे भाग में रहें जहाँ उस अच्छे स्थान की एक भी अच्छाई न हो। (क) काशी में औरंगाबाद एक मुहल्ला है जो पहले बहुत बुरा समझा जाता था। (ख) औरंगाबाद मुहल्ले में मुसलमान ही अधिक रहते हैं।

कासा दीजे, बासा न दीजे—खिलाइए पर बासा अर्थात् घर पर न रखे। अपरिचित या विदेशी मेहमान पर कहते हैं। (कासा=थाली, बासा=घर)। तुलनीय : मरा० भाँडें कुडे द्या, ग्हायला जागा देऊँ न का।

कासा-भर खाना, आसा-भर सोना—मस्त लोगों पर कहते हैं, जिन्हें केवल थाली-भर खाने और सोने से काम रहता है। (कासा=थाली)। तुलनीय : पंज० थाल पर के खाना जी पर के सोना।

कासी चूतर बनारस पीढ़ा—चूतड़ है काशी में और पीढ़ा रखा है बनारस में। बेतुका आचरण करने वालों के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० टुआ कासी पीड़ी बनारस।

का सुनाइ बिधि काह सुनावा, का देखाइ चह काह दिखावा—प्रकृति की लीला विचित्र है, वह दिखाती कुछ और करती कुछ है। प्रकृति का भेद जानना बहुत कठिन है। (क) जब किसी व्यक्ति को किसी काम में लाभ या सफ-लता की आशा होती है और उसे हानि या असफलता प्राप्त होती है तब वह ऐसा कहता है। (ख) जब किसी का पुत्र या पति मर जाता है तब वह स्त्री ऐसा कहती है या उसके प्रति सहानुभूति दिखाने वाले लोग ऐसा कहते हैं।

काह न पावक जरि सके, का न समुद्र समाइ; का न करइ अबला प्रबल, केहि जग काल न खाइ—अर्थात् अग्नि में प्रत्येक वस्तु जल जाती है, कोई वस्तु इतनी बडी नहीं है कि सागर में न समा सके, स्त्री अपनी पर आ जाए तो असम्भव काम भी कर डालती है और संसार में प्रत्येक वस्तु काल का ग्रास बनती है।

काहि न सोक समीर डोलावा—संसार में कोई भी ऐसा नहीं है जिसे शोक रूपी वायु ने छुआ न हो, अर्थात् प्रत्येक प्राणी को कोई न कोई कष्ट रहता है।

काहु न कोइ सुख-दुख कर दाता, निज कृत करम भोग सब भ्राता—संसार में कोई किसी को सुख या दुःख नहीं देता, अपितु सब अपने कर्मों का फल भोगते हैं। जो जैसा कर्म करता है उसे वैसा ही फल भुगतना पड़ता है।

काहुहि दोस देहु जनि ताता, मोहि सब बिधि बाम बिधाता— भगवान की इच्छा के प्रतिकूल कुछ नहीं होता, इसलिए किसी को दोष देना अनुचित है।

काहू काहू मगन, काहू काहू मगन—कोई किसी चीज़ में प्रसन्न है तो कोई किसी अन्य चीज़ में प्रसन्न है। अर्थात् संसार में विभिन्न स्वभाव एवं रुचि के व्यक्ति होते है। तुलनीय : सं० भिन्न रुचिर्हि लोक:।

काहू को बैंगन बाउ है काहू को बैंगन पथ्य—दे० 'किसी को बैंगन वायु…'।

काहू को हँसिए नहीं, हँसी कलह को मूल—हँसी ही सब झगड़ों की जड़ है, इसलिए किसी की हँसी नहीं उड़ानी चाहिए।

काहे तुम धमधूसर मोट, धन की फ़िकर न रिन की सोच—जिस आदमी को न ऋण देने की चिन्ता हो और न धन एकत्र करने की ही चिन्ता हो वही मोटा होता है। आशय यह है कि निश्चिन्त व्यक्ति मोटा हो जाता है।

काहे को गूलर का पेट फड़वाते हैं ?— गूलर को तोड़ने (फाड़ने) से उसमें से कीड़े निकलते है जिन्हें देखकर मन दुखी हो जाता है। अर्थात् आप मुझसे क्यों स्पष्ट कहलवाना चाहते है ? जब मैं कह दूंगा तो आप नाराज़ हो जाएँगे।

काहे पंडित पढ़ि-पढ़ि मरो, पूस अमावस की सुधि करो; मूल बिषाखा पूरबाषाढ़; झूरा जान लो बहिरे ठाढ़—पौष की अमावस्या को यदि मूल, विशाखा या पूर्वाषाढ़ नक्षत्र हो तो वर्षा नहीं होती।

किं करिष्यन्ति वक्तार: श्रोता यत्रन विद्यते—जब श्रोता ही नहीं तो वक्ता का क्या काम। अर्थात् जिस स्थान पर किसी बात के समझने वाले न हों वहाँ पर उसे नहीं कहना चाहिए।

कितना अहिरा होय सयाना, लोरिक छोड़ न गावे गाना—अहीर चाहे कितना भी विद्वान् क्यों न हो किन्तु लोरिक ('लोरिक' एक युद्ध के वर्णन का काव्य है जिसमें लोरिक नामक अहीर की जो कि 'गौरा' नगर का निवासी था, लड़ाई पिपरी के राजा से होती है।) के अतिरिक्त और कोई गीत नहीं गाता। (क) अपनी जाति की प्रशंसा करने वालों को कहते हैं। (ख) लकीर के फ़कीर को भी कहते हैं जो कि पुरानी वस्तुओं को ही पसन्द करता है। तुलनीय : भोज० कितनो अहिरा होहि सयाना, लोरिक छोडि न गावे आना।

कितना भी कूदो पैर ज़मीन पर ही पड़ेंगे—(क) कितना भी दूर रहना चाहो पर रहना समाज में ही है। (ख) जब कोई व्यक्ति किसी कार्य या किसी मुसीबत से बचने के लिए अनेक प्रयत्न करे फिर भी उससे बच न सके तो उसके प्रति ऐसा कहते हैं। (ग) कोई कितना भी उपाय क्यों न करे पर एक-न-एक दिन सबको मरना है। तुलनीय : छत्तीस० सिरगा कूदै, भुंये पाँव; पंज० जिन्ना मरजी कुदो पेर लग्गी उत्ते पैणगे।

कितना होय अहीर सुजाना, बिरहा छाँड़ि न गावै गाना—दे० 'कितना अहिरा होय सयाना लोरिक छोड…'।

कितनो अहिरा पिंगल पढ़े, एक बात जंगल के कहे—अहीर कितना भी छन्द-शास्त्र क्यों न पढ़े, लेकिन जंगल में गौ चराने के अनुभव की बात एकाध बार कह ही देगा। अर्थात् मूर्ख की मूर्खता कहीं-न-कहीं अवश्य प्रकट हो जाती है, चाहे कितना ही पढ़-लिख क्यों न ले। तुलनीय : मैथ० कनबो गोआर पिंगल पढ़ै एक बात जंगल के कहे; भोज० अहिर होइ केतनो सयाना, लोरकी छोड न गाइ गाना; सं० तावच्च शोभते मूर्खो यावत्किंचिन्न भाषते।

कितनो अहिरा होय सयाना, लोरकि छोड़ न गाई गाना—दे० 'कितना अहिरा होय सयाना लोरिक छोड…'।

कितनो चिड़िया उड़े अकास, फिर करे धरती की आस—चिड़िया आकाश में भले ही बहुत दूर तक उड़े, किन्तु पुन: उसे धरती पर आना ही पड़ेगा। आशय यह है कि स्थायी संबंधी कभी भी छोड़ा नहीं जा सकता। तुलनीय: भोज० चिरई केतनो ऊप्पर उड़ी आखिर में जमिनिएँ पर आई।

कि दुख जाने दुखिया कि दुखिया की माय—दु:ख की अनुभूति दु:खी की माता को या जिस पर दु:ख पड़ा है उसी को हो सकती है।

किमार्द्र कवणिजो वहित्रचिन्तया:—अदरक के बेचने वाले का जहाजों से क्या काम ? तात्पर्य यह है कि दोनों का क्षेत्र बिल्कुल भिन्न है। जब कोई व्यक्ति किसी से ऐसे काम या वस्तु के विषय में चर्चा करे जिससे उसका कोई सम्बन्ध या मतलब न हो तब ऐसा कहते है।

किमाश्चर्यमत: परम्—इससे अधिक आश्चर्य और क्या होगा। जब कोई व्यक्ति बहुत आश्चर्यजनक बात कहता है तब ऐसा कहते हैं।

किया कराया यश नहिं पाया—जब सब कुछ करने के बावजूद सब लोग निन्दा या शिकायत करते हैं तब कहते

हैं।

किया कराया, सब गुड़ माटी—सब किया-कराया काम बिगड़ जाता है तब कहते हैं। तुलनीय : अव० करा करावा सब माटी होय गवा; हरि० करा कराया सब गुड़-गोब्बर; हरि० खांड का पाणी हो ज्याणा; पंज० कीता कराया मिट्टी बिच मिलाया।

किया चाहे आशिक़ी बाबूजी का डर—दे० 'करना चाहे आशिक़ी···'।

किया चाहे चाकरी राखा चाहे मान—नौकरी भी करना चाहते हैं और मान या अकड़ के साथ रहना भी जो दोनों एक साथ नही हो सकते। जब कोई लाभ भी प्राप्त करना चाहता है और उसके लिए कष्ट भी सहना नही चाहता तब उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मरा० चाकर म्हणून शह्यचें म्हणे भट्टा राव म्हणा; पंज० बनवा चांइदा नौकर रखना चांदा मान।

किया चाहे चाकरी, सोया चाहे घर —ऊपर देखिए।

किया जाने बहू, सास समझे सब किया—सास समझती है कि बहू ने सब काम कर लिया है किन्तु जो किया है वह तो बहू को मालूम है। जब कोई व्यक्ति सही ढंग से कार्य न करे और कार्य कराने वाला समझे कि कार्य ठीक ढंग से हो रहा है तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भीली—वऊ जाणे वीशल्यू, हाऊ जांणे धोय्यू; पंज० कीते दा बौटी नूं पता सस मोने सब कर लिया।

किया, पर कर न जाना, मैं होती तो कर दिखाती —कोई स्त्री पर-पुरुष से प्रेम करके परेशानी में फँस गई। दूसरी स्त्री ने कहा कि तुमने प्रेम किया लेकिन करना नहीं जाना। मैं होती तो करके दिखा देती कि यह काम कैसे किया जाता है। अर्थात् बुराई करके उसे छिपा लेना सबके वश का नहीं।

किया, बुरा किया, छोड़ दिया और भी बुरा किया —अस्थिर चित्त वालों के प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : कौर० कर्‌या तो बुरा कर्‌या, करकै छोड्या और बुरा कर्‌या; पंज० कीता बुरा कीता, छडया और बी बुरा कीता।

किरती एक जबूकड़ो, औगत सह गलिया—कृतिका नक्षत्र में बिजली की चमक सौ अपशकुनों को दूर कर देती है।

कि रुई, कि धूई, कि दूई—जाड़े का आनन्द तभी आता है या जाड़ा तभी कटता है जब या तो रुई अर्थात् रजाई आदि हो या आग हो या दूई अर्थात् दम्पति हों।

किरिया और तरकारी खाने ही के बा—सौगन्ध (किरिया) और तरकारी खाने के लिए ही होती हैं। जो बहुत सौगन्ध खाता है उसके लिए कहते हैं।

क़िला फ़तह कर आए—जब कोई साधारण काम को करके अपनी तारीफ़ करे तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

क़िले और पेट उन्हीं के जो पहल करें—जो क़िले पर पहले अधिकार कर ले क़िला उसी के अधिकार में रहता है। भोजन करने में भी जो पहले-पहल हाथ मारते हैं उन्ही का पेट भरता है, बाद वाले प्रायः भूखे रह जाते हैं। आशय यह है कि किसी काम में जो आगे रहता है वही उचित लाभ प्राप्त कर पाता है। तुलनीय : राज० कोट पेट रुंधे जकांरा; पंज० किले अते टिड उनांदे जिहड़े पैल करण।

कि शादी कि बादी—धन या तो विवाह में खर्च होता है या लड़ाई मुक़द्दमे आदि में।

किसका-किसका धरें नाँव, ककरी ओढ़े सारा गाँव—सारे गाँव के लोग जब कम्बल ओढ़े हैं तब नाम किसका-किसका रखा जाय। अर्थात् जब पूरा गाँव मूर्ख है तब किसे दोषी ठहराया जाय। तुलनीय : मैथ० केकर केकर धरी नांव कमरी ओढ़ले सगरो गांव; भोज० केकर केकर लेईं नांव कमरी ओढले सर्ज्जा गाँव।

किसका-किसका लेवें नाँव, कम्बल ओढ़े सारा गाँव—ऊपर देखिए।

किसकी खोपड़ी है ? —पता नही इस आदमी के सिर में किसका दिमाग़ रखा है। (क) जो व्यक्ति बहुत बक-बक करते हों उनके प्रति कहते हैं। (ख) जो व्यक्ति नित नई खुराफ़ात करें उनके प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : राज० क्यांरी कुपाली है; पंज० किसदी खोपड़ी है।

किसकी छाती काला बाल—कौन अपने को वीर समझता है। (क) बलवान व्यक्ति ऐसा कहता है कि किसके अन्दर इतनी हिम्मत है जो मुझसे टकराए। (ख) जब किसी कार्य को करने के लिए कोई तैयार नही होता तो उत्तेजित करने के लिए ऐसा कहते हैं।

किसकी बकरी कौन डाले घास—अपनी वस्तु की हरेक रक्षा करता है, किन्तु दूसरे की वस्तु को कोई सँभालकर नहीं रखता।

किसकी माँ ने धौंसा खाया—जब किसी को चुनौती देनी होती है तब कहते हैं। तुलनीय : राज० कैरी माँ सूंठ खायी है; हरि० किसकी माँ न दूध प्या राख्या से; पंज०

किस दी माँ ने दुद पीता है ।

किसके सिर पर सिर मुंडवा दिया—किसके मरने पर सिर के बाल मुँड़वा दिए । किसी संबंधी की मृत्यु हो जाने पर बाल-मूँछें आदि मुँड़वा दिए जाते हैं । परिहास करने के लिए ऐसा कहते हैं । तुलनीय : राज० केसरिया केरै ऊपर वणिया ।

किस खेत का बथुआ है—नगण्य व्यक्ति के प्रति कहते हैं ।

किस खेत की मूली है—नगण्य मनुष्य को कहते हैं जिसकी कोई भी परवाह न करता हो । तुलनीय : मरा० कुठल्या शतांचा मुळा; अव० कौने खेते कै मूरी अहे; हरि० किस खेत की मूली; पंज० किस खेत दी मूली है ।

किस गली का कुत्ता है—(क) जो व्यक्ति दर-दर दर खाक छानता फिरे उसके प्रति कहते है । (ख) जिस व्यक्ति की कोई इज्जत न करता हो उसके प्रति भी कहते हैं । (ग) जिससे किसी प्रकार का भय न हो उसके प्रति कहते हैं ।

किस जनम के काले तिल चाबे हैं—(क) काले बाल रखने का उपाय कब से किया है जो अब तक एक बाल भी सफेद नही । (ख) किस समय से आज्ञाकारिता का व्रत लिया है ?

किसने अपनी माँ का दूध पीया है—अर्थात् जो बहादुर हो सामने निकल आए । किसी कठिन कार्य को करने को तैयार करने के लिए या लड़ाई-झगड़े में कहते हैं । तुलनीय : पंज० किसने अपनी माँ दा दुद पीता है ।

किसने तुम्हें पीले चावल भेजे थे—नीचे देखिए ।

किसने सुपारी भेजी थी—तुम्हें किसने दावत दी थी या बुलवाया था । जो व्यक्ति स्वयं ही किसी काम को करे और उसका अहसान भी जताए तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं । तुलनीय : राज० कुण पीला चावल भेज्या हा; पंज० कुन सादा दिता सी ।

किस पर करूँ सिंगार पिया हो मोर आन्हर—दे० 'का पर करूँ सिंगार ...'।

किस बिरते पर तत्ता पानी—जब किसी की माँग उसकी पात्रता से अधिक होती है तब कहते हैं । (क) माता अपने निखट्टू पुत्र के प्रति कहती है । (ख) स्त्री अपने नपुंसक पति के प्रति कहती है । इस सम्बन्ध में एक कहानी है : एक व्यक्ति का विवाह हुआ किन्तु सुहागरात को उसने कुछ नहीं किया । प्रातःकाल जब उसकी माँ दुलहिन के स्नान के लिए गरम पानी लेकर आई तो दुलहिन ने अपनी सास से कहा, 'किस बिरते पर तत्ता पानी ?' तुलनीय : अव० कौने बिरते पर करौ ।

किस बिधि मेरा गूंगा बोले—कार्य की सिद्धि किस प्रकार होगी ? इस अर्थ में इस लोकोक्ति का प्रयोग किया जाता है । तुलनीय : गढ़० कैं बुधि मेरा लाटा बाच आव; भोज० कैसे चली मोर लंगड़ुवा ।

किसान उपजाय, बनिया पाय, बनिया-पूत खाय—किसान अन्न उत्पन्न करता है और उसे ले जाता है बनिया। किन्तु बनिया भी उसे भोग नहीं पाता, वह भी कंजूस होने के कारण उसे छोड़ जाता है । अन्त में उसका पुत्र ही उसका भोग करता है । परिश्रम करने के उपरान्त भी जो व्यक्ति सुख-भोग नहीं कर पाता तथा उसके परिश्रम का लाभ दूसरे उठाते हैं तो उसके प्रति कहते हैं । तुलनीय : भीली० करसो हाथ कमावे वाणज्या ना बेटा हारु ।

किसान खाय बाजरा, बनिया खाय गेहूँ—जो किसान परिश्रम करके गेहूँ पैदा करते हैं उनको तो खाने के लिए मोटा अनाज (बाजरा) मिलता है और बनिए जो कि अपनी दुकान के भीतर ही बैठे रहते हैं गेहूँ खाते हैं । जब कोई अपने किए हुए परिश्रम से कुछ भी सुख न उठा पाए और दूसरे उससे सुख भोगें तो उसके प्रति कहते हैं । तुलनीय : राज० कूरा करसा खाय गेहूँ जीमै वाणिया ।

किसान चाहे वर्षा, कुम्हार चाहे सूखा—एक ही चीज़ एक व्यक्ति के लिए लाभकर तथा दूसरे के लिए हानिकर होती है । यदि किसान फ़सल के अच्छे होने के लिए वर्षा की प्रार्थना करता है तो कुम्हार सूखे की इच्छा करता है । आशय यह है कि एक वस्तु सभी के लिए हितकर नही होती । तुलनीय : अं० One man's meat is another man's poison.

किसान जग की जान—किसान सारे संसार के लिए अन्न उपजाते हैं, इसलिए उनके प्रति ऐसा कहते हैं ।

किसान मैदान की घास है—मैदान की घास को सभी रोंदते हैं । भारतीय किसान बहुत सहनशील और दब्बू होते हैं, इसीलिए उनके प्रति कहते हैं । तुलनीय : गढ़० जिमदार चौड़ की दूब छ; पंज० किसान खेत दा काह है ।

किसी का आवा बिगड़े, इनका खदाने का खदाना बिगड़ गया—(क) जब किसी का थोड़ा नुक़सान हो और दूसरे का अधिक तब कहते हैं । खदाना उस स्थान को कहते हैं जहाँ से कुम्हार मिट्टी खोदकर लाता है । (ख) किसी के घर का एक व्यक्ति खराब हो और दूसरे के घर के सब-के-सब बिगड़ गए हों तो भी कहते हैं ।

किसी का घर जले, कोई आग तापे—जब कोई मनुष्य दूसरे की विपत्ति पर हँसता है या उससे फ़ायदा उठाना चाहता है तब कहते हैं। तुलनीय : **मैथ०** केहू के घर जरे केंहू आगि तापे; **भोज०** केहू क घर जरे केहू आग तापे; ब्रज० काऊ कौ घर जरै, कोई तापै; पंज० कर किसे दा फकौया हथ कोई सेके।

किसी का घर जले केहू हाथ सेंके—ऊपर देखिए।

किसी का घर जले, गुंडे हाथ सेकें—जब कोई नीच दूसरे की तकलीफ़ पर हँसे या उससे लाभ उठाना चाहे तब कहते हैं। तुलनीय अव० केहू के घर बिगड़ै गुंडन हाथ साफ़ करें।

किसी का दिया नहीं खाते—जब कोई व्यक्ति किसी से बलपूर्वक कुछ कराना चाहता है तब वह ऐसा कहता है। (ख) जब कोई किसी पर अनायास रोब दिखाता है तब भी वह ऐसा कहता है। तुलनीय : माल० कंडा पेट्या थोड़ी आई र्या है; पंज० किसे दा दिता नई खांदे।

किसी का पेट दुखे किसी की पीठ—किसी का तो पेट दुखता है और किसी की पीठ। (क) जिसे खाने को अधिक मिलता है उसका पेट दुखता है तथा जिसे खाने को कम या बिल्कुल नहीं मिलता, कमज़ोरी के कारण उसकी पीठ दुखती है। (ख) जिसे खाने को नहीं मिलता, भूख के कारण उसके पेट मे दर्द होने लगता है और जो सम्पन्न लोग है, बैठे रहने या अधिक आराम करने से उनकी पीठ मे दर्द होने लगता है। ससार मे ऐसा बिरला ही होगा जिसे कोई दुःख न हो। तुलनीय : भोज० केहुक क पेट दुखाय केहुक क पीठ, पंज० किसे दे पिठ पीड़ किसे दे टिड बिच।

किसी का मुँह चले किसी का हाथ—कोई गाली देता है, कोई मार बैठता है। दो आदमियों में झगड़ा होने पर अपनी शक्ति भर दोनो एक दूसरे को हानि पहुँचाते है। तुलनीय राज० केईरी जीभ चलै केईरा हाथ चालै; ब्रज० काऊ कौ मुँह चलै, काऊ का हात; पंज० किसे दा मुँह चले किसे दा हत्थ।

किसी का लड़का कोई मन्नत माने—लड़का किसी का है और मन्नत मानता है कोई। अनधिकार चेष्टा या काम पर कहते है। तुलनीय : अव० कोनो केर लड़िका, मनवाती माने केहू; पं० किसे दा मुंडा मन्नत मन्ने कोई।

किसी का हाथी मरे, किसी की हंड़िया फूटे—जब किसी व्यक्ति का बहुत अधिक नुक़सान हो जाए और किसी का थोड़ा सा नुक़सान हो फिर भी उसके (पहले व्यक्ति के) समान ही दुखी हो या फिर भी उसकी हानि से अपनी हानि की तुलना करे तो व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० किसे दा हाथी मरया किसे दी कुन्नी पड़ी।

किसी की कुछ नहीं चलती है जब तक़दीर फिरती है—विधि का विधान अमिट है वह होकर ही रहता है चाहे कोई लाख सर पटके। तुलनीय : मरा० दैव फिरलें की मग कुणाचें ही काही चलत नही; अव० कछु न बसाइ भएँ विधि बामा—तुलसी।

किसी की जान गई आप की अदा ठहरी—जब कोई विपत्ति में पड़ा हो और दूसरा कोई उसके दुख को कुछ भी न समझे तब कहते है।

किसी की जीभ चलती है तो किसी का हाथ—दे० किसी का मुँह चले···'। तुलनीय : बुंद० कोऊ की भीं चले कोऊ को हात चलै; गुज० केअरी जीभ चालै के ओरा हाथ चालै; मरा० कोणाचें तोंड चालतें कोणा वे हाथ चालतो; पंज० किसे दी जीव चलदी है किसे दा हाथ।

किसी की जोरू मरे, किसी को सपने आवे—जिसकी पत्नी मरी है उसे तो कष्ट नहीं है किन्तु दूसरे को वह स्वप्न में दिखाई पड़ती है। जब किसी व्यक्ति को किसी दूसरे के स्थान पर परेशान किया जाय तो इस तरह कहते हैं। तुलनीय : मेवा० कींकी रॉंड मरे अर कीं के सपने आवे। पंज० किसे दी बौटी मरे किसे नूँ सुपने बिच आवे।

किसी की टोकरी अनाज को, किसी की सोने-चांदी को—किसान अपनी टोकरी मे अनाज भर कर रखता है और उसी के बल पर उसका महाजन उन्हीं टोकरियों में रुपये-पैसे या सोना-चांदी भर कर रखता है। जब एक ही वस्तु की भिन्न-भिन्न जगहों पर भिन्न-भिन्न क़ीमत होती है या जब एक ही वस्तु का भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में विभिन्न रूपों में उपयोग होता है तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० केको डालो सुप्पो, केको सोनो रूपों।

किसी की नाक टेढ़ी, किसी की आँख टेढ़ी—(क) प्रत्येक व्यक्ति मे कोई-न कोई कमी होती है। (ख) जब किसी परिवार या गाँव के सभी व्यक्ति बुरे होते है तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मैथ० केओ नाके टेढ़ केओ नक-मुन्हिए चेढ; पंज० किसे दी नक डींगी किसे दी अँख डींगी।

किसी की बहू और कोई गहना बदलवाए—दे० 'किसी का लड़का कोई···'।

किसी की भेड़—जब कोई स्वार्थी दूसरे की चीज़ ईमानदार बनकर हड़पने की चेष्टा करे तब ऐसा कहते हैं। इस संबंध मे एक कहानी है, जो इस प्रकार है : एक बार

एक मुल्ला को एक भेड़ मिल गई। उसे देखकर उसके मुँह में पानी भर आया। वह भेड़ को अपनाने का उपाय सोचने लगा। उसने उसे सीधे हड़प लेना अच्छा नही समझा। अतः मस्जिद पर चढ़कर चिल्लाने लगा, 'किसी की भेड़'। 'किसी की' ज़ोर से बोलता था पर 'भेड़' शब्द बहुत धीमे स्वर मे कहता था। इस प्रकार तीन-चार बार आवाज़ लगाकर मुल्ला ने भेड़ को हड़प लिया।

किसी की मेहनत जाया नहीं जाती -- अर्थात् किसी का परिश्रम विफल नहीं होता। तुलनीय : पंज० किसी दी मेहनत बेकार नई जांदी।

किसी की साई, किसी को बधाई— बयाना (साई) किसी से लिया और बाजा किसी और के यहाँ बजाया। वादाखिलाफ़ और धोखेबाज़ व्यक्ति के प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० किसी दी साई किसे नूं बधाई।

किसी की 'हाँ में हाँ' नहीं मिलानी चाहिए (क) किसी की चापलूसी नहीं करनी चाहिए। (ख) किसी की बातों का अंधानुकरण नहीं करना चाहिए। तुलनीय : भीली कणा भड़े बँधाई ने ने बोलवो, भारलाए जोर लागे; पंज० किसे दी हां विच हां नई करनी चाइदी।

किसी के किये में घी धड़े, किसी के किये में पत्थर पड़े --एक ही काम यदि कोई धनवान या सक्षम व्यक्ति करता है तो उसकी ख्याति होती है और यदि वही कार्य कोई निर्धन या अभागा करे तो निन्दित होता है।

किसी के क्या दबैल बसते हैं ? --हम क्या किसी से दबे है ? जब कोई किसी की धौंस में आने से इन्कार करता है तो अनायास आक्रोश दिखाते हुए तब वह ऐसा कहता है।

किसी के घर आग लगी और कोई हाथ सेंकने लगा -- दे० 'किसी का घर जले कोई तापे।' तुलनीय : भोज० केहुक घरे आग लागल बा केहु हाथ सेकत बा; आग लागे गुंडा गांड़ सेंके; ब्रज० काउ के घर आगि लगी और कोई हात सेकिके लग्यौ ऐ।

किसी के पौ बारह, किसी के तीन काने --जब किसी को फ़ायदा और किसी को नुक़सान होता है तब कहते हैं।

किसी के बाप का क़र्ज़ नहीं खाया है---मैंने किसी का कुछ लिया नहीं है जो किसी से दब कर रहूँ। जब कोई व्यक्ति बिना कारण ही किसी को दबाना चाहे तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : माल० कण्डा बाप री खाद खादी है; पंज० किसे दे पिओ दा करजा नई खादा।

किसी के मुँह नहीं लगना चाहिए-- किसी से भी छोटी-छोटी बातों में उलझना नहीं चाहिए क्योंकि उससे अपना ही अपमान होने का भय रहता है। तुलनीय : भीली० कणा ने मूँडे नी लागवू, मनाव ने मूँडा माँये जीभ आवे जीभ बोली जाए; पंज० किसे दे मूंह नई लगना चाइदा।

किसी को कर या किसी का हो---सुखी जीवन बिताने के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति या तो किसी को अपना बना ले या किसी का कृपापात्र या प्रिय बन जाय। तुलनीय : माल० केक तो कंडो वेई रेणो, केक कणी ने करी राखणो।

किसी को अपना कर रखो या किसी के हो रहो---ऊपर देखिए।

किसी को तवे में दिखाई देता है, किसी को आरसी में -- जब किसी की बुद्धिमानी दूसरे से अधिक मालूम पड़ती है तब कहते हैं। आरसी में तो सभी अपना मुँह देखते है, पर जब कोई तवे में अपना मुँह देख सके तब उसकी बुद्धि सराहनीय है। तुलनीय : पंज० किसे नूँ तवे विच लबदा है किसे नूं सीसे विच।

किसी को धमका कर कुछ नहीं पूछना चाहिए--- धमका कर पूछने से सच बात का पता नहीं चलता और बताने वाला डर कर झूठ बोलता है। तुलनीय भीली--- कणए दबावी ने बात नी करवी; पंज० किसे नूं तमका के कुछ नई पूछना चाइदा।

किसी को बैंगन बायु तो किसी को बैंगन पथ्य-- किसी के लिए बैंगन हानिकारक होता है तो किसी के लिए लाभदायक। अर्थात् एक ही वस्तु किसी के लिए नुकसानदेह होती है तो किसी के लिए फ़ायदेमंद। तुलनीय मैथ० काऊ खों भटा बायले काऊ खों पथ्य बरोबर; भोज० केहुके बैंगन कुपथ है केहुके पथ, केहू का भंटा पँथ केहू का भंटा कुपंथ; छग० ककरो ला बइगन पथ, ककरो ला बेआला; अव० कौनो को भाँटा जहर, कौनो का पंथ; हरि० किसै नै बैंगण पच्च, किसै नै कुपच्च; बुंद० काऊ खो भटा बायले-बायले काऊ खों पित्त करें; हाड़० कोई न बंगण बायड़ा, कोई न बगण पच; पंज० किसे लई बतऊँ चंगे किसे लई माड़ें; ब्रज० काऊ कू बैंगन वायु बराकरि, काऊ कूं बैंगन पच बराकरि; अं० One man's meat is another man's poison.

किसी ने कमाया, किसी के समाया कमाए कोई और खाए कोई। जहाँ किसी भले आदमी की पूँजी को उसके भाई-बंद या मित्र उड़ा जाएँ तो उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० केदार न कमायो, मधु न समायो; पंज० किसे ने कमाया किसे ने खादा।

किसी ने पैदा किया, किसी को दुख—किसी चीज़ को किसी ने परिश्रम करके अर्जित किया और कोई उसे देखकर द्वेष करता है। जब कोई व्यक्ति किसी की उन्नति या प्रगति को देखकर ईर्ष्या करता है तब ऐसा कहते है। तुलनीय : राज० कैरा जायोड़ा, कैने दुख दे; पंज० किसे ने पैदा कीता किसे नूं दुख।

किसी ने यह भी नहीं पूछा कि तुम्हारे मुंह में कै दांत हैं—(क) जब किसी की तकलीफ़ में कोई साथ न दे तब कहते हैं। (ख) जिस व्यक्ति का कोई भी आदर न करे उसके प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : हरि० किसे न आकै न्यू भी न बूझी के मरै स अक जीवै स; पंज० किसे नें इह नईं पुछया तेरे मुंह बिच किन्ने दंद हन; ब्रज० काऊ नें नायें पूछी कै तेरे मुँह में कै दाँत हैं।

क़िस्मत का खेल है—भाग्य राजा को रंक और रंक को राजा बना देता है। जब कोई निर्धन व्यक्ति बहुत धनी हो जाता है या कोई धनी व्यक्ति बहुत ग़रीब हो जाता है तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० किसमत दी खेड है।

क़िस्मत किसने देखी है—भविष्य अज्ञात होता है, उसके विषय में कोई कुछ नहीं कह सकता या कुछ नहीं जानता। तुलनीय : पंज० किसमत किन दिखी है; ब्रज० किस्मत कौनें देखी है।

क़िस्मत दे यारी, तो क्या हो ख्वारी?—यदि भाग्य साथ दे तो परेशानियाँ क्यों झेलनी पड़ें?

क़िस्मत दे यारी तो क्यों करे फ़ौजदारी—ऊपर देखिए।

क़िस्मत दो क़दम आगे चलती है—जब कोई व्यक्ति निरंतर परिश्रम करने के बाद भी सफल नहीं हो पाता तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय . राज० नसीब दो पग आगे-रो-आगे।

क़िस्मत में नहीं तो कहीं भी नहीं—यदि भाग्य में कुछ नहीं है तो चाहे कितना भी परिश्रम और दौड़-धूप की जाय कुछ नहीं मिलता। भाग्यवादी इस तरह कहा करते हैं। तुलनीय : भीली - एवां मोरे जाई ने घणूं खाहें करम ने कूला हाथें हैं; पंज० किसमत बिच नईं तां किते वी नईं।

क़िस्मत में ना रोटी, मांग रहे हैं बोटी—भाग्य में तो सूखी रोटी भी नहीं है और चाह रहे हैं मांस। जो व्यक्ति अपनी औक़ात से अधिक चाहे उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : पंज० किसमत बिच नईं सुककी मंगण चुपड़ी।

क़िस्से में साग जल गया—बातों में ही काम बिगड़ गया। जब कोई व्यक्ति बातें करने में ही लीन रहता है और अपने कार्यों की ओर ध्यान नहीं देता तब काम बिगड़ जाने पर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मैथ० किस्सै में साग जरि गेल; भोज० बतियवते-बतियावत साग जरि गइल; पंज० गलाँ बिच साग सड़ गया।

कि हंसा मोती चुगे, कि भूखा मरि जाय—दे० 'कै हंसा मोती चुगे ···'। तुलनीय : ब्रज० कै हंसा मोती चुगै कै भूखों मरि जाय।

किहूँ भाँति सोहत नहीं, केहरि ससक विरोध—ख़रगोश (ससक) और शेर (केहरि) का विरोध किसी प्रकार भी शोभा नहीं देता। अर्थात् विरोध या बैर बराबर वालों का ही अच्छा होता है।

कीकर पाथा, सिरस हल, हरियाने का बैल; लोधा डाली लगाय के, घर बैठा चौपड़ खेल—जिस किसान के पास बबूल (कीकर) की लकड़ी का पाथा (खोंपा), सिरीष (लकड़ी विशेष) का हल, हरियाणे का बैल, लोधा (वृक्ष विशेष) की डाली हो, वह आनंद से घर में बैठकर चौपड़ खेल सकता है। अर्थात् उसकी खेती अवश्य अच्छी होगी।

कीचड़ में पत्थर मारने से छींटे ही पड़ेंगे—यदि कोई आदमी कीचड़ में पत्थर मारेगा तो उसके ऊपर छीटे अवश्य पड़ेंगे। (क) बुरे काम का फल बुरा ही मिलता है। (ख) बुरे आदमियों से कुछ कहने-सुनने पर गालियाँ ही सुनने को मिलती हैं। तुलनीय : माल० कीचड़ में भाटो फेंकी ने छांटा उड़ावणा; भीली - गादा मांए जाणी ने पड़े ते फचड़का उड़ेज; गढ़० कीचमां हाणे, मुख पे लगे; पंज० गू नू छेड़ के छिट्टे ई पैंदे ने।

कीचड़ में मारने से, मुख पर ही छींटे पड़ते हैं—दे० 'कीचड़ में पत्थर मारने से···'।

कीचड़ से कमल पैदा होता है—(क) बुरे स्थानों में भले व्यक्ति भी मिलते हैं। (ख) ग़रीब परिवारों में ही अच्छे लोग पैदा होते हैं। तुलनीय : गढ़० महर गंधिलो ध्यू सुंधिलो; पंज० गारे बिच कमल जमदा है; ब्रज० कीच ते कमल पैदा होयै।

कीचहि मिलइ नीच जल संगा—जिस प्रकार तालाब या नदी का जल स्वच्छ दिखाई देता है परन्तु उसकी तली में कीचड़ पाया जाता है उसी प्रकार अच्छे लोगों में भी कुछ दोष पाए जाते हैं। आशय यह है कि गुण-दोष सभी व्यक्तियों या वस्तुओं में पाये जाते हैं।

कीजे कहा पयोधि को जातें प्यास न जाय—कोई कितना ही समर्थ और वैभवशाली क्यों न हो किंतु यदि किसी के काम न आए तो बेकार है। जिस प्रकार समुद्र की मर्यादा

इतनी बड़ी है पर उसमें किसी की प्यास को शांत करने की शक्ति नहीं है।

कीट मनोरथ दारु सरीरा, जेहि न लाग घुन को अस धीरा---संसार में कोई ऐसा धीरज वाला व्यक्ति नहीं है जिसकी शरीर रूपी लकड़ी में मनोरथ रूपी घुन न हो। अर्थात् ऐसा व्यक्ति मिलना असंभव है जिसके हृदय में कोई भी इच्छा न हो।

कीटी को कन हाथी को मन---चींटी (कीटी) को कण तथा हाथी को मन भर आहार मिल जाता है। अर्थात् जो ईश्वर सृष्टि की रचना करता है वह सभी प्राणियों के भोजन आदि की भी व्यवस्था करता है। तुलनीय : हरि० कड़ी नै कण, हात्थी नै मण; ब्रज० कीटी कूं कन हाती कूं मन; पंज० कीड़ी नूं कण हाथी नूं मण।

कीड़ी ऊपर कटक-- चीटी पर कटक (पर्वत का मध्य भाग) का बोझ रखना मूर्खता है। जब किसी अयोग्य व्यक्ति को बहुत महत्वपूर्ण काम दिया जाता है तो व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : पंज० कीड़ी उत्ते पहाड़।

कीड़ी संचे तीतर खाय, पापी का धन पर ले जाय---जिस प्रकार चींटी का एकत्र किया हुआ अन्न तीतर खा जाते हैं, उसी प्रकार पापी का धन दूसरे खा जाते हैं। तात्पर्य यह है कि पाप की या मुफ़्त की कमाई किसी को सुख नहीं देती, वह जिस तरह आती है उसी तरह चली भी जाती है। तुलनीय : मेवा० कीड़ी संचे तीतर खाय, पापी को धन पर लै जाय; फ़ा० माले-हराम बूद बजा-ए-हराम रफ़्त; अं० Ill gotten, ill spent.

कील कांटे से दुरुस्त है--- बिल्कुल तैयार है। जो व्यक्ति आने वाले काम के लिए पूर्णरूपेण तैयार हो उसके प्रति कहते हैं।

की सोवे राजा का पूत, की सोवे जोगी अवधूत---या तो राजकुमार ही आनन्द से रहता है, या योगी चैन से सोते हैं। अर्थात् वे ही सुखी रहते हैं जिन्हें किसी प्रकार की चिन्ता नहीं होती।

कुंआरी को सदा बसंत---वेश्याओं के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

कुंआरी खाय रोटियाँ, ब्याहीं खाय बोटियाँ---कुंआरी (क्वाँरी) लड़की तो सिर्फ रोटियाँ ही खाती हैं पर विवाहित लड़की बाप की बोटियाँ खा जाती है, क्योंकि विवाह हो जाने पर ससुराल जाते समय या अन्य अवसरों पर भी बाप को उसे कुछ-न-कुछ देना पड़ता है। आशय यह है कि कुंआरी लड़की की अपेक्षा विवाहित लड़की का भार माता-पिता पर अधिक रहता है। तुलनीय : अव० कुंआरी खाय रोटी, बियारी खाय बोटी।

कुंजड़न की अगाड़ी और कसाई की पिछाड़ी -- यदि तरकारी अच्छी चाहते हो तो कुंजड़े के पास पहले पहुँचो, क्योंकि उस समय ताज़ी तरकारी मिलती है, और यदि मांस अच्छा चाहते हो तो क़साई के पास बाद में जाओ क्योंकि वह अच्छा मांस अन्त में बेचता है।

कुंजड़िन अपने बेर को खट्टा नहीं कहती-- अपनी वस्तु को कोई बुरा नहीं कहता। तुलनीय : अव० कुंजडिन अपने बैर का खट्टा नही कहत; हरि० अपणे गीत न कोये खाट्टा नाह बताता।

कुंजड़िन अपने बेर को खट्टा नहीं बतावति --ऊपर देखिए।

कुंभे आवे मीने जाय, पेड़े लागे पालो खाय-- पौधों में 'गेरुई' रोग फाल्गुन में तने से आरंभ होता है और चैत्र में पत्तियों को खाकर समाप्त हो जाता है।

कुआं खोदते को खाता तैयार-- दूसरों की बुराई करने वाले को भी हानि अवश्य पहुँचती है।

कुआँ जात नहिं प्यासे पास--कुआँ प्यासे के पास नहीं जाता, बल्कि प्यासा कुएँ के पास जाता है। जिसको आवश्यकता होती है वही ऐसे के पास जाता है जो उसकी आवश्यकता पूरी कर सके। तुलनीय : पंज० खू तरयाये कोले नई जांदा।

कुआँ जिनके खेत, अकाल न उनका लेत---जिनके खेत में कुआँ होता है उनका अकाल कुछ भी नहीं बिगाड़ पाता। कुएँ से सिंचाई करने वाले पर वर्षा न होने पर भी कोई प्रभाव नहीं पड़ता। अर्थात् साधन-सम्पन्न व्यक्ति का कुछ नहीं बिगड़ता। तुलनीय : भीली---जणा ने गेर मांल, जणा ने गेर काल नी; पंज० खू जिसदे खेत अकाल न उसदा कुछ लेवे।

कुआँ प्यासे के पास नहीं जाता---दे० 'कुआँ जात न...'।

कुआँ बावली लाँघते फिरते हैं---जो बिना कारण ही मारा-मारा फिरे या मुसीबतों में फँसे उसके प्रति कहते हैं।

कुआँ बेचा है, कुएँ का पानी नहीं बेचा - निरर्थक वाद-विवाद बढ़ाने के लिए प्रस्तुत किया जाने वाला तर्क। तुलनीय : ब्रज० कूआं बेच्यौ ऐ, पानी नायें बेच्यौ।

कुआँ या गुंबद की आवाज---कुएँ के भीतर और गुंबद के अन्दर से बोलने पर वही आवाज़ फिर से प्रतिध्वनित होती है। तात्पर्य यह है कि इस संसार में जैसा

तुम दूसरों के साथ व्यवहार करोगे, उसी तरह तुम्हारे साथ भी होगा। तुलनीय : पंज० खू या बुर्जी दी आवाज।

कुआर जाड़े का दुआर—अर्थात् क्वार के महीने से जाड़ा प्रारंभ होता है।

कुएँ का कुएँ पानी लाया फिर भी रहा प्यासा—कुएँ का सारा पानी लाने पर भी प्यास नहीं गई। अर्थात् मनुष्य कितना भी धन-संग्रह क्यों न कर ले पर उसकी आत्मा सन्तुष्ट नहीं होती। लोभ-लालच की कोई सीमा नहीं होती। तुलनीय : कौर० कुए के कुए हंडा लावै, फेर बी तिसाया; पंज० खू दा खू पाणी लयांदा तांवी तरयाया।

कुएँ का ब्याह गीत गावै मसीद का—अवसरोचित बात न होने पर कहा जाता है। तुलनीय : हरि० कोये गावै होली के कोये गावै दिवाली के; पंज० खेलन होली गीत गाण दिवाली दे।

कुएँ का मेंढक—जिसको संसार का कुछ भी ज्ञान न हो उसके प्रति कहते है।

कुएँ का मेंढक कुएँ का ही हाल जानेगा—छोटे स्थान या कम पढ़े-लिखे लोगों के बीच रहने वाले व्यक्ति का ज्ञान बहुत सीमित होता है। तुलनीय : छत्तीस० कुंवा के मेंचका, कुवे के हाल ला जानही; ब्रज० कूआ की मैंढ़ का कूआ की ई बात जानेगो, पंज० खू दा डडू खू दा हाल ही जानेगा।

कुएँ का मेंढक समुद्र का हाल क्या जाने?—ऊपर देखिए। तुलनीय . प्र० केवट हँसे सो सुनत गवेजा; समुंद न जाने कूआ कर भेजा—जायसी।

कुएँ की छाया कुएँ में—कुएँ की छाया कुएँ के भीतर ही रहती है बाहर नहीं आती। (क) गंभीर मनुष्यों के दिल की बात कोई नहीं जान पाता। वे अपना भेद किसी को नहीं देते इसी से उनके प्रति कहते है। (ख) मित्र अपने मित्रों के अवगुण प्रकट नहीं होने देते। (ग) बड़े लोगों के घर की बात घर के भीतर ही रहती है, बाहर नहीं निकलने पाती। तुलनीय : बुंदे० कुआ की छांयरी कुअई में रत; पंज० खू दी छाँ खू बिच।

कुएँ की परछाईं कुएँ में रहती है—ऊपर देखिए।

कुएँ की माटी कुएँ भर को—जब किसी काम, व्यवसाय या वस्तु से की गई आमदनी उसी में पुनः खर्च हो जाय तो ऐसा कहते है। तुलनीय : पंज० खू दी मिट्टी खू नू।

कुएँ की माटी कुएँ में—ऊपर देखिए। तुलनीय : बुंदे० कुआ की माटी कुअई खों नई होत; मरा० दराची माती दराम पुरत नाहीं; ब्रज० कूआ की माटी कूआ में।

कुएँ की मिट्टी कुएँ में—दे० 'कुएँ की माटी कुएँ भर को।'

कुएँ की मिट्टी कुएँ में लग जाती है—दे० 'कुएँ की माटी कुएँ भर को'। तुलनीय : अव० कुआँ कै माटी, कुआँ मा लागत है; हरि० कूए की माट्टी कूए कै ए लाग्य ज्या; ब्रज० कूआ की माटी कूआ मे ई लगि जाय।

कुएँ की मिट्टी कुएँ ही में लगती है—दे० 'कुएँ की माटी....'। तुलनीय : मरा० विहिरीनी माती विहीरीच्याच कामी ये ते; अव० कुआँ कै माटी कुआं मा लागत है।

कुएँ पर गये और प्यासे आये—पूरी आशा लेकर किसी काम के लिए गये लेकिन निराश लौटे। बहुत अधिक अभागे के लिए कहते हैं।

कुएँ में की मेंढकी, करै सिन्धु की बात—रहती तो कुएँ मे है परन्तु बड़े सागर की बात करती है। (क) जब कोई व्यक्ति अपनी ज्ञान-गरिमा के बाहर की बात करता है तब ऐसा कहते हैं। (ख) जब कोई गरीब व्यक्ति अपनी सामर्थ्य के बाहर की बात करता है तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० खू दी डड्डी दरिया दी गल करे।

कुएँ में गिरा सूखा नहीं निकलता—कुएँ मे जो गिरेगा वह भीगकर ही बाहर निकलेगा। अर्थात् जो बुरा काम करेगा वह बदनाम भी होगा। तुलनीय : पज० खू बिच डिगया सुक्का नई निकलदा।

कुएँ में पानी होगा तो खेत ही में आएगा—यदि कुएँ में पानी होगा तो सिचाई के काम मे आएगा ही। (क) जब धन होगा तो परिवार के लिए ही खर्च होगा या जब साधन होगा तो वह उपयोग मे आएगा ही। (ख) अपने घनिष्ठ मित्र के प्रति भी कहते हैं कि यदि उसके पास अमुक वस्तु होगी तो वह मुझे अवश्य देगा। तुलनीय : राज० कूवे में हुवै तो खेळी मे आवै, पज० खू बिच पाणी होवेगा तां खेत बिच ही आवेगा।

कुएँ में भाँग पड़ी है—जहां सबकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई हो वहाँ कहते हैं। अथवा जहाँ सभी मूर्खता की बातें करें वहाँ भी कहते हैं। तुलनीय : राज० कूवे भाँग पड़गी; अव० कुआँ मा भाँग घोर है; ब्रज० कूआ में भाँग परी है; पंज० खू विच भंग पयी है।

कुओं में बाँस डलवा दिए—बहुत छानबीन की। जब कोई व्यक्ति या वस्तु बहुत तलाश करने पर मिले तब व्यंग्य मे कहते हैं। तुलनीय . ब्रज० कूआन में बाँस डरवायि दिये।

कुकुर प्रयाग जायगा तो हँड़िया कौन चाटेगा—दुष्ट व्यक्तियों के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं कि यदि वे अच्छे

कर्म करेंगे तो बुराई या दुष्टता कौन करेगा ? तुलनीय : पंज० कुत्ते प्रयाग जाण गें तां कुन्नी कौण चट्टेगा।

कुकृत्ये को न पंडितः—कुकृत्य करने में कौन कुशल नहीं है, अर्थात् सभी हैं। बुरे काम कभी न कभी सभी से हो जाते हैं।

कुचकट पनही बतकट जोय, जो पहिलौठी बिटिया होय; पातर कृषी बौरहा भाय, कहैं घाघ दुःख कहाँ अमाय — फुनगी कटा हुआ जूता, बात काटने वाली स्त्री, पहिलौठी लड़की, हलकी खेती और पागल भाई ये सब दुखदायी हैं।

कुचाल संग फिरना, आप मूत में पड़ना—अर्थात् कुसंगति अच्छी नहीं होती।

कुचाल संग हाँसी, जीव जानकी फाँसी—बुरों के साथ हँसी करना खतरा मोल लेना है। तुलनीय . मरा० दुष्टासवें थट्टा मस्करी, लागे गळ्याचा दोरी; पंज० पैड़े नाल-हसना अपने आप फसना।

कुछ इन मूँछों को निभाओ—कुछ अपनी इज़्ज़त का भी ख्याल करो। जो व्यक्ति स्वार्थ के सम्मुख अपनी इज़्ज़त की भी परवाह न करे उसको कहते हैं।

कुछ कमान झुके, कुछ गोशा—कमान और गुन जब दोनों ही झुकते है, तब तीर छूटता है। (क) जब हिसाब में फ़र्क़ पड़ता है तो उसे निपटाने के लिए दोनों को कुछ-न-कुछ झुकना पड़ता है। (ख) किसी भी झगड़े को निपटाने के लिए दोनों पक्षों को झुकना पड़ता है। तुलनीय : मरा० धनुष्य कांही वांकते कांही (दोरी) वांकते।

कुछ खाया गाँव के चोरों ने, और कुछ बन के मोरों ने—सीधे व्यक्ति के प्रति कहते हैं क्योंकि उसे सभी नोचते-खसोटते रहते हैं। तुलनीय : गढ़० कुछ खायो गाँव का चोरुन कुछ बण का मोरुन; पंज० कुछ खादा पिड दे चोरां बाकी खादा मोरां ने।

कुछ खोकर ही अक़्ल आती है—(क) ठोकर खाने के बाद ही मनुष्य सुधरता है। (ख) ज्ञान प्राप्त करने के लिए मनुष्य को श्रम और समय खर्च करना पड़ता है। तुलनीय : मरा० कांही गमावल्यावरच अक्कल येते; पंज० कुछ गवा के ही मत्त आंदी है; ब्रज० कछू खोइकें ई अकलि आवै।

कुछ गुड़ ढीला, कुछ बनिया—जब कुछ माल खराब होता है और कुछ बनाने वाले खराब होते हैं तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० कुछ गुरु ढील कुछ बनिया; पंज० कुछ गुड़ टिला कुछ कराड।

कुछ गेहूँ सीले, कुछ जँदरे टीले—दे० 'कुछ तो गेहूँ गीला...'।

कुछ तुम समझे, कुछ हम समझे—जब एक व्यक्ति दूसरे की आंतरिक इच्छा समझ जाता है तब कहते हैं। इस सम्बन्ध में एक कहानी है : कोई पथिक सिर पर गठरी लेकर कहीं जा रहा था। गठरी भारी थी, अत: वह एक पेड़ के नीचे बैठ गया। संयोगवश उसी ओर से एक सवार आ निकला। पथिक ने कहा कि आप मेरी गठरी लेते चलिए मैं आगे जाकर ले लूँगा। सवार अनसुनी करके चल दिया। पथिक ने सोचा, अच्छा हुआ यदि वह मेरी गठरी लेकर भाग गया होता तो मैं क्या करता ? उधर सवार ने भी सोचा कि आई लक्ष्मी को मैने छोड़ दिया। सवार लौटकर आया और उसने कहा, 'लाइए गठरी लेता चलूं।' पथिक ने उत्तर में कहा, 'कुछ तुम समझे कुछ हम समझे, अब गठरी नहीं मिलेगी।' तुलनीय : हरि० कुछ तरह समझो कुछ हम समझे; ब्रज० कछू तुम समझे कछू हम समझे।

कुछ तो खरबूज़ा, मीठा, कुछ ऊपर से क़ंद पड़ा—कुछ तो खरबूज़ा मीठा था और उसके ऊपर मीठा पड़ गया जिससे वह और मीठा हो गया। (क) जब किसी लाभ के काम में और अधिक लाभ हो जाता है तब कहते हैं। (ख) जब कोई अच्छा काम हो और उसे करने वाला भी अच्छा मिल जाय जिससे वह काम काफ़ी सुन्दर हो जाय तब भी ऐसा कहते हैं। (ग) कुछ तो स्वयं लोभी हो और ऊपर से काम में लाभ भी बहुत हो जाए तो हवस और भी बढ जाती है तब भी इस लोकोक्ति का प्रयोग किया जाता है।

कुछ तो खलल है कि जिससे यह खलल है—जब कोई गुप्त रहस्य होने का सन्देह होता है तब ऐसा कहते हैं।

कुछ तो गेहूँ गीला, कुछ जिंदरी ढीला—कुछ तो गेहूँ गीला रहा और कुछ जिंदरी (गेहूँ पीसने का यंत्र) ढीला रहा जिससे आटा अच्छा नहीं पिस सकता। आशय यह है कि (क) जब दोनों ओर बुराई होती है तभी कोई काम बिगड़ता है। (ख) जब कार्य और उसे करनेवाला दोनों ख़राब होते हैं तब ऐसा कहते है।

कुछ तो बावली कुछ भूतों खदेड़ी—कुछ तो पहले से ही बेवकूफ़ है दूसरे भूत भी लग गए। जब कोई पहले से ही मूर्ख हो और परिस्थितियाँ भी वैसी ही हो जायँ तो कहते हैं। तुलनीय : पंज० पैलां ही पागल उतों पूतां खदेड़या।

कुछ दाल में काला है—जब किसी बात में सन्देह उपस्थित होता है तब कहते हैं। तुलनीय : अव० कुछ दाल मा काला है; हरि० किमै न किमै दाल में काला सै; पंज० दाल बिच काला है; ब्रज० कछू दारि में कारौ है।

कुछ दिए कुछ दिलाए कुछ का देना ही क्या है ?— किसी काम में टालमटोल करने पर कहते हैं।

कुछ दिया ही आगे आ गया— भगवान ने किसी पुण्य के कारण विपत्ति से बचा लिया। जब कोई व्यक्ति किसी विपत्ति या दुर्घटना या विपत्ति का शिकार होने से बच जाता है तब कहते हैं।

कुछ देर के लिए तो दानी बन - जो व्यक्ति बहुत कंजूस हो उसके प्रति कहते है। तुलनीय : राज० थोडी देर तो वण रतन; पंज० थोड़ी देर लई दानी ते बन।

कुछ दोष लोहे का, कुछ लोहार का भी—अर्थात् किसी काम की खराबी केवल कर्ता पर ही नही अपितु वस्तु पर भी निर्भर करती है। तुलनीय : मैथ० कुछ लोहो के दोस कुछ लोहारो के दोस; भोज० कुछ दोस लोहा क कुछ लोहार क।

कुछ न करने वाला दूसरे की खूब निंदा करता है— जिसे कुछ नहीं आता या जो दोषी होता है वह दूसरों की (जो कर्मठ या गुणी होते है) बुराई करता है। तुलनीय : मैथ० अढनी दुसलनि बढनी के चलनी दुसलनि सूप के; भोज० सूप क छीप चालन काटंस; पंज० कुछ नईं करन वाला दूजे दी बड़ी बेइजती करदा है।

कुछ न होने से थोड़ा अच्छा है- तुलनीय : मल० एल्लु तिन्नाल् एल्लोलम्; अं० Something is better than nothing.

कुछ न होने से बुरा ही अच्छा है—न होने से थोडा या बुरा ही अच्छा है।

कुछ बसंत की भी खबर है—(क) बसन्त मे खुशी न मानने वालों के प्रति कहते है। (ख) उन मनुष्यों के ऊपर व्यंग्य है जो दुःख के समय खुशी मनाते हैं। (ग) वास्तविक बात से अनभिज्ञ रहने पर भी कहा जाता है। तुलनीय : पंज० कुछ बसंत दा वी पता है।

कुछ मूसल नहीं बदलाना है—जब आदमी की ग़रज़ निकल जाती है तो वह किसी की बात नहीं सुनता। इस सम्बन्ध मे एक कहानी है : किसी समय एक मुसाफ़िर ने लुटेरों के भय से मूसल में अशर्फ़ियाँ रखकर यात्रा आरम्भ की। रास्ते में वह एक बुढिया के घर ठहरा। जब वह सो गया तो बुढिया ने यात्री का मूसल अच्छा देखकर बदल लिया। प्रातः यात्री को मालूम हुआ पर भेद खुलने के भय से कुछ नहीं कहा। बुढिया का ही मूसल ले वह आगे बढ़ा। रास्ते में उसने एक नया मूसल बनवाया और कहा, 'जिसे नये मूसल से पुराना बदलना हो बदल लो।' बहुत लोग आए और बदल ले गए, बुढ़िया को भी खबर मिली और यात्री वाले मूसल को पुराना समझकर बदल लिया। जब यात्री का काम हो गया तो जितने लोग मूसल बदलने खड़े थे उनसे उसने कहा 'अब हमें मूसल नहीं बदलना है।'

कुछ लकड़ी गीली, कुछ कुल्हाड़ा भोंतरा दे० 'कुछ गेहूँ गीला, कुछ '। तुलनीय : मेवा० क्यूं तो धो चीकणा और क्यूं कुवाड़ा मोटा; ब्रज० कछू लकड़ियाँ गीली, कछू कुड़हारी भौतरी; अं० It quires two to quarrel.

कुछ लिखा कालिदास बहुत लिखा औरों ने - जब किसी बात को लोग बहुत बढ़ा-चढाकर बतलाते है तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० कुछु बनायेन का कालिदास कुछु बनायेन भक्तन; पंज० थोड़ा लिखया कालिदास ने बाकी लिखया ओरनां।

'कुछ लेते हो ?' कहा, अपना काम क्या है,' 'कुछ देते हो ?' कहा, 'यह शरारत बंदे को नहीं आती'— स्वार्थी व्यक्तियों के प्रति व्यंग्य मे कहते हैं, क्योंकि वे केवल लेना ही चाहते हैं, देना नही।

कुछ लोहा खोटा, कुछ लोहार खोटा दे० 'कुछ दोष लोहे का···'। तुलनीय : ब्रज० कछू लोहौ खोटौ कछू लुहार खोटौ।

कुजगह फोड़ा और ससुर वैद्य — दे० 'कुठौर फोड़ा और '। तुलनीय : गढ़० कुजगा दुखणो जेठाणो बैद; मेवा० को ठोड़े खादी ने सुसरानी वैद।

कुजात मनाया सिर पर चढ़े, सुजात मनाया पाँव पड़े—नीच जाति के व्यक्ति की यदि खुशामद की जाय तो वह सिर पर चढ़ जाता है तथा ऊँची जाति के व्यक्ति की यदि खुशामद की जाय या उसे मनाया जाय तो वह अत्यधिक विनम्रता का व्यवहार करता है। तुलनीय : राज० कुजात मनायां माथै चढ़ै।

कुटनी से तो राम बचावे प्यारी होकर पत उतरावे— कुटनी अपनी मीठी-मीठी बातों में फँसाकर स्त्रियों को पथ-भ्रष्ट कर देती है। आशय यह है कि नीच व्यक्ति भले आदमियों को बुरे रास्ते पर ले जाने के लिए मीठी-मीठी बातें किया करते हैं। तुलनीय : अव० कुटनी से राम बचावे।

कुठाँव का घाव भसुर ओझा—भसुर (जेठ) अपने छोटे भाई की पत्नी का अंग देखना भी बुरा मानता है। अगर कुठाँव (गुप्तांग) में घाव है तो फिर पूछना ही क्या, भसुर कैसे झाड़-फूंक कर सकता है ? धर्म संकट की स्थिति में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० ससुर ओझा कुठाँवे घाव; बुंद० कुजांगा खाता और ससुर बैद; ब्रज० कुठौर काठी और

ससुर बाइगी; राज० कुठोर खाई रे सुसरो वैद; गढ़० कुजगा दुखणो जेठाणो बैद; मरा० अड़चणीचें ठिकाणीं दुःख आणी जांवई वैद्य।

कुठारच्छेद्यता कुर्यान्नखच्छेद्यम् न पंडितः- बुद्धिमान आदमी को यह कल्पना नहीं करनी चाहिए कि वह कुल्हाड़ी से काटी जाने वाली वस्तु को नाखून से ही काट देगा। अर्थात् बुद्धिमान व्यक्ति संभव और असंभव के भेद को समझता है और असंभव कार्य के लिए प्रयत्न नहीं करता।

कुठौर फोड़ा और ससुर बैद--दे० 'कुठांव का घाव…'।

कुड्यं बिना चित्रकमव---दीवार के बिना चित्र रचना की तरह। अवास्तविकता के संदर्भ में इस न्याय का प्रयोग किया जाता है।

कुड़हल भदई बोओ यार, तब चिउरा की होय बहार --हे मित्र! कुड़हल ज़मीन में भदई (भादों का) की खेती करने से चिउरा (चिड़वा) खाने को खूब मिलेगा। अर्थात् कुड़हल ज़मीन में भदई की पैदावार अच्छी होती है।

कुड़हल राखो खाद पटाय, तब धानों के बीज दिखाय -कुड़हल भूमि में खाद डालकर धान बोने से फ़सल काफ़ी अच्छी होती है।

कुतिया के छिनाले में फँसे हैं -व्यर्थ में खींचातानी में पड़ने वाले के प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० कुत्ती दे पिछे लगया है।

कुतिया के सब एक से---कुतिया के सभी पिल्लों (बच्चों) का स्वभाव और चाल-ढाल एक सी होती है। अर्थात् जब किसी जाति, परिवार या समाज के सभी व्यक्ति दुर्गुणी हों तो उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० कुत्ती जाया कूकरिया एके डोरे ऊतरिया; पंज० कुत्ती दे सारे इक जिहे।

कुतिया गई काशी - व्यर्थ का काम। किसी नीच, पापी या मूर्ख द्वारा ऐसे अच्छे काम का किया जाना जो उसके लिए निरर्थक हो। तुलनीय : तेलु० कुक्क काशिकि पोइ-नट्लु; भोज० कुक्कुर नहाय तिरबेनी; पंज० कुत्ती गयी कासी।

कुतिया चोर से मिल गई तो पहरा कौन दे?—जब अपने ही लोग शत्रु से मिल जायेंगे या विरोधी बन जाएँगे तो सुरक्षित रखना मुश्किल हो जाएगा। तुलनीय : अव० कुतिया चोरन से मिल गय पहरा केकर देय; तेलु० कंचे चेनु मस्ते कापेमि चेयुनु; मरा० कुत्री चोरांना सामिल झाली पहारा कसचा करणा; पंज० कुत्ती चोर नाल रल गयी तां राखी कौण करेगा।

कुतिया चोरों मिल गई पहरा देवे कौन—ऊपर देखिए।

कुतिया प्रयाग जावें तो पत्तल कौन चाटे?---नीच व्यक्ति यदि निकृष्ट काम छोड़ दें तो उसको कौन करे? आशय यह है कि नीच कभी महान् काम नहीं करते। तुल-नीय : अव० कुकुरिया परागं जइहैं तौ हंड़िया के चाटी।

कुतिया मरे गांड़ों की व्यथा, शिकारी कहे कि लुह बेटा- कुतिया कष्ट के मारे मर रही है और शिकारी शिकार के पीछे दौड़ाना ('लुह') चाहता है। जब कोई व्यक्ति दूसरे के कष्ट की परवाह न करके अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहे तो कहते हैं।

कुत्ता अपनी पूंछ को टेढ़ी कब कहता है—कोई भी मूर्ख या दुष्ट व्यक्ति अपनी मूर्खता या दुष्टता को स्वीकार नहीं करता। तुलनीय : छत्तीस० कुकुर अपन पूछी लटेड़गा कब कहिथे; पंज० कुत्ता अपनी दुब नूं डींगी कदो कंदा है।

कुत्ता कपास पहिचाने तो गुह न खाय - बुरे व्यक्ति यदि अच्छे कामों के महत्त्व को समझ लें तो बुराई न करें। तुलनीय : अव० कूकुर कपास पहिचानै तो गुह न लै खाय; पंज० कुत्तेनं कपा दा पता हावे तां गुह नां खावे।

कुत्ता कहे गाड़ी मेरे ही कारण चल रही है - बैलगाड़ी के नीचे चलने वाला कुत्ता कहता है कि मेरे चलने के कारण ही यह गाड़ी भी चल रही है। जो व्यक्ति किसी कार्य के लिए अयोग्य होने पर भी यह कहता है कि अमुक कार्य मैंने ही किया है तो ऐसे व्यक्तियों के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : पंज० कुत्ता आखे गड्डी मेरे उते चलदी पयी है। ब्रज० कुत्ता समझै मेरे ईबलते गाड़ी चालि रही है।

कुत्ता कुरमी काहू के ना--कुत्ते और कुर्मी किसी के नहीं होते। कुर्मी जाति के मनुष्य और कुत्ते जहां खाने को पाते हैं वहीं चले जाते हैं। अर्थात् ये दोनों स्वार्थी होते हैं।

कुत्ता के आटा होय तो लिट्टी लगा के खाय कुत्ते के पास अगर आटा होता तो वह स्वयं उसकी लिट्टी (एक प्रकार का भोजन) बना कर खाता। मनुष्य विवश होकर ही दूसरों के पास कुछ माँगने जाता है यदि वह सामर्थ्यवान होता तो किसी के सामने हाथ नहीं फैलाता। तुलनीय : पंज० कुत्ते कौल आटा होंदा तां मिट्टी ला के खांदा।

कुत्ता क्या जाने नारियल का स्वाद?-- कुत्ता नारि-यल के स्वाद को नहीं जानता। मूर्ख व्यक्ति अच्छी वस्तुओं

के महत्त्व को नही जानते या समझते। तुलनीय : राज० गिडक नारेल सार कांअी जाणै ; पंज० कुत्ते नूं की पता खोये दा सवाद।

कुत्ता घसीटी में पड़ गए—जब कुत्ता मर जाता है तो उसकी टाँग पकड़ कर घसीट ले जाते हैं और आबादी से बाहर फेंक देते हैं, इसी को 'कुत्ता घसीटी' कहते हैं। जब कोई किसी कष्टप्रद या नीच काम में फँस जाता है तो कहते हैं। तुलनीय : हरि० काम-वाम तै कुत्ता घसीटी सै।

कुत्ता घास खाय तो सभी पाल लें—यदि व्यय का भय न हो तो सभी अपने शौक पूरे कर लें। तुलनीय : पंज० कुत्ता काह खावे तां सारे पाल लैण; ब्रज० कुत्ता घास खाय ले तौ सबई पारि लें।

कुत्ता चौक चढ़ाइये, चाकी चाटन जाय—नीचे देखिए।

कुत्ता चौक चढ़ाइए, चपनी चाटन जाए- नीच का कितना भी आदर क्यों न किया जाय पर वह नीचता से बाज़ नही आता।

कुत्ता देखेगा, न भौंकेगा—कोई चीज़ छिपाकर रखने पर कहते हैं, क्योंकि न कोई देखेगा और न ही कोई माँगेगा। तुलनीय : हरि० नां कुत्ता देखैगा ना भौंस्सैगा; पंज० कुत्ता देखेगा, नां पौंकेगा।

कुत्ता देखे न भौंके—ऊपर देखिए। तुलनीय : ब्रज० कुत्ता दीखै न भूंसै।

कुत्ता न देख, कुत्ते का मालिक देख—कुत्ते का सम्मान मालिक को देख कर ही किया जाता है। जब किसी के बड़े-बड़े दोष भी उसके घर वालों या मालिकों के प्रभाव, या लिहाज़ के कारण क्षमा कर दिए जायँ तो उसके प्रति कहते है। तुलनीय : गढ़० कुता क्या देखण कुता को ठाकुर देखण; पंज० कुत्ते नूं न देख, कुत्ते दा मांई देख।

कुत्ता नहलाले से बछा नहीं होता—अर्थात् अच्छे कपड़े पहनने और शृंगार करने से मूर्ख या दुष्ट व्यक्ति सभ्य नहीं हो जाते। तुलनीय : अव० कुकुर नहवाए बछवा न होई। पंज० कुत्ता नूं सनान करान वाल ओह बछा नई बनदा।

कुत्ता निज पीरा मरे मांगे मियां शिकार—दे० 'कुतिया मरे गांड़ी ...'।

कुत्ता जाएगा तो पत्तल कौन चाटेगा?—दे० 'कुतिया प्रयाग जावें ...'। तुलनीय : अव० कुकुरिउ परागै जैहें तौ पतरी के चाटी।

कुत्ता पाय तो सवा मन खाय, नहीं तो दीया ही चाट कर रह जाय—जो उसे मिल जाय उसी में संतोष कर लेने वाले व्यक्ति के प्रति कहते हैं।

कुत्ता पाले वह कुत्ता, सास घर जमाई कुत्ता, बहन घर भाई कुत्ता, सब कुत्तों का वह सरदार, जो रहवे बेटी के द्वार—अर्थात् ससुराल में, बहन के घर तथा बेटी के घर रहना अच्छा नहीं होता।

कुत्ता फल को क्या करे?—कुत्ते को यदि फल मिल जाय तो वह उसे नहीं खाएगा। मूर्ख व्यक्ति अच्छी वस्तुओं के महत्त्व को नही समझते और न ही उनका उपयोग करना जानते हैं। तुलनीय : राज० कुत्तों नारेळरो कांई करै; पंज० कुत्ता फल नूं की करे।

कुत्ता भी बैठता है तो दुम हिलाकर बैठता है—सफ़ाई न रखने पर कहा जाता है कि कुत्ते जैसा गंदा पशु भी बैठते समय पूँछ से ज़मीन साफ कर लेता है। तुलनीय: मरा० कुत्राहि शेंपूट हलवून (जागा स्वच्छ करून) बसतो; भोज० कुक्करो बइठेला त पोंछ हिलाके; अव० कुत्ता जहां बैठत है पूछ हिलाय के बैठत है; हरि० कुत्ता बी बैट्ठैगा तै पूछ हलाकै; पंज० कुत्ता वी बेंदा हां ता दुब हला कर बेंदा है; ब्रज० कुत्ताऊ पूछि हलाइकै बैठै।

कुत्ता भूंकता रहता है हाथी निकल जाता है—छोटे या ओछे व्यक्तियों की उलटी-सीधी बातों पर बड़े लोग ध्यान नहीं देते। वे उनकी बातों को अनसुनी कर अपने पथ पर अग्रसर रहते हैं। तुलनीय : छत्तीस० कुकुर भूंके हजार, हाथी चले बजार; पंज० कुत्ता पौंकदा रैंदा है हाथी निकल जांदा है।

कुत्ता भूंके क़ाफ़िला सिधारे—नीचे देखिए।

कुत्ता भूंके हज़ार, हाथी चले बज़ार—छोटों के बड़-बड़ाने या रोकने से बड़े अपने पथ से विचलित नही होते। तुलनीय: पंज० कुते पौंकन हजार हाथी चले बजार; ब्रज० कुत्ता भूंसै हजार हाती चलै बजार।

कुत्ता भौंके काफ़िला सिधारे—काफ़िले को देखकर कुत्ते भौंकते है, किन्तु उनके भौंकने से क़ाफिला रुकता नहीं है। नीच व्यक्तियों के चिल्लाने से सज्जन या बड़े आदमी काम नहीं छोड़ देते। तुलनीय: मरा० कुत्रा भुंकतो (लमाणाचा) तांडा (खुशाल) चालतो।

कुत्ता भौंके हज़ार, हाथी चले बज़ार—दे० 'कुत्ता भूंके हज़ार ...'। तुलनीय: भोज० हाथी चलले बजार, कुकुर भूकसु हजार; राज० हथियां की गैल घणां ही कुत्ता घुसै; निमाड़ी - हत्थी जाय बजार, कुतरा भूक हजार; कन्न० नायि बोगळि दरे देवलोक हाळे?

कुत्ता मरे अपनी पीर, मियाँ मांगे शिकार—दे०

'कुतिया मरे गांड़ी की...'।

कुत्ता मरे आने-जाने में—कुत्ता इधर से उधर आने-जाने में मारा जाता है। तात्पर्य यह है कि नीच और आवारा व्यक्ति आवारागर्दी में ही मारे जाते हैं। तुलनीय: पंज० कुत्ते मरण आन जान विच।

कुत्ता मुँह लगाने से सिर चढ़े—नीच को मुँह नहीं लगाना चाहिए। जब कोई नीच बड़े व्यक्ति द्वारा बढ़ावा दिए जाने पर बिगड़ जाता है और बिना अदब व लिहाज़ के बातचीत करता है तब कहते हैं।

कुत्ता राज बिठाया और चक्की चाटने आया—नीच व्यक्ति उच्च पद पर पहुँचकर भी अपने पद का ध्यान नहीं रखता बल्कि अपने स्वाभाविक लक्षण प्रदर्शित करता है।

कुत्ता सराहे अपनी पूँछ—यद्यपि कुत्ते की पूँछ टेढ़ी होती है फिर भी वह उसकी प्रशंसा करता है तब व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय: छत्तीस० कुकुर महराय अपन पूछी; पंज० कुत्ते लई अपणी दुंब सोहनी।

कुत्ते का कुत्ता बैरी—कुत्ते का दुश्मन (बैरी) कुत्ता होता है। जाति ही जाति की दुश्मन होती है। तुलनीय: सं० याचकी याचकं दृष्ट्वा श्वानवत् घुर्घुरायते; कन्नौ० कुत्ता को कुत्ता बैरी; पंज० लोहे दा बैरी लोहा।

कुत्ते का गू लीपने का न पोतने का—कुत्ते का मैला दुर्गंधपूर्ण तथा थोड़ा होने के कारण किसी काम का नहीं होता। जो वस्तु या मनुष्य किसी काम का न हो उसके प्रति यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय: हरि० कुत्ते का गूह लीप्पण का ना पोत्तण का; बुंदे० मुस पै को, लीपनों, चीकनी न चांदनो; कौर० कुत्ते का गू, लीपणा न पाथणा; छत्तीस० कुकुर गुह लीपे के न पोते के; पंज० कुत्ते दा गू लिपण दा नां पत्थन दा; भोज० बिल्ली का गुह न लीपने का न पोतने का। दे० 'बिल्ली का गू···'।

कुत्ते का विष्टा न लीपे में न पोते में—ऊपर देखिए।

कुत्ते का बैरी कुत्ता—दे० 'कुत्ते का कुत्ता···'।

कुत्ते का मग़ज़ खाया है—बड़े बकवादी को कहते हैं। तुलनीय: राज० कुत्तेरी कपाळी है; पंज० कुत्ते दा मगज खादा है।

कुत्ते का सिर बिल्ली के, और बिल्ली का सिर कुत्ते के—(क) चुग़लखोरों के प्रति कहते हैं क्योंकि वे हमेशा दो व्यक्तियों को आपस में लड़ाते रहते हैं। (ख) मूर्ख व्यक्ति के प्रति भी ऐसा कहते हैं क्योंकि वह अपनी मूर्खतावश उलटा-सीधा काम करता रहता है। तुलनीय: गढ़० कुकुरू का मुड बिराला, अर बिरालू का मुंड कुक्कर; पंज० झोट्टे दा सिर मींडे नूं, मींडे दा सिर झोट्टे नू।

कुत्ते की खोपड़ी है—जो व्यक्ति बहुत अधिक बोले उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय: राज० कुत्तेरी कपाळी है।

कुत्ते की दुम बारह वर्ष नलकी में रखी तो भी टेढ़ी की टेढ़ी—कुत्ते की दुम यदि ज़मीन में सीधी करके गाड़ दी जाय तो भी निकालने पर टेढ़ी ही निकलेगी। अर्थात् जन्मजात बुराइयाँ दूर नहीं हो सकतीं चाहे लाख प्रयत्न किया जाय। जिस आदमी की बुरी आदत किसी तरह से भी न जाय उसे कहते हैं। तुलनीय: मरा० कुत्र्याचें शेंपूट बारा वर्षे नळांत घालून ठेवलें तरी वांकड़ें, तें वांकड़ें च; राज० कुत्तेरी पूंछ दस बरस जमी में राखी, निकाली तो फेर आंटी-र-आंटी; पंज० कुत्ते दी पूंछ बारां साल बांस विच रक्खो फेर वी विंगी दी विंगी; माल० कुत्तारी पूछ जदी देखो जदी वांकी री वांकी; गढ़० कुकुर को पुछड़ो थोला डालीक भी बांगे बांगो; भोज० कुक्कुर क पोंछ बारह बरिस नलवे में रखला के बादो निकलला पर टेढ़े निकलेला; अव० कूकुर कै पूछ बारा बरिस तक भुइं मा गाड़ कै निकारौ फिर टेढ़ का टेढ़; मेवा० गंडकड़ा की पूंछ को बल बारा बरस भूंगली में राखे तो भी नी निकले; निमाड़ी कुत्ता की दुम ख लाख फोंगलई म राखो आखिर बाकी की बाकी; तेलु० कुक्क तोक गोट्टमुन्नंत वरके; पंज० कुत्ते दी दुम बारां बरें नलकी बिच रखी तां वी डीगी; ब्रज० कुत्ता की पूछ बारह बरस नली में रही, फिरि ऊ टेढ़ी की टेढ़ी।

कुत्ते की दुम सदा टेढ़ी—ऊपर देखिए।

कुत्ते की दुम सौ बरस रगड़ो टेढ़ी की टेढ़ी—दे० 'कुत्ते की दुम बारह वर्ष···'। तुलनीय: मैथ०; मग०; भोज० कुक्कुर क पोंछ में कतनो तेल लगाइब टेढ़ क टेढ़े रही; भोज० केतनो तेल लगाव बाकी कुक्कुर क पोंछ सोझ ना हो सके ले; मरा० कुत्र्याचें शेंपुट किती ही दिवस नलकांड्यांत घातलें तरी अखेरीस वांकडें तें वांकडें; बग० कुकुरेर लेज घि दिये उल्ले ओ सोजा हय ना।

कुत्ते की पूँछ सौ वर्ष गाड़ो टेढ़ी की टेढ़ी—दे० 'कुत्ते की दुम बारह वर्ष···'। तुलनीय: बुंदे० कुत्ता की पूंछ बारा बरसें पुंगरिया में राखी, जब निकरी तब टेढ़ी की टेढ़ी; ब्रज० कुत्ता की पूँछ बारह महीना घूरे में गढ़ी रही पर एठ न गई; गुज० कुकरानी पुछड़ो छ महीना नली मां राखे, तो पण वांकी ने वांकी; भोज० कूकुर के पोंछ बारह बरस गाड़ी तबहूं टेढ़ के टेढ़; छत्तीस० कुकुर के पूछी जब रइही टेड़गा।

कुत्ते की मार अढ़ाई घड़ी—कुत्ता अपनी मार बहुत जल्दी भूल जाता है। जब कोई मार या दंड को भूलकर फिर वही ग़लती करे तो कहते हैं। तुलनीय : भोज० कुक्कुर क मार अढ़ाइ घरी; पंज० कुत्ते नू कुट ढाई कड़ी।

कुत्ते की मौत आवे तो मस्जिद में मूते—मस्जिद में मूतने पर कुत्ते को जो भी व्यक्ति देख लेता है उसे मार डालने का प्रयत्न करता है। (क) जब कोई निर्धन या दुष्ट व्यक्ति किसी शक्तिशाली से दुश्मनी बढ़ाता है तब उसके प्रति ऐसा कहते हैं। (ख) जब किसी के बुरे दिन आने होते हैं तब उसकी बुद्धि खराब हो जाती है और वह अनुचित कार्य करने लगता है। तुलनीय : हरि० ज्यब गादड़ की मौत आवै तै गाम काणा भाज्या करै; राज० गोहरी मौत आवै जरां ढेढरा खाल्ड़ा खड़बडावै; पंज० कुत्ते दी मौत आवे ता ममजिद विच मूतरे; व्रज० कुत्ता कौ काल आवै तो ममजिद में मूतै।[1]

कुत्ते के आटा होय तो लिट्टी लगा के खाय—दे० 'कुत्ता के आटा होय तो…'।

कुत्ते के पेट में घी नहीं पचता—दे० 'कुत्ते को घी नहीं…'। तुलनीय : व्रज० कुत्ता के पेट में घ्यौ नायँ पचै।

कुत्ते के पैर जाओ, बिल्ली के पैर आओ—जल्दी जाओ और जल्दी आओ। (क) शीघ्रता करने के लिए कहा जाता है। (ख) दबे पैरों जाने के लिए भी कहा जाता है, क्योंकि दोनों के चलने में आवाज नहीं होती। तुलनीय : राज० मिन्नीरी चाल जावणो, कुत्तेरी चाल आवणो।

कुत्ते के भी दिन लौटते हैं—सबके दिन फिरते है। विपत्तिग्रस्त या दुःखी को भी कभी सुख मिलना है। वह सर्वदा दुःखी ही नहीं रहता। तुलनीय : पंज० माड़े दे वी दिन फिरदे हन; अं० Every dog has his day.

कुत्ते भूंकने से हाथी नहीं डरते—छोटे या ओछे व्यक्तियों के उपद्रव से महान लोग घबड़ाते या भयभीत नहीं होते। तुलनीय : तेलु० एनुगुनु चूचि कुक्कलु मोरिगिनट्लु; अव० कूकुर के भूंके से हाथी नाही डेरात; हरि० कुत्ता भौंकता रह हाथी चालता रह; व्रज० कुत्ता के भूँमे ते हाती नायें डरें।

कुत्ते के सिर पर लात ही ठीक रहती है—कुत्ता लात खाने से ही ठीक रहता है। अर्थात् दुष्ट और मूर्ख व्यक्ति मार खाने से ही ठीक रहते है। तुलनीय : राज० कुत्तेरो सिर खल्ले जोगो; पंज० कुत्ते दे सिर उत्ते लत्त ही ठीक रैंदी है।

कुत्ते को आटा दोगे तो क्या रोटी पकाएगा?—अर्थात् नहीं। आटा तो वह खा जायेगा। मूर्ख व्यक्ति जिस वस्तु का उपयोग नहीं जानता उसका उपयोग कैसे कर सकेगा, उलटे वस्तु के स्वरूप को भी बिगाड़ देगा। तुलनीय : भोज० कुक्कुर के पिसान दिआई त का उ लिट्टी लगाई; पंज० कुत्ते नू आटा देओगे ते ओह रोटी पकायेगा।

कुत्ते को कपास, बंदर को नारियल—कुत्ते को कपास तथा बंदर को नारियल देना बिल्कुल बेकार है, क्योंकि उनके लिए इन वस्तुओं का कोई मूल्य नहीं है। जब किसी व्यक्ति को कोई ऐसी वस्तु मिल जाय जिसकी उपयोगिता या जिसका मूल्य वह न जानता हो तो उसके लिए ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० कुकुर मू कपास, बांदर मू नर्यूल; पंज० कुते नूं कपा बाँदर नूँ नारियल।

कुत्ते को काम न धाम लेकिन फ़ुरसत नहीं—कुत्ता कोई काम नहीं करता, फिर भी उसे अवकाश नहीं मिलता कि दम ले सके, हमेशा इधर-उधर दौड़ता ही रहता है। अर्थात् निकम्मे व्यक्ति करते तो कुछ नहीं पर व्यर्थ में इधर-उधर घूमते रहते हैं। तुलनीय : भोज० कुक्कुर के कामे कवन् बाकी दम्मो मारे के फुरसत ओके नां मिलेला।

कुत्ते को घी नहीं पचता—(क) ओछे के पेट में बात नहीं पचती। (ख) नीच के पास यदि धन हो जाय तो वह उसे छिपा नहीं सकता। तुलनीय : मग० कुत्याला तूप पचत नाही; अव० कूकुर का घिउ नाही पचत; मग०, मैथ० कुकुर क पेट में कतहू घी पचे; भोज० कुक्कुरे क पेट मे कहीं घी पच्चेला; बुंदे० कुत्ता के पेट में घी नईं पचत; मल० अल्पन् अर्थम् किट्टियाल् अर्द्ध रात्रिक्कुम् कुट पिटिक्कुम्; पंज० कुते नू घी नई पचदा; अं० A low-born person feels proud of his honour.

कुत्ते को घी हज़म नहीं होता—ऊपर देखिए।

कुत्ते को पुचकारें तो मुँह चाटे—कुत्ते को यदि प्यार किया जाय तो वह मुँह चाटने लगता है। जब कोई नीच व्यक्ति किसी सज्जन के अच्छे व्यवहार से अनुचित लाभ उठाता है तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० कुत्ते ने मूढे लगावणो चोखो कोनी; भोज० कुक्कुर के मुँह लगइब त मुँहे चाटी; पंज० कुत्ते नूं पयार करो तां मुँह चट्टे।

कुत्ते को मसजिद से क्या काम—जब कोई बुरा व्यक्ति भलों के समाज में जा बैठे, या कोई पापी पुण्य करने का ढोंग रचे तब कहते हैं। तुलनीय : पंज० कुत्ते नूं मसजिद दा की काम।

कुत्ते को मुँह लगाओ तो मुँह चाटेगा—दे० 'कुत्ते को पुचकारें…'। तुलनीय : व्रज० कुत्तायै मुंह लगाओ तौ मुँह

चाटेगो।

कुत्ते को हड्डी भली लगती है—गंदे को गंदी चीज़ें ही अच्छी लगती हैं। हिन्दू लोग मांसाहारियों को व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : अव० कूकुर का हड्डिये नीक लागत है; पंज० कुत्ते नूँ हड्डी चंगी लगदी है।

कुत्ते खस्सी में कौन पड़े झगड़े-टंटे से अलग रखने पर कहते हैं।

कुत्ते तेरा मुंह नहीं, तेरे साईं का मुंह है—कुत्ते के भौंकने पर कोई कहता है कि तू अपने मालिक के बल पर भूंक रहा है। जब कोई कमजोर अथवा साधारण मनुष्य किसी बड़े की शह पाकर बमकता है तब कहते हैं। तुलनीय : राज० कुत्ता थारी काण के थारे मालक री काण।

कुत्ते तेरा मुँह या तेरे घर वालों का?—कुत्ते तुझे तेरे मुंह पर नहीं छोड़ते, यह तो तेरे घर वालों का लिहाज है। बुरे आदमी का कोई लिहाज़ नहीं करता, वास्तव में लोग उसके परिवार वालों की सज्जनता का लिहाज करके टाल देते हैं। तुलनीय : राज० कुत्ता, थारी काण कै थारे घरवारी काण; पंज० कुत्या तेरा मूं नई तेरे साई दा मूह देखीदा है।

कुत्ते ने आइना देखा तो भौंक-भौंक कर पागल हो गया जो व्यक्ति व्यर्थ की बातों में पड़कर झगड़ा मोल लें और हानि उठाएँ उन मूर्खों के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : भीली— कूतरा काच भालल्यू, भची मुवो दन्या मांय। ब्रज० कुत्ता नें दरपन देख्यौ तौ भूंसि-भूंसि कैं पागल है गयौ।

कुत्ते भी तेरे दर पर नहीं आएँगे—आदमी तो आदमी कुत्ते भी तुम्हारे दरवाज़े पर नहीं आएँगे। बदचलन, दुष्ट या झगड़ालू व्यक्ति के प्रति कहते हैं जो सदा कुछ बुराई, उत्पात या झगड़ा करते रहते हैं। तुलनीय : राज० कुत्ता ही खीर को खावेलानी; पंज० कुत्ते वी तेरे बुये उते नई आणगे।

कुत्ते भूंके तो चंद्रमा को क्या?—मूर्खों या दुष्टों की बातों पर महान लोग ध्यान नहीं देते। वे उनकी बातों को अनसुनी करके अपने काम में लगे रहते हैं। तुलनीय : मल० चन्द्रने नोक्कि पट्टि कुरच्चालेन्तु फलम्; ब्रज० कुत्ता भूंसें तौ चंदा ऐ कहा; पंज० कुत्ते पौंकण तां चंद्रमा नूं की। अं० Tho moon does not heed the barking dog.

कुत्ते भौंकते रहते हैं, क़ाफ़िला चलता रहता है—दे० 'कुत्ते के भौंकने से हाथी···'।

कुत्ते से कुत्ता भिड़ाया, बिगड़ा काम बनाया—जो व्यक्ति दोनों पक्षों को लड़ा कर अपना उल्लू सीधा करे वह लड़ने वालों के प्रति व्यंग्य से कहता है। तुलनीय : भीली— कूतरा माते कूतरा पाड़ी ने चेटी हरकी जाहें; ब्रज० कुत्ता ते कुत्ता भिड़ायौ बिगर्यौ काम बनायौ; पंज० कुत्ते नाल कुत्ता लड़ाया बिगड़या काम बनाया।

कुत्तों के घर में छिछड़े नहीं मिलते—(क) जो वस्तु किसी को प्रिय हो और उसे उसी के पास रख दी जाय तो वह अवश्य उसे खा जायेगा। (ख) कुप्रबंध पर भी कहते हैं। (ग) बुरे लोग किसी वस्तु को सुरक्षित नहीं रखते। (घ) बुरे लोगों के बीच कोई स्त्री रहे तो उसकी इज्जत सुरक्षित नहीं रह सकती। तुलनीय : गढ़० स्यालू क घर फाबसो; पंज० कुत्त्यां दे कर दही नई जमदा।

कुत्तों के बीच, आटे का दीया—आटे के दीए को कुत्ते खा जाते हैं। (क) जब कोई वस्तु ऐसे व्यक्तियों के संरक्षण में दी जाय जो उन्हें बहुत प्रिय हो और वे उसे प्रयोग करने लगें या वापिस न दें तो कहते हैं। (ख) नीच व्यक्ति अच्छी चीज़ों को रहने ही नहीं देते और न ही उनका मूल्य जानते हैं। तुलनीय : पंज०कुत्यां बिच आटे दा दीवा।

कुत्तों के भौंकने से हाथी नहीं डरते—दे० 'कुत्ते के भौंकने से हाथी···'। तुलनीय : मरा कुत्र्याच्या भुंकण्या ला हत्ती भीत नाहीं।

कुत्तों में मेल हो जाय तो राज करें—यदि कुत्तों में मेलजोल हो जाय और वे आपस में लड़ना छोड़ दें तो सारे संसार में राज्य करें। जो व्यक्ति आपस में सदा लड़ते-झगड़ते रहते हैं तथा जिनमें मतैक्य कभी नहीं होता उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। या मूर्ख या दुष्ट व्यक्ति यदि शान्ति से रहने लगें तो उनका जीवन भी सुखमय व्यतीत होने लगेगा। तुलनीय : मार० कुत्तांरे संप हुवै तो गंगाजी नहायि आवै; पंज० कुत्तं मिल जाणता राज करण; ब्रज० कुत्तान में मेल है जाय तौ राज करें।

कुत्तों में सलूक हो तो गंगा नहा लें—यदि बुरे आदमियों में प्रेम-भाव या समझदारी हो जाय तो वे सुधर जाएँ और उनका भी उद्धार हो जाय। तुलनीय : कौर० कुत्तों में सलूक हो तो गंगा न्हा लें; पंज० कुतयां बिच सलूक होवे तां गंगा नहा लेण।

कुत्तों से कौन-सी गली छूटी है?—कुत्तों का काम ही दरदर घूमना है, इसलिए उनको प्रत्येक गली का पता होता है। जोव्यक्ति दिन-भर घूमता रहे और नगर के प्रत्येक भाग से परिचित हो उसके प्रति उपहास करने के लिए कहते हैं। तुलनीय : मेवा० गंडका छानी गल्यां नहीं; पंज० कुतयां नूं किस गली दा नई पता; ब्रज० कुत्तान ते कौन-सी गली बची है।

क़ुदरत की मार, ख़बर न सार—दैवी विपत्ति की सूचना किसी को नहीं मिलती। जब किसी व्यक्ति पर अचानक कोई दैवी विपत्ति आ जाय और वह उससे बचने का कोई प्रबंध न कर सके तो उसको धीरज देने के लिए इस प्रकार कहते हैं। तुलनीय : गढ़० दैब की मार खबर न सार; पंज० कुदरत दी मार न मौका नां खबर।

कुनबा खीर खाए देवता भला माने—परिवार के लोग खीर भी खाते हैं और देवता भी खुश रहते हैं। जब एक कार्य से दो लाभ हों तो कहते हैं। तुलनीय : हरि० कुणबा खीर खा, अर देवता भला मान्नै; ब्रज० कुनबा खीर खायँ, देबता भलौ मानें।

कुनबे वाले के चारों पल्ले कीचड़ में हैं—जिसका परिवार बड़ा होता है उस पर हर वक्त विपत्ति पड़ने की संभावना रहती है। किसी-न-किसी पर कष्ट आता ही रहता है। जब कोई गृहस्थ दूसरे घर का दोष दिखाये तब कहते हैं। तुलनीय : मग० मोट्या कुटुंबांच्या लोकांचीं (पदर) दोकें चिखलांत आहेत।

कुपात्र से निरबंस अच्छा—बुरे पुत्र से बिना पुत्र का रहना ही अच्छा है। जब किसी का पुत्र नालायक़ हो जाता है तो वह उसके बुरे कर्मों से ऊबकर ऐसा कहता है। तुलनीय : ब्रज० कुपात्र तें निरबंसी अच्छौ।

कुपुत्रो जायते क्वादिचिदपि कुमाता न भवति—पुत्र कुपुत्र तो होते हैं, किंतु माता कुमाता कभी नहीं होती।

कुपूत से निपूत भला—दे० 'कुपात्र से निरबंस···'।

कुफ़ टूटा ख़ुदा-ख़ुदा करके—मुश्किल ही से सही कोई मान तो गया। जब अनेक प्रयास करने पर विफलता मिले और फिर सहसा सफलता के लक्षण दिखाई देने लगें तब ऐसा कहते हैं।

कुबेर की बीबी माँगे भीख—जो संसार-भर के धन का स्वामी है उसकी पत्नी भीख माँग रही है। (क) जब बड़े आदमी पर विपत्ति आए और उसमें वह पैसे-पैसे को मोहताज हो जाय तो कहते है। (ख) जब कोई धनवान लोभवश कोई निकृष्ट कार्य करे तो भी कहते है। तुलनीय : राज० इदर्रा मां निमी फिरै, पंज० कुबेर दी बौटी मंगदी फिरे।

कुम्हार अपना घड़ा ही सराहता है—कुम्हार अपने बनाए घड़े की ही तारीफ़ करता है। अपना किया गया काम, अपनी संतान या अपनी वस्तु सबको अच्छी लगती है। तुलनीय: मरा० कुंभार आपल्या घड्याची प्रशंसा करतो; पंज० कमँर अपणा कड़ा सौहणा दसदा है।

कुम्हार कभी अच्छे बरतन में नहीं खाता—यद्यपि कुम्हार के घर काफी बर्तन पड़े रहते है फिर भी वह उन्हीं बर्तनों को प्रयोग में लाता है जिनमें कुछ दोष होता है। अर्थात् कंजूस व्यक्ति कभी भी अच्छा खाते-पहनते नहीं। तुलनीय : मेवा० कुम्हार फूटा हांडा में ईज खाय है; पंज० कमँर टुटे पांडे बिच खांदा है।

कुम्हार कहे से गधे पर नहीं चढ़ता—(क) आदमी जो काम सदैव करता है, वही कहने पर न करे तब कहते हैं। (ख) जिद्दी मनुष्य अपनी ख़ुशी से काम भले ही करे, पर कहने से नहीं करता। तुलनीय : हरि० कुम्हार कहे तै गधे पै न चड्ढै।

कुम्हार का गधा जिसके चूतड़ में मिट्टी देखे उसी के पीछे—क्योंकि उसी को वह अपना स्वामी समझता है। (क) मूर्ख जब अज्ञानवश कोई मूर्खता करता है तो कहते हैं। (ख) अंधानुकरण करने वाले के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० कमँर दा खोता जिसदे टुए बिच मिट्टी दिखे उसदे पिछे।

कुम्हार का जी पानी में—अपनी मिट्टी गूँथने में कुम्हार हमेशा पानी की कमी-बेशी का ही ध्यान करता है जिससे उसकी मिट्टी बिगड़ न जाय। किसी व्यक्ति का ध्यान जब एक ही वस्तु पर सदा टिका रहता रहता है तब ऐसा कहते है। तुलनीय : मग० कोहरा के जीऊ पानी पानी; भोज० कोंहरा हरदम पनिए क धियान करेला; पंज० कमँर दा जी पाणी बिच।

कुम्हार की गधी, लदी की लदी—कुम्हार की गधी सदा बोझा लादे ही आती-जाती रहती है। अर्थात् काम करने वाले परिश्रमी व्यक्ति के साथियों तथा सहयोगियों को भी परिश्रम करना पड़ता है और उनको आराम नहीं मिल सकता। तुलनीय : माल० कुमार री गद्दी जदी देखो जदी लद्दी री लद्दी; पंज० कमँर दी खोती लदी दी लदी; ब्रज० कुम्हार की गधैया लदी की लदी।

कुम्हार की नींद सबसे गहरी—कुम्हार की नींद बहुत गहरी होती है, क्योंकि उसकी मिट्टी कोई चुराता नहीं और वह निश्चिन्त होकर सोता है। आशय यह है कि जिनके पास धन नहीं होता वे निश्चिंत होकर सोते हैं। तुलनीय : भोज० निचित सुते कुहार माटी न लै जाय चोर; पंज० कमँर दी नींदर सब तो गाड़ी।

कुम्हार-कुम्हार को बरतन मोल नहीं देता—यदि किसी कुम्हार को किसी घड़े आदि की आवश्यकता पड़ जाय और उसे वह दूसरे कुम्हार से ले तो दूसरा कुम्हार उसका मूल्य नहीं लेता। एक पेशे वाला उसी पेशे वाले से

कोई दाम या मजदूरी नहीं लेता इसी से ऐसा कहते हैं। तुलनीय : माल० नावी-नावी री हजामत रो पईसा नी ले; पंज० कमैर-कमैर नू मुल्ल पांडे नई देंदा।

कुम्हार के घर फूटी हांडी - कुम्हार के घर में बरतन फूटे हुए हैं। जिस व्यक्ति के पास किसी वस्तु की अधिकता हो किंतु वह कृपणतावश उसका प्रयोग न करता हो तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : राज० कुंमार रे घरे फूटी हांडी; पंज० कमैर दे कर टूटी कुन्नी; ब्रज० कुम्हार के घर फूटी हँडिया।

कुम्हार के घर बासन का काल (क) जहाँ ऐसी चीज़ की कमी हो जो वहाँ होनी चाहिए तब कहते हैं। (ख) जहाँ जो वस्तु अधिक मात्रा में होती है और कोई उसी के विषय मे पूछे कि आपके पास अमुक वस्तु है तब वह व्यंग्य में ऐसा कहता है। तुलनीय : राज० कुमार फूटी में रांधै।

कुम्हार के घर माटी का अकाल—ऊपर देखिए। तुलनीय : भोज० कोंहार क घरे माटियै क दुख।

कुम्हार से पार न पाय, गधे का कान उमेंठें—कुम्हार का तो कुछ कर नहीं पाते और गधे का कान ऐंठ रहे हैं। जब कोई व्यक्ति अपने से शक्तिशाली व्यक्ति का कुछ भी नहीं बिगाड़ पाता और ग़रीब या दुर्बल व्यक्ति पर अपना क्रोध प्रकट करता है तब उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भीली --घोड़ाऊं नी पूगे ते गदेड़ा न कान आमळे; गढ० बांज नि सकू बुरांस नि सकू स्यारू चापाक; राज० कूमार कूमारीने को नावडेनी जरां गधीरा कान मरोड़े; अव० धोबिया न जीतै गदहवा कै काम उमेठै; गढ़० भैंसा को डौ मकडा पर; हरि० कुम्हारी पै तै पार ना बसावै गधी के जा कान ऐंठे; ब्रज० कुम्हार ते पार न पावै, गधा कौ कान ऐठै।

कुम्हारिन का बैल मरा लुहारिन सती होय - जब कोई व्यक्ति व्यर्थ में दूसरों की चीज़ों के संबंध में परेशान होता है तब कहते है। तुलनीय : पज० कमैर दा टग्गा मरया लुहारिन सती होयी।

क़ुरब न क़ायदा 'जो हुक्म' में फ़ायदा- जो लाभ आज्ञापालन में मिलता है, वह क़ायदे या क़ानून का पालन करने में नहीं मिलता। चाटुकार ऐसा कहते हैं।

क़ुरसी का अहमक़ --(क) बड़े मूर्ख को कहते हैं। (ख) क़ुर्सी अवध में एक छोटा शहर है। वहाँ के लोग मूर्खता के लिए प्रसिद्ध हैं।

क़ुरान पर क़ुरान रखने का क्या मुज़ायक़ा/डर—(क) समान स्तर के व्यक्ति परस्पर कुछ भी कह-सुन सकते हैं। (ख) एक ही जाति या क़ौम में विवाह-सबंध होने में कोई बुराई नही है।

कुल का दीपक पुत्र है, मुख का दीपक पान; घर का दीपक इसतिरी, धड़ का दीपक प्रान- कुल की शोभा पुत्र से है, मुख की शोभा पान से है, घर की शोभा स्त्री से और शरीर की शोभा प्राण से है।

कुल गुड़ गोबर हुआ -जब बना बनाया काम बिगड़ जाय तो कहते है। तुलनीय : भोज० कुल गुर गोबर हो गइल; पंज० कुल गुड़ गोआ बनया;

कुलटा ससुराल जाय, सौ घर अंधेरा छाय—जब दुश्चरित्र स्त्री मायके से ससुराल जाती है तो मायके के सौ घरों में अंधेरा हो जाता है, अर्थात् उसके बहुत से चाहने वालों को दुःख होता है। कुलटा स्त्रियों के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : माल० जोरू चाली सासरे सौ घरां संताप; पंज० पेंडी सोहरे जावे सौ कर हनेरा छावे।

कुलवंत निकारहिं नारि सती, गृह आनहि चेरि निबरि गती- उच्च कुल के पुरुष अपनी सती स्त्री को घर से निकाल कर दासी रखते हैं और घर को भ्रष्ट करते है। बड़े लोगों पर व्यंग्य है।

कुलिस कठोर निठुर सोइ छाती, सुन हरि चरित न जो हरषाती- जो भगवान की महिमा को सुनकर प्रसन्न नहीं होता उसका हृदय कलुषित, कठोर और निष्ठुर होता है।

कुलूखअंदाज रा पादाश संग अस्त- ईंट का जवाब पत्थर। ख्वाहमख़्वाह छेड़ करने वाले को सख़्त सजा मिलती है।

कुलेल में गुलेल -खुशी में रंज। जब सुख या खुशी के समय एकाएक विघ्न पड़ जाय तब कहते हैं।

कुल्या प्रणयन न्याय---नहर के निर्माण का न्याय। फ़सलों की सिचाई के लिए नहरों का निर्माण किया जाता है परंतु उनका जल पीने के काम में भी प्रयुक्त होता है। जब एक वस्तु से एक से अधिक लाभ प्राप्त होता है तब इस न्याय का प्रयोग होता है।

कुल्ला करे न दाँतन फेरे, फिर कैसे हो दाँत निखेरे—न तो कुल्ला करता है न दांतौन, तो दाँत कैसे साफ़ रख सकता है। गंदे व्यक्ति के प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० कुरली करन नां दातन करन दंद किवें चिट्टे हौण।

कुल्हाड़ी से कपड़े धोना और करम को दोष देना—कुल्हाड़ी से कपड़े धो रहे है और कपड़ों के कट या फट जाने पर कहते हैं कि मेरा भाग्य ही ठीक नहीं है। जो व्यक्ति जान-बूझ कर अनुचित कार्य करता है और हानि होने पर

भाग्य को कोसता है उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : हाड़० खुराड़्या सूं लत्ता धोव अर करम क भरोस ले।

कुल्हिया में गुड़ नहीं फूटता—बड़े काम को छिपाकर नहीं किया जा सकता। गुड़ को कुल्हिया में फोड़ने से कुल्हिया के फूटने का डर रहता है। तुलनीय : कुल्हैया में गुर नायें फूटै।

कुंवारी लड़की को वर बहुत— कुंवारी लड़की के लिए वरों की कोई कमी नही है। अच्छी वस्तु के चाहने वाले अवश्य मिलते हैं। जब किसी व्यक्ति का काम कोई करने में आना-कानी करे तब उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० कंवारी कन्या ने वर घणा; पंज० कुआरी कुड़ी लई लाड़े बड़े; ब्रज० कुआरी लड़की बहुत से वर।

कुशकाशावलंबन न्याय —डूबते हुए को कुश के सहारे का न्याय। जिस प्रकार डूबते हुए व्यक्ति को कुश, घास या खर का सहारा मिल जाता है तो उसे थोड़ी तसल्ली हो जाती है उसी प्रकार विपत्ति में फँसे व्यक्ति की कोई थोड़ी भी सहायता कर देता है तो उसे कुछ आराम मिल जाता है। हिन्दी में, 'डूबते को तिनके का सहारा' लोकोक्ति इसी का अनुवाद है। तुलनीय : अं A drowning man catches at a straw.

कुश्ता कुश्ता मी कुनद- कुश्ता (भस्म) आदमी को मार डालता है और बलवान भी बनाता है। ढंग से व्यवहार न करने पर लाभदायक वस्तुएँ भी हानि पहुंचाती हैं।

कुसमय पड़े दुश्मन से हेत—आपत्ति पड़ने पर दुश्मन से भी मित्रता करनी चाहिए। इस संबंध में एक कहानी है : एक चूहा रात के समय खाने के लिए बिल से बाहर निकला, उसे एक उल्लू ने देखा। उसी समय एक नेवले ने देखा और बिल के पास बैठ गया। चूहा यह दशा देख तीसरे शत्रु बिल्ली के पास गया जो कि जाल में फँसी थी, उससे मैत्री कर ली। ज्योंही बहेलिया आया उल्लू और नेवला भाग गये। चूहे ने जाल काट दिया, बिल्ली भी भाग गई। उसके बाद बिल्ली चूहे के पास आई और कहा, 'आओ हम मित्रता कर लें।' चूहे ने उत्तर दिया, 'शत्रु से मित्रता केवल आपत्ति आने पर ही की जाती है।'

कुसुआरि के किरवा क राम रखवार- -कुसाआरि (रेशम) के कीड़े को भगवान ही बचा सकते हैं। जिस व्यक्ति या वस्तु का नाश होना निश्चित हो उसके प्रति कहते हैं।

कुसुम का रंग तीन दिन, फिर बदरंग—फूल का रंग थोड़ी देर के लिए ही होता है। जो चीज़ स्थायी न हो उस पर कहते हैं। तुलनीय : पंज० कुसुम दा रंग तिन दिन फिर वेरंगा।

कुहनी है तो निकट, पर मुंह तक नहीं जाती—कभी-कभी बहुत पास की वस्तु भी प्राप्त नही होती। जीवन की विडंबना बड़ी विचित्र है। तुलनीय : अव० कोहनी है तो नेरे पर मुँहै नहीं जाति।

कुही अमावस मूल बिन, बिन रोहिनि अखतीज; स्रवन बिना हो सावनी आधा उपजे बीज - यदि अमावस्या को मूल नक्षत्र न हो, अक्षय तृतीय को रोहिणी नक्षत्र न हो और श्रावणी को श्रवण न हो तो बीज आधा उगेगा, अर्थात् फ़सल चौपट हो जाएगी।

कूकरू उदरू खलाय के, घर-घर चाटतु चून —कुत्ते पेट को पीठ से मिलाए हुए घर-घर जूठन चाटते रहते हैं। अर्थात् नीच मनुष्य अपने लाभ के लिए जूठन खाने जैसा निकृष्ट कार्य करने में भी हिचकिचाते नहीं।

कूकुर भूखें लाख हजार, हाथी घूमे हाट बजार- -कुत्ते लाखों भौंकते रहें तो भी हाथी बाजार में मस्त घूमता रहता है। महान व्यक्ति निंदा करने वालों की परवाह न करके अपने काम में लगे रहते हं। तुलनीय : मरा० कुत्री कितीहि भुकली तरी हत्ती खुशाल बाजारांत हिंडत असतो।

कूजे ढले कि माट—कोई नहीं कह सकता कि पहले बूढ़ा मरेगा या लड़का। जब किसी बूढ़े को मरने के लिए कहा जाय तो वह चिढ़ कर कहता है।

कूटकार्षापणन्यायः- जाली द्रव्य (खोटे सिक्के) का न्याय। किया जाने वाला कार्य जब विपरीत फलवाला सिद्ध होता हो तो उसे वैसे ही छोड़ देना चाहिए, जैसे एक व्यापारी पता लग जाने पर जाली (खोटे) रुपयों को अपने व्यापार में नहीं लगाता।

कूटनवारी कूटी गई, सास पतोहू एकी भई- -जब दो आदमियों की लड़ाई में तीसरा इधर-उधर की लगावे और उन दोनों में मेल हो जाय तब कहते हैं। तुलनीय : अव० कूटन वाली कूट गई, सास पतोह एकै भई।

कूटी दवा और मुड़ा बैरागी पहचाना नहीं जाता—माथा मुड़ाए हुए योगी और कूटी हुई दवा की जाति पहचानना कठिन होता है। तुलनीय : मैथ० मूडल जोगी कूटल दवा के का पहचान।

कूटे हर्र, खाय बहेरा—प्रयास के विपरीत परिणाम भोगने पर ऐसा कहते हैं।

कूटो तो चूना नहिं खाक से बूना—चूना जितना ही कूटा जायगा उतना ही लसदार होगा नहीं तो मिट्टी के

बराबर होता है।

कूड़ी के भी दिन फिरते हैं—सबके जीवन में कभी न कभी सुख आता है। तुलनीय : मल० एन्टे पुळियुम् पूक्कुम्; अं० Every dog has his day.

कूड़ी के इस पार या उस पार—(क) आलसी आदमी के लिए कहा गया है। (ख) किसी काम का वारा-न्यारा करने पर भी कहते हैं।

कूत थोड़ा मंजिल बड़ी—जो काम अपनी शक्ति से परे हो उस पर कहते हैं।

कूद-कूद मछली बगुले को खाय—बड़ी-बड़ी मछलियां कूदकर बगुले को खा जाती हैं। उलटे ज़माने पर कहते हैं। तुलनीय : पंज० कुद कुद मछी बगले नूं खावे।

कूदते-कूदते नचैया हो जाता है—अभ्यास करने से कुशलता आती है।

कूद मुए कूद तेरी नलियों में गूद, निकल गया गूद तो रह गया मरदूद—स्त्रियाँ पुरुषों के प्रति कहती हैं।

कूदे फाँदे तोड़ें तान, ताको दुनिया राखे मान- इस संसार में उसी की इज़्ज़त होती है जो हर तरह का ढंग जानता है। जब गुणी की क़दर नहीं होती तब कहते हैं। तुलनीय : अव० नाचै गावै तोड़ै तान, दुनिया करै वही कै मान।

कूदो न कुआँ, खेलो न जुआ—कुएँ का कूदना और जुआ खेलना अच्छा नहीं है, इसलिए ऐसा कहते है। यह लोकोक्ति उपदेशात्मकहै। तुलनीय : हरि० कूदिए ना कूआ, खेल्हिए ना जूआ; पंज० खू बिच छाल नां मारो जुआ कदी नां खेडो।

कूपखानक न्यायः—कुएँ खोदने वाले की मिट्टी या कीचड़ उसी के पानी से घुल जाती है। किसी कार्य के कारण लगा कलंक या दोष जब उसी कार्य से मिट जाय तो ऐसा कहते हैं।

कूप मेक जाने कहा सागर को विस्तार—कुएँ में रहने वाला मेंढक इतने बड़े सागर की बात को क्या जाने। अर्थात् मूर्ख संसार के असीम ज्ञान के संबंध में कुछ नहीं जानते।

कूपमण्डूकन्यायः—कुएँ के मेंढक का न्याय। प्रस्तुत न्याय का प्रयोग ऐसे आदमी के लिए किया जाता है जिसका पालन-पोषण संकीर्ण दायरे में हुआ हो और जो मानव समाज के सार्वजनिक जीवन से सर्वथा अनभिज्ञ हो।

कूपयंत्र घटिकान्यायः—कुएं के जल को निकालने वाली रहट का न्याय। ज्यों-ज्यों कूपयंत्र का चक्र घूमता जाता है, त्यों-त्यों कुछ जलपात्र नीचे की ओर रिक्त होकर चलते जाते हैं और कुछ जलपात्र जल से पूर्ण होकर ऊपर की ओर आते जाते हैं। प्रस्तुत न्याय का प्रयोग इस नश्वर सांसारिक जीवन में घटित होने वाले परिवर्तनों और अवसरों का उदाहरण प्रस्तुत करने के लिए किया जाता है।

कूबरे-लात बन गई—जब किसी को हानि पहुँचाने की चेष्टा में उसका लाभ हो जाय तो कहते हैं। इस संबंध में एक कथा है : एक बार एक कुबड़े व्यक्ति से अपने मालिक का एक काम बिगड़ गया। मालिक को बहुत क्रोध आया और उसने कुबडे की पीठ पर कसकर एक लात जमाई। किंतु उस लात से कुबड़े का जन्म का कूबड़ ठीक हो गया।

कूर जोगी, मौन साध—जिस व्यक्ति को ढंग से बातचीत करनी न आती हो तो चुप रहना ही उसके लिए श्रेयस्कर है। (क) इस कहावत का प्रयोग तब करते हैं जब कोई मूर्ख बहुत बकबक करके अपनी प्रतिष्ठा खोता है। (ख) जब कोई ढोंगी मौन साधकर अपने दुर्गुणों को छिपाना चाहता है तो भी कहते हैं।

कूर्माङ्गन्यायः—कछुए के अंगों का न्याय। जब कछुआ अपने अंगों को अपने शरीर के अन्दर कर लेता है तब वे दृष्टिगोचर नहीं होते, और जब वह उनको निकालता है तो वे ही अंग जो पहले छिपे हुए थे स्पष्टतया दिखाई पड़ जाते हैं। इस न्याय का स्पष्ट भाव यह है कि जो वस्तु पहले से विद्यमान रहती है वही दृष्टिगोचर होती है और जिस वस्तु का अस्तित्व नहीं है वह दृष्टिगत नहीं हो सकती।

क़ूवत कम, ग़ुस्सा ज़्यादा—निर्बल व्यक्ति को क्रोध अधिक आता है।

क़ूवत थोड़ी, मंज़िल भारी—जो काम सामर्थ्य के बाहर हो उस पर कहते हैं।

केकड़े का बच्चा पैदा होते ही मिट्टी कुरेदता है—केंकड़े का काम ही मिट्टी खोदना है, इसलिए उसका बच्चा भी वही काम करता है। तात्पर्य यह है कि जाति या रक्त के संस्कार प्रबल बहुत होते हैं। तुलनीय : पंज० केकड़े दा बच्चा जनमदा मिट्टी खोददा है।

केंचुआ करे साँप को सर, खिचता खिचता जाय मर—केंचुआ चाहे कितना भी तेज़ चले, किंतु साँप की बराबरी करने में उसके प्राण चले जाते हैं। जब कोई दुर्बल या छोटा व्यक्ति किसी सबल या बड़े की बराबरी करना चाहे और उसमें मुँह की खाए तो उसके प्रति व्यंग्य से ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० कितलो करो, सर्प की सर, चिच्चो कितलो ताणी ताणी मर।

केऊ के लेखे जेठ पूत केऊ के लेखे कनवा—(क) जो घर वालों के लिए तो बड़े काम का हो पर बाहर वाले उसे कम उम्र का जान कर बच्चा समझते हों तब कहते हैं। (ख) जब कोई वस्तु किसी के लिए काफ़ी महत्त्व की हो और कोई उसे कुछ भी न समझे तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० केउके लेखे जेठरका पूता केऊ के लेखे कनवैं।

केकड़े का बच्चा माँ को खाय—ऐसा प्रचलित है कि केकड़ा जन्म लेते ही अपनी मां को खा जाता है। जब किसी कार्य के करने से लाभ कुछ भी न हो, अपितु उलटे हानि हो तब कहते है। तुलनीय : मैथ० ककोड़बाक बियान कवोड़ब खाय; भोज० केकड़ा जनमे माइ के खाला; पंज० केकड़े दा बच्चा माँ नूं खावे

केकर केकर घरों नाम, कमरीं ओढ़ले सारो गाँव—जब सारा गाँव कंबल ओढ़े है तो किसका किसका नाम लिया जाय। जिस मंडली मे सभी खराब हो वहाँ किसी एक पर दोषारोपण नहीं किया जा सकता।

केकर खेती केकर गाय, बखस कोइ मारा जाय—जब कोई निर्दोष मनुष्य किसी दूसरे के दोष के कारण कष्ट पाये तब कहते हैं। तुलनीय : अव० करनी करै के, नाम लागै केकर।

के करनी करे केकरा सिरे बीते—ऊपर देखिए।

केरा बीछी बाँस, अपने जनमे नास—ऐसी मान्यता है कि केला, बिच्छू और बांस ये तीनों जब फल या बच्चे देते हैं तो स्वयं समाप्त हो जाते है।

केला काटने को ठीकरा भी तेज—साधारण हथियार भी केला काटने के लिए काफ़ी होता है। अर्थात् कम शक्ति-शाली भी कमज़ोर के लिए काफ़ी होते है। तुलनीय : भोज० केरा काटे के ठिटिका चोख, मैथ० केरा पर भितुहा चोख कड़रिक गाछ पर मितुआ चोख; मग० कदुआ पर गितुआ चोख; पंज० केला कटण नूं ठीकरा वी तेज।

केला काटने पर ही फलता है—नीच दंड देने पर ही सुधरते हैं। तुलनीय : भोज० केरा फटले पर फरेला। राम-चरितमानस में भी कहा गया है—काटहिं पै कदली फलै, कोटि जतन कोउ सींच।

केले के पौधे पर केला एक ही बार लगता है—(क) सच्चे व्यक्तियों की प्रशंसा के लिए कहते है, क्योंकि वे जो कहते है उससे कभी नहीं फिरते। (ख) स्त्रियों के प्रति भी इसका प्रयोग करते है क्योंकि स्त्रीत्व एक बार बिगड़ने से फिर कभी नहीं आ सकता। (ग) धोखेबाज़ों के प्रति भी कहते हैं क्योंकि वे एक ही बार सफल होते है। तुलनीय : पंज० केले दे थंब उते केला इक बार ही लगदा है।

केले पर केला एक ही बार लगे—ऊपर देखिए।

केवलैर्वचैर्नर्निर्धनाधमर्णिक इव साधून् भ्रामयन्—केवल बातों द्वारा साहूकारों को घुमाने वाले दीन ऋणी की तरह। जो व्यक्ति करते कुछ नही केवल बातों से खुश करना चाहते हैं उनके लिए इस न्याय का प्रयोग किया जाता है।

केशरंजन की शीशी में सरसों का तेल—शीशी तो केशरंजन की है और उसके भीतर तेल सरसों का है। बाहरी दिखावे पर कहा जाता है।

केसन कहा बिगारिया जो मुंडो सौ बार—बालों से नुक़सान नहीं होता फिर भी लोग मुँडवाते रहते हैं। जब किसी व्यक्ति या वस्तु से किसी को हानि न हो फिर भी वह उस व्यक्ति या वस्तु को क्षति पहुँचावे तो कहते है। तुलनीय : पंज० बालां की बगाड़या जिहड़ा बार-बार मुनदे हो।

केह पर करौं सिंगार पिया मोर बारे क आंधर—दे० 'किस पर करूं सिगार...'।

केहरी का नाद सियार का भागना—केहरी (शेर) के बोलते ही सियार भाग जाता है। तात्पर्य यह है कि बलवान से सब डरते हैं।

केहि अपराध बिसारेउ दाया—(क) ईश्वर के प्रति कहते हैं कि किस अपराध के कारण दया करना भूल गए। (ख) बड़े लोग जब छोटों का ध्यान नहीं रखते तब छोटे भी ऐसा कहते है।

केहि कर हृदय क्रोध नहिं दाहा—संसार में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जिसका हृदय कभी क्रोध से दग्ध न हुआ हो। समय आने पर सभी को क्रोध आ जाता है।

केहि के प्रभुता ना घटी पर घर गए रहीम—ऐसा कौन है जिसका दूसरे के घर जाने पर मान न घटा हो। अर्थात् दूसरे से सहायता लेने वाले का मान अवश्य घट जाता है।

केहू ऊदपुर केहू महमूदपुर—कोऊ ऊदपुर आ रहा है और कोई महमूदपुर। जहाँ सब अपनी मनमानी करें वहाँ व्यंग्य से कहते हैं।

केहू न मिले त बाम्हन से बतलाया—जब और कोई बात करने के लिए न मिले तभी ब्राह्मण से बात करनी चाहिए। अर्थात् ब्राह्मणो से बात करना हानिकारक है क्योंकि वे सदा अपना स्वार्थ साधने के चक्कर में रहते हैं।

कै आमदी-ओ-कै पीर शुदी—साधारण अनुभव रखने वाला जब उसी पर इतराने लगता है तो व्यंग्य में ऐसा कहते हैं कि अभी कुछ करो तो सही, कुछ किए बिना ही

अनुभवी कहाँ से हो गए।

कं कन भर, कै मन भर—जब कोई वस्तु इच्छानुसार न मिलकर बहुत कम या बहुत अधिक मिले तब ऐसा कहते हैं।

कंजु सनीचर मीन को, कंजु तुला को होय; राजा विग्रह प्रजा छय, बिरला जीवं कोय—शनिश्चर चाहे मीन का होय चाहे तुला का दोनों दशाओं में राजा युद्ध करेंगे, प्रजा का नाश होगा और शायद ही कोई बचेगा।

कं तो कन भर, कं तो मन भर—दे० 'कं कन भर कै मन···'। तुलनीय : ब्रज० कै तौ कन भरि कै मन भरि।

कंथिन का डोला—कायस्थों की लड़कियाँ जब अपनी ससुराल जाती हैं तो उनके साज-शृंगार में काफी समय लगता है। जब कोई व्यक्ति कहीं जाने की तैयारी में अधिक समय लगा देता है तब ऐसा कहते हैं।

कंमुतिक न्याय—जो बड़े-बड़े काम कर सकता है उसके लिए साधारण काम का मूल्य क्या है? जब किसी काम के अच्छे जानकार को साधारण-सा काम बताया जाय तो कहते हैं।

कं हंसा मोती चुगं कं उपास मरि जाय—नीचे देखिए। तुलनीय : बुंदे० कै नौ मैदा की, कै फिर ठनका की; मरा० खाईन तर तुपाशी नाही तर उपाशी।

कं हंसा मोती चुगे, कं भूखा मर जाय—हंस या तो मोती ही चुगते हैं या भूखे मर जाते है। (क) जो व्यक्ति अपना अभिमान छोड़ने से मृत्यु अच्छी समझते हैं उनके प्रति कहते हैं। (ख) जो सज्जन पुरुष अपने सिद्धांतों और नियमों के लिए प्राण दे देते हैं, किंतु कोई नीच कार्य नहीं करते उनके प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : राज० कं हंसा मोती चुगं कं निरणा (भूखा) रह जाय; मरा० हंस मोती तरी रिपून खातील नहीं तर उपाशीं मरतील; पंज० हंस यां तां मोती चुगदा है यां पुखा मर जांदा है।

कं हंसा मोती चुग कं भूखे मर जाहि—ऊपर देखिए।

कं हंसा मोती चुगे कं लंघन मर जाय—दे० कं हंसा मोती चुगं कं भूखा···'।

कोइरिन की बिटया का न नैहरे सुख, न ससुरे सुख—खेतिहर जाति की कन्या को न मायके में सुख मिलता है और न ससुराल में क्योंकि दोनों स्थानों पर उसे खेत में काम करना पड़ता है। जब किसी को सभी जगह कष्ट भोगना पड़े तो कहते हैं।

कोइरी की बिटिया, केसर का तिलक—कोइरी (एक जाति जो सब्जियाँ बोती है) की पुत्री ने केसर का तिलक लगाया है। जब कोई निर्धन व्यक्ति धनवानों की तरह शान-शौकत दिखाए तो व्यंग्य से कहते हैं।

कोइरी के गाँव में धोबी पटवारी—(क) जैसा मालिक वैसा कारिन्दा। अर्थात् मूर्ख को मूर्ख ही अच्छा लगता है। (ख) कोइरी से धोबी हिसाब रखने या करने में चतुर होता है, इसलिए कहते हैं। तुलनीय : मरा० कोइरी गाँवात धोबी तलाठी, कोइरी गाँव चे धोबी हि शेतकरण्यांत हुशार असतात; भोज० कोइरी के गाँव में धोबी पटवारी।

कोइरी के लरिका करम के हीन, खुरपी ले के मोथा बीन—निर्धनों या भाग्यहीनों को छोटा काम ही करना पड़ता है।

कोइरी सिपाही बकरी मरकही—कोइरी सिपाही नहीं हो सकता और न बकरी मरकही (सींग से मारने वाली) हो सकती है। कठिन कार्य साधारण लोगों के बस का नहीं होता जो जिस काम के लायक होता है वह उसे ही कर सकता है।

कोई अब बोले, कोई जब बोले, मेरी नकटी शपाशप सब बोले—अत्यंत निर्लज्ज व्यक्ति के लिए कहते हैं जो अपमानित होने पर भी अपनी बकवास किये जाता है।

कोई आँख का अंधा, कोई हिये/अक्ल का अंधा—आँख के अंधे को तो दिखाई नहीं देता किंतु अक्ल के अंधे को कोई क्या करे? जब कोई समझाने पर भी नहीं समझता तब कहते हैं। तुलनीय : मरा० कोणाचे डोले आँधळे कोणाचे हृदय आँधळे; पंज० कोई अख दा अन्ना कोई अकल दा अन्ना।

कोई आदमी मरने योग्य नहीं, और कोई वस्तु देने योग्य नहीं—संसार में कोई भी मनुष्य मरना नहीं चाहता, किंतु सभी को मरना पड़ता है तथा संसार में कोई ऐसी वस्तु नहीं है जिसे बेकार कहा जाए और किसी को दे दी जाए। जब कोई व्यक्ति किसी वस्तु को देने में आनाकानी करता है या अपनी इच्छा से नहीं देता तो उसके प्रति इस प्रकार कहते हैं। तुलनीय : गढ़० मन्न जुग मनखी निहोंद देण जुग वस्तू नि होंदी; पंज० कोई मरण जोगा नई कोई देण जोगा नई।

कोई ओढ़े शाल दुशाला, मोरा पियवा ओढ़े कालो कमरिया—कोई तो शाल-दुशाला ओढ़ता है पर मेरे स्वामी काले कम्बल में ही मस्त हैं। (क) सब कुछ रहते हुए भी सादगी अपनाने पर लोग कहते हैं। (ख) मूर्ख के प्रति भी ऐसा कहते हैं।

कोई कह के दिखाय, हम करके दिखायें—कोई तो केवल किसी काम के करने को कहकर ही रह जाता है, पर मैं

काम को पूरा करके ही छोड़ता हूँ। वचन के पक्के व्यक्ति के प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० कोई कहके दिखे असी करके दसिसये।

कोई कहीं जाय, मियाँ गौने को जाय—लोग अपने-अपने काम कर रहे हैं और मियाँ को अपने गौने की चिंता है। (क) स्वार्थी के प्रति कहते हैं। (ख) बेतुका काम करने वाले को भी कहते हैं।

कोई कहे मैं क्या खाऊँ, कोई कहे मैं किससे खाऊँ—निर्धन मनुष्य को भरपेट भोजन नहीं मिलता और धनवान की कोई वस्तु स्वादिष्ट नहीं लगती। (क) धनवान और ग़रीब की तुलना करने में इस लोकोक्ति का प्रयोग किया जाता है। (ख) संसार की विचित्रता पर भी कहते हैं जहाँ पर कोई खाने के लिए मुहताज है और कोई विलासिता में डूबा हुआ है। तुलनीय : गढ़० क्वै बोद क्या खौं, क्वै बोद की माँ खौं; पंज० कोई आक्खे मैं की खावाँ कोई आक्खे मैं किसरा खावाँ।

कोई काऊ में मस्त कोई काऊ में मस्त—कोई किसी तरह से खुश है और कोई किसी तरह से। आशय यह है कि सबकी प्रसन्नता अलग-अलग होती है।

कोई काम करे दाम से, हम दाम करें काम से—कोई पूँजी लगाकर व्यापार करता है, हम परिश्रम करके पूँजी पैदा करते हैं। परिश्रमी व्यक्तियों के प्रति कहते हैं।

कोई किसी की क़ब्र में नहीं जाता—मरने के बाद कोई किसी के साथ नहीं जाता, अपने कर्मों का परिणाम स्वयं भुगतना पड़ता है। बुरे कर्म करने वालों के शिक्षार्थ ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० कोई किसे दी कब्र बिच नई जांदा।

कोई खा के खुश कोई खिला के—कोई व्यक्ति स्वयं खाकर प्रसन्न होता है और कोई दूसरों को खिलाकर। अर्थात् सब लोग अलग-अलग विचार के होते हैं। तुलनीय : मेवा० कोई जीम र राजी व्हे कोई जीमार राजी व्हे; पंज० कोई खा के खुस कोई खोआ के।

कोई खाते-खाते मरे, कोई खाए बिना मरे—समाज में आर्थिक असमानता इतनी अधिक है कि कोई अधिक खाने से अपच के कारण मरता है तो कोई खाना न मिलने के कारण मरता है। तुलनीय : मैथ० कोय खाइते मरे, कोय गाछ कांदे; भोज० केहू खइले से मरे केहू खइले बिना मरे; पंज० कोई खा खा के मरे कोई भुखा मरे।

कोई खाए खस्सी मार, कोई रोए आँसू चार—(क) कोई तो बकरा (खस्सी) मार कर खाता है और कोई भूख के मारे बैठ कर रोता है। (ख) बकरा (खस्सी) कोई खाता है और रोता कोई है। समाज की अव्यवस्थित व्यवस्था पर कहते हैं। जब दंड अपराधी को न मिलकर किसी और को मिलता है तब भी ऐसा कहते हैं।

कोई खाय तर माल, कोई लेटे हो निढाल—अच्छे-अच्छे पकवान तो कोई और खाए तथा पेट के दर्द से कोई और पीड़ित हो। तुलनीय : भोज० खां यं भीम हग्गें सकुनी अथवा केहू खाय खाना, केहू जाय पैखाना।

कोई खींचे लाँग लँगोटी कोई खींचे मूछरियाँ, कोठे चढ़के दी दुहाई, कोई मत करियो दो जनियाँ—दो ब्याह करने वालों पर व्यंग्य है, क्योंकि दो विवाह करने वालों की बड़ी दुर्दशा होती है।

कोई गावे होली, कोई गावे दिवाली—(क) जहाँ पर सभी लोग मनमाने ढंग से कार्य करते हैं वहाँ इस लोकोक्ति का प्रयोग होता है। (ख) शासन-व्यवस्था अच्छी न होने पर भी इसका प्रयोग करते हैं। तुलनीय : हरि० कोए गावै होळी के, कोए गावै दिवाळी के; राज० कोई गावै होळी रा कोई गावै दियाळी रा; पंज० कोई गावे हाली कोई गावे दिवाली; ब्रज०कोई गावै होरी, कोई गावै दिबारी।

कोई गिने न गूँथे, मैं लल्लन की बुआ—जब कोई बिना कारण या बिना जान-पहचान के किसी की व्यक्तिगत बात में टाँग अड़ाए तो व्यंग्य से कहते हैं।

कोई डूबे हम तो हँसें—दूसरे के दुःख को देखकर खुश होने वालों के प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० कोई डुबे असी तां हसिये।

कोई तन दुखी कोई मन दुखी, दुखी सारा संसार—किसी को कोई दुख किसी को कोई, दुनिया में कोई भी व्यक्ति सुखी नहीं है।

कोई तोलों भरी कोई मोलों भारी, कोई तोलों कम कोई मोलों कम—कोई किसी कारण सम्मानित होता है और कोई किसी कारण सम्मान पाता है। हर व्यक्ति अपनी-अपनी हैसियत के अनुसार इज्ज़त पाता है।

कोई दम का दमामा है—मनुष्य-जीवन की क्षणभंगुरता पर कहा गया है। तुलनीय : हरि० कोये दिण की चाँदणी फेर अँधेरी रात।

कोई दम का मेहमान है—जब कोई आदमी मर रहा हो तब कहते हैं। तुलनीय : अव० तनकिन बेरिया के मेहमान है; भोज० थोड़ देर के मेहमान हवें; पंज० थोडे चिरदा परौणा है।

कोई न पूछे बात, मैं दूल्हे की मौसी—कोई बात भी

नहीं पूछ रहा और बताती हैं अपने को दूल्हे की मौसी। (क) जब कोई ज़बरदस्ती किसी से अपना रिश्ता जोड़ कर अपना पद ऊँचा करना चाहे तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। (ख) जब कोई किसी की बात में बिना किसी संबंध के दखल दे तो उसके प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : राज० (क) कोई पूछै न ताछै हूँ लाडेरी भूवा, (ख) आवै न जावै हूँ लाडैरी भूवा।

कोई न मिले तो अहीर से बतलाय, कुछ न मिले तो सतुआ खाय –अर्थात् अहीर बहुत मूर्ख होते हे इनसे कोई बात नही कहनी चाहिए क्योंकि वे उस बात को सब लोगों में फैला देते हैं और साथ ही कुछ कहने पर लड़ाई-झगड़ा करने को तैयार हो जाते है। इसी प्रकार सतुआ भी अच्छा भोजन नहीं है, अत: उसे भी नही खाना चाहिए। तुलनीय : अव० कोऊ न मिलै तौ अहिर मे बतलाय, कुछ न मिलै तो सेतुआ खाय।

कोई न रहा बिन दांत निपोरे—प्रत्येक व्यक्ति को कभी न कभी किसी के सामने हाथ फैलाना पड़ता है। आशय यह है कि समय परिवर्तनशील होता है। तुलनीय : मैथ० कोय न रहल बिन दांत खिसोटे; भोज० दांत निपोरला बिना केहू नां रहे।

कोई नहीं पूछता कि तेरे मुंह में कै दांत हैं—बड़ा सुख-शांति का युग है, हर व्यक्ति निडर और स्वतंत्र है कोई किसी को नही पूछता।

कोई नाचे कैसे ही, ऊधो नाचें वैसे ही -(क) जब कोई व्यक्ति सबका साथ न देकर अपने मन की करे तो कहते है। (ख) जो व्यक्ति पुराने ढर्रे पर चलना पसंद करें उनके प्रति भी व्यंग्य से कहते हैं।

कोई पूजे गंगा माई, कोई पूजे काली माई –(क) जहां सब अपने में ही मस्त हों, कोई भी एक-दूसरे की चिंता न करे तो उनके प्रति इस लोकोक्ति का प्रयोग किया जाता है। (ख) जिन व्यक्तियों का आपस में मतैक्य न हो उनके प्रति भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० क्वै मैरोंकि केरी का, क्वै नरसिंह कि केरी का।

कोई फिरे डाल-डाल, मैं फिरूं पात-पात—यदि कोई डाल-डाल पर घूमता है तो मैं पत्ते-पत्ते पर घूमता हूँ। जो व्यक्ति चतुर होने के कारण दूसरों के गुप्त भेद जान जाय उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० कोई फिरै डाळ डाळ, हूँ फिरूँ पान-पान।

कोई बियाय, कोई ओछवानी खाय—बच्चा कोई पैदा करे और पौष्टिक पदार्थ (ओछवानी) कोई खाए। अर्थात् जब परिश्रम कोई करे और आराम कोई करे तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : छत्तीस० आन बियाय, आन पथ खाय।

कोई भाग्य बदल देगा?—अर्थात् कोई किसी के भाग्य को बदल नहीं सकता। (क) जब कोई व्यक्ति किसी से नाराज़ हो जाता है तब कहते हैं। (ख) जब लोग किसी का बुरा चाहते है पर उसका भला होता है तब भी ऐसा कहते हैं। (ग) जब किसी व्यक्ति के किसी कार्य के लिए लोग काफी प्रयत्न करते हैं परन्तु फिर भी उसे सफलता नही मिलती तब भी ऐसा कहते है। तुलनीय : राज० किसी भाग लुयीजै है; पंज० कोई पाग बदल देवेगा।

कोई भी मां के पेट से लेकर नहीं निकला– दे० 'कोई मां के पेट से सीखकर···'।

कोई भी हो कार-व्यापार, बड़े भाई सदा तैयार– चाहे किसी भी प्रकार का कारोबार हो बड़े भाई सदा तत्पर रहते हैं। जो व्यक्ति सदा प्रत्येक कार्य करने को उद्यत रहता हो किन्तु अंत तक करता किसी को भी न हो तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० कोई चालै चाकरी ताज्यो तुरक तयार।

कोई मँगाय कोई खाय, जो खाय सो गधा कहाय—किसी को भूख लगी हो और वह भोजन मँगवाए किन्तु कोई दूसरा व्यक्ति उसे खा जाए तो उसे गधा ही कहा जाता है। अर्थात् दूसरे का भोजन खा जाना अनुचित और अशिष्टता-पूर्ण माना जाता है। तुलनीय : राज० दूसरेरी तिस पीवै उको गधो हुवै; पंज० कोई मंगावे कोई खावे जो खावे ओह खोता खुआवे।

कोई मरे, किसी का घर भरे– किसी की हानि पर जब कोई दूसरा लाभ उठाता है तो कहते है। तुलनीय : पंज० कोई मरे किसे दा कर परया।

कोई मरे कोई गाए मल्हार—दे० 'कोई मरे कोई मल्हार···'।

कोई मरे कोई जीसे, सुथरा घोल बतासे पीसे —स्वार्थी के लिए कहते हैं जिसे किसी के मरने-जीने से कोई मतलब नहीं है। सुथरा संतों की जाति है जो किसी के मरने पर दुःख नहीं मनाते। तुलनीय : मरा० कोणी मरो कोणी नाहीं तरतरो हा आपला बतासे घालूव शुद्ध भाग पिणार।

कोई मरे कोई मल्हार गावे—जब कोई दूसरे की विपत्ति पर हँसता है तब कहते हैं। तुलनीय : अव० केउ मरै इनका मल्हार सूझी है।

कोई मरे कोई मौज करे—ऊपर देखिए। तुलनीय : अव० कोउ मरे कोउ मउजें मारे; पंज० कोई मरे कोई गीत

गावे ।

कोई मरे कोई राम-राम करे—जो दूसरे के दुःख में सहयोग नही देते बल्कि प्रसन्नता व्यक्त करते हैं उनके प्रति कहते है। तुलनीय : असमी—केवे मरे, केवे हरि हरि करे; पंज० मरे कोई राम-राम करे कोई ।

कोई मां के पेट से सीख कर नहीं आता - सभी लोग संसार में आकर ही ज्ञान प्राप्त करते हैं। जब लोग किसी कार्य से अनभिज्ञ लोगों को उनकी गलतियों पर डाँटते हैं या उनकी खिल्ली उड़ाते है तब वे ऐसा कहते है। तुलनीय : अव० केउ माई के पेट मा सिख के नाही आवा; पंज० कोई मां दे टिड बिचों सिख के नई आंदा।

कोई माल में मस्त, कोई खाल में मस्त—कोई धन-सम्पत्ति में प्रसन्न रहता है तो कोई फ़ाकेमस्ती में। प्रत्येक व्यक्ति अलग-अलग विचार रखता है ।

कोई माल में मस्त, कोई ख़्याल में मस्त—(क) कोई केवल धन-लाभ से ही प्रसन्न रहता है चाहे उसका उपभोग वह जाने या न जाने और कोई सम्पत्ति को अच्छे कामों में लगाकर ही खुश होता है। (ख) कोई सपनों की दुनिया में ही मस्त रहता है, चाहे उसे कुछ मिले या न मिले और कोई धन-संग्रह में मस्त रहता है। तुलनीय : पंज० कोई माल विच मस्त कोई खयाल विच मस्त।

कोई मुझे न मारे तो मैं सारे जहाँन को मार आऊं—डरपोक आदमी के प्रति कहते है जो मुंह पर कुछ न कहता हो और पीठ पीछे डींग हाँकता है। तुलनीय : गढ़० मार्दी मार्दी दिल्ली जौं, जब क्वे आगो हाथ नाकर; पंज० मैंनू कोई नाँ मारे ताँ मैं सारे जहान नू मार आवा।

कोई राजा का साला, कोई रानी का साला—जहाँ सभी अधिकारियों के पिट्ठू हों या जहाँ सभी मनमानी करने वाले हों वहाँ कहते हैं। तुलनीय : पंज० कोई राजा दा साला कोई रानी दा साला।

कोइ रोए आंसू चार कोइ खाए खस्सी मार—दे० 'कोई खाए खस्सी मार…'।

कोई रोवे घड़े को और कोई रोवे घोड़े को – कोई घड़े जैसी सस्ती वस्तु के लिए परेशान है और कोई घोड़े जैसी महंगी वस्तु के लिए। कोई जीवन की प्रारंभिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए परेशान रहता है तो कोई विलासिता की वस्तुओं के लिए। तुलनीय : गढ़० क्वे जौ घड़ा का मोल, क्वे जौ घोड़ा का मोल; पंज० कोई रोवे कड़े नू कोई रोवे कोड़े नूं ।

कोई संग लाया है न कोई ले जायगा—इस संसार में कोई कुछ लेकर न पैदा होता है और न मरने पर कुछ लेकर जाता है। लोभी व्यक्तियों के शिक्षार्थ ऐसा कहते हैं। तुलनीय : हरि० ना कोय साथ ल्याया, ना कोय ले ज्यागा; पंज० नां कोई नाल लियाया नां नाल ले जावेगा।

कोई हाल मस्त, कोई माल मस्त—कोई अपनी निश्चिन्तता में मस्त रहता है और कोई अपने माल में ही मस्त रहता है। अर्थात् सब लोगों की अलग-अलग चाल होती है।

कोई होली के गीत गाए, कोई दिवाली के—दे० 'कोई गावे होली, कोई…'।

कोउ का घर जले, कोउ हाथ सेके—दे० 'किसी का घर जले…'। तुलनीय : ब्रज० काऊ कौ घर जरै कोई हात सेकै।

कोउ न काहु दुख सुखकर दाता, निजकृत कर्म भोग सब भ्राता—इस संसार में कोई सुख-दुःख देने वाला नही है, मनुष्य अपने पूर्वजन्म मे किए हुए अच्छे-बुरे कर्मों का फल भोगता है। जब कोई अपने दुःख का दोष ईश्वर को दे तब कहते हैं।

कोउ नृप होय हमहि का हानी, चेरी छाँड़ि अब होब कि रानी—राजा कोई हो मेरा कोई नुक़सान नहीं क्योंकि मैं दासी से रानी नही होऊँगी। कैकेयी से मन्थरा ने कहा था। नौकर को तो नौकरी ही करनी है चाहे कोई भी मालिक क्यों न हो क्योंकि उसके लिए सभी मालिक एक से होते हैं। तुलनीय : मरा० कोणी होईना राजा, आपलें काय जाणार (मी) दासी आहें ती राणी थोडीय होणार।

कोउ लांगड़, कोउ लूल, कोउ चले मटकावत कूल—(क) जिस परिवार में लँगड़े, काने, लूले आदि हों उस पर ऐसा कहते है। (ख) संसार की विविधता और विभिन्न प्राणियों में परस्पर अंतर पर भी ऐसा कहा जाता है।

कोउ सर्वज्ञ धर्मरत कोई, सब पर प्रीति पितहिं सम होई—चाहे पुत्र सर्वज्ञ हो या धर्म का पालन करने वाला, पिता का प्रेम दोनों पर एक-सा ही होता है।

कोऊ मरे कोऊ मलार गावे—दे० 'कोई मरे कोई मल्हार गावे।'

को कहि सके बड़ेन सों, लखे बड़ी ही भूल—बड़े आदमी की बड़ी भूल या दोष को लोग देखते हुए भी कुछ नहीं कहते अर्थात् बड़े सभी प्रकार के कुकर्म कर लेते हैं फिर भी उन पर लांछन नही लगाया जाता। 'समरथ हूँ नहिं दोस गुसाईं' —तुलसी

को कहि सके बड़ेन सों, होत बड़ी ए भूल; दीने दई गुलाब की, इन डारन के फूल—बड़ों में भी दोष पाया जाता

है। जैसे गुलाब बहुत सुंदर फूल है फिर भी उसकी टहनियों में कांटे पाए जाते हैं।

कोकिल अंब ही लेत है, काक निबौरी लेत—कोयल आम का फल ही खाती है, किंतु कौआ निबोली (नीम का फल) खाता है। (क) जो जिस योग्य होता है उसे वैसी वस्तु ही मिलती है। (ख) बुरे आदमी बुरी वस्तु को तथा भले आदमी भली वस्तु को पसंद करते हैं।

कोख का बाघ हो गया—जब अपना पुत्र ही शत्रु हो जाय तो कहते हैं।

कोख की आँच सही जाती है पेट की आँच नहीं सही जाती—(क) प्रसव-पीड़ा सहनीय है पर पेट दर्द नही सहा जाता। (ख) सन्तान की मृत्यु सह ली जाती है पर पति की नही। (ग) निःसन्तान होना सहनीय है पर भूख नही सही जाती।

कोख के लिए गए माँग गँवा आए—जब कोई थोड़े लाभ के लिए कहीं जाय या कुछ करे पर अधिक हानि हो जावे तब कहते है। तुलनीय : भोज० कोख खातिर गइली माँग गवाँ के अइली।

कोख से ठंडी है—सन्तानवती है, गोद भरी है।

को जग काम नचाव न जेहीं—संसार में कौन ऐसा है जिसे कामदेव ने अपने वश में न किया हो।

को जग काम नचाव न जेती—संसार में ऐसा कौन बलशाली है जिसे कामदेव न नचा सकता हो। अर्थात् काम बड़ों-बड़ों को अपनी लपेट मे ले लेता है।

को जग जाहि न व्यापी माया—संसार में कौन ऐसा है जो माया के बंधन में न फँसा हो? अर्थात् कोई व्यक्ति माया से मुक्त नहीं है।

कोटि करो चतुराई विधि का लिखा मेट न जाई—लाख प्रयत्न करने पर भी होनी को कोई नही रोक सकता।

कोटि जतन कोऊ करे, परै न प्रकृतिहिं बीच; नल बल जल ऊंचो चढ़े, अन्त नीच को नीच—लाखों उपाय करने पर भी नीच की नीचता नही जाती, जैसे नल के ज़ोर से फुहारे का पानी ऊपर चढ़ तो जाता है परन्तु अन्त में नीचे ही आता है। जब कोई तुच्छ व्यक्ति ऊँचा पद पाने पर भी नीचता का काम करे तब कहते है।

कोटि जतन पर बोधिए कागा हंस न होय—लाख प्रयत्न करने पर भी कौआ हंस नहीं बन सकता। कितनी भी शिक्षा या उपदेश क्यों न दिया जाय पर नीच व्यक्ति सज्जन नहीं बन सकता।

कोटि जतन हू फिरत ना लिखी जो बिधि की बात—भाग्य का लिखा लाख प्रयत्न करने पर भी नहीं मिटता।

कोटिन दाख खवाइ मसे पर ऊँटहिं काठ कठेरोइ भावे—ऊँट को कितना भी किशमिश आदि अच्छी चीजें क्यों न खिलाई जायँ फिर भी उसे कांटे, पत्ते आदि ही पसंद आते हैं। नीच या दुष्ट व्यक्ति को जितना भी उपदेश या शिक्षा क्यों न दी जाय फिर भी वह अपने स्वभाव को नहीं बदलता।

कोटिन रंग दिखावत है जब अंग में आवत भंग भवानी—यह भंगेड़ियों का कहना है कि जब शरीर में भाँग अपना असर कर जाती है तो अनेक रंग दिखाती है।

कोठिला बैठी बोली जई, आधे अगहन काहे न बोई—कोठिले में जई (एक अनाज) ने कहा कि मुझे आधे अगहन में क्यों नही बोया, अर्थात् जई अगहन मास के मध्य में बोने से बहुत पैदा होती है।

कोटी कुठला हाथ न देना घर बार तेरा है—नीचे देखिये तुलनीय : कौर० कोट्ठी कुठळे ते हात्था न लाइए, घर-बार तेरा है।

कोठी कुठले को हाथ न लगाओ घरबार सब तुम्हारा—(क) जो सास अपनी नई बहू को घर नहीं सौंपना चाहती उसके लिए कहते है। (ख) ओछी तथा झूठी ख़ातिरदारी पर भी कहते हैं।

कोठी के साथ ही पाखाना भी बनता है—जहाँ सुंदर और बहुमूल्य भवन बनाया है वही पाखाना भी बनाया जाता है। (क) अच्छी और बुरी दोनों तरह की वस्तुएँ इकट्ठी ही रहती हैं। (ख) भले और बुरे दोनों प्रकार के मनुष्य एक ही स्थान पर रहते हैं। तुलनीय : राज० हवेली हुवै जठै पारतखानो ही हुवै; पंज० कोठी दे नाल टट्टी बी बनदी है; अं० No garden without its weeds.

कोठी धोये कीच हाथ लगे—बुरा काम करने से बद-नामी ही होती है, मिलता-जुलता कुछ नहीं।

कोठी में चारउ घर में उपास—कोठी में चावल रहते हुए यदि खाने की तकलीफ़ हो तो ठीक नही। कंजूस और मूर्ख के लिए कहा जाता है। तुलनीय : अव० कोठरी मा चाउर, तबौ उपास।

कोठी में धान तो काठो में सान—काठ (निर्जीव) भी रोब से बात करता है यदि उसके पास धन हो। अर्थात् मूर्ख भी पैसा होने पर गर्व से बात करता है।

कोठी में धान तो कोट में ग्यान—जिसके पास पैसा होता है ज्ञान भी उसी के पास होता है। पैसे से ही सभी काम किए जाते हैं इसलिए जिसके पास पैसा होता है वही समझ-

दार भी होता है। तुलनीय : मग० जेकर कोठी में धान सेकर कोट में ग्यान; पंज ० कोठी बिच तान तां मिले गयान।

कोठी में से मूठी नहीं निकली—(क) जब पूंजी उतनी की उतनी बनी रहे तब कहते हैं। जो ब्रह्मचर्य से रहे उसे भी कहते हैं।

कोठे ऊपर तोमड़ी क्या देखेगी लोमड़ी—कंजूस या स्वार्थी व्यक्ति से किसी के भले आशा की नही की जा सकती।

कोठे में रहने वाली जीने पर आ गई, रफ़्ते रफ़्ते अपने क़रीने पर आ गई— जब कोई मनुष्य उच्च स्थान प्राप्त कर फिर अपनी दुष्टता से निम्न स्थान पर आ जाए तब कहते हैं।

कोठे कोठे की बुद्धि—सबकी विचारधारा अलग-अलग होती है। जब कोई किसी की अच्छी बात से भी सहमत नहीं होता तो कहते है।

कोठे कोठे जी छुपाते हैं—चारो तरफ भाग रहे हैं। (क) जब कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति या काम से बचने के लिए छिपता रहे तो कहते है। (ख) जब किसी क़र्ज़दार को उसका महाजन परेशान करता है तब क़र्ज़दार ऐसा कहता है।

कोठे वाला रोवे छप्पर वाला सोवे—धनी से निर्धन मज़े में रहता है क्योंकि वह निश्चिन्त है। तुलनीय : मरा० गच्ची वाला रडतो, छप्पर वाला झोंपतो; अव० महलवाला रोवै, झोपड़िया वाल सोवे ; हरि० कोट्ठी आला रोवै अर छप्पर आल सोवे; पंज० कोठे वाला रोवे छप्पर वाला सोवे ; ब्रज० कोठे बारौ रोवै, छप्पर वारौ सोवै।

कोठे मे गिरा सम्हलता है, नज़रों से गिरा नहीं सम्हलता—निर्धन हो जाने पर इज्जत फिर भी बन सकती है, किन्तु एक बार निरादर हो जाने से फिर आदर मिलना कठिन होता है। चार आदमियों की नज़र से गिर जाने पर कहा जाता है। तुलनीय : अव० अटारी से गिरा संभार जात है मुला नजर मे गिरा नही संभरत।

कोड़ा की मार घोड़ा सहे सूल की मार हाथी—(क) भारी आघात मज़बूत व्यक्ति ही सह सकता है। (ख) बड़ी परेशानियों को बडे (सपन्न) लोग ही बर्दाश्त कर सकते हैं।

कोढ़ और कोढ़ में खाज—जब विपत्ति पर विपत्ति आ जाती है तब कहते है।

कोढ़ का दाग़ और नील का टीका—ये दोनों आयु-पर्यन्त नहीं जाते। बुरे काम से रोकने के लिए इस प्रकार कहते हैं, क्योंकि एक बार कलंकित हो जाने पर फिर आदर मिलना कठिन हो जाता है। तुलनीय : गढ़० नील को टीका कोढ़ को दाग; पंज० कोड़ दा दाग अते नील दा टिक्का।

कोढ़ में खाज—दे० 'कोढ़ और कोढ़ में ···'। तुलनीय : बुंदे० कोढ़ और कोढ़ में खाज; ब्रज० कंगाली में आटा गीला; अव० कोढ़ी कै खाज (कोढ़ में खाज)।

कोढ़ी का दिल शहज़ादी पर—कोढ़ी शाहज़ादी को पाना चाहता है। जब कोई निकृष्ट व्यक्ति बहुत उच्च श्रेणी की वस्तु पाना चाहता हो तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० काढ़ियेरो सवासणी माथे मन चालं; पंज० कोड़ी दा दिल सहलादी उत्ते।

कोढ़ी को जूं नहीं पड़ती—क्योंकि उसका ख़ून ख़राब होता है। अर्थात् बुरे व्यक्ति से सभी डरते है। तुलनीय : अव० कोढ़ी के जुआं नाही परत ; पंज० कोड़ी नू जुँआ नई पैंदियाँ; ब्रज० कोढिया कै जूआँ नाये परें।

कोढ़ी को दाल-भात कमासुत को फुटहा—जब परिश्रमी व्यक्ति को कुछ भी न मिले और निकम्मे बैठकर मौज करें तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० कोढ़ी के बरे दाल भात कमासुत के बरे भुट्टा।

कोढ़ी डराये थूक से—कोढ़ी के थूक से लोग बहुत डरते हैं, अर्थात् घृणा करते हैं। एक तो कोढ़ी दूसरे थूक जैसी गन्दी चीज़। तुलनीय : भोज० कोढ़ी डेरवावेला थूक से; पंज० कोड़ी डरावे थुक नाल;

कोढ़ी बैल की फुफकार बड़ी—निकम्मे काम कुछ नहीं करते, लेकिन दूसरों पर रोब ख़ूब दिखाते हैं। तुलनीय : मैथ० कोढिया बरद के फुफकार बड; कोढ़िया बरदा के खाली फुफकारे; भोज० कोढ़ी बरध ख़ूब फुफकारेला।

कोढ़ी मरे संगाती चाहे—कोढ़ी मरते समय चाहता है कि कोई और मेरी ही तरह मरे। जो अपना-सा बुरा दूसरों का भी चाहे उसके प्रति कहते हैं।

कोतवाल को कोतवाली ही सिखाती है—पद ही काम सिखाता है।

कोतह गर्दन तंग पेशानी, हरामज़ादे की यही—निशानी—छोटी गर्दन तथा संकीर्ण मस्तक वाला व्यक्ति दुष्ट समझा जाता है।

कोता गर्दन, दुम दराज कंजी आँख, कबूतरबाज; सौ में अंधा सहस में काना, लवा लाउ में ऐंचा ताना; ऐंचा ताना करी पुकार, गंजे से रहियो हुशियार; जाकी छाती एक न बार, वह मानव सबका सरदार—जिसकी गर्दन छोटी हो (कोतह) तथा दुम लंबी हो जिनके पीछे-पीछे बहुत से

लोग खुशामद करते रहते हों, जिसकी आँखें कंजी हों और जो कबूतरबाज़ी जैसे निम्न स्तर के मनोरंजन का शौक़ीन हो, जो अंधा, काना, ऐंचा-ताना हो, जो गंजा हो तथा जिसकी छाती पर बाल न हों ऐसे लोग प्रायः अच्छे नहीं होते। इनमें भी जिसकी छाती पर बाल न हों वह सबसे ख़राब होता है तथा उस क्रम से उसके पूर्व कहे गए लोग उसकी अपेक्षा कम ख़राब होते हैं।

कोदों कान किन भातन में और ममिया सास किन सासन में —कोदों का भात सब भातों में हेठा समझा जाता है, उसी तरह ममिया सास भी सासों में सब से हेठी समझी जाती है। अर्थात् इन दोनों का कोई विशेष महत्त्व नहीं है।

कोदों देके पढ़े हो ? —(क) कम पढ़े-लिखे के लिए कहा जाता है। (ख) जिसको पढ़ाई-लिखाई का ठीक बोध न हो उसे भी कहते है। तुलनीय : अव० कोदों दे के पढ़े ह्या का; पंज० कोदरा दे के पढ़े हो (छोले बेच)।

कोदों दे के पूत पढ़ाए सोलह दूने आठ—कोदों जैसा निकृष्ट अन्न देकर पढ़ने वाले को आजकल कोई गुरु क्या पढा सकता है ? जब कोई पढ़ा-लिखा व्यक्ति साधारण से प्रश्न का उत्तर नहीं दे पाता तो व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय पंज० कोदरा दे के पुत्तर पढ़ाए सोलां दूनी अट्ठ; भोज० कोदों दे के पूत पढ़उली सोरह दूनी आठ।

कोदों मड़ुआ अन नहीं, जोलहा धुनिया जन नहीं— कोदो और मड़ुए की गिनती अनाजों मे नहीं की जाती तथा जुलाहे और धुनिए की गिनती मनुष्यों में नहीं की जाती। अर्थात् ये चारों अच्छे नहीं समझे जाते।

कोन इसान दुंदुभी बाजै, दही भात सब भोजन गाजै ईषान कोण (उत्तर-पूर्व) की हवा चलने से फ़सल अच्छी होती है और लोग अधिक शादी-विवाह होने के कारण खूब दही-भात खाकर प्रसन्न होते हैं।

को न कुसंगत पाई नसाई, रहइ न नीच मते चतुराई— नीच के साथ रहने से बुद्धिमान भी मूर्ख हो जाते हैं और बुरों के साथ रहने से हानि उठानी पडती है।

को न चहइ जग जीवन लाहू—संसार का प्रत्येक प्राणी जीवन का लाभ उठाना चाहता है।

कोफ़्तारा, नानेतिही कोफ़्तास्त—भूखे के लिए सूखी रोटी कोफ़्ते के समान स्वादिष्ट है। भूखे व्यक्ति को साधारण या बुरा भोजन भी बहुत अच्छा लगता है। दे० 'भूख में गूलर पकवान' तुलनीय : अं० Hunger is the best sauce.

को बड़ छोट कहत अपराधू—किसी एक को बड़ा और दूसरे को छोटा कहना भी अपराध ही होगा। जब कोई व्यक्ति दो मनुष्यों या दो वस्तुओं में किसी को भी संकोच या लज्जावश अच्छा या बुरा नहीं कह पाता तब कहता है।

कोयल, काले कौवे की जोरू—जब दोनों समान रूप से बुरे या असुंदर हों तब कहते है। तुलनीय : पंज० कोयल काले कां दी बौटी।

कोयला गर्म हो तो हाथ जलावे, ठंडा हो तो काला करे—जो व्यक्ति या वस्तु हर तरह से कष्टदायी हो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : सि० अंगर कोसा त हत्थ सारीन, जे थधा त हत्था काटा कनि; पंज० कोला तता होवे तां हथ फूके ठंडा होवे तां काला करे।

कोयला धोय ना ऊजरो, लासुन तजो न बोय—कोयला धोने से उजला नहीं होता और न लहसुन अपनी गंध को छोड़ता है। बुरे व्यक्ति या बुरी वस्तुएँ किसी भी दशा में अपने स्वभाव या गुण नहीं छोड़ती।

कोयला होय न ऊजरो, सौ मन साबुन खाय—कोयले को चाहे जितना भी धोया जाय, पर वह सफ़ेद नहीं हो सकता। नीच लाख उपाय करने पर भी अपनी आदत नहीं छोड़ता। तुलनीय : मरा० कोळसा शभर मण साबणाने धुलला तरी पांढरा होणार नाही; माल० दूध रा धोया कोयला उजला नी वे; गढ़० घुमघुमी कमोरा धोई-धोई क गोरा कखछया; कन्न० हीन सुठि वोलिमिदरे होदिते; पंज० कोले नू सौ मन साबुन नाल वी चिट्टा नई कर सकदे।

कोयला होय न ऊजला, सौ मन साबुन खाय—ऊपर देखिए।

कोयले की दलाली में हाथ काले —कोयले की दलाली में हाथ काले हो जाते हैं। (क) संगति का प्रभाव अवश्य पड़ता है। (ख) बुरी संगत से बुराई ही मिलती है और बुरे काम का फल भी बुरा ही मिलता है। तुलनीय : मरा० कोळशाच्या दलालींत हात काळे; राज० कोयलेरी दलाली में काळा हाथ; अव० कोयला कै दलाली मा हाथ करिया; ब्रज० कोयला की दलाली में काले हाथ; हरि० सोहबत का असर क्यान्हे उकै स; अं० Evil association must leave its impress.

कोयले पर छाप और मुहर की लूट—नीचे देखिए।

कोयले पर मुहर और अशर्फ़ियों की लूट -बड़ी चीज़ों को अंधाधुंध खर्च करने और छोटी चीज़ों के संबंध में कंजूसी करने या कम खर्च करने की कोशिश करने पर कहते हैं। तुलनीय : अं० Penny wise pound foolish.

कोयलों की दलाली में हाथ भी काले मुंह भी काला—

दे० 'कोयले की दलाली में हाथ···'। तुलनीय : मल० दुर्जन संसर्गताल् सज्जनवुम् केटुम्; अं० Evil communications corrupt good manners.

क़ोरमा बासी भी दाल से बेहतर है— बढ़िया चीज खराब होकर भी साधारण चीज़ से अच्छी रहती है।

कोरा बतबन्ना - गप्पे हाँकने वालों के लिए कहते हैं। (बतबन्ना बातूनी)।

कोरियों की हाट लगी—जिस स्थान पर बहुत शोरगुल हो रहा हो वहां कहते हैं।

कोरियों के मोहल्ले में त्यौहार- जब कोई असंभव कार्य हो जाय तो कहते है क्योंकि कोरी जाति कोई त्यौहार नहीं मनाती और बहुत झगड़ालू होती है।

कोरी के दमाद न बनो जो व्यक्ति किसी वस्तु या काम के लिए नखरा दिखाए उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

कोरे का कोरा पुन्न -कोरे व्यक्ति को पुण्य भी कोरा ही मिलता है। अर्थात (क) खरे आदमी को लाभ भी खरा ही मिलता है। (ख) कंजूस को यश नहीं मिलता। तुलनीय : पंज० खरे न जवाब वी खरा।

कोरे के कोरे रह गए— (क) जब किसी प्रकार का लाभ न मिले तो कहते हैं। (ख) मूर्ख व्यक्ति के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० कोरेदे कोरे रह गए।

कोरे गरजे बूंद न एक उस बादल को कहते हैं जो गरजता बहुत है पर बरसता कुछ भी नहीं। जो आदमी कहता बहुत है, करता कुछ नहीं उसके लिए कहते हैं। तुलनीय : हरि० थोथा चणा बाजै घणा; अं० Empty vessels make much noise.

कोली का घर जले, कलन्दर गांड़ा मांगे—जब कोई व्यक्ति केवल अपना ही स्वार्थ देखे, दूसरे की हानि की कुछ भी परवाह न करे तब कहते है। तुलनीय : अव० कोरी के घर जरै, मात घरी भद्रा।

कोल्हू का बैल दिन भर चले, रहे वहीं का वहीं- -दिन भर चलने के पश्चात् भी कोल्हू का बैल उसी स्थान पर होता है अर्थात् आगे नहीं बढ़ता। जब कोई व्यक्ति कठिन परिश्रम करने पर भी उन्नति नहीं कर पाता तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : माल० घाणी रो बैल दन भर फरे तोइ घरे रो घरे; पंज० कोलू दा टग्गा दिन पर चले रहे उथे दा उथे।

कोल्हू के बैल को घर में भी पचास कोस- कोल्हू का बैल घर में भी धीरे-धीरे पचास कोस का चक्कर लगा लेता है। वह मनुष्य जो घर में रहकर भी दिन-रात कामों में व्यस्त रहे उसे कहते हैं। तुलनीय : भोज० कोल्हू क बैल के घरवे में पचास कोस; पंज० कोलू दे बैल (टग्गे) नूं कर बिच वी पंजा कोहे।

कोल्हू बनने को थे पत्थर भी न हुए— जिस व्यक्ति से बहुत बड़ी आशा की जाती हो और वह किसी काम का न होवे तब ऐसा कहते हैं।

कोल्हू से खल उतरी, भई बैलों जोग नीचे देखिए।

कोल्हू से खल निकली और जलावन हुई जब तक खल कोल्हू में रहती है तब तक उसका मूल्य तेल निकलने के कारण बहुत रहता है, किंतु उससे अलग होने पर उसे जलाने के काम में लाया जाता है। (क) जब किसी योग्य व्यक्ति से किसी का संबंध-विच्छेद हो जाता है तो उसका मूल्य कुछ भी नहीं रहता। (ख) बूढ़े मनुष्य, पदच्युत अधिकारी या बेकार वस्तु के लिए भी कहा जाता है। तुलनीय : राज० तेलम् खळ ऊतरी हुई बळीते जोग।

कोस कोस पर पानी बदले, बारा कोस पर बानी— पानी के गुण और स्वाद थोड़ी दूर पर ही बदल जाते है और बारह कोस के अंतर पर मनुष्य की बोली भी बदल जाती है। तुलनीय : पंज० थां थां उते पाणी बदले बारां कोस उते बाणी।

कोस चली न बाबा प्यासी —कोस-भर चले नहीं कि प्यास लग गई। वह मनुष्य जो थोड़े ही परिश्रम से थक जाय उसे कहते है। तुलनीय : हरि०कोस बीना चाल्ली अक बाबा मरी त्यसाई।

कोस न चली गला सूखने लगा ऊपर देखिए।

कोसे जिएं, असीसे मरें- - (क) जिसे कोसा जाय वह जीए, जिसे आशीर्वाद दिया जाय वह मरे तब कहते हैं। (ख) कलियुग की उलटी रीति पर कहते है। तुलनीय : अव० कोसे जियें, असीसे मरै।

कोह कंदन-ओ-काह बरावुर्दन -खोदा पहाड़ और निकली घास। जब बहुत परिश्रम करने पर कोई साधारण सी वस्तु मिले तो कहते हैं। तुलनीय : पंज० खोदाया पहाड़ निकली चुई।

कोह टले, न टले फ़क़ीर (क) पहाड़ टल जाय पर फ़क़ीर नहीं टलता (ख) ज़िद्दी आदमी के प्रति भी कहते है।

क्रोध पाप कर मूल— क्रोध पाप की जड़ है, अर्थात् क्रोध से ही पाप होता है। पाप से बचने के शिक्षार्थ ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० गुस्सा पाप दा मूल; ब्रज० क्रोध पाप को मूल।

क्रोधवंतं मदोन्मत्तं नमस्कारोऽपि वर्जयेत्—क्रोधी और मदोन्मत्त को नमस्कार करना भी मना है क्योंकि ये लाभ पहुँचाने या आदर करने पर भी दोषी बना देते हैं। इनसे सदा दूर रहना चाहिए।

कौंडिन्य न्याय—जब कोई कार्य सफल तो हो किंतु उससे भी अच्छा हो सकता हो या होने की संभवाना हो तो कहते हैं।

कौआ अपने शिशुन को, सबतें जानत सेत—कौआ अपने बच्चे को सबसे अच्छा समझता है अर्थात् अपने बच्चे सबको सुंदर लगते हैं, चाहे वे कुरूप ही क्यों न हों। इस पर एक कहानी है: एक रानी ने अपने हाथ से मोतियों की एक टोपी बनाई। रानी के कोई लड़का न था। इसलिए उसने दासी को बुलाकर कहा कि शहर भर में जो लड़का सबसे खूबसूरत हो उसे ले आओ, मैं उसे यह टोपी पहनाऊँगी। दासी अपने कुरूप लड़के को ले आई और कहा, 'इससे सुंदर लड़का मेरी निगाह में नहीं आया।'

कौआ कान ले गया—जो बिना सोचे-समझे किसी की बात पर दृढ़ विश्वास कर ले उसको कहते हैं। इस पर एक कहानी है: किसी मूर्ख ने एक मनुष्य से कहा, तेरा कान कौआ ले गया? वह झट कौवे के पीछे दौड़ा। जब लोगों ने इसका कारण पूछा तो वह बोला, 'मेरा कान कौवा ले गया है इसलिए उससे छीनने के लिए उसके पीछे दौड़ता हूँ।' इस पर एक आदमी ने कहा, 'कान तो तुम्हारे दोनों हैं तीसरा कहाँ से आया, जो कौवा ले गया?' तब उसने अपने दोनों कान हाथ से टटोले और काफ़ी लज्जित हुआ। तुलनीय: पंज० काँ कन ले गया; ब्रज० कौआ कान ले गयौ।

कौआ कोयल एक भेष, कौन किसे कहे?—कौआ/कौवा और कोयल दोनों काले रंग के हैं इसलिए कौन किसे कुछ कहे? जब दो बुरे साथ हों तो उनमें कोई एक-दूसरे को बुरा नहीं कह सकता क्योंकि वे दोनों बुरे हैं। तुलनीय: भीली—कागलो कोयल एक वरण कूण कणए कै; पंज० काँ कोयल इको जिहे कौण किसे नूं आखे।

कौआ कोयल को काली कहे—कौआ कोयल को काली कहता है। जब कोई व्यक्ति स्वयं दोषी होने पर भी दूसरे की बुराई करे तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय: मेवा० कागलो कायल ने केवे के थू तो काली है; पंज० काँ कोयल नूं काली आखे; अं० The pot calls the kettle black.

कौआ चला हंस की चाल, अपनी चाल भी भूल गया—जो व्यक्ति अपने रहन-सहन को छोड़कर अपने से बड़े लोगों का अनुकरण करके हानि उठाता है उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय: हरि० बणज करेंगे बाणियां और करेंगे रीस, बणज करा था डूमन रहगे सौ के तीस; राज० कागलो हंसरी चाल सीखणनै गयो, आपरी भूलि आयो; मेवा० आड़ तरे तो तरवा दे, पर थू कों तरेरे का, नीची हां मी नाड़ की, अर थारा ऊंचा होसी पग; तेलु० हंस नडकलु गाक पौये, काकि नडकलु मरचि पौये; मरा० कावळा हंसा सारखा चालायला गेला तर स्वतः ची चालहि विसरला; भोज० कउवा चलत हंस क चाल अपनो गइल भुलाय; पंज० काँ चलया हंस दी चाल अपनी चाल वी पुल गया।

कौआ चला हंस की चाल, भूल गया अपनी भी चाल—ऊपर देखिए।

कौआ चले हंस की चाल—ऊपर देखिए। तुलनीय: राज० कागलो हंसरी चाल चालै; अव० कौवा चलै हंस के चाल।

कौआ छप्पर पर चढ़ तो गया, देखें कैसे उतरता है—किसी व्यक्ति की मूर्खता पर कहते हैं। इस संबंध में एक कहानी है जो इस प्रकार है: एक बार एक मूर्ख व्यक्ति ने एक कौए को छप्पर में लगी हुई सीढ़ी से होकर, छप्पर पर चढ़ते हुए देखा। कौए के चढ़ जाने के पश्चात उसने सीढ़ी को हटा दिया ताकि कौवा दुबारा सीढ़ी से होकर उतर न सके। कुछ ही समय बाद कौआ छप्पर से उड़ गया और वह मूर्ख इसे देखकर काफी लज्जित हुआ। तुलनीय: मैथ० कौआ चढ़ला ढेकी पर उतरना कोना; पंज० काँ छप्पर उते चढ़ गया ते देखो किवें उतरदा है।

कौआ टरटराता ही है, धान सूखते ही हैं—जब कार्य अच्छी तरह होता जाय और लोगों के अड़ंगा डालने से उसमें किसी प्रकार का विघ्न न पड़े तब कहते हैं।

कौआ पिंजड़े में परे, बोलत नहिं सुरबानी—कौए को चाहे पिंजड़े में क्यों न पाला जाय पर वह तोते जैसी वाणी नहीं बोल सकता। नीच व्यक्ति को चाहे जैसा भी उपदेश दिया जाय अथवा कितनी भी अच्छी संगति क्यों न मिले पर उसकी नीचता नहीं जाती। तुलनीय: पंज० काँ नूं पिंजरे बिच रखण नाल वी ओह चंगी वाणी नई बोल सकदा।

कौआ से कबेला चतुर—कौवे का बच्चा ही कौवे से चतुर है। जब कोई कम उम्र का लड़का बुद्धिमत्तापूर्ण बात करता है तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय: भोज० कउवा ले कबेला भला; मग० कउवा से कबेलवे चतुर।

कौआ से कबेला सयान—ऊपर देखिए। तुलनीय: अव० कौआ से कबेलवा सयान।

कौआ सों भले गेल्ह बुधियार—मैथिली भाषा में 'गेल्ह' चिड़ियों के छोटे बच्चों को कहते है। कौवे से उसका बच्चा ही चतुर होता है। जब पिता से पुत्र अधिक बुद्धिमानी की बात करे तब कहते है। इस पर एक कहानी है: एक कौवे ने अपने बच्चे से कहा, 'जब कोई ईट उठा कर तुम्हें मारने दौड़े तो तुरन्त उड़ जाना, नही चोट लगेगी।' इस पर बच्चे ने कहा, 'यदि पहले से ही हाथ में ईट लिये रहे तो मैं कैसे जानूंगा ?' यह सुनकर कौवे ने कहा, 'मुझसे तू ही चतुर निकला।'

कौआ हंस की चाल चला अपनी भी चाल भूल गया—दे० 'कौआ चला हंस की चाल…'।

कौए की दुम में अनार की कली—(क) जब कोई काला तथा बदशक्ल आदमी लाल रंग की या बढ़िया पोशाक पहने तब व्यंग्य से कहते है। (ख) जब भोंड़ी सूरत के पुरुष को सुन्दर पत्नी मिले तो भी कहते है। (ग) कुपात्र को बढ़िया वस्तु मिलने पर भी कहते हैं।

कौए के गले पूरी—असभव बात पर कहते है, क्योंकि कौआ पूरी पाने पर उसे तुरत खा जाएगा रखेगा नहीं। तुलनीय : पज० का दे गले बिच पूरी।

कौए के गले सोहारी—ऊपर देखिए।

कौए के कोसे से ढोर नहीं मरते—नीचे देखिए। तुलनीय : ब्रज०कौआन के कोसे ते का ढौर मरें।

कौए के मनाने से जानवर नहीं मरता—यदि कोई अपने स्वार्थ को ध्यान में रखकर किसी के अनिष्ट की कामना करे तो उसकी कामना पूर्ण नहीं होती। (जानवर मरने पर कौवे को खाने को मिलता है। अतः वह जानवरों के मरने की कामना करता है)। तुलनीय : राज० कागळारी दुरासीस सू ऊंट थोड़ा ही मरे; पंज० कां दे मनाय नाल जानवर नई मरदा।

कौए क्या नहीं खाते—अर्थात् बुरे लोग सभी खाद्य-अखाद्य खा लेते है। तुलनीय : सं० किं न भक्षंति वायसाः; पंज० कॉं की नई खांदे।

कौए गिरें, कुत्ते भौंकें—किसी उजाड़ गाँव या घर के प्रति कहते है कि वहाँ कौवे गिरते है तथा कुत्ते भौंकते है। तुलनीय : राज० काग पड़ै, कुत्ता भुसै; पंज० कां डिगन कुत्ते भौंकन।

कौए भी हड्डियाँ नहीं ले जाएँगे—(क) पापी व्यक्ति के प्रति कहते है। (ख) शाप देने के लिए भी प्रयोग करते है

कौए से गोरा—बहुत काले व्यक्ति के प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

कौओं के कोसने से पशु नहीं मरते—दे० 'कौए के मनाने से…'।

कौओं के रोने से ढोल नहीं फूटते—दुष्टों के कोसने से किसी का बुरा नही होता। किसी के कोसने पर यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : पंज० कां दे रोन नाल ढोल नईं फटदे।

कौओं के रोने से बैल नहीं मरते—ऊपर देखिए।

कौड़ी का कंजूस रुपए का दाता—कौड़ी तो देते नही हैं और रुपया देने को कहते है। जब कोई व्यक्ति किसी के माँगने पर साधारण या छोटी-सी भी वस्तु नही देता और बाद में उसे क़ीमती या बड़ी चीज़ देने को कहता है तब उसके प्रति व्यंग्य मे ऐसा कहते है। तुलनीय : राज० कोड़ी-कोड़ी नै कंजूस, रुपियारो दातार; पज० कौड़ी दा कजूस रपै दा दाता।

कौड़ी के तीन तीन—(क) बहुत सस्ती चीज़ को कहते है। (ख) जिसकी कोई क़दर न हो उसे भी कहते हैं। तुलनीय : राज०कोड़ीरा तीन; अव० कउड़ी के तीन-तीन; हरि० जूत्यां पिटते फिरण; पंज० पैहे दे तिन तिन।

कौड़ी के वास्ते मस्जिद ढाते हैं—जो थोड़े फ़ायदे के लिए अधिक हानि कर बैठे या जो अपने थोड़े स्वार्थ के लिए दूसरे की बड़ी वस्तु या चीज को क्षति पहुँचाये उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० पैहे लई मसजिद ढांदे हन।

कौड़ी-कौड़ी करके माया जुड़ जाती है—थोड़ा-थोड़ा धन एकत्र करने से अधिक हो जाता है। तुलनीय : मल० आयरिम् माकाणि अरुपनि रण्टर, पलतुळिळ पेरुवेळ्ळम्; पंज० पैहा पैहा करके रपैया बनदा है।

कौड़ी-कौड़ी को मुहताज—बहुत ग़रीब के प्रति कहते हैं। तुलनीय : अव० कउड़ी-कउड़ी के मोहताज; हरि०दाणे दाणे न मोहताज।

कौड़ी-कौड़ी जोड़ कर रुपया बन जाता है—एक-एक कौड़ी जमा करने से रुपया बन जाता है। अर्थात् थोड़े-थोड़े से ही बहुत हो जाता है। तुलनीय : राज० कोड़ी-कोड़ी संचतां रुपियो हुवै; कोड़ी-कोडी करयां लक लागै।

कौड़ी-कौड़ी जोड़ के निधन होत धनवान, अक्षर-अक्षर के पढ़े मूरख होत सुजान—थोड़ा-थोड़ा एकत्र करने से बहुत हो जाता है और अभ्यास करने से मूर्ख भी विद्वान हो जाता है।

कौड़ी-कौड़ी माया जोड़ी कर बातें छल की, भारी बोझ धरा सिर ऊपर किस बिध हो हलकी—छली, कपटी, पापी

या अन्यायी व्यक्ति जब अपने बुरे कर्मों के कारण कष्ट सहता है तब उसके प्रति कहते हैं।

कौड़ी चित्त है--(क) अर्थात् काम सफल हो गया। (ख) कोई बड़ा लाभ होने पर भी कहते हैं।

कौड़ी न रख कफ़न को बिज्जू की शक्ल बन रह—(क) बेकार खर्च करने वाले को कहते है। (ख) फैलसूफ़ (मक्कार) को कहते है।

कौड़ी नहीं गांठ में चले बाग़ की सैर—(क) बिना सामान अथवा साधन के जब कोई किसी काम के लिए तैयार हो जाय तब कहते है। (ख) जब कोई निर्धन व्यक्ति धनवानों की बराबरी करने का प्रयत्न करता है तो भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० पैहा नई जेब बिच चले बाग दी सैर करन।

कौड़ी नहीं पास, पड़ी अफ़ीम की चाट पास में कौड़ी भी नहीं है और अफ़ीम खाने की आदत डाल रखी है। जब कोई निर्धन व्यक्ति दुर्व्यसन में फँस जाता है तब कहते है।

कौड़ी न हो पास, मेला लगे उदास—बिना पैसे के मेला भी अच्छा नहीं लगता। तात्पर्य यह है कि बिना धन के कुछ भी नहीं सुहाता। तुलनीय : हरि० पीसे का ए खेल से; पंज० पैहा कौल नां होवे मेला लगे उदास।

कौड़ी पर खून नहीं होता—मामूली चीज़ पर कोई ईमान नहीं खोता। तुलनीय : गढ़० कौड़ी पर काल गाटेणो ठीक नी; पंज० घेले लई गले नई पैंदे।

कौड़ी में हाथी बिकाय पर कौड़ी तो हो- हाथी जैसा महंगा जानवर कौड़ी मे बिक रहा है पर उसे भी ख़रीदने के लिए कौड़ी तो चाहिए। आशय यह है कि अच्छी वस्तुओं के सस्ते दाम पर बिकने पर भी निर्धन व्यक्ति उन्हें नहीं खरीद सकते। तुलनीय : पंज० पैहे बिच हाथी बिकया पर पैहा तां होवे।

कौन अभागे राम न भावे—कौन ऐसा बदनसीब व्यक्ति है जिसे राम प्रिय नहीं है? यानी राम सभी को प्रिय हैं।

कौन किसी के आवे जावे, दाना पानी खेंच लावे—अन्न जल ही मनुष्य को सर्वत्र ले जाता है, अपनी खुशी से कोई अपना घर छोड़ कर परदेश या दूसरे के घर नहीं जाता। तुलनीय : हरि० कूण किसकै आवै जावै दाणा पाणी खीच लावै; ब्रज० को काऊ कैं आवै, दानों पानी लावै।

कौन-कौन गुन गाये अपने राम के---मैं अपने राम के किन-किन गुणों की प्रशंसा करूँ। बिलकुल मूर्ख व्यक्ति के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० अपने राम दे कैड़े गुण गाइए।

कौन खाए ख़स्सी मार, कौन रोए आँसू चार-- दे० 'कोई खाए ख़स्सी...'। तुलनीय : गढ़० कै न खाए खासू मासू, कै आया पितलाण्या आँसू; भोज० खेत खाये गदहा, मारल जाय जोलहा।

कौन गाँव सूना हुआ जाता है? --तुम्हारे बिना क्या गाँव सूना हो जाएगा? जिस व्यक्ति के रहने न रहने से किसी को कुछ अंतर न पड़ता हो उसके प्रति कहते है। तुलनीय : राज० किसी सांभर सूनी हुवै है।

कौन गिने उड़गन आकाश --आकाश के तारे कोई नहीं गिन सकता। असम्भव काम पर कहा जाता है।

कौन जानता है कल क्या होगा?-- (क) भविष्य के संबंध में कोई कुछ नहीं जानता। (ख) अचानक ही कोई दुर्घटना होने पर भी कहते हैं। तुलनीय : भीली – अच बचामे बीजली पड्ये अहू कूण जाणे तीर; पंज० किसे नू की पता कल की होना है।

कौन जाने पीर पराई-- दूसरों के दुःख को कोई नहीं समझता, सब अपने दुःखों को ही रोते हैं। तुलनीय : पंज० बगानी पीड़ दा किसे नू की पता।

कौन तुम्हीं ने माँ का दूध पिया है-- जब कोई व्यक्ति किसी कार्य के करने मे असमर्थ हो और दूसरा व्यक्ति उसकी खिल्ली उड़ावे जो स्वयं उसे करने में असमर्थ है, तब पहला व्यक्ति दूसरे के प्रति ऐसा कहता है। तुलनीय : पंज० तू ही केड़ा मां दा दुद पीता है।

कौन दे बड़ों को सीख, कौन सहे धक्का-मुक्की-- (क) जब कर्म कोई करे और उसका दंड किसी और को भुगतना पड़े तब ऐसा कहते है। (ख) जब कोई दंड के भय से बड़ों के अपराध, दोष को नहीं कहता तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० को कहै बडेन के बात को सहै धक्का मुक्की।

कौन पराई आग में गिरता है---दूसरे की मुसीबत कोई अपने सर नहीं लेता।

कौन मारे हाथी, कौन उखाड़े दाँत --हाथी को कोई मारता है और उसका दाँत कोई और उखाड़ कर ले जाता है। जब श्रम कोई और करे तथा उसका लाभ दूसरे उठावें तब कहते हैं। तुलनीय : पंज० कौण हाथी मारे अते दंद कौण कड्ढे।

कौन राजा राज करो, कौन परजा सुख भोगी—जनता कष्ट पाते-पाते सोचने लगी है कि कौन ऐसा राजा राज्य करेगा कि प्रजा सुख पाएगी।

कौन सा दरख़्त है जिसे हवा नहीं लगी—हर दरख़्त को हवा के झोंके सहने पड़ते हैं। कष्ट से कोई खाली नहीं है। तुलनीय : अव० कउने पेड़ कै पाती मा हवा नाहीं लाग; पंज० केड़ा दरख्त है जिस नू हवा नई लग्गी; ब्रज० कौन सौ पेड़ हैं जामैं हवा नायँ लगी।

कौनसी चक्की का पीसा खाया है- बहुत मोटे आदमी को कहते है। तुलनीय : मरा० कुठल्या जात्याने दळलेले खाल्लें; अव० कउने चक्की कै पीसा खात हैं; पंज० केहड़ी चक्की दा आटा खादा है।

कौन हाथी मारे कौन दाँत उखारे दे० 'कौन मारे हाथी·····'। तुलनीय : बुंद० को हाथी मारै को दाँत उखारै; ब्रज० बिल्ली के घंटी कौन बाँधे।

कौन है जिससे ग़लती नहीं होती?—अर्थात् सभी लोगों से ग़लती हो जाती है। तुलनीय : मल० अटि तेट्टियाल् आनयुम् वीपुम्; अं० To err is human.

कौर उठाते ही मक्खी पड़ी—किसी शुभ कार्य के प्रारम्भ होते ही विघ्न पड़ने पर ऐसा कहते है। तुलनीय : भोज० कवर उठवते माछी परल; स० प्रथमग्रासे मक्षिका पात:; पंज० गरा चुकदे ही मक्खी पयी; ब्रज० कौर लेते ई मांखी परी।

कौरव-पांडव जैसी लड़ाई नहीं करनी चाहिए - (क) कौरवों-पांडवों ने अपने लिए युद्ध किया और संसार-भर के मनुष्यों का विनाश करा डाला। ऐसा झगड़ा नहीं करना चाहिए जिससे दूसरे भी मुफ्त में मारे जायँ। (ख) ऐसी लड़ाई नहीं करनी चाहिए जिससे सब कुछ नष्ट हो जाय। तुलनीय भीली- मोरा महला वाली हार जीत नी करवी; पंज० कौरव पांडव जिही लड़ाई नई करनी चाइदी।

क़ौले-मर्दां जान (जाने) दारद मर्द अपनी ज़बान के पक्के होते हैं।

कौओं के कोसने से ढोर नहीं मरते - कौवों के कोसने या शाप से पशु नहीं मरते। अर्थात् किसी के चाहने या कोसने से किसी का अनिष्ट नहीं होता। तुलनीय : हरि० कागा कोस्यें के ढोर मर्या करैं; कौरव० कौओं के कोस्से क्या ढोर मरैं; बुंद० कौअन के कोसे ढोर नई मरते; मरा० कावळ्याचे श्रापेने ढोरें मरत नाहीत; हाड़० कागला का सराप मैं ढोर न मर; गुज० कागडाने श्रापे ढोर न मरे; छत्तीस० कौवा के रटे ले ढोर नइ मरैं।

क्या आँखों में ख़ाक डालते हो—कैसा धोखा दे रहे हो।

क्या आग लेने आए थे?—जब कोई तुरंत आवे और चला जाय तब कहते हैं। तुलनीय : हरि० के कौले क हाथ लगावण आये थे; पंज० अग्ग लैण आये सी।

क्या आसमान के तारे हैं—किसी ऐसी वस्तु के लिए कहते हैं जो बहुत दुर्लभ न हो।

क्या उधार की माँ मारी गई है?— (व्यंग्य) जब कर्ज़ नहीं मिलता तब कहा जाता है। तुलनीय : अव० का उधार मा पथरा परा है; पंज० उदार दी मां मर गयी है।

क्या उल्लू और क्या उल्लू का पट्ठा—नाम में ही अंतर है, है तो दोनों एक से ही। जब बाप-बेटा एक से ही दुर्गुणी हों तो कहते हैं। तुलनीय : पंज० की उल्लू अते की उल्लू दा पट्ठा।

क्या एक हाथ से ताली बजती है? —अर्थात् एक हाथ से ताली नहीं बजती। झगड़ा तभी होता है जब दोनों पक्षों का दोष हो। तुलनीय : हरि० क्या एक हाथ तै ताली बाजै सै; अं० It takes two to make a quarrel.

क्या करेगा दौला, जिसे दे मौला—ईश्वर ही सबको देता है दौला उसमें कुछ नहीं कर सकता। (पंजाब के गुजरात ज़िले में 17वीं शताब्दी में शाह दौला नामक एक पहुँचे हुए फ़कीर थे। जब कोई उनके पास याचना करने जाता था तब वह उससे उक्त वाक्य कह दिया करते थे)।

क्या करे नर फाँकड़ा, जब थैली का मुँह साँकड़ा—बेचारा फक्कड़ आदमी क्या करे जब थैली का ही मुँह छोटा है। जिस मनुष्य के पास धन न हो और उसकी इच्छाएँ बड़ी-बड़ी हों तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय: राज० क्या करै नर फांकड़ा, जद थैली का मुँह सांकड़ा, पइसे बिना बुध-बापड़ी, टके बिना टकटकायेत।

क्या करे जो पतनी, जो होय मेहरिया जतनी—यदि स्त्री यत्न वाली हो तो ग़रीबी में भी काम चल जाता है।

क्या क़ाज़ी की गधी चुराई है—अर्थात् हमने ऐसा कोई अपराध नहीं किया जिसके दण्ड के कारण भयभीत हों।

क्या काबुल में गदहे नहीं होते? —काबुल सुन्दर घोड़ों के लिए प्रसिद्ध है वहाँ गदहे कम ही होते हैं। कहावत का भाव यह है कि मूर्ख सर्वत्र होते हैं कहीं कम कहीं अधिक। तुलनीय : भोज० का काबुल में गदहा नां होला?

क्या कोयलों की नाव डूब जायगी? कौन बड़ी हानि होगी? जब किसी की साधारण वस्तु खो जाती है तब कहते हैं।

क्या खांड के घोड़े हो जो कोई घोल के पी जायगा?—जब कोई किसी साधारण व्यक्ति से बिना कारण ही डरे तो उसे साहस बँधाने के लिए कहते हैं। तुलनीय : पंज० खंड दे कौड़े हो जिहड़ा तुसां नूं कोई घोल के पी जावेगा।

क्या ख़ूब सौदा नक़्द है, इस हाथ दे उस हाथ ले — नक़द सौदे में एक हाथ से पैसा दिया जाता है और दूसरे हाथ से सामान लिया जाता है। जब किसी को बुरे काम का फल तत्काल मिल जाय तब कहते हैं।

क्या गूंगे का गुड़ खाया है—किसी के निरंतर चुप रहने पर व्यंग्य से ऐसा पूछते है।

क्या गोमती का पानी पीया है? गोमती नदी लखनऊ में है वहाँ के लोग कुछ नज़ाकत लिये होते है। (क) उन पुरुषों पर व्यंग्य है जिनमे जनानापन है। (ख) लखनऊ वालों को ताने मे कहते हैं। तुलनीय : पंज० की गोमती दा पाणी पीता है।

क्या घास में साँप नहीं चलता? —अर्थात् क्या अच्छे स्थानों में बुराई नही होती?

क्या घोड़े बेच के सोये हो?—घोड़े के बिक जाने पर सौदागर सुख से सोता है। (क) निश्चिनता पर कहा जाता है। (ख) जब कोई व्यक्ति बहुत गहरी नीद सोता है और पुकारने पर नही उठता तो भी कहते हैं। तुलनीय : भोज० का घोड़ा बेच के सुतल हउब; अव० का गोहूं बेच कै सोया है; ब्रज० की घौड़े बेच के सुत्ते हो?

क्या चील का मूत ढूँढ़ते हो? (क) किसी काल्पनिक वस्तु या लाभ के पीछे दौड़ने वाले के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। (ख) असंभव कार्य को करने की चेष्टा करने वाले के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : भोज० का चील्ह क मूत ढूढ़ेल।

क्या चूड़ियाँ फूट जायेंगी?—(क) जब कोई व्यक्ति किसी कार्य को करने में झिझकता है उसे करने मे डरता है तब कहते है। (ख) बहुत धीरे-धीरे काम करने वाले के प्रति भी व्यंग्य में कहते है।

क्या जनम-भर का ठेका लिया है?—कोई भी व्यक्ति किसी को आयुपर्यंत सहायता नहीं दे सकता। जब कोई व्यक्ति किसी के सिर पर बोझ बनकर बैठा रहे तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० उमर पर दा ठेका तां नई लैया।

क्या जनम-भर की साई ली है?—ऊपर देखिए।

क्या जाने गँवार घुंघटवा का यार—देहाती गँवार पर कहा गया है जो प्रेम की बात नहीं जानते।

क्या जाने जाट लौंग का भाव—जाट लौंग का भाव नहीं जानता क्योंकि उसे कभी उसकी आवश्यकता नहीं पड़ती। अर्थात् गँवार या छोटे आदमी मूल्यवान वस्तुओं के संबंध में कुछ नहीं जानते। तुलनीय : हरि० क्या जानै भेड़ बिनोलों का भाव; पंज० जट्ट की जाणे लौंगा दा भा।

क्या जाने भेड़ बिनौलों का भाव—ऊपर देखिए।

क्या तमाशा है?—(क) जो व्यक्ति काम के समय गप्पें लड़ाते हैं उनके प्रति कहते हैं। (ख) जब कोई व्यक्ति किसी कार्य को ठीक तरह से नहीं कर पाता तो उसके प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : राज० किसो तमासो है? पंज० की तमाशा है।

क्या तेरस क्या तीज— तेरस और तीज से कोई अंतर नहीं पड़ता। अर्थात् किसी कार्य को आरंभ करने के लिए विशेष भेदभाव नहीं रखना चाहिए। सभी दिन समान महत्त्व के हैं। तुलनीय : राज० तेरस कै तीज।

क्या दरजी का कूच क्या मक़ाम—अकेले आदमी को यात्रा में कोई असुविधा या कष्ट नही होता।

क्या दिल्ली में दिवालिया नहीं होते?—अर्थात् निर्धन व्यक्ति सभी जगह होते हैं।

क्या देवर के भरोसे लड़की पैदा की है? देवर के भरोसे पर लड़की पैदा नहीं की, अपने भरोसे पर की है। अर्थात स्वाभिमानी व्यक्ति प्रत्येक कार्य अपने बल पर करते हैं, दूसरे के नही। तुलनीय : राज० किसी देवर माथै बेटी जिणी है? पंज० की दवर दे परोसे कुड़ी पैदा कीती है।

क्या धान खारा लगता है?—जब कोई व्यक्ति लाभ के कार्य को करने से भी आना-कानी करता है तब उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० धान खारो लागै है कांई?

क्या धूप में बाल सफेद किए हैं -किसी के बूढ़ा होने पर भी यदि वह अनुभवहीनता की बात करे तो कहते हैं।

क्या नंगी नहाय और क्या निचोड़े? -जिसके पास कुछ भी नही है, वह क्या स्वयं खर्च करेगा और क्या दूसरों को देगा। तुलनीय : गढ़० क्या नाखो खौ क्या जुगारो; पंज० की नगी नहावे की नंगी निचोड़े।

क्या निवाला कान में चला जाएगा? -(क) अँधेरे में या कम रोशनी में भोजन करने में आनाकानी करने वाले को व्यंग्य से कहते है। (ख) किसी साधारण और स्पष्ट कार्य के करने में भी जब कोई आना-कानी करता है तब कहते हैं।

क्या पानी मथने से घी निकलता है? —(क) नीरस तथा कंजूस व्यक्तियों के प्रति कहा गया है। (ख) व्यर्थ का काम करने से कोई लाभ नहीं होता। जब कोई व्यर्थ का कार्य करता है तब उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : मरा० पानी घुसळून तूप थोडेच निघणार; अव० का पानी का मथे से माखन निकरी; पंज० की पाणी रिड़-

कन नाल घी निकलदा है; ब्रज० कहा पानी मथे ते घ्यौ निकलै।

क्या पिद्दी क्या पिद्दी का शोरबा ?—पिद्दी एक छोटा पक्षी होता है और ऐसे पक्षी का शोरबा बनाना और न बनाना बराबर है। तात्पर्य यह है कि छोटी वस्तु या छोटे आदमी से बड़े काम नही हो सकते। तुलनीय : मरा० चिमणीचे पिल्लूं ते केवढे तिच्याचे कालवण किती होणार।

क्या पैरों में मेंहदी लगी है ?—(क) जब कोई व्यक्ति कहीं पैदल चलने मे आनाकानी करता है तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते है। (ख) जब कोई व्यक्ति किसी काम को करने में आनाकानी करता है तो उसके प्रति भी व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० पगारै किसी महंदी लाग्योड़ी है; पंज० पैरां विच मैंदी तां नई लग्गी; ब्रज० कहा पामन में मेंहदी लगी है।

क्या बकरी की तरह मुँह चलाते हो ?—हर समय कुछ खाने वाले या थोड़ी-थोड़ी देर पर खाने वाले के प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० की बकरी वरगा मूँह मारदे हो।

क्या बड़ा चना भाड़ फोड़ देगा ? —छोटी औकात का व्यक्ति बड़ा हो जाने पर भी दिलेर नहीं हो सकता या बड़ा काम नही कर सकता।

क्या भूख को बासन, क्या नींद के ओढ़न भूखा व्यक्ति यह नहीं देखता कि बर्तन कैसा है और जिसे नींद आने लगती है वह ओढ़ने का ध्यान नहीं रखता। अर्थात् गरजमंद व्यक्ति को जो कुछ मिल जाता है उसी से काम चला लेता है। तुलनीय : तेलु० आकलि रुचि मेरुगदु निद्र सुखमेरुगदु।

क्या मक्खी ने छींक दिया है ?— क्या कोई अपशकुन हो गया है ? (क) जब कोई मनुष्य काम करते-करते छोड़ दे, या जब कोई व्यक्ति किसी कार्य को करने का निश्चय करके इरादा बदल दे तब व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० काँई माखी छीक दियो ? पंज० की मक्खी ने छिक मारी है; ब्रज० कहा माखी ने छींकि दियौ।

क्या मजाल जो अलिफ़ से बे कहे ? —जरा भी विरुद्ध नही बोल सकता। जिस व्यक्ति की गाँव-देहात या समाज में काफ़ी धाक या प्रतिष्ठा होती है वह ऐसा कहता है।

क्या मरते ही कीड़े पड़ जायेंगे ?—अर्थात् कोई काम बहुत जल्दी बिल्कुल खराब नहीं हो जाता। बिगड़ने के बाद उसे ठीक किया जा सकता है। तुलनीय : पंज० की मरदे ही कीड़े पै जाणगे।

क्या मरा नहीं तो किसी को मरते भी नहीं देखा ?—तुम स्वयं कभी कष्ट नहीं पाए तो क्या किसी और को कभी कष्ट में पड़ा नहीं देखा ? साधन-संपन्न व्यक्ति के प्रति कहते हैं जिसे कभी किसी चीज के लिए परेशानी नही उठानी पड़ती। तुलनीय : असमी – नाइ मरा बुलि कि मराओ देखा नाइ; पंज० मरया नई तां किसे नूं मरदे वी नई देखया।

क्या मुँह और क्या मसाला - जब कोई मनुष्य ऐसी बात करे या ऐसा काम करे जो उसे शोभा न देता हो तब कहते है।

क्या मुँह में दही जमाया गया है ?- -जब कोई किसी की बात का जवाब न देकर बिल्कुल चुप रहता है तब क्रोधवश व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : पंज० मुँह बिच दई जमाया सी।

क्या मुँह से फूल झड़ते हैं ?—कठोर वचन बोलने वालों के प्रति व्यंग्य है। तुलनीय : मरा० काय तोंडा तुने फुलें पडताहेत; पंज० की मूंह नाल फुल चड़ दे हन।

क्या रोहिनि वर्षा करे बचे जेठ नित मूर एक बूंद कृतिका पड़े नासे तीनों तूर –रोहिणी नक्षत्र मे वर्षा होने और जेठ मास मे वर्षा न होने से फ़सल बहुत अच्छी होती है, परन्तु कृतिका नक्षत्र में साधारण वर्षा से भी तीनों फ़सलें (खरीफ़, रबी और ज़ायद) नष्ट हो जाती है। अर्थात् कृतिका नक्षत्र में वर्षा होना फ़सलों के लिए हानिकर होता है।

क्या लड़की का विवाह कर सोये हो ?—लड़की का विवाह करने के बाद आदमी निश्चिंत होकर सोता है। निश्चिंतता पर कहा गया है। तुलनीय: अव० का बिटिया कै बिआह कै के सोये हो; पंज० को कुड़ी दा वयाह करके सुते हो।

क्या शान में ज़ुफ़ते पड़ जाएँगे ? जब कोई व्यक्ति अपने हाथ से कुछ करने या छोटों की सहायता करने में शरमाता है या हिचकिचाता है तब उसके प्रति व्यंग्य से ऐसा कहते हैं। (ज़ुफ़्ता = सिकुड़न या शिकन)।

क्या शान में बट्टा लग जाएगा ?- –ऊपर देखिए।

क्या सँपेरा गाता है और क्या बीन बजती है ? - देखेंगे कि सँपेरा क्या गाता है और क्या बीन बजती है ? पता नहीं परिणाम क्या होगा ? जब किसी कार्य के फल का अनुमान न हो तो कहा जाता है। तुलनीय : राज० कांई गोडियो गावै अर कांई पूंगी वाजे; पंज० की सँपेरा गांदा है की बीण बजदी है।

क्या साँप का पाँव देखा है ?—साँप के पाँव नहीं होते। अर्थात् असम्भव बात कहने वाले पर कहते हैं। तुलनीय :

पंज० की साँप दा पैर देखया है !

क्या साँप सूंघ गया है ?—जिसे साँप काटता है वह बेहोश हो जाता है। जब कोई बात का जवाब न दे और चुप्पी साध ले तब व्यंग्य में कहा जाता है। तुलनीय : अव० का साँप सूघ लिहेस; पंज० की साँप सूंघ गया है; ब्रज० कहा स्याप सूघि गयौ है।

क्या सासू जी अटको मटको, क्या मटकाओ कूल्हा; डोली पर से जब उतरूंगी, जुदा करूंगी चूल्हा—नई झगड़ालू बहू जो आते ही परिवार से अलग हो जाय उसके प्रति कहते है। तुलनीय : हरि० के सासु तुं अटकै मटकै, के मटकावै कुल्ला; डोली मंह क जब उतरूंगी ज्यब न्यारा धराल्यूं चुल्हा।

क्या सौ रुपये की पूँजी, क्या एक बेटे की औलाद—सौ रुपये की पूंजी को पूंजी न कहना चाहिए क्योंकि किसी भी समय खर्च हो सकती है, उसी प्रकार एक बेटे की औलाद को औलाद न कहना चाहिए क्योंकि वह मर जाय तो वंश का अंत हो जायगा। तुलनीय : पंज० की सौ रपै दी पूंजी की इक पुतर दी औलाद।

क्या हँसिया को बेचे खुरपी को गिरवीं रखे—हँसिया और खुरपी जैसी तुच्छ वस्तु को गिरवीं रखने या बेचने से कोई आर्थिक समस्या हल नहीं हो सकती। अर्थात् छोटी वस्तु के भरोसे योजना बनाना व्यर्थ है। या छोटी वस्तुओं के बेचने या गिरवी (बंधक) रखने से आर्थिक समस्या हल नहीं होती। तुलनीय : भोज० का खुरपी के बान्हे धइले का हँसुआ के बेचले।

क्या हँसुआ बेच खाय, क्या हँसुआ बंधक रखे—हँसुए जैसी साधारण वस्तु को बेचने या बंधक रखने पर कुछ नहीं मिलता। अर्थात् साधारण वस्तु को बेचने या बंधक रखने से आर्थिक समस्या हल नहीं हो सकती।

क्या हमने घास खोदी है—हम बेवकूफ नहीं हैं। होशियार को जब कोई पट्टी पढ़ाने लगता है तो वह इसका प्रयोग करता है। तुलनीय : पंज० असी काह थोड़ी खोतरी है; ब्रज० कहा हमनें घास खोदी है।

क्या हाथ पैरों में मेंहदी लगी है—हाथ-पैर में मेंहदी लगने पर जब तक उसका रंग भलीभाँति न चढ़ जाय हाथ-पैर हिलाना-डुलाना न चाहिए, क्योंकि छूट जाने का भय रहता है। आलसी मनुष्य पर व्यंग्य है जो आलस्यवश कहीं जाना न चाहता हो। तुलनीय : अव० का गोड़न मा मेंहदी लगाए हौ; हरि० के हाथ पांया में मंहदी लागरी सै; पंज० की हथां पैरां बिच मैंहदी लगी है।

क्या हाथों में मेंहदी लगी है ?—हाथ में मेंहदी लगी होने पर कोई काम नहीं करते क्योंकि काम करने से मेंहदी का लेप उतर जाता है। जो व्यक्ति कोई काम न करे उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० हाथांरै किसी मंहदी लाग्योड़ी है ?

क्या हीजड़े राह मारते हैं—व्यंग्य में ऐसे व्यक्ति से पूछते हैं जो बार-बार बुलाने पर भी किसी के घर नहीं जाता।

क्या ही पिदड़ी, क्या ही पिदड़ी का शोखा—दे 'क्या पिद्दी क्या…'।

क्यों कही और क्यों कहाई ?—जब कोई किसी को एक कहे और वह उसे चार सुनावे तब कहते हैं।

क्यों काँटों में घसीटते हो ?—जब कोई आदमी किसी अपने से छोटे का आदर करे तो वह लज्जित होकर कहता है। तुलनीय : हरि० क्यूं कांटा में घसीटो सो; पंज० कंडया बिच कैनू कसीटदे हो।

क्यों बहिश्त में लात मारते हो ?—बहिश्त में लात मारना अर्थात् स्वर्ग की उपेक्षा करना। (क) जो भोग विलास में लिप्त रहता है उसे कहते हैं। (ख) झूठ बोलने वाले को भी कहते हैं। (ग) मिलते लाभ को न लेने वाले पर भी कहते हैं।

क्यों विष दीजै ताहि जो गुड़ दीने ही मरत ?—जो आसानी से मर रहा है उसे बुरी तरह मारने से कोई लाभ नहीं। अर्थात् यदि कोमल उपाय से काम निकल जाय तो कठोरता अपनाना व्यर्थ है। तुलनीय : ब्रज० वायै जहर क्यों दियौ जाये जो गुर दिये ई ते मरि जाय।

क्रोध में कोई काम नहीं करना चाहिए—क्रोध में तत्काल कोई निर्णय या कार्य नहीं करना चाहिए। क्रोध में किया गया काम या निर्णय कभी-कभी बहुत दुःख देता है। तुलनीय : गढ़० ताता रोष मार निकरनी; पंज० गुस्से बिच कोई काम नईं करना चाइदा।

क्रोधी सो कमजोर—(क) कमजोर व्यक्ति अधिक क्रोध करते हैं। (ख) क्रोध करने से स्वास्थ्य खराब हो जाता है। तुलनीय : माल० दुबला ने रीस घणी; पंज० गुस्से वाला माड़ा।

क्वचिद् काणो भवेत साधुः—शायद ही कोई काना साधू होगा। अर्थात् काने सज्जन (साधू) नहीं होते, वे प्रायः दुष्ट ही होते हैं।

क्वचिद् खल्वाट निर्धन :—शायद ही कोई गंजे मस्तक वाला ग़रीब हो। अर्थात् गंजे मस्तक वाले प्रायः धनवान

होते हैं।

क्वचिद् गानवती सती— गाने वाली स्त्री या वेश्या शायद ही कोई सती होगी। अर्थात् इनका चरित्र ख़राब होता है।

क्वार करेला कातिक दही, मरे नहीं तो पड़े सही— क्वार मास में करेला और कातिक मास में दही हानिकारक होता है।

क्वार का सा झल्ला, आया बरसा चल्ला— क्वार मास में वर्षा थोड़े समय तक होती है और देखते-देखते धूप भी निकल आती है। जिस मनुष्य को एकाएक क्रोध या जोश आये और तुरंत ही चला जाये उसके प्रति कहते हैं।

क्वार के झला, साह के लला - (क) क्वार की वर्षा और बनिए के पूत धोखेबाज़ होते हैं। (ख) क्वार में वर्षा के झोंके (झला) इधर से उधर आते रहते हैं और धनिकों (साह) के पुत्र कोई काम न होने से आवारागर्दी करते रहते हैं।

क्वार जाड़े का द्वार- क्वार से जाड़ा प्रारंभ हो जाता है। तुलनीय : भोज० कुवार जाड़ा क दुवार; हरि० पौह अर जाड़े का छौह।

क्वारी कन्या को सौ वर -दे० 'कुवारी लड़की को…'।

क्वारी को अरमान, ब्याही पशेमान—काम का न करने वाला तो निराशा के कारण दुःखी रहता है और जो करता है वह उसकी मुसीबत और कष्ट के कारण दुःखी रहता है।

क्वारी को सदा बसंत—स्वतंत्र और छड़े व्यक्ति के लिए हर प्रकार का सुख उपलब्ध रहता है।

क्वारी खाय रोटियाँ, ब्याही खाय बोटियाँ- दे० 'कुँआरी खाय रोटियाँ…'।

क्वोष्ट्रः क्व च नीराजना -कहाँ ऊँट और कहाँ नीराजना (एक सांस्कृतिक, धार्मिक विधि जो युद्धभूमि में जाने से पूर्व राजाओं और युद्ध के अन्य विशिष्ट पदाधिकारियों द्वारा प्राचीन काल में की जाती थी)। प्रस्तुत न्याय का प्रयोग परस्पर संबंध न रखने वाली दो वस्तुओं के संदर्भ में किया जाता है।

क्षणे रुष्टा क्षणे तुष्टा- -जो व्यक्ति ज़रा देर में ही प्रसन्न और ज़रा देर में रुष्ट (नाराज़) हो जाय उसके प्रति कहते है।

क्षते क्षारमिव - घाव पर नमक की तरह। अर्थात् जब कोई व्यक्ति किसी कारण से दुखी हो और कोई व्यक्ति ऐसी बात कहे जिससे उसका दुख और बढ़ जाय तब उक्त कहावत कहते हैं।

क्षमा वीरस्य भूषणम्—क्षमा वीर का आभूषण है। अर्थात् वीर पुरुष क्षमा से ही सुंदर लगते हैं। तुलनीय : पंज० माफ करना वीरां दा पूषण है।

क्षीरं विहायारोचक ग्रस्तस्य सौ वीर रुचिम् अनुभवति :— मन्दाग्नि से पीड़ित मनुष्य द्वारा लाभदायक दुग्ध-पान छोड़ कांजी का सेवन करना। अर्थात् कभी-कभी मनुष्य को मजबूरी में अच्छी वस्तुओं को छोड़कर बुरी वस्तुओं का प्रयोग करना पड़ता है,

क्षीरनीरन्याय- —दूध और पानी का न्याय। प्रस्तुत न्याय का उदाहरण दो या दो से अधिक वस्तुओं की नितान्त आत्मीयता के संबंध में दिया जाता है।

क्षीणा नरा निष्करुणा भवंति—दुर्बल या क्षीण मनुष्य निर्दयी होते हैं।

ख

ख़ंजर तले टुक दम लिया तो उससे क्या? - तलवार के नीचे थोड़ा आराम कर लिया तो उससे क्या हो सकता है? महान संकट से यदि थोड़ी देर के लिए मुक्ति मिल भी जाय तो उससे कोई फ़ायदा नहीं होता।

खग जाने खग ही की भाषा- -पक्षी की भाषा पक्षी ही समझ सकते हैं। (क) विशेष प्रकार के स्वभाव के व्यक्ति के दिल की बात उसी प्रकार के स्वभाव का व्यक्ति जानता है। (ख) जो जिस वर्ग, संगति, जाति या समाज में रहता है वही उसकी बातें समझता है या उनका हाल जानता है। तुलनीय : मरा० पक्ष्याला पक्ष्याची भाषा कळते; अव० खग जानै खगही कै भाखा; मल० कन्नु चेन्नाल् कन्निन् कूट्टनिल्।

खग ही जाने खग कर भाषा - ऊपर देखिए।

ख़ज़ाने में लूट और कोयलों पर छाप—दे० 'अशर्फ़ियाँ लुटें और कोयलों पर…'।

खटवाटी लिए पड़े हैं - रूठे या नाराज़ हैं। जब कोई व्यक्ति किसी कारणवश किसी से नाराज़ होकर लेटा रहता है तब कहते हैं। तुलनीय : पंज० रुसया पैया है; ब्रज० खटपाटी लै कें परे हैं।

खटि-खटि मरे बैलवा, बाँधे खायं तुरंग—काम करते-करते तो बैल परेशान हो रहे हैं और घोड़े बैठकर (बँधे हुए) आराम से खा रहे हैं। जब परिश्रम कोई करे और उसका सुख किसी और को मिले तब कहते हैं।

खटिया में खटमल और गाँव में तुरक—चारपाई में खटमल जिस प्रकार सोने वाले को दुःख पहुँचाते हैं उसी प्रकार तुर्क भी गाँव में रहने वालों को दुःख देते हैं। तुलनीय : माल० होड़ में माकण ने गाँव में तुरक; पंज० मंजी बिच खटमल अते पिंड बिच तुरक।

खटून गए कमाऊ, कुछ खट्ट भी लाए; शक्कर बाँटों बीबी, मियाँ जो घर फिर आए—निकम्मे आदमी के प्रति कहते है जो कमाने जाता है पर खाली हाथ ही लौट आता है।

खट्टा-खट्टा साझे में, मीठा-मीठा न्यारा—(क) जो व्यक्ति सुख में अलग रहे और विपत्ति में सब की सहायता चाहे उसके प्रति कहते हैं। (ख) स्वार्थी व्यक्ति के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : अव० खट्टा-खट्टा साझे मां मीठ-मीठ न्यारा; पंज० खट्टा-खट्टा साजे बिच मिठा-मिठा बखरा।

खट्टा खावे मिट्ठे को—(क) जो लोग भलाई के लिए बुराई सहते हों उनके लिए इस कहावत का प्रयोग होता है। (ख) जिस कार्य का आरंभ बुरा होकर भी अंत अच्छा हो तब भी इस कहावत का प्रयोग होता है। आशय यह है कि सुख के लिए दुःख सहना पड़ता है। तुलनीय : पंज० खट्टा खावे मिट्ठे नू; ब्रज० खट्टौ खावै मीठे कूं।

खट्टी छाछ से भी गये—लाभ की जो आशा थी वह भी जाती रही। निरंतर विफलता मिलने पर कहते है।

खट्टू आवे चुपचाप निखट्टू आवे बोलता—कमाने वाला चुपचाप शांति से आता है और निखट्टू शोर मचाते या लड़ते हुए आता है। (क) जब कोई परिश्रमी व्यक्ति शांतिपूर्वक रहे और निकम्मा व्यक्ति बेकार की बातें करे तब कहते हैं। (ख) जब विद्वान व्यक्ति शान्ति से रहे और मूर्ख व्यक्ति बहुत बातें करे तब भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० खट्टू आवे चुप चपीता, निखट्टू आवे गज्जदा।

खड़ा डरावा खेत का खाय न खायन दे—भयावह जड़ व्यक्ति न स्वयं खाता है और न पशुओ को खेत खाने देता है। ऐसे के लिए कहते है जो न तो स्वयं किसी चीज़ का उपयोग करे और न किसी अन्य को करने दे। तुलनीय : कोर० खडा डराव्वा खेत का, खाय न खावण दे; पंज० खड़ा डराबा खेन दा खावे ना खाणदे।

खड़ा बहिश्त में गया—खड़ा ही स्वर्ग में चला गया। आराम की मौत मरने वाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० खड़ा सवर्ग बिच गया।

खड़ा बैला खोदे सार—जिस बैल से काम नहीं लिया जाता, वह अपने बँधने के स्थान को ही खोदता रहता है। तात्पर्य यह है कि बेकार आदमी को खुराफ़ात ही सूझती है। तुलनीय : पंज० खड़ा टग्गा खोतरे थां।

खड़ा मूते, लेटा खाय, उसका दरिद्र कभी न जाय—खड़े होकर पेशाब करना तथा लेट कर भोजन करना, दोनों ही अच्छे नहीं हैं। तुलनीय : राज० ऊभो मूतै सूतो खाय, जिणरो दालद कदे न जाय।

खड़ी ईख का गुड़ नहीं बनता—गुड़ बनाने में श्रम और समय लगता है। किसी कार्य को पूर्ण करने में श्रम, समय और धैर्य की आवश्यकता होती है। तुलनीय : राज० ऊभा खेजड़ाँ बेझ थोड़ा ही पड़ै; पंज० खड़े गन्ने दा गुड़ नई बनदा।

खड़ी खेती गाभिन गाय, तब जानो जब मुँह में जाय—खेत में खड़ी फ़सल जब कट जाय और घर में आ जाय तथा गार्भिणी (गाभिन) गाय जब बच्चा दे दे और दूध खाने को मिलने लगे तभी उन्हें अपना समझना चाहिए। तुलनीय : बुंद० ठाड़ी खेती गाभिन गाय, तब जानो जब मों में जाय; ब्रज० हरी खेती ग्याभन गाय जब जानों जब मुँह जु जाँय।

खड़े-खड़े बैठे चिल्लाने लगे—जो खड़े थे वे तो खड़े रहे, जो आराम से बैठे थे चिल्लाने लगे। (क) व्यर्थ में कोई शोरगुल मचाए तो कहते हैं। (ख) अपात्र व्यक्ति कुछ माँगे तब भी कहते हैं। तुलनीय : अव० ठाढ़ि ठाढ़िन रहे, बैठि गोहरावै लागि; पंज० खड़े-खड़े बैठ चीकण लग्गे।

खड़े पीर का रोज़ा रखा है क्या?—जब कोई बैठे नही, खड़े-खड़े बात करे तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते है। (खड़े पीर का रोज़ा रखने वाला दिन-भर बैठता नहीं है)। तुलनीय : पंज० खड़े पीर दा रोजा रखया है की।

खड़े रस्सी, बैठे कोस, खाते-पीते तीन कोस—कोई राह चलता हुआ व्यक्ति कहीं जितनी देर खड़ा हो जाता है उतनी देर मे एक रस्सी बट सकता है। जितनी देर बैठता है उतनी देर में एक कोस चल सकता है और जितनी देर में खाता-पीता है उतनी देर में तीन कोस जा सकता है। आशय यह है कि अपना समय नष्ट नहीं करना चाहिए बल्कि उसका सही उपयोग करना चाहिए।

खत का मज़मूं भाँप लेते हैं लिफ़ाफ़ा देखकर—लिफ़ाफ़ा देखकर ही पता चल जाता है कि पत्र में क्या लिखा होगा। तात्पर्य यह है कि बुद्धिमान लोग शक्ल देखकर ही अच्छे-बुरे की पहचान कर लेते हैं। तुलनीय : खत दा पता लगा लैंदे हन लिफाफा देख के।

खता-ए-बुज़ुर्गां गिरिफ़्तन खता अस्त—बुज़ुर्गों की ग़लती पकड़ना या उन पर आपत्ति करना खुद एक ग़लती है। श्रेष्ठजन की बात पर आपत्ति नही करनी चाहिए।

खता करे बीवी, पकड़ी जाय बाँदी—अपराधी कोई और हो और दंड कोई और पाये तो कहते हैं। तुलनीय : हरि० नानी खसम करै धेवती डंड भरै।

खत्री पुत्रं कभी न मित्रं, जब मित्रं तब दगी दगा—खत्री का पुत्र कभी मित्र नहीं होता और यदि कभी मित्र बन भी जाता है तो वह धोखा देता है या दगा कर जाता है। आशय यह है कि खत्री कपटी होते हैं।

खत्री से गोरा सो पिंड रोगी—(क) जब कोई अपने से बुद्धिमान व्यक्ति को धोखा देने का प्रयत्न करता है तब कहते हैं। (ख) खत्री जाति के लोग गोरे और काफ़ी सुंदर होते हैं। तुलनीय : पंज खत्री तों गोरा सो पिंड रोगी।

खनि के काटे घन के मोराए, जब बरदा के दाम सुलाए—ईख को जड़ से खोदकर निकालने और खब दबा-दबाकर कोल्हू में पेरने से फायदा होता है और बैलों का परिश्रम सफल होता है।

खपरा फूटा, झगड़ा टूटा—जिस वस्तु के लिए झगड़ा था वही समाप्त हो गई। जब झगड़े की जड़ ही मिट जाय तो कहते हैं। तुलनीय : पज० खपरा पजया लड़ाई मुकी; ब्रज० खिपरा फूट्यौ, झगड़ो टूट्यौ।

खपा दी जान, ले न कोई नाम—जान भी गँवा दी फिर भी कोई नाम नहीं लेता। (क) जब कोई किसी के एहसान को भूल जाता है तब कहते हैं। (ख) जब कोई बहुत ही अधिक श्रम करे और फिर भी लोग उसे महत्त्व न दें तब भी कहते हैं। (ग) स्वार्थी लोगों के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० खपा दित्ती जाण लेवे ना कोई ना।

खर कटाओ चाहे गैल चलाओ—उतना समय तो तुम्हारे लिए दे ही दिया है। घास कटवाओ, रास्ता चलवाओ, चाहे जिस किसी काम की भी इच्छा हो करवा लो।

खर का पीर डर—दुष्ट व्यक्ति डराने से ही काम करता है। जो व्यक्ति डाँट पाए बिन कोई काम न करे उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : भीली—खालड़ा नी लाड़ी खाएड़ा नी पूजा।

खर को गंग नवइए, तऊ न छाड़े छार—गदहे को यदि गंगा में स्नान कराया जाय तो भी वह धूल में लोटना नहीं छोड़ता। अर्थात् (क) जाति-स्वभाव नहीं छूटता। (ख) अच्छे लोगों की संगति में रहने पर भी दुष्ट लोग अपनी दुष्टता नहीं छोड़ते। तुलनीय : मरा० गाढव गंगेत न्हालें नि उकीरड्यावर जाऊन लोळले; हरि० गंगाजी न्हवाए तैं गधा के घोड़ा बणै सै; फ़ा० खरे-ईसा अगर बमक्का रवद चू बे आयद हनोज खर बाशद (ईसा का गदहा अगर मक्का भी चला जाए तो लौटकर गदहा ही आता है)।

खर को गंग न्हवाइये तऊ न छांडे छार—ऊपर देखिए।

खर गुड़ एक ही भाव—जहाँ भले-बुरे का विचार न कर सबको समान रूप से स्थान या महत्त्व दिया जाय वहाँ कहते हैं। तुलनीय : मरा० गवत नि गूळ एकाच भावांत; हरि० खल खाँड का एकै भा; पंज० खल गुड़ इको पा; ब्रज० खरि गुर एकई भाव।

खर घुघ्घू मूरख पशु, सदा सुखी प्रिथिराज—पृथ्वीराज ने कहा है कि गधा, उल्लू, मूर्ख और पशु सदा सुखी रहते हैं, क्योंकि उन्हें किसी प्रकार की चिंता नहीं रहती और न ही उन्हें भले-बुरे का ज्ञान होता है। पूरा दोहा इस प्रकार है—

> चातक चकवा चतुर नर, इनरा रहत उदास।
> खर घुघ्घू मूरख पशु, सदा सुखी प्रिथिराज॥

तुलनीय : राज० खर घुघ्घू मूरख पसू सदा सुखी प्रिथिराज।

खरबूजा चाहे धूप को और आम चाहे मेह नारी चाहे जोर को और बालक चाहे नेह—खरबूजा धूप, आम वर्षा, स्त्री ज़ोर और बालक स्नेह चाहते हैं।

खरबूजा छुरी पर गिरे या छुरी खरबूजे पर—खरबूजा चाकू पर गिरेगा तो भी या चाकू खरबूजे पर गिरेगा तो भी—दोनों दशाओं में खरबूज़ा ही कटेगा, चाकू नहीं। तात्पर्य यह है कि (क) कमज़ोर ही सर्वदा पराजित होता है। (ख) जब किसी व्यक्ति को हर दशा में लाभ हो तब वह कहता है। तुलनीय : पज० खरबूजा छुरी उत्ते डिगेया छूरी खरबूजे उत्ते।

खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग पकड़ता है—नीचे देखिए।

खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग पलटता है—एक को देखकर दूसरा भी बिगड़ता या बनता है। तात्पर्य यह है कि संसार में लोग देखा-देखी बहुत करते हैं। तुलनीय : अव० खरबूजा का देख खरबूजा रंग बदलै लाग; राज० खरबूजेने देखेर खरबूजो रंग बदलै; मरा० (शेजारचे) खरबूज पाहून खरबूज आपला रंग ठरवितें; पंज० खरबूजे नू देखके खरबूजा रंग बदलदा है।

खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है—ऊपर देखिए। तुलनीय : ब्रज० खरबूजे ऐ देखिकैं खरबूजौ रंग बदलै।

खरसा प्यारा बीजना स्याले प्यारी आग, वर्षा प्यारी तीन चीज छाता छावा राग—गर्मी (खरसा) में पंखा

(बीजना) अच्छा लगता है, जाड़े (स्याले) में आग प्यारी लगती है और वर्षा ऋतु में छाता, छप्पर और गाना अच्छे लगते हैं।

खरा कमाय खोटा खाय— (क) जो व्यक्ति परिश्रम से कमाता है किन्तु खाने-पीने में कंजूसी करता है उसके प्रति कहते हैं। (ख) जब परिश्रमी व्यक्ति पूंजी एकत्रित करते हैं और निकम्मे या आलसी व्यक्ति उसका उपभोग करते हैं तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : माल० खरो कमावे खोटो खाय ; राज० खरा कमावे खोटा खावे।

खरा कमाय खोटा खाय, सो मूरख कहाय—आशय यह है कि खाने-पीने में कंजूसी नहीं करनी चाहिए, ऐसा करने वाला मूर्ख समझा जाता है। तुलनीय : मेवा० खोटो खाणो ने खरो कमाणों; पंज० खरा कमावै मोटा खावे ओ मूरख खवावे।

खरा खेल फ़र्रुखाबादी बहुत खरे आदमी पर कहते है। (फ़र्रुखाबाद में कभी चाँदी के रुपए बहुत शुद्ध बनते थे, उसी पर यह लोकोक्ति आधारित है।) तुलनीय : अव० खरा खेल फ़र्रुखाबादी; बुंद० खरो खेल फरुखाबादी; ब्रज० खरौ खेल फर्रुखाबादी।

खरा-खोटा जाने राम— भगवान ही किसी की अच्छाई-बुराई के संबंध में जान सकते हैं, मनुष्य के बस का नहीं है। तुलनीय : भोजी० खरटा करे जो करे; पंज० खरा-खोटा रब जाने; ब्रज० खरौ खोटौ जानैं राम।

खरादी का काठ काटे ही से कटता है—ऋण वापस देने ही से चुकता है या काम करने से ही पूरा होता है।

खराब सस्ता, अनाज सस्ता—(क) सस्ती चीज़ प्रायः खराब होती है। (ख) सस्ती चीज़ की कोई पूछ नहीं करता या सस्ती चीज को कोई नहीं पूछता।

खरी कहने वाला दुश्मन—नीचे देखिए।

खरी कहैया दाढ़ीजार—सत्यभाषी बुरा कहा जाता है या गाली सुनता है। तुलनीय : अव० खरा कहे डाढ़ीजार कहावै।

खरी कि होय सुरधेनु समाना—गदही (खरी) कभी कामधेनु (सुरधेनु) नहीं हो सकती। अर्थात् नीच व्यक्ति सज्जनों की बराबरी नहीं कर सकते।

खरी खा मसान जा—हानिकर वस्तु खाने पर श्मशान ही जाना पड़ेगा। हानिकर वस्तुओं के खाने से मना करने के लिए कहते हैं। तुलनीय : पंज० चंगी खा मसान जा।

खरी-खोटी की राम जाने—दे० 'खरा खोटे जाने…'।

खरी बात साबुल्ला कहें, सबके मन से उतरे रहें—खरी और स्पष्ट बात कहने वालों से सभी नाराज रहते हैं। तुलनीय : ब्रज० खरी बात सादुल्ला कहै, सब के मन ते उतर्यौ रहे।

खरी मजूरी चोखा काम—नक़द मज़दूरी देने से काम अच्छा होता है। या जब मज़दूरी नक़द देनी है तो काम भी अच्छा होना चाहिए। तुलनीय : गढ़० रोक मजूरी मामा काम; राज० खरी मजूरी चोखा दाम; भोज० खर मजूरी चोख काम; अव० खरी मजूरी चोखा काम; मैथ० चोख मजूरी चोख काज; मल० नल्ल खपिवनु नल्ल सम्बळम्; पंज० चंगी मजूरी चोखा कम्म; अं० Work brings its own reward.

खरी रोवे, कूड़ा बिके मृदुभाषी दूकानदार रद्दी माल को भी मीठी-मीठी बातें करके बेच देता है और कटुभाषी किन्तु ईमानदार विक्रेता अच्छे माल को भी नहीं बेच पाता। अर्थात् नम्रता से बोलने वाले ही लाभ उठाते हैं। तुलनीय : पंज० चंगी रोवे कुड़ा विके।

खरीरेस्ती कुतिया और मखमल की झल—दे० 'खारिशी कुतिया…'।

खरे माल के सौ गाहक—अच्छी वस्तु को खरीदने वालों की कमी नहीं रहती। अर्थात् अच्छी वस्तु को सभी चाहते हैं। तुलनीय : बुंद० खरे माल के सौ गाहक; पंज० चंगे माल दे सौ गाहक।

खरो कहैया डाढ़ीजार—सच या स्पष्ट (खरा) कहने वाला सबको अप्रिय होता है।

खर्च के भाग्य बड़े धन व्यय करने वाले का भाग्य तेज रहता है और उसे धन कहीं-न-कहीं से मिल ही जाता है। कंजूसों की बुराई तथा खर्च करने वालों की बड़ाई करने के लिए कहते हैं। तुलनीय : राज० खरचरा भाग मोटा, पंज० खरचे दे भाग बडे।

खर्च घना और पैदा थोड़ी, किस पर बाँधू घोड़ा-घोड़ी—खर्च अधिक होकर और आमदनी कम हो तो ठाट-बाट से नहीं रहा जा सकता।

खर्च तो खर्च ही सही दे दाल में पानी—आडम्बरपूर्ण काम करने पर ऐसा कहते हैं। कंजूस अपने लोगों से तो दाल में पानी डालने को कहता है तथा रिश्तेदारों से कहता है कि खूब खर्च हो रहा है। तुलनीय : भोज०मैथ० खरच तऽ खरचे सही दे दाल में पानी।

खर्च बअंदाजे-दख़्ल कुन—आमदनी देखकर ही खर्च करना उचित है।

खर्च बड़ा और कम रुजगार, मनई घर के सब सुकुमार; टरिया घर लौका बरे, वहि घर कुशल विधाता करे- जिस घर में खर्च आमदनी से अधिक हो, घर के सभी सदस्य सुकुमार हों अर्थात् परिश्रम न कर सकते हों, फूस के घर में आग की लपटें उठें उसकी रक्षा विधाता ही करें, अर्थात् वह शीघ्र ही नष्ट हो जाता है।

खलः करोति दुर्वृत्तम् -दुष्ट व्यक्ति दुष्कर्म ही करता है, उसमें किसी भले कार्य की आशा करना मूर्खता है।

खलउ करहिं भल पाइ सुसंगू बुरे आदमी भी भली संगति पाकर भले कार्य करने लगते है, अर्थात् सत्संग का प्रभाव सब पर पड़ता है।

खल उघरहिं तत्काल--दुष्टों का रहस्य बहुत जल्द प्रकट हो जाता है।

खलक़ का हलक़ किसने बंद किया—ससार के मुँह को भला कौन बंद कर सकता है ? अर्थात् दुनिया मनमानी कहने के लिए स्वतंत्र है। जब व्यर्थ में लोग किसी के बारे में कुछ कहते हैं तो वह व्यक्ति यह कहावत कहता है या उसके पक्ष के लोग इसे कहते है। तुलनीय : संसार दा मुँह किन बंद कीता है।

खल कै प्रीति यथा थिर नाहीं—दुष्ट जनों की प्रीति में स्थायित्व नहीं होता, वे अपना मतलब हल करने तक ही मित्रता रखते हैं।

खलन हृदय अति ताप बिसेखी, जरहिं सदा पर संपत्ति देखी दुष्ट या नीच व्यक्ति दूसरों की संपत्ति को देखकर सदैव जलते रहते हैं या सदैव ईर्ष्या करते हैं।

खल बिनु स्वारथ पर अपकारी, अहि मूषक इव सुनु उरगारी -जिस प्रकार साँप और चूहे बिना कारण या बिना लाभ के दूसरों की हानि करते है उसी प्रकार नीच मनुष्य भी बिना स्वार्थ के दूसरों की हानि चाहते है या करते है।

खल सन कलह न भल, नहिं प्रीती —दुष्ट से न तो बैर करना अच्छा है और न प्रीति। उनसे दोनों दशाओं में हानि ही सहनी पड़ती है।

खलीलखाँ ने फ़ाख्ता मारली--छोटे काम पर घमंड करने वाले के लिए कहा जाता है।

खलील खाँ फ़ाख़ता उड़ा गए असभव बात सर्वदा नही होती। लोग कबूतर उड़ाया करते हैं, किंतु कोई खलील खां थे जो फाख्ता उड़ाया करते थे। वे ही उड़ा गए अब कोई नहीं उड़ा पाता। तुलनीय : अव० अब उइ दिन चला गए जब खलील मियां फाख्ता उड़ावत रहें।

खले कपोतन्यायः— खलिहान में कबूतरों का न्याय। खलिहान में एक कबूतर आकाश से उतर कर बैठ जाता है, तब अनेक कपोत वहीं आकर दाने चुगने बैठ जाते हैं। जब एक व्यक्ति कोई कार्य करता है और उसे देखकर अन्य लोग भी करने लगते है तब ऐसा कहते है।

खल्क़ का हल्क़ किसने बंद किया है ?—जन-साधारण की ज़बान कोई बंद नही कर सकता। अर्थात् वे जिसके संबंध में जो चाहें कह दें उन पर कोई प्रतिबंध नही लगाया जा सकता।

खल्क़ की जबान खुदा का नक़्क़ारा जनता की आवाज को ईश्वर की आवाज़ समझना चाहिए। तुलनीय : मरा० जनतेची जीभ म्हणजे नारायणाचा नगारा; अं० Voice of the people is the voice of god (लैटिन vox populi vox dei).

खल्क़ खुदा का मुल्क बादशाह का -सृष्टि का मालिक ईश्वर है और जमीन का राजा। अर्थात् संसार के मालिक ईश्वर के रहते हुए ज़मीन का मालिक राजा है।

खल्वाट बिल्वीय न्यायः—गंजे और बेल का न्याय। कोई गंजा पुरुष अकस्मात् किसी बेल के वृक्ष के नीचे पहुँचा ही था कि उसके सिर पर बेल का एक फल गिर पड़ा। इसी प्रकार कभी-कभी दो वस्तुओं का सयोग आकस्मिक रूप से हो जाता है। संयोग से दो के मिल जाने आदि के प्रसंग में इसका प्रयोग होता है।

खस कम जहाँ पाक घास-फूस कम हुई और संसार शुद्ध हो गया। जब कोई अनचाहा व्यक्ति चला जाता है तो उसके जाने पर संतोष प्रकट करते हुए कहते हैं।

खसम औरत की ढाल है- (क) औरत अपने पति के रहते हुए यदि कुत्सित आचरण करे तो भी उसका बचाव हो जाता है, क्योंकि यदि गर्भ आदि रह जाय तो लोग समझते है कि पति का है, इस प्रकार बेइज़्ज़ती नही होती। (ख) पति के रहते पत्नी की ओर कोई आँख नही उठाता। तुलनीय : हरि० औलाद तेल्ली की नाम खसम का; पंज० खसम जनानी दी ढाल है।

खसम का खाँय, भाई का गाँय -दे० 'खाय खसम का, गाय भाइयों का।' तुलनीय : ब्रज० खसम की खावै भैया की गावै।

खसम का मारा और राजा का दंड कौन पूछता है?-- पति द्वारा मार खाने और राजदंड मिलने पर कोई नही पूछता। अर्थात् इन दोनों से किसी का कोई अपमान नहीं होता। तुलनीय : राज० मांटीरी भारी और राजरी डंडी रौ

कांई मैणो ? पंज० खसम दा मारया अते राजा दा दंड कौन पुछदा है।

खसम किया अमीर जान पर निकला धोबी जैसा—धोबी के पास दूसरों के कपड़े धुलने आते हैं और वह उन्हीं को पहनकर रईस बना घूमता रहता है और संपत्ति के नाम पर उसके पास केवल एक गधा होता है। जो व्यक्ति कोई काम लाभदायक समझकर करे किंतु उससे उसे हानि हो तब कहते हैं। तुलनीय : भीली हाऊ जोई ने माटी कीदो, कुबार होई ने नवड़यो; पंज० खसम कीता पैहे वाला जान के पर निकलया तोबी जिहा।

खसम किया सुख सोने को कि पाटी लग लग रोने को—विदेशी या वृद्ध पति की स्त्री कहती है। तुलनीय : पंज० खसम कीता सुख मांण नू पाटी लगलग रोण नू।

खसम चाहे मर जाय पर सपना सच हो जाय—पति मरता है तो मर जाय किंतु उसके मरने का स्वप्न अवश्य ही सच होना चाहिए। (क) जो व्यक्ति अपनी मूर्खतापूर्ण ज़िद के कारण हानि उठाने को तैयार हो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। (ख) दूसरा मरे या जीए इससे कोई मतलब नहीं, अपना काम सिद्ध होना चाहिए, ऐसे सोचने वाले स्वार्थी व्यक्तियों के प्रति भी व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० मांटी मर्‌यैगो फिकर नहीं, सपनो साचो हुंयो जोयीजै; पंज० खसम पावें मरे पर सुपना सच होवे।

खसम देवर दोनों एक सास के पूत यह हुआ या वह हुआ—(क) जाट जाति की स्त्रियाँ देवर और पति में भेद-भाव नहीं मानती। उन पर यह व्यंग्य है। (ख) जो स्त्री अपने देवर से फँसी हो उसके प्रति भी व्यंग्य है। तुलनीय : पंज० खसम देवर दोनों एक सस दे पुतर इह होया या ओह होया।

खसम मार कर सती हुई—धोखा देने के बाद ऊपरी मन से दुःख प्रकट करने वाले व्यक्ति के लिए व्यंग्य से कहते हैं।

खसम से छूटे तो यारों के जाय—व्यभिचारिणी स्त्री के प्रति कहा गया है। उसे कोई न कोई अवश्य चाहिए। तुलनीय : पंज० खसम तों छुटे ते यारा कोल जावे; ब्रज० खसम ते छूटे तौ यारन कै जाय।

खस्सी की जान जाय खवैये को स्वाद नहीं—बकरा (खस्सी) मर गया परंतु खाने वाले को स्वाद नहीं मिला। अर्थात् जब कोई व्यक्ति कार्य करते-करते थक जाय या परेशान हो जाय और लोग उसके कार्यों से संतुष्ट न हों तब वह ऐसा कहता है। तुलनीय : मग० खस्सी के जान जाय खवइया के सवादे न।

खस्सी भुखाय तो लकड़ी चबाय—बकरे (खस्सी) को भूख लगती है तो वह लकड़ी खाता (चबाता) है। आशय यह है कि भूख लगने पर अच्छी-बुरी सभी चीज़ें अच्छी लगती हैं।

खस्सी मोटाय तो लकड़ी चबाय—बकरा (खस्सी) जब मोटा हो जाता है तो लकड़ी चबाने (खाने) लगता है। आशय यह है कि संपन्न या सुखी लोग कभी-कभी अच्छी चीजों को छोड़ कर साधारण चीजों को खाने लगते हैं या खाने की इच्छा व्यक्त करते हैं। तुलनीय : पंज० बकरा मोटा होके लकड़ी खावे।

खाँड खंडे जो और को, ताको कूप तयार—जो दूसरे के लिए खाई खोदता है, उसके लिए कुआँ तैयार रहता है। तात्पर्य यह है कि दूसरे की बुराई करने वाले की स्वयं बुराई हो जाती है। तुलनीय : राज० खाड खिणै जके ने कूवो त्यार है; अं० They hurt themselves who wrong others.

खाँड खने जो आन को ताको कूप तयार—ऊपर देखिए।

खाँड़ की रोटी जहाँ भी तोड़ो मीठी ही मीठी—अच्छी चीज़ हर प्रकार से अच्छी होती है। तुलनीय : राज० मीठी रोटी तोड़ै जठीनै ही मीठी; हरि० खाँड की रोट्टी न जीतै तोड़ै उड़े त ए मीट्ठी; पंज० खंड दी रोटी जिथों वी तोडो उथों मिट्ठी।

खाँड़ खरी का एक भाव है—मिठाई (खाँड़) और खली (खरी) दोनों एक भाव बिक रही है। अर्थात् जब किसी राज्य या शासन में बहुत अंधेर हो तो कहते हैं। तुलनीय : पंज० खंड अते खली दा इको पा है।

खाँड़ खूंदेगा सो खायगा—जो मेहनत करेगा वही मीठा फल पाएगा। तुलनीय : ब्रज० खाँड खूंदेगो तौ खाँड़ खायगौ।

खांड़ दही जो घर में होय बाँके नैन परोसे जोय, कहें घाघ तब सबही झूठा उहाँ छोड़ि इहवे बैकुंठा—खाँड़ और दही खाने को मिले और भोजन परोसने वाली स्त्री सुंदर हो तो घाघ कहते है कि काल्पनिक स्वर्ग का विचार करना व्यर्थ है, यह आनंद ही स्वर्गिक है।

खाँड़ बिना सब राँड़ रसोई—आशय यह है कि बिना मीठे पकवान के भोजन का आनंद नहीं आता।

खाँड़ भरे भुस खात हैं, बिनु गुरु के उपदेश—बिना गुरु के उपदेश के आदमी के ज्ञान-चक्षु नहीं खुलते।

खाँड़ से खाया जाय, न गुड़ से खाया जाय—जो वस्तु बिल्कुल बेकार हो उसके प्रति कहते हैं कि न तो यह खाँड़ से

खाई जाती है और न गुड़ से खाई जाती है। तुलनीय : राज० खांड में खायो जाय ना कोई गुळ में खायो जाय; पंज० खंड तो खाया जावे न गुड़ नाल खाया जावे।

खांड़ा बजे रण पड़े और दांता बजे घर पड़े—लड़ाई में तलवार की मार होती है और घरेलू झगड़ों में कहा-सुनी या गाली-गलौज होती है। यह शकुन संबंधी कहावत है। ऐसा कहा जाता है कि तलवारों की आपसी खड़खड़ाहट से युद्ध होता है और घर दांता-किटकिट होने से घरेलू कलह विनाशकारी बन जाती है।

खांसे खंखारे, चोर नहीं मूरख—जो चोर चोरी करते समय खाँसता या खँखारता है वह मूर्ख होता है, क्योंकि उसके पकड़े जाने का भय होता है। अर्थात् जो व्यक्ति गुप्त काम करते समय सावधानी नहीं बरतता उसके प्रति कहते हैं।

खाइए त्योहार चलिए व्यवहार—त्योहार के शुभ अवसर पर अच्छा भोजन करना चाहिए और मनुष्य को सामाजिक शिष्टाचार के अनुकूल व्यवहार करना चाहिए। अर्थात त्यौहार को मनाने तथा समाज में रहने के लिए उचित-अनुचित का ध्यान अवश्य रखना चाहिए। तुलनीय : हरि०खाइए तिव्हार, चालिए विव्हार; पंज० खाओ त्यौहार चलो वयवहार।

खाइए देस कमाइए परदेस—अपने देश में अच्छी तरह से खाना चाहिए और परदेश में खूब कमाना चाहिए। अथात् धन बाहर के देशों से अर्जित करके अपने देश में खर्च (व्यय) करना चाहिए। तुलनीय : हरि० खाइए देस कमाइए परदेस।

खाइए मन भावता, पहनिए जग भावता—भोजन अपनी रुचि के अनुसार करना चाहिए और वस्त्र समाज की रुचि के अनुसार पहनना चाहिए। तुलनीय : हरि० खाइए मन भाँवता, पहरिए जग भाँवता; मरा० (आपल्या) मनास आवडेल ते खावें, जनास आवडेल ते ल्यावें।

खाइ के मूतै सूतै बाउं, काहे का बेद बसावे गाउं—यदि भोजन के पश्चात् पेशाब किया जाय और बाईं करवट सोया जाय तो वैद्य को गाँव में बसाने की कोई आवश्यकता नही पड़ेगी, अर्थात् उपरोक्त विधि का प्रयोग करने वाले सदा स्वस्थ रहते हैं। तुलनीय : बुंद० खा के मूतै, सोवे बायें, ताके वैद कबहुं न जायें, छत्तीस० खाके मूते सूतै बायं, काहे बैद बसाए गाउं; अव० खाय कै मूतै सूतै बांय ना घर बैद कबौ न जायं। ब्रज० खाइकें मूतै, सूतै बाऊ, ता घर बैद कबहुं नाहीं जाऊ।

खाई करे कमाई, कप्पड़ करे सिंगार—पौष्टिक आहार से शरीर पुष्ट होता है और वस्त्रों से शरीर की सुन्दरता बढ़ जाती है। अर्थात् भोजन कपड़े से कहीं अधिक आवश्यक है।

खाई खल औ कुत्तन जूठी—खली खाई और वह भी कुत्तों की जूठी। अर्थात् जब कोई व्यक्ति बुरा काम भी करे और हानि भी उठाए तो कहते हैं। तुलनीय : पंज० खल खादी ओह वी कुत्तयां दी जूठी।

खाई भली कि कमाई भली—मुफ्त का खाना अच्छा है या परिश्रम करके उपार्जित करना। निठल्ले लोगों के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : पंज० बेली खाना चंगी या कमायी करके।

खाई भली कि माई भली—खाना माँ से भी प्यारा होता है, अर्थात् रोटी के आगे मनुष्य को कुछ भी नहीं सूझता, या भोजन सबसे प्रिय चीज़ है। तुलनीय : अव० खाई मीठ की माई मीठ; छत्तीस० खाई मीठ त माई मीठ; पंज० खाई चंगी की मां चंगी।

खाई मीठ कि माई मीठ—ऊपर देखिए।

खाई मीठ तो माई मीठ—ऊपर देखिए।

खाई मुग़ल की ताहरी, कहां जायगी बाहरी—मुसलमान भोजन बहुत स्वादिष्ट बनाते हैं। आशय यह है कि जो जिस चीज़ का मजा पा जाता है उससे दूर नही जा सकता या किसी चीज़ का चस्का लगने पर वह आसानी से नही छूटती।

खाई रोटियाँ गुड़ घी से, बुढ़वा लगा हमार जियसे—(क) बूढ़े और निकम्मे पति के प्रति उसकी जवान पत्नी कहती है। (ख) जब कोई किसी असहाय, वृद्ध व्यक्ति को अच्छा भोजन करा दे और उसके बाद वह उसका साथ या पीछा न छोड़े तब कहते है। तुलनीय : पंज रोटियां खादियां गुड की नाल बुडा लगया साडे नाल।

खाई, वही करे कमाई—जो व्यक्ति पौष्टिक आहार करता है वह शरीर से ठीक रहता है और शरीर से स्वस्थ व्यक्ति ही धन भी उपार्जित कर सकता है। अर्थात् व्यक्ति को स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना चाहिए। तुलनीय : हरि० खाई, करै कमाई।

खाऊँ तो कड़वा लगे, उठाऊँ तो भारी लगे—यदि खाता हूँ तो कड़वा लगता है और यदि सिर पर उठा कर चलता हूँ तो बोझ लगता है। जिस वस्तु या मनुष्य से किसी प्रकार का लाभ न हो और उससे पीछा भी न छुड़ाया जा सके तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० चाटूं तो खारो लागै उखणूं तो भारा मरूँ; पंज० खांवा ते कौड़ा लग्गे

चुकाँ ताँ पारी लग्गे।

खाऊँगा तो गेहूँ नहीं तो रहूँगा एहूँ—नीचे देखिये। तुलनीय : व्रज खाऊंगो तौ गेहूं, नहीं तौ रहुंगो एहूं।

खाऊँ तो गेहूँ, नहीं रहूँ एहूँ—जो व्यक्ति प्रत्येक बात में अपना एक स्तर (स्टैंडर्ड) रखते हों और किसी दशा में उससे नीचे न उतरें तो उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय : भोज० खाइब त गोहूं नाहीं रहब ओहूं; हरि० कै तै बाबा बाँढ़ै पागड़ी नां रहै उघाड़ै सिर; पंज० खां तां कनक नई तां इही सई।

खाऊँ तो चुके, न खाऊँ तो सड़े—कंजूसों के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भीली—खाऊँ तो खाड़ो पडे, नी खाऊँ तो रोड़ी वले।

खाऊँ पीऊँ एक में, हिसाब रखूं अलग—खाना-पीना तो साथ चाहिए पर हिसाब-किताब अलग रखना चाहिए या साफ रखना चाहिए। ऐसा करने से व्यवहार में अंतर नहीं पड़ता। तुलनीय : पंज० खाना पीना इक बिच हिसाब बखरा रखना।

खाएँ दिवाली पीटें सूप—मिठाई दिवाली (दीपावली) के नाम पर आती है अर्थात् दिवाली मिठाई खाती है और रात को पीटा जाता है सूप (दलिद्दर देखना)। कुछ लोग मिठाई के स्थान पर 'घी' का प्रयोग करते हैं; अर्थात् दिवाली घी खाती है और सूप पीटा जाता है। जब किसी वस्तु का लाभ कोई उठाए और दंड किसी अन्य को मिले तब कहते है। 'दुष्ट मौज उड़ाते हैं और सज्जन दु:ख पाते हैं' अर्थ में भी इस कहावत का प्रयोग मिलता है। फलै फूलै फलै खल, सीदै साधु पल पल; खाती दीपमालिका, ठठाइ-यत सूप—तुलसीदास।

खाएँ-पिएँ लड़के लड़कियाँ, उपवास करें बुड्ढे-बुढ़ियाँ–खाने-पीने के लिए बच्चे और व्रत-उपवास के लिए बूढ़े। (क) प्रायः बूढ़े व्यक्ति धर्म-कर्म किया करते हैं, बच्चों को इन कामों में कोई दिलचस्पी नहीं होती। (ख) जब कठिन कार्य किसी एक ही व्यक्ति को दिए जाएँ और बाक़ी बैठे तमाशा देखें तो व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : पंज० खाण पीण मुंडे कुड़ियां वरत रखन बुड्डे बुडिडयां।

खाए के ऊँट फेंके के मुर्गी—दे० 'खाने को सेर…'।

खाए के गाल, नहाए के बाल नहीं छिपते—अच्छा भोजन करने वाले का स्वास्थ्य और नहाए के गीले बाल छिपते नहीं। अर्थात् किया हुआ काम चेहरे से जाहिर हो जाता है। जब छिपाकर किया गया काम स्पष्ट हो जाता है तब कहते हैं। तुलनीय : पंज० खाण नाल गल अते नाण नाल बाल नई लुकदे।

खाए तो गेहूं नहीं रहे एहूँ—दे० 'खाऊँ तो गेहूँ…'। तुलनीय : भोज० खाइब गेहूं नाहितऽ रहब एहूँ।

खाए पर खाया वह भी गँवाया—अधिक लालच करने वाला अपना पहले का अर्जित धन भी खो बैठता है।

खाए पीए एक में हिसाब करें अलग—दे० 'खाऊँ पीऊँ एक में……'।

खाए बकरी की तरह सूखे लकड़ी की तरह—बहुत खाकर भी दुबला नज़र आने वाले के लिए कहते हैं।

खाओगे खाँड कि पीओगे शरबत—मीठा (मिठाई, खांड) खाओगे या शरबत पिओगे। जिसे हर तरह से लाभ हो उसके प्रति कहते हैं।

खाओगे तो जाओगे कहाँ ?—जब कोई व्यक्ति किसी का कुछ खा लेता है तब उसे उसकी हर बात माननी ही पड़ती है। तुलनीय : मैथ० खैबऽ तऽ जैबऽ कहाँ; भोज० खइबऽ तऽ जइबऽ कहाँ; पंज० खाओगे तां जाओगे किथै।

खाओ न पीओ ऐसे ही जीओ—नीचे देखिए।

खाओ न पीओ जुग-जुग जीओ—कंजूसों के प्रति व्यंग्य में कहते हैं जो केवल बातों से ही लोगों को प्रसन्न करना चाहते हैं। तुलनीय : भोज० खा न पीअ जुग-जुग जीअ; पंज० खाओ न पीओ जुग-जुग जिओ।

खाओ पीओ अपना, नाम गाओ हमारे—जो व्यक्ति मुफ्त में यश पाना चाहे उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : पंज० खाओ-पीयो अपना गुण गावो साडे।

खाओ पीओ अपना, नाम हो पड़ोसी का—ऊपर देखिए।

खाओ पीओ मस्त रहो—(क) भोगवादी (एपीक्यूरियन) या चार्वाक के सिद्धांतानुसार जीवन इसी प्रकार बिताना चाहिए। (ख) एक तरह का आशीर्वाद। तुलनीय : पंज० खाओ पिओ मस्त रहो।

खाओ पकौड़ी पेलो दंड—मस्त रहने वाले कहते हैं, जिनके अनुसार जीवन केवल मौज उड़ाने के लिए ही है। तुलनीय : पंज० खाओ पकोड़ियां मारो डंड।

खाओ वहाँ तो पानी पीओ यहाँ—शीघ्रता करने के लिए कहते हैं। तुलनीय : मरा० तेथें जेवा नि येथे पाणी प्या; राज० जीमता हुवो तो चळू पठे आर कीजा; अव० खाना हुआं खाव अंचवौ हिआं; हरि० उड़ै खाणा खाते हो न आड़ै आणा के पाणी पियो; पंज० खाओ उथे अते पाणी पीवो इथ्थे।

खा कचौड़ी ओढ़ दुश, ला, हो बैठेगा दम्मो वाला—

ऐसे दिवालिए को कहते हैं जो दूसरों से क़र्ज़ लेकर अधाधुंध खर्च करे।

खाक छानते बेर बिनते— व्यर्थ परिश्रम करने वालों के प्रति कहते हैं।

खाक डाले चाँद नहीं छिपता— राख (खाक) डालने या उड़ाने से चाँद नहीं छिपता। अर्थात् किसी प्रतिष्ठित या सम्मानित व्यक्ति की निंदा करने से उसकी प्रतिष्ठा या उसके सम्मान पर कोई आंच नही आती। तुलनीय : मरा० राख फेंकून चांदोबा लपत नाही; पंज० थूक सुटण नाल चंदरमा नई लुकदा;

खाक न धूल बकायन के फूल— खोटे मनुष्यों पर कहते हैं।

खाकर पड़ जाओ, मारकर टल जाओ—खाने के बाद आराम करना चाहिए तथा झगड़ा करने के बाद वहाँ से हट जाना चाहिए। तुलनीय : भोज०,मैथ० खाके पर जाई, मार के टर जाई; मग० खाके पसरी मार के ससरी; अव० खाय के परि रहै मार के टरि रहै; पंज० खाके पै जाओ मार कै नट्ठ जावो।

खाकर मूते सोवे बाएं, ताके बैद कभी न आएँ—दे० 'खाइ के मूतै सूतै⋯'।

खाकर सोए चित्त, बैद बुलाए नित्त—भोजनोपरांत चित्त सोना हानिकर समझा जाता है। टि० आधुनिक चिकित्साविज्ञान इसे हानिकर नही मानता। तुलनीय : मग० खा के सूते चित्त, बइद बुलावे नित्त; भोज० वही; ब्रज० खाइ कें सोवै चित्त बैद बुलावै नित्त।

खा कर हगे, कभी न अघे—जो खाना खाकर शौच जाता है उसका पेट कभी नहीं भरता या उसकी तृप्ति कभी नही होती। तुलनीय : राज० खाय हंगाया कदे न धाया; पंज० खाके हग्गे कदी नां रज्जै।

खा कर्जा जल्दी मर जा—क़र्ज़ लेने पर व्यक्ति का नाश शीघ्र होता है अतः क़र्ज़ नहीं लेना चाहिए। तुलनीय : पंज० कर्जा खा छेती मर जा।

खाकी अंडे में बच्चे नहीं होते—जो चीज़ ऊपर से स्पष्टतः खराब है उसमें कुछ भी तत्त्व नहीं होता (खाकी अंडा जिसे मुर्गी मैथुन के बिना दे)।

खा के खो दिया बाद में रो दिया—जो कुछ था उसे खा-पी लिया और समाप्त हो जाने पर रो रहा है। जो व्यक्ति बिना विचारे खर्च करे और समाप्त हो जाने पर पछताए उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : भीली खाई खोया माहुल गेई ने रोयो; पंज० खाके गवा दिता मगरों रो दिता।

खाके जल्दी चलिए कोस, मरिए आप दैव को दोस—भोजन के बाद तुरंत चलने के कारण मृत्यु हो जाने पर भगवान को दोष देते हैं। तात्पर्य यह है कि भोजन के तुरंत बाद चलना हानिकारक है।

खाके मूतीं सूती बायँ ताके कबहूँ न बैद बुलायँ—दे० 'खाइ के मूतै सूतै⋯'।

खा के मूते सूते बायँ काहे के घर बैद बसायँ—दे० 'खाइ के मूतै, सूतै⋯'।

खाके सूते दहिने बैद बोलावे तहिने—भोजन के बाद दाहिनी करवट सोना हानिकर होता है।

खाके सूते पट्ट बैद बुलावे झट्ट—खाकर पेट के बल सोने से विकार उत्पन्न होता है।

खा को पड़ रहे, मार कर टल रहे—दे० 'खाकर पड़ जाओ⋯'। तुलनीय : ब्रज० खाइकें परि रहै, मारि कैं टरि रहै।

खा-खा कर घर पोला किया—खा-खा कर घर खोखला या खाली कर दिया। निकम्मे या आलसी व्यक्ति के प्रति कहते है जो काम कुछ नही करते बल्कि दूसरों द्वारा एकत्रित धन को ही व्यय करते हैं।

खा-खा कर डुबो दिया—जिस व्यक्ति या बच्चे के लिए काफ़ी खर्च किया जाता है और इसके बावजूद वह किसी काम लायक़ नही होता उसके प्रति कहते है। तुलनीय : पंज० खा-खा डुबा दिता।

खा-खा कर मुँह चिकनाए—दूसरों के धन पर गुलछर्रे उड़ाने वालों को कहते हैं।

खा-खा कर संडा पड़े हैं—जो व्यक्ति मुफ़्त का खाएँ और काम-धाम कुछ न करें उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० खा-खा के संडा बणे दा है।

खा चुके खिचड़ी सलाम भाई चूल्हे—स्वार्थी व्यक्तियों के प्रति व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : पंज० खा के खिचड़ी चुल्ले नूं सलाम।

खा जाने सो पचा जाने—जो व्यक्ति भोजन करता है वह उसे पचाना भी जानता है। अर्थात् जानकार व्यक्ति ही किसी काम को करने का बीड़ा उठाता है। तुलनीय : पंज० जो खावे ओह पचावे।

खात निबौरी दाख बतावे—झूठी शान दिखाने वालों के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : मरा० लिंबोण्या खातो पण द्राक्षं मागतो (फुकट मिजास)।

खाता-पीता जो मरे, उसको कोई क्या करे?—जो

व्यक्ति खाते-पीते (स्वस्थ) मर जाय उसके लिए कोई क्या कर सकता है। अर्थात् जो व्यक्ति सावधानी रखने पर भी हानि उठाए तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय: राज० खावतो-पीवतो मरै जकेरो कोई कांई करे; पंज० खंदा-पींदा जिहड़ा मरे उसदा कोई की करे; ब्रज० खातौ-पीतौ जो मरै, वाकूं कोई कहा करै।

खाता भी जाय गुर्राता भी जाय—नीच व्यक्ति के प्रति कहते हैं जो जिससे लाभ उठाता है उसी के साथ अकड़ भी दिखाता है। तुलनीय: हरि० खाना जा अर घुर्राता जा; मेवा० खा जावे ने खाड़ा कूट जावे; पंज० खांदा वी जा फूरदा वी जा।

खाता भी जाय घूरता भी जाय—ऊपर देखिए।

खाता भी जाय बर्राता भी जाय—दे० 'खाता भी जाय गुर्राता भी…'।

खाती-पीती डोमनी, घर में लाए घोड़ा—डोमनी आराम से घर में बैठकर खा-पी रही थी कि घोड़ा मँगवा लिया। अर्थात् जब कोई सुख से दिन काटता हुआ भी मुसीबत मोल ले ले तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय: राज० बैठी-सूती डोमणी घर मे घाल्यो घोड़ो।

खाते कमाते रहो—किसी के सुखमय जीवन की कामना या आशीर्वाद। तुलनीय: अव० खात कमात रहो।

खाते-कमाते होते तो डूब क्यों मरते?—निठल्लों और आवारा लोग जो इधर-उधर भटकते रहने के कारण विपत्ति में फँस जाते हैं उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय: गढ़० बटदी-कातदी होंदी त भेल लोट दी; पंज० खांदे कमादे होतां डुब के कैनू मरदे।

खाते के गले में फँसती है—रोटी खाते हुए के गले में फँसती है। खाते-पीते उलटी बातें सूझती हैं। अर्थात् जब कोई व्यक्ति आराम से रहता हुआ भी कोई ऐसा काम करे जिससे उसे कष्ट उठाना पड़े तो उसके प्रति व्यंग्योक्ति। तुलनीय: राज० बाटी खातैनै बूज आवै; पंज० खांदा-पीदा मौत नूं छंडां मारदा ए।

खाते-खाते पहाड़ भी चुक जाता है—बैठे-बैठे खाने से अपार संपत्ति भी समाप्त हो जाती है। आलसियों या निकम्मों के शिक्षार्थ कहते हैं। तुलनीय: खांदे खांदे पहाड़ वी मुक जांदा है।

खाते-पीते को मौत आती है—(क) मृत्यु का कोई समय निश्चित नहीं होता वह किसी समय भी आ सकती है। (ख) जो व्यक्ति आराम से रहते हुए भी कोई मुसीबत मोल ले ले उसके प्रति भी व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय: राज० रोटी खांवतां-खांवतांने मौत आवै; पंज० खांदे-पीदे नूं मौत आंदी है।

खाते-पीते जग मिले, औसर मिले न कोय—सुख में सभी साथी बनते हैं, किंतु दुःख में कोई साथ नहीं देता। लेकिन जो दुख में साथ देता है वही सच्चा साथी समझा जाता है। तुलनीय: पंज० खंदे पींदे सब मिलण पुखे मिले ना कोई।

खाते-पीते रंडी घर लाए—आराम से जीवन बिता रहे थे कि वेश्या को घर में ले आए। अर्थात् जब कोई व्यक्ति सुख-चैन से रहते हुए कोई मुसीबत मोल ले ले तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय: भीली—हूनो बैठो डूमडी घरे माये घाले; पंज० खंदे-पींदे रंडी करबिच लयाये।

खाते-पीते हरि मिलें तो हम भी मिल लें—खाते-पीते अर्थात् संसार के सुख भोगते हुए यदि भगवान मिलें तो हम भी उनसे मिल लें। अर्थात् जो व्यक्ति बिना किसी कष्ट और परिश्रम के लाभ उठाना चाहें उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय: राज० खानां-पीनां हर मिलै तो हमकूं कहियो; पंज० खंदे-पींदे रब मिले तां असी वी मिल लइये।

खाते रहो कमाते रहो—दे० 'खाते-कमाते रहो।'

खा थोड़ा बहुत खायगा, बहुत खायगा सो थोड़े से भी जायेगा—(क) थोड़ा खाने वाला अधिक समय जीवित रहता है तथा उसे कोई रोग भी नहीं होता, इसलिए वह अधिक खाता है। किन्तु अधिक खाने वाला रोगी होकर शीघ्र ही परलोक सिधार जाता है। (ख) कम लाभ लेने वाले की बिक्री अधिक होती है और उसे अधिक लाभ मिलता है तथा लोभी दूकानदार की दूकान चौपट हो जाती है। तुलनीय: पंज० कट खा मता खांवेगा मता खावेगा कट तों वी जांवेगा।

खाद कूड़ा ना टले, भाग्य लिखा टल जाय—दे० 'करम लौट जाय पर खाद…'।

खाद देय तो होवे खेती, नाहीं तो रहे नदी की रेती—यदि खेत में खाद डाली जायगी तो फ़सल अच्छी होगी नहीं तो नदी की बालू जैसी ही दिखाई देगी। अर्थात् कुछ भी पैदा नहीं होगा।

खाद पड़े तो खेत नहीं घूर की रेत—जिस खेत में खाद डाली जाती है वही खेत अच्छा समझा जाता है और उसी में फ़सल भी अच्छी होती है तथा जिस खेत में खाद नहीं डाली जाती वह भूमि रेतीली भूमि समझी जाती है यानी उसमें फ़सल अच्छी नहीं होती। तुलनीय: ब्रज० खात परै तो खेत, नहीं घूरे की रेत।

खाद पड़े तो खेत, नहीं भूड़ का रेत—ऊपर देखिए।

खाद परे तो खेत नाहीं तो कूड़ा रेत—ऊपर देखिए।

खान का पत्थर और खानदान का आदमी—अच्छे और मूल्यवान पत्थर खान में से निकलते हैं तथा भले आदमी अच्छे खानदानों में ही पैदा होते हैं। अर्थात् जब कोई सम्मानित परिवार का व्यक्ति अपने घराने की प्रतिष्ठा के अनुसार कोई बड़ा काम करता है तो प्रशंसा के लिए उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० जात को मनखी अर खाणि को ढुंगो।

खान-खानां जिनके खाने में बिताना—ऐसे अवसर पर कहते है जब कोई व्यक्ति गुप्त रूप से किसी का उपकार करे। (बिताना—गुप्त वस्तु)।

खान तो खान, जुलाहा भी पठान—पठान को तो सभी खान कहते हैं, किंतु जुलाहा भी अपने को खान कहता हैं। (क) जब कोई व्यक्ति अपने को अपनी स्थिति से बढ़-कर दिखाए तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। (क) जब कोई छोटा व्यक्ति किसी बड़े आदमी की संगति में आकर उसके जैसा ही अपने-आपको भी समझने लगता है तब भी ऐसा कहते है। तुलनीय : माल० मियां तो मियां पर पिंजा-रा इ मियां।

खानदेश खुर्दे से डूबा, दक्खिन डूबा दाने से; मारवाड़ मनसूबे डूबा, पूरब डूबा गाने से—खानदेश की अवनति नित नए सिक्के चलने से, दक्षिण की अकालों से, मारवाड़ की कोरी बातें करने से और बंगाल की नाच-गाने से हुई।

खान-पान को चाचा ताऊ, काम करन को बुढ़वा नाऊ—खाने-पीने के लिए चाचा आदि को पूछते हैं और काम दूसरों से कराते हैं। अर्थात् जो व्यक्ति लाभ अपनों को पहुँचाए और काम दूसरों से कराना चाहे उसके प्रति कहते है।

खाना और उँघाना—आलसियों के प्रति कहते है।

खाना और ऐंठना—ऊपर देखिए।

खाना करे मस्ताना—(क) अच्छा भोजन मिलने से आदमी पुष्ट होता है। (ख) जब भोजन मिल जाता है तभी मनुष्य को उपद्रव सूझते हैं। (ग) अच्छा भोजन करने वाले को कभी कोई रोग नहीं होता। तुलनीय : राज० खाद्य करै उपाध; पंज० अन्न बनावे मौजी।

खाना गाँव का रहना शहर का—गाँव की खाद्य वस्तुएँ शुद्ध और ताज़ी होती है, इसलिए गाँव का भोजन अच्छा माना जाता है और रहने के लिए शहर अच्छा माना जाता है, क्योंकि जो सुविधाएँ शहरों में प्राप्त होती हैं वे गाँवों में नहीं मिलती। तुलनीय : गढ़० खाणो पेणो गढ़ रौतेलो कुमौं; पंज० खाना पिंडदा रैणा सहर दा।

खाना घर में, भौंकना सड़क पर—जो व्यक्ति खाय किसी का और काम करे किसी और का तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० खाना शिवद्वारे भौंकना मसीतीं; ब्रज० खाइबौ घर में, भूंमिबौ सड़क पै।

खाना छोटे से, ब्याह बड़े से—शादी पहले बड़े लड़के की करनी चाहिए और भोजन पहले छोटे बच्चों को ही कराना चाहिए। तुलनीय : गढ़० काणसा बिटी खओणो जेठा बिटी वेओणो; पंज रोट्टी छोटे नू, वौट्टी बड्डे नू।

खाना दे पर रहना न दे—अपरिचित अथवा संदेहास्पद व्यक्तियों के प्रति ऐसा कहते है। तुलनीय : गढ० गास देणो पर बास नि देणो। (भोजन करा देना चाहिए घर में रहने की जगह नहीं देनी चाहिए)। तुलनीय : पंज० खान नू देवे पर रैण नू ना देवे।

खाना न कपड़ा, सेंत का भतरा—(क) कुछ न कमाने या कुछ न देने वाले पति पर औरतें कहती हैं। (ख) यदि कोई अपना संबंधी बने पर कुछ दे-ले नहीं तब भी कहते हैं। तुलनीय : अव० खाना न कपड़ा सेत मेन कै भतरा।

खाना न खाने देना, कूड़े में फेंक देना—जो व्यक्ति न तो खुद लाभ उठाते हैं और न दूसरे को लाभ उठाने देते हैं, ऐसे दुष्ट प्रकृति के मनुष्यों के प्रति इस प्रकार कहते हैं। तुलनीय : गढ़ त्वैंकु न मैंकू स्वीचल राम; पंज० खेलना न खेलन देना खुत्ती विच मूत देना।

खाना न खाने देना, पत्तल उठा कर फेंक देना—ऊपर देखिए।

खाना न पीना धूंगिया डकार—खाया-पिया कुछ नहीं है, पर डकारते हैं। झूठे दिखावे पर कहते हैं।

खाना तो पराया है, पेट तो पराया नहीं है—मुफ़्त पाने पर यदि कोई बहुत खा रहा हो तो अधिक न खाने देने के लिए ऐसा कहते हैं। (क) आशय यह है कि कम से कम पेट का तो ध्यान रखो कि वह फट न जाय। (ख) सेंत में मिली हुई वस्तु को अनावश्यक रूप से बटोरने वाले व्यक्ति को लक्ष्य करके भी कहा जाता है। तुलनीय : पंज० रोटी बगानी है टिड ताँ अपना ही है।

खाना पीना गाँठ का निरी सलाम अलैक—झूठे दिखावे या आदर पर कहा जाता है।

खाना मन भाता, पहनना जग भाता—अपनी रुचि के अनुसार भोजन और पर रुचि के अनुसार पोशाक होनी चाहिए।

खाना वहाँ खाओ तो पानी यहाँ पीओ—दे० 'खाओ

वहाँ तो पानी…'।

खाना शराकत, रहना फ़राक़त—मिलकर रहें और खाएँ पर लेन-देन या हिसाब-किताब साफ़ रखें।

खाना है, पेट के साथ बाँधना नहीं है जितना पेट में समायगा उतना ही तो खायगा, कोई पेट के ऊपर बाँध थोड़े ही लेगा। भोजन भट्टों को जब कोई व्यक्ति टोक देता है तो वे इस प्रकार कहते हैं। तुलनीय : भीली—पेट खावो है पेट बांधवो नी।

खाना होटल में, सोना मोटर में, मरना अस्पताल में—मोटर चालकों अथवा पर्यटकों अथवा प्रवासियों के प्रति कहते है, क्योंकि घर से दूर रहने के कारण वे खाना होटल में खाते हैं, सोते मोटर ही में हैं और प्राय: दुर्घटना में शिकार होने पर अस्पताल में जाकर मरते है। 'अकबर' का शेर है :

हुए इस क़दर मुहज़्ज़ब कभी घर का मुंह न देखा।
कटी उम्र होटलों में, मरे हस्पताल जाकर।।

खाने आई बिल्ली, खंभा खाए—आवेश में आकर सीमा का उल्लंघन करने वाले व्यक्ति को लक्ष्य करके ऐसा कहा जाता है।

खाने की सुध न पीने का होश—काम में सर्वदा व्यस्त रहने वाले पर कहा जाता है।

खाने के खर्चो नहि डेवढ़ी पर नाच—खाने-पीने के लिए तो कुछ है नहीं, किन्तु द्वार पर नाच करा रहे हैं। बाह्य दिखावा करने वालों के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

खाने के दाँत और, दिखाने के और—(क) कहना कुछ और करना कुछ। (ख) ऊपर से प्रेम और भीतर से कपट रखने पर भी कहते हैं। (ग) ऊपर से कुछ और दिखावे तथा भीतर से असलियत कुछ और हो तो भी कहते हैं। तुलनीय : मरा० खायचे दाँत निराळे नि दाखविण्याचे निराळे; अव० खाय के दाँत और देखावै कै और; पंज० खाण दे दंद होर दसण दे होर; ब्रज० खाइके के दाँत और दिखाइबे के और।

खाने के वक़्त भाई-भतीजा, लड़ने के वक्त देवर-ससुर—जब श्रम कोई करे और उसका फ़ायदा कोई अन्य उठाये तब व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : छत्तीस० खाए के बेर भाइ-भतीज, जूझे के बेर देवर-ससुर; पंज० खाण बेले परा-पतीजा लड़न वेले देवर सोहरा।

खाने को अपने, काम को हम—ऊपर देखिए। तुलनीय : कौर० खान पान कू मोती का कुनबा, इस काम कू हम।

खाने को अलाउद्दीन कुपड़ने को फ़िरोज़—जब काम कोई करे और लाभ कोई उठाए तो कहते हैं।

खाने को आगे, कमाने को पीछे—खाने को सबसे पहले और काम के लिए सबसे पीछे अर्थात् जो व्यक्ति खाना-पीना तो खूब चाहते हैं और काम कुछ भी नहीं करना चाहते उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : भीली—खावा नी वेला अग्गो, काम नी वेला पाछो; पंज० खाण नूं अग्गे कमाण नूं पिछे।

खाने को आगे, लड़ने को पीछे—कायर व्यक्ति के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : भोज० खाये में आगे मार में पूछे; राज० जीमण में अगाड़ी लड़ाई मे पिछाड़ी।

खाने को ऊँट, कमाने को बकरी—अर्थात् जो व्यक्ति खाना तो अधिक चाहते हैं और श्रम बहुत कम करते हैं, उनके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मेवा० काम की बेल्याँ लाकड़ी, खाबाने अर चावे छ ताकड़ी; भोज० खाय के बाघ कमौये के मुरगी; अव० खाये के बेरी सेर कमाये के बेरी बकरी; पंज० खाण नूं ऊँट कमाण नूं बकरी।

खाने को ऊँट, कमाने को मुर्गी—ऊपर देखिए।

खाने को ऊँट, लादने को मुर्गी—दे० 'खाने को ऊँट, कमाने को बकरी।'

खाने को ऊद कमाने को मजनूं—ऐसे निकम्मे व्यक्ति पर कहते हैं जो खाने में तो तेज़ हो पर कमाता कुछ भी न हो।

खाने को कुछ नहीं, नहाएँ बड़े तड़के—घर में खाने के लिए तो कुछ भी नहीं है पर स्नान बहुत सबेरे करते हैं। बाह्य आडंबर दिखाने वाले के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० खाए के कुछ ना नहाए के तड़के; पंज० खाण नूं कुछ नई नाण तड़के।

खाने को कुछ नहीं नाम लक्ष्मी नारायण—हैसियत के अनुसार नाम न होना।

खाने को खरे, खिलाने को मरे—खाने के लिए तैयार रहते हैं, पर खिलाते समय जान निकल जाती है। अत्यत कृपण के लिए कहा जाता है। तुलनीय : पंज० खाण नूं चंगे पले खुआव नूं भाड़े।

खाने को चचा, काम को भतीजे—खाते है चाचाजी और काम करते हैं भतीजे। (क) जब कोई व्यक्ति परिश्रम करे किन्तु फल किसी और को मिले तो उसके प्रति कहते हैं। (ख) जब कोई व्यक्ति खिलाए-पिलाए किसी और को तथा काम किसी और से कराए तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० खावण पीवण ने खेमली नाचण ने गजराज; पंज० खाण नूं चाचा करण नूं पतीजा।

खाने को पहले लड़ने को पीछे-- (क) भोजन करने के लिए तो सबसे पहले तैयार रहते है और लड़ने के समय पीछे छिपे रहते हैं। निकम्मे और डरपोक व्यक्तियों के प्रति ऐसा कहते है। (ख) भोजन सबसे पहले करना चाहिए क्योंकि बाद में प्राय: भोजन बचता नहीं है, और युद्ध में पीछे ही रहना चाहिए क्योंकि आगे वाले ही मारे जाते हैं और पीछे वाले मार खाने से बच जाते हैं। स्वार्थी तथा डरपोक व्यक्तियों की खिल्ली उड़ाने के लिए ऐसा कहते हैं। तुलनीय : माल० खावा में आगे ने लड़वा में पाछे रेणो; पंज० खाण नूं पैले लड़ण नूं पिछे।

खाने को पीछे नहाने को पहले-- भोजन से पहले स्नान कर लेना चाहिए। या नहाने के बाद खाना चाहिए, खाने के बाद नहाना उचित नहीं। यह उक्ति स्वास्थ्य-विज्ञान से संबंधित है। तुलनीय : मरा० खायला मागें आंधोळीला आधी; अव० खाय पाछे नहाय पहिले; पंज० खाण नूं पिछे नाण नूं पैले।

खाने को पूत, लड़ने को भतीजा---खिलाते अपने पुत्र को है और लड़ने के लिए भतीजे को भेजते हैं। (क) स्वार्थी व्यक्ति के प्रति कहते है। (ख) जब श्रम कोई करे और फ़ायदा कोई और उठाये तब भी कहते है। तुलनीय : पंज० खाण नूं पुतर लड़ण नूं भतीजा।

खाने को बाघ कमाने को मुर्गी---दे० 'खाने को ऊँट कमाने को बकरी।'

खाने को बिसमिल्लाह, कमाने को अस्तग़फ़िरुल्लाह---कामचोर, पर खाने में तेज़ आदमी पर कहा जाता है। तुलनीय : राज० खां मांब लकड़ी तोड़ो तो कै यह काफर का काम, खा माव खीचड़ी खावो तो कै बिसमिल्लाह।

खाने को मलाई, बोलने को म्याऊँ---दे० 'खाने को ऊँट कमाने को बकरी।'

खाने को महुआ पहनने को अमौआ---जो खाते बहुत ही साधारण है पर रहते हैं ठाठ से अर्थात् दिखावा करने वालों पर कहा जाता है। तुलनीय : गढ़० खुट्टू खोमड़ा चुफला नागा, राज० खावणने खोखा पैरणनु चोखा।

खाने को साढ़ी बोले को मेउँ---जो भोजन तो अच्छा-अच्छा चाहते है पर काम कुछ भी नहीं करते उन पर कहा जाता है।

खाने को सेर कमाने को बकरी---दे० 'खाने को ऊँट, कमाने को···'। तुलनीय : ब्रज० खाइबे कू सेर कमाइबे कू बकरिया।

खाने-पीने को पंडित जी, काम करने को लड़के---पंडित जी बैठे-बैठे मौज उड़ाते हैं और काम करते हैं लड़के। जहाँ परिश्रम कोई और करे तथा लाभ कोई दूसरा उठाए वहाँ कहते हैं। तुलनीय : गढ़० खाला पेला गौरू का, डाँड देला औरू का; पंज० खाण पीण नूं पंडतजी काम करण नूं मुंडे।

खाने-पीने में शरम क्या ?---अर्थात् खाने-पीने में संकोच नहीं करना चाहिए। व्यर्थ संकोच दिखाने वाले के प्रति कहते है। तुलनीय : पंज० खाण-पीण बिच सरम कैंदी; ब्रज० खाइबे पीबे में सरम कहा।

खाने-पीने से कम नहीं होता-- धन खाने-पीने से कम नहीं हुआ करता। धन बुरे कामों में ही नष्ट होता है। कंजूसों को समझाने के लिए कहते है। तुलनीय : राज० खायां किमा खाडा पड़ै है; पंज० खाण पीण नाल काटा नईं पैदा।

खाने-पीने से गए तो क्या दुआ-सलाम से भी गए ?---किसी से घनिष्ठ संबंध तोड़ भी दिए जाएँ, फिर भी बोल-चाल नहीं छोड़नी चाहिए। तुलनीय : गढ़० पूड़ीपाल से त गया पर क्या नगोनारायण से भी गया; पंज० खाण पीण तों गया ते की राम राम तों वी गया।

खाने में आगे मार में पीछे---दे० 'खाने को आगे लड़ने को···'। तुलनीय : ब्रज० खाइबे में आगे, मार में पीछे।

खाने में आगे, लड़ने में पीछे---दे० 'खाने को आगे लड़ने को···'।

खाने में चटनी, पलंग पर नटनी-- विलासी मनुष्यों पर कहा जाता है। (नटनी --औरत, वेश्या)।

खाने में शरम क्या और घूसों में उधार क्या ?---खाने में लज्जा नहीं करनी चाहिए और मारने का बदला मार से तुरंत चुकाना चाहिए।

खाने वाले खा गए, पीने वाले पी गए, बैठे रह गए संत---खाने-पीने वाले तो खा-पी कर चले गए किंतु सज्जन मनुष्यों को वहीं छोड़ गए। जब दुष्ट मनुष्य किसी की हानि करके भाग जाएँ और संगति के कारण सज्जन मनुष्य को झंझट में फँसना पड़े तब उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० चटवा-चाटिगे बिटवा बीटिगे, भल भला मणसू कोटिगे।

खाने से कुछ नहीं चुकता---कंजूसों के शिक्षार्थ ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मेवा० खायां नी खूटे।

खाने से पेट भरता है, देखने से नहीं---भोजन को देखने से पेट नहीं भरता, बल्कि खाने से भरता है। जो

व्यक्ति केवल बातों से ही काम चलाना चाहे या बड़ी-बड़ी बातें ही करता रहे, काम कुछ न करे तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : भीली—खादे भूख जाये दीठे भूख नी जाये; पंज० खाण नाल टिड परदा है दिखण नाल नईं।

खान्दान का खान्दान ही बुरा—सारे के मारे बुरे। जब पूरा खान्दान, वर्ग या मंडली आदि बुरी हो तो कहते हैं। तुलनीय : कन्नौ० खन्ने को खन्नो ई बुरो।

खा-पी कर आए हो तो बने रहो—यदि भोजन करके आए हो तो रह जाओ, अर्थात् हम भोजन नहीं देंगे। कंजूसों के प्रति कहते है।

खामोशी अलामते-रजा-अस्त—चुप रहना स्वीकृति का लक्षण है। तुलनीय : म० मौनं स्वीकृति लक्षणं।

खामोशी नीम रजा—चुप रहना आधा स्वीकार करने के बराबर है।

खायँ निबोली बतावें टपका—खाते तो नीम (निबोली) हैं और बताते हैं कि आम (टपका) खाता हूँ। अर्थात् जो व्यक्ति व्यर्थ में संपन्न होने का स्वाँग रचते हैं उनके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : कौर० खायं निबोली, बतावें टपका।

खायँ भीम, हगें नकुल—नीचे देखिए।

खायँ भीम हगें सकुनी—जब अपराध कोई और करे और भोगे कोई दूसरा तब कहते हैं। इस संबंध में एक कहानी कही जाती है : भीम ने किसी से वरदान प्राप्त किया कि वे जो भी खाएँ शकुनि को पाखाना करना हो। वरदान के बाद वे खूब मिर्च खाने लगे जिससे शकुनि को बहुत परेशान होना पड़ा। तुलनीय : राज० खावै सूर कुटीजै पाड़ा; अव० खायँ भीम हगें सकुनी; गढ़० खिमसिंह खायो, विरसिंह उस्यायो; अं० January commits the fault and May bears the blame.

खाय अन्न हाई, मारी कपिला जाय—जब अपराध कोई करे और दंड किसी और को मिले तो कहते हैं।

खाय अरु गुर्राय—जब कोई व्यक्ति नुक़सान भी करे और उल्टे रोब भी दिखावे तब कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० खावै और घुर्रावै।

खाय अहार, तो ठेले पहार—पौष्टिक भोजन करने वाला ही भारी काम कर सकता है, या परिश्रम करने वाले के लिए पौष्टिक भोजन आवश्यक है। तुलनीय : अव० खाय अहार, तो ठेलै पहार।

खाय इस मुहल्ले, भौंके उस मुहल्ले—नीच या कृतघ्न व्यक्ति के प्रति कहते हैं जो खाने को कहीं पाता है और काम कहीं और ही करता है या दूसरों की सहायता करता है। तुलनीय : पंज० खाण इस कर पौंकण उस कर।

खाय उसका माल—जो खाए उसी का धन (माल) है। जो सम्पत्ति का भोग करते हैं उन्हीं की वह होती है, अर्जित करने वाले की नहीं। जो व्यक्ति कमा-कमा कर रखते हैं, भोग नहीं करते उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० माणै जकांरा माल, पंज० जो खावे उस दा माल।

खाय और आँख दिखावे—नीचे देखिए। तुलनीय : ब्रज० खावै और आँखि दिखावै।

खाय और ऐंठे—(क) कृतघ्न व्यक्ति पर कहा जाता है जो खाता भी है या लाभ भी उठाता है और रोब भी दिखाता है। (ख) जो नुकसान भी पहुँचाये और उलटे अकड़ दिखाये उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० खावे अते अक्खां दस्से।

खाय कर मूते सूते बाएँ, ता घर बैद कभी न आएँ—दे० 'खाइके मूतै सूतै...'।

खाय का साग नहीं, दरी बिछौना—खाने को साग भी नहीं मिलता है और बिछाने के लिए दरी चाहते हैं। (क) जब कोई निर्धन व्यक्ति ऊँची आकांक्षा करता है तब उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। (ख) जब कोई ग़रीब होते हुए भी अपने को धनी दिखाना चाहता है तब उसके प्रति भी व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

खाय का साढ़ी बोले का म्याऊँ—खाते तो हैं साढ़ी (दूध की मलाई) और बोलते हैं बिल्ली जैसे। (क) जब किसी लड़के के ऊपर काफ़ी धन व्यय किया जाता है और वह किसी काम लायक़ नहीं होता तब व्यंग्य में कहते हैं। (ख) जो खाते-पीते तो बहुत हैं पर काम कुछ भी नहीं करते उनके प्रति भी व्यंग्य में कहते हैं। (ग) जिस बच्चे को काफ़ी पौष्टिक आहार दिया जाय फिर भी वह कमज़ोर ही रहे तो उसके प्रति भी ऐसा कहते हैं।

खाय कासा भर चले आसा भर—पेटू मनुष्य के लिए कहते हैं जो खाता अधिक और काम कम करता है। (कासा=थाली, आसा=डंडा)।

खाय के पड़ जाय, मार के टल जाय—भोजन के पश्चात् लेटना और मार-पीट के बाद वहाँ से हट जाना लाभदायक है।

खाय खसम का, गाय भाइयों का—नीचे देखिए।

खाय खसम का, गाय भाई का—खाती पति का कमाया और प्रशंसा भाई की करती है। लाभ किसी से

मिलता है और गुण किसी के गाती है। (क) जो व्यक्ति लाभ पहुंचाने वाले का गुणगान न करके किसी दूसरे की प्रशंसा करे उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। (ख) स्त्रियों को अपने मायके वालों से बहुत प्रेम होता है, इस पर भी कहते हैं। तुलनीय : राज० रोट खावैं मांटीरी, गीत गावैं वीरैरा, खावैं-पीवैं खसमरो गीत गावैं बीरैरा; मेवा० धान खावे मांटी कोने गीत गावे वीरा का; पंज० खावे खसम दा दस्से परा दा।

खाय खसम का गाय यारों का—(क) लाभ किसी से मिले और तारीफ़ किसी की की जाय तो कहते हैं। (ख) व्यभिचारिणी स्त्रियों के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० खावे खसम दा गावे यारां दा।

खायगा तो हगेगा भी—जो खायगा उसे पाखाना भी करना पड़ेगा। अर्थात् (क) जो लाभ उठाएगा उसे परिश्रम भी करना पड़ेगा। (ख) जब कोई बुरा कर्म करता है और अपने उस कर्म के कारण उसे दंड भुगतना पड़ता है तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० खाई त हगही के पड़ी; पंज० खावेगा तां हग्गे गा वी।

खाय गोप, कुटे जयपाल—जब किसी का अपराध दूसरे के सिर मढ़ दिया जाय तो कहते हैं।

खाय चना कहें खुंटियां—ऐसे बनावटी आदमियों पर कहा जाता है जो खाएँ-पहनें साधारण तरह से और जताना चाहें कि बहुत अच्छा खाने-पीने और पहनते हैं। (खुंटियाँ =रेवड़ी)।

खाय चना बतावे किशमिश—ऊपर देखिए।

खाय चना, रहे बना—चना पुष्टकर खाद्य है। उसका सेवन करने वाला स्वस्थ रहता है। तुलनीय : अव० खाय चना रहे बना पानी पियै रहै तना।

खाय तो घी से, नहीं जाय जी से—आशय यह है कि जो चीज़ इस्तेमाल की जाय वह अच्छी हो, वरना न रहे तो ठीक है। तुलनीय : ब्रज० खावै तो घी ते, नहीं जावै जी ते।

खाय तो चुपड़ी नहीं तो उपासे—नीचे देखिए।

खाय तो पछताय, न खाय तो पछताय—(क) किसी ऐसी अच्छी वस्तु के प्रति कहते हैं जिसे खानेवाला उसके स्वाद को याद करके पछताता है और जिसने नहीं खाया होता है वह उसे पाने के लिए लालायित रहता है, इसलिए पछताता है। (ख) किसी ऐसी वस्तु के प्रति भी कहते हैं जो अच्छी नहीं होती। उसे खाने वाला उसके बुरे स्वाद के कारण पछताता है और न खाने वाले उसे अच्छा समझकर पाने के लिए परेशान रहते हैं इसलिए पछताते हैं। तुलनीय : पंज० खावे तां पछतावे नां खावे तां पछतावे।

खाय दिल बारे के, लड़े सिर फोर के—खाना दिल भर के खाना चाहिए अर्थात् संकोच नहीं करना चाहिए और लड़ाई में भी पीछे नहीं हटना चाहिए भले सिर फट जाय।

खाय दो, मारे चार—(क) कम भोजन और अधिक काम करने वालों के प्रति ऐसा कहा जाता है। (ख) दुबला-पतला व्यक्ति जब किसी बलवान अथवा मोटे-ताज़े व्यक्ति को पछाड़ दे तो उसके प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : गढ़० खड़ खेंक भड़; पंज० खावे दो मारे चार।

खाय न खरचे सूम धन, चोर सबै ले जाय—कंजूस अपने धन का उपयोग न तो अपने लिए करता है न दूसरे के लिए, अन्त में उसे चोर उठा ले जाते हैं। आशय यह है कि सूम के धन का दूसरे लोग ही उपयोग करते है।

खाय न खाने दे—न स्वयं खाते हैं और न ही दूसरों को खाने देते हैं। अर्थात् जब कोई व्यक्ति किसी वस्तु का न तो स्वयं उपयोग करता है या लाभ उठाता है और न दूसरों को ही उपयोग करने देता है या लाभ उठाने देता है तब कहते हैं। तुलनीय : भोज० खाइब न खाए देब; माल० खावे नी ने ढोली देगो; पंज० खावे ना खाण दे, खेडे ना खेडण दे।

खाय न खिलाय, खाला दीदों आगे पाय—जो न तो स्वयं खाता है और न दूसरों को खिलाता है, उसकी आँखें बेकार हो जाती हैं। यह एक शाप है।

खाय नाना का कहाय दादा का—जब कार्य कोई करे और नाम किसी और का हो या जब सहायता कोई करे और नाम किसी और का हो तब कहते हैं। तुलनीय : भोज० खाय के नाना क कहाए के दादा क; पंज० खावे नाने दा दस्से बाबे दा।

खाय निबौरी दाख बतावे—(क) अपने खाने की झूठी प्रशंसा करने पर कहते हैं। (ख) ढोंगी आदमियों पर भी कहा जाता है। तुलनीय : ब्रज० खावै निबौरी बतावै दाख।

खाय पान, टुकड़े को हैरान—(क) जो बहुत शान और तड़क-भड़क से रहता है, उसे अन्त में खाने के लिए मोहताज होना पड़ता है। (ख) जो व्यक्ति निर्धन होने पर भी धनवानों की बराबरी करें उनके प्रति भी व्यंग्य से कहते हैं।

खाय बकरी की तरह, सूखे लकड़ी की तरह—जो बहुत भोजन पाते रहने पर भी दुबला रहता है उस पर कहते हैं। तुलनीय : पंज० खावे बकरी बरगा सुक्का लकड़ी बरगा।

खाय बड़ियाँ, टाँग रहे लड़ियाँ—बड़ियों की प्रशंसा में

कहा गया है। बड़ियों का खाने वाला काम पर खड़ा रह सकता है।

खाय भी, पत्तल में छेद भी करे---खाते भी हैं और उसी पत्तल में छेद भी करते हैं। जब कोई अपने आश्रय-दाता या सहायक का ही नुक़सान करता है तब कहते हैं। तुलनीय : पंज० खावे वी पत्तल बिच मौर वी करे।

खाय भी बरतन भी फोड़े — ऊपर देखिए। तुलनीय : मेवा० खातो जाय र खप्पर फोड़तो जाय।

खाय मन भर, लड़े दिल भर—दे० 'खाय दिल बारे के···'।

खाय मूंग, रहे ऊंघ—मूंग हलका भोजन है, उसे खाने से ताक़त नहीं बढ़ती।

खाय मोट तोड़े कोट—मोट बहुत पुष्टिकर भोजन होता है। उसे खाने से व्यक्ति बलवान हो जाता है।

खाय यार का, गाय खसम का— खाती है प्रेमी का और गीत पति के गाती है। (क) जो व्यक्ति उपकार करने वाले की कृतज्ञता न मानकर दूसरे के गुण गाए उसके प्रति व्यंग्य मे कहते हैं। (ख) पति कितना भी बुरा क्यों न हो फिर भी पत्नी उसकी प्रशंसा करती है। तुलनीय : पंज० खावे यारां दा दस्से खसम दा।

खाय सो पछताय न खाय सो पछताय—दे० 'खाय तो पछताय न खाय ···'। तुलनीय : भोज० खाय सेहू पछिताय न खाय सेहू पछिताय; हरि० गोब्बर के रसगुल्ले खा वो भी पछतावैं नाह खा वो भी पछतावैं; मरा० खाइल तो पस्तावेल, न खाईल तो पस्तावेल।

खाया अधपेट, रोए भरपेट—थोड़ा-सा खाना खाया और उससे कष्ट बहुत हुआ। जब किसी व्यक्ति को किसी काम से सुख से अधिक दु:ख मिले तो कहते है। तुलनीय : गढ़० प्रश्रल खायो, अधेल झूर्‌यो।

खाया और नहाया देह छिपता नहीं--जिसने पौष्टिक खाद्य-सामग्री खाई होगी तथा जिसने स्नान किया होगा दोनों का शरीर अवश्य ही पहचान में आ जाएगा। अर्थात् कोई कार्य या बात छिपती नही। तुलनीय : भोज० खाइल देह आ नहाइल चेहरा छिपे नां।

खाया गिलहरी ने, पड़ा नेवले के सिर—अर्थात् जब अपराध कोई और करे और उसका दंड किसी और को भुगतना पड़े तब कहते हैं। तुलनीय : हरि० खाया खेत गिलहरी नै, पड्या नौल के सिर।

खाया न पीया, यू ही जीया—(क) जो व्यक्ति सारी आयु बेकार बिता देते हैं उनके प्रति ऐसा कहते हैं। (ख) जो व्यक्ति केवल दु:ख ही उठाये और उसे सुख न मिले अथवा कोई व्यक्ति सारी उम्र परिश्रम करता रहे और उसको फल कुछ न मिले उसके प्रति भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० खायो न पायो मर्नकु आयो; पंज० खादा नां पीता इंदा ही जीदा।

खाया पीया दिल बहलाए, कपड़े फाटे घर को आए—(क) जब कोई ऐसा रोज़गार करे जिसमें हानि ही हो तब कहते हैं। (ख) जब कोई विदेश में कुछ कमाने-धमाने घर से रुपया लेकर जाय और सारा रुपया उड़ाकर फटे हाल घर लौट आए तो भी कहते हैं।

खाया पीया ही अपना, बाकी सब बेगाना -जो धन खा-पी लिया जाय वही अपना होता है। तात्पर्य यह है कि धन का अच्छी तरह उपयोग करना चाहिए क्योंकि मरने पर धन किसी के साथ नहीं जाता। उसका उपयोग दूसरे लोग ही करते हैं। तुलनीय : पंज० खादा पीता अपणा बाकी सब बगाना।

खाया वह अपना और जो दिया वह अपना—जो वस्तु स्वयं प्रयोग में ले ली वह अपनी है या जो कुछ खा-पी लिया और जो दान-पुण्य कर दिया वह अपना है क्योंकि अगले जन्म में वही काम आता है। धन का उपयोग खाने-पीने और दान करने में ही करना चाहिए। तुलनीय : राज० खाया सो ही ऊबर्‌या दीया सो ही मथ्थ; पंज० खादा वी अपना अते दिता वी अपना।

खारिशी कुतिया, मख़मली झूल—(क) पात्र का उपयुक्तता से प्रसाधन की सामग्री कहीं बढ़ कर हो तब कहा जाता है। (ख) बेमेल वस्तुओं के एक साथ होने पर भी कहते है।

खारी पहने तील में नुक्स काढ़े—स्वयं तो मोटे कपड़े पहनती हैं और दूसरे के अच्छे कपड़े में दाग निकालती हैं। जो स्वयं बुरी वस्तु रखते हुए भी दूसरों की अच्छी वस्तुओं में दोष निकालता है उसके प्रति कहते हैं। (खारी - हाथ का बुना हुआ मोटा वस्त्र; तील — विवाह के अवसर पर दहेज में चढ़ाई जाने वाली साड़ी)। तुलनीय : हरि० खारे आळी बरी की तीळ मे नुक्स काढ्य दें।

खाल उढ़ावे सिंह की सियार सिंह ना होय—नीचे देखिए।

खाल ओढ़ाए सिंह की स्यार सिंह नहिं होय -रूप बदलने से गुण में परिवर्तन नही होता, अर्थात् असल-नक़ल में बड़ा अंतर होता है। तुलनीय · मरा० सिंहाचें कातडे पाछर विल्याने कोल्हासिंह बनत नाही; अव० खाल ओढ़ाये

से सियार शेर न बन जाइ; माल० पुलित्तोलु धरिच्चालुम् नरि नरि तन्ने; अं० The ass is an ass even in lion's skin.

खाला का दम और किवाड़ की जोड़ी—(क) डींग मारने वाले के प्रति कहा जाता है। (ख) खोखले व्यक्तियों को भी कहते हैं।

खाला का रुतबा माँ के बराबर—मौसी माँ के बराबर होती है।

खाला की मेहमानी, हाथ डाल पछतानी—क्योंकि वहाँ पर बहुत काम करना पड़ता है। (क) ऐसी जगह मेहमान होकर जाने पर कहा जाता है जहाँ काम करना पड़े। (ख) किसी ऐसे काम पर भी कहा जाता है जो दूर से देखने में साधारण लगता हो पर शुरू करने पर कष्ट या हानि देने लगे।

खाला खसम करा दे, खाला खुद तलाश में—जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति से ऐसी वस्तु माँगे जिसकी तलाश वह खुद कर रहा हो तब कहते हैं। तुलनीय : कौर० खाला खसम करा दे, खाला खुद तलाश में।

खाला चाँदी का कुनबा—जब घर का घर ही नालायक़ हो तो कहा जाता है।

खाला जी का घर नहीं है—बहुत कठिन काम पर कहा जाता है। तुलनीय : अव० खाला जी कौ घर नाही अहै; यह तो घर है प्रेम का खाला का घर नाहिं—कबीर पंज० मासी तेरी दा कर नई है।

खाली आदमी शैतान का दिमाग़—जिस व्यक्ति के पास कोई काम नही होता वह शैतान जैसा होता है। उसे हर समय कोई-न-कोई उत्पात ही सूझता रहता है। इसी कारण कहा गया है, 'बेकार से बेगार भली।' तुलनीय : राज० खाली बैठाँ उतपात सूझै, आरे रांड्या, राडकरो, निकमा बैठा काई करा; भोज० खाली मन सइतान क डेरा; मैथ० खाली सिर सैतान के डेरा; खाली बैठे अटपट सूझे; पंज० वैला दमाग सैतान दा कर; अं० An idle brain is the Devil's workshop.

खाली कुआँ पत्तों से नहीं भरता—सूखा कुआँ पत्तों से नही भरता अर्थात् (क) बड़े काम छोटे साधन से या मुफ्त में नही होते, उन्हें संपन्न करने के लिए धन व्यय करना पड़ता है। (ख) निर्धन व्यक्ति की निर्धनता थोड़े धन से दूर नही होती। तुलनीय : पंज० खाली खू पतरां नाल नईं परदा; ब्रज० खाली कूआ पत्तानतें नायें भरै।

खाली खरीती पूरी फ़ज़ीती—पैसा न रहने पर दुनिया भर की तकलीफ़ें सहनी पड़ती हैं।

खाली घर में क़लंदर बैठे—(क) घर को खुला छोड़ने से फ़क़ीरों का वास हो जाता है। (ख) रंडुओं के प्रति भी कहते हैं।

खाली चना, बाजे घना—अर्थात् जब कोई व्यक्ति व्यर्थ में अपने को बुद्धिमान, बलवान या धनवान साबित करता है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

खाली दिमाग़ शैतान का घर—दे० 'खाली आदमी शैतान...'। तुलनीय : राज० आरे रांड्या, राजकरो, निकमा बैठा काई करा; बुंद० ठाँडों बैलखूंदे सार; ब्रज० खाली दिमाग शैतान की दुकान; मेवा० नवरी रहे न नाते जाय।

खाली नाई पट्टरा मूंड़े—आशय यह है कि बेकार या बैठा हुआ व्यक्ति कुछ खुराफ़ात ही करता है। तुलनीय : कौर० खाली बैट्ठी नायण पट्डा मूंड्डै।

खाली बर्तन भाँय-भाँय करे—अर्थात् कम बुद्धि का व्यक्ति बहुत बोलता है। तुलनीय : ब्रज० खाली बरतन भाँय-भाँय करें।

खाली बनिया आँड़ी तौले—अर्थात् बैठा हुआ आदमी कुछ उलटा-सीधा काम करता ही रहता है। तुलनीय : कौर० खाली बैट्ठा बणियां आँड तौलै।

खाली बनिया क्या करे, इस कोठी का धान उस कोठी करे—अर्थात् (क) जिसे काम करने की आदत रहती है वह बेकार नहीं बैठ सकता, कुछ-न-कुछ अवश्य करता रहता है। (ख) बनिया बेकार नहीं बैठ सकता, कुछ-न-कुछ करता रहता है। (ग) खाली आदमी कुछ उलटा-सीधा करता ही रहता है। तुलनीय : भोज० खाली बनिया का करे, ए कोठिला क धान ओ कोठिला करे; छत्तीस० ठलहा बनियाँ क्या करै, ए कोठी का धान ला ओ कोठी माँ करै; मेवा० आओ नकामा जी काम करो, माचो उदेड़ बाँण वणो।

खाली बनिया क्या करे, बाट तराजू तोले—खाली आदमी कुछ उलटा-सीधा काम करता ही रहता है। तुलनीय : कश्म० विहित बोन्य पोन्य तोलि।

खाली बनिया तराजू तोले—ऊपर देखिए।

खाली बहू नौनके में हाथ—खाली बहू नमक के बर्तन में हाथ डालती है। आशय यह है कि खाली या बेकार आदमी कुछ उत्पात करता रहता है। तुलनीय : कौर० खाली बहू का नौंनके में हाथ। ब्रज० वही।

खाली बैठने से बेगार भली—खाली बैठे रहने से किसी की बेगार कर देना अच्छा होता है। अर्थात् बैठे रहने से

कुछ करना ही अच्छा है। तुलनीय : भोज० बैठल से बेगारी भल।

खाली मन शैतान का डेरा—दे० 'खाली आदमी शैतान का···'।

खाली मवाश, कुछ किया कर—व्यक्ति को खाली नहीं बैठना चाहिए बल्कि कुछ करते रहना चाहिए।

खाली शंख बजावे, दीपा पानी भोग लगावे—ऊपर से जो बहुत शिष्टाचार करे पर उससे कुछ प्राप्ति न हो तो कहते हैं।

खाली से बेगार भली—दे० 'खाली मवाश···'।

खाली हाथ आय, खाली हाथ जाय—(क) कंजूसों के प्रति कहते है जो न तो खुद धन का भोगते हैं और न ही दूसरे को भोगने देते हैं। (ख) जन्म-मरण के संबंध मे भी कहा जाता है। तुलनीय : पंज० खाली हत्थ आवे खाली हत्थ जावे।

खाली हाथ भी मुँह तक नहीं जाता—नीचे देखिए।

खाली हाथ मुँह की ओर नहीं जाता—जब हाथ में कुछ खाने के लिए होगा तभी वह मुँह की तरफ जाएगा। (क) जब मनुष्य के पास धन होता है तभी वह व्यय करता है। (ख) साधन बिना कोई कार्य नही हो सकता। (ग) बड़ों के पास कुछ न कुछ लेकर जाना चाहिए। तुलनीय : मेवा० खाली हाथ मूंडा सामो नी जावे।

खाले गुड़ तेरा ही है—जो व्यक्ति अवसर से लाभ उठाते है उनके प्रति कहते है कि अब तो खा ही लो यह गुड़ तो तुम्हारा हो ही गया है। तुलनीय . राज० खा गुड़ तेरो ही है।

खावे उतनी भूख, सोवे उतनी नींद—जितना खाए उतनी ही भूख और जितना सोए उतनी ही नींद। भूख और नींद को मनुष्य जितना चाहे बढ़ा ले या घटा ले वह अपने बस की बात है। तुलनीय : राज० खावै जिती भूख, लेवे जिती नीद ; पंज० जिन्ना खावो उन्नी पुख जिन्ना सोवो उन्नी नींदर।

खासी तोरी लहँगा-चोली, खासी तोरी चाल—(क) नखरा दिखाने वाली स्त्रियों के प्रति कहते हैं। (ख) जब कोई मूर्खतापूर्ण कार्य करता है तो भी कहते हैं।

खिचड़ी का एक चावल देखते हैं—किसी परिवार वर्ग, या जाति के एक सदस्य से ही पूरे के विषय में जानकारी हो जाती है। तुलनीय : भोज० खिचड़ी क पकला क पता एगो चाउर से चलेला; सं० स्थाली पुलाकन्याय; तेलु० अन्न मुडिकिदो लेखों अंता पट्टि चूडनबकर लेदु।

खिचड़ी के चार भतार, मूली नींबू, घी, अंचार—मूली, नींबू, घी और अचार इन चार चीजों के साथ खिचड़ी खाने से अच्छा स्वाद मिलता है। तुलनीय : मरा० खिचड़ी म्हणे बोलवा चार मित्र (कोणचे ?) दहीं, पापड़, तूपनि, लोण चे।

खिचड़ी के चार यार घी, पापड़, दही, अंचार—ऊपर देखिए।

खिचड़ी के चार यार चोखा, चटनी, दही, अंचार—ऊपर देखिए।

खिचड़ी के पकने का पता एक चावल से चल जाता है—दे० 'खिचड़ी का एक चावल देखते है।'

खिचड़ी खाई पेट जलाया, तेरे राज में क्या सुख पाया—तेरे राज्य में केवल खिचड़ी ही खाने को मिली, कोई पकवान नही। हमें तेरे राज्य में केवल दुःख ही मिला। (क) दुःखी स्त्रियाँ अपने पतियों के प्रति कहती हैं। (ख) जिस राजा के राज्य में प्रजा सुखी न हो उसके प्रति भी कहते हैं। (ग) कंजूस या निर्धन स्वामी के प्रति भी उसके सेवक कहते हैं। तुलनीय : राज खीचड़ खाया पेट कुटाया तेरे राज में क्या सुख पाया।

खिचड़ी खाते पहुँचा टूटा—(क) अत्यंत कोमल व्यक्ति को कहते है। (ख) जिस काम में तनिक भी हानि या खतरे की संभावना न हो, पर उसे करते यदि कोई ऐसी चीज आ पड़े तो कहते हैं। तुलनीय : राज० खीचड़ी पापड़ खावतां ही पुणचो उतरे; मवा० खाता पीतां ही मूंडो दूखे; पंज० की पीदे लत पज्जी; ब्रज० खीचरी खामत पुहचौ टूट्यौ।

खिचड़ी नहीं है जो खा लोगे—किसी कठिन कार्य के लिए कहते हैं। तुलनीय : सि० खिचणी ना आहे जा खाइ नू बी ? पंज० खिजड़ी नई है जिहड़ी खा लोगे; अं० If wishes were horses beggars would ride.

खिचड़ी माँगे चार यार, दही, पापड़, घी, अचार—दे० 'खिचड़ी के चार यार···'।

खिजर मिले जी खिजर मिले—इच्छित वस्तु के प्राप्त हो जाने पर कहते हैं। (हज़रत खिज़्र एक पैगंबर हैं जो भटके हुओं को रास्ता दिखाते हैं)।

खिजरी खबर सच्ची होती है—खिज़्र साहब की बात सत्य होती है।

खिदमत से अज़मत है—जो दूसरों की सेवा करता है, दूसरे भी उसका आदर करते हैं। सेवा-भाव और उत्सर्ग ही मनुष्य को महान् बनाते हैं।

खिलाए का नाम नहीं रुलाए का नाम—दूसरे के लड़के को खिलाने में कोई नेकनामी नही होती पर मारने पर बदनामी अवश्य होती है। अर्थात् अच्छा करने से इज़्ज़त हो या न हो पर बुरा करने से बेइज्ज़ती अवश्य होती है। तुलनीय : मरा० खायला घातल्याचें नाव नाहीं, रडविलें म्हणून ओरड; हरि० इतणां खिलाए का नाम नांह हो जितणां र वाए का हो ज्या।

खिलाए सोने का निवाला, देखें शेर की तरह / देखें दुश्मन की निगाह—संतान को अच्छे से अच्छा खाना खिलाना चाहिए लेकिन शिष्टाचार तथा सद्व्यवहार का पाठ सिखाने के लिए उनके साथ कठोरता भी बरतनी चाहिए ताकि वह अवज्ञा करने से डरती रहे।

खिलाने-पिलाने का नाम नहीं मारने को तैयार—जो व्यक्ति दूसरे से काम कराना या लाभ उठाना तो चाहे किंतु देना कुछ न चाहे उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

खिसियाई कुतिया भुस में ब्याई, टुकड़ा दिया काटने आई—लज्जित होकर जब कोई क्रोध प्रकट करता है तब उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : कौरव० खिसियाई कुतिया भुस में ब्याई, टुकड़ा दिया काठने आई।

खिसियान बिलइया टू—दे० 'खिसियानी बिल्ली···'।

खिसियान मांड़ देवरी गावं—नीचे देखिए।

खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे—शर्मिन्दा होकर क्रोध करने वाले पर कहा जाता है। तुलनीय : मरा० चिडलेल माँजर, खावालाच ओरबाडते ; अव० खिसियान बंदरिया मूंड नोचै; मैथ० कुढली बिलैया खम्भा नोचै; भोज० खिसियाइल बिलार खम्हा नोचे; मैथ० खिसिआयल बिलाड़ि धुरखुड़ नोचै; बुंद० खिसयानी बाई पुंआर नौंचे; ब्रज० वही।

खीर की थाली में लात मार दी—अपनी हानि आप करली। जब कोई व्यक्ति किसी लाभदायक वस्तु को क्रोध से या मूर्खता से नष्ट कर दे या त्याग दे तो कहते हैं। तुलनीय : पंज० खीर दी थाली बिच लत मार दिती; ब्रज० खीर की थारी में लात मारि दई।

खीर खाय बाम्हन मारा जाय सेख—जब अपराध कोई करे और दंड किसी और को मिले तब कहते हैं। तुलनीय : कौर० खीर खाय बाम्हणी सूली चढ़े सेख; पंज० खीर खावे पंडत मारा जावे सेख।

खीर देखि आगे आ खोरनाठ देखि पाछे—जब कोई व्यक्ति लाभ के काम में तो पहले हिस्सा बँटाता है और मुसीबत के समय साथ छोड़ देता है तब उसके प्रति कहते हैं। स्वार्थी व्यक्ति के प्रति इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

खीर में नोन डाल दिया—बने-बनाए काम को बिगाड़ देने पर कहते हैं। तुलनीय : मरा० खिरींत मीठ टाकले; मेवा० खीर में मूसल।

खीरा सिर धर काटिए, मलिए नमक लगाय ; रहिमन कड़ुवे मुखन को चहियत यही सजाय—बुरों को कठोर दंड देना चाहिए।

खीरे की चोरी में फाँसी की सजा—जब किसी को साधारण अपराध पर कठोर दंड दिया जाय तो कहते हैं। तुलनीय : छत्तीस० खीरा के चोरी मां फाँसी के सजा; पंज० खीरे दी चोरी बिच फाँसी दी सजा।

खील-बताशों का मेल है—किन्ही दो अच्छी वस्तुओं या किन्ही दो व्यक्तियों के परस्पर मेल पर कहते हैं।

खील-बताशों का मेह—किसी अनहोनी घटना पर कहते हैं।

खीसा हो तर, जो भावे सो कर—जेब भरी हो तो जो दिल में आए किया जा सकता है अर्थात् धन से प्रत्येक कार्य संभव है।

खुँडा हथियार और किया भतार काम नहीं आते—कुंद हथियार और उपपति व्यर्थ सिद्ध होते हैं।

खुड़का हुआ चोर उभड़ा—आहट पाते ही चोर भाग जाता है।

खुद अनब्याहे, पोते की पूछें जनमपत्री—स्वयं तो अविवाहित हैं और पौत्र की जन्मपत्री पूछते हैं। अर्थात् जो व्यक्ति बेपर की उड़ाए उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० मूल में मूलजी कँवारा, साळै रा लगन पूछै।

खुद करदारा इलाज नेस्त—अपने किए हुए का परिणाम स्वयं ही भोगना पड़ता है।

खुद करें न धरें, खाते देख मरें—अकर्मण्य या निकम्मे व्यक्तियों के प्रति कहते हैं, जो स्वयं तो अपनी अकर्मण्यतावश कष्ट सहते हैं और दूसरे परिश्रमी लोगों की सुख-सुविधाओं को देखकर जलते हैं। तुलनीय : गढ़० हल न मल खांदी दौं डुमजल; पंज० आप करना नई खंदे नूं देख मरदे।

खुद चल न सकें, और रजाई लपेटें—जब कोई अपनी सामर्थ्य से बाहर के कार्य को करना चाहता है या करता है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० आप चल नई सकदा उतों रजाई लेदी।

खुद चौड़े, बाज़ार तंग—खुद को इतना लंबा-चौड़ा

अर्थात् बड़ा मानते हैं कि उन्हें बाजार भी सँकरा दिखता है। (क) झूठे या गप्पी व्यक्ति के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। (ख) जो किसी से बात तक करना अपनी शान के खिलाफ़ समझते हैं उनके लिए भी व्यंग्य में ऐसा कहा जाता है। तुलनीय : गढ़० अफ चौडा, बाजार सांगुड़ा।

खुद तो खाय, दूसरों को व्रत सिखलाय—दूसरों को उपदेश देने वाले किंतु स्वयं उन पर आचरण न करने वाले के प्रति कहते हैं। दे० पर उपदेश कुशल बहुतेरे, जे आचरहिं ते नर न घनेरे। तुलनीय : पंज० आप खावे दूजिवां नू वरत दस्से।

खुद तो दूध देती नहीं, दूसरों का भी गिरा देती है—दुष्ट गाय खुद तो दूध देती नहीं और दूसरी गाय को भी गिरा देती है। आशय यह है कि दुष्ट मनुष्य स्वयं तो कुछ करते नहीं और जो करते हैं उन्हें भी करने नहीं देते।

खुद मरा साथवालों को भी मार गया—स्वयं तो मरा ही किंतु अपने आश्रितों को बेमौत मार गया। (क) जब किसी परिवार का ऐसा व्यक्ति मर जाय जिसके आश्रय पर सभी का पालन-पोषण होता हो और उनका कोई दूसरा ठिकाना न हो तो उसके प्रति कहते है। (ख) जब कोई व्यक्ति अपनी हानि के साथ-साथ औरों की भी हानि कराए तब भी कहते हैं। तुलनीय : माल० मरीग्या ने मारीग्या; पंज० आप मरया दूजयां नूं वी मार गया।

खुद मियाँ उल्लू पढ़ाने चले तोते को—जब कोई अनपढ़ और मूर्ख व्यक्ति किसी पढ़े-लिखे या चतुर व्यक्ति को शिक्षा देने का प्रयत्न करे तो व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : भोज० आप मियाँ उरुवा सुगवे पढ़ावें; पंज० आप मियाँ उल्लू पड़ान चले तोते नू।

खुद मियाँ मंगते दुआर दरवेश—दे० 'आप मियाँ मंगते बाहर···'।

खुदरा फ़ज़ीहत दीगराँ नसीहत—खुद तो फ़ज़ीहत कराते फिरते हैं और दूसरों को नसीहत देते हैं। (क) जिस व्यक्ति का कोई आदर न करे लेकिन वह फिर भी सबको उपदेश देता रहे तो उसके प्रति कहते हैं। (ख) ढोंगी व्यक्तियों के प्रति भी कहते हैं। (ग) जब कोई दूसरों को उपदेश दे और स्वयं वैसा न करे तब कहते हैं। तुलनीय : राज० आप व्यासजी वैंगण खावै, औराणें परमोध बतावै।

खुद शैतान के भाई, सबको सीख सिखाई—(क) उपद्रवी या शैतान व्यक्ति जब दूसरों को भले काम करने की शिक्षा दे तो व्यंग्य से कहते हैं। (ख) जब कोई दुष्ट सबको अपने जैसा ही बना ले तो भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० आप शैतान दे परा सब नूं सिखया देण।

खुद ही क़ाज़ी, खुद ही मुल्ला—जब कोई व्यक्ति स्वयं किसी चीज़, स्थान, आदि का सर्वेसर्वा बन बैठता है तब ऐसा कहते हैं।

खुद ही गावें, खुद ही बजावें—(क) जहाँ सब कामों को करने वाला एक ही व्यक्ति हो वहाँ कहते हैं। (ख) जहाँ सभी चीज़ों पर एक ही व्यक्ति का आधिपत्य हो वहाँ भी कहते हैं।

खुद ही जा रहे तो पत्र कैसा ?—दे० 'आप चले तो चिट्ठी···'।

खुद ही राम, खुद ही रहीम—स्वयं ही राम और रहीम हैं। (क) आजकल भगवान में लोगों की आस्था नहीं रह गई है और वे स्वयं को ही भगवान समझ कर मनमाने काम करते हैं। नास्तिकों के प्रति व्यंग्य से कहते है। (ख) जहाँ पर सभी अधिकार एक ही व्यक्ति के हाथों में हो वहाँ भी कहते हैं। तुलनीय : भीली—आज राम कूण ओलके—आपै राम हैं।

खुदा अमीर के पास क़ब्र भी न बनवाए—अमीर या धनी का पड़ोसी भी कष्ट में रहता है, इसलिए ईश्वर मरने के बाद भी उसका पड़ोसी न बनवाए।

खुदा इसका सेहरा दिखाए—खुदा इसका ब्याह दिखाए या इसे दूल्हा बनाकर दिखाए।

खुदाई ख्वार गधे सवार—खुदा करे तुम्हें गधे पर सवार होना पड़े। यह एक गाली है।

खुदा करे चंगा सबै, मंगे डाक्टर फीस—(क) मनुष्य को स्वस्थ तो ईश्वर करता है और व्यर्थ में डाक्टर लोग फीस लेते हैं। (ख) जब कोई बिना कुछ किए फीस या मेहनताना माँगता है तब भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० रब करे चंगा डाक्टर मंगें फीस।

खुदा का दिया कंधे पर, पंचों का दिया सिर पर—अर्थात् ईश्वर से अधिक पंचों की आज्ञा मानी जाती है। तुलनीय : पंज० रब दा दिता मोंडे उसे पंचा दा सिर उत्ते।

खुदा का दरवाज़ा हमेशा खुला है—(क) ईश्वर के यहाँ हर समय फ़रियाद होती है। (ख) दिलेर आदमियों के प्रति भी कहते हैं जो हर समय लोगों की सहायता के लिए तत्पर रहते हैं। तुलनीय : पंज० रबदा बुआ सदा खुला है।

खुदा का मारा हराम, अपना मारा हलाल—ईश्वर के द्वारा मारा गया मनुष्य पवित्र माना जाता है और जो स्वयं मर जाता है वह अपवित्र। हिंदुओं के यहाँ अकाल मृत्यु शायद कुछ ऐसी ही चीज़ है जिससे दूर रहने के लिए लोग

चरणामृत आदि पीते समय प्रार्थना करते हैं। तुलनीय : पंज० रब दा मारया हराम अपणा मारया हलाल।

ख़ुदा किसी को लाठी लेकर नहीं मारता—मनुष्य स्वयं अपने कर्मों का परिणाम भुगतता है। तुलनीय : पंज० रब किसे नूं डंडे नाल नईं मारदा।

ख़ुदा की ख़ुदाई—(क) यह ईश्वर की प्रकृति पर कहा गया है। एक बार एक आदमी ने किसी से पूछा कि ख़ुदा की ख़ुदाई क्या है? आदमी ने गंगा को दिखाकर कहा, 'देखो, यह ख़ुदा की ख़ुदाई नहीं तो क्या तुम्हारे बाप की ख़ुदाई है?' (ख) संसार की विचित्रता पर भी कहते हैं।

ख़ुदा की गर नहीं चोरी तो फिर बंदे की क्या चोरी?—ईश्वर सभी जगह है। उससे कोई बात छिपी नहीं है, इसलिए आदमी से कोई बात छिपाने की आवश्यकता नहीं। अर्थात् कोई काम छिपाकर नहीं करना चाहिए।

ख़ुदा की चोरी नहीं तो बंदे का क्या डर?—ऊपर देखिए।

ख़ुदा की बातें ख़ुदा ही जाने—(क) भगवान अपनी बातों को स्वयं समझता है, उसकी बात कोई और नहीं समझ सकता। (ख) जब किसी की कोई बात या कोई काम लोग नहीं समझते हैं तब भी कहते हैं।

ख़ुदा की लाठी में आवाज़ नहीं होती—(क) ख़ुदा किसी पाप का दंड तत्काल नहीं देता बल्कि जब पापी उसे भूल जाता है तब उसे ख़ुदा सजा देता है। आशय यह है कि भगवान से सदा डरते रहना चाहिए और यह समझ लेना चाहिए कि उसके यहाँ देर हो सकती है अंधेर नहीं। (ख) जब कोई अत्याचारी किसी दुर्बल को सताता है तब वह अत्याचारी से कहता है कि ख़ुदा तुझे इसकी सज़ा ज़रूर देगा।

ख़ुदा के ग़ज़ब से डरते रहिए—ईश्व के प्रकोप से डर कर रहना चाहिए। बुरे कर्मों से बचने के लिए कहते हैं। तुलनीय : पंज० रब तो डरना चाइदा है।

ख़ुदा के घर से फिरे हैं—जो मरने से बच जाय या किसी महान संकट से मुक्ति पा जाय उसके प्रति कहते हैं।

ख़ुदा के वास्ते बिल्ली भी चूहा नहीं मारती—दे० 'ख़ुदा वास्ते बिल्ली ...'।

ख़ुदा को देखा नहीं तो अक़्ल से तो पहचाना है—दे० 'ख़ुदा देखा नहीं ...'।

ख़ुदा गंजे को नाख़ून न दे—(क) अत्याचारी को अधिकार कभी न मिलना चाहिए। (ख) जो जिसका दुरुपयोग करे उसे वह चीज़ नहीं मिलनी चाहिए। तुलनीय : पंज० रब गंजे नूं नऊं नां देवे; ब्रज० वही।

ख़ुदा गंजे को नाख़ून नहीं देता—दुष्ट और अत्याचारी को भगवान शक्ति और अधिकार नहीं देता। तुलनीय : मरा० देवानें टकल्याता नखे देऊँ नयेत; अव० भगवान गजा का नह नाहीं देत; पंज० रब गंजे नूं नऊँ नईं देंदा।

ख़ुदा ज़ालिम से पाला न पड़े—अत्याचारियों से बचने के लिए ईश्वर से प्रार्थना।

ख़ुदा देखा नहीं जाता अक़्ल से पहचाना जाता है—ईश्वर को आँख से देखा नहीं जा सकता, उसे बुद्धि से जानना चाहिए। तुलनीय : पंज० रब लबदा नईं पछानया जांदा है।

ख़ुदा देखा नहीं तो अक़्ल से तो पहचाना है—भले ही ईश्वर को देखा नहीं है पर उसके विषय में बुद्धि से सोचा तो जा सकता है।

ख़ुदा देता है तो छप्पर फाड़कर देता है—ईश्वर किसी को कुछ देना चाहता है तो किसी-न-किसी बहाने दे ही देता है।

ख़ुदा देता है तो नहीं पूछता, 'तू कौन है?'—ईश्वर को जिसे जो देना होता है वह उसे दे देता है चाहे वह कोई हो।

ख़ुदा दो सींग भी दे तो वह भी सहे जाते हैं—(क) ईश्वर का दिया दुख भी स्वीकार कर लिया जाता है। (ख) ज़बरदस्त आदमी की सभी बातें माननी पड़ती है।

ख़ुदा ने तो जवाब दे दिया है, बेहयाई से जीते हैं—(क) निर्लज्ज व्यक्ति के प्रति कहते हैं। (ख) घातक रोग से ग्रस्त रोगी जब बहुत कष्ट में होता है और मरने की इच्छा रखता है तब वह अपने लिए भी कहता है।

ख़ुदा भरे को भरता है—संपन्न व्यक्ति को ही ईश्वर और संपन्न बनाता है। जब किसी संपन्न व्यक्ति को और अधिक लाभ होता है या धन प्राप्त होता है तब ऐसा कहते है। तुलनीय : पंज० रब रज्जे नूं रजांदा है।

ख़ुदा भूखा उठाता है, भूखा सुलाता नहीं—अर्थात् दिन-भर में सबको कुछ-न-कुछ खाने को मिल जाता है।

ख़ुदा महफ़ूज़ रक्खे हर बला से—ईश्वर हर दुख से बचाए। कष्टों से बचने के लिए ईश्वर से विनय।

ख़ुदा मारे या छोड़े—कुछ भी हो, ख़ुदा छोड़ दे या सज़ा दे। जब कोई व्यक्ति अपने संकल्प पर दृढ़ रहकर कुछ करना चाहता है तो कहता है।

ख़ुदा मिले और नंगे सिर—जब किसी को बिना प्रयत्न

किए कोई बड़ा लाभ मिल जाता है तब कहते हैं। तुलनीय : पंज० रब मिलया नंगे सिर।

खुद मेहरबान, तो कुल मेहरबान—नीचे देखिए।

खुदा मेहरबान, तो जग मेहरबान—यदि अपने पर ईश्वर प्रसन्न है तो संसार भी प्रसन्न रहता है। तुलनीय : राज० खुदारी महर तो लीला लहर; पंज० रब दी मेहर तां जग दी मेहर; ब्रज० खुदा महरबान तौ सब मेहरबान।

खुदा रज्जाक़ है, बंदा क़ज्जाक़ है—ईश्वर रोटी देने वाला (रज्ज़ाक़) है और आदमी (बंदा) उसे छीनने वाला (क़ज्ज़ाक़)।

खुदा लगती कोई नहीं कहता, मुंह देखी सब कहते हैं—सत्य कोई नहीं बोलता और झूठी प्रशंसा सभी लोग करते हैं। (खुदा लगती = बिल्कुल सच बात)।

खुदा लड़नी रात करे, बिछुड़नी न करे—नीचे देखिए।

खुदा लड़ने की रात दे, बिछुड़ने का दिन न दे—एक साथ रहकर लड़ना भी अच्छा पर बिछुड़ना अच्छा नहीं।

खुदा वास्ते का बैर है—नीचे देखिए।

खुदा वास्ते की दुश्मनी है—(क) जब कोई व्यक्ति किसी अपने भले-बुरे के लिए नहीं बल्कि खुदा के लिए किसी से दुश्मनी मोल ले तो उसे निरर्थक समझकर ऐसा कहा जाता है। (ख) बेकार में किसी को दुश्मन बनाने पर भी ऐसा कहते हैं।

खुदा वास्ते बिल्ली भी चूहा नहीं मारती—हर व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिए सब कुछ करता है, ईश्वर के लिए नहीं।

खुदा शक्करखोरे को शक्कर ही देता है—ईश्वर सबकी इच्छा पूरी करता है या जिसकी जो आवश्यकता हो उसे उसी के अनुरूप देता है।

खुदा सबकी मेहनत स्वारथ करता है, अकारथ नहीं करता—अर्थात् ईश्वर सबका परिश्रम सफल करता है।

खुदा से खैर मांगो—कुशलता के लिए ईश्वर से विनय करो। जब कोई व्यक्ति किसी महान् संकट में फँस जाता है तब लोग उसे ऐसा कहते हैं।

खुदा हाजिर-ओ-नाजिर है—खुदा सर्वव्यापी (हाज़िर) और सबको देखने वाला (नाज़िर) है।

खुदा और खुदाई में बैर है—अहं या आत्मप्रेम और भक्ति दो चीज़ें हैं। एक को चाहने वाला दूसरे से दूर रहता है।

खुर खांसी तेरी दाई के गले में फां—सीयह बच्चों की खाँसी का एक प्रकार का टोटका है।

खुरचन मथुरा की और सब नकल—खुरचन ब्रज प्रदेश की एक अच्छी मिठाई है। किसी अच्छी वस्तु के लिए कहते हैं कि अमुक वस्तु ही अच्छी है शेष इससे निम्न स्तर की हैं। जैसे 'गढ़ तो चित्तौड़ गढ़ और सब गढ़ैया हैं'; 'ताल तो भोपाल ताल और सब तलैया हैं' आदि।

खुरपी के ब्याह में हँसुए का गीत—(क) अवसर के अनुकूल काम न करने वालों पर कहते हैं। (ख) जो जिस स्वभाव का होता है उसके साथी भी वैसे ही मिल जाते हैं। (ग) बेमेल काम पर भी कहते हैं। तुलनीय : सं० किमार्द्र-कवणिजो वहित्र-चिंतया; पंज० रंबी दे बयाह बिच हल दा गीत।

खुरपी को टेढ़ा बेंट मिल ही जाता है—अर्थात् (क) जो जैसा होता है उसे उस तरह के साथी भी मिल जाते हैं। (ख) दुष्ट व्यक्तियों को दुष्ट लोग मिल ही जाते हैं।

खुरपे की शादी में हँसिए का गीत—दे० 'खुरपी के ब्याह में···'।

खुरपे के ब्याह में हँसिए का गीत—दे० 'खुरपी के ब्याह में···'।

खुर्दा न बुर्दा, मुफ़्त दर्दे-गुर्दा—न खाने को न पीने को मुफ़्त में पेट का दर्द। जब कोई व्यक्ति व्यर्थ की परेशानियों में फँस जाता है तब ऐसा कहते हैं।

खुशबू और खून छिपते नहीं—(क) किसी चीज़ की सुगंध और क़त्ल छिपने नहीं। (ख) व्यक्ति की अच्छाइयाँ और बुराइयाँ अवश्य प्रकट हो जाती हैं। तुलनीय : सिं० खून कस्तूरी गुझो न रहे; पंज० खुशबू अते खून लुकदे नईं; अं० Murder will out.

खुशबू छिपाए नहीं छिपती—मनुष्य के उत्तम गुण अपने आप प्रकट हो जाते हैं। तुलनीय : हरि० घी होगा तै अंधेरे मैं भी दिक्खैगा; पंज० हीग होवेगी तां हनेरे बिच लब्बेगी।

खुश रह पठानी, निकल गया पानी—संतोषजनक कार्य होने पर मालिक मजदूर से कहता है।

खुश हुई भिखना दमाद लाया गाजर—कोई स्त्री इसीलिए प्रसन्न हुई कि उसका दामाद ससुराल गया तो गाजर ले गया। अर्थात् ग़रीब व्यक्ति छोटी चीज़ पाने पर भी काफ़ी प्रसन्न होता है।

खुशामद ताजा रोजगार—खुशामद से तत्काल फल मिलता है। अयोग्य व्यक्ति जब केवल खुशामद के बल से ही लाभ उठाते हैं तब व्यंग्य में यह कहावत प्रयुक्त होती है। तुलनीय : मेवा० खुशामद को ताजा रुजगार।

ख़ुशामद से ही आमद है—बिना दूसरे की ख़ुशामद किए लाभ नही मिलता। जब कोई साधारण-सा व्यक्ति केवल ख़ुशामद करके कोई बड़ा पद पा जाय या अपना कोई काम बना ले तो व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : मरा० पुढें-पुढें करणें नि आपलें पोट भरणें; अव० ख़ुशामद से आमद है।

ख़ुशामद से आमद है, इसलिए बड़ी ख़ुशामद है—चापलूसी से धन मिलता है, अत: चापलूसी सबसे बड़ी है।

ख़ुशामद से आमद है, सबसे बड़ी ख़ुशामद है— ऊपर देखिए। तुलनीय : बुंद० पिसे बिना चिलक नई आऊत; ब्रज० ख़ुशामद से आमंद।

ख़ुशामदी का मुंह काला—अर्थात् ख़ुशामद करने वाले का बुरा हो।

ख़ुशी और ग़मी सबको सहनी पड़ती है—सुख-दुःख सभी पर आते हैं।

ख़ुशी और ग़मी सभी सहनी पड़ती है—समय-कुसमय आते-जाते रहते हैं तथा इन्हें सहने के अतिरिक्त और कोई मार्ग भी नही है। इसलिए जैसा भी समय आए उसका सामना प्रसन्नता और धैर्य के साथ करना चाहिए। तुलनीय : भीली— वगत को वगत वलती आवे राम पाणी पाये जेम पीवो पड़े; पंज० ख़ुसी अते गमी सब सहना पैंदियां हन।

ख़ुशी का सौदा—अपनी मर्ज़ी से किया गया काम। जब किसी काम के लिए किसी पर कोई दबाव न हो तब कहते हैं। तुलनीय : पंज० ख़ुसी दा सौदा; ब्रज० ख़ुसी कौ सौदा।

ख़ुशी भई मौसिया सास, कंडा लै कै पोछें आंस—जब कोई व्यक्ति किसी की प्रसन्नता मे व्यर्थ ही नाराज़ हो या जले तो कहते हैं।

खूंटा से फड़वाए पर जेठ को बचावे—पति का बड़ा भाई जिसके साथ अनुज-वधू का रति-प्रसंग वर्जित है। परन्तु व्यभिचारिणी स्त्री जेठ के बड़ा होने का बहाना कर उससे अलग रहती है और दूसरों से संभोग कराती है। अर्थात् जब कोई व्यक्ति सम्पत्ति का दुरुपयोग करता है और अपने परिवार वालों को उसके सदुपयोग से वंचित रखता है तब व्यंग्य मे ऐसा कहते है। तुलनीय : कौर० खूंटा ते फड़वा लेगी, पर जेठ कू ना देगी।

खूंटे के बल बछड़ा कूदे—(क) मालिक का सहारा पाकर नौकर भी रोब दिखाने लगता है। (ख) जब कोई दूसरे के भरोसे बहुत तीन-पाँच करता है तो भी व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : माल० खूंटा रे बल बछड़ो कूदे; मरा० खुंटाच्या जोरावर गोरहा उड्या मारतो; गढ़० कीली का छोर बाछी बुरकेदी; राज० टोघड़ियो खूंटे री तांण कूदै; अव० खूंटा कै बल बछरा कूदै; मैथ० खुट्टा क बले पड़रू चुकरै, खूटा के बल पर बाछा कूदले; भोज० खूंटा बरियारे देख के बछरू कूदेला; हरि० खूंट्टे की ताण्य बाच्छड़ू कूद्या करै; पंज० खुंडी उते बछा नच्चे; ब्रज० खूंटा के बल बछरा कूदै।

खूंटे के बल बछड़ा नाचे—ऊपर देखिए।

खूंटे टंगा हार गले तो क्या करे— खूंटे पर टंगा हार यदि स्वयं गल जाय या नष्ट हो जाय तो कोई क्या कर सकता है? आशय है कि भाग्य के विपरीत होने पर या ईश्वरीय कोप पर कोई कुछ नही कर पाता। तुलनीय : पंज० खुंटी उते टंगया हार सड़ जावे तां की करिये।

खूंटे बंधा बछड़ा गाय की राह देखे—खूंटे से बँधा बछड़ा गाय की राह देखता रहता है। (क) माँ का प्यार बहुत अधिक होता है, इसलिए बछड़ा उसका इंतज़ार करता है। (ख) किसी पर आश्रित रहने वाला व्यक्ति सदैव आश्रयदाता या मालिक का ही इंतज़ार करता है। तुलनीय : भीली — वलाबे न वाचरू वाड़े वाट जोवे।

खून करके भी हाथ नहीं धोता—महादुष्ट या निर्दयी व्यक्ति के प्रति कहते हैं जो अपराध या बुरा कर्म करने के बाद पश्चात्ताप नहीं करता या पुण्य नहीं करता। तुलनीय : राज० मिनख मार हाथ को धोवेनी; पंज० मक्खी मार के वी हत्थ नई तोंदा।

खून का बदला फाँसी—बड़े अपराध के लिए कठोर दंड देना उचित है। तुलनीय : मेवा० खून के बदले फाँसी।

खून छिपाए नहीं छिपता—अर्थात् अपराध छिपाने से छिपता नही है, वह कभी-न-कभी प्रकट हो जाता है। जब कोई अपराध या बुरा कर्म करके छिपाने की कोशिश करता है तब कहते हैं। तुलनीय : मल० कालम् नीळे चेन्नाल नेर्ताने अरियाम्; पंज० खून लुकाण नाल नई लुकदा; अं० Murder will out.

खून लगाकर शहीदों में मिल गए—बिना कष्ट उठाए या बिना त्याग किए ही यश पाने वालों के प्रति व्यंग्य में कहते हैं जो झूठा स्वाँग रचकर महान बनते हैं। तुलनीय : मरा० अंगास रक्त लावून हुतात्मा म्हणून भिरविणें।

खूब गुज़रेगी जो मिल बैठेंगे दीवाने दो—एक स्वभाव वाले मनुष्यों का साथ हो जाने पर समय बड़े मज़े से गुज़र जाता है। तुलनीय : मरा० समान शील मिळालें, त्यांचे

जगच निराळे । यह एक शेर की दूसरी पंक्ति है, पहली इस प्रकार है 'क़ैस जंगल में अकेला है मुझे जाने दो'।

खूब दुनिया को अजमा देखा, जिसको देखा सो बेवफ़ा देखा—संसार में सभी विश्वासघाती या बेवफ़ा हैं।

खूब मिले भई खूब मिले, जैसे को तैसे मिले—खूब मुलाक़ात हुई, दोनों एक दूसरे से बढ़-चढ़कर हैं। जब दो धूर्त मनुष्य इकट्ठे हो जायँ तो उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० राय मिळिया रे ! राय मिळिया, हूंता जेहड़ा आय मिळिया।

खेत का डरावा, न खाय न खाने दे—जो स्वयं न किसी चीज़ का उपयोग करे और न दूसरों को करने दे उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : हरि० खेत का डरावा, खा न खाण दे।

खेत खाए गदहा, मार खाए जुलाहा—(क) किसी का गुस्सा किसी ग़रीब पर उतारा जाय तब कहते हैं। (ख) ग़लती कोई करे और दंड कोई और भोगे तब भी कहा जाता है। तुलनीय : भोज० खेत खा गदहा मारल जो जोलहा; अव० खेतु खाय गदहा मारु खाय जुलहवा; मैथ० खेत खाय महिस मुँह चुरै पड़रू के; छत्तीस० खेत चरे गदहा, मार खाय जोलाहा; पंज खेत खावे खोता मार खावे जौट्टा।

खेत खाय गदहा मारा जाय जुलाहा—ऊपर देखिए।

खेत खाय गधा मारा जाय जुलाहा—दे० 'खेत खाए गदहा'''। तुलनीय : मि० अट्टो खादो कुए मार पइ गाबे ते; अं० One does the blame, another bears the shame.

खेत गए किसान—दे० 'खेत पर जाए'''।

खेत चरे गदहा मार, मार खाए जुलाहा—दे० 'खेत खाए गदहा'''।

खेत चरे गदहा मारा जाय जोलाहा—ऊपर देखिए।

खेत जला के चूहा मारें—चूहों को मारने के लिए खेत में ही में आग लगा दी। मूर्ख व्यक्ति जब छोटे लाभ के लिए बहुत बड़ी हानि कर दें तो उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय : गढ़० मूसा का बाना महल आग; पंज० खेत फूक के चूहे मारण।

खेत जो तन्ने भेटे नहरी, बाके मिलते मतले बहरी—नहर के पास खेत मिल रहा हो तो उसे छोड़ नीची ज़मीन वाला खेत नहीं लेना चाहिए। नीची ज़मीन वाला खेत बेकार होता है।

खेत जोते घुड़चढ़ा का रिन खाई सहुकारा का—किसी घुड़चढ़े (अर्थात् बड़े ज़मींदार) का ही खेत जोतना चाहिए और क़र्ज़ किसी साहूकार से ही लेना चाहिए। तुलनीय : भोज० खेत जोतीं घोड़चढ़ा क रिन खाई सहुकार क।

खेत जोतें घुरहू पोत दें दुर्वासा—जब किसी वस्तु का लाभ कोई उठाये और परेशानी किसी और को सहनी पड़े तब कहते हैं।

खेत तर खेतारी जार तर भतारी—तात्पर्य यह है कि खेत घर के क़रीब होने से फ़सल की रखवाली ठीक तरह से की जा सकती है तथा पति के जीवित रहते हुए पत्नी यदि कोई भ्रष्ट आचरण भी करे तो वह पति की आड़ में छिप जाता है।

खेत न जाय किसान कहाय—खेत तो देखने कभी जाते नहीं और अपने को किसान कहते हैं। अर्थात् जो व्यक्ति नौकरों या दूसरों से खेती कराता है और तब भी अपने को किसान कहता है उसके प्रति व्यंग्य से ऐसा कहते हैं क्योंकि नौकरों या दूसरों के बल पर खेती नहीं होती।

खेत न जोते राड़ी, न भैंस बेसाहै पाड़ी, न मेहरि मर्द क छाड़ी—ऊसर का खेत, भैंस की पड़िया और किसी की त्यागी हुई स्त्री अच्छी नहीं होती, इनसे सम्बन्ध नहीं रखना चाहिए।

खेत न पत्थर खेतोरिया राजा—खेत तो कुछ है नहीं किन्तु कहते हैं अपने को बड़ा ज़मींदार। व्यर्थ में गर्व करने वाले पर व्यंग्य।

खेत पर चढ़े किसानी—जब फ़सल पैदा करनी पड़ती है तो किसान की योग्यता का पता चल जाता है।

खेत पर जाय वही किसान—जो अपने हाथ से खेती करता है या जो हमेशा अपने खेतों की निगरानी करता रहता है उसी की खेती अच्छी होती है और वही अच्छा किसान समझा जाता है।

खेत बरानी, जैसे नियाम राजानी—बिना सींचे खेत में खेती का भरोसा वैसे ही है जैसे राजा के दान का। अर्थात् इन दोनों का लाभ तभी समझना चाहिए जब मिल जायँ।

खेत बिगाड़े खरतुआ और सभा बिगाड़े दूत—कूड़ा-करकट, घास-पात से खेत बिगड़ जाता है और निंदक से सभा का सत्यानाश हो जाता है।

खेत बिगाड़े सोभना, गाँव बिगाड़े बम्हना—स्वच्छ वेश-भूषाधारी (सोभना) खेत को और ब्राह्मण गाँव को बिगाड़ देते हैं। खेती के काम में कपड़े गंदे हो जाते हैं क्योंकि खेती में कभी-कभी जल और कीचड़ में भी काम करना पड़ता है। अतः जो साफ़-सुथरे वस्त्र पहनकर घूमते हैं

उनकी खेती अच्छी नहीं होती, और ब्राह्मण निठल्ले बैठे रहते हैं इसलिए वे गाँव के कुछ और लोगों को साथ लेकर या तो घूमते हैं या बैठकर बातें करते हैं जिससे लोगों की आदतें खराब हो जाती हैं। इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर उक्त लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : छत्तीस० खेत बिगाड़ै सोभना, गाँव बिगाड़ै बांभना।

खेत बे पनिया जोतो तब, ऊपर कुआं खुदाओ जब—जिस खेत में सींचने का प्रबंध न हो उसे जोतना बेकार है और यदि उसे जोतना चाहते हो तो पहले सिचाई के लिए कुआँ खुदवा लो।

खेत बे पानी बूढ़ा बैल, सो गृहस्थ साझे गहे गैल—जिस गृहस्थ या किसान के पास सिचाई के साधन न हों और बैल बूढे हों उसे खेती नही करनी चाहिए क्योंकि इन परिस्थितियों में खेती अच्छी नही होती। खेती के लिए सिंचाई के साधनों एवं मज़बूत बैलों का होना नितांत आवश्यक है।

खेत भला नहिं झील का खेत भला नहिं सील का—नीची ज़मीन के खेत और नमी वाले मकान किसी काम के नही होते।

खेत में उपजे तो सब कोइ खाय, घर में उपजे तो घर बह जाय—फूट नामक फल यदि खेत में हो तो सब कोई खाते हैं पर घर में हो जाने से घर बिगड़ जाता है। अर्थात् फूट से घर का नाश हो जाता है। तुलनीय : अव० खेत मा उपजे सब जन खायँ, घर मा उपजै तौ घर बहि जाय।

खेत में गेहूँ, कल ब्याह—गेहूँ अभी तक काटा भी नही गया और ब्याह का दिन कल ही है। (क) किसी काम का उपयुक्त अवसर न मिलने पर इस कहावत का प्रयोग किया जाता है। (ख) बहुत जल्दबाज़ व्यक्तियों को भी व्यंग्य मे ऐसा कहते है। तुलनीय : गढ़० ख ला साट्टी, भोल ब्यौ।

खेत में हल, घर में छिनाल, खलिहान में भूसा, हाथ से ही ठीक होता है—गहरा हल चलाने के लिए हाथ का ज़ोर लगाना पड़ता है, घर मे दुष्ट स्त्री को भी हाथ से पीट कर ठीक किया जाता है तथा खलिहान में भूसा भी हाथों से ही पीटना पड़ता है। ऐसा किसान जो सभी तरफ से दुःखी हो उसके प्रति कहते है। तुलनीय : भीली—खेता मांए हाल कराल, घेर मांए राड लड़ाक, खला मांए ताण परान।

खेत में ही तरकारी को बघार नहीं लगता—तरकारी घर मे लाकर ही पकाई जाती है। जो व्यक्ति जल्दबाज़ी में कोई मूर्खता करें उनके प्रति कहते हैं।

खेत वाला मेड़ पर, मेड़कटा खेत में—खेत का मालिक मेड़ पर खड़ा है और मेड़ काटने वाला (मेड़कटा) खेत में। अर्थात् जब कोई सबल व्यक्ति खुलेआम नुक़सान करे और उसके डर के मारे उसे कोई कुछ न कह सके तब कहते हैं। या जब कोई नुक़सान भी करे और अकड़ भी दिखाए तब भी कहते हैं।

खेतिहर ब्योपार करे राम न मारे आपहि मरे—किसान यदि व्यापार करे तो उसे सिवाय हानि के कुछ नहीं मिल पाता क्योंकि वह व्यापार के गुर नहीं जानता। आशय यह है कि जो जिस काम को जानता है वही उसे कर सकता है।

खेती अपने सेती—खेती यदि स्वयं न की जाय तो वह अच्छी नहीं होती। अर्थात् अपने हाथ से की गई खेती ही अच्छी होती है। तुलनीय : छत्तीस० खेती अपन सेती; पंज० खेती अपणी कीती।

खेती आप सेती—ऊपर देखिए। तुलनीय : ब्रज० खेती खसम सेती।

खेती इंद्र भरोसे—खेती ईश्वर के भरोसे ही होती है क्योंकि खेती वर्षा पर निर्भर होती है और वर्षा के मालिक इंद्र हैं। तुलनीय : भीली—राम भरोसे खेती है, हदाखू बगाड़वू बणाए हाथ है।

खेती कर कर मरे, बहुरे के कोठे भरे—ऋणी कृषक को कभी सुख नही मिलता क्योंकि उसकी सारी कमाई क़र्ज़ा चुकाने में ही चली जाती है।

खेती कर कर मरे, बोहरे की कोठी भरे—ऊपर देखिए।

खेती करे अधिया, न बैल न बधिया—इस लोकोक्ति का दो अर्थों में प्रयोग किया जाता है। (क) न इसके पास बैल हैं और न कोई साधन, पर बटाई (अधिया) पर खेती करना चाहता है। जब कोई साधनरहित व्यक्ति बटाई पर खेती करना चाहता है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। (ख) बटाई (अधिया) पर खेती कराने में बैल आदि की कोई आवश्यकता नहीं पड़ती।

खेती करे ऊख कपास, घर करे साहूकारे पास—ऊख और कपास की खेती में अधिक लाभ होता है तथा साहूकार के पड़ोस में रहने से वक़्त-बे-वक़्त उधार मिल जाता है।

खेती करे ऊख कपास, घर करे ब्यवहरिया पास—ऊपर देखिए।

खेती करे खाद से भरे, सौ मन कोठिला से भरे—यदि किसान खेतों में खूब खाद डाले तो उसके घर के कोठिले

अनाजों से भर जाएँगे। अर्थात् खाद डालने से अधिक अन्न पैदा होगा।

खेती करे तो गाड़ी रखे, रार करे तो जबान रखे—खेती के लिए बैलगाड़ी तथा झगड़ालू के लिए जबान का तेज-तर्रार होना आवश्यक है। झगड़ालू व्यक्ति प्रायः किसी-न-किसी से गाली-गलौज किया करते हैं, उन्हीं के प्रति उपहास से कहा करते हैं। तुलनीय : मेवा० खेती करे तो राख गाड़ो, राड़ करे तो बोल आड़ो।

खेती करे न बनिजे जाय, विद्या के बल बैठा खाय—विद्वान व्यक्ति बिना खेती या व्यापार किए विद्या के बल पर घर बैठा आराम से खाता है।

खेती करे न विदेस जाय, विद्या के बल बैठा खाय—ऊपर देखिए।

खेती करे बनिजे को धावे, ऐसा डूबे थाह न पावे—दे० 'खेतिहर व्योपार करे···'। तुलनीय : अव० खेती करै बनिज का धावै ऐसा डूबे थाह न पावै।

खेती करे साँझ घर सोवे, काटे चोर हाथ धरि रोवे—जो किसान खेत की रखवाली न करके घर में सोता है, उसकी खेती को चोर काट ले जाते हैं और उसे रोना पड़ता है। आवश्यक सतर्कता न बरतने वाले व्यक्ति को लक्ष्य करके कहा जाता है।

खेती का टोटा खेती से आय—खेती का टोटा खेती से ही पूरा होता है। आशय यह है कि किसी कार्य का घाटा उसी कार्य से पूरा होता है। तुलनीय : भीली—खेती नो खाड़ो खेती की देज भराय है; पंज० खेती दा टोटा खेती नाल जांदा है।

खेती खसम साथे के—कृषि तथा पति का सुख साथ रहने पर ही मिलता है।

खेती खसम सेती—खेती और स्वामी की देखभाल, सतर्कता और हाथ से करने पर ही अच्छी होती है। तुलनीय : मरा० शेती, घनी लक्ष घालील तरच वाढते; गढ़० खेती खसम सेती; राज० खेती खसमां सेती; हरि० खेत्ती खसम सेत्ती नाह तै रेत्ती की रेत्ती।

खेती खसम सेती, आधी के की जो देखे ताकी, बिगड़े के की घर बैठे पूछे तेकी—जो किसान अपने हाथ से खेती करता है उसे उसका पूरा लाभ मिलता है, जो देखभाल ही करता है या अपने सामने काम कराता है उसको आधा लाभ मिलता है और जो घर बैठे ही खेती कराता है उसको कुछ भी नहीं मिलता। तुलनीय : माल० खेती घनी हेती, आधी खेती बेटा हेती, हारी हेती ने हींटा हेती।

खेती जोरू जोर के जोर घटे त और के—कृषि तभी ठीक ढंग से होती है जबकि शरीर में शक्ति हो और पत्नी भी वश में तभी रह सकती है जब शरीर मजबूत हो; नहीं तो दोनों अच्छी प्रकार से नहीं रह सकतीं। तुलनीय : पंज० खेती अते रन जोर दी जोर नइँ तां किसे होर दी।

खेती तो उनकी जो करें अन्हान-अन्हान, उनकी क्या खेती जो देखे साँझ बिहान—खेती उन्हीं की अच्छी होती है जो परिश्रम करते हैं और जो कभी-कभी खेत पर घूमने चले जाते हैं उनकी खेती अच्छी नहीं होती।

खेती तो थोड़ी करे मिहनत करे सिवाय, राम चहें वहि मनुस को टोटा कभी न आय—परिश्रमी किसान के पास थोड़ी भी भूमि हो तो वह परिश्रम करके इतना पैदा कर लेता है कि उसे किसी बात की कमी नहीं रहती।

खेती तो वह जो खड़ा रखावे, सूनी खेती हरिना खावे—फसल उसे ही अच्छी मिलती है जो खेत की रखवाली करता है और जो घर बैठा रहता है उसकी खेती पशु और चोर नष्ट कर देते हैं।

खेती धन का नास, जो धनी न होवे पास; खेती धन की आस, धनी जो होवे पास—ऊपर देखिए।

खेती न पथारी पहाड़ पर घरारी—गृहस्थी तो कुछ है है नहीं किन्तु पहाड़ी पर घर बना लिया है रखवाली के लिए। व्यर्थ में आडम्बर करने वाले पर व्यंग्य।

खेती पाती बीनती औ घोड़े का तंग; अपने पाथ सँवारिये चह लाखों हों संग—चाहे लाखों आदमी साथ या पास में हों खेती, पत्र, विनती तथा घोड़े का कसना अपने हाथ से ही सुन्दर होता है। तुलनीय : ब्रज० वही; मरा० शेती, पान, प्रार्थना नि घोड्याचा तंग आपल्या हातानें सावरावी जरी लाखो असती संग; माल० खेती, पाती, वीनती, गोर तणी खुजार जो सुख चावे आपणों हाथों हाथ संभार; गढ़० सरहत्त खेती परहत्त बणज।

खेती पाती बीनती और खुजावन खाज, घोड़ा आप पलानिए जो पिय चाहो राज—ऊपर देखिए।

खेती-बारी पागड़ी औ घोड़े का तंग, अपने हाथ सँवारिए तब ही लावे रंग—ऊपर देखिए।

खेती में आलस करे भीख माँग सुस्ताय, सत्यानास की चले अठ्यानास हो जाय—खेती में आलस्य और भीख में आरामतलबी करने वाला भूखा मरता है। तात्पर्य यह है कि खेती करना और भीख माँगना बहुत कठिन कार्य है और परिश्रमी ही इनसे लाभ उठा सकता है।

खेती रखे बाड़ को, बाड़ रखे खेती को—राजा प्रजा से

और प्रजा राजा से होती है।

खेती राज रजाय, खेती भीख मँगाय—खेती से लोग राजा भी बन जाते हैं और भिखारी भी बन जाते हैं। खेती के अच्छे होने या न होने पर ही वैभव और विपन्नता निर्भर हैं। तुलनीय : भीली—एते खेती हाथे हारा खेल है, बीजे झूठी बात हारी।

खेती वाला झक मारे, हँसिया वाला धन गाड़े—खेती अच्छी न होने पर किसानों को काफी परेशानी उठानी पड़ती है लेकिन मज़दूर आराम से रहते हैं क्योंकि उन्हें तो पूरी मज़दूरी मिल जाती है किसान को चाहे थोड़ा ही क्यों न बचे।

खेती सदा सुख देती—खेती करना सबसे उत्तम माना जाता है।

खेती सबसे आगे रहे—खेती के बराबर और कोई काम नही है। खेती सबसे प्रतिष्ठित और लाभदायक काम माना जाता है। तुलनीय : भीली—खेती कणाए नी पूगवा दिए; पंज० खेती मारियां तो अग्गे रहे।

खेती पाँसा जो न किसाना, उसके घरे दरिद्र समाना जो किसान खेत में खाद नही डालता उसके घर में दरिद्रता ही रहती है। आशय यह है कि बिना खाद डाले फ़सल अच्छी नही होती और किसान सुखी नही रहता।

खेदी गिल्ली अंत को पेड़ ही तले आती है—बेकार या सुस्त मनुष्य घूम-फिरकर घर ही आता है।

खेप हारी जनम नहीं हारा—परिश्रमी व्यक्ति कहता है कि इस बारी (खेप) हानि हुई तो क्या जन्म नही हारा, फिर प्रयत्न करूँगा और सफलता मिलेगी।

खेल खतम, पैसा हजम—(क) किसी काम, खेल या कहानी आदि की समाप्ति पर यह लोकोक्ति कही जाती है। (ख) अवसर निकल जाने पर जो व्यक्ति पछताते हैं उनके प्रति भी ऐसा कहा जाता है। (ग) किसी से पिंड छुड़ाना हो तो बहकाने के लिए भी कह देते हैं। तुलनीय : गढ़० बग्वाली बीती द्वी सार रीती; पंज० खेड़ खतम पैसा हजम; अव० खेल खतम पइसा हजम।

खेल खिलाड़ी का, घोड़ा असवार का—खिलाड़ी ही खेल को अच्छी तरह से खेल सकते हैं और सवार ही घोड़े को अच्छी तरह क़ाबू में रख सकते हैं। तुलनीय : राज० खेल खेलारारा, घोड़ा असवारांरा; मेवा० खेल खिलाड्यां का अर घोड़ा असवारां का; पंज० खेल खेड़नवाले दा कोड़ा सवारी करण वाले दा।

खेल खिलाड़ी का पैसा मदारी का—मदारी के नीचे काम करने वाले खेल दिखाते हैं पर असल में आमदनी मदारी को होती है। काम और करें और नाम या धन और को मिले तो कहते हैं। तुलनीय : अव० खेल खेलाड़ी कै, पइसा मदारी कै; ब्रज० खेल खिलाडी को, पैसा मदारी को; पंज० खेल खेडन वाले दा पैहा मदारी दा।

खेल खिलाड़ी का, भगत भैया जी का—काम कोई करे और नाम किसी का हो। (भगत भाँडों की तरह तमाशा दिखाने वाली मंडली होती है। भैया जी का अर्थ संचालक है। खेल सब दिखाते हैं और नाम मुखिया का ही होता है)।

खेलत में को का के गुसैंयाँ—खेल-कूद में अपने-पराये का ध्यान नही रखा जाता उसमें तो सभी समान माने जाते हैं।

खेल न जाने मुरगी का उड़ाने लगे बाज—सहज काम न कर सकने और कठिन काम करने पर तैयार हो जाने वाले के लिए व्यंग्य मे कहते हैं।

खेलना न खेलने देना, खेल में मूत देना—न खुद खेले और न दूसरों को खेलने दे, खेल के स्थान पर मूत दे। ऐसे नीच मनुष्य को कहते हैं जो न तो खुद लाभ उठाए और न दूसरों को ही उठाने दे, बल्कि सारा काम ही बिगाड़ दे। तुलनीय पंज० खेडना न खेड़न देना गुती बिच मूतना।

खेलब न खेले देब, खेलिये बिगारब—ऊपर देखिए।

खेल में कौन चाचा और कौन भतीजा—खेल में छोटा-बड़ा या अपना-पराया नहीं देखा जाता। अर्थात् खेल में सबको बराबर समझना चाहिए।

खेल में कौन ठकुरई—ऊपर देखिए।

खेल में रोवे से कौवा / कौआ—खेल में रोना मूर्खता है। खेलते समय जब कोई बच्चा रोने लगता है तो अन्य बच्चे उसे चिढ़ाने के लिए ऐसा कहते हैं।

खेल लो खिला लो, फूट जाय तो खा लो—जिस काम या वस्तु में सब प्रकार से लाभ ही लाभ हो तो उसके प्रति कहते हैं।

खेलाए का नाम नहीं, दे मारे का नाम—जब कोई व्यक्ति किसी के अच्छे कार्यों की कोई चर्चा या प्रशंसा न करे और एक बार सहायता करने से इनकार कर देने पर उसे भला-बुरा कहे या उसकी चारों ओर निंदा करे तब कहते है।

खेलाय मेलाय का नाम नहीं दई मारे का नाम—बच्चों को खिलाने-पिलाने का तो कोई नाम नहीं, पर यदि दैववशात् बच्चे रो पड़ें तो भला-बुरा कहने से नहीं चूकते। अर्थात्

जब कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति की अच्छाइयों की ओर ध्यान न देकर केवल उसकी बुराइयों या ग़लतियों की ओर ही ध्यान देता है तब कहते हैं।

खेले खाय तो कहाँ पिराय—प्रायः वही बच्चे बीमार रहते हैं जो लाड़ले होने के कारण सदा घर में या माँ के पास रहते हैं। खेलने-कूदने वाले बच्चे स्वस्थ रहते हैं।

खेलोगे कूदोगे होगे ख़राब, पढ़ोगे लिखोगे होगे नवाब—खेल की ओर ध्यान रखने वाले लड़कों को पढ़ाई की ओर झुकने के लिए कहा जाता है। तुलनीय : अव० खेलौगे कूदौगे होवगे ख़राब, पढ़ौगे लिखौगे होवगे नवाब।

खेलोगे कूदोगे होगे नवाब, पढ़ोगे लिखोगे होगे ख़राब—न पढने वाले लड़के कहते हैं।

खेलो न जुआ, झाँको न कुँआ—जुआ खेलने से धन की क्षति होती है और कुएँ में झाँकने से उसमे गिरने का डर रहता है। इन दोनों बुराइयों से बचने के लिए ऐसा कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० खेलौ न जूआ, झाँकियै न कूआ; पंज० खेडोगे नां जुआ दिखोगे नां खूँ।

खेसारी लाचारी—खेसारी की दाल लाचारी में खानी पड़ती है। तात्पर्य यह है कि जब किसी अच्छी वस्तु की प्राप्ति नही होती तब तुच्छ वस्तु को ही स्वीकार करना पड़ता है। तुलनीय: मैथ० नचार दाल खमाड़ी; भोज० खेसारी क दाल लचारी में।

खैर का बेड़ा पार है—अच्छे व्यक्ति को कार्य में सफलता मिल जाती है।

खैर की जूती का नाड़ा, पढ़ दे मुल्ला अक़द उधारा—दूसरे का जूता और दूसरे का पायजामा, अतः मुल्ला तुम सेत में ब्याह भी करा दो। मुफ़्त में काम कराने वाले पर व्यंग्य है। (खैर/ग़ैर=दूसरा)।

खैर, खून, खाँसी, खुशी बैर प्रीति मधुपान, रहिमन दाबे ना दबै जाने सकल जहान—ये चीजें छिपाने से भी नही छिपती। (खैर=कत्था, मधुपान=मदिरा सेवन)।

खैर ! जो हुआ सो हुआ—जो हो गया सो हो गया। जब किसी का कुछ खो जाता है तब उसे सात्वना देने के लिए कहते हैं। (ख) जब किसी का किसी से कोई झगड़ा हो जाता है तब भी कहते हैं कि जो हुआ सो हुआ अब शांत रहिए, झगड़ा बढ़ाने की कोई आवश्यकता नहीं है। (ग) जब किसीका बहुत अधिक नुक़सान हो जाता है तब भी लोग उसे ढाढ़स बँधाने के लिए ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० खैर जो होया सो होया।

खैरात के टुकड़े बाजार में डकार—दूसरों की चीज पर शान दिखाने वाले पर व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : मरा० भिकेचे तुकडे खायचे, नि बाजरांत ढेकरा; पंज० मुखत दे टुकड़े बजार बिच डकार।

खैरात लगी बँटने, जब गाँड़ लगी फटने—(क) जब मुसीबत आती है तभी लोग दान-पुण्य करते हैं। (ख) बिना मुसीबत में फँसे या बिना दबाव के कोई भी धन नहीं देता। तुलनीय : अव० खैरात लगी बटने, गाँड़ लगी फटने; पंज० पैहा लग्गा बंडान जदौं बुड लग्गी फटण।

खैराबादी बड़े फ़िसादी, नोन तेल पै बेचें दादी—खैराबादियों के ऊपर कहा गया है। वे बड़े झगड़ालू होते हैं।

खो गया लहँगा, ननद को हुआ—जब लहँगा खो गया तो कह दिया कि ननद को दे दिया। जब कोई व्यक्ति मुफ़्त में ही नेकनामी लेना चाहे तो व्यंग्य से कहते हैं।

खोगीर की भर्ती—जब कोई व्यर्थ की वस्तुओं या व्यर्थ के मनुष्यों से किसी जगह की पूर्ति करता है तब ऐसा कहते हैं।

खोजने से सँभालना भला—किसी वस्तु को खोजने में समय ख़राब करने से अच्छा है कि उसे पहले ही सँभाल कर रखा जाय। तुलनीय : गढ़० खोज कर्न ते पहरो करनो भलो; पंज० लबन तो सांबना चंगा।

खोटा पैसा और खोटा बेटा भी समय पर काम आ जाते हैं—नीचे देखिए।

खोटा पैसा, खोटा बेटा कभी तो काम आ जाते हैं—नीचे देखिए।

खोटा बेटा और खोटा पैसा भी समय पर काम आता है—दुनिया में कोई चीज़ बेकार और निंद्य नहीं है, सभी वक़्त पर काम आती हैं। तुलनीय : मरा० वाईट मुलगा नि गुळगुळीत पैसा सुद्धां वेळेवर उपयोगी पड़तो; भीली - खोटो खरो बगत मां काम आवे; राज० खोटो रुपियो गमै कोनी; हरि० खोट्टा बेट्टा अर खोट्टा पीसा बी बखत पै काम आया करै; बुंदे० खोटो पइसा और खोटो लरका बखत पै कामें आऊत; ब्रज० खोटा बेटा, खोटा दाम वक़्त पर आ जाते हैं काम; मल० पोन्निन् सूचि उळळवनुम् इरुम्बिन् सूचि उपकारप्पेटुम्; पंज० खोटा पुतर अते खोटा पैहा वी मौके उते कम्म आंदा है; अं० A millionaire may borrow a penny; A man with golden axe may need an iron axe.

खोटा बेटा खोटा दाम (सिक्का) बखत पड़े पर आवे काम—ऊपर देखिए। तुलनीय : हरि० खोट्टा बेट्टा खोट्टा दाम, बखत पड़ै जिब आवै काम; ब्रज० खोटौ बेटा खोटौ

दाम, बखत परे पै आवै काम।

खोदने से ही पानी, पढ़ने से ही विद्या – कुआँ खोदने से ही पानी मिलता है तथा पढ़ने से ही विद्या आती है। अर्थात् बिना परिश्रम के कुछ नही मिलता। तुलनीय : पंज० खोदन नाल पाणी पड़न नाल विद्या।

खोदा पहाड़ और निकला चूहा, वह भी मरा हुआ—जब काफी परिश्रम करने के बाद भी बहुत कम लाभ या प्राप्ति हो तो कहते हैं। तुलनीय : पंज० खोदरया पहाड़ निकलया चूहा ओह वी मरया होया।

खोदा पहाड़, निकला चूहा– ऊपर देखिए।

खोदा पहाड़ निकली चुहिया—जब बहुत परिश्रम करने पर बहुत कम लाभ या उपलब्धि हो तो कहा जाता है। तुलनीय : मरा० डोंगर पोखरून उंदीर निघाला; राज० भागणो भाखर, काढ़णो ऊंदर, खिणियो डूंगर निकळियो ऊंदर; मल० मल एलिए पेट्टतु पोले; अव० खोदिन पहाड़ु निकसी चुहिया; भोज० खोदली पहाड़ निकलल चुहिया; मैथ० खोदलांय पहाड़ निकलनी चुहिया; ब्रज० खाट्यौ पहाड़, निकस्यौ चूहा; पंज० खोदरया पहाड निकली चूही; अं० To dive deep and bring up a potshed.

खोदे पहाड़ निकली चुहिया—ऊपर देखिए।

खोदेगा सो गिरेगा, बोवेगा सो काटेगा—जैसा करेगा वैसा पाएगा। अर्थात् बुरे कर्म का फल बुरा और अच्छे कर्म का फल अच्छा मिलता है। तुलनीय : खोतरे ज्योत पड़े रावेगा जो लणे; पंज० खोदरेगा ओह डिगेगा रावेगा ओह वडेगा।

खोन पाक खोनपोश पाक, खोलके देखो तो खाक की खाक – जब केवल ऊपर-ऊपर की ही तड़क-भड़क हो और वास्तविकता कुछ न हो तब कहा जाता है।

खोन बड़ा खोनपोश बड़ा, खोल के देखो तो आधा बड़ा– जहाँ तड़क-भड़क या केवल बनावट हो वास्तविकता कुछ भी न हो वहाँ कहते हैं।

खोया ऊँट ढूँढ़े गगरी—ऊँट गगरी में नही छिप सकता इसे सभी जानते हैं, पर उसके खो जाने पर गगरी भी देखी जाती है। आशय यह है कि (क) विपत्ति में फँसा व्यक्ति मुक्ति पाने के लिए चारों ओर भटकता है, उसे कर्तुम् अकर्तुम् का ध्यान नही रहता। (ख) मानसिक संतुलन बिगड़ जाने पर जब व्यक्ति उलटा काम करता है तब भी व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० ऊँट हेरान गगरी मां ढूढ़ा जात है।

खोरहे सिर पर मखमल की पगिया—(क) अनमेल चीजों के मेल पर कहा जाता है। (ख) कुरूप आदमी अच्छी पोशाक पहने हो तो उस पर भी लोग कहते हैं।

खोल खीसा, खा हरीसा—जो कुछ खर्च करेगा वही खायेगा। अर्थात् मुफ़्त में कुछ नहीं मिलता।

खोला मटका खाँड़ का देख तमाशा राँड़ का—दुश्चरित्र स्त्रियाँ धन के लोभ में सब कुछ कर लेती हैं। तुलनीय : अव० खोली मटकी खाड़ का देख तमाश रांड़ का।

खोलो लँगोटी उतरो पार, इस नदी का यही व्यवहार—लँगोटी उतारकर रख दीजिए तभी नदी के उस पार जा सकते हैं। आशय यह है कि जहां जैसी स्थिति होती है वहाँ वैसा ही किया जाता है। तुलनीय : मैथ० खोलऽ लँगोटी उतरऽ पार ई नदिया के यहै ब्योहार; भोज० खोलऽ लंगोटी उतरऽ पार ए नदी क इहे ब्योवहार।

खौरही कुतिया रेशम के झूल—(क) जब कोई कुरूप व्यक्ति अच्छी वेश-भूषा धारण कर लेता है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। (ख) बेमेल वस्तुओं के मेल पर भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० खोरही कुतिया रेशम कै झूलि।

खौरियाऊ कुतिया मखमल की झूल ऊपर देखिए।

खौलते पानी से घर नहीं जलते—पानी चाहे कितना भी गर्म क्यों न हो वह आग को फिर भी बुझा देगा। (क) तात्पर्य यह है कि प्रकृति-प्रदत्त गुण कोई छोड़ नही पाता। जब कोई साधारण उपायों से किसी बड़े काम को करना चाहे तो भी कहते हैं।

ग

गंग जहाँ रंग—जहाँ गंगा है वहीं आनंद है।

गंगा आवनहार भगीरथ के सिर पड़ी—गंगा को आना तो था ही व्यर्थ में भगीरथ को यश मिला। मुफ़्त का यश पाने पर कहते हैं।

गंगा कर गौर गरीबन की—हे गंगा! ग़रीबों पर दया करो। किसी से भी दया करने के लिए कहना होता है तो कहते हैं।

गंगा किसकी खुदाई है—ऐसी वस्तु या जगह के लिए कहते हैं जिस पर सबका समान अधिकार हो।

गंगा की खुदाई क्या?—गंगा को किसी ने खोदकर नही बनाया। जब कोई व्यक्ति मूर्खतापूर्ण प्रश्न करे तो कहते हैं। तुलनीय : पंज० गंगा दी खुदाई की।

गंगा की गंगा, सिवराजपुर का हाट—स्नान का स्नान करेंगे और लौटते हुए बाजार से सामान भी खरीद लाएँगे। जब एक काम में दो लाभ हों तो कहते हैं। तुलनीय : पंज० नाले मुज बगड़, नाले देवी दा दर्शन।

गंगा की धार तथा अफ़सर का मन कोई नहीं जानता—गंगा की धार किधर मुड़ेगी तथा अधिकारी कब क्या कर बैठेगा कोई नहीं जानता। तुलनीय : मैथ० गंगा के धार आ हाकिम के मन केहू न जाने; भोज० हाकिम क मन आ गंगा क धार केहुनां जाने ला।

गंगा की राह में पीर के गीत—मूर्खतापूर्ण काम करने वालों के प्रति कहते हैं।

गंगा की राह में मदार के गीत—मूर्खतापूर्ण या उलटा काम करने वालों के प्रति कहते हैं। तुलनीय : बुंद० गंगा की गैल में मदारन के गीत।

गंगा के मेले में पड़े रहे का क्या काम—अवसरोचित न होने पर किसी काम का महत्त्व नहीं होता।

गंगा को आना था भागीरथ को यश हुआ—ऐसे अवसर पर कहते हैं जब किसी घटना के घटित होने पर जो कि घटनी ही, किसी अन्य व्यक्ति की ख्याति हो।

गंगा गए गंगादास, जमुना गए जमुनादास—गंगा के पास गए तो गंगादास हो गए और जमुना के पास गए तो जमुनादास हो गये। अर्थात् जैसा मौक़ा देखा बन गए। अवसरवादियों के लिए कहा जाता है। तुलनीय : मरा० गंगेस गैले गंगादास झाले यमुनेस गेले जमुनादास; काशीस गेला काशीदास मथुरेस गेला मथुरादास; गढ़० गंगा गयो गंगादास, जमुना गया जमुनादास; बुंद० गंगा गये गंगादास जनमा गयें जमनादास; मेवा० गंगा गिया गंगादास, जमना गिया जमनादास; मल० यातोरु सिद्धान्तवुम् इल्लात्त।

गंगा गए मुड़ाये सिद्ध—(क) तीर्थ स्थानों में जाने पर सिर मुड़ाना ही पड़ता है। (ख) जहाँ का जो नियम या दस्तूर होता है वहाँ जाने पर उसे करना ही पड़ता है। तुलनीय : अव० गंगा गये मुड़ये सिद्ध; ब्रज० वही।

गंगा गए मुड़ाए सिर—ऊपर देखिए।

गंगाजी की धारा पाप काटने को आरा—ऐसा विश्वास है कि गंगा स्नान से पाप कट जाते हैं या नष्ट हो जाते हैं।

गंगाजी को पैरिबो विप्रन को ब्यौहार; डूब गए तो पार है, पार गये तो पार—गंगा में तैरने से कोई डूब जाय तो भी कोई हानि नहीं क्योंकि गंगा में डूबने से स्वर्ग मिलता है। इसी प्रकार ब्राह्मण को दिया गया उधार डूब जाय तो भी पुण्य मिलता है। जब किसी ब्राह्मण को दिया गया रुपया डूब जाय तो कहते हैं।

गंगा नहाए क्या फल पाए, मूंछ मुड़ाए घर को आए—लाभ के काम में जब हानि हो तो व्यंग्य या मज़ाक़ में कहते हैं। तुलनीय : अव० गंगा नहायेन का फल पाएन, मूछ मुड़ाय घर आएन; ब्रज० गंगा नहाये काहा फल पाये, मोंछ मुड़ाय कें घर कूं आए; पंज० गंगा नहा के की फल लिआ, मुंछ लुआ के कर नूं आये।

गंगा नहाये मुक्त होय तो मेढ़क मच्छियाँ, मूड़ मुड़ाये सिद्ध होय तो भेड़ कपट्टियाँ—यदि गंगा स्नान से ही मुक्ति होती है तो मेंढक और मछलियाँ क्यों नहीं तर जातीं? और यदि सिर को मुड़ाने से ही मुक्ति मिलती है तो भेड़ों और मेमनों की मुक्ति क्यों नहीं होती। व्यर्थ के ढकोसलों के प्रति कहते हैं। इसी अर्थ को द्योतित करने वाला कबीर का यह दोहा भी है :

मूड़ मुड़ाए हरि मिलै सब कोई लेय मुड़ाय।
बेर बेर के मूड़ते भेड़ न बैकुंठ जाय॥

गंगा नहाने से गदहा गाय नहीं बनता—सज्जन व्यक्तियों की संगति में रहकर भी मूर्ख या दुष्ट अपना स्वभाव नहीं छोड़ते। तुलनीय : छत्तीस० गंगा नहाय ले गदहा कपिला नइ बनै; ब्रज० गंगा नहाय कें गधा गाय नायें बनें; पंज० गंगा नहा के खोता गाँ नयी बनदी।

गंगा नहा लिए—अर्थात् पुण्य कमा लिया। जब कोई व्यक्ति किसी मुसीबत से छुटकारा पा जाय या किसी कष्ट-साध्य काम में सफल हो जाय तो कहते हैं। तुलनीय : पंज० गंगा नायी बैठा।

गंगा बही जाय कलवारिन छाती पीटे—उन मूर्खों पर कहा जाता है जो व्यर्थ में चिन्ता करते हैं। (मदिरा बनाने में पानी की आवश्यकता पड़ती है, अतः कलवारिन इसलिए रोती है कि कहीं सारा पानी बह न जाय)।

गंज चला भी जाय, पर खुजाने की आदत न जाय—गंजे व्यक्ति का गंज यदि ठीक भी हो जाय तो भी उसकी खुजाने की आदत नहीं जाती। अर्थात् जिस कारण से बुरी आदतें पड़ी हों यदि वह दूर भी हो जाय तो बुरी आदतें नहीं छूटतीं। तुलनीय : भीली—टाट्या नी टाट जाय टेव नी जाये।

गंज बेरंज नहीं—बिना श्रम किए सफलता या धन की प्राप्ति नहीं होती। (गंज = धन का ढेर)।

गंजा जल्दी मूंड़ा जाता है—क्योंकि उसके बाल कम होते हैं। (क) अज्ञानी जल्दी ठगा जाता है। (ख) सरल कार्य शीघ्र हो जाता है। तुलनीय : पंज० गंजा छेती मनोंदा है।

गंजा मरा खुजाते-खुजाते—बुरे की मौत बुरी तरह होती है। तुलनीय : पंज० गंजा मर्या खुरकदे-खुरकदे।

गंजी कबूतरी महलों में डेरा—किसी अयोग्य आदमी के उच्च पद पाने पर कहते हैं।

गंजी कुतिया मखमल का बिस्तर— दे० 'खारिशी कुतिया···'।

गंजी क्या जाने नाला का भाव—मूर्ख व्यक्ति अच्छी वस्तुओं या अच्छे लोगों के महत्त्व को नही समझते।

गंजी गुरसल कांख में कंघी—गंजे के सिर पर बाल ही नही होते, फिर उसे कंघी करने की क्या आवश्यकता ? अर्थात् जब कोई कुरूप होते हुए भी सुंदर दीखने के प्रसाधनों को एकत्रित करता है तब व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : कौर० गंजी गुरसल कांख में कंघी। (गुरसल=एक पक्षी, जिसके सिर के बाल छोटे किन्तु सदा सँवरे (कढ़े) से दिखाई देते है, जैसे किसी ने कुछ समय पूर्व ही कंघी की हो)।

गंजी को नहाना क्या निचोड़ना क्या ?—नीचे देखिए।

गंजी ने नहाना क्या और सुखाना क्या—जिसके बाल ही नही होंगे वह बालों को कैसे धोयेगी और कैसे सुखायगी। ग़रीबों के प्रति कहते हैं जिनके पास सुख के कोई साधन नहीं होते। दे० 'गंजी क्या नहाए और क्या निचोड़े।'

गंजी पनिहारी गोखरू का इंडुवा—पनिहारिन के सिर पर बाल तो हैं नहीं लेकिन इंडुवा गोखरू लगा सिर पर रखती है। जब किसी कुरूप की वेश-भूषा अच्छी होती है तब कहते हैं। (इंडुवा=जिस पर पानी का बर्तन रखते हैं)।

गंजी पनिहारी और गोखरू का हुंडा—ऊपर देखिए।

गंजी यार किसके, दम लगाया खिसके—नीचे देखिए। तुलनीय : मरा० टकल्या कुणाचा मित्र झुरका मारला की पसार; अव० गंजेड़ी आर किसके दम लगाए खिसके; पंज० गंजी जार किसकी दम लगांदे खिसकी।

गंजी यार किसके दम लगावे जिसके—जिसके पास दम लगाते हैं गँजेड़ी उसी के मित्र होते है। (क) लोग समान गुण वाले से ही प्रीति करते हैं। (ख) स्वार्थी लोग काम निकल जाने पर अपने उपकर्ता या मित्र को नही पूछते। खाना आदि हो जाने के बाद जल्दी घर जाने वाले मेहमान भी मज़ाक़ में अपने लिए ऐसा कहते हैं।

गंजी सत्ती ऊत पुजारी— जैसे को तैसा मिलने पर कहते है। (सत्ती=एक प्रकार की देवी; ऊत=गँवार, निःसंतान) कहीं-कहीं 'गंजी' के स्थान पर 'गंदी' भी कहते हैं। तुलनीय : कौर० गंदी सत्ती ऊत पुजारी।

गंजी सिर मुड़ाने चली—गंजी सिर मुड़वाने जा रही है। व्यर्थ का काम करने वाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० गिंजी माथो गुंथावणने चाली।

गंजे के नाखून नहीं होते—बुरे व्यक्तियों के पास अधिक अधिकार या शक्ति नहीं होती वरना वे लोगों को परेशान कर देते। तुलनीय : पंज० गंजे दे नहुँ नयीं होंदे।

गंजे के भाग्य से ओले पड़े—गंजे के भाग्य से ओले पड़ रहे हैं। (क) अभागे के ऊपर ही कष्ट आते हैं। (ख) अभागा अपने साथ दूसरों को भी कष्ट दिलाता है। तुलनीय : राज० गिंजीरै भागरा गड़ा पड़ै।

गंजे को भगवान नाखून नहीं देता—गंजे को भगवान नाखून नहीं देता नही तो वह खुजा-खुजाकर ही सिर छील डाले। अर्थात् दुष्ट व्यक्तियों को ईश्वर बुरे काम करने की शक्ति और साधन नहीं देता नही तो वे लोगों का जीना मुश्किल कर दें। तुलनीय : राज० गिंजेने परमात्मा नख कांयने देवै; पंज० गंजे नूं रब नहुँ नयी दिंदा।

गंजेड़ी की चले तो गाँज बोवावै—यदि गंजेड़ी का वश चले तो संसार के सारे खेतों में केवल गाँजा ही गाँजा बोया जाय। जो केवल अपने स्वार्थ की बात चाहता है उस पर कहते हैं।

गंजेड़ी यार किसके, दम लगाके घिसके—दे० 'गंजी यार किसके···'।

गंजेड़ी यार किसके, दम लगाया खिसके—दे० 'गंजी यार किसके···'।

गंजेड़ी यार किसके, दम लगावे तिसके—दे० 'गंजी यार किसके···'।

गंडुआ गाँव, गंडरिया महतो—कायरों और मूर्खों के गाँव में गड़रिया ही मुखिया बन बैठता है। मूर्खों में साधारण बुद्धिवाला भी बुद्धिमान माना जाता है। तुलनीय: अव० गंडुआ गाँव गड़ेरिया महतो; पंज० पड़ुआ पिंड, पंडरिया महंता।

गंदगी से छेड़छाड़ करने पर छींटे ही पड़ते हैं—बुरे आदमियों से मेलजोल करने से बुराई ही मिलती है।

गंदा मरे न चिथड़ा जाय—गंदा मरेगा न चिथड़ा जाएगा। बुरे आदमियों के दुर्गुणों से ऊबकर लोग ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० फूहर मुइ न गंड़तर उधियाई।

गंदी बोटी का गंदा शोरबा—(क) अयोग्य का बेटा अयोग्य ही होता है। (ख) बुरी चीज़ से बनाई गई चीज़ भी बुरी ही होती है।

गंदी सत्ती, ऊत पुजारी—दे० 'गंजी सत्ती ऊत···'।

गंदुमनुमा जौफ़रोश—दिखाते हैं गेहूँ और बेचते हैं जौ। ठगी या धोखेबाजी पर कहते हैं। (गंदुम=गेहूँ)।

गंधाश्मरज सा स्पृष्टो नष्टो दीपः पुनर्ज्वलेत—गंधक के चूर्ण से छुए जाने पर बुझा हुआ दीपक भी पुनः जल जाता है। अर्थात् दुखों के दूर हो जाने पर कभी-कभी मनुष्य सोचता है कि वे अब पुनः नहीं आएँगे पर समय आने पर वे पुनः आ जाते हैं।

गंधी अंध गुलाब को गँवई गाहक कौन ?—हे अंधे ! गाँव में गुलाब जल या इत्र को खरीदने वाला भला कौन है। (क) आशय यह है कि जहाँ पर जिस वस्तु के मूल्य को कोई न जानता हो वहाँ उस वस्तु को नही दिखाना चाहिए। (ख) छोटी-मोटी या सामान्य जगहों पर बड़ी चीज़ की क़द्र नहीं होती। (ग) मूर्ख व्यक्तियों के बीच उपदेश नहीं देना चाहिए।

गंवई का दाना रस; बजार की रमरम्मी- छोटे लोगों की बड़ी चीजों से बड़े लोगों की छोटी चीजें अधिक महत्त्व की होती हैं। (दाना रस=जलपान; रमरम्मी=राम=राम, नमस्कार)। तुलनीय: पंज० जमीदार दी लस्सी, चौदरी दी राम राम।

गँवार ईख न दे भेली दे—जब कोई व्यक्ति साधारण वस्तु न दे और क़ीमती वस्तु दे दे तब कहते हैं। तलनीय: कौर० गमार गाँडा न दे भेल्ली दे; पंज० जट्टा कमांद न दे भेली दे; हरि० जाट गंडा नाह दे भैल्ली दे दे; अं० Penny wise pound foolish.

गँवार का हाँसा, तोड़े पाँसा—(क) गँवार का हंस मोती न चुगकर गोबर (पाँसा) आदि गंदी चीजें ही चुगता है। मूर्ख के साथ रहने वाला बुद्धिमान भी मूर्ख हो जाता है। (ख) गँवार का मज़ाक़ (हाँसा) पसली (पाँसा) तोड़ देता है। आशय यह है कि गँवारों के साथ मज़ाक़ करना मूर्खता है। तुलनीय: पंज० जट्ट दा हासा भन्न दित्ता पासा।

गँवार की अक्ल डंडे में—मूर्ख व्यक्ति मारने-पीटने या ताड़ना देने से ही शान्त रहते हैं या ठीक ढंग से कार्य करते हैं। तुलनीय: पंज० जट्ट दी अक्ल बालाँ बिच।

गँवार की अक्ल जूते में—ऊपर देखिए।

गँवार की अक्ल पीठ में—दे० 'गँवार की अक्ल डंडे में।'

गँवार की गाली, हँसी में टाली—गँवार की गाली-गलौज हँस कर टाल देनी चाहिए। अर्थात् मूर्खों और उजड्डों की बातों को गंभीरता से नही लेना चाहिए। तुलनीय: माल० गमार री गारी ने हँसी नै टारी।

गँवार को किवाड़ पापड़—गँवार व्यक्ति के लिए किवाड़ ही पापड़ है। अर्थात् मूर्ख चीजों का भेद नहीं जानता। तुलनीय: मेवा० गुँवार के भाए कुँवाड़ ही पापड़।

गँवार को पापड़—गँवार पापड़ का मजा क्या जाने ? जो व्यक्ति जिस वस्तु के योग्य न हो, उसको यदि वह दी जाए तो कहते हैं।

गँवार को पैसा दे पर अक्ल न दे—मूर्ख को धन दे दें पर समझायें नहीं क्योंकि उसे समझाना व्यर्थ होगा। तुलनीय: अव० गवार के पइसा दै दे बाकी अकिल न दे; पंज० जट्टनूं पैहा देओ अकल नईं; ब्रज० गमारै पैसा दै दे परि अकलि न दे।

गँवार गन्ना न दे भेली दे—दे० 'गँवार ईख न दे...'।

गँवार गरियार जूते के यार—मूर्ख और कामचोर बिना डाँट-डपट के काम नहीं करते। तुलनीय: कन्नौ० गँवार औ गरयार, जूता के यार; पंज० जट्ट रामी जुती दी सामी।

गँवार गाँड़ा न दे भेली दे—ऊपर देखिए। तुलनीय: हरि० जाट गंडा नाह दे, भेल्ली दे दे।

गँवार गौं का यार—मूर्ख व्यक्ति भी केवल अपना अवसर (गौं) या मतलब देखता है। तुलनीय: अव० गँवार गौंव का आर; पंज० जट्ट पैहे दा यार।

गई अँधियारी चोर कौन ?—चोर अँधेरी रात में ही चोरी करता है उजाले में नही, इसीलिए वह पकड़ा नही जाता। आशय यह है कि रंगे हाथों पकड़ने पर ही किसी को अपराधी कहा जा सकता है। तुलनीय: पंज० बडला होया चोर कुन।

गई गुज़री हुई—बीती बात को चर्चा करना व्यर्थ है। तुलनीय: पंज० रुड़ी दी गल।

गई चौधराहट फिरी है—छिनी हुई आज़ादी पुन: मिल गई है।

गई जवानी पुनि नहिं लौटे, लाख मलीदा खायें—कितना भी क्यों न खाया-पिया जाय पर बीता यौवन फिर नही लौटता। तुलनीय: भोज० गइल जवानी फिर न लउटी केतनौ घी व मलीदा खा; उ० जो आके न जाए वो बुढ़ापा देखा जो जाके न आए वो जवानी देखी; पंज० गैदी जवानी मुड़िए नई आंदी जिन्ना दुध क्यों मरजी खा।

गई जवानी फिर नहीं लौटे, कितनौ घीव मलीदा खायें—ऊपर देखिए।

गई थी नमाज बख़शवाने, रोजा गले पड़ा—जब कोई काम लाभ के लिए किया जाय और उसमें हानि हो तब ऐसा

कहते हैं। कहा जाता है कि मुसलमानों में पहले रात-दिन में बहुत बार नमाज़ पढ़ने का नियम था। मुहम्मद साहब नमाज़ों की संख्या कम करने के लिए खुदा के यहाँ गए। खुदा ने नमाज़ों की संख्या तो कम कर दी पर साथ ही रोज़ा (एक माह तक उपवास) रखने का नियम कर दिया, जिससे और परेशानी बढ़ गई। इसी बात को ध्यान में रखकर उक्त कहावत कही गई है। तुलनीय : ब्रज० निबाज के गये, रोजा गरे परे।

गई परथन लेने, कुत्ता ले गया आटा—(क) जब किसी साधारण वस्तु के लिए बड़ा नुकसान हो जाय तो कहते हैं। (ख) एक काम को करते हुए दूसरा बिगड़ जाय तो भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० सरफा कर-कर सुती, आटा खाइ अयी कुत्ती।

गई बातों को हवा भी पा नहीं सकती—जो बातें बीत चुकी है उन्हें हवा जैसी तेज सवारी भी पकड़ कर नहीं ला सकती। अर्थात् बीती बातें और बीता समय लौटाया नहीं जा सकता। जो व्यक्ति उतावली के कारण कोई ऐसा काम कर बैठता है जो उसकी बदनामी का कारण बनता है और बाद में उस भूल को सुधारना चाहता है तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० वां बातांनै घोड़ा ही को पूगै नी।

गई बू बूदार की और रही ग्वाल की खाल—इज्जत या दौलत खोकर जैसे थे वैसे ही हो गए।

गई भैंस पानी में—ठीक ढंग से किए गए किसी काम को सहसा बिगड़ते देखकर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मैथ० गैल महिस पानी में, धोयल-धायल भेड़ी पाका लागै चाहै अछि; भोज० गइल भंइस पानी में, धोवल-धावल भइस लेवाड़ मंजलम; राज० जा भैंस पाणी में; पंज० मयी गयी पाणी च; ब्रज० जा भैंसि पानी में।

गई माँगने पूत को, खो आई भरतार—पुत्र माँगने के लिए गई थी और पति को भी खो आई। जब कोई व्यक्ति कुछ पाने की आशा से कहीं जाय और पास की भी वस्तु या पास का भी धन खोकर आए तब उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० गई रही पूत मनावै, भतारै उफ्फर पड़गा; राज० लैवण गई पूत, गमा आयी खसम; गढ़० दो पुरा की भई मुड़ी; मरा० पुत्र मागायला गेली नवरा घालवून वसली; पंज० मँगन गयी पुतर खा आयी पितर; ब्रज० गई मांगिबे पूतकूं, खोइ आई भरतार।

गई सो गई अब राखु रही को—जो नष्ट हो गई, वह तो नष्ट हो ही गई जो बची है उसकी रक्षा करो। अर्थात् बीती की चिंता छोड़ वर्तमान को देखना चाहिए। तुलनीय : मरा० गेलेंतें गेलें, आहे तें सांभाळ।

गई शोभा दरबार की सब बीरबल के संग—जब किसी परिवार, गाँव या समाज से कोई योग्य व्यक्ति चला जाता है और समय आने पर कोई अन्य व्यक्ति उसके अभाव को पूरा नहीं कर पाता तब ऐसा कहते हैं।

गई स्वामीनाथ की यात्रा, घर मरा भरतार—तीर्थ यात्रा को गई और घर में पति मर गया। (क) जब भले काम का बुरा फल मिले तो कहते हैं। (ख) जिस व्यक्ति के लिए कष्ट सहा जाय और उसी का अनिष्ट हो तो भी कहते हैं।

गऊ के मुँह में दूध है—(क) गाय को जितना ही अधिक खिलाओगे वह उतना ही अधिक दूध देगी। (ख) सज्जन व्यक्ति की वाणी में माधुर्य होता है।

गए ऊन को लेने, आए बाल मुड़ाय—ऊन लेने गए थे मुड़ा आए बाल। अर्थात् जब कोई व्यक्ति कहीं पर कुछ लाभ के लिए जाय और पास का भी गँवाकर आ जाय तब कहते हैं।

गए कटक रहे अटक—जब किसी काम पर भेजा हुआ आदमी उसमें बहुत देर लगा देता है तो कहा जाता है।

गए कनागत टूटी आस, बाम्हन रोवें चूल्हे पास—पितृ पक्ष में तो ब्राह्मणों को अच्छे-अच्छे खाने मिलते हैं, अतः वे खूब प्रसन्न होते हैं पर उसके चले जाने पर जब फिर वही साधारण खाना मिलता है तो वे चूल्हे के पास बैठकर रोते हैं। ब्राह्मणों की खिल्ली उड़ाई गई है। (कनागत = कन्या राशि में सूर्य के रहने का काल)। तुलनीय : पंज० गये सराद आये नराते, बाम्हन बैठे चुपचपाते।

गए गंगा जी और लाए बालू—गंगा जी जाकर बालू लाए। अर्थात् जो व्यक्ति किसी अच्छे स्थान पर जाय और वहाँ से कोई निकृष्टि अथवा अनुपयोगी वस्तु लाए उसके प्रति व्यंग्य मे कहते हैं। तुलनीय : मेवा० गंगा जी सांपड्या अर मांकूल्या लाया।

गए ग्वाले के, मिले सत्त—गए थे ग्वाले के यहाँ जिसके यहाँ घी, दूध, दही की कमी नहीं होती पर उसके यहाँ भी सत्तू खाने को मिला। जब कोई व्यक्ति किसी ऐसे व्यक्ति के पास कोई याचना लेकर जाय जहाँ उसे पूर्णतया सफल होने की आशा हो, किंतु वहाँ निराशा ही हाथ लगे तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : गढ़० हम आया मरड़ा बौली, सात्तू खाया पाणी ओली।

गए घर का क्या ठिकाना—कमजोर या निर्धन व्यक्ति

से कोई उम्मीद नहीं की जा सकती । तुलनीय : मैथ० गयला घर के कवन ठिकाना; भोज० गइल घर क कवन भरोसा।

गए थे गाड़ी की बिनती को बाखर हार आए - थोड़े लाभ के प्रयत्न में बड़ी हानि होने पर इस लोकोक्ति का प्रयोग किया जाता है ।

गए थे गाड़ी लावने, आए बाखर हार—ऊपर देखिए ।

गए थे नमाज छुड़ाने रोजा गले पड़ा—दे० 'गई थी नमाज छुड़ाने···'। तुलनीय: राज० गई तो ही गळो करावणने कॉंच माथे पड़ी; मरा० रोजा सोडायल गेले तर उलट प्रार्थना चालविणें गळयांत पडलें; भोज० गइली नमाज छोड़ावे रोजा परल गर में; अव० गए रहे नमाज के बरे रोजा गले पड़िगय; ब्रज० गये तौ निबाज कूँ रोजा गरे परे ।

गए माघ दिन 29 बाकी—माघ तो बीत गया केवल 29 दिन ही बाक़ी हैं । जब कोई व्यक्ति किसी बड़े काम को थोड़ा सा करके समझ ले कि अब तो पूरा हो गया है तो उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं । तुलनीय : भोज० गइल माघ दिन ओन्तिम बाकी; ब्रज० गयौ माह दिन 29 बाकी ।

गए मियाँ रहमूँ, एहमूँ न ओहमूँ— जब कोई व्यक्ति लालचवश एक साथ कई कार्यों को आरंभ कर देता है और उसे किसी भी कार्य में सफलता नहीं मिलती तब उसके प्रति ऐसा कहते हैं ।

गए शेर को कंकड़ मारे— शेर जा चुका है, किंतु उसके पीछे कंकड़ फेंक रहा है । (क) जो व्यक्ति गुज़री हुई विपत्ति को फिर से बुलाए उसके प्रति कहते हैं । (ख) जब कोई किसी प्रतिभाशाली व्यक्ति की उसकी अनुपस्थिति में निंदा करता है तब भी कहते हैं । तुलनीय : राज० गयी भूखने हैला पाड़े; पंज० पिठ पिछे गालां कड्नीयां ।

गए सो आवन के नाहीं, रहे सो जावनहार—अर्थात् जो मर गए हैं वे लौट कर नहीं आ सकते और जो रह गए हैं उनको भी मरना है । संसार की क्षणभंगुरता पर कहा गया है ।

गए हानि, न मरे पछतानि—जिस वस्तु या व्यक्ति से किसी प्रकार का लाभ न हो उसके प्रति कहते हैं ।

गगन चढ़इ रज पवन प्रसंगा धरती पर पड़ी धूल वायु का सहारा पाकर आकाश पर चढ़ जाती है । तात्पर्य यह है कि क्षुद्र या ओछे व्यक्ति बड़ों की संगति और सहायता से महान बन जाते हैं ।

गगरी अनाज है, जुलाहा राजा है—थोड़ा भी अनाज होने पर जुलाहा अपने को राजा समझने लगता है, अर्थात् छोटे व्यक्ति थोड़े से धन पर इतराने लगते हैं । तुलनीय : पंज० मासा जिहा अन्न, जुलौया तन्नं ।

गगरी दाना, सूद उताना—नीच व्यक्ति थोड़ा धन पाने पर ही इतराने लगता है । तुलनीय : अव० गगरी दाना, सूद उताना । (सूद=शूद्र) ।

गगरी में दाना, नीच उताना— ऊपर देखिए । तुलनीय : अव० गगरी मां दाना शूद्र उताना ।

गगरी में दाना सूदु उताना— दे० 'गगरीदाना सूद उताना'।

गगरी में नाज गँवार, का राज - दे० 'गगरी अनाज है जुलाहा···'।

गज भर न फाड़े, चाहे थान भर हारे —पूरा थान तो हार जाने को तैयार है, किन्तु गज़ भर फाड़ना नहीं चाहता । किसी हठी या कंजूस या मूर्ख व्यक्ति के प्रत्यक्ष में कोई चीज़ न देने तथा परोक्ष में बहुत बड़ी हानि पर संतोष करने पर ऐसा कहते हैं । तुलनीय : मैथ० गज भर न फारे के थान भर हारे के; भोज० पूरा थान हार जइहं बाकी गज भर नां फरिहं ।

गज भर लड़ैया, नौ गज पूंछ- नीचे देखिए ।

गज भउ लुखड़ी नौ गज पूंछ - गज़ भर की लोमड़ (लुखड़ी) है और उसकी पूंछ नौ गज़ लंबी है । जब कोई व्यक्ति बेढंगी पोशाक पहनता है या अपना सामर्थ्य से आडंबर दिखाता है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं । कहीं-कहीं 'लुखड़ी' की जगह 'लड़ैया' या 'लड़' शब्द का भी प्रयोग करते हैं । तुलनीय : अव० जेतने बड़ बाल मियां नाहीं ओतनी बड़ी पूंछ, गढ़० बाछी चुली पूछी बड़ी ।

गज भर लोमड़ी, नौ गज पूंछ- ऊपर देखिए ।

गजमुक्त कपित्थ न्याय - हाथी द्वारा खाए हुए कैथ (कपित्थ) के समान । किसी वस्तु के ऊपर से ठीक लेकिन भीतर से पोली, निस्सार या शून्य होने पर कहते हैं ।

गजर बजर की घानी, आधा तेल आधा पानी—किसी कार्य को साफ-सुथरा या स्वच्छ न करने वाले के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं । तुलनीय : पंज० इधर-उधर की कानी, अद्दा तेल अद्दा पाणी; ब्रज० गजर मजर की घानी, आधौ तेल आधौ पानी ।

गठरी में गुड़ ताड़ता है—दूसरे की गठरी का गुड़ जान जाता है । (क) जो व्यक्ति दूसरों के भेदों को जान जाता है उसके प्रति कहते हैं । तुलनीय : राज० कोथली में गुड़ भांगै; उ० ख़त का मज़मूँ भाँप लेते हैं लिफ़ाफ़ा देखकर ।

गठरी में बोतल बाँधे, तो कौन जाने ?—शराब की बोतल को यदि गठरी में बाँध कर ले जाय तो कौन जान

सकता है ? आशय यह है कि बुरे आदमी संसार की आँखों में धूल झोंककर बुरे काम कर ही लेते हैं। तुलनीय : भीली—वच के बत को कोई नी जाणे लसको।

गठरी में लागा चोर मुसाफ़िर—जब कोई आफ़त में फँसने वाला हो और उसे पता न हो तो सावधान करने के लिए कहते हैं।

गठरी सिर पर, सवारी घोड़े की—गठरी को सिर पर रखे हुए घोड़े पर बैठकर जा रहे हैं। मूर्खतापूर्ण कार्य करने वाले के प्रति व्यंग्य में कहते है। तुलनीय : गढ़० अकल को टप्पू मुंडमा बोदगी घोड़ा मां अप्फू; पंज० चढ़े दा कोंड़े ते, तेगंड सिरा ते।

गठिया खुला, बिटिया पारस—पुत्र पैदा होने पर स्त्री (बिटिया) पारस पत्थर की तरह इज़्ज़त पाती है। आशय यह है कि पुरुष संतान को जन्म देने पर स्त्री की इज़्ज़त की जाती है। यदि वह कन्या को जन्म दे तो उसका उतना आदर नही किया जाता। (गठिया खुलना - गर्भ से होना या बच्चा होना।)

गड़ई चले नहाय त गड़इहो चले पराय—गड़ही में नहाने चले तो वह भी भागने लगी। अर्थात् अभागे व्यक्ति को साधारण सुख भी नही मिलता।

गड़सी की सगाई, खुरपी का ब्याह—सगाई की थी गँड़ासे (गड़सी) की और ब्याह हो रहा है खुरपी का। जो व्यक्ति कहे कुछ और करे कुछ और तो उसके प्रति ऐसा कहते है। तुलनीय : पंज० कड़माई ही के दी, ब्याह होआ रंबी दा।

गड़ही के पानी से मुंह धोलो—दे० 'गढ़े के पानी मे '।

गड़ा धन माथे पर चमकता है—(क) धनी का चेहरा प्रकाशमान रहता है या धनी सूरत से ही पहचाना जाता है। (ख) जब कोई निर्धन व्यक्ति बहुत लंबी-चौड़ी बातें करता है तब उसके प्रति व्यंग्य मे ऐसा कहते है।

गड्डरिका-प्रवाह न्याय—जिस प्रकार भेड़ें एक के पीछे एक बिना देखे चलती हैं, उसी प्रकार यदि लोग देखा-देखी किसी काम को करे तो यह उक्ति कही जाती है।

गड्ढे से बन बैठा कूप—गड्ढे से कुआँ हो गया। (क) जब कोई थोड़ा बिगड़ा हुआ काम बहुत अधिक बिगड़ जाय तो कहते है। (ख) जब कोई साधारण व्यक्ति बहुत बड़ा हो जाता है तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० टोये तों बनया खू।

गढ़ तो चित्तौरगढ़ और सब गढ़ैयाँ—चित्तौरगढ़ के क़िले के सम्मुख अन्य क़िले कुछ भी नहीं है। जब किसी वस्तु या व्यक्ति की काफ़ी प्रशंसा की जाय और अन्य वस्तुओं या व्यक्तियों को कोई महत्त्व न दिया जाय तब कहते हैं।

गढ़ने से लकड़ी बनती है, पर बात बिगड़ती है—लकड़ी जितनी ही गढ़ी जाएगी उतनी ही चिकनी होगी तथा बात जितनी गढ़ी (बनाई) जाएगी उतनी ही बिगड़ेगी। तुलनीय : मैथ० काठ गढला से चिकन होखले, बात गढ़ला से रूखर होखले; भोज० बात गढ़ले बिगरेला काठ गढ़ले बन्नेला।

गढ़ रहा था चिलम बना गया हुक़्क़ा—जिस लक्ष्य की पूर्ति हेतु प्रयास किया जाय और वह पूरा न हो तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० बना दा कुपी बनी अयी चारी (झारी)।

गढ़ से चली बदरखे आई, मेरठ कितनी दूर—गढ़ (मेरठ ज़िले में प्रसिद्ध एक तीर्थ स्थान गढ़ मुक्तेश्वर) से चलकर अभी बदरखे (गढ़ से 2-3 मील की दूरी पर एक गाँव) तक आई थी कि पूछने लगी मेरठ कितनी दूर है। जबकि मेरठ और गढ के बीच की दूरी 30 मील से भी अधिक है। जब कोई व्यक्ति किसी कार्य के आरंभ में ही कार्य की परेशानियों से घबड़ा जाय और यह सोचने लगे कि कब कार्य पूरा हो जाएगा या होगा तब कहते हैं। इस संबंध में एक कहानी है जो इस प्रकार है : कोई पिता-पुत्री गढ़ से मेरठ की पदयात्रा पर चले। वे अभी दो-तीन मील ही गए थे कि लड़की ने पिता से पूछा कि अभी हम लोगों को और कितना चलना है। इस पर पिता ने उक्त कहावत कही। तुलनीय : कौर० गढ से चली बदरखे आई मेरठ कितणी दूर।

गढ़े कुम्हार, भरे सं—सारकुम्हार घड़ा बनाता है पर सभी लोग उससे पानी भरते है। जब किसी व्यक्ति के काम से अनेक व्यक्ति लाभान्वित हों तो कहते हैं।

गढ़े के पानी में मुंह धो आओ—(क) जो लोग कुछ काम-धाम करना तो जानते नहीं, पर बहुत लम्बी-चौड़ी बातें करते हैं उनके प्रति कहते हैं। ख) जब कोई अयोग्य व्यक्ति किसी अच्छी वस्तु को पाने की कामना करता है तब उसके प्रति भी व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : पंज० होये दे पाणी च मूं नोयी लो।

गणपति लघुश्रम जीत्यो देवा—जहाँ थोड़े उपाय से बड़े काम बन जायँ वहाँ इस लोकोक्ति का प्रयोग करते हैं। एक बार देवताओं में विवाद चला कि सब से पूज्य कौन

है। ब्रह्मा ने कहा कि जो पृथ्वी की प्रदक्षिणा पहले कर आय वही श्रेष्ठ समझा जाय। सब देवता अपने-अपने वाहनों पर चल पड़े। चूहे पर सवार गणेशजी स्वभावत: सब से पीछे रहे। इतने में नारद जी मिले। उन्होंने गणेश जी को युक्ति बतलाई कि राम नाम लिखकर उसी की प्रदक्षिणा करके चटपट ब्रह्मा के पास पहुँच जाओ। गणपति ने ऐसा ही किया और देवताओं में वे सर्वश्रेष्ठ एवं प्रथम पूज्य हुए।

गणेश जी का चौक पूरा मेंढक जी आन बिराजे -(क) जब कोई व्यक्ति किसी कार्य में ज़बरदस्ती या बिना बुलाए आ जाय तो व्यंग्य से कहते हैं। (ख) जब किसी चीज़ को किसी बड़े या महान् व्यक्ति के लिए तैयार किया जाय और कोई साधारण व्यक्ति उसका उपयोग करने लगे तो भी व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

गत का सोचा क्या—बीती हुई बात पर सोचना व्यर्थ है। तुलनीय : भोज० बितला बात क का चिन्ता; सं० गतं न शोचामि कृतं न मन्ये; ब्रज० बीति ताहि बिसार दे आगे की सुध लेय; अं० Bury the dead; let bygones be bygones.

गतस्य शोचनं नास्ति--बीती बात भूल जानी चाहिए, उसके लिए शोक करना व्यर्थ है। तुलनीय : पंज० गैंदी गल पुन्न अगे दी दिख।

गतानुगतिको लोका:--प्राय: लोग परंपरा का ही अनुकरण करते हैं।

गदहा गावे ऊँट सराहे—दो मूर्ख व्यक्तियों की आपसी प्रशंसा पर व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : फ़ा० मन तुरा हाजी बगोयम, तू मुरा हाजी ब गो।

गदहा घोड़ा एक भाव—तुच्छ तथा उत्तम वस्तु को समान समझने पर व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० गदहा घोड़ा बराबर; अव० गदहा घोड़ा एकै भाव।

गदहा का/ने खाया न पाप न पुन्न----गदहे को खिलाने से पाप-पुण्य कुछ भी नहीं मिलता। अर्थात् मूर्खों को खिलाना-पिलाना व्यर्थ है। तुलनीय : बुंद० गदन खाओ खेत पाप न पुन्न; मरा० गाढवानें खाल्लें पाप न पुण्य; भोज० गदहा के खियवले न पुने न पाप; अव० गदहा के खिआये से पुन न होई; पंज० खोते नूं खिलाने कन्ने पुन नयीं मिलदा।

गदहे को अरगजा लेप?—जब कोई व्यक्ति किसी मूर्ख व्यक्ति की काफ़ी इज्जत करता है तब कहते हैं। तुलनीय : असमी —बान्दर गलत् मुक्तार् माला; सं० किं मिष्टमान्नं खरशूकराणम्; अं० Do not throw pearls to swine.

गदहे पर जैसे एक मन वैसे दो मन—गदहे की पीठ पर थोड़े या ज्यादा भार का कोई विशेष अंतर नहीं होता। आशय यह है कि मूर्ख व्यक्ति को चाहे थोड़ा डाँटिए-फटकारिए या ज्यादा उस पर कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता। तुलनीय : मग० गदहवा के जइसन छौ मन ओइसन नौ मन; भोज० गदहा के जइसने नौ मन ओइसने छ मन। ब्रज० गधा पै जैसो एक मन, वैसोई दो मन।

गदहे से जीते नहीं, गदही के कान उमेठे—जब कोई व्यक्ति किसी सबल व्यक्ति का कुछ भी न बिगाड़ सके और ग़रीब या दुर्बल व्यक्ति को परेशान करे तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : बुंद० गदा गदइया से जीते नई, रेंगटा के कान मरोरे; ब्रज० गधा से तो बसियानी नाइ गधइयां के कान मरोरे; कौर० गधा तें पार न बसावे, गधइया के काण ऐंट्ठे; पंज० खोते की कुछ नयी आखया खोती दे कान मरोड़े।

गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति—कवियों की कसौटी गद्य है।

गधा कहे कुत्ता से रोई, जिसका काम उसी से होई—जो जिसका काम है वही उसको कर सकता है। आशय है कि प्रत्येक कार्य हर मनुष्य नहीं कर सकता।

गधा क्या जाने अदरक का स्वाद?—गदहा अदरक के स्वाद को नहीं समझता। अर्थात् मूर्ख व्यक्ति अच्छी वस्तुओं या अच्छे लोगों के महत्त्व को नहीं समझते। तुलनीय : कश्म० खर क्याह जानि ज़ाफरानुक स्वाद; पंज० खोते नूं की पता ए गांदे किदां नै।

गधा क्या जाने ज़ाफ़रान की क़द्र? - ऊपर देखिए। (ज़ाफ़रान = केशर)।

गधा खरसा में मोटा होता है - गदहा गर्मी (खरसा) में काफ़ी तंदुरुस्त हो जाता है। प्रतिकूल परिस्थितियों में जब कोई काफी प्रसन्नचित्त रहता है तब व्यंग्य में कहते हैं। कहते हैं कि गर्मी के मौसम में चरते समय जब गदहा पीछे की ओर देखता है और उसे घास नहीं दिखाई देती तो समझता है कि मैंने बहुत घास चर ली है, और यह सोच कर वह काफी प्रसन्न होता है तथा मोटा हो जाता है। लेकिन बरसात के मौसम में जब चारों ओर हरी-हरी घास दिखाई देती है तो वह सोचता है कि मैंने कुछ नहीं खाया और इसी कारण वह दुबला हो जाता है।

गधा खिलाए पाप न पुन्न—मूर्ख को खिलाना-पिलाना व्यर्थ है। तुलनीय : अव० गदहा खावाये पाप न पुन्नि।

गधा खेत खाय और जुलाहा मारा जाए—जब अपराध कोई और करे तथा दंड किसी और को मिले तो कहते हैं। तुलनीय : मरा० गाढवानें शेत खाल्ले, मारा गेला साळी; कन्न० सूठि य पाप सन्यसिगे।

गधा गया दुम की तलाश में कटा आया कान—जब कोई व्यक्ति लाभ-प्राप्ति का प्रयत्न करे और उलटे उसे हानि उठानी पड़ी तो कहते हैं।

गधा गिरे पहाड़ से और मुर्गी के टूटे कान—जब कोई असंभव बात या गप्प कहे तो कहा जाता है। यह भी एक प्रकार का ढकोसला है जैसे अमीर खुसरो के प्रसिद्ध ढकोसले हैं यथा—भैंस चढ़ी बबूल पर अरु लप लप गूलर खाय।

गधा घोड़ा एक भाव—दे० 'गदहा घोड़ा एक भाव।'

गधा तो कूड़े पर राज़ी—गदहा कूड़े (खर-पतवार) पर ही खुश रहता है। अर्थात् मूर्ख व्यक्ति साधारण वस्तु को ही पाकर काफ़ी खुश हो जाता है। तुलनीय : हरि०गधा तै कुरड़ियां ए पै रज्जै।

गधा धूल में लोट के राज़ी—गधा धूल में लोट कर ही प्रसन्न रहता है। अर्थात् गंदा आदमी गंदगी में ही रहता है। तुलनीय : राज० गधो ऊकरड़ी पर लुटण सूं राजी।

गधा धोए से बछड़ा नहीं होता—नीचे देखिए।

गधा धोने से घोड़ा नहीं बनता—गधा तो गधा ही रहेगा चाहे उसको कितना भी धोया जाय। मनुष्य की प्रकृति को सुधारना बहुत कठिन है। उन मूर्ख व्यक्तियों के प्रति कहते हैं जो पढ़ाने-लिखाने या समझाने से भी कुछ नहीं समझते। तुलनीय : राज० गधो धोया सूं घोड़ो को हुवैनी, गधेने लाख साबणसूं धोवो घोड़ो को हुवैनी; मरा० गाढ़वाला न्हायला घालून तें गोऱ्या होत नाहीं; मेवा० गदेड़ी गंगाजी जवा स उरण नीवे; पंज० खोते नूं नुआलने कन्ने ओ कोड़ा नयी बनदा।

गधा धोने से बछड़ा नहीं होता—ऊपर देखिए। तुलनीय : मल० काक्क कुळिच्चा ल् कोक्काकुमो?; अं० Wash a dog, comb a dog still a dog is a dog.

गधा न सही गधे का बच्चा ही सही—जो व्यक्ति किसी बात को सीधे न माने और उसी को घुमा-फिरा कर कहने से मान ले तो उसके प्रति कहते हैं।

गधा पीटे घोड़ा नहीं होता—(क) मूर्ख मारने से नहीं सुधरते। (ख) सुधारने या प्रयास करने से भी बुरी चीज़ बहुत अच्छी नहीं बन सकती या प्रकृति नहीं बदल सकती। तुलनीय : राज० गधे ने मार्‌यां सूं घोड़ो को हुवैनी।

गधा बरसात में भूखा मरे—बरसात का मौसम गदहे के लिए अनुकूल नहीं होता, इसलिए बरसात में उसे कष्ट होता है। जब अच्छे समय में भी किसी को कष्ट होता है तब व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

गधा मरे कुम्हार का, धोबिन सत्ती होय—(क) किसी आदमी के ऐसे काम में पड़ने पर कहते हैं जिसका उससे कोई भी संबंध न हो। (ख) व्यर्थ में कोई अपने को कष्ट में डाले तब भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० खोता मर्‌या कमैर दा सती होयी धोबिण; ब्रज० गदहा मरे कुम्हार को, धोबिनि सत्ती होय।

गधा मरे तो अच्छा हो—मूर्ख एवं अकर्मण्य व्यक्तियों के प्रति ऐसा कहते हैं क्योंकि उनसे कोई फ़ायदा नहीं होता बल्कि नुक़सान ही होता है। तुलनीय : पंज० खोता मरे ते चंगा है।

गधा रे गधा तू है कैसा, घोड़े जैसा, घोड़े जैसा—जब कोई छोटा, मूर्ख या नीच व्यक्ति अपने को मूर्खतावश बड़ा, बुद्धिमान या अच्छा समझे तो कहते हैं।

गधा समझता है सदा सावन ही रहेगा—मूर्ख व्यक्ति समझते हैं कि अच्छे दिन सदा बने रहेंगे। किंतु अच्छे और बुरे दिन आते-जाते रहते हैं। तुलनीय : राज० गधो जाणै सावण सदाही सुरगो रहसी।

गधा से पार न पावे गधी के कान उमेठे—दे० 'गदहे से जीते नहीं···'।

गधी भी जवानी में भली लगती है—जवानी में कुरूप लोग भी अच्छे लगते हैं क्योंकि जवानी में शरीर के सभी अंग पूर्ण रूप से विकसित हो जाते हैं और चेहरे पर चमक आ जाती है।

गधी मरे कुम्हार की धोबिन सत्ती होय—दे० 'गधा मरे कुम्हार का···।' तुलनीय : कौर० गधी मरे कुम्हार की, धोब्बण सत्ती हो।

गधे ऊपर वेद लदे, गधा फिर भी गधा—गधे पर ज्ञान की पुस्तकें लाद देने से वह विद्वान नहीं बन जाता। (क) मूर्ख व्यक्ति को कितना भी क्यों न उपदेश दिया जाय पर वह मूर्ख ही रहता है। (ख) अच्छे लोगों की संगति पाकर भी मूर्ख नहीं सुधरते। तुलनीय : अव० गदहा के ऊपर बेद लदे, गदहा का गदहा; पंज० खोते उते बेद लदे, तां वी खोते दा खोता।

गधे का खिलाया पाप न पुण्य—दे० 'गधा खिलाया पाप···'। तुलनीय : मल० नन्दि केट्टवनोटु दयवेण्ट; अं० Kindness is lost upon on ungrateful man.

गधे का पूत गधा—(क) जैसा बाप वैसा बेटा, अर्थात्

बाप के गुण या दुर्गुण बेटे में भी आ जाते हैं। (ख) प्राय: मूर्ख व्यक्ति के बच्चे भी मूर्ख ही होते हैं। तुलनीय : पंज० खोते दा पुत्तर खोता।

गधे की आँख में डाला घी, उसने कहा फोड़ ही दी—नीचे देखिए।

गधे की आँख में नोन दिया, उसने कहा मेरी आँखें फोड़ीं—(गदहे की आँख में नमक लाभकर होता है।) ऐसे कृतघ्न पर कहा जाता है जो उपकार को भी अपकार समझे। तुलनीय : हरि० गधे का आँख में घाल्या घी अख मिरी फोड़ दी; पंज० खोते दी अखा बिच पाया क्यो आखदा मेरी अख कड्डी अर्डी; ब्रज० गधायै दीयौ नोंन, गधानें कही मेरी आंखि फोरी।

गधे की दोस्ती, लात की सनसनाहट—आशय यह है कि बुरे या मूर्ख की दोस्ती से हानि ही होती है।

गधे की दोस्ती लातों का प्रसाद—ऊपर देखिए। तुलनीय : अव० गदहा के दोस्ती लातन का सनमनाहटा।

गधे की लात से गधा नहीं मरता—(क) जब दो समान शक्ति वाले व्यक्ति परस्पर लड़ते या झगड़ते हैं तब उनके प्रति कहते हैं। (ख) जब दो मूर्ख परस्पर लड़ते हैं तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० गधेरी लातसूं गधो को मरैनी।

गधे की लादी में नौ मन का अंतर !—गदहे पर लादे गए सामान में नौ मन का फ़रक़ नहीं पड़ सकता। छोटी या थोड़ी चीज़ में अधिक का अंतर कैसे पड़ सकता है ?

गधे के ऊपर बेद लदे गधा न बेदी होय—दे० 'गधे ऊपर वेद लदे ...'।

गधे के गोन में नौ हीरे का झोला—जब कोई मूर्ख व्यक्ति काफी दिखावा करता है, तब व्यंग्य में कहते हैं।

गधे के पास गाय बाँधी तो वह भी रेंकने लगी—गधे के समीप यदि गाय बाँधी जाय तो वह स्वयं भी रंभाना छोड़कर रेंगने लगती है। अर्थात् बुरे की संगति में रहकर भले व्यक्ति भी बुरे हो जाते हैं। तुलनीय : भीली—गधेड़ा ओले ढाही बांदी वे भोंकने लगी। पंज० खोते कौल गांयीं बनी ओ भी रौन लगी।

गधे के सर पर मुकुट—गधे के सिर पर मुकुट नहीं रखा जाता। (क) किसी अच्छी वस्तु के अनुपयुक्त स्थान पर या अपात्र के पास होने पर कहते हैं। (ख) जब कोई मूर्ख व्यक्ति अच्छी वेश-भूषा धारण कर लेता है तब भी व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : मेवा० गदेड़ी ने गजगाव; पंज० खोते दे सिर उत्ते मुकट; ब्रज० गधा के सिर पै मुकुट।

गधे को अंगूरी बाग—जब किसी व्यक्ति को ऐसी चीज़ प्राप्त हो जाय जिसके योग्य वह न हो तो व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : माल० गधा ने जाफरान री कई कदर; राज० गधो मिसरी सार कांई जाणै।

गधे को केसरी बूटी—ऊपर देखिए।

गधे को खिलाय पाप न पुन्न—दे० 'गदहा का खाया...'।

गधे को खुश्का—दे० 'गधे को अंगूरी बाग।' (खुश्का = भात)।

गधे को गधा ही खुजाता है—मूर्ख या दुष्ट व्यक्ति का साथ वैसा ही दुष्ट या मूर्ख व्यक्ति देता है। या ओछे व्यक्तियों की प्रीति ओछे लोगों से ही होती है।

गधे को गुलक़ंद—दे० 'गधे को अंगूरी बाग।' तुलनीय : राज० गधो मिसरी सार कांई जाणै।

गधे को चंदन—जब किसी व्यक्ति को कोई ऐसी वस्तु दी जाय या प्राप्त हो जाय जिसके महत्त्व को वह न समझता हो या जिसके योग्य वह न हो तो व्यंग्य में ऐसा कहते है।

गधे को जाफ़रान—ऊपर देखिए।

गधे को मिश्री—दे० 'गधे को अंगूरी बाग।'

गधे को हलुआ पूरी—दे० 'गधे को अंगूरी बाग।'

गधे घोड़े एक मोल—दे० 'गधा घोड़ा एक...'। तुलनीय : पंज० खोते कोड़े इक बराबर।

गधे माल खा गये—(क) जब किसी व्यक्ति के किए गए श्रम का लाभ मूर्ख या अयोग्य व्यक्ति उठा लेते हैं तो कहते हैं। (ख) जब किसी व्यक्ति के लाभप्रद कार्य को मूर्ख व्यक्ति नष्ट कर देते हैं तब भी ऐसा कहते हैं।

गधे सार के बाह लिए—अर्थात् सभी काम करके देख लिए। जब किसी व्यक्ति को किसी भी कार्य में सफलता नहीं मिलती और वह हार मानकर बैठ जाता है तथा जब कोई व्यक्ति पुन: उसे किसी कार्य को करने को कहता है तब वह ऐसा कहता है।

गधे से जीता न जाए, गधी के कान मरोड़े—दे० 'गदहे से जीते नहीं...'।

गधे से जीते ना गधी के कान मरोड़े—दे० 'गदहे से जीते नहीं...'।

गधों की बातें, गीदड़ों की लातें—मूर्खों की बेतुकी बातों पर कहते है।

गधों के कान गधे ही खुजाते हैं—दे० 'गधे को गधा

ही…'।

गधों के खाए पाप न पुण्य— दे० 'गदहा ने खाया पाप…'।

गधों के सिर सींग नहीं होते—नीचे देखिए।

गधों के सींग नहीं होते— मूर्खों के प्रति कहते हैं कि गधों के कोई सींग नही होते हैं जो तुम्हारे नहीं हैं। अर्थात् तुम भी गधों जैसे ही हो। तुलनीय : राज० गधांरे किसा सींग होवैं; पंज० खोत्तयां दे सिर सीग थोड़े हुंदे ने; ब्रज० गधान के कहा सीग होंयें।

गधों को मिठाई और सुअरों को सुगंध—गधे के लिए मिठाई और शूकर के लिए इत्र की क्या आवश्यकता। छोटे या नीच के लिए बड़ी या अच्छी चीज़ की क्या ज़रूरत? आशय यह है कि बुरे लोग बुरी चीज़ों में ही प्रसन्न रहते है। तुलनीय : सं०कि मिष्टान्नं खरशूकराणम्; पंज० खोत्तयां दी मठाई ते सूरां दी खशबू।

गधों ने खाया खेत, पाप हुआ न पुण्य —दे० 'गदहे का खाया पाप…'।

गधों से रथ चले तो घोड़ा कौन खरीदे—नीचे देखिए।

गधों से हल चले तो बैल कौन बिसाहै?— अयोग्य व्यक्तियों मे यदि काम चले तो योग्य की कौन पूछे? (बिसाहे - ख़रीदे)। तुलनीय : अव० गदहन से काम चल जाय तो बैल कउन बेसाहे; पंज० खोत्ते हल बांदे ते टगे कौन खरीदे।

गनेस के ब्याह में सौ जोखों— बुरे या बदशक्ल के ब्याह मे अनेक बाधाएँ आती हैं। तुलनीय : अव० कानी के ब्याहन में सौ जोखौं; तेलु० बिना यकुनि पेंडिलकि वेय्यि विघ्नालु।

गन्ने से गडेरी मीठी गुड़ से मीठा राला; भाई से भतीजा प्यारा सबसे प्यारा साला—अर्थात् संबंधियों में साला सबसे प्रिय होता है। तुलनीय : पंज० गन्ने नालों गुल्लियां मिठियां ते गुड़नालों मिठीरो (रस)।

गप्प भी हाँको तो ऐसी हाँको एक बिता का खरबूजा नौ बिता की फाँकी—एक बालिश्त के ख़रबूज़े की नौ बालिश्त लंबी फाँक। बहुत अधिक गप्पें मारने वालों के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : माल० मार गया गप्प, बारे हाथ री काकड़ी ने तेरे हाथ रो बीज।

गप्पी आदमी और लंबा धागा—लंबी-चौड़ी बातें करने वाले व्यक्ति से बचकर रहना चाहिए क्योंकि वह कभी-न-कभी धोखा अवश्य देता है तथा लंबा धागा भी कभी कभी ऐसा उलझता है कि सुलझाए नही सुलझता! बुरे आदमियों की संगति से बचने के लिए ऐसा कहते है। तुलनीय : गढ़० छुंयाल आदिम अर लब्बो धागो अलजी जांद।

गप्पी का पूत गपबकड़—जैसा बाप होता है वैसा ही बेटा भी होता है। तुलनीय : पंज०गपोड़े दा पुतर भी गोपोड़ा हुंदा है।

गप्पी के नौ हल चले, खेत में एक भी नहीं—उन झूठ बोलने वालों के प्रति कहते हैं जो कि निर्धन होने पर भी अपने को बहुत धनवान बताते हैं।

गप्पी बड़ा या खुर्राट—चालाक (खुर्राट) और गप्पी एक जैसे खतरनाक होते हैं।

गफ्फा या घफ्फा—सबसे अंत में खाने वाले के प्रति कहते हैं, क्योंकि अंत में भोजन या तो बहुत अधिक (गफ्फा) बचता है या बिलकुल ही नही (घफ्फा)।

ग़म खाना और कम खाना अच्छा है—क्रोध को दबा लेने या शान्त कर लेने से आदमी लड़ाई-झगड़े से बच जाता है और कम भोजन करने से स्वास्थ्य ठीक रहता है जिस से उसे डाक्टर के पास नही जाना पड़ता। तुलनीय : अव० गम खाय कम खाय हाकिम हकीम के पास कबहूं न जाय।

ग़म खाना बड़ी बात है— क्रोध न करना या दुख सहना बहुत लाभदायक और बुद्धिमानी है।

ग़म न हो तो बकरी ख़रीद— जिसको कोई चिंता न हो और जो मुसीबत में पड़ना चाहे उसे बकरी ख़रीद लेनी चाहिए। बकरी पाल लेने से आदमी को तरह-तरह की परेशानियाँ झेलनी पड़ती है। अर्थात् बकरी पालना ठीक नहीं है।

गया गाँव जहं गोंड महाजन—अर्थात् जिस गाँव में ओछे व्यक्ति या छोटी जाति के लोग ही प्रधान माने जाते हैं उस गाँव का पतन निश्चित है। तुलनीय : भोज० गइल गाँव जेंह गोंड महाजन; पंज० उह पिंड गया जिये गोंड माजन होण।

गया गाँव जहँ ठाकुर हँसा, गया रूख जहँ बगला बसा; गया ताल जहँ उपजी काई, गया कूप जहँ भई अथाई—उस गाँव का पतन हो जाता है जिसका प्रधान (ठाकुर) हँसोड़ हो, उस वृक्ष का नाश हो जाता है जिस पर बगुले निवास करते हैं, जिस ताल में काई पैदा हो जाती है वह ताल भी बरबाद हो जाता है तथा वह कुआँ भी ख़राब हो जाता है जिसकी तली बैठ जाती है।

गया धन किसने पाया—खोया हुआ धन दुबारा नही मिलता। तुलनीय : पंज० गवाचे दा पैहा मुड़ा के नयीं मिलदा।

गया धन मिचोतरा माँगे—जो धन चोरी गया वह तो

गया ही, उसे ढूँढ़ने के लिए और धन (पिचोतरा) माँग रहे हैं। अर्थात् गुम हुई वस्तु के विषय में अधिक छान-बीन के बजाय शांत रहने में ही फ़ायदा है वरना और हानि उठानी पड़ती है। तुलनीय : हरि० गया धन पिचोतरा मांग्गै; ब्रज० गयो धन पचोत्तरा मांगै।

गया पिंडे, प्रयाग मुंडे, काशी हुंडे -गया जाने पर पिंडदान, प्रयाग में जाने पर मुंडन और काशी जाने पर परिक्रमा करने का नियम है।

गया पेड़ जब बकुला बैठा, गया गेह जब मुड़िया पैठा, गया राज जहँ राजा लोभी, गया खेत जहँ जामी गोभी—बगुले पक्षी के बैठने से पेड़ नष्ट हो जाता है, मुड़िया (संन्यासी) के घर में बार-बार आने-जाने से घर नष्ट हो जाता है, लोभी राजा होने से राज्य नष्ट हो जाता है, और खेत में गोभी नामक घास पैदा होने से खेत नष्ट हो जाता है।

गया मरद जो खाय खटाई, नई नारि जो खाय मिठाई—मर्द के लिए खटाई और स्त्री के लिए मीठी वस्तुएं हानिकारक हैं। तुलनीय : भोज० गइल मरद जे खाय खटाई गइल नार जे खाय मिठाई; राज० आदमी ने खटाई औरत ने मिठाई बगाड़े; अव० गवा मरद जौन खाएन खटाई, गई मेहरारू जौन खाएन मिठाई; पंज० बंदे नूं खटाई माड़ी ते जनानी नूं मिठाई माड़ी।

गया मर्द जिन खाई खटाई, गई नारि जिन खाई मिठाई- ऊपर देखिए।

गया माघ दिन 29 बाकी—दे० 'गइल माघ दिन···'। तुलनीय : भोज० गइल माघ दिन ओनतीस बाकी; मैथ० गेल माघ दिन उनतीस बाकी।

गया वक़्त आता नहीं- नीचे देखिए।

गया वक़्त फिर हाथ नहीं आता- बीता हुआ समय या अवसर फिर नहीं लौटता। तुलनीय : मरा० गेलेली वेल पुन्हा हातीं लागत नाही; अव० गवा समय फिर नाही लौटत; हरि० बीत्ता बखत के फेर हग्यावे सै, पंज० गैदा बखत मड़िए नयीं आंदा।

गया वक़्त मिल जाय तो और क्या चाहिए—बीता समय फिर से मिल जाय तो और कुछ नहीं चाहिए किन्तु समय आगे ही बढ़ता है पीछे नहीं लौटता। समय के प्रति सावधान रहना चाहिए क्योंकि वह जाकर फिर नहीं लौटता। जब कोई किसी असंभव चीज़ को प्राप्त करने की कामना करता है तो कहते हैं। तुलनीय : भीली—वली न वार आवे ते चावे हूं; पंज० गैदी बैला आयी जा तै और के चाहिदा।

गयो जमाना तीर को अब आई बन्दूक—(क) ज़माना बदलता रहता है। (ख) यदि कोई गुज़रे ज़माने की वस्तु का प्रयोग करता है तो भी कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० गयौ जमानों तीर कौ अब आई बन्दूक।

गरज अपनी आप सों रहिमन कही न जाय—अपनी ग़रज़ (आवश्यकता) अपने आप से नहीं कही जाती। यानी सबको अपनी आवश्यकता दूसरों से कहनी पड़ती है।

गरज का बावला अपनी गावे—खुदग़रज़ आदमी को अपनी ही धुन रहती है। तुलनीय : माल० गरज दिवानी हुवै; अव० गरज बावली होत है।

गरज गधे को बाप कहलाती है—आशय यह है कि आवश्यकता पड़ने पर मूर्ख की भी खुशामद की जाती है। तुलनीय : मेवा० गरज बड़ी बावली सो गधा ने बाप करे; पंज० मौके ते खोते नूं भी पिओ बनाना पैंदा है।

गरजता बादल बरसता नहीं- जो बहुत लंबी-चौड़ी बातें करते हैं वे कुछ भी नहीं कर पाते। तुलनीय : छतीस० जौन गरजथे, तौन बरसै नहिं; असमी—यत गज्जै, तत नबर्षे; सं० वह्वारम्भे लघुक्रिया; पंज० जिहड़े रौला पांदे नैओ कुछ नयीं करदे; अं० Barking dogs seldom bite.

गरजता मेघ बरसता नहीं- ऊपर देखिए।

गरजता है सो बरसता नहीं—दे० 'गरजता बादल···'।

ग़रज़ दीवानी होती है—ग़रज़मंद आदमी पागलों की तरह काम करता है या ग़रज़ आदमी को पागल बना देती और वह अपने स्वार्थ के सामने भला-बुरा कुछ नहीं सोच पाता। तुलनीय : राज० गरज दिवानी हुवै; भीली—गरज बावली।

गरजने वाला बरसता नहीं—दे० 'गरजता बादल···'।

गरजने वाले बरसते नहीं—दे० 'गरजता बादल···'।

ग़रज पड़े दुश्मन की मां को मां कहना पड़ता है—नीचे देखिए

ग़रज़ पर गधे को भी बाप कहना पड़ता है—अपना काम निकालने के लिए मूर्ख की भी खुशामद करनी पड़े तो कहते हैं। तुलनीय : भीली—गरजे गदेड़ा गदे ए बाप केवी हैं; राज० गरज गधे ने बाप के वावै; पंज० मुसीबत बिच खोते नूं भी पिओ बनाना पैंदा है।

ग़रज़ पूरी जहान पराया- स्वार्थी व्यक्तियों के प्रति कहते है जो स्वार्थ सिद्ध हो जाने के बाद भूल जाते हैं। तुलनीय : माल० गरज नीकली नै लोग परायो।

ग़रज़ बड़ी कि अक़्ल—आवश्यकता पड़ने पर मूर्खों की

भी खुशामद करनी पड़ती है। जब कोई विद्वान या चतुर पुरुष किसी मूर्ख की खुशामद या मिन्नत करे तो उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० चाह बड़ी कि चतुरें बड़ी।

ग़रज़ बावली—दे० 'ग़रज़ दीवानी होती है।' तुलनीय : ब्रज० गरज बावरी।

ग़रज़ बावली है, आदमी नहीं—ग़रज़ ही आदमी को पागल कर देती है। स्वार्थ के लिए ही मनुष्य नीच से नीच और हास्यास्पद कार्य कर बैठता है। तुलनीय : भीली—गरज बावली है, आदमी बावलो नी है।

ग़रज़ बावली होती है—दे० 'ग़रज़ दीवानी होती है।'

ग़रज़ बुरी होती है—दे० 'ग़रज़ दीवानी होती है।'

ग़रज़मंद करे या दरदमंद—दूसरों की मदद या ग़रज़मंद व्यक्ति करता है या दयालु।

ग़रज़मंद गधे को भी बाप कहता है—दे० 'ग़रज़ पर गधे को भी···'।

ग़रज़मंद मारा जाय—ग़रज़मंद आदमी को सभी की भली-बुरी सुननी पड़ती है, क्योंकि वह अपनी मजबूरी या असमर्थता के कारण दूसरों का विरोध नही कर सकता।

ग़रज़मंद रूखी चबाय—ग़रज़मंद को सब तरह की असुविधाएँ और आपदाएँ सहनी पड़ती हैं। जब कोई ग़रज़मंद व्यक्ति अपनी ग़रज़ के लिए सबकी खरी-खोटी सहे तो उसके प्रति ऐसा कहा जाता है। तुलनीय : गढ़० चाड़ी कू बाड़ी खाण पड़द।

ग़रज़ मिटी, गूजरी नटी—ग़रज़ पूरी होते ही गूजरी इनकार कर देती है। अर्थात् स्वार्थी व्यक्ति स्वार्थ सिद्ध होते ही मुँह फेर लेते हैं। तुलनीय : भीली—गरज मटी ने गूजरी नटी; राज० गरज मिटी गूजरी नटी।

ग़रज़ मिटी, हम कौन और तुम कौन ?—स्वार्थ सिद्ध हो गया, तुम से अब हमारा क्या संबंध ? स्वार्थी व्यक्ति मतलब हल हो जाने पर जब सूरत भी नही दिखाते तो उनके प्रति व्यंग्य मे कहते हैं। तुलनीय : पंज० मुसीबत टली तूं कौन मैं कौन।

ग़रज़ में गधे को भी बाप कहना पड़ता है—दे० 'ग़रज़ पर गधे को···'।

ग़रज़ रहे तक नौकर, नहीं तो मारे ठोकर—स्वार्थ रहने तक ही नौकर, स्वार्थ पूरा होते ही ठोकर मारो। (क) नौकर-मालिक का संबंध स्वार्थ सिद्ध होने तक ही रहता है। (ख) स्वार्थियों के प्रति भी कहते है जो कि मतलब होने तक नौकरों के समान दीन बने रहते हैं और मतलब हल हो जाने पर बात भी नही करना चाहते। तुलनीय : भीली—गरज जतरे नौकर, गरज मटे ने दियो ठोकर।

ग़रज़वंत को अकल नहीं—(क) जब कोई अपनी ग़रज़ के लिए अपना भला-बुरा न देखे तो यह लोकोक्ति कही जाती है। (ख) जब कोई अपने काम के सामने दूसरे की हानि-लाभ का ध्यान न रखे तब भी ऐसा कहते हैं।

ग़रज़ सबसे बड़ी—ग़रज़ के सामने कोई बात नहीं दीखती। ग़रज़ के लिए मनुष्य भला-बुरा सब कुछ करने को तैयार हो जाता है। तुलनीय : राज० गरज बड़ी।

ग़रज़ू किरतनिया अपने तेले नाचे—आवश्यकता पड़ने पर व्यक्ति दूसरे के कार्य को भी अपने पैसे से कर या करा देता है।

गरजे सो बरसे नहीं, जो बरसे वो चुपचाप—जो अधिक गरजते हैं वे बरसते नही और जो बरसते हैं वे चुपचाप आते है तथा बरस कर चले जाते हैं। जो व्यक्ति बातें बहुत करते हैं वे काम कुछ नही करते तथा जो गंभीर रहते हैं वे चुपचाप सभी काम कर लेते है। तुलनीय : राज० गरजै सो बरसै नही बरसे घोर अंधार; पंज० गरजने वाले बरसदे नयीं बरसने वाले रौला नही पांदे।

गरब करते रावन हारे—गर्व करने मे रावण को हार खानी पड़ी। अर्थात् गर्व करने वाले को सदा पराजय का मुँह देखना पड़ता है।

गरब का सिर नीचा—घमंड करने वाले को अपमानित होना पड़ता है। तुलनीय : पंज० घमंडी दा सिर निचा।

गरब कियो रतनाकर सागर, नीर कर डारो खारो; गरब कियो चकवा चकवी रैन बिछोहा पारो—रत्नाकर सागर ने गर्व किया था तो उसका जल खारा हो गया और चकवा-चकवी को अपने प्रेम पर बहुत गर्व था तो उनको भी रात का विछोह मिला। आशय यह है कि गर्व करने वाले का सिर नीचा हो जाता है चाहे वह कितना भी महान क्यों न हो।

गरम खाओगे तो मुँह जले—स्वाद के लिए बहुत गरम भोजन करने पर मुँह जल जाता है। (क) सुख भोगने के लिए दुःख भी सहना पड़ता है। (ख) जल्दबाज़ी करने से हानि हो जाती है। तुलनीय : भीली—ऊनूं खाओ तो मूडूं बाले; पंज० तत्ती खान नाल मूं सड़ जांदा है।

गरम खाय ठंडा नहाय—भोजन ताजा (गर्म) तथा स्नान ठंडे जल से करना चाहिए। तुलनीय : पंज० तत्ता खाओ ठंडे कने नाओ।

गरम थूक ठंडा थूक—ऐसे अवसर पर कहते हैं जब कोई नौकर अपने मालिक की नौकरी छोड़ देने के लिए कोई

बेहाना ढूंढ़े ।

गरम पानी सर पर ही गिरता है—स्नान के लिए गर्म किया पानी पहले सिर पर ही गिरता है। यदि उसे देखा न जाय कि कितना गर्म है तो अपने सिर के जलने का ही भय होता है। स्वयं की भूल से हानि हो जाने पर या कष्ट पाने पर कहते हैं। तुलनीय : भीली—ऊनो पांणी मूंडी मार; पंज० तत्ता पाणी सिर उत्ते ही पैंदा है।

गरम लोहे को ठंडा लोहा काटता है– क्रोधी प्रकृति के व्यक्तियों का क्रोध शांत स्वभाव वाले व्यक्ति शांत कर देते हैं। तुलनीय : मैथ० गरम लोहा के ठंढा लोहा काटि दैअए; भोज० गरम लोहा के ठंढा लोहा काटे ला; पंज० तत्ते लोहे नूं ठंडा लोहा बडदा है।

गरमी खावे अपने को, नरमी खावे और को—क्रोध अपने को नष्ट करता है और धैर्य दूसरे को।

गरमी जाय जीरे से सरदी जाय हीरे से—ऐसा वैद्य लोग कहते है। ज़ीरा शीतल है और हीरा गर्म। तुलनीय : भोज० गरमी जाला जीरा से सरदी जाला हीरा से; ब्रज० गरमी जाय जीरेते, सरदी जाय हीरे ते।

गरमी सब्जा रंगों से और घर में भूनी भंगा नहीं – पैसा एक भी नही है और मन सुंदर वेश्याओं पर जाता है। शक्ति से अधिक ख़र्च करने या शक्ति से बाहर कार्य करने वाले पर कहा जाता है। (सब्जा = जवानी की उम्र में दाढ़ी-मूंछ के वे बाल जो उगने शुरू होते हैं)।

ग़रीब आदमी चंडाल बराबर— ग़रीब व्यक्ति समाज में सबसे तुच्छ समझा जाता है उसकी कोई इज्ज़त नही करता।

ग़रीब आदमी थोड़े ही में सन्तुष्ट हो जाता है--संपन्न व्यक्ति को बहुत लालच होता है पर ग़रीब को जो मिलता है वह उसी में संतोष कर लेता है। तुलनीय : मल० कुन्जिपक्षिक्कु कुन्जि कुटु, तनिक्कोत्तु तनिक्कुन्जु; पंज० माडा बंदा मासा जिहे पैंहे नाल खुस हो जांदा है; अं० A little bird wants a little nest.

ग़रीब का दाता राम—ग़रीब को देने वाला भगवान है। जिसको कोई कुछ नही देता उसको भगवान पेट भरने के लिए कुछ-न-कुछ दे ही देता है तुलनीय : राज० गरीब रो बेली परमेसर; पंज० माड़े दा राखा रब; ब्रज० गरीब कौ दाता राम।

ग़रीब का लड़का स्वर्ग में भी बेगार करे—निर्धन व्यक्ति को सभी जगह परिश्रम करना पड़ता है। जब कोई व्यक्ति निर्धनता के कारण किसी अच्छे स्थान में भी दुःख भोगे तो कहते हैं।

ग़रीब का सोना भी पीतल—ग़रीब की अच्छी वस्तु को भी लोग बुरा कहते हैं। तुलनीय : मल० एळियवन् परिक्कुन्नतु इलक्करि; पंज० माड़े दा सोना भी पितल; अं० The Poor man's shilling is but a penny.

ग़रीब का हिस्सा सब मारें, पर राम न मारे—ग़रीब और कमज़ोर के हिस्से का धन सभी लोग दबा लेते हैं किंतु ईश्वर उसको किसी-न-किसी ढंग से दे ही देता है। ग़रीब की सहायता ईश्वर करता है। तुलनीय : भीली—मजूरया नी मजूरी हारा भांजे पण राम नी भांजे; पंज० माड़े दा हिस्सा मारे मार लेंदे नै पर रब इदां नयीं करदा।

ग़रीब की जवानी, गरमी की धूप और जाड़े की चांदनी अकारथ जाय—इन तीनों का उचित उपयोग नही होना।

ग़रीब की जवानी बहता पानी–जिस तरह बहता पानी सदैव बहता रहता है उसी प्रकार ग़रीब व्यक्ति की जवानी सदा कार्य करते ही व्यतीत हो जाती है, उसे कभी आराम नही मिलता।

ग़रीब की जोरू और उमदा खानम नाम—('उमदा खानम' नाम बेगमों का रक्खा जाता है)। औक़ात और स्तर से बहुत बढ़ कर नाम होने पर कहते हैं।

ग़रीब की जोरू सब की भाभी—कमज़ोर या निर्धन व्यक्तियों को सभी परेशान करते है। तुलनीय : हरि० ह्रीणे की लुगाई सबकी भाभी ; मल० धनमिल्लात पुरुषनुम् मणमिल्लात पुष्पवुम शारि; भोज० अबरा क मेहरारू गाँव भर क भौजाई ; तेलु० बीदवाडि पेंड्लां बदरिकी वदिना; मग० दुबरा की मेहरी पूरे गांव की सरहज. निमाड़ी — गरीब की लुगाई, सबकी भाबी; गढ़० गरीब की लुगाई, जगत की भाभी; पंज० माड़े दी बोटी सारियां दी पाबी।

ग़रीब की जोरू सबकी भाभी, अमीर की जोरू सबकी दादी—ग़रीब व्यक्ति को सभी लोग परेशान करते हैं और संपन्न व्यक्ति की सभी इज्ज़त करते हैं। तुलनीय : अव० निमरे के मेहरारू सगरिउ गाँव कै भउजाई; कौर० माड़े की जोरू सबकी भाब्बी, ठाडे की जोरू सबकी दादी; पंज० माड़े दी बोटी सारिया दी पाबी चंगे दी बोटी सारियां दी दादी।

ग़रीब की बछिया को बोलना मना–अर्थात् ग़रीब को सभी तंग करते हैं। तुलनीय : कौर० गरीब की बछड़ी कू रांभना कौथ; पंज० माड़े दी टगी नूं चुगना मनां।

ग़रीब की बहू सबकी सरहज— अर्थात् ग़रीब पर सभी

रोब दिखाते हैं। तुलनीय : भोज० अबरा के मेहरारू गाँव भर के भउजाई।

ग़रीब की बीबी गाँव भर की भाभी—दे० 'ग़रीब की जोरू ...'।

ग़रीब की भैंस ब्याई तो सब बर्तन लेकर दौड़े— ग़रीब को सभी चूसते या सताते हैं। या ग़रीब की संपत्ति का सभी लोग उपयोग करते हैं।

ग़रीब की मिट्टी भी भारी होती है—मरने के बाद गरीब का दाह-संस्कार भी दुष्कर होता है। वह समाज के लिए एक अभिशाप होता है और उसकी कोई सहायता नही करना चाहता। तुलनीय : मग० गरीब के मिट्टी भारी होवे है; भोज० गरीब क मटियो भारी होला।

ग़रीब की लुगाई, जगत की भौजाई—दे० 'ग़रीब की जोरू...'।

ग़रीब की लुगाई, सबकी (या सब गाँव की) भौजाई—ग़रीब आदमी को सभी लोग परेशान करते हैं और उससे लाभ उठाते हैं। तुलनीय : गढ़० दुबला की सवैण सबकी बौ; राज० गरीबरी जोरू सगळांरी भाभी।

ग़रीब की हाय बुरी है—ग़रीब को सताना ठीक नही है। उसका शाप अवश्य पड़ता है। तुलनीय: मरा० गरिबांचा तळतळाट वाईट; राज० गरीबरी हाय खोटी; अव० गरीब के हाय बुरी होत है; पंज० माड़े दी हा पैंड़ी हुंदी है।

ग़रीब की हाय, सरबस खाय—जिस पर ग़रीब की हाय या शाप पड़ जाता है उसका सर्वस्व नष्ट हो जाता है। ग़रीबों को न सताने के लिए ऐसा कहा जाता है। तुलनीय : पंज० माड़े दी हा, मारा खा जांदी है।

ग़रीब के तीन नांव लूचा पाजी बेइमान—अर्थात् ग़रीबी मे व्यक्ति का ईमान घट जाता है और वह निंदनीय कर्म करने को भी तत्पर हो जाता है। तुलनीय : मरा० गरीबा तुझे नावें तीन असती खोटा, पाजी, विश्वासघाती; हरि० खोटे तेरे तीन नाम परसी, परसा, परसराम; पंज० माड़े तेरे तिन नाँ नंगा, लुच्चा बेईमान।

ग़रीब को भगवान बचाए—ग़रीब मनुष्य को भगवान ही बचाता है। ग़रीब मनुष्य पर सभी अत्याचार करते है केवल ईश्वर ही उसे बचाता है। तुलनीय : राज० गरीबांरा भगवान है; पंज० माड़े दा रब राखा (माडे नूं रब बचाए)।

ग़रीब को सब कोई कहते हैं, बड़े आदमी को कोई नहीं कहता—(क) ग़रीब और असमर्थ होना ही दोषी होने के लिए पर्याप्त है, 'समरथ हूं नहिं दोष गुसाईं।' (ख) थोड़ी ग़लती पर भी ग़रीब सताये जाते हैं पर अमीर बड़ी ग़लती पर भी नहीं। तुलनीय : अव० गरीब मनई का सबै कहत हैं, बड़ मनई का केउ नाहीं कहत।

ग़रीब को स्वर्ग में भी बेगार—ग़रीब आदमी स्वर्ग में भी विश्राम नहीं कर पाता उसे वहाँ भी बेगार करनी पड़ती है। अर्थात् जब कोई ग़रीब व्यक्ति किसी अच्छे स्थान पर पहुँच कर भी सुख न पाए और लोग उसे वहाँ भी सताने लगें तो उसके प्रति सहानुभूति से कहते हैं। तुलनीय : राज० ढेढने सुर्ग में बिमांई कोनी।

ग़रीब घर में नून कलेवा—भोजन के अभाव में निर्धन व्यक्ति नमक को फाँककर जल पी लेते हैं। अर्थात् (क) अभाव में जो मिल जाय वही काफ़ी है। (ख) साधारण वस्तु ही ग़रीब के लिए बहुत बड़ी चीज़ होती है। तुलनीय : भोज० घटला घरे नूनें खरमेटाव।

ग़रीब तेरे तीन नाम, झूठा पाजी बेईमान—दे० 'गरीब के तीन नाँव...'।

ग़रीब नहीं कुछ करेगा तो उसका रोआँ करेगा—ग़रीब की आह अवश्य पड़ती है।

ग़रीब ने की खेती, न बोई न उपजी—(क) ग़रीब चाहे कितनी भी मेहनत से काम करे, किन्तु उसको सब यही कहते हैं कि तुमने कुछ नही किया। कोई बड़ा आदमी जब किसी ग़रीब के अच्छे-भले काम में दोष निकाले या क़द्र न करे तो उसके प्रति ऐसा कहते हैं। (ख) निर्धन मनुष्य धन न होने के कारण किसी काम में भी सफलता प्राप्त नही कर पाता। तुलनीय : गढ़० गाडा डूमको गायूं न बजायूं।

ग़रीब ने खेती की तो ओले पड़े—दे० 'कंगाली में आटा गीला।'

ग़रीब ने रोज़े रखे, दिन भी बड़े हुए—ग़रीब के लिए सभी (भगवान भी) दुखदाई होते हैं। (रोज़े में दिन-भर भूखा-प्यासा रहना पड़ता है, अतः दिन जितना ही बड़ा होगा, उतना ही कष्ट होगा)। तुलनीय : मरा० गरिबानें वरत केलें तर दिन मानच वाढले।

ग़रीब पर सभी दो बोरे अधिक लादते हैं—(क) सीधे पशु पर प्रत्येक व्यक्ति अधिक बोझ लादता है क्योंकि वह चुपचाप बोझ ढो ले जाता है। सीधे मनुष्य को जब लोग तंग करते हैं तो उनके प्रति कहते है। (ख) असमर्थता के कारण ग़रीब को सभी परेशान करते हैं। तुलनीय : राज० गरीब माथे दोय गूणती वत्ती लादे; अं० All lay load on the willing horse.

ग़रीब से नां परोसवाई, धनी से नां भरवबाई—ग़रीब

आदमी के पास हमेशा किसी भी चीज का अभाव ही रहता है इसलिए वह किसी चीज का थोड़ा ही इस्तेमाल करता है, अत: उसे यदि किसी यज्ञ में कोई चीज़ परोसने (बाँटने) के लिए दे दी जाय तो वह थोड़ा-थोड़ा ही लोगों को देगा। धनी व्यक्ति अपनी संपन्नता के कारण दूसरे की मजबूरी को समझता नहीं है, इसलिए यदि उसके पास कोई भरववाने के लिए जाय तो वह मनमौजी ढंग से कुछ उलटा-सीधा बतला देगा। (जबकि भरववाने वाला काफी परेशानी में रहता है)। इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर उक्त लोकोक्ति कही जाती है।

ग़रीब सोवे धनी रोवे—ग़रीब आदमी चैन की नींद सोता है क्योंकि उसके पास कुछ रहता ही नहीं जिससे कि वह परेशान हो। धनी अपना स्तर बनाए रखने के लिए अपनी संपत्ति की रक्षा के लिए रोता (परेशान रहता) है। तुलनीय : अव० चिथड़, गुद्दड़ सोवें, मर्जादा बैठे रोवें; पंज० माडा बंदा सोवे चंगा बैठा रोवे।

गरीबी में आटा गीला—दे० 'कंगाली में आटा गीला।' तुलनीय : गढ़० घर निछदी आटो गीलो, टीकू मांगे दौड़े च होणी; मल० आपत्तु वरुम्बोळ कूट्टचोटे; अं० Misfortune seldom comes alone.

ग़रीबों की आहें मोटी होती हैं, बाहें नहीं—ग़रीब अपने सताने वाले का बल से तो कुछ नही कर सकता, किन्तु उसकी आह के कारण सताने वाले का बुरा अवश्य होता है। तुलनीय : पंज० माड़े बंदिया दी हा मोटी हुंदी है बाहें नयीं।

गरुड़ के गोरैया—गरुड़ जैसे पूज्य और शक्तिशाली पक्षी की संतान गोरैया जैसी छोटी-सी चिड़िया। अर्थात् जब किसी बड़े आदमी की संतान नीच या ओछी हो तो कहते है। तुलनीय : गढ़० गरुड़ का थेंदुड़ा।

गरेबां में मुंह डालो—अपनी असलियत को देखो। जब कोई व्यक्ति बहुत लम्बी-चौड़ी बातें करता है तब उसके प्रति कहते हैं।

गर्चे क़ंदीले-सखुन को मढ़ लिया तो क्या हुआ, काँच की तो हैं वही अगले बरस की तीलियाँ—(क) जब कोई पहले कही गई किसी बात को बदल कर नए ढंग से कहे तो कहते हैं। (ख) किसी पुराने कवि की उक्ति को जब नए शब्दों में कहते हैं तब भी ऐसा कहा जाता है।

गर्ज बन्दे नूं गर्ज आन पैंदी गलियाँ दे ककख चुगांवदे—मतलब पड़ने पर सब कुछ करना पड़ता है या मतलब पड़ने पर छोटा-से-छोटा काम भी करना पड़ता है।

गर्ज़ू नचनियाँ बिना तेल नाचे—अपनी गरज़ पर सभी बहुत दीन या सज्जन बन जाते हैं। तुलनीय : भोज० गर्ज़ू नचनियां बिन तेल के नाचे।

गर्तवृति मोघाविभजन न्याय:—गड्ढे में ही रहने वाली गोधा (एक प्रकार की छिपकली) के मांस को बाँटने का न्याय। असंभाव्यता के सम्बन्ध में इसका उदाहरण दिया जाता है।

गर्म खाय, ठंडा नहाय, ओस में बसं, उसके सामने वैद बैठा हँसे—बहुत गर्म खाना खाने से, बहुत ठंडे पानी से नहाने से और ओस में सोने से रोग पैदा होते हैं, इसलिए वैद्य को बुलाना पड़ता है।

गर्म खाय भर नींद सोवे, ताकर दुखवा बन-बन रोवे—ताज़ा भोजन करने तथा नींद भर सोने से, रोग नहीं होता। तुलनीय : मग० तातल खाये भर नींद सोवे ताकर दुखवा बन-बन रोवे; भोज० जरते खाय भर नीन सोवे ओकर दुख बन-बन रोवे।

गर्म तवे पर चूतड़ रखे तो भी झूठ बोले—गर्म तवे पर बैठा दिया तो भी सच नहीं बोलता। जो व्यक्ति सदा झूठ बोले उसके प्रति कहते है।

गर्म नहाय, ठंडा खाय, ओस बचा के सोवे, उसके पिछवाड़े वैद बैठा रोवे—गरम पानी से नहाने से, ठंडा खाना (जो बहुत गर्म न हो) खाने से और ओस से बचकर सोने से मनुष्य रोगी नहीं होता, अत: चिकित्सक को नहीं बुलाना पड़ता।

गर्म पानी भी आग बुझावे—आग गर्म पानी से भी बुझ जाती है। तात्पर्य यह है कि (क) अपने आदमी रूखे स्वभाव के भी हों तब भी समय पर वही काम आते हैं। (ख) स्वभाव किसी भी परिस्थिति में बदला नहीं जा सकता। तुलनीय : भोज० घीकलो पानी भी आग बुझावे; पंज० तत्ता पाणी भी अग बुझांदा है।

गर्म पानी से घर जलवाते हैं—(क) जब कोई असंभव कार्य करना या कराना चाहता है तब कहते हैं। (ख) जब कोई किसी साधारण साधन से कोई बड़ा कार्य करना चाहता है तब उसके प्रति व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : राज० पराया घर ऊने पाणीसूं बाळे।

गर्म पानी से घर नहीं जलते—यदि कोई किसी बड़े काम को मुफ्त में या साधारण साधन से करना चाहे तो उसके प्रति कहते है कि घर तो आग से ही जलता है गर्म पानी से नहीं। तुलनीय : पंज० तत्ते पाणी कन्ने कर नयीं सड़दे।

गर्म पानी से आग बुझती है—दे० 'गर्म पानी भी

आग···'।

गर्म लोहे को ठण्डा लोहा काटता है— दे० 'गरम लोहे को···'।

गर्मियों में कश्मीर जन्नत है—गर्मी के दिनों में कश्मीर स्वर्ग के समान है। अर्थात् गर्मी के दिनों में कश्मीर में ठंड होने के कारण काफी आराम मिलता है।

गर्मी में पर्वत, शीत में मैदान- ग्रीष्म ऋतु में पर्वत सुखदायी होते हैं और शीत ऋतु में मैदान। क्योंकि गर्मी के दिनों में पहाड़ियों पर बर्फ गिरता है जिससे वहाँ ठंडक रहती है और लोगों को आनन्द मिलता है तथा जाड़े के दिनों (शीत ऋतु) में मैदानी भागो में पर्वतीय भागों की अपेक्षा कम ठंडक पड़ती है, इसलिए जाड़े में मैदानी भागों में अधिक आनन्द मिलता है।

गर्मी में मैदान शीत में पर्वत--(क) गर्मी के दिनों में मैदानी भाग तथा जाड़े के दिनों में पर्वतीय भाग कष्टप्रद होते हैं। (ख) जब कोई समय के प्रतिकूल कार्य करता है तब भी उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहा जाता है। तुलनीय : गढ़० ह यूद हिवाल रूड़ी पयाल।

गर्रानो सो अर्रानो— जिसने गर्व किया वही नष्ट हुआ अर्थात् गर्व करने वाला अधिक दिन नही टिकता।

गर्व किसी का नहीं रहा—नीचे देखिए।

गर्व तो रावण का भी नहीं रहा—रावण जैसा सर्वशक्तिमान, प्रतापी राजा भी गर्व करने से नष्ट हो गया तो औरों की तो बात ही क्या? तात्पर्य यह कि अभिमान करने वाले का पतन शीघ्र हो जाता है। तुलनीय : पंज० घमंड तें रावण दा वी मुक गया सी; ब्रज० गरब तो रामन को ऊ नायें रह्यो।

गली का कुत्ता भी बात नहीं पूछता—बहुत ही तुच्छ व्यक्ति के प्रति कहते हैं जिसकी समाज में कोई प्रतिष्ठा न हो। तुलनीय : राज० गळीरा गिंडक ही को बूझेनी; पंज० गली दा ते कुत्ता वी गल नयीं पुछदा।

गली-गली और कूचे-कूचे की जूठन चखती है—जिस दुश्चरित्र स्त्री का बहुत से लोगों से अनुचित संबंध हो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : भीली— घरां-घरां ने गामा गामा कणको खोड़तो है।

गली भूली में जाऊँ, एक संदेशा लेती जाऊँ—जब बिना मन के या आनुषंगिक रूप से कोई काम करे तब कहते है।

गले अमल गुलरी गारो, रवि सिसरे वोली कुंडाली सुरपत धनख करे बिध सारी, ऐरावत मघवा असवारी—यदि अफीम गलने लगे, गुड़ में पानी छूटने लगे, सूर्य और चन्द्रमा के चारों ओर कुंडल हो, इन्द्रधनुष पूरा दिखाई दे तो इन्द्र ऐरावत की सवारी पर आयेगा अर्थात् अच्छी वर्षा होगी।

गले पड़ा बजाए सिद्ध—नीचे देखिए।

गले पड़ी ढोलकी बजाए सिद्ध—जो आफ़त आती है उसे हँसकर सहना ही उचित है। तुलनीय : अव० गले म पड़ गइ ढोल बजाए सिध; पंज० गले विच पेया ढोल बजांदा सिद्ध।

गले पड़े का सौदा- ज़बरदस्ती का सौदा जो जबरन किसी के सर मँढा जाए।

गले पादुकान्या—गले में जूतों का न्याय। प्रस्तुत न्याय का प्रयोग ऐसे सन्दर्भो में किया जाता है जब किसी विरोधी को नितान्त मूर्खतापूर्ण विकल्प को स्वीकार करने के लिए विवश किया जाता है।

गले में जाए मन भर, नाक में जाए कन भर—गले से तो पेट भर खाया जाता है, किंतु नाक से एक कण भी नहीं खाया जा सकता। अर्थात् स्वाभिमानी व्यक्ति प्रेम की गाली बर्दाश्त कर लेते हैं, पर जब कोई रोब से छोटी-सी भी बात कह देता है तो वे उसे सहन नहीं करते। तुलनीय : गढ़० गला जांद गास, अर नाक जांद सीत।

गले में पड़ा ढोल तो बजाना ही पड़ेगा -(क) जब कोई कार्य न चाहते हुए भी करने को बाध्य कर दिया जाय तब ऐसा कहते है। (ख) जब कोई आपत्ति आ जाती है तो उसे सहना ही पड़ता है। तुलनीय : मैथ० गराक ढोल बजा-बहि पड़त; भोज० जब गर में ढोल पर गइल त बजवही के परी; पंज० गले विच पया ढोल ते बजाना ही पैंगा।

गले हमेल देह में थू थू—बाहर से सजावट और भीतर से गंदे रहने वाले लोगो के प्रति कहा जाता है।

गवन समय जो स्वान, फरफराय दे कान, एक सूद्र दो बैस असार, तीनि बिप्र औ छत्री चार; सनमुख आवैं जो नौ नार कहै भड्डरी असुभ विचार- कही जाते समय यदि कुत्ता कान फड़फड़ा दे या एक शूद्र, दो वैश्य, तीन ब्राह्मण चार क्षत्रिय अथवा नौ स्त्रियाँ सामने पड़ जायें तो भड्डरी के अनुसार ये सभी अशुभ है।

गवने आई सूख गई—सुख के लिए कही जाय किन्तु वहाँ कष्ट के मारे दुर्बल हो जाय तब ऐसा कहा जाता है। तुलनीय : भोज० अइली गवने परली सुखवने।

गवा काम जब भवा उवावा—जिस काम के लिए करने वाला तुरंत न करके वायदा करने लगे अर्थात् करने के लिए कोई दिन निश्चित करने लगे तो उसका होना कठिन हो

जाता है।

गवाह चुस्त मुद्दई सुस्त—जिसका काम होना हो जब वही अपने काम में सुस्ती करे तथा दूसरे तत्पर हों तो कहते हैं। (लोकोक्ति का आधार मुक़दमा है जिसमें जिसका मुक़दमा है अर्थात् मुद्दई तो अपने काम में सुस्ती कर रहा है और गवाह, जिससे कोई खास संबंध नहीं है, काफी चुस्ती या मुस्तैदी से काम कर रहा है। तुलनीय : मरा० साक्षीदार पक्का वादी निश्चिंत; अव० गवाह चुस्त मुद्दई सुस्त; बुंद० ऊंगतो बोले, जागतो न बोले; पंज० कम कराने वाला सुस्त करने वाला चुस्त; ब्रज० वही।

गवाही एक खरगोश की—बिगड़े काम को बुद्धिमानी से सँवारने के प्रति प्रशंसा से कहते हैं। इस पर एक कहानी है : एक बार एक बनिया व्यापार के लिए परदेस चला। राह में एक जंगल पड़ा जहाँ उसे कुछ ठगों ने घेर लिया। बनिया बहुत घबराया, किंतु वहाँ से बच निकलना कठिन था। इसलिए वह एक दरी बिछा कर रुपयों की थैली और बही-खाता खोलकर बैठ गया। ठगों ने कहा, 'सेठ जी हमें रुपयों की आवश्यकता है, कृपया हमें उधार दीजिए।' बनिए ने कहा, 'ठीक है, रुपये चाहे कितने भी ले लो, किंतु गवाही का प्रबन्ध करो।' इतने में एक खरगोश उधर से गुज़रा। ठगों ने कहा, 'सेठ जी, लीजिए गवाह भी आ गया, लाओ रुपये दो।' मजबूर होकर बनिये को रुपये देने पड़े। गवाही में खरगोश को लिखाकर ठग नौ-दो-ग्यारह हुए। बनिया दुखी मन से घर लौट आया और अवसर की प्रतीक्षा करने लगा। कुछ दिनों पश्चात् वे ठग नगर में आए और बनिये ने उनको पकड़वा कर राजा के सम्मुख पेश कराया। बनिए ने राजा से कहा कि 'ये मेरे रुपये नहीं देते।' ठगों ने कहा कि 'हमने इससे कभी रुपये नहीं लिए और यदि लिए हैं तो काग़ज़ में गवाह का नाम तो होना चाहिए।' बनिए ने बही खोल कर कहा, 'महाराज इन्होंने एक लोमड़ी की गवाही दिला कर रुपये लिए हैं।' इतना सुनते ही एक ठग बोल पड़ा, क्यों झूठ बोलता है वहाँ कोई लोमड़ी नहीं थी, वहाँ एक खरगोश ही था।' इतना सुनते ही राजा समझ गया और उसने बनिये को उसका धन दिलवाया और ठगों को कठोर दंड दिया।

गहता आया गहतो ऊगे, तोऊ चोखी साख न पूगे—यदि सूर्य ग्रस्तास्त (ग्रहण में अस्त) या ग्रस्तोदय (ग्रहण में उदय) हो तो फ़सल अच्छी नहीं होती।

गहना को क्या जीन—थोड़ी दूर जाने के लिए क्या घोड़ा कसना। अर्थात् निर्बल पर विजय प्राप्त करने के लिए घुड़सवारों की क्या आवश्यकता। (ख) साधारण कार्य के लिए जब कोई बहुत प्रबंध करता है तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : कौर० गहना कू क्या जीन।

गहरा प्यार लड़ाई का घर—जहाँ अधिक प्रेम होता है वहाँ झगडे भी अधिक होते हैं। किसी से भी अधिक प्रेम नहीं करना चाहिए नहीं तो बाद में पछताना पड़ता है। तुलनीय : राज० घणो हेत लड़ाईरो मूल; पंज० मता मिठा न बणो कोई खा जावेगा; ब्रज० गहरौ प्यार, लड़ाई कौ घर; अं० Hot love is soon cold.

गहरे में उतरोगे तो पता चलेगा—अभी तक तो उथले पानी में ही घूमते रहे हो जब गहरे पानी में उतरोगे तो पता चलेगा। जो व्यक्ति साधारण-सी सफलता पाकर फूला न समाए तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : भीली ऊनले ऊनले फरद्यो है पण ऊंडे ऊतरी जॅरा खबर पड़े हैं; पंज० डूंघ विच वडोगे ते लगेगा।

गहिर न जोते बोवै धान, सो घर कोठिला भरे किसान—धान के खेत को अधिक गहरा न जोत कर बोना चाहिए क्योंकि इससे पैदावार अधिक होती है।

गहिर हराई गहिर खाद, तब खेती में आवे स्वाद—खेतों की गहरी जुताई करने और अधिक खाद डालने से फ़सल अच्छी होती है।

गहिरा प्रेम चलत दिन चार—जिन व्यक्तियों में बहुत गहरा प्रेम होता है वह कुछ समय तक ही चलता है। बहुत गहरा प्रेम शीघ्र ही विरोध में परिवर्तित हो जाता है या समाप्त हो जाता है। तुलनीय : राज० घणो हेत टूटणने बड़ी आँख फूटणने; पंज० गूड़ा प्यार चार दिन ही चलदा है; ब्रज० गहरौ प्यार चलै दिन चारि; अं० Friendship that flames goes out in a flash.

गाँगू का हेंगा—बहुत देर में काम करने वाले के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। इसके पीछे एक कहानी है : एक गृहस्थ के यहाँ गाँगू नामक एक नौकर था जो बहुत ही सुस्त था। कार्तिक मास में रबी की बुआई हो रही थी, किसान ने गाँगू से कहा कि घर जाकर हेंगा (पाटा) लाओ। गाँगू उस समय हेंगा लेकर पहुँचा जब फ़सल पक कर तैयार हो गई। उसने किसान से कहा कि मालिक, जब इतनी जल्दी का काम हो तो मुझे न कह कर किसी और को कह दिया करें। इतनी देर मे आने के बाद भी वह समझता था कि मैं बहुत जल्दी वापस आया हूँ। तुलनीय : भोज० गांगू क हेंगा।

गाँज जले, पूलों का लेखा—गाँज (करबी, घास या चारे का बड़ा ढेर) जल जाता है, उसे कोई नहीं पूछता और

पूलों का हिसाब रखा जाता है। जहां कोई बड़ी या मूल्यवान वस्तु की क्षति पर कोई ध्यान न दे और साधारण वस्तु की चौकसी करे वहां कहते हैं। तुलनीय: उ० अशर्फ़ियों की लूट और कोयलों पर मुहर। (पूल=घास का छोटा-सा गट्ठर)।

गांजा पिये गुरु ज्ञान घटे और घटे तन अन्दर का, खोंखत खोंखत गांड़ फटे मुंह देखो जैसे बन्दर का—गाँजा पीने वालों पर व्यंग्य है। गाँजा पीने से व्यक्ति की शक्ति समाप्त हो जाती है और उसे खाँसी की बीमारी हो जाती है जिससे वह काफी परेशान रहता है।

गाँठ का देना और लड़ाई मोल लेना—अपना धन उधार देना और लड़ाई खरीदना बराबर है जो सस्ती चीज़ को महगे दामों खरीदे।

गाँठ का पूरा अक़्ल का अंधा- धनी किंतु मूर्ख व्यक्ति के लिए कहा जाता है।

गाँठ का पूरा मति का हीना ऊपर देखिए। तुलनीय: पंज० अड्डी दा पक्का ते अकल दा अन्ना।

गाँठ के पूरे अक़्ल के अंधे-- दे० 'गाँठ का पूरा अक़्ल···'।

गाँठ गिरह में कौड़ी नहीं मियां गये लाहौर---जब कोई निर्धन व्यक्ति बड़ी-बड़ी योजनाएं बनाता है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मल० केलू विक्कुं वलिय उत्पायि माप्पिळ, उळळयुम् जीरकवुम् कच्चवटम्; पज० बोजे विच तैला नहीं ते सैर करा दा लौर दी।

गाँठ गिरह से मद पीवे, लोग कहें मतवाला---अपने पास से पैसा खर्च करके शराब (मद) पीते है और लोग मतवाला (मदहोश) कहते हैं। अर्थात् जब कोई ऐसा काम करे जिसमें पैसा भी खर्च हो और अपमानित भी होना पड़े तब ऐसा कहते हैं।

गाँठ न मुट्ठी फड़फड़ाती उट्ठी—पास कुछ न रहने पर भी किसी चीज़ को देखकर खरीदने के लिए जब कोई तैयार हो जाय तो कहते है। तुलनीय : उ० घर में नही है खाने को और अम्मा चली भुनाने को।

गाँठ में जमा रहे तो खातिर जमा रहे अपने पास रुपया हो तो किसी बात की चिंता नहीं रहती। तुलनीय : मरा० गांठी धन असल्यावरी चिन्ता कशाची हि न करी।

गाँठ में जर जो चाहैं सो कर (क) पास में पैसा होने पर सभी कुछ किया जा सकता है। (ख) जब कोई दुष्ट व्यक्ति धनवान होने के नाते मान-सम्मान पाए और उसकी बुराइयों को कोई न देखे तो उसके लिए भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय :मेवा०गाँठ में होवे नाणों तो वींद परणीजे काणो; अव० समरथ हूँ नहिं दोस गुसाईं।

गाँठ में जर है तो नर है नहीं तो खर है—यदि मनुष्य के पास पैसा है तो वह सबसे अधिक बुद्धिमान है और नहीं है तो बड़ा मूर्ख है।

गाँठ में दाम ना पतुरिया देख रुलाई आवे—पास में पैसा एक नहीं और चाह रईसों जैसी है। (पतुरिया = वेश्या, नर्तकी)। तुलनीय : अव० गाँठी मा दाम नाही पतुरिया देखे रोवाई आवै।

गाँठ में न कौड़ी नाक छेदावन दौड़ी —जब निर्धन या साधनरहित व्यक्ति किसी कार्य को करने के लिए तैयार हो जाता है तो उसके प्रति व्यंग्य मे ऐसा कहते है। तुलनीय : छत्तीस० गाँठ माँ न कौड़ी, नाक छेदावन दौड़ी; उ० घर में नही है खाने को और अम्मा चली भुनाने को।

गाँठ में पैसा नहीं, बाँकीपुर की सैर --साधनहीन की ऊँची कल्पना को लक्ष्य करके ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मैथ० गेठी में दाम नहिं बाँकीपुर क सैर; भोज० गाँठ में कौड़ी ना चलऽ चलीं हरिहर छत्तर; हरि० अल्ले नाँ पल्ले मियाँ मटकताए चाल्लै।

गाँठ मे पैसा होने पर घनेरे दोस्त होते हैं - पैसे वाले की इज़्ज़त सभी करते हैं। तुलनीय : अं० In times of prosperity friends will be plenty.

गाँठ से दे वे पर अक़्ल न दे -- मूर्खों को पैसा दे देना चाहिए लेकिन उन्हें राय नही देनी चाहिए, क्योंकि वे जल्दी किसी बात को मानते नहीं और उलटे समझाने वाले को ही मूर्ख समझने लगते है।

गाँडू का हिमायती भी हारा है --निकम्मे व्यक्ति की कोई सहायता नही करता।

गाँड़ चले मन बख्तों को—पेट खराब है या दस्त लगते है पर चना खाना चाहते हैं। जब कोई सहनशक्ति के बाहर काम करने की इच्छा रखता है तब ऐसा कहते हैं।

गाँड़ जलती है या सुभाव ही है - ईर्ष्या होती है या स्वभाव ही ऐसा है। जो व्यक्ति किसी व्यक्ति को सुखी देख कर द्वेष करते हैं उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० गाँड बळै है कन सभाव है; पंज० बुंड सड़दी है या सभाव ही है।

गाँड़ तपे तब सूत कते बैठे-बैठे चूतड़ तप जाते हैं तब कहीं जाकर सूत तैयार होता है। (क) अर्थात् सूत कातना बहुत मेहनत का काम है। (ख) किसी भी काम में सफल होने के लिए परिश्रम करना पड़ता है। तुलनीय : राज०

गाँड तपै जद सूत कतै; पंज० चुतड़ तपा के सूतर कत्तया जांदा है।

गाँड़ न धोय सो ओझा होय ओझा की खिल्ली उड़ाने के लिए ऐसा कहते हैं। (ओझा = भूत-प्रेत झाड़ने वाला। सरजूपारी, मैथिल और गुजराती ब्राह्मणों की एक जाति भी ओझा कहलाती है)।

गाँड़ पर नहीं लत्ता घूमें कलकत्ता - निर्धन होने पर भी धनवानों जैसा दिखावा करने वालों के प्रति कहते हैं।

गाँड़ पर नहीं लत्ता, पान खायें अलबत्ता अपनी सामर्थ्य से अधिक शान-शौकत करने वालों के प्रति व्यंग्य से कहते है।

गाँड़ फटे मल्हार गावे—भूखों मरते हैं, किंतु मल्हार गा रहे हैं। जो परेशानी में रहते हुए भी अमीरी दिखाते है उनके प्रति कहते हैं।

गाँड़ में काँटे हैं क्या ? —जिस व्यक्ति के कपड़े बहुत फटते है उससे मज़ाक़ में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० बुड बिच कंडा है की ?

गाँड़ में कीड़ा है -जो व्यक्ति कहीं एक स्थान पर चैन से न बैठता हो, सदा इधर से उधर घूमता रहता हो ऐसे चंचल व्यक्ति के प्रति व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : राज० गाँड में कीडो है; पंज० बुंड बिच कीड़ा है।

गाँड़ में गू नहीं, कौओं का नेवता - गाँड़ में तो गू नहीं है और न्योता दे रहे हैं कौओं को। जब कोई व्यक्ति कुछ पास न होने पर भी बहुत शेखी मारे तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : अव० गाँडी में गुह नाहीं सात सुअरी का न्यौता; राज० चितड़ां च गूं नई ते कावां नूं नेंदे; राज० गांड में गू ही कोनी कागळां ने नौतां देवे।

गाँड़ में लंगोटी, न सिर पर टोपी ऐसे आवारा व्यक्तियों के प्रति कहते है जो दर-दर की ठोकरें खाते फिरते हैं और जिन्हें भोजन-वस्त्र भी ठीक से नहीं मिलता।

गाँड़ लगी फटने, खैरात लगी बटने --जब गाँड़ फटने लगी तो खैरात बाँटनी शुरू कर दी। जब किसी मनुष्य पर आपत्ति आए और वह धर्म-कर्म, दान-पुण्य करने लगे तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : राज० गाँड लगी फटने खैरात लगी बटणे।

गाँव का खान-पान शहर का राम-राम--गाँव और शहर के आतिथ्य के संबंध में कहा जाता है। गाँव वाले खिलाते-पिलाते हैं पर शहर वाले केवल नमस्कार करके रह जाते हैं। तुलनीय : भोज० शहर क रमरमी गाँव क दाल-भात।

गाँव का जोगी जोगड़ा आन गाँव का सिद्ध—गाँव का योगी झूठा माना जाता है और बाहर का सिद्ध। अर्थात् गुणी होने पर भी अपने परिचित लोगों के बीच व्यक्ति की खास इज्ज़त नहीं होती और उसी व्यक्ति जैसा यदि कोई बाहर से अपरिचित आ जाता है काफ़ी इज्ज़त होती है। यानी परिचित लोगों की अपेक्षा अन्य लोगों से अधिक सम्मान मिलता है। तुलनीय : अव० गाँव का जोगी जोगड़ा आनि गाँव का सिद्ध; बुंद० गाँव कौ जोगी जोगिया अन· गाँव को सिद्ध; ब्रज० गाँव घोस कौ जोगिया आन गाँव की सिद्ध; निमाड़ी —गाँव को जोगी, न पर गाँव को सिद्ध; छत्तीस० गाँव के जोगी जोगड़ा, आन गाँव के सिद्ध; हाड़० घर का जोगी जोगड़ा, आंण गाँव का सद्ध।

गाँव का दाल-भात शहर का राम-राम—दे० 'गाँव का राम-राम ...'।

गाँव का पता उसके दरवाज़े से लग जाता है --किसी गाँव का पता उसके मुख्य द्वार से चल जाता है कि उसमें कैसे लोग रहते है। आशय यह है कि किसी व्यक्ति के चरित्र का पता उसके कपड़े और चाल-ढाल से लग जाता है। तुलनीय : राज० गाँवरी साख वाड़ भरै।

गाँव का समधी, पीठ की ओट यदि गाँव में ही समधियाना हो तो समधी से स्त्रियाँ विशेष पर्दा नहीं करती, सामने देखकर केवल मुँह फेर कर ही निकल जाती हैं। तात्पर्य यह है कि सदा पास रहने वाले संबंधियां या आदरणीय व्यक्तियों का आदर कम किया जाता है।

गाँव की कुतिया भी नहीं पूछती- गाँव की कुतिया भी परवाह नहीं करती। जिस व्यक्ति को कोई भी सम्मान न दे उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० गांवरी गधी ही को बूझैनी; पंज० पिंड दी कुत्ती भी नयीं पुछदी।

गाँव की हवा गाँव बता देता है— किसी गाँव को देखकर ही उस गाँव के निवासियों की दशा का अनुमान लगा लिया जाता है। अर्थात् व्यक्ति की वेश-भूषा तथा चाल आदि से ही उसकी आर्थिक दशा तथा चरित्र का पता चल जाता है। तुलनीय : हरि० गाम की हवा नै, गोरा बता दे; पंज० पिंड दा हाल उह पिंड ही दस दिंदा है।

गाँव के गँवेले, मुँह में खाक, पेट में ढेले—गाँव के रहने वालों के सादा जीवन या उनके मोटे ढंग से रहने-सहने और खाने-पीने पर कहा जाता है।

गाँव के गड्ढे, गाँव का अंधा भी जानता है—गाँव के रास्तों को और उनके दोषों को वहाँ रहने वाला अंधा भी जानता है। तात्पर्य यह है कि एक स्थान पर रहने

वाला दूसरों के गुण-दोषों से परिचित रहता है।

गाँव के जोगी जोगना, आन गाँव का सिद्ध- दे० 'गाँव का जोगी जोगड़ा···'।

गाँव के दुश्मन न आन गाँव के मीत- अपने गाँव का शत्रु भी दूसरे गाँव के मित्र से अच्छा होता है। आशय यह है कि अपनी बुरी वस्तु भी दूसरों की अच्छी वस्तुओं से ठीक होती है क्योंकि समय पर वही काम आती है।

गाँव के सरपंच कहाँ हैं? कहा—शराबखाने में-- जहाँ बड़े लोग दुष्कर्म करते हों वहाँ छोटों का क्या हाल होगा? दूसरों को बुरे काम से रोकने वाले गुरु या बड़े-बूढ़े जब स्वयं बुरे काम करें तब उनके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय . गढ़० गौ को सयाणो क ख छ? बल चोरी।

गाँव के साथ चमरौटी—जहाँ गाँव होता है वहाँ चमारों की बस्ती भी होती है। अर्थात् जहाँ अच्छाई होती है वहाँ कुछ बुराई भी पाई जाती है। तुलनीय : राज० गाँव जठे ढेढवाड़ो।

गाँव को न्योता, गाँठ में कौड़ी नहीं- पास में कौड़ी नहीं है और न्योता दे रहे हैं सारे गाँव को। (क) जब कोई व्यक्ति बिना साधन के ही किसी बड़े काम को करना चाहे तो उसके प्रति व्यंग्य में कहते है। (ख) झूठ बोलने वाले या गप्पें हाँकने वाले के प्रति भी कहते है। तुलनीय : पंज० पिंड नू सादा, कौल थैल्ला नयी।

गाँव छोटा, पागल बहुत—छोटे से गाँव में बहुत अधिक पागल। जिस घर या गाँव में मूर्ख अधिक और बुद्धिमान कम हों तो कहते है। तुलनीय : माल० गाम छोटो ने दैण्डा घणा; पंज० पिंड निका पागल वडे।

गाँव जले, नंगे का क्या जले?--गाँव का चाहे सब कुछ जल जाय, नंगे के पास तो कुछ है ही नहीं तो उसका क्या जलेगा? जिस व्यक्ति के पास कुछ होगा ही नहीं उसकी क्या हानि होगी? तुलनीय : राज० नगेरो लाय में काई बळै; अं० Beggars can never be bankrupt.

गाँव तेरा, नाम मेरा-झूठा सम्मान करने वाले के प्रति कहते हैं।

गाँव ढहा जाए और सिवाने की लड़ाई---गाँव बरबाद हो रहा है और सिवान के लिए लड़ाई-झगड़ा कर रहे है। जब कोई व्यक्ति किसी बड़ी क्षति की तरफ कोई ध्यान न देकर साधारण वस्तु के लिए परेशान हो तो उसके प्रति कहते हैं।

गाँव न गूँव एक ही कोस—जिस व्यक्ति या वस्तु के संबंध में बड़ी-बड़ी बातें की जाएँ और देखने या मिलने पर वह उससे विपरीत पाया जाय तो व्यंग्य से कहते हैं।

गाँव न बसा भिखारी पहले से आ गए—दे० 'गाँव बसा ही नहीं···'। तुलनीय: पंज० पिंड पैया नयी ते मंगते पैले ही आ गए।

गाँव नहीं मुखिया बिन, खेती नहीं वर्षा बिन—बिना मुखिया के गाँव में शांति नहीं रहती और वर्षा बिना खेती नहीं होती। मुखिया ही गाँव को उन्नति के पथ पर ले जाता है और वर्षा ही खेती का प्राण है। तुलनीय : भीली- - गड्ढा टालते गामनी गे खेड़ा टालते वे रनी।

गाँव पगले को नहीं मानता, पगला गाँव को नहीं—गाँव पागल की कोई परवाह नहीं करता और पागल गाँव की। यदि कोई व्यक्ति किसी की परवाह या आदर नहीं करता तो उसकी परवाह या आदर भी कोई नहीं करता। आशय है कि दूसरों से आदर पाने के लिए दूसरों का आदर करना पड़ता है। तुलनीय: राज० गांव गैलैने को गिणै नी गैलो गाँवने को गिणैनी; पंज० पिंड पागल दी परवाह नयी करदा, पागल पिंड दी नहीं।

गाँव पटवारगिरी खुद ही सिखा देता है- गांव पटवारी को उसका काम स्वयं सिखा देता है। जब कोई गाँव का पटवारी बनता है तो उसे वह काम स्वयं ही आ जाता है चाहे पहले से उसे उसका कुछ भी अनुभव न हो। अर्थात् जब आवश्यकता पड़ती है तो मनुष्य स्वयं ही काम सीख जाता है या काम करने से ही आता है। तुलनीय : राज० गाँव कोटवाळी आप ही सिखाय दे; अं० Necessity is the mother of invention.

गाँव बसंते भूत ने शहर बसंते देव- गाँवों में भूत बसते या रहते हैं और शहरों में देवता। आशय यह है कि शहर के लोग गाँव के लोगों से सभ्य होते हैं और गाँव वालों की अपेक्षा अच्छी ज़िंदगी बिताते हैं।

गाँव बसा नहीं उचक्के जमा हो गए—दे० 'गाँव बसा ही नहीं चोर···'।

गाँव बसाया वनिए, बसै तभी जानिए—गाँव यदि बनिए ने बसाया है तो जब बस जाय तभी मानिए। (क) बनिया जाति पैसे कमाने के अतिरिक्त और कोई काम नहीं कर सकती। जब कोई दूसरा काम वह कर दिखाए तभी विश्वास करना चाहिए। (ख) जो व्यक्ति कोई काम न करता हो और वह कुछ करने की सोचे उसके प्रति भी व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : राज० गाँव बसायो वाणिये बसै जद जाणिये; पंज० घोड़ी चड़े ते जाणिए।

गाँव बसा ही नहीं चोर इकट्ठे हो गए—गांव बसा ही नहीं और चोर चोरी करने की सोचने लगे। जब कोई कार्य

पूर्ण भी न हुआ हो और लाभ लेने वाले पहले से ही जुट जाएँ तो उनके प्रति व्यंग्य से कहते है। तुलनीय: राज० गाँव वस्यो ही कोनी मंगता पहली ही आयग्या; माल० हाजी तो हाटे नी बैठा, ने नमतो तौल जो; पंज० पिंड बसया नई ते उचक्के नट्ठे हो गए; हरि० गाम ना बस्स्या पह्लयम मोड्डे हांड्य गे।

गाँव बिगाड़े ग्वाला, ब्याह बिगाड़े मेंह—ग्वाला पशुओं से चरा कर खेती नष्ट करा देता है जिससे गांव वाले परेशानी में पड़ जाते हैं तथा विवाह में पानी बरस जाने में सब काम अस्त-व्यस्त हो जाता है। तुलनीय: मेवा० गांव बिगाड़्यो गोरस्यो ब्याह बिगाड़्यो मेह।

गाँव भागे पघिया लागे—फ़सल तैयार होने पर गाँव खाली हो जाता है, क्योंकि लोग फ़सल काटने चले जाते हैं।

गाँव महाराज के बाँट करे बबखो—जब किसी एक की वस्तु का मालिक कोई दूसरा बन जाता है तब व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

गांव मालिक का, तोंद दीवानजी की—पराए की वस्तु से मोटा होने वाले को लक्ष्य करके ऐसा कहते है। तुलनीय: मैथ० गांव मालिक के थोंधि दीवानजी के भइस तोरा तोन मोरा।

गाँव में गाड़ा खेत में जाड़ा—गांव में गाड़ा (मुसलमान) तथा खेत में जाड़ा (घास-फूस, विशेषत: बड़ी जड़ वाली) का होना हानिप्रद होता है। तुलनीय: हरि० गाम में गाड़ा, अर खेत में जाडा मेढ़या करे।

गाँव में घर न जंगल में खेती—(क) किसी की शोचनीय आर्थिक दशा को लक्ष्य करके कहा जाता है जिसके पास कुछ भी न हो। (ख) गाव में घर और जंगल में खेती ये दोनों ठीक नहीं हैं। तुलनीय: भीली गाँभ माए घेरनी, उजाड माए खेती नी, माल० गाम मे ता घर नी, ने मार में खेत नी; अव० गाँव मा घर न हार मा खेती ; पंज० पिंड बिच कर नयी जंगल बिच खेती नयी।

गाँव में धोबी का छैल—(क) गाँव में धोबी का लड़का ही विशेष शौक़ीन दिखाई पड़ता है क्योंकि उसे पहनने को शहर के कपड़े मिल जाते हैं। (ख) दूसरे की चीज़ पहन कर जब कोई ठाठ-बाट करे तो भी कहते हैं।

गाँव में पड़ी मरी, अपनी-अपनी सबको पड़ी—दुःख के समय सभी को अपनी-अपनी पड़ी रहती है, कोई किसी दूसरे की नहीं सुनता। (मरी—महामारी)।

गाँव में मैं सबकी प्यारी, पर फिरती हूँ मारी-मारी—जिस व्यक्ति की कोई भी आदमी इज़्ज़त न करता हो, फिर भी वह यह कहता फिरे कि मुझे लोग बहुत सम्मान देते हैं तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय: मिर्छो गौं माँ सबसे भली, पर आग करवी नि मिली।

गाँव यहाँ, कुआँ वहाँ—गाँव तो यहाँ पर है और कुआँ वहाँ (दूर) खुदा रहे हैं। किसी के अनुचित या उलटे कार्य को देखकर व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

गाँव सदा गंवारन को—गाँव गंवारों के लिए ही है। (क) ग्राम्य जीवन के प्रति हीनभाव रखने वाले प्राय: कहा करते है। (ख) गाँव वालों की दुर्दशा को देखकर भी ऐसा कहते है। तुलनीय: पंज० पिंड सदा पेंडुआं लई हुंदा है।

गाँव आई डोली, क्या राजा का कोरी—दूल्हा या दुलहिन छोटे या बड़े किसी के भी हों उनका उचित सम्मान होता है या करना चाहिए।

गाऊँ न गाऊँ तो बिरहा गाऊँ—जब कोई व्यक्ति या तो कुछ करे नहीं और यदि कुछ करे भी तो वह करे जो नहीं करना चाहिए तब कहते हैं। (बिरहा अहीरों का गाना है, सामान्यत: इसे अच्छा नहीं माना जाता)।

गाएँ तो मालिक की हैं, ग्वाले की केवल लाठी है—ग्वाले के पास तो केवल एक लाठी ही अपनी है, गाएँ तो स्वामी की हैं। उस व्यक्ति के प्रति कहते हैं जिसके पास देखने की सम्पत्ति बहुत हो, किंतु वह दूसरों की हो और वह उसका उपभोग न कर सकता हो, केवल रखवाली ही करता हो। तुलनीय: राज० गायाँ तो धण्यारी है गुवालियेर हाथ में तो गेडियो है।

गाए गीत का क्या गाना, रंधे भात का क्या राँधना—जो गीत कोई और गा चुका हो उसका गाना बेकार है और पके भात को फिर से पकाना भी बेकार है। अर्थात् जो काम पहले ही हो चुका है उसे दोबारा करने से क्या लाभ?

गाओ बजाओ, कौड़ी न पाओ—सूम के प्रति कहा जाता है जहाँ बहुत करने पर भी कुछ प्राप्ति की आशा न हो।

गाओ बजाओ, बन्ने के लोलो ही नहीं—जिसके लिए सारा बखेड़ा किया जाय, वही न हो तो कहते हैं। (बन्ने = बच्चे; लोलो = लिंग) गाना-बजाना बच्चे के पैदा होने पर होता है।)

गागर कैसे फोरिये, उनयो देखि पयोद—बादल को घिरा हुआ या झुका हुआ देखकर घड़े को न फोड़ना चाहिए अर्थात् दूसरे की आशा में अपने प्रयत्न या उद्यम नहीं छोड़ना चाहिए या अपने पास की वस्तु को नष्ट नहीं करना चाहिए।

गा-गाकर भवानी बुला ली—जबरन मुसीबत मोल ले ली। जब कोई बिना कारण ही विपत्ति को गले लगाए तो

कहते हैं।

गाछ में कटहल होंठ में तेल—कटहल अभी पेड़ पर ही है और इधर होंठ मे तेल लगा कर बैठ गए हैं। जब कोई व्यक्ति किसी कार्य की तैयारी समय से बहुत पहले ही करने लगता है तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : बंग० गाछे कांटल गोंपे तेल।

गाजर के खवैया जलेबी में हाथ डालें—गाजर का खाने वाला अर्थात् सस्ती वस्तु खरीदने वाला जलेबी में हाथ डाले अर्थात् महंगी वस्तु को चाहे। जब कोई व्यक्ति अपने स्तर से बड़ी वस्तु चाहे तो व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : पंज० निकी चादर लमे पैर।

गाजर की पुंगी बजी तो बजी नहीं तोड़ खाई—ऐसे काम पर कहते हैं जो हो जाय तो अच्छा और न हो तो भी अच्छा। जब किसी काम में हर तरह से फ़ायदा ही तो कहते हैं। (पुंगी—एक प्रकार की बाँसुरी)। तुलनीय : मेवा० गाजर की पुंगी बाजी जतरे बजाई, नी बाजी तो तोड़ खाई।

गाजर खा गजरौटा फेंका, माँ री माँ मेरा टुक-टुक सुहाग बोहड़ा—पत्नी ऐसे अवसर पर बोलती है जब उससे घृणा करने वाला पति उसकी ओर तनिक भी आकृष्ट हो जाता है। (ख) कोई धनी व्यक्ति किसी दरिद्र की सहायता करे तब भी इसका प्रयोग किया जाता है।

गाजर, गंजी, मूरी तीनों बोवे दूरी—गाजर, शकरकंद (गंजी) और मूली को दूर-दूर बोना चाहिए।

गाजर मरद मुरई जोय, भंटा खाय से हिजड़ा होय—गाजर पुरुष के लिए और मूली औरत के लिए पुष्टिकर समझी जाती है तथा बैंगन दोनों के लिए त्याज्य माना जाता है।

गाजरों का दान, देखें विमान की राह—दान तो किया गाजर का और स्वर्ग जाने के लिए विमान की राह देख रहे हैं। जब कोई व्यक्ति साधारण कार्य का फल बहुत बड़ा चाहे तो उसके प्रति व्यंग्य मे ऐसा कहते हैं।

गाज़ी मियां दममदार, खिच्चड़ मक्का हम तैयार—गाज़ी मियां और दममदार की शपथ खाकर कहता हूँ कि मैं खिचड़ी खाने को तैयार हूँ। जब कोई व्यक्ति किसी काम को करने को पूर्णतया तैयार रहता है तब कहता है।

गाजे बाजे से आये हैं—धूमधाम से आये हैं। जब कोई व्यक्ति किसी शादी आदि को खूब धूमधाम से मनाता है तो कहते हैं। तुलनीय : पंज० गज वज के आना।

गाडर आनी ऊन को बैठी चरं कपास—भेड़ (गाडर) ऊन के लिए लाये थे और वह कपास खा रही है। जब कोई काम लाभ के लिए किया जाय, किन्तु उसमें उलटे हानि हो तो कहते हैं। तुलनीय : मरा० लोंकरी साठी मेंढी पाळली, तो कापूसच चरायला लागली; बुंदे० गाड़र आनी ऊन कों लागी चरन कपास; ब्रज० चौबेजी छब्बे होने गये दुबे जी होकर लौटे।

गाडर आनी ऊन को लागी चरल कपास—ऊपर देखिए।

गाड़र पाली ऊन कौ लागी चरन कपास—दे० 'गाडर आनी ऊन को बैठी…'।

गाड़ी अटक गई—किसी काम मे रुकावट पड़ जाने पर कहते हैं।

गाड़ी का चक्कर, औरत का मक्कर—नीचे देखिए।

गाड़ी का चक्कर, मेहरिया का मक्कर—स्त्री की मक्कारी गाड़ी के पहिए-सी चक्करदार होती है। अर्थात् उसका आदि-अंत पाना कठिन है। तुलनीय : अव० गाड़ी का चक्कर मेहरिया का मक्कर; ब्रज० गाड़ी कौ चक्कर, बइयरि कौ मक्कड़।

गाड़ी का नाम उखड़ी—नीचे देखिए।

गाड़ी का नाम उखली—काम, स्थिति या प्रकृति के विरुद्ध नाम होने पर कहते हैं। (उखली—ओखली या उखड़ी हुई)।

गाड़ी का बोझ बैल ही उठाते हैं—बैल ही गाड़ी के बोझ को खींच पाते हैं। शक्तिशाली लोग ही बड़े काम कर सकते हैं। तुलनीय : भीली—जूड़ा नो भार धोरी ई झेले; पंज० गड्डी दा भार ढगे ही चुकदे ने या ताकतवर बंदे ही बड़े कम करदे हन।

गाड़ी का सुख गाड़ी भर, गाड़ी का दुख गाड़ी भर—बड़े कार्यों (रोजगार आदि) मे जब लाभ होता है तो खूब लाभ होता है और जब घाटा होता है तो खूब घाटा भी होता है।

गाड़ी के नीचे कुत्ता चले, समझे गाड़ी मैं ही खींच रहा हूँ—गाड़ी के नीचे कुत्ता चलता है जो समझता है कि गाड़ी मैं ही खींच रहा हूँ। जो व्यक्ति किसी काम में हाथ न लगाए किंतु समझे कि यह सब मेरी ही शक्ति से हो रहा है तब उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० गाड़ी नीचे कुत्तो वै वे जको जाणै गाडी म्हारे पाण चाले।

गाड़ी तो चलती भली, ना तो जान कबाड़/बिवाड़—जब गाड़ी चलती है तब तक तो ठीक है, नहीं तो वह काठ का टुकड़ा है। अर्थात् जब तक किसी चीज़ से फ़ायदा होता है तभी तक उसकी इज्जत होती है, उसके बाद उसे कोई नहीं

पूछता। तुलनीय : हरि० चालती का नाम गाड़ी सै; पंज० चलदी दा नाँ गड्डी।

गाड़ी तो लीक पर ही चलती है—गाड़ी उसी रास्ते पर चलती है जिस पर पहले भी गाड़ियाँ चलती रही हों और जहाँ उनके पहियों के चिह्न पड़ गए हों। अर्थात् जिस कार्य का जो तरीक़ा होता है उसे उसी ढंग से करने से वह ठीक होता है। तुलनीय : राज० गाड़ी तो चीलों ही वैवे; ब्रज० गाड़ी तौ लीक पैई चलै।

गाड़ी देख थकाई लागे (क) साधन देखकर उसके उपभोग की इच्छा अनायास ही उत्पन्न हो जाती है। (ख) आश्रय पाकर मनुष्य परिश्रम से भागने लगता है।

गाड़ी देख लाड़ी के पाँव/पैर फूले—गाड़ी को देखकर दुल्हन (लाड़ी) के पैर में भी दर्द होने लगता है। अर्थात् वह भी आराम से चढ़कर चलना चाहती है। (क) आराम छोटे-बड़े सभी चाहते हैं। (ख) किसी उपलब्ध होने वाली वस्तु को देखकर सभी लोग उसका उपयोग करना चाहते हैं। तुलनीय : राज० गाड़ी देखेर लाडीरा पग सूजै; माल० गाड़ी देखी ने पग भारी पड़े; कौर० गाड्डी कू देख, लाडी के पां फूलें; पंज० गड्डी नूँ देख के कमीन दे पैर भी दुखदे हन।

गाड़ी भर आशनाई, जौ भर नाता—मामूली-सी रिश्तेदारी बहुत-सी दोस्ती से अच्छी होती है।

गाड़ी भर धान की मुट्ठी भर बानगी—धान की भरी हुई गाड़ी के धान का पता लेने के लिए एक मुट्ठी धान ही बहुत है। (क) किसी वस्तु के थोड़े भाग से सम्पूर्ण वस्तु के गुण-दोषों का पता चल जाता है। (ख) किसी परिवार के एक व्यक्ति को देखने से ही उस परिवार के विषय में पता चल जाता है। तुलनीय : राज० गाड़ी भर धानरी मूठी भर बानगी।

गाड़ी भर बोया, पल्लू भर पाया—गाड़ी भर कर बीज बोया था और पैदावार पल्लू भर (थोड़ी-सी) हुई। जब काफ़ी श्रम करने या लागत लगाने पर बहुत मामूली लाभ प्राप्त हो तो कहते हैं। तुलनीय : भीली— गाड़ी भरी ने बोद्यू, ने टोपी भरी ने लाद्या; पंज० मन पक्का राया छटाँक पर पाया।

गाड़ी में क्या एक छाज भारी होता है? - अनाज से भरी गाड़ी में यदि एक छाज (सूप) भरकर और अनाज डाल दिया जाय तो उससे गाड़ी के भार में कोई विशेष अंतर नहीं पड़ता। आशय यह है कि संपन्न व्यक्ति के खर्चे में यदि थोड़ी वृद्धि हो जाय तो उससे उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। तुलनीय : हरि० गाड्डी में के छाज भाह्र्या हो से; भीली—चालती गाड़ी माँए चाण्नी नो हूँ भार।

गाड़ी में एक टोकरी क्या और दो क्या? ऊपर देखिए।

गाड़ी में टोकरी का क्या बोझ—दे० 'गाड़ी में क्या एक छाज...'।

गाड़ी लेकर आजा—जब किसी की मांग को ठुकरा दिया जाय और माँगने वाले को फिर भी मिलने की आशा रहे तो व्यंग्य में उससे कहते हैं कि 'जा गाड़ी लेकर आ और उसको भर कर ले जा'। तुलनीय : गढ़० थौली सींक ऐ जा।

गाड़ीवान की नार जनम दुखिया (क) गाड़ी हाँकने में परेशानी अधिक उठानी पड़ती है और आमदनी कम होती है। गाड़ीवान जो कुछ भी कमाता है वह बैलों को खिलाने तथा कुछ अन्य फुटकर खर्च में समाप्त हो जाता है और उसके पास कुछ बचता नहीं, जिससे उसकी पत्नी दुखी रहती है। (ख) गाड़ीवान रात-दिन गाड़ी हाँकने से थका रहता है। घर आकर विश्राम करते पर थोड़ी ही देर में उसे नींद आ जाती है और उसकी पत्नी उससे प्रेम की दो-चार बातें भी नहीं कर पाती है जिससे वह दुखी रहती है।

गाड़ीवान की नारि सदा दुखिया -ऊपर देखिए।

गाते-गाते कलावंत बनते हैं—नीचे देखिए।

गाते-गाते कलावंत हो जाते हैं -निरंतर अभ्यास करने से मनुष्य में निपुणता आ जाती है।

गाना उत्तम, बजाना मध्यम—गाना उत्तम है और गाने के साथ बाजा बजाना उससे कुछ नीचा माना जाता है। तुलनीय : पंज० गाना चंगा बजाना मंदा।

गाना और रोना किसको नहीं आता—ये चीजें सभी को आती हैं। तुलनीय : राज० गावणो र रोवणो कुण को जाणै नी; अव० गाउब रोउब कउन नाही जानत; मेवा० गाणो अर रोवणो सब जाणें; पंज० गाना ते रोना किनू नयी आँदा।

गाना और रोना किसे नहीं आता?—ऊपर देखिए।

गाना तो आता नहीं गाने का भाई आता है—गाने का भाई रोना होता है। जब किसी ऐसे व्यक्ति से गाने को कहा जाय जो गाना ज़रा भी न जानता हो तो वह इस तरह परिहास से कहता है। तुलनीय : राज० गावणो को आवे नी गावणेरो भाई आवे है; पंज० गाना ते आंदा नयीं उहदा परा आंदा है।

गाना न बजाना, पाद-पाद के रिझाना—जिस व्यक्ति को कोई काम करने का तरीक़ा मालूम नहीं होता और वह भद्दी हँसी आदि में समय बिताता है उसके प्रति ऐसा कहते हैं।

गाने को रामधुन पीसने को चक्की—चलाते तो चक्की हैं और गाते हैं रामधुन। जब कोई व्यक्ति अपने ज्ञान, सामर्थ्य आदि के बाहर कार्य करता है या करना चाहता है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : कन्नौ० गइबे को रामधुन पिसिबे को चकिया; ब्रज० गइबे कू रामधुनि पीसिबे कू चक्की।

गाने वाले का मुँह नहीं रहता और नाचने वाले का पैर—आदमी का हुनर छिपा नहीं रहता। जैसा आदमी होता है वह वैसा ही दिखाई देने लगता है।

गाय कहाँ घोंचा घोंघिआय कहाँ—गाय कहीं और खड़ी है, घोंचे (उसके रहने के स्थान) से आवाज़ किसी और जगह से आ रही है। कारण और परिणाम में असंगति होने पर ऐसा कहते हैं।

गाय का दूध सो माय का दूध—गाय का दूध माता के दूध के समान होता है। अर्थात् गाय का दूध काफ़ी लाभप्रद होता है।

गाय का धड़ जैसा आगे वैसा पीछे—पवित्रता के लिहाज़ से गाय का अगला तथा पिछला दोनों धड़ समान माना जाता है। कहावत का आशय यह है कि समदर्शी व्यक्ति को सभी श्रद्धा से देखते हैं। तुलनीय : भोज० गाइ क धर जइसन आगे तइसन पाछे; पंज० गां दा धड़ जिदा आगे उदा दा पिछे।

गाय का बछड़ा मर गया तो खलड़ा देख पेन्हाई—वियोग हो जाने पर बिछुड़ने वाले के चित्र या मूर्ति आदि नक़ली रूप को देखकर भी तसल्ली होती है (खलड़ा—खाल जिसमें भुसा भर दिया जाता है)। तुलनीय : अव० गाय के लेरुआ मरि गवा तो ठठरियै से थोरी पन्हाई।

गाय का बछिया तले और बछिया का गाय तले—युक्ति से काम निकालने पर कहते हैं।

गाय की दो लात भली—सज्जन व्यक्तियों की दो-चार बातें भी भली पड़ती है। तुलनीय : अं० Pain is forgotten where gain follows

गाय की भैंस क्या लगे ?—अर्थात कोई संबंध नहीं है। जब किसी का किसी से कोई संबंध न हो फिर भी वह उससे संबंध जोड़ना चाहे तो कहते हैं। तुलनीय : राज० गाय रै भैंस कांई लागै; मेवा० गाय के भैंस कई लगे; ब्रज० गाय की भैंस कहा लगै।

गाय की भैंस तले, भैंस की गाय तले—गाय के बच्चे को भैंस के नीचे और भैंस के बच्चे को गाय के नीचे करते हैं। (क) जब कोई व्यक्ति इधर-उधर से व्यवस्था करके अपने परिवार की देखभाल करता है तब कहते हैं। (ख) जब कोई उलटा-सीधा काम करता है तब भी कहते हैं। (ग) जब कोई इधर-उधर की बातें करके लोगों को आपस में लड़ाता रहता है तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : हरि० गा की भैंस्य तले, भैंस्य की गा तले; भोज० गाइ में क भइंसी में भइंसी में क गाइ में; पंज० गां थले कट्टा, मझ थले वच्छा।

गाय की भैंस में भैंस की गाय में—ऊपर देखिए।

गाय के कीड़े निबटे, कौए का पेट पले—कौए आदि पक्षी पशुओं के शरीर के कीड़े-मकोड़े खाते रहते हैं। इससे पशुओं की कुछ हानि नहीं होती किंतु पक्षियों को भोजन मिल जाता है। यदि कोई छोटा आदमी किसी बड़े आदमी के सहारे जीवनयापन करे तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : गढ़० गोरू का किल्ला फिट जौंन, गंटला को ज्युंदलो।

गाय को अपने सींग भारी नहीं होते—अपने परिवार के लोग किसी को बोझ नहीं मालूम पड़ते।

गाय को बच्चा बैल हुंकारे—गाय तो बच्चा जनती और बैल कराह (हुंकार) रहा है। जब कष्ट किसी और को हो और उसे देखकर दूसरा व्यर्थ में परेशान हो तो व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : निमाड़ी— जण गाय न कण बइल।

गाय को भैंस से क्या ?—गाय को भैंस से क्या मतलब ? जब कोई किन्हीं दो व्यक्तियों या वस्तुओं में कोई संबंध होने पर भी ज़बरदस्ती संबंध बनाए तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० गाय रै भैंस कांई लागै, पंज० गाँ नं मझ नालों की लेना।

गाय गई साथ रस्सी भी ले गई—गाय तो हाथ से गई ही और साथ में जो रस्सी उसके गले में बँधी थी वह भी ले गई। (क) जब एक हानि के साथ ही दूसरी हानि भी हो जाय तो कहते हैं। (ख) जब कोई अपनी हानि के साथ-साथ दूसरों की भी हानि करता है तब उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० गाय गयी गळावड़ो लेगी।

गाय घास से प्यार करे तो खाय क्या ?—यदि गाय घास से प्रेम या दोस्ती करने लगे तो क्या खाएगी ? अर्थात् जो जिसका भोज्य पदार्थ है या जिससे किसी का निर्वाह होता है और वह उसे छोड़ दे तो उसका जीना मुश्किल हो

जाएगा। तुलनीय : राज० गाय घास सूं भायेला कर तो खावे कांई ।

गाय चरावें रावत, दूध पिए बिलैया—गाय तो रावत चराते हैं और दूध बिल्ली (बिलैया) पीती है। अर्थात् जब श्रम कोई और करे तथा उसका लाभ कोई और उठावे तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : छत्तीस० गाय चरावे राउत, दूध खाय बिलैया ।

गाय जने बैल की दुम फटे—दाता दे और जलने वाले को दुःख हो।

गाय जब दूध से सलूक करे तो क्या खाय ?—दे० 'गाय घास से प्यार करे···'।

गाय तरावे, भैंस डुबावे—(क) गाय की पूंछ पकड़कर नदी या नाला पार करना पड़े तो वह पार ले जाती है किंतु भैंस पानी में प्रसन्न रहती है इस कारण वह बीच में ही रह जाती है और पार जाने वाला डूब जाता है। (ख) गाय को पवित्र और पूजनीय तथा भैंस को मनहूस माना जाता है। (ग) भले लोगों की संगति से मनुष्य का कल्याण हो जाता है और बुरों की संगति करने से हानि सहन करनी पड़ती है। तुलनीय : भीली—ढाही तारे डोबी डुबावे, डोबी नूं पंछड़ो नीं हावे ।

गाय दुह कर गधे को पिलाएँ—गाय दुहकर गदहे को उसका दूध पिलाते हैं। जब कोई व्यक्ति किसी अच्छे आदमी से धन या वस्तु लेकर कुपात्र को देता है तो उसके प्रति कहते है। तुलनीय : राज० गाय दू'र गधांने पावै।

गाय न आवे आखर, दाबे फिरें पाथर—जिसे एक अक्षर भी पढ़ना-लिखना नहीं आता उसके लिए पुस्तक पत्थर के समान है। जो व्यक्ति अनपढ़ होने पर भी दिखावा करने के लिए बड़ी-बड़ी पुस्तकें लिये घूमते हैं उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

गाय न आवे बछवे लाज—(क) माँ को बेटे से लज्जा नहीं लगती। (ख) पशु किसी से लज्जा नहीं करते। तुलनीय : पंज०गां नूँ बच्छे नालों सरम नयी आंदी।

गाय न बाछी नींद आवे आछी—जिनके पास गाय, बछड़े या बछिया आदि नहीं होतीं उन्हें खूब नींद आती है। अर्थात् निर्धन व्यक्ति निश्चित होकर सोता है। (ख) ऐसे लोगों के प्रति भी व्यंग्य में कहते हैं जो निर्धन होते हुए भी कुछ काम नहीं करते और व्यर्थ में इधर-उधर घूमते रहते हैं। तुलनीय : हरि० गा न बाच्छी, नींद आवे आच्छी; कौर० गाय न बच्छी, नींद आवै अच्छी; पंज० गाँ न बच्छी नींद आवे चंगी।

गाय न हो तो बैल दुहो—बेकार बैठने से कुछ-न-कुछ करते रहना अच्छा है। तुलनीय : पंज० बैले बैना चंगा नयीं हुंदा।

गाय न्याणे की, बहू ठिकाने की—गाय वह अच्छी होती है जिसे न्याणो पर दूध देने की आदत हो और बहू वह अच्छी होती है जो अच्छे खानदान की हो (न्याणा =एक रस्सी जो दूध निकालते समय गाय के पिछले पैरों में बाँधी जाती है)। तुलनीय : हरि० गा न्याणे की भऊ ठिकाणे की।

गाय बिआय बैल को पीर आवे—जब काम कोई और करे या कष्ट किसी और को हो और परेशान कोई और हो तब व्यंग्य में ऐसा कहा जाता है।

गाय-बैल नमक चाटें, बछिया-बछड़े मुँह चाटें—गाय-बैल आदि बड़े पशु तो नमक चाटते हैं, किंतु छोटे-छोटे बछड़े आदि उनका मुँह चाट कर ही संतोष कर लेते हैं। जब बड़े या बलवान व्यक्ति सब धन या वस्तु अकेले ही हज़म कर लें और छोटों को कुछ न मिले तो उनके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० ठुल्ला गौरू लूण बुकावन छोटा बाछरू थोवडो चाटन; पंज० गां-टगा लूण चटण, बच्छी बछा मुँह चटण।

गाय भाग गई, गोबर छोड़ गई—गाय तो रस्सी तोड़ कर भाग गई और केवल गोबर छोड़ गई। जब लाभ की वस्तु तो चली जाय और बेकार वस्तु अपने पास रह जाय तब कहते है। तुलनीय : राज० गायां ऊछरगी पोट। लारे छोडगी; पंज० गां नठ गयी, गोआ छडी गयी।

गाय भी हाँ बैल भी हाँ—(क) जब कोई अपनी ठीक राय न दे और प्रत्येक बात पर 'हाँ हाँ' करे तो कहते हैं। (ख) मूर्ख व्यक्ति के प्रति भी कहते है जो गलत और सही सभी बातों में 'हाँ हाँ' करते रहते है। तुलनीय : मैथ० गइओ हू बछरुओ हू; भोज० गइओ हं भइंसियो हं।

गाय भी हूँ भैंस भी हूँ—ऊपर देखिए। तुलनीय : पंज० गां भी आहो टग्गा भी आहो।

गाय-भैंस मर गए, चूहे के गले घंटी—(क) चूंकि गाय-भैंस मर गए, और घंटी कहीं बाँधनी ही है, अत: चूहे के गले में बाँध दी। किसी के द्वारा इस प्रकार की मूर्खता करने पर कहते है। (ख) किसी स्थान पर जब बड़े या सभ्य लोग नहीं रहते और किसी ओछे या निम्न श्रेणी के व्यक्ति को सम्मान प्राप्त होता है तो व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : छत्तीस० गाय-भैंस मर गइन, छेरी-के गर माँ खड़फड़ी (लकड़ी की बड़ी घंटी); पंज० गाँ-मज मर गयी-चूहे बिच 'कंटी'।

गाय मरे तो घास का क्या काम—गाय के मर जाने पर सान की कोई जरूरत नहीं होती। अर्थात् (क) जब किसी वस्तु का उपभोग करने वाला ही न हो तो उस वस्तु के रहने और न रहने से कोई अंतर नही पड़ता। (ख) समय पर न मिल कर जब कोई चीज़ बाद में मिलती है तो उसका कोई महत्त्व नही होता। तुलनीय : अव० गाई मरे खरु होई तौ काहे लागै; पंज० गा मर गयी ते का दा की कम; (जदों दंद थे अदों छोले नयी, जदों छोले न अदों दंद नयीं;

गाय मार कर जूता दान—गाय मारने का पाप जूता दान करके धोना चाहते हैं। जो साधारण या छोटी सी वस्तु को देकर किसी महान् पाप से मुक्ति चाहे उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

गाय में या बैल में—न गाय में न बैल में। (क) जो व्यक्ति कुछ काम न करता हो बिल्कुल निकम्मा हो उसके प्रति कहते हैं। (ख) जिस व्यक्ति का किया हुआ कोई भी कार्य पूर्ण न हो बल्कि उसे वह अधूरे ही छोड़ दे तब भी ऐसा कहते है। तुलनीय : राज० गाय में न बळध में, पंज० न गां विच न टग्गे विच।

गाल और थप्पड़ में कितनी दूरी—गाल और थप्पड़ में कोई विशेष दूरी नहीं है। बहुत आसान काम के प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० गाल थाप कितोक आंतरो; पंज० गल्ल ते चपेड़ विच किनी दूरी।

गाल कट जाय पर चावल न उगलै—हानि होने पर भी अपना हठ न छोड़ने वाले के प्रति कहते है। तुलनीय : मरा० गाल तुटेल पण भाताचे शीत बाहेर निघणार नाही।

गाल का हारे गाल के जीते—मुंह से ही मनुष्य की हार-जीत होती है। अर्थात् ठीक ढंग से बात कहने से ही लोग प्रभाव में आते है और जिसको वह ढंग नही आता वह सब जगह दुतकारा जाता है। या जो प्रेम से बातें करता है उसे सब जगह सम्मान मिलता है और कटु बात कहने वाले का चारों ओर निरादर होता है। तुलनीय : उ० जबान सीधी तो मुल्कगीरी।

गाल बजायेहूँ करे, गोरी कंत निहाल—बड़े लोग थोड़े में ही प्रसन्न हो जाते है। तुलनीय : पंज० गलबजायी गोरी नची।

गाल वाला जीते चुप वाला हारे—दुष्ट और झगड़ालू व्यक्तियों से सज्जन लोग हार मान जाते हैं। तुलनीय : पंज० गेला पाणे वाला जित्ते, चुप रहण वाला हारे।

गाल वाला जीते माल वाला हारे—अर्थात् (क) अत्यधिक गप्प मारने वाले पूंजी वाले को हरा देते हैं। (ख) बड़े लोग ओछे लोगों से हार मानकर ही अपनी इज्जत बचाते हैं। तुलनीय : मैथ० गालवाला जीत गेल आ मालवाला हारि गेल; पंज० गालड़ जित्ते पैहे वाला हारे।

गाली और तरकारी खाने ही के लिए हैं—गाली सुनकर क्रोध न करने के लिए ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० गारी तरकारी खाइन के बरे है; पंज० गाल ते तरी खादी जांदी है; ब्रज० गारी और तरकारी खायबे ई कू हैं।

गाली देना बच्चों का खेल नहीं है—किसी को गाली देने पर उसका फल भी तुरंत मिल जाता है, अर्थात् उसके बदले में गाली या मार खानी पड़ती है। तुलनीय : पंज० गाल कडना बचियाँ दा खेल नहीं।

गाली मत दे किसी को, गाली करे फ़साद—गाली किसी को भी नही देनी चाहिए क्योंकि यह झगड़े की जड़ होती है। तुलनीय : पंज० गाल न कड किसे दी गाल करे फ़साद।

गाली से कौन सिर फटता है—(क) गाली को सहन करना ही ठीक है। चुपचाप सुन लेने मे कोई हानि नही होती और उत्तर देने से बहुत से झगड़े खड़े हो जाते हैं। (ख) सज्जन लोग दुष्टों से बचने के लिए उनकी कड़वी बातों को सुनकर भी शांत रहते हैं। तुलनीय : राज० गाल्यांसूं किसा गूमड़ा हुवै; पंज० गाल सुणणे कने कैड़ा सिर फटण लग्गा है; अं० Harsh words break no bones.

गाले डूबेंगे, पत्थर तरेंगे—उलटे ज़माने (कलियुग) पर कहते है जिसमें कुलीन अपमानित होते हैं और नीचों का सम्मान होता है।

गाले हाथ गोपालक माय—गोपाल की माँ का हाथ हमेशा गाल पर रहता है। (क) सदा प्रसन्न रहने वाली स्त्री के लिए कहते हे। (ख) चिन्तित मुद्रा में भी लोग गाल पर हाथ रखते है। अतः चिंतित रहने वाली स्त्री के लिए भी कहते हैं।

गावे के कजरी गावें बसंत—विपरीत काम करने पर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० गावे के मलार गावें चउताल

गाहक और मौत का ठीक नहीं कब आवे—ये दोनों कभी भी आ सकते हैं, इनके विषय में कुछ निश्चित नहीं है। तुलनीय : पंज० गाहक ते मौत दा पता नहीं कदों आ जाण।

गिन-गिन कर टूटी उंगली, खीसा फिर भी खाली—हिसाब लगाते हुए थक गए और कुछ मिला भी नहीं। (क) जब किसी व्यक्ति से कुछ लेन-देन हो और इस आशा से कि उससे कुछ धन मिलेगा हिसाब-किताब करे, किंतु बाद में कुछ भी न मिले तो कहते हैं। (ख) जब अधिक श्रम करने

पर भी कोई लाभ न हो तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० गाण पूरी, थौला रोता; पंज० गिण-गिण के उँगला पनियाँ चौला तां भी खाली।

गिन पोई सम्भाल खाई—(क) समझ-बूझ कर आवश्यकतानुसार धन पैदा करे और संभाल कर खर्च करे। यही उचित पथ है। (ख) जो व्यक्ति थोड़ा पैदा करे और सब व्यय कर दे, भविष्य के लिए न छोड़े उस पर भी कहते हैं।

गिनी गाय में चोरी नहीं हो सकती—व्यवस्थित रूप से या सँभाल कर रखी हुई चीजों के कम-बेश होने का भय बहुत कम रहता है। तुलनीय : पंज० साँबी दी गाँ कुते नही जंदी।

गिनी डालियाँ हैं—सभी डालें गिनी हुई हैं। व्यवस्थित वस्तु के लिए कहते हैं।

गिनी रोटी नपा सुरुवा—(क) सदा एक ही ढंग से या मितव्ययिता से रहने वाले मनुष्य के प्रति कहते हैं। (ख) उस व्यक्ति के प्रति भी कहते है जिसकी एक निश्चित आमदनी और जो किसी तरह खाने-पीने को ही अटती हो। तुलनीय : अव० गिनी रोटी नपा सुरुआ।

गिने गिनावे टोटा पावे—ऐसा लोकमत है कि जो व्यक्ति धन को बहुत जतन से रखता है उसके पास धन अधिक नहीं हो पाता। उसे प्राय: सभी कामों में घाटा लगता रहता है।

गिने न गूंथे जिजी का फूला कहाँ धरों—'मान न मान मैं तेरा मेहमान,' की प्रवृत्ति या बिना बुलाए भी सब की बात में दखल देने वाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० सदया न बुलाया मैं तेरे कर आया।

गिने न गूंथे हो दूल्हा की मौसी—(क) जब कोई व्यक्ति बिना परिचय के किसी से बहुत नजदीक का संबंध जोड़ता है तो कहते हैं। (ख) जब कोई व्यक्ति बिना बुलाए किसी के कार्य में सम्मिलित हो जाता है तो भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० कर-कर मेरे सौहरिए खड़दुंबी मेरा नां।

गिने पूये सम्हाल खाये—यदि अपने पास कोई सामान कम हो तो उसे सँभाल कर खर्च करना चाहिए। अर्थात् अपनी सामर्थ्य देखकर ही व्यय करना उचित है। तुलनीय : पंज० पैर उन्ने पसारो जिन्नी चादर है।

गिरगिट का सा रंग बदलता है—जो मनुष्य किसी एक बात पर अटल न रहे उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : मेवा० कंरगेट्या वाला रंग बदले; पंज० गिरगिट वरगा रंग बदलदा है।

गिरगिट की दौड़ बार ताईं—नीचे देखिए।

गिरगिट की दौड़ बिटौरे तक—गिरगिट अधिक दौड़ेगा तो बिटौरे (उपलों या कंडों के बड़े ढेर) तक। अर्थात् (क) शक्ति के अनुसार ही काम या भागदौड़ की जा सकती है। (ख) हर व्यक्ति अपने ठिकाने पर जाकर शरण लेता है। तुलनीय : हरि० मियाँ की दौड़ मस्जिद तक; पंज० मुल्ला दी दौड मस्जिद तक।

गिरते-पड़ते ही सवारी आती है—घोड़े की सवारी सीखने वाले को कई बार घोड़े से गिरना पड़ता है तभी वह निपुण घुड़सवार बन पाता है। (क) मनुष्य ठोकरें खाने पर ही अनुभवी हो पाता है। (ख) जो व्यक्ति कष्ट मिलने पर भी अपने मार्ग को नही छोड़ता उसे ही सफलता मिलती है। तुलनीय : राज० पड़तां-पड़तां ही असवार हुया करै।

गिरदान की दौड़ बढ़िया लग—दे० 'गिरगिट की दौड़ बिटौरे तक।'

गिरने वाला सस्ता छूटे और गर्दन मेरी टूटे—जब कोई जिस पर वास्तव में विपदा आने वाली हो वह बच जाए और दूसरा सहसा उसमें फँस जाय तो ऐसा कहते हैं।

गिर पड़े की दंडवत—(क) भाग्यवश किसी अच्छे काम के हो जाने पर कहते है। (ख) किसी हानिप्रद काम में लाभ हो जाने पर भी कहते हैं। तुलनीय : मरा० उलटून पडली खरी म्हणनी सूर्यास दडवत करी: छत्तीस० गिर परे के हर गंगा।

गिर पड़े तो हर गंगा—ऊपर देखिए।

गिरहकट का भाई गठकट—सभी ठग या धूर्त एक जैसे होते है।

गिरा अनैन नैन बिनु बानी—वाणी के पास नेत्र नही हैं कि देखे और फिर कहे और नेत्र के पास वाणी नही है कि वर्णन कर सके। जब किसी चीज या व्यक्ति की सुदरता का वर्णन न किया जा सके तब कहते हैं।

गिरि सम होंहि कि कोटिक गुंजा—असंख्य छोटी चीजें भी मिल कर पहाड़ के बराबर नही हो सकती। अर्थात् अनेक छोटे मिलकर भी बडों का मुकाबला नहीं कर सकते।

गिरी अटारी कोठे बराबर—अटारी गिरने पर भी कोठे के बराबर रहती है। अर्थात् धनवान भी निर्धन क्यों न हो जायँ फिर भी निर्धनों की तुलना में धनी ही रहते हैं।

गिरी ताड़ से रूठी भतार से—नीचे देखिए।

गिरी पहाड़ से रूठी भतार से—पहाड़ से तो गिरी, किन्तु भतार से रूठ गई। अर्थात् गुस्से का कारण कोई है, किन्तु गुस्सा प्रकट कर रही है किसी और पर। असंबद्ध कार्य करने पर व्यंग्य में उक्त कहावत कहते है। तुलनीय :

मैथ० खसली पहाड़ सं रुसली भतार सं; भोज० चउकठ क उढ़ुक लागे सील के फोरें।

गिरे का क्या गिरेगा ?—किसी की अत्यंत दयनीय स्थिति पर कहा जाता है। अर्थात् जिसके पास कुछ होगा ही नहीं उसका क्या खोयेगा या बिगड़ेगा। तुलनीय : पंज० मरे नूँ की मारना।

गिरे खंभ पलान भारी—रोजगार बिगड़ जाने पर या प्रमुख आधार के समाप्त हो जाने पर जीवन का निर्वाह कठिन हो जाता है। (खंभ = खंभा, पलान = खंभे पर टिकी झोपड़ी)।

गिरे पड़े वक़्त का टुकड़ा—सुयोग्य लड़के पर कहा जाता है, जिसकी बुरे वक़्त में काम आने की आशा हो।

गिरे में सब चार लात मारते हैं—(क) कमज़ोर को सब परेशान करते हैं। (ख) बुरे दिन आने पर सभी तंग करते हैं। तुलनीय : पंज० मरे नू मारे मारदे हन; ब्रज० गिरे मे चारि लात सबई मारें।

गिलहरी का पेड़ ठिकाना—जब कोई घूम-फिर कर अपने एक ही ठिकाने पर आवे तब कहते हैं। तुलनीय : पंज० कूम-फिर के फिर उथे ही।

गिलहरी की दौड़ पेड़ तक—दे० 'गिरगिट की दौड़ बिटौरे…'।

गिलोय और नीम चढ़ी—दे० 'एक करेला दूजा नीम…'।

गिहथिन धरें बड़ा के अदहन—अपने को निपुण समझ कर बड़ा बनाने के लिए पानी गर्म कर रही है (अदहन रख रही हैं)। अर्थात् जब कोई अनिपुण स्त्री या पुरुष अपने को निपुण दिखाने के लिए कोई उलटा-सीधा काम करे तो कहते है। तुलनीय : भोज० गिहथिन चलली बारा के अदहन धरे; अव० निउनी चली बरन का अदहनु धरैं।

गीत गाने गए बिसर, जब बिटिया आई तिसर—(क) तीसरी बार मायके आने तक लड़की सब गीत भूल जाती है, क्योंकि तब तक उसके एक-दो बच्चे हो जाते हैं और वह घरेलू झंझटों में फँस जाती है। (ख) एक-दो लड़की तक तो कोई बात नहीं रहती, पर जब तीसरी लड़की पैदा हो जाती है तो माँ को गाना-बजाना अच्छा नहीं लगता। तुलनीय : मैथ० गीत-दान गे बिसरि जब बिटिया भे तीसरि।

गीत गाने से पत्थर नहीं पिघलते—कठोर आदमी पर मीठे बोल या अनुनय-विनय का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। तुलनीय : पंज० गीत गाण नाल बट्टे नहीं टूटदे।

गीत गाने से ही ब्याह नहीं होता—ब्याह केवल गीत गाने से ही नहीं होता उसके लिए और भी बहुत-सी चीज़ों की आवश्यकता होती है। अर्थात् काम बातों से ही नहीं होते उनके लिए परिश्रम और धन की आवश्यकता होती है। तुलनीय : पंज० गीत गाण नाल विआह नहीं हुंदा।

गीत-दान गए बिसर, जब बिटिया भई तिसर—दे० 'गीत-गाने गए बिसर…'।

गीदड़ औरों के शगुन बताए, आप अपनी गर्दन कुत्तों से तुड़वाए—अपना पता नहीं दूसरों का भविष्य बताते फिरते हैं।

गीदड़ का बच्चा कहीं शेर होगा ?—अर्थात् नहीं। (क) कमज़ोर की सन्तान कमज़ोर ही होगी। (ख) कायर के बच्चे भी कायर ही होते हैं। तुलनीय : भोज० बिलार क बच्चा कहीं बाघ होई, सियार क बच्चा कहीं शेर होई; पंज० खोते दा पुतर कदी सेर बनदा है।

गीदड़ की आवाज़ सौ कोस तक जाती है—क्योंकि गीदड़ रात्रि के शांत वातावरण में चिल्लाते हैं, इसलिए उनकी आवाज़ दूर-दूर तक चली जाती है तथा उसको सुन-कर और गीदड़ भी चिल्लाने लगते हैं। इसी प्रकार यह क्रम आगे ही बढ़ता जाता है। जो व्यक्ति एक-दूसरे का बहुत साथ देते हों उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं कि इनमें से एक बोला तो उसकी आवाज़ सौ कोस तक पहुँच जाएगी। तुल-नीय : माल० हियांरा री हाको सो कोस तक जाय; पंज० गिदड़ रोण सारे सुनण।

गीदड़ की जल्दी से बेर नहीं पकते—गीदड़ के चाहने से बेर शीघ्र नहीं पक जाते हैं। आशय यह है कि कोई भी काम घबड़ाने या जल्दबाजी करने से नहीं होता बल्कि प्रत्येक कार्य अपने समय पर ही होता है। तुलनीय : हरि० गादड़ की तावळ तैं बेर कोन्या पाकें।

गीदड़ की बेर से क्या बेर नहीं पकते ?—बेर क्या गीदड़ के आने पर ही पकते हैं ? बेर तो समय आने पर पक ही जाएँगे चाहे गीदड़ आए या न आए। आशय है कि (क) प्रकृति किसी की प्रतीक्षा नहीं करती वह अपने क्रम पर ही चलती है। (ख) ओछे आदमियों के बिना कोई काम नहीं रुकता। तुलनीय : अं० Time and tide wait for none.

गीदड़ की मौत आवे, तो गाँव की ओर भागे—(क) जब किसी का अनिष्ट होना होता है तो वह उलटा-सीधा कार्य करने लगता है। (ख) जब कोई व्यक्ति अपने से काफ़ी शक्तिशाली या संपन्न व्यक्ति से शत्रुता करता है तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : कौर० गीदड़ की मौत आवै, तो गां की ओर भगै; हरि० गीदड़ की मौत आया करै, वो

गाम की ओड़ा भाज्या करे; मरा० कोल्हयाच्या जिवावर बेतली तर तो गांवा कड़े पळतो; भोज० सियार क मउति आवे त गांव के ओर धावे; राज० स्याकियैरी (गादड़ेरी) मौत आवै जरां गांव कानी भाजै; पंज० गिदड़ मरण लगा ते पिंड वल नट्ठया।

गीदड़ की मौत आवे तो शहर की ओर दौड़े—ऊपर देखिए।

गीदड़ की शामत आए तो गाँव की तरफ भागे—दे० 'गीदड़ की मौत आवे तो गांव…'।

गीदड़ के कहे से बेर नहीं पकते—किसी के चाहने से काम नहीं होता। काम तो समय आने पर ही होता है। तुलनीय : पंज० गिदड़ दे आखन नाल बैर नहीं पकदे।

गीदड़ के मनाए ढोर नहीं मरते—दे० 'कौवे के कोसने से…'।

गीदड़ ने मारी पालथी, जब मेंह बरसेगा तभी उठेगा—ऐसी धारणा है कि गीदड़ जब गर्मी से परेशान हो जाता है तो वह पालथी मारकर बैठ जाता है और जब तक पानी नहीं बरसता वह अपनी जगह से नहीं हिलता। (क) जब कोई आदमी किसी कार्य को करने की हठ पकड़ ले तो उसके प्रति मजाक में कहते है। (ख) जब कोई व्यक्ति किसी स्थान पर जमकर बैठ जाय और वहाँ से हिले ही नहीं तो उसके प्रति भी व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० गादड़ मारी पालथी मेहां बूठां हालसी; पंज० गिदड़ ने मारी चौंकड़ी, जदों मीह बरेगा ते उठेगा।

गीदड़ ने हाथी को मार दिया—गीदड हाथी को कभी नहीं मार सकता, यह असंभव है। जो व्यक्ति बिना सिर-पैर की हाँकते हैं उनके प्रति व्यंग्य मे कहते हैं। तुलनीय : राज० कैररो कांटो वढ्यौ माढ़ी सोळै हाथ; पंज० गलाँ नाल पहाड़ तोड़ना।

गीदड़ पड़ गया झेरे में तो रात बसेरा वहीं सही—सियार अंधकूप (झेरा) में पड़ गया तो कहा कि आज रात यहीं रहूँगा। अर्थात् (क) मजबूरी में सब कुछ सहना पड़ता है। (ख) जब कोई किसी परेशानी में फँस जाय और मजबूरी मे कहे कि मुझे इसी में आनंद आ रहा है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : हरि० गाद्दड़ पड़्य गया झेरे मैं, तँ रात्य बसेरा आडै ए सही; पंज० गिदड फस गया टोये बिच ते रात उथे सही।

गीदड़ों के रोने से बैल नहीं मरते—दे० 'गीदड़ के कहे से…'।

गीदी गाय गुलेंदा खाय, बेर-बेर महुआ तर जाय—लपकी (गीदी) गाय महुए का फल (गुलेंदा) खाती है इसलिए बार-बार महुए के नीचे जाती है। जब कोई व्यक्ति लालच में बार-बार किसी के पास जाए तो उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० हिली-हिली लूंकड़ी अड़कमतीरा खाय, लोभ लागो वाणियो चोट लागी गाय; गढ़० वगमारा काखड़ू गीज्यू छ; पंज० गिज्जी गोह गलेले खाए।

गीधा चोर मार खाय—एक ही स्थान पर बार-बार चोरी करने वाला चोर पकड़ा जाने पर मार खाता है। कोई भी बुरा काम सदा ही एक स्थान पर करने वाला अवश्य पकड़ा जाता है। तुलनीय : पंज० गिज्जी गोह गलेले खाए; राज० हिल्योड़ो चोर गुलगुला खाय।

गीधा बनिया सीधा दे—केवल परिचित से ही उधार मिलता है। (गीधा = परिचित)।

गीधी गाय गुलेंदा खाय, दौर-दौर महुवे तर जाय—दे० 'गीदी खाय गुलेंदा…'।

गीला भी हाँ सूखा भी हाँ—दे० 'गाय भी हाँ बैल…'।

गीली लकड़ी, बासी पानी—जिस परिवार में गीली लकड़ियां तथा बासी पानी का प्रयोग होता होगा वे निश्चित रूप से बहुत आलसी होंगे। (क) आलसी मनुष्यों को व्यंग्य से कहते है। (ख) वे व्यक्ति जो उलटे उपायों द्वारा किसी काम को करना चाहें उनके प्रति भी कहते है। तुलनीय : गढ़० सदा लाखड़ा अर बासी पाणी।

गीली लकड़ी सीधी हो सकती है—(क) बालक सब कुछ सीख सकते हैं। (ख) बालक में यदि कोई बुरी आदत आ गई है तो वह छुड़ाई जा सकती है, किन्तु बड़े हो जाने पर आदतें छुड़ाना कठिन हो जाता है। तुलनीय : पंज० गिली लकड़ी नहीं बल दी।

गीली सूखी सब जलती है—लकड़ी कैसी भी हो आग में जल जाती है। (क) अच्छे-बुरे सभी दुःख भोगते हैं। (ख) इस संसार में सभी तरह के भले-बुरे काम चलते हैं। (ग) आग सब कुछ जला देती है। (घ) अच्छे-बुरे सभी काम में आ जाते हैं।

गुंजन को बन देखि के मुकुतन दीनी त्यागि—गुंजा के वन को देखकर मोती के समूह को त्याग दिया। आडम्बर से युक्त या गुणहीन के आकर्षण में पड़कर गुणी को छोड़ने पर कहते हैं।

गुंडे चले बजार बिनौले ढक रखियो—गुंडे बाजार में जा रहे है बिनौले को ढक कर रखना। अर्थात् दुष्टों से

सावधान रहना चाहिए।

गुंबद की-सी आवाज़—जैसा कहोगे वैसा जवाब भी पाओगे। (क) गुंबद में आदमी जो कहेगा, प्रतिध्वनि के रूप मे वही सुनाई पड़ेगा। (ख) बच्चों के प्रति भी कहते हैं क्योंकि उनको जो भी कहा जाय चाहे वह बुरा ही क्यों न हो, वे वैसे ही कह देते हैं। तुलनीय : पंज० जिदाँ दा आखो उदाँ दा सुनो।

गुज़र गई गुज़रान, क्या झोंपड़ी क्या मैदान संतोषी और शांत मनुष्य के लिए सब कुछ बराबर है। तुलनीय : सं० संतोषं परम् सुखम्; माल० गुजर गई गुजरान, कई झोंपड़ी कई मैदान; गढ़० गुजर गई गुजरान क्या झोंपड़ी क्या मैदान।

गुज़र गए अच्छे दिन तो बुरे दिन भी गुज़र जायेंगे —समय सदा एक-सा नही रहता। मनुष्य के जीवन में सुख-दुख आते रहते हैं। तुलनीय : पंज० चंगे दिन बीत गये ते माड़े दिन भी बीत जाणगे।

गुज़रा गवाह लौटा बराती, इन्हें कोई नहीं पूछता—प्राय: काम निकल जाने पर लोग भूल जाते हैं। तुलनीय : अव० गुजरा गवाह लौटा बराती कोऊ नही पूछत; पंज० गये गवाह ते आए बराती नूं कोई नही पुछदा।

गुज़री को सब जाने, आती को कोय न जाने—जो बात बीत चुकी है उसे सभी जानते हैं, किंतु भविष्य मे होने वाली बात को कोई नहीं जानता। आशय है कि भविष्य को कोई नही जान पाता। तुलनीय : भीली—गिया जीतें हारा जाणे, आवे जी कोनी जाणे; पंज० गये नूं मारे जाद करण सामणे कोई नहीं।

गुज़श्त आँचे गुज़श्त -बीती पर विचार करना व्यर्थ है। तुलनीय : पंज० गये नूं की जाद करना; अं० Let bygones be bygones.

गुज़श्ता रा सलवात—जो बीत गया उसे जाने दो। (सलवात सलाम करना)।

गुड़ अँधेरे में खाओ तो मीठा, उजेले मे खाओ तो मीठा- (क) सर्वदा एक-सा या एक रस रहने वाले पर कहते है। (ख) भले मनुष्य परिस्थितियों के बदलने से अपने गुण नही छोड़ते और अच्छे हर परिस्थिति मे अच्छे ही रहते हैं। तुलनीय : मेवा० गोल तो अंधरा में ई मीठो लागे।

गुड़ कहने से मुँह मीठा नहीं होता कोरी बातो से काम नहीं चलता, उसके लिए उद्योग करना पड़ता है। तुलनीय : पंज० गलाँ करण नाल कम नही बनदा।

गुड़ का नफा चींटों ने खा डाला—जब किसी कार्य या व्यापार में एक तरफ से जितना लाभ हो दूसरी तरह उतना ही नुकसान हो जाय तो कहते हैं। तुलनीय : मैथ० गुड़ क नफा चिउटा खइलक, गुड़ क नफा चुट्टी खाय; भोज० गुर क नफा चिउटिये में गायब; पंज० गुड़ दा नफा काढ्याँ ने खा लिया।

गुड़ के बाप कोल्हू—कोल्हू से गन्ने को पेरने के बाद ही गुड़ बनना संभव है। (क) किन्हीं वस्तुओं का संबंध बताने के लिए कहते हैं। (ख) उपद्रव की जड़ या उसके मुखिया को बताने के लिए भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० गुड़ दा पिउ कोलहू।

गुड़ को ही मक्खियाँ लगती हैं -जहाँ लाभ मिलता है वही सब जाते हैं। तुलनीय : पंज० गुड नूं ही मक्खियाँ लगदियाँ हन।

गुड़ खाऊँ न कान छिदाऊँ—न गुड खाऊँगा और न कान छिदाऊँगा। कही-कही कनछेदन की रस्म बालक-बालिका दोनों के लिए होती है और रस्म पूरी होने के बाद गुड़ या मीठी वस्तु खाने के लिए दी जाती है। किसी वस्तु का लाभ लेने के लिए कुछ कष्ट भी उठाना पड़ता है, किंतु यदि लाभ कम और कष्ट अधिक हो तो त्याग देना ही अच्छा है। ऐसे ही समय इस कहावत का प्रयोग करते हैं। तुलनीय : मेवा० गुड़ खाऊँ र कान बीदाऊँ।

गुड़ खाएँ गुलगुले से परहेज़ करें—गुड़ खाते हैं और गुलगुले (गुड़ तथा आटे का बना एक तरह का पकवान) से परहेज़ करते है। अर्थात् (क) जब कोई एक बुरा काम करे और उसी तरह के दूसरे बुरे काम से परहेज़ करे तब व्यंग्य में ऐसा कहते है। (ख) ढोंग करने वालों के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : कौर० गुड़ खावें गुड़ियानी की आण; अव० गुरु खाएँ गुलगुला ते परहेज करें; बुंद० गुर खायें पुअन को नेम करें; ब्रज० गुड़ खाइ पुआ की आन करे; राज० गुड़ ठोकै गुलगुला सूँ परेज; हरि० गुड़ खा, गुलगल्या का परहेज; छत्तीस० गुर खाय गुलगुला से परहेज; मरा० गूल खातो नि गुलगुल्यांचे पथ्य करतो; मेवा० गुड़ खावे और गुलगुला स परेज करें; पंज० गुड़ खाना ते गोगलयां तो परहेज; मल० कोक्किलोतुङ्ङुन्नते कोत्ताव्; अं० To swallow a camel and to strain at gnat.

गुड़ खाना गुलगुले से परहेज़—ऊपर देखिए।

गुड़ खाना पड़ेगा, कान छिदाना पड़ेगा—जब किसी काम को हर हालत में करना पड़े तो कहते हैं।

गुड़ खाना है तो चलना भी पड़ेगा—अर्थात् सुख

प्राप्त करने के लिए कष्ट भी सहना पड़ता है। तुलनीय: कौर० गुड़ खायगी, तो अँधेरे में आयगी; पंज० गुड़ खाना है ते लूंण भी खाना पैंगा।

गुड़ खाय गुलगुले से परहेज -- ऊपर देखिए।

गुड़ खाय और पगड़ी रखे सो बड़ा कहाय- जो गुड़ खाय अर्थात् भोजन भी अच्छा करे और पगड़ी भी रखे अर्थात् कपड़े भी अच्छे पहने उसे ही बुद्धिमान समझना चाहिए। आशय यह है कि थोड़े धन से ही अच्छा खाने-पहनने वाले को बुद्धिमान समझना चाहिए।

गुड़ खायगी तो आयगी अँधेरे में—बदचलन स्त्री के प्रति कहा जाता है क्योंकि धन पाने पर वह सभी कुछ कर सकती है।

गुड़ खाय गुलगुले से परहेज करें—दे० 'गुड़ खाएँ गुलगुले···'।

गुड़ खाय, गुलगुलों से परहेज—दे० 'गुड़ खाएँ गुल-गुले···'।

गुड़ खाय पुओं से परहेज – दे० 'गुड़ खाएँ गुलगुले···'।

गुड़ खाय पुए में छेद करें -- दे० 'गुड़ खाएँ गुलगुले···'।

गुड़ चुरावे तो पाप, तेल चुरावे तो पाप—(क) चोरी चाहे छोटी वस्तु की की जाय या बड़ी वस्तु की चोरी ही कहलाती है। (ख) चाहे छोटी बुराई हो या बड़ी बुराई ही कहलाती है। बुरे कर्मों से बचने के लिए ऐसा कहते हैं।

गुड़जिह्विकान्याय: -गुड़ से सनी हुई जीभ का न्याय। जिस प्रकार चर्परी या दुर्गन्धमय ओषधि गुड़ में लपेट कर बच्चों या अन्य लोगों को खिलाई जाती है, उसी प्रकार नीरस नीति काव्यमय वाणी के माध्यम से सुकुमार मति वाले लोगों को सिखायी जाती है।

गुड़ डलिया, घी अँगुलियाँ—डलिया से देने से गुड़ और अँगुली-अँगुली भर देने से घी समाप्त हो जाता है। (क) जब कोई ग्राहक देखने या चखने के लिए कुछ माँगता है तो बनिए कहते हैं। (ख) थोड़ा-थोड़ा लेने से ही वस्तु समाप्त हो जाती है। तुलनीय: हरि० गुड़ डळियां घी आंगळिया।

गुड़ डली से, घी उँगली से --गुड़ डली से खाया जाता है और घी उँगली से। आशय है कि प्रत्येक कार्य को करने का ढंग पृथक होता है और उसको उसी ढंग से करना चाहिए।

गुड़ ढीला और मक्खियाँ बैठीं—एक तो वैसे गुड़ ढीला है और दूसरे उस पर मक्खियाँ भी बैठी हैं। जब किसी बुरे आदमी या वस्तु में और भी कोई बुराई मिल जाय तो व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय: पंज० गुड़ नंगा छड्या ते मक्खियाँ बैठियां।

गुड़ दिये मरे तो जहर क्यों दे?—(क) यदि बात से कोई मान जाय तो उसे क्यों मारें (ख) सरलता से काम हो जाय तो टेढ़ा क्यों बनें? तुलनीय: मरा० गूळ दिल्याने मरतो, मग विष कां द्या; मालं० मधु कहे मालती, वाण्या वद कीजिए; जो गुड़ से मर जाय ताको विष क्यूं दीजिए; राज० गुड दियां मरे जनके जहर क्यूं देणो; मेवा० गुड़ देता मर जाय जी ने विष नी दीजे; अव० गुर ते मरै तौ माहुर काहे देय।

गुड़ दिखा के ईंट न मारो—अच्छी चीज़ की आशा दिला कर बुरी चीज़ देने पर कहा जाता है।

गुड़ देने से जो मरे क्यों विष दीजे ताहि--दे० 'गुड़ दिए मरे तो ज़हर···'।

गुड़ न दे तो गुड़ की-सी बात तो करे—किसी को यदि कुछ न दे तो कोई बात नहीं, पर कम से कम उससे मीठी बातें तो करे, इसमें क्या जाता है। अर्थात् सबके साथ विनम्रता से बातचीत करनी चाहिए। तुलनीय: मरा० गूळ देऊं नका गुळ सारखे गोड तर बोलाल; राज० गुळ नहीं गुळवाणी नही गुळसूं मीठी जीभ नही; मल० चेतामिल्लात्त उपकारम्; पंज० गुड़ नही देणा ते गुड़ वरगी गल ते कर; ब्रज० गुर न दे गुर की सी बात तौ करै; अं० Civility costs nothing.

गुड़ न राब, हमहूँ खाब--न तो गुड़ ही है और न राब और आप कह रहे हैं कि मैं भी खाऊँगा। जो व्यक्ति बिना जाने-बूझे ही बेतुकी बात करे या कुछ चाहे उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय: राज० राब ना राबड़ी, ऊठे उठे खावड़ो।

गुड़ पकाने की हाँड़ी फूट गई—किसी लाभदायक वस्तु के नष्ट हो जाने या हाथ से निकल जाने पर कहते हैं।

गुड़ पर मक्खियाँ पहुँच ही जाती हैं—गुड़ पर उसकी मिठास के कारण मक्खियाँ पहुँच जाती हैं। अर्थात् जहाँ लाभ की आशा होती है वहाँ लोग पहुँच ही जाते हैं। तुलनीय: राज० गुळ हुवे जठे माख्यां आयी रैवै; कौर० गुड़ होगा तो मक्खी आप आवैगी; पंज० चगे बँदे कोल सारे जांदे हन।

गुड़ बिन त्योहार कैसा—गुड़ के बिना त्योहार कैसे मनाया जा सकता है। जब कोई व्यक्ति किसी आवश्यक वस्तु के बिना ही कार्य करने के लिए कहे तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय: राज० गुळ बिना चोथ किसी; पंज०

गुड़ बगैर सगन नही।

गुड़ बिन होय न चौथ, दुलहा बिन नहीं बरात—गुड़ और दूल्हा के बिना क्रम से चौथ (एक त्यौहार) और बारात संभव नही। अर्थात् अति आवश्यक चीज़ के बिना काम नही चलता। तुलनीय : राज० गुळ बिना चौथ किसी।

गुड़ भरा हंसिया खाते बने न उगलते—जब कोई ऐसा काम आ जाय जिसे न तो करते ही बने और न छोड़ते ही तो कहते है।

गुड़ में होय सवा तऊ न करे रवा, नोन में होय पौन तऊ छोड़े नोन—गुड़ मे यदि अधिक लाभ हो तो भी उसे संग्रह नही करना चाहिए क्योंकि उसे सभी, घर के ग्राहक तथा चीटे-चूहे आदि खा जाते हैं और नमक मे यदि घाटा हो तो भी उसका संग्रह लाभदायक है क्योंकि उसको कोई वैसे नही खाता।

गुड़ सा मीठा है भगवान, बाहर भीतर एक समान—भगवान सदैव ही सुख देने वाला है। वह एकरस रहता है। तुलनीय : पंज० गुड़ जिहा मिठा पगवान, अदरों-बारों इक समान।

गुड़ से बैंगन हो गए—(क) सस्ती चीज़ के महगी हो जाने पर कहते है। (ख) जब कोई साधारण व्यक्ति उन्नति कर जाता है तब भी ऐसा कहते हैं।

गुड़ से मरे तो जहर क्यों देय?—दे० 'गुड़ दिए मरे तो···'।

गुड़ से मीठे अंगार होते हैं—गुड़ से मीठी तो कोई चीज़ नही होती। लेकिन इस लोकोक्ति मे अंगार को गुड़ से मीठा बताया गया है। इसका भाव यह है कि जब किसी व्यक्ति से कहा जाय कि गुड़ से मीठी कोई चीज़ नहीं होती और वह इसे न माने तथा बार-बार यह पूछे कि गुड़ से मीठी कौन सी चीज होती है तब व्यंग्य मे कहते हैं 'गुड़ से मीठे अंगार होते हैं।' जब किसी वास्तविक बात पर कोई विश्वास नही करता तो क्रोध में आने पर लोग कुछ उलटा ही कह देते है। तुलनीय : कौर० गुड़ से मीठ्ठे, के अंगार है।

गुड़ होगा तो चींटे आएंगे ही—(क) दे० 'गुड़ पर मक्खियाँ पहुच···'।

गुड़िया के ब्याह में चीयों का बिखेर—गुड़िया के विवाह में चीओं (इमली या अरंड के बीज) ही बिखेरे जा सकते हैं। अर्थात् जैसा काम हो उसी के अनुसार ही सामान होना चाहिए। तुलनीय : हरि गुडियाँ के ब्याह में चीआँ की बखेर।

गुड़ियों के ब्याह में चीयों की बेल—ऊपर देखिए।

गुण की पूजा होती है, जाति और कुल व्यर्थ—मनुष्य की इज्जत उसके नेक कर्मों से होती है, न कि उत्तम जाति और कुल मे जन्म लेने में। पंज० गुणाँ दी पूजा हुंदी है जात तें कर दी नही।

गुण ना हिरानो गुण ग्राहक हिरानो है—गुणी की क़दर न होने पर कहते है। तुलनीय : अव० गुड़ न हेराने गुड़ गाहक हेराने।

गुण प्रकटे अवगुण दुरे, जाके कमला साथ—जिसके पास कमला (लक्ष्मी) अर्थात् धन है उसके सब अवगुण छिप जाते हैं और उसे सब गुणी मानते है। तात्पर्य यह है कि धनी व्यक्ति की सब लोग इज्जत करते है उसकी बुराइयों की तरफ कोई ध्यान नही देता।

गुण से गुड़ मिले—गुणी व्यक्ति को ही गुड़ मिलता है। गुणी व्यक्ति सभी कुछ पा जाता है। गुण होने पर ही आदर और सुख मिलता है। तुलनीय : भोजी गुण लारे पूजा।

गुद गुदाइए वहाँ तक जहाँ तक हँसी न आए—दिल्लगी तभी तक करनी चाहिए जब तक वह दूसरे के लिए असह्य न हो जाए।

गुदड़ी पर लाल का बखिया—(क) बेमेल वस्तुओं के मेल पर कहते हैं। (ख) जब कोई कुरूप स्त्री या पुरुष अधिक शृंगार करता है तब भी व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० कथरी पर लाल के बखिया।

गुदड़ी मे भी लाल पैदा होते हैं—गुदड़ी जैसी सस्ती वस्तु में भी लाल जैसी मूल्यवान वस्तु पैदा होती है। आशय यह है कि गरीब और निम्न जातियो मे भी महापुरुष जन्म लेते हैं। तुलनीय : राज० गूदड़ी में किसी लाल को नीप जैनी; अव० गुदरी कै लाल; पंज० गुदड बिच चगियां चीजां वी हुदियां हन।

गुदड़ी मे लाल नहीं छिपते—मूर्ख-मंडली में रहते हुए भी गुणी नहीं छिपता अर्थात् गुण चाहे जहां भी हो स्पष्ट हो जाता है। तुलनीय : माल० गोदड़ी में गोरख निकल्यो; अव० गुदरी में लाल नही छिपै; पंज० गुदड़ विच गुण नहीं लुकदे, ब्रज० गुदरी में का लाल छिपै।

गुदड़िया मरकोले मारे हुरमत मरे जड़ाई—गरीब अपनी गुदड़ी में सुखी रहते हैं और धनी लोग शेखी बघारने में जाड़े मे मरते हैं। आशय यह है कि सादगी में आराम है। संपन्न लोगों के प्रति व्यंग्य में कहते है। (मरकोल—गरमाई का सुख लेना; हुरमत=ऐश्वर्य)। तुलनीय : कौर० गूदड़िया मरकोले मारे, हुरमत मरै जिडाई।

गुदड़ी से बीबी आई, 'शेखजी किनारे हो'—ग़रीब परिवार (गुदड़ी) से बीबी आई है और कहती है शेखजी बग़ल हट जाओ। अर्थात् जब कोई ओछा व्यक्ति प्रतिष्ठा या उच्चपद पाने पर इतराने लगता है तब व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

गुन के गाहक सहस नर बिन गुन लहै न कोय —गुण को चाहने वाले हज़ारों मनुष्य हैं, किन्तु बिना गुण के कोई नहीं पूछता। अर्थात् गुणी को ही सब चाहते हैं।

गुन न हिरानो, गुन गाहक हिरानो है—दे० 'गुण न हिरानो गुण···'।

गुनाहे-बेलज्जत -अनुचित काम करने पर भी यदि कुछ रंग न मिले या लाभ न हो तो कहते हैं।

गुनियाँ तो गुन कहै, निर्गुनियाँ देख घिनाय—गुणी के गुण को देखकर अवगुणी घृणा करते हैं। अर्थात् बुरे को अच्छी चीज भी अच्छी नहीं लगती। जब कोई किसी की अच्छी वस्तु को देखकर या कोई किसी की उन्नति को देखकर घृणा या ईर्ष्या करता है तब ऐसा कहते हैं।

गुनी गुनी सब कोउ कहत, निगुनी गुनी न होत—सब के गुणी कहने मात्र से अवगुणी मनुष्य गुणी नहीं हो सकता। अर्थात् झूठी प्रशंसा से कोई महान नहीं बन जाता।

गुप-चुप की मिठाई—कोई बात सुन कर या जाकर किसी से न कहने या खाकर चुप हो जाने (कुछ न कहने) पर कहते हैं।

गुप्तदान महा कल्याण—(क) गुप्तदान का बहुत महत्त्व माना जाता है। गुप्त रूप से कार्य करने वाला अधिक सफलता प्राप्त करता है। तुलनीय: राज० गुपतदान महा पुन।

गुमाश्ते, जमा गुम करें आस्ते आस्ते—(क) धूर्त या विश्वासघात करने वाले गुमाश्ते के लिए कहा जाता है। (ख) जब कोई व्यक्ति धीरे-धीरे ऐसी रक़म को हज़म करे जो उसके विश्वास पर उसके पास रखी गई हो, तो उस पर भी कहते हैं।

गुर खाने अरु पाग राखने जै है काम सुघर के—उसे ही बुद्धिमान समझना चाहिए जो अच्छा खाए-पीए भी और इज़्ज़त भी बना कर रखे।

गुर खाय पुअन का आन बात गुड़ खा ले और पुओं (गुड़ और आटे से बनने वाला एक पकवान) से परहेज करे। आडम्बरपूर्ण कार्य करने वाले के प्रति कहते हैं।

गुर-गुर बिद्या, सिर सिर अकल—सबकी बुद्धि और विचारधारा अलग-अलग होती है।

गुर भरा हंसिया न लीलत बनत है न उगिलत—दे० 'गुड़ भरा हंसिया···'।

गुरबेल अरु नीम चढ़ी - एक तो गिलोय (गुरबेल) वैसे ही कड़वी होती है दूसरे वह नीम पर चढ़ गई जिससे और अधिक कड़वी हो गई। अर्थात् जब किसी बुरे व्यक्ति को किसी दूसरे बुरे व्यक्ति का साथ मिल जाता है तो वह और अधिक बुरा हो जाता है। तुलनीय: पंज० इक ते करेला दूजा नीम चढ़या।

गुरबेल और नीम चढ़ी—ऊपर देखिए।

गुरु आज्ञा अविचारणीया—गुरुओं की आज्ञा के संबंध में विचार करने की आवश्यकता नहीं होती। अर्थात् गुरु की आज्ञा को चुपचाप स्वीकार कर लेना चाहिए। तुलनीय: सं० आज्ञा गुरुणां ह्यविचारणीया।

गुरु कहै सो कीजिए, औ करै सो करिए नाहिं - गुरु जो करने को कहें उसे तो करना चाहिए, लेकिन जो करें उसे देख-कर करना नहीं चाहिए। इस संबंध में एक कहानी है: कोई गुरु एक बार अपने शिष्य के साथ शराब पीने गए। उन्हीं की देखा-देखी शिष्य ने भी एक बोतल पी। उसके बाद रास्ते में गुरुजी एक खौलते हुए तेल के कड़ाहे में कूद पड़े। पर शिष्य चुपचाप खड़ा देखता रहा। इस पर गुरुजी ने चेले से कहा, 'अब तू मेरा अनुकरण क्यों नहीं करता?' और अन्त में उन्होंने उक्त लोकोक्ति कही।

गुरु कीजे जान पानी पीजे छान—गुरु भली भाँति जानकर बनाना चाहिए तथा पानी छान कर पीना चाहिए। तुलनीय: मेवा० गुरु कीजै जाण, पाणी पीजे छाण; बंग० गुरु करबे जेने, जल खाबे छेने; भोज० मैथ० गुरुकर जान के पानी पीथ छान के; सं० दृष्टिपूतं न्यसेत्पादं वस्त्रपूतं जलं पिबेत्. सत्यपूतां वेदद्वाणी मनः पूतं समाचरेत्; ब्रज० गुरु कीजै जानि; पानी पीजै छानि।

गुरु कीजे जानकर, जल पीजे छानकर -ऊपर देखिए।

गुरु की मार, बच्चे का संवार—गुरु के मारने से बच्चे सुधर जाते हैं। आशय यह है कि बिना दण्ड या भय के कोई अच्छा मनुष्य नहीं बन पाता। तुलनीय: सिं० उस्तादजी मार, बार जी संवार; माल० छड़ी लागे छमछम अरु विद्या आवे घमघम, पंज० गुरु दी मार बच्चे नूं संवारदी है; अं० Spare the rod and spoil the child.

गुरु की विद्या गुरु को फली—गुरु के कर्मों का फल गुरु को ही मिला। जब किसी बुरी सीख का फल सीख देने वाले को ही मिले तो व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय: मरा० गुरुची अक्कल गुरुलाच फळली; पंज० गुरु दी अकल गुरु दा

फल।

गुरु के न पीर के— न तो गुरु के ही हैं और न पीर के ही। जो व्यक्ति सबके साथ धोखाधड़ी या नीचता करे उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० गुररा न पीररा; पंज० गुरु दे न पीर दे।

गुरु गुरु, चेला चीनी—नीचे देखिए।

गुरु गुड़ रह गये, चेला चीनी हो गये – जब शिष्य गुरु से आगे बढ़ जाए या छोटा बड़ों से अधिक उन्नति कर जाए तो कहते हैं। तुलनीय: मल० शिष्यन् गुरुविनेक्काल् विद्वानाकुक; मेवा० गुरु तो गुड़ रेग्या और चेला शक्कर वेग्या; पंज० गुरु जिना दे टप्पन चेले जान छड़प्पन; भोज० गुरु तो गुरुइ रहिगे चेला सक्कर होइगे; अव० गुरु गुड़ रह गयें, चेला शक्कर होए गए; राज० गुरु गुड़ ही रेग्या चेला शक्कर हवेग्या; मरा० गुरु गूळच राहिला, शिष्य साखर झाला; छत्तीस० गुरु तो गुर रहिगे, चेला सक्कर होगे; मैथ० गुरु गुरे रहिइल चेला चीनी हो गइला; तेलु० गुरु वुनु चिन शिष्युडु; अं० A s rong chip of a feeble block.

गुरु गुरु ही रहे चेला शक्कर हो गए - दे० 'गुरु गुड़ चेला चीनी······'।

गुरु गुरु ही रहे चेला शक्कर हो गए—ऊपर देखिए।

गुरु गुरवावे, चेला हरकावे—किसी को बुरे कामों में जब अपनों से ही सहायता मिले तो कहते है।

गुरु-गुरु विद्या सिर-सिर अक्कल —सब की राय कभी एक नहीं हो सकती। अर्थात् सब लोग अलग-अलग विचार-धारा के होते है। बहुत कम लोगों के विचारों में समता होती है।

गुरुजी चेले बहुत हो गए, बच्चा भूखे मरेंगे तो आप चले जायेंगे– किसी स्थान पर आवश्यकता से अधिक आदमी एकत्र होने पर उन्हें हटाने के लिए कहा जाता है। तुलनीय : राज० गुरुजी, चेला ओत हूग्या ! के-बच्चा भूखों मरेंगे तो आप ही चले जायंगे।

गुरु गुड़ ही रहे चेला शक्कर हो गया—दे० 'गुरु गुड़ ही रहे···'।

गुरु न गुरु भय्या, सबमे बड़ा रुपय्या—धन ही सबसे बड़ा है, धन के सामने सारे संबंध तुच्छ है। तुलनीय : पंज० बाप बड़ा न भैया सबसे बड़ा रुपया; गुरु वड़ा न पायी सब तों बड़ी कमायी।

गुरुबासर धन बरखा करई, रविवासर धन राजा मरई– जब धन राशि में गुरुवार को चन्द्र-ग्रहण हो तो वर्षा होगी और यदि रविवार हो तो राजा मरेगा।

गुरु बिन ज्ञान, भेद बिन चोरी—नीचे देखिए।

गुरु बिन ज्ञान भेद बिन चोरी, बहुत नहीं तो थोड़ी-थोड़ी – गुरु के बिना ज्ञान नहीं मिलता और भेद के बिना चोरी नहीं होती। इन दोनों कार्यों के लिए गुरु और भेदिया का होना बहुत जरूरी है।

गुरु बिन व्याकुल चेलवा कंठ बिनु बाउर गीत—जैसे सुर के बिना गीत खराब हो जाता है वैसे ही गुरु के बिना शिष्य बिगड़ जाता है।

गुरु बिन भव-निधि तरउ न कोई—बिना गुरु के कोई भी इस संसार रूपी समुद्र को पार नहीं कर सकता। अर्थात् ज्ञान के लिए गुरु का होना नितांत आवश्यक है।

गुरु बिन मिले न ज्ञान, भाग बिन मिलें न सम्पति – बिन गुरु के ज्ञान नही मिलता और न बिना भाग्य के धन ही मिलता है। तुलनीय : राज० गुर बिना किसो ग्यान; पंज० गुरु बगैर ज्ञान नही मिलदा ते भाग वगैर पैहा नही।

गुरु वैद अरु ज्योतिषी, देव मन्त्री अरु राज, इन्हें भेंट बिन जो मिले, होय न पूरन काज—गुरु, वैद्य, पंडित, देव, मंत्री और राजा इनके पास खाली हाथ कभी नही जाना चाहिए। इनके पास खाली हाथ जाने से काम के बनने की संभावना कम रहती है। तुलनीय : पंज० गुरु वैद ते जोतिषी, देव मंत्री ते राजा, इनां नो वगैर मिल्ने कम पूरा नही हुंदा।

गुरु वहीं चेला कहीं —गुरु तो वही का वहीं है और चेला कहाँ पहुँच गया। अर्थात् जब शिष्य गुरु से महान या ज्ञानी हो जाता है तब कहते हैं। तुलनीय : मेवा० गुरु वचे चेला वदे; पंज० गुरु पिछे चेला अग्गे।

गुरु शुक्र की बादली रहै शनीचर छाय, कहै घाघ सुन घाघनी बिन बरसे नहिं जाए —गुरुवार और शुक्र की बादली यदि शनीचर तक रहे तो अवश्य वर्षा होगी, ऐसा घाघ का विचार है।

गुरु से चेला सवाया – (क) जब गुरु से चेला या बड़े से छोटा अधिक उन्नति कर जाय तो कहते हैं। (ख) गुरु से चेले के अधिक दुष्ट होने पर भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० गुरु सेर चेला सवा सेर।

गुरु से चेला मार खाय—(क) गुरु से पहले चेला ही पिटता है क्योंकि वही गुरु के सिद्धान्तों को कार्यरूप में परिणत करता है या भिक्षाटन करने जाता है। (ख) गुरु से पहले चेला माल उड़ाता है क्योंकि वही उसका आयोजन करता है। (इसके लिए 'मार' के स्थान पर 'माल' ठीक होगा)। तुलनीय : पंज० बड़े आदमी तो पहले निका आदमी मरदा है।

गुरु से बढ़कर चेला—(क) जब शिष्य गुरु से अधिक उन्नति कर जाता है तब कहते हैं। (ख) जब गुरु और शिष्य दोनों बुरे हों और शिष्य बुराई में गुरु से तेज हो, तब भी ऐसा कहते है। तुलनीय : पंज० गुरु तों गद के चेला।

गुरु सों कपट मित्र सों चोरी, कि होय अंधा कि होय कोढ़ी—गुरु से कपट तथा मित्र से चोरी करने वाले अंधे या कोढ़ी हो जाते हैं। आशय यह है कि गुरु और मित्र को धोखा देना बहुत बुरा है। तुलनीय : अव० गुर से कपट मित्र से चोरी आय होय निरधन आय होय कोढ़ी।

गुलाब भी जुकाम करे, देखो समय का फेर—समय बदलने पर गुलाब का फूल सूंघने से भी जुकाम हो जाता है। अर्थात् (क) जब मनुष्य के बुरे दिन आते हैं और वह अच्छा काम करता है तब भी बुरे परिणाम मिलते हैं। (ख) विपत्ति मे अपने लोग भी शत्रु बन जाते हैं। तुलनीय : राज० सारोइ बादी करै देख दे ही रा खेल।

गुलाम की जात से वफ़ा नहीं—नौकरों पर विश्वास नही करना चाहिए, उनसे सदा सावधान रहना चाहिए।

गुलाम साथ, तो भी नाथ—गुलाम (नौकर) साथ में हो फिर भी उसकी नकेल (नाथ) हाथ में रखनी चाहिए नही तो उसके जाने का भय रहता है। अर्थात् नौकरों से सदा सावधान रहना चाहिए।

गुस्सा अपने को खाता है—गुस्सा गुस्सा करने वाले को ही हानि पहुँचाता है। तुलनीय : उज़० क्रोध सबसे बड़ा शत्रु है और बुद्धि सबसे बड़ा मित्र; पंज० गुस्सा अपने आप नूं खांदा है।

गुस्सा बहुत, ज़ोर थोड़ा, मार खाने की निशानी—दे० 'कमजोर गुस्सा ज़्यादा···'।

गुस्सा मारे, बल बढ़े—क्रोध मारने से (अपने क्रोध को अपने ही अंदर समाप्त कर देने से) शारीरिक और आत्मिक बल बढ़ता है। अर्थात् क्रोध को दबाना बहुत गुणकारी है। तुलनीय : राज० रीस मार्‌या रेसाण ऊपजै; पंज० गुस्सा कट करण नाल ताकत आउंदी है।

गुस्सा मारे हीरा मिले—क्रोध का शमन करने से विनम्रता रूपी रत्न प्राप्त होता है। क्रोध रहित मनुष्य देव-स्वरूप होता है। तुलनीय : भीली—रीस मार्‌यो रतन पैदा थावे।

गुस्से में ले न खुशी में दे—(क) जब क्रोध में होता है तो कुछ छीन नही लेता और जब प्रसन्न होता है तो कुछ दे नहीं देता। ऐसे व्यक्ति के प्रति कहते हैं जिसके प्रसन्न या अप्रसन्न होने से कुछ भी अंतर न पड़ता हो। (ख) क्रोध में किसी को दी हुई वस्तु को वापस नहीं लेना चाहिए तथा प्रसन्न होकर एकाएक कुछ दे भी नहीं देना चाहिए। तुलनीय : गढ़० हल्कदी आवो नी हंस दी देवनी।

गुह हँसे गोबर का—मल (मैला या बिष्टा) गोबर को देखकर हँसता है। अर्थात् जब एक दुष्ट दूसरे दुष्ट की खिल्ली उड़ाता है तब उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : छत्तीस० गुह हंसे गोबरला।

गूँगा अंधा चुगदिया और काना, कहैं कबीर सुनो भइ साधो, इनको नहिं पतियाना—गूँगे, अंधे चुगद (चुग़ल ख़ोर) और काने का विश्वास नहीं करना चाहिए।

गूँगी जोरू भली गूँगी नारियल न भला—गूँगी स्त्री अच्छी लेकिन गूँगा नारियल अच्छा नहीं। जब पीते समय हुक्का न बोले तो कहा जाता है। (नारियल=हुक्का)। पंज० गूंगी बौटी चंगी गूंगा नारियल नहीं।

गूँगे का इशारा गूँगा ही समझे—दे० 'गूँगे की गति···'।

गूँगे का कोई दुश्मन नहीं—कायर का कोई शत्रु नही होता। शत्रु भी बहादुरों के ही होते हैं। तुलनीय : असमी-बोबार् शत्रु नाई; पंज० गूंगे दा कोई दुसमन नहीं; अं० Silence seldom doth any harm.

गूँगे का गुड़—गूँगा गुड़ या किसी वस्तु का स्वाद नहीं बता सकता। अर्थात् अपना अनुभव कह सकने में असमर्थ व्यक्ति के प्रति कहते हैं। नैनन्ह ढरहिं मोती औ मूंगा, जस गुर खाइ रहा होइ गूँगा—जायसी।

गूँगे का गुड़ खाया है—मौन साधने पर कहा जाता है। तुलनीय : पंज० गूँगे दा गुड़ खादा है।

गूँगे का गुड़, न खट्टा न मिट्ठा—(क) किसी बात का भेद न खुलने पर कहते हैं। (ख) जो बात अकथनीय हो उस पर भी कहते हैं।

गूँगे की गति गूँगा जाने—गूँगे की बात गूँगा ही समझ सकता है। जो जैसा होता है उसे वैसे ही व्यक्ति समझ सकते हैं। तुलनीय: ब्रज० गूँगे री फारसी ने गूँगो ही समझै; पंज० गूंगे दी बोली गूंगा ही जाणे।

गूँगे की फ़ारसी—ऊपर देखिए।

गूँगे गुड़ खाओगे ? हाँ; कान छिदाओगे ? 'हाँ'—प्रत्येक बात में 'हाँ' करने वाले को लक्ष्य करके ऐसा कहते हैं। तुल-नीय : भोज० गूँगा गुर खइब हाँ, कान छेदइब हाँ।

गूँगे ने सपना देखा मन ही मन पछताय—गूँगा सपने का वर्णन किसी से नहीं कर सकता। जब कोई व्यक्ति किसी कारण से कोई बात न कह सके, यद्यपि उसे कहने की बड़ी इच्छा हो तो यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : पंज०

गुंगे ने सुखना दिखया अपने दिल बिच रोया।

गू का कीड़ा गू ही में खुश रहता है—बुरी संगति वाले को उसी में सुख मिलता है। तुलनीय : अव० गोबडउरा गोबरेन मा खुसी रहत है; पंज० गूं दा कीड़ा गूं बिच ही रहँदा है।

गू की दारू मूत और मूत की दारू गू—बुरे की दवा भी बुरी ही होती है। (दारू = दवा) तुलनीय : पंज० गूं दा मूतर इलाज ते मूतर दा इलाज गू।

गू के कीड़े को गुलाब जल में डालो तो मर जाय—अर्थात् गूं (बुरे व्यक्ति) बुरे स्थान ही में प्रसन्न रहते हैं। तुलनीय : अव० गूं के किखा का गुंएँ माँ नीक लागी; पंज० गूं दे कीड़े नू अर्क बिच रखो ते मर जाए।

गू के कीड़े को गू में ही अच्छा लगता है—ऊपर देखिए।

गू के पूत नौसादर—बुरे का पुत्र बुरा हो तो कहा जाता है। नौसादर ऊंट आदि की लीद से बनाया जाता है।

गू खाए अकाल नहीं निकलता—गू खाकर अकाल नहीं बिताया जा सकता। निकृष्ट साधन अपना लेने से गुज़र नहीं होती। जो व्यक्ति बुरा समय आने पर नीचतापूर्ण काम करने लगे तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० गू खायां काल थोड़ो ही नीकले; पंज० गूं खाण नाल समा नहीं निकलदा।

गूजर चाहे ऊजड—गूजर (पशु पालने वाली एक जाति) को मैदान (ऊजड़) अधिक पसंद आता है क्योंकि वहाँ उसे पशुओं को चराने आदि की सुविधा होती है। जब कोई व्यक्ति अपने स्वार्थ की ही बात करता है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते है। तुलनीय : मेवा० गूजर चावे ऊजड़; पंज० गुजर मँगे उजड।

गूजर देखे उजाड़—ऊपर देखिए।

गूजर मूरख छाछ पीए और घी बेचे—गूजर जाति घी का उत्पादन करने पर भी स्वयं उसे नहीं खाती अपितु उसे बेच देती है। और स्वय मट्ठा (छाछ) पीती है। जो व्यक्ति स्वयं की उत्पन्न की हुई अच्छी वस्तु का उपभोग न करके उसे बेच दे और साधारण वस्तु का उपयोग करे उसके प्रति कहते है। तुलनीय : मेवा० गूजर बड़ा गंवार छाछ पीवे ने घी बेच दे; पंज० गूजर बड़ा मूरख लस्सी पिए क्यों बेचे।

गूजर रांघड दो, कुत्ता बिल्ली दो; ये चारों न हों तो खुले किवाड़ों सो—ये चारों चोर है, और अगर ये नहीं हैं तो घर सुरक्षित है।

गूदड़ में गिदौड़ा—साधारण घर में कोई लड़का असाधारण हो या अशिक्षित परिवार में यदि कोई लड़का सुशिक्षित हो तो कहा जाता है।

गूदड वाले सोएं मरजाद वाले रोएं—(क) गरीब आदमी (गूदड़ वाला) निश्चिंत होकर सोता है और इज्जत (मरजाद) वाले रात-दिन अपनी मर्यादा की रक्षा के लिए परेशान रहते हैं। (ख) जाड़े के दिनों में फटा-पुराना जो भी मिले उसे पहन-ओढ़ कर शरीर को ढककर रहने वाले आराम से सोते हैं और मरजाद (फैशन) वाले ठंडक के मारे ठिठुरते रहते हैं। तुलनीय : छत्तीस० गीदर-गादर सोवे, मरजाद वाले रोवे; पंज० गुदड़ बिच रैण वाले सौण ते इज्जत बिच रैण वाले रौण।

गूदड़िया आराम करे, हुरमती जाड़ों मरे—ऊपर देखिए।

गूदरगू, मुरगी का गू—बहुत ही निकृष्ट चीज़ हो तो कहते हैं।

गू नहीं छी-छी—एक ही बात। चाहे वह कहो या यह।

गू में ईंटा फेंको न छींटा पड़े—जो गू में ईंटा फेंकेगा उसके ऊपर छींटा अवश्य पड़ेगा। अर्थात् जो नीच या दुष्ट व्यक्ति से उलझेगा उसे अवश्य अपमानित होना पड़ेगा। उसी अपमान से बचने के शिक्षार्थ उक्त लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : अव० गुह मा ईंटा न फेंकों छींटा पड़ी; हरि० गूह में उळा मारे अर छींटम छींटा हो; पंज० गू विच टेला सुटो न छिटां पैण।

गू में कौड़ी गिरे तो दांत से उठाले—अत्यंत कृपण या लोभी के प्रति व्यंग्य और घृणा के भाव से कहा जाता है। तुलनीय : हरि० गुह में ते दाना ठावै से; पंज० गूं बिच हथ मारना।

गू में गोते खाय—बहुत नीचा देखे या बहुत नीच कर्म करे तो कहते हैं।

गूलर का कीड़ा—ऐसा व्यक्ति जिसे बाहर का ज्ञान प्राप्त न हो और जो अपने सीमित दायरे को ही सब कुछ समझता हो।

गूलर का पेट क्यों फाड़ते हो—छिपी बातों को प्रकट करने पर कहा जाता है।

गूलर का फूल पीपल का मद घोड़ी की जुगाली कभी पावे और पावे को रेन दिवाली—गूलर में फूल नहीं लगता, पीपल में मद नहीं होता और घोड़ी जुगाली नहीं करती। लोगों में जनश्रुति है कि दीवाली की रात में ये होते हैं,

और यदि कोई देख ले तो राजा हो जाय।

गूलर के कीड़े का राम रखवारा—लोग गूलर कीड़े सहित ही खा जाते हैं। इसलिए गूलर के कीड़े की प्राण रक्षा कोई नहीं कर सकता। अर्थात् असहायों का मालिक ईश्वर ही होता है।

गूलर के कीड़े को गूलर ही दुनिया—सीमित जगह में रहते हुए व्यक्ति विस्तृत संसार को भूल जाता है और अपने आस-पास के गाँव-नगर को ही संसार की आखिरी सीमा मानता है। संकुचित ज्ञान वाले के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते है। तुलनीय : भोज० गूलर क किरवना गुलरिये के दुनिया जानेला।

गूलर के फूल हो गए—अलभ्य वस्तु। एक लंबे समय के बाद मिलने वाले मित्र या किसी संबंधी के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते है। तुलनीय : अव० गूलरी के फूल होय गए।

गू से गू नहीं धुलता—गुह से गुह कोई भी नही धो सकता। बुराई के बदले में बुराई करने से तथा नीचता के बदले में नीचता करने कोई लाभ नहीं होता। जो व्यक्ति अपना प्रतिकार लेने के लिए दूसरे के साथ नीचता करना चाहे उसको समझाने के लिए कहते है। तुलनीय : राज० गू सू गू थोड़ी ही धुपै; पंज० गूं नाल गूं नहीं धुलदा।

गूह की दवा मूत—बिष्टा (गूह) की दवा पेशाब (मूत) होता है अर्थात् दुष्ट व्यक्ति दुष्ट से ही शांत रहते हैं। या नीच के साथ नीचता का ही व्यवहार करना चाहिए। तुलनीय : हरि० गूह की दारू मूत; पंज० गू दी दवा मूतर।

गृह कारज नाना जंजाला—गृहस्थी के कार्य में तरह-तरह की परेशानियाँ उठानी पड़ती हैं।

गृहस्थ के घर नेवान नहीं चोर के घर दादर—कृषक के घर तो नया अन्न अभी आया ही नही कि चोर के घर अन्न की मंड़ाई शुरू हो गई। अर्थात् जिसकी वस्तु रहे वह उससे कुछ फ़ायदा नहीं उठा पाए और दूसरे उससे फ़ायदा उठा लें तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० साहू के नेवान ना चोर के दंवरी।

गेंठी संभाल, माधुरी चाल, आज न पहुँचब, पहुँचब काल—गठरी (गेंठी) संभाल कर रखो, धीमी चाल चलो, आज नहीं तो कल अवश्य पहुँच जाओगे। अर्थात् (क) किसी कार्य में घबड़ाना नहीं चाहिए या जल्दबाज़ी नहीं करनी चाहिए। धैर्य धारण करने से सफलता अवश्य मिलती है। (ख) निकम्मे या कायरों के प्रति भी कहते हैं जो कहते हैं कि आज नहीं तो कल अमुक काम हो जाएगा।

गेंड़े की ढाल और बिजली की तलवार—ये दोनों सबसे अच्छी मानी जाती हैं। (तलवार बनाने वाले कहते हैं कि बिजली से तलवार पर पानी चढ़ाया जाता है।)

गेंवड़े आई बारात, बहू को लागी हगास—खास मौक़े पर जब कोई कहीं चला जाय या खास मौक़े पर कोई काम करने से बहाना बना ले तब व्यंग्य से उसके प्रति ऐसा कहते हैं। (गेंवड़ा = गाँव की सीमा या गाँव के पास)। दे० 'शिकार के वक़्त कुतिया हगासी।'

गेंवड़े खेती, सिखा साँप, भाई भयकरन, बादी बाप—गाँव के पास (गेंवड़े) की खेती, छप्पर (सिखा) का सर्प भयकारी भाई और शत्रु (बादी) पिता (बाप) अच्छे नहीं होते।

गेहूँ अच्छा नहर का चावल अच्छा डहर का—गेहूँ नहर के किनारे का और चावल नीची ज़मीन (डहर) का अच्छा होता है। तुलनीय : ब्रज० गेहूँ अच्छौ नहरि कौ, चावर अच्छौ डहर कौ।

गेहूँ और गोखरू साथ ही पैदा होते हैं—जहाँ अच्छी वस्तुएँ पैदा होती हैं वहीं बुरी वस्तुएँ भी पैदा होती हैं। जहाँ अच्छे मनुष्य होंगे वहाँ बुरे भी होंगे। अर्थात् अच्छे-बुरे हर जगह रहते हैं। तुलनीय : राज० गहूँ र गोयला तो मेळा ही नीपजैं; पंज० कनक ते जमंदर नाल ही पैदा हुँदे हन।'

गेहूँ कहै सुनो हे वीर, मैं हूँ सब नाजन का मीर—अर्थात् गेहूँ सभी अन्नों में श्रेष्ठ होता है।

गेहूँ की ढेरी पर गोबर बढ़ावन—गेहूँ के ढेर पर गोबर का बढ़ावन होता है। अर्थात् अच्छे-बुरे सब साथ ही रहते हैं। तुलनीय : भोज० गेहूँ क रास पर लेंढ़ा क बढ़ावन, सोने क ढेरी पर कोइला के बढ़ावन; पंज० गुलाब दे फुल उते कंडे भी हुदे हन।

गेहूँ की बाल नहीं देखी—मूर्ख के लिए कहते हैं जो साधारण बात से भी परिचित नही होता। तुलनीय : पंज० कनक दे बाल नहीं दिखे।

गेहूँ की रोटी को फ़ौलाद का पेट चाहिए—(क) गेहूँ देर में हज़म होता है। (ख) जब कोई व्यक्ति अपनी योग्यता से बढ़कर कोई चीज़ पा जाने पर घमंड करने लगे तो उस पर भी कहते हैं।

गेहूँ की रोटी टेढ़ी भी मीठी—गेहूँ की रोटी टेढ़ी होने पर भी अच्छी (मीठी) लगती है। (क) अच्छी वस्तु हर दशा में अच्छी ही होती है। (ख) अच्छे लोगों में यदि थोड़ी बुराई भी होती है तब भी वे अच्छे ही कहे जाते हैं। (ग) भले खानदान या अच्छे कुल के लोग ग़रीबी या बुरे दिनों में

भी अपना बड़प्पन नहीं छोड़ते । तुलनीय : छत्तीस० गेहूँ के रोटी टेडयो मीठ; पंज० कनक दी रोटी डींगी भी मिठी।

गेहूँ के साथ घुन पिसता है—अर्थात् दुष्टों के साथ सज्जनों को भी कष्ट झेलना पड़ता है । तुलनीय : गढ़० ग्यूं दगड़ी घूण पिसाई; राज० गवां मेळा घुण पीसीजै; भोज० गोहूँ क संगे घूटओं पिसाला; अव० गोहूँ के साथ घुनौ पिस गवा; मल० बलवानोटोप्पम् पावप्पेट्टवनुम् नशिक्कुन्नु; पंज० कनक दे नाल कुण मी पिस देहन; अं० When the buffaloes fight crops suffer.

गेहूँ के साथ बथुआ सिंचता है आशय यह है कि बड़ों की संगति से छोटों को भी लाभ हो जाता है। तुलनीय : अव० गेहूँन के साथै बथ्वा का पानी लागि जात है।

गेहूँ खा के बाजरा खाय, उसके मन को कभी न भाय—जो उम्र-भर गेहूँ खाता रहा हो और उसे बाजरा खाने के लिए दिया जाय तो उसे अच्छा नहीं लगता । अर्थात् आराम-तलब आदमी को कोई परिश्रम का काम करने को कहा जाय तो वह उसे नहीं कर सकता। तुलनीय : गढ़० ग्यू खैक जौ मिट्ठा करव छया ।

गेहूँ खेत में, बेटा पेट में –खेत में जो फ़सल खड़ी हो और जो बच्चा पेट में हो उसका भी कोई भरोसा नहीं करना चाहिए। अर्थात् जब तक कोई वस्तु प्राप्त न हो जाय तब तक उसकी कोई उम्मीद नहीं करनी चाहिए। तुलनीय : राज० गहूँ खेत में बेटो पेट में ।

गेहूँ खेत में, बेटा पेट में, ब्याह की तैयारी—गेहूँ कटा नहीं, पुत्र पैदा भी नहीं हुआ और उसके ब्याह की तैयारी आरंभ कर दी। अर्थात् (क) उतावले व्यक्ति जब बिना सोचे-समझे किसी ऐसे काम की तैयारी शुरू कर दें जिसके संबंध में कुछ भी निश्चित न हो तो व्यंग्य में कहते हैं। (ख) जब कोई व्यक्ति किसी काम की तैयारी उचित समय से बहुत पहले करने लगता है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय. बुंद० गोंऊँ खेत में, लरका पेट मे, पासनी कौ दिन धरई दो; गुज० घऊं खेत मे, बेटा पेट में, ने लगन पांचमनां लीधां, स० अजातपुत्र नामोत्कीर्तन न्यायः ।

गेहूँ खेत में, लड़का पेट में अन्नप्राशन का दिन धरें—ऊपर देखिए ।

गेहूँ गेरुई गांधी धान, बिना अन्न मरा किसान—गेहूँ में गेरुई रोग और धान में गंधी कीडा लगने पर किसान अन्न बिना मरने लगता है, अर्थात् कुछ भी पैदा नहीं होता।

गेहूँ जौ जब पछुवा पावे, जब जल्दी से दायाँ जावे—गेहूँ जौ को जब पछुवाँ हवा मिलती है तब वे बहुत जल्दी दायें जाते हैं। अर्थात् पछुवा हवा से डाँठ (पौधे का डंठल) सूख जाता है और मड़ाई (दँवरी) में सुविधा होती है।

गेहूँ का कंडा कोरे गूंडा—पल्ले (पास में) कुछ न होने पर भी फ़ैशनबाज़ी करने वालों के प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

गेहूँ पड़ा कूंड़े तो फगुआ चढ़ा मूंड़े—(क) गेहूँ की फ़सल घर मे आते-आते फगुआ (होली का त्यौहार) आ जाता है। (ख) जब पास में धन होता है तभी मस्ती सूझती है। (कूंड़ा मिट्टी का बड़ा बरतन जिसमें अनाज रखा जाता है, मूंड़ = सर)।

गेहूँ बाहा धान गाहा, ऊख गोड़ाई से है आहा—गेहूँ के खेत को अधिक जोतने से, धान की फ़सल बिदहने से और ऊख गोडने से अधिक पैदा होती है।

गेहूँ बाहें चना दलाये, धान गाहें मक्की निराये ऊख कसाये—गेहूँ के खेत को खूब जोतने से, चने को खूब खोंटने से, धान तथा मकई को निराने से तथा बोने के पहले ऊख को पानी मे छोड़ने से फ़सल अच्छी होती है।

गेहूँ बाहें धान बिदाहें—खेत को कई बार जोतने से गेहूँ और बिदहने से धान की फ़सल अच्छी होती है।

गेहूँ भवा काहें, कातिक के चौबाहें—कातिक के महीने में खेत को चार बार जोतने से गेहूँ की पैदावार अच्छी होती है।

गेहूँ भवा काहें, सोलह दायँ बाहें—खेत को खूब जोतने से गेहूँ की पैदवार अधिक होती है। तुलनीय : मरा० गहूँ कसा तरला, गोळा वेळ नांगर फिरला ।

गेहूँ भवा काहें, सोलह बाहें नौ गाहें—खेत को अधिक जोतने और अधिक हैगा (पाट) देने से गेहूँ की पैदा-वार अधिक होती है।

ग़ैब का हाल ख़ुदा जाने—भविष्य (ग़ैब) की बात ईश्वर (ख़ुदा) ही जान सकता है। तुलनीय : पंज० अग्गे दी रब जाने ।

ग़ैर का सिर कद्दू बराबर—दूसरे का सिर कद्दू बराबर है यदि कट भी जाय तो कोई हर्ज नहीं है। दूसरे के दुख-दर्द का प्रायः लोग अनुभव नहीं करते। तुलनीय : पंज० दूजे दे दुख-दरद नू कोई नहीं जाणदा ।

ग़ैर के लिए कुआँ खोदेगा, तो आप ही गिरेगा—नीचे देखिए ।

ग़ैर के लिए कुआँ खोदेगा तो आप ही गिरेगा– जो दूसरों के लिए कुआँ खोदेगा वह स्वयं उसमें गिरेगा। अर्थात् जो दूसरों को क्षति पहुँचाना चाहता है उसकी स्वयं क्षति

होती है। तुलनीय : पंज० दूजे लयी खूं कढ़ोगे आप ही डिगोगे।

ग़ैर-ग़ैर ही है, अपना-अपना है-- पराये लोगों से चाहे कितना भी अच्छा संबंध क्यों न हो पर अन्त में अपने सगे लोग ही काम आते हैं। तुलनीय : पंज० दूजा-दूजा ही है अपना-अपना ही है।

गोंइड़ा खेती, सीखा साँप भाई भयकार नवादो बाप — दे० 'गेवडे खेती सिखा साँप···'।

गोंइड़े आई बारात, तो बहू को लगी हगास--दे० 'गेंवड़े आई बरात···'।

गोंइड़े आई बरात, समधिन को लागी हगास - दे० 'गेंवड़े आई बरात···'। तुलनीय : अव० गोंयड़े आई बरात तो समधिन केइ लाग हगास।

गोंद पंजीरी और ही खायें, जच्चा रानी पड़ी करहायें - गोंद और मसाले की पजीरी दूसरे लोग ही खाते हैं और प्रसूता (जच्चा रानी) पड़ी-पड़ी कराह रही है। अर्थात् जब कोई चीज जिसके लिए तैयार की जाय उसे न मिले और दूसरे लोग ही उसे ले लें तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय · पंज० कमाए कोई ते खाए कोई।

गों निकली आँख बदलीं --काम (गों) निकल जाने के बाद आना-जाना बन्द कर दिया। अर्थात् जब तक स्वार्थ रहता है तभी तक लोग खुशामद करते हैं। उसके बाद बात भी नहीं करते। स्वार्थी लोगों के प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० कम होया ते राह बदलया।

गोइंठा जले गोबर हँसे—ऐसे मूर्ख पर कहा जाता है जो दूसरे के ऐसे कष्ट पर हँसता है जो उस पर भी निकट भविष्य में आने वाला है। (गोबर ही सूखने पर गोइंठा (उपला) बनता है)। तुलनीय : पंज० गोटा बले ते गोआ हँसे।

गोकुल की बिटिया मथुरा की गाय, करम फूटे तो अंते जाय—आशय यह है कि गोकुल (ब्रज) की लड़कियों और मथुरा की गायों को जो सुख इन स्थानों पर मिलता है वह अन्यत्र मिलना मुश्किल है। इसी बात को ध्यान में रखकर उक्त कहावत कही जाती है। तुलनीय : हरि० दिल्ली की बेट्टी, मथुरा की गा, भाग फूट्टें ते भाग्य जा; छत्तीस० गोकुल के बिटिया मथुरा के गाय, करम छाँड़े त अंते जाय।

गोकुल गाँव की पैंड़ो न्यारी—जिस देश, जाति, घर, गाँव या व्यक्ति की रीति निराली हो तो उस पर कहा जाता है।

गोकुल से मथुरा न्यारी— जब प्रत्यक्ष में कोई व्यक्ति मिला हुआ हो किन्तु हृदय में भेदभाव रखे तब इस लोकोक्ति का प्रयोग करते हैं। तुलनीय : मरा० गोकुल नि मथुरा यात महदतर आहे; पंज० गोकुल नालों मथुरा चंगी।

गोज़-ए-शुतर न आसमान का न ज़मीन का —ऊँट का पाद न आसमान का होता है न ज़मीन का। जब कोई वस्तु या व्यक्ति कहीं का नहीं होता तो उसके प्रति कहते हैं। (गोज = पाद, हवा; शुतर = ऊँट)।

गोजर का एक पैर टूटेगा भी तो क्या होगा? —दे० 'कनखजूरे का···'। तुलनीय : भोज० गोंजरा क एगो गोड़े टूटी त का होइ, गनगुआरि के एक टाँग टुटनैह की।

गोजर का पैर कितना टूटे--दे० 'कनखजूरे···'।

गोजर के कै पाँव टूटेंगे दे० 'कनखजूरे के···'।

गोझे का घाव, रानी जाने या राव गुप्त या छिपी बात को हर कोई नहीं जान सकता।

गोद का खिलाया गोद में नहीं रहता -बड़े होने पर लड़के अपने पैरों पर खड़े होते हैं, हमेशा गोद में नहीं रहते। जब कोई ऐसा आदमी जो अतीत में कभी अपने ऊपर आश्रित रहा हो और अपना कहा न माने तो कहते हैं।

गोद का छोड़ के पेट की आस—वर्तमान छोड़कर भविष्य के लिए आशान्वित होने पर कहते हैं। तुलनीय : राज० खोले मांयले ने घोड़'र पेट मांयलरी आस करै; पंज० अपना छड के दूसरे नू तकना; ब्रज० गोद कौ छोड़ि पेट की आस।

गोद में छोरा, शहर में ढिंढोरा —दे० 'कानिया लरिका गाँव···'। तुलनीय : पंज० कुड़ी कुछड टिंढोरा सहर।

गोद में बच्चा, गाँव में ढिंढोरा —दे० 'कनिया लरिका ···'। तुलनीय : गुज० केडे छोकरी ने गामा ढंढेरो। पंज० बच्चा कुछड़ ते पिंड बिच टिंढोरा।

गोद में बैठ के आँख में उँगली —गोद में बैठकर आँख में उँगली कर रहे हैं। जब कोई व्यक्ति अपने आश्रयदाता को ही क्षति पहुँचाता है तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मरा० कडेवर बसतो नि डोलयात बोट खुपसतो; हरि० उसे हांडी खा उसे हाँडी हागै; पंज० जिस थाली बिच खादा उसी बिच छेद कीता।

गोद में बैठ के दाढ़ी नोचे—ऊपर देखिए।

गोद में बैठ के नाक में दम—दे० 'गोद मे बैठ के आँख···'।

गोद में बैठ के पेट में काटे—दे० 'गोद में बैठ के आँख···'।

गोद में लड़का, गाँव में ढिंढोरा— पास पड़ी वस्तु को

न देखकर उसी के लिए चारों ओर खोजने वाले के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : मरा० कडेवर मूल गांव भर दौड़ी : बंग० कोले छेले सहरे टेंडरा; पंज० कुच्छड़ कुड़ी ते शैर ढिंढोरा; राज० बगल में छोरो, गॉव में ढिंढोरो; भोज० लड़का कोराँ, गाँव ढिढोरा; अव० गोदी मा लरिका सगरिउ गाँव ढिंढोरा; मेवा० कांधा पर छोरो ने गाँव में ढंढोरो।

गोद में लड़का नगर में ढिंढोरा—ऊपर देखिए। तुलनीय : मैथ० कौर में चिल्हकोड़ नगर भरि सोर; कोरा में नेना नगर में सोर; भोज० कोंरां में लइका गांव भर सोर।

गोद में लड़का शहर-भर ढिंढोरा—दे० 'गोद में लड़का गाँव में…।' तुलनीय : मल० अटुत्तिरिक्कुन्न वस्तुविने नालुपाटुम् अन्वेषिक्कुम।

गोद में लड़का शहर में ढिंढोरा—दे० 'गोद में लड़का गाँव…'। तुलनीय : अव० गोदी मा लरिका सगरिव गाँव ढिंढोरा; कन्न० मगनन्नु तेलें मेले इट्टुकोडु तुंब हुडकिदरते।

गोद में लिए फिसले पड़ते हैं—जब कोई मनुष्य मनाने पर और भी ऐंठता है तो उसके प्रति कहते हैं।

गोद वाले की बात न पूछे, पेट वाले को पुचकारे—जो बच्चा गोद में है उसकी तो बात भी नहीं पूछती और जो पेट में है उसको लाड़-प्यार करती है। जो वस्तु प्रत्यक्ष हो उसे छोड़कर भविष्य की आशा करने वाले के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० खोळे मांयले ने छोड़'र पेट मांयलेरी आस करे; भोज० भइल लड़के मरि-मरि जां ढीढ़े क ओझइती करे; पंज० कुछड़ दी पुछ नहीं ते दुजे नू प्यार।

गोदी का लड़का मर जाय, पेट आग बुझाय—(क) पेट इतना अधम है कि उसे भरने के लिए पुत्र-मृत्यु जैसे भारी कष्ट को भी भुलाना पड़ता है। (ख) गोद का लड़का मर जाने पर पेट में जो बच्चा होता है उससे दुख कुछ कम हो जाता है। वर्तमान की क्षति का दुख भविष्य में प्राप्ति की आशा से कुछ कम हो जाता है।

गोदी में छोरा गाँव में ढिंढोरा—दे० 'गोद में लड़का गाँव…'। तुलनीय : छनीस० कोरा मां लइका, गाँव गोहार।

गोदी में लड़का, गाँव भर ढिंढोरा—दे० 'गोद में लड़का गाँव में…'।

गोनू झा का लड़का—निकम्मे के प्रति ऐसा कहते हैं। इस संबंध में एक कहानी है, जो इस प्रकार है : गोनू झा नामक कोई व्यक्ति था। उसका एक ही पुत्र था। किसी ने पूछा, 'गोनूझा ! आपके कितने लड़के हैं ?' उन्होंने कहा, 'लड़का तो एक ही है पर वह दो व्यक्तियों का भोजन अकेले खा जाता है, तीन आदमियों की जगह घेर कर सोता है और काम एक आदमी का भी नहीं करता। अतः मैं समझता हूँ कि मेरे कोई पुत्र नहीं है।'

गोनू ओझा की बिल्ली—किसी राजा के दरबार में बहुत से दरबारी रहते थे, गोनू भी उनमें से एक था। राजा ने सभी दरबारियों को एक-एक बिल्ली तथा एक-एक भैंस दी और कहा कि जिसकी बिल्ली मोटी होगी उसे पुरस्कार दिया जाएगा। सभी दरबारियों ने अपनी-अपनी बिल्ली को भैंस का दूध पिलाकर मोटा कर दिया, किन्तु गोनू ने भैंस का दूध स्वयं पिया। गोनू ने बिल्ली का मुँह जलते दूध में एक दिन डुबो दिया जिससे बिल्ली दूध देखते ही दूर भागती थी। जब सभी दरबारी अपनी-अपनी बिल्ली लेकर राजा के दरबार में पहुँचे तब गोनू भी पहुँचा। उसकी बिल्ली सबसे दुबली थी। राजा ने पूछा, 'तुम्हारी बिल्ली सबसे दुबली क्यों है ?' गोनू ने उत्तर दिया, 'महाराज, यह बिल्ली दूध नहीं पीती, इसीसे दुबली है।' राजा ने गोनू की बिल्ली की परीक्षा ली और बात सच साबित हुई। अंत में पुरस्कार गोनू को ही मिला।

प्रस्तुत कहावत इस कहानी को ध्यान में रखकर किसी चालाक व्यक्ति के प्रति कही जाती है।

गोनू झा की लाठी—गोनू झा एक बार किसी लकड़ी को छीलकर लाठी बना रहे थे किन्तु कभी एक ओर अधिक छीलते तो कभी दूसरी ओर कम। इस प्रकार पूरी लकड़ी समाप्त हो गई, किन्तु लाठी नहीं बनी। अर्थात् किसी नासमझी के काम पर ऐसी कहावत कही जाती है।

गोबर का कीड़ा गोबर में खुश—आशय यह है कि बुरे व्यक्ति बुरों की संगति में ही प्रसन्न रहते है। तुलनीय : बुंद० जौन नीम को कीरा, तौनई में मानत, ब्रज० गुबरीला गोबर में राजी रहता है।

गोबर की साँझी भी पहिरे ओढ़े अच्छी लगती है—अच्छे कपड़े-लत्ते पहन लेने पर बुरे भी अच्छे लगते है।

गोबर गनेस—बुद्धू आदमी को कहते हैं।

गोबर गिरा तो कुछ लेकर ही उठेगा—गोबर पृथ्वी पर गिरेगा तो कुछ-न-कुछ मिट्टी लेकर ही उठेगा। अर्थात् (क) लालची व्यक्ति कहीं भी बैठता है तो कुछ लेकर ही उठता है। (ख) होशियार व्यक्ति जहाँ जाते हैं वहाँ कुछ-न-कुछ फ़ायदा कर ही लेते हैं। तुलनीय : राज० पोटो पड्यो जको रेत में लेट ही उठसी; मेवा० पड्यो योयठो धूल लेने ऊठे; मरा० शेणाचा पोह पाडला, तर कांहीं तरी घेऊन मेई लच; मल० कटम् गाडिङ्याल् पलिश कोटुक्केण्टि वरुम्; अं०

You have to pay the interest if you borrow.

गोबर चोकर चकार रूसा, इनको छोड़े होय न भूसा — खेत में गोबर चोकर, चकोड़ा और अरुसे की पत्तियों को डालने से भूसा नहीं होता है, दाना ही दाना होता है। यानी पैदावार काफ़ी अच्छी होती है।

गोबर मैला नीम की खली, या से खेती दूनी फली — खेत में गोबर, मैला और नीम की खली छोड़ने से खेत की उपज दूनी हो जाती है। तुलनीय : मरा० शेण मोनखन कड लिंबाची गेंड, याने शेती दुप्पट होते।

गोबर मैला पाती सड़े, तब खेती में दाना पड़े - खेत में गोबर, मैला और पत्ती डाल कर सड़ाना बड़ा लाभप्रद है। इससे पैदावार काफ़ी अच्छी होती है।

गोबर राखी पानी सड़े, तब खेती में दाना पड़े - खेत में गोबर और राख को पानी के साथ सड़ाने से अन्न अधिक पैदा होता है।

गोमयपायसीय न्यायः — गोबर और खीर का न्याय। इस न्याय का प्रयोग अति मूर्खतापूर्ण वक्तव्य के संदर्भ में किया जाता है। (कुछ मूर्ख कहते हैं कि गोबर दूध से ही बनता है क्योंकि यह गोबर गाय से ही प्राप्त होता है)।

गोर चमाइन गरमे मातल - गोरी चमारिन अपने रूप के गर्व में ही फली रहती है। अर्थात् नीच व्यक्ति गुण या वैभव पाकर इतराने लगते हैं, तुलनीय : पंज० गोरी चमारन टौर बिच पौर।

गोर में छोटे बड़े सब बराबर - क़ब्र (गोर) में या मरने के बाद सभी बराबर हैं।

गोरी का जीवन चुटकियों में जाय — नीचे देखिए।

गोरी का यौवन चुटकियों में जाय — (क) अच्छी और सुन्दर चीज़ थोड़े-थोड़े में ही समाप्त हो जाती है। (ख) ऐसे व्यक्ति पर भी कहते हैं जो अपना धन थोड़ा-थोड़ा करके दूसरों के लिए व्यय कर दे। (ग) सुंदर और स्वस्थ बच्चों (प्रमुखतः लड़कियों) को जब लोग दुलार से चुटकी भरते हैं तो भी कहा जाता है। तुलनीय : पंजा० गोरी दा मास चूंढ़ियो मुक्के।

गोरी का शरीर चुटकियों में खतम — ऊपर देखिए।

गोरी चमाइन गर्व से पागल — दे० 'गोर चामइन गरमे...'।

गोरी मत कर गोरे रंग का गुमान, यह है दो दिन का मेहमान — सौंदर्य अस्थायी है उस पर घमंड नहीं करना चाहिए। तुलनीय : हरि० मतणा धरती काटै टिक क चाल कयू चाले पाड री स; पंज० गौरे रंग दा की गुमान इह ता दो दिनां दा मेहमान।

गोरी रूठें अपना सुहाग लें — जब कोई व्यक्ति अपनी मर्यादा को बचाने के लिए सब कष्टों को झेलने को तैयार हो जाता है तब कहते हैं। तुलयीय : पंज० गौरी रुस्से अपना सुहाग लवे।

गोरे संग काला रहे, रंग नहीं मति तो बदलेगी — गोरे के साथ रहने से काला व्यक्ति गोरा तो नहीं हो सकता किन्तु उसके गुण तो उसमें आ ही जायेंगे। अर्थात् संगति का प्रभाव प्रत्येक पर पड़ता है। तुलनीय : मेवा० कालां की लारां धोलो रेवे तो रूप नहीं तो गुण तो आवे; पंज० जैसे फड़िए संग वैसा हो जाए रंग, जिहे जा फड़ो संग उहो जिहा हो जावे रंग।

गोल का गोल नहीं तो महोर जरूर होगा — अर्थात् मां-बाप का संतान पर कुछ न कुछ प्रभाव अवश्य पड़ता है। (गोल - लाल) (महोर कुछ-कुछ लाल)।

गोला बारूद कहीं जाय तलब से काम — स्वार्थी व्यक्तियों के प्रति कहते हैं जिन्हें अपने स्वार्थ के सम्मुख दूसरे के लाभ-हानि की कोई चिन्ता नहीं रहती।

गोला बारूद कहीं जाय धमाके से काम — ऊपर देखिए।

गोली कतहूं जाय महीना से काम — नमकहरामों पर व्यंग्य।

गोली का घाव भर जाता है पर बोली का नहीं — गोली का घाव कुछ दिनों बाद ठीक हो जाता है, किन्तु कटु वचनों का घाव आयुपर्यन्त ठीक नहीं होता। आशय यह है कि दुर्व्यवहार मनुष्य कभी नहीं भूलता। तुलनीय : ब्रज० गोली कौ घाव पुरि जायँ, बोली कौ नायें पूरैं; अं० Wounds caused by words are hard to heal.

गोली मारी राम के, लागी घनश्याम के मर गए बिहारी - अर्थात् जब कोई कार्य किसी और उद्देश्य से किया जाय और उसका परिणाम कुछ और हो तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : कनौ० गोली मारी छिन्न कैं लगी त्रिलोक कैं औ मरे बिहारी।

गोली से बचे पर बोली से नहीं बचे — गोली लगने पर मनुष्य बच भी जाता है, किंतु अपमान से बचना कठिन है। तात्पर्य यह है कि अपमानित मनुष्य का जीवन बहुत दुःख-पूर्ण होता है। तुलनीय : पंज० गोली तों बच्चे पर बोली तों नहीं।

गोश्त खाये गोश्त बढ़े, घी खाये बल होय, साग खाये ओझ बढ़े तो बल कहां से होय — गोश्त खाने से मनुष्य

केवल मोटा होता है, घी खाने से बल बढ़ता है और साग खाने से मात्र पेट बढ़ता है। अर्थात् बिना पौष्टिक चीज़ों के बल नहीं आता। तुलनीय : अव० मास खाये मास बाढ़े, घी खाये बल होय, साग खाये झोझर बाढ़े बल कहाँ से होय।

गोश्त खाये गोश्त बढ़े साग खाये ओझरी –ऊपर देखिए।

गोश्त खा लेते हैं, हड्डियाँ फेंक देते हैं –(क) संसार मतलब की चीज़ लेकर बाक़ी छोड़ देता है। (ख) अपने काम की चीज लेकर शेष छोड़ देनी चाहिए। तुलनीय : पंज कम दीआं गल्लाँ लेओ ते बे कम्मियां छडो।

गोह का जाया बिल खोदे –चूहे (गोह) का बच्चा बिल खोदता है। अर्थात् जाति या वंश का गुण बच्चे में अवश्य रहता है। तुलनीय : हरि० गोह का जाया बिल्लै खोदै, पंज० गोह दा जाया रुड कडे।

गोह को हाँय, मुसहर घर जायँ –(क) जिसकी जहाँ तक पहुँच होनी है वहीं तक जाता है। (ख) कोई जानबूझ कर वहाँ जाय जहाँ उसके लिए बहुत खतरा हो तो भी कहते हैं। (मुसहर गोह को मार कर खा जाते हैं।)

गोहरा न दे गोहरोला दे—गोहरा (उपला) न दे लेकिन गोहरोला (उपलों का ढेर) दे दे। (क) ऐसे मूर्ख व्यक्तियों के प्रति कहते है जो माँगने पर छोटी सी वस्तु नहीं देते और अपनी इच्छा से बड़ी वस्तु भी दे देते हैं। (ख) ऐसे लोगों के प्रति भी कहते हैं जो शांत रूप से माँगने पर साधारण या थोड़ी चीज़ भी नहीं देते पर दबाव में आने पर महँगी या अधिक चीज़ दे देते हैं। तुलनीय : कौर० गोस्मा न दे बिटोरा दे।

गौणमुख्ययोर्मुख्येकार्यसम्प्रत्ययः –(शब्दों के) गौण और मुख्य अर्थों में कार्य की प्रवृत्ति होती है। तात्पर्य यह है कि जब किसी शब्द के दो अर्थ—मुख्य और गौण हो तो मुख्य अर्थ को ही ग्रहण करना चाहिए।

गौ निकल गई आँख बदल गई –अपना प्रयोजन (गौ) सिद्ध हो जाने पर आदमी का रुख बदल जाता है। स्वार्थी लोगों प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० कम निकलया राह बदलया।

गौरा को छोड़कर पकौड़ा कौन तोड़े—गौरा के अतिरिक्त और कोई पकौड़ा या पकौड़ी नहीं बना सकता। अर्थात् जब कोई व्यक्ति कहता है कि अमुक कार्य मैं ही कर सकता हूँ अन्य कोई इसे नहीं कर सकता तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते है। तुलनीय : कौर० गौरा बिना पकौड़ा कौन तोड़े।

गोरा रूठेंगी तो अपना सुहाग लेंगी, भाग तो न लेंगी –(क) मालिक के नौकरी छुड़ाने की धमकी पर नौकर कहता है। आशय यह है कि मालिक अधिक-से-अधिक नौकरी छुड़ा सकते हैं, उसका (नौकर का) भाग्य तो नहीं ले सकते। (ख) किसी व्यक्ति की कोई चीज़ किसी के पास हो। किसी कारण से चीज़ के मालिक के नाराज़ होने की संभावना होने पर वह व्यक्ति (जिसके पास चीज़ है) इस लोकोक्ति का प्रयोग करता है। तुलनीय : अव० राजा रुठि हैं आपन राज लेहैं, रानी रूठि है आपन सोहाग ले हैं।

गौरैया बाबा मेरी पुकार सुनो, कहा— मैं ही चित्त पड़ा हूँ—गौरैया (एक पक्षी) ने किसी व्यक्ति से कहा कि ज़रा आप मेरी बात सुन लीजिए। उस व्यक्ति ने कहा कि मैं तो स्वयं चित्त पड़ा (असहाय) हूँ। अर्थात् जब कोई किसी ऐसे व्यक्ति से सहायता की याचना करे जो खुद मुसीबत में फँसा हो तो कहते हैं।

गौवाँ देवाँ घास, मलीदा कुत्तियाँ –जब किसी अयोग्य व्यक्ति की क़द्र हो और योग्य की न हो तो लोग कहते हैं।

ग्रह घेरे हैं—जब कोई ज़बरदस्ती मुसीबत मोल ले तो व्यंग्य से कहते हैं।

ग्रहण में साँप मारे–पुण्य पर्व पर या पवित्र दिन पर घृणित कार्य करने पर कहते है।

ग्रह बिन हानि भेद बिन चोरी बहुत नहीं पर थोरी-थोरी—बिना बुरे ग्रह के हानि नहीं होती और बिना भेद के चोरी नहीं होती और यदि होती भी है तो बहुत कम।

ग्रावणि रेखेव—पत्थर की रेखा के समान। प्रस्तुत न्याय का प्रयोग अपरिवर्तनीय वस्तु के सन्दर्भ में होता है।

ग्राहक और मौत का कोई भरोसा नहीं –इन दोनों का कुछ पता नहीं कब आ जाएँ इसलिए इन्हें लेने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए। तुलनीय : ब्रज० गाहक और मौति कौ कहा भरोसौ।

ग्वार खायँ गँवार–ग्वार की फली को गाँव वाले या मूर्ख खाते हैं, इसका स्वाद अच्छा नहीं होता।

ग्वालन अपने दही को खट्टा नहीं कहती—अर्थात् अपनी चीज़ को कोई भी खराब नहीं कहता। तुलनीय : हरि० अपणे मीत न कूण खाटा बताव से; पंज० अपणे दही नूं कूण खट्टा आखे; ब्रज० ग्वालिनि अपने दही है खट्टौ नायँ बतावै।

ग्वाले की चटाई दोनों ओर चिकनी—तात्पर्य यह है कि मूर्खों को उचित-अनुचित का ज्ञान नहीं होता। तुलनीय : मैथ० गुआर क गोनड़ी दुहु दिस चिक्कन; भोज० अहिर के

गोनर दुनों और चिक्कन ।

ग्वाले की बही महतों की भेंट—परिश्रम कोई करे और फल कोई दूसरा भोगे तो कहते हैं। तुलनीय : फ़ा० माले-मूजी नसीबे-ग़ाज़ी ।

ग्वाले के घर दूध तो दूधन नहीं नहाय—ग्वाले के घर दूध बहुत होता है, किंतु वह दूध से नहाता नहीं। अर्थात् धन बहुत होने पर भी कोई उसे फेंकता नहीं है या उसका अनुचित प्रयोग नहीं करता ।

ग्वेंड़े आई बरात तो समधिन को लगी हगास—दे० गोइड़े आई बरात…।

घ

घंटे पर के गरुड़—घंटे के ऊपर गरुड़ की मूर्ति हाथ जोड़े बैठी रहती है। इसी प्रकार जो कुछ करता नहीं केवल बैठा रहता है उस पर कहते हैं।

घटती-बढ़ती छाया है—संसार घटती-बढ़ती छाया है। संसार में सुख-दुःख आते-जाते और घटते-बढ़ते रहते हैं। तुलनीय : राज० घटत,बढ़तरी छियां है; पंज० कटती बददी छाँ है।

घट प्रदीपन्यायः—घट में दीपक का न्याय। तात्पर्य यह है कि घट में रखा हुआ दीपक केवल घड़े के भीतर ही प्रकाश कर सकता है। अर्थात् (क) संकुचित क्षेत्र में रहने वाले व्यक्ति से थोड़े लोग ही लाभ उठा सकते हैं। (ख) जब कोई स्वार्थी व्यक्ति केवल अपना ही भला चाहता है तो भी कहते हैं।

घटी यन्त्र न्यायः—जल घटी यन्त्र का न्याय। प्रस्तुत न्याय में यह भाव निहित है कि जैसे जलघटी यन्त्र के चलते समय उसके कुछ जलपात्र भरे हुए तथा कुछ रिक्त रहते हैं और वे जलपात्र ऊपर-नीचे आने-जाते रहते हैं, उसी प्रकार मानव को यह संसार छोड़ना पड़ता है और पुनः इसी में कर्म-बन्धनवश आना भी पड़ता है।

घटे-बढ़े निकसे छपे ससि कपटी की प्रीति—चंद्रमा के समान कपटी व्यक्ति की प्रीति भी घटती-बढ़ती, प्रकट होती और छिपती रहती है। अर्थात् वह एक समान नहीं रहती।

घट्ट कुटी प्रभात न्यायः—चुंगी अफसर के कार्यालय के समीप प्रभात का न्याय। इस सम्बन्ध में एक कहानी है: एक आदमी चुंगी देना नहीं चाहता था। अतः उसने रात्रि के आरंभ में किसी दूसरे मार्ग से यात्रा शुरू की, पर मार्ग भूल जाने से प्रभात होते-होते वह उसी स्थान पर आ गया जहाँ चुंगी अधिकारी का कार्यालय था। प्रस्तुत न्याय का प्रयोग उद्देश्य में असिद्धि होने पर किया जाता है।

घटने वाले को तकलीफ़ नहीं हुई तो तुझे क्यों हो रही है?—जब कोई व्यक्ति किसी के विकृत अंग को देखकर उसकी हँसी उड़ाए तो उसके प्रति कहते हैं कि जब ईश्वर को बनाते समय कोई कष्ट नहीं हुआ तो तुम्हें क्यों हो रहा है। तुलनीय : भीली—घड़वा वाला ए दोरूँ नी आय्यू, तोय हूँ दोरू आवे; मों का हूँसे कि कोर हूँ—जायसी; पंज० कड़ने वाला नहीं रोया तूं केंनूं रोनां है।

घड़ा टूट गया तो क्या प्यासे रहेंगे?—जिस काम के किए बिना कोई चारा न हो और कोई व्यक्ति छोटी-सी बाधा दिखाकर उसे करने में आना-कानी करे तो उसके प्रति समझाने के लिए ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० पाथो फूटीगे त उधारी मी क्या बगद; पंज० कड़ा पज गय ते तर-याये ते नही रैणा।

घड़ी पल का पता नहीं, कल का करें भरोसा—जीवन का पता नहीं कि कब समाप्त हो जाय और भविष्य के भरोसे पर बैठे हैं। जो व्यक्ति जीवन में दीर्घकालीन योजनाएँ बनाए और जीवन की क्षणभंगुरता को भूल जाए उसे समझाने के लिए कहते हैं। तुलनीय : भीली—घड़ी पलक नीते खबर नी, ने करे काल नी बात; उ० सामान सौ बरस का है पल की खबर नहीं; पंज० कड़ी दा परोसा नही कल दा कां।

घड़ी पल की आस नहीं, कहे काल की बात—ऊपर देखिए।

घड़ी भर की बेशरमी सारे दिन का आराम—(क) वेश्याओं के लिए कहा जाता है जो थोड़ी बेशर्मी से दिन-भर के खर्च के लिए कमा लेती हैं। (ख) थोड़े कष्ट से अधिक लाभ होने को हो तब भी कहते हैं। तुलनीय : मरा० घटकामराची निस्पृहता, दिवस भर सुख।

घड़ी भर के लिए बुरे, सब दिन का आराम—किसी को कोई वस्तु देने से इनकार कर देने पर या कोई काम करने से मना कर देने पर थोड़े समय के लिए लोग बुरा-भला कहते हैं, किन्तु सदा के लिए आराम हो जाता है, क्योंकि दोबारा माँगने या कहने के लिए कोई नहीं आता। तुलनीय : एक नन्ना (नहीं) से सौ बलाएँ टलें; पंज० मासा जही मुसीबत सारा दिन आराम।

घड़ी, महीना, पल, पखवाड़ा, चौघड़िए का साल; जिसको लाला कल कहें उसका कौन हवाल—न देने वाले

को कहते हैं जो प्रायः माँगने पर 'कल देंगे' कह देता है। तुलनीय : अं० Tomorrow never comes.

घड़ी में औलिया घड़ी में भूत—तुनुकमिज़ाज के प्रति कहते हैं जिसके दिमाग़ में स्थिरता तनिक भी न हो। तुलनीय : अव० घड़ी मा औलिया घड़ी भर मा भूत; (औलिया =संत)।

घड़ी में करे सो पड़ा सड़े—जो काम शीघ्रता से किया जाता है वह ठीक न होने के कारण व्यर्थ जाता है। अर्थात् जल्दी में किया गया काम अच्छा नहीं होता। तुलनीय : भीली घड़ी तो घड़ूल्यो पैदा नहीं करवो; पंज० छेती करो ते दुगना परो।

घड़ी में घड़ियाल—(क) भविष्य का कुछ ठीक नहीं। जाने क्या-का-क्या हो जाय? (ख) असंभव बात पर भी कहते हैं।

घड़ी में घर जले अढ़ाई घड़ी भद्रा—नीचे देखिए।

घड़ी में घर जले ढाई घड़ी भद्रा—घर तो घड़ी भर में जल जायगा पर पंडित जी के अनुसार भद्रा होने के कारण ढाई घड़ी बाद बुझाया जा सकता है। (क) व्यर्थ में विलंब करने पर कहा जाता है। (ख) ज्योतिषियों और पंडितों के प्रति भी व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : मरा० एका घटकेंत घर जळतें, अड़ीच घडी भद्रा; भोज० घरी में घर जरे नव घरी भदरा; अव० घड़ी भर मा घर जरै अढ़ाई घरी भदरा; कौर० छिन माँ घर जरे, अढ़ाई घरी के भदरा।

घड़ी में घर जले, नौ घड़ी भद्रा—ऊपर देखिए।

घड़ी में घर जले पाँच घड़ी भद्रा—दे० 'घड़ी मे घर जले ढाई घरी...'।

घड़ी में घर जले, सात घड़ी भद्रा—दे० 'घड़ी में घर जले, ढाई...'।

घड़ी में तोला घड़ी में माशा—ऐसे मनुष्य को कहते हैं जिसका चित्त स्थिर न हो और जो छोटी-सी बात पर प्रसन्न और छोटी-सी बात पर क्रोधित हो जाय। तुलनीय : मरा० घटकेंत तोला घटकेंत मासा, पंज० कड़ी बिच तोला कड़ी बिच मासा।

घड़े को रेंड़ ही बज्र—मिट्टी के घड़े के लिए रेंड़ की लकड़ी ही बज्र जैसी घातक है। अर्थात् (क) दुर्बल को मामूली चोट भी बहुत बड़ी दिखती है। (ख) निर्धन को मामूली हानि भी बहुत बड़ी लगती है। तुलनीय : कड़े दी कँडियाली ही बजर।

घड़े से घड़ा नहीं भर जाता—इस क्रिया में बहुत-सा पानी ख़राब हो जाता है। (क) हर काम के लिए विशेष युक्ति होती है। (ख) बड़ी चीज़ छोटी चीज़ से ही सरलता से भरी जा सकती है।

घन जायां कुल मेहनो घन बूंठा कण हाण—अधिक कन्याएँ होने से परिवार को तथा अधिक वर्षा से होने से अन्न को हानि पहुँचती है।

घन मोर घनवहिया हुंकड़े लोहार—घन (लोहे का भारी हथौड़ा) तो घन चलाने वाला (घनवहिया) मार रहा है और 'हूँ' 'हूँ' कर रहा है (हुंकड़ रहा है) लोहार। कार्य कोई और करे और दूसरा झूठे परेशान हो तो उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते है।

घन संग खारो उदधि मिलि, बरसे मीठो तोय—समुद्र का खारा पानी भी बादल के मीठे पानी के साथ मिलकर मीठा हो जाता है। तात्पर्य यह है कि अच्छों के साथ बुरों के भी अवगुण छिप जाते हैं।

घना कुटुंब घना दुखी, घना कुटुंब घना सुखी—अधिक सदस्यों वाला परिवार अधिक दुखी रहता है और अधिक सदस्यों वाला परिवार अधिक सुखी भी रहता है। यह परिवार के सदस्यों के ऊपर निर्भर करता है। यदि परिवार के सदस्य अच्छे होते है तब तो उनकी ज़िन्दगी सुखमय होती है। और यदि परिवार के सदस्य अच्छे नही होते तो दिन-रात कोलाहल मचा रहता है। तुलनीय : हरि० घणा कुटुम्ब घणा दुखी, घणा कुटुम्ब घणा सुखी; पंज० बडा टब्बर बड़ा सुखी, बड़ा टब्बर बडा दुखी।

घना स्याना कौआ टट्टी में चोंच मारे—कौआ/कौवा बहुत चतुर पक्षी होता है पर वह टट्टी में चोंच मारता है। अर्थात् (क) जो अधिक चालाक होते हैं वे भी बुरा कर्म करते है। (ख) अधिक चालाक बनने वाले को काफ़ी नीचा देखना पड़ जाता है। तुलनीय : हरि० घना/घणा स्याणा काग हो, जो गूह में चूंच मारै; ब्रज० घनों स्यानों कौआ गलीज खावै; पंज० बड़ा सयाना काँ टट्टी बिच चुंज मारे।

घनी-घनी सनई बोवै तब सुतली की आशा होवै—सनई की फ़सल घनी बोने से सन या सनई का उत्पादन अधिक होता है।

घनी स्यानी दो बार चून गूंधे—जो स्त्री अधिक चालाक होती है वह दो बार आटा गूँधती है/गूंथती है। अर्थात् आवश्यकता से अधिक चालाक होने पर हँसी का पात्र बनना पड़ता है। तुलनीय : हरि० घणी स्यानी, दो बै चूण ओसण्या करै; पंज० बड़ी सयानी दो वार आटा गुने।

घबड़ाया कुम्हार लकड़ी से मिट्टी खोवे—(क) जल्दबाज़ी करने से काम बिगड़ जाता है। (ख) घबड़ाहट में मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है जिससे व्यक्ति ग़लत काम कर बैठता है। तुलनीय : मैथ० अगुतायल कुम्हार लकड़ी से खने माटी; भोज० अउंजाइल कोहार लकड़ी से माटी खन्ने, अकुताइल नाउन अंगुरिए काटे।

घबड़ाया नाउ अँगुली काटे—ऊपर देखिए।

घमंड का सर नीचा—नीचे देखिए।

घमंडी का सिर नीचा—अहंकारी को सदा मुँह की खानी पड़ती है। तुलनीय : अव० घमंडी का मूंड तरे; हरि० घमंड का सर नीचा; मल० अहम्भावम् नाशत्तिनु वषिकाट्टि; पंज० कमंडी दा सिर नीदा; अं० Pride goes before a fall.

घमंडी का सिर सदा नीचा—ऊपर देखिए। तुलनीय : मल० अहम्भावम् नाशत्तिनु वषिकाट्टि।

घये की तेरी, तवे की मेरी—स्वार्थी मनुष्य पर कहते हैं जो कहता है कि तवे की रोटी (जो अच्छी होगी) मेरी है और अंगारे की (जो अच्छी न होगी) तेरी है। (घया—अंगारा)। तुलनीय : पंज० चुल्हे दी तेरी ते पचौले दी मेरी।

घये की मेरी, तवे की तेरी—ऊपर देखिए।

घर आई बारात बहू पीपल तले—(क) बहुत ही आवश्यक कार्य के समय ग़ायब रहने वाले के प्रति कहते हैं। (ख) दुश्चरित्र स्त्रियों के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० कर आयी जंज ते बौटी होयी बँझ।

घर आई लक्ष्मी को लात न मारे—पाए हुए धन को या मिलते धन को छोड़ना नहीं चाहिए। तुलनीय : राज० घर आयी लक्ष्मी को ठोकर नही मारणी; अव० घर आई लच्छमी का लात न मारै चाही; ब्रज० घर आई लक्ष्मी ऐ लात मारैं; पंज० घर आयी लसमी नू लत न मारो।

घर आए कुत्ते को भी नहीं निकालते—अपने घर आए हुए को घर में अवश्य आश्रय देना चाहिए। तुलनीय : मरा० घरी आलेल्या कुत्र्याला सुद्धां हांकलीत नाहीत; भोज० घरे आइल कुक्करो के भी नाहीं निकालल जाला; पंज० कर आये ते कुत्ते नू भी नही कडदे।

घर आए जिजमान बीबी गई करौंदे खान—मौक़े को देखकर टल जाय या बहाना कर दे तो कहते हैं।

घर आए नाग न पूजे बाँबी पूजन जाय—घर आए हुए नाग की पूजा नहीं करते और बिल (बांबी) की पूजा करने जाते हैं। (क) मौक़े को हाथ से नहीं जाने देना चाहिए। (ख) जब कोई कार्य सरलता से होने पर न करे और उसी को परेशानी से करे तब भी कहते हैं। (ग) हिन्दू धर्म की उलटी रीति पर भी यह कहावत चरितार्थ होती है। तुलनीय : राज० घर आयो नाग न पूजिय बांबी पूजण जाय; छत्तीस० घर नाग पूजै नहीं, भिमोरा पूजे जाय; पंज० कर आए नाग न पूजे बरमी पूजन गयी।

घर आए पूजे नहीं बाबा पूजन जायँ—ऊपर देखिए।

घर आए बैरी को भी न मारिए—घर पर आया बैरी भी स्वागत की अपेक्षा रखता है। तुलनीय : अव० घर में आवा दुसमनौ का न मारै चाही; (अतिथि-सत्कार सम्बन्धी भारतीय दृष्टिकोण); पंज० कर आए दे दुसमन नूँ भी नहीं मारना चाहिदा।

घर आए मेहमान बहू कंडों को निकली—घर पर मेहमान आ गए और बहू कंडा (सूखा गोबर) ढूँढ़ने जा रही है। (क) जब किसी कार्य के करने का समय आ जाय तब उसके लिए साधन जुटाने वाले के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। (ख) उचित समय पर जब कोई किसी कार्य को करने से कोई बहाना कर जाय तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : कौर० घर आए मेहमान, बहू कंडो को निकली; पंज० परौने कर आए ते बौटी गोटे चुगन गयी।

घर आए सो पाहुना—जो घर आ जाय वह मेहमान (पाहुना के समान) होता है। अर्थात् आगंतुक की सेवा करनी चाहिए। तुलनीय : मेवा० घरे आया को पामणो।

घर आया बैरी पाहुना—घर पर आए बैरी का भी अतिथि की तरह स्वागत करना चाहिए। तुलनीय : मेवा० घर आयो वैरी ई मांपणो।

घर आया बैरी भी पाहुना—ऊपर देखिए।

घर आवे जोय टेढ़ी पगड़ी सीधी होय—जब घर में स्त्री आ जाती है तब आदमी की समस्त उछल-कूद समाप्त हो जाती है और उसे गृहस्थी की चिन्ता हो जाती है। तुलनीय : मग० जब घर आवे जोई तब टेढ़ी पगड़ी सोझी होई।

घर आवे सो साला, घर जाय सो साला—दूसरे के घर जो जाता है या दूसरे के यहाँ जो आता है, दोनों ही को दबना पड़ता है।

घर का घर कर सत्तर बला सिर कर—ब्याह करने या मकान बनवाने में बहुत-सी बलाओं (परेशानियों) का सामना करना पड़ता है।

घर कहे मुझे कर देख, ब्याह कहे मुझे कर देख—घर कहता है कि मुझे करके देख तथा विवाह कहता है मुझे करके

देख कि कितना खर्च होता है । अर्थात् इन दीनों में काफ़ी पैसा खर्च होता है और परेशानियां भी काफ़ी झेलनी पड़ती हैं। तुलनीय : राज० घर कह मने खोल जोय। व्यांव कह मने मांड जोय ।

घर का आटा कुत्ता खाय, बीबी पर घर पीसन जाय अपनी वस्तु की देखभाल न करने और उसी की प्राप्ति के लिए दूसरों से याचना करने या कष्ट उठाने के प्रति व्यंग्य मे कहते हैं ।

घर का आटा कौन गीला करे--अपनी चीज़ को कोई नहीं बिगाड़ना चाहता। तुलनीय : पंज० कर दा आटा कूण गिला करे।

घर का और मन का भेद हरएक के सामने न कहे---घर का और हृदय का भेद सबसे कहना उचित नही। तुलनीय : अव० घर का औ मन का राज केउ न बनावै; पंज० कर दी ते दिल दी गल हर इक नूं न दसो; ब्रज० घर कौ और मन कौ भेद औरै न दे।

घर का कुआं है तो कोई डूब कर मरता है--किसी वस्तु की अधिकता होने पर भी उसका दुरुपयोग कोई नही करता। तुलनीय . बुंद० घर कौ कुआ है, तौ का कोई डूब के मरत ।

घर का कुआं है तो क्या कोई डूब मरे---ऊपर देखिए ।

घर का कोल्हू, तेली रूखी क्यों खाय ?---जब तेली के अपने घर में तेल का कोल्हू है तो वह रूखी रोटी क्यों खाए ? (क) जब किसी व्यक्ति के पास किसी वस्तु की अधिकता हो तो वह उसका खुले दिल से प्रयोग करता है। (ख) जो वस्तु घर हो उसका भोग तो इच्छानुसार करना चाहिए। तुलनीय : राज० घरे घाणी तेली लुखो क्यों खावें; अं० The tailor's wife is worst clad.

घर का खेत न खेती बारी, कहें मियां मेरी नंबरदारी - खेती-बारी कुछ भी नही है फिर अपने को सबसे धनी (नंबरदार) बताते हैं। व्यर्थ में शेखी बघारने वाले के प्रति व्यंग्य मे कहते है ।

घर का गुड़ घर ही में फोड़ लो--(क) घर की लड़ाई घर मे ही समाप्त कर लेनी चाहिए, बाहर बताने से हँसी ही होती है। (ख) लाभदायक वस्तु का चुपके से बँटवारा करना चाहिए नहीं तो उसको चाहने वाले और भी जमा हो जाते हैं ।

घर का घरवाहा कर दिया--घर का नाश कर देने पर कहते हैं ।

घर का घर बैद तऊ बीमार---घर के अधिकांश लोग वैद्य हैं फिर भी लोग बीमार रहते हैं। अर्थात् (क) प्रबंधक के रहते हुए भी कुप्रबंध हो तो कहते हैं। (ख) भाग्य के सामने किसी की कुछ नहीं चलती । तुलनीय : पंज० कर दा बैद सारे बिमार ।

घर का घर स्वाहा कर दिया--पूरे गाँव को चौपट (नाश) कर देने पर कहते हैं। तुलनीय : पंज० कर दा कर फूक दिता।

घर का चून चौखरे खायें पर घर सबका मांगन जांय -- (क) अपने पास की वस्तु की देखभाल न करने और उसी के लिए याचना करने तथा कष्ट उठाने वाले के प्रति कहते है । (ख) भीख माँगने वालों और ब्राह्मणों के प्रति भी कहते है जो घर में सब कुछ होते हुए भी भीख माँगते हैं।

घर का चोर जल्दी पकड़ा नहीं जाता--- (क) घर के भेदिया का जल्दी पता नहीं चलता । (ख) जब बहुत परिचित व्यक्ति क्षति पहुँचाता है तो आसानी से पता नहीं चलता। तुलनीय : भोज० घर क चोर जलदी ना पकड़ाला; पंज० कर दा चोर छेती नही फड़ोदा; ब्रज० घर को चोर जल्दी नाये पकर्यो जाये।

घर का जला बन में गया, बन में लागी आग -चारों तरफ से असहाय व्यक्ति के प्रति उक्त कहावत कही जाती है। (ख) ऐसे, बदनसीब व्यक्ति के प्रति भी कहते हैं जिसे हर जगह कष्ट ही सहना पड़ता है । तुलनीय : भोज० घर के मारल बन में गइलों बन में लागल आग; बन बेचारा का करें करमे लागल आग ।

घर का जोगी जोगड़ा आन गाँव का सिद्ध--घर के योग्य व्यक्ति भी साधारण समझे जाते हैं तथा दूर के साधारण लोग भी योग्य समझे जाते हैं। यह संसार की विचित्रता है। तुलनीय : मरा० घर चा जोगी जोगड़ा, परगाँवचा सिद्ध पुरुष; हरि० घर का जोग्गी जोगणां बाहर गाम का सिद्ध; भोज०घर क जोगी जोगड़ा, बाहर का जोगी सिद्ध; कन्नौ० घर कौ जोगी जोगना औ आन गांव को सिद्ध; अव० घर के जोगी जोगना आन गाँव के सिद्ध; राज० घर का जोगी जोगिया आण गाँव का सिद्ध; सं० अति परिचयाद्वज्ञा भवति; ब्रज० घर कौ जोगी जोगना आन गाम कौ सिद्ध; अं० A prophet is not honoured in his our country; Too much familiarity breeds contempt.

घर का दिवाला हुआ मेहमान फिर भी नाराज़- घर वालों ने अतिथि को प्रसन्न करने के लिए जी तोड़ परिश्रम किया और काफ़ी धन व्यय किया, किंतु अतिथि फिर भी नाराज़ ही रहे। (क) जो व्यक्ति किसी के बहुत परिश्रम

से किए हुए काम को भी पसंद नहीं करता उसके प्रति कहते हैं। (ख) बहुत नखरेबाज़ मेहमान के प्रति भी इसका प्रयोग करते हैं। (ग) जब कोई किसी की अत्यधिक सेवा करे, फिर भी वह संतुष्ट न हो तो ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मेवा० घर को तो घर कटे और पांबणों बेराजी; छेगी जान से गई खटिक के भायँ भी नहीं।

घर का दीप जलाय न जानें, पर्वत आग लगाय -- घर का दीपक तो जलाना नहीं जानते और पर्वत पर आग लगाने जाते हैं। जिसे साधारण काम की भी जानकारी न हो और वह किसी बड़े कार्य को करने चले तो उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भीली—घरनो दीवो करी ने जाणे, डुगरे दैव लगाड़े।

घर का द्वार खसम के हाथ -- (क) जो चीज़ जिसके पूर्णतः वश में हो उसका वह जो चाहे कर सकता है। (ख) स्त्रियाँ अपने पति के प्रति भी कहती हैं क्योंकि भारतीय स्त्रियाँ पतियों के हाथ की कठपुतली होती हैं। तुलनीय : पंज० कर दा बुआ खसम दे हथ; ब्रज० घर कौ द्वार खसम के हात।

घर का देवता नहीं पूजा जाता, पर बाहर का पत्थर पूजा जाता है अपने परिवार के योग्य व्यक्ति की भी लोग इज़्ज़त नहीं करते और बाहर के साधारण व्यक्ति की इज़्ज़त करते हैं। इसी बात को ध्यान में रखकर उक्त कहावत कही जाती है। तुलनीय : भोज० बाहर क पथरो पुजाला घर का देवतो नां।

घर का धान पुआल में न मिलाओ- जब कोई अयोग्य व्यक्ति थोड़े से लाभ के लिए घर की पूँजी नष्ट करता है तो कहते हैं।

घर का नाग पूजें नहीं बाँबी पूजन जाएँ—दे० 'घर आए नाग न पूजे⋯'।

घर का नाम कस्तूरी, पर घर में दुर्गंध—नाम के अनुसार गुण न होने पर व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : तेलु० इंटि पेरु कस्तूरिवारट, इल्लु गब्बिलवालु वासन।

घर का नीम हकीम, बाहर का शाही हकीम—दे० 'घर का जोगी जोगड़ा आन⋯'। तुलनीय : गढ़० घर कौ बैद अर कोरणा की दवाई।

घर का परसैया अँधेरी रात—दूसरे की चीज़ को हर प्रकार से अपने अधिकार में कर लेने और उसे मनमाने ढंग से प्रयोग करने पर कहा जाता है। शब्दार्थ है कि अँधेरी रात हो और परसने वाला घर का हो तो मनमाना खाया जा सकता है। तुलनीय : मेवा० घर का परूसबा वाला अर अंधारी रात; छत्तीस० घर के परसोइया, अउ अंधियारी रात।

घर का परसोइया अँधेरी रात —ऊपर देखिए।

घर का पूत कुँआरा डोले, पड़ोसी का फेरा—घर के लड़के तो कुँआरे घूम रहे हैं और आप पड़ोसी के लड़के की शादी करा रहे हैं। जो व्यक्ति घर वालों की आवश्यकताओं को पूरा न करके दूसरों की आवश्यकताओं को पूरा करे उनके लिए लोकोक्ति का प्रयोग करते हैं। तुलनीय : राज० घररा टाबर कुंवारा फिर पाड़ास्याने फेरा भावै; मेवा० घर का पूत कुंवारा खेले पाडोसी ने फेरा; पंज० अपना पुतर कुंवारा फिरे ते गुआँडियाँ दा व्याह करावे।

घर का पैसा खोटा तो परखने वाले का क्या दोष—जब अपनी वस्तु बुरी हो तो दूसरे को कुछ नहीं कहा जा सकता। तुलनीय : मेवा० घर को नाणो खोटो तो परखवा-वालो कई करे; पंज० अपना पैहा ही खोटा ते हट्टी वाले दा की दोष।

घर का बच्चा घंटी चाटे, उपाध्याय के लिए आटा—जो व्यक्ति अपने परिवार के लोगों की तरफ कोई ध्यान न दे और दूसरों के लिए व्यवस्था करे उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गुज० घरनां छोकरां घंटी चाटे ने उपाध्यायने आटो।

घर का बाम्हन बैल बराबर—दे० 'घर की मुरगी दाल...'।

घर का बालक चोरी करे, कहै राम घर कैसे चले—जब घर के बच्चे ही चोरी करने लगें तो घर को बचाना कठिन है। अर्थात् जब अपने लोग ही क्षति पहुँचाना शुरू कर देंगे तो रक्षा करना मुश्किल हो जाएगा। तुलनीय : पंज० अपना पुतर चोरी करे ते राम जी घर किवें चले।

घर का भूत सात पीढ़ी के नाम जाने--घर के आदमी से घर के भेद छिपे नहीं रहते।

घर का भेद तब ही पाया, जब चौक पुरन को ढकना आया घर का भेद तो उसी समय मालूम हो गया जब चौक पूरने के लिए मिट्टी के सकोरे (ढक्कन) में आटा आया। अर्थात् व्यक्ति के रहन-सहन और व्यवहार से उसकी आर्थिक दशा का पता चल जाता है।

घर का भेदिया लंका ढावे—दे० 'घर का भेदी⋯'।

घर का भेदी चोर—घर का भेदी ही घर का चोर हुआ करता है। अर्थात् जब तक किसी के घर का व्यक्ति चोरों को भेद नहीं बताएगा तब तक वहाँ चोरी होना बहुत कठिन है। तुलनीय : राज० घररो भेदी चोर; पंज० कर

दा भेदी चोर।

घर का भेदी मिले, जड़-मूल से मारै—जिस पर यह शक हो कि यह घर के भेद दूसरों को देता है उसे समूल नष्ट कर देना चाहिए। तुलनीय : पंज० कर दा भेदी मिले जानों मारे।

घर का भेदी लंका ढाए—आपस की फूट विनाश की जड़ होती है। तुलनीय : भोज० घर क भेदिया लंका ढावे; अव० घर का भेदी लंका ढावै; छत्तीस० घर के भेदी लंका छेदी; गढ़० घर भेदू लंका बिणाश; बुद० घर की भेदी लंका जार; बुद० घरई की कुरइला से आंख फूटत; माल० घर रो भेदू लंका ढावे; मरा० घरचा फितूर लंकेचा नाश झाला; पंज० कर दा भेदी लंका फूके।

घर का हुआ न दर का—कहीं का न रहा, निकम्मा हो गया।

घर की आग नहीं दिखती, टीले पर की दिख जाती है—अपने घर मे लगी हुई आग दिखाई नहीं देती किंतु दूर के टीले पर लगी हुई आग दिखाई दे जाती है। अर्थात् अपने और अपनों के दोष दिखाई नहीं देते और दूसरों के तुरंत दिखाई पड़ जाते हैं। जो व्यक्ति अपने दोष न देखकर दूसरों के ही देखे उसके प्रति व्यंग्य में कहते है। तुलनीय : राज० घर वळती को दीसै नी डूगर वळती दीस ज्याय; मेवा० पंगा बलती नीं दीखे, डूगर बलती दीखे।

घर की आग नहीं दिखती, पहाड़ की दिख जाती है—ऊपर देखिए।

घर की आधी अच्छी बाहर की पूरी नहीं—घर की आधी रोटी बाहर की पूरी रोटी से अच्छी होती है। अर्थात् (क) अपने घर तकलीफ़ सह लेना किसी के सामने हाथ फैलाने मे अच्छा होता है। (ख) निकम्मे या आलसी व्यक्ति भी ऐसे है जो घर रहकर तकलीफ़ सहते है पर बाहर जाकर काम करना नही चाहते। तुलनीय : हरि० घर की आद्धी आच्छी भार्‌य की साब्बत्य कुछ ना; अव० घर के आधी ठीक बाहेर की पूरी ठीक नाहीं; गढ़० घर की आधी भली; मरा० घरची अर्धी चांगली, बाहेरची सबंध नको; मल० मट्टुट्टुळ्ळवन्टे पल्लिनेक्काळ अवनवण्टे मोणयाणु नल्लतु; पंज० कर दी अद्धी चंगी बाहर दी सावन नही; अं० Dry bre d at home is better than sweet-meat of abroad.

घर की आधी भली, बाहर की पूरी नहीं—ऊपर देखिए।

घर की आधी भली, बाहर की सारी नहीं—दे० 'घर की आधी अच्छी···'।

घर की खाँड़ किरकिरी पराया गुड़ मीठा—ऊपर देखिए।

घर की खाँड़ किरकिरी लागे, चोरी का गुड़ मीठा—नीचे देखिए।

घर की खाँड़ किरकिरी लागे, बाहर का गुड़ मीठा—घर की मिठाई (खांड़) अच्छी नही (किरकिरी) लगती और बाहर का गुड़ मीठा (अच्छा) लगता है। (क) जिन्हें अपनी अच्छी वस्तु प्रिय नही लगती और दूसरों की साधारण वस्तु भी प्रिय लगती है उनके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। (ख) व्यभिचारियों के प्रति भी ऐसा कहते हैं जो अपनी सुन्दर पत्नी को प्यार नही करते और वेश्याओं से प्यार करते हैं। तुलनीय : हरि० घर की खाण्ड चरचरी (किरकिरी) लागै, गुड चोरी का मीट्ठा, राज० घररी खांड करकरी लागै चोरी रो गुड़ मीठो; मेवा० घर की खाड करकरी लागे गुळ चोरी को मीठो; मरा० घरची साखर आळणी लागेत, चोरी चा गूळ गोड गोड; तेलु० पेरटि चट्ट मदुकु पानिकि रादु; अव० घर कै खाड़ खुटूरी लागै चोरी का गुरु मीठ; तेलु० इंटि सोम्भु इप्पडि पिडि, पोरिगिंटि सोम्भु पोडि बेल्लमु; पंज० कर दी खंड कौडी लगे बाहर दा गुड़ मिठा।

घर की खाँड़ खट्टी, बाहर का गुड़ मीठा—ऊपर देखिए।

घर की खेती—(क) बालों को कहा जाता है क्योंकि इनको जब चाहो रख लो और जब चाहो कटा लो। (ख) प्रताड़ना मे ऐसे व्यक्तियों पर कहा जाता है जो अपने वश के बाहर की बात पर साधिकार बोलते रहते हैं। तुलनीय : पंज० कर दी खेती।

घर की खुनुस औ जर की भूख, छोट दमाद बराहे ऊख; पातर खेती भकुवा भाइ, घाघ कहें दुख कहाँ समाय—घर मे प्रतिदिन की लड़ाई (खुनुस), ज्वर के बाद की भूख, छोटी आयु का दामाद, पानी बिना सूखती ऊख (ईख) की खेती, कमज़ोर फ़सल और मूर्ख भाई हों तो घाघ कहते हैं कि इतना अधिक दुःख होता है कि उसे झेलना कठिन होता है।

घर की गंगा, चाहे ऊपर नहाओ, चाहे नीचे—अपनी वस्तु को चाहे जिस तरह प्रयोग में लाओ कोई कुछ नही कह सकता। इस लोकोक्ति का प्रयोग तब किया जाता है जबकि व्यक्ति बुरा काम कर रहा हो, किंतु देखने वाला कुछ कहने में असमर्थ हो। तुलनीय : गढ़० अपणी गंगा, क्वै

उंदो न्हौ उबौ न्हौ; पंज० कर दी गंगा पाँवे उते नहाओ पांवे थले ।

घर की घूंस (छछूंदर)—परिवार के दुष्ट, नीच या गंदे व्यक्ति को कहते हैं जिसे कोई न चाहता हो ।

घर की चीज कड़वी लागे बाहर की चीज मीठी—दे० 'घर की खाँड़ किरकिरी···'। तुलनीय : ब्रज० घर की चीज करई और बाहर की मीठी ।

घर की जोरू की चौकसी कहाँ तक—(क) घर की स्त्री की चौकीदारी संभव नही। (ख) घर के चोर को पकड़ना या उससे सामान बचाकर रखना कठिन है । तुलनीय : अव० घर की मेहरिया का कै घरी ताकै ।

घर की जोरू चबेना खाय, रंडी खाय बताशा आज के रंडीबाज पुरुषो पर व्यंग्य है जो अपनी स्त्री का अनादर और रंडियों का आदर करते हैं। तुलनीय : माल० पतिवरता भूखे मरे ने पेड़ा खाय छिनाल; पंज० अपनी बौटी भुखी मरे ते रंडी खाय बताशा ।

घर की जोरू नंगी घूमे, फकीर माँगे चोला—अपनी पत्नी तो नंगी घूमती है और फ़क़ीर चोले के लिए कपड़ा माँग रहा है । निर्धनता मे दान नही दिया जा सकता । जब कोई व्यक्ति बहुत कठिनाई में हो और उससे कोई कुछ माँगने आ जाय तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : भीली—घरनी ते घट्टी चाटे, उपाद्यौ के दोय चपटी; राज० घररा छोरा घंटी चाटै ओझे जी ने आटो ; पंज० अपनी बौटी नंगी फिरे ते मंगता मंगे चोला ।

घर की ड्योढ़ी लंघे ना, जायेंगे सागर पार—घर की ड्योढ़ी लाँघते नही बनती और बाते करते है सागर पार जाने की । (क) जो व्यक्ति बैठे-बैठे गप्पें हाँके, काम-धाम कुछ न करे उसके प्रति व्यंग्य से कहते है। (ख) जब कोई निर्धन या असहाय व्यक्ति बहुत लंबी-चौड़ी बातें करता है तब उसके प्रति व्यंग्य मे ऐसा कहते हैं। या जब कोई अपनी सामर्थ्य के बाहर की बात करता है तब भी व्यंग्य में ऐसा कहते है । तुलनीय : भीली— घेरने खूणो तो चोरेह नी, ने गांम गमेताई करे ।

घर की दाही बन गई, बन में लागी आग; बन बेचारो का करे, कर में लागी आग—घर के जले बन में गए तो बन में भी आग लग गई । अर्थात् भाग्य के विपरीत होने पर प्रत्येक स्थान पर दुःख ही मिलता है । तुलनीय : भोज० घर : मारल बन गइल वन में लागल आग, बन बेचारा का करे जब कर मे लागल आग ।

घर की न बाहर की—न तो घर का काम कर सकती है और न ही बाहर की । जो स्त्री या वस्तु किसी भी कार्य के योग्य न हो उसके प्रति कहते हैं । तुलनीय : भीली—नी तो घर नी, ने आंगण नी ।

घर की पुटकी बासी साग—घर में थोड़ा आटा और साग के अतिरिक्त कुछ नहीं है फिर भी बहुत बात करते हैं । घमंडी या डींग हाँकने वाले के प्रति ऐसा कहते हैं ।

घर की फूट बुरी—घर की फूट बुरी होती है क्योंकि परिवार में फूट होने से परिवार का पतन हो जाता है ।

घर की बारूद गीली है—घर की बारूद ही जब गीली हो तब बाहर वालों से लड़ाई किस बूते पर छेड़ी जा सकती है । घर के भेद बताने वालों के प्रति ऐसा कहा जाता है। तुलनीय : गढ़० घर की दारू बुगली ।

घर की बिल्ली घर ही में शिकार—(क) जब घर का आदमी घर ही में धोखेबाज़ी करे तो कहते हैं। (ख) जो जहाँ का रहने वाला है, उसकी अक्ल वहीं काम करती है या वही उसका रुआब रहता है ।

घर की बिल्ली घरै शिकार—ऊपर देखिए ।

घर की बीबी हाँडिनी घर कुत्तों जोगा जिस घर की मालकिन इधर-उधर घूमती है उस घर में कुत्तों को स्वतंत्रता मिल जाती है । आशय है कि जो व्यक्ति अपने घर की देखभाल नहीं करता उसके घर की दशा ठीक नहीं रहती ।

घर की बेटी गू हगनी अपने घर की बेटी गू हगनी है। दूसरों की लड़की अच्छी है और अपनी बुरी। दूसरे की प्रत्येक वस्तु अच्छी दिखती है । जो व्यक्ति सदा अपनी वस्तु की बुराई और दूसरे की वस्तु की बड़ाई करता रहे उसके प्रति व्यंग्य से कहते है । तुलनीय : अव० अपने देश कै बिटिवा गुह हगनी ।

घर की मुर्गी दाल बराबर घर की अच्छी चीज़ों की भी लोग क़द्र (इज़्ज़त) नही करते । तुलनीय : भोज० घर के मुरगी दाल बरोबर; अव० घर की मुरगी साग बरोबर; हरि० घर की मुर्गी दाल बराबर; मग० घर के खंडा लउड़ी; राज० घर की मुरगी दाळ बरोबर; छत्तीस० घर के मुरगी दार बरोबर; कौर० घर की मुरगी दाल बराबर; मरा० घरची कोंबड़ी वरणा समान; कन्न० हित्तल गिड मछल्ल; तेलु० पौरुगिंटि पुल्लगुरू रुचि; मल० मुट्टत्ते गुल्ल यक्कु मणभिल्लु; ब्रज० घर की मुरगी दारि बराबरि; अं० No man is a hero to his own valet.

घर की मुर्गी साग बराबर—ऊपर देखिए। तुलनीय : पंज० कर दी कुकड़ी दाल बराबर ।

घर की मूंछे ही मूंछे हैं— (क) कोरी डींग मारने वाले को कहते हैं। (ख) अपने पास की पूंजी को ही अपनी पूंजी समझना चाहिए। तुलनीय : ब्रज० घर की तौ गौछई गौछें।

घर की रोटी आधी भली—अपने घर थोड़ा खाकर रह जाना ठीक लेकिन दूसरे के सामने हाथ नहीं फैलाना चाहिए। तुलनीय : मैथ० घर के रोटी आधो भला; भोज० घर क टुक्को भल; पंज० अपनी रोटी थोड़ी चंगी।

घर की हानि, जगत की हांसी—अपने घर में हानि होती है और संसार हँसी उड़ाता है। तुलनीय : राज० घर मे हाण जगत मे हांसी।

घर के खपरा बिक जाएंगे—जब कोई निर्धन व्यक्ति अपने से सम्पन्न या शक्तिशाली व्यक्ति से दुश्मनी करता है या करना चाहता है तो उसके प्रति ऐसा कहते है। तुलनीय : पंज० कर के पांडे बिक जाणगे।

घर के खीर खाएँ और देवता भला मनाएँ— हिन्दुओं के भोग लगा कर स्वयं खा लेने की खिल्ली उड़ाई गई है। तुलनीय : कुनबा० खीर खावै देवी भला मानै; पंज० कर दे खीर खाण, ते भला देवता मनान।

घर के घर और बाहर के बाहर—जब एकाएक कोई आपदा आने पर लोग जहाँ हो वहीं दुबक जाये तो कहते है। तुलनीय पंज० कर दे अंदर बाहर दे गिदड़।

घर के घर ही न समाएँ और ढटींगर पाहुने— घर में योंही बहुत ज्यादा आदमी हो और दो-चार बाहर से अतिथि भी आ जायँ तो कहते है। तुलनीय : गढ़० यार न आवन, ए पड्या चारी मानम।

घर के चोर का कौन रखवाला ? —यदि घर का व्यक्ति ही चोरी करता है तो उससे बचना कठिन है।

घर के छप्पर से आँख फूटती है—अपने घर के छप्पर मे लगे बाँस से ही आँख फूटती है। जब घर के लोग ही क्षति पहुँचाते है तब ऐसा कहते है, या घर की फूट से होने वाली हानि पर ऐसा कहते है।

घर के जले बन गए और बन में लागी आग बन बिचारा क्या करे जो कर्मों लागी आग—दे० 'घर की दाही बन गई...'।

घर के जोगी जोगना आन गाँव के सिद्ध—दे० 'घर का जोगी जोगड़ा...'।

घर के देवता को सत्तू का भोग—अपने घर के योग्य व्यक्ति की भी इज्जत नहीं होती है। तुलनीय : भोज० घर क देवता के तेल हा पकवान; ब्रज० घर के देवता कूं सतुआ कौ भोग।

घर के देवता घर के पुजारी—घर के ही देवता हैं और घर के ही पुजारी। जब सभी परिस्थितियाँ किसी के अनुकूल होती है तब ऐसा कहते है। तुलनीय : राज० घररा ही देवता घररा ही पुजारी; पंज० कर दे देवता ते कर दे पुजारी।

घर के देव भूखों मरें बाहर के पूजा माँगे—घर के देवता भूख से परेशान है और बाहर के देवता पूजा माँग रहे है। जब कोई स्वयं परेशान हो और उससे दूसरे सहायता चाहें तब ऐसा कहते है। तुलनीय : अव० घर के देव ललायँ बाहर के पूजा माँगैं; पंज० कर पुखा मरे ते बाहर दे पूजा करवान।

घर के देव ललायं, बनवासी पूजा माँगे—दे० 'घर के देव ललायं बाहर...'।

घर के देव ललायँ बाहर के पूजा माँगे—(क) जब घर वालों का पेट न भरे और बाहर के लोग माँगने आ जाएँ तो कहते है। (ख) जो घर वालों की इज्जत न करके बाहर वालों के गुण गाए उसके प्रति भी कहते है।

घर के धान प्याल गये—घर की वस्तु की क़द्र नहीं की जाती।

घर का धान पियार में न मिलाओ—दे० 'घर का धान पुआल...'।

घर के नंदबाबा घर ही की जसोदा—दे० 'घर के देवता घर के...'।

घर के न घाट के—जो व्यक्ति न तो घर काम कर सके और न बाहर का ही अर्थात् निकम्मे व्यक्ति के प्रति व्यंग्य में कहते है। तुलनीय : गढ़० घर का न घाट का करणी का निरया; पंज० न कर दे न बाहर दे।

घर के पले बैल के दाँत क्या गिनने ? जो बैल घर ही में पैदा तथा बड़ा हुआ उसके दाँत गिनने की क्या आवश्यकता? जिस व्यक्ति अथवा वस्तु से अच्छी तरह परिचित होने पर भी यदि कोई उसके सम्बन्ध में पूछताछ करे तो उसके प्रति कहते है। तुलनीय : माल० घर जाया रा दन देखं के दाँत; पंज० जानण दा कि जानणहारा।

घर के पीरों को गुड़ बाहरी को मलीदा—जब कोई व्यक्ति घर के लोगों की तरफ कोई ध्यान नहीं देता और बाहर वालों की काफ़ी इज़्ज़त करता है तब ऐसा कहते हैं।

घर के पीरों को तेल का मलीदा—अपने परिवार के लोगों के प्रति अच्छा बर्ताव न करने वाले के प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मरा० घरच्या पीरांना (पितराना) तेलां-

तले पक्वान्न; ब्रज० घर के पीरन कूं तेल को मलीदा।

घर के पूत कुँआरे खेलें, पड़ोसी का कराएँ ब्याह—तुलनीय : मेवा० घर का पूत कुंवारा खेले पड़ोसी ने फेरा; राज० घरहा टाबरा कुंवारा फिरे पाड़ास्याँने फेरा भावै।

घर के भूखे मरें, पुजारी माँगे सीधा—दे० 'घर की जोरू नंगी घूमे…'।

घर के मारें, दोस्त बचाएँ—संबंधी हानि करने का अवसर ढूँढते है, किन्तु मित्र सदा सहायता के लिए तत्पर रहते है। जब कोई संबंधियों से हानि उठाए तथा मित्रों की सहायता से उन्नति करे तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : गढ़० भिनर डड्याव अर भैरौ लड्याव; पंज० कर दे मारण दोस्त बचाण।

घर के मारे बन गए, बन में लागी आग; बन बेचारा क्या करे, जब करमें लागी आग—दे० 'घर की दाढ़ी बन गई…'।

घर रोवें बाहर के खायें, दुआ देत कलंदर जायें—बाहरी लोगों का स्वागत और घर वालों की कोई कदर न तब कहा जाता है। तुलनीय : राज० घर में तो फाका पड़ै मोडा तृत्तण जावै; पंज० करे बिच पुत्त पयी ते पूजन बाहर जावे।

घर के लड़के कुँआरे, पड़ोसी चाहें बहू—दे० 'घर के पूत कुंवारे…'।

घर के लड़के गुठली चाटें, मामा खायें अमावट—जो घर वालों की तरफ कोई ध्यान न दे और बाहर वालों का काफ़ी ध्यान रखे उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते है। तुलनीय : पंज० कर दे मुंडे गुल्लियाँ चट्टन मामे खान अमपापड़।

घर के लड़ें, लोगों का तमाशा—घर वाले आपस मे लड़ते है तो पड़ौसी आदि उन पर हँसते हैं। या आपस की फूट से दूसरे लोग खुश होते हैं। तुलनीय : मेवा० जूझे ने घर उघाड़े।

घर के ही मर्द हैं—जो डर के मारे घर वालों से कोई बात नही करता और अपने परिवार वालों पर खूब रोब जमाता है उसके प्रति व्यंग्य मे ऐसा कहते है।

घर को उसारा, लड़के को साला—घर के लिए बरामदा (उसारा) आवश्यक होता है उसी प्रकार लड़के के लिए साला, क्योंकि यदि साला नही है तो ससुराल जाने में कोई आनन्द नही आता।

घर खर्ची नहीं दुपहर का भोज—दे० 'घर में खर्च नही ड्योढ़ी पर…'।

घर खावें आला या साला—अधिक आले होने से दीवारें कमज़ोर हो जाती हैं तथा साले को भी घर से कोई लगाव नहीं होता इसलिए वह खूब मौज उड़ाता है। इस प्रकार घर के लिए ये दोनों ही खतरनाक हैं। तुलनीय : ब्रज० घरे खावैं आरौ कै सारौ।

घर खीर तो बाहर खीर—(क) बड़ों का हर जगह आदर होता है। (ख) जो घर से अच्छा खाकर जाते हैं उन्हें बाहर भी अच्छा खाने को मिलता है। (ग) भाग्य जब सीधा होता है तब सभी स्थानों पर लाभ या सुख मिलता है। तुलनीय : मरा० घरी खीर तर बाहेर खीर; हरि० घरां खीर, तै भारय खीर; कौर० घर खीर तो बाहर खीर; मग० घर भात त बाहरो भात; भोज० घरे जेकर पेट भरी ओही क बहरों भरी, घर भरल त बहरों भरल; मैथ० घर दही त बाहरो दही; पंज० कर सिद्ध ते बाहर भी सिद्ध।

घर खोदे ईंधन बहुत—घर उजाड़ने से ईंधन की कमी नहीं रहती। जब कोई अपना घर ही उजाड़ने पर उतारू हो तो उसे खर्च करने को बहुत मिलता है।

घर खोवें और आसपास, तिन का नाम धर्मदास—जो अनायास ही दूसरे और अपने काम में विघ्न डालते हैं उन पर कहा जाता है।

घर घर कहे तो कह नाइन से—यदि किसी बात का प्रचार करना है तो उसे नाइन से कह देना चाहिए। नाइन पर व्यंग्य है, क्योंकि वह सभी घरों मे आती-जाती है और उसे चुगली करने की आदत भी होती है।

घर घर का साथ नर का—न कभी दूसरे के मकान मे रहे और न कभी स्त्रियों का साथ करे। अर्थात् घर अपना अच्छा होता है तथा साथ किसी पुरुषोचित गुणवाले व्यक्ति का ही अच्छा होता है।

घर घर के जाले बुहारते फिरती है—(क) स्थिर न रहने वाली, या इधर-उधर घूमने वाली स्त्री के प्रति भी कहा जाता है। (ख) जल्दी घर बदलने वालों के लिए भी कहते है। (ग) खुशामदी आदमी के प्रति भी व्यंग्य से कहते है।

घर घर के निपट लो, बराती बहुत हैं—बराती तो बहुत हैं इसलिए घर के लोग पहले भोजन कर लें पता नही बाद में बचेगा कि नही। स्वार्थी व्यक्तियों के प्रति कहते हैं जो स्वार्थ के आगे मानापमान का ध्यान नही रखते। तुलनीय : पंज० कर-कर दे मावों जंजी बडे हन।

घर-घर ढोलकी, घर-घर तान, उसका नाम हिंदुस्तान—(क) भारत में विभिन्न मतावलंबी रहते है इसी कारण

कहते हैं। (ख) भारतीय गाने-बजाने के काफ़ी शौक़ीन हैं इसलिए भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० घर-घर ढोलकी घर-घर तान उसका नाम हिंदुस्तान; पंज० कर-कर ढोलकी, कर-कर तान उहदा नाँ हिन्दुस्तान।

घर-घर देखा एकहि लेखा—जब प्रत्येक घर का परीक्षण किया तो पता चला कि सभी एक समान हैं। अर्थात् सभी में दोष है। जहाँ पूरे गाँव के लोग बुरे हों वहाँ ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मरा०घरो घरी हाच हिशाब; अव० घर-घर एकै लेखा; पंज० कर कर एहो हाल।

घर-घर पति न कीजे, गाँव-गाँव तो कीजे—व्यभिचारिणी स्त्रियों के प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

घर-घर पीत न कीजे तो गाँव-गाँव तो कीजे- यदि घर में आप मित्र (पीत) नहीं बना सकते तो कम से कम हर गाँव में तो कुछ लोगों को मित्र बना लेना चाहिए। अर्थात् कुछ न कुछ मित्र अवश्य रखने चाहिए।

घर-घर मटियाले चूल्हे—(क) सर्वत्र एक ही हाल है। (ख) सभी घरों में लड़ाई-झगड़े होते हैं। तुलनीय : माल० घर-घर गारा रा चूल्हा; गढ़० घर-घर मट्टी क चुल्ला; राज० घर-घर माटीरा चूल्हा है; अव० घर-घर माटी कै चूल्हा है; हरि० घर-घर मटियाले चूल्हे; बुद० घर-घर मट्या चूले हैं; ब्रज० घर-घर चूल्हे मांटी के हैं; गुज० घरे-घरे माटी ना चुला; हाड़० घर-घर गार का छूला छ; मरा० घरोघर मातीच्या चुली; छत्तीस० माटी के चुल्हवा, घर-घर हावय; कौर० घर-घर मटियाल चुल्हे; पंज० कर-कर मिट्टी दे चूल्हे।

घर-घर मिट्टी के चूल्हे हैं—ऊपर देखिए।

घर-घर मीत न कीजे, तो गाँव-गाँव तो कीजिये - दे० 'घर-घर पीत न कीजे...'।

घर-घर का यही लेखा—दे० 'घर-घर देखा...'।

घर घरवाली से—घर घर वाली से अर्थात् पत्नी से ठीक रहता है। तुलनीय : भीली - घेर लुगाइ नूं है, आदमी नु नी; पंज० कर करवाली नाल।

घर-घर शादी घर-घर ग़म—दुःख-सुख सभी जगह रहता है। तुलनीय : मरा० घरोघरी आनद, घरोघरी दुःख।

घर, घरेड़ा, गाड़ी, इन तीनों का दाम खड़ाखड़ी—इन तीनों की क़ीमत नक़द ले लेनी चाहिए, इनके उधार बेचने से बहुत परेशानी होती है।

घर घोड़ा, नखासे मोल—घोड़ा तो घर पर है और बाज़ार (नखास) में उसका मोल करते हैं। बिना माल दिखाए ही उसका दाम कहने पर कहते हैं। तुलनीय : अव० घर घोड़ा मोल नकास कोना; भोज० घर में घोड़ा बजारे मोल; पंज० कोड़ा कर मूल बजार।

घर घोड़ा पैदल चलें- घर में घोड़ा बँधा है फिर भी पैदल जा रहे हैं। जो व्यक्ति किसी वस्तु के रहते हुए भी उसका उपयोग न करे और कष्ट भोगे उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० घरे घोड़ो रे पाळो जावै; पंज० कोडा कर ते तुरे पैदल।

घर घोड़ा पैदल चलें, तीर चलावें बीन, थाती धरें दमाद घर, जग में भकुआ तीन—घर में घोड़ा होते हुए पैदल चलने वाले, बीन-बीन (छाँट-छाँट) कर तीर चलाने वाले तथा दामाद के घर थाती (पूंजी) रखने वाले ये तीनों मूर्ख होते है।

घर चूहे एकादशी रहें—अत्यन्त निर्धन व्यक्ति को कहते है जिसके घर में खाने के लिए कुछ भी न हो।

घर चैन तो बाहर चैन- जिसको घर चैन है उसे बाहर भी चैन मिलता है। तात्पर्य यह है कि जिसके घर में किसी चीज़ की कमी नहीं है उसे बाहर भी प्रत्येक वस्तु मिल जाती है। तुलनीय : कर सबर ते बाहर सबर।

घर चोरी परदेस भिक्षा अपने घर में चोरी करने पर भी विशेष डर नहीं होता क्योंकि वहाँ सहायता करने वाले भी होते है, किंतु परदेस में चोरी करने पर मार भी पड़ती है और सज़ा भी भुगतनी पड़ती है। परदेश में भीख माँगने पर कोई हानि नहीं होती क्योंकि वहाँ जान-पहचान वाला कोई नहीं होता।

घर छोटा समधियाना बड़ा हैसियत कम लेकिन ख्याति बहुत।

घर जल गया तब चूड़ियाँ पूछीं—काम बिगड़ जाने पर सुधि लेने वाले के प्रति कहते हैं। इस पर एक कहानी है : एक मूर्ख स्त्री ने एक बार नई चूड़ियाँ पहनीं। चूड़ियों की प्रशंसा न सुनकर उसने घर में आग लगा दी। लोग इकट्ठे हो गये और तब उनमें से एक की निगाह चूड़ियों पर पड़ी और उसने पूछा। इस पर स्त्री ने उक्त कहावत कही।

घर जला तो जला, चूहों की अकड़ तो टूटी—(क) छोटे से लाभ के लिए बहुत बड़ी हानि करने वाले मूर्ख को कहते हैं। (ख) बदला लेने के लिए अपनी हानि की परवाह न करने वाले के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : हरि० घर तै जल्या, पर मूस्सयां कै आंख्य होगी।

घर जले किसी का तापे कोई—नीचे देखिए।

घर जले गुंडा तापें—किसी का घर जल रहा है और गुंडे हाथ सेंक रहे हैं। (क) जब किसी की क्षति से दूसरे लोग लाभ उठावें तब कहते हैं। (ख) जब किसी की क्षति पर दूसरे लोग मखौल करें तब भी कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० घर जरै और गुंडा तापें; पंज० कर जला दुसमन तापे।

घर जले घूर बुतावे—आवश्यक काम न करके फ़िज़ूल का काम करने पर कहा जाता है।

घर जले तो जले पर चाल न बिगड़े—रूढ़िवादियों या लकीर पीटने वालों के लिए कहा जाता है।

घर जाय तो बीबी मारे, बाहर जाय तो मियाँ मारे—हर तरफ से पीड़ित व्यक्ति ऐसा कहता है। तुलनीय : पंज० कर जाओ ते बौटी मारे बाहर जाओ ते मियाँ मारे।

घर जानी मन मानी—अपने घर जैसा जानकर, मनमाना काम करना। मनमाना काम करने वाले के प्रति यह लोकोक्ति कही जाती है।

घर जानी मर जानी—आपसी या घरेलू बात के लिए कहते हैं।

घर जोरू का—दे० 'घर घरवाली से···'।

घर तंग बहू जबरजंग—(क) ग़रीबों में शाहखर्ची करने वाली स्त्री के आने पर कहते हैं। (ख) मोटी-ताज़ी स्त्री के लिए मज़ाक़ में भी ऐसा कहते हैं।

घर तेरा, पर कर न लगा—घर तो तेरा ही है पर किसी वस्तु को हाथ न लगाना। नाममात्र का अधिकार या केवल दिखाने का अधिकार देने वाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० कर तेरा पर हथ न लायीं।

घर तो जला, चूहों को भी आँख हो गई—दे० 'घर जला तो जला···'।

घर दूर बोझा/भरोटा भारी—घर अभी दूर है तथा सिर पर बोझा भारी है। (क) जब कोई व्यक्ति किसी ऐसे काम में फँस जाता है जो उसकी शक्ति (सामर्थ्य) से बाहर का हो तो उसके प्रति कहते हैं। (ख) कामचोरों तथा आलसियों के प्रति भी व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० घर दूर घटी भारी।

घर दूसरे का है पर पेट तो अपना है—दूसरे के घर का भोजन है, किन्तु पेट तो अपना ही है, उसका विचार तो कर लो। जो व्यक्ति मुफ़्त का समझकर अधिक खाते हैं उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० धान पारको पण पेट तो पारको कोनी; पंज० पूरियाँ इजे दिआँ है टिड ते आपना ही है।

घर न बर—लड़की के लिए कहते हैं कि उसके लिए घर और दूल्हा (बर, वर) दोनों में से एक भी अच्छा नहीं मिल रहा है।

घर न बार मियाँ मुहल्लेदार—(क) नाम के अनुसार औक़ात या काम न होने पर कहा जाता है। शेख़ी मारने वालों को भी व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : गढ़० घर न बार, मुहल्लादार; ब्रज० घर न द्वार, मियां मुहल्लेदार।

घरनी से घर, हलवाहे से हल—सुशील स्त्री की उपस्थिति में घर की शोभा होती है तथा अच्छे हलवाहे से कृषि अच्छी होती है। तुलनीय : भोज, मैथ० घरनिए घर हरवाहे हर; सं० न गृहं गृहमित्याहुर्गृहिणी गृहमुच्यते।

घर पर फूस नहीं नाम लखपतचंद—नाम के अनुसार स्थिति न होने पर व्यंग्य से ऐसा कहते है। तुलनीय : मैथ० आँखि नदारद नाम नयनमुख; भोज० घरे फूस नां नांव धन्नासेठ; पंज० कौल टका नहीं नां लखपति।

घर फूंककर बिर्रा मारे—बर्रे या भिड़ों को मारने के लिए घर में आग लगा दी। थोड़े फ़ायदे के लिए बहुत बड़ा नुक़साक करने पर कहते हैं।

घर फूंक तमाशा देखें—घर फूंककर तमाशा देख रहे हैं। ऐसे मूर्ख व्यक्ति के प्रति कहते है जो अपनी ही हानि करके खुश होता है। तुलनीय : अव० घर फूंक तमाशा देखै; ब्रज० घर फूँकि तमासौ देखें।

घर फूटे गाँव लूटे, गाँव फूटे जवार लूटे—तात्पर्य यह है कि घर के व्यक्तियों में यदि मतभेद हो जाय तो पूरा गांव उसका लाभ उठाता हैं और यदि पूरे गांव में मतभेद हो जाय तो आसपास के गाँव वाले उसका लाभ उठाते हैं।

घर फूटे गँवार लूटे, गाँव फूटे जवार लूटे—आशय यह है कि आपस की फूट से सदा दूसरे लोग लाभ उठाते हैं।

घर बनवाया बन गई क़ब्र—बनवा रहे थे घर पर बन गई क़ब्र। (क) अपना सोचा न होने पर कहते हैं। (ख) किसी लाभदायक काम में हानि हो जाने पर भी कहते हैं।

घरबार तुम्हारा रोटी कुल्ले को हाथ न लगाना—ऊपरी प्रेम या अतिथ्य दिखाने पर कहते है।

घर बेचकर तीर्थ करें—तीर्थ करना अच्छा चीज है किन्तु घर बेच के करना मूर्खता है। जो व्यक्ति अपनी स्थिति से बढ़कर व्यय करें या कोई कार्य करें उनके प्रति व्यंग्य से

कहते हैं। तुलनीय : मेवा० घर बालर तीरथ नी करणी आवे।

घर बैठकर राजा को भी डाँटा जा सकता है—(क) आशय यह है कि पीठ पीछे शक्तिशाली व्यक्ति को भी गालियाँ दी जा सकती हैं। जो व्यक्ति किसी बली व्यक्ति की बुराई पीठ पीछे करे तो कहते हैं। (ख) अपने घर में सभी राजा होते है।

घर बैठे आधा भला—बिना कुछ मेहनत के जो कुछ भी मिल जाय वही बहुत है।

घर बैठे आधी भली ऊपर देखिए।

घर बैठे गंगा आई—बिना प्रयत्न के सफलता मिलने पर कहते है। तुलनीय : राज० घर बैठां गंगा आई; पंज० कर बैठे गंगा वगी।

घर बैठे मोतियों का चौक पूरते हैं—पूजा करने के लिए चौक पूरा जाता है जो कि आटे का होता है। मोतियो का चौक पूरते हैं अर्थात् बहुत धनी है।

घर ब्याह, बहू कंडों को डोले—(क) काम के समय लापरवाही करना। (ख) किसी विशेष समय पर ऐसी साधारण वस्तु का घर में न होना जिसका होना अत्यावश्यक है।

घर भर दढ़ियल, चूल्हा के फूंके?—सभी के दाढ़ी है तो चूल्हा कौन फूंके? (क) जब एक ही कारण से किसी काम को करने में सब असमर्थ हों तो कहते है। (ख) जहाँ सभी अपने को बड़ा समझे और कार्य न करना चाहें वहां भी व्यंग्य मे ऐसा कहते है।

घर भर देवर पति से ठिठोली—जो जिसके लिए बने है उनके रहते हुए भी उनसे वह काम न लेकर दूसरो से लेने पर कहा जाता है।

घर भर देवर भतार से ठिठोली—ऊपर देखिए।

घर भाड़े, हाट भाड़ें, पूंजी को लागे ब्याज; मुनीम बैठा रोटियाँ झाड़े, दिवाला काढ़े काई लाज—घर भी किराए पर, दूकान भी किराए पर, पूंजी पर ब्याज लग रहा है, मुनीम मुफ़्त का वेतन पा रहा है, तब दिवाला निकालने मे शर्म (लज्जा) किस बात की? पूंजी बिना जब कोई व्यक्ति व्यापारी बन जाता है तब कहते है।

घर भात तो बाहर भी भात—दे० 'घर खीर तो···'।

घर भी बैठो और जान भी खाओ—निखट्टू को कहते है जो कुछ करता भी नही ऊपर से दिनभर बात करके प्राण खाता रहता है। तुलनीय : पंज० कर भी रहो ते जान भी खाओ।

घर भूत दैत्य बरात आए—जब घर में एक जैसे कुरूप, भोंडे या दुष्ट व्यक्ति आएँ तो व्यंग्य से कहते हैं।

घर मटकी तो बाहर माठा—जिसके घर मे कुछ होगा, उसे बाहर मे भी मिलेगा। बिना अपने पास कुछ रहे कोई बाहर वाला भी नही देता। तुलनीय : पंज० कर कड़ौली ते बाहरा कड़ा।

घर महुआ की रोटी, बाहर लम्बी धोती—अन्न न होने के कारण घर मे महुए की रोटी पकती है और बाहर काफी साफ-सुथरे वस्त्र पहनकर घूमते हैं। (क) झूठी शेखी मारने वालों पर यह लोकोक्ति कही जाती है। (ख) घर मे आर्थिक कष्ट सहकर भी बाहर इज़्ज़त बनाए रखने वाले पर भी कहते है। तुलनीय : मैथ० घर में कुरथी क रोटी बाहर कोर वाला धोती; भोज० घरे रहिला क रोटी, बहरो कुरहेरा धोती।

घर मा खाय का नाहीं अटरिया मा धुआँ—घर मे खाने के लिए कुछ भी नही है फिर भी अटारी पर धुआँ कर रहे हैं ताकि लोग समझें कि भोजन बन रहा है। व्यर्थ में दिखावा करने वालो के प्रति व्यंग्य मे कहते है।

घर मा नहीं हैं दाने, अम्मा चली भुनाने—दे० 'घर मे नही दाने···'।

घर मिलता है तो वर नहीं मिलता, वर मिलता है तो घर नहीं मिलता—लड़की के लिए उचित घर और लड़का न मिलने पर कहा जाता है। एक ही जगह धन-धान्य तथा सुन्दर वर प्राय. नही मिलता। कही एक की कमी रहती है तो कहीं दूसरे की। (ख) सारी सुविधाएँ या अच्छाइयाँ एक जगह नही मिलती।

घर में अँधेरा बाहर भी अँधेरा घर में जिसे कोई सहारा नही होता उसे बाहर भी कोई सहारा नही मिलता। तुलनीय : मग० घर अँधार तऽ बाहरो अँधार; भोज० घरे अन्हार तऽ बहरों अन्हार; पंज० कर विच अनेरा ते बाहर भी अनेरा।

घर में अँधेरा मंदिर में दिया बारें—दे० 'घर मे चिराग नही···'।

घर में आई जोय, टेढ़ी पगिया सीधी होय—ब्याह के बाद सारी मगरूरी और शौक भूल जाते है और सीधापन आ जाता है।

घर में आई लुगाई, भूले बाप मिताई—विवाह के पश्चात् लड़के मां-बाप और मित्रों की परवाह नही करते।

घर में आग, बाहर आंधी—घर मे आग लगी हुई है और बाहर आंधी चल रही है। जब चारो ओर से विपत्ति

घेर ले तो कहते हैं ।

घर में आग लगा जमालो दूर खड़ी—ऐसे व्यक्ति के प्रति कहते हैं जो आपस में लोगों को टकराकर स्वयं दूर से आनन्द लेता है । तुलनीय : कौर० भुस मे आग लगा जमालो दूर खड़ी; कन्नौ० भुस में आगी देय, जमालो दूर खड़ी ।

घर में आटा चूहे खायँ, खुद दर-दर माँगन जायँ दे० 'घर का चूब चोखरे···'।

घर में उसका दिया सब कुछ है – घर में भगवान का दिया सब कुछ है । गर्व-सम्पन्न व्यक्ति इस प्रकार कहता है । तुलनीय : राज० घर में रामजीरो दीन है।

घर में कुत्ता शेर अपने घर में निर्बल भी बलवान बन जाता है, क्योंकि उसको पता होता है कि कोई बात होने पर उसकी सहायता करने वाले तुरन्त आ जाएँगे । जब कोई निर्बल व्यक्ति अपने घर या गाँव में किसी सबल को रोब दिखाता है तब वह ऐसा कहता है । तुलनीय : पंज० कर विच कुत्ता भी शेर ।

घर में कुल्थी की रोटी बाहर लम्बी-लम्बी धोती - दे० 'घर महवा की रोटी···'।

घर में खर्च नहीं ड्योढ़ी पर नाच— व्यर्थ की ऊपरी दिखावट पर कहा जाता है । तुलनीय : माल० जै रुघनाथ का झड़ाका लागे, चढ़वा मोटी घोड़ी, अन्न तन का फाका पड़े ने पग में फाटी जोड़ी, भीली—खा धानी ते बगपड़े ने मोटी-मोटी बात करें; गढ़० भित्तर नीच आलण देलिम नचदन गत-गत बालण; अव० घर में खर्ची नाही दुपहरी का भोज; भोज० घर में खर्ची नाही दुआरे पर नाचि; मग० घर मे खर्ची ना डेउढ़ी पर नाच ।

घर में खाक नहीं कहते हैं आटा छान रोटी बनाओ -- (क) झूठी शान दिखाने वालों के प्रति व्यंग्य से कहते हैं । (ख) निकम्मा व्यक्ति जब खाने को बढ़िया माँगे तो भी कहते हैं ।

घर में खाने को नहीं अटारी में धुआँ-- झूठा आडंबर करने वालों के प्रति व्यंग्य ।

घर में खाने को नहीं, तीसरे पहर का ब्याह- -दे० 'घर में खर्च नहीं···'।

घर में गुड़ हो तो बाहर भी मक्खी लगती है-- (क) सम्पन्न व्यक्ति की बाहर भी इज़्ज़त होती है । (ख) गुणी व्यक्ति की सभी खुशामद करते हैं । तुलनीय : अव० घरै गुरु होय तौ बहरौ ममाखी लगै ।

घर में घर लड़ाई का डर --पास-पास रहने से लड़ाई का भय रहता है ।

घर में घूर, खेत में बाड़ी; बुद्धू लोग बसें ससुरारी -- घर में कूड़ा रखने वाला, खेत में बाग़ (बाड़ी) लगाने वाला और ससुराल में रहने वाला, तीनों मूर्ख होते हैं । तुलनीय : भोज० घर मे घूर खेत में बारी, बुरबकजाय बसें ससुरारी ।

घर में घोड़ा नखासे मोल-- दे० 'घर घोड़ा नखासे···'।

घर में चने का चून नहीं, गेहूँ दो पो लाइयो --दे० 'घर में खाक नहीं···'।

घर में चिराग़ जलाकर मस्जिद में जलाना चाहिए -- दे० 'घर में दिया तो मस्जिद···'।

घर में चिराग़ नहीं, बाहर मशाल-- घर में भूखे मरने वाले और बाहर झूठी तड़क-भड़क दिखाने वाले पर कहते हैं । तुलनीय : माल० घर में तो होली बले ने बारने दीवाली है; मरा० घरांत पंती नाही, बाहेर मशाल, अव० घर मा दिया नाही, मंदिर मा ममाल जरावै; अव० घर अंधेरा मंदिर माँ दिया बारें, पंज० घर विच दीवा नही मंदिर विच अग जलाण ।

घर में चून नहीं खाने को, ठाकुर बड़ी करावें; मुझ दुखिया को लहंगा नहीं कुत्तों को झूल डलावें - घर में आर्थिक कष्ट होने पर भी बाहर ठाट-बाट दिखाने वाले के प्रति कहते है । तुलनीय : मरा० घरांत नाही दाणा व मला श्रीमंत म्हणा; बग० घरे नेई भात दोरे चंदोया; बुंद० घर मे नइया चून चनन, कौ ठाकुर बरी करावें; मो दुखनी कों लांगा नइयां कुतन झूल डरावें ।

घर में चूहा दंड पेले बाहर मिरजा होली खेले---घर की आर्थिक दशा इतनी बिगड़ चुकी है कि घर में चूहों के खाने तक को कुछ नहीं है और बाहर होली खेल रहे हैं । दिखावटी कार्यों पर व्यंग्य मे ऐसा कहते है । तुलनीय : व्रज० घर मे मूसे डड पेलें, बाहर मिरजा होली खेले ।

घर में चूहा दंड पेले ससुराल में माँगे हाथी – सामर्थ्य से बाहर माँग करने वाले पर व्यंग्य ।

घर में चूहे अंगड़ाई लेते हैं —अत्यत निर्धन व्यक्ति के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

घर में चूहे गिरे तो मर जाएँ- घर में यदि चूहे पहुँच जायँ तो भूखे मर जायँ, अर्थात् खाने को कुछ नहीं है । अत्यंत निर्धन के प्रति कहते हैं जबकि वह कोई डींग हाँक रहा हो । तुलनीय : अव० घर मा मूस गिरै तौ मर जायँ ।

घर में चूहे डंड करते हैं – जिसके यहाँ खाने-पीने को कुछ भी न हो उसे कहते हैं । तुलनीय : भीली— घर माएँ

उन्दारा ग्यारस करे; राज० घर में ऊंदरा थड़्यां करै है; अव० घर मा मूमन एकादशी करत हैं; हरि० घर मं त मुस्मे ऐड़ी ठा ठा कै देखं बणरहा सै हीरीखां; पंज० कर बिच ते चूहे डंड मारदे हन।

घर में चूहे डंड पेलते हैं—ऊपर देखिए।

घर में छोरा, नगर में ढिंढोरा—दे० 'गोद में लड़का…'।

घर में जोरू का नाम बहू बेगम रख लो—अपने घर मे जो चाहो सो करो।

घर में तो अन्न नहीं गाँव भर के न्यौता—व्यर्थ के दिखावे पर व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

घर में तो चूहे लोटते हैं और बनते हैं नवाब—झूठे आडंबर दिखाने वाले के प्रति कहते हैं।

घर में दवा, हाय हम मरे— मूर्खों के लिए कहा जाता है जो चीज़ रहते भी उसका उपयोग नहीं करते है। तुलनीय : पंज० कर बिच दवाई, हाय राम दुहाई।

घर में दही तो बाहर भी दही—दे० 'घर खीर तो…'।

घर में दिया जलाकर मंदिर में जलाया जाता है—अपनी तथा अपने परिवार की व्यवस्था करने के बाद दूसरों की व्यवस्था करनी चाहिए। तुलनीय : मल० तन् कुलम् वर्ट्टि धर्म्मम् चेय्गरुनु; पंज० कर देख के बाहर जाया जादा है; अं० Charity begins at home.

घर में दिया तो मंदिर में दिया—नीचे देखिए।

घर में दिया तो मस्जिद में दिया—पहले अपना घर संभालना चाहिए तब दूसरे का, जैसे पहले घर में दिया जलाया जाता है और बाद में मस्जिद में। तुलनीय : मरा० घरांत दिवा तर मदिरा दिवा; भोज० घर में दिया बार के त मस्जिद में बारल जाला।

घर में दिया न बाती मुंडो फिरें इतराती—झूठी शान दिखाने वाले के प्रति व्यंग्य मे कहते है। (मुंडो—ऐसी स्त्री जिसका सिर घुटा हो)।

घर में देखी चलनी न छाज, बाहर मियाँ तीरन्दाज—झूठ-मूठ की बनावट या तड़क-भड़क पर कहा जाता है।

घर में धन, सिर पर ऋण—(क) जब कोई पैसा पास रखते हुए भी मूर्खतावश ऋण नहीं चुकाता है तो कहा जाता है। (ख) दूसरे का धन घर में रखना ऋण की भाँति चिंता का कारण होता है।

घर में धान न पान, बीबी को बड़ा गुमान—किसी ग़रीब के बहुत घमंडी हो जाने पर कहते है।

घर में नहीं खाने को अम्मा चलीं पिसाने को—दे० 'घर में नहीं दाने…'।

घर में नहीं खाने को बेटा जाए ब्याहने को—दे० 'घर में नहीं दाने…'।

घर में नहीं खाय का अम्मा चली भुजाय का—दे० 'घर में नहीं दाने…'।

घर में नहीं चने का चूर, बेटा माँगे मोतीचूर—अपनी सामर्थ्य से अधिक चाह करने वाले के प्रति व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : गढ़० मन करद सरदी, नौना बाला भूख मरदी; मेवा० घर में नहीं चणा को चूर, बेटो माँगे मोतीचूर।

घर में नहीं तागा, अलबेला माँगे पागा—घर में तो सूत (तागा) नहीं है और माँग रहे हैं पगड़ी (पागा)। झूठे दिखावे पर कहते हैं।

घर में नहीं तिनका, बिजली मेहमान—किसी निर्धन के यहाँ किसी धनी मेहमान के आने पर कहते है।

घर में नहीं दाना खूब है दिखाना—दे० 'घर मे चून नहीं खाने को…'।

घर में नहीं दाने अम्मा चलीं भुनाने—घर में तो एक दाना भी नहीं है और अम्मा भुनाने जा रही हैं। आडंबरपूर्ण कार्य करने वाले के प्रति व्यंग्य मे ऐसा कहते है। तुलनीय : कौर० घर में नहीं दाने अम्मा चली भुनाने; मरा० घरांत नाहीत दाणे, म्हातारी चालली भट्टीवर; पंज० कर विच नईं खाण नूं ते बीवी चली भुणान नूं।

घर में नहीं दाने बुढ़िया चली भुनाने—ऊपर देखिए।

घर में नहीं बूर बेटा माँगे मोतीचूर—दे० 'घर में नहीं चने का चूर…'। तुलनीय : पंज० कर विच नहीं बूर पुत्तर मगे मोतीचूर।

घर में नहीं भुनी भाँग, पाहुने आए ढले साँझ—अतिथि भी उस समय आए जबकि घर में कुछ भी नहीं है और दिन भी ढल चुका है। अर्थात् रात में कहीं से कुछ माँग कर भी नहीं लाया जा सकता। जब आर्थिक कठिनाई मे कोई बड़ा खर्च आ जाए तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० कूट्या पीस्याँ कि नी चुम की पौणो आई पौंछो रुमकी।

घर में न हो धेला, तो भी बाबू छैला—घर में एक भी अधेला न हो तो भी बाबू साहब छैला बने घूमते हैं। जो व्यक्ति निर्धन होने पर भी काफ़ी शान-शौकत से रहे उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० घर में नहीं अखतरा बीज, कोडो खेळे आखातीज; पंज० कर बिच नहीं कौड़ी ते बाबू बने करोड़ी।

घर में नारि आँगन सोवे, रन में चढ़के छत्री रोवे; रात

को सतुआ करे बिआरी, घाघ मरे तेहि की महतारी— पत्नी के होते हुए आँगन में अकेले सोने वाले को, युद्ध में जाकर रोने वाले क्षत्रिय को और रात्रि को सत्तू का भोजन करने वाली माँ को मर जाना चाहिए। ये तीनों प्रकार के पुरुष निकृष्ट माने जाते हैं।

घर में ना है चून चने का, पो दे माँ गेहूँ की— दे० 'घर में खाक नहीं…'।

घर में पड़ी फूट, बाहर के ले गए लूट—घर में फूट होने से शहर के लोग लूट कर ले गए। आशय यह है कि आपस की फूट से सदा दूसरे फ़ायदा उठाते हैं। तुलनीय : गढ़० घरमां पडी फूट, भैर पड़ी लूट; पंज० कर बिच होई लड़ाई बाहर देआँ सेहत बनायी।

घर में पड़े फूट, तुरत ही जाय टूट— घर में फूट पड़ने के पश्चात् वह घर अधिक दिनों तक सही-सलामत नहीं रहता। घर की फूट बहुत बुरी होती है। तुलनीय : राज० घर फूट्या घर जाय।

घर में बिलौटा बाघ— अपने घर सभी शेर होते है।

घर में बीबी भूजे भाड़ बाहर मियाँ ताल्लुकेदार— झूठी शान-शौकत पर व्यंग्य। तुलनीय : बुंद० तन पै नइयां लत्ता, पान खायें अलबत्ता।

घर में ब्याह साढ़ू को न्योता— जो व्यक्ति अपने घर के आवश्यक कार्य में सम्मिलित न हो और दूसरे के कार्य में सम्मिलित हो जाय उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

घर में मेरी तिजोरी, माँगे दर-दर भीख—जो व्यक्ति धनी होते हुए भी दूसरों के आगे हाथ फैलाएँ या निकृष्ट पेशा अपनाएँ उनके प्रति कहते हैं।

घर में भूंजी भाँग नहीं, अम्मा चलीं भुजाने—जो निर्धन होते हुए भी डींग हांकता है उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : अव० घर मे भूजी भाँग नाही, अम्मा चलीं भुजावै; राज० घर में तो भूज्योडी भाँग ही कोनी; भीली—जुग ते तेड़धी पण बेहवा नी जगा नी है; भीली— कुल की माये कण नीने कागा भाये नूतू; छत्तीस० घर मां भूजे भाँग नहि, पिछौत मां मेंछा अइंठ्य।

घर में भूंजी भाँग नहीं, और बाहर न्योते सब— ऊपर देखिए।

घर में भूंजी भाँग नहीं गाँव भर के न्योता—ऊपर देखिए।

घर में भूंजी भाँग नहीं नहाय का तड़के—झूठी तड़क-भड़क दिखाने वाले पर कहते हैं।

घर में भूंजी भाँग नहीं, बाहर खोदें रोब—घर में कुछ भी न होना, और बाहर रोब दिखलाना। जब वस्तुतः कोई व्यक्ति बहुत निर्धन हो, किन्तु ऊपर से बहुत रोब दिखलावे तो ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० घर में भूंजी भाँग नहीं बाहर हेवें मोछ (अर्थात् बाहर घमंड से मूंछों को ऐंठते हैं। छत्तीसगढ़ी कहावत का भी यही अर्थ है) छत्तीस० घर माँ भूजे भाँग नही, पछीत माँ मेछा मेड़े।

घर में भूंजी भाँग नहीं मियाँ चलें हज्ज करे—(क) पल्ले (पास में) धन न होने पर भी किसी बड़े काम को करने का मंसूबा बाँधने वाले पर कहते हैं। (ख) जो व्यक्ति बिना कुछ व्यय किए ही लाभ या यश कमाना चाहता है, उसके प्रति भी कहते है। तुलनीय : सं० गृहे कर्पदिका नास्ति बहिरस्ति महोत्सवः।

घर में भूंजी भाँग नहीं है— अर्थात् कुछ भी नहीं है। अत्यंत निर्धन व्यक्ति को कहते हैं।

घर में भूंजी भाँग ना कोठा पर घुमगाजरि—घर में तो कुछ भी नही है और कोठे पर बैठकर घूम (घुमगाजरि) मचा रहे हैं। जब कोई निर्धन होते हुए भी अधिक तड़क-भड़क दिखाता है तब उसके प्रति व्यंग्य मे ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० घर में भूजी भाँग ना माई गइल बिया पीसे।

घर में भैंस रूखी खायें—घर में भैंस का दूध-घी है तब भी रूखी रोटी खाते हैं। कंजूस व्यक्ति घर में वस्तु रहते हुए भी उसका भोग नहीं करते। तुलनीय : राज० धरे धीणोर लूखो खाय।

घर में महुवा की रोटी, बाहर लम्बी लम्बी धोती— बनावटीपन पर व्यंग्य।

घर में मूस कबड्डी खेलते हैं—दे० 'घर में चूहे डंड…'।

घर में मोल नखामे घोड़ी—दे० 'घर घोड़ा नखामे…'।

घर में रहे खाने को तो बहुत मिलें खिलाने को— यदि अपने घर में खाने को तंगी न हो तो बाहर वाले भी खूब खिलाते-पिलाते हैं। संपन्न व्यक्ति की सभी जगह इज्ज़त होती है। तुलनीय : माल० नफा में नूता आवे ने टोटा में आवे पामणा; पंज० करो जाओ खा के ते अग्गे मिलन पका के।

घर में रहे न तीरथ गए, मूड़ फोड़ते मर गए—नीचे देखिए।

घर में रहे न तीर्थ गए, मूड़ मुड़ाकर जोगी भए—जब कोई व्यक्ति एक कार्य को छोड़कर दूसरा कार्य शुरू कर दे

और उसमें भी उसे सफलता न मिले, तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० घर रया न तीरथ गया; पंज० कर रया न तीरथ गया।

घर में रहे न तीरथ गए, मूड़ मुड़ाय फजीहत भए—ऊपर देखिए।

घर में राम का नाम है—घर में राम-नाम के अतिरिक्त कुछ नहीं है। जिस व्यक्ति के पास कुछ न हो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० घर मे राम जी जो नाव है; पंज० कर बिन राम दा नां है।

घर में रोटी नहीं ड्यौढी पर नाव दे० 'घर में खर्च नहीं ड्यौढ़ी···'।

घर में रोटी नहीं बाहर डकार दे० 'घर में चिराग नही···'।

घर में संवार तो झक मारे गंवार— यदि अपना काम बनता जाय तो दूसरे कुछ नही कर सकते। तुलनीय : राज० घर में हुवै संवार तो जख मारो गंवार।

घर में साला, भीत में आला— घर में साले का रहना और दिवाल (भीत) में छोटे रोशनदान (आला, ताक) का होना खतरे का कारण होता है। तुलनीय : हरि० घर में साळा अर भीत मै आळा; ब्रज० घर में सारो, भीति मे आरो।

घर मे हल न बलद्या, माँगे ईख हलद्या—घर में न तो हल है न बैल (बलद्या) फिर भी हलवाहा (हलद्या) खेत-जुताई की मजदूरी मे ईख (गन्ना) माग रहा है। जब किसी से कोई काम न लिया जाय फिर भी वह मजदूरी मांगे तब ऐसा कहते हैं।

घर में हल रखा, जोतोगे क्या आँगन?—हल को छिपाकर रख तो लिया किन्तु जोतोगे कैसे? (क) किसी बड़े काम को जब कोई छिपाकर करना चाहे तो कहते है। (ख) जो वस्तु जिस काम के लिए बनी है वह वही काम करती है या उससे वही काम किया जा सकता है।

घर में हानि जगत में हाँसी— असफल होने या कोई मूर्खता कर बैठने पर घर मे तो हानि होती ही है बाहर भी लोग हँसते है। तुलनीय : मेवा० घर में हाण जगत में हांसी।

घर में हो पैसा, ब्याहे भैसे जैसा—घर में यदि धन हो तो भैसे जैसे असुन्दर और मूर्ख व्यक्ति का विवाह भी हो जाता है। अर्थात् धन से सभी काम बन जाते हैं। तुलनीय : राज० घर में नाणा बींद परणीजै काणा।

घर यार के, पूत भतार के—बुरे चाल-चलन की स्त्रियों पर कहा जाता है।

घर रहे, घर को खाय, बाहर रहे बाहर को खाय—मुफ्तखोर या आलसी को कहते हैं जो घर-बाहर सभी का खाता है पर स्वयं कुछ करके नहीं देता। तुलनीय : पंज० कर रहण घर नूं खाण, बाहर रहण बाहर नू खाण।

घर रहे न तीरथ गए, मूड़ फोड़ते मर गए—बुरी स्थिति में पड़कर दुःख भोगने पर या कही के भी न रहने पर कहा जाता है।

घर वाले का एक घर निघरे के सौ घर—जिसका घर-द्वार नहीं वह कहीं भी रह सकता है। तुलनीय : पंज० कर वाले दा इक कर बेकरे दे कई।

घर वाले घर नहीं, हमें किसी का डर नहीं—जहाँ स्वामी या बड़े व्यक्ति की अनुपस्थिति में सेवक या छोटे लोग मनमानी करे वहाँ उनके प्रति ऐसा कहते है। तुलनीय : गढ़० जैकी छै डर, सो नी घर; पंज० कर वाले कर नईं साहनूं किसे दा डर नई।

घर वालों को ही दबा पाया—जो व्यक्ति घर में सब पर रोब दिखावे और बाहर भीगी बिल्ली बना रहे उसके प्रति कहते है। तुलनीय . पंज० कर वालियाँ उते ही रौब दसना।

घर सुख तो बाहर चैन—घर में शांति हो तो बाहर भी सुख-चैन मिलता है।

घर से कदम बाहर तो सारी दुनिया चौका—घर से बाहर, विदेश मे चौके की छुआछूत संभव नही रहती। विदेश में तो सभी स्थान चौके जैसे मानने पड़ते हैं नहीं तो भूखों मरने की नौबत आ जाती है। तुलनीय : भीली तीन पग ताणिया ने चितोड तांई चोको।

घर से होवें तो आँखें खोवें—(क) घर से खर्च करें तो उसका मूल्य पता चले। जब कोई मनुष्य पराया धन अधाधुध खर्च करता है तो कहते है। (ख) कुछ खोने के पश्चात् ही मनुष्य संभलता है।

घर से चले खा के, तो आगे मिलें पका के— जब भोजन करके किसी के यहाँ जाया जाय तो वहाँ भी भोजन मिलता है और यदि भूखे चला जाय तो कोई पूछता भी नहीं। जब आवश्यकता पड़ने पर कोई वस्तु नहीं मिलती तब कहते हैं। तुलनीय : पंज० करों जाओ खा के ते अग्गे मिलन पका के।

घर से जाओ भूखे तो आगे भी रहो भूखे—जब अपने पास कोई चीज नहीं होती तो बाहर भी नही मिलती।

घर से बाहर भला— घर से बाहर रहना ही अच्छा है। जब कोई व्यक्ति घर की परेशानियों से तंग आ जाता है तब ऐसा कहता है।

घर से मारे बन में गए, बन में लागी आग; बन बेचारा का करे, जब करमें लागी आग—दे० 'घर की दाही बन गई…'।

घर से लड़कर तो नहीं चले—किसी के योंही लड़ाई छेड़ने पर कहते हैं।

घर से साग दे और फूहड़ कहलावे—अपना सामान देकर मूर्ख कहलावे। संसार की विचित्रता पर कहा गया है। लोग सीधे-सादे लोगों का सामान भी ले लेते हैं और उन्हें मूर्ख भी बनाते हैं। अपने इस ओछे कर्म को वे अपनी चतुराई समझते है। तुलनीय : हरि० घर ते साग दे अर फूअड़ कुहावै।

घर सौंप, न चोरी लगा—न किसी को अपना घर सौंपो और न उस पर चोरी का दोष लगाओ। किसी भी व्यक्ति को चोरी करने का या कोई बुरा काम या हानि करने का अवसर ही नहीं देना चाहिए। जो व्यक्ति अपने ही कारण हानि उठाए उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० तालो प: देणी अर चोरी प: लगौणी।

घर हानि, अरु लोगों की हँसी—दे० 'घर में हानि…'।

घर ही की रोटी खानी है—(क) जो व्यक्ति अपनी वस्तु पर ही संतोष करे तथा उसी में प्रसन्न रहे और किसी दूसरे की वस्तु पर दृष्टि न रखे तो उसके प्रति कहते है। (ख) निकम्मे व्यक्तियों के प्रति भी कहते हैं जो घर छोड़कर बाहर कमाने जाते हैं और थोड़ी-सी परेशानी होने पर फिर घर लौट आते हैं। तुलनीय : राज० घर री रोटी बारे खावणी है।

घर ही के मर्द हैं—डरपोक आदमी को कहते हैं जो घर में तो डींग हाँकते हैं और बाहर बोल भी न पाएँ। तुलनीय : हरि० घर घर के शेर सं; पंज० कर दे जनाने।

घर ही के शूर-वीर हैं—ऊपर देखिए।

घर ही में बंद, मरे कंसे—जब मालिक के रहते हुए भी घर का इंतज़ाम ठीक से न हो या जब घर में किसी योग्य व्यक्ति के रहते हुए भी उसका काम बिगड़े तब कहते हैं।

घाघ बात अपने मन गुनहीं, ठाकुर भगत न मूसर धनुहीं—घाघ के विचार से जिस प्रकार मूसल का धनुष नहीं बन सकता उसी प्रकार ठाकुर भक्त नहीं बन सकता। आशय यह है कि ठाकुर (क्षत्रिय) भगवान के भजन में रस नहीं लेते।

घाघरे का चीलर न पालते बने न निकालते—घाघरे का चीलर (एक प्रकार की जूं) न तो निकाला जा सकता है (क्योंकि सबके सामने निकालना कठिन है) और न ही उसे सहा जाता है। ऐसे व्यक्ति या वस्तु के प्रति कहते हैं जिससे पीछा छुड़ाने का कोई रास्ता न मिले।

घाट गए मुर्दे लौटकर नहीं आते—(क) मर कर कोई नहीं लौटता। (ख) बीता हुआ समय लौटकर नहीं आता। (ग) वापस गया हुआ ग्राहक फिर लौटकर नहीं आता। तुलनीय : पंज० गए बंदे मुड़ के नहीं आंदे।

घाट-घाट का पानी पीए है—(क) ऐसे अनुभवी मनुष्य को कहते हैं जिसे दुनिया-भर का तजुर्बा हो। (ख) दुष्चरित्र और व्यभिचारियों के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : मरा० बारा बदर चे पाणी प्याला; हरि० सौ घाटां का पाणी पी रह्या सै; पंज० थां-थां दा पानी पीता है।

घाम तापें चीलर मारें, एक साथ दो काम निबेरें—एक तो घाम ताप रहे हैं और दूसरे चीलर (जूं की एक जाति जो कपड़ों में होती है) भी मार रहे हैं। (क) बेकार व्यक्तियों के प्रति व्यंग्य से कहते हैं कि ये बेकार थोड़े ही हैं, दो-दो काम एक साथ तो कर रहे हैं। (ख) एक काम के साथ जब दूसरा भी किया जाय या एक काम के साथ दूसरे काम का लाभ भी मिले तो भी कहते है।

घाम में बाल नहीं पके हैं—इतनी आयु ऐसे ही नहीं बिताई। जब कोई व्यक्ति किसी अनुभव को धोखा दे किंतु वह (अनुभवी) उसकी चाल को समझ जाय तो इस तरह कहना है। तुलनीय : अव० घामें मा बार नाहीं पाक।

घाम लेना और चीलर मारना—दे० 'घाम तापें चीलर मारें…'।

घायें घायें तोरा, मनहा बाजे मोरा—भीतर से तो तेरा है और दिखाने के लिए मेरा है। जब किसी का पति किसी दूसरी स्त्री से प्रेम करता है और दिखाने के लिए उससे प्रेम करता है तब पहली स्त्री दूसरी से कहती है।

घायल की गत घायल जाने—दुखी व्यक्ति की हालत को दुखी व्यक्ति ही समझता है। तुलनीय : अव० घायल कै हाल घायलै जानै; राज० घायलरी गत घायल जाणै, जे कोई घायल होय।

घायल की गति बैद क्या जाने?—घायल की दशा को जितना वैद्य नहीं समझेगा उससे अधिक घायल समझ जाएगा। एक दुखिया के दुख का जितना अनुभव किसी दुखिया को होता है उतना किसी अन्य को नहीं। तुलनीय : मल० आनप्पुरन्नि-रिक्कुन्नवनरियाम् इरुप्पिन्टे विषमम्; अं० The wearer alone knows where the shoe pinches.

घायल हो बिल्ली तो चूहे काटें कान—बिल्ली चूहों को

पकड़कर खा जाती है लेकिन जब वह घायल हो जाती है तो उसे चूहे परेशान करने लगते हैं। जब किसी सबल या शक्तिशाली व्यक्ति के बुरे दिन आ जाते हैं और उसे उसके अधीन रहने वाले लोग परेशान करने लगते है तब ऐसा कहते है। तुलनीय : राज० कणोंडी बिराली मूसू मूं कान कतरौ।

घाव भर जाता है पर निशान सदा रहता है—आशय यह है कि बहुत समय बीत जाने पर भी शत्रुता नही भूलती या अपमान नही भूलता। तुलनीय : मेवा० चरमराटो तो मट जाय पण गड़बड़ाटौ नी मटे।

घास के गंज का कुत्ता, न खाए और न खाने दे—दुष्टों के प्रति कहते है जब वे किसी वस्तु का उपयोग न स्वयं करते हैं और न दूसरों को करने देते है। तुलनीय : हरि० खड़ा डरावा खेत का खावै ना खावनदे; अं० A dog in the manger.

घास खाने वाला नहीं बँधता तो अनाज खाने वाला कैसे बँधेगा—पशु जो घास खाते है वे भी परतन्त्रता स्वीकार नही करते तो मनुष्य जो अन्न जैसा पौष्टिक भोजन करता है कैसे परतंत्र रह सकता है। अर्थात् मनुष्य कभी भी परतंत्र रहना नहीं चाहता। तुलनीय : भीली—चोपां चार खाए जो हाद्यौ नी रे तं मनख धान खाए ते रो कदा हाद्यो रे।

घास न जाने धोबी घाट—धोबी घाट पर घास नही उगती। (क) ग़रीबो को साधारण वस्तुएँ भी प्राप्त नहीं होती। (ख) जहाँ जिस वस्तु की आवश्यकता हो वहाँ वह न मिले तो भी कहते है क्योंकि घाट पर धोबी का गधा चरता है और घास न होने पर भूखे ही मरेगा।

घास न दाना छह बार खरहरा—घोड़े को घास-दाना आदि तो देते नही और खरहा (मालिश, सफाई आदि) दिन में छह बार करते है। जो किसी की मूल आवश्यकता को पूरा न करके बाह्य दिखावा करे उसके प्रति ऐसा कहते है। तुलनीय : कौर० घास न दाना, खुरैरा छः छः बार; ब्रज० घास न दानो, छै बार खुरैरा।

घास न भूसा दोनों जून खरहरा—ऊपर देखिए।

घास न भूसा दोनों समय खरहरा—ऊपर देखिए।

घास-फूस का तापना—थोड़ी देर के लिए मिलने वाले लाभ (सुख) के लिए कहते है।

घास हाथी के लिए नहीं होती—जब किसी बड़े आदमी को कोई ऐसी चीज़ देता है जो उसके योग्य न हो तो वह ऐसा कहता है। तुलनीय : अव० हाथिन का हरियारी नहीं होति।

घिनौना गीदड़ छींट का जामा—(क) कुरूप व्यक्ति जब भड़कदार कपड़े पहने या पहनना चाहे तो कहते हैं। (ख) जब कोई ऐसी वस्तु की इच्छा करता है जिसके योग्य वह न हो तो भी कहते है।

घिनौने पूत पर कुलवंती बनें—जो व्यक्ति किसी साधारण या निकृष्ट वस्तु पर गर्व करे उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

घिरे हैं तो बरसेंगे ही—जब बादल छाए (घिरे) है तो बरसेंगे भी। जब किसी लाभ के मिलने की आशा होती है तब ऐसा कहते है। तुलनीय : पंज० आए ने ते वरनगे ही।

घिसे पिसे हैं—अनुभवी व्यक्ति के प्रति कहते है। तुलनीय : पंज० घिसे-पिटे दा हे।

घिसे मजे हैं—ऊपर देखिए।

घिसे बिना काम नहीं बनता—(क) बिना दबाव के काम नही बनता। (ख) बिना खुशामद के कोई काम नही होता। (ग) बिना परिश्रम के सफलता नही मिलती। तुलनीय : पंज० घिस मारे बगैर काम नही बनदा।

घिसे बिना चमक नहीं आती—जब तक बर्तन या किसी धातु को घिसा न जाय तब तक उसमें चमक नही आती। आशय यह है कि बिना परिश्रम के कोई कार्य अच्छा नहीं होता। तुलनीय : पंज० घसे बगैर चमक नही आंदी।

घी उँगलियों से, गुड़ डलियों से—दे० 'गुड़ डलिया, घी···'।

घी कहाँ खोया ? दाल में—नीचे देखिए।

घी कहाँ गया ? खिचड़ी में—अपनी चीज़ किसी-न-किसी तरह से अपने काम में ही आ जाय तब कहते है। तुलनीय : मरा० तूप काय झाले ? खिचड़ीत गेलं; मैथ० घी कत हैरायल त दालि में; भोज० घी कहाँ गिरल त खिचड़ी में; ब्रज० घी कहाँ गयौ, खीचरी में।

घी का कुप्पा लुढ़क गया—(क) बहुत भारी हानि हो जाने पर कहते है। (ख) किसी ऐसे व्यक्ति से शत्रुता हो जाने पर कहते है जो काफ़ी प्रिय हो या जिससे अपना काफ़ी लाभ होता हो।

घी का लड्डू टेढ़ा भला—नीचे देखिए।

घी का लड्डू टेढ़ा भी भला—(क) सन्तति चाहे योग्य हो या अयोग्य, उससे पिण्डदान की आशा तो पूरी होती है। (ख) रूप देखकर गुण का अनुमान नहीं लगाया जा सकता। (ग) अच्छी चीज़ बुरी शक्ल की भी अच्छी ही होती है। तुलनीय : भोज० घीव क लड्डू टेढ़ो भल; अव० घिउ का लेडुआ टेढ़ौ मेढ़; हरि० खांड की रोटी किहे बल खाले; कौर० घी का लड्डू टेढ़ा भला।

घी के कुप्पे तक पहुँच गए—बहुत लाभदायक स्थान पर पहुँच जाने वाले को कहते हैं।

घी के कुप्पे से चिपके हैं—जब कोई व्यक्ति किसी बड़े व्यक्ति के संपर्क में आ जाता है या किसी ऐसे व्यक्ति के संपर्क में आ जाता है जिससे उसे काफ़ी लाभ मिलने की आशा है तब ऐसा कहते हैं।

घी के कुप्पे से जा लगा है—ऊपर देखिए।

घी खाय, आँख बनाय—घी खाने से आँखें ठीक-ठाक रहती हैं या घी से आँखों की ज्योति बढ़ती है। घी स्वास्थ्य के लिए लाभकार होता है। तुलनीय : राज० घी खायां आंख्यारी जोत बधै।

घी खाया है बाप ने, सूँघो मेरा हाथ—बड़ों या पूर्वजों की कीर्ति पर व्यर्थ डींग मारने पर व्यंग्य करते हैं। तुलनीय : मरा० वडिलांनी तूप खाल्लें, वास घ्या माझा हाताचा; हरि० दादा ले अर पोता बरतै; मल० अन्यरूटे कीर्त्तिविल अहंकारिक्कुक; पंज० दादा लवै ते पोता बरतै।

घी-खिचड़ी हो रहे हैं—जिनमें बहुत मेल-जोल हो उनके प्रति कहते हैं।

घी खिलाकर भी लड़की हो तो कोई क्या करे?—जब घी खिलाने पर भी लड़की ही पैदा हो तो कोई क्या करे? पूरा प्रयत्न करने पर भी कार्य ठीक ढंग से न हो तो क्या किया जाय? तुलनीय : राज० गुड़ देनां ही छोरी हुवै जरां पछै कांई करै? पंज० गुड़ बडन नाल भी कुड़ी ही होई ते कोई कि करे।

घी गया खिचड़ी में—दे० 'घी कहां गया...'।

घी गिर गया, मुझे रूखी भाती है—जब कोई अपनी असफलता किसी बहाने छिपाने का प्रयास करता है उस पर कहा जाता है। (जब घी गिर जाय तो रूखी रोटी भी खानी ही पड़ेगी)।

घी गिरा तो खिचड़ी में—दे० 'घी गया खिचड़ी में।'

घी गिरा, पर दाल ही में—नीचे देखिए।

घी गिरा भी खिचड़ी में—घी हाथ से छूटकर गिरा भी तो खिचड़ी में ही। (क) जब किसी कार्य में प्रत्यक्ष रूप से हानि होते हुए भी अप्रत्यक्ष रूप से लाभ हो तो कहते हैं। (ख) जब कहीं धन व्यय हो जाय और उससे अपना ही लाभ हो तो भी कहते हैं। तुलनीय : राज० घी ढुल्यो तो मूंगामें; गढ़० घ्यू खतेयो दालीमां; ब्रज० घी गिर्यौ तौ खीचरी में।

घी-गुड़ मीठा या बहू—रोटी या भोजन के सामने सभी कुछ फीका लगता है। तुलनीय : पंज० गुड़ क्यों मिठा या बौटी।

घी जाट का तेल हाट का—घी गाँव का और तेल दूकान का अच्छा होता है। क्योंकि ऐसे स्थानों पर मिलावट संभव नहीं है, या कम संभव है। (यह कहावत बहुत पुरानी ज्ञात होती है क्योंकि इधर बहुत दिनों से ऐसी बात नहीं देखी जाती)। तुलनीय : राज० घी जाटरो तेल हाटरो।

घी ढुला पर पत्तल में—दे० 'घी गिरा भी तो...'।

घी ताले में भी नहीं छिपता—घी को यदि छिपाकर रखा जाय तो भी उसकी खुशबू से उसका पता चल जाता है। आशय यह है कि महान या गुणी लोगों की महत्ता या गुण अवश्य प्रकट हो जाते हैं। तुलनीय : राज० घी इंधारे में ही छानो को रहैनी।

घी-दूध आँख से, खेती-बारी हाथ से—अपने सामने का निकाला हुआ घी-दूध ही लेना चाहिए और खेती स्वय करनी चाहिए क्योंकि सामने का निकाला हुआ घी-दूध और अपने हाथ से की गई खेती अच्छी होती है। तुलनीय : भीली—घी-दूध नजरांना, धान खोड़यानू।

घी देत घोड़ा नरियाय—नीचे देखिए।

घी देत बाम्हन नरियाय—कोई अच्छी चीज़ देने पर भी जब कोई नाराज़ हो या उसे स्वीकार न करे तो कहते हैं। यथार्थतः घी देने से ब्राह्मण को प्रसन्न होना चाहिए। तुलनीय : छत्तीस० घी देत बांभन नरियाय; भोज० घीव देत घोड़ नरियाय; मैथ० घिउ देत बाभन नरिआवथि; पंज० क्यों दिंदे पंडत रुसया।

घी देते बाम्हन नरियाय—ऊपर देखिए।

घी न खाया, कुप्पा तो बजाया—घी नहीं खाया तो कुप्पा तो बजा लिया। यदि किसी वस्तु के प्राप्त न होने पर केवल देखकर ही संतोष कर लिया जाए तो ऐसा कहते हैं। तुलनीय : कौर० घी न खाया, कुप्पा बजाया।

घी न दूध दोनों वक्त कसरत—जब कोई व्यक्ति बिना कुछ खिलाए-पिलाए या बिना कुछ दिए कोई कठिन कार्य कराना या करना चाहे तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० दुध न क्यों डंड मारने ज्यों।

घी न वो, पक्की बनें—घी तो है नहीं और कहते हैं पक्की रसोई बनाने को। कोरी गप्प हाँकने वाले या व्यर्थ का दिखावा करने वाले के प्रति कहते हैं।

घी नहीं तो कुप्पा ही बजाओ—दे० 'घी न खाया कुप्पा...'।

घी बनावे तोरी नाम हो बहू का—दे० 'घी संवारे

काम…'।

घी बनावे सालना अरु बड़ी बहू का नाम—दे० 'घी संवारे काम…'।

घी बिन खाना और दिल जलाना—बिना घी का भोजन करना और दिल जलाना दोनों बराबर हैं। अर्थात् बिना घी के भोजन अच्छा नहीं लगता। तुलनीय : माल० घी घोर रा हारणा और छाती बारणा।

घी बिन भोजन बेकार, औरत बिन दुनिया बेकार—बिना घी के भोजन नीरस लगता है तथा बिना पत्नी के संसार। पत्नी ही पति को सच्चा सुख पहुँचा सकती है। तुलनीय : राज० घी बिना लूखो कंसार टाबर बिना लूखो संसार; पंज० क्या बगैर रोटी बेकार वौटी (जनानी) बगैर जहान बेकार।

घी भी खाओ और पगड़ी भी रखो—(क) इज्जत पर ध्यान देते हुए ही खर्च करना चाहिए। (ख) पौष्टिक भोजन करना चाहिए तथा इज्जत भी बनाकर रखनी चाहिए। तुलनीय : मरा० तूप पण खानि पगड़ीहि सांभाळा।

घी में तला, तेल में भी तला, तब भी करेला तीता—आशय यह है कि दुष्ट व्यक्ति अपने स्वभाव में कभी भी परिवर्तन नहीं करता, भले ही उसके साथ कितनी ही भलाई की जाय। तुलनीय : भोज० करइला आपन तिताई नां छोड़े चाहे केतनो तेल-घी में भूंजऽ ?

घी संवारे काम बड़ी बहू का नाम—काम तो किसी दूसरे के कारण हो और नाम किसी दूसरे का हो तो कहते हैं। तुलनीय : राज० घी सुधारै सागनै नांव बहूरो होय; बुंद० घी संवारे रसोई नाव बऊ कौ; ब्रज० घी बनावे खीचरी और नाम बहू को होई। कौर० घी बनावे तोरई, नाम बहू का होय; मेवा० घिरत सुदारे मारणा नानी बहू का नाम. हरि० घी बनावै साग नै नाम बहु का हो।

घी संवारे तोरी नाम बहू का होय—ऊपर देखिए।

घी संवारे, बैंगन, नाम बहू का हो—दे० 'घी संवारे काम…'।

घी संवारे सालना, बड़ी बहू का नाम—दे० 'घी संवारे काम…'।

घी सुधारे सागने नाम बहू का होय—दे० 'घी संवारे काम…'।

घुघुची अपने रंग खराब—जब कोई अपने कर्मों से अपमानित होता है तब व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

घुटने नवेंगे तो पेट ही को—जब कोई स्वजनों की तरफ़दारी करे तो कहते हैं। तुलनीय : राज० गोडा तो पगाने ही निवसी; हरि० आपणा मारेगा तै छांह में गेरेगा; मेवा० गोड़ो पेट ने नमे।

घुणाक्षर न्याय—घुन के लकड़ी खाने से लकड़ी पर अक्षरों जैसी आकृतियाँ बन जाते हैं। घुन तो अपना पेट भरने के लिए लकड़ी खाता है और अक्षर अपने आप बन जाते हैं। जब कोई काम अनायास ही हो जाय तो कहते हैं।

घुनी लकड़ी ज्यादा दिन नहीं चलती—जिस लकड़ी में घुन लग जाय वह अधिक दिन तक नहीं रहती। (ख) जिस मनुष्य को कोई असाध्य रोग लग जाए उसके प्रति कहते हैं क्योंकि उसके अधिक जीवित रहने की आशा नहीं होती। (ख) जिस संपत्ति को व्यय करने वाले ही हों, बढ़ाने वाले नहीं तो उसके प्रति भी कहते हैं क्योंकि वह भी अधिक देर तक नहीं चलती। तुलनीय : भीली हलो घुण लोगों ते रे वानो नी है; पंज० खादी दी लकड़ी मते दिन नहीं चलदी।

घुसिया हाकिम, रुसिया चाकर—रिश्वतखोर अधिकारी और रूठने वाला नौकर दोनों ही बुरे होते हैं।

घूंघट की ही लाज—(क) जो व्यक्ति दिखावे के लिए ही आदर करे और प्रत्येक कार्य में अपनी मनमानी करे तो उसके प्रति कहते है। (ख) जो स्त्रियाँ बड़ों से घूंघट तो निकालें किंतु उनकी इज़्ज़त न करें उनके प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० परदे दी सरम।

घूंघट डाला तो नाचना क्या, नाचना तो घूंघट क्या ?—यदि इज़्ज़त बचानी हो तो बुरा काम नहीं करना चाहिए और बुरा काम करना हो तो इज़्ज़त बचाने की चेष्टा करना मूर्खता है।

घूंघट तक की लाज—लाज तभी तक लगती है जब तक घूंघट रहता है। एक बार घूंघट हटा तो सब लाज-शरम भाग जाती है।

घूंघट में सब सुंदर—जब तक भेद नहीं खुलता तब तक सभी अच्छे होते हैं पर जब भेद खुल जाता है तब अच्छे बुरे का पता चल जाता है। तुलनीय : पंज० परदे बिच सब चंगा है।

घूंघट वाली को सब देखना चाहें—जिस स्त्री या वस्तु को न देखा हो उसके प्रति सबके हृदय में आकर्षण रहता है। तुलनीय : पंज० सरम वाली नूं सारे देखना चाहंदे हन।

घूम-घाम जीवन ना बीते—घूमने या आवारागर्दी करने से आयु नहीं कटती। यौवन तो मज़े में कट जाता है किंतु बुढ़ापे में कोई बात भी नहीं पूछता, इसलिए इधर-उधर

घूमकर दिन काटने की अपेक्षा एक स्थान पर, घर बसा कर परिश्रम द्वारा अर्जित धन से जीवन-यापन करना ही श्रेष्ठ है। तुलनीय : भीली—भमन्ये भमन्ये भोव न वीते।

घूमते को लाठी लंबी हो जाती है—घूमते-घूमते मार्ग में बढ़ई बैठा देखा तो कह दिया कि जरा लाठी काट कर छोटी कर दो क्योंकि और कोई काम था ही नहीं। (क) जब कोई व्यक्ति दुर्बल को बिना मतलब सताए तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। (ख) निठल्ले व्यक्तियों के प्रति भी कहते हैं जो उलटा-सीधा काम करते रहते हैं। तुलनीय : राज० वेंवतैरी लकड़ी लांबी हु ज्याय।

घूमने-फिरने से आदमी बनता है—देश-देशांतर की यात्रा से मनुष्य का ज्ञान बढ़ता है। तुलनीय : राज० फिर्यां-घिर्यांमूं आदमी हुवै; पंज० कूमन-फिरन नाल अकल आउंदी है।

घूम-फिर कर वही बात—जो व्यक्ति घुमा-फिरा कर अपनी ही बात मनवाना चाहे या अपने स्वार्थ की बात करे उसके प्रति कहते हैं।

घूर में पड़ा हीरा भी कूड़ा—कूड़े के ढेर में पड़ा रत्न भी कूड़ा ही समझा जाता है। गुणी और विद्वान पुरुष भी यदि दुर्गुणी और नीच मनुष्यों की संगति करता है तो संसार उसे भी वैसा ही समझता है। तात्पर्य यह कि बुरे मनुष्य की संगति से अच्छे लोग भी बुरे हो जाते हैं। तुलनीय : भीली—रोड़ी मांये रतन है तो रतन रोड़ी समान है।

घूरे को बढ़ते क्या देर लगती है?—कूड़े को बढ़ते देर नहीं लगती। तात्पर्य यह है कि (क) बुरी वस्तु को बढ़ते देर नहीं लगती या बुरे आदमियों में मेलजोल होते देर नहीं लगती। (ख) बुरी आदतें मनुष्य बहुत जल्दी अपनाता है। तुलनीय : राज० अकूरड़ी बधतां कांई बार लागै; ब्रज० घूरे पै बाढ़िबे में देर नायें लगै।

घूरे को रेशम से ढकते हैं—जब आदमी अपनी बुराई को छिपाने के लिए खूब धन व्यय करे या अच्छे काम करे तो कहते हैं।

घूरे पर कौनसा आम नहीं होता?—(क) खराब जगह पर भी अच्छी चीजें पैदा हो जाया करती हैं। (ख) बुरे खानदान में भी शरीफ़ पैदा होते हैं। तुलनीय : राज० अकूरड़ी पर किसो आंबो को हुवैनी।

घूरे पर घूरा पड़ता है—(क) जिस स्थान पर जिस वस्तु की अधिकता होती है वहां वह वस्तु और आती है। (ख) बुरे बुराई को पसंद करते हैं। (ग) जैसी वस्तु होती है उसके लिए वैसा ही स्थान भी चाहिए।

घूरे पर भी मेंह बरसता है और महलों पर भी बरसता है—(क) सत्पुरुष सब पर समान दृष्टि रखते हैं। (ख) प्रकृति की दृष्टि में सभी समान हैं और वह सबको बराबर लाभ देती है। तुलनीय : पंज० बुरे ते भी बरखा बरदी है ते चंगे ते भी।

घूरे पर सोता है और महलों के सपने आते हैं—अप्राप्य को प्राप्त करने की कामना करने वाले पर कहते हैं। तुलनीय : राज० अकूरड़ी पर मोवैरे महलांरा सपना आवै।

घूसिया हाकिम रूसिया चाकर—रिश्वत लेने वाले हाकिम और रूठने वाले नौकर दोनों खतरनाक होते हैं। तुलनीय : गढ़० घुस्या हाकम रुस्या चाकरा।

घूसों में उधार क्या?—(क) घूंसे का बदला तुरंत देना चाहिए। (ख) रिश्वत (घूस) में उधार नहीं होता। तुलनीय : पंज० मुक्कां दा की उधार।

घोंघा का घर पीठ पर—घोंघे का घर उसकी पीठ पर ही रहता है। सदा घर में चिपके रहने वाले के लिए व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

घोंघे में पकाया सीपी में खाया—(क) जो अपने हिसाब के अनुसार चले उस पर कहते हैं। (ख) जो जितना खर्च करता है उसे उतना ही खाने को मिलता है।

घोंची देखै ओहि पार, थैली खोलै यहि पार—घोंची बैल यदि नदी के दूसरे पार हो तो इसी पार से उसे खरीदने के लिए रुपयों की थैली खोल लेनी चाहिए अर्थात् घोंचे बैल बहुत अच्छे समझे जाते हैं।

घोंसला हिमालय, अंडा पाताल—घोंसला तो हिमालय पर्वत पर बनाया है और अंडा पाताल लोक में दिया है। जब किसी के साध्य और साधन बहुत दूर-दूर हों और उनसे कुछ भी लाभ न उठाया जा सके तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : गढ़० हिवाल अंडू पयाल घोल।

घोकंत विद्या खोदंत पानी—विद्या मनन करने से और पानी खोदने से प्राप्त होता है। तुलनीय : गढ़० घोखंत विद्या सोघंत वाणी; अव० घोटंत विद्या खोदंत पानी; मेवा० घोकंत विद्या खोदंत पाणी।

घोखंत विद्या खोदंत पानी—ऊपर देखिए।

घोड़ा अगवानी के लिए नहीं है तो क्या महापात्र के लिए है—जब अपनी वस्तु से सुख न मिले तो कहते हैं कि हमारे लिए नहीं है तो क्या महापात्र के लिए है। तुलनीय : पंज० कोड़ा सवारी जोगा नहीं ते दिखन जोगा है।

घोड़ा इस पार या उस पार—किसी बात का फ़ैसला करने पर कहते हैं कि इस पार करो या उस पार। तुलनीय :

पंज० कोड़ा इदर या उदर।

घोड़ा घास से आशनाई करे तो खाय क्या ?— नीचे देखिए।

घोड़ा घास से यारी करे तो खाय क्या ? (क) जिस चीज़ का जो उपयोग हो उसे अवश्य करना चाहिए। ऐसा न करने से हानि होती है। (ख) व्यापारी यदि नफ़ा न ले तो उसका काम कैसे चलेगा ? (ग) पारिश्रमिक माँगने में शर्म नहीं करनी चाहिए। तुलनीय : कन्नौ० घोडा जो घास ते पिरेम करे, तो खाय का; अव० घोड़ा घास से यारी करौ तो खाई का; हरि० घोडा घास ते यारी करै, तै खा के ? घोड़ा घास तै यारी करैगा तै खागा के; राज० घोड़ा घासभं हेत करे तो खाय कैने; मल० घोड़ों घास सी हेत करे तो भूखो मरे; मरा० घोडा गवताशी मैत्री करील तर पोटाला काय खाईल; पंज० कोड़ा काह नाल यारी करेगा खाएगा की।

घोड़ा घास ही में बिक गया— (क) जब कोई अच्छी चीज बहुत कम दाम में ही बिक जाय तब ऐसा कहते हैं। (ख) जब किसी की कोई वस्तु लोगों के थोड़ा-थोड़ा माँगने में ही समाप्त हो जाय तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० कोड़ा काह विच ही विक गया।

घोड़ा घुड़साल नखासे मोल— दे० 'घर घोड़ा नखासे…'।

घोड़ा घुड़साल ही में बिकता है— जहाँ की जो चीज होती है वहीं उसका उचित मूल्य लगाया जाता है। तुलनीय : मरा० घोडा तबेल्यातच विकला जातो, अव० घोड़ा घोड़साले मा बिकत है।

घोड़ा घोड़सारे नखासे पर मोल— दे० 'घर घोड़ा नखासे…'।

घोड़ा चले चार घड़ी, ब्याज चले आठ घड़ी— घोड़ा तो केवल चार घड़ी ही चल पाता है, किन्तु ब्याज चौबीस घंटे चलता है। आशय यह है कि ब्याज दिन-रात बढ़ता ही जाता है। तुलनीय : पंज० कोड़ा चले चार पहर ते ब्याज लगे आठ पहर।

घोड़ा चाबुक से काँपता है— चाबुक से ही घोड़ा काँपता है। जो व्यक्ति किसी व्यक्ति विशेष से ही भय खाय तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० टार मार्‍याँ केकांण कांपे।

घोड़ा चाहिए दूल्हे को, कहता है लौटते हुए ले लेना— घोड़ा तो चाहिए दूल्हे के लिए और कहते हैं कि बारात से लौटते हुए ले लेना। जो व्यक्ति समय पर सहायता न करे और बाद में करने का वादा करे उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० घोड़ा बरनोळे ने जोईजै कहै पिरतो आए।

घोड़ा, जीन, लगाम बाकी है— किसी व्यक्ति को एक चाबुक कहीं पड़ा मिल गया तो वह अपने को घुड़सवार ही समझने लगा। जब कोई व्यक्ति किसी छोटी वस्तु को पाकर गर्व करे उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

घोड़ा जोड़ा मिले भाग्य से— अच्छा घोड़ा और अच्छी पत्नी भाग्य से ही मिलती है।

घोड़ा तो दिन में दौड़े, ब्याज रातदिन दौड़े— दे० 'घोड़ा चले चार घड़ी…'।

घोड़ा दूर न मैदान दूर— सभी वस्तुएँ सामने हैं, चाहो तो परीक्षा करके देख लो। तुलनीय : पंज० न कोड़ा दूर न मैदान दूर।

घोड़ा दौड़-दौड़ मरे सवार का दिल न भरे— घोड़ा तो दौड़-दौड़ कर मरा जा रहा है और सवार का दिल ही नहीं भरता। जो व्यक्ति किसी के परिश्रम का सम्मान न करे उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० घोडो दोड़-दोड़ मरे सवार री होंस ही को पूरी जैनी।

घोड़ा न कूदे, कूदे तंग— घोड़ा कूदता ही नहीं, जीन कूदने लगता है। अर्थात् जब प्रमुख वक्ता कुछ न बोले और छोटे-मोटे शोर करें तो कहते हैं। तुलनीय : मैथ० घोडा न कूदे बाखर कूदे; अव० घोड़ न कूदै बाखर कूदै।

घोड़ा न कूदे बाखर कूदे— ऊपर देखिए।

घोड़ा पड़ा ऊहिर के पाले, ले-दौड़ाया ताले ताले— बुरे के हाथ में पड़ने पर किसी की दुर्दशा होने पर या ऐसी संभावना पर कहते हैं।

घोड़ा मरे कच्चे में, बैल मरे पक्के में— घोड़े के फिसलने का डर कच्ची जमीन पर नहीं होता इसलिए लोग उसे खूब भगाते हैं किन्तु बैल को पक्की या कड़ी धरती जोतने में बहुत परिश्रम करना पड़ता है। तुलनीय : माल० घोड़ा री मौत गाम मे ने बल्द री मौत मार मे।

घोड़ा लिया तो जीन भी लो— घोड़ा खरीदा है तो ज़ीन भी खरीदनी पड़ेगी। जिसको एक खर्च के साथ दूसरा खर्च भी करना पड़े या एक हानि के साथ दूसरी हानि भी उठानी पड़े तो उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० घोड़ा का झगड़ा काठी भी।

घोड़ी नहलाएं या पानी पिलाएं— घोड़ी को नहलाने ले जाएँगे तो वह स्वयं पानी पी लेगी। (क) जो व्यक्ति किसी काम को न करने के लिए बहाना बनाए उसके प्रति कहते हैं। (ख) एक ही व्यक्ति को जब कई काम करने को

कहा जाए तो वह ऐसा कहता है।

घोड़ी पर चढ़कर दानों की याचना—घोड़ी पर सवार और भीख मांगे। अच्छी दशा में होने पर भी ओछे काम करने वाले पर यह लोकोक्ति कही जाती है।

घोड़ी पर त हम चढ़ी, त छेड़ी पर के चढ़े—घोड़ी पर तो मैं चढ़ा तो बकरी (छेड़ी) पर कौन चढ़ेगा ? (क) जब कोई व्यक्ति अच्छी परिस्थिति से बुरी परिस्थिति में आ जाता है तब ऐसा कहता है। (ख) जो सुख उठाता है उसे कष्ट भी सहना पड़ता है।

घोड़े और लोहे का मोल क्या ?—घोड़े और लोहे की पहचान करना बहुत कठिन है, इसी कारण प्रत्येक व्यक्ति उनका मोल-भाव नहीं कर पाता। तुलनीय : भीली—घोड़ा लोड़ान् मोल नी; पंज० कोड़े ते लोहे दा की मुल करना।

घोड़े का गिरा संभल सकता है, नजरों का गिरा नहीं संभलता—घोड़े से गिरा बच भी जाता है, किन्तु बुरे व्यवहार या बुरे चरित्र के कारण नजरों से गिरा व्यक्ति नहीं बचता। आशय यह है कि एक बार जो व्यक्ति किसी की निगाहों में बुरा हो जाता है उसे फिर कभी सम्मान नहीं मिलता। तुलनीय : मरा० घोड्यावरुन घसरला तर सांवरतो मनातून उतरला तो सांवरत नाही।

घोड़े की दुम बढ़ेगी तो अपनी ही मक्खियां उड़ाएगा—ऐसी बढ़ती या उन्नति के प्रति कहते हैं जिससे किसी दूसरे का मतलब न निकले। तुलनीय : राज० घोड़ी री पूंछ लांबी हुसी तो आपरी ढकसी।

घोड़े की पिछाड़ी और हाकिम की अगाड़ी अच्छी नहीं—घोड़े के पीछे चलना और अपने बड़े अफ़सर के मुंह लगना अच्छा नहीं होता। इन दोनों दशाओं में हानि की संभावना रहती है। तुलनीय : हरि० घोड़े की पिछाड़ी अर हाक्किम / अफ़सर की अगाड़ी आच्छी नहीं; ब्रज० घोड़ा की पिछारी और हाकिम की उगारी अच्छी नायें।

घोड़े की लगाम, सवार के हाथ—सवार की इच्छानुसार ही घोड़ा चलता है क्योंकि उसकी लगाम सवार के हाथ में होती है। जब कोई व्यक्ति चाहता हुआ भी स्वामी की इच्छा के प्रतिकूल उसके दबाव के कारण नहीं कर पाता तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : भीली—घोड़ा नी लगाम घोड़ा वाला ने हाथ में।

घोड़े की लात घोड़ा सहे—(क) बड़ों के भार को बड़े ही बर्दाश्त कर सकते हैं। (ख) बड़ों से बड़े ही टक्कर ले सकते हैं। तुलनीय : छत्तीस० घोड़ी के लात ला घोड़े सहे, भोज० घोड़ा क लात घोड़े सहेला; बुंद० घोड़ा की लात घोड़ई सऊत।

घोड़े की लात घोड़ा ही सहता है—ऊपर देखिए।

घोड़े की लात से घोड़ा नहीं मरता—एक जैसे शक्तिशाली एक-दूसरे का कुछ नहीं बिगाड़ पाते। या जब समान शक्ति के दो व्यक्ति आपस में टकराते हैं तो एक-दूसरे को विशेष क्षति नहीं पहुँचा पाते। तुलनीय : पंज० कोड़े दी लतनाल घोड़ा नहीं मरदा।

घोड़े की सवारी चलता जनाज़ा—अर्थात् कोड़े की सवारी ख़तरनाक होती है।

घोड़े के मुंह से नहीं लात से बच—घोड़े के मुंह से कोई डर नहीं होता क्योंकि उसके सींग होते ही नहीं। (क) जहाँ हानि देने वाली वस्तु न हो वहाँ उससे हानि हो ही नहीं सकती, इसलिए बेखटके वहाँ जाना चाहिए। (ख) अफसरों की फटकार से नहीं बल्कि उनकी क़लम से डरना चाहिए। तुलनीय : भीली—घोड़ा गदेड़ा नी मोंडा आगे वला जाओ; पंज० कोड़े दी दुलती नालों बचना चाहिदा है।

घोड़े के साथ मेंढ़क भी नाल ठुकवाना चाहता है—जब दूसरे को देखकर कोई निर्बल या निर्धन व्यक्ति भी ऐसा कार्य करे जो उसकी सामर्थ्य से बाहर हो तो व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मैथ० घोड़वा के साथे बेंगवा नाल ठोकावे; भोज० घोड़े क मडे भेंड़ु चो उठलं नाल ठोकवावे; पंज० कोडे दे नाल डड्डू भी नाल लगवाना चाहँदा है।

घोड़े को क्या रोना, उसकी चाल का रोना है—घोड़े की पहचान उसकी चाल से होती है, शरीर से नहीं। जिस प्रकार घोड़े की पहचान उसकी चाल से होती है उसी प्रकार मनुष्य की पहचान शरीर या रंग-रूप से नहीं चाल-चलन से होती है। सुंदर-स्वस्थ व्यक्ति चरित्रहीन हो तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : भीली—घोड़ाए नी रोनू है, घोड़ा नी चाल रोवू है।

घोड़े को घर कितनी दूर—दे० 'घोड़ों को घर···'। तुलनीय : कौर० घोड़ों कू घर कितनी दूर; ब्रज० घोड़ान कू घर कितनी दूरि।

घोड़े को जल दिखा सकते हैं, जल पिला नहीं सकते—किसी को उपाय बतलाया जाता है हाथ पकड़कर काम नहीं कराया जाता। तुलनीय : मल० उन्तिक्कयट्टियाल् ऊरिप्पोरुम; अं० One man can lead a horse to the water but twenty can not make him drink.

घोड़े को देखकर मेंढक नाल मढ़ावे—दे० 'घोड़े के साथ मेंढ़क···।'

घोड़े लात, आदमी को बात—अच्छे आदमियों के

लिए थोड़ी बात ही बहुत होती है, किन्तु बुरे दंड पाकर ही ठीक होते हैं। तुलनीय : तेलु० मनिषि कोक्क माट एद्दुकोक देद्ब।

घोड़े गये गधों का राज आया—भले लोग गये और दुष्टों ने उनका स्थान ले लिया।

घोड़े गरे दलालन परे--जब झगड़ा मिटाने वाले के ही सिर पर आफ़त आए तो कहा जाता है।

घोड़े घी, मर्दे तमाखू --घोड़े के लिए घी और मर्द के लिए तम्बाकू आवश्यक है या लाभदायक है। (आजकल तम्बाकू हानिकारक माना जाता है)।

घोड़े-घोड़े लड़ें मोची की जीन टूटे– करे कोई और भरे कोई। बलशाली लोगों की लड़ाई में निर्बल ही मारे जाते है।

घोड़े बारात में नहीं दौड़ेंगे तो कब दोड़ेंगे – बारात में यदि घोड़े नहीं दौड़ेंगे तो फिर कब दौड़ेंगे ? शादी-विवाह में खर्च नहीं किया जायगा तो फिर कब किया जाएगा। जो व्यक्ति विवाह पर भी दिल खोलकर खर्च न करे या न करना चाहे उसके प्रति कहते है। (ख) किसी खास मौके पर जब कोई किसी वस्तु का प्रयोग नहीं करता तब उसके प्रति ऐसा कहते है। तुलनीय : राज० घोडा गणगोरांने ही नहीं दौड़सी तो फेर कद दौड़सी।

घोड़े से गिरना अच्छा, पर नजरों से गिरना अच्छा नहीं --दे० 'घोड़े का गिरा संभल सकता है···'। तुलनीय : पंज० कोड़े तों डिगना चंगा पर नजरां तों डिगना चंगा नहीं।

घोड़ों का चारा गधों को नहीं डाला जाता (क) अच्छे काम के लिए बनी वस्तु बुरे काम में प्रयोग नहीं की जाती। (ख) अयोग्य व्यक्ति को अच्छी वस्तु नहीं दी जाती। तुलनीय : पंज० खांते कौडे इक समान नहीं हुंदे।

घोड़ों को घर कितनी दूर जो जिस काम में विशेष पटु है उसे उस काम को करने देर नहीं लगती। तुलनीय : राज० घोड़ां ने घर किती दूर? मरा० घोड्याचें घर किती लांब; कौर० घोड़ों क घर कितनी दूरी।

घोर पाप चढ़ि टीले बोले--पाप टीले पर चढ़कर बोलता है। अर्थात् बड़ा पाप छिपाने से छिपता नहीं अपितु और भी तेज़ी से चारों ओर फैलता है। तुलनीय : पंज० पाप सिरते चढ़के बोलदा है।

घोसिया सोचता ही रहा, कमरिया ब्याह ले गया - घोसी (एक जाति जो घी-दूध आदि बेचती है) सोचता ही रहा और कमरिया (अहीरों की एक जाति) उस स्त्री को ब्याह ले गया जिससे घोसी ब्याह करना चाहता था। जब कोई किसी काम को करने की योजनाएँ बनाता रहे और दूसरा व्यक्ति इसी बीच उस कार्य को करले तब ऐसा कहते हैं।

च

चंग पर चढ़ गया है– (क) जो व्यक्ति किसी के कहने पर किसी से भिड़ जाय तो कहते हैं। (ख) जब कोई व्यक्ति कोई आवश्यकता पड़ने पर अपनी मजबूरी के कारण किसी की सभी शर्तें मानने को तैयार हो जाय तब वह (जो शर्तें रखता है) ऐसा कहता है। तुलनीय : ब्रज० चग पै चढ़ि गयौ।

चंगा है मगर नंगा-- सामर्थ्यवान तो है परन्तु बहुत मितव्ययी है। धनी होने पर भी जो धन का व्यय न करे और संयत जीवन व्यतीत करे उसके प्रति कहते हैं।

चंचल नार की चाल छिपे नहिं, नीच छिपे न बड़प्पन पाए चंचल स्त्री की चाल और नीच की नीचता छिपाने से नहीं छिपती। बुरे लोग चाहे कितनी भी उन्नति क्यों न कर लें पर उनका स्वभाव नहीं बदलता।

चंचल नार छैल से लड़ी, छन अंदर छन बाहर खड़ी– (क) चचल तथा चरित्रभ्रष्ट स्त्रियों के स्वभाव पर कहते हैं। (ख) अस्थिर चित्तवृत्ति वाला व्यक्ति कभी विश्वसनीय नहीं होता। तुलनीय : ब्रज० चंचल नारि छैल ते लड़ी, छिन अन्दर छिन बाहर खड़ी।

चंडी घर लीपेगी ? नहीं निगोड़े, खोदूंगी. चंडी घर खोदेगी ? नहीं निगोड़े, लीपूंगी (क) घर में एक दूसरे के विपरीत काम करने वाली तथा कलहप्रिय स्त्रियो पर कहते है। (ख) हर दशा में और हर समय विपरीत आचरण करने वाले व्यक्तियों के संबंध में भी कहा जाता है।

चंदग्रहन में चक्कीराहे का क्या काम ? – चन्द्रग्रहण के मेले में चक्की छीनने वाले (चक्कीराहे) की कोई आवश्यकता नहीं होती। जहाँ जिसकी आवश्यकता न हो वहाँ यदि वह उपस्थित हो तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० चंदा गहन में चक्कीराहे को कहा काम।

चंद दूबरो, कूबरो, तऊ नखत ते बाढ –चंद्रमा चाहे जितना भी छोटा हो परन्तु फिर भी वह दूसरे नक्षत्रों से बड़ा ही दिखाई पड़ता है। आशय यह है कि बड़ा आदमी बिगड जाने पर भी छोटों से बड़ा रहता है।

चंदन का लेप भी पहली बार तकलीफ़ देता है—हर काम में प्रारंभ में कठिनाई (तकलीफ़) होती है। तुलनीय :

मैथ० अददी के चनन लिलार चरचराय; भोज० अददी क चन्नन लिलार चरचराय; पंज० चंदन पैली बार लाण नाल वी पीड़ करदा है; ब्रज० चंदन कौ लेप ऊ पहलें तकलीफ देयँ।

चंदन की चुटकी, न गाड़ी भर काठ —चुटकी-भर (थोड़ा-सा) चदन अच्छा है लेकिन गाड़ी भर (अधिक मात्रा में) काठ (लकड़ी) नही। अच्छी वस्तु थोड़ी ही अच्छी है लेकिन बेकार या बुरी चीज़ अधिक भी अच्छी नहीं। तुलनीय . मरा० चिमुट भर चंदन वरवें, गाड़ी भर लाकडा काय करावें; पंज० मासा जिहा चंदन चगा गड्डी पर के लकड़ी।

चंदन की चुटकी भली, गाड़ी भरा न काठ—ऊपर देखिए। तुलनीय : ब्रज० चंदन की चुटकी भली गाडी भर्‌यौ न काठ।

चंदन गया विदेसड़े, सब कोइ कहे पलास— चंदन की लकड़ी विदेश गई तो लोगों ने उसे पलास की लकड़ी समझा। आशय यह है कि जहाँ गुण के पारखी नहीं है वहाँ गुणी को गुणहीन ही समझा जाता है।

चंदन पड़ा चमार के, नित उठ कूटे चाम; रो रो चंदन महि फिरे, पड़ा नीच से काम (क) जब कोई अच्छी चीज़ बुरे के पाले पड़ जाय और उसका उचित उपयोग न हो तब कहते है। (ख) भाग्य-विपर्यय की स्थिति में विवश व्यक्ति के सबध में भी कहा जाता है। तुलनीय : ब्रज० चंदन पर्‌यौ चमार के नित उठि कूटैं चाम।

चंदन हूँ की आग ते, जरे देह तत्काल आग चाहे चंदन ही की क्यों न हो शरीर को जला देती है। (क) बुरी वस्तु भलों के पास जाकर भी अपने दुर्गुण नहीं छोड़ सकती। (ख) अच्छे कुल में जन्म लेने पर भी दुष्ट दुःखदायी होता है। तुलनीय : पज० चंदन दी अग्ग नाल वी सरीर सड़ जांदा है; ब्रज० वही।

चंद्र चन्द्रिका न्यायः—चाँद और चाँदनी का न्याय। प्रस्तुत न्याय का प्रयोग प्रकृति से अविभाज्य वस्तुओ के संबध मे किया जाता है। तात्पर्य है जैसे चाँदनी चन्द्रमा से अलग नहीं की जा सकती, वैसे ही इस संसार में अनेक वस्तुएँ ऐसी है जिनको एक दूसरे से पृथक करना संभव नही है।

चंद्रमा पर थूका मुंह पर आता है—भले लोगों पर दोषारोपण करने वाला स्वयं अपमानित होता है। तुलनीय : मल० मलर्न्नु वीणु तुपियाल् मारत्तु वीषुन्नु; पंज० चन्द्रमा उत्ते थुकया मुंह उत्ते आंदा है; ब्रज० चंदा पै थूक्यौ मुंह पैइ आवं; अं० He that blows in the dust fills his eyes with it.

चंद्रमा में भी कलंक होता है—बुराई सभी लोगों में पाई जाती है। तुलनीय : असमी -चन्द्रतो कलङ्क आछे; सं० एकोहि दोषो गुणसन्निपाते, निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवाङ्कः; पंज० चन्दरमा बिच वी कलंक हुंदा है; ब्रज० चन्द्रमाऊ में में कलंक होयँ; अं० There is a spot even in the moon.

चंद्र सर्प जल अग्नि, बसत शंभु के अंग —चंद्रमा, साँप, जल और अग्नि ये सभी शंकरजी के साथ निवास करते हैं। आशय यह है कि बड़ों के साथ अच्छे-बुरे सब निभ जाते है।

चंदा बिन निशि साँवरी, निशि बिन चंदा सेत—जिस तरह बिना चाँद के रात अच्छी नही लगती, उसी प्रकार रात के बिना चाँद भी अच्छा नही लगता। आशय यह है कि बड़ों से छोटों की और छोटों से बड़ो की शोभा होती है। अथवा एक दूसरे के सहयोग के बिना काम नही चलता। तुलनीय : ब्रज० वही।

चंदे आफ़ताब, चंदे माहताब चंद्रमा की तरह सुन्दर और सूर्य की तरह उज्ज्वल। किसी सुन्दरी की प्रशंसा में ऐसा कहते हैं।

चंपक पटवास न्याय —जिस कपड़े मे चम्पा के फूल रखे जाते है उसमें से फूल निकालने पर भी उसकी सुगंध बहुत देर तक रहती है। आशय यह है कि संसर्ग या संगति के गुण-दोष बहुत दिनों तक रहते है।

चंपा के दस फूल, चमेली की एक कली; मूरख की सारी रात, चतुर की एक घड़ी—चमेली की एक कली चंपा के दस फूलों के बराबर है, और मूर्ख जो काम सारी रात में [illegible] ता है उसे चतुर थोड़ी देर में कर लेता है। अच्छी थोड़ी वस्तु बुरी अधिक वस्तुओं से अच्छी होती है और मूर्खो के साथ जो कुछ सारी रात मे नही सीखा जा सकता वह विद्वानों के घड़ी-भर के संसर्ग में प्राप्त किया जा सकता है। तुलनीय : ब्रज० वही।

चंबेली चाव में आई, बख़तावर रेवड़ियाँ बाँटे—चमेली खुश हुई तो रेवड़ियो का प्रसाद बाँटने लगी। जब कोई कंजूस खुशी में भी बहुत कम खर्च करता है तब कहते है। तुलनीय : ब्रज० वही।

चंबेली चाव में आई, बख़्त्यारे साथ लाई—चमेली प्यार (चाव) में आई तो पूरे परिवार को दावत में लेकर आई। जब किसी को थोड़ा-सा सम्मान मिले और वह इतने ही मे सिर चढ़ जाय तब ऐसा कहते है। तुलनीय : दे० 'मुंह

लगाई डोमनी कुनबे समेत आई।'

चकमक दीदा खाय मलीदा—चंचल (चकमक) नेत्र (दीदा) वाली अच्छी चीजें (मलीदा) खाती हैं। व्यभिचारिणी स्त्रियों के प्रति कहते हैं। तुलनीय : अव० चटक दीदा माँगे मलीदा; ब्रज० वही।

चकवा चकवी दो जने, इन मत मारो कोय; यह मारे करतार के, रैन बिछोया होय—चकवा-चकवी को कष्ट मत दीजिए। इन्हें तो ईश्वर ने ही कष्ट दिया है कि ये रात को एक-दूसरे से अलग रहते हैं। जब कोई व्यक्ति किसी दुखी व्यक्ति को कष्ट देता है या देना चाहता है तब ऐसा कहते हैं।

चक्की तले घर तेरा, निकल सास घर मेरा—मुँहज़ोर तथा ज़बरदस्त बहू पर कहते हैं। ग़रीब आदमियों में यह रिवाज है कि जब बहू घर मे आ जाती है तो सास भीतर का घर छोड़ देती है और बाहर घर में अपना डेरा डालती है जहाँ पर चक्की रहती है। तुलनीय : ब्रज० चक्की पै घर तेरौ, निकसि सास घर मेरौ।

चक्की पर चक्की मेरी सौगंद पक्की—ज़िद्दी आदमी पर कहा गया है।

चक्की पर बैठ के सभी गा लेते हैं—चक्की चलाते समय स्त्रियाँ गाया करती हैं। आशय यह है कि साधारण काम तो सभी कर लेते हैं, किंतु कोई कठिन कार्य करने पर ही यश मिलता है, या कठिन कार्य करने पर ही व्यक्ति की वास्तविकता का पता चलता है। तुलनीय : पंज० चक्की उत्ते बैठ के सारे गा लेंदे हन; ब्रज० चाखी पै बैठि कै सबई गामें।

चक्की में कौर डालोगे तो चून पाओगे—चक्की में गेहूँ (कौर) डालने से ही आटा (चून) मिलता है। (क) बिना पैसे के कोई काम नहीं होता। (ख) बिना श्रम के कुछ भी प्राप्त नहीं होता। (ग) घूसखोर भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मरा० जात्यांत वैरण घातल्नी तर भरडा मिळेल; ब्रज० चक्की मे कौर डारौगे तो चून मिलैगो; पंज० चक्की विच गाला पावोगे तां आटा ही लब्भेगा।

चक्की में कौल डालोगे तो चून पाओगे—ऊपर देखिए।

चख डाल माल धन को, कौड़ी न रख कफ़न को; जिसने दिया है तन को, देगा वही कफ़न को—(क) वर्तमान को ही सर्व प्रमुख मानने वाले व्यक्ति के बारे में कहा गया है। (ख) मस्त या निश्चिंत लोग भी कहते हैं।

चचा को न दी गुठली, भतीजे को आम—चाचा को गुठली भी नहीं दी और भतीजे को आम दे दिया। जब कोई व्यक्ति देने योग्य व्यक्ति को कोई वस्तु न देकर अयोग्य को दे तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : गढ़० राणी आई त छांछ नि देई, कमीणी आई त देयो दै; पंज० चाचे नूं गुली नई दित्ती पतीजे नूं अंब दित्ते।

चचा चोर भतीजा पाजी—जहाँ सभी बुरे हों वहाँ ऐसा कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० चाचा चोर भतीजौ पापी।

चचा बना के छोड़ूंगा—आपकी अक़्ल ठीक कर दूंगा। जब किसी पर क्रोध आता है तब व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० चचा बना के छडांगां।

चचेरे ममेरे, तले बहुतेरे—बड़ों के सभी संबंधी बन जाते हैं। आशय यह है कि दूसरे के बड़प्पन का लाभ उठाने के लिए सभी उनसे अपना संबंध ढूंढ़ निकालते हैं।

चटक न छांड़त घटतहू, सज्जन नेह गंभीर; फीको परै न बरु घटै, रंग्यो चोल रंग चीर—सज्जन लोगों का प्रेम सदा एक-सा रहता है चाहे निर्धन ही क्यों न हो जायें? जिस प्रकार मंजीठ रंग में रंगा हुआ कपड़ा फट जाता है पर उसका रंग फीका नहीं पड़ता।

चटका मघा पटकिगा ऊसर, दूध भात में परिगा मूसर—मघा नक्षत्र में पानी न बरसने से खेत सूख जाते हैं, इसलिए धान पैदा नहीं होता तथा घास न होने से दूध भी नहीं मिलता। आशय यह है कि मघा नक्षत्र में वर्षा न होने से फ़सल नष्ट हो जाती है और किसानों को परेशानी उठानी पड़ती है। तुलनीय : ब्रज० चटक्यौ मघा पटकिगौ ऊसर, दूध भात में परिगौ मूसर।

चटकें बोतल उछलें काग—ख़ूब शराब उड़ती है।

चट तिलक, पट ब्याह—नीचे देखिए।

चट मँगनी, पट ब्याह—बहुत शीघ्रता से किसी काम के करने पर कहा जाता है। तुलनीय : अव० चट मँगनी पट बिआह; मैथ० चट मंगनी पट बिआह; मग० चट मंड़वा पट बिआह; भोज० चट रोटी पट दाल; छत्तीस० चट मँगनी, पट बिहाव; बघे० चट्ट मंगनी, पट्ट बिआह; राज० चट मेरी मँगणी, पट मेरा ब्याँव; पंज० अज कड़मायी कल वयाह; ब्रज० चट्ट मँगनी पट्ट ब्याह।

चट मँगनी पट ब्याह, चट रोटी पट दाल—ऊपर देखिए। तुलनीय : ब्रज० चट्ट मँगनी पट्ट ब्याह, चट्ट रोटी पट्ट दारि।

चट मँगनी पट ब्याह, टूट गई टँगड़ी रह गया ब्याह—(क) होनहार पर कहते हैं। (ख) अनिश्चित काम पर भी कहा जाता है। (ग) उतावलेपन के कुपरिणाम के संबंध में

कहा जाता है। तुलनीय : पंज० अज वडमायी कल वयाह टुट गयी लत्त रह गया वयाह; ब्रज० चट्ट मँगनी पट्ट ब्याह, टूटि गई टाँग बिगरि गयौ ब्याह।

चट मकई पट सनई—जल्द मकई बोई और उसे काटकर सनई बो दी। शीघ्रता से कोई कार्य सम्पन्न हो तब यह उक्ति कही जाती है।

चट मौत, पट शादी—ऊपर देखिए। तुलनीय : भोज० चट मरवा, पट बिआह।

चट राँड, पट ऐबाती—बहुत जल्द कोई काम हो जाने पर ऐसा कहते हैं। ऐबाती (सुहागिन)। तुलनीय : भोज० चट्ट गड़ पट्ट एहवाति।

चट राँड़, पट सुहागिन—ऊपर देखिए। तुलनीय : बुंद० चट्ट रांड़, पट्ट ऐबाती।

चट रोटी पट दाल—दे० 'चट मंगनी, पट ब्याह।'

चट रोटी पट दाल, तोड़ो रोटी बोरो दाल—नीचे देखिए।

चट रोटी पट दाल, तोरा रोटी बोरा दाल—शीघ्रता करने या किसी काम को तुरत कर डालने के लिए कहा जाता है।

चटोर का ब्याह, चोट्टी न्योते आई—जैसे को तैसा ही मिले तो कहते है।

चटोरा कुत्ता अलोनी सिल—चटोरा कुत्ता उस सिल को भी चाट लेता है जिस पर कोई चीज़ पिसी नहीं रहती। अर्थात् चटोरे आदमी को जो कुछ भी मिल जाय वही खा लेता है।

चटोरा खाय अपना घर बतोरा खाय पास-पड़ोस—चटोरा केवल अपना घर बर्बाद करता है पर बहुत बात करने वाले से तो पास-पड़ोस के लोग भी परेशान हो जाते हैं। तुलनीय : कन्नौ० चट्टो खांय अपनो घरा, बत्तो खांय चार-घरा; ब्रज० चटोरा खावै अपनों घर, बतोरा खावै परायौ घर।

चटोरा खावे अपना घर, बटोरा खावे दोनों घर—ऊपर देखिए। तुलनीय : ब्रज० चटोरा खावै अपनों घर बतोरा खावै दोऊ घर।

चटोरी जबान दौलत की हान—चटोरा आदमी अपनी जबान के पीछे बहुत धन नष्ट करता है।

चट्ट राँड़ पट्ट एहवाती—दे० 'चट राँड़ पट ऐबाती।' तुलनीय : बुंद० चट्ट रांड़ पट्ट ऐबाती; ब्रज० सरैक सती कि मरैक राड़।

चट्टे बट्टे लड़ा रहे हैं—इधर की उधर और उधर की इधर लगा रहे हैं। चुग़ली करने पर कहा जाता है। तुलनीय : अव० चट्टा बट्टा जिन लड़ावा।

चढ़ जा बच्चा सूली पर, भली करेंगे राम—किसी को लड़ाकर ख़ुद तमाशा देखने वाले पर व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० वही।

चढ़ जा बेटा सूली पर सब भली करे भगवान—ऊपर देखिए। तुलनीय : कौर० चढ़ जा बेट्टा सूळी पै, सब भली करें भगवान्; ब्रज० वही।

चढ़ जा बेटी सूली—भयंकर आपत्ति मे किसी को जब कोई डालता है तब आपत्ति में पड़ने वाले को संकेत करके ऐसा कहते हैं।

चढ़त जो बरसे चित्रा, उतरत बरसे हस्त; कितनौ राजा डाँड ले, हारे नाईं गिरस्त—यदि चित्रा नक्षत्र के प्रारभ में तथा हथिया (हस्त) नक्षत्र के अंत में वर्षा हो तो समझो कि इतना अन्न उत्पन्न होगा कि सैकड़ों कर देने पर भी किसान हार नहीं मानेगा अर्थात् अन्न बहुत अधिक पैदा होगा और किसान सुख से रहेंगे।

चढ़ता राजा उतरता ग्रह पूजा जाता है—आने वाले या गद्दी (कुर्सी) पर आसीन अधिकारी की इज्ज़त होती है और समाप्त होते हुए (उतरते हुए) ग्रह की भी पूजा की जाती है ताकि ऐसी मुसीबत पुनः न आवे। तुलनीय : ब्रज० चढ़तौ राजा और उतरतौ ग्रह पूज्यौ जायँ।

चढ़ती कला जागती जोत—(क) यह एक प्रकार का आशीर्वाद है। (ख) देवता पर भी कहा जाता है।

चढ़ती दरगाह—संत पुरुष के लिए कहते हैं।

चढ़ते पित्त उतरते बाई, ताते गोरख भून के खाई—भाँग के गुण गिनवाए गए हैं।

चढ़ते बरसे आद्री, उतरत बरसे हस्त, कितना राजा दण्ड लें, रहे अनन्द गृहस्थ—आद्रा नक्षत्र के प्रारंभ में और हस्ति (हथिया) नक्षत्र के अंत में वर्षा होने से अन्न बहुत पैदा होता है। इसलिए राजा कितना भी कर लें फिर भी किसान को फ़ायदा ही होता है। तुलनीय : मरा० प्रारंभी पडती आर्द्रा, अंती कोसळे हस्त, राजा किती ही मागो, सुखी राहे गृहस्थ।

चढ़ मार, गूलर पक्के—चढ़ करके पके गुलर मार (तोड़) लो। अर्थात् अवसर का फ़ायदा उठा लो।

चढ़ी कढ़ाई तेल न आया, तो कब खाएगा ?—कढ़ाई चूल्हे पर रख दी और अभी तक तेल नहीं आया तो फिर कब आएगा। ऊचित समय पर कोई चीज़ न मिलने पर ऐसा कहते हैं।

चढ़ी जवानी माझा ढील जवानी में दुर्बलता या कमजोरी क्यों ? जब कोई युवक साधारण काम में हिम्मत हार जाता है तो उसे उत्साहित करने के लिए या व्यंग्य में इस लोकोक्ति का प्रयोग करते है । तुलनीय : ब्रज० चढ़ी जवानी माझौ ढीलौ ।

चढ़ी पर चढ़ा, सिर दुखे न पाँव—चढ़े नशे पर और पी लेने से शरीर स्वस्थ रहता है, उसमें कहीं दुःख-दर्द नहीं रहता । शराब या भाग पीने वाले ऐसा कहते है । तुलनीय : राज० चढी पर चढाव, सिर दुख न पांव, पंज० चढ़ी उत्ते चढ़ा सिर रोवे नां पैर ।

चढ़ी हांड़ी को ठोकर नहीं मारते —चूल्हे पर पकती हुई हांडी को ठोकर नही मारनी चाहिए । जो कार्य ठीक ढंग से चल रहा हो उसे नष्ट नहीं करना चाहिए । तुलनीय : राज० चढी हाडीने ठोकर नही मारणी; पंज० चढ़ी कुन्नी नू ठेडा नई मारदे ।

चढ़े ऊँट, माँगे बूट (क) बड़े पद पर होने पर भी छोटी चीज मागने पर ऐसा कहते है । (ख) उच्च स्थान प्राप्त करने के बाद भी जब कोई ओछा काम करे तो ऐसा कहते हैं । तुलनीय : भोज० बूट माँगे ऊँट चढ़ ।

चढ़े कचहरी, बिके मेहरी जो व्यक्ति मुकदमेबाज़ी करता है उसकी पत्नी तक बिक जाती है । मुकदमेबाज़ी की निंदा करने के लिए कहते है, क्योंकि उसमें बहुत धन व्यय होता है । तुलनीय : राज० चढ़ै दरबार, जाय घरबार ।

चढ़े के साइकिल पर घंटी नदारद - किसी काम के करने तथा उसके कुपरिणाम से बचने के लिए उपाय न निकालने पर ऐसा कहते है । तुलनीय : मैथ० चढ़ऽ के बाइसिकिल पर घटी अछिये ने; भोज० चढ़े के सइकिल पर घंटी हइये नां ।

चढ़ेगा सो पड़ेगा - जो ऊपर चढ़ेगा वह नीचे भी गिरेगा । (क) उन्नति करने वाले की अवनति भी होती है । (ख) जो व्यक्ति अधिक ऊँचा उठने का प्रयत्न करते हैं वही गिरते भी है । (ग) जब कोई अपने बुरे कर्मों के कारण दंडित होता है तब भी ऐसा कहते है । तुलनीय : राज० चढ़सी सो पड़सी, पंज० चड़ेगा आह पैगा ।

चढ़े घोड़े आए —अर्थात् घोड़े से उतरे नहीं वैसे ही लौटना चाहते है । जो व्यक्ति किसी काम के लिए या जाने के लिए जल्दी मचाए उसके प्रति कहते हैं । तुलनीय : पंज० चडे कोड़े आया ।

चढ़े तवे पर सभी रोटी डाल लेते हैं जब साधन हाथ आ जाता है तो सभी कुछ काम कर लेते है । तुलनीय मल० किणट्टिल् वीण पन्निक्कु कल्लुम् पारयुम् तुण; पंज० चड़े तवे उत्ते रोटी सारे पा लेंदे हन; अं० If a man ever falls all will tread on him.

चढ़े बिनारनी छात पर गावें पूत मलार—दूसरे के सहारे रहते हैं और स्वतंत्र होकर मलार (एक प्रकार का गीत) गाते हैं । पराये बल पर घमंड करने वाले पर यह लोकोक्ति कही जाती है ।

चढ़े रंग तीसरी बार के बोरे— तीसरी बार रंगने से रंग अच्छी तरह चढ़ जाता है । परिपक्वता एवं पूर्णता की दृष्टि से तीन के महत्त्व पर कहा गया है ।

चढ़े सो पड़े—(क) जो ऊपर चढ़ता है, वही नीचे भी गिरता है । (क) प्रत्येक काम में लाभ के साथ-साथ हानि भी होती है । तुलनीय : मेवा० चढ़े जो पड़े ।

चढ़ो चाचा, चढ़ो ताऊ, कोस एक घोड़ी खाली गई -- एक कोस तक घोड़ी इसी में खाली चली गई कि दोनों एक दूसरे से चढ़ने के लिए कहते रहे । जब झूठे शिष्टाचार से हानि हो या समय नष्ट हो तो कहते है ।

चतुर का दुख चौगुना, मूरख का सौ गुना— चालाक या बुद्धिमान व्यक्ति को अपना कष्ट (दुख) कम मालूम पड़ता है और मूर्ख को अधिक क्योंकि बुद्धिमान आदमी सहनशील होता है और मूर्ख के पास सहनशक्ति का अभाव होता है । तुलनीय : हरि० चातिर ने चौगुणी, मूरख नै सौ गुणी, ब्रज० चतुर कू चौगुनी, मूरख कू सौ गुनी ।

चतुर का सौदा मन ही मन—चतुर व्यक्ति चुपचाप अपना कार्य निकाल लेते है, ढोल नहीं पीटते । तुलनीय : भोज० चतुर क सउदा मन ही मन; सं० मनसा चिन्तितं कर्म वचसा न प्रकाशयेत, अन्यलक्षित कार्यस्य यतः सिद्धिर्न जायते ।

चतुर को इशारा बहुत--अक्लमंद को इशारा ही बहुत होता है । तुलनीय : राज० चतरने इशारो घणो; पंज० अकलमंद नू शारा बड़ा; अं० A word to the wise.

चतुर को एक पहर, मूर्ख को सारी रात - जिस काम को करने में चतुर एक पहर लगाता है उसी कार्य को मूर्ख सारी रात में करता है । चतुर आदमी काम को शीघ्र समझता है और करता है तथा मूर्ख देर से । तुलनीय : राज० चतरो एक पोर मूरखरी सारी रात; पंज० अकलमंद नूं इक पैह्र खोटे नू सारी रात; ब्रज० चतुर कू पहर और मूरख कू रात भरि ।

चतुर को चार घड़ी, मूर्ख को उम्रभर—(क) जिस बात को चतुर तुरत समझ जाता है उसी बात को मूर्ख उम्र-

र नहीं समझता। (ख) जिस कार्य को चतुर चार घड़ी कर दिखाता है उसी को मूर्ख सारी उम्र में नहीं कर ता। तुलनीय : राज० चतररी च्यार घड़ो मूरखरो मारो; पंज० अकलमंद नू चार कड़ीयां खोटे नू उम्र पर।

चतुर को चौगुनी, मूरख को सौगुनी दूसरे के धन ो मात्रा चतुर को चौगुनी और मूर्ख को सौगुनी मालूम ड़ती है।

चतुर चार जगह चूकता है—नीचे देखिए।

चतुर चार जगह ठगा जाता है—जब कोई व्यक्ति अपने आपको बहुत चालाक या होशियार समझने लगता है तथा किसी की सलाह को नहीं मानता, ऐसी दशा में जब उसे किसी काम में हानि हो जाती है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : बंग० अति चालाकेर गलाय दड़ि, अति बोकाय पाये बेड़ी; पंज० अकलमंद चार थां ठगया जादा है।

चतुर नार नर कूड़ से, ब्याह हुए पछिताय; जैसे रोगी नीम को आंख मीच पी जाय—चतुर स्त्री मूर्ख से ब्याही जाने के बाद पश्चात्ताप करती है और उस मूर्ख पति को उसी प्रकार स्वीकार करती है जैसे रोगी व्यक्ति मजबूरी में नीम के कड़वे घूंट को पी जाता है। जब न चाहते हुए भी किसी काम को करना पड़े या किसी बात को स्वीकार करना पड़े तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० चतुर नारि नर मूढ़ ते ब्याह भये पछिताय; जैसे रोगी नीम क आंखि मीचि पी जाय।

चतुर बहू आगे थूके—चालाक स्त्री पहले ही थूकती है। जब कोई व्यक्ति ग़लती या बुराई करके सबसे पहले अपने को निर्दोष साबित करने की कोशिश करता है तब व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

चतुर शत्रु उपाय ही नासे—चतुर दुश्मन उपाय से ही मारा जाता है, केवल पराक्रम से नहीं। तुलनीय : गढ़० वग्य बाघ जिबाला पड़ी जांद।

चतुर होय सो चेते—(क) बुद्धिमान लोग सोच-विचार कर कोई काम करते हैं। (ख) बुद्धिमान व्यक्ति संकेत पाते ही किसी चीज़ को समझ जाते हैं। (ग) समझदार लोग अच्छाई-बुराई की परख सुगमता से कर लेते हैं।

चतुराई क्या कीजिए जो नहिं शब्द समाय; कोटिक गुन सूआ पढ़े अंत बिलाई खाय—जिस तरह तोते को लाख पढ़ाया जाय लेकिन अंत में उसे बिल्ली खा ही जाती है उसी प्रकार ज्ञान को यदि पुस्तकों में लिखकर प्रकट न किया जाय तो वह भी बेकार हो जाता है। अर्थात् संचित ज्ञान को यदि दूसरों तक न पहुँचाया जाय या प्रकट किया जाय तो उसका कोई महत्त्व नहीं होता।

चतुराई चूल्हे में पड़ी—जब कोई चतुर या पढ़ा-लिखा व्यक्ति कहीं धोखा खा जाता है या हानि में पड़ जाता है तो कहते हैं। तुलनीय : पंज० अकलमंदी चुल्हे विच गयी।

चतुराई तुम्हारि मैं जानी—तुम्हारी चालाकी मैं समझ गया। जब कोई व्यक्ति किसी से बाहर से मित्रता का व्यवहार करे और भीतर-भीतर उसके विरुद्ध कार्य करे और उसे (जिसके विरुद्ध कार्य करे) इसका पता चल जाय तब वह ऐसा कहता है।

चतुराई सब विद्या को मूल—चतुराई सब विद्याओं की जड़ है। अर्थात् चतुराई से सब विद्याएँ आती हैं।

चना अधपका, जौ पका काटै, गेहूँ बाली लटका काटै—चने को अधपका होने पर, जौ को पक जाने पर और गेहूँ की बालें खूब पक कर लटक जाने पर काटनी चाहिए।

चना उछलेगा तो क्या भाड़ फोड़ेगा?—चना उछलकर भाड़ का कुछ नहीं बिगाड़ सकता। तात्पर्य यह है कि कमज़ोर क्रोध करने पर भी बली का कुछ बिगाड़ नहीं पाता। तुलनीय : हरि० चना उछलेगा तो क्या भाड़ नै फोड़ेगा?

चना और चुग़ल मुँह लगा छूटता नहीं—जब चना खाने और चुगलखोर की बात सुनने की आदत पड़ जाती है तो वह छूटती नहीं। तुलनीय : मरा० चणे नि चगली, जर एकदां तोंडी लागलो, सुटतां सुटेना।

चना और चुग़ल मुँह लगा बुरा—चना खाने में और चुगल की बात सुनने में अच्छी लगती है, पर बाद में ये दोनों कष्ट देते हैं। तुलनीय : पंज० छोले ते चुगलखोर मुँह लगया पैड़ा; ब्रज० चना और चुगल मुँह लग्यो बुरो।

चना क खेती चिक्क धन बिटिअन कै बढ़वारि, यतनेहुँ पर धन ना घटै तो करे बड़े से रारि—चने की खेती, क़माई का पेशा और लड़कियों की अधिकता से भी यदि धन न घटे तो अपने से बड़े से (धनी से) झगड़ा करना चाहिए। आशय यह है कि ये चारों धन की कमी के कारण होते हैं या इनसे व्यक्ति निर्धन हो जाता है।

चना कहे मेरी ऊँची नाक, एक घर बलिए दो घर हांक, जो खावे मेरा इक टूक, पानी पीवे सौ-सौ घूंट—चने से बनी हुई चीज़ विशेषकर रोटी खाने से प्यास अधिक लगती है।

चना कितना भी मजबूत हो पर भाड़ नहीं फोड़ सकता—(क) अर्थात् छोटी औक़ात का व्यक्ति कितना भी ज़ोर क्यों न करले, लेकिन उससे महान् कार्य नहीं हो सकता। (ख) छोटी औक़ात के लोग बड़ों का कुछ नहीं

बिगाड़ सकते। तुलनीय: भोज० रहिला केतनो बड़ियार होइ तऽ भरसाँय थोरे फोरी।

चना कितना ही बड़ा होगा तो क्या भाड़ फोड़ेगा ?— ऊपर देखिए।

चना की अंडी चट-चट चनके—चने की फली 'चट' की आवाज़ के साथ फूटती है। अर्थात् तुच्छ व्यक्ति बिना मतलब बोला करते हैं।

चना खाकर हाथ चाटते हैं —बहुत ही कंजूस के प्रति कहते हैं। तुलनीय : अव०चना चवाय के हाथ चाट लेत हैं। पंज० छोले खाके हत्थ चट्ट लेंदे हन।

चना चबेना गंग जल जो पुरवै करतार, काशी कबहूँ न छाँड़िए विश्वनाथ दरबार -अगर किसी प्रकार पेट भरता जाय तो काशी ऐसी सुंदर नगरी नहीं छोड़नी चाहिए जहाँ पर विश्वनाथजी का प्रसिद्ध मंदिर है। काशी की प्रशंसा में कहते हैं।

चना चितरा चौगुना, स्वाती गेहूँ होय—चित्रा नक्षत्र में चना और स्वाति नक्षत्र में गेहूँ बोने से पैदावार चौगुनी होती है। अर्थात् चित्रा नक्षत्र में चना और स्वाति नक्षत्र में गेहूँ बोने से उपज अच्छी होती है।

चना चिरौंजी हो गए, गेहूँ हो गया दाख, घर में गहने तीन हैं, चरखा पीढ़ी खाट -बुरा समय आने पर कहा जाता है।

चना पकत है चैत में, अरु गेहूँ बैसाख; कातिक पाकै बाजरा, मंगसिर पाकै ज्वार -चना चैत में, गेहूँ बैसाख में, बाजरा कार्तिक में और ज्वार माघ में (मंगसिर) में पकती है।

चना मर्द नाज है—चना सभी अन्नों से बढ़कर पौष्टिक होता है। तुलनीय : ब्रज० वही।

चना में सरदी बहुत समाई, ताको जान गधेला खाई- अधिक सर्दी पड़ने से चने की फ़सल में 'गदहिला' नामक कीड़े लग जाते हैं जिससे फ़सल खराब हो जाती है।

चना सींचकर जब हो आवे, ताको पहिले खूब खुंटावे— सिंचाई योग्य हो जाने पर चने की फ़सल को खुंटवा देना चाहिए। सिंचाई से पूर्व खुँटवा देने से फ़सल अच्छी होती है।

चने और चुग़ल मुँह लगे अच्छे नहीं होते- -'दे० चना और चुग़ल मुँह लगा बुरा।'

चने के साथ घुन भी पिस जाता है—जब बुरे या अपराधी के साथ सभ्य व्यक्ति को भी कष्ट सहना पड़ता है या दंडित होना पड़ता है तब व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय: कौर० चणे के सात्थ घुण पिस्या करे; पंज० छोले नाल कुण (सुसरी) वी पिस जांदा है।

चने के साथ घुन भी पिसता है – ऊपर देखिए।

चने चबाओ या शहनाई बजाओ—अर्थात् एक साथ दो काम नहीं हो सकते।

चने मिले तो दाँत ही नहीं –जब चने खाने को मिले तब तक दाँत गिर चुके थे। कोई चीज़ समय पर न मिलकर असमय पर मिले तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० चिणा जठे दाँत कोनी; पंज० छोले मिले तां दंद नई; ब्रज० चना है परि दाँत नायें।

चनों के धोखे, मिर्चें न खा जाना- -जब कोई व्यक्ति किसी कठिन कार्य को बहुत आसान समझे तो कहते है। तुलनीय :पंज० छोलया दे पलेखे मर्चा ना खा लेणां।

चपनी भर पानी में डूब मरो –अर्थात् तुम्हें शर्म आनी चाहिए। जब कोई घृणित या निंदनीय कर्म करता है तब ऐसा कहते हैं।

चपनी लिखकर सिर पर धरी, निकल पड़ा या निकल पड़ी —स्त्रियों का ऐसा विश्वास है कि चपनी पर शेख़ फ़रीद का नाम लिखकर प्रसूता के सिर पर रख देने से बच्चा आसानी से पैदा हो जाता है।

चपरासी बेसताए नहीं रहते -बिना कुछ लिए नहीं मानते। (यहाँ चपरासी का मतलब याचकों से है।)

चप्पे जितनी कोठरी, मियाँ मुहल्लेदार—छोटी-सी तो कोठरी है और बनते हैं मुहल्ले के मालिक। डींग हाँकने वाले के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : ब्रज०चप्पा जैसी कोठरी मियां मुहल्लेदार।

चबा के खाओ तो हलक़ में क्यों फँसे- यदि भोजन चबाकर खाओ तो हलक़ में फँसने की नौबत ही क्यों आए? (क) जो व्यक्ति बिना सोचे-समझे काम करके हानि उठाए उसके प्रति कहते हैं। (ख) जल्दबाज़ी से हानि उठाने वाले के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : भीली- चयाबी ने खाए ते घाघले नी चोटे; पंज० चा के खावो तां गले बिच कँनू फसे।

चबा न खाय तो पेट दुखाय –भोजन चबाकर न खाया जाय तो पेट दुखने लगता है। (क) जल्दबाज़ी के काम में हानि और कष्ट मिलता है। (ख) बिना सोचे-समझे काम करने से हानि उठानी पड़ती है। तुलनीय : भीली--वगर चाब ट्यू पेट माये दुखे; पंज० चाप केनां खावे ता टिड पीड़ होवे; ब्रज० चबाय कैं न खावै तो पेटै फुलावै।

चमके पच्छिम उत्तर ओर, तब जान्यो पानी है जोर—

यदि पश्चिमोत्तर कोण पर बिजली चमके तो समझना चाहिए कि काफी पानी बरसेगा।

चमगीदड़ों के घर मेहमान आए, हम भी लटके तुम भी लटको--संगति के अनुसार ही काम करना चाहिए या करना पड़ता है। तुलनीय : मरा० वटवाघुला घरी पाहुणे आले, आम्ही उलटे लटकतो तुम्हीहि लटका; मल० चेर तिन्नुन्न नाट्टिल वेन्नाल् नटुक्कण्डम् तिन्नणम्; पंज० चमगादड़ा दे कर परौणे आये असीं वी लमके तुसीं वी लमको; अं० When in Rome do as the Romans do.

चमड़ी चली जाय पर दमड़ी न जाय - नीचे देखिए। तुलनीय : ब्रज० चमड़ी जाय परि दमड़ी न जाय।

चमड़ी जाए तो जाए दमड़ी न जाए –नीचे देखिए।

चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए--नीचे देखिए।

चमड़ी जाय पर दमड़ी न जाय - कृपण पर कहते हैं। वह चाहे भूखों मरे पर धन नहीं खर्च करता। तुलनीय : मरा० अगाचे कातडें जाईना का पण दमड़ी जातां कामा नये, गढ़० चमड़ी जौ पर दमड़ी नि जौ; मेवा० चमड़ी जाव पर दमड़ी नी जाय, हाड़०चमड़ी जाव, पण दमड़ी न जाय; छनीस० चमड़ी जाय, फेर दमड़ी झन जाय; कन्न० चर्म होदरू चिने इल्ल, दुड्डु होग कूड्दु; पंज० जाण जावे पर पैहा ना जावे; ब्रज० वही।

चमड़ी भले ही जाए, पर दमड़ी न जाए—ऊपर देखिए। तुलनीय : ब्रज० वही।

चमड़े का जल दुनिया पिए--नल के भीतर चमड़े का वाशर लगा रहता है, और वही पानी सभी लोग पीते हैं। तात्पर्य यह है कि किसी बुरी बात को यदि बहुत आदमी करें तो उसमें दोष नहीं। तुलनीय : पंज० चमड़े दा पाणी दुनियां पीवे।

चमड़े का जूता कुत्ता रखवार—जो जिसके लिए प्रिय हो उसे उसी की देखभाल में छोड़ देने पर व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। (कारण कि जो वस्तु जिसे प्रिय है वह उसका उपयोग अवश्य करेगा, ऐसी दशा में उस वस्तु की सुरक्षा संभव नहीं। या जिस पुरुष से किसी स्त्री को प्यार है उसी पुरुष के ऊपर उस स्त्री के देख-रेख का भार सौंप दिया जाय तो ऐसी दशा में उसकी इज्जत का बचना मुश्किल हो जाता है। तुलनीय : भोज० चामे क जूता कुक्कुर रखवार; मैथ० चाम के जूता के कुत्ता रखवार; पंज० चमड़े दी जुत्ती कुत्ते दी राखी।

चमड़े की जबान है -जब भूल से किसी के मुँह से अनुचित शब्द निकल जाता है तब वह ऐसा कहता है या उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० चमड़े **कई जबान है**; पंज० चमड़े दी जबान है।

चमड़े की देवी, जूते से पूजा—जो जिस योग्य हो उसका वैसा ही सत्कार भी उचित है। तुलनीय : खाल्ड़ा की देवी ने खारड़ा की पूजा; पंज० चमड़े दी देवी जुत्ती नाल पूजा।

चमड़े के टुकड़े के लिए भैंस मारता है— छोटे से चमड़े के टुकड़े के लिए भैंस को मारना चाहता है। थोड़े से लाभ के लिए बहुत बड़ी हानि उठाने के लिए तत्पर व्यक्ति के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० मलु भट्टे भैंस मारे।

चमत्कार बिना नमस्कार नहीं बिना चमत्कार के कोई नमस्कार नहीं करता। अर्थात् बिना गुण के कोई इज्जत नहीं करता।

चमरन कोसे ढोर न मरहीं--(क) सभी अपनी मौत से मरते हैं न कि किसी के बुरा मनाने से। (ख) दुष्टों या नीचों के चाहने से किसी की हानि नहीं होती। तुलनीय : पंज० गिछड़ां दे रोण नाल बौल्द नई मरदे; माल० कागला रे कैवातीं डोबलो नी मरे; राज० ढेढारी दुरासीसगं गायां थोड़ी ही मरे; अव० चामरन के मनाए डागर न मर जइहें; बुंद० कौअन के कोसे ढोर नहीं मरत; ब्रज० कमाई के कोसेते पड़रा नायें मरत; मरा० कावळ्याचें श्रापनें ढोरें मरत नाहींत; गुज० कागडाने श्रापे ढोर न मरे।

चमरि सउंचनि/सउंननि में फँसि गए -चमारों की मंडली में फँस गए जो चमड़े के उबालने आदि का काम कर रहे हैं। जब कोई सभ्य व्यक्ति संयोगवश कभी बुरी संगति में फँस जाता है तब ऐसा कहता है।

चमरौटी गाँव के पास, पड़ौसी करें उदास—चमार आदि जातियों के घरों में प्रतिदिन लड़ाई-झगड़े होते रहते हैं और यदि पड़ोस में कोई सीधा आदमी रहता है तो उसको परेशानी हो जाती है। बुरे व्यक्तियों की संगति से बचने के लिए ऐसा कहते है। तुलनीय : गढ़० गौं साथे ड्सारणो, दिन रात को ढुंग्यो।

चमार का मठा—जैसे चमार का मट्ठा उसके अतिरिक्त और कोई नहीं पी सकता उसी प्रकार नीच व्यक्ति की संपत्ति किसी दूसरे के काम नहीं आती, उसका उपभोग केवल वही करता है।

चमार की छोकरी चंदन नाम—जब नाम के अनुसार गुण न हो तब ऐसा कहा जाता है। तुलनीय : राज० जाटरी बेटी काको जी नांव; अव० चमार की बिटिया नाम जगरनिया; पंज० चमैर दी ती चंदन नां; ब्रज० चमार की छोरी

को चंदनियां नाम।

चमार की जोरू नंगे पांव—घर में सरलता से प्राप्त होने वाली वस्तु का भी उपयोग न करने पर ऐसा कहते हैं। या जिसके पास जिस वस्तु की अधिकता हो फिर भी वह उसका उपयोग न करे और कष्ट सहे तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० चमइनो क घरे कारे सूप; पंज० चमैर दी बौटी नंगे पैर।

चमार की बेटी नाम राजरानी—ऊपर देखिए।

चमार के कोसे ढोर नहीं मरते—दे० 'चमरन कोसे ढोर···'।

चमार के घर खाया, उसमें भी आधा पेट—जब कोई ओछा या निन्दनीय कर्म करे और उसमें भी उसे सफलता न प्राप्त हो या उसकी इच्छा पूरी न हो तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : छत्तीस० चमार घर खइस, तउन मां आधा पेट।

चमार के देव की जूते से पूजा—(क) योग्यता देखकर आदर-निरादर करना चाहिए। (ख) जो जैसा हो उसके साथ वैसा ही बर्ताव करना चाहिए। तुलनीय : मेवा० चमारां का देवता की जूता सूं पूजा; पंज० चमैर दे देवता दी जुत्ती नाल पूजा।

चमार के देवता की जूतों से पूजा—ऊपर देखिए।

चमार के मनाने से डाँगर नहीं मरता—दुष्टों (नीचों) के चाहने से किसी का अनिष्ट नहीं होता। तुलनीय : भोज० चमार के कहला से डाँगर ना मरेला।

चमार को अर्श में भी बेगार—(क) दुखिया को सब जगह दुःख ही मिलता है। (ख) मूर्ख को सर्वत्र परेशानी ही झेलनी पड़ती है। तुलनीय : माल० चमार गंगाजी ग्यो तोइ डेड़की माथा पै; ब्रज० चमार कूं तौ अरस में ऊँ बेगारी करनी परै; अव० चमार का सरगौ मां बेगार।

चमार को बेगार आसमान से उतरे—निर्धन या दुर्बल व्यक्ति से लोग अक्सर व्यर्थ का काम कराते रहते हैं। तुलनीय : कौर० चमार कु बैगार अर्स से उतरे।

चमार को भैया कहो तो वह चौके में घुस जाता है—जब कोई नीच मनुष्य आदर या सम्मान पाने पर सिर पर चढ़ जाता है या अनुचित काम करने लगता है तब व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : माल० चमार ने चमार बावजी केवे तो चौके चढ़ै; पंज० चमैर नूं परा आक्खो तां औह चौके बिच आ जांदा है।

चमार को स्वर्ग में भी बेगार—ऊपर देखिए।

चमार चमड़े का यार—(क) स्वार्थी आदमी के बारे में कहा जाता है। (ख) चमार की जीविका चमड़े से ही चलती है, इसलिए वह उसी को अपना यार समझता है या उसी से अपना संबंध रखता है। (ग) चमार जूते से ही मानता है बात से नहीं। तुलनीय : पंज० चमैर चमड़े दा यार।

चमार सियार बड़ा होशियार, जहाँ मार पड़े वहाँ भाग पड़े; जहाँ लूट पड़े वहाँ टूट पड़े—अवसरवादियों के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

चमारिन को भौजी कहा तो चौके में आ गई—दे० 'चमार को भैयार कहो तो···'।

चमेली चाव में आई, बख्तावर रेवड़ियाँ बाँटे—दे० 'चंबेली चाव में···'।

चमेली चाव में आई, बख्तियारे साथ लाई—दे० 'चंबेली चाव में···'।

चमोटी लागे चमचम विद्या आवे झमझम—बिना मार के विद्या नहीं आती। तुलनीय : अं० Spare the rod and spoil the child.

चरखा अब नहीं चलता—बहुत वृद्ध या अति निर्बल हो जाने पर कहते हैं।

चरता फिरे तो कैसे मरे—(क) जो व्यक्ति केवल खाते और घूमते हैं वे स्वस्थ रहते हैं क्योंकि उनको कोई चिंता नहीं रहती। (ख) सदा कुछ काम करते रहने से आदमी स्वस्थ रहता है। तुलनीय : राज० चरै फिरै जेकेरो कांई मरै; पंज० खंदा रहै तां किवें मरे।

चरवाही में ही गाय बिक गई—जब कोई काम लाभ के लिए किया जाय और उसमें लाभ के बजाय मूलधन भी चला जाय तो ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मैथ० गाय बिकायल चरवाहिये; पंज० चराण बिच ही गां बिक गयी।

चरसी यार किसके, दम लगा के खिसके—(क) नशेबाज लोगों को अपने नशे से ही मतलब होता है। जब उन्हें नशा मिल जाता है वे राह पकड़ लेते हैं। (ख) स्वार्थियों के प्रति भी व्यंग्य से ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० चरसी यार किसदे दम लगा के खिसकदे।

चरे सूअर पिटें पाड़े—खेत तो सूअर चरे और मार खाए भैंसे (पाड़े)। जब अपराध कोई और करे तथा दंड किसी और को मिले तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० चरग्या सूर कुटीज्या पाडा; पंज० चरण सूर कुट खाण कट्टे।

चर्बी छाई आँखन में नाचन लागी आँगन में—(क) बेशर्म औरतों पर कहा जाता है। (ख) अभिमानियों अथवा

अहंकारियों के प्रति भी व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

चल घोड़ी धाने-धान—ऐ घोड़ी, केवल धान की फ़सल के ही बीच में से होकर चल। अर्थात् भले-बुरे का ख्याल न कर। उचित-अनुचित का विचार न करने वालों पर व्यंग्य में यह उक्ति कही जाती है। तुलनीय : मैथ० मग० चल घोड़िया धाने-धान।

चल चक्हे, मेरे मुँह मत लग—यहाँ से हट जा, मुझसे अधिक बात मत कर। क्रोध में आने पर किसी के प्रति फटकार।

चल जाय अत्तारी, झक मारे चकलेदारी—दवा बेचने वाले को अधिक लाभ होता है।

चलत फिरत धन पाइए बैठे देगा कौन?—श्रम या उद्योग करने से धन मिलता है, बैठे रहने से नहीं। तुलनीय : पंज० हत्थ पैर हिलाओ पैहा मिलेगा बैठे दे नू कूण देगा।

चलत समय नेउरा मिलि जाय, बाम भाग चारा चखु खाय; काग दाहिने खेत सुहाय, सफल मनोरथ समझहु भाय—कहीं जाते समय यदि रास्ते में नेवला मिल जाय, बाईं ओर नीलकंठ (चखु) चारा खाता दिखाई पड़ जाय, और दाहिनी तरफ कौआ बैठा हुआ दिखाई पड़ जाय तो समझना चाहिए कि कार्य पूर्ण हो जाएगा। (यह एक प्रकार का शकुन है)।

चलता घोड़ा आप दाना माँग लेता है—चलते घोड़े को लोग अपने आप खिलाते हैं। आशय यह है कि परिश्रम करने वाले की लोग खुद इज्ज़त करते हैं और उसको उचित पारिश्रमिक दे देते हैं।

चलता चरखा—जिसका रोज़गार अच्छी तरह चलता हो उस पर कहते हैं। तुलनीय : पंज० चलदा चरखा; ब्रज० चलतौ चरखा।

चलता पुरज़ा—चालाक या शक्तिशाली आदमी को कहते हैं। तुलनीय : पंज० चलदा पुरजा; ब्रज० चलतौ पुरजा।

चलता फिरता ना मरे बैठा हो मर जाय—(क) मेहनती व्यक्ति भूखा नहीं मरता, आलसी ही मरता है। (ख) होनहार पर भी कहते हैं।

चलती का नाम गाड़ी—गाड़ी जब तक चलती रहे तभी तक गाड़ी है नहीं तो काठ-कबाड़। आशय यह है कि (क) जब तक कोई वस्तु लाभ दे तभी तक उसकी क़द्र की जाती है। (ख) ऐसे प्रभावशाली व्यक्ति के प्रति भी कहते हैं जिसका कहना कोई न टालता हो या जिसकी बहुत चलती हो। तुलनीय : मरा० चालते तिचे नाव गाड़ी आहे; राज० चलतीरो नांव गाडी; अव० चलती का नाम गाड़ी; मेवा० चलती को नाम गाड़ी; पंज० चलदी दा नां गड्डी; ब्रज० चलती कौ नाम गाड़ी।

चलती का नाम गाड़ी, गाड़ी का नाम उखड़ी—दुनिया की उलटी रीति पर कहते हैं। जो चलती है उसे तो गाड़ी कहते हैं और जो गड़ी है उसे उखड़ी अर्थात् उखड़ी (ओखली) कहते हैं। तुलनीय : माल० चालती ने गाड़ी केवे, ने गड़ी ने केवे ऊँखड़ी।

चलती का नाम गाड़ी है—दे० 'चलती का नाम गाड़ी।'

चलती के पौबारह—जिसकी चलती है उसी के पौबारह हैं, अर्थात् प्रभावशाली व्यक्ति के सभी काम हो जाते हैं।

चलती गाड़ी में रोड़ा अटकाए—चालू काम में विघ्न डालने वाले पर कहते हैं। तुलनीय : मरा० चालत्या गाड्यास खीळ घालणें; अव० चलत गाड़ी मा रोड़ा अटकावै; हरि० चालती गाड्डी में रोड़ा अटकांवणां; मेवा० चालतो गाड़ी में फाचरो देणो; पंज० चलदी गड्डी बिच रोड़ा अड़ाना।

चलती चक्की देख के दिया कबीरा रोय, दो पाटन के बीच में साबित रहा न कोय—संसार की क्षणभंगुरता पर कहते हैं। अर्थात् पृथ्वी और आकाश के बीच में जो पैदा हुआ है उसे अवश्य ही मरना पड़ेगा।

चलती (ढलती) फिरती छाँव—संसार की क्षणभंगुरता पर कहा जाता है। धन-संपत्ति या पदप्रतिष्ठा सदा एक ही व्यक्ति के पास नहीं रहती।

चलती में कौन कसर करता है—अर्थात् कोई नहीं। जिनका दबदबा होता है वे उसका फ़ायदा अवश्य उठाते हैं। तुलनीय : हरि० अपणी चालती में कूंण कसर घालै सै।

चलती में सब अपने—अच्छे दिनों में सभी मित्र बन जाते हैं, किंतु बुरे दिनों में कोई बात भी नहीं पूछता। तुलनीय : गढ़० चलती का यार सबी होंदा।

चलती रोजी पर लात मारते हैं—(क) जो व्यक्ति किसी बने हुए काम को बिगाड़ देता है उसके प्रति कहते हैं। (ख) जो अकारण ही अपनी जीविका को छोड़ देते हैं उनके प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० मिली दी रोजी नूं लत मार दे हो।

चलती हवा से लड़ती है—अत्यन्त झगड़ालू स्त्री के प्रति कहते हैं।

चलते घोड़े को चाबुक कैसा ?—चलते घोड़े को चाबुक नही मारना चाहिए। आशय यह है कि ठीक काम करने वाले को दोष नही लगाना चाहिए। या उचित काम करने वाले को डाँटना-फटकारना नही चाहिए।

चलते घोड़े को चाबुक देवे—(क) जो किसी परिश्रमी व्यक्ति को और अधिक परिश्रम करने के लिए कहे या परेशान करे तो कहते हैं। (ख) ठीक ढंग से चल रहे काम को बिगाड़ने वाले पर भी कहते है।

चलते चोर लंगोटी लाभ—चोर को भागते समय जो कुछ मिल जाए वही बहुत है। अर्थात् मुफ्त मे जो कुछ मिल जाय उसे बहुत समझना चाहिए।

चलते बैल के चूतड़ में लकड़ी करता है—(क) जब कोई व्यक्ति काम मे लगे हुए व्यक्ति को छेड़ता है तब कहते हैं। (ख) जब परिश्रमी व्यक्ति को कोई बार-बार और अधिक श्रम करने के लिए कहता है तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० चलत बैल का अरई देत है।

चलते बैल को चाबुक मारते हैं—ऊपर देखिए।

चलते बैल को डंडा मारे—दे० 'चलते बैल के चूतड़ में·······'। तुलनीय : ब्रज० चलते बरध मे पेंनिया मारैं।

चलते हाथ पाँव उठा लो—ईश्वर से प्रार्थना कि अपाहिज होकर न मरें। तुलनीय : अव० चलत पौरुष उठाय लेव।

चलतो चूल्हो देख के झुक पड़ रे बेइमान, पाँच मिनट की शरम औ आठ पहर आराम—रोटियाँ बन रही हों तो वहाँ खाने के लिए बैठ जाना चाहिए। थोड़ी देर शर्म तो आएगी पर बाद में दिन-भर के लिए आराम हो जायगा। अर्थात् भूख से निश्चित हो जाओगे। इस तरह की बात वे लोग करते है जो खाने के सामने मर्यादा को भूल जाते है।

चल न पावें, कूदन नाम—नीचे देखिए।

चल न पावें, फांदे नाला—नीचे देखिए।

चल न सकूं, मेरा कूदन नाम—जब कोई व्यक्ति अपनी सामर्थ्य से बाहर की लंबी-चौड़ी बातें करता है तब उसके प्रति व्यंग्य मे ऐसा कहते है। तुलनीय : बुंद० चल न पावे, कूदन नाये; ब्रज० आख के अंधे नाम नयनसुख।

चल न सके क़दम दो, दौड़ेंगे दो मील—दो क़दम तो चल नही सकते और दौड़ने के लिए तत्पर है। जो व्यक्ति सुगम काम करने की सामर्थ्य न रखे और कठिन काम करने को तैयार हो जाए उसके लिए व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० दोण नि सको, बीस पथा सको; पंज० चल नई सकदे दो पैर दौड़ण दो मील।

चलना बुरा कोस का—पैदल चलना एक कोस का भी बुरा है। पैदल चलने में बहुत परिश्रम करना पड़ता है और कष्ट भी बहुत होता है। तुलनीय : राज० पेंडो कोसरो ही बुरो; पंज० तुरना इक कोह ही बुरा।

चलना भला न कोस का, बेटी भली न एक, माँगन भला न बाप का, जो विधि राखे टेक—पैदल चलना एक कोस का भी बुरा लगता है, पुत्री एक भी हो तो उसके कारण बाप को झुकना पड़ता है और उधार बाप से भी माँगना बुरा है।

चलना भला सड़क का चाहे हो फेर, बैठना भला भाई संग चाहे हो बैर—सड़क पर चलना अच्छा है चाहे उसमें कितना ही फेर (घुमाव) पड़े और अपने भाई से चाहे कितना भी लड़ाई-झगड़ा क्यों न हो तो भी उसी के साथ उठना-बैठना चाहिए क्योंकि समय पर वही काम आता है। तुलनीय : माल० चालणा सड़क रो चावे देर वे, बैठणो भायां रो चावे बैर वे।

चलना वहीं पड़ेगा जहाँ मालिक ले जावे—जहाँ मालिक ले जायगा वहाँ जाना ही पड़ेगा। (क) पराधीन व्यक्ति को जब विवशता से कोई ऐसा काम करना पड़े जिसको वह न करना चाहे तो उसके प्रति कहते हैं। (ख) ईश्वर जैसे रखेगा वैसे ही रहना पड़ेगा। तुलनीय : गढ़० हिट्ट मेरा बल्द, जनो तेरो गोस्यू हिटाल्द।

चलना है रहना नहीं, चलना बिस्वे बीस; ऐसे सहज सुहाग पर, कौन गुंधावे सीस—जब एक दिन इस संसार से जाना ही है तो सुख-सुविधाएँ एकत्र करने से क्या लाभ ? (सहज सुहाग = थोड़ी देर का सुहाग)।

चल निकला सो चल निकला—काम एक बार चल जाने पर किसी बात का भय नही रहता।

चलनी चम्मा, घोड़ लगम्मा, कायथ गुलम्मा, ये तीनों नहीं कोई कम्मा—चलनी का चमड़ा (चम्मा), घोड़े की लगाम (लगम्मा) और नौकरी करने वाला कायस्थ, ये तीनों किसी काम के नही होते। अर्थात् इनसे और कोई काम नहीं हो सकता।

चलनी दूसे सूप को, जिसमें बहत्तर छेद—जब कोई अपने बड़े दोष को न देखे और दूसरे के साधारण दोष की चर्चा करता फिरे या खिल्ली उड़ाए तब व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। (दूसना = दोष देना, बुरा-भला कहना)।

चलनी में गाय दुहें, कपारे को दोष दें—जब कोई जान-बूझकर ग़लत काम करे और भाग्य को दोष दे तब कहते हैं। तुलनीय : अव० चलनी मा दूध दुहैं करम का

दोष देंय ।

चलनी में गाय दुहें, कपाले को दोष दें—ऊपर देखिए।

चलनी में गाय दुहे, कर्म को दोष दे—जब कोई जान-बूझकर गलत काम करे और उसके कुपरिणाम पर अपने भाग्य को कोसे तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : कौर० चलनी गा दुहै, करम कू दोष दै; छत्तीस० चलनी मां गाय दूहै, करम ला दोस दै; निमाड़ी—चलनी म धुव, न करम ख दोष दे; बुंद० चलनी में दूद दोयें, कपारे खोर देयं; ब्रज० चलनी में दुहे और करम है टटोले; चालनी में काढै, करमें दोल लगा वै।

चलनी में गाय दूहे करम का दोष दे—ऊपर देखिए।

चलनी में दूध दुहे और करम को टटोले—दे० 'चलनी मे गाय दुहे कर्म को···'।

चलनी में दूध दुहे, कर्म को दोष दे—दे० 'चलनी मे गाय दुहे कर्म···'।

चलनी में दूध दूहे अपने करम को रोए—दे० 'चलनी में गाय दुहे कर्म···'।

चलनी में दूध दूहे, कर्म को दोष दे—दे० 'चलनी मे गाय दुहे कर्म···'।

चलनी में दूहें, करम का दोष दे—दे० 'चलनी मे गाय दुहे कर्म···'।

चलनी में दूहे, करम को दोष दें—दे० 'चलनी में गाय दुहे कर्म···।' तुलनीय : कौर० चलनी गा दुहै, करम कू दोस दे।

चलनी हँसे सूप पर जिसमें बहत्तर छेद—नीचे देखिए। तुलनीय : मैथ० भोज० चलनी हँसलिन सूप के जिनका बहत्तर गो छेद।

चलती सुई देखकर हँसे—चलनी सुई में छेद देखकर हँसती है। चलनी अपने अनेक छेदों को नहीं देखती और सुई के एक छेद को देखकर हँसती है। जो व्यक्ति अपने बड़े दोषों को न देखकर दूसरे के साधारण दोष देखकर उसकी हँसी उड़ाए तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० चालणी सुई ने हँसे।

चलनी की शक्ति नहीं नाम मजबूत खाँ—नाम के विपरीत कर्म या गुण वालों को ध्यान में रखकर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० चले अइबे नं करे नाँव बरियार खां; मग० चले के चेत न नाम बरियार खांव; पंज० तुर सकदा नई नां मजबूत खां।

चलने वाला हारता है रास्ता नहीं हारता—राह पर चलने वाला ही थक जाता है, राह नहीं। आशय यह है कि जीवन समाप्त हो जाता है, किन्तु जीवन की राह समाप्त नहीं होती। तुलनीय : भोज० चलही वाला थाके ला डरह नां थाके; सं० कालो न यातो वयमेव याताः; पंज० तुरन वाला थकदा है राह नई थकदी।

चलनो भलो कोसकों, दुहिता भली तो एक, माँगन भलो तो बाप सों, जो माँगे पर देत—चलना तो एक कोस का अच्छा है, बेटी एक ही भली है और बाप से ही माँगना उचित है, क्योंकि वह माँगने पर दे देता है।

चलबो भलो न कोस को, दुहिता भली न एक, माँगन भलो न बाप सों, जो विधि राखे टेक—दे० 'चलना भला न कोस का···'।

चल भई थैले, जहाँ चेले वहीं मेले—जिनके पास केवल भीख माँगने का एक थैला ही है, वे जहाँ भी रहें उनको किसी बात की चिंता नहीं होती। भीख माँगने वालों या ऐसे ही माँग करें गुजर करने वालों के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : गढ़० चलबे थौला, जखी जौला तखी खौला।

चल मरघट को लकड़ी सस्ती है—कृपण साहूकार को कहते हैं।

चल मेरे चरखे चर्रखचूं, कहाँ की बुढ़िया कहाँ का तूं—अपने ही मन की कहे जाना दूसरे की न सुनना। इस संबंध में एक कहानी जो इस प्रकार है : किसी जंगल में एक बुढ़िया शेर, भालू आदि हिंसक जानवरों से घिर गई। जब वे उसे खाने को तैयार हुए तब बुढ़िया बोली, 'अभी तो मैं बहुत दुबली हूँ। मैं अपनी लड़की के यहाँ जा रही हूँ। तुम लोग कुछ दिन तक इंतजार करो। जब मैं वहाँ से खा-पीकर मोटी होकर आऊँगी तो खा लेना।' सब ने बुढ़िया की बात मान ली और उसे छोड़ दिया। बुढ़िया जब लौटी तो अपने साथ एक चरखा लेती आई और उसी के अंदर बैठ गई। जब जानवर उससे कहते कि 'ओ बुढ़िया, अपना वादा पूरा कर।' तो वह चरखे के भीतर से जवाब देती 'चल मेरे चरखे चर्रखचूं, कहाँ की बुढ़िया कहाँ का तूं।' यह सुनकर जानवर समझते कि यह बुढ़िया नहीं कोई और बला है और डर के मारे दूर भाग जाते थे। इस प्रकार बुढ़िया ने अपनी जान बचा ली। इससे शिक्षा यह मिलती है कि बल से बुद्धि बड़ी है।

चल लौंडी मैं आता हूँ—ऐसे अवसर पर कहते हैं जब कोई व्यक्ति अपने शृंगार की कोई वस्तु दिखाकर उसके इशारे से कोई बात करता है।

चल सोटे अब तेरी बारी—सब तरह से हार मानकर किसी अन्तिम और अवश्य सफल होने वाले उपाय का अव-

लोकन करने पर कहते हैं। एक बार एक शेखचिल्ली अपनी माँ से विदा लेकर, चार रोटियों के साथ विदेश को चला। रास्ते में एक वृक्ष के नीचे विश्राम करने लगा। उस वृक्ष पर कई परियाँ रहती थी। थोड़ी देर बाद भूख लगने पर वह कहने लगा कि एक खाऊँ कि दो खाऊँ, कि तीन खाऊँ या चारों खा लूँ। यह सुनकर परियों ने समझा कि यह कोई दैत्य है जो उन्हें खाना चाहता है। इसलिए उन्होंने उसे एक कड़ाही देकर जीवनदान माँगा। कड़ाही में यह गुण था कि वह माँगने पर रोटियाँ देती थी। करामाती कड़ाही पाकर शेखचिल्ली ने घर का रास्ता लिया। रास्ते में एक सराय में भटियारे ने कड़ाही बदल ली। घर पहुँच कर शेखचिल्ली ने कड़ाही नकली पाई। शेखचिल्ली फिर उसी वृक्ष की ओर चला। इस बार परियों ने उसे एक रस्सी और डंडा दिया। वह इनको लेकर सराय को चला। रस्सी में यह गुण था कि वह कहने पर किसी को भी बाँध लेती थी और डंडा कहने पर पीटने लगता था। वहाँ पहुँच कर शेखचिल्ली ने रस्सी से कहा, 'भटियारे को बाँध लो।' और डंडे से कहा, 'चल सोटे अब तेरी बारी।' सोटे की पिटाई से भटियारे ने कड़ाही लौटा दी और शेखचिल्ली कड़ाही, रस्सी और सोटे को लेकर अपने घर आ गया। तुलनीय : पंज० चल सोटे हुण तेरी बारी; ब्रज० चल सोटा अब तेरी बारी।

चला चली की राह में भला भली कर लेहु—इस अनित्य संसार में पैदा होकर कुछ तो परोपकार कर लो क्योंकि जीवन का कोई ठिकाना नहीं है।

चलिए फिरिए, बैठ न रहिए; करिए गोड़ापाई, दूध-दही नित खाय बिलइया कब-कब भैंस बिआई—बिल्ली के घर कौनसी भैंस बच्चा देती है जो यह प्रतिदिन दूध-दही खाती है। आशय यह है कि परिश्रम करने से ही लाभ मिलता है।

चली चली आई मौत के पीहर—जब कोई जान-बूझ कर बुरे मार्ग पर जाता है या विपत्ति में फँसता है तो कहते हैं।

चली चली बो माखों आई—(क) फैलते-फैलते बात यहाँ तक पहुँच गई; (ख) लड़कों का एक खेल।

चलनी में पानी भरें, महामाई के धर्म मनावें—असंभव को संभव करने का प्रयत्न करने वाले पर कहते हैं। तुलनीय : पंज० छननी बिच पाणी परण महामाई दे गुण गाण।

चले जाउ यहाँ को करै, हाथनि को ब्योपार; जानत नहिं यहि पुर बसैं, धोबी, ओंड़, कुम्हार—चले जाओ, यहाँ पर कौन हाथी खरीदने वाला है? तुम नहीं जानते कि इस नगर में धोबी, गड़रिए और कुम्हार रहते हैं। अर्थात् यहाँ पर छोटी चीज़ों के ग्राहक हैं बड़ी के नहीं। जब कोई गुणी व्यक्ति या विद्वान मूर्खों के बीच उपदेश देता है तब ऐसा कहते हैं।

चले जोंक जिम बक्र गति यद्यपि सलिल समान—जिस प्रकार जोंक जल में रह कर भी टेढ़ी चाल चलती है, उसी प्रकार नीच व्यक्ति अपनी नीचता नहीं छोड़ता भले ही उसे अच्छे स्थान या अच्छे लोगों के साथ रहने का अवसर मिले।

चले न जाने आँगन टेढ़ा—दे० 'नाच न जाने आँगन टेढ़ा।'

चले न पाएँ कूदन नाम—दे० 'चल न सकूँ मेरा⋯'।

चले पावें आँगन टेढ़ा—दे० 'चले न जाने आँगन⋯'।

चले न पावें कूदन नाम—दे० 'चल न सकूँ मेरा⋯'।

चले न पावें; रजाई का फाँड़ बाँधें—चल तो पाते नहीं है और उस पर भी कमर में रज़ाई बाँधते हैं। जब कोई व्यक्ति अपनी सामर्थ्य से बाहर का काम करना चाहता है या करता है, तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० चलै न पावै रजाई के फ़ांड़ बाँधे; पंज० चल सकदे नईं लक उत्ते रजाई बनदे।

चले पेट, सराय में डेरा—दस्त आ रहे हैं और सराय में टिकना चाहते हैं। जो व्यक्ति अयोग्य होने पर भी किसी अच्छी वस्तु की इच्छा करे तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : राज० दस्त लाग अर सराय में डेरा; पंज० लगियां टटियाँ रैण सराय बिच।

चले फिरे, कुछ पाइए, बैठे देगा कौन—बिना उद्यम या परिश्रम किए कुछ नहीं मिलता।

चले राह साफ, लगे चाहे दुगनी देर—साफ-सुथरे रास्ते पर चलना चाहिए, चाहे समय कितना भी क्यों न लग जाय। राज० तुलनीय : चलाणो रास्तै सर हुवो भलाँई फेर ही।

चलै न जाने आँगन टेढ़ा—दे० 'नाच न जाने आँगन⋯'।

चले न पाँव कूदन नाम—दे० 'चल न सकूँ मेरा कूदन⋯'।

चलै न पावें, रजाई का फाँड़ बाँधे—दे० 'चले न पावें रजाई⋯'।

चलै न पावै, रजाई का लँगोटा बाँधे—दे० 'चले न पावें रजाई⋯'।

चलै बहुत सो बीर न होई—(क) वीर की पहचान बाहरी कामों से नहीं होती। (ख) अधिक परिश्रम करने

का कोई लाभ नहीं जबकि उसमें कोई सार न हो।

चलै रांड़ का चरखा अर भूंजी का पेट—नीचे देखिए।

चलै रांड़ का चरखा और चलै बुरे का पेट—रांड़ दुखियारी पेट के लिए सदा चरखा चलाया करती है और बुरे मनुष्य का बदपरहेजी के कारण सदा पेट चला करता है। जब कोई किसी को चलने के लिए कहता है और वह नहीं जाना चाहता तो उपरोक्त कहावत कहता है। तुलनीय : गढ़० चलो रांड को चर्खा या भूंजी को पेट; अव० चलै रांड़ कै चरखा औ चलै बुरे कै पेट; पंज० रंडी दा चरखा चले अते बुरे पैड़े दा टिड।

चलौ न जाए, गठरी मुड़ाधछो—चल तो पाते नहीं ऊपर से सिर पर गठरी रख लिए है। औक़ात या शक्ति से बाहर काम करने वालों पर व्यंग्य।

चवोक्ड़ सो लड़ोवई—हँसी-हँसी में लड़ाई हो जाती है।

चश्मे-बद दूर आँखें मोतीचूर—इन मोती जैसी सुंदर आँखों पर किसी की नज़र न लगे। एक तरह की शुभ-कामना।

चश्मे-मा रोशन दिले-मा खुश—आँखों की रोशनी दिल की खुशी। लड़के के लिए कहते हैं।

चसका दिन दस का, पराया खसम किसका—पराया पराया ही है, वह अपना नहीं हो सकता। वह मतलब हल करके अपना रास्ता लेता है। तुलनीय : पंज० चसका दसां दिनां दा पराना खसम खिसकदा।

चसका लगा बुरा—किसी चीज़ की आदत (चसका) बुरी होती है। तुलनीय : पंज० चसका लगया बुरा।

चहत चीज उड़ावन फूंकि पहारू—पहाड़ को मुँह से फूंककर उड़ाना चाहते हैं। जो व्यक्ति किसी बड़े काम को साधारण उपायों द्वारा या बिना परिश्रम के करना चाहे उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : पंज० पहाड़ नूं फूक मार के उडांदे हन।

चहार चीज अस्त तोहफ़-ए-मुल्तान; गर्द, गरमा, गदा-ओ-गोरिस्तान—मुल्तान की चार चीजें प्रसिद्ध है : धूल, गरमी, फ़क़ीर और क़ब्रें।

चहार शंबा नदारद—चहार शंबा फारसी में बुधवार को कहते हैं और हिन्दी में बुध (बुद्धि) अक्ल को कहते हैं। जब किसी को व्यंग्य में मूर्ख बनाना होता है तब कहते हैं।

चहिअ अमिय जग जुरै न छाछी—मठा (छाछ) तो मिलता नहीं और चाहते हैं अमृत (अमिय)। जो व्यक्ति अपनी सामर्थ्य या शक्ति के बाहर इच्छा करता है उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० अकूरड़ी पर सोवै र महलांरा सपना आवै।

चाँद आसमान चढ़ा सबने देखा—(क) जब कोई महान् घटना घटती है तो उस पर सबकी नज़र जाती है। (ख) बढ़ते या प्रगति करते हुए को सभी देखते हैं। तुलनीय : पंज० चन्न असमान उन्ते चड़या सारियाँ देखया।

चाँद उगेगा तो क्या आँचल में छिपेगा?—अर्थात् नहीं। (क) कोई महान् घटना छिपाने से नहीं छिपती। (ख) जो व्यक्ति महान या विद्वान होते हैं उनके गुण अपने-आप प्रकाश में आ जाते हैं। तुलनीय : मैथ० चान उगिहैं तऽ अंचरा छिपी हैं; भोज० चान उगी तऽ अंचरा में थोड़े छिपी!

चाँद का टुकड़ा—बहुत सुंदर वस्तु को कहते हैं।

चाँद को गहन लग गया—(क) जब किसी महान व्यक्ति को कोई कलंक लग जाय तब ऐसा कहते हैं। (ख) जब किसी रूपवती लड़की को कुरूप पति मिल जाय तब भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० चन्न नूं ग्रहण लग गया है।

चाँद को भी ग्रहण लगता है—ऊपर देखिए। तुलनीय : मरा० चंद्रालाहि ग्रहण लागतें।

चाँद-चढ़े कुल आलम देखे—दे० 'चाँद आसमान चढ़ा…'।

चाँदनी भी आती है, और अँधेरी रात भी—संसार में सुख-दुख दोनों लगे रहते हैं। तुलनीय : तेलु० चीकटि कोन्नाल्लु वेन्नल कोन्नालु; भोज० अन्हार अंजोर दुनो क जिनगी होले; पंज० चाननी वी आंदी है अते अनेरी रात वी।

चाँदनी मार गई—कमज़ोर पीठ वाले घोड़े के लिए कहते हैं।

चाँदनी में फ़स्द खुलवाना मना है—नस छेदकर शरीर के दूषित रक्त को बाहर निकलवाने को फ़स्द खुलवाना कहते हैं। यह काम शुक्ल पक्ष में नहीं करवाया जाना चाहिए।

चाँदनी में शहद नहीं होता—ऐसा लोक मत है कि शुक्ल पक्ष में मधुमक्खियाँ शहद इकट्ठा नहीं करतीं। तुलनीय : पंज० चाननी बिच शहद नईं हुंदा।

चाँदनी से सूखे और हवा से उड़े—बहुत सुकुमार बनने वालों के प्रति व्यंग्य। तुलनीय : गढ़० जूनि सुखद मूत बगद; पंज० चाननी नाल सुकके अते हवा नाल उड़े।

चाँद पर खाक डाले नहीं पड़ती—गुणी पर दोष लगाने से नहीं लगता; भले को बुरा कहने या कलंकित करने से वह कलंकित नहीं हो जाता। तुलनीय : पंज० चन्न उते कूड़ा

सुटण नाल उते नई पैदा।

चाँद में दाग है पर इसमें नहीं – (क) बहुत सुंदर स्त्री के प्रति कहते है। (ख) बहुत सभ्य व्यक्ति के प्रति भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० चन्न बिच दाग है पर इस बिच नई।

चाँद में भी धब्बे होते हैं थोड़ी-बहुत कमी सभी में होती है। पूर्णत: आदर्श कोई भी नहीं होता। तुलनीय : उज्ञ० आदर्श मित्र तलाश करने वाला बिना दोस्त के रह जाता है, पंज० चन्न बिच वी दाग होंदा है।

चाँद में मैल पर इसमें मैल नहीं दे० 'चाँद में दाग·· '।

चाँदनि कर कि चंद कर चोगे चाँदनी चाँद को किस तरह चुरा सकती है ? अर्थात् कोई अपना जीवन स्वयं नष्ट नहीं कर सकता या जीवनदाता का अनिष्ट नहीं कर सकता।

चाँदी का चश्मा लगाते हैं – घूस लेते हैं।

चाँदी का जूता सिर पर – रुपए से सब कुछ हो जाता है। तुलनीय : अव० चाँदी का जूता लगाया दिहेन; पंज० चाँदी दी जुत्ती सिर उते।

चाँदी की चाबी लगाई और द्वार खुला -चाँदी की चाबी से सभी द्वार खुल जाते है। अर्थात् धन से सब कार्य सिद्ध हो जाते है। तुलनीय भीली – उदेपर में पोल ई पोल दर्वाजा पर्यो है; पंज० चादी दी कुंजी लगायी अते बुआ खुलया।

चाँदी की मेख तमाशा देख बिना धन के तमाशा देखना अर्थात् सुख भोगना संभव नहीं है। तुलनीय : अव० चाँदी के मेख तमाशा देख।

चाक कुनम, गिरह कुनम देखो, मेरा हुनर मैं काट भी सकता हूँ और सी भी सकता हूँ। चतुर आदमी को कहते हैं।

चाकर के आगे कूकर, कूकर के आगे पेजखंमा – जब मालिक कोई काम नौकर से करने के लिए कहे और नौकर किसी अन्य से कहे तब कहते है।

चाकर को उजर नहीं है कूकर को उजर है –नौकर कुत्ते से भी ज्यादा पाबन्द है, उसे अपने मालिक के हुक्म की तामील करनी ही पड़ती है।

चाकर को ठाकुर बहुत –चाकर (नौकर) को मालिक बहुत मिल जाते है। जो व्यक्ति परिश्रम करने वाला होता है उसे मालिकों की कोई कमी नहीं रहती। तुलनीय : राज० चाकरने ठाकर घणा, पंज० चाकरां नू ठाकर बड़े।

चाकर को ठाकुर बहुत, ठाकुर को चाकर बहुत— धनवान को सेवकों की कमी नहीं और परिश्रमी को स्वामियों की। तुलनीय : पंज० चाकरां नू ठाकुर बड़े ठाकरां नूं चाकर बड़े।

चाकर चोर राज बेपीर, कहैं घाघ का धारी धीर — 'घाघ' कहते है कि यदि नौकर चोर है और राजा निर्दयी है तो धैर्य कैसे रखा जाय। आशय यह है कि इन दोनों से हानि ही मिलती है।

चाकर से कूकुर भला जो सोवे अपनी नींद - नौकरों से तो कुत्ते अच्छे है जो आराम से सोते तो हैं। जब नौकर आठों पहर काम करते-करते परेशान हो जाता है तब कहता है। तुलनीय : पंज० चाकर तों कुत्ता चंगा सोंदा अपनी नीदर; ब्रज० चाकर ते कुत्ता भलौ जो सोवै अपनी ओध।

चाकर है तो नाचा कर, ना नाचे तो ना चाकर— नौकरी करनी है तो मालिक की आज्ञा का पालन करो। यदि मालिक की आज्ञा नहीं मानते तो नौकरी मत करो।

चाकरी में (आकरी) नाकरी क्या? - नौकर को मालिक की आज्ञा का पालन करना ही पड़ता है। तुलनीय : मरा० चाकरीत ना करी कुठलें; हरि० हां जी की नौकरी नाह जी का राह।

चाकी के मुख परे सो मैदा होय – चक्की में जो भी अन्न पड़ता है वही पिस जाता है। (क) आशय है कि निष्पक्ष अधिकारी किसी के साथ रिआयत नहीं करता। (ख) संसार की सभी वस्तुएं नाशवान है। (ग) शक्तिशाली या सपन्न व्यक्तियों से जो टकराते है उनका पतन हो जाता है। तुलनीय : पंज० चक्की बिच पैया मैदा होया।

चाकी फेरी हुई चूने को ढेरी - चाकी चलाई कि आटा (चून) तैयार होने देर नहीं। कार्य आरंभ करने पर पूरा होने देर नहीं लगती।

चाचहि चाचा किमि कहे सगे बाप नहिं बाप —जो अपने बाप को बाप नहीं कहता वह चाचा को चाचा कैसे कहेगा। जो स्वजनों का आदर नहीं करता वह दूसरों का कैसे करेगा।

चाचा की बेटी जैसे खिचड़ी में घी –मुसलमानों में चाचा की बेटी से विवाह हो जाता है। उनके अनुसार यदि चाचा की लड़की से विवाह हो जाय तो वह खिचड़ी में घी के समान स्वादिष्ट होता है। मुसलमानों के प्रति व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : राज० काकैरी घी र खीचड़ी पर घी; पंज० चाचे दी ती जिवें खिचड़ी बिच घी।

चाचा की भाँग भतीजे को उगे— चाचा की पी हुई भंग

भतीजे को उगती है। अर्थात् बड़ों के दुर्गुण छोटे भी ग्रहण करते हैं। तुलनीय : राज० काकैरी पियोड़ी भतीजेरे उगे।

चाचा की भैंस भतीजा लड़े कुश्ती—दूसरे के धन पर मौज उड़ाने वाले को लक्ष्य करके ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० काका क भईंस भतीजा लड़े कुश्ती।

चाचा चोर, भतीजा क़ाज़ी—जब चोर का सबंधी न्यायाधीश हो तो न्याय कहाँ संभव है? जब कोई व्यक्ति अपराध करने पर भी अपने सबंधियों के कारण बच निकलता है तो कहते हैं। तुलनीय : पंज० चाचा चोर भतीजा काजी।

चाचा चोर, भतीजा काजी, चाचा के घर नौबत बाजी—जब कोई बुरा काम करे और आपस वाले दूसरे के सामने उसकी तारीफ करें तब कहते है।

चाट लगी तो हलवाई की दूकान की सूझी—ऐसे अवसर पर कहावत का प्रयोग करते है जब किसी को मिठाई का चस्का पड़ जाए।

चाटे हूँ कहुँ ओस के, मिटे काहु की प्यास—ओस को चाटने से किसी की प्यास नहीं बुझती। आशय यह है कि साधारण वस्तु या उपायों से बड़े काम सिद्ध नहीं होते।

चातक चाहे स्वाति की बूँद—चातक (एक पक्षी) स्वाति नक्षत्र के जल को ही चाहता है। जिसे जो प्रिय हो उसी के मिलने से उसकी इच्छा पूरी होती है।

चातुर का क़र्ज़ मन में विस्तार—(क) क़र्ज़ समझदार व्यक्ति को ही देना चाहिए। (ख) क़र्ज़ समझदार व्यक्ति से ही लेना चाहिए।

चातुर का काम नही पातुर से अटके, पातुर का काम यही लिया दिया सटके—चातुर लोग पातुर अर्थात् वेश्याओं के चक्कर में नहीं पड़ते, क्योंकि वेश्या का काम केवल द्रव्य खींचना है।

चातुर की चेरी भली मूरख की नार से—मूर्ख की पत्नी होने से चतुर की नौकरानी होना अच्छा है।

चातुर को चिंता घनी, नहिं मूरख को लाज; सर-औसर जाने नहीं, पेट भरे सौं काज—चतुर व्यक्ति को अनेक चिंताएँ सताती रहती हैं, किंतु मूर्ख मस्त रहता है, उसे केवल पेट भरने की ही चिंता रहती है। जब कोई व्यक्ति किसी महत्त्वपूर्ण बात पर ध्यान न देकर अपने लाभ की बात सोचे तो व्यंग्य से कहते हैं।

चातुर तो बैरी भला, मूरख भला न मीत—नीचे देखिए।

चातुर तो बैरी भला, मूरख भला न मीत, साध कहैं हैं 'मत करो कोइ मूरख से प्रीत'—चतुर दुश्मन अच्छा है पर नादान दोस्त अच्छा नहीं। अर्थात् मूर्ख से मैत्री नहीं करनी चाहिए।

चादर थोड़ी पैर पसारे बहुत—आमदनी कम और ख़र्च ज़्यादा।

चादर देख कर ही पाँव पसारे जाते हैं—आशय यह है कि सामर्थ्य के अनुसार ही व्यय किया जाता है या कोई काम किया जाता है। तुलनीय : पंज० चादर देख के पैर वछाने चाइदे।

चादर देख करें नर आदर—आशय यह है कि वेश-भूषा देखकर ही आदर किया जाता है। या वेश-भूषा से ही सम्मान मिलता है।

चापलूसी का मुँह काला—चाटुकारिता (चापलूसी) बुरी चीज़ है। तुलनीय : पंज० चुगली दा मुँह काला।

चाम का घर कुत्ता लिए जाता है—(क) जहाँ मुफ़्त की चीज मिलती है वहाँ सभी इकट्ठे हो जाते हैं। (ख) घर ऐसा बनवाना चाहिए जो शीघ्र ख़राब न हो।

चाम का चमोटा, कुत्ता रखवाल—दे० 'चमड़े का जूता कुत्ता…'।

चाम की जीभ गोता खा ही जाती है—जब किसी के मुँह से भूल से कोई अनुचित शब्द निकल जाता है तब कहते हैं। तुलनीय : चामे क जीभ बहक गइल है; पंज० चमड़े दी जीभ गोता खा ही जांदी है।

चाम के चंडू चलल पहाड़, पीछल टँगड़ी टूटल कपार—दुर्बल व्यक्ति ने पहाड़ पर चढ़ने की कोशिश की तो पैर (टँगड़ी) फिसल गए और सिर फट गया। आशय यह है कि सामर्थ्य से बाहर काम करने पर नुकसान उठाना पड़ता है।

चाम के दाम—बहुत सस्ती वस्तु पर कहते हैं। दिल्ली नरेश मुहम्मद तुग़लक़ ने 1330 ई० में चमड़े का सिक्का चलाया था, उसी संदर्भ में यह लोकोक्ति कही जाती है।

चाम को तेल, गुलाम को रोटी—चमड़े में तेल लगाने से वह अधिक समय तक चलता है और नौकर भरपेट भोजन मिलने से अधिक काम करता है। तुलनीय : पंज० चमड़े नूँ तेल गुलाम नूँ रोटी; ब्रज० चाम कूं तेल गुलाम कू रोटी।

चाम, गुलाम पिटे बिना नहीं मानते—आशय यह है कि दुष्ट बिना दंड के ठीक नहीं रहते। तुलनीय : हरि० चाम अर गुलाम पिट्टे बिना ना मान्नैं/सुधरैं।

चाम जाय पर दाम न जाय—चाहे खाल उतर जाय पर धन खर्च न हो। कृपण व्यक्ति पर कहा जाता है जो कष्ट

सहता है पर धन नहीं ख़र्च करता। तुलनीय : पंज० चमड़ी जावे पर पैहा ना जावे; ब्रज० चमड़ी जाय परि दमड़ी न जाय।

चाम प्यारा नहीं, काम प्यारा है—रूप-रंग के आधार पर किसी की क़द्र नहीं होती बल्कि गुणों के आधार पर क़ीमत (इज़्ज़त) होती है। तुलनीय : राज० चामरो कर्पई प्यारो काम प्यारो है; पंज० चमड़ी (जाण) पयारा नई कम्म पयारा है; ब्रज० चाम प्यारो नाये काम प्यारो।

चाम प्यारा है दाम नहीं— शरीर प्यारा है धन नहीं। तात्पर्य यह है कि शरीर से धन को अधिक महत्त्व नहीं देना चाहिए। तुलनीय : पंज० जाण पयारी है पैहा नई।

चामे तेल गुलामे रोटी—दे० 'चाम को तेल गुलाम…'।

चार अफ़ीमी, और तीन हुक्क़ा—जब आवश्यकता से कम वस्तु हो तब कहते हैं।

चार आने का बाजरा चौदह आने का मचान—जब किसी वस्तु पर उसकी क़ीमत से अधिक ख़र्च लग जाय तो व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० चार आना क जनेरा चउदह आना क मचान।

चार कलेवा, आठ दुपहरी, नौ ब्यारी को दे गोपाला; इतनक कहूँ फेर पड़े तो लो कंठी या लो माला—हे गोपाल! सुबह चार बार कलेवा (नाश्ता), दोपहर के लिए आठ और शाम के लिए नौ रोटी दें। इसमें ज़रा भी कोई गड़बड़ हुई तो मैं यह कंठी-माला छोड़ दूंगा। जो केवल खाने के लिए ही साधु बनते हैं या बने हों उनके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

चार कान की बात ब्रह्मा भी नहीं छिपा सकता—तात्पर्य यह है कि जब कोई बात एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक पहुँच जाती है तब उसका छिपना बड़ा मुश्किल हो जाता है। तुलनीय : भोज० चार काने क बात बरम्हों ना छिपा सकेल; पंज० चारां कनां दी गल रब वी नई लुका सकदा।

चार का मुंह कौन पकड़ सकता है?—अर्थात् कोई नहीं। आशय यह है कि (क) जिस बात का प्रचार पूरे समाज में हो गया है उसे कोई नहीं रोक सकता, चाहे वह भली हो या बुरी। (ख) जब किसी स्थान पर कई व्यक्ति होते हैं और वे किसी के प्रति विभिन्न प्रकार की बातें करते है तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मैथ० चारि के मुँह के पकड़े; भोज० चार क मुँह के पकड़ी; पंज० चारां दा मुँह कूण फड़ सकदा।

चार कोस की आवा-जाही, लड़का मर गया ढोवा-पाही—चार कोस के आने-जाने और सामान ढोने में ही लड़का मर गया। जब कोई मुफ़्त की चीज़ पाकर उसका इतना उपयोग करे या उसे इतना इकट्ठा करे जिससे उसे हानि उठानी पड़ जाए तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० चारि कोस कै आवा-जाही लरिका मरिगा ढोवा पाही।

चार कौर मित्तर, तब देवता और पित्तर- नीचे देखिए।

चार कौर भीतर, तब देव और पीतर—जब पेट भरा होता है तभी देवता और पितरों की भी याद आती है (उन्हें भी कुछ देने को लोग सोचते हैं)। अर्थात् जब पेट भरा नहीं होता तो कुछ भी अच्छा नहीं लगता। तुलनीय : भोज० चार कवर भित्तर तब देवता और पित्तर; अव० चारि कौर भीतर तब देव और पीतर।

चार कौर भीतर, तब देवता और पीतर—ऊपर देखिए।

चारगोड़वा बाँधा जाय, दोगोड़वा न बाँधा जाय—पशु (चारगोड़वा) को बाँधा जा सकता है पर मनुष्य (दोगोड़वा) को नहीं। दुश्चरित्रों के प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० चारगोड़वा बाँधा जाए सकत है दुईगोड़वा नाही।

चार घर चौ भैया तेकरा बीच में भीखन भैया—सभी मनुष्य एक से नहीं होते। यहाँ तक कि एक ही घर के सगे भाइयों में फ़र्क़ हो जाता है। (भीखन – भीखमंगा)।

चार चूड़े, चार चमार, दो चुग़ल, चार चंडाल; इन चौदह का बाँधा घड़ा, जिसका नाम चौधरी पड़ा—चूड़े (जमादार, मेहतर), चमार (हरिजन), चुग़ल और चांडाल (चंडाल) ये चारों बड़े दुष्ट होते हैं। इन चारों को इकट्ठा कर दिया जाय तो वे चौधरी के बराबर हो जाते हैं। चौधरियों की भर्त्सना के लिए ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० चार चिकवा, चार चमार, चार कसाई, दुई हत्यार इनकै नाम चौधरी।

चार चोर चौरासी बनिए, एक-एक करके लूटा—चार चोरों ने चौरासी बनियों को एक-एक करके लूटा। तात्पर्य यह है कि एकता न होने से दुर्बल शत्रु से बली को हारना पड़ता है। इस पर एक कहानी है : एक बार चार चोरों ने चौरासी बनियों को कहीं जाते हुए देखा। बनिये स्वभावतः डरपोक होते ही हैं और विपत्ति आने पर एक-दूसरे की मदद नहीं करते। जब चोरों ने उनमें से एक को लूटा तो बाक़ी डर कर भाग गए। इस तरह उन्होंने बारी-बारी से सबको लूट लिया। आशय यह है कि संगठन में ही शक्ति है। यदि चौरासी बनियों में एकता होती तो चार चोर उन्हें कभी नहीं

लूट सकते थे। तुलनीय : राज० च्यार चोर चोरासी बाण्या कांई करै बापड़ा एकला बाण्या।

चार छावे, छह निरावे, तीन खाट, दो बाट—छप्पर छाने के लिए चार, खेत तिराने के लिए छह, खाट (चारपाई) बुनने के लिए तीन और रास्ता चलने के लिए दो व्यक्ति होने चाहिए।

चार जने चारहु दिशातें चारों कोन गहि चाहे जो सुमेरु को उखारें तो उखड़ जाय—चार व्यक्ति चारों दिशा से चारों कोने पकड़ कर चाहें तो सुमेरु पर्वत को भी उखाड़ दें। अर्थात् एकता में बहुत बल है। संगठित प्रयास से कठिन-से-कठिन काम भी सहज सपन्न हो जाता है।

चार जनों की बग्घी पर जाना पड़ेगा—प्रत्येक मनुष्य को मरना पड़ता है और मरने पर चार आदमियों के कंधे पर जाना पड़ता है। जो व्यक्ति दूसरों पर अत्याचार करते हैं उनको यह बताने के लिए कि तुम भी मारे जाओगे इस प्रकार कहते हैं। तुलनीय : राज० च्यार जणांरी बग्घी ऊपर जासी।

चार जात गावें हर बों(भों)ग, अहिर, डफाली, धोबी, डोम—अहीर, डफाली, धोबी और डोम इन चारों जातियों के लोगों के गाने में संगीत की गहराई नहीं पाई जाती है, इसलिए इनका गायन-स्तर सामान्य समझा जाता है।

चार टके गांठ में, हार लूं या कंठी?—गाँठ में केवल चार रुपए (टके) है और सोच रहे है कि हार खरीदूं या कंठी। जब किसी व्यक्ति के पास पूंजी तो थोड़ी हो किन्तु उसके इरादे बहुत बड़े हों तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० च्यार टका म्हारी गाँठी हूँ हार कइं कन कांठी; पंज० चार टगे गंठ विच हार लवां यां कंठी।

चार दिन का चसका यार बेचारा धसका—ऐसे स्वार्थी की ओर संकेत है जो काम निकल जाने पर ग़ायब हो जाता है।

चार दिन का रंग चंग छोड़ दईजरवा मोरा संग—(क) यौवन के प्रति कहते हैं कि यह चार दिन ही रहेगा। इसलिए थोड़े समय के भोग-विलास के लिए उम्र-भर की बुराई नहीं लेनी चाहिए। (ख) थोड़े दिन का प्यार (रंग-चंग) मुझे नहीं चाहिए। तुम मेरा साथ छोड़ दो। किसी स्त्री का अपने दुष्ट पति के प्रति कथन।

चार दिन की आइयां और सोंठ बिसाइन आइयां—चार दिन अभी ब्याह के बीते हैं और सोंठ लेने चली हैं। बहुत पहले से ही किसी काम के लिए प्रबन्ध करने पर व्यंग्य से कहते हैं। (सोंठ की आवश्यकता बच्चा पैदा होने पर होती है)।

चार दिन की कोतवाली फिर वही खुरपा वही जाली—ऐसे व्यक्ति के प्रति व्यंग्य में कहते हैं जो कुछ समय के लिए कोई उच्च पद पा जाए और फिर अपनी असली हालत में आ जाए।

चार दिन की चमर जोतिस—यदि कोई चमार ज्योतिषी बन जाय तो उसका ज्योतिष थोड़े दिन तक चलता है। जब कोई ओछा या तुच्छ व्यक्ति कुछ पाकर बहुत दिखावा करता है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० चार दिनां दा चमार जोतिस।

चार दिन की चमार चौदस है—थोड़े दिन की बहार है।

चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरा पाख—नीचे देखिए।

चार दिन की चाँदनी, फिर अँधेरी रात—(क) थोड़ा सुख पाकर घमंड करने वाले पर कहा जाता है। (ख) जब थोड़े दिन सुख भोग कर फिर दुःख भोगना पड़ता है तब भी कहते हैं। (ग) इसका प्रयोग जवानी, सौंदर्य या धन की क्षणभंगुरता बताने के लिए भी किया जाता है। तुलनीय : मरा० चार दिवसांचें चांदणें, पुढे अंधारी रात्र; माल० चार दनांरी चांदणी, फेर अँधेरी रात; गढ़० चार दिन की चांदणा फेर अंध्यरी रात; राज० च्यार दिनाँरी चानणी फेरी अंधारी; भोज० चार दिन क चाँदनी फिर अंधेरी रात; अव० चार दिना की चाँदनी फिर अँधियारी रात; मेवा० चार दिनां की चांदणी फेर अँधेरी रात; तेलु० चीकटि कोन्नाल्लु वेन्नेल कोन्नाल्लु; पंज० चारां दिना दी चाननी फिर हनेरी रात।

चार दिन की चाँदनी फेर अँधेरी रात—ऊपर देखिए।

चार दिन की चाँदनी फेरि अँधेरी रात—दे० 'चार दिन की चाँदनी फिर...'।

चार दिन को महुआ हमें दे दो, फिर तो तुम्हारा ही है—महुए का फल वर्ष में कुछ ही दिन मिलता है, पूरे वर्ष उससे कोई लाभ नहीं मिलता। फिर भी कहते हैं चार दिन का महुआ मुझे दे दो। स्वार्थियों के प्रति व्यंग्य से कहते हैं जो अपने लाभ के सामने दूसरे का लाभ-हानि नहीं देखते।

चार दिन तो आए नहीं हुए और सोंठ खरीदने लगीं—दे० 'चार दिन की आइयां...।'

चार दिना की चाँदनी, फेरि अँधेरी राति—दे० 'चार

दिन की चाँदनी फिर···'।

चार दिना की चाँदनी फेर अँधेरा पाख—दे० 'चार दिन की चाँदनी फिर···'।

चार पाँव का घोड़ा चौंकता हैं, तो दो पांव का आदमी क्या बला है—आदमी के चौंकने पर व्यंग्य से कहा जाता है।

चार पाँव का घोड़ा भी चूक जाता है—जब किसी से कोई ग़लती हो जाती है तो उसके प्रति सहानुभूति रखने वाले लोग ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० चार पैरां दे कौड़े तो वी गलती हो जांदी है।

चार पाँव का हाथी भी फिसल जाता है—अर्थात् बड़ा हो चाहे छोटा ग़लती सभी करते हैं। तुलनीय : भोज० चार गोड़ क हथिया कबे-नबे बिछलाले; पंज० चारां पैरां दा हाथी वी तिलक जांदा है।

चार पाए बरों किताबे चंद—पशु के ऊपर पुस्तकें लादी हुई। शिक्षित मूर्ख के प्रति व्यंग्य से ऐसा कहते है। (यह फ़ारसी की कहावत है)।

चार पैसे की हंडी गई, कुत्ते की जात पहचानी गई—जब कोई व्यक्ति थोड़ी-सी चीज़ के लिए अपना ईमान खो देता है तब उसके प्रति ऐसा कहते है। तुलनीय : बुंद० अड़की की हंड़िया फूटी सो फूटी, कुत्ता की जात तौ पैचानी।

चार बासन जहाँ होंगे वहाँ खटकेंगे ही—जहाँ पर कुछ आदमी साथ-साथ रहते है उनमें परस्पर कभी न कभी झगड़ा हो ही जाता है। जब किसी परिवार में या पड़ोसी से झगड़ा हो जाता है तब मेल कराने के लिए ऐसा कहते हैं। तुलनीय : चार पांडे जित्थे होणगे खड़कणगे; ब्रज० चारि बासन जहां होंइ गे, वहीं खटकिंगे।

चार बेटे राम के, कौड़ी के न काम के—राम के चार बेटे है पर वे किसी काम के नहीं है। किसी के नालायक या निकम्मे लड़कों के प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : छत्तीस० चार बेटा राम के, कौड़ी के न काम के; पंज० चार पुतर राम दे पैहे दे ना कम्म दे।

चार बेद एक ओर, चतुराई एक ओर—यहाँ चतुराई का अर्थ सफलता से है। व्यावहारिक जीवन में सफलता पाने के लिए चतुर होना आवश्यक है। इसलिए चतुराई ज्ञान से बड़ी चीज़ है। तुलनीय : पंज० चार बेद इक पासे चलाकी इक पासे।

चार बेद, पाँचवाँ भबेद—गप्प हांकने वाले के प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

चार महीने हाल का, चार महीने ताल का चार महीने पाल का—बरसात में ताज़ा, जाड़े में तालाब का और गर्मी में रखा हुआ अर्थात् घड़े आदि का पानी पीना चाहिए। तुलनीय : अव० चार महीना हाल का, चार महीना ताल का, चार महीना पाल का।

चार साल बुरा हवाल—घोड़े के ऊपर कहा गया है, क्योंकि घोड़े के लिए प्रारंभिक चार वर्ष अनिष्टकारी होते हैं। तुलनीय : पंज० चार साल बुरा हाल।

चार हाथ-पांव सबके हैं—(क) लड़ाई-झगड़े में ऐसा कहा जाता है। (ख) सब में कुछ न कुछ करने की शक्ति होती है। जब कोई किसी के प्रति बहुत रोब दिखाता है कि मैं यदि न रहूँ या करूँ तो तुम्हारा गुज़र नहीं होगा तब वह ऐसा कहता है। तुलनीय : पंज० चार हत्थ पैर सारियां दे हन।

चारि के चार मत—प्रत्येक की राय एक-दूसरे से भिन्न होती है। या हर व्यक्ति अलग-अलग विचार का होता है। तुलनीय : पंज० चार आदमियाँ दे चार जवाब, ब्रज० चारि की चारि गति।

चारू कभी न हारू—चरने वाला कभी हारता नहीं। जो व्यक्ति या पशु पेट-भर खाता है वह कभी दुर्बल नहीं होता और न ही थकता है। तुलनीय : राज० चारू कदे न हारू; बुंद० चारू सो भारू, पंज० चारू कदी नईं हारदा; ब्रज० चारू कबऊ न हारूँ।

चारू सो भारू—(क) जो बहुत खाते हैं वे भार भी अधिक उठाते है। (ख) जो बहुत खाते हैं वे भार-स्वरूप बन जाते हैं।

चारे से बैर करे तो चरे क्या?—यदि पशु चारे से दुश्मनी कर ले और उसे खाना छोड़ दे तो वह क्या खाएगा? (क) जो जिसका भोज्य पदार्थ है वह उसे छोड़ दे तो उसका जीना मुश्किल हो जाएगा। (ख) व्यापारी यदि लाभ न ले तो उसका दिवाला निकल जाएगा। तुलनीय : ब्रज० चारे ते बैर करैगो तौ खायगो कहा; पंज० कौड़ा चारे नाल यारी करे तां खाये की।

चारों ओलती टपकती हैं—चारों ओर से या हर तरह से विपत्ति में घिर जाने पर कहते है।

चारों रास्ते मोकले—स्वतन्त्र मनुष्य को कहते है, जिसके सभी रास्ते खुले रहते हैं। तुलनीय : हरि० तेरे चारूँ राह मोकळे।

चाल चलें सादा कि निबहै बाप-दादा—रहन-सहन का तरीक़ा ऐसा होना चाहिए जो ज्यादा दिनों तक निभ सके।

कभी बहुत अच्छा खाना-पहनना और कभी बहुत बुरा खाना-पहनना ठीक नहीं होता। इसलिए मध्यम मार्ग अच्छा है।

चाल में गिड्ड-बिड्ड, मतलब में चौकस—दे० 'चाल में डग्गम-डग्गा···'।

चाल में ढुलमुल, मतलब में चौकस—नीचे देखिए।

चाल में डग्गम डग्गा, मतलब में चौकस—(क) जो देखने में मूर्ख हो पर काम में होशियार हो उस पर यह लोकोक्ति कही जाती है। (ख) ऊपर से बहुत सीधे, किंतु अपने मतलब में चौकन्ने रहने वाले पर भी कहते हैं। तुलनीय: अव० चाल में गिड्डु-पिड्डु मतलब में चौकस।

चालाक के चार हिस्से—चालाक व्यक्ति अधिक लाभ पाता है।

चालाक कौवा मैले पर ही बैठता है—कौवा जो अपने को सबसे चालाक समझता है, पाखाने पर ही जाकर बैठता है। अपने को बहुत बुद्धिमान और चतुर समझने वाले भी जब कोई धोखा खाते हैं तो उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय: माल० चतर कागलो मैला परे बैठे, पंज० सयाणा कौं गू तेड़ू बैठदा ए।

चालाक चार जगह ठगा जाता है—अपने को बहुत चालाक समझने वाले जब कभी धोखा खा जाते हैं तब उनके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते है। तुलनीय: पंज० सयाणा चार थां ठगया जांदा है।

चालाक फँसे चालाकी से—चालाक अपनी चालाकी के कारण ही मुसीबत में फँसता है। तुलनीय: गढ़० चतुर का चार जगा: पंज० सयाणा फसया सयाणप बिच।

चालीस तो घालीस—मतलब यह है कि चालीस वर्ष के बाद व्यक्ति की शारीरिक शक्ति में ह्रास होना शुरू हो जाता है।

चालीस वर्ष का रेज़ा—(क) गँवार या मूर्ख पर कहा जाता है। (ख) जब कोई अधिक उम्र का होते हुए भी अपने को कम उम्र का बतलाता है तब उसके प्रति व्यंग्य मे ऐसा कहते है।

चालीस सेरा ऊत—मूर्ख या बुद्धू को कहते है। तुलनीय: ब्रज० चालीस सेरो ऊत।

चालीस सेरी बात कहते हैं—तुली हुई अथवा बहुत वज़नी बात कहते हैं।

चाव घटे नित के घर जाए, भाव घटे कुछ मुख से माँगे; रोग घटे कुछ ओषधि खाए, ज्ञान घटे कुसंगति पाए—लोक-मान्यताएँ हैं। प्रति दिन किसी के यहाँ जाने से आदर में कमी आ जाती है, किसी से कुछ माँगने पर मोल घट जाता है, दवा खाने से बीमारी कम होती है तथा बुरे आदमियों की संगति में रहने से ज्ञान घटता है।

चावल और दोस्त पुराने ही अच्छे—ये दोनों पुराने ही अच्छे होते हैं। तुलनीय: उज़० कपडे नए अच्छे किंतु दोस्त पुराने; पंज० चौल अते मितर पुराने चंगे; अं० Old is gold.

चावल की कनी और भाले की अनी—चावल का थोड़ा-सा भी कच्चा (कनी) रह जाना तथा भाले का छोटा-सा घाव भी कष्टदायक होता है।

चावल न दाल खटाई बिन फ़जीहत—न तो चावल है, न ही दाल और कहते हैं खटाई के बिना स्वाद नहीं आ रहा है। डींग हाँकने वालों के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय: भोज० चाउर न दालि खटाई बिना फजीहत; सूत न कपास जुलाहों में लट्ठम लट्ठा।

चावल पचे टावल—चावल जल्द (टावल) हज़म हो जाता है।

चावल बेच कोदों ली, यह अक्ल तुझे किसने दी—जब कोई व्यक्ति मूर्खतावश या किसी के सिखाने से अच्छी वस्तु देकर या बेचकर सस्ती वस्तु ले तो व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय: पंज० चौल दे के कोदरों लयी इह अकल किन दित्ती; ब्रज० चामर बेचि कोदों लई, इ अकलि तोयै कौने दई।

चाह कन रा चाह दरपेश—दूसरे के लिए कुआँ खोदने वाले के लिए पहले ही कुआँ खुद जाता है। तात्पर्य यह है कि दूसरे की बुराई चाहने वाले की बुराई अपने आप होती है। तुलनीय: मल० तान् कुषिच्च कुषियिल् तान् तन्ने चाटुम्; अं० He who digs a pit for others falls in it himself.

चाह करूँ, प्यार करूँ, चूतर तले अंगार धरूँ जल जाय तो मैं क्या करूँ—झूठे प्यार पर कहा जाता है।

चाह कुन रा चाह दर पेश—दे० 'चाह कन रा···।'

चाह चमारी चूहरी सब नीचन की नीच—तृष्णा या लोभ सबसे बुरा होता है।

चाहत की चाकरी कीजै, अर चाहत का नाम न लीजे—जो अपना सम्मान करे उसकी ग़ुलामी करना अच्छा, पर जो अपमान करे उसका नाम लेना भी पाप है। आशय यह है कि जो इज़्ज़त करे उसी से साथ करना चाहिए।

चाहने के नाम गधी भी खेत खाना छोड़ देती है—अगर गधी के कान में कह दें कि 'हूँ तुझ पर फ़िदा' तो यह मुमकिन है कि वह भी खेत खाना छोड़ दे। (क) लगन या प्रेम बुरी

चीज़ होती है और मनुष्य की कौन कहे, पशु भी इसमें पड़कर बेचैन रहता है। (ख) प्रशंसा प्रत्येक व्यक्ति के लिए सुखकर होती है।

चाहले की भेंस—मोटी औरतों पर व्यंग्य। जो पुरुष अपनी मोटी-ताज़ी स्त्री को काफ़ी प्यार करता है उसे कहते हैं।

चाहे कटवा लो, चाहे निरवा लो—चाहे खेत की निराई करा लो चाहे फ़सल कटवा लो। (क) मुझे तो मज़दूरी से मतलब है जो काम चाहे करा लो। (ख) एक समय में एक ही काम हो सकता है। तुलनीय : मेवा० खड़ कटाओ चावे गेले चलाओ; ब्रज० चाहै कटवाइलै चाहै नरवाइलै।

चाहे कुत्ता पिए सुरुकका, कभी न कर विश्वास तुरुकका—कुत्ता आदमी की तरह पानी पी ले (जो असंभव है) तब भी मुसलमान का विश्वास न करे। मुसलमानों की खिल्ली उड़ाने के लिए कहते है। तुलनीय : अव० चाहे कुकुर पिए सुरुक्का, तऊं न करु विश्वास तुरुक्का।

चाहे कोदों दला ले, चाहे मंडुवा पिसा ले—दे० 'चाहे कटवा लो चाहे⋯'।

चाहे चें कर चाहे में कर, काले-काले एक न छोडूंगा—चाहे रोओ चाहे गाओ कुछ छोड़ूँगा नही। अर्थात् सब खा जाऊँगा।

चाहे छुरी खरबूजे पर गिरे चाहे खरबूजा छुरी पर—हर हालत में खरबूज़ा ही कटेगा। (क) जब किसी व्यक्ति को हर दशा में नुक़सान सहना पड़े तब कहते हैं। (ख) जब किसी को हर दशा में लाभ हो तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० भलां ही छुरी खरबूजै पर पड़ो, भलां ही खरबूजो छुरी पर पड़ो; पंज० पांवे चाकू खरबूजे उत्ते डिगे पांवें खरबूजा चाकू उत्ते; ब्रज० चाहै छुरी खरबूजे पे गिरै, चाहै खरबूजो छुरी पै।

चाहे सोना उछालते जाओ—चाहे सोने को हाथ में लेकर उछालते जाओ कोई कुछ नहीं करेगा। निरापद स्थान के प्रति कहते हैं जहां किसी प्रकार की चोरी आदि का डर न हो। तुलनीय : राज० सोनो उछाळता जावो।

चिंडाल न छोड़े मक्खे, न बाल—चंडाल (चिंडाल) मक्खी (मक्खे) और बाल भी नहीं छोड़ते। ऐसे व्यक्ति के प्रति कहते हैं जो सब कुछ खा जाता है।

चिंता चिता से भी बुरी—चिता तो मरे को जलाती है पर चिंता जीवित को जला देती है, अतः चिंता चिता से भी अधिक ख़तरनाक या बुरी है। तुलनीय : पंज० फिकर मरण तों पैड़ी; ब्रज० चिंताचिताऊ ते बुरी।

चिंतामणि परित्याज्य काचमणि ग्रहण न्याय—चिंतामणि का त्याग करके काचमणि को ग्रहण करने का न्याय। संसार में अनेक मनुष्य ऐसे होते हैं जो आध्यात्मिक ज्ञान-प्राप्ति की अपेक्षा भौतिक भोग-विलास करना अधिक श्रेयस्कर समझते हैं। उन्हीं लोगों को ध्यान में रखकर यह लोकोक्ति कही जाती है।

चिंता सांपिन काहि न खाई—नीचे देखिए।

चिंता सांपिन काहि न खाया—संसार में ऐसा शायद ही कोई मनुष्य हो जिसे चिंता न व्यापी हो। अर्थात् सभी लोगों को कोई-न-कोई चिंता लगी रहती है।

चिउंटी लेत समुंदर थाह—चिउंटी समुद्र में थाह लेने चली है। जब कोई व्यक्ति अपनी सामर्थ्य से बाहर किसी बहुत बड़े कार्य को करने की तैयारी करता है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० कीड़ी चडी पहाड उत्ते।

चिकना घड़ा हो गया है—उस निर्लज्ज तथा मूर्ख व्यक्ति के लिए कहते हैं जिस पर उपदेश और चेतावनी का कोई असर न हो। तुलनीय : पंज० तिलकना कंडा हो गया है; ब्रज० चीकनों घड़ा है गयौ है।

चिकना देख फिसल पड़े—(क) किसी की सुंदरता पर मुग्ध हो जाने वाले के प्रति कहते हैं। (ख) जब कोई किसी वस्तु की उपयोगिता पर ध्यान न देकर बल्कि उसकी तड़क-भड़क देखकर उसे खरीद ले तब भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० तिलकना देख के तिलक पयै; ब्रज० चीकनों देख्यौ और फिसलि परे।

चिकना मुँह पेट खाली—खाने को नहीं मिलता पर ऊपर से मुँह चिकनाए हुए है। कोरी दिखावट करने पर यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : अव० चिक्कन मौंह खाली पेट; हरि० दिल्ली की दिलवाली मुंह चीकणे पेट खाली।

चिकना मुंह सब देखते हैं—दे० 'चिकने मुँह को सब⋯'।

चिकनियां फ़क़ीर मखमल का लंगोट—(क) फ़क़ीर होने पर भी शौक़ न जाय तब कहते हैं। (ख) जब कोई सामान्य स्थिति या स्तर का व्यक्ति काफ़ी तड़क-भड़क से रहता है तब भी उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

चिकनी-चुपड़ी बातों से पेट नहीं भरता—केवल आदर्श की या कोरी बातों से काम नहीं चलता। तुलनीय : पंज० चंगियां गलां नाल टिड नईं परौंदा; ब्रज० चीकनी चुपरी बातन ते का पेट भरै।

चिकनी बातें जिन पतयाओ—मीठी (चिकनी) बातों पर विश्वास नहीं करना चाहिए। चापलूसी या चाटुकारिता करने वालों से सावधान रहना चाहिए। मीठी-मीठी बातें करने वाले बड़े खतरनाक होते हैं। ऐसे लोगों के जाल से बचने के लिए ऐसा कहते हैं।

चिकनी होत मजेदार, चिकनी होत खतरनाक—बाह्य सौंदर्य-युक्त वस्तु इंद्रिय-सुख तो दे सकती है, पर उसका परिणाम बड़ा भयंकर होता है। तुलनीय: पंज० चंगियां मजेदार वी हुंदियां हन अत पैंडियां वी हुंदियां हन; ब्रज० चीकनी अच्छीऊ होयै और बुरी ऊ।

चिकने का मुंह बिल्ली चाटे—जिनसे कुछ प्राप्त होने की उम्मीद रहती है लोग उन्हीं की खुशामद करते हैं। या सबल एवं शक्तिशाली की खुशामद या चाटुकारिता सभी करते हैं। तुलनीय: कौर० चिकने मुँह बिल्ली चाटे।

चिकने गलवा मलवा के—धनी के गाल चिकने होते हैं या धन होने पर ही गाल चिकने होते हैं। आशय यह है कि संपन्न व्यक्ति ही सुखमय जीवन व्यतीत करता है या कर सकता है।

चिकने गाल तिलिनियां के और जरे-बरे भुरजिनियां के—तेलिन के घर में तेल का काम होता है, इसलिए उसके गाल चिकने होते हैं क्योंकि वह तेल लगाए रहती है, पर भुजइन (भड़भूंजी) का मुँह काला हो जाता है क्योंकि वह सदा आग के सामने और धुएँ में काम करती है। आशय यह है कि आदमी जैसा काम करता है वैसी ही उसकी वेश-भूषा तथा दशा हो जाती है। तुलनीय: ब्रज० चीकने गाल तेलिनी के, जरे भुँजे भरभूजिनि के।

चिकने गाल तेलिनियां के, जले-भुने भड़भुजिनियां के- ऊपर देखिए।

चिकने घड़े का पानी— नीचे देखिए।

चिकने घड़े पर पानी नहीं ठहरता—बेशर्म या निर्लज्ज व्यक्ति के प्रति कहते हैं जिस पर डाँट-फटकार या उपदेश का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। तुलनीय: भोज० चिकने गगरी पर पानी नाहीं रुकेला; अव० चिक्कन गगरी पै पानी नाही रहत; राज० चोपड्ये घड़े छांट कोलागै नी; मरा० गुळगुळीत घड्यावर पाणी ठरत नाहीं; ब्रज० चीकने घड़ा पै का पानी रुकै।

चिकने मुंह को सब चूमते हैं—(क) अच्छे या सुंदर की ओर सभी आकर्षित होते हैं। (ख) बड़ों की खुशामद सभी करते हैं। तुलनीय: अव० चिक्कन मुंह का साथ कोउ चूमै; मरा० गुळगुळीत मुखाचें सगळे च चुंबन घेतात; भोज० चिक्कन मुंह के सभे चुम्मा लेला; मैथ० चिकना मुंह के सबेह चुम्मा लिए; ब्रज० चीकने मुँह ऐ तौ सबई चाटें।

चिकने मुँह को सभी चाटते हैं - ऊपर देखिए।

चिकने मुँह को सभी चूमते हैं—ऊपर देखिए।

चिकने मुँह को सभी चूमे—दे० 'चिकने मुँह को सब···'।

चिकने मुँह पेट खाली—दे० 'चिकना मुंह पेट···'।

चिट्टे में पतवा मेरा (और) बेटा जोवे तेरा—जब कोई व्यक्ति किसी का काम कर दे और मालिक को धोखे में रखकर अपना लाभ कमा ले तब उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

चिट्ठी न परवाना, मार खाए मलिक बेगाना—अकारण किसी को दंड मिलने पर कहते हैं। कुछ पुस्तकों में इसका अर्थ इस प्रकार भी दिया गया है—बिना पूछे दूसरे की वस्तु का प्रयोग करने पर ऐसा कहते हैं।

चिड़ा मरन गंवार हँसी— चिडिया (चिड़ा) मर गई और मूर्ख (गँवार) हँसता है। जब एक का नुकसान हो और दूसरा उसे देखकर खुश हो तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय: पंज० चिड़ा मरया गँवार हँसया; ब्रज० चिरैया कौ मरन और गँमार की हँसी।

चिड़िया अपनी जान से गई, खानेवाले को स्वाद न आया—जब किसी के काफ़ी श्रम करने के बावजूद लोग उसके श्रम या कार्य से संतुष्ट नहीं होते तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय: पंज० चिड़ी अपनी जाण तों गयी खाँण वाले नूं सुआद नईं आया; ब्रज० चिरैया ज्यौ ते गई खाइबे बारेन्ने स्वादई न आयौ।

चिड़िया अपनी जान से गई, लड़का खुश न हुआ—ऊपर देखिए।

चिड़िया और दूध—असंभव बात या काम पर कहते हैं, क्योंकि चिड़िया के दूध नहीं होता। तुलनीय: पंज० चिड़ी अते दुद; ब्रज० चिरैया और दूध।

चिड़िया करे खोंचा, चिड़ा करे नोचा—चिड़िया तिनके लाकर घोंसला (खोंचा) बनाती है और चिड़ा उसे नोंच-नोंच कर नष्ट करता है। (क) जब पत्नी संयमी और पति खर्चीला हो तब ऐसा कहते हैं। (ख) जब घर का एक व्यक्ति श्रम करके इकट्ठा करे और दूसरा उसे निःसंकोच खर्च करे तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय: ब्रज० चिरैया खोमचा करै और चिरौटा नोंचा करै।

चिड़िया का जान जाय, लड़कों का खिलवाड़—दे० 'चिड़िया की जान गई···'।

चिड़िया का जीव जाय लड़के का खिलौना—दे० 'चिड़िया की जान गई…'।

चिड़िया का धन चोंच—ऐसा निर्धन व्यक्ति के प्रति कहते हैं जिसके पास कुछ भी न हो, केवल मजदूरी करके वह अपना पेट भरता हो।

चिड़िया की चोंच में चौथाई हिस्सा—चिड़िया की चोंच में मेरा भी चौथाई हिस्सा होता है, जब कोई किसी गरीब या निर्बल की वस्तु में अकारण ही हिस्सा माँगे या ले ले तब ऐसा कहते हैं।

चिड़िया की जान गई, लड़के का खिलौना—जब कोई विपत्ति में पड़ जाय और दूसरा उसके कष्टों की कोई चिंता न करके उलटे हँसे या खुश हो तब ऐसा कहते है। तुलनीय: भोज० चिरई क जान जाय लइकन क खेलवना; मरा० तुमचा खेळ होता आम चा जीव जातो; पंज० चिड़ो दी जाण गयी मुंडे दा खडोना।

चिड़िया की जेब मांडे का फफोला—अत्यंत अल्पाहारी व्यक्ति के लिए कहते हैं।

चिड़िया की पहुँच पेड़ तक—जब किसी की सामर्थ्य बहुत कम होती है या उसका परिचय साधारण लोगों तक ही होता है और वह उन्हीं के बल पर काफी उछल-कूद मचाता है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते है।

चिड़िया के मुंह में सोना—(क) बड़े आदमी जो भी कहें वह ठीक है। (ख) बच्चे (जो प्राय: भोले और मासूम होते है) जो कहते है सत्य कहते हैं। तुलनीय: पंज० चिड़ी दे मूँह विच सोणा, ब्रज० चिरैया के मूँह में सोनों।

चिड़िया के शिकार में शेर का सामान—(क) किसी छोटे से काम के लिए बहुत बड़ी तैयारी करने पर व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। (ख) छोटे काम में पूर्णत: सतर्क रहने के लिए भी ऐसा कहते है। तुलनीय: पंज० चिड़ी दे शिकार विच सेर दा समान; ब्रज० चिरैया की सिकार कूं सेर को सामान।

चिड़िया को शाहीन से क्या काम?—चिड़िया को शाहीन (एक प्रकार का बाज पक्षी) से कोई मतलब नहीं होता, क्योंकि शाहीन अन्य पक्षियों को मार डालता है। आशय यह है कि (क) सज्जन लोग दुष्टों से दूर ही रहते है। (ख) निर्बल व्यक्ति सदा बलवानों से डरता है और उनसे दूर रहने का ही प्रयत्न करता है।

चिड़िया चौंके, न बाज फड़के—पूर्ण निस्तब्धता होने पर कहते हैं।

चिड़िया मरन गँवार हँसी—दे० 'चिड़ा मरन गँवार…'।

चिड़ियों की जान जाय, लड़कों का खिलौना—दे० 'चिड़िया की जान गई…'।

चिड़ियों की मौत गँवार की हँसी—दे० 'चिड़ा मरन गंवार…'।

चिड़ियों के शिकार में शेर का सामान—दे० 'चिड़िया के शिकार में…'।

चिड़ियों से खेत छिपते नहीं—जो जिस क्षेत्र का ज्ञाता होता है उससे उस क्षेत्र की कोई बात या चीज़ छिपती नहीं। तुलनीय: राज० चिड़्याँ सूं खेत छाना कोनी; पंज० चिड़ियाँ नाल खेत लुकदे नईं; ब्रज० चिरैयान ते का खेत छिपें।

चिड़ी चोंच भार ले गई नदी न घटयो नीर—चिड़िया के पीने से नदी का पानी कम नहीं होता। तात्पर्य यह है कि धनी यदि थोड़ा सा धन दान कर दे तो उसे कुछ अंतर नहीं पड़ता किंतु निर्धन को जीने का सहारा मिल जाता है। तुलनीय: गढ़० खौ बाघ लाल खाव, नि खौ बाघ लाली खाव; गढ़० पोछ लू का पियांन समोदर नि सूखद, पंज० चिड़ी चुंज भर के लै गयी नदी दा पाणी नईं कटया; ब्रज० चिरी चौंचि भरि लै गई नदिया घट्यौ न नीर।

चिड़ी मार का टोला, भाँत-भाँत का पंछी बोला—(क) चिड़ीमारों के मुहल्ले में हर तरह की चिड़ियों की बोली सुनाई पड़ती है। (ख) जिस सभा या संस्था में जितने आदमी हों उतने ही मत हों तब भी कहते हैं। (ग) आगरे में चिड़ीमार टोला नाम का एक बाज़ार है जहाँ पर शाम को हर प्रकार के मनुष्य दिखाई पड़ते है और बड़ी धूमधाम रहती है। तुलनीय: ब्रज० चिरीमार को टोला, भाँति-भाँति को पंछी बोला।

चिड़ीमार हमेशा भूखे नंगे रहते हैं—(क) चिड़िया मारने वाले सदा फटेहाल रहते हैं। (ख) ग़रीबों को कष्ट देने वाला कभी सुखी नहीं रहता। तुलनीय: पंज० चिड़ीमार भुखा नंगा रैंदा है।

चित भी मेरा पट भी मेरा, अंटा मेरे बाप का—ऐसे व्यक्ति के प्रति व्यंग्य में कहते हैं जो हर दशा में अपना ही लाभ चाहता हो। (अंटा—ऐसी कौड़ी जो न पूरी चित्त हो, न पट्ट हो)। तुलनीय: हरि० चित मेरी, पट्ट मेरी, अंटा मेरे बाब्बू का; ब्रज० चित्त ऊ मेरी, पट्ट ऊ मेरी अंटा मेरा बाप को।

चित भी मेरी पट भी मेरी—सब तरह से मेरी जीत है। (क) हर तरह से लाभ उठाने वाले स्वार्थी व्यक्ति के

प्रति कहते हैं। (ख) ज़बरदस्त (शक्तिशाली) के प्रति भी कहते हैं जो हर दशा में अपना ही अधिकार जमाना चाहता है। तुलनीय : माल० चट भी मारी ने पट भी मारी; गढ़० पुगती मारी में जुगती, तितरी मारी में भितरी।

चिता दहति निर्जीव कहँ, चिंता जीव समेत—चिता तो नर्जीव को जलाती है, किंतु चिंता जीवित ही को जला देती है। आशय यह है कि चिंता बुरी चीज़ होती है।

चित्त चंदेरी मन मालवे—दिल चंदरी (एक नगर) में है और मस्तिष्क मालवे में। अस्थिर चित्त व्यक्ति के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० चत चंगेडी मन मालवे हियो हाड़ोती जाय; बुंदे० चित्त चंदेरी, मन मालवे; मेवा० चत चंगेडी मन मालवे, हियो हाड़ोती जाय।

चित्त भी तुम्हारा और पट्ट भी—प्रत्येक दशा में अपना ही लाभ सोचने पर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० चित्तो तोहरे आ पट्टो तोहरे।

चित्त भी मेरी पट्ट भी मेरी, अंटी (अटा) मेरे बाप की—दे० 'चित भी मेरी पट···'।

चित्त में न पट्ट में—(क) जो व्यक्ति किसी भी ओर न रहे, अर्थात् तटस्थ रहने वाले के प्रति कहते हैं। (ख) जो काम अधूरा या अपूर्ण रह जाय उसके प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : राज० चित में न कोई पुट में; ब्रज० चित्त में न पट्ट में जो है सो मेरे लट्टु में।

चित्त हो गए तो क्या, टाँग तो ऊपर ही है—कुश्ती में चित हो गए तो क्या हुआ टाँग तो ऊपर ही है, गिरी नहीं। जो व्यक्ति पराजित हो जाने पर भी पराजय स्वीकार न करे अपितु कोई मूर्खतापूर्ण बहाना बनाए तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० पड्या तो काई हुयो, टांग तो ऊपर ही है, पड्यो पण टांग तो ऊंची ही राखी; पंज० चिते हो गये तां की लत्त तां उत्ते ही है।

चित्राङ्गना न्यायः—चित्र में स्थित स्त्री का न्याय। वास्तविकता की बाह्य रूपरेखा के संदर्भ में प्रस्तुत न्याय का प्रयोग किया जा सकता है।

चित्रा गेहूँ अद्रा धान, न उनके गेरुई न इनके घाम—चित्रा नक्षत्र में गेहूँ बोने से गेरुई नही लगती और आद्रा नक्षत्र में धान बोने से धान को धूप नहीं लगती।

चित्रा दीपक चेतवे, स्वाते गोबरधन्न; डंक कहे है भड्डली, अथग नीपजे अन्न—डंक भडुरी से कहते हैं कि यदि दीवाली में चित्रा नक्षत्र हो और गोवर्धन पूजा के दिन स्वाति नक्षत्र हो तो अथाह अन्न उपजेगा। यानी पैदावार अच्छी होगी।

चित्रा बरसे तीन गए, कोदों, तिली, कपास; चित्रा बरसे तीन भए गेहूँ, शक्कर मास—चित्रा नक्षत्र में वर्षा होने से कोदों, तिल तथा कपास की फ़सल नष्ट हो जाती है और गेहूँ, गन्ना तथा उर्द (मास) की फ़सल अच्छी होती है।

चित्रा बरसे जाय, मेथी, लतरा, ईख—चित्रा नक्षत्र में पानी बरसने से मेथी, लतरा (लोबिया) तथा ईख को नुक़सान होता है। तुलनीय : अव० चीत के बरखे तीनि जायँ, मोती मास उखार।

चित्रा स्वाति बिसाखड़ी जो बरसं असाढ़, चलो नरां बिदेसड़ो परिहे काल सुगाढ़—आषाढ़ मास में चित्रा, स्वाति और बिशाखा नक्षत्रों में वर्षा होने से इतना बड़ा अकाल पड़ता है कि लोगों को विदेश में शरण लेनी पड़ती है।

चिरई का चिउ जाय लड़िका का खेल—दे० 'चिड़िया की जान गई···'।

चिरई का धन चोंच—दे० 'चिड़िया का धन ··'।

चिरई में कौवा / कौआ आदमी में नौवा—पक्षियों (चिरई) में कौवा और आदमियों मे नाई (नौवा) बड़े चालाक होते हैं। तुलनीय : छत्तीस० चिरइ माँ कौवा, आदमी माँ नौवा; ब्रज० चिरैयान में कौआ, आदिमीन में नौआ।

चिरले चार बघरले पाँच—बहुत मोटे-ताज़े या विशाल-काय लोगों को मज़ाक़ में ऐसा कहते है कि यदि इन्हें चीरा जाय तो साधारण जैसी चार-पाँच देह (शरीर) होंगी।

चिराग़ गुली पगड़ी ग़ायब—दीपक (चिराग़) बुझते ही पगड़ी ग़ायब हो गई। (क) कुव्यवस्था पर ऐसा कहते हैं। (ख) जब किसी भले समाज में कुछ ऐसे बुरे लोग पहुँच जाएँ और थोड़ा-सा अवसर पाते ही कुछ नुक़सान कर बैठें तब भी ऐसा कहते है। तुलनीय : पंज० दीवा बुझया पग गुआची; ब्रज० दीयौ बुझयौ और पाग गई।

चिराग़ जला दाँव गला—चोरों या बदमाशों के लिए कहते हैं। (क) प्रकाश होने पर चोरों को चोरी करने का अवसर नही मिलता। (ख) अच्छी व्यवस्था होने पर गुंडों या बदमाशों को शरारत करने का मौक़ा नही मिलता।

चिराग़ तले अँधेरा-(क) जो दूसरों को उपदेश दे और स्वयं उसके अनुसार आचरण न करे, उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। (ख) जहाँ विशेष न्याय, सुरक्षा आदि पर विचार करने की आशा हो और वहाँ भी ग़लत या अनुचित काम हो तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० दीया तरे अन्हार; तेलु० दीपमु किंदने चीकटि; अव० चिराग तरे

अंधियार; राज० दियेरे हेठे इंधारो हुया करै; भीली—दीवा नीचू अंधारू; माल० आंखा हीटे अंधारो; गढ़० दिवा मूड़े अंध्यारो; मरा० दिव्याखाली अंधेरे; मल० पूजारिक्कु दैवत्ते भयमो; पंज० दिये हे हनेरा; ब्रज० दीवे के नीचें अंधरो; अं० Nearer the church farther from God.

चिराग़ में बत्ती और आँख में पट्टी—जो शाम होते ही सो जाता है उस पर कहा जाता है। तुलनीय : मरा० दिव्यांत बात नि डोल्यावर पट्टी।

चिराग़ मेरा है, रात उनकी—मेरे ही चिराग़ से रात को प्रकाश होता है। जब किसी व्यक्ति की सहायता से किसी दूसरे की इज्ज़त बढ़ती है तब वह ऐसा कहता है। तुलनीय : पंज० दिया मेरा है रात उस दी।

चिराग़ रोशन मुराद हासिल— दीपक (चिराग़) जल गया इच्छा (मुराद) पूरी हो जाएगी। (क) मुसलमानों का ऐसा विश्वास है कि पीरों की दरगाह में दीपक जलाकर रखने से मनोकामनाएँ पूरी हो जाती है। (ख) नक्शबंदी संप्रदाय के फ़क़ीर हाथ में जलता दीपक लेकर उक्त कहावत को कहते हुए भीख माँगते है। उनके कहने का मतलब होता है कि दीपक जल गया है जो भिक्षा देगा उसकी इच्छाएँ पूरी हो जाएँगी।

चिराग़ से चिराग़ जलता है—यह कहावत उस समय की है जब दियासलाई का आविष्कार नहीं हुआ था और दीये से दीया जलाया जाता था। इसका अर्थ है कि (क) मनुष्य से मनुष्य की उत्पत्ति होती है, या पुत्र से वंश की रक्षा होती है। (ख) एक के सत्कार्य से दूसरे को उसका अनुसरण करने की प्रेरणा मिलती है। तुलनीय : पंज० दिये नाल दिया बलदा हे; ब्रज० बार्ता ते बाती जरै।

चिरैया में चोर-फार, असरेखा में टार-टार, मथा में कोदो सार—चिरैया नक्षत्र में साधारण जुताई से भी जड़हन की फ़सल अच्छी हो जाती है, अश्लेषा नक्षत्र में अच्छी जुताई से तथा मघा नक्षत्र में उत्तम जुताई से तथा खाद डालने से फ़सल अच्छी होती है।

चिलम की आग, बाकी का मारा गाँव—चिलम से लगी आग सारे गाँव को जलाकर भस्म कर देती है और जिस गाँव का लगान नहीं चुकाया जाता उस गाँव को राजा का क्रोध नष्ट कर देता है।

चिलुओं के डर कथरी तजें—चीलरों के डर से कथरी (फटे-पुराने वस्त्रों से बना बिस्तर) छोड़ दे रहे हैं। जो व्यक्ति साधारण कठिनाई से किसी काम को छोड़ देते हैं उनके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। (चीलर = एक प्रकार की जूँ या जूँ की एक जाति)।

चिल्लड़, चमोकन, चिथड़ा, ये तीनों बिपता का बखेड़ा—शरीर या कपड़े में जूँ का पड़ना, मार खाना (चमोकन) और फटे-पुराने वस्त्र (चिथड़ा) ये तीनों बहुत बड़ी विपत्ति हैं। ऐसी स्थिति ग़रीबों की ही होती है।

चिल्लड़ चुनने से भगवा हलका नहीं होता—कपड़े में से चीलर (चिल्लड़ = एक प्रकार की जूँ) निकाल देने से कपड़ा हल्का नहीं होता। आशय यह है कि किसी समस्या का थोड़ा-सा अंश हल कर देने से समस्या हल नहीं होती या समाप्त नहीं होती।

चिल्लड़ मारे कुत्ता खाए—चीलर (चिल्लड़) मार कर कपड़े साफ़ रखते हैं और कुत्ता मारकर खा जाते हैं। जो व्यक्ति छोटी या साधारण चीजों के लिए अपने को निर्दोष या पाक-साफ़ बतलाए और बड़ी चीज़ों को हड़प ले या हथिया ले उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

चिल्लर के डर से गुदड़ी नहीं फेंकते—चिल्लर (जूँ) से डर कर गुदड़ी नहीं फेंकते। अर्थात् साधारण कठिनाई के डर से काम नहीं छोड़ते। तुलनीय : अव० चीलरन के डेरू ते कथरी नहीं फेंकी जाति; पंज० जूँ दे डर नाल गुदडी नईं सुटदे।

चिह निस्बत ख़ाक रा बा आलमे पाक— यह कहावत फ़ारसी की है। इसका अर्थ है कि पृथ्वी और आकाश में क्या संबंध ? (क) जब कोई किसी साधारण व्यक्ति की तुलना किसी महान व्यक्ति से करता है तब ऐसा कहते हैं। (ख) जब कोई ऐसे व्यक्तियों या वस्तुओं में सामंजस्य दर्शाना चाहता है जिनका एक-दूसरे से कोई मतलब न हो तब भी ऐसा कहते है।

चींटा मारे पानी हाथ—चींटा मारने से पानी ही निकलता है। (क) ग़रीब को कष्ट देने से कुछ लाभ नहीं होता। (ख) जब कोई ऐसा काम करे जिसमें कोई लाभ न हो तो भी ऐसा कहते हैं।

चींटियों भरा कबाब—झगड़े की जड़, मुसीबत का घर।

चींटियों के घर नित मातम—(क) चींटियाँ बहुत मरती हैं, इसलिए ऐसा कहते हैं। (ख) ऐसे दुर्बलों या ग़रीबों के प्रति भी कहते हैं जिन्हें जो जब चाहे परेशान कर दे, ऐसी दशा में उन्हें हमेशा दुख झेलना पड़ता है। (ग) बड़े परिवार में नित्य प्रति कोई न कोई आपदा आती ही रहती है।

चींटी का बिल नहीं मिलता, कहाँ छिपूं— जिसका

कहीं गुजारा न हो उसके प्रति कहते हैं।

चींटी का मूड़– चींटी का सिर अर्थात् बहुत छोटी वस्तु। तुलनीय : पंज० कीड़ी दा सिर।

चींटी का मूत पैराव बड़ा भारी—चींटी ने पेशाब किया। उसे तैरना बहुत कठिन है। जब कोई अत्यंत छोटे काम को भी उसके रास्ते की कठिनाइयाँ बताकर करने से कतराए तब कहते हैं। तुलनीय : अव० चींटी क मूत पीराव बड़ा भारी।

चींटी की आवाज़ अर्श पर—ग़रीब की आवाज़ ईश्वर तक पहुँचती है। (अर्श—स्वर्ग या आसमान)।

चींटी के पर निकले और मौत आई— (क) जब कोई थोड़ा धन या विद्या पाकर घमंड करे तब कहते हैं। (ख) जब कोई छोटा-सा साधन पाकर बड़ों की प्रतिद्वंद्विता करे तो भी कहते हैं। तुलनीय : गढ़० उकटदी किर मूल्यूं पंख लगदा; अव० चींटी कै पर जामै लागे; ब्रज० मरिबे के बखत चेंटी के पर उगियामें; अं० The frog that learns to fly shall fall.

चींटी के मूत में तैरते हैं—(क) जब कोई साधारण-सी वस्तु से बड़ा काम लेना चाहे तो व्यंग्य से कहते हैं। (ख) जब कोई थोड़ी सी कठिनाई से घबड़ा जाय तब भी ऐसा कहते है। (ग) जब सामान्य साधन की प्राप्ति से कोई इतराने लगता है तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : चींटी का मूत पेराव है।

चींटी के लिए रथ सजा–(क) जब कोई साधारण कार्य के लिए बहुत बड़ी तैयारी करे तो व्यंग्य से कहते है। (ख) जब कोई किसी साधारण शत्रु को परास्त करने के लिए बहुत बड़ी योजना बनाए तो भी व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० कीड़ी लयी रथ सज्जया।

चींटी को कन हाथी को मन—नीचे देखिए। तुलनीय : ब्रज० चेंटी कूं कन और हाती कूं मन।

चींटी को किनका, कुत्ते को टुकड़ा, हाथी को मन भर—जिसे किसी चीज़ की जितनी आवश्यकता हो उसे उतना ही देना चाहिए। किसी-किसी पुस्तक में इसका अर्थ इस प्रकार भी दिया गया है—जिसे जितनी चीज़ की आवश्यकता होती है उसे उतनी ही मिलती है। लेकिन यह अर्थ पहले अर्थ जैसा सटीक नहीं है। तुलनीय : राज० कीड़ी ने कण, हाथी ने मण।

चींटी को पेशाब की बाढ़ ही भारी—चींटी पेशाब में ही बह जाती है। निर्धन और दुर्बल व्यक्तियों के लिए छोटी सी समस्या ही बहुत बड़ी होती है।

चींटी चली गंगा नहाने—जब छोटे बड़ों की नक़ल करना चाहें तब व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : अव० चीटी चली पराग नहाय; पंज० कीड़ी चली गंगा नाण।

चींटी चाहे सागर थाह—जब कोई साधारण मनुष्य बड़ा काम करना चाहे जिसके लायक़ वह न हो तब कहते हैं। तुलनीय : मरा० मुंगी सागराचा ठाव पहाणार; राज० कीड़ी कैवै क मां गुड़री भेली लावूं, मां कैवे के बेटा थारी कमर ही कैवे है नी; ब्रज० चेंटी चाहै सागर थाह।

चींटी पर मन भर बोझ—किसी साधारण व्यक्ति पर बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी सौंप देने पर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० कीड़ी उते मन पक्का पार।

चींटी बनकर चीनी खाय, हाथी बनकर लक्कड़ चबाय—चींटी चीनी खाती है और हाथी लकड़ी (लक्कड़) चबाता है। आशय यह है कि विनम्र व्यक्ति अधिक लाभ उठाता है और अक्खड़ या उद्दंड व्यक्ति सदा घाटे में रहता है। तुलनीय : पंज० कीड़ी बण के खंड खा हाथी बण के लकड़ी चबा; ब्रज० चेंटी बनें तौ चीनी खाय हाती बनें तो लकड़ चबाय।

चींटी भी दबने पर काट खाती है—चींटी छोटा जीव होते हुए भी दब जाने पर काट खाती है। आशय यह है कि निर्बल भी अनुचित दबाव नहीं सहते। तुलनीय: पंज० कीड़ी बी दवण नाल वड लैंदी है; ब्रज० चैंटी ऊ दबे पै काटि खावै।

चींटी मरे पंख परकाशे—जब चींटी के पंख निकल आते हैं तो उसकी मौत शीघ्र होती है। आशय यह है कि जब छोटे या ओछे व्यक्ति इतराने लगते हैं तो उनका पतन जल्द हो जाता है।

चींटी मारी निकला पानी—नीचे देखिए।

चींटी मारी पानी हाथ—चींटी मारने पर पानी ही हाथ लगता है। (क) ग़रीब को परेशान करने से कोई लाभ नहीं मिलता है। (ख) साधारण परिश्रम का फल भी साधारण ही मिलता है। तुलनीय : राज० ईली पीस्या पाणी नीकलं।

चींटी मारे कुछ न मिले—ऊपर देखिए।

चींटी संचे तीतर खाय—चींटियाँ अनाज को इकट्ठा करती है और तीतर उसे खा जाते हैं। (क) जब किसी ग़रीब की संपत्ति को कोई सबल छीन लेता है, या हड़प लेता है तब ऐसा कहते हैं। (ख) कजूसों के धन का उपयोग दूसरे लोग ही करते है। तुलनीय : राज० कीड़ी संचे तीतर खाय, ब्रज० चेंटी जोरै तीतुर खाय।

चींटी सरसने को जगह नहीं—बहुत संकीर्ण स्थान के

लिए कहते हैं। (सरसना = निकलना, रेंगना)। तुलनीय : पंज० कीड़ी जिन्नी थां नई।

चींटी होकर घुसे मूसल होकर निकले— उस व्यक्ति के प्रति कहते हैं जो मतलब हल करने के लिए हाथ-पैर जोड़े और काम हो जाने पर सहायता करने वाले की ही हानि करने लगे और बहुत मुश्किल से पीछा छोड़े।

चीऊंटी अपने पाँवें भारी हाथी अपने पावें भारी—छोटे-बड़े सभी अपने-अपने ख़र्च से परेशान रहते हैं।

चीकना मुंह करे फिरते हैं—निर्धन होने पर भी तड़क-भड़क दिखाने वाले के प्रति कहते हैं।

चीज गमावे आप ही, चोरे गाली देइ—अपनी वस्तु स्वयं खोकर चोर को गाली देते हैं। जब कोई अपनी लापरवाही से हानि करके दूसरे को दोष दे तब यह लोकोक्ति कही जाती है।

चीज न राखे आपनी, चोरों गाली देय— ऊपर देखिए।

चीज भी गई, ईमान भी गया – (क) किसी वस्तु की चोरी होने पर वस्तु तो जाती ही है साथ ही वस्तु के मालिक का ईमान भी चला जाता है क्योंकि वह किसी पर संदेह करने लगता है। (ख) जब कोई व्यक्ति अपनी कोई चीज़ किसी को रखने के लिए देता है और संयोगवश वह चीज खो जाती है तब वह (चीज़ रखने वाला) ऐसा कहता है। तुलनीय : हरि० चीज जा अर इमान जा; पंज० चीज वी गयी इमान वी गया;

चीड़फाड़ के अंग्रेज डाक्टर उस्ताद हैं— शल्य-चिकित्सा में अंग्रेज़ डाक्टर काफ़ी निपुण होते हैं।

चीत के बरसे तीन जायं, मोधी, मास, उखार – चित्रा (चीत) नक्षत्र में वर्षा होने से मेथी (मोथी), उरद (मास) और गन्ना (उखार) इन तीन फ़सलों को हानि पहुँचती है।

चीनी कहते मुंह मीठा नहीं होता – (क) किसी वस्तु का नाम लेने से ही वह नहीं मिल जाती। (ख) 'राम' कहने मात्र से मुक्ति नहीं मिल जाती। आशय यह है कि कोरी बातों से काम नहीं चलता। कुछ पाने के लिए श्रम और साधना की आवश्यकता होती है। तुलनीय : पंज० खंड आखदे मुँह मिट्ठा नई हुंदा; ब्रज० खांड़ कहेते मुँह मीठौ नायँ होयँ।

चीरा है जिसने वही नीरेगा— जिसने मुँह दिया है, वही भोजन भी देगा। (नीरेगा = पानी देगा)।

चीरे चार बधारे पाँच—इन्हें चीरा जाय तो चार-पाँच आदमी बन सकते हैं। किसी अत्यंत मोटे व्यक्ति पर व्यंग्य। तुलनीय : भोज० चिरले चार अहरले पाँच।

चील का मूत ढूंढ़ते हैं—जब कोई ऐसी वस्तु को प्राप्त करने की कोशिश करता है जिसका मिलना असंभव हो तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० चील दा मूतर लबदे हो;

चील के घर पारस होता है—चील के घोंसले में सोना मिलता है। ऐसा कहा जाता है कि चील सोने का गहना उठा ले जाती है और उसे अपने घोंसले में इसलिए रखती है कि जब तक सोना पास न हो उसके बच्चे आँखें नहीं खोलते। तुलनीय : पंज० चील दे कर सोना हुंदा है।

चील के घर मांस कहाँ?— चील के घोंसले में मांस नहीं बचता क्योंकि वह सब खा जाती है। (क) जब कोई किसी के यहाँ से ऐसी चीज़ पाने की आशा करे जिसका वहाँ पूरी तरह से अभाव हो तब कहते हैं। (ख) भोगी के घर में भोग्य वस्तु का सुरक्षित रहना असम्भव है। तुलनीय : मरा० घारीच्या घरट्यांत मास कुठलें; अव० चील के घर मा मांस कै थाती; मल० कपुकन्टे कूट्टिल् मांसम् एविटे; ब्रज० चील के घर में मांस कहाँ; अं० Is meat available in eagle's nest?

चील के घर मांस की थाती— नीचे देखिए।

चील के घर में मांस का धरोहर— चील के घर में मांस की धरोहर (थाती, अमानत) नहीं रखते क्योंकि चील का तो वह भोजन है, वह खा जाएगी। ग़लत आदमी को कुछ सौंपने या उसके यहाँ कोई धरोहर रखने पर कहते हैं। तुलनीय : अव० चील्ह के घर मां मांस के धरोहर।

चील के घोंसले में मांस कहाँ? दे० 'चील के घर में···'।

चील झपट्टा— किसी वस्तु पर एकाएक झपट कर अधिकार जमा लेने पर कहते हैं।

चील बैठे तो एक खड़ ले ही उड़े—चील जहाँ बैठती है वहाँ से एक तिनका लेकर ही उड़ती है। (क) परिश्रमी व्यक्ति जहाँ कहीं जाते है वहाँ से कुछ प्राप्त करके ही आते हैं। (ख) चोर या बदमाश जहाँ जाते हैं वहाँ से कुछ-न-कुछ चुराकर या झटककर लाते ही हैं।

चीलर के दुःख से कथरी नहीं छोड़ी जाती—दे० 'चिल्लर के डर से गुदड़ी···'।

चीलर चमकोन चिथड़ा ये तीनों बिपट के बखरा—कपड़े में चीलर, जूड़े में जूं तथा शरीर पर थिगड़ैल (चिथड़ा) ये तीनों दरिद्रता की निशानी हैं।

चील-सा मंडराया और कबूतर सा बीनता फिरता है—

जो मनुष्य इस ताक में रहे कि जो मिले वही उठाले उस पर कहते हैं।

चील से मंडरा रहे हैं— उस व्यक्ति के प्रति कहते हैं जो किसी वस्तु को हड़पने के लिए उसके आसपास चक्कर लगाता रहता है। तुलनीय : पंज० चील बरगा मँडरा रिहा है।

चुंगला भर आटा साईं का, बेटा जीवे माई का— माँ! थोड़ा सा आटा मुझे दे दो तुम्हारा बेटा दीर्घायु होगा। भीख माँगने वाले फ़क़ीर ऐसा कहते हैं।

चुंबक के पीछे लग्यो, फिरत अचेतन लोह—निर्जीव लोहा चुंबक के पीछे-पीछे घूमता है। तात्पर्य यह है कि जिससे जिसका प्रेम होता है वह उसी के पास रहना चाहता है।

चुकते का खाइए उकटे का न खाइए—ऐसे का खाइए जिसे आपने खिलाया हो या खिला सकें, ऐसे का न खाइए जो खिलाने के बाद ताना दे कि 'मैंने तुम्हें खिलाया है।' तुलनीय : अव० नकटे को खाय उटके को न खाय; ब्रज० चुगल को खाय; उघर्‌या कौ न खाय।

चुका वायदा कि दिखाया क़ायदा—काम निकल जाने पर जो आदमी बदल जाता है उसके अर्थात् स्वार्थी व्यक्ति के प्रति ऐसा कहते हैं।

चुकी दाढ़ी गाल पचक्की नहि छाती में बार, लंबी टँगड़ी होवे जिसकी ये चारों हत्यार—छिदरी दाढ़ी वाले, पिचके गाल वाले, जिसकी छाती में बाल न हों और लंबी टाँगों वाले दुष्ट प्रकृति के होते हैं।

चुग़लख़ोर का मुंह साँप डसे—चुग़ली करने वालों को शाप देते हुए ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० चुगुल सदा चूनिया; पंज० चुगलखोर दा मुंह सप डसे।

चुग़लख़ोर ख़ुदा का चोर—चुग़ली करने वाले पर कहते हैं कि वह ईश्वर का शत्रु होता है। अर्थात् बुरा आदमी होता है। तुलनीय : पंज० चुग़लख़ोर रब दा चोर।

चुगलख़ोर चुगली खाय, बीच बजार में जूते खाय—चुग़ली करने वाले हमेशा चुग़ली करते रहते हैं जिसका परिणाम यह होता है कि वे भरे बाज़ार में जूते खाते हैं अर्थात् हर जगह अपमानित होते हैं।

चुग़ल चुग़ली से नहीं चूकता—अवसर मिलने पर चुग़लख़ोर चुग़ली करने से बाज़ नहीं आते। तुलनीय : पंज० चुगल खोर चुगली तों नई रेंदा; ब्रज० चुगल चुगलई ते नायँ चूकै।

चुगला बैठा नीम पै, दे साले के तीन से—चुग़लख़ोरों का अपमान करने के लिए कहते हैं।

चुगली लग जाती है पर बिनती नहीं—जब चुग़लख़ोर चुग़ली करके अपना काम बना ले और सच्चा विनती करने पर भी दुतकारा जाय तब ऐसा कहते हैं।

चुड़ैल पर दिल आ जाए तो वह भी परी है—नीचे देखिए।

चुड़ैल पर दिल आ जाय तो परी क्या चीज है—जिसका जिससे प्रेम हो जाए वही उसके लिए सबसे सुन्दर है। प्रेम में रूप-रंग का ध्यान नहीं होता। तुलनीय : पंज० चड़ैल उते दिल आ जावे तां ओह वी परी है; ब्रज० मन लग्यौ चुड़ैल ते तौ वूह परी ऐ; अं० Love is blind.

चुटकी भर सत्तू पूरे गाँव का नेवता—थोड़ा-सा सत्तू है और पूरे गाँव को निमंत्रण दे रहे हैं। (क) थोड़ी-सी संपत्ति पाकर इतराने वालों के प्रति व्यंग्य मे ऐसा कहते हैं। (ख) मूर्खतापूर्ण कार्य करने पर भी व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० चुटकी भर सतुआ गांव भर के नेवता; पंज० मुट्ठ पर सत्तू सारे पिंड नूं सादा; ब्रज० चुटकी भरि चून, पूरे गांम कूं न्यौतौ।

चुटकी लो न बकोटा खाओ—दूसरे की खिल्ली न उड़ाओ न स्वयं मार खाओ। अर्थात् जो दूसरों को अपमानित करता है उसे भी अपमानित होना पड़ता है। इज्ज़त पाने के लिए दूसरों की इज्ज़त करनी पड़ती है।

चुटकी लो न मुक्का खाओ—ऊपर देखिए।

चुटके का खाय, उटके का न खाय—दे० 'चुकते का खाइए···'।

चुटिया को तेल नहीं, पकौड़ों को जी चाहे—सिर में लगाने के लिए तेल नहीं है और पकौड़ी खाना चाहते हैं। शक्ति से परे किसी चीज़ को पाने की आकांक्षा करने पर कहते हैं। तुलनीय : पंज० सिर नूं तेल नई पकौड़यां नूं जी करे; ब्रज० बारन कू तेल नायँ, पकौड़ेन कूं मन करै।

चुड़ैल के घर सुख कहाँ—चुड़ैल के घर में किसी को सुख नहीं मिलता। अर्थात् दुष्ट के साथ कोई सुखी नहीं रह सकता। तुलनीय : पंज० चड़ैल दे कर सुख नई।

चुड़ैल-भूत एक राय—चुड़ैल और भूत के विचार एक जैसे होते हैं। आशय यह है कि बुरे व्यक्ति का साथी बुरा व्यक्ति ही होता है। या बुरे लोगों का विचार आपस में मिलता है। तुलनीय : भीली—डाकण भोपा ने एक मतू। ब्रज० चुड़ैल-भूत कौ एकई मत।

चुनिए खुनिए पासलों धीया, आइल दमाद ले गइल धीया—लड़की को खिला-पिलाकर सयानी की और दामाद आया उसे लेकर चला गया। अर्थात् लड़कियाँ सयानी होने

पर दूसरे के घर चली जाती हैं।

चुनी कहे मुझे घी से खा—चुनी (कन या अन्न का टुकड़ा या रद्दी बचा हुआ अन्न) कहती है मुझे घी के साथ खाओ। हैसियत अथवा योग्यता से अधिक दावा करने पर यह लोकोक्ति कही जाती है।

चुने-चुने को टोपी, बाकी को लंगोट—जब कोई प्रतिष्ठित लोगों की काफ़ी इज्ज़त करे और शेष लोगों को साधारण सम्मान दे तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय: राज० ठावे ठावे टोपली बाकी ने लंगोट।

चुप आधी मरजी—किसी के कुछ कहने पर चुप हो जाना आधी स्वीकृति दे देना है। तुलनीय: फा० अल ख़ामोशी नीम रज़ा; सं० मौनं स्वीकृति लक्षणं; अं० Silence is half consent.

चुपकी दाद ख़ुदा देगा—जो मनुष्य दूसरे के दिए दुःख को शान्तिपूर्वक सह लेता है उसका बदला ईश्वर उसको देता है।

चुपड़ी और दो-दो—अच्छी चीज और अधिक मात्रा में। (क) जिसे अधिक अधिकार प्राप्त हो जाय और वेतन भी अच्छा मिले उसके प्रति कहते हैं। (ख) जो बढ़िया चीज भी चाहे और अधिक मात्रा में उसके प्रति भी व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय: भोज० चुपड़ी अ चार गो; हरि० चोपड़ी अर दो‌द्दो; अव० चुपरी अउ दुइ दुइ; राज० चोपड़ी' र दो दो; गढ़० मली मी अर कखछौ; मरा० तुपाने माखलेली नि दोन दोन; पंज० चोपड़ी दिया दो दो (हार दे); ब्रज० चुपरी और दो-दो।

चुरावे नथवाली, नाम लगे चिरकुटवाली का—जब किसी बड़े का दोष ग़रीब पर लगे तब कहते हैं। या जब अपराध कोई और करे तथा दंड किसी और को मिले तब कहते हैं।

चुल्लू-उल्लू, लोटे में गड़गप्प—दे० 'चुल्लू में उल्लू…'।

चुल्लू चुल्लू साधेगा, दरवाजे हाथी बांधेगा—थोड़ा-थोड़ा धन संचय करने वाले के द्वार पर हाथी बँध सकता है। अर्थात् थोड़ा-थोड़ा धन इकट्ठा करके आदमी बड़ा कार्य कर सकता है।

चुल्लू चुल्लू साधेगा, दुआरे हाथी बांधेगा—ऊपर देखिए।

चुल्लू पानी, तंग जिन्दगानी—धनाभाव में जीवन कष्टमय हो जाता है।

चुल्लू-भर पानी में डूब मरो—किसी को लज्जित करने के लिए कहा जाता है। तुलनीय: अव० चुल्लू भर पानी में बूड़ मरा; हरि० एक चलू पांणी में डूब मर; पंज० मासा हारे पाणी बिच डुब मरो; ब्रज० चुल्लू भरि पानी में डूबि मरौ।

चुल्लू में उल्लू लोटे में गड़गप—भंगेड़ी को कहते हैं। तुलनीय: मरा० चुळका भर घेतली की चढली धुंदी; ब्रज० चुल्लू में उल्लू, लोटा में गड़प्प।

चुल्हिया नेवत—ऐसा निमन्त्रण जिसमें चूल्हे को अर्थात् घर भर को भोजन पर बुलाया जाता है।

चुहिया करे साँप से झगड़ा—जब कोई अपने से बहुत शक्तिशाली से झगड़ा मोल ले तो व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय: भोज० मुसरी करे साँप से झगड़ा; पंज० चुयी सप नाल लड़े; ब्रज० चुहिया करै स्यांप तें झगड़ो।

चुहिया के बिल में मूसल—चुहिया का बिल बहुत छोटा होता है और मूसल बहुत मोटा जो उसमें नहीं जा सकता। जब कोई व्यक्ति किसी असम्भव कार्य को करने की जिद करे तो कहते है। तुलनीय: भोज० मुसरी के बीली में मूसर; पंज० चुयीदी रुड बिच मुसल; ब्रज० चुहिया के बिल में मूसर।

चूक अजाने मे परैं, बाँधे गाँठ सयान—(क) छोटे से भूल होने पर बड़े लोग सावधान हो जाते है। (ख) छोटों के दोष का परिणाम बड़े लोगों को भुगतना पड़ता है। (गाँठ बाँधना = सावधान होना)।

चूक गए धुनियत है सीस—किसी बात या विशेष अवसर पर चूक जाने पर जब कोई पश्चाताप करता है तब कहते हैं।

चूका और गया—जो व्यक्ति असावधानी से रहता है उसे हानि उठानी पड़ती है। तुलनीय: ब्रज० चूक्यौ और गयौ।

चूका और मरा—ऊपर देखिए।

चूचियों में हाड़ टटोलते हैं—अनुपयुक्त स्थान पर ढूँढना। (क) जब कोई किसी वस्तु की खोज ऐसे स्थान पर करे जहाँ उसका होना संभव न हो तो कहते हैं। (ख) जब कोई ग्राहक उस वस्तु का दाम कम कराना चाहे जिसमें कम करने की गुजाइश न हो तब दूकानदार ऐसा कहता है। तुलनीय: पंज० ममयां बिच हड्ड लबदे हन; ब्रज० चुहिया में हाड़ टटोरे।

चूड़िया लादीं सड़क पर फूटीं, खांड लादी नदी में गिरी—चूड़ियाँ लादी तो बैलगाड़ी सड़क पर उलट गई और चूड़ियाँ फूट गई तथा चीनी लादी तो नदी में गिर

गई। जब किसी व्यक्ति पर चारों ओर से विपत्ति आती है तो कहते हैं।

चूतड़ में काँटे हैं क्या ?—जिस व्यक्ति के कपड़े बहुत फटते हैं उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : पंज० बुड बिच कंडे है की।

चूतड़ से कान गाँठे (क) जो किसी की बात का सिर-पैर एक किया चाहे या बेतुकी बात कहे उस पर कहते हैं। (ख) जो व्यक्ति दरवाज़े से कान लगाकर दूसरे की बात सुने उसके प्रति भी कहते है।

चूतर खौरहा मखमल का मगवा— चूतड़ों में तो खोरा रोग (एक प्रकार की खुजली) हो रहा है और चाहते हैं मखमल का मगवा (एक प्रकार का लंगोट)। (क) जो व्यक्ति अपनी योग्यता से अधिक की कामना करे उसके प्रति व्यंग्य से कहते है। (ख) जब कोई कुरूप व्यक्ति अच्छी वेश-भूषा धारण करता है तब भी व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० ट्ये विच खरक मखमल दा लंगोट।

चूतिया मर गए औलाद छोड़ गए— मूर्ख पर कहा गया है। जब कोई काम बिगाड़ देता है या समझाने से भी नहीं समझता तब कहते हैं। तुलनीय : गढ़० चूतिया मरिग्या औलाद छोड़िग्या; भोज० चूतिया मर गइलें अवलाद छोड़ गइलें; अव० चूतिया मर गए औलाद छोड़ गए; हरि० मरगे चूतिया औलाद छोड़ के; पंज० चूतिया मर गया औलाद छड गया; ब्रज० चूतिया मरि गये औलाद छोड़ि गये।

चूतियों का माल यार खायँ—मूर्खों का धन उसके साथी-संबंधी ही खा जाते है। तुलनीय : राज० चूतियांरा माल मसखरा खाय; पंज० चूतियाँ दा माल यार खाण; ब्रज० चूतियान को माल यारई खामैं।

चूतियों ने गाँव मारा है ? —मूर्खों ने कभी कुछ किया है ? अर्थात् नहीं।

चून न ऊन, छानकर पकाओ—आटा तो है नहीं और कहते हैं कि पूड़ी बनाओ। झूठी शान दिखाने वाले के प्रति कहते हैं।

चून खाए मुसंड होवे, तला खाए रोगी—रोटी खाने से आदमी तगड़ा होता है और तली हुई चीज़ें खाने से रोगी। अर्थात् तली हुई चीज़ें स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होती हैं।

चूना और चमार कूटे पर ठीक रहते हैं- आशय यह है कि दुष्ट दंड पाने पर ही क़ायदे से रहते हैं। तुलनीय : हरि० भूज अर, गुलाम के पिट्टे बिणा माने; ब्रज० चूनौ ओर चमार कुटि कैई बनें।

चूना चमार कूटने से सीधे रहते हैं— ऊपर देखिए।

चूना चूची दही ये बंगाला नहीं —बंगाल का चूना और दही अच्छा नहीं होता और वहाँ की स्त्रियों के स्तन छोटे होते हैं।

चूनी कहे मुझे घी से खाओ— छोटा आदमी भी चाहता है कि मेरा आदर हो। योग्यता से बढ़कर दावा करने पर कहा जाता है।

चूने के धोखे कपास न खा जाना—किसी के बहकाने में आकर या धोखे से हानिप्रद काम करने वाले को सावधान करने के लिए कहते है। तुलनीय : पंज० चूने दे तोखे कपा ना खा जाणा।

चूम चाट के खा लिया— (क) जब कोई किसी को बिल्कुल बर्बाद कर देता है तब ऐसा कहते हैं। (ख) जब कोई चाटुकारिता करके किसी से कुछ पाता रहता है तब भी कहते हैं। तुलनीय : हरि० कली घरती के मिला देणा; पंज० चुम चट्ट के खा लिता; ब्रज० चूमचाटि कें खाइ लियौ।

चूमे घंटा भर, दे धेला भर- चूमते तो एक घंटे तक हैं और देने के वक्त धेला (स्वतंत्रता-पूर्व प्रचलित पैसे का आधा) देते है। (क) झूठा प्यार करने वालों के प्रति कहते हैं। (ख) वेश्याएँ भी उन लोगो के प्रति ऐसा कहती हैं जो उनके साथ मौज तो खूब करते है, पर उन्हें बहुत कम पैसा देते हैं। तुलनीय : राज० लांबा हैला, ओछी पीक; पंज० चुमन-चटण कंटा पर देण तैला पर;

चूर-चूर यार को, चोकर भतार को- यारों को तो अच्छे माल खिलाती है तथा अपने पति (भतार) को चोकर या रूखा-सूखा। दुश्चरित्र स्त्रियों के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते है। तुलनीय : अव० चूर-चूर यारन का चोकर भतारन का।

चूरा झाड़ खाओ, लड्डू न तोड़ो -केवल ब्याज खाना चाहिए, पूंजी नहीं। ब्याज़खोर इस तरह कहते है।

चूल्हा खोदें तो खाट बिछे --स्थान की बहुत कमी जताने के लिए कहते हैं।

चूल्हा छोड़ भरसाई में जाओ --किसी से किसी प्रकार का मतलब न रखने पर कहा जाता है।

चूल्हा झोंके चाँवर हाथ -झोंकते तो चूल्हा है और हाथ मे पंखा (चाँवर) लिए हैं। काम में नज़ाकत दिखाने वालों के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

चूल्हा झोंके छावर हाथ— चूल्हा झोंकने से हाथ काला (छावर) हो जाता है। अर्थात् (क) जैसा काम होता है वैसा ही फल भी मिलता है। (ख) बुरे कर्म का परिणाम

भी बुरा ही होता है।

चूल्हा झोंके झांवर हाथ—ऊपर देखिए।

चूल्हा फूंकना और दाढ़ी रखना—चूल्हा फूंकते समय दाढ़ी जल जाने का भय रहता है। जो व्यक्ति दो प्रतिकूल कामों को एक साथ करना चाहे उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : मरा० चूल फुँकायची नि दाढी ठेंवायची; पंज० चुल्हा बालना अते दाड़ी रखना; ब्रज० चूल्हौ फूंकै और डाढ़ी राखै।

चूल्हे आग न घड़े पानी—अत्यंत दरिद्रता पर कहा जाता है। तुलनीय : गढ़० चुल्ला आग न घड़ा पाणी।

चूल्हे आग न पल्हैंड़े पानी—ऊपर देखिए।

चूल्हे का फूंकना और दाढ़ी का रखना—दे० 'चूल्हा फूंकना और···'।

चूल्हे का राव लाव ही लाव पुकारे—चूल्हे का देवता हमेशा यही रट लगाता है कि और लकड़ी लाओ। पेटू अथवा बहुत अधिक खाने वाले को कहते हैं।

चूल्हे की न चक्की की—मूर्ख या फूहड़ औरतों के प्रति कहते हैं जिन्हें न तो भोजन बनाना आता है और न घर का अन्य काम-धंधा। तुलनीय : हरि० चूल्हे की ना चाक्की की; मरा० चुलीची न जात्याची; पंज० चुल्ले दी नां चक्की दी; ब्रज० चूल्हे कौन चाखी कौ।

चूल्हे की मिट्टी चूल्हे लग गई—(क) जहाँ की वस्तु वहीं काम आ जाय तो कहते हैं। (ख) भटका हुआ व्यक्ति यदि बाद में सही रास्ते पर आ जाय तो भी कहते हैं। तुलनीय : कौर० चुल्हे की मिट्टी चूल्हे लग गई; पंज० चुल्ले दी मिट्टी चुल्ले लग गयी।

चूल्हे की लकड़ी चूल्हे में ही जलती है—जहाँ की वस्तु वहीं काम आती है। तुलनीय : बुंदे० चूले की लकरियाँ चूलेई में जरनीं; ब्रज० जहाँ के मरे वहीं फुँकते है; मरा० चुलीचें लाँकूड चुलीत जगे; पंज० चुल्ले दी लकड़ी चुल्ले बिच ही बलदी है।

चूल्हे को आग से डराते हैं—चूल्हे को आग से डराते हैं जिसमें सदा ही आग रहती है। जब कोई व्यक्ति मूर्खतावश किसी को ऐसी वस्तु का भय दिखाए जो उसके लिए बहुत साधारण हो तो कहते हैं। तुलनीय : पंज० चुल्ले नूं अग्ग तों डरांदे हो।

चूल्हे गाऊँ चक्की गाऊँ, पंचों बैठी जूती खाऊँ—चूल्हे और चक्की पर बैठकर तो गाती हूँ लेकिन जब समाज में बैठती हूँ तो जूती खाती हूँ। जो रोजाना अपने को किसी काम में दक्ष बतलावे और समय पर असफल हो जाय उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : कौर० चूल्हे गाऊँ चक्की गाऊँ, पंचों बैठी जूती खाऊँ।

चूल्हे चक्की सब ही काम पक्की—निपुण गृहिणी पर कहा जाता है।

चूल्हे पीछे सोवें और टेहरी को टोपवें—चूल्हे के पीछे सोते हैं और मटकी टटोलते रहते हैं। निर्धन व्यक्ति के प्रति कहते हैं।

चूल्हे में बिल्लियाँ दंडवत करती हैं—अर्थात् घर में खाने को कुछ नहीं है। अति निर्धन के प्रति कहते हैं।

चूल्हे में सर दिया तो आग से क्या डरना?—जब कठिन काम करने का बीड़ा उठा लिया तो कष्टों से क्या डरना? तुलनीय : पंज० चुल्ले विच सिर दिता ते अग्ग तों की डरना; ब्रज० चूल्हे में सिर दियौ तौ आगि ते कहा डर।

चूल्हे में आग देने से जलेगा ही—जलते हुए चूल्हे में हाथ डाला जाएगा तो वह जलेगा ही। जिस कार्य में स्पष्ट दिखता हो कि उसको करने में कष्ट मिलेगा उसे करना ही नहीं चाहिए। जो व्यक्ति जान-बूझ कर मुसीबत मोल ले उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : भीली—ऊना मांये आँगली घाले ने बलिया वगर नी रे; पंज० चुल्ले विच हत्थ देण नाल सड़ेगा ही।

चूल्हे से निकला भट्ठी में पड़ा—(क) जब कोई साधारण विपत्ति से मुक्ति पाते ही किसी बड़ी विपत्ति में फँस जाये तो कहते हैं। (ख) कोई बुरा काम छोड़कर उससे भी बदतर काम करने लगे तो उसके प्रति भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० चुल्ले बिचों निकलया पट्ठी विच पैया।

चूल्हे से निकले और कड़ाही में गिरे—ऊपर देखिए।

चूहड़ों के गाँव में कुत्ते भी खामोश—चूहड़ों (भंगी या चांडाल) के गाँव में कुत्ते भी डर कर चुपचाप रहते हैं। आशय यह है कि दुष्ट व्यक्ति से मनुष्य तो मनुष्य पशु-पक्षी भी डरते है। तुलनीय : भोज० चुहाड़न क गाँव में कुक्कुरों ना बोले; पंज० चूड़याँ दे पिंड बिच कुत्ते वी चुप।

चूहा बजावे चपनी और जात बतावे अपनी—कार्यों से ही मनुष्य की जाति मालूम हो जाती है। आशय यह है कि मनुष्य के कार्यों से ही उसकी महत्ता और नीचता प्रकट हो जाती है।

चूहा बिल न समा सके, कानों बाँधा छाज—चूहा स्वयं तो बिल में घुस नहीं पाता और ऊपर से अपने कानों पर छप्पर (छाज) बांध लिया है। आशय यह है कि जब कोई व्यक्ति अपनी व्यवस्था न कर सके और ऊपर से और भी

भार बढ़ा ले तो उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

चूहा बिल्ली का शिकार है—(क) चूहा बिल्ली का भोजन है। (ख) निर्बल सदैव सबल द्वारा सताए जाते हैं। तुलनीय: पंज० चूया बिल्ली दा खाणा है; ब्रज० चूहा बिल्ली कौ सिकारै।

चूहा मोटाकर लोढ़ा होगा—(क) छोटा (ग़रीब) व्यक्ति उन्नति भी करेगा तो भी साधारण ही होगा। (ख) जब कोई छोटा आदमी साधारण सफलता पर गर्व करने लगता है तब भी व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

चूहा मोटा होकर लोढ़ा न होगा—अर्थात् छोटा आदमी कितनी भी उन्नति क्यों न कर ले किंतु वह बड़ों की बराबरी नहीं कर सकता।

चूहे का जाया बिल ही खोदता है—जाति-स्वभाव नहीं छूटता। तुलनीय: बुंद० कँकरे कौ जाव माटी कुकेरत; ब्रज० चूहा कौ जायौ बिल खोदै है; मल० जाति स्वभावम् आरुम् विट्टुकयिल्ल; राज० चूहे रा जाया बिल ही खोदसी; मरा० उंदराचे पोर बीळ च खोदतें; पंज० चुये दा बच्चा रुड ही कड्‌दा है; हरि० कान न कुछै खवादे-प्यादे फेर भी वो गुह में चूंच मारैगा।

चूहे का बच्चा बिल ही खोदता है—ऊपर देखिए।

चूहे का बच्चा बिल ही खोदेगा—ऊपर देखिए।

चूहे की औलाद बिल ही खोदती है—दे० 'चूहे का जाया बिल···'।

चूहे की जान जाय, बिल्ली का खेल—जब कोई व्यक्ति किसी को दुखी करके या परेशान करके आनंदित हो तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय: गढ़० मूसा को ज्यू औ बिराला को खेल है; मरा० मांजराचा खेल उंदराचें मरण; पंज० चूये दी जाण जावे बिल्ली दी खेड।

चूहे को गेहूं होगा तो कुटक कर ही खाएगा, पूड़ी नहीं बनाएगा—आशय यह है कि मूर्ख व्यक्ति किसी वस्तु का सही उपयोग नहीं कर पाते।

चूहे के चाम से कहीं नगाड़े मढ़े जाते हैं—अर्थात् नहीं। छोटों से कोई बड़ा काम नहीं हो सकता। तुलनीय: मरा० उंदराच्या कातड्यानें कुठें नगारे मढतात; अव० मूस के खाल से नगाडा न मढा जाई; ब्रज० मढ्‌यौ दमामा जातु है वहु चूहे के चाम।

चूहे के जाए मिट्टी खोदें—दे० 'चूहे का जाया···'। तुलनीय: कौर० चूहे के जाए भट्‌ट खोदैं।

चूहे के हाथ लगी हल्दी की गाँठ, पंसारी ही बन बैठा—चूहे को कहीं से हल्दी की एक गाँठ मिल गई तो वह अपने आपको सेठ (पंसारी) समझने लगा। जब कोई व्यक्ति थोड़ा-सा धन अथवा थोड़ी-सी विद्या पाकर अपने को बहुत बड़ा धनवान या बहुत बड़ा विद्वान समझने लगता है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय: हरि० मुस्से न पागी हल्दी की गाँठ त पंसारी ए बण बैठा; राज० हळदी-री गांठियो ले'र पंसारी वण्यो है; राज० सूठरो गांठियो ले'र पंसारी वण्यो है; मेवा० ऊंदरी ने सूठ को गांठ्यो लादग्यो जो पंसारण ई बणर बैठगी।

चूहे को हल्दी की गाँठ मिली तो पंसारी बन बैठा—दे० 'चूहे के हाथ लगी हल्दी···'।

चूहे दंड पेल रहे हैं—घर में खाने के लिए कुछ भी न होने पर कहते हैं।

चूहे दुलत्ती खेलते हैं—ऊपर देखिए।

चूहों की मौत, बिल्ली का खेल—दे० 'चूहे की जान जाय···'।

चेतनस्य यत्नहीनस्योर्ध्वगतिश्चेतनान्तराधीना—प्रयत्न-हीन चेतन प्राणी की उन्नति दूसरे बुद्धिजीवी प्राणियों के कार्यकलाप पर निर्भर करती है। अनेक लोग ऐसे हैं जो असमंजस में पड़े रहते हैं और किसी भी काम का उपक्रम नहीं करते, पर वे ही जब दूसरों को कार्यशील देखते है तो स्वयं प्रेरित होकर प्रगति पथ पर चल पड़ते हैं।

चे दानद बूज़ना लज्ज़ाते-अदरक—दे० 'बंदर क्या जाने अदरक···'।

चेना जी का लेना चौदह पानी देना, बयार चले तो लेना न देना—चेन (चेना) की खेती के विषय में कहा जाता है कि उसे पानी की बहुत आवश्यकता होती है और यदि गर्म हवा या लू चल जाए तो वह समाप्त हो जाती है। चेन एक हल्का अनाज है। इसकी खेती गर्मी में होती है। इसमें परिश्रम अधिक करना पड़ता है और थोड़ी-सी असाव-धानी से इसकी फ़सल समाप्त हो जाती है)।

चे निस्बत खाक रा बा आलमे-पाक—छोटे या निकृष्ट व्यक्ति की बड़े अथवा महान व्यक्तियों से क्या तुलना?

चेने के वंश में सपूत भए माढ़ा—किसी पिछड़े परिवार में कोई लड़का थोड़ा चालाक हो जाता है तब व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

चेरी का चित्त महेरी में—नौकरानी का दिल महेरी (एक प्रकार का व्यंजन) में लगा है कि कब बने और खाऊँ। स्वार्थी व्यक्तियों के विषय में कहते हैं जो हर समय अपनी स्वार्थ-सिद्धि की ताक में लगे रहते हैं। तुलनीय:

ब्रज० चेरी कौ चित्त महेरी में।

चेरी का पैर दबाने से बहू का गुजर नहीं होता—अर्थात् छोटे लोगों की खुशामद करने से बड़ों के कार्य की सिद्धि नहीं होती। तुलनीय : भोज० चेरिया क गोड़ दबवले बहू क गुजर नां होइ; ब्रज० चेरी कौ पाम दबाइबे ते बहू की गुजरि नायँ होयै।

चेरी सबके पाँव धोवै, अपने धोती लजावै—नौकरानी सबका पैर धोती है लेकिन अपना पैर धोने में शरमाती (लजाती) है। जो अपना काम करने में शरमाते हैं और उसी प्रकार का दूसरों का काम करते हैं उनके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० नौकरानी सारियां दे पैर तोवे आपण तोंदी सरमावे; ब्रज० चेरी सबके पाम धोबै, अपने नायँ धोये जाये।

चेले चीनी हो गए, गुरु गुड़ ही रहे—आशय यह है कि जब शिक्षक से शिक्षार्थी अधिक उन्नति कर जाय तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० चेले खंड हो गये गुरू गुड़ ही रहे; ब्रज० चेला चीनी है गये, गुरू गुर ई रहे।

चेले लावैं माँगकर बैठा खाय महंत, राम भजन का नाम है पेट भरन का पंथ—चेले भिक्षा माँगकर अन्न लाते हैं और महंत बैठ कर खाते हैं। पूजा-पाठ की बात वे झूठी करते हैं, यह तो उनके पेट भरने का तरीका है। पाखंडी साधुओं के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

चेहरा गोरा दिल काला—जो व्यक्ति मीठी-मीठी बातें करते हैं और भीतर में कपट रखते हैं उनके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : सि० मुँह जो मिठो अंदर जो कारो; पंज० मुँह गोरा दिल काला; ब्रज० मुह गोरौ मन कारौ।

चैत अमावस जै घड़ी परती पत्रा माँहि, तेता सेरा भड्डरी कातिक धान बिकाँहि—भड्डरी कहते हैं कि चैत्र मास की अमावस्या जितने घड़ी की होगी, कार्तिक में धान भी रुपए का उतने ही सेर बिकेगा।

चैत के पछुवां भादों जल्ला, भादों पछुवा माघ क पल्ला—अगर चैत्र मास में पश्चिम की हवा चले तो भादों में खूब पानी होगा और यदि भादों में पछिवां चले तो माघ में खूब पाला गिरेगा।

चैत चढ़े न बैसाख उतरे—न तो चैत में चढ़ता है और न बैशाख में उतरता है। (क) जो व्यक्ति दुख-सुख में एक-सा ही रहे उसके प्रति कहते हैं। (ख) जो व्यक्ति सदा स्वस्थ रहता है उसके प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : राज० ना चैत चढे ना बैसाख ऊतरे; पंज० चैतर चढ़या ना वसाख उतरया।

चैत चिड़पड़ा, सावन निरमला—यदि चैत्र मास में बूँदाबाँदी हो तो सावन में वर्षा बिल्कुल नहीं होती।

चैत पूर्णिमा होई जो, सोम गुरौ बुधवार; घर घर होइ बधबड़ा, घर घर मंगलवार—चैत्र मास की पूर्णिमा को यदि सोमवार, बुधवार या गुरुवार हो तो घर-घर बधाई बजेगी और उत्सव मनाए जाएँगे अर्थात् लोग सुखी रहेंगे।

चैत मास उजियाले पाख, आठैं दिवस बरसता राख; नव बरसे जित बिजली जोय, ता दिसि काल हलाहल होय—चैत्र मास के शुक्ल पक्ष में अष्टमी को यदि आकाश से धूल गिरे और नवमी को पानी बरसे तथा जिस दिशा में बिजली चमकेगी उस दिशा में बहुत भारी अकाल पड़ेगा।

चैत मास उजियाले पाख, नव दिन बीज लुकोई राख; आठम नम नीरत कर जोय, जाँ बरसे जाँ दुरमख होय—यदि चैत्र मास के शुक्ल पक्ष में प्रतिपदा से नवमी तक बिजली न चमके, (विशेषतया अष्टमी और नवमी को) और वर्षा हो तो अकाल पड़ता है।

चैत मास जो बीज लुकावै, धुर बैसाख टेसू धोवै—यदि चैत में बिजली नहीं चमकती तो बैशाख में इतनी वर्षा होती है कि टेसू के फूल भी धुल जाते हैं, अर्थात् बहुत पानी बरसता है।

चैत मास दसमी खड़ा, बादर बिजुरी होय; तो जानों चित माँहि यह, गर्भ गला सब जोइ—चैत मास की दशमी को यदि बादल और बिजली हो तो यह समझना चाहिए कि वर्षा का गर्भ गल गया। अर्थात् चार मास तक वर्षा बहुत कम होगी।

चैत मास नै पख अँधियारा, आठम चौदस दो दिन सारा; जिण दिस बादल जिण दिस मेह, जिण दिस निरमल जिण दिस खेह—चैत मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी और चतुर्दशी को जिस दिशा में बादल होते हैं उस दिशा में खूब वर्षा होती है और जिस दिशा में आकाश निर्मल होता है उधर सूखा पड़ता है।

चैत में चमार काबू में नहीं रहता—(क) चमार (हरिजन) प्रायः ग़रीब होते हैं। मज़दूरी करके ही वे अपना भरण-पोषण करते हैं। चैत्र मास में उनके घर भी थोड़ा-बहुत अन्न हो जाता है और मज़दूरी से कुछ अन्न पा जाते हैं, इसलिए वे अकड़ कर बात करते हैं। (ख) जब थोड़ा-सा धन पाकर कोई इतराने लगता है तब उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : पंज० चैतर विच चमैर काबू नई रैंदा; ब्रज० चैत में चमार काबू में नाये रहै।

चैत में हुई फसल तैयार, काट बाँध कर लाओ पास—

चैत्र मास में फ़सल पक कर तैयार हो जाती है, इसलिए उसे खेत में नही छोड़ना चाहिए, काट-दांयकर अन्न घर में रख लेना चाहिए। तुलनीय : मरा० चैत्रीं झाले पीक तयार, कापा मळा नि आणा घरां।

चैत सुदी रेवतड़ी जोय, बैसाखहिं भरणी जो होय; जेठ मास मृगसिर दरसंत, पुनरवसू आसाढ़ चरंत; जित्यो नछत्र कि बरत्यो जाई, ते तो सेर अनाज बिकाई—चैत्र मास में रेवती नक्षत्र, वैशाख में भरणी नक्षत्र, जेठ में मृगशिर और आषाढ़ में पुनर्वसु जितनी घड़ी तक रहते हैं, एक रुपए में उतने ही सेर अनाज बिकता है।

चैत सोए भोगी क्वार सोए रोगी—चैत में भोगी (विलासी) सोते हैं तथा क्वार में रोगी। तात्पर्य यह है कि विलासी प्रकृति के लोग चैत में आराम अधिक चाहते हैं तथा क्वार में सोने से रोग होता है। तुलनीय : भोज०, मैथ० चइत सूते भोगी कुआर सूते रोगी।

चैत सोवे रोगी, क्वार सोवे भोगी—चैत्र मास में दिन में रोगी सोते हैं और क्वार मास में भोगी सोते हैं।

चैते गुड़, वैसाखे तेल, जेठ क पंथ, आसाढ़ क बेल, सावन साग न, भादों दही, क्वार करेला कातिक मही, अगहन जीरा, पूसे धना, माघे मिश्री फागुन चना—चैत्र में गुड़, वैशाख में तेल, जेठ में पैदल चलना, आषाढ़ में बेल (एक फल), सावन में साग, भादों में दही, क्वार में करेला, कार्तिक में मठा, अगहन में जीरा, पूस में धनिया, माघ में मिश्री और फाल्गुन में चना हानिप्रद माना जाता है।

चैन की बंशी बजा रहे हैं—निश्चित एवं सुखमय जीवन बिताने वाले के प्रति कहते हैं।

चैना जी का लेना, सोलह पानी का देना: बीस बीस के बच्छा हारे, हारे बलम नगीना; हाथ में रोटी बगल में पैना, एक बयार बहे पुरवाई, लेना है ना देना—चेना नामक अन्न जान लेने वाला अन्न है। उसे सोलह बार सींचना पड़ता है। मेहनती किसान और जवान बैल भी उसकी सेवा करते परेशान हो जाते हैं। किसान को खाना खाने की भी फ़ुरसत नहीं मिलती और वह काम करते हुए ही रोटी खाता जाता है। इतना सब करने पर भी यदि एक बार पुरवाई बह जाय तो सारी फ़सल नष्ट हो जाती है।

चोंच दिया तो चारा भी देगा—जिसने पक्षी को चोंच दी वह उसे चारा भी देगा। आशय यह है कि ईश्वर सबकी व्यवस्था करता है। तुलनीय : हरि० चोंच दी से तै चुग्गा वी देगा; पंज० चुंज दिती है ताँ अन्न वी देगा; ब्रज० चोंचि दई है तौ चारौ ऊ देगौ।

चोंडा धूप में सफेद नहीं किया—अपने को अनुभवी बताते समय कहा जाता है कि मेरे बाल यों ही धूप में सफेद नहीं हो गए, मैंने अनुभव प्राप्त किया है।

चोखा माल टन-टन बोलै—अच्छी वस्तु की परख देखते ही हो जाती है। तुलनीय : ब्रज० चोखौ माल टनाटन बोलै।

चोट दुश्मन की भी सराहनी चाहिए—शत्रु के भी अच्छे दाँव की प्रशंसा करनी चाहिए। आशय यह है कि वीरता की प्रशंसा करनी चाहिए, चाहे वह शत्रु की ही क्यों न हो। तुलनीय : राज० घाव वैरी रो ही सरावणो जोइजै; पंज० सट्ट दुसमन दी वी सरावी चाहदी।

चोट पर चोट, घाटे पर घाटा—जिस अंग पर चोट लगी होती है उसी पर और चोट लगा करती है और एक बार व्यापार में घाटा होने पर बार-बार घाटा हुआ करता है। आशय यह है कि विपत्ति जब आती है तो चारों ओर से आती है। तुलनीय : पंज० सट्ट उते सट्ट काटे उते घाटा; ब्रज० चोट पै चोट, घाटे पै घाटौ।

चोट पर चोट, भाग्य का खोट—(क) चोट पर चोट लगे तो भाग्य का ही दोष मानना चाहिए। जब किसी आदमी की विपत्तियाँ बढ़ती ही जाएँ तो उसके प्रति सहानुभूति से ऐसा कहते हैं। (ख) जब किसी के यहाँ अर्थसंकट के समय में अनचाहे मेहमान आ जाएँ तो भी ऐसा कहा जाता है। तुलनीय : गढ़० दुखदा ठेस, अड़िठा भेंट।

चोट लगी पहाड़ की और तोड़े घर की सिल—पहाड़ से चोट लगी और तोड़ रहे हैं घर की सिल। जब कोई बाहर का ग़ुस्सा घर में उतारता है तब कहते हैं।

चोटी का खाज और पीहर की आस—स्त्रियों के बालों में प्रायः खाज होती रहती है और मरते दम तक उन्हें मायके से कुछ न-कुछ मिलने की आशा रहती है। तुलनीय : मेवा० चोटी की खाज अर पीर की आश कदी नी मटे।

चोटी तो हमारे हाथ में है जायगा कहाँ?—जो व्यक्ति किसी कारणवश अपने अधीन हो उसका अपने प्रतिकूल जाने का भय नहीं रहता। तुलनीय : पंज० दुब ता साडे हाथ बिच है जावें गा कित्थे।

चोट्टी कुतिया जलेबियों की रखवाली—भक्षक को ही रक्षक बनाने पर कहा जाता है। तुलनीय : मरा० चोरटी कुत्री जिलब्या राखते; हरि० चोरटी कुत्तिया अर जलेबियाँ की रुखाल; कौर० चोट्टी कुतिया जलेबियाँ की रखवाली; ब्रज० चोट्टी कुतिया जलेबिन की रखबारी।

चोट्टी कुतिया जलेबी की रखवाली—ऊपर देखिए।

चोर आए चुप-चाप चौकीदार आए बोलता—दोषी

या अपराधी व्यक्ति सदा लुक-छिप कर रहता है और निर्दोष व्यक्ति स्वतंत्र रूप से घूमता है। तुलनीय : गढ़० बाग आयो लुकदो-लुकदो, कुकर आयो भुकदो-भुकदो; पंज० चोर आवे चुप-चाप पैरेदार आवे बोलदा।

चोर उचक्का चौधरी, कुटनी भई परधान —(क) जब किसी तुच्छ मनुष्य का बोलबाला हो जाय तब कहते हैं। (ख) प्रायः देखा जाता है कि दुष्ट प्रकृति के लोग ही प्रभावशाली होते है और लोग डर के मारे उ के इशारों पर नाचते हैं। तुलनीय : पंज० चोर उचक्का चौधरी गुंडी रन्न परधान।

चोर और मोट कसकर बाँधना चाहिए—चोर तथा गठरी (मोट) को मज़बूती से बाँधना चाहिए। ढीला बाँधने से चोर के भागने और गठरी से सामान गिरने का भय रहता है।

चोर और सांप की बड़ी धाक होती है—इनसे सब लोग डरते हैं।

चोर सांप दबे पे चोट करते हैं जब चोर और सांप घिर जाते है और उन्हें भागने का कोई रास्ता नही मिलता तब वे आक्रमण करते है। तुलनीय : पंज० चोर अते सप दबण अते वडदे हन; ब्रज० चोट्टा और स्पाँप दबे पै चोट करे।

चोर कहें अइहै अँधियारी —चोर कहते हैं कि फिर अंधेरी रात आएगी और चोरी करने का अवसर मिलेगा। स्वार्थी व्यक्तियों के प्रति कहते है जो सदा अपने स्वार्थ की ताक में ही लगे रहते है। तुलनीय : ब्रज० चोर कहै अँधियारो आवै।

चोर का कोई हिमायती नहीं चोर का साथी कोई नही होता या चोर की सहायता कोई नही करता। तुलनीय : पंज० चोरदा कोई साथी नई; ब्रज० चोर कौ कोई हिमायती नाये होयँ।

चोर का चावल चार पैसे सेर —चोरी का माल सस्ता बिकता है। तुलनीय : मैथ० चोरनी चाउर टके सेर; भोज० चोर क चाउर टके सेर, पंज० चोर दे चौल चार पैहे सेर; ब्रज० चोर के चामर टका सेर।

चोर का जी कितना चोर मे साहस नहीं होता। तुलनीय : अव० चोर कै जिव केतना; पंज० चोर दा दिल किन्ना; ब्रज० चोर कौ ज्यी कितनो।

चोर का जीव आधा— चोर बहुत डरपोक होते हैं। तुलनीय : पंज० चोर दा दिल अद्दा; ब्रज० चोर कौ ज्यौ आधौ।

चोर का दिल सरसों बराबर—चोर का दिल बहुत छोटा होता है यानी उसमें साहस का अभाव होता है। तुलनीय : भोज० चोर क दिल सरसो बरोबर; मैथ० चोर के दिल सरसों लेखा होरवडले; पंज० चोर दा दिल सरों बराबर।

चोर का धन चंडाल खाए—दे० 'चोर का माल···'।

चोर का भाई गठकटा — नीचे देखिए।

चोर का भाई गिरहकट— जो जैसा होता है उसके साथी-संगी भी वैसे ही होते है। अर्थात् दुष्टों के साथी भी दुष्ट होते हैं। तुलनीय : अव० चोर के भाई गिरहकट; गढ़० चोर को साखी बटमार; छत्तीस० चोर के भाइ गरकट्टा; फ़ा० सगे-ज़र्द बिरादरे-शग़ाल; ब्रज० चोर को भैया गिरह कट; अं० A boaster and a liar are cousins.

चोर का भाई डाकू दे० 'चोर का भाई गिरहकट'।

चोर का मन बकुचे में —चोर की नज़र गठरी पर रहती है। (क) जिसका जो पेशा होता है उसका ध्यान उसी पर रहता है। (ख) दुष्ट व्यक्ति सदा दुष्टता करने की ताक में रहते है।

चोर का मन बसे ककड़ी के खेत में— बुरी प्रकृति के लोगों का ध्यान सदैव बुराई की ओर ही जाता है। तुलनीय : भोज० चोरवा क मन ककरी क खेत में रहेला; मैथ० चोरवा के मन बसे ककरी के खेत में।

चोर का माल चांडाल खाय—अनुचित ढंग से अर्जित धन का फ़ायदा दूसरे लोग ही उठाते है। या अनुचित ढग से अर्जित धन का सही उपयोग नही होता। इस सबंध में एक कहानी है जो इस प्रकार है: चार चोर कही से धन चुरा कर लाए। उन्होंने सोचा कि आज मिठाई खाना चाहिए। दो चोर मिठाई लेने गए। जो दो चोर रह गए थे उन्होंने सोचा कि यदि उन दोनों को मार दिया जाय तो हम लोगों को उन दोनों का भी हिस्सा मिल जाएगा। उधर मिठाई लाने वाले चोरों ने सोचा कि यदि मिठाई में विष मिला दिया जाय तो मिठाई खाकर वे दोनों मर जाएँगे और उन दोनों का हिस्सा भी हम लोगों को मिल जाएगा। मिठाई लेकर ज्यों ही दोनों चोर पहुँचे उन दोनों चोरों ने उन्हें मार डाला। इसके बाद मिठाई खाने पर वे दोनों भी मर गए। इस प्रकार चारों चोर मर गए। ख़बर मिलने पर गाँव के डोमों ने उन्हें जलाया और सारा धन उनके हाथ लगा। तुलनीय : अव० चोर के माल चण्डाले खात है; हरि० चोरी का माल मोरी में; गढ़० चोर को माल चडाल खौ; छत्तीस० चोर के धन ला चंडाल खाय, पापी हांन मलते रहि जाय; पंज०

चोर दा माल चंडाल खाण।

चोर का माल सब कोई खाय, चोर की जान अकारथ जाय--चोर द्वारा चोरी करके लाए गए धन का उपयोग उसके साथी-संबंधी तथा परिवार के लोग भी करते हैं परतु दंड केवल चोर को ही भुगतना पड़ता है। तुलनीय : अव० चोरी कै माल सब जन खायँ, चोखा कै जिउ अल्ले जाय।

चोर का मुँह चाँद सा – (क) क्योंकि वह अपने को निर्दोष साबित करता है। (ख) उसके (चोर के) चेहरे में चाँद की तरह स्याही रहती है अर्थात् उसके चेहरे से उसका चोर होना साबित होता है। तुलनीय : पंज० चोरदा मुँह चन्न वरगा।

चोर का मुँह चाई—चोर की शक्ल ही उसे बता देती है। तुलनीय : मैथ० चोर क मुँह चाई सन; भोज० चोर क मुँह चान अइसन, चोर के मुँह चान (चाँद) अइसन।

चोर का शहीद चिराग़ नीचे देखिए।

चोर का शाहिद चिराग़—चोर की गवाही चिराग़ ही दे सकता है, चोर प्रकाश में चोरी नहीं करता। (शाहिद = गवाह)।

चोर का साथी गिरहकट्ट--दे० 'चोर का भाई ……'। तुलनीय : मल० कन्नु चेन्नाल् कन्निन् कूटटत्तिल; अं० Birds of a feather flock together.

चोर का सिर नीचा—चोर किसी के सम्मुख सिर नहीं उठा सकता। वह सदा शर्मिंदा रहता है। तुलनीय : अव० चौर कै मूँड नीचा; पंज० चोर दा सिर नींदा; ब्रज० चोर कौ सिर नीचौ।

चोर का हाल सो मेरा हाल—अपने को निर्दोष साबित करने के लिए कहते हैं कि यदि मैं दोषी हूँ तो मुझे वैसा ही दंड दिया जाय जैसा चोरों को दिया जाता है।

चोर की और साँप की धाक बड़ी होती है—दे० 'चोर और साँप की बड़ी…'।

चोर की गति चोर ही जाने--चोर की गतिविधियों को चोर ही जान सकता है। अर्थात् जो जिस काम को करता है वही उस काम के करने वालों के विचारों से अच्छी तरह परिचित रहता है। तुलनीय : राज० चोररी गत चोर जाणै; पंज चोर दी गति चोर जाणे; ब्रज० चोर की गति चोरई जानें।

चोर की जमानत नहीं होती—चोर की कोई जमानत नहीं कराता क्योंकि उसकी जमानत लेने वाले पर भी चोर होने का शक किया जाता है। आशय यह है कि बुरे व्यक्तियों का कोई साथ नहीं देना चाहता। तुलनीय : अव० चोर कै जबानत नाहीं होत; पंज० चोर दी जमानत नहीं हुंदी।

चोर की जोरू का मुँह कोठे में--(क) चोर की पत्नी सदा कमरे के अंदर रहती है क्योंकि चोरी के धन को बंद कमरे में ही देखा और भोगा जा सकता है। (ख) चोर की पत्नी को अपने पति के अपराधों के कारण सदा मुँह छिपा कर रखना पड़ता है वह कभी गर्दन उठाकर नहीं चल सकती है, इस कारण भी उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : माल० चोर री मां रो कोठड़ा में मूण्डो; राज० चोररी माँ घड़े में मूंढो घाल'र रोवे; मेवा०चोर की माँ छाने-छाने रोवे; पंज० चोर दी बौटी दा मुँह कोठे बिच।

चोर की जोरू कोने में मुँह देकर रोवे ऊपर देखिए।

चोर की दाढ़ी में तिनका अपराधी ज़रा-ज़रा-सी बात पर अपने ऊपर शंका करके दूसरों से लड़ता है। इस पर एक कहानी है : एक बार किसी क़ाज़ी ने चोरी के मामले में बहुत से आदमियों को इकट्ठा किया जिन पर उसे संदेह था। जब क़ाज़ी को चोर का पता न चला तो क़ाज़ी ने कहा कि चोर वह है जिसकी दाढ़ी में तिनका है। उनमें जो चोर था झट अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरकर देखने लगा। अन्त में वही चोर ठहराया गया और चोरी का माल भी बरामद हो गया। तुलनीय : मरा० चोराच्या दाढ़ींत काडी (गवताची); गढ़० चोर की दाढ़ी माँ तिनका; राज० चोररी दाड़ी में तिणखलो; भोज० चोर क दाढ़ी में तिनका; अव० चोर के डाढ़ी मा तिनका; मल० एन्नेकळण्टाल् विळ्णम् कट्टु सन्नु तोन्नुमो; पंज० चोर दी दाड़ी बिच तीला; ब्रज० चोर की दाढ़ी में तिनका; A guilty conscience needs no accuser.

चोर की नजर गठरी पर—दे० 'चोर का मन बकुचे…'।

चोर की माँ कब तक खैर मनावे—एक दिन चोर पकड़ा ही जाता है। उसके शुभाकांक्षी कहाँ तक उसकी शुभकामना करके उसकी रक्षा कर सकते हैं। तुलनीय : भोज० चोर क माई कबले खैर मनाई; हरि० बकरे की माँ कद ताही खैर मनावैगी; पंज० चोर दी माँ कदों तक खैर मनावेगी; ब्रज० चोर की मा कहाँ तक खैर मनावै।

चोर की माँ कोठी में सिर देकर रोती है—दे० 'चोर की जोरू का मुँह…'।

चोर की माँ रोने से डरती है—कि कहीं लोग जान न जायँ कि उसी का बेटा चोर है। तुलनीय : तेलु० दोंग तल्लिकि एड्डु भयमु; पंज० चोर दी माँ रोण तों डरदी है।

चोर की स्त्री चुपचाप रोती है—दे० 'चोर की जोरू

का मुँह···'।

चोर के ख्वाब में बुकचे— चोर को स्वप्न में भी गठरी ही दिखाई पड़ती है। आशय यह है कि जिसका जो पेशा होता है उसका ध्यान सदा उसी ओर रहता है तुलनीय : मरा० चोराला स्वप्नातहि बोचकीच दिसतात।

चोर के घर छिछोर - एक दुष्ट को दूसरा दुष्ट जब दबाना चाहे तो कहते है। तुलनीय : अव० चोर के घरे मा छिछोर।

चोर के घर में मोर— (क) जब कोई अपना ही आदमी धोखा दे तब कहते हैं। (ख) जब बेईमानी से कमाए धन को कोई और धोखा देकर ले जाय तो भी कहते हैं। कथा है कि एक चोर कहीं से हार चुरा कर लाया। उस हार को उसका मोर निगल गया और वह पछताता रह गया। तुलनीय : पंज० चोर कर बिच मोर।

चोर के दिल में उजाला रहता है—चोर के दिल में सदा उजाला ही रहता है क्योंकि उसे सदा यही डर रहता है कि बत्ती जल जाने पर उजाले में मुझे कोई पकड़ न ले। जो व्यक्ति सदा सशंकित रहे उसके प्रति व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : राज० चोर रे मन में चानणो बसै।

चोर के पाँव नहीं होते - (क) चोर बहुत डरपोक होता है और मामूली-सी मारपीट से या धमकाने से सब कुछ बतला देता है। (ख) चोर जरा-सा खटका होते ही भाग खड़ा होता है। (ग) अपराधी मनुष्य परीक्षा की कसौटी पर नहीं ठहरता। तुलनीय : मरा० चोराला पाय नसतात; राज० चोररा पग काचा; हरि० चोर के पाँह नहीं होते; पंज० चोर दे पैर नहीं हुंदे; ब्रज० चोट्टा कै पाम नाये होये।

चोर के पास चादर ही नहीं—चोर के पास चोरी का माल बाँधने के लिए चादर ही नहीं है। जिस व्यक्ति के पास किसी कार्य को करने के आवश्यक साधन न हों उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० चोर कने पडाखली ही को नी; पंज० चोर कोल चादर नई।

चोर के पेट में गाय आप ही आप रंभाय – पापी का पाप स्वयं उसी के कारनामों से प्रकट हो जाता है। तुलनीय : पंज० चोर दे टिड विच गा अपणे आप बाँग देवे।

चोर के पैर चोर पहचाने चोर के पद-चिह्नों को चोर ही पहचानता है। जो जैसा होता है वही अपने जैसे लोगों के कार्यों या भेदों को जानता है। तुलनीय : राज० चोररा पग चोर ओलखे; पंज० चोर दे पैर चोर पछाणे; ब्रज० चोर के पामन्नें तौ चोरई पहचाने।

चोर के पैर नहीं होते —दे० 'चोर के पाँव नहीं···'।

चोर के पैर ही कितने – दे० 'चोर के पाँव नहीं···'।

चोर के मन में चोरी बसे—बुरे के मन में बुरी ही बातें ही पैदा होती हैं।

चोर के माथे छींदी—चोर की पगड़ी में छेद रहता है। चोरी का धन स्थायी नहीं रहता, इसी कारण चोरी करने वाला निर्धन का निर्धन ही रहता है। तुलनीय : पंज० चोर दे मत्थे मोर।

चोर के सौ दिन, शाह का एक दिन—अपराधी अनेक बार अपराध करता है लेकिन जब एक बार भी वह पकड़ में आ जाता है तो उसे सभी अपराधों का दंड उसी दिन मिल जाता है। तुलनीय : भीली— चोर ना तो हो दाड़ा 'धणी नो एक दाड़ो; पंज० चोर दे सौ दिन सेठ दा इक दिन; ब्रज० चोर के सौ दिन, साह कौ एक दिन।

चोर के हाथ में दीया - दीया चोर की सहायता भी कर सकता है और पकड़वा भी सकता है। तुलनीय : पंज० चोर दे हाथ बीच दीवा; ब्रज० चोर के हात में दीयो।

चोर को अंगारा मीठा चोर को जलता अंगारा भी मीठा लगता है। जो अपने बुरे कामों को भी अच्छा ही समझता है उसके लिए कहते हैं। किसी समय यह प्रथा थी कि यदि किसी पर चोरी का संदेह होता था तो उसे अपनी निर्दोषता दिखाने के लिए अपने मुँह में अंगार रखना पड़ता था। जो चोर होता था उसकी जीभ जल जाती थी।

चोर को अँधियारी प्यारी चोर को अँधेरी रात प्रिय होती है क्योंकि उसका मतलब उसी में सिद्ध होता है। तुलनीय : अव० चोर के अंधियरिया पियार; हरि० अन्धेरी रात तै चोर न माँगी; भोज० चोर के अन्हरिये भावे; ब्रज० चोर कूँ अँधेरी भावै।

चोर को अँधेरी भावै— ऊपर देखिए।

चोर को क्या मारे, चोर की माँ को मारे -चोर को नहीं मारना चाहिए बल्कि चोर की माँ को मारना चाहिए ताकि भविष्य में पुनः चोर न उत्पन्न हो। आशय यह है कि बुराई की जड़ को समाप्त करना चाहिए। तुलनीय : हरि० चोर नै के मारे ? चोर की माँ नै मारे; राज० चोर री मा ने हीज मारणे जोई जै; माल० चोर ने कई मारो चोर री माँ ने मारणी; पंज० चोर नूँ नाँ मारो चोर दी माँ नूँ मारो।

चोर को ख्वाब में बुकचे— दे० 'चोर के ख्वाब में···'।

चोर को चोर पहचानता है एक चोर दूसरे चोर को बहुत शीघ्र पहचान लेता है। आशय यह है कि अपने क्षेत्र के लोगों की परख लोग आसानी से कर लेते हैं। तुलनीय :

भोज० चोर के चोरे जानेला; अव० चोर का चोरै पहिचानै।

चोर को चोर पकड़े—क्योंकि चोर चोर की चालों को जानता है। आशय यह है कि जिस क्षेत्र का होता है वह उस क्षेत्र के लोगों को आसानी से परख लेता है। तुलनीय: राज० चोर ने चोर पकड़े; पंज० चोर नूं चोर फड़े; ब्रज० चोर ऐ चोरई पकरै; अं० Set a thief to catch a thief.

चोर को चोर पहचानता है—ऊपर देखिए।

चोर को चोर ही सूझे—जो मनुष्य जैसा होता है उसे सब वैसे ही मालूम होते हैं। तुलनीय: हरि० बेईमान न बेईमानए दीखे; पंज० चोर नूं चोर ही लब्बे।

चोर को चौकीदार करें—भक्षक को रक्षक बनाने पर कहते हैं। तुलनीय: अव० चोर का चौकीदार बनावे।

चोर को न मार, चोर की माँ को मार—दे० 'चोर का क्या मारे चोर…'।

चोर को न मारो, चोर की माँ को मारो—दे० 'चोर को क्या मारे चोर…'।

चोर को पकड़िए गाँठ से, छिनाल को पकड़िए खाट से—चोर को माल सहित पकड़ना चाहिए और छिनाल (दुश्चरित्र स्त्री) को खाट पर ही पकड़ना चाहिए नहीं तो प्रमाण मिलना कठिन हो जाता है। तुलनीय: ब्रज० चोरै पकरै गाँठी पै, छिनारिऐ पकरै खाट पै।

चोर को पचीसों राह—चोर को चोरी करने के लिए पच्चीसों राहें मिल जाती हैं। जिस व्यक्ति को बुरा काम करना होता है वह अनेक रुकावटों के रहते भी कोई-न-कोई रास्ता खोज ही लेता है। तुलनीय: भीली—चोर ने हतरे चे कलाँ; पंज० चोर नूं पंजी राह; ब्रज० चोर कूं पच्चीस गिरारे।

चोर को पन्हई दूर से सूझे—क्योंकि वह उसी से पीटा जाएगा। (क) बुरा काम करने वाले को उसका बुरा नतीजा पहले से ही मालूम हो जाता है। (ख) चोर ज़रा-सा खटका होने पर तुरन्त सावधान हो जाता है। (पन्हई=जूता।) तुलनीय: पंज० चोर नूं जुत्ती दूरों लब्बे।

चोर को मारे नीबू को गारे—चोर मारने पर सुधरता है तथा नीबू खूब दबाने पर रस देता है। तुलनीय: मग० चोर के भरले नेभू के गारले; भोज० चोर के भरले नीबू के गरले; पंज० चोर नूं मारों निंबू नूं गालो।

चोर को मोर मिले—चोरों के धन में हिस्सा बँटाने वाले बहुत होते हैं। जब किसी के मुफ्त के धन को और कोई मार ले जाय तो व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय: भीली—चोरा वचे मोर पड़े; पंज० चोर नूं मोर पैण।

चोर को मोर, मोर को और—चोरों का धन कोई खाता है और उनसे छीन कर दूसरे खा जाते हैं। आशय यह है कि (क) अनुचित राह से आया हुआ धन किसी के काम नहीं आता। (ख) दूसरों के धन को छीनने वाले के पास वह धन नहीं रह पाता। तुलनीय: पंज० चोरां नूं मोर ते मोरां नूं होर; गढ़० छोट्टा कू बड़ो, बड़ा कू बाघ, बाघ कू जिवालो, जियाला कू आग; मरा० चोरावर मोर।

चोर क्या जाने मंगनी के बरतन—चोर को चुराने से मतलब। वह यह नहीं सोचता कि ये बर्तन इन्हीं के हैं या ये किसी से माँग कर लाए हैं। तात्पर्य यह है कि स्वार्थी व्यक्ति अपने स्वार्थ के आगे किसी का दुःख-दर्द नहीं देखते। तुलनीय: अव० चोर का जानै की मंगनी कै बासन अहै; पंज० चोर नूं मंगनी दे पांडिया नाल की।

चोर गठरी ले गया बेगारियों से छुट्टी पाई—जिस काम में मन न लगता हो उससे किसी कारणवश छुटकारा मिल जाय तब कहते हैं। तुलनीय: अव० चोर गठरी लैगें, बेगारिन छुट्टी पायेन, भोज० चोर लेगइल गठरी उसास हो गइल।

चोर चकार चूके लेकिन चुग़ल न चूके—चुग़लखोरों पर कहा गया है। चुगलखोर चुग़ली करने से बाज़ नहीं आते। तुलनीय: अव० चोरवा चूक जात मुला चुगलिया न चूके; ब्रज० चोर चूकै परि चुगल न चूकै।

चोर चिढ़े और डाकू डाटें—चोर को यदि चोर कहा जाय तो वह चिढ़ जाता है और डाकू को यदि डाकू कहा जाय तो वह डाँट-डपट कर सबको चुप करा देता है। अर्थात् कोई अपने को अपराधी स्वीकार नहीं करता। कोई अपराधी अपने को निरपराध जताने के लिए चिढ़े या रुआब दिखावे तो उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय: गढ़० चोर चरचरो, जार जरजरो।

चोर चुरावे गर्दन हिलावे—चोर चोरी करके उसे मानने से इंकार करता है। जब कोई अपराध करके उसे स्वीकार नहीं करता तब कहते हैं।

चोर चोर का ही साथी होता है—जो जिस स्वभाव का होता है वह उसी स्वभाव के लोगों से संबंध रखता है। तुलनीय: मल० कन्नु चेन्नाल् कन्निन कूट्टानल्; पंज० चोर चोर दा ही साथी हुंदा है; अं० Birds of a feather flock together.

चोर चोर को पहचानता है—जो जैसा होता है वही उस ढंग के लोगों की परख कर पाता है। तुलनीय: मल० कळळने कलवरियु; अं० A thief knows a thief and a

wolf knows a wolf.

चोर चोर मौसरे भाई (क) एक व्यवसाय या स्वभाव के लोगों में परस्पर मैत्री होती है। (ख) जब किसी के बुरे कार्यो पर कोई पर्दा डालने की कोशिश करता है तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० चोर चोर मसियाउत भाई; अव० चोर चोर मौसिआउत भाई; राज० चोर चोर मासिया भाई; मरा० चोर चोर मावस भाऊ; हाड़० चोर-चोर माँसवी जाया भाई; ब्रज०, बुंद० चोर-चोर मौसयाते भैय्या; कौर० चोर-चोर मुसेरे भाई; निमाड़ी—चोर-चोर मौसेरा भाई; मल० भल कलने कळने अरियू; अं० Like draws like. Birds of a feather flock together.

चोर चोरी कर गया, मूसलों ढोल बजाय – खुलेआम अपराध या अन्याय करने वालों के प्रति कहते है।

चोरी चोरी करता है, पर घरवालों से तो सच कहता है—जब कोई व्यक्ति अपने परिवार वालों से भी अपने किसी दोष या हानिप्रद बात को छिपाता है तो कहते हैं। तुलनीय : राज० चोर चोरी करै घर आ तो सच बोलै; पंज० चोर चोरी करदा है पर कर वालगां तो तां लुकांदा है ।

चोर चोरी से गया तो क्या हेराफेरी से भी गया—किसी का जातीय गुण कभी नहीं जाता। यदि वह बुराइयों को छोड दे फिर भी कुछ न कुछ चेष्टा किया ही करता है। इस पर एक कहानी है : एक चोर के कई बार पकड़े जाने और सजा पाने के कारण वह साधु हो गया। भला साधुओं के पास चुराने को क्या वस्तु थी, इसलिए उसे चैन न पड़ता, वह केवल साधुओं की चीज़ों को उलट-पुलट किया करता और इसी से अपने को शांत करता । जब साधु सो जाते तो एक की गठरी दूसरे के नीचे और दूसरे की गठरी पहले के सिर के नीचे रख दिया करता था। जब साधुओं को पता लग गया और उससे पूछा कि तू क्यों इस प्रकार करता है तो चोर ने जवाब दिया कि मैं पहले चोर था। यद्यपि मैंने चोरी करना छोड़ दिया तो क्या हेरा-फेरी भी न करूँ ? तुलनीय : मरा० चोराने चोरी करणें सोडले, तरी तो उलथा पालथ तरी करीलच; राज० चोर चोरी सूं गयो तो काई हेरा-फेरी सूं गयो; अव० चोर चोरी से जाय मुला हेराफेरी से नही जाय; हरि० चोर चोरी तैं गया तै के हेराफेरी तै बी गया; बुंद० चोरी से गओ, तौ का हेरा-फेरी से गओ ; ब्रज० चोर चोरी छोड़दे हेरा-फेरी नायें छोड़ै; कौर० चोर चोरी तें जा, हेरा फेरी तें न जा।

चोर चोरी से गया, हेराफेरी से नहीं गया—ऊपर देखिए।

चोरी से गया हेराफेरी से नहीं—दे० 'चोर चोरी से गया तो क्या··· ।' तुलनीय : ब्रज० चोर चोरी ऐ छोड़ि देगौ, हेराफेरी ऐ थोरेंई छोड़ि देगौ।

चोर चोरी से जाए हेरा फेरी से न जाए— दे० 'चोर चोरी से गया···'।

चोर छिनाल उलटे चलें—चोर और कुलटा (छिनाल) सदा उलटे चलते हैं। अर्थात् चोर और छिनाल समाज के नियमों के विपरीत कार्य करते हैं। तुलनीय : भीली —चोरे चेनाल नी उल्टी रीती।

चोर जहाँ जाय, वहीं चाँद दिखाय—चोर जहाँ कहीं भी चला जाय चाँद भी उसके साथ ही रहता है। (क) जब कोई व्यक्ति किसी दुष्ट को दुष्टता करने का अवसर न दे, उसके पीछे ही लगा रहे तो कहते हैं। (ख) भगवान प्रत्येक स्थान में प्रत्येक व्यक्ति के कामों को देखते रहते हैं। तुलनीय : ब्रज० चोर जहाँ जाय वहीं चंदा दीखै; पंज० चोर जित्थे जावे अपणे हत्थ दिखावे ।

चोर जाते रहे कि अँधियारी— (क) अँधेरा पक्ष जाते ही चोर निराश हो उठता है क्योंकि उजेले पक्ष मे चोरी करना खतरे से खाली नहीं होता। (ख) सतर्क रहने के लिए ऐसा कहते है कि न अभी चोर गए हैं और न अँधेरा पक्ष ही गया है यानी किसी भी समय घटना घटित हो सकती है।

चोर जाने चोर का सार— चोर की असलियत (सार) चोर ही जानता है। अर्थात् एक ही काम के करने वाले एक-दूसरे की वास्तविकता जानते हैं। तुलनीय : पंज० चोर नूं चोर दे सार दा पता; ब्रज० चोर जाने चोर की सार।

चोर जाने चोर की घात—चोर के दाँव-पेंच को चोर ही जानता है। अर्थात् एक ही काम को करने वाले एक-दूसरे के दाँव-पेंच को भली प्रकार समझते हैं। तुलनीय : अव० चोरवा जानै चोरवा के घात; बुंद० चोर जाने चोर की घाई; ब्रज० गूंगा जाने कि गूंगा के घर के; पंज० चोर ही चोर दियां गलां नू जाणदा है ।

चोर जाने चोर की हाल—दे० 'चोर जाने चोर का सार।' तुलनीय : ब्रज० चोर ई जाने चोर की हाल।

चोर जुआरी / जुवारी गंठकटा जार और नार छिनार, सौ सौगंधें खायं जो घाघ न कर इतबार—घाघ कहते हैं कि चोर, जुआरी / जुवारी (जुआ खेलने वाले), गंठकटे (राहज़नी करने वाले या सामान छीनने वाले), जार (पर-स्त्रीगामी) और छिनार (दुश्चरित्र) स्त्रियों का कभी भी विश्वास नहीं करना चाहिए, चाहे ये सौ क़समें (सौगंधें)

खायें।

चोर जुआरी गठकठा, जार औ नार छिनार; सौ सौगंधें खायें जो, भूल न कर इतबार---ऊपर देखिए। तुलनीय : अव० चोर छिनार जुआरी, इन तीनों गंगा हारी।

चोर ढोर का नहीं भरोसा---चोर और पशु का विश्वास नहीं करना चाहिए। ये किसी भी समय हमला कर सकते हैं, अतः इन दोनों से सावधान रहना चाहिए। तुलनीय : भीली---चोर ढोर ना हूँ भरोसा करवा; पंज० चोर ढोर दा कोई परोसा नई।

चोर ढोर दोनों हाजिर हैं---चोर और पशु दोनों सामने हैं। प्रमाण सहित किसी चोर को पकड़ने पर कहा जाता है।

चोर न कहे अपुन को चोर---चोर अपने को चोर नहीं कहता। आशय यह है कि बुरे अपने को बुरा नहीं कहते हैं, या अपराधी अपने को अपराधी नहीं कहते। तुलनीय : पंज० चोर अपने नू चोर नई कंदा।

चोरन कुतिया मिल गई पहिरो केकर देय---जब कुतिया ही चोरों से मिल गई तो पहरा कौन दे सकता है? जब अपना कोई घनिष्ठ व्यक्ति ही शत्रु से मिल जाय तो कहते हैं क्योंकि ऐसी दशा में सुरक्षा संभव नहीं। तुलनीय : ब्रज० कुतिया मिलि गई चोर ते फिरि को पहरौ देय।

चोर न जाने मँगनी के बासन---दे० 'चोर क्या जाने मँगनी···'।

चोरन बकुचा लीन बेगारिन छुट्टी पाएन---दे० 'चोर गठरी ले गया···'।

चोर नारि प्रगटि न रोई---चोर की पत्नी किसी के सामने नहीं रोती, क्योंकि उसे इस बात का भय रहता है कि लोगों द्वारा रोने का कारण पूछा जाने पर भेद खुल जाएगा।

चोर पकड़े, जार पकड़े, पर झूठे को कौन पकड़े---चोर पकड़ा जा सकता है, जार (पर स्त्रीगामी) भी पकड़ा जा सकता है, किंतु झूठे को पकड़ना बहुत कठिन होता है। झूठ बोलने वालों के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० चोररो पकड़े, जाररो पकड़े, झूठे आदमीरो कांई पकड़े; पंज० चोर फड़ो यार फड़ो पर चूठे नूं कौण फड़े।

चोर भला, मूर्ख बुरा---मूर्ख व्यक्ति से सभी तरह के मनुष्य अच्छे होते हैं, यहाँ तक कि चोर भी अच्छे होते हैं। तुलनीय : गढ़० चोर भला बेवकूफ बुरा।

चोर राजा को भी नहीं छोड़ता---(क) चोर या बुरे व्यक्ति छोटे-बड़े सभी को हानि पहुँचाते हैं। (ख) दुष्ट व्यक्ति अपने रक्षक के साथ भी दुष्टता से पेश आने से बाज नहीं आते। तुलनीय : राज० चोर बादसाही माल खावै; पंज० चोर राजा नूं वी नईं छड़दा; ब्रज० चोर राजा ऊ ऐ नायें छोड़ै।

चोर लाठी दो जने, हम बाप पूत अकेले---चोर ने लाठी लेकर बाप-बेटे पर आक्रमण किया और सारा सामान छीन लिया। सामान छिन जाने पर बेटे ने कहा कि हम (बाप-बेटा) अकेले थे और वह (चोर तथा लाठी) दो थे। ऐसी दशा में हम लोग कर ही क्या सकते थे? जब कोई व्यक्ति अपनी कमजोरी छिपाने के लिए उलटी-सीधी या बेमतलब की बातें कहता है तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० चोरवा के हाथ मा लाठी रही, हम पूत अकेले रहिन।

चोर लूटे अनजान, बनिया लूटे जान---चोर तो बिना जान-पहचान के व्यक्ति को लूटता है किंतु बनिया जान-पहचान वाले को लूटता है। बनियों के प्रति कहते हैं क्योंकि वे किसी के साथ रियायत नहीं करते।

चोर ले गया गठरी, बेगारिन छुट्टी पाई---दे० 'चोर गठरी ले गया···'।

चोर ले, न साधु पूछे---(क) चोर को चोरी से काम, चाहे वस्तु किसी साधु की ही क्यों न हो। (ख) ऐसी वस्तु के प्रति भी कहते हैं जिसे कोई नहीं पूछता (लेता, चुराता)। तुलनीय : पंज० चोर लेवे ना साधु पुछे।

चोर ले न साह छुए---अचल संपत्ति के प्रति कहते हैं जिसे न तो चोर चुरा सकता है और न साहूकार ही ले सकता है।

चोर ले, साधु न पूछे---किसी वस्तु को चोर चुरा सकता है पर साधु उसे नहीं चुराता। आशय यह है कि दुष्ट व्यक्ति दुष्टता करते हैं पर सज्जन व्यक्ति ऐसे कामों से दूर रहते हैं।

चोर वही जो पकड़ा जाय---जब तक किसी को चोरी करते पकड़ न लिया जाय तब तक उसे चोर नहीं कहा जा सकता। चोर अपने को निर्दोष बतलाने के लिए ऐसा कहते हैं। चोरों के समर्थक भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० चोर ओही जिहड़ा फड़या जावे; ब्रज० चोर वही जो पकर्यौ जाय।

चोर सब घर ले मरे---चोर पकड़े जाने पर अपने सभी साथियों को बतला देते हैं, यहाँ तक कि निर्दोष व्यक्तियों को भी फँसा देते हैं।

चोर साह को दंड दे---जब अपराधी उलटे निरपराध व्यक्ति को दोषी ठहराने का प्रयत्न करता है तब व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भीली---चोर साहुकारे दंडे।

चोर से कहे चोरी कर, साहु से कहे जागता रह---ऐसे

व्यक्ति के प्रति कहते हैं जो व्यक्तियों या दो दलों में झगड़ा लगाकर स्वयं दूर से तमाशा देखना चाहता है। तुलनीय : भोज० चोर से कहे चोरी करऽ साहु से कहे जागत रहऽ; मैथ० चोर के संग चोर पहरू के संग खवास; ब्रज० चोर ते कहँ चोरी करि, साहते कसैंहै जागतौ रह।

चोर से कहे चोरी कर साहूकार से कहे जागते रहो — ऊपर देखिए। तुलनीय : भोज० चोर से कहें चोरी कर, साह से कहें जाग; तेलु० दोंगकु तलुपु तीसि दोरनु लेपिनट्लु; अव० चोर से कहै चोरी करौ, साह से कहै जागत रहौ; राज० चोर नै कह चोरी कर, साहूकार नै कह जाग; मरा० चोराल म्हणे चोरी कर, मावाला म्हणे जागा रहा; माल० चोर ने के चोरी करजे, ने घर धणी ने के के होंशियार रीजे; गढ़० चोर मूं चोरी करौ साहू मू जाग रिलौ; गुज० चोर ने केह के खातर पाड ने, साहुकार ने केह के जागतो रहे; कन्न० हौदप्पन चारडियल्लि हौदप्प, अल्लप्पन चावडियल्लि अल्लप्प; असमी—साप है खाय, बेज है चाय; अं० To run with the hare and hunt with the hounds.

चोर से कुत्ता मिल गया पहरा कैसे देय ?— दे० 'चोरन कुतिया मिल गई…'।

चोर हथेली पर जान लिए फिरता है —चोरी करना खतरनाक काम है। चोर हर समय अपने को खतरे में समझता है। इसलिए वह मरने-जीने की कोई चिंता नहीं करता। तुलनीय : पंज० चोर हत्थ उत जाण लैके फिरदा है; ब्रज० चोर की हतेरी पै जानि होयै।

चोरहि चाँदनी रात न भावा —(क) चोर को चाँदनी रात अच्छी नहीं लगती, क्योंकि उसका मतलब अँधेरी रात में सधता है। (ख) बुरे लोगों को अच्छी बातें बहुत बुरी लगती हैं। तुलनीय : अव० चोरवा का अंजोरिया नाहीं नीक लागत।

चोरी और मुँहज़ोरी— जब कोई अपराध भी करे और जवाब भी दे तब कहते हैं। तुलनीय : अव० चोरी औ मीनाजोरी; पंज० चोरी वी मूँह जोरी वी।

चोरी और सीनाज़ोरी—जब कोई अपराध भी करे और उलटे आँख भी दिखावे तब कहते हैं। तुलनीय : अव० चोरी औ मीनाजोरी; हरि० राह में हागगे अर दीदे काढ़ै; बंग० चोरी न मीनाजोरी; पंज० चोरी अते मीनाजोरी राह हग्गे आने टड्डे।

चोरी ककड़ी से, बाघ बकरी से —चोरी करने की आदत छोटी-छोटी चीजों से पड़ती है तथा बकरी खानेवाला बाघ ही एक दिन मनुष्य को भी खाने लगता है। (क) जो व्यक्ति पहले छोटे-मोटे अपराध करता रहे और बाद में बड़े अपराध भी करने लगे तो उसके प्रति कहते हैं। (ख) छोटा-मोटा अपराध करने वाला ही बहुत बड़ा अपराधी बन जाता है। तुलनीय : गढ़० चोर गीज्यो काखड़ी, बाघ गीज्यो बाखरी।

चोरी करि होरी धरी, भई छिनक में छार—चोरी करके होरी लगाई गई और वह क्षण-भर में जलकर राख हो गई। आशय यह है कि हराम की कमाई नहीं ठहरती। तुलनीय : फ़ार० माले-हराम बूद बजा-ए-हराम रफ़्त; अं० Ill gotten ill spent.

चोरी करे और आँख दिखावे— दे० 'चोरी और सीनाजोरी।' तुलनीय : अव० चोरी करै औ आँखों लड़ै रै।

चोरी करे सो मोरी राखे— चोरी करने वाला निकलने के लिए मोरी पहले से बना लेता है। अर्थात् किसी काम को करने से पहले व्यक्ति अपने बचाव की व्यवस्था कर लेता है।

चोरी का गुड़ मीठा —(क) चोरी की चीज विशेष रूप से प्रिय होती है। (ख) पराई स्त्री से संबंध रखने वालों के प्रति व्यंग्य से ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० चोरी दा गुड़ मिट्ठा।

चोरी का धन खखोरी में जाय—अनुचित ढंग से पैदा किया हुआ धन अनुचित काम में ही खर्च होता है।

चोरी का धन मोरी में जाता है नीचे देखिए।

चोरी का धन मोरी में जाय बुरे काम की कमाई बुरे काम में ही खर्च होती है। तुलनीय : मल० वंलुळत्तिळ किट्टियतु वेंल्लत्तिळ पोयि; मरा० (1) चोरीचा माल मोरींत घाल, (2) चोरीचा माल मोरीत; राज० चोरी में मोरी हुगी; ब्रज० चोरी को माल मोरी में; अं० Easy come, easy go; Ill got, ill spent.

चोरी-चोरी हल बनवावें, जोतेंगे क्या आँगन ?— आशय यह है कि बड़े काम छिपाकर नहीं किए जा सकते।

चोरी बेथाँग नहीं होती — बगैर मिले चोरी नहीं होती। अर्थात् भेद मिलने से ही चोरी होती है।

चोरी बेसुराग़ नहीं निकलती—चोरी का माल बड़ी छानबीन के पश्चात् मिलता है।

चोरी सा रोजगार नहीं जो मार न होवे, जूए-सा व्यापार नहीं जो हार न होवे — यदि मार न खानी पड़े तो चोरी से अच्छा कोई काम नहीं है और यदि हार न होवे तो जूए से अच्छा कोई व्यापार नहीं है। जब कोई जूए में हार

जाता है तब ऐसा कहते हैं।

चोरी से अच्छी कहुँ भीख—चोरी करने से भीख माँगना अच्छा है। चोरी करना कितना बुरा कर्म है, इसे बतलाने के लिए ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंच० चोरी नालों मंगना चंगा।

चोरों की बारात में अपनी-अपनी होशियारी—जहाँ अनेक बुरे व्यक्ति इकट्ठे हो जायँ और सब अपने-अपने स्वार्थ की बात सोचें वहाँ व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

चोरों कुतिया मिल गई, पहरा कैसे देय?—दे० 'चोरन कुतिया मिल गई···'। तुलनीय : मेवा० चोरां कुत्ति मिल गया, पहरा किसका देय।

चोरों ने माल छीना, बेगारी से छुट्टी—दे० 'चोर गठरी ले गया···'।

चोरों ने माल छीना बेगारों की छुट्टी—दे० 'चोर गठरी ले गया···'।

चोली दामन का साथ है—गाढ़ी मित्रता तथा निकटतम संबंध होने पर ऐसा कहा जाता है। तुलनीय : ब्रज० चोली दामन कौ साथ।

चौका-सा झाड़ बैठे हैं—सब कुछ खा बैठे है। अर्थात जो व्यक्ति अपनी सारी पूँजी बर्बाद कर चुका हो उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते है।

चौकी गाँव वालों को लूट खाती है—पुलिस के कर्मचारियों की लूट-खसोट की नीति पर व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। (यहाँ चौकी का मतलब पुलिस चौकी से है)।

चौके की राँड़—विवाह के बाद की ही विधवा, अक्षतयोनि विधवा को कहते हैं।

चौके भीतर मुर्दा पाके, जीवेंगे नहाय के—जो लोग ऊपरी ढोंग दिखाते है पर अपना हृदय शुद्ध नहीं रखते उन पर व्यंग्य में यह लोकोक्ति कही जाती है।

चौके में ऐरे-गैरे, चौके वाले डालें फेरे—इधर-उधर के ऐरे-गैरे लोग तो चौके में घुसकर बैठ गए हैं तथा चौके वालों को बाहर भगा दिया गया है। (क) जहाँ बाहर वालों की प्रतिष्ठा हो तथा घरवालों की कोई बात भी न पूछे तो उस घर के प्रति ऐसा कहते हैं। (ख) जहाँ मुख्य व्यक्ति का सम्मान न हो और गौण व्यक्तियों का सम्मान हो वहाँ ऐसा कहते है।

चौदह कलाओं में प्रवीण—प्रत्येक काम में निपुण व्यक्ति के प्रति कहते हैं।

चौदह वर्ष बनवास भोगा तभी राम का नाम अमर हुआ—राम का नाम बहुत दु:ख झेलने के पश्चात् ही अमर हुआ। दूसरों के लिए कष्ट और कठिनाइयाँ सहनेवाले का ही नाम अमर होता है और संसार उसे पूजता है। तुलनीय : भीली—राम लचमण बेड़े मांये रेय्या ने नाम रे रेय्यू।

चौदह विद्यानिधान—सभी विद्याओं में पारंगत। मूर्खों के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते है।

चौदहवीं रात के चाँद को गहन लगा—पूर्ण चंद्र को ग्रहण लगा। जब कोई ऐसी घटना घटित हो जाय जिसकी कोई संभावना न हो तब कहते।

चौपड़ मीठी हार—चौपड़ अर्थात् जुए की हार मीठी होती है क्योंकि जुआरी हारने पर भी जीतने के लालच से बार-बार खेलता है।

चौबाई हवा चला दो—बुद्धिमानी और चतुराई से काम लेकर अपने लक्ष्य को सिद्ध कर लो।

चौबे गए छब्बे होने दुब्बे ही रह गए—जब लाभ की आशा से कोई काम किया जाय और उसमें उलटे हानि हो तब कहते है। तुलनीय : मरा० चाराचे सहा करायला गेलेतों दोनच झाले; राज० चौबेजी ग्या छब्बेजी हुवणने दुबे हो'र आया; गढ़० डुम-जोगी न लेयो जोग, फाटी लत्ता बाढ्यो रोग, बाबू की लेण गैछो बूढा की उबाली क लाये; अव० चौबे गये छब्बे होय दुब्बेन रह गयें।

चौबे गए छब्बे होने दूबे होकर आए—ऊपर देखिए। तुलनीय : मल० प्रतीक्षिच्चतु किट्टियुमिल्ल, कैयिलुळ्ळतु पोकुकयुम् चेय्तु; अं० The camel going to seek horns lost ears.

चौबे गए छब्बे होने हो गए दूबे—दे० 'चौबे गए छब्बे होने दुब्बे ही···'। तुलनीय : अं० Too much cunning overreaches itself.

चौबे मरें तो बंदर हों, बंदर मरें तो चौबे हों—मथुरा के चौबों को व्यंग्य से कहते हैं क्योंकि वे और बंदर दोनों ही यात्रियों को बहुत परेशान करते हैं।

चौमासे का ज्वर और राजा का कर—बरसात के ज्वर और राजा के कर से जान बचाना कठिन हो जाता है अर्थात् ये दोनों कष्टदायी होते हैं।

चौमासे के रपटे और राजा से पिटे का क्या डर?—बरसात में फिसलकर गिर जाने और राजा या राज्याधिकारी द्वारा दंडित होना कोई विशेष शर्म की बात नही है, क्योंकि ऐसा अधिकांश लोगों के साथ होता रहता है।

चौरापराधान्मांडव्य निग्रह न्याय:—चोरों द्वारा अपराध होने पर मांडव्य को दंड देने का न्याय। प्रस्तुत न्याय के संबंध में एक कहानी है : कई डाकुओं ने साथ डाका डाला

और डाके में प्राप्त धन सहित तपोलीन मांडव्य ऋषि के आश्रम में छिप गए। बाद में रक्षा अधिकारियों ने उक्त ऋषि को भी इस काम से संबद्ध जानकर उस डाकू-दल के साथ दंडित किया। तात्पर्य यह है कि कभी-कभी साहचर्यवश निरपराध भी दंडित हो जाते हैं।

चौरासी लाख जनम के बाद आदमी जनम मिलता है—चौरासी लाख योनियों में जन्म लेने के पश्चात् ही मनुष्य-जीवन मिलता है ऐसा हिंदुओं का विश्वास है। आशय यह है कि मनुष्य-जीवन बहुत कठिनता से मिलता है और इसे व्यर्थ नहीं गँवाना चाहिए। तुलनीय: भीली— लाकां चौरासी मांये एक दण मनख नो जमारो; पंज० लख चौरासी जनम तो मगरों मनुख जनम मिलदा है।

चौराहे पर बैठे लड़के और रास्ते में बैठे कुत्ते को कभी न छेड़े—लड़के को छेड़ने से अपमानित होने का भय रहता है और कुत्ते को छेड़ने से काटने का। आशय यह है कि बच्चे और कुत्ते से बचकर रहना चाहिए वरना हानि उठानी पड़ जाएगी। तुलनीय: भीली—चोरे बैठूं चोरु गेल बैठूं कुतरुनी बतलावणों; ब्रज० चौराहे पै बैठे बालकं और रस्ता में बैठे कुत्तारो न छेड़ै।

छ

छः आदमी छः काम नहीं आदमी नहीं काम—तात्पर्य यह है कि जितने आदमी रहेंगे उतना ही काम बढ़ेगा, कम होंगे तो काम भी कम होगा। तुलनीय: मैथ० छै आदमी छै काम नै आदमी नै काम; भोज० जेतने आदमी ओतने काम नाही अदमी नाही काम।

छः ग्रह एकं राशि बिलोको, महाकाल को दीन्हो कोको—यदि छः ग्रह एक ही राशि पर हों तो मानो महाकाल को निमंत्रण दिया है, अर्थात् अवश्य मृत्यु होगी। (कोको—निमंत्रण)।

छः चावल नौ पखार—नीचे देखिए।

छः चावल नौ पखाल—छोटे काम के लिए बहुत सामान इकट्ठा करने पर कहते हैं। (पखाल—धोने का बर्तन)।

छः जाने ना, नौ की बात करे—जब कोई व्यक्ति किसी ऐसे विषय की गूढ़ बाते करे जिसका साधारण ज्ञान भी उसे न हो तो व्यंग्य से कहते है। तुलनीय: भोज० छ त जाने न नौ क पचरा गावें; पंज० छै दा पता नईं नौं दी गल करण।

छः दांत फिर भी मुँह पोपला—छः दाँत होने पर भी मुँह पोपला है। ऊँट के प्रति कहते हैं। तुलनीय: राज० छव दाँत'र मूंढो पोलो; पंज० छै दंद मुँह ताँवी पोपला।

छः महीने का सबेरा करते हैं—(क) वायदा करके पूरा न करने वाले के प्रति कहते हैं। (ख) किसी काम को करने में देर करने वाले के प्रति भी कहते हैं।

छः महीने मिमयानी, तो एक बच्चा बियानी—जो व्यक्ति शोरगुल या बातें बहुत करे और काम कम उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। (मिमयाना=चिल्लाना)।

छः में न छत्तिस में—किसी में नहीं या नगण्य। (इस लोकोक्ति का आधार किसी राग या गीत का छः राग या छत्तीस रागिनियों में न होना है।) तुलनीय: पंज० छै बिच नां छत्ती बिच।

छछूंदर के सिर में चमेली का तेल—(क) किसी तुच्छ व्यक्ति को भाग्यवश यदि कोई अच्छी चीज़ प्राप्त हो जाए तो कहते हैं। (ख) अनमेल बात या काम पर भी कहते हैं। तुलनीय: मरा० चिचुंद्रीच्या डोक्याला चमेलीचें तेल; माल० छछूंदरी रे माथा में चमेली रो तेल।

छछूंदर जैसे घूमता है—निरुद्देश्य घूमने या आवारागर्दी करने वाले के लिए कहते हैं। तुलनीय: अव० छछूँदर अस छुछुआत रहत हैं।

छछूंदर लगावे चमेली का तेल—दे० 'छछूंदर के सिर...'।

छज्जू गेले छः जना, छज्जू एले नौ जना—छज्जू छः आदमियों के साथ गए और नौ के साथ लौटे। (क) जब कोई व्यर्थ में साथियों की संख्या बढ़ावे तो कहते हैं। (ख) जब किसी को किसी काम में लाभ मिलता है तब भी ऐसा कहते हैं। (गेले=गए; एले=आए, लौटे।)

छज्जे की बैठक बुरी, परछावन की छाँह, धोरे का रसिया बुरा नित उठ पकड़े बाँह—छज्जे की बैठक या छज्जे पर का बैठना, दूसरे की छाँह या शरण और नज़दीक का प्रेमी (रसिक)—जो मौक़े-बेमौक़े हाथ पकड़े—ये तीनों ही अच्छे नहीं होते।

छटंकी सिखाए सेर को—(क) जब कोई छोटी आयु वाला अपने से बड़ी आयु वाले को उपदेश दे तो व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय: गढ़० सेर हक पाथा सणी अढो; पंज० छटाकी सिखावे सेर नूं; ब्रज० छटंकी सेर कूं सिखावै।

छटाँक चून चौबारे रसोई—छटाँक भर (थोड़ा-सा) आटा (चून) है और चबूतरे (चौबारे) पर रसोई बना रहे हैं। झूठी शान दिखाने वाले के लिए कहते हैं। तुलनीय: मरा० छटाक कण्या नि ओसरीवर स्वयंपाक।

छटाँक-भर धनिया शहजादपुर की हाट—ऊपर देखिए। तुलनीय : कनौ० छिटाँक भर धनियाँ, सहजादपुर की हाट।

छटाँक भर सतुआ काशी में भंडारा—एक छटाँक सत्तू लेकर काशी में भंडारा देने जा रहे हैं। (क) साधारण वस्तु से बड़ा काम लेने वाले के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। (ख) झूठी शान दिखाने वाले के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : भोज० छटाँक भर सतुआ कासी में भंडारा; पंज० छटाँक पर सतू काशी बिच पंडारा।

छटाँक भर हींग आगरे में कोठी—झूठा आडंबर दिखाने वाले के लिए कहते हैं।

छटाँक सतुआ मथुरा में भंडार—झूठा दिखावा करने वाले के लिए कहते हैं। (सतुआ=भुने हुए अन्न का आटा जो बिना पकाये खाया जाता है)। तुलनीय : गढ़० डेढ़ सेर पिसणो, आधी रात उठणो; हरि० छटाँक चून चौबारे रसोई।

छटी का खाया-पीया सब निकल गया—किसी कार्य में बहुत परिश्रम करने पर कहा जाता है। तुलनीय : पंज० छटी दा खादा पीता सारा निकल गया।

छटी का दूध याद आ गया—नीचे देखिए।

छठ की सातें किए फिरते हैं—जान-बूझकर ग़लत काम करने पर कहते हैं।

छठी का दूध याद आ गया—बहुत अधिक परिश्रम करना पड़े तो कहते हैं। तुलनीय : माल० छठी रो दूध याद आवणों; पंज० छठी दा दुद याद आ गया।

छठी का दूध याद आ जाएगा—जब करना पड़ेगा तो पता चलेगा। जब कोई व्यक्ति किसी कठिन कार्य को बहुत आसान समझे तो कहते हैं कि करोगे तो छठी...। तुलनीय : अव० छट्ठी कै दूध याद आय जाई; भोज० छट्ठी के दूध याद आ जाई; ब्रज० छठी कौ दूध यादि आइ जाइगौ।

छठी का लिखा नहीं मिटता—अर्थात् भाग्य का लिखा नहीं मिटता।

छठी के पोतड़े अबो तक न धुले—अभी तक नादान, अनुभवहीन या बच्चे के समान हैं। कोई बड़ा होकर भी यदि लड़कों-सा व्यवहार करे तो कहते हैं। (छठी=जन्म के बाद छठा दिन; पोतड़ा=बच्चों के बिछौने पर बिछाया जाने वाला कपड़ा जो बिछौने की पाखाना-पेशाब से रक्षा करता है)।

छठी न खिल्ला, हराम का पिल्ला—हराम की संतान के संस्कार नहीं किए जाते।

छड़ी बाजे छम-छम, विद्या आवे घम-घम—नीचे देखिए।

छड़ी लागे चट, विद्या आवे झट—बिना दंड या भय के विद्या नहीं आती। तुलनीय : राज० सोटी बाजे चम-चम, विद्या आवै घम-घम; मेवा० छड़ी बाजै छम-छम विद्या आवे घम-घम।

छत्तीस प्रकार के भोजन में सत्तर दो बहत्तर रोग भरे रहते हैं—स्वादिष्ट भोजन से (जिसमें खूब मसाले पड़ें हों और जो तला हुआ हो) रोग की अधिक संभावना रहती है।

छत्रपती घटे पाप बढ़े रती—बच्चों के छींकने पर कहते हैं।

छत्रिन्यायः—छाताधारियों का न्याय। प्रस्तुत न्याय का तात्पर्य यह है कि किसी दल विशेष में जब छत्र धारण करने वालों की संख्या कुछ अधिक होती है तो दल के समस्त आदमी छत्रधारी से दिखाई पड़ते हैं।

छत्रिय तनु धरि समर सकाना—क्षत्रिय के वंश में उत्पन्न होकर युद्ध से डरना उचित नहीं। जिस कुल, वर्ग, जाति या समाज में व्यक्ति जन्म ले उसके अनुरूप साहस, वीरता और धैर्य या गुण आदि तो उसमें होने ही चाहिए। (सकाना=डरना)।

छत्रिय भगत न मूसर धनुहीं—नीचे देखिए।

छत्री का भगत, मूसला का धनक—जैसे मूसल का धनुष नहीं बन सकता उसी तरह क्षत्रिय भक्त नहीं बन सकता। आशय यह है कि जातीय गुण या परंपरागत गुण-दोष नहीं जा सकते।

छत्री का सोहदा, कायथ का बोदा, ब्राह्मण का बैल, बनियों का ऊत—क्षत्रिय का पुत्र आवारा, कायस्थ का सुस्त, ब्राह्मण का मूर्ख और बनिये का उजड्ड होता है। (यह लोकोक्ति बड़ी बेतुकी-सी है। प्रायः ऐसा देखा नहीं जाता)।

छदाम की हंडिया ठोक बजाकर ली जाती है (क) साधारण या कम मूल्य की वस्तु भी देखभाल कर ख़रीदी जाती है। (ख) धन को बहुत सोच-समझकर ख़र्च करना चाहिए।

छदाम में लड़ाई, पैसे में सुघड़ भलाई—संयोग बड़ा विचित्र है। कभी तो थोड़े में काम बिगड़ जाता है और कभी थोड़े ही में बन जाता है।

छद्दर कहै मैं आऊँ-जाऊँ, सद्दर कहै गौसंये खाऊँ; नौदर कहैं मैं नौ दिसि धाऊँ, हित कुटुंब उपरोहित खाऊँ—यह लोकोक्ति बैलों की प्रकृति और गुण-दोष बतलाती है।

छः दाँत वाला बैल एक जगह स्थायी रूप से नहीं रहता। सात दाँत वाला स्वामी को ही मार डालता है। नौ दाँत वाला नवों दिशाओं तक दौड़ लगाता है और मित्र, कुल पुरोहित आदि सबको खा जाता है अर्थात् बहुत अशुभ होता है।

छन में छन रंग, छन में छन रंग --अस्थिर स्वभाव वाले व्यक्ति की ओर संकेत करके ऐसा कहते हैं। तुलनीय : सं० क्षणे रुष्टा क्षणे तुष्टा रुष्टा तुष्टा क्षणे क्षणे; मैथ० छने में छन रंग छने में तीन रंग।

छन में रानी छन में चेरी—ऊपर देखिए। तुलनीय : सं० नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण।

छप्पन टका- बड़ी रक़म। छोटी रक़म (छोटी धन-राशि) के लिए व्यंग्य से कहते है।

छप्पर पर फूस नहीं, ड्योढ़ी पर नक्क़ारा --झोंपड़ी पर फूस तक नहीं है और दरवाज़े पर नगाडा बजवा रहे है। झूठी शेखी बघारने या रोब झाड़ने वालों के प्रति कहा जाता है। तुलनीय . अव० झोपडी पं फूस नाही, चलेन नगाड़ा बजुवाये; हरि० घर म णा सूत णा पूणी जुलाहे के साथ लट्ठम लट्ठा; अव० छपरा माँ तिनु नाही औ दुआरे नाचु; भोज० मड़ई मे तिरिन ना दुआरे पर हाथी।

छप्पर में फूस नहीं दरवाज़े पर नाच --ऊपर देखिए।

छप्पर पर फूस नहीं रहा --बिल्कुल दिवाला निकल गया। अत्यन्त निर्धन व्यक्ति के प्रति कहते है। तुलनीय : पज० छप्पर उते कख़ नई रया।

छब गठरी में यौवन रकाबी में --सुन्दरता वस्त्रों पर निर्भर करती है (गठरी में वस्त्र रखे जाते हैं) और यौवन अच्छे भोजन पर निर्भर करता है। (रकाबी में भोजन परसा जाता है)।

छमा बड़न को चाहिए छोटन को उत्पात--छोटों के अपराधों को बड़े लोगों को क्षमा कर देना चाहिए। इस दोहे की दूसरी पंक्ति है --कहा विष्णु को घटि गयो जो भृगु मारी लात।

छमिया के मन की भई, सहजहिं हुइ गई राँड़—छमिया के मन की हो गई, जैसा वह चाहती थी वैसे ही वह राँड हो गई। जब किसी व्यक्ति का इच्छित कार्य पूरा हो जाय चाहे उससे हानि हो क्यों न हुई हो तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : राज० बाईरा बंधन कट्या सहजे हुयगी राँड।

छल-छंद दिखाते हैं--(क) धोखा-धड़ी करने वाले के प्रति कहते हैं। (ख) किसी काम को करने में नखरा दिखाने वाले के प्रति भी कहते हैं।

छह दाँत का ठिगना बाछा- छः दाँत होने पर भी बैल ठिंगना (छोटा) ही है। किसी वयस्क, किन्तु नाटे क़द वाले व्यक्ति को ध्यान में रखकर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० छै दंदा दा ठिगना बच्छा।

छाँह कभी इधर कभी उधर— छाया (छाँह) एक स्थान पर स्थिर नही रहती, अर्थात् दिन (समय) सदा एक से नहीं रहते। सुख-दुःख आते-जाते रहते हैं। तुलनीय : राज० अठी नली छियाँ उठी नै आया सरै; पंज० छाँ कदी इत्थे कदी उत्थे।

छाछ बिखरी और बेटी इतरी —भूमि पर छितरी हुई छाछ और प्यार से इतराई हुई लड़की का बचाना बहुत कठिन होता है। आशय है कि लड़कियों को अधिक लाड-प्यार नही करना चाहिए। तुलनीय : राज० छाछ छीतरी बेटी ईतरी।

छाज बोले तो चलनी भी बोले जिसमें बहत्तर छेद --निर्दोष व्यक्ति तो किसी को कुछ कह सकता है पर दोषी व्यक्ति को किसी को कुछ कहने का क्या अधिकार? अर्थात् दोषी व्यक्ति किसी पर टिप्पणी नही कर सकता। जब कोई स्वयं दोषी होते हुए दूसरे की आलोचना करता है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : कौर० छाज बोले तो बोले चळणी बि बोल्ले जिसमें बहत्तर छेद; हरि० छाज तै बोल्लै, छालणी बी के बोल्ले जींह में हजार छेक।

छाज बोले तो बोले चलनी भी बोले जिसमें बहत्तर छेद --ऊपर देखिए।

छाज लाई न छालनी, बन बैठी मालकिन न तो अपने घर से सूप (छाज) लाई और न चालनी (छालनी) लेकिन यहाँ पर घर की मालकिन बन गई। (क) अनधिकार चेष्टा करना व्यर्थ है। (ख) दूसरे की संपत्ति पर अनुचित अधिकार कर लेने वाले के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : हरि० छाज ल्याई ना छालणी, बण बैठी घर की म्हाल्हणी।

छाजा बाजाकेश, तीन बंगाला देश, चूना चूंची दही, तीन बंगाले नहीं—छान्ह के घर या झोंपड़ी, बाजा (संगीत-प्रेम) और केश बंगाल में बहुत दिखाई पड़ते हैं, पर चूना, स्तन और दही नहीं।

छाड़ शतरंज जा में रंज अति भारी है—ऐसा काम या ऐसा साथ जिससे रंज के बढ़ जाने की सभावना हो छोड़ देना चाहिए।

छाती पर कोई नहीं रख देगा—कजूस व्यक्ति के प्रति कहते हैं कि खा-पी लो, मरने पर कोई छाती पर नहीं रख देगा।

छाती पर नहीं बाल, समुझो छोटा काल—जिसकी छाती पर बाल न हों उससे अधिक मित्रता नहीं करनी चाहिए। बल्कि उससे सावधान रहना चाहिए। छाती पर बालों का होना विश्वसनीयता तथा वीरता का प्रतीक होता है। तुलनीय : राज० छाती पर केश नही जकेसूं बात नही करणी।

छाती पर पत्थर रख लिया है—सब कुछ सह लेने को तैयार हैं। जो व्यक्ति बड़ी विपत्तियों को झेल चुका होता है या झेलने को तैयार रहता है उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० छाती उते वटटा रख लया है; ब्रज० छाती पै पत्थर धरि लियौ है।

छाती पर पत्थर रखा है—कोई बहुत बड़ा दु:ख जिसे किसी से कहा न जा सके।

छाती पर बाल नहीं, भालू से लड़ाई—शक्ति से बाहर काम करने का दावा या प्रयत्न करने वाले के प्रति व्यंग्य में कहा जाता है। तुलनीय : मरा० छाती वर केस नाही नि अस्वलाशी स्पर्धा।

छाती पर रखकर कोई नहीं ले गया—सूम के प्रति कहा गया है कि क्यों धन बचाते हो? मरने के बाद साथ कोई नही ले गया, अत: तुम भी नहीं ले जा सकोगे। तुलनीय : अव० छाती पै धौके कौनो नाही ले गवा; हरि० छाती पै धर के कोए ना लेग्या; पंज० छाती उते रखके कोई नई लै गया; ब्रज० छाती पै धरि कै कोई नायें लै गयौ।

छाती पर होरा भूजते हैं—जब कोई किसी को बुरी तरह सताता है तो कहते हैं।

छाती में गम को पी लिया—जब कोई व्यक्ति अपना दुख किसी से न कहे बल्कि उसे अपने अंदर ही रखकर संतोष करे तब वह ऐसा कहता है या उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० छाती बिच गम नूं पी लिता।

छान का क्या घर, मेंढक का क्या डर?—छान का घर (झोपड़ी) घर नहीं है और मेंढक का भय भय नहीं है। तुलनीय : छन्न दा कर डड्डूं दा की डर।

छान के पिए तो हलक में क्यों फँसे?—सोच-विचार के या सही ढंग से काम करने पर क्षति की कोई संभावना नहीं रहती। तुलनीय : भीली – चाणी ने पीए ते कहें ने चोटे; पंज० छाण के पिओ ते गले बिच कैनूं फसे।

छान्ह के घर में सखुये की कड़ी—झोपड़ी में सखुये (माखू) जैसी क़ीमती लकड़ी की कड़ी लगाना व्यर्थ है। अनुचित मेल स्थापित करने पर व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

छाया तो ठूंठ की भी भली—छाया सूखे पेड़ की भी अच्छी होती है। (क) सुख कम भी मिले तो कोई अस्वीकार नहीं करता। (ख) आश्रय निर्धन का भी लाभदायक होता है। तुलनीय : मेवा० छाया तो छीनरी की ई आछी। पंज० छाँ ता सुक्के दरख्त दी वी चंगी।

छाया बड़ी माया है—आश्रय या शरण का महत्त्व बहुत अधिक है। इससे कितनों का जीवन कहाँ से कहाँ पहुँच जाता है। तुलनीय : पंज० छां बड़ी माया है।

छाया हुआ घर पाया, और बाँधी पाई टट्टी; दूसरे का जन्मा लड़का पाया, चुम्मा लें कि चट्टी—विधवा विवाह करने वाले पर व्यंग्य में कहते हैं।

छावत मँड़वा गावत गीत, पिया बिना लागत सब अनरीत—औरतों को पति बिना कुछ भी अच्छा नहीं लगता (मंडवा - विवाह का मंडप)।

छिगुली पकड़कर पहुँचा पकड़े—(क) जो व्यक्ति थोड़ी सहायता पाकर पीछा ही न छोड़े और अधिक सहायता चाहे तो कहते हैं। (ख) जब कोई व्यक्ति थोड़ा आश्रय पाकर बाद में आश्रयदाता पर अधिकार कर ले तो उसके प्रति भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० उंगली घड़ के पौचा फड़न।

छिद्रेष्वनर्था बहुली भवन्ति- जहाँ एक दोष ने घर कर लिया हो वहाँ ध्यान से देखने पर अनेक दोष दिखाई पड़ते हैं।

छिन ठंडे, छिन ताते—क्षण भर में शान्त और क्षण में क्रुद्ध। अस्थिर चित्त वाले व्यक्ति के प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० तल बिच ठंडे पिल बिच तत्ते।

छिन पुरवैया छिन पछियाँव, छिन छिन बहे बबूला बाव; बादर ऊपर बादर धावे तब घाघ पानी बरसावे—घाघ कहते हैं यदि क्षण-क्षण में पुरवा तथा पछिवाँ हवा बदलती रहे और रह-रहकर बवंडर उठता रहे तथा बादल के ऊपर बादल जाता दिखाई दे तो खूब पानी बरसेगा।

छिनरा, चोर, जुआरी, इनसे गंगा तुलसी हारी—चरित्रहीन, चोर और जुआरी से भगवान भी डरते हैं। आशय यह है कि ये किसी के सगे नहीं होते।

छिनाल का बेटा बबुआ रे बबुआ—(क) कुलटा स्त्री के बच्चे को सभी प्यार करते है ताकि उसकी माँ से सम्बन्ध बिगड़ने न पावे। (ख) व्यभिचारिणी स्त्री के बच्चे को सभी छेड़ते हैं। (ग) जब कोई चरित्र-भ्रष्ट स्त्री अपने लड़के

को बहुत प्यार करती है तब भी व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

छिनाल का विश्वास नहीं—दुश्चरित्र स्त्री का विश्वास नहीं किया जा सकता। तुलनीय : भीली—भूँडी राँड ना हूँ भरोसा; पंज० रंडी दा की परोसा।

छिनाल का हाल दाढ़ीजार ही जाने—बुरे का हाल बुरा ही जान सकता है।

छिनाल की बातें छिनाल ही जाने—एक प्रकृति और आदत के व्यक्ति ही एक-दूसरे को भली प्रकार समझ सकते हैं। तुलनीय : भोज० छिनार का हाल छिनारे जाने; पंज० रंडी दिआं गलां रंडी समझे।

छिनाल डायन से भी बीस—दुश्चरित्र स्त्री डायन से भी बुरी होती है। डायन तो एक बार में ही मार डालती है, किन्तु कुलटा आयु-भर तिल-तिल करके जलाती है। तुलनीय : भीली—डाकण ते हाऊ ने चेनाल खोटी; पंज० रंडी डैण नालों दी पैड़ी।

छिनाल लुगाई, चतुर सिपाही—भ्रष्ट आचरण की स्त्री और चतुर सिपाही, ये दोनों अपने को छिपा नहीं सकते। तुलनीय : अव० छिनार लुगाई, चतुर सिपाही।

छिपके चले छपाँकि के काटैं, का जाने पर पीरा; ई दुइ जाति कहाँ ते आई, कायथ और खटकीरा—कायस्थ और खटमल ये दोनों बड़े निर्दयी होते हैं। इन्हें किसी को कष्ट देने में तनिक भी संकोच नहीं होता।

छिपत न अंत बसंत में, कैसेहुँ कोयल काग—बसंत ऋतु में कोयल और कौवा अवश्य पहिचान लिये जाते हैं। अर्थात यों भले ही दोनों एक से लगें पर समय पड़ने पर गुणी और निर्गुणी मालूम पड़ जाते हैं।

छिरिया के गोड़े बुकरिया में, बुकरिया के गोड़े छिरिया में—(छिरिया—बकरी का बच्चा) इधर की वस्तुएँ उधर और उधर की वस्तुएँ इधर करना, अर्थात् ऊटपटांग काम करने वाले के लिए कहते हैं।

छिली छिलाई तैया सी—ऐसे सिर को कहते हैं जिसका बाल मूँड़ डाला गया हो। (तैया—तवा)।

छीकत नहाइए, छींकत खाइए, छींकत रहिये सोय, छींकत पर घर न जाइए, चाहे सर्व सोने का होय—नहाते समय, खाते समय और सोते समय छींक शुभ है, पर दूसरे के घर जाते समय अशुभ है। तुलनीय : अव० छींकत नहाय, छींकत खाय, छींकत पराए घर न जाय; हरि० छीक्कत खाइए, छीक्कत न्हाइए, छीक्कत पर घर ना जाइए।

छींकते की नाक नहीं काटी जाती—छींकना अपशकुन है, पर छींकने वाले की नाक नहीं काटी जाती। अर्थात् हर-एक अपराध के लिए अपराधी दंडित नहीं किया जाता। तुलनीय : माल० छींकता कोई डंडे; पंज० छिकदे दी नक नईं बडी जांदी; ब्रज० छींकत नाक काटी जाती।

छींकत खाय, छींकते नहाय, छींकत पर घर कभी न जाय—दे० 'छीकत खाइए, छीकत नहाइए...'।

छींकते ही नाक कटी—दुष्कर्म का फल तुरत मिलने पर कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० छीकत नाक कटी।

छींकत पाद डकार, इनसे रोग से रार—छींकना, पादना और अच्छी तरह डकारना आरोग्य के लक्षण हैं।

छींके का टूटना और बिल्ली का लपकना—अवसर का तुरन्त लाभ उठाने वाले के लिए कहते हैं।

छींट का घँघरिया, गजी का तना—छींट के घाँघरे में गजी (खद्दर) का तना (ऊपर का भाग जिसमें नाड़ा डाला जाता है)। बेमेल काम करनेवाले के प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

छीछी भली जौ चना, छी-छी भली कपास, जिनकी छी-छी उखड़ी, उनकी छोड़ो आस—जौ, चना तथा कपास की खेती विरल अच्छी होती है, किन्तु जिसकी ईख विरल है उसकी आशा नहीं। अर्थात् ईख की विरल बोवाई अच्छी नहीं होती।

छींपा, छेड़ी, ऊँट, कोंहार, पीलवान और गाड़ीवान; आक, जवासा, बेस्वा बानी, दस मलीन जब बरसे पानी—रंगरेज (छीपा), बकरी (छेरी), ऊँट, कुम्हार, महावत, गाड़ीवान, आकर (मदार), वेश्या और बनिया ये दसों वर्षा होने से दुःखी होते हैं।

छीर-नीर विवरण समय, बक उधरत तेहि काल—क्षीर और नीर को अलग करते समय बगुले और हंस का भेद खुलता है। तात्पर्य यह है कि गुण दिखाने के अवसर पर गुणी और निर्गुणी का पता चल जाता है यों देखने में चाहे दोनों एक से क्यों न दिखाई पड़ें।

छुआ और मुआ—बहुत कमज़ोर या नाजुक व्यक्ति के प्रति कहते हैं।

छुओं न छांव, अलगहे नाँव—आज तक मैंने कभी किसी को छुआ भी नहीं, फिर भी मेरा नाम 'अलगहा' रख दिया गया है। अर्थात् मुझे व्यर्थ बदनाम कर रखा है। (अलगहा—झाड़-फूंक करने वाला।)

छुद्र नदी भर चल उतराई—छोटे स्तर के लोग थोड़ा धन या गुण पाने पर भी इतरा जाते हैं या घमंड करने लगते हैं।

छुरी खरबूजे पर गिरी तो खरबूजे का जरर, खरबूजा

छुरी पर गिरा तो खरबूजे का जरर—दोनों तरफ़ से नुक़सान अपना ही हो या किसी एक का ही हो तो कहते हैं। तुलनीय : मरा० सुरी खरबुजावर पडली काय नि खरबूज सुरीवर पडलें काय, फुटायचें खरबुजच; अव० छूरी खरबूजा पर गिरे, चाहे खरबूजा छूरी पर गिरे; ब्रज० छुरी खरबूजे पै गिरी तौ खरबूजे कौ नुकसान, और खरबूजौ छुरी पै गिर्‌यौ तौ खरबूजे कौ नुकसान।

छुरी छड़ी छतरी छला सदा राखिए पास—छुरी, छड़ी, छतरी और छल्ला ये वस्तुएँ सदा अपने पास रखना चाहिए। इनकी कभी भी आवश्यकता पड़ सकती है। तुलनीय : राज० छुरी छड़ी छतरी छलो सदा राखिए पास।

छुरी तले दम लो—अन्त तक सहन करो।

छुरी न कटारी बात बोले के हजारी—पास में साधन न रहते हुए भी लम्बी-चौड़ी बातें करने वाले को व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

छुरी से काटें बकरी, साथ में काटें लकड़ी—काटा तो बकरी को जाता है किन्तु जिस लकड़ी पर रखकर उसको काटते हैं वह मुफ्त में ही कट जाती है। आशय यह है कि बुरे आदमी के साथ रहने से भले आदमियों की हानि बिना कारण ही होती है। तुलनीय : गढ़० काटकूट वाखरीमाँ थ्यांगथुंग अबाणी मां।

छूअन मरें धायके काटें का जाने परपीरा, दुःख देने को दोऊ जन्में, कायथ अरु खटकीरा—कायस्थ और खटमल, इतने कमज़ोर होते हैं कि छूने से ही मर जाते हैं पर दोनों ही काटते दौड़कर हैं और दूसरों की पीड़ा को नहीं जानते। इस प्रकार वे संसार को बहुत कष्ट देते है।

छूए पाँव और फूटी आँख—जब कोई असंगत बात या घटना किसी के साथ घटे तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : गढ़० लगी घुंडा फूटी आँख; पंज० पैर हुते अख पज्जी।

छूकर खाओ तो मुँह क्यों जले—भोजन को छूकर देखना चाहिए कि गर्म तो नहीं है। आशय यह है कि सोच-विचार कर या धीरज से काम करने पर हानि की संभावना नहीं रहती। तुलनीय : पंज० हत्थ नाल खाओ तां मुँह कैनूं सड़े।

छूछा फटका उड़-उड़ जाय—व्यर्थ की बातों या कामों से कोई फ़ायदा नहीं होता। तुलनीय : बुंद० छूछो फटको उड़-उड़ जाय।

छूछा का संग न साथी, भइला द्वारे झूम ले हाथी—जब व्यक्ति ग़रीब रहता है तब उसका साथ कोई नहीं देता, पर जब वही धनवान हो जाता है तब उसके द्वार पर हाथी झूमने लगता है।

छूछा कुआँ पत्तों से नहीं भरता—(क) बड़े कार्य साधारण साधनों से संपन्न नहीं होते। (ख) काम बहुत बाक़ी हो और उसमें अभी काफ़ी व्यय होने की संभावना हो तो चेतावनी के रूप में भी कहते हैं। तुलनीय : अव० छूँछ कुआँ पतकोरन ना भरी; भोज० खाली (छूछ) कुआँ पत्ता से नाहीं भरी।

छूछा कोई न पूछा—धन या ज्ञान से खाली (छूछे) व्यक्ति को कोई नहीं पूछता। तुलनीय : अव० छछे का केउ न पूछे।

छूछा फटके सब उड़ि जाय—हल्की चीज़ फटकने पर उड़ जाती है। तात्पर्य यह है कि ओछे लोगों की बात का कोई मूल्य नहीं होता। तुलनीय : भोज० छूँछा फटके सम उधियाय; अव० छूंछ पछोरैं उड़-उड़ जाय।

छूछा बर्तन बहुत बजे—जब कम ज्ञान या धन के लोग इतरा कर बहुत लम्बी-चौड़ी बातें करते हैं तो उनके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : सं० पूरार्गेऽपि कुम्भो न करोति शब्दं रिक्तो घटो घोष घोरम मुपैति; विद्वान विनोतो न करोति गर्व बहूनि जल्पन्ति गुणैर्विहीनाः; भोज० छूछी हाँड़ी टन-टन बाजे।

छूछी हाँड़ी बाजे टन टन—ऊपर देखिए।

छूछे का संग न साथी, भइला के द्वारे झूम ले हाथी—दे० 'छूछा का संग न साथी···'।

छूछे कोउ न पूछे—दे 'छूछा कोई न···'।

छूछे फटके उड़-उड़ जाय—दे० 'छूछा फटके सब···'।

छूछे मौसी पालागी—(छूछे) व्यर्थ में कोई काम नहीं करना चाहिए। जब कोई बिना कुछ लिए-दिए ही कुछ करने की इच्छा रखता हो तो कहा जाता है।

छूट भलाई सारे गुन—भलाई छोड़कर और सभी गुण हैं। दुष्ट आदमी के प्रति कहा जाता है जिसके पल्ले केवल दुर्गुण ही होते हैं। तुलनीय : पंज० पलाई नूं छड के सारे गुण हन; ब्रज० छुट्टि भलाई ऐ सब गुनै।

छूटा घोड़ा नांदे ठाढ़—(क) जिसका कहीं ठिकाना न लगे और घूम-फिर कर उसी जगह पर आ जाय उसके प्रति ऐसा कहते हैं। (ख) जब कोई अवसर पाते ही किसी एक काम में हमेशा लग जाय या अवसर पाते ही किसी एक ही स्थान पर बार-बार जाय उसके प्रति भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मैथ० छूटल घोड़ मुसकुइबटि ठाढ़।

छूटा बाज न आवे हाथ—गई चीज़ प्रायः फिर नहीं मिलती।

छूटी घोड़ी फिर खूंटे पर—नीचे देखिए।

छूटी घोड़ी भुसवले ठाढ़—घोड़ी छूटने पर भूसे के घर में ही जाकर खड़ी होती है। (क) जिसका जहाँ कुछ स्वार्थ सधता है वह वहीं जाता है। (ख) व्यक्ति प्राय. वही जाता है जहाँ का अभ्यस्त होता है। (यह दूसरा अर्थ लोकोक्ति का है तो नहीं, पर इस अर्थ में भी इसका प्रयोग प्राय: होता है)।(ग) जिसका केवल एक ठिकाना हो और घूम-फिर कर वह वहीं आ जाय तो भी कहते हैं। तुलनीय: अव० छूट घोड़ भुसौले ठाढ़।

छूटी घोड़ी भुसौरे खड़े—ऊपर देखिए।

छूटे मल कि मलहिं के धोए, घृत कि पाव कोउ बारि बिलोए—मैल से धोने पर मैल नहीं छूटता और पानी के मथने से घी नहीं निकलता। व्यर्थ के कार्यों से कोई लाभ नहीं होता।

छुटौ बैल भुसौरी में—दे० 'छूटी घोड़ी भुसवले···'।

छूना न चीज कोई घर भर है तुम्हारा—जो केवल ऊपर से आत्मीयता दिखावे पर भीतर से ग़ैर समझे उसके प्रति कहते हैं।

छेरी अपने जी से गई, राजा कहें नमक कम है—बकरी (छेरी) मर गई लेकिन राजा कहते है कि गोश्त में नमक कम पड़ा है। जब किसी के त्याग या परिश्रम की प्रशंसा न की जाय तो कहते है। तुलनीय: कौर० छेरी जी से गई, राजा कै भांई ना; पंज० छेली मर गयी राजा आखे लूण कट्ट है।

छेरी जी से गई राजा को भाई ना—ऊपर देखिए।

छेरी रोवे जीव को, खटीक रोवे मांस को—छेरी अपनी प्राणरक्षा के लिए चिल्लाती है और खटिक मांस के लिए चिल्लाता है। आशय यह है कि सभी अपनी स्वार्थ-सिद्धि चाहते हैं।(खटिक=मांस या फल बेचने वाला)। तुलनीय: पंज० छेलीं रोवे जाण नूं कसाई रोवे मास नू।

छैल छींट बगल में ईट—छैल है तो छींट की तरह दुर्बल पर बगल में ईंट रखकर मोटर बनते हैं। जब कोई ऊपर से वह बनना या दिखाना चाहे जो वह भीतर से नहीं है तो कहते हैं।

छैला छपे न फटे कपड़ों में—छैला चाहे कैसे भी फटे-पुराने कपड़े पहने रहे किन्तु उसका छैलपन छुपता नहीं। अर्थात् व्यक्ति की वास्तविकता छिपती नही चाहे कितना भी प्रयत्न क्यों न किया जाय। तुलनीय: राज० छैला छाना न रहै मैला कपड़ां मांय।

छोट घोघर बड़ डेरवावन—जब कोई छोटा होकर बड़े को डाँटे या डराना चाहे या छोटा होकर बड़े के जैसी बात करे तो कहते हैं।

छोट लतिआए बड़ बतिआए—छोटी जाति मारने से तथा बड़ी जाति बात से ही सही रास्ते पर आ जाती है। तुलनीय: भोज० छोट जात लतिअवले बड़ जात बतिअवले।

छोट सींग औ छोटी पूंछ, ऐसे को ले लो बे मोल—छोटी सींग और छोटी पूँछ वाले बैल को बिना मोल किए ही खरीद लेना चाहिए अर्थात् वे बहुत अच्छे होते हैं।

छोटा घर बड़ा समधियाना—(क) बेमेल या असंभव बात पर कहते हैं। (समधियाना=जहाँ अपने लड़के या लड़की का विवाह हुआ हो)।(ख) व्यर्थ में डींग हाँकने वाले पर भी कहते हैं।

छोटा, बड़ा खोटा—दे० 'छोटा सो खोटा।'

छोटा मुंह ऐंठा कान, यही बैल की है पहचान—अच्छे बैलों की यही पहचान है कि उनके मुँह छोटे और कान ऐंठे हुए होते हैं। तुलनीय: बुंद० छोटो मों ऐंठे कान जई बरद की है पहचान।

छोटा मुंह और ऐंठा कान यही बैल की है पह-चान—ऊपर देखिए।

छोटा मुंह बड़ा निवाला—(क) बेजोड़ बात पर कहते हैं। (ख) जब कोई अपनी योग्यता या स्थिति से ऊँची बातें करता है तब भी कहते हैं। तुलनीय: अव० छोट कै मुंह बड़ा कै नेवाला।

छोटा मुंह बड़ी बात—जब मनुष्य अपनी योग्यता या सामर्थ्य से बहुत बढ़कर बातें करे या अपनी स्थिति को भूलकर ऐसी बात करे जिसे उस जैसे सामान्य आदमी को नहीं करनी चाहिए तो कहते हैं। तुलनीय: गढ़० छोट्टा गिच्चा बुवाजी की दवाई; भोज० छोट मुँह बड़ बात; अव० छोट कै मुह बड़ी बात; मरा० लहाना तोंडी मोठा घांस; राज० छोटे मूंढ़ें बड़ी बात; हरि० छोटा मुंह बड़ी बात; बुंद० गन्नें मों बड़ी बात; छत्तीस० छोटे मुंह बड़े-बड़े बात; मेवा० छोटे मुंडे मोटी बात; पंज० निक्का मुंह बड़ी गल; ब्रज० छोटा मुंह बड़ी बात।

छोटा सबसे खोटा—दे० 'छोटा सो खोटा।'

छोटा सींग ओ छोटी पूंछ, ऐसे को ले लो बेपूछ—छोटे सींग और छोटी पूंछ वाले बैल को बिना मोल-भाव किए ही खरीद लेना चाहिए। अर्थात् इस तरह के बैल बहुत अच्छे माने जाते हैं। तुलनीय: मरा० आँखुड़ शिंगी, लहान शेपूट; अमा बैल विकत घ्या।

छोटा सो खोटा—नाटा आदमी प्राय: दुष्ट होता है।

तुलनीय : राज० छोटो जितो ही खोटो; हरि० जितणा छोटा उतणा खोट्टा; बुंद० छोटो सब सें खोटो; पंज० निक्का सो तिखा; ब्रज० छोटो सो खोटो।

छोटा सो मोटा — ठिगने या छोटे क़द के व्यक्ति प्राय: बलिष्ट होते हैं।

छोटी गर्दन दग़ाबाज़—छोटी गर्दन वाले धोखेबाज़ माने जाते हैं। तुलनीय : राज० ओछी गरदन दगेबाज; पंज० निक्की तौण तोखेबाज़।

छोटी चुकी ननदी ज़हर की पुड़िया --कम उम्र का व्यक्ति जब लगने वाली बात कहता है तब ऐसा कहते हैं।

छोटी ननद अँगिया का बंद, बड़ी ननद बिजली बसंत —छोटी ननद से प्राय: स्त्रियाँ (भाभियाँ) अधिक प्यार करती हैं और बड़ी से डरती है, इसी पर यह लोकोक्ति कही गई है।

छोटी नसी, धरती हँसी—हल के छोटे फाल को देखकर ज़मीन हँसती है। अर्थात् छोटे फालवाले हलों से जुताई करने से पैदावार अच्छी नहीं होती।

छोटी पूंजी बनिजे खाय—कम पैसा लगाकर व्यापार करने से ख़र्च अधिक होता है और व्यापारी की मूल पूंजी भी मारी जाती है। तुलनीय : मैथ० छोट पूंजी बनिजिए खाय; भोज० छोट पूंजी रोजगरिहे खाय।

छोटी पूंजी मालिक खाय—छोटी पूंजीमालिक को खा जाती है। आशय यह है कि निर्धन व्यक्ति सदा परेशान रहता है। तुलनीय : बुंद० ओछी पूंजी खसमें खाय; गुज० ओछी पूजी धणी ने खाय; गढ़० छोट्टी पूँजी खसम खांदा; पंज० कट पैहा मालिक नू खावे।

छोटी बुलबुल निगले गूलर—सामर्थ्य से अधिक काम करने पर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मग० रही बुलबुल इंगली गूलर; भोज० छोटी मुटकऽ बुलबुल निगले गूलर; मैथ० रही बुलबुल खाई डुमरि।

छोटी मछली उछले, कूदे, रोहू के सिर जाय—छोटी मछलियाँ उछलती कूदती हैं, किन्तु पकड़ा जाता है रोहू। कहावत का आशय यह है कि छोटे (बच्चे) उद्दंडता करते हैं, किन्तु उसका परिणाम बड़ों को भोगना पड़ता है। तुलनीय : मैथ० चन्ना पोठी चालि दे रोहू के सिर बिसाय; भोज० सिधरी चाल करे रोहू के सिरे बिसाय।

छोटी-सी कहानी सारी रात उनींदा—छोटी-सी कहानी सुनने के लिए सारी रात जागते रहे। जब कोई व्यक्ति किसी साधारण काम के लिए बहुत अधिक परेशान हो तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : छत्तीस० छोट कुन कहानी सारी रात उसनिंदा; पंज० निक्की जिही कहानी सारी रात जगाणी।

छोटी-सी गौरैया बाघों से नज़ारा—जब कोई सामान्य स्थिति या औक़ात का व्यक्ति किसी बहुत बड़े से मुक़ाबला करे तो कहते हैं।

छोटी-सी बछिया बड़ी-सी हत्या—(क) छोटा अपराध करने पर बड़ा दोष लगे तो कहते हैं। (ख) हत्या हत्या ही है, बड़े की हो या छोटे की। इसलिए बछिया मारने पर भी गाय मारने की हत्या लगती है। अर्थात् अपराध अपराध है, बड़ा हो या छोटा और उसका दंड भोगना ही पड़ता है। तुलनीय : पंज० निक्की जिही वछी इडी बडी हत्या (मार)।

छोटी-सी मिर्च दाँतों पसीना—एक छोटी-सी मिर्च खा ली और दाँतों तक को पसीना आ गया। जब किसी छोटे से व्यक्ति में अथवा किसी छोटी-सी वस्तु में गुण या दुर्गुण बहुत हों तब उसके प्रति इस प्रकार कहते है। तुलनीय : गढ़० मर्च छोटी बबकार बड़ी; पंज० मर्च निक्की बड़ी तिखी।

छोटी-सी लोहड़ी उसी में गुसाई बाबा— जब कहीं पर थोड़े लोगों के खाने-पीने की व्यवस्था हो और वहाँ पर और लोग भी आ जायँ तब ऐसा कहते है। तुलनीय : कौर० छोटी-सी लोहड़ी उसी में गुसांई बाबा।

छोटी हाँड़ी जल्दी खौलती है—छोटे बर्तन में पानी शीघ्र ही खौल जाता है। आशय है कि नीच व्यक्ति थोड़ा धन या गुण पाकर ही गर्व करने लगते हैं। तुलनीय : भीली०, गढ़० गली भराणी, भीलड़ी धादी; माल० ओछो पातर झट झलके; पंज० निक्की कुन्नी छेती बोलदी है।

छोटे पेड़ से ही सब झूलते हैं—जो वृक्ष छोटा होता है उसी को पकड़ कर सब झूलते हैं और उसी के पत्ते, शाखाएँ आदि तोड़ते हैं। अर्थात् निर्धन और निर्बल को ही सब दु:ख देते हैं और तंग करते हैं। तुलनीय : राज० नीची बोरड़ी सैं सब कोई घूणो।

छोटे-बड़े कतरे कुंवारे रह गए - पहले आयु कम थी और अब अधिक है, इसलिए विवाह नहीं हो सकता। जब सोच-विचार करने में अवसर बीत जाय या काम बिगड़ जाय तो कहते हैं। तुलनीय : पंज० निक्के बड़े होंदे कुआरे रह गये।

छोटे बड़े खोटे—प्राय: नाटे व्यक्ति (छोटे क़द के व्यक्ति) बुरे स्वभाव के होते हैं। तुलनीय : पंज० निक्के बड़े खोटे।

छोटे बड़े सब एक ही लाठी से हाँकता है—जो व्यक्ति छोटे-बड़े का ध्यान न करे और सबको बराबर समझे या जिसका आदर करना चाहिए उसका भी निरादर करे तो कहते हैं। तुलनीय : गढ़० गोरू भैंसा एक्कु से टुगो; पंज० गाँयी मैंथी इक डंडे नाल खिददे हन; ब्रज० छोटे बड़े सब एकई लौठी ते हाँके जायें।

छोटे बड़े सबके दो कान— बड़े हों चाहे छोटे कान तो सबके दो ही होते हैं। अर्थात् किसी को निर्धन होने से ही छोटा नहीं समझना चाहिए। तुलनीय : पंज० निक्के बड़े सरियाँ दे दो कन।

छोटे बिगड़े देख बड़ों को—बड़ों का अनुकरण करके ही छोटे बिगडते हैं। आशय यह है कि बड़े लोग जैसा करते हैं वैसा ही छोटे भी करते हैं। तुलनीय : पंज० निक्के बड्यां नूं देख के बिगड़न।

छोटे मियाँ तो छोटे मियाँ, बड़े मियाँ सुब्हान अल्लाह —जब छोटों से भी बढ़कर बड़ों में दोष हों तो कहते हैं। तुलनीय : अव० छोट मियाँ तौ छोट मियां बड़ा मियां सुब्हान अल्लाह।

छोटे मुंह बड़ी बात—जब कोई अपनी योग्यता, अवस्था या हैसियत आदि से बढ़कर बात करता है तब कहा जाता है। तुलनीय : राज० छोटे मूंढ़े बड़ी बात; पंज० निक्का मुँह बड़ी गल्ल।

छोटे-मोटे नदी-नाले मिल के ही गंगा बनती है—गंगा एकदम ही बड़ी नदी नहीं बन जाती। राह में सैकड़ों नदी, नाले उसमें मिलते हैं तब वह गंगा बनती है। आशय यह है कि (क) कोई महान् कार्य अकेले ही नहीं हो जाता, उसको करने में बहुत से लोगों की सहायता लेनी पड़ती है। (ख) लोगों के सहयोग से ही किसी की धाक बनती है। तुलनीय : माल० भेगी भेगी भागीरथी।

छोटे से ग़ाज़ी मियाँ बड़ी-सी दुम—अटपटी या बेमेल वस्तु, बात या काम पर कहते हैं। तुलनीय : अव० छोटे के गाजी मियाँ बड़ी के पूंछ।

छोटे से बड़ा होता है—छोटे से ही बड़ा हुआ जाता है। कोई वस्तु या व्यक्ति एकाएक ही बड़ा नहीं हो जाती। उन्नति धीरे-धीरे ही होती है। तुलनीय : राज० छोटे सूं मोटा हुवै; पंज० निक्के तों वड्डा हुँदा है।

छोटो बरतन छन में छलकै—छोटे बर्तन में पानी शीघ्र ही छलकने लगता है। (क) ओछे मनुष्यों के पास किसी बात को अपने तक रखने की क्षमता नहीं होती। (ख) ओछे मनुष्य थोड़े क्रोध में ही उबल पड़ते हैं। (ग) ओछे व्यक्ति थोड़े धन या सम्मान आदि में ही इतराने लगते हैं। तुलनीय : पंज० निक्का पांडा छेती वज्जे।

छोड़ चले बंजारे की सी आग—मतलब निकल जाने पर जब कोई साथ छोड़कर चल देता है तो कहते हैं। बंजारे रास्ते में पड़ी आग से अपना काम निकाल लेते हैं और चलते वक्त उसे वहीं छोड़कर चल देते हैं।

छोड़ जाट, पराई खाट— (क) अत्याचारी से अत्याचार न करने के लिए इस प्रकार कहा जाता है। (ख) कोई व्यक्ति यदि दूसरे की वस्तु पर बलात् क़ब्ज़ा कर ले तो उसे भी ऐसा करना छोड़ने के लिए कहते हैं। तुलनीय : पंज० छड़ जटट बगानी मज्जी (खट)।

छोड़ झाड़ मुझे डूबन दे—ऐ झाड़ मुझे छोड़ दे, मैं डूब मरूँगी। (एक स्त्री नाराज़ होकर नदी में कूदी। वह मरना तो चाहती नहीं थी, अतः उसने पानी में एक झाड़ पकड़ लिया, इस प्रकार वह बच गई। घर लौट कर उसने बताया कि झाड़ ने उसे पकड़ लिया तो डूबती कैसे?) जब कोई अपनी बेवक़ूफ़ी या शर्मिंदगी की बात इस प्रकार के बहाने से छिपाता है तो व्यंग्य में कहते हैं।

छोड़िए न जबान, खेंचिए न कमान; खेलिए न जुआ फाँदिए न कुँआ— बात कह कर बदल जाना, कमान को खींचना, जुआ खेलना और कुँआ फाँदना अच्छा नहीं होता।

छोड़ो राम अयोध्या जो चाहे सो लेय— जब राम ने अयोध्या छोड़ ही दी तो जो चाहे राज्य करे उन्हें क्या मतलब। आशय यह है कि जिस वस्तु को छोड़ दिया जाय या जिससे कोई संबंध न हो उसके विषय में चिंता करना मूर्खता है।

छोड़े खाद खेत गहराई, तब खेती का मज़ा उठाई— खेती का मज़ा तभी आता है जब खेत को खूब गहरा जोता जाय और खूब खाद डाली जाय। अर्थात् गहरी जुताई और खाद से फ़सल अच्छी होती है। तुलनीय : मरा० खत घाला, खोल नांगरा, मग शेतीचा आनन्द लुटा।

छोड़े गाँव का क्या नाँव—जिस गाँव को छोड़ दिया अब उसका क्या नाम लेना। अर्थात् जिससे एक बार संबंध-विच्छेद हो जाय उससे पुनः संबंध स्थापित करना ठीक नहीं रहता। तुलनीय : गढ़० छोड्या गौं को क्या नौं; पंज० छड्डे पिंड ते की लैनाँ।

छोड़ो पाट बैठो साठ—पाटी छोड़कर साठ बैठ जाओ। आशय यह है कि चारपाई की पाटी को छोड़कर उस पर चाहे जितने व्यक्ति बैठ जाएँ पर वह टूटेगी नहीं। पाटी पर बैठने से ही उसके टूटने का डर रहता है। तुलनीय : राज०

छोडो ईस बैठो बीस।

छोरा कुत्ता बांदरा याकी उलटी रीत, डरता रीज्यो परसराम, ये थोड़ी पालें प्रीत—लड़के, कुत्ते और बंदर इन तीनों में गंभीरता नहीं होती। ये प्रीति का पालन नहीं करते शीघ्र ही पलट जाते हैं, अतः इनसे डरते रहना चाहिए।

छोरा मरे अभागे का छोरी मरे सुभागे की—भाग्यहीन का लड़का मरता है और भाग्यशाली की लड़की। (इस लोकोक्ति में लड़कों का महत्त्व लड़कियों से अधिक दिखलाया गया है, पर आज के युग में ऐसा नहीं है)। तुलनीय : पंज० छोरा मरै अभागे को, छोरी मरै सभागे की।

छोरा से ही घर बसे तो बूढ़े का क्या काम—(क) यदि साधारण चीज़ से काम चल जाय तो बड़ी चीज़ के लाने की क्या आवश्यकता? (ख) लड़कों से गृहस्थी नहीं चलती, उसके लिए बड़े-बूढ़ों की आवश्यकता होती ही है। तुलनीय : हरि० छोहरा मरै निरभाग का छोहरी मरै भाग्यवान की, पंज० मुंडे नाल ही कर बने बुडे दा की कम्म।

छोह करे सास तो उपला से पोंछें आँस—ऐसे व्यक्ति या उसके व्यवहार पर कहते है जो किसी विशिष्ट व्यक्ति से या तो प्रेम न करे, या फिर करे भी तो प्रेम के कारण जो व्यवहार करे वह सुखद न होकर दुःखद हो। यह लोकोक्ति सास और पतोहू के संबन्ध पर आधारित है।

छोहन जिउ कल्लाइ, सिकहरे हाथै न जाय—तुम्हारे प्रति स्नेहभाव तो बहुत है, सिकहर (दूध रखने का छत से लटकता रस्सी का घेरा) तक हाथ ही नही पहुँचता और इसीलिए दूध (या दही) देने में असमर्थ हूँ। ऐसे व्यक्ति पर कहते हैं जो मुँह से तो बहुत प्यार दिखाये पर जब कुछ करने या देने की बात आये तो किसी बहाने से टाल जाय।

छोह से छाती फाटे आँसू एक नहीं—झूठी ममता प्रकट करने पर उक्त कहावत कही जाती है। तुलनीय : भोज० आँख में लोर नाँ छोहन छाती फाटे।

ज

जंगल जाए न छेड़िए, हट्टी बीच किराड़; भूखा तुरक न छेड़िए, हो जाय जी का झाड़—जाट को जंगल में, दुकानदार को दुकान में और भूखे तुर्क को नहीं छेड़ना चाहिए नहीं तो ये जान के पीछे पड़ जाते हैं। तुलनीय : राज० जंगल जाट न छेड़िये हाँटा कीच किराड़, राँगड़ कदे न छेड़िये पटकै टाँग पछाड़।

जंगल जाय तो बोझ लकड़ी ही मिल जाय—बेकार व्यक्तियों को कहते है कि हाथ-पैर हिलाओगे तो कुछ न कुछ तो मिल ही जायगा। तुलनीय : भीली - वगड़े जाये ते बूकरो लेई ने आवे।

जंगल में आग लगी तो लगी, तुमसे क्या?—जंगल में आग लगी है तो तुम से क्या मतलब, तुम अपने घर में बैठो। जो व्यक्ति बिना मतलब ही दूसरों के झगड़ों में रुचि ले और उनमें सम्मिलित होने का प्रयास करे उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : भीली—मंगरे लाये लागे ते लागवे दियो, तमा हाते हुके धामो; पंज० जंगल विच अग्ग लग्गी तेनूँ की।

जंगल में ऊसर शहर में दूसर—जिस प्रकार जंगल में अनुर्वर (ऊसर) भूमि का कोई महत्त्व नहीं है उसी प्रकार शहर में दूसर (वैश्यों का एक वर्ग विशेष) जो अब अपने को कुछ समय से ब्राह्मण कहने लगा है और भार्गव के नाम से प्रसिद्ध है, अनुपयोगी या महत्त्वहीन है। तुलनीय : कौर० जंगल में ऊसर, स्हैर में दूसर।

जंगल में काँटा, भील में बैर—जिस तरह जंगल में बहुत काँटे होते है उसी प्रकार भील जाति मे वैरभाव बहुत पाया जाता है। आशय यह है कि भीलों से सदा बचकर रहना चाहिए, क्योंकि एक बार बैर हो जाने पर ये जल्दी पीछा नहीं छोड़ते। तुलनीय : भीली- खारड़ा माँ काँटो भील माँ आँटो हदा रे।

जंगल में खेती नहीं, बस्ती में नहीं घर—न जंगल में खेती है और न गाँव (बस्ती) में घर। ऐसे व्यक्ति के प्रति कहते हैं जिसके पास कुछ भी न हो और न जिसका कोई स्थायी निवास स्थान ही हो।

जंगल में मंगल—जहाँ सुख की आशा या संभावना न हो और यदि वहाँ सुख मिले तो कहते है। तुलनीय : राज० जंगल में मंगल; पंज० जंगल बिच मंगल।

जंगल में मंगल बस्ती में कड़ाका—जंगल में सुखी है और गाँव (बस्ती) में दुखी। उलटी बात पर कहते हैं। तुलनीय : अव० जंगल मा मंगल; राज० जंगल में मंगल; गढ़० जंगल माँ मंगल बस्ती माँ कड़ाका; पंज० जंगल बिच मंगल बसती बिच कड़ाका।

जंगल में मंगल बस्ती में वीरान—ऊपर देखिए।

जंगल में मोती की क़द्र नहीं—जंगल में मोती की इज्जत नहीं होती, क्योंकि वहाँ उसकी परख करने वाला कोई नहीं होता। आशय यह है कि मूर्खों या असभ्य लोगों के बीच विद्वानों की इज्जत नहीं होती। तुलनीय : पंज०

जंगल विच मोती दी कद्र नईं।

जंगल में मोर नाचा, किसने जाना—नीचे देखिए।

जंगल में मोर नाचा किसने देखा ?—(क) परदेश में किए गए अच्छे काम आदि को देश वाले नहीं जान सकते। (ख) जब कोई गुणी अपना गुण ऐसे व्यक्तियों को दिखावे जो उसको न समझते हों तो भी कहते हैं। (ग) जब कोई आदमी अच्छा काम करे किन्तु किसी को पता न चले तो भी कहते है। तुलनीय : राज० मोर बाग में बोल्यो, कण दीठो ? पंज० जंगल विच मोर नचया किन देखया; कौर० जंगल में मोर नाच्चा, किमणी जाणा।

जंगल में मोर नाचा देखा किसने—ऊपर देखिए। तुलनीय : ब्रज० जंगल में मोर नाच्यौ देख्यो कौनें।

जंगली हाथी हाकिम चोर तीनों के बिगरे ओर न छोर—जंगली हाथी, हाकिम तथा चोर इन तीनों के क्रोध करने पर विनाश की आशंका रहती है।

जंगी घोड़े को भंगी सवार—(क) जब कोई मूल्यवान वस्तु किसी अयोग्य के अधिकार में हो तो कहते हैं। (ख) बेमेल संबंध पर भी ऐसा कहते हैं।

जंजाल अच्छा कंगाल नहीं—(क) सम्पन्न होकर झंझटों में रहना अच्छा है, किन्तु गरीब रहना अच्छा नहीं। (ख) बाल-बच्चों वाला होकर परेशानी सहना ठीक है पर निःसंतान रहना ठीक नहीं। तुलनीय : पंज० जंजाल चंगा कंगाल नईं।

जइस करिहौ तइस भरिहौ—जो जैसा कर्म करता है उसे उसी प्रकार का फल भी मिलता है।

जख़मी दुश्मनों में दम ले तो मरे, न ले तो मरे—शत्रुओं को यदि मालूम हो जाए कि यह अभी साँस ले रहा है तो वे मार डालेंगे और यदि साँस न ले तो अपने-आप मर जाएगा। जब कोई दोनों ओर से आपदा में हो तो कहते हैं।

जग जला तो जलने दे, मैं आप ही जलती हूँ—संसार जलता है तो जलने दो मैं तो खुद जल रही हूँ। जब कोई व्यक्ति स्वयं परेशानियों में फँसा होता है वह दूसरों की परेशानियों की तरफ़ ध्यान नहीं देता।

जग जानी देश बखानी—(क) जिस बात या स्त्री की सभी तारीफ़ करते हों उस पर कहते हैं। (ख) प्रसिद्ध बात के प्रति भी कहते हैं जिसे सभी जानते हों।

जग जीता मोरी कानी, वर ठाढ़ होय तब जानी—जब दोनों ही तरफ़ गड़बड़ी हो तब कहते हैं। इस पर एक कहानी है : किसी पुरोहित ने धोखा देकर किसी कानी लड़की का विवाह एक नवयुवक के साथ ठीक किया। जब वर पक्ष को यह मालूम हुआ कि यह लड़की के पिता से रुपये लेकर हम लोगों को ठगना चाहता है तो वे एक लँगड़े को दूल्हा बना कर बारात में ले गए। जब विवाह हो गया तो पुरोहितों ने कहा, 'जग जीता मोरी कानी।' जिसके जवाब में वर पक्ष ने कहा, 'वर ठाढ़ होय तब जानी।' तुलनीय : राज० जग जीत्यो म्हारी काणी, ऊभो हु वै जद जाणी; भोज० जग जितलस रे मोर कानी, वर ठड़ा होय त जानी।

जगत का मुँह किसने रोका है ?—कहने वाले के मुँह को कोई बंद नहीं कर सकता। जब किसी सज्जन व्यक्ति पर कुछ लोग दोषारोपण करते हैं तब ऐसा कहते हैं या वह ऐसा कहता है। तुलनीय : कन्न० जगत्तिन बायि यारु ताने मुच्चियारु; पंज० संसार दा मुँह किन फडया है; ब्रज० जगत को मुँह कौन रोकि सकै।

जगते की कटिया और सोते का कटड़ा—जो जागता है उसकी भैंस (कटिया) ब्याती है और जो सोता है उसकी पाड़ा (कटड़ा)। आशय यह है कि जो सावधान रहता है वह लाभ उठाता है और जो असावधान रहता है वह हानि उठाता है। इस संबंध में एक कहानी है जो इस प्रकार है : किसी स्थान पर दो ग्वाले थे। उनके पास कुछ भैंसे थी। दोनों की कुछ भैंसें बच्चा देने वाली थी। भैंसों के बच्चा देने का समय आ गया था। उसमें एक चालाक था। वह सदा सावधान रहता था और दूसरा निश्चिंत रहता था। एक रात जब दोनों की भैंसें बच्चा दे रही थीं तो जो चालाक था वह जगा हुआ था और दूसरा सो रहा था। जागने वाले की भैंस पाड़ा ब्याई और सोने वाले की पाड़ी, लेकिन जो जाग रहा था उसने तुरंत अपनी भैंस का बच्चा उसकी भैंस के पास रख दिया और उसकी भैंस का बच्चा अपनी भैंस के पास। बाद में उसे जगाया और उक्त लोकोक्ति कही। तुलनीय : हरि० जगते की कटिया सोते का कटड़ा; माल० जागत री पाड़ी ने ऊंगता रो पाड़ो।

जग ते रहु छत्तीस है, राम चरन छः तीन—'36' के अंकों के मुँह जिस प्रकार एक दूसरे से विमुख हैं, उसी प्रकार मनुष्य को संसार से विमुख रहना चाहिए और जिस तरह '63' के अंकों का मुँह एक दूसरे के आमने-सामने है उसी प्रकार मनुष्य को राम के चरणों को सदा सम्मुख रखना चाहिए। इस लोकोक्ति का भाव यह है कि व्यक्ति को सांसारिक मोह-माया से दूर रह कर हरि का ध्यान करना चाहिए और मोक्ष पाने का प्रयत्न करना चाहिए।

जगदर्शन का मेला—संसार मेले की तरह है जिसमें सभी प्रकार के लोग होते हैं।

जगन्नाथ का भाटा जिसमें झगड़ा न झाटा—जगन्नाथ जी सर्वमान्य हैं, उनमें किसी प्रकार का भेद-भाव नहीं है। जो चीज़ या बात सबको मान्य हो उसके लिए ऐसा कहते हैं।

जगन्नाथ का भात जगत पसारे हाथ—लोक विरुद्ध होते हुए भी धार्मिक कृत्य समझ कर लोग जगन्नाथ के भात का विरोध नहीं करते। (जगन्नाथजी का जूठा भात लोग प्रसाद की तरह खाते हैं)। जब कोई लोकाचार के विरुद्ध बात बुरी नहीं मानी जाती तो कहते हैं।

जगन्नाथ के भात को जगत पसारे हाथ—जगन्नाथ के प्रसाद के महत्त्व पर कहा गया है। ऊपर देखिए। तुलनीय : ब्रज० जगन्नाथ कौ भात, जगत पसारे हाथ।

जग बौराइ राज-पद पाए—राजपद पाने पर सभी पागल हो जाते हैं, अर्थात् अधिकार मिलने पर प्रायः लोग उसका दुरुपयोग करने लगते हैं।

जगत भल भलेहि, पोच कहँ पोचू—संसार भले के लिए भला और बुरे के लिए बुरा है। आशय यह है कि जैसा मनुष्य दूसरों से व्यवहार करता है दूसरे भी उससे वैसा ही व्यवहार करते हैं।

जग में देखत ही का नाता—(क) जब तक मनुष्य जीता है, तभी तक नाता है। (ख) आँखों के सामने रहने पर ही प्रेम रहता है। तुलनीय : मरा० जीव आहे तोवर नातें।

जग में साँचे दो जने, एक राम और दाम; इक दाता है मोक्ष के, एक सुधारें काम—इस संसार में ईश्वर का नाम और धन दो का विशेष महत्त्व है। राम के नाम से मोक्ष की प्राप्ति होती है और धन से कार्य की सिद्धि होती है।

जगह न जमीन, राजा अचलपुर के—खेती-बारी कुछ भी नहीं है और अपने को अचलपुर का राजा बतलाते हैं। झूठी शेखी मारने वाले के लिए कहते हैं।

जग ही मिला न जग कर्ता—न तो सांसारिक कार्यों में ही सफलता मिली और न ही ईश्वर के दर्शन हुए। अर्थात् स्वार्थ और परमार्थ एक भी नहीं सधा।

जट बुद्धि या नट बुद्धि—जाट की और नट की बुद्धि बहुत विचित्र होती है। इन दोनों को कुछ न कुछ खुराफ़ात सूझती ही रहती है। तुलनीय : राज० जट बुध नट बुध; पंज० जट्ट अकल या नट अकल।

जटाधारी को प्रणाम है—यदि कोई व्यक्ति साधु न होकर भी साधुओं जैसा पहनावा पहनता है और जटा आदि रखता है तो उसे भी आदर दिया जाता है। अर्थात् वेश-भूषा से ही इज़्ज़त होती है। तुलनीय : राज० मुदराने आदेस है; पंज० लट्टूरिया वाले नूं राम राम (पैरी पोणा)।

जटा बढ़ा साधू हुए कौन जाने कौन हैं—जटा बढ़ा कर साधु हो गए, अब कौन जान सकता है कि इनकी जाति कौन सी है? साधुओं में सभी जातियों के व्यक्ति सम्मिलित हो सकते हैं, इसलिए उनकी कोई जाति नहीं होती। अर्थात् जब किसी स्थान पर सभी लोग एक जैसी वेश-भूषा में हों और उनमें भेद करना मुश्किल हो तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० भगताँ भेळा मिल गया, कुण जाणै कूभार?

जटा बधे बड़री जाँणां, बादल तीतर पंख-बखाड़ां; अवस नील रंग है असमाना, घणा बरसे जलरो घमसाणां—जब बरगद की जटा बढ़ने लगे, बादल का रंग तीतर के पंखों जैसा हो जाय और आकाश का रंग गहरा नीला हो जाय तो घमासान वर्षा होती है।

जट्टी रोवे यारों को, लेके नाम भाइयों का—जाटनी भीतर से तो यारों के लिए रोती है पर संसार के दिखावे के लिए भाइयों का नाम लेती जाती है। जब कोई दिखाने के लिए पर वास्तव में अपने स्वार्थ के लिए कोई काम करे तब कहते हैं। तुलनीय : पंज० जट्टी रोवे यारां नूं, ले-ले नां परावां दा।

जड़ काटते जायँ पानी देते जायँ—जब कोई सामने मीठी-मीठी बातें करे और पीछे बुराई करे तो उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मरा० मूळ कापीत जायचे, पाणी देते राह्यचें; ब्रज० जरैं काटते जाओ और पानी देते जाओ।

जड़ को काटो शाखें अपने आप गिर जायेंगी—प्रमुख शत्रु को मारना चाहिए, उसके मरने के बाद उसके सहायक खुद ही भाग जाते हैं।

जड़ को पकड़ो शाखों को क्यों पकड़ते हो—प्रधान की सेवा से लाभ होता है, अधीनों की सेवा से नहीं। तुलनीय : अव० जड़ पकड़ो डार का न पकड़ो; पंज० जड़ नूं फड़ो डालियाँ नूं कैनू फड़दे हो।

जड़ चेतन गुन-दोषमय, विश्व कीन्ह करतार—विधाता ने जड़-चेतन सबको गुण और दोष से युक्त बनाया है, अर्थात् बुराई और अच्छाई सभी में होती है।

जड़ से पूंछ नहीं और नाम है चँवरी—पूँछ तो जड़ से कटी है और नाम है चँवरी अर्थात् सुंदर पूँछ वाली। नाम के अनुसार गुण न होने पर कहा जाता है। तुलनीय : ब्रज० जर में पूँछि नायँ और नाम ऐ चौंरी।

जतने की तीन रोटी, ततने की टिकड़ी; अलग करो

तीन रोटी, एने लावा टिकड़ी—जितने (जतने) आटे की तीन रोटियाँ बनी है उतने (नतने) की एक टिकड़ी (मोटी रोटी)। इन तीन रोटियों को उधर कर दीजिए और मोटी रोटी इधर लाइए। क्योंकि मोटी रोटी खाने से एक ही रोटी मानी जाएगी और तीन पतली रोटियों के खाने से तीन रोटियाँ मानी जाएँगी। ऐसे व्यक्ति के प्रति कहते है जो अपना स्वार्थ भी पूरा करले और लोगों की दृष्टि में अच्छा भी बनना चाहे।

जद्यपि जग दारुन दुख नाना, सब तें कठिन जाति अपमाना यद्यपि संसार में अनेक असह्य दुःख है फिर भी जाति-अपमान सबसे बड़ा दुःख है। (इस लोकोक्ति में जाति की महत्ता को प्रदर्शित किया गया है)।

जनती न ढोल बजते, न होते मंगल चार— यदि मैं जानती तो न तो ढोल बजता और न ही मंगल गीत गाए जाते। उस मूर्ख के प्रति कहते हैं जिसके कारण कुल की मर्यादा पर आंच आती है। (जब लड़का पैदा होता है उस समय ढोल बजाया जाता है और मंगल गीत गाए जाते है)। पंज० तुलनील : जमदी ना ढोल वजदे ना गीत गांदे।

जनना और मरना बराबर है— बच्चा पैदा करने के बाद स्त्रियों का पुनर्जन्म होता है। आशय यह है कि प्रसव के समय स्त्रियों को बहुत कष्ट होता है। तुलनीय : अव० जिअब, मरब बरोबर है; पंज० जमना मरना इक बराबर है।

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी— माँ और जन्मभूमि स्वर्ग से भी प्यारी होती हैं। इस पर एक कहानी कही जाती है • एक बार भगवान विष्णु के वाहन गरुड़जी ने घर जाने की छुट्टी मांगी। भगवान ने उन्हें बहुत समझाया कि स्वर्ग में रहकर स्वर्गीय आनन्द ही लेते रहे, पर गरुड़जी ने एक न मनी और अन्ततः उन्हें आज्ञा मिल गई। तदुपरान्त भगवान विष्णु नकली भेष में उनके घर गए और देखा कि वे एक पुराने वटवृक्ष के कोटर में रह रहे है। वे कभी इस डाल से उस डाल और उस डाल से इस डाल पर उड़ते हैं और प्रसन्नता से पंख फड़फड़ाते है। यह देखकर भगवान ने पूछा, 'कहो गरुड़, इस निर्जन स्थान में तुम्हें क्या सुख मिल रहा है?' गरुड़ ने उत्तर दिया, 'भगवन्! क्या आप नहीं जानते कि जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी?'

जननी-सम जानहिं पर-नारी, धन पराव विष ते विष भारी सज्जन पुरुष पराई स्त्री को माता के समान और पराए धन को विष से भयंकर समझते है।

जनम और मरण कभी नहीं रुकते—किसी भी जीव का जन्म या मृत्यु प्रत्येक परिस्थिति, स्थान और समय में हो सकती है। इनको कोई रोक नहीं सकता। तुलनीय : माल० जनम, मरण ने परण कदी नी रुके; पंज० जनम अते मरण कदी नई रुकदे।

जनम का कंटक टला— किसी बहुत बड़ी मुसीबत या अनचाहे व्यक्ति के पीछा छोड़ देने पर कहते हैं।

जनम का काला उबटन से गोरा नहीं होता—जो जन्मजात काला है उसे चाहे कितनी भी उबटन लगाई जाय वह गोरा नहीं हो सकता। आशय यह है कि जन्मजात बुरे आदमियों पर उपदेशों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। तुलनीय :भोज० जनमत नाही गोर होई उ का अबटले गोर होई; पंज० जनम दा काला बूटना मलननाल गोरा नई हुंदा।

जनम का कोढ़ एक इतवार में नहीं जाता— (क) बड़े अपराध का प्रायश्चित्त एक दिन में नहीं हो जाता। (ख) जब कोई भारी काम बिगड़ जाता है तो उसे सुधारने में समय लगता है। तुलनीय : पंज० जनम दा कोड़ इक एतवार बिच नई जांदा।

जनम की उढ़री कभी न सुधरी –(क) जो स्त्री बचपन से ही चरित्र भ्रष्ट होती है वह मरते दम तक नहीं सुधरती। (ख) जो कार्य आरंभ में ही बिगड़ जाय वह फिर ठीक नहीं होता। तुलनीय : भोज० जनम क उढ़री कबहूँ न सुधरी है; पंज० जनम दी बिगड़ी कदी नयी सुदरी।

जनम के कमबख्त नाम बख्तावरसिंह –नामानुसार गुण न हो तब कहते है। तुलनीय : पंज० जनम दे पैड़े नां चंगे लाल।

जनम के कोढ़ी सदा बीमार रहने वाले के प्रति कहते हैं।

जनम के कोढ़ी, नाम गुलाबसिंह– नाम के अनुसार गुण न होने पर कहते हैं।

जनम के दुखिया करम के हीन, तिनका देव तिलंगवा कौन तिलंगों का जीवन बहुत पाबंद और कष्टमय होता है।

जनम के दुखिया नाम सदासुख—जन्म से तो तक़लीफ़ उठाते आ रहे हैं, पर नाम है सदासुख। नाम के अनुसार गुण न हो तब कहते हैं। तुलनीय : राज० जलमरो दुखारी नांव सदासुख; पंज० जनम दे दुखिया नाँ सदासुख।

जनम के मंगता नाम दाताराम— जन्म से भीख माँगते हैं और नाम है दाताराम। नाम के अनुसार गुण न हों तब कहते है। तुलनीय : राज० जनमरा मंगता नांव दाताराम; पंज० जनम दे मगंते नाँ दाताराम।

जनम के सब साथी, करम का कोई नहीं—माँ-बाप, भाई-बहिन आदि सभी जन्म के साथी होते हैं, भाग्य के नहीं। माँ-बाप जन्म देने और पालन-पोषण करने के अतिरिक्त और कुछ नहीं कर सकते। भाग्य का फल मनुष्य को स्वयं भोगना पड़ता है। तुलनीय : राज० जलमरा साथी है करमरा साथी कोनी; पंज० जनम दे सारे साथी करम दा कोई नईं।

जनम-जनम को छूट गई—(क) जन्म-जन्मांतर के लिए कलंक मिट गया। (ख) जन्म-जन्मांतर के लिए छुटकारा मिल गया।

जनमत सिहन को तनय गज पर चढ़त अभीति—शेर के बच्चे जन्म लेते ही निर्भय होकर हाथी पर चढ़ बैठते हैं। तात्पर्य यह है कि (क) वीर के पुत्र भी वीर होते हैं। (ख) अपने कुल की रीति को बच्चे बिना बताए ही जान जाते हैं।

जनम न देखा बोरिया, सपने आई खाट—दे० 'जन्म न देखी टाट···'।

जनम पत्र सभी देखते हैं, करम पत्र कोई नहीं देखता—ज्योतिषी केवल जन्मपत्री ही बना सकते हैं, कर्मपत्री नहीं। (क) जब ज्योतिषियों की कही बात झूठ हो जाय तो कहते हैं। (ख) भाग्य में क्या लिखा है इसे कोई नहीं जानता। तुलनीय : गढ़० जन्मपत्री सभी देखदा कर्मपत्री कोई नि देखदा; पंज० जनम पत्री सारे देखदे हन करमपत्री कोई नईं देखदा।

जनमपत्री की विधि तो मिला लो—(क) जो काम कभी न किया हो, उस काम के करने के लिए व्यंग्य में ऐसा कहते है। (ख) जल्दी मत कीजिए, पहले यह देख लीजिए कि काम हो सकेगा या नही।

जनम-भर में नकल की, वो भी कोढ़ी की—उम्र-भर में कोई काम किया वह भी बुरा या घृणित।

जनम-मरन का मुहूर्त कैसा?—जन्म लेने का और मरने का कोई मुहूर्त नहीं होता। ये दोनों कभी भी हो सकते हैं। तुलनीय : भीली—जलमणा ने मरवाना मोरत नी है; पंज० जनम मरन दा महूरत कैहो जिहा।

जन से धन—आदमी से रुपया पैसा होता है। अर्थात् यदि मनुष्य सकुशल रहे तो जीवन में बहुत धन कमाएगा। तुलनीय : मग० जन तऽ धन; भोज० जने से धन हऽ।

जनि हैं चिलम जे पर धरी अंगारी—चिलम को ही पता चलता है जिसके ऊपर आग रखी जाती है। आशय यह है कि जिसके ऊपर विपत्ति पड़ती है वही उस दुख को समझता है। तुलनीय : अव० बाँझ कि जानि प्रसव के पीरा; अं० Wearer alone knows where the shoe pinches.

जनी न ब्याही प्रसूत कहाँ से लाई—न ब्याह हुआ और न बच्चा पैदा हुआ तो प्रसूत का कष्ट कैसे हो रहा है? (क) चरित्र-भ्रष्ट औरतों के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। (ख) अकारण कार्य-सिद्धि पर भी ऐसा कहते हैं। (प्रसूत एक प्रकार का रोग है जो स्त्रियों को प्रायः प्रसव के बाद होता है)। तुलनीय : कौर० जणी ना ब्याही, परसूत कहाँ तें लाई।

जने जनका मन रखती, वेश्या हो गई बाँझ—जब कोई सबकी इच्छा पूरी करते-करते अपनी ही हानि करा बैठे तो कहते हैं। तुलनीय : माल० जण जण रा नखरा रखती वेश्या रहगी बाँझ; राज० जण जणरां मन रखती वेस्या रहगी बाँझ।

जने-जने की लाकड़ी, एक जने का बोझ—(क) यदि कई लोग किसी को थोड़ा-थोड़ा भार दें तो वह भार से दब जाएगा। (ख) यदि कई लोग किसी की थोड़ी-थोड़ी सहायता करें तो उसका कार्य आसानी से हो जाएगा। तुलनीय : मल० पलतुल्लि पेरुवेल्लम; अं० A pin a day is a groat a year; Drop by drop the ocean is filled, Many a little makes a mickle.

जने-जने से मत कहो, कार भेद की बात—अपने रोज़गार और रहस्य की बात हर एक से नहीं कहनी चाहिए। तुलनीय : अव० जनेन जनेन से घर के भेद नाही कहा जात।

जन्म का दुखिया नाम सदानन्द—नाम के अनुरूप स्थिति न होने पर व्यंग्य से ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० जनमे क दुखिया नाँव सदानन्द; जनम क दुखिया नाँव नयनसुख; अव० जनम के दुखिया नाम चैनसुख।

जन्म का दुखिया नाम सदासुख—ऊपर देखिए।

जन्म का बिगड़ा कब सुधरा?—जन्म का बुरा कभी सुधरता नहीं। या जन्मजात बुराई कभी जाती नही। तुलनीय : भोज० जनमें क बिगरल का सुधरी; मग० जनम के बिगरी कब सुधरी; पंज० जनम दा बिगडया कदों सुदरया।

जन्म का मंगता नाम दाताराम—दे० 'जन्म का दुखिया नाम···'।

जन्म के अंधे नाम नैनसुख—ऊपर देखिए।

जन्म के गंडुआ कर्म के हीन, बन गए जनटिल मैन—जब कोई ऐसा व्यक्ति ठाठ-बाट दिखाए जिसने कभी एक पैसा भी न कमाया हो या जो दूसरों के आसरे पेट पालता हो तो व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : अव० जनम कै गड़ुआ

करम के हीन बन गए जन्टू मैम।

जन्म के दुखिया नाम चैनसुख—दे० 'जन्म का दुखिया नाम···'।

जन्म के दुखिया सबसुख नाम—दे० 'जन्म का दुखिया नाम···'।

जन्म-जन्म मुनि जतन कराहीं अंतराम कहि आवत नाहीं—(क) आजीवन राम-राम रटते रहने पर भी मरते समय राम का नाम याद नहीं आता। (ख) जब कोई व्यक्ति किसी काम के लिए काफ़ी प्रयत्न करे और जब काम होने का समय आये तो भूल जाय तब भी कहते हैं।

जन्मत सिंघनि को तनय, गज पर चढ़त अभीत—दे० 'जनमत सिंहन को तनय···'।

जन्म देकर भगवान भी पछताए होंगे—तुम्हें पैदा करके भगवान भी पछताए होंगे। मूर्ख या दुष्ट व्यक्ति के प्रति व्यंग्योक्ति। तुलनीय : माल० अणाँ ने घड़ी ने राम पछताणा।

जन्मपत्र सब देखते हैं, कर्मपत्र कोई नहीं देखता—दे० 'जनमपत्र सभी देखते हैं···'।

जन्म न देखी टाट, सपने में आई खाट—जीवन-भर तो टाट भी सोने को नहीं मिला किंतु सपने में खाट देखते हैं। बहुत महत्वाकांक्षी व्यक्ति पर कहते हैं जो अपनी परिस्थितियों की ओर ध्यान न देकर बड़े-बड़े स्वप्न देखता है। तुलनीय : अव० जनम न देखिनि टाट सपने माँ आई खाट; भोज० जनम न देखलन टटिया सपने मे सोवें खटिया; पंज० जागदे ना दिखी टाट सुखने बिच आई खट।

जन्मपत्री क्या देखनी, शक्ल ही देख ली है—शादी-ब्याह तय करते समय जन्मपत्री आदि देखी जाती है। जिस व्यक्ति के ब्याह की बातचीत चल रही हो यदि उसकी सूरत से मूर्खता टपकती हो या वह असुन्दर हो तो व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। (ख) कोई व्यक्ति बहुत सुन्दर हो तो उसके लिए भी ऐसा कहते हैं कि इसकी तो सूरत ही बहुत है, पत्री देखकर क्या होगा। तुलनीय : गढ़० कुडली क्या देखणी मुंडली देखणी।

जन्म भर की कमाई, चक्कर में गँवाई—किसी के धन, यश, धर्म आदि के व्यर्थ में या किसी ग़लती के कारण नष्ट होने पर कहते हैं। तुलनीय : छत्तीस० जलम भर के कमाई, चक्कर-भटा माँ गवाई; भोज० जनम क कमाई, घन चक्कर में गँवाई; पंज० जनम पर दी कमायी फेरयाँ बिच गवायी।

जन्म भर न खाया पान, थूकत-थूकत निकले प्रान—जब कोई व्यक्ति निर्धन होने पर भी झूठी शान दिखाए तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

जन्म से दुखी, नाम सदासुख—दे० 'जनम का दुखिया नाम···'।

जन्म से ही पुत्र गोरे न हुए तो उबटने से थोड़े ही होंगे—दे० 'जनम का काला···'।

जन्मे थे या आसमान से टपके थे—(क) जब कोई व्यक्ति कोई मूर्खतापूर्ण बात करता है तो व्यंग्य से कहते हैं। (ख) शरारती जब कोई विकट शरारत करता है तो उसके प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० जम्में सी के ढठ्ठे सी।

जन्मे लाल और बाँटे कोयले—पुत्र-उत्सव में कोयला बाँट रहे हैं। मूर्खतापूर्ण कार्य करने वाले के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० जम्मे लाल वंडे कौले।

जप माला छाया तिलक सरे न एकौ काम, मन कोचे नाचे वृथा साँचे राचे राम—सच्ची भक्ति मन शुद्ध होने पर ही होती है आडंबर से नहीं। तुलनीय : राज० जटा बधायाँ हर मिले सुरग तो बड़ला सुर्ग क्यूं जावे नी; मूंड़ मुड़ाए हरि मिले सब कोई लेय मुड़ाय, बेर बेर के मूड़ते भेड़ न बैकुंठ जाय।—कबीर

जफ़ा वफ़ा राजाओं पर पड़ती आई है—राजाओं पर भी विपत्ति पड़ती है, अर्थात् विपत्ति छोटे-बड़े सभी पर आती है।

जब अगहन में ही घट गया तब आगे के लिए क्या चिंता?—अगहन महीने में नई फ़सल कटने से सभी के घर कुछ-न-कुछ अन्न रहता है; किंतु इस महीने में भी यदि किसी के घर कुछ खाने को न रहा तो आगे की न जाने क्या गति होगी। तुलनीय : मैथ० अगहन पटल झखब कतेक; भोज० जब अगहने में खर्ची ओरा गइल तऽ आगे के के झखे।

जब अपनी उतार ली तो दूसरे की उतारते क्या लगता है—जो अपनी इज़्ज़त का ध्यान नहीं रखता, उसे दूसरे की इज्ज़त की भी परवाह नहीं रहती। तुलनीय : मरा० ज्यानें लाज सोडली तो दुसऱ्याची फटफजिती करायला काय लाजणार।

जब अपनी लाज उतार ली तो दूसरे की उतारने में क्या लगता है?—ऊपर देखिए।

जब आँखें चार होती हैं, मुरव्वत आ ही जाती है—सामने मिलने पर लिहाज़ करना ही पड़ता है।

जब आँखें चार होती हैं मुहब्बत हो ही जाती है—परस्पर मिलने पर प्रेम उत्पन्न हो ही जाता है। तुलनीय : पंज० अखाँ चार हुँदे ही पयार हो जांदा है।

जब आई बेहयाई तो खाई दूध मलाई—निर्लज्ज हो

जाने पर खूब सुख मिलता है। वेश्याओं पर कहा गया है। तुलनीय : अव० जब करै बेहाई तो खाय दूध मलाई; पंज० जदों होये बसरम ते खादी दुद मलाई।

जब आक का दूध भी सूख गया तो गाय-भैंस का कहाँ से होगा—मदार (आक) का पौधा कड़ी धूप में भी हरा रहता है। यदि गर्मी से वह भी सूख गया तो गाय-भैंस कहाँ से घास खाकर दूध देंगी? जब अत्यधिक गर्मी पड़ने पर दुधारू पशु दूध नहीं देते तो कहते हैं। तुलनीय : भीली—आकड़े दूध हुकाणों ढाही डांबियांन खटे हावें।

जब आदमी भी मजदूरी देता है तो ईश्वर क्या रख लेगा?—मनुष्य भी जब परिश्रम का फल दे देता है तो भगवान भी दे देंगे। आशय है कि भगवान श्रम और भक्ति का फल अवश्य देते हैं। तुलनीय : राज० मिनख मजूरी देत है, क्या राखै लो राम।

जब आम झाड़े पताई तब लरिका रोवें माई रे माई—अभी पत्ते ही झड़े हैं कि लड़के आम के लिए रोने लगे। उचित समय से बहुत पहले फल की आशा करने या फल के लिए व्यग्र होने पर कहते हैं।

जब आवे बरसन का चाव, पछवाँ गिने न पुरवा बाव—जब बादल की बरसने की इच्छा होती है तो वह पछवा हवा से भी बरसता है। प्राय: वर्षा पुरवैया (पूरब की हवा) चलने पर ही होती है।

जब आया देही का अन्त जैसा गदहा वैसा संत—मृत्यु के सामने सभी बराबर हैं अर्थात् मृत्यु किसी को नहीं छोड़ती।

जब उठा ली झोली तो क्या बाम्हन, क्या कोरी—जब भीख माँगने का पेशा अपना लिया तो ब्राह्मण और कोरी में क्या अन्तर। फिर तो वह सभी के सामने झोली फैलाएगा। (क) भिखारी के लिए जाति-पाँति का कोई अर्थ नहीं। (ख) जब बेशर्मी अख्तियार कर ली तो ऊँच-नीच की क्या चिंता। तुलनीय : अव० जब उठा लिहिसि झोरी तो का बाम्हन का कोरी।

जब उतर गई लोई, तो क्या करेगा कोई?—जब चादर या ओढ़ना (लोई) उतर गया तो अब कोई मेरा क्या करेगा? यानी जब इज्जत समाप्त हो गई तो इससे अधिक अब कोई मेरा क्या बिगाड़ेगा? निर्लज्ज या बेशर्म व्यक्ति ऐसा कहता है। तुलनीय : पंज० जदों उतार लयी लोई ते की करेगा कोई; ब्रज० जब उतरि गई लोई तौ कहा करैगौ कोई।

जब ऐसे हो, तब ऐसे हो—तुम ऐसे बुरे कर्म करते हो इसीलिए तुम्हारी यह बुरी हालत हुई है। जब कोई अपने कुकर्मों का परिणाम भुगता है तो उसके प्रति ऐसा कहते हैं।

जब ओखली में सिर दिया तो मूसलों का क्या डर?—ओखली में सिर देने के बाद चोटों का भय करना मूर्खता है। अर्थात् जब कोई कठिन काम का बीड़ा उठाया जाय तो कष्टों की परवाह नहीं करनी चाहिए। तुलनीय : गढ़० ओखल्यूं सिर देणो चोट्टू क्या डरणो; राज० माथो ऊखली में दियां पछे घावो रौ काँई डर; अव० जब ओखरी माँ मूँड़ दीन तौ मुसरन तैं कौन डेरू; भोज० जब ओखरी में सिर दिहली त मुसरन क का डर; पंज० उखल बिच सिर दिता ते मुसल तों की डरना।

जब ओखली में सिर पड़ा तो मूसलों से क्या डर?—ऊपर देखिए।

जब ओढ़ ली लोई, तब क्या करेगा कोई—दे० 'जब उतर गई लोई···'।

जब ओढ़ लीनी लोई तो क्या करेगा कोई—ऊपर देखिए। तुलनीय : बुंद० जब लाद लई लोई तौ लाज काय की; ब्रज० जाने ओढ़ी लोई वाको कहा करैगो कोई।

जब करें आस, तब आवें तेरे पास—(क) निःस्वार्थ आदमी का कथन है। (ख) स्वार्थी व्यक्ति के प्रति भी कहते हैं कि जब उसे कुछ मिलने की उम्मीद होती है तभी वह पास आता है। तुलनीय : पंज० जदों करेंगा आस अदों आवांगे तेरे पास।

जब काल का आया खाजा, जैसा गदहा वैसा राजा—दे० 'जब आया देही···'।

जब काहू के देखहिं बिपती, सुखी भए मानहु जग नृपती—किसी को विपत्ति में देखकर नीच लोग इतने प्रसन्न होते हैं मानो उन्हें संसार का राज्य मिल गया हो। आशय यह है कि नीच व्यक्ति दूसरों के कष्टों में बहुत प्रसन्न होते हैं।

जब की जब पर छोड़ो—जब आएगा तो देखा जाएगा। भविष्य की चिंता करने वालों के प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० अदों दी अदों उते छडो।

जब के बूढ़े अब के जवान, अब के हुइहें और निकाम—आजकल के युवक कल के बूढ़ों के समान हैं और भविष्य में पैदा होने वाले और भी दुर्बल होंगे। लोगों के दिन-प्रतिदिन गिरते स्वास्थ्य को देखकर कहते हैं।

जब गीदड़ की मौत आती है तो गाँव की ओर भागता है—विनाश के समय बुद्धि खराब हो जाती है और व्यक्ति उलटा काम करने लगता है। तुलनीय : हरि० जब गादड़ की मरण मोत आवै गाँव सौ ही भाज्ज्या करै; सं० विनाश

काले विपरीत बुद्धिः; कौर० जिब गाद्दड़ की मौत आव्वे, गाँ उरियां भाग्गै; पंज० जदों गिददड़ दी मौत आंदी है तां पिंड नूं नठदा है।

जब गीदड़ की मौत आती है तो गाँव की तरफ भागता है—ऊपर देखिए। तुलनीय : ब्रज० जब गीदरा की मौति आवै तो गाँम सामुही भाजै।

जब चने थे तब दाँत नहीं, जब दाँत भए तब चने नहीं —नीचे देखिए।

जब चने थे तब दाँत नहीं, जब दाँत हुए तब चने नहीं —जब धन था तब कोई खानेवाला नहीं था और जब खाने वाले हुए तब धन नहीं रहा या जब आवश्यकता नहीं थी तो वस्तु की अधिकता थी और जब आवश्यकता है तो बिल्कुल नहीं है। तुलनीय : मरा० चणे होते तेव्हाँ दाँत नव्हते, दाँत आहेत तर चणे नाहीत; राज० दाँत हा जद चिणा कोनी, चिणा है जद दाँत कोनी; गढ़० जख नाक तख सोनोनी, जख सोनो तख नाक नी; कन्न० कड़ले इड्दाग; हल्लिल्ल हल्लिद् दाग कड्ले इल्ल; पंज० जदों छोले सी अदों दंद नई सी जदों दंद होये ताँ छोले नई।

जब चाहे तब जोड़े, जब चाहे तब तोड़े—(क) मनमाना काम करने वाले के प्रति कहते हैं। (ख) ओछे व्यक्ति के प्रति भी कहते हैं जो शीघ्र संबंध जोड़ता और तोड़ता रहता है।

जब चौके पर राँड़ हो गई तो लड़के की कौन उम्मीद—विवाह के तुरंत बाद विधवा हो गई तो लड़का कहाँ से होगा। जिस कार्य को करने के साधन ही ही नष्ट हो जायें तो उसे करना संभव नही रहता। तुलनीय : पंज० बयाह होंदे ही रंडी हो गयी ते मुडे दी उमीद कौन करे।

जब छोटी गाड़ी लीक पर तो बड़ी भी लीक पर—जिस लीक (वह निशान जो बैलगाड़ी के पहियों के चलने से कच्ची सड़क पर पड़ जाते हैं) पर छोटी बैलगाड़ी जा सकती है उस पर बड़ी गाड़ी भी जा सकती है। किसी भी काम की प्रारंभिक अवस्था निम्न स्तर पर ही होती है। काम आरंभ होने पर उसको मनचाहा बढ़ाया जा सकता है। जो व्यक्ति छोटा-मोटा काम करने में लज्जा का अनुभव करता है उसको समझाने के लिए इस तरह कहते हैं। तुलनीय : मेवा० गाड़ी लीक जो गाड़े लीक।

जब जाना ही है तो देर-सबेर क्या?—जब चल ही देना है तो आज क्या और कल क्या। अर्थात् जब किसी कार्य को करने का निश्चय कर लिया जाय तो उसमें लाभ हो या हानि इस बात की चिता न करके उसे कर डालना चाहिए। तुलनीय : भीली—जावू जणा पूटे पाहले मोरें नी जाके वगड़ो के हदरो; पंज० जाणा ही है देर सबेरे की।

जब जाय तीन पाव भीतर, तब सूझे देव-पीतर—जब पेट में अन्न पहुँच जाता है तभी देवता और पितरों का ध्यान आता है। तात्पर्य यह है कि अपना पेट भर जाने पर ही दूसरे का ध्यान आता है

जब जेहि द्रिग भ्रम होय खगेशा, सो वह पश्चिम उग्यो दिनेशा—भ्रम में पड़ा हुआ आदमी असम्भव बात भी कहने लगता है। वह पूर्व की अपेक्षा पश्चिम की ओर सूर्य का उदय होना बताता है।

जब जैसा, तब तैसा—अवसर के अनुसार कार्य करना चाहिए।

जब तक ऊँट पहाड़ के नीचे नहीं आता, तब तक वह जानता है 'मुझसे ऊँचा कोई नहीं'—नीचे देखिए। तुलनीय : ब्रज० जब तक ऊँट पहाड़ के नीचें नायें आवै, तब तक वु जानतु ऐ कै मोते ऊँचौ कोई नायें।

जब तक ऊँट पहाड़ नहीं देखता, उसका घमंड नहीं टूटता—जब कोई व्यक्ति अपने ज्ञान पर काफ़ी गर्व करता है तब उसके प्रति ऐसा कहते हैं। अर्थात् जब तक उसकी मुलाक़ात अपने से योग्य लोगों से नहीं होती तब तक वह अपने सामने किसी को कुछ नहीं समझता। तुलनीय : छत्तीस० जलघस ऊँटवा पहाड़ नइ चढ़ें तलघस भरभस नइ टूटे; पंज० ऊंट जदों तक पहाड़ नई देखदा उसदा गुमान नई टुटदा।

जब तक एक तब तक भाई, अलग हुए और हुई लड़ाई—भाइयों में प्रेम तभी तक रहता है जब तक वे सम्मिलित परिवार में रहते हैं। जब वे अलग हो जाते हैं तो संपत्ति के लिए झगड़ा करने लगते हैं। अर्थात् अलग हो जाने पर प्रेम समाप्त हो जाता है। तुलनीय : भीली—भेला जतरे भाई, भाग पड्याने भागग्या; पंज० जदों तक कट्ठे रहै परा वखरे होय पयी लड़ाई।

जब तक ओझा आएगा लड़का तो मर जाएगा—जब किसी आवश्यक कार्य में भी कोई विलंब करता है तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मैथ० जबले सोखा के भाव आई तबले लड़िके मर जाई; भोज० जबले सोखा अइहं तबले लइका मरि जाई; ब्रज जब तक ओझा आवैगो, छोरा तौ मरि जावैगो।

जब तक करूँ बाबू बाबू, तब तक करूँ अपने काबू—(क) जब तक आदमी की खुशामद की जाती है तब तक वह अपने क़ाबू (वश) में रहता है। (ख) जब तक मैं किसी की खुशामद करूँगा तब तक तो मैं उस कार्य को

स्वयं कर लूँगा या अपने बलपर कर लूँगा। तुलनीय : अव० जब तक कर बाबू, तबं तक रहै क़ाबू; पंज० जद तक करां बाबू तद तक रखां काबू।

जब तक खाय तब तक पत्तल, नहीं तो कूड़ा—भोजन करते समय पत्तल उपयोगी होती है, किंतु भोजन के पश्चात् उसका कोई मूल्य नहीं रहता। (क) जब व्यक्ति मतलब हल हो जाने के पश्चात् बात करना भी पसंद न करे तो कहते हैं। (ख) जो वस्तुएँ एक बार काम में आने के पश्चात् बेकार हो जायँ उनके प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : मेवा० पातल में जी में जतरे काम, जीम्यार फेंकी। पंज० पत्तल अदों तक जदो तक खावो उसदे बाद कूड़ा।

जब तक खुश तब तक राजा नहीं तो जल्लाद—जब तक प्रसन्न हैं तब तक जो चाहो सो ले लो, क्रोधित होने पर जल्लाद जैसा कठोर हो जायगा। प्रसन्न होने पर प्रत्येक व्यक्ति दरियादिल हो जाता है और अप्रसन्न होने पर कठोर। प्रसन्न रहते समय ही अपना काम बनाने का प्रयत्न करना चाहिए। तुलनीय : भीली—राझू जतरे रईस रीश्याँ पूठे रागम।

जब तक गंगा जमुना बहे—किसी कार्य के अनंत काल तक जारी रहने के लिए कहा जाता है। तुलनीय : अव० जब तक गंगा जमुना मा पानी रहै; सं० यावच्चंद्र दिवाकरौ।

जब तक गाड़ी लुढ़के तब तक लुढ़काए जा—अर्थात् जब तक काम चल सकता है चलाए जाओ, फिर देखा जायगा। तुलनीय : पंज० जदों तक गड्डी रिड़दी है रेड़ी चल; ब्रज० जब तक गाढ़ी लुढ़कै, लुढ़कायें जा।

जब तक घर में दाने, किसी का डर न माने—जब तक अपने घर में अनाज हो तब तक किसी से डरना नहीं चाहिए। (क) जब तक अपनी गाँठ में दाम हो, किसी से डरना नहीं चाहिए। (ख) जब तक अपनी आयु है तब तक कोई मार नहीं सकता, इसलिए किसी से डरने की आवश्यकता नही है। तुलनीय : राज० कोठी में दाणा है जिते तो कोई डर कोनी; पंज० जदों तक कर बिच दाणे किसे दा डर नां मन्नो।

जब तक चले तब तक खाओ, नहीं तो अपने घर लौट आओ—जब तक मुफ़्त की मिलती है खाते रहो, जब न मिले तो घर लौट आओ। हरामखोरों के प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

जब तक चले हाथ-पांव, तब तक पूजे सारा गाँव—जब तक शरीर में शक्ति रहती है तब तक सभी आदर-मान देते हैं और वृद्धावस्था में कोई बात भी नहीं पूछता। (क) जब किसी व्यक्ति की उसके घर वाले वृद्धावस्था में उसकी सेवा नहीं करते उसके प्रति सहानुभूति प्रकट करने के लिए ऐसा कहते हैं। (ख) जब तक किसी के पास धन रहता है तब तक उसकी सभी इज्ज़त करते हैं। (ग) जब कोई संपन्न व्यक्ति निर्धन हो जाता है और उसकी इज्ज़त नहीं होती तब भी ऐसा कहता है। तुलनीय : गढ़० जब तें ल्वै तब तैं सब कोई; पंज० जदों तक चलण हत्थ पैर अदों तक पूजे सार पिंड।

जब तक जीता है तब तक कुत्ते भौंकाता है—जब तक जीवित है तभी तक कुत्तों को भौंकाता है बाद में कोई नही पूछेगा। जो व्यक्ति कंजूस या साहसहीन हो वह ऐसा कोई कार्य नहीं कर पाता जिससे उसका नाम मरने के बाद भी कोई ले। इसी कारण उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० जीवै जिते कुतो भुसावै; पंज० जींदे जी कुत्ते भौंकादा है।

जब तक जीना तब तक सीना—मनुष्य जब तक ज़िन्दा रहता है दुनिया के झंझटों से उसका पिंड नहीं छूटता। तुलनीय : भोज० जबले जिया तबले सीयऽ; कौर० जब लों (लग) जीणां तब लों (लग) सीणा; मेवा० जीवणां जतरे सीवणां; मरा० जोंवरि जगणें, तोंवरी शिवणें; ब्रज० जब तक जीनों तब तक सीनों; प्र० पेट के वेट बेगारहि में जब लों जियना तब लौं सियना है—पद्माकर।

जब तक तंगदस्त है तब तक परहेजगारी है—जब तक आदमी परेशानियों में फँसा रहता है तब तक सबकी बातों को बर्दाश्त करता है।

जब तक थैली भरी सारी बात खरी—संपन्न व्यक्ति की सभी बातें अच्छी होती हैं। धनी व्यक्ति की बातों का कोई विरोध नहीं करता भले ही वह अनुचित कहे। तुलनीय : गढ़० जब तो सो, तब भरोसो; पंज० जद तक खीसा भरया, सारा कम्म सरया।

जब तक दम तब तक गम—जब तक जीवन है तभी तक इसकी चिंता भी है। तुलनीय : भोज० जबले दम तबले गम; अव० जब तक दम फिर का गम है; राज० जीवे जिते जंजाल; गढ़० जब तैं दम तब तैं गम।

जब तक पढ़िबे 'का का खंया' तब तक जोतिबे तीनि हरैया—जब तक 'क' 'ख' पढ़ेगा तब तक थोड़ा जोत लेगा। गाँव के लोग पढ़ने के विरुद्ध ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० वही।

जब तक पहिया लुढ़कता है तभी तक गाड़ी है—रोज़गार चलने तक ही बात बनी रहती है। तुलनीय : अव० जब तक पहिया ढुनगै तब तक गाड़ी ढकेले चलौ; पंज० जदों

तक पैया चलदा है अदों तक गड्डी है।

जब तक पहिया लुढ़के लुढ़काए जाओ—जब तक काम चल जाय चलाते जाओ।

जब तक फूटे न कपार तब तक समझे न गँवार—गँवार समझाए से नहीं समझता, मारपीट से ही समझता है। तुलनीय : भोज० जबले फूटे ना कपार तबले बूझे ना गँवार। पंज० जदों तक पैया रिड़दा है रेड़ी चल; ब्रज० जब तक पहिया टरकै टरकायें जाओ।

जब तक फूले केतकी तब तक बिमल करील— जब तक इच्छानुसार काम न मिले तब तक जो कुछ मिले उसे ही करते रहना चाहिए। आशय यह है कि बेकार रहने से कुछ करते रहना अच्छा है।

जब तक भाँटा-भाजी तब तक बिरजो काकी — जब तक बैंगन (भाटा) और साग (भाजी) मिलता है तभी तक बिरजो काकी हैं। स्वार्थी व्यक्तियों के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : बुंद० जौलों भटा-भाजी तौलों बिरजो काकी; बग० जतक्षण दूध ततक्षण पूत; मरा० कामा पुरता मामा आणि नाकी पुरती आजीबाई।

जब तक मालिक, तब तक धन - सम्पत्ति तभी तक रहती है जब तक उसका स्वामी उसके पास रहे, न रहने से वह शीघ्र ही नष्ट हो जाती है। आशय यह है कि उचित व्यवस्था से ही धन सुरक्षित रहता है। तुलनीय : भीली— धणी जतरे धन, धणी गियो ने धन ग्यो।

जब तक रकाबी में भात तब तक मेरा तेरा साथ— स्वार्थियों के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

जब तक रहें कुठलिया धान, पुआ छाँड़ न खावें आन- जब तक कुठले में चावल है तब तक तो पुआ ही खायेंगे, जब समाप्त हो जायँगे तब देखा जायगा। भविष्य की चिन्ता न करने वाले मूर्ख के प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

जब तक लालाजी पाग सँभालें, तब तक दरबार उठ जाय जब तक लालाजी अपनी पगड़ी ठीक करेंगे तब तक सभा समाप्त हो जाएगी। साज-शृंगार में अधिक समय लगाने वाले के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

जब तक साँसा तब तक आसा— (क) मरने तक आशाएं दूर नहीं होती बल्कि नित्य एक न एक उठती रहती है। (ख) जब तक साँस चलती रहती है तब तक रोगी के बचने की आशा रहती है चाहे उसका कितना भी असाध्य रोग क्यों न हो। तुलनीय : मरा० जोवरि श्वास तोंवरि आस; राज० साँस जिते आस; गढ़० जब तें सास तब तें आस; अव० जब तक साँसा तब तक आसा; जबै तक स्वास तबै तक आसा; भोज० जबले साँसा तबले आसा; पंज० जदों तक साँह अदों तक आस।

जब तब सूअरो गंगा पार- (क) कभी-कभी अनहोनी बात भी हो जाती है। (ख) जब कोई आदमी ऐसा काम कर बैठे जिसकी उससे आशा न हो तब भी कहते हैं।

जब तीर छूट गया, तो फिर कमान में नहीं आ सकता— अर्थात् मुँह से निकली बात वापस नहीं आती। अत: सोच-विचार कर कुछ कहना चाहिए। तुलनीय : पंज० छुटया तीर कमान बिच नई आंदा।

जब तेरे पेट में खुड़डिया लगे, तब मीठा और सलोना क्या रे ?—भूख में मीठी और नमकीन, अच्छी-बुरी सभी चीज़ें बराबर होती हैं।

जब दरवाजे पर आई बरात, तब समधिन के लागल हगास—जब किसी कार्य के करने के समय कोई बहाना बना ले तो उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० जब गोंइड़े आई बरात, पगरैतिन के लागे हगास; (हगास =टट्टी जाने की आवश्यकता महसूस करना)। ब्रज० जब दरवज्जे पै आई बरात। तब समधिनिकूं लगी हिंगास।

जब दाँत थे तब चने नहीं, जब चने दिए तब दाँत नहीं —दे० 'जब चने थे तब दाँत नहीं····'। तुलनीय : ब्रज० जब दाँत ए तब चना नायें।

जब दाँत न थे तब दूध दयो, जब दाँत दिए का अन्न न देइ है ?—निर्धन को धैर्य रखने तथा ईश्वर पर भरोसा रखने के लिए कहते हैं कि जब दाँत नहीं तो दूध दिया और अब दाँत निकल आए हैं तो अन्न भी देगा। तुलनीय : मरा० दाँत नव्हते तेव्हां दूध दिले, अत्ता दाँत दिले तर अन्न देत नाही; अव० जब दाँत नहीं तब दूध दिहेन अब का अन्न न देइ है।

जब दाँत हुए तब चने नहीं, जब चने हुए तब दाँत नहीं—आवश्यकतानुकूल उपलब्धि न होने पर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : कौर० जब दाँत हुए तो चणे ना, जब चणे हुए तो दाँत ना; पंज० जदों दंद उग्गे अदों छोले नईं जदों छोले होये अदों दंद नई; ब्रज० दाँत ए तब चना नाये, जब चना ये तब दाँत नायें।

जब दिन आए भले, तब लड्डू मारे चले – जब अच्छे दिन आते हैं तब लड्डू अपने-आप खाने को मिल जाते हैं। आशय यह है कि जब मनुष्य के अच्छे दिन आते हैं तो उसे अनायास अच्छी चीज़ों की उपलब्धि होती रहती है।

जब दिया दिल तो फिर अन्देशा-ए-रुसवाई क्या ?—

जब प्रेम किया तो बदनामी का क्या डर? जब कोई बुरा कर्म करे और बदनामी से डरे तब ऐसा कहते हैं।

जब दिल लगा गधी से तो परी क्या चीज है?— जिसका जिससे प्रेम हो जाता है वही उसके लिए सुंदर होता है, भले वह कुरूप क्यों न हो। तुलनीय : भोज० जब दिल लागल कुबरी से त परी कवन चीज; पंज० जदों दिल खोती नाल लगया है ते परी की चीज है।

जब देखो तब नाजिर मियाँ का टाला—जब देखो तब नाजिर मियाँ मौजूद रहते हैं। मुफ्तखोरों को कहते हैं जो हमेशा दरवाजे पर बैठे रहते हैं। (टाला = आना-जाना या घूमना)।

जब देखो पिय संपति थोड़ी, बेसहो गाय बिआउरि घोड़ी—हे स्वामी! जब देखना कि धन कम रह गया है तो हाल में बच्चा दी हुई गाय और घोड़ी खरीद लेना। इन दोनों से लाभ होता है।

जब देगा तब छप्पर फाड़कर देगा—ईश्वर जिसे कुछ देना चाहता है उसे किसी न किसी तरह दे ही देता है। तुलनीय : अव० जब दई तो छपरा फार के देई; राज० खुदा देगा तो छप्पर फोड़ कर देगा; हरि० भगवान जब देगा छप्पर पाड़कै देगा; मरा० देतो तेव्हाँ घराचें छप्पर काढ़ून त्यांनून देतो; माल० भगवान दे तो छप्पर फाड़ी ने दे; पंज० जदों देगा छप्पर फाड़ के देगा; ब्रज० जब देगौ तौ छप्पर फारि कैंई देगौ।

जब नटनी बाँस पर चढ़ी, तब लाज काहे की—इसके कई प्रयोग चलते हैं। (क) जब कोई निर्लज्ज व्यक्ति निर्लज्जतापूर्वक अपना बुरा या गंदा काम करता चला जाय तो व्यंग्य में इस लोकोक्ति का प्रयोग करते हैं। (ख) जब कोई व्यक्ति किसी छोटे काम को करना प्रारंभ करे और कुछ दिन करके भी लज्जा का अनुभव करे तो साहस बँधाने तथा लज्जा का अनुभव न करने के लिए उसके प्रति कहते है। ऐसा तब कहते हैं जब काम छोटा होने पर भी अनुचित न हो। (ग) जब किसी बुरे काम को सबके सामने करके भी कोई छुपाने का प्रयत्न करे तब उसके प्रति कहते है। तुलनीय : भोज० नाचे त घूंघट का।

जब नटनी बाँसे चढ़ी तब काहे की लाज—ऊपर देखिए।

जब नाचने चली तब घूंघट क्या—दे० 'जब नटनी बाँस पर चढ़ी...'। तुलनीय : ब्रज० जब नटिनी बाँस पै चढ़ि गई तो लाज कैसी।

जब नाचने निकली तो घूंघट किससे—दे० 'जब नटनी बाँस पर चढ़ी...'।

जब नीके दिन आइहैं, बनत न लगिहै बेर—जब अच्छे दिन आते हैं तो सभी बिगड़े हुए काम ठीक हो जाते हैं।

जब प्रजा नहीं तो राजा कहाँ?—(क) जब प्रजा नहीं होगी तो राजा भी नहीं होगा, क्योंकि राजा प्रजा पर ही शासन या राज्य करता है। (ख) जब वस्तु ही नहीं है तो उसके मालिक के होने का कोई सवाल ही नहीं उठता। तुलनीय : पंज० जद परजा नईं ताँ राजा किथे।

जब फेंको तब पाँचे तीन—जब पासा फेंकते है तब पाँच और तीन ही पड़ते हैं। किसी कार्य में बार-बार सफल होने पर ऐसा कहते हैं।

जब बरखा-चित्रा में होय, सगरी खेती जावै खोय—चित्रा नक्षत्र में वर्षा होने से कृषि को बड़ी हानि होती है।

जब बरसता है तब गरजता नहीं—जब बादल बरसते हैं तो गरजते नहीं। आशय यह है कि अच्छे लोग किसी कार्य को करने के पूर्व उसका प्रचार नहीं करते। तुलनीय : पंज० जदों बरसदा है अदों गरजदा नईं, ब्रज० जब बरसै तो गरजै नायँ।

जब बरसेगा उत्तरा, नाज न खावे कुत्तरा—उत्तरा नक्षत्र में पानी बरसने से इतनी पैदावार होती है कि कुत्ता भी अनाज खाते-खाते ऊब जाता है। अर्थात् उत्तरा नक्षत्र में पानी बरसने से काफी अन्न पैदा होता है।

जब बरसे तब बाँधो क्यारी, बड़ा किसान जा हाथ कुदारी—वर्षा होते समय खेत में क्यारी बना कर पानी को बहने से रोक देना चाहिए और अच्छा किसान वही माना जाता है जिसके हाथ में सदा कुदाल रहे, अर्थात् सदा काम करने को तैयार रहे।

जब बर्र बरोठे आई, तब रबी की होय बोआई—जब बर्रें घर में या सामने उड़ती हुई दिखलाई दें तब रबी की फ़सल की बोवाई करनी चाहिए।

जब बहै हड़हवा कोन, तब बनजारा लादै नोन—दक्षिण-पश्चिम की हवा से पानी नहीं बरसता इसलिए उसमें नमक नहीं गलता है। अतः व्यापारियों को ऐसी हवा में नमक लादना चाहिए।

जब बाँझ ब्याई तो सोंठ हेराई—जब बाँझ स्त्री को संतान हुई तो जच्चा को खिलाने के लिए तलाशने पर पता चला कि सोंठ खो गई। जब बड़ी कठिनाई से कोई असंभव काम हो जाए और दूसरी जरूरी चीज जो उस स्थिति में अपेक्षित हो न मिले तो कहते हैं।

जब बिगड़े तब सुघड़ नर, क्या बिगड़ेंगे कूर; मठा

बिचारा क्या बिगड़े, जब बिगड़े तब दूध—जो भला आदमी है वही बुरा बनता है क्योंकि बुरा तो पहले से ही बुरा होता है। जैसे दूध ही बिगड़ता है, मठे का क्या बिगड़ेगा ?

जब बुरे दिन आते हैं तो अक़्ल जाती रहती है—बुरे दिन आने पर बुद्धि नष्ट हो जाती है।

जब बोले तब कफ़न फाड़े—जो व्यक्ति प्रायः चुपचाप रहे किन्तु जब बोले तो उलटी ही बात बोले तो उसके प्रति कहते हैं।

जब बोले तब टेढ़े—जो व्यक्ति सदा लड़ने को तत्पर रहे या जो सीधी बात का भी टेढ़ा उत्तर दे उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० जदों बोलया कफ़न फाड़या।

जब बोले तब बां-बां—(क) मूर्खतापूर्ण काम करने वाले या बातें करने वाले के लिए कहते हैं। (ख) सदा रोने-धोने वाले के प्रति भी कहते हैं।

जब भए सौ तब भाग गया भय—जहाँ पर अधिक लोग रहते हैं उन्हें किसी से डर नहीं लगता। एकता बहुत बड़ी चीज़ है।

जब भाजन को होय लुगाई, तोरे कोट और फाँदे खाई—जब स्त्री को भागना होता हो तो वह दीवार को तोड़ देती है और खाई को कूद जाती है। आशय यह है कि जब कोई बुराई करने के लिए तैयार हो जाता है तो उसे किसी प्रकार रोका नहीं जा सकता। तुलनीय : ब्रज० वही।

जब भी तीन और अब भी तीन, जब पाए तब तीन ही तीन—सदा एक ही स्थिति में रहने पर ऐसा कहते हैं।

जब भूख लगी भड़ुवे को तंदूर की सूझी; और पेट भरा उसका तो फिर दूर की सूझी—जब भूख लगती है तब तो चूल्हे की याद आती है यानी घर आता है और खा लेने के बाद फिर दूर चला जाता है। (क) अपने निकम्मे पति को स्त्री इस प्रकार कहती है, जिसे भोजन के समय ही घर याद आता है। (ख) स्वार्थी व्यक्ति के प्रति भी कहते हैं। (ग) दिखावटी प्रेम करने वाले के प्रति भी ऐसा कहते हैं।

जबर का कोई धर्म नहीं—बलवान का कोई धर्म नहीं होता। जब कोई धनवान या शक्तिशाली व्यक्ति मनमाना काम करे और मान-अपमान का ध्यान न रखे तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० धींगांणे धरम को डूबैनी; पंज० तगड़े दा कोई तरम नई; ब्रज० जबर कौ कहा धर में।

जबर का बोझ सर पर—ज़बरदस्त के आगे सब झुकते हैं।

जबर की जोय महतारी होय, निबल की जोय मेरी साली—शक्तिशाली या ज़बरदस्त की स्त्री माँ के समान और कमज़ोर की स्त्री साली के समान होती है। आशय यह है कि शक्तिशाली से सभी डरते हैं और कमज़ोर को परेशान करते हैं।

जबर की लाठी सदा सिर पर—शक्तिशाली से सभी डरते हैं। तुलनीय : गढ़० जबर्दस्त को लट्ठ सिर पर वाण; पंज० तगड़े दी सोटी सदा सिर उत्ते; ब्रज० ज़बर कौ लट्ठ सदा सिर पै।

जबर को मारे सबर—ज़बरदस्त संतोष करने से ही मारा जाता है। ज़बरदस्त के अत्याचारों को धैर्य से सह लेना चाहिए, क्योंकि वह शीघ्र ही नष्ट हो जाता है। तुलनीय : राज० जबरने पूगै सबर; पंज० तगड़े नूं मारे सबर।

जबरदस्त का खेत भूत जोतता है—(क) भाग्यवान का काम अपने आप ही हो जाता है। (ख) प्रभावशाली का काम बिना किसी कठिनाई के हो जाता है। तुलनीय : ब्रज० जबरदस्त कौ खेत भूत जोतै।

जबरदस्त का ठेंगा सर पर—बलवान से सभी दबते हैं या वह सभी से बलपूर्वक अपनी आज्ञा का पालन करवा लेता है। तुलनीय : मरा० जबरदस्ताचा आँगठा डोक्यावर; पंज० तगड़े दा डंडा सिर ते; भोज० जबर क लाठी कपारे पर; ब्रज० जबरदस्त कौ ठेंगा सिर पै।

जबरदस्त के तेवर सहने पड़ते हैं—बलवान का क्रोध या रोब सहना ही पड़ता है, क्योंकि और कोई चारा नहीं होता। तुलनीय : राज० लूंठैरो डोको डाँगनै फाड़ै; पंज० तगड़े दा रोब सैना पैंदा है; ब्रज० जबरदस्त की त्यौरी सहनी ई परै।

जबरदस्त के बेटे को सभी चूमें—बलवान के बेटे को सभी चूमते हैं। जब सभी मनुष्य किसी बात में किसी बलवान का समर्थन करें तो ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० होंदा का नौना की भुक्की सब कोई पैंदा; पंज० तगड़े दे पुतर नूं सारे चुमन।

जबरदस्त मारे, और रोने न दे—बलवान व्यक्ति निर्बल को मारता भी है और रोने भी नहीं देता। (क) जबरदस्त से सभी डरते हैं। (ख) जब कोई निर्बल पर अनुचित दबाव डाले तो भी कहते हैं। तुलनीय : मरा० बलवान मारतोच मारतो निवर रडूहि देत नाहीं; राज० लूंठाईरा लाल तुर्रा, जबरो मारै र रोवण को दै नी; अव० जबरा मारै रोवै न देय; मेवा० जबरो मारे र रोबा नी देवे;

बुंद० जबर मारे रोउन न देय; ब्रज० धीगरा मारे और रोयन देई; पंज० तगड़ा मारा अते रोण ना देवे।

जबरदस्त सबका जमाई—जबरदस्त का सभी लोग दामाद की तरह आदर करते हैं। आशय यह है कि उससे सभी दबते हैं। तुलनीय : मरा० बलवान सर्वाचा जांवई; पंज० तगड़ा सारियाँ दा जवाई

जबरदस्ती का पढ़ना किसने पढ़ा—इच्छा के विरुद्ध किसी को पढ़ाया नहीं जा सकता। तात्पर्य यह है कि अनिच्छा से अन्य सभी काम थोड़े-बहुत हो जाते हैं किंतु पढ़ा नही जा सकता। तुलनीय : भीली—दीदा डाम लागे भण अकल न लागे; पंज० रौबदा पढ़ाना किन पढ़या।

जबरदस्ती ही धर्म है—जो व्यक्ति बलपूर्वक किसी बात को मनवा ले वही सत्य है। बलवान व्यक्ति अपनी शक्ति या धन से सभी बातों को सत्य कर दिखाता है। तुलनीय : राज० धीगांणे रो धरम है; पंज० रौब ही तरम है।

जबरन कुत्ता कितना शिकार मारे—कुत्ता ज़बरदस्ती अधिक शिकार नहीं मार सकता। किसी से बलपूर्वक अधिक काम नहीं कराया जा सकता। तुलनीय : राज० उठाया कुत्ता कितीक सिकार करै; पंज० चुकया कुता किन्ना शिकार मारे।

जबर मारे और रोने भी न दे—दे० 'ज़बरदस्त मारे और···'।

जब रहना जैसे का तैसा, तब रोना-धोना कैसा ?—जब सदा इसी तरह रहना है तो रोने-धोने का क्या काम ? अर्थात् जो दुःख स्थायी हो उसके लिए रोना-पीटना व्यर्थ है। तुलनीय : भीली—जमारो ते रेवू ने, होच कीदे हूँ वे।

जबरा करे जबरई, अबरा करे न्याय—शक्तिशाली मनमानी करते हैं और कमज़ोर न्याय की बात करते हैं। तुलनीय : भोज० जबरा करे जबरई, अबरा करे नियाव; अव० जबरा करै जबरई, नीबर करै नियाव।

जबरा की जोय महतारी अबरा की जोय साली—दे० 'जबर की जोय···'।

जबरा की बीबी, गाँव भर की ताई—प्रभावशाली तथा दबंग की पत्नी का सभी आदर करते हैं। तुलनीय : अव० जबरा कै मेहरिया जवारभर कै काकी; भोज० जबरा क बीबी गाँव भर क चाची; पंज० तगड़े दी बौटी सारे पिंड दी ताई।

जबरा मारे रोने न दे—दे० 'ज़बरदस्त मारे और···'।

जबरा मारे रोवे न दे—दे० 'ज़बरदस्त मारे और···'।

जबरा हारे तो भी मारे, न हारे तो भी मारे—बलवान हर हालत में सताता है।

जबरा हारे मुँह में मारे—बलवान जब हार जाता है तब भी मुँह पर थप्पड़ मारता है। आशय यह है कि सबल व्यक्ति कभी अपनी हार या ग़लती स्वीकार नहीं करता बल्कि उल्टे डाँटता है। तुलनीय : भोज० जब्बर हारे मुँह में मारे; पंज० तगड़ा हारे मुँह बिच मारे।

जब लग उरई धावन जाय, तब लगि बिल्ली खाक उड़ाय—जब तक उरई में संदेशा पहुँचेगा तब तक तो दिल्ली बर्बाद हो जाएगी। (क) जब किसी काम के करने का समय आ जाय और तब कोई सामान जुटाने की तैयारी करे तब ऐसा कहते हैं। (ख) जब किसी घटना से बचने का उपाय पहले न करके समय आने पर किया जाय तब भी ऐसा कहते हैं।

जब लग पैसा गाँठ में तब लग सब कोइ यार—जब पास में धन है तब तक सब लोग दोस्त हैं, पास में धन न रहने पर कोई साथ नहीं देता। लोगों की स्वार्थपरता पर ऐसा कहा गया है। तुलनीय : पंज० जदों तक खीसे विच पैहा अदों तक सारे यार।

जब लगि मरने से डरें तब लगि प्रेमी नाहि—जब तक प्रेमी मृत्यु से डरता है उसे सच्चा प्रेमी नहीं कहा जा सकता। अर्थात् यथार्थ प्रेमी मृत्यु की भी परवाह नहीं करते।

जब लगी चाट, तब सूझी हलवाई की हाट—चटोरे आदमियों पर कहा गया है।

जब लाद ली. तब लाज क्या ?—बेशर्म या बुरा कर्म करने वाले के प्रति कहते हैं कि जब बुरा कर्म कर चुके तो शरमाने की क्या आवश्यकता है ? तुलनीय : पंज० जदो लद लयी अदों सरम की।

जबले सोखा के भाव आई, तबले पूत के आँखी जाई—दे० 'जब तक ओझा आयगा···'।

जबलौं जीव शरीर में, तब लौं बीन बजाव—जब तक जीवन है तब तक बीन बजाते रहना चाहिए। (क) अर्थात् मनुष्य को जीवन भर उद्योग करते रहना चाहिए। (ख) हिरण मरणपरान्त वीणा की ध्वनि पसंद करता है।

जब लौं निबही तब लौं खाब, नाहिं तो अपने घर कौं जाब—दूसरे को ठगकर काम चलाने वाले के प्रति कहते हैं। इस पर एक कथा है : कोई निरक्षर पंडित एक दिन राज-दरबार में पहुँचे। वहाँ पर उन्होंने अपने को बहुत बड़ा पंडित बताकर जाप करने की आज्ञा माँगी। देवालय में जाकर जाप करने लगे 'जाप जपी भाई जाप जपी' इसी प्रकार

दूसरा पंडित आया वह भी देवालय में गया। 'उसने भी पहले वाले पंडित को मूर्ख जानकर कहा, 'तुहूँ जपो सो हमूं जपी।' तीसरा आया उसने कहा, 'ई अँधेर कब लों टिबही ?' चौथा आया उसने कहा, 'जै दिन चली तै दिन खाब।' इसी प्रकार पाँचवाँ आया, उसने कहा,' 'नाही तो अपने घरवै जाब।'

जबलौं फूले केतुकी, तबलौं बिलम करील—दे० 'जब तक फूले केतकी···'।

जब लौं भटा-भाजी, तबलौं बिरजो काकी— दे० 'जब तक भाँटा-भाजी···'।

जब लौं भूत गंगाजी गए, तबलौं मरघटा जुत गए— भूत गंगा नहाने गए और इतनी देर में श्मशान जोत लिया गया। कोई बली कुछ देर के लिए कहीं जाय और उसकी अनुपस्थिति का लाभ उठाकर दूसरा व्यक्ति कोई अनुचित काम कर ले जो उसके रहते करना संभव न हो तो कहते हैं।

जब लौं कुठला में नाज, तब लौं जलहटू को राज— जब तक कुठला में अनाज है तब तक जलहटू के लिए राज्य है। जब कोई व्यक्ति थोड़ा धन पाकर काम धाम करना बंद करदे और उसी को बैठकर खाए तब ऐसा कहते हैं।

जब सब कुत्ते काशी चल देंगे, तो दोना कौन चाटेगा— दुष्टों के प्रति व्यंग्य से कहते हैं कि यदि सभी लोग अच्छा कर्म करने लगें तो बुराई कौन करेगा। तुलनीय : बघे० जब सब कुकुरा काशी जइहैं त दोनमा को चाटी; पंज० जदों सारे कुत्ते काशी चले जाणगे ताँ पत्तल कौण चट्टेगा।

जब सब पनहारी तो पनहारी कहाई जब सब काम करके थक गई, तब पनहारी का काम करने लगी। जब कोई व्यक्ति अंत में कोई छोटा काम करने लगे तो ऐसा कहते हैं।

जब सबरी उठ जात, तब बिटिया को खात— जब सब धन समाप्त हो जाता है तभी बेटी का धन खाया जाता है। बेटी का धन खाना अच्छा नहीं समझा जाता।

जब सब सोवें, न फूहर रोटी पोवें- -किसी के उलटा या असमय में काम करने पर कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० जब सब सोमें, तब फूहरिया रोटी पोवै।

जब सालिग्राम ही पटका खात हैं तो पुजारी का कहाँ ठिकाना- -जब बड़ों पर या स्वामी पर ही आफ़त आई है तो छोटों या सेवकों की क्या कही जाए। अर्थात् उन पर तो आफ़तें आएँगी ही।

जब सिर ओखली में दिया तो चोटों को क्या गिनना ? —दे० 'जब ओखली में सर दिया···'।

जब से आई अनूपा, तबसे गए कनूका— जब से घर में अनूपा आई तब से कनूका अर्थात् लक्ष्मी चली गई। आशय यह है कि भाग्यहीन के आने से दरिद्रता आती है।

जब से उगे बाल, तब से यही हवाल- बचपन से ही यह हालत है। प्रायः बुरी लत के लिए कहा जाता है।

जब से जानी, तब से मानी- -किसी बात को जान लेने या देख लेने पर ही उस पर विश्वास करना चाहिए।

जब से जामें बाल, तब से यही हवाल— दे० 'जब से उगे बाल···'।

जब सैल खटाखट बाजै, तब चना खूब ही गाजै—जिस खेत में हल चलाते समय बैलों के जुए की लकड़ियाँ बजती रहती है उसमें चने की फ़सल अच्छी होती है।

जब हाथ ली झोली तो क्या बाम्हन क्या कोरी—जब भीख माँगना शुरू कर दिया तो ब्राह्मण और कोरी का भेद करना व्यर्थ है। जब कोई अशोभनीय या निन्दनीय कर्म करना शुरू कर ही दिया तो उसमें लज्जा करना व्यर्थ है। तुलनीय : छत्तीस० जब घर लीस झोरी, त का बाँमहन का कोरी; ब्रज० जब हाथ में ले लई झोरी, तौ कहा बाँमन कहा कोरी।

जबाँ शीरीं मुलुकगीरी, जबाँ टेढ़ी मुलुक बाँका— मधुर भाषी के लिए पूरा विश्व अपना देश है और कटुभाषी के लिए अपना देश भी अपने लिए टेढ़ा है। रहीम ने लिखा है —'मीठो बोलो नै चलो, सबै तुम्हारो देस'।

जबान कतरनी जैसी चलती है—प्रायः लड़ाई-झगड़े में बहुत तेजी से बोलने वाले के लिए कहते हैं। तुलनीय : अव० जबान कतन्नी अस चलावै; पंज० जबान कैंची बरगी चलदी है; ब्रज० जीब कतरनी जैसी चलै।

जबान के आगे लगाम जरूर चाहिए— सोच-समझकर कोई बात मुँह से बाहर निकालनी चाहिए। तुलनीय : पंज० जबान नूं लगाम दे के रखो।

जबान के आगे लगाम नहीं है— जब कोई किसी बड़े एवं श्रद्धेय व्यक्ति से अपमानजनक बात कहे तब कहते हैं। तुलनीय : अव० जबान मा लगाम नाही; हरि० उसकी जीभ कै के लगाम सै; पंज० जबान अग्गे लगाम नई है; ब्रज० जबान पै लगाम नायँ।

जबान के नीचे जबान—दो तरह की बातें करनेवाले को कहते हैं।

जबान क्या चली दो हल चल गए— (क) जो दो तरह की बातें करता है उसको कहते है। (ख) बिना सोचे-समझे बात कह देने वाले को भी कहते हैं। (ग) कठोर बात कहने पर भी कहते हैं।

ज़बाने-ख़ल्क़ को नक़्क़ारा-ए-ख़ुदा समझो—जनता (ख़ल्क़) की बात (ज़बान) ईश्वर (ख़ुदा) की बात (नक़्क़ारा) होती है। अर्थात् जिस बात को सब लोग कहते हैं वह सत्य होती है। तुलनीय : मल० पोतुजन शब्दम् शरियाय शब्दम् जनशब्दम् तन्ने ईश्वर शब्दम्; अं० The voice of people is the voice of God.

ज़बान खोलिए तो बुरा बनिए, न खोलिए तो अपना ही कलेजा खाइए—सच्ची बात कहिए तो बुरा बनिए और न कहिए तो अपना दिल जलाइए। जब किसी आदमी को उसकी बुरी बात बताने में हानि होने की संभावना हो और न बताने में अपनी हानि हो रही हो तो कहते हैं।

ज़बान जने एक बार, माँ जने बार-बार—एक बार कहकर उससे कभी फिरना नहीं चाहिए।

ज़बान टेढ़ी, मुल्क बाँका—(क) अप्रियभाषी अपने देश में भी बुरा ही समझा जाता है। (ख) कड़वा बोलने वाला परदेश में भी दुख भोगता है।

ज़बान तलवार से ज्यादा तेज़ है—जब कोई किसी को बहुत अप्रिय या कटु बात कहता है तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मल० ओरु वलिनुम् दुष्टत निरञ्ज ओरु नाक्किनोलम् शक्तियिल्ल; पंज० जबान बरछी नालों मती तिखी है; अं० Tongue is not steel but cuts deeper.

ज़बान तुर्की बतुर्की—मुँह तोड़ जवाब देने पर कहते हैं।

ज़बान नहीं तो मर्द नहीं—अपनी बात पर दृढ़ न रहने वाले व्यक्ति को पुरुष नहीं समझना चाहिए। तुलनीय : अव० जबान नाहीं तौ मरद नाहीं।

ज़बान मत फेरो—कहकर बात मत बदलो। अर्थात् जो कहना चाहिए उसे पूरा करना चाहिए। तुलनीय : पंज० जबान नां फेरो।

ज़बान शीरीं, मुल्कगीरी—शीरीं ज़बान अर्थात् मिष्टभाषी के सभी मित्र होते हैं। तुलनीय : ब्रज० जबां सीरी मुलकगीरी।

ज़बान शीरीं, मुल्कगीरी, ज़बान टेढ़ी मुल्क बाँका—दे० 'ज़बाँ शीरी मुल्कगीरी ...'।

ज़बान से ख़ंदक पार—बातों से ही खाई (ख़ंदक) पार कर जाते हैं। बहुत लंबी-चौड़ी बातें करने वाले के प्रति ऐसा कहते हैं।

ज़बान से बेटा-बेटी पराये हो जाते हैं—(क) बात कहकर बदलना नहीं चाहिए। जिसे बात दे देते हैं उसके यहाँ लड़के-लड़की की शादी कर देते हैं। (ख) कटु वचन बोलने से अपने बच्चे भी अपना साथ छोड़ देते हैं यानी कड़वी बातें करने वाले से कोई प्रेम नहीं करता। तुलनीय : अव० जबानै से बिटिया, बेटवा परायाँ होय जात हैं; हरि० जबान त ए बेटा बेटी पराए होसं; पंज० जबान नाल ती पुतर बगाने हो जाँदे हन; ब्रज० ज़ुबान ते देटा बेटी पराये है जायें।

ज़बान हारा वो सब हारा—जिसने वचन दे कर वापिस ले लिया उसका जीवन व्यर्थ है। अर्थात् पहले तो प्रतिज्ञा करनी ही नहीं चाहिए और यदि की ही जाय तो उसका हर हालत में पालन करना चाहिए। तुलनीय : राज० जबान हारी जिकै जिलम हार्‌यो; ब्रज० ज़ुबान हार्‌यौ सो सब हार्‌यौ।

ज़बान ही लाल है, ज़बान ही मुरदार है—ज़बान से न्याय अन्याय दोनों होता है।

ज़बान ही हाथी चढ़ावे, ज़बान ही सर कटावे—ज़बान ही से हाथी चढ़ने को मिलता है और ज़बान ही के कारण सिर कटाना पड़ता है। आशय यह है कि मीठा बोलने वाले सुख भोगते हैं और आदर पाते हैं तथा कटुभाषी सदा दुःख भोगते है। तुलनीय : मरा० जीभच हत्तीवर मिरवते, जीभच शिरच्छेद करविते; पंज० जबान ही हाथी उत्ते चड़ावे जबान ही सिर बडावे; ब्रज० ज़ुबान ई हाती चढ़ावै, ज़ुबान ई सिर कटावै।

ज़बानी जमा ख़र्च करते हैं—कहना बहुत और करना कुछ नहीं। जो कहता बहुत है और करता कुछ नहीं उसको कहते हैं। तुलनीय : भोज० जबानी जमा खर्च कइल; अव० जबानी जमा खर्च करत हैं।

जब्बर मारे रोवे न दे—दे० 'ज़बरदस्त मारे और ...'।

जभी जंगल जावे, तभी लोटा याद आवे—जब पाखाने जाता है तभी लोटे की याद आती है। जो व्यक्ति कार्य को करने का प्रबंध पहले से ही नहीं रखता और सिर पर पड़ने पर एकदम दौड़-धूप करने लगता है तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० झाड़े जाय ठूठा याद आवे।

जभी लादो तभी तैयार—जब सामान लादने की आवश्यकता होती है तभी घोड़ा कसा हुआ मिलता है। चुस्त और ईमानदार नौकर पर कहते हैं। तुलनीय : माल० लाद्‌या जदी पलाण्या; पंज० जदों लद्दो अदों तैयार। ब्रज० जब लादौ तब तैयार।

जमना किनारे घर किया, कर्ज काढ़के खायँ, जब आवे कोई माँगने गड़प जमना में जायँ—(क) जो अपना क़र्ज़ चुकता करने के भय से साधु बन बैठे उसे कहते हैं। (ख) बगला भगत को भी कहते हैं।

जम से बुरी जनेत—बारात (जनेत) यम से भी बुरी होती है। बारात की फ़र्माइशें पूरी करते-करते दिवाला निकल जाता है और उनकी अनुचित बातों तथा दबाव को भी सहना पड़ता है।

जमाई जम का भाई—जमाई अर्थात् दामाद प्रायः ससुराल वालों को कष्ट दिया करते हैं, इसलिए उनको यम का भाई कहा है। तुलनीय : पंज० जवाई यमदा परा; ब्रज० जमाई जम कौ भाई।

जमाई जम का भाई, भानजा यमराज—दामाद (जमाई) यम का भाई है और भानजा साक्षात यमराज। जमाई और भानजे के साथ चाहे जितना भी उपकार किया जाय किंतु ये दोनों समय पर काम नहीं आते तथा सदा अपने स्वार्थ को ही सामने रखते है। तुलनीय : राज० जाट जवाई भाणजा रे बारी सोनार, इवरा हुवे न आपरा कर देखो उपगार, ब्रज० जमाई जम कौ भाई भानजौ जमराज।

जमात से करामात है—संगठन ही शक्ति है। एकता के अनेक लाभ हैं। तुलनीय : मरा० संघ शक्ति में सर्व घड़े; पंज० जमातदी करामात है; ब्रज० जमाति मे करामाति।

जमा लगे सरकार की, और मिर्जा खेलें फाग—सरकार के खर्च पर मिर्जा फाग खेलते है। जो दूसरे के धन पर मौज उड़ाते है उनके लिए कहते है। तुलनीय : राज० जमा लगे सिरकार की मर्जो खेले फाग।

जमींदार कहायं, भांग भूंज कर खायं—भाँग भूज कर तो खाते हैं और कहाते है जमीदार। झूठी शान दिखाने वालों के प्रति व्यंग्योक्ति। तुलनीय : गढ़० फाँट न पट्टा नौ वर्वे पधान, डाली न बोटी नों वर्वे बग्वान।

जमींदार की जड़ हरी—ज़मींदार की जड़ सदा हरी रहती है। आशय यह है कि ज़मींदार सदा आराम से रहता है।

जमींदार को किसान, बच्चे को मसान—ज़मींदार किसान के लिए उसी प्रकार है जिस प्रकार बच्चों के लिए भूत-प्रेत (ममान)। अर्थात् ज़मींदार किसानों को बहुत कष्ट देते हैं।

जमींदारी दूब की जड़—जिस प्रकार दूब की जड़ हमेशा फैलती रहती है उसी प्रकार ज़मींदारी हमेशा फूलती-फलती रहती है।

जमीं सख्त है आसमां दूर है—ज़मीन कठोर (सख्त) है और आसमान काफ़ी दूर है मैं कहाँ जाकर शरण लूँ। जब कोई बहुत तकलीफ़ में फँस जाता है तब कहता है। इस शेर की पहली पंक्ति है : जुदाई तिरी किसको मंजूर है।

ज़मीन आसमान के क़ुलाबे मिलाते हैं—बहुत बातें करने वाले या झूठ बोलने वाले के प्रति ऐसा कहते हैं।

ज़मीन एक धूर नहीं नाम धरनी धर—(क) नाम के अनुरूप गुण या स्थिति न होने पर कहते हैं। (ख) झूठी तड़क-भड़क दिखाने वाले पर भी व्यंग्य से कहते हैं।

ज़मीन-जोरू ज़ोर की, ज़ोर हटा किसी और की—नीचे देखिए।

ज़मीन जोरू ज़ोर की, ज़ोर हटा तो और की—जगह और स्त्री बलवान व्यक्ति ही अपने पास रख पाते हैं। बल घटते ही ये दूसरे की हो जाती हैं। तुलनीय : मेवा० जमीन जोरू जोर की, जोर हट्याँसू और की।

ज़मीन पर पड़ा हुआ कभी तो उठेगा ही—जो व्यक्ति ज़मीन पर गिरा पड़ा हो वह भी कभी खड़ा हो जाएगा। अर्थात् जो बुरी अवस्था में हो वह भी अच्छी अवस्था में आ जाएगा। उन्नति और अवनति होती रहती है। किसी का भी जीवन हमेशा एक सा नही रहता। तुलनीय : माल० धरती रापया धरती पेइज थोड़ी रेगा; पंज० तरती उत्ते पेदा कदी ता उठेगा ही।

ज़मीन बीज थोड़े ही खाती है—भूमि में बीज बोने पर वह खा थोड़े ही जाती है। बीज बोने पर कुछ तो पैदा होता ही है। (क) परिश्रम का कुछ फल तो मिलता है। (ख) बहुत मनुष्यों में कुछ तो अच्छे होते ही हैं। तुलनीय : भीली-जमीनों बीज जमी नी खागी; पंज० तरती वीं थोड़े ही खांदी है।

जय गोपाल भैया, असली मूल रुपैया—रुपये-पैसे के कारण ही आजकल लोग सलामी भी देते हैं। आशय यह है कि धन से ही इज्ज़त होती है! तुलनीय : पंज० जै गुपाल भैया असली चीज रपैया।

ज़र का ज़ायल करना, जीते जी मरना है—धन को नष्ट करना, जीते जी मरना है क्योंकि इस संसार में धन बिना जीवन यापन संभव नहीं है। तुलनीय : पंज० पैहा बरबाद करना जीदे जी मरना है।

ज़र का ज़ोर पूरा है और सब अधूरा है—बिना धन-बल के अन्य बल बेकार है। धन ही सबसे बड़ा बल है। तुलनीय : पंज० पैहेदा जोर पूरा है बाकी सारा अद्दा है।

ज़र का तो ज़र्रा भी आफ़ताब है, बेज़र की मट्टी ख़राब है—धन (ज़र) का तो एक कण (ज़र्रा) भी सूर्य (आफ़ताब) के समान है और बिना धन (बेज़र) के जीवन बेकार है। आशय यह है कि धन से ही मनुष्य को सम्मान मिलता है, निर्धन को कोई नहीं पूछता।

जर को जर ही खींचता है—रुपये से ही रुपया पैदा होता है। इस लोकोक्ति पर एक कहानी है : कोई मनुष्य यह सुनकर कि रुपए से रुपया पैदा होता है एक रुपया लेकर सर्राफ की दूकान पर गया और वहाँ रुपयों के ढेर के पास अपना रुपया रखकर दूर जा खड़ा हुआ। थोड़ी देर में जब सर्राफ़ की निगाह उस रुपए पर पड़ी तो उसे अपनी ढेरी से छिटका हुआ जानकर रख लिया। उस मनुष्य ने कहा, 'मैंने सुना था कि रुपए को रुपया कमाता है लेकिन मेरा तो गाँठ का भी चला गया।' सर्राफ़ ने कहा, 'ठीक तो है, मेरे रुपयों ने रुपया कमा लिया।' तुलनीय : हरि० पीसा पीसे न खींचे से; भोज० रुपया देख के रुपया आवेला; पंज० पैहे नू पैहा खिचदा है; अं० Money begets money.

जर गया जरदी छायी, जर आया सुरखी आयी—रुपया न रहने पर मनुष्य चिंता के मारे पीला हो जाता है, किंतु उसके आते ही उसका चेहरा लाल (सुर्ख) हो जाता है। आशय यह है कि धन के अभाव में व्यक्ति उदास रहता है और धन प्राप्त होने पर प्रसन्नचित्त।

जर, जमीन, जन, झगड़े की जड़—धन (ज़र), भूमि (ज़मीन) और स्त्री (ज़न) ये तीनों झगड़े की जड़ हैं। इन्हीं के कारण झगड़ा होता है। तुलनीय : अव० जर, जोरू, जमीन, झगरा कै जड़ हैं; राज० जमी जोरू जर राड़रा घर; गढ़० झगड़ा की तीन जड़ जमीन, जोरू, जर; मरा० जमीन, जन हे भानगड़ां चे मूल० पंज० लड़ाई दी जड पैहा जमीन, जनानी।

जर, जोर, खुदादाद है—धन और बल ईश्वर की देन है। अर्थात् ये सबको प्राप्त नहीं होते।

जरदार का सौदा है, बेजर का खुदा हाफ़िज—संपन्न व्यक्ति कोई चीज खरीद सकता है, निर्धन (बेज़र) का तो ईश्वर ही मालिक है।

जर दीजे हजार मगर दिल न दीजे, उलफ़त बुरी बला है किसी से न कीजे—किसी को धन दे देना चाहिए, मगर दिल नहीं देना चाहिए। प्रेम बुरी चीज़ है, किसी से नहीं करना चाहिए। क्योंकि अंत में प्रेमियों की बहुत बुरी हालत होती है।

जर न ताप कीचक मरे अपने आप—न बुखार और न जलन, कीचक अपने आप मर गया। (ख) जब अकारण किसी की बहुत बड़ी क्षति हो जाय तब ऐसा कहते हैं। (ख) जब बिना किसी के मारे कोई दुष्ट व्यक्ति मर जाय तब भी प्रसन्न होकर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : छतीस० जर न ताप, कीचक मरै आपे-आप।

जर नेस्त, इश्क़ टेटें—बिना धन के इश्क़ नहीं किया जा सकता। (नेस्त=नहीं है)।

जर फैलाया कार बराया—धन ख़र्च किया और काम बना, अर्थात् धन व्यय करने से सभी काम हो जाते हैं। तुलनीय : पंज० पैहा खरचया कम्म बनाया।

जर बल न जोर बल—न तो धन का बल है और न शरीर का। हर तरह से असहाय व्यक्ति के प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० नां पैहेदा जोर ना जाण।

जर हजार जेब लगाता है, बेजर बिगड़ा नजर आता है—धन से सभी काम बन जाते है और बिना धन के व्यक्ति परेशानी में रहता है। अर्थात् धन से ही सब कुछ होता है बिना धन के कुछ भी नहीं।

जर है तो घर है—धन से ही घर की शोभा होती है। तुलनीय : भोज० जर बाऽ तऽ घर बाऽ; पंज० पैहा है ते कर है।

जर है तो घर है नहीं तो खंडहर है—बिना धन के घर खंडहर के समान है। अर्थात् धनाभाव में मनुष्य कुछ भी नहीं कर सकता।

जर है तो नर है नहीं तो पूरा खर है—बिना धन के मनुष्य गधे के समान है, अर्थात् निर्धन का कोई आदर नहीं करता। तुलनीय : पंज० पैहा है तां मनुख है नई ता पूरा खोता है।

जर है तो नर है नहीं तो पंछी बेपर है—धन होने पर ही व्यक्ति मनुष्य का जीवन बिता सकता है वरना बिना पंख के पक्षी की तरह असहाय हो जाता है। आशय यह है कि धनाभाव में मनुष्य की बड़ी दुर्दशा होती है। तुलनीय : मरा० जर आहे तर नर आहे, नही तर नुमता पंखविहीन पक्षी आहे मल० पणम् इल्लेन्किल् पिणम्; अं० Wrinkled purses make wrinkled face.

जरा-जरा सा कर लिया, और अपना पल्ला भर लिया—थोड़ा-थोड़ा इकट्ठा करके अपना काम कर लिया। अर्थात् धीरे-धीरे या थोड़ा-थोड़ा संचय करने से व्यक्ति धनी हो जाता है और अपना काम कर लेता है।

जरा न जदूर गाँठ मेरी भरपूर—कौड़ी-छदाम पास नहीं और कहते हैं मैं मालदार हूँ। झूठी शान बघारने वालों पर कहते हैं। (ज़दूर=संपत्ति)।

जरा सा खावे बहुत बतावे, वह है बहू सुघड़ैली, बहुता खावे कम बतलावे वह बहुअड़ बिगड़ैली—अच्छी बहू कम खाने पर भी कहती है कि मैंने अधिक खाया है और बिगड़ैल

बहू अधिक खाने पर भी कहती है कि मैंने कुछ नहीं खाया। तात्पर्य यह है कि अपने घर और परिवार वालों की बड़ाई करने वाले को बुद्धिमान और बुराई करने वाले को मूर्ख कहा जाता है।

जरा-सा मुँह बड़ा-सा पेट—पेटू या डाह करने वाले को कहते है। तुलनीय : पंज० निक्का जिन्ना मुँह टोये जिन्ना टिड।

जरा-सी बात और यह अफ़साना—छोटी-सी बात को बहुत बढ़ा-चढ़ा कर कहने वालों के लिए व्यंग्य में ऐसा कहते है। तुलनीय गढ़० कतनी कुखड़ी, कतनो फपटाट।

जरूरत ईजाद की माँ है आवश्यकता (जरूरत) आविष्कार (ईजाद) की जननी (माँ) है। आशय यह है कि आवश्यकता पड़ने पर ही किसी चीज की खोज की जाती है। तुलनीय : पंज० भुनावो औ पावे गिल्ले ही हों; फ़ा० आं के शेरां रा कुनद रू-ब-मिजाज, एहतियाजस्त एहतियाजस्त एहतियाज; अर० अल एहतियाजो उम्मा ला इख्तिराअ; अं० Necessity is the mother of invention; Ability and necessity live in the same cabin.

जरूरत के सामने क़ानून नहीं चलता—आवश्यकता पड़ने पर नियम के विपरीत आचरण भी करना पड़ता है। तुलनीय : पंज० जरूरत अग्गे कनून नई चलदा; Necessity has no law.

जरे जाएँ; सूझे सुक्कर—मरने जा रही है फिर भी शुक्र देख रही है। (शुक्र एक अशुभ ग्रह माना जाता है)। अनुचित समय में शुभ-अशुभ का भेद करने वाले के प्रति ऐसा कहते हैं।

जल और कुल को मिलते देर नहीं लगती—जल आपस में तुरंत मिल जाते है और एक कुल के लोगों के झगड़ते रहने पर भी मिलने में देर नहीं लगती। किसी के आपसी झगड़े में भाग लेना अनुचित है, क्योंकि वे लोग फिर मेल कर लेते हैं और बाहरी आदमी ही बुरे बनते है। तुलनीय : ब्रज० जलै और कुलैं मिलन में देर नायें लगैं।

जल की मछली जल में भली—(क) जहाँ की चीज़ हो वहीं अच्छी रहती है। (ख) अपने देश, नगर या परिवार में ही सुख मिलता है। जो जिस वातावरण में रहता है उसे उसी में आनंद मिलता है। तुलनीय : मरा० पाण्यांतल मासा पाण्यांतच भला; पंज० पाणी दी मछी पाणी बिच ही चंगी।

जल जाय वह सोना, जिससे कान फटे—उस आभूषण से क्या लाभ जो शरीर को कष्ट पहुँचाता हो? जिस व्यक्ति या वस्तु से कष्ट मिले उसे त्याग देना चाहिए, चाहे वह कितना ही प्रिय या क़ीमती क्यों न हो। तुलनीय : ब्रज० जरि जाय बु सौनों जाते नाक फटै।

जल तरंग न्याय—नाम अलग-अलग होने पर भी तरंग का गुण जल से भिन्न नहीं होता। जिन वस्तुओं के नाम भिन्न हों किंतु गुण एक जैसे हों उनके लिए कहते हैं।

जलता चूल्हा देख झुक पड़ रे बेइमान, पाँच मिनट की शर्म है आठ पहर आराम—बेशर्म लोगों के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं कि जहाँ रोटी बनते देखो वहाँ खाने के लिए बैठ जाओ। थोड़ी देर की बेहयाई के बाद दिन भर के लिए आराम हो जाएगा। तुलनीय : मेवा० चलतो चूल्हो देखके झुक पड़ रे बेईमान, पाँच मिनट की शरमा-शरमी आठ पहर आराम।

जलती रोटी भी नहीं पलट पाती - रोटी जल रही है, किंतु उसको भी पलटना नहीं जानती। (क) जब कोई मूर्ख व्यक्ति बहुत आसान काम भी न कर पाए तो उसके प्रति कहते हैं। (ख) आलसी व्यक्ति आलस्य के कारण आवश्यक और मामूली काम न करें तो उनके प्रति भी कहते है। (ग) फूहड़ औरतों के प्रति भी कहते हैं जिन्हें गृहस्थी के आवश्यक कामों की जानकारी नहीं होती। तुलनीय : राज० बलयोड़ी बाटी ही को उथकीजैं नी।

जलती लकड़ी से डराया बंदर बिजली की चमक से भी डरता है—एक बार धोखा खा लेने पर मनुष्य साधारण काम या वस्तु से भी सावधान रहता है। तुलनीय : अं० A burnt child dreads the fire.

जलती हुई लकड़ी की आग पीछे की तरफ़ ही आती है—लकड़ी की आग एक सिरे से जलती हुई दूसरे सिरे की ओर आती है। (क) जब किसी के साथ बुराई करने वाले के साथ कोई दूसरा आकर वैसा ही व्यवहार करे तो कहते हैं। (ख) यदि परिवार के बड़े लोगों में बुराई है तो उसका प्रभाव छोटों पर भी पड़ता है। तुलनीय : गढ़० अगनें को मुछयाली जगीक पिछने ही औंदी।

जल तुंबिका न्याय—(क) तुंबी पानी में नहीं डूबती, चाहे उसको कितने ही गहरे पानी में क्यों न डुबोया जाय। जब कोई व्यक्ति किसी ऐसी बात को छुपाने का प्रयत्न करे जिसका छुपना असंभव हो तो कहते हैं। (ख) तुंबी के ऊपर मिट्टी-कीचड़ आदि लपेट दे तो वह पानी में डूब जाती है, किंतु कीचड़ आदि धुल जाने पर फिर से उतरने लगती है। आशय यह है कि मनुष्य विकारों से संसार रूपी सागर में डूब जाता है और विकारों को त्याग देने से संसार से तर जाता है।

जलतू जलाल तू आई बला को टाल तू—किसी विपत्ति के समय उससे अपनी रक्षा करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है।

जलते की जाई, ग़रीब के गले लगाई—अभागे की लड़की ग़रीब को ब्याह दी। जैसे को तैसा मिलता है।

जलते को जलने दो, मरते को मरने दो—जलने वाले को जलने दो और मरते को मरने दो अपने राम से क्या मतलब ? किसी के झगड़े में नहीं पड़ना चाहिए; अपने काम से मतलब रखना चाहिए। तुलनीय : भीली — बालत्यू बले ने गालत्यू रले जतरे माते नी लेबू; पंज० सड़दे नूं सड़न दे मरदे न मरन दे; ब्रज० जरते ऐ जरन देउ, मरते ऐ मरन देउ।

जलदी का काम शैतान का और देर का काम रहमान का—जब जल्दबाज़ी के कारण कोई काम बिगड़ जाय तब ऐसा कहते हैं। आशय यह है कि सोच-समझकर काम करना चाहिए, जल्दबाजी करने से काम बिगड़ जाता है।

जल बिच मीन प्यासी—किसी वस्तु के प्रचुर मात्रा में होने पर भी जब कोई कष्ट सहे तब उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० खार देण भूख, मौ कठालू नांग; पंज० पाणी विच मछी तरयायी।

जल में खड़ी प्यासों मरे—ऊपर देखिए।

जल में खोट करम में कीरा, जहँ देखो तहँ कारइ कीरा—(क) संसार की प्रत्येक वस्तु में कोई न कोई दोष अवश्य होता है। (ख) जब बुरे दिन आते हैं तो हर तरह से परेशानी उठानी पड़ती है। तुलनीय : मेवा० जल में खोड़ करम मे कीड़ा; अं० It never rains but it pours; Difficulties come in a train.

जल में घी निकसन लगे, तो रूखो खाय न कोय—यदि जल में घी निकलने लगे तो कोई रूखी रोटी नही खाएगा, सब लोग चुपड़ी रोटी खाने लगेंगे। यदि बड़ी चीजें सरलता से प्राप्त हो जायँ तो कोई कष्ट नही सहेगा। यानी बड़ी चीजें आसानी से प्राप्त नहीं होतीं। तुलनीय : हरि० रूखा के रप्पए लांग त सबए ना तोड़ ले; पंज० पाणी बिचों की निकलन लग्गे ते रूखी कौण खावे।

जल में घुसे न, तैरना आ जाय—पानी में घुसना नही चाहते और चाहते हैं कि तैरना सीख लें। जो बिना उद्योग के कार्य-सिद्धि चाहता है उस पर यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : पंज० पाणी बिच बड़ो तां तैरना आवे।

जल में मछली नौ-नौ कुटिया बखरा—मछली अभी पानी में है पकड़ी नहीं गई पर हिस्सेदारों ने अपना हिस्सा लगा लिया। जब काम होने के पहले ही हिस्सेदार लोग अपना हिस्सा लगा ले तब कहते हैं। तुलनीय : पंज० पाणी बिच मछी नों नों हस्से।

जल में बसे कुमोदनी चंदा बसे अकास, जो जन जाके मन बसे सो जन ताके पास—कुमुदिनी जल में रहती है और चाँद आकाश में किंतु प्रेम होने के कारण चंद्रमा को जल में आना पड़ता है (जल में चंद्रमा की परछाई असली चंद्रमा जैसी होती है)। आशय यह है कि जिनमें सच्चा प्यार हो वे कितनी भी दूरी पर क्यों न रहते हों अवश्य ही मिल जाते हैं।

जल में रहकर मगर से बैर—(क) जब कोई व्यक्ति अपने गाँव या इलाके के प्रभावशाली व्यक्ति से लड़ाई मोल ले या उसके विरुद्ध हो तो कहते हैं। (ख) जब कोई अपने आश्रयदाता का विरोध करता है तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मरा० पाण्यांत राहून मगराशी वैर करायचं; गढ़० पाणि माँ रणो माछा दगड़ी बिर दोग; अव० जल मा रह कै मगर से बैर; भोज० जल मे रहि के मगर से बैर; मैथ० जल में बसी मगर से बैर; गुज० दरीयाना रहेवु ने मगर साथे वैर; बुंद० तला में रै के मगर सों बैर; ब्रज० जल में रहे मगर से बैर, तेलु० नीटिलो उन्दि मोसलि तो वैरमा; मल० तलयुवकु मीते वेल्लम् वन्नाल् अतिनु मीते तोणि; पंज० पाणी विच रह के मगर नाल बैर; अं० To live in Rome and strife with the Pope.

जल में रहना मगर से बैर—ऊपर देखिए।

जलानयन न्याय—पानी लाने का न्याय। किसी से पानी माँगा जाता है तो कहने का अर्थ होता है कि बरतन में पानी लाओ। इस प्रकार जब एक को कहने से दूसरे का भी बोध हो तो ऐसा कहते हैं।

जलाने को फस नहीं तापने को कोयला—निर्धन होने पर भी बहुत ऊँची आकांक्षा रखने वाले को कहते हैं। तुलनीय : पंज० जलाण लई काह नई सेकन नूं कोला।

जलावत सूखा, बाम्हन भूखा—जलाने के लिए लकड़ी सूखी ठीक रहती है और यदि किसी ब्राह्मण से कुछ काम कराना हो तो उसे उस समय कहना चाहिए जब वह भूखा हो, क्योंकि उस समय वह सभी काम करने को तत्पर रहता है। आशय यह है कि ब्राह्मण मजबूर होने पर या आवश्यकता पड़ने पर ही किसी का कोई काम करते हैं। तुलनीय : गढ़० सांदण सूको बामण भूखो।

जले को क्या जलाना ?—जो पहले ही जल रहा हो उसे और क्या जलाना ? अर्थात् जो व्यक्ति पहले से ही दुःख

भोग रहा हो उसे और दुख नहीं पहुँचाना चाहिए। तुलनीय : भीली-- बलल्या ए हूँ बालवो; पंज० सड़े नूं की साड़ना।

जले घोड़े को जली लगाम---दुष्ट व्यक्ति के साथ दुष्टता से पेश आना ही उचित होता है। या जो जैसा हो उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए। तुलनीय : मैथ० जटल घोड़ा के जरले लगाम; सं० शठे शाठ्यम् समाचरेत; पंज० सड़े कौड़ दी सड़ी लगाम; अं० Tit for tat.

जले जंगल में राख का अकाल--अर्थात् जहाँ जो वस्तु बहुतायत से पाई जाती है वहाँ उसका कोई अभाव बतलाए तो व्यंग्य से उक्त कहावत कहते हैं। तुलनीय : पंज० सड़े जंगल बिच सुआ दा काल।

जले को जलाइए, दूध मलाई खाइए-- जो व्यक्ति बिना कारण ही जलता-भुनता रहता हो उसे परेशान करने में बहुत आनंद आता है। आशय यह है कि दूसरे को परेशान करने में उतना ही आनंद आता है जितना कि दूध-मलाई खाने में। तुलनीय : पंज० सड़े नू सड़ाओ दुद मलाई खाओ।

जले को जलाना, नमक मिर्च लगाना- किसी दुखी को दुख देने पर उतना ही कष्ट होता जितना जले पर नमक और मिर्च लगाने पर। अर्थात् किसी दुखी को और अधिक दुख नहीं पहुँचाना चाहिए। जब किसी पीड़ित व्यक्ति को कोई और अधिक कष्ट पहुँचाता है तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० जरे का न जरावा; पंज० सड़े नूं सड़ाना लूण मर्च लाणा।

जले घर की बलेंडी--जिसके घर के सब मनुष्य उसके सामने ही मर जायँ, उसको कहते हैं। (बलेंडी = वह लम्बी-मोटी लकड़ी जिसके सहारे पर छप्पर रखा जाता है)।

जले तेल, नाम दिए का-- जलता तो तेल है, किंतु कहा जाता है दीपक जल रहा है। जब काम कोई करे और नाम किसी और का हो या श्रेय किसी और को मिले तो कहते हैं। तुलनीय : पंज० बलदा तेल नां दिवे दा।

जले पर डाले पानी, तो हो आग दुगनी- जिस व्यक्ति के कपड़ों आदि में आग लग जाय तो वह पानी की तरफ भागता है, किंतु पानी डालते ही उसकी जलन और भी बढ़ जाती है। (क) उपाय या प्रयत्न करने पर भी फल विपरीत हो तो उसके प्रति कहते हैं। (ख) किसी व्यक्ति से घूस लेने के बाद भी जब कोई घूसखोर अधिकारी उस व्यक्ति के विपरीत निर्णय देता है तब भी कहा जाता है। तुलनीय : गढ़० आग्यू डाड्यूँ दौड्यों पाणी, तख पाई आग दूणी; पंज० अग्ग उते पाणी पाओ तां दूणी होवे।

जले पर फोड़ा फोड़ते हैं—दे० 'जले फफोले···'।

जले पराई धी, और हँसे बटाऊ लोग—जब किसी की हानि पर कोई प्रसन्न होता है तब कहते हैं। (धी = बेटी, लड़की, बटाऊ = राही)।

जले पाँव की बिल्ली—वह स्त्री जो एक स्थान पर न टिकती हो बल्कि घूमती-फिरती हो, आवारागर्द।

जले फफोले फोड़ते हैं--जब दुखी व्यक्ति को कोई और अधिक दुख पहुँचाता है तब ऐसा कहते हैं।

जलेबियों की रखवाली और चोट्टी कुतिया—दे० 'चोट्टी कुतिया जलेबियों की···'।

जलेबी का पेंच—जलेबी जैसी टेढ़ी-मेढ़ी अर्थात् धूर्तता-पूर्ण बात पर कहते हैं।

जलेबी जैसा सीधा-सादा-- जब कोई चतुर या चालाक आदमी अपने को बहुत सीधा बतलाए तो व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : पंज० जलेबी वरगा सिद्द-साद्दा।

जले वह सोना जिससे कान टूटे— नीचे देखिए। तुलनीय : छत्तीस० जरे ओ सोन, जेमां कान टूटे।

जले वह सोना जिससे नाक छिले--वह सोना व्यर्थ है जिससे नाक छिल जाय। आशय यह है कि मूल्यवान वस्तु भी यदि दुःखदायी अथवा हानिकारक हो तो त्याज्य है। तुलनीय : पंज० उस सोने नू फूक देओ जिस दे नाल कन्न टुटन।

जले हुए तो पत्थर मारा ही करते हैं---(क) ईर्ष्या करने वाले तो शिकायत करते रहते हैं। (ख) ईर्ष्या करने वाले सदा हानि पहुँचाने का प्रयत्न करते रहते हैं। तुलनीय पंज० सड़े दे तां वट्टे मार दे ही नें।

जले हुए यों ही कहा करते हैं--ईर्ष्या करने वाले बिना प्रयोजन ही कुछ उलटी-सीधी बातें कहते रहते हैं।

जल्दिमाया कुम्हार चूतर से माटी खोदे--जल्दी में आदमी कुछ से कुछ करने लगता है। जल्दी में मस्तिष्क ठीक से काम नहीं करता। तुलनीय : भोज० अगुताय कोंहार चूतर से खन्ने माटी।

जल्दी का काम अच्छा नहीं होता—जब जल्दबाजी करने से कोई काम बिगड़ जाता है तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मेवा० आगती डूमड़ी दो-दो दूआ दे; मल० एट्टुचाट्टम् अपकटम्; पंज० छेती दा कम्म चंगा नईं हुंदा; ब्रज० जल्दी कौ काम अच्छौ नायें होय; अं० Quick and well do not go well together.

जल्दी का काम शैतान का और देर का काम रहमान का---जल्दबाजी का काम बुरा होता है। जब जल्दबाजी करने से कोई काम बिगड़ जाय तब कहते हैं। तुलनीय

अव० जल्दी का काम सैतान का बेर काम रहमान का; पंज० छेती दा कम्म सैतान दा अते देर दा रहमान दा।

जल्दी की घानी आधा तेल आधा पानी—आशय यह है कि जल्दबाजी में काम बिगड जाता है।

जल्दी की दोस्ती धोखे का घर—बिना विशेष जाने हुए किसी व्यक्ति को मित्र बनाना उचित नहीं क्योंकि थोड़े परिचय से आदमी के भीतर (हृदय) का पता नहीं चल सकता। तुलनीय : उज० अनजान दोस्त बिना छिला हुआ अख़रोट है; कपड़े नए अच्छे होते हैं, और दोस्त पुराने; पंज० छेती दी यारी तोखे दा कर।

जल्दी में सदा हानि होती है— जब जल्दबाज़ी करने से कोई काम बिगड़ जाता है तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मल० अक्षमत नष्टत्ते उण्टाक्कुम्; पंज० छेती विच नुकसान हुंदा है; अं० Haste maketh waste; Hurry spoils curry.

जव के साथ घुन भी पिसता है –जौ के साथ घुन भी चक्की में पिस जाता है। जब किसी दुष्ट के साथ किसी सज्जन व्यक्ति को भी कष्ट झेलना पड़ता है तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० जब के साथे घूनों पिसाला; पंज० जौं नाल कुण वी पिस जांदा है।

जव जुरे ना गेहूँ पचे ना—घर में तो जौ भी खाने को नहीं मिलता, बाहर गेहूँ की रोटी के न पचने की बात करता है। व्यर्थ में गप्प मारने वाले के लिए व्यंग्य में उक्त कहावत कहते हैं।

जवन पंडित के पतरा में तवन पंडिताइन के अंचरा में—जो बात पंडित के पत्रा (पतरा) में है वही बात पंडिताइन के आँचल (अंचरा) में है। (क) जब किसी शिक्षित व्यक्ति से कोई अशिक्षित व्यक्ति ही बुद्धिमानी की बात करता है तब वह (अशिक्षित) ऐसा कहता है। (ख) जहाँ दो व्यक्तियों की राय एक जैसी होती है वहाँ भी ऐसा कहते हैं।

जवन पाँड़े के पतरा में, तवन पंडाइन के अंचरा में—ऊपर देखिए।

जवान जाए पतार, बुढ़िया माँगे भतार—जवान पतार (पाताल) जाती है अर्थात् मरी जाती है और बुढ़िया ब्याह किया चाहती है। उलटी बात पर कहते हैं।

जवान डरावे भागने से, बूढ़ा डरावे मरने से—अपनी माँग पूरी न होने पर युवा तो घर छोड़कर भाग जाने की धमकी देता है और बूढ़ा अपनी सेवा में कमी देखकर मरने की धमकी देता है। दोनों तरफ से कष्ट में पड़ने पर ऐसा कहते हैं।

जवान रौंड़, बूढ़े साँड़—जवान स्त्री विधवा हो गई और बुढ़िया का पति अब तक हृष्ट-पुष्ट है। बेतुकी तथा उलटी बात पर कहा जाता है। तुलनीय : पंज० जवान रंडी बुड़े संडे।

जवानी और उस पर शराब, दूनी आग लगाती है—जवानी में वैसे ही व्यक्ति मस्ती में रहता है और उस पर शराब पी लेने से वह और बढ़ जाती है। जब किसी बुरे व्यक्ति को बुरे साधन भी मिल जाएँ जिससे उसकी बुराई और बढ़ जाय तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० जवानी अते उस उते सराव दूणी अग्ग लगांदी है।

जवानी के सौ यार—(क) यौवन में स्त्री को चाहने वाले बहुत होते हैं। (ख) जवानी में शरीर में ताक़त होती है इसलिए अनेक लोग मित्र बन जाते हैं। तुलनीय : पंज० जवानी दे सौ यार।

जवानी दीवानी है—जवानी दीवानी होती है। यौवन में मनुष्य भले-बुरे का विचार नहीं कर पाता। तुलनीय : भीली—जवानी न देखे रात ना देखे दाड़ो; पंज० जवानी ना देखे दिन रात।

जवानी में गदहियो नीक—नीचे देखिए।

जवानी में गधी पर भी यौवन आता है--जवानी आने पर गधी भी सुन्दर मालूम पड़ती है। आशय यह है कि युवा अवस्था आने पर कुरूप भी सुन्दर दीखते हैं। तुलनीय : राज० जवानी में गधेने ही जोवन चढ़ै; अव० जवान गदहि‍उ कै जवानी आवत है।

जवानी में नहीं किए तो कब करोगे ?--(क) जवानी या यौवन में ही सब कुछ किया जा सकता है, क्योंकि उस समय व्यक्ति शारीरिक और मानसिक दोनों दृष्टियों से ठीक रहता है। जब कोई व्यक्ति यौवन का समय व्यर्थ में गँवाता है तो उसके प्रति कहते हैं। (ख) जब कोई व्यक्ति अच्छे दिनों को व्यर्थ में बिताता है तब भी कहते हैं कि अच्छे दिनों में कुछ नहीं कर रहे हो तो बुरे दिन आने पर क्या करोगे ? अर्थात् कुछ नहीं कर पाओगे। तुलनीय : भीली—मोट क्यार नां मेड़का है वली न वाट कूंण आले; पंज० जवानी बिच नईं करोगे तां कदों करोगे।

जवानी में शादी, नहीं तो बरबादी—यौवन में ही विवाह करना अच्छा होता है। बुढ़ापे में विवाह करना अच्छा नहीं। बुढ़ापे में विवाह करने से अधिकांश स्त्रियाँ चरित्रभ्रष्ट हो जाती हैं जिससे मर्यादा पर आँच आती है। तुलनीय : भीली—नवा जतरे नकता, पचे नवी हमाई ने

नवा नकता; पंज० जवानी बिच वयाह नईं तां बरबादी।

जवानी में सौ यार —'दे० जवानी के सौ यार।'

जवानी रांड और गधी को भी आती है—प्रकृति की कृपा सबके लिए बराबर होती है, चाहे वह उसके योग्य हो या न हो। तुलनीय : राज० जवानी रांड गधी ने ही आवै। पंज० जवानी रंडी ते खोती नूं वी आंदी है।

जवानों को चला चली, बुढ़िया को ब्याह की पड़ी—जवान मरे जा रहे हैं और बुढ़िया ब्याह करना चाहती है। उलटी बात पर कहते हैं। तुलनीय: अव० जवान जवान चला जायँ बुढ़िअन का बिआहै की पड़ी है।

जवान तुर्की-बतुर्की—जो जैसा कहे उसे उसी प्रकार जवाब देने पर कहते हैं।

जवाबे-जाहिलां बाशद खामोशी—मूर्ख की बात का उत्तर (जवाब) चुप या मौन रहना है।

जश्न में पैदा हुए, छानें खाक—पैदा हुए थे तो उत्सव मनाए गए और अब खाक छानते घूम रहे हैं। समय का प्रभाव बड़ों-बड़ों को भीख मँगवा देता है। जो व्यक्ति समय के प्रभाव से निर्धन होकर दर-दर की ठोकरें खा रहे हों उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० रलियाँरा जाया, गळियाँ में रूळिया।

जस काछिय तस चाहिय नाचा—जैसी कछनी काछे वैसा ही नाच नाचना चाहिए। (क) अर्थात् जैसा कहे वैसा करना भी चाहिए। जैसा समय हो वैसा ही काम करना चाहिए।

जस किया तस पावा जैसा कर्म किया वैसा फल मिला। अर्थात् काम के अनुसार ही फल मिलता है। तुलनीय : अव० जस कीन तस पावा।

जस घास फूल के बाबा, तस पयार की दाढ़ी—मनुष्य को उसकी योग्यतानुसार ही वस्तु मिलती है। (पयार= पुआल)।

जस दूलह तस बनी बराता—जैसा दूल्हा है उसी के अनुसार बरात भी है। जैसा आदमी हो, वैसे ही उसके साथी भी हों तब कहते है। तुलनीय : मरा० जसा नवरदेव, तशी बरात; अव० जस दुलहा तसि बनी बराता; पंज० जिहो जिहा लाड़ा ओहो जिही बरात।

जस दुल्लह तस बनी बराता—ऊपर देखिए।

जस नकफुसरी देवी, तस पीना का भोगु—(क) जिस प्रकार का व्यक्ति हो और उसका उसी प्रकार सेवा-सत्कार किया जाए तो कहते हैं। (ख) जैसे को तैसा मिले तब भी कहते हैं। (ग) एक जैसे दो कार्यों की बराबरी बताने के लिए भी कहते हैं।

जस नकफोसरी छेरी, तस खउरहा भेड़हा—ऊपर देखिए।

जस नागनाथ तस सांपनाथ—जैसे नाग हैं वैसे ही साँप हैं। एक ही वस्तु या व्यक्ति के दो नाम होने से या नाम बदल देने से उसके गुण-दोष नहीं बदल जाते। एक जैसी दुष्प्रकृति वाले व्यक्तियों के लिए कहते हैं। तुलनीय : अं० Tweedledum and tweedledee.

जस पसु तस बँधना - जैसा पशु होता है उसी के अनुसार उसका बँधना (रस्सी) भी होता है। (क) किसी को उसकी दुष्टता का उचित दंड मिले तब कहते हैं। (ख) जो जैसा हो उसके साथ उसी प्रकार का व्यवहार करना चाहिए।

जस मनई तस पनहीं—आदमी की पहचान कर, व्यवहार करना चाहिए। या जो जैसा हो उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए। (मनई = आदमी, पनही = जूता)।

जस मुकुंद तस पादन घोड़ी, विधना आनि मिलाई जोड़ी—जैसे मुकुंद हैं वैसी ही उन्हें पादने वाली घोड़ी मिल गई है। भगवान ने खुद आकर इन दोनों की जोड़ी मिला दी है। जब किसी व्यक्ति की साज-सज्जा उसके अनुरूप ही हो तब ऐसा कहते हैं। या जैसे को तैसा मिलने पर ऐसा कहते हैं।

जस मुकुंद तस पादल घोड़ी, विधना आनि मिलाई जोड़ी—ऊपर देखिए।

जस साँपनाथ तस नागनाथ—दे० 'जस नागनाथ तस...'। तुलनीय : ब्रज० जैसे स्याँपनाथ तैसेई नागनाथ।

जस सुराज खल-उद्यम गयऊ—सुशासन में दुष्टों का काम नहीं बनता।

जहं कबीरा माठा को जायँ, भैंस पड़ा दोनों मर जायँ—दे० 'जहाँ कबीर मठा को जायँ...'।

जहँ जहँ चरन पड़ें संतन के तहँ तहँ बंटा धार करें—(क) मनहूस आदमी को कहते हैं। (ख) किसी मूर्ख आदमी द्वारा जब कोई काम बिगड़ जाता है तब कहते हैं। तुलनीय : मरा० संताचे पाय जेथें लागतील तिथें सुख समृद्धीचे काम विचारावें; अव० जहाँ जहाँ इ गोड़ परी हुवई बंटाढार होय जाई।

जहँ देखो पटवा को ढोर, तहवाँ बीजे थैली छोर—जहाँ कहीं भी पीले रँग के बैल को देखो तुरन्त खरीद लो। अर्थात् पीले रंग के बैल अच्छे होते हैं।

जहँवा देखिया लोह बैलिया, तहवाँ बीहा खोल थैलिया—जहाँ लाल रंग के बैल दिखाई पड़ें वहाँ रुपये की थैली को खोल दीजिये अर्थात् खरीद लीजिए। आशय है कि लाल रंग के बैल परिश्रमी होते हैं।

जहर का कीड़ा जहर ही में खुश रहता है—विष के कीड़े विष में ही प्रसन्न और जीवित रहते हैं। अर्थात् जो जिसका स्वभाव होता है वह उसी में प्रसन्न रहता है। दुष्ट मनुष्य को यदि किसी नेक कार्य को करने का अवसर दिया जाय तो वह उसको करने में सुख अनुभव नहीं करता। तुलनीय : राज० जहररा कीड़ा जहर में राजी; पंज० जैर दा कीड़ा जैर विच ही खुश रेंदा है; ब्रज० जहर कौ कीरा जहर में ई खुस रहै।

जहर को जहर और लोहे को लोहा काटता है—जब किसी दबंग व्यक्ति की टक्कर उस जैसे किसी दबंग व्यक्ति से हो जाए और वह उसे पराजित कर दे तब ऐसा कहते हैं। एक जैसे व्यक्ति ही एक-दूसरे को पछाड़ सकते हैं। तुलनीय : पंज० जैर नूँ जैर अते लोहे नूँ लोहा बड़दा है।

जहर को जहर मारता है—ऊपर देखिए। तुलनीय : बुंद० बिख की ओखद बिख; हरि० झैर ने झैर मारै; सं० विषस्य विषमौषधम; असमी—दारट मुखत् बिप् नाने; अं० Extreme evils have extreme fremedies.

जहर को जहर मारता है—दे० 'जहर को जहर और लोहे…'।

जहर को जहर ही मारता है—दे० 'जहर को जहर और लोहे…'। तुलनीय : ब्रज० जहर कूँ जहर ई मारै।

जहर खाने को भी फुर्सत नहीं है—किसी काम में बहुत व्यस्त रहने पर कहते है। तुलनीय : पंज० जहर खाण नूँ बेल नईं; ब्रज० जहर खाइबेऊ की फुरसति नायें।

जहर खाने को भी पैसा नहीं है—इतने पैसे भी नहीं जिससे जहर लेकर आत्महत्या की जा सके। जब किसी व्यक्ति के पास कुछ भी नहीं होता तो किसी के कुछ माँगने पर स्वयं के प्रति कहता है। तुलनीय : पंज जेह्र खान नूं वी पैसे नईं हैगे; राज० जहर खावणने ही टको कोनी; पई सो तो जहर खावणनैं ही कोनी।

जहर-जहर को मारता है—दे० 'जहर को जहर …'।

जहर से जहर कटे—दे० 'जहर को जहर…'।

जहर से नहीं मरे, रोटी खा के मरे—जहर खाकर जीवित रहा और रोटी खाने से मर गया। आशय यह है कि जिसकी मृत्यु का समय नहीं आता उसे चाहे कितना भी मारने का प्रयत्न किया जाय वह नहीं मरता और जिसकी मृत्यु आई हो वह बिना कारण ही मर जाता है। तुलनीय : भीली—जरे खाये जो नी मरे नी खाये जो मरे; पंज० जेहर खाण नाल नईं मरे ताँ रोटी खा के मरे।

जहाँ कबीर माठा को जायें, भेंस पड़ा दोऊ मर जायें—कबीरा जहाँ कहीं भी माठा लेने जाते हैं वहाँ भेंस और उसका बच्चा दोनों मर जाते हैं। आशय यह है कि भाग्यहीन को कहीं भी कोई चीज़ नहीं मिलती।

जहाँ काँसा वहाँ बिजली का साँसा—जहाँ धन है वहीं चोर भी आता है।

जहाँ का दाना-पानी हो, वहीं आदमी जाता है—(क) जिसके भाग्य में जहाँ रहना लिखा रहता है वह वहीं रहता है। (ख) आदमी किसी भी स्थान का रहने वाला हो, किन्तु वहीं रहना पसन्द करता है जहाँ उसे रोज़ी-रोटी मिलती हो। तुलनीय : पंज० जिथों दा दाणा पाणी होवे आदमी उथे जांदा है।

जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तलवार—सुई का काम तलवार से नहीं हो सकता। जहाँ काम किसी छोटी वस्तु से निकलता हो वहाँ बड़ी वस्तु बेकार सिद्ध होती है। (ख) बड़ी वस्तुओं को पाकर छोटी वस्तुओं की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

जहाँ का पीवे पानी, वहीं की बोले बानी—(क) जिसका नमक खाय उसी की प्रशंसा करनी चाहिए। (ख) जिस देश में रहे, वहीं की बोली बोलनी चाहिए। तुलनीय : पंज० जिथों दा पीओ पाणी उथों दी बोलो बाणी।

जहाँ की मिट्टी, वहीं ठिकाने लगती है—नीचे देखिए।

जहाँ की मिट्टी वहीं ले जाती है—जहाँ मरना बदा रहता है, काल वहीं पर खींच कर ले जाता है। तुलनीय : मराठी जेथली माती तेथेली घेऊन जाते; अवधी जहाँ कै माटी हुवईं लै जात है; भीली—जटे मरे जटे बले; पंज० इदर दी मिट्टी उदर ले जांदी है।

जहाँ के बड़े ऐसे, वहाँ के छोटे कैसे—जहाँ के बड़े लोग ऐसे गए-गुज़रे हैं वहाँ छोटे पता नहीं कितने नीच होंगे। जब किसी गांव-देहात के मान्य व्यक्ति ही ग़लत काम करते हैं तब कहते हैं।

जहाँ के मुरदे वहीं गड़ते हैं—(क) जहाँ की चीज़ हो वहीं बिकती है। (ख) जहाँ के झगड़े हों वहीं तय होते हैं। तुलनीय : ब्रज० जहाँ के मुर्दे वहीं गढ़ैं।

जहाँ खर्च नहीं वहाँ हर एक गाँठ का पूरा—(क) जब खर्च नहीं रहता तो धन इकट्ठा हो जाता है। (ख) जहाँ खर्च की आवश्यकता नहीं रहती, वहाँ सबकी जेब भरी

रहती है, और जहां जरूरत होती है वहां खाली हो जाती है।

जहां खाना वहां सबका ठिकाना—जहां भोजन मिले वहां सबका गुजारा हो जाता है या वहीं सब रहना चाहते हैं। तुलनीय : अव० जहाँ मिलै खाना हुवईं करै ठेकाना।

जहां खुजलाए वहां खुजलाओ—जहां जिस वस्तु की आवश्यकता हो वहीं वह की जानी चाहिए।

जहां खेत तहां खलिहान—समस्त कार्य एक जगह करने पर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० जहां खेत वही खलिहान

जहां गंग वहां रंग—गंगा-प्रेमियो का कहना है कि जहां गंगा है वहीं आनंद है। तुलनीय : अव० जहैं गंग हुवई भंग।

जहां गंग, वहीं भंग—प्राय: गंगातट पर रहने वाले पंडे आदि भाँग के प्रेमी होते है। तुलनीय : अव० जहैं गंग हुवई भंग।

जहां गंज वहां रंज—जहाँ धन होता है वहाँ परेशानियाँ भी बहुत होती है। आशय यह है कि बिना कष्ट सहे उन्नति नही होती।

जहां गइया वहां बछिया—जहाँ गाय रहती है वही उसका बच्चा भी रहता है। (क) आश्रित आश्रयदाता के पास ही रहते हैं। (ख) जीवन का आधार जहां होता है वहां लोग रहते हैं। तुलनीय : अव० जहाँ गाय जई हुवई लेरुवा जाई; कौर० जहाँ गाय वहां बच्छी; पंज जित्थे गा उथे वच्छी।

जहां गई डाढ़ो रानी वहां पड़े पत्थर पानी—मनहूस व्यक्ति के प्रति कहते हैं, क्योंकि वह जहां भी जाता है वही आपत्ति आती है। तुलनीय : भोज० जहां गइली डाढ़ो रानी उहवाँ परल पत्थर पानी।

जहां गए वहीं के हो रहे—(क) जो व्यक्ति किसी काम के लिए कही जाय और बहुत विलंब से लौटे तो उसके प्रति कहते हैं। (ख) जो व्यक्ति किसी दूसरे स्थान पर जाय और वहां वालो से संबध रखे, अपने घरवालो या मित्रों को भूल जाय तो भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० जिथे गये उथे दे होके रहे।

जहां गढ़ा होगा वहीं पानी भरेगा—(क) साधन होने पर ही काम होता है। (ख) जहां बुरे लोग रहते हैं वही बुराई होती हैं। तुलनीय : पंज० जिथे गडा होवेगा उथे पाणी परोयेगा।

जहां गदहे इकट्ठे होंगे लात चलेगा—गदहे जब एक जगह एकत्र होते हैं तो प्रसन्नता से एक-दूसरे पर लात झाड़ते हैं। तात्पर्य यह है कि जहां मूर्खों का समाज एकत्र होगा, वहाँ आपस में गाली-गलौज, मार-पीट हो ही जाएगी। तुलनीय : भोज०, मैथ० गदहा के इयारी लात सनसनाहट।

जहां गाँठ तँह रस नहीं, यह जानत सब कोय—सभी लोग यह जानते हैं कि जहाँ कपट (गाँठ) रहता है वहाँ प्रेम (रस) नहीं रहता। अर्थात् कपट और प्रेम में जन्मजात बैर है।

जहाँ गाड़ी वहीं बैल—जहाँ बैलगाड़ी होगी वहीं बैल भी रहेंगे। जहाँ जिसका कार्य होता है वह वहीं रहता है। तुलनीय : राज० गाड़ी कने बळद आया रहसी; पंज० जिथे गड्डी उथे टग्गे (बलद)।'

जहाँ गाय तहाँ गाय का बच्चा—दे० 'जहाँ गइया वहाँ···'।

जहाँ गिरे, वहीं डेरा—राह चलते जहाँ पैर फिसल गया वही बैठ रहे। आलसी व्यक्तियो के प्रति व्यंग्य में कहते हैं जब वे थोड़ी सी कठिनाई पड़ते ही काम छोड़ कर आराम से बैठ जाते है या हिम्मत हार जाते हैं। तुलनीय : गढ़० असली रड़्या डेरा पड़्या; पंज० जित्थे डिगे उत्थे डेरा।

जहाँ गुड़ रहता है वहाँ चींटे भी रहते हैं—दे० 'जहाँ गुड़ होगा वही···'। तुलनीय : ब्रज० जहाँ गुर वही चैंटी।

जहाँ गुड़ वहीं मक्खियां—नीचे देखिए।

जहाँ गुड़ होगा वहाँ चींटे होंगे ही—(क) जहाँ गुणी व्यक्ति रहते है वही उनके चाहने वाले पहुँच जाते हैं। (ख) जहाँ धन होगा, वही माँगने वाले पहुँचेंगे। तुलनीय : मरा० गूळ असेल तेथे मुगळे (किंवा मासा) आसाय चेच; भीली—धान जटे धनेरां ह्वे; छतीस० जिहाँ गुर, तिहाँ चाटी; तेलु० वेल्लमुन्न चोटनेईग लुटाइ; मल० तेनुल्ल टत्ते ईच्चयाक्कुं; अं० In times of prosperity friends will be plenty; Prosperity makes friends and adversity tries them. पंज० जित्थे गुड़ होवेगा उत्थे काडे वीहोण गे।

जहाँ गुड़ होगा वहीं चीटियाँ होंगी—ऊपर देखिए।

जहाँ गुल है वहाँ काँटा भी है—नीचे देखिए।

जहाँ गुल होगा वहाँ खार भी होगा—गुलाब में काँटा अवश्य होता है। आशय यह है कि जिसमें अच्छाइयाँ होती हैं उसमें कुछ बुराइयां भी होती हैं। तुलनीय : मरा० जेथे फूल आहे तेथें काटाहि आहे।

जहाँ घड़ा होगा, वहाँ पानी भी गिरेगा—घड़ा रखने का स्थान गीला ही रहता है। (क) जहाँ व्यक्ति रहता है वहाँ किसी न किसी से उसकी लड़ाई हो ही जाती है। (ख)

जिस वस्तु या व्यक्ति से लाभ के साथ हानि या सुख के साथ दुख भी मिले तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० जख घड़ो तख हीलो; पंज० जित्थे कड़ा होवेगा उत्थे पाणी वी डिगेगा।

जहाँ घर, वहीं कर—(क) जो लोग अपना घर साफ-सुथरा नहीं रखते उनको समझाने के लिए ऐसा कहते हैं। (ख) यदि कोई मनुष्य अपने आश्रयदाता की झूठी प्रशंसा करे तो उसके प्रति भी व्यंग्य में इस लोकोक्ति का प्रयोग किया जाता है। तुलनीय : गढ़० जख बसणो तख घसणो।

जहाँ चना तहाँ दाँत नहीं, जहाँ दाँत तहाँ चना नहीं—दे० 'जहाँ दाँत वहाँ चना नही…'।

जहाँ चार अहीर वहाँ बात गंभीर—जहाँ चार अहीर इकट्ठा होते हैं वहाँ कुछ बुराई की ही योजना बनाते हैं। आशय यह है कि अहीर जाति के लोग बहुत मूर्ख होते हैं। वे जहाँ इकट्ठा होते हैं वहाँ मार-पीट या लड़ाई-झगड़े की ही बात करते हैं या योजना बनाते हैं। तुलनीय : छत्तीस० जिहां चार अहीर, तिहां बात गहीर।

जहाँ चार बर्तन होंगे, टकराएँगे ही—जहाँ कई लोग रहते हैं वहाँ कभी-कभी झगड़ा भी हो जाता है। तुलनीय : छत्तीस० चार ठन बरतन रइथे, तिहां ठिक्की लाजबे करथे; मरा० जिथे चार भांडी असतील तेथें ती एक मेकाला लगायचीज; राज० भेला पड्या वासण ही खड़बड़ावै; अव० जहा चार बासन होइही हुवई खटकिही; हरि० घर में चार बास्संण होंगे ते खड़कें एं गे।

जहाँ चार बाम्हन तहाँ पड़े लाँघन - जहाँ चार ब्राह्मण होते है वहाँ काम पूरा नही होता। जब किसी काम को पूरा करने के लिए लोग एक-दूसरे से कहें और कोई भी उस काम को न करे तब ऐसा कहते हैं। (ब्राह्मण जाति के लोग काम करना नहीं चाहते बल्कि कराना चाहते हैं, इसीलिए यह लोकोक्ति ब्राह्मणों पर कही जाती है)। तुलनीय : छत्तीस० जिहाँ चार बाँभन, तिहाँ परे लाँघन।

जहाँ चार बासन होंगे वहीं खड़केंगे—दे० 'जहाँ चार बर्तन होंगे…'। तुलनीय : ब्रज० जहाँ चारि बासन हुंगे वहीं खटकिंगे।

जहाँ चारि काछी उहाँ बात आछी, जहाँ चारि कोरी उहाँ बात बोरी, जहाँ चारि भुंजो उहाँ बात उंझी—जहाँ चार काछी होते हैं वहाँ अच्छी बातें होती हैं; जहाँ चार कोरी होते हैं वहाँ सब काम बिगड़ जाते हैं और जहाँ चार भूजंव (भड़भूंजे) रहते हैं वहाँ सभी बातें उलझी रहती हैं।

जहाँ चाह है वहाँ राह है—आदमी जिस कार्य को करने के लिए तैयार हो जाता है उसके लिए कोई न कोई रास्ता निकाल लेता है। तुलनीय : मल० वेणमेन्किल् चक्क वेरिलुम् कायक्कुम् वेण्टेन्किळ चक्क कोम्बत्तुमिल्ल; पंज० जित्थे चाह है उत्थे राह है; अं० Where there is a will there is a way.

जहाँ चिकना वहाँ टिकना—जहाँ चिकना हो वहीं टिकना चाहिए। जहाँ लाभ हो वहीं जाना चाना चाहिए, या जिससे लाभ हो उसी का संपर्क करना चाहिए।

जहाँ-जहाँ संत मठा को जायँ, भैंस पड़ा दोनों मर जायँ—दे० 'जहाँ कबीर मठा को जायँ…'।

जहाँ जाएँ बाली मियाँ तहाँ जाय पूँछ—(क) बड़े लोग जब कहीं जाते हैं तो उनके साथ उनके नौकर-चाकर भी जाते हैं। (ख) जब कोई हमेशा किसी के साथ लगा रहता है तब भी ऐसा कहते हैं।

जहाँ जाए ऊखा वहीं पड़े सूखा—ऊखा जहाँ कहीं जाती है वही अकाल (सूखा) पड़ जाता है। दुखी व्यक्ति के प्रति कहते हैं जिसे हर जगह दुख ही मिलता है। तुलनीय : बुंद० जितै जात भूखा उतै परै सूखा; अव० जहाँ जाय भूखा तहाँ पड़ै सूखा; ब्रज० जहाँ जाय ऊखा, वहीं पड़ेगो सूखा; कौर० जहाँ जाय भुक्खा, वहाँ पडै सुक्खा; गढ़० जख जो भगनयाल तख नौ हाथ खयाल।

जहाँ जाए भूखा वहाँ पड़े सूखा—ऊपर देखिए।

जहाँ जाओ रुपए की चार चवन्नी—प्रत्येक स्थान पर रुपए की चार चवन्नियाँ मिलती हैं। (क) मुद्रा का मूल्य देश-भर में एक ही होता है। (ख) जिस वस्तु का मूल्य सभी स्थानों पर एक-सा हो उसके प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : मेवा० जठे जावे जठे ई पइसा का दो अधेला; पंज० जिथे जावो रपै दी चार चवन्नी।

जहाँ जाट तहाँ ठाठ—जहाँ जाट रहते हैं वहाँ शान-शौकत भी होती है। आशय यह है कि जाट जाति के लोग बड़े परिश्रमी होते हैं जिससे उनका जीवन सुखमय होता है। तुलनीय : मेवा० जाट जटे ठाठ; राज० जाट जाटे ठाट।

जहाँ जाट वहाँ ठाठ—ऊपर देखिए।

जहाँ जायँ डाढ़ो रानी वहाँ परे पाथर पानी—(क) भाग्यहीन को हर जगह कष्ट ही मिलता है। (ख) मूर्खों के प्रति भी व्यंग्य में कहते हैं क्योंकि वे जहाँ जाते हैं सब काम चौपट कर देते हैं। तुलनीय : भोज० जहाँ गइली डाढ़ो रानी उहाँ परल पाथर पानी; मैथ० जहाँ जालिन खेहो रानी ऊँहा न मिले आग पानी।

जहाँ जायँ बाला मियाँ, वहाँ जाय पूँछ—दे० 'जहाँ

जाएँ बाली मियाँ···'।

जहाँ जाय भूखा तहाँ पड़े सूखा—दे० 'जहाँ जाए ऊखा···'।

जहाँ जाय भूखा तहाँ परै सूखा—दे० 'जहाँ जाए ऊखा···'।

जहाँ जाय मूसर वहीं खेत ऊसर—(क) मूसर अर्थात् मूर्ख जहाँ जाता है वहीं बनी-बनाई बात को बिगाड़ देता है। (ख) मूसर अर्थात् चूहा लग जाने पर खेत उजाड़ हो जाता है। (ग) मूसर अर्थात् लट्ठ चलने (आपस की लड़ाई) से काम बिगड़ जाता है। तुलनीय : गढ़० जख जो तन्या गल तख अनमन भांति कल।

जहाँ जिसके सींग समाएँ, वहाँ निकल जाएँ—आशय यह है कि जहाँ जिसका जीवन-निर्वाह हो वह वहाँ चला जाय।

जहाँ डर वहाँ हमारा घर—निर्भीक आदमी को कहते हैं।

जहाँ ढाक वहाँ डाकू—ढाक के जंगल में डाकू ज्यादा रहते हैं।

जहाँ तमा वहाँ आदमियत कहाँ?—लालच आने पर मनुष्य की बुद्धि नष्ट हो जाती है। (तमा=लालच)।

जहाँ तीन से तेरह, वहीं खड़ा बखेड़ा—जिस काम में तीन के स्थान पर तेरह व्यक्ति हो जाते है उस कार्य में कोई न कोई झंझट अवश्य ही खड़ा हो जाता है। अर्थात् जिस कार्य मे अधिक लोग सम्मिलित हो जाते हैं वह कार्य ठीक नहीं होगा। तुलनीय : माल० तीन तेरे ने बात बखेरे।

जहाँ तुम्हारा पसीना गिरे वहाँ हम खून गिरावें—सच्चा दोस्त ऐसा कहता है। तुलनीय : भोज० जहवाँ तोहार पसीना गिरी ओइजा हमार खून गिरी; अव० जहाँ त्वहार पसीन गिरे हुआं हम खून गिराउब; पंज० जिथे तुआड़ा परसा डिगे उत्थे असी खून सुटिये।

जहाँ दल, तहाँ बादल—जहाँ आदमियों की भीड़ होती है वहीं धूल उड़ती है।

जहाँ दाँत वहाँ चना नहीं, जहाँ चना तहाँ दाँत नहीं—किसी वस्तु के उपयुक्त स्थान पर न होने पर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० दाँत है जठै चिणा कोनी, चिणा है जठे दाँत कोनी।

जहाँ दाँत हैं वहाँ चने नहीं, जहाँ चने हैं वहाँ दाँत नहीं—ऊपर देखिए।

जहाँदीदा बिसियार गोयद दरोग़—बहुत अधिक अनुभवी व्यक्ति झूठ भी बढ़-चढ़कर बोलता है।

जहाँ दूल्हा वहीं बारात—जहाँ दूल्हा रहता है वहीं बारात भी रहती है। (क) दूल्हे के बिना बारात का कोई महत्त्व नहीं होता। (ख) मुख्य व्यक्ति के बिना उसके सहायकों की कोई इज्ज़त नहीं होती। (ग) किसी बड़े व्यक्ति के सहयोगी उसके समर्थन में ऐसा कहते हैं।

जहाँ देखि हो रूपा धँवर, सुका चार बरु दीहअ अवर—सफेद रंग के बैल जहाँ देखिए उसे एक रुपया अधिक क़ीमत देकर खरीद लीजिए। अर्थात् सफेद (धँवर) रंग के बैल काम में बहुत अच्छे होते हैं, वे यदि कुछ महँगे मिलें तब भी उन्हें ख़रीद लेना चाहिए।

जहाँ देखी तवा-परात वहाँ गुज़ारी सारी रात—(क) थोड़े से स्वार्थ के लिए किसी के पीछे-पीछे घूमने वाले के प्रति कहते हैं। (ख) पेटू और बेशर्मों के प्रति भी व्यंग्य में ऐसा कहते हैं जो जहाँ कही भी दो रोटी पाने की गुंजाइश देखते हैं वही बैठ जाते हैं। तुलनीय : मेवा० जठे मले तल्यो गुल्यो उठे फरे रुल्यो रुल्यो; मरा० जेथें देखे तवा परात तेथेंच काढी सारी रात; पंज० जिथ्थे देख्खी तवा परात ओथ्थे कट्टी सारी रात; गढ़० जख देखी तवा परात, तख बिताई सारी रात; कौर० जहाँ दिक्खी तवा परात व्हंई गँवाई सारी रात।

जहाँ देखी बरात वहीं गवाई रात—ऊपर देखिए।

जहाँ देखी रोटी, वहाँ मुड़ाई चोटी—(क) थोड़े से स्वार्थ के लिए जो दिन-रात किसी की ख़ुशामद करता रहता है उसके प्रति ऐसा कहते हैं। (ख) जो कुछ पाने के लालच में अपनी इज्ज़त भी गँवा देता है उसके प्रति भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० जिथे लब्बी रोटी उते मनाई दोबी।

जहाँ देखे गुना-पुरी तहाँ जायँ लुरी-लुरी—दे० 'जहाँ देखी तवा-परात···'। (गुना—एक प्रकार का पकवान)।

जहाँ देखे तवा परात वहाँ गुज़ारे सारी रात—दे० 'जहाँ देखी तवा-परात···'।

जहाँ देखे तवा परात, वहीं गावे सारी रात—दे० 'जहाँ देखी तवा-परात···'।

जहाँ देखे दाल-भात, तहाँ जागे सारी रात—दे० 'जहाँ देखी तवा-परात···'।

जहाँ देवी पावें तहाँ आरा-सा मुँह बावें—(क) ओछे व्यक्ति के प्रति कहते है जो कि कुछ देखते ही उसे पाना चाहता है। (ख) ऐसे लोगों के प्रति भी कहते हैं जिन्हें जहाँ से कुछ मिलता है उस स्थान को हर समय घेरे रहते हैं।

जहाँ धुआँ है वहाँ आग भी होगी—आग्नेय देखकर

आधार का अनुमान लगाया जा सकता है। एक होगा तो दूसरा भी अवश्य होगा। तुलनीय : रूसी—आग के बिना धुवाँ नहीं होता; उज० टोपी के नीचे आदमी भी होता है; पंज० जिथे तूँआ है उथे अग्ग वी होवेगी।

जहाँ न कुक्कट शब्द, तहँ होत न कहा बिहान—दे० 'जहाँ मुर्गा नहीं बोलता···'।

जहाँ न जाय रवि, तहाँ जाय कवि—जहाँ सूर्य (रवि) भी नहीं पहुँच पाता वहाँ कवि पहुँच जाते हैं। आशय यह है कि कवियों की कल्पना की उड़ान बड़ी ऊँची होती है। तुलनीय : सं० कवय: किं न पश्यंति; अव० जहाँ न पहुँचे रब हुआँ पहुँचे कब; तेलु० करविगांचनिचो कवि गांचु-नेगर्दा।

जहाँ न पहुँचे रवि तहाँ पहुँचे कवि—ऊपर देखिए।

जहाँ न माँ का जाया, वह सबही देश पराया—जहाँ अपने भाई-बंधु नहीं हैं वह विदेश के समान है। अर्थात् अपने परिवार के लोगों के बिना कहीं अच्छा नहीं लगता।

जहाँ नहाय वहीं गंगा—जहाँ स्नान करने को स्थान मिल जाय वहीं गंगा है। जहाँ लाभ मिले वही स्थान अच्छा है। तुलनीय : मेवा० न्हाया जोई गंगा; पंज० जिथे न्हाया उत्थे गंगा; ब्रज० जहाँ नहाये वही गंगा।

जहाँ नहीं सुनवइया, वहाँ मरे कहनइया—जहाँ कोई प्रार्थना सुनने वाला न हो वहाँ कहने वाला ही मारा जाता है। अर्थात् जहाँ ईमानदार अधिकारी न हों वहाँ सच्ची बात कहने वाला आदमी काफ़ी परेशान किया जाता है।

जहाँ निन्नानवे घड़े दूध के होंगे वहाँ एक घड़ा पानी का क्या जाना जायेगा—अमीरों में ग़रीबों को कौन पूछता है।

जहाँ पंच तहाँ परमेश्वर—पंचों में परमेश्वर का वास होता है। जिस बात या निर्णय पर अधिकांश लोग एकमत हों उसे ठीक समझना चाहिए।

जहाँ पड़े मूसला, वहीं खेम-कुशल—(क) अकेला और निश्चिंत आदमी जहाँ रहता है वहीं मस्त रहता है। (ख) मार पड़ने से झगड़ा शांत हो जाता है। (ग) जहाँ मूसल से अनाज कूटकर खाया जाता है वहाँ लोग स्वस्थ रहते हैं। तुलनीय : राज० जठै पड़ै मूसल वठै खेम कूसल।

जहाँ परे फुलबा की लार, झाड़ू लेके बुहारो सार—जहाँ पर फुलबा जाति के बैल की लार गिरे उस स्थान को झाड़ू से साफ कर देना चाहिए। अर्थात् फुलवा जाति के बैल अच्छे नहीं होते।

जहाँ पानी भरेगा वहीं कीचड़ होगा—जहाँ बुरे आदमी होंगे वहाँ बुरे काम भी होंगे। तुलनीय : पंज० जित्थे पाणी परोयेगा उत्थे किचड़ होवेगा।

जहाँ पावे वहाँ मुँह पसारें—(क) जिस व्यक्ति से कुछ मिलने की आशा हो उसी से माँगना चाहिए। (ख) जिस व्यक्ति को किसी से एक बार कोई चीज़ मिल जाती है और जब वह बार-बार उसी के यहाँ माँगने जाता है तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० जहाँ देवी पावैं तहाँ आगे सो मुँह बावैं।

जहाँ पुण्य तहँ बास है, जहाँ बास तहँ भौंर—जहाँ फूल होगा वहीं पर सुगंध भी फैलेगी और जहाँ सुगंध होगी वहीं भौंरे भी आयेंगे। आशय यह है कि जहाँ धन होगा वहीं शाहखर्ची होगी और जहाँ शाहखर्ची होगी वहीं गुणी पहुँचेंगे।

जहाँ पेड़ न रूख तहाँ रेंड़ महा रूख—नीचे देखिए।

जहाँ पेड़ न रूख वहाँ रेंड़ प्रधान—जहाँ कोई दूसरा वृक्ष नहीं होता वहाँ रेंड (अरंड का वृक्ष) ही अच्छा माना जाता है। जहाँ सभी अयोग्य या छोटे हों वहाँ उनसे ज़रा-सा बड़ा या योग्य व्यक्ति भी बड़ा समझा जाता है। तुलनीय : भोज० जहाँ पेड़ न रूख तहाँ रेड़ परधान; तेलु० वृक्षमुलेनि देशमंदु आमुदपु वृक्ष में महावृक्षमु; गीवुलेनि बूल्लो गोड्डगेदे श्रीमहालक्ष्मी; अव० जहाँ रूख न बेरूख तहाँ रेड़े रूख।

जहाँ पेड़ नहीं, वहाँ अरंड ही पेड़—ऊपर देखिए।

जहाँ पेड़ नहीं वहाँ एरंड ही पेड़—दे० 'जहाँ पेड़ न रूख वहाँ···'। तुलनीय : ब्रज० जहाँ कोई पेड़ नायें होयँ, वहाँ अंडी ई पेड़ैं।

जहाँ फूल वहाँ काँटा—जहाँ फूल होते है वहाँ काँटे भी पाए जाते हैं। (क) जहाँ सज्जन व्यक्ति होते हैं वहाँ दुष्ट भी होते है। (ख) जहाँ सुख होता है वहाँ दुख भी होता है। तुलनीय : मल० गुणत्तिनटुत्ततु दोषवुम्काणुम्; अं० No rose without thorn.

जहाँ बकरी चरे वहाँ बाघ सोए ?—जहाँ बकरी रहेगी वहाँ बाघ सो नहीं सकता। अर्थात् भक्ष्य को देखकर भक्षक चुप या शांत नहीं रह सकता, वह अवसर पाकर उस पर आक्रमण कर ही देता है। तुलनीय : भीली—चाली नू चर-नार ने चिता नूं बेहनार; पंज० जिथे बकरी चरे उथे सेर कैंनू सोवे।

जहाँ बड़ी सेवा वहाँ ओछा फल—जहाँ अधिक ख़ुशामद होती है वहाँ परिणाम अच्छा नहीं निकलता।

जहाँ बसें पंडित चार, पता न लागे दिन-त्योहार—जहाँ

अधिक पंडित होते हैं वहाँ सभी अपनी-अपनी चलाते हैं, या एक दूसरे के विरुद्ध कहते हैं। इसलिए किसी भी बात या तिथि का निर्णय नहीं हो पाता। आशय यह है कि जब बहुत से व्यक्ति एक काम का प्रबंध करते हैं तो वह काम बिगड़ जाता है। तुलनीय : गढ़० जख जोशी चार, तख दिन न बार; अं० Too many cooks spoil the broth.

जहाँ बहू का पीसना वहीं ससुर की खाट जहाँ बहू चक्की चलाती है वहीं उसके ससुर (पति के पिता) चारपाई बिछा कर सोते हैं। नियम-विरुद्ध या अनुचित काम करने पर कहते हैं। तुलनीय : पंज० जिथे वौटी दा परसा उथे सोहरे दी खट; ब्रज० जहाँ बहू को पीसना वही ससुर की खाट।

जहाँ बाँमन तहाँ नाऊ, जहाँ गंगा तहाँ झाऊ—ब्राह्मण के साथ नाई रहता है और गंगा के तटों पर झाऊ (एक प्रकार का खर) होता है। आशय यह है कि बड़े लोगों के साथ उनके सेवक और सहायक भी होते हैं। तुलनीय : ब्रज० जहाँ बाम्हन वहाँ नाऊ, जहाँ जमुना वहाँ झाऊ।

जहाँ बालकों का बैठना वहाँ भूतों का बास—आपत्ति-जनक बात पर कहते हैं।

जहाँ वृक्ष नहीं वहाँ एरंड प्रधान—दे० 'जहाँ रूख नहीं वहाँ···'।

जहाँ मरें, वहीं जलें—जहाँ मृत्यु होती है वही मुर्दे को जलाया जाता है। (क) मृत्यु के समय व्यक्ति जिस देश में होता है वहीं जला दिया जाता है। (ख) श्मशान आबादी से बहुत दूर नहीं होते, इसलिए भी कहते है। तुलनीय : भीली—जटे मरे जटे बले।

जहाँ माँ न भाई, वह दुनिया पराई—जिस स्थान पर न तो अपनी माँ हो और न अपना भाई तो वह स्थान दूसरी दुनिया के बराबर हो जाता है। जिस स्थान पर आत्मीयता रखने वाला कोई न हो वहाँ कहते हैं। तुलनीय : माल० माँ न माँ रीयो देश ही परायो।

जहाँ मांस की गठरी वहाँ कुत्ता रखवाला दे० 'चोट्टी कुतिया जलेबियों की···'।

जहाँ मिठास अधिक होती है वहाँ चींटें भी अधिक होते हैं—दे० 'जहाँ गुड़ होगा···'।

जहाँ मिली दो, वहीं रहे सो—(क) मस्त आदमी के प्रति कहते हैं जो थोड़ा पाकर ही प्रसन्न रहता है और भविष्य की चिंता नहीं करता। (ख) निकम्मे और स्वार्थियों के प्रति भी कहते है जिन्हें जहाँ कही भी कुछ पाने की आशा रहती है वही जमे रहते हैं।

जहाँ मिले पाँच माली, वहाँ बाग सदा खाली—जिस बाग में पाँच माली रखे जायँ वह बाग सदा सूना ही रहता है क्योंकि (क) सब एक-दूसरे की कार्य-प्रणाली में दोष बता कर उसके काम को बिगाड़ देते हैं। (ख) सब एक-दूसरे की आशा में ठीक ढंग से काम नहीं करते और इस प्रकार काम बिगड़ जाता है। जब एक काम को बहुत से आदमी करें और वह बिगड़ जाए तो उनके प्रति कहते है। तुलनीय : माल० जठे मल्या तीन दरजी वठे हुै बात उलझी; भोज० सात गिहथिनी माठा पातर, ढेर गिहथिनी माठा पातर; पंज० जिथे मिलण पंज माली उह बाग सदा खाली; अं० Too many cooks spoil the broth.

जहाँ मुर्गा नहीं बोलता, क्या सबेरा नहीं होता ?—(क) प्रकृति का काम किसी व्यक्ति विशेष पर निर्भर नही करता। (ख) किसी के बिना कोई काम रुकता नहीं, यदि कोई सोचता है कि मेरे बिना अमुक काम नही हो सकता तो ऐसा सोचना उसकी मूर्खता है। तुलनीय : कौर० जहाँ मुर्गा ना बोल्लै, क्या तड़का नी होत्ता; अव० जहाँ मुरगा न होई का हुआँ भिसार न होई; मेवा० कूकड़ो के जठे ईज दन ऊगे; हरि० जित मुरगा नाँह होन्ना हुडै के तड़का नही होता; भीली—दाड़ो कूकड़ा नी वात नी जोये; मरा० जिथें कोंबडा नसेला तिथें सकाळ होत नाहीं काय; पंज० जिथे कुकड़ नई बोलदा उथे दिन नई चड़दा की; ब्रज० जहाँ मुर्गा नायें होयँ वहाँ का सबेरौ नायें होयँ।

जहाँ मुर्गा नहीं होता, क्या वहाँ सबेरा नहीं होता ?—ऊपर देखिए।

जहाँ मुर्गा न होगा वहाँ क्या भोर न होगा ?—दे० 'जहाँ मुर्गा नही बोलता···'।

जहाँ में जहाँ तक जगह पाइए इमारत बनाते चले जाइए—बादशाह शाहजहाँ ऐसा कहा करते थे।

जहाँ राज-रीति आए, वहाँ राज भी आए—जहाँ सुव्यवस्था होती है वहाँ लोग सुखी रहते हैं। तुलनीय : राज० राज रीत आवे जठे राज आयो रैवै; पंज० नीत्तां दियां मुरादां।

जहाँ रात वहाँ सराय—(क) जिस व्यक्ति का कहीं घर-द्वार न हो उसके प्रति उपहास से कहते हैं। (ख) पैदल यात्रा करने वालों के प्रति भी ऐसा कहा जाता है। तुलनीय : गढ़० जख रात तख थात; पंज० जिथे रात उथे सरां।

जहाँ रूख न परास तहाँ रेंड़ प्रधान—दे० 'जहाँ रूख नही वहाँ···'।

जहाँ रूख नहीं तहाँ अरंड ही रूख—नीचे देखिए।

जहाँ रूख नहीं वहाँ अरंड ही रूख—जहाँ किसी चीज़

का पेड़ नहीं होता वहाँ रेंड़ (अरंड) ही पेड़ मान लिया जाता है। अर्थात् जहाँ कोई विद्वान नहीं होता वहाँ साधारण ज्ञान वाला ही पूज्य हो जाता है। तुलनीय : राज० नहीं रूख जठे एरंडियो रूख; भोज० जहाँ रूख न परास तहाँ रेड़ परधान; ब्रज० जहाँ कोई पेड़ नायँ वहाँ अंडीई पेड़ होयँ।

जहाँ रोटी वहाँ दाँत नहीं, जहाँ दाँत वहाँ रोटी नहीं — दे० 'जब चने थे तब दाँत नहीं…'।

जहाँ लड़का होगा वहाँ बहू भी आएगी — जिसके घर लड़का होगा उसके घर बहू भी आएगी। आशय यह है कि (क) जिसके पास साधन होंगे उसके कार्य भी पूरे हो जाएँगे। (ख) जिसके पास गुण होगा उसे चाहने वाले भी मिल जाएँगे। तुलनीय : राज० छोकरो है जठे बहू ही आवै; पंज० जिथे मुंडा होवेगा उथे वौटी वी आवेगी।

जहाँ शाम वहाँ बिहान — जहाँ शाम होती है वहाँ सुबह (बिहान) भी होती है। आशय यह है कि दुख के बाद सुख भी आता है।

जहाँ संत मठा को जायँ, भैंस-पड़ा दोनों मर जायँ — दे० 'जहाँ कबीर माठा को…'।

जहाँ सींक न जाए तहाँ मूसल समाववै — (क) हिकमती व्यक्ति के प्रति कहते है। (ख) किसी बात को बहुत बढ़ा-चढ़ा कर कहने वाले के प्रति भी कहते हैं। (ग) जब कोई किसी असंभव काम के लिए प्रयत्न करता है तब भी व्यंग्य में ऐसा कहते है। तुलनीय : अव० जहाँ सींके न समाय तहाँ फारु समवावै।

जहाँ सुई तहाँ धागा — जो वस्तुएँ या व्यक्ति परस्पर सहयोग से कार्य कर सकते हों वे एक ही स्थान पर रहते हैं या मिलते हैं।

जहाँ सुमति तहँ संपति नाना, जहाँ कुमति तहँ विपति निधाना — जहाँ पर सब लोग एक राय होकर सही ढंग से काम करते है वहाँ जीवन सुखमय होता है और जहाँ सब लोग मनमाने ढंग से कार्य करते एवं रहते हैं वहाँ हर तरह की परेशानियाँ घेरे रहती हैं। अर्थात् एकता बहुत अच्छी चीज है।

जहाँ सूर माठा को जाएँ पड़वा भैंस दुनो मर जाएँ दे० 'जहाँ कबीर माठा को…'।

जहाँ से चले वहीं पहुँचे — (क) जब कोई व्यक्ति अपनी एक ही बात को बार-बार कहे तब कहते है। (ऐसा प्रायः उस समय कहते हैं जब किसी व्यक्ति के झगड़े को मिटाने के के लिए मध्यस्थता करने वाले प्रयत्न करें और वह झगड़े की जड़ को ही बार-बार दुहराए। (ख) धीमी गति से कार्य करने वाले के प्रति भी व्यंग्य से कहते हैं। (ग) काफ़ी प्रयत्न के बाद भी जब किसी समस्या का हल नहीं निकलता तब भी कहते हैं। तुलनीय : माल० हाजी चाल्या घरे या घरे; पंज० जिथों चले उथे पोहंचे।

जहाँ सेर वहाँ सवा सेर — (क) किसी कार्य को करते समय यदि हिसाब से अधिक खर्च बढ़ जाए तो भी उस कार्य को कर लेना चाहिए। (ख) जब कोई व्यक्ति किसी समस्या का सामना करना है और उसी समय कोई और छोटी समस्या सामने आ जाती है तब वह ऐसा कहता है। तुलनीय : गढ़० जख यत्ती तख तत्ती; राज० सेर जठे सवा सेर, जठै सेर बठै सवा सेर; हरि० जित सौ उड़ै सवा सौ सही; अव० जहाँ सौ हुआँ सवा सौ; राज० जठै सौ बठै सवा सौ, सौ जठे सवा सौ; मल० आके मुड़्डियाळ कुळिरिळ; पंज० जिथे सेर उथे सवा सेर; अं० In for a penny out of a pound.

जहाँ सौ वहाँ सवा सौ - ऊपर देखिए।

जहाँ हाथी तुलें, वहाँ गधे पासंग — जहाँ हाथी तौले जाते हैं वहाँ गधों का पासंग बनाया जाता है। (क) शक्तिशाली मनुष्यों के बीच निर्बलों की कोई बात भी नहीं पूछता। (ख) बुद्धिमानों या धनवानों के सम्मुख मूर्खों या निर्धनों की कोई क़द्र नहीं होती। तुलनीय : राज० हाथी तोलीजै जठे गधा पासंग में जाय।

जहाज के काग को जहाज ही दीखता है — जहाज़ के कौए को जहाज के अतिरिक्त और कहीं आश्रय नहीं मिलता। (क) जिसका मात्र एक सहारा होता है वह उसी से लगा रहता है। (ख) घर में बैठ कर बाहरी बातें नहीं मालूम हो सकतीं। तुलनीय : पंज० जहाज दे कां नूं जहाज ही लबदा है।

जहान भेड़िया धसान — लोग एक दूसरे की देखादेखी काम करते हैं। (भेड़िया धसान = भेड़ों की चाल। भेड़ें बिना देखे एक दूसरे के पीछे चलतीं हैं)।

जाँघ दिखा पैर दबवाए — जाँघ दिखाकर पैर दबवाती है। जब कोई किसी को किसी चीज़ का प्रलोभन देकर अपना काम कराले तब कहते हैं। (ख) जब कोई प्रलोभन में आकर कोई निकृष्ट कार्य कर बैठे तब भी कहते है। तुलनीय : भीली हाथल भाली ने हूकू नाकू खणाड़ दू; ब्रज० जाँघ दिखाइकें पाम दबवायें।

जाँत देखकर झोंक देना चाहिए — औक़ात या शक्ति के अनुसार कोई काम हाथ में लेना चाहिए। तुलनीय : मैथ० जांता देखिक झीको दे; भोज० जांत देख के तऽ झोक डाले

के चाही।

जांत फूटा, नाता टूटा - चक्की (जांता) टूट जाने पर किसी काम नहीं आती। इस लोकोक्ति का प्रयोग प्रायः उस समय किया जाता है जब लड़की मर जाती है और उसकी ससुराल वालों से संबंध टूट जाता है।

जाय लाख रहे साख—मर्यादा की हर क़ीमत पर रक्षा करनी चाहिए। तुलनीय : कौर० जाओ लाख, रहो साख।

जाओ नेपाल, साथ जाय कपाल—(क) तक़दीर सब जगह साथ जाती है। (ख) अकर्मण्य व्यक्तियों का कहीं ठिकाना नहीं होता।

जाओ पूत दक्खन वही करम के लक्खन—ऊपर देखिए। (दक्खन=दक्षिण लक्खन=लक्ष्मण)। तुलनीय : गुज० अखण गया दख्खण गया, पण लख्खन नहिं गयाँ।

जाकर डालो गोबर खाद, तब देखो खेती का स्वाद—खेत में गोबर की खाद डालने पर ही खेती का मज़ा मिलता है। आशय यह है कि खेत में गोबर की खाद डालने से फ़सल अच्छी होती है।

जाका कोड़ा, ताका घोड़ा—जिसका कोड़ा है उसी का घोड़ा भी है। बलवानों की सब जगह चलती है।

जा कारन हम मूंड़ मुड़ायो सोई आगे—जिस चीज़ से बचने के लिए मैंने बालों को मुँड़ाया वही चीज़ सामने आई। जब कोई किसी बात या झंझट से बचने का उपाय करे फिर भी उससे बच न सके तब ऐसा कहते हैं।

जाकी अच्छी सास, वाका ही घर बास; जाकी सास, नकारा, वाका नहीं गुज़ारा—जिस स्त्री की सास भली होती है उसका जीवन आनंद से बीत जाता है, किंतु इसके विपरीत होने पर उसका जीवन कष्टमय हो जाता है।

जाकी आंत भारी ताको माथ भारी - अजीर्ण से सिर में दर्द हो जाता है।

जाकी ओर न जाइये कैसे मिलि है माय, जैसे पच्छिम गये पूरब काज न होय (वृन्द)—जैसे पश्चिम दिशा में जाने से पूरब दिशा का काम नहीं होता उसी प्रकार जिस व्यक्ति के मिलने से कोई काम सिद्ध होना हो तो उससे मिले बिना वह नहीं होता। अर्थात् सही ढंग से काम करने पर ही सफलता मिलती है।

जाकी खरचू जोरू होय ताके धन कबहूँ ना होय—जिसकी स्त्री खर्चीली होती है उसके पास धन इकट्ठा नहीं हो सकता।

जाकी घर में माई, ताकी राम बनाई—(क) जिसकी माँ जीवित हो उसको किसी बात की चिन्ता नहीं होती। (ख) जब किसी व्यक्ति का कोई बिगड़ा हुआ काम किसी संबंधी या परिचित आदि के द्वारा ठीक कर दिया जाय तब भी इस लोकोक्ति का प्रयोग होता है।

जाकी धन धरती हरी ताहि न लीजे संग--(क) जिसका धन और ज़मीन हर ली गई हो उसको अपने साथ नहीं रखना चाहिए, नहीं तो उसका साथी या हितैषी होने के आरोप में अपना धन भी छीना जा सकता है। (ख) निर्धन व्यक्ति का साथ करना ठीक नहीं होता क्योंकि सदा उसकी सहायता ही करनी पड़ती है।

जाकी नरद पक्की घर आवे वही खिलाड़ी सुघड़ कहावे—जो खेल में अपनी एक भी गोटी न हारे बल्कि दूसरे की ही जीत ले उसे ही अच्छा खिलाड़ी समझा जाता है। इस संसार में वही व्यक्ति सफल माना जाता है जो अपनी कोई हानि न करे बल्कि सदा कुछ लाभ प्राप्त करे। (नरद=चौपड़ की गोटी)।

जाकी भीतर बाई, ताकी राम बनाई—दे० 'जाकी घर में माई...।'

जाकी यहाँ चाहना है, वाकी वहाँ चाह ना है, जाकी यहाँ चाह ना है वाकी वहाँ चाहना है—(क) जिसका इस संसार में आदर है, उसका भगवान भी आदर करते हैं। जिसका संसार निरादर करता है भगवान भी निरादर करते हैं। (ख) सज्जन पुरुषों को प्रभु भी चाहते हैं, इसलिए उन्हें शीघ्र अपने पास बुला लेते हैं और दुष्ट मनुष्य लंबी आयु पाते हैं और सबको परेशान करते हैं।

जाकी रही भावना जैसी, प्रभु-मूरत देखि तिन तैसी--नीचे देखिए।

जाकी रही भावना जैसी, हरि मूरत देखि तिन तैसी—मनुष्य अपने-अपने विचारों के अनुसार भगवान को विभिन्न रूपों में देखता है। विचारों में भिन्नता होने के कारण एक ही वस्तु को कुछ लोग अच्छी और कुछ लोग बुरी बताते हैं। तुलनीय : मरा० ज्याची जशी भावना असे त्याला तसें प्रभूरूप दिसे; कनौ० जाकी रही भावना जैसी, प्रभु पाई तिन मूरत तैसी; पंज० मनुख नूं अपनी पावना जिही रबदी मूरत दिसदी है।

जाके लाठी वाकी भैंस—दे० 'जिसकी लाठी उसकी...'। तुलनीय : ब्रज० जाकी लौठी वाकी भैंस।

जाके कारन पहिरी साड़ी, वोही टाँग रही उघाड़ी—जिस टाँग को ढकने के लिए साड़ी पहनी वही टाँग नंगी रह गई। (क) जिस स्त्री को ब्याह होने पर भी सुख न मिले उसका कथन है। (ख) जब कोई व्यक्ति किसी लाभ या

सुख के लिए धन व्यय करे और वह सुख या लाभ उसे न मिले तो भी कहते हैं।

जाके घर में नौ-नौ गाय, दूसरे के घर मठा मांगने जाय—जिसके घर दूध देने वाली नौ गायें हैं वह दूसरे के घर मठा मागने जाता है। जो चीज़ जिसके यहाँ काफ़ी मात्रा में है उसी के लिए जब वह किसी दूसरे के घर जाता है तब व्यंग्य से ऐसा कहते हैं। तुलनीय : छत्तीस० जौन घर नौ नौ गाय, तौन मही माँगे जाय; पंज० जिसदे कर विच नौं नौ गायीं दूजे कर विच लस्मी मंगन जावे।

जाके घर में नौ सौ गायें वह छाछ पराई खाय—ऊपर देखिए।

जाके जैसे बाप मताई, वैसे वाके लरिका; जाके जैसे नदिया नाले, वैसे वाके भरिका—जैसे माँ-बाप होते हैं वैसी ही संतानें होती है और जैसे नदी-नाले होते हैं वैसे उसके किनारे कटे-फटे होते हैं। माँ-बाप भले हो तो संतानें भी अच्छी होती हैं और बुरे हों तो संतानें भी बुरी होती हैं। (भरिका = नदी की कटान से बनने वाला गड्ढा जिसमें वन्य पशु और चोर डाकू आश्रय लेते हैं)।

जाके नख अरु जटा बिसाला, सोइ तापस प्रसिद्ध कलिकाला—कलियुग में जिसके नाखून और जटाएँ बड़ी-बड़ी हों उसे ही सबसे बड़ा तपस्वी माना जाता है। (क) कलियुग में गुणों को कोई नहीं देखता केवल वस्त्रों या ऊपरी आडंबर को देखकर ही पूजा की जाती है। (ख) पाखंडी साधुओं के प्रति व्यंग्य में भी ऐसा कहते हैं।

जाके पाँव न फटी बिवाई, वह क्या जाने पीर पराई—जिसके पैर में कभी बिवाई नही फटी, दूसरे के पैर में बेवाई फटने पर वह उसके कष्ट का अनुभव नही कर सकता। अर्थात् जिसके ऊपर कभी कष्ट नही पड़ा वह दूसरे के कष्ट को कष्ट नहीं समझ सकता। तुलनीय : मरा० त्याच्या पायाला चिखल्या झाल्या नाहीत त्याला दुसरयाचें दु:ख काय कळणार; राज० जाके पाँव न फटी बिवाई सो का जानै पीर पराई; अव० जेके पाँव न फाट बेवाई ऊ का जौ पीर पराई; भोज० जेकर पाँव न फाटी बेवाई उ का जानी पीर पराई; हरि० जिसके लागै वोहे जाणै; तेलु० तनकरकू वस्ते गानि खेलियदु; कनौ० जाके पाँय न फटी बिवाई, सो का जानै पीर पराई; छत्तीस० जेतर पाँव न फटे बेंवाई, ते का जाने पीर पराई; ब्रज० जाके पाँम न फटी बिबाई, वुह कहा जानें पीर पराई।

जाके पाँव न फटी बिवाई सो का जाने पीर पराई—ऊपर देखिए।

जाके पास रहिए, ताही की सी कहिए—आश्रयदाता का शुभचिंतक होना चाहिए। तुलनीय : ब्रज० जाके पास रहौ, वाईकी सी कहौ।

जाके पैर न फटी बिवाई, सो क्या जाने पीर पराई—दे० 'जाके पाँव न फटी बिवाई वह क्या···'।

जाके सँग दूषन दुरै करिये तिहि पहिचानि, जैसे समझै दूध सब सुरा अहीरी पानि—साथ उसका करे जिसके साथ रहने से अपना दोष अथवा बुराई छिप जाय, जिस प्रकार कि अहीर के हाथ में शराब ही क्यों न हो लेकिन उसे लोग दूध ही समझते हैं।

जाके हाथ लोई, वाका सब कोई—जिसके हाथ में लोई है उसके सभी हैं। अर्थात् जिसके पास धन हैं उसके सब साथी हैं। (लोई = गूंधे हुए आटे की बत्ती जिसे तोड़कर रोटी या पूरी का पेड़ा बनाया जाता है)। तुलनीय : ब्रज० जाके हात लोई, वाकौ सब कोई।

जाको जहँ स्वारथ सधै, सोई ताहि सुहात; चोर न प्यारी चाँदनी, जैसी कारी रात—जिस व्यक्ति या वस्तु से जिसका काम निकलता है वही उसे अच्छी लगती है, चाहे वह बुरी ही क्यों न हो। जिस प्रकार चोर को चाँदनी रात की अपेक्षा अँधेरी रात अधिक प्रिय होती है क्योंकि उसी में उसका स्वार्थ सिद्ध होता है।

जाको जा पर सत्य सनेहू, सो तिहि मिले न कछु संदेहू—जिसका जिस पर सच्चा प्रेम रहता है वह उसे अवश्य मिलता है। दो मित्र आपस में मिलने पर कहते हैं।

जाको जो स्वभाव जाय नहिं जीसे, नीम न मीठो होय, सींच गुड़-घी से—लाख प्रयत्न करने पर भी दुष्टो की बुरी आदतें नहीं छूटतीं। जिस प्रकार नीम को चाहे जितना भी गुड़-घी से क्यों न सींचा जाय पर उसमें मीठापन नहीं आ सकता।

जाको डंडा ताकी गाय, मत करो कोई हाय हाय—जिसके पास लाठी (डंडा) है उसी की गाय है, व्यर्थ में पश्चात्ताप करने से कोई फ़ायदा नहीं। (क) जिसकी कोई ओषधि नही, उसका सोच करना व्यर्थ है। (ख) बलवान के आगे निर्बल की कुछ नही चलती। तुलनीय : ब्रज० जाकौ डंडा वाकी गाय।

जाको प्रभु दारुण देहीं, ताकी मति पहिले हर लेहीं—जिस पर कठिन दु:ख पड़ने वाला होता है उसकी बुद्धि पहले से ही नष्ट हो जाती है। जब कोई अपनी मूर्खता से दु:ख पाता है तब कहते हैं।

जाको मारा चाहिए बिन मारे बिन घाव, वाको यही

बताइए घुइयाँ पूरी खाव—जब किसी को बिना मारे या बिन घाव किए मारना हो तो उसे घुइयाँ (अरबी, अरुई) की तरकारी और पूरी खाने की राय देनी चाहिए। आशय यह है कि इन दोनों को एक साथ खाना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं।

जाको राखे साइयाँ, मार सके ना कोय, बाल न बाँका कर सके जो जग बैरी होय - ईश्वर जिसका सहायक है उसका कोई भी कुछ नहीं बिगाड़ सकता। (क) जब कोई भारी विपत्ति से बच जाता है तब कहते हैं। जिसके बहुत दुश्मन होते हैं और उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ पाते तब वह कहता है। तुलनीय : मरा० ज्याचे रक्षण परमेश्वर करतो त्याला कोणी मारू शकत नाही; गढ़० जेको साही शंकर, तैको क्या करो भयंकर; राज० जाकू राखै साइयाँ मार न सक्के कोय; भोज० जाको राखै साइयाँ मार न सकिहै कोय, पंज० जिसनूं साईं रखे उस नूं कोई मार नई सकदा; अं० God tempers the wind to the shorn lamb.

जाको राम रच्छक, ताको कौन भच्छक—ऊपर देखिए।

जाको लोह, ताको सोह—जिसका हथियार उसी को शोभा देता है। शक्तिवान का ही सब कुछ है। शक्तिशाली के आगे किसी की नहीं चलती।

जाग जगन्ते पहरुआ, लाग लगंते और प्रहरी जागते रहते हैं, और काम करने वाले अपना काम कर ही लेते हैं। जब सावधानी रखने पर भी चोर चोरी कर ले तो कहते हैं।

जागती हुई चींटी की शक्ति सोते हुए हाथी से अधिक होती है - आशय यह है कि दुर्बल या निर्बल पर सावधान व्यक्ति असावधान बलवान को पराजित कर सकता है। तुलनीय : पंज० जागदी कीड़ी हाथी कोलों तगड़ी हुंदी है।

जागते की कटिया और सोते का कटड़ा -दे० 'जगते की कटिया और···'।

जागते को कौन जगाए ?— जो पहले से ही जाग रहा है उसे कौन जगाएगा। (क) जो व्यक्ति जानबूझकर सोने का बहाना करे उसके प्रति व्यंग्य से कहते है। (ख) जो व्यक्ति जानबूझ कर किसी काम के बारे में अनभिज्ञता दर्शाए उसके प्रति भी व्यंग्य से कहते है। (ग) जो व्यक्ति किसी काम को बुरा समझते हुए भी करे तो उसके प्रति भी व्यंग्य से कहते है। (घ) चालाक व्यक्ति के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : राज० जागतेने जगावणो दोरो; मैथ० जागल जागे कि सूतल जागे; भोज० जगला के का जगावे के; अंग० None so blind as those who won't see. There is none so deaf as he that won't hear.

जागते को क्या जगाना—ऊपर देखिए।

जाग मछिन्दर गोरख आयो—किसी को सचेत करते समय कहते हैं। कनफटों के गुरू मछिन्दरनाथ ने जब अपना शरीर छोड़कर किसी राजा के शरीर में प्रवेश किया था और भोग-विलास में लिप्त हो गये थे तब उनके शिष्य गोरखनाथ ने यही कहकर उनको सचेत किया था।

जागियो / जागना भला होगा -जागते रहो। जागने से लाभ होगा। आशय यह है कि व्यक्ति को सदा सावधान रहना चाहिए। सावधान रहने वाला ही फ़ायदा उठाता है।

जागीर से जागीरदारी—जागीर होने से ही व्यक्ति जागीरदार कहाता है। (क) जब कोई व्यक्ति झूठ ही अपने को बहुत धनी और संपत्तिशाली बताए तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। (ख) धन से ही व्यक्ति की इज्ज़त होती है। तुलनीय : राज० ठिकाणां सू ठाकर बाजै।

जागे कोई धन का धनी, जागे जिसको चिंता घनी—वही लोग रात को जागते है जो बहुत चिंतित होते हैं या जिनके पास धन बहुत होता है। (कहीं-कहीं इस लोकोक्ति के साथ 'जागे' शब्द से आरम्भ होने वाली तीन-चार लोकोक्तियाँ एक साथ भी कही जाती हैं)।

जागेगा सो पावेगा, सोवेगा सो खोवेगा— (क) सावधानी से रहने से लाभ होता है। (ख) उद्यमी लाभ और आलसी हानि उठाते हैं। तुलनीय : पंज० जागेगा ओह पावेगा सोवेगा ओह गुआवेगा।

जागे जिसके घर में साँप, जागे जो बिटिया का बाप - -जिसके घर में साँप हो उसे डर के मारे और जिसके घर में जवान बेटी हो उसे चिंता के मारे नींद नहीं आती। तात्पर्य यह है कि भारतीयों के लिए जवान बेटी बहुत बड़ी चिंता का विषय होती हैं और जब तक उसके हाथ पीले न कर दिए जाएँ उनको नींद नहीं आती।

जागे जिसके देह में दुक्ख, जागे जिसको लागे भुक्ख—जिसके शरीर में कोई रोग या कष्ट हो उसे और जो भूखा हो इन दोनों को नींद नहीं आती। तुलनीय : पंज० जिस दी देह विच दुख जागे उस नू पुख लग्गे।

जागे जो जपे जगदीश, जागे जिसको देना शीश—भगवान का भजन करने वाले या जिनको मृत्यु दंड मिला हो जागते हैं। तात्पर्य यह है कि दुखी व्यक्ति को नींद नहीं आती।

जागे रात अँधेरी चोर, जागे भर बरसात मोर—मोर बरसात भर नहीं सोते और चोर अंधेरी रात में।

आशय यह है कि (क) प्रेम और स्वार्थ के कारण ही प्रत्येक जीव दुख सहता है। (ख) उपयुक्त समय का सभी अधिक से अधिक फ़ायदा उठाना चाहते हैं।

जागे सो पावे, सोवे सो खोवे—दे० 'जागेगा सो पावेगा···'।

जा घट प्रेम न संचरै ता (सो) घट जान मसान—जिसके हृदय में प्रेम नहीं है उसे मुर्दे के समान समझना चाहिए। आशय यह है कि स्वार्थी व्यक्तियों से मित्रता करना बेकार है।

जा घर दाल पड़े हींग ना हरदा, ता घर जेवन जेवें बरदा—जिस घर में दाल में हींग और हल्दी नहीं पड़ती वहाँ बैल ही भोजन करने जा सकते हैं। आशय यह है कि हींग और हल्दी के बिना दाल स्वादिष्ट नहीं होती। तुलनीय : पंजा० नां नूण तां हल्द ते खाणगे वल्द।

जा घर माँग न संचरै सो घर भूत समान—जिसके घर में साधुजन भिक्षा माँगने आते हों, वह घर भूतों के घर के बराबर है। अर्थात् दान न देने वाले अच्छे आदमी नहीं समझे जाते।

जा घर लाग्यो बानियो, सो घर गया जानियो—जिस घर में बनिए का आना-जाना हो या जिस परिवार में बनिए की घनिष्ठता हो वह शीघ्र नष्ट हो जाता है। बनियों पर व्यंग्य है।

जा घर सास मठकुली (मटक्कनी) ता घर बहुअर कौन सिंगार - जिस घर में सास शृंगार करने वाली हो वहाँ बहू क्या शृंगार कर सकती है यानी जब परिवार के बड़े लोग ख़ुद शौक़ीन हो जाएँगे तो छोटों को सुख नहीं मिल पाएगा।

जाचक जन को देखि कै भूकत हैं बहु स्वान—य॰ अ॰ अर्थात् भिखारियों को देखकर कुत्ते भी भौंकते हैं, क्योंकि ये दोनों ही अपनी जीविका स्वयं अर्जित नहीं करते बल्कि दूसरों के दान पर निर्भर रहते हैं। आशय यह है कि निर्धन या दीन का सभी तिरस्कार करते हैं।

जाट कहे शरमाय पर लड़े ना शरमाय—जाट जाति के लोग किसी बात को कहने में संकोच करते (शरमाते) हैं, पर लड़ने में संकोच नहीं करते। आशय यह है कि जाट जाति के लोग व्यवहार-कुशल तो नहीं होते पर युद्ध-कुशल होते हैं। तुलनीय : हरि० जाट कहता सरमा ज्या पर लड़ता न सरमावै; पंज० जट्ट आखदा सरमावे पर लड़दा नईं सरमांदा।

जाट कहे सुन जाटनी इही गाँव में रहना; ऊँट बिलैया ले गई तो हाँ जी, हाँ जी कहना—जाट अपनी पत्नी को समझा रहा है कि सुनो इसी गाँव में हम लोगों को रहना है, इसलिए यदि कोई कहे कि बिल्ली ऊँट को उड़ा कर ले गई तो कहना बिल्कुल ठीक है। अपना स्वार्थ पूरा करने के लिए झूठे 'हाँ में हाँ' मिलाने वाले के प्रति कहते हैं।

जाट की हँसी ठहरी, अपनी बाँह टूटी—जाट ने तो मज़ाक़ किया और अपनी बाँह टूट गई। तात्पर्य यह है कि गँवार का मज़ाक़ भी खतरनाक होता है। तुलनीय : पंज० जट्ट दा हास्सा भन्न दित्ता पासा।

जाट क्या जाने लौंग का भाव ?—जाट को लौंग के भाव का पता नहीं रहता। (क) छोटे लोग बड़ी चीज़ों के महत्त्व को नहीं समझते। (ख) जिससे जिसका कोई संबंध नहीं होता उसके विषय में उसे कोई जानकारी नहीं होती। (व्यापारी ही किसी वस्तु के भाव को जान सकता है)। तुलनीय : गढ़० हत्या डूम क्या जाण राज द्वारा की खबर; पंज० जट्ट की जान्ने लौंगा दा भा, टका देके चादर दित्ती बिछा।

जाट गांड़ा न दे, भेली दे—जाट गन्ना (गांडा) नहीं देता पर गुड़ भेली दे देता है। मूर्ख व्यक्ति स्वेच्छा से साधारण वस्तु भी नहीं देते पर जब वे विवशता में पड़ जाते हैं तो मूल्यवान वस्तु को भी देने को तैयार हो जाते हैं। तुलनीय : कौर० जाट गांड्डा न दे, भेल्ली दे; पंज० जट्ट गन्ना ना देवे पैली देवे ? ब्रज० जाट गांड़ो न दे, भेली दे।

जाट जाटनी से पार न पावे, बैल के चाबुक मारे—जाट जाटनी से तो जीत नहीं पाता, और बैल को चाबुक मारकर उस पर अपना क्रोध उतारता है। जो व्यक्ति बलवान से हारकर निर्बल पर अपना क्रोध शांत करे उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० जाट जाटणी ने वारी कोनी आवै जणां गधेड़ीरा कान मरोडे : अं० They whip the cat if the mistress does not spin.

जाट जाति गंगा--जितनी ग्रहणशीलता गंगा में है, उतनी ही जाट जाति में।

जाट डूबे मँझधार—जाट बीच धार में डूबता है। जाट कोई भी कार्य सोच-विचार कर नहीं करते इसी कारण बहुत हानि उठाते हैं। जो व्यक्ति बिना सोचे-समझे कोई काम करके हानि उठाता है उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० जाट डूबै धोळी धार; पंज० जट्ट बिच जाके डुबे।

जाट न जाने भला किया, चना न जाने हल बिया—जाट अपने साथ किए गए उपकार का कुछ मूल्य नहीं

समझता और चने के खेत में चाहे जितना भी हल चला लें, फ़सल पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता। जो व्यक्ति स्वार्थी और कृतघ्न हो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० जाट न जाणे गुण किया चिणा न जाणे बेह; पंज० जट् नू पलेदा पता की, छोले नूं हल देण पला की।

जाट मरा जब जानिए जब तेरहीं हो जाय—नीचे देखिए।

जाट मरा तब जानिए जब बरखी हो जाय—जाट बहादुर होता है और उसका मरना सबके मरने की तरह आसान नहीं है। (बरखी—एक प्रकार का मृत्यु संबंधी संस्कार जो मृत्यु के एक वर्ष बाद मरण-तिथि पर किया जाता है)। तुलनीय : हरि० जाट मरा जब जाणिये जब तेहरामी हो; कौर० जाट मरा जिब जाणिये बरस्सोडी होल्ले; पंज० जट्ट अदों मरया मन्नो जदों बरखी हो जावे।

जाट मिताई तब करे, जब सकल मित्र मर जायँ—जाट से तभी मित्रता करनी चाहिए जब सभी मित्र समाप्त हो जाएँ। आशय यह है कि जाट जाति के लोग बड़े मूर्ख होते हैं, उनमे मित्रता नही करनी चाहिए। तुलनीय : ब्रज० वही।

जाट मुआ तब जानिए जब तेरहीं हो जाय—दे० 'जाट मरया तब……'।

जाट रे जाट, तेरे सिर पर खाट, तेली रे तेली तेरे सिर पर कोल्हू—किसी बेतुकी या मूर्खतापूर्ण बात पर कहते हैं। इस पर एक छोटी-सी कहानी है : एक बार की बात है, एक जाट और तेली एक साथ कहीं जा रहे थे। राह चलते बातचीत करते हुए तेली ने ऐसे ही जाट को चिढ़ाने के लिए कह दिया, 'जाट रे जाट तेरे सिर पर खाट।' जाट ने पलटकर कहा, 'तेली रे तेली तेरे सिर पर कोल्हू।' तेली ने कहा, 'तुक तो मिली नहीं।' तो जाट ने उत्तर दिया, 'तुक नहीं मिली तो न सही, बोझों तो मरेगा।' तुलनीय : हरि० जाट रे जाट तिरे सिर पै खाट, तेल्ली रै तेल्ली तिरे सिर पै कोल्हू; पंज० जट्ट वे जट्ट तेरे सिर उत्ते खट, तेली वे तेली तेरे सिर उते कोलू; ब्रज० जाट रे जाट, तेरे मूंड पै खाट, तेली रे तेली तेरे मूड पै कोल्हू।

जाटिन रोवे यारों को, लेके नाम भैया का—दे० 'जट्टी रोवे यारों को……।' तुलनीय : ब्रज०—जाटिनि रोवै यार कू, नाम ले भैया को।

जाड़ राड़ के कवन चिरउरी, कम्मर पर होय पिछउरी—जाड़े के मौसम में यदि कंबल (कम्मर) के साथ चादर (पिछउरी) लगी हो तो ठंड नहीं लगती।

जाड़ा लगे उमरावन को जहँ खोजा शक्कर दूध मलाई—जाड़ा ग़रीबों की अपेक्षा बड़े आदमियों को अधिक सताता है।

जाड़ा और दुश्मन जाने कब आ जाएँ—अर्थात् सर्दी और शत्रु से सदा सतर्क रहना चाहिए, इनकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। तुलनीय : हरि० जाड्डे का अर दुसमन का के बेरा कद्य मारेय ज्या ? पंज० ठंड अते दुसमण दा की पता कदों आ जाण।

जाड़ा गए जड़ावल और जोबन गए भतार—जाड़ा निकल जाने पर ओढ़ना और जवानी बीत जाने पर पति का मिलना व्यर्थ है। अर्थात् उचित समय पर कोई चीज़ न मिले तो बाद में उसका मिलना बेकार है। तुलनीय : भोज० जाड़ा गइल त जड़ावल, जोबन गइल त भतार।

जाड़ा जाय 'दुई से रुई या धुई से—ठंड या सर्दी (जाड़ा) रज़ाई, दो व्यक्तियों के साथ सोने या आग से दूर होती है। तुलनीय : कौर० जाड़ा दुइ से जा, या रुई से; भोज० जाड़ा जा रुई से की दुई से।

जाड़ा नहा कर या खाकर—नहाने और खाने के बाद जाड़ा अधिक लगता है। तुलनीय : पंज० ठंड नहाके यां खाके।'

जाड़ा पूस न जाड़ा माघ, जाड़ा सिली हवा से आय—जब भी ठंडी हवा चलती है, ठंडक मालूम होती है या ठंड लगती है। तुलनीय : हरि० जाड्डा पोह ना माह, जाड्डा सीली बाळ का।

जाड़ा बड़ा बिचारा 'गरमा बड़ा बेशरमा'—जाड़े में लोग ओढ़े-लपेटे रहते हैं और गर्मी में नगे बदन रहते हैं, इसलिए कहते हैं।

जाड़े की हवा और औरत का दिमाग बदलते देर नहीं लगती—जिस प्रकार जाड़े के मौसम में वायु की दिशा शीघ्र बदलती रहती है, उसी प्रकार स्त्रियों का दिमाग़ भी बहुत जल्द बदल जाता है। आशय यह है कि स्त्रियों की बातों पर विश्वास नहीं करना चाहिए। तुलनीय : पंज० सर्दी दी हवा अते जनानी दा दमाग बदल दे देर नईं लगदी।

जाड़े में रुई कि दुई—दे० 'जाड़ा जाय दुई से……।'

जाड़े सूतो भला, बैठो बरखाकाल; गरमी में ऊभो भलो, चोखो करै सुकाल—द्वितीया का चन्द्रमा जाड़े में सोया हुआ, वर्षा में बैठा हुआ और गर्मी में खड़ा शुभ है। आशय

यह है कि द्वितीया के चाँद के उपरोक्त दशा में रहने से समय अच्छा होता है और जन-जीवन सुखमय रहता है।

जाड़ो ठाड़ो गैल में करे हेत की बात, मोरे बैरी तीन हैं रुई पयार अरु आग—जाड़ा कहता है कि मेरे बैरी तीन हैं—रुई, पयार (धान का डंठल) और आग। आशय यह है कि रुई, पुआल (पयार) और आग से ठंड नहीं लगती।

जात का बुलबुल खाय बरगद का गोदा—बुलबुल एक सुन्दर पक्षी है जिसे लोग प्यार से पालते हैं। वह अच्छी चीजों को ही खाता है, पर अब बरगद का गूदा खा रहा है। जब कोई उच्च कुल या उच्च स्तर का व्यक्ति कोई निम्न स्तर का काम करे तब व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

जात का बैरी जात, काठ का बैरी काठ—अपनी ही जाति वालों से हानि होने पर कहते हैं। कुल्हाड़ी में यदि काठ की बेंट न हो तो अकेले कुल्हाड़ी काठ को नहीं काट सकती। तुलनीय : भीली—जाते जात खामेज है; राज० जात जातरो बैरी; गढ़० जात को बैरी जात, काठ को बैरी काठ।

जात की औकात, दूध की बुध—जाति के गुण तथा दोष प्रत्येक मनुष्य में होते है और माँ से ही बालक गुण-दोष सीखते हैं। जब किसी व्यक्ति में उसके माँ-बाप के दोष दिखाई दें तो उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० जात की औकात अर दुद्ध की बुद्ध। (बुध—बुद्धि)।

जात की चमारिन कहे, छुआ नहीं खाती—चमार की स्त्री या बेटी है, पर कहती है मैं किसी का छुआ हुआ भोजन नहीं करती। जब कोई व्यक्ति व्यर्थ का नखरा दिखाता है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० जात री धारण की भींट्योड़ो खाऊं कोनी; मेवा० जात की तो बलाण, मूई थारो भीट्यो नी खाऊं।

जात का बाम्हन करम कसाई—हैं तो जाति के ब्राह्मण पर कर्म क़साई का करते हैं। जब कोई उच्च कुल में पैदा होकर निम्न स्तर का कर्म करे तब कहते है। तुलनीय : छत्तीस० जात के बांभन, करम कसाई; पंज० जात दे बामण करम कसाई दे; ब्रज० जाति कौ बाम्हन करम कसाई कौ।

जात के बुलैये, बराबर बैठेये, कमजात के बुलैये, नीचे बैठेये—जैसा आदमी हो उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए।

जात खाय या चक्की—अन्न या तो बिरादरी वालों के पेट में जाता है या चक्की के पेट में। कई जातियों में बिरादरी को भोज आदि बहुत देने पड़ते हैं।

जात खुदा की बे-ऐब है—अर्थात् ईश्वर निर्दोष है।

जात गँवाई पेट न भरा—जब कोई किसी लालच के कारण निम्न कर्म करे और फिर भी मतलब पूरा न हो तब कहते हैं। तुलनीय : भोज० जात गंवौलों पेट न भरल; पंज० जात गवाई टिड नईं परया।

जा तन लगे सोई तन जाने, दूजा क्या जाने रे भाई—जिस पर दुख पड़ता है वही उसे समझता है, दूसरे को उसका कुछ अनुभव नहीं होता।

जा तन लागी सो तन जाने, कौन जाने पीर पराई—ऊपर देखिए।

जात पाँत पूछे नहिं कोई जनेऊ पहिन के ब्राह्मन होई—ऊपरी दिखावा ही सब देखते हैं, गुणों को कोई नहीं देखता।

जात पाँत, पूछे नहिं कोय, कुर्ती पहिन तिलंगवा होय—पोशाक पहिनने से ही सिपाही हो जाता है चाहे किसी जाति का क्यों न हो। आशय यह है कि लोग किसी की वेश-भूषा से ही उसे सम्मानित या अपमानित समझते हैं, उसकी वास्तविकता की ओर ध्यान नहीं देते।

जात पाँत पूछे ना कोई, हरि को भजे सो हरि का होई—ईश्वर तो प्रेम की अपेक्षा करता है, उसके लिए जाति-पाँति का कोई महत्त्व नहीं। जो सच्चे हृदय से उसकी आराधना करता है उसी से वह ख़ुश रहते हैं चाहे वह किसी जाति का हो। तुलनीय : राज० जात-पांत पूछै नहिं कोय हर कूं भजै स हर को होय; भोज० जात-पात पूछै न कोई हरि के भजौ से हरि के होई; ब्रज० जाति-पांति पूछै नहिं कोय, हरि कूं भजे सो हरि कौ होय।

जात में कौन बड़ा कौन छोटा—जाति में बड़ा-छोटा कोई नहीं है, सब समान हैं। तुलनीय : पंज० जात बिच कौण बड़ा कौण निक्का।

जात में तुरुक और बाजे में हुड़ुक—जातियों में तुर्क की जाति और बाजों में हुड़ुक, ये दोनों शोर मचाने वाले होते हैं।

जात से परजात भली—अपनी जाति से दूसरी जाति के लोग अच्छे होते हैं। अपनी जाति के लोग शत्रुता और दूसरी जाति के लोग मित्रता के अवसर ढूँढ़ा करते हैं। तुलनीय : पंज० जात तो कुजात चंगी।

जात स्वभाव न छुट्टे टाँग उठाकर मुत्ते—कुत्ते को कहते हैं क्योंकि वह सदा टाँग उठाकर मूतता है। जो अपनी बुरी आदत नहीं छोड़ता उसे कहते हैं। तुलनीय : भोज० सोभाव न छूटे टांग उठा के मूते; पंज० जात सवाव नईं

छुटदा लत चुक के मूतरदा ।

जाति-जाति में नव आचारा—जाति-जाति में नए-नए आचार होते हैं ।

जाति न पूछो साधु की पूछि लीजिए ज्ञान—साधुओं से जाति नहीं पूछनी चाहिए अपितु ज्ञान की बातें पूछनी चाहिए । आशय यह है कि किसी की छोटाई-बड़ाई जाति से नहीं अपितु ज्ञान से देखनी चाहिए ।

जाति-पाँति पूछे नाहीं कोय, हरि का भजे सो हरि का होय—दे० 'जात-पाँत पूछे ना कोई···'।

जाति से पति बड़ी होती है—प्रतिष्ठा (पत या पति) जाति से बड़ी होती है । आशय यह है कि किसी व्यक्ति की इज़्ज़त अच्छे कुल में जन्म लेने से नहीं होती बल्कि उसके गुणों से होती है । तुलनीय : मैथ० जतिया सं पतिया बड़ भारी; भोज० जतिया ले बड़ पतिया हऽ; पंज० जात तो पति बड़ी हुंदी है ।

जाति स्वभाव न छूटे, टाँग उठाकर मूते—दे० 'जात स्वभाव न छूटे···'।

जाति स्वभाव न छूटे, टाँग उठाय के मूते—दे० 'जात स्वभाव न छूटे···'।

जादू वह जो सिर पर चढ़कर बोले—किसी अत्यधिक प्रभावशाली व्यक्ति, बात अथवा प्रवृत्ति इत्यादि के संबंध में कहते हैं जिसके प्रभाव से बचना प्रायः असंभव है । तुलनीय : मरा० जादू (सामर्थ्य) ती च खरी, जी प्रगटपणें प्रभाव दाखविते; ब्रज० जादू सिर पै चढ़ि कें बोलं; पंज० जादू उह जिहड़ा सिर उते चड़ के बोले ।

जान का ख़याल नहीं करते, रुपए का ख़याल करते हैं—जो व्यक्ति किसी बड़ी परेशानी में पड़ने पर अथवा बीमार पड़ने पर रुपया-पैसा ख़र्च न करे उसके प्रति कहते हैं । तुलनीय : पंज० जाण दा खयाल नईं रखदे रपैया दा खयाल रखदे हन ।

जान का मोह नहीं करते रुपये का मोह करते हैं—ऊपर देखिए ।

जानकार को सदा आफ़त—बुद्धिमान या गुणी व्यक्ति सदा परेशान रहता है क्योंकि उसे कोई न कोई घेरे ही रहता है । तुलनीय : मेवा० जांण वो हाण ।

जान का सदक़ा माल, इज़्ज़त का सदक़ा गला—धन से जान की और जान से इज़्ज़त की रक्षा करनी चाहिए । अर्थात् इज़्ज़त जीवन से भी अधिक मूल्यवान है ।

जान की जान गई, ईमान भी गया—जब किसी व्यक्ति के सामान की रक्षा में किसी की जान (प्राण) चली जाय और मालिक (सामान का मालिक) उलटे उस पर चोरी का आरोप भी लगाए तब ऐसा कहते हैं । तुलनीय : पंज० जाण दी जाण गयी ईमान वी गया ।

जान के लाले पड़ गए—जीना मुश्किल हो गया । जब किसी व्यक्ति को लोग बहुत परेशान करते हैं तब वह कहता है । तुलनीय : अव० जान कै लाला पड़िगा; हरि० ज्याण के लाले पड़गे; पंज० जाण दे लाले पै गये ।

जान के साथ जेवड़ा—जब तक शरीर में जान है, यह फाँसी मेरे गले से छूटेगी नहीं । (क) जब किसी व्यक्ति को कोई असाध्य रोग हो जाता है तब वह ऐसा कहता है । (ख) जब किसी व्यक्ति को झगड़ालू स्वभाव की पत्नी मिल जाती है तब भी वह ऐसा कहता है । तुलनीय : हरि० जान के साथ जेवड़ा । (जेवड़ा = रस्सी) ।

जान गए बम्हनई के लच्छन, बाप का नाम फ़िरोज़ अली—मैं आपके ब्राह्मणत्व को इसी से समझ गया कि आपके पिता का नाम फ़िरोज़ अली है । जब कोई बुरा कर्म करते हुए भी अपने को महान बतलाए या जब कोई नीच कुल का होते हुए भी अपने को उच्च कुल का बतलाए तब व्यंग्य में ऐसा कहते हैं । तुलनीय : अव० जानिलीन बभनई के लच्छन बाप के नाम फ़िरोज अली ।

जान जाय ईमान न जाय—जान चली जाय, पर विश्वास नहीं जाना चाहिए । ईमानदार व्यक्ति का कथन । तुलनीय : पंज० जान जावे ईमान न जावे ।

जान जाय तो जाय, ज़बान न जाय—ज़बान का मूल्य प्राण से भी बढ़कर है । रामचरित् मानस की अर्द्धाली भी इसी उक्ति को पुष्ट करती है—'प्राण जाइ पर वचन न जाई' । तुलनीय : भोज० जान जाय त जाय बाकी जबान न जाय; पंज० जाण जावे ते जावे पर जबान नां जावे ।

जान जाय पर माल न जाय—(क) कृपण व्यक्ति के प्रति व्यंग्य में कहते हैं जो कष्ट सहते हुए भी धन को ख़र्च नहीं करता । (ख) अपने स्वाभिमान पर गर्व करने वाले व्यक्ति कहते है कि प्राण भले चले जायें, पर मेरी सम्पत्ति कोई छीनकर न ले जा सके । तुलनीय : गढ़० जान जौ पर पैसा निजौ; पंज० जाण जावे पर माल ना जावे ।

जान जाय पर सच्च न बोले—प्राण चाहे देने पड़े किंतु सत्य कभी नहीं बोलूंगा जो व्यक्ति सदा झूठ बोले उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं । तुलनीय : भीली—वणां ने मोत ही वाड़ो दड़ो ते हाच नी बोले; पंज० जाण जावे पर सच्च ना बोले ।

जान जाय माल न जाय—दे० 'जान जाय पर माल न

जाय'।

जानता चोर गाँव उजाड़े—जो घर की स्थिति से भली प्रकार परिचित है वह बुरी तरह परेशान कर सकता है।

जान न पहचान, चार महीने साझे में रहने दो—बिना किसी पूर्व परिचय या संबंध के जो व्यक्ति प्रगाढ़ मित्रता जताए या कोई लाभ उठाना चाहे तो उसके प्रति व्यंग्य से ऐसा कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० जान न पहचान छै महीना साझें ई राखिलै।

जान न पहचान बड़ी खाला सलाम—कोई परिचय नही है पर कहते हैं, बड़ी मौसीजी (खाला) प्रणाम जब कोई बिना किसी पूर्व परिचय के किसी से संबंध जोड़े या मित्रता की बातें करें तब उसके प्रति व्यंग्य मे ऐसा कहते हैं। तुलनीय : कौर० जान न पहचान, बड़ी खाला सै सलाम; माल० जाण नी पेछाण नी ने खाला बीबी सलाम; अव० जान न पहिचान बड़ी बीबी सलाम; भोज० ओलावे न बोलावे दउर दउर मंगिये टीके।

जान न पहचान बड़ी बीबी सलाम—ऊपर देखिए।

जान न पहचान बड़े मियाँ सलाम—दे० 'जान न पहचान बड़ी खाला सलाम।'

जान न पहचान मौसी-मौसी करे—दे० 'जान न पहचान बड़ी खाला सलाम'। तुलनीय : भोज० चिन्हल न जानल मंउसी पा लागी।

जान न पहचान हम मेहमान—जब स्वार्थ सिद्ध करने वाले ज़बर्दस्ती किसी से सम्बन्ध जोड़ते हैं तो उनको ध्यान में रखकर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० जाण न पछाण मैं तेरा मेहमान (परौणा)।

जान न पहचान, हथियार घर में रख दो—बिना किसी पूर्व परिचय के जब कोई किसी से परिचित जैसा व्यवहार करे तब ऐसा कहते हैं।

जानन वाले जानिए मूरख मन पछिताय, करनी भूली आपनी औरो दोष लगाय—मूर्ख व्यक्ति बिना सोचे-समझे काम करता है और बिगड़ जाने पर दूसरों को दोष लगाता तथा मन में पछताता रहता है।

जान बची और लाखों पाये—(क) जब किसी आलसी आदमी को किसी काम से छुटकारा मिल जाय तब कहते हैं। (ख) किसी विपत्ति में फँसकर सकुशल बच निकलने पर भी कहा जाता है। तुलनीय : मरा० प्राण वांचले लाखों रुपये मिळविले; राज० कुसलां आया धाड़वी धाड़े लारे धूड़; अव० जान बची लाखों पाए, घर के बुद्धु घर लौट आए; तेलु० ब्रति कुंटे बलुसाकु तिन ब्रतुक वच्चु।

जान बची लाखों पाए लौट के बुद्धू घर को आए—ऊपर देखिए।

जान-बूझकर कुएँ में गिरे उसे कौन बचाए—जो व्यक्ति जान-बूझकर अपनी हानि करे या मुसीबत मोल ले उसे कोई नहीं बचा सकता। तुलनीय : अव० जान बूझकर कुआं मा गिरै; ब्रज० वही; पंज० जाण बुझके खू बिच डिगे उसनूं कौण बचावे।

जान-बूझकर कुएँ में ढकेल दिया—(क) जब कोई जानते हुए भी अयोग्य वर के साथ लड़की की शादी कर देता है तब भी ऐसा कहते हैं। (ख) जब कोई जान-बूझकर किसी को परेशानी में फँसा देता है तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : हरि० जाण बूझ के कुए म धक्का देणा; पंज० जाण बुझ के खू विच सुट दिता।

जान-बूझ के ले कंगाली, उसकी हालत कौन संभाली—जो व्यक्ति जान-बूझकर निर्धनता चाहे उसे कौन धनवान बना सकता है? अर्थात् जो व्यक्ति पैसे को पानी की तरह बहाए उसे कुबेर भी धनी नहीं बना सकते। तुलनीय : भीली—जाणी ने जोगी थाये, जणा नो हूं करवो।

जान मारे बानियाँ, पहिचान मारे चोर—बनिया जाने-पहचाने आदमियों को अधिक ठगता है क्योंकि वे संकोचवश कुछ नहीं कहते और चोर भेद मिलने पर ही चोरी करता है। तुलनीय : मरा० ओळखीच्या गिर हाइकाला वाणी लुबाडतो; राज० जाण मारै बणियो पिछाण मारै चोर; हरि० जाण मारै बाणिया पिछाणा मारै जाट।

जान में जान आ गई—संतोष हुआ या तसल्ली हुई। जब किसी व्यक्ति को किसी परेशानी से मुक्ति मिल जाती है तब वह ऐसा कहता है। तुलनीय : पंज० जाण बिच जाण आयी।

जानवरों में कौआ और आदमियों में नौआ—जानवरों में कौआ और मनुष्यों मे नाई बहुत चालाक होते है। तुलनीय : मरा० पक्ष्यांत काऊ नि मनुष्यांत नाऊ; अव० पसुअन मन कौआ मनई मा नऊआ; ब्रज० जिनावरन में कौआ आदिमीन में नोआ; पंज० जानवरां बिच काँ अते मनुखां बिच नाई।

जान सबको प्यारी है—अपनी जान प्रत्येक जीव को प्यारी है। जब कोई किसी जीव को सताता है तब उसको उपदेश देने के लिए कहते हैं। तुलनीय : अव० जान सब का पियारी है; पंज० जाण सारियां नूं पयारी है।

जान सब में बराबर है—किसी जीव को सताने पर

उपदेश रूप में कहा जाता है। दूसरों को या अपने से छोटों को अपने समान ही समझना चाहिए क्योंकि सबके दुःख-दर्द एक जैसे ही होते हैं। तुलनीय : पंज० जाण सब बिच इको जिही है।

जान समझकर कुएँ में गिरे—दे० 'जान बूझकर कुएँ में गिरे···'।

जान समझकर कुएँ में ढकेल दिया—दे० 'जान बूझकर कुएँ में···'।

जान से जहान है—दे० 'जान है तो जहान है।'

जान से हाथ धो बैठे हैं बचने की या जीने की आशा नहीं है। तुलनीय : अव० जानेउ से हाथ धोइ बैइठे; पंज० जाण तो हत्थ तो बैठे हन।

जान है तो जहान है— जब तक जीवित है तभी तक संसार है, मृत्यु पश्चात् संसार किसी काम नहीं आता। जब कोई व्यक्ति अपनी जान की परवाह न करके कष्टसाध्य अथवा संकटपूर्ण कार्य करता है तो उसे समझाने के लिए कहते है। तुलनीय : पंज० जाण है तां जहाण है।

जाना अपने बस, आना पराए बस— जाने के लिए जब चाहे तब जा सकते हैं, पर आना तभी हो सकता है जब दूसरे आने दें। जब कोई अतिथि आने न पाये तब कहते है। तुलनीय : मरा० जाणें आपल्या हातीं, परतणे दुसऱ्याच्या हाती; गढ़० जाणो अपणा थया, औणो विरणा थया।

जाना मारे बनिया पहचाना मारे जाट— बनिए अपने परिचित लोगों को अधिक ठगते हैं और जाट अपने परिचित लोगों को ही कष्ट पहुँचाते हैं। आशय यह है कि बनिया और जाट किसी के मित्र नहीं होते। तुलनीय : हरि० जाण्य मारै बाणिया, पिछाण्य मारै जाट।

जाना है रहना नहीं, मोहिं अंदेशा और; जगह बनाई है नहीं, बैठोगे किस ठौर—हर एक मनुष्य की मृत्यु निश्चित है, इसलिए परलोक के लिए अच्छा कार्य करके पुण्यरूप स्थान सबको बना लेना चाहिए। माया में लिप्त व्यक्तियों को ईश्वर की भक्ति करने के लिए उपदेश दिया जाता है।

जानि न जाय निशाचर माया—दुष्टों या राक्षसों की माया का पता नहीं चलता। किसी दुष्ट मनुष्य का भेद न जान पाने पर कहा जाता है। तुलनीय : मरा० राक्षसांची माया कांही कळत नाहीं; अव० जानि न जाय निसाचर माया।

जानि न जाय निसाचर माया—ऊपर देखिए।

जानि न जांहि निसाचर माया—ऊपर देखिए।

जानि लीन बंभनई लच्छन बाप का नाम फिरोज अली—दे० 'जान गए बम्हनई के लच्छन···'।

जानी न सुनी मौसी मौसी करी—दे० 'जान न पहचान बड़ी खाला···'।

जाने ऊख मिठास को, जब मुख नीम चबाय—ऊख की मिठास का सच्चा अनुभव तभी हो सकता है जब कोई कड़वी चीज़ का भी स्वाद ले चुका हो। अर्थात् सुख का आनंद वही ले सकता है जो दुःख का अनुभव कर चुका हो। तुलनीय : ब्रज० जाने ईख मिठास कूं, जब मुख नीम चबाय।

जाने का आना है—तुम किसी के घर जाओगे तो वह भी तुम्हारे घर आवेगा। जो मनुष्य शादी या ग़मी में किसी के घर नहीं जाता और उसके यहाँ काम पड़ने पर कोई नहीं आता तब कहते हैं।

जाने के न सुने के भरे के हुंकारी—किसी बात को बिना समझे-बूझे उसका समर्थन करने पर कहते हैं।

जानेगी चिलम जिस पर चढ़ेगी अंगारी जिस पर दुःख पड़ता है वही उसका कष्ट जानता है, दूसरा नहीं। तुलनीय : भोज० जाने ली चिलम जिनका पर चढ़ले अंगारी।

जानें न बूझें कठौती से जूझें—मूर्ख व्यक्ति के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं जब वह बिना सोचे-समझे कोई ऊटपटांग काम करता है। तुलनीय : अव० जानै न बूझै कठउती ते जूझै; अं० A bad workman quarrels with his tools.

जाने मारिया बनिया अनजान मारे चोर— बनिया परिचित व्यक्ति को ठगता है और चोर अपरिचित का माल चुराता है। बनियों के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : कौर० जाणा मारै बाणिया, पिछाण मारै चोर।

जाने मारे बनिया पहचाने मारे चोर—बनिया अपने ही लोगों को ठगता है तथा चोर पहचानने वाले का ही माल चुराता है।

जाने वाला पैसा मुट्ठी से भी निकल जाता है—(क) जाने वाला धन हाथ में लिये रहने पर भी चला जाता है यानी उसे किसी भी उपाय से रोका नहीं जा सकता। (ख) घटित होने वाली घटना लाख उपाय के बावजूद भी घटित होकर रहती है। तुलनीय : पंज० जाण वाला पैंहा मुठ बिचों वी निकल जांदा है।

जाने वाला बताकर नहीं जाता—(क) मरने वाला बताकर नहीं मरता, यानी मृत्यु का किसी को पता नहीं कब आ जाए। (ख) किसी का कुछ लेकर भागनेवाला बतलाता नहीं कि कब और कहाँ जाएगा।

जाने वाला भी कभी लौटा है?—मृत्यु के पश्चात् कोई

जीवित नहीं हुआ। जो मर गया सो मर गया उसकी चिंता करना व्यर्थ है। तुलनीय : भीली—गिया जी पाचा नी आवणा ना; पंज० जाण वाला कदी मुड़या है।

जाने वाले के हजार रास्ते, ढूंढ़ने वाले का एक—भागने वाला न मालूम किस रास्ते से गया होगा, पर ढूंढ़ने वाला एक ही रास्ता देखता है। आशय यह है कि किसी काम को न करने वाले अनेक बहाना बना लेते हैं। तुलनीय : अव० जाय कै रास्ता हजार आवै कै एक; पंज० जाण वाले नूं हजार राह लब्बण वाले नूं इक।

जाने वाले को कोई नहीं रोक पाता—जिसे जाना है वह किसी के रोके नहीं रुकता। (क) जो व्यक्ति कहीं जाने का दृढ़ निश्चय कर लेता है उसे कोई रोक नहीं पाता। (ख) मरने वाले को बचाने के लाख प्रयत्न किए जायें फिर भी वह नहीं बचता। तुलनीय : भीली—जावानूं जण पूठे अजार कला करो, वो रेवानूंजी; पंज० जाण वाले नूं कोई रोक नई सकदा; ब्रज० जाइबे बारे ऐ कौन रोकि सकै।

जाने से झगड़ा, आने से रगड़ा—जाने पर भी झगड़ा और आने पर भी झगड़ा। जिस स्थान पर सदा लड़ाई-झगडा होता रहता हो वहाँ के लिए कहते हैं। ऐसे स्थान पर जाना उचित नहीं है। तुलनीय : भीली—जावानों ते झगड़ो आवण नो रगड़ो; पंज० जान नाल लड़ाई आण नाल रगड़ाई।

जाने सो ताने—जो बात को जानता है वही खीचता है या आगे बढ़ाता है। अर्थात् जानकार ही बात या काम को अन्त तक ले जाता है।

जाने सो बूझे कहा, आदि अंत बिरतंत—समझदार इशारे से ही आदि से अंत तक बात समझ लेता है अर्थात् बुद्धिमान थोड़ा बताने पर ही सब समझ लेते हैं।

जानो नाहिं जा गाँव को, ताकि पूछ न बाट—जिस गाँव को जाना नही है उसकी बाट (राह) नहीं पूछनी चाहिए। व्यर्थ में झंझट में फँसने वाले पर यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : पंज० जिस पिंड नईं जाणा ओदों राह क्यों पुछ्छनी; ब्रज० जा गाम कूँ जानो नायें वाको रस्ता पूछिबे ते कहा लाभ।

जाप की ओट में पाप—पाखंडी संन्यासियों के प्रति कहते हैं जो दिखावे के लिए तो पूजा-पाठ करते हैं पर होते हैं व्यभिचारी।

जाप के बिरते पाप—ऊपर देखिए।

जाफ़र जटल्ली ने ऐसा किया, पिस्सू को मलमल कर भैंस किया—जो छोटी-सी बात को बहुत चढ़ा-बढ़ाकर कहता है उस पर कहते हैं।

जा बिधि राखे राम ताही बिध रहिए—ईश्वर जिस तरह से राखे उसी तरह रहना चाहिए। आशय यह है कि विपत्ति में धैर्य एवं साहस से काम लेना चाहिए।

जा मन होय मलीन, सो न सहे पर संपदा—जिसका मन शुद्ध नही है वह दूसरे की उन्नति को नहीं देख सकता। किसी की प्रगति या उन्नति को देखकर ईर्ष्या करने वाले के प्रति कहते हैं।

जामाता दशमोग्रहः—जिस प्रकार नौ ग्रह विमुख होने पर कष्टदायी होते हैं, वैसे ही दामाद दसवां ग्रह है। जब कोई दामाद से कष्ट पाता है तब कहता है।

जामिन दुनिया पाप है तिरिया महापाप, दोनों को तू फूंक दे नाम निरंजन जाप—संसार में रहना पाप है और स्त्री से सम्बन्ध रखना महापाप, इसलिए इन दोनों को छोड़कर भगवान का नाम जपना चाहिए। सांसारिक विषय-वासनाओं से दूर रहकर ईश्वर की भक्ति करनी चाहिए, ऐसा जामिन का विचार है।

जामिन दे या दिलाए—किसी की जमानत तभी ले जब दूसरा न दे सके और स्वयं देने की सामर्थ्य रखे। तुलनीय : ब्रज० जमान दे कै दिबावै।

जामिन मत हो चोर का और सींग पकड़ मत ढोर का—चोर की जमानत नही लेनी चाहिए, क्योंकि स्वयं की बदनामी होती है और पशु (ढोर) का सीग नही पकड़ना चाहिए क्योंकि ऐसा करने पर चोट लगने का भय रहता है। आशय यह है कि बुरे लोगों से दूर रहने में ही भलाई है।

जामिन होना, धन का खोना—जमानतदार होने पर धन की बर्बादी होती है। आशय यह है कि किसी की जमानत लेना ठीक नहीं। तुलनीय : गढ़० हूँ भड़र द्यू घरो घर।

जामे जित्ती बुद्धि है उत्ती देय बताय, वाको बुरा न मानिए और कहाँ ते लाय—जब कोई व्यक्ति मूर्खतापूर्ण बात करे तो उसकी बात का बुरा नही मानना चाहिए क्योंकि जिसके पास जितनी बुद्धि होती है वह उतनी ही बात करता है। आशय यह है कि मूर्खों की बात पर ध्यान नहीं देना चाहिए।

जायें उत्तर बतावें दक्खिन—कहे कुछ और करे कुछ ऐसे धोखेबाज व्यक्ति के लिए कहते हैं।

जाय ईमान रहे सब कुछ—(क) मरने के बाद ईमान ही साथ जाता है शेष सभी वस्तुएँ यहीं रह जाती हैं। (ख) केवल ईमान के जाने से अगर सब कुछ बच जाता है तो जाने दो। धन या पद के सम्मुख जो मर्यादा को कोई महत्त्व नहीं देते उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : पंज० जांदा

ईमान रैंदा सब कुछ।

जाय ए-उस्ताद खाली---चाहे शिष्य कितना ही प्रतिभाशाली हो फिर भी गुरु का स्थान नहीं ले सकता। जहाँ कोई व्यक्ति कोई अच्छा प्रस्ताव प्रस्तुत करे वहाँ कहते हैं---हम आपके शिष्य है अब आप ही की कमर बाक़ी थी।

जायगा साहू का, रहेगा साहू का---हानि-लाभ सेठ या मालिक (साहू) का होगा, मुझे इससे क्या मतलब ? जो व्यक्ति किसी के कार्य को लापरवाही से करते हैं उनके प्रति कहते हैं।

जाय जान रहे ईमान---सज्जन व्यक्ति ईमान के आगे जान की परवाह नहीं करते। आशय यह है कि मर्यादा प्राण से भी बढ़कर होती है। तुलनीय : राज० जाय जान रह ईमान।

जाय नेपाल साथ कपाल - मनुष्य कहीं भी जाय उसका भाग्य हमेशा उसके साथ रहता है।

जाय लाख रहे साख- लाखों का नुक़सान हो जाय पर इज़्ज़त (साख) बनी रहे। आशय यह है कि बड़ी से बड़ी हानि उठाकर भी अपनी मर्यादा की रक्षा करनी चाहिए। तुलनीय : हरि० जाओ लाख, रहो साख; राज० जाय लाख रह साख; मरा० लाखाची हानि झाली तरी पतजाता काम नये; मल० नल्लपेरु धनत्तेक्काल् नळनाकुन्नु; अं० A good name is better than bags of gold.

जाया उसका पूत, काता उसका सूत---जिसने जन्म दिया होगा उसी का पुत्र होगा और जिसने काता होगा उसी का सूत होगा। परिश्रम करने वाले को ही लाभ होता है, दूसरे को उसे अपना न बनाना चाहिए। तुलनीय : मेवा० जायां जीं का पूत र कात्या जीं का सूत।

जाये की पीर माँ को होती है---प्रसव पीड़ा का अनुभव माँ को होता है। (क) कष्ट जिस पर पड़ता है वही उसे जानता है। (ख) जो जिस वस्तु को पैदा करता है, उसकी क्षति पर उसे जितना दुःख होना है उतना किसी अन्य को नहीं। (ग) माँ अपनी सन्तान को कष्ट में देखकर बहुत परेशान होती है या दुखी होती है। तुलनीय : पंज० जम्मन दी पीड़ माँ नूं हुंदी है।

जार खावे मार---परस्त्रीगामी (जार) की दुर्दशा होती है।

ज़ालिम का जोर सिर पर---अत्याचारी (ज़ालिम) से सभी डरते हैं, उसके सामने किसी की नहीं चलती।

ज़ालिम का पैंड़ा ही निराला है---अत्याचारी (ज़ालिम) का रास्ता (पैंडा) निराला होता है। आशय यह है कि अत्याचारी नियम-विरुद्ध ही काम करता है।

ज़ालिम की उम्र कोता---अत्याचारी की उम्र थोड़ी होती है, क्योंकि मालूम नहीं लोग उसे कब मार डालें। (कोता = छोटा या थोड़ा)।

ज़ालिम की जड़ भी उजड़ जाती है---अत्याचारी या अन्यायी (ज़ालिम) भी नष्ट हो जाता है, अर्थात् कोई अमर नहीं है।

ज़ालिम की रस्सी दराज़ है - ज़ालिम अर्थात् अत्याचारी की उम्र बड़ी होती है क्योंकि उससे सभी डरते हैं, कोई उसे आसानी से नहीं मार सकता।

ज़ालिम मर जाता है, पर क़ानून छोड़ जाता है---अत्याचारी तो मर जाता है किन्तु उसके बनाए हुए कठोर क़ानून यहीं रह जाते हैं। तुलनीय : राज० जालम गुजर ज्याय जुलम रह जाय; पंज० जालिम मर जांदा है पर कानून छड जांदा है।

जा विधि राखे राम, ताही विधि रहिए---ईश्वर जैसे रखे उसी तरह रहना चाहिए। आशय यह है कि दुःख-सुख जो भी आवे धैर्य एवं संतोष से काम लेना चाहिए।

जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी, सो नृप अवसि नरक अधिकारी--- जिसके राज्य में प्रजा दुखी रहती है, वह राजा नरकगामी होता है। जिस शासक से प्रजा संतुष्ट न हो, वह अच्छा नहीं समझा जाता और उसे कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

जा सूली पर चढ़ जा---जब कोई किसी के बहकावे में आकर ग़लत या ख़तरनाक काम करने को तैयार हो जाय तो उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० जा सूरी पै चढ़ि जा।

जासे जाको काम सोई ताको राम---जिससे जिसके कार्य की सिद्धि हो वही उसके लिए ईश्वर है। आशय यह है कि जिससे जिसका मतलब हल होता है वही उसके लिए सब कुछ होता है।

जासो निबहै जीविका, करिए सो अभ्यास; वेश्या पालै सील तो कैसे पूरै आस---जिस कार्य से भरण-पोषण हो वही कार्य करना चाहिए। उसमें संकोच करने की कोई ज़रूरत नहीं। जिस प्रकार यदि वेश्या संकोच करे या मर्यादा का ध्यान रखे तो उसका काम नहीं चल सकता। जिस कार्य से जिसे लाभ हो उसे वही कार्य करना चाहिए।

ज़ाहिद का क्या ख़ुदा है, हमारा ख़ुदा नहीं---अर्थात् ईश्वर सबका है। (ज़ाहिद = भक्त)।

जाहि निकारो गेह ते, कस न भेद कहि देय—जिसे घर से निकाला जायगा वह घर का भेद दूसरों को अवश्य बताएगा या घर की बुराई करेगा। आपस की फूट नुक़सानदेह होती है।

ज़ाहिर रहमान का बातिन शैतान का—देखने में भगवान का भक्त लगता है, पर अन्दर से है शैतान। देखने में सीधे-सादे पर मन से दुष्ट व्यक्तियों के प्रति ऐसा कहते हैं।

जाहिल फ़क़ीर शैतान का टट्टू—मूर्ख (जाहिल) साधु के सिर पर सदा शैतान सवार रहता है। अर्थात् वह हमेशा उलटा-पुलटा काम करता है, या इधर-उधर घूमता रहता है।

जाही ते कछु पाइए करिए ताको आश—जिससे कुछ मिले उसी से आश रखनी चाहिए।

जाही बिधि राखै राम ताही विधि रहिए—दे० 'जा विधि राखे राम……'।

जिन्दगी-भर का कोढ़ एक दिन में नहीं छूटता—अर्थात् (क) एक दिन पुण्य-कर्म करने से समस्त जीवन के पापों का शमन नहीं होता। (ख) लंबे समय से बिगड़ा काम थोड़े प्रयास से नहीं बनता। तुलनीय : भोज० जनम-भर के पाप एक दिन में नां छूटे; मग० एके अवतार से कोढ़ न जाहे; पंज० जिंदगी पर दा कोड़ इक दिन विच नई छुटदा।

जिअत-जिअत के सब संगाती—जीते जी के ही सब साथी होते हैं। अर्थात् मरना अकेले ही पड़ता है, इसलिए दूसरों या सगी-साथियों के लिए बुरे काम नहीं करने चाहिए। तुलनीय : पंज० जीदे जी सारे संगी; ब्रज० जिदे के सब साथी हैं।

जिअ बिनु देह नदी बिन नारी, तइसिअ नाथ पुरुष बिनु नारी—जिस प्रकार बिना प्राण के शरीर की और बिना जल के नदी की कोई क़ीमत नहीं होती, उसी प्रकार बिना पति के स्त्री का कोई महत्त्व नहीं होता। आशय यह है कि पति के साथ रहने पर ही स्त्री का जीवन सुखमय होता है।

जिए से खेले फाग, मरे सो लेखे लाग—जो जीवित हैं वही होली (फाग) खेलेंगे, जो मर गए वे तो एक किनारे हो गए। अब उनकी चिंता करना व्यर्थ है। जो व्यर्थ में भूतकाल की बातों के चक्कर में पड़े रहते हैं उनके प्रति कहते हैं।

जिओ मेरे भैया, घर बर भोजइया—भाई जीवित रहेगा तो भाभी भी मिल जाएगी, अर्थात् साधन रहेगा तो कार्य सम्पन्न हो जाएगा।

जिगर जिगर है, दिगर दिगर है—अपना रिश्तेदार अपना ही है, पराया पराया होता है।

जिजमान चाहे स्वर्ग को जाए, चाहे नरक को; मुझे दही पूड़ी से काम—स्वार्थी व्यक्ति के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं जिसे अपने स्वार्थ के आगे दूसरे के हानि-लाभ की कोई चिंता नहीं रहती।

जिठानी का भैंसा अगड़धों धों—जिठानी का लड़का हमेशा मोटा-ताज़ा रहता है, क्योंकि घर में जिठानी की अधिक चलती है।

जिण दिन नीली बले जवासी, मांडे राड सांपरी मासी; बादल रहे रातरा बासी, तो जानो चौकस मेह आसी—जिस दिन जवास के हरे पौधे सूख जायँ, बिल्लियाँ लड़ें और बादल रात-भर घिरे रहें तो वर्षा अवश्य होती है।

जितना अंधा वटे पाड़ा चबा जाय—अंधा व्यक्ति रस्सी बट रहा है। जितना बटता है पाड़ा (भैंस का बच्चा) उसे चबा जाता है। संयुक्त परिवार में जहाँ एक आदमी कमाता है तथा सभी मिलकर खा जाते हैं, ऐसा कहा जाता है। मूर्ख या सीधा व्यक्ति परिश्रम करे तथा अन्य उसे चट कर जाएँ तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० जेता अंधरऊ बरै ओता पड़ऊ चबा जाय; भोज० जेतना अन्हरा बरै, पड़वा चबा जाए।

जितना आटा उतना नमक—(क) मूर्खतापूर्ण कार्य करने वाले को कहते हैं, क्योंकि आटा और नमक बराबर मिला देने से आटा कड़वा हो जाता है। (ख) आटे में उतना ही नमक मिलाना चाहिए कि किसी को बुरा न लगे। अर्थात् झूठ उतना ही बोलना चाहिए जितना किसी को बुरा न लगे या पता न चले। (ग) लाभ उतना ही लेना चाहिए जितनी गुंजाइश हो, अधिक लाभ लेने से दुकान-दारी टूट जाती है।

जितना ऊपर उतना नीचे—यह जितना ज़मीन के ऊपर है उतना ही ज़मीन के नीचे भी, अर्थात् बहुत चालाक है। चतुर व्यक्ति के प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० जितो बारे जितो ही मांय; पंज० जिन्ना उते उन्ना थल्ले।

जितना ओढ़ना उतना ठंड—संम्पन्न लोग जितना ही पहनते-ओढ़ते हैं उन्हें उतनी ही ठंड लगती है, क्योंकि वे ठंड में रहने के अभ्यस्त नहीं होते। लेकिन ग़रीब आदमी जिसके पास पहनने-ओढ़ने को कपड़ों का अभाव रहता है, ठंड को सहने का अभ्यस्त होता है, इसलिए उसे अमीर की

अपेक्षा कम ठंड महसूस होती है। आशय यह है कि जिसे जितनी अधिक सुविधाएँ मिलती हैं वह उतना ही अधिक सुकुमार होता है। तुलनीय : छत्तीस० जतके ओढ़ना, ततके जाड़; पंज० जिन्ना ओडा उन्नी ठंड।

जितना कमाया उतना खाया—(क) उन व्यक्तियों के प्रति कहते हैं जो अपनी सारी आय खर्च कर देते हैं, कुछ भी बचा कर नहीं रखते और आवश्यकता पड़ने पर दूसरों से क़र्ज़ मांगने के लिए तत्पर रहते हैं। (ख) निर्धन मनुष्य भी अपने प्रति ऐसा कहते हैं क्योंकि अपनी कम आय के कारण वे कुछ बचा नही सकते। तुलनीय : गढ़० जो माई आई रया माई खाई; पंज० जिन्ना कमाया उन्ना खांदा।

जितना करम में लिखा है उतना कहीं नहीं जाता—भाग्य में जो लिखा है वह अवश्य मिलेगा। भाग्यवादी कहते हैं।

जितना करे तंगा-तुरसी उतना खा जाय ढोरे सुरसी—जितनी कंजूसी (तंगा-तुरसी) करते हैं उतनी तो कीड़े आदि खा जाते है। जब कोई कंजूसी करके धन इकट्ठा करे और दूसरे लोग उसे समाप्त कर दें तो कहते हैं। (ढोरे = ढोर का बहुवचन। अन्न को हानि पहुँचाने वाले एक प्रकार के कीड़े। सुरसी = यह भी अन्न को क्षति पहुँचाने वाले एक प्रकार के कीड़े होते हैं)। तुलनीय : कौर० जितणा करें तांगा-तुलसी, उस्नें खा जां ढोरे सुल्सी।

जितना कहा छुपकर आओ, उतना ढोल बजा कर आए—कहा था छिपकर आने के लिए किन्तु आ रहे हैं शोर मचाते हुए। (क) जो व्यक्ति सही ढंग और साधनों से काम न करे उसके प्रति कहते हैं। (ख) मूर्खों के प्रति भी कहते है जो किसी की नेक सलाह को नही मानते। तुलनीय : मेवा० छाने बुलाया ने ऊंट पे चढ़ आया।

जितना खाय उतना ललाय—छोटे बच्चों को कहते हैं जिन्हें खूब खाने के बाद भी संतोष नही होता। वे झट एक के बाद दूसरी वस्तु की माँग करने लगते हैं। या किसी को कुछ खाते देख वहाँ पहुँच जाते है या उसकी माग करने लगते हैं। तुलनीय : बुंद० जित्तो खात उत्त(औ) ई ललात; बंग० जत खाय तत ललाय।

जितना खाय सारी बारात, उतना खाय दूल्हे का बाप—(क) जब किसी एक या साधारण व्यक्ति पर बहुत अधिक खर्च हो जाय तो कहते हैं। (ख) बहुत खाने वाले के प्रति भी ऐसा कहते हैं।

जितना गरमाएगा उतना ही बरसेगा—(क) जितनी ही उमस होती हो उतना ही पानी बरसता है। (ख) मनुष्य को जितना ही अधिक क्रोध आता है, उतना ही अधिक वह उलटा-सीधा बोलता है। तुलनीय : पंज० जिन्ना गरमायेंगा उन्ना ही वरेंगा; ब्रज० जितनो गरमावैगो उतना ही बरसैगो।

जितना गुड़ उतना मीठा—(क) किसी कार्य पर जितना अधिक व्यय किया जाएगा वह उतना ही अच्छा होगा। (ख) जितना ही अधिक रुपया लगाया जाएगा उतनी ही अच्छी वस्तु मिलेगी। (ग) जितना अधिक श्रम किया जाएगा उतनी ही अच्छी सफलता मिलेगी।

जितना गुड़ डालोगे उतना मीठा होगा—ऊपर देखिए। तुलनीय : भोज० जतने गुर डारी ओतने मीठ होई; अव० जेतना गुड़ डारै ओतनै मीठ होय; राज० जितो गुड़ घालसो जितो ही मीठो हुसी; हरि० जितणां गुड़ गेरोगे उतणां ऐ मीट्ठा होगा; गढ़० जनो गुड़ तनो मिट्ठो; माल० जतरो गोर नाखे नतरो मीठो वे; मरा० जितका गूळ घालावा तितकें गोड़ होत जातें; बुंद० जित्तो गुर डारो उत्तोई मीठो होत; बंग० जत मेघ तत वृष्टि, जत गुड़ तत मिष्टि; पंज० जिन्ना गुड़ उन्ना मिट्ठा; ब्रज० जितनों गुर उतनों ई मीठौ।

जितना गुड़ पड़ेगा उतना मीठा होगा—दे० 'जितना गुड़ उतना मीठा।' तुलनीय : छत्तीस० जतके गुर ततके मीठ।

जितना घी उतना स्वाद—दे० 'जितना गुड़ उतना मीठा।' तुलनीय : राज० घी घाले जितो (जिसो) ही स्वाद।

जितना चढ़े उतना उतरे—मनुष्य जितनी उन्नति करता है उसकी उतनी ही अवनति भी होती है। सुख के पश्चात् दुःख भी आता है। तुलनीय : राज० चढणो जितो ही उतरणो; फ़ा० हर कमाले रा ज़वाले।

जितना चूतड़ / जाँघ पर हाथ फेरा उतना ढोलक पर नहीं—जितना चूतड़ या जाँघ पर ताल लगाया उतना ढोलक पर नहीं। जब किसी की कथनी और करनी में अन्तर होता है तब व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

जितना छानो उतना ही किरकिरा—जितनी अधिक जाँच करोगे उतने ही दोष नज़र आयेंगे। जब कोई किसी के विषय में बहुत खोजबीन करता है तब कहते हैं। तुलनीय : पंज० जिन्ना छानो उन्ना करारा।

जितना छोटा उतना ही खोटा—छोटे क़द के व्यक्ति प्रायः शरारती होते हैं। तुलनीय : भोज० जेतने छोट ओतने

खोट; अव० जेतना छोट ओतना खोट; हरि० जितणां छोट्टा उतणांऐ खोट्टा; मेवा० छोटा बड़ा खोटा; गढ़० जतना छोट्टो ततना खोट्टो; बुंद० जित्तो छोटो उत्तो ही खोटो; पंज० जिन्ना छोटा ओन्ना हीं खोटा; ब्रज० जितनो छोटौ, उतनों खोटौ।

जितना तपेगा उतना ही बरसेगा—दे० 'जितना गरमाएगा···'।

जितना तुम आटा खाए उतना हम नमक—जब कोई छोटी आयु का अपने से बड़े की बात काटे या मूर्ख बनाने का प्रयत्न करे तो कहते हैं।

जितना तेरा नाच-कूद उतनी मेरी वार-फेर—तुम जितना नाचोगे उसी के अनुसार मैं तुम्हें पारिश्रमिक दे दूंगा। आशय यह है कि जो जैसा श्रम करता है, उसी के अनुसार उसे पारिश्रमिक या फल मिलता है। तुलनीय: कौर० जैता तेरा नाच-कूद, वैसी मेरी वार-फेर।

जितना तेल उतना खेल—जितना तेल होगा उतना ही खेल खेल सकेंगे। (क) जितना धन व्यय किया जायगा उतना ही उसका सुख मिलेगा। (ख) जितनी शक्ति होगी उतना ही कार्य होगा। (ग) जितना परिश्रम किया जायगा लाभ भी उतना ही होगा। (घ) जितनी आयु होगी उतना ही जीवन भी होगा। तुलनीय: राज० तेल जितो खेल; पंज० जिन्ना तेल उन्ना खेल।

जितना दे, उतना ले—नीचे देखिए।

जितना देगा उतना पाएगा—(क) जो जितना दान-पुण्य करेगा वह उतना ही उसका फल पाएगा। (हिंदुओं का ऐसा विश्वास है कि जो जितना दान-पुण्य करता है मरने के बाद उसी के अनुसार सुख-दुख मिलता है।) (ख) जैसा कर्म करोगे वैसा फल भी मिलेगा। (ग) दिया हुआ व्यर्थ नहीं जाता, वह किसी-न-किसी रूप में मिल जाता है। जो जैसा दूसरों का सत्कार करते हैं, दूसरे भी वैसा ही उनका करते हैं। तुलनीय: अव० जेतना देय, उतनै पावै; भोज० जेतना देबऽ उतना पइबऽ; पंज० जिन्ना देंगा उन्ना लेंगा।

जितना धन उतनी चिन्ता—जिसके पास जितना अधिक धन होता है वह उसकी सुरक्षा एवं व्यवस्था के विषय में उतना ही चिंतित रहता है। तुलनीय: मल० अर्त्थम् अनर्त्थम्; पंज० जिन्ना पैहा उन्नी फिकर; अं० Much coin much care.

जितना नहाओ उतना पुण्य—जितना नहाओ उतना अधिक पुण्य मिलेगा। अच्छा कार्य जितना अधिक किया जाय उतना ही अधिक और अच्छा उसका फल भी मिलता है। तुलनीय: राज० न्हाया जितना ही पुण्य।

जितना पानी पिलावे, उतना पीए—जब कोई हर तरह से किसी के अधिकार में हो तब कहते हैं। तुलनीय: बुंद० जित्तो पानी पियाउन उत्तोई पियता; पंज० जिन्ना पाणी पिलाओ उन्ना पीओ।

जितना पुरखों ने दान दिया उतनी औलाद ने भीख माँगी—(क) जब किसी सम्मानित परिवार के बच्चे नालायक हो जाते हैं और ओछे कर्म करते हैं तब ऐसा कहते हैं। (ख) जब किसी खानदान में पहले लोग सुखमय जीवन व्यतीत कर चुके हों और बाद की पीढ़ी दुख झेल रही हो तब भी ऐसा कहते है।

जितनो पुरखों ने पुण्य किया उतना लड़कों ने कुकर्म किया—जब किसी प्रतिष्ठित परिवार के लोग आवारा हो जाते हैं तब कहते हैं। तुलनीय: ब्रज० जितनों पुरिखान्नें पुन्न कियौ, उतनों ई लड़िकन्नें पाप कियौ।

जितना बड़ों ने पुण्य किया उतनी लड़कों ने भीख माँगी—दे० 'जितना पुरखो ने दान दिया'। तुलनीय: अव० जेतना बड़कवन पुन्न किहेन, ओतना लड़िकवन बरोबर कई दिहेन।

जितना बादल होगा उतनी ही वर्षा होगी—सामर्थ्य के अनुसार ही काम होता है।

जितना भोग उतना सोग—जितना अधिक भोग किया जाय उतना ही दुःख बढ़ता है। अधिक भोग करने वाले की इच्छा सदा भोग करने में ही लगी रहती है और उसके लिए वह उचित-अनुचित सभी उपाय करता है तथा अनुचित उपाय करने के कारण दुःख और हानि भी उठाता है। तुलनीय: राज० घणो खावै जाको घणो मरै; पंज० जिन्ना भोग उन्ना सोग।

जितना मुटाय उतने मिमियाय—अर्थात् धन की वृद्धि के साथ मनुष्य में असंतोष बढ़ता जाता है। तुलनीय: भोज० जइसे मोटानी ओइसे मिमिआनी।

जितना मैंने दूध पिया है उतना तुम्हें पानी भी न मिला होगा—दे० 'जितना तुम आटा खाए'।

जितना रला सो चुग लो—जितना तुम्हारे भाग्य में मिला है उसी को लेकर संतोष करो।

जितना लंबा साँप, उतनी चौड़ी गोह—साँप जितना लंबा है गोह उतनी ही चौड़ी है। दो बुरे व्यक्तियों की परस्पर टक्कर हो जाने पर कहते हैं, जो समझाने पर जल्दी मानते नहीं।

जितना लाभ उतना लोभ—लाभ की वृद्धि के साथ लोभ भी बढ़ता जाता है। आशय यह है कि धन बढ़ने पर मनुष्य में असंतोष बढ़ जाता है। तुलनीय : ब्रज० जितनों लाभ, उतनों लोभ।

जितना सरे, उतना करे—काम जितना किया जा सके उतना ही करना चाहिए। अपनी बुद्धि और सामर्थ्य के अनुसार ही परिश्रम करना चाहिए ताकि जो काम हाथ में लिया है उसे ठीक ढंग से पूरा किया जा सके। तुलनीय : भीली—जलरू काम थायानू बनरु न रवानु।

जितना सयाना, उतना दीवाना—(क) जो अपने को बहुत बुद्धिमान समझता है, वह अधिक मूर्खता करता है। (ख) जो अपने को अधिक बुद्धिमान समझता है वह अनेक स्थितियों में संशय में पड़ जाता है। (ग) जब कोई सीमा से अधिक चतुर बनता है तब खुद हानि उठाता है।

जितना सस्ता उतना खराब—कोई वस्तु जितनी सस्ती होती है उतनी ही खराब होती है। आशय यह कि सस्ती वस्तु अच्छी नहीं होती। तुलनीय : अव० जेतना सस्ता ओतना खराब; पंज० जिन्ना सस्ता उन्ना खराब।

जितना साँप लंबा, उतनी ही गोह चौड़ी—दे० 'जितना लंबा साँप...'।

जितना स्याना, उतना दीवाना—दे० 'जितना सयाना उतना...'।

जितना सयाना बनेगा, उतना दुःख भोगेगा—जो व्यक्ति अपने को बहुत चालाक समझते हैं और दूसरों को धोखा देते रहते हैं वे जीवन भर दुःखी रहते हैं। तुलनीय : हरि० जितना सियाना बनेगा उतना ही दुःख पावेगा।

जितना ही छानो, उतना ही किरकिरा—दे० 'जितना छानो उतना...'।

जितनी आमद, उतना खर्च—जितनी जिसकी आमदनी होती है उतना ही उसका खर्च भी होता है। तुलनीय : गढ़० भैंसा कोनो भैंसा वा ही ढामणा; अव० जेतनी आमदनी ओतनै खर्च; ब्रज० जितनी आमदनी, उतनों खर्च; पंज० जिन्नी आमद उन्ना खरच।

जितनी आमद उतना लोभ—दे० 'जितना लाभ उतना लोभ'।

जितनी कंजूसी उतनी हानि—जितनी अधिक कंजूसी की जाती है उतनी ही अधिक हानि की संभावना रहती है, इसलिए कंजूसी नहीं करनी चाहिए। जो आदमी कंजूसी करके धन इकट्ठा करता है उसे या तो चोर-डाकू ले जाते हैं या दूसरे उसका उपयोग करते हैं। तुलनीय : हरि० जितणी करिए तांगा तुलसी, उतनी ए खा ज्यां ढोरा तुलसी; पंज० जिन्नी सयाणप उन्ना काटा।

जितनी गंगा नहाई, उतना फल पाया—(क) जब कोई अपने अच्छे कर्मों के कारण सुखमय जीवन व्यतीत करता है तब ऐसा कहते हैं। (ख) जब किसी दुष्ट व्यक्ति की अपने बुरे कर्मों के कारण दुर्दशा होती है तब भी व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। श्री विश्वंभर नाथ खत्री द्वारा संकलित 'हिन्दी लोकोक्ति कोश' में इसका अर्थ इस प्रकार है—जब कोई किसी के साथ नेकी करे और वह उसको न माने तब कहते हैं। कहने का मतलब यह है कि जो कुछ किया सो किया और आगे न करूँगी। (शायद उस समय ऐसा भी अर्थ लगाया जाता रहा हो)। तुलनीय : अव० जेतनै गंगा नहाव, उतनै फल मिली।

जितनी चादर देखो, उतने ही पैर पसारो—आय के अनुसार ही व्यय करना चाहिए उससे अधिक नहीं। तुलनीय : मरा० जेवढी चादर असेल तेवढे च पाय पसारा; पंज० चादर देख के पैर पसारने चाहीदे ने; भोज० जेतना नदरा रहे ओतनै गोड़ पसारी; अव० जेतनी चादर होय ओतनै गोड़ फैलाओ; हरि० जितणी लाम्बी चाद्दर (सौड़) हो उतणें ऐं पांह पसारो; मल० उरूलटक्कु तक्कवण्णम् वा नुरक्कुक; अं० Cut your coat according to your cloth.

जितनी छुपाओ, उतनी उभरे—जिस बात को जितना अधिक छुपाने का प्रयत्न किया जाय उतनी ही फैलती है। अर्थात् कोई भी बात छिपाने से छिपती नहीं, कभी न कभी वह अवश्य प्रकट हो जाती है। तुलनीय : भीली—चाने करदा हूं घणी चौड़े आवे; पंज० जिन्नी लुकाओ उन्नी लब्बे।

जितनी दौलत उतनी ही मुसीबत—मनुष्य के पास जितना धन रहता है उसे उतना ही झंझट और परेशानी रहती है। आशय यह है कि अमीर-ग़रीब सभी परेशानी में रहते हैं, कोई धन की अधिकता के कारण तो कोई निर्धनता के कारण। तुलनीय : कौर० जितनी संपत उतनी विपत; ब्रज० जितनी संपति, उतनी विपत्ति।

जितनी भाई उतनी खाई, बाकी छींके लटकाई—जितनी इच्छा हुई उतना खाया, शेष छींके (सिकहर) पर लटका दिया। (क) ऐसे व्यक्ति के प्रति कहते हैं जो संपन्न हो और इच्छानुसार कार्य करने के लिए स्वतन्त्र हो, जिस पर किसी तरह का कोई प्रतिबन्ध न हो। (ख) अकेले व्यक्ति के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : राज० भायी जका

मायो, लारली छींकै टांग दी।

जितनी भेड़ न, उतने गड़ेर—काम के अनुपात में कार्यकर्त्ताओं की अधिक संख्या देखकर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० जेतना भेड़ नां ओह ले अधिका भेड़िहारे।

जितनी संपत्ति, उतनी विपत्ति—दे० 'जितनी दौलत उतनी ही···'।

जितने का ढोल नहीं उतने के मजीरा फूटे—ढोल महँगा होता है और मजीरा सस्ता। किफ़ायत के लिए ढोल को बचाया गया तथा केवल मजीरे बजते रहे किंतु सब मिलाकर जितने रुपए का ढोल नहीं था उतने रुपये के मजीरे फूट गए। जब महँगी चीज़ को बचाने के प्रयास में सस्ती चीज़ उससे भी ज़्यादा खर्च हो जाए तो कहते हैं। तुलनीय : अव० जैते के ढोल नही ओने के मजीरा फूटे; भोज० जेतना क ढोल ना ओतना क मजीरे फूटि गइल।

जितने काले उतने मेरे बाप के साले—काले प्रायः बुरे होते हैं। जो रंग का अथवा दिल का काला हो उसे कहते हैं। तुलनीय : अव० जेतने काले ओतने मोरे बाप कै साले; पंज० जिन्ने काले उन्ने मेरे पिओ दे साले।

जितने की बहू नहीं उतने के कंगन—बेमेल स्थिति पर व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मैथ० जतेक बहू न ततेक के लहठी; भोज० जेतना क मेहरारू नां ओतना क लहठीए; पंज० जिन्ने दी बौटी नई उन्ने दा सोना (कंगन)।

जितने की भक्ति नहीं उतने के मजीरे फूटे—नीचे देखिए।

जितने की भक्ति नहीं, उससे अधिक मजीरे पर खर्च—जितने का कार्य न हो उससे अधिक उसके साधनों के जुटाने पर खर्च हो जाय तो कहते हैं। तुलनीय : निमा० जिनरा की भक्ति नी, ओतरा का मजीरा।

जितने घने उतने भले—जितना परिवार बढ़े उतना ही अच्छा है।

जितने ज़्यादा कपड़े, उतनी ज़्यादा ठंड—(क) जितने अधिक वस्त्र पहने जायँ उतनी ही अधिक ठंड लगती है। (ख) जो जितना धनी होता है वह उतना ही सुकुमार होता है। तुलनीय : पंज० जिन्ने मते टल्ले उन्नी मती ठंड।

जितने बड़े उतने मत—जितने बड़े या विद्वान हैं उतने ही उनके विचार (मत) हैं। (क) प्रत्येक व्यक्ति का विचार भिन्न होता है। (ख) सब अपनी ही बात को श्रेष्ठ समझते हैं। तुलनीय : राज० मुनी जिता ही मत; सं० भिन्नरुचिर्हि लोकः; मुंडे-मुंडे मतिर्भिन्ना।

जितने मुंड उतने पिंड—(क) सभी लड़कों को पिण्ड-दान देना चाहिए। (ख) जितने लड़के होंगे पितरों को उतना ही पिंड-दान करेंगे।

जितने मुंह उतनी बातें—जब किसी बात पर अनेक लोग अलग-अलग विचार प्रकट करते हैं तब कहते हैं। तुलनीय : भोज० जै मुंह तै बाति; अव० जेतना मुँह ओतनी बातें; राज० मूंढा जिती वातां; हरि० जितणे मुंह उतणी बातें; मरा० जितकी तोंडे तितक्या गोष्टी; कनौ० जित्ते मोंह तित्ती बात; गढ़० देस्सू देस्सू का आला-भाँति भाँति बुलाला; नबा बाणी मुखे मुखे; ब्रज० जितने मुँह उतनी बातें; पंज० जिन्ने मुंह उन्नियां गलां।

ज़िद पर आई दुगना पीसे—हठ (ज़िद) करके जो स्त्री अनाज पीसती है वह सामान्य स्थिति से दूना पीसती है। आशय यह है कि हठ से कार्य करने पर कार्य अधिक होता है। तुलनीय : मेवा० अड़यां आई अदूण पीसे।

जिधर जलता देखें तिधर तापें—स्वार्थी आदमियों के लिए कहा गया है जो जिधर फ़ायदा देखते हैं उधर ही लटक जाते हैं।

जिधर देखना दही, उधर बोलना सही—अर्थात् जिससे लाभ हो उसी की बात में सहमति प्रकट करनी चाहिए, स्वार्थियों का ऐसा विचार है। तुलनीय : मैथ० जिन्ने देखियो दही हुनै बोलियो सही, जनै देखिऔ चान तनै करीऔ सलाम; भोज० जेन्नी देखीं दही आन्नी बोली सही।

जिधर मौला उधर आसफ़ुद्दौला—कोई कितना ही परिश्रम क्यों न करे, जो भाग्य में होता है वही मिलता है। इसका उद्गम एक कहानी से है : एक बार नवाब आसफ़ुद्दौला के यहाँ एक फ़क़ीर आया। नवाब साहब ने दो थैलियाँ रखवा दी। उनमें से एक में रुपए भरे थे और दूसरी में पैसे। फ़क़ीर को आज्ञा हुई कि वह जो चाहे ले ले। दुर्भाग्यवश फ़क़ीर के हाथ पैसों की थैली लगी। नवाब ने कहा, 'जो तुम्हारे भाग्य में था सो मिल गया।'

जिधर रब उधर सब—जिस पर ईश्वर की कृपा होती है उस पर सब की कृपा होती है। तुलनीय : अव० जहाँ रब, हुआं सब। (रब=ईश्वर)।

जिनका मुंह नहीं देखते, उनका पाँव छूना पड़ता है—जब आवश्यकता पड़ने पर किसी छोटे व्यक्ति की खुशामद करनी पड़ती है तब कहते हैं। तुलनीय : भोज० जेकर मुंह ना देखे, ओकर गोड़ छूएँ; ब्रज० जाको मुँह नायें देख्यौ

वाके पांम छीमने परैं; पंज० जिनां दा मुंह नईं देखदे उनां दे पैर फड़ने पैंदे हन।

जिनकी बोली में दगा, उनके दिल में क्या दगा न होगी—अर्थात् जिनकी बोली में दग़ा होता है उनके दिल में भी दग़ा होता है।

जिनकी यहाँ चाह, उनकी वहाँ भी चाह—जिनकी इस संसार में आवश्यकता होती है उनकी ईश्वर के यहाँ भी आवश्यकता होती है। अर्थात् परोपकारी एवं सज्जन व्यक्ति को सभी पसंद करते हैं। जब किसी सज्जन व्यक्ति की अल्पायु में मृत्यु हो जाती है तब उसके प्रति सहानुभूति प्रगट करते हुए लोग ऐसा कहते हैं। तुलनीय: राज० अठे जोईजै कजा उठै जोईजै; अं० They die early whom God loves.

जिनकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी - (क) जिनकी जैसी भावना होती है उन्हें ईश्वर उसी रूप में नज़र आते हैं। (ख) जब एक ही व्यक्ति या वस्तु के विषय मे अनेक लोग अलग-अलग विचार रखते हैं तब भी कहते हैं।

जिनके लाड़ घनेरे, उनके दुख बहुतेरे—जिन्हें अधिक प्यार किया जाता है वे दुख भी बहुत पाते हैं। (क) जब अधिक दुलार या प्यार के कारण बच्चे बिगड़ जाते है और बाद में कष्ट भोगते हैं तब कहते हैं। (ख) जिनकी अधिक देखभाल की जाती है उनको हमेशा कोई न कोई तकलीफ़ होती रहती है। तुलनीय: पंज० मता लाड़ करो मता दुख पावो।

जिनको चाव घनेरा, उनको दुख बहुतेरा—जिसकी जितनी ही अधिक आकांक्षा होती है उसको उतना ही अधिक दुःख मिलता है।

जिनको न दे मौला, उनको दे आसफ़ुद्दौला—जिसको भगवान नही देते, उसे आसफ़ुद्दौला देते हैं। मूलतः यह लोकोक्ति आसफ़ुद्दौला की प्रशंसा में है, पर अब किसी भी देने वाले के लिए प्रयुक्त की जाती है। प्रायः या बहुत अधिक देने वाले के लिए तो इसका प्रयोग चलता ही है।

जिन खोजा तिन पाइयाँ गहरे पानी पैठ—गहरे पानी में घुसकर जिसने खोज की उसे मोती इत्यादि मिले। आशय यह है कि परिश्रम करने वाले को ही अच्छा फल मिलता है।

जिनगी भर सेइ कासी मरे के बेरी मगहर क आसी/बासी – जन्म भर काशी में रहे और मरने के समय मगहर चले गए। काशी में मरने पर स्वर्ग और मगहर में मरने पर गधे की योनि मिलती है इसी अंधविश्वास के विरुद्ध कबीर मृत्यु के समय मगहर चले गए थे। जब कोई व्यक्ति किसी स्थान पर उम्र भर रहे और जब वहाँ कुछ लाभ मिलने की संभावना हो तो किसी दूसरे स्थान पर चला जाय तो कहते हैं।

जिन जाये, उनहीं लजाये—जिन्होंने पैदा किया उन्हीं को लज्जित किया। नालायक़ लड़कों के लिए कहा जाता है। तुलनीय: पंज० जिन जम्मया उस नूं पन्नया।

जिन ढूंढ़ा तिन पाइयाँ गहरे पानी पैठ—दे० 'जिन खोजा तिन पाइयाँ ···'।

जिन पर नौबत बजी, वे कड़ों की मार से क्या डरें?—जो बड़े-बड़े कष्ट सह चुके हों वे साधारण दुःख की परवाह नहीं करते।

जिन पाँयन पनहीं नहीं, तिन्हें देत गजराज; विष देते विषया मिले, साहब गरिब निवाज—ईश्वर बड़े दयालु हैं। जिनके पैरों में जूते नहीं हैं उन्हें चढ़ने के लिए हाथी देते हैं और विष की जगह लड़की से विवाह करा देते हैं। आशय यह है कि ईश्वर की अनुकम्पा से निर्धन भी धनवान बन जाता है। इस सम्बन्ध में एक कहानी है जो इस प्रकार है: एक सेठ बहुत धनी था पर था बड़ा कंजूस। उसके यहाँ एक भिखारी रोजाना भीख माँगने के लिए आता था। उस भिखारी से तंग आकर एक दिन सेठ ने अपने अढ़तिए को पत्र लिखा कि इसे बिख यानी विष दे दो। अढ़तिए की लड़की का नाम विषया था। इसलिए यह समझकर कि सेठजी ने उसे ही देने को लिखा है, उसने भिखारी का बड़ा आदर-सत्कार किया और अपनी लड़की का उसके साथ विवाह करके उसे हाथी पर बैठाकर विदा किया। जब सेठ ने यह सुना तो उक्त कहावत कही।

जिन बरहा हार चरो, सो कैसे चरे प्यांर—जो पशु (बरहा) हरी-हरी घास (हार) चर चुके हैं, वे भला सूखा पुआल (प्यांर) कैसे खाएँगे। आशय यह है कि सुख भोगने के पश्चात दुख भोगने पर बड़ा कष्ट होता है।

जिन बारां रबि संक्रमै, तिनै अमावस होय; खप्पर हाथा जग भ्रमै, भीख न घालै कोय—यदि सूर्य-संक्रांति तथा अमावस्या एक ही दिन पड़ जाएँ तो हाथ में खप्पर लेकर घूमने पर कोई भीख नहीं देगा। आशय यह है कि सूर्य-संक्रांति तथा अमावस्या के एक दिन होने से घोर अकाल पड़ता है और जन-जीवन कष्टमय हो जाता है।

जिन मोलों आई उन्हीं मोलों गंवाई—जितने में खरीदा उतने में बेचा। (क) जब दाम के दाम में कोई

वस्तु बेच दी जाय तब कहते हैं। (ख) जिस कार्य में न लाभ हो और न हानि हो तो भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० जिस पा लिया उस्से पा बेच दिता।

जिन मोहि मारा तेहि मैं मारा—जिसने मुझे मारा उसे मैंने मारा। बदला लेने पर कहते हैं।

जिन हरि-कथा सुनी नहिं काना, स्रवन-रंध्र अहि भवन समाना—जिन्होंने हरि कथा नही सुनी उनके कानों के सूराख साँप के बिल के समान हैं। आशय यह है कि हरि से विमुख लोग अच्छे नहीं समझे जाते।

जिन हरि-भगत हृदय नहिं आनी, जीवत सव-समान तेइ प्रानी—वे जीवित ही मुर्दे के समान हैं जिनके हृदय में ईश्वर के प्रति प्रेम नही है। आशय यह है कि जो भगवान की भक्ति नहीं करते उनका जीवन व्यर्थ है।

जिन हाथनि गजपति हने, जम्बुक मारिय काह—जिन हाथों से हाथी जैसे बड़े जानवरों को मारा उन्ही से सियार जैसे साधरण जानवर को किस प्रकार मारूँ। आशय यह है कि बड़ा काम करने के बाद छोटा काम करना शोभनीय नहीं होता। तुलनीय : ब्रज० जिन हातन गजपति हने, जम्बुक मारिये काह।

जिमि कपूत के ऊपजे, कुल सद्धर्म नसाहिं—कपूत अच्छे कुल के धर्म को भी नष्ट कर देता है। बुरे लोग दूसरों को तो कष्ट देते ही हैं किन्तु अपनों को भी नही छोड़ते।

जिमि जवास परे पावस पानी—वर्षा के जल मे जवास का पौधा सूख जाता है। जब कोई व्यक्ति या वस्तु अनुकूल परिस्थितियों में जिनमे उसे फलना-फूलना चाहिए नष्ट हो जाय तो इस लोकोक्ति का प्रयोग करते हैं।

जिमि टिट्टिभि खग सूत उताना—टिटिहरी (एक पक्षी) सोते समय अपने पैरों को ऊपर उठा लेती है ताकि यदि आकाश गिरे तो उसे पैरों पर रोक ले। जब कोई व्यक्ति सीमित साधन, धन या शक्ति आदि पर गर्व करे तो व्यंग्य से कहते हैं।

जिमि दसनन मँह जीभ बिचारी—चारों ओर शत्रुओं या विरोधी स्वभाव वालों के रहने पर कहा जाता है। ऐसी परिस्थिति में आदमी वैसे ही रहता है जैसे दाँतों के बीच में जीभ। जीभ यदि तनिक भी ग़ाफ़िल हो तो दाँत उसे काट लेंगे।

जिमि पिपीलिका सागर थाहा—चींटी (पिपीलिका) यदि सागर की थाह लेना चाहे तो उसे उसकी मूर्खता ही कहा जा सकता है। जब कोई साधारण व्यक्ति अपनी सामर्थ्य से बड़ा काम करना चाहता है तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

जिमि सरिता सागर मँह जाही, जद्यपि ताहि कामना नाहीं; तिमि सुख संपति बिनहिं बोलाए, धरमशील पहिं जाहिं सुभाए—जिस प्रकार सागर की इच्छा के बिना ही नदियाँ उसमें स्वयं ही जाकर मिल जाती हैं उसी प्रकार धर्मनिष्ठ व्यक्ति को बिना चाहे या प्रयत्न किए ही सुख-संपत्ति प्राप्त होती रहती है। आशय यह है कि धर्म से आदमी उन्नति करता है।

जियत दिया न कौर, मरे खिलावें चौर—जीवित रहने पर तो एक कौर (थोड़ा-सा) भी खाने को नहीं दिया और मरने के बाद चौर (चबूतरे पर रखा गया पिंड जो कच्चा और पक्का दोनों होता है।) को खिलाते हैं। दिखावा करने वालों या अंधविश्वासियों के प्रति कहते हैं। तुलनीय : अव० जियत न देंय कउरा, मरे बधावें चउरा।

जियत न दीन्हिनि कौरा, मरे उठैहैं चौरा—ऊपर देखिए।

जियत न देय कौरा मरे बँधावे चौरा—ऊपर देखिए।

जियत न देहौं कौरा, मरे डुलैहों चौरा—ऊपर देखिए।

जियत पिता की पूछी न बात, मरे पिता को दूध और भात—नीचे देखिए।

जियत पिता से दंगमदंगा, मरे पिता पहुँचाए गंगा—जीवित रहने पर तो पिता से लड़ाई-झगड़ा करते रहे और मरने पर उनका दाह-संस्कार गंगा-तट पर किया। हिन्दुओं के अंधविश्वास एवं झूठा प्रेम दिखाने पर व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। (गंगा=भारतवर्ष की एक पवित्र नदी जिसके तट पर दाह-संस्कार मोक्षदायी माना जाता है)। तुलनीय : छत्तीस० जियत पिता मां दंगी-दंगा, मरे पिता पहुँचावे गंगा।

जियत पिता से दंगी-दंगा मरे पिता पहुँचावे गंगा—ऊपर देखिए।

जियत बाप को असाढी के डले, मरे बाप को दही बड़े—जब पिता जीवित थे तब तो उन्हें रद्दी चावल पकाकर खिलाते थे और मरने के बाद उनके नाम पर दही-बड़े चढ़ाते हैं। मूर्खतापूर्ण कार्य करने या रूढ़ियों में विश्वास करने एवं दिखावा करने वालों के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : पंज० जिदे पिओ नूं सड़े दे चौल मरे पियो नूं दई बड़े।

जियत बाप सो दंगमदंगा मरे पिता पहुँचावहिं गंगा—दे० 'जियत पिता से दंगमदंगा...'।

जियत महोवे हम जैबे ना कागा मरे हाड़ लै जाय—जीते जी महोबा नही जाऊँगा, मरने पर भले ही कौवे हमारी हड्डियाँ ले जाएँ। कठिन प्रतिज्ञा या ज़िद करने पर कहा जाता है।

जियते पड़वा करके महान्—जीते जी किसी ने बात भी नही पूछी और मरने के पश्चात् उसी को लोग महान कहते हैं। प्राय: गुणी लोगों की क़द्र मृत्यु के पश्चात् ही होती है इसी पर कहते हैं।

जियते पड़िया मुअले भंइसियाँ जब ज़िंदा थी तब तक तो उसे पड़िया (भैंस का मादा बच्चा) कहते थे और जब मर गई तो उसे भैंस कहते फिरते हैं। जब कोई साधारण वस्तु के खो जाने के बाद या थोड़ी हानि हो जाने के बाद उसे बहुत बड़ी बतलाए तब व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

जिय बिनु देह नदी बिनु बारी, तैसहिं नाथ पुरुष बिनु नारी—दे० 'जिअ बिनु देह नदी बिनु बारी ...'।

ज़ियारते-बुज़ुर्गां क्फ़ार: ए-गुनाह बड़ों (बुज़ुर्गो) का दर्शन (ज़ियारत) करने मे पाप (गुनाह) मिट जाते है।

जिसका आँड़ू बिके वह बधिया क्यों करे—जिसका बैल बिना बधिया किए ही बिक जाय उसे बधिया करने की कोई ज़रूरत नहीं होती। अर्थात् जो माल जिस दशा मे है उसी दशा में आसानी से बिक जाय तो उसका रूप बदल कर बेचने का कष्ट क्यों उठाया जाय।

जिसका इलाज नहीं उसका कोई उपाय नहीं—जिस रोग की कोई दवा नहीं है उसके लिए कोई कुछ नहीं कर सकता। असाध्य रोग के लिए कहते है। तुलनीय : मल० भेदमाक्कान् साधिक्कात्तत् अनुभविच्चे तीरू; पंज० जिसदा लाज नई उसदा कोई तरीका नई; अं० What can not be cured must be endured.

जिसका ऊँचा बैठना, जिसका खेत निचान; उसका बैरी क्या करे, जिसका मीत दिवान- बड़े आदमियों में बैठने वाले का, नीची भूमि के खेत वाले का (नीची भूमि होने से कम वर्षा होने पर फ़सल सूखती नही क्योंकि आसपास का पानी बहकर उसमें भर जाता है।) और जिसका मित्र राजा का मंत्री हो उसका शत्रु कुछ भी नही बिगाड़ सकता।

जिसका काम उसी को साजे और करे तो मूरख बाजे—जो जिसका काम है वह उसी को शोभा देता है, अगर दूसरा कोई करता है तो उसे मूर्ख समझा जाता है। हर काम प्रत्येक व्यक्ति नही कर सकता। व्यक्ति को अपनी योग्यता के अनुसार ही कार्य करना चाहिए। तुलनीय : ब्रज० जाको काम वहिये साजै और करै तौ मूरख बाजै; मेवा० ज्यां का काम ज्यांने बाजे और करे तो डींगा बाजे।

जिसका काम उसी को साजे और करे तो लाठी बाजे—ऊपर देखिए।

जिसका काल उसका शिकार—शिकार शिकारी नहीं करता अपितु शिकार की मृत्यु ही उसे शिकारी के सम्मुख ले जाती है। मृत्यु भगवान की इच्छा बिना या आयु पूर्ण हुए बिना असंभव है। तुलनीय : मेवा० काल शिकार; पंज० जिसदा काल उसदा शिकार।

जिसका कोड़ा, उसका घोड़ा- दे० 'जिसकी लाठी उसकी भैंस'।

जिसका खाइए अन्न पानी, उसकी कीजिए आबादानी—जिसका नमक खाया जाता है उसी की ख़ुशामद भी की जाती है। आशय यह है कि अपने उपकर्त्ता का शुभचिंतक होना चाहिए।

जिसका खाइए उसका गाइए—नीचे देखिए।

जिसका खाए, उसका गाए अपने सहायक या आश्रयदाता की प्रशंसा करनी चाहिए। तुलनीय : बुंद० जीकौ खावे ऊकौ गावे; कौर० जिसका खावै, उसका गावै; भोज० जेकर खावे ओकर गावे; अव० जेकर खाय ओही कै गावै; राज० खावै जेकरो गावै; गढ़० जैंको भत्ता खाणो तैंका गित्ता गाणो; माल० जेरी घटी ए बैणो, बण्डोगीत गावणो; मेवा० खावे जी की बजावे; पंज० जिसदा खावे उस नूँ गावे; अं० To be true to one's salt.

जिसका खाना उसका गाना—ऊपर देखिए।

जिसका खावे उसका गावे—सहायक की सदा प्रशंसा करनी चाहिए।

जिसका खावै उसका गावै—ऊपर देखिए। तुलनीय : ब्रज० जाको खावै, वाईको गावै।

जिसका ख़ून उसी की गर्दन पर—क़त्ल करने का पाप क़ातिल को ही लगता है। अपराधी को अपने अपराध का दंड भुगतना पड़ता है। तुलनीय : पंज० जिसदा ख़ून उस दे गले उत्ते।

जिसका गुइयाँ नहीं उसका कूकर गुइयाँ—जिसका कोई दोस्त नही उसका कुत्ता ही दोस्त है। (क) ऐसे व्यक्ति के प्रति कहते हैं जिसे समाज में कोई व्यक्ति महत्त्व एवं साथ नहीं देता तथा जो कुत्ते आदि पालकर ही मन बहलाव करता है। (ख) जिसे समाज के प्रतिष्ठित लोग सम्मान नहीं देते और वह निम्न स्तर के व्यक्ति को ही साथी बना लेता है

उसके प्रति भी कहते हैं। (गुइयाँ=साथी या मित्र)।

जिसका चाम उसी का सीवन—चमड़े को सीने के लिए उसी की रस्सी बनाई जाती है। (क) जब कोई व्यक्ति अपना बन के लाभ भी उठाए और कष्ट भी पहुँचाए तो कहते हैं। (ख) जब अपनी हानि अपने लोग ही करें, तब भी कहते हैं। (ग) जो जिस तरह का होता है वह उसी तरह के लोगों से ठीक रहता है। तुलनीय : भीली—खाल जणाज ना हेवा।

जिसका चिकना देखा, फिसल पड़े—स्वार्थी व्यक्तियों के प्रति व्यंग्य में कहते हैं जो किसी से कुछ पाने की आशा पाकर उसकी खुशामद करते फिरते हैं। (ख) पराई स्त्रियों से प्रेम करने वालों के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० सोहनी देखी तिलक पयै।

जिसका चुएगा, सो छवा लेगा—जिस पर परेशानी आएगी वह उससे बचने का उपाय कर लेगा। (क) जब कोई व्यर्थ में दूसरों की चिंता में पड़ा रहता है तब उससे चिंता-मुक्त होने के लिए ऐसा कहते हैं। (ख) जब कोई किसी को बार-बार धमकी देता है कि यदि मैं न करूँ तो तुम्हारा काम नहीं होगा तब वह कहता है कि आप परेशान मत होइए जिसका चुएगा, सो छवा लेगा।

जिसका चुन्न, उसका पुन्न—जिसका आटा दान में दिया जायगा उसी को फल मिलेगा। अर्थात् दान में जिसका धन खर्च होता है उसी को पुण्य मिलता है। (चुन्न=आटा)। तुलनीय : गढ़० जै को चुन्न तै को पुन्न; अव० जेहि का चुन्न ओहि का पुन्न; भोज० जेकर चुन्न ओकर पुन्न; मैथ० जेकर चुन तेकर पुन।

जिसका जावे वही चोर कहावे—जिसका धन चोरी जाता है वही चोर कहलाता है। पुलिसवालों को कहते हैं क्योंकि जब वे चोरों का पता नहीं लगा पाते तो जिसका धन जाता है उसी को चोर बनाते हैं। तुलनीय : गढ़० वैक्वै मड़ो मरो वेही पच्चीस पड़ा; अव० जेकर जाय ओही चोर कही जाय; पंज० जिसदा जावे ओह चोर खुआवे।

जिसका डर, वही नहीं घर—जिसका भय है वही जब घर नहीं है तो मुझे किसी बात की चिंता नहीं। (क) जब पिता की अनुपस्थिति में बच्चे शोर मचाते हैं और उनसे कोई शांत रहने के लिए कहता है तब वे ऐसा कहते हैं। (ख) पति के घर पर न रहने पर प्रायः स्त्रियाँ दूसरों का भय नहीं मानतीं और किसी के कुछ कहने पर ऐसा कहती है। तुलनीय : पंज० जिसदा डर उह नहीं कर।

जिसका तेज उसका मेज—बलवान ही लगान वसूल कर सकता है। आशय यह है कि शक्तिशाली से सभी डरते हैं। तुलनीय : गढ़० जैको जांठो तैको बांटो।

जिसका दूध बिकेगा, वह दही क्यों जमावेगा—जिसका दूध बिक जाएगा वह दही जमाने की परेशानी क्यों सहेगा। अर्थात् (क) जो माल बिना किसी परेशानी के जैसा हो वैसा ही बिक जाय तो उसका रूप बदलकर बेचने की परेशानी कोई मोल नहीं लेता। (ख) जिसका काम आसानी से हो जाय तो उसे परेशानी उठाने की कोई जरूरत नहीं। तुलनीय : पंज० जिसदा दुद्ध विकेगा ओह दई कैनू जमावेगा।

जिसका पलला भारी वही झुके—(क) बड़े लोग विनम्र होते हैं। (ख) जिसके पास धन होता है वही दे सकता है। (ग) पंचायत में जिसका पक्ष मजबूत हो और उसी पर लोग दबाव डालकर निर्णय मानने के लिए बाध्य करें तब वह ऐसा कहता है। तुलनीय : अव० जेकर पलरा जब्बर अहै ओही झुकै; पंज० जिसदा पासा पारी ओह झुके।

जिसका पाप उसका बाप—पाप मनुष्य के बाप के समान है। उसके अनुसार उसे चलना पड़ता है, अर्थात् दुःख भोगना पड़ता है। तुलनीय : गढ़० जैको पाप तको बाप; अव० जेकर पाप, ओकर बाप; पंज० जिस दा पाप उसदा पिउ।

जिसका पिया प्यार करे वही सुहागिन—वास्तव में सौभाग्यशालिनी वही स्त्री है जिसका पति उसे प्यार करता है। जिसका पति उसे प्यार नहीं करता, उसका सौभाग्य निरर्थक है। जिसे मान्यता, प्रेम या आदर मिले वही भाग्यशाली है। तुलनीय : अव० जेहि का पिया मानै वहै सोहागिनी; जेकर पिया मानै ऊहै सोहागिनी; पंज० जिस दा खसम पयार करे ओह सुहागन; [illegible]० जायँ पिया प्यार करै वही सुहगिल।

जिसका पेट खाली, वह न ढूँढ़े लोटा-थाली—जिसे भूख लगी रहती है वह लोटा-थाली नहीं खोजता। अर्थात् जब मनुष्य भूखा होता है तो उसे यदि हाथ में ही रोटियाँ दे दी जाएँ तो वह प्रसन्नता से खा लेता है। पेट भरा होने पर ही मनुष्य नखरे करता है। तुलनीय : गढ़० जैका लगो पेट आग तै क्या चयो साग; पंज० जिसदा टिड खाली ओह ना लब्बे गड़वा थाली।

जिसका पेट दुखता है वही अजवाइन ढूँढ़ता है—आशय यह है कि (क) जिसको कष्ट होता है वही उसका इलाज करता है। (ख) जिस पर बोझ पड़ता है वही उसका प्रबंध भी करता है। (ग) जिसे किसी चीज़ की आवश्यकता होती है वही उसकी तलाश करता है। तुलनीय : बंग० जार माथा भांगे सेई चून खोजे; बुंद० जी को पेट पिरात सो

अजवान ढूंढ़त; पंज० जिसदे टिड बिच पीड हुंदी है और ही अजवैन लबदा है।

जिसका पेट दूखे सोइ दवा ढूंढ़े—ऊपर देखिए।

जिसका पेट भरा हो उसके लिए दिवाली—पेट भरा होने पर कोई दु:ख नही रहता।

जिसका पेट भरा हो वह भूखे के दर्द को क्या समझेगा—जिसका पेट भरा होता है वह भूखे के दु:ख को नहीं समझ पाता, अर्थात् साधन-संपन्न व्यक्ति निर्धनों के दु:ख-दर्द को नही समझते। तुलनीय : पंज० जिसदा टिड पर्‌या होवे उस नूं भुख दी पीड़ दा की पता।

जिसका फ़िक्र, उसका ज़िक्र—जिसकी चिंता रहती है उसी पर विचार-विमर्श या चर्चा होती है।

जिसका बंदर उसी से नाचे—जिसका बंदर होता है वही उसे नचा सकता है। आशय यह कि (क) जो चीज़ जिसकी होती है वही उसका ठीक ढंग से प्रयोग कर सकता है। (ख) जिसे किसी काम की जानकारी होती है वही उसे कर सकता है। तुलनीय : छत्तीस० जेखर बेंदरा, तेखरे ले नाचै; पंज० जिसदा बांदर उसी कोलों नच्चे।

जिसका बंदर वही खिलावे, दूसरा खिलावे तो काटे धावे—जिसका बंदर होता है वही उसे खिला सकता है, दूसरों को तो वह काटने दौड़ता है। आशय यह है कि जिसका जो काम होता है वही उसे कर सकता है, दूसरा नही। तुलनीय : कन्नौ० जाकी बंदरिया, सोई नचावे; मैथ० जकरी बनरी वही नचावै; भोज० जेकर बानर वही नचावे।

जिसका बंदर वही नचावे—दे० 'जिसका बंदर उसी से नाचे'।

जिसका बनिया यार—उसको दुश्मन की क्या दरकार—बनियों पर व्यंग्य है, क्योंकि वे किसी को भी बिना ठगे नही छोड़ते। सबसे अधिक लाभ वे परिचितों से ही लेते हैं। तुलनीय : अव० जेकर बनिया आर ओका दुसमन का नाहीं दरकार।

जिसका बल, उसका न्याय—जिसके पास बल होता है उसी के पक्ष में न्याय होता है। आशय यह है कि शक्तिशाली से सभी डरते हैं और अपनी रक्षा के लिए उसी के पक्ष की बात करते हैं। तुलनीय : असमी० जोर यार् मुलुक् तार्; सं० वीरभोग्या वसुन्धरा; पंज० जिसदा जोर उसदा न्याय; ब्रज० जाकौ बल बाकौ न्याव; अं० Might is right.

जिसका बाप उसका पाप—दे० 'जिसका पाप उसका बाप'।

जिसका ब्याह उसका आधा दालका—जिसका ब्याह होता है, अर्थात् दूल्हे को आधा दालका (दही बड़ा) मिलता है और आधा सब बरातियों को। आशय यह है कि प्रमुख व्यक्ति का सत्कार अन्य लोगों की अपेक्षा अधिक किया जाता है। तुलनीय : भोज० जेही का बियाह, ओही का आधा बारा; अव० जेहि का बियाह तेहि का आधं बारा।

जिसका ब्याह उसका (उसी का) गीत—(क) समय के अनुसार काम करने के लिए कहते हैं। (ख) जिससे लाभ मिलता है उसी के गुण गाए जाते हैं। तुलनीय : मरा० ज्याचें लग्न त्याच्यासाठीं गाणीं; माल० जंडो मांडो वंडा गीत; राज० परणीजै जिको गायी जै; अव० जेके बिआह ओही के गीत; पंज० जिसदा वयाह उसदा गीत।

जिसका ब्याह, उसी को आधा बड़ा—दे० 'जिसका ब्याह उसका···'।

जिसका भटा जले, वही पानी डाले—जिसका बैंगन (भटा) सूखता है वही उसमें पानी डालता है। जिसका काम बिगड़ता है, वही उसे सुधारने का प्रयत्न करता है। तुलनीय : छत्तीस० जेखर भांटा रर्फ, तउन पानी डारै; पंज० जिसदा पट्ठा सड़े ओह पाणी पावे।

जिसका मड़वा उसका गीत—दे० 'जिसका ब्याह उसका गीत'।

जिसका मरे सो रोवे गंगादास सुख से सोवे—(क) ऐसे व्यक्ति के प्रति कहते हैं जो दूसरे की हानि-लाभ या दुख-सुख की कोई चिंता नहीं करता। (ख) जिसकी हानि होती है वही रोता है। (ग) जो व्यक्ति किसी से मतलब नही रखता वह सदा सुखी रहता है।

जिसका यार कोतवाल, उसे डर काहे का—कोतवाल (एक पुलिस अफसर, जिससे अधिकांश लोग भय खाते हैं) जिसका मित्र (यार) है उसे किसी बात का भय नहीं रहता। आशय यह है कि जिनकी दोस्ती बड़े लोगों से होती है उन्हें किसी बात की चिंता नहीं रहती। तुलनीय : पंज० जिसदा यार कोतवाल उस नूं डर कादा।

जिस कारन पहनी सारी, वही टाँग रही उघारी—दे० 'जाके कारन पहिरी सारी······'।

जिस कारन मूंड़ मुड़ाया, सो दु:ख आगे आया—जब किसी मनुष्य को किसी दु:ख से छूटने का उपाय करने पर भी छुटकारा न मिले तब कहते हैं। इस पर एक कहानी है: कोई आलसी मज़दूर परिश्रम करके जीविका-निर्वाह करता था। प्रतिदिन कठिन परिश्रम करके खाना उसे बहुत दु:खदायी जान पड़ा, इसलिए वह सिर मुंडा कर साधु हो गया।

वह जानता था कि साधु होने पर कुछ परिश्रम करना नहीं पड़ेगा; पर अब उसे दरवाजे-दरवाजे भीख के लिए घूमना पड़ा तब उसने उक्त मसल कही। तुलनीय : अव० जेकरे कारन मुड़ावा, ओही आगे आवा।

जिसका लड़का घुटनों चलता है, उसकी बारात का क्या कहना ?—जिसका पुत्र लंगड़ा या अबोध है उसकी बारात में कुछ न कुछ गड़बड़ अवश्य होगी। जब किसी काम में पहले से ही परेशानी नजर आती है तब ऐसा कहते हैं।

जिसका लुढ़क जाता है, वही सूखा खाता है—जिसका घी गिर जाता है वही रूखी रोटी खाता है। अर्थात् जिसकी हानि होती है वही कष्ट उठाता है।

जिसका सिर फूटता है, वही चूना खोजता है—जिसके सिर में चोट लगती है वही उसमें लगाने के लिए चूना खोजता है, अर्थात् जिस पर मुसीबत आती है, वही उससे बचने का उपाय करता है। तुलनीय . पंज० जिसदा सिर फटदा है, ओह चूना लब्बदा है।

जिसका हरि जैसा ठाकुर उसे जमराज से क्या डर—अर्थात् जिसका रक्षक बहुत शक्तिशाली हो उसे कमजोरों से डर नहीं लगता। तुलनीय : मैथ० जेकरा हरि अइसन ठाकुर, ओकरा जम से का डर; भोज० जेकरा हरि अइसन ठाकुर ओकरा जम से कवन डरि।

जिसका हाथी उसका नाम– हाथी हाँकने वाले का नहीं होता, जिसका होता है, (जो उसे खरीदकर लाया है) उसका ही नाम होता है। आशय यह है कि जिसकी वस्तु होती है उसी का नाम होता है, देखभाल करने वाले का नहीं। तुलनीय : भोज० जेकर हथिया ओकरे नाव; ब्रज० जाको हाती वाको नाम; पंज० जिसदा हाथी उस दा नाँ।

जिसकी आँख नहीं उसकी साख नहीं—(क) अंधा बेईमान होता है। (ख) जो चीज आँख से न देखी हो उसका एतबार नहीं करना चाहिए। (ग) जब ग़रीब या साधारण व्यक्ति की बातों पर लोग विश्वास नहीं करते तब वह कहता है।

जिसकी आँख में तिल, वह बड़ा बेसिल—जिसकी आँख में तिल होता है वह निर्दयी होता है।

जिसकी आँख में तिल, वह बड़ा बेसील—ऊपर देखिए।

जिसकी उतर गई लोई उसका क्या करेगा कोई ?—जिसकी समाज में कोई इज्जत नहीं होती वह कुछ भी भला-बुरा कर सकता है। निर्लज्ज या बेशर्म के प्रति कहते हैं। (लोई=ऊनी चादर)। तुलनीय : कौर० जिसकी उतर गई लोई, उसका क्या करेगा कोई; मरा० ज्याची डोक्यावरची धावली खालीं पडली, त्याचें कोण काय करणार।

जिसकी कोठी दाने, उसके बच्चे भी सयाने—जिसके घर में अन्न होता है, उसके बच्चे भी प्रौढ़ लोगों जैसी बातें करते हैं। आशय यह है कि धन होने पर कम बुद्धि वाले भी चालाक हो जाते हैं, और धनाभाव में बुद्धिमान लोग भी मूर्ख बने रहते हैं। तुलनीय : मंल० संचि निरंजाल वा तुरक्कुमे (नावाटुम); अं० A full purse makes the month speak.

जिसकी खइए चंदिया, उसकी रहिए बंदिया—जिसका खाय उसकी गुलामी करे। आशय यह है कि सहायक या आश्रयदाता की सेवा करनी चाहिए या उसकी बातों को मानना चाहिए। (चंदिया=चांदी, रुपया, बंदिया=बाँदी गुलाम)।

जिसकी खिचड़ी उसी को एक कलुछी—जिस व्यक्ति ने खिचड़ी पकाई थी उसी को सबसे कम मिली। जब परिश्रम करने वाले या वस्तु के स्वामी को ही उसका सबसे कम भाग मिले तो कहते हैं। तुलनीय : मेवा० ज्याँ की ई खीचड़ी ने ज्यां ई ने डोड़ चाटू; पंज० जिसदी खिजड़ी उसी नूं इक कडछी।

जिसकी गाड़ी रेत में, उसका बुद्धू नाम—जिसकी गाड़ी रेत में फँस जाती है उसे लोग बुद्धू कहते हैं। अर्थात् जिसका काम बिगड़ जाता है उसे लोग मूर्ख कहते है। तुलनीय : पंज० जिसदी गड्डी रेत बिच उसदा नां बुद्धू।

जिसकी गाड़ी रेत में उसी का उल्लू नाम—ऊपर देखिए। तुलनीय : कौर० जिसकी गाडी रेत में उसकाई उल्लू नां; ब्रज० जाकी गाड़ी रेत में वाको उल्लू नाम।

जिसकी गूजर खीर खाय, उसी की भेंस चुरा ले जाय—गूजर जिसके घर खीर खाता है उसी की भैंस भी चुरा ले जाता है। आशय यह है कि (क) गूजर जाति के लोग बड़े नीच या दुष्ट स्वभाव के होते हैं वे अपने लोगों को भी हानि पहुँचाते रहते हैं। गूजरों की उद्दंडता पर व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। (ख) जो अपने आश्रयदाता को ही क्षति पहुँचाते हैं उनके प्रति भी व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० जेकर गूजर खीर खां, ओही क भंइसि चोरावें।

जिसकी गोद में बैठे, उसकी दाढ़ी नोचे—कृतघ्न मनुष्य के प्रति कहा जाता है जो अपने सहायक या आश्रयदाता को ही क्षति पहुँचाता है। तुलनीय : ब्रज० जाकी गोद में बैठें, वाई की डाढ़ी नोचें।

जिसकी छाती एक न बार, उससे रहिहो सब हुशियार—

दे० जिसके छाती पर नहीं बार…'।

जिसकी छाती पर ना बार, उसका कभी नहीं एतबार—दे० 'जिसके छाती पर नहिं बार…' ब्रज० जाकी छाती नायें बार, वाको कहा ऐतबार।

जिसकी जीभ चलती है, उसके नौ हर चलते हैं—(क) डींग हाँकने वाले को कहते हैं। (ख) जो दूसरों की खुशामद करके पेट पाले उसके प्रति भी कहते हैं।

जिसकी जूती उसी का सिर—(क) किसी का पैसा खर्च करके उसी की दावत करने पर कहते है। (ख) किसी की बातों से उसी को लज्जित या परास्त करने पर भी कहते है। (ग) जो दूसरों को हानि पहुँचाने की कोशिश करे और उलटे उसी की हानि हो तो भी कहते हैं। तुलनीय : अव० जेकर जूती ओही के सिर; राज० जूती जकेरों ही सिर; पंज० जिसदी जुती उसी दा सिर; ब्रज० जाकी जूती वाको सिर; अं० To pay one in one's own coin.

जिसकी जोरू अंदर, उसका नसीबा सिकंदर—अंग्रेजों के समय में मेहतर लोग आपस में ऐसा कहा करते थे। आशय यह है कि जिस मेहतर की स्त्री किसी अंग्रेज़ के यहा आया बनकर घुस गई उसकी तक़दीर खुल गई। तुलनीय : अव० जेके जोरू अंदर, ओके करम सिकंदर; पंज० जिसदी रन अंदर उसी दा करम सिकंदर।

जिसकी डाल प्यारी, उसका फल भी प्यारा—जिस पेड़ की शाखाएँ अच्छी होती है उसके फल भी अच्छे लगते है। (क) जब कोई व्यक्ति अपने किसी मित्र को बहुत चाहता हो और साथ ही उसके बच्चों को भी तो उसके प्रति ऐसा कहते है। (ख) यदि किसी व्यक्ति की किसी से शत्रुता हो और वह उसके बच्चों से भी शत्रुता माने तो उसके प्रति भी व्यंग्य में ऐसा कहते है। (ग) अच्छे लोगों के बच्चे भी अच्छे होते है। (घ) जब किसी बुरे व्यक्ति के बच्चे भी बुरे हों तो भी व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० जैको नल प्यारो, तैको फल प्यारो।

जिसकी तड़ में लाडू, उसकी तड़ में हम—खुशामदी आदमी जिस तरफ दो पैसे की आमदनी देखते है, उसी तरफ लल्लो-चप्पो करने पहुँच जाते हैं ऐसे समय इस लोकोक्ति का प्रयोग किया जाता है।

जिसकी तरफ रब, उसकी तरफ सब—ईश्वर जिसकी सहायता करता है उसकी सभी सहायता करते हैं। तुलनीय : अव० जेकरे ओरी रब, ओकरे ओरी सब; पंज० जिस पासे रब उस पासे सारे।

जिसकी तेग उसकी देग—जिसकी तलवार (तेग) है उसी का भोजन पकाने का बर्तन (देग) भी है। आशय यह है कि शक्तिशाली से सभी डरते हैं, और वह जो चाहता है कर डालता है। तुलनीय : ब्रज० जाकी तेग वाकी देग।

जिसकी थाली खोई होती है वह कलसों में हाथ डालकर देखता है—(क) कोई वस्तु खो जाने पर अक़्ल ठिकाने नहीं रहती। (ख) परेशानी में फँसा व्यक्ति मुक्ति पाने के लिए ऐसे-ऐसे काम करता है जिससे कोई लाभ नहीं होता, लेकिन वह सोचता है शायद इसी से लाभ हो जाय। तुलनीय : पंज० जिस दी थाली गुआची हुंदी है ओह गड़बयां बिच हत्थ पाके देखदा है।

जिसकी देग उसकी तेग—जिसके पास खाने को है उसी की तलवार भी है। आशय यह है कि जिसके पास धन है उसी की विजय होती है।

जिसकी न फटी बिवाई, वह क्या जाने पीर पराई—दे० 'जाके पैर न फटी बिवाई……'।

जिसकी नहीं पत, उसकी कौन गत—(क) बेईमान व्यक्ति यदि लिखा-पढ़ी करके भी कुछ क़र्ज़ लेना चाहे तो उसके प्रति व्यंग्योक्ति। जिस व्यक्ति का मान-सम्मान नहीं होता उसकी ज़िंदगी बड़ी बुरी होती है। तुलनीय : गढ़० जैको नी पत, तैको क्या कर्न खत।

जिसकी बंदरिया वही नचावे—जिसका जो काम है वही उसे कर सकता है। जब किसी काम में बिल्कुल अनभिज्ञ व्यक्ति उसे करता है और उससे हानि उठाता है तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० जेकर बदरिया, ओही से नाची; मरा० ज्याची वादरी तोच नाचवं जाणें।

जिसकी बात का ठीक नहीं, उसके बाप का ठीक नहीं—जो अपनी बात से पलट (बदल) जाता है उसके प्रति कहते हैं।

जिसकी वालिदः बोलेगी, उसका क़िबलःगाह क्यों न बोलेगा—(वालिदः—माँ; क़िबलःगाह=बाप)। जो थोड़ा पढ़कर विदेशी भाषा बोलने लगते हैं, पर उसका अर्थ नहीं समझते उन पर व्यंग्य है। इस लोकोक्ति पर एक कहानी है : किसी मूर्ख ने एक जोड़ा फ़ारसी सीखी, उसमें भी उसने भ्रम से 'वालिदः' का अर्थ स्त्री और 'क़िबलःगाह' का अर्थ मर्द समझ लिया। एक दिन किसी पड़ोसिन से उसकी स्त्री की लड़ाई हुई, वह बीच में बोल उठा। इस पर पड़ोसिन के मर्द ने कहा, 'मस्तूरात की लड़ाई में मर्दों का क्या काम ?' इस पर उसने उक्त मसल कही। इस पर सब हँस पड़े।

जिसकी बीबी से काम उसकी लौंडी से क्या काम ?—

जिसकी पत्नी तक पहुँच है उसकी नौकरानी से क्या मतलब ? अर्थात् जब बड़ों तक पहुँच हो तो छोटों की खुशामद नहीं करनी चाहिए।

जिसकी महल में भैया, माँगे पैसा मिले रुपैया—वेश्या या दुश्चरित्र स्त्री जब किसी मालदार आदमी को फँसा कर उससे खूब धन खींचती है तो कहते हैं। तुलनीय : पंज० जिसदी महल बिच भैया मँगे पैहा मिले रपैया।

जिसकी माँ पूरी पकावे वही बैठ ललचाय—(क) जिसके घर साधन है, किन्तु वह उसका उपयोग नहीं कर पाता और ललककर ही रह जाता है तब ऐसा कहते हैं। (ख) जिस काम में किसी का बहुत खास व्यक्ति होता है उसे कोई परेशानी नहीं होती। तुलनीय : भोज० जेकर माई पूरी पकावे से ही बइठ ललचाय।

जिसकी यहाँ चाह, उसकी वहाँ चाह—अच्छे व्यक्ति को ईश्वर भी पसन्द करता है। जब कोई सज्जन व्यक्ति कम आयु में ही मर जाता है तब उसके प्रति ऐसा कहकर सहानुभूति प्रकट करते हैं। तुलनीय : ब्रज० जाकी ह्यां मागँ, वाकी ह्वाँ माँगै।

जिसकी लाठी उसकी भैंस—बलवान का सब कुछ है। जब कोई बलवान जबरदस्ती किसी निर्बल का कुछ हथिया लेता है तो कहते हैं। इस पर एक कहानी है : एक बार एक आदमी भैंस खरीदकर जा रहा था। राह में एक चोर मिला और उसने कहा कि भैंस मेरे हवाले कर दो नहीं तो लाठी से सर फोड़ दूंगा। उस व्यक्ति ने देखा कि मामला विकट है तो उसने सोचकर कहा, 'ठीक है, तुम भैंस ले जाओ पर इसके बदले में मुझे लाठी ही दे दो।' चोर को क्या आपत्ति हो सकती थी ? वह लाठी देकर भैंस को लेकर चलने ही वाला था कि उस व्यक्ति ने लाठी तानकर कहा, 'भैंस छोड़कर भाग जा नहीं तो सर फोड़ दूंगा।' चोर ने भैंस छोड़ दी और अपनी लाठी वापस माँगी। उस व्यक्ति ने उत्तर दिया कि 'अब लाठी नहीं मिलेगी क्योंकि 'जिसकी लाठी उसकी भैंस।' तुलनीय : मरा० ज्याची लाठी त्याची म्हैस; माल० जंडी लाठी वंडी भैंस; गढ़० जैकी लाठी तैकी भैंस; राज० लाठी जकैरी भैंस; अव० जेके लाठी ओही कै भइस; बुंद० डंडा सब को पीर है; छत्तीस० जेखर लाठी तेखर भैंस; सं० वीर भोग्य वसुन्धरा; मल० कैय्यूक्कुल्लवन् कार्यक्कारन्; ब्रज० जाकी लौठी वाकी भैंस; अं० *Might is right.*

जिसकी सीरत अच्छी, उसकी सूरत भी अच्छी—जिसका स्वभाव अच्छा है उसका रूप भी अच्छा है। आशय यह है कि व्यक्ति की इज्जत उसके गुणों से होती है, रंग-रूप से नहीं। स्वभाव अच्छा होने पर कुरूप व्यक्ति भी अच्छा माना जाता है और स्वभाव अच्छा न होने पर रूप रहते हुए भी कोई क़द्र नहीं होती।

जिसके कारन जोगिन भई, वह सइयाँ परदेश—जिस चीज़ के लालच में आकर कोई सब कुछ छोड़ बैठे और वही चीज़ उसे न मिले तब कहते हैं।

जिसके काली, उसके सदा दिवाली—जिसके घर भैंस (काली) पल रही है उसके घर सदा दिवाली अर्थात् प्रसन्नता रहती है। आशय यह है कि जिसके घर घी-दूध है उसके घर अच्छी तरह से लोग खाते-पीते हैं और आनंदपूर्वक जीवन बिताते हैं। तुलनीय : हरि० जिसके काली उसके सदा दिवाली।

जिसके खूंटे बंधे बैल, उसके मन में कैसा मैल—जिसके पास बैल हों चोरी करने की क्या आवश्यकता है, वह अपने बैलों से खेती करके सुख की रोटी खाएगा। जिस व्यक्ति के पास धन उत्पन्न करने के साधन होते हैं वह चोरी आदि बुरे कामों से धन प्राप्त करना नहीं चाहता। जब किसी संपन्न व्यक्ति पर चोरी आदि का कोई संदेह करता है तो कहते हैं। तुलनीय : भीली—मारे मोरल्या धोरी हाजा रे हें ते कणीनी जूटी ने करूँ; पंज० जिस दी खुंडी बन्ने टग्गे (बलद) उस दे दिल बिच कैहो जिहा मैल।

जिस घर भोज उस को भात नहीं—क्योंकि वह स्वागत में लगा रहता है और उसे भोजन करने का समय नहीं मिलता।

जिसके घर में उसके लिए बन में—जिसके घर में कोई चीज होती है तो उसे वन में भी मिल जाती है। आशय यह है कि संपन्न व्यक्ति की हर जगह इज्जत होती है। तुलनीय : छत्तीस० जेखर घर मां, तेखर बन मां।

जिसके घर में माई उसकी राम बनाई—जिसकी माँ जीवित है उसे किसी बात का दुःख नहीं, क्योंकि माँ से अधिक प्यार करने वाला कोई दूसरा नहीं है। तुलनीय : पंज० जिस दे कर बिच माँ उसदी बनावे राम।

जिसके घर संतति उसके घर नित कौतुक—जिसके घर में बच्चे होते हैं उसके घर सदा आनंद छाया रहता है। आशय यह है कि बच्चों के बिना घर सूना लगता है और जीवन नीरस हो जाता है।

जिसके चार पैसे लो, उन्हें हलाल करके खाओ—(क) जिससे पैसे लो उसका कार्य ईमानदारी से करो। (ख) यदि किसी से पैसे लो तो उसका सदुपयोग करो। तुलनीय : पंज० जिसतों चार पैहे लो उस नूं हलाल करके खाओ; ब्रज०

जाके चार पैसा लेउ तौ हलाल करि कै खाओ।

जिसके चार भैया, मारे धौल छीन ले रुपैया—जो चार भाई होते हैं, वे मुक्के (धौल) से मार कर किसी का रुपया छीन लेते हैं। आशय यह है कि एकता बहुत बड़ी चीज़ है। जिनमें एकता है उनके लिए कोई काम कठिन नहीं होता।

जिसके छाती पर नहिं बार उसका बिल्कुल ना एतबार—जिसकी छाती पर बाल नहीं होते उसका बिल्कुल विश्वास नहीं करना चाहिए। क्योंकि उसे धोखेबाज़ समझा जाता है। तुलनीय : अव० जेके छाती न होय बार, ओका जानौ पूर लबार; राज० छाती पर केस नहीं, जकै सूं बातनी करणी।

जिसके जहाँ सींग समायें, वहीं वह चला जाय—कोई संकट आने पर कहते हैं कि जिसको जहाँ ठिकाना मिले वह वहीं चला जाय। तुलनीय : ब्रज० जाकी जहाँ सींक समाय वह वहीं चल्यौ जाय।

जिसके जैसे बाप दादे, उसका वैसा लड़का—संबद्ध वस्तुओं के समान होने पर, या पुत्र में पूर्वजों के गुणावगुण मिलने पर कहते हैं। तुलनीय : छत्तीस० जेकर जैसे घर-दुआर तेकर तैसे फरिका (टट्टी का दरवाज़ा), केकर जैसे दाई दादा, तेकर तैसे लरिका; भोज० जइसन कांकर ओइसन बीया, जइसन माई ओइसन धीया; पंज० जिहो जिहे पिओ बाबा उसदा ओहो जिहा मुंडा।

जिसके दिल में रहम नहीं, वह कसाई है—कठोर हृदय वाले लोगों के प्रति कहते हैं। (रहम = दया, क्षमा)।

जिसके दूध होता है वह हाँड़ी को नहीं अटकता—जिसके पास भैंस होती है वह हाँड़ी के लिए किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। एक स्थान से नहीं मिलती तो दूसरे स्थान से ले लेता है। (क) आवश्यक वस्तु खोज कर ले ली जाती है। (ख) संपन्न व्यक्ति को किसी साधारण वस्तु के लिए चिंता नहीं करनी पड़ती। तुलनीय : पंज० जिस नूं दुद हुंदा है ओह कुन्नी लई नईं अड़कदा।

जिसके दूध होता है, वही हांड़ी के लिए अटकता है—जिसको कुछ लेना होता है वही प्रतीक्षा करता है, अर्थात् बिना स्वार्थ के कोई बात भी नहीं पूछता। तुलनीय : ब्रज० जाके दूध होयँ, वही हँडिया कूं झगड़ै।

जिसके धी नहीं, उसकी देहली धी—जिसके लड़की नहीं है वह यदि दान देना चाहे तो दरवाज़े पर आए उसे ही देगा।

जिसके नहीं पूत क्या जाने माया?—जिस स्त्री के पास पुत्र नहीं होता, वह माँ की ममता को नहीं समझ सकती। यानी जिसके पास जो वस्तु नहीं होती वह उसके महत्त्व को नहीं समझता। तुलनीय : पंज० जिसदा पुतर नई उस नूं माया दा की पता।

जिसके ना हो कोई तेल, तो मीठा लगे भाँग का तेल—जब किसी व्यक्ति के पास कोई अच्छी वस्तु नहीं होती तो वह बुरी वस्तु से ही प्रसन्न रहता है। आशय यह है कि मजबूरी में सब कुछ अच्छा लगता है।

जिसके पल्ले हिमियानी, वही रन्न स्यानी—पैसे वाला ही चतुर है। (हिमियानी = कमर से बाँधने की रुपयों की पतली थैली)।

जिसके पाँव न फटी बिवाई सो क्या जाने पीर पराई—दे० 'जाके पैर न फटी बिवाई ...'।

जिसके पास ढिबुआ, वही मोर बबुआ—जिसके पास ढिबुआ है, वही मेरा मालिक है। अर्थात् धनी की सब खुशामद करते हैं। (ढिबुआ = दाल-तरकारी परोसने का चम्मच)।

जिसके पास नहीं पैसा, वह भला मानस कैसा?—धन से ही भलमनसाहत है। निर्धन व्यक्ति चाहे कितना भी सज्जन हो किंतु लोग उसे अच्छा नहीं समझते। तुलनीय : मर० ज्याच्या जवळी पैसा नसे, त्याला सज्जन म्हणावें कसे; पंज० जिस दे कौल नई पैहा उह पलामानस किहो जिहा।

जिसके पास रुपैया, वह कहावे भैया—जिसके पास धन होता है उसका सभी आदर करते हैं। तुलनीय : पंज० जिस कौल रपैया उस नूं आखण परा।

जिसके पेशे में बान, उसका गुरु शैतान—एक दिन अकबर बादशाह ने बीरबल से कहा, 'जिनके पेशे में 'बान' लगा होता है वे प्रायः धूर्त और शैतान होते हैं जैसे कोचबान फ़ीलबान आदि।' इस पर बीरबल ने जवाब दिया 'जी हाँ, मेहरबान।'

जिसके पेट में होय गाय का गोश्त, वह क्या होय हिन्दू का दोस्त—मुसलमानों पर व्यंग्य है।

जिसके पैर न फटी बिवाई, वह क्या जाने पीर पराई—दे० 'जाके पैर न फटी...'। तुलनीय : ब्रज० जाके पाँम न फटी बिवाई, सो कहा जानें पीर पराई।

जिसके पैर नहीं फटी बिवाई, वह क्या जाने पीड पराई—दे० 'जाके पैर न फटी बिवाई ...'।

जिसके पैसा नहीं हो पास, उसको मेला लगे उदास—जिसके पास पैसा नहीं होता उसे मेले में आनन्द नहीं आता। आशय यह है कि बिना पैसे के कोई काम नहीं होता

और न कहीं सुख मिलता है। तुलनीय : पंज० जिस कोल पैहा नई उस नूं मेला उदास लग्गे; ब्रज० जाके पैसा नायें पास, वाको मेलो लगै उदास।

जिसके फटी ना बिवाई, वह क्या जाने पीर पराई ?—दे० 'जाके पैर न फटी बिवाई···'। तुलनीय : हरि० बांझ के जाणी जाप्पे की पीड़ ?; अव० बाँझ कि जानि प्रसव कै पीरा ?

जिसके बारह बीघा बाँगा उसकी कमर में नहीं ताँगा—जिसके यहाँ बारह बीघा कपास बोया जाता है, उसकी कमर में ताँगा नहीं है। कंजूसों के प्रति व्यंग्य में कहते है जो संपन्न होते हुए भी अच्छी तरह खाते-पहनते नहीं। (बाँगा=कपास का खेत)।

जिसके माँ-बाप जीते हैं वह हराम का नहीं कहलाता विना प्रणाम किसी पर दोष लगाने पर कहा जाता है। तुलनीय : अव० जेके माँ-बाप जिउत हैं उह हरामी नाहीं कहावत; पंज० जिस दे माँ पिओ जीदे हन उह हराम दा नई हुंदा; ब्रज० जाकौ बाप जिंदौ ऐ, वाकौ हराम कैंमो।

जिसके माथे पड़ती है वही जानता है—जिस पर आपत्ति आती है वही उसका कष्ट जानता है। तुलनीय : भोज० जेकरा कपारे पड़ेला उहे जानेला।

जिसके लगे उसी के दुखे—जिसे चोट लगती है उसी को दर्द होता है। आशय यह है कि एक के दुख को दूसरा नहीं जानता। तुलनीय : राज० लागै जकैरै दूखै; हरि० जिसकै लागै वोहे जाणै।

जिसके लड़के बच्चे, उसे भेड़िये का डर—जिसके बाल बच्चे होते हैं उसे ही भेड़िये का डर होता है, जिसके बच्चे न हों उसे किस बात का डर ? आशय यह है कि जिसके पास कोई वस्तु होती है उसे ही उसकी चोरी का भय रहता है।

जिसके लिए अलग हुए वही मिला हिस्से में—जिससे दूर रहना चाहें वही गले पड़े तब कहा जाता है। तुलनीय : पंज० जिस लयी बखरे होये उह बिच मिलया; ब्रज० जाके काजें अलग भये, वही मिल्यौ हिस्सा में।

जिसके लिए आँख गवाई वही कहे काना—जिसके लिए हानि उठाई जाय और वही कष्ट दे तब कहते हैं। तुलनीय : भोज० जेकरा खातिर आँख गंवंवलीं उहे कहे कान; मैथ०, भोज० जेकरा खातिर चोरी कइली से ही कहे चोर; पंज० जिस लयी अख गवायी ओह काना आखे; ब्रज० जाके काजे आँखि खोई, वही कहै कानौं।

जिसके लिए चोरी की वही कहे चोर—जब कोई किसी के लिए बुरा काम करे और वही उसे दोषी कहे तब कहते हैं। तुलनीय : बंग० जार जन्य चूरी कोरी सेई बले चोर; पंज० जिस लयी चोरी कीती ओह चोर आखे।

जिसके लिए चोरी करें वही कहे चोर—ऊपर देखिए। तुलनीय : मैथ० जकरा ले चोरी करो तहीं कहै चोरा; भोज० जेकरा खातिर चोरी करीं उहे कहे चोर; ब्रज० जाके काजें चोरी करै, वही चोर कहै।

जिसके लिए जोगी बना छोड़ चली परदेश—जब किसी वस्तु की प्राप्ति के लिए कठोर परिश्रम किया जाय, फिर भी वह न मिले तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० जेकरे खातिर जोगी भइलीं से ही चलल परदेश; पंज० जिसदे पिछे बनया जोगी छड चली परदेस।

जिसके लोहे के दाँत हों, वह ससुराल का भात खाए—(क) पहले विवाह में काफ़ी लड़ाई होती थी, अनेक लोग मारे जाते थे। बड़ी परेशानियों के बाद विवाह संपन्न होता था। (ख) किसी कठिन कार्य के प्रति भी कहते हैं कि इसे सभी लोग नहीं कर सकते, जिनके पास काफ़ी धन-बल हो वही कर सकते हैं। तुलनीय : छत्तीस० जेखर रहे लोहा के दाँत, तउन खाय ससुरार के भात; पंज० जिसदे लोहे दे दंद होंण ओह सोहरियाँ दे चौल खावे।

जिसके वास्ते रोए उसकी आँखों में आँसू नहीं—जिसके लिए कष्ट सहा जाय और वह कोई सहानुभूति न दिखाए तब कहते हैं। तुलनीय : पंज० जिस दे पिछे रोये उस दियाँ अखाँ विच अथरू नई ?

जिसके सबब लड़ाई हो वह आदमी नहीं, काँटा है घर में सीका या गुल कनेर का—जिसके कारण घर में लड़ाई हो वह आदमी नहीं सेई का काँटा या कनेर का फूल है। (लोक-विश्वास है कि जिस घर में सेई का काँटा या कनेर का फूल होता है, वहाँ दिन-रात कोहराम मचा रहता है। (सीका=सेई)।

जिसके सिर पड़ती है वही जानता है—जिसके ऊपर कष्ट पड़ता है वही दुःख को समझता है, दूसरा नहीं। तुलनीय : अव० जेके मूंड़े परत है ओही जानत है; ब्रज० जाके मूंड पै परै, वही जानें है।

जिसके हाथ डोई उसका सब कोई—(क) धनियों का सभी पक्ष लेते हैं। (ख) जिससे खाने-पीने को मिलता है उसकी सभी तारीफ़ करते हैं। (डोई=कलछी)। तुलनीय : राज० जिणरे हाथ हांडी-डोई उणरे हाथ है सब कोई।

जिसके हाथ न कौड़ी उसकी बात लपौड़ी--निर्धन व्यक्ति की बातों को लोग महत्त्व नही देते। तुलनीय : मैथ० जेकरा हाथ में न कौड़ी तेकर बात लपौड़ी; भोज० जेकरे हाथे न कौड़ी ओकर बात लपउड़ी।

जिसके हाथ लोई, उसका क्या करेगा कोई?—जिसके पास खाने-पीने को है उसका कोई क्या बिगाड़ लेगा? अर्थात् धनी का कोई कुछ नही बिगाड़ पाता। (लोई=गँधा हुआ आटा)। तुलनीय : भोज० जेकरा हाथे लोई ओकर का करी कोई; ब्रज० जाके हात लोई, वाकौ कहा करै कोई।

जिसके हाथ लोई, उसका सब कोई-जिसके पास धन-दौलत है उसकी सभी खुशामद करते हैं। तुलनीय: मरा० ज्याचे हाती उंडा (पिठावा गोला) असे, त्याचे से वेशीं प्रत्येक जण असे।

जिसके हाथ लोई, उसकी कदर करे सब कोई--ऊपर देखिए।

जिसके होवें अस्सी, वह करे खस्सी जिसके पास रुपए हों वह बकरा मार कर खा सकता है, अर्थात् रुपए से सारे काम किए जा सकते है या होते है।

जिसको कर, उसको डर-(क) जो बुरा काम करते हैं उनको सदा ही भय बना रहता है। (ख) बुरा करने वाले को डरना चाहिए। तुलनीय : पंज० जेड़ा करे ओही डरे।

जिसको खाने को मिले वह कमाने क्यों जाए?—(क) जो संपन्न हो और जिसे घर बैठे आराम से भोजन मिल जाय, उसे नौकरी करने की कोई आवश्यकता नही। (ख) निकम्मो के प्रति भी व्यंग्य से कहते हैं जो दूसरे की कमाई खाते है और कुछ काम करना नही चाहते। तुलनीय : हरि० जिसणी पाइदे सरज्या वो हागणवयूं जावे; पज० जिस नूं खाण नू मिले ओह कमाण क्यों जावे;

जिसको खुदा बचाए, उस पर कभी न आफ़त आए--जिसका रक्षक अथवा सहायक ईश्वर है उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। तुलनीय : पंज० जिस नू रब्ब बचाये उस उत्ते आफत कदी नां आवे।

जिसको जाना है वह रुकता नहीं- (क) मरने वाले को कोई नही रोक सकता। (ख) जो घटना घटित होने वाली है, वह घटित होकर ही रहती है। तुलनीय : भीली—जवानू त्यू राखत्यू क्यो रेखा-नू; पंज० जिस नूं जाना है, ओह रुकदा नई।

जिसको देखे ताप चढ़े, वही ब्याहन आया—जब ऐसे व्यक्ति या वस्तु से गहरे संबंध करने पड़ें जिससे घृणा हो तो कहते हैं।

जिसको दे जगदीश, उससे कैसी रीस---जिसको ईश्वर धन बल या बुद्धि देता है, उससे द्वेष या ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए। तुलनीय : गढ़० जै द्यो जगदीस, तैंकी क्या रीस। (रीस=क्रोध, द्वेष, ईर्ष्या)।

जिसको न फटी बेवाई, वह क्या जाने पीर पराई?—दे० 'जाके पैर न फटी बिवाई···'। तुलनीय : मल० मच्चिक्करियामो ईट्टूनोवु।

जिसको पिया चाहे वही सुहागिन-वही स्त्री सौभाग्यशालिनी है जिसका पति उसे मानता या प्यार करता है। जिसका पति प्यार नहीं करता उसका सुहागिन होना व्यर्थ है।

जिसको राखे साइयाँ मार सके न कोय-दे० 'जाको राखे साइयाँ···'।

जिस गाँव जाना नहीं, उसकी राह क्या पूछनी—नीचे देखिए।

जिस गाँव जाना नहीं उसकी राह क्यों पूछनी?—जिस गाँव कभी नही जाना उसकी राह पूछने से क्या लाभ? अर्थात् (क) जिस कार्य या व्यक्ति से अपना कोई सबंध न हो उसके विषय में जानकारी रखने से कोई लाभ नही होता। जो व्यक्ति बिना किसी कारण के किसी वस्तु के संबंध में पूछताछ करते हैं तो उनके पीछा छुड़ाने के लिए भी कहते है। तुलनीय : राज० जकै गाँव जावणो नहीं जकैरो मारग क्यूं बूझणो; गढ़० जै गों निजाणां तैंकी बाट क्या पूछणी; पंजा० जेडे पिंड नई जाना ओदी राह की पुछ्छनी।

जिस घर खेले बाला उस घर कैसा दिवाला—जिस घर में बाल-बच्चे हो उस घर का दिवाला कैसे पिट सकता है। (क) बच्चे ही सबसे बड़ी संपत्ति है। (ख) बच्चे बड़े होकर घर की स्थिति को सँभाल सकते हैं। तुलनीय : राज० जिस घर बाला उरा घर कायका दिवाला।

जिस घर नहीं बुड्ढा वह घर डिग्गम डिग्गा—जिस घर में बूढ़े व्यक्ति न हों वह खस्ता हालत में रहता है। अर्थात् बिना अनुभवी व्यक्ति के गृहस्थी को चलाना कठिन है।

जिस घर नारी फूड़ी वह घर जानो कूड़ी—जिस घर में फूहड़ (फूड़ी) स्त्री हो उस घर की दशा कभी सुधर नहीं सकती।

जिस घर बूढ़ा न बड़ा वह घर डिग्गम डिग्गा—दे०

'जिस घर नहीं बुड्ढा···'।

जिस घर में ना आय कमाई, वहाँ होय दिन-रात लड़ाई-- जिस घर में आमदनी का कोई साधन नहीं होता वहाँ दिन-रात लड़ाई-झगड़ा होता रहता है। आशय यह है कि धनाभाव में जीवन बड़ा कष्टमय हो जाता है। तुलनीय : भीली० टोटानी टापरी माये रात-दाड़ो राड़; पंज० जिस कर बिच कमाई नाँ होवे उथे दिन-रात लड़ाई होवे।

जिस घर में संपत नहीं, तासू भला विदेश-- घर में धन न हो तो घर पर रहने से अच्छा विदेश में रहना ही है। आशय यह है कि ग़रीबी में घर से दूर जाकर कहीं कुछ कमा कर जीवन-रक्षा करनी चाहिए।

जिस घर सास न नंदा, तिस घर बड़े अनंदा—जिस घर में सास और ननद नहीं होती, उस घर में बड़ा आनंद रहता है। ऐसा स्त्रियाँ कहती हैं। तुलनीय : पंज० जिस कर सास नाँ ननाण उस करें जसन मनाण।

जिस घर होय कुचलिया नारी, साँझ भोर हो उसकी ख्वारी—जिस घर में चरित्रभ्रष्ट औरत होती है उस घर की सभी बुराई करते है या चरित्रभ्रष्ट स्त्री के पति का भी सभी अनादर करते है।

जिस घर होवे पुरुष कुचलिया, उस घर होवे खीर का दलिया—जिस घर में पुरुष चरित्रहीन होते हैं वह घर नष्ट हो जाता है।

जिस छन तक दूध, उसी छन तक पूत--स्वार्थी को कहते है जो तभी तक टिकता है जब तक उसका स्वार्थ सिद्ध होता है।

जिस टहनी पर बैठे, उसी को काटे—नीचे देखिए।

जिस डाल (डाली) पर बैठे उसी को काटे—(क) जिससे जीविका चले उसी को नष्ट करने वाले को कहते हैं। (ख) अपने आश्रयदाता की ही क्षति करने वाले को भी कहते हैं। तुलनीय : मरा० ज्या फाँदीवर बसावें तिलाच कापावें; अव० जौन डार पर बैठे ओही का काटै; हरि० जिस हाँडी में पाँणी पीवै उरसै में छेद करे; पंज० जिस थाली बिच खादा उसी बिच मोर कीता।

जिस तन लागे वह तन जाने—नीचे देखिए।

जिस तन लागेगी वह तन जाने, कौन जाने पीर पराई—जिसके शरीर में पीड़ा होती है वही जानता है, दूसरे की पीड़ा और कोई नहीं जानता। अर्थात् दूसरे का दुःख कोई नहीं समझता। तुलनीय : भीली—जो दुखे जणाये खबर, बीजो हूं जाणे; माल० जंडे दुखे वंडे पीड़; राज० दूखे जकेरे पीड़हुवै; मेवा० दूखे जीके दूखणो पाके जीके पीड़; अं० The wearer alone knows where the shoe pinches.

जिस तरफ लड्डू, उस तरफ हम—स्वार्थियों के प्रति कहते हैं जो सदा अपने लाभ की ताक में रहते हैं। तुलनीय : हरि० जित दीखै नवा परात उडै गावै सारी रात।

जिस तरफ लाडू उस तरफ हम—ऊपर देखिए।

जिस थाली में खाना, उसी में छेद करना—जिस वस्तु से लाभ हो उसी को क्षति पहुँचाने वाले या अपने सहायक अथवा आश्रयदाता का ही अनिष्ट करने वाले के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० खावै जकी थाली में हिंगै; भोज० जवने थरिया में खां के ओही मे छेद करे; माल० आऊं थारा हाट में ने मेनू थारी टाट में; गढ़० तै ही पातली खाणो तै ही पातली छेद करनो; अव० जौने पतरी मा खाय ओही मा छेद करे; मरा० ज्या भांड्यांत जेवावें त्यालाच भोंकपडावे।

जिस थाली में खाय, उसी में छेद करे—ऊपर देखिए।

जिस दरख्त की छाँह में बैठे, उसकी जड़ काटे—ऊपर देखिए।

जिस दुःख छोड़ी भेलसी, वही तेली मिला पड़ौसी—जिस परेशानी से बचने के लिए दूसरी जगह जाया जाय और वहाँ भी वही परेशानी हो तब कहते हैं।

जिस दुःख से सिर मुँड़ाया, वही दुःख सामने आया—दे० 'जिस कारन मूंड मुड़ाया··'।

जिसने की बेहयाई, उसने खाई खूब मलाई—ऐसे लोगो के प्रति कहते हैं जो मर्यादा की तरफ़ कोई ध्यान नहीं देते और खाने-पीने में ही मस्त रहते है।

जिसने की शरम उसके फूटे करम—संकोच करने वाले सदा हानि उठाते हैं। तुलनीय : अव० जे करं सरम उसके फूटे करम; पंज० जिन कीती सरम, उसदे फट्टे करम; ब्रज० जानें करी सरम, वाके फूटे करम।

जिसने कोड़ा दिया, वह घोड़ा भी देगा—दे० 'जिसने चोंच दी वही···'।

जिसने गर्दन झुकाई, उसकी कभी नहीं बुराई—जो गर्दन झुका कर कटु वचन भी सुन लेता है वह बड़े आराम से रहता है। अर्थात् जो व्यक्ति धैर्यवान एवं सहनशील होते हैं वे महान् समझे जाते हैं और सभी लोग उनका सम्मान करते हैं। तुलनीय : राज० नीची कीनो नाड़ आडी गोडाँ सूणी बाड़।

जिसने चीरा वही नीरेगा—दे० 'जिसने चोंच दी वही···।'

जिसने चोंच दी वह खाने को भी देगा—नीचे देखिए।

जिसने चोंच दी वह चारा भी देगा—जिसने चोंच दी है वही पेट भरने के लिए चारा भी देगा। अर्थात् ईश्वर ने पैदा किया है तो खाने को भी देगा। (क) आलसी व्यक्ति कहा करते हैं। (ख) ईश्वर में विश्वास रखना चाहिए वही विपत्ति से उबारता है। तुलनीय : हरि० चोंच दी सै ते चुग्गा बी देगा; राज० चूंच दो जको चुगो ही देसी; माल० चोंच दीदी तो चग्गो देगा; खानार पीनार ने राम देनार; अं० God never sends mouths but sends meat.

जिसने दिया उसने पाया—(क) जो दान-पुण्य करता है उसी को दूसरे लोक में सुख मिलता है। (ख) जैसा दूसरों के साथ व्यवहार किया जाता है वैसा ही दूसरे भी अपने साथ व्यवहार करते हैं। तुलनीय : पंज० जिन दित्ता उन पाया।

जिसने दिया तन को, देगा वही कफन को—यह ऐसे लोगों का कथन है जो अपने भविष्य की कोई चिंता नहीं करते और धन को धड़ल्ले के साथ खर्च करते हैं। तुलनीय : पंज० जिन दिता सरीर नूं ओह देगा कफन नूं।

जिसने दिया वही पाया—दे० 'जिसने दिया उसने...'।

जिसने न चखी सुर्ती की कली, उस लड़के से लड़की ही भली—यह सुर्ती (तम्बाकू) खाने वालों का कहना है।

जिसने न देखा हो जम वह देखे जमाई—हिंदुओं में जामाता (दामाद) या जमाई को यमराज का दूत मानते हैं। ये ससुराल वालों को बहुत परेशान करते हैं, इसलिए उनके प्रति ऐसा कहते है। तुलनीय : पंज० जिन नां देखया होवे यम ओह देखे जमाई।

जिसे न देखा हो बाघ वह देखे बिलाई, जिसने न देखा हो ठग वह देखे कसाई—बाघ और बिल्ली रूप-रंग में एक जैसे ही होते है तथा ठग भी क़साई की तरह कठोर दिल के होते है।

जिसने न देखा हो शेर वह देखे बिलाई, जिसने न देखी हो बहन वह देखे बहन का भाई—शेर और बिलाई (बिल्ली) जिस प्रकार रूप-रंग में काफ़ी साम्य रखते हैं उसी प्रकार सगे भाई और बहन भी प्राय: एक से होते है।

जिसने न देखी हो कन्या वह देखे कन्या का भाई—भाई-बहन की शक्ल प्राय: मिलती-जुलती है इसलिए कहते हैं।

जिसने न पी गांजे की कली, उस लड़के से लड़की ही भली—दे० 'जिसने न चखी...'।

जिसने बेटी दी, उसने क्या रखा ?—नीचे देखिए।

जिसने बेटी दी, उसने सब कुछ दिया—कन्या-दान सब दानों से बढ़कर है। जब कोई व्यक्ति कम दहेज की शिकायत करता है तो उसे समझाने के लिए ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० जे बिटिया दिहेस उ सब कुछ दिहेस; हरि० जिसणे अपणी बेट्टी दे दी उसणे अपणा सब कुछ दे दिया; पंज० जिन ती दित्ती उसने सारा दिता।

जिसने मुंह चीरा, खाना भी देगा—दे० 'जिसने चोंच दी वह...'।

जिसने रंडी को चाहा उसे भी जवाल और जिसको रंडी ने चाहा उसकी भी तबाही—चाहे वेश्या को कोई फँसाये या वेश्या किसी को फँसाये, हर हालत में वेश्या को फ़ायदा होता है और वेश्या के संपर्क में आने वाला सदा घाटे में रहता है। वह मर्यादा भी खोता है और धन की भी हानि उठाता है।

जिसने लगाई वही बुझावेगा—(क) जिसने काम छेड़ा वही उसको पूरा करेगा। (ख) जिस ईश्वर ने कष्ट दिया है वही उसे दूर भी करेगा। (ग) भिखारी भी ऐसा कहते हैं कि जिसने भूख दी है वही (ईश्वर) उसे शांत भी करेगा। तुलनीय : हरि० जीहनें लगाई वोहे बुझावैगा (भेटूंगा); पंज० जिन लगायी ओह बुझावेगा।

जिसने शहद नहीं चखा उसके लिए गुड़ ही शहद—जिस व्यक्ति ने कभी मीठा नही खाया उसके लिए गुड़ ही शहद के समान है। अर्थात् जिस व्यक्ति को अच्छी वस्तुएँ खाने-पीने को नही मिलतीं उसके लिए साधारण वस्तुएँ ही अच्छी होती हैं। तुलनीय : राज० नालेर नही चाख्यां जकांरे काचरा ही मीठा; पंज० जिन सहद नईं चखया उस लयी गुड़ ही सहद।

जिसने सालिग्राम भूजे उसे भाटा भूनते क्या देर ?—अर्थात् जो बहुत कठिन काम कर चुका है, उसे साधारण काम करते ज़रा भी देर नहीं लगती। (भाटा=बैंगन)।

जिस पतरी में खाय उसी में छेद करे—दे० 'जिस थाली में खाना...'।

जिस पत्तल में खाए, उसी में छेद करे—दे० 'जिस थाली में खाना...'।

जिस पत्तल में खाना, उसी में छेद करना—दे० 'जिस थाली में खाना...'।

जिस पत्तल में खाय उसी में छेद करे—दे० 'जिस थाली में खाना...'।

जिस पर बीतती है, वही जानता है—जिस पर विपत्ति पड़ती है वही उसके दु:ख को समझता है। जब कोई किसी

पर विपत्ति पड़ने पर उसकी खिल्ली उड़ाता है तब कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० जापै बीतै वही जानैं; पंज० जिस उते बीत दी है ओह जानदा है।

जिस पर बीते, वही वैद्य—(क) जिस पर जो घटना घटित होती है वह उसके सम्बन्ध में सब कुछ जान जाता है और उसको ठीक करने का उपाय भी जान जाता है। (ख) जिस व्यक्ति को एक बार कोई रोग हो चुका हो और दोबारा वही रोग उसे हो जाय तो उसकी दवा उसको मालूम होती ही है, इसलिए वह उसे तुरंत ठीक कर लेता है। तुलनीय: राज० वीती सो वैद।

जिस पेड़ का जुआ बना उसके नीचे क्यों जाना ?—जिस पेड़ की लकड़ी काटकर जुआ (बैलों के कंधे पर रखा जाने वाला गाड़ी या हल का भाग) बनाया गया है, उसके नीचे जाने की कोई आवश्यकता नहीं है। (क) जिससे हानि की आशंका हो उससे बचकर रहना चाहिए। (ख) जहाँ जो चीज न हो वहाँ जाने से कोई फ़ायदा नहीं होता।

जिस पैर की जूती, उसी पैर में फबती—जिस पैर की जूती होती है उसी में वह शोभा देती है। जो वस्तु जहाँ की होती है वह वही अच्छी लगती है, दूसरी जगह नही। तुलनीय : पंज० जिस पैर दी जुत्ती उस पैर विच सोहनी लग्गे।

जिस बन सुवा न सांवरा, वहाँ कागा खाय कपूर—जिस बन में तोता (सुवा) और कोयल (साँवरा) नहीं होती, वहाँ कौए ही कपूर खाते हैं। आशय यह है कि जहाँ विद्वान नही होते, वहाँ मूर्खों का ही आदर होता है।

जिस बरतन में खाना, उसी में छेद करना—दे० 'जिस थाली में खाना···'। तुलनीय : हरि० जिस थाली मं खा उसै मं हग्गै; कन्न० उंड मने तोले एडिसुवदु, उंड मने गे एरडु वगेयोदु; पंज० जिस पांडे विच खाना उसी विच मौर करना।

जिस बरतन में खाय, उसी में छेद करे—दे० 'जिस थाली में खाना···'।

जिस बहुअर की बहरी सास, उसका कभी न हो घर बास—जिस स्त्री की सास बहरी हो, वह कभी घर में नहीं रहती। आशय यह है कि जिस परिवार का मालिक ठीक नही होता उस परिवार के लोग बिगड़ जाते हैं।

जिस मुंह से पान खाइए, उस मुंह से कोयले न चबाइए—(क) जिसे अच्छा कह चुके हो उसकी बुराई नहीं करनी चाहिए। (ख) जहाँ सम्मानपूर्वक रह चुके हों, वहाँ अपमानित होकर नहीं रहना चाहिए। तुलनीय : पंज० जिस मुँह बिच पान खाओ उस नाल कौले नां चबाओ।

जिसमें खाए, उसी में छेद करे—दे० 'जिस थाली में खाना··'। तुलनीय : कश्म० यथ बासन ख्युन तऽथअ बनम छरुन; ब्रज० जामें खाय वाई में छेद करै।

जिस राह ही नहीं चलना, उसके कोस क्यों गिनना ?—न करने वाले काम की चर्चा करना व्यर्थ है। बेकार की पूछ-ताछ करने वालों को कहते हैं। तुलनीय : राज० जावणो नहीं जके गाँवरो मारग क्यं बूझणो।

जिस राह ही नहीं चलना, उसके कोस गिनने से क्या काम ?—ऊपर देखिए।

जिस शहर में फूल बिछाइए, वहाँ धूल न उड़ाइए—जहाँ प्रतिष्ठा हो वहाँ उसका हनन नही होने देना चाहिए, अर्थात् ऐसा काम नही करना चाहिए जिससे प्रतिष्ठा को धक्का लगे।

जिस शहर में फूल बेचे, वहाँ लकड़ी बेचते हैं—(क) जब कोई किसी स्थान पर सम्मान के साथ रहा हो और बाद में उसी स्थान पर अपमानित होकर रहे तब कहते हैं। (ख) जब कोई किसी स्थान पर अच्छा कर्म करने के बाद बुरा कर्म करे तब भी ऐसा कहते हैं।

जिस हंडी में खाय उसी को फोड़े—जिस हांडी (बर्तन) में पकाता-खाता है उसी को फोड़ता है। (क) किसी वस्तु से लाभ होने पर भी जब कोई व्यक्ति उसे मूर्खतावश नष्ट कर देना चाहता हो तो उसके प्रति कहते हैं। (ख) जब कोई व्यक्ति अपने उपकर्ता के साथ अपकार करता है तो उसके प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : राज० खावै जकी हाँड़ीने फोड़ै; पंज० जिस कुन्नी बिच खावे उसी नूं पन्ने।

जिस हंडी में खाय उसी में छेद करे—ऊपर देखिए। तुलनीय : राज० खावै जाकी हांडी में ही छेकला करै।

जिस हंडी में साझा नहीं वह चढ़ते ही फूटे—जिस काम में अपना कोई लाभ नही वह चाहे बने चाहे बिगड़े, अपने को क्या ?

जिस हंड़िया में खाय उसी में छेद करे—दे० 'जिस हंडी में खाय···'। तुलनीय : कौर० जिसमें खाय उसी हाँडी में छेक करे; ब्रज० जा हँड़िया में खाय वाई में छेद करै।

जिस हांड़ी में खाना उसी में छेद करना—दे० 'जिस हँडी में खाय··'। तुलनीय : मल० उण्णुन्न चोट्टिल् कल्लिटरुतुं; अं० Cast not dust into the well that gives you water.

जिसे अल्ला रक्खे, उसे कौन चक्खे—जिसका रक्षक ईश्वर है उसे कोई मार नहीं सकता या उसका कोई कुछ बिगाड़ नही सकता।

जिसे कर उसे डर—(क) जिसे कर देना होता है उसे डर लगा रहता है। (ख) बुरा काम करने वाला ही डरता है, सच्चा आदमी किसी से नही डरता। तुलनीय : अव० जब कर माहीं तौ डर कौने बात; पंज० जिस नूं कर उस तो डर।

जिसे खाने को मिले यों, वह कमाने जाय क्यों ?—जिसे बैठे ही बैठे खाने को मिल जाय वह काम क्यों करे। आलसी और निखट्टू लोगो को कहते हैं। तुलनीय : अव० जेका मिलै खाने ठेंग जाय कमाने का।

जिसे खुदा रक्खे, उसे कौन चक्खे—दे० 'जिसे अल्ला रक्खे ...'।

जिसे जाया उसी ने लजाया—जिसे जन्म दिया उसी के कारण अपमानित होना पड़ा। जब बच्चे नालायक़ हो जाते हैं और निन्दनीय कर्म करते हैं तब माँ-बाप ऐसा कहते हैं। तुलनीय : कौर० जिन जाए उन्ही लजाए।

जिसे ठोकर लगती है वही आँखें खोलकर चलता है—आशय यह है कि जो एक बार हानि उठाता है या धोखा खा जाता है वह भविष्य में सावधान रहता है। तुलनीय : पंज० जिस नूं ठेडा लगदा है ओह अखाँ खोल के तुरदा है।

जिसे दुनिया बड़ा कहे वही बड़ा—जिसे सभी लोग महान् या सज्जन कहें वही वास्तव मे बड़ा है। जो व्यक्ति अपने प्रभाव या बल द्वारा अपने आश्रितो आदि से स्वयं को बड़ा कहलवाए उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मेवा० के गे छोरी ठाकर, म् कई क् मारा दुनिया केवे जदी; पंज० जिस नू दुनियां बड़ा आखे ओह बडा।

जिसे पंख नहीं वह उड़ेगा क्या ?—बिना साधन के कुछ नहीं किया जा सकता, या साध्य की प्राप्ति नहीं हो सकती। प्र० सो का उडै न जेहि तन पांख, लै सो परासहि बूडै साखू।—जायसी; तुलनीय : पंज० जिस दे फंग नई ओह उडेगा की।

जिसे पिया चाहे वही सुहागिन, क्या सांवरी क्या गोरी—चाहे अच्छा हो या बुरा जिस पर मालिक की कृपा-दृष्टि होती है वही ऊँचे दरजे पर पहुँच जाता है। तुलनीय : अव० जेका पिया चाहै ओही सुहागिन।

जिसे बैठा नहीं देखा, उसे खड़ा क्या देखेगा ?—जो वस्तु देखने में अच्छी नही है, प्रशंसा करने से अच्छी नहीं होगी। जब कोई किसी सामान्य व्यक्ति या वस्तु की बहुत घुमा-फिराकर प्रशंसा करता है तब व्यंग्य मे ऐसा कहते हैं। तुलनीय : कौर० जिसकू बैट्ठा ना दीखै खड़ा क्या दीखैगा; ब्रज० जायँ बैठ्यो नायँ दीखै, वायँ ठाड़ो कहा दीखैगो।

जिसे मिले खाने को ठेंगा जाय कमाने को—दे० 'जिसे खाने को मिले यों...'। तुलनीय : ब्रज० जायँ मिलै खाइबे कूं, वाकौ ठेंगा जाय कमाइबे कूं।

जिसे हया नहीं, उसे ईमान नहीं—जिन्हें लज्जा या शर्म नहीं होती वे ईमानदार नहीं होते। आशय यह है कि बेशर्म व्यक्ति कुछ भी कह या कर सकता है। तुलनीय : पंज० जिस नूं सरम नईं उस नू ईमान नईं।

जिस्म की मैल भी नहीं देता—शरीर का मैल तक नहीं देता। बहुत ही कंजूस और लोभी व्यक्ति के प्रति व्यंग्य मे कहते हैं। तुलनीय : राज० पिंडरो मैल ही को देवैनी; पंज० पिंडेदी मैल बी नईं दिदा।

जिस्म तोड़े तो घर बने—शरीर तोड़ने अर्थात् परिश्रम करने से ही घर बनता है। परिश्रम करने से ही उन्नति होती है। अकर्मण्य व्यक्ति जब किसी के सामने अपना दुखड़ा रोता है तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : भीली घणा नाड़ा तोड्या जेरा घरान आलो बांध्यो; पंज० पिंडा पन्ने तां कर बणे।

जिहि घर जिते बधावनो, तिहि घर तितनो सोग—(क) जहाँ अधिक खुशी है वहाँ दुख भी बहुत होता है। (ख) जहाँ अधिक लाभ मिलता है वहाँ हानि भी बहुत होती है।

जिहि नक्षत्र में रवि तपै, तिहीं अमावस होय; परिवा साँझी जो मिलै सूर्यग्रहण तब होय—जिस नक्षत्र में सूर्य होता है उसी में अमावस्या भी होती है और यदि संध्या को प्रतिपदा हो जाय तो सूर्यग्रहण होता है।

जिहि न लाग घुन को अस बीरा—(क) कोई ऐसा वीर नही है जिसे दोष न लगा हो। अर्थात् सब में कुछ-न-कुछ बुराई अवश्य पाई जाती है। (ख) जिस प्रकार अनाज में घुन लग जाने से अनाज सड़ जाता है उसी प्रकार किसी रोग या बुढ़ापे से सबकी शक्ति समाप्त हो जाती है।

जिहि पितु देहि सो पावहि टीका—जिस राजपुत्र का पिता द्वारा तिलक हो वही राजा होता है। आशय यह है कि मालिक की दृष्टि जिस पर होती है वही ऊँचे पद पर पहुँच पाता है।

जिहि प्रसंग दूषन लगे, तजिए ताको संग—जिसका साथ करने से दोष लगे, उसका साथ छोड़ देना चाहिए। बुरे या बदनाम आदमी का साथ नहीं करना चाहिए।

जीअत पिता की पूछी ना बात, मरे पिता को दूध औ भात—दे० 'जियत पिता की पूछी...'।

जीअत बाप से दंगम-दगा मुए बाप पहुँचावहि गंगा—दे० 'जियत पिता से दंगमदंगा...'।

जीउ लेय जीउका न लेय — दे० 'जी जाय पर रोजी न जाय।'

जीएँगे तो भीख माँग खाएँगे — आलमियों पर व्यंग्य है जो काम करने की अपेक्षा भीख माँगना अच्छा समझते हैं।

जीए न माने पित्र मुए करें श्राद्ध— (क) हिन्दुओं के प्रति ईसाइयों का कहना है। (ख) कुपुत्रों पर भी कहा जाता है। तुलनीय : गढ़० जूंदा मा निपाए मांड, मरयां मां सुध्यारो खांड; अव० जिअत न परोसैं मांड़, मुए परोसैं खांड।

जी कहीं लगता नहीं, जब जी कहीं लग जाय है— (क) जिस स्थान से प्रेम हो जाता है, उसे छोड़ अन्यत्र कही अच्छा नही लगता। (ख) जब किसी का किसी से प्रेम हो जाता है तब उससे दूर कही जाना अच्छा नही लगता।

जी कहो जी कहलाओ—दूसरे की इज़्ज़त करने से ही अपनी इज्ज़त होती है। तुलनीय : फ़ा० मन तुरा हाजी बगोयम तू मुरा हाजी बगो; पज० इज्जत करो इज्जत करवाओ।

जी का बैरी जी — (क) इस संसार में जीव का भक्षक जीव है। (ख) मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु मनुष्य ही है। तुलनीय : हरि० जी का बैरी हो सै; पंज० जो दुसमण जी।

जी के बदले जी—प्राण के बदले प्राण लिया जाता है। जब किसी का क़त्ल हो जाता है तो उसके परिवार के लोग और सहायक लोग ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० जी दे बदले जी।

जी चलता है पर टट्टू नहीं चलता —इच्छा होती है, पर शक्ति नही है। वृद्धावस्था में विलासी मनुष्य ऐसा कहता है।

जी चाहे बैराग को कुनबा छोड़े नाहिं—मन तो बैराग्य लेने को चाहता है, पर पारिवारिक मोह-माया नही छोड़ती। आशय यह है कि पारिवारिक बंधन से छुटकारा पाना बहुत मुश्किल है। तुलनीय : ब्रज० ज्यी चाहै बैराग कू, कुनबा छोड़ै नायँ।

जी जलाने से हाथ जलाना बेहतर है—किसी के वैभव को देखकर जलने से परिश्रम करके स्वयं धन उत्पन्न करना श्रेष्ठ है। तुलनीय : पंज० दिल साड़न तो हत्थ फूकना चंगा है।

जीजा के माल पर साली मतवाली—(क) मिथ्या अधिकार दिखाने वाले पर कहते हैं। (ख) दूसरे के धन पर मौज उड़ाने वाले पर भी कहते हैं। तुलनीय : अव० आन के धन पै कनवा राजा; पंकु० जीजे दे पैहे उत्ते साली पुड़के।

जी जाय घी न जाय—कृपण को कहते हैं क्योंकि वह अपने धन को जान से भी अधिक मूल्यवान समझता है।

जी जाय पर रोज़ी न जाय—प्राण देकर भी अपनी जीविका को बचाना चाहिए क्योंकि जीविका के बिना मनुष्य जीवित नही रह सकता। तुलनीय : माल० जीव जाय पण जीवका नी जाणी चाहिजे।

जीजी मरी तो अच्छी भई, जीजी की फरिया मेरी भई—जीजी मर गई तो अच्छा ही हुआ, क्योंकि उसका लहँगा (फरिया) अब मेरे काम आवेगा। स्वार्थवश दूसरे की हानि में खुश होने वाले के प्रति कहते हैं।

जीत की हवा भी अच्छी है—हारने वाले का संसार में अपना नहीं बनता और जीतने वाले का सभी सम्मान करते हैं। तुलनीय : ब्रज० जीत की हवा ऊ अच्छी; पंज० जीत दी हवा वी चंगी है।

जीत के आगे हार के पीछे —स्वार्थियों पर व्यंग्य। तुलनीय : मैथ०, भोज० जीतला का आगा हरला का पाछा; ब्रज० जीतते के आगे हारते के पीछें, पंज० जित दे अग्गे हार दे पिछे।

जीता सो हारा, और हारा सो मरा—मुक़दमेबाज़ों पर ताना है, क्योंकि मुक़दमे में इतना धन व्यय हो जाता है कि जीतने पर भी कोई लाभ नहीं होता और जो हार जाता है वह तो बरबाद ही हो जाता है।

जीती मक्खी नहीं निगली जाती —(क) जान-बूझकर कोई कष्ट नही उठाता। (ख) जान-बूझ कर कोई झूठ नहीं बोलता। (ग) जान-बूझकर कोई अपनी हानि नहीं करता। (घ) जान-बूझकर कोई बुरा काम नहीं करता। तुलनीय : माल० जीवती माखी नी नगलाय; भोज० जीयत माछी ना घोटाई; अव० जिअत माखी नाही लीली जात; हरि० देखती आंख्या जहर के खाया जा स; पंज० जीदी मक्खी खादी नईं जांदी।

जीते आसा, मुए निरासा—(क) जीवित रहने पर मनुष्य बहुत कुछ कर सकता है, किन्तु मृत्यु के उपरांत कुछ भी नहीं। (ख) जीवित मनुष्य से ही कुछ आशा की जा सकती है अर्थात् कुछ पाया जा सकता है।

जीते की खाल नही खींची जा सकती—पशु या मनुष्य जब तक जीवित रहेगा उसकी खाल नही उतारी जा सकती उसे मारकर ही खाल उतारी जा सकती है। तात्पर्य यह है कि जब तक किसी व्यक्ति में थोड़ा भी बल शेष रहेगा,

वह अपने अधिकार की रक्षा के लिए लड़ता ही रहेगा। तुलनीय . माल० जीवते खालड़ी नी फाटे; पंज० जींदे दी खल नईं दरेड़ी जा सकदी।

जीते के बदले मुर्दा नहीं देता--जीवित व्यक्ति लेकर मृत भी नही देता। बहुत ही कंजूस व्यक्ति के प्रति व्यग्य से कहते हैं। तुलनीय : जीवते सटे मरयोड़ो को देवै नी।

जीते चाव चाव, मुए दाव दाव—जीवित रहने के समय तक लोग चाहते है, पर मरते ही वे गाड़ने की फ़िक्र में पड़ जाते हैं। संसार की विचित्र गति पर कहा गया है।

जीते जी का नाता है— (क) किसी आत्मीय मनुष्य की मृत्यु पर धीरज बँधाने के लिए कहते हैं। (ख) मृत्यु के उपरांत कोई संबंध नही रहता और मरने वाले को लोग शीघ्र भूल जाते हैं। तुलनीय : अव० जिअत जिउ तक नाता; हरि० जीवते जी का मेला स; ब्रज० जीते जी कौ नातौ है; पंज० जींदे जी दा मेल है।

जीते जी का मेला है जब तक जीवन है तभी तक मेल-मिलाप है फिर तो अकेले जाना है। आशय यह है कि जीते जी जो कुछ देखना है, जहाँ कहीं घूमना है या जो भोगना है भोग लो, फिर मरने के बाद कुछ नही मिलता। तुलनीय : राज० जीवनांरी माया है; फ़ा० बाबर ब ऐश कोश कि आलम दुबारा नीस्त; ब्रज० जीते ज्यौ का मेलौ है; पंज० जींदे जी दा मेला है।

जीते जी के सब नाते हैं दे० 'जीते जी का सब नाता है।'

जीते जी खाँव खाँव, मर गए तो हाय हाय-- जब तक जीवित थे तब तक तो उनके साथ लड़ाई-झगड़ा करते रहे और मर जाने पर शोक मना रहे है। दिखावटी प्रेम दर्शाने-वाले के प्रति व्यंग्य।

जीते तो हाथ काला, हारे तो मुँह काला जुआरियों पर कहा गया है। आशय यह है कि जुआ खेलना हर तरह से बुरा है। तुलनीय : अव० जीतै तो हाथ काला, हारै तो मुँह काला; पंज० जीदे तां हत्थ काला हारे तां मुँह काला।

जीते तो हैं पर बिना मतलब—जो व्यक्ति न तो अपना और न ही किसी और का कोई काम करे और न किसी से कोई लगाव रखे, बल्कि सारा दिन बैठा मक्खियाँ मारे उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : भीली— थारी दन्या माये रेईने धूल जमारो; पंज० जींदे हां पर वगैर मतलब।

जीते न पूछे, मुए धड़धड़ पीटे --नीचे देखिए।

जीते बात न पुच्छियाँ, मुए धड़ाधड़ पिट्टियाँ— (क) आदमी का महत्त्व उसके मरने के बाद मालूम होता है। (ख) कृतघ्न संतान को भी कहते हैं। (ग) झूठा शोक जताने वालों को भी कहते हैं।

जीते रहे तो लानत पहना— किसी को कोसना या शाप देना।

जीते सिपाही नाम सरदार का---जीत होती है सिपाहियों से, नाम होता है सरदार का। अर्थात् ग़रीब व्यक्ति परिश्रम करते हैं और लाभ धनवानों को मिलता है। जब काम कोई करे और नाम किसी का हो तब यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : ब्रज० जीतैं सिपाही नाम सरदार कौ; पंज० जीदे सपाई नां सरदार दा।

जीते से दूर मरने से नजदीक—किसी के मरणासन्न होने पर कहते हैं।

जीते हैं न मरते हैं, सिसक सिसक दम भरते हैं --उस मनुष्य पर कहा गया है जिसका रोग असाध्य हो और प्राण भी न छूटना हो।

जी तो जहान---जीवन है (शरीर स्वस्थ है) तो संसार में सब कुछ है। आशय यह है कि जीवित रहने पर ही मनुष्य संसार के सुखों का उपभोग कर सकता है, मरने पर सभी चीजें बेकार हो जाती हैं। जीवन के महत्व को बतलाया गया है। तुलनीय : भोज० जी त जहान।

जी न रहेगा तो घी क्या करेगा—कुछ नहीं। यह कहावत उन लोगों को ध्यान में रखकर कही जाती है जो ठीक ढंग से खाते-पीते नहीं और सदा धन इकट्ठा करने की चिन्ता में लगे रहते हैं। तुलनीय : भोज० जब जीवे चल जाइ तऽ घी का करी।

जीना तब तक सीना—जब तक जीना है तब तक परिश्रम करते रहना है। अर्थात् मनुष्य आजीवन कुछ-न-कुछ करता रहता है। तुलनीय : राज० जीवणो जिते सीवणो; ब्रज० जीनों तब तक सीनों।

जीना थोड़ा आशा बहुत—(क) जब मनुष्य बहुत बड़ी-बड़ी आशाएँ करता है तब कहते हैं। (ख) बहुत लंबी-लंबी योजनाएँ बनाने वालों के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० जीणा कट आसा मती।

जीना सभी चाहते हैं—संसार में कोई भी व्यक्ति मरना नहीं चाहता, चाहे वह कितना ही दुःखी या कष्ट में हो। तुलनीय : भीली--- जीवणू ने खावू हारे चावे; पंज० जीना सारे चांहदे हन।

जी बहुत चलता है, मगर टट्टू नहीं चलता—दे०

'जी चलता है···'।

जीभ का चस्का बुरा—चटपटी वस्तुएँ खाने वाले की आदत कभी नहीं छूटती और उसके लिए वह सभी कुछ कर बैठता है। चटोरा व्यक्ति अच्छा नहीं समझा जाता। तुलनीय : ब्रज० जीभ का चस्का बुरौ।

जीभ का स्वाद बुरा—चटपटी चीजें खाने वालों का स्वास्थ्य चौपट हो जाता है और साथ ही धन भी खर्च होता है। तुलनीय : पंज० जीव दा चसका पैड़ा।

जीभ जली, न स्वाद आया—जब किसी को कोई चीज बहुत कम मात्रा में खाने के लिए दी जाती है तब वह कहता है। तुलनीय : मरा० जीभहि भाजली नि स्वादहि नाहीं; ब्रज० जीभ जरी न स्वाद आयौ; पंज० जीभ सड़ी सवाद नईं आया।

जीभ जैसा रहना सबके बस का नहीं है—जिस प्रकार जीभ बत्तीस दाँतों की क़ैद में रहती है और थोड़ा भी इधर-उधर होते ही दाँतों द्वारा काटी जाती है, उस प्रकार सभी लोग कठोर शासन और कारागार में नहीं रह सकते। अर्थात् कठोर अनुशासित जीवन सबके बस का नहीं है।

जीभ बड़ी जुबाना नाम जिस पर जीता सारा गाँव—मुँहज़ोर स्त्री को कहते हैं।

जीभ भी जली स्वाद न आया—दे० 'जीभ जली स्वाद न···।'

जीभ छोड़े पाहुना, जी ले छोड़े व्याधि—अतिथि भोजन करके टलता है और रोग प्राण लेकर। अर्थात् असाध्य रोग प्राण लेकर ही छोड़ता है।

जी में जी आया—किसी कठिन परिस्थिति से उबरने पर कहा जाता है। तुलनीय : ब्रज० ज्यौ में ज्यौ आयौ।

जीया बाबू अपनी अरबुवाई—आप अपनी आयु से जीवित रहिए। यह एक प्रकार का आशीर्वाद है जिसमें आशीर्वाद देनेवाला अपनी तरफ से कुछ नहीं देता। अर्थात् वह आशीर्वाद देने में कंजूसी करता है।

जी ले, जीविका न ले—किसी को जान से मारना अच्छा है किन्तु किसी की जीविका छीनना अच्छा नहीं। तुलनीय : अव० जीव से मार, मुला जीविका न मार; ब्रज० ज्यौ ले जीविका न ले।

जीव किसी का मत सता जब लग पार बसाय—जहाँ तक हो सके, किसी भी प्राणी को कष्ट नहीं देना चाहिए।

जीवन का बिन मीत—मित्र के बिना ज़िंदगी कैसी? बिना मित्र के जीवन अच्छा नहीं होता। तुलनीय : उज० दोस्त जीवन की गिज़ा है।

जीवन के दिन सफल जो, बीतें सहित हुलास—आनंद से जीवन बीत जाय यही जीवन की सबसे बड़ी सफलता है।

जीवन दे जो पानी दे—(क) बादल के प्रति ऐसा कहा जाता है क्योंकि वह सागर-नदियों आदि से पानी लेकर बरसता है और सबको अन्न देता है। (ख) पुत्रों के प्रति भी कहते हैं जो मृत्यु के पश्चात् तर्पण आदि करते हैं और मृतक की आत्मा को शांति पहुँचाते हैं। तुलनीय : गढ़० ज्यू को लेंदारो पाणी को देंदारो; पंज० जीण दे जो पाणी देवे।

जीवन से भी जीविका प्यारी—जीविका के लिए मनुष्य प्राण भी दे देता है किंतु जीविका नहीं छोड़ता। तुलनीय : भोज० जीविका परानो ले पियार।

जीव भी प्यारा पीव भी प्यारा किरिया काकी खाऊँ—दो में से एक भी काम करते न बने तब कहते हैं। (किरिया=क़सम)। तुलनीय : अव० पूतौ मीठ भतारौ मीठ किरिया केकर खांव।

जीव मार जीविका न मार—दे० 'जी ले जीविका न ले।'

जीव से जीविका प्यारी—जीविका जीवन से भी प्यारी होती है। तुलनीय : अव० जीव से जोवका पिआरी है; ब्रज० ज्यौ ते जीविका प्यारी।

जीवेंगे सोई, सोवेंगे दोई—जो दो साथ सोवेंगे, वही जिएंगे। आशय यह है कि (क) जब दो व्यक्ति साथ सोते हैं तो ठंड नहीं लगती। (ख) पति-पत्नी दोनों के साथ रहने पर जीवन सुखी रहता है।

जीवे मेरा भाई, गली-गली भौजाई—भाई के रहने पर बहुत भौजाइयाँ मिल जायेंगी। अर्थात् साधन रहने पर काम होते देर नहीं लगती।

जीवो जीवस्य भोजनम्—जीव ही जीव का भोजन है। बड़े छोटों को या बलवान निर्बलों को अपना शिकार बनाते हैं।

जी से जहान लगा है—नीचे देखिए।

जी से जहान है—जब तक जीवन है तभी तक संसार से नाता है। मृत्यु के पश्चात् इस संसार से कोई संबंध नहीं रहता। जो व्यक्ति धन या यश के लिए जीवन या स्वास्थ्य की परवाह नहीं करता उसे समझाने के लिए कहते हैं। तुलनीय : राज० आप मरयां जग परलै।

जी है तो जहान है—ऊपर देखिए। तुलनीय : हरि० जी सै तै, जिहान सै।

जुआ बड़ा रोजगार जो इसमें हार न होवे—यदि जुए में हार न हो, तो यह सबसे अच्छा व्यवसाय है। जब कोई

जुए में लंबी रक़म हार जाता है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : हरि० अगर हार नाह हो त जुए जिसा खेल ना; पंज० जुआ बडा कम्म जे इस बिचहार ना होवे।

जुआ युद्ध व्यापार, फिर-फिर करे तो पावे पार—जुआ, युद्ध और व्यापार में जो हारने के बाद पुनः उसमें लगा रहता है उसी को सफलता मिलती है। आशय यह है कि जो पराजित होने के बाद हिम्मत नहीं हारते और पुनः प्रयत्न जारी रखते हैं वही जीवन में सफल होते हैं।

जुआरी आया जित, मंजे चार ज्वारी इक्क ; ज्वारी आया हार, मंजा इक्क जुआरी चार—जीता जुआरी खुशी से इतना फूल जाता है कि उसके सोने के लिए चार खाटें (मंजा) चाहिए और हारे जुआरी एक खाट पर चार सो सकते हैं। आशय यह है कि जुआरी क्षण में खुशी से फूला नहीं समाता और क्षण में बहुत दुखी हो जाता है।

जुआरी को अपना ही दाँव सूझता है—स्वार्थी को अपना ही ध्यान रहता है। तुलनीय : भोज० जूआड़ी के अपने दाव सूझेला : पंज० जुआरी नू अपना दा लबदा है; ब्रज० जुआरी ऐ अपनों दाबई दीखै।

जुआरी को कोई उधार नहीं देता—जुआ खेलने वालों पर कोई विश्वास नहीं करता। तुलनीय : पंज० जुआरी नू कोई उधार नईं देंदा; ब्रज० जुआरी ऐ कोई उधार नायें दे।

जुआरी जीए बुरे हवाल—जुआरी जीवन-भर शांति नहीं पाता। या जुआ खेलने वालों की ज़िंदगी बड़ी बुरी होती है। तुलनीय : पंज० जुआरी जीवे बुरे हाल।

जुआरी शराबी का क्या एतबार ?—इन दोनों पर कोई विश्वास नहीं करता क्योंकि इनको अपने धंधे के आगे दूसरे के लाभ-हानि की कोई चिंता नहीं रहती।

जुआरी हमेशा मुफ़लिस—जुआरी सदा दरिद्र (कंगाल) रहता है।

जुए में बैल भी हारा है—बैल जैसा शक्तिशाली पशु भी जुए (गाड़ी या हल का वह भाग जो बैल के कंधे पर रखा जाता है) से हार जाता है। जुआ खेलने वाले के लिए उपदेश। तुलनीय : पंज० जुये विच टग्गा वी हारया है; ब्रज० जूआ ते तौ बैल ऊ हार्यौ है।

जुए में हार मीठी होती है—जुआरी हारने पर भी हिम्मत नहीं हारता और बार-बार खेलता है। तुलनीय : पंज० जुए विच हार मिट्ठी हुंदी है।

जुग-जुग जीओ, दूध बतासा पीओ—एक प्रकार का आशीर्वाद है। तुलनीय : गढ़० जैंबासा, तेरी आसा।

जुग टूटा नर्द मरी—एकता में ही शक्ति है, अलग हुए और मारे गए। चौसर में युग (दो गोटियाँ) यदि साथ रहती है तो उन्हें कोई नहीं मार सकता।

जुड़ती नहीं धुर की टूटी, धरी रहै सब दारू बूटी—उम्र पूरी हो जाने पर कोई दवा काम नहीं करती।

जुत-जुत मरें बैलवा बैठे खायं तुरंग—बैल काम करते-करते थक जाते हैं और घोड़े बैठे खाते है। आशय यह है कि (क) ग़रीब परिश्रम करते हैं और धनी उसका फ़ायदा उठाते है। (ख) छोटे कर्मचारी काम करते हैं और अफसर मौज उड़ाते हैं। (ग) मूर्ख दिन-रात परिश्रम करते हैं और चालाक आराम करते हैं। तुलनीय : अव० मर मर करै बैलवा, बइठे खायँ तुरंग।

जुता खेत खाली न रहे, साजा दूल्हा कुआँ न रहे—जो खेत बोने के तैयार किया गया है उसमें किसी-न-किसी प्रकार प्रबंध करके बीज बो ही दिया जाता है तथा जो लड़का दूल्हा बनाया जाता है वह विघ्न उपस्थित होने पर भी कुँआरा नहीं रहता। अर्थात् जिस कार्य के लिए परिश्रम और प्रयत्न किया जाता है वह अधूरा नहीं रहता। तुलनीय : भीली—बाय मरय्यो खेत नी रे, हलदी भरय्यो वोर नी रे।

जुमा छोड़ सनीचर नहाए, उसका सनीचर कभी न जाए—मुसलमानों का ऐसा विश्वास है कि जो शुक्रवार को न नहाकर शनिवार को नहाते हैं उनके दुख दूर नहीं होते हैं।

जुम्मा-जुम्मा आठ दिन की पैदाइश—जब कोई कम उम्र का लड़का किसी वृद्ध या अनुभवी व्यक्ति को धोखा देना चाहे या मूर्ख बनाना चाहे तो उसके प्रति व्यंग्य से इस प्रकार कहते हैं। तुलनीय : गढ़० पोरकरो परारकरा छकौ; ब्रज० जुम्मा, जुम्मा आठ दिन।

जुरै न नमक चाहे मलाई—शक्ति से बाहर आकांक्षा रखने वाले पर व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : मैथ० जुरै नोन नहिं खाय मलाई; भोज० नम्मक जुरही के नां चाहतान मलाई; पंज० लूण नईं जुड़दा खावो मलाई।

जुरै मियाँ के माँड़ नहिं, ताड़ी की फरमाइस—ऊपर देखिए।

जुलाहा चुरावे नली नली, खुदा चुरावे एकके बेरी—जुलाहा थोडा-थोडा करके सूत चुराता है, पर ईश्वर (खुदा) एक ही बार में सब चुरा लेता है। आशय यह है कि जो चोरी या बेईमानी से धन इकट्ठा करते हैं उनका एक ही बार में

इतना नुक़सान हो जाता है कि चोरी या बेईमानी से इकट्ठा किया हुआ धन समाप्त हो जाता है।

जुलाहा जाने जौ काट ?—जुलाहा क्या जाने कि जौ कैसे काटा जाता है ? जब कोई व्यक्ति ऐसे काम को करना चाहता है जिसका अनुभव उसे न हो तो कहते हैं। इस संबंध मे एक कहानी है : किसी जुलाहे पर बहुत ऋण हो गया था। उसके महाजन ने उससे मेहनत लेकर धन वसूल करना चाहा। जुलाहा राज़ी होकर खेत में जौ काटने गया। वह काटने के बदले झुकी हुई बालों को सूत की तरह सुलझाने लगा। तुलनीय : पंज० जुलाहे नूं जों वडन दा की पता।

जुलाहे का बेगारी पठान—उलटी तथा अनहोनी बात पर कहा जाता है। क्योंकि जुलाहे बहुत सीधे और निर्बल और पठान चालाक तथा बलवान होते हैं।

जुलाहे की अक़्ल गुद्दी में होती है—जुलाहे सामान्यतः मंदबुद्धि होते है।

जुलाहे की जूती, सिपाही की जोय, धरी धरी पुरानी होय—सिपाही की स्त्री और जुलाहे की जूती काम न आने के कारण बिगड़ जाती है। तुलनीय : अव० जोलहा कै जूती, सिपाही कै जोय धरे धरे पुरानी होय।

जुलाहे की तरह ईद-बक़रीद को पान खा लेते हैं—(क) कभी-कभी शौक़ करने वालों पर व्यंग्य। (ख) कंजूसों के प्रति भी व्यंग्य में ऐसा कहते हैं जो कभी कुछ खर्च कर देते है।

जुलाहे की बेटी को फूफा की साध—यद्यपि यह एक प्रचलित लोकोक्ति है, फिर भी इसे पढ़कर आश्चर्य होता है क्योंकि 'फूफा' तो सभी जातियों मे होते हैं।

जुलाहे की मसखरी माँ-बहन से—(क) मूर्खतापूर्ण काम करने वालों पर व्यंग्य। (ख) जुलाहों के उलटे संबंध पर भी व्यग्य में ऐसा कहते हैं। (ग) निम्न जाति अथवा सांस्कृतिक स्तर के लोग अपने बड़ों का निरादर करते हैं।

जुल्फ़ पोशाक, मिर्च खूराक—ऐसे व्यक्ति को कहते हैं जो वस्त्र पहनकर ठाठ से रहना चाहे और भोजन भी अच्छा चाहे किन्तु काम कुछ न करना चाहे या किसी योग्य न हो।

जुल्म की टहनी कभी फलती नहीं, नाव काग़ज की कभी चलती नहीं—अन्याय और अत्याचार से पैदा किया हुआ धन उसी प्रकार नष्ट हो जाता है जिस प्रकार काग़ज की नौका। आशय यह है कि ग़लत ढंग से पैदा किया हुआ धन अधिक समय तक नहीं टिकता।

जुल्मी की नज़र टेढ़ी—(क) बुरे व्यक्ति अपने हाव-भाव से ही पहचान में आ जाते हैं। (ख) अन्यायी बड़े कठोर होते हैं। तुलनीय : पंज० पैड़े दी नजर डींगी।

जुल्मी पति आधी रात को खाना पकवाए—अत्याचारी पति आधी रात को भोजन बनवाकर खाता है। आशय यह है कि (क) अत्याचारी से सब डरते हैं। (ख) अत्याचारी सबको परेशान करके प्रसन्न होता है। तुलनीय : राज० अत्तोताईरो मांटी आवै दोपाररो दियो जगावै; पंज० पैडा खसम अद्दी रात नूं रोटी बनवाके खावे।

जुल्मी सदा उलटा देखे—अन्यायी व्यक्ति सीधी-सी बात में भी कुछ-न-कुछ दोष निकाल ही देता है ताकि उसको जुल्म करने का अवसर मिले। जो व्यक्ति सच्ची या सही बात को अपना स्वार्थ-सिद्ध करने के लिए ग़लत बताए उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : भीली— अन्यायी ना अवला पग; पंज० पैडा उलटा देखदा है।

जुवती, सास्त्र, नृपति बस नाहीं—युवती, शास्त्र और राजा किसी के वश मे नही रहते।

जूँ के डर से गुदड़ी (कथरी) नहीं फेंकी जाती—(क) मामूली तकलीफ़ के लिए कोई अपना काम नहीं छोड़ता। (ख) साधारण कष्ट देने वाली लाभदायक वस्तु नही छोड़ी जाती। तुलनीय : मरा० उवांच्या भीती ने गोधडी कुठें फेकून देतात; राज० जूंवांरे खायांमूं किसा घाघरा नाखीजै है; गढ़० जुऊँ की डर घागरो सी क्या छोड़ेद; अव० चिलरे कै दुक्ख कथरी नाही फेंक जात; मेवा० जवा आगे झावलो नी नांकणी आवे।

जूं के डर से घाघरा नहीं जलाया जाता—ऊपर देखिए।

जूठा खाय मीठ के लालच—स्वार्थी के लिए नीच कर्म करने वाले को कहते है। तुलनीय : मरा० उष्टें खाणें गोडाच्या लोभाने; माल० एंठो खाय मीठा रे लारे; गढ़० जुट्ठो खायेंद मिट्ठा का लोभ; अव० जूठ, मीठा कै लालच मा खावा जात है; ब्रज० झूँठौ खैयै मीठे कूं।

जूठे हाथ से कुत्ता भी नहीं मारता—जूठे हाथ से कुत्ते को भी नही मारता कि कहीं हाथ मे लगा जूठा अन्न गिर न जाय। कंजूसों के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते है। तुलनीय : मेवा० ऐठे हाथ गंडक नी मारे; पंज० जूठे हत्थ नाल कुत्ता वी नईं मरदा।

जूता पहने नरी का, क्या भरोसा करी का—नरी का = (बकरी के चमड़े का, करी का = रखैल औरत का)। मामूली जूते और रखैल औरत का कोई विश्वास नहीं, क्योंकि ये किसी भी समय धोखा दे सकते हैं।

जूता पहिने साई का, बड़ा भरोसा ब्याही का—बयाना

देकर बनवाया हुआ जूता और ब्याही स्त्री का विश्वास करना ठीक है, क्योंकि ये ही काम आते हैं। तुलनीय : ब्रज० जूता पहरै साई कौ, करै भरोसौ ब्याही कौ।

जूता पैर में ठीक ही रहता है—जूते को पाँव में ही पहनना चाहिए। तात्पर्य यह है कि नीच व्यक्ति को सिर नहीं चढ़ाना चाहिए, उसे दबाकर ही रखना ठीक रहता है। तुलनीय : भीली पगरकू पग नू काम नू, बीजो हूँ काम आवे; पंज० जुत्ती पैर विच ही ठीक रैंदी है।

जूते की मार जोरू का यार—ये दोनों आठों पहर दिल में चुभते रहते हैं। यदि कोई व्यक्ति किसी का अपमान सबके सामने करे या पर नारी से अनुचित संबंध रखे तो उसको बुरी राह से हटाने के लिए ऐसा कहते है। तुलनीय : गढ़० जुत्ता की मार अर स्वैणी को जार; पंज० जुत्ती दी मार अते बौटी दा यार।

जूते पड़ें तो मुंह खिले—जूता पड़ता है तभी प्रसन्न होता है। (क) जो व्यक्ति दंड पाने पर ही कार्य करता हो और प्रसन्न भी रहता हो तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। (ख) जो व्यक्ति निर्लज्ज होने के कारण दंड और अपमान पाने पर लज्जित न हो और बढ़-बढ़कर बातें बनाए तो उसके प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : राज० पड़ गया खल्ला, उठ गई खेह; फूल फड़क-सी हो गई देह।

जे अपकारी चार तिन्ह कर गौरव मान्य बहु, मन क्रम बचन लबार ते वकता कलिकाल महुँ—कलियुग में जो दूसरों का अपकार करें वही मान पाते हैं और जो मन, वचन और कर्म सब प्रकार से झूठा होता है वही विद्वान कहलाता है। आशय यह है कि आज के युग में ईमानदार और भले लोगों की कोई इज्जत नही करता।

जेकर ऊँचा बैठना, जेकर खेत निचान; ओकर बैरी का करै जेकर मीत दिवान—दे० 'जिसका ऊँचा बैठना, जिसका···'।

जेकरे अखर लगे लोहाई, तेंहि पर आवै बड़ी तबाही—जिसकी ऊख की फ़सल में लोहाई रोग लग जाता है उस पर बड़ी विपत्ति आ जाती है। आशय यह है कि गन्ने की फ़सल में लोहाई रोग लग जाने से फ़सल नष्ट हो जाती है और किसान काफ़ी परेशानी में पड़ जाता है, क्योंकि गन्ने से उसे अच्छी आमदनी होती थी जो समाप्त हो जाती है।

जेकर पुरखा न देखल पोय, तेका घर खुरबंदी—जिसके बाप-दादों ने पोई का साग भी नही खाया है, उसके घर घोड़ा बँधता है। नए धनी के लिए तथा जिसने परिश्रम से धन कमाया है उसके लिए कहते है।

जेकर भैया पूआ पकावै तेकर धीया लिलके—जिसकी माँ पूआ बनाये उसी की लड़की खाने बिना तरसती है। अर्थात् जिसका जो चीज़ बनाने का पेशा होता है उसकी सन्तान उस चीज़ के लिए तरसती है, जैसे मोची की लड़की जूते के लिए और दर्जी की लड़की अच्छे-अच्छे कपड़े पहिनने के लिए तरसती है।

जेकर बीघा भर कपास, तेकरा डाँड़े डर ना—जिसने एक बीघा जमीन में कपास बोया है, उसे जुमाने (डाँड़) का भय नही रहता। आशय यह है कि संपन्न व्यक्ति जुर्माने या दंड से नही डरता।

जेकरी जोय तेकरे पास, देखनहारा ताके आस—जिसकी स्त्री है उसी को आनंद मिलता है देखने वाले तरसते रहते हैं। आशय यह है कि जिसकी जो चीज होती है उससे वही लाभ उठाता है, दूसरा नही। तुलनीय : गढ़० जैंकी छै राणी सो लीगे ताणी, संकल रैगे आँखा ताणी; अव० जेकर मेहरिया ओके पास, देखन वाला ताकै आस; भोज० जेकर मेहरी ओकरे पास देखवैया के कवन लाभ।

जेकरे खेत पड़ा नहिं गोबर, वही किसान को जान्यो दूबर—जिस किसान के खेत में गोबर नहीं डाला गया है उसे कमज़ोर किसान समझना चाहिए। आशय यह है कि गोबर की खाद के बिना अच्छी पैदावार नहीं होती।

जेकरे घुड़वा बैठिन, तेकर ओड़ दागिन—जिसका खाय उसी की हानि करे। कृतघ्न को कहते है।

जेकरे छाती एक न बार, तासे सदा रहो हुसियार—जिसकी छाती पर बाल न हों, उससे सदा सावधान रहना चाहिए क्योंकि ऐसे लोग धोखेबाज़ होते हैं। तुलनीय : अव० जेहि की छाती एकु न बार, वोहिते सदा रहहु हुसियार; भोज० जेकरे छाती एक न बार, ओकर कबहूँ न एतबार।

जेकरे रथ पर केसो, ताको कौन अंदेसो—जिसके रथ पर केशव हैं उसको किसका डर है (महाभारत के युद्ध में भगवान कृष्ण अर्जुन के सारथी बने थे)। आशय यह है कि जिसके सहायक भगवान हों उसको कोई हानि नहीं पहुँचा सकता।

जेका खाइए भतवा, उका गाइए गितवा—जिसका भात खाओ, उसके ही गीत गाओ। अर्थात् जिसका खाया जाय उसी की बड़ाई करना या पक्ष लेना उचित है।

जेके पाँव न फूटी बेवाई वो क्या जाने पीर पराई—दे० 'जाके पाँव न फटी···'।

जे गरीब पै हित करै, ते रहीम बड़ लोग—जो ग़रीबों की भलाई करते हैं, वही महान समझे जाते हैं। आशय यह

है कि दयालु और परोपकारी व्यक्ति ही महान होते हैं।

जे गरीब सो हित करे धनि रहीम वे लोग—ऊपर देखिए।

जे घर सास चमकनी बहू कौन सिंगार—जिस घर में सास ही शृंगार करके चमकना चाहे, उस घर में भला बहू क्या शृंगार करेगी। उसे तो गृहस्थी सम्हालनी पड़ेगी। जब कोई बूढ़ी औरत बहुत शृगार करे तो भी व्यंगय में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० जेहि घर सासु चमकूल तेहि घर बौहर कौन सिंगार; ब्रज० जा घर सास चमकनी, बहू को कौन सिंगार।

जेघर हींग न हरदा ते घर जेवें बैल—जिस घर में हींग और हल्दी का प्रयोग नहीं होता वहां का भोजन बैल ही खा सकते है अर्थात् हींग और हल्दी के बिना भोजन स्वादिष्ट नहीं होता।

जेठ-असाढ़ की धूप देख जोगी हो गए जाट—जेठ और आषाढ़ की कड़ी धूप से किसान जोगी बन गए हैं। जेठ-आषाढ़ की कड़ी धूप के डर से जाट काम-धंधा छोड़कर जोगी बन गए हैं। आशय यह है कि जेठ और आषाढ़ की धूप बहुत कड़ी होती है और उससे कठोर परिश्रम करने वाले भी डर जाते हैं। तुलनीय : राज० जेठ-असाढांरा ... तावड़ा जोगी हुयग्या जाट।

जेठ-असाढ़ में तपने दो—जेठ-आषाढ़ की धूप में तपने दो। जो व्यक्ति बहुत सुकुमार हो और उसे कोई कठिन परिश्रम करना पड़ जाय तथा उसमें उसे कष्ट का अनुभव हो तो उसके प्रति कहते है कि इसे तपने दो कुछ दिनों बाद पक्का हो जाएगा। तुलनीय : राज० जेठ वैसाखांरा तावड़ा लागण दो; पंज० जेठ हाड़ बिच तपण देओ।

जेठ आगली परवा देखू, कौन बासरा है यों पेखू; रबि बासर अति बाढ़ बढ़ाय, मंगलवारी ब्याधि बताय; बुधो नाज महँगा जो करई, सनिबासर परजा पीर हरई; चंद्र सुक्र सुरगुरु के बारा, होय तो अन्न भरो संसारा—जेठ माह की प्रतिपदा को यदि रविवार हो तो बाढ़ आती है, मगलवार हो तो रोग बढ़ते हैं, बुधवार हो तो अन्न मँहगा होता हैं, शनिवार हो तो प्रजा के कष्ट दूर होते हैं और सोमवार, गुरुवार तथा शुक्रवार हो तो अन्न का उत्पादन बहुत अधिक होता है।

जेठ उजारे पच्छ में आद्रादिक दस रिच्छ; सजल होयं निरजल कह्यो निरजल सजल प्रत्यच्छ—जेठ के आद्रा आदि दस नक्षत्रों में वर्षा हो तो वर्षा ऋतु में वर्षा नहीं होती और यदि न हो तो वर्षा ऋतु में खूब वर्षा होती है।

जेठ उज्यारी तीज दिन, आद्रा रिख बरसंत; होजो भाखं भड्डरी, दुभिच्छ अवसि करंत—जेठ सुदी तृतीया को यदि आर्द्रा नक्षत्र बरसे, तो भड्डरी ज्योतिषी कहते है कि अवश्य अकाल (दुभिक्ष) पड़ेगा।

जेठ के भरोसे पेट—जेठ (पति के बड़े भाई) के बल पर गर्भवती हुई हो। (क) जब कोई दूसरे के बल पर कोई काम करता है तब व्यंग्य में उसके प्रति ऐसा कहते हैं। (ख) दूसरों के भरोसे जीने वाले के प्रति भी व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : पंज० जेठ परोसे टिड।

जेठ जिठानी देवरा, सब मतलब के मीत; मतलब बिन तो कोई भी राखं नाहीं प्रीत—सारे कुटुम्ब-जन मतलब के साथी हैं, बिना स्वार्थ के कोई प्रीति नही करता।

जेठ जेठे आषाढ़ हेठे—जेष्ठ में मौसम अच्छा और आषाढ़ में खराब हो जाता है।

जेठ तपत हो वर्षा गहरी, हंसी बाँगरू रोवें नहरी—जेष्ठ (जेठ) के तपने से वर्षा अधिक होती है जिससे ऊँची ज़मीन वाले खुश होते हैं और नीची ज़मीन वाले दुखी होते हैं।

जेठ पहिल परिवा दिन बुध बासर जो होइ, मूल असाढ़ी जो मिलै पृथ्वी कंपे जोइ—जेठ वदी प्रतिपदा को बुधवार हो और आषाढ़ की पूर्णिमा को मूल नक्षत्र हो तो पृथ्वी दुःख से काँप उठेगी। अर्थात् प्रजा पर बहुत आपदाएँ आएँगी।

जेठ बदी दसमी दिना जो सनिबासर होयु; पानी होय न धरिन पर, बिरल जीवं कोयु—जेठ मासके कृष्ण पक्ष की दशमी को यदि शनिवार हो तो वर्षा नही होती जिससे जन-जीवन कष्टमय हो जाता है।

जेठ बीती पहली पड़वा जो अंबर धरहड़ै, अषाढ़ सावन जाय कोरो भादवे बिरखा करै—आषाढ़ मास की प्रतिपदा को यदि बादल गरजें तो वर्षा आषाढ़ और सावन में न होकर भादों में होती है।

जेठ मास जो तपै निरासा, तो जानो बरखा की आसा—जेठ माह की कड़ी तपन अच्छी वर्षा का शकुन होती है।

जेठ में जरै माघ में ठरै, तब जीभी पर रोड़ा परै—जेठ की भीषण धूप और माघ की कड़ाके की ठंड को सहने के पश्चात् ही किसान को गुड़ खाने को मिलता है। अर्थात् ऊख की खेती बहुत परिश्रम से होती है।

जेठा अंत बिगाड़िया, पूनम नै पड़वा—जेठ मास की पूर्णिमा और आषाढ़ की प्रतिपदा को वर्षा की बूंदों का पड़ना अच्छी वर्षा का लक्षण नही है।

जेठे की जिठाई रखली—जब कोई बड़े की अनुचित बात को भी स्वीकार कर ले तो कहते हैं।

जे डरे भिन्न भेली, सेह परल बखरा—जिसके कारण या डर से अलग हुए, वही हिस्से में पड़ा। जब किसी परेशानी से बचने का कोई उपाय किया जाय, फिर भी वह पीछा न छोड़े तब कहते हैं।

जेतना गहिरा जोते खेत, बीज परै फल अच्छा देत—खेत की जुताई जितनी ही गहरी होती है, बीज बोए जाने पर उतना ही अच्छा फल निकलता है, अर्थात् उत्पादन अधिक होता है। तुलनीय : ब्रज० जितनों गहरो जोतै खेत, बीज पर्यौ फल अच्छो देत।

जेतने पुरखा पुन्नि कीन्हेनि, ओतने लरिका कुकरम कीन्हेनि—जब किसी सम्मानित परिवार के बच्चे नालायक हो जाते है तब कहते है।

जे न मित्र दुःख होहि दुखारी, तिन्हिं बिलोकत पातक भारी—जिन्हें अपने मित्रों के प्रति उनके दुख में महानुभूति नहीं है, उनका दर्शन भी पाप है। जो मित्र के दुख में साथ नहीं देते ऐसे लोगों से संबंध नहीं रखना चाहिए। तुलनीय : मरा० मित्र संकटीं कामा नये, त्याचे मुखावलोकन करू नये।

जे पर भनिति सुनत हरषाहीं, ते वर पुरुष बहुत जग नाहीं—संसार में ऐसे मनुष्य बहुत कम है जो दूसरों के गुणों को सुनकर प्रसन्न होते है।

जे पांडे के पत्रा में ते पंडियाइन के अंचरा में—पुरुष से स्त्री के चतुर होने पर कहा जाता है। तुलनीय : ब्रज० जो पाडे के पत्रा में, सो कहूँ नाये।

जे पूत दरबारी भइलें देव पितर दुनों से गइलें—नीचे देखिए।

जे पूत दरबारी भइले देव लोक दुनों से गइलें—राजा की नौकरी करने पर उचित-अनुचित सभी कुछ करना पड़ता है और अनुचित काम करने पर लोग विरुद्ध हो जाते हैं तथा भगवान भी रुष्ट हो जाते है। आशय यह है कि जो दरबार में रहते है उनका धर्म-कर्म बिगड़ जाता है।

जे पूत परदेशी भइलें देव पितर सबसे गइलें—जो लोग घर से बाहर (परदेशों में) रहते हैं उनका धर्म खराब हो जाता है।

जेब में नहीं खीली की डली, छैला फिरै गली-गली—जेब में तो सुपारी का टुकड़ा (खीली की डली) भी नहीं है लेकिन बाबू हर गली मे चक्कर लगा रहे हैं। झूठी शान दिखाने वाले के प्रति व्यंग्य ऐसा में कहते है।

जेब में हो माल, खींचे सबकी खाल—जिसके पास धन हो वह लोगों की खाल भी खिचवा सकता है। आशय यह है कि संपन्न व्यक्ति सब कुछ कर सकता है। तुलनीय : माल० जेब में वे नगदुल्ला तो खेले बेटा अबदुल्ला; पंज० जेब बिच होवे माल सारे खिचन खल।

जेब से निकालोगे तो पता चलेगा—जब अपने पास से व्यय करना पड़ेगा तब पता चलेगा। जब कोई व्यक्ति दूसरे के धन को पानी की तरह बहाता है तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : भीली—नगध गण हो जेरां ते खबर पड़ है। पंज० खीसे विचो कडोगे तां पता लग्गेगा।

जें बहुत धौंधियाला, जल्दी जाला—जो बहुत अत्याचार करते है वे शीघ्र मिट जाते हैं। आशय यह है कि अत्याचारियों का थोड़े दिन में ही पतन हो जाता है।

जे बिनु काज दाहिने हु बाएँ—जो व्यक्ति व्यर्थ में ही अपने पक्षवालों के प्रतिकूल रहे वह मूर्ख कहलाता है और शीघ्र ही नष्ट हो जाता है।

जे मुंह चीरेला ऊ अहारो देला—जो ईश्वर जन्म देता है, वही खाने-पीने को भी देता है। अर्थात् ईश्वर सारी व्यवस्था करता है।

जेरों से ही शेर होते हैं—(क) जिसे अधिक दबाया जाता है, वह आगे चलकर बहुत बड़ा विद्रोही होता है। (ख) कमजोर बच्चे से ही शक्तिशाली आदमी बनता है।

जेवड़े से नाड़ा घिसना पड़ता है—गले में रस्सी पड़ने पर सिवा उसमे गला घिसने के और कोई उपाय नही है। अर्थात् चाहे जैसी विपत्ति आ पड़े झेलनी ही पड़ती है। जब कोई मनष्य मजबूर होकर कोई काम करे तब कहते हैं।

जेवरी जल गई पर ऐंठ न गई—रस्सी (जेवरी) जल गई लेकिन उसकी ऐंठन नही गई। (क) जब किसी बुरे या दुष्ट व्यक्ति का पतन हो जाय, फिर भी वह अपनी हरकत से बाज न आए तो कहते हैं। (ख) जब कोई धनी व्यक्ति निर्धन हो जाने पर भी पहले जैसा ही रोब दिखाता है तब भी कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० जेवरी जरि गई परि ऐंठ न गई; पंज० रस्मी सड़ गयी पर अकड़ (बट) नई गया।

जे सठ गुरु सन इरखा करहीं, रौरव नरक कोटि जुग परहीं—गुरु से ईर्ष्या (इरखा) करने वाला नीच व्यक्ति कोटि (करोड़ों) युग तक रौरव नरक में कष्ट भोगता है। अर्थात् गुरु से द्वेष करना महा अपराध है।

जेहि कर जेहि पर सत्य सनेहू, सो तेहि मिलइ न कछु संदेहू—जिसका जिस पर सच्चा स्नेह होता है, वह उसे अवश्य ही मिलता है।

जेहि का काम ओहि के छाजै, और करे तो डंडा बाजै—जिसका जो काम होता है उसी को वह शोभा देता है दूसरा करे तो उसे तकलीफ़ उठानी पड़ती है। तुलनीय : अव० जेहि का काम वोही का छाजे, औरन करे तौ डंडा बाजै; भोज० जेकर काम ओही के छाजे, दूसर करे तो डंडा बाजै।

जेहि के पाँव न फटी बेवाई, सो का जाने पीर पराई?—दे० 'जिसके पाँव न फटी बिवाई...।' तुलनीय : मल० अन्यन्टे भारम अवने अरियू; अं० The wearer alone knows where the shoe pinches.

जेहि घर एक न डगा तेहि घर डगी का मगा—(क) जिस घर में एक आदमी नहीं था, उसमें चहल-पहल मच गई। यदि ऐसा हो जाए तो कहते हैं। (ख) जिनके घर कभी कोई भी न जाता हो और फिर लोग खूब जाने लगें तो भी कहते हैं। तुलनीय : अव० जेहि घर एक न डगा तेहि घर डगी का मगा।

जेहि घर साला सारथी तिरिया की हो सीख, सावन में बिन हल लवै तीनों माँगें भीख—जिस घर में साला प्रधान हो, जहाँ स्त्री की राय से काम किया जाता हो और जो किसान सावन मास में बिना हल के रहे ये तीनों भीख माँगते हैं, अर्थात् इनकी दशा शीघ्र ही बिगड़ जाती है।

जेहि नहिं सीखो बोलिबो, तेहि सीखो सब धूर—जिसने बोलना नहीं सीखा उसका ज्ञान धूल के समान है। आशय यह है कि जिसे बोलने का ढंग नहीं आता या जिसे बोलने की तमीज़ नहीं है वह चाहे कितना भी विद्वान हो फिर भी कहीं मान नहीं पाता।

जेहि पितु देइ सो पावइ टीका—पिता जिसे राज्य-तिलक देता है वही राज्य का अधिकारी होता है। आशय यह है कि ईश्वर की जिस पर कृपा होती है वही महान बन जाता है।

जेंह दिन जेठ बहै पुरवाई, तै दिन सावन धूरि उड़ाई—जेठ में जितने दिन पुरवाई (पूरब दिशा से बहने वाली वायु) बहती है उतने ही दिन सावन में धूल उड़ती है, अर्थात् उतने दिन वर्षा नहीं होती।

जै दिन भादों बहै पछार, तै दिन पूस में पड़ै तुसार—भादों के माह में जितने दिन तक पछुवाँ हवा चलेगी पूस में उतने ही दिन पाला पड़ेगा।

जैन मंदिर में कंघी का क्या काम—जैन महात्मा बाल रखते ही नहीं तथा स्त्रियाँ वहाँ नहीं रहतीं, इसलिए वहाँ कंघी होने का प्रश्न ही नहीं उठता। जब कोई व्यक्ति किसी ऐसी वस्तु की चाह करे जो उस स्थान पर न पाई जाती हो या उसकी वहाँ कोई आवश्यकता न हो तो इस प्रकार कहते हैं। तुलनीय : मेवा० उपासरा में कांगसी को कई काम; पंज० जैन मंदर बिच कंगी दा की कम्म।

जै राम के लिए मुखिया को नाराज क्यों करना—जैरामजी जैसी मुफ़्त की वस्तु के लिए मुखिया जैसे शक्तिशाली व्यक्ति को नाराज़ क्यों करना? (क) किसी मामूली-सी बात के लिए किसी को नाराज़ नहीं करना चाहिए। (ख) बड़ों का आदर करने से वे सदा अनुकूल रहते हैं और लाभ पहुँचाते हैं। तुलनीय : राज० सिलाम सटै मियाँजी नै वेराजी क्यों करणा?

जैसन को तैसन, सुकटी को बैंगन—जब किसी दुबली-पतली लड़की की शादी किसी मोटे-ताज़े लड़के से हो जाती है तो इस बेमेल जोड़ी पर व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। (सुकटी=दुबली पतली)।

जैसन देखे गाँव की रीत, तैसी उठावे अपनी भीत—नीचे देखिए।

जैसन देखे गाँव की रीति तैसन करे लोग से प्रीति—जहाँ का जैसा रिवाज देखे वहाँ वैसा ही करना चाहिए।

जैसा अनजल खाइए, तैसा ही मन होय; जैसा पानी पीजिए, तैसी बानी होय—जैसा भोजन किया जाता है वैसे ही विचार भी होते हैं और जैसा पानी पीते हैं वैसी ही बोली होती है। आशय यह है कि सात्विक भोजन करने वालों के विचार भी सात्विक होते हैं और तामसी भोजन करनेवालों के तामसी।

जैसा अन्न खाओ वैसा ही मन होता है—दे० 'जैसा अन्न वैसा मन।'

जैसा अन्न खाओ वैसी ही डकार आती है—दे० 'जैसा अन्न वैसी डकार।' तुलनीय : मेवा० खावे धान, उस्यो आवे ज्ञान; सं० यादृशं भक्षते अन्नं तादृशी जायते मतिः।

जैसा अन्न, वैसा मन—मनुष्य जैसा अन्न खाता है वैसे ही उसके विचार भी होते हैं। अर्थात् परिश्रम से उत्पन्न या भले तरीक़ों से कमाया गया अन्न विचारों को शुद्ध करता है और बुरे तरीक़ों से कमाया हुआ भोजन विचारों को दूषित कर देता है। तुलनीय : राज० अन्न खावै जिसो मन्न हुवै; गढ़० जनो रिजक, तनि बुध; मग०, भोज० जइसन अन ओइसन मन; पंज० जैसा खावो अन्न वैसा हो जावे मन्न।

जैसा अन्न, वैसी डकार—जिस तरह का भोजन किया जायगा उसकी डकार भी वैसी ही आएगी। जैसा काम किया जाएगा वैसा ही उसका फल भी मिलेगा। तुलनीय : राज०

अन्न खावै जिसी डकार आवै ।

जैसा अन्न वैसी नीयत—परिश्रम से उत्पन्न भोजन विचारों को शुद्ध करता है और मुफ़्त का खाने वालों के विचार बुरे कामों की ही ओर जाते है। तुलनीय : राज० अन्न खावै जिसी निवंत हुवै; पंज० जैसा अन्ना वैसी नीयत।

जैसा अन्न वैसी बुद्धि— ऊपर देखिए। तुलनीय: राज० जिसो खावै अन्न जिसो हुवै मन्न; अव० जैसेन अन्न वैसेन बुद्धी।

जैसा आदमी खुद होता है वैसा ही दूसरे को समझता है—भले आदमी सबको भला और बुरे सबको बुरा समझते हैं। जब कोई आदमी किसी सज्जन की बुराई करे तो कहते हैं। तुलनीय: हरि० जिसा आदमी आप होसे वैसा ही दूसरे ने सोचै से।

जैसा आया, वैसा गया- नीचे देखिए। तुलनीय : ब्रज० जैसौ आयौ, वैसौ गयौ; अं० Ill got ill spent.

जैसा आवे वैसा जावे—जैसे आता है वैसे चला भी जाता है अर्थात् खोटी कमाई का पैसा ठहरता नहीं।

जैसा ऊँट लंबा वैसा गधा खवास—(क) एक-सी जोड़ी मिल जाने पर कहा जाता है। (ख) लंबा आदमी बेवक़ूफ़ समझा जाता है।

जैसा कन भर वैसा मन भर—(क) हांड़ी का एक चावल टटोलने से मालूम हो जाता है कि गल गया कि नहीं। आशय यह है कि केवल थोड़ी-सी बातचीत या व्यवहार से ही मनुष्य के चरित्र और स्वभाव का पता लग जाता है। (ख) चोरी आदि बुरे काम थोड़े किए जाएँ तो भी बदनामी और सज़ा मिलती है और अधिक किए तो भी वही बात है। तुलनीय : ब्रज० जैसौ कन भरि, वैसौ मन भरि।

जैसा कमाओ तैसा खाओ—आमदनी के अनुसार ही खर्च करना चाहिए। तुलनीय : असमी—आय् इच्छाइ व्यय्; पंज० जिहो जिहा कमाओ ओहो जिहा खाओ; अं० Cut your coat according to your cloth.

जैसा करेगा, वैसा पाएगा -भले कर्म का फल भला मिलेगा और बुरे कर्म का बुरा। तुलनीय : भीली—जहू करे जहूँ मले; राज० करै जिसा भुगतै; गढ़० जनो करलो तनो भरलो; अव० जे जैसेन करी, ओयसेन पाई; पंज० जिवें करें गा उवें परें गा; ब्रज० जैसौ करैगौ वैसौ भरैगौ।

जैसा करेगा, वैसा भरेगा—जो जैसा कर्म करता है, उसको वैसा ही फल भी मिलता है। तुलनीय : मरा० करावें तसे भरावें; सं० यथा कर्म तथा फलम्।

जैसा करे, वैसा भरे—ऊपर देखिए।

जैसा करो काम, वैसा पाओ दाम—जैसा काम करोगे वैसा ही उसका पारिश्रमिक भी मिलेगा। अर्थात् कार्य के अनुसार ही फल मिलता है। जो व्यक्ति साधारण काम करके बड़ा लाभ चाहे उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : भीली—थारे हाथे कींदू, हाथे आयूं।

जैसा करोगे, वैसा पाओगे—दे० 'जैसा करेगा, वैसा...'।

जैसा करोगे, वैसा भरोगे—दे० 'जैसा करेगा...'।

जैसा कल का हाकिम वैसा आज का—एक पद के अधिकारी पुराने हों या नए, उनके अधिकार एक से ही होते हैं। किसी अधिकारी को नया जानकर उसको निर्बल नहीं समझना चाहिए। तुलनीय : मेवा० घड़ी रो हाकम जनम को वास बिगाड़ देवे।

जैसा कहा, वैसा सुना—जब कोई किसी के साथ अनुचित व्यवहार करे और वह भी उसके साथ वैसा ही व्यवहार करे तब ऐसा कहते है। तुलनीय : माल० उं कई ने थूं हुणनो।

जैसा काछ काछे, तैसा नाच नाचे—(क) जैसा वेष हो उसी के अनुसार काम करे। (ख) हैसियत के अनुसार ही काम करना चाहिए। तुलनीय : ब्रज० जैसौ काछै, वैसौ नाचै।

जैसा काम तैसा दाम—(क) जैसा काम करोगे वैसी ही मज़दूरी भी मिलेगी। (ख) कर्म के अनुसार ही फल मिलता है। तुलनीय : असमी—दाम चाइ काम्; सं० कर्म्मीर्यतां फलं पुष्पम्; अं० A you sow, so you reap.

जैसा काम वैसा दाम- ऊपर देखिए। तुलनीय : ब्रज० जैसौ काम, वैसे दाम।

जैसा कारन तैसा कारज -जैसा साधन होता है वैसा ही काम भी होता है।

जैसा किया, वैसा पाया—जब किसी को बुरे काम का बुरा फल मिलता है तब कहते हैं। तुलनीय : राज० जिसा करै जिसा भोगै; अव० जेस किहा ओस पाया; पंज० जिदां कीता उदां मिलया।

जैसा को तैसा—जो जैसा व्यहार करे उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए। तुलनीय : भोज० ओइसना के ओइसने; सं० शठे शाठ्यं समाचरेत्; ब्रज० जैसे कू तैसौ।

जैसा खाए अन्न, वैसा बने मन—(क) सात्विक भोजन करने वाले सात्विक विचार के तथा तामसी भोजन

करने वाले तामसी विचार के होते हैं। (ख) ताजा एवं शुद्ध भोजन करने वाले की बुद्धि तीव्र होती है और बासी तथा सड़ा-गला खाने वाले की बुद्धि मंद होती है। तुलनीय : कौर० पाछली चंदिया खाय, पाछली अक्कल आवै; ब्रज० जैसौ खावै अन्न, वैसौ होयै मन्न।

जैसा खाय अन्न, वैसा होय मन—ऊपर देखिए।

जैसा खीरा चोर वैसा हीरा चोर—अर्थात् अपराध अपराध ही है, चाहे वह छोटा हो या बड़ा। तुलनीय : मग० जइसन खीरा के चोर ओइसन हीरा के चोर।

जैसा खुदा, वैसा फ़रिश्ता—जैसा खुदा है वैसे ही उसके फ़रिश्ते भी हैं। जब स्वामी और सेवक एक से ही दुष्ट हों तो व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० खुदा जेहड़ा फ़रेश्ता, आँधा अंहूर थोथो धान, जैसा गुर विमा जजमान; ब्रज० जैसौ खुदा, वैसे फिरिस्ते।

जैसा गुरू, वैसा चेला—जब शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों मूर्ख होते है तब व्यंग्य से ऐसा कहते हैं। तुलनीय : माल० गुरू गंडिया चेला अन्याई; ब्रज० जैसौ गुरु, वैसौ चेला।

जैसा घड़ा वैसी ठीकरी, जैसी माँ वैसी बेटी—जैसा घड़ा होगा वैसी ही उसकी ठीकरी भी होगी तथा जैसी माँ होगी वैसी ही उसकी बेटी भी होगी। माँ का प्रभाव बेटी के ऊपर अधिक पड़ता है। जो जैसा होता है उससे उत्पन्न या सबद्ध लोग भी वैसे ही होते हैं। तुलनीय : राज० घड़े सरीखी ठीकरी माँ सरीखी डीकरी; पंज० जिहो जिही माँ ओहो जिही ती, जिहो जिहा कड़ा ओहा जिही ठीकरी।

जैसा घर, वैसा वर—जैसे को तैसा मिलने पर कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० जैसौ घर, वैसौ वर।

जैसा जामन वैसा दही—जैसा वीर्य होगा वैसी ही संतान होगी। अर्थात् माँ-बाप के गुणावगुण संतान में भी होते हैं। तुलनीय : पंज० जिदां जामन उदां दई।

जैसा जेठ का, वैसा पेट का—अपने बच्चों और जेठ (पति के बड़े भाई) के बच्चों को एक समान मानना चाहिए। तुलनीय : माल० जेठ रा जो पेट रा।

जैसा डेरा वहाँ, वैसा तंबू यहाँ—दोनों स्थानों में तंबू में ही रहना है तो कहीं भी रह लेंगे। जब किसी व्यक्ति को सब जगह कष्ट ही मिलता हो तो वह स्वयं को कहता है। तुलनीय : गढ़० तनि वलि मांडा, तनी पलि मांडा।

जैसा ताना वैसा बाना—जो जिस प्रकृति का हो यदि उसे उसी प्रकृति का अन्य कोई मिल जाय तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मैथ० जेहने तानी तेहने भरनी; भोज० जइसन पसु तइसन बान्हन; ब्रज० जैसौ तानों, वैसौ बानों। अं० Tit for tat.

जैसा ताना वैसी बिनाई—अर्थात् साधन के अनुरूप ही कार्य भी होगा—अच्छा साधन होगा तो कार्य भी अच्छा होगा, बुरा साधन होगा तो कार्य भी बुरा होगा। तुलनीय : भोज० जइसन तोर तानी भरनी ओइसन मोर बिनवाई।

जैसा तेरा आव-भाव, तैसा मेरा आशिरबाद—जैसा तुम मेरा आदर-सत्कार करोगे वैसा ही मैं तुम्हें आशीर्वाद भी दूँगा। जो जैसा व्यवहार करे उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए।

जैसा तेरा खोट रुपैया वैसा मेरा खोखर पैसा—जब कोई बुरे के साथ बुराई करता है तब कहते हैं। तुलनीय : गढ़० जनि गोरय की निदेंदी वाण, तनि ल्वार की लचलची पाण।

जैसा तेरा घूँघर बीया वैसी हींग हमारी—जैसी घुनी हुई मटर तुमने मुझे दी वैसी ही खराब हींग मैंने तुम्हें दी। जब जैसे को तैसा मिल जाय तो कहते हैं।

जैसा तेरा देना लेना, वैसा मेरा गाना-बजाना—(क) किसी के बुरे बर्ताव के बदले जब बुरा बर्ताव किया जाता है और वह उलाहना देता है तब कहते हैं। (ख) जैसा अथवा जितना दाम दिया जाता है वैसा ही काम मिलता है। (ग) जैसा दाम दिया जाता है वैसा ही माल मिलता है। तुलनीय : गढ़० जनो बाजो तनो नाच; पंज० जिदां तेरा देना लेना उदां मेरा गाना वजाना।

जैसा तेरा नोन पानी तैसा मेरा काम जानी—ऊपर देखिए।

जैसा तेरा पातर सावाँ वैसा मेरा झाँझर (खाँखर) खावाँ—दे० 'जैसा तेरा देना लेना······'।

जैसा दाम वैसा काम—जैसा धन व्यय किया जाता है, वैसा ही काम भी होता है। अर्थात् लागत के अनुसार ही काम होता है। तुलनीय : मरा० जसा दाम तसें काम; हरि० जितणा गुड़ गेरै उतणा ए मिट्ठा हो; अव० जैसेन दाम वैसेन काम।

जैसा दुद्ध वैसी बुद्ध—जैसी माँ का दूध पिओगे वैसी ही बुद्धि होगी। अर्थात् माँ का प्रभाव बच्चों पर सर्वाधिक होता है। तुलनीय : गढ़० जनि दुद्ध तनि बुद्ध।

जैसा दूध धौला, वैसी छाछ धौली—जब दो वस्तुओं में काफ़ी समता होती है तब ऐसा कहते हैं।

जैसा देखना वैसा करना—(क) जिस तरह सभी व्यवहार करते हों उसी प्रकार का व्यवहार करना चाहिए।

(ख) जिस प्रकार का व्यवहार कोई अपने साथ करे उसके साथ भी वैसा ही व्यवहार करना उचित है। तुलनीय: राज० देखणो जिसो वरतणों; पंज० जिदां देखना उदां करना; ब्रज० जैसो देखें, वैसो करें।"

जैसा देवता वैसा पुजारी— जब किसी बुरे व्यक्ति को सेवक भी बुरा ही मिल जाय तब व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० जिसो देवता बिसा पुजारी; पंज० देवता बरगे पुजारी; ब्रज० जैसो देवता, वैसो पुजारी।

जैसा देव तैसी पूजा --जिस स्वभाव का मनुष्य होता है उसके साथ वैसा ही व्यवहार किया जाता है। तुलनीय : मग० जैसन देवता तैमन पूजा; भोज० जइसन देव तइसन पूजा; ब्रज० जैसो देव, वैसी पूजा।

जैसा देव वैसी पूजा -जो जैसा हो उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए। तुलनीय : राज० जिसो देव बिसो पूजा; छत्तीस० लबरा देवता खरी के अठवाही।

जैसा देवे वैसा पावे, पूत भतार के आगे आवे—जो जैसा कर्म करता है उसका परिणाम उसके परिवार एवं सम्बन्धियों को भी उठाना पड़ता है। इस संबंध में एक कहानी है जो इस प्रकार है: किसी स्त्री ने विषयुक्त दो रोटियाँ किसी साधु को दी। साधु ने ले जाकर उन्हें अपनी कुटिया में रख दिया। संयोगवश उस स्त्री का पति और पुत्र कहीं से थके हुए उस कुटिया पर आ पहुँचे। उन्होंने साधु से पानी पीने के लिए माँगा। साधु ने वही दोनों रोटियाँ उन दोनों को खिला दी और पानी पिला दिया। वे दोनो रोटियाँ खाकर मर गए। तुलनीय : भोज० जेइसन करी, ओइसन पाई, पूत भतार के आगे आई।

जैसा दे वैसा पाय, पूत भतार के आगे आय--ऊपर देखिए।

जैसा देस वैसा भेस -जहां रहें वहाँ की रीति-रिवाज के अनुसार रहें। तुलनीय : अव० जैसन देस वैसन भेस; राज० देस जिसो भेस; गढ़० जनो देश, तनो भेष; मरा० देश तसा वेश; मेवा० जस्यो देश वस्यो भेष; असमी— दिन् देखि भेश् लोवा; सं० वर्तमानेन कालेन वर्तयन्ति विचक्षणा: मैथ० जेहन देस तेहन भेस; भोज० जइसन देस ओइसन भेस; अं० Whien in Rome do as the Romans do.

जैसा नचाओ वैसा नाचे—जो व्यक्ति सब प्रकार से किसी के अधीन हो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० जैसो नचाओ, वैसो नाचै।

जैसा नाग वैसा सांप—जहाँ दो व्यक्तियों में समान रूप से बुराई पाई जाती है वहाँ व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

जैसा नाता वैसा गोत—जब कोई बिना पूर्व परिचय के किसी से ज़बरदस्ती संबंध जोड़ता है तब कहते हैं। तुलनीय : बुंद० अड़ुआ नातो, पड़ुआ गोत; ब्रज० सड़ुआ नातौ पड़ुआ खेव।

जैसा नाम वैसा गुण—नाम के अनुसार गुण होने पर कहा जाता है। तुलनीय: भोज० जइसन नाँव ओइसन गुन; ब्रज० जैसो नाम, वैसो गुन।

जैसा पशु वैसा चारा --अर्थात् जिस स्वभाव का व्यक्ति होता है उसके साथ वैसा ही व्यवहार किया जाता है। या जो जैसा होता है उसे उसी प्रकार का मान-सम्मान भी मिलता है। तुलनीय : भोज० जइसन पस तइसन बान्हन।

जैसा पशु वैसा बंधना --जो जैसा हो उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए। तुलनीय : अव० जैसा पशु तस बंधना।

जैसा पानी पीजिए, तैसी बानी होय -नीचे देखिए।

जैसा पानी वैसी बानी —जिस प्रकार का पानी पिया जाता है उसी प्रकार की वाणी होती है। आशय यह है कि जलवायु और वातावरण का प्रभाव मनुष्य के स्वभाव पर पड़ता है। तुलनीय : राज० जिसो पीवै पाणी बिसी हुवै वाणी; पंज० जिहो जिहा पाणी उहो जिही वाणी; ब्रज० जैसो पानी, वैसी बानी।

जैसा पाय, वैसा निभाय—जैसे व्यक्ति मिलें उनके साथ उसी तरह का व्यवहार करना चाहिए। व्यक्ति को देखकर उससे उसके योग्य ही व्यवहार करना चाहिए। तुलनीय : भीली --जहो वा जहो बर्ताव।

जैसा पेड़, वैसा फल —जैसा वृक्ष होता है उसका फल भी वैसा होता है। आशय यह है कि जैसे माँ-बाप होते हैं वैसे ही बच्चे भी होते हैं। (प्रायः इस कहावत का प्रयोग बुरे माँ-बाप की बुरी संतानों के लिए ही किया जाता है)। तुलनीय : राज० बड़ जिसा टेंडा; असमी—अजात् गछर् बिजात् फल्; पंज० जिहो जिहा पाणी उहो जिही वाणी; अं० Wild trees produce useless fruit.

जैसा पेड़ वैसा फल; जैसा बाप वैसा बेटा—पेड़ के अनुरूप ही फल होता है और बाप के अनुरूप बेटा। प्रायः पुत्र में पिता के गुण या अवगुण पाए जाते हैं। तुलनीय : राज० बड़ जिसा टेंटा, बाप जिसा बेटा।

जैसा बर्तन वैसी ठीकरी, जैसी माँ वैसी बेटी—दे० 'जैसा घड़ा वैसी ठीकरी……'।

जैसा बाप, तैसा बेटा—(क) यदि पिता के जैसा ही

पुत्र का भी चाल-चलन हो तो कहते हैं। (ख) किसी वस्तु आदि की परीक्षा किए बिना उसके बीज या जनक के आधार पर ही कभी-कभी उसके भी गुण-दोष आदि का अनुमान लगा लेते हैं। तुलनीय : पंज० जिसरां दा प्यो, ओसरां दा पुत्तर।

जैसा बाप वैसा बेटा—ऊपर देखिए। तुलनीय : मल० अम्मयुम् मकलुम पेण्णु तन्ने; असमी—बाप चाइ बेटा; ब्रज० जैसा बाप वैसो बेटा; अं० Like father like son.

जैसा बाप वैसा बेटा, जैसी माँ वैसी बेटी—बाप के अनुरूप पुत्र तथा माँ के अनुरूप पुत्री होती है। पुत्र पर पिता का और पुत्री पर माँ का प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है। तुलनीय : भीली—बाप जहाँ बेटा, माँ जाँही डीकरी; पंज० पिओ बरगा पुत मां बरगी तीं।

जैसा बीज वैसा गाछ—जैसा बीज बोया जाता है वैसा ही वृक्ष होता है। अर्थात् जैसा बाप होता है वैसा ही बेटा भी होता है।

जैसा बेटा रानी का वैसा बेटा कानी का—तात्पर्य यह है कि हर माँ को अपना पुत्र प्रिय होता है चाहे वह ग़रीब हो या धनी। तुलनीय : भोज० जइसन रानी क ओइसन कानी क; पंज० जिदां पुत्र रानी दा उदाँ पुत कानी दा।

जैसा बोएगा, वैसा काटेगा—कर्म के अनुसार ही फल मिलता है। तुलनीय : छत्तीस० जैसन बोंही, तैसन लूही; गढ़० जनो बूतणो तनो लौणो; अव० जे जैसन बोइ वैसन काटी; अं० As you sow so you reap.

जैसा बोवेगा, वैसा काटेगा—ऊपर देखिए। तुलनीय : ब्रज० जैसो, बोवैगो, वैसोई काटैगो।

जैसा बोवे तैसा काटे—दे० 'जैसा बोएगा वैसा…'।

जैसा बोवोगे वैसा काटोगे—दे० 'जैसा बोएगा…'।

जैसा ब्राह्मण वैसी दक्षिणा—जो जिस ढंग का होता है उसका उसी ढंग से आदर-सत्कार किया जाता है। तुलनीय : ब्रज० जैसो बाम्हन, वैसी दच्छिना।

जैसा भाई का मसाला वैसा बहिन का बघार—जैसा भाई मसाला लाता है वैसा ही बहिन बघार लगाती है। आशय यह है कि (क) जितना व्यय किया जाता है उतना ही अच्छा काम होता है। (ख) जैसा दूसरे से व्यवहार किया जाता है वह भी वैसा ही व्यवहार करता है। तुलनीय : राज० जिसा भाईरा मोसाळा बिसा बहनरा गीत।

जैसा भाई का लेना-देना वैसे बहिन के गीत—भाई बहन को जैसा सम्मान देता है, उसी के अनुसार बहन भाई की प्रशंसा या निन्दा करती है। आशय यह है कि जिस ढंग का कोई किसी से सम्बन्ध रखता है उसी ढंग से वह भी उसके साथ व्यवहार या संबंध रखता है।

जैसा भोजन, वैसी बुद्धि—मनुष्य जिस तरह का भोजन करता है उसी तरह की उसकी बुद्धि तथा विचार होते हैं। तुलनीय : गढ़० जनो रिजक, तनि बुध; पंज० जिदां दा खाण उदां दी अकल।

जैसा मन हराम में, वैसा हरि में होय; चला जाय बैकुंठ को, रोक सके ना कोय—जिस तरह बुराई में मनुष्य का मन लगता है, उसी प्रकार यदि ईश्वर की भक्ति में लग जाय तो उसे मोक्ष प्राप्त हो जाय। आशय यह है कि अच्छाई की अपेक्षा बुराई में लोगों का मन अधिक लगता है।

जैसा मान वैसा दान—जो जिस स्तर का होता है उसे वैसा ही सम्मान मिलता है। तुलनीय : गढ़० जनो बाजो तनो नाच; पंज० जिदां दा मान उदां दा दान।

जैसा मालिक काम करावे, वैसा नौकर करके लावे—मालिक जिस तरह का काम कहेगा नौकर उसी तरह का करके लाएगा। (क) जब कोई नौकर अपने दोष को मालिक के सिर मढ़ना चाहे तो उसके प्रति व्यंग्य से ऐसा कहते हैं। (ख) जैसा आचरण स्वामी करे, यदि वैसा ही आचरण सेवक भी करे तो उसके प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : गढ़० जनो करो धामी तनो करो कामी।

जैसा मुंह वैसा तमाचा (थप्पड़)—(क) जिस तरह का आदमी हो उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए। (ख) सामर्थ्य देखकर काम देना चाहिए। (ग) उचित दंड और मुँहतोड़ जवाब देने पर भी कहते हैं। तुलनीय : अव० जैसेन मुँह तैसेन तमाचा; पंज० जिदां मुँह उदां दी चपेड़।

जैसा मुंह वैसा तिलक—कोई व्यक्ति जिस स्तर का हो उसका उसी के अनुसार आदर-सत्कार किया जाता है। तुलनीय : मेवा० जस्यो ललाड़ देखे वस्यो तलक काढ़े।

जैसा मुंह वैसा पान—ऊपर देखिए।

जैसा राजा, वैसी प्रजा—जैसा राजा होता है, उसकी प्रजा भी वैसी ही होती है। तुलनीय : गढ़० जन राजा तन परजा; भोज० जइसन राजा ओइसन परजा; सं० यथा राजा तथा प्रजा।

जैसा ललाट वैसा बनावें तिलक—योग्यता या स्थान के अनुसार शृंगार करना चाहिए।

जैसा लीकड़ा भर, वैसा ठीकरा भर—ख़राब काम ख़राब ही है चाहे थोड़ा हो या अधिक। (लीकड़ा = थोड़ा; ठीकरा = अधिक)।

जैसा सलाम वैसा इनाम—जैसा सलाम किया जाता है वैसा ही इनाम भी मिलता है। अर्थात् आदर करने वाले

का सभी आदर और अनादर करने वाले का अनादर करते हैं। तुलनीय : राज० जिसो सिलाम विसो इनाम; पंज० सलाम बरगा इनाम; ब्रज० जैसौ सलाम, वैसो इनाम।

जैसा साँचा, वैसा ढाँचा—जैसा साँचा होता है वैसी ही चीज़ भी तैयार होती है। (क) जैसे माता-पिता होंगे वैसी उनकी संतान भी होगी। (ख) जैसे गुरू होंगे वैसे ही शिष्य भी होंगे।

जैसा साँपनाथ वैसा नागनाथ—जब दोनों व्यक्तियों में समान रूप से बुराई पाई जाती है तब व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० जैसौ स्यांपनाथ, वैसौई नागनाथ।

जैसा साजन पाय, तैसी सेज बिछाय—जैसा व्यक्ति हो उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए। या जो जैसा हो उसका वैसा ही स्वागत करना चाहिए। तुलनीय : राज० साजन जिसा भोजन; मैथ० जैसन साजन पाय तैसन सेज बिछाय; भोज० जइसन पाई साजन ओइसन बिछाई सेज।

जैसा साजन पावै तैसी सेज बिछावै—ऊपर देखिए।

जैसा सूई चोर, वैसा बज्जर चोर—दे० 'जैसा हीरा चोर वैसा···'।

जैसा सूत तैसा फेटा, जैसा बाप तैसा बेटा—जो जैसा होता है उसकी संतान भी वैसी ही होती है। तुलनीय : अव० जस बाप तस बेटवा।

जैसा सूत वैसी फेटी, जैसी माँ वैसी बेटी—ऊपर देखिए।

जैसा सोचे, वैसा पावे—जिस प्रकार के विचार हृदय में होंगे वैसा ही फल मिलेगा। जो व्यक्ति दूसरों के प्रति भले विचार रखते है उनको उसका फल भी अच्छा मिलता है और बुरा सोचने वालों को बुरा। तुलनीय : भीली—जहाँ आपणा भाव जहाँ अपणा भाग; पंज० नीत्ता दियां मुरादां।

जैसा सोता वैसी धारा—दे० 'जैसा सूत तैसा फेटा···'।

जैसी ओढ़ी कामली, वैसा ओढ़ा खेस—जैसे कंबल (कामली) ओढ़ा वैसे खेस भी ओढ़ लिया। ऐसे व्यक्ति के प्रति कहते हैं जिसे जो चीज मिल जाय वह उसी में संतोष कर ले। तुलनीय : ब्रज० जैसी ओढ़ी कामरी, वैसौ ई ओढ़्यौ खेस।

जैसी कन्या वैसा वर—दो समान मूर्खों के संबंध की ओर लक्ष्य करके कहा गया है। तुलनीय : भोज० जइसन कनिया ओइसन बर; अकलंड़ कनिया चकलंड़ बर; पंज० जिदां दी कुड़ी उदां दा खसम; ब्रज० जैसी कन्या वैसो वर।

जैसी कमाई वैसी गँवाई—जो धन जिस ढंग से आता है वह वैसे ही खर्च भी हो जाता है। आशय यह है कि ग़लत तरीक़े से अर्जित धन ग़लत ढंग से खर्च भी हो जाता है। तुलनीय : बुंद० अधरम से धन होत है बरस पाँच कै सात; पंज० जिदां कमाया उदां गवाया; ब्रज० जैसी कमाई, वैसी गमाई।

जैसी करनी तैसी पार उतरनी—मनुष्य जैसा कर्म करता है उसी के अनुसार उसे परिणाम भी मिलता है। (इस लोकोक्ति का प्रयोग प्रायः बुरे लोगों के प्रति करते हैं जो अपने कुकर्मों के कारण कष्ट झेलते हैं)। तुलनीय : अव० जैसी करनी, वैसी पार उतरनी; ब्रज० जैसी करनी, वैसी पार उतरनी।

जैसी करनी वैसा फल—ऊपर देखिए।

जैसी करनी, वैसी पार उतरनी—दे० 'जैसी करनी तैसी···'। तुलनीय : अव० जस करनी ओस पार उतरनी।

जैसी करनी वैसी भरनी—मनुष्य जैसा कर्म करता है उसी के अनुसार उसे फल भी भोगना पड़ता है। तुलनीय : गढ़० जनो देलो तनो पोलो; भोज० जइसन करनी ओइसन भरनी; राज० करणी जिसी भरणी; हरि० जिसी करणी उसी भरणी; कन्न० बित्तिद्दन्ने बळे दुको; माडिददुण्णे महाराय; गुज० करणी तेवी पार उतरनी; पंज० जिदां दी करनी उदां दी भरनी; ब्रज० जैसी करनी पार उतरनी।

जैसी काकी, वैसी भतीजी—परिवार के छोटे हमेशा बड़ों का ही अनुकरण करते है। अतः जैसे बड़े होते हैं वैसे ही छोटे भी होते है। जब कोई परिवार का बड़ा (प्रौढ़) व्यक्ति बुरा हो और उसी को देखकर छोटे भी बुराई करें तो व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

जैसी कुतबो बेगम तैसी बक्सी बेगम—जब एक ही प्रकृति वाले दो व्यक्तियों में से कोई भी प्रशंसा का पात्र नही होता तब ऐसा कहते हैं।

जैसी खान वैसी उसकी मिट्टी—जिस प्रकार के माँ-बाप होते हैं वैसी ही संतान भी होती है।

जैसी गंगा नहाओ, वैसी सिद्धि—जिस विचार से गंगा स्नान किया जाता है उसी प्रकार का फल भी मिलता है। आशय यह है कि कर्म के अनुसार ही फल मिलता है।

जैसी गंदी देवी, वैसे पुजारी—(क) जैसे स्वामी हों उसी प्रकार का सेवक भी मिल जाय तो कहते हैं। (ख) दो बुरे स्वभाव के लोगों में संबंध हो जाने पर भी कहते हैं। तुलनीय : कौर० जैसी गंजी सती, वैसे ऊत पुजारी।

जैसी गई थीं वैसी आईं, हक्के-मेहर का बोरिया लाईं—बदक़िस्मती पर कहते हैं। जब कोई कहीं आशा

करके जाय और वहाँ कुछ न मिले तब भी कहते हैं।

जैसी गठरी अपनी, वैसा मीत न कोय—अपनी गाँठ का धन संसार में सबसे बड़ा मित्र है। आशय यह है कि अपने पास का धन ही समय पर काम आता है।

जैसी चले बयार, ओट तब वैसा दीजे—दे० 'जैसी बहे बयार··'।

जैसी छिनरी आप छिनार, जाने वेसो सब संसार—अर्थात् मनुष्य जिस प्रकृति का होता है दूसरों को भी वैसा ही समझता है। तुलनीय : भोज० जइसन छिनरी आप छिनार ओइसन जाने सभ संसार; सं० आत्मवत मन्यते जगत्।

जैसी जगह, वैसे आदमी—जैसा स्थान होगा वैसे ही वहाँ के निवासी होंगे। जलवायु और वातावरण का प्रभाव मनुष्य पर बहुत अधिक पड़ता है। तुलनीय : भीली—हरका नों भाई हारा हरका।

जैसी झूठी बधाई, वैसी कड़ुई मिठाई—जैसे के साथ वैसा व्यवहार करने पर कहा जाता है।

जैसी तुम्हारी करनी, वैसी महारी देनी—जो जैसा व्यवहार दूसरों के साथ करता है दूसरे भी उसके साथ वैसा ही व्यवहार करते हैं।

जैसी तुम्हारी देन दुकानी वैसी मेरी चखाही (क) जो जिस काम में जितना खर्च करता है वह काम उतना ही होता भी है। (ख) नौकर या काम करने वाले पर जितना खर्च किया जाता है वह उतने ही का काम भी करता है।

जैसी तेरी आवभगत, वैसा मेरा आशीर्वाद—जब कोई किसी के बुरे व्यवहार के प्रति स्वयं भी वैसा ही व्यवहार करे तब कहते हैं।

जैसी तेरी खांय पइया, वैसी होंग हमारी—दे० 'जैसा तेरा पातर मावां···'।

जैसी तेरी तानी बानी, बैसा मेरा बुनना—(क) जो जैसा करता है उसके साथ वैसा ही करने पर ऐसा कहते हैं। (ख) जैसे साधन होते हैं वैसे ही काम भी होते हैं।

जैसी तेरी तिलचावरी, वैसे मेरे गीत—जैसा खर्च किया जाता है वैसा ही काम भी होता है। जब कोई कम खर्च में अच्छा काम करना चाहे तो उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : हरि० जिसी बाँकळी वाँहैगी उसे ऐ गीत गवावैंगी; मरा० जशी तुमची तिला-ताँदुळाची खिचडी तसें माझें गाणें; ब्रज० जैसी तेरी तिलचामरी वैसे मेरे गीत।

जैसी तेरी तुमड़ी वैसे मेरे राग—जैसा साधन होता है वैसा काम भी होता है। तुलनीय : कौर० जैसी तेरी तूमड़ी वैसे मेरे राग; पंज० जिदां दी तेरी तुमड़ी उदां दे मेरे राग

जैसी तेरी फाफड़ कोदो, वैसी मेरी होंग—जैसा दाम वैसी चीज़। जब कोई कम दाम की चीज़ माँगे और उसी के अनुसार उसे मामूली चीज़ दी जाय और वह उसे पसंद न हो तब कहते हैं।

जैसी तेरी बंदगी वैसा मेरा आशीर्वाद—जो जैसा व्यवहार करे उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए।

जैसी दाई आप छिनार, वैसी जाने सब संसार—दे० 'जैसी छिनरी आप छिनार··।'

जैसी देखी गाँव की रीत, वैसी उठाई अपनी भीत—नीचे देखिए। तुलनीय : ब्रज० जैसी देखो गाँम की रीति, वैसी बनाई अपनी भीति।

जैसी देखे गाँव की रीत, तैसी उठाए आपन भीत—मनुष्य जहाँ रहे उसे वहीं के रीति-रिवाज के अनुसार आचरण करना चाहिए। तुलनीय : अव० जैसी देखें गाँव की रीति तैसी उठावैं आपनि भीति; भोज० जैसन देखी गाँव क रीति वैसन उठाई आपन भीत।

जैसी देखे गाँव की रीत वैसी उठावें आपन भीत—ऊपर देखिए। तुलनीय : मैथ० जेहन देखी गाँव क रीत तेहन उठावी अपन भीत; भोज० जेइसन देखी गाँव क रीत ओइसन उठाई आपन भीत; अव० जस देखै गाँव कै रीत, ओस उठावैं आपन भीत।

जैसी देखे गाँव की रीति वैसी करे लोग से प्रीति—दे० 'जैसी देखें गाँव की रीति तैसी···'। तुलनीय : भोज० जइसन देखे गाँव क रीत ओइसन करें लोग से प्रीत; अव० जैसेन देखै गांव कै रीति, वैसेन करे सबसे परीत।

जैसी देखे देश की रीति वैसी उठावे अपनी भीति—दे० 'जैसी देखें गाँव की रीति तैसी·········'।

जैसी देवी वैसे गीत—आदमी जिस योग्य होता है उसके साथ वैसा ही व्यवहार किया जाता है।

जैसी देवी, वैसे पंडा—बुरे व्यक्ति को सेवक भी बुरा मिल जाय तो कहते हैं।

जैसी देवी शीतला, वैसा वाहन खर—जब किसी दुष्ट के साथी भी उसी जैसे हों तो व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : गढ़० नकटी देवी को गाँडो पुजारी।

जैसी धूप वैसी छतरी—समय के अनुसार कार्य करने वाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : तेलु० एएंड का गोड्डु पट्टु; पंज० जिदां दी तुप उदां दी छतरी।

जैसी नकटी देवी वैसा ऊत पुजारी—जब किसी बुरे

को सेवक या साथी भी बुरा ही मिल जाए तब व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय हरि० इसी ए नकटी देब्बी, इसे ए ऊत पुजारी; अव० जस नकफोसरी छेरी तस खउरहा भेड़हा।

जैसी नकटी नचनारी, वैसा टिड़का बजैया—जैसी असुन्दर नाचने वाली है वैसा ही भद्दा बजाने वाला भी है। जब दो बुरे व्यक्तियों में संगति या मेल हो जाय तब कहते हैं।

जैसी नकटी बकरी तैसा भोंड़ा बकरा—दे० 'जैसी नकटी देवी वैसा ......'।

जैसी नीयत वैसी बरकत— विचार के अनुसार ही फल मिलता है। तुलनीय : भोज० जइसन नीयत ओइसन बरक्कत; अव० जस निअत, ओस बरकत; नींत गैल्य बरकत्य; गढ़० जनि नेथ तनि बरकत।

जैसी नीयत वैसी बरक्कत—ऊपर देखिए।

जैसी फूहड़ आप छिनार, तैसी लगावै कुल व्यवहार—जो जैसा होता है वैसा ही सबको समझता है। जब कोई बुरा व्यक्ति किसी सज्जन व्यक्ति की निन्दा करता है तब व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

जैसी बहे बयार पीठ तब तैसी कीजै—समय के अनुसार कार्य करना चाहिए। तुलनीय : बुंद० जैसी बहे बयार पीठ तब तैसी दीजे; ब्रज० जैसी हवा देखे वैसे बरसावे; मेवा० जस्यो बायरो बाजे वस्यो तुवाव देणो; मरा० वारा वाहील तशी पाठ पानी।

जैसी बहे बयार पीठ पुनि वैसी कीजै—ऊपर देखिए।

जैसी बहे बयार, पीठ पुनि तैसी दीजे—दे० 'जैसी बहे बयार पीठ तब......'।

जैसी बेटी गवनारी वैसी नचनारी होतीं तो न जाने क्या करती ?—जब कोई व्यक्ति किसी काम या विद्या का पूर्ण ज्ञान न रहने पर भी सबकी प्रशंसा का पात्र हो तो कहते हैं।

जैसी बोई वैसी काटी—मनुष्य को अपने कर्मों के अनुसार ही फल मिलता है। तुलनीय : भोज० जेइसन बोई ओइसन काटी; पंज० जिदां दी गयी उदां वडी; ब्रज० जैसी बयौ वैसौ काट्यौ।

जैसी भावना वैसी सिद्धि—विचारों के अनुसार ही परिणाम भी मिलते हैं। तुलनीय : सं० यादृशीभावनायस्य सिद्धिर्भवति तादृशी; राज० भावना जिसी सिद्धि; पंज० नीत्तां दियां मुरादां।

जैसी मजूरी वैसा काम—लागत के अनुसार ही काम होता है। तुलनीय : भोज जइसन तोर देन देनवाही ओइसन मोर चरवाही; जइसन तोर नीमक पानी ओइसन मोर काम जानी।

जैसी मत तैसी गत—कर्मानुसार फल मिलता है।

जैसी माँ तैसा पूत—माँ की प्रकृति, रंग आदि के अनुसार पुत्र भी होता है। तुलनीय : भोज० जइसन माई ओइसन जाई; पंज० माँ बरगा पुतर।

जैसी माँ वैसी बेटी—प्रायः माँ के अनुसार ही बेटी का स्वभाव होता है। तुलनीय : ब्रज० ठाय तेबी ठीकरी ने माओ तेबी दीकरी; पंज० माँ बरगी ती।

जैसी माई वैसी जाई—माँ के अनुसार बेटी हो तब कहते हैं। तुलनीय : गढ़० जना मैंड़ा तना जैड़ा; राज० हाँडी जिसा ठीकरा, मा जिसा डीकरा; अव० जस माई तस जाई; ब्रज० जैसी माई वैसी जाई।

जैसी माई वैसी धीया जैसी ककड़ी वैसी बीया आशय यह है कि प्रायः बच्चे माँ-बाप के अनुरूप ही होते हैं। तुलनीय : बुंद० जीके जैसे बाप मताई तीके तेसे लरका; गुज० ठाय तेवी ठीकरी ने माओ तेबी दीकरी; मरा० खाण तशी माती आणि आत तशी माची।

जैसी माई वैसी धीया, जैसी काकर वैसी बीया—ऊपर देखिए।

जैसी माता वैसी धीया, जैसी ककड़ी वैसी बीया—दे० 'जैसी माई वैसी धीया जैसी ककड़ी......'। तुलनीय : अव० जस माया तस बेटी जस सूत तस फेटी।

जैसी रूह वैसे फ़रिश्ते—जैसी जीवात्मा होती है वैसे ही यम के दूत उसे लेने के लिए आते हैं। (क) जोड़ मिलाने पर कहते हैं। (ख) प्रायः बुरे स्वभाव पर कहते हैं। तुलनीय : पंज० रूह वरगे फ़रिश्ते; ब्रज० जैसी रूह वैसेई फिरस्ते।

जैसी लक्खो बंदरिया वैसे मनवाँ भाँड़—जब दो बुरे व्यक्तियों में परस्पर मैत्री हो जाती है, या संबंध हो जाता है तब व्यंग्य में ऐसा कहते है।

जैसी लालना वैसी ताड़ना—जैसा प्यार करे वैसा ही दंड भी देना चाहिए। अर्थात् संतान को प्यार के साथ दंड देना भी आवश्यक है। तुलनीय : पंज० जिदां पयार उसी तरहाँ ताड़ा।

जैसी शकल वैसी नौकरी—योग्यता के अनुरूप ही काम मिलता है।

जैसी शक्ती वैसी भक्ती—सामर्थ्य के अनुसार ही कोई काम करना चाहिए। तुलनीय : असमी—पालि चाइहे राग

टानिबा; सं० यथा शक्नुयात, तथा कुर्य्यात्; पंज० सकती बरगी पगती।

जैसी भगत करो वैसी इज्जत मिले—संगत से अनुसार ही व्यक्ति का मान-अपमान होता है।

जैसी सउत, वैसा फल—संगत के अनुसार ही फल मिलता है। अर्थात् अच्छे व्यक्तियों की संगति से अच्छा और बुरे व्यक्तियों की संगति से बुरा फल मिलता है। तुलनीय : राअ० संगत जिसो फल; संगत रा फल है; पंज० संगत बरगा फल।

जैसी संगत वैसी रंगत—जैसी संगति होती है वैसा ही मनुष्य का चरित्र होता है। संगति का प्रभाव मनुष्य पर बहुत अधिक पड़ता है। तुलनीय : राज० संग जिसों रंग, संगत जिमी रंगत; अव० संगत ओम बुध; पंज० संगत वरगी अकल।

जैसी सास वैसी बहू—जब किसी बुरे को दूसरा बुरा मिल जाता है तब व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : माल० हाऊ जसी वऊ; पंज० सस बरगी बौटी।

जैसी सोहबत, वैसा असर—मनुष्य जिस तरह के लोगों की संगति में रहता है वैसा ही बन जाता है। अर्थात् संगति का मनुष्य पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। तुलनीय : राज० सौबत जिसी असर; ब्रज० जैसी संगति वैसौ असर।

जैसे अन्न तैसी डकार—दे० 'जैसा अन्न वैसी डकार।'

जैसे असू तैसे वसू, न इनके कछू न उनके कछू—दे० 'जैसे उदई तैसे मान···'।

जैसे इस पार वैसे उस पार—(क) जिस व्यक्ति को किसी विशेष स्थान से किसी प्रकार का भी लगाव न हो उसके प्रति ऐसा कहते हैं। (ख) जिस कार्य को करने में कोई लाभ न हो और न करने में कोई हानि न हो उसके प्रति ऐसा कहते हैं। (ग) साधु-संन्यासियों के प्रति भी ऐसा कहते हैं क्योंकि उनकी किसी विशेष स्थान पर रहने की इच्छा नहीं होती। तुलनीय : गढ़० जनि वली मांडा तनि पली मांडा; पंज० जिदां इस पार उदां उस पार।'

जैसे उदई तैसे मान, उनकी चुटिया न इनके कान—जब एक ही तरह के दो निकम्मे या मूर्ख मिल जाएँ। तब कहते हैं तुलनीय : भोज० जइसन उदई ओइसन भान, न उनके चुरकी न उनके कान; अव० जस उदई तस भान, न उनके चुंदई न उनके कान; ब्रज० जैसे उदई ते सैं भान, उनके चुटिया न उनकें कान।

जैसे उदई तैसे भान न उनके नाक न इनके कान—ऊपर देखिए।

जैसे उरई वैसे धान न उनके चोटी न उनके कान—उरई के पौधे में बालें नहीं होतीं और धान के पौधे की उरई के पौधे जैसी चौड़ी पत्तियां नहीं होतीं। जब दो ऐसे व्यक्ति परस्पर संबंध स्थापित कर लें जिनमें कोई-न-कोई दोष अवश्य हो तो उनके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : छत्तीस० जइसे उरई तइसे धान, एखर चुटई न ओखर कान।

जैसे ऊधो वैसे यान, न उनके चोटी न उनके कान—दे० 'जैसे उदई तैसे भान उनकी चुटिया···'।

जैसे एक बार, वैसे हजार बार—बुराई तो बुराई ही है, चाहे कम की जाय या अधिक। बुरे लोगों को समझाने के लिए कहते हैं।

जैसे कंता घर रहे तैसे रहे बिदेस—(क) जिसके समीप रहने पर भी किसी प्रकार की सहायता न मिले उसे कहते हैं। (ख) निखट्टू आदमी का घर और बाहर रहना एकसा है। तुलनीय : अव० का कंता घर रहै, का रहै बिदेस।

जैसे करे सारा गाँव, वैसे गुजारे अपने राम—जिस प्रकार सारा गाँव रहता है मैं भी वैसे ही रहता हूँ। जिस प्रकार के समाज में मनुष्य रहता है उसे उसी प्रकार का आचरण करना पड़ता है। तुलनीय : राज० गाँव करै ज्यूं गैली करै।

जैसे काग जहाज को, सूझत और न ठौर—जब किसी का मात्र एक ही सहारा हो और वह हर तरफ से भटकने के बाद उसी की शरण ले तब ऐसा कहते हैं।

जैसे काठ की भवानी, वैसे मकरा का अक्षत—जैसे देवता होते हैं वैसी ही उनकी पूजा भी होती है। अर्थात् जो जिस योग्य होता है उसका वैसा ही आदर या मान किया जाता है।

जैसे काठ के मियाँ, वैसे कोरी का गलीचा—ऊपर देखिए।

जैसे काली कामरी चढ़े न दूजो रंग—दुष्टों या नीचों के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं जिन पर किसी उपदेश आदि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। तुलनीय : मल० कारिक्कूट्टूत्तिल् कूरि चेरुकयिल्ल; (कामरी = कंबल) पंज० काले कंबल उते दूजा रंग नईं चड़दा।' अं० Black will take no other hue.

जैसी की सेवा करे तैसी आशा पूर—जिस प्रकार के व्यक्ति की सेवा करोगे, उसी प्रकार की प्राप्ति भी होगी। अर्थात् भले लोगों की सेवा से अच्छी चीज प्राप्त होती है

और बुरे व्यक्ति की सेवा से बुरी।

जैसे कुम्हड़ा छप्पर पर, वैसे कुम्हड़ा नीचे—स्थिति या पद-परिवर्तन के कारण जब मनुष्य में कोई परिवर्तन नहीं होता तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० जइसने कोहड़ा खपड़ा पर ओइसने भुइयां।

जैसे कुल की कुलवधू चिथरन मांहि सुहात--अच्छे कुल की कुलवधू चिथड़ों में भी अच्छी लगती है। अर्थात् अच्छे कुल के व्यक्ति या गुणी लोग निर्धन होने पर भी सबका आदर पाते हैं।

जैसे के तैसे -जैसे माँ-बाप होते हैं वैसे ही उनके बच्चे भी होते है। जब किसी दुष्ट व्यक्ति के बच्चे भी दुष्टता करते है तब उनके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० जनू का तना।

जैसे को तैसा--जो जैसा व्यवहार करे, उसके साथ वैसा व्यवहार करना चाहिए। तुलनीय : अव० जैसा का तैसा; मल० पकरित्तनुपकरम्; ब्रज० जैसे को तैसो; अं० Tit for tat.

जैसे को तैसा, बाबू को भैसा-- जैसा आदमी देखे उसका वैसा ही सम्मान करे।

जैसे को तैसा मिल ही जाता है --जब किसी उद्दंड या दुष्ट व्यक्ति की टक्कर उसी जैसे व्यक्ति से हो जाती है तब ऐसा कहते है। तुलनीय : पंज० सेर नू सवा सेर मिल ही जांदा है।

जैसे को तैसा मिले कर-कर लम्बे हाथ--जो व्यक्ति जिस स्वभाव का होता है, उसे वैसे संगी-साथी भी मिल जाते हैं। तुलनीय : मेवा० पाबूजी ने पुजारी मिले जो थोरी ही थोरी मिले; पंज० जैसे नू तैसा मिले कर-कर लमे हत्थ।

जैसे को तैसा मिले, मिले कुल्हाड़ी बेंट; कानी को कनवा मिले, धरे आँख पे टेंट जैसे को तैसा होता है उसे उस तरह के लोग मिल ही जाते हैं।

जैसे को तैसा मिले, मिले खीर में खांड; तू है जात की बेड़नी, मैं जात का भांड-- जैसे को तैसा मिलने पर कहते है। इस पर एक रोचक कहानी है : एक बार एक बेड़नी (ग्रामीण वेश्या) ने पितृपक्ष में ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहा किन्तु ब्राह्मण उसके वेश्या होने के कारण उसका भोजन स्वीकार नहीं करते थे। वेश्या ब्राह्मण की खोज में थी कि सामने से एक अनजान ब्राह्मण आता दिखाई दिया और उसने उससे भोजन करने की प्रार्थना की, किन्तु यह नही बताया कि वह कौन है। ब्राह्मण को क्या आपत्ति हो सकती थी, सो तुरन्त वेश्या के साथ चल दिया। भोजन समाप्त हो जाने पर वेश्या ने क्षमा माँगते हुए बताया कि वह वेश्या है चूंकि कोई ब्राह्मण उसके घर भोजन करने के लिए तैयार नहीं था, इसलिए उसने बिना बताए उनको भोजन करा दिया। तब ब्राह्मण ने बताया मैं भी ब्राह्मण नहीं हूँ। ब्राह्मण का वेश इसलिए पहन लिया था कि चलकर कहीं स्वादिष्ट भोजन किया जाय।

जैसे को तैसा मिले, ज्यूं बामन को नाई, हमने कही आशीर्वाद, उसने आरसी काढ़ दिखाई--जोड़ का तोड़ मिलने पर कहा जाता है। ब्राह्मण को आशीर्वाद देने पर कुछ दिया जाता है और नाई को आइना दिखाने पर कुछ दिया जाता है।

जैसे को तैसा मिले, मिले नीच को नीच, पानी में पानी मिले, मिले कीच में कीच --जो जिस तरह का होता है, उसकी उस तरह के लोगों से भेंट हो ही जाती है।

जैसे को तैसा मिले मिले सूम को सूम, दाता को दाता मिले, मिले डोम को डोम—ऊपर देखिए।

जैसे को तैसा मिले, सुनियो राजा भील; लोहा चूहा खा गया, लड़का ले गई चील---जो जैसा होता है, उसे वैसे लोग मिल जाते हैं। इस लोकोक्ति के संबंध मे एक कहानी कही जाती है : एक आदमी कुछ लोहा अपने मित्र को देकर परदेश चला गया। कई वर्ष बाद जब वह लौट कर आया तो अपनी अमानत माँगी। इस पर उसके मित्र ने कहा कि लोहा तो चूहे खा गए। यह सुनकर वह चुप रह गया और बदला लेने के अवसर की प्रतीक्षा करने लगा। कुछ दिन पश्चात् उसने मित्र के छोटे लड़के को अपने घर छुपा दिया। जब उसका मित्र अपने लड़के को खोजते हुए उसके पास आया और पूछा कि तुमने लड़के को देखा है ? उसने उत्तर दिया कि उसे तो चील उठा ले गई। मित्र ने कहा कि चील का लड़के को उठा ले जाना असम्भव है, तो मित्र ने उत्तर दिया कि चूहे लोहा खा सकते हैं तो चील लड़के को क्यों नही ले जा सकती ? यह सुन कर मित्र बहुत लज्जित हुआ और उसने लोहा लौटाने का वचन दिया, तथा अपने लड़के को लेकर घर चला गया। तुलनीय : माल० जस्या ने तस्यो ने गदेड़ा ने भैंसो; भोज० जइसन को तइसन मिले सुनिहऽ राजा भील, लोहा मूस खा गेइल लइका ले गइल चील।

जैसे को वैसा भवानी का भेड़ा—जो जिस वस्तु से प्रसन्न होता हो, उसे वही वस्तु देना चाहिए।

जैसे कौआ गुलेल से डरता है, वैसे ही डरता है---कौआ गुलेल से बहुत डरता है। जो व्यक्ति किसी से बुरी

तरह भय खाए या डरे, उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० हाडो तीरसूं डरै ज्यूं डरै।

जैसे गंगा नहाए वैसा फल पाए—जिस विचार (नीयत) से कोई काम किया जाता है उसी तरह का फल भी मिलता है।

जैसे गीत वैसी मजूरी—कार्य के अनुसार ही पारिश्रमिक (मजूरी) मिलता है। तुलनीय : हरि० जिसे गीत, उसी ए बाकली।

जैसे गुरू वैसे चेला, मांगें गुड़ ले आवें ढेला—दो मूर्खों के एकत्र होने और उनके उलटे कार्यों को देखकर व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

जैसे घासफूस के बाबा, वैसे पयार की दाढ़ी—(क) जो व्यक्ति जैसा होता है, उसका वैसा ही आदर किया जाता है। तुलनीय : अव० जस घांस फूस के बाबा तस पयार कै दाढ़ी। (पयार = पुआल, धान का सूखा डंठल)।

जैसे चिड़ियों में ढेल—क्रूर या दुष्ट व्यक्ति को कहते हैं जो सदा लोगों को परेशान किया करता है। (ढेल = बाज पक्षी)। तुलनीय : ब्रज० जैसे चिरैया में डेल।

जैसे छप्पन वैसे गप्पन—(क) किसी वस्तु के खरीदने में मोल-भाव के समय यदि थोड़े दाम का अन्तर हो तो उसे भी देकर ले लेना चाहिए। (ख) जब कोई व्यक्ति कई कामों में उलझकर खर्च से परेशान रहता है और उसी में कोई और खर्च बढ़ जाता है तब वह कहता है, चलो इसे भी कर लो. जैसे छप्पन वैसे गप्पन।

जैसे जाके मात-पिता हैं, वैसे वाके लरिका—माता-पिता के स्वभाव के अनुसार ही बच्चों का भी स्वभाव होता है।

जैसे जेहि का चोट सिराय, तैसे हल्दी मोट बिकाय—आशय यह है कि आवश्यकतानुसार चीज़ों का दाम बढ़ जाता है। तुलनीय : अव० जस जेहि कै चोट सिराय, तस हल्दी मोल बिकाय।

जैसे तुलसी राम का, वैसे राम तुलसी का—जिसके साथ जैसे व्यवहार किया जाता है वह भी अपने साथ वैसा ही व्यवहार करता है। तुलनीय : पंज० जिवें तुलसी राम दा उवें राम तुलसी दा।

जैसे दाध्यो दूध को पीवत छाछहि फूंकि—जब कोई व्यक्ति किसी साधारण काम को भी बहुत डर कर करता है तब उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। (दाध्यो = जला हुआ)।

जैसे दीवार को कहते हैं—जैसे तुम्हें न कहकर किसी दीवार को कह रहा हूँ। जब कोई व्यक्ति किसी की बात को सुनकर भी अनसुना कर देता है तो उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० जाणे कोई गाँवरने कैवे है।

जैसे देखे गाँव की रीति, वैसे उठावे आपन भीत—मनुष्य जहाँ रहे, उसे वहाँ की रीति-रिवाज के अनुसार ही रहना चाहिए।

जैसे देवता वैसे पुजारी—दो मूर्खों के मेल पर कहते हैं या स्वामी और सेवक दोनों मूर्ख हों तो कहते हैं। तुलनीय : राज० देव जिमा पुजारी; पंज० देवता वरगे पुजारी।

जैसे देव वैसी पूजा—जो जैसा होता है उसके साथ वैसा ही व्यवहार किया जाता है। तुलनीय : राज० देवता जिसी पूजा; अव० जस देवता, ओस पूजा।

जैसे नब्बे वैसे सौ—जब किसी काम को करने का निश्चय कर लिया जाय और थोड़ा अधिक व्यय हो तो चिंता नहीं करनी चाहिए। तुलनीय : पंज० जिवें नब्बे उवें सौ; ब्रज० जैसे नब्भै वैसे सौ।

जैसे नागनाथ तैसे साँपनाथ—नीचे देखिए।

जैसे नागनाथ वैसे साँपनाथ—दोनों एक ही हैं। जब दो दुष्ट प्रकृति के व्यक्तियों की तुलना करते हैं तब कहते हैं। तुलनीय : भोज० जइसन नागनाथ ओइसन साँपनाथ।

जैसे नीमनाथ, वैसे बकायननाथ—दे० 'जैसे नागनाथ वैसे साँपनाथ।'

जैसे नैना आज के, वैसे नित के होयँ—किसी का अपने मित्र या आश्रयदाता से अनुरोध है कि वर्तमान जैसा भविष्य में भी सम्बन्ध बना रहे।

जैसे पानी बह गए सेतुबंध केहि काम—पानी बह जाने के बाद बाँध (सेतुबाँध) बनाना व्यर्थ है। आशय यह है कि यदि कोई काम उचित समय पर न किया जाय तो बाद में करने से कोई लाभ नहीं होता। तुलनीय : It is too late to shut the stable-door after the horse has bolted.

जैसे पाए वैसी पाटी, जैसी माँ वैसी बेटी—चारपाई के पाए जैसे होते हैं वैसी ही उसकी पाटियाँ भी होती हैं और जैसी माँ होती है वैसी ही उसकी बेटी भी होती है। आशय यह है कि बेटी का स्वभाव भी माँ जैसा ही होता है। तुलनीय : राज० ईस जिसा पाया रांड जिमा आया; अं० Like father like son; Like tree, like fruit.

जैसे पीड़ित कीजिए, ऊख तऊ रस देत—जिस प्रकार गन्ना पेरने पर भी रस ही देता है उसी प्रकार सज्जन व्यक्ति सताए जाने पर भी भलाई ही करते हैं। अर्थात् सज्जन व्यक्ति हर दशा में उपकार ही करते है। तुलनीय : पंज०

कमांद पीडण नाल ही रस निकलदा है।

जैसे बक सोहत नहीं, हंस मंडली माहि—जिस प्रकार हंसों के बीच बगुला (बक) शोभा नही देता उसी प्रकार विद्वानों के बीच में मूर्ख का होना अच्छा नहीं लगता। अर्थात् जो जैसा होता है, वह उसी तरह के समाज में इज्जत पाता है।'

जैसे बड़े तैसे छोटे—बड़ों का ही अनुकरण छोटे भी करते हैं। तुलनीय : असमी—आगर् हाल् यि फाले याय्, पिछर् हालो सेई फाले याय्; सं० यत् यदाचरति श्रेष्ठ; तत् तत्तु इतरे जना; अं० The yoke of bullocks behind will follow the preceding one.

जैसे बसि सागर बिचे, करत मगर सों बैर—सागर में रहकर मगर से बैर करना मूर्खता है, क्योंकि वह जब भी चाहेगा तभी निगल जाएगा। आशय यह है कि जिसके अधीन रहे उससे शत्रुता मोल नही लेनी चाहिए। तुलनीय : अं० To live in Rome and strife with the Pope.

जैसे बाइस वैसे घाइस—दे० 'जैसे छप्पन वैसे गप्पन।'

जैसे बाई के कोदों, तैसी हींग हमार—(क) जैसा व्यवहार दूसरे से किया जाता है वैसा ही दूसरे भी अपने साथ करते हैं। (ख) जैसा पैसा खर्च किया जाता है वैसा सामान भी मिलता है।

जैसे भोजन नोन बिनु तैसे तिय बिन लाज—जिस प्रकार नमक के बिना भोजन अच्छा नहीं लगता, उसी प्रकार लज्जा के बिना स्त्री अच्छी नही लगती। आशय यह है कि लज्जा स्त्री के लिए बहुत आवश्यक है। तुलनीय : पंज० जिवे रोटी लूण बगैर उवें जनानी सरम बगैर।

जैसे मनवा आप हैं वैसे उनके मीत—जैसा व्यक्ति स्वयं होता है वैसे ही उसके मित्र भी होते हैं, अर्थात् भलों के भले और बुरों के बुरे मित्र हुआ करते है।

जैसे मानें दूध सब, सुरा अहीरी पास—यदि अहीर के पास शराब हो तब भी लोग यही सोचेंगे कि दूध रखा होगा, क्योंकि दूध रखना और बेचना उसका मुख्य धंधा है। आशय यह है कि जैसे लोगों की संगति में जो रहता है वैसा ही लोग उसे समझते हैं।

जैसे मारकंडे वैसे कंडेमार जहाँ दोनों एक ही हों वहाँ कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० जैसी मारकंडे वैसे कंडेमार।

जैसे मियाँ काठ के, वैसी सन की दाढ़ी– जिस प्रकार काठ के मियाँ साहब है, उसी प्रकार सन (सनई) की उनकी दाढ़ी भी है। जब किसी मूर्ख की वेश-भूषा भी ठीक नहीं होती तो व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मरा० जसे मीयाँ लाकड़ी, त्यांना अंबाडीची दाढ़ी।

जैसे मुर्दे पर सौ मन मिट्टी वैसे हजार मन—मुर्दे के ऊपर कितना भी बोझ क्यों न रख दिया जाय पर उस पर कोई प्रभाव नही पड़ता। बेशर्म व्यक्ति के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं जिस पर डाँट-फटकार का कोई असर नहीं पड़ता। तुलनीय : अब० जैसेन मुरदा पै सौ मन माँटी वैसेन सवा सो मन मांटी; ब्रज० जैसे मुर्दे पै सौ मन मांटी, वैसे हजार मन।

जैसे में तैसा मिले, मिले नीच में नीच; पानी में पानी मिले, मिले कीच में कीच—दे० जैसे को तैसा मिले, मिले कीच......'। तुलनीय : ब्रज० जैसे में तैसौ मिलै मिलै नीच में नीच, पानी में पानी मिलै, मिलै कीच में कीच।

जैसे में तैसे, आप जैसे के तैसे—हर प्रकार की संगति करके भी उनसे प्रभावित न होने वाले को कहते है।

जैसे रक्खे राम, वैसे करने काम—सभी काम ईश्वर की इच्छानुसार होते हैं, इसलिए वह जैसे रखे वैसा ही रहना चाहिए। अर्थात् हर दशा में संतोष करना चाहिए। तुलनीय : गढ़० जनो राखो राम, तनो करनो काम; पंज० जिवे राम रक्खे उवें कम्म करांगे।

जैसे राम चौदह साल बिना रोटी के रहे, वैसे हम भी रह लेंगे—श्री रामचन्द्र चौदह वर्ष के बनवास में बिना अन्न के ही रहे तो क्या हम कुछ समय तक भी नहीं रह सकते? विपत्ति में भोजन के लिए अन्न न मिले तो धीरज देने के लिए कहते हैं। तुलनीय : भीली—एक राजा राम चौवदे वर अन वगर् बेड़े माँए रेग्या जय रहैं।

जैसे लाल चाउर, वैसे दंत निपोर मँहकी—जैसे चावल लाल (घटिया) हैं, वैसे ही उनके दाँत निपोरने वाले ग्राहक मिल गए हैं। आशय यह है कि जैसा सौदा होता है वैसे उसके ग्राहक भी मिल जाते हैं।

जैसे सत्यानाश वैसे साढ़े सत्यानाश—(क) जब कोई काम खराब हो जाता है तब उसे सुधारने के लिए अंतिम प्रयास किया जाता है जिससे वह या तो सुधर जाय अथवा अगर खराब होना हो तो और अधिक खराब हो जाय। ऐसी दशा में अंतिम प्रयास के समय ऐसा कहते हैं। (ख) जब एक काम के खराब हो जाने के बाद, अचानक कोई दूसरा काम भी खराब हो जाता है तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : छत्तीस० सत्यानास तौन मां साढ़े सत्यानास।

जैसे समझे दूध सब, सुरा अहीरी पानि—दे० 'जैसे मानें दूध सब...'।

जैसे साँपनाथ वैसे नागनाथ—दे० 'जैसे नागनाथ

वैसे ………'। तुलनीय : मैथ० जहिनो हेम तहिनो खेम दुहूँ दीस में कुसल छेम; भोज० जइसन साँपनाथ ओइसन नागनाथ; अव० जैसेन साँपनाथ, वैसेन नागनाथ; राज० जिया साँपनाथ विसा नागनाथ; कनौ० जैसे साँपनाथ तैसे नागनाथ; मरा० जसे सापनाथ, तसे नागनाथ।

जैसे साजन आए, तैसे बिछौना बिछाए—जो जिस रूप में मिले उससे उसी रूप में मिलना चाहिए।

जैसे सौ, वैसे पचास—जहाँ सौ व्यय हुए हैं, वहाँ पचास और सही। जब अधिक हानि हो चुकी हो तो थोड़ी और हो जाने से कोई विशेष अंतर नहीं पड़ता। तुलनीय : राज० सौ ज्यूं पचास, गांगो ज्यूं हरदास; पंज० जिंदा सौ उदा पजां।

जैसे सौ, वैसे सवा सौ—ऊपर देखिए।

जैसे हरगुन गाए, तैसे गाल बजाए—जब हरि का गुण गाने वाले और बैठकर गप्प हाँकने वाले दोनों की एक ही स्थिति है तो गप्प हाँकना ही अच्छा है। जब कोई व्यक्ति परिश्रमी और कामचोर दोनों के साथ एक जैसा ही व्यवहार करता है तब परिश्रमी व्यक्ति ऐसा कहता है। तुलनीय : अव० का हरगुन गाए, का गाल बजाए।

जैसे हसन, वैसे हुसैन—जब दो आदमी एक से माने जाये तब कहते हैं। क्योंकि हुसन और हुसैन दोनों एक पिता के पुत्र होने के कारण एक से माने जाते है।

जैसों को तैसे मिलें, तब पूरा संग्राम—जब जोड़ का तोड़ मिल जाए तब कहते है।

जैसो खावे धान, वैसे आवे ज्ञान—आदमी जैसा खाना खाता है उसकी बुद्धि भी वैसी ही बनती हैं।

जैसो घर है तैसो फरिका, जैसो बाप तैसो लड़िका—जो जैसा होता है, उसकी संतान भी वैसी ही होती है।

जैसो चाहत आपको तैसो चाहे और—आप दूसरों से जैसा व्यवहार चाहते हैं वैसा ही स्वयं भी दूसरों के साथ करें। अर्थात् इज्जत पाने के लिए दूसरों की इज्जत करना बहुत आवश्यक है। तुलनीय : अं० Do as you desire to be done by others.

जैसो देस वैसो भेस—दे० 'जैसा देश वैसा………'।

जोंक को स्तन में भी खून ही मिलता है—स्तन में दूध होता है पर यदि जोंक लगाई जाए तो उसे दूध न मिलकर खून मिलेगा। आशय यह है कि बुरे अच्छी जगह से भी बुरी चीजें ग्रहण करते हैं। तुलनीय : पंज० जोक नूं ममे बिचों वी खून ही मिलदा है।

जोंक में जोंक नहीं सटती—अर्थात् एक धोखेबाज़ की चालाकी दूसरे धोखेबाज़ पर नहीं चलती। तुलनीय : भोज० जोंक का संगे जोंक नां सटे; पंज० जोक नाल जोक नहीं रंदी।

जो अंधे से करे मिताई, अपनी कान्हि परे पहुँचाई—अंधे से मैत्री करने पर अपने कंधे पर उसे पहुँचाना पड़ता है। अशक्त को कभी मित्र न बनावे।

जो आँख से दूर वह दिल से दूर—जो व्यक्ति दूर चला जाता है उससे धीरे-धीरे प्रेम भी समाप्त हो जाता है। तुलनीय : पंज० अखों दूर दिलों दूर; अं० Out of sight, out of mind.

जो अति आतप व्याकुल होई, तरु छाया सुख जाने सोई—जो गर्मी से व्याकुल रहता है उसी को छाया का आनन्द मिलता है। आशय यह है कि दुःखी ही सुख का महत्त्व पहचानता है।

जो अपने काम न आए, सो चूल्हे भाड़ में जाए—जिससे अपना कोई फ़ायदा न हो उससे सम्बन्ध नही रखना चाहिए।

जो आके न जाए वह बुढ़ापा देखा, और जो आके न आए वह जवानी देखी—वृद्धावस्था आकर फिर जाती नहीं और जवानी जाकर लौटती नही।

जो आग खाएगा अंगार हगेगा—जो अनुचित कार्य करेगा उसका बुरा परिणाम भी उसे भुगतना पड़ेगा। तुलनीय: भोज० जे आग खाई से अंगार हगी; छत्तीस० आगी खाही, तउन अंगरा हगबे करही; असमी—जुइ खाले आंगारे हागे; अं० The fire eater's excreta will be charcoal; Impossible undertakings will end in frustration.

जो आज बचे वह सदा बचे—किसी बड़ी विपत्ति के जाने पर लोग ऐसा कहते है। तुलनीय : गढ़० जो घड़ी बचो सो घड़यांमू बचो; पंज० जो अज बचे ओह सदा बचे।

जो आज सो राज—जो आज राज्य कर रहा है वही राजा है। कल के भरोसे आज के शक्तिवान मनुष्य से बैर नहीं करना चाहिए। तुलनीय : मेवा० आज जो राज; ब्रज० वही।

जो आपको न चाहे, ताके बाप को न चाहो; जो आपको चाहे, ताके गुलाम को भी चाहो—जो अपने को प्यार न करता हो उसके साथ किसी प्रकार का व्यवहार रखना बेकार है और जो अपने को चाहे उसके सेवकों का भी आदर करना चाहिए। आशय यह है कि जो प्रेम करे

उसी से सम्बन्ध रखना चाहिए। तुलनीय : राज० चाय करै जकेरा चाकर नही जकेरा ठाकर।

जो आपन चाहइ कल्याना, सुजस सुमति सुभगति सुखनाना; सो पर-नारि विलास गोसाई, तजई चौथ के चंद की नाईं—जो मनुष्य संसार में अपना कल्याण, सुकीर्ति, सुमति, सुगति और सुख चाहता हो, उसे पर स्त्री से विलास करना उसी प्रकार छोड़ देना चाहिए जिस प्रकार लोग चौथ के चन्द्रमा को त्याग देते हैं। (कहते हैं कि भाद्रपद्र शुक्ला चतुर्थी का चन्द्रमा देखने से झूठा कलंक लगता है)। आशय यह है कि पराई स्त्री से सम्बन्ध रखने से मर्यादा खराब हो जाती है।

जो आया है वो जायगा—जिसने जन्म लिया है उसकी मृत्यु भी अवश्य होगी। तुलनीय : पंज० जो आया है ओह जावेगा; ब्रज० जो आयौ है सो जायगौ।

जोइगर बंसगर बुझगर भाय, तिरिया सतवंति नीक सुभाय; धन पुत हो मन बिचार, कहैं घाघ ई सुक्ख अपार—स्त्री वाला (जोइगर), वंशवाला (बंसगर), समझदार (बुझगर) भाईवाला, अच्छे स्वभाव वाली सतवंती (सतवंति) स्त्री वाला, धन और पुत्र से युक्त तथा विचारवान होना, घाघ कहते हैं ये अपार सुख हैं।

जो पाँड़े की पोथी, सोइ मुख वचन—जो पंडित के पत्रा (पोथी) मे है, वह मेरी जबान पर है। बुद्धिमान व्यक्ति का मंद बुद्धि के प्रति व्यंग्य है कि जो चीज़ तुम पुस्तक मे देखकर बतलाओगे उसे मैं बिना पुस्तक देखे ही बतला दूंगा।

जोई काछ काछिये, सोई नाच नाचिये—दे० 'जैसा काछ काछे...'।

जोई तीन बीसी, सोई साठ—जो अर्थ तीन बीसी (3×20=60) का है, वही साठ का। जब कोई एक ही बात को घुमा-फिराकर कहे या मनवाना चाहे तो कहते हैं। तुलनीय : पंज० बी तीयां सट्ठ; अं० As is six so is half dozen.

जोई नाच नचावे, सोई नाचूं नाच—अधीन व्यक्ति के प्रति कहते हैं क्योंकि उसे प्रत्येक काम अपने स्वामी के कहने पर करना पड़ता है।

जो ईश्वर किरपा करें तो खड़े हिलावें कान अरहर के खेत में—ईश्वर जब देता है तो अनायास देता है। इस सम्बन्ध में एक कहानी है जो इस प्रकार है : एक दिन राजा का खजाना गधों पर लदकर जा रहा था। संयोगवश उनमें से एक गधा अरहर के खेत मे घुस गया और चरने लगा। दूसरे दिन खेत के मालिक ने आकर देखा कि एक गधा खेत में खड़ा कान हिला रहा है। पास जाकर देखा तो उस पर रुपये लदे पाए। उसने सब रुपया अपने घर में रख लिया और गधे को मार भगाया। इस पर उसने उक्त कहावत कही।

जो उगेगा, वह डूबेगा भी—जो उदय होगा वह अस्त भी होगा। (क) जो पैदा होता है वह मरता भी है। (ख) जो उन्नति करता है वह अवनति के गड्ढे मे भी गिरता है। तुलनीय : भीली—ऊगा जे बूड़वाना; पंज० जो उग्गेगा ओह डुबेगा वी।

जो उपस्थित है, वही हथियार है—जो कुछ भी अपने पास रहता है, वही समय पर काम आता है।

जो कछु उचित रहा सोइ कीन्हा—जो उचित था वही किया। अपने करने के सम्बन्ध मे लोग कहते हैं।

जो कछु करहिं उन्हहिं सब छाजा—वे जो कुछ भी करें उन्हें सब शोभा देता है। बड़ों या समर्थ लोगो के लिए कहते है। तुलनीय : अव० समरथहूँ नहि दोस गुसाईं।

जो कछु जाए हाथ से, करौ न ताकौ सोग—जो वस्तु हाथ से निकल जाय उसकी चिन्ता नही करनी चाहिए। अर्थात् खोई हुई वस्तु या बीती बात पर दुःखी होने से कोई लाभ नही।

जो कपास को नाहीं गोड़ी, उसके हाथ न आवे कौड़ी—जो कपास को गोड़ता नही है उसे कौड़ी भी नही मिलती अर्थात् बिना गोड़े कपास की उपज अच्छी नही होती। तुलनीय : पंज० कपा नू गोडी ना करो ते कुछ नईं मिलदा।

जो कबीर काशी में मरिहैं, रामहि कौन निहोरा—हिन्दुओं का विश्वास है कि काशी में मरने से मुक्ति मिल जाती है। जब कोई आदमी किसी से कुछ सहायता माँगे और वह यह कहकर टाल दे कि यह तो तुम्ही कर लोगे, तब यह कहावत कही जाती है कि 'मुझसे हो जाता तो तुम्हारे पास क्यों आता।' तुलनीय : अव० जो कबीर काशी मा मरिहै तौ रामै कउन निहोरा।

जो कम बोले, सो ही डोले—कम बात करने वाला ही काम करता है। तुलनीय : उजा० बात कम, काम ज्यादा; पंज० कट बोले मता करे।

जो कमाता है वही क़ीमत जानता है—जो व्यक्ति धन पैदा करता है वही उसके महत्त्व को समझता है। जब किसी की कमाई कोई बेफ़िक्री से खर्च करता है तो उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : माल० कमावे उ पइसा री कदर जाणे; पंज० कमाण वाला पैहे दी कीमत जाणदा है।

जो कमावें सब, तो खर्च बुखे कब ?—जब परिवार

के सभी सदस्य कमाते हैं तो किसी तरह की कोई परेशानी नहीं होती। तुलनीय : भीली—जोणा वरे ने जोणा वले।

जो करता है मीत बुराई, उसे न समझो अपना भाई—अपने मित्र की बुराई करने वाला अविश्वसनीय होता है। तुलनीय : उज० उससे दूर रहो जो अपने मित्र की बुराई करता है।

जो करता है वही जानता है—जो जिस काम को करता है वही उसके गुण-दोषों से परिचित रहता है, दूसरे व्यक्ति उसके सम्बन्ध में कुछ नहीं जानते। जब कोई व्यक्ति किसी के काम को बहुत सहज या लाभदायक बताए जबकि वास्तव में वह ऐसा न हो तो कहने वाले के प्रति व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : भीली—खीमला खीमला मीठं, खाए जणाए खबर; पंज० करण वाला जाणदा है; ब्रज० जो करै वही जानें।

जो करनी समुझे प्रभु मोरी, नहिं निस्तार कल्प शत कोरी—हे ईश्वर, मैंने जो दुष्कर्म किया है उससे हमारा सैकड़ों कल्प में भी उद्धार न हो सकेगा। ईश्वर के आगे अपनी दीनता प्रकट करते हुए अपने दुष्कर्मों को क्षमा करने के लिए प्रार्थना करते हैं।

जो कर लो सो काम, जो भज लो सो राम—जितना अपने हाथ से किया जाय वही काम और जितना प्रभु का नाम लिया जाय वही पुण्य है। आशय यह है कि (क) जो काम स्वयं किया जाय वही अच्छा होता है। (ख) जीते जी या हाथ-पांव चलते रहने तक जो कर लिया जाय उसी को अपनी उपलब्धि मानना चाहिए।

जो करे काम, उसका लें सब नाम—जो व्यक्ति काम करने वाला तथा परिश्रमी होता है, सब उसीको याद करते हैं। अर्थात् परिश्रमी व्यक्ति की सभी इज़्ज़त करते हैं। तुलनीय : राज० काम कर्‌या जकै कामण कर्‌या; पंज० जो कम्म करदा है उसदा नां सारे लैंदे हन।

जो करे काम, वही करे आराम—जो मनुष्य परिश्रम करता है वही सुख भी पाता है। जो व्यक्ति कुछ काम-धंधा नहीं करते और आराम या सुख उठाना चाहते हैं उनके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० जग कमर कस, तब जिवड़ी रस; पंज० कम्म करण वाला अराम करदा है।

जो करेगा वह भरेगा—जो बुरा काम करेगा उसे उसका दंड भी भुगतना पड़ेगा। तुलनीय : गढ़० जो कर लो सो भर लो; ब्रज० जो करैगो, वह भरैगो; पंज० करेगा सो परेगा।

जो करे पाप, सो कराय माफ—पाप या अपराध करने वाला ही हाथ जोड़ता है। अर्थात् निर्दोष व्यक्ति किसी से क्षमा याचना नहीं करता। तुलनीय : भीली—जो खोटू करे जो हाथ जोड़े।

जो करे प्यार रोवे ज़ार-ज़ार—प्रेम करने वालों को प्रायः रोना ही पड़ता है क्योंकि प्रेम में प्रायः हानि उठानी पड़ती है। (क) प्रेमी विरह से दुःखी रहते हैं इसलिए कहते हैं। (ख) यदि कोई व्यक्ति अपने प्रेमी या मित्र से कोई वस्तु या धन माँग कर ले जाय और उसको लौटाने का कष्ट न करे तो देने वाले मित्र के प्रति कहते हैं। तुलनीय : गढ़० मौला जै मौ कोणा जैक रो; पंज० पयार वी करे रोवे वी।

जो करे लिखने में ग़लती, उसकी थैली होगी हलकी—रोकड़ बही लिखने में ग़लती होने पर हानि उठानी पड़ती है। तुलनीय : ब्रज० जो करै लिखिबे में गलती, वाकी थैली होइगी हल्की।

जो करे, वही भोगे—जो कार्य करता है फल भी उसी को मिलता है। (क) जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे की उन्नति देखकर जलता है तो उसके समझाने के लिए कहते हैं। (ख) जब किसी को अपने बुरे कर्मों के कारण दंड भुगतना पड़ता है तब भी कहते हैं। तुलनीय : राज० करै सो भरै; पंज० जो करे सो परै।

जो करे सोई पेट भरे—जो काम करता है वही भोजन पाता है। अर्थात् परिश्रम करने पर ही धन मिलता है। अकर्मण्य व्यक्ति जब काम-काज न करने के कारण भूखे-प्यासे मरते हैं तो उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय : भीली—धंधो करे जो धाई ने खाये; पंज० जो करे सो टिड परे।

जो करे सो उस्ताद—जो काम करता है या जो काम जानता है सब उसे उस्ताद (गुरु) कहते हैं अर्थात् अनुभवी या परिश्रमी का सभी आदर करते हैं। तुलनीय : राज० करता उस्ताद है।

जो करे होड़, सो मरे सिर फोड़—जो व्यक्ति किसी से होड़ करता है उसे सिर फोड़कर मरना पड़ता है। देखा-देखी काम करने वाले या धन व्यय करने वाले सदा हानि उठाते हैं। जो व्यक्ति दूसरों की देखादेखी नक़ल या ज़िद करके हानि उठाते हैं उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० होडाहोड क्यूं गोडा फोडै।

जो कह झूठ मसखरी जाना, कलियुग सोइ गुनवंत बखाना—कलियुग में उसी को गुणी और विद्वान् माना जाता है जो झूठ बोलना और मसखरी करना जानता हो। अर्थात् गुणियों और विद्वानों का कलियुग में आदर नहीं

होता।

जो कहते हैं, वे करते नहीं—जो लम्बी-चौड़ी बातें करते हैं वे कुछ नहीं करते। तुलनीय : ब्रज० जो कहैं वे करैं नायें ; पंज० कैहण वाले करदे नई।

जो कहुँ वरसे ऊतरा कोदो न खायें कूकरा—उत्तरा नक्षत्र में वर्षा होने से कोदों की उपज इतनी अधिक होती है कि कुत्ते भी खाते-खाते ऊब जाते हैं। अर्थात् उत्पादन बहुत होना है।

जो कहुँ बहै इसाना कोना, नाग्यो बिस्वा दो दो दोना—ईशान कोण की तरफ से वायु बहने पर बिस्वे में दो-दो दोना अन्न होगा। अर्थात् फ़सल नहीं होगी और बहुत बड़ा अकाल पड़ेगा। (ईशान कोण=पूरब और उत्तर के बीच की दिशा)।

जो कहुँ मघा में बरसे जल, सब नाजो में होगा फल—मघा नक्षत्र में वर्षा होने से सभी अनाजों की फ़सल अच्छी होती है। तुलनीय : मरा० मघा (नक्षत्रा) या पाऊस जर पडेल, तर सर्व पीक चांगले फलेल।

जो कहुँ हवा अकासे जाय, परै न बूँद काल परि जाय—यदि वायु नीचे से ऊपर की ओर बहे अर्थात् धरती से आकाश की ओर जाए तो वर्षा बिलकुल नहीं होती तथा वर्षा न होने से अकाल पड़ जाता है।

जो कान छिदाय, वही गुड़ खाय—जो कष्ट उठाता है वही सुख भी भोगता है। अर्थात् बिना कष्ट उठाए या परिश्रम किए सुख नहीं मिलता है।

जो काम हिकमत से निकलता है, वह हुकूमत से नहीं निकलता—जो काम तरकीब से निकल जाता है वह रोब से नहीं होता। आशय यह है कि बुद्धि बल से अधिक शक्तिशाली है। तुलनीय : हरि० नरमी जोर न खास गर्मी अपणे आप्णे न।

जो कोई कलपाय है, सो कैसे कल पाय है?—जो दूसरे को कष्ट देता है, उसे कैसे सुख और शांति मिल सकती है? अर्थात् उसे भी कष्ट ही मिलना है।

जो कोई खाय चने का टूँक, पानी पीवे सौ-सौ घूंट—चना खाने से प्यास अधिक लगती है।

जो कोई खाय निवाह के ज्वार, मूल बने वह मूढ़ गँवार—जो हमेशा ज्वार खाता है वह सदा गँवार बना रहता है क्योंकि ज्वार बहुत मोटा अन्न है।

जो कोई जिए सो खेले होली—जो जीवित रहते हैं वही होली खेलते हैं। माघ-फागुन में रोग अधिक फैलते हैं इसलिए उसमें से जो बचते हैं वही होली खेल पाते हैं। तुलनीय : ब्रज० जो जीवै सो खेलै होरी।

जो कोई हमको देख के जले, उसकी आँख राई नोन पड़े—स्त्रियाँ टोटका करते समय कहती हैं।

जो कोउ होयँ अभागे, काटी मछली भी उठ भागे—भाग्य में यदि कुछ न हो तो मिली हुई वस्तु भी खो जाती है। जिस व्यक्ति के दुर्भाग्यवश सभी प्रयत्न विकल हो जायें तो उसके प्रति संवेदना प्रकट करने के लिए प्रयोग करते हैं। तुलनीय : गढ़ अभागी का पड्या पाला, काट्यां माछा लग्या डाला।

जो कोयले खाएगा, उसी का मुँह काला होगा—(क) जो बुरा काम करेगा बदनामी भी उसी की होगी (ख) जैसा कार्य कोई करेगा वैसा ही फल मिलेगा। तुलनीय : राज० कोयला खावै जकेरो कालो मूंढो; पंज जो कोले खावेगा उसदा मुंह काला होवेगा; ब्रज० जो क्यौला खायगौ, वाई कौ मुँह कारौ होयगौ।

जो कोसत बैरी मरें, मन चितए धन होय, जल में घी निकसन लगे, तो रूखी खाय न कोय—यदि सब काम अनायास ही हो जायें तो उसके लिए कोई परिश्रम न करे। जो व्यक्ति बिना परिश्रम किए ही सुख भोगना चाहते हैं उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

जो खड़े पेशाब करेगा, वह छींटे से क्या डरेगा?—अर्थात् अनुचित कार्य करने वाला उसके परिणाम से नहीं डरता। तुलनीय : भोज० खड़े मूती ओके छिटका से का डर; ब्रज० ठाड़े हैकें पेसाब करैगौ, वही छींटान ते डरैगो।

जो खाट पर जागते मूते उसे कोई क्या करे?—जो व्यक्ति जागता हुआ भी खाट पर मूत देता है उसे कोई क्या कहे। जो व्यक्ति जानते हुए भी बुरा काम करे उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : भीली—जागत् मूते वीनो हूं उपा लागे।

जो खाते लजाय सो अचवंत पछताय—भोजन करते समय जो संकोच करेगा बाद में उसे पश्चाताप होगा। आशय यह है कि खाने-पीने में संकोच नहीं करना चाहिए। तुलनीय : मैथ० जे खात में लजाई से अंचवत में पछताई; भोज० जो खाए क बेरी लजाई उ पाछे पछताई।

जो खाय कस, दुनिया उसके बस—जो भर पेट भोजन करता है, उसका शरीर पुष्ट रहता है और दुनियावाले उसी से दबते हैं। जो भोजन के प्रति उदासीन रहते हैं या यदि मिला तो खा लिया और न मिला तो न सही, इस प्रकार कहने वाले व्यक्तियों को यह बताने के लिए कि शरीर की पुष्टता भोजन पर निर्भर है इस लोकोक्ति का प्रयोग करते

हैं। तुलनीय : गढ़० जैकी गली बाजो, तैकी नली गाजो।

जो खाय चने का टूंक, पानी पीवै सौ-सौ घूंट—चने की रोटी या अन्य वस्तु खाने से अधिक प्यास लगती है।

जो खाय मीठा सोइ खाय कड़वा—जो मीठा खाता है उसे कड़वा भी खाना पड़ता है। (क) अधिक मीठा (मिठाई) खाने वाले प्रायः बीमार होते रहते हैं और उन्हें चिकित्सक की कड़वी दवाइयाँ खानी पड़ती हैं। (ख) सुखी लोगों पर भी दुःख आ जाता है। (ग) लाभ उठाने वालों को हानि सहनी पड़ती है। तुलनीय : राज० मीठा खासी जका खारो ही खासी।

जो खीरा चुराएगा वह हीरा भी चुराएगा—अर्थात् छोटी वस्तुएँ चुराने वाला ही धीरे-धीरे बड़ी वस्तुओं को भी चुराने लगता है। तुलनीय : भोज० जे खीरा चोराई से हीरा नां चोराई ?

जो खुदा सिर पर सींग दे तो वह भी सहने पड़ते हैं—ईश्वर जैसे रखता है उसी प्रकार रहना पड़ता है। तुलनीय : पंज० रब जिवें रक्खे उवें रैणा पेंदा है।

जो खुशामद करे खल्क़ उससे सदा राजी है, सच तो यह है कि खुशामद से खुदा राजी है—खुशामद बहुत बड़ी चीज है, यहाँ तक कि इससे ईश्वर भी राजी हो जाता है।

जो खेती में मोती फरें तबहूँ ना बनिया खेती करे—खेती में यदि मोती भी फलें तब भी बनिया खेती नही कर सकता। (क) जो काम जिसे पसंद है या करने का आदी हो गया है वह उसे ही करता है या करना चाहता है। (ख) खेती की तुलना में व्यापार में अधिक लाभ होता है

जो खोदेगा वह गिरेगा—जो गड्ढा खोदेगा वही गिरेगा। जो जैसा करता है उसको वैसा ही फल मिलता है। जब किसी दुष्ट को अपनी दुष्टता के कारण दुख भोगना पड़ता है तब उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० खिणै जको पड़ै; पंज० जो खोदरेगा ओह डिगेगा।

जोग-जुगत जानी नहीं, कपड़े रंगे तो क्या हुआ ?—विना गुण सीखे केवल आडंबर से काम नहीं चलता।

जो गदहे जीतें संग्राम, तो काहे को ताजी को खरचे दाम—यदि गदहों से ही युद्ध में विजय मिल जाय तो अरबी घोड़ों (ताज़ी) को खरीदने की क्या आवश्यकता ? आशय यह है कि यदि मूर्खों से बड़े काम सिद्ध हो जायें तो पढ़े-लिखे लोगों की क्या आवश्यकता ?

जोगना जोगे, भोगना भोगे—बचाकर रखने वाला पाई-पाई जोड़ता है तथा खर्च करने वाले निःसंकोच खर्च करते हैं।

जोग में भोग की आस ?—जब कोई परस्पर विरोधी कार्यों को एक साथ करना चाहता है तब कहते हैं। तुलनीय : गढ़० जोगमां भोग कख छयो।

जो गरजता है, वह बरसता नहीं—जो बहुत लम्बी-चौड़ी बातें करते हैं वे कुछ नहीं करते। तुलनीय : तमिल—किरनाय कड्डिकादै; ब्रज० जो गरजै वह बरसै नायें।

जो गरजता है सो बरसता नहीं—ऊपर देखिए।

जो गरजते हैं, बरसते नहीं—दे० 'जो गरजता है वह···'। तुलनीय : भोज० जो गरजेला उ बरसेला ना; अव० जी गरजिहैं ती बरसिहैं का, जी पुपुअइहैं ती करिहैं का; मरा० गर्जेल तो बर्षेल काय; हाड० गरज जे बरस न अर बरस जे गरज न; मल० कुरय्क्कुम् पट्टि कटियक्कुक-यिल्ल; अं० Barking dogs seldom bite.

जो गरजते हैं, वे बरसते नहीं—दे० 'जो गरजता है, वह···' तुलनीय : राज० गरजणा वादल वरसणा नहीं, भुसणा कुत्ता खाणा नहीं; कन्नड़ -कच्चो नायि बगठोदिल्ल बोगठोनायि कच्चोदिल्ल।

जो गरजते हैं सो बरसते नहीं—(क) डींग हांकने वाला कुछ नहीं कर सकता। (ख) घमंडी कोई काम नहीं कर सकता। तुलनीय : मरा० जे गरजतात ते पडत नाहीत; भीली—घणो गाजे जो थोड़ो वरे; राज० गरजणा वादल बरसणा नहीं, भुसणा कुत्ता खाणा नहीं; अव० जे जेतना गरजत है ओतना बरसत नाहीं।

जो गरीब का खाय वह जड़ से जाय—जो ग़रीब को सताता है उसका नाश हो जाता है, क्योंकि ग़रीब की आह बहुत बुरी होती है। आशय यह है कि ग़रीबों को कष्ट देना अच्छा नहीं है। तुलनीय. गरीब दा खादा जड़ों जावे।

जो ग़रीब का खाय, सत्यानाश हो जाय—ऊपर देखिए।

जो ग़रीब का खाय, सीधा दोजख जाय—जो ग़रीबों को कष्ट देता है, वह सीधे नरक में जाता है। आशय यह है कि ग़रीबों को कष्ट देने का परिणाम अच्छा नहीं होता। तुलनीय : राज० गरीब का खाय जड़ां मूत्र सूं जाय।

जो गाँठ में सो अपना—जो वस्तु अपने पास हो उसी को अपना समझना चाहिए क्योंकि अपने पास की चीज ही समय पर काम आती है। तुलनीय : माल० तीरे जो वीरे; ब्रज० जो गांठि में सो अपनों।

जो गिरा खाई के अन्दर सो पड़ा फेरी में—झंझट में

पड़ा हुआ व्यक्ति बड़ी मुश्किल से उससे छुटकारा पाता है।

जोगी और सांप का घर कहाँ?—जोगी और सांप का घर कहीं नहीं होता। आवारा लोगों के प्रति व्यंग्योक्ति। तुलनीय : गढ़० जोग्यूं का अर गुरौ का घर करवछया; पंज० जोगी अते सप दा कर किथे; ब्रज० जोगी और स्यांप कौ घर कहाँ।

जोगी का डेरा कुम्हार के घर—जो व्यक्ति जैसा होता है उसके साथी भी वैसे ही होते हैं। तुलनीय : पंज० जोगी दा डैरा कमैर दे कर।

जोगी का लड़का खेलेगा तो साँप से—सँपेरे का लड़का साँप से खेलता है, क्योंकि उसके लिए वह स्वाभाविक है। आशय यह है कि पारिवारिक व्यवसाय या जातीय गुण बच्चों में भी पाया जाता है। (जोगी = सँपेरा)। तुलनीय : पंज० जोगी दा मुंडा खेडेगा सप नाल।

जोगी का लड़का जोगी से नहीं डरता—क्योंकि वह उसके सभी मंत्रादि जानता है।

जोगी किसका मीत कलन्दर किसका साथी—न तो जोगी किसी का मित्र होता है और न बन्दर-भालू नचानेवाला किसी का साथी। दोनों स्वतन्त्र होते हैं, इनका किसी से कोई खास सम्बन्ध नहीं होता।

जोगी किसका मीत वेस्या कैसी प्रीत—जोगी किसी का मित्र नहीं होता और वेश्या किसी की प्रियतमा नहीं होती। तुलनीय : भोज० जोगी केकर मीत वेस्या केकर नारी; टि० वेस्या केकर नारी की जगह 'राजा केकर हीत' भी कहीं-कहीं प्रयुक्त होता है।

जोगी किसके मीत और पातु किसकी नारि—ये दोनों किसी के कभी नहीं होते।

जोगी किसके मीत, कलंदर केहि के साथ—हिन्दू साधुओं को जोगी और मुसलमान फ़क़ीरों को क़लंदर कहते हैं। आशय यह है कि ये लोग किसी के साथी नहीं होते।

जोगी की सी फेरी—प्रिय व्यक्ति जब अपना आना-जाना कम कर दें तो लोग कहते हैं।

जोगी को बैल बला—जोगी को बैल देना उसे झंझट में डालना है, क्योंकि उसके लिए बैल का कोई भी उपयोग नहीं है। जब किसी के हाथ बेमतलब की चीज़ लगे तब कहते हैं।

जोगी जल रमता भला दाग न लगिहैं काहिं—जोगी तथा जल दोनों चलते रहने से शुद्ध होते हैं अर्थात् जोगी के ज्ञान का विकास देश-देशान्तर से होता है तथा पानी की शुद्धि निरन्तर बहते रहने से होती है।

जोगी जुगत से जुग-जुग जिए—जोगी संयम और योगबल से बहुत समय तक जीवित रहता है। आशय यह है कि संयमी मनुष्य की आयु बड़ी होती है।

जोगी-जोगी लड़ पड़ें खप्पर का नुकसान—(क) साधारण लोगों की लड़ाई में कोई बड़ी हानि नहीं होती, क्योंकि उनके पास कोई मूल्यवान वस्तु होती ही नहीं। (ख) बड़ों के टकराने से छोटों को हानि होती है। तुलनीय : तेलु० जोगी-जोगी राचकुंटे बूडिदरालु तुंदि।

जोगी-जोगी लड़ें, खप्परों की हानि—ऊपर देखिए। तुलनीय : गढ़० जोगी-जोगी लड़्या तुमड़ै तुमड़ा फूट्या।

जोगी था सो उठ गया आसन रही भभूत—(जोगी = आत्मा)। आदमी के मरने के बाद केवल उसका यश रह जाता है।

जोगी बढ़े तो तूंबा बोवै—(क) जिसे जिस वस्तु की कमी होती है वह उसी को उत्पन्न करने की चेष्टा करता है। (ख) जब कोई निर्धन व्यक्ति धनी होने के बाद अपने छोटे कर्मों को नहीं छोड़ता उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। (ग) जातीय पेशा या गुण कभी नहीं जाते, चाहे व्यक्ति कितना भी महान क्यों न हो जाय। तुलनीय : ब्रज० जोगी बढ़ै तूमरा बोवै।

जोगी बरद बलाय कोहारे बादल—जोगी के लिए बैल और कुम्हार के लिए बादल बला के समान होते है। आशय यह है कि जिस वस्तु से कोई लाभ नहीं होता वह उसको बहुत बुरी लगती है, भले वह औरों के लिए अच्छी हो।

जोगी बरध, कोहारें, बादर; माली घेर, जोलाहे बानर—साधु को बैल, कुम्हार को बादल, माली को बकरी और जुलाहे को बंदर बड़ी हानि और कष्ट पहुँचाते हैं।

जोगी बहुत, कुटिया छोटी—जोगी बहुत हैं, किन्तु कुटिया बहुत छोटी है। किसी छोटे से स्थान में जब बहुत से लोग एकत्र हो जायें तो उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० मोडा घणा, मढी सांकड़ी; पंज० जोगी बड़े कुटिया निक्की।

जोगी भागे मैले से—जोगी जिस स्थान पर टिक जाय उस स्थान से उसको भगाना बहुत कठिन होता है। लड़ाई, गाली-गलौज आदि का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। उसको भगाने के लिए उस स्थान पर गंदगी फैला दी जाय तो वह स्वयं ही भाग जाता है। अर्थात् दुष्टों के साथ दुष्टता करने से ही वे मानते हैं। तुलनीय : गढ़० जोगी भाग्यो हगणें बिटी।

जोगी-भोगी खेती की, झोली में ही बांट ली—जोगी और भोगी ने मिलकर खेती की तो इतना ही अनाज पैदा हुआ जो उनकी झोली में समा गया। (क) जब दो अयोग्य व्यक्ति मिलकर लाभदायक कार्य करें और उसमें साधारण-सा ही लाभ मिले तो व्यंग्य से कहते हैं। (ख) अयोग्य व्यक्ति किसी भी काम को ठीक ढंग से नहीं कर सकते। तुलनीय : भीली—जोगी ढोली हीर कमांणां, खपपां खपरां वांट क्यूं।

जोगी मंत्री बुआवै तितलौकी—जोगी मंत्री बना कड़वी लौकी (तितलौकी) की खेती कराने लगा। जब कार्य-भार किसी अयोग्य व्यक्ति के हाथों में आ जाता है तब वह उलटा-सीधा ही काम करता है जिससे हानि के सिवाय और कुछ हाथ नहीं लगता।

जोगी मारे छार हाथ—जोगी के मारने से हाथ काला होता है। आशय यह है कि निर्बल को कष्ट देने से कोई लाभ नहीं होता उलटे निन्दा ही होती है।

जोगी से लड़ना राख को पीटना—साधु-संन्यासियों से झगड़ा नहीं करना चाहिए और राख को पीटना नहीं चाहिए क्योंकि इन दोनों को पीटने से लाभ कुछ नहीं मिलता केवल निन्दा ही होती है। आशय यह है कि जिस काम में हानि या अपमान हो, उससे दूर ही रहना चाहिए। तुलनीय : गढ़० जोगी झटाक, खन्ना पटाक; पंज० जोगियां नाल लड़ना, सुआ नूं कुटना।

जो गुड़ खाएगा कान छिदाएगा—(क) जो लाभ उठाता है, उसे हानि भी सहनी पड़ती है। (ख) जब कोई व्यक्ति अपने बुरे कर्मों के कारण दंडित होता है तब भी उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० जे गुर खाइ से कान छेदाई; मैथ० ईगुड़ खैहिनै कान छेदैनै; ई गुर खइले कान छेदवले, ई गुड़ खैनहि कान छेदौनहि; ब्रज० जो गुर खावैगो वही कान छिदावैगो।

जो गुड़ खाएगा वह कान छिदाएगा—ऊपर देखिए।

जो गुड़ खाएगी अंधेरे में आएगी—चरित्र-भ्रष्ट स्त्रियों के प्रति व्यंग्य में कहते हैं जो धन के लालच में इज्जत खो देती है। (ख) जो किसी का अहसान लेता है उसकी अनुचित इच्छा भी पूरी करनी पड़ती है। तुलनीय : जो गुड खावेगी हनेरे बिच आवेगी।

जो गुड़ खाय सो कान छिदाय—दे० 'जो गुड़ खाएगा कान ''। तुलनीय : खोज० जे गुर खाई उ कान छेदाई; अव० गुड़वा खाये परी, कान छेदाये परी।

जो गुड़ दिए मरे उसे जहर क्यों दे ?—नीचे देखिए।

जो गुड़ दीन्हें ही मरे, क्यों विष दीजे ताहि ?—(क) जब कोई समझाने से ही मान जाय तो उसे दण्ड क्यों दे ? (ख) जो काम आसानी से हो जाय, उसके लिए कष्ट क्यों उठाया जाय ? (ग) जो काम उचित ढंग से हो सकता है उसके लिए बुरा रास्ता क्यों अपनाया जाय। तुलनीय : भोज० जे गुरे देहले मर जाय ओकरा के विस काहे के देहल जाइ; अव० जौ गुड़ दीन्हें से मर जाय तौ जहर काहे का देय।

जो गुर खाय सो कान छिदाय—दे० 'जो गुड़ खाएगा कान'''।

जो घोड़ी मस्तक लिखी, चोर कहां ले जाय—आशय यह है कि जो चीज भाग्य में होती है वह कहीं नहीं जाती।

जो चढ़ेगा सो गिरेगा—(क) जब किसी काम में कोई असफल हो जाता है तब उसे हिम्मत बँधाने के लिए कहा जाता है। (ख) जिसका उत्थान होता है उसका पतन भी होता है। तुलनीय : मरा० चढेल तो पडेल; गढ़० जो चढ्यो सो पड्यो; भोज० जे घोड़ा पर चढी उ गिरी; हरि० जो चड्ढैगा वोहै पड़ैगा; उ० गिरते हैं शहसवार ही मैदाने-जंग में; पंज० जो चढ़ेगा सो डिगेगा; ब्रज० जो चढ़ैगो सो गिरैगो।

जो चढ़े सो गिरे—ऊपर देखिए।

जो चप-चपकर आँख झपावे, वह रण में सेल चलावे—सुस्त आदमियों पर कहा गया है।

जो चाकर तो नाचा कर—चाकरी (नौकरी) करने पर स्वामी के इशारों पर नाचना पड़ता है। अर्थात् नौकर अपनी इच्छा से कुछ नहीं कर सकता, उसे अपने स्वामी के आदेशानुसार ही कार्य करना पड़ता है।

जो चाहे उसके चाकर, जो न चाहे वह खुद चाकर—जो हमें चाहे उसके हम नौकर और जो हमें न चाहे वह हमारा नौकर। जो व्यक्ति अपना हितैषी और प्यार करने वाला हो उसकी आज्ञा और इच्छा का पालन नौकरों की तरह करना चाहिए तथा जो अपने को न चाहे उसको अपना नौकर समझना चाहिए। तुलनीय : राज० चाय करै जकेरा चाकर नही जकेरा ठाकर।

जो चाहे ले जाओ, कहा—मुझे कुछ नहीं चाहिए—आत्मसम्मान वाले तथा सज्जन व्यक्ति आवश्यकता होते हुए भी किसी की सहायता स्वीकार नहीं करते। ऐसे ही व्यक्तियों की प्रशंसा करने के लिए ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० त्वैंकु चोली टोपली स्यूला; ना मैं टसटसै सौंलो।

जो चित्रा में खेलें गाई, निहचे खाली साख न जाई—यदि कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा, गोवर्द्धन पूजा, गो-क्रीड़ा के दिन

चित्रा नक्षत्र में चन्द्रमा हो तो फ़सल अच्छी होगी।

जो चोरी करता है वह मोरी भी रखता है– (क) जब बुरा काम करनेवाला अपने बचाव के लिए झूठ बोलता है तब कहते हैं। (ख) बुरा काम करने वाला अपने बचाव की राह भी रखता है। तुलनीय : पंज० चोरी करण वाला मोरी वी रखदा है; ब्रज० जो चोरी केरे सो मोरी राखै।

जो चोरी करता है, सो मोरी भी रखता है—ऊपर देखिए।

जो छावे सो पावे—जो श्रम करता है उसे ही आराम मिलता है।

जो जन्म से सुन्दर नहीं, वह सिंगार से क्या होगा?—सौंदर्य जन्मजात वस्तु होती है। बाहरी उपादानो से किसी को सुंदर नही बनाया जा सकता। जब कोई किसी के अवगुणों को इधर-उधर की बातो से छिपाने की कोशिश करता है तब व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० जनमते धिया गोर ना भइली त उबटले होइहं; पंज० जिहड़ा जनम तो सोहना नईं सिगार नाल की होवेगा?

जो जल अषाढ़ लगत ही बरसे, नाज नियार बिन कोई न तरसे—आषाढ़ के प्रारंभ में ही यदि वर्षा होने लगे तो किसी के पास अनाज और चारे (नियार) की कमी नही रहेगी, अर्थात् फ़सल काफ़ी अच्छी होगी और लोग सुख से रहेंगे।

जो जस करइ सो तस फल चाखा—जो जैसा करता है वह वैसा फल पाता है, अर्थात् भले काम का भला और बुरे काम का बुरा फल मिलता है। तुलनीय : सं० एकेन पाणिना देयं द्वितीयेन च गृह्यताम्।

जो जस करे सो तस फल चाखा—ऊपर देखिए। तुलनीय : तेलु० ऐवह् चेसिन कर्म वारनुमविपंक तीरदु।

जो जाके मन बसे सो सपने दरसाया—जो वस्तु जिसके दिल में रहती है, वही स्वप्न में भी दिखाई पड़ती है। अर्थात् प्रिय वस्तुएँ या प्रिय पात्र ही स्वप्न मे दिखाई पड़ते हैं।

जो जागत है सो पावत है—जो जागता है वही पाता है। आशय यह है कि जो सतर्क रहता है वही लाभ उठाता है। तुलनीय : भीली —मूं थाई ग्यो मारा लबरा लेईग्या चोर; पंज० जो जागदा है ओह पांदा है।

जो जैसा करे सो तैसा भरे—मनुष्य जिस प्रकार का कर्म करेगा उसी के अनुसार परिणाम भी भोगेगा। तुलनीय : भोज० जे जइसन करी से तइसन भरी।

जो जैसो सो तैसो—जो जैसा कर्म करता है उसे वैसा ही फल मिलता है।

जो ज्यादा क़रीब, सो ज्यादा रक़ीब—जो अपने बहुत ही नजदीक (क़रीब) होता है, वही सबसे बड़ा दुश्मन (रक़ीब) भी होता है। जब अपने खास लोग ही शत्रु बन जाते हैं तब ऐसा कहते हैं।

जो टट्टू जीतें संग्राम तो क्यों खरचें तुर्की के दाम—दे० 'जो गदहे जीतें संग्राम...'।

जोड़-जोड़ मर जाएँगे, माल जमाई खाएँगे—इकट्ठा करते-करते मर जाओगे और तुम्हारे धन का उपभोग तुम्हारे दामाद (जमाई) करेंगे। आशय यह है कि कंजूसों के धन का लाभ दूसरे लोग ही उठाते हैं।

जोड़-जोड़ मर जाएँगे, माल पराए खाएँगे—ऊपर देखिए।

जोड़-जोड़ मर जाएँगे, माल मुसाफ़िर खाएँगे—दे० 'जोड़-जोड़ मर जाएँगे माल जमाई...'।

जोड़-तोड़ का ब्याह, चचा हार बनवा दो—किसी प्रकार इधर-उधर मे प्रबंध करके (जोड-तोड़ करके) ब्याह किया और लड़की कहती है कि चाचाजी हार बनवा दीजिए। जब कोई व्यक्ति, स्थिति का ध्यान न रखकर बहुत ऊँची महत्वाकांक्षा करता है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

जोड़ फूटी, नर्द गयी—चौसर के खेल में जब तक दो गोटियाँ एक घर में रहती हैं तब तक उन्हें कोई मार नही सकता और अलग होते ही गोटी (नर्द) मारी जाती है। आशय यह है कि एकता में बहुत बल है। एका समाप्त होने पर हार खानी पड़ती है।

जो तक़दीर में होगा, वही मिलेगा—जब व्यक्ति किसी चीज़ को प्राप्त करने के लिए बहुत परेशान होता है तब कहते हैं कि क्यों परेशान हो रहे हो जो तक़दीर में होगा वही मिलेगा। तुलनीय : पंज० जो लेख बिच होवेगा मिलेगा।

जोत-जोत कर मरें बैल, बैठे खायें तुरंग—बैल खेत जोत-जोत कर मरते हैं और घोड़े आराम से बैठ कर खाते हैं। (क) धनवान घर में बैठे रहते हैं और उनके सेवक कमा कर खिलाते हैं। (ख) जब श्रम कोई करता है और उसका फ़ायदा कोई उठाता है तब भी कहते हैं। तुलनीय : भोज० जोतत मरे बरध बइठल खाय घोड़ा।

जोतत मरे बैल, बैठल खाय तुरंग—ऊपर देखिए।

जोतते हैं हल और गाते हैं सीता हरण—बेतुके या बेमेल काम पर कहते हैं।

जोत न मानै अरसी चना, कहा न मानै हरामी जना—

जिस प्रकार दुष्ट व्यक्ति (हरामी जना) किसी की शिक्षा या उपदेश को नहीं मानते हैं, उसी प्रकार अलसी (अरसी) और चना जुताई नही मानते। आशय यह है कि अलसी और चने को अधिक जुताई की आवश्यकता नही होती।

जोतने को हल, गाने को सीता हरन—दे० 'जोतते हैं हल···'।

जो ताके परनारि को ताको ताके और—जो दूसरे की स्त्री को बुरी दृष्टि से देखता है तो दूसरे भी उसकी स्त्री को बुरी दृष्टि मे देखते हैं। अर्थात् जो दूसरे लोगों के साथ जैसा व्यवहार करता है उसके साथ भी लोग वैसा ही व्यवहार करते हैं।

जो तिल हद से ज्यादा हुआ तो मस्सा हुआ—सीमा से अधिक धर्म करने से भी अधर्म होता है। क्योंकि तिल का होना चेहरे पर अच्छा होता है पर यही जब मस्से का रूप धारण कर लेता है तो बुरा लगता है। आशय यह है कि हर चीज सीमा के अंदर ही अच्छी लगती है।

जोतिसी ग्रह पीड़ा कहे, बैद बतावे रोग—कष्ट पड़ने पर ज्योतिषी ग्रहों का फेर बताता है और वैद्य रोग बताता है। आशय यह है कि जिसका जो व्यवसाय है वह उसी के आधार पर समस्या का निदान या उपचार सुझाता है।

जो तुझसे बोले वो कुत्ता—जो अब कभी तुझसे बोलेगा वह कुत्ता ही होगा अर्थात् तुझसे कभी नही बोलूंगा। जब दो व्यक्तियों में किसी बात को लेकर बहुत मतभेद हो जाय और वे आपस मे सभी प्रकार का संबंध तोड़ दे तो एक दूसरे के प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० तैमूं बोलै जकेरो गुर झूठो; पंज० तेरे नाल बोलण वाला कुत्ता।

जो तुम देवो नील की जूठी, सब खादों में रहे अनूठी—यदि तुम खेत में नील के डंठल को डाल कर सड़ाओगे तो वह सब खादों से अधिक लाभप्रद होगा। अर्थात् नील के पौधे की खाद बहुत गुणकारी होती है।

जो तू भूखा माल का, तो ईख कर ले नाल का—यदि तुम धनी होना चाहते हो तो ईख को उस खेत में बोओ जो एक फाल्गुन से दूसरे फाल्गुन तक तैयार किया गया है। अर्थात् इस खेत में ईख की फ़सल अच्छी होगी।

जो तू ही राजा हुआ अपना सुख मत ठान, फक्कड़ और फ़क़ीर के दुःख सुख पर कर ध्यान—राजा को ग़रीबों पर भी ध्यान देना चाहिए न कि केवल अपने ही ऊपर। आशय यह है कि धनिकों को ग़रीबों और अनाथों का भी ध्यान रखना चाहिए।

जोतें रमजान, खायें अवदान—किसी दूसरे के फल का उपभोग जब दूसरा कोई करे तब ऐसा कहते हैं।

जोतें हल और गावें सीता हरन—दे० 'जोतते हैं हल···।' तुलनीय : ब्रज० जोतै हर और गामें सीता हरन।

जोते का पुरबी, लादे का दमोय, हेंगा का काम दे जो देवहा होय—जुताई के लिए पूर्वी, बैलगाड़ी के लिए दमोय तथा हेंगा के लिए देवहा जाति के बैल सर्वोत्तम होते है।

जो तेरे कंता घन घना, गाड़ी कर ले दो; जो तेरे धन नहीं, कालर वाड़ी बो—यदि धन अधिक हो तो दो गाड़ियाँ बनवा लेनी चाहिए ताकि उनसे और अधिक धन कमाया जा सके और यदि धन न हो तो कपास की खेती करनी चाहिए, क्योंकि इसमें लागत कम लगती है और लाभ अधिक होता है।

जो तेरे कुनबा घना, तो क्यों न बोये चना—यदि तुम्हारे घर में अधिक प्राणी है तो तुमने चना क्यों नही बोया? आशय यह है कि चने की उपज अन्य अनाजों की अपेक्षा अधिक होती है।

जोते हल तो होवे फल—परिश्रम करने वाले को ही फल की प्राप्ति होती है। तुलनीय : पंज० हल वाओ तां फल होण।

जोतें खेत घास न टूटे, तेकर भाग सांझ ही फूटे—जिसके जोतने से खेत की घास नहीं टूटती है उसके भाग्य को फूटा हुआ समझना चाहिए। अर्थात् उसके खेत में बहुत कम अन्न पैदा होता है जिससे उसकी ग़रीबी नहीं जाती।

जो तैरेगा, सो डूबेगा—तैरने वाला ही डूबता है। आशय यह है कि काम करने वाले से ही भूल होती है। या जो किसी काम के लिए प्रयत्न करता है वही असफल भी होता है। तुलनीय : पंज० तैरण वाला डुबेगा; ब्रज० जो तैरैगो सोई डूबैगो।

जो तोको काँटा बुवे, ताहि बोइ तू फूल—जो तुम्हारी बुराई करे उसके साथ तुम भलाई करो।

जो तोलों कम, सो मोलों कम—जो वस्तु तौल में कम होती है उसका दाम भी कम होता है। तुलनीय : पंज० कट तौल कट मोल, ब्रज० जो तोल में कम सो मोल में कम।

जो दम गुजरे, सो ग़नीमत है—जितना समय आराम से व्यतीत हो वही अच्छा है।

जो दिन गया वह कभी न लौटा—बीता हुआ समय कभी वापस नहीं आता, इसलिए समय का सदुपयोग करना चाहिए। जो लोग व्यर्थ में अपना समय गँवाते हैं उनके शिक्षार्थ ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० जावै सो दिन आवै नहीं; भोज० जवन दिन बीति जाला उ फेर नां आवेला;

पंज० गया दिन नईं आंदा।

जो दिन जात अनंद सों जीवन को फल सोय—जितना दिन आनंद से बीत जाय, वही ज़िन्दगी का सुख है।

जो दिया, वही अपना—जो धन दान कर दिया वही अपना है, क्योंकि लोक-परलोक में वही अपने काम आता है और जो धन रह जाता है वह दूसरों के ही काम आता है। तुलनीय : पंज० जो दिता ओह अपणा।

जो दिल में, वो होंठों पर—जो बात मन में रहती है वही बात मुख से निकलती है। जब कोई व्यक्ति किसी बात को छिपाने का प्रयत्न करे, किन्तु भूल से उसके मुँह से वही बात निकल जाय तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० कोठे सो ई होठे; पंज० जो दिल विच ओह बुलां उत्ते।

जो दुर्जन हँसि के मिलै, तबै बचैयो कंत—दुर्जन व्यक्ति का हँस कर मिलना बड़ा ख़तरनाक होता है। उससे भगवान ही रक्षा करें। ऐसी स्थिति मे काफ़ी सावधान रहना चाहिए।

जो दूसरे के लिए कुआँ खोदे, उसके लिए खाई तैयार है—दूसरों का बुरा करने वालों का स्वयं बुरा होता है या ईश्वर उनका बुरा करता है। तुलनीय : माल० खोदेगा खाड़, तो पड़ेगा आप; गढ़० जो करो औरू कू रोणी, तै कूहो रोणी; अव० जौन दुसरे के बुरे कुआँ खनत है ओकरे बरे खाई तैयार रहत है।

जो देखना हो किसी को तो उसके यार देख लो—जैसा व्यक्ति स्वयं होता है, वैसे ही उसके मित्र भी होते हैं। तुलनीय : पंज० मुंडे नूं ना देख मुंडे दे यारां नू देख।

जो देखा सो पेखा—देखना और पेखना दोनों का एक ही मतलब होता है। जब कोई एक ही बात को घुमा-फिरा कर कहता है तब ऐसा कहते हैं।

जो देखो, उसे भूलो मत—जो वस्तु या काम एक बार देख लिया जाय उसे भूलना नही चाहिए। छोटी-मोटी बातों को याद रखने से कभी-कभी बहुत बड़ा लाभ हो जाता है। तुलनीय : राज० देखणो सो भूलणो नही।

जो देगी उसी का खेलेगा—जो पैसा देगी उसी का लड़का खेलने के लिए खिलौना पाएगा। (क) जो खर्च करता है, उसी को मिलता भी है। (ख) जब कोई किसी को कुछ दे न, पर उससे कुछ प्राप्त करना चाहे तब भी वह ऐसा कहता है। तुलनीय : कौर० जो देगी, उसी का खेल्लेगा; पंज० जो देवेगी उसी दा खेडेगा।

जो देर से आए वही भूखा सोए—जो अतिथि देर से आता है वही बिना खाए सोता है। अर्थात् उचित समय पर कोई काम न करने वाला ही हानि उठाता है। तुलनीय : भीली—मामा आया मोड़ा खाहें वणारा फोड़ा; पंज० देर नाल आण वाला पुखा सोवे; अं० Bones for the late-comers.

जो दे वह दाता, जो न दे तो कैसा नाता?—जो मुझको कुछ दे वही मेरा दाता या स्वामी और जो मुझे कुछ नहीं देता उससे मेरा किसी प्रकार का संबंध नही है। जब कोई व्यक्ति केवल अपने स्वार्थ की ही बात करे तो उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० जो मैं द्यो सो मेरो ठाकुर, जो मैं नि द्यौ सो कुत्ता को ठाकुर।

जो दो पैसे की हाँड़ी लेता है, वह भी ठोक-बजा कर लेता है—आशय यह है कि किसी वस्तु को अच्छी तरह देख-भाल कर लेना चाहिए। तुलनीय : अव० जौन दुइ पैसा कै हंड़िया लेई, ओहू ठोंक-बजाय कै लेई; ब्रज० जो दो पैसा की हँड़िया ले वह ऊ ठोकि बजायकें ले।

जो दौड़े सो दाना पाय, बँधा रहे सो भूखा जाय—जो घोड़े दौड़ लगाते हैं उनको नित्य दाना मिलता है और जो घोड़े घर में बँधे रहते हैं उनको कोई घास भी नही देता। अर्थात् (क) परिश्रम करने वाले व्यक्ति सुख पाते है और आलसी सदा दुःख पाते हैं। (ख) जिनसे कुछ मिलता है या मिलने की आशा रहती है उन्हीं की खुशामद की जाती है। तुलनीय : माल० दोड़तो घोड़ो दाणो पावे।

जो धन जाता देखिए तो आधा दीजे बाँट—नीचे देखिए।

जो धन जातो जानिए, आधो दीजे बाँट—यदि यह ज्ञात हो जाय कि धन जाने वाला है तो उसमें से आधा बाँट कर बचा लेना बुद्धिमत्ता है। तुलनीय : मेवा० जो धन जातो जाणजे, आधो दीजे बाँट; सं० सर्वनाशे समुत्पन्ने अर्धं त्यजति पंडितः।

जो धनेस हैं आदि लौं सो ना करत गुमान—जो खानदानी धनी हैं उन्हें धन का गर्व नहीं होता। धन का गर्व वही करते हैं जिन्होंने कभी धन देखा न हो और नए धनी बने हों। जब कोई नया धनी अपने धन पर इठलाने लगता है तब कहते हैं।

जो धरती पर आया उसे धरती ने खाया—जो जन्म लेता है, वह मरता भी है।

जो धरी जोतै तोड़ मड़ोर, तब वह डारै काठिला फोर—मक्का के खेत की खूब जुताई करने से पैदावार अच्छी होती है।

जो धोवे सो पावे, जो सोवे सो खोवे—जो परिश्रम करेगा वही सफल होगा और जो आलस्य करेगा वह कहीं का

नहीं रहेगा। आशय यह है कि परिश्रमी व्यक्ति ही कुछ प्राप्त कर सकता है, आलसी नहीं। तुलनीय : अव० जे जागै उ पावै, जे सोवै उ खोवै।

जो ध्यावे सो पावे—जो ईश्वर का ध्यान करता है, वही सुख पाता है।

जो न करे खेत तेकर भरे न पेट—जो कृषि नहीं करता उसका पेट नहीं भरता। अर्थात् बिना कृषि-कर्म के अन्न नहीं मिल सकता। तुलनीय : मैथ० जे न करे खेत तेकर न भरे पेट; पंज० जिहडा कम्म नईं करदा ओह पुखा रेंदा है।

जो न करै बाबू भइया, सो सब करै रुपैया—जो काम अनुनय-विनय से नहीं होता, वह पैसे से हो जाता है। पैसे से सभी काम हो जाते हैं। तुलनीय : भोज० दरबे से सरबे सरबे सो करबे; ब्रज० जो न करै भैया, वह करै रुपैया।

जो नजर से न मरे, वो मार से क्या मरेगा?—निर्लज्ज व्यक्ति के प्रति व्यंग्य से कहते हैं जिस पर समझाने-बुझाने तथा डाँटने-फटकारने का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। तुलनीय : पंज० जिहड़ा नज़र नाल नां मरे ओह मार नाल की मरेगा।

जो नटे सो नाक कटाय—जो व्यक्ति एक बार वचन देकर उससे फिर जाता है, उसकी नाक कट जाती है। अर्थात् वचन देकर पूरा न करने से व्यक्ति का अपमान होता है। तुलनीय : भीली—नटे जणानो नाक कटे; ब्रज० जो नाटै सो नाक कटावै।

जो न माने बड़े की सीख, खपरी ले के माँगे भीख—जो बड़ों की बात नहीं मानता उसे भीख माँगनी पड़ती है, अर्थात् हानि उठानी पड़ती है। जब कोई अपने से बड़ों की बात न मानकर हानि उठाता है तब कहते हैं। तुलनीय : माल० जो नी माने बड़ा री हीख, तो घर-घर माँगे भीख; भोज० जे न माने बड़े क सीख ठिकरा लेके माँगे भीख; अव० जे नहिं माने बड़े कै सीख, खपरी लैके माँगै भीख।

जो नवे सो भारी—विनम्र व्यक्ति को ही महान समझा जाता है। तुलनीय : बुंद० नमे सो भारी; सं० नमंति फलिनो वृक्षा नमंति गुणिनो जनाः।

जो नहिं करहिं रामगुन गाना, जीह सो दादुर जीह समाना—जो ईश्वर की आराधना नहीं करता उसकी जीभ मेंढक की जीभ के समान होती है। अर्थात् ईश्वर का गुणगान न करने वाले का जीवन निरर्थक है।

जो भावे आपको, देव बहू के बाप को—जो वस्तु अपने को अच्छी न लगती हो या जो वस्तु लाभदायक न हो, उसे बहू के पिता को दे देना चाहिए। चालाक व्यक्ति के प्रति कहते हैं जब वह किसी निरर्थक वस्तु को किसी को देकर अहसान लाद देता है।

जो निकले सो भाग धनी के—जो कुछ मिलता है वह मालिक का होता है अर्थात् हमें उससे क्या? जो नौकर स्वामिभक्त नहीं होता वह कहता है।

जो परनाला सोई मोरी—दोनों एक से ही हैं। जब दोनों चीज़ें खराब हों तब कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० जो पनारौ वही मोरी।

जो पहिले मारे सोई मीर—लड़ाई-झगड़े में पहले मारने वाला ही विजयी होता है। तुलनीय : अव० अगुवा मारै वाल मीर; पंज० पैहिलां मारे ओ मीर; ब्रज० जो पहलें मारै सोई मीर; अं० Offence is the best defence.

जो पांड़े के पत्रा में, वह जजमान के मुँह में—(क) बुद्धिमान व्यक्ति का मंद बुद्धि वाले के प्रति व्यंग्य है कि जिस बात को तुम पुस्तक में देखकर बतलाओगे, वह मेरी ज़बान पर है। (ख) जब कोई बात बताने से पहले भाँप ले तो भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० जो पंडे दे पत्रे बिच ओह जजमान दे मुंह बिच।

जो पाँड़े के पत्रा सो पंड़ाइन के अंचरा—ऊपर देखिए। तुलनीय : भोज० जवन पाँड़े के पतरा में तवन पंड़ाइन के अंचरा में।

जो पजामा सिलाता है, वह पेशाब के लिए जगह रखता है—दे० 'जो सुत्थन सिलाता है...'।

जो पावै अति उच्च पद, ताको पतन निदान—जो कोई उन्नति के शिखर पर पहुँच जाता है, उसके बाद उसका पतन ही होता है। अर्थात् हमेशा किसी की एक-सी दशा नहीं रहती।

जो पीसेगी वह पिसाई भी लेगी—आटा पीसने वाली मज़दूरी भी लेगी। आशय यह है कि बिना पारिश्रमिक लिए कोई काम नहीं करता। तुलनीय : भीली—दलवा वाली दलाई लेई ने जाहें; पंज० पीसन वाली पिसाई वी लेवेगी।

जो पीसेगी वही पिसाई लेगी—जो आटा पीसेगी वही उसकी मज़दूरी लेगी। जो परिश्रम करेगा लाभ भी उसी को मिलेगा। तुलनीय : राज० पीससी जको पिसाई लेसी।

जो पूत दरबारी भए, देव पितर सबसे गए—जो सरकारी नौकरी करते हैं वे देव-पित्रों के काम के योग्य नहीं रहते। अर्थात् अंग्रेज़ों के साथ के कारण उन्हें अपने धर्म में निष्ठा नहीं रहती। यह कहावत अंग्रेजी शासनकाल में कही जाती थी। देश स्वाधीन हो जाने के बाद से इसका प्रचार कम हो गया है।

जो पेट में सो मुंह पर—मन की बात चेहरे पर झलकती है। तुलनीय : गि० अमल मणिक हुजे पेट में त वरवे मुँह में; पंज० जो टिड विच ओह मुँह उते।

जो पेड़ छाँह दे उसी को काटे—जिससे भलाई हो उसी की क्षति करने वाले के लिए ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० जवन पेड़ छाँह करे ओही के काटें; पंज० जिहड़ा दरखत छां देवे उसी नूं वडें।

जो पेड़ जुआ बने उसके नीचे से क्यों निकले ?—दे० 'जिस पेड का जुआ बना…'।

जो पै पवन पूरब से आवै, उपजै अन्न मेघ झर लावै—यदि वायु पूरब दिशा से चले तो खूब वर्षा होती है और अन्न अधिक उत्पन्न होता है।

जो पैसे की हँड़िया लेता है, सो भी ठोक-बजाकर लेता है—दे० 'जो दो पैसे की हाँडी लेता है…'।

जो फरा सो झरा जो बरा सो बुताना—दे० 'जो फलेगा सो झरेगा…'।

जो फल चक्खा नहीं वही मीठा है—न मिलने वाली चीज़ पर सभी का जी मचलता है या न मिलने वाली वस्तु बहुत अच्छी लगती है। तुलनीय : पंज० जिहड़ा फल चक्खया नई ओह मिट्ठा है।

जो फलेगा सो झड़ेगा, जो बलेगा सो बुतेगा—(क) जन्म-मरण और उत्थान-पतन की ओर संकेत है। अर्थात् कोई भी चीज सदा एक दशा में नहीं रहती। (ख) अत्याचारियों के प्रति व्यंग्य से ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० जे बहुतै बरत है ऊ बुताय जात है।

जो बकाइन बहुत फलेगी, तो क्या दाख से लड़ेगी—बहुत फलने पर भी बकाइन (एक फल) अंगूर की बराबरी नहीं कर सकती। आशय यह है कि ओछा व्यक्ति कितना भी धनी क्यों न हो जाय, फिर भी उसे सज्जन व्यक्ति जैसा सम्मान नहीं मिलेगा। प्र० जो र बकायण बहु फल फलिहै, तो सरभर कहा दाख की करिहै—चतुर्भुजदास।

जो बचपन मा लागै छून, वह तो सदा रहै कपूत—जो बुरी आदतें बचपन में पड़ जाती है, वे मरते दम तक साथ नहीं छोड़ती। बुरे लोगों की संगति से बचने के लिए शिक्षार्थ ऐसा कहा जाता है। तुलनीय : गढ़० जो नि औ गढ़द सो क्या औ मढद।

जो बड़ा करे वही छोटा करे—परिवार के श्रेष्ठ जनों का प्रभाव छोटों पर भी पड़ता है। जैसा बड़े लोग करते है, वैसा ही छोटे भी करते हैं। तुलनीय : गढ़० जो गौं करो सो गँवार करो; पंज० जो बड़ा करे ओही निक्का करे।

जो बदरी बादर माँ समसे, कहैं भड्डरी पानी बरसे—भड्डरी कहते हैं कि यदि बादल से बादल मिलें तो अवश्य वर्षा होगी।

जोबन गए तिरिया मिली, जाड़ा गए रजाई; भूख गए रोटी मिली, किसी काम न आई—वृद्धावस्था में मिली स्त्री, ग्रीष्म ऋतु में रजाई और भूख समाप्त हो जाने पर मिली रोटी किसी काम नहीं आती। आशय यह है कि यदि उचित समय पर कोई चीज़ ना मिले तो बाद में मिलने से कोई फ़ायदा नहीं होता।

जोबन ज्वर केहि नहिं बलकावा—यौवन रूपी ज्वर किसे नहीं सताता ? अर्थात् जवानी में सभी मदांध हो जाते हैं। तुलनीय : पंज० जवानी दा ताप किस नूं नईं सतांदा।

जो बनि आवे सहज में ताही में चित देय—जो सरलता से हो जाय उसी को ध्यान लगाकर करना चाहिए और जिसमें रुचि न हो उसे करने के लिए परिश्रम करना व्यर्थ है।

जो बनिए का खाय, कहीं न कर कुछ पाय—जो व्यक्ति बनियों के घर में रहकर रोटियाँ खाते हैं, वे कहीं पर भी कोई काम नहीं कर सकते क्योंकि बनिए के घर में कोई परिश्रम का कार्य नहीं करना पड़ता जिससे आदमी सुकुमार हो जाता है। जब कोई बनिए का नौकर किसी दूसरे स्थान पर जाकर काम नहीं कर पाता तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० वाणियांरा पग्वाणिया चाट्याड़ां सूं काम को हुवैनी।

जो बनिए का खाय, जनम अकारथ जाय—जो बनिए का धन खाता है उसका जन्म लेना बेकार है, क्योंकि बनिए बेईमानी से धन अर्जित करते हैं। आशय यह है कि बेईमानी के धन को नहीं लेना चाहिए। तुलनीय : ब्रज० जो बनियां कौ खावै, जनम अखारत जावै।

जो बर देख ताप मुझे आवे, सोई बर मुझे ब्याहन आवे—जिस व्यक्ति को देखकर मुझे ज्वर चढ़ जाता था उसी से मेरी शादी होने जा रही है। (क) जिससे काफ़ी घृणा हो, वही पल्ले पड़ जाय तब ऐसा कहते है। (ख) न चाहते हुए भी जब किसी काम को विवश होकर करना पड़े तब भी ऐसा कहते है। तुलनीय : माल० जे का देखे मूंड पिरावै, ओही मारे ब्याने आवै।

जो बरसते हैं, वे गरजते नहीं—जिनको सचमुच काम करना रहता है वे करने का डंका नहीं पीटते या उसे कहते नहीं फिरते। तुलनीय : पंज० गरजन वाले वरसदे नईं।

जो बरसेगी स्वाँत बिसांत, चले न चरखा बजे न

तांत—आशय यह है कि स्वाति नक्षत्र में वर्षा होने से कपास की खेती को काफ़ी हानि पहुँचती है।

जो बरसे पुनरबस स्वाति, चरखा चले न बोले तांति—पुनर्वसु तथा स्वाति नक्षत्र में पानी बरसने से न चरखा चलता और न धुनकी रुई धुनता है। आशय यह है कि पुनर्वसु तथा स्वाति नक्षत्र में वर्षा होने से कपास की फ़सल नष्ट हो जाती है।

जो बहुत क़रीब, सो ज़्यादा रक़ीब—क़रीब वाले ही अर्थात् घर के ही लोग दुश्मन हो जाते हैं। तुलनीय: मरा० जो अगदीं आपला, त्यानेंच गला कापला। (रक़ीब= प्रेमिका का दूसरा प्रेमी)।

जो बहुत क़रीब सो बहुत रक़ीब—ऊपर देखिए।

जो बहुत मीठा है उसे सभी खाएँगे—अत्यधिक सज्जनता का अनुचित लाभ सभी उठाते हैं। तुलनीय: बंग० एतो भालो भालो ना; भोज० जादे मीठ सब कोई खाई; पंज० जादा मिट्ठे नूं सारे खाणगे।

जो बाँह दे, उसी की बाँह तोड़े—जो बाँह देता है अर्थात् सहारा देता है उसी की बाँह तोड़ता है। जो व्यक्ति उपकार करने वाले को ही हानि पहुँचाए उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय: राज० बाँह देवै जकैरी बांह नहीं तोड़नी; पंज० जो बाँह देवे उसे दी बाँह पन्ने।

जो बामन की जीभ पर सो बामन की पोथी में—ब्राह्मणों की मनमानी पर कहा गया है क्योंकि वे अपने मतलब की जैसी चाहें वैसी व्यवस्था शास्त्र देखकर देते हैं। तुलनीय: पंज० जो पंडत दी जीव उते उसदी पोथी बिच।

जो बामन की पोथी में सो यारों की जबान पर—ऊपर देखिए।

जो बासी खाय सो मूर्ख हो जाय—बासी भोजन करने वाले की बुद्धि मंद हो जाती है।

जो बिंध गया सो मोती, जो रह गया सो पत्थर—नीचे देखिए।

जो बिंध गया सो मोती, रह गया सो सीप—जो मिल जाय वही मोती है और जो न मिले वह सीप के समान है। अर्थात् जो काम पूरा हो जाय वही सब कुछ है और जो अधूरा रह जाय वह कुछ नहीं। तुलनीय: गढ़० जो बिंदग्या से मोती, जो रैंग्या से कांच; हरि० बंधग्या सो मोती रह ग्या सो पत्थर।

जो बिटिया सौ साठ, तऊ बाप को नाठ—यदि निःसंतान को साठ या सौ साल की उम्र में भी लड़की मिले तो वह उसे स्वीकार नहीं करता। लड़की के विवाह आदि में काफ़ी धन खर्च करना पड़ता है इसलिए लोग चाहते हैं कि लड़की पैदा होने से निःसंतान रहना अच्छा है।

जो बिन सहारे खेले जूआ,, आज न मूआ कल मूआ—जुआरियों के प्रति कहा गया है क्योंकि जुआ खेलने से सभी अपनी सम्पत्ति खो बैठते हैं।

जो बिल्ली पहिरे दस्ताना, तो चूहे पकड़े कौन—दुष्टों के प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

जो बैद बतावे, सोई रोगी भावे—इच्छानुसार मत, राय मिलने पर ऐसा कहते हैं। तुलनीय: मैथ० जो बैदा फरमावें ऊहे रोगिया का भावे; भोज० जवने बैदा बतावे तवने रोगिया के भावे; भोज०, मैथ० जे रोगिया के भावे से बैदा फरमावे, जवन रोगिया के भावे उहै बैद बतलावे; छत्तीस० जौन ला रोगिया खोजै तौन ला बैद बताय।

जो बैरी हों बहुत से अऊ तू होवे एक; मीठा बनकर निकल जा यही जतन है नेक—जिसके बहुत से शत्रु हों उसको नम्र होकर रहना चाहिए, यही उसके लिए उत्तम उपाय है।

जो बोले वह गधा हो—जो तुमसे कभी बोले वह गधा हो। जब कोई व्यक्ति किसी से अप्रसन्न होकर उससे न बोलने की क़सम खाता है तो कहता है। तुलनीय: राज० बोलै, जकैरो गुर झूठो; मेवा० जो बोले जोई केरड़ा में जावे; पंज० जो बोले ओह खोता होवे।

जो बोले सो कुंडा (दरवाज़ा) खोले—जो पुकारने से बोलता है वही कुंडा (दरवाज़ा) खोलता है। जब घर के पुरुष कहीं चले जाते हैं तो स्त्रियाँ भीतर से दरवाज़ा बंद कर लेती हैं। जब मर्द बाहर से पुकारता है तो पहले जो स्त्री बोलती है उसे ही कुंडा खोलना पड़ता है और जो चुपचाप पड़ी रहती है उसे नहीं जाना पड़ता। जो किसी बात की राय दे उसी से वह काम करने को कहा जाय तब कहते हैं। तुलनीय: मरा० सांगेल त्यानेंच कडी उघडावी; पंज० जेड़ा बोले ओही कुंडा खोले; माल० जो बोले जो सांकल खोले; पंज० जो बोले सो कुंडा खोले।

जो बोले सो घी को जाय—जो सलाह दे जब उसी को आगे चलना पड़े तब कहते हैं। इस पर एक कहानी है: एक बार चार मनुष्यों ने खिचड़ी बनाई। जब खाने लगे तो एक ने कहा कि बिना घी के खिचड़ी अच्छी नहीं लगती। इस पर तीनों बोल उठे कि आप ही घी लाइए तो डाल दें। इस पर उसने उक्त मसल कही। तुलनीय: ब्रज० जो बोले वही घी कूं जाय; अं० The leader must bear the brunt,

or One shall pay dearly for one's whistle.

जो बोले, सो तौले—जो बोलता है उसी का सौदा बिकता है। चुप बैठने वाला बैठा ही रह जाता है। (क) जो व्यक्ति सबसे बोलचाल या मेलजोल रखता है वही उन्नति करता है और अकेला चुपचाप बैठने वाला बैठा रह जाता है। (ख) प्रयत्न करने से ही सफलता मिलती है। तुलनीय : राज० बोलै जकीरा बोर विकै; पंज० जेड़ा बोले ओही तोले।

जो भादों में बरखा होय, काल पछोकर जाकर रोय—भादों में वर्षा होने से अकाल पड़ने का भय नहीं रहता।

जो भीग जाएगा उसे निचोड़ना ही पड़ेगा—आशय यह है कि जब कोई समस्या उत्पन्न हो जाती है तो उसका समाधान करना ही पड़ता है। तुलनीय : माल० भीज्यो जो निचोवणो ज पड़ेगा; पंज० जेड़ा सिज्जेगा उस नूँ नचोड़ना पैगा।

जो भी मिला वही चालू—जब किसी व्यक्ति के सभी मित्र स्वार्थी निकल जायँ तब वह ऐसा कहता है। तुलनीय : माल० भजो पूछे भाभा ने, जो मले जो खावा ने; पंज० जेड़ा टक्करया ओन्हो मसाला लैके टक्करया।

जो भौंकते हैं, वे काटते नहीं—आशय यह है कि जो लोग बहुत डाँटने-फटकारते हैं वे दिल के बुरे नहीं होते और न किसी का अहित करना चाहते हैं। तुलनीय : गढ़० भकदो कुत्ता काटदो नी; पंज० भौकण वाले वड्दे नईं, ब्रज० जो भुँसै वह काटै नाये।

जो मजा आरे में ऊ बलख में न बोखारे में—जैसा आनंद आरा शहर में है वैसा न तो बलख में है और न ही बुखारा में। अपने देश या नगर के प्रति अगाध प्रेम प्रकट करने के लिए ऐसा कहते हैं।

जो मन में बसे सो सुपने दसे—जो बात मन में रहती है, वही स्वप्न में भी दिखाई देती है। तुलनीय : पंज० दिल विच वसी मुख के विच लब्बी।

जो माँगे पैसा, वह कीमियागर कैसा—जिसके पास जो वस्तु प्रचुर मात्रा में होनी चाहिए और उसी की वह दूसरों से माँग करे तो कहते हैं। (कीमियागर=सोना बनाने वाला)।

जो माँ से सिवा चाहे सो डायन (फाफाकुटनी)—सबसे अधिक स्नेह माता का होता है किन्तु जब कोई उससे भी अधिक स्नेह का प्रदर्शन करे तो समझना चाहिए कि कुछ दाल में काला है।

जो माने उसका धर्म—जो मानता है धर्म उसी के लिए है। (क) धर्म हृदय से माना जाता है और प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छानुसार धर्म को मानता है। (ख) जो व्यक्ति धर्म को मानते हैं और उसका पालन करते हैं फल भी भी उन्हींको मिलता है। तुलनीय : राज० पाल जकैरो धरम; पंज० जो मन्ने उसदा धरम।

जो मिले सो खा, देने वाले का शुक्र मना—भोज्य पदार्थ जो भी मिले उसे खा लेना चाहिए और ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिए। सामने आए भोजन को नीरस देखकर ठुकराने वाला भूखों मरता है ऐसा बूढ़े लोग कहते हैं। तुलनीय : भीली- हाऊ भूड़ू टालवूनी, भूख नू भूड़ू बालवू।

जो मूंदे कंबल के छेद वो जाने जाड़े का भेद—जो कंबल के छेद मूँदना जानता है उसको जाड़ा नहीं सताता। आशय यह है कि कंबल के साथ पतला कपड़ा भी ओढ़ने से जाड़ा नहीं लगता। तुलनीय : भोज० जाड़ गाड़ के कवन चिरउरी कम्मर पर जब होय पिछउरी।

जो मेरी पीठ खुजा दे मैं उसकी भुजा पुजा दूँ—परस्पर सहयोग से कार्य की सिद्धि होती है।

जो मेरे सो तेरे, काहे दाँत निपोड़े—जब कोई किसी की बुराई देखकर हँसे और वही बुराई उसमें अथवा उसके घरवालों में हो तब कहते हैं। इस लोकोक्ति के संबंध में एक छोटी-सी कहानी है : एक दिन कोई भारतीय महिला किसी खुले स्थान पर नंगी होकर स्नान कर रही थी। यह देखकर एक यूरोपियन हँस रहा था। इस पर उसने उक्त मसल कही। आशय यह है कि जिस पर तू हँस रहा है वही तुम्हारी माँ, बहनों के भी है।

जो मेरे हैं वो किसी के नहीं—जो मेरे पास है वैसा किसी के पास नहीं है। व्यर्थ में गर्व करने वाले पर व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : पंज० जो मेरे हन ओह किसे दे नईं।

जो मेरे हैं, सो राजा के नहीं—ऊपर देखिए—तुलनीय : अव० जौन हमरे है तौन राजौ के नाहीं।

जो मैं ऐसा जानती, प्रीत किए दुःख होय; नगर ढिंढोरा फेरती (पीटती), प्रीत न करियो (कीजो) कोय—आशय यह है कि प्रेम करना फूलों की सेज नहीं काँटों की शय्या होती है।

जो मोय जोते टोर-मरोर, वाकी कुठिया देहों फोर—खेत कहता है कि जो मुझे तोड़-मरोड़कर जोतेगा उसके अनाज रखने के बर्तनों को मैं फोड़ दूंगा। आशय यह है कि खेत को जितना अधिक जोता जायगा पैदावार उतनी ही अधिक होगी।

जोर कम गुस्सा ज्यादा, मार खाने की निशानी—

दे० 'कमज़ोर गुस्सा ज्यादा…' ।

ज़ोर की लाठी सिर पर—दे० 'ज़बर की लाठी सदा सिर पर।'

ज़ोर के आगे ज़र्ब नहीं चलती—शक्तिशाली व्यक्ति पर सामान्य आघात (ज़र्ब) का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

ज़ोर के धक्के से नींव हिल जाती है—ज़ोर के धक्के से नींव हिल जाती है और फिर उस मकान को गिर जाने की आशंका बनी रहती है। (क) जिस व्यक्ति पर बहुत बड़ी विपत्ति आकर निकल जाय तो उसका दिवाला कब निकल जाय कोई कुछ नहीं कह सकता है। (ख) ताक़त के सम्मुख सबको झुक जाना पड़ता है। तुलनीय : भीली—एक दन ओलो आगे ते जोको खावा नो; पंज० जोर दे नाले नाल नी हिल जांदी है।

जो रक्षक वही भक्षक—जब रक्षा करने वाला ही चोरी करे, अथवा विश्वासी ही विश्वासघात करे तब कहते हैं। तुलनीय : अव० जौन रक्षक ओही भक्षक; पंज० रखण वाला खावे।

जोर झकोरे चारों बाय, दुखवा परथा जीव डराय—चारों तरफ से हवा बहने पर चारों ओर दुख होगा और लोग भयभीत होंगे।

जोर झलो अकाशं जाय, तौ पृथ्वी संग्राम कराय—यदि नीचे से वायु ऊपर को उठे तो समझना चाहिए कि पृथ्वी पर घोर सग्राम होगा।

जोर थोड़ा गुस्सा बहुत मार खाने की निशानी—निर्बल मनुष्य जब क्रोध करता है तब कहते है।

जोर न जुल्म अक्ल की कोताही—मूर्ख मूर्खतावश सबको परेशान करता है, अपने लाभ के लिए नहीं।

जोर बादशाह और दांव वज़ीर—कुश्ती लड़ने वालों का कहना है। यद्यपि शक्ति बादशाह है फिर भी वज़ीर के दांव के बिना उसका काम नहीं चल सकता।

जो रहीम उत्तम प्रकृति का करि सकं कुसंग—आशय यह है कि सज्जन प्रकृति के मनुष्यों पर कुसंग का कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता।

जो रहीम ओछो बढ़ं तो तेतो इतराय—कवि रहीम कहते है यदि ओछे व्यक्ति उच्च पद पर पहुँच जायँ तो उनके पैर ठिकाने नहीं पड़ते अर्थात् वे बहुत घमंड करते हैं। जब कोई व्यक्ति थोड़े में ही इतराने लगता है तब कहते है।

जो रहीम दीनहि लखं, दीनबंधु सम होय—जो व्यक्ति दीन की सहायता करता है वह ईश्वर के समान होता है। अर्थात् ग़रीबों या असहायों की सहायता करने वाला महान समझा जाता है।

जो राह बताए सो आगे चले—जो राह बताता है उसे ही आगे चलना पड़ता है। आशय यह है कि जो व्यक्ति काम करने का ढंग बताता है उसे करके भी दिखाना पड़ता है। जब कोई व्यक्ति किसी काम को करने का ढंग बताए और वह करके दिखाने का अनुरोध करे तो कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० जो रस्ता बतावै वही आगें चलै; पंज० जेड़ा राह दस्से ओह अग्गे चले।

जो राह बतावे से आगे चले—ऊपर देखिए। तुलनीय : भोज० जे राह बतावे से आगे चले; मैथ० जे बोले से किवाड़ खोले।

जोरू का धवला बेंचकर तंदूरी रोटी खाई है—स्त्री का लहँगा (धवला) बेंचकर तंदूरी रोटी खाई है। बहुत ही पेटू व्यक्ति के प्रति कहते हैं।

जोरू का मरना और जूती का टूटना दोनों बराबर हैं—जिस प्रकार जूती के टूटने पर दूसरी जूती आती है उसी प्रकार स्त्री के मरने पर दूसरी स्त्री से ब्याह हो जाता है। प्राचीन विचारधारा के लोग इस लोकोक्ति का प्रयोग करते हैं। तुलनीय : अव० मेहरारू कै मरब औ जूती कै टूटब बरोबर है; पंज० रन दा मरना अते जुत्ती दा टुटना इक बराबर।

जोरू का मरना घर की ख़राबी—स्त्री के मरने से घर की व्यवस्था बिगड़ जाती है, क्योंकि स्त्री को गृह-लक्ष्मी माना जाता है। वही घर की ठीक ढंग से व्यवस्था कर सकती है। तुलनीय : अव० मेहरारू का मरब घर कै खराबी; पंज० रन दा मरना कर दी तबाही।

जोरू का मुरीद—स्त्री का गुलाम (मुरीद) है। जो व्यक्ति स्त्री के इशारों पर काम करता है उसके प्रति कहते हैं।

जोरू किसकी जो पास रक्खे उसकी/तिसकी—स्त्री उसी की होती है जो उसे अपने साथ रखता है। आशय यह है कि स्त्री को सदा अपने साथ रखा चाहिए। पति से दूर रहने पर स्त्री के पतिव्रत धर्म के नष्ट होने की सभावना रहती है। तुलनीय : अव० मेहरारू केके जेके पास रहै; पंज० रन किस दी कोल रखे उसदी।

जोरू ख़सम की लड़ाई क्या?—पति और पत्नी की लड़ाई को लड़ाई नहीं कहना चाहिए क्योंकि उनमें क्षण में लड़ाई होती है और क्षण में मेल भी हो जाता है। तुलनीय : अव० मेहर भतार कै कौउनो लड़ाई; भोज० मेहरी भतारे कऽ कवन लड़ाई; पंज० रन खसम दी लड़ाई की।

जोरू चिकनी मियाँ मजूर—पति महोदय तो मज़दूर बने हुए हैं, पर श्रीमतीजी शान-शौकत से रहती हैं। जब किसी निर्धन व्यक्ति की पत्नी काफ़ी शान और ठाठ बाट करती है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : बुंद० जोरू चिकनी मियाँ मजूर।

जोरू जमीन जर तीनू झगरा के जर—स्त्री, ज़मीन तथा धन तीनों झगड़े की जड़ हैं।

जोरू ज़ोर की—जोरू या पत्नी उसी की होती है जो ज़ोरवाला या शक्तिशाली होता है। तुलनीय : बुंद० जिमीं जोरू जोर की, जोर घट काऊ और की; पंज० रन तगड़े दी 'तिरिया पुहुमि खरग कै चेरी, जीतै खरग होइ तेहि केरी'—जायसी

जोरू टटोले गठरी, अम्मा टटोले अंतरी—नीचे देखिए।

जोरू टटोले गठरी, माँ टटोले अंतड़ी—पत्नी पति के धन की भूखी होती है पर माँ को अपने पुत्र से यथार्थ प्रेम होता है और वह पुत्र को स्वस्थ देखना चाहती है। अर्थात् पत्नी का प्रेम स्वार्थ का होता है, पर माँ का निःस्वार्थ होता है। तुलनीय : मरा० बायको चांचपते गठडी, आई चांचपते आंतड़ी; अव० मेहरारू टटोवै गठरी, महतारी टटोवै अंतड़ी; भोज० मेहरी टोवै गठरी माई टोवै अंतड़ी; बुंद० जोरू टटोवे गठरी, माता टटोवे अंतरी।

जोरू डुबावे खसम का नाम—जब स्त्री दुश्चरित्र हो जाती है तो पति की मर्यादा समाप्त हो जाती है। ऐसी दशा में इस कहावत का प्रयोग करते हैं। तुलनीय : राज० अचलैजी नै कँण गिदिया, गिदिया घररी नार; पंज० रन डोबे खसम दा नां।

जोरू न जांता अल्ला मियाँ से नाता—ऐसे व्यक्ति के प्रति कहते हैं जिसके आगे-पीछे कोई न हो और जो सदा बेफ़िक्र रहता हो। तुलनीय : अव० जोरू न जांता भगवान से नाता; बुंद० जोरू न जांता अल्ला मियां से नाता।

जोरू न जांता खुदा मियाँ से नाता— ऊपर देखिए। तुलनीय : अव० जोरू न जांता खुदा ते नाता।

जोरू ने पकाई खसम ने खाई—जो किसी से कुछ लेते-देते नही और न कोई संबंध ही रखते है उनके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० स्वैणीन पकायो मैंसन खायो भाट भिखारी कँन नि पायो; पंज० रन ने पकायी खसम ने खादी।

जोरू साथ की रुपया हाथ के—हमेशा साथ रहनेवाली स्त्री ही सच्ची पत्नी है तथा जो पैसा हाथ में रहे उसे ही अपना पैसा समझना चाहिए क्योंकि अपने पास का धन ही समय पर काम आता है।

जो रोगी को भावे वही बैद बतावे—दे० 'जो बैद बतावै...'।

जो जोगी को भावे सो बैद बतावे—दे० 'जो बैद बतावै...'।

जोलहा की बेगार में पाँड़े जी—विपरीत या अनुचित काम होने पर व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय: कनौ० कोरियन की बेगार में मिसुर।

जो वर देख ताप म वे, सो ही वर मुझे ब्याहन आवे—दे० 'जो बर देख ताप मुझे आवे...'।

जो शरीर सुख चहै, तजै खटाई चार; चोरी, चुगली, ज़ामिनी और पराई नार—यदि शरीर से सुखी रहना चाहते हो तो चोरी, चुगली, किसी की ज़मानत लेने से और दूसरे की पत्नी से दूर रहो।

जो सहरी खाये वही रोज़े रखे—जो लाभ उठाता है उसी को कष्ट भी उठाना चाहिए। मुसलमान रमज़ान में रोज़े रखते हैं और उन्हें 12-14 घण्टे निर्जल-निराहार रहना होता है, किन्तु रोज़ा शुरू करने से पहले वे सहरी (सुबह 4 बजे का खाना) खाते हैं। जो लोग केवल सहरी खाते हैं लेकिन रोज़ा नही रखते हैं उनके लिए कहा गया है।

जो साँभर में पड़ा, सो साँभर हुआ—पहले साँभर का अर्थ साँभर झील और दूसरे का अर्थ नमक है अर्थात् जो जैसी संगति में पड़ता है वह वैसा ही हो जाता है। तुलनीय : फ़ा० हर कि दरकाने-नमक रफ़्त, नमक शुद।

जो साथ रहें वे भाई– आशय यह है कि जो समय पर सहायता करें (साथ रहें) वे ही अपने (भाई) हैं। तुलनीय : राज० भेला बैठा जका भाई; पंज० जेड़े नाल रैण ओ परा।

जो सादी चाल चलता है, वह हमेशा खुशहाल रहता है—सादगी से रहने वाला सदैव सुखी रहता है।

जो साधु की माने बात, रहे आनंद वह दिन-रात—सज्जन व्यक्ति की बात को मानकर चलने वाला सदा सुख से रहता है।

जो सावन में बरखा होवे, खोज कालका बिलकुल खोवे—सावन के महीने में वर्षा होने से अकाल पड़ने की संभावना कम रहती है।

जो सिर उठाकर चलेगा, सो ठोकर खायगा—आशय यह है कि जो गर्व करता है और बिना सोचे-समझे काम

करता है उसे हानि उठानी पड़ती है। तुलनीय : पंज० उते मुंह करके तुरेगा ठेडा खावेगा।

जो सुख छज्जू के चौबारे में, सो बलख न बुखारे में—जो आराम अपने घर में मिलता है वह दूसरी जगह नहीं मिल सकता। छज्जू एक संत थे जो किसी के बुलावे पर कहीं नहीं जाते थे और उक्त लोकोक्ति कहा करते थे।

जो सुत्थन सिलाता है, वह मूतने का रास्ता रख लेता है—जब कोई व्यक्ति कोई टेढ़ा या झंझट का काम करता है तो अपने बचाव का उपाय पहले ही सोच लेता है। तुलनीय : अव० जौन सुथना सिआवत है ऊ मूतै का रस्ता पहिलेन बनाय लेत है; पंज० सुत्थन सीण वाला मूतरन दा राह रख लेंदा है।

जो सेर से मरे उसे पसेरी क्या मारना ?—जो काम सुगमता से हो जाय, उसके लिए विशेष श्रम की कोई आवश्यकता नही होती। तुलनीय : भोज० जे सेर से मरिजा ओके पसेरी से काहें मारे; मैथ० जे सेर से मूए ओके पसेरी ना मारेके।

जो सेवा करे सो मेवा पावे—श्रम करने वाला ही सुख पाता है। तुलनीय : ब्रज० वही।

जो सोच करे, सो मौज करे—जो सोच-समझकर काम करता है वह आराम से रहता है। आशय यह है कि किसी काम को खूब सोच-विचार कर करना चाहिए। तुलनीय : भीली- -काम करो जोइ वचारी ने करो।

जो सोवे उसका पड़वा, जो जागे उसकी पड़िया—दे० 'जागते की कटिया···'।

जो हठ रक्खे धर्म को तेहि रक्खे करतार—धर्मानुसार आचरण करने वाले पुरुषों की भगवान् भी सहायता करता है।

जो हर होंगे बरसन हार, काह करेगी दखिन बयार—दखिनाई बहने से वर्षा की संभावना क़तई नहीं रहती परंतु यदि भगवान को वर्षा ही अभीष्ट होगी तो दखिनाई हवा क्या कर सकती है। आशय यह है कि ईश्वर की कृपा होने पर असंभव काम भी संभव हो जाते हैं।

जो हल जोते खेती वाकी, और नहीं तो जाकी ताकी—जो किसान अपने हाथ से हल जोतता है खेती उसी की होती है और जो दूसरों से जुतवाता है उसे कुछ नहीं मिलता। तुलनीय : मरा० नांगर चालवि शेती त्याची, नाहीं तर मग प्रत्येकाची; ब्रज० जो हर जोतै खेती वाकी, और नहीं तौ जाकी ताकी।

जो हांड़ी में होगा, सो पत्तल में आ जाएगा—जो भीतर होगा वह स्पष्ट हो जायगा। अर्थात् भेद खुलते देर नहीं लगती। तुलनीय : पंज० कुन्नी विच होवेगा पत्तल बिच आ जावेगा।

जो हांड़ी में होगा, सो रकाबी में आएगा—ऊपर देखिए।

जो हिकमत से होता है हुकूमत से नहीं होता—जो काम उपाय से संपन्न होता है, वह रोब जमाने से नहीं होता हैं। आशय यह है कि उपाय से सभी काम पूरे हो जाते हैं। तुलनीय : भोज० जवन काम हिकमत से होला ऊ हुकूमत नां होखे; सं० उपायेन हि यच्छक्यं न तच्छक्यं पराक्रमैः।

जो ही राम सो ही राम—जितना हो जाय उतना ही बहुत। जिस काम के पूर्ण होने की आशा न हो उसके संबंध में कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० जोई राम सोई राम।

जो ही रोटी पके, वही मियाँ चक्खे—जो रोटी अभी बनकर तैयार होती है उसे ही मियाँ जी खा रहे हैं। आशय यह है कि जब कोई व्यक्ति प्रतिदिन जो कमाता है उसे खा जाता है और उसके पास शेष कुछ नहीं बचता तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : हरि० वाहे रोट्टी पक्कै, वाहे मीयां चक्खै; पंज० जेड़ी रोटी पक्की ओही मियां चक्खी।

जो है बनिया वही महाजन—यदि एक ही व्यक्ति क़र्ज़ देनेवाला और सामान बेचनेवाला दोनो हो तो उसका क्या पूछना ? दूसरा उसी से क़र्ज़ लेगा तथा उस क़र्ज़ से उसी की दूकान से खरीदेगा, अतः एक ओर सूद तथा दूसरी ओर सामान की बिक्री द्वारा उसे अच्छा लाभ होगा या इन दोनों के द्वारा वह दूसरे को खूब चूसेगा।

जौक़ में शौक़, बस्तूरी में लड़का—खुशी की खुशी और मुफ्त में लड़का। जब शौक़ के लिए कोई कार्य किया जाय और उसी में कोई लाभ हो जाय तब कहते हैं।

जौ के खेत कंडुआ उपजे—जब किसी परिवार में कोई लड़का बहुत अयोग्य निकल जाता है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० जौ के खेत में कंडुआ।

जौ के साथ घुन भी पिसा जाता है—दे० 'गेहूँ के साथ घुन···'।

जौ को गए, सनुआनी को आए—जब कोई अपने हक़ से अधिक चाहता है तब कहते हैं।

जौ गेहूँ बोबै पाँच पसेर, मटर का बीघा तीसै सेर—जौ और गेहूँ को पच्चीस सेर प्रति बीघा और मटर को तीस सेर प्रति बीघा के हिसाब से बोना चाहिए।

जौ जल गए भुंजाई घर से गई—जौ भी जल गए

और भुजाई पल्ले से देनी पड़ी। जब कोई काम लाभ के लिए किया जाय और वह बिगड़ जाय तथा उसमें कुछ और घर से भी देना पड़े तब कहते हैं। तुलनीय : पंज० जौ सड़ गये पुनाई करो देणी पयी ?

जौ तुम्हारे मन अति संदेहू, तौ किन जाइ परीछा लेहू—यदि हृदय में संदेह हो तो दूर करने के लिए परीक्षा ले लो अर्थात् जिस विषय में संदेह हो उसकी अच्छी तरह जाँच कर लेनी चाहिए।

जौनी पतरी में खाएँ, ओही में छेद करें जिस व्यक्ति या वस्तु से लाभ हो उसी को क्षति पहुँचाने वाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : भोज० जबने पतरी में खा ओही में छेद करे; अव० जौनी पतरी मां खायं ओही मां छेद करें।

जो पुरवा पुरवाई पावे, झूरी नदिया नाव चलावे, ओरी क पानी बड़ेरी जावे —यदि पूर्वा नक्षत्र में पूर्व की हवा चले तो इतना अधिक पानी बरसेगा कि सूखी (झूरी) नदी में भी नाव चलने लगेगी और ओलती (ओरी) का पानी छप्पर की चोटी (बंड़ेरी) पर चढ़ जायगा। आशय यह है कि पूर्वा नक्षत्र मे पूर्व की हवा चलने से अधिक वर्षा होती है।

जौ फ़रोशे-गंदमनुमा— बेचता जौ और दिखाता गेहूँ है। धूर्त या दग़ाबाज़ व्यक्ति के प्रति कहते हैं।

जौ लगि नहिं स्वाधीन कहा अमृत तें पूरे—जब तक मनुष्य स्वतंत्र न हो तब तक उसके पास अमृत होना भी व्यर्थ है। अर्थात् बिना स्वतंत्र हुए मनुष्य को सुख की वास्तविक अनुभूति नहीं होती।

जौ लौं काग सराध-पत, तौ लौं तो सनमान— जब तक श्राद्ध पक्ष रहता है तभी तक कौओं का सम्मान किया जाता है। अर्थात् समय पड़ने पर दुष्टों की भी पूजा होती है किंतु यह सम्मान स्थायी नहीं होता।

जौ लौं तेल प्रदीप में, तौ लौं जोति प्रकाश— जब तक दीपक में तेल रहता है तभी तक प्रकाश रहता है। (क) जब तक प्राण रहता तभी तक जीवन रहता है। (ख) जब तक भोजन मिलता है तभी तक शक्ति बनी रहती है। तुलनीय : मेवा० घणो खाऊं न अवेली जाऊं।

जौहर को जौहरी पहचाने हीरे को जौहरी ही पहचानता है। अर्थात गुणी को गुणी ही पहचानता है। तुलनीय : पंज० जौहर नूं जौहरी पछाणे।

जौ है खेत, लाल है पेट, मूड़न के दिन देखो आय— जो अभी खेत में है और लड़का पेट में, लेकिन कह रहे हैं कि मुंडन के दिन आकर देखना। ऐसे लोगों के प्रति व्यंग्य से कहते हैं जो काम होने से पहले ही बहुत लम्बी-चौड़ी बातें करने लगते हैं।

ज्ञान घटे जड़ मूढ़ की संगत, ध्यान घटे बिन धीरज लाए— मूर्खों की संगति करने से ज्ञान घटता है और बिना धैर्य के ईश्वर की आराधना या योग-साधना नहीं हो सकती।

ज्ञान-पंथ कृपान कै धारा—ज्ञान मार्ग पर चलना तलवार की धार पर चलने के समान है, अर्थात् अत्यंत कठिन है। तुलनीय : पंज० गयान दी राह तलवार बरगा हुंदी है।

ज्ञान बढ़े सोच से, रोग बढ़े भोग से- चिंतन से ज्ञान बढ़ता है और विलासी होने से रोग। अर्थात् विलासिता स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

ज्ञानी मारे ज्ञान से रोम-रोम भिद जाय, मूरख मारे डेंडका टूट कनपटी जाय—ज्ञानी ज्ञान से शत्रु के रोम-रोम को बीध देता है अर्थात् उसे अपना अनुचर बना लेता है और मूर्ख क्रोध आते ही डंडा (डेंडका) मारकर सिर फोड़ देता है अर्थात सदा के लिए शत्रुता मोल ले लेता है।

ज्ञानी से ज्ञानी मिले करे ज्ञान की बात, गधे से गधा मिले मारे लातइ लात ज्ञानी से ज्ञानी मिलता है तो ज्ञान की बात करता है, किन्तु मूर्ख व्यक्ति मिलते हैं तो झगड़े की बातें करते है। जो जैसा होता है वह उसी तरह की चर्चा करता है।

ज्यादा उड़े कौआ सो मुर्दे पर गिरे —अधिक उड़ने वाला कौआ मरे पशुओं को ही खाता है। अपने आपको बहुत चतुर समझने वाला जब कोई ओछा कर्म कर बैठता है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते है। तुलनीय : भीली भमतो कागलो मरांकड़े बेहे; पंज० मता उडन वाला कां मुर्दे उते डिगदा है।

ज्यादा खाऊँ न रात को जाऊँ—जो अधिक भोजन नही करता उसका पेट ठीक रहता है और उसे रात में शौच जाने की आवश्यकता नही रहती। जो व्यक्ति बिना सोचे-समझे काम शुरू कर देते हैं और हानि उठाते हैं उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० मता खांवा ना रात नूं जाव।

ज्यादा जीकर क्या आक़बत के बोरिए समेटोगे ?— जिस वृद्ध व्यक्ति की अधिक जीने की इच्छा होती है उसके प्रति कहते हैं।

ज्यादा जोगी मठ का उजाड़—अधिक साधु (जोगी) जिस मठ (साधुओं या जोगियों के रहने का स्थान) में रहते हैं वह मठ बर्बाद (उजाड़) हो जाता है। आशय यह है कि जहाँ पर अधिक लोग रहते हैं, वहाँ काम अच्छा नहीं होता। तुलनीय : भोज० बटुरे जोगी मठ उजार ; छत्तीस० जादा

के जोगी मठ उजार; पंज० मते जोगी मठ नूं खाण; ब्रज० ज्यादा जोगी मठ को उजारा; अं० Too many cooks spoil the broth.

ज्यादा बात सिर दर्द—ज्यादा बात करने से सिर में दर्द हो जाता है। या अधिक सोचने-विचारने से सिर में दर्द हो जाता है। अर्थात् अधिक बात करना या अधिक सोचना ठीक नहीं है। तुलनीय : उज़० ज्यादा बात गदहे के लिए भी बोझ होती है; पंज० मतियां गलां नाल सिर खाणा।

ज्यादा बेटे घर का नाश, ज्यादा वर्षा खेती का नाश—अधिक बच्चे होने से घर बर्बाद हो जाता है क्योंकि उनके पालन-पोषण पर अधिक व्यय होता है और व्यक्ति निर्धन हो जाता है। साथ ही अधिक बच्चे होने से ठीक ढंग से उनकी शिक्षा की भी व्यवस्था नहीं हो पाती जिससे वे बिगड़ जाते हैं और घर को बर्बाद करते हैं। इसी प्रकार अधिक वर्षा से फ़सल नष्ट हो जाती है। किसी भी चीज़ की अधिकता हानिप्रद होती। तुलनीय : राज० घण जायां कुल-हाण घण बूठां कणहाण; पंज० मते पुतर कर दा नास, मती बरखा फसल दा नाश ?

ज्यादा मुंह उठाना ठीक नहीं है—अधिक गर्व करना अच्छा नहीं होता। तुलनीय : पंज० मुंह चुक के तुरना चंगा नईं ?

ज्यारते-बुज़ुर्गां कफ़्फ़ार:-ए-गुनाह—दे० 'ज़ियारते-बुज़ुर्गां...।'

ज्येष्ठा आद्रा सतभिखा, स्वाति सुलेखा माहिं ; जो संक्राति तो जानिए, मंहगो अन्न बिकाय—यदि ज्येष्ठा, आद्रा, शतभिखा, स्वाति तथा श्लेषा नक्षत्रों में संक्रांति हो तो समझना चाहिए कि अनाज महँगा बिकेगा।

ज्यों आँखिन सब देखियत, आँखि न देखी जाहि—आंख सबको देखती है, किंतु अपने को नहीं देखती। इस लोकोक्ति का प्रयोग उन लोगों पर किया जाता है जो दूसरों की बुराई देखते हों, किंतु अपनी बुराई पर ध्यान नहीं देते।

ज्यों केरा के पात में, पात-पात में पात ; त्यों ज्ञानी की बात में बात-बात में बात—जिस प्रकार केले के तने में एक के ऊपर एक पत्ता होता है उसी प्रकार ज्ञानी लोगों की बातें बहुत अर्थ रखती हैं। बात करने की चतुरता पर कहा जाता है। तुलनीय : मरा० जसें केळीच्या पानांत पान, तसें जाण्याच्या शब्दाशब्दांत ज्ञान।

ज्यों-ज्यों कंचन ताइस, त्यों-त्यों निर्मल होय—सोना जितना ही तपाया जाता है उतना ही खरा होता है। अर्थात् (क) सज्जन पर ज्यों-ज्यों कष्ट पड़ता है त्यों-त्यों वह निखरता जाता है। (ख) दुख सह कर आदमी और भी योग्य होता है; तुलनीय : पंज० सोणा जिन्ना तत्ता करो उन्ना चमकदा है।

ज्यों-ज्यों डाली फल लगे, त्यों-त्यों नीचो होय—ज्यों-ज्यों वृक्ष की डालों में फल लगता है त्यों-त्यों वे नीचे झुकती जाती हैं। आशय यह है कि ज्यों-ज्यों मनुष्य बड़ा (महान) होता जाता है त्यों-त्यों वह विनम्र होता जाता है। तुलनीय : गढ़० ज्यूं डाली फलो त्यूं-त्यूं नमो; सं० फलंति वृक्ष : नमंति शाखा।

ज्यों-ज्यों बिटिया होय सयानी त्यों-त्यों भूख नींद नहीं आनी—ज्यों-ज्यों लड़की जवान होती जाती है त्यों-त्यों मां-बाप उसके विवाह के लिए परेशान एवं चिंतित होते जाते हैं।

ज्यों-ज्यों भीजे कामरी, त्यों-त्यों भारी होय—जब किसी पर ऋण बहुत हो और वह उसका ब्याज तक न दे और क़र्ज़ बढ़ता ही जाय तब कहते हैं। तुलनीय : मरा० घोगडी जों-जों भिजे तों-तो जड ओझें; गढ़० कमाली ज्यूं-ज्यूं भीजो त्यूं-त्यूं गरीं होंद; राज० ज्यूं-ज्यूं भीजै कामळी त्यूं-त्यूं भारी होय; कामक भीजै ज्यूं-ज्यूं भारी हुवै; कनौ० ज्यों-ज्यों भीजै कामरी त्यों-त्यों भारी होय।

ज्यों-ज्यों मुरगी मोटी त्यों-त्यों गाँड़ छोटी—नीचे देखिए।

ज्यों-ज्यों मुरगी मोटी, त्यों-त्यों दुम सुकड़े—जब किसी कृपण के पास धन बढ़ता जाए और उसके साथ उसकी कृपणता भी बढ़ती जाय तब कहते हैं। तुलनीय : अव० जस जस मुर्गी मोटी तस-तस गाँड सकेती।

ज्यों-ज्यों मुर्गी सयानी, त्यो-त्यों गाँड़ संकेती—ऊपर देखिए। तुलनीय : कौर० ज्यां-ज्यों चिड़िया मोटी हुई, त्यों-त्यों गाँड सिकुड़ती गई।

ज्यों-ज्यों लिया तेरा नाम, तुमने मारा सारा गाम—जितनी ही लोगों ने प्रशंसा की उतना ही तुमने लोगों को परेशान किया। किसी के स्नेह एवं विनय की अवहेलना करने वाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : हरि० ज्यु-ज्यु लीया तेरा नाम, तन्ने मारा मारा गाम; पंज० जिदां जिदां लिता तेरा नां तूं मारया सारा पिंड।

ज्यों-ज्यों लिया तेरा नाम, त्यों-त्यों मारा सारा गाँव—ऊपर देखिए।

ज्यों-ज्यों वायु बहै पुरवाई त्यों-त्यों अति दुःख घायल पाई—ज्यों-ज्यों पूरब की हवा चलती है, त्यों-त्यों घायल व्यक्ति की पीड़ा बढ़ती जाती है। आशय यह है कि पूरब की

वायु घायल व्यक्ति के लिए कष्टदायी होती है।

ज्यों तपि-तपि मध्यान्ह लौं, अस्त होत है भानु – मध्याह्न तक सूर्य खूब तपता है और उसके बाद धीरे-धीरे अस्त हो जाता है। आशय यह है कि उन्नति की चरम सीमा पर पहुँचने के बाद अवनति आरम्भ हो जाती है।

ज्यों नकटे को आरसी, होत दिखाए क्रोध –दुष्ट की बुराई बताई जाय तो उसे उसी प्रकार बुरा लगता है जिस प्रकार नकटे को आईना दिखाने से उसे क्रोध आता है। तुलनीय : मरा० नकट्याला दाखवितां आरसा, नो क्रोधे होय पिसा।

ज्यों नाचत कठपूतरी, करम नचावत गात—जिस प्रकार कठपुतली को मनुष्य नचाता है उसी प्रकार कर्म मनुष्य को नचाते है। अर्थात् बुरा कर्म करने वाले की बड़ी दुर्दशा होती है। तुलनीय : पंज० जिवे नचांदे कठपुतल करम नचाण उवें।

ज्यों भुजंग गन संग तऊ, चन्दन विष न धरंत—सज्जन लोग बुरों की संगति में रहकर भी नहीं बिगड़ते, जिस प्रकार चंदन पर साँप लिपटे रहते हैं पर उनके विष का प्रभाव चंदन पर नहीं पड़ता। तुलनीय : अव० चंदन विष व्यापे नही लिपटे रहत भुजंग।

ज्यों सपने सिर काटे कोई, बिन जागे दुख दूर न होई — जिस प्रकार स्वप्न में यदि किसी का सिर काट लिया जाय तो उसका दुःख तब तक दूर नहीं हो सकता जब तक कि वह जाग न जाय। उसी प्रकार जब तक मनुष्य माया जाल में फँसा रहता है तब तक दुःख भोगता रहता है, पर ज्योंही उसे ज्ञान प्राप्त हो जाता है वह सुखी हो जाता है।

ज्यों ही कहा, त्यों ही किया— किसी के आदेश का ठीक ढंग से पालन करने वाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० जिवें अखया उवें कीता।

ज्वर याचक अस पाहुना, चौथा माँगनहार; लंघन तीन कराय दे, फेर न आए द्वार—ज्वर, भिखारी, अतिथि और महाजन इन तीनों को यदि तीन दिन तक भोजन न दिया जाय या टाल दिया जाय तो ये लौटकर नहीं आते अर्थात् पीछा छोड़ देते हैं।

ज्वर हर तक्षक चूडारत्नालंकारोपदेशवत् – ज्वर-नाशक तक्षक नागीय शिखामणि आभूषण के लिए उपदेशों के सदृश। कोई यह दावा करे कि तक्षक नाग की शिखामणि से ज्वर दूर हो जाएगा तो उसकी यह मूर्खता है, क्योंकि उपर्युक्त वस्तु की प्राप्ति असंभव-सी है। जब कोई किसी ऐसी वस्तु को बहुत लाभदायक बतलावे जिसका मिलना संभव न हो तब कहते हैं।

झ

झंडे तले की दोस्ती—चार दिन की मित्रता; रास्ते की जान-पहचान।

झगड़नी रात आवै तो आवै, बिछुड़नी रात न आवै — दो व्यक्ति (पति-पत्नी, भाई-भाई या मित्र-मित्र आदि) झगड़ा कर लें पर अलग न हों। बिछुड़ने या अलग होने से झगड़ा करके भी मिले रहना या एक साथ रहना अच्छा है।

झगड़ा की जड़ हाँसी, रोग की जड़ खाँसी—लड़ाई-झगड़े का मूल प्रायः हँसी होती है और भयंकर बीमारियों में अधिकांश की जड़ खाँसी होती है। तुलनीय : पंज० हांस्से दा बनागा हो जान्दा है; फ़ा० ज़क़ात-ए-आतिश अफ़रोज़ जुदाईस्त; अर० अल मेज़ाहो अव्वलो फ़राहुन ओ आख़िरो तराहुन; ब्रज० झगड़े की जर हांसी, रोग की जर खांसी; अं० A bitter jest is the poison of friendship.

झगड़ा खेत का बात खलिहान की—बेतुकी (अप्रासंगिक) बात करने वाले पर कहते है।

झगड़ा झूठा क़ब्ज़ा सच्चा— किसी वस्तु के झगड़े में क़ब्ज़ा ही सच्चा सबूत होता है क्योंकि क़ानून से लड़ने पर भी उसी की विजय होती है। तुलनीय : हरि० झगड़ा झूठा काबू सांच; गढ़० झगड़ा झुट्टा कब्जा सच्चो; अव० झगरा झूठ कब्जा सच; पंज० चगड़ा जूठा कबजा सच्चा; ब्रज० झगड़ो झूटो, काबू सांचो।

झगड़ा बीच में नहीं छोड़ना चाहिए—किसी भी झगड़े को बीच में नहीं छोड़ देना चाहिए, अपितु उसे अंत तक या निर्णय तक पहुँचाना चाहिए क्योंकि जब तक किसी बात का निर्णय नहीं हो जाता दोनों पक्षों को चैन नहीं पड़ता और वे एक-दूसरे पर दाँव लगाए रहते हैं। तुलनीय : भीली— झगड़ा भरी बात ने राखनी; पंज० चगड़ा बिच नई छडना चाइदा।

झगड़ा भतार से रूठीं संसार से—झगड़ा तो पति (भतार) से हुआ, पर सभी लोगों से नाराज़ हो गई हैं। जब किसी के क्रोध का कारण कुछ और हो तथा वह अपना क्रोध किसी और पर प्रकट करे तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० झगरा भतार से रुसली संसार से; पंज० चगड़ा खसम नाल रुसी लोकां नाल।

झगड़ालू से काम पड़ा— ऐसे व्यक्ति से काम पड़ने पर

कहते हैं जो प्रत्येक व्यक्ति से बिना कारण लड़ता रहता है। तुलनीय : पंज० लड़ाकू नाल कम्म पैया।

झगड़े की जड़ हाँसी, रोग की जड़ खाँसी—दे० 'झगड़ा की जड़ हाँसी...'। तुलनीय : भोज० झगरा क जर हँसी अ रोग क जर खाँसी; मैथ० झगड़ा के जड़ हँसी रोग के जड़ खांसी; हरि० राड्य का घर हांस्सी, रोग का घर खांस्सी।

झगड़े की तीन जड़, जन जमीन जर—स्त्री, जमीन और सम्पत्ति ही सारे झगड़ों के मूल कारण हैं। अर्थात् इन्हीं के कारण झगड़ा होता है। (जन=स्त्री, जर=संपत्ति)।

झगड़े में पहल नहीं करनी चाहिए—स्वयं किसी से झगड़ा नही करना चाहिए। झगड़े में हानि ही होती है इसलिए उससे बचने का प्रयत्न करना चाहिए। तुलनीय : भीली – जाणीने घामड़ो ने करवो; पंज० कला बिच पैह्ल नई करनी चाइदी।

झट घोड़ा दे, झट गधा दे—प्रसन्न होकर तुरंत घोड़ा दे देते हैं और तुरंत ही नाराज होकर घोड़े के स्थान पर गधा दे देते हैं। जो व्यक्ति शीघ्र प्रसन्न होकर पुरस्कार दे और तुरंत ही अप्रसन्न होकर उसे वापस ले ले ऐसे शीघ्र प्रसन्न और शीघ्र ही अप्रसन्न होने वाले के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० घोड़े ही वेगा चढ़ावै गधे ही वेगा चढ़ावै।

झटपट की धानी, आधा तेल आधा पानी—जल्दी में किया हुआ काम अच्छा नहीं होता। तुलनीय : ब्रज० झट्ट पट्ट की घानी, आधौ तेल आधौ पानी।

झट मगनी पट ब्याह—जल्दी काम करने पर कहा जाता है। आशय यह है कि काम तुरत-फुरत कर डाला। जल्दी काम करने के लिए भी कहा जाता है। अर्थात् 'झट मंगनी पट ब्याह' की तरह अपना काम जल्दी कर डालो। तुलनीय : गढ़० झट्ट रोटी,पट्ट दाल, खाई लीनी मारी फाल; भोज० झट मंगनी पट वियाह; अव० झट मंगनी पट बिआह; ब्रज० झट्ट सगाई, पट्ट ब्याह।

झड़बेरी औ काँस में खेत करे न कोय, बैल दोनों बेचके करो नौकरी सोय—जिस खेत में झड़बेरी और काँस हो उसमें खेती करने से अच्छा है कि दोनों बैल बेचकर नौकरी कर ली जाय। तात्पर्य यह है कि जिस खेत में झड़बेरी और काँस होती है उसमें कोई फ़सल नहीं होती।

झड़बेरी का काँटा—झड़बेरी के कांटे में उलझ जाने पर निकलना मुश्किल हो जाता है। जब कोई ऐसा पीछे पड़े कि उससे पीछा छुड़ाना मुश्किल हो जाय तब कहते हैं।

झड़बेरी के जंगल में बिल्ली शेर—जहाँ कोई नहीं होता वहाँ छोटे ही बड़े बन बैठते हैं। तुलनीय : पंज० बेरियां दे जंगल बिच बिल्ली सेर।

झल्लन खेती, हल्लन न्याव—खेती के लिए वर्षा की फुहारें (झल्ला) और झगड़े के लिए शोर (हल्ला) आवश्यक और लाभदायक होता है।

झाँट उखाड़े मुर्दा हल्का ?—आवश्यक यह है कि साधारण उपायों से बड़ी समस्याओं का समाधान नही होता। तुलनीय : भोज० झाँट उखरले मुर्दा हल्लुक; कौर० झाँट उखाड़े ते क्या मुर्दे हळके हों।

झाँट की झंटुल्ली—अत्यंत निकृष्ट, बहुत थोड़ा सा।

झाँट नहीं झोली में, सराय में डेरा—दे० 'झोली में झाँट नहीं...'।

झाँट बराबर झोंपड़ी नई नवेली नाम—मामूली-सी झोंपड़ी है और उसका नाम रखा है 'नई हवेली'। जब किसी साधारण वस्तु की बहुत बढ़ा-चढ़ाकर प्रशंसा की जाय तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० झाड़ मान झूंपड़ी तारागढ़ गाँव।

झाँसी गले की फाँसी दतिया गले का हार, ललितपुर ना छाड़िए, जब लग मिले उधार—(क) झाँसी बुरी जगह है पर दतिया बहुत अच्छी जगह है। ललितपुर में रुपए का व्यवहार (लेन-देन) बहुत होता है। (ख) किसी जगह से जब तक कोई लाभ होता रहे उसे नहीं छोड़ना चाहिए।

झाड़ बिछाई कामली, औ रहे निमाने सोय—साधु-संतों की निश्चितता पर कहा जाता है। अर्थात् वे सारे झंझटों से मुक्त रहते हैं। (नमाने=निश्चित होकर)। तुलनीय : राज० झाड़ बिछाई कामळी रह्या निमाणे सोय।

झाड़ भी बनिए का बैरी है—बनिये को कोई भी अपना मित्र नहीं समझता, क्योंकि बनिये सभी को ठगते हैं। बनिये के प्रति व्यग्य।

झाड़ से छूटा पहाड़ में अटका—एक मुसीबत से उबरा और दूसरी में फँस गया।

झाड़ों फूंकों रक्षा करौं, दई लै जाय तो मैं क्या करौं—हर प्रकार से झाड़-फूंक करके रक्षा करता हूँ पर जब ईश्वर ही ले जाने पर तुल जाय तो क्या कर सकता हूँ? अर्थात् होनहार के आगे पुरुषार्थ की कुछ नहीं चलती। तुलनीय : भोज० झारू-झपारू रच्छा करौ, दई ले जायँ त हम का करों; अव० झार फूंक रछा करी, मर जाय हम का करी।

झाम झंपट घी संपट—झगड़ा-टंटा किया और घी हजम। जब कोई व्यक्ति किसी पर दबाव डालकर या डाँट-डपटकर उसकी वस्तु हड़प ले तो कहते है। तुलनीय : पंज० कम्म खतम की हजम।

झिलंगा खटिया बातलि देह, तिरिया लम्पट हाटे गेह, भाई बिगरि के मुदई मिलंत, कहैं घाघ ई बिपति क अंत ––ढीली-ढाली चारपाई, वातरोग से पीड़ित शरीर, कुलटा स्त्री, बाज़ार में घर और भाई का बिगड़कर शत्रु से मिलना, घाघ कहते हैं कि ये विपत्ति के अन्त हैं अर्थात् इनसे बढ़कर कोई और विपत्ति नहीं है।

झींगुर बजाजे में पहुँचा तो पूरा बजाजा उसी का हो गया—झींगुर कपड़े के बाज़ार में पहुँचा तो समझने लगा कि पूरा बाज़ार उसी का है। जब कोई थोड़ा अधिकार पाकर ही अपने को सर्वे-सर्वा समझने लगे तो उसके प्रति व्यंग्य मे कहते हैं। तुलनीय : झीगुर बचुका मां का बैठिगा जानौ बजाजा ओही का होइगा।

झुक के रहे तो सुख से रहे—जो व्यक्ति सबसे विनम्रता का व्यवहार करता है वह सुखी रहता है, क्योंकि सभी उसे चाहते और आदर करते हैं। तुलनीय : भीली—नई नां डीगा हरखो नमी ने रेवू; ब्रज० झुकि के रहै सो सुख में रहै; पंज० नीवें रहो सुख नाल रहो; नानक नीवी जे रहो लग्गे नां तत्ती हवा।

झुकते पलड़े को सभी चाहते हैं—तराज़ू का जो पलड़ा नीचे झुका होता है उसी को सब चाहते है। (क) लाभ पर ही सबकी दृष्टि रहती है। (ख) धनवान को सभी चाहते हैं। तुलनीय : राज० झुकते पालणेरा सै सीरी; ब्रज० झुकते पल्ला पै सबई चाहें; पंज० नींवे पासे नू सारे चांहदे हन।

झुके कोई उससे झुक जाय—जो व्यक्ति विनम्रता दिखलावे उससे विनम्रता का व्यवहार ही उचित है। तुलनीय : पंज० नीवें अग्गे सारे नीवे होजांदे हन।

झूठ आदमी को कहीं का नहीं छोड़ता—झूठ बोलने वाला व्यक्ति पकड़े जाने पर अपमानित होता है। आशय यह है कि झूठ बोलने वाले की न तो कोई इज़्ज़त करता है और न उसकी बातों पर कोई विश्वास करता है। तुलनीय : हरि० झूठ तै आदमी नै डुबो दैसै; पंज० जूठ मनुख नू किसे पासे दा नई छड़दा।

झूठइ लेना, झूठइ देना, झूठइ भोजन झूठ चबेना—जो व्यक्ति प्रत्येक बात में झूठ बोलता है उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

झूठ कहना और जूठा खाना बराबर है—दोनों ही बुरे है। तुलनीय : अव० झूठ कै कहब, गुह के खाब बरोबर है; पंज० चूठ आखना अते जूठा खाना इको जिहा है।

झूठ का घोड़ा कितना चलेगा—झूठ का घोड़ा अधिक दूर तक नहीं चल पाता। जिस बात या कार्य में सचाई नहीं होती वह अधिक देर तक नहीं रहता। तुलनीय : राज० तोतरा घोड़ा किताक चालै; पंज० चूठ दा कौड़ा किन्ना चलेगा।

झूठ का तो नाम भी बुरा—यदि किसी सच्ची बात को एक आदमी झूठी कह देता है तो उस पर फिर कोई विश्वास नहीं करता। तुलनीय : हरि० झूठ का तै नामै बुरा; पंज० चूठ दा ते नां वी पैड़ा।

झूठ का बेड़ा ग़रक़—झूठ बोलने से व्यक्ति का विश्वास समाप्त हो जाता है। उसका कोई सम्मान नहीं करता और अन्त में उसकी बड़ी दुर्दशा होती है। तुलनीय : ब्रज० झूंटा कौ बेड़ा गरक; पंज० चूठे दा बेड़ा गरक।

झूठ की ही नाव मझधार में डूबे—ऊपर देखिए। तुलनीय : हरि० झूठ का तो बेड़ा गरक हो से; भोज० झूठ्ठा क नाव मजधारे में हर घरी रहेला।

झूठ की सफ़ाई दी जाती है—झूठी बात की ही सफ़ाई देने की आवश्यकता होती है, सच्ची बात को एक बार कह देना ही काफ़ी होता है। तुलनीय : भीली—जूटं बोलवान् कई न कई समजावणो पड़े; पंज० चूठ दी सफाई दिनी जांदी है।

झूठ के पाँव कहाँ—नीचे देखिए।

झूठ के पाँव नहीं होते—झूठा व्यक्ति परीक्षा में नहीं टिक सकता। झूठा होने के कारण उसकी पोल खुल जाती है। तुलनीय : मरा० असत्याला पाया नाही; गढ़० झूट का पैरा निहोंदा; राज० झूठे रे पग को हुवैनी; ब्रज० झूट के पांम नायें होंय; पंज० चूठ दे पैर नई हुंदे; अं० Liars have short wings; liars have no legs.

झूठ को तो दुनिया ने चटनी समझा है—झूठ बोलने वाले के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : हरि० झूठ की तै दुनिया न रेल बना राखी से।

झूठ झूठ ही है सच सच ही है—जब कोई किसी की सत्य बात को अपनी इधर-उधर की चालों से झूठी साबित कर दे और अपनी झूठी बात को सत्य, लेकिन बाद में वास्तविकता का पता लगने पर जब लोग उसकी (झूठ बोलने वाले की) बातों पर विश्वास नहीं करते और उसका अनादर करते हैं तब वह (सत्य बोलने वाला) ऐसा कहता है। आशय यह है कि झूठ बोलने वाले का पोल खुल जाता है तथा वह अपमानित होता है। अन्त में सत्य की ही विजय होती है। तुलनीय : अव० झूठ झूठै अहै, सच सचै

अहै; गढ़० झूट झूट ही छ, सच्च सच्च ही छ; पंज० चूठ चूठ है सच सच सच ही है।

झूठ तितोही बोलिए ज्यों आटे में नोन—झूठ उतना ही बोलना चाहिए जितना आटे में नमक। आशय यह है कि झूठ बोले भी तो बहुत थोड़ा जो छिप सके।

झूठ न बोले तो पेट अफर जाय - झूठा व्यक्ति अगर किसी दिन झूठ न बोले तो उसका पेट फट जाय अर्थात् बिना झूठ बोले वह नहीं रह सकता। झूठे व्यक्ति की आदत पर कहते है। तुलनीय : पंज० चूठ नां बोले ते टिड आफर जावे।

झूठ न बोले तो रोटी न पचे— झूठ बोलना जिसकी आदत बन चुकी हो वह बिना झूठ बोले रह नहीं सकता। झूठे के प्रति व्यंग्य मे कहते है। तुलनीय : ब्रज० वही; पंज० चूठ ना बोले ता रोटी नई पचदी।

झूठ नौ कोस सच सौ कोस— सच मे दीर्घकालीन टिकाव होता है। पर झूठ उसकी तुलना मे क्षणिक होता है। तुलनीय : पंज० चूठ नौ कोह सच सौ कोह।

झूठ बराबर पाप नहीं — झूठ बोलना बहुत नीच कर्म है। झूठ बोलने वाले के शिक्षार्थ ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० चूठ बरगा पाप नई।

झूठ बोलते नहीं और सच के नजदीक नहीं जाते— जब कोई झूठ बोलने वाला अपने को सच बोलने वाला बनाए तो व्यंग्य मे कहते है। तुलनीय : पंज० चूठ बोलदे नई अते सच दे कौल (नेड़े) नईं जांदे।

झूठ बोलना और खे खाना बराबर है—झूठ बोलना और विष्टा (खे) खाना बराबर है। आशय यह है कि झूठ बोलना बहुत बुरा है। तुलनीय : भोज० झूट क बोलल आ जूठ का खाइल बराबर है; पंज० चूठ बोलना अते खे खाणा इको जिहा है।

झूठ बोलना जो चाहो तो जाओ देश बिगाने—उस व्यक्ति के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं जिसकी झूठ बोलने की आदत पड़ चुकी हो और सभी जानते हो कि वह झूठ बोलता है, किन्तु फिर भी वह सबसे झूठ बोलता रहे। तुलनीय : गढ़० झूट लाणी गंगा पार, जो निभ जौ दिन चार।

झूठ बोलना भी दिलवाले का काम है—'झूठ बोलने वाले ऐसा कहते हैं।

झूठ बोलना भी दिलेर का ही काम है—ऊपर देखिए।

झूठ बोलना भी दिलेरी है —दे० 'झूठ बोलना भी दिलवाले…'।

झूठ बोलने में कुछ आमदनी हो तो सभी बोलने लगें —दे० 'झूठ बोलने से कुछ मिले…'।

झूठ बोलने में रक्खा क्या है—अर्थात् झूठ बोलना व्यर्थ है। तुलनीय : पंज० चूठ बोलन बिच की रखया है।

झूठ बोलने वालों को पहले मौत आती थी, अब बुखार भी नहीं आता—झूठ बोलने वालों से मज़ाक़ में कहते हैं। तुलनीय : पंज० चूठ बोलण वाले नू पैलां मौत आंदी सी हुण ताप वी नईं आंदा।

झूठ बोलने से कुछ मिले तो सभी बोलने लगें —आशय यह है कि झूठ बोलने से कोई लाभ नहीं होता, लोग केवल आदत के कारण झूठ बोलते हैं। तुलनीय : हरि० झूठ बोलने तै कुछ आमदनी हो तै सबै ही ना बोलन लाग जाँ; पंज० चूठ बोलण नाल कुछ मिले तां सारे बोलण।

झूठ बोलने में सरफ़ा क्या— झूठ बोलने में कुछ खर्च नहीं होता। झूठ बोलने वाले के प्रति व्यंग्य मे कहते हैं। व्यंग्य यह है कि जब कोई खर्च नहीं है तो बोलने वाला किफ़ायत क्यों करे। तुलनीय : पंज० चूठ बोलण बिच सरफा कँदा।

झूठ बोलने वाले और ज़मीन पर सोने वाले को क्या कमी ? - झूठ बोलने वाले को क्या कमी जितना चाहे बोले और ज़मीन पर सोने वाला चाहे जितना हाथ-पैर फैलाए उसको जगह की क्या कमी ? जब कोई व्यक्ति लम्बा-चौड़ा झूठ बोले तो उसके प्रति इसका प्रयोग करते है। तुलनीय : मेवा० झूठ बोलवा वाला अर अखरोड़े सूबावाला के कई संकड़ाई कोय ने; पंज० चूठ बोलण वाले अते रखोड़े सोण वाले नूं की काटा।

झूठ बोलने से गू खाना अच्छा — झूठ बोलने वालों को प्रत्येक स्थान और प्रत्येक व्यक्ति से अपमानित होना पड़ता है। झूठ बोलना कितना बुरा है यही इस लोकोक्ति मे दर्शाया गया है। (कोई गू (विष्टा) नहीं खाता फिर भी कहा गया है कि झूठ बोलने वाले से गू खाना अच्छा है)। तुलनीय : पंज० चूठ बोलन तो गू खाना चंगा।

झूठ साँच का फ़र्क़ यों जैसे रज औ' भोर —झूठ और सच में उतना ही अन्तर है जितना कि रात (रज— रजनी) और दिन में, अर्थात् बहुत अधिक।

झूठ सो झूठ साँच सो साँच —झूठ झूठ ही है और सत्य सत्य ही। अर्थात् दोनों में बहुत अन्तर है। तुलनीय : पंज० चूठ चूठ ही है सच सच ही है।

झूठा कहना और जूठा खाना बराबर —झूठ बोलना जूठा खाने के बराबर है। आशय यह है कि झूठ बोलना

बहुत बुरा है। तुलनीय : पंज० चूठ बोलना जूठा खाना इको जिहा है।

झूठा जूठन से बुरा जो सोने का होय—झूठे व्यक्ति से सब जूठन से भी अधिक घृणा करते हैं, चाहे वह कितना ही सुन्दर एवं धनी क्यों न हो?

झूठा मरे न शहर पाक होय—झूठे से शहर गंदा रहता है। (झूठे से सभी घृणा करते हैं, इसलिए ऐसा कहा जाता है)।

झूठी गवाही कौन दे?—झूठी गवाही कोई भी सज्जन पुरुष नहीं देता। झूठी बात में कभी सम्मिलित नहीं होना चाहिए। तुलनीय : राज० खोटे खत में साख कुण घालै; पंज० चूठी गवायी कौन देवे।

झूठी बात बना ले पानी में आग लगा ले—झूठ बोलना पानी में आग लगाने के बराबर है। (क) झूठी बात गढ़ना बहुत कठिन काम है, यह सब के बस की बात नही। (ख) झूठी बात बनाना बहुत बुरा है। तुलनीय : पंज० चूठी गल बना लै पाणी बिच अग्ग लगा लै।

झूठे आगे सच्चा रो मरे—दे० 'झूठे के आगे सच्चा...'।

झूठे का मुंह काला, सच्चे का बोलबाला—झूठे के हारने और सच्चे के जीतने पर कहा जाता है। आशय यह है कि अंततः झूठे को मुंह की खानी पड़ती है, और सच्चे की विजय होती है। तुलनीय : मरा० असत्याचें तोंड कालें, खरयाचा जय जयकार; राज० झूठे का मुंह काला; अव० झूठा कै मुंह काला सच्चा कै बोलबाला; पंज० चूठे दा मुंह काला सच्चे दी जै।

झूठे की कुछ पत नहीं—झूठे व्यक्ति का कोई विश्वास नहीं करता। तुलनीय : राज० झूठेरी बावड़ै कोनी।

झूठे की नहीं बह बढ़ती—झूठ बोलने वाला कभी उन्नति नहीं करता।

झूठे की नाव मझधार में डूबे—झूठ बोलने वाला जीवन में सफलता प्राप्त नही कर पाता।

झूठे के आगे सच्चा रो मरे—अर्थात् झूठे के आगे संसार में सच्चे की नहीं चलती, उसे हार मान लेनी पड़ती है। तुलनीय : अव० झूट्ठा कै आगे सच्चा रोवै; पंज० चूठे अग्गे सच्चा रो मरै।

झूठे के पांव नहीं होते—दे० 'झूठ के पांव नहीं...'। तुलनीय : व्रज० झूंठे के पाँम नायें होयें।

झूठे को घर तक पहुंचाना चाहिए—अर्थात् झूठे से तब तक विवाद करे जब तक कि वह सच न बोले। तुलनीय : झूट्ठा के घर ले पहुँचावै के चाही; पंज० चूठे नूं कर तक पौंचाना चाइदा।

झूठे घर को घर कहे सच्चे घर को गोर—संसार की दशा विचित्र है। क़ब्र जो सच्चा घर है (अर्थात् मनुष्य मरने पर ही अपने स्थायी घर को जाता है) उसे तो मनुष्य क़ब्र कहता है और घर, जो झूठा घर (क्षणभंगुर) है, उसे घर कहता है।

झूठे जग पतियाय—जब सच्चे की बात न मानी जाय तब कहा जाता है। इस दुनिया में झूठों का तो लोग विश्वास कर लेते हैं, पर सच्चों का नही। तुलनीय : राज० झूठे जग पतीजै; अव० झूठे पतियाय, सच्चा मारा जाय।

झूठे जग पतियाय, सच्चा मारा जाय—संसार की विचित्रता पर कहा गया है। आज के युग में झूठ बोलने वाले की इज़्ज़त होती है और सच बोलने वाला कष्ट पाता है।

झूठे पर कुत्ता भी न मूते—झूठे का कोई विश्वास नही करता और उसका सभी अनादर करते हैं। तुलनीय : हरि० झूठ पै तै कुत्ता भी न मूतै; पंज० चूठे उत्ते कुत्ता वी नईं मूतरदा।

झूठे पर विश्वास कर लिया या सांप पर कर लिया—दोनों बराबर हैं। अर्थात् झूठे की बात पर विश्वास करना हानिप्रद है। तुलनीय : हरि० झूठे पर विश्वास कर लिया इसा गधे पर कर लिया।

झूठे ब्याह, साचे न्याव—ब्याह झूठ बोलने से ही होते हैं क्योंकि वर या वधू की झूठी तारीफ़ किए बिना ब्याह तय नहीं होते और न्याय सत्य बोलने से ही होता है।

झूठे से खुदा भी कांपे—आशय यह है कि झूठ बोलने वाले से सभी भय खाते हैं। तुलनीय : हरि० झूठे आदमी से तो परमात्मा भी डरै से; पंज० चूठे तो रब वी कंबदा।

झूठों का घर नहीं बसता—झूठा व्यक्ति सुखी नहीं रहता।

झूठों का बादशाह—बहुत अधिक झूठ बोलने वाले के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : पंज० चूठयां दा बादशाह (राजा)।

झोंपड़ी में दिन काटना सबके बस का नहीं है—निर्धनता या कष्ट में भी सच्चाई न छोड़ना सबके बस का नहीं है। तुलनीय : हरि० झोंपड़ी में दिन काटने सबके बसके थोड़े सें; पंज० टपरी बिच रैना सारियां दे बस दा नई?

झोंपड़ी में बैठ बाबा जी बकरी मूंड़े—झोंपड़ी में बैठ कर बाबा जी बकरियों के बाल मूंड़ा करते हैं। जो व्यक्ति

बेकार होने के कारण समय बिताने के लिए व्यर्थ के काम करें उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० बाबोजी छान में बैठा गोधा नाथै; पंज० टपरी बिच बैठ के बावा जी बकरी (छेली) मुनन।

झोंपड़ी में रहे, महलों का ख्वाब देखे—अपनी सामर्थ्य से परे आकांक्षा रखने वाले के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : हरि० झूंपड़ी मं रहणा महलां के सपने; अव० झोंपड़ी मा रहें खाब देखें महलन का; मरा० झोंपडींत राहतो स्वप्न प्रासादाचें पाहतो; पंज० टपरी बिच रैण मैहलां दे सुखने देखन; ब्रज० झोंपरी में रहै, महलन कौ ख्वाब देखै।

झोटे-झोटे लड़े, झुंडियों का नाश हो—लड़ते तो भैंसे हैं पर नुकसान पौधों का होता है। आशय यह है कि बड़ों की लड़ाई में छोटे मारे जाते हैं।

झोली न झंडा, माँगें चंदा—बिना किसी प्रमाण के कोई काम करने या कोई बात कहने वाले के प्रति व्यंग्य में कहते है।

झोली में खाक नहीं सराय में डेरा—झूठी शान बघारने वाले के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० खांदी नजीक न जुबान तराश, गेड़ी न पल्ला द्वी व्यो कल्ला; पंज० खीसे बिच पैहा नईं सरां बिच डेरा।

झोली में झांट नहीं सराय में डेरा—ऊपर देखिए।

झोली में टका ना सराय में डेरा—दे० 'झोली में खाक नहीं...'।

ट

टंगपुछिया अरु ओछे कान, हिरन पेटिया लगी मुतान; सींग अंगोइया चौरी छाती, बैल न जानो बैठा हाती—जिस बैल की पूँछ टाँगों तक लटकती हो, कान छोटे हों, मूत्र स्थली हिरन के समान पेट से चिपकी हो, सींग आगे की ओर झुके हों और छाती चौड़ी हो वह बैल हाथी के समान बलशाली और परिश्रमी होता है। अर्थात् उक्त ढंग के बैल काम में बहुत अच्छे होते हैं।

टंगी रहे कि टके बिकाय—ठीक दाम लगेगा तो बिकेगी और नहीं तो रखी रहेगी। ग्राहक जब किसी चीज का दाम बहुत कम लगाता है तो दूकानदार ऐसा कहता है।

टंटा मोल ले लिया—जब कोई अपने आप मुसीबत मोल ले ली जाय तो कहते हैं। या जब कोई जान-बूझकर कोई परेशानी अपने सिर ले लेता है तब उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० टंटा मुल लई है।

टंटा विष की बेल है—झगड़ा (टंटा) बुराई की जड़ है। अर्थात् लड़ाई-झगड़ा करना बुरी चीज है। पंज० तुलनीय : टंटा जहर दा कुट है।

टकसाली बात—बिल्कुल सही बात। पंज० तुलनीय : पैहे बरगी गल।

टका कराई और गंडा दवाई—दवा कराने के लिए वैद्यजी को एक रुपया (टका) दिया और पाँच कौड़ी (गंडा) की दवा लगी। जब किसी काम में मुख्य खर्च के अतिरिक्त अन्य खर्च ही अधिक हो जाय तो ऐसा कहते हैं।

टका का सारा खेल है—सभी कार्य पैसे से संपन्न होते हैं। तुलनीय : पंज० टके दी सारी खेड है; ब्रज० टका कौई सबरौ खेल है।

टका धर्मः टका कर्मः टका देवो महेश्वरः—टका ही धर्म है, टका ही कर्म है और टका ही देव और ईश्वर है। अर्थात् धन ही सब कुछ है। तुलनीय : राज० टका मां-बाप है।

टका न खरचें गाँठ का, नित्त बरातें जायँ—अपने पास से एक रुपया भी खर्च नहीं करते और रोजाना बारात करने जाते हैं। मुफ्तखोर के लिए कहते हैं जो सदा मुफ्त का ही खाना चाहता है।

टका माँ-बाप है—धन ही माँ-बाप है। धन बिना कोई भी नहीं पूछता। तुलनीय : राज० टका माँ-बाप है; पंज० पैहा माँ-पिओ है; ब्रज० टका माई-बापै।

टका में टका और ढका में ढका—पैसे वालों के पास पैसा आता है और दुखियों के पास दुःख और नुकसान। आशय यह है कि जो जिस दशा में रहता है, उसी के अनुसार आगे भी उसकी हालत होती जाती है।

टका रोटी अब ले, चाहे तब ले—(क) जब किसी वस्तु का भाव सदा एक ही हो तब दूकानदार ग्राहक से ऐसा कहता है (ख) जब कोई किसी को एक निश्चित धन राशि ही देना चाहता है उससे अधिक नहीं तब वह कहता है कि इतना जब चाहो ले लो, इससे अधिक नहीं दूँगा।

टका लगे चाहे थैली बिक जाय—चाहे एक रुपया लगे चाहे सारी थैली खाली हो जाय पर काम पूरा करके छोड़ूंगा। किसी कार्य को करने का निश्चय कर लेने पर कहते हैं।

टका सर्वत्र पूज्यंते, बिन टका टकटकायते—धन की सब जगह पूजा होती है, बिना धन के व्यक्ति मारा-मारा

फिरता है। आशय यह है कि धन से ही इज्जत होती है, बिना धन के कोई आदर-मान नहीं करता।

टका-सा जवाब दे दिया—किसी कार्य को करने से या कुछ देने से स्पष्ट इनकार कर देने पर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० टका अस जवाब दे दिहेस; हरि० टका गा जवाब दे दिया; पंज० टके वरगा जवाब दिता; ब्रज० टका सौ जुवाब दै दियौ।

टका-सा मुंह लेकर रह गए—जब कोई व्यक्ति किसी के पास कुछ आशा लेकर जाए, किंतु वहाँ उसे कुछ न मिले तो व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : पंज० निक्का जिहा मुँह हो गया; ब्रज० टका सौ मुँह लैके रह गये।

टका हर्त्ता, टका कर्त्ता, टका मोक्ष विधायका—रुपए से दुख दूर हो जाता है, काम पूरा हो जाता है और रुपए से मोक्ष मिल जाता है। रुपए से सभी काम संपन्न हो जाते हैं, वह बहुत ही आवश्यक चीज़ है। तुलनीय : राज० टका हर्ता टका कर्ता; सं० अर्थस्य पुरुषो दासो अर्थो दासो न कस्यचित्, मरा० पैसा ज्याचे हातांत तो श्रेष्ठ आपल्या जातीत।

टका हो जिसके हाथ में, वह बड़ा है जात में—जिसके पास धन है वही जाति में भी श्रेष्ठ है। अर्थात् नीचे दर्जे का मनुष्य भी रुपये-पैसे के ज़ोर से ऊँचा बन जाता है या समझा जाता है। (क) जब नीचे दर्जे का मनुष्य रुपये-पैसे के कारण श्रेष्ठ गिना जाय तब कहते हैं। (ख) टके के महत्व-प्रदर्शन के लिए भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० पैहे वाला बड़ा हुंदा है; ब्रज० टका जाके हात में, वही बड़ौ है जाति में।

टके का (सब) सारा खेल है—इस दुनिया में सारी माया रुपये-पैसे की ही है। धन के महत्त्व पर कहा गया है। तुलनीय : मरा० पैशाचा सर्व खेल आहे; अव० टकै कै सारा खेल है; पंज० टगे दी सारी खेड है; ब्रज० टका कौ ई सबरौ खेल।

टके की ओढ़नी भीतर धरूँ या बाहर?—एक टके की ओढ़नी है, उसे संभाल कर रखने की चिंता है, बाहर रक्खूं या भीतर? जब कोई ओछा आदमी अपनी किसी साधारण वस्तु को बार-बार दिखाने के लिए इधर-उधर लिए फिरे तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० मिन्नीरो कोठारियो ढकूँ कन खोलूँ? पंज० टगे दी छाल अंदर रखां या बाहर?

टके की घोड़ी, पांच टके बरधवाई—एक रुपये की घोड़ी है और गर्भवती कराने के लिए पाँच रुपए खर्च करने पड़े। जब किसी वस्तु की क़ीमत से अधिक उस पर अन्य खर्च बैठ जाय तब ऐसा कहते हैं। (बरधवाई=गर्भवती कराने का शुल्क)। तुलनीय : मेवा० टका की घोड़ी पाँच रुपया भराई का लाग जावे; पंज० टगे दी कौड़ी रुपैया नवी करायी।

टके की घोड़ी, पाँच रुपया भराई—ऊपर देखिए। (भराई= गर्भवती कराने का शुल्क)।

टके की चटाई और नौ टके बिदाई—दे० 'टके की घोड़ी पाँच टके...'। तुलनीय : भोज० एक टका कऽ चटाई नौ टका बिदाई।

टके की नहारी में टाट का टुकड़ा—सस्ती वस्तु में कुछ न कुछ दोष अवश्य होता है।

टके की बुढ़िया नौ टका मूड़ मुड़ाई—दे० 'टके की घोड़ी पाँच टके...'। तुलनीय : अव० टका के बुढ़िया नौ टका निकि आई; गढ़० छँ सेर पिम्यूँ नौ सैर मगोलो।

टके की बुढ़िया, मोहर का लहँगा—बेमेल साज-शृंगार पर व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

टके की मुर्गी छह टके महसूल—टके की तो मुर्गी है और उस पर महसूल है छह टका। जब किसी वस्तु के यथार्थ मूल्य से उस पर कर आदि या अन्य इस प्रकार के ऊपरी व्यय अधिक हों तो कहा जाता है।

टके की मुर्गी धेला जबह कराई—ऊपर देखिए।

टके की मुर्गी नौ टका कटाई—दे० 'टके की मुर्गी छह टके...'। तुलनीय : भोज० टका कऽ मुर्गी अ नौ टका कटाई।

टके की मुर्गी नौ टका जबह कराई / निकियाई—दे० 'टके की मुर्गी छह...'।

टके की लौंग बनियाइन खाय, कहो घर रहे कि जाय?—जब बनिये की स्त्री स्वयं बहुत खर्च करेगी तो भला दूकानदारी कैसे चलेगी? अर्थात् जिस घर की मालकिन अधिक खर्च करती है उसका घर बिगड़ जाता है। यहां टके का अर्थ रुपए से है, किंतु टके का अर्थ दो पैसे भी होता है और तब इस लोकोक्ति का प्रयोग बनिये की कंजूसी पर छींटा कसने के लिए किया जाता है।

टके की हंडिया गई, कुत्ते की जात पहचानी गई—ओछे व्यक्तियों के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं जो साधारण-सी चीज़ पर अपना ईमान या विश्वास खत्म कर देते हैं। तुलनीय : कौर० टका की हाँडी गई तो गई, कुत्ते की जात पिछाणी गई; पंज० टगे दी कुन्नी गयी कुत्तेदी जात पछाणी गयी।

टके की हाँड़ी एक ही बार चढ़ती है—आशय यह है कि सस्ती वस्तुएँ शीघ्र नष्ट हो जाती हैं। तुलनीय : भीली—

'टके नी हांडी टक चढ़े ने टक उतरे; पंज० टगे दी कुन्नी इक बार चड़दी है।

टके की हांडी गई, कुत्ते की जात पहचानी गई —दे० 'टके की हंड़िया गई ...'। तुलनीय : गढ़० कच्ची की हांड़ी गे बिराली को इमाग ग्यो।

टके की हाँड़ी भी ठोक बजा के लें—साधारण चीज़ भी अच्छी तरह देखकर लेनी चाहिए। तुलनीय : मेवा० टका का हाँड़ी भी बजाय ने लेवे है; पंज० टगे दी कुन्नी वी ठोक बजा के लै।

टके के वास्ते मस्जिद ढाय—थोड़े से लाभ के लिए बहुत बड़ी हानि करने वाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : मरा० दोन पैशा करतां मशीद पाडणें; पंज० टगे पिच्छे कोठा टावे।

टके को नहीं पूछे जाओगे—तुम्हारी कोई थोड़ी भी इज्जत नहीं करेगा। निकम्मे और आवारा व्यक्ति के प्रति ऐसा कहते हैं ताकि वह लज्जित होकर अपने में कुछ सुधार लावे। तुलनीय : पंज० टगा मुल नईं है तुआडा।

टके गज की चाल चले—बहुत धीमी गति से चलने वाले पर व्यंग्य में कहते हैं कि क्या नाप कर चल रहे हो या नाप कर पैसे लेने हैं?

टके तीतर गइला पर, पांच रुपया भइला पर—पास में धन न होने पर एक रुपए में भी तीतर महँगा जान पड़ता है और पास में धन होने पर पाँच रुपए में सस्ता। आशय यह है कि ग़रीबी में जो वस्तु जिस मूल्य पर महँगी मालूम होती है, वही वस्तु धनी होने पर उससे अधिक मूल्य पर सस्ती पर मालूम होती है। (गइला = न होने पर; भइला = होने पर)। तुलनीय : अव० टका तीतुर महँग, रुपिया तीतुर सस्ता।

टके सो सुना दी—खरा जवाब देने या साफ़ इनकार कर देने पर कहते हैं। तुलनीय : पंज० टगे जिहा जवाब दिता।

टकों के चाकर—पैसों के ग़ुलाम। अर्थात् कंजूस व्यक्ति के प्रति कहते हैं।

टटोले बेटी अपना कपाल—जब कोई व्यक्ति अपने हाथ से अपना अनिष्ट या अपनी हानि कर बैठता है तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

टट्र खोलो निखट्टू आये—कमाऊ न होते हुए घर वालों पर रौब दिखाए और असमय घर लौटकर भी पत्नी को डाँटे कि तुमने मेरे देर से आने पर भी दरवाज़ा क्यों नहीं खोला।

टट्टी की ओट शिकार खेलते हैं—छिपकर बुरा कार्य करने वाले के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : अव० टटिया के ओट से सिकार करत हैं; ब्रज० टट्टी की ओट सिकार।

टट्टू को कोड़ा और ताज़ी को इशारा—टट्टू मार से मानता है और ताज़ी केवल इशारे से ही समझ जाता है। आशय यह है कि बुरे, नीच या मूर्ख दंड से मानते हैं, पर अच्छे या समझदार आदि इशारों से ही समझ जाते हैं। (टट्टू = साधारण घोड़ा; ताज़ी = अच्छा घोड़ा)।

टट्टू जो जीतें संग्राम, खर्चें क्यों ताज़ी के दाम ?—दे० 'जो गदहे जीतें...'।

टट्टू मार खाय ताज़ी के कान होयं—मार तो पड़ रही है टट्टू पर और सावधान हो रहा है ताज़ी। (क) आशय यह है कि बुद्धिमान व्यक्ति दूसरों की आपत्ति देख कर उससे बचने के लिए सावधान हो जाते हैं या उससे बचने का प्रबन्ध कर लेते हैं। (ख) एक को किसी दोष का दंड दिया जाता है तो दूसरे भी उस काम को छोड़ देते हैं।

टपके का डर है—केवल बरसात से छत टपकने का डर है। मन में किसी के प्रति स्थायी रूप से भय पैदा हो जाने पर कोई काम न करे तो कहते हैं। इस लोकोक्ति का आधार यह कहानी है : एक बूढ़ा सिपाही अपने दुबले-पतले टट्टू पर सवार होकर कहीं जा रहा था। रास्ते में एक जंगल के पास एक बुढ़िया की झोंपड़ी थी वह वहीं ठहर गया। सिपाही ने बुढ़िया से पूछा कि यहाँ किसी बात का डर तो नहीं है तो बुढ़िया ने उत्तर दिया कि 'टपके' के सिवा और किसी चीज़ का डर नहीं है। झोंपड़ी के पीछे एक बाघ भी इस वार्तालाप को सुन रहा था, उसने सोचा कि टपका कोई मुझसे भी शक्तिशाली जीव होगा। संयोग से उसी समय पानी बरसने लगा और सिपाही का टट्टू भाग गया। सिपाही अँधेरे में उसे खोजने निकला और झोंपड़ी के पीछे खड़े बाघ को टट्टू समझकर बाँध लिया। बाघ ने उसे 'टपका' समझा और इसी कारण चुपचाप बँध गया। सुबह लोगों ने देखा तो सारे नगर में शोर मच गया। राजा को भी पता चला और उसने सिपाही को बुलवाकर अपनी सेना में ऊंचा पद दिया।

कुछ क्षेत्रों में इस कहानी का एक भिन्न रूप भी मिलता है। एक राज्य में एक मनुष्य-भक्षी शेर ने बहुत आतंक मचा रखा था और उसके मारने के सभी प्रयत्न विफल हो चुके थे। राजा ने उसको मारने वाले को बहुत बड़ा पुरस्कार देने की घोषणा की, किन्तु निष्फल रहे। उसी राज्य में बन के किनारे एक निस्सहाय बुढ़िया झोंपड़ी बनाकर रहती थी।

वर्षाऋतु थी और बुढ़िया की झोंपड़ी स्थान-स्थान से टपकती थी। इधर सांझ ढली और उधर पानी बरसना आरम्भ हुआ। थोड़े समय में अन्धेरा घिर आया और झोंपड़ी भी टपकनी आरम्भ हो गई। बुढ़िया ने बेबस होकर कहा कि मुझे तो मनुष्य-भक्षी शेर खा जाय तो अच्छा है इस 'टपके' से तो पीछा छूटेगा। संयोग से वह शेर झोंपड़ी के पीछे वर्षा से बचने के लिए खड़ा था। उसने सुनकर सोचा कि यह 'टपका' अवश्य ही कोई भयंकर जीव है। इतने में एक धोबी जिसका गधा खो गया था उसे खोजता हुआ आ निकला और अँधेरे में शेर को गधा समझ कर शेर को रस्सी से बाँध कर मारता-पीटता अपने घर ले गया और खूटे से बांध कर सो गया। सुबह ग्रामवासियों ने धोबी के दरवाज़े पर शेर को बँधा देखा तो चारों ओर शोर मच गया कि एक बहादुर धोबी ने मनुष्य-भक्षी शेर को जीवित पकड़ लिया। राजा ने एक पिंजरा भिजवाया जिसमें उसे बन्द करके दरबार में पहुँचाया गया और धोबी को बहुत-सा पुरस्कार मिला।

टहल करो फ़क़ीर की, देवे तुम्हें असीस—साधु-सन्तों की सेवा करने से वे आशीर्वाद देते हैं जिससे जीवन सुखी रहता है। साधु-सन्तों की सेवा करना अच्छा कर्म है।

टहल करो माँ-बाप की, हो संपूरन आश—माँ-बाप की सेवा करने से इच्छाएं पूर्ण हो जाती हैं। तुलनीय: पंज० मां-पिओ दी सेवा करो रब फल देवेगा।"

टहल न टकोरी, लाओ मजूरी मोरी—काम-धाम कुछ नहीं करते और मजदूरी मांग रहे हैं। मुफ़्तखोरों के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय: पंज० कम्म कीता कुछ नई मंगे मजूरी।

टहल सूँ जो फिरे, नरक उन्हीं का बास—जो सेवा करना नहीं चाहते वे नरक के भागी होते हैं। आशय यह है कि जिनके अन्दर सेवा-भाव नहीं होता उन्हें अच्छा नहीं समझा जाता।

टहलिए को टहल सोहे, बहलिए को बहल सोहे—जिसका जो काम है उसे वही शोभा देता है। जब कोई व्यक्ति अपने पेशे को छोड़ किसी अन्य पेशे को अपनाता है जो उसके लिए उपयुक्त नहीं होता तब ऐसा कहते हैं।

टांका पानी मिल गया—समझौता हो गया। जब किसी बात को लेकर चल रहे विवाद या झगड़े को दोनों पक्षों को समझा-बुझाकर समाप्त करा दिया जाता है तब ऐसा कहते है। तुलनीय: पंज० टाँका पाणी मिल गया।

टाँकी का घाव सहे तब ईश्वर—पत्थर के टुकड़े को छेनी (टांकी) से काटकर मूर्ति गढ़ी जाती है तब पत्थर भगवान का रूप धारण करता है और उसकी पूजा होती है। आशय यह है कि अनेक कष्ट सहने के बाद आदमी महान् बनता है और आदर पाता है।

टाँग उठे ना चढ़ना चाहे हाथी—पैर तो उठ नहीं रहा है और हाथी पर चढ़ना चाहते हैं। अपनी सामर्थ्य से परे महत्वकांक्षा करने वाले के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय: भोज० टाँग उठे ना चढ़ल चाहेलं हाथी पर; पंज० लत हिलदी नई चड़दा हाथी उत्ते।

टाँग ओलल के मर गया—असहाय और विवशता की स्थिति में प्राण त्याग दिये।

टाँग की जगह लँगड़े की लाठी—जब किसी की टांग टूट जाती है और वह लँगड़ा हो जाता है तब उसकी लाठी ही उसकी टाँग का काम करती है। जब किसी लाभदायक या उपयोगी पदार्थ के नष्ट हो जाने पर उसके बदले जैसे बने वैसे दूसरे के द्वारा काम चलाया जाए तब कहते हैं।

टाँग के नीचे से निकाल दिया—अपने अधिकार में कर लिया। जब किसी को अपने अधिकार या बस में कर लिया जाता है तब कहते हैं। तुलनीय: पंज० लतों थल्ले कड दिता; ब्रज० टाँग के नीचें ते निकारि दियौ।

टाँग तले से निकल जाऊँगा—किसी बात या काम के विषय मे शर्त लगाते समय कहते है कि यदि अमुक बात सच न हुई या अमुक काम पूरा न हुआ तो मैं आपकी टाँग तले से निकल जाऊँगा।

टाँग पकड़कर लाए और पूंछ पकड़कर बहा दिया—एक तरफ़ से लाया और दूसरी तरफ़ से निकाल दिया। (क) जब कोई व्यापारी माल लाते ही बेच दे तब कहते हैं। (ख) स्वार्थी मनुष्य के प्रति भी कहते है जो स्वार्थ के सिद्ध होते ही सब नाते तोड़ देता है। (ग) किसी के साथ बहुत अनुचित व्यवहार करने पर भी कहते हैं। तुलनीय: पंज० लत फड़ के लयांदा अते दुंब फड़ के कड दिता।

टाँग में मारे सिर लँगड़ाय—बेमेल या उलटी बातें करने वाले के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय: कौर० घोंटा मारे सिर लंगड़ाय।

टाँगें बिरहा गा रही हैं—अर्थात् पैरों में दर्द हो रहा है। पद-यात्रा से थक कर आगे और अधिक चलने में असमर्थता प्रकट करने के लिए कहते हैं। तुलनीय: राज० टांग्यां पिणियारीं गावे है।

टाँगों बीच टकसाल है—टाँगों के बीच में टकसाल है। जो स्त्रियां पैसे के लिए तन का सौदा करती हैं उनके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय: राज० टांग्यां बिचे टकसाल

है; पंज० सुत्थन बिच गेह्ना (गैंना) ते भुक्खे क्यों रेह्ना (रैंना)।

टाँट वाले के ठाठ—प्राय: गंजे व्यक्ति धनवान होते हैं, इसलिए उनके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मेवा० टाट जीके ठाट; सं० क्वचिद् दंतालुको मूर्खः, क्वचिद् खल्वाट निर्धन: क्वचिद् काणो भवेत् साधुः, क्वचिद् गानवती सती।

टाँय टाँय फिस्स—किसी काम के बिगड़ जाने या किसी काम में असफल हो जाने पर कहते हैं। तुलनीय : अव० टायं टायं फिस; ब्रज० टांय टांय फिस्सि।

टाट कामले घरमां घाले बाहर बतावे शाल-दुशाले—घर में तो टाट बिछाते और कम्बल ओढ़ते हैं और बाहर लोगों को शाल-दुशाला बताते हैं। झूठी शेख़ी मारने वालों पर व्यंग्य में कहते है। तुलनीय : हरि० मीत पी कै मूंछा पै ता देण।

टाट का लंगोटा नवाब से यारी—पहनते हैं टाट का लंगोट और दोस्ती करना चाहते है नवाब से। जब कोई छोटा होकर भी बड़ों की बराबरी करना चाहे तब व्यंग्य में कहते है। तुलनीय : अव० टाट कै लहंगा नवाबे से यारी; पंज० बोरी दा कच्छा नबाब नाल यारी।

टाट की अंगिया गुजराती कलफ़—बेमेल वेश-भूषा धारण करने वाले के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : अव० टाट कै अंगिया गुजराती कुलुफ।

टाट की अंगिया मूंज की तनी, देख मेरे देवरा मैं कैसी बनी—जब कोई औरत भद्दी पोशाक पहनकर शान से सबको दिखाती फिरती है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते है।

टाट की अंगिया मूंज की बखिया—जोड़ का तोड़ मिल जाने पर कहते हैं।

टाट की अंगिया, रेशम की बखिया—बेमेल काम करने पर व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० टाट के अंगिया पर रेसम क बखिया; पंज० बोरी दी सुत्थन रेशम दी कढाई।

टाट की ओढ़नी रेशम की बखिया--ऊपर देखिए।

टाट के ठाट--प्राय: गंजे धनवान होते है, इसलिए कहते हैं। (टाट=गंजा)।

टाट पर मंच के सब बराबर, क्या अमीर क्या ग़रीब—टाट पर के पंच चाहे अमीर हों चाहे ग़रीब सब बराबर हैं। अर्थात् (क) एक जाति में छोटा-बड़ा कोई नहीं, सब बराबर हैं। (ख) जब एक ही ओहदे के व्यक्तियों में कोई अंतर डाले तब भी कहते हैं। (ग) पंच अर्थात् न्यायाधीश के लिए धनी-निर्धन सब बराबर हैं।

टाट में मूंज का बखिया—जैसी वस्तु होती है वैसी ही सामग्री उसमें लगाई जाती है।

टायर भला न लाँगड़ा, रूख भला ना झाँगड़ा--लंगड़ा घोड़ा और काँटेदार वृक्ष अच्छे नहीं होते।

टाल न भूखे को कभी, जो दे तुझे ख़ुदा—यदि आप संपन्न हों तो भूखे व्यक्ति को अपने दरवाजे से ख़ाली वापस न जाने दीजिए। आशय यह है कि ग़रीबों की सहायता के लिए अधिक-से-अधिक प्रयत्न करना चाहिए।

टाल बता उसको न तू, जिससे किया क़रार—किसी से वादा करके पुन: उससे बहानेबाज़ी नहीं करनी चाहिए। आशय यह कि मनुष्य को अपने वचन का पालन करना चाहिए।

टाल मटोल वक़्त का चोर—सुस्त और आलसी नौकर के लिए कहते हैं जो बहाने बनाकर काम को टाल देता है।

टालमटोला मत करे, किए बचन भुगताय—ऊपर देखिए।

टाली में बहाली और चिट्टे में मुँह फिट्टा—नाम मात्र का देकर टाल देने पर कहते हैं। (टाली=अठन्नी; चिट्टा =रुपया)।

टिकुली सेन्दुर गया तो खाने के भी बज्जर पड़ गए?--(क) जब किसी स्त्री को सौंदर्य-प्रसाधनों के साथ-साथ खाने-पीने की भी परेशानी होती है तब वह अपने पति से ऐसा कहती है। (ख) जब किसी नौकर को अन्य कोई सुविधाएँ न मिलती हों और साथ ही उसे खाने-पीने का भी कष्ट होने लगता है तब वह दुखी होकर मालिक के प्रति ऐसा कहता है।

टिकुली सेन्दुर से गए तो क्या पेट भरने से भी गए—ऊपर देखिए।

टिटिहरी के रोके बादल नहीं रुकता—कमज़ोर या निर्धन कोई बड़ा काम नही कर सकता या किसी शक्तिशाली या संपन्न से टक्कर नही ले सकता। तुलनीय : भोज० टिड्डी क रोकले बादर नां रोकाई; मैथ० टिटही टेकल पर्बत; पंज० टटीरी दे रोकंण नाल बदल नई रुकदा।

टिटिहरी चली हंस की चाल--टिटिहरी (एक पक्षी) हंस की चाल चल रही है। जब कोई अयोग्य योग्य की, असुंदर सुंदर की या निर्धन धनी की बराबरी करे तो व्यंग्य से कहते हैं।

टिट्टिभन्याय:—टिट्टिभ का न्याय। किसी की सभी बातों की जानकारी के बिना उसकी सामर्थ्य का निर्णय नही

किया जा सकता है। हितोपदेश में एक कहानी है। उस कहानी के अनुसार टिट्टिभ ने समुद्र को धमकाया और समुद्र उसकी बातों में आकर भयभीत हो गया।

टिड्डी का आना काल की निशानी—टिड्डियों के आने से अकाल की संभावना रहती है, क्योंकि वे फ़सलों को नष्ट कर देती हैं। तुलनीय : भोज० टिड्डी क आइल काल क निसानी; मरा० टोळांचे आगमन दुष्काळाचे चिह्न।

टीप टाप कर काम चलाते हैं—(क) जो विद्यार्थी पढ़ते न हों और परीक्षा में नक़ल करके उत्तीर्ण होते हों उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। (ख) जो व्यक्ति निर्धन होते हुए भी कपड़े आदि साफ़-सुथरे पहनकर संपन्न होने का स्वांग रचे उसके प्रति भी व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० टीप-टाप करिकें काम चलायें।

टीम टाम इतनी, जलपान नदारद—(क) जो व्यक्ति बाहरी हाव-भाव खूब दिखावे और लंबी-चौड़ी बातें करे लेकिन जलपान आदि के लिए न पूछे उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते है। (ख) जो व्यक्ति बाहर से घर-द्वार सजा दे और घर में खाने-पीने के लिए न हो, उनके प्रति भी व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

टुक-टुक करके मन भर खावें, तनक बेगमा नाम बतावें—थोड़ा-थोड़ा करके मन-भर खा जाती हैं लेकिन नाम है तनक बेगमा। जब नाम के अनुसार गुण न हों तब कहते हैं। (तनक=सुकुमार या थोड़ा। यहाँ तनक का मतलब कम खाने से है)।

टुकड़े खाए दिन बहलाए, कपड़े फाटे घर को आए—ऐसे व्यक्तियों के प्रति व्यंग्य में कहते हैं जो बाहर जाकर श्रम करके कमाना नहीं चाहते। बल्कि इधर-उधर कुछ दिन समय बिताकर अंत में परेशान होकर घर चले आते हैं। तुलनीय : भोज० टुक्की खइली दिन बितवली, लुग्गा फाटल घरे अइली।

टुकड़े-टुकड़े काम चले तो मेहनत कौन करे?—जब माँग कर ही पेट भर जाय तो काम क्यों किया जाय। आलसी और मुफ़्तखोरों के प्रति कहते हैं। तुलनीय : भोज० टुक्के टुक्का से काम चल जाइ त काम काहें के करी; अव० टुकड़ा मांगे काम चलै, तौ मेहनत ओकर बलाय करै; पंज० टुकड़ा मंगण नाल कम्म चले तां मैंनत कौण करे।

टुकड़े दे-दे बछड़ा पाला, सींग लगे तब मारन चाला—खिला-पिलाकर बछड़े को बड़ा किया, जब उसके सींग निकल आए तो मारने लगा। (क) कृतघ्न को कहते हैं जो किसी के किए हुए उपकार को नहीं मानता। (ख) माँ-बाप भी जो कष्ट उठाकर बच्चों को पालते हैं और सयाना होने पर जब वे (बच्चे) उनका अनादर करते हैं या उन्हें कष्ट देते हैं तब ऐसा कहते हैं।

टुकर टुकर दीदम दम न कशीदम—आश्चर्य से किसी वस्तु या दृश्य को देखना और स्तंभित रह जाना।

टूक तो गया पर कुत्ते की जात पहचानी गई—दे० 'टके की हंड़िया गई...'।

टूट चाँप नहिं जुरहिं रिसाने—जब धनुष टूट गया तो वह क्रोध करने से नहीं जुड़ सकता। (श्रीरामचन्द्रजी ने परशुरामजी से कहा था)। तात्पर्य यह है कि काम बिगड़ने पर क्रोध करने से कोई लाभ नहीं होता।

टूटत ही धनु भये बिबाहू—धनुष के टूटते ही श्रीरामचन्द्रजी का सीताजी से विवाह हो गया। जिस वस्तु या चीज़ के अभाव में कोई काम अटका रहे और उसके मिलते ही पूरा हो जाय तब कहते हैं।

टूटने पर सोना जुड़ जाता है पर मिट्टी का बर्तन नहीं जुड़ता—आशय यह है कि सज्जन व्यक्तियों में यदि कभी सम्बन्ध-विच्छेद हो जाता है तो पुनः उनमें मेल-मिलाप हो जाता है, पर यदि ओछे लोगों में कभी सम्बन्ध-विच्छेद हो जाता है तो उनमें पुनः मैत्री नहीं होती। तुलनीय : पंज० टुटन उते सोना जुड़ जांदा है पर मिट्टी दा पांडा नईं जुड़दा।

टूटल तेली, तो कमर में अधेली—बिगड़े तेली की कमर में अधेली ही रहती है। आशय यह है कि जब आदमी के बुरे दिन आते हैं तो उसकी सारी सम्पत्ति नष्ट हो जाती है।

टूटा औज़ार और खोटा बेटा—ये दोनों ही समय पर काम आ जाते हैं। औज़ार चाहे कितना ही टूट-फूट गया हो किन्तु फिर भी काम आ ही जाता है। इसी प्रकार पुत्र चाहे कितना भी नालायक़ हो किन्तु समय पर वही काम आता है। आशय यह है कि इनकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए और न ही इन्हें बेकार समझकर त्याग देना चाहिए। तुलनीय : भीली—टूटी हथियार ने टूटो लूटो बेटो बगत में काम आवे; पंज० पज्जया संदर अते खोटा पुत्तर।

टूटा बासन कसेरे के सर—खराब बर्तन तत्काल दूकानदार को लौटा दिया जाना चाहिए।

टूटी कमान से डरे नौ जने—टूटे हथियार से भी लोग डरते हैं। आशय यह है कि बहादुर या शक्तिशाली आदमी वृद्ध हो जाता है तब भी लोग उससे डरते हैं।

टूटी की क्या बूटी?—मौत की कोई दवा नहीं है। बहुत इलाज करने के बाद भी जब कोई अच्छा नहीं होता तब कहते

हैं। तुलनीय : राज० टूटी री बूँटी नहीं; ब्रज० टूटी कूं बूंटी नहीं।

टूटी टाँग पाँव ना हाथ, कहे, चलूं घोड़ों के साथ—हाथ-पाँव टूटा हुआ है और घोड़ों के साथ चलने को तैयार है। उस मूर्ख मनुष्य को कहते हैं जो ऐसा काम करने चले जिसे उससे योग्य मनुष्य भी न कर सकते हों।

टूटी दाढ़ बुढ़ापा आया, टूटी खाट दरिद्दर छाया—दाढ़ टूटने से बुढ़ापे का और खाट टूटने से दरिद्रता का आगमन समझना चाहिए। तुलनीय: अव० टूटी जाढ़ बुढ़ापा आवा, टूटी खाट दरिद्दर आवा।

टूटी तान व सौरिये पर—तान टूटी किसी से और क्रोध दिखा रहे है कसौरिये पर (देहाती गाने-बजाने में ढोलक आदि के साथ काँसे की कटोरी को एक लकड़ी से बजाया जाता है, इस कटोरी को कसौरी और इसके बजाने वाले को कसौरिया कहते हैं)। आशय यह है कि जब काम किसी से बिगड़े और दोष किसी निर्बल को दिया जाय तो कहते हैं।

टूटी बाँह गले पड़ी—हाथ (बाँह) जब टूट जाता है तब उसे रस्सी या पट्टी के सहारे गले में लटका लेते हैं; आशय यह है कि (क) जब अपना कोई खास व्यक्ति किसी परेशानी में पड़ जाता है तो उसे भी संभालना पड़ता है। (ख) जब कोई परिवार का आदमी अथवा रिश्तेदार बुरी दशा में हो और उससे पीछा भी न छूटे तब भी ऐसा कहते है।

टूटी रस्सी जोड़ने पर भी गाँठ नहीं जाती—टूटी हुई रस्सी को कितना भी सावधानी से क्यों न जोड़ा जाय फिर भी उसमें गाँठ पड़ जाती है। आशय यह है कि किसी से एक बार संबंध-विच्छेद हो जाने पर पुनः उससे अच्छा संबंध बनाने के लिए कितना भी प्रयत्न क्यों न किया जाय, फिर भी मन में कुछ गाँठ रहती ही है। तुलनीय: पंज० टुटी रस्सी गंडन नाल वी गंड नईं जांदी।

टूटी है तो किसी से जुड़ती नहीं और जुड़ी है तो कोई तोड़ सकता नहीं—(क) बहुत बीमार आदमी को सांत्वना देने के लिए कहते हैं कि यदि आयु है तो कोई मार नहीं सकता और यदि आयु नहीं है तो कोई बचा नहीं सकता। (ख) मित्रता के लिए भी कहते हैं कि यदि मित्रता सच्ची है तो कोई तोड़ नही सकता और यदि दिल में खोट है तो कोई जोड़ नहीं सकता। तुलनीय: पंज० टुटी है तां किसी तों जुड़दी नईं अते जुड़ी है तां कोई तोड़ नईं सकदा।

टूटे टाँग कि होय निबेड़ा—टाँग टूट जाती तो कष्ट दूर हो जाता। किसी कष्ट से छुटकारा पाने के लिए मूल को नष्ट कर देने पर कहा जाता है। इस संबंध में एक कहानी है: किसी मनुष्य के पैर में दर्द होने पर वह अस्पताल गया। वहाँ पर तेज-तेज दवाइयाँ लगाई गईं जिससे उसके पैर का दर्द और बढ़ गया। जब डाक्टर ने उसके दर्द का हाल पूछा तो उसने उपरोक्त कहावत कही।

टूटे टूटनहार तरु वायुहि दीजत दोष—वृक्ष तो टूटने ही वाला था, व्यर्थ में वायु को दोष दिया जा रहा है कि आँधी के कारण वृक्ष टूट गया। आशय यह है कि होनहार अवश्य होती है उसके लिए किसी को दोषी नही ठहराना चाहिए।

टूटे सुजन मनाइए, जो टूटे सौ बार—सज्जन व्यक्ति यदि रुष्ट हो जायँ तो उन्हें सौ बार प्रार्थना करके भी मना लेना चाहिए। आशय यह है कि भले व्यक्तियों से हर क़ीमत पर मित्रता रखनी चाहिए।

टूम कापड़े जिस घर पावें, एक छोड़ दस बैयर आवें—जिसके पास गहने (टूम) कपड़े देने की सामर्थ्य हो उसके यहाँ एक नही दस स्त्रियाँ (बैयर) आ सकती हैं। (क) संपन्न व्यक्ति के लिए कोई चीज़ प्राप्त करना असंभव नहीं है। अन्य चीजों के विषय में क्या कहा जाय यहाँ तक कि उसे स्त्रियाँ भी प्राप्त हो जाती हैं या हो सकती हैं। (ख) संपन्न व्यक्ति से बहुत से लोग सबंध जोड़ने के इच्छुक रहते हैं।

टूम बिना बैयर है तैसी, बिन पानी की खेती जैसी—जैसे बिना पानी के खेती हरी-भरी नहीं रहती उसी प्रकार बिना गहने (टूम) के स्त्री भी सुन्दर नहीं लगती। आशय यह है कि स्त्री के लिए गहने बहुत अवश्यक हैं, उसके बिना स्त्री सुन्दर नहीं लगती। तुलनीय: अव० भूषन बिनु न बिराजई कविता, बनिता मित्त—केशवदास।

टेंट आँख में मुँह खुरदीला, कहे पिया मोर छैल छबीला—आँख में फुल्ली (टेंट) है और मुँहासे आदि से मुँह खुरदरा है फिर भी कहती है कि मेरे पति बहुत सुंदर हैं। जब कोई व्यक्ति अपनी खराब, कुरूप या भद्दी वस्तु की बहुत प्रशंसा करता है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

टेंट बरबा काल के मीत, खाएँ किसान और गावें गीत—दुर्भिक्ष पड़ने पर टेंट और बरबा (जंगली फल) खाकर ही किसान अपनी भूख शांत करते हैं और खुश रहते हैं। आशय यह है कि असमय या विपत्ति के दिनों में साधारण या बुरी वस्तुएँ भी अच्छी लगती हैं।

टेक उन्हीं की राखै साईं, गरब कपट नहिं जिनके माहीं—ईश्वर भी उन्हीं की बात रखता है जिनमें किसी प्रकार का न तो घमंड है और न ही कपट। आशय यह है कि ईश्वर

सज्जन व्यक्ति की ही इच्छा पूरी करता है।

टेकुए की तरह सीधा—बहुत सीधे या भले मानुस के प्रति कहते है।

टेढ़ जानि बंदई सब काहू, बक्र चन्द्रमा ग्रसै न राहू—नीचे देखिए।

टेढ़ जानि शंका सब काहू, बक्र चन्द्रमा ग्रसहिं न राहू—टेढ़े से सभी डरते है, यहाँ तक कि टेढ़े चंद्रमा को राहू भी नही ग्रसता। यह वचन राम ने परशुराम से कहा था, जब वह लक्ष्मण की कटूक्तियों का जवाब न देकर उनसे विवाद करने लगे थे)। (क) जब कोई कड़े स्वभाव वाले से डर के मारे न बोले और सीधे को दबावे तब कहते हैं। (ख) दुष्ट व्यक्ति से सभी डरते है। तुलनीय : राज० आकरे देव ने से कोई नमैं।

टेढ़ी अँगुली किए बिना घी नहीं निकलता—जब प्रेम से कहने पर कोई किसी काम को नहीं करता या किसी की बात को नहीं मानता और डाँट-फटकार पड़ने या दंडित होने पर उस काम को करता या बात को मानता है तब ऐसा कहते है। तुलनीय : पंज० इगल डींगी किते बगैर की नई निकलदा।

टेढ़ी अँगुली से ही घी निकलता है—ऊपर देखिए। तुलनीय : मरा० वांकड्या बोटानेच तूप निघते; पंज०सिद्दी उँगली ध्यौ नई निकलदा।

टेढ़ी खीर है—मुश्किल काम है। जब कोई आदमी ऐसा काम करने जाय, जिसके करने लायक़ वह न समझा जाय तब कहते हैं। इस पर एक कहानी यों है : किसी जन्म के अंधे फ़क़ीर से एक मनुष्य ने कहा, 'खीर खाओगे?' सूरदास ने कहा, 'खीर कैसी होती है?' उत्तर मिला, 'सफ़ेद रंग की।' सूरदास ने कहा, 'सफ़ेद रंग कैसा होता है?' उस मनुष्य ने कहा, 'जैसे बगुला।' सूरदास ने कहा, 'बगुला कैसा होता है?' इस पर उस मनुष्य ने अपना हाथ टेढ़ा करके दिखाया कि जिसकी गर्दन ऐसी होती है। सूरदास ने टेढ़े हाथ को टटोलकर कहा, 'नहीं बाबा मैं ऐसी खीर नहीं खाऊँगा यह तो मेरे गले में ही फँस जाएगी।' तुलनीय : अव० टेढ़ी खीर है; हरि० बड़ी टेढ़ी खीर स।

टेढ़ी-मेढ़ी रोटी है, पर है गेहूँ की—देखने में तो टेढ़ी लग रही है. लेकिन यह गेहूँ की रोटी है। तात्पर्य यह है कि लाभदायक वस्तु देखने में यदि अच्छी न भी लगे तो भी उसको बुरा नही समझना चाहिए और उसे स्वीकार कर लेना चाहिए। तुलनीय : राज० आँटी-टूँटी गँवारी रोटी; पंज० डींगी-पींगी रोटी है पर कनकदी।

टेढ़े से सीधा बनहु नहीं नीति की बात—टेढ़े व्यक्ति से सीधा बनना बुद्धिमानी नहीं है। तात्पर्य यह है कि नीच के साथ नीचता का ही व्यवहार करना चाहिए। तुलनीय : सं० आर्जवं हि कुटिलेषु न नीतिः; पंज० पैंडे नाल सिद्दा होके रैणा चंगा नई।

टेर-टेर के रोवे, अपनी लाज खोवे—अपने नुक़सान को किसी से न कहना चाहिए क्योंकि उसे कोई पूरा तो कर नहीं देता उलटे अपनी बदनामी होती है।

टोटे का नाम गांधी—गरीबी (टोटे) का नाम गांधी है। आशय यह है कि मजबूरी में सभी लोग सीधे और दयालु बन जाते हैं। तुलनीय : हरि० टोट्टे का नाम गांधी; पंज० टोट्टे दा नां गांधी।

टोटे का साथी राम—दीन-दुखियों का सहायक ईश्वर होता है। जब गरीबों और दुखियों की कोई सहायता नही करता तब वे कहते हैं। तुलनीय : हरि० टोट्टे का साथी राम।

टोटे तेरे तीन नाम—लुच्चा, गुंडा, बेईमान—गरीबी में व्यक्ति को लुच्चा, गुंडा और बेईमान आदि कहते है। आशय यह है कि अभाव लोक अपवाद का कारण होता है। तुलनीय : कौर० टोटे तेरे तीन नाम—लुच्चा, गुँडा, बेईमान; पंज० मजबूरी तेरे तिन नां—नंगा, लुच्चा, बेईमान।

टोटे से हो घर का टीबा टोटा गया तो खुला नसीबा—टोटे से घर बरबाद हो जाता है और न रहने पर घर बनने लगता है। तात्पर्य यह है कि जब तक बुरे दिन रहते है तब तक प्रयत्न करने पर भी कोई लाभ नही मिलता और अच्छे दिन आने पर सभी काम आसानी से सिद्ध हो जाते हैं।

टोडर का पेट, लोगों की दिल्लगी—किसी आदमी की साधारण बात पर जब लोगों को मजाक़ या हँसी (दिल्लगी) करने का मौक़ा मिले तो कहते हैं।

टोपी की इज्ज़त पगड़ी ग़ायब—पहले पगड़ी बाँधने में इज्ज़त समझी जाती थी, परन्तु अब उसका रिवाज उठ गया, अब लोग टोपी पहनने में ही इज्ज़त समझते हैं। आजकल की वेश-भूषा पर कहते हैं। तुलनीय : पंज० टोपी सांबी पगा गुआची।

टोपी से भी मशविरा करना चाहिए—बिना किसी के परामर्श के कोई काम नहीं करना चाहिए, कोई आदमी न मिले तो टोपी से ही सलाह ले लो। आशय यह है कि दो की राय से किया गया काम हमेशा अधिक अच्छा होता है।

ठ

ठंठनपाल मदनगोपाल—(क) जब किसी को किसी से कुछ न मिले तो कहते हैं। (ख) खाली जेब होने पर स्वयं के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : गढ़० ठंठण गोपाल; राज० ठण-ठण पाल मदन गोपाल; अव० ठंठन गोपाल; पंज० ठण-ठण गुपाल।

ठंडा करके खाओ तो मुँह क्यों जले ?—भोजन ठंडा करके खाने से मुँह नहीं जलता। आशय यह है कि धैर्य एवं सोच-विचार का कार्य करने से हानि नहीं होती। जब कोई व्यक्ति बिना सोचे-समझे जल्दबाजी से कोई काम करता है और उसमें उसे हानि उठानी पड़ती है तब उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० ठंडा करके खाण नाल मुँह नईं सड़दा।

ठंठा नहाय, ताता खाय, उसके वैद्य कभी न आय—जो व्यक्ति ठंडे जल से स्नान करता है तथा ताजा-गर्म भोजन करता है उसके घर में वैद्य कभी नहीं आता। अर्थात् उक्त ढंग से रहने से मनुष्य सदा स्वस्थ रहता है। तुलनीय : पंज० ठंड नहाओ तता खाओ वैद नूं कदीनां कर बिच लाओ।

ठंडा बुखार—झूठी बीमारी का बहाना बनाने वालों के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : गढ़० मुँड मुंडारो न गति जर; पंज० ठंडा ताप।

ठंडा लोहा गरम लोहे को काटता है—तात्पर्य यह है कि शांत मनुष्य क्रोधित को हरा देता है। तुलनीय : मरा० थंडें लोखंड तापलेल्या लोखंडाला कापते; राज० ठंडो लो ताते न खावै; पंज० ठंडा लोआ तत्ते लोये नूं बडदा है; ब्रज० ठंडौ लोहयौ गरम लोहे ऐ काटै।

ठकुर सुहाती तब कहैं जब कछु लेना होय—जब कोई व्यक्ति अपनी स्वार्थ-सिद्धि के समय ही किसी के पास जाय और उसकी खुशामद करे तब वह कहता है।

ठग कसाई, चोर सुनार; खाऊ बाहमन, बली लुहार—प्राय: क़साई ठग, सुनार चोर, ब्राह्मण भोजन भट्ट और लुहार बलवान हुआ करते है। ये इनके स्वाभाविक तथा जातीय गुण हैं। तुलनीय : गढ़० ठग तमोटो चोर सुनार खाओ कोली डाढो ल्वार।

ठग कौन मौसी ?—ठगों की कोई मौसी नहीं होती। अर्थात् ठग या धूर्त किसी संबंध की परवाह नहीं करते और अवसर पाते ही वे ठग लेते हैं। इसलिए ठगों पर विश्वास नहीं करना चाहिए। तुलनीय : राज० ठंगारे किसी मासी; पंज० ठग दी मासी कूण।

ठग के घर ठग जाय, बातों से ही पेट भराय—ठग के घर कोई दूसरा ठग आए तो उसे कुछ खाने-पीने को नहीं मिलता, केवल बातों से ही टरका दिया जाता है। आशय यह है कि ठग लेने सिवाय कुछ देना नहीं जानते। तुलनीय : माल० ठग ठगा रे पामणाँ ने जीरा री लापा लोर; पंज० ठग दे कर बिच ठग जावे गललां नाल टिड परावे।

ठग जाने ठग ही के भाषा—समान व्यवसाय वाले ही एक दूसरे को अच्छी तरह समझ सकते हैं। तुलनीय : पंज० ठग दी गल ठग जाणे।

ठग न देखे, देखे कलवार—जिसने ठग न देखा हो वह कलवार देख ले। तात्पर्य यह कि कलवार जाति ठग से किसी तरह कम नहीं होती।

ठग न देखे देखे कसाई, शेर न देखे देखे बिलाई—जिसने ठग न देखा हो वह क़साई को देख ले और जिसने शेर न देखा हो वह बिल्ली को देख ले। आशय यह कि ठग और कसाई एक स्वभाव के तथा शेर और बिल्ली ये एक रूप एवं स्वभाव के होते है।

ठगाए वही ठाकुर—नीचे देखिए। तुलनीय : ब्रज० ठगायें ठाकुर।

ठगा बनिया, लुटा राजपूत किसी से नहीं बताते—बनिया दूसरों को ठगता है और यदि उसे किसी ने ठग लिया तो उसे बहुत शर्म आती है, वह किसी से कहता नहीं है। इसी तरह राजपूत बहुत वीर होते हैं और किसी के सामने झुकना अपना अपमान समझते हैं यदि वे कहीं झुक जाते हैं तो किसी से कहते नहीं। तुलनीय : मेवा० टगायो वाण्यो ने लुटायो रजपूत कठे ई नी केवें; अं० A man's folly to be his greatest secret.

ठगाए से ठाकुर होता है—धोखा खाने के बाद ही आदमी को समझ आती है या कुछ खोने के बाद ही आदमी को ज्ञान होता है। तुलनीय : राज० ठगायांसूं ठाकर हुवैं; गढ़० गाजी गंवाइक बणिया स्याणो; मेवा० ठगायाँ सूं ठाकर बाजे; पंज० ठिगण नाल आदमी (मनुख) नूं मत्त आंदी है; ब्रज० ठगाये ते ठाकुर होयँ।

ठठेरे की बिल्ली खटके से नहीं डरती—ठठेरे की बिल्ली तो दिन-भर बरतन पीटने की खट-खट की आवाज़ सुनती रहती है, इसलिए वह किसी खटके को सुनकर डरती नहीं। आशय है कि (क) जो व्यक्ति सदा ही बड़बड़ाता रहता है उससे कोई डरता नहीं। (ख) जो व्यक्ति किसी घटना को प्रतिदिन देखता रहे वह उसके लिए महत्त्वहीन

हो जाती है। तुलनीय : राज० ठण्ठारे री भिन्नी खड़के सूं थोड़ी ही डरैं; ब्रज० ठठेरे की बिल्ली खटका ते नायें डरै।

ठठेरे-ठठेरे बदलाई—जब एक ठठेरे को आवश्यकता होती है तो दूसरे से बासन ले लेता है और बदले में दूसरा बासन दे देता है मुनाफ़ा नही लेता। जब एक पेशे वाले मनुष्यों में आपस में बिना मुनाफ़े के लेन-देन चलता रहता है तब कहते हैं।

ठठेरे ठठेरे में अदली-बदली नहीं होती—अर्थात् दो ठग एक-दूसरे को नही ठगते या नही ठग सकते। तुलनीय : ब्रज० ठठेरौ ठठेरे ते बदलाई नायें ले।

ठहर पर की भूख नहीं सही जाती—आशय यह कि जब कोई किसी काम को करने के लिए उस स्थान पर पहुँच जाय और किसी कारणवश वहां इंतज़ार करना पड़े तो बहुत बुरा लगता है। तुलनीय : भोज० ठहर पर क भूख ना सहाले; (ठहर=वह स्थान जहाँ बैठकर भोजन करते हैं)। पंज० खाण बैठे पुख नई सही जांदी।

ठाँव गुन काजल, ठाँव गुन कालिख—जो धुआँ काजल बनकर आँखों की शोभा बढ़ाता है वही घर में जम जाने पर कालिख समझा जाता है और पुतवा दिया जाता है। आशय यह है कि एक ही व्यक्ति या वस्तु को विभिन्न स्थानों एवं परिस्थितियों में भिन्न-भिन्न रूप में देखा जाता है।

ठाकुर की कुतिया मरे तो सब आए और ठाकुर मरे तो कोई नहीं आया—आशय यह है कि ज़बरदस्त या शक्तिशाली आदमी जब तक जीता है तब तक लोग भय वश उसका आदर करते है परन्तु उसके मरने के बाद कोई उसका नाम भी नही लेता। तुलनीय : माल० पटेल रो पाड़ो मरे तो आखो गाम आवे ने पटेल मरे तो कोई नीं आवे। ब्रज० वही।

ठाकुर के घर लहंगा एक, जो पहले उठे सो पहने—ठाकुर के घर में एक ही लहँगा होने के कारण जो पहले सोकर उठती है वही पहनती है। किसी परिवार में कोई अत्यावश्यक वस्तु कम हो और उसे सभी चाहते हों तो कहते हैं। तुलनीय : माल० खाखा रावला में एक घाघरो जो पेला उठे जो पेरे।

ठाकुर चले गए, ठग रह गए—ठाकुर अर्थात् भले आदमी तो चले गए और केवल धूर्त ही रह गए। आजकल के ढोंगी संतों और कंजूस धनियों के लिए व्यंग्य से कहते हैं।

ठाकुरद्वारा बहुत चौड़ा है—(क) जो व्यक्ति अपनी सामर्थ्य से अधिक काम करने की गप्प मारते हैं उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। (ख) जो व्यक्ति किसी काम को करने की सामर्थ्य नहीं रखता वह भी स्वयं के प्रति कहता है। तुलनीय : राज० ठाकुरद्वारो चवड़ो घणाँ।

ठाकुर भगत न मूसर धनुहीं—ठाकुर अर्थात् क्षत्रिय कभी भक्त (साधु) नही हो सकता और मूसल का कभी धनुष नहीं बन सकता। तात्पर्य यह है कि जो वस्तु जिस काम के लिए होती है उससे वही काम लिया जा सकता है।

ठाकुर साहब कोई बाल-बच्चा है, कहा—हाँ, भाई के साले के दो बच्चे हैं—(क) जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे की वस्तु पर आँख लगाए रहे तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। (ख) किसी प्रश्न का ऐसा उत्तर जिसका प्रश्न से कोई संबंध न हो, देने वाले के प्रति भी व्यंग्य में कहते है। तुलनीय : राज० ठाकराँ टाबर टूवर कै—भाई रे साले रे दो टाबरका है।

ठाकुरों की बारात में हुक्का कौन भरे—जहाँ सभी लोग अपने को बड़ा समझें और कोई भी थोड़ा झुक कर रहना न चाहे वहाँ कहते हैं। तुलनीय : कौर० ठाकुरों की बरात में हुक्का कौन भरे; पंज० ठाकरां दी गंज विच हुक्का कूण परे।

ठाट काट कर लक्ष्मी आई—किसी को अनायास ही धन मिल जाने पर कहते है।

ठाट-बाट इतना जलपान नदारद—आडम्बर दिखाने वाले पर व्यंग्य। तुलनीय : मैथ० ठाठ बाट अतेक जलपान नदारत; भोज० टीमटाम एतना जलपत्तर नदारत।

ठाट-बाट इतना लगान डेढ़ आना—ऊपरी ठाट-बाट दिखाने वाले निर्धन के प्रति व्यंग्य से कहते है।

ठाढ़ नाँचों मोरा, तो निहुर नाचों तोरा—यदि तुम मेरे यहाँ खड़ा होकर नाचोगे तो मैं तुम्हारे यहाँ झुक कर नाचूँगा। आशय यह है कि जो व्यक्ति दूसरों का काम करता है उसका काम दूसरे भी करते हैं।

ठाढ़ी खेती गाभिनी गाय, तब जानों जब मुंह में जाय—खेत में खड़ी फ़सल और गर्भवती गाय को तब तक लाभदायक या अच्छा नहीं समझना चाहिए जब तक खेती कट कर अनाज घर में न पहुँच जाय और गाय दूध देना आरंभ न कर दे। अर्थात् (क) इन दोनों के नष्ट होने में देर नहीं लगती। (ख) जब तक कोई चीज़ प्राप्त न हो जाय तब तक उसकी विशेष उम्मीद नहीं करनी चाहिए। तुलनीय : अं० There is many a slip between the sauce (cup) and the lip.

ठाढ़े हूजत घूर पर जब घर लागत आग—जब घर में

आग लग जाती है तो लोग कूड़े के ढेर पर चले जाते हैं। अर्थात् (क) विपत्ति आने पर बुरे स्थान पर भी रहना पड़ता है। (ख) विपत्ति के दिनों में छोटे लोगों की भी सहायता लेनी पड़ जाती है।

ठाला नाई कुतिया मूंड़े— बेकार नाई कुतिया की ही हजामत बनाता है। जो व्यक्ति काम न रहने पर मूर्खतापूर्ण और बेकार का काम करे उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय: राज० निकमो नाई पाटला मूंड़ै।

ठाला बनिया अंडा तौले —नीचे देखिए। तुलनीय: कौर० ठाली बैठ्ठा बणिया आँड तोलै।

ठाला बनियाँ क्या करे, इस कोठी का धान उस कोठी में धरे - बैठा (ठाला) बनिया एक कुठले (कोठी) में से धान निकाल कर दूसरे कुठले (कोठी) में डालता है। जब कोई व्यर्थ का काम करता है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय: अव० खाली बानिन का करै, इ कोठी का धान उ कोठी धरै; गढ० बैठो बणियाँ भार तोलो; मरा० रिकामा वाणी काय करतो, या खोलींतले धान्य त्या खोलीत ठेवतो; पंज० वेला वनियां की करे इस कौल दा चोना उस कौल बिच रक्खे। (कौल= मिट्टी का बनाया बड़ा बर्तन)।

ठाला बनियाँ क्या करे, सेरे बांट ही तौले -ऊपर देखिए।

ठाली नाइन पाड़े पर डोरा डाले—खाली नाइन पाड़े को ही फँसाना चाहती है। (क) जब कोई उलटा-पुलटा काम करे तो व्यंग्य में उसके प्रति कहते हैं। (ख) जब कोई कामातुर स्त्री किसी अवयस्क पुरुष से ही संपर्क स्थापित करना चाहे तो उसके प्रति भी कहते हैं। तुलनीय: कौर० ठाली नायन कटरा मूडन लागी।

ठाली नाऊ मूड़े पड़ा—दे० 'ठाला नाई······'।

ठाली बहू का नूनके में हाथ—नीचे देखिए। तुलनीय: कौर० ठाली बहू का नूण के में हाथ।

ठाली बहू के नोन में ही हाथ—बहू के पास कोई काम नहीं है इसलिए वह सदा नमक ही कूटती-पीसती रहती है। जब कोई व्यक्ति बेकार होने के कारण व्यर्थ के काम करता रहे तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय: पंज० बेली बौंटी दा लूण बिच हत्थ।

ठाले से बेगार भली—बैठे रहने से तो किसी का मुफ्त में काम कर देना ही अच्छा है। आशय यह है कि खाली बैठे रहना ठीक नहीं है आदमी को सदा कुछ करते रहना चाहिए। तुलनीय: पंज० बेले तो कम्म चंगा; ब्रज० ठाले ते बेगारि भली।

ठिकाने ठाकुर पूजा जाय अपने इलाके या क्षेत्र में ही ठाकुर की पूजा होती है। जब कोई सबल या संपन्न व्यक्ति अपने क्षेत्र से बाहर कहीं जाय और उसका उस स्थान पर सम्मान न हो तब कहते हैं। आशय यह है कि अपने क्षेत्र या अपने परिचित लोगों के बीच ही मनुष्य की इज्जत होती है।

ठिकाने से ठाकुर—धन-बल होने पर ही मनुष्य की इज्जत होती है। तुलनीय: मेवा० ठिकाणाँ सू ठाकर बाजे।

ठीक नहीं ठेके का काम ठेका दे मत खोवो दाम—ठेके का काम अच्छा नहीं होता।

ठीकरा घड़ा फोड़ देता है—घड़े का टूटा हुआ एक टुकड़ा भी घड़े को फोड़ देता है। जब कोई साधारण व्यक्ति अपने से बड़े आदमी को नीचा दिखा दे या उसे हानि पहुँचा दे तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय: राज० ठीकरी घड़ो फोड़ नाखे; पंज० ठीकरा कड़ा पन्न देंदा है; ब्रज० ठीकरा घड़ायँ फोरि देयँ।

ठीकरा हाथ में और उसमें सत्तर छेद—किसी को शाप देने के लिए कहते हैं। (ख) निकम्मे लड़के पर बाप नाराज होकर ऐसा कहता है। तुलनीय: पंज० हत्थ बिच ठीकरा अते सौ मोर।

ठीकरा हाथ में होगा, और भीख माँगता फिरेगा—ऊपर देखिए।

ठीकरे का सुख, खुरची का दुःख—रहने का स्थान तो अच्छा है पर पैसे की दिक़्क़त है। (क) रहने का स्थान अच्छा हो, पर खर्च के लिए पैसा न हो तब कहते है। (ख) प्रायः वेश्याएँ जिन्हें तनख्वाह कम या ठीक समय पर नहीं मिलती कहा करती हैं। तुलनीय: अव० पेहरी के बड़ा सुख, खरची के बड़ा दुख।

ठुक-ठुक सुनार की, एक चोट लुहार की— सुनार की अनेक चोटें लोहार की एक चोट के बराबर होती हैं। जब कोई निर्बल व्यक्ति किसी शक्तिशाली व्यक्ति से बार-बार छेड़खानी करता है तब वह उसे शांत रहने के लिए ऐसा कहता है। तुलनीय: अव० सौ चोट सोनार की एक चोट लोहार की; हरि० सौ सुनार की एक लुहार की; पंज० सौ सन्लारे दी इक लुआर दी।

ठुमकी गैया सदा कलोर—नाटी या छोटी (ठुमकी) गाय (गैया) सदा बछिया (कलोर) जैसी लगती है। जब कोई छोटे क़द का आदमी अधिक आयु का होने पर भी कम आयु का मालूम पड़े तब उसके प्रति ऐसा कहते हैं।

ठेंगा थाम, लबेदे हजार—मोटे डंडे को संभालो, पतले डंडे तो अनेक मिल जाएंगे। आशय यह है कि बड़े लोगों से अच्छी तरह संबंध बनाए रखना चाहिए क्योंकि ऐसे लोगों से बार-बार संबंध या मैत्री नहीं होती। सामान्य लोग तो अधिकतर मिलते रहते हैं।

ठेका ले उस काम का जो तुझसे होवे ठीक—जिस कार्य को ठीक ढंग से कर सके उसी की जिम्मेदारी लेना चाहिए। तुलनीय : पंज० उस कम्म दा ठेका लैं जिहड़ा तेरे तो होवे।

ठेस लगे बुद्धि बढ़े—ठोकर लगने से मनुष्य को ज्ञान होता है। आशय यह है कि क्षति होने पर मनुष्य भविष्य के लिए सावधान हो जाता है। तुलनीय : हरि० पड़-पड़ कै सवार हो सं।

ठोंगें मार किया सिर गंजा, कहै 'मेरे है हाथ न पंजा'—मार के सिर तो गंजा कर दिया और कहना है मेरे हाथ और अँगुलियाँ ही नहीं है। जब कोई किसी का नुक़सान करके सबके सामने अपनी असमर्थता दिखाकर निर्दोष बनना चाहे तब कहते हैं।

ठोंट चितेरो मन में झींके—लूला (ठोंट) चित्रकार (चितेरो) मन ही मन पछताता है। जब कोई योग्य व्यक्ति किसी कारणवश अपनी योग्यता प्रदर्शित करने में असमर्थ हो जाता है तब उसके प्रति ऐसा कहते है।

ठोक-बजा ले वस्तु को, ठोक बजा दे दाम—किसी वस्तु को अच्छी तरह देख लेना चाहिए और देखभाल कर ही उसका मूल्य भी देना चाहिए। आशय यह है कि किसी भी काम को अच्छी तरह देखभाल और सोच-विचार कर करना चाहिए। ऐसा करने से कोई क्षति नहीं होती। तुलनीय : पंज० देख सुण के चीज लैं पा कर के पैहा दें।

ठोकर खाकर, सम्भलें सब—ठोकर खाने के बाद ही लोग संभलते हैं, अर्थात् हानि उठाकर ही मनुष्य सावधान होता है। तुलनीय : गढ़० गाजी गंवाइक बणिगा स्याणो।

ठोकर खावे बुध पावे—ऊपर देखिए।

ठोकर लगी पहाड़ की, तोड़ें घर की सिल—जब कोई किसी शक्तिशाली द्वारा अपमानित होने पर उसका क्रोध किसी निर्बल पर प्रकट करे या अपनी स्त्री पर प्रकट करे तब व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मरा० ठेंच लागली डोंगराची घरचा पाटा फोडतोय; पंज० ठेडा लगया पहाड़ दा पनण कर दी सिल।

ठोकरें खाते-खाते चलना आ जाता है—किसी कार्य के विषय में नुकसान सहते-सहते अनुभव हो जाता है। बिना कष्ट उठाए कोई ज्ञान नही होता। तुलनीय : पंज० ठेडे खाण नाल चलना आ जांदा है।

ठोकरें खाने वाला सितारा भी बन जाता है—जब बहुत दुख झेलने के बाद किसी व्यक्ति को अच्छी सफलता मिलती है या जब बहुत कठिनाइयों के झेलने के बाद कोई उच्च पद पा जाता है तब उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० ठेडे खाण वाला सोणा वी बन जांदा है।

ठौर पड़ा पत्थर भारी होता है—एक स्थान पर पड़ा हुआ पत्थर भारी होता है। आशय यह है कि अपने सिद्धांत पर दृढ़ रहने वाला व्यक्ति ही सम्मान प्राप्त करता है। तुलनीय : हरि० ठौड़ पड़्या पात्थर भाहर्‌या हो; पंज० इक थां पया वट्टा वी पारी हुंदा है।

ड

डंडा सबका पीर है—मार से बड़े-बड़े क़ाबू मे आ जाते है। तुलनीय : मल० अटियोळम् नन्नल्ल अण्णन् तम्पि; ब्रज० डंडा सबकौ पीरै; पंज० डंडा मारियां दा गुरु है; अं० Rod tames every brute.

डंडे के डर बंदर नाचे—ऊपर देखिए। तुलनीय : कौर० लकड़ी के बल बंदरी नाचै; ब्रज० डंडा के डर बंदर नाचै।

डग डग डोलन फरका पेलन, कहाँ चले तुम बाँड़ा; पहिले खाबइ रान परोसी गोसैंयाँ कब छाँड़ा—आशय यह है कि लड़खड़ाते हुए चलने वाला, बड़े सींगों वाला और पूँछकटा बैल अच्छा नहीं होता और उसको रखने वाला विपत्ति में पड़ जाता है।

डगरा में हगें आँख दिखावें—राह में पाखाना करते हैं और आँख भी दिखाते है। जब कोई व्यक्ति बुरा काम भी करे और उलटे लड़ाई भी करे तो कहते हैं। तुलनीय : पंज० राह अग्गे आने टड्डे।

डढ़ियाला घन—पुत्र को कहते हैं। लंबी दाढ़ी वाले को भी व्यंग्य से कहते हैं।

डपोरशंख—जो लोग बहुत बातें करते हैं और काम कुछ नहीं उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० ढपोल संख।

डरता डोम करे शुभ राग—डोम डर कर ही अच्छी बातें करता है। आशय यह है कि दुष्ट या ओछे व्यक्ति भय से ठीक रहते हैं। तुलनीय : राज० डरतो डूम करे शुभराग।

डर न दहशत, उतार फिरी खिशतक—इसे भय और लज्जा से नही है, पायजामा उतार कर घूम रही है।

बेशर्म स्त्री के प्रति कहते हैं। (खिशतक=फ़ा० खिश्तक, पायजामा)।

डर से झाड़ी भूत बने—भय से पेड़-पौधे भूत-प्रेत का आकार धारण कर लेते हैं। डरपोक व्यक्ति को सभी स्थानों में किसी न किसी भय की शंका वह बनी रहती है। तुलनीय : भीली—भो भूमिका बांकी लोग।

डरहु दरिद्रहि पारस पाए—दरिद्र व्यक्ति पारस पत्थर पाकर भी डरते हैं। आशय यह है कि निर्धन व्यक्ति मूल्यवान या लाभदायक वस्तु पाकर भी डरते हैं, क्योंकि वे उसकी रक्षा करने में समर्थ नहीं होते।

डरा सो मरा—प्राय: लोग भयंकर बीमारियों से डर कर ही बीमार पड़ जाते हैं और मर जाते हैं। इसलिए यह मसल कही जाती है ताकि लोग डरें नहीं। पंज० तुलनीय : डरया ओह मरया; ब्रज० डरयौ सो मरयौ।

डरें लोमड़ी से नाम दिलेर खाँ—गुण या प्रकृति के विपरीत नाम होने पर व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : फ़ा० बरअक्स नेहन्द नाम जंगी काफ़ूर; अर० हीया अल खमरो तुसम्मी अल तलाआ का अल्ला ज़िब्रहू युकन्नी अबा ज अछनिन, कनौ० नांव सूरमा पीठ में घाव; पंज० डरदा लोबंडी कौलों नाँ शेर सिंग; अ० A black man being called Mr. White.

डरें लोमड़ी से नाम शेर खाँ—ऊपर देखिए।

डरे सो मरे, खोदे से पड़े—जो डरता है वही मरता है और जो दूसरों के लिए गड्ढा खोदता है वह स्वयं उसमें गिरता है। आशय यह है कि जो शंकित रहता है उसे सफलता मिलने में भी संदेह होता है और जो दूसरों को क्षति पहुँचाना चाहता है उसकी स्वयं की क्षति होती है। तुलनीय : हरि० डरैगा सो मरैगा, खोद्दै गा सो पड़ैगा; पंज० डरे ओह मरे खोदरे ओह डिगे।

डल्लू का दहसेरा—डल्लू नाम का एक बनिया था जो पसेरी की जगह दस सेर का बाट रखता था। निराली चाल चलने वाले तथा बेमौक़े की बात करने वाले पर कहा जाता है। तुलनीय : अव० डल्लू के डसेरा।

डहर की खेती रॉड की बेटी—ये दोनों सुरक्षित नहीं रह पाती। तुलनीय : छत्तीस० डहर के खेती, अउ राँड़ी के बेटी।

डाढी खुदा का नूर है—इस्लाम धर्म में दाढ़ी (डाढ़ी) बहुत मानी जाती है इसीलिए ऐसा कहते हैं। पंज० तुलनीय : दाड़ी खदा नूर है; ब्रज० डाढ़ी ख़ुदा कौ नूरै।

डाबर कमठ कि मंदर लेहीं?—क्या तालाब का कछुआ अपनी पीठ पर मंदराचल पर्वत को उठा सकता है? आशय यह है कि छोटे आदमी बड़े काम नहीं कर सकते।

डायन किसकी मौसी?—डायन किसी की मौसी नहीं होती। वह संबंध न देखकर अपने स्वार्थ के लिए सबको हानि पहुँचाती है। जो व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिए निकट संबंधियों और मित्रों को भी हानि पहुँचाए उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० डाकण केरी मासी; पंज० डेण किस दी सक्की।

डायन के ब्याह में बरातियों का भोजन—डायन के विवाह में बारातियों को मारकर उन्हीं को पकाया जाता है। अर्थात् दुष्ट मनुष्यों के साथ में कष्ट ही होते हैं। तुलनीय : राज० डाकण्यांरे ब्यांव में नोनियार रो गटको; पंज० डैण ने वयाह विच बरातियां दी रोटी; ब्रज० डाइन के ब्याह में बरातीन को भोजन।

डायन के यार भूतने—अर्थात् जो जैसा होता है उसके साथी भी वैसे ही होते है। (क) कुरूप स्त्री को पति भी कुरूप मिले तो कहते हैं। (ख) प्राय: कुरूप वेश्याओं पर कहा जाता है। तुलनीय : भोज० डाइन क इयार भूतिन; अव० डाइन के आर भूत; पंज० डैण दे यार पूतने।

डायन को बच्चा सौंप दिया—(क) किसी को खतरे में डाल देने पर कहते हैं। (ख) कोई वस्तु किसी ऐसे व्यक्ति को दी जाय जिससे मिलने की कोई आशा न हो तब भी कहते है। तुलनीय : पंज० डैण नूं बच्चा दे दिता।

डायन को भी दामाद प्यारा—अपनी लड़की के कारण डायन को भी अपना दामाद प्यारा होता है। आशय यह है कि दामाद सबको प्यारा होता है। तुलनीय : अव० डइनिऊ कै दमाद पिआर होता है; पंज० डैण नूं वी जुआई पयारा।

डायन को मौसी कहे—जो व्यक्ति अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए दुष्टों का आदर करता है उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० डाकन ने मासी कहर बतलावणो; पंज० डैण नूं मासी आख।

डायन को मौसी कहे सो बचे—डायन को जो मौसी कहता है वही बचता है। आशय यह है कि दुष्टों के सम्मुख विनम्र रहने पर ही कल्याण होता है। तुलनीय : पंज० डैण नूं मासी आखे ओ बचे।

डायन को सपने में भी कलेजे—डायन को स्वप्न में भी कलेजे ही दिखाई देते हैं। जब कोई सदा अपने स्वार्थ की ही बात करता है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मेवा० डाकण ने कालजा ही कालजा दीखे; पंज० डैण नूं सुखने विच कालजे।

डायन खाय तो मुँह लाल, न खाय तो मुँह लाल—बदनाम व्यक्ति के प्रति कहते हैं। चाहे वह बुराई करे या न करे, हर बात में उसका नाम आ जाता है। तुलनीय : भीली—खाय ते डाकण नी खाए ते डाकण; पंज० डैण खावे तां मुँह लाल नाँ खावे ताँ मुँह लाल।

डायन बेटा-बेटी दे कि ले—जब कोई किसी दुष्ट व्यक्ति से कुछ पाने की उम्मीद करे तब व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० डाकण बेटा दे क ले; हरि० भूत बेटे लें अक दें।

डायन भी अपने बच्चे को नहीं खाती—आशय यह है कि अपना बच्चा सभी को प्यारा होता है। तुलनीय : मरा० डाकीण सुद्धां आपले मूल खात नाही; पंज० डैण वी अपने बच्चे नं खांदी।

डायन भी दस घर छोड़कर खाती है—डायन भी अपने पड़ोसियों को नुकसान नहीं पहुँचाती है। किसी के अपने सहवासियों को ही ठगने पर कहा जाता है। आशय यह है कि अपने पड़ोसियों से सदा संबंध बनाए रखना चाहिए। तुलनीय : मरा० डाकीण सुद्धा दहा घरें सोडून खाते; भोज० डइनियों दस घर छोड़के खाले।

डारि सुधा विष चाहत चीखा—अमृत को छोड़कर विष पीना चाहता है। जो व्यक्ति अच्छी वस्तु त्यागकर बुरी वस्तु लेना चाहे उसके प्रति कहते हैं।

डाल का चूका बंदर और असाढ़ का चूका किसान—ये दोनों सँभल नहीं पाते। आशय यह है कि अवसर खो देने पर हानि सहनी पड़ती है। तुलनीय : छत्तीस० डार के चूके बेंदरा, अउ असाढ़ के चूके किसान।

डाल का चूका बंदर और बात का चूका आदमी फिर नहीं सँभलता—ऊपर देखिए। तुलनीय : अव० डार का चूका बान्दर औ बात का चूका मनई फिर नाही सँभरत।

डाल के टूटे फिर नहीं जुड़ते—एक बार टूट जाने पर फल फिर कभी डाल से नहीं जुड़ता। तात्पर्य यह है कि (क) मरने के बाद कोई पुन: जीवित नहीं होता। (ख) जब किसी से किसी का संबंध-विच्छेद हो जाता है और उनमें से एक पुन: संबंध स्थापित करना चाहता है तथा दूसरा नहीं तब वह (दूसरा) ऐसा कहता है।

डाल के टूटे हैं—अर्थात् ताज़े हैं। ताज़े फलों आदि के लिए कहते हैं।

डालते देर नहीं सिर पर कोतवाल—जब कोई अपराध करते ही पकड़ा जाय तब कहते हैं।

डाल न पात, फल की करें बात—जिस वृक्ष पर डाल और पत्ते तक नहीं हैं अर्थात् ठूँठ है उस पर फल कैसे लग सकते हैं? जो व्यक्ति बिना सिर पैर की बातें करें या अप्राप्य वस्तु की आशा करें उनके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० जेका नी नल तैका को क्या फल।

डिगै न शंभु सरासन कैसे, कामी वचन सती मन जैसे—शंकरजी का धनुष उसी प्रकार हटाये नहीं हटता जिस प्रकार व्यभिचारी व्यक्ति की बातों से सती स्त्री का मन विचलित नहीं होता। (क) किसी भारी वस्तु के प्रति कहते हैं जो हटाए न हटे। (ख) जो अपने वचन पर दृढ़ रहता है उसके लिए भी कहते हैं।

डिलारो खेत सबके पल्ले पड़तो है—ढेले (डिलारो) वाले खेत सबके जिम्मे पड़ते हैं। आशय यह है कि सभी के जीवन में कभी-न-कभी बुरा समय आता है।

डींग हाँकनी है तो हलकी-फुलकी क्यों?—जब गप्प ही मारनी है तो छोटी-मोटी क्यों मारें? बहुत गप्प हाँकने वालों के प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

डुकरी ढोल गुंबज, आवाज़ दर फ़िस्त—देखने में बहुत मोटे-ताज़े हैं, पर आवाज़ बहुत धीमी है। जो शरीर का बहुत सुंदर, पर बुद्धि का मोटा हो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० दिखण बिच मोटे-ताजे बोलण बिच मरे होय।

डुकरी सो मरी पै यम घर देख गए—हानि हुई सो तो हुई किंतु हानि करने वाले की आदत पड़ गई जो बहुत बुरी चीज़ है। जब कोई किसी को बार-बार हानि पहुँचाता है तब कहते हैं। (ख) जब कोई व्यक्ति एक बार कोई चीज़ पा जाने के बाद पिंड नहीं छोड़ता तब भी कहते हैं।

डुग-डुग बाजै बहुत नीक लागै, नौआ नेग माँगै तो उठा-बैठी लागै—शादी-ब्याह में बाजे बजते हैं तो बहुत अच्छा लगता है, किंतु जब नाई आदि नेग माँगते हैं तो गृह-स्वामी उठा-बैठी करने लगता है, अर्थात् उसे बुरा लगने लगता है। यह एक प्रकार का व्यंग्य है जो नाई आदि ऐसे लोगों पर करते हैं जो उन्हें ठीक से नेग नहीं देते।

डुबकी साध के रह गए—चुप्पी साध ली या ग़ायब हो गए। जो व्यक्ति काम करने के या धन व्यय करने के अवसर पर कुछ न बोले या ग़ायब हो जाय उसके लिए कहते हैं।

डूँगर दूर ते आछा लागे—पहाड़ (डूँगर) दूर से ही अच्छे लगते हैं। किसी दूर की वस्तु या व्यक्ति की काफ़ी प्रशंसा सुनी जाय, पर उसके संपर्क में आने पर वह सारहीन जान पड़े तब व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। (यह मारवाड़ी कहा-

वत है)।

डूबता तिनके की ओर भी हाथ बढ़ाता है—नीचे देखिए।

डूबते को तिनके का सहारा—विपत्ति में फँसे व्यक्ति को जब कहीं से थोड़ी सहायता मिल जाती है तब कहते हैं। तुलनीय : अव० डूबत का तिनका कै सहारा; राज० डूबते ने तिणकलेरो ही स्हारो; हरि० डूबता सिवाळे हाथ घालै; माल० डूबता ने टीनका रो आसरो; मल० मुङ्ङिच्चाकान् पोकुन्नवनु वय्क्कोन् तुरुम्बुम् सहायम्; असमी —पानीत मरा मानुहे तृणकुटा लै का हात् बढ़ाय; ब्रज० डूबत कू तिनका कौ सहारौ; अं० A drowning man catches at a straw.

डूबने पर भी तीन बाँस—डूब जाने के पश्चात् भी तीन बाँस गहरा जल। जब कोई काम एकदम चौपट हो जाय तो उसके प्रति कहते है। तुलनीय : राज० डूबी पर तीन बाँस। मेवा० डूबा ऊपर दो बाँस; स० यथा हि मलिनैर्वस्त्रैर्यत्र तत्रोपविश्यते तथा चलित वृत्तस्तु वृत्त शेष न रक्षति।

डूबा बंश कबीर का जो उपजा पूत कमाल—पूर्वजों के चलन या धर्म के विरुद्ध चलने पर कहते है। इस लोकोक्ति के संबंध में दो कहानियां कही जाती हैं : (1) कबीर ने अपने पुत्र कमाल को बचपन में ही यह उपदेश दिया था कि सब मनुष्यों को अपने भाई के समान तथा स्त्रियों को मां-बहन के समान समझना। कमाल जब बड़ा हुआ तो कबीर ने ब्याह के लिए कहा। इस पर कमाल ने कहा कि मुझे संसार में मां, बहिन और बेटी के अतिरिक्त कोई दिखाई नहीं पड़ती विवाह किससे करूँ? कमाल ने ब्याह नहीं किया कबीर का वंश समाप्त हो गया। (2) कमाल कबीर के वचनों का खंडन करते थे इसलिए कबीर ने क्रोधित होकर यह बात कही थी।

डूबी कंत भरोसे तेरे—जब किसी के बल (भरोसे) पर किसी का नुक़सान हो जाय तब कहा जाता है।

डूबे ऊपर दो बाँस—दे० 'डूबने पर भी⋯'।

डूबे कहीं उतरा य चटगाँव ही में—जब कोई व्यक्ति कहीं भी जाय पर घूम-फिर कर एक ही स्थान पर आवे तब उसके प्रति कहते हैं।

डूबेगा भाड़ का भाड़, रात समय ने देसं झाड़—रात को झाड़ू नहीं लगाना चाहिए। (लोगों का विश्वास है कि रात में झाड़ू देने से दरिद्रता आती है)। यह मारवाड़ी कहावत है।

डेढ़ ईंट की मस्जिद जुदी ही बनाते हैं—निराली चाल चलनेवाले तथा अपने मन की करने वाले पर कहा जाता है। तुलनीय : माल० डोड़ चोखो न्यारो हीजे।

डेढ़ चावल अपने जुदे ही पकाते हैं—ऊपर देखिए। तुलनीय : अव० डेढ़ चाउर आपन अलगै बनावत हैं; हरि० अपणे ढाई चावल न्यारे पकाणा।

डेढ़ चावल की खिचड़ी जुदा पका रहे हैं—दे० 'डेढ़ ईंट की मस्जिद⋯'। तुलनीय : राज० डोढ चावलरी खीचड़ी न्यौरी ही पकावे; गढ़० डेढ़ चौंल की खिचड़ी जुदी च पकणी; ब्रज० डेढ़ चामर की खीचरी अलगई पकायें।

डेढ़ टट्टू बाग में डेरा—जो व्यक्ति व्यर्थ में दिखावा करते हैं उनके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : गढ़० डेढ़ टट्टू बाग मां डेरो।

डेढ़ पहोली रमतिला मिर्जापुर की हाट—थोड़ा-सा (डेढ़ पहोली) रमतिला लेकर बड़े बाजार (मिर्जापुर की हाट) में बेचने जा रहे है। किसी साधारण सी वस्तु का बहुत दिखावा करने वाले के प्रति कहते हैं।

डेढ़ पाव आटा पुल पर रसोई—जब कोई साधारण व्यक्ति अपने को बड़े लोगों जैसा दिखलाता है तब उसके प्रति कहते हैं। या व्यर्थ का आडंबर करने वाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० डेड़ पा आटा पुल उत्ते रसोई; ब्रज० डेढ़ पा चून पुल पै रसोई।

डेढ़ पाव की रोटी, सारे गाँव गुहार—थोड़े धन पर इतराते फिरने वाले के प्रति व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : माल० तीन पाव मेदो ने आखा गाम में बेदो; पंज० डेड पा दी रोटी सारे पिंड रौला।

डेढ़ पेड़ बकायन, मियाँ बाग तले—डेढ़ पेड़ है और उसी को बाग कहते हैं। झूठी शेखी बघारनेवालों के लिए कहते हैं। तुलनीय : माल० डेढ़ बखाण ने मियां जी बाग में।

डेढ़ पैसे की इमली खाटी होय कि मीठी—डेढ़ पैसे की इमली लिए जा रहे है और सोच रहे है कि यह खट्टी (खाटी) होगी कि मीठी। जब कोई छोटी-सी वस्तु के लिए काफ़ी सोच-विचार करे तब उसके प्रति व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : पंज० डेड पैहे दी इमली खट्टी होवे या मिट्ठी।

डेढ़ बाल कनपटी में जूड़ा—नीचे देखिए। तुलनीय : अव० डेढ़ बाल कनपटी मां जूरा; ब्रज० डेढ़ बार कनपटी में जूरो।

डेढ़ बाल सर में, कनपटी में जूड़ा—सिर पर तो केवल डेढ़ बाल हैं और जूड़ा बाँधती हैं कनपटी पर। (क) निकृष्ट वस्तु का प्रदर्शन करने वाले को कहते हैं। (ख) झूठी शान दिखाने वालों के प्रति भी कहते है।

डेरा न डाँड़ी, बदौसा अँधियार – नाम ही नाम है बदौसे (बाँदा जिले का एक बड़ा क़स्बा) का, है कुछ भी नहीं। जब किसी व्यक्ति से नगर या वस्तु की बहुत प्रशंसा सुनी जाय और देखने पर बिल्कुल बेकार निकले तो कहते है।

डेरा भाई राम राम, भूला चूका सामदाम—स्वार्थियों के प्रति व्यंग्य में कहते है जो काम निकल जाने पर ध्यान नहीं देते।

डेरे हिरन दाहिने जायं, लंका जीत राम घर आयं—यदि कहीं जाते समय रास्ते मे दाहिनी ओर हिरन दिखाई पड़े तो समझना चाहिए कि कार्य पूरा हो जाएगा। आशय यह है कि यात्रा के समय हिरन का दाहिनो ओर दिखाई देना शुभ है।

डोडो आई बाल थुतराए (छितराए)—बुरी वेश-भूषा या गंदे स्वभाव वाली स्त्री के प्रति कहते है।

डोम का मरना और ब्राह्मण का धन कोई नहीं देखता—छोटी जाति के आदमी, डोम आदि की यदि मृत्यु हो जाय तो किसी को पता भी नही लगता क्योंकि उसके स्थान पर तुरन्त दूसरा आदमी काम पर आ जाता है। इसी प्रकार ब्राह्मण के धन का किसी को पता नहीं लगता क्योंकि बहुत धन होने पर भी वह भीख आदि मांगता रहता है। तुलनीय : गढ़० डोमो, मन्नो अर बिडकों छंदो कोई नी देखद; पंज० डूम दा मरना अते बामन दा पैसा कोई नई देखदा।

डोम किसके गुण गाए दुर्गुण की जब खान—डोम किसी का गुण नहीं गाता क्योंकि वह स्वयं अवगुणी होता है। (क) डोम जाति के प्रति कहते हैं। (ख) जो व्यक्ति सदा सबकी बुराई करे उसके प्रति भी व्यंग्य मे कहते हैं। तुलनीय : राज० गोला किसका गुण करै ओगणगारा आप।

डोम के घर ब्याह, मन आवे सो गा—डोम आदि छोटी जातियों में शादी-ब्याह के अवसर पर बहुत अश्लील गीत गाए जाते है। छोटे लोगों के प्रति व्यंग्य मे ऐसा कहते है जिनके यहाँ बुरे-भले का कोई ध्यान नहीं रखा जाता और मनमाना काम किया जाता है। तुलनीय : पंज० डूम दे कर वयाह जो गाणा ओह गा; ब्रज० डोम के ब्याह मन आवै सो गा।

डोम के साथ पेट भर खाओ चाहे उंगली छुआओ—डोम के साथ पेट भर कर खाने मे भी जातिच्युत होना पड़ेगा और उंगली से छूकर चाटने मे भी। अर्थात् बुरा काम चाहे थोड़ा किया जाय चाहे अधिक, पर बदनामी अवश्य होती है। तुलनीय : राज० टेटरे साथ धाप'र जीमो भावै आंगली भर-भर चाखो।

डोम घर को खाए—डोम जिस घर में रहते हैं उसका शीघ्र नाश हो जाता है। आशय यह है कि (क) जो व्यक्ति नीचतापूर्ण कार्य करते हैं वे शीघ्र नष्ट हो जाते हैं। (ख) जो व्यक्ति डोमों की तरह बैठे-बैठे खाते हैं, पर कमाते कुछ नहीं और उनका परिवार शीघ्र नष्ट हो जाता है। तुलनीय : राज० गेलां घर मेळ दियो; पंज० डूम कर नूं खावे।

डोम डोली पाठक प्यादा—डोम डोली में और पुरोहित पैदल चल रहा है। (क) बुद्धू मालिक को बुद्धिमान नौकर मिले तब कहते है। (ख) समाज की उलटी रीति पर भी कहते हैं।

डोमनी का पूत चपनी बजाय, अपनी जात आप ही जताय—डोम का लड़का, अन्य कोई बाजा न होने से घर की हंड़िया का ढक्कन (चपनी) ही बजाता है जिससे उसकी स्थिति, स्वभाव आदि का पता लग जाता है। आशय यह है कि किसी का जातीय स्वभाव नहीं छूटता।

डोमनी रोवेगी तो भी स्वर में—यदि चारणी (डोमनी) रोयेगी तो भी वह स्वर और ताल में ही रोयेगी। अर्थात् कुशल व्यक्ति हर स्थिति में अपनी कुशलता दिखाता है। साहसी और धैर्यवान व्यक्ति विषम परिस्थितियों को भी अपनी कुशलता से सुगम बना देते है। तुलनीय : हरि० डूम की रोवेगी जिब बी सुरैं में ए रोवेगी; मेवा० डूमड़ी रोवे तो ई राग में।

डोम से हाथ मिलाओ चाहे गले लगाओ—डोम से चाहे हाथ मिलाओ चाहे गले लगाओ दोनों प्रकार से छूत मानी जाती है। बुरे काम को चाहे थोड़ा किया जाय या अधिक दोनों प्रकार से बुरा ही रहता है। तुलनीय : राज ढेढ़ पलो लगावो भावें बाथे पड़ो; पंज० डूम नाल हत्थ मिलाओ पांवें गले लाओ।

डोम हारे अघोरी से—डोम अघोरी से ही हार मानता है। अर्थात् दुष्टों से ही दुष्ट हार मानते हैं।

डोरी ढीली कि बच्चा बिगड़ा—बच्चे की देखरेख में लापरवाही करने से बच्चा बिगड़ जाता है। अर्थात् संतान की देखरेख में लापरवाही नहीं बरतनी चाहिए। तुलनीय : डोरी टिल्लो पुतर बिगड़या।

डोली न कहार बोबी भई हैं तइयार—(क) साधनहीन होने पर भी जब कोई कार्य में तत्परता दिखाता है तब ऐसा कहते है। (ख) बिना बुलाए ही जब कोई किसी के यहाँ जाने की तैयारी करता है तब उसके प्रति भी व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : अव० डोली न कहार बीवी जाय का तैयार; गढ़० जैकी निछै खबर न सार, सो ऐगे डेली द्वार।

डोली में बैठ के कंडे बीने—डोली में बैठ करके सूखे गोबर के टुकड़े (कंडे) इकट्ठा कर रही है। (क) अशोभनीय कार्य करने वाले के प्रति कहते हैं। (ख) अच्छी स्थिति में रहते हुए भी ओछा कर्म करने वाले के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० डौली बिच बैठ के वी गोटे पत्थे।

डोले हथवा, बोले मितवा—हाथ डोलने पर भी अर्थात् कुछ पाने पर ही मित्र भी बोलता है। स्वार्थी मित्रों के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : अव० डोले हथवा तो बोले मितवा।

डोल चिथड़ा की नहीं, हविश कनात की—व्यवस्था तो चिथड़ों की भी नहीं है पर इच्छा क़नात की करते है। बहुत महत्वाकांक्षी व्यक्ति पर व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : अव० डौल चिथड़न के नहीं, हवस कनातन के।

डौल डालकर शामिल हो गए—थोड़ी-सी चीज़ देकर किसी चीज़ में साझी बनने वाले के प्रति कहते हैं।

ढ

ढंढावाला जाड़ा टाला—लकड़ी जलाने से जाड़ा दूर हो जाता है। आशय यह है कि उपाय करने से काम बन जाता है। तुलनीय : पंज० बालण वालया ठंड नू टालया।

ढंढी गाय सदा कलोर—जिस गाय के सींग नहीं होते (ढंढी गाय) वह हमेशा जवान मालूम होती है। वैसे ही छोटे कद के लोग जल्दी बुड्ढे नहीं लगते। और गृहस्थी से मुक्त बिना बाल-बच्चों वाली स्त्री सदा युवती दिखाई पड़ती है। इन्हीं अर्थों में इस लोकोक्ति का प्रयोग होता है। तुलनीय : अव० डूंड़ी गाय सदा कलोरि।

ढकनी में पानी लेकर डूब जा—कृतघ्न व्यक्ति को लज्जित करते हुए क्रोध में कहते हैं कि इस तरह बेशर्मी से जीवित रहने से थोड़े से पानी में जाकर डूब मरना अच्छा है। (ढकनी = मिट्टी का एक छोटा-सा बर्तन जिससे घड़े का मुँह ढका जाता है)। तुलनीय : राज० ढकणी में पाणी लेर डूब ज्या; पंज० चपणी बिच पानी लैके डुब्ब मर।

ढका माल अपना, खुला तो पराया—जब तक माल ढका रहे तब तक ही अपना है और जब सबको पता चल जाय तो उसके चाहनेवाले और भी पैदा हो जाते हैं। अर्थात् जब तक कोई लाभ की बात अपने को ही मालूम हो तब तक कोई उसके संबंध में बात भी नहीं करता किंतु जब सब को पता चल जाता है तो सभी उस पर अपना अधिकार जताने लगते हैं। इसलिए लाभ की बातों को गुप्त रखने में ही भलाई है। तुलनीय : भीन्ची—बांधी मूठी आपनी, खूली मूठी जातनी; पंज० बंद मुट्ठी लख दी खोली तां कख दी।

ढटींगर काहे मोटा, लाहा गने न टोटा—निश्चित आदमियों के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। (ढटींगर = उद्धत, आवारा; लाहा = लाभ; टोटा = हानि)।

ढपोल(र)संख—ऐसे व्यक्ति के प्रति कहते हैं जो बातें बहुत करता है पर किसी काम का नहीं होता। तुलनीय : अव० डपोर संख; हरि० डपोड़ संख; ब्रज० ढपोल संख।

ढब से खेती ढब से न्याय, ढब से हो बूढ़े का ब्याह—खेती ढंग से करने पर होती है और न्याय भी ढंग से ही किया जाता है तथा यदि ठीक ढंग प्रयोग में लाया जाय तो बूढ़े का भी विवाह हो सकता है। आशय यह है कि उचित ढंग से करने से सभी कार्य पूरे हो जाते हैं। तुलनीय : राज० ढबाँ खेती ढबाँ न्याव, ढबाँ हुवै बूढेरो व्यांव।

ढब से खेती, सबूत से न्याय—खेती ढंग से करने पर होती है और न्याय प्रमाण (सबूत) के आधार पर ही किया जाता है। तुलनीय : राज० ढबाँ खेती पुरावाँ न्याव।

ढब से खेती होय—खेती यदि ठीक ढग से की जाय तभी होती है नहीं तो परिश्रम व्यर्थ जाता है। तुलनीय : राज० ढबाँरी खेती है।

ढलती फिरती छाँह है—मनुष्य की अवस्था की परिवर्तनशीलता पर कहते हैं।

ढाई अक्षर प्रेम के पढ़े सो पंडित होय—आशय यह है कि मनुष्य यदि परस्पर प्रेम न करे और केवल पुस्तकों का ज्ञान अर्जित करके स्वयं को विद्वान समझे तो मूर्खता है। मानव-प्रेम से बढ़कर और कोई ज्ञान नहीं है।

ढाई ईंट की मस्जिद बनाते हैं—मनमाना कार्य करने वाले के प्रति कहते है।

ढाई के दो कर दे, नाम दरोगा धर दे—वेतन कम कर दो लेकिन नाम दरोगा रख दो। वेतन से अधिक पद-प्राप्ति का मोह रखनेवाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : कौर० ढाई के दो कर दे नाम दरोगा धर दे।

ढाई चावल की खिचड़ी अलग पकाते हैं—मनमाना कार्य करने वाले को कहते हैं। तुलनीय : अव० अढ़ाई चाउर अलगै चुराते हैं; पंज० टांई चोलां दी खिजड़ी बखरी बनांदे हन; ब्रज० टाई चामर की खीचरी अलग पकामें।

ढाई पाव का भात लाई, गाँव के भूड़ों पर गाती आई—ढाई पाव चावल के भात को गाँव के ऊंचे टीलों (भूड़ों) पर चढ़कर गाती हुई लेकर आई। (क) ओछे व्यक्ति के प्रति

कहते हैं जो थोड़ी-सी चीज़ को लोगों को दिखाते फिरता है। (ख) ननद भी अपनी भावज (भाभी) के प्रति व्यंग्य में कहती है। तुलनीय : कौ०ग० ढाई पा का भात्त लाई, भूडों पै तै गाती आई।

ढाई हाथ ककड़ी नौ हाथ बीज—बहुत अधिक झूठ बोलने वाले के प्रति व्यंग्य मे कहते है। तुलनीय : गढ़० ढाई हाथ काखड़ी नौ हाथ बीज; पंज० टाई हत्थ दी ककड़ी नौ हत्थ दा बी।

ढाक के तीन पात (क) किसी मनुष्य के सदा एक ही हालत मे रहने पर कहा जाता है। (ख) सबसे छोटे कर्मचारी पर भी कहते है जिसकी तनख्वाह कभी नहीं बढ़ती। तुलनीय : अव० ढाक के तीन पत्ता; हरि० वँहे ढाक के तीन पात; मग० पल्माला पाते तीन; ब्रज० ढाक के तीन पत्ता।

ढाक के वही तीन पात- ऊपर देखिए।

ढाक के सदा तीन पात—दे० 'ढाक के तीन पात।'

ढाक तले की फूहड़ महुए तले की सुघड़ - ढाक के नीचे बैठने वाली को फूहड़ कहते है क्योंकि ढाक के नीचे बैठन से न तो छाया मिलती है और न कुछ खाने को ही मिलता है; और महुए के नीचे बैठने वाली को सुदर (सुघड़) कहते हैं क्योंकि वहाँ छाया और खाना दोनों मिलते हैं। आशय यह है कि निर्धन का साथ करने वाला मूर्ख और सपन्न का साथ करने वाला चतुर समझा जाता है।

ढाके के बंगाल, कूजे के कंगाल- -यदि किसी स्थान पर किसी वस्तु की बहुतायत हो और वह वहीं के आदमियों को न मिले तब कहते है। (कूजा = प्याला)।

ढाल तलवार सिराहने, और चूतड़ बंदीखाने—हथियार तो पास ही है, पर लडने की हिम्मत नही है। डरपोक व्यक्ति के प्रति कहते हैं।

ढाल में शेर- असंभव बात पर कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० ढाल में नाहर।

ढिल ढिल बेंट कुदारी, हँसि के बोले नारी; हँसि के माँगें दामा, तीनों काम निकामा - ढीले बेंट की कुदाल, हँसकर बोलने वाली स्त्री और हँसकर दाम माँगने वाला—ये तीनों अच्छे नहीं समझे जाते।

ढीठ पतोहू पिया गरियार, खसम बेशेर न करे विचार; घरे जलावइ अन्न न होइ, घाघ कहे सो अभागिन जोइ-—घाघ कहते हैं कि वह स्त्री अभागिन है जिसकी बहू ढीठ हो, पुत्री आलसी, पति मूर्ख और निर्दयी तथा घर में खाने के लिए अन्न और जलाने के लिए इंधन न हो।

ढील छोड़े सो खींच मरे—पतंग को यदि बहुत ढीली छोड़ दिया जाय तो उसको नीचे खीचने में बहुत परेशानी होती है। आशय यह है कि किसी कार्य को ढीला छोड़ दिया जाय तो बाद में उसमे समय तो अधिक लगता ही है साथ ही परिश्रम भी अधिक करना पड़ता है। अर्थात् लापरवाही से हानि उठानी पड़ती है। तुलनीय : माल० लाँबी मेल्याँ लार मेले।

ढढ लाओ बता देंगे— ढढ कर लाओ तो उसका पता बता देंगे। मूर्ख बनाने वाले या बिना परिश्रम किए नाम कमाने वाले के प्रति व्यंग्य मे कहते है। तुलनीय : पंज० लब्ब लआयो तां दस्सांगे।

ढेड़-ढेड़ से ही मानता है - दुष्ट या नीच अपने जैसे लोगों से ही ठीक रहते है। (ढेड़- एक निम्न जाति)।

ढेड़नी नहीं बोलती, घर में गड़ा बरतन बोलता है - ढेड़नी नहीं बोलती, उसके घर मे गड़ा हुआ धन का बर्तन बोलता है। आशय यह है कि धन पाने पर गर्व होना स्वाभाविक है। इस लोकोक्ति के संबंध मे एक कहानी कही जाती है : एक ढेड़नी किसी धनवान के पास गई और उससे प्रार्थना की कि अपनी लड़की का विवाह उसके लड़के से कर दे। यह सुनकर धनी को बहुत आश्चर्य हुआ कि इसकी हिम्मत कैसे हुई इतनी बात कहने की। उसने सोचा कि इसके पास कहीं-न-कहीं से अपार धन आया है जिससे इसका दिमाग चकरा गया है। इसलिए धनी मजदूरों को लेकर उसके घर गया और उसकी चारपाई के नीचे की भूमि खुदवाई। वहाँ गड़ी अपार संपत्ति को देखकर धनी की आँखे चुँधिया गई और उसने उक्त लोकोक्ति कही। तुलनीय : राज० ढेढणी काई बोलै जमी मांयलो चरर बोलै है।

ढेंड़म और कद्दू, लानत बा हर दू - दोनों पर लानत। जब दो व्यक्ति आपस मे लड़ रहे हों और दोनों एक से बुरे हो तो कहते हैं। (यह फ़ारसी की कहावत है)।

ढेबुआ ना कौड़ी सलाम करे छउड़ी—पास मे पैसा तो है नही, लड़की सलाम कर रही है। उक्त कहावत किसी साधनहीन व्यक्ति को लक्ष्य करके कही जाती है।

ढेर गिहथिन माठा पातर—कई स्त्रियाँ (गृहस्थिन = गिहथिन) मिलकर यदि मठा बनाये तो वह अवश्य ही पतला अर्थात खराब हो जाता है। जिस काम के करने में कई आदमी लग जाते हैं, वह बिगड़ जाता है। बहुतों की ज़िम्मेदारी किसी की भी नहीं रह जाती। तुलनीय : अं० Too many cooks spoil the broth.

ढेर जोगी मठ का उजाड़—ऊपर देखिए। तुलनीय :

मैथ० मुलकुन योगी मठ उजार; भोज० अधिका जोगी मठ क उजार।

ढेर हुँशियार तीन जगह चुपड़ें---बहुत अधिक चालाक बहुत धोखा खाते हैं। जो व्यक्ति अपने आपको बहुत चालाक समझता है और किसी की बात नही मानता, जब कही हानि मे पड़ जाता है तब उसके प्रति व्यग्य में कहते है।

ढेले ऊपर चील जो बोलै, गली-गली में पानी डोले--यदि मिट्टी के ढेले पर बैठकर चील बोले तो समझना चाहिए कि काफ़ी वर्षा होगी।

ढेले पत्ते का कौन साथ--दो ऐसे व्यक्तियों का साथ संभव नही है जिनकी प्रकृति या स्थिति एक-सी न हो। ढेला और पत्ता यदि साथ करे तो पानी बरसने पर ढेला गल जाएगा और पत्ते को अकेला रह जाना पड़ेगा और आंधी आने पर पत्ता उड़ जायेगा और ढेला अकेला हो जायेगा।

ढोकी बोले जाय अकास, अब नाहीं बरखा की आस--यदि वन मुर्गी (ढोकी) उड़कर बोला समझना चाहिए कि वर्षा की आस आशा है।

ढोय टोकरी गावें गीत--ढोते टोकरी है और गा रहे है गीत। बेमेल काम करने वाले के प्रति व्यग्य। तुलनीय : पंज० ढौण टोकरी गाण गीत।

ढोर मरे कूकुर हरषाय--पशु के मरने पर कुत्ते प्रसन्न होते है क्योंकि उनको खाने का मांस मिलता है। तात्पर्य यह है कि नीच व्यक्ति दूसरों की हानि पर प्रसन्न होते हैं और उससे लाभ उठाना चाहते है। तुलनीय : पंज० डंगर मरण कुत्ते हसण।

ढोर मरे न कौवा खाय---झूठी आशा दिलाने वाले पर कहते है।

ढोर से चिल्लाते हैं---पशु जैसे चिल्ला रहे हैं। ज़ोर से बोलने वाले या कर्कश आवाज़ वाले के प्रति कहते है। तुलनीय : पंज० डंगरा बरगे चींकदे हन।

ढोल के भीतर पोल--जहाँ बाह्य दिखावा बहुत हो पर आंतरिक स्थिति ठीक न हो, वहाँ व्यग्य मे ऐसा कहते है। तुलनीय : अव० ढोल के भितरे पोल; गढ़० ढोल की पोल खुलीगे।

ढोल न ढाक हर-हर गीत---जब बिना किसी आवश्यक वस्तु के ही कोई कार्य आरंभ किया जाय तो कहा जाता है।

ढोल बजे दमामे बजे--जब किसी बुरे आदमी के आचरण से पहले थोड़े आदमी ही अवगत हों और बाद में बहुत से लोग अवगत हो जायें तो कहा जाता है।

ढोल में पोल---दे० 'ढोल के भीतर पोल।' तुलनीय : बुंद० ढोल के भीतर पोल; राज० ढोल में पोल; माल० ढोल में पोल।

ढोवे के टोकरी गावे के गीत---दे० 'ढोय टोकरी····'।

त

तंगी के साथ फ़राख़ी और फ़राख़ी के साथ तंगी लगी हुई है--दरिद्रता (तंगी) के साथ संपन्नता (फ़राख़ी) और सुख के साथ दुख लगा हुआ है। (क) जीवन मे सुख-दुख आता रहता है। (ख) प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में सदैव सुख या निरन्तर दुख नही रहता। कभी वह किसी क्षेत्र में सुखी होता है तो कभी दूसरे क्षेत्र मे दुखी।

तंगी गई फ़राख़ी आई---दुख के बाद सुख या ग़रीबी के बाद अमीरी आती है। अर्थात् बुरे दिन हमेशा नही रहते।

तंदुरुस्ती हजार नियामत--तंदुरुस्ती बहुत बड़ी चीज़ है। तंदुरुस्ती है तो सब कुछ है। तुलनीय : तेलु० आरोग्यम महाभाग्यम्, पंज० सेहत है तो सब कुज है; सि० एक तंदरुस्ती हजार नियामत; अं० Health is Wealth.

तंदुरुस्ती हजार न्यामत : ऊपर देखिए।

तई की तेरी घई की मेरी--दे० 'तवे की तेरी हाथ की मेरी।' तुलनीय : पंज० तवे दी तेरी ते हथ दी मेरी; ब्रज० तये की तेरी गहे की मेरी।

तक़दीर के आगे नहीं तदबीर की चलती--भाग्य के सामने उद्योग काम नही करता। भाग्य बड़ा प्रबल है। तुलनीय : गढ़० तकदीर का अगाड़ी तदबीर क्या कर सकदी; हरि० तकदीरो मे हो मिलजा, न हो न मिले; अव० तकदीर कै आगे तदबीर नाही चलत; सं० भाग्यं फलति सर्वत्र न च विद्या न च पौरुषम्; पंज० : होनी नू कोई नहीं टाल सकदा।

तक़दीर के लिखे को तदबीर क्या करे--ऊपर देखिए।

तक़दीर सीधी है तो सब कुछ---भाग्यवान् के लिए सभी सुख है। तुलनीय : अव० तकदीर सीध है तो सब कुछ अहै; पंज० होनी चंगी ते सब चंगा।

तक़दीरों बाज़ी है--हार और जीत भाग्य से ही होती है। तुलनीय : गढ़० भागें भताक कर्में लटाक; उ० शिकस्त-ओ-फ़तह तो क़िस्मत से है वले ऐ 'मीर'।

तकले का-सा बल निकल गया---जब टेढ़ा व्यक्ति दंड पाने के बाद सीधा हो जाता है तो कहते है।

तकल्लुफ़ में रेल चल दी---सीमा से अधिक शिष्टा-

चार करने से हानि होती है। इस सम्बन्ध में एक कहानी कही जाती है: दो सज्जन जो तक्ल्लुफ़ के बहुत क़ायल थे टिकट ले कर प्लेट फार्म पर पहुंचे। एक ने कहा 'चढ़िए।' दूसरे ने कहा, 'अरे भला कैसी बात करते हैं, पहले आप चढ़िए।' दोनों आदमी इसी प्रकार कहते रहे और गाड़ी चली गई।

तकल्लुफ़ में है तकलीफ़ सरासर अत्यधिक शिष्टता और विनम्रता व्यावहारिक दृष्टि से कष्टकर सिद्ध होती है।

तक़ाज़े का हुक़्क़ा भी नहीं पिया जाता --उधार की चीज़ बहुत बुरी होती है।

तका पराया हाथ और गया नरक—दूसरे के भरोसे बैठे और काम बिगड़ा। जीवन में आत्म-निर्भरता ही साथ देती है, मुखापेक्षिता मनुष्य को अकर्मण्य और समाज में हीन बना देती है।

तख़्त पर बैठे या तख़्ते पर लेट जाए – जीवित रहे तो इज़्ज़त से नहीं तो मर जाय। आशय यह है कि अपमान की ज़िंदगी कोई ज़िंदगी नहीं होती, उससे अच्छा तो मर जाना ही है।

तख़्ती पर तख़्ती मियांजी की आई कमबख़्ती— प्राइमरी स्कूल या मक्तब आदि में पढ़ने वाले विद्यार्थी कहते है। लोगों का विश्वास है कि तख़्ती पर तख़्ती रखा जाना शिक्षक के लिए अशुभ है। यह भी एक प्रकार का अपशकुन है, जैसे जूते या पीढ़े का उलटना या नाखून से ज़मीन कुरेदना आदि।

तज-गज मुक्ता भीलनी, पहिरत गुंजा हार- भीलनी गज-मुक्ता को छोड़कर गुंजा की माला पहनती है। (क) जो जिसे पसद होता है, वही वह करता है। (ख) मूर्ख अच्छी चीज़ों को नहीं जानते और न उनकी क़द्र ही करते हैं।

तजल्ली को तकरार नहीं-- जो चीज़ आँख के सामने है उसके लिए प्रमाण की आवश्यकता नहीं। तुलनीय: सं० प्रत्यक्ष किं प्रमाणम्; पंज० अन्ने नू की चाहिदा दो आखाँ।

तटादर्शि शकुन्तपोत न्याय – तट को देख पाने वाले पक्षि शावक का न्याय। समुद्र के मध्य में बहते हुए काष्ठ-खण्ड पर बैठा पक्षिशावक तट को नहीं देख पाता। तट तक पहुँचने के लिए वह बार-बार बहते हुए काष्ठ-खण्ड से उड़ता है पर तट के न दिखाई देने पर वह पुनः उसी बहते हुए काष्ठ पर जाकर बैठ जाता है। तात्पर्य है कि आपत्ति-काल में छोटा सम्बल भी ग्राह्य है।

तड़के का भूला साँझ को आ जाए तो भूला नहीं कहाता —सुबह (तड़के) का भूला यदि शाम (साँझ) को घर लौट आए तो उसे भूला नहीं कहते। यदि कोई व्यक्ति अपने आचार-व्यवहार में सुधार कर ले तो उसे ग़लत नहीं कहते। तुलनीय: हरि० तड़के का भूल्या सांझ ने घरां आजा तै भूल्या नहीं जाणिये; पंज० सबेर दा भूल्या साम नू घर आवे ते ओनूं भूल्या नहीं कहंदे।

तन छिन नीर न लीजिए जो रति कीजै बाम—संभोग करने के तुरन्त बाद पानी पीना हानिकारक है।

ततड़ी ने दिया जनमजली ने खाया, जीभ जली और स्वाद न आया –(क) जब दो अभागे अपने-अपने काम के लिए एक दूसरे से सहयोग करें पर किसी का भी कोई लाभ न हो, उलटे हानि हो तो कहते हैं। (ख) जब कोई व्यक्ति कोई खाने की चीज़ बहुत कम दे तो भी कहते हैं। (ततड़ी=जली हुई, दुख से पीड़ित)। तुलनीय: पंज० सड़ी दी ने दिता ते फकोयी दी ने खादा, जीभ सड़ी तांवी सुआद न आया।

ततैया से नाचते फिरते हैं— बहुत चंचल व्यक्ति के प्रति कहते हैं जो सदा इधर-उधर दौड़-धूप करते रहते हैं। तुलनीय: ब्रज० ततैया की तरह नाचत डोलें।

तत्ता कौर निगलने का न उगलने का—(क) जब किसी काम के न करने और करने दोनों में कष्ट हो तो कहते है। (ख) किसी को अपनाने या न अपनाने दोनों में ही कष्ट हो तो भी कहा जाता है। (तत्ता – गर्म)। तुलनीय: पंज० तत्ता गरा खानदा न उगान दा; ब्रज० तातौ कौर निगलिबे कौ न उगलिबे कौ।

तत्ती खिचड़ी घी न पाया, अब का सियाला यों ही गंवाया – दीनता के सम्बन्ध में कहते है। दीन व्यक्ति समय पर अपेक्षित चीज़ों की प्राप्ति नहीं कर पाता। खिचड़ी प्रायः जाड़े में खाई जाती है और घी डालने से ही उसका स्वाद आता है पर ग़रीब कहता है कि गर्म खिचड़ी में घी न डाला और इस वर्ष का जाड़ा (सियाला) योंही बीत गया। तुलनीय: पंज० तत्ती खिजड़ी बिच क्यो न पाया हुन दा सयाला एवें गुआया।

तत्स्थानापन्ने तद्धर्म लाभः—उसके (किसी आदमी के) स्थान को ग्रहण करने वाला उसके द्वारा किए जाने वाले कार्यों का उत्तरदायित्व भी लेता है।

तदपि कठिन दसकंठ सुनु, छत्रि जाति कर रोष – हे रावण! फिर भी क्षत्रिय वंश का क्रोध कठिन होता है।

क्षत्रियों पर कहते हैं क्योंकि वे जरा सी बात पर क्रोधित हो जाते हैं।

तदागमे हि तद्दृश्यते इति न्याय—एक विशिष्ट वस्तु के गोचर होने पर अन्य विशिष्ट वस्तु प्रकट होती दिखाई पड़ती है। तात्पर्य यह है कि दो सम्बन्ध वस्तुएँ एक साथ ही प्रकट होती हैं।

तन उजला मन सांवला बगले का सा भेख—कपटी या ढोंगी मनुष्य के लिए कहा जाता है। तुलनीय : पंज० बारों चिट्टा अंदरो काला, बगले जिहा रूप; ब्रज० तन उजलो मन सामरो बगुला को सो भेस।

तनक को मनक करते हैं—थोड़े को (तनक) मन भर (मनक) बना देते है। (क) गप्पी मनुष्य के प्रति कहते हैं। जब वह छोटी-सी बात को बहुत बढ़ा-चढ़ा कर बताता है। (ख) झगड़ालू मनुष्य के प्रति भी कहते हैं क्योंकि वह भी जरा-सी बात पर लड़ने के लिए बात का बतंगड़ बना देता है।

तन कसरत में मन औरत में—दो विरोधी काम एक साथ नहीं हो सकते। जब कोई परस्पर विरोधी काम करता है तो कहते है। तुलनीय : पंज० आप इथे ते दिल उथे।

तनक सी कहानी सारी रात—छोटी-सी कहानी कहने में पूरी रात बिता दी। जब कोई व्यक्ति किसी छोटे या साधारण काम में बहुत अधिक समय लगा देता है तब उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : पंज० मासा जिही बात ते सारी रात; ब्रज० तनक सी कहानी सबरी रात।

तनक-सी छोरी, नौ मन काजल—छोटी-सी (तनक-सी) लड़की (छोरी) है और नौ मन काजल लगा रखा है। जब कोई आवश्यकता से अधिक किसी वस्तु का प्रयोग करता है तब कहते हैं। तुलनीय : पंज० मासा जिही कुड़ी ते नौ मन तेल; ब्रज० तनक सी छोरी नौ मन काजर।

तन को कपड़ा न पेट को रोटी—(क) ग़रीब व्यक्ति के प्रति कहते हैं या ग़रीब अपने को कहता है। (ख) स्त्रियाँ भी चैन से न रखे जाने पर कहती है। तुलनीय : अव० तन का कपड़ा नाही पेट का रोटी नहीं; पंज० लान वास्ते टल्ला नहीं ते खान वास्ते टुकड़ा नहीं; ब्रज० तन कूं कपड़ा न पेट कूं रोटी।

तन गुदड़ी मन धागा, कोई कुछ ही लखे मन लागा—साधु लोग कहते हैं। आशय यह है कि उनमें कोई कुछ भी देखे, उनका मन तो भगवान् में लगा रहता है।

तन तकिया अरु मन विश्राम, जहाँ पड़ रहें वहीं आराम—साधुओं पर लोग कहते हैं। जब उन्होंने जिंदगी की चिंताएं छोड़ दी हैं तो उनके लिए सर्वत्र चैन ही चैन है।

तन ताजा, क़लंदर राजा—पेट भरने पर साधु या भिखारी (क़लंदर) भी अपने को राजा समझता है। (क) पेट भरने पर सभी आनंद का अनुभव करते हैं। (ख) स्थिति में थोड़ा सुधार होने पर जब निर्धन व्यक्ति इतराने लगते हैं तब उनके प्रति भी व्यंग्य में कहते हैं।

तन दे मन ले—परिश्रमी व्यक्ति सभी को आकर्षित कर लेते हैं।

तन दो मन एक—तन तो दो हैं किंतु दोनों का हृदय एक है। जिन दो व्यक्तियों में बहुत अधिक प्रेम हो उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० धड़ दोय मन एक; फ़ा० एक जान दो क़ालिब।

तन पर चीर न घर में नाज, दद-ससुरे का रोपा काज—तन पर न तो वस्त्र (चीर) हैं और न घर में अनाज (नाज) है, फिर भी ददिया सुसर का श्राद्ध करने जा रहे हैं। जब कोई अपनी सामर्थ्य से बाहर का काम करता है तब उसके प्रति कहते हैं।

तन पर न लत्ता जा रहे कलकत्ता—(क) अपनी स्थिति न देखकर सैर-सपाटे करने वाले दरिद्र पर कहते हैं। (ख) डींग हाँकने वाले पर भी कहते है। तुलनीय : छतीस० तन बर नइ ए लत्ता, जाए बर कलकत्ता; पंज० कोल नहीं टल्ला जाण लगे कलकत्ता; ब्रज० तन पै नायें लत्ता, जाय रहे कलकत्ता।

तन पर नहीं धागा, नाम चन्द्रभागा—जब नाम के अनुसार स्थिति या गुण न हों तो व्यंग्य में कहते हैं।

तन पर नहीं लत्ता, घूमे कलकत्ता—दे० 'तन पर न लत्ता…'।

तन पर नहीं लत्ता पान खायें अलबत्ता—अपनी हैसियत का ध्यान न कर बहुत अधिक टीम-टाम से रहने वाले पर व्यंग्य में कहा जाता है। तुलनीय : अव० तन पर नाही लत्ता, पान खायँ अलबत्ता; कौर० तन पै नही लत्ता, पान खायँ अलबत्ता; पंज० लान नूं नयीं टल्ला पान खाण अलबत्ता।

तन पुतला है खाक़ का इसे देख मत फूल—शरीर की नश्वरता पर कहा जाता है कि यह तो खाक (मिट्टी) का पुतला है किसी भी समय नष्ट हो जाता है। आशय यह है कि सौंदर्य अथवा संपत्ति पर अभिमान नही करना चाहिए।

तन पै नहीं लत्ता पान खायँ अलबत्ता—दे० 'तन पर नहीं लत्ता …'।

तन फूहर का भेंस से भारी, कहै कहो मोहिं नाजो

प्यारी—जब कोई बदशक्ल स्त्री अपने शरीर या अपने सौंदर्य पर नाज़ करती है तो कहते हैं।

तन बाँधा जा सकता है, मन नहीं—किसी के तन को वश में बल या दबाव से किया जा सकता है, किंतु हृदय को नहीं। जब बार-बार मना करने के बावजूद कोई दुष्कर्म को नहीं छोड़ता तब कहते हैं। तुलनीय : गढ़० पुंगड़ा बाड़ ह्वैं जांदी पर हियड़ा बाड़ नि ह्वैं सकदी; पंज० सरीर नूं बनया जा सकदा है मन नू नही; ब्रज० तन बांध्यौ जाइ सकै मन नहीं।

तन लगी धुपड़ी, तो बलाय छाय झुपड़ी—(क) जब आवश्यकता हो तो काम हो जाता है, आवश्यकता बीत जाने पर नही। इस संबंध में एक कहानी है : कोई बुढ़िया थी जिसके पास मकान नहीं था। रात को जाड़ा लगा तो उसने सोचा कि सबेरे अवश्य झोपड़ी छा लूंगी। पर जब किसी तरह सबेरा हुआ तो धूप लगते ही वह झोंपड़ी का छाना भूल गई। (ख) कोई व्यक्ति वर्तमान सुखों का आनंद लेने में व्यस्त हो और आने वाले दुखों से बचने का उपाय न करे तो भी कहते हैं।

तन शीतल हो शीत सूं, मन शीतल हो मीत सूं—शरीर ठंड (शीत) से ठंडा होता है और मन मित्र से। आशय यह है कि मित्र से मिलने पर काफ़ी आनंद आता है। (यह मारवाड़ी की कहावत है)। तुलनीय : राज० तन सीतल हो सीतसूं मन सीतल हो मीत सूं।

तन सुखी तो चैन है, ना तो दुख दिन रैन है—शरीर स्वस्थ है तो सुख है, नहीं तो दिन-रात दुःख ही दुःख है। अर्थात् स्वस्थ रहना सबसे बड़ा सुख है।

तन सुखी, तो मन सुखी—शरीर के स्वस्थ रहने पर ही मन प्रसन्न रहता है। तुलनीय : पंज० सरीर सुखी ते दिल सुखी।

तनिक-सी चींटी साँप को खाय—हिम्मत करने वाला क्या नहीं कर सकता ? अर्थात् निर्बल व्यक्ति भी साहस और प्रयत्न से बली को परास्त कर सकता है। तुलनीय : पंज० मासा जिही कीड़ी सप नू खाय।

तनूर बाजी, और अल्लाह राजी—भोजन के नाम पर भगवान भी खुश हो जाते हैं, तो फिर मनुष्य का क्या पूछना ? (तनूर = तंदूर)।

तने क्यों चलते हैं, भाई पहलवान हैं—किसी के बनावटीपन पर या उसकी श्रेष्ठता देखकर व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० उतान काहें चलेल भाई, सिरहां नं हउअं; पंज० टौर नाल क्यों चलदे हो परा पैलवान है।

तपा जेठ में जो चुइ जाय, सभी नखत हल्के परि जायँ—यदि जेठ माह में दसतपा में पानी बरस जाता है तो बाक़ी सब नक्षत्र हल्के पड़ जाते हैं। अर्थात् उक्त दशा में वर्षा बहुत कम होती है। (दसतपा—मृगशिरा के अन्तिम दस दिन को कहते हैं)।

तपा तप रहे हैं—बहुत गर्मी पड़ रही है। जेठ के दशहरे से जेठ सुदी पूर्णिमा तक के दिनों में भीषण गर्मी पड़ती है उन्हीं के लिए कहते हैं।

तपे जेठ, तो बरखा हो भर पेट—जेठ के महीने में यदि गर्मी ख़ूब पड़े तो उस वर्षा ऋतु में पानी ख़ूब बरसता है। तुलनीय : ब्रज० तपै जेठ, तौ बरसै भरि पेट।

तपे नखत मृगसिरा जोय, तब बरसा पूरन जग होय—मृगशिरा नक्षत्र में अगर गर्मी ज्यादा पड़े तो उस वर्ष पानी ख़ूब बरसता है।

तपे मृगसिरा बिलखें चार, बन बालक औ भैंस उखार—मृगशिरा नक्षत्र का तपना, कपास, बालक, भैंस और ईख के लिए अच्छा नही। कपास और ईख की फ़सल अच्छी नही होती। मां और भैंस का दूध कम हो जाता है।

तप्तायः पीताम्बुतव् न्यायः—तपते हुए लौह द्वारा पीए हुए जल का न्याय। जब किसी की आवश्यकता बहुत हो और थोड़ी ही प्राप्ति हो तब इसका प्रयोग करते हैं।

तब की तब पर छोड़ो—भविष्य की व्यर्थ में चिंता नही करनी चाहिए। (क) जो हमेशा भविष्य के विषय में सोचते रहते है उनके प्रति कहते हैं। (ख) निश्चिंत लोग भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० अदों दी छड्डो।

तब लग झूठ न बोलिए, जब लग पार बसाय—(क) जब तक वश चले झूठ नहीं बोलना चाहिए, विवशता की बात ही अलग है। आशय यह है कि झूठ बोलना ठीक नहीं है और उससे बचने का अधिक से अधिक प्रयत्न करना चाहिए।

तब लौं झूठ न बोलिए जब लौं चले बसाय—ऊपर देखिए।

तब सुजान जानो तुम्हें, जब जानो पर पीर—मैं तुम्हें सज्जन तभी समझूंगा जब तुम दूसरों के कष्टों को समझोगे। आशय यह है कि सज्जन व्यक्ति ही दूसरे के दुखों को समझते हैं।

तब लग ही जीबो भलो दीबो परे न धीम—तभी तक जीना अच्छा है जब तक दूसरों की भलाई कर सके। आशय यह है कि जो परोपकारी नहीं होते उनका जीवन व्यर्थ है।

तबेले की बला बन्दर के सिर—जब कोई अपना दोष

किसी दूसरे पर लगाता है तब कहते हैं। तुलनीय : मरा० तबेल्याची रोग राई माकडाच्या कपाली; अव० मकु एहि खोज होइ निसि आई, तुरें रोग माथे जाई।—जायसी हर्षचरित में भी इसका उल्लेख है। इसका आशय यह है कि यह अंधविश्वास पर्याप्त पुराना है। छत्तीस० छोड़वा के रोगबें दरवा मां जाय; मल० चुट्टिक अटिच्चु कयट्टियातेनुं आणिक्को शिक्ष; ब्रज० : तबेले की बला बन्दर के सिर; अं० : The fault of the horse is put on the saddle.

तमाखू के साथ गुड़ जले—तम्बाकू (तमाखू) के साथ गुड़ भी जलता है। अर्थात् बुरों की संगति से भलों का भी बुरा होता है। तुलनीय : राज० गुल लारे तमाखू बलै; पंज० तमाकू कन्ने गुड़ मडे।

तमाचा मारे मुँह लाल रखते हैं—ग़रीब होने पर भी ऊपर से ठाठ-बाट बनाए रख कर अपनी ग़रीबी छिपाने वाले के प्रति व्यंग्य में कहते है। तुलनीय : अव० तमाचा मार मुह लाल राखत है; पंज० : चडा मार के मुह लाल राखदे हन।

तमोदीपन्याय:—अंधकार और दीपक का न्याय। दीपक की सहायता से अन्धकार को खोजने का तात्पर्य है कि प्रमाण की सहायता से अज्ञान को पहचानना

तमोली के घर पान तो बकरिन के न चारा देय—तमोली के घर पान बहुत होता है तो वह उन्हें अपनी बकरियों को नही खिलाता। आशय यह है कि जिसके घर मे जिस चीज़ की बहुतायत होती है उसे वह व्यर्थ में लुटाता नही।

तरकश में तो तीर नहीं पर शरमा शरमी लड़ते हैं—निराशा की स्थिति में भी अपनी झेंप मिटाने के लिए या लाज रखने के लिए थोड़ा बहुत करने वाले पर कहते हैं।

तर खाने को साधु हुआ, पहले दिन ही भूखा रहा—साधु तो बने थे अच्छे-अच्छे पकवान खाने के लिए, किन्तु पहले ही दिन भूखे रहना पड़ा। जब कोई किसी कार्य को बहुत लाभ की आशा से करे और आरंभ में हानि हो जाए तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : गढ़० भौत खाणकू जोगी होया, पैल्या बासा भूखा रया।

तरघुन्ना से काम पड़ा है—ऐसे व्यक्ति के प्रति कहते हैं जो ऊपर से देखने में बहुत सीधा-सादा मालूम हो और अन्दर से काफ़ी चालाक हो तथा जिसके साथ अपनी कोई चालाकी काम न कर सके।

तर तेल ना ऊपर नून—अत्यधिक ग़रीबी का उल्लेख है। (नून = नमक, तर = नीचे)।

तर धार ऊपर धार—बहुत अधिक पानी बरसने पर कहते हैं।

तराज़ू से खड़े होकर न तोलो, बरकत जाती है—ऐसा लोक विश्वास है कि खड़ा होकर तराज़ से तोलने से लाभ (बरकत) नहीं होती। तुलनीय : पंज० तरकड़ी बिच खलो बार न तोलां पूरी नहीं पेंदी।

तरुवर आछा छाँवला औ रूप सुहाना साँवला—वृक्ष छायादार (छाँवला) और व्यक्ति साँवला अच्छा माना जाता है। (साँवला = न बहुत गोरा न बहुत काला; आछा = अच्छा)।

तरुवर फल नहीं खात हैं, सरवर पियहिं न पानि—वृक्ष फल नहीं खाते हैं और सरोवर अपने जल को नहीं पीते हैं। अर्थात् परोपकारी व्यक्ति अपने धन का स्वय उपभोग नहीं करते, वे दूसरों को भी देते है।

तल (तरे) धरती ऊपर राम—नीचे धरती माता है और ऊपर भगवान। यह लोकोक्ति क़सम खाने के लिए कही जाती है। तुलनीय : अव० तर धरती उपरा राम।

तल मुंड़िया, पताल ढुंढ़िया—चोर या बदमाश को कहते हैं जो सिर नीचा किए अपने शिकार की तलाश में रहते हैं।

तलवा में चमके तलही मछरिया, रन में चमके तरुवार नंबुआ चमके सइयां के पनगड़ियां, सेजिया पर बिंदिया हमार—हर चीज़ अपने स्थान पर ही शोभित होती है, अन्यत्र नहीं।

तलवार का खेत हरा नहीं होता—(क) तलवार का कटा व्यक्ति फिर नहीं जीता। (ख) किसी की बलात् ली हुई वस्तु लाभ या सुख नहीं देती। तुलनीय : पंज० चोरी दी चीज कदीं सुख नही देंदी।

तलवार का घाव भर जाता है, पर जबान का नहीं—नीचे देखिए।

तलवार का घाव भरता है, पर बात का नहीं—बड़े से बड़ा घाव भर जाता है किन्तु कड़वी और चुभने वाली बात कभी नही भूलती। उसका घाव सर्वदा हरा रहता है। तुलनीय : गढ़० हथ्यारु का घौ मौल जांदा पर वचन घौ नि मौलदा; मरा० तलवारीचा घाव भरून निघतो, शब्दाचा घाव बुजत नहीं; भोज० तलवार क घाव भर जाला बाकी बात क घाव नाहीं भरे; अव० तलवार कै घाव पूर जात है मुला बात के घाव नाहीं पूरत; मल० कटुवचनम् एल्लाय्पोषुम् असह्यमाणु; अं० Wounds caused by

words are hard to heal.

तलवार किसकी, मारेगा उसकी (क) जिसके पास जो चीज़ होती है वह उसी के काम आती है। (ख) वस्तुतः कोई चीज़ उसकी नहीं होती जिसके अधिकार में वह है, वह उसकी होती है जो उसका उपयोग करे। (ग) बलवान का ही सभी चीज़ों पर अधिकार होता है कमज़ोर का नहीं। यदि एक तलवार कमज़ोर के पास है तो वास्तव में उसके पास नहीं है या उसकी नहीं है। क्योंकि यदि किसी बलवान से उसका विरोध हो तो बलवान तलवार छीन कर उसी को मार सकता है और इस प्रकार वह तलवार उस बलवान की है न कि कमज़ोर की।

तलवार की आँच के आगे बिरले ही ठहरते हैं– आशय यह है कि कठिन परिस्थितियों का सामना बहुत कम लोग कर पाते हैं।

तलवार के धार से वीर करें प्यार वीर मृत्यु से नहीं डरते।

तलवार के घाव से बचन का घाव बड़ा—दे० 'तलवार का घाव भरता है...।'

तलवार के नीचे (तले) दम तो लेने दो—(क) ज़रा प्रतीक्षा करो। (ख) जो दम बचे वही सही। (ग) जीवन इतना सुन्दर है कि चाहे कितने ही कष्ट उठाने पड़ें इसका एक-एक क्षण आनन्ददायी बन जाता है।

तलवार जिसके हाथ, देगी उसका साथ—(क) शक्तिशाली की सहायता सभी करते हैं। (ख) जो जिसके मातहत रहता है वह हमेशा उसी का साथ देता है। (ग) जो वस्तु जिसकी होती है वह उसी के काम आती है।

तलवार तो दे दी पर म्यान मरे मारे देंगे—जब कोई महत्वपूर्ण वस्तु तो दे दे पर उसके साथ की साधारण वस्तु के लिए लड़ाई-झगड़ा करे तो व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : हरि० जाट भेल्ली दे दे पर गंडा नाह दे; पंज० बकरी दुद देवे मींगना पा के।

तलवार मारे एक बार, एहसान मारे बार-बार—(क) एहसान में बड़ी शक्ति है जिसके कारण आजीवन दबना पड़ता है। (ख) जब कोई एहसान करके बार-बार उसे जताने की कोशिश करता है तो उस पर भी कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० तलवारि मारै एक बार, अहसान मारै बार-बार।

तलवार वाली अच्छी, मुँह वाली बुरी—लड़ाई के लिए कहते हैं। तलवार से तो एक बार में निर्णय हो जाता है किन्तु गाली-गलौज करने वाले सदा लड़ते ही रहते हैं। तुलनीय : मेवा० तरवार बाजी आछी पण दांता कछी खोटी; पज० तलवार दी चंगी मुँह दी बुरी।

तलुओं की-सी कहूँ या जीभ की-सी—(क) दोनों पक्ष से रिश्वत खाने वाले पर व्यंग्य में कहा जाता है। इस संबंध में एक कहानी है : एक क़ाज़ी ने दोनों पक्षों से घूस ली। एक ने मिठाई खिलाई और दूसरे ने पैर के नीचे एक अशर्फ़ी रख दी। दोनों का ध्यान कर वह निर्णय देने के समय बड़ी दुविधा में पड़ गया और उपर्युक्त लोकोक्ति सोचने लगा। (ख) दोनों पक्षों की ओर से दबाब पड़ने पर यदि किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो जाय तो भी कहता है।

तलुओं से तो आग लगी है—जब किसी अधिकारी को खिला-पिलाकर या रिश्वत देकर अपने अनुकूल बना लिया जाय तो व्यंग्य मे कहते हैं। इस पर एक रोचक कहानी है : एक बार ज़मीन के सबन्ध में दो व्यक्तियों में झगड़ा हो गया। मामला अदालत मे पहुँच गया। इस मुक़दमे में प्रमुख गवाह गाँव का मुखिया था इसलिए दोनों व्यक्ति मुखिया को प्रसन्न करने का प्रयत्न करने लगे। जिस दिन गवाही थी उस दिन एक व्यक्ति ने चलते समय मुखिया के साफे में एक मोहर बाँध दी, किन्तु दूसरे व्यक्ति ने भी इसे देख लिया और उसने तैश में मुखिया के जूते में एक साथ दस मोहरें रख दी। अदालत में पहुँचकर पहले व्यक्ति ने स्मरण कराने की ग़रज़ से कहा कि मुखियाजी आपके साफे में क्या है ज़रा झाड़कर देख लो। किन्तु मुखिया ने सुनी-अनसुनी कर दी क्योंकि जूते में पड़ी दस मोहरों का उनको पता था। दूसरे व्यक्ति ने तब कहा कि मुखियाजी क्या सुनें तलुओं मे तो आग लगी है।

तलुओं से लग गई– कानों से सुनी बात पैर के तलुओं तक पहुँच गई। जब कोई व्यक्ति कठोर या चुभने वाली बात करता है तो कहते है।

तलुओं से लगी सिर से निकल गई—जब कोई व्यक्ति क्रोध से भड़क उठता है तब कहते हैं।

तले का दम तले रह गया, ऊपर का ऊपर—किसी बात को सुनकर जब कोई अवाक् हो जाये तो कहते हैं। तुलनीय : हरि० तले का सांस तले रह गया और ऊपर का ऊपर; अव० तरे का दम तरेन रैहगा, ऊपरां कै ऊपरै; पंज० थले दा साह थले रह गया ते उत्ते दा उत्ते।

तले के दाँत तले रह गए ऊपर के ऊपर—ऊपर देखिए।

तले धरती न ऊपर आसमान—किसी के बहुत बड़ी विपत्ति मे फँस जाने पर या बिल्कुल असहाय के प्रति कहते

हैं। तुलनीय : भोज० तरे धरती न उप्पर बज; पंज० थले तरती नं उत्ते असमान।

तले पड़ी का मोल क्या—(क) जो चीज़ अपने अधीन है उसकी क्या क़ीमत? (ख) बीती बातों की व्यर्थ चर्चा करने पर भी कहा जाता है। (ग) स्त्रियां भी अपने पति से ऐसा कहती हैं जब वे उनकी अवहेलना करते हैं। तुलनीय : पंज० थले पेदी दा की मुल।

तले पड़े की ऊँची टाँग--जो व्यक्ति कुश्ती में गिर जाता है वह टाँग ऊँची रखने का प्रयत्न करता है। हारने वाला मनुष्य जब अपनी हार मानने से आनाकानी करता है तो व्यंग्य में इस लोकोक्ति का प्रयोग किया जाता है। तुलनीय : मेवा० तले पड्या की ऊपर टाँग।

तलौके की साध लगी, गले बाती घुसेड़ी— तेल के पकवान (तलौके) की इच्छा हुई तो और कुछ तो मिला नही दीपक की बत्ती ही खा ली। (क) जो व्यक्ति चटोरा होने के कारण अच्छी वस्तु न मिलने पर बुरी वस्तुएँ भी खा लें उसके प्रति कहते है। (ख) फूहड़ और मूर्खों के प्रति भी कहते हैं।

तवा कहे मैं सोने का था, चूल्हा कहे मेरे ऊपर ही रहता था—तवे ने कहा कि मैं सोने का बना हुआ था। चूल्हे ने उत्तर में कहा कि मेरे ऊपर ही तू चढ़ता था, मुझे तेरी वास्तविकता का पता है। जो व्यक्ति अपने परिचितों के सामने भी अपनी झूठी बड़ाई करे उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० तवो कहै हूँ सोनेरो थो चूल्हो कैवे चढ़तो थो म्हारे ऊपर इज ही।

तवा चढ़ा और जीव बढ़ा—(क) किसी चीज़ के मिलने की आशा होने पर उत्साह बढ़ जाता है। (ख) कुछ मिलने की आशा देख कर उसे पाने की इच्छा तीव्र हो जाती है।

तवा चढ़ा बैठी मिसरानी, घर में नाज न आँगन पानी—बिना सामान के ही जब कोई किसी काम को करना शुरू कर दे तो कहते हैं। (मिसरानी = मिश्र—ब्राह्मण की एक जाति—की पत्नी)। तुलनीय : ब्रज० तयौ चढ्यौ बैठी मिसुरानी, घर में नाज न आँगन पानी।

तवा न कुंडा ना चुलहारी, कहै नारि मैं हूँ भटियारी—जब साधनहीन या अयोग्य व्यक्ति अपने को साधनसम्पन्न या योग्य व्यक्तियों जैसा समझता है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

तवा ना तगारी, काहे की भटियारी--ऊपर देखिए।

तवा हांड़ी को काला कहे—तवा जो स्वयं काला है, हंडी (हाँड़ी) को काला कहता है। जब कोई बुरा व्यक्ति दूसरे की बुराई करता है तब उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : राज० तवो हाँडी ने काली बतावें; अं० Pot calls the kettle black.

तवे की तेरी कठौती की मेरी—दे० 'तवे की तेरी हाथ...।' (कठौती = लकड़ी का बर्तन जिसमें रोटियाँ पकाकर रखी जाती हैं। तुलनीय : ब्रज० तये की तेरी, कठौती की मेरी।

तवे की तेरी तगारी की मेरी—नीचे देखिए। (तगारी = बर्तन जिसमें रोटियाँ पकाकर रखी जाती हैं)।

तवे की तेरी, हाथ की मेरी—जो रोटी तवे पर है अर्थात् अभी पकी नहीं है वह तो तुम्हारी है और जो पककर हाथ में है वह मेरी है। स्वार्थी या जल्दी करने वाले पर कहते हैं। तुलनीय : गढ़० तवा की तेरी हाथ की मेरी; अव० तवा के तोर कठौती के मोर; मेवा० तवा ऊपली थारी, खीरा परली म्हारी; ब्रज० तये की तेरी, हाथ की मेरी।

तवे की तेरी, चूल्हे की मेरी—ऊपर देखिए। तुलनीय : कौर० तवे की मेरी, चूल्हे की तेरी; ब्रज० तये की तेरी चूल्हे की मेरी।

तवे पर बूँद पड़ी और छनक गई—गर्म तवे पर बूँद पड़ते ही समाप्त हो जाती है। जब किसी भूखे व्यक्ति को या किसी अधिक खाने वाले को कोई चीज़ थोड़ी मात्रा में दी जाय तो उससे तृप्ति नहीं मिलती। तुलनीय : ब्रज० तये पै बूँद परी और छन्न है गई।

तस मति फिरि आई जस भावी—जैसा होने का होता है वैसी बुद्धि भी हो जाती है। आशय यह है कि बुरे दिनों में बुद्धि भी विपरीत हो जाती है।

तस मुकुन्द तस पादन घोड़ी, विधि ने आन मिलाई जोड़ी—दे० 'जस मुकुँद तस पादन घोड़ी...'।

तसलवा तोर कि मोर—(क) 'तोर-मोर' शब्द भोजपुरी का है अतः भोजपुरियों पर व्यंग्य के रूप मे इसका प्रयोग करते हैं। (ख) किसी के जबरदस्ती करने पर भी कहते हैं। (ग) सत्य बात कहने पर यदि कोई नाराज़ हो तब भी इसका प्रयोग करते हैं। इस संबन्ध में एक कहानी है : एक बार अकाल में लोग यहाँ तक पीड़ित हुए कि दूसरों का छीनकर खाने पर उतारू हो गए। कहा जाता है कि जब कोई पतीली (तसले) में चावल बनाता था तो लोग उसके पास छीनने पहुँचते थे और पूछते थे 'तसलवा तोर की मोर?' यदि वह व्यक्ति कहता कि 'मोर, तो वे लोग सब छीनकर

खा जाते थे और यदि 'तोर' कहता तो उसकी उदारता पर छोड़ देते थे।

तसबीह फेरूँ किसको घेरूँ—ढोंगी व्यक्ति या बगुला-भगत पर कहते हैं। (तसबीह = माला)।

तसि पूजा चाहिय जस देवता—जैसे देवता हों उसी के अनुरूप उनकी पूजा भी करनी चाहिए। अर्थात् जो व्यक्ति जैसा हो उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए। तुलनीय : पंज० जिदाँ जिहा बंदा होवे उदाँ दा ही बोलना चाहिदा है।

तहँ कि तिमिर जहँ तरनि-प्रकासू—जहाँ पर सूर्य का प्रकाश है वहाँ अंधकार नहीं रह सकता। (क) जहाँ पर ज्ञानी पुरुष हैं वहाँ पर अज्ञान नहीं रह सकता। (ख) दो विरोधी प्रकृति या स्वभाव के व्यक्तियों के एक साथ या एक स्थान पर न रहने पर भी कहते हैं।

तहइँ दिवसु जहँ भानु-प्रकासू—जहाँ पर सूर्य का प्रकाश है वहीं दिन है। अर्थात् जहाँ ज्ञानी लोग रहते है वहीं पर ज्ञान की वार्ता होती है।

ताँत बजी राग जानो—नीचे देखिए।

ताँत बाजी और राग पहिचानी—(क) बुद्धिमान व्यक्ति किसी बात के छिड़ते ही उसका भाव समझ लेते हैं। (ख) आदमी के बोलते ही उसकी योग्यता का पता चल जाता है। तुलनीय : अव० ताँत बोली राग मालुम भा; मेवा० ताँत बाजी अर राग पछाणी; बुंदे० ताँत बाजी राग पहिचानो; ब्रज० ताँति बाजी राग पायो।

ताँत बाजी और राग बूझा—ऊपर देखिए।

ताँत-सी देह पाँव न हाथ, लड़न चलो सूरन के साथ—जब कोई अपनी शक्ति से बाहर काम करने चलता है तो व्यंग्य में कहते हैं। (सूरन = योद्धा)। तुलनीय : हरि० चूतड़ाँ मँ तै टाँग भी कोन्या बजावै लट्ठ; पंज० वुंड बिच गूँ नहीं चलान चलया मोटे।

ताँबा देख व्योपार, मुख देख ब्योहार—धन से व्यापार और मुँह देखकर व्यवहार किया जाता है। तुलनीय : ब्रज० ताँबों देखि व्योपार, मुँह देखे व्योहार।

ताँबा देखे चीतना, मन देखे व्योपार—व्यापार या तो पैसे से या आदमी देखकर होता है।

ताँबे की मेख, तमाशा देख—(क) जब कोई धनी व्यक्ति सम्भव-असम्भव सभी कर लेता है तो कहा जाता है। (ख) धन से सभी प्रकार के सुख सुलभ हैं। तुलनीय : गढ़० तामा की मेख, करामात देख।

ताक पर बैठा उल्लू, माँगे भर-भर चुल्लू—छोटा आदमी जब किसी बड़े आदमी पर अपना हुक्म चलाना चाहता है तो कहते हैं। तुलनीय : मरा० फलीवर बसलें घुबते, मागें चुळका-चुळका पाणी।

ताका भैंसा गादर बैल, नारि कुलच्छनि, बालक छैल, इनसे बाँचे चातुर लोग, राज छाड़ि के साधे जोग—ताका (जिसकी आँखें दो प्रकार की हों) भैंसा, गादर (हल में चलते समय बैठ जाने वाला) बैल, बुरे लक्षणों वाली स्त्री और छैल या शौकीन पुत्र से चतुर लोग बचते रहें। इनके साथ रहने से यदि राज-सुख की प्राप्ति हो तो भी अच्छा नहीं। बल्कि इनका संग छोड़कर योगी बनकर रहना कहीं अच्छा है।

ताकी न रक्खे बाकी—ताकी (जिसकी दोनों आँखें दो प्रकार की हों) घोड़ा बड़ा मनहूस होता है। उसे अपने पास रखने से कोई भी विपत्ति आ सकती है।

ताजा माल तुरत बिके—ताज़ा माल बाज़ार में आते ही बिक जाता है। अर्थात् अच्छी वस्तु को सभी लेना चाहते हैं। तुलनीय : राज० ताजो माल तुरत खपै; पंज० चंगा माल छेती बिक जांदा है।

ताजा मिला नहीं खाया माँग के बासी खाया—जब अच्छा भोजन मिल रहा था तब तो खाया नहीं और बाद में माँगकर बासी ही खा लिया। या जो व्यक्ति सम्मान के साथ देने पर किसी अच्छी वस्तु को स्वीकार न करे और बाद में किसी बुरी वस्तु को खुद विनय से प्राप्त करे उसके प्रति व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : गढ़० सदो नि खाये बासी खाये बासी माँकू साग पिपाये; पंज दित्ती चीज न खा ते कोल्हू चट्टन जा।

ताजी को मारा, तुर्की काँपा—जब एक को दंड देने से दूसरा भी भयभीत हो जाय तो कहते हैं। (ताज़ी और तुर्की अरब के घोड़ों की जातियाँ हैं)

ताजी न बासी, नींद आए काची—न ताज़ा भोजन है और न ही बासी, भूखे पेट तो नींद भी नहीं आती। आशय यह है कि भूखे होने पर नींद भी नहीं आती अत: भूखे रहने से अच्छा है कि बासी ही खा लिया जाय। तुलनीय : भीली० आची न वाची ने काची आवे नंद।

ताज़ी पर बस नहीं, तुर्की के कान उमेंठे—बलवान पर तो चलती नहीं, कमज़ोर को परेशान करते हैं। या बलवान पर चलती नहीं अतएव उसके कारण उत्पन्न गुस्सा कमज़ोर पर उतारते है। ('ताज़ी' एक प्रकार का घोड़ा होता है जो 'तुर्की' घोड़े से अच्छा और बलवान होता है)।

ताज़ी मार खाय तुरकी आस पाय—जब किसी के

राज्य में या किसी काल में योग्य मनुष्य तो परेशान किए जाएँ और अयोग्य मौज उड़ाएँ तो कहा जाता है। ('ताज़ी' घोड़ों की एक जाति जो 'तुर्की' जाति के घोड़ों से अच्छी मानी जाती है; 'आश' फारसी का शब्द है जिका अर्थ होता है, भोजन।

ताज़ीमे-कारीगरां मुआफ़ – काम करने वालों को सम्मान (ताज़ीम) न करना भी माफ़ है। आशय यह है कि यदि योग्य व्यक्ति में कुछ बुराई है तो उस पर ध्यान नही देना चाहिए। (यह कहावत फ़ारसी की है)।

ताड़ से गिरा खजूर पर अटका/लटका – एक परेशानी से मुक्ति मिलते ही दूसरी में फंस जाने पर कहते हैं। तुलनीय : मल० नाये पेटिच्चु नरियुटे वायिल; पंज० पहाड़ तो डिगया ते खजूर विच फसया; अं० Out of the frying pan into the fire.

ताता-ताता खाएँ, जल जाने पर दोस—अधिक गर्म भोजन करते हैं और मुँह जल जाता है तो दूसरों को या भाग्य को दोष देते है। जो व्यक्ति अपने दोष को दूसरों के सिर मढ़े और अपने को निर्दोष बताए उसके प्रति कहते है।

ताता, तीता, आमला तीनों धात विनास –गरम, चटपटी या मिर्च पड़ी हुई और खट्टी चीज़ें धातु या शुक्र के लिए हानिकारक होती हैं।

ताता थेई मचा दी –किसी काम के लिए उतावला होने या अधिक भाग दौड़ करने पर व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० ताता थेई मचाइ देई।

ता तिरियाक़ अज इराक़ आवर्दा शवद, मार मज़ीदा मुर्दा शवद—जब तक तिरियाक़ (विषहर) इराक़ से लाया लाया जायेगा, साँप का डसा मर जाएगा। ऐसे अवसर पर कहते हैं जब किसी समस्या का समाधान ऐसा सुझाया जाए जिसमें बहुत अधिक समय लगने की संभावना हो।

ताते खूं जल मरूँ—अर्थात् गर्म ही गर्म खाऊँ, चाहे जल मरूँ। अधिक उतावले व्यक्ति पर व्यंग्यपूर्ण कहावत है।

ताते दूध बिलार नाचे—गरम दूध देखकर बिल्ली उसके आसपास नाचा करती है, क्योंकि न तो उसे गर्म होने के कारण पी सकती है ओर न छोड़ सकती है। ऐसी परिस्थिति में फँसे व्यक्ति पर यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : मढ़० तातो दूध होयूँछ; पंज० दुद कौल बिल्ली नचदी है; ब्रज० ताते दूध बिलैया नाचै।

ताते पाँव पसारिए जेती लाँबी सौर—जितनी लंबी चादर (सौर) हो उतना ही पैर (पाँव) फैलाना चाहिए। आशय यह है कि अपनी स्थिति या सामर्थ्य के अनुसार ही कार्य करना चाहिए। तुलनीय : मल० कुळरिनु अनुसरिच्चे पुनयकाव्; पंज० पैर उन्ने ही विछाओ जिन्नी लंबी मंजी होवे; अं० Cut your coat according to your cloth.

ताते पानी घर न जले— गर्म पानी से घर नहीं जलते। अर्थात् घर तो आग लगाने पर ही जल सकता है। (क) साधारण उपायों से बड़ा काम नही हो सकता, ऐसा चाहने वाले के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। (ख) जो वस्तु जिस काम के लिए बनी है उमसे दूसरा काम नहीं लिया जा सकता। तुलनीय : हरि० ताते पानिया तै के घर जलै सै; पंज० तत्ते पाणी नाल घर नई बलदे।

तान न पड़वा कोरी घर लट्ठम-लट्ठा—बिना किसी बात के या बिना किसी आधार के लड़ाई करने पर कहते हैं। इस संबंध में एक कहानी है : एक कोरी (हिंदू जुलाहा) ने एक स्थान पर ताना बनाने का निश्चय किया, इस पर कोरिन ने कहा कि उस जगह पर मैं पड़वा बाँधूंगी। इस बात पर दोनों में लाठी चल गई, यद्यपि न तो कोरी के पास ताने के लिए सूत था और न कोरिन के पास पड़वा। तुलनीय : हरि घर में ना सूत ना पूणी जुलाहे के साथ लट्ठम लट्ठा; अव० सूत-कपास कहूँ नाहीं जोलहा से लट्ठम लट्ठा।

ताना बाना सूत पुराना—बेकार मेहनत करने पर कहते हैं। पुराने या जीर्ण-शीर्ण सूत का ताना-बाना बनाना व्यर्थ है क्योंकि उसका बना कपड़ा चल नही सकता। तुलनीय : ब्रज० तानों-बानों सूत पुरानों।

तानाशाह दिवाना जिसके चिट्ठी न परवाना—(क) मस्ती या असावधानी के कारण जो व्यापारी अपना हिसाब-किताब ठीक से नही लिखता उसे बड़ी परेशानी हो जाती है। (ख) तानाशाह दीवान को चिट्ठी या परवाना लिखने की ज़रूरत नही पड़ती क्योंकि उसका मौखिक आदेश ही सब कुछ होता है। निरंकुश और सबल व्यक्ति के प्रति कहते हैं।

तानी घाट या बानी घाट—दोनों ही तरफ़ दोष होने पर कहते हैं।

ताप करे सिंह का नाश—(ख) ज्वर का रोग महाबली को भी नष्ट कर देता है। (ख) शेर के लिए गर्मी हानिकारक होती है।

ताप करे हाथी को साफ—ज्वर हाथी जैसे बलवान को भी मार डालता है। अर्थात् ज्वर के सामने किसी की भी नहीं चलती चाहे वह कितना भी बलवान क्यों न हो। तुलनीय : राज० ताव हाथीरा हाड भांगै।

ताप को कौन बुलाता है—ज्वर को कौन चाहता है कि

उसे आ जाय, अर्थात् विपत्ति को कौन बुलाता है ? जो व्यक्ति जान-बूझ कर मुसीबत सर पर लेना चाहता है उसे समझाने के लिए कहते हैं। तुलनीय : राज० तावते कुण तेड़ी ज़ावै; पंज० ताप नूँ कौन पुलादा है।

तापब तुकुब तलावे जाब—आग तापना, बन्दूक चलाना और टट्टी जाना, ये काम पड़े-पड़े नही हो सकते। इनके लिए कुछ तो सुख-सुविधा छोड़नी ही होगी।

ताम झाम लगे—व्यर्थ के या मूर्खतापूर्ण दिखावे पर कहते हैं। इस संबंध में एक कहानी है : एक मूर्ख व्यक्ति को कहीं से पालकी मिल गई। जब भी उसे कही जाना होता था तो कहता था 'तामझाम लगे'। इस प्रकार बाज़ार जाने से लेकर पाखाना जाने तक वह तामझाम लगाकर अर्थात् पालकी पर चढ़कर जाता था। कही-कही 'तामझाम' के स्थान पर 'तामदान' या 'तामजान' भी कहा जाता है। (तामझाम = एक प्रकार की खुली पालकी)।

ता मर्द सुख़न न गुफ़्ता बाशद, ऐबो-हुनरश न हुफ़्ता बाशद—जब तक कोई व्यक्ति बात न करे उसके गुण-दोष छिपे रहते हैं। भले-बुरे सब एक से ज्यों-लौं बोलत नाही, जान परत हैं काक पिक ऋतु बसन के माँहि। -वृंद

ताल उझल कर उझले क्यार, तब बरसा हो पूरमपार—जब ताल और खेत की क्यारियाँ सब पूरी तरह भर जायँ और पानी अधिक बहने लगे तो बरसात का पूरा होना समझना चाहिए। तुलनीय : मरा० तालाव तुडुंब भरून वाफे पण भरले, तर पाऊस भरपूर पडले।

ताल तो भोपाल ताल और तो तलैयाँ हैं—अगर कोई ताल है तो भोपाल का ताल है, अन्य ताल तो उसके आगे तलैया हैं (भोपाल में एक बहुत बड़ा तालाब है)। अपने वर्ग या जाति की अन्य चीज़ों से किसी चीज़ के बहुत अच्छी या बुरी होने पर कहा जाता है। कहीं-कहीं इस लोकोक्ति को इस प्रकार कहते है : ताल तो भोपाल ताल और सब तलइयाँ; रानी तो कमलापत और सब रनइयाँ। तुलनीय : गढ़० तो चितौडगढ़ और सब गढ़इयाँ राजा तो छत्रसाल और सब रजइयाँ; ब्रज० ताल तौ भूपाल ताल और सब तलैया हैं।

ताल न तलैया बोओ सिंघाड़े भैया (क) बिना सामान के यदि कोई काम करने चले तो कहते हैं। (सिंघाड़ा तालाब में बोया जाता है)। (ख) जब कोई अपनी सामर्थ्य के बाहर की बहुत लंबी-चौड़ी बातें करता है तब उसके प्रति भी व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

ताल पर ही पैर उठता है—ताल के अनुसार ही नृत्य किया जाता है या नृत्य के अनुसार ही ताल दी जाती है। (क) बेमेल काम करने वालों के प्रति उसे ठीक करने के लिए कहते हैं। (ख) आय के अनुसार ही व्यय करना चाहिए। तुलनीय : राज० बाजै पर पग उठै।

ताल बजाकर माँगे भीख, उनका जोग कहाँ क्या ठीक—ताली या करताल बजा कर भीख माँगने वाले साधु ढोंगी होते है।

ताल में नहीं पानी की बूँद, मैं खाऊँगी मछली भून—तालाब में जब पानी ही नहीं है तो मछली कहाँ से होगी। जब कोई व्यक्ति ऐसी माँग करे जो पूरी न की जा सकती हो तो उसके प्रति ऐसा कहा जाता है। तुलनीय : गढ़० गाड क दिन राँड दिखदी नी च, बोद लौ माछा।

ताल से तलैया गहरी, साँप से सँपोला जहरी—बाप से बेटे की दुष्टता के बढ़ जाने पर कहते हैं।

ताला घर का रखवाला—ताला घर का रक्षक होता है। तुलनीय : मेवा० तालो र घर को रुखालो; पंज० जँदरा कर दी राखी करदा है; ब्रज० तारौ घर कौ रखबारौ।

ताला चोरों को नहीं रोक पाता—ताला सज्जन व्यक्तियों के लिए होता है न कि चोरों के लिए। आशय यह है कि सामान्य तरीके से दुष्टों से नही निपटा जा सकता। तुलनीय : पंज जँदरा चोराँ नू रोक नहीं सकदा; ब्रज० तारौ चोरन्नैं नायँ रोकि सकै।

ताला तो पशुओं के लिए होता है—आशय यह है कि दंड दुष्टों या मूर्खों को दिया जाता है, सज्जनों को नहीं। तुलनीय : पंज० डंडा ते डगरा लयी हुंदा है; ब्रज० तारौ तौ पसून कू होंतु है।

तालाब खुदा नहीं मगर आने लगे—तालाब अभी तैयार भी नही हुआ और मगर रहने के लिए आ गए। जब कोई काम आरंभ भी न हुआ हो या वस्तु तैयार न हुई हो और चाहने वालों की भीड़ लग जाय तो व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : पंज० पिंड पिआ नही मंगते आ गए; ब्रज० ताल खुदयौ नायँ, मगर पहलें ई आय गये।

तालाब पर जाकर कोई प्यासा नहीं लौटता—दानी व्यक्ति की प्रशंसा में ऐसा कहते हैं जो किसी को खाली हाथ नहीं लौटाता। तुलनीय : पंज० तलाब बिच जा के कोई तरेआ नही आउंदा।

तालाब में प्यासा, बारात में भूखा—तालाब में रहते हुए भी प्यासे और बारात में जाकर भी भूखे रह गए। (क) जो व्यक्ति लाभ के स्थान पर भी लाभ न उठा पाए उसके प्रति कहते हैं। (ख) अभागे के प्रति भी कहते हैं जिसको परि-

श्रम का फल सहज नहीं मिलता। तुलनीय : भीली—तालाब तर्‌यो, बीवो भुखियो; पंज० तलाब बिच तरेया ते जंज बिच पुखा; ब्रज० ताल में प्यासो, बरात में भूखो।

तालाब में रहकर मगर से बैर—दे० 'जल में रह-कर···'।

ताला साह के लिए, चोर के लिए कैसा? —ताला अच्छे आदमियों के लिए लगाया जाता है, चोरों के लिए नहीं। (क) चोर को ताला तोड़ते देर नहीं लगती। (ख) सज्जन व्यक्ति से ही सामान्य ढंग से निपटा जा सकता है, दुष्ट से नहीं। तुलनीय : भोज० ताला साहु खातिन होला चोर खातिन नाहीं; राज० साहूकार रै वास्ते तालों चोर रै बास्ते किसो तालो; पंज० जंदरा घरवालयाँ लई हुंदा है चोरां लई नई।

तालियाँ बजा ले बन्ने ब्याह होगा—किसी बात की खुशी मनाने के लिए बच्चों से कहते हैं।

ताली एक हाथ से नहीं बजती—किसी झगड़े में दोनों पक्षों का दोष होता है, एक का ही नहीं। तुलनीय : गढ़० जब धाड़ तब राड़; भोज० ताली एक हाथे से नाहीं बाजेले; पंज० ताड़ी इक हथ नाल नहीं बजदी; ब्रज० तारी एक हात ते नायें बजें।

ताली दोऊ कर बाजे—ऊपर देखिए। तुलनीय : अव० ताड़ी दुइनो हाथे बाजत है; पंज० ताड़ी दोआं हथां नाल बजदी है; ब्रज० तारी तौ दोऊ हातन तेई बजे।

ताली दोनों हाथ से बजती है—दे० 'ताली एक हाथ से···'।

ताली बिन कैसा ताला, जोरू बिन कैसा साला—(क) ताली बिना ताला और स्त्री बिना साला (या साले का संबंध) व्यर्थ है। (ख) आवश्यक चीज़ के बिना और चीज़ों का रहना व्यर्थ है। तुलनीय : पंज० जंदरे बगैर कुंडा किवें ते बौटी बगैर मुंडा किवें; ब्रज० तारी बिन कैसो तारो, जोरू बिन कैसो सारो।

तावला सो बावला—दे० 'उतावला सो बावला···'।

तावा तोर कठौती मोर—दे० 'तवे की तेरी कठौती की···'।

ताश की अंगिया, मूँज की बखिया—बेतुके काम पर कहा जाता है। अच्छे कपड़े की अंगिया में मूँज की बखिया या सिलाई बड़ी भद्दी लगेगी। (ताश = एक प्रकार का अच्छा कपड़ा)।

तिनका उतारे का अहसान होता है—बिना किसी स्वार्थ के किया हुआ छोटा काम भी एहसान मानने योग्य हो जाता है।

तिनका कबहूँ न निंदिए, जो पावन तर होय—पैर के नीचे पड़े हुए तृण को भी तुच्छ नहीं समझना चाहिए। अर्थात् छोटे-से-छोटे आदमी को भी छोटा समझ कर घृणा की दृष्टि से नहीं देखना चाहिए वे भी समय पड़ने पर बहुत कुछ भला-बुरा कर सकते हैं। तुलनीय : ब्रज० तिनका कबऊ न निंदिये जो पामन तर होय।

तिनका गिरा गयंद मुख, नेक न घटो अहार; सो ले चली पिपीलिका, पालन को परिवार—हाथी (गयंद) के मुख से भोजन का कण (तिनका) नीचे गिर जाने से उसके भोजन (आहार) में कोई कमी नहीं होती और उस गिरे हुए कण को चींटी ले जाकर अपना तथा अपने परिवार का पालन-पोषण करती है। आशय यह है कि जो वस्तु बड़े लोगों के लिए कोई महत्त्व नहीं रखती वही छोटों के लिए बड़े महत्त्व की होती है।

तिनके की आड़ पहाड़—नीचे देखिए।

तिनके की ओट पहाड़—(क) थोड़े सहारे से कभी-कभी बड़े काम भी सिद्ध हो जाते हैं। (ख) नज़दीक की छोटी या तुच्छ चीज़ भी दूर की बड़ी चीज़ से बड़ी दिखाई देती है। तुलनीय : मरा० काडीच्या आड डोंगर; अव० तिनका ओट, पहाड़ ओट; पंज० डुबदे नूँ तिनके दा सहारा; ब्रज० तिनका की ओट पहाड़।

तिनके की चटाई, नौ बीघा फैलाई—छोटी-सी चीज़ को बहुत बड़ा-चढ़ाकर कहने पर व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० मासा जिही गल अत्ते सारा पिंड सिर उत्ते।

तिनकों की रस्सी से हाथी बँध जाता है—बहुत-से निर्बल मिलकर सबल हो जाते हैं। एकता बहुत बड़ी चीज़ है। तुलनीय : पंज० मासा जिही रस्सी नाल हाथी बनया जा सकदा है; ब्रज० तिन कान की लेज ते हाती बँधि जायँ।

तिन ब्याहे का बढ़िया भाग, दो ले जायँ अरथी औ इक ले जाए आग—तीन विवाह करने वाले का भाग्य इतना अच्छा है कि उसकी दो पत्नियाँ लाश (अरथी) को ले जाती हैं और एक आग ले जाती है। बहुविवाह करने वालों के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। आशय यह है कि बहुविवाह करने वालों की बड़ी दुर्दशा होती है।

तिरिया चरित न जाने कोई, खसम मारि के सत्ती होई—स्त्री-चरित्र को जान पाना कठिन है। ऐसी भी स्त्रियाँ हैं जो अपने पति को मार भी डालती हैं और उनकी चिता पर सती भी हो जाती हैं। तुलनीय : अव० तिरिया चरित्तर जानै न कोई, खसम मारि कै सत्ती होई।

तिरिया चरित न जाने कोय, खसम मारि कें सत्ती होय —ऊपर देखिए। तुलनीय : ब्रज० तिरिया चरित न जानै कोय खसम मारि कै सत्ती होय; बुंद० तिरिया चरित जाने नहीं कोय खसम मार कं सत्ती होय; राज० तिरिया चरित न जाणै कोय मिनख मार के सत्ती होय; सं० त्रिया चरित्रम् पुरुषस्य भाग्यम् देवो न जानसि कुथः मनुष्यः।

तिरिया जात कमान है, जित चाहे तित तान—स्त्री जाति कमान के समान जितना भी चाहे तानी जा सकती है। अर्थात् पुरुष की पत्नी पर पूरी धाक होती है और वह जैसा चाहता है वैसा व्यवहार उसके साथ करता है।

तिरिया तेरह मरद अठारह —तेरह वर्ष की स्त्री और अठारह वर्ष के पुरुष की जोड़ी ठीक होती है। तुलनीय : राज० तिरिया तेरा मरद अठारा। (यह कहावत पुरानी है आजकल ऐसा नहीं माना जाता)। तुलनीय : पंज० टाह हेठ बच्छा।

तिरिया तेल हमीर हठ चढ़े न दूजी बार --हठ या दृढ़ प्रतिज्ञा पर कहा जाता है। हम्मीर देव नाम के जयपुर के पास रणथंभौर गढ़ के शासक थे। अलाउद्दीन खिलजी का मुहम्मद नाम का एक मंगोल अपराधी भागकर इनके पास आया। अलाउद्दीन के लाख कहने पर इन्होंने अपराधी नहीं दिया और सन् 1300 ई० में अपने इसी हठ के पीछे उससे लड़ते हुए मारे गए। राजा ने कहा था .

सिंह गमन सुपुरुष वचन, कदलि फरै इकसार।
तिरिया तेल हमीर हठ चढ़े न दूजी बार॥
धड़ नुच्चे लोह बहै परि बोले सिर बोल।
कटि-कटि तन रण में परै तेहु न देहु मंगोल॥

तुलनीय : मरा० स्त्री तेल हमीर हट्ट ही एक दांच चढ़वली जातात; माल० तीरिया तेल हमीर हठ, चढ़े नी दूजी बार; राज० तिरिया तेल हमीर हठ चढ़े न दूजी बार।

तिरिया तो है शोभा घर की, जो हो लाज रखावा नर की—जो स्त्री अपने पति की प्रतिष्ठा का पूरी तरह ध्यान रख सकती है वही घर की शोभा है। तुलनीय : पंज० जेड़ी जनानी अपने बंदे दी लाज रखदी है उह ही चंगी हुंदी है।

तिरिया बिन घर भूत का घेरा – घर की देखभाल या प्रबंध स्त्रियाँ ही ठीक प्रकार से कर पाती हैं उनके न होने पर घर की व्यवस्था बिगड़ जाती है। तुलनीय : पंज० जनानी बगैर घर विच भूत रहंदे हन; ब्रज० तिरिया बिन घर भूत कौ घेरौ।

तिरिया बिन तो नर है ऐसा, राह बटाऊ होवे जैसा--- बिना स्त्री के मनुष्य का जीवन यात्री की भाँति डाँवाडोल होता है, उसमें स्थिरता नहीं आती।

तिरिया भली वही है भाई, जो पुरुषा संग करे भलाई —अपने पति का हर प्रकार से भला करने वाली स्त्री ही अच्छी है। तुलनीय : पंज० जनानी उह ही चंगी हुंदी है जेडी बंदे नू चंगी लगे।

तिरिया भी नर बिन है, ऐसी बिना धनी के खेती जैसी —जिस प्रकार मालिक (धनी) के न रहने पर खेती नष्ट हो जाती है उसी प्रकार पति के न रहने पर स्त्री अनाथ हो जाती है। आशय यह है कि पति के बिना स्त्री का जीवन बहुत दुखमय होता है।

तिरिया रोवे पुरुष बिना, खेती रोवे मेह बिना---स्त्री पति के बिना रोती है और खेती बारिश (मेह) बिना। आशय यह है कि पति के बिना स्त्री का जीवन बहुत दुखी रहता है, और पानी के बिना खेती नहीं होती। तुलनीय : पंज० जनानी रोवे बंदे बगैर बूटे रौन मींह वगैर।

तिल आध दूख जनम भरि सूख—आधे क्षण का दुख जीवन-भर के सुख का कारण हो सकता है। विद्यापति ने लिखा है : 'तिल आध दूख जनम भरि सूख, इथे लागि धनि किए होइ बिमूख'। तुलनीय : पंज० मासा जिहा दुख सारी जिंदगी दा सुख।

तिलक तकदीर वालों के (का) होता है --विवाह से पूर्व वर को तिलक दिया जाता है। (क) तिलक से ग़रीब लोग वंचित रह जाते हैं, इसलिए उनके प्रति कहते हैं। (ख) जिन व्यक्तियों का विवाह किसी कारणवश नहीं हो पाता उनके प्रति भी कहते हैं। (ग) राज्यतिलक अर्थात् शासक बनना सबके भाग्य में नहीं होता। करोड़ों में से एक व्यक्ति ही राजा बन पाता है। तुलनीय : भीली—टीलू तकदीर वाला ने थाय।

तिलक वाली टीका दहेज वाली फीका—जिसके पिता ने केवल तिलक लगाकर शादी कर दी उसकी तो खूब इज्ज़त होती है और जिसके पिता ने काफ़ी दहेज देकर शादी की उसकी कोई इज्ज़त नहीं होती। जब अयोग्य व्यक्ति का सम्मान और योग्य व्यक्ति का अपमान होता है तब व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

तिल का ताड़ बना दिया—किसी छोटी-सी चीज़ के विषय में बहुत बढ़ा-चढ़ा कर कहने वाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० तिल कौ ताड़ बनाइ दियौ।

तिल का ताड़ और बात का बतंगड़ – किसी भी बात को बहुत बढ़ा-चढ़ा कर कहने वालों के प्रति व्यंग्योक्ति। तुलनीय : गढ़० जुऊं का भैंसा अर कितलू का नाग, स्यूणू का

सावला, बिरालू का बाप।

तिल की ओट पहाड़—दे० 'तिनके की ओट पहाड़।'

तिल कोरें, उर्द बिलोरें—तिल की खेती गोड़ने (कोरें) से और उर्द की खेती निराई करने (बिलोरें) से अच्छी होती है।

तिल गुड़ भोजन तुरक मिताई, आगे मीठ पाछे करु आई—तिल और गुड़ के भोजन की भाँति मुसलमानों का प्रेम पहले तो अच्छा पर पीछे कड़वा हो जाता है। (क) उनमें तलाक़ की प्रथा है। उसी पर यह व्यंग्य है। (ख) मुसलमानों से दोस्ती आदि से अन्त तक नहीं निभती, इस अर्थ में भी इसका प्रयोग होता है।

तिल चट्टे को मारकर हाथ गंदा किया—निलचट्टे को मारने से हाथ गंदा होता है। नीच व्यक्ति को छेड़ने या उसके मुँह लगने पर अपनी प्रतिष्ठा जाती है। तुलनीय : मैथ० औसरार मारि के हाथ गंधेला।

तिल ज्यों बारु पेरिए, नाहीं निकसे तेल—तिल की तरह बालू (रेत) को पेरने से तेल नहीं निकल सकता। जहाँ कुछ मिलने की आशा न हो, या कंजूसों पर कहा जाता है। तुलनीय : पंज० सुके तिलाँ बिचों तेल नयीं निकलता।

तिल तंडुल का मेल—चावल और तिल (तंडुल) मिले रहने पर भी अलग-अलग दिखाई देते हैं। (क) ऐसा मेल जहाँ मिली चीजें स्पष्ट ज्ञात हों। (ख) विभिन्न प्रकृति के लोगों का पूर्ण मेल संभव नहीं।

तिलतण्डुलन्यायः—तिल और चावल का न्याय। प्रस्तुत न्याय का प्रयोग दो या दो से भिन्न वस्तुओं के सम्बन्ध मे जो बहुत आसानी से अलग या भिन्न समझी जा सकें किया जाता है।

तिल, तीखुर, दाना, घी शक्कर में साना, खाये बूढ़ा होय जवाना—इन चीजों को घी और चीनी में मिलाकर यदि बूढ़ा भी खाये तो वह जवान हो सकता है। अर्थात् ये बहुत पौष्टिक चीजें हैं। (तीखुर=तवाखीर; दाना=पोस्तदाना)।

तिल भर लहू प्याज भर मुहब्बत—जब किसी अवसर पर अपना दूर का संबंधी या नातेदार मित्र से ज्यादा काम आए तो इसका प्रयोग करते हैं।

तिल रहे तो तेल निकले—जब खरीददार भाव घटाने को कहता है तो दुकानदार इस कहावत को कहते हैं। आशय यह है कि गुंजाइश हो तब तो दाम कम किया जाय। तुलनीय : पंज० तिलाँ विच तेल होवे ताँ निकले।

तिली तमाखू सावनी, फिर मन समझावनी—तिल और तंबाकू को सावन में बो देना चाहिए, बाद में बोने से मन को ही समझाया जा सकता है अर्थात् सावन के बाद बोने से नाम-मात्र की पैदावार होती है। तुलनीय : पंज० तिलाँ ते तमाकू नूं सौन विच रो देना चाहिदा मगरों नहीं।

तिहरी कुम्हार का दूध जजमान का—दूध दुहने का बर्तन (तिहरी) तो कुम्हार ने दिया और दूध यजमान ने। अर्थात् अपना कुछ भी नहीं है, सब चीजें मुफ्त ही मिल गई। तुलनीय : मैथ० कंटिया कुम्हार के दूध जजिमान के; भोज० कोहांर क तिहरी जजिमान क दूध; पंज० पांडा कमैर दा दुद यजमान दा।

तीज, पड़े खेत में बीज—सावन की तीज को खेत में बीज पड़ता है। अर्थात् जुलाई में खरीफ़ की बुआई होती है। तुलनीय : मरा० तीज निपडे शेतात बीज।

तीजे चावल सीझें चौथे लोक पसीजें—कोई बात तीन बार की जाय तो लोग कुछ-कुछ विश्वास कर लेते हैं, किन्तु चार बार करने से पूरा विश्वास हो जाता है। अर्थात् जो व्यक्ति अपनी बात मनवाने के लिए बार-बार प्रयत्न करता है तो लोग उसकी बात का विश्वास कुछ समय पश्चात् स्वयं ही करने लगते है। तुलनीय : राज० तीजै चावळ सीजै चौथे लोक पतीजै।

तीतर की-सी बोली है—ऐसी बोली जिसका कुछ भी या मनमाना अर्थ निकाला जा सके। इस सम्बन्ध में एक कहानी है : एक तीतर एक वृक्ष पर बैठा था। संयोगवश उसी रास्ते से एक पथिक गुजरा। पथिक की यह जानने की इच्छा हुई कि तीतर क्या बोल रहा है। उधर से एक पहलवान, एक फ़क़ीर, एक साधु, एक कुँजड़ा और एक जुलाहा ये सब बारी-बारी से आए। उसने सभी से पूछा। पहलवान ने कहा कि तीतर 'डंड मुगदर कसरत' कह रहा है। इसी प्रकार फ़क़ीर ने 'सुबहान तेरी क़ुदरत' साधु ने 'राम लक्ष्मण दशरथ', कुंजड़े ने 'गाजर मूली अदरक', और जुलाहे ने 'चरखा पूनी चमरख' उत्तर दिया। एक ही बोली का सबने अपने मन के अनुसार अर्थ लगाया। तुलनीय : पंज० टटीरी जिही आवाज है।

तीतर के मुँह लक्ष्मी—मुक़दमे के समय लोग कहते हैं। न्यायकर्त्ता के मुँह में ही सब कुछ है जिसे चाहे जितावे और जिसे चाहे हरावे। (कहा जाता है कि सौरगृह के बच्चे को कभी-कभी यम घेरता है। पर तीतर की आवाज़ सुनते ही वह भाग जाता है। इस कहावत का आधार यही किंवदन्ती है) तुलनीय : राज० तीतररे मूंढे में सदा कुसल; गढ़० तितरा का मुख लछमी; बुंद० तीतर के मों लच्छमी।

तीतर बरनी बादरी, बिधवा काजर रेख, वे बरसें वे घर करें, कहैं भड्डरी देख—भड्डरी के अनुसार यदि आकाश में तीतर के पंख की तरह बदली हो ता वह बरसेगी और यदि विधवा की आँखों में काजल लगा है तो वह दूसरा घर करेगी, अर्थात् दूसरा पति वरेगी। आशय यह है कि श्रृंगार करने वाली विधवा सच्चरित्र नही होती।

तीतर बरनी बादरी, रहै गगन पर छाय, कहे घाघ सुनू भड्डरी, बिन बरसे ना जाय—घाघ भड्डरी से कहते हैं कि यदि तीतर के पंख के समान बादल आसमान में दिखाई दें तो पानी अवश्य बरसेगा।

तीतर बाएं बोल जा, तो सगर कार हों ठीक; दाहिने बोलत ना भला, सोच जान यह सीख- ऐसा लोक विश्वास है कि यदि तीतर बाए बोले तो शुभ और दाहिने बोले तो अशुभ समझना चाहिए।

तीन अँगुल का माथा उसमें भी सलवट—तीन अँगुल का तो माथा है और उसमें भी सलवट पड़ी हुई है। जो व्यक्ति देखने में कुरूप हो और उसके काम भी बुरे हों उसके प्रति व्यंग्य मे कहते हैं। तुलनीय : राज० तीन आंगळरो लिलाड़ जकेमें ही दो मल; पंज० जिहो जिहा सकलों उहो जिहा अकलों।

तीनउ पन ऐसे गए परत पराई पौर—बचपन से लेकर बुढ़ापे तक दूसरों के घर में ही खाते रहे। जिस व्यक्ति ने निकम्मा या कायर होने के कारण अपना जीवन व्यर्थ गँवा दिया हो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय . बुंद० तीनऊँ पन ऐसेई गये परत पराई पौर।

तीन कनौजिया, तेरह चूल्हे—कनौजिया ब्राह्मण छूआ-छूत का भेद-भाव बहुत अधिक रखते है, इसीलिए उनके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० तीन कनउजिया तेरह चूल्हे; मैथ० तीन तिरहुतिया तेरह पाँत; चंपारन—तीन कानू तेरह हुक्का तबो हूँका हूँका; गढ़० नौ पुर्ग्या दस चूली; अव० तीनि कनवजिया तेरह चूल्ह; मरा० तीन कनोजी नि तेरा चुली।

तीन कनौजिया तेरह हुक्का, तिस पर भी हो मुक्की-मुक्का— ऊपर देखिए।

तीन कपड़े और एक लोटा—जो व्यक्ति समय के प्रभाव से निर्धन हो जाय और उसके पास तन के कपड़ों के अतिरिक्त और कुछ न बचे तो उसके प्रति कहते हैं। तुल-नीय : गढ़० नाकें, नथुली अर खाणें थकुली।

तीन कसूर भगवान भी माफ करते हैं—अपराध करने पर तीन बार ईश्वर भी क्षमा कर देता है। जब कोई व्यक्ति किसी साधारण अपराध पर कठोर दंड देना चाहे तो उसे समझाने के लिए कहते हैं। तुलनीय : भोज० तीन गलती रामो माफ करले; मरा० तीन अपराध देवसुद्धां क्षमा करतो।

तीन का टट्टू तेरह का जीन—जितने की कोई वस्तु न हो उससे अधिक उस पर अन्य खर्च हो जाने पर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० तीनि को टट्टू, तेरह कौ जीन।

तीन का ढाई कर दो, पर नाम दरोगा धर दो—मेरी तनख्वाह तीन रुपए के बजाय ढाई रुपए कर दो लेकिन मुझे दारोग़ा बना दो। मनुष्य की पद-लोलुपता पर व्यंग्य है।

तीन क्यारी तेरह गौड़, तब देखो गन्ने का पौर—आशय यह है कि अधिक गोड़ाई करने से गन्ने की फ़सल अच्छी होती है। तुलनीय : भोज० तीन कियारी तेरह कोड़, तब देखऽ ऊँखी क पोर।

तीन के जामे नाश, केला बिच्छू बाँस—केला, बिच्छू और बाँस की संतान इनका नाश करके पैदा होती है (बिच्छू के संबंध में किंवदन्ती है कि उसके बच्चे गर्भ में आने के बाद उसे खाने लगते हैं और खाते-खाते उसे पूरा खाकर बाहर निकल आते हैं। मादा बिच्छू बच्चे नही जनती। पर अब विज्ञान ने इसे ग़लत सिद्ध कर दिया है)।

तीन कोस तक गलकटी आगे राम का राज—तीन कोस (छह मील) तक तो परेशानी (गलकटी) है, फिर आगे राम-राज्य है। आशय यह है कि किसी काम में सफलता प्राप्त करने के लिए पहले कष्ट उठाना पड़ता है। तुलनीय : हरि० तीन कोस लग गलकटी, आग्गै राम का राज; पंज० तिन कोह तक गलकटी अग्गे राम दा राज।

तीन कोस तक मिल जा तेली उलटा फिर जा नहीं तो अकेली—स्त्री अपने पति से कहती है कि यदि तीन कोस तक जाने पर भी रास्ते में तेली मिल जाय तो वहीं से लौट आइएगा वरना मैं अकेली हो जाऊँगी यानी आप मर जायेंगे। आशय यह है कि यात्रा पर तेली का मिलना अशुभ माना जाता है। तुलनीय : हरि० तीन कोस लग मिल ज्या तेल्ली, उल्टा फिर ज्या ना रहूँगी अकेल्ली; पंज० तिन कोह लबे तेली, मुड़ आ नयीं तां होयी कल्ली।

तीन कोस लों मिले जो काना, तो फिर लौट घरे आ जाना—घर से तीन कोस (छह मील) तक चल चुकने पर भी यदि राह में काना मिल जाय तो आगे जाने की अपेक्षा घर लौट आना अच्छा है। अर्थात् काने का मार्ग में मिलना अशुभ माना जाता है। तुलनीय : पंज० तिन कोह ते जे लबे अन्ना तां कर आना पछेडा।

तीन कौर मिक्षर, तब देवता और पित्तर—पेट में तीन कौर जाने पर ही देवता और पित्तर (पितर) याद आते हैं। पेट भरा होने पर ही सब कुछ अच्छा लगता है। तुलनीय : अव० तीन पाव पित्तर तो पाछै पित्तर।

तीन गुनाह खुदा भी बख्शता है—दे० 'तीन कसूर भगवान...'।

तीन गुनाह भगवान भी माफ करे—दे० 'तीन कसूर भगवान...'।

तीन चपाती नौ बाराती खाओ चूरम-चूर—जब कोई स्त्री कोई भोज के अवसर पर कंजूसी करती है तो उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहा जाता है।

तीन छिपाए न छिपे, चोरी, हत्या, पाप—ये तीनों छिपाने से नहीं छिपते।

तीन जाति अलगर्जी, नाई धोबी दर्जी—नाई, धोबी और दर्जी ये तीनों समय पर काम नहीं करते और वायदे करते रहते हैं, इस लिए उनकी लापरवाही पर ऐसा कहते हैं। (अलगर्जी = लापरवाह)।

तीन टाँग का घोड़ा—जब कोई ग्राहक कोई सामान लेकर दाम घटाने या न लेने की दृष्टि से उसमें व्यर्थ के दोष दिखाने लगता है तो दुकानदार व्यंग्य में कहते हैं। व्यंग्य यह है कि जिस प्रकार किसी घोड़े के संबंध में यह कहना कि 'यह तीन टाँग का है, मैं नहीं लूंगा,' मूर्खतापूर्ण है, वही बात इस सामान के बारे में भी सत्य है। इसमें यथार्थतः कोई दोष नहीं है।

तीन टाँग की घोड़ी नौ मन की लदनी—किसी अयोग्य या असमर्थ व्यक्ति पर बहुत बड़ा काम लादने पर कहा जाता है। शब्दार्थ है तीन पैर की घोड़ी पर नौ मन भारी सामान। तुलनीय : पंज० तिन लतां दी कोड़ी ते नौ मनां दी रोडी।

तीन टिकट महाबिकट—तीन आदमियों का एक साथ कहीं जाना या किसी को तीन चीज़ें देना अशुभ माना जाता है। तुलनीय : राज० तीन तिकट महाबिकट; अव० तीन टिकट महाबिकट।

तीन टीका मधुरी बानी चोर चाई की यही निशानी—चंदन की तीन लीक का टीका करने वाले तथा मधुर बोलने वाले चोर होते हैं। ऐसे लोगों के प्रति व्यंग्य में कहते हैं जो बुरा होते हुए भी सज्जन लोगों जैसा दिखावा करते हैं।

तीन टेढ़ बारात में—बारात में सिंधा, पालकी का बाँस तथा समधी तीन टेढ़ होते हैं। सिंधा तथा पालकी का बाँस तो बनावट में और समधी स्वभाव में। तुलनीय : मग० तीन टेढ़ बरियात में।

तीन तिरहुतिया मिले पकना रह गया—तीन तिरहुतिया इकट्ठा हो जाने पर भोजन नहीं बन पाता। तिरहुतिया (मैथिल) ब्राह्मणों में कच्ची रसोई (चावल, दाल, रोटी आदि) में छुआछूत का बड़ा विचार होता है। उसी पर यह व्यंग्य है।

तीन तेरह घर बिखेरह—परिवार में फूट पड़ने या अलगाव होने से घर बर्बाद हो जाता है। (तीन तेरह = तितर-बितर)। तुलनीय : राज० तीन तेरह घर बिखेरह

तीन दबावत निसक हो, राजा पातक रोग—राजा, पाप और रोग ये तीनों कमज़ोर को ही दबाते हैं। आशय यह है कि कमज़ोर को सभी परेशान करते है।

तीन दिए औ तेरह पाए, कैसे लोभ ब्याज का जाए—(क) सूद (ब्याज) पर रुपया देने वाले कहीं थोड़ी-बहुत हानि होने पर भी यह काम बंद नहीं करते, क्योंकि अन्यत्र उन्हें पर्याप्त लाभ होता है। (ख) ज्यादा ब्याज लेने वालों के प्रति भी व्यंग्य में कहते हैं।

तीन दिन क़ब्र में भी भारी होते हैं—मुसलमानों की धारणा है कि तीन दिन तक लोगों को क़ब्र में अपने अपराधों का स्पष्टीकरण देना पड़ता है। इसी धारणा पर यह लोकोक्ति आधारित है। आशय यह है कि मरने के बाद भी अपने किए से छुटकारा नहीं मिलता, उसका फल भोगना ही पड़ता है।

तीन दिन की जिंदगी में बुराई क्या लेनी—मनुष्य की आयु बहुत थोड़ी होती है और इसमें बुराई लेना या किसी से शत्रुता करना अच्छा नहीं है। तुलनीय : हरि० तीन दिन नाहि तै आड़ै आवै फेर भी बुराई ले कै जां; पंज० तिन दिन रेना ते चगड़ा मुल लैना।

तीन दिन के छोकरा, हमें सिखावत बात—जब कोई कम उम्र का लड़का किसी वयस्क व्यक्ति को कोई चीज़ समझाता है तब वह कहता है।

तीन दिन के जोगी पैर तक जटा—(क) ढोंगी साधुओं के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। (ख) किसी के बहुत शीघ्र काफ़ी उन्नति कर जाने पर भी कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० तीने दिना को जोगी और पांम तक जटा।

तीन दिन मेहमान, चौथे दिन हैवान—अतिथि के रूप में कहीं भी तीन दिन से अधिक नहीं ठहरना चाहिए। अधिक दिन रहने से कोई आदर नहीं करता। तुलनीय : पंज० तिन दिनां दा परौना चौथे दा करौना।

तीन दिनों का बाऊ लाल, फिर गोड़ का गोड़—जब किसी साधारण व्यक्ति को थोड़े दिन के लिए काफ़ी सम्मान

मिल जाय और फिर वह पहले जैसी स्थिति में आ जाय तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : छत्तीस० तीन ल्निन दाउ के लाला, फेर गोंड़ के गोंड़।

तीन नरी में तेरह गज—(क) तीन बकरियों का चमड़ा फैलाने से तेरह गज होता है। (ख) छोटे सामान से किसी असंभव काम की आशा करने पर भी कहते हैं क्योंकि तीन नरी में तेरह गज़ कपड़ा संभव नहीं है। (नरी =बकरी का चमड़ा, जुलाहों का एक नलिका पर का थोड़ा सूत)।

तीन पानी तेरह कोड़, तब देखें गन्ने का पोर—आशय यह है कि अधिक गोड़ाई करने से गन्ने की फसल अच्छी होती है।

तीन पाव आटा, तूल पर रसोई—व्यर्थ के दिखावे पर व्यंग्य में कहते है।

तीन पाव की तीन पकाई सवा सेर की एक, जेठ निपूता तीन खा गया मैं संतोखन एक—जेठ ने तीन रोटियां (तीन पाव की) खाई पर मै, संतोष करने वाली ने केवल एक (सवा सेर)। जब कोई अधिक लेकर उसे कम बताने की कोशिश करे तो व्यंग्य मे कहते हैं। तुलनीय : भोज० तीन पउवा के तीन पकवली सवा सेर क एक्के, जेठ निपूता तीनों खइलस हम सतवंती एक्के।

तीन पाव मित्तर, तब देवता और पित्तर—देव० 'तीन कौर मित्तर…।'

तीन पेड़ बकायन के मियाँ बाग़बान—मियाँ साहब के पास बकायन के सिर्फ़ तीन पेड़ है फिर भी वे अपने को बाग़ का मालिक समझते हैं। थोड़ी-सी पूंजी होने पर जब कोई अपने को बहुत बड़ा (धनी) समझने लगता है तब उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

तीन प्राणी पद्‌मा रानी—अर्थात् परिवार में कम आदमी रहने से जीवन सुखमय होता है। तुलनीय : मैथ०, भोज० तीन परानी पदुमा रानी।

तीन बराती, नौ पाहुने—बराती तो केवल तीन आए हैं और मेहमान हैं नौ। जब किसी उत्सव आदि में प्रमुख अतिथि थोड़े हो और फालतू अधिक तो व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : पंज० तिन जजी नौ पराँने।

तीन बुलाए, तेरह आए—बुलाए तो केवल तीन थे, पर तेरह आ गए। (क) जब किसी अवसर पर निमंत्रित लोगों से अधिक लोग आ जाते है तब उनके प्रति कहते हैं। (ख) दबंग व्यक्ति भी ऐसा कहता है जिसके बुलाने पर भयवश एक की जगह अनेक आ जाते हैं। तुलनीय : राज० तीन बुलाया तेरह आया; गढ़० चार बुलाया चौदह आया; बुंद० तीन बुलाये तेरा आये; पंज० तिन सदे तेराँ आन।

तीन बुलाए तेरह आए, दे दाल में पानी—तीन आमंत्रित थे और तेरह आ गए तो दाल में पानी मिलाना ही पड़ेगा। आमंत्रित या अपेक्षित से अधिक व्यक्ति आवें तो आवभगत में स्वभावतः कमी करनी ही पड़ती है। तुलनीय : राज० तीन बुलाया तेरह आया ठेज दाल में पाणी; मरा० बोलावले तीन आले तेरा वरणांत पाणी आणखीं घाला।

तीन बेटा राम के, एक नहीं काम के—जब किसी व्यक्ति के सभी लड़के मूर्ख, नालायक़ या आवारा हो जायें तो कहते है। तुलनीय : पंज० मते पुत्तर कम दे नयीं हुंदे।

तीन बैल घर में दो चाकी, पूरब खेत राज की बाकी—तीन बैल होने मे एक बैल हमेशा बेकार पड़ा रहेगा, घर मे फूट होने से (दो चाकी होने से) सदा अशांति बनी रहेगी, पूरब दिशा मे खेत होने से सुबह-शाम जाते और आते समय मुंह पर धूप लगेगी और राज्य-कर बाक़ी रहने पर अपमानित होने का भय रहेगा, अतः ये चारों अच्छे नही होते।

तीन बैल दो मेहरी, काल बैठा डेहरी—जिसके तीन बैल और दो स्त्रियाँ हों उसके दरवाज़े पर साक्षात् मृत्यु बैठी है। अर्थात् उसकी बड़ी दुर्गति होती है। (डेहरी-कुठला को कहते हैं पर यहाँ पर डेहरी का अर्थ दरवाज़ा लगाया है)।

तीन ब्राम्हन जहाँ, बज्जर परे तहाँ—तीन ब्राह्मणों का एक साथ कहीं जाना अशुभ माना जाता है। तुलनीय : भोज० तीन बरामन कहवाँ बिपत परे तहवाँ; सं० न गच्छेद् ब्राह्मणत्रयम्।

तीन भेड़ तेरह गड़ेरिए—भेड़ें तीन है और उन्हें चराने के लिए गड़ेरिए तेरह। जब किसी छोटे काम को अधिक लोग मिलकर करते है तब व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : पंज० इक चूहा तिन बिल्लियाँ।

तीन में घंटा चले, तीन में तलवार; तीनइ में पैना चले आलीपुर दरबार—अलीपुर दरबार में घंटा बजाने वाले अर्थात् पुजारी को भी तीन रुपया मिलता है, तलवार चलाने वाले सिपाही को भी और हलवाहे को भी तीन रुपया ही मिलता है। जहाँ गुणी और गँवार का एक जैसा ही सम्मान हो या जहाँ अंधेरगर्दी हो वहाँ कहते हैं।

तीन में न तेरह में—जो कहीं का न हो अर्थात् नगण्य व्यक्ति के प्रति कहते हैं। तुलनीय : हरि० तीन मैं ना तेरह मैं; गढ़० ग्वैर गणो न गुसैं पूछो; तीनमाँ न तेरामाँ; पंज० नाँ तिन बिच नां तेराँ बिच।

तीन में न तेरह में, ढोल बजावें डेरा में—किसी दूसरे से प्रयोजन न रखकर अपने ही राग में मस्त रहने वाले के प्रति कहते हैं। (डेरा=अस्थायी घर)। तुलनीय: भोज० तीन में न तेरह में तबला बजावे डेरे में; अव० तीन मा न तेरा मा ढोल बजावें डेरा मा; छत्तीस० तीन माँ, न तेरा माँ, ढोल बजावै डेरा माँ; मेवा० तीन में न तेरा में मरदंग वाजे डेरा में।

तीन में न तेरह में, बावन में न बहत्तर में, न सेर भर सुतली में न करवा भर राई में—बहुत ही नगण्य व्यक्ति के प्रति कहा जाता है जिसकी कहीं भी गिनती न हो। इस संबंध में एक कहानी है: एक वेश्या थी जिसके प्रेमियों की कई श्रेणियाँ थीं। प्रथम श्रेणी के तीन थे, दूसरी के तेरह, तीसरी में बावन, चौथी में बहत्तर, पाँचवी में और भी ज्यादा थे। अत: गिनने के आलस्य से सुतली में गाँठ देकर उसने उनकी याद रख छोड़ी थी। छठी श्रेणी में असंख्य प्रेमी थे अत. एक करवे में प्रत्येक के नाम से उसने एक-एक राई रख छोड़ी थी। एक बार एक पुराना प्रेमी आया। वेश्या ने अपने भँडुए से पूछा कि ये किस श्रेणी में है। इस पर उसने उपरोक्त कहावत कही। आशय यह था कि वह किसी में नहीं है। यहाँ तक कि छठवीं में भी नहीं।

तीन में न तेरह में, मृदंग बजावें डेरे में—ऐसे व्यक्ति के प्रति कहते हैं जिसकी कोई गिनती न हो अर्थात् जिसका कोई आदर न करता हो या जो किसी से कोई संबंध न रखता हो। इस लोकोक्ति के संबंध में बहुत कहानियाँ प्रचलित है जिनमें से एक यह है जो बुंदेलखंड में प्रचलित है: एक बार वानपुर के शासक महाराज मर्दनसिंह ने यज्ञ किया और सभी ठाकुरों को उसमें भोज पर आमंत्रित किया। ठाकुरों में बुंदेले, पँवार और घघँरे श्रेष्ठ समझे जाते हैं, इनके अतिरिक्त तेरह घराने और हैं ठाकुरों के। भोज में ये सभी आए, किंतु एक और ठाकुर आए जो कि छोटे घराने के माने जाते थे और जिनसे दूसरे ठाकुर संबंध नहीं रखते थे। अब भोज में यह समस्या उत्पन्न हुई कि इन महाशय जी को भोजन कैसे कराया जाय, क्योंकि सब के बीच में बैठकर वे भोजन नहीं कर सकते थे। सोच-विचार के पश्चात् यही तय किया गया कि इनका भोजन उनके मकान पर ही भिजवा दिया जाय और ऐसा ही किया भी गया। तभी से यह लोकोक्ति कही जाने लगी। तुलनीय: मरा० अध्यांत ना मध्यांत, मृदंग वावी घरांत; बुंद० तीन में न तेरा में मृदंग बजावें डेरा में।

तीन लोक ते मथुरा न्यारी—अनोखी चाल चलने वाले के प्रति कहते हैं।

तीन लोक से गए वेऊ, सुन्न करो या वेउ जनेऊ—जिस व्यक्ति की दुनिया में कोई पूछ नहीं है उसे लिंग काटकर मुसलमान बना दो या जनेऊ पहनाकर ब्राह्मण, इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ने वाला। आशय यह है कि नगण्य व्यक्ति चाहे किसी तरफ रहे उससे कोई अंतर नहीं पड़ता। तुलनीय: भोज० तीन लोक से गइले देऊ मुनत कर चाहे दा जनेऊ। (सुन्नत=मुसलमानी)।

तीन लोक से मथुरा न्यारी—दे० 'तीन लोक ते···'। तुलनीय: अव० तीन लोक से मथुरा नियारी; राज० तीन लोक सूँ मथरा न्यारी; पंज० तिनों लोकां नालो मथरा वखरी।

तीन ही रानी के कपड़े, सुथनी नाड़ा हाथ—सलवार (सुथनी) उसमें पड़ा नाड़ा तथा हाथ—ये तीन ही कपड़े हैं। बहुत निर्धन व्यक्ति के प्रति कहते हैं। तुलनीय: पंज० तिन्न बीबी दे कप्पड़े, सुथ्थन, नाला, हथ्थ।

तीन है साह किसान के जड़, जाल अरु केर—दुर्भिक्ष पड़ने पर इन्हीं तीनों से किसान की गुज़र होती है, अत: इन्हें किसान का शाह कहा गया है। (जड़ खोदकर खाता है, जाल से मछली या चिड़िया फँसाता है, केला (केर) आदि पर गुज़र करता है)।

तीनों पन एक से नहीं जाते—बचपन, जवानी और वृद्धावस्था ये तीनों समान रूप से नहीं कटते। अर्थात् कभी सुख तो कभी दुःख रहता है। तुलनीय: पंज० सारे दिन इको जिहे नहीं हुंदे; ब्रज० तीन्यौ पन एक से नायें जायें।

तीनों लोक दिखाई दे गए—बहुत कष्ट हुआ या पूरा ज्ञान हो गया। (क) भूखा मनुष्य ऐसा कहता है। (ख) [illegible] बड़ी विपत्ति में फँस जाने पर भी कहते हैं: तुलनीय: अव० तीन्यौं लोक दिखाई पर गयें; पंज० तिनां लोक लब गए; ब्रज० तीनौं तिल्लोक दीखि गये।

तीर, तुरुमटी इसतिरी, छूटत बश ना आयें—तीर, बाज़ और स्त्री, ये तीनों एक बार हाथ से जाने पर फिर वश में नहीं आते।

तीरथ गए मुड़ाए सिद्ध—(क) जब कोई खर्च करने का अवसर आए तो खर्च करना ही पड़ता है। (ख) तीर्थ-स्थान में जाने पर सिर मुड़ाना ही पड़ता है। (ग) जैसी अवस्था आए वैसा काम करना ही पड़ता है। तुलनीय: अव० तीरथ गए मुँडाए सिध।

तीर न कमान काहे के पठान—झूठी शान बघारने वाले के प्रति कहते हैं।

तीर न कमान मियाँ का अल्लाह निगहबान—(क) जिसके पास अपना कोई बल नहीं है उसकी रक्षा ईश्वर करता है। अर्थात् उसके बचने की आशा नहीं। (ख) डींग हाँकने वाले के प्रति भी कहते हैं।

तीर न कमान मेरे चाचा खूब लड़े--शेखी बघारने वाले के प्रति कहते हैं।

तीर न तरकश चाचा तीसमारखां—ऊपर देखिए। तुलनीय : भोज० तीर न तरकस चाचा तिसमार खाँ।

तीर नहीं तो तुक्का—नीचे देखिए।

तीर नहीं तो तुक्का ही सही—किसी काम के परिणाम के अनिश्चित होने पर कहा जाता है। कोशिश करेंगे यदि सफल हो गये तो ठीक और नही तो कोई बात नही। तुलनीय : मरा० तीर नाहीं तर नाहीं, तुक्का का होई ना; राज० तीर नही तो तुक्को इ सही; भोज० तीर ना त तुक्के सही; अव० तीर नाहीं तो तुक्का; हरि० तीर नांह तै तुक्का सही; पंज० लग जावे तीर नयीं ते तुक्का; ब्रज० तीर नायें तौ तुक्का ई सही।

तीवन बिन न रोटी सोहे, गूंधे बिना ना चोटी सोहे--तीवन (दूध, दही, दाल, चटनी, अचार, सब्ज़ी आदि) के बिना भोजन अच्छा नही लगता और बिना सँवारे बाल अच्छे नही लगते।

तीस की आमद, तेंतीस का खर्च—आमदनी से अधिक खर्च करने या होने पर यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : पंज० पेहे दी कमाई तंला खर्च लगवाई।

तीसमार खाँ बने फिरते हैं—व्यर्थ में अपने को बहुत बुद्धिमान या शूरवीर समझने वाले मनुष्य के प्रति कहते हैं। इस सम्बन्ध में एक कहानी है : एक बुड्ढा सिपाही था। उसकी स्त्री प्रायः कहा करती थी कि तुम कमाने क्यों नहीं जाते। अन्ततः बुड्ढा विदेश जाने को तैयार हुआ। स्त्री ने तीस दिन के लिए तीस लड्डू बनाकर उसे दे दिए। स्त्री की गलती से कुछ ज़हर उनमें मिल गया था। थोड़ी दूर जाने पर वह रास्ते में सो गया और तीस चोरों ने आकर उसे घेर लिया। उसके पास और कुछ तो था नही। चोरों ने उन तीस लड्डुओं को छीन कर खा डाला। फलतः वे सभी मर गए। सिपाही ने तीसों की नाक काट ली और राजा को दिखाया। वहाँ के राजा इन चोरों से परेशान थे। उन्होंने जब इन चोरों के मरने का समाचार सुना तो बहुत प्रसन्न हुए। और उस बुड्ढे को तीसमारखाँ की पदवी दी यद्यपि वह इस पदवी के योग्य नही था। तुलनीय : माल० आप न्यारा कस्याक चकरवर्ती हो; अव० तीसमार खाँ बनत हैं।

तीसरा आँखों में ठीकरा—पति-पत्नी, पिता-पुत्र या मित्रों के बीच तीसरे व्यक्ति का हस्तक्षेप असह्य होता है।

तीसरा मुझको मारेगा—ऐसे अवसर पर इस कहावत का प्रयोग किया जाता है जब कोई कायर प्रोत्साहन तथा प्रेरणा देने के बाद भी कुछ करने का साहस नही बटोर पाता।

तीसरे दिन मुरदा भी हलाल है—इस्लाम धर्म के अनुसार आदमी तीन दिन भूखा रहने के बाद मुर्दा खाकर भी अपना पेट भर सकता है। आशय यह है कि भूखे के लिए भक्ष्याभक्ष्य का प्रश्न नही होता केवल पेट भरने से मतलब होता है।

तीसी के खेत में जुलाहा भुतलाने—भूत के भय से लोग जंगल आदि में डरते हैं पर मूर्ख जुलाहे तीसी (अलसी) के खेत में ही डरते हैं। जुलाहों से या बहुत डरने वालों से मज़ाक में कहा जाता है।

तुई तो मुई, नहीं तुई तो मुई—जब हर तरह से हानि हो और बचने का कोई रास्ता न हो तो कहते है।

तुख्म तासीर सोहबत का असर—बीज और संगति का असर ज़रूर पड़ता है। अर्थात् जो जैसा होता है उसकी संतान भी वैसी ही होती है और जो जिस तरह के व्यक्ति से साथ करता है, वह भी वैसा ही हो जाता है। तुलनीय : राज० संगत जिसो असर; गढ़० तुख्म तासीर सोबत असर; मल० मुलयिलरियाम् विल; अं० Kid after kind; As the seed so the sprout.

तुझको पराई क्या पड़ी अपनी निबेड़ तू—दूसरों की चिन्ता छोड़कर अपना काम करो। जब कोई अपना काम छोड़कर दूसरे के काम में हस्तक्षेप करने लगता है तो कहते है। तुलनीय : मरा० दुसऱ्याची उठाठेव कशाला स्वतः चे संभाल; पंज० तिनू किसे नालों की लैना आपना देख।

तुझसे तो गधा भी सयाना—गधा भी तुमसे बुद्धिमान है। बहुत मूर्ख व्यक्ति के प्रति कहते हैं जो साधारण काम भी नही कर पाता। तुलनीय : भीली० तो मां कई लक्खण नी कूतरा मांजे लक्खण हाउ है; पंज० तेरे नालों ते खोता भी चंगा।

तुझसे तो जा-ए-ज़रूर में भी पानी न रखवाऊँ—किसी के प्रति तीव्र घृणा व्यक्त करते हुए कहा जाता है कि तुम्हें हम इतना गिरा हुआ समझते हैं कि इतना छोटा काम भी न लें।

तुझसे पतला मूतते हैं क्या—अर्थात् तुझसे कमज़ोर नहीं हैं। जब कोई किसी दूसरे को दुर्बल समझकर लड़ना चाहे

तो दूसरा उससे कहता है। तुलनीय : अव० तोह से पातर मूतित ही का ?

तुझसे फिरे तो ख़ुदा से फिरे—तुझसे वफ़ा न करूँ तो विधर्मी कहलाऊँ। अपने वचन को दृढ़तर बनाने के लिए कहते हैं।

तुझे कोई और नहीं, मुझे कोई ठौर नहीं—तुझे कोई और आदमी नही मिलता और मुझे कोई दूसरी जगह नहीं मिलती। जब कोई दो व्यक्ति बार-बार आपस में लड़ने-झगड़ने पर भी इकट्ठे हो जायँ तो उन लोगों के प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

तुझे खिलाऊँ तेरे कुत्ते को खिलाऊँ—जिस व्यक्ति को स्वार्थ सिद्ध करना होता है वह छोटे-बड़े सभी की ख़ुशामद करता है। तुलनीय : पंज० तिनूँ खोआवाँ तेरे कुत्ते नूँ।

तुझे पराई क्या पड़ी अपनी तो निबेड़—दे० 'तुझको पराई क्या पड़ी···'।

तुझे बिगानी क्या पड़ी अपनी तो निबटा—दे० 'तुझको पराई क्या···'।

तुझे पूजूं ख़ुद को मारूँ—स्वयं को कष्ट में रखकर तुझे प्रसन्न रखूँगा। (क) जो व्यक्ति स्वार्थ-सिद्धि के लिए दूसरों की इज़्ज़त करे और अपनों को न पूछे उसके प्रति कहते हैं। (ख) कंजूसों के प्रति भी व्यंग्य में कहते हैं जो कष्ट उठाते हैं और धन को सँजोए रखते है। तुलनीय : राज० तोय भजूं पण मोय न भजूं; पंज० तिनूं पूजाँ अपणे नूं माराँ।

तुनतुनी बजाते मियाँ खाते शक्कर घी—बिना कुछ किए-धरे ही स्वार्थ सिद्ध करनेवाले मुफ़्तख़ोर के प्रति कहते हैं। (तुनतुनी = एक बाजा, चैन की बंशी)।

तुम काटो मेरी नाक औ कान, मैं न छोड़ूं अपनी बान—मूर्ख और ज़िद्दी व्यक्ति के प्रति कहते हैं जो हानि सहने और अपमानित होने पर भी ज़िद नही छोड़ता। (बान = आदत)।

तुमको हमसी अनेक हैं, हमको तुम सा एक—आपको मेरे जैसी अनेक स्त्रियाँ मिल जाएँगी पर मेरे लिए केवल आप ही हैं। पतिव्रता स्त्री का अपने पति के प्रति कहना। तुलनीय : पंज० तुसाँ नूं साडे जिहे बडे मे सानू तुहाडे जिहा इक।

तुम कौन तोप के मुँह से बाँध के उड़ा दोगे—जब कोई किसी पर रोब दिखाता है और कहता है कि मुझे तुम से कोई डर नहीं हैं तब वह ऐसा कहता है।

तुम क्या घुइयाँ छील रहे हो ?—जब दो बराबर के व्यक्ति बैठे हों और एक दूसरे से किसी काम के लिए कहें तो दूसरा इस प्रकार उत्तर देता है, अर्थात् तुम स्वयं क्यों नहीं कर लेते, तुम भी तो बेकार बैठे हो। (घुइयाँ = अरबी)। तुलनीय : पंज० तूं की आलू छिला दाँ।

तुम क्या यहाँ शहतीर साधे हो—अर्थात् तुम कौन-से भारी काम में फँसे हो जो दूसरों पर हुक्म चला रहे हो। जो व्यक्ति आराम से बैठे रहने पर भी अपने बराबर वालों पर हुक्म चलाए उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० तू की इथे लमा पेदा है।

तुम क्यों फटे में पाँव देते हो ?—दूसरे का झगड़ा तुम क्यों अपने सिर ले रहे हो ? जब कोई व्यक्ति दूसरों के झगड़े में ज़बरदस्ती टांग फँसाए तो उसको समझाने के लिए कहते हैं। तुलनीय : अव० तुम फटे मा काहे का गोड़ डारत हो।

तुम चाटो सिल मैं चाटूं लोढ़ा—अभावग्रस्त होने या समय चूक जाने पर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० तू चाट मिल हम चाटीं लोढा।

तुम जाओ पूरब, हम जाएँ पच्छिम—जहाँ सब अपनी इच्छानुसार काम करें कोई एक दूसरे की न सुने तो कहते हैं।

तुम जानो तुम्हारा काम जाने—जब कोई किसी की बात नही मानता और मनमानी करता है तब उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : अव० तुम जानौ और तुम्हार काम जानै। हिन्दी—तुम जानो तुम्हारा काम जाने; हरि० तूँह जाँणे अर तिरा काम जांणै; पंज० तू जाण तेरा काम जाणै; ब्रज० तुम जानों, तुम्हारौ करम जानें।

तुम डार-डार हम पात-पात—दे० 'तू डाल-डाल···'। तुलनीय : ब्रज० तुम डार डार हम पात पात।

तुम डाल-डाल हम पात-पात—दे० 'तू डाल-डाल···'।

तुम तो अक्ल के पीछे लट्ठ लिए फिरते हो—मूर्खता पूर्ण काम करने वाले के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : पंज० तू ताँ अकल पिछे डंडा ले के पैदा रहंदा है; ब्रज० तुम तौ अकलि के पीछे लट्ठ लै कें घूमौं।

तुम तो कुछ जानते ही नहीं, औंधे मुँह दूध पीते हो—तुम तो अभी बच्चे हो, तुम्हें कुछ पता नहीं है। जब कोई जान-बूझकर अनजान बनता है तब उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

तुम थूकते हो हम थूकते भी नहीं—जब कोई किसी व्यक्ति या वस्तु से बहुत अधिक घृणा करता है तब कहता है। तुलनीय : पंज० तुसी थुको असी क्यों थुकिये।

तुमने उड़ाई, हमने भून-भून खाई—(क) तुमने अपने

धन को बरबाद कर दिया। अतः अब पछताने के सिवाय कोई चारा नहीं। पर मैंने अपने धन का सदुपयोग किया, अतः मेरा आनन्द से रहना सर्वथा स्वाभाविक है। (ख) जब कोई किसी की खूब निंदा करता है और वह उसकी कोई चिंता नही करता तब कहता है।

तुमने कहा दिया, अपना मरन हो गया—तुमने तो कहकर छुट्टी पा ली किंतु अपनी मौत हो गई। आदेश देने वाले के प्रति कहते हैं क्योंकि कार्य चाहे कितना भी कठिन क्यों न हो वह तो कहकर छुटकारा पा जाता है किंतु जिसे करना पड़ता है वह परेशान होता है। तुलनीय : भीली—तों केय्यो ने मायें ढोच करावय्ये; पंज० तुहाडे कैन नाल असी नयीं मरना।

तुमने कौन सी जायदाद बँटानी है?—जब कोई व्यक्ति अकारण ही झगड़ा करना चाहे तो उसे समझाने के लिए कहते है कि तुम्हारी कौन-सी जायदाद मेरे पास है है जिसके लिए तुम झगड़ा करने को तैयार हो गए हो। तुलनीय : भीली—चाना माना जाओ, थारे मारे हूँ लेवू है; पंज० तुसा केड़ी जमीन बडानी है।

तुम भी कहोगे कोई मुझे जोरू करे—तुम भी कहोगे कि कोई मेरी शादी कर दे। मूर्ख के प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

तुम भी कहोगे मुझे चरखा ले दो—(क) जब कोई मूर्खता की बात या काम करता है तो उसके प्रति कहते हैं (चरखा चलाना तुम्हें नहीं आ सकता, तुम पूरे मूर्ख हो)। (ख) जो पुरुष पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों का काम अधिक अच्छी तरह कर सके उसके प्रति भी कहते हैं। (चरखा चलाना स्त्रियों का काम है)। तुलनीय: पंज० तुसी भी आखोगे मैंनू चरखा ले दे।

तुम भी कहोगे मुझे तलवार दे दो—डरपोक या स्त्रैण व्यक्ति के या स्त्रियों के कार्य को अधिक निपुणता से करने वाले या नपुंसक व्यक्ति से कहते है। तलवार मर्दों को या वीरों को दी जाती है, औरतों या नपुंसकों को नहीं। तुलनीय : पंज० तुसी भी आखोगे मैंनू तलवार दे देओ।

तुम कोरे चालीस सेरे ऊत हो—अर्थात् पूरे मूर्ख हो। (ऊत = मूर्ख; चालीस सेर = पूरा एक मन)।

तुम भी रानी हम भी रानी, कौन भरेगा पानी—जहाँ सब लोग अपने को एक-दूसरे से बढ़कर समझें और काम न करना चाहें तब कहते हैं। तुलनीय : मैथ० तूहो रानी हम बाड़ी रानी के भरी गगरी से पानी; पंज० तूँ भी रानी मैं भी रानी कौन भरेगा पाणी। (तू भी राणा मैं भी राणा कम कौन करे जराणा)।

तुम रिसाने, हम पुसाने—तुम रूठ गए हमारी जान बची। किसी अनचाहे व्यक्ति के रूठ जाने पर कहते हैं।

तुम रूठे हम छूटे—तलाक़ या संबंध-विच्छेद के समय कहा जाता है।

तुम सरीखे सैंकड़ों फिरते हैं—जब कोई किसी की परवाह नहीं करता तब कहता है। तुलनीय : ब्रज० तुम जैसे सैंकड़ान घूमैं।

तुमसे क्या छिपाव है—तुम से क्या छिपाना है। तुम तो घर के आदमी हो। जिस व्यक्ति से अपना निजी संबंध हो तो उसके प्रति अपनत्व के भाव से कहते हैं। तुलनीय : राज० थारे म्हारे क्या बँचियोड़ो; पंज० तुहाडे नालों की लुकाना।

तुम हमारी कहो न हम तुम्हारी कहें—न तो तुम मेरी बुराई करो और न मैं तुम्हारी बुराई करूँ। (क) शांत स्वभाव के व्यक्ति कहते हैं। (ख) जब कोई किसी की बुराई करता है और वह भी उसकी बुराई करता है तो जब वह (पहला) नाराज़ होता होता है तब वह (दूसरा) ऐसा कहता है। तुलनीय: पंज० न तुसी सानूं आखो न असी तुहानू आखांगे।

तुम हू कान्ह मनो भये, आज कालि के दानि—हे कृष्ण! मानो तुम भी आज कल के दानी लोगों के समान हो गए हो। आजकल संसार में दानी नहीं हैं, या दानी कहलाने वाले भी दान नहीं देते हैं।

तुम्हरे हि भाग राम बन जाहीं—जब कोई काम किसी और उद्देश्य से किया जाय पर प्रसंगतः या आनुषंगिक रूप से किसी और का कोई काम भी उससे हो जाय तो जिसका काम हुआ हो उस व्यक्ति के प्रति कहते हैं।

तुम्हारा पाव भर घी, हमारा पाव भर तेल, तुम खाओ भी लगाओ भी—तुम्हारा पाव भर घी है और मेरा पावभर तेल है आओ बदल लें। मैं तुम्हारा घी लेकर खाऊँगा पर तुम मेरा तेल खाओगे भी और शरीर में लगाओगे भी, इस प्रकार तुम्हारा ही लाभ है। जब कोई किसी की चीज से अपनी कोई चीज बदलना चाहे और यह दिखाने की कोशिश करे कि उसे स्वयं कोई लाभ नहीं है, यद्यपि यथार्थ में उसे बहुत अधिक लाभ हो तो इस कहावत का प्रयोग करते हैं।

तुम्हारा मुँह तुम्हारी पूरी—किसी व्यक्ति का स्वागत उसी की वस्तु से करने पर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० तोहरे गाल तोहरे पूआ; पंज० तुहाडा मुँह तुहाडी खंड।

तुम्हारा मुंह नहीं गंधाता (बसाता)—झूठ बोलनेवाले के प्रति व्यंग्य से कहते हैं कि झूठ बोलते-बोलते तुम्हारा मुंह भी दुर्गंधित नहीं होता।

तुम्हारा मुंह नहीं दुखता ?—बहुत अधिक, तेज या ऊंचा बोलने वाले को कहते हैं।

तुम्हारा मेरा है और मेरा मेरा है ही—धूर्त दूसरे से आत्मीयता जताकर लाभ उठाने के लिए ऐसा कहता है। तुलनीय : असमी-- तोर् हले मोर्, मोर् हले बापेर रो नहय् तोर।

तुम्हारा सो हमारा, हमारा तो हमारा है ही—ऊपर देखिए।

तुम्हारी आंख में नौ नन बालू—जब कोई किसी के प्रति कहता है— तुम तो बहुत अच्छे लग रहे हो, या तुम्हारी अमुक चीज़ बहुत अच्छी लग रही है तो उसके प्रति कहते हैं। आशय यह है कि यदि तुम देख रहे हो तो तुम्हारी आँख फूट जाय। यह प्राय: मज़ाक़ में कहा जाता है। तुलनीय : पंज० तेरी अख बिच नौ मन रेत।

तुम्हारी आँख मेरी टाँग चलो घूम आवें—मुसीबत के समय जब दो व्यक्ति एक दूसरे की सहायता करने को तैयार होते हैं तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मैथ० आहांक क दालि चाउर हमर टोकना आउ दुनू गोटे करू भोजना।

तुम्हारी जूती और तुम्हारा ही सिर—जब किसी को अपने ही कार्यों से हानि उठानी पड़े या अपमानित होना पड़े तब उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० जिदी जूती उदाही सिर; ब्रज० तुम्हारी जूती और तुम्हारौ ई सिर।

तुम्हारी दिल्ली देखी हुई है—किसी वस्तु विशेष की जब बहुत अधिक प्रशंसा होती है किन्तु वास्तव में वह वैसी नहीं होती तब उक्त कहावत कही जाती है। तुलनीय : मैथ० देखलौ सीली तोहरो दिल्ली; भोज० तोहार दिल्ली देखल हऽ।

तुम्हारी बराबरी वह करे, जो टाँग उठाकर मूते--तुम कुत्ते हो, तुमसे कौन बात करे? (क) मूर्खों के प्रति कहते हैं जो किसी की बात को नहीं मानते। (ख) डींग हाँकने वालों के प्रति भी व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : पंज० तुहाडे नाल लड़े जिहड़ा लत चुक के मुतरे।

तुम्हारी बराबरी वह करे, जो दौड़ते हिरन को पकड़े—जिस तरह दौड़ते हुए हिरन को पकड़ना असंभव है उसी तरह तुम्हारी बराबरी करना भी। बहुत लंबी-चौड़ी बातें करने वाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज तुहाडे नाल उह लड़े जिहड़ा नठदे हिरण नूं फड़े।

तुम्हारी बात उठाई जाय, न धरी जाय—व्यर्थ की बातें करने वालों के प्रति कहते हैं।

तुम्हारी बात का एतबार क्या ?—अर्थात् तुम्हारी बातों का मुझे कोई विश्वास (एतबार) नहीं है। बहुत अधिक झूठ बोलने वाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० तुहाड़ी गल दा की परोसा।

तुम्हारी बात न थल की न बेड़े की—तुम्हारी बात न तो ज़मीन की है और न जल की। ऊटपटांग बातें करने वाले के प्रति कहते हैं।

तुम्हारी बात में बंद क्या ?—तुम्हारी बात का ठिकाना ही क्या, अर्थात् तुम्हारी बात का कोई विश्वास नहीं है। झूठ बोलनेवाले के प्रति कहते हैं। (बंद=बाँधने की चीज़ अर्थात् प्रतिबंध)।

तुम्हारी माँ ने खसम किया बुरा किया, कहा—छोड़ दिया, और भी बुरा किया—किसी लड़के की माँ ने पति के मरने के पश्चात् दूसरा पति कर लिया। लड़के ने गुरु को बताया कि माँ ने क्या किया, तो उन्होंने कहा कि बुरा किया और लड़के ने कहा अब छोड़ दिया, तो उन्होंने कहा कि यह तो और भी बुरा है। आशय यह है कि प्रत्येक कार्य को समझ-बूझकर करना चाहिए और एक बार कर लेने पर उसको छोड़ना नहीं चाहिए।

तुम्हारे चाटे तो रोम भी नहीं उगते—अर्थात् तुम जिसके पीछे पड़ जाते हो वह पनपने नहीं पाता। जब कोई किसी के पीछे इस तरह से पड़ जाय कि वह उसे बर्बाद करके छोड़े तो व्यंग्य से उसके प्रति कहते है। तुलनीय : पंज० तुहाडे चट्टन नाल ते कंडे भी नहीं उगदे; ब्रज० तुम्हारे चाटे तौ रोंगटाऊ नायें।

तुम्हारे जैसे तो हमारी अंटी में बँधे हैं—तुम्हारे जैसे लोगों को तो हम बग़ल में बाँधे रहते है। लड़ाई-झगड़े में दूसरे पक्ष का अपमान करने या रुआव जमाने के लिए कहते हैं। तुलनीय : पंज० तुहाडे जिहे ते मेरी जेब बिच रहंदे हन।

तुम्हारे जैसे सैकड़ों देखे हैं—ऊपर देखिए।

तुम्हारे जैसे सैकड़ों फिरते हैं—जब कोई नौकर मालिक को काम छोड़ देने की धमकी देता है तब मालिक ऐसा कहता है। तुलनीय : भोज० तुहरे एइसन सौ जनी घुमत बाड़ें; अव० त्वहरे जैसन सैकड़ फिरत हैं; पंज० तुहाडे जिहे बथेरे फिरदे नें।

तुम्हारे पेट में चींटे की गाँठ है—बहुत कम खाने पर कहते है।

तुम्हारे फ़रिश्तों को भी ख़बर नहीं--तुम किसी भी तरह से नही जान सकते। जब कोई किसी की गुप्त बात का जानकार होने का दावा करता है तब वह ऐसा कहता है। (मुसलमानों का विश्वास है कि प्रत्येक व्यक्ति के साथ दो फ़रिश्ते होते हैं जो उसके सारे कामों की ख़बर रखते हैं)। यह लोकोक्ति इसी विश्वास पर आधारित है। तुलनीय : हरि० तेरे देवताँ नें भी खबर को न्याँ; पंज० तेरे पिउ नूं भी खबर नहीं।

तुम्हारे बैल हमारे भैंसा, तुम्हारा हमारा फिर साथ कैसा (बैल भैंसे से तेज़ चलता है)। आशय है कि अनमेल आदमियों का साथ या मेल सम्भव नही।

तुम्हारे भतार न हमारे जोय, अस कुछ करो कि बेटवा होय— तुम्हारा न पति है और न मेरी पत्नी। आओ मिल-जुलकर कुछ ऐसा उपाय किया जाय जिससे पुत्र उत्पन्न हो। (क) रँडुए का विधवा के प्रति कथन है। (ख) जब दो असमर्थ व्यक्ति आपस में मिलकर कुछ करने की सोचते हैं तब भी कहते हैं। तुलनीय : भोज० तुहरे मरद न हमरे जोय अस कुछ कर कि लड़का होय।

तुम्हारे मरे देश ख़ाक, हमारे मरे देश पाक— तुम्हारे मरने से देश बरबाद हो जाएगा और हमारे मरने से देश पवित्र हो जाएगा। किसी को अपने से महान बताने के लिए कहते हैं।

तुम्हारे मरे देश पाक, हमारे मरे देश ख़ाक--तुम्हारे मरने से देश पवित्र हो जाएगा और मेरे मरने से देश का बहुत अहित होगा। (क) अज्ञान-जनित दंभ। (ख) आपस में मज़ाक में भी कहते है।

तुम्हारे मुंह का उगाल, हमारे पेट का आधार— तुम्हारे मुँह से जो बाहर गिर जाता है उसी से मेरा पेट भर जाता है। आशय यह है कि जो चीज़ बड़े लोग अनावश्यक समझकर त्याग देते हैं उसी से छोटों का काम चल जाता है।

तुम्हारे मुंह में घी-शक्कर—अच्छी ख़बर सुनाने या शुभकामना प्रकट करने पर कहते है। तुलनीय : मरा० तुमच्या तोण्डांत साखर पडो; अव० तुम्हरे मुंह मा घी शक्कर; पंज० तुहाडे मुंह विच घी-शक्कर; ब्रज० तुम्हारे मुंह में घी सक्कर।

तुम्हें ग़ैरों से कब फ़ुरसत, हम अपने ग़म से कब ख़ाली—न तो तुम कभी दूसरों के काम से ख़ाली रहते हो और न मैं कभी अपने दुख से ख़ाली रहता हूँ। (ख) पति के प्रति पत्नी का कथन। (ख) एक मित्र का दूसरे मित्र के प्रति कथन।

तुरई कद्दू, लानत हरदू—तोरी (तुरई) और कद्दू दोनों बेकार हैं। जहाँ कोई भी चीज़ अच्छी न हो वहाँ कहते हैं।

तुरक काके मीत, सरप से क्या प्रीत—तुर्क (तुरक) किसके मित्र होते हैं और सर्प (सरप) से कैसी प्रीति? अर्थात् तुर्क (मुसलमान) किसी के मित्र नहीं होते और सर्प से कोई प्यार नहीं करता। आशय यह है कि दुष्ट किसी के मित्र नहीं होते, उनसे सदा दूर ही रहना चाहिए।

तुरक तेली ताड़, यह सूबे बिहार—तुर्क (तुरक, मुसलमानों की एक जाति) तेली और ताड़--ये तीनों बिहार प्रान्त में बहुत पाए जाते हैं।

तुरक तोता ख़रगोश, कभी न माने पोश--(क) ये तीनों किसी का एहसान नहीं मानते। (ख) तुर्कों के प्रति भी व्यंग्य में ऐसा कहते हैं क्योंकि तुर्क जाति के लोग कृतघ्न होते हैं वे किसी का एहसान नही समझते।

तुरकी पीटे ताज़ी काँपे--एक को मज़ा पाते देख दूसरे को भी डर लगता है। (तुर्की, ताज़ी दो प्रकार के घोड़े हैं)।

तुरत दान महाकल्यान— तुरत देना सर्वश्रेष्ठ है। (क) तुरत देने वाले पर प्रसन्न होकर या वादे करने वाले पर व्यंग्य रूप से यह लोकोक्ति कही जाती है। जिससे कोई चीज़ माँगी जाय उससे यह संकेत करने के लिए भी कि अभी दे दो, इस कहावत का प्रयोग करते हैं। तुलनीय : माल० तुरन्त दान ने महापुन्न; भीली--तुरत दान ने महापन्न; राज० तुरत दान महापुन; भोज० तुरन्त क दान महाकल्यान; अव० तुरत दान महा कल्लियान; मरा० तुरत दान महा पुण्य; मल० उण्णाचोरु मण्णु; पंज० छेती दान महाकलयाण; ब्रज० तुर्तदान, महाकल्यान; अं० He gives twice that gives in a trice, Giving to the poor is lending to the Lord.

तुरत फ़तह हो उसके नाई, जिसका हामी हो गोसाईं— जिसके साथ भाग्य या ईश्वर है उसकी जीत तुरत होती है। अर्थात् किसी कार्य में शीघ्र सफलता सबको नहीं मिलती।

तुरत फुरत हों सारे काम, जब होवे मुट्ठी में दाम— पास में पैसा रहे तो किसी काम के होते देर नहीं लगती। तुलनीय : पंज० मुठ विच पैहा होन नाल सारे कम छेती हो जाँदे हन।

तुरत फुरत हो वह ही कार मदद करे जिसकी सरकार—मालिक या शासन जिस काम में सहायता करे उसके होते देर नहीं लगती। (कार = कार्य, काम)।

तुरत भलाई वह नर पावे, जो धनवाला नाम छुटावे—

जो ईश्वर के नाम पर खर्च करता है उसकी नेकनामी बहुत जल्द फैल जाती है। (धनदाता=धन देने वाला अर्थात् ईश्वर)। तुलनीय : ंज० जिहड़ा बंदा रब दे नाँ दान करदा है उहदा कम छेती बन जाँदा है।

तुरत मजूरी चोखा काम—नीचे देखिए। तुलनीय : ब्रज० तुरत मजूरी चोखौ काम।

तुरत मजूरी जो परखावे, वाका काज तुरत हो जावे—मज़दूरी उधार न रखने वाले का काम शीघ्र हो जाता है। उसके काम को मजदूर मन लगाकर करते हैं। तुलनीय : राज० तुरत मजूरी जो परखावै ज्यांरो काम तुरत हो जावै।

तुरतहि पोवो तुरतहि खोवो, बासी खा मत ओझ बढ़ाओ—खाना ताज़ा ही खाना चाहिए, बासी खाने से तोंद निकलती है।

तुरुक का के मीत, सरप मे का पीत—तुर्कों (मुसल-मानों) से मित्रता रखना ऐसा ही है जैसे साँपों से प्रेम कर लिया। आशय यह है कि ये दोनों ही घातक होते हैं इनसे सम्पर्क करना ठीक नहीं है।

तुरुक कायथ खरगोश ये न माने पोश—तुर्क, कायस्थ और खरगोश को चाहे कितना भी खिलाओ-पिलाओ फिर भी ये अपने नहीं होते अर्थात् ये एहसान नहीं मानते।

तुरुक ततैया तोतड़ा ना काहू के मीत—मुसलमान, बर्रे (ततैया) और तोते (तोतड़ा) ये किसी के मित्र नहीं होते।

तुरुक ताड़ी बैल खिसारी—तुर्क ताड़ी (एक मादक द्रव्य) और बैल खिसारी (एक प्रकार की दाल) खाकर प्रसन्न रहता है। तुलनीय : भोज० तुरक तारी बरध खिसारी।

तुरुक ते मुसक थोड़े हूँगा—तुर्क से बुरा नहीं होऊँगा। अर्थात् तुर्क बहुत बुरे होते हैं।

तुरुक तेली ताड़, ये सूबे बिहार—बिहार में इन तीन (मुसलमान, तेली, ताड़) की अधिकता है।

तुरुक तोता खरगोश, कभूं न माने पोश—ये तीनों किसी का पोस नहीं मानते। अर्थात् इनको अपना समझना मूर्खता है।

तुरुक मिताई आगे मीठ, पाछे कड़ुआई—तुर्क अर्थात् मुसलमान की मित्रता पहले तो अच्छी लगती है, किन्तु बाद में हानि पहुँचाती है। आशय यह है कि मुसलमान विश्वास-घाती होते हैं।

तुर्क होना है तो क्या बेहना के साथ—नीचे देखिए।

तुर्क होसी बेहना—अपना धर्म छोड़कर मुसलमान (तुर्क) बने तो (मुसलमानों में सबसे निम्न स्तर का) बेहना क्यों? अर्थात् जब धर्म बदला तो छोटा क्यों बने। धर्म बदलने के बाद तो कम से कम उच्च बने। अपना धर्म, रीति-रिवाज, परिवार या समाज छोड़कर यदि कोई उल्लेख्य प्राप्ति न करे, उसकी स्थिति न बदले तो कहते है। आशय यह है कि तुर्क बने तो अच्छा तुर्क बने, बेहना क्यों। तुलनीय : अव० तुरुक होय तो बेहना।

तुर्की गए तुरुक बनि आए बोलें तुर्की बानी, आब-आब करि मरि गए सिरहाने रखा पानी—दे० 'काबुल गए मुग़ल ......'।

तुलसी अपनो आचरन, भलो न लागत कासु—तुलसी-दास कहते हैं कि अपना आचरण सभी को अच्छा लगता है।

तुलसी कबहुँ न त्यागिए, अपने कुल की रीति—अपने कुल की रीति को कभी नहीं छोड़ना चाहिए। तुलनीय : पंज० अपने खानदान दी रीत कदी न छडो।

तुलसी कबहूँ होत नहीं, रवि रजनी इक ठौर—सूर्य और अंधकार दोनों एक साथ नहीं रह सकते। तुलनीय : पंज० सूरज ते हनेरा दोनों इक नाल नहीं रहंदे।

तुलसी का पत्ता कौन बड़ा कौन छोटा—नीचे देखिए। तुलनीय : ब्रज० तुलसी कौ पत्ता, कहा बड़ौ कहा छोटौ।

तुलसी के पत्ते में कौन छोटा कौन बड़ा—(क) बड़े लोग आपस में बड़े हों या छोटे पर छोटों के लिए सभी बराबर हैं। (ख) जहाँ कई मालिक हों वहाँ नौकर कहते हैं उनके लिए तो सभी मालिक है, अतः सभी बराबर हैं। तुल-नीय : भोज० तुलसी क पत्ता कवन बड़ कवन छोट; पंज० तुलसी दे पतरबिचों बडा केड़ा निका केड़ा।

तुलसीदास ग़रीब को कोई न पूछे बात—अर्थात् ग़रीब का कोई मित्र नहीं होता। तुलनीय : मल० मुट्टुण्टेन्किल् इष्टम् पोकुम्; पंज० गरीब नूं कोई नहीं पुछदा; अं० Poverty parts friends.

तुलसी पावस के समय, धरी कोकिला मौन—पावस ऋतु में कोकिला मौन धारण कर लेती है अर्थात् असमय में गुणी लोग चुप हो जाते हैं।

तुलसी बुरो न मानिए जो गँवार कहि जाय—गँवार की बातों का बुरा नहीं मानना चाहिए क्योंकि जिसमें जितनी बुद्धि होती है उतनी ही बात वह करता है। तुल-नीय : पंज० गुआर दिआं गलाँ दा बुरा नहीं मनना चाहिदा।

तुलसी मिटे न वासना बिना विचारे ज्ञान—ज्ञान के बिना बुराई (वासना) का नाश नहीं होता। तुलनीय : पंज० ज्ञान बगैर वासना नहीं मिटदी।

तुलसी मीठे वचन ते सुख उपजत चहुँ ओर—मीठी बात से हर जगह सम्मान मिलता है। तुलनीय . पंज० मिठा बोलों अते सदा सुख पाओ।

तुलसी संत सुअंबु तरु, फूलि फरहिं पर हेत—जिस प्रकार आम का वृक्ष दूसरों के लिए फूलता-फलता है उसी प्रकार संतजन परोपकार के लिए ही सब कुछ करते हैं। आशय यह है कि सज्जन व्यक्ति सदा दूसरों की भलाई के लिए ही कार्य करते हैं।

तुली बोटी नपा शोरबा—खर्च पर पाबंदी या रोक-टोक होने पर कहते है।

तुषकण्डनन्यायः—भुस को पीसने का न्याय। तात्पर्य यह है कि अनावश्यक प्रयत्न करना। भुस को बार-बार पीसने से वह उपयोग के योग्य नहीं रह पाता। यह न्याय पिष्टपेषण न्याय के समान है।

तू अपनी कह मैं तेरी कहूँ—खुशामदी व्यक्ति को कहते हैं क्योंकि चाहे ग़लत हो चाहे ठीक हो वह हाँ-में-हाँ अवश्य मिलाएगा। तुलनीय : पंज० तू अपनी दस मैं तेरी दसना।

तू कर अपना काम तर्बालिया भूँकन दे—अपना काम करो कुत्तों को भूँकने दो। तात्पर्य यह है कि लोगों की आलोचना की परवाह न करके अपना काम करते रहना चाहिए। तुलनीय : पंज० तू अपना काम करदा रह कुत्तयाँ नू भूँकन दे।

तू कहे सो सच बुढ़िया तू कहे सो सच—किसी झूठी बात को झूठी न कहकर व्यंग्य से सच्ची कहने पर कहते हैं। इस संबंध में एक कहानी है : एक बुढ़िया को होली मे चोरों ने लूट लिया और उसे उठाकर कंधे पर रखकर घुमाने लगे। रास्ते में बुढ़िया चिल्लाती जा रही थी कि इन्होंने मुझे लूट लिया। और वे सब उपयुक्त कहावत कहते जाते थे। लोग समझते थे कि होली का तमाशा है। तुलनीय : ब्रज० तू कहै सो सच्च, बुढ़िया तू कहै सो सच्च।

तू काम से चोर मैं जाति से चोर—तुम तो चोरी करने के कारण चोर हो, किंतु मैं तो खानदानी चोर हूँ अर्थात् हमारा तो यह खानदानी काम है। जब कोई व्यक्ति किसी की धोखेधड़ी से बच जाए अर्थात ठगा न जा सके तो वह ठगने वाले के प्रति व्यंग्य मे ऐसा कहता है। तुलनीय : गढ़० तु ठगणी को ठग मि जाती क्वै ठग।

तू खोल मेरा मकना, मैं घर सँभालूँ अपना—जब कोई बहू सुसराल में आते ही घर पर अधिकार जमा ले तो कहते हैं।

तू गधी कुम्हार की तुझे राम से कौथ—तुम तो कुम्हार की गधी हो तुझे राम से क्या मतलब। जब कोई तुच्छ मनुष्य किसी ऐसी बात में दखल दे जिसमें उसका कुछ अधिकार न हो तो कहते हैं। तुलनीय : माल० तू गधी कुमार री, थारे राम ती कई काम; कौर० तू तो गधी कुंभार की तने राम सू कौत; पंज० तू खोती कमैर दी तिनूं राम नाल की।

तू गोर खोद मोकों मैं गाड़ आऊँ तोकों—यदि तुम मेरे लिए क़ब्र (गोर) खोदोगे तो मैं तुम्हें गाड़ दूंगा। आशय यह है कि यदि तुम मेरे साथ बुरा बर्ताव करोगे तो मैं तुम्हारे साथ उससे भी बुरा व्यवहार करूँगा।

तू चल, मैं आया—तू चल मैं अभी आ रहा हूँ। जो व्यक्ति दूसरों का काम न करके वायदे से ही टरका दे उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० हूँ आयो, तूं चाल; पंज० तूं चल्ल मैं आन्ना; ब्रज० तू चलि मैं आयौ।

तू चाह मेरे जाये को, मैं चाहूँ तेरे खाट के पाये को—सास जमाई से कहती है कि यदि तुम मेरी लड़की (जाई) को प्यार दोगे तो मैं तुम्हारी चारपाई (खाट) के पाये को भी प्यार करूँगी। आशय यह है कि यदि तुम मेरे साथ अच्छा व्यवहार करोगे तो मैं भी तुम्हारे साथ अच्छा व्यवहार करूँगी।

तू छुए और मैं मुई—ज्योंही तुम मुझे छुओगे, मैं मर जाऊँगी। अपने आपको बहुत सुकुमार बताने वाली स्त्री के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : पंज० तू हथ ला मैं मरी।

तू जाय रंडी के, मैं जाऊँ भड़ुए के—तुम रंडी के पास जाओगे तो मैं भड़ुए के पास जाऊँगी। जब पति-पत्नी दोनों चरित्रभ्रष्ट होते हैं तब व्यंग्य में उनके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० तूं कीनी हरामजादी ते मैं कीता हरामजादा

तू डाल-डाल मैं पात-पात—एक से बढ़कर एक चालाक। (क) जहाँ सब लोग काफ़ी होशियार हों, वहाँ ऐसा कहते हैं। (ख) जब कोई किसी को धोखा देना चाहता है तब वह ऐसा कहता है। अर्थात् मैं तुम्हारी सब चालें समझता हूँ। मेरे साथ तुम्हारी चालें काम नहीं करेंगी। तुलनीय : अव० तुम डार-डार तो मैं पात-पात; भोज० तू डार-डार त हम पात-पात; हरि० तूंह डाळ-डाळ तै मैं पात-पात; कौर० तू डाल-डाल मैं पात-पात; राज० तूं डाळ-डाळ तो हूँ पात-पात; मरा० तुला फाँदी फाँदीचे ज्ञान, मी जाण पान पान; पंज० तू सेर मैं सवा सेर; ब्रज० तू डार-डार मैं पात-पात।

तूती चुंगे तो ऊँच-चुंग, नीच चुगन मत जा—(क) अधीनता स्वीकार करनी हो तो बड़े या अच्छे की करनी

चाहिए न कि छोटे या बुरे की। (ख) एहसान लेना हो तो बड़े या अच्छे का ले न कि बुरे का।

तू तेली का बैल तुझे क्या सैल, लगा रह घानी में—तुम तो तेली के बैल हो, तुम्हें घूमने-फिरने (सैल) से क्या मतलब? तुम घानी पेरने में लगे रहो। दिन-रात काम में लगे रहनेवाले के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। (घानी = कोल्हू में एक बार जितनी सरसों या तीसी आदि डालते हैं उसे घानी कहते हैं)।

तू गधी कुम्हार की तुझे राम से क्या—दे० 'तू गधी कुम्हार की···'।

तू नहीं नाचता, तेरे पेट का माल नाचता है—यह नाच तुम नहीं कर रहे हो, नाच रहा है वह माल जो तुमने खाया है। अच्छा भोजन मिलने पर व्यक्ति अधिक परिश्रम कर सकता है, यही इस लोकोक्ति का भाव है। तुलनीय: मेवा० थूं कई नाचे रे राज्या थारा गऊँ नाचे वाज्या; पंज० तू नहीं नचदा तेरा ढिड तेनूं नचांदा है।

तू ने की रामजनी मैंने किया रामजना—दे० 'तू जाय रंडी के···'।

तूने गाली न दी होगी तो तेरे बाप ने दी होगी—जब कोई लड़ाई-झगड़ा करने के लिए किसी प्रकार की झूठी बात ही गढ़ ले तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय: गढ़० तेरो बाबू डाँडा कौड़ी निबूतदो त मेरा बाबू सणी रिख नि खांदो; पंज० तू गल नहीं कडी तेरे पिओ ने कडी होवेगी; ब्रज० तैनैं गारी न दई होयगी तौ तेरे बापनें दई होयगी।

तूने दिया सो किसने लिया?—जब कोई व्यक्ति विपत्ति के समय की हुई सहायता या उपकार को बाद में नहीं मानता उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय: गढ़० तेरी सेवा मेरा कथैं; पंज० तू दिता ते किन लेया।

तूफ़ान शैतान अल्लाह निगहबान—तूफ़ान और शैतान इन दोनों से ईश्वर (अल्लाह) ही बचाए। अर्थात् इन दोनों से बचना बड़ा मुश्किल होता है। (निगहबान = रक्षक)।

तू फिर डाल-डाल मैं फिरूँ पात-पात—दे० 'तू डाल डाल मैं···'।

तू भी ठाकुर मैं भी ठाकुर, पकड़े कौन मसाल?—दे० 'तू भी रानी मैं भी रानी···'।

तू भी ठाकुर मैं भी ठाकुर, मशाल कौन पकड़े?—दे० 'तू भी रानी मैं भी रानी···'। तुलनीय: मेवा थूंई ठाकुर मूंई ठाकुर कूंण पकड़े मसाल।

तू भी रानी मैं भी रानी कौन भरे पानी—जब सभी अपने को एक से एक बढ़कर समझें तो छोटे-मोटे ज़रूरी कार्यों को कौन करेगा? ऐसी स्थिति पर या ऐसा समझने वालों पर व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय: मरा० तूहि राणी मीहि राणी, कोण भरील विहिरीचें पाणी; गढ़० तू राणी मैं राणी को फूटो चीणा-दाणी; पंज० तू बी रानी मैं भी रानी कौण भरे खूओं पाणी मल० नीयुम् राणि, जानुम् राणी आरु कोरुम् किणट्टिले वेललम्; ब्रज० तू रानी, मैं रानी, कौन भरैगौ पानी।

तू मुझको तो मैं तुझ को—यदि तुम्हारा व्यवहार मेरे साथ अच्छा रहेगा तो मेरा भी तुम्हारे साथ अच्छा ही रहेगा। तुलनीय: राज० तूं मने हूँ तने; पंज० तूं मैन्नू ते मैं तेन्नू; ब्रज० तू मोकूं तौ मैं तोकूं।

तू मेरा लड़का खिला, मैं तेरी खिचड़ी पकाऊँ—एक दूसरे की सहायता करने या आपस में समान व्यवहार रखने के लिए कहते हैं। (स्त्री अपने पति से कह रही है)। तुलनीय: पंज० तूं मेरा मुँडा खिडा मैं तेरी खिचड़ी पकानी हाँ; ब्रज० तू मेरे छोराय खिलाय, मैं तेरी खीचरी पकाऊँ।

तू मेरी जिकर में, मैं तेरी फ़िकर में—यदि तुम मेरी बदनामी करोगे तो मैं तुम्हारी करूँगा। अर्थात् तुम जैसा मेरे साथ करोगे वैसा मैं भी तुम्हारे साथ करूँगा। तुलनीय: पंज० तूं मेरी कर मैं तेरी करां।

तू मेरी रख मैं तेरी रखूं—तू मेरी इज्ज़त कर मैं तेरी इज्जत करूँ। अर्थात् जो दूसरों का आदर करता है दूसरे भी उसका आदर करते हैं। तुलनीय: पंज० तूं मेरी रख मैं तेरी रखाँ। ब्रज० तूं मेरी राखि, मैं तेरी राखूं।

तू मेरे घूंघट की रख मैं तेरी मूंछों की रखूंगी—स्त्री का पति के प्रति कहना है कि यदि तुम मेरी इज्ज़त रखोगे तो मैं भी तुम्हारी इज्ज़त रखूंगी। तुलनीय: पंज० तू मेरे चुड दी रख मैं तेरीआं मुछा दी रखांगी।

तू मेरे बारे को चाहे, तो मैं तेरे बूढ़े को चाहूँ—दे० 'तू मुझको तो···'। तुलनीय: ब्रज० तू मेरे बारेयै चाहै तो मैं तेरे बूढ़े है चाहूँ।

तू मेरे मुँह में अँगुली दे, मैं तेरी आँख में—तुम मेरे मुँह में अँगुली दो और मैं तुम्हारी आँख में अँगुली देती हूँ। मेरे मुँह में अंगुली देगा तो उसे मैं दाँतों से काट लूंगा और अपनी अँगुली से उसकी आँख फोड़ दूंगा। जो व्यक्ति सभी तरह से अपना लाभ और दूसरे की हानि करना चाहे उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय: राज० तूं म्हारे दे बाके में हूँ थारे दे आंख में; पंज० तूं मेरे मुंह बिच उंगल दे मैं तेरी आख बिच; ब्रज० तू मेरे मुंह में उँगरिया करैगौ तौ मैं तेरी आँख में करुगो।

तू रूठी मैं छूटी—अच्छा हुआ तुम नाराज हुईं (रूठी) मेरा साथ तो छुट गया। जैसे को तैसा। कौर० तू रूठी; मैं छूठी सं० शठे शाठ्यं समाचरेत्; अं० Tit for tat.

तू तेल तापना, पूस माघ है अपना—रूई (तूल) तेल और आग (तापना) हो तो जाड़े में कष्ट नहीं होता।

तू सच्चा, तेरा गुरू सच्चा—(क) सच्चे या ईमानदार व्यक्ति को कहते हैं। (ख) झूठे व्यक्ति के प्रति भी व्यंग्य में कहते हैं।

तू सच्चा, तेरा पीर सच्चा—ऊपर देखिए। तुलनीय: ब्रज० तू साँचौ, तेरौ पीर साँचौ।

तेंतर बेटा भीख मँगावे, तेंतर बेटी राज रजावे—तीन बेटी के बाद यदि पुत्र पैदा हो तो माँ-बाप को भीख माँगनी पड़ती है अर्थात् वह बड़ा कुलक्षण होता है पर तीन बेटे के बाद यदि बेटी पैदा हो तो माता-पिता राजसुख भोगते हैं, अर्थात् वह बड़ी शुभ या सुलक्षणी होती है। कुछ लोगों के अनुसार इसका दूसरा भी अर्थ है। दे० 'तेंतर बेटी राज…'।

तेंतर बेटी राज रजावे, तेंतर बेटा भीख मँगावे—तीन लड़कियाँ यदि लगातार पैदा हों तो तीसरी बेटी बड़ी भाग्यवान होती है और बाप राजा जैसा सुख भोगता है। किंतु तीन बेटे यदि लगातार पैदा हों तो तीसरा बेटा बड़ा अभागा होता है और बाप से भीख मँगवाता है। कुछ लोग इसका अर्थ दूसरी तरह भी करते हैं। ऊपर देखिए।

तेज आँधी में चिड़िए का क्या पता?—अर्थात् भयंकर परिस्थिति या संकट के समय शक्तिशाली या प्रतिभावान् ही टिक सकते है, कमजोर नहीं। तुलनीय: मैथ० आंधी में बगुला के पता; मग० आंधी में बगुला के बाह।

तेज घोड़े को ऐड़ कैसी—बिना कहे या इशारे पर काम करने वाले व्यक्ति या नौकर को डाँट या धमकी आदि की जरूरत नहीं होती। (घोड़े को चलाने के लिए एड़ लगाई जाती है)। तुलनीय: ब्रज० तेज घोड़ा में एड़ कैसी।

तेज हवा से बचकर चलना पड़ता है—अर्थात् आपदाओं से सभी बचना चाहते है।

तेतरी बेटी राज रजावे, तेतरा बेटा भीख मंगावे—दे० 'तेंतरी बेटी राज रजावे…'।

तेते पाँव पसारिए जेती चादर होय—नीचे देखिए।

तेते पाँव पसारिए, जेती लांबी सौर—जितनी लंबी चादर (सौर) हो, उतना ही पैर फैलाना चाहिए। आशय यह है कि अपनी सामर्थ्य के अनुसार ही कोई कार्य करना चाहिए या व्यय करना चाहिए। तुलनीय: राज० दुपटी देखअर पग पसारो; सीरख देखर पग पसारणा चीयीजे; हरि० सौड़ गैल्य पांह पसारणो आच्छे; मरा० जितकी वुलई लाँब असेल तितकेच पाय पसरावेत; पंज० पैर उन्ने ही बिछाओ जिन्नी लंबी चादर है।

तेरह अगहन चैत आठ, जहाँ चाहो वहाँ काट—अगहन-कृष्ण की त्रयोदशी तथा चैत-कृष्ण की अष्टमी के बाद क्रमशः धान तथा रबी की फ़सल सर्वत्र पक जाती है, अतः जहाँ इच्छा हो वहीं फ़सल काटो। तुलनीय: मैथ० अगहन के तेरह चैत के आठ जहाँ चाहे तहाँ काट; भोज० अगहन तेरह चइत आठ जहँवाँ मन करे तहँवाँ काट।

तेरह कातिक तीन आषाढ़, जो चूका सो गया बजार—जो खेत को कार्तिक के मास में तेरह बार और आषाढ़ के मास में तीन बार जोतना भूल जाता है उसके खेत में कुछ भी नहीं पैदा होता है और उसे बाज़ार से खरीद कर खाना पड़ता है। या जो आषाढ़ के माह में तीन दिन के अन्दर और कार्तिक में तेरह दिन के अन्दर खेत नहीं बो लेता है उसके यहाँ बहुत कम अन्न पैदा होता है। और वह बाजार से ही ख़रीद कर खाता है।

तेरह की भैंस लाए लोग कहें बांडी—तेरह रुपए की तो भैंस खरीदी अर्थात् बहुत महँगी (लोकोक्ति तब की है जब 13 रु० बहुत बड़ी रकम समझी जाती थी) भैंस ख़रीदी और लोग इसे बांडी (बिना पूँछ की) अर्थात् बुरी बतला रहे हैं। जब मूल्यवान् वस्तु या परिश्रम से किया गया काम लोगों को द्वेष, या ईर्ष्यावश पसन्द नहीं आता तो कहते हैं। 'लोग' के स्थान पर कहीं-कहीं 'चोर' भी कहते हैं। तुलनीय: अव० तेरा कै भईस लायेन च्वार कहैं बांडी।

तेरह दिन का देखी पाख, अन्न महँगा समझो बैसाख—यदि तेरह दिन का कोई पक्ष हो तो उस वर्ष बैशाख मास में महँगाई रहेगी।

तेरह बरस की तिरिया, पन्द्रह बरस का पुरुष; अकल आई तो आई, नहीं तो रहा जरख—लड़की को तेरह वर्ष की आयु में तथा लड़के को पंद्रह वर्ष की आयु में बुद्धि नहीं आती तो आयुपर्यन्त वे मूर्ख ही रहते हैं। तुलनीय: माल० तेरे बरस री तीरिया न पन्दरे बरस रो पूरख, अकल आइ तो आइ, नीतर रेहग्यो जरख।

ते रहीम पशु ते अधिक, रीझेहु कछु न देत—वे मनुष्य पशु से भी गिरे हैं जो रीझ जाने या प्रसन्न हो जाने पर भी किसी को कुछ नहीं देते।

तेरा काम हो न हो, मेरा दाम खरा कर—तुम्हारा काम चाहे हो या न हो, पर मेरी मजदूरी दे दो। स्वार्थी व्यक्तियों के प्रति व्यंग्य से कहते हैं जो दूसरे की हानि-

लाभ की चिंता न कर सदा अपने स्वार्थ की ही बातें करते हैं। तुलनीय: गढ़० तेरो घट पिस्यो नि पिस्यो, मेरी भग्वाड़ी चेंद; पंज० तेरा कम बने न बने मेरे पैहै खरे।

तेरा किया तेरे आगे आवे—जैसा तुम करो वैसा तुम्हें फल भी मिले। यह एक प्रकार का शाप है। तुलनीय: पंज० तेरे कित्तेदा तेरे अग्गे आऊणा है, ब्रज० तेरौ कियौ तेरे आगै आवै।

तेरा ढका रहे, मेरा बिक जाय—स्वार्थी के प्रति कहते हैं। स्वार्थी दूकानदार चाहता है कि उसका सामान बिक जाय और सबका जैसे का तैसा पड़ा रहे। तुलनीय: गढ़० तेरो ढांकरी आयां न आयां, मेरो लोण सेर आयूं चेंद; पंज० तेरा पैया रवे मेरा बिक जाय।

तेरा तेल गया, मेरा खेल गया—तेरा तेल गिर गया और मेरा खेल चौपट हो गया। जब किन्ही दो व्यक्तियों की किसी घटना या कार्य में बराबर की हानि होती है तो उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय: राज० तेरा तेल गया मेरा खेल गया; ब्रज० तेरौ तेल गयौ, मेरौ खेल।

तेरा दिया किसने लिया—(क) कंजूस के प्रति व्यंग्य से कहते हैं कि तुमने आज तक किसी को कुछ दिया भी है। और यदि दिया है तो किसी ने स्वीकार भी किया है। (ख) तुच्छ व्यक्ति के प्रति भी व्यंग्य में कहते हैं जिसका दिया सामान कोई लेता नहीं। तुलनीय: पंज० तेरा दिता किन लैया; ब्रज० तेरौ दियौ कौनें लियौ।

तेरा नउज बिकाय मुझे धलुवा दे—तेरा बिके या न बिके मुझे धलुवा (रूंगा, बच्चे मुफ्त में माँगा करते हैं) दे। जो दूसरों की परवाह न करके केवल अपना स्वार्थ देखे उसके प्रति कहते हैं।

तेरा पानी मैं भरूं मेरा भरे कहार—ऊपर से बड़प्पन दिखाने या आत्मप्रशंसा करने पर व्यंग्य में कहा जाता है (कहार=पानी भरने वाली एक जाति)।

तेरा बैंगन मेरी छाछ—तुम्हारा बैंगन और मेरा मट्ठा (छाछ) बराबर है, आओ बदल लें। जब कोई अपनी साधारण वस्तु देकर दूसरे की महँगी वस्तु लेना चाहे तब व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय: ब्रज० तैरौ बैंगन मेरी छाछि।

तेरा माल सो मेरा माल, मेरा माल सो ही ही ही—स्वार्थी के प्रति व्यंग्य में कहते हैं जो दूसरे की चीज़ को अपनी समझे पर अपनी वस्तु को दूसरे की न समझे। तुलनीय: राज० थारो सो म्हारो, म्हारो सो हैं हैं; ब्रज० तेरौ माल सो मेरौ माल, मेरौ तो मेरौ है ई।

तेरा लिहाज कुत्ते या तेरे मालिक का—जब किसी बुरे का इसीलिए सम्मान किया जाय कि उसके मालिक या संबंधी सज्जन हैं या उनसे अपने अच्छे सम्बन्ध हैं तो कहते हैं।

तेरा सवा पाव, मेरा सवा सेर—अपनी ही बात को बढा-चढाकर कहने वाले या ऊँची रखने वाले के प्रति व्यंग्योक्ति। तुलनीय: गढ़० दोण की दोतेरी पाथा की छसेरी।

तेरा हाथ और मेरा मुंह—कमाकर मेरा पेट भरो। स्वार्थी या आलसी के प्रति कहते हैं जो स्वयं कुछ न करना चाहे पर दूसरे के परिश्रम पर पेट भरना चाहे। तुलनीय: पंज० मेरा मुँह तेरी चंड।

तेरा है सो मेरा था, बराय खुदा टुक देखने दे—सास अपनी बहू को (जिसने अपने स्वामी को अपने वश में कर लिया हो) कहती है। आशय यह है कि जो पहले मेरा था, अब तुमने अपना कर लिया है, फिर भी कम से कम देख तो लेने दिया करो। व्यंग्य है। किसी की कोई वस्तु यदि कोई दूसरा व्यक्ति हथिया ले तो उससे भी व्यंग्य में कहते हैं कि भाई उस वस्तु का पूरा लाभ तो उठा रहे हो, मुझे भी थोड़ा उठा लेने दो।

तेरी आन या तेरे गोसइयां की—किसी के सिर चढ़े नौकर पर कहा जाता है जब वह कोई रोब आदि की बात करता है। आशय यह है कि (क) न तो तेरा डर है और न तेरे मालिक का। (ख) जब ऐसे नौकर की किसी बुरी बात पर भी उसके मालिक के कारण कुछ न कहा जाय तो भी कहते हैं।

तेरी आवाज मक्के और मदीने—खुशी की खबर लाने वाले के प्रति आशीर्वाद।

तेरी कजरी गाऊँ तू मेरी लड़की खिला—मैं तुम्हारे घर कजरी (एक प्रकार का गीत) गाती हूँ तब तक तुम मेरी लड़की को खिलाओ। आशय यह है कि तुम मेरी सहायता कर दो मैं तुम्हारी सहायता कर दूंगी।

तेरी करनी तेरे आगे, मेरी करनी मेरे आगे—जो जैसा करेगा उसे वैसा फल भी मिलेगा। जब कोई सदा किसी की भलाई करे और वह उसकी बुराई करे तब वह (भलाई करने वाला) ऐसा कहता है। तुलनीय: पंज० तेरी किती दी टेरे अग्गे मेरी किती दी मेरे अग्गे; ब्रज० तेरी करनी तेरे आगें, मेरी करनी मेरे आगें।

तेरी गोद में बैठूं और तेरी ही दाढ़ी नोचूं—जब कोई अपने सहायक या आश्रयदाता को ही क्षति पहुँचाता है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय: पंज० तेरी

थाली विच खावां ते उदे बिच मोरी करां।

तेरी जौ तेरी दरांती चाहे जैसे काट—जब कोई कहना न माने और अपने मन से सारा काम करे तो उसके प्रति कहते हैं। आशय यह है कि तुम जानो तुम्हारा काम जाने, मुझसे कुछ मतलब नही। (दरांती= हँसिया)। तुलनीय: गढ़० तेरा जौ तेरा हाथी; पंज० अपनी खेती जिवें मरजी वड।

तेरी तोंद भद्दी दिखती है, कहा—सेर भर अन्न भी तो इसी में आता है किसी व्यक्ति ने दूसरे व्यक्ति से जिसका पेट बहुत बड़ा था कहा कि तेरी तोंद भद्दी दिखाई पड़ती है तो उसने उत्तर में कहा कि कोई बात नही, इतनी बड़ी तोंद में ही एक सेर अन्न समाता है। जो वस्तु कुरूप दिखाई देने पर भी लाभदायक हो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय: राज० थारो ओजरो भूंडो दीखै कै म्हारे तो सेर धान ऐमें ही खटावै।

तेरा मां खली खाय मुझे देख जली जाय—तुम्हारी माँ अनाज नहीं खाती, वह जानवर है खली खाती है तभी तो मुझे देखकर जलती है। स्त्रियाँ एक दूसरे से ईर्ष्या-भाव में ऐसा कहती है। तुलनीय: अव० तुम्हारी महतारी खरी खाय, मोहिका देखे जरी जाय।

तेरी मेरी बोली में इतना फ़रक़, तू कहे फ़रिश्ता मैं कहूँ जरक जब एक ही बात को लोग भिन्न-भिन्न ढंग से कहते हैं या एक ही चीज़ को विभिन्न नामों से सम्बोधित करते है तब ऐसा कहते हैं।

तेरी रखं या तेरे गुसाई की—तेरी प्रतिष्ठा की सुरक्षा की जाय या तेरे स्वामी की। जब अपने किसी मित्र, परिचित या संबंधी के कारण किसी अनुचित बात को मानना पड़े या उसका पक्ष लेना पड़े तो कहते हैं। तुलनीय: माल० थारी काण के थारा धणी री काण।

तेरे किए का फल है कोई क्या करे?—जब कोई व्यक्ति अपने कर्मो के कारण (चाहे वे इस जन्म के हों या पूर्व जन्म के) कष्ट पाए तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय: भीली—थारा आगला भो ना लेख मूं हूँ करूँ; पंज० तू किते दा पा रिहा है कोई की करे।

तेरे जने भी कभी खुद चलेंगे—तुम्हारे बच्चे भी कभी स्वयं चलेंगे। अर्थात् अपना काम सँभाल लेंगे या अच्छी स्थिति में आ जाएँगे। (क) ग़रीब व्यक्ति को संतोष दिलाने के लिए कहते है जिसके बच्चों का जीवन अधीनता में दुख से बीत रहा हो। (ख) किसी के आलसी या कामचोर बच्चों के प्रति भी व्यंग्य में कहते हैं कि तुम्हारे बच्चे भी कुछ करेंगे या सदा दूसरों के बल पर ही जीवन व्यतीत करेंगे? तुलनीय: राज० जायोड़ा कदे पगां चालसी; पंज० तेरीं यद्दी की आंडेइ देवेगी।

तेरे जैसे छत्तीस सौ घूमते हैं—तुम्हारे जैसे यहाँ अनेक मारे-मारे फिरते हैं। जिस व्यक्ति को नीचा दिखाना हो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय: राज० थारे जिसा छप्पन सौ देख्या है; हरि० तैरे कैसे तीन सौ डेढ़ बसें सैं मैं जानूं सूँ तू कौन सै।

तेरे दया धरम नहिं मन में, मुखड़ा क्या देखे दरपन में—तेरे मन में न किसी के लिए दया है न तू किसी के साथ पुण्य करता है फिर आज मुख-सौंदर्य यदि तुझमें है भी तो क्या? आशय यह है कि मनुष्य के शारीरिक सौंदर्य का इतना महत्त्व नहीं है जितना उसके सदाचरण तथा मानव-प्रेम का है।

तेरे पान खाने से घर उजड़ गया—पति अपनी पत्नी से कहता है कि तेरे पान खाने के कारण ही घर उजड़ गया है। (क) जब कोई व्यक्ति किसी हानि का कारण स्वयं होते हुए किसी दूसरे के छोटे से दोष को उसका कारण बताए और ऐसा दिखाए जैसे उससे उसका कोई संबंध ही न हो तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। (ख) जब कोई कंजूस साधारण खर्च से भी कतराए तो भी व्यंग्य से कहते है। तुलनीय: राज० थारा गमाया घर गया ए कांदाखाणी नार; पंज० तेरे पान खान नाल कर रुड़ गया।

तेरे बोए तुझे मुबारक हों—आपके कर्मों का फल आप ही को मिले, मुझे उसकी कोई आवश्यकता नही है। जब कोई किसी बुरे कार्य में बहुत लाभ दिखाकर किसी और को मिलाना चाहता है तब वह ऐसा कहता है। तुलनीय: पंज० तेरी किती तिनूँ मुबारक।

तेरे बोए तुझे ही चुभेंगे—जो काँटे तुम बोओगे वे तुम्हीं को चुभेंगे। जो दूसरों को हानि पहुँचाने का प्रयत्न करता है उसकी अपनी ही हानि होती है। तुलनीय: राज० थारा काँटा तने ही भागेला; पंज० तेरे कंडे तिनूँ चुबनगे।

तेरे मुंह में घी-शक्कर—शुभ संदेश लाने वाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय: ब्रज० तेरे मुँह में घी सक्कर।

तेरे मेरे सदक़े में उसकी जोरू पेट से—तुम्हारी और मेरी कृपा से उसकी स्त्री को गर्भ रह गया। नपुंसक की व्यभिचारिणी स्त्री के प्रति व्यंग्य में कहते है। (सद्क़ा= खैरात, दान)।

तेरे ही दम का जहूरा है, बाकी सब घास-कूड़ा है—(क) परिश्रमी व्यक्ति जिसके कारण सफलता मिलने की

आशा हो उसके प्रति कहते हैं। (ख) कुछ न करने वाले के प्रति भी व्यंग्य से कहते हैं।

तेल और पानी मिलते नहीं—विपरीत प्रकृति के लोगों में कभी मेल नहीं होता। तुलनीय : असमी—तेले पानीये मिहल नहय; पंज० तेल अते पाणी नहीं रलदे; ब्रज० तेल और पानी नायें मिलें; अं० Parallel lines never meet.

तेल की जलेबी मुआ दूर से दिखाए—(क) जब कोई आशा बहुत दे पर करे कुछ नही तो कहते हैं। (ख) जब कोई किसी रद्दी चीज़ का बड़े रोब और शान से लालच दे तो उसकी मूर्खता पर भी व्यंग्य में इस लोकोक्ति का प्रयोग करते हैं।

तेल की मिठाई देखने में अच्छी खाने में बुरी—ऐसे व्यक्ति या वस्तु के प्रति व्यंग्य में कहते है जिसमें बाहरी तड़क-भड़क अधिक हो, पर गुण बिलकुल न हो। तुलनीय : पंज० तेल दी मठाई दिखन बिच चंगी खाण बिच बुरी।

तेल जल चुका—(क) रुपया समाप्त हो गया अब कुछ नही है। (ख) सारी शान चली गई, अब कोई इज़्ज़त नही।

तेल जला पर अंधेरा नहीं गया—जब पैसा भी खर्च हो और काम भी न हो तो कहते हैं। तुलनीय : मग० तेलो जरल अँधारो भेल; भोज० तेल जरल बाकी अन्हार ना गइल; पंज० तेल सड़या पर हनेरा नही गया।

तेल जले घी, घी जले तेल—(क) उन दो व्यक्तियों के प्रति कहा जाता है जो एक दूसरे का काम कर दें। (ख) तेल जलने से घी के समान और घी जलने से तेल के समान होता है।

तेल जले नाम दिये का—जलता तो तेल है और लोग कहते हैं कि दीपक (दिया) जल रहा है। जब दे कोई लेकिन नाम किसी और का हो या कष्ट कोई सहे और नाम कोई और ही पाए तो कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० तेल जरै, नाम दीये कौ।

तेल जले बाती जले नाम दिये का हो—ऊपर देखिए। तुलनीय : ब्रज० तेल जरै बत्ती जरै नाम दिये कौ होय।

तेल जले सरकार का मिर्ज़ा खेले फाग—किसी के धन पर जब कोई मौज उड़ाता है तो व्यंग्य से कहते हैं। (फाग= होली)। तुलनीय : ब्रज० तेल जरै सरकार कौ मिरजा खेलै फाग।

तेल डाल कमली का साझा—जब कोई व्यक्ति किसी से कोई काम कराये और काम करने वाला अपने को उसका हिस्सेदार समझने लगे तो कहते है। इस संबंध में एक कहानी है : एक गड़रिए ने एक कंबल बनाया और उसे मुलायम करने के लिए एक व्यक्ति से तेल मलने को कहा। तेल मलने के बाद तेल मलने वाला कहने लगा कि इस कंबल में तो मेरा भी साझा है।

तेल डालने से आग नहीं बुझती—जब किसी लड़ाई-झगड़े में कोई समझौते की बातें न करके ऐसी बातें करे जिससे मामले के और बढ़ जाने की संभावना हो तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : मल० एरियुन्न तीयिल् एण्ण औषच्चुती केटुत्तानोक्कुमो? पंज० तेल सुटन नाल अग्ग नही बुझदी; ब्रज० तेल डारे ते का आगि बुझ।

तेल तिलों से ही निकलता है—जिसका जो स्थान होता है वह वहीं से निकलता है। या कोई चीज़ अपने स्रोत से ही निकलती है। इस कहावत का प्रयोग अधिकतर दूकानदार करते हैं जब ग्राहक उनसे वस्तु का दाम कम कराने का प्रयत्न करते हैं। उनके कहने का मतलब होता है कि मुनाफ़ा लागत से ही निकलता है। तुलनीय : अव० तेल तिलैसे निकरत है; मेवा० तेल तो तलां मे, घाणी लाठ मे थोड़ो ई है; मरा० तेल तिलांतूनच निघते दगडातून नाहीं; राज० तेल तो तिलां मांयसं ही निकलै; पंज० तेल तिलां बिचों ही निकलदा है; ब्रज० तेल तौ तिली तेई निकसै।

तेल तेली का भगत भैया जी की—दे० 'तेली का तेल पुजारी…'।

तेल तो तिलों से ही निकलेगा—दे० 'तेल तिलों से ही…'।

तेल देखो तेल की धार देखो—प्रत्येक काम को शान्ति-पूर्वक समझ-बूझ और देख-सुनकर करना चाहिए। इस संबंध में एक कहानी है : एक राजा का सिपाही, ब्राह्मण, ऊँटवान और तेली ये चार मित्र थे। जब एक दूसरे राजा ने उस पर चढ़ाई की तो उसने अपने इन चारों मित्रों को बुलाया और राय माँगी। सिपाही ने कहा, 'लड़ने के लिए तैयार हो जाइए।' ब्राह्मण ने कहा, 'येनकेन प्रकारेण संधि कर लीजिए।' ऊँटवान ने कहा, 'देखिए ऊँट किस करवट बैठता है।' तेली ने कहा, 'घबड़ाइए नही, तेल देखिए, तेल की धार देखिए।' अर्थात् जल्दी न कीजिए ठीक से ग़ौर कर कर लीजिए। तेल लेना हो तो बर्तन में तेल देखकर ही पहचान नहीं हो सकती। उसकी धार देखने पर उसकी अच्छी पहचान हो सकती है। तुलनीय : राज० तेल देखो तिलांरी धार देखो; अव० तेल देखौ तेल की धार देखौ; भोज० तेल देख तेल क धार देख; कौर० तेल देक्ख तेल की धार देक्ख; मेवा० तेल देखो तेल की धार देखो; मल० काट्टिननुसरिच्चे वळळम् वेय्क्कावू; अं० See which

way the wind blows.

तेल न फुलेल, मंगौरा बने--तेल तो है नही और खाना चाहते हैं मंगोरा (पकौड़ी)। जब कोई व्यक्ति निर्धन होने पर भी बहुत महत्त्वाकांक्षी होता है तब उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

तेल न कड़ाही, बनाने चली मिठाई—न तो तेल है और न कड़ाही, पर मिठाई बनाने जा रही है। जब कोई व्यक्ति बिना साधन के ही किसी काम को करना चाहता है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते है। तुलनीय : पंज० तेल न कड़ाई, बनान चली मिठाई।

तेलन से क्या धोबन घाट, इसके मूसल उसके लाठ--तेली की औरत से क्या धोबी की औरत कम (घाट) है? यदि इसके पास मूसल है तो उसके पास लाठी। जहाँ दोनों बुरे होते हैं और कोई किसी से कम नहीं होता वहाँ ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० धोबण तै के तेलण घाट उसका कुतका उसकी लाठ; राज० तेलन सू नहीं मोचण घाट, वैरी मोगरी वैरी लात; हरि० धोब्बण्य तै के तेल्लण्य घाट्य, उसके मौगरा उसके लाट्य।

तेल निकले तिल और जली लकड़ी—तिलों से तेल निकल जाने के पश्चात् और लकड़ी के जल जाने के पश्चात् उन्हें कोई नहीं पूछता। स्वार्थी व्यक्ति स्वार्थ सिद्ध करने के पश्चात् अपने शिकार के प्रति कहते हैं। तुलनीय : भीली—उतरघे घाणी वली तो।

तेल पकावे पूआ, नाम बहू का होय—जब कार्य कोई और करे और ख्याति किसी और को प्राप्त हो तो ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मग०, मैथ० घिउ बनावे खिचड़ी बड़ी बहुरिया के नांव।

तेल बिना गाड़ी नहीं चलती—कोई भी काम बिना व्यय किए नही होता या कोई भी व्यक्ति बिना धन लिए काम नहीं करता। तुलनीय : पंज० तेल बगैर गड्डी नहीं चलदी।

तेल लगाओ, माल कमाओ--धन लगाओ और लाभ लो। आशय यह है कि व्यापार में बिना पूंजी लगाए लाभ नहीं मिलता। तुलनीय : पंज० तेल मलो अते माल बनाओ।

तेल लगे न नोन, माल चोखा पके—बिना व्यय किए ही लाभ चाहने वाले पर व्यंग्य है। तुलनीय : भोज० तेल न नून लागे चिकने पाके; पंज० तेल् लग्गे न लूण माल चंगा पके।

तेलिन का बैल मरे, कुम्हारिन सती हो—दे० 'तेली का बैल लेके···'।

तेलिन के साथ कुम्हारिन सती—जब कोई व्यर्थ में किसी के साथ परेशान होता है तब उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : मग०, मैथ० तेलिन साथ कुम्हैनी सती; पंज० तेलिण नाल कमैरण सती।

तेलिन से क्या धोबिन घाट, एक के मूसल एक के लाठ—दे० 'तेलन से क्या धोबन घाट··'।

तेली का काम तमोली करे, चूल्हे में आग उठे—जो कार्य जिसका होता है वह उसी से सिद्ध होता है, दूसरा करे तो बिगड़ जाता है।

तेली का काम तमोली करे, बारां बरस लों गढ़ा में परे—ऊपर देखिए। ब्रज० तेली कौ काम तमोली करै, बारह बरस गढ़े मे परै।

तेली का काम तमोली करे, हाय-हाय कैसे ना परै—दे० 'तेली का काम तमोली करे चूल्हे···'।

तेली का तेल गिरा हीना हुआ, बनिये का नोन गिरा दूना हुआ—तेल गिरता है तो जमीन सोख लेती है और नमक गिरता है तो उसके साथ मिट्टी भी मिल जाती है, अतः वजन में कुछ वृद्धि हो जाती है। जब एक ही तरह की घटना से किसी की हानि हो और किसी का लाभ तो कहते है। तुलनीय : ब्रज० तेली कौ तेल गिर्यौ हीनों भयौ, बनियाँ कौ नौंन गिर्यौ दूनों भयौ।

तेली का तेल जरे और मसालची को जान जाए--जब व्यय किसी और का हो और उसे देखकर दुख किसी और को हो तो व्यंग्य में ऐसा कहते है। तुलनीय : भोज० तेली के तेल जरे, मसालची के जीव जाइ।

तेली का तेल जलता है, मसालची का पेट फटता है--ऊपर देखिए। तुलनीय : अव० तेली का तेल जरै, मसालची का गाँड़ फटे; राज० तेल तेलीरो बलै, मसालचीरी गाँड क्यूं बलै; बघे० तेली केर तेल जरइ, मसालची कइ पेट फटइ; मरा० तेल्याचें तेल जलतें मशालची च्या पोटांत् दुखतें; पंज० तेली दा तेल वलया मसालजी दा टिड फट्या; ब्रज० तेली कौ तेल जरै, मसालची कौ करेजा जरै।

तेली का तेल जले, मशालची का कलेजा फटे—ऊपर देखिए।

तेली का तेल जले, मशालची का दिल जले—दे० 'तेली का तेल जरे और···'। तुलनीय : हरि० तेल्ली का तेल जलै मसालची का जी जले।

तेली का तेल जले, मशालची का पेट फटे—दे० 'तेली का तेल जरे···'।

तेली का तेल जले, मशालची का पेट फूले—दे० 'तेली

का तेल जरे और···'। तुलनीय : अव० तेली का तेलु जरै मसालची कै पेटु (गाँड़ि) जरै; भोज० तेली क तेल जरे मसलची क पेट फूलै; मैथ० तेल जरे तेली के गाँड़ फाटे मसालची के ; छतीस० तेली के तेल जरे, मसालची के गाँड़ फाटे; पंज० तेली दा तेल बले मशालची दा टिड फुल्ले।

तेली का तेल जले, मशालची की आँख फूटे—दे० 'तेली का तेल जरे और···'।

तेली का तेल जले, मशालची की गांड/छाती फटे—दे० 'तेली का तेल जरे··'। तुलनीय : गढ़० रज्जा को जौ लोण-पाणी, चिचा महथा को हियो फाट; पंज० तेली दा तेल बले मसालची दी वखी फटे।

तेली का तेल जले मशालची की जान जाय—दे० 'तेली का तेल जरे और···'।

तेली का तेल पुजारी का नाम—मंदिर में तेल तो तेली का जल रहा है और नाम पुजारी का हो रहा है। जब व्यय किसी और का हो और नाम किसी और का तब कहते हैं। तुलनीय : पंज० तेली दा तेल पुरोत दा नाँऊ।

तेली का तेल, भगत भैया जी की—ऊपर देखिए। (भगत=भक्ति)।

तेली का बैल दिन में सौ कोस चले, फिर भी वहीं का वहीं—तेली का बैल सारा दिन कोल्हू में जुता रहता है और एक ही स्थान में घूमता रहता है। (क) जो व्यक्ति अत्यधिक परिश्रम करके भी उन्नति न कर पाए उसके प्रति कहते हैं। (ख) जो व्यक्ति बहुत से व्यापार करके भी निर्धन ही रहे उसके प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : राज० तेली रो बलद सौ कोस चालै तोई वठे-रो-वठे।

तेली का बैल बना रक्खा है—किसी से दिन-रात काम कराने वाले पर कहते हैं।

तेली का बैल भी हार मानता है—रात-दिन काम में व्यस्त रहने वाले पर व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : पंज० तेली दा टग्गा वी हारदा है।

तेली का बैल लेके, कुम्हारिन सती होय—(क) किसी के लिए जब व्यर्थ में दूसरा जान-बूझकर परेशान हो तो कहते हैं। (ख) झूठी लल्लो-चप्पो दिखाने पर भी कहते हैं।

तेली का बैल हो गया—दिन-रात श्रम करने वाले के प्रति कहते हैं।

तेली की जोरू होने पर पानी नहाई—किसी संपन्न व्यक्ति के यहाँ नौकर होने पर भी यदि हाथ रंगने का अवसर न मिला तो फिर कब मिलेगा।

तेली के घर तेल तो क्या पहाड़ पोते?—नीचे देखिए।

तेली के घर तेल तो चुपड़े नहीं पहाड़—तेली के घर तेल की अधिकता होती है फिर भी वह उसे पहाड़ पर नहीं लगाता। आशय यह है कि अधिक धन होने पर कोई उसे व्यर्थ में नहीं गँवाता या लुटाता। तुलनीय : अव० तेली घर तेल है तौ का पहाड़ चुपरै; छत्तीस० तेली के तेल रइथे, त पहाड लो नइ पोते।

तेली के तीनों मरे, और ऊपर से टूटे लाठ—तेली के दोनों बैल तथा हांकने वाला मर जाय और उसकी लाठ भी टूट जाय। किसी से कोई प्रयोजन न होने पर ऐसा कहते हैं। (लाठ=मूसल जो कोल्हू में होता है)।

तेली के पास तेल होता है, तो वह पहाड़ को नहीं पोतता—दे० 'तेली के घर तेल तो··'। तुलनीय : पंज० तेली कौल तेल हुंदा है तां बी ऊह पहाड़ नूँ नही लिपदा।

तेली के बैल को, घर ही कोस पच्चास—तेली के बैल को कोल्हू में चलने के कारण घर में ही पचासों कोस चलना पड़ता है। थोड़े ही दूर में जिसे बहुत चलना पड़े या घर ही में रहकर जिसे दिन-रात काम करना पड़े उस पर कहते हैं या वह अपने पर कहता है। तुलनीय : मरा० तेल्याच्या बैलाला घरीच पन्नास कोस चलावें लागतें।

तेली क्या जाने मुश्क की सार—जिसने जो चीज देखी नहीं, वह उसके महत्त्व को क्या समझे।

तेली खसम करे और पानी से नहाय—जब कोई सामर्थ्य से संबंध करके भी कष्ट सहे तब कहते हैं। तुलनीय : अव० तेली खसम करिकै पानी ते नहाय; हरि० तेल्ली खसम कर्‌या अर लूक्खा खाया; ब्रज० तेली खसम कर्‌यौ और पानी ते नहावै।

तेली खसम किया और उलटा खाया—ऊपर देखिए।

तेली खसम किया और रूखा खाया—संपन्न परिवार में विवाह करने पर भी दरिद्रता नहीं गई। (क) नियम या रूढ़ि के विरुद्ध आचरण करने पर भी लक्ष्य सिद्ध न हो तो कहते हैं। (ख) बड़ों के आश्रय में रहकर भी जब कोई कष्ट हो तो कहते हैं। तुलनीय : मरा० तेली नवरा केला तरी कोरडेच खावें लागतें; अव० तेली भतार करै, पानी से सउंचें; मेवा० तेली नेई मांटी कीदो र फेर पाणीसू पग धोवे; कौर० तेली खसम कर्‌या फिर बी पानी ते गांड धोई।

तेली खसम किया तो पानी से आबदस्त क्यों?—ऊपर देखिए।

तेली जोड़े परी-परी, रहमान लुढ़ावें कुप्पे—तेली एक-एक परी (तेल नापने का बर्तन) तेल इकट्ठा करता है

और रहमान एक ही बार उसे गिरा देते हैं। (क) जब कोई मेहनत से धन इकट्ठा करे और दूसरा उसे खूब उड़ावे तब कहते हैं। (ख) कंजूसों के प्रति भी व्यंग्य में कहते हैं जो थोड़ा-थोड़ा करके धन इकट्ठा करता है और वह एक ही बार में किसी काम मे खर्च हो जाता है। तुलनीय : पंज० तेली जोड़ पली पली रहमान रोड़े कुप्पी; ब्रज० तेली जोरै परी परी, रहमान लुढ़कावै कुप्पा।

तेली ने एक घोड़ा पाया, चट अपने कोल्हू में लगाया —आशय यह है कि मूर्ख व्यक्ति अच्छी वस्तुओं के महत्त्व को नहीं समझते।

तेली रोवे तेल को, मकसूद रोवे खली को—सभी को अपने लाभ का ध्यान रहता है। मकसूद तेली के नौकर का कल्पित नाम है जो इस शर्त पर तेल निकालता है कि तेल तेली लेगा और वह खली पाएगा। इसी पर यह लोकोक्ति आधारित है।

तैराक की पहले राँड़— तैराक की पत्नी पहले ही राँड़ होती है। (क) तैराक प्राय: डूबा ही करते हैं। (ख) साहसी व्यक्तियों के प्रति भी कहते है, क्योंकि वे ही प्राय: जोखिम उठाते हुए मारे जाते हैं। तुलनीय : राज० तेरूरी पहली राँड़।

तैराक ही डूबता है—तैरने वाला ही डूबता है। जो तैरेगा ही नही वह डूबेगा कैसे? जब कोई किसी कार्य मे असफल हो जाता है तब उसे संतोष दिलाने के लिए ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मरा० पोहणाराच बुडतो; पंज० तारु ही डुबदा है; ब्रज० तैराई डूबै; अं० Good swimmers are often drowned.

तैरेगा सो डूबेगा—जो जिस काम को करता है उसके खतरों का उसी को शिकार बनना पड़ता है।

तैलपात्र धर न्याय— तैल-पात्र धारण करने वाले का न्याय। प्रस्तुत न्याय का प्रयोग उस आदमी के संबंध में किया जाता है जिसने वैराग्यमय जीवन स्वीकार कर लिया है। तेल से भरे हुए पात्र को लेकर चलने में प्रत्येक पग पर तेल के गिरने का भय रहता है। इसी प्रकार संन्यासी का जीवन व्यतीत करते समय सांसारिकता की ओर मन के जाने का सतत भय विद्यमान रहता है।

तोको न भुनाऊं, तेरा भइया और बँधाऊं—तुमको न भुनाऊँगा बल्कि तुम जैसे औरो को भी तुम्हारे साथ अपनी गाँठ में बाँध लूँगा। कंजूस पर कहते है। कोई कजूस एक बार बाजार में एक रुपया भुनाने लगा। उसे भुनाना अच्छा नहीं लग रहा था क्योंकि टूटा रुपया जल्दी खर्च हो जाता है। अत: कई दूकानों पर गया पर दुअन्नी या चवन्नी खराब बताकर पैसा लौटा देता था और रुपया लेकर चला आता था। यहाँ तक कि उसके हाथ में पसीना आ गया। अब उसने कल्पना की कि रुपया उसके प्रेम में रो रहा है और यह सोचकर उसने रुपए से यह कहावत कही।

तोको न मोको, चूल्हा में झोंको—न तुम्हारे काम की न हमारे काम की इसे चूल्हे में डाल दो। सर्वथा अनुपयोगी वस्तु के विषय में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मरा० ना तुला घाल मुला कुत्र्यला; पंज० तैनूं न मैनूं चूल्हा मैं फूंकू। (तोको = तुमको; मोको = मुझको)!

तोड़ डाल तागा, तू किस भंडुई के मुंह लागा--(क) यदि कोई किसी बुरे से मित्रता कर ले तो उसका साथ छोड़ देने के लिए यह लोकोक्ति कहते हैं। (ख) विवाह होते ही कोई स्त्री दुराचारिणी हो जाय तो पति से कहते हैं।

तोड़न आये चारा और खेत पर इजारा---कोई किसी खेत में चारा काटने आया और उस खेत पर अपना अधिकार जमाने लगा। झूठे या बेजा अधिकार-प्रदर्शन पर कहा जाता है।

तोड़-फोड़ करके ग्रहों को दोष—किसी काम को खुद ही बिगाड़कर भाग्य को दोष देने वाले के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते है। तुलनीय : गढ़० खणीक खाड अर गणीक दोष।

तोता तो टें-टें ही करेगा - जब कोई व्यक्ति बिना कारण ही बड़बड़ाता है तब उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : पंज० तोता ते टें-टें ही करदा है।

तोते की-सी आँखें फेर लेता है—जो करुणा, दया, मोह, ममता आदि से शून्य हो उसके प्रति कहते हैं। (तोता अपनी बेवफ़ाई या बेमुरौवती के लिए प्रसिद्ध है)। तुलनीय : पंज० तोते बरगी अख फेर लेंदा है।

तोर नउजी बिकाई मोके घलुआ बे—दे० 'तेरा नउज बिकाए...'।

तोरी बनत-बनत बनि जाई, तू हरि से लगा रहु भाई —हरि से लगा रहने से धीरे-धीरे मनुष्य की गति बन जाती है और वह मुक्ति पा जाता है।

तोले के पेट में घुंगची—बड़े में छोटा अँट या छिप जाता है। (घुगची संस्कृत गुंजा का एक प्रचलित नाम भी है। इसको तोलने के लिए सुनार लोग प्रयोग करते हैं)।

तोले भर का छोकरा मन भर जबान—जब कोई छोटा लड़का बड़ों के सामने बढ़-बढ़ कर बातें करता है तब उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० तोले दा मुंडा ते मन आरी

जबान; ब्रज० तोले भरि कौ छोरा और मन भरि की जीब।

तोले भर की आरसी नानी बोले फ़ारसी—लम्बी-चौड़ी बातें करने पर कहते हैं। (आरसी=शीशा जड़ा दाहिने हाथ के अँगूठे का गहना)।

तोले भर की तीन चपाती, कहे जिमाने चलो हाथी—बहुत थोड़े आटे की तीन रोटियाँ हैं और कहते हैं चलो हाथी को खिलाने चलें। झूठी शान बघारने वाले के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। (जिमाना=खिलाना)।

तो सम पुरुष न मो सम नारी, यह संयोग विधि रचा विचारी—तुम्हारे जैसा न तो कोई पुरुष है और न मेरी जैसी कोई स्त्री। यह जोड़ी भगवान ने बहुत सोच-विचार कर बनाई है। (क) पति-पत्नी की बहुत सुन्दर जोड़ी होने पर कहते हैं। (ख) जब किसी कुरूप पुरुष की शादी किसी कुरूप स्त्री से हो जाती है तब भी व्यंग्य में कहते हैं।

तोसा सो भरोसा—अपनी गाँठ में पैसा (या यात्रा में अपने पास पाथेय) रहता है तो चित्त निश्चित रहता है। (तोसा=तोशा, पाथेय, संबल)। तुलनीय: माल० तोसे जो भरोसे।

तौबा कर बंदे इस गंदे रोज़गार से—किसी बुरे काम को बदनामी आदि के भय से या किसी रोज़गार को हानि आदि के भय से छोड़ने के लिए कहा जाता है।

तौबा तेरी छाछ से, कुत्तो से छुड़ा—तौबा मेरी, मुझे तेरी छाछ नहीं चाहिए, मुझे तो तू इन कुत्तों से ही छुड़वा दे। जब कोई व्यक्ति किसी से कुछ लाभ उठाने के लिए जाय किन्तु वहाँ उस पर कोई आपत्ति टूट पड़े तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय: राज० घाई थारी छाछ सूं कुत्तों से छोडाव।

तौबा बड़ी सिपर है गुनहगार के लिए—दोषी का पश्चात्ताप कर लेना उसके लिए बड़ी अच्छी चीज़ है, या बहुत बड़ा बचाव है। (तौबा=पश्चात्ताप; सिपर=ढाल, बचाव)।

तृण समूह को छनिक में, जारत तनिक अंगार—घास के बहुत बड़े ढेर को छोटा-सा अंगार पल-भर में जला देता है। आशय यह है कि अनेक मूर्खों को एक बुद्धिमान परास्त कर देता है।

तृन ओट पहार न देख परे—एक तृण की ओट में पहाड़ दिखाई नहीं देता। दे० 'तिनके की ओट···'।

तृष्णा केहि न कीन्ह बौराहा—संसार में ऐसा कोई भी नहीं है जिसे तृष्णा ने अपने वश में करके पागल न बना दिया हो। अर्थात् सभी तृष्णा के वश में आ जाते हैं।

त्यजेदेकं कुलस्यार्थे—कुल के हित में एक आदमी का त्याग कर देना चाहिए। आशय यह है कि कुल की मर्यादा व्यक्ति के जीवन से अधिक होती है।

त्योहार कोदों, वैसे भात—प्रतिदिन तो अच्छा खाना खाते हैं और त्योहार के दिन कोदों। (क) अवसर के विपरीत काम करने वाले के प्रति ऐसा कहते हैं। (ख) जो व्यक्ति वर्तमान को ही सब कुछ समझते हों, भविष्य की चिंता ज़रा भी न करते हों और इसी कारण सब कुछ खा-पीकर बैठ जाते हों तथा अवसर पर उनके पास कुछ न हो तो भी कहते हैं। तुलनीय: भोज० वरे नू सुक्कियाँ ते रोज परौठे।

त्रिया चरित ईश नहिं जाने—स्त्रियों के चरित्र को भगवान भी नहीं जानता। आशय यह है कि स्त्रियों के स्वभाव को समझना बड़ा मुश्किल है।

त्रिया चरित जाने न कोई खसम मार के सत्ती होई—दे० 'तिरया चरित जाने···'।

त्रिया चरित औ चोर की घात, पार पड़े ना कह गया नाथ—स्त्री-चरित्र और चोर की घात को कोई नहीं समझ सकता।

त्रिया सके नहिं बात पचाय—स्त्री के पेट में बात नहीं पचती वह तुरत औरों से कह देती है।

थ

थका ऊँट सराय ताकता है—ऊँट चलते-चलते थक जाता है तो सराय में रुकने की इच्छा करता है। अर्थात् (क) दिन भर के परिश्रम के बाद मनुष्य को अपने घर जाने की सूझती है। (ख) थका हुआ मनुष्य आराम चाहता है। तुलनीय: मरा० थकलेला ऊँट धर्मशाळे कडे पाहातो; भोज० थकल ऊँट सराय देखेला; पंज० थकया ऊँट सराय लब्दा है; ब्रज० थक्यो ऊँट सराइ की ओर देखै।

थका तैराक फेन चाटे—थका तैराक फेन चाटता है। (क) जब किसी मनुष्य की सारी सम्पत्ति नष्ट हो जाती है और वह विवश होकर थोड़े धन पर सन्तोष करता है तब कहते हैं। (ख) जब कोई मनुष्य परिस्थितियों से बाध्य होकर ओछा काम करता है तब भी कहते हैं। तुलनीय: भोज० थकल तैराक फेन चाटे; पंज० थकया तारू फेन चटे।

थका मजूर पैसा खोजे—मज़दूर जब तक जाता है तो

झूटमूठ ही गिरा हुआ पैमा ढूंढ़ने लगता है, क्योंकि वैसे तो विश्राम कर नहीं सकता, इसी बहाने से कुछ देर विश्राम कर लेता है। जब कोई व्यक्ति कोई बहाना बनाकर आराम करना चाहे तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : भीली—थाको हाली दोवे दोवे काँटा काढ़े; पंज० थकया मजदूर पैहा लबै।

थके बैल को घास भारी—बैल जब थक जाता है तब घास भी उसे बोझ (भारी) मालूम पड़ती है। आशय यह है कि (क) परिश्रम से चूर होने पर छोटा (हल्का) काम भी मुश्किल प्रतीत होता है। (ख) शक्ति घट जाने पर हल्के काम भी बड़े लगने लगते हैं। तुलनीय : मैथ० थाकल बड़द के पेटार भारी; पंज० थके टग्गे नूं काह पारी लगदी है।

थके बैल गौन भई भारी, अब क्या लादोगे व्यापारी ?—ऊपर देखिए। तुलनीय : भोज० थकल बैल गोन भइल भारी अब का जोत बड ए बनवारी। (गौन—चटाई, गोनरी)।

थन में दूध, न बरतन में दूध—न गाय के थन में दूध है न ही दूध के बर्तन में। किसी वस्तु का ऐसे स्थान से चोरी चले जाने पर जहाँ से उसके जाने की कोई सम्भावना न हो तो आश्चर्य प्रकट करने के लिए ऐसा कहते है। तुलनीय : गढ़० न रयो अणेठा न गयो परोठा; पंज० थन विच दूद न पाँड़े विच दुद।

थप्पड़ का मारा ऊपर देखे, रोटी का मारा नीचे—मार खाने वाला सिर उठा भी सकता है, किन्तु रोटी का मारा अर्थात् एहसानमंद आदमी कभी सिर नहीं उठा सकता। अर्थात् रोब से सभी को नहीं दबाया जा सकता किन्तु एहसान से सभी को दबाया जा सकता है। तुलनीय : माल० रोटी रो मार्यो नीचो, चांटा रो मार्यो ऊँचो; पंज० पुख मारे थल्ले ते चंड मारे उत्ते।

थप्पड़ की क्या उधारी ?—(क) जब किसी को मारने का अवसर मिलता है तो उसे तुरंत मारा जाता है, उसमें समय देने की कोई आवश्यकता नहीं होती। (ख) जब किसी बात के कहने का मौक़ा मिले तो उसे उसी समय कह देना चाहिए। तुलनीय : छत्तीस० चटकन के का उधार; पंज० चंड दा की उदार।

थर न थराई, हरामजादी कहाई—जब किसी व्यक्ति को कुछ मिले भी नहीं और व्यर्थ में अपमानित भी होना पड़े तब कहता है। (थर—स्तर, परत)।

थान से गिरा, मान से गिरा—स्थान (थान) से गिर जाने पर व्यक्ति सम्मान से गिर जाता है। आशय यह है कि पदच्युत हो जाने पर व्यक्ति की इज्जत कम हो जाती है। तुलनीय : असमी० थान् हराले मान् हराय्; सं० स्थानं प्रधानं नकुलं प्रधानम्; अं० You lose your respect if you lose your place.

थाली के ग़ायब होने पर घड़े में हाथ जाता है—(क) विपत्ति में फँसा व्यक्ति उससे छुटकारा पाने के लिए ऐसे कार्य भी करता है जिससे कोई लाभ नही होता। (ख) परेशान व्यक्ति सब कुछ करने को तैयार रहता है। (ग) संकट के समय व्यक्ति का मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है।

थाली के बैंगन हैं- ऐसे व्यक्ति के लिए कहते हैं जो निश्चित सिद्धांत का न हो, बल्कि थाली के बैंगन की तरह कभी इधर झुकता है कभी उधर। तुलनीय : अव० थारी के भाटा। दे० 'बिना पेंदी का लोटा'।

थाली खोई तो गगरी में हाथ गया—दे० 'थाली के ग़ायब होने पर…'। तुलनीय : भोज०, मैथ० थरिया भुलाले तऽ गगरी में खोजल जाले।

थाली गिरी झनकार भई, फूटे चाहे न फूटे—थाली गिरी तो झनझनाहट की आवाज़ हुई चाहे फूटे या न फूटे। कोई बुरा काम न भी किया हो, किन्तु बदनामी हो जाए तो कहते है। अर्थात् बुरा होने से बदनाम होना कही बदतर है। दे० 'बद अच्छा बदनाम बुरा।'

थाली गिरी झनकार सबने सुनी—किसी घटना की ख़बर चारों ओर तेजी से फैल जाय तब कहते हैं। तुलनीय : अव० थारी गिरी झनाक से आवाज निकरि गइ; पंज० थाली डिगी छेड़ सारियाँ सुनी।

थाली चाट के दिन काटें—अत्यंत निर्धनता का जीवन व्यतीत करें। किसी के प्रति शाप। तुलनीय : राज० आरे म्हारा मघनपाट, हूँ तनै चाटूँ तूं मने चाट; पंज० थाली चट के दिन कटन।

थाली न लोटा, खाय दाल-भात—(क) झूठी शान दिखाने वाले के प्रति व्यंग्य। (ख) अपनी स्थिति से बढ़कर महत्त्वाकांक्षा रखने वाले के प्रति भी व्यंग्य में कहते हैं; तुलनीय : पंज० थाली न गड़वा खाये दाल-चोल।

थाली पर की भूख सही नहीं जाती—(क) भोजन करने के स्थान पर बैठकर भोजन का इंतजार करना बहुत बुरा लगता है। (ख) जब कोई व्यक्ति किसी काम को करने के लिए बिल्कुल तैयार हो जाता है और किसी कारणवश काम करने में विलंब होता है तब भी वह ऐसा कहता है। तुलनीय : अव० अब तो सही न जात है थरिया पर कै भूख; पंज० खान बैठे पुख नहीं सैन होंदी।

थाली पर से भूखा नहीं उठा जाता—अर्थात् (क) धन होते हुए कष्ट नहीं सहा जाता। (ख) मिलती वस्तु को छोड़ना नहीं चाहिए।

थाली फूटने पर ठीकरा ही हाथ आता है--भाग्य रूपी थाली के फूट जाने पर भीख माँगने की नौवत आ जाती है। जीवन-यापन के लिए मूलभूत साधन समाप्त हो जाने पर कहते हैं। तुलनीय : राज० थाली फूट्यां ठीकरा हाथ में आया करे। (ठीकरा=सामान्यतः इसका प्रयोग मिट्टी के बर्तनों के टुकड़े के लिए किया जाता है, पर उक्त कहावत में 'ठीकरा' का प्रयोग भीख की ठीकरे या कमंडल लिए किया गया है)।

थाली फूटी न फूटी, झनकार तो सुनी—दे० 'थाली गिरी झनकार भई···'।

थाली में खाओ, तो कहा—खप्पर में खाएँगे—(क) साधुओं के प्रति कहते हैं क्योंकि वे अपने बर्तन में ही खाना पसंद करते हैं। (ख) उन व्यक्तियों के प्रति भी व्यंग्य से कहते हैं जो अच्छी वस्तु न लेकर बुरी वस्तु की माँग करते है।

थाली हेराय घड़े में हाथ डाले—दे० 'थाली के ग़ायब होने पर ···'। तुलनीय : बुंद० टठिया हिरात तो गगरी में हात डारो जात।

था सोचा जो कुछ अव्वल, वही आखिर पेश आया—जिस बात का संदेह हो वही सामने आये तब कहते हैं।

थुरमोल अरु दुधार—(क) जब कोई व्यक्ति किसी मूल्यवान वस्तु को बहुत कम मूल्य में ख़रीदना चाहे तब व्यंग्य में इस लोकोक्ति का प्रयोग करते हैं। (ख) जब किसी को संयोगवश कोई अच्छी चीज़ कम दाम में मिल जाती है तब भी ऐसा कहते हैं। (थुरमोल=थोड़े दाम की; दुधार=दूध देने वाली)।

थुरमोल अरु दुधार, लमथन् अरु नैनवार—थोड़े दाम की हो, दूध खूब देती हो, थन लंबे हों और घी खूब हो ऐसी गाय चाहिए। जब कोई कम दाम में मूल्यवान वस्तु लेना चाहे तो व्यंग्य से कहते हैं। (नैनू=मक्खन लेकिन यहाँ इसका अर्थ घी से है। 'नैनू' शब्द से नैनवार बना है जिसका अर्थ नैनू वाली या घी वाली)।

थूककर चाटना अच्छा नहीं है—बात कहकर इनकार करने पर कहते हैं। तुलनीय : भोज० थूक के चाटल अच्छा नाईं है; पंज० थुक के चटना चंगा नहीं हुंदा; ब्रज० थूकि कें चाटिबौ अच्छौ नायें होय।

थूक का चिपकाया चिपकता नहीं—(क) लापरवाही से किया गया काम अच्छा नहीं होता। (ख) कम व्यय से किया हुआ काम अस्थायी और कमज़ोर होता है। तुलनीय : राज० थूकरा चेपा किताक दिन चलै? पंज० थुक नाल जोड़या नहीं जुड़दा।

थूक का पकवान करे—(क) चतुर व्यक्ति थोड़ी सामग्री से भी अच्छा दिखावा कर लेते हैं। (ख) कंजूस के प्रति भी तब कहते हैं जब वह थोड़ा खर्च करके अधिक लाभ चाहे। तुलनीय : पंज० थुक्क विच पकौड़े नई बनदे; मेवा० थूंक का पकवान करै।

थूक की नदी में तैरते हैं—झूठ बोलने वाले के प्रति कहते हैं।

थूक चाटे प्यास नहीं जाती—आशय यह है कि साधारण उपायों से बड़े काम सिद्ध नहीं होते। तुलनीय : पंज० थुक चटण नाल तरे नइँ मिटदी।

थूक दाढ़ी किट्टे मुंह—किसी को धिक्कारना हो तब कहते हैं।

थूक में पकवान नहीं पकते—दे० 'थूक का पकवान करे।'

थूक से चिपका कितने दिन चलेगा?—दे० 'थूक का चिपकाया···'। तुलनीय : राज० थूक सूं गांठ्योड़ा किता दिन संचै; मेवा० थूक सूं कान चपेक्या है।

थूकों सत्तू नहीं सनता—थोड़े खर्च से बड़ा काम नहीं हो सकता। तुलनीय : पंज० थुक विच पकौड़े नई तले जांदे; मरा० थुकी ने जब भिजत नाहीत; भीली—थूके थूंके मांडा चौपड़े; भोज० थूके से सतुआ ना सनाई; अव० थूंकन सेतुआ न सनी; पंज० थुक बिच सत्तू नहीं सिजदे; ब्रज० थूकन ते सतुआ नायें सनें।

थैलियाँ सिला लाओ—किसी के रुपया माँगने पर जब उसे नहीं देना होता तो हँसी से कहते हैं।

थैली चोट बानियाँ जाने—(क) धन की क्षति का सबसे अधिक दुख बनिए को ही होता है क्योंकि अन्य लोगो की अपेक्षा उसका लगाव धन से अधिक होता है। (ख) जिस व्यक्ति का किसी वस्तु से अधिक लगाव होता है उसे ही उस वस्तु के खो जाने या नष्ट हो जाने का अधिक दुख होता है। तुलनीय : ब्रज० थैली की चोट तौ बनिया ई जाने।

थैली में नगपुल्ला, तो खेलें बेटा अब्दुल्ला—थैली में दाम हो तो बेटा अब्दुल्ला खेलते घूमें। तात्पर्य यह है कि जिसके पास पैसा है उसके लिए संसार में मौज ही मौज है।

थैली में रुपया मुँह में गुड़—(क) पास में धन हो और ज़बान मीठी हो तभी मनुष्य सुखी रहता है। (ख) यदि पास

में रुपया हो तो मुँह मीठा हो जाएगा। अर्थात् धन होने पर ही आदमी सुख पाता है। तुलनीय : पंज० थैली बिच रुपया मुँह बिच गुड़; ब्रज० थैली में रुपैया तौ मुँह में गुर।

थैली लगावे सो थैला पावे—व्यापार में धन लगाने वाला ही लाभ उठाता है।

थोड़ बनायेन कबीरदास बहुत बनाये भकुआ—कबीरदास ने थोड़ा ही लिखा था, बाक़ी ऐरों-ग़ैरों ने लिख दिया। जब कोई किसी की बात को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कहे तो कहते है। (भकुआ—मूर्ख)।

थोड़ा आपको, बहुत ग़ैर को—जो अपने घर वालों का कम आदर करे और बाहर वालों का अधिक करे उसे कहते हैं। तुलनीय: पंज० थोड़ा तुहानू मता ओनू।

थोड़ा करें ग़ाज़ी मियाँ, बहुत करें डफ़ाली—दे० 'थोड़ बनायेन कबीरदास...'। तुलनीय : अव० थोड़ा करैं गाजी मियां, बहुत करैं मुजावर।

थोड़ा कहे कबीरदास अधिक कहें कविता—(क) कहने वाला तो थोड़ा कहता है और बीच के लोग उसे बढ़ा-चढ़ा कर अधिक कर देते हैं। (ख) कबीर ने थोड़ा कहा, उनका अधिक भाग और लोगों द्वारा बढ़ाया हुआ है। (ग) वक्ता के प्रयोजन से अधिक अर्थ लगाने पर कहा जाता है।

थोड़ा खाओगे तो बहुत खाओगे, बहुत खाओगे तो थोड़े से भी जाओगे—थोड़ा-थोड़ा खाने से तो बहुत खाया जा सकता है किन्तु बहुत खाने से रोगी होना पड़ता है और फिर कुछ भी खाने को नहीं मिलता। व्यापार में जो व्यक्ति एका-एक ही बहुत बड़ा लाभ चाहते हैं उनके प्रति समझाने के लिए कहते हैं। तुलनीय : राज० नांने कवे घणो खावणो; पंज० खा थोड़ा बौता खाएंगा, बौता खाया ते थोड़े तो बी जाएंगा।

थोड़ा खाना और बनारस का रहना—(क) हिन्दुओं का पवित्र एवं प्रमुख तीर्थ स्थान होने के कारण हिन्दू लोग थोड़ा खाकर बनारस रहना पसंद करते हैं, उसे छोड़ना नहीं चाहते, क्योंकि बनारस में रहने से उन्हें स्वर्ग में जगह मिलने की आशा रहती है। (ख) थोड़ा ही खाने को मिले, पर रहने का स्थान अच्छा होना चाहिए। तुलनीय : अव० थोड़ा खाना बनारस का रहना; पंज० कट खाना ते बनारस बिच रहना।

थोड़ा खाना और बनारस में रहना—ऊपर देखिए।

थोड़ा खाना जवानी की मौत—खाना भर पेट न मिलने से मनुष्य दुर्बल होकर जल्दी मर जाता है। तुलनीय : पंज० कट खाना जवानी दी मौत।

थोड़ा खाना, सुखी रहना—संतोषी व्यक्ति का कथन। तुलनीय : पंज० कट खाओ सुखी रहो; ब्रज० थोरौ खाइबौ, सुखी रहबौ।

थोड़ा खायगा सो ज़्यादा खायगा, ज़्यादा खायगा सो थोड़े से भी जायगा—दे० 'थोड़ा खाओगे बहुत खाओगे...'। तुलनीय : मेवा० छोटे कुवे घाणो खवावे; अं० Small profit quick returns.

थोड़ा खाय बहुत डकारे—(क) अपनी असमर्थता या ग़रीबी छिपाने के लिए जो झूठा दिखावा करे उसके प्रति कहते हैं। (ख) जो काम तो थोड़ा करे पर उसका प्रचार खूब बढ़ा-चढ़ा कर करे, उसके प्रति भी व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : छत्तीस० थोरे खाय, बहुत डेकारै; ब्रज० थोरौ खाय डकारै बहुत।

थोड़ा जोतै बहुत हेंगावे, ऊँच न बांधे आड़; ऊँचे पर खेती करे, पैदा होवे झाड़—कम जुताई करे, अधिक पाटा चलावे (हेंगावै) और खेत की अच्छी मेंड़बंदी न करे तथा ऊँची भूमि हो तो उसमें झाड़ होता है। आशय यह है कि ऊँची भूमि की यदि ठीक ढंग से मेड़बंदी न की जाय तो अधिक श्रम करने के बावजूद उसमें फ़सल अच्छी नहीं होती।

थोड़ा-थोड़ा करके ही बहुत हो जाता है—थोड़ा-थोड़ा धन संचय करने से आदमी संपन्न हो जाता है या थोड़ा-थोड़ा प्रयत्न या परिश्रम करते रहने से एक दिन लक्ष्य अवश्य सिद्ध हो जाता है।

थोड़ा-थोड़ा खाय न मरे न मोटाय—(क) थोड़ा खाने वाला न तो रोगी होकर मरता है और न ही मोटा होता है। (ख) साधारण ढंग से जीवन बिताने वाले के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० मासा-मासा खाय न मर न मोटा।

थोड़ा-थोड़ा सब खाया जाता है—जो लोग कहते हैं कि मैं अमुक चीज़ नहीं खाता उनके प्रति कहते हैं। (लेकिन इसका तात्पर्य यह नहीं है कि नशीली वस्तुओं को भी खाना चाहिए। सामान्य रूप से खाई-पी जाने वाली वस्तुओं के लिए ही ऐसा कहते हैं)। तुलनीय : पंज० कट कट सब खादा जांदा है।

थोड़ा देना बहुत आरज़ू कराना—थोड़ा तो देंगे परन्तु बहुत विनय (आरज़ू) करनी है। जब काफ़ी ख़ुशामद कराने के बाद कोई किसी को कुछ थोड़ा-सा देता है तब वह ऐसा कहता है।

थोड़ा पढ़े सो हल से जाय, बहुत पढ़े सो घर से जाय—थोड़ा पढ़ने वाले लड़के खेती करने में अपमान समझते हैं

और अधिक पढ़ने वाले नौकरी करने के लिए नगर चले जाते हैं। ग्रामीण युवकों और आज की शिक्षा प्रणाली पर व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० थोरी पढ़ै सो हर ते जाय, बहुत पढ़ै सो घर ते जाय।

थोड़ा माल खाय दूकानदार को, अधिक माल खाय गाहक को –दूकान में अधिक माल रहने पर ग्राहक रौब में आ जाता है और सौदा जल्दी पट जाता है। थोड़ा माल होने पर लाभ कम और खर्च बहुत होने के कारण दूकान का दिवाला निकल जाता है।

थोड़ा सुख धनी, बहुत सुख ग़रीब—लोभ की प्रबलता के परिणामस्वरूप धनी हमेशा चिंतित रहते हैं और सुख नहीं पाते; किन्तु ग़रीब संतोष के कारण सुखी रहता है। तुलनीय : मैथ० थोडां धनक सुखिया बहुत धनक दुखिया; पंज० कट सुख तनी मता सुख गरीब; ब्रज० थोरे सुख धनी, बहुत सुख गरीब।

थोड़ा सुख बहुत दुख –(क) जीवन मे सुख की घड़ियाँ बहुत कम आती हैं, अधिकांश समय दुख मे ही व्यतीत होता है। (ख) जब काफ़ी श्रम के बाद थोड़ी उपलब्धि होती है तब भी कहते हैं। (ग) क्षणिक सुख मिलने पर बड़ा पछतावा होता है। तुलनीय : मल० चिरिच्चोलम दुखम् ; पंज० कट सुख मता दुख; अं० Short pleasure long lament.

थोड़ी आस मदार की, बहुत आस गुलगुलों की–किसी से मुलाक़ात करने के उद्देश्य से लोग कम जाते हैं बल्कि कुछ लाभ के उद्देश्य से लोग किसी के पास अधिक जाते हैं। (शाह मदार मुसलमानों के एक बड़े पीर हुए हैं जिनकी मृत्यु सन् 1432 ई० में हुई। मनकपुर में उनकी दरगाह है। प्रति वर्ष वहाँ पर मेला लगता है और प्रसाद में गुलगुले बँटते हैं। वहाँ मदार साहब के दर्शन के लिए लोग कम जाते हैं बल्कि गुलगुलों के लालच से अधिक)।

थोड़ी करे सो अपने को, बहुत करे सो गैरों को—खेती के विषय में कहते हैं कि जो कम भूमि रखता है वही उस पर ठीक ढंग से खेती कर पाता है अधिक भूमि रखने से उसकी ठीक ढंग से देखभाल नहीं हो पाती और उसका फ़ायदा दूसरे लोग उठाते हैं। तुलनीय: पंज० कट करे ते अपनी मती करे ते परायी।

थोड़ी देर का आलस करे, सारी रात हगासन मरे—जो व्यक्ति थोड़े आलस्य से बहुत बड़ी हानि उठाए उसके प्रति कहते हैं।

थोड़ी पूँजी खसमों खाय—थोड़ा माल दूकानदार का दिवाला निकाल देता है, क्योंकि खर्च अधिक होता है और लाभ कम। तुलनीय : गढ़० छोट्टी पूँजी खसम खांदा; हरि० थोड़ी पूंजी खसम ने खा; पंज० कट पूंजी खसमां खा; ब्रज० थोरी पूँजी खसमें खाय।

थोड़ी बेशर्मी, दिन-भर का आराम—आलसियों एवं निकम्मों के प्रति व्यंग्य में कहते है जो अपमान सह लेते हैं पर कुछ करना नहीं चाहते। तुलनीय : पंज० बसरम नूं सारा दिन अराम।

थोड़े धन में खल इतराय—नीच थोड़े ही धन से घमंड करने लगते हैं। तुलनीय : अव० थोड़ेन धन मा खल बोराय; पंज० मासा जिहे पेहे उथे पुड़कना।

थोड़े पानी में उभरे फिरते हैं—थोड़े ही जल में तैर रहे हैं। जब कोई थोड़ा-सा धन पाकर इतराने लगता है तब उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : पंज० मासा जिहे पाणी बिच गोते लांदे हो।

थोड़े में मज़ा है—थोड़ी वस्तु में अधिक आनंद आता है और अधिक मिलने से उसका आकर्षण समाप्त हो जाता है। तुलनीय : पंज० थोड़े बिच ही मजा है; ब्रज० थोरेई में मजा है।

थोड़े से बहुत होता है—जब कोई थोड़े काम या धन से संतुष्ट नही होता तो उसे धीरज बँधाने अथवा बढ़ावा देने के लिए कहते हैं। तुलनीय : भोज० थोरे से बहुत होला; अव० थोड़ से बहुत होय जाई; पंज० थोड़ा ही बौत हुंदा है।

थोड़े ही में जानिये सयाने–(क) बुद्धिमान किसी बात को थोड़े ही में समझ जाते हैं। (ख) बुद्धिमान की बुद्धिमत्ता का पता लगने में देर नही लगती। तुलनीय : पंज० थोड़े बिच ही सयाने दा पता लग जांदा है।

थोथा चना, अंधा घोड़ा, जितना खिलाओ उतना थोड़ा—अंधे घोड़े को थोथे चने ही दिए जाते हैं, क्योंकि वह कोई काम नही करता। आशय यह है कि निकम्मे व्यक्ति को कोई अच्छा भोजन या आदर नहीं देता।

थोथा चना बाजे घना—निकम्मों के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। वे बातें तो बहुत बड़ी-बड़ी करते हैं, पर काम कुछ नहीं करते। अल्पशिक्षित या कम ज्ञान रखने वाला जब अपनी सर्वज्ञता की डींग हाँकता है तब भी व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : अव० अधजल गगरी छलकत जाय ; हरि० थोत्था चणां बाज्जै घणां; राज० थोथो निणो बाजै घणो; मेवा० थोथो चणों बाजे घणो ; मरा० पोकळ हरमरे बाजतात फार; निरकुटम तुलुम्बुकयिल्ल; ब्रज० थोथो चना,

बाजै घना; अं० Empty vessels make much noise; Much cry little wool.

थोथा शंख और मूरख आदमी—खोखला (थोथा) शंख और मूर्ख आदमी दूसरे द्वारा फूंकने (हवा देने) पर ही बोलते हैं। आशय यह है कि मूर्ख व्यक्ति दूसरों द्वारा बतलाने पर ही कोई काम करते हैं। तुलनीय : हरि० थोत्था संख अर चूतिया बिराणी फूक तै बाजै।

थोथे फटके उड़-उड़ जायँ—पोला और घुना हुआ अनाज फटकने से उड़ जाता है। (क) मूर्ख या झूठे परीक्षा में नहीं ठहरते, उनका दोष प्रकट हो जाता है। (ख) व्यर्थ की बातों से कोई लाभ नही होता। तुलनीय : मरा० पोकळ किडके दाणे फटकले की उडून जातात; अव० झूर पछोरे उड़-उड़ जाय।

थोथे वृक्ष पर कोई खग नहीं बैठता—असहाय और निर्धन की कोई सहायता नही करता। तुलनीय : मल० खगङ्ङळ माविल पेरुकुम् बसन्ते वरा शरल्क्कालम-तोन्नु पोलम्; पंज० रंडे बूटे उत्ते कोई नहीं बैंदा; अं० In times of prosperity friends are plenty; Poverty parts friends.

थोर जोताई बहुत हेंगाई, ऊँचे बाँधे आरी; उपजे तो उपजे, नाहीं घाघे देवे गारी—थोड़ा जोतने, अधिक हेंगा देने और ऊँची मेंड़ बांधने से अनाज उत्पन्न होने की अधिक आशा नहीं होती।

द

दंड पूप न्याय— एक व्यक्ति एक डंडे में बँधे हुए पुए छोड़कर पास ही कहीं गया। लौटकर उसने देखा कि डंडे का अधिकांश भाग चूहे खा गए हैं। यह देखकर उसने सोचा कि यदि चूहे डंडे जैसी वस्तु को इतनी देर में खा सकते हैं तो पुओं को कब छोड़ने वाले हैं। आशय यह है कि जहाँ कोई कठिन और सहज काम एक स्थान पर हों और कठिन कार्य हो जाय तो आसान काम अवश्य हो जाने की संभावना रहती है। यही सूचित करने के लिए इस न्याय का प्रयोग किया जाता है।

दंड चक्र न्याय—जिस प्रकार घड़ा आदि बनाने में डंडा और चाक आदि कई कारक होते हैं उसी प्रकार जो काम या बात अनेक कारकों से हो उसके प्रति इस न्याय का प्रयोग किया जाता है।

दंड पूपिका न्याय— लाठी और पूड़े का न्याय। दे० 'दंडपूप न्याय'।

दंडा सी पूँछ बुढ़ाने का रास्ता—किसी का किसी काम के लिए अयोग्य होना। दंडा-सी पूंछ बूढ़े बैल की हो जाती है। बुढ़ाने का रास्ता रेगिस्तानी होने के कारण चलने में दुखदायी होता है। तुलनीय : हरि० डंडा सी पूछ भदोण का राह।

दंत टूट साँप जोर से फू-फू करे— टूटे हुए दाँतों वाला सर्प ज़ोर से फुफकारता है। ऐसे लोगों के प्रति व्यंग्य में कहते हैं जो करते तो कुछ नही है पर हल्ला बहुत करते हैं। तुलनीय : असमी— दाँत भाङ्गा फोंपनिये सार; सं० सम्पूर्णघटो न करोति शब्दं; अं० Empty vessels make much noise; Shallow streams make most din.

दंतला खसम की हाँसी, न साँची—दंतले (जिसके दाँत बाहर निकले हों) पति की हँसी को सच्चा माना जाय या झूठा? जिस व्यक्ति की मुखमुद्रा सदा एक-सी रहती हो उसके मनोभाव का पता नही चलता।

दंतुल खसम की हँसी न खसी— ऊपर देखिए। (खसी =नाराजगी)। तुलनीय : कौर० दंतुल खसम की हंसी न खसी; पंज० दंदले खसम दी हसी न खस्सी।

दंतुले का न रोना जाना जाय न हँसना—दे० 'दंतला खसम की हाँसी…'। तुलनीय : हरि० दान्तुए खसम का, रोवते का बेरा पाट्टै ना हंसते का; पंज० दंदले दे न रोण दा पता ना हसण दा।

दक्खन गए न बाहुरे, रहे चंदेरी छाय—औरंगजेब की फ़ौज दक्षिण में जाते समय 12 वर्ष तक चंदेरी में पड़ी रही थी। बहुत दिनों तक विदेशवास करने पर कहा जाता है। तुलनीय : ब्रज० दच्छिन गये न बाहुरे, रहे चँदेरी छाय।

दक्खिन पच्छिम आधो समयो, भड्डर जोसी ऐसे मनयो—भड्डरी ज्योतिषी कहते है कि दक्षिण-पश्चिम की हवा चलने से अनाज की पैदावार आधी होगी। अर्थात् दक्षिण-पश्चिम की हवा चलने से फ़सल अच्छी नहीं होती।

दक्खिन बाय बहे बघनास, समया निपजे सनई घास—दक्षिण की हवा बहने से जीवों का अधिक नाश होता है और सनई तथा घास अधिक होती है।

दखनी कुलखनी, माघ-पूस सुलखनी—दक्षिण की हवा साधारणत: अनिष्टकारी होती है परन्तु माघ-पूस में उसका प्रवाह अच्छा होता है।

दखिन बहै जल थल अल गोरा, ताहि समय जूझे बड़ बीरा—दक्षिण की हवा चलने पर बरसात अधिक होगी और योद्धा युद्ध करेंगे।

दख्ल दर माक़ूलात करना—उचित कार्य में ही हस्तक्षेप करना चाहिए।

दगा किसी का सगा नहीं—धोखेबाज़ सबको धोखा देता है, वह किसी को नहीं छोड़ता। तुलनीय : राज० दगा न किसका सगा; अव० दगा केहू कै सगा नाहीं; पंज० तोखा किसे दा मका नहीं।

दगे सांड़ है—(क) बहुत लंबे-चौड़े बलवान शरीर वाले व्यक्ति को मज़ाक़ में कहते हैं। (ख) उद्दंड व्यक्ति के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० वही; पंज० तोखे दा परया है।

दग्धपट न्यायः—जले हुए वस्त्र का न्याय। जलती हुई आग में पड़ा हुआ वस्त्र जल जाने पर भी अपनी ज्वलित रूपरेखा सहित दृष्टिगत होता है। पर वह अवास्तविक एवं महत्त्वहीन होता है। तात्पर्य यह है कि समस्त चराचर विश्व उपयुक्त दग्ध वस्त्र के समान असत्य एवं सारहीन है।

दग्धबीज न्यायः—जले बीज का न्याय। तात्पर्य है कि जब बीज जल जाता है या विनष्ट हो जाता है तब अंकुर नहीं निकलता।

दग्धेन्धन वह्नि न्यायः—उस आग का न्याय जिसने अपने ईंधन को जला दिया है। तात्पर्य है भस्मीभूत हो जाने के पश्चात् आग स्वयं भी शान्त हो जाती है।

दत्तमेकधा सहस्र गुणमुपलभ्यते—वह वस्तु जो एक बार दी जाती है, हज़ारों गुना बढ़कर वापस प्राप्त होती है।

दत्तर्णाधमर्ण इव स्वप्—ऋण चुका देने वाले ऋणी मनुष्य की तरह सोना। निश्चित सोने वाले के प्रति कहते हैं।

दद्दा को दोनों मीठी—स्वार्थी के प्रति कहते हैं जब वह सब ओर से अपना ही लाभ चाहता हो।

दद्दा तुमने लाख कही, हमने एक न मानी—बहुत समझाने पर भी न समझने या मानने वाले पर कहते हैं।

दद्दा, दाल रोटी—दूसरे की न सुनकर अपनी ही रट लगाने वाले को मज़ाक़ में कहते हैं।

दद्दा नहीं पढ़े हैं, लल्ला पढ़े हैं—देना नहीं जानते, लेना ही जानते हैं। (क) जो किसी से क़र्ज़ लेकर नहीं देता है उस पर कहते हैं। (ख) कंजूस को भी कहते हैं।

दद्दा, हम पांव सिकोड़कर नाप दे आए, कहा—तो बेटा पहनकर कौन सुख उठाओगे?—बहुत चालाक कभी-कभी बहुत बड़ी मूर्खता भी कर बैठते हैं। एक बार किसान का लड़का चमार के पास जूता बनवाने गया। नाप देते समय लड़के ने सोचा कि जितना छोटा जूता होगा उतने ही पैसे कम देने पड़ेंगे। यह सोचकर उसने नाप देते समय पाँव सिकोड़ लिए। अपनी चतुराई पर मन-ही-मन प्रसन्न होते हुए उसने अपने पिता से अपनी कारस्तानी बताई तो पिता ने कहा कि बेटा उसे पहनकर कौन सुख उठाओगे।

दधित्रपुसम् प्रत्यक्षो ज्वरः—दही और ककड़ी मूर्तिमान् ज्वर है। तात्पर्य है कि ये दोनों ही वस्तुएँ ज्वरोत्पादक हैं।

दबकर कौन कितने दिन काम करे—दबा कर किसी से भी अधिक दिन काम नहीं निकाला जा सकता। दबा व्यक्ति अवसर पाते ही निकल भागता है या कोई मुसीबत खड़ी कर देता है। इसलिए राज़ी से यदि कोई काम करता हो तभी कराना चाहिए। तुलनीय : भीली—मनख कतराक दाड़ा हाथ्यो रे।

दबक शीरे के मटके में—मिठाई के बर्तन में मुंह डालो। (क) बड़े की खुशामद में रहने वाले पर कहा जाता है। (ख) जब किसी को अच्छा अवसर मिलता है तब भी कहते हैं कि पूरा लाभ उठा लो।

दबके रहे सो सुख से रहे—जो सबसे दबकर रहता है वह सुखी रहता है। सब का कहा मानने वाले को सभी चाहते हैं और इसी कारण उससे कोई नाराज़ या असंतुष्ट नहीं होता। तुलनीय : भीली—दबी ने रेनू दन्या में हूदो है; पंज० नानक नीवी जे रहो लग्गे न तत्ती हवा।

दबता बनिया नमता तौले—दे० 'दबा बनिया देय…'। तुलनीय : ब्रज० दबिके रहै सो सुख ते रहै।

दबते को सब दबाते हैं—निर्बल या ग़रीब को सभी परेशान करते हैं। तुलनीय : मरा० गरीबाला सगळेच दम देतात; ब्रज० दबते ऐ सब दबायें; पंज० दबदे नूं सारे दबादें हन।

दबसी सो हारसी—जो दबेगा उसी की हार होगी। दबकर रहने से मनुष्य हानि उठाता है। तुलनीय : पंज० जिहड़ा दबया ओही हार्या।

दबा पाई गूजरी, 'गहरा बासन लाओ'—किसी की विवशता का नाजायज़ फ़ायदा उठाने वाले के प्रति कहते हैं। (गूजरी=ग्वालिन)।

दबा बनिया देय उधार—जो बनिया किसी कारण दबता है वही उधार देता है। अर्थात् जिस पर दबाव होता

है उससे उचित-अनुचित सभी प्रकार का काम कराया जा सकता है । तुलनीय : ब्रज० दब्यौ बनिया देय उधार ।

दबा बनिया नमता तोले - ऊपर देखिए ।
तुलनीय : ब्रज० दब्यौ बनियां नविकें बोलै ।

दबा बनिया पूरा तोले -- दे० 'दबता बनिया…' ।
तुलनीय : अव० दबा बनिया पूरै तौले; माल० दबतो वाण्यो नमतो तोले; ब्रज० दब्यौ बनियां पूरौ तोलै ।

दबा हाकिम महकूम के ताबे -रिश्वतखोर हाकिम अपने कर्मचारियों से भी डरता है । आशय यह है कि बेई-मान या पापी सबसे डरता रहता है कि न जाने उसका भेद कौन कब खोल दे ।

दबी आग और दबी बहू -जिस तरह राख में दबी हुई आग धीरे-धीरे सुलगती रहती है, उसी प्रकार मार-पीट से या बलात् रखी हुई बहू भी धीरे-धीरे सुलगती रहती है और अवसर पाकर एकाएक भडक जाती है, अर्थात् घर से भाग जाती है । जहाँ इस तरह की घटना हो जाय तो वहाँ सास-ससुर और पति आदि की निन्दा करने के लिए ऐसा कहते है । तुलनीय: गढ० हिरोली आग अर उल्याई बुवारी कखछैं ।

दबी बिल्ली चूहे की बहू बनती है—संकट के समय, ग़रीबी की दशा में या कमज़ोरी की दशा में दुर्बल भी मखौल उड़ाते है । तुलनीय : भोज० परिल बिलार असक्के त मूस कहें कि होखऽ हमार बहुअर ।

दबी बिल्ली चूहों से कान कटाती है—(क) बलवान भी अपराध करने पर कमज़ोरों की बातें सुनता है । (ख) प्रतिकूल स्थिति में नगण्य व्यक्तियों की बातें भी सुननी पड़ती है । तुलनीय : मरा० उदीर खाउन बसलेली माजरी उदीर चावला तरी गप्प बसते; अव० दबी बिलैया मुसवन से कान कटावै; ब्रज० दबी बिलैया मूसेन पै कान कटवावै ।

दबे पर चींटी भी चोट करती है—अधिक सताने से कमज़ोर भी बदला लेने के लिए तैयार हो जाता है । तुल-नीय : मरा० चिडली म्हणजे मुंगी सुद्धां चावते; गढ़० अपर्णा पीड़ा किरमुलो भी चड़ाक देंद; ब्रज० दबे पै चेंटी ऊ चोट करै ।

दबे पर सब शेर हैं—जो दबता है उससे सभी ज़बर-दस्त या बलवान बनते हैं । आशय यह है कि शरीफ आदमी को सब परेशान करते है । तुलनीय : अव० दबे पै सबै शेर; पंज० दबे उते सारे शेर हन ।

दम का क्या भरोसा, आया न आया—जीवन की क्षण-भगुरता पर कहा गया है । तुलनीय : मरा० श्वासाचा काय विश्वास येतो कीं न येतो ।

दम का दमामा है- जीवन का ही सारा खेल है । (दम - साँस; दमामा - ढोल) ।

दम ग़नीमत है -मनुष्य जब तक ज़िंदा है, तभी तक ग़नीमत है ।

दमड़ी का चमड़ा गया कुत्ते की जात पहचानी गई—थोड़े से स्वार्थ के लिए जब कोई निम्न कर्म करता है तब कहते हैं । तुलनीय : भोज० दमड़ी क चाम गइल कुक्कुर क जात चिन्हाइल । (दमड़ी - ब्रिटिश शासन काल में सोलह आने के रुपए का 512वां भाग) ।

दमडी का पान पिटरिया में, मेरी तेरी बात अटरिया में -निर्धन प्रेमियों पर कहा जाता है । तुलनीय : ब्रज० दमड़ी कौ पान पिटारी मे, मेरी तेरी बात अटारी में ।

दमड़ी का सौदा बाज़ार ढिंढोरा—एक दमड़ी के माल को बेचने के लिए बाज़ार में ढिंढोरा पीटते हैं । जो व्यक्ति छोटे से काम के लिए बहुत शोर मचाएं उनसे व्यंग्य में ऐसा कहते है । तुलनीय गढ० दमड़ी को सौदा बजार खलल; पंज० पैहे दा सौदा ते बजार टिढोरा ।

दमड़ी की अरहड़ सारी रात खड़हड़ --ज़रा से काम को बहुत बड़ा दिखाने पर कहा जाता है । तुलनीय : ब्रज० दमड़ी अरहर, सब रात खड़हर ।

दमड़ी की गुड़िया, टका डोली का—(क) जब जितने का माल न हो उससे अधिक उस पर खर्च हो तब कहा जाता है । (ख) ग़रीब के ब्याह के समय भी कहते है ।

दमड़ी की घोड़ी छः पसेरी दाना -माल से बढ़कर उस पर खर्च पड़ने पर कहते हैं । तुलनीय : मरा० पेची घोडी तिला सहा पासरी दाणा; अव० दमड़ी भर की घोड़ी छः पसेरी भूसा । (पसेरी - पाँच सेर की एक पसेरी होती है) ।

दमड़ी की घोड़ी नौ टका विदाई —असली चीज़ पर जो व्यय हो उससे अधिक अनौपचारिकता पर व्यय हो तो कहते हैं । तुलनीय : अव० दमड़ी कै घोड़ी नौ टका बिदाई ।

दमड़ी की चीज़, पेटारा रक्खों कि पेटारी—चीज़ बहुत मामूली या कम क़ीमत की हो, किन्तु उसे रखने की बहुत चिन्ता की जाय, पेटारे में रक्खें या पेटारी में ? छोटी चीज़ की बहुत चिन्ता करने पर कहते हैं । तुलनीय : छत्तीस० पाँच कौड़ी के तितरी घर धरों कि भितरी; भोज० दमरी क चीज, इहां धरों कि उहां । (तितरी = कान का एक गहना) ।

दमड़ी की दाल, आपही कुटनी, आपही छिनाल—जब किसी चीज़ की मात्रा इतनी कम हो कि एक का पेट भी न

भरे तो दूसरे को कहाँ से दी जा सकती है।

दमड़ी की दाल न्यारी-न्यारी टार— बहुत थोड़े पैसे की दाल है, उसको बाँट कर लेना चाहते हैं। छोटी सी बात पर भी एकमत न हो पाने वालों या अपनी मर्जी से निर्णय करने वालों पर कहा जाता है।

दमड़ी की दाल 'बुआ पतली न हो'—एक दमड़ी (बहुत कम क़ीमत) की तो दाल ले आए और कहते हैं कि देखिएगा बुआजी दाल पतली न होने पावे। आवश्यकता से अधिक कंजूसी करने वाले के प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

दमड़ी की निहारी में टाट के टुकड़े – (क) ग़रीब व्यक्ति नाश्ते (निहारी) में रद्दी चीज़ या जो कुछ मिलता है, खाकर संतोष कर लेता है। (ख) निर्धन व्यक्ति गद्दे (निहाली, निहारी) के फट जाने पर उसमें टाट के टुकड़े लगाकर ही अपना काम चलाता है क्योंकि उसकी इतनी सामर्थ्य नहीं होती कि वह नया गद्दा बनवा सके।

दमड़ी की पाग अधेली का जूता —उलटा काम करने पर कहा जाता है। जूते से पगड़ी की क़ीमत अधिक होनी चाहिए। (अधेली दमड़ी से अधिक होती है)।

दमड़ी की बछिया जनम-जनम की हत्या —पाप का काम कितना भी छोटा क्यों न हो, पूरा जीवन उससे लांछित होता है। तुलनीय : मैथ० दमरी के बाछी जनम के हत्या; भोज० दमरी क बाछी जनम भर क हतियारी।

दमड़ी की बुढ़िया, टका सिर मुड़ाई —जितने का माल न हो उससे अधिक उस पर खर्च पड़े तब कहते हैं। तुलनीय : मरा० दमडीची म्हातारी निला तीन पैसे मंडणावळ; कौर० दमड़ी की बुढ़िया, टका सेर मुंड़ाई; बुंद० अड़की की डुकरो टका मुड़ावनी; तेलु० दम्मिडी मुंडकु एगानी क्षौरं; मल० ईरेट्टुत्ताल् पेन कृलि; पंज० पैहे दी बुडी, टका सिर मनाई; अं० The game is not worth the candle.

दमड़ी की बुलबुल टका रँगाई ऊपर देखिए। तुलनीय : पंज० पैहे दी बुलबुल दो आनी रँगाई।

दमड़ी की बुलबुल टका हलाली— ऊपर देखिए। तुलनीय : ब्रज० दमड़ी की बुलबुल, टका हलाल।

दमड़ी की भाजी घर भर राजी -दमड़ी की सब्जी से ही परिवार के लोग खुश रहते हैं। (क) कंजूसों के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। (ख) ऐसे लोगों के प्रति भी कहते हैं जो अपने सीमित साधनों से ही संतुष्ट रहते हैं। तुलनीय : पंज० पैहे दी भाजी, सारा कर राजी।

दमड़ी की मुर्गी टका जबह कराई—दे० 'दमड़ी की बुढ़िया···'।

दमड़ी की मुर्गी नौ टका चोंथाई —दे० 'दमड़ी की बुढ़िया···'।

दमड़ी की मुर्गी, नौ टका निकियायी—दे० 'दमड़ी की बुढ़िया···'।

दमड़ी की लाई टका बिदाई— ऊपर देखिए। तुलनीय : भोज० दमड़ी क बुलबुल टका दलाली, दमड़ी के बुलबुल टका चोंथाई।

दमड़ी की लाई, बनैनी खाय, यह घर रहे कि जाय —दमड़ी की लाई बनिए की पत्नी खा जाती है बताइए इससे घर रहेगा, कि नष्ट हो जाएगा। बनियों की कंजूसी पर व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

दमड़ी की सुई, और सवा मन का मलीदा –थोड़े से लाभ के लिए अधिक खर्चा करने पर कहा जाता है। इस पर एक कहानी है : किसी दर्जी की सुई खो गई। उसने मन्नत मानी कि या खुदा यदि मेरी सुई मिल जाएगी तो मैं सवा मन का मलीदा चढ़ाऊँगा।

दमड़ी की हँड़िया गई, कुत्ते की जात पहचानी गई—जब कोई थोड़ी चीज़ के लिए बेईमानी या नीच कर्म करे तब कहते हैं। तुलनीय : मरा० दमडीचे मड़के गेले कुत्र्याची जात कळली; अव० दमड़ी कै हँड़िया गय, कुत्ते की जात पहिचानी गय; भोज० दमड़ी क हांड़ी गइल कुत्ता क जात चिन्हा गइल; हरि० दमड़ी की हांडी तैं गईए पर कुत्ते की जात का बेरा पटग्या; कौर० दमड़ी की हाडी गई तो कुत्ते की जात पिछाणी गई।

दमड़ी की हाँड़ी गई, कुत्ते का ईमान गया —ऊपर देखिए।

दमड़ी की हाँड़ी लेते हैं तो भी ठोंक-बजाकर -जब कोई व्यक्ति कोई सामान बिना अच्छी तरह देखे-सुने ही खरीद लेता है और वह खराब निकल जाता है तब उसे समझाने के लिए ऐसा कहते है। आशय यह है कि कोई भी वस्तु खरीदने के पहले अच्छी तरह देख लेनी चाहिए। तुलनीय : पंज० पैहे दी चीज लेंदे है ताबी बजा के।

दमड़ी के चने निराले ठाठ -थोड़े धन पर जब कोई इतराने लगता है तब उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

दमड़ी के तीन-तीन —(क) किसी वस्तु की अधिकता के कारण जब उसका मूल्य गिर जाय तो ऐसा कहते हैं। (ख) जिन व्यक्तियों का कहीं आदर नहीं होता है उनके लिए भी इसका प्रयोग होता है। तुलनीय : पंज० पैहे दे तिन-तिन।

दमड़ी के पान बनियाइन खाय, कहा राम घर रहे के जाय—दे० 'दमड़ी को लाई बनैनी···'।

दमड़ी के लेने में दस चक्कर—(क) जिससे कुछ लेना हो चाहे वह थोड़ा ही हो, पर लेकर ही पीछा छोड़ना चाहिए। (ख) जो व्यक्ति छोटी राशि के लिए दिन-रात परेशान करे उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० पैहा लैण पिछे दस चक्कर।

दमड़ी-दमड़ी करके कोष भारी हो जाता है—थोड़ा-थोड़ा एकत्र करने से बहुत हो जाता है। तुलनीय : मल० पलतुळ्ळि पेरुवेळळम्; पंज० पैहे पैहे नाल रुपया बनदा है; अं० Many a little makes a mickle.

दमड़ी पास नहीं नाम लखपत राय—नाम के अनुसार गुण, धन आदि न होने पर व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : हरि० लिछमी चुगै आरणो धनपत चोदै घास; अव० दमड़ी पास नही नांव लक्खीचंद; पंज० कोल पैहा नई नाँ लखपत राय।

दम नहीं बदन में नाम जोरावरखाँ—नाम के अनुसार गुण न होने पर व्यग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० जान नई अपने विच नाँ जोरवान।

दम नाक में आ गया—बहुत परेशान होने पर ऐसा कहते है। तुलनीय : पंज० दम नक विच आ गया; ब्रज० दम नाक में आइ गयौ।

दम बना रहे फूंक निकल जाय—आशीर्वाद और शाप दोनों एक साथ। जो व्यक्ति दिल से बुरा चाहे किन्तु दिखावे के लिए आशीर्वाद दे उसके प्रति कहते है। तुलनीय : अव० दम बना रहै, घर जरा करै।

दम भर की खबर नहीं—अगले क्षण क्या होगा, कुछ पता नहीं। जीवन की क्षणभंगुरता पर कहते है।

दम भाई किसके, दम लगाया खिसके—दम लगाने वाले अर्थात् गांजा, चरस आदि पीने वाले पीने के बाद नहीं रुकते। मतलब निकालकर खिसक जाने वालों पर कहते हैं। तुलनीय : अव० गजेड़ी यार किसके दम लगाये खिसके।

दम भाई सो निज भाई, और भाई सटर-पटर—गंजेड़ी आदि कहा करते हैं कि असली भाई तो वही हैं जो उनके साथ नशा पीते हैं बाक़ी सब ऐरे-गैरे हैं।

दम मारने की जगह नहीं—जब काम से बिलकुल आराम न मिले तब कहते है। तुलनीय : पंज० दम मारने दा थाँ नहीं।

दममार यार किसके, दम लगाया खिसके—दे० 'दम भाई किसके···'।

दमरी के अरहर सारी रात खरर—कम काम के लिए बहुत बड़ा आडम्बर करने पर ऐसा कहते हैं।

दम है, जब तक ग़म है—आशय यह है कि जब तक मनुष्य जीवित रहता है तब तक उसे कोई-न-कोई परेशानी लगी रहती है।

दम है तो क्या ग़म है ?—सामर्थ्यवान को किसी बात की चिंता नहीं होती। तुलनीय : पंज० दम है ते की गम है।

दमा दम के साथ—दमा (श्वास-संबंधी एक रोग) जीवन के साथ ही जाता है। आशय यह है कि दमे की बीमारी ठीक नहीं होती। तुलनीय : ब्रज० दमा दम के संगई जायै।

दम्मो ढेर कि हड्डो ढेर—या तो दाम अर्थात् रुपए का ढेर लगा देंगे या खुद ढेर हो जाएंगे। धन के लिए सिर-धड़ की बाज़ी लगाने वाले के प्रति कहते हैं।

दया धर्म को मूल है, पाप मूल अभिमान—दया धर्म की जड़ है और अभिमान पाप की। अर्थात् दयालु व्यक्ति धर्मात्मा और अभिमानी पापात्मा होता है। तुलनीय : सं० को धर्मः कृपा बिना; माल० क्रोध हरिको जेर नी ने दया हरिको अमृत नी।

दया धर्म नहिं मन में मुखड़ा क्या देखे दर्पन में—जिसके हृदय में दया न हो उसका दर्पण में मुँह देखना व्यर्थ है। (क) अपनी सुंदरता का घमंड करने वाले दुष्ट मनुष्यों को कहते हैं। (ख) बुरा काम करके अच्छे फल की आशा करने वाले के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : भोज० दया धरम ना तन में मुखड़ा का देखी दरपन में।

दया बिन संत कसाई—साधु के अंदर भी यदि दया नहीं है तो वह बुरा समझा जाता है। दया के माहात्म्य को दर्शाया गया है।

दयावान मनुष्य और जुता छुआ खेत—जो खेत अच्छी तरह जोता जाए उसमें अनाज बहुत होता है और जो मनुष्य दयावान हो वही अच्छा होता है। दया और परिश्रम की महत्ता और उपयोगिता बताने के लिए इस लोकोक्ति का प्रयोग करते हैं। तुलनीय : गढ़० दया को मनखी अर मया को नाज।

दरअमल कोश हरचे ख्वाही पोश—वेशभूषा चाहे जैसी हो मनुष्य का आचरण अच्छा होना चाहिए।

दरकारे-खैर हाजत हेच इस्तखारा नेस्त—नेक काम में सोचने की जरूरत नहीं है।

दर-दर माँगते फिरते हैं—निर्धन व्यक्ति के प्रति कहते

हैं जो इधर-उधर से माँगकर अपना काम चलाता है। तुलनीय : पंज० बुए-बुए मँगदे फिरदे हन ।

दर पर मूतने से कौनसा बदला निकलता है ?— किसी के दरवाज़े पर मूत देने से ही उससे बदला नहीं लिया जा सकता । तात्पर्य है कि यदि किसी से बदला ही लेना हो तो छोटी-मोटी बातों से नहीं लेना चाहिए। क्योंकि उससे उसकी कोई हानि नहीं होती और केवल उपहास ही पल्ले पड़ता है। तुलनीय : राज० वाड़ में मूत्यां किसो वैर निकळे ? पंज० बुए बिच मूतरन नाल केडा बदला निकलदा है।

दर-बदर खाक बसर फिरता है – सिर पर धूल डाल कर दरवाज़े-दरवाज़े फिरता है। बहुत शोचनीय स्थिति वाले के प्रति कहते है ।

दरब से सरब - पैसे से ही सब कुछ है। धन रहने पर मनुष्य सब कुछ कर सकता है। तुलनीय : सं० अर्थस्य सर्वे वशः; भोज० दरबे से सरबे; पंज० पैहे नाल ही सब कुज हुंदा है।

दरया को कूज़े में भरते हैं —नदी के जल को मिट्टी के पुरवे (कूज़े) में भरते हैं। (क) असंभव कार्य करने का प्रयत्न करने वाले के प्रति कहते हैं। (ख) थोड़े में बहुत कहने वाले के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० दरया नूं कुजे बिच परदे हन ।

दरया पर जाना, और प्यासे आना— नदी के पास जाकर भी प्यासे आ रहे हैं। (क) किसी लाभदायक स्थान से भी ख़ाली लौट आने वाले के प्रति कहते हैं। (ख) जब कोई धन की इच्छा से किसी धनी के पास जाय और ख़ाली हाथ लौट आये तब भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० दरया उते जावा ते तरेये आना ।

दरया में रहना और मगरमच्छ से बैर—जब कोई व्यक्ति जिसके अधीन रहे उसी से शत्रुता करे तब कहते हैं। तुलनीय : अव० दरिआव का रहब औ मगरमच्छ से बैर; पंज० दरया बिच रहना ते मगरमच्छ नाल वैर ।

दरवाजे पर आइ बरात, समधन को लगी हगास— (क) अवसर पर मुख्य व्यक्ति के तैयार न रहने पर कहा जाता है। (ख) आवश्यक काम के समय जब कोई कुछ बहाना कर बैठता है, या ग़ैरहाज़िर हो जाता है तब भी कहते हैं। तुलनीय : अव० दुआरे आई बरात, तौ समधिन कैं लाग हगास; भोज० दरवाजे पर आइल बरात त समधिन के लागल हगवास ।

दरवाजे पर खटिया नहीं नाम तख्तसिंह—यदि बहुत ग़रीब आदमी का ऐसा नाम हो जिससे उसकी धनाढ्यता प्रकट हो तो ऐसा कहते हैं। गुण या योग्यता आदि के विपरीत नाम होने पर भी कहते हैं। तुलनीय : कनौ० द्वारे पै खटिया नाही औ नाऊं धरे तखतसिंह; पंज० बुए बिच मंजी नहीं नां तख्तसिंह; ब्रज० दरबज्जे पै खाट नायें, नाम तखतसिंह।

दरवाजे पर टाट नहीं, नाम धनपति —ऊपर देखिए। तुलनीय : अव० दुआरे टटिया नहीं नाम धनपति।

दरिद्र को मुहूर्त कैसा, जब चाहे चल पड़े—ग़रीब को मुहूर्त आदि से क्या लेना है। वह जब चाहे, जो चाहे करे क्योंकि उसे तो ग़रीब होने के कारण दुःख ही मिलेगा। मुहूर्त तो धनवानों के लिए हैं क्योंकि उन्हें दुःख या हानि का भय सताता है।

दरिद्रता बहुत दुःखदाई —दरिद्रता में बहुत दुख झेलना पड़ता है। तुलनीय : भीली—घणी दाली दराई दुख दिएज हैं।

दरे-तौबा बाज़ है—भूल के लिए कभी भी खेद प्रकट किया जा सकता है। ('दरे-तौबा=पाप न करने के संकल्प का द्वार; बाज़=खुला हुआ)।

दरोग़ को फ़रोग़ नहीं— झूठा कभी उन्नति नहीं कर सकता क्योंकि झूठ बोलना बहुत बड़ा पाप है। (दरोग़=झूठ; फ़रोग़=उन्नति)।

दरोग़गो रा हाफ़िज़ा न बाशद —झूठे की स्मरण-शक्ति अच्छी नही रहती। इसी कारण वह एक बार कही हुई बात को भूल कर झूठी बताता है तथा अपना भांडा आप ही फोड़ लेता है। (दरोग़=झूठ; हाफ़िज़ा=स्मृति)।

दरोग़ बरगर्दने-रावी— झूठ का पाप झूठ बोलने वाले के सिर पड़ता है।

दर्ज़ी का क्या कूच और क्या मुक़ाम —(क) दर्ज़ी की अस्थिरता पर कहा गया है क्योंकि उन लोगों का कोई ठीक नहीं रहता, आज यहाँ है तो कल वहाँ। कारण यह है कि उनके पास विशेष सामान तो होता नहीं। (ख) ऐसे लोगों के प्रति भी व्यंग्य में कहते हैं जो कहीं स्थायी रूप से नहीं रहते। तुलनीय : पंज० दरजी दा केडा थाँ जिथे देखो उथे नाँ; ब्रज० दरजी कौ कहा कूंच कहा मुकाम।

दर्ज़ी का पूत जब तक जीता, तब तक सीता—दर्ज़ी जब तक जीवित रहता है उसे कपड़े सीने पड़ते हैं। तात्पर्य यह है कि मनुष्य जब तक जीवित रहता है उसे काम करना पड़ता है। तुलनीय : पंज० दरजी दा पुतर जदों तक जीणा अदों तक सीणा; ब्रज० दरजी कौ पूत जब तक जीवै, तब

तक सीमें।

दर्ज़ी की सुई कभी टाट में कभी कमख़्वाब में—सीने के लिए मूल्यवान कपड़ा आया तो वह भी सी दिया और सस्ता या रद्दी कपड़ा आया तो वह भी सी दिया। (क) व्यवसायी का कहना है कि लाभ होना चाहिए ग्राहक चाहे अच्छी चीज़ ले चाहे बुरी। (ख) परिस्थितियाँ सदा एक-सी नहीं रहती। तुलनीय : मरा० शिप्याची सुई, कधी मरजरीतं तर कधी गोणपाटांत।

दर्ज़ी के काज बटन, और सुनार की खटाई—दर्ज़ी कपड़ों के तैयार होने में काज-बटन का और सुनार गहनों में विलंब होने पर खटाई में सफाई के लिए पड़े होने का बहाना करता है। ये दोनों ग्राहकों को टरकाने के लिए इन बहानों का प्रयोग करते हैं।

दर्द को वह समझे जो ख़ुद दर्दमन्द हो—जिस पर दुःख पड़ा हो, वही दूसरे की तकलीफ़ जानता है। जब कोई दूसरे की तकलीफ़ को कुछ नहीं समझता तब उस पर कहा जाता है। तुलनीय : पंज० पीड़ नूं ओही जाण सकदा है जिन् पीड़ होई होवे।

दर्द होने पर तो चींटी भी काट लेती है—दे० 'दबे पर चींटी भी ...'।

दर्शन के नैना लोभी—दर्शन के लिए आँखें लालायित हैं। जब कोई किसी से मिलने का बहुत इच्छुक होता है तब कहते हैं।

दर्शन थोड़े नाम बहुत—जब किसी की बहुत प्रशंसा की जाय पर उसमें वास्तविकता न हो तो कहते है। तुलनीय : ब्रज० दरसन छोटे नाम बड़ो।

दर्शन मोटा, पंडा खोटा—श्रीबद्रिकाश्रम की लंबी और कठिन यात्रा पर कहा गया है।

दलाल का दिवाला क्या, मस्जिद में ताला क्या?—दलाल के घर की पूँजी नहीं होती तो उसका दिवाला क्या निकलेगा और मस्जिद में धरा ही क्या है जो उसमें ताला लगाया जाय। तुलनीय : मरा० दलालाचें दिवाळें कसलें मशिदीला कुलुप कुठलें; मैथ० दलाल के दिवाला की मसजिद मे ताला की।

दलाली बेशरम की, शर्राफ़ी भरम की; दौलत करम की, बात मरम की—दलाली बेशर्म बनने में ही होती है और सर्राफ़ी (शर्राफ़ी) साख से। धन भाग्य मे आता है और बात दिल की अच्छी होती है।

दलिद्दर घर में नोन पकवान—निर्धन के लिए साधारण वस्तु ही बहुत बड़ी चीज़ होती है।

दवा की दवा और ग़िज़ा की ग़िज़ा—दवा का भी काम करती है और पेट भी भर जाता है। जब एक वस्तु या काम से दो फ़ायदे हों तो कहते हैं।

दवा के लिए ढूँढ़ो तो नहीं मिलती—बहुत दुर्लभ चीज़ के लिए कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० दवाईन कूं नायँ।

दवा से परहेज बड़ा—दवा खाने से अधिक लाभ खान-पान के परहेज़ से होता है। तुलनीय : भोज० दवाई ले परहेज बड़; सं० पथ्ये सति गदार्त्तस्य किमौषधनिषेवणैः; अं० Prevention is better than cure.

दशम न्याय—एक बार दस आदमी एक साथ नदी तैर कर पार गए और यह जानने के लिए कि कोई डूब तो नहीं गया उन्होंने गिनना आरंभ किया। गिनती प्रत्येक ने की किन्तु एक आदमी प्रत्येक बार कम रहा। कारण यह था कि जो व्यक्ति गिनता था वह नौ की गिनती तो करता था किंतु स्वयं को भूल जाता था। जब गिनती पूरी नहीं हुई तो उन्होंने मान लिया कि एक आदमी डूब गया है और उसी शोक में वे रोने-पीटने लगे। कुछ देर बाद एक पथिक आया और उसने उनसे शोक का कारण पूछा तो उन्होंने सब माजरा बताया। पथिक ने देखा कि ये हैं तो दस फिर ये रो-पीट क्यों रहे हैं? उसने कहा कि एक बार फिर से गिनती करो तो उनमें से एक ने खड़े होकर नौ तक गिन दिया किंतु अपने को नहीं गिना। इस पर पथिक ने उससे कहा कि तुम ही 'दसवें' आदमी हो। यह जानकर वे सब प्रसन्न हो गए और अपने रास्ते चल दिए। आशय यह है कि मूर्खता और अज्ञान ही दुःख का कारण है।

दशहरे के नीलकंठ—दशहरे के दिन नीलकंठ पक्षी का दिखाई पड़ना बहुत शुभ माना जाता है। जब अपना कोई प्रिय पात्र बहुत दिनों बाद मिले तो विनोद में कहते हैं।

दस कनवजिया ग्यारह चूल्हे—दे० 'तीन कनौजिया तेरह चूल्हे।'

दस कहें तो झूठ भी सच है—बहुमत किसी झूठी बात के पक्ष मे हो तो वह सत्य हो जाती है। जिसका बहुमत होता है वही सत्य माना जाता है। तुलनीय : दस अदमी क घोखले (कहले) झूठो बात सच हो जाले; पंज० दस चूठ बोलण ते ओह वी सच है।

दस की लाठी एक का बोझ—एक लाठी लेकर एक आदमी आसानी से चल सकता है, किन्तु दस की लाठी एक के लिए बोझ बन जाती है। हर आदमी थोड़ी-थोड़ी सहायता करे तो उनमें किसी पर कोई भार नहीं पड़ता, किन्तु उनसे किसी एक की अच्छी सहायता हो जाती है। मिल-जुलकर

किसी असहाय या निर्धन की सहायता करने के लिए ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० दस क लाठी एक क बोझ, दस जने क लाठी एक जने क बोझ; अव० जने जने कै लकड़ी एकु जने का बोझु; राज० दसरी लकड़ी एकरो भारो; असमी दहर् लाठि एकर् भार्; पंज० दसां जनयां दी सोटी इक दा पारा; ब्रज० दस की लकरी एक को बोझ; अं० Every little makes a mickle.

दस जने की लाठी एक जने का बोझ—ऊपर देखिए।

दस दे यहाँ तो सौ ले वहाँ—मुसलमान फ़क़ीरों का ऐसा मत है कि इस लोक में दस देने से परलोक में सौ मिलता है। तुलनीय : पंज० दस दे इथे ते सौ ले उथे; अं० Giving to the poor is lending to the Lord.

दस दोगे, सत्तर पावोगे, शक्करखोर को शक्कर मूज़ी को टक्कर—भले का भला ही होता है। तुलनीय : मल० तन्ननिने तिन्नुकोण्टाल पिन्नेयुम् दैवम् तन्नुकोळ्ळुम्; अं० Give and spend and God will send.

दस नकटों में नाक वाला नक्कू—दस नकटों के बीच में कोई नाक वाला आता है तो उसको नक्कू कहते है जिसके दो अर्थ है : बदनाम और बड़ी नाक वाला। आशय यह है कि जो जैसे समाज में रहे उसे उसी तरह स्वयं को भी बनाना चाहिए। जब मूर्ख, नीच या दुष्टों आदि के बीच किसी सज्जन को उसकी सज्जनता के लिए बुरा-भला सुनना पड़े तो कहते है।

दस बाँहों का मांड़ा और बीस बाँहों का गांड़ा—गेहूँ के खेत को दस बार तथा ईख के खेत को बीस बार जोतने से पैदावार अच्छी होती है। तुलनीय : मरा० गव्हाचें शेत दहा वेळ नि उसाचें शेत वीस वेळ नांगरलें तर पीक चांगलें येतें।

दस बिगहा पर पानी बदले, दस कोस पर बानी—थोड़ी-थोड़ी दूर के फ़ासले पर जलवायु और भाषा बदल जाती है। तुलनीय : पंज० दस कमां उते पानी बदले दस कोह उते बाणी; ब्रज० दस बीघे पै पानी बदलै, कोस कोस पै बानी।

दस मरेंगे तो तू भी मर—जैसा सब लोग करें वैसा ही करना चाहिए। तुलनीय : असमी—नमरिलोओ दहजनर् माजत चकु मुदिबा; पंज० दस मरदे हैं ते तू भी मर; अं० When in Rame do as the Romans do.

दस हल राव, आठ हल राना, चार हलों का बड़ा किसाना—जिसके पास दस हलो की खेती हो वह राव अर्थात् राजा के समान होता है; जिसके पास आठ हल की हो वह राणा अर्थात् राजा से कुछ कम और जिसके पास चार हल की है वह बड़ा किसान माना जाता है।

दसों उँगलियाँ घी में—जिसे हर तरह से लाभ हो उसे कहते हैं। तुलनीय : अव० दसों अंगुरी घीउ मा; ब्रज० दसों उँगरिया घ्यौ में।

दसों उँगलियाँ दसों चिराग़—दसों उँगलियाँ दस चिराग़ों के समान हैं। सब तरह से प्रवीण और काम करने वाली स्त्री को कहते हैं।

दस्त थम गए तो बुख़ार आया—जब एक विपत्ति के जाते ही दूसरी आ जाय तब कहते हैं। तुलनीय : पंज० जलाब बंद होय ते ताप आया।

दस्तरख़्वान की बिल्ली (मक्खी)—(क) मुफ़्तख़ोर और ख़ुशामद को कहते हैं। (ख) जो बिना बुलाए ही निमंत्रण आदि में पहुँच जाता है उस पर भी कहते हैं।

दस्तरख़्वान के बिछाने में सौ ऐब, न बिछाने में एक ऐब—किसी काम को करना चाहिए तो अच्छी तरह करना करना ही नही चाहिए। न करने से केवल यही बदनामी होगी कि नहीं किया, लेकिन यदि ठीक ढंग से नहीं किया तो उससे भी अधिक बदनामी होती है।

दस्तार-ओ-गुफ़्तार अपनी ही काम आती है—पगड़ी (दस्तार) और बात (गुफ़्तार) अपनी ही काम आती है। किसी से कुछ कहना हो तो ख़ुद कहना चाहिए, दूसरे से नहीं कहलवाना चाहिए।

दस्तार, रफ़्तार, गुफ़्तार जुदी-जुदी—पगड़ी बाँधने, बोलने और चलने का ढंग सबका भिन्न-भिन्न होता है।

दह दर दुनिया सद दर आख़िरत—दे० 'दस दे यहाँ तो…'।

दहिना धोए बाएँ को, बायाँ धोवे दहिने को—इस संसार में किसी का भी काम बिना दूसरे की सहायता के नहीं होता। तुलनीय : पंज० सज्जा तोवे खब्बे नू, खब्बा तोवे सज्जे नूं।

दही की गवाही चूड़ा—दोनों का मेल ठीक होता है। जब दो ऐसे लोग परस्पर मिल जाएँ (साथ करलें) जिससे काम और सुन्दर हो जाय तो कहते है। तुलनीय : पंज० दई दा गुआह चूड़ा।

दही की फुट्टी, जिन तिन पाई भिन लुट्टी—दही जिसको भी मिलेगा वही ले भागेगा। अर्थात् लाभदायक वस्तु मिलने पर कोई उसे छोड़ता नहीं। (दही की फुट्टी = थोड़ा दही का एक टुकड़ा; लुट्टी = लूट ली)।

दही की साखी बिलारी—जब भक्षक ही रक्षक हो तब

ऐसा कहते हैं। तुलनीय : छत्तीस० दही के साखी बिलाइया; ब्रज० दही की रखबारी बिल्ली।

दही के घर में बिल्ली भंडारी—दे० 'चोट्टी कुतिया जलेबियों की···'।

दही के धोखे कपास न खा लेना—अर्थात् धोखा न खा जाना। नीचे देखिए।

दही के धोखे चूना खाया—अच्छी समझकर बुरी चीज लेने पर अर्थात् ठगे जाने पर कहा जाता है। तुलनीय : हरि० दही के धोखे में कपास खा जागा; अव० दही कै धोखे चूना न खायेव।

दही परोसते पहुँचा टूटा—दही परोसने में ही कलाई टूट गई। (क) बहुत सुकुमार व्यक्ति के प्रति व्यंग्य में कहते हैं जो साधारण काम भी नहीं कर पाता। (ख) जब किसी अच्छे काम के प्रारम्भ में ही कोई हानि हो जाय तब भी कहते हैं।

दही बेचन चली पीठ पिछाड़ू कमोइया—बेचने चली है दही पर शर्म के मारे मटकी (कमोइया) सिर पर न रखकर पीछे दबाती है। बेढंगा काम करने पर या अपना काम करने में शरमाने पर ऐसा कहते हैं।

दही भात का मूसल—दही और भात दोनों मुलायम चीज़ें हैं इसमें मूसल की कोई भी आवश्यकता नहीं है। (क) व्यर्थ बात पर कहते हैं। (ख) व्यर्थ में टाँग अड़ाने पर भी कहा जाता है। तुलनीय : भोज० दही भात में मूसरचंद।

दही माँगे अहीर कंगाल माँगे चूरा—अर्थात् जो व्यक्ति जिस वस्तु का अभ्यस्त होता है उसी की ही माँग करता है। तुलनीय : पंज० दईं मगे दोदी कंगला मंगे चूरा; ब्रज० दही माँगै अहीर, कंगाल माँगै चूरौ।

दही मीठा दही का बर्तन तीता—स्वार्थी व्यक्ति स्वार्थ-पूर्ति के बाद अपने सहयोगियों से कोई वास्ता नहीं रखता। तुलनीय : भोज० दहिया मीठ कहंतरिये तीत।

दही में का मूसर—जब कोई व्यक्ति किसी काम में व्यर्थ ही हस्तक्षेप करता है तब ऐसा कहते है। तुलनीय : कनौ० दही में मूसर।

दही में मूसर पटक दिया—(क) जब कोई लाभदायक काम को बिगाड़ दे तो कहते है। (ख) शुभ कार्य मे विघ्न डालने पर भी कहते हैं।

दांड़ा बाला, जाड़ा ढाला—लकड़ी (दांड़ा) जलाने से जाड़ा भाग जाता है। तात्पर्य यह है कि उपाय करने से काम बन जाता है या परेशानियां समाप्त हो जाती हैं।

दाँत आते भी दुख दें, जाते भी दुख दें—जब दाँत निकलते हैं तब भी कष्ट होता है और जब दाँत गिरते हैं तब भी। जब किसी काम के करने और न करने दोनों दशा में हानि हो तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० दाँत आवत दुख देंय, जात दुख देंय; पंज० दद उगदे भी दुख देंदे हन ते टुटदे भी।

दाँत काटी रोटी है—एक-दूसरे का जूता भी खाते हैं। बहुत गहरी दोस्ती होने पर कहते हैं। तुलनीय : अव० दाँत काटी रोटी अहै; राज० दांत काटी रोटी है।

दाँत कुरेदने को तिनका नहीं बचा—आग मे जलकर स्वाहा हो गया। अग्निकांड के बुरे परिणाम को प्रकट करने के लिए कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० दांत कुरेदिबे कूं तिनुकाऊ नाये बच्यौ।

दाँत खट्टे हो गए/कर दिए—परेशान अथवा परास्त हो गए या कर दिया। तुलनीय : हरि० नानी याद आगी; पंज० नानी याद आयी।

दाँत गया स्वाद गया, आँख गई संसार गया—दाँत न होने पर भोजन का स्वाद नहीं मिलता और आँख न होने पर सब कुछ बेकार हो जाता है। तुलनीय : मग० दाँत गेल स्वाद गेल, आँख गेल संसार गेल; भोज० दांत गइल सवाद गइल, आंख गइल संसार गइल; पंज० दंद गए, सुआद गया, अख गयी जहान गया; ब्रज० दाँत गये तौ स्वाद गयौ; आँखि गई तौ जहान गयौ।

दाँत तले जीभ दबाते हैं—जब कोई किसी बात या काम पर आश्चर्य प्रकट करता है तब कहते हैं। तुलनीय : पंज० दंदा थले जीब दबांदे हन।

दाँत थे तो चने न पाए, चने मिले तो दाँत गँवाए—ऐसे समय आकांक्षा पूरी होना जब उससे लाभ उठाने की शक्ति न रहे।

दाँत पर मैल नहीं—बहुत निर्धनता की दशा में कहते हैं।

दाँत बिना ही चाबे पान—बेमेल काम अथवा बात पर यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : पंज० दंदां बगैर पान चबान।

दाँत से छूटा कौर, होंठों से नहीं पकड़ा जाता—(क) अवसर निकल जाने पर पछताने से कुछ लाभ नहीं होता। (ख) एक बार हानि हो जाने या काम बिगड़ जाने पर सँवारना कठिन हो जाता है।

दाँतों पसीना आ गया—किसी काम में बहुत मेहनत पड़ने पर कहा जाता है। तुलनीय : हरि० चूतड़ां मंह के पसीना आग्या।

दाँतों में पैसा चिपकता है—कंजूस को कहते हैं। तुलनीय : हरि० दाँता तं पीसा पकड़े से।

दाँतों से पीसा नहीं खाया जाता—चक्की का पीसा सभी खाते हैं परंतु दाँतों का पीसा कोई नहीं खाता। जहाँ दिन-रात लड़ाई-झगड़ा होता रहता है वहाँ कहते हैं। अर्थात् ऐसे स्थान पर आदमी चैन से नहीं रहता। तुलनीय : राज० दाँतोंरो पीस्योड़ो नहीं खावणो, घटीरो पीस्योड़ो खावणो।

दांतों से बाँधी हाथों से भी नहीं खुलती—दाँतों से बाँधी गई गाँठ हाथों से भी नहीं खुलती। चतुर मनुष्य जिस गाँठ को केवल दांतों से बाँध दे उसको साधारण मनुष्य हाथों से भी नहीं खोल पाता। अर्थात् बुद्धिमान मनुष्य जिस कार्य को खेल की तरह कर डालते हैं, मूर्ख या साधारण मनुष्य उसी कार्य को पूरा जोर लगाने पर भी नहीं कर पाते। तुलनीय : राज० दांतांरी बांधी हाथां सूं को खुले नी; पंज० दंदा नाल बनी होई हथां नाल भी नई खुलदी।

दाई अपने मन की बड़ाई करती है—अपनी प्रसंसा जब कोई स्वयं करता है तब व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मैथ० अपन बड़ाई कैलनि मनक दाई; भोज० अपना मन के त लउड़ियो बड़ बन्ने ले।

दाई का खपरा आगे आगे—सन्तानोत्पत्ति के समय से पूर्व ही दाई चक्कर लगाना आरम्भ कर देती है। जब कोई समय से पूर्व लाभ उठाने के लिए चक्कर काटना आरंभ कर दे तो कहते हैं।

दाई की दोस्ती पोतनो का प्यार—कोई शौकीन एक दाई से प्रेम करने गया। दाई उस समय चौका लीप रही थी। जब उसने दिल्लगी की तो दाई ने प्यार से उसके मुँह पर पोतना फेर दिया। (क) संगत का असर होता है। (ख) बुरी संगत का फल भी बुरा ही होता है। तुलनीय : पंज० दाई दी दोस्ती पोतडेयां दा प्यार।

दाई के सिर फूल पान—नेकी और बदी सब नाई के सिर पर। हर प्रकार का प्रकोप निर्बल और निर्धन व्यक्ति पर ही उतरता है।

दाई चमेली के मिरजा मोगरा—उस नीच मनुष्य को कहते हैं जो अपने को ऊँचा बतलाना चाहता है। चमेली और मोगरा फूलों के भी नाम हैं और मनुष्यों के नाम भी होते हैं।

दाई जाने अपनी हाई—अपने दुःख का ठीक अनुभव दाई ही कर सकती है क्योंकि उसे प्रसूता की बहुत सेवा करनी पड़ती है। आशय यह है कि जिसे काम करना पड़ता है वही उसके कष्टों को जानता है। तुलनीय : गढ़० दाई पिड़ा कि स्वीली पिड़ा।

दाई भी मीठी दद्दा भी मीठे, तो स्वर्ग कौन जाय—जब हर तरह से अपनी ही हानि की संभावना हो और मनुष्य कुछ करने से कतराए तो कहते हैं।

दाई मीठी, दद्दा मीठे, कसम किसकी खाऊँ—ऊपर देखिए।

दाई से क्या पेट छिपाना?—जो जिस चीज़ के विषय में सब कुछ जानता है या अवश्य जान जायेगा, उससे छिपाना मूर्खता है। तुलनीय : पंज० दाई कोलो टिड की लुकाना; ब्रज० दाई ते का पेट छिपै।

दाई से क्या पेट छिपेगा?—ऊपर देखिए। तुलनीय : मैथ०, भोज० चमाइन क आंगां ढीढ़ छिपाई, चमइन से कहीं पेट छिपेला; पंज० दाई कालों कि टिड लुकेगा।

दाई से पेट नहीं छिपता—दे० 'दाई से क्या पेट छिपाना।' तुलनीय : अव० दाई से पेट नाही छिपत; हरि० दाई आग्गे, पेट ना छिप्पै; राज० दाई सूं पेट थोड़ों ही छानो रवै; बुंद० नान से पेट नई छिपत; गढ़० दाई से पेट नि छिपायेद; मेवा० दाई छानो पेट नी।

दाख पके जब काग के, होत कंठ में रोग—जब दाख पकता है तो कौए के गले में रोग हो जाता है और रोग होने के कारण वह उसको खाने का आनंद नहीं उठा सकता। (क) भाग्यहीन व्यक्तियों के प्रति कहते हैं। (ख) जो व्यक्ति किसी कारणवश अच्छे अवसर का लाभ न उठा पाएँ उनके प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : राज० दाख पकै जद काग के, होत कंठ में रोग।

दाग लगाय लंगोटिया यार—जब कोई अपना बहुत घनिष्ठ मित्र भेद खोलकर बदनामी करा दे तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मरा० बाळमित्रच उणें काटतात।

दागे के साँड़ तो दागले लोहार—साँड़ को दगवाना है तो उसे लोहार ही दाग सकता है। जिसका जो काम होता है वह उसी से होता है।

दाढ़ी मूँछ निकल आइल नाम बच्चा जी—उम्र के अनुरूप नाम न पुकारने पर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मैथ० दाढ़ी मोंछ मरखर नुनुआ नांव घइले।

दाढ़ी मूँड़े जवानी नहीं आती—दाढ़ी आने से पहले ही दाढ़ी बनाने से यौवन नहीं आ जाता। अर्थात् प्रत्येक कार्य समयानुसार ही होता है उतावली करने से नहीं। तुलनीय : भीली० थारी आगते ऊमर नी पाके; पंज० दाड़ी मनान नाल जवानी नई आंदी।

दाढ़ी है या राज की कूँची—बहुत लंबी दाढ़ी वाले

को मज़ाक़ से कहते हैं।

दाता और सूम साल-भर में समान— दाता का देने से कुछ घटता नहीं और सूम का न देने से कुछ बढ़ता नहीं, इसलिए दोनों का धन बराबर रहता है।

दाता की नाव पहाड़ चढ़े —दानी की नाव पहाड़ पर भी चढ़ जाती है। (क) आशय यह है दान देने से सभी मनोरथ सफल हो जाते हैं। (ख) धन व्यय करने से असंभव कार्य भी संभव हो जाते है। तुलनीय : गढ़० मया को नाज अर दया को मनखी खूब पनपद; ब्रज० दाता की नाव पहाड़ पै चढ़े।

दाता के तीन गुण, दे, दिलावे, देके छीन ले— (क) ईश्वर देता है, दिलाता है और देकर छीन भी लेता है। (क) मालिक व राजा के प्रति भी कहा जाता है। तुलनीय . पंज० रब दे तिन गुन, दे, देआये, दे के ले लवे।

दाता को मृत्यु नहीं आती दानी पुरुष मरते नहीं। अर्थात् उनका नाम सदा अमर रहता है। तुलनीय पंज० देन वाले नूँ मौत नईं आदी।

दाता को राम छप्पर फाड़ कर देता है --दानी पुरुष को ईश्वर कहीं-न-कहीं से धन देता रहता है। तुलनीय : पंज० देन वाले नूँ रब छप्पर फाड़ के देंदा है।

दाता तें सूमहि भलो, जल्दी देइ जवाब— देने वाले से सूम ही अच्छा होता है क्योंकि वह साफ़-साफ़ इनकार तो कर देता है। जब कोई देने को कहे और बार-बार दौड़ावे तब कहते हैं। तुलनीय : माल० दातानी सूम भलो जो वेगो उत्तर दे; राज० दातासूं सूम भलो झटके ऊतर देय; अव० दाता से सूम भला जौन तुरतै देय जवाब; गढ़० दाता सैं सोम भलो जो तुर्त द्यो जवाब; भोज० दाता से सूम भला कि ठावे दे जबाब।

दाता दातार सुथनी उतार - कोई स्त्री अपने पति की दानशीलता के विषय में कहती है कि मेरे पति इतने दानी हैं कि आवश्यकता पड़ने पर मेरी सुथनी (पायजामा) भी दे सकते है। इसका एक अर्थ यह भी हो सकता है कि दानी वही है जो अपना सब कुछ त्याग करने की सामर्थ्य रखता हो।

दाता दाता मर गये रह गये मक्खीचूस—दानी मर गए कंजूस रह गए।

दाता दान करे कंजूस देख मरे—दानी दान करता है और उसे देखकर कंजूस व्यक्ति दुखी होता है। जब खर्च किसी और का हो तथा उसे देखकर दुख किसी और को हो तो व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : भोज० दाता दान करे कंजूस देख मरे; बुंद० दाता देय भंडारी कौ पेट फटे; मरा० जाणाऱ्याचे जातें आणि कोठारयाचें पोट दुखतें; अव० दानी दान करै, भंडारी के पेट पिराय; राज० दाता दे भंडारी रो पेट दूखे।

दाता दान करे भंडारी का पेट कटे - ऊपर देखिए।

दाता दान दे भंडारी का पेट पिराय— दे० 'दाता दान करे···'।

दाता दानी सूर नृप, मंत्री बैद सचान; ये सब निर्भय चाहिए, जामिन जुआ किसान— स्वामी, दानी, वीर, राजा, मंत्री, वैद्य, बाज़, पक्षी (सचान), ज़मानत देने वाला, जुआरी और किसान इन सबको निर्भय होकर काम करना चाहिए नहीं तो हानि होती है।

दाता दे भंडारी का पेट दुखे— दे० 'दाता दान करे कंजूस··'।

दाता दे भंडारी का पेट / फूले—दे० 'दाता दान करे कंजूस ·'।

दाता दे भंडारी पेट पीटे— दे० 'दाता दान करे कंजूस '।

दाता देवे और शरमाय, बादल बरसे और गरमाय— दानी दान देकर शरमाता है कि मैंने बहुत कम दिया। इसी प्रकार बादल से वृष्टि होने के बाद गर्मी पैदा होती है जिससे सूचित होता है कि भारी वृष्टि होगी। तुलनीय : पंज० रब दिंदा सरमाय, बदल वरे ते गरमाय; ब्रज० दाता दे और सरमावै, बादर बरसै और गरमावै।

दाता पुण्य करे कंजूस झुरझुर मरे—दाता को दान करते देखकर कंजूस दुखी होता है। तुलनीय : अव० दानी दान करे ते कंजूस झुलस के मरे।

दाता सदा दलिद्री—दाता हमेशा निर्धन बना रहता है क्योंकि वह सारी वस्तुएँ दान कर देता है और अपने पास कुछ नहीं रखता। तुलनीय . पंज० दानी सदा गरीब रैंदा है।

दाता से सूम भला जो ठावें दे जवाब—दे० 'दाता ते सूमहि भलो · '।

दाता से सूम भला जो तुरतै देय जबाव—दे० 'दाता तें सूमहि भला···'।

दाद-खाज अरु सेउआ बड़भागी के होय, परे खुजावें खाट पै, बड़ आनंदी होय—उपरोक्त रोगों से पीड़ित व्यक्तियों से व्यंग्य से कहते हैं।

दादा कहने से बनिया गुड़ देता है—(क) चापलूसी बड़ी चीज है, इससे कंजूस भी कुछ-न-कुछ दे देता है। (ख)

जिसका आदर किया जाता है उससे कोई-न-कोई लाभ अवश्य मिलता है। तुलनीय : मरा० अजोबा म्हणून हाँक मारली तर वाणी सुद्धां मूल हातावर ठेवतो; भोज० दादा कहला से बनिया गुर देला; पंज० बाबा आखन नाल बनिया गुड़ देंदा है।

दादा के गले मुंगरी, पोता के गले रुद्राक्ष—उक्त कहावत उन्हें ध्यान में रखकर कही जाती है जो पारिवारिक स्थिति की उपेक्षा करके अपनी ही शान-शौकत में मस्त रहते हैं। तुलनीय : भोज० दादा के गर में मुंगरी नाती के रुद-राछ; पंज० दादे दे गले मुगरी, पोतरे दे गले रुद्राक्ष।

दादा के भरोसे फौजदारी—दूसरे के भरोसे झगड़ा करने वाले को लक्ष्य करके ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मैथ० दादाक भरोसे फौजदारी; दादाक का भरोसे नेवता।

दादा को देखने गये दादी गायब—एक प्रिय वस्तु की रक्षा में दूसरी प्रिय वस्तु के गायब होने पर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० दादे नूं दिखन गए दादी गुआची।

दादाजान पराए बरदे आजाद करते थे—दूसरे के धन पर नाम कमाने वाले के प्रति कहते हैं। (बर्दा=गुलाम, दास)।

दादा परदादा के राज की बातें—भतकाल के भले दिनों की चर्चा करने वाले को उनकी व्यर्थता जतलाने के लिए कहते हैं। तुलनीय : पंज० बाबे पड़बाबे दे राज दियां गलां।

दादा मरिहैं, तो भोज करिहैं—जब दादा मरेंगे तो भोज होगा, अर्थात् बहुत लम्बा वायदा करने पर व्यंग्य से कहा जाता है।

दादा मरेंगे तब बैल बटेंगे—(क) लम्बा वायदा करने वाले पर व्यंग्य से कहते है। (ख) ऐसे लाभ के संबंध म सोचने वाले के प्रति भी कहते हैं जिसके निकट भविष्य में मिलने की कोई आशा न हो। तुलनीय : पंज० बाबा मरेगा ते बाजे बजणगे; ब्रज० दादा मरिंगे और बरध बटिंगे।

दादा मरेंगें तो पोता राज करेंगे—ऊपर देखिए।

दादा मरेंगे तो भोज होगा—दे० 'दादा मरिहैं तो···'। तुलनीय : भोज० दादा मरिहैं तऽ भोज होई, दादा मुइहें तऽ बैल बिकाई।

दादा ले और पोता बरते—दादा ने खरीदा और पोता ने भी उससे काम चलाया। मजबूत चीज के लिए कहा जाता है। तुलनीय : मरा० आजोबाने घेतली (वस्तु) ती नातवानें वापरली; पंज० बाबा लवे ते पोतरा बरते।

दादी ही भाग भाग पसीना ले—(क) जब एक व्यक्ति काम करे और अन्य लोग बैठे रहें तो कहते हैं। (ख) जब कोई वयोवृद्ध व्यक्ति काम करे तथा शेष लोग आराम करें तो भी कहते हैं।

दाव् दो-दो न बनें, जाले बाले डार—एक समय मे दो काम नहीं किए जा सकते और यदि किए जायँ तो दोनों ही बिगड़ जाते हैं।

दादे राज न खाय पान, दाँत दिखावत गए प्रान—दादा ने तो कभी पान खाया नहीं बल्कि माँगते-फिरते मर गया। जब कोई साधारण व्यक्ति बहुत दिखावा करता है, तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

दाध्यो दूध को पीवत छाछहि फूंकि—दूध का जला मट्ठा फूंक कर पीता है। अर्थात् किसी चीज़ मे धोखा खाने वाला उस चीज से सादृश्य रखने वाली अन्य चीज से भी होशियार रहता है, यद्यपि उसमे कोई डर नहीं। तुलनीय : अं० Once bitten twice shy; A burnt child dreads the fire.

दान की गाय के कितने दाँत?—दे० 'दान की बछिया के···'।

दान की गाय के दाँत नहीं देखे जाते—दे० 'दान की बछिया के···'। तुलनीय : मरा० धर्माची गाई दाँत कांगे नाही; अं० A gifthorse is never looked into thee mouth.

दान की बछिया का दाँत क्या देखना—दे० 'दान की बछिया के दांत···'। तुलनीय : निमाड़ी : धरम की गाय का काई दाँत देखणू।

दान की बछिया के कान नहीं होते—दे० 'दान की बछिया के दाँत···'। तुलनीय : बुंदे० दान की बछिया कें कान नईं होत।

दान की बछिया के दाँत नहीं गिनते—दे० 'दान की बछिया के दाँत नही देखे जाते।' तुलनीय : हरि० दान की बछिया के दांत कूण गिणै।

दान की बछिया के दाँत नहीं देखते—नीचे देखिए। तुलनीय : भोज० दान के बछिया के दाँत न देखल जाला; राज०धरमरी गायरा दाँत डाढ़ कांई देखणा, बुंदे० दान की बछिया के दांत नईं देखे जात; असमी : दानर गुरुर दांत् नाचावा; पंज० दान किती बच्छी दे दंद नईं देखदे, अं० A gift horse is never looked into the mouth.

दान की बछिया के दाँत नहीं देखे जाते—मुफ्त में मिली वस्तु की अच्छाई-बुराई नही देखनी चाहिए। जब कोई मुफ्त में मिली वस्तु में दोष निकालता है तब उसे सम-

झाने के लिए ऐसा कहते हैं। तुलनीय : **बुंदे० दान की** बछिया के दांत नई देखे जात; राज० घरमरी गायरा दांत डाढ़ कांई देखणा; **गुज०** घरमनी गाउ ना दांत ण जोवा; **मरा०** धर्माची गाई दांत कांगे नाहीं; तेलु० दानमु चेसिन आवुकु दउड पंड्लु एचब्रोकु; मल०दानम् किट्टिय पशुविन्टे पल्लैण्णरिल्ल; पंज० दान लई बच्छी दे दंद नही दिखे जांदे; **ब्रज०** दान की बछिया के दांत नायें देखे जायें।

दान दीन को दीजिए, मिटे दरद अरु पीर— दान निर्धन को देना चाहिए जिससे उसके कष्ट दूर हों। धनी को दान देना पुण्य नही होता, क्योंकि वह उसका दुरुपयोग करता है।

दान पीछे कल्यान—प्राय: बहुत बीमार आदमियों को दान देने के लिए कहा जाता है क्योंकि इससे रोग में लाभ होता है। तुलनीय : ब्रज० दान पीछें कल्यान।

दान भाड़ा औ दच्छिना, इनमें नहीं उधार—दान, किराया (भाड़ा) और दक्षिणा में उधार नही किया जाता या उधार नहीं करना चाहिए।

दान में से दान दे, तीन लोक जीत ले—यदि दान में मिले धन में से कुछ दान कर दिया जाय तो उसका बहुत अधिक पुण्य मिलता है।

दान बित्त समान—शक्ति के अनुसार दान देना चाहिए। तुलनीय : गढ़० दान बित्त समान; ब्रज० दान वित्त समान।

दान ही काम आता है—जो वस्तु जितनी मात्रा में दान की जाती है उसी के अनुसार अगले जन्म में मनुष्य को सुख-सुविधा मिलती है। ऐसा लोकमत है। तुलनीय : राज० आगोतर में आड़ो आवणो; पंज० दान ही कम आंदा है।

दाना अरसी बोया सरसी—पोस्ता या अफ़ीम (दाना) और अलसी (अरसी) को नम खेत में ही बोना चाहिए।

दाना खा मोठ का पानी पी सोंठ का—मोठ का (भुना हुआ) दाना खाने के बाद सोंठ का पानी गुणाच्य होता है। तुलनीय : ब्रज० दानो खाय मोठ कौ, पानी पीवै सोंठि कौ।

दाना खाय न पानी पीए, वह आदमी कैसे जीए—ऐसे व्यक्ति या स्वामी के प्रति कहते हैं जो काम तो कराता है किन्तु खाने के लिए कुछ नहीं देता।

दाना दुश्मन, नादान दोस्त से बेहतर—चतुर दुश्मन मूर्ख मित्र से अच्छा होता है, क्योंकि ऐसे दुश्मन की दुश्मनी से मनुष्य को उतना डर नही होता जितना कि मूर्ख दोस्त की दोस्ती से। तुलनीय : मरा० मूर्ख मित्रा पेक्षां शहाणा शत्रु बरा; **गढ़० दानो दुस्मन नादान दोस्त से भलो; अव०** दानेदार दुस्मन नादान दोस्त से भला।

दाना न घास खरहरा छ: जून—नीचे देखिए।

दाना न घास, खरहरा छै-छै बार— घोड़े को दाना-घास, जो कि बहुत ही आवश्यक है नही देते, पर उसके बदन पर खरहरा कई बार करते हैं। जब कोई व्यर्थ की वस्तु तो देने को तैयार न हो पर जो चीज माँगी जाय (जिसकी आवश्यकता हो) वह न दे तब कहते हैं। तुलनीय : अव० दाना न घासु खरहरा छः-छ दई; बुंदे० दाना देयं न घास, खुरौरौ छ: छ: बेर; भोज० घास न भूसा दूनो जून खरहरा; ब्रज० दानों न घास खुरैरा छै-छै बार।

दाना न घास घोड़े तेरी आस—जब किसी आरामदेह वस्तु की रक्षा तो न करे न उस पर कुछ खर्च करे और उससे अपने आराम की आशा रखे तब कहते है।

दाना न घास छ: बार खरहरा—दे० 'दाना न घास खरहरा छै छै बार'।

दाना न घास दोनों वक्त खरहरा—दे० 'दाना न घास खरहरा छै-छै बार।'

दाना न घास पानी छ:-छ: बार—दे० 'दाना न घास खरहरा छै-छै बार।'

दाना न घास हिन-हिन करे—(क) जब कोई दुखी होते हुए भी अपने को ऊपर से सुखी दिखावे तब कहते हैं। (ख) जब किसी की कोई पूछ न हो किन्तु वह फिर भी अपना बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध जताए तो भी व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : पंज० पैहा न तेला बनया फिरे चमेला।

दाना पानी कुछ न खायँ, नौ सेर चावल रसोई में खायँ—उन व्यक्तियों के प्रति व्यंग्य में कहा जाता है जो बनते तो अल्पाहारी हैं, पर खाते बहुत हैं।

दानी दान करे, भंडारी का पेट फूले—दे० 'दाता दान करे ..'।

दाने को टापे, सवारी को पादे—खाने को तैयार हो पर काम करने की शक्ति न हो या काम न करे तब कहते हैं।

दाने थोड़े कंकर बहुत—(क) ऐसी बात सम्बन्ध में कहते हैं जिसमें सत्य बहुत कम हो। (ख) ऐसी वस्तु या व्यक्ति के विषय में भी कहते है जिसमें गुण कम और दुर्गुण अधिक हों। तुलनीय : राज० कण थोड़ा, कांकरा घणा; पंज० दाने कट बट्टे मत्ते।

दाने-दाने को मुहताज है—किसी की बहुत निर्धनता पर कहते हैं।

दाने-दाने पर मोहर है—बिना भाग्य के एक दाना भी

नहीं मिलता, या जिसके भाग्य में जो वस्तु होती है वह लाख व्यवधान के पश्चात् भी उसे मिल जाती है। तुलनीय : माल० दाणा-दाणा पे मोर वे; अव० दाना-दाना पर मोहर है; हरि० दाणे-दाणे पं मोहर सै; पंज० दाणे-दाणे उते मोर लगी है; ब्रज० दाने-दाने पै मौहरं।

दानेदार दुश्मन नादान दोस्त से बेहतर है —दे० 'दाना दुश्मन नादान ...'।

दाने पानी का अख्तियार है—दाना-पानी मनुष्य को जब और जहाँ चाहे ले जाय। तुलनीय : मरा० अन्न जलाची सत्ता आहे; राज० दाणे पाणी रो सीर है।

दाने पानी का संयोग है —जब भाग्यवश मनुष्य ऐसे स्थान पर पहुँच जाता है जहाँ जाने की उसे सपने में भी आशा नहीं होती तब ऐसा कहते हैं।

दाने-पानी की बात है—ऊपर देखिए।

दाबिल मांजरी बैठ चुपं-चुप चूहन सों निज कान कटावे—दबी हुई या कमज़ोर (दाबिल) बिल्ली (मांजरी) चुपचाप बैठकर चूहों से अपने कान कटाती है। (क) बलवान यदि क़सूरवार होता है तो कमज़ोर की भी बातें सुनता है। (ख) घूसखोर हाकिम जब अपने अधीनस्थ कर्मचारियों से दबता है तब भी ऐसा कहते हैं।

दाम आवे काम—पैसा समय पर काम आता है। तुलनीय : ब्रज० दाम आवै काम।

दाम करे सब काम—पैसे से सभी कार्य सम्पन्न हो जाते हैं। तुलनीय : सिं० दाम करे सब काम; पंज० पैहा करे सारे कम; ब्रज० दाम करै सब काम।

दाम का यार, किसे करे प्यार ?—धन का लोभी धन के अतिरिक्त किसी से प्रेम नहीं करता। कंजूस और लोभी व्यक्ति जब धन के लिए अपने प्रियजनों को भी ठुकरा देते हैं तो उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० दमड़ाँरों लोभी बातां सूं को रीझे नी; पंज० पैहे दा यार किनूं करे प्यार।

दाम दीजे काम लीजे—पैसा दीजिए और काम कराइए। (क) पैसे से सभी काम कराए जा सकते हैं। (ख) जब कोई मुफ्त में काम कराना चाहता है तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० पैहा दो कम लो; ब्रज० दाम देऔ, काम लेऔ।

दाम देओ चक्कर खाओ, टूटे पालकी जी से जाओ—पैसे भी दो और चक्कर भी खाओ, यदि पालकी टूट जाय तो जान से भी हाथ धोना पड़े। (क) मेले आदि में हिंडोला झूलने वालों पर व्यंग्य से कहते हैं। (ख) ऐसे काम के प्रति भी कहते हैं जिसमें धन लगे और क्षति की भी आशंका बनी रहे।

दाम न छदाम मिठाई देख रोवें—पास में तो कौड़ी भी नहीं है और मिठाई देखकर रोते हैं। जब कोई निर्धन या सामर्थ्यहीन होते हुए भी बड़ी (महँगी) वस्तु को प्राप्त करने की इच्छा करता है तब उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : बुंद० दाम न छिदाम, मिठाई देखें रो-रो आवे; ब्रज० खोच न मुठी कुलकुलाइ उठी; पंज० पैहा न तेला मठाई दिख के पाए रोला।

दाम न छिदाम, मिठाई देख रो-रो पड़े—ऊपर देखिए।

दामन पर फ़रिश्ते नमाज़ पढ़ें—किसी व्यक्ति के सदाचरण और सद्गुणों की प्रशंसा करते समय इस कहावत का प्रयोग कियाँ जाता है।

दाम बड़ा या नाम ?—रुपया बड़ा है या नाम ? (क) मनुष्य का नाम अच्छे कामों के कारण लिया जाता, धन के कारण नहीं, इसलिए नाम ही महत्त्वपूर्ण है। (ख) भगवान का नाम लेने से ही संसार से मुक्ति मिलती है इसलिए भगवान का नाम धन से श्रेष्ठ है। तुलनीय : भीली० जगती मोटी के भगती।

दाम बनावे काम—दे० 'दाम करे सब काम।' तुलनीय : मल० पणम् तान् उलकत्तिले जीवनाडि; अं० Money m kes the mare go.

दाम बिन होय न काम—दाम बिना काम नहीं होता। (क) पारिश्रमिक लिए बिना कोई भी काम नहीं करता। (ख) पैसे के बिना कोई भी कार्य संभव नहीं। तुलनीय : पंज० पैहे बगैर कम नई बनदा।

दाम संवारे काम—दे० 'दाम करे सब काम।' तुलनीय : गढ़० दाम करो काम, बीबी करो सलाम; मेवा० पईसो भींत में गेलो कर-कर देवे; सं० द्रव्येण सर्वे वशाः; अं० Money makes the mare go.

दाम हां में राम है—ईश्वर का वास भी धन ही में है। अर्थात् धन बहुत बड़ी चीज़ है जिसे सभी चाहते हैं, यहाँ तक कि ईश्वर को भी धन बहुत प्रिय है। तुलनीय : पंज० पैहे बिच ही रब है।

दामाद रूठकर क्या करेगा, लड़की अपने घर ले जाएगा—ऐसे व्यक्ति का रूठना विशेष महत्त्व नहीं रखता जिससे कुछ बनता-बिगड़ता नहीं। तुलनीय : भोज० दमाद रूठ के का करिहें, आपन लइकी ले जइहें।

दामों ढेरी या हाड़ों ढेरी—या तो बहुत धन पैदा कर लेंगे या हड्डियों का ढेर लगा देंगे। ऐसा काम करने पर कहते

हैं जिसमें प्राण जाने का खतरा है। तुलनीय : पंज० पैहें दी टेरी हड्डियाँ टेरी।

दामों रूठा, बातों नहीं मानता—यदि कोई रुपया-पैसा न पाने पर रूठ जाता है तो वह केवल मीठी-मीठी बातों से संतुष्ट नहीं होता। अर्थात् जिसे धन लेना है वह धन के लिए बिना संतुष्ट नहीं होता चाहे उससे कितनी भी मीठी-मीठी बातें की जायँ। तुलनीय : पंज० पैहे दा रुसया गलां नाल नईं मनदा।

दारिद्र्य असमय बूढ़ा बना देता है—निर्धनता में मनुष्य समय से पहले ही बूढ़ा हो जाता है। अर्थात् निर्धन मनुष्य का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता और वह यौवन में ही बूढ़ों जैसा कमज़ोर हो जाता है। तुलनीय : मल० पणमिल्लाज्ज्ञाल् पिणम्; पंज० गरीबी बेमौके बूढ़ा बना देंदी है; अं० An empty purse fills the face with wrinkles; Wrinkled purses make wrinkled faces.

दारिद्रयात मरणं वरम्—धनहीन होने से मर जाना अच्छा है। अर्थात् निर्धनता बहुत बुरी चीज़ है।

दारु-ए-ग़जब खामोशी—क्रोध की दवा शांति है। अर्थात् चुप रहने से क्रोध शांत हो जाता है। यह फ़ारसी की कहावत है।

दारू पीए सो जल्दी जाय—(क) शराब पीने वाले का स्वास्थ्य ख़राब हो जाता है, इसलिए वह शीघ्र ही मर जाता है। (ख) अधिक दवा खाने वाला सदा रोगी रहता है इसलिए वह भी शीघ्र ही मर जाता है। तुलनीय : पंज० सराब पिये ओ छेती मरे।

दारू पीने वाले का कोई इतबार नहीं—शराबी का विश्वास नहीं करना चाहिए क्योंकि वह कहता कुछ है और करता कुछ। जब कोई मद्यप किसी काम को करने का या किसी वस्तु को देने का वचन देता है तो कहते हैं। तुलनीय : पंज० सराबी दा कोई इतवार नहीं !

दारू बिन आराम नहीं, मेहनत बिन दाम नहीं—दवा के बिना रोग दूर नहीं होता तथा बिना परिश्रम किए धन नहीं मिलता। तुलनीय : पंज० दवा बगैर अराम नईं मेहनत बगैर पैहा नहीं।

दाल-चावल तुम्हारा, फूंक-फांक मेरा—चापलूस थोड़ा उपकार करके भी एहसान जताते हैं। तुलनीय : मग० दाल चाउर तोहर फूंक है हम्मर; पंज० दाल-चौल तुहाड़े बाकी तो मेरे।

दाल-भात का कौर नहीं है—जब कोई व्यक्ति किसी कार्य की जटिलता का ध्यान किए बिना उपहासपूर्ण ढंग से उस कार्य को बहुत सरल बताता है तो चेतावनी के तौर पर ऐसा कहते हैं।

दाल-भात बिन खाँग रसोई—बिना दाल-चावल के रसोई अधूरी रहती है। तुलनीय : पंज० दाल-चौल बगैर अदी रसोई।

दाल-भात में मूसरचंद—दो आदमियों की बातचीत में तीसरा आदमी, जिसकी आवश्यकता न हो बीच में बोल-कर बाधा डाले तब कहते हैं। तुलनीय : गढ़० दाल-भात में मूसलचंद; भोज० दाल-भात में ऊँट के ठेहुआ; अव० दालि-भातु माँ मूसरचंद; मल० पट्टिक्कु परुत्तिक्कटयिल् कार्यमेन्तु। (मूसर=मूसल)।

दाल-भात रोटी, और बात खोटी- भारतीय भोजन में दाल, चावल (भात) और रोटी ही मुख्य खाद्य पदार्थ माने जाते हैं। और चीजों के प्रतिदिन खाने से जी ऊब जाता है पर इनमे जी नही ऊबता। तुलनीय : राज० दाल-भात रोटी और बात खोटी; पंज० दाल चोल फुलका अते गल खोटी।

दाल में काला है—जब किसी बात में संदेह उपस्थित होता है तब कहते हैं। तुलनीय : गढ़० दाल मां कालोछ; अव० दाल मा काला है; हरि० दाल मं काला सै; पंज० दाल बिच काला है; ब्रज० दारि में कारौ है।

दाल में कुछ काला है—ऊपर देखिए। तुलनीय : बुंद० तेल मे कारी है; मल० मल० एतो तेटटुण्टु अविटत्तिल्; पंज० दाल बिच कुज काला है; ब्रज० दारि में कछू कारौ है; अं० There is something fishy.

दाल में नमक, सच में झूठ—उतना ही झूठ बोलना चाहिए जितना कि दाल में नमक डाला जाता है। अर्थात् बहुत कम झूठ बोलना चाहिए। तुलनीय : पंज० दाल बिच नूण, सच बिच चूठ।

दाल में मूसरचंद— दे० 'दाल-भात में मूसरचंद।' तुलनीय : बुंद० दई में मूसर-मूसर पटक देओ।

दाल रोटी खाए टोटा पड़े तो भाड़ में जाए—मित-व्ययिता और सावधानी बरतने पर भी यदि हानि ही हो तो हुआ करे।

दाल से सना भात, भात में सनी दाल—जिस तरह दाल-भात का आपसी संबंध है और दोनों का अलग-अलग कोई मूल्य नहीं है, उसी प्रकार जब किसी व्यक्ति का किसी के साथ बहुत पुराना और घनिष्ठ संबंध हो और वे एक-दूसरे के बिना रह न पाते हों तो उनके प्रति इस प्रकार कहा

जाता है। तुलनीय : गढ़० दाल लबेटी भात, भात लबेटी दाल।

दासी करम कहार से नीचा—दासी को कहार से नीचा काम करना पड़ता है या दासी का काम कहार से भी नीचा होता है।

दाहना धोवे बाएँ को और बायाँ धोवे दाएँ को—परस्पर सहयोग से ही काम होता है। तुलनीय : पंज० सज्जा तोबे खब्बे नू ते खब्बा तोबे सज्जे नूं।

दिए लिए पर खाक, मुहब्बत रक्खो पाक—(क) प्रेम में पहले तो लेन-देन करना ही नहीं चाहिए और यदि किया भी जाय तो उसकी परवाह नहीं करनी चाहिए। (ख) प्रेम उसी को कहते है जिसमें वासना न हो।

दिगंबर के गाँव में धोबी का वास—जहाँ नंगे लोग रहते हैं वहाँ धोबी की आवश्यकता ही क्या है? जिस वस्तु के उपभोक्ता ही न हों, उस वस्तु के उत्पादकों की वहाँ कोई आवश्यकता नहीं होती। तुलनीय : मैथ० दिगम्बर क गाँव मे धोबी क बास; ब्रज० दिगम्बरन के गाम में धोबी कौ बास।

दिन अच्छे होते हैं तो कंकड़ जवाहिर हो जाते हैं—आशय यह है कि अच्छे दिन आने पर बुरी चीज़ भी लाभप्रद हो जाती है। तुलनीय : पंज० दिन चंगे हुंदे हन ते वट्टे भी हीरे बन जांदे हन।

दिन अस्त मजूर मस्त—जब दिन अस्त होता है तो मज़दूर (मजूर) खुश होता है कि काम से छुट्टी मिली और जो कमाया है उसे आराम से खाएँगे। तुलनीय : मेवा० दिन अस्त र मजूर मस्त।

दिन आए सुदिन के, बन भूँजे पाए मोर; चोरन लड्ड खा लिए, घर भैंस बियानी घोड़—दिन अच्छे आने पर सभी काम बन जाते हैं और अनायास लाभ होने लगता है। इस लोकोक्ति पर एक कहानी कही जाती है : कोई मनुष्य बेकारी से परेशान होकर रोजगार की तलाश में विदेश गया। जाते समय उसकी स्त्री ने कुछ लड्डू बनाकर दे दिये जिनमें भूल से विष मिल गया। ज्योंही वह एक वन में पहुँचा जहाँ कुछ देर पहले आग लग चुकी थी वहाँ भूना हुआ मोर पाया। उसे खाकर पेड़ की छाया में सो रहा, उधर से आते हुए डाकुओं ने उसे लूटकर उसके सारे लड्डू खा लिए, और खाते ही मर गए। उस आदमी को सारा धन मिल गया, जब घर लौटा तो उसकी भैंस घोड़ी ब्यायी थी, इस प्रकार दूध भी मिला और घोड़ी भी।

दिन ईद और रात शबबरात—(क) सदा खुश रहने वाले को कहते हैं। (ख) धनवान को भी कहते हैं क्योंकि उसे कोई दुख नहीं होता। तुलनीय : मल० सदा आनन्द-मायिरिक्कुक।

दिन कहे मैं चला, मजूर कहे मैं मरा—ज्यों-ज्यों दिन ढलता है कठिन परिश्रम करने वाले व्यक्ति थकते जाते हैं। तुलनीय : मेवा० दिन करे तुर-तुर, दानग्यो करे घुर-घुर।

दिन का बद्दर रात निबद्दर, बहे पुरवैया झब्बर-झब्बर; घाघ कहैं कछु हानि होई कुआँ के पानी धोबी धोई—घाघ कहते हैं कि यदि दिन को घटा छाए तथा रात को आकाश साफ़ हो और पुरवा हवा रुक-रुककर चलती हो तो ऐसा सूखा पड़ेगा कि धोबी को भी पानी नहीं मिलेगा और वह कुएँ के पानी से कपड़ा धोवेगा।

दिन का बादर, सूम का आदर—दिन में बादल का होना तथा सूम का सत्कार करना दोनों ही व्यर्थ है।

दिन का भूला साँझहिं आवे, सो भूला नहिं तनिक कहावे—दिन का भूला हुआ यदि शाम को घर लौट आता है तो वह भूला हुआ नहीं कहलाता। आशय यह है कि यदि कोई ग़लती या अपराध करके शीघ्र ही अपने को सुधार ले तो उसे बुरा नहीं कहते। तुलनीय : पंज० सबेर दा गुआचा साम नूं आवे ते ओनूं गुआचा नईं कैंदे; ब्रज० दिन कौ भूल्यौ संझा आवै, सो भूल्यौ कबऊ न कहावै।

दिन को ऊनी-ऊनी, रात को चरखा पूनी—दिन में तो आलस्य करती है और रात को चरखा-पूनी लेकर बैठती है। जब कोई काम के समय को व्यर्थ मे गँवा देता है और बेवक्त काम करता है तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : बग० दिन गेल हेंसे खेले, रात होले बउ कपास डले; पंज० दिन गवाया बेले उठे रात पैयी ते चरखा कने; ब्रज० दिन कू ऊनी-ऊनी, राति कूं चरखा पूनी।

दिन को बादर रात को तारे; चलो कंत जहँ जीवें बारे—जब दिन को बादल और रात को तारे दिखाई देते हैं तो स्त्री पति से कहती है कि अब सूखा पड़ेगा, इसलिए वहाँ चलें जहाँ बच्चे जी सकें। आशय यह है कि दिन को बादल और रात को तारे होने से वर्षा नहीं होती और अकाल पड़ता है।

दिन को बादल रात को तारे, कहैं भड्डरी मेह सिधारे—भड्डरी कहते हैं कि यदि दिन को बादल हों और रात को तारे दिखाई पड़ें तो समझ लेना चाहिए कि वर्षा नहीं होगी और अकाल पड़ेगा।

दिन को शरम, रात को बग़ल गरम—दिन को शरमाती है और रात में पास रहकर गर्म रखती है। (क)

जब कोई स्त्री अपने पति के सामने घूंघट काढ़ती है तो कहते हैं। (ख) चरित्रभ्रष्ट स्त्रियों के प्रति भी व्यंग्य में कहते हैं जब वे दिन में अपने प्रेमी को देखकर शरमाती हैं। तुलनीय : पंज० दिन नूं सरम ते रात नूं गरम।

दिन को सोवे, रोज़ी खोवे—दिन को सोने से आमदनी (रोज़ी) मारी जाती है। दिन तो काम करने के लिए होता है, सोने के लिए रात बनी है। तुलनीय : मरा० दिवसा निजे त्याजा धंदा बुडे; पंज० दिन नूं सांवे पैहा गवावे; ब्रज० दिन में सोवै, रोज़ी खोवै।

दिन खसा, मजूर हँसा—दे० 'दिन अस्त···'।

दिन जब बुरे आते हैं तो सोना छुए मिट्टी हो जाता है— बुरे दिन आने पर अच्छा काम करने का भी परिणाम बुरा ही होता है। तुलनीय : अव० दिन जब खराब होय जात है तौ सोना छुए से माटी होय जात है; ब्रज० दिन बुरे आवें तौ सोनों माटी है जायँ।

दिन जब भले आते हैं तो मिट्टी छुए सोना हो जाता है - अच्छे दिन आने पर साधारण काम से भी बहुत लाभ होता है।

दिन जाता है पर क्षण नहीं—विपत्ति कभी भी आ सकती है यद्यपि दिन का अधिकांश समय सामान्य रूप से व्यतीत हो जाता है। तुलनीय : असमी—दिन्टो याय् क्षणटो नायाय्; अं० There is many a slip between the sauce and the lip.

दिन जाते देर नहीं लगती—(क) समय बहुत जल्द समाप्त हो जाता है। (ख) अच्छे-बुरे दिन आने में अधिक समय नहीं लगता। तुलनीय : हरि० दिण धरे की वार सै; अव० दिन जाते बेर नाहीं लागत; राज० दिन जातां किती वार लागै; पंज० दिन जांदे चिर नईं लगदा; ब्रज० दिन जात में देर नायें लगै।

दिन दीवाली हो गए—जब बहुत आनन्द से जीवन व्यतीत होता है तो कहते हैं।

दिन दूना रात चौगुना—आशीर्वाद है। (क) अति वृद्धि या शीघ्रता से उन्नति होने पर कहा जाता है। (ख) जो लड़का दिन-दिन बिगड़ता जाय उस पर भी व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० दिन दूणो रात चोगणो; अव० दिन दूना रात चौगुना; पंज० दिन दुगने रात चौगुनी; ब्रज० दिन दूनी राति चौगुनी।

दिनन के फेर से सुमेर होत माटी को—समय के फेर से सुमेर पर्वत (जिसे सोने का कहा जाता है) मिट्टी का हो जाता है। आशय यह है कि बुरे दिन आने पर अपार सम्पत्ति भी नष्ट हो जाती है। तुलनीय : मरा० काळ फिरला की सोन्याच मेरुहि मातीचा होतो।

दिन गया कि रात—संसार में न तो दिन का होना समाप्त हुआ और न रात का आना। सभी को अपनी इच्छा का काम करने का अवसर मिल जाता है।

दिन निकल जाते हैं पर बात रह जाती है—बुरे दिन तो व्यतीत हो ही जाते हैं, किंतु उन दिनों में दूसरों द्वारा की गई बुराइयाँ सदा याद रहती हैं। जब कोई किसी की विपत्ति में सहायता की याचना को ठुकरा देता है तो कहते हैं। तुलनीय : पंज० दिन निकल जांदे ने पर गल्ल रै जांदी है; गढ़० दिन चल जांदा पर बात रै जांदी।

दिन नीके जब आयंगे, बनत न लगिहे/लागी बेर—जब अच्छे दिन आएँगे तो बनते देर (बेर) नहीं लगेगी। आशय यह है कि जब अच्छे दिन आते है तो मनुष्य शीघ्र काफी उन्नति कर लेता है।

दिन फिरते हैं तो चतुराई ताक़ पर धरी रह जाती है—जब बुरे दिन आते हैं तो बुद्धिमानी काम नहीं करती। जब कोई बुद्धिमान व्यक्ति ऐसा कार्य कर बैठे जिससे वह बड़ी विपत्ति में फँस जाय तब कहते हैं। तुलनीय : राज० दिन फिरै जद चतुराई चूल्हे मे जाय परी।

दिन भर खून-पसीना एक किया है—सारा दिन जी-जान से परिश्रम किया है। जो व्यक्ति किसी के कठिन परिश्रम का कुछ भी मूल्य न समझे तो उसको बताने के लिए कहते हैं कि हमने इतना परिश्रम किया है कि खून भी पसीना बनकर बह गया। तुलनीय : भीली—सेंग दाड़ो तपत्या तापत्यो हूँ; पंज० दिन पर लहूँ-पसीना इक कीता है।

दिन-भर चले अढ़ाई कोस—दिन-भर में ढाई (अढ़ाई) कोस चलते हैं। (क) बहुत धीमी गति से कार्य करने वाले के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। (ख) जब अधिक श्रम करने के बावजूद बहुत कम लाभ होता है तब भी कहते हैं।

दिन-भर नायें-मायें, चाँदनी में कपास बीने—दे० 'दिन को ऊनी-ऊनी···'।

दिन-भर नायें-मायें, रात में सोऊँ कहाँ?—दिन-भर तो इधर-उधर घूमते हैं और रात को कहते हैं कि कहाँ सोऊँ। जो व्यक्ति अपना समय व्यर्थ में गँवा देता है और कोई समस्या आने पर जब उसका समाधान नहीं कर पाता तो उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

दिन-भर बने खाना, संझा चबाएँ दाना—दिन-भर भोजन पकाते हैं, किंतु शाम को चबेना चबाकर ही पेट

भरते हैं। जो लोग टीमटाम या दिखावा तो बहुत करते हैं किन्तु वास्तव में उनके पास कुछ भी न हो तो उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय : गढ़० परकार दिखेवन त खुंतडो अर बाड़ि।

दिन-भर रांड-निपूती करे—दिन-भर किसी को रांड़ और किसी को निपूती करती रहती है। झगड़ालू स्त्री के प्रति कहते हैं जो सदा गाली-गलौज करती रहती है। तुलनीय : राज० दिन-भर रांड-निपूती करै।

दिन भले आएंगे, तो घर पूछते चले आएँगे—अच्छे दिन आने पर किसी को बुलाना नहीं पड़ेगा, अपने-आप चले आएँगे अर्थात् अच्छे दिन आने पर अनायास ही लाभ होने लगता है।

दिन में गर्मी रात में ओस, कहैं घाघ बरखा सौ कोस—घाघ कहते हैं कि यदि दिन को गर्मी पड़े तथा रात मे ओस पड़े तो समझना चाहिए कि वर्षा ऋतु में अभी बहुत देर है।

दिन में न पाय तो रात को रोय—दिन में कुछ लाभ न मिले तो रात्रि में बिस्तर पर पड़े-पड़े उसी की चिंता सताती है। रात्रि में चारों ओर शांति रहने के कारण चिन्ताएँ अधिक सताती हैं। तुलनीय : भी०जी० दाड़ा ना देवालां रातें देखायें।

दिन में बादर रात को तारे, चलो कंत जहँ जीवै बारे—दे० 'दिन को बादर रात को···'।

दिन में भैया रात में सैंया—ऐसी चरित्रहीना के संबध मे प्रस्तुत कहावत कही जाती है जो अपने प्रेमी को दिन में तो भैया कहती है (ताकि समाज उसे चरित्र-भ्रष्ट न समझे) और रात में उससे पति का नाता जोड़ती है (जिससे उसकी प्रेम-पिपासा शांत होती है)। इस कहावत का प्रयोग 'ऊपर से और भीतर से और' के संबंध में भी होता है। तुलनीय : भोज० दिन में भैया रात में सैंया; पंज० दिन में दीदी रात को बीबी;

दिन में सोवे रोजी खोवे—दे० 'दिन को सोवे···।'

दिन सात जो चले बांडा, सूखे जल सातो खांडा—यदि सप्ताह-भर लगातार दक्षिण-पश्चिम की हवा चले तो समझना चाहिए कि सातों खंड का पानी सूख जाएगा अर्थात् वर्षा नहीं होगी।

दिन सुथनी रात उपास—दिन को सुथनी (एक बहुत रद्दी खाद्य पदार्थ) खाते हैं और रात को उपवास करके सो जाते हैं। अत्यंत निर्धनता पर कहते हैं।

दिमाग आसमान पर उड़ रहा है—अभिमानी के प्रति कहते हैं जब वह भला-बुरा कुछ न सोच कर अपने मन की करता है। तुलनीय : पंज० दमाग अस्मान उते चढ़दा है।

दिमाग में गोबर भरा है—जब किसी को कोई साधारण बात भी समझ में नहीं आती तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० दमाग बिच गोआ परेदा है; ब्रज० दमाक में गोबर भर्यौ ऐ।

दिमाग में धूनी सुलगती ही रहती है—जो व्यक्ति सदा क्रोध में रहता है उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : राज० गळे में हरदम सिगड़ी जगती ही रैवै।

दिमाग में भूसा भरा है—दे० 'दिमाग में गोबर···'।

दिमाग है या शैतान का चरखा—जिसको सदा शैतानी सूझे उसको कहते हैं। तुलनीय : पंज० दमाग है या सैंतान की पटारी।

दिया गुल पगड़ी गायब—चिराग (दिया) बुझते (गुल होते) ही पगड़ी गायब। (क) जब थोड़ा-सा मौका मिलते ही कोई किसी वस्तु को चुरा ले तो कहते हैं। (ख) जब किसी परिवार के बुद्धिमान व्यक्ति के मरने के बाद उस परिवार की मर्यादा (पगड़ी) समाप्त हो जाय तब भी कहते हैं।

दिया तले अंधेरा—(क) बड़ों के भीतर छोटी बुराइयाँ या अवगुण रहते हैं। (ख) अच्छाई के साथ बुराई भी रहती है। (ग) दूसरों को उपदेश देने वाले स्वयं उन पर व्यवहार नही करते तब भी कहते हैं। (घ) दूरदृष्टि रखने वालों को प्राय: अपने निकट का ज्ञान नहीं होता। तुलनीय : मरा० दिव्या खालीं अंधार; गढ़० गोणी अपणो पूछ छोटो ही देखद; अव० दिया तरे अंधियारा; पंज० दीवे हेठ हनेरा; ब्रज० दीये के नीचे अँधेरो।

दिया तो चाँद था न दिया तो मुँह मांद था—जब दिया तब तो उनका मुख चाँद जैसा चमक रहा था और जब नहीं दिया तो मुँह लटका लिया। स्वार्थी व्यक्ति के प्रति कहते हैं जो कुछ पाने पर प्रसन्न रहते हैं और न पाने पर मुँह फुलाए रहते हैं।

दिया दान माँगे मुसलमान—जब कोई चीज़ देकर माँगता है तब कहते हैं। मुसलमान लोग ही दिए हुए दान को वापस लेते हैं क्योंकि उनके यहाँ लड़की के मर जाने पर सब धन वापस हो जाता है। तुलनीय : मरा० दिलें दान घेतलें दान पुढल्या वर्षी मुसलमान; ब्रज० दीयौ दान, माँगै मुसलमान।

दिया धन बखीमारा ही ले—एक बार दान देकर जो

वापस लेता है उसे गाय मारने का पाप लगता है, अर्थात् वह बहुत बड़ा पापी है।

दिया न बाती, मुंडो फिरै इतराती--घर में दीपक (दिया) जैसी साधारण वस्तु भी नहीं है फिर भी इतराती फिरती हैं। जब कोई निर्धन व्यक्ति व्यर्थ में इतराता फिरता है, तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

दिया फ़ातिहा को लगे लुटाने--दिया था मरने पर चढ़ावा (फ़ातिहा) देने के लिए और बाँटने या दान देने (लुटाने) लगे। (क) किसी के धरोहर का दुरुपयोग करने पर कहा जाता है। (ख) जब किसी को कोई वस्तु किसी के लिए दी जाय और वह उसका उपयोग किसी दूसरे काम में करने लगे तब भी कहते है।

दिया बुझते पगड़ी गायब-- दे० 'दिया गुल पगड़ी ...'।

दिया बुझा, पगड़ी गायब दे० 'दिया गुल पगड़ी...'। तुलनीय : मल० निट्वाल् पोयाल कोट्वाल् निट्वाल्, ब्रज० दीयौ बुझयौ और पाग गई; अ० When the cat is away the mouse will play.

दिया लाख मिली खाक--जब किसी व्यक्ति को अधिक धन व्यय करने पर भी मनोवांछित वस्तु न मिले तो उसके प्रति कहते है। तुलनीय : गढ़० देणी तेमासी लेणी उदासी; पंज० दित्ता लख मिलिया कख।

दिया-लिया बह गया रह गई कानी बहू--विवाह के समय जो कुछ दहेज में मिला था वह समाप्त हो गया, अब केवल कानी बहू रह गई है। (क) मनुष्य के आकर्षण का केन्द्र उसके गुण होते है, उसका धन नहा। (ख) बहुत आडबर के बाद जब कोई दुखद वस्तु प्राप्त होती है तब भी कहते है। तुलनीय : कौर० आत-दान बह गई, मेरी काणी बहू रह गई; पंज० दिता लेया रुड़ गया बौटी रह गई कानी।

दिया-लिया तो आड़े ही आता है- अन्त समय मे केवल दान-पुण्य ही रक्षा करता है। तुलनीय : राज० दियो-लियो आडो आवै; ब्रज० दीयौ-लीयौ ई आड़े आवै।

दिया साट बिटिया खाट--दिया जलाया और बिटिया खाट पर पहुँच गई। जो व्यक्ति संध्या होते ही काम से बचने के लिए सो जाएँ उनके प्रति व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : राज० दीयो दाट बहू खाट।

दिया हाथ, खाने लगा साथ--थोड़ी सहायता कर दी तो वह मेरे साथ रहकर खाने लगा। (क) जब किसी की थोड़ी सहायता की जाय और उसके बाद वह पीछा न छोड़े तब कहते हैं। (ख) जो एक बार सम्पर्क में आने के बाद धीरे-धीरे सम्पर्क बढ़ाकर अपना मतलब पूरा कर लेता है उसके लिए भी कहते हैं।

दिये का उजाला प्रलय तक--नीचे देखिए। तुलनीय : मल० तिन्नतु तिरूम् कोट्टुत्तु तीरुकयिल्ल; अं० Giving to the poor is lending to the Lord

दिये का प्रकाश स्वर्ग तक--दान का प्रभाव परलोक तक होता है और उसका फल वहाँ मिलता है।

दिये की रोशनी महशर तक--ऊपर देखिए।

दिये तले अँधेरा दे० 'दिया तले अंधेरा।'

दिल का घाव रानी जाने या राव- हार्दिक दुख या सन्ताप को पति-पत्नी ही भली प्रकार समझते हैं।

दिल का दिल आईना है--(क) एक के हृदय (दिल) की बात दूसरे से छिपती नहीं। (ख) जितना कोई किसी से प्रेम करता है उतना ही वह भी उससे प्रेम करता है।

दिल का मालिक अल्ला है खुदा ही दिल की बात जानता है, और वही दिल मे सोची हुई बात को बदल सकता है।

दिल की थी मैं सादी, जिसका पाती उसका गाती--(क) मै विचार की शुद्ध थी जिससे कुछ मिलता था उसी की प्रशंसा करती थी। (ख) जो लोग किसी से लाभान्वित होने पर उन्ही की प्रशंसा करते रहते है उनके प्रति व्यंग्य से भी कहते हैं।

दिल की बात होंठों पर आ जाती है--नीचे देखिए।

दिल की बात होठों पर आती है--जो बात हृदय में होती है वह कभी-न-कभी मुँह से निकल ही जाती है। जिस व्यक्ति के हृदय में कपट होता है वह स्वयं ही उसको बातों ही बातों में उगल देता है। तुलनीय : राज० हियेरी बात होंठा आयां सरे; पंज० दिल दी बुलां तक आंदी है।

दिल के फफोले फोड़ते हैं--मन का क्रोध दिखाते हैं। बुरा-भला कहकर मन को सन्तुष्ट करते हैं। दूसरे के द्वारा पहुँचाए गए कष्ट में उससे बदला लेकर केवल मन ही मन खीझने पर ऐसा कहते है।

दिल को दिल चाहिए--दिली मित्र मिलने पर ही दिल चैन से रह सकता है। तुलनीय : उर्दू० दिल दिल से पानी पीता है।

दिल को दिल से राहत है--ऊपर देखिए।

दिल को हो क़रार तो सब सूझे त्यौहार--मन या चित्त शांत रहता है तभी त्यौहार भी अच्छे लगते हैं। आशय यह है कि मन शांत रहने पर ही सब कुछ अच्छा लगता है, वरना आनंद की घड़ियाँ भी अच्छी नहीं लगती। तुलनीय : पंज०

दिल नं लगे चंगा ते सब कुज चंगा।

दिल जाने सो दिलदार – (क) जो सुख-दु.ख में साथ दे अथवा ध्यान रखे वही अपना है। (ख) जो दूसरों की सुख-सुविधा का ध्यान रखता है वही दिलवाला कहा जाता है। तुलनीय : पंज० दिल जाणे दिलदार।

दिल दिलबर से मिला नहीं तो क्या करवा कोपीन लिए—कमंडल (करवा) और भगवा वस्त्र (कोपीन) पहनने से क्या हुआ यदि सच्ची भक्ति न की। आडंबर करने वाले ढोंगी साधुओं के प्रति कहते हैं।

दिल बोर/भर खाना, सिर फोड़ लड़ना – (क) खाना पेट भर खाना चाहिए और लड़ाई में चाहे सिर भी फूट जाय तो भी पीछे नहीं हटना चाहिए। (ख) खाना-पीना और लड़ना-झगड़ना ही जिनका काम हो उनको लक्ष्य करके भी कहा जाता है। लड़ा-भिड़ा चाहे जितना भी जाय पर खाना-पीना मिलकर ही खाना चाहिए।

दिल माने सो सही—जिस बात को हृदय माने वही ठीक है। (क) किसी से ज़बरदस्ती कोई बात मनवाता है तो कहते है। (ख) हृदय की आवाज सदा सत्य होती है। तुलनीय : भीली- अक्कल ते हया माँगे उपजे।

दिल में आई को राखे सो भड़ुवा—मन में आई हुई बात को प्रकट कर देना चाहिए, छिपाना नहीं चाहिए। जो छिपाता है वह बुरा है।

दिल में नहीं डर, तो सबकी पगड़ी अपने सर—(क) निडर आदमी सबकी इज़्ज़त अपनी इज़्ज़त के समान समझता है और उसी प्रकार उसकी रक्षा करने के लिए तैयार रहता है। (ख) सच्चे और ईमानदार व्यक्ति की सभी इज़्ज़त करते हैं।

दिल लगा गधी से, क्या काम परी से ? – नीचे देखिए।

दिल लगा गधी से तो परी क्या चीज है ? — यदि गधी से प्रेम हो जाय तो परी भी उसके सामने फीकी होती है। आशय यह है कि जिसका जिससे प्रेम हो जाता है वही उसके लिए सर्वोत्तम है, भले ही वह कुरूप क्यों न हो। अर्थात् प्रेम में रूप-कुरूप नहीं दिखाई देता। तुलनीय : मरा० मन गेलें गाढवीवर, तेथें अप्सरेचे काय काम; अव० दिल लाग गदही से तौ परी का चीज है; पंज० दिल लगया खोती नाल ते परी की चीज है; ब्रज० दिल लग्यौ गधी ते, तौ परी कहा चीजै।

दिल लगा मेंढकी से तो पद्मिनी क्या चीज है ?—ऊपर देखिए।

दिल वाला देगा नामर्द क्या देगा ?—जिसके पास दिल होगा, या जो उदार होगा वही दान देगा, छोटे दिल वाले क्या देंगे ? बाज़ीगर और भिखारी आदि लोगों को दान करने के लिए यह कहकर उकसाते हैं। तुलनीय : राज० वढ्योरा वढै, नहो जका कांई वढै; पंज० दिलवाला देगा जनाना की देगा।

दिल साफ, क़सूर माफ़—दिल साफ हो तो सभी क़सूर माफ़ हो जाते हैं। जिस व्यक्ति का दिल साफ़ हो और उससे कोई हानि हो जाय तो भी उसे कोई कुछ नहीं कहता, क्योंकि सभी जानते हैं कि इसने जान-बूझकर नहीं किया है। तुलनीय : राज० दिलं साफ कसूर माफ; पंज० दिल चंगा गुनाह माफ़।

दिल सोज़ खाना तराश—कलेजे में आग और घर में छुरी। अयोग्य संतान पर कहते है।

दिलेरी मर्दों का गहना है— वीरता या बहादुरी से ही मनुष्य सुशोभित होता है।

दिलों में खाक उड़ती है, फ़क़त मुंह पर सफाई है – दिल में तो धूल (खाक) उड़ रही है केवल (फ़क़त) मुंह पर ही सफ़ाई है। कपटी और दिवालियों के प्रति कहते हैं।

दिल्लगी अच्छी भी है बुरी भी—दिल्लगी से मनोरंजन भी होता है और दुःख भी। तुलनीय : अव० दिल्लगी अच्छिउ है बुरिउ है; पंज० दिल लगाना चंगा भी है ते माड़ा भी।

दिल्ली उजड़ी सौ बार, फिर भी है सबकी सरदार—दिल्ली नगर बहुत उजाड़ा गया (लूटा गया) किन्तु उजड़कर भी दिल्ली दिल्ली ही है, उसके वैभव में कोई विशेष अन्तर नहीं आया। किसी वैभवशाली व्यक्ति का पतन होने पर भी उसके पास धन की कमी नहीं पड़ती। तुलनीय : राज० टूटी तो गुजरात भागी तो नागोर।

दिल्ली की कमाई दिल्ली में खतम—नीचे देखिए।

दिल्ली की कमाई दिल्ली में ही गँवाई— जहां कमाया वहीं खर्च किया, बचाकर घर कुछ भी न लाया। (क) जब कोई व्यक्ति परदेश में जाकर भी कमा करके कुछ घर न लाए तो उसके प्रति कहते हैं। (ख) दिल्ली में इतनी महँगाई है कि यहां नौकरी करने वाला कुछ बचा नहीं पाता। तुलनीय : अव० डिल्ली की कमाई डिल्ली मा गंवाई; हरि० दिल्ली की कमाई दिल्ली न ए खाई; पंज० दिल्ली दी कमाई दिल्ली बिच गुआई।

दिल्ली की दिलवाली, मुंह चिकना पेट खाली—दिल्ली

के लोग खाने की अपेक्षा पहनने के अधिक शौक़ीन होते हैं। तुलनीय : हरि० दिल्ली के दिलवाल्ली, मुंह चीकणा पेट खाल्ली; गढ़० दिल्ली का दिलवाला, मुख का चोपडा पेट का खाली।

दिल्ली की बेटी मथुरा की गाय, कर्म फूटे तो अन्ते जाय – प्राय: ये दोनों दूसरी जगह नही जाती दूसरी जगह जाने में इन्हें कष्ट होता है, क्योंकि दिल्ली वाले पुत्रियों की और मथुरा वाले गायों की बहुत सेवा करते हैं। तुलनीय : अव० डिल्ली कै बिटिया मथुरा कै गाय, करम फूटै तौ अंतै जाय; हरि० दिल्ली की बेट्टी, मथरा की गा, भाग फूट्टें ते भारय जा।

दिल्ली की बेटी मथुरा की गाय, भाग फूटे तो बाहर जायं - ऊपर देखिए।

दिल्ली के पांचों सवार—जब कोई व्यक्ति किसी बड़ी जगह के साथ अपना सम्बन्ध जोड़कर अपना महत्त्व स्थापित करना चाहता है तब कहा जाता है। तुलनीय : पंज० दिल्ली दे पंजो सवार।

दिल्ली ग़दर पहले चमन बनी हुई थी— लड़ाई (ग़दर) के पहले दिल्ली फुलवारी बनी हुई थी। अर्थात् उस समय दिल्ली की शान-शौकत काफी बड़ी हुई थी। (ग़दर का मतलब लड़ाई होता है परन्तु यहाँ ग़दर का मतलब 1857 ई० की लड़ाई मे है)।

दिल्ली दूर है –(क) अभी बहुत अधिक चलना है। (ख) जब कोई साधारण व्यक्ति बड़ी वस्तु को प्राप्त करना चाहता है तब भी कहते है अर्थात् यह तुम्हारे बस का नही है। तुलनीय : पंज० दिल्ली दूर है।

दिल्ली फ़क़ीरों लायक़ अब हुई है – दिल्ली फ़क़ीरों के रहने योग्य अब हुई है अर्थात् उजड़ी है। जब किसी व्यक्ति का वैभव नष्ट हो जाय तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० दिल्ली फकीरां जोगी हमे हुई है; पंज० दिल्ली मंगतियाँ जोगी हुण होई है।

दिल्ली फ़क़ीरों लायक़ ही रहेगी –दिल्ली फ़क़ीरों के रहने योग्य ही रहेगी। जब कोई धनवान व्यक्ति निर्धन हो जाय और प्रयत्न करने पर भी सँभल न सके तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० दिल्ली फकीरां जुगती रहगी; पंज० दिल्ली मंगतियाँ जोगी ही रहेगी।

दिल्ली में क्या दिवालिए नहीं रहते ?—नीचे देखिए। तुलनीय : मेवा० दिल्ली मे कई दिवाल्या नी वसै ?

दिल्ली में दिवालिए भी रहते हैं—दिल्ली में ग़रीब भी रहते हैं। आशय यह है कि किसी बड़ी जगह में सब धनवान ही धनवान नहीं रहते।

दिल्ली में बारह वर्ष रहकर भाड़ झोंका—जब कोई अच्छे स्थान या वातावरण में काफ़ी दिनों तक रहकर भी कुछ न सीख सके तो उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मेवा० दिल्ली में बारा बरस रिया अर भाड़ झूंकी; पंज० दिल्ली बिच बाराँ वरे रह के चुल्हा फूंकया; ब्रज० दिल्ली में बारह बरस रहे परि भार झोंक्यो।

दिल्ली में रहकर क्या भाड़ झोंका –ऊपर देखिए।

दिल्ली में रहकर भी भाड़ ही झोंका – दे० 'दिल्ली में बारह वर्ष…'। तुलनीय : राज० दिल्ली रहेर भाड़ ही भूंजी।

दिल्ली से मैं आऊँ ख़बर कहे मेरा भाई—दिल्ली से मैं आ रहा हूँ और समाचार मेरा भाई बताता है। आशय यह है कि ऐसे के सामने किसी का हाल कहना जो उससे अधिक जानता हो तब कहते हैं।

दिल्ली से हींग आई, तब बड़े पके– दिल्ली में हींग आने पर बड़े तैयार हुए। (क) व्यर्थ का आडंबर करने वाले के प्रति कहते हैं। (ख) अनावश्यक विलंब करने पर भी कहते हैं।

दिवस जात नहिं लागइ बारा— दिन व्यतीत होते देर नहीं लगती। (क) जो व्यक्ति कहे कि अभी बहुत समय है कुछ दिन बाद कर लेंगे उसको समझाने के लिए कहते हैं। (ख) मनुष्य का भाग्य बदलते देर नहीं लगती। तुलनीय : पंज० दिन जांदे पता नहीं लगता।

दिवानों के सिर क्या सींग होते हैं ?—आशय यह है कि किसी के गुण-अवगुण देखने से नही बल्कि उसके कर्मों से पहचाने जाते हैं। तुलनीय : हरि० गधे के सिर पै सींग हों सं ? पंज० खोते दे सिर उते सिंग नई हुंदे।

दिवाल रहेगी तो लेब बहुतेरे चढ़ रहेंगे—दीवार (दिवाल) रहेगी तो उस पर अनेक लेप (लेब) चढ़ेंगे। जान बच जाएगी तो मांस भी चढ़ जाएगा। रोगी व्यक्तियों के कमज़ोर हो जाने पर उन्हें सांत्वना दिलाने के लिए कहते हैं।

दिवालिया बनिया खाते टोवे—जब बनिए को घाटा होता है तो वह अपने नए-पुराने खातों को देखना आरंभ करता है। आशय यह है कि विपत्ति आने पर मनुष्य साधारण सहारे को भी ढूंढ़ता है। तुलनीय : राज० खूट्या वाणियो जुना खत जोवे।

दिवालिये का क्या खोए, भीगे का क्या भीगे ? — जिसका दिवाला निकल गया है उसका अब क्या खोएगा

और जो पूर्ण रूप से भीग चुका है उसका क्या भीगेगा? आशय यह है कि जो पूर्ण रूप से बरबाद हो चुका है उसका अब क्या बिगड़ेगा, अर्थात् कुछ नहीं। तुलनीय : माल० भीज्यो थको कई भीजे और खोया रो कई खोवाय।

दिवालिए की साख पाताल में—दिवालिए की मर्यादा नष्ट हो जाती है। (साख—इज़्ज़त या मर्यादा)।

दिसा मारे रोगी पेशाब मारे भोगी—पाखाना रोकने से रोग होता है तथा पेशाब रोकने से भोग की इच्छा बढ़ती है। (दिसा=पाखाना)।

दीदम वले न गोयम यह लोकोक्ति फ़ारसी की है जिसका अर्थ है, 'देख रहा हूँ, मगर कहूँगा नहीं।' एक मूर्ख मनुष्य ने इतनी ही फ़ारसी सीखी थी। एक दिन मुग़ल का ऊँट खो गया। वह उसे ढूँढ़ता हुआ आया और अकस्मात् वह मूर्ख सामने आ गया तो उससे भी पूछा कि कहीं मेरा ऊँट देखा है। मूर्ख ने उत्तर दिया, 'दीदम वले न गोयम।' इस पर मुग़ल ने उससे प्रार्थना की कि बता दो किन्तु मूर्ख ने फिर वही उत्तर दिया। मुग़ल ने कई बार कहा किंतु उत्तर एक ही मिला। इस पर उसने क्रोधित होकर मूर्ख की पिटाई शुरू कर दी। लोगों की भीड़ लग गई। मुग़ल ने सबको बताया कि यह जानते हुए भी मेरा ऊँट नहीं बताता। लोगों ने उससे पूछा कि तुम बताते क्यों नहीं तो उसने उत्तर दिया, 'मैं बताऊँ तब जब मुझे पता हो।' इस पर उससे पूछा गया कि तू 'दीदम वले न गोयम' क्यों कहता था तो उसने कहा कि मेरा खयाल था कि इसका अर्थ यही होता है कि 'मैं नहीं जानता।' जो व्यक्ति विदेशी भाषा न जानते हुए भी उसका ग़लत प्रयोग करते हैं तो उनके प्रति कहते हैं।

दीदारबाज़ी और मौला राज़ी—सुंदरियों से नज़रें लड़ाने में ईश्वर (मौला) खुश (राज़ी) होता है। लंपटों का ऐसा कहना है। (दीदारबाज़ी—नज़र लड़ाना)।

दी दिवाई खली न खाय, पाछे कोल्हू चाटन आय—बैल को जब खली दी जाती थी तब तो उसने नहीं खाई और बाद में कोल्हू चाटता है। जब कोई व्यक्ति देने पर अच्छी वस्तु स्वीकार न करे और बाद में उससे भी बुरी चीज़ अपनी इच्छा से ले ले तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : पंज० दिती चीज न लें ते कोलू चट्टन जा।

दीदी का दुलार पीठ पर आग—बहन (दीदी) खुश हुई तो पीठ पर आग रख दी। जब कोई कुछ फ़ायदा न करके बल्कि उलटे हानि पहुँचाता है तब व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मैथ० दिदिया दुलार कयलक पीठ पर आग धयलक; पंज० पैन दा प्यार ते पीठ उते मुक्का।

दी न खाय, बीन-बीन खाय—देने पर नहीं खाती और बाद में चुन-चुन (बीन-बीन) कर खाती है। दे० 'दी दिवाई खली न खाय…'।

दीन-दुनिया की खबर नहीं है—किसी से कोई मतलब न रखने वाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० दीन-दुनिया दा पता नहीं; ब्रज० दीन दुनियां की खबरि नायें।

दीन-दुनिया दोनों से गए—किसी बुरे काम से जिसका यह लोक और परलोक दोनों बिगड़ जायँ उसे कहते हैं। तुलनीय : भोज० दीन दुनियां दूनों से बह गइल; अव० दीन दुनियाँ दुइनौं से गएँ; हरि० दीन दुनियां तैं खूगे; पंज० दीन दुनियां दोनां तो गए; ब्रज० दीन ते गये और दुनिया ते गये।

दीन व दुनिया में उसका होय बुरा, जो किसी का कोई बुरा चेते—जो किसी का बुरा चाहता है उसका लोक-परलोक दोनों जगह बुरा होता है।

दीन सबन को लखत है, दीनहिं लखे न कोय—ग़रीब (दीन) सबको (सबन) देखता है, पर ग़रीब की ओर कोई नहीं देखता। आशय यह है कि असहायों या ग़रीबों की कोई सहायता नहीं करता।

दीन से दुनिया रखनी मुश्किल है—(क) ईश्वर को सरलता से प्रसन्न किया जा सकता है पर संसार को खुश रखना बहुत मुश्किल है। (ख) धर्म-पालन करके दुनिया में रहना मुश्किल है।

दीन से दुनिया है—धर्म के बल पर संसार टिका हुआ है। धर्म की महत्ता को प्रदर्शित करने के लिए ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० दिन उते दुनियाँ टिकी है।

दीपक की रवि के उदय, बात न पूछे कोय—सूर्य निकलने पर दीपक को कोई नहीं पूछता। अर्थात् बड़ों के आगे छोटों की क़द्र नहीं होती। तुलनीय : मरा० सूर्योदय झाल्यावर दिव्याला कोण पुसतो।

दीपक को भावे नहीं, जरि-जरि मरे पतंग—पतंग दीपक में जलकर अपने प्राण दे देता है पर उसे तनिक भी इसका ख़याल नहीं रहता। जब कोई किसी के लिए प्राण देने को तैयार हो, पर वह उसका कुछ भी ख़याल न करे तब कहते हैं।

दीपक तले अँधेरा—दे० 'दिया तले अँधेरा।' तुलनीय : हरि० दीवे तले अँधेरा; अव० दिया तरे अँधेरू; पज० दीवे थले हनेरा; ब्रज० दीये के नीचे अँधेरौ।

दीपक से काजल प्रकट, कमल कीच ते होय—दीपक जिससे चारों ओर प्रकाश फैलता है उससे काजल जैसी

काली चीज़ उत्पन्न होती है और कीचड़ जैसे गन्दे स्थान से कमल जैसा सुन्दर पुष्प उत्पन्न होता है। जब अच्छों की बुरी और बुरों की अच्छी सन्तान होती है तब कहते हैं।

दीपमाल निज लखत नहिं दीपक देखत आन अपने घर की दीवाली नहीं देखता दूसरे के घर का दिया देखता है। डाह रखने वाले को कहते हैं जो अपने बड़े लाभ या बड़ी खुशी को न देखकर दूसरे के साधारण लाभ या साधारण सुख से जलता है।

दीमक के चाटे में कैसा दम—जिस लकड़ी में दीमक लग जाती उसमें दम नहीं रहता। जब कोई वस्तु किसी दुष्ट मनुष्य के हाथ में पड़कर नष्ट हो जाय तो कहते हैं। तुलनीय: माल० वागर रा चुंध्या में कई रस रे; पंज० खादी होई लकड़ी विच केहो जिहा दम।

दीवाना बकारे खेश/खुद होशियार—पागल (दीवाना) भी अपने मतलब के लिए (बकारे-खेश) होशियार होता है। अर्थात् अपने काम में सभी चालाक होते हैं।

दीवानी माँ का खब्ती बेटा—खानदानी बेवक़ूफ़।

दीवाने को बात बताई, उसने ले छप्पर चढ़ाई—मूर्ख को एक बात बताई तो वह उसने सबसे कह दी। जब कोई गोपनीय बात किसी से कही जाय और वह उसका प्रचार करे तो कहते हैं।

दीवा बाट और बहू खाट- दीपक जला और बहू सोने के लिए चल दी। (क) नई शादी होने पर पति-पत्नी का प्रेम कुछ अधिक ही होता है, इसलिए वे अधिक से अधिक समय तक साथ रहना चाहते है। (ख) कामचोर व्यक्ति काम से बचने के लिए जब शीघ्र ही सोने का बहाना करके चारपाई पर लेट जाते हैं तो उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय: मेवा० दीवे बाट अर बऊ खाट।

दीवा बीती पंचमी, सोम सुकर गुर मूर; डंक कहे हे भड्डरी, उपजे सातो तूर- डंक भड्डरी से कहते हैं कि यदि कार्तिक सुदी पंचमी को मूल नक्षत्र में सोमवार, शुक्रवार तथा गुरुवार पड़ें तो सातों प्रकार के अन्न उपजते हैं, अर्थात् खेती बहुत अच्छी होती है।

दीवार के भी कान होते हैं—गुप्त बातों को बहुत सावधानी से किसी से कहना चाहिए ताकि कोई और न सुन सके। तुलनीय: अव० देवालौ कै कान होत है; राज० भीतांरै ही कान हुआ करै है; मरा० भितीलाहि कान असतात; तेलु० गोडलकु चेवुलुंटाइ; मल० अरमल रहस्यम् अङ्ङाटियिल परस्यम्; फ़ा० दीवार हम गोश दारद; पंज० कंदा दे भी कन हुंदे हन; ब्रज० दीवार कें ऊँ कान होयें; अं० Walls have ears.

दीवाल खाय आला, घर खाय साला—जिस प्रकार बहुत से आले बनाने से दीवार कमज़ोर हो जाती है, उसी प्रकार साले को घर में रखने से बहुत नुक़सान उठाना पड़ता है। जो सालों को घर में रखता है उसके उपदेशार्थ कहा गया है। तुलनीय: पंज० कंद खाये आला, कर खाय साला।

दीवाल रहेगी तो लेब बहुतेरे चढ़ रहेंगे—दे० 'दिवाल रहेगी तो…'। तुलनीय: भोज० देवाल रही त ओपर कईगो लेपन चढ़ जई; मरा० भिंत उभी असली की गिलावे पुष्कळ लागतीत।

दीवाली का दीया चाट के आए और होली की जूतियाँ खाकर जाएँगे— दीपावली मना कर आए है और होली तक रहेंगे और मार खाए बिना नही जाएँगे। निकम्मे या जाहिलों के प्रति व्यंग्य से कहते हैं जो किसी के यहां लम्बे समय तक पड़े रहते हैं और अपनी इच्छा से जाने का नाम नही लेते।

दीवाली का दीया दीठा, काचर बेर मतीरा मीठा—दीपावली का दीपक दिखाई पड़ने तक कचरी (काचर), बेर और तरबूज़ (मतीरा) मीठे हो जाते हैं। (सामान्यत: कचरी, बेर और तरबूज़ा इस समय तक मीठे नही होते, अत: ऐसा जान पड़ता है कि जहाँ से यह लोकोक्ति शुरू हुई वहाँ इस समय तक वे मीठे हो जाते हैं)। तुलनीय: राज० दीवाली रा दीया दीठा काचर बेर मतीरा मीठा।

दीवाली की कुल्हिया—दीपावली के अवसर पर रंग-बिरंगे मिट्टी के बर्तन बनाए जाते हैं। वे देखने में काफ़ी सुन्दर होते हैं, पर बाद में किसी काम में नही आते। ऐसी वस्तु के प्रति कहते हैं जो देखने में सुंदर पर अनुपयोगी हो। तुलनीय: पंज० दीवाली ते कुल्ले।

दीवाली की मिठाई—जो चीज़ देखने में अच्छी हो पर गुण में बुरी हो, उसके प्रति कहते हैं। दीवाली के अवसर पर हलवाई लोग बहुत पहले से मिठाई बनाते हैं जो खाने में उतनी अच्छी नही होती, जितनी देखने में। तुलनीय: अव० दिवारी कै मिठाई; पंज० दवाली दी मठाई।

दीवाली के खाए पाड़ा ना मोटाई—केवल दीवाली के दिन खाने से पाड़ा (भैंस का बच्चा) मोटा नहीं हो सकता। आशय यह है कि (क) एक दिन पौष्टिक चीज़ खाने से आदमी स्वस्थ नहीं होता। (ख) केवल एक दिन के सुख या आनन्द से विशेष लाभ नही होता। तुलनीय: अव० देवारी के खाये पड़वा न मोटाई।

दीवाली के चोखे से पाड़ा मोटा नहीं होता—ऊपर देखिए।

दीवाली के दीये चाटकर जाएँगे—दीपावली मनाकर जाएँगे। जो व्यक्ति लंबे समय तक किसी के यहाँ रुक जाता है उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० दवाली के दीवे चटकर जाण गे; ब्रज० दिवारी कौ दीयौ चाटि कै जायगौ।

दीवाली को बोझ दिवालिया—दीपावली के दिन बोने से मनुष्य दिवालिया हो जाता है, अर्थात् कुछ भी पैदा नही होता। तुलनीय : पंज० दवाली नूँ राए दिवालिया।

दीवाली जीत, साल-भर जीत—जुआरियों का ऐसा विश्वास है कि दीवाली को जा जुए में जीतता है उसकी साल-भर जीत होती है। तुलनीय : सं० अद्य द्यूते ज्यो येषां सवत्सरो जयः; पंज० दवाली नूँ जितया सारा साल जितया।

दिवाली के पीए बछड़ा मोटा नहीं होता—दे० 'दीवाली के खाए पाड़ा···'।

दीवाली नहीं दिवाला है—दीवाली के अवसर पर अधिक खर्च होने पर कहा जाता है। तुलनीय : अव० दिवाली नाही देवाला है।

दीक्षा लेना आसान है पर सीधा देना कठिन है—ब्राह्मण से दीक्षा लेना तो आसान है, किन्तु उसे 'सीधा' (अन्न, वस्त्रादि) देना बहुत कठिन है। अर्थात् जब मुख्य काम की अपेक्षा उससे संबंधित अन्य काम में अधिक परेशानी उठानी पड़े तो कहते है। इस पर एक मनोरंजक कहानी है : एक बार एक अहीर को भक्ति करने की सनक सवार हुई, इसलिए उसने एक पंडित से कहा कि उसे दीक्षा दें। पंडित ने कहा कि ठीक है, किन्तु जो मैं कहूँ वही तुम्हें करना होगा। तभी तुम्हारे दीक्षा लेने का कुछ लाभ है और यदि तुम्हें अपने मन की करनी हो तो दीक्षा लेना बेकार है। अहीर ने कहा, 'महाराज आप जो कहेंगे मैं वही करूँगा।' इस पर पंडितजी दूसरे दिन आने को कहकर अपने घर चले गए। दूसरे दिन पंडितजी पहुँचे और आमने-सामने आसन बिछवाकर उससे कहा, 'बैठ सामने।' अहीर ने भी पलटकर कहा, 'बैठ सामने।' पंडितजी ने कहा, 'बड़ा मूर्ख है, बैठता क्यों नही?' अहीर ने भी इसी तरह कहा। अब पंडितजी को क्रोध आया और उन्होंने कस कर एक चांटा अहीर को लगाया तथा कहा, 'अबे उल्लू के पट्ठे! तुझे मैं बैठने के लिए कह रहा हूँ और तू बकबक किए जा रहा है।' इस पर अहीर ने भी एक हाथ जमाकर वही वाक्य दोहराया। अब पंडितजी के क्रोध का पारावार न रहा और उन्होंने हाथ से पीटना आरंभ किया। अहीर पहले तो देखता रहा कि पंडित जी हटें तो वह भी पीटे किन्तु जब देखा कि पंडितजी छोड़ने वाले नहीं हैं तो उसने भी पंडितजी को धुनना शुरू कर दिया। अब दोनों में मल्ल युद्ध हो रहा था, चूँकि अहीर बलवान था, अतः उसने पंडितजी को नीचे दबाकर उनकी खूब मरम्मत की। पंडितजी किसी प्रकार जान बचाकर भागे और घर आकर दम लिया। घर में पंडिताइन पंडित-जी की राह देख रही थी क्योंकि आज मोटा यजमान फँसा था और आशा थी कि खूब माल मिलेगा। पंडितजी की हालत देखकर पंडिताइन के होश उड़ गए। धीरे-धीरे पंडित-जी कुछ बोलने योग्य हुए तो सारा क़िस्सा सुनाया। इधर अहीर का पसीना सूखा तो उसे याद आया कि दीक्षा तो ले ली किन्तु पंडित जी का 'सीधा' तो अभी दिया नही, इस-लिए अपनी पत्नी को सीधा देकर पंडितजी के घर भेजा। अहीरिन को आता देख पंडिताइन ने पति का बदला लेने की ठानी और उसको घर में बन्द करके उसकी खूब पिटाई की। किसी प्रकार अहीरिन प्राण बचाकर भागी और उसने घर आकर पति से कहा, 'दीक्षा लेना तो आसान है पर सीधा देना कठिन।'

दीवाली वर्ष में एक दिन—त्योहार और खुशी का दिन रोज़-रोज़ नही होता। या आनन्द की घड़ियाँ कम आती हैं। तुलनीय : पंज० दवाली साल बिच इक दिन।

दीसे ज्यों जल माँहि तरंग—पानी और उसकी तरंगें यद्यपि अलग-अलग दिखाई पड़ती है पर वास्तव में एक ही चीज़ है। जब एक ही चीज़ दो भिन्न-भिन्न रूपों में दीख पड़े तब कहते हैं।

दुआ और दवा नित करनी चाहिए—ईश्वर की पूजा नित्य करनी चाहिए और रोगी व्यक्ति को प्रतिदिन दवा खानी चाहिए। ये दोनों काम नियमित रूप से करने से ही लाभ होता है। तुलनीय : पंज० दुआ ते दवा रोज करनी चाहिदी।

दुआ-सलाम के लिए मुल्ला को नाराज़ क्या करना?—केवल दुआ-सलाम के लिए किसी को नाराज़ नहीं करना चाहिए, क्योंकि सलाम में कोई दाम नहीं लगता। अर्थात् साधारण वस्तु या बात के लिए किसी से बुरा नहीं बनना चाहिए। तुलनीय : राज० सलाम सट्टे मियांजी नै विराजी क्यूँ करणा? पंज० दुआ सलाम लई मुल्ले नूँ की नराज करना।

दुइ दिन चलै एक दिन खाय, भकुआ होय बराते

जाय— बारात में जाना मूर्खता है, क्योंकि दो दिन तो आने-जाने में ही बीत जाते है, केवल एक दिन वहाँ रहकर खाने को मिलता है। बारात की परेशानियों को ध्यान में रखकर ऐसा कहते हैं। अर्थात् बारात में जाने पर तकलीफ़ ही होती है। तुलनीय : भोज० दुइ दिन दौरे एक दिन खाय भकुवा होय बराते जाय।

दुइ दिन दौड़े एक दिन खाय, अहमक़ होइ बराते जाय— ऊपर देखिए।

दुइ हर खेती एक हर बारी, एक बैल से भली कुदारी— खेती दो हलों से होती है, एक हल से केवल साग-भाजी लगाई जाती है और केवल एक बैल रखने से अच्छा है कि कुदाल से ही खेती की जाय। आशय यह है कि अच्छी खेती करने के लिए दो हल आवश्यक है।

दुकान को एक घड़ी को भूलो तो दुकान कहे, मैं तुमको सदा के लिए भूली— अर्थात् दुकान करने वाले को आलस्य नहीं करना चाहिए और समय से दुकान पर मौजूद रहना चाहिए क्योंकि ग्राहक का कोई पता नहीं होता कि कब आ जाय। तुलनीय : पंज० हट्टी नूँ इक कड़ी पुलो तै हट्टी कहंदी है मैं तुहानूँ सदा वास्ते पुल गई।

दुकानदारी नरम की, बहू-बेटी शरम की, सिपाहीगिरी (हाकिमी) गरम की— दुकानदार वही अच्छा होता है जो ग्राहकों से नम्रता का व्यवहार करता है, बहू-बेटियाँ लज्जाशील ही अच्छी होती है और सिपाही या अधिकारी गर्म स्वभाव का अच्छा होता है।

दुकान पर बैठने न दे, कहे अच्छा तोलना— दुकान पर बैठने तो देता नही है फिर भी कहते हैं कि ठीक ढंग से तोलना। जब कोई व्यक्ति किसी को ज़रा भी क़द्र न करे फिर भी वह उससे कुछ पाने की उम्मीद करे तो व्यंग्य में ऐसा कहते है। तुलनीय : पंज० हट्टी उते बैन नई दिंदा अते कहिंदा चंगा तौंली।

दुकान पर बैठने न दे, तोलने की बात पूछे—ऊपर देखिए।

दुकान फैलाने की ज़रूरत नहीं है—जब कोई आदमी ज़बरदस्ती अपनी वस्तु दिखाना चाहे या बात मनवाने के लिए इधर-उधर की बाते करे तो उससे पीछा छुड़ाने के लिए कहते हैं।

दुकान-सी दाता न घर-सा भिखारी—दूकान जैसा कोई दाता नहीं है और घर जैसा कोई भिखारी। गृहस्थी के लिए आवश्यक वस्तुओं को दुकान से ही लाया जाता है या उन्हें ख़रीदने के लिए दुकान से ही धन प्राप्त किया जाता है फिर भी गृहस्थी की आवश्यकताएँ पूरी नहीं होतीं। तुलनीय : कौर० दुकान-सी दाता, न घर-सा भिखारी।

दुख एक साथ आते हैं—जब कोई व्यक्ति अनेक परेशानियों से एक ही बार घिर जाता है तब उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : सं० संघचारिणोऽनर्था:; पंज० दुख कट्ठे आंदे हन; अं० Difficulties always come in train; It never rains but it pours.

दुख का दिन भी जाता है और सुख का भी—दुख और सुख दोनों की घड़ियाँ बीत जाती है। अर्थात् समय किसी का इन्तज़ार नही करता। तुलनीय : असमी दुखीरो दिन् याय् सुखीरो दिन याय्; पंज० दुख दा दिन भी जांदा है अते सुख दा भी; अं० Time and tide wait for none.

दुख टला, राम बिसारा—विपत्ति से मुक्ति मिलते ही राम (ईश्वर) को भूल गया। स्वार्थियों के प्रति व्यंग्य मे कहते हैं जो स्वार्थ पूरा होते ही साथ छोड़ देते है। तुलनीय : मल० संकट समयत्तुनेर्न्नु सौम्यम् वन्नाल् मरक्कुम्; पंज० दुख गया राम गया (पुलया); अं० Vows made in storms are forgotten in calms.

दुखड़ी झा दरभंगा गए—मूर्खता की चरम सीमा पर पहुँचे हुए व्यक्ति को लक्ष्य करके उक्त कहावत कही जाती है। किसी के आस-पास के बहुत से व्यक्तियों से पूछना आरंभ किया कि कोई दरभंगा जाएगा। किसी ने उक्त जगह जाना स्वीकार नही किया। रात को पूछनेवाले व्यक्ति का बड़ा भाई (दुखड़ी झा) चुपके से उठा और दरभंगा जाकर लौट भी आया। इस पर उसके भाई ने कहा, 'कहाँ गए थे?' उसने कहा 'दरभंगा।' फिर उसके भाई ने पूछा, 'बिना मेरे पूछे क्यों गए?'

दुखते दाँत को उखाड़ना ही चाहिए—जिस दाँत से रोज़-रोज कष्ट हो उसे निकलवा देना चाहिए। आशय यह है कि जिसके कारण निरंतर कष्ट पहुँचता हो उसे निकाल बाहर कर देना चाहिए। तुलनीय : अव० पिरात दाँत का उखाड़ फेंके चाही; पंज० दुखदे दंद नूं पुट देना चाहिदा है।

दुखते चोट कनौंड़े भेंट— नीचे देखिए।

दुखते पर ही चोट लगती है— जिस अंग में दर्द हो या चोट लगी हो उसी पर बार-बार चोट लगती है। जब विपत्ति पर विपत्ति आती रहती है तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० लाग्योड़ी में लाग्या करे; स० छिद्रष्वनर्था बहुली भवंति; पंज० लग्गे उते लगदी है; ब्रज० दूखते इ पै चोट लागै; अं० Misfortune never comes alone.

दुख दीने हू देत सुख, उत्तम पुरुष सुजान—सज्जन व्यक्ति को यदि कोई कष्ट पहुँचाता है तो भी वह उसे सुख देता है। अर्थात् सज्जन व्यक्ति सदा भलाई ही करते हैं।

दुख नहीं तो सुख नहीं—यदि दुख नहीं उठाओगे तो सुख नहीं मिलेगा। अर्थात् बिना दुख या कष्ट उठाए सुख नहीं मिलता। सुख प्राप्त करने के लिए दुख उठाना आवश्यक होता है। तुलनीय : पंज० दुख नई ते सुख नईं; अं० No pains no gains.

दुख भरे/झेले बी फ़ाख़ता और कौए बच्चे खायें—पंडुक पक्षी (फ़ाख़ता) दुख उठाती है और कौए उसके बच्चे खा जाते हैं। (क) जब श्रम कोई और करे और उसका लाभ कोई और उठावे तो कहते हैं। (ख) जब भले लोग दुख झेले और दुर्जन सुखी रहे तब भी ऐसा कहते हैं।

दुख में रामा, सुख में बामा—दुख में तो लोग भगवान् को याद करते हैं पर सुख में स्त्री को। अर्थात् (क) सुख में सब चैन से जीवन बिताते हैं पर जब दुःख पड़ता है तो भगवान की ओर ध्यान करते हैं। (ख) स्वार्थी के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० दुख बिच राम दा नाँ सुख बिच बौटी दी बाँह।

दुख में सुख की क़दर होती है—दुख या विपत्ति आने पर ही सुख का महत्त्व मालूम पड़ता है।

दुख सुख का जोड़ा है—नीचे देखिए। तुलनीय : ब्रज० दुख सुख कौ जोड़ायै।

दुख सुख बहन भाई हैं—दुख और सुख, बहन और भाई के समान एक दूसरे से संबंधित हैं। अर्थात् (क) बिना दुख के सुख नहीं होता। (ख) जीवन सदा एक जैसा नहीं रहता, कभी दुख आता है तो कभी सुख।

दुख सुख मानने का है—दुख और सुख को जितना ही मानें उतना ही कष्ट या आनन्द मिलता है। (क) संन्यासी कहा करते हैं क्योंकि उनके लिए दुख-सुख दोनों एक से हैं। (ख) दुख और मोह घटाने के लिए भी कहते हैं। इस संबंध में एक कहानी कही जाती है : एक बनिया व्यापार करने विदेश गया और उसे वहाँ 15 वर्ष तक रहना पड़ा। अपने पीछे वह एक वर्ष का पुत्र छोड़कर गया था, जो अब सोलह वर्ष का युवक हो चुका था। यह युवक अपने पिता से मिलने उसी देश चल दिया। उधर बनिया भी घर लौट रहा था। रास्ते में भाग्यवश दोनों एक ही सराय में ठहरे। पुत्र पहले पहुँचा था और उसने जाते ही एक कमरा जो खाली था किराए पर ले लिया। पिता बाद में पहुँचा किन्तु कमरा कोई खाली था नहीं, इसलिए उसने सराय के मालिक को अधिक रुपया देकर लड़के से कमरा ख़ाली करा लिया। लड़का रात-भर बाहर जाड़े में ठिठुरता रहा और बाप आराम से खर्राटे भरता रहा। सुबह लड़के से बातचीत करने से बनिए को पता चला कि यह तो उसी का पुत्र है तो उसे बहुत दुख हुआ। इस प्रकार रात में उसे कमरे से निकलवाकर उसे प्रसन्नता हुई थी और सवेरे यह जानकर कि वह उसका पुत्र है उसे दुख हुआ। तुलनीय : पंज० दुख सुख मनन दा है।

दुख-सुख सबके साथ लगा हुआ है—दुख-सुख हर व्यक्ति के जीवन में आता है, इसमें कोई मुक्त नहीं रहता। तुलनीय : पंज० दुख सुख हर इक नाल लगा हुदा है।

दुखिया का घर जले, सुखिया पीठ सेंके—ग़रीब का घर जल रहा है और संपन्न उससे अपनी पीठ सेंक रहा है। (क) सामर्थ्यहीन की विवशता का सामर्थ्यशाली खूब लाभ उठाते हैं। (ख) ग़रीबों की परेशानियों की ओर कोई ध्यान नहीं देता। (ग) किसी की मुसीबत को देखकर जब दूसरा आनंद का अनुभव करता है तब भी कहते हैं। तुलनीय : भोज० दुखिया क घर जरे सुखिया पीठ सेंके; मैथ० दुखिया के घर जरे सुखिया पीठ सेंकें; पंज० दुखी दा कर फकोये ते सुखी पिठ सेंके।

दुखिया दुख रोवे सुखिया कमर तोड़े—नीचे देखिए।

दुखिया दुख रोवे, सुखिया जेब टोवे—दुखी व्यक्ति अपनी परेशानियों को सुनाता है और सुखी उसकी जेब को टटोलता है। (क) दूसरे के दुख की तरफ़ ध्यान न रखकर अपनी ही स्वार्थ-सिद्धि में लगे रहने वाले के प्रति कहते हैं। (ख) वकीलों के प्रति भी कहते है, क्योंकि वे किसी के दुख-दर्द से प्रभावित नहीं होते, उन्हें केवल अपनी फ़ीस से मतलब होता है। तुलनीय : पंज० दुखी दुखां नू रोके सुखी जेब टोवै।

दुखिया रोवे, सुखिया सोवे—(क) दुखी व्यक्ति रात-दिन रोते हैं और सुखी चैन से सोते हैं। (ख) जब किसी दुखी की याचना पर कोई धनी व्यक्ति ध्यान नहीं देता तो भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० दुखी रोवे सुखी सोवे।

दुखी को तीज क्या, त्यौहार क्या?—दुखी व्यक्ति के लिए तीज-त्यौहार सब समान है। (क) दुखी व्यक्ति पर्व के अवसर पर भी दुखी रहता है, क्योंकि उसके हृदय में दुख रहता है, दूसरों की प्रसन्नता से उसे कोई प्रसन्नता नहीं होती। (ख) निर्धन व्यक्ति अपने त्यौहार भी ढंग से नहीं

मना पाते। तुलनीय : भीली—दुखत्या ना वार ने तेवार हारा एक।

दुखे पेट, बतावे माथा—दर्द पेट में है लेकिन कहते हैं कि सिर में दर्द हो रहा है। (क) बेतुकी बातें करने वाले के प्रति कहते हैं। (ख) मूर्ख के प्रति भी कहते है जिसे सामान्य चीजों का भी ज्ञान नही होता। (ग) धोखा-धड़ी की बातें करने वालों के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : मेवा० दुखे तो पेट बतावे माथो।

दुखे पेट मले छाती—ऊपर देखिए। तुलनीय : मेवा० दूखे तो पेट कूटे छाती।

दुजहाँ जोरू, कोतवाल की घोड़ी; जितना नाचे उतना थोड़ी—दूसरे विवाह की पत्नी और कोतवाल की घोड़ी जितना परेशान करे उतना थोड़ा ही है। दूसरे विवाह की पत्नी के नाज-नखरों को देखकर व्यंग्य मे ऐसा कहते है। तुलनीय : कौर० दुजहां जोड़ू कोतवाल की घोड़ी, जितणा नाचै उतणा थोड़ी।

दुधाड़ी तक साँप रेंगता है—दुधाड़ी (दूध गर्म करने का बर्तन या स्थान) तक साँप रेंगकर पहुँच जाता है, अर्थात् लाभ मिलने के स्थान तक कष्ट या कठिनाइयों का सामना करके भी लोग पहुँच जाते हैं। तुलनीय : अव० दुधांड़ी तक संपवा रेंगावत है।

दुधार गऊ की लात भी भली—(क) लाभ पहुँचाने वाले की घुड़कियाँ भी सही जाती हैं। (ख) काम करने वाले या कमाऊ व्यक्ति की दो कड़वी बातें सही जाती हैं। तुलनीय : मरा० दुभत्या गाईची लाथहि चांगली; राज० दूझती गायरी लात सेवणी पड़ें; गढ़० दुधाल गोरु को लात भड़ाक, दुधारे गाई क लातो भला; अव० दुधार गाय की लात सहे परत है; बुंद० दुधार गइया की दो लातें सउनें परतीं; गढ़० दुधाल गोरु को लात भड़ाक; असमी—दोवानी गाइर लाठि खाव पारि; हरि० दूध आळी की तै लात बी आच्छी/सही जां; पंज० मुई दी गाँ दी लत भी पैंदी चंगी; अं० Give me roast meat and beat me with the spite.

दुधार गाय की दो लात भी भली—ऊपर देखिए। तुलनीय : ब्रज० दुधार गाय की तौ दो लात ऊ अच्छी।

दुधारु गाय की लात भी भली—दे० 'दुधार गऊ की ···'।

दुधारु गाय की दो लात भी अच्छी—दे० 'दुधार गऊ की···'।

दुधारु गाय की लात मीठी—दे० 'दुधार गऊ की···'।

तुलनीय : छत्तीस० दुधारी गरुवा के लातो मीठ।

दुधारू दाना खाय, बाँझ मुँह चाटें—दूध देने वाली गायों को अच्छा चारा मिलता है और बाँझ गायें उनका मुंह चाटकर ही संतोष करती हैं। (क) जब परिश्रमी व्यक्तियों के साथ निकम्मों को भी कुछ प्राप्त हो जाए तो निकम्मों के प्रति कहते हैं। (ख) जिससे कुछ लाभ होता है उसी का आदर होता है, जिससे कुछ लाभ नही होता उसे कोई नही पूछता। (ग) जब किसी इज्जतदार आदमी के साथ रहने से किसी छोटे आदमी का कुछ भी मान हो जाय तो उसके प्रति भी कहते है। तुलनीय : गढ़० लंदा गोरु पींडो खौन, बांडा थोवड़ा चाटौन।

दुधारू भी उतना खाय, जितना खाय बाँझ—दूध देने वाली गाय या भैंस भी उतना ही चारा खाती है जितना दूध न देने वाली। (क) दोनों पर व्यय एक-सा ही पड़ता है इसलिए दूध वाली गाय या भैंस रखना ही बुद्धिमत्ता है। (ख) जब दो वस्तुओं पर समान रूप से व्यय होता है और एक से लाभ होता है और दूसरे से नही तो कहते है। तुलनीय : राज० टार इ खावै कुटार इ खाव; पंज० मुई दी भी उन्ना खाय जिन्ना रंडी (बरकडी)।

दुनिया का मुँह किसने बंद किया है?—किसी की वाणी पर रोक नही लगाई जा सकती। जब कोई किसी सज्जन व्यक्ति की निन्दा करता फिरता है तो कहते है। तुलनीय : अव० दुनिया के मुँह कउन बंद किहेस है; गढ़० घड़ा को मुख बुजेंद पर घड़्याँमा को मुख नि बुजेद; मरा० जगाचें तोंड कोण धरणार; ब्रज० दुनिया कौ मुँह कौन बन्द करै; पंज० लोकां दा मुह किन बद कीता है।

दुनियाँ की छाने खाक, उसी के जागें भाग—संसार में ठोकरें खाना वाला ही धनवान बनता है। अर्थात् जो व्यक्ति धन के लिए कठिन परिश्रम करता है वही उसे पाता है। तुलनीय : भीली—धूल खाये ज्यो धाई ने खाये; पंज० थां थां दी खे छाने ओही अपने भाग जगावे।

दुनिया के झगड़ों में क्या रखा है?—संसार के मिथ्या-प्रपंचों में कुछ भी सार नही है। समय का सदुपयोग करने तथा व्यर्थ की बातों में समय नष्ट न करने के लिए कहते हैं। तुलनीय : भीली—दन्या ना जूटा जगड़ां मायने लागवू; पंज० लोकां दे चगडियां बिच की रखया है।

दुनिया को किसी तरह चैन नहीं—जब हर दशा में लोग किसी में कोई दोष बतलाते हैं तो कहते है। इस लोकोक्ति के संबंध में एक मनोरंजक कथा कही जाती है : एक बार एक बुड्ढा और उसका लड़का कही जा रहे थे। दोनों

अपने टट्टू पर बैठे थे। राह में कुछ लोगों ने उन्हें टोक दिया और कहा, 'तुम्हें शर्म नहीं आती, दो-दो आदमी इस कमज़ोर टट्टू पर बैठे जा रहे हो।' यह सुनकर लड़का पैदल चलने लगा। कुछ दूर पर राह चलने वालों ने फिर कहा, 'देखो इस बुड्ढे को, बच्चा पैदल चल रहा है और खुद कैसे ठाठ से टट्टू पर बैठा है।' इस पर बुड्ढा उतर गया और उसने लड़के को टट्टू पर बैठा दिया। कुछ और आगे चलने पर एक आदमी ने फिर टोक दिया, 'क्या कलियुग का जमाना है। बुड्ढा बाप पैदल चल रहा है और सपूत अकड़कर घोड़े पर बैठा है।' यह सुनकर दोनों पैदल चलने लगे, किन्तु लोगों को फिर भी चैन नहीं पड़ा। कुछ दूर जाने पर और राही मिले और वे हँसते हुए कहने लगे कि देखो मूर्ख ऐसे ही होते हैं। घोड़ा पास है और पैदल चल रहे हैं। यह देखकर वे दोनों बहुत परेशान हुए और दोनों ने झुंझलाकर घोड़े के चारों पैर बाँध कर लाठी पर लटका लिया और उसे उठाकर चल दिए। अब तो लोगों को तमाशा मिल गया और वे खूब तालियाँ बजाकर उनका मज़ाक़ उड़ाने लगे। अन्त में उन्होंने सोचा कि सारी परेशानियों की जड़ यह टट्टू है और उससे छुटकारा पाने के लिए उसे नदी में ढकेल दिया और अपने रास्ते चल दिए। तुलनीय : मरा० लोकांना खोड काढल्या शिवाय चैन पडत नाही; अव० दुनिया का कौनो तरह चैन नाही परत; पंज० लोकां नूं किसे तरह भी चैन नहीं।

दुनिया चंद रोज़ा है—दुनिया थोड़े (चंद) दिन की है। अर्थात् दुनिया की सभी चीजें नाशवान है कुछ भी स्थायी नहीं है।

दुनिया चली सोने, फूहड़ चली पोने—सब लोग सोने जा रहे हैं तो फूहड़ भोजन पकाने जा रही है। बेतुका काम करने वालों के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : कौर० दुनिया चली सोने, फूहड़ चली पोने।

दुनिया चूके चुग़ल कभी न चूके—अन्य लोग कभी-कभी कोई बात भूल जाते हैं, पर चुग़ली करने वाले कभी नहीं चूकते। चुग़ली करने वालों के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० चुगल को चूकैनी और सगळ चूके है।

दुनिया छोड़ी खाने को, या गंगा घाट नहाने को—खाने के लिए संन्यासी बने हो या गंगा-तट पर स्नान करने के लिए। ढोंगी साधुओं को कहते हैं जो केवल मुफ़्त का खाने के लिए गेरुए वस्त्र पहनते हैं।

दुनिया जा-ए-उम्मेद है—दुनिया नष्ट हो जाए फिर भी आशा रहती है। आशय यह है कि आशा (उम्मेद) कभी समाप्त नहीं होती।

दुनिया ज़ाहिरपरस्त है—दुनिया बनावट (दिखावट) को पसंद करती है। (क) जब किसी साधारण वेश-भूषा वाले किन्तु विद्वान् व्यक्ति की अपेक्षा किसी सामान्य ज्ञान वाले किन्तु तड़क-भड़क वाले की अधिक इज़्ज़त हो तो कहते हैं। (ख) जब किसी निर्धन किन्तु तड़क-भड़क वाले की इज़्ज़त हो तथा साधारण वेश-भूषा वाले किन्तु धनी व्यक्ति की इज़्ज़त न हो तो भी कहते हैं।

दुनिया झुक सकती है झुकाने वाला चाहिए—दुनिया तो झुक सकती है, आवश्यकता केवल झुकाने वाले की है। आशय यह है कि (क) बलवान के सामने सभी सिर झुकाते हैं (ख) कर्मठ या परिश्रमी का सभी आदर करते हैं। तुलनीय : पंज० दुनिया चुकदी है जे कोई चुकान वाला होवे।

दुनिता ठगिए मकर से, रोटी खाइये शकर से—जो छल से संसार को ठगते हैं और आराम से अपनी ज़िन्दगी के दिन बिताते हैं उनके प्रति कहते हैं। आशय यह है कि इस दुनिया में सीधे आदमी का गुज़ारा नहीं है। तुलनीय : मरा० जगाला लबाडीनें फसवावे नि साखरेशी पोळखावी; बुंद० दुनिया ठगिये मक्कर सें, रोटी खैये सक्कर सें; ब्रज० दुनिया मारी मक्कर ते, रोटी खाई सक्कर ते।

दुनिया ठगी का बाज़ार है—संसार में ठग ही भरे पड़े हैं। (क) प्रत्येक क़दम सँभाल कर उठाने वाले ही लक्ष्य तक पहुँच पाते हैं। (ख) प्रत्येक वस्तु को देखभाल कर लेना चाहिए। तुलनीय : भीली – इ ते ठग वेपार है, जोई ने लेवू; पंज० दुनिया ठगां दा बजार है।

दुनिया दुरंगी मकारा सराय, कहीं खैर खूबी कहीं हाय-हाय—यह संसार धोखेबाज़ों के स्थान जैसा दो तरह का है, कहीं पर तो खूब आराम है और कहीं पर हाय-हाय मची हुई है। आशय यह है कि संसार में सब लोग एक जैसे नहीं हैं, कोई सुखी है तो कोई दुखी। तुलनीय : भीली – दुनिया बेरंगी है, जठे हाऊ देखे जठे फरे; पंज० दुनिया रंग रंगीली किते खैर किते वैर; ब्रज० दुनिया दुरंगी मक्के की सराय, कहूँ खैर खूबी कहूँ हाय-हाय।

दुनिया दोरंगी है—(क) सबके बिचार अलग-अलग होते हैं। एक ही बात या वस्तु से एक को प्रसन्नता होती है और दूसरे को दुख। (ख) संसार में सभी व्यक्ति एक से नहीं हैं कोई दुखी, कोई सुखी, कोई अच्छा, कोई बुरा, कोई धनी, कोई निर्धन आदि हैं। तुलनीय : भीली—आज काल दुनिया बो रंगी है; पंज० दुनियां बिच जिन्ने मुँह उन्नियां गल्लां हन।

दुनिया धोके की टट्टी है— संसार मिथ्या है। वेदांतियों तथा सूफ़ी मज़हब वालों का ऐसा कहना है। तुलनीय : पंज० दुनियां तोके दी टट्टी है।

दुनिया बा-उम्मेद क़ायम है—दुनिया का सारा काम आशा पर चल रहा है, अर्थात् दुनिया आशा पर टिकी हुई है।

दुनिया बेसबात है—संसार नश्वर है। (बेसबात = जिसकी स्थिरता न हो, क्षण भंगुर।

दुनिया मुर्दापसंद है—दुनिया मरे हुए लोगों की प्रशंसा करती है। जब आदमी मर जाता है तब लोग उसकी प्रशंसा करते है, इसलिए कहा जाता है।

दुनिया में एक से एक पड़ा है—संसार में किसी भी वस्तु या मनुष्य को सर्वश्रेष्ठ नहीं कहा जा सकता। जब कोई अपने या अपनी किसी वस्तु को सर्वश्रेष्ठ बताये तो उसके प्रति कहते है। तुलनीय : राज० पिरथी माथै भला-भली है; पंज० दुनियां बिच इक तो वद के इक हन; ब्रज० दुनिया में एक ते एक परे हैं।

दुनिया में कौन किसका ?—अर्थात् दुनिया में कोई किसी का नहीं है, सब स्वार्थ के साथी है। तुलनीय : मैथ० दुनियां में के ककरा होलइ छै; भोज० दुनिया मे केहु क केहु ना हउ; ब्रज० दुनिया मे कोई काऊ कौ नायें; पंज० दुनियां बिच कोई किसेदा नई।

दुनिया में डेढ़ अकल, एक ख़ुद में, आधी सब में—संसार में कुल बुद्धि डेढ़ है जिसमें से एक स्वयं में और आधी सारे संसार वालों में। अर्थात प्रत्येक मनुष्य अपने को संसार का सबसे बुद्धिमान मनुष्य समझता है। जो व्यक्ति मूर्ख होते हुए भी अपने को बहुत बुद्धिमान समझे उसके प्रति व्यंग्य मे कहते है। तुलनीय : राज० दुनिया मे डोढ अकल हुवै एक मे आप आधी में दूजा।

दुनिया में दो चीज़े हैं; बेटा, बेटी—जब लड़की पैदा होने पर लोग दुखी होते है तब उन्हें संतोष दिलाने के लिए ऐसा कहते है। तुलनीय : पंज दुनिया बिच दो ही चीजां हन इक पुतर इक पुतरी।

दुनिया में भेड़ चाल है—जिस तरह जो भेड़ आगे चलती है उसी के पीछे सभी भेड़े चल देती हैं। उसी तरह दुनिया में एक आदमी जैसा करता है वैसा ही सभी करने लगते हैं। अंधानुकरण करने वालों के प्रति कहते हैं। पंज० तुलनीय : दुनिया बिच भेड चाल है।

दुनिया में मां-बाप के सिवा सब कुछ मिल जाता है—संसार में धन-संपत्ति, संतान, नौकर-चाकर आदि सभी कुछ मिल जाता है, किंतु माता-पिता जैसा निःस्वार्थ प्रेम करने वाला नही मिलता अर्थात् माता-पिता जैसा कोई प्यार नही करता। तुलनीय : भीली—दन्या में मा बाप नी मले, बीजू हारू मले; पंज० दुनिया बिच मां पिओ दे सिवा सब कुछ मिल जांदा है।

दुनिया में सब दिन देखने पड़ते हैं—आशय यह है कि मनुष्य के जीवन में अच्छे-बुरे सभी दिन आते हैं। तुलनीय : हरि० दुनिया में सब दिन देखने पडे सै; ब्रज० दुनिया में सब देखनौ परै; पंज० दुनिया बिच सारे दिन देखने पैदे हन

दुनिया में सब दुखी—संसार में सभी व्यक्ति दुखी है। (क) प्रत्येक व्यक्ति को किसी न किसी चीज़ का अभाव रहता है। (ख) संसार में किसी को संतोष नहीं है, इसलिए सब दुखी हैं। तुलनीय : भीली—दन्या माय को चवत्यो नी है; ब्रज० दुनियां में सुख कहाँ; पंज० दुनिया बिच सारे दुखी।

दुनिया में हाथ-पैर हिलाना नहीं अच्छा, मर जाना पै उठकर कहीं जाना नहीं अच्छा—दुनिया में कुछ करना अच्छा नही है। मर जाना अच्छा है पर कहीं जाना नहीं। निकम्मों एवं आलसियों के प्रति व्यंग्य में कहते है जो तकलीफ़ सहते हैं, मगर कुछ करना नही चाहते।

दुनिया रंग-बिरंगी है—संसार मे भाँति-भाँति के लोग हैं, अर्थात् अच्छे भी हैं और बुरे भी। तुलनीय : भीली—आज काल दुनिया दो रंगी है।

दुनिया है और ख़ुशामद है—संसार मे चापलूसी से ही काम निकलता है।

दुनिया हो और तुम हो—जब तक दुनिया रहे तुम जीवित रहो। एक आशीर्वाद।

दुबला कुनबा सराप की आस—कमज़ोर या ग़रीब परिवार को शाप (सराप) की ही उम्मीद या आशा रहती है। जब कोई सबल निर्बल का धन छीन ले तो उसके पास सिवा कोसने के और कोई चारा नही रहता। तुलनीय पंज० मरया टब्बर सराप दी आस।

दुबला जेठ देवर जैसा—दुबला जेठ (पति का बड़ा भाई) देवर बराबर होता है। आशय यह है कि दुर्बल व्यक्ति से कोई नही दबता। या उसकी कोई इज्ज़त नही करता। तुलनीय : राज० दूबळो जेठ देवराँ बरोबर; पंज० मर्या जेठ देर बरगा।

दुबला देख अड़ना नहीं, मोटा देख डरना नहीं—किसी को दुबला-पतला देखकर लड़ाई करने के लिए अड़ नही जाना चाहिए तथा किसी को मोटा-ताज़ा देखकर डर भी

नहीं जाना चाहिए। आशय है कि मनुष्य को ऊपरी तौर पर देखने से उसकी शक्ति का अनुमान नहीं लगाया जा सकता। तुलनीय : राज० दूबळो देख अड़नो नहीं, मातो देख डरणो नहीं; पंज० मरे नूं देख के आकड़ना नहीं चाहिदा अते मोटे नू देख के डरना नहीं चाहिदा; ब्रज० दुबलौ देखि अड़ैना, मोटौ देखि डरैना।

दुबली कुतिया हिरनी खदेरे—कमज़ोर कुतिया हिरनी को खेद (भगा) रही है। जब कोई असमर्थ व्यक्ति किसी बड़े कार्य को करता है जो उसकी सामर्थ्य से बाहर होता है तो व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। (हिरनी काफ़ी तेज़ दौड़ती है इसलिए कमजोर कुतिया के लिए उसका पीछा करना असंभव है)।

दुबली बिटिया को घंघरिया भारी—कमज़ोर लड़की के लिए घाघरा (घँघरिया) भी भारी होता है। (क) जो अपने को बहुत सुकुमार जनाते हैं उनके प्रति व्यंग्य में कहते है। (ख) कमज़ोर आदमी के लिए साधारण काम भी मुश्किल होता है।

दुबली बिल्ली चूहों से कान कटवाती है—निर्बल व्यक्ति बलवान के वश में आकर उसका दास बन जाता है।

दुबली बेटी को छिगुनी भी भार—कमज़ोर लड़की को छिगुनी (सबसे छोटी उँगली) भी भारी मालूम पड़ती है। ऊपर देखिए। तुलनीय : मेवा० दूबला बेटा ने कणगती को भार।

दुबले कलावंत की कौन सुने ?—ग़रीब गायक का गाना कोई नही सुनता। आशय यह है कि निर्धन या निर्बल का कोई सम्मान नही करता।

दुबले को दुख बहुत—कमज़ोर को बहुत से दुख घेरे रहते हैं। (क) दुर्बल व्यक्ति को अनेक रोग लगते हैं। (ख) निर्धन को बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ता है। तुलनीय : राज० दूबळां ने दोखा घणा ज्यां चीचड़ का पाँव।

दुबले को दो असाढ़—दुबले के लिए सदा दो आषाढ़ (असाढ़) होता है। (दो आषाढ़ होने से परेशानियाँ बढ़ जाती हैं)। आशय यह है कि कमज़ोर या निर्धन को सदा परेशानियाँ घेरे रहती हैं। तुलनीय : मेवा० दूबला ने दो अषाढ़।

दुबले को मक्खी बहुत लगती है—दुर्बल पशु को मक्खियाँ बहुत परेशान करती हैं। तात्पर्य यह है कि दुर्बल को सभी परेशान करते हैं या दुर्बल और निर्धन व्यक्ति पर विपत्तियाँ ज्यादा आती हैं। तुलनीय : पंज० मरे नूं मक्खियाँ बड़ियाँ लगदियां हन।

दुबले मारें शाह मदार—शाह मदार भी दुर्बल को ही कष्ट देते हैं। अर्थात् दुर्बल या ग़रीब को सभी परेशान करते हैं। तुलनीय : सं० दैवो दुर्बल घातक।

दुबिधा में दोऊ गए, माया मिली न राम—संशय की दशा में दोनों चले गए और धन के लालच में ईश्वर नहीं मिला। जब कोई व्यक्ति एक साथ दो चीज़ों को प्राप्त करना चाहता है और कभी इधर ध्यान देता है तो कभी उधर, और ऐसी दशा में जब उसे कुछ भी नहीं मिल पाता तो ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० दुविधा मा दुइनो गएंन माया मिली न राम; राज० दुवधा में दोनूं गया माया मिली न राम; छत्तीस० दूनों डाहर ले गइन पांड़े, हलुवा मिलिस न माँड़े; सं० संशयात्मा विनश्यती; मल० इरुतोणियिल् काल् बच्चाल् वेळळत्तिल् किटक्कुम्; अं० Between two stools one falls to the ground.

दुबिधा में दोनों गए, माया मिली न राम—ऊपर देखिए।

दुम दबा के भाग गए—दीनता दिखाकर भाग गए। डरपोक या कायर के प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० दुब दबा के नठ गए।

दुम पकड़ी भेड़ की बार हुए न पार—अशक्त या निर्बल का सहारा पकड़ने से कोई लाभ नहीं होता।

दुरंगी छोड़के इक रंग होजा, सरासर मोम हो या संग होजा—या तो मोम के समान मुलायम हो जाओ या पत्थर की तरह कठोर, बीच का मार्ग अच्छा नहीं होता। दुहरी नीति या दुरंगेपन को छोड़ने के लिए कहा गया है।

दुरदिन परे रहीम कहि भूलत सब पहिचानि—रहीम कवि कहते हैं कि कुसमय में सारे परिचित लोग अपरिचित हो जाते हैं। अर्थात् विपत्ति में कोई सहायता नही करता।

दुर्गुणी आदमी से गुणी पशु का साथ अच्छा—बुरे व्यक्ति से अच्छे पशु की संगति अच्छी होती है। आशय यह है कि बुरे व्यक्ति से सदा दूर रहना चाहिए। तुलनीय : भीली—गुणनो तो वन भलो को गुणनो मनख खोटो।

दुर्जन दर्पन सम सदा, करि देखो हिय गौर—हृदय में विचार करके देख लीजिए कि दुष्टों की प्रकृति दर्पण के समान होती है। अर्थात् जैसे दर्पण के सामने से देखने से कुछ और दिखाई देता है किन्तु दूसरी तरफ कुछ और उसी प्रकार दुष्ट लोग सामने तो चापलूसी करते हैं किंतु पीठ पीछे बुराई।

दुर्बल के भगवान भी घातक—कमज़ोर को ईश्वर भी

कष्ट देते हैं। अर्थात् कमज़ोर या निर्धन को सभी कष्ट पहुँचाते हैं। तुलनीय : अव० दुर्बल का दइयू घातक; दैवो दुर्बल घातक:।

दुर्बल को न सताइए जाकी मोटी आह—कमज़ोर या निर्धन व्यक्ति को परेशान नहीं करना चाहिए क्योंकि उसकी आह बहुत बुरी होती है। अर्थात् दुर्बल मनुष्य को सताने वाला अधिक समय तक सुखपूर्वक नहीं रह पाता क्योंकि उसके शाप से सुख-चैन शीघ्र नष्ट हो जाते हैं।

दुर्बल में क्रोध होता है—(क) कमज़ोर व्यक्ति बहुत जल्दी नाराज़ हो जाते हैं। (ख) ओछे लोग थोड़े में ही इतराने लगते हैं। तुलनीय : मल० एळिय पुरते वातम् कोच्चु; पंज० मरे बिच गुस्सा बड़ा हुंदा है; अं० A little pot is soon hot.

दुर्बलों का उत्साह सोने तक—दुर्बलों का उत्साह सोने के समय तक ही रहता है बाद में काम करते समय ठंडा पड़ जाता है। तात्पर्य यह है कि दुर्बल व्यक्ति काम करने से कतराते हैं। तुलनीय : सं० दुर्बलाना समुत्साहः शयनावधि वर्तते।

दुर्लभं भारते जन्म मानुष्यं तत्र दुर्लभम्—भारत में जन्म मिलना दुर्लभ है और उसमें भी मनुष्य जन्म मिलना तो अति दुर्लभ है। भारत भूमि और मनुष्य योनि की महत्ता प्रतिपादित करने के लिए ऐसा कहा जाता है।

दुर्लभ ब्रह्मलीन, विज्ञानी—ब्रह्म में लीन रहने वाले तथा विज्ञानी बहुत ही दुर्लभ हैं। अर्थात् ऐसे लोग बहुत कम होते हैं।

दुलहा का पत्तल नहीं बजनियाँ को थाली—दूल्हे को पत्तल भी नहीं मिला और बजनियाँ (बाजा बजाने वाले) को थाल में भोजन दिया गया है। जब प्रमुख व्यक्ति की कोई बात भी न पूछे और उसके सेवकों का आदर करे तो ऐसा कहते है। तुलनीय : भोज० दुलहा के पतरी नाही बजनियाँ के थरिया; अव० दुलहा का पतरी नाही, बजनियन का थारी; मरा० नवर देवला पत्रावळ नाही नि वाजंत्रयाला ताट; ब्रज० दूलह कूं पत्तरिऊ नायें; बाजे वारे कूं थारी; पंज० लाड़े नू पत्तल भी नई मिली ते बाजे वालेनू थाली।

दुलहा दुलहिन मिल गए झूठी पड़ी बरात—मित्रों में परस्पर मिलाप हो गया और बीच में पड़नेवाले व्यर्थ में बुरे बने।

दुलहा साथे सजै बरात—दूल्हा के साथ ही बारात की भी शोभा होती है अन्यथा नहीं। आशय यह है कि मुख्य अतिथि के साथ ही दूसरे आमंत्रितों की भी शोभा होती है। तुलनीय : पंज० लाड़े नाल सज्जे जंज।

दुलारी तिरिया ईंट का लटकन—जब कोई दुलार में आकर अनुपयुक्त वस्तु इस्तेमाल करता है तब कहते है।

दुलारी बिटिया ईंट का लटकन—ऊपर देखिए।

दुलारे बालक मार खायें—जिन बच्चों को अधिक लाड़-प्यार किया जाता है वे दूसरों के बच्चों से मार खाकर घर आते हैं। (क) बचपन में जिन बच्चों की अधिक साज-सँभाल की जाती है वे निर्बल रह जाते हैं और सदा सहायता के मोहताज रहते है। (ख) अधिक दुलार करने से बच्चे शरारती हो जाते हैं जिससे उन्हें बाहर मार खानी पड़ती है। तुलनीय : भीली—ढाँकियाँ पूत नी मोटा थाये; पंज० लाडले मुंडे मार खान।

दवा और दवा नित करनी चाहिए—ईश्वर की आराधना और स्वस्थ रहने का उपाय प्रतिदिन करना चाहिए। तुलनीय : अव० दुवा दवा रोज करै चाही।

दुविधा में दोऊ गए, माया मिली न राम—दे० 'दुबिधा में दोऊ…'।

दुविधा में दोनों गये माया मिली न राम—दे० 'दुविधा में दोऊ गए…'।

दुशाले में टाट का पैबंद—दुशाले जैसे क़ीमती और सुन्दर वस्त्र में टाट जैसे मोटे वस्त्र का पैवद (जोड़) लगाते हैं। बेमेल कार्य करने वाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : भोज० दुसाला टाटे कऽ पेवन।

दुशाले में लपेट के मारते हैं—मीठी बोली में बुरा-भला कहने या शर्मिन्दा करने के प्रति कहते हैं।

दुश्मन अगर क़वीस्त निगहबां क़वीतर अस्त—यदि शत्रु बलवान है तो कोई डर नहीं क्योंकि रक्षक या बचाने वाला (ख़ुदा) उससे भी अधिक शक्तिशाली है।

दुश्मन अपने हाथ पाँव—हाथ-पाँव आदि इन्द्रियाँ शत्रु के समान हैं; अतः इन्हें वश में रखना चाहिए।

दुश्मन कहाँ ? बग़ल में—आस-पास के लोग ही जल्दी दुश्मन बनते हैं।

दुश्मन की निगाह जूती पर—दुश्मन की नज़र जूते पर ही रहती है (उसे भय रहता है कि जूता निकालकर मार न दे)। आशय यह है कि शत्रु हमेशा भयभीत रहता है। तुलनीय : पंज० दुसमन दिआं अखां जुती उते।

दुश्मन को कभी न छोड़े—शत्रु को परास्त कर देना चाहिए क्योंकि शत्रु का रहना घातक होता है। तुलनीय : अव० दुश्मन को कभी न छोड़ै; पंज० दुसमन नूं कदे न

छडो।

दुश्मन को कम न समझिए—शत्रु को कमजोर नहीं समझना चाहिए। अर्थात् शत्रु से सदैव सतर्क रहना चाहिए। तुलनीय : पज० दुसमन नूं कट न समजो।

दुश्मन कौन ? कहा माँ का पेट—सगे भाई से बढ़कर और कोई शत्रु नही होता।

दुश्मन चे कुनद जो मेहरबाँ बाशद दोस्त—शत्रु हमारा क्या बिगाड़ सकता है जब दोस्त अर्थात् भगवान हम पर कृपालु है।

दुश्मन मिट्टी का भी बुरा- शत्रु यदि मिट्टी का है तब भी वह बुरा ही है। आशय यह है कि शत्रु को निर्बल समझकर उसकी अवहेलना नही करनी चाहिए वह भी हानि पहुँचा सकता है। अर्थात् शत्रु से सदा सतर्क रहना चाहिए। तुलनीय : भीली –वेरी गारे नो खोटो; पंज० दुसमन गारे दा भी पैडा; ब्रज० दुसमन मांटी कौ ऊ बुरौ।

दुश्मन मौका देखकर वार करता है—दुश्मन अवसर पाने पर आक्रमण करता है। जब किसी का शत्रु किसी कारण वश उसका पीछा करना छोड़ दे और वह यह सोचे कि अब वह मेरा पीछा नही करेगा तो उससे सतर्क रहने के लिए ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भीली वैरी वगत माते वगरो करे; पंज० दुसमन मौका दिख के मारदा है।

दुश्मन सोय न सोने दे—शत्रु न तो खुद चैन से रहता है और न दूसरे को चैन से रहने देता है। अर्थात् शत्रुता बहुत बुरी चीज़ है। तुलनीय : पंज० दुसमन सोवे न सोण दे।

दुश्मनों के मन का चीता हुआ—दुश्मनों की इच्छा पूरी हुई।

दुश्मनों में यों रहिए जैसे बत्तीस दाँतों में जीभ—शत्रुओं के बीच इस प्रकार रहना चाहिए जिस प्रकार दाँतों के बीच में जीभ रहती है। दुश्मनों के बीच में बहुत होशियारी से रहना चाहिए क्योंकि ज़रा-सा चूकने से प्राण जाने या हानि होने का डर रहता है। तुलनीय : पंज० दुश्मनाँ बिच चुप न रह चाहिदा है।

दुष्ट की दवा पीठ पूजा—दुष्ट प्रकृति के व्यक्ति दंड देने पर ही ठीक से रहते हैं। तुलनीय : मैथ० खल के दवा पीठ पूजा; भोज० बदमास क दवाई पीठपूजा; पंज० पैड़े दी दवा पिठ पिछे पूजा।

दुष्ट देव की भ्रष्ट पूजा—जो दुष्ट समझाने से न माने और दंड देने से तथा बुरा-भला कहने से सीधा रहे उस पर कहते हैं। तुलनीय : भोज० हरहठ देवता के भरभट पूजा; सं० शठे शाठ्यम् समाचरेत्; पंज० पैड़े रब दी परसट पूजा।

दुष्ट बातों से और मरखना सींगों से मारता है—दुष्ट मनुष्य बातों से और दुष्ट बैल सींगों से मारते हैं या कष्ट पहुँचाते हैं। (क) जब कोई व्यक्ति जानबूझकर किसी को परेशान करे तो उसके लिए ऐसा कहते हैं। (ख) कोई व्यक्ति बार-बार समझाने से भी न माने और अपनी हरकतें करता रहे तो उसके प्रति भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० कुमनखी बोल्यूं मार कुबल्द सिंगू मार; पंज० पैड़ा गलाँ नाल अते मरखना (पैंड़ा टग्गा) सिंगा नाल मारदा है।

दुहूँ बिसा भई मरण हमारी— दोनों तरफ से मेरे मरने की नौबत आ गई है। (क) जब कोई व्यक्ति दोनों ओर से विपत्तियों से घिर जाता है तब कहता है। (ख) जब कोई ऐसे काम में फँस जाता है जिसके करने और न करने दोनों दशाओं में उसे हानि हो तब भी वह ऐसा कहता है। तुलनीय : मरा० दोन्हीं कडून आमचें मरण आहे।

दूजे तीजे किरवरो, रस कुसुंभ महँगाय; पहले छठयें आठयें, पिरथी परलै जाय—सूर्य की संक्रांति के दूसरे और तीसरे दिन खराब होते हैं। रसदार पदार्थ और तेलहन महँगा होता है। लेकिन पहला, छठा, और आठवाँ दिन इतना बुरा होता है कि पृथ्वी पर प्रलय की स्थति उत्पन्न हो जाती है।

दूध औ पूत छिपाये न छिपे –धन और पुत्र छिपाने से नहीं छिपते। तुलनीय : पंज० दुद (पैंहा) अते पुतर लुकान नाल नहीं लुकदे; ब्रज० दूध पूत का छिपै।

दूध का उफान ठंडे जल के छींटे से दब जाता है—आशय यह है कि विनम्रतापूर्वक की गई बातों से क्रोध शांत हो जाता है। तुलनीय : पंज० दुद दे उबाल बिच ठंडा पाणी पाण नाल कट हो जांदा है।

दूध का जला छाछ को फूंक-फूंक कर पीता है—दूध का जला मट्ठे (छाछ) को भी फूंक-फूंक कर पीता है। आशय यह है कि एक बार धोखा खा जाने या हानि उठा लेने के बाद मनुष्य किसी साधारण कार्य को भी बहुत सोच-समझकर करता है। तुलनीय : अव० दूध का जरा माठा फूंक के पीता है; राज० दूधरो बल्योड़ो छाछने फूंक दे-दे'र पीवै; गढ़० दूध को जल्यूं छाँछ भी फूकीक पेंद; जै को बाबू रिखन खायो सो काला मुंडा देखी डरो; फ़ा० मार गज़ीदा अज़ रेसमान मी तरसद; छत्तीस० दूध के जरे ह, मही ला फूंक के पीथे; मरा० दुधाने तोंड भाजडें म्हणजे ताक सुद्धाँ फुकु पितात; मेवा० दूध को दाज्यो छाछ नेई फूंक कर पीचे; हाड़० दूध को दाज्यो छ याछ न बी फूंक-फूंक रपछ; मल० कोळिळ कोण्टटि कोण्ट पूच्च मिन्ना-

मिनुङ्गिने कण्टाल् पेटिक्कुम्; ब्रज० दूध कौ जरयौ छाछि ऐ फूंकि फूंकि के पीवै; अं० A burnt child dreads the fire; Once bitten twice shy.

दूध का जला मट्ठे को भी फूंक-फूंककर पीता है—ऊपर देखिए।

दूध का जला माठा फूंककर पीता है—दे० 'दूध का जला छाछ···'।

दूध का दूध और पानी का पानी—नीचे देखिए।

दूध का दूध पानी का पानी—विशुद्ध न्याय करने पर कहते है। इस लोकोक्ति के संबन्ध में एक रोचक कथा कही जाती है: एक ग्वाला नगर मे दूध बेचने पास के गांव से आया करता था। किसी को पता न चले इसलिए वह राह में एक तालाब से दूध में पानी मिला लिया करता था। धीरे-धीरे उसके पास कुछ धन एकत्र हो गया और उसने सोचा कि इस धन से कुछ सोना आदि ख़रीदकर रख लिया जाए तो अधिक अच्छा है। इसलिए एक दिन उस धन को लेकर नगर को चल दिया। राह में उसी तालाब पर बैठकर उसने सोचा कि यहाँ एकान्त में बैठकर रोटी खा लूं, नगर में कही स्थान भी नही मिलेगा और न ही वहाँ समय मिलेगा। यह सोचकर हाथ-मुँह धोकर वह रोटी खाने लगा। इतने में पास के पेड़ से एक बन्दर उतरा और रुपयों की थैली लेकर फिर पेड़ पर चढ़ गया। ग्वाले ने देखा तो बहुत घबड़ाया और बन्दर को रोटी देकर फुसलाने का प्रयत्न करने लगा, किन्तु बन्दर ने एक न सुनी और रुपयों की थैली खोलकर एक-एक रुपया पानी मे फेंकने लगा। इतनी देर में कुछ राहगीर भी इकट्ठे हो गए थे उन लोगों ने भी ग्वाले के साथ मिलकर बन्दर से थैली लेने का प्रयत्न किया किन्तु निष्फल। अब तक बन्दर ने आधे के लगभग रुपये पानी में फेंक दिए थे और बैठकर ग्वाले का मुंह देख रहा था। ग्वाले ने अब हाथ-पैर जोड़ना आरम्भ कर दिया। अन्त में कुछ रुपयों को छोड़कर बाकी सब रुपये तालाब में फेंक दिए और थैली ग्वाले की ओर फेंक दी। इस प्रकार बन्दर ने दूध के रुपये ग्वाले को दे दिए और पानी के रुपये पानी में फेंक दिए। तुलनीय: गढ़० ग्यूं ग्यूं रामी, जौ जौ रामी, दूध को दूध पाणी को पाणी; माल० दूध रो दूध पाणी रो पाणी; राज० दूध रो दूध, पाणी रो पाणी; भोज० दूध क दूध, पानी क पानी; अव० दूध का दूध, पानी का पानी; मरा० दूध एका बाजूला पाणी एका बाजूला; मल० नीर क्षीर न्यायम्; ब्रज० दूध कौ दूध और पानी कौ पानी; पंज० दुददा दुद अते पाणी दा पाणी; अं० Oil and truth must come out.

दूध का धोया आदमी कहाँ मिलता है—सभी व्यक्तियों में कुछ न कुछ खराबियाँ होती हैं। तुलनीय: उज़० आदर्श मित्र का खोजी बिना मित्र के रह जाता है; पंज० सुच्चा बंदा किथे मिलदा है।

दूध का धोया कोई नहीं है—ऊपर देखिए।

दूध का-सा उबाल आया और चला गया—जो आदमी शीघ्र नाराज़ और खुश हो जाता है उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय: अव० दूध का-सा उफान आवा और चला गवा; पंज० दुद जिहा उबाला आया ते चला गया।

दूध की अभी बू आती है—दूध की अभी गन्ध आ रही है। अर्थात् अभी तुम्हारा लड़कपन गया नही। जो व्यक्ति सयाना होने के बाद भी बच्चों जैसी बात करता है या बच्चों जैसा काम करता है तो उसके प्रति कहते है। तुलनीय: पंज० अजे दूद दी बू आंदी है।

दूध की चौकीदार बिल्ली—दे० 'चोट्टी कुतिया जलेबियों···'।

दूध की नदी बहती है—जहाँ पर दूध की अधिकता होती है वहाँ के लिए ऐसा कहते हैं। तुलनीय: ब्रज० दूद की नदी बहै; पंज० दुद दी नदी व्रेदी है।

दूध की मक्खी-सा निकालकर फेंक दिया—दूध की मक्खी जैसे निकालकर फेंक दिया। (क) अपमानित अथवा तिरस्कृत व्यक्ति के प्रति कहते है। (ख) बहिष्कृत वस्तु के लिए भी कहते हैं। तुलनीय: अव० दूध कै मक्खी अस निकार फेंकिन; ब्रज० दूध की माँखी की तरह निकारि के फैंकि दीयो; पंज० दुद जिही मक्खी बरगा कडके सुट दिता, इवें कड़या जिवें मक्खन बिचों बाल।

दूध के दाँत भी अभी नहीं गिरे—अल्पायु या बच्चे के प्रति कहते हैं। जब वह बड़ों से बढ़-बढ़कर बातें करता है। तुलनीय: ब्रज० दूध के दाँत ऊ नायें गिरे; पंज० दुद दे दंद अजे नहीं टुटे।

दूध के दाँत भी नहीं टूटे—ऊपर देखिए।

दूध तो माँ का और दूध किसका, फूल तो कपास का और फूल किसका—माँ के दूध के समान लाभदायक और कोई दूध नहीं होता तथा कपास के फूल के समान लाभदायक और कोई फूल नहीं है, क्योंकि उसके फूल से कपास जैसा उपयोगी पदार्थ मिलता है। तुलनीय: राज० दूध तो गाय का और दूध काय का।

दूध दही से जमता है, काँजी से फट जाय—दूध में दही डालने से ही वह जमता है, खटाई डालने से फट जाता है।

(क) उपयुक्त साधनों से ही काम बनता है। (ख) प्रकृति के अनुरूप कार्य करने से ही सफलता प्राप्त होती है।

दूध दुहना ग्वाला ही जाने—ग्वाला ही दूध दुहना जानता है। अर्थात् जो व्यक्ति जिस कार्य को करता है वही उसके संबन्ध में पूरी जानकारी रखता है। तुलनीय : भीली —गुवाल नी बात दोवा वाली जाणे; पंज० दुद चोणा चोण वाला ही जाणे।

दूध पीये बिल्ली मार खाय कुत्ता—दूध बिल्ली पी गई और मार कुत्ते को पड़ी। जब किसी के अपराध की सज़ा दूसरे व्यक्ति को दी जाए तो कहते है। तुलनीय : भीली—नाई आटो खादो हियार में कूतरू कूटक्यू; पंज० दुद पींवे बिल्ली कुट खाए कुत्ता।

दूध पीए भेंस वाला, बाक़ी पीएं छाछ—जिसकी भेंस है वह दूध पीता है और पास-पड़ौस के लोग मठा। किसी भी वस्तु का श्रेष्ठ भाग उसका स्वामी प्रयोग में लाता है और बचा-खचा दूसरों को देता है। तुलनीय : भीली —दूद दोवा वाली नो बीजाए चा।

दूध पूत क़िस्मत से—धन और पुत्र भाग्य से ही मिलते है। तुलनीय : अव० दूध औ पूत बड़े भाग से मिलत हैं।

दूध पूत बड़े भाग्य से—ऊपर देखिए।

दूध-पूत माँगे नहीं मिलते—धन और पुत्र माँगने से नहीं मिलते। ये भगवान की इच्छा से ही मिलते हैं। तुलनीय : पंज० दुद अते पुतर मंगे नई मिलदे।

दूध फटे कांजी परे, सो फिर दूध बने न—दूध में खटाई डालने से वह फट जाता है और फिर दूध नहीं बनता। (क) बिगड़ी बात फिर नहीं बनती। (ख) किसी से सम्बन्ध विच्छेद हो जाने पर पुनः सम्बन्ध नहीं होता। तुलनीय : गढ़ दूध फाट्यो अर दिल फाट्यो।

दूध बना रहे तो दुधांड़ी मिल जाएँगी—दूध रहे तो उसे गर्म करने का बर्तन (दुधांड़ी) मिल जाएगा। मूल स्रोत के सुरक्षित रहने पर अन्य वस्तुओं का प्रबन्ध हो ही जाता है। जब कोई व्यक्ति किसी गौण वस्तु के नष्ट हो जाने से दुखी हो तो उसे समझाने के लिए कहते हैं। तुलनीय : अव० दूध बना रही तो दुधाँड़ी बहुत मिलि जइ हैं।

दूध बेचो पूत बेचो—दूध बेचना और पूत बेचना एक समान है। प्राचीन समय में दूध बेचना बहुत अनुचित समझा जाता था। इसीलिए इस कहावत का प्रचलन था। तुलनीय : राज० दूध बेचो भावें पूत बेचो; ब्रज० दूध बेच्यौ, पूत बेच्यौ; पंज० दुद बेचो पुतर बेचो।

दूध भात छोड़े, पर संग न छोड़े—दूध-भात जैसी अच्छी वस्तु छोड़ दे किन्तु साथी का साथ न छोड़े। अर्थात् अच्छे साथी का साथ बहुत भाग्य से मिलता है और उसे किसी मूल्य पर नहीं छोड़ना चाहिए। तुलनीय : पंज० दुद चौल छडे पर हथ नई छड्या।

दूध भी धौला छाछ भी धौली—दूध और मट्ठा दोनों का रंग सफ़ेद होता है, पर उनका गुण अलग-अलग होता है। जब दो मनुष्य अथवा चीज़ें देखने में एक-सी हों पर उनके गुण में बहुत अन्तर हो तब कहते हैं।

दूध भेंस नहीं, दुहने वाला देता है—भेंस का दूध उसके पालन पोषण और दुहने की चतुरता पर निर्भर होता है। आशय यह है कि पूंजी लगाने और कुशल कर्मचारियों से ही लाभ मिलता है, वस्तु से नहीं। तुलनीय : भीली—दूध डोबी मांये नी है, दूध दोवा वाली मांये है; पंज० दुद मज नई चोण वाला देदा है।

दूध में घी—बहुत मिला-जुला। जिनमें परस्पर काफी गहरी मैत्री होती है उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय : कनौ० मठा मैं नैनू; पंज० दुद विच की।

दूध में साझा, मठा में न्यारे—दूध मे हिस्सा बँटाते हैं और मठे से दूर रहते हैं। (क) जो व्यक्ति अच्छी वस्तु लेना चाहे और सामान्य वस्तु न लेना चाहे उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। (ख) जो व्यक्ति लाभ में हिस्सा बँटाना चाहे और हानि में नहीं उसके प्रति भी व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

दूध हु धौला, छाछ हु धौली—दे० 'दूध भी धौला ...'।

दूध वाली की दो लात भी भली—दे० 'दुधारू गऊ की...।' तुलनीय : हरि० दूध आळी की तैं लात बी आच्छी/सही जाँ।

दूध वाली की लात भी भली—दे० 'दुधारू गऊ की लात...'।

दूध से सींचने पर भी नीम मीठी नहीं होती—(क) जाति स्वभाव नहीं छूटता चाहे कितने भी उपाय किए जाएँ। (ख) चाहे कितना भी समझाया-बुझाया जाए, फिर भी दुष्ट अपनी दुष्टता नहीं छोड़ते।

दूधों नहाओ पूतों फलो—धन और सन्तान की वृद्धि हो। यह एक प्रकार का आशीर्वाद है। तुलनीय : अव० दूधन नहाव पूतन फलो; राज० दूधाँ न्यावो, पूता फलौ; ब्रज० दूधन नहाओ, पूतन फलौ।

दूबर पाड़ा छत्तिस रोग—कमज़ोर भेंस के बच्चे (पाड़ा) को अनेक रोग लगते हैं। (क) कमज़ोर व्यक्ति को बहुत बीमारियाँ होती हैं। (ख) निर्धन पर अनेक विपत्तियाँ आती हैं। तुलनीय : भोज० दुब्बर पड़वा छत्तिस

रोग; पंज० बुड्डा टग्गा बती रोग।

दूबरी अरु दो अषाढ़—पहले ही दुखों से घिरे होने पर जब किसी व्यक्ति को और विपत्ति घेर ले तब उसके लिए कहते हैं। तुलनीय : पंज० बुड्डे लई दो हाड़।

दूर का पहाड़ अच्छा दीखता है—दे० 'दूर के ढोल सुहावने।' तुलनीय : असमी—दुरैर पर्वत निटोल; सं० दूरस्था : पर्व्वता रम्याः; पंज० दूर दे लड्डू सोहने लगदे हन; अं० Distance lends enchantment to the view.

दूर की गंगा से घर की पोखर अच्छी—(क) जो व्यक्ति परिश्रम करके अच्छी वस्तु न चाहे और बुरी वस्तु को बिना परिश्रम किए प्रसन्नता से ग्रहण कर ले तो उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। (ख) आलसी व्यक्तियों के प्रति भी ऐसा ही कहते हैं क्योंकि वे आलस्यवश घर से कभी बाहर नहीं जाते। (ग) अपनी पूँजी पर संतोष करने वाले भी स्वयं के प्रति ऐसे कहते हैं। तुलनीय : गढ़० दूरक्या अणसाला ते नजीक की पत्यूण भली; पंज० दूर दी गंगा नालों कर दा खू चंगा।

दूर के ढोल सुहावने- दूर के ढोल की आवाज़ बड़ी सुहावनी लगती है। जब किसी व्यक्ति या वस्तु की प्रशंसा सुनी जाय पर वास्तविकता वैसी न हो तो व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० दूर कै ढोल सुहावन; मैथ० सावन क ढोल सुहावन; गढ़० दूर के ढोल सुहावने नीरे ढप-ढप होयँ; सि० दूराँ दाढ़े ओर्याँ कक्ख; सं० दूरस्थाः पर्वता रम्याः, दूरस्थाः गिरयो रम्याः; असमी—दुरैर पर्वत निटोल्; छत्तीस० दूरिहा के ढोल सुहावन; मरा० दूरून ढोल चाँगले; मल० इक्कर निल्क्कुम्बोळ अक्करप्पचव, अक्कर निल्क्कुम्बोळ इक्करप्पचच; पंज० दूर दियाँ गलाँ सोहनियाँ लगदियाँ हन; अं० Distance lends enchantment to the view.

दूर के ढोल सुहावने, पास से ढप-ढप होय—ऊपर देखिए।

दूर गए की आस क्या ?—जो दूर चला गया उसका भरोसा (आस) ही क्या? (क) जो दूर रहता है उसके आने का कोई निश्चय नहीं रहता। (ख) जो वस्तु या व्यक्ति दूर हो उससे लाभ की आशा नहीं करनी चाहिए। तुलनीय : पंज० दूर गए दा की परोसा।

दूर गुड़सा दूर पानी, नीयर गुड़सा नीयर पानी—यदि रेवाँ (एक कीड़ा गुड़सा) पेड़ पर चढ़कर बोले तो बरसात दूर होने और यदि जमीन पर से बोले तो वर्षा ऋतु के निकट (नीयर) होने का शकुन है।

दूर जमाई फूल बराबर, गाँव जमाई आधो; घर जमाई खर की नाईं जो चाहो सो लादो—दूर रहने वाला दामाद फूल के समान प्रिय होता है, गाँव में रहने वाला उससे आधा प्रिय तथा घर में रहने वाला अर्थात् घरजमाई गधे के समान होता है, उससे जो काम चाहो कराओ। तात्पर्य यह है कि दामाद का ससुराल से दूर रहने पर ही आदर होता है, ससुराल में रहने से नहीं।

'दूल्हा' से प्रारम्भ होने वाली लोकोक्तियों के लिए देखिए 'दूल्हा'।

दूसरे का ऐब बहुत जल्दी दीखता है—दूसरे की बुराई बहुत जल्द नज़र आ जाती है। जो व्यक्ति अपनी बुराइयों की तरफ ध्यान न देकर दूसरे की बुराइयों की चर्चा करे उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : भोज० दूसरे कऽ दोष बड़े जल्दी लउकेला; अव० दुसरे का ऐब बड़ी जल्दी देखात है; ब्रज० दूसरे कौ ऐब बड़ी जल्दी दीखै; पंज० दूसरे दे दोस छेती लबदे हन।

दूसरे का क्या भरोसा ?—अर्थात् दूसरे की आशा पर नहीं रहना चाहिए। जब व्यक्ति दूसरों के बल पर रहता है या कोई काम करता है तब कहते है। तुलनीय : पंज० दूसरे दा की परोसा।

दूसरे का गहना शोभे ना, छीन लेवे तो लाज ना—दूसरे का आभूषण आदि नहीं पहनना या लेना चाहिए, क्योंकि एक तो वह शोभा नहीं देता (दूसरे की नाप के कारण) दूसरे किसी समय भी दूसरा अपना गहना, चीज़ आदि माँग सकता है, उसे ऐसा करने में लज्जा नहीं आती (चीज़ तो उसी की है)। तुलनीय : मैथ० अनकर गहना लाजे ना छीन लेवे तऽ लाजे ना; भोज० आन कऽ गहना फब्बे ना छीन लेइ तर लाजे ना।

दूसरे का घर, घी ला भर—दूसरे के घर गए तो कहते हैं कि कटोरी भरकर घी लाओ। ऐसे लोगों के प्रति कहते हैं जो दूसरे की हानि-लाभ का ध्यान न रखकर उसकी वस्तुओं का मनमाना प्रयोग करते हैं। तुलनीय : गढ़० बिराणा घर ताता की रड़।

दूसरे का घर थूक का भी डर, अपना घर चाहे हग भर—दूसरे के घर में थूकने का भी डर होता है और अपने घर में चाहे हगते भी रहो तो कोई पूछने वाला नहीं होता। तात्पर्य यह है कि दूसरे के घर में कुछ करते हुए संकोच होता है और अपने घर में सभी प्रकार की स्वतन्त्रता रहती है। तुलनीय : पंज० अपना घर हगहग भर, दूजे दा घर थुक्क दा वी डर;

ब्रज० दूसरे को घर; थूक कोऊ डर।

दूसरे का घर थूकने का डर—ऊपर देखिए। तुलनीय : कौर० दूसरे का घर, थूकणे का डर।

दूसरे का पावे तो हक लगाकर खावे—दूसरे के धन को बिना शील-संकोच के व्यय करने वालों की ओर संकेत। तुलनीय : भोज० आन क पाईं हक लगा के खाईं; पंज० दूजे दा लब्बे ते दम लगा के खावे।

दूसरे का पीसा-पकाया सभी को अच्छा लगता— मुफ़्त में मिली वस्तुओं का उपभोग सभी करना चाहते हैं। स्वयं परिश्रम न कर जब दूसरे की कमाई का कोई उपभोग करता है तब व्यंग्य मे ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मैथ० अनकर कूटल अनकर पीसल पहुँच तक भीतर पैसल; भोज० आन क कूटल पीसल पहुँचा ले भीतर पइसल; पंज० बनया बनाया सारियाँ नूं चँगा लगदा है।

दूसरे का पैर तो धोवे नाउन, अपना धोते लजाय—नाइन (नाउन) दूसरे का पैर धोती है पर अपना पैर धोते समय शरमाती है। जो व्यक्ति दूसरे की सेवा करे, पर अपना काम करने में लज्जा का अनुभव करे उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : भोज० आन क गोड़ धोवे नौनियां आपन धोवत लजाय।

दूसरे का माल, चमकाएँ अपनी खाल—दूसरों का माल खाकर अपनी खाल चिकनी करते हैं। दूसरों के धन पर मौज करने वालों के प्रति कहते हैं। तुलनीय : माल० अण मोल्या घोड़े चढ़े पर घर करे अणंद, थूं क्यूं रीझे गोरड़ी फाकानन्द फडंग।

दूसरे का सेंदूर अपना कपाल फोड़े—(क) दूसरे की उन्नति देखकर जलने वाले के प्रति कहा जाता है। (ख) दूसरे के आभूषण-वस्त्रादि देखकर उसकी भद्दी नक़ल करने वाले पर भी कहते हैं। तुलनीय : भोज० दूसरा सेनुर देख के आपन कपार फोड़ेली; अव० दुसरे का ऊँचा लिलार देखिकै आपन कपार न फोड़ै।

दूसरे की आस, नित उपास—दूसरे के बल पर रोज़ाना उपवास करना पड़ता है। आशय यह है कि दूसरे के बल पर रहने से व्यक्ति को सदा हानि उठानी पड़ती है। तुलनीय : पंज० दूजे उत्ते पुखे सुत्ते।

दूसरे की आस बन का बास बराबर—दूसरे के बल पर रहना तथा जंगल में रहना बराबर है। तुलनीय : असमी—परत आश्, बनत् बास्।

दूसरे की आस सदा निरास—दूसरे की आशा रखने वाले को सदा निराश होना पड़ता है। तुलनीय : भोज० दूसरा क आस नित उपास; अव० दुसरे कै आस सदा निरास; पंज० दूजे दी आस सदा निरास।

दूसरे की कमाई पर तेल-उबटन—ऐसे आदमी की ओर लक्ष्य करके व्यंग्य में कहते हैं जो दूसरे की कमाई पर मौज उड़ाता है। तुलनीय : मैथ० अनका कमाई पर तेलबकुवा; भोज० आन के कमाई पर तेल बुकवा; पंज० दूजे दी कमाई उते तेल बूटना।

दूसरे की थाली का लड्डू बड़ा दिखता है—अपनी थाली के लड्डू की अपेक्षा दूसरे की थाली का लड्डू बड़ा दिखता है। (क) दूसरे की वस्तु अपनी की अपेक्षा सुंदर और अच्छी लगती है। (ख) दूसरे का धन बहुत अधिक दिखाई देता है। तुलनीय : अव० आने के पतरी के बड़ा-बड़ा भतवा; पंज० दूजे दी थाली दा लड्डू बड़ा लबदा है; ब्रज० दूसरे की थारी को लड्डू बड़ो दीखै।

दूसरे की दलाली अपना हाथ खाली—दूसरों की दलाली करने से अपने हाथ ख़ाली रहते हैं। अर्थात् दूसरों का काम करने से अपना कोई लाभ नही होता। तुलनीय : भीली—पारकी ददाली माँ कई नी हाथे आवे; पंज० दूजे दी दलाली अपणे हथ खाली।

दूसरे की पावें बुख़ार में खावे—दूसरे की वस्तु मुफ़्त में मिले तो बुख़ार की हालत में भी खा डालें अर्थात् विपरीत अवस्था में भी पराये की वस्तु अच्छी लगती है। तुलनीय : भोज० दुसरा क पाई तऽ जरो में खाई।

दूसरे की मिर्च पावे तो आँख में भी लगावे—मुफ़्तख़ोरों के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं जो मुफ़्त में मिली हानिकारक वस्तु का भी उपयोग करने में नहीं सकुचाते। तुलनीय : भोज० आन कऽ मरिचो पाई त आँख में लगाई।

दूसरे की मुसीबत जो मोल ले सो चूतिया कहावे—दूसरे के झंझट में पड़ने वाला मूर्ख कहलाता है। आशय यह है कि दूसरे के झंझट में पड़ना नहीं चाहिए। तुलनीय : भीली—वाटे ही वाली न वेट नो करनी।

दूसरे की संपत्ति पर मिर्ज़ा होली खेलें—ऐसे लोगों की ओर लक्ष्य करके यह कहावत कही जाती है जो दूसरे की संपत्ति पर मौज उड़ाते हैं। तुलनीय : भोज० आन के धन पर मिरजा खेलें होली।

दूसरे की संपत्ति पर विक्रमाशाह—दूसरे के धन पर अत्यधिक अभिमान करने वाले पर ऐसा व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : भोज० आन के धन पर विकरमा राजा; आन के धन पर लछमी नरायन।

दूसरे के कहने पर जय भगवान्—स्वयं काम न कर

दूसरे के आश्रय पर जीने वालों की ओर व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मैथ० अनकर कैल घैल पर जय जगरनाथ; भोज० आन क कइला धइला पर बमसंकर; पंज० दूजे ने कीता रबदा पला।

दूसरे के धन पर मदनगोपाल—दे० 'दूसरे की संपत्ति पर…'।

दूसरे के धन पर लक्ष्मी नारायण—दे० 'दूसरे की संपत्ति पर…'।

दूसरे के मंडप में झूमना अच्छा लगता है—आशय यह है कि दूसरे के मत्थे सभी लोग आनंद मनाते हैं। तुलनीय : भोज० आन क मंड़वा में सबका झुम्मे आवेला; पंज० किसे सिर उत्ते नचना चंगा लगदा है।

दूसरे के मंडवा में सब नाचते हैं, अपने में नाचें तो जानें—ऊपर देखिए।

दूसरे के वंश से वंश बनता भी है, डूबता भी है—अर्थात् (क) अपने पुत्र को यदि अन्य परिवार के सुपुत्र का साथ मिले तो वह अच्छा बन सकता है और बुरे का मिले तो वह अच्छा बन सकता है और बुरे का मिले तो वंश भी डूब जायेगा अर्थात् पुत्र नालायक़ हो जायेगा। (ख) बहू अच्छी मिलने पर बच्चे अच्छे होते हैं तथा ख़ानदान अच्छा होता और बुरी बहू मिलने पर इसके विपरीत परिणाम होता है। तुलनीय : भोज० आन क बंस कि त बनाइ दे कि डुबाइ देइ।

दूसरे को कुएँ खोदे, स्वयं गिरे—जो दूसरों के लिए कुआँ खोदते है, वे स्वयं उसमें गिरते है। आशय यह है कि जो दूसरों की बुराई चाहते हैं उनका ख़ुद का बुरा होता है। तुलनीय : अव० दुसरे का कुआँ खोदै अपने गिरै; पंज० किसे वास्ते खू कढ्या आप गिरया; ब्रज० दूसरे कौ कूआ खोदै, खुद गिरै।

दूसरे को ढेला मारने पर अपने पर पत्थर पड़ता है—अर्थात् दूसरे की थोड़ी हानि भी अपने लिए बहुत बड़ी हानि का कारण बन जाती है। तुलनीय : मैथ० अनका पर ढेप चलवे त5 अपना पर वज्जर खसय; भोज० जे आन के कुँआँ खोदावेला ओ करा के भकन्नर तइयार रहेला; पंज० दूजे नू टेला मारण नाल अपणे उते बट्टे पैंदे हन।

दूसरे को मति-बुद्धि दें, अपने ढमनियाँ खाएँ—दूसरों को बुद्धि देते हैं और स्वयं तकलीफ़ सहते है। जो औरों को शिक्षा देते हैं और स्वयं कष्ट झेलते हैं उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय : छत्तीस० दूसरा ला सिखौना देय, अपन बैठ रौनिया लेय।

दूसरे को लोमड़ी सगुन बतावे, अपने कुत्ता से नुचवावे—जो दूसरों को धर्म का उपदेश देते हैं और स्वयं कष्ट भोगते हैं उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय : भोज० दुसरे के सगुन बतावें अपने कुकुरन से नोचवावें।

दूसरे बातों से ही घर पूरा करते हैं—दूसरे लोग केवल बातों से ही घर भर देते है, देते-दिलाते कुछ नहीं। जो व्यक्ति दूसरों की बातों पर विश्वास करके बैठा रहे और कार्य को सफल बनाने का कोई उद्योग स्वयं न करे उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : भीली- -पारके गाल भराहें, पेट नी भराहें; पंज० किसे दिआं गलां नाल ही कर पूरा करदे हन।

दूसरों की इज़्ज़त करो तो दूसरे भी इज़्ज़त करेंगे—(क) जो लोग दूसरों का मान करते हैं वही मान या आदर भी पाते हैं। (ख) जो व्यक्ति दूसरों की इज़्ज़त नहीं करते और उनसे इज़्ज़त पाने की अपेक्षा करते है तो उनके प्रति भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० राखपत रखाय पत; पंज० किसे दी इज़्ज़त करो ते उह भी तुहाडी करेगा।

दूसरों की इज़्ज़त रखो, दूसरे भी तुम्हारी इज़्ज़त रखेंगे—ऊपर देखिए। तुलनीय : बुंद० रखपत तो रखापत।

दूसरों के पाहुने अच्छे लगते हैं—दूसरों के घर जब मेहमान आते हैं तो बड़ा अच्छा लगता है। जब कोई दूसरों की परेशानियों की तरफ़ कोई ध्यान नहीं देता बल्कि उन्हें यों ही टाल देता है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते है। तुलनीय: पंज० किसे दे परौने चंगे लगदे हन।

दूसरों को खाँई खोदे, उसे कुआँ तैयार—दे० 'दूसरे को कुएँ खोदे…'।

दें लाख बताएँ सवा लाख—दिया तो केवल एक लाख पर दूसरों को बताते हैं सवा लाख। झूठी शान दिखाने वाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : बुंद० देवें लाख बतावें सवा लाख; पंज० देण लख दसण सवा लख।

दे उधार, हो ख्वार—उधार देने वाले की दुर्दशा होती है क्योंकि लेना तो सभी चाहते हैं किन्तु देना कोई-कोई ही जानता है। तुलनीय : ब्रज० दै उधार होय ख्वार।

देखकर दिल आ ही जाता है—किसी वस्तु की सुन्दरता या उपयोगिता को देखकर उसको पाने के लिए जब कोई लालायित हो जाता है तो कहते हैं।

देखकर मक्खी नहीं निगली जाती—(क) जान-बूझकर हानि नहीं सही जाती। (ख) सामने किया गया अपमान बर्दाश्त नहीं होता। तुलनीय : राज० देखतीं आंख्या माखी को गिटी जै नी; पंज० देख के मक्खी नई खादी जांदी।

देख के भूख भागती है—बहुत सुन्दर व्यक्ति या वस्तु

आदि के प्रति कहते हैं कि इसको देखने से ही पेट भर जाता है। तुलनीय : पंज० देख के टिड परोंदा है; देख के पुख नठदी है।

देख के घर किया करम को दोष दे—देखकर पति चुना और कहती है कि भाग्य ही खराब है। जब कोई जान-बूझ कर बुरा काम करे और उसके परिणाम पर भाग्य को कोसे तो उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : छत्तीस० आंखी देख मानुस करे, अउ करम ला दोस दे।

देखत के हम ऊजरे, ऊसर मेरा नाव; मोर भरोसे रहिओ ना, काढ़ बिरोनो खाव—देखने में मैं उजला हूँ और ऊसर (बंजर) मेरा नाम है। मेरे भरोसे पर मत रहना किसी से उधार लेकर खाना। आशय यह कि ऊसर भूमि में कुछ भी नहीं उगता।

तेल तलाई बाप की कायर खावे गार—अपने बाप का तलाब रहने पर यदि उसका पानी खारा या गन्दा भी हो जाता है तो कायर उसी को पीते है, दूसरे स्थान से नहीं लाते। आशय यह है कि कायर या आलसी व्यक्ति साहस अथवा परिश्रम करने की अपेक्षा बुरी वस्तु से काम चलाना उचित समझते हैं। तुलनीय : मेवा० देख तलाई बाप की कायर खावे गार; सं० तातस्य कूपो यमिति बुवाणा क्षारं जलं कापुरुषा पिबंति।

देख तिरिया के चाले सिर मुड़ा मंह काले; देख मर्दों की फेरी, माँ तेरी कि मेरी—जब किसी स्त्री को उसी की चाल से पराजित कर दिया जाय तो व्यंग्य से कहते हैं। एक बार एक पति-पत्नी में इस बात को लेकर विवाद छिड़ा कि स्त्री और पुरुष में से बुद्धिमान और चालाक कौन है। दोनों अपने को श्रेष्ठ बता रहे थे किन्तु फ़ैसला नहीं हो पा रहा था। इस विवाद के कुछ दिन पश्चात् स्त्री बहाना बनाकर बीमार हो गई। वैद्य आकर दवा दे जाता किन्तु जब किसी को रोग ही न हो तो वह ठीक क्या होगा ? पुरुष ओषधियाँ ला-लाकर परेशान हो गया किन्तु स्त्री जैसी थी वैसी ही रही। स्त्री ने जब देखा कि पति अब खूब परेशान हो गया है तो उसने कहा कि यदि आप अपनी माँ का सिर मुँड़वाकर और गधे पर बिठाकर लाएँ तो मैं अवश्य स्वस्थ हो जाऊँगी। अब पति की समझ में आया कि यह मुझे नीचा दिखाने का प्रयत्न कर रही है, इसे रोग आदि नहीं है। उसने कहा ठीक है मैं कल अपनी माँ को ले आऊँगा तुम चिंता मत करो और उसी समय अपनी ससुराल को चल दिया। दामाद को अचानक आया देख सास को बहुत चिंता हुई। दामाद ने बताया कि तुम्हारी पुत्री मृत्यु शैय्या पर पड़ी है और सउके बचने की एक ही सूरत है कि आप सिर मुँड़ा कर, मुँह काला करके गधे पर सवार होकर उसके सामने जाएँ। माँ को पुत्री बहुत प्रिय होती है और वह उसके लिए कुछ भी कर सकती है। माँ ने तुरन्त बेटी को बचाने का निर्णय कर लिया और दामाद के कहे अनुसार सब कुछ करके गधे पर बैठी और उसके साथ चल दी। घर पहुँचकर वह चुपचाप रहा और जब उसकी स्त्री ने उनको देखा तो अपनी सास समझकर प्रसन्नता से उपरोक्त लोकोक्ति का पूर्वार्ध कहा। इस पर पति ने उत्तरार्ध कहा तो पत्नी को पता चला कि यह तो उसकी ही माँ है। लज्जा से वह गड़ गई और तब उसने हार मान ली।

देखते की नई नवेली, आवें पाँचों पीर—देखने में तो नई दुल्हन की तरह हैं पर त्रिया चरित्र के सारे गुर जानती है। देखने में तो भोले-भाले किंतु कुटिल व्यक्ति के प्रति कहते हैं। तुलनीय : भोज० देखत क बउरहिया आवे पाँचों पीर।

देखते की लुगाई अंधा ले गया—आँखों वाले की स्त्री अंधा ले जाय यह बड़े आश्चर्य की बात है। आश्चर्यजनक या अनहोनी बात पर यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : पंज० सजाखे दी बौटी अन्ना लै गया।

देखते-देखते आँखों में धूल झोंकता है—आँखों के सामने ही धोखा देता है। बहुत ही चालाक व्यक्ति के प्रति कहते है जो देखने-ही-देखते धोखा दे जाय। तुलनीय : राज० वैवंता वैवंता आख्या में धूड़ घाल दे।

देखना यह है मुँह किसका काला हुआ—जब कोई शरारती व्यक्ति अपने किसी बुजुर्ग को हानि पहुँचाकर यह झूठी तसल्ली दे कि यह सब खुदा का किया हुआ है तो वह (बुजुर्ग) उत्तर में कहते हैं कि देखने की बात तो यही है कि पाप किसने कमाया ?

देखना सो पेखना—देखना और पेखना दोनों एक ही चीज़ हैं। जब एक ही बात को कोई घुमा-फिराकर कई ढंग से कहता है तो कहते हैं।

देखने और सुनने में बड़ा फ़र्क़ है—सुनी हुई बात झूठ हो सकती है पर देखी हुई नहीं। तुलनीय : पंज० दिखण अते सुनण विच बड़ा फरक है।

देखने को नन्ही, लीलने को धन्नी—देखने में छोटी-सी है किंतु धन्नी (छत में लगाई जाने वाली बड़ी लकड़ी) निगल जाती है। (क) छोटी आयु में चरित्र भ्रष्ट हो जाने वाली लड़की को कहते है। (ख) अल्प आयु में भारी काम कर लेने वाले के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : अव० देखे का नन्ही, लीलै का धन्नी।

देखने को नौनिहाल, काम करने को खिंचे खाल -- देखने को हृष्ट-पुष्ट और काम करने से भागने वाले के लिए व्यंग्य मे कहते है।

देखने को बुलबुल निगलने को दोमरिया बड़ -- जो आदमी देखने में बहुत कमजोर हो पर काम शहजोरो का-सा करे तो उसके प्रति कहते है। तुलनीय : राज० दीमती ता गिलारी कर ज्याय बिच्छूरो गढ को; भोज० देखे के बुल-बुल लीले के बर।

देखने में ना सो चखने में क्या---जो चीज़ देखने योग्य न होगी वह खाने योग्य क्या होगी। अर्थात् जो वस्तु देखने में सुन्दर होती है उसे ही खाने की इच्छा होती है। तुलनीय : मरा० दिसाय ना चाँगले नाही त्याला चाखतो कोण।

देखने में पागल पर आवें पाँचों पीर-- ऊपर से सीधे-सादे पर भीतर से शातिर और बदमाश व्यक्ति को कहते हैं। तुलनीय : भीली --भोलू थाई ने भोलवीन, आपणो भलो करे है; अव० देखे ना बोरहिया आवे पाँचों पीर।

देखने में बुलबुल निगलती है गूलर - उक्त कहावत उस व्यक्ति को ध्यान में रखकर कही जाती है जो कद का छोटा होने पर भी बहुत बड़ा काम करता है या अधिक खाता है। तुलनीय भोज० देखे के बुलबुल लीले के गुल्लर।

देखने में भोला-भाला, भीतर भरा गरम मसाला -- नीचे देखिए।

देखने में भोले-भाले, भीतर से हैं काले-काले --ऊपर से बहुत सीधे दिखते हैं, किन्तु भीतर से बिल्कुल काले है। कपटी एवं दुष्ट व्यक्तियों के प्रति व्यंग्य मे ऐसा कहते है। तुलनीय : भीली० भोलू दूध दाँत पाड़; पंज० बारों चगे अंदरों माड़े।

देख-भाल के पाँव रखना चाहिए बहुत सोच-समझ-कर कोई काम करना चाहिए। तुलनीय : पंज० दिख सुण के पैर रखणा चाहिदा।

देख माल ढोंके ताल-- (क) दबग व्यक्ति धन मिलने की संभावना देखते ही उसे लेने का प्रयत्न खुले आम आरंभ कर देता है। (ख) जब कोई लाभ की उम्मीद पाकर खुश होता है तब भी कहते है।

देखा देख सेठनियाँ की, धरियक सीख जेठनियाँ की -- घर के बाहर पड़ोसिन की और घर के बाहर जेठानी की शिक्षा माननी चाहिए।

देखा-देखी पुन्न, देखा-देखी पाप---लोगों को देखकर पुण्य भी किया जाता है और पाप भी। आशय यह है कि जो काम अधिकांश लोग करते है उसी का अन्य लोग भी अनुकरण करते हैं, चाहे वह अच्छा हो या बुरा।

देखा-देखी भेड़ चाल---जो व्यक्ति दूसरों को देखकर उनकी नकल करता है वह भेड़ के समान होता है। प्रत्येक कार्य को दूसरे को करते देखकर ही नही करना चाहिए अपितु स्वयं सोच-विचार करना चाहिए। जो व्यक्ति स्वयं कुछ न विचार कर दूसरो के पीछे चलता है उसके प्रति व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : राज० देखा-देखी चाल चलै ज्यूं भेड़ाँ का टोळा।

देखा-देखी मरा नहीं जाता-- किसी की नक़ल करके जान नही दी जाती। (क) अपनी चादर देखकर ही पैर फैलाया जाता है। जब कोई व्यक्ति किसी ऐसे व्यक्ति की बराबरी करना चाहता है जिसके बराबर वह न हो तो कहते हैं। (ख) अंधानुकरण करने वाले के प्रति कहते है। तुल-नीय : माल० होड़ा होड़ नी मराय।

देखा-देखी साधा जोग, घटे काया बाढ़े रोग--देखा-देखी योग साधना शुरू किया फलत: शरीर कमज़ोर होने लगा और रोग बढ़ने लगे। जब कोई बिना सोचे-समझे अंधा-नुकरण करता और हानि उठाता है तब कहते है। तुलनीय : राज० देखा-देखी साध्यो जोग, छीजी काया ब्राध्यो रोग; मेवा० देखा देखी साधे जोग, घटे काया बदे रोग; बुद० देखा-देखी साधो जोग, छीजी काया बाढ़ो रोग।

देखा-देखी साधे जोग, छीजै काया बाढ़ै रोग---ऊपर देखिए।

देखा न भाला सदके गई खाला -- बिना देखे ही कहते है कि मौसी (खाला) न्यौछावर हो गई। किसी की झूठी प्रशंसा करने वाले के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। (सदक़ा = दान, खैरात; न्यौछावर होना)।

देखा शहर बंगाला, दांत लाल मुँह काला-- बंगा-लियों पर कहा जाता है जिनका रग काला होता है और पान बहुत खाते हैं। तुलनीय : राज० देख्यो देस बंगाला दाँत लाल मुँह काला।

देखा सीखी कीनी जोग छीजी काया बाढ़ा रोग-- दे० 'देखा-देखी साधा जोग...'।

देखिए ऊँट किस करवट बैठता है---(क) किसी कार्य के परिणाम के विषय में कहते है कि परिणाम पक्ष में होगा या विपरीत। (ख) जब दो व्यक्तियों में मुक़दमेबाज़ी होती हैं तब भी ऐसा कहते हैं कि देखिए विजय किसकी होती है। तुलनीय : राज० ऊँट किसी धड़ बैसे; भोज० देखी न ऊँट केवने करवट बइठेला; अव० ऊँट कौनी करवट बैठी; मल० काट्टुम कोलुम् नोक्कियेवळळम् वेय्क्काबू; पंज०

दिखो ऊँट केडे पासे बैंदा है; ब्रज० देखे ऊँट कहा करबट बैठै; अं० Let us see which way the wind blows.

देखिए क़साई शेर की नजर और खिलाइए सोने का निवाला— देखिए क़साई की तरह लेकिन खिलाइए सोने का कौर (निवाला)। आशय यह है कि बच्चों को खूब खिलाना-पिलाना तथा पहनाना चाहिए पर उनके साथ कड़ा व्यवहार करना चाहिए ताकि वे बिगड़ें नहीं।

देखिए दीदार और मारिए पैज़ार—आँख से देख लीजिए और जूता (पैजार) मार कर भगा दीजिए। वेश्याओं के प्रति कहते है। आशय यह है कि वेश्याओं से सदा दूर रहना चाहिए।

देखी, अनदेखी हुई—जब आँखों देखी बात झूठी सिद्ध हो जाय तो कहते हैं।

देखी ठीक बजाके दुनिया तालिब जर की—इस संसार को भली भांति देखा है कि सभी धन के पीछे अंधे है। अर्थात दुनिया मे सभी धन कमाने में लगे हैं और उसके लिए गलत-सही सब कुछ करने को तैयार है।

देखी तेरी कालपी बावन पुरा उजाड़—मैंने तुम्हारी कालपी देख ली जिसमें बावन पुरा खण्डहर है। जब कोई किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान की काफी प्रशंसा करे पर उसमें असलियत कुछ भी न हो तो व्यंग्य मे ऐसा कहते है। तुलनीय : राज० देखी थारी कालपी बावनपुरा उजाड़।

देखी पीर तेरी करामात—ऊपर देखिए।

देखें ऊँट किस करवट बैठता है—दे० 'देखिए ऊँट किस करवट···'।

देखें डोम कहाँ दीवाली मनाता है—पता नहीं डोम कहाँ जाकर दीवाली मनाएगा। जिस बात का कोई निश्चित समय और स्थान न हो उसके बारे में कहते हैं। तुलनीय : राज० डूम कुण जाणै कठे जांवनो दियाली करसी; पंज० दिखो डूम किथे दिवाली मनांदा है।

देखे के बौरहिया आवें पाँचों पीर—दे० 'देखने मे पागल···'।

देखे की बूढ़ी, काम को आँधी—देखने मे तो बूढ़ी दीख पड़ती है, पर काम करने में बहुत तेज है। जो देखने में बहुत कमज़ोर मालूम पड़े पर काम बलवानों का-सा करे तो उसके प्रति कहते है। तुलनीय : पंज० दिखण नूँ बुडी कम नू अनी।

देखे न भूंके—न देखेगा और न भूंकेगा। (क) किसी काम को ऐसे व्यक्ति से छिपाकर करने के लिए कहते हैं जो उसे देखकर नाराज़ होता है। (ख) ऐसे व्यक्तियों को परस्पर दूर रहने के लिए कहते हैं जो आपस में मिलने पर लड़ाई-झगडा करते हैं। तुलनीय : मेवा० देखे न भुसे; पंज० दिखे न भौके; ब्रज० देखैं न भूँसै।

देखे बाप के, सो कर आपके—जैसा लोग बाप को करते देखते हैं वैसा ही करने लगते हैं। आशय यह है कि पिता या बड़ों का अनुकरण बच्चे भी करते हैं।

देखे भाले शेखजी औ चिड़ियें संद होयँ—देखने से तो शेख लगते हैं पर चिड़ियों को मारकर खा जाते हैं। बगुला भगत के प्रति कहा जाता है।

देखे में छोटा काम करे मोटा—छोटे क़द के साहसी एवं परिश्रमी व्यक्ति को ध्यान मे रखकर उक्त कहावत कही जाती है। तुलनीय : पंज० दिखण विच निक्का करण विच तिखा।

देखे राही बोले सिपाही—कहीं लूट-मार होने पर राहगीर तो केवल तमाशा देखता है, बोलता तो सिपाही है। आशय यह है कि अधिकार-प्राप्त व्यक्ति ही कुछ कर सकता है जिसे कोई अधिकार प्राप्त नहीं है वह कुछ नहीं कर सकता।

देखो मियाँ के छंद बंद फाटा जामा तीन बंद—मियाँ का जामा तो फटा हुआ है पर उसमें तीन बंद लगे हुए है। जब कोई निर्धन होते हुए भी बड़े लोगों जैसा शौक करना चाहता है तब कहते है।

देता भला न लेता—न तो देने वाला अच्छा है और न लेने वाला। जब कोई किसी को कोई चीज़ बहुत थोड़ी मात्रा में देता है तो कहते है। तुलनीय : अव० देता भला न लेता।

देता भूले न लेता—देने वाला भूलता है न लेने वाला। (क) सीधे हिसाब पर कहते है। (ख) हिसाब लिख लेने पर भी कहते है।

देते समय दरवाजा भी चूँ करता है—देने में सबको कष्ट होता है। जब कोई किसी को कुछ दुख से देता है तो कहते है। तुलनीय : पंज० दिंदे होई बुआ भी रोदा है।

देते समय दरवाजा भी बोल देता है—ऊपर देखिए।

दे तो बेटा, नहीं तो बेटी भी छीन ले—प्रसन्न हुए तो बेटा दे देंगे और यदि अप्रसन्न हो गए तो बेटी भी छीन लेंगे। (क) भगवान के प्रति कहते हैं। (ख) जो व्यक्ति प्रसन्न होने पर बहुत धन और मान देते है और अप्रसन्न होने पर साधारण वस्तुओं को भी नहीं देते उनके प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : राज० देवे जद बेटा देवे नही तो बेट्यां ही खोस लेवै।

दे थोड़ा, चाहे बहुत—देते तो थोड़ा है पर लेना बहुत

चाहते हैं। जो दूसरों को कोई चीज़ थोड़ी मात्रा में दे और उनसे कोई चीज अधिक मात्रा में पाने की अपेक्षा करे उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० दे कट दे या मता दे।

दे दाल में पानी, पंगा बह चले चुहानी/चौहानी— दाल में इतना पानी डालो कि चारों तरफ धार बह चले (क) कंजूसों के प्रति कहते हैं। (ख) जब खाने वाले अधिक हों और दाल कम हो तो हँसी में ऐसा कहते है।

दे दिलावे दे दे करे, वह प्राणी भवसागर तरे— जो दान देता है, दिलाता है तथा औरों से भी देने के लिए कहता है वह भव-सागर से तर जाता है। आशय यह है कि दान देने तथा दिलाने वाला मोक्ष प्राप्त करता है। इस लोकोक्ति में दान की महत्ता दर्शायी गई है।

दे दुआ समध्याने को, नहीं फिरती दो-दो दाने को— समधी (लड़की या लड़के का ससुर) के घरवालों को आशीर्वाद दो जिन्होंने तुम्हारी सहायता की वरना दाने-दाने के लिए मारी-मारी फिरती। (क) जो स्वयं कुछ करने में असमर्थ हो और दूसरों की सहायता से किसी कार्य मे सफलता पाकर इठलाए उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। (ख) जिसकी बदौलत आराम मिले सदा उसकी इज़्ज़त करनी चाहिए।

दे दे बारूद में आग, किसकी रही और किसकी रह जाएगी—बारूद में आग लगा दो, किसकी रही है और किसकी रहेगी। आशय यह है कि धन को खूब खर्च करो। मरने के बाद किसी की भी संपत्ति न तो उसके काम आई है और न आएगी।

देन कहो घोड़ो अब देत, अब देत, अब देत—जब किसी को कोई वस्तु देने का वचन देकर टाला जाय तो ऐसा कहा जाता है। इसके संबंध में एक कहानी कही जाती है: एक बार किसी राजा ने किसी कवि की कविता पर प्रसन्न होकर एक घोड़ा देने का वचन दिया, किंतु जब भी कवि ने घोड़ा मांगा तभी राजा ने यही उत्तर दिया, 'हां देवेंगे।' बहुत दिन बीतने पर भी जब घोड़ा नही मिला तो कवि ने यह कहावत गढ़कर राजा को सुनाई तथा राजा ने लज्जित होकर कवि को दो घोड़े पुरस्कार में दिए।

दे न दिलावें, साहूकार कहावें—रुपये का लेनदेन तो करते नहीं और अपने को साहूकार कहते हैं। झूठी अकड़ दिखाने वालों के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० तलप न तनखा छिति मिथ्यो, हवल्दार; पंज० देण न दुआण, सेठजी कहाण (खुआण)।

देनहार बलिहारी, हल देखे ना फाली—देने वाले पर बलि जाता हूँ, वह हल-फाल नही देखता। ईश्वर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन। वह अमीर-ग़रीब नहीं देखता, सबकी मदद करता है। तुलनीय : कौर० देनहार बलिहारी, हल देखे ना फाळी।

देनहार समरत्थ है, सो देवे दिन रैन—देने वाला ईश्वर है और वही सबको रात-दिन देता है। अर्थात् ईश्वर ही एक दाता है अन्य कोई नही।

देना और मरना बराबर है—(क) कृपण पर कहा गया है जिसे देने के नाम पर मौत आती है। (ख) किसी का देनदार होने पर बड़ी लज्जा आती है। तुलनीय : राज० देवणो मरणो बराबर है; पंज० देणा अते मरणा इको जिहा है।

देना थोड़ा, दिलासा बहुत—जो आशा बहुत की दिलाए और दे थोड़ा उस पर कहते हैं। तुलनीय : मरा० देणें थोड़ें मचमच फार; पंज० देणा कट अते दसना मता।

देना न लेना, मगन रहना—न किसी का लेना और न ही किसी का देना, अपने में ही मगन रहना। अर्थात् (क) जिस व्यक्ति को किसी से कुछ लेना और देना नहीं होता वह सदा प्रसन्न रहता है। (ख) जो व्यक्ति किसी से संबंध नही रखता वह भी सुखी रहता है। तुलनीय : राज० देणा न लेणा मगन रहणा; पंज० लेणा न देणा चुप रहणा।

देना पठानों का, लेना जुलाहों का—देना पठानों का अच्छा होता है और लेना जुलाहों का क्योंकि पठान किसी को उधार देते हैं तो उससे सख्ती से वसूल करते हैं और जुलाहे जब किसी से लेते हैं तो वे ग़रीबी के कारण नहीं दे पाते और उन्हें छुटकारा मिल जाता है।

देना भला न बाप का, बेटी भली न एक—बाप का देनदार होना भी ठीक नहीं है और बेटी एक भी ठीक नहीं होती। क़र्ज़ किसी का अच्छा नही होता और लड़की एक भी अच्छी नहीं होती। तुलनीय : राज० देणो भलो न बापरो, बेटी भली न एक, पैंडो भलो न कोस रो, साहब राखे टेक; मेवा० देणो भलो न बाप को, बेटी भली न एक, चलबो भलो न कोस को, परभू राखै टेक।

देना सहज, लेना कठिन—किसी वस्तु का देना बहुत सहज है, किंतु उसे वापस लेना बहुत कठिन। लेने वाले लेते समय बहुत शीलवान दिखते हैं किंतु देने के समय वे सीधे मुँह बात भी नहीं करते। तुलनीय : भीली—आलक होरु लेवू दोरु; पंज० देणा सोखा लेणा ओखा।

देनी पड़ी बुनाई, तो घटा बतावे सूत—जब कपड़े की बुनाई देने का समय आया तो कहते हैं कि मेरा सूत कम हो

गया। (चोरी का आरोप)। जो व्यक्ति काम करा लेने के बाद पारिश्रमिक देने में आनाकानी करे उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

देने के नाम तो दरवाजे के किवाड़ भी नहीं देते - कृपण या न देने वाले के प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

देने को टुकड़ा रोटी, बुलाने को महल—बुलाते हैं आलीशान महल में और देते हैं रोटी का टुकड़ा। उस धनवान के प्रति कहते हैं जो तड़क-भड़क तो बहुत दिखाए किंतु दे कुछ नहीं। तुलनीय : पंज० देण नू टुकडा अते सदण नूं महल।

देने को दमरी बिछाने को कमरी - देना है केवल एक दमड़ी पर बिछाना चाहते हैं कंबल। जो व्यक्ति बिना पैसा खर्च किए सुख उठाना चाहे उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : देण नू पैहा अते बछान नूं जुलाहा।

देने-लेने से भिखारी राजी—भिखारी को यदि कुछ दे दिया जाय तो वह प्रसन्न रहता है। जो व्यक्ति धन के लिए दूसरों की चापलूसी करें या अपमान सहें उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० दियां-लियां डूम राजी हुवै; पंज० देण लेण नाल मंगता मन्नै।

देने वाला राम, पर नजर चूल्हे पर—कह रहे हैं कि देने वाला भगवान है, किंतु आँखें चूल्हे की ओर ही लगी हैं। जो व्यक्ति किसी से कुछ लेना चाहे पर न लेने का दिखावा करे उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : मेवा० अल्ला तेरी आस, अर नजर चूला पास; पंज० देण वाला राम, पर अख चूल्ले उत्ते।

देने वाले का पैसा लगे, देखने वाले का पेट दुखे—पैसा तो खर्च होता है उसका जो देता है, पर देखने वाले के पेट में दर्द हो रहा है। जब खर्च किसी और का हो तथा उसका दुख दूसरे को हो तो व्यंग्य में ऐसा कहते है।

देने वाले से दिलाने वाले को ज्यादा सवाब है—देने वाले से दिलाने वाले को अधिक पुण्य मिलता है। अर्थात् परोपकार करने से परोपकार कराने वाला अच्छा समझा जाता है।

दे मढ़ी में आग बाबा दूर हुए—दे० 'भुस में आग लगाय जमालो…'।

दे मेरी वही रोटी—मेरी वह रोटी जो मैंने तुझे खिलाई थी, वापस कर दे। जब कोई व्यक्ति किसी असंभव चीज़ के लिए हठ कर बैठता है तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० ला म्हारी सागी रोटीरो कोर।

देर है पर अंधेर नहीं—ईश्वर के दरबार में देर हो जाय पर न्याय अवश्य होता है। जब कोई अत्याचार करता है तो कहते हैं। आशय यह है कि अत्याचार कर लो पर देर से भले मिले पर ईश्वर के यहाँ उसका बदला अवश्य मिलेगा। तुलनीय : पंज० चिर है हनेर नहीं; ब्रज० देर है परि अंधेर नायें।

देर आयद दुरुस्त आयद—जो कार्य देर से होता है वही ठीक होता है।

देवतन चढ़ी सुहारी, कूकुर खांय चाहे बिलारी—देवता को सुहारी (पूड़ी) चढ़ा दी गई अब उसे चाहे कुत्ते खांय या बिल्ली। अर्थात् (क) जब कोई वस्तु दे दी जाय तो वह किसी के भी काम आये हमसे क्या मतलब। (ख) किसी काम को बोझ समझकर उलटा-सीधा करके छुटकारा पा लिया जाय तो भी कहते है। तुलनीय : बुंद० देवतन चढ़ी सुहारी, कूकुर खांय चाय बिलारी।

देवता वासना के भूखे हैं—देवता कुछ खाते नहीं वे केवल सच्चे विश्वास और प्रेम के भूखे होते हैं। तुलनीय : गढ़० देवता वासना का ही भोगी होंदा; राज० देवता वासनारा भूखा है।

देवदत्तहन्तृ हत न्याय—देवदत्त के हत्यारे की हत्या का न्याय। आशय यह है कि हत्यारे की हत्या से मरे हुए को जीवन पुन: प्राप्त नहीं होता। फलत: हत्यारे को मार डालना समीचीन नहीं है।

देवन चढ़ी सोहारी, कुत्ते खांय चाहे बिलारी—दे० 'देवतन चढ़ी सुहारी…'।

देवस्थान सूना और उपजाऊ भूमि कभी बंजर नहीं होती—देवता का स्थान या मंदिर कभी खाली नही रहता और उपजाऊ भूमि कभी बेकार (बंजर) नहीं रहती। अर्थात् लाभ के स्थान पर लाभ की वस्तु के चाहने वाले बहुत होते हैं। तुलनीय : गढ़० थाती सूनी बिरती बांजी कख छ।

देवा को रिन मिले सुहेला, अनदेवा को मिले न धेला—जो लेकर दे देता है उसे ऋण आसानी से मिल जाता है, पर जो लेकर नही देता उसे अधेला भी उधार नहीं मिलता। अर्थात् खरे व्यक्ति से ही लोग लेन-देन करते है।

देवान धूपान, नीचान कूटान—देवता धूप देने से और नीच दण्ड देने से संतुष्ट होते हैं। जब कोई नीच व्यक्ति समझाने से नहीं मानता और दंडित होने पर ठीक हो जाता है तो कहते हैं।

देवाय न पित्राय—न देवताओं के और न पितरों के। (क) व्यर्थ खर्च करने पर कहते हैं। (ख) कंजूस के धन पर भी कहते हैं क्योंकि वह न तो पितरों के काम आता है

और न ही दान-पुण्य के।

देविन चढ़ी सोहारी, कूकुर खाय चाहे बिलारी—दे० 'देवन चढ़ी सोहारी…'।

देवी अपने दिन भरे लोग माँगे परिचार--दे० 'देवी दिन काटे…'।

देवी क्या वरदान देगी जब स्वयं नगी है ?—अर्थात् जिसके पास अपनी ही गुजर के लिए चीज़ें नहीं है वह दूसरे की क्या सहायता करेगा ? अर्थात् कुछ नहीं। तुलनीय : मग० अपने देवी लंगा का देतन वरदान; भोज० देवी दुसरा के का दीह जब अपने नंगा बाड़ी, पंज० देवी की देगी ओह आपे नंगी है।

देवो छोटी देव बड़ा—बड़े भूत (देव) को भगाने के लिए छोटी देवी की पूजा कर रहे हैं। (क) जब कोई किसी बड़े काम के लिए किसी सामान्य व्यक्ति की सिफ़ारिश करना है तो कहते हैं। (ख) जब कोई किसी बड़े काम को साधारण उपायों से पूरा करना चाहता है तब भी कहते है। (ग) जब कोई सामान्य व्यक्ति कोई बड़ा काम कर देता है तब भी ऐसा कहते है। तुलनीय : गढ़० देबी नान्नी छल बड़ो, पंज० देवी निक्की देव बडा।

देवी दिन काटें, पंडा परिचय माँगे—नीचे देखिए।

देवी दिन काटें, लोग परचौ माँगें— देवी दिन काट रही है और लोग उसका चमत्कार देखना चाहते है। जब कोई स्वयं विपत्ति में फँसकर किसी तरह समय व्यतीत कर रहा हो और कोई उससे सहायता मांगे तो कहते है। तुलनीय : गढ़० नबेद का कुदालू न देबी अफुई पेट पालदी, लोग चाँदा परचो; कौर० देवी दिण काटे पडा पर्चे मागे; बुद० देवी दिन काटें, पंडा परचो माँगे; ब्रज० देवी मरैं पेट की पीर, पंडा कहें मोय कला दिखाव।

देवी पित्तर, मेरे पेट के मित्तर—देवी और पितर सभी मेरे पेट के अंदर हैं। आशय यह है कि बिना पेट भरे देवताओं की सुधि नहीं आती।

देवी मदार का कौन साथ ?—दो अनमेल व्यक्ति, काम या बात पर कहा जाता है। (देवी हिंदुओं की और मदार साहब मुसलमानों के पीर है)।

देवेगा सो पावेगा, बोवेगा सो काटेगा—जो देगा वही पावेगा और जो बोवेगा वही काटेगा भी। जो दूसरों को कुछ देता है उसे दूसरे भी देते है और जो परिश्रम करता है उसे ही लाभ मिलता है। तुलनीय : अव० जौन देई वोही पाई, जौन बोई ओही काटी; पंज० डेगा सो पावेगा, काएगा सो बड़ेगा।

देवे में कंजूस है, धर्मदास है नाम—देने में तो कंजूस हैं लेकिन नाम धर्मदास है। नाम के अनुसार गुण न हो तब कहते है।

देवे लाख, बतावे सवा लाख—गप्प हाँकने वाले के प्रति व्यंग्य मे कहते हैं। तुलनीय : पंज० देण लख दसण सवा लख।

देश में मुर्दा गंगाजी के घाट—देशभर के मुर्दे गंगाजी के घाट पर ही आते है। (क) एक के सिर बहुत आफ़तें आवें तब यह लोकोक्ति कही जाती है। (ख) बड़े लोगों में अधिक परेशानियों के झेलने की सामर्थ्य होती है। तुलनीय : ब्रज० देस के मुरदे गंगाजी पै।

देश के लिए बूढ़ा लड़ाई के लिए जवान--देश मे वृद्ध पुरुषों की तथा युद्धक्षेत्र मे नौजवानों की आवश्यकता होती है। आशय यह है कि वृद्ध लोग ही देश को सुचारु रूप से चला सकते हैं और नौजवान व्यक्ति ही रणभूमि में ठीक ढंग से लड़ सकते है। तुलनीय : पंज० देस वास्ते बुडा, लडण लई जवाण।

देश के लोग एक रंग, एक ढंग--एक देश में रहने वालों का रंग-रूप और ढंग एक-सा ही होता है। तुलनीय : राज० उणियारै उणियारै देश भर्‌या है।

देश चोरी, परदेश भिक्षा—दरिद्रता आने पर अपने नगर मे चोरी और परदेश में भीख माँग कर गुज़र करनी चाहिए। अपने देश में चोरी करना सहज है क्योंकि मालदार असामियों का पता होता है और पकड़े जाने पर कोई-न-कोई जमानत आदि भी करा लेता है। इसके विपरीत विदेश में चोरी में पकडे जाने पर बहुत दुर्गति होती है। क्योंकि वहाँ कोई जानता नही है इसलिए वहाँ भिक्षा माँगनी चाहिए। तुलनीय : राज० देस चोरी परदेस भीख; अव० देश चोरी परदेश भीख; पंज० देस चोरी परदेस भिखया; हरि० देस चोरी अर परदेश भीख; ब्रज० देस चोरी परदेस भीक।

देश छोड़ो, वेश न छोड़ो - देश को छोड़ भी दिया जाय किंतु वेश नही छोड़ना चाहिए। वेश से ही देश के प्रति स्वाभिमान जाग्रत रहता है तथा वेश ही देश की संस्कृति और सभ्यता का प्रदर्शन करता है और देश-प्रेम को बल देता है। तुलनीय : भीली-- देश चोड़वानो पण वेश चोड़वानू नी; पंज० देस छडो पेस न छडो।

देश नौकरी परदेश भीख—देश में नौकरी करके खाना चाहिए क्योंकि वहाँ भीख माँगने में बदनामी होती है। भीख परदेश में माँगी जा सकती है जहाँ कोई परिचित नहीं होता और बदनामी का कोई भय भी नहीं रहता। तुलनीय : राज०

देस चाकरी परदेस भीख।

देश पर चढ़ाव, सिर दुखे न पाँव---घर जाने के लिए न सिर दुखता है न पाँव। अर्थात् घर जाने की प्रसन्नता में सब दुख भूल जाते हैं। (क) जब कोई काम करने के वक्त बीमारी का बहाना करे और घर जाने के वक्त झट तैयार हो जाय तब कहते हैं। (ख) जिस काम में लाभ की संभावना रहती है उसके लिए श्रम करने में कष्ट का अनुभव नहीं होता।

देशा देशा चार कुला कुला व्यवहार-- हर देश एवं हर परिवार के लोगों का रहन-सहन अलग-अलग होता है। तुलनीय : गढ़० देसा चाल कुला व्यवहार।

देशी कुतिया बिलायती बोली देशी कुतिया है लेकिन बिलायती बोली बोलती है। (क) जब कोई अपना रहन-सहन या भाषा छोड़कर दूसरे के रहन-सहन या भाषा को अपनाता है तब कहते हैं। (ख) जब कोई व्यक्ति अपनी वास्तविक स्थिति से बढ़कर दूसरों का अनुकरण करता है तब भी कहते हैं। तुलनीय : भोज० देसी कुतिया बिलइती बोल; अव० देसी कुतिया बिलैती बोल; राज० देसी गधी बिलाती बोली; मेवा० देशरी गदेडी पूरव री चाल; बुद० देसी गदा बिलायती रेंगन; पंज० देस्सी घुग्गी खुरासानी राज० देसी गधा बिलायती बोली; मेवा० देशरी गदेड़ी पूरब री चाल, बुद० देसी गदा बिदायती रेकन; मरा० स्वदेशी कुत्री नि विलायती भुंकणें।

देशी कुतिया मराठी चाल - ऊपर देखिए।

देशी गधा पंजाबी रेंक -दे० 'देशी कुतिया बिलायती···'।

देशी गधी पूर्वी चाल—दे० 'देशी कुतिया बिलायती···'।

देशी घोड़ी बिलायती चाल -दे० 'देशी कुतिया बिलायती···'।

देशी घोड़ी, बिलायती लगाम—घोड़ी तो देशी है पर उसकी लगाम विलायती है। जब कोई सामान्य व्यक्ति उच्च स्तर के लोगों जैसी वेश-भूषा धारण करता है तो उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : छत्तीस० देसी घोड़ी परदेसी लगाम।

देशी घोड़ी मराठी चाल—दे० 'देशी कुतिया बिलायती···'।

देशी चिड़िया बिलायती बोल—दे० 'देशी कुतिया बिलायती···'।

देशी फाख्ता खुरासानी बोल—दे० 'देशी कुतिया बिलायती···'।

देशी मुर्गी, बिलायती बोली दे० 'देशी कुतिया बिलायती···'।

देशों में देश हरियाना, जहाँ दूध-दही का खाना देशों में अच्छा देश हरियाणा है जहाँ दूध-दही ही खाया जाता है आशय यह है कि हरियाणा में दूध-दही अधिक होता है।

'देस' या 'देसी' से आरंभ होने वाली लोकोक्तियों के लिए देखिए 'देश' या 'देशी'।

देह का क्या भरोसा ?- शरीर का कोई भरोसा नहीं है, न जाने कब धोखा दे जाए। अर्थात् जीवन का कुछ पता नहीं है कब समाप्त हो जाए। जीवन की क्षणभंगुरता को दर्शाया गया है। तुलनीय : भीली---गंधी देही ना हूँ भरोसा पंज० सरीर दा की परोसा।

देह डोरा, पेटा बोर शरीर तो डोरे जैसा पतला है, पर पेट बोरे के समान है। जब कोई दुबला-पतला आदमी बहुत अधिक खाता है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

देह धरे का दंड है- शरीर में एक-न-एक रोग लगा ही रहता है। जिसको सदा कोई-न-कोई रोग घेरे रहे उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : मरा० देह आहे ना।

देहधारी होने का दंड है --ऊपर देखिए।

देह न दसा नाक पर गुस्सा - शरीर की दशा तो देखने लायक नहीं है, पर क्रोध (गुस्सा) नाक पर ही रहता है। कमजोर व्यक्तियों के प्रति कहते हैं जो छोटी-छोटी बातों पर नाराज होते रहते हैं। तुलनीय : पंज० न रंग न ढंग नक उते गंज।

देह पर न लत्ता, पान खायँ अलबत्ता—नीचे देखिए।

देह पर न लत्ता पान खायँ कलकत्ता - शरीर पर तो एक वस्त्र तक नहीं है पर कलकत्ता जाकर वहाँ का अच्छा पान खाना चाहते हैं। साधन-शून्य व्यक्ति जब व्यर्थ के शौक में अपनी औक़ात के बाहर काम करे तो कहते हैं। तुलनीय : कनौ० देह पे नाहीं लत्ता, औ पान खाँय अलबत्ता।

देह पर वस्त्र नहीं हाथ भर को लटकन—ऐसी ग़रीबी है कि तन ढँकने के लिए वस्त्र नहीं मिलता किंतु किसी प्रकार स्त्री के कान के लिए एक हाथ लंबी लटकन (एक आभूषण) बनवाना चाहते हैं। ग़रीब व्यक्ति जब अपव्यय करे तो कहते हैं। जहाँ जिसकी ज़रूरत न हो, वहाँ उसकी व्यवस्था आदि पर भी कहते हैं। तुलनीय : भोज० देह पर लुग्गा नहीं सोने का जंजीर; छत्तीस० मुढ़ली महतारी लोढ़वा के लटकन।

देह में दम नहीं बाजार में धक्का— शरीर में तो शक्ति

नहीं है पर बाज़ार में धक्का मारने जा रहे हैं।(क) सामर्थ्य से परे काम करने वालों के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। (ख) इश्क़बाज़ आदमी के प्रति भी कहते हैं।

देह में न लत्ता, लूटे के कलकत्ता—ऊपर देखिए। तुलनीय : राज० देह में न लत्ता लूटला कळकत्ता।

देहरी लाँघते पाप लगा—दरवाज़ा पार करते ही दोष लग गया। (क) जब किसी की अकारण बदनामी होती है तो कहते हैं। (ख) जब किसी कार्य के आरंभ में ही हानि हो जाय तब भी कहते हैं।

देहरी हरी-भरी देह—धन-धान्य से परिपूर्ण रहें। एक तरह का आशीर्वाद या किसी के प्रति मंगल कामना।

देहलीज के हगे से बैर नहीं जाता—मूर्खतापूर्ण कार्यों से आपसी बैर-भाव समाप्त नहीं होता।

देहली दीपक न्याय—दरवाज़े की देहली पर दीपक रखने से घर के बाहर और भीतर दोनों ओर उजाला हो जाता है। जहाँ एक उपाय से दो कार्य संपन्न हों या एक बात से दो अर्थ निकलें वहाँ इस न्याय का प्रयोग करते हैं।

देव का दिया सर पर—ईश्वर जो देता उसे सिर पर रखना ही पड़ता है। अर्थात् भाग्य में जो लिखा है उसे सहना ही पड़ता है।

दैव दैव आलसी पुकारा—आलसी और अकर्मण मनुष्य ही भाग्य की दुहाई दिया करते हैं।

दैव न मारे हाथ से, कुमति देत चढ़ाय ईश्वर किसी को हाथ से नहीं मारता है बल्कि उसे दुर्बुद्धि दे देता है। जब किसी बुरे व्यक्ति की अपने ही कार्यों से दुर्दशा होती है तो कहते हैं।

दैवो दुर्बल घातकः—ईश्वर भी कमज़ोर को ही कष्ट देता है। अर्थात् निर्धन या निर्बल को सभी दुख देते हैं।

दैवाधीनं जगत्सर्वं: सारा संसार ईश्वर के अधीन है। अर्थात् ईश्वर जो चाहता है वही होता है, आदमी के चाहने से कुछ नहीं होता।

दो अश्विन दो भादों दो असाढ़ के माँह; सोना-चाँदी बेचकर, नाज बेसाहो साह—जिस वर्ष आश्विन, दो भादों या आषाढ़ हों उस वर्ष अकाल पड़ता है, इसलिए व्यापारियों को चाहिए कि सोना-चांदी बेचकर अन्न संग्रह कर लें।

दो उधार और पालो बैर—उधार दो और दुश्मनी बढ़ाओ (पालो)। उधार देना अच्छा नहीं है क्योंकि लेन-देन से परस्पर संबंध बिगड़ जाते हैं। तुलनीय : गढ़० अपणो दीक बैर; पंज० दुआर दे अते दुसमणी लवो; ब्रज० देउ उधार और बैर मोल लेउ।

दो और दो कितने, कहा चार रोटी—एक व्यक्ति से पूछा गया कि दो और दो कितने होते हैं तो उसने कहा कि 'चार रोटी।' (क) भूखे व्यक्ति को रोटी ही सूझती है या जब भूख लगी हो तो रोटी के अतिरिक्त मस्तिष्क में और कोई बात नहीं समाती। (ख) स्वार्थी के लिए भी कहते हैं क्योंकि वह दूसरे की ओर ध्यान न देकर अपने स्वार्थ की बात ही करता है। तुलनीय : पंज० दो अते दो किन्ने, चार पुलके।

दो क़साइयों में गाय मुरदार—एक क़साई को देखकर ही गाय के प्राण सूख जाते हैं और दो हो गए तो समझो जीते जी मर गई। जब कोई सीधा मनुष्य दुष्टों के चक्कर में फंसकर बेमौत मारा जाय तो कहते हैं।

दो की लड़ाई, तीजे की मौज—दो व्यक्तियों के झगड़े में तीसरे का लाभ होता है। आपस में फूट होने से अपनी हानि और विरोधियों का लाभ होता है, यही बताने के लिए इस लोकोक्ति का प्रयोग किया जाता है। तुलनीय : भीली—बियाँ नी फूट, तीजाए लाभ; पंज० दोआं दी लड़ाई तीजे दी कमाई।

दो के धाई एक न पाई—दो के लिए दौड़े और एक भी नहीं मिली। जब कोई एक साथ कई कार्यों को करना चाहता है और उसे किसी भी कार्य में सफलता नहीं मिलती तो कहते हैं। तुलनीय : भोज० दुगो के धाई एकहु न पाई।

दो खसम की जोरू, चौसर की गोट—दो पुरुषों की पत्नी चौपड़ (चौसर) की गोटी की तरह होती है। अर्थात् जिसे अवसर मिलता है वही फ़ायदा उठा लेता है। साझे की वस्तु के विषय में भी कहते हैं। तुलनीय : अव० दुइ खसम कै मेहरारू, चौसर कै गोट्टी।

दो घड़ी की बेहयाई सारे दिन का उद्धार—थोड़ी-सी बेमुरव्वती या उदासीनता से बहुत समय तक आराम हो जाता है। आशय यह है कि एक बार मनुष्य थोड़ा ढीठ बन जाए और दूसरे के नाराज़ होने का ख़याल न करे तो उसे हमेशा के लिए छुटकारा मिल जाता है।

दो घर का पाहुना भूखा ही रह जाता है—(क) क्योंकि दोनों सोचते हैं कि उसके यहाँ भोजन बनता होगा। अन्त में कहीं भी उसका भोजन नहीं बनता और वह भूखा ही रह जाता है। साझे का काम बहुत बुरा होता है। तुलनीय : भोज० दूघर के पाहुना भूखो रह जाला; अव० दुइ घर कै मेहमान भूखै रह जात है; राज० दो घरांरो पावणो भूखो फिरै; मरा० दोन्ही घरचा पाहुँणा उपाशी; पंज० दो घरां दा परौणा भुखा मरे।

दो घर डूबते एक ही डूबा—दो घरों के स्थान पर एक ही घर डूबा। जब मूर्ख व्यक्ति को पत्नी भी मूर्ख ही मिले तो उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० दो घर डूबता एक ही डूब्यो, दो डूबता एक ही डूब्यो।

दो घर मुसलमानी, तिसमें भी आनाकानी—दो ही घर मुसलमानों के हैं उसमें भी मेल नहीं रहता। (क) मुसलमान बहुत झगड़ालू होते है, इसलिए कहते हैं। (ख) जहाँ सजातीय लोग थोड़े ही हों और उनमें परस्पर मेल न हो तो भी व्यंग्य में कहते हैं।

दो घोड़ों का सवार बेमौत मरे—दो घोड़ों पर एक साथ बैठने वाला व्यक्ति बिना मौत के ही मर जाता है। अर्थात् दो कामों को एक साथ करने वाला हानि ही उठाता है।

दो चून के भी बुरे होते हैं—आटे (चून) के भी दो बुरे होते हैं। (क) यदि किसी पुरुष की दो पत्नियाँ हों तो उनमें परस्पर द्वेष रहता है। (ख) एक साथ दो से निपटने वाले के प्रति कहते है। तुलनीय : हरि० दो तै चून के भी भूंडे; राज० दो माटीरा ही मूंडा।

दो जोरू का खसम चूल्हा फूंके—दो स्त्रियों का पति चूल्हा जलाता है, अर्थात् भोजन पकाता है क्योंकि उसकी दोनों पत्नियाँ लड़ाई-झगड़ा करती रहती हैं और उन्हें भोजन बनाने की फ़ुर्सत नहीं मिलती। आशय यह है कि दो स्त्रियों का पति बहुत परेशान रहता है। तुलनीय : राज० दो बवांरो वर चूल्हो फूँके; पंज० दोआ रनां दा घरवाला चूल्ला वाले।

दो जोरू का खसम चौसर का पासा—दो स्त्रियों वाले पति की वही हालत होती है जो चौसर के पासे की, अर्थात् एक ओर से दूसरी ओर ढकेल दिया जाता है। यानी दो स्त्रियों के पति की बड़ी दुर्दशा होती है।

दो जोरू के खसम भूखा मरे—(क) दो पत्नियों का पति भूखा मरता है क्योंकि दोनों पत्नियाँ एक दूसरे के भरोसे पति के लिए भोजन नहीं पकातीं। (ख) प्राय. झगड़ा होने के कारण उनके घर खाना नहीं पकता। तुलनीय : भीली—भूखे मरे वे लगाई नो लोक; राज० दो बंवारों वर चूल्हो फूँके; पंज० दोआं रनो दा खसम पुखा मरे।

दो तू खाता है और दो मैं भी खाता हूँ—दो रोटियाँ तुम खाते हो तो दो रोटियाँ मैं भी खाता हूँ। अर्थात् (क) मैं तुमसे कमजोर नहीं हूँ। (ख) मैं तुमसे कम पैसे वाला नहीं हूँ। शारीरिक एवं आर्थिक समता को प्रदर्शित करने के लिए इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

दो तोई, घर खोई—(क) रबी की फ़सल काट कर ऊख बोने से कुछ उत्पन्न नहीं होता और बीज आदि में घर से व्यय किया धन भी नहीं लौट पाता। (ख) घर में दो तवे अर्थात् मेल न होने के कारण अलग-अलग खाना पकने से घर नष्ट हो जाता है। (ग) एक खेत में एक फ़सल के कटने के बाद दूसरी फ़सल बो देने से खेत खराब हो जाता है जिससे पैदावार कम होती है और किसान निर्धन हो जाता है।

दो तो चून के भी खोटे होते हैं—दे० 'दो चून के भी···'। तुलनीय : ब्रज० दोइ तौ चून के ऊ बुरे हैं।

दो दिन की ज़िंदगी, बुरा करो न कोय—जीवन बहुत थोड़े दिन का होता है, इसलिए कोई बुरा कर्म नहीं करना चाहिए। आशय यह है कि मनुष्य को सदा नेक कर्म करना चाहिए। तुलनीय : भीली—बेदड़ा कल नो पाणी पीवो है तो एम ने करवू।

दो दिन पछुवां छह पुरवाई, गेहूँ जौ को लेव दँवाई; ताके बाद ओसावै सोई, भूसा दाना अलगे होई—गेहूँ और जौ की पछुवा हवा में दो दिन और पुरवा हवा में छह दिन मड़ाई (दवाई) करके ओसाई करने से दाना और भूसा अलग हो जाते हैं। आशय यह है कि पछुवा हवा में मड़ाई करने से जल्दी पुरवा हवा में मड़ाई करने से देर से दाना भूसा अलग होते हैं।

दो दिल राज़ी, तो क्या करेगा क़ाज़ी ?—यदि दोनों आदमी तैयार हों तो क़ाज़ी कुछ नहीं कर सकता। (क) यदि प्रेमी-प्रेमिका विवाह करने के लिए तैयार हों तो तीसरा कुछ नहीं कर सकता। (ख) किसी मामले में समझौता करने के लिए यदि दोनों पक्ष तैयार हों तो तीसरा व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता। तुलनीय : हरि० मियाँ बीबी राज्जी तै के करेगा काज्जी; अव० मियाँ बीबी राजी तौ का करै काजी।

दो दो और चुपड़ी हुई—दो-दो और वह भी घी लगी (चुपड़ी) रोटी चाहते हैं। (क) जब कोई व्यक्ति किसी अच्छी चीज़ को अधिक मात्रा में पाना चाहता है तो उसके प्रति कहते हैं। (ख) स्वार्थी व्यक्ति के प्रति भी कहते हैं जब वह हर तरह से अपना ही स्वार्थ पूरा करना चाहता है। तुलनीय : राज० दो दो और चोपड़ी; हरि० दो दो अर चोपड़ी ओड़।

दो नाव पर चढ़ना, गाँड़ फाट के मरना—(क) एक साथ दो सहारे को पकड़ने वाले की दुर्दशा होती है। (ख) एक साथ दो कामों में हाथ लगाने वाला असफल होता है। तुलनीय : पंज० दो पासे खडोना, बुंड फाड के रोणा।

दो नाव पर बैठने वाला डूब मरता है—ऊपर देखिए। तुलनीय : भोज० दुइ नाव पर चढ़ल, छाती फाट के मरल।

दोनों आँखें बराबर हैं—दोनों आँखें समान हैं क्योंकि

दोनों से समान सुख मिलता है। (क) जब किसी व्यक्ति को किन्हीं दो वस्तुओं से समान लाभ होता है तब वह कहता है। (ख) बच्चों के प्रति भी माँ-बाप कहते है क्योंकि उन्हें सभी बच्चे प्रिय होते। तुलनीय : अव० दुइनौ आँखी बरोबर चितवौ; पंज० दोवें अखाँ इको जिहयां हन।

दोनों आँखों से देखना चाहिए- (क) किसी भी बात का निर्णय सोच-समझ कर करना चाहिए। (ख) किसी भी झगड़े आदि का न्याय दोनों पक्षों को समान समझकर करना चाहिए चाहे वे आपस के हों या बाहर के। तुलनीय : राज० दोयाँ आँख्याँसूं देखणों जोई जै; पंज० दोवें अख नाल देखो।

दोनों खोई जोगिया, मुद्रा और आदेश जोगी ने अपना तिलक-छाप और मान-सम्मान दोनों खो दिये। जब कोई अपने धर्म और मर्यादा दोनों से च्युत हो जाता है तब कहते हैं। तुलनीय : राज० दोनूं गमाई रे जोगिया मुदरा औ आदेश।

दोनों चूतड़ ढाल समान— दोनों चूतड़ ढाल की तरह हैं। दोनों एक से है, कोई किसी से कम नही है। जब दो व्यक्ति एक जैसे दुष्ट हो तो कहते हैं। तुलनीय : राज० दोनूं ढूंगा एके ढाळ, जै गोपाळ जी जै गोपाळ।

दोनों तरह से मौत है—हर तरह से कष्ट है। जब किसी काम के करने और न करने दोनों दशाओ में नुक़सान की संभावना हो तो कहते हैं। तुलनीय : अव० दोहरी मौत है; राज० दोनां कानी मौत है।

दोनों दीन से गए पाँडे, हलुआ मिला न माँड़े—पांडेजी दोनो ओर से गए न उन्हें हलवा (हलुआ) मिला और न माँड़ ही। जब कोई व्यक्ति लोभवश किसी सामान्य वस्तु को छोड़कर अच्छी वस्तु को पाने का प्रयत्न करे और उसे वह न मिले और अंत में दोनों से हाथ धोना पड़े तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते है।

दोनों पड़ोसी एक ही रूप न उनके झाड़ू न उसके सूप— दोनों एक जैसे हैं एक के पास झाड़ू नही है और दूसरे के पास सूप। दो अभावग्रस्त व्यक्तियों के संबंध में उक्त कहावत कही जाती है। तुलनीय : मग० दुन् परोसिया एक्के रूप न उनका बढ़नी न उनका सूप; भोज० जइसन उदई ओइसन भान न उनका चिरुकी न उनका कान।

दोनों पलीतों में दे दो तेल, तुम नाचो हम देखें खेल— दोनों मशालों (पलीतो) को जला दो और तुम नाचो तथा हम तमाशा देखें। दो मनुष्यों में झगड़ा करा के अपना स्वार्थ गाँठने और तमाशा देखने वाले के प्रति कहते हैं। (पलीता = एक प्रकार की मशाल)।

दोनों पल्ले बराबर— दोनों पलड़े समान हैं। (क) उचित न्याय करने पर कहते है। (क) किन्हीं दो व्यक्तियों में समता होने पर भी कहते हैं। तुलनीय : अव० दुइनौ पलरा बरोबर है; पंज० दोवे पासे इको जिहे हन।

दोनों हाथ मिलकर काम करते हैं—दोनों हाथो से ही कोई काम किया जा सकता है। आशय यह है कि बिना दूसरों के सहयोग से कोई काम करना कठिन होता है। तुलनीय : राज० दोनूं हाथ रळायाँ धुपै; गढ़० बाओं हाथ देणा हाथ धो देणो हाथ बायाँ हाथ धो; पंज० दोनां हथां नाल कम हुंदा है।

दोनों हाथ लड्डू लेके मरी—जब कोई स्त्री भरा-पूरा परिवार और पति के रहते मरे तो कहते हैं।

दोनों हाथ लड्डू हैं - दोनो हाथों में लड्डू हैं। दोनों तरफ़ से फ़ायदा होने पर कहा जाता है। तुलनीय : गढ़० द्वी हाथू सगून; अव० दुइनो हाथे लेड्आ; राज० दोनां हाथाँ में लाडू है; पंज० दोनां हथां विच लड्डू हन।

दोनों हाथ से ताली बजती है दोनों हाथों से बजाने पर ही ताली बजती है आशय यह है कि लड़ाई-झगड़े में दोनों का दोष रहता है, केवल एक का ही नही। तुलनीय : राज० दोनाँ हाथाँसूं ताळी वाजै; भोज० दूनों हाथे से थपरी बाजेला; अव० दुइनौ हाथे ताड़ी बाजत है।

दोनों हाथों में लड्डू है—दे० 'दोनों हाथ लड्डू ···'। तुलनीय : ब्रज० दोनू हातन में लड्डू हैं।

दोनों हाथों से ताली बजती है—दे० 'दोनों हाथ से···'।

दोनों हाथों से पगड़ी सँभालनी पड़ती है—मर्यादा क़ायम रखने के लिए परेशानी उठानी पड़ती है। तुलनीय : भोज० दूनों हाथे से पगड़ी सम्हारल जाला।

दोनों पत्ती क्यों न निराए, अब बीनत क्यों पछताएँ— जब कपास का पेड़ दो पत्ती का था तो उस समय क्यों नही निराई की ? अब कपास बुनते समय क्यों पछता रहे हो ? आशय यह है कि कपास जब छोटी हो तभी निराई करनी चाहिए वरना पैदावार अच्छी नही होती।

दो पैसे में नाव गाजीपुर नहीं जाती—दो पैसे में कोई इतनी दूर नही जाता। जो व्यक्ति थोड़े धन से बड़ा लाभ चाहे उसके प्रति कहते हैं।

दो बेटे की माँ कुतिया—दो बेटों की माँ कुतिया के समान हो जाती है। एक माँ के दो पुत्र जब एक दूसरे से पृथक् हो जाते हैं तब माँ की दशा कुतिया की भाँति हो जाती है, क्योंकि दोनों पुत्रों के टुकड़े पर ही उसका दिन कटता है। तुलनीय : मैथ० दु बेटा के माय कुतिया; भोज० दु लइका

क माई कुतिया तमाम; पंज० दो पुतरां दी माँ कुत्ती।

दो मामों का भानजा भूखा रहे—यदि किसी के दो मामा हों और वह ननिहाल जाय तो भूखा ही रह जाता है। दोनों मामा एक दूसरे के ऊपर भानजे के खाने-पीने की ज़िम्मेदारी छोड़कर निश्चित हो जाते है। (क) जब कोई व्यक्ति एक काम को कई आदमियों को सौंप दे और वे सब एक-दूसरे के भरोसे बैठे रहें, कोई भी उसे न करे तो उनके प्रति कहते है। (ख) दो घर का मेहमान भी इसी कारण प्रायः भूखा रह जाता है। (ग) साझे की वस्तु पर कोई ध्यान नही देता। तुलनीय : राज० दो मामांरो भाणजो भूखा रैवे।

दो मालिक के नौकर की मिट्टी पलीद—दो मालिकों के नौकर की बुरी दशा होती है। जब कोई मनुष्य दो व्यक्तियों की खींचा-तानी मे पड़कर कष्ट उठाता है तब कहते है।

दो मिट्टी के भी ठीक—अकेली मिट्टी की मूर्ति भी अच्छी नहीं लगती। आशय यह है कि साथी बिना जीवन काटना दूभर हो जाता है।

दो मुल्लाओं में मुर्ग़ी हराम—नीचे देखिए।

दो मुल्लों में मुरग़ी हराम—(क) दो मुल्ला यदि किसी बात पर जिद करने लगे तो हलाल चीज़ को भी हराम क़रार दे दिया जाता है। दो दावेदार और सहव्यवसायी व्यक्तियों में काम बिगड़ जाता है। अर्थात् एक काम को जब बहुत से मनुष्य करने लगते हैं तो वह बिगड़ जाता है। तुलनीय. मल० पलरुटे इटयिल् पाम्पुम् चाका; कन्नड—हिंदु होलेयरु कूडि चमंद हर केड सिदरते।

दो में तीसरा, आँख का ठीकरा—दो आदमियों की बातचीत में तीसरे का बोलना आँख में पड़े मिट्टी के कण जैसा बुरा लगता है। जब दो व्यक्ति आपस में बातचीत करते हों और तीसरा बीच में बोल उठे तब कहते हैं। तुलनीय : गढ़० दो राजी, तीन पाजी।

दोरंगी छोड़कर एक रंगी हो जा, या किनारे हो जा या संग हो जा—दोनों तरफ़ की राह छोड़कर एक तरफ़ हो जाओ। या तो अलग हो जाओ या साथ रहो। (क) ढुलमुल नीति के अस्थिर चित्त या दोनों ओर से लाभ चाहने वाले व्यक्तियों को समझाने के लिए कहते हैं कि किसी भी तरफ़ हो जाओ, दोनों ओर टाँग फैलाना ठीक नहीं है। (ख) भगवद्भक्ति के संबंध में भी कहते हैं कि यदि ईश्वर की ओर ध्यान लगाना है तो दुनिया छोड़ दो और यदि दुनिया अच्छी लगती है तो ईश्वर का पीछा छोड़ दो।

दो रकाबा घोड़ा, बख़्शी का दामाद—बख़्शी का दो रकाबा घोड़ा उनका दामाद है, अर्थात् उसके भी ठाठ-बाट निराले हैं। (क) बड़े लोगों के जानवर भी बहुत सुख भोगते हैं। (ख) किसी की बहुत प्रिय चीज़ के लिए भी कहते हैं।

दो राजी, तीसरा पाजी—दो ही अच्छे होते हैं तीसरा बेकार होता है। (क) दो व्यक्तियों की मित्रता अच्छी होती है उनमें तीसरे का आना अच्छा नहीं होता। (ख) दोनों खुश हों तो तीसरा कुछ नहीं कर सकता। तुलनीय : गढ़० द्वी राजी तीसरा पाजी।

दो लड़ें, तीजा ले उड़े—दो की लड़ाई में तीसरा लाभ उठाता है। जब दो व्यक्तियों के परस्पर लड़ने से तीसरे का लाभ हो तब कहते हैं। तुलनीय : राज० दो लड़ै जद तीजो ले पड़ै।

दो लड़ेंगे तो एक गिरेगा ही—नीचे देखिए।

दो लड़ें तो एक पड़े—दो लड़ते हैं तो एक हारता है। लड़ाई में एक की हार अवश्य होती है। हारने वाले को साहस बँधाने के लिए कहते हैं। तुलनीय : राज० दो लड़ै जठे एक पड़ै; माल० दो लड़े तो एक पड़े; ब्रज० दो लड़िगे तौ एक गिरैगौ ई; अं० There is only one thing worse than victory and that is defeat.

दो सिर इकट्ठे करने का बड़ा सवाब है—दो सिर इकट्ठा करने से बड़ा पुण्य मिलता है। किसी का ब्याह कराने से बहुत पुण्य होता है।

दो सेर मोथी अरहर मास, डेढ़ सेर बीघा बीज कपास—मोथी, अरहर और उड़द (मास) को दो सेर प्रति बीघा तथा कपास को डेढ़ सेर प्रति बीघा बोना चाहिए।

दोस्त आवे तो हड्डी बिकाय—मित्र के आने पर हड्डी बिक जाती है। आशय यह है कि दोस्त के आने पर बहुत व्यय होता है।

दोस्त का दुश्मन दुश्मन, और दुश्मन का दुश्मन दोस्त—दोस्त का दुश्मन अपना भी दुश्मन है और दुश्मन का दुश्मन अपना मित्र होता है। तुलनीय : अं० A friend's enemy is enemy while an enemy's enemy is a friend.

दोस्त के मुँह पर कहे और दुश्मन की पीठ पीछे—अपने मित्रों से जो कुछ भी भला-बुरा कहना हो वह उनके मुँह पर अर्थात् सामने ही कहना चाहिए और शत्रु के पीठ पीछे ही कड़वी बात करनी चाहिए। मित्र-हित के लिए चाहे कितनी भी कड़वी बात क्यों न हो उसके सामने तुरन्त ही कह देनी चाहिए। तुलनीय : गढ़० मित्र का बोन्नी अग्वाड़ी अर शत्रु का बोन्नी पिछाड़ी; सत्तुर का बोन्नी पीठ पिछाड़े, मित्र का बोन्नी अग्वाड़े।

दोस्त के सामने, दुश्मन के पीछे—ऊपर देखिए।

दोस्त बिना ज़िंदगी नमक बिना दाल—मित्र के बिना जीवन वैसा ही होता है जैसी नमक के बिना दाल। आशय यह है कि मित्र के बिना जीवन फीका है। तुलनीय : उर्दू० नमक के बिना खाना, और दोस्त के बिना ज़िंदगी बराबर है।

दोस्त मिल जाते हैं, पर पहाड़ नहीं मिलते—दो बिछुड़े हुए मित्रों के आपस में मिलने की संभावना रहती है पर पहाड़ नही मिलते। आशय यह है कि प्रकृति के नियम नहीं बदलते।

दोस्त मिले खाते, दुश्मन मिले रोते—मित्र खाते हुए और दुश्मन रोते हुए मिलें तो ठीक है। अर्थात् मित्र का भला और शत्रु का बुरा सभी चाहते है।

दोस्ती में लेन-देन बैर का मूल—रुपए-पैसे के लेन-देन से दोस्ती में फ़र्क पड़ जाता है अर्थात् दुश्मनी हो जाती है। तुलनीय : मरा० मैत्रीतलें देणे-घेणें वैराचे मूल।

दोस्तों का हिसाब दिल में - दोस्तों का हिसाब मन में ही रखा जाता है। आशय यह है कि मित्र गुप्त रूप मे ही अपना लेन-देन समझ लेते हैं।

दो हाथ और एक पेट—प्रकृति ने पेट दिया है तो परिश्रम करके कमाने के लिए दो हाथ भी दिये हैं। हाथ से काम करने वाला कभी भूखा नही मरता। अकर्मण्य व्यक्तियों को समझाने के लिए कहते हैं। तुलनीय : माल० दो हाथ बचे पेट है।

दो हाथ बीच पेट है—दो हाथो के बीच मे पेट है अर्थात् पेट को दोनों हाथों का बल है। जो परिश्रम करेगा वह भूखों नहीं मर सकता।

दो हाथ मिलकर धोते हैं—दोनों हाथ मिलकर ही धोते हैं। (क) दोनों हाथ मिलकर ही कार्य करते है। (ख) एकता में बहुत शक्ति होती है और उससे प्रत्येक कार्य हो सकता है। तुलनीय : राज० दोनू हाथ रळायां धुपै।

दो ही चीज़ है बेटा या बेटी—दो मे से एक ही पैदा होता है बेटा या बेटी। लड़की पैदा होने पर प्राय: खुशी नहीं होती, उस समय सांत्वना देने के लिए कहा जाता है।

दो ही चीज़ है हार या जीत—विजय और पराजय में से एक ही होती है। किसी के हारने पर उसको ढाढ़स बँधाने के लिए कहा जाता है। तुलनीय : अं० There is only one thing worse than victory and that is defeat.

दौड़ चले न चोपट गिरे— न दौड़कर चलता न औंधा गिरता। असावधानी से काम करने और हानि उठाने वाले के प्रति कहते हैं।

दौड़ चलो न ठोकर खाओ—ऊपर देखिए।

दौड़ता घोड़ा दाना पाता है— दौड़ते हुए घोड़े को ही खाने को दाना मिलता है। मेहनत करने वाला ही सुख पाता है।

दौड़ दौड़ धाव, कर्म रेख पाव—चाहे जितना दौड़ो पर पाओगे उतना ही जितना कर्म रेखा में लिखा है। अर्थात् प्रारब्ध से अधिक नहीं मिलता।

दौड़-धूप कर तेरह, घर बैठे बारह – दौड़-धूप करने से तेरह हो जाता है और बैठे रहने से बारह ही रह जाता है। आशय यह है कि परिश्रम करने से ही लाभ होता है। तुलनीय : छत्तीस० धांय-धूपे तेरा, घर बैठे बारा।

दौरो कोस हजार लों बसे लच्छमी पास – लक्ष्मी तो प्रत्येक स्थान में रहती है उसके लिए भागना-दौड़ना व्यर्थ है। आशय यह है कि भाग्य में होने पर ही लक्ष्मी मिलती है।

दौलत अंधी होती है—तैमूर जब दिल्ली में आया तो उसके पास एक अंधा गवैया आया जिसका नाम दौलत था। बादशाह ने कहा, कहीं दौलत भी अंधी होती है? अंधे ने कहा दौलत अंधी न होती तो लंगड़े के पास क्यों आती। बादशाह इस हाज़िरजवाबी से बहुत प्रसन्न हुए। तैमूर भी लँगड़ा था। धनी व्यक्ति ग़रीबों के दुख को नहीं समझते। या धन होने पर आदमी उचित-अनुचित का ध्यान नही रखता।

दौलत करम की, सराफी भरम की - धन भाग्य से मिलता है और सर्राफी उसी की चलती है जिसके ईमानदार होने की साख हो।

दौलत का खेल है—(क) सब काम रुपए से ही होता है। (ख) जब कोई निर्धन व्यक्ति धनी होने पर काफ़ी साधन जुटा लेता है तब भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० पैहे दी खेड है।

दौलत के पर लग गए—धन को पंख लग गए और उड़ गया। जब कोई संपन्न व्यक्ति थोड़े ही समय में निर्धन हो जाता है तो कहते हैं। तुलनीय : पंज० पैहे नू फंग लग गए।

दौलत खर्च के लिए है—(क) कंजूसों के प्रति कहते हैं। (ख) जब कोई अधिक खर्च करने वाले को कम खर्च करने के लिए कहता है तब वह ऐसा कहता है। तुलनीय : पैहा खर्चन लई है।

दौलत पाय न कीजिए सपने में अभिमान— धन पाकर स्वप्न में भी घमंड नहीं करना चाहिए। धन-वैभव पाकर

अभिमान नहीं करना चाहिए क्योंकि ये दोनों सदा किसी के पास नहीं रहते।

दौलतमंद की डेवढ़ी पर सब सिजदा करते हैं—धनी के दरवाज़े पर सब सिर झुकाते हैं। अर्थात् रुपए वाले की सब ख़ुशामद या इज्ज़त करते हैं। तुलनीय : मरा० श्रीमंता पुढें सर्व नमतात।

दौलतमंद के सब रिश्तेदार—धनवान के सब संबंधी बनते हैं। जो धनवान के साथ स्वार्थवश या लोभवश अपना संबंध जोड़ते हैं उनके प्रति व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : राज० धनवाळे रे सै नेड़ा; पंज० पैहे दे सारे यार; अं० Every one is kin to the rich man.

द्रव्य का दरबार—धन होने से दरबार लगा है। अर्थात् धन होने पर ही लोग ख़ुशामद करते है।

द्वार आई बरात, बहू पीसे मंदा—बारात द्वार पर पहुँच गई और बहू अभी गेहूँ पीस रही है। जो व्यक्ति पहले से तैयार न होकर आवश्यकता के समय साधन तैयार करते हैं उनके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते है। तुलनीय : भीली—घेर विवा, वऊ पीसला वीणे।

द्वार आई बरात, समधिन काते सूत—ऊपर देखिए।

द्वारे बारात आई तो कुम्हड़ा रोपने लगे—दे० 'द्वार आई बरात, बहू···।' तुलनीय : भोज० दुअरा आइल बरिआत तऽ समधी क लागल हगवास।

द्विविधा में दोनों गए माया मिली न राम—दे० 'दुविधा में दोऊ गए···'।

द्वै तुरंग पै एक एक संग, भयो कौन असवार ?—एक समय में दो घोड़ों पर कौन सवार बैठ सकता है, अर्थात् कोई नही। आशय यह है कि एक समय में एक ही कार्य हो सकता है दो नही।

ध

धक्के पर धक्का लगता है—विपत्ति पर विपत्ति आती है। जब किसी व्यक्ति पर एक के बाद दूसरी विपत्तियाँ आती रहती हैं तब कहते हैं। तुलनीय : पंज० मरया मरदा है।

धड़ी भर का सिर तो हिला दिया, पैसे भर की जबान न हिलाई गई—पाँच सेर (धड़ी भर) का सिर हिला दिया लेकिन थोड़ी-सी ज़बान नहीं हिलाई। जब कोई किसी बात का उत्तर बोले बिना सिर हिलाकर हाँ या नहीं में दे तो कहते हैं। या जब कोई प्रणाम आदि का उत्तर वाणी से न देकर केवल सिर हिला दे तो भी कहते हैं। तुलनीय : अव० पसेरी भर कै मूंड हिलाय दिहेन, तोला भर कै जबान न डोलाएन।

धधायगा सो बुतायगा—जो धधकता है वह बुझ जाता है। (क) जो तेज़ी से उठता है वह शीघ्र ही गिर जाता है। (ख) जो बहुत उपद्रव करता है उसका शीघ्र पतन हो जाता है।

धनंजय न्याय—अर्जुन का न्याय। प्रस्तुत न्याय का प्रयोग ऐसे किसी काम के संबंध में किया जाता है जो पहले भी किसी अन्य व्यक्ति के द्वारा संपन्न हो चुका हो। जैसे अर्जुन ने कौरवों को हराया, जिन्हें श्रीकृष्ण ने पहले ही पराजित कर दिया था।

धन ईश्वर से भी बढ़कर है—स्पष्ट है। तुलनीय : मल० देवतेक्काल् वलुतु धनम्; पंज० पैहा रब नालों बड़ा हुंदा है; अं० Mammon has more worshippers than God

धन का खेल है—धन से सभी सुख प्राप्त किये जा सकते हैं।

धन का धन गया, मीत की मीत गई—धन भी गया और दोस्ती भी समाप्त हो गई। जब दो मित्रों में लेन-देन के हिसाब में गड़बड़ी होने से मित्रता समाप्त हो जाती है तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० धन का धन गवा, मिताई उपरा से गय।

धन का बढ़ना अच्छा पर मन का बढ़ना नहीं—(क) धन का बढ़ना अच्छा माना जाता है पर मन का बढ़ना अच्छा नहीं माना जाता, क्योंकि मन के बढ़ने से धन और मर्यादा दोनों पर ख़तरा आने की संभावना रहती है। (ख) जब किसी को मनमाना काम करने के कारण हानि उठानी पड़ती है तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० धन क बढ़ल नीक मन क बढ़ल नाँ।

धन के अगाड़ी मक्कर नाच—धन के लिए मनुष्य तरह-तरह की चालबाज़ियाँ (मकर) करता है।

धन के पंद्रह मकर पच्चीस, जाड़ा चिल्ला दिन चालीस—पंद्रह दिन धन राशि के और पच्चीस दिन मकर राशि के, कुल इन्हीं चालीस दिनों तक ज़ोर का जाड़ा पड़ता है जिसे चिल्ला कहते हैं। तुलनीय : राज० धनरा पनरह मकररा पचीस, ऐ सरदीरा दिन चालीस; ब्रज० धन के पन्द्रह, मकर के पच्चीस, चिल्ला जाड़े दिन चालीस।

धन के बाप और भाई, धन बिन नार पराई—धन

रहने पर ही पिता और भाई साथ देते हैं। धन न होने पर पत्नी भी दूसरे की हो जाती है अर्थात् साथ छोड़ देती है। आशय यह है कि धन रहने पर ही सभी साथ देते हे, धन न रहने पर बहुत प्रिय लोग भी साथ छोड़ देते है। तुलनीय : माल० छतरी बेन ने छतरो भाई, पीठ पछाड़ी नार पराई; पंज० पैहे दे पिओ परा पैहे बगैर बुंड मरा।

धन के साथ अकल भी चली जाती है—धन जाने के साथ-साथ मनुष्य की बुद्धि भी चली जाती है। (क) निर्धन व्यक्ति की निर्धनता के कारण बुद्धि भी मारी जाती है। (ख) जब कोई बुद्धिमान व्यक्ति निर्धनता के कारण कुछ नहीं कर पाता तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० पैहे नाल मत मारी जांदी है।

धन को धन कमाता है—धन से ही व्यवसाय आदि करके धन बढ़ाया जा सकता है। तुलनीय : मल० पणम् कोण्टेरिज्जाले पणत्तेल् कोल्लू; पंज० पैहे नू पैहा कमांदा है; अ० Money begets money.

धन को धन खींचता है—ऊपर देखिए। तुलनीय : पंज० पैहे नू पैहा खिचदा है।

धन गया तो काना नाती आया—धन नष्ट हुआ, ग़रीबी आई तो नाती भी काना जन्मा। (क) एक के साथ दूसरी विपत्ति आने पर कहते हैं। (ख) निर्धन को ही विपत्तियां सताती हैं। तुलनीय : छत्तीस० धन के भये जाती तो उपजिन कनवा नाती।

धनक्षये वर्धते जठराग्नि—धन के अभाव से भूख भी बढ़ जाती है अर्थात् (क) निर्धन होने पर भूख भी अधिक लगती है। (ख) ग़रीबी में आवश्यकताएं बढ़ने पर भी कहते हैं।

धन चाहे तो धर्म कर, मुक्ति चाहे भज राम—धन चाहते हो तो धर्म करो और मोक्ष चाहते हो तो ईश्वर की आराधना करो। आशय यह है कि धर्म से धन और भजन से मुक्ति की प्राप्ति होती है।

धन जाय, ईमान जाय—धन जाने पर आदमी की ईमानदारी भी चली जाती है। आशय यह है कि निर्धनता में मनुष्य चोरी-बेईमानी सब कुछ करता है। तुलनीय : राज० धन जाय जिगरो ईमान जाय; पंज० पैहा गया मान गया।

धन जाय तो धर्म भी जाय—धन जाने के साथ-साथ धर्म भी चला जाता है। (क) निर्धन व्यक्ति दान-पुण्य नहीं कर पाता। (ख) निर्धन व्यक्ति अपनी भूख मिटाने के लिए किसी भी जाति का दिया हुआ अन्न खा लेता है। तुलनीय : मैथ० धन जाय तऽ धरमो जाय; भोज० धन गइला पर धरमो चल जाला; पंज० पैहा गया अते धरम भी गया।

धन जाय पर मान न जाय—धन भले चला जाय पर मर्यादा नहीं जानी चाहिए। आशय यह है कि मर्यादा का स्थान धन से ऊँचा होता है, उसकी हर क़ीमत पर रक्षा करनी चाहिए। तुलनीय : गढ़० धन जौ, मान रौ; पंज० पैहा गया पर मान न गया।

धन जाय, बुद्धि आय—धन जाने से ही मनुष्य की बुद्धि ठिकाने आती है। धन होने पर मनुष्य बुद्धि को तिलांजलि देकर भोग-विलास तथा धूर्तता के कामों में फँसा रहता है और धन के जाते ही उसे सुबुद्धि आ जाती है तथा वह भविष्य में भला आदमी बनने का प्रयत्न करता है। तुलनीय : माल० धन जावा केड़े अकल आवे; पंज० पैहा गया मत आयी।

धन दे जी को राखिए और जी दे राखे लाज—धन देकर प्राणों की और प्राण देकर लाज की रक्षा करनी चाहिए। अर्थात् इज्ज़त बहुत बड़ी चीज है, उसकी हर क़ीमत पर रक्षा करनी चाहिए।

धन दे तन को राखिए, तन दे रखिए लाज—ऊपर देखिए।

धन नहिं जग संतोष समाना—संसार में संतोष से बड़ा कोई धन नहीं है। संतोष रखने वाला बहुत सुखी रहता है। तुलनीय : स० संतोषं परमं सुखम्।

धन नाते हुक्का, पोशाक नाते ज़ुल्फ़—धन के नाम पर केवल हुक्का है और और पोशाक के नाम पर केवल ज़ुल्फ़े। (क) बहुत निर्धन व्यक्ति के प्रति कहते हैं। (ख) निर्धन होने पर भी जब कोई ऊपर से ठाठ बनाए रहे तो भी व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : भोज० धन नाते हुक्का पोसाक नाते चीलम।

धन नाम कठौती, पोशाक नाम जामा—ऊपर देखिए। तुलनीय : भोज० धन नावें कठउती पोसाक नावें जामा।

धन बढ़े मन बढ़े—धन बढ़ते पर मन बढ़ता है। आशय यह है कि धन होने पर ही नए-नए कामों को करने की इच्छा होती है। तुलनीय : पंज० पैहा वदे दिल वदे।

धन में धन एक हुक्का औ चिलम—दे० 'धन नाते हुक्का...'।

धन में धन चंगेली-भर कन—दे० 'धन नाते हुक्का...'।

धन में धन, तीन आंटी सन—धन में धन क्या है, केवल सन की तीन छोटी-छोटी गाँठें। (क) बहुत ग़रीब आदमी के प्रति कहते हैं। (ख) जब कोई किसी साधारण

वस्तु पर बहुत घमंड करता है तो उसके प्रति भी व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

धन, यौवन औ रूप, जैसे सावन धूप—जिस प्रकार सावन मास में धूप कुछ देर के लिए चमकती है और बादल के घिरते ही समाप्त हो जाती है उसी प्रकार धन, यौवन और सुंदरता भी कुछ देर ही ठहरते हैं। आशय यह है कि ये तीनों वस्तुएँ बहुत थोड़े समय के लिए मिलती हैं, इसलिए इन पर गर्व नहीं करना चाहिए। तुलनीय : भीली – धन जोबन माया तीन दड़ा नी पामणी।

धनवंती काँटा लगा, दौड़े लोग हजार, निर्धन गिरा पहाड़ से कोई न आया कार- धनी को काँटा चुभ गया तो हजारों लोग देखने आए और निर्धन पहाड़ से गिरा तो कोई नहीं आया। बड़ों के छोटे रोग को भी रोग समझकर हजारों देखने आते हैं पर छोटों का बड़ा कष्ट भी कष्ट नहीं समझा जाता। लाखों मरते हैं, कोई पूछता तक नहीं पर नेताओं को जुकाम भी हो जाता है तो दोनों समय अखबारों में समाचार दिए जाते है। तुलनीय : मरा० राणीला काँटा बोचला हजारों धाँवले, दासी पडली डोंगरा वरून ढुकून नाहीं पाहिले; गुज० पैसा वाला नी बकरी मरी ते बधां गामे जाणी, गरीब नी छोकरी मरी ते कोइ ए नहिं जाणी।

धन वाले और गुस्से वाले की चाल निराली—धनवान और क्रोधी मनुष्य सधारण मनुष्यो से भिन्न होते हैं। क्रोधी का पागलपन और धन का नशा मनुष्य को अन्य लोगों से भिन्न रखता है। तुलनीय : भीली---री रत्ना नो राग दनिया हूँ न्यारो; पंज० पैहे वाले अते गुस्से वाले दा चलण बखरा हुंदा है।

धन सबको अंधा कर देता है—धन होने पर सभी लोग अनुचित काम करते हैं। या धन होने पर सबको घमंड हो जाताहै। तुलनीय : मल० धनम् मनुष्यने अन्धनाक्कुन्नु; पंज० पैहा सब नू अन्ना कर दिंदा है; अं० Gold is the dust that blinds all eyes.

धन से धर्म—धन होने पर ही आदमी धर्म करता है। आशय यह है कि धन होने पर ही सब कुछ किया जाता है। तुलनीय : असमी – धनेइ धर्म्मर् मूल्; स० धनात् धर्म्मस्ततः सुखम्; छत्तीस० धन है त धरम है; पंज० पैहे नाल तरम; अं० Money masters all things.

धन से लखपति, दिल से भिखारी—धन से तो लखपति हैं पर दिल से भिखारी हैं। धनवान होने पर भी जो व्यक्ति बहुत बुरे हाल में रहता हो तथा बहुत कंजूसी करता हो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : माल० लखे सरी तोई भखेमरी।

धन हे देश की पुआल निशानी—किसी देश में धान की फ़सल कैसी हुई इसका अन्दाज़ वहाँ के पुआल को देखकर ही चल सकता है। किसी व्यक्ति की संपन्नता का पता उसके पहनावे आदि से ही चल जाता है। तुलनीय : मैथ० उपजल आँगन पुआरहिं चिन्ही; भोज० पुअरे देख के धान कै पता चल जाइ।

धन है तो धर्म है—दे० 'धन से धर्म।'

धन होई सन, सूते या फिर गाई के पूते—किसानों के पास धन के केवल तीन ही साधन है—पटसन, कपास या गाय के बछड़े। तुलनीय : भोज० धन होला सन से, सूत से, या तऽ गाई के पूत से।

धन हो न हो, दिल तो है—भले ही धन नहीं है लेकिन उसके पास दिल तो है। जो निर्धन होते हुए भी दिलदार होता है उसके प्रति कहते है। तुलनीय : माल० नर है फाँकड़ा पण थैली रा मूंडा हाँकड़ा।

धनियों के लिए जेवर, गरीबों के लिए सहारा—आभूषण अमीरों के लिए शृंगार की वस्तु है और ग़रीबों के लिए रोटी का सहारा। अच्छे दिनों में जो आभूषण शोभा बढ़ाते हैं वही बुरी अवस्था में कुछ दिन काटने का साधन बन जाते हैं। तुलनीय : राज० गहणा धायांरा सिणगार है भूखांरा आधार है।

धनि वह राजा धनि वह देस, जहवां बरसै अगहन सेस; पूस में दूना माघ सवाई, फागुन बरसै घरों से जाई—वह देश तथा वहाँ का राजा दोनों ही धन्य है जहां अगहन समाप्त होते-होते जल बरसा हो। पूस मास में पानी बरसने से दूना और माघ के पानी से सवाया अनाज पैदा होता है, परन्तु फाल्गुन की वर्षा से घर का भी बरबाद हो जाता है।

धनी के सब साथी—सम्पन्न व्यक्ति से सभी सम्बन्ध जोड़ना चाहते है। तुलनीय : मल० एतानुमुण्टन्क्लि आरानुमुण्टु; पंज० पैहो वाले दे सब यार; अं० Every one is kin to the rich man.

धनी से जलन और गरीब से दया—धनी से सब जलते हैं और निर्धनों से सहानुभूति रखते है। संसार की अधिकांश आबादी ग़रीब है, इसलिए मुट्ठी-भर अमीरों से वह घृणा करती है। तुलनीय : गढ़० होंदा की हीस जांदा की टीस।

धनुष पड़े बंगाली, मेह साँझ या सकाली—यदि पूर्व दिशा मे इन्द्र धनुष का दर्शन हो तो समझना चाहिए कि वर्षा शीघ्र ही होगी।

धन्ना सेठ के नाती बने है—थोड़ी पूंजी वाला जब

अपने को बड़ा साहूकार समझने लगे तो व्यंग्य में कहा जाता है। तुलनीय : अव० धन्न सेठ कै नाती बने हैं; बुंदे० धन्ना सेठ के नाती बनें फिरत; ब्रज० धन्ना सेठ के नाती ऐं।

धन्य जुलाहन तेरा हिया, जीता खसम धरती में दिया —ऐ जुलाहन धन्य तुम्हारा दिल है कि तुमने अपने जीवित पति को ही दफ़ना दिया। जब कोई जानकार अपनी बहुत बड़ी हानि करे या कोई स्त्री अपने पति को गाली दे तो कहते हैं।

धन्य मलयगिरि जहँ सकल तरु चंदन होइ जाहिं —वह मलयगिरि धन्य है जहाँ सभी पेड़ चंदन जैसे हो जाते है या चंदन जैसी गंध देने लगते है। आशय यह है कि वे व्यक्ति धन्य है जिनकी संगति से बुरे भी भले हो जाते है। संसर्ग का प्रभाव अवश्यमेव पड़ता है।

धन्य मेरी बालकी, जिन बाप चढ़ाए पालकी—मेरी लड़की धन्य है जिसने बाप को पालकी पर चढ़ाया। किसी के अपनी लड़की या जामाता के कारण प्रतिष्ठा पाने पर व्यंग्य से कहते हैं।

धन्य मेरी बूटी, कहाँ बोई कहाँ फूटी -- बीज कही बोया और पैदा कही हुआ। जब किसी का प्रयत्न वांछित फल न दे या किसी के परिश्रम का फल दूसरे को मिले तो कहते हैं। तुलनीय : गढ़० धनि मेरी बूटी, कख लगी कख फूटी।

धन्य सो भूप नीति जो करई—वह शासक धन्य है जो नीति पर चलता है अर्थात् जो प्रजा के साथ न्याय करता है।

धप्पा लगाकर माफी माँगें--धप्पा (चोट या नुक़सान) मारकर क्षमा माँगते हैं। जो व्यक्ति किसी का नुकसान करके या किसी को अपमानित करके बाद में उससे क्षमा-याचना करता है उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० चंड मार के माफी मगना है।

धमकाया बनिया धर दी डेढ़सेरी---धमकाने पर बनिया चीज़ देने में सेर के स्थान पर डेढ़सेरी रख देता है। जब कोई किसी को भयवश उचित से अधिक चीज दे देता है या कोई किसी से भय दिखाकर उचित से अधिक वस्तु ले लेता है तो कहते हैं। तुलनीय : अव० धमकावा बनिया, चढ़ाय दिहेस डेढ़सेरी।

धमधूसड़ काहे मोटा, बनज करे न आवे टोटा—धमधूसड़ मोटा क्यों ? न व्यापार करता और न घाटा होता। बेफ़िक्र व्यक्ति के प्रति कहते हैं। तुलनीय : अव० धमधूसड़ काहे मोट बनिज करै न आवै टोंट।

धरजा मरजा---मेरे यहाँ सामान रखकर मर जाए। स्वार्थी व्यक्ति के प्रति कहते हैं जो अपने लाभ के लिए दूसरे का अहित करता है।

धर जा, मर जा, बिसर जा---मेरे पास रख जा और रखने के बाद या तो मर जा या उसे भूल जा। जो व्यक्ति दूसरों का धन हड़पने के लिए उनका अनिष्ट चाहता है उसके प्रति कहते हैं।

धरती का पानी नीचे ही जाता है— भूमि पर पड़ा पानी भूमि के भीतर ही जाता है। अर्थात् जो धन उत्पन्न करता है, उसका सुख भी वही भोगता है।

धरती किसी की रही न रहेगी---भूमि किसी एक की नही रहती अर्थात् सम्पत्ति किसी एक के पास नही रहती वह चलायमान है। तुलनीय : पंज० तरती किसी दी न रवेगी।

धरती के सब पत्थर देव माना, पर सुख कभी न जाना — धरती के सब पत्थरों को देवता मानकर पूजा की, किन्तु सुख फिर भी न मिला। (क) मूर्ति पूजा के विरोध में व्यंग्य से कहते हैं। (ख) जब कोई व्यक्ति सभी प्रयत्न करके थक जाए और फिर भी उसे सफलता न मिले तो उसके प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : भीली—धरती माते माटा जतरा देव कीदू, पण कई उपाय ने लागी।

धरती भी जगह नहीं देती -अत्यन्त दीन या दुखी व्यक्ति के प्रति कहते हैं जिसे कहीं भी आश्रय न मिले। तुलनीय : पंज० तरती भी थां नई दिंदी।

धरती माता बोझ सँभाले -- (क) यह एक आशीर्वाद है जिसका अर्थ है दीर्घायु पाना। (ख) बिलकुल निकम्मे व्यक्ति के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० तरती माँ पाँर गाँवे।

धरते झाँपी बवंडर—टोकरी (झाँपी) रखते ही तूफान (बवंडर) आ गया। जब कोई किसी स्थान पर पहुँचते ही किसी विपत्ति में फँस जाय तो कहते हैं।

धरनी की माँ साँझ— सन्ध्या को पृथ्वी की माता कहा गया है क्योंकि इसी समय सबका पेट भरता है और सब आराम करते हैं।

धरनीधर से क्या नहीं होता—अर्थात् सामर्थ्यवान् सभी कुछ कर सकता है। तुलनीय : मैथ० का न होई धरनी धर।

धरने की मर्यादा साँझ—हर एक चीज़ की सीमा होती है, यहाँ तक कि लोग धरना भी शाम ही तक देते हैं।

धर पटको तुम, चढ़ने को हम तैयार—पटक तुम दो बाद में हम भी चढ़ बैठेंगे। दूसरे से कार्य करवाकर लाभ चाहने वाले के प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

धरम का काम मंगलवार— धर्म का काम केवल मंगलवार को ही करना चाहिए। अज्ञानी मनुष्य प्रतिदिन बुरा से बुरा काम करने को तत्पर रहते हैं, किन्तु मंगलवार को प्याज तक नहीं खाते। इस तरह के ढोंगी और मूर्खों के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : माल० करम धरम दीतवार।

धरम की जड़ पाताल में—धर्म की जड़ पाताल में गड़ी होती है। धर्म करने वाले व्यक्ति का कभी अनिष्ट नहीं हो सकता, ईश्वर उस पर सदा प्रसन्न रहता है। तुलनीय : राज० धरमरी जड़ पताल में।

धरम की जड़ सदा हरी—धर्म की जड़ सदा हरी रहती है। आशय यह है कि दान-पुण्य या परोपकार करने वाले सदा सुखी रहते हैं। तुलनीय : हरि० धरम की जड़ सदा हरी; राज० धरमरी जड़ सदा हरी; ब्रज० धरम की जर सदा हरो ऐ।

धरम की जय होती है—ईमानदार एवं परोपकारी की सदैव विजय होती है।

धरम के दूने—धर्म करने से दूना लाभ होता है। परोपकारी व्यक्ति सदा उन्नति करते रहते हैं।

धरम कोई खोये धन कोई ले—ईमान किसी का जाए और लाभ किसी दूसरे का हो।

धरम धनियों का—धर्म सम्पन्न व्यक्ति के लिए है। आशय यह है कि दान-पुण्य सम्पन्न व्यक्ति ही कर सकते हैं। निर्धन तो सदा रोटी जुटाने में ही परेशान रहते हैं। तुलनीय : राज० धरम धण्याँरो।

धरम भी गया तुमड़ी भी फूटी—धर्म और धन दोनों ही खत्म हो गए। जब कोई लोभवश धर्म और धन दोनों से हाथ धो बैठता है तब उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : भोज० धरमो गइल तुम्मो फूटल; मैथ० धरमो गेल तुम्मो फूटल।

धरम रहे तो ऊसर में जुरे—धर्म के जोर से ऊसर में भी खेती की जा सकती है। आशय यह है कि धर्म से कठिन कार्य भी हो जाते हैं।

धर्म शील कोटिक महँ कोई—करोड़ों में कोई एक धर्मात्मा होता है। आशय यह है कि सज्जन पुरुष बहुत कम होते हैं।

धरम सनेह उभय मति घेरी, भई गति साँप छछूँदर केरी—धर्म और स्नेह दोनों ने बुद्धि को घेर लिया है तथा साँप और छछूँदर की-सी दशा हो गई है। जब किसी कार्य के करने और न करने दोनों दशा में हानि को देखते हुए कोई धर्म संकट में फँस जाता है तब उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

धरमी के सवाए, अधरमी के दूने—जो व्यक्ति ईमानदारी से दूकानदारी करते हैं उनको थोड़ा लाभ होता है और जो बेईमानी से व्यापार करते हैं उनको अधिक लाभ होता है। बेईमान व्यक्तियों के प्रति व्यंग्य से इस प्रकार कहते हैं। तुलनीय : गढ़० सौ का सवाया कंजूस का दूणा।

'धर्म' से आरम्भ होने वाली लोकोक्तियों के लिए देखिए 'धरम'।

धरा को स्वभाव यही तुलसी जो फरा सो झरा, जो बरा सो बुताना—तुलसीदास जी कहते हैं कि धरा का यह नियम है कि जो फलता है वह झड़ भी जाता है और जो जलता है वह बुझ जाता है। आशय यह है कि उत्पन्न होना और मिट जाना इस संसार का नियम है।

धरी की धरी रह जाएगी—रखी ही रह जाएगी किसी काम नहीं आएगी। कंजूसों के प्रति कहते हैं जो कष्ट सहते हैं, पर धन खर्च नहीं करते। तुलनीय : पंज० पैदी दो पैदी रैनी है।

धरी धराई वस्तु पराई—रक्खी हुई चीज दूसरों के ही काम आती है। कंजूसों के प्रति कहते हैं जो धन इकट्ठा करते हैं लेकिन खर्च नहीं करते। तुलनीय : गढ़० धरी धराई, बस्त पराई।

धरे बाजार नहीं लगती—जबरदस्त पकड़कर बिठाने से बाज़ार नहीं लगता। आशय यह है कि कोई भी काम जबरदस्ती नहीं होता।

धाई सो पाई—जो दौड़ेगा वह पाएगा। आशय यह है कि परिश्रम करनेवाला ही लाभ उठाता है या सुख पाता है।

धाओ, जो विधि लिखा सो पाओ—नीचे देखिए।

धाओ धाओ धाओ, कर्म लिखा सो पाओ—चाहे कोई कितना भी श्रम करे वही मिलता है जो भाग्य में लिखा होता है। जब किसी व्यक्ति को कठोर परिश्रम करने पर भी लाभ नहीं मिलता तो कहते हैं। तुलनीय : गढ़० मैं जौं बख कर्म लिजों कख, उफली-उफली मारूफाली करम की छै नाली।

धाकड़ चोर सेंध में गावे—जबरदस्त (धाकड़) चोर सेंध में बैठकर गीत गाता है। जब कोई दबंग व्यक्ति किसी की खुले आम हानि करता है तो कहते हैं। तुलनीय : भोज० जब्बर चोर सेन्ही में गावे।

धान कहे मैं हूँ सुल्तान, आए गए का राखूं मान—धान कहता है कि मैं बादशाह हूँ और आने-जाने वालों की इज्जत करता हूँ। धान से लोगों की इज्जत रहती है। प्राय: मेहमानों

को रोटी की अपेक्षा चावल खिलाना अच्छा माना जाता है।

धान का गाँव पुआल से जाना जाता है—दे० 'धनहे देश की…'। तुलनीय : मरा० भात-शेतीचें गाव, पेंढी वरून ओळखतें; मेवा० गाँव की छत गोरमा सूं ही नजर आवे; ब्रज० धान कौ छेत पियार ते पहँचनें।

धान को गाँव पपयार ते जानिये—ऊपर देखिए।

धान गिरे सुभागे का, गेहूँ गिरे अभागे का—धान भाग्यवान का गिरता है और गेहूँ भाग्यहीन का। धान की फ़सल जब अच्छी होती है तो अन्न के भार के कारण उसके पौधे गिर जाते है और उसके गिरने से पैदावार पर कोई असर नहीं पड़ता, लेकिन गेहूँ के पौधे जब हवा के झोंके से गिर जाते हैं तो उनकी पैदावार मारी जाती है। तुलनीय : बुंद० धान गिरे सुभागे कौ, गोऊंव गिरे अभागे कौ।

धान धनी का, शोभा नगर की– धन तो धनवान का ही है, पर उसमें पूरे नगर की शोभा है। आशय यह है कि संपन्न लोगों से आस-पास के लोगों की भी इज्ज़त होती है। तुलनीय : हरि० धन धणियाँ का, सोब्भ्या नगर की; पंज० पैहा पैहे वाले दा नां पिंड दा।

धान पान अरु केरा तीनों पानी के हैं चेरा—धान, पान और केला (केरा) ये तीनों पानी पर आश्रित रहते हैं क्योंकि इन्हें पानी की अधिक आवश्यकता होती है और पानी न मिलने पर ये नष्ट हो जाते है।

धान पान उखेरा, तीनों पानी के चेरा—ऊपर देखिए। (उखेरा = ईख या गन्ना)।

धान पान और खीरा, तीनों पानी के कीरा—ऊपर देखिए।

धान पान नित असनान—धान-पान को रोज़ाना स्नान कराना चाहिए। धान तथा पान के पौधे को हमेशा पानी चाहिए क्योंकि ये पानी से ही हरे-भरे रहते हैं। (असनान = स्नान)।

धान पान पनिआए नान्ह जात लतिआए—जिस प्रकार धान तथा पान के पौधे बराबर पानी देते रहने से बढ़ते है उसी प्रकार छोटी जाति के लोग डाँट-डपट से ही सुधरते हैं आशय यह है कि छोटे लोग बिना दंड पाए ठीक नहीं रहते।

धान पान पानी, कातिक सवाद जानी—धान पान और पानी इन तीनों का स्वाद कातिक में ही मिलता है। तुलनीय : अव० धान पान पानी कातिक का स्वाद जानी।

धान पान हो रही है—मुर्झा रही है। जब कोई स्त्री पति-वियोग से दुर्बल हो जाती है और उदास रहती है तब उसके प्रति कहते हैं कि जैसे धान और पान पानी के बिना कुम्हला जाते हैं वैसे ही यह भी पति के बिना दुर्बल होती जा रही है।

धान पुराना घी नया—धान पुराना और घी ताज़ा अच्छा होता है।

धान बिचारे भल्ले, जो कूटा खाया चल्ले—धान बहुत अच्छी चीज़ है। कूटा, खाया और चल दिया। यह एक प्रकार का व्यंग्य है जो किसी काम के कठिन होने पर कहा जाता है। वास्तव में धान से चावल और चावल से भात बनाना सरल नहीं है, इसी कारण यह कहा गया है। इस संबंध में एक कहानी है : एक सराय में दो यात्री रुके हुए थे। एक के पास थोड़ा सत्तू था और दूसरे के पास धान। जब आपस में खाने-पीने की चर्चा छिड़ी तो एक ने कहा, 'मेरे पास सत्तू है मैं उसे ही खाकर चल दूंगा।' दूसरा बोला, 'तुम्हें बहुत देर लगेगी मेरे पास धान है मैं तुरंत कूट-छाँट कर खा लूंगा क्योंकि सत्तू मन भत्तू जब घोलो तब खाओ और धान बिचारे भल्ले कूटा खाया चल्ले।' पहला व्यक्ति सीधा था इसलिए वह दूसरे के बहकावे में आ गया। उसने अपने सत्तू के बदले में उसका धान ले लिया। वह तो सत्तू खाकर चल दिया और यह धान कूटता ही रह गया। तुलनीय : अव० धान बिचारा भला कूटा खावा चला।

धान सब ते भले कूटे खाए चले—ऊपर देखिए।

धान सूखता है, कौआ टरटराता है—कोई चिल्लाता रहता है और कोई मर जाता है। अर्थात् चिल्लाने से कोई काम नही रुकता या किसी का मरना नही रुकता।

धाये धन न माँगे पूत—परिश्रम से धन और माँगने से संतान नहीं मिलती। यहाँ भाग्य की प्रधानता बताई गई है तुलनीय : अव० धाये मिलै न धन, माँगे मिलै न पूत; पंज० मंगे मिले न पैहा मंगे मिले न पुतर।

धार पर चले, तो फूलों पर सोय—तलवार की धार पर चलने वाला ही फूलों की सेज पर सोता है। (क) कष्ट उठाने वाला ही सुख पाता है। (ख) परिश्रम करने वाला ही आनंद और फल पाता है। तुलनीय : राज० सेल धमीड़ा जो सहै, सो जागीरी खाय; पंज० कंडया उते चले अते फुलां उते सोवे।

धार पर वह चले, जो फूलों पर सोय—ऊपर देखिए।

धावेगा सो पावेगा—जो दौड़ धूप करता है वही पाता है। अर्थात् बिना परिश्रम या तकलीफ के आराम संभव नहीं। तुलनीय : अव० धाई तौ पाई; पंज० करेगा सो पावेगा।

धींगी धींग बल्लू का राज—जिस शासन में मनमानी होती है उस पर कहते हैं। बल्लू एक जाट राजा था जिसके राज्य में शक्ति का ही बोलबाला था और चारों तरफ़ अशान्ति व्याप्त रहती थी। इसी पर यह मसल प्रसिद्ध हो गई है। तुलनीय: हरि० धींग-धींगी, बल्लू का राज; ब्रज० धींगा धींग बल्लू कौ राज।

धी छोड़ दामाद प्यारा—पुत्री से दामाद अधिक प्रिय होता है।

धी जनी तो क्या जेठ के भरोसे?—क्या जेठ (पति के बड़े भाई) के बल पर लड़की (धी) पैदा की है? आशय यह है कि हर व्यक्ति अपने बल पर ही कुछ करता है। जब कोई किसी को यह सोचकर रोब दिखाता है कि मेरे बिना उसका काम नही चलेगा तब वह ऐसा कहता है। तुलनीय: कोर० धी जणी तो के जेट्ठ के उप्पर।

धी, जमाई, भानजा; तीनों नहीं आपने—लड़की (धी दामाद (जमाई) और भानजा ये तीनों अपने नही होते क्योंकि इनके घनिष्ठ संबंधी दूसरे होते हैं।

धी दस कोसी, पूत पड़ोसी—लड़की का दस कोस दूर रहना और लड़के का पास-पास रहना अच्छा होता है। आशय यह है कि विवाह के पश्चात् लड़की पति के साथ रहे तो अच्छा है तथा विवाह के उपरांत लड़के को भी पड़ौसी जैसे ही रखना चाहिए। उसके व्यक्तिगत जीवन में हस्तक्षेप नही करना चाहिए। तुलनीय: कौर० धी दस कोसी पूत पड़ौसी; सं० दुहिता दूरे हिता।

धी न धियाना आप ही कमाना आप ही खाना—न लड़की है और न दामाद ही, इसलिए खुद कमाता खुद खाता है। जिसके कोई न हो और खुद कमाये और खुद निश्चिंत होकर खाये उसके प्रति कहते हैं।

धी न धोकड़, अल्ला मियाँ का नौकर—(क) मोटा आदमी आलसी और बेकार होने के कारण ईश्वर का नौकर है। ईश्वर ही उसे खाना देता है। (ख) जिसके संतान नहीं होती वह निश्चित रह कर भगवान का भजन करता है।

धी न बेटी उघल गई समधेरी—लड़की न होने पर भी कहना कि मेरी लड़की की ननद निकल गई। (क) बिना सिर-पैर की बात करने पर कहा जाता है। (ख) दूसरों की व्यर्थ चुगली या बदनामी करने पर भी कहते हैं।

धी पराई आँख लजाई—(क) जब बहू कोई ऐसा काम करे जिससे बदनामी हो तो कहते हैं कि पराए घर की लड़की ने मेरी आँख नीची करवा दी। (ख) विवाह के बाद लड़की लज्जाशील बन जाती है। (ग) विवाह के पश्चात् लड़की को ससुराल वालों से दबना पड़ता है। (घ) लड़की का विवाह हो जाने पर समधी से दबना पड़ता है।

धी बेटी अपने घर भली—लड़कियों का ससुराल में रहना ही अच्छा होता है।

धीमर के बस पड़ी—कुरूप, दुष्ट या मूर्ख के लिए कहा जाता है।

धी मरी जमाई चोर—लड़की के मरने पर दामाद चोर की तरह हो जाता है। अर्थात् वह भी नहीं रुचता। तुलनीय: गढ़० दीदी मरी भेना कीको।

धी मारूँ पतोह ले तरास—बहू को डराने के लिए मैं अपनी लड़की को मारती हूँ। अर्थात् एक पर सख्ती करने से सभी डरते हैं।

धीया तोको कहूँ, बहुरिया तू कान धर—लड़की तुम को कहती हूँ, बहू तुम ध्यान से सुनो। (क) एक से कहें पर इस आशय से कि दूसरा भी सीख ले तब कहते हैं। (ख) एक को डांटने के बहाने दूसरे को डाँटा जाय तो भी कहते हैं।

धीता पूत के न गाँती, बिलैया के गाँती—(क) बेटा-बेटी के लिए वस्त्र नही है, पर बिल्ली या स्त्री के लिए मौजूद है। संतान से अधिक ध्यान स्त्री पर देने वाले को कहते हैं। (ख) अपनों का ध्यान न रखकर जिनसे कोई संबंध नहीं उनका ध्यान रखने वाले के प्रति भी कहते हैं।

धीरज धरिय त पाइय पारू—नीचे देखिए।

धीरज धरिय तो पाइय पारू, नाहीं बूड़त सब परिवारू—धैर्य रखने से बेड़ा पार हो जाता है नही तो सारा परिवार डूब जाता है। धैर्य के महत्त्व पर कहा गया है कि धैर्य धरने वाला सफल होता है और उतावला खुद तो हानि उठाता ही है साथ वालों को भी हानि पहुँचाता है।

धीरज धरें बसा गाँव, करे उतावलि मिटा ठाँव—धैर्य रखने से गाँव बस जाता है और उतावला होने से नाम भी समाप्त हो जाता है। धीरज धरनेवाला मनुष्य प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है और उतावला अपनी उतावली के कारण मारा जाता है। तुलनीय: राज० धीरारा गाँव बसै उतावँकारी देवळयाँ हुवै।

धीरज धर्म मित्र अरु नारी, आपदकाल परखिए चारी—विपत्ति में धैर्य, धर्म, मित्र और स्त्री की परीक्षा होती है। तुलनीय: मरा० धैर्य, धर्म, मित्र नी नारी, प्रसंग पडल्या परीक्षा खरी।

धीरज बनिज उतावल खेती—व्यापार धीरे-धीरे का और खेती जल्दी की ठीक होती है।

धीर सो गंभीर—धीरज रखने वाला व्यक्ति गंभीर होता है।

धीरा काम रहमानी, शिताब काम शैतानी—धीरे का रहमान का और जल्दी का काम शैतान का। धीरे-धीरे किया गया काम ठीक और जल्दी का खराब हो जाता है। तुलनीय : अव० धीरे का काम रहमान का, जल्दी काम सैतान का।

धीरा सो गंभीरा, उतावला सो बावला—धीर गंभीर और उतावला बावला होता है। तुलनीय : अव० धीरा गंभीरा, उतावला तौ बावला; मेवा० धीर सो गंभीर।

धीरे धीरे काटिके, तरु बलूत कटि जायँ—धीरे-धीरे काटने से बहुत बड़े-बड़े पेड़ तक कट जाते है। अर्थात् धैर्य से कठिन कार्य भी पूरे हो जाते हैं।

धीरे सो गंभीरे—दे० 'धीर सो गंभीर।' तुलनीय : मल० निरकुटम् तुलुम्बुकयिल्ल; अं० Deep rivers move in silence.

धुंआ न उआँ पंडिताइन मारें जुआँ—यहाँ ऊआँ का कोई अर्थ नही है। घर में कुछ नहीं है कि पंडिताइन उसे पकावें और धुआँ हो, इसलिए वे बैठकर जूं (जुआँ) मार रही हैं। निर्धन व्यक्ति के प्रति कहते है जिसके पास कुछ करने को नही होता और वह व्यर्थ में समय गँवाता है। तुलनीय : अव० उआँ न धुआँ पड़िताइन मारे जुआँ।

धुंवा न धुकुन कोंहबर में अनर्थ—(क) अकारण लड़ाई-झगड़ा करनेवाले के प्रति कहते हैं। (ख) झूठी बात कहने वाले के प्रतिभी व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

धुएँ की गठरी बाँधे—धुएँ की गठरी बाँधते हैं। व्यर्थ या असंभव कार्य करनेवाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० तुएँ दी गंड बन्नी।

धुर आषाढ़ की अष्टमी, ससि निर्मल जो दीख; पीव जाइ के मालवा, माँगत फिरि हैं भीख—आषाढ़ की अष्टमी को यदि आकाश निर्मल रहे और चंद्रमा स्पष्ट दिखता रहे तो इतना भारी अकाल पड़ता है कि लोगों को देश को छोड़कर विदेश जाना पड़ता है और भीख माँगकर पेट पालना पड़ता है। अर्थात् उपरोक्त दशा में घोर अकाल की संभावना रहती है।

धुर आषाढ़ी बिज्जु की; **चमक निरंतर जोय, सोमाँ, सुकरौं, सुरगुरौं, तो भारी जल होय**—आषाढ़ में यदि सोमवार, शुक्रवार और बृहस्पति के दिन निरंतर बिजली चमके तो बहुत भारी वर्षा होती है।

धूनी का पानी संजोग है—जब दो अपरिचित साधु कहीं मिल जाते हैं तो कहते हैं। तुलनीय : पंज० तूँ पाणी दा मेल है।

धूप पड़त जो दायँ चलावे, रासनाज वह तुरत उठावे—धूप होते ही जो दायें वे शीघ्र ही अनाज उठाकर घर ले जाते हैं। अर्थात् धूप में दायँ करने से अनाज भूसे से तत्काल अलग हो जाता है।

धूप में बाल सफ़ेद नहीं किए हैं—अर्थात् लंबा अनुभव है। जब कोई व्यक्ति किसी अनुभवी को मूर्ख बनाना चाहता है तो कहते हैं। तुलनीय : मरा० केस उन्हाँत पाँढरे नाहीं केले; अव० धूप मा बार नाही पकावा; भोज० धूप में बाल सफ़ेद नाहीं कइले हउवं, पंज० तुप विच बाल चिट्टे नई कीते।

धूल उठाएँ तो सोना हो जाय—धूल भी छू लें तो वह भी सोना बन जाता है। उन भाग्यवान व्यक्तियों के प्रति कहते हैं जिन्हें साधारण काम में भी विशेष लाभ प्राप्त होता है। तुलनीय : राज० काँकराँनै हाथ घालताँ रुपिया हाथ होता आवै।

धूल उड़ती है—घर मे धूल उड़ रही है, अर्थात् घर में कुछ भी नही है। जो व्यक्ति बहुत ही निर्धन हो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० धोराँरी धूड़ उठे; पंज० तूंड़ उडदी है।

धूल की रस्सी नहीं बटती—धूल की रस्सी नहीं बटी जा सकती। जो व्यक्ति असंभव काम करना चाहे उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० धूल धाणी राख छाणी; पंज० तूंड़ दी लज्ज नई बनदी।

धूल की रस्सी बनाते हैं—ऊपर देखिए।

धूल के दो कण भी नहीं हैं—अर्थात् कुछ भी नहीं है। बहुत ही निर्धन व्यक्ति के प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० धूड़रा दो दाणा ही कोनी।

धूल के पैसे बनाते हैं—(क) बहुत चालक व्यक्ति के प्रति कहते हैं। (ख) धूर्त व्यक्ति के प्रति भी कहते हैं जो उलटी-सीधी बातों से या उलटे-सीधे कामों से धन प्राप्त करता है।

धूलकोट का खरबूजा जैसे मिश्री का कूजा—धूलकोट का खरबूजा मिश्री के टुकड़े जैसा मीठा होता है। यह एक प्रान्तीय कहावत है। दिल्ली के सन्निकट धूलकोट नाम का एक स्थान है जहाँ का खरबूजा बहुत मीठा होता है।

धूल छाने कंकड़ मिलते—धूल छानने पर कंकड़ के अतिरिक्त और क्या मिल सकता है? (क) व्यर्थ के काम में कुछ लाभ नहीं मिलता। (ख) बुरे काम का नतीजा बुरा ही

मिलता है। तुलनीय : पंज० खें छान बट्टे लब्बे।

धूल डालने से सूरज नहीं छिपता—आशय यह है कि भले आदमी की चाहे जितनी भी निन्दा की जाय वह निन्दित नहीं होता। तुलनीय : भोज० धूर उड़वले से सूरज नाहीं छिपेला।

धूल फाँकने से अकाल नहीं कटता—धूल फाँकने से अकाल नही कट सकता, उसके लिए अन्न की आवश्यकता पड़ती है। आशय यह है कि साधारण उपायों से बड़ी मुसीबतें नहीं टलतीं। तुलनीय : राज० धूड़ खायाँ किसो काळ नीसरे।

धूल में ही धन है—धन धरती में ही है, अन्यत्र कहीं नहीं। संसार की प्रत्येक वस्तु धरती से ही उत्पन्न होती है। धूल-मिट्टी से घृणा करने वालों के प्रति कहते है। तुलनीय : भीली- धूल मांये धन हे, न्यारो नी; पंज० तूड बिच ही पैहा।

धूल ही खानी है तो कमी क्यों की जाय?—जब धूल ही खानी है तो कमी क्यों की जाय? पेट भरकर क्यों न खाई जाय? अर्थात् कोई बुरा काम करना ही है तो उसे डट कर क्यो न किया जाय अधूरा क्यों किया जाय? क्योंकि बुराई तो हर हालत में मिलेगी। तुलनीय : राज० धूड़ खावणी जद ओछ क्यूँ रळावणी।

धेला सिर मुड़ाइ टका बदलाई—एक अधेला तो सिर की मुड़ाई और दो पैसे रुपए की भुनाई। प्रधान कार्य से अधिक उससे संबंधित छोटे-मोटे कार्य पर खर्च होने पर कहते हैं। तुलनीय : अव० धेला मूँड मुड़ाई, टका बदलवाई; पंज० तेला सिर मनाई टगा पनाई।

धेले का दूध कड़ाही में खोया—एक धेले का दूध है और खोया बना रहे हैं कड़ाही में। झूठी टीप-टाप करने वाले या झूठी अकड़ दिखाने वाले को कहते हैं। तुलनीय : पंज० तेले दा दुध कड़ाई बिचा खोआ।

धेले का बूढ़ा, टका मुँड़वाई—दे० 'धेले की बुढ़िया ...'।

धेले की नथनी पर इतना गुमान, सोने की होती तो चलतीं उतान—धेले की नथनी पर ही फूली नहीं समाती, यदि सोने की होती तो कदाचित चित्त (उतान) होकर चलतीं। व्यर्थ के शृंगार या साधारण वस्तु पर जब कोई अधिक अभिमान करता है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

धेले की बुढ़िया टका सिर मुँड़ाई—एक अधेले की बुढ़िया है और उसके सिर मुड़ाने पर एक टका खर्च हो गया। जब किसी प्रधान चीज की अपेक्षा उससे संबंधित अन्य कामों पर अधिक खर्च हो जाय तो कहते हैं। तुलनीय : छत्तीस० नीधी के घोर, दोगानी के दाना; नीधी (50 कौड़ी) का घोड़ा और उसके लिए दोगानी (500 कौड़ी का दाना); भोज० अधेले क मुर्गी टका जबहकराई; राज० पईसेरी डोकरी टको सिर मुँडाई; गढ़० गढ़ै ते मढ़ै खैं जांदी; पंज० तेले दी बुड्डी टगा सिर मनाई।

धेले की भाजी, टके का बघार—ऊपर देखिए। तुलनीय : राज० पईसेरी भाजी, टकेरो बघार।

धेले की हांड़ी भी ठोक-बजाकर ली जाती है—एक धेले की हाँड़ी भी ठोक-बजा कर अर्थात् परखकर ली जाती है कि कहीं टूटी-फूटी न हो। आशय यह है कि चाहे कोई वस्तु कितनी भी सस्ती क्यों न हो उसे देखभाल कर लेना चाहिए। तुलनीय : राज० दमड़ीरी हांडी ही वजार लेवणी। ब्रज० धेला की हँडिया ऊऐ ठोकि बजाइ के ले।

धैर्य का फल मीठा—संतोष का फल मीठा होता है। अर्थात् जो धैर्य धारण करके काम करता है उसे अच्छा फल मिलता है। तुलनीय : पंज० सबर दा फल मिठा हुँदा है।

धोई धाई भेंड़ी पाँके लगी—धुली भेड़ कीचड़ में चली गई। अर्थात् बुरों का कितना भी अच्छा करो वे फिर बुरे ही रहते हैं। किसी अशुद्ध व्यक्ति या वस्तु का परिष्कार करने और उसके फिर अशुद्ध या अपवित्र हो जाने पर कहते हैं।

धोती आकाश में सूखती है—जो व्यक्ति छुआछूत का बहुत ध्यान रखते हो उनके प्रति व्यंग्य से कहा जाता है कि इनकी धोती तो आकाश में सुखाई जाती है। तुलनीय : राज० धोती आकास सूके।

धोती के भीतर सब नंगे—दोष से कोई भी मुक्त नहीं है। जब कोई किसी पर दोषारोपण करे तो कहते हैं। तुलनीय : राज० धोती रे मांय सै नागा; भोज० धोती के भीतर सभे नंगा ह या सभे उघार; हरि० धोत्ती में सभ उधाड़े; मेवा० धोवती में सब नागा है; पंज० धोती थले सारे नंगे।

धोती के भीतर सभी उघारे—ऊपर देखिए।

धोती के भीतर सभी नंगे—दे० 'धोती के भीतर सब ...'।

धोती थी दो पाँव, धोने पड़े चार पाँव—पहले मैं अपने दो पैरों को ही धोती थी लेकिन अब पति के पैरों को भी धोना पड़ता है, इसलिए मुझे चार पैरों को धोना पड़ता है। आलसी पति के प्रति स्त्री का व्यंग्य।

धोती वाले कमाएँ, टोपी वाले खाएँ—धोती वाले कमाते हैं और टोपी वाले खाते हैं। (क) जब श्रम कोई करे

और उसका लाभ कोई उठावे तो कहते हैं। (ख) भारतीय कमाते थे और उसका लाभ अँग्रेज़ उठाते थे। (ग) छोटे लोग श्रम करते हैं और सुख बड़े लोग उठाते हैं। तुलनीय : गढ़० धोत्यूं वाला कमौन टोप्यूं वाला समौन; हरि० कमावै धोती आला, खाजा टोपी आला।

धो न सके अपना मुख, दूजे को क्या देगा सुख—जो अपना मुँह नही धो सकता वह दूसरे को क्या सुख देगा? जो मनुष्य अपने लिए ही काम नही करता, वह दूसरे के लिए क्या करेगा (क) निठल्ले या कामचोर व्यक्ति के प्रति व्यंग्य में ऐसे कहते है। (ख) निर्धन और असहाय व्यक्ति के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : गढ़० जो नि ध्वौ अपड़ो मुखु, हैका क्या द्यौ सुख।

धोविन तेलिन कोऊ न घाट, उसके मोगरा उसके जाट—'दे० तेलिन से क्या धोबन घाट'।

धोबिन पर बस न चले, गधी के कान ऐंठे धोबिन का कुछ नहीं कर पा रहे तो गधी का कान ऐंठ रहे है। बलवान पर वश न चलने पर कमज़ोर को सताने वाले के प्रति व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : अव० धोबिया से न जीतै गदहवा कै कान उमेठै; हरि० धोब्बण पै पार बसावैना गधी के कान ऐंट्ठे; मरा० परटिणीला बोलतां येत नांही गाढवाचे कान उपटतो; पंज० तोबन उते जोर नई चोनी ने कन मरोड़े।

धोबिन पराया धोती फिरे, अपना धोते लाजों मरे - धोबिन दुनिया भर के मैले कपड़े धोती है, किन्तु अपने कपड़े स्वयं धोने में शरमाती है। जो व्यक्ति दूसरों का काम कर दे किन्तु अपना करने में अपमान समझे तो उसके प्रति कहते हैं। *तुलनीय : राज० गोन्नी राड़ पराया धोविती फिरै, आपरा धोवती लाजां मरै।*

धोबिन से क्या तेलिन घाट, इसके मोंगरी उसके लाठ —दे० 'तेलिन ते क्या धोबन घाट'। तुलनीय : ब्रज० धोबिन ते का तेलिनि घाटि, वा पै मौंगरी वा पै लाठि।

धोबी अहिर की कौन मिताई, इनके गधा न उनके गाई—धोबी और अहीर की क्या मित्रता न तो इसके पास *गधा है और न उसके पास गाय। आशय यह है कि विपरीत पेशे या स्वभाव वालों में मित्रता नहीं होती। तुलनीय :* अव० धोबी अहिर के कउन मिताई, इनके गदहा न उनके गाई।

धोबी का कुत्ता घर का न घाट का धोबी का कुत्ता न तो घर का ही होता है और न घाट का ही। (क) जिस व्यक्ति के रहने का कोई निश्चित स्थान न हो उसके प्रति कहते हैं। (ख) जो व्यक्ति किसी तरफ़ का न हो उसके प्रति भी व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : धोबी का कुत्ता, घर का न घाट का; राज० धोबी को कुत्तो घर को न घाट को; इतके बराती, न उतके न्यौतार; गढ़० धोबी को कुत्ता घर को न घाट को; अव० धोबी कौ कुत्ता, घर कौ न घाट कौ; मरा० धोब्याचा कुत्ता घरचा हि नाही नि घाटावर-चाहि नाही; पंज० तोबी दा कुत्ता कर दा न बारदा।

धोबी का कुत्ता न घर का न घाट—ऊपर देखिए।

धोबी का घर ईद पर देखा जाता है—ईद के अवसर पर सभी साफ़ और सफ़ेद कपड़े पहनते है, इसलिए धोबी के घर से सभी कपड़े निकल जाते हैं। जो बचे रहते है वही उसके अपने होते हैं।

धोबी का छैला, आधा उजला आधा मैला धोबियों के प्रति व्यंग्य से कहते है क्योंकि वे दूसरों के कपड़े पहनते है। उन्हें गदा या साफ जो भी मिलता है पहन लेते है।

धोबी का छैला, एक उजला एक मैला - ऊपर देखिए।

धोबी का भाई पत्थर—क्योंकि उसी से उसका हमेशा काम पड़ता है। आशय यह है कि जिससे अपना काम निकले वही अपना भाई है।

धोबी का मरे, सती हो कुम्हारिन—मरा तो धोबी का लड़का है और सती होने कुम्हारिन जा रही है। *व्यर्थ* में दूसरे का झंझट लेकर परेशान होने वाले के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : गढ़० धोबी को मड़ो, कुम्हार की सत्ती।

धोबी की गधी जब देखो लदी - धोबी की गधी को जब देखो उसके ऊपर भार रखा ही रहता है। ऐसे व्यक्ति पर *कहते हैं जो हमेशा काम करता रहता है।*

धोबी के घर आग लगी न सुख न दुख—धोबी के घर आग लगने पर उसे सुख-दुख नहीं होता, क्योंकि उसके घर दूसरे लोगों के ही वस्त्र रहते हैं। जलेगा तो दूसरे का ही वस्त्र, उसका कुछ नुक़सान नहीं होगा। उक्त कहावत पराये की हानि से विमुख रहने वालों को ध्यान में रखकर कही जाती है। तुलनीय : भोज०, मग० धोबी के घर आग लागल *हरखे न बिसाद।*

धोबी के घर पड़े चोर, वह न लुटा लुटे और—धोबी के घर चोरी होने से उसका कुछ नही जाता क्योंकि कपड़े तो दूसरों के होते हैं। जब किसी दूसरे की हानि करने की कोशिश हो और असल में हो किसी और की जाए तब कहते हैं। तुलनीय : मरा० धोब्याच्या घरांत चोर शिरला, तर

धोबी लुटला जायचा नाहीं तर इतर लुटले जातील।

धोबी के घर ब्याह गधे के माथे मोर—धोबी के घर विवाह होने पर गधे के सिर पर मौर रखते हैं। (क) धोबियों के यहाँ ऐसी ही रीति है। (ख) नीचों की सभी चीज़ें विचित्र होती हैं। तुलनीय : अव० धोबिया के घर बिआह, गदहवा के माथे माउर।

धोबी के घर ब्याह, गधे ने छुट्टी पाई—धोबी के घर विवाह होने पर गधे को छुट्टी मिल जाती है। स्वामी के घर उत्सव होने पर सेवकों को भी लाभ पहुँचता है।

धोबी के सबको मगर खा जाय—धोबी के सारे परिवार को मगर खा जाय हमें क्या अन्तर पड़ेगा। जो व्यक्ति किसी की हानि से कुछ मतलब न रखे उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : माल० तेली रा तीनी मरो ने ऊपर पड़ो लाठ।

धोबी गति को धोबी जाने—धोबी की गति को धोबी ही जानता है। अर्थात् (क) एक स्वभाव के व्यक्ति ही एक-दूसरे को पहचानते है। (ख) जिसका जो काम होता है उसे वही जानता है। तुलनीय : पज० तोबी नूं तोबी जाणदा है।

धोबी छोड़ सक्का किया रही खिजर के घाट—धोबी छोड़कर भिश्ती (सक्का) से विवाह किया फिर भी पानी से साथ न छूटा। धोबी और भिश्ती दोनों का सम्बन्ध पानी से है, अतः इनसे सम्बन्ध रखना पानी से भी सम्बन्ध रखना है क्योंकि दोनो घाट पर जाते हैं। एक बुरे को छोड़, दूसरे से नाता जोड़े तब कहते हैं।

धोबी धोवे प्यासे मूए—धोबी पानी में ही कपड़े धोता है फिर भी प्यास से मरता है। ज़रूरत की चीज़ों से घिरे रहने पर भी कष्ट पाने पर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० *तोबी तोवे तरेए मरण।*

धोबी पर धोबी खेंधड़े में साबुन—थोड़े-थोड़े समय पर धोबी बदलना वैसे ही बुरा है जैसे गुदड़ी में साबुन लगाना। आशय यह है कि घड़ी-घड़ी धोबी या नौकर बदलना ठीक नहीं होता।

धोबी बस के क्या करे दिगम्बरों के गाँव—दिगम्बरों के गाँव में धोबी की कोई आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि दिगंबर वस्त्र धारण नहीं करते बल्कि नग्न रहते हैं। तुलनीय : मरा० नागव्याच्या गाँवांत वस्ती करून धोव्याचें काय चालणार; सं० नग्नक्षपण के देशे रजकः कि करिष्यति; अव० धोबी बसि के का करै जो होय दिगंबर गाँव।

धोबी बेटा चाँद सा—धोबी का लड़का चाँद-सा सफेद झलकता है। दूसरों के कपड़ों से शौक़ करने पर कहा जाता है।

धोबी बेटा चाँद सा, सीटी और पटाक—कपड़ा धोते समय धोबी सीटी बजाते हैं तथा 'पटाक' से पटकते हैं। बस ये ही दो चीज़ें उनकी अपनी होती हैं। फिर भी दूसरों के कपड़े को पहनकर चाँद की तरह साफ़ बने रहते हैं। जब दूसरे की चीज़ पर कोई शौक़ करे तो कहते हैं।

धोबी रोवे धुलाई को, मियाँ रोवे कपड़ों को—धोबी धुलाई के लिए रो रहा है और मियाँ साहब अपने कपड़ों के लिए रो रहे हैं। जहाँ दोनों अपनी-अपनी शिकायतें पेश करते हों वहाँ कहते हैं।

धोबी से क्या तेली घाट उनके मुगरा उनके लाट—दे० 'तेलन से क्या क्या धोबन घाट...'।

धोयौ और खोया—मूल्यवान कपड़े धोने से खराब हो जाते हैं तथा बहुत सस्ते कपड़े भी धोने से बिगड़ जाते हैं। बहुत महँगे और बहुत सस्ते कपड़ों के लिए कहते हैं। तुलनीय : माल० धोया ने रोया; पंज० तोया अते गुआचा।

धोये से गधा बछड़ा नहीं होता—जन्म का बुरा बाद में कोशिश करने पर अच्छा नहीं हो सकता। तुलनीय : भोज० धोवले गदहा बाछा नाँई होई; पंज० तोंण नाल खोता बच्चा नहीं हुँदा।

धोये हूँ सौ बार के काजर होय न सेत—ऊपर देखिए। तुलनीय : मरा० शंभर वेळां धुवलें तरी काजळ पाँढरें थोडेंच होणार।

धोवे गोर ह्वै नहीं हबसी कारो गात—काला हब्सी धोने से गोरा नहीं हो सकता। अर्थात् सहजात स्वभाव या गुण-दोष लाख प्रयत्न करने पर भी नहीं जाते।

धौला बाल मौत की निशानी—सफेद बाल मृत्यु के सूचक हैं। सफ़ेद बाल बुढ़ापे के द्योतक है और बूढ़ा होना मृत्यु के समीप जाना है। तुलनीय : *अव० धौला बार मडत कै निसानी।*

धौले भले है कापड़े, धौले भले न बार; काली आछी कामली, काली भली न नार—सफेद कपड़े अच्छे होते हैं लेकिन सफ़ेद बाल नहीं। इसी प्रकार काला कंबल अच्छा होता है पर काले रंग की स्त्री अच्छी नहीं होती।

ध्यान बड़ी चीज है—(क) जिस कार्य को ध्यान से किया जाता है वह सदा सफल होता है। (ख) भगवान का ध्यान करना बहुत अच्छा है। तुलनीय : भीली—ओसान बड़ी चीज़ है।

न

नंग न लुटे हजारों में—नंगे को हजारों मिलकर भी नहीं लूट सकते, क्योंकि उसके पास कुछ होगा तभी कोई लूटेगा? (क) निर्धन के प्रति कहते हैं कि उसे कोई नहीं लूट सकता। (ख) निर्लज्ज के प्रति भी कहते है क्योंकि वह हजारों के बीच भी अपनी इज्जत की परवाह नहीं करता।

नंग बड़े परमेश्वर से—निर्लज्ज और दुःशील व्यक्ति से जितना डर रहता है उतना ईश्वर से भी नहीं होता। अतः वह ईश्वर से भी बड़ा है। तुलनीय: हरि० नंगते तै भगवान भी डरै से; भोज० नंगा से सभे डेराला; मैथ० लंगा से खुदा मियाँ डेराले, टेंटिहा से सभे डेराले; कनौ० नंगा परमेसुर तैऊ बड़ो होत है; ब्रज० नंग बड़े परमेसुर ते।

नंगा कहे मुझसे डर गया, भला शरम से चला जाय—नंगे ने यह समझा कि मुझसे डरकर भाग गया, किन्तु सज्जन मनुष्य नंगा देखकर शर्म से चला गया। जब कोई सज्जन व्यक्ति अपनी बदनामी के डर से किसी दुष्ट के मुँह न लगे और चुपचाप हट जाय किन्तु दुष्ट यही समझे कि मुझसे डरकर भाग गया है तो उसके (दुष्ट के) प्रति कहते हैं। तुलनीय: राज० नागो कह मैंसू डरियो सरमाँ मरतो नर में बड़ियो; पंज० बसरम कहे मेरे तों डर गया चगा सरम नाल चल गया।

नंगा के घर चोरी—जो खुद बदमाश (नंगा) है उसके घर चोरी हो गई। (क) जब किसी बदमाश व्यक्ति की कोई हानि कर देता है तब आश्चर्य से कहते हैं। (ख) दुष्टों के यहाँ ही बुरे काम होते है। तुलनीय: पंज० बसरम दे घर चोरी।

नंगा खड़ा उजाड़ में, है कोई कपड़े ले—नंगा मैदान में खड़ा है और कहता है कि कोई ऐसा है जो मेरे कपड़े छीन सकता है? (क) जिसके पास कुछ नहीं है उससे कोई क्या छीन सकता है? (ख) दुष्ट व्यक्ति असुरक्षित स्थान में रहते हैं तब भी भयवश कोई उनका नुकसान नहीं करता।

नंगा खुदा से भी बड़ा—उत्पाती व्यक्ति परमात्मा से भी बड़ा है अर्थात् उससे सभी डरते है।

नंगा चला बजार को, चोर बलैया लेय—दरिद्र से कुछ मिलने की आशा रखने पर कहा जाता है। तुलनीय: गढ़० नंगा चोरू दगड़ी स्यून; अव० नंगा चला बजार का, चोरन बलैया लेय।

नंगा ठाड़ा गैल में, चोर बलैयां लेय—ऊपर देखिए।

नंगा नहाय तो क्या निचोड़े—जो नंगा होकर स्नान करता है उसे निचोड़ने की कोई आवश्यकता नहीं पड़ती। (क) जिसके पास कुछ नहीं है उसको क्या चिन्ता? (ख) जिसके पास जो चीज़ नहीं है उसकी परेशानी उसे भला क्यों होगी? तुलनीय: अव० नंगा का नहाय, का निचोरै; कौर० नंगी के न्हाय के निचोड़ै; हाड़० नागो न्हावे नचोव काँई; निमाड़ी—नाँगी न्हाव काई, न नीच काई; बुंद० नंगी का सपरे और का निचोरे; अव० नंगा बछाय तो निचोवै का; राज० नागो काँई धोवै काँई निचोवै; गढ़० नंगो क्या ध्वो क्या निचोड़ो; मरा० नागवी काय भिजवणार नि काय पिलणार; माल० नागो कइ धोवे न कइ निचोवे; मल० पणमिल्लात पुरुषनुम् मणमिल्लात पुष्पवुम्; ब्रज० नंगी नहाय तो कहा निचोरै।

नंगा नाचे खोर में चोर बलैया लेत—दे० 'नंगा चला बजार···'।

नंगा नाचे फाटे क्या—जिसके शरीर पर कपड़ा ही नहीं है उसका क्या फटेगा? आशय यह है कि (क) जिसकी कोई इज्जत नहीं होती उसे बेइज़्ज़ती का भय नहीं रहता। (ख) जिसके पास कुछ नहीं होता उसे क्षति का कोई भय नहीं रहता। तुलनीय: अव० नंगा नाचे फाटे का।

नंगा नाचे बीच बजार—जब कोई निर्लज्ज व्यक्ति सबके सामने कोई निर्लज्जतापूर्ण काम करता है तो कहते हैं। आशय यह है कि निर्लज्ज को किसी की परवाह नहीं होती। तुलनीय: मेवा० नागा आगे नोपत बाजे दो घड़ाका वत्था लागे; पंज० नंगा नच्चे विच बजार।

नंगा नाचे हजार देखे—(क) नंगा होकर नाचने से (अर्थात् निर्लज्ज होने से) समाज में व्यापक बदनामी होती है। (ख) जब कोई बिना किसी चिन्ता के खुलेआम अपमानजनक काम करता है तब कहते हैं। तुलनीय: मैथ० नंगय नाचे हजार देखे; भोज० उघारे नाचऽ हजार देखे।

नंगा बूचा सबसे ऊँचा—दे० 'नंगी बूची सबसे ऊँची। तुलनीय: ब्रज० नगे बूचे सबते ऊँचे; पंज० नंगा लूच्या सबनों उच्चा।

नंगा सबसे चगा—अर्थात् (क) कंगाल सबसे अच्छा है क्योंकि उसे कोई चिन्ता नहीं सताती। (ख) निर्लज्ज बहुत सुख में रहता है क्योंकि उसे कोई फिक्र नही रहती।

नंगा साठ रुपये कमाए तीन रुपये खाये—नंगा साठ रुपये कमाता है और तीन पैसे खाता है। ऐसे व्यक्ति के प्रति कहते हैं जिसके पास घर-गृहस्थी नहीं होती और आमदनी की अपेक्षा खर्च कम होता है।

नंगा सो चंगा—दे० 'नंगा सबसे चंगा।'

नंगी क्या धोए क्या निचोड़े—दे० 'नंगा नहाय तो क्या...'।

नंगी क्या नहाए और क्या निचोड़े—दे० 'नंगा नहाय तो क्या...'। तुलनीय : ब्रज० नंगी कहा नहावै और कहा निचोरै।

नंगी क्या नहाएगी और क्या निचोड़ेगी—दे० 'नंगा नहाय तो क्या...'।

नंगी देख चुदास लगे— नीचे देखिए।

नंगी देखे सरसै काम—नंगी स्त्री को देखने से काम-वासना पैदा होती है। आशय यह है कि बुरे को देखने या बुरे के साथ रहने से बुराई ही सूझती है। तुलनीय : राज० नागी देखैंर मन चाल; अव० नंगी देखे चोदास लागै।

नंगी नाचती है—उस स्त्री के प्रति कहते हैं जो खुले-आम निर्लज्जतापूर्ण काम करती है। तुलनीय : पंज० नंगी नचदी है।

नंगी नाचेगी तो पांच-सात तो देखेंगे ही—जब कोई स्त्री नंगी होके नाचेगी तो कुछ लोग तो अवश्य ही देख लेंगे। बुरा काम करने वालों के प्रति उपदेशार्थ ऐसा कहा जाता है क्योंकि बुरा काम कभी छिपता नहीं है। तुलनीय : गढ़० नाँगी हैक नाची नी सात पाँचुन देखी नी; पंज० नंगी नचेगी ते पंज सत दिखणगे।

नंगी नाचे धमाका होय—नंगी जब नाचती है तो धमाका होता है और लोगों को पता चल जाता है कि कोई नंगी नाच रही है। आशय यह है कि निर्लज्जता छुपाने पर भी नहीं छुपती, सबको अपने आप पता चल जाता है कि किसने कब और कहाँ कौन काम किया है।

नंगी नाचे पूते खाय, बेटा की सों जेई आय—मैं अपने पुत्र की क़सम खाकर कहता हूँ कि जो स्त्री नंगी होकर नाचने के लिए तैयार है, उसी ने पुत्र की हत्या कर दी है। जब कोई अपने कामों या अपनी बातों से ही अपना अपराध क़बूल कर ले तो कहते हैं। इस लोकोक्ति के सम्बन्ध में एक कहानी है : एक व्यक्ति के दो स्त्रियाँ थीं। बड़ी स्त्री की गोद में एक बालक था और छोटी के अभी कोई सन्तान नहीं थी। छोटी ने एक दिन अवसर पाकर बड़ी के बच्चे को मार दिया और विलाप करना शुरू कर दिया कि बड़ी ने मुझे बद-नाम करने के लिए अपने पुत्र को मार दिया है। बड़ी नहाने गई थी और लौटकर उसने यह माजरा देखा तो उसे बहुत दुख हुआ। उसने लोगों से कहा कि मैं तो स्नान करने गई थी मेरे पीछे से छोटी ने बच्चे को मार डाला। इस प्रकार दोनों एक दूसरे को अपराधी बताने लगीं। अन्त में मामला गाँव के मुखिया के पास पहुँचा। मुखिया ने दोनों को बुला-कर सारा झगड़ा सुना, सुनकर वह भी चक्कर में पड़ गया। सोच-विचार कर मुखिया ने कहा, 'ठीक है, तुम दोनों में से जो नंगी होकर नाचे उसे ही निरपराध समझा जाएगा। बड़ी ने सुनकर कहा, यह अच्छा न्याय है! एक तो पुत्र खोया और अब लाज भी खोऊँ। चाहे मुझे अपराधी समझें किन्तु मैं नंगी नहीं हो सकती।' छोटी ने कहा, 'जब मैंने कोई अपराध नहीं किया तो नंगी नाचने से क्यों डरूँ?' और कपड़े उतारने की तैयारी करने लगी। मुखिया ने तुरन्त उसे रोक दिया और कहा, 'नंगी नाचने को जो स्त्री प्रस्तुत है उसी ने पुत्र को मारा है, मैं बेटे की क़सम खाकर कह सकता हूँ कि यही अपराधी है।'

नंगी ने घाट रोका, नहाय न नहाने दे— ऐसे दुष्ट व्यक्ति के प्रति कहते हैं जो न स्वयं कुछ करे और न किसी को करने दे।

नंगी बूची सबसे ऊँची—नंगी तथा कनकटी स्त्री अपने को सबसे ऊँची समझती है। आशय यह है कि बेशर्म व्यक्ति अपने को सबसे अच्छा समझते है पर वास्तविक दशा इसके विपरीत होती है। तुलनीय : हरि० नाँगगी बूच्ची, सभ तैं ऊँच्ची।

नंगी भली कि छीके पाँव—नंगा रहना अच्छा है कि छींके पर खड़ा होना अच्छा। आशय यह है कि दो बुरे कामों में जो कम बुरा हो वही करना चाहिए।

नंगी भली, कि टटकमचवा—ऊपर देखिए। (टटक मचवा=टंटा या झगड़ा करने वाली)।

नंगी भली कि मूसल आड़े—इसका आशय यह है कि दो बुरे कार्यों में जो कम बुरा हो वही करना चाहिए। इस लोकोक्ति के सम्बन्ध में एक कहानी है : एक बार एक स्त्री अपने घर में नंगी होकर नहा रही थी। घर में कोई और नहीं था। इतने में उसका समधी आ गया। समधी ने इधर-उधर देखा और जब कोई नहीं दिखा तो वह सीधा आँगन में चला आया। स्त्री उसे देख एकदम घबरा गई, उसके पास कोई कपड़ा नहीं था। उसे कुछ नहीं मिला तो सामने रखे मूसल को ही उठाकर उसने सामने आड़ कर ली। इस पर समधी ने कहा कि यह तो और भी बुरा कर रही हो, इससे तो नंगी ही भली थीं।

नंगी होके काता सूत, बूढ़ी होके जाया पूत—जब वस्त्र बिल्कुल फट गये और नंगी हो गई तब जाकर सूत काता और जब बूढ़ी हो गई तब पुत्र पैदा किया। ऐसे व्यक्ति के

प्रति व्यंग्य से कहते हैं जिसमें दूरदर्शिता का अभाव होता है और जो परेशानी बिल्कुल सामने आ जाने पर बचाव का उपाय करता है।

नंगे की नाक कटी डेढ़ हाथ और बढ़ी—निर्लज्ज जब अपने अपमान की परवाह न करके सबसे अकड़ता रहे तो कहते हैं।

नंगे के साथ नाचे बिना हिस्सा नहीं मिलता—बेशर्म के साथ वैसा बनने से ही कुछ मिल सकता है, इज़्ज़तदार बनने से नहीं। तुलनीय : पंज० बमरम नाल नच्चे बगैर हिस्सा नहीं मिलदा।

नंगे जाट को मिला कटोरा, पानी पी-पी मरा निगोड़ा—किसी कंगाल जाट को पड़ा हुआ एक कटोरा मिल गया। उसे पाकर उसने इतना पानी पिया कि प्राण-पखेरू ही उड़ गए। जब कोई ओछा व्यक्ति साधारण वस्तु पाकर फूला न समाए और उसका प्रदर्शन करता फिरे तो व्यंग्य से कहते हैं।

नंगे पैरों मारे ठोकर—नंगे पैर से ठोकर मारने से चोट लगने की संभावना रहती है। जान-बूझकर आपत्ति में फँसने पर यह लोकोक्ति कही जाती है।

नंगे से खुदा डरे—बुरे से ईश्वर भी डरता है। आशय यह है कि दुष्टों से सभी लोग डरते हैं। तुलनीय : छत्तीस० नगरा ले खुदा डरे, अव० नंगन से राम राम बचावें ; पंज० नंगे नालों रब डरे।

नंगे से खुदा भी हारा है—ऊपर देखिए।

नंगों को भूखों ने लूटा—नंगे के पास कोई वस्तु नहीं रहती जिसे लूटा जाय। असम्भव बात पर कहते है। तुलनीय : पंज० नंगे नू पुख्याँ बड्या।

नंगों से खुदा हारा—दे० 'नंगे से खुदा डरे।'

नंद के नंदोई, मेरे लगे न कोई—ननद (नद) का ननदोई (नंदोई) मेरा कुछ भी नहीं लगता। दूर के सम्बन्धी के प्रति कहते है। तुलनीय : बुंद० नंद को नदेऊ, मेरे लगें न कोऊ। (ननदोई—ननद का पति।

नंद के फंद नंदई जाने—ननद की चालें ननद जानती है। किसी व्यक्ति के गुण-दोष को उसी के स्वभाव वाला व्यक्ति जानता है।

न अक्ल मिली न मौत मिली—इसके पास न तो बुद्धि है और न इसे मौत ही आती है। जब कोई मूर्ख व्यक्ति साधारण काम को भी नहीं कर पाता और हानि पहुँचाता है तो कहते हैं।

न अक्ल ही मिली, न शक्ल ही मिली—न तो बुद्धि ही मिली न सूरत ही अच्छी मिली। कोई मूर्ख और कुरूप दोनों होता है तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० न मत लई न सकल।

न अच्छा काम होगा न दरबार में जाएँगे—न अच्छा काम करूँगा और न दरबार में बुलाहट होगी। कभी-कभी अच्छा काम करने के कारण भी हानि उठानी पड़ती है। (क) जब किसी में कोई अच्छाई होने के कारण उसे हानि उठानी पड़े तो वह भविष्य के लिए इस कहावत का प्रयोग करता है। (ख) काम से जी चुराने वालों के प्रति भी व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मैथ० न नीमन काम करब न दरबार देखे जायब; भोज० न नीक गाइब न दरबार में बुलावल जाइब; मग०, मैथ० न नीमन गीत गायम न बेगारी पकड़ल जायम।

न अच्छा गाऊँ न दरबार बुलाया जाऊँ—ऊपर देखिए।

न अच्छा गीत गाऊँगी, न दरबार बुलाई जाऊँगी—दे० 'न अच्छा काम होगा न ...।'

न आँखो लोर न मुँहे बोल—न आंखों में प्रेम है और न मुँह में बोल। यह कहावत अत्यन्त सीधे-सादे स्वभाव के व्यक्ति को लक्ष्य करके कही जाती है।

न आई न गई, फलाना बहू भई—नीचे देखिए।

न आई न गई बहू हो गई—ससुराल तो गई नहीं और व्यक्ति विशेष की बहू कहलाने लगी। किसी के कुछ पूछने पर भी अपने को बड़ा समझने वाले के प्रति ऐसा कहा जाता है। तुलनीय : मैथ०, भोज० अइली ना गइली दुके बो कहवली; पंज० आई न गयी रन बण गयी।

न आधा लेंगे, न पूरा देंगे—(क) किसी भी शर्त को मानने के लिए तैयार न होने पर ऐसा कहते हैं। (ख) जो पूरा माल स्वयं हड़पना चाहता है उसके प्रति भी कहते हैं।

न आन के अपटन, न महतारी बाप के चटकन—दूसरे का प्यार माँ-बाप के थप्पड़ के बराबर ही होता है। दूसरे के घर में अच्छा भोजन और सुविधाएँ मिलने पर भी लड़कों का स्वास्थ्य उतना अच्छा नहीं रहता जितना अपने घर की रूखी-सूखी खाकर। अपने घर सा सुख कहीं नहीं मिलता।

न इधर के रहे न उधर के—दोनों तरफ़ का सहारा चाहने वाले को एक तरफ़ का भी सहारा नहीं मिलता। जब कोई व्यक्ति दोनों पक्षों से लाभ उठाना चाहे और किसी ओर से न मिले तो कहते हैं। तुलनीय : मरा० इकडचे ना तिकडचे; ब्रज० न इतके रहे न वितके रहे; पंज० न इदर ने उदर दे।

न इनकी दोस्ती अच्छी, न इनकी दुश्मनी अच्छी—

गुंडों और पुलिसवालों के प्रति कहते हैं क्योंकि उनकी मित्रता और शत्रुता दोनों से बदनामी और हानि होती है।

न इस काम का, न उस काम का—अर्थात् किसी काम का नहीं। सर्वथा अयोग्य व्यक्ति या वस्तु के प्रति कहते हैं। तुलनीय : असमी—ने देवाय न धर्म्माय; अं० Neither here nor there.

न ईंट की दो, न पत्थर की लो—न किसी को ईंट मारो और न तुम्हें कोई पत्थर मारे। अर्थात् न तुम किसी की बुराई करो और न तुम्हारी बुराई कोई करेगा। जब किसी को दूसरे को हानि पहुँचाने के कारण स्वयं भी हानि उठानी पड़ती है तब उसके प्रति शिक्षार्थ ऐसा कहते हैं।

न ईंट डालो, न छींट पाओ—न कीचड़ में ईंट फेंकोगे और न तुम्हारे ऊपर कीचड़ की छींट पड़ेगी। आशय यह है कि (क) यदि बुरा कर्म नहीं करोगे तो तुम्हारी बदनामी नहीं होगी या तुम्हें बुरा फल नहीं भुगतना पड़ेगा। (ख) दुष्टों से उलझ कर बदनामी कराने वाले के प्रति भी कहते है। (बुरे कर्म का परिणाम बुरा ही होता है)। तुलनीय : बुंद० चोंटिया लेओ न बकोटो भराओ; ब्रज० न ईंट डारो न छींट पाओ।

न ईंट डालो, न छीटों मरो—ऊपर देखिए। तुलनीय : हरि० गूह में डला मारै छींटम छीटा हो।

नई आय, पुरानी जाय—नई वस्तु आती है और पुरानी वस्तु उसके लिए स्थान छोड़कर चली जाती है। आशय यह है कि किसी वस्तु या व्यक्ति का प्रभाव सदा एक-सा नहीं रहता। कुछ समय पश्चात् उसके स्थान पर कोई और आ जाता है। तुलनीय : पंज० नवीं आ परानी जा; अं० Old order changeth yielding place to new.

नई कहानी गुड़ से मीठी—हर नई बात सभी को प्रिय होती है।

नई काया, नई माया—जब कोई व्यक्ति किसी काम को नए सिरे से आरंभ करे तो कहते हैं। तुलनीय : राज० नई काया नई माया।

नई के आगे पुरानी धूल—(क) नई वस्तु के आगे पुरानी बिल्कुल बेकार दिखती है। (ख) जब कोई नई वस्तु को पाकर पुरानी वस्तु की अवहेलना कर देता है तब भी कहते है। (ग) जब कोई नए मित्र के मिल जाने पर पुराने मित्रों का पहले जैसा आदर नहीं करता तब भी कहते हैं।

नई घोड़िया कोठी में बछेड़—नई घोड़ी आई तो उसके बच्चे को कोठी में बाँधा गया। (क) नई चीज के प्रति प्रेम अधिक होता है। (ख) नए शौक़ीन के प्रति भी व्यंग्य में कहते हैं।

नई घोसन, उपलों का तकिया—घोसी की नई पत्नी आई तो वह उपलों का तकिया लगाने लगी। (क) किसी नौसिखिये द्वारा किसी वस्तु का ठीक उपयोग न होने पर कहा जाता है। (ख) बेतुके साज-शृंगार पर भी व्यंग्य में कहते हैं।

नई जवानी बाराबाट, कभी न खाया मट्ठा भात—जवानी में ही सब लोग अलग हो गए और कभी मट्ठा-भात खाने को नहीं मिला। आपसी फूट के कारण जब कोई सामान्य सुख के लिए भी तरसता रहे तब व्यंग्य में कहते हैं।

नई जवानी मांझा ढीला—जवानी में जब कोई व्यक्ति साधारण काम के लिए आलस्य दिखाए अथवा हिम्मत हारे तब कहते हैं। तुलनीय : भोज० नई जवानी माझा ढील; अव० चढ़ती जवानी मांझा ढील; पंज० नई जुआनी मंजा टिला; ब्रज० नई जवानी मांझो ढीलो।

नई जुलाहिन कान में छूछी—दे० 'नई घोसन……'। (छूछी = नाक में पहनने का एक आभूषण)।

नई जोगन काठ की मुंदरी—दे० 'नई घोसन…'।

नई दुकान तिनबरसी गुड़ माँगे—नई दुकान खुली है और गुड़ माँग रहे है तीन वर्ष पुराना। बेतुकी बात करने या अप्राप्य वस्तु की माँग करने पर कहते हैं।

नई दुलहिन टाट का लहँगा—दे० 'नई घोसन……'। तुलनीय : भोज० नई दुलहिन टाटे क लहँगा।

नई दुलहिन मुंह पोपा—नवागता वधू का मुँह बूढ़ी जैसा है। (क) जवानी में ही जो बूढ़ों जैसा दिखता है उसके प्रति व्यंग्य में कहते है। (ख) जब कोई पुरानी चीज को नई बतलाता है तब भी व्यंग्य से ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० नवी रन मुँह पीपा।

नई धोबिन लुगरी में साबुन लगावे—धोबी की नई पत्नी आई है तो लुगरी (फटे-पुराने वस्त्र) को भी साबुन से धोती है। (क) जवानी में शौक़ अधिक होते हैं। (ख) किसी नौसिखिए के ऊटपटांग काम पर भी व्यंग्य में कहते हैं।

नई-नई लड़की नई-नई गीत, बुलाओ लड़की गवाओ गीत—आजकल नई-नई लड़कियाँ है और नए-नए ढंग के गीत गाती हैं, इसलिए उन्ही को बुलाइए और गीत गवाइए। आजकल के नए लोग पुराने (वृद्ध) लोगों की बातों को मानते नहीं है क्योंकि पुराने लोग रूढिवादी हैं, इसीलिए वे लोग आजकल के लोगों के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं कि अमुक कार्य उन्हीं से कराइए मेरे बस का नहीं है। तुलनीय : भोज० नई नई बिटिया नई नई गीति बोलाव बिटिया गवाव

गीति।

नई नवेली आसमान पर पाँव—(क) नई बहू जो कोई काम नहीं करती अधिकतर फ़ैशन में ही व्यस्त रहती है उसे लक्ष्य करके ऐसा कहते हैं। (ख) नए मालिक के प्रति भी व्यंग्य में ऐसा कहते हैं जो बहुत बड़ी-बड़ी योजनाएँ बनाता है। तुलनीय : मैथ० अरबा छौंड़ी के दस गो नौंड़ी; भोज० अरकी क धिया नौ गो लौंड़ी अथवा अरके क बिटिया नौ ठे लौंड़ीनि।

नई नवेली तलवे तेल—नवागता वधू पैर के तलवे में तेल लगाती है जबकि सामान्य रूप से ऐसा नही होता। किसी के असामान्य कार्य के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मैथ० अरबा बाभनि तरबा तेल; भोज० अरकी क पतोह तरवा ला तेल अथवा अरके कऽ पतोहि तरवा में तेल।

नई नवेली नया ढंग—ऊपर देखिए।

नई नाइन बाँस की नहरनी—नई नाइन आई है तो बाँस की नहरनी लेकर नाखून काटने चली है जबकि नहरनी लोहे की होती है। नौसिखिए के ऊटपटाँग काम करने पर या किसी नए व्यक्ति के विचित्र ढंग से कार्य करने पर व्यंग्य से ऐसा कहते है। तुलनीय : अव० नोखे कै नाउन बाँसे कै नहन्नी; बुंद० अनोखी नान, बाँस की नहन्नी; ब्रज० नई नांइन बाँस को नैहन्ना; कौर० नई नायन बाँस का निहन्ना; कनौ० नई नाइन बाँस को नहन्नो।

नई नाइन सोने की नहरनी—ऊपर देखिए। तुलनीय : भोज० अरकी कऽ नाउन सोना कऽ नहरनी अथवा अरके कऽ नाउन सोना कऽ नहन्नी।

नई नागिन टाँगे पर फन—साँप का बच्चा और फन पूँछ पर है। मूर्खतावश ऐसा काम कर बैठना जो स्वयं न समझ में आवे तब कहते है।

नई नाँव में बाँस ही नहीं—हर नाव में बाँस होता है बिना उसके नाव का चलाया जाना बहुत मुश्किल है। बहुत बड़ी भूल पर कहा जाता है।

नई नौ दिन, पुरानी सब दिन—(क) नई बातें नौ दिन में ही समाप्त हो जाती हैं, किंतु पुरानी बातें सदा उसी प्रकार चलती रहती हैं। (ख) नई चीज़ जल्दी टूट जाती हैं या खराब हो जाती है, पुरानी चीज़ उसकी तुलना में मज़बूत होती है। तुलनीय : राज० नूंई नव दिन पुराणी दस दिन; पंज० नवीं नौं दिन पुरानी सौ दिन; भोज० नया नौ दिन, पुराना सौ दिन।

नई नौ दिन पुरानी सौ दिन—ऊपर देखिए। तुलनीय : मल० पुत्तनच्चि पुरप्पुरम् तूक्कुम् पिन्ने अच्चि उण्टेटम् कूटि तूक्कुकयिल्ल; ब्रज० नई नौ दिना पुरानी सौ दिना; अं० New brooms are not better than old ones.

नई बस्ती रेड़ी का फुलेल—नई आबादी हुई है और यहाँ के लोग अरंडी (रेड़ी) का इत्र लगाते है। किसी नए व्यक्ति के ऊटपटाँग शौक़ पर ऐसा कहते हैं।

नई बहू कुठौर फोड़ा—नई बहू आई है और उसे ऐसी जगह फोड़ा हो गया है जहाँ देखा नहीं जा सकता, जिससे उसके उपचार की समस्या पैदा हो गई है। किसी टेढ़ी समस्या के उत्पन्न हो जाने पर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० नई बहुरिया अड़बड़े फूंका।

नई बहू को पालागन—नई बहू को प्रणाम (पालागन)। नई बहू का सभी आदर करते है। जिस व्यक्ति या वस्तु को थोड़े समय के लिए आदर हो उसके प्रति कहते है।

नई बहू को हलुआ-पूड़ी—ऊपर देखिए। तुलनीय : गढ़० नौला गोरू का नौ पूला पराल।

नई बहू टाट का लहँगा—दे० 'नई घोसन……'।

नई बहू दुवारे ठाढ़—(क) नयेपन पर व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। (ख) बेशर्म या निर्लज्ज स्त्री के प्रति भी व्यंग्य में ऐसा कहते है। तुलनीय : भोज० अरकी कऽ धिया दुवरवें ठाढ़ अथवा अरके कऽ बहुरिया चउकठे ठाढ़।

नई बात नौ दिन—नई बात नौ दिन तक ही रहती है। आशय यह है कि नई बातें शीघ्र भूल जाती है। तुलनीय : राज० नूंई बात नव दिन; पंज० नवीं गल नौं दिण।

नई बात नौ दिन, खींचातानी दस दिन—नई बात बहुत जल्द समाप्त हो जाती है और यदि उसके प्रचार पर बहुत ज़ोर लगाया जाय तो वह कुछ दिन और चल जाती है, किंतु वह अंततः मिट जाती है। आशय यह है कि नई बातें अधिक दिन तक याद नही रहतीं। तुलनीय : राज० नूंई बात नौ दिन खेंचीताणी दस दिन।

नई मिले तो पुरानी फेंको—नई वस्तु मिलने से पुरानी वस्तु को त्याग देना चाहिए, अर्थात् मनुष्य को अपने आपको नई परिस्थितियों के अनुसार ढाल लेना चाहिए। तुलनीय : माल० नवी आई पुराणी ने दूर करो; पंज० नवीं लब्बे ते परानी छड़ो; अं० Old order changeth yielding place to new.

नई मुसलमानी अल्ला ही अल्ला पुकारे—नई मुसलमानी हुई है, इसलिए दिन-रात अल्ला ही अल्ला पुकार रहो है। जब कोई किसी नए काम में आवश्यकता से अधिक रुचि दिखाए तब उसके प्रति ऐसा कहते हैं।

नई मुसलमानी, नमाज को नहिं पानी—नई मुसलमानी हुई है और नमाज के लिए पानी लाना भूल गया। जब कोई नौसिखिया व्यक्ति किसी काम की आवश्यक वस्तु को भूल जाय तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

न उगलते बनता है, न निगलते—असमंजस की स्थिति। जब किसी काम के करने और न करने दोनों दशाओं में हानि की संभावना हो तब कहते हैं। तुलनीय : भोज० न उगिलत बने न लीलत बने; पंज० न खंदे बने न छडदे।

न उनको ठौर, न इनको और—न उन्हें कोई दूसरी जगह मिलेगी और न इन्हें कोई दूसरा आदमी मिलेगा। दो ऐसे बुरे व्यक्तियों के प्रति कहते हैं जिन्हें एक-दूसरे के अतिरिक्त और कोई न पूछे।

न ऊधो का लेना, न माधो का देना—हर तरह से निश्चित। जो व्यक्ति किसी से लेन-देन नहीं रखता उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : छत्तीस० न उधो के लेना, न माधो के देना; ब्रज० न ऊधौ कौ लैनों, न माधौ कौ दैनों।

न अनोखे पाई, कांधे डारि हलाई—नया अनोखा (पैर में पहनने का चाँदी का एक गहना) पाई तो उसे गले में डालकर हिला रही है या दिखा रही है। थोड़ा-सा धन पाकर इतराने वाले के प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

न एक हँसता भला न एक रोता—अकेला मनुष्य न सुख-आनन्द भोग सकता है और न दुःख झेल सकता है, इसलिए एकाकी रहना उचित नहीं।

नए के नए तरीके—नए के नए तरीक़े होते हैं। जब कोई नया मालिक या कर्त्ता किसी काम को ऐसे ढंग से करता है जो सामान्य रूप से प्रचलित तरीक़े से भिन्न होता है तब उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : सं० नवा नानः नव एव पंथाः; पंज० नवें दे नवें कम।

नए के नौ दाम पुराने के छः दाम—नई वस्तु कम उपयोगी होने पर भी पुरानी और उपयोगी वस्तु से महँगी मिलती है। अर्थात् नई चीज़ की क़ीमत पुरानी से अधिक लगती है। तुलनीय : मरा० नव्याचे नऊ (नाणें) जुन्याचे सहा।

नए गुंडे अंडी का फुलेल—नए-नए शौक़ीन अंडी का इत्र (फुलेल) लगाते हैं। जब कोई नया व्यक्ति मूर्खतावश या अनुभवहीन होने के कारण ऊटपटांग काम करे तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

नए गुंडे कंडे का दर्पण—ऊपर देखिए।

नए चिकनियाँ अंडी का फुलेल—दे० 'नए गुंडे अंडी का फुलेल।'

नए जोगी कूल्हों पर जटा—ढोंगी और मूर्खतापूर्ण दिखावा करने वाले पर व्यंग्य में कहते हैं।

नए जोगी गाजर का शंख—नए योगी बने हैं तो गाजर का शंख लिए फिर रहे हैं। जब कोई अनुभवी व्यक्ति किसी वस्तु का हास्यास्पद प्रयोग करता है तो कहते हैं।

नए जोगी पैर में जटा—दे० 'नए जोगी कूल्हों···'।

नए नए हाकिम, नई नई बातें—नया हाकिम होता है तो क़ानून भी नया होता है। नया हाकिम या अफ़सर जब कोई नई बात करे तब कहते हैं। तुलनीय : मरा० नवा अधिकारी नव्या गोष्टी; अव० नवा नवा हाकिम, नई नई बात; पंज० नवें नवें कींम नंवियां नवियां गलां।

नए नमाज़ी, बोरिये का तहमद—नए नमाज़ पढ़नेवाले हुए हैं तो चटाई का तहमद पहनकर घूम रहे हैं। किसी नौसिखिए के मूर्खतापूर्ण या अनोखे काम के प्रति कहते हैं। तुलनीय : अव० नवा नमाजी, बोरिया कै तहमत।

नए नवाब आसमान पर दिमाग़—दे० 'नया नवाब···'।

नए पत्ते लगे और पुराने झड़े—वृक्ष पर नए पत्ते लगते ही पुराने झड़ने आरंभ हो जाते हैं। (क) पुराने व्यक्तियों के स्थान पर नए व्यक्तियो के आने पर इस प्रकार कहते हैं। (ख) सृष्टि का नियम बताने के लिए भी ऐसा कहा जाता है। तुलनीय : गढ़० नवां पात लगोन पुराणा पात झड़ोन; पंज० नवें पत्तर लगण अते पराण चड़ण।

नए पहने खेत में, पुराने पहने बारात में—नए कपड़े पहनकर खेतों में काम करता है और पुराने पहनकर बारात में जाता है। (क) जो व्यक्ति मूर्खतापूर्ण कार्य करे उसके प्रति व्यंग्य से कहते है। (ख) असंगत कार्य करने वालों के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : राज० रार्ली ओढ जान में जावै, वागो पहर एवड़ में जावै।

नए पहने सो झूम चले, फटे पहने सो ढक चले—नए कपड़े पहनने वाला तो लापरवाही से झूमकर चलता है और फटे पहनने वाला अपनी इज्ज़त बचाने के लिए ढँककर चलता है। निर्धन व्यक्ति अपनी इज्ज़त के प्रति सावधान रहता है क्योंकि कोई भी उसका अपमान कर सकता है। तुलनीय : भीली—हाजा वालो नागो देखाये, फाटा वाला नी देखाये।

नए पुजारी का शंख—नए पुजारी बने हैं तो कोल्हू को ही शंख के रूप में इस्तेमाल करते हैं। बेतुका काम करनेवाले या अनुभवहीन के मूर्खतापूर्ण कार्य करने पर कहते हैं। तुलनीय : पंज० नवें पंडत दा संख।

नए बावरची साग में शोरुआ—नए रसोइये ने साग को रसदार बनाया है। मूर्ख या फूहड़ के प्रति कहते हैं।

(शोरुआ — शोरवा, रसा)।

नए बैल औ घर का आदमी, मिले तो खेती होय—नई उम्र के बैल और उनको हाँकने वाला अपने घर का हो तो खेती होती है। आशय यह है कि अच्छे बैलों तथा अपने हाथ से परिश्रम करने से ही खेती अच्छी होती है। तुलनीय: भीली— घरना गोदा ने घरना जोदा, जणानी खेती।

नए शौक़ीन, खलीतो में गाजर—नए शौक़ीन थैली (खलीती) मे गाजर रखकर चलते है। मूर्खतापूर्ण काम करने वाले के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते है।

नए सिपाही मूँछ में ढाठा—(ढाठा दाढ़ी मे बाँधा जाता है, मूँछ मे नहीं।) ऊपर देखिए।

नए सिरे से जन्म हुआ है—बहुत बड़ी विपत्ति या असाध्य रोग से छुटकारा पाने वाले को कहते है। तुलनीय: पंज० नवां जमया है।

नकटा की नाक कटी, ढाई बित्ता रोज बढ़ी— नकटे की जब नाक कट गई तो कहा कि कोई बात नही है, बहुत जल्द (ढाई बालिश्त रोज़) बढ़ेगी। बेशर्म व्यक्ति के प्रति व्यंग्य में कहते है जिस पर किसी बात का प्रभाव नहीं पड़ता।

नकटा जिए बुरा हवाल—नकटे की ज़िंदगी बहुत बुरी होती है। (क) जिसकी नाक कट जाती है उसकी बड़ी दुर्दशा होती है। (ख) बदनाम व्यक्ति समाज मे उपेक्षित रहता है। तुलनीय: मल० मेषुत्तलयन् वेयिलत्तिरङङरुतु; ब्रज० नकटा जीवै बुरे हवाल; अं० He that hath ill name is half hanged.

नकटा जेठ नसरड़ी बहू, आवो जेठजी कहानी कहू—जेठ और बहू दोनो निर्लज्ज हो तो बहू कहती है कि जेठजी एक कहानी कहो। अर्थात् दो निर्लज्ज मिल जायें तो जो उनमें नहीं होना चाहिए वह भी होता है।

नकटा देव, चोर पुजारी—जैसे देवता नकटे है वैसे ही उनके पुजारी भी चोर है। जहाँ सेवक और स्वामी, बड़े और छोटे सभी दुश्चरित्र हों तो वहां उनके प्रति कहते है। तुलनीय: राज० नकटा देव, सुरड़ा पूजारा।

नकटा देव, नसरड़ा पुजारी—जैसे देवता होते है, उनको वैसे ही पुजारी मिलते हे या वैसे ही पुजारी अच्छे लगते है। ऊपर देखिए। तुलनीय: मेवा० नकटा देव नसरड़ा पुजारी।

नकटा बूचा सबसे ऊँचा—जिनके नाक-कान कट गए हैं वे सबसे बड़े हैं। निर्लज्ज व बेशर्म से सभी डरते हैं क्योंकि निर्लज्ज पर किसी के कुछ कहे का या अपमान का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। तुलनीय: छनीस० नकटा बूचा सबले ऊँचा; पंज० नंगा लुच्चा सब तों उच्चा।

नकटा भला, बात काटे सो बुरा— नकटा इतना बुरा नही होता जितना कि बात काटने वाला। आशय यह है कि किसी की बात को बीच में काटना अच्छा नहीं होता। तुलनीय: मेवा० नकटो हाऊ, पण बात कटो खोटो।

नकटा ससुर, निर्लज्ज बहू, आ रे ससुर कहानी कहूँ—दे० 'नकटा जेठ नसरडी बहू···'।

नकटी के ब्याह में सौ जोखम—दे० 'कानी के ब्याह में···'। तुलनीय: गुज० नकटवां लगन मों सोलसे अघन; मरा० नकटीचे लग्नाम सत्राशे विघ्ने; बुंद० नकटी के ब्याव में सौ जोखो; पंज० नगे लुच्चे दे ब्याह बिच सौ काटा।

नकटी के सामने नाक पकड़े—जिसकी नाक कटी है उसी के सामने नाक पकड़ता है। जब कोई किसी व्यक्ति को उसके दोष दिखाकर खिझाता है तब कहते हैं। तुलनीय: पंज० बमरम दे अग्गे मरम करे।

नकटी बुढ़िया पानी पिला, बेटा आगे चलकर दूध मिलेगा—दे० 'कानी बुढ़िया···'।

नकटी मैया पानी पिला, पूता इन्हीं गुनों से— किसी ने किसी स्त्री को नकटी कहकर पानी माँगा, उसने व्यंग्य से कहा कि इन्हीं गुणों से तुझे पानी मिलेगा अर्थात नहीं मिलेगा। तात्पर्य यह है कि मीठी बोली से जो काम निकलता है वह कड़वी से नहीं।

नकटे की नाक कटी ढाई बीता रोज बढ़ी—दे० 'नकटा की नाक कटी···'।

नकटे की नाक कटी, सवा गज और बढ़ी—दे० 'नकटा की नाक कटी···'। तुलनीय: अव० नकटा कै नाक कटी सवा बीता रोज बाढ़ै; राज० नकटा नाक कटी कै सवा गज बधी; गढ़० बेशरम को नाक काट्यों, हातेक और बाढ्यो।

नकटे की नाक कटी, सवा हाथ बढ़ गई—दे० 'नकटा की नाक कटी···'। तुलनीय: गढ़० नाक काटी हात मा घयूं; छनीस० नकटा के नाक कटै, सवा हाँत बाढ़ै।

नकटे की नाक पर पीपल उगा तो उसे छाया मिली—नकटे की नाक पर पीपल का वृक्ष उग गया तो उसने कहा कोई बात नहीं इससे छाया रहेगी। आशय यह है कि बेशर्म को चाहे कितना भी अपमानित होना पड़े फिर भी कोई फ़र्क नहीं पड़ता। तुलनीय: हाड़० नकटा की नाक प फीफली उगी तो चालो छायाई होई।

नकटे तेरी कितनी नाक? कहा—निन्यानबे—किसी ने नकटे से पूछा कि तेरे कितने नाक हैं तो उसने कहा कि निन्यानबे। निर्लज्ज व्यक्ति जब किसी बुरे काम को बार-

बार करना है तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० नकटा थारे नाक किना ? निन्नाणवे।

न कड़ुआ बन कि जो चक्खे ओ थूके, न मीठा बन कि चट कर जायँ भूखे—न तो इतना कड़ुआ बनना चाहिए कि जो चखे वही थूक दे और न इतना मीठा बनना चाहिए कि भूखे पूरा साफ कर जायँ। आशय यह है कि न मनुष्य को बहुत मीठा या नरम बनना चाहिए और न बहुत कड़ुआ या कड़ा। इन दोनों सीमाओं (extremes) से हानि होती है। बीच का मार्ग ही सर्वोत्तम है।

नगद दाम सब आसान—नकद दाम देने से सभी कठिन काम आसान हो जाते हैं। अर्थात् धन से सभी कुछ हो जाता है। तुलनीय : राज० नगद नाणो बींद परणीजै काणो।

न करने से करना अच्छा—आशय यह है कि बैठे रहने से कुछ करना अच्छा है। तुलनीय : सं० अकरणात् करणं श्रेयः।

नक़ल में अक़ल का क्या काम ?—नक़ल में बुद्धि की कोई आवश्यकता नहीं होती। (क) बुद्धिमान व्यक्ति किसी की नक़ल करके काम नहीं करते या किसी की नक़ल करना बुद्धिमानी नहीं समझी जाती। (ख) साधारण व्यक्ति भी दूसरे की नक़ल करके उसी जैसा काम कर लेता है। तुलनीय : फ़ा० नक़्ल राचे अक़्ल ? पंज० नकल बिच अकल द की कम।

नक़ल में भी अक़ल लगती है—नक़ल करने के लिए भी बुद्धि की आवश्यकता होती है। आशय यह है कि बिना बुद्धि के कोई काम नहीं हो सकता। तुलनीय : पंज० नकल बिच वी अकल लगदी है।

नकसीर भी नहीं फूटी—ज़रा भी शोक या दुःख नहीं हुआ। दूसरे की हानि या विपत्ति पर सहज प्रतिक्रिया न होने पर कहते हैं।

न कहने की लाज न सुनने की—निर्लज्ज के प्रति कहते हैं जिस पर किसी के कहे-सुने का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। तुलनीय : भोज० न कहले कऽ लाजि न सुनले कऽ; पंज० न कैण दी सरम न सुणण दी।

'न' का नियम, मतलब का प्रेम—कुछ माँगने पर नहीं कर देते हैं केवल मतलब का प्रेम रखते हैं। जो व्यक्ति घोर स्वार्थी हों, कुछ भी माँगने पर इनकार कर देते हों तथा स्वार्थ-सिद्धि के लिए प्रेम जताते हों उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० न कारे आळो नेम पाळीवाळो पेम; पंज० लल्ला सिखया एद्दा नईं।

न काम का, न काज का—किसी का नहीं है। बिलकुल निकम्मे व्यक्ति के प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० न काम दा न काज दा।

न काम की न काज की ढाई सेर नाज की—दे० 'काम का न काज का…'।

न काम की न काज की दुश्मन अनाज की—दे० 'काम का न काज का…'।

न कुत्ता देखेगा न भौंकेगा—(क) जिस काम से जो व्यक्ति नाराज़ होता हो उससे छिपाकर उस कार्य को करना चाहिए। (ख) मूर्खों को रहस्य की बात नहीं बतानी चाहिए क्योंकि वे प्रचार बहुत करते हैं।

न कूटे न पीसे दुखड़ा करे, ख़ुदा ऐसी औरत को ग़ारत करे—जो स्त्री न कूटने-पीसने का काम करे और न दुख में सेवा करे उसे भगवान मौत दे दे। निकम्मी औरत के प्रति कहते हैं। (ग़ारत—बरबाद करना, नष्ट करना)।

न कोई साथ आया है और न कोई साथ ले जायगा—धन पर कहा जाता है। तुलनीय : अव० न कौने कुछ साथ लय आवा है न साथ लै जाई; ब्रज० न कोई संग लायौ न लै जायगौ।

न कौआ काँय करे, न मक्खी भाँय करे,—न कौआ बोलता है और न मक्खियाँ भिनभिनाती हैं। अत्यंत उजाड़ प्रदेश के लिए कहते हैं जहाँ किसी प्रकार के जीव-जंतु न हों।

नक्कारख़ाने में तूती की आवाज़—ऐसी आवाज़ जो आसपास के कोलाहल में सुनी न जा सके और जिसका कोई प्रभाव न हो। जब बड़ों के आगे छोटों की कोई नहीं सुनता तब कहते हैं। जब बहुमत के सामने अल्पमत पर कोई ध्यान नहीं देता तब भी कहते हैं। तुलनीय : गढ़० ढोल दमौं दगडी कमच्या की रुंड्चुंइं; माल० नगारखाना में तूती री आवाज कुण हुणे; राज० नगारां में तूतीरी आवाज कुण सुणै; अव० नक्कारखाना मा तूती कै अवाज कउन सुनत है; मरा० नगाऱ्याची घाई, तेथे टिमकी तुझे काई; ब्रज० नक्कार खाने में तूती की आवाज कौन सुनें।

नक्क़ारेबाज दमामे बाज गए—बड़ी ख्याति मिल गई, धूम मच गई।

नक़्दह् हुरमतह्—नक़द हिसाब-किताब रखने से साख अर्थात् इज़्ज़त (मर्यादा) बनी रहती है। (यह अरबी की कहावत है)।

नक्षत्र बली है—(क) जो व्यक्ति आपदाओं से बच निकले उसके प्रति कहते हैं। (ख) जिस व्यक्ति को हर तरफ़ से लाभ होता है उसके प्रति भी कहते हैं।

नक्षुधार्तोऽपि सिंह स्तृणञ्चरति—भूखा होने पर भी सिंह घास नहीं चरता। अर्थात् बड़ी से बड़ी आवश्यकता पड़ने पर भी बड़े अपना पथ नहीं छोड़ते।

न खलु शालग्रामे किरातशत संकीर्ण प्रतिवसन्नपि ब्राह्मणः किरातो भवति—सैकड़ों किरातों से संकुल शाग्राम (एक पर्वत) पर बसने वाला ब्राह्मण भी किरात नहीं हो जाता। जैसा कि गधों के वासस्थान में पैदा होने वाला घोड़ा अश्व कभी नहीं हो सकता। आशय यह है कि संगति का बहुत प्रभाव पड़ता है।

न खाऊँगा न खाने दूँगा—न तो मैं स्वयं खाऊँगा और न किसी को खाने दूँगा। जो व्यक्ति किसी कार्य को न स्वयं करे ओर न दूसरों को करने दे उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : छत्तीस० न खाहों, न खान दे हों; पंज० न खेड़ागे न खेडण देआंगे।

न खाए न खाने दे—ऊपर देखिए। तुलनीय : गुज० गंजुनो कूतरो न खाय, न खावा दे; पंज० न खां गे न खाण देआं गे।

न खाती बहू सास-ससुर खाए—न खाने वाली बहू सास-ससुर को भी खा जाती है। (क) अधिक भोजन करने वालों के प्रति व्यंग्य में तब कहते हैं जब वे अपने को खाने वाला बताएँ। (ख) जब किसी व्यक्ति या वस्तु की बहुत प्रशंसा सुनी जाय, पर वास्तव में वह वैसा न हो बल्कि उसके विपरीत हो तब व्यंग्य में कहते हैं : तुलनीय : गढ़० निखाँदी ब्वारि सासु सुसुर खांद।

न खाती बिटिया पाँच सेर खाय—ऊपर देखिए। तुलनीय : गढ़० निखांदी ब्वारी छँ सेरी खौ।

न खेलना न खेलने देना, खेल में मूत देना—न तो स्वयं खेलते हैं और न ही दूसरे को खेलने देते हैं बल्कि खेल बिगाड़ देते हैं। जब कोई व्यक्ति न तो स्वयं कोई लाभ उठाए और न दूसरों को उठाने दे तो कहते है। तुलनीय : पंज० खेड़णा न खेड़न देणा गुत्ती विच मूत देना।

न गंदा पति मरेगा न मिचली जाएगी—बुरे आचरण वाले व्यक्ति की ओर लक्ष्य करके कहा जाता है। तुलनीय : भोज० फूहर पियवा मरतो नइखे मुत्ते क बेरियां चित छोड़तो नइखे।

न गंदा मरे न गंदगी जाय—किसी गंदे व्यक्ति से ऊबकर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० न फूहर मरी न फुहरपन दूर होई।

न गंदी गली जाए न कुत्ता काटे—न बुरों के पास जाए या उनकी संगति करे और न बदनामी उठाए।

न गदहे को दूसरा मालिक न धोबी का दूसरा पशु—गदहे को धोबी ही मालिक मिलता है और धोबी को गदहा ही पशु। (क) बुरे को बुरे ही मिलते हैं और एक के बिना दूसरे का काम नहीं चलता। (ख) जब दो व्यक्ति हानि होने पर भी एक-दूसरे पर सर्वदा भरोसा करें तब भी कहते हैं। तुलनीय : मैथ० गदहा के ने दोसर गोसैंया, धोबिया के ने दोसर परोहन; भोज० धोबिया के नं दूसर ढोवेवाला नं गदहा के दूसर सवार।

नगर बसंते देवा नाम, गाँव बसंते भूता नाम—नगर में देवता लोग रहते है और गांव में भूत। आशय यह है कि (क) शहर के लोग सभ्य एवं सुशिक्षित होते है तथा गाँव के लोग असभ्य एवं अशिक्षित या कम शिक्षित होते हैं। (ख) शहर के लोगों की जिंदगी गाँव के लोगों से अच्छी होती है।

न गाय के थन, न गुसाईं के भाँडा—न तो गाय के थन हैं और न गोसाई के पास बर्तन। जब किसी चीज़ का कोई आधार ही न हो तब कहते हैं।

न गाय में न भैंस में—किसी मे नही। (क) बेकार वस्तु के प्रति के कहने हैं। (ख) तटस्थ व्यक्ति के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : भोज० न गाई में न भंइसी में; पंज० नाँ गाँ विच नाँ मज बिच।

न गिनु तीन सै साठ दिन, नाकर लगन विचार, गिनु नौमी अषाढ़ बदि, होवे कौनउ वार; रबि अकाल मंगल जग उगै, बुआ सयो सम भावो लगै, सोम सुक्र सुरगुरु जो होय, पुहुमी फूल फलंती जोय—साल के तीन सौ आठ दिनों की गिनती करना बेकार है और लग्नादि का विचार करने से भी कोई लाभ नहीं है। आषाढ़ वदी नवमी का विचार करने से ही साल-भर का पता चल जाता है। यदि नवमी रविवार को पड़े तो अकाल पड़ता है, मंगल को हो तो पूर्व स्थिति बनी रहेगी और सोमवार, शुक्रवार और गुरुवार को पड़े तो पृथ्वी तथा स्त्रियाँ फलती-फूलती हैं।

नगीने से नक्श जुदा नहीं होता—पत्थर की नक्काशी मिटाने से नहीं मिटती। आशय यह है कि जो बात दिल में जम या बैठ जाती है वह कभी नहीं हटती।

न गुड़ खाऊँ, न कान बिधाऊँ (छिदाऊँ)—न तो गुड़ खाऊँगा और न कान छिदवाना पड़ेगा। जहाँ कुछ लाभ से अधिक कष्ट होने की संभावना हो, वहाँ लाभ का मोह न करना चाहिए। हिन्दुओं के लड़कों, लड़कियों का कान मीठा या लड्डू खिलाकर छिदवाया जाता है, उसी पर यह कहावत आधारित है। तुलनीय : ब्रज० न गुर खाऊँ, न कान

छिदाऊँ।

न गू में ईंट फेंके न छींटे खाय—नीचे देखिए। तुलनीय : कौर० न गू में ईंट गेरे, न छींट खाय; पंज० नाँ गूँ बिच इटां सुटो न छिटाँ खाओ।

न गू में ईंट फेंको न छींटा पड़े—न नीच मनुष्य को छेड़ो और न अपनी बेइज्जती करवाओ। तुलनीय : भोज० न ईंटा डाली न छीटा पड़ी।

न घर का न घाट का—दे० 'धोबी का कुत्ता···'। पंज० ना कर दा ना वारदा; ब्रज० न घर कौ न घाट कौ।

न घर चैन न बाहर चैन—न तो घर पर आराम या शांति है और न बाहर। (क) जब किसी को कोई बड़ी चिंता हो जाती है तो कहता है। (ख) जिसे घर और परदेश हर जगह कष्ट ही रहे वह भी कहता है या उसके प्रति भी कहते है। तुलनीय : पंज० न कर चैण न बार।

नचनारी के कूल्हे फड़कें—नाचने वाली के कूल्हे फड़कते हैं। आशय यह है कि मनुष्य के गुणावगुण छुपते नहीं हैं, उसकी बातचीत या हाव-भाव से प्रगट हो जाते हैं।

चलनी का पानी आएगा, न पड़ोस का बरह बराएगा—दे० 'न नौ मन तेल होगा···'।

न च सर्वत्र तुल्यत्वं स्यातप्रयोजक कर्मणाम्—प्रेरणा-दायक कार्य हमेशा और हर जगह एक ही प्रकार के नहीं होते। तात्पर्य यह है कि प्रेरणा कभी किसी कार्य से कभी वचन मात्र से और कभी-कभी संकेतमात्र से भी प्राप्त होती है जिससे मानव कर्म में प्रवृत्त हो जाता है।

नचैया के पाँव आप दिखते हैं—नाचने वाले के पाँव अपने आप नज़र आने लगते हैं। आशय यह है कि गुणी आदमी का गुण छिपा नहीं रहता। तुलनीय : बुंद० नचया के पाँव आप दिखा परत; बंग० नाचेर पा थामे ना; गुज० नाचनारी ना पग ढाँक्या न रहे; ब्रज० नचवैया के पाम आप दीखें।

नचैया के पाँव ढके नहीं रहते—ऊपर देखिए।

न जनती, न ढोल बजता—ऐसे कपूत के लिए कहते हैं जो सभी से बुरा व्यवहार करता है कि न उसकी माँ उसे जन्म देती और न उसके कारण परिवार में बदनामी होती।

नजर जो राखे चोरी पर, तो पगड़ी, पत रख मोरी पर—यदि चोरी की नीयत रखते हो तो अपनी पगड़ी और पत मोरी पर रखो अर्थात् अपने को बेइज्जत हुआ समझो।

नजर से दूर दिमाग से दूर—जो आँख के सामने नहीं होते वे दिमाग से भी दूर हो जाते हैं। अर्थात् दूर चले जाने वालों की याद नहीं आती। तुलनीय : अं० Out of sight out of mind.

न जाड़े धूप न गरमी छाँव—आवास के लिए हानिकर स्थान जो किसी मौसम में भी सुख नहीं दे सकता।

न जीने की शादी न मरने का ग़म—न जीने की खुशी (शादी) है और न मरने का दुख (ग़म)। (क) ऐसे मनुष्य का कथन है जो संसार से ऊब गया हो। (ख) त्यागी व्यक्ति को भी कहते हैं। तुलनीय : मरा० सोयर सुतक काँही नाहीं।

नट का बच्चा तो कलाबाजी ही करेगा—आशय यह है कि किसी का जातीय स्वभाव नहीं छूटता। (नट एक निम्न श्रेणी की जाति है जो तमाशा दिखाकर अपनी जीविका के लिए धन कमाती है)।

नटनी जब बाँस पर चढ़ी तो घूंघट क्या?—नटनी (नट जाति की स्त्री) जब नाचने या कला दिखाने के लिए बाँस पर चढ़ गई तो शरमाने की कोई आवश्यकता नहीं। जब कोई बुरा या बेशर्मी का काम करे और लजाए भी तब उसके प्रति कहते हैं कि लजाने से कोई लाभ नहीं होगा, खुलकर काम करो। तुलनीय : बुंद० जब नटनी बाँसे चढ़ी तब काहे की लाज; मरा० कोल्हाटीण बाँबूवर चढली खरी, आताँ बुरावा कसला; ब्रज० नटिनी जब बांस पै चढ़ि गई तो लाज कहा।

नटनी बाँस चढ़ी, तो शर्म कैसी?—ऊपर देखिए।

नटनी बाँस चढ़े तो कुल की आँख बचा के—नटनी (नट जाति की स्त्री) जब बाँस पर कला-प्रदर्शन के लिए चढ़ती है तो अपने परिवार वालों से छिपकर। जब कोई खुले आम बुराई या बेशर्मी का काम करता है तब उसके प्रति कहते हैं। आशय यह है कि यदि कोई बुरा काम किया जाय तो अपने परिवार के लोगों या परिचितों से छिपकर करना चाहिए। तुलनीय : कौर० नटनी बांस चढ़े तो कुल की आँख बचा कै।

नट विद्या पाई जाय, जट विद्या न पाई जाय—नट की विद्या प्राप्त की जा सकती है पर जाट की नहीं। जाटों की चालाकी पर कहा गया है। इस सम्बन्ध में एक कहानी है : एक राजा ने एक नटनी से प्रतिज्ञा की कि यदि तुझे नट-विद्या में कोई परास्त न कर सकेगा तो मैं तुझे अपना राज्य दे दूंगा। राजा की इस बात को जाट खड़ा सुन रहा था। वह झट लोहे के दस्ताने पहिनकर बाँस के ऊपर चढ़ गया और वहीं से चारों ओर घूमकर पेशाब करने लगा। यह देखकर सब हँसने लगे और नटनी बहुत शरमाई क्योंकि वह इस प्रकार नहीं कर सकती थी। इस प्रकार जाट ने अपनी

बुद्धिमत्ता से नटनी को परास्त करके राजा का राज्य बचा लिया। तुलनीय : राज० नटबुध आवै, जाट बुध नावै।

नटा बनिया माने ना—बनिया यदि एक बार किसी वस्तु के लिए इनकार कर देता है तो फिर बाद में उसके लिए किसी भी तरह नहीं मानता। आशय यह है कि बनिया अपनी हानि किसी प्रकार सहने को तैयार नही होता। तुलनीय : माल० नट्यो वाण्यो आर में नी आवे।

नडलोदकं पादरोगः—नरकटों (दलदल में उत्पन्न होने वाले पौधे) की क्यारी का पानी पैरों में रोग पैदा करता है। तात्पर्य यह है कि नरकटों की क्यारी में अधिक देर तक खड़े रहने से पैरों में रोग हो जाता है।

न नरे घंघरिया, न ऊपर फरिया—न तो नीचे (तरे) घघरा (घंघरिया) पहनी है और न ऊपर फरिया, अर्थात् कोई कपड़ा नहीं पहना है। (क) अति निर्धन स्त्री के लिए कहते हैं। (ख) निर्लज्ज स्त्री के लिए भी कहते हैं।

न तीन में न तेरह में—दे० 'तीन में न तेरह में।' तुलनीय : ब्रज० न तीनि में न तेरह में।

न तू मेरी ओर खींस निपोर, न मैं तेरी ओर दाँत निपोरूँ—नीचे देखिए।

न तू मेरी धूरे पर की कह, न मैं तेरी खेत पर की कहूँ—न तुम मेरी बुराई करो और न मैं तुम्हारी बुराई करूँ। आशय यह है कि यदि कोई दूसरे की बुराई करता है तो दूसरा भी उसकी बुराई अवश्य करता है।

न तेल तली न ऊपर पली—न तो नीचे तेल है और न ऊपर। अति क्षुद्र दान पर कहा जाता है।

न तो राँड को चिन्ता और न बाँझ को—पति के मर जाने से राँड और बच्चे के न होने से बाँझ निश्चिन्त रहती है। आशय यह है कि जिसे न किसी की सेवा करनी हो और न जिस पर कोई भार हो, वह बेफिक्र रहता है। तुलनीय : छत्तीस० राँड़े सोच न बाँझे सोच।

न दलिद्र से परसवावै, न बड़े से भखवावै—दरिद्र (दलिद्र) से खाने के लिए कुछ परसवाना नहीं चाहिए क्योंकि वह दरिद्र होने के नाते थोड़ा खाता है और दूसरों को भी थोड़ा ही देता है। और न ही सम्पन्न लोगों से उनके खर्च के विषय में पूछना चाहिए क्योंकि वे अधिक खर्च करते हैं और वे दूसरों को भी ऐसी सलाह देते हैं जिससे काफ़ी खर्च हो जाए।

न दिन दिखे न फूहड़ पीसे—न दिन दिखाई देता है और न फूहड़ पीसती है। (गाँवों में रात्रि के अन्तिम पहर से चक्की चलाने की प्रथा है। फूहड़ औरतें जब तक दिन नहीं निकल आता सोई रहती हैं)। (क) जब तक स्थिति सामने न आ जाए, मूर्ख विश्वास नहीं करते और न कार्य करते हैं। (ख) असमय कार्य करने वाले पर भी व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : कौर० न दिण दिक्खै, न फूहड़ पिस्सै; ब्रज० न दिन दीखै, न फूहरि पीसै।

नदिया नाव घाट बहुतेरा, कहैं कबीर 'नाम का फेरा'—नदी, नाव और घाट बहुत से हैं केवल नाम का अन्तर (फेर) है। आशय यह है कि ईश्वर की आराधना के भिन्न-भिन्न मार्ग हैं।

नदी आई नहीं मगर घहराने लगे—नदी अभी आई नहीं कि उसमें रहने के लिए मगर इकट्ठे होने लगे। किसी कार्य के आरम्भ होने से पहले ही जब उससे लाभ उठानेवाले तैयार हो जायँ तो उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : कौर० नद्दी आई ना मगर घहराण लाग्गे।

नदी किनारे बगुला बैठा, चुन-चुन मछली खाय—(क) मृत्यु किसी को नहीं छोड़ती एक-एक करके सबको खा जाती है। (ख) कपटी मनुष्य के प्रति भी कहते हैं जो ऊपर से बहुत सज्जन बना रहता है किन्तु अवसर पाते ही अपना स्वार्थ सिद्ध कर लेता है।

नदी किनारे रूखड़ा जब-जब होत बिनास—नदी के तट पर स्थित पेड़ किसी भी समय नष्ट हो सकता है, अर्थात् नदी उसे किसी भी समय बहा ले जा सकती है। जिसे सदा ही जोखिम का काम करना पड़ता हो उसके लिए कहते हैं। तुलनीय : मरा० नदीकांठींचें झाड़, केव्हां पडेल नेम नाही; राज० नदी किनारे रूखड़ो जद-कद होय विनास।

नदी तू गुर्राती क्यों है, मैं पाँव ही नहीं रखता—नदी तुम क्यों गुर्रा रही हो मैं यहाँ आऊँगा ही नहीं। किसी के धौंस की कुछ परवाह न करने वाले के प्रति कहा जाता है।

न दीन के रहे न दुनिया के—न तो धर्म ही रहा और न दुनिया में इज्जत ही रही। जब कोई ऐसा काम करे जिसमें धर्म भी जाए और बदनामी भी हो तथा कुछ भी न मिले तो कहते है। तुलनीय : पंज० न दीन दे न दुनिया दे; ब्रज० न दीन के रहे न दुनिया के।

नदी नाव संजोग—संसार में दो व्यक्तियों का समागम संयोग से ही होता है और वह अस्थायी होता है। पता नहीं भविष्य में फिर मिलन हो या नहीं। किसी से आकस्मिक भेंट होने पर कहते हैं। तुलनीय : राज० नदिया नाव संजोग; गढ़० नदी नाव संजोग; मेवा० नदी नाव संजोग।

नदी बही जाय क्या किसी के बाप की—नदी पर सब

का समान अधिकार होता है। (क) प्रकृति छोटे-बड़े, अमीर-ग़रीब का भेद-भाव नहीं करती, वह सबके लिए समान सुविधायें देती है। (ख) प्रकृति पर सबका समान अधिकार होता है। तुलनीय : मेवा० नदी बही जावे जो कई तेली का बाप की।

नदी बहे तो काम आय, नालो बहे तो गंधाय—नाली में बहता पानी किसी काम नहीं आता और नदी का पानी अनेक काम आता हैं। अर्थात् (क) एक ही वस्तु एक स्थान पर लाभदायक होती है और दूसरे स्थान पर हानिकारक होती है। (ख) सज्जन व्यक्ति से काफ़ी फ़ायदा होता है और दुर्जन क्षति पहुँचाते हैं। तुलनीय : भीली—नेवा निकळ्ये हं वे नदी नाला निकले हैं, जेरों काल निकल हैं।

नदी में रहकर मगर से बैर—जब कोई व्यक्ति आश्रय-दाता, शासक या बलवान के समीप रहकर उससे बैर मोल लेता है तो कहते हैं। तुलनीय : भोज० नदी मे रहे के मगरे से बैर, अव० नदी मा रहिके मगर से बैर; माल० तलाब मे रेइने मगर ती बैर; स० नद्या निवासो मकरेण वैरम्; ब्रज० नदी में रहै, मगर ते बैर; अं० It is ill sitting at Rome and striving with the Pope.

न देने की सौ बातें—न देना चाहे तो अनेक (सौ) बहाने मिल जाते हैं। जब कोई किसी को कुछ देना न चाहे और उसके लिए इधर-उधर की बातें करें तब उसके प्रति ऐसा कहते है। तुलनीय : ब्रज० न दैबे की सौ बातें।

न देने से कुछ देना अच्छा—किसी को निराश लौटाने से कुछ दे देना ठीक होता है। तुलनीय : असमी—किञ्चित् हओक् बञ्चित नहओक्; ब्रज० न दैवे ते तौ कछु दैबो अच्छौ; पंज० न देण नालों देणा चंगा; अं० Half a loaf is better than no loaf; Give the greedy dog a little bone.

न दौड़कर चलूँगा न ज़मीन पर गिरूँगा—अर्थात् (क) बुरा काम करूँगा तभी तो कुपरिणाम भोगना पड़ेगा। (ख) सावधानी से काम करने से हानि नही होती। तुलनीय : मैथ० दउड़ के चलब न हार के गिरब न; भोज० दउरब तब्बे न गिरब; पंज० न नठांगा न डिगांगा।

न दौड़कर चलेंगे न ज़मीन पर गिरेंगे—ऊपर देखिए। तुलनीय : मग० न दउड़ के चले न ठेह गिरे; भोज० न दउर के चलब न ठोकर लागी; मैथ० न दौड़ि चली न ठेसि खसी; पंज० न नठांगा न थले डिगांगा।

न दौड़ के चढ़ें न फिसलकर गिरें—यदि दौड़कर नहीं चढ़ते तो फिसलकर गिरते नहीं। जब कोई व्यक्ति जल्दबाज़ी करने से हानि उठाता है तब उसके शिक्षार्थ ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० न धाय कै चढ़ै न खसकि कै गिरे; भोज० न दउड़ि के चढ़े न बिछिला के गिरे; पंज० नठ के चढ़णा न तिलक के डिगना।

न दौड़ चलोगे न ठेस लगेगी—ऊपर देखिए।

न दौड़ चलो न गिर पड़ो—दे० 'न दौड़ के चढ़ें···'।

नद्या निवासो मकरेण वैरम—दे० 'नदी में रहकर मगर से बैर।'

न धान बोएँगे न बादल की प्रतीक्षा करेंगे—धान के लिए पानी बहुत आवश्यक होता है। अतः धान की खेती करने वाला बादल की ओर देखता है कि कब पानी बरसेगा। जो धान की खेती ही नही करेगा उसे बादल से क्या मतलब ? आशय यह है कि (क) जो काम नही करता उसे उससे संबंधित चीज़ों की आवश्यकता नही होती। (ख) ऐसा काम नही करना चाहिए कि दूसरे के बल पर निर्भर रहना पड़े। तुलनीय : भोज० न धान बोइब न बदरे क5 राहि जोहब; अव० न धान बोवै न बदरन कैती चितवै; पंज० नां चांना राना न बदल तकणा।

न धान बोवो न बादल ताको—ऊपर देखिए।

न धोबी को और सवारी न गदहा को और मालिक—दे० 'न गदहे को दूसरा मालिक···'। तुलनीय : अव० न धोबी के औरु परोहन न गदहा के औरु किसान।

न धोबी को और सवारी न गदहा को और मालिक—दे० 'न गदहे को दूसरा मालिक···'।

न धोबी को दूसरा पशु न गदहे को दूसरा स्वामी—दे० 'न गदहे को दूसरा मालिक···'।

ननद का नंदोई, गले लाग लाग रोई—ननद की ननद के पति के गले से लग-लगकर रोई। किसी के प्रति बिना किसी संबंध के बहुत स्नेह दिखाने पर कहा जाता है। तुलनीय : ब्रज० नंदन नंदोई, गरे लगि लगि कै रोई।

ननद का नंदोई, मेरा लगे न कोई—दे० 'नंद के नंदोई···'।

ननद के भी ननद हुई—ननद के भी ननद पैदा हुई, अब उसे भी पता चलेगा कि भाभी को परेशान करने का कैसा मज़ा मिलता है। जब किसी दुष्ट व्यक्ति को जो सबको तंग करता हो वैसा ही तंग करने वाला मिले तो कहते है। तुलनीय : पंज० ननाण दे वी ननाण होई।

न नाम लेवा न पानी देवा—न तो कोई नाम लेने वाला है और न पानी देने वाला। (क) जिसका कोई न हो उसे कहते हैं। (ख) निःसंतान को भी कहते हैं।

न निगले बनती है न उगले— दोनों ही तरह से नुक़सान है। न करो तो बुराई और करो तब भी बुराई।

न नीक गीत गाऊँ न दरबार बुलाई जाऊँ—दे० 'न अच्छा काम होगा…'।

न नीम-सा कड़ुआ न गुड़-सा मीठा—न तो इतना कड़वा बनना चाहिए कि लोग बात करने से भी कतराएँ और न ही इतना मीठा बनना चाहिए कि लोग अनुचित लाभ उठाने लगें। (नीम को चखकर लोग थूक देते हैं और गुड़ को खाने में देर नहीं करते)।

न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी—जब कोई किसी काम को करने के लिए ऐसी शर्त रखे जो असंभव हो तब कहते हैं। इस संबंध में एक कहानी है: किसी शहर में राधा नामक एक वेश्या रहती थी जो नर्तकी के रूप में बहुत प्रसिद्ध हो गई थी। वह जानती थी कि मुझे अच्छा नाचना नहीं आता है। इसलिए जो कोई उसे नाचने के लिए बुलाता था उससे कहती थी कि पहले नौ मन तेल का चिराग़ जलाओ तब मैं नाचूँगी। न कोई इस शर्त को पूरा करता था और न वह नाचती थी। तुलनीय: माल० नी नव मण तेल वे ने नी राधा नाचे; अव० न नौ मन तेल जुटइहै न राधा गउने जइहै; गढ़० न नौ मण तेल ह्वे न राधा नाचो; मरा० नउ मण तेल होणार नाही, राधा कधी नाचणार नाही; कौर० न नौ मन तेल होग्गा न राद्धा नाचेगी; बुद० न नौ मन तेल हुइये, न राधा नाचे; ब्रज० न नौ मन तेल होइ न राधा नाचे; न नौ मन तेल हुइहै न राधा नचिहै; मल० कलङ्ङिम्म वेळ्ळत्तिळ मीन् पिटिक्कुक; अं० If the sky falls we shall gather larks.

न पितरों के लिए भेंट न सिर पर बाल—न तो पित्रों को देने के लिए कुछ है और न सिर पर बाल ही है। अर्थात् कुछ भी न होना। अत्यंत निर्धन के प्रति कहते हैं। भेंट पितरन को न मूड़ हू में बार है।—तुलसी।

नपुंसक का पुंसवन—बाँझ स्त्री का पुंसवन हो रहा है। (पुंसवन हिंदुओं का एक संस्कार है जो पहली बार स्त्री के गर्भवती होने पर किया जाता है)। निरर्थक कार्य के प्रति कहते हैं। तुलनीय: असमी—नपुंसकर पुंसवन्; अं० A beggar may sing before a pickpocket.

नपूती का घर सूना, मूरख का हृदय सूना, दरिद्री का सब कुछ सूना—जिसके पुत्र नहीं होता उसका घर सूना लगता है, मूर्ख को ज्ञान न होने से उसका हृदय सूना रहता है पर दरिद्र का घर बिना सब कुछ सूना रहता है। आशय यह है कि धन के अभाव में बहुत दुख झेलना पड़ता है।

नफ़री में नख़रा क्या?—प्रतिदिन की तनख़्वाह में झगड़ा क्या? जब कोई किसी साधारण चीज़ में भी व्यर्थ में परेशानी बढ़ाता है तब कहते हैं।

नफ़ा को धावे, मूल गँवावे—लाभ के लोभ में मूल भी चला जाता है। (क) लालची व्यक्ति के प्रति कहते हैं। (ख) अदूरदर्शितापूर्ण कार्य करने पर ऐसा कहते हैं। तुलनीय: मैथ० नफा के धावे मूर गमावे।

नफ़िलों में ही यारों का काम बन गया—ऐसे अवसर पर इस कहावत का प्रयोग किया जाता है जब धार्मिक उद्देश्य से कोई कार्य प्रारंभ किया जाए और ख़ुदा की मेहरबानी से नमाज़ के पहले पढ़ी जानेवाली नफ़िलों से ही वह उद्देश्य पूरा हो जाए या वांछित फल मिल जाए।

न बसना चाहे तो कोरे जवाब—बहू को यदि पति और ससुराल वाले अच्छे नहीं लगते या वह वहाँ नहीं रहना चाहती तो वह सबसे लड़ती-झगड़ती रहती है ताकि वह मायके जा सके। जब कोई नौकर अपने मालिक से बिना कारण ही नौकरी छोड़ने के लिए लड़ता है तो उसके प्रति कहते है। तुलनीय: गढ़० नि खांदी ब्वारी का करकरा स्वाल।

न बात बिरानी कहो न ऐंचा तानी सहो—न दूसरे की चुग़ली करो और न खिंचे-खिंचे फिरो। आशय यह है कि दूसरे के झगड़े में पड़ने से हानि के अतिरिक्त कुछ नहीं मिलता। इस लोकोक्ति के संबंध में एक कथा कही जाती है: एक जंगल में सियारों का एक जोड़ा रहता था। संयोग से मादा जब भोजन की खोज में जंगल में घूम रही थी तो उसे प्रसव पीड़ा हुई और पास ही सिंह की माँद के अतिरिक्त और कोई सुरक्षित स्थान न मिलने के कारण उसे उसी में बच्चे देने पड़े। जब नर को पता चला कि उसकी पत्नी ने सिंह की माँद पर अधिकार कर रखा है तो वह बहुत घबड़ाया और सियारिन के पास पहुँचा। संध्या हो रही थी और सिंह किसी समय भी माँद में आ सकता था और वे लोग वहाँ से इतनी जल्दी वह स्थान छोड़ने की स्थिति में नहीं थे, इसलिए सियार ने एक युक्ति सोची। उसने अपनी पत्नी से कहा कि मैं छुपकर देखता हूँ जब शेर आयगा तो तुम्हें बता दूँगा और तुम बच्चों को रुला देना तो मैं पूछूँगा, 'बच्चे क्यों रो रहे हैं?' तुम उत्तर देना, 'राजा शालवाहन, बच्चे भूखे हैं। वे शेर का ताज़ा मांस माँग रहे हैं।' तुम इतना कह देना बाद में मैं सँभाल लूँगा। थोड़े समय पश्चात् सिंह आया और इन दोनों में प्रश्न और उत्तर आरंभ हो गए। जब मादा सियार ने कहा कि बच्चे शेर का मांस माँग रहे हैं

तो सियार बोला इस जंगल में शेरों की क्या कमी ? मैं अभी दो-चार मारकर लाता हूँ, तुम चिंता मत करो। शेर यह सुनकर बहुत डरा और वहाँ से भाग गया। राह में एक दूसरा सियार मिला और सिंह को बहदवास देखकर उससे कारण पूछा। सिंह ने बताया कि मेरी माँद में राजा शालवाहन ने डेरा जमाया है और वे सिंहों को मारकर उनका मांस अपने बच्चों को खिलाएँगे। सियार समझ गया, और उसने सिंह को बताया कि यह सब झूठ है उसमें तो एक साधारण सियार है, राजा शालवाहन यहाँ कहाँ से आ गए ? किंतु सिंह ने उसकी बात पर विश्वास नहीं किया। गीदड़ ने कहा यदि वह चाहे तो उसके साथ चल सकता है और दिखा सकता है कि वास्तविकता क्या है। किन्तु सिंह राज़ी नहीं हुआ। अंत में गीदड़ ने कहा कि यदि तुम्हें विश्वास नहीं आता तो अपनी और मेरी पूँछ एक में बाँध लो और चलो। तब तो मैं तुम्हें छोड़कर नहीं भागूँगा। सिंह इस पर राज़ी हो गया और दोनों पूँछ बाँधकर माँद की ओर चल दिए। माँद वाले गीदड़ ने जब देखा कि उसी का जाति भाई उसको मरवाना चाहता है तो उसे फिर से युक्ति सोचनी पड़ी। जब सिंह माँद के पास पहुँचा तो सियार बाहर निकलकर दूसरे गीदड़ को बड़ी ज़ोर से डाँटने लगा कि मैंने तो तुझे दो शेर लाने को कहा था और तू इतनी देर बाद आया भी तो एक ही शेर लेकर। सिंह यह सुनकर अपनी जान हथेली पर लेकर भागा। जो सियार पूँछ बँधवाकर आया था वह चिल्लाता ही रह गया कि यह सब झूठ है किन्तु उसको सिंह जंगल में घसीटता हुआ भाग चला। शरीर में कई जगह चोटें लग गईं। अपनी दुर्दशा देखकर उसने कहा कि 'न बात बिरारी कहो न ऐंचातानी सहो।' तुलनीय : बुंद० ना बात बिरानी कँये, ना ऐंचा तानी सैये।

न बाबा आवे न घंटा बाजे—न तो बाबा आएँगे और न घंटा बजेगा। जब किसी विशेष मनुष्य की प्रतीक्षा में कोई काम रुका रहता है तब यह लोकोक्ति कही जाती है।

न बासी बचे न कुत्ता खाय—न तो भोजन बासी बचेगा और न कुत्ता खायगा। जब एक बात दूसरी बात पर निर्भर हो तो दूसरी से बचने के लिए पहली को न होने देना चाहिए। क्योंकि उसके न होने पर दूसरी के होने का प्रश्न ही नहीं उठता।

न बेटा न बेटी, बेट—न बेटा होगा और न बेटी बल्कि बेट होगा। (क) जब कोई व्यक्ति स्पष्ट उत्तर न देकर गोलमोल या अस्पष्ट बात कहे तो कहते हैं। (ख) जब कोई साधारण या ढोंगी ज्योतिषी ऐसा भविष्यफल बताए जिसका अर्थ मनमाने ढंग से या अनुकूल और प्रतिकूल निकाला जा सके तो भी कहते हैं।

न बोली न बोली, बोली तो एक पत्थर खेंच मारा—ऐसी कर्कश स्त्री के प्रति कहते है जो पहले तो कुछ बोलती ही नहीं लेकिन जब भी मुँह खोलती है तो लगता है पत्थर मार रही है।

न ब्याहे, न बारात गए—अपना ब्याह तो दरकिनार किसी की बरात में भी नहीं गए। अनुभवहीन व्यक्ति के प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

न भटों में, न भाजी में—न तो बैंगन, भाटा (भटों) में हैं और न साग-सब्ज़ी (भाजी) में ही। अर्थात् किसी में भी नहीं है। अत्यंत तुच्छ व्यक्ति या वस्तु के प्रति कहते है।

न भूतो न भविष्यति—न पहले कभी हुआ न होने की संभावना है। (क) बहुत आश्चर्यजनक या अद्वितीय काम पर कहा जाता है। (ख) अद्वितीय गुणी व्यक्ति के लिए भी कहते हैं।

नमक का पुतला समुद्र की थाह—नमक का पुतला समुद्र की थाह लगा रहा है। जब कोई सामर्थ्यहीन व्यक्ति बहुत बड़े काम को करने की चेष्टा करता है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते है। तुलनीय : मैथ० नोन के पुतरा चलल समुद्र थाहे।

नमक का सहारा ही बहुत है—थोड़ा सहारा भी बहुत होता है। अर्थात् थोड़ी सी सहायता से भी काम चल जाता है। तुलनीय : पंज० लूण दी टेली ही वडी है।

नमक खुर्दन-ओ-नमकदान शिकस्तन—जिस थाली में खाना उसी में छेद करना, जिसका आश्रय पाना उसी को क्षति पहुँचाना।

नमक न हल्द खायँ बल्द—नमक और हल्दी (हल्द) के बिना भोजन बैल (बल्द) के खाने योग्य ही होता है। अर्थात् (क) नमक और हल्दी के बिना भोजन अच्छा नहीं होता। (ख) चटपटा भोजन करने वालों का कहना है कि जिस भोजन में खूब मसाले आदि न हों उसे तो बैल (बल्द) ही खा सकते हैं। तुलनीय : पंज० नून ना हल्द ते खाणगे बल्द।

नमक पर ताला शक्कर बीच आँगन—नमक को कमरे में बंद करके रखा है और शक्कर खुली पड़ी है। मूल्यवान वस्तु को लापरवाही से और कम मूल्य की वस्तु को सावधानी से रखने वाले के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : मेवा० खारी के तो चौकी लागे साकर सूनी जाय; अं० Penny-wise pound foolish. दे० 'अशरफ़ियाँ लुटें...'।

नमक पर पहरा और शक्कर की लूट—बड़ी चीज़ के लूटे जाने या व्यर्थ में बहुत खर्च होने का कोई ध्यान नहीं और छोटी या कम क़ीमत की चीज़ों को बहुत सावधानी से ख़र्च करने या रखने पर कहते हैं। दे० 'कोयले पर मुहर और अशर्फ़ियों की लूट।'

नमक बिन रसोई कैसी ?—नमक के बिना भोजन कैसा ? अर्थात् बिना नमक के भोजन स्वादिष्ट नहीं लगता, नमक भोजन का प्रधान अंग है। किसी कार्य का आवश्यक अंग छोड़ देने वाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० लूण बिना पूण रसोई।

नमक से नमक नहीं खाते—नीचे देखिए।

नमक से नमक नहीं खाया जाता—दो तेज़ वस्तुओं या व्यक्तियों का मेल नहीं होता। तुलनीय : भोज० ठठेर-ठठेर बदलौवल ना होले; पंज० लूण नाल लूण नहीं खादा जांदा।

नमक है तो दस्तरख्वान है, बात है तो इन्सान है—भोजन का आनंद नमक से है, और आदमी की मनोरंजकता उसकी बातों से है। नमक नहीं तो खाना बेकार और अच्छी तरह बातें करने का शऊर नहीं है तो आदमी बेकार। तुलनीय : उ॰ खाने का मज़ा नमक, और आदमी का मज़ा बात।

न मरते तो फ़ौज बन जाती—यदि परिवार के लोग न मरते तो अब तक एक सेना बन जाती। जो व्यक्ति अपने भूतकाल के ऐश्वर्य और महानता की बातें किया करे और दुःखी रहे तो उसके प्रति व्यंग्य में कहते है।

न मरे न खटिया छोड़े—न मरता है और न ठीक ही होता है। असाध्य रोग से पीड़ित या अतिवृद्ध के प्रति उसके परिवार वाले तंग आकर कहते हैं। तुलनीय : पंज० न मरे न मंजी छडे।

न मरे न मोटाय—न मरता है और न ही मोटा होता है। (क) जब किसी व्यक्ति को उतना ही भोजन दिया जाय जिससे वह किसी प्रकार जीवित रहे तो कहते है। (ख) जब कोई दुर्बल या रोगी व्यक्ति पौष्टिक भोजन पाने पर भी जैसे का तैसा रहता है तो भी कहते है। (ग) सदा एक जैसा रहने वाले के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : छत्तीस० न मरै न मोटाय।

न माघे जाड़ न मेघे जाड़ बयारे जाड़—न तो माघ में ठंड लगती है और न बदली से, बल्कि जब हवा चलती है तब ठंड लगती है। आशय यह है कि जब हवा चलती है तभी ठंड लगती है। तुलनीय : भोज० घन बदरी घन बहे बतासा, रहे जाड़ बारही मासा; राज० ना शी पो ना माये, शी जद बाजंती बाये।

नमाज़ छुड़ाने गए थे, रोज़े गले पड़े—दे० 'गए थे नमाज़ छुड़ाने···'। तुलनीय : अव० नमाज़ छोड़ावै गएं रोजा गले पड़गा; राज० नमाज छुड़ाणने गया तो रोजा गले पड्या।

नमाज़ भी गई, बिल्ली भी भाग गई—बिना हानि उठाए ही युक्ति से कार्य सिद्ध कर लेने वाले के प्रति कहते हैं। इस पर एक कथा है : एक मौलवी साहब नमाज़ पढ़ रहे थे। उनके सामने हलुवा रखा था जिसे उन्हें नमाज़ के बाद खाना था। वे अभी नमाज़ ही पढ़ रहे थे कि एक बिल्ली उनके के चक्कर काटने लगी। मौलवी साहब बहुत कठिनाई में पड़ गए। यदि वे बिल्ली को भगाने के लिए कुछ कहते हैं या मारते हैं तो नमाज़ बीच में ही छूट जाती है और यदि नमाज़ पढ़ते हैं तो हलुवा बिल्ली खा जाती है। इसी बीच उन्हें एक युक्ति सूची उन्होंने खूब ज़ोर से चिल्ला कर नमाज़ पढ़नी आरंभ की और उस आवाज़ से बिल्ली डर कर भाग गई और इस प्रकार मौलवी साहब ने पूरी नमाज़ भी पढ़ ली और हलुवा भी खा लिया।

नमाज भी न गई और हलुवा भी बच गया—ऊपर देखिए।

नमाज़ी का टका—एक दुष्ट लड़का था जो जिस किसी को नमाज़ पढ़ते देखता था, पीछे से उसके पैर खींच लेता था और नमाज़ पढ़ने वाला गिर पड़ता था। यह देख कर एक दिन एक बुड्ढे ने इस पर उसे एक टका दिया जिससे वह उसकी टाँग न खींचे। इस पर लड़के का हौसला बढ़ गया और वह बहुतों से एक-एक टका वसूल करने लगा और एक दिन किसी पठान के पैर घसीटे। पठान ने घूम कर एक घूंसा जमा दिया और वह वहीं ढेर हो गया।

न मामा से काने मामा ही ठीक—कुछ न होने से बुरा होना ही अच्छा है। बुरी वस्तु अच्छी जितना काम नहीं करेगी तो थोड़ा बहुत तो करेगी ही। तुलनीय : पंज० मामे बगैर अन्ना मामा चंगा; अं० Something is better than nothing.

न मारे करे न काटे कटे—न मारने से मरता है और न काटने से कटता है। अत्यन्त कठोर पदार्थ या निर्दयी मनुष्य को कहते हैं। तुलनीय : पंज० न मारे मरे न बड्डे बडोये।

न मिलने पर त्यागी, मिल जाने पर बैरागी—स्त्री जब तक नहीं मिली तब तक त्यागी कहलाए और जब मिल गई तो बैरागी कहलाने लगे। गृहस्थ साधुओं के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। (बैरागी साधु गृहस्थ होते हैं)। तुलनीय : राज

अणमिलि यांरा त्यागी रांड मस्यां बैरागी।

न मिला भात न मिली जात—न भात दिया और न जाति में मिलाया गया। जब किसी शर्त को पूरा न कर सकने के कारण किसी का काम न हो तो कहते हैं।

न मिली नारी तो सदा ब्रह्मचारी—विवाह नहीं हुआ तो आजीवन ब्रह्मचारी बने रहे। जो लाचारी से भले मानस बने रहते या अच्छे काम करते हैं, उन पर व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : हरि० थ्यागी तौ दे मारी नाह तै पक्के के पक्के ब्रह्मचारी।

न मुंह में दांत न पेट में आंत—अर्थात् बहुत बूढ़ा और कमजोर।

नमें सो जमें—जो नमता है वही जमता है। विनम्र स्वभाव या विनम्रता का व्यवहार करने वाला ही उन्नति करता है।

नमें सो भारी—जो झुकता है वही भारी होता है। विनम्र व्यक्ति को ही बड़ा समझना चाहिए।

न मैं कहूँ तेरी न तू कह मेरी—न मैं तेरी बुराई करूँ न तू मेरी कर। झगड़ा निपट जाने के बाद ऐसा कहा जाता है तुलनीय : अव० न कहौं मैं तोर न कहु तैं मोर; पंज० न मैं आखा तेरी न तूं आख मेरी।

न मैं जलाऊँ तेरी न तू जला मेरी—ऊपर देखिए।

नमो नारायण, तो कहा बच्चा आज भोजन तेरे घर—राह जाते किसी साधु को प्रणाम किया तो वह भोजन कराने के लिए कहने लगा। (क) जबरदस्ती किसी के गले पड़ने वाले पर कहते हैं। (ख) किसी से साधारण परिचय के बाद ही बड़ा लाभ चाहने वाले के प्रति भी व्यंग्य से कहते हैं।

नया अतीत पेड़ू पर अलाव—नया साधु (अतीत) पेड़ू पर अलाव रखता है। जब कोई नोसिखिया ऊटपटांग काम करता है तब व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। (साधु लोग सहारे के लिए काठ का एक साधन बनाकर रखते हैं, जिसे बैरागन कहते हैं। उस पर हाथ रखकर वे दिन भर बैठे रहते हैं और थकते नहीं। यदि बैरागन को कोई पेड़ू का सहारा देकर बैठे तो जल्द थक जाएगा। 'अलाव' आग के लिए इकट्ठा किए गए ईंधन को भी कहते हैं।

नया ग्वाला चलनी में दूध दूहे—ऊपर देखिए। तुलनीय : भोज० अरकी क गइया चलनी दुहवइया।

नया घोड़ा सधे, तब चले—नया घोड़ा साधे बिना सवारी नहीं करने देता। अर्थात् अनाड़ी व्यक्ति तब तक काम नहीं कर पाता जब तक कि उसे सिखाया न जाय। तुलनीय : भीली—नवा घोड़ा ने सांण।

नया घोड़िहा कोठी में बछेड़—पहली बार घोड़ी रखने का शौक़ हुआ है तो उसके बच्चे को कोठी के अंदर रखते हैं। किसी चीज का नया-नया शौक़ करने पर चाव बहुत होता है। नए शौक़ीन पर व्यंग से कहा जाता है।

नया चिकनियाँ रेंड़ी का फुलेल—दे० 'नए चिकनियाँ...'। तुलनीय : अव० नवा चिकनियाँ रेंड़ी का तेल।

नया छैला लीद के फक्के—नया छैला लीद फांकता है। किसी नए व्यक्ति द्वारा शौक़ में मूर्खतापूर्ण कार्य करने पर व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। (फक्के = फाँकना)।

नया जूता सिर में पहने या पैर में—जब कोई नई वस्तु मिलने पर उसे इधर-उधर दिखाता फिरता है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० अरकी क भतार भुइंयां धरीं की भंड़मार।

नया जोगी और गाजर का संख—जब कोई नौसिखिया अनुपयुक्त चीज़ से काम लेता है तब कहते हैं। तुलनीय : बुंद० नये जोगी, गाजर को संख।

नया जोगी कलींदे का खप्पर—ऊपर देखिए। तुलनीय : छतीस० नेवइ के जोगी, कलिंदर के खप्पर; ब्रज० नयौ जोगी, कलींदे कौ खप्पर।

नया जोगी कूल्हे पर जटा—ऊपर देखिए। तुलनीय : बुंद० नये जोगी, कुल्लन पै जटा।

नया जोगी गोहरौल की धूनी—नया योगी बना है तो पूरे गोहरौल (उपलों की ढेर) में आग लगाकर धूनी किए हुए है। अपने बड़प्पन को दिखाने के लिए मूर्खतापूर्ण काम करने वाले के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : कौर० कल की जोगाण बटोडों में धुन्ना।

नया जोगी पैर में जटा—दे० 'नया जोगी गाजर का संख।'

नया ज्योतिषी, वैद्य पुराना—ज्योतिषी नया तथा वैद्य पुराना (अनुभवी) अच्छा माना जाता है। तुलनीय : गढ़० नओं जोसी अर पुराणों बैद; ब्रज० नयौ ज्योतिषी, बैद पुरानों।

नता दाँव पुरानी दुश्मनी—पुरानी शत्रुता का नए दाँव से अर्थात् धोखे से बदला लेना। जब कोई व्यक्ति पुरानी शत्रुता का मित्रता की आड़ में प्रतिकार करता है तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : गढ़० नयाँ दौ पुराण खिरता।

नया दाना नया पानी—मालिक के बदल जाने अथवा नई नौकरी लगने पर कहा जाता है। तुलनीय : पंज० नवां दाना नवां पाणी।

नया धुनिया मूंज की तांत—दे० 'नई नाइन बांस की

निहरनी ।'

नया धोबिया धोवही, गुदड़ी साबुन लाय—दे० 'नई धोबिन लुगरी…'। तुलनीय : अव० नवा धोबी कथरी मा साबुन लगावत है।

नया धोबी नाई पुराना—धोबी नया अच्छा होता है और नाई पुराना । तुलनीय : अव० नवा धोवी, नाऊ पुरान; भोज० धोबी नया नाऊ पुरान; तेलु० चाकालि कोत मंगल पात; पंज० तोबी नवां नाई पराणा ।

नया नया राज ढब ढब बाज—नया राज हुआ तो चारों ओर ढब-ढब की आवाज़ हो रही है । आशय यह है कि नया राज होने पर अव्यवस्था के कारण शोरगुल बहुत होता है ।

नया नया राज भइल, गगरिक अनाज भइल—नए-नए अधिकार मिले हैं इसी कारण खाने-पीने का ठिकाना हो गया है । नई हुकूमत में नई-नई बातें और घटनाएँ घटती हैं ।

नया नवाब आसमान पर दिमाग़—नए राजा का दिमाग़ आसमान पर होता है । (क) जब कोई निर्धन धनी हो जाय और घमंड करे तब कहते हैं । (ख) यदि निर्बल अधिकार पाकर उसका दुरुपयोग करे तो भी कहते हैं ।(ग) नया अधिकारी रोब अधिक दिखाता है ।

नया नौकर मारे हिरन/शेर – नया नौकर हिरन मारता है । नया नौकर शुरू-शुरू में स्वामी को प्रसन्न करने के लिए हिरन भी मारता है अर्थात् कष्टप्रद या कठिन कार्य भी कर लेता है । तुलनीय : भोज०नया नोकर हरना मारे ।

नया नौ गंडा, पुराना छः गंडा—नए की क़ीमत नौ गंडा और पुराने की क़ीमत छह गंडा होती है । आशय यह है कि (क) पुराने से नए की क़द्र अधिक होती है । (ख) पुरानी वस्तु की अपेक्षा नई वस्तु का मूल्य अधिक होता है ।

नया नौ दाम, पुराना छः दाम—ऊपर देखिए ।

नया नौ दिन पुराना सब दिन—नीचे देखिए ।

नया नौ दिन, पुराना सौ दिन—पुरानी चीज़ से घृणा न करनी चाहिए क्योंकि थोड़े दिन में सभी चीज़ें पुरानी हो जाती हैं और उन्हीं को प्रयोग में लाना पड़ता है। तुलनीय : भोज० नवा लूगा नौ दिन, लुगरी बरिस दिन; अव० नवा नौ दिन, पुरान सब दिन; मरा० नव्याचे नऊ दिवस जुन्याचे शंभर दिवस; हरि० नया नौ दिन परांणा सौ दिन; छनीम० जुन्ना ल घुना खइस त नवा मुलमुलाइस नवा ल घुना खइस त जुन्ने काम अइस; छत्तीस० नवा नौ दिन, जुन्ना सब दिन; असमी—बुढ़ी नटीर् नाछन् चार्; अं० An old ox makes a straight furrow.

नया पुजारी, कोल्हू का शंख—दे० 'नया जोगी गाजर का संख ।'

नया फल दांत तले, दुश्मन पाँव तले—नया फल खाते समय स्त्रियाँ प्राय: यह वाक्य कहती हैं । तुलनीय : बुंद० नये पुजारी, कोलू को संख ।

नया बाँका ताड़ की तलवार—ऊपर देखिए ।

नया मुल्ला अधिक ज़्यादा प्याज़ खाता है—आशय यह है कि नए कार्य के प्रति अधिक रुचि रहती है । तुलनीय : बघे० नमाइन के गौह दिखिन, पउसी पलागो; नमाइन के तुपकदार, मूड़े माँ गोरसी, नमाइन के व्यसनी त अधियारे माँ सनकी मार; निमाड़ी-अधवई को जोगी, अन पाय तक जटा ।

नया मुल्ला बोरी का तहमद—दे० 'नया जोगी गाजर का संख ।' तुलनीय : कौर० नवा मुल्ला, बोरियाँ की तेहमंद ।

नया मुल्ला मस्जिद को (दौड़-दौड़) जाए—नीचे देखिए ।

नया मुसलमान, अल्ला ही अल्ला पुकारे—(क) नया धर्म अपनाने पर जोश बहुत होता है । (ख) नया काम करने के लिए उत्साह बहुत होता है ।

नया मुसलमान कमाई की दूकान—नीचे देखिए ।

नया मुसलमान प्याज़ बहुत खाता है—दे० 'नया मुल्ला ज़्यादा…'। तुलनीय : अव० नवा मुसलमान पिआज बहुत खात है ।

नया मुसलमान सात बार नमाज पढ़े—दे० 'नया मुसलमान अल्ला अल्ला पुकारे ।' तुलनीय : भोज० नया मुसलमान सात बेर नमाज पढ़े; ब्रज० नयौ मुसलमान सात बेर निबाज पढ़ै ।

नया मेहमान नौ दिन, पुराना मेहमान दो दिन—यदि कोई पहली बार किसी के घर जाता है तो कुछ दिन तक उसका सत्कार किया जाता है और बार-बार आने वाला एक-दो दिन ही आदर पाता है । अर्थात् बार-बार कहीं जाने से व्यक्ति का मान घट जाता है । तुलनीय : भीली—नवले नावे दाड़ा पामणी पाँच दाड़ा; पंज० नवाँ परौना नौ दिन पराना परौना दो दिन ।

नया वकील, पुराना हकीम—वकील नया ही अच्छा होता है, क्योंकि वह मुकदमे में धन कम लेता है और परिश्रम अधिक करता है ताकि उसका नाम हो साथ ही शिक्षा की नई प्राणालियों के कारण उसका ज्ञान भी अधिक

होता है। इसी प्रकार वैद्य जितना भी पुराना या वृद्ध होगा उतना ही वह अनुभवी होगा तथा ओषधियाँ भी उसके पास बहुत अच्छी-अच्छी होंगी। तुलनीय : माल० नवो वकील ने पुराणों हकीम।

नया शौक़ीन, जेब में गाजर—उस व्यक्ति पर कहा जाता है जो झूठी शान दिखाता है या नया-नया शौक़ होने के के कारण मूर्खतापूर्ण कार्य करता है।

नया हकीम, दे अफ़ीम—नया वैद्य रोगी को अफ़ीम खाने को देता है। अनुभव न होने के कारण नया हकीम सब रोगियों को अफ़ीम ही दवा बतलाता है क्योंकि उसके नशे से कष्ट कुछ समय के लिए दब जाता है। अर्थात् अनुभवहीन व्यक्ति लाभ के स्थान पर हानि पहुँचाते हैं।

'नयी' तथा 'नये' से आरंभ होने वाली लोकोक्तियों के लिए देखिए 'नई' और 'नए'।

नरकों में भी ठेला-ठेली—स्वर्ग तो स्वर्ग नरक में भी धक्के मिले। जब किसी को तुच्छ वस्तु या निकृष्ट स्थान भी न मिले तो कहते हैं।

नर चेता नहिं होत है प्रभु चेता तत्काल—मनुष्य जो सोचता या चाहता है वह नही होता और भगवान का चाहा तुरंत हो जाता है। आशय यह है कि ईश्वर जो चाहता है वही होता है मनुष्य के चाहने से कुछ नही होता। तुलनीय : माल० नर चिती रोती रही, हर चिती सो होय; अं० Man proposes and God disposes.

नर जाने दिन जात है, दिन जाने नर जाय—मनुष्य समझता है कि दिन व्यतीत हो रहे हैं, किन्तु दिन समझता है कि मनुष्य जा रहा है। अर्थात् वास्तविकता यह है कि दिन-प्रतिदिन मनुष्य मृत्यु की ओर अग्रसर होता जाता है। तुलनीय : राज० नर जाणै दिन जात है दिन जाणै नर जाय।

नर, नाहर, दिगंबरा, पाके ही रस होय—नर, सिंह, और नंगे रहने वाले साधु पकने पर अर्थात् वृद्ध होने पर ही रसीले यानी ज्ञानी होते हैं। तुलनीय : राज० नरां नाहरां डिगमरां पाकां ही रस होय।

नर बानरहु संग कहु कैसें—मनुष्य और बंदर का साथ किस प्रकार हो सकता है? अर्थात् भिन्न प्रकृति के लोगों का साथ नहीं होता।

नरसी गेहूँ, सरसी जरा, अति के बरसे चना बना—गेहूँ को कम नमी वाले खेत में तथा जौ को अधिक नमी वाले खेत में बोना चाहिए, किन्तु यदि पानी अधिक बरसा हो तो चना बोना चाहिए।

न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी—(क) जिस वस्तु से हानि होती हो उसे सदा के लिए समाप्त कर देने पर कहते हैं। (ख) झगड़े के मूल कारण को नष्ट करने पर भी कहते हैं। तुलनीय : भोज०, अव० न रही बाँस न बाजी ग बाँसुरी; मरा० बेलूहि राहणार नाही नि पाँवाहि वाजणार नाहीं; हरि० नाह रहेगा बाँस नाह बाजैगी बाँसुरी; बुंद० न रय बाँस, न बजे बाँसुरी; ब्रज० न रहेंगे बाँस न बाजेगी बाँसुरी।

न रहे मान, न रहे मानी आखिर दुनियाँ फ़नाफ़ानी—न किसी का घमंड रहता है और घमंड करने वाला रहता है। आखिर यह दुनिया नश्वर है। संसार की अस्थिरता पर कहा जाता है।

न राँड़ कहो, न निपूती सुनो—न तुम किसी को राँड़ कहो और न ही वह तुमको निपूती कहे। यदि कोई किसी को बुरी बात नहीं कहेगा तो उसे भी कोई बुरी बात नहीं कहेगा। तुलनीय : राज० क्यूँ राँड कह अर निपूती सुणनी।

न राम के न रहीम के—न हिन्दू का न मुसलमान का अर्थात् जो किसी का भी साथी न हो उसे कहते हैं। तुलनीय : पंज० न राम दे न रहीम दे।

नरित को न बूँद ना परै, राजा परजा भूखन मरै—दक्षिण-पश्चिम कोण की हवा बहने पर पानी बिल्कुल नहीं बरसेगा और राजा तथा प्रजा दोनों भूखों मर जाएँगे। (नरित = नैऋत—दक्षिण-पश्चिम कोण)।

नर्क परे उनके पुरखा, परपंच करें पर पंच कहावें—उनके पूर्वज नर्क में जायँ, जो दूसरे के विरुद्ध प्रपंच (साज़िश) करें लेकिन कहावें पंच। अन्याय या उचित न्याय न करनेवाले पंचों के प्रति कहते हैं।

नर्तकन्याय—नर्तक का न्याय। प्रस्तुत न्याय का भाव है, जैसे एक दीपक अनेक लोगों को प्रकाश देता है उसी प्रकार एक नर्तक अनेक दर्शकों को आह्लादित करता है।

नर्म चोब रा किर्म मी खुर्द—नर्म काठ को कीड़े खा जाते हैं। आशय यह है कि बहुत नर्म होना भी बुरा है। (चोब रा = काठ को; किर्म = कीड़ा, कृमि; खुर्द = खा जाते हैं)। यह फ़ारसी की कहावत है।

नर्मदा के कंकर सबके सब शंकर—नर्मदा के कंकड़ भी शंकर के समान पूज्य माने जाते हैं। आशय यह है कि (क) बड़ों के साधारण सम्बन्धी भी आदर पाते हैं। (ख) प्राय: अच्छे कुल में अच्छे ही पैदा होते हैं।

नल का मारा नलवा टूटे—तिनके की चोट से पिंडली टूट जाती है। अर्थात् ज़रा-सी बात में जब भारी नुक़सान हो जाता है तब कहते हैं। (नलका = तिनका, नलवा =

पिंडली)।

न लड़का 'दिया' कहे, न सोने का बने—किसी काम में असंभव शर्त लगा देने पर जिससे उसके पूर्ण होने की कोई आशा न रहे कहते हैं। (लोगों में यह विश्वास प्रचलित है कि यदि छ: मास का लड़का 'दिया' कह दे तो मिट्टी का दिया सोने का हो जाता है)।

न लेना न देना मगन रहना—न किसी से कुछ लेना है और न ही किसी को कुछ देना है, इसी कारण प्रसन्न रहते हैं। (क) जो व्यक्ति किसी से कुछ लेन-देन नहीं रखता वह सदा प्रसन्न रहता है, ऐसे लोगों के प्रति प्रशंसा करने के लिए कहते हैं। (ख) जो व्यक्ति दूसरों के झगड़ों में नहीं पड़ता अर्थात् न किसी के भले में और न बुरे में तो उसके प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : राज० भाई भूरा, लेखा पूरा; पंज० लेणा न देणा मस्त रहना; ब्रज० न लैनों न दैनों, मस्त रहनों।

न लोग न लड़का चलो द्वारिका—न बच्चे हैं और न अन्य कोई है और कहते हैं द्वारिकापुरी चलो। (क) अकारण कोई काम करने के लिए आग्रह करने पर कहा जाता है। (ख) नि:संतान या अकेले व्यक्ति के प्रति भी कहा जाता है क्योंकि उसे किसी बात की चिंता नहीं रहती, वह कहीं भी जा सकता है।

नवन नीचकै अति दुखदाई—नीच या तुच्छ व्यक्ति का नम्र होना बहुत बुरा है। जब नीच नम्रता से पेश आवे तो कुछ न कुछ खतरा अवश्य समझना चाहिए।

न वह राम, न वह अयोध्या—न तो वह राम रह गए और न वह अयोध्या रह गई। अर्थात् दुनिया का ढंग ही बदल गया।

नवा नौ दिन पुराना सौ दिन—दे० 'नया नौ दिन…'।

नवैं अषाढ़े बादले जो गरजै घनघोर, कहैं भड्डरी ज्योतिषी काल पड़े चहूँ ओर—भड्डरी ज्योतिषी कहते हैं कि यदि आषाढ़ मास की नवमी को बादल ज़ोर से गरजें तो बहुत बड़ा अकाल पड़ता है।

न शरीरं पुन: पुन:—मानव शरीर बार-बार नहीं मिलता। मानव शरीर पाकर ऐसे कार्य करने चाहिए जिनसे सदा के लिए नाम अमर हो जाय।

नशा उसने पिया खुमार तुम्हें चढ़ा—नशा उसने पिया और उसका प्रभाव तुम पर पड़ा (क) बड़े आदमियों या उच्च अधिकारियों के साथियों, संबंधियों पर कहा जाता है जो अपने को भी वैसा ही समझते हैं। (ख) सच्चे प्रेमियों के लिए भी कहते हैं जो एक दूसरे के सुख से सुखी और दु:ख से दु:खी हो जाते हैं। तुलनीय : पंज० कम उन किता थकया तूं।

नष्ट देव की भ्रष्ट पूजा—जैसे देवता हों उनकी पूजा भी वैसी ही उचित है। अर्थात् बुरों के साथ बुरा ही व्यवहार करना चाहिए। तुलनीय : मेवा० नष्ट देव की भ्रष्ट पूजा।

नष्ट देवी की भ्रष्ट पूजा—ऊपर देखिए। तुलनीय : राज० नष्ट देवरी भ्रष्ट पूजा; सं० शठे शाठ्यं समाचरेत्

नष्टाश्वदग्धरथन्याय:—खोए घोड़ों और जले हुए रथ का न्याय। प्रस्तुत न्याय के संबंध में एक कहानी है : दो व्यक्ति अपने-अपने रथ में बैठकर यात्रा कर रहे थे। रात्रि में वे एक गाँव में ठहरे। (ख) उस गाँव में आग लग जाने से एक के घोड़े खो गए और दूसरे का रथ जल गया। बाद में आग से सुरक्षित घोड़ों को बचे हुए रथ में जोड़ कर वे चल पड़े। इस प्रकार उनकी यात्रा का क्रम नहीं टूटा। तात्पर्य यह है कि परस्पर मेल से बिगड़ा हुआ कार्य भी बन जाता है।

नसकट खटिया, दुलकन घोड़, करकस मेहरी बिपत की ओर—अपनी लम्बाई से कम की खटिया, दुलकने वाली घोड़ी तथा कर्कश पत्नी का होना सबसे बड़ी विपत्ति है।

नसकट खटिया दुलकन घोर, कहें घाघ यह बिपति क ओर—ऊपर देखिए।

नसकट खटिया बतकठ जोय घाघ कहें नहिं बिपती क ओर—घाघ कहते हैं कि छोटी चारपाई (खटिया) और बात काटने वाली स्त्री ये दोनों ही बड़ी दु:खदायिनी होती हैं।

नसकट पनही, बतकट जोय, जो पहिलौंठी बिटिया होय; पातर कृषी बौरहा भाय, घाघ कहैं दुख कहाँ समाय—घाघ कहते हैं कि पैर काटने वाला जूता, बात काटने वाली अर्थात् कहना न मानने वाली पत्नी, पहली संतान कन्या, कमज़ोर तथा पागल भाई का होना बहुत बड़ा दु:ख है अर्थात् इससे बड़ा दु:ख संसार में और कुछ नहीं है।

न साँप मरे, न लाठी टूटे—आशय यह है कि (क) काम भी हो जाए और हानि भी न उठानी पड़े। (ख) दूसरे को क्षति पहुँचाए बिना अपने को सुरक्षित रखने के लिए भी कहते हैं। तुलनीय : छत्तीस० झन साँप मरै, झन लाठी टूटे; पंज० न सप मरया न सोटी टूटी।

न सावन सूखा, न भादों हरा—न सावन के महीने में सूखता है और न भादों के महीने में हरा होता है। (क) सदा एक जैसा रहने वाले के प्रति कहते हैं। (ख) जो न दु:ख में घबड़ाए और न सुख में इतराए उसके प्रति भी कहते है। तुलनीय : छत्तीस० न सावन सूखा, न भादों हरियर;

पंज० न सौण सुका न भादरों हरा।

नसि प्रोतोष्ट्रन्याय—रस्सी से नथी हुई नासिका वाले ऊँट का न्याय। जैसे ऊँट वाहक ऊँट की नासिका को रस्सी से नाथकर स्वेच्छा से इधर-उधर ले जाता है और ऊँट वाहक का अनुगमन करता है, उसी प्रकार माया से वशीभूत प्राणी उसके (माया के) निर्देशानुसार इतस्ततः भ्रमणशील तथा कार्य तत्पर हैं।

नसीबवर का खेत भूत जोतता है—नीचे देखिए।

नसीबवर का भूत हल जोतता है—भाग्यशाली मनुष्य के कार्य स्वयं ही हो जाते हैं, या बिना परिश्रम या व्यय के ही सिद्ध हो जाते हैं। तुलनीय : अव० नसीब वाले का हर भूत जोतता है।

न सुनने वाला बहरे से भी बहरा होता है—अर्थात् जो सुनना चाहता ही नहीं उसे कोई नहीं सुना सकता। तुलनीय : पंज० न सुनण वाले तों बोला भी चंगा हुंदा है; अं० None is so deaf as those who won't hear.

न सुबह होती न शाम होती, न उम्र मेरी तमाम होती—यह कहना व्यर्थ है कि सुबह-शाम न हो तो मेरी उम्र तमाम न हो। क्योंकि इनका न होना असंभव है, अर्थात् ये अवश्य होंगी और इस प्रकार उम्र भी अवश्य समाप्त होगी। यदि कोई अवश्य होने वाली बात के विषय में कहता है कि यदि यह बात न होती तो मेरा अमुक नुक़सान न होता तो इस कहावत को कहते हैं।

न सूप दूषे के न चलनी सरहो के—न सूप की बुराई करनी चाहिए और न छलनी (चलनी) की प्रशंसा। दो समान दोषी व्यक्तियों को लक्ष्य करके ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० न सूप दूसे के न चलनी सराहे के।

नहं भर खाया तो खाया, मुंह भर खाया तो खाया—जब खा लिया तो थोड़ा खाया हो या अधिक, खाने वालों में नाम हो ही जाता है। अर्थात् चोरी, रिश्वत आदि बुरा काम छोटे पैमाने पर किया जाय या बड़े पैमाने पर बुरा ही कहलाता है और उसका फल भी भुगतना पड़ता है।

न हंसिया चोख न खुरपा भोथर—न तो हंसिया तेज है और न खुरपी कम तेज। वैसे कहावत बड़ी विचित्र है लेकिन इसका प्रयोग वहाँ होता है जहाँ कोई किसी से कम नहीं होता।

न हंसिया दूर, न पड़ोसी की नाक—जो व्यक्ति काम करने में आगा-पीछा करे या बहाने बनाए तो उसे तुरन्त करने के लिए ऐसा कहते हैं कि सब साधन सुलभ हैं यदि करना हो तो तुरंत कर डालो।

न हड़हड़ न खड़खड़—कोई झगड़ा नहीं, आशय है कि कार्य सुचारू रूप से किया जा सकता है।

नहनो घूंघट मधुरी चाल, चली कौन का घर घाल—लंबा घूंघट (नहनो घूंघट) काढ़े और मन्द गति से चल कर तुम किसका घर नष्ट (घाल) करने जा रही हो। आशय यह है कि गजगामिनी सुंदरी सहज ही रसिकों के हृदय में हलचल मचा देती है, इसलिए उसका चरित्र-भ्रष्ट होना कठिन नहीं होता।

न हम किसी के न हमारा कोई—किसी से कोई सरोकार न होना। घोर असामाजिक व्यक्ति के प्रति कहते है।

न हमको और, न तुमको ठौर—न मुझे कोई दूसरा आदमी मिलने वाला है और न तुमको कोई दूसरी जगह। अर्थात् दो व्यक्ति एक-दूसरे पर अवलंबित हों तो कहते हैं।

नहरनी कितनी भी तेज होगी तो क्या पेड़ काटेगी?—अर्थात् नहीं। तात्पर्य यह है कि (क) किसी कार्य को करने के लिए औक़ात भी बड़ी होनी चाहिए, केवल साहस ही पर्याप्त नहीं होता। (ख) छोटे साधन से बड़े काम नहीं किए जा सकते चाहे वह कितना भी अच्छा क्यों न हों। तुलनीय : भोज० नहरनी केतनो चोख होइ तऽ पेड़ थोड़े काटी।

नहरनी से पेड़ नहीं कटता—ऊपर देखिए।

नहाए-धोए डाले सिर में खाक—स्नान करके सिर में धूल भरते हैं। (क) मूर्खतापूर्ण कार्य करने पर व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। (ख) अच्छा कर्म करने के बाद बुरा कर्म करने वाले के प्रति कहते है। तुलनीय : मल० नाइ धोइ कोढ़ मांगणी।

नहा कर कोई नहीं पछताता—स्नान करके कोई नहीं पछताता क्योंकि उससे लाभ ही होता है। (क) जब कोई व्यक्ति किसी भले काम को करने से कतराता है तो उसे समझाने के लिए कहते हैं। (ख) जब कोई व्यक्ति दान देकर पछताता है तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : माल० सांपड़ी ने कोई नी पछताय।

नहा कर खावे खाकर सोवे, उसको औसक कभी न होवे—नहाकर खाने वाला, और खाकर सोनेवाला कभी बीमार नहीं पड़ सकता। अर्थात् नियम-संयम से रहने वाला व्यक्ति सदा स्वस्थ रहता है।

नहाने से पहले खाने के पीछे—जाड़ा मालूम होता है। तुलनीय : अव० नहात के पहिले खाये के पाछे; पंज० नाण तो पैलां ते खाण तों पिछे।

नहिं असत्य सम पातक पुंजा—झूठ के समान कोई पाप

नहीं है। अर्थात् झूठ बोलना सबसे बड़ा पाप है।

नहिं गजारि जस, बधे सृगाला—सियार (सृगाला) को मारने से सिंह (गजारि=गज+अरि) को यश (जस) नहीं मिलता। आशय यह है कि (क) महान लोग जब साधारण काम करते हैं तो उनकी हँसी ही उड़ाई जाती है, बड़ाई नहीं की जाती। (ख) जब कोई शक्तिशाली या धनवान किसी दुर्बल या निर्धन को परास्त कर देता है तब भी ऐसा कहते हैं।

नहिं चाहतु चंदन-चिता, भीष्म छाँड़ि सर-सेज—भीष्म पितामह ने अंतिम समय में भी बाणों की सेज के सम्मुख चंदन की सेज को हेय समझा। अर्थात् वीर पुरुष मरते दम तक अपनी वीरता या हठ को नहीं छोड़ते।

नहिं दरिद्र सम दुख जग माहीं—निर्धन होने के समान इस संसार में कोई दुःख नहीं है। अर्थात् निर्धनता सबसे बड़ा दुःख है।

नहिं विष बेलि अमिय फल फरहीं—विष की लताएँ कभी भी अमृत-तुल्य मीठा फल नहीं पैदा कर सकतीं। अर्थात् (क) दुष्टों से अच्छे काम की आशा कभी नहीं की जा सकती। (ख) बुरे लोगों के बच्चे बुरे ही होते हैं।

नहिं सिंहिनी के गर्भ ते, उपजे कबहुँ सियार—सिंहनी के पेट से कभी गीदड़ उत्पन्न नहीं होते, अर्थात् सिंह ही होते हैं। आशय यह है कि वीरांगना के गर्भ से वीर ही पैदा होते हैं या भले लोगों की संतानें भी भली होती हैं।

न हिन्दू न तुर्क—किसी ओर या कहीं का न होने पर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० न हिन्दुए में न तुरुके में।

नहि कठोरकण्ठीरवस्य कुरंगशावः प्रतिभटो भवति—हिरन का बच्चा बलवान् सिंह का विरोधी नहीं हो सकता। तात्पर्य है कि छोटा आदमी बड़े आदमी का विरोध करने में समर्थ नहीं हो सकता।

नहि कर कंकणदर्शनाय आदर्शापेक्षा—हाथ पर धारण किए हुए कंकण को देखने के लिए दर्पण की आवश्यकता नहीं होती। आशय यह है कि प्रत्यक्ष चीज़ के लिए प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती। तुलनीय : हाथ कंगन को आरसी क्या; सं० प्रत्यक्षं किं प्रमाणम्।

नहि काकिण्यां नष्टायाम् तदन्वेषणाम् कार्षापणेन क्रियते—कौड़ी के खो जाने पर कोई उसकी खोज में कार्षापण (स्वर्ण मुद्रा) खर्च नहीं करता अर्थात् छोटी बात के लिए अधिक व्यय करना उचित नहीं है।

नहि क्वचिदश्रवणमन्त्र श्रुतं निवारयितुम् उत्सहते—एक स्थान पर किसी बात के न सुने जाने का अर्थ यह नहीं कि वह कहीं भी नहीं सुनी जा सकती है।

नहि खदिरमोचरे परशौ पलाशे द्वैधी भावो भवति—खदिर के वृक्ष पर कुल्हाड़ी मारने पर पलास के वृक्ष के विषय में सन्देह नहीं रह जाता। अर्थात् दो वस्तुएँ परस्पर एक-दूसरे से भिन्न होती हैं।

नहि गोधा सर्पन्ती सर्पणादहिर्भवति- सरकने वाली छिपकली सरकने के कारण सर्प नहीं हो जाती। (क) तात्पर्य यह है कि अनुकरण करने मात्र से, अनुकर्त्ता वह नहीं बन जाता। (ख) किसी का किसी एक बात में अनुकरण करने से, अनुकर्त्ता वह नहीं बना सकता।

नहि ग्रामस्थः कदा ग्रामं प्राप्नुयामित्यरण्यस्थइवाशास्ते—ग्राम में स्थित आदमी वहीं (गाँव में) पहुँचने की इच्छा नहीं करता, जैसा कि जंगल में रहने वाला चाहता है। जो जहाँ रहता है, वह उसे पसंद नहीं आता, वह और अच्छे स्थान पर जाना चाहता है।

नहि त्रिपुत्रो द्विपुत्र इति कथ्यते—तीन पुत्रों वाला दो पुत्रों वाला नहीं कहा जाता। अर्थात् जो जैसा होता है, वैसा ही कहलाता है। वास्तविकता को मिटाया या छिपाया नहीं जा सकता।

न हि निन्दा निन्द्यं निदिन्तुं प्रयुज्यते किं तर्हि निन्दितान् इतरत् प्रशंसितुम्—वस्तुतः निन्दनीय की निन्दा करने के लिए निन्दा नहीं की जाती, बल्कि निन्दित से इतर वस्तु की प्रशंसा करने के लिए की जाती है। जैसे एक ओर तो चारों वेद और एक ओर महाभारत—इस वाक्य में महाभारत की प्रशंसा की गई है।

नहि पद्भ्यां पलायितुं पारयभाणो जानुभ्याम् रंहितुमर्हति:—यह संभव नहीं कि जो पैरों से भाग सकता हो, घुटनों के बल सरके। अर्थात् (क) बड़ा व्यक्ति छोटा काम नहीं कर सकता। जो जिस योग्य होता है, वह वही करता है। (ख) सामर्थ्य रहते कोई कष्ट नहीं सहना चाहता।

नहि पूतं स्याद गोक्षीरं श्वदृतो घृतम्—कुत्ते के चमड़े में रखा हुआ गाय का दूध (घी) पवित्र नहीं रह सकता। अर्थात् अच्छी चीज़ या व्यक्ति भी बुरे की संगति में बुरे हो जाते हैं।

नहि बंध्या विजानाति गुर्वी प्रसव वेदना—बाँझ स्त्री प्रसव-पीड़ा की वास्तविकता को नहीं जानती, अर्थात् जो दुःख जिस पर नहीं पड़ा वह उसे समझ नहीं सकता। तुलनीय : अव० बाँझ कि जान प्रसव को पीरा।

नहि भवति नरक्षुः प्रतिपक्षो हरिणशावकस्य—लकड़बग्घा हरिण के बच्चे का शत्रु नहीं होता। अर्थात् समान बल

वाले ही आपस में शत्रु हो सकते हैं।

न हि भिक्षुकाः सन्तीति स्थाल्यो नाधिश्रीयन्ते, न च मृगाः सन्तीति यवाः नोप्यन्ते—ऐसी बात नहीं है कि लोग भिखारियों के भय से पाचनपात्रों को आग पर न रखें, और मृगों के भय से जौ न बोएँ। अर्थात् भावी कठिनाइयों के डर से कोई भी आदमी अपना काम करने से पीछे नहीं हटता।

नहि भिक्षुको भिक्षुकान्तरं याचितुभति सत्यन्या स्यिम्म भिक्षुके:—याचना की वृत्ति न रखने वाले को उपस्थिति में एक भिक्षुक को दूसरे भिक्षुक से भीख नहीं माँगनी चाहिए। अर्थात् बड़ों के सामने छोटे काम करना उचित नहीं।

नहि भूमि वम्भो सहं सदिति दुष्टाक्षस्यापि नभसि तदवभासते: भूमि पर स्थित रहने वाला कमल सदोष दृष्टि वाले को भी आकाश में नहीं दिखाई देता। अर्थात् वास्तविकता छिपती नहीं।

नहिं मानत कोउ अनुजा तनुजा—आजकल अर्थात् कलियुग में कोई बहन और पुत्री के संबंधों को भी नहीं मानता। आशय यह है कि कलियुग में व्यभिचार बहुत बढ़ गया है।

नहि यद् गिरि शृंग भासह्य गृह्यते तव प्रत्यक्षम्—पर्वत की चोटी पर चढ़े हुए व्यक्ति द्वारा देखी गई वस्तु अप्रत्यक्ष नही कही जा सकती। अर्थात् उच्च कोटि के लोगों की बात झूठी नही मानी जाती।

नहि यद्देवदत्तस्य युध्यमानस्य स्थानभवगतम् तदेव भुंजानस्यापि भवति—युद्धरत देवदत्त को प्राप्त स्थिति भोजन करते हुए देवदत्त को प्राप्त नहीं होती। अर्थात् (क) वीर पुरुष को जो सम्मान प्राप्त होता है वह कायर को नहीं प्राप्त हो सकता। (ख) वीर गति को बहादुर ही प्राप्त होते हैं, कायर नहीं।

नहि वरविधाताय कन्योद्वाहः—वर के नाश के लिए कन्या का विवाह नहीं होता। तात्पर्य है कि जिस कन्या से विवाह करने पर वर का नाश अवश्यम्भावी है, उससे कभी भी विवाह नहीं करना चाहिए। प्रस्तुत न्याय का स्पष्ट भाव है किसी भी कार्य का सम्पादन विनाशात्मक न होकर रचनात्मक होना चाहिए।

नहि विधिशतेनापि तथा पुरुष: प्रवर्तते यथालोभेन—मानव जितना अधिक लोभ से कार्य प्रवृत्त होता है उतना सैकड़ों अन्य विधियों से नही। आशय यह है कि जिस काम में स्वार्थ दिखाई देता है उसे करने के लिए लोग झट तैयार हो जाते हैं।

नहि श्यामाकबीजं परिकर्म सहस्रेणापि कलमांकुराय कल्पते:—हजारों प्रकार के प्रयत्नों के बावजूद श्यामाक (साँवाँ) का बीज चावल पैदा नहीं कर सकता। असंभव कार्य के लिए ऐसा कहते हैं।

नहि सर्वः सर्वं जानाति—प्रत्येक मनुष्य प्रत्येक वस्तु को नहीं जानता। आशय यह है कि किसी मनुष्य के लिए हर चीज़ का ज्ञान संभव नही है।

नहि सहस्त्रेणाप्यन्धैः पाटच्चरेभ्यो गृहं रक्ष्यते—हजार अंधे भी डाकुओं से घर की रक्षा नहीं कर सकते। आशय यह है कि जिस कार्य को थोड़े परन्तु कुशल या समर्थ व्यक्ति कर सकते हैं, उसे अधिक परंतु मूर्ख या असमर्थ व्यक्ति नही कर सकते।

नहि सुतीक्ष्णाप्यसिधारा स्वंछेत्तुमाहित व्यापारा—तीक्ष्ण धार वाली तलवार अपने आपको काटने के लिए प्रयुक्त नहीं की जाती। अर्थात् (क) जब कोई बलवान या बुद्धिमान होकर अपने ही परिवार या संबंधियों को कष्ट देता है तब उसके प्रति कहते हैं। (ख) जब कोई अपने प्रियजनों को कटु वचन कहता है तब भी कहते है।

नहि सुशिक्षितोऽपि बटु. स्वस्कन्ध मधिरोढुं समर्थः—कोई भी सुशिक्षित तथा युवा नट अपने कन्धे पर चढ़ने में समर्थ नहीं हो सकता। आशय यह है कि (क) प्रकृति के विरुद्ध कार्य नही किया जाता। (ख) असंभव कार्य या बात के लिए भी कहते हैं।

नहि स्वतोऽसती शक्तिः कर्तुमन्येन शक्यते—यदि शक्ति स्वत: किसी मनुष्य या वस्तु में विद्यमान नही है तो किसी अन्य के द्वारा लाई नहीं जा सकती।

नहीं दरकार जेवर की जिसे सूरत ख़ुदा ने दी—यदि शरीर में सौन्दर्य है तो आभूषण की कोई आवश्यकता नहीं।

नहुँ भर ठकुरी ऊँट भर ठसक—नाखून भर ठकुराई है और ठसक है गाड़ी भर। (क) जब कोई व्यक्ति साधारण अधिकार पाकर बहुत रोब दिखाता है तो व्यंग्य से कहते हैं। (ख) जब कोई थोड़ा-सा धन पाकर बड़े लोगों जैसे नखरे दिखाता है तब भी व्यंग्य से उसके प्रति ऐसा कहते हैं।

न होने से बुरा होना अच्छा—कुछ भी न होने से बुरी वस्तु होना ही अच्छा है, क्योंकि वह थोड़ा-बहुत लाभ या काम तो करेगी ही। संतान के विषय में भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय: पंज० न होण नालों माड़ा होना वी चंगा; अं० *Something is better than nothing.*

नह्यन्ध-स्याज्यावेक्षणोपेते कर्मण्याधिकारोऽस्ति—अन्धा मनुष्य मक्खन के परीक्षण की योग्यता नहीं रखता।

अर्थात् मूर्ख व्यक्ति अच्छी चीज़ों या अच्छे लोगों की परख नहीं कर सकता।

नह्यन्यस्य वितथभावेन्यस्य वैतथ्यं भवितुमर्हति—एक मनुष्य की असत्यता दूसरे मनुष्य को असत्य प्रमाणित नहीं कर सकती।

नह्यप्राप्य प्रदीपः प्रकाश्यं प्रकाशयति—प्रकाशित होने वाली वस्तु के पास पहुँचे बिना दीपक उस (वस्तु) को प्रकाशित नही करता। अर्थात् बिना सम्पर्क में आए सज्जन किसी को सुधार नही सकता।

नह्येष स्थाणोरपराधो यदेनमन्धो न पश्यति—यदि अन्धा स्तम्भ को नही देखता तो इसमें स्तम्भ का कोई दोष नही है। अर्थात् जब कोई अपनी मूर्खता से हानि उठाता है और उसका आरोप किसी और पर लगाता है तब ऐसा कहते हैं।

ना अति बरखा, ना अति धूप, ना अति बोलब, ना अति चूप—अधिक वर्षा, अधिक धूप, अधिक बोलना और अधिक चुप रहना अच्छा नहीं होता। आशय यह है कि किसी भी कार्य को सीमा से अधिक करना हानिप्रद होता है।

नाइन सबके पैर धोए, अपने धोते लजाए—नाइन (नाई की स्त्री) सबके पैरों को धोती है, पर अपने पैरों को धोने में लज्जा का अनुभव करती है। जब कोई व्यक्ति अपने लिए ऐसा काम करने में शरमाए या अपना अपमान समझे जिसको वह सबके लिए करता है तो व्यंग्य से कहते हैं।

नाइयों को बारात में सब ठाकुर ही ठाकुर—नाई दूसरों की बारात में सेवा करते हैं, पर उनकी बारात में कौन करे क्योंकि वहाँ सभी नाई ही होते हैं। जब एक स्तर के लोगों में कोई भी सेवा या श्रम का काम करना न चाहे तब व्यंग्य से ऐसा कहते है। तुलनीय : कौर० नाइयों की बरात मे सब ठाकुर ही ठाकुर; मेवा० नायां की जान में सारा ही ठाकर; राज० नाईरी जान में सै ठाकुर; भोज० नाऊ के बराते मे सभे ठाकुरे ठाकुर; अव० नउआ के बरात मा ठकुरै ठाकुर; गढ़० नाई की बरात मां ठाकुरी ठाकुर; मरा० न्हाव्याच्या वारातीत जण ठाकुर (राजा); हरि० नाइयां की बरात में सभै ठाकर; मेघ० हजाम के बराती सबै ठाकुरे ठाकुर; बुंद० नाऊ-नाऊ की बरात, टिपारो को लै चलै; ब्रज० नाई की बारात में सब ठाकुर ही ठाकुर फिर हुक्का कौन भरे; छत्तीस० नाउ बरात मां ठाकुर-ठाकुर; गुज० हजाम की बरात में सभी ठाकोर; कनौ० नाऊ की बरायत में सब ठाकुर; पंज० नाइयां दी बरात बिच सारे राजे।

नाई की बारात में जने-जने ठाकुर दे० 'नाइयों की बारात में······'।

नाई का जामा—ऐसी चीज़ को कहते हैं जिसे अपनी इज्जत के लिए ले जायें पर उसके कारण बेइज़्ज़त होने की स्थिति आ जाय। इस सम्बन्ध में एक कथा है : एक हज्जाम के पास एक 'जामा' (शादी में दूल्हे को पहनाया जाने वाला एक वस्त्र) था। उसे कोई ठाकुर साहब माँग कर अपने लड़के की शादी के लिए ले गए। वे उसी नाई के यजमान थे, अतः वह भी बारात में गया। वहाँ और सब लोग तो अपने काम में व्यस्त थे पर नाई को अपने जामे की चिन्ता थी। जब भी दूल्हा महोदय हिलें, लेटें या बैठें वह उन्हें सचेत करता रहा कि ज़रा जामे का ध्यान रखिए कहीं वह गन्दा या खराब न हो जाए। यह बात यहाँ तक बढ़ी कि आजिज़ आकर ठाकुर साहब बिगड़ गए और जामे का उधार माँगा होना बारात के सभी लोग जान गए। तुलनीय : भोज० नउआक जामा।

नाई की बारात में ठाकुर ही ठाकुर—दे० 'नाइयों की बारात में ·····'।

नाई की बारात में सभी ठाकुर—दे० 'नाइयों की बारात में··'।

नाई के आगे कौन नहीं झुकता ?—अर्थात् सभी झुकते हैं। आशय यह है कि परिस्थिति के अनुसार सबको झुकना पड़ता है। तुलनीय : भोज० नउआ क आगे सभही झुकेला; पंज० नाई आगे सारे नीवे हुंदे हन।

नाई को देख हजामत बढ़े—नाई को देखकर बाल बढ़ जाते हैं। बिना आवश्यकता सेवक से सेवा कराने पर ऐसा कहा जाता है। यह कहावत उस वक्त की है जब नाइयों के घर बँधे होते थे। उन्हें गाँव में हर घर से नाज मिल जाता था। अतः किसान लोग फ़ुर्सत के वक्त बिना ज़रूरत भी हजामत बनवा लिया करते थे। गाँवों में अब भी ऐसा देखने को मिल जाता है। तुलनीय : भोज० नउआ के देखके हजामत बढ़ेला; मैथ० नौआ देखी नो बाढ़े; भोज० नउआ के देखके नहूँ बढ़ेला; मैथ० नउआ देखने काँख में बार; भोज० नउआ के देख के सब कर हजामत बढ़े ले; या नउआ देखले काँखे बार; मैथ० हजाम देखे दाढ़ी बढ़े।

नाई को नौ अकल, ब्राह्मन को एक भी नहीं—नाई को नौ बुद्धि (अकल) होती है और ब्राह्मण को एक भी नहीं होती। आशय यह है कि नाई ब्राह्मण से चालाक होता है।

नाई देख के हजामत बढ़ती है—दे० 'नाई को देख

हजामत···'।

नाई देख नाखून बढ़े—दे० 'नाई को देख हजामत···'।

नाई देख हजामत बढ़े—दे० 'नाई का देख हजामत···'।

नाई देखे हजामत बढ़े—दे० 'नाई को देखे हजामत···'।

नाई, धोबी, दर्जी तीन जात अलगर्जी—नाई, धोबी और दर्जी इन तीन जातियों के लोग स्वार्थी होते हैं। तुलनीय : ब्रज० नाऊ धोबी दर्जी, तीनि जाति अलगर्जी।

नाई-नाई कितने बाल, जजमान सामने आएँगे—नीचे देखिए।

नाई-नाई बाल कितने, जिजमान आगे आएँगे—किसी ने नाई से पूछा कि कितने बाल हैं? उसने कहा—आपके सामने ही आएँगे। जब कोई ऐसी बात पूछे जिसका परिणाम शीघ्र ही उसके सामने आने वाला हो तब कहते हैं। तुलनीय : राज० नाई-नाई केस किता? क जजमान आगे आव है; अव० नाऊ ठाकुर बार केतना, जजमान आगेन आई; मरा० न्हावी रे न्हावी! केस किती आहेत? महाराज, हे पहा पुढ्यांतच पडताहेत; हरि० नाई बाल कीउ-कीउ सै अक? जिजमान तेरे आग्गै आजां सैं; कौर० नाई-नाई बाल कितने, जिजमान सब सामने आए जां हैं; मेवा० नाई नाइ माथा पर केश कतरा, होई जो सामने आण पड़ी; ब्रज० नाऊ नाऊ बार कितने एँ, जिजमान आगें आये जायें।

नाई-नाई बाल कितने, बाबू आगे आएँगे—ऊपर देखिए।

नाई-नाई माथे पर कितना बाल, नाई बोले बाबू सामने आई—दे० 'नाई-नाई बाल कितने···'।

नाई से सयाना सो कौवा—नाई से जो अधिक चालाक है वह कौवा है। पक्षियों में कौवा और मनुष्यों में नाई बहुत चतुर होता है। नाइयों के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : पंज० नाई तो सयाणा कां; ब्रज० नाऊ ते स्यानों सो कौआ।

नाऊ की आरसी हर काहू के पास—नाई का शीशा अभी एक के पास है और थोड़ी देर में दूसरे के पास चला जायगा। ऐसी वस्तु जिसका उपयोग सभी करें उस पर कहते हैं।

नाउन अपना पाँव धोने में शरमाती है—दे० 'नाइन सबका पाँव धोय ··'।

नाऊ की बारात में ठाकुर ही ठाकुर—दे 'नाइयों की बारात में···'।

नाऊ, नाऊ कितने बाल, जजमान सब आगे आई—दे० 'नाई-नाई बाल कितने···'।

नाक कटाकर आपनी, असगुन चाहें अन्य—अपनी नाक कटाकर दूसरे का अशुभ चाहते हैं। दूसरे का नुक़सान करने के लिए अपना भी भारी नुक़सान कर डालने वाले के प्रति व्यंग्य में कहा जाता है। तुलनीय : मेवा० ओरां को सुगन बिगाड़वाने खुद की नाक कटावें; ब्रज० नाक कटावै आपनी असगुन चाहै और; अं० Cut one's nose to spite one's face.

नाक कटी पर घी तो चाटा—किसी ने कनस्टर में मुंह डालकर घी चाट लिया जिससे उसकी नाक कट गई, तब उसने उक्त कहावत कही। उस बेशर्म आदमी के प्रति कहते हैं जो अपमान पर ध्यान न देकर केवल लाभ देखे। तुलनीय : अव० नाक कटी तौ कटी, भगवान तौ देखाने; मरा० नाक तुटलें पण तूप तर चाटलें; पज० नक बडोयी तांबी की चटया।

नाक कटी पर हठ न हटी—नाक कट गई लेकिन ज़िद न गई। आशय यह है कि बहुत बेइज़्ज़ती होने पर भी ज़िद नहीं छोड़ी। ज़िद्दी आदमी के लिए कहते हैं जो बहुत हानि होने पर भी अपनी हठ नहीं छोड़ता। तुलनीय : मरा० नाक कापलें गेले पण हट्ट गेला नाही।

नाक कटी बला से, दुश्मन की बदशकुनी तो हुई—दे० 'नाक कटाकर आपनी···।' तुलनीय : गढ़० अपणा नाक काठिक विराणो मारिक असगुन; माल० म्हारा नाक कटे तो कटे पर थारा तो हुकन बगड़े; ब्रज० नाक तौ कटी परि परौसीन कौ सौन खूब बिगर्यो।

नाक कटी मुबारक, कान कटे सलामत—नाक कटी तो समझे कि लोग मुझे मुबारकबाद दे रहे हैं और कान कटे तो समझे कि मैं ठीक-ठाक हूँ। बेशर्म और ढीठ व्यक्ति को कहते हैं।

नाक काटकर पट्टी बाँधते हैं—दे० 'नाक काट के दुशाले···'।

नाक काटकर पीठ पर लगा ली है—अर्थात् नाक नहीं है इसलिए शर्म भी नहीं आती। जिस पर अपमान का कोई प्रभाव न पड़े और वह अपनी दुष्टता से बाज न आए उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० नक बड के पिठ उते ला लयी।

नाक काट के दुशाले में पोंछें—नाक काट करके दुशाले से पोंछते हैं। (क) नुक़सान करके बाद में झूठी हमदर्दी दिखाने पर कहा जाता है। (ख) किसी से बुराई करके क्षमा माँगने वाले पर भी व्यंग्य से कहा जाता है। तुलनीय :

ब्रज० नाक काटिकें दुसाला ते पोंछें।

नाक छिदाने गई, कान छिदा कर आई—मूर्ख व्यक्ति के प्रति व्यंग्य से कहते हैं जो जाता है कोई और काम करने तथा करके आता है कोई और काम।

नाक तो जाय-जाय पर साख न जाय—इज्ज़त चाहे समाप्त हो जाय, किन्तु समाज मे विश्वास नही समाप्त होना चाहिए। व्यापारी साख के महत्त्व के प्रति कहते हैं। तुलनीय : माल० नाक जाय तो जाय पर हाक नी जाय।

नाक तक खा चुके हैं--बहुत अधिक भोजन कर लेने पर कहते हैं।

नाक तो कटी पर वह भी मर गए--हमारा तो नुक़सान हुआ पर उनका हमसे अधिक हो गया। दूसरे को हानि पहुँचाने के लिए अपनी हानि करनेवाले के लिए व्यंग्य में कहते हैं।

नाक तो है ना, नथिया पहनने की साध मुख्य वस्तु न होने पर भी जब कोई उससे संबंधित वस्तु की इच्छा करता है तब उसके प्रति कहते हैं। व्यर्थ की इच्छा रखने वाले के प्रति भी कहते हैं।

नाक दबाने से मुंह खुलता है—(क) दबाव पड़ने मे ही बात खुलती है। (ख) बच्चे जब खाने-पीने के लिए मुंह नही खोलते तब यह मसल बहुत काम देती है। तुलनीय : मरा० नाक दाबलें की तोंड उघडतें; अव० नाक दवाये से मुंह खुलत है; भोज० नाक दबवले से मुंह खुलेला; पंज० नक दबान नाल मूंह खुलदा है।

नाक दे या नहरनी दे—दो में एक दो या तो नाक दे दो या नहरनी। जब कोई किसी से ऐसी बात कहता है या ऐसी चीज़ माँगता है जिसमे वह असमंजस में पड़ जाता है तब कहते हैं।

नाक नंगी गले हमेल--नाक नंगी है और गले में हमेला (मोहरों का हार) पहने हुए हैं। आवश्यक वस्तु न हो और जिसकी विशेष ज़रूरत न हो वह हो तब कहते हैं। नाक में नथुनी अवश्य होनी चाहिए गले में हमेल (मोहरों का हार) हो या न हो। तुलनीय : अव० नाक मा कतौ कुछ नाही गरे मा हवेल; भोज० नाक उघार गेंटई में हुमेल।

नाक नकटी मुंह फटकार--नाक कटी हुई है और उलटा-सीधा बहुत बकती है। कुरूप और निर्लज्ज स्त्री के प्रति कहते हैं।

नाक न बाँसा, देखें लोग तमासा—नाक तो नाक, बाँसा (नाक की ऊपरी हड्डी) तक नहीं है। अत्यन्त कुरूप या निर्लज्ज के प्रति कहते हैं।

नाक न हो तो औरत मैला खा ले—यदि स्त्रियों को दुर्गंध न आए तो वे मैला तक खा लें। आशय यह कि स्त्रियाँ कम बुद्धि की होती हैं यदि उन्हें अपमान का भय न हो तो वे कोई भी काम बाक़ी न छोड़ें, अर्थात् सब कुछ कर डालें। तुलनीय : ब्रज० नाक न होय तौ औरति बुरी वस्तु खाइ ले।

नाक पकड़े दम निकलता है—नाक पकड़ने से जान जाने लगती है। बहुत सुकुमार बनने वाले के प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

नाक पकौड़ा माथा चौड़ा--नाक पकौड़े जैसी है और सिर चौड़ा है। कुरूप को कहते हैं। तुलनीय : अव० नाक पकउड़ा, माथा चउड़ा; पंज० नक पकौड़ा मत्था चौड़ा।

नाक पर दीया बाल के आए हैं- अर्थात् बहुत देर करके आए हैं। यहाँ संध्या के समय से तात्पर्य है। तुलनीय : पंज० नक उते दिया वाल के आया।

नाक पर मक्खी नहीं बैठने देते—(क) जो किसी का एहसान न लेना चाहे उस पर कहते हैं। (ख) जो किसी की बात न सुने या सीधे मुंह बात न करे उसके प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० नक उते मक्खी नईं वैण दिंदे।

नाक पर सुपाड़ी तोड़ते हैं—(क) असंभव कार्य करने वाले के प्रति कहते हैं। (ख) मूर्खतापूर्ण कार्य करने वाले के प्रति भी कहते हैं। (ग) विड़चिड़े आदमी को भी कहते हैं। तुलनीय : अव० नाके पै सुपारी तोड़त अहै।

नाक रगड़िए का बच्चा—वह बालक जो कड़ी मन्नतें माँगने पर उत्पन्न हुआ हो।

नाकर्दा ख्वार कर्दा पशेमान—जब किसी काम के न करने में अपमान हो और करने पर पश्चात्ताप तो ऐसा कहते हैं।

नाक से नथुनी बड़ी—बेढंगी या अनमेल बात या बेढंगे पहनावे पर कहा जाता है। तुलनीय : अव० नाके से बड़ नथुनी; पंज० नक नालो नथ बड़ी।

नाक हो तो नथिया सोहे—नीचे देखिए।

नाक होय तो नथुनी सोहे—नाक होगी तभी तो नथुनी पहनी जायगी और वह शोभा देगी। यदि नाक ही नहीं होगी तो नथुनी कहाँ पहनी जायगी? तात्पर्य यह है कि कोई काम तभी हो सकता है जब उसे करने का आधार या साधन हो। तुलनीय : अव० नाक होय तौ बेसर सोहै।

'ना' का कोई इलाज नहीं है—जब कोई व्यक्ति किसी काम को न करने की ठान ले या किसी वस्तु को न देना चाहे तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : गढ़० ना की कुछ

दवाई नी च; पंज० नाँ दा कोई लाज नई; ब्रज० ना कौ कोई ऐलाज नायें।

ना काई साथ लाया है, न ले जाएगा—धन के लिए कहते हैं। तुलनीय : पंज० जनां कोई नाल लिआया नां नाल लेगा।

नाखलफ़ बेटे से बेटी भली—कुपुत्र (नाखलफ़) लड़के से लड़की ही अच्छी। निकम्मे या नालायक़ लड़कों के प्रति कहते हैं।

नाखून से गोश्त अलग नहीं होता—अपने (संबंधी) को छोड़ा नहीं जा सकता। आशय यह है कि अपना चाहे बुरा ही क्यों न हो, फिर भी उससे प्रेम होता है।

नाखूनों में पड़े हैं—अच्छी तरह देखे-भाले हैं। महत्त्व-हीन व्यक्ति या वस्तु के लिए कहते हैं।

नाग और आग का कोई भरोसा नहीं—साँप और आग का विश्वास नहीं करना चाहिए। ये दोनों किसी भी समय हानि पहुँचा सकते हैं। तुलनीय : भीली—नाग ने आग नमतां बला नी करे।

नाग डरावत गरुड़ को हर उर हार प्रभाव—शिवजी के गले में पड़ा रहने वाला सर्प गरुड़ पक्षी को डराता है अर्थात् बड़े का सहारा पाकर निर्बल भी सबल को धमका देता है।

नाग मंत्र के सुनत ही, विष छोड़त है ब्याल—नागमंत्र के सुनते ही सर्प अपना विष छोड़ देता है। आशय यह है कि अपनी प्रशंसा सबको यहाँ तक कि दुष्टों को भी अच्छी लगती है।

नाग मंत्र नहिं जानहीं देत पिटारी हाथ—नागमंत्र जानते नहीं और सर्प की पिटारी में हाथ डाल रहे हैं। बिना अनुभव, जानकारी या बचाव का रास्ता रखे किसी खतर-नाक काम करने पर कहा जाता है।

नागराज कहो या साँपराज कहो—नागराज कहो या साँपराज कहो अर्थ एक ही है। (क) किसी वस्तु या व्यक्ति का नाम बदल देने से गुण नहीं बदलते। (ख) किसी दुष्ट व्यक्ति का अच्छा नाम रखने पर भी उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। (ग) एक ही बात को घुमा-फिराकर कहने वाले के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : माल० थूकचंद जी कहो के अभीचंद जी कहो, एक री एक; ब्रज० नागराज कहौ चाहे स्यांप राज कहौ।

ना गुरु ना चेला, सबसे भला अकेला—न किसी को गुरु मानना ठीक है और न किसी को शिष्य बनाना बल्कि अकेले रहना अच्छा है। जो व्यक्ति किसी से कोई संबंध नहीं रखता उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० ना गुरु ना चेला सब तो चंगा कल्ला।

नाच न जाने आँगन टेढ़ा—नाचना आता नहीं और कहती है कि आँगन टेढ़ा है। आशय यह है कि जब कोई किसी काम में अयोग्य हो और अपनी योग्यता को छिपाने के लिए उस कार्य से सम्बन्धित साधनों में दोष निकाले तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० नांचे न आवै अंगनवें टेढ.; कनौ० नाच न आवै आँगन टेढ़ो; असमी—नाचिब ना जाने चोताल् बेंका; पंज० नाच न जानां ते वेड़ा डिंगा (टेढ़ा); फ़ा० रक़्स कर्दन ख़ुद न दानद सहन रा गोयद कज़ अस्त; अथवा ख़ू-ए-बद रा बहाना-ए-विसियार; सं० साधन भूषणम् अकौशल लक्षणम्; अं० A bad workman quarrels with his tools.

नांच न जाने आँगन टेढ़ा—ऊपर देखिए। तुलनीय : अव० नाचै न आवै अँगनवा टेढ़; राज० नाचूं कियां आंगणो टेढ़ा; छत्तीस० नांच नि जाने मंड़वा टेढ़वा; नाचे ल आवै नहिं, मंड़वा ला दोस दै; बुंद० नाच न आवे आंगन टेढ़ो; बँग० नाचते न जानले उठानेर दोष; मरा० नाचतां येइना आंगण वाँकड़े; येघतां येईना ओली लांकटे; गढ़० खै नि जाण्यो खसम कांगो, नाच नि जाण्यां आंगन बांगो; कन्नड़—कुणियल्लिक्के बारद सूठे नेल डोकदेंठु; तमि० आड माट्टादि तेवाड़िया कुक्कु कूडम कोणल्; तेलु० आड लेनिभोगमुदि मद्दिलबानि मीद पड्डद्लु; ब्रज नाचि न जानें, आँगन टेढ़ौ।

नाचने निकली तो घूंघट कैसा—जब कोई ओछा कर्म करे और शरमाए भी तब उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० नचण वाली नूं घुंड किहो जिहा।

नाचने वालों के पाँव थिरकते हैं—(क) कामकाजी या परिश्रमी आदमी आलस्य नहीं करता। वह सदा कुछ-न-कुछ करता रहता है। (ख) विद्वान की विद्वता छिपी नहीं रहती, वह शीघ्र ही स्पष्ट हो जाती है। (ग) गुणी व्यक्ति देखने में ही पहचान में आ जाते हैं। तुलनीय : गढ़० गांदारा की गली अर नाचदारा को पैर; मरा० नाचणाऱ्याचे पाय हालतच असतात।

नाच पड़ोसिन मेरे तो मैं खड़ी नाचूं तेरे—यदि तुम मेरे घर थोड़ा-सा भी नाचोगी तो मैं तुम्हारे घर सारा दिन नाचती रहूँगी। आशय यह है कि यदि किसी की आव-श्यकता पर सहायता कर दी जाय तो वह भी मौक़े पर दूसरे की सहायता करने को प्रस्तुत रहता है। परस्पर सह-योग करने के लिए या सहयोग का लाभ बताने के लिए इस

लोकोक्ति का प्रयोग किया जाता है।

नाचे-कूदे तोड़े तान उसकी दुनिया रक्खे मान—आज का संसार सीधे या भले मानुसों का नहीं है। जो 420 हो, नाच-कूदकर अपना विज्ञापन करे, उसी का आदर होता है। तुलनीय: राज० नाचै कूदै तोड़ै तान ज्यांरो दुनिया राखै मान; अव० नाचै गावै तौड़ै तान, दुनिया करै ओकर मान; मैथ० उछलै कूदै तोड़ै तान बाकी दुनिया राखै मान; भोज० नाची गाइ तोरी तान सेकर (ओकर) दुनियां राखी मान; ब्रज० नाचै-कूदै तोरै तान, वाको दुनिया राखै मान।

नाचे, कूदे, तोड़े तान, वाका दुनियां राखे मान—दे० ऊपर।

नाचे कूदे बानरा, माल मदारी खाय—मेहनत करता है बंदर और लाभ होता मदारी का। जब किसी की मेहनत का फल कोई और ही भोगे तब कहा जाता है।

नाचे गावै तोड़ै तान ताकर दुनिया राखे मान—दे० 'नाचे-कूदे तोड़े तान उसकी……'।

नाचेगा सो पावेगा—जो नाचेगा वही पाएगा। अर्थात् केवल मेहनत करने वाले को ही लाभ मिलता है। तुलनीय: पंज० नचेगा सो लेगा।

नाचे ब्राह्मण देखे धोबी—उलटी बात पर कहते हैं। क्योंकि प्रायः धोबी नाचते हैं और ब्राह्मण देखते हैं। तुलनीय: पंज० बामन नच्चे धोबी दिखे।

नाज़ नखरों के से शकल चुड़ैलों की—(क) जब कोई कुरूप स्त्री नखरे दिखाती है या अपने को बहुत सुन्दर समझती है तो व्यंग्य में कहते हैं। (ख) झूठी शान दिखाने वालों पर भी कहते हैं।

नाज है तो राज है—घर में यदि अनाज (नाज) भरा हुआ है तो समझिए सब कुछ है। (क) अन्न ही संसार की सभी चीज़ों की विनिमय-दर निश्चित करता है। (ख) भोजन मनुष्य की मूलभूत आवश्यकता है। तुलनीय: कौर० नाज है तो राज है; पंज० अन्न है ते राज है।

नाटा-खोटा बेंचि के चार धुरन्धर लेहु, आपन काम निकारि के, औरहुँ मँगनी देहु—छोटे और खराब बैलों को बेचकर चार बड़े बैल रखो। उनसे अपना काम होने के साथ-साथ दूसरे का भी काम निकल सकता है। अर्थात् अच्छे डील-डौल के बैल परिश्रमी होते हैं, इसलिए उन्हें ही रखना चाहिए।

नाटा सबसे टाँटा—(क) नाटा सबसे मजबूत होता है। (ख) नाटा सबसे झगड़ा करता है। (टाँटा=झगड़ालू, मजबूत)। तुलनीय: पंज० निक्का सारियां तों तिखो।

नाटी बछिया सदा कलोर—छोटी गाय अधिक दिनों तक बिना ब्यायी ही मालूम पड़ती है। अर्थात् छोटे क़द के व्यक्ति का शरीर बहुत दिनों तक आकर्षक प्रतीत होता है या उनकी आयु वास्तविक आयु से बहुत कम प्रतीत होती है।

नाटे खोटे, लम्बे मूर्ख—ऐसा विश्वास प्रचलित है कि आदमी का क़द जितना छोटा होता है वह उतना ही खोटा होता है और जितना लम्बा होता है उतना ही मूर्ख होता है।

नाड़ी जल है तातो न्हालो, थिर करबं नीलो रंग थाली; चहक बैठ सिरे चूंचाली, काठल बंधे उतर दिस काली—यदि तालाब का पानी गर्म हो जाए, काँसे की थाली का रंग नीला हो जाय और पनडुब्बी चिड़िया पेड़ पर बैठकर चहचहाए तो उत्तर दिशा में काली घटा आएगी अर्थात् वर्षा होगी।

नात का न गोद का, बाँटा माँगे पोथ का—न तो रिश्तेदार है और न अपना बच्चा, पर मालगुज़ारी का हिस्सा माँगता है। बिना किसी संबंध के ही कुछ चाहने वाले या अनुचित माँग करने वाले पर कहते हैं। (पोथ—मालगुज़ारी, भूमिकर)।

ना तप्त लौहं लोहेन संधते—बिना तपाए हुए लोहे में लोहा नहीं जुड़ता। अर्थात् बिना दुःख आए दो समान व्यक्ति भी संगठित नहीं होते, या उनमें मैत्री नहीं होती।

नाता न गोता, खड़ा होकर रोता—(क) अनुचित अधिकार जमाने पर कहते हैं। (ख) निष्प्रयोजन दखल देने पर भी कहते हैं।

नाता न रिश्ता नेवते पर नेवते—कोई संबंध नहीं है और निमंत्रण पर निमंत्रण भेज रहा है। स्वार्थवश ज़बरदस्ती संबंध जोड़ने पर ऐसा कहते हैं। तुलनीय: भोज० नाता न गोता नेवता ताबरतोड़।

नातिन सिखावे आजी को कि बारह ड्योढ़े आठ—नीचे देखिए। (आजी=दादी, पिता की माँ)।

नाती कहे नानी से, चलोगी नानी गवने—जब कोई अल्पायु अपने से बड़ों को मूर्ख बनाना चाहे या उसे उपदेश दे तो व्यंग्य से कहते हैं।

नाती के गाँती नहीं बिल्ली के जामा—नाती के लिए गाँती बाँधने के लिए भी कपड़े नहीं हैं और बिल्ली के लिए जामा बनवा रहे हैं। (क) आवश्यक वस्तु को त्याग कर अनावश्यक वस्तु या व्यक्ति की सेवा-शुश्रूषा करने पर उक्त कहावत कही जाती है। (ख) अपने के लिए कुछ न करके

दूसरों के लिए बहुत कुछ करने वाले के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : मैथ० नाती के गांती ने बिलाई के जामा।

नाती क्या गया ले जाएगा जब अपने पुत्र से आशा नहीं पूरी हुई— अर्थात् जब अपने संबंधियों से मन की इच्छा पूरी नही हुई तो दूसरे क्या करेंगे ? अर्थात् दूसरे उसे पूरी नही कर सकते। तुलनीय : मग० अपन पूत न पूरल आस, नाती ले देह गया जात; भोज० नाती का गया ले जाइ जब अपना पूत से पेट भर गइल या हीक पूज गइल।

नाती तो नाती बाबा खड़ा मूतता है—नाती तो खड़ा होकर पेशाब करता ही है, बाबा (दादा) भी खड़ा होकर पेशाब करता है। जिस परिवार के छोटे-बड़े सभी बुरे होते हैं उनके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० नाती तौ नाती बाबा भई भई मूतत है।

नाती माँगे पूत मिलता है—नाती माँगने पर पुत्र ही मिलता है। जितना मांगा जाता है उससे कम ही मिलता है। आशय यह है कि जब किसी से कुछ माँगा जाय तो अपनी आवश्यकता से अधिक माँगने पर ही काम चलता है, क्योंकि मुँह-माँगी वस्तु कभी नही मिलती।

नाथ के घर 'न' नहीं—नाथ के घर किसी के प्रवेश पर मना नहीं होती। अर्थात् (क) नाथ संप्रदाय के साधुओं में प्रत्येक जाति और धर्म के मानने वाले सम्मिलित हो सकते है। (ख) भगवान के प्रति भी कहते हैं कि वह माँगने से प्रत्येक वस्तु देता है। तुलनीय : मेवा० नाथ के घरे नाहीं ने; पंज० रब दे कर नां नई।

नाथ देव कर कवन भरोसा—भाग्य का क्या ठिकाना ? अर्थात् कुछ नहीं। भाग्य की अनिश्चितता पर कहा जाता है।

नाथ पगैया मोरे हाथ, बच्छा कूदे नौ-नौ हाथ—नाथ (बैल के नाक में सूराख़ करके डाली गई रस्सी जिससे वह वश में रहता है) और पगैया (पशुओं को बाँधने की रस्सी) तो मेरे हाथ में है, फिर भी बछड़ा नौ-नौ हाथ कूदता है। जब कोई परावलंबी, परतंत्र या आश्रित होने पर भी अपने को स्वावलंबी या स्वतंत्र बताए तो व्यंग्य से कहते हैं।

नाथे बिना भैंस हेहर—बिना नाथ के भैंस ढीठ हो जाती है अर्थात् दुष्ट स्वभाव के व्यक्ति बिना नियंत्रण (अंकुश) के ठीक नहीं रहते। तुलनीय : भोज० नथला बिना भइंस हेहर हो जाले; पंज० नथ बगैर मज डींगी।

नादान की दोस्ती जी का जंजाल / ज़ियाँ—मूर्ख की मित्रता जानलेवा होती है अर्थात् मूर्ख से मित्रता करना खतरे से खाली नहीं है। तुलनीय : राज० नादानरी दोस्ती जीवने जोखम; भोज० नादान क दोस्ती, जी क जवाल; हरि० नादान की दोस्ती ज्यान का खोह; मेवा० नादान की दोस्ती, जीव का जंजाल; ब्रज० नादान की दोस्ती और जी कौ जंजार। 'दोस्ती नादाँ की है जी का ज़ियाँ हो जाएगा' —ग़ालिब।

नादान दोस्त से, दाना दुश्मन अच्छा / भला—मूर्ख मित्र से बुद्धिमान दुश्मन अच्छा होता है। आशय यह है कि मूर्ख मित्र से कोई लाभ नहीं होता, बल्कि वह कुछ नुक़सान ही करता है। तुलनीय : भोज० बुरबक मित से चल्हांक दुस्मन अच्छा; उज्ज० मूर्ख मित्र से हानि की संभावना है, और बुद्धिमान् शत्रु से लाभ की; अव० नदान दोस से दानेदार दुश्मन अच्छा; गढ़० नादान दोस्त ते दानो दुश्मन भलो; माल० नादान दोस्त तीं दानो दुश्मन हाउ; पंज० अहमक दोस्त नालों दाना दुश्मन चंगा; फा० दुश्मने-दाना बेह अज़ दोस्ते-नादान; अर० उदू-ए-आक़िल-ओ-ख़ैरून मिन सिद्दीक़-ए-जाहिल; अं० A bitter enemy is better than a foolish friend.

नादान वाद करे, दाना क़यास करे—मूर्ख विवाद करता है और विद्वान उस पर विचार करता है। अर्थात् मूर्ख व्यक्ति किसी बात की गहराई में जाने की चेष्टा न करके बेकर बहस किया करते हैं, किंतु विद्वान बहस न करके उस पर मनन करते हैं।

नाना की दौलत पर नवासा ऐंडा फिरे—नाना के धन पर नवासा (लड़की का लड़का) ऐंटकर (ऐंडा) चलता है।

नाना के टुकड़े खावे, दादा का पोता कहावे—दे० 'नानी के टुकड़े खाय···'।

नाना छबीली ने मोह लिए—नाना को छबीली ने आकर्षित कर लिया। जब कोई अनुभवी या चालाक व्यक्ति किसी चालबाज़ आदमी या भ्रष्ट स्त्री के चक्कर में फँस जाता है तो कहते हैं।

नानी कुँवारी मर गई, नवासे के नौ-नौ ब्याह—नानी तो बिना विवाह के ही मर गई और नवासे का नवाँ विवाह हो रहा है। व्यर्थ डींग हाँकने वाले पर व्यंग्य से कहते हैं। (नवासा = लड़की का लड़का)। तुलनीय : मरा० आजी कुमारिका मेली, नातवांचीं नअ नऊ लग्नें झाली।

नानी के आगे ननिहाल का बखान—नानी के सामने ननिहाल की प्रशंसा कर रहे हैं। जब कोई व्यक्ति किसी से किसी व्यक्ति या वस्तु के विषय में ऐसी बातें जिसके विषय में उससे (कहने वाले से) वह (सुनने वाला) अधिक जानकारी रखता हो तब व्यंग्य में ऐसा कहता है। तुलनीय :

अव० नानी कै आगे ननिअऊरे कै बात; बुंद० नन्नां के आगे ननयावरे की बातें; ब्रज० नानी के आगे नंसार कै बातें; तेलु० तल्लि पट्टिल्लु मेनमाम वद्द पोगडिनट्लु; मरा० आजीलाच आजोलचया गोष्टी सांगतां।

नानी के आगे ननिहाल की बातें—ऊपर देखिए।

नानी के टुकड़े खाय, दादी का पोता कहाय—खाता तो है नानी का और पोता कहाता है दादी का। अर्थात् लाभ किसी से लेता है और गुण दूसरे के गाता है। (क) नातियों के प्रति कहते हैं क्योंकि वे ननिहाल से लाभ उठाकर भी एहसान नहीं मानते या समय पड़ने पर काम नहीं करते और अपने घर वालों के पक्ष में ही रहते हैं। (ख) स्वार्थी या कृतघ्न को भी कहते हैं जो एहसान को नहीं मानता और दूसरों के ही गुण गाता रहता है। तुलनीय : मरा० आजीच्या घरी तुकड मोडतो नि आजोबांचा नातू म्हणवितो।

नानी खसम करे, धेवती दंड भरे—किसी पराए पुरुष को पति बनाती है नानी और दंड उसकी धेवती (लड़की की लड़की) को मिलता है। अर्थात् जब बुराई कोई करता है और उसका दंड किसी और को मिलता है तब व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : राज० नानी खसम करै दोहीतो दंड भरै; हरि० नानी खसम करै धेवती डंड भरै; कौर० नानी खसम करै, धेवती दण्ड भरै; मरा० आजीने पुनर्विवाह केला नि नातवाने दानधर्म करायचा।

नानी खसम करे, नवासा चट्टी भरे—ऊपर देखिए।

नानी खसम करे, नातिन दंड दे—दे० 'नानी खसम करे धेवती …'।

नानी तो क्वांरी मर गई, नवासे के साढ़े सत्रह ब्याह—दे० 'नानी कुंवारी मर गई, नवासे…'।

नानी मरी कुंआरी नाती के नौ-नौ ब्याह—दे० 'नानी कुंवारी मर गई नवासे …'।

नानी मरी नाता टूटा—नानी के मर जाने पर ननिहाल से संबंध टूट जाता है। नानी के प्रेम पर कहा गया है क्योंकि उसके मरने के पश्चात् मामा, मामी का वैसा प्रेम नहीं रहता। तुलनीय : गढ़० नान्नी मरी नातो टूट्यो; अव० नाना मरें नाता टूट; पंज० नानी मरी रिसता टुटया।

नानी रांड कुआरी मर गई, धेवती नौ-नौ फेरे—दे० 'नानी कुंवारी मर गई नवासे …'। तुलनीय : हरि० नान्नी राण्ड कुआरी मरगी, धेवती नै नौ-नौ फेरे।

नान्यदृष्टं स्मरत्यन्यः—कोई आदमी अन्य व्यक्ति के द्वारा देखी हुई वस्तु का स्मरण नहीं करता। तात्पर्य यह है कि जो व्यक्ति जिस वस्तु को देखता है, वही उसका स्मरण करने में समर्थ हो सकता है। ऐसा कभी संभव नहीं कि देखे कोई और स्मरण करे दूसरा।

नान्हे गुन सयाने विद्या—बचपन से ही यदि गुण सिखाया जाय तो सयाना होने पर आदमी निपुण हो जाता है। नीचे देखिए।

नान्हे शुरू सयाने विद्या—जिस काम को बाल्यावस्था में करना आरंभ कर दिया जाता है उसमें व्यक्ति युवावस्था तक पहुँचते-पहुँचते पूर्णतः दक्ष और अनुभवी हो जाता है।

नाप न तोल भरदे झोल—नापो-तौलो नहीं मेरा झोला (थैला) भर दो। अपने स्वार्थ की बातें करने और दूसरे की न सुनने वाले के प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

नापे सौ गज, फाड़े दो (नौ) गज—नापते तो हैं सौ गज और फाड़ते हैं दो या नौ गज। (क) जो कहता बहुत है पर करता थोड़ा है उस पर व्यंग्य में यह लोकोक्ति कही जाती है। (ख) धोखेबाज़ या 420 के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : राज० वेंते सौ हाथ, फाड़ै एक ही को नी।

नापे सौ गज, फाड़े न एक गज—नापता तो सौ गज़ है पर फाड़ता एक गज भी नहीं। झूठा प्रलोभन देने वाले के प्रति कहते हैं।

नाबदान की विनती को गए, बखरी हार आए—जब कोई साधारण लाभ के पीछे बहुत बड़ी हानि करा बैठे तो कहते हैं। (बखरी—मकान)।

ना बोला सबसे भला—जो बोलता नहीं है वही सबसे अच्छा रहता है। अर्थात् चुप रहने वाला सदा लाभ में रहता है और उसी को सब सीधा, बुद्धिमान और शरीफ़ समझते हैं। तुलनीय : राज० नहिं बोल्यें में नव गुण; पंज० न बोलण सारियां तों चंगा।

ना बोले में नौ गुण—ऊपर देखिए।

नाम अमृत पिलाय विष—नाम तो अमृत है पर पिलाते विष हैं। नाम के अनुसार गुण न होने पर कहते हैं।

नाम उमरावसिंह पोत साढ़े तीन आना—(क) नामानुसार गुण न होने पर कहा जाता है। (ख) झूठी बड़ाई करने वाले के प्रति भी व्यंग्य से कहते हैं। (पोत—मालगुजारी, भूमिकर)।

नाम कपूर चंद, गंध गोबर की—नाम के अनुकूल गुण न होने पर उक्त कहावत कही जाती है। तुलनीय : मैथ० नांव कपूरचन गन्ह गोबर; भोज० नांव कपूरचंद खुसबू गोबरो क ना।

नाम कपूरचंद गंध गोबर की भी नहीं—ऊपर देखिए।

नाम कपूरी उगले बिष—ऊपर देखिए।

नाम करोड़ीमल, टेंट में धेला भी नहीं—नाम तो करोड़ीमल है पर पास में धेला भी नहीं है। नाम के अनुसार स्थिति न होने पर कहा जाता है।

नाम का बड़ा दरसन का थोड़ा—(क) नाम और गुण में जब बहुत अंतर हो तो कहते हैं। (ख) किसी वस्तु या व्यक्ति की तारीफ़ बहुत सुनी जाय पर वास्तव मे वह किसी काम का न हो तो भी कहते हैं।

नाम की नन्हीं, उठा ले जाए धन्नी—नीचे देखिए।

नाम की नन्हीं, निगल जाय धन्नी—देखने में छोटी है पर धन्नी निगल जाती है। (क) जब कोई कम आयु की लड़की दुश्चरित्र या व्यभिचारिणी हो जाती है तो कहते है। (ख) जब कोई छोटा या कमज़ोर व्यक्ति अधिक मेहनत का कार्य कर देता है तब भी कहते हैं। तुलनीय : अव० देखै का नन्ही लीलै का धन्नी। (नन्ही=छोटी; धन्नी=छत की कड़ी, बड़ेर)।

नाम के पेड़ काटे न कटें—यश के वृक्ष को यदि कोई काटना चाहे तो भी नहीं काट सकता। अर्थात् मनुष्य का नाश हो जाता है, किंतु उसकी कीर्ति सदा विद्यमान रहती है। तुलनीय : राज० कीरत हंदा कोटड़ा पाड़या नही पड़ंत; पंज० नाँ दे बूटे वड़े नई बड़ोदे।

नाम के बाबाजी करनी छावर—नाम के साधु है पर करनी ख़ाक (छावर) है। जो नाम का बड़ा हो पर उसमें गुण कुछ भी न हो उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते है। (छावर=ख़ाक)।

नाम क्षीरसागर, घर में छाछ तक नहीं—नाम के अनुसार स्थिति न होने पर व्यंग्य में कहते हैं। (क्षीरसागर=दूध का समुद्र, छाछ=मट्ठा)। तुलनीय : कन्न० हेसरु क्षीरसागर, मने लि मज्जिगे नीरिगे गति इल्ल।

नाम गुलबिया महंक धमोय की—नाम के विपरीत गुण होने पर व्यंग्य में कहते है।

नाम गुलबिया मुंह कुकुरन अस—नाम तो है गुलबिया लेकिन मुंह कुत्ते जैसा है। नाम के अनुरूप रूप या गुण न होने पर कहते हैं।

नाम गुलाबचंद गंध का ठिकाना नहीं—दे० 'नाम के बाबाजी···'।

नाम चीनी प्रसाद, स्वाद गुड़ का भी नहीं—ऊपर देखिए।

नाम छोटी बहू, है ताड़ जैसी—नाम तो छोटी बहू है पर ताड़ जैसी लम्बी है। नाम के विपरीत गुण होने पर कहते हैं। तुलनीय : बुंद० नाव तो नन्नी बऊ, और ऊँची धरीं ताड़ सी।

नाम जगधर भुंइ बिस्वा भर नहीं—दे० 'नाम के बाबाजी···'।

नाम जब्बर सिंह उठें भूं टेक—नाम के अनुरूप गुण या शक्ति या गुण-शक्ति के अनुरूप नाम न होने पर व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : छत्तीस० नांव जब्बरसिंह, उठे भूं टेक; भोज० नांव बरियार राम उठे भुइयां टेक।

नाम तखतसिंह मुंह चपला अस—ऊपर देखिए। तुलनीय : अव० नांव तखत सिंह मुँह चपला अस।

नाम तुलसीदास, महक बनतुलसी की भी नहीं—नाम के अनुरूप गुण न होने पर व्यंग्य में कहते हैं।

नाम तो गंगा, पर पीने के लिए पानी नहीं—नाम के अनुरूप गुण न होने पर व्यंग्य में कहा जाता है। तुलनीय : तेलु० पेरु गंगानम्म, ताग वोते नीळ्ळु लेदु, पंज० नाँ ते गंगा पीण लई पाणी नई।

नाम तो सोहनी, शक्ल उल्लू जैसी—ऊपर देखिए।

नाम दयाराम करे कसाई का काम—काम करते हैं कसाई का और नाम है दयाराम।

नाम दाताराम, पुण्य का ठिकाना नहीं—पुण्य या दान कुछ नही करते लेकिन नाम दाताराम है।

नाम दूधनाथ लज्जत मट्ठे की भी नहीं—नामानुसार गुण न होने पर कहते है। तुलनीय : मैथ० नांव दूधनाथ लज्जित मठो के न।

नाम धनपति, माँगे भीख—नाम तो धनपति है पर माँगते हैं भीख।

नाम धर्मात्मा धर्म से दूर रहे—नाम तो धर्मात्मा है पर धर्म से बहुत दूर रहते हैं। तुलनीय : मैथ० नांव धरमात्मा पून के लेसे न।

नाम धर्मात्मा पुण्य का लेश नहीं—नाम के अनुकूल गुण न होने पर कहते हैं।

नाम न करे खोटा, चाहे काम करे छोटा—काम चाहे कितना भी छोटा करे किन्तु अपनी इज़्ज़त बनाए रखनी चाहिए। आशय यह है कि धन के लालच में आत्मसम्मान और स्वाधीनता को नहीं बेचना चाहिए। तुलनीय : माल० ओछे रोजगार रेणो पर ओछे कायदे नी रेणो।

नाम नन्हीं निगलें धन्नी—दे० 'नाम की नन्ही निगल '।

नाम नन्ही बहू और ऊँची ताड़-सी—दे० 'नाम छोटी बहू···'।

नाम नयनसुख आँख एक भी नहीं—दे० 'आँख के अंधे…'।

नाम नयनसुख जन्म के अन्धे—दे० 'आँख के अंधे…'।

नाम नवलखा जन्म का भिखारी—औक़ात से बहुत बढ़कर जब नाम हो तो कहते हैं।

नाम निर्मलदास देह भर में कोढ़—पूरे शरीर में कोढ़ है पर नाम निर्मलदास है। नाम के अनुकूल रूप, गुण या दशा न होने पर कहते है। तुलनीय : भोज० नांव निर्मलदास भर देहीं कोढ़; अव० नाम निर्मलदास देही भर मां कोढ़।

नाम पहाड़ खाँ बोलें तब चीं—उपर देखिए।

नाम पहाड़ सिंह देह चीयाँ अस—नाम तो पहाड़ सिंह है पर शरीर (देह) चीयाँ (इमली का बीज) जैसी है। नाम के अनुसार रूप, दशा या गुण न होने पर कहते हैं। तुलनीय : अव० नाम पहाड़ सिंह देहा चियाँ असि; भोज० नाँव पहाड़ सिंह देंहि चीयाँ जस; छत्तीस० नाम पहारसिंग, अउ देह चियाँ अस।

नाम पृथ्वीपति ज़मीन एक पग नहीं—नीचे देखिए। तुलनीय : मैथ० नाँव पिरथीपति सोमहुत के ठेकाने न।

नाम पृथ्वीपति भूमि बिस्वा भर नहीं—नाम तो पृथ्वीपति है लेकिन भूमि एक बिस्वा भी नही। जब कोई नाम से बहुत धनवान प्रतीत हो और वास्तव में उसके पास कुछ भी न हो तो कहते हैं। तुलनीय : अव० नाँव पृथीपाल-सिंह भुंइ बिस्वौ-भर नाही।

नाम पृथ्वीपति समहुत का ठिकाना नहीं—ऊपर देखिए।

नाम पृथ्वीपाल पालें चिड़िया भी नहीं—कहलाते हैं पृथ्वी के पालने वाले, पर एक चिड़िया भी नहीं पाल सकते। नाम के विपरीत गुण होने पर कहा जाता है।

नाम पृथ्वीपालसिंह भुंइ बिस्वा-भर नहीं—ऊपर देखिए।

नाम पृथ्वीपाल सिंह भूमि बित्ता-भर ना—दे० 'नाम पृथ्वीपति भूमि…'।

नाम फूलमती देह चैला जैसी—नाम के अनुरूप गुण, दशा या रूप आदि न होने पर कहते हैं। (चैला=चीरी हुई लकड़ी)।

नाम फूल सिंह देह चैला अस—ऊपर देखिए। तुलनीय : अव० नाम फूल सिंघ गाँड़ि चैला असि; भोज० नांव फूल सिंह देंहि चैला हस।

नाम बढ़ावे दाम—प्रसिद्ध दूकानदार चीज़ बहुत महँगी बेंचते हैं क्योंकि उनके नाम के कारण ग्राहक उन्हीं की दूकान पर सौदा लेने जाते हैं। तुलनीय : मरा० नांव मोठें म्हणून दर वाढतो; पंज० नाँ बदावे मुल।

नाम बड़ा और दर्शन छोटा—नाम के अनुकूल गुण न होने पर कहते हैं। तुलनीय : पंज० नाँ बडा अते दरसन निक्का।

नाम बड़ा और सड़क का गाँव—प्रसिद्ध व्यक्ति के पास और प्रमुख मार्ग पर स्थित गाँव में अतिथि अधिक आया करते हैं।

नाम बड़ा ऊँचा कान दोनों बूचा—नाम के अनुसार गुण, स्थिति, रूप आदि न होने पर ऐसा कहते हैं।

नाम बड़े और दर्शन खोटे—नीचे देखिए।

नाम बड़े और दर्शन थोड़े—ख्याति अधिक हो, किन्तु तत्त्व कुछ न हो तब कहते हैं। तुलनीय : मरा० नांव मोठें, दर्शन खोटें; अव० नाव बड़ा दर्शन थोर; हरि० नाम बड्डा दरसन छोट्टे; मैथ० नाम पैघ दरसन थोड़; राज० नाव धापली, फिरै टुकडा माँगती; बघे० नाव गहागह, मुँह कुकुर अस; बुंद० नड़ी बड़ाई, फटी रजाई। 'मुहमद मलिक पेम मधु भोरा, नाउँ बडेरा दरसन थोरा'—जायसी।

नाम बसंती मुँह कूकर अस—नामानुसार गुण न होने पर कहते हैं। तुलनीय : अव० नाव गुलबिया मुँह कुकरन अस।

नाम बहादुर सिंह पीठ में लगी गोली—जब कोई व्यक्ति अपने नाम के अनुरूप गुणों वाला न हो तो कहते हैं। तुलनीय : कनौ० नाँव सूरमा पीठ में घाव; पंज० नाँ बहादुर सिंग पिठ बिच लगी गोली।

नाम भवानी मुँह छछूंदर का—नाम के अनुरूप रूप न होने पर उक्त कहावत कही जाती है। तुलनीय : मैथ० नांव भवानी मुँह छुछुनर के।

नाम भानमती और झोली में सिर—झूठी बड़ाई करने पर कहा जाता है।

नाम मिस्रीलाल गुन गुड़ का भी नहीं—नाम के अनु-सार गुण न होने पर यह कहावत कही जाती है। तुलनीय : भोज० नाँव मिसीरीलाल लज्जत चोटो क नाँ।

नाम मेरा, गाँव तेरा—गाँव तुम्हारा रहेगा पर नाम मेरा। दूसरे के धन से जो लाभ उठाना चाहे उसे कहते हैं। तुलनीय : पंज० नाँ मेरा पिंड तेरा।

नाम मोती कुँवर, चमक बिनौले-सी भी नहीं—नाम के अनुसार रूप या गुण न होने पर कहा जाता है।

नाम मोती चंद आब मटर की नहीं—गुण के अनुसार नाम न होने पर कहते हैं। तुलनीय : भोज० नाँव मोतीचंद

आव केरावो (मटर) क ना; छत्तीस० नाँव मोतीचंद झलक त्रिनौरा (बिनौला) के नहीं।

नाम रजरनियाँ चमार की बेटी—स्तर के अनुकूल नाम न होने पर कहते हैं।

नाम रजरनियाँ बेटी चमार की—ऊपर देखिए।

नाम रतन कुँवर, मुंह कुतियों जैसा—नाम के अनुसार रूप न होने पर व्यंग्य में कहते हैं।

नाम रामलखन मुंह कुत्ते का—नाम के अनुसार रूप न होने पर यह कहावत कही जाती है। तुलनीय : भोज० नाँव रामलखन मुँह कुकुरों का नाँ; अथवा नाँव रामलखन मुंह कुकुरे अस; पंज० नाँ रामलखण मुँह कुत्ते दा।

ना मरे तो घर भर जाय यदि सभी जीवित रहे तो घर में आदमी ही आदमी हो जायँ। जब कोई अपने व्यय या हानि का रोना रोता है तो उसे समझाने के लिए कहते है।

नामर्द हाथी अपने लश्कर को मारता है—दे० 'निकम्मा हाथी अपनी फ़ौज को…'।

नामर्दी तो दी ख़ुदा ने, मार-मार से चूके क्यों – यदि नहीं मार सकते हो तो मार-मार का हल्ला तो करो। आशय यह है कि (क) अशक्त होने पर भी सुस्त नहीं बैठना चाहिए। (ख)अपनी दुर्बलता किसी पर प्रकट नहीं करनी चाहिए। तुलनीय : राज० नामर्द तो ख़ुदा ने बणाया, मार-मार तो कर।

नाम लक्ष्मीचंद पास कौड़ी नहीं—नाम तो लक्ष्मीचंद है पर पास में एक कौड़ी भी नहीं है। नाम के विपरीत स्थिति होने पर कहा जाता है। तुलनीय : पंज० नाँ लख-मीनरैन कौल तेला नई; ब्रज० नाम लखमी चंद, पास में कौड़ी ऊ नायें।

नाम लखेसुरी मुंह कुतिया-सा—नाम के अनुरूप रूप या गुण न होने पर कहा जाता है।

नाम लक्ष्मीबाई बेचे कंडे—बेचती हैं कंडे और नाम लक्ष्मीबाई है। नाम के अनुरूप गुण या स्थिति न होने पर व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : निमाड़ी— नाव लक्ष्मीबाई, न कंडा बेचन जाय।

नामलेवा रहा न पानीदेवा—अर्थात् सब मर गए, कोई ऐसा नहीं जो मुझे याद करे।

नाम सुगंधी देवी पादे के बिख—नाम के अनुकूल गुण न होने पर कहते हैं। तुलनीय : अव० नाम सुगंधा पादै का विखु; भोज० नाँव सुगंधी देई बोलें बिख जइसन।

नाम वह है जो ख़ुदा कहलवाए—अर्थात् अपने मुंह मियाँ मिट्ठू बनने से कोई लाभ नहीं।

नाम सुघड़पति, मुंह की यह गति—हैं कुरूप लेकिन नाम सुघड़पति है। नाम के अनुरूप रूप न होने पर कहते हैं।

नाम से काम नहीं, काम से नाम है—नाम अच्छा होने से कुछ नहीं होता, काम अच्छे होने चाहिए। अर्थात् मनुष्य का नाम अच्छे कामों से ही होता है। तुलनीय : भीली—मारे खाल ओलख है मोय नी ओलखे।

नाम सौ का, है एक भी नहीं—कहने के लिए तो सौ पुत्र हैं, किंतु वस्तुतः एक भी नहीं हैं क्योंकि वे सब न होने के समान हैं अर्थात् कुपुत्र हैं। कुपुत्रों के प्रति इस प्रकार कहते हैं।

नाम स्यामसुंदर मुंह कुत्ता जैसा— नाम के अनुरूप रूप न होने पर कहते हैं। तुलनीय : अव० नाम स्यामसुंदर मुँह कुक्कुर अस; भोज० नाँव स्यामसुंदर मुँह कुकुरे अस; पंज० नाँ सामसुंदर मुँह कुत्ते वरगा।

नाम हीरामल, दमक कंकड़-सी भी नहीं—नाम के विपरीत स्थिति होने पर कहा जाता है। तुलनीय : अव० नाव कड़ोरीमल, टेंटे मा धेलौ नाही।

नाम है मिश्री प्रसाद स्वाद चोटा का भी नहीं—नाम के विपरीत गुण होने पर कहते हैं। (चोटा=च्योंटा=शीरा)।

नामी चोर मारा जाय, नामी शाह कमा खाय—कहीं पर नाम का होना अच्छा होता है, कहीं पर बुरा। अर्थात् नेकनामी से लाभ होता है और बदनामी से हानि। बदनाम आदमी पर अकारण दोष लगे तब कहते हैं। तुलनीय : राज० नामूंद वाण्यो कमा खाय, नामूंद चोर मार्‌या जाय; गढ़० नामी चोर पकड़्या जौ, नामी मौ कमै खौ; मरा० प्रसिद्ध चोर मारला जातो, प्रसिद्ध व्यापारी गडगंज मिल-वतो; मेवा० नामी चोर मार्‌यो जाय, नामी साहुकार कमा खाय; ब्रज० नामी चोर मार्‌यौ जाय, नामी साह कमाय खाय।

नामी चोर सरनामी बनिया—मशहूर चोर हर चोरी के मामले में पकड़ा जाता है और प्रसिद्ध दूकानदार के यहाँ ही ज़्यादा लोग सामान ख़रीदने जाते हैं।

नामी मर होत गरुड़, नामी के हेरेते— यशस्वी वही होता है जिस पर भगवान की कृपा होती है।

नामी बनिया कमा खाय, नामी चोर मारा जाय—दे० 'नामी चोर मारा जाय…'।

नामी बनिया, कमा खाय, सरनामी चोर जूता खाय—

सुप्रसिद्ध व्यक्ति लाभ कमाता है चाहे वह कितना भी बुरा काम क्यों न करे, किंतु कुप्रसिद्ध व्यक्ति अच्छा काम करे तो भी उसे बुराई ही मिलती है।

नामी मरे नाम को, गाँडू मरे दाम को—इज़्ज़तदार आदमी अपनी इज़्ज़त के लिए मरता है और निखट्टू धन के के लिए। आशय यह है कि इज़्ज़तदार व्यक्ति हर क़ीमत पर अपनी मर्यादा की रक्षा करता है जबकि नामर्द आदमी धन के सम्मुख मर्यादा को महत्व नहीं देता। उसे हर क़ीमत पर धन प्राप्त करने की ही चिन्ता रहती है।

नामी मरे नाम को नामर्द मरे नान को—ऊपर देखिए। (नान=रोटी)।

ना मोहिं नाधो उलिया कुलिया, ना मोहिं नाधो दायें; बीस बरस तक कर बरदाई, जो ना मिलि हैं गायें—बैल कहता है कि यदि मुझे छोटे-छोटे खेतों (उलिया-कुलिया) में नहीं जोतोगे, न दाहिने जोतोगे और न गायों से मिलने दोगे तो मैं बीस वर्ष तक अच्छी तरह से काम दूंगा। आशय यह है कि उपरोक्त ढंग से रखने पर बैल अधिक दिनों तक काम देता है।

नार ने निकाला दंत, मर्द ने ताड़ा अंत—स्त्री ने दाँत निकाला और पुरुष उसका मतलब समझ गया। अर्थात् जब स्त्री हँसी तो पुरुष समझ गया कि उसके वस में हो गई। आशय यह है कि स्त्री का हँसना उसके राज़ी होने का संकेत माना जाता है।

नार मुई, घर संपति नासी, मूंड़ मुंड़ाय भए संन्यासी—दे० 'नारि मुई, कुल संपति '।

नार सुलखनी कुटुम छकावे, आप तले की खुरचन खावे—अच्छे गुणवाली स्त्री परिवार के लोगों को खूब खिलाती है और स्वयं पेंदी की खुरचन खाती है। आशय यह है कि भली स्त्री परिवार को खिलाने के बाद जो कुछ बच रहता है वही खाकर संतोष कर लेती है।

नारि करकसा कट्टर घोर, हाकिम होय के खाय अँकोर; कपटी मित्र पुत्र है चोर, घग्घा इनको गहिरे बोर—घाघ कहते हैं कि कर्कशा स्त्री, कटखना घोड़ा, घूसखोर अधिकारी, कपटी मित्र तथा चोर पुत्र को गहरे पानी में डुबो देना चाहिए अर्थात् इनके साथ किसी प्रकार की रियायत नहीं करनी चाहिए बल्कि इन्हें कड़ी सज़ा देनी चाहिए।

नारिकेल फलांबुन्याय—नारियल के फल में जिस प्रकार पानी न जाने कैसे आ जाता है उसी प्रकार लक्ष्मी के आने का पता नहीं चलता कि वह किस मार्ग से आई है। गुप्त या रहस्यपूर्ण ढंग से किसी बात या घटना के हो जाने पर भी इस न्याय का प्रयोग किया जाता है।

नारि धर्म पति देव न दूजा—स्त्रियों के लिए पति से बढ़कर कोई दूसरा देवता नहीं है। आशय यह है कि (क) स्त्रियों को अपने पति की काफ़ी सेवा करनी चाहिए। (ख) स्त्री के लिए उसका पति सबसे महान होता है।

नारि नहीं तहँ कानी राजी—जहाँ एक भी स्त्री न हो वहाँ कानी ही सर्वश्रेष्ठ समझी जाती है। आशय यह है कि जहाँ अच्छी वस्तु या अच्छे मनुष्य नहीं होते वहाँ बुरे ही अच्छे समझे जाते हैं।

नारि मुई कुल संपति नासी, मूंड़ मुड़ाय भये संन्यासी—जब स्त्री मर जाती है और धन नष्ट हो जाता है तब सिर घुटाकर संन्यासी हो जाते हैं। कलियुग के संन्यासियों पर व्यंग्य में कहा गया है कि वे भक्ति करने के लिए या संसार त्यागने के लिए संन्यासी नहीं बनते, अपितु और कोई चारा न रहने पर मजबूर होकर संन्यासी बनते हैं। तुलनीय : मरा० बायको मेली वैभव गेलें, मुंडण केलें की संन्यासी झाले।

नारियल में पानी, नहीं मालूम खट्टा कि मीठा—नारियल के अंदर के पानी के विषय में नहीं कहा जा सकता कि वह खट्टा है या मीठा। संदेहयुक्त और गुप्त बात पर कहते हैं। तुलनीय : मरा० नारळाच्या आँत पाणी कोण जाणे आंबट कि गोड।

नारि सुहागिन जल घट लावै, दधि मछली जो सन्मुख आवै; सनमुख धेनु पिआवै बाछा, यही सगुन है सबसे आछा—यात्रा पर जाते समय यदि सुहागिन स्त्री भरे घड़े को लाती मिले, दही, मछली और बछड़े का दूध पिलाती गाय मिले तो शुभ शकुन समझना चाहिए।

नारी नर का नूर है, नारी जग का मान; नारी से नर ऊपजें, ध्रुव प्रह्लाद समान—स्त्री ही पुरुष की शोभा है, स्त्री ही संसार की इज़्ज़त है और स्त्री से ही ध्रुव और प्रह्लाद जैसे पुरुष उत्पन्न होते हैं। आशय यह है कि स्त्री बहुत महान होती है।

नारून का फल—ऊपर से सुंदर और आकर्षक पर भीतर से बुरा।

नाली का कीड़ा नाली ही में ख़ुश रहता है—नाली के कीड़े को यदि साफ़ स्थान में रखा जाये तो उसे वहाँ रहना बुरा लगता है। आशय यह है कि नीच और दुष्ट व्यक्ति बुरे स्थान या समाज में ही प्रसन्न रहते हैं। तुलनीय : भोज० नारी क किरवना नारिये में ख़ुश रहेला; मेवा० पनाला का

कीड़ा और अंतर की सुगंध; पंज० नाली दा कीड़ा नाली बिच ही खुस रहिंदा है ।

नाली की ईंट कोठे चढ़ी—(क) जब कोई छोटा आदमी किसी प्रकार महत्त्वपूर्ण पद पर पहुँच जाता है तो कहते हैं। (ख) जब किसी निर्धन घर की लड़की किसी धनी परिवार में ब्याही जाती है तो भी कहते हैं। तुलनीय : अव० नरदवा का पाथर मंदिरे मां; पंज० मोरी दी इट्ट चवारे चड़ी ।

नाली में से बदबू ही आती है—नाली में से बदबू के अतिरिक्त और क्या मिल सकता है ? अर्थात् बुरे व्यक्ति बुरे काम ही करते हैं अथवा उनसे बुराई या हानि ही मिलती है। तुलनीय : राज० पींडारै में छाणाही नीकळै; पंज० नाली विचों वो ही आंदी है ।

नाले-पोखर ही अकाल में काम आते हैं—जब कहीं भी पानी नहीं मिलता तो छोटे-मोटे नाले-पोखर ही अपने पानी से सबकी आवश्यकता पूरी करते है। आशय यह है कि छोटी वस्तुएँ भी समय पर काम आती हैं अत: छोटी होने के कारण उनका महत्त्व कम नहीं समझना चाहिए। तुलनीय : भीली नाड़ा खाड़ा है काल ना गाडा ।

नाव कागज़ की कभी चलती नहीं—(क) धोखे का व्यवहार अधिक समय तक नहीं चलता, वास्तविकता शीघ्र प्रकट हो जाती है। (ख) नकली वस्तुएँ टिकाऊ नहीं होतीं वे थोड़े दिनों में ही नष्ट हो जाती है ।

नाव किसने डुबोई, ख्वाजा खिज्र ने—जब नेता ही अपने अनुयायियों को धोखा दे या क्षति पहुँचाए तब कहते हैं।

नाव के आगे, गाड़ी के पीछे—नदी पार करते समय नाव के अगले भाग की ओर बैठना चाहिए क्योंकि यदि नाव डूबेगी तो अगले भाग की ओर बैठने वाले को नदी का छोर शीघ्र मिल जाएगा। इसी प्रकार रेलगाड़ी में पीछे बैठना चाहिए क्योंकि दुर्घटना के समय गाड़ी का अगला हिस्सा ही क्षतिग्रस्त होता है। तुलनीय : छत्तीस० डोंगा के अगाड़ी, गाड़ी के पिछाड़ी; पंज० नाव दे अग्गे गड्डी दे पिछे ।

नाव खुश्की में नहीं चलती—प्रशंसा के बिना कोई कार्य भली प्रकार संपन्न नहीं होता। धनवान यदि दानी न हो तो उसे ख्याति नहीं मिलती ।

नाव चढ़े झगड़ालू आवें, तैरत आवें साखी—झगड़ा करने वाले तो नाव में बैठकर आ रहे हैं और गवाह (साखी=साक्षी) तैर कर। उलटी बात या उल्टे काम पर कहते हैं क्योंकि गवाहों का मान मुक़दमेबाज़ को करना ही पड़ता है।

नाव भर रुई जल गई, अपने लेखे फूस—पूरी नाव की रुई जल गई लेकिन मेरे लिए तो वह खर-पतवार के जलने के समान है। दूसरे की हानि की चिंता न करने वाले के प्रति कहते हैं।

नाव में खाक क्यों उड़ाते हो—जब किसी को कष्ट देने के लिए उसपर कोई झूठा लांछन लगाया जाए तो उसके प्रति कहा जाता है।

नासिकाग्रेण कर्णमूलकर्षण न्यायः—नाक के अग्रिम भाग से कान के मूल को खींचना। जब कोई किसी असंभव कार्य को करना चाहता है तब उसके प्रति कहते हैं।

नासू करै राज का नास—नासू बैल (जिसकी आधी पसली दूसरी पसलियों से कम हो) राज्य का नाश कर देता है। आशय यह है कि नासू बैल बहुत अशुभ समझा जाता है।

नाहक चोट जुलाहा खाय, करगह छोड़ तमाशे जाय—दे० 'करघा छोड़ तमाशे जाय……'।

ना हल चले न चले कुदारी, अमृत भोजन करें मुरारी—न हल चलाते हैं और न कुदारी, फिर भी अमृततुल्य भोजन करते हैं। ढोंगी साधुओं और मुफ़्तखोरों के लिए व्यंग्य से कहते हैं।

नाहीं करिबे तें कछु करिबो ही नीको है—बिलकुल न करने से, कुछ न कुछ करते रहना अच्छा होता है। अर्थात् बेकार रहने से कुछ भी करना अच्छा है।

निकम्मा नाई पाटला मूँडे—बेकार बैठा नाई पाटले की हजामत बनाता है। जब कोई व्यर्थ कोई ऊटपटांग काम करता है तो कहते हैं। तुलनीय : तेलु० पनिलेनि मंगलवाडु पिल्लि तल गोरिगे।

निकम्मा हाथी अपनी फ़ौज को ही मारता है—मूर्ख हाथी शत्रुसेना को न मारकर अपनी ही सेना को रौंद देता है। तात्पर्य यह है कि मूर्ख व्यक्ति शत्रु को हानि न पहुँचा कर अपने ही लोगों को हानि पहुँचाते हैं या वे सदा मूर्खतापूर्ण कार्य करते हैं।

निकम्मों का दशहरा, भांडों की होली—दशहरे (रामलीला) का त्यौहार बहुत दिनों तक रहता है, इसलिए जो व्यक्ति कामकाज नहीं करते हैं वही उसमें भाग लेते हैं तथा होली में लोग अश्लील गीत गाते घूमते है। अर्थात् निकम्मे लोग ही रामलीला में समय नष्ट करते हैं और असभ्य लोग होली में बेहूदगी किया करते हैं। तुलनीय :

भीली—नवरां नी गवरी ने भांडा नी होली।

निकरनहार बहुरिया, दुरौंधा का दोष—घर से भागने वाली औरत दुरौंधा को दोष लगाती है। जो झूठा बहाना करके अपना मतलब साधना चाहे उस पर कहते हैं।

निकल गया हाथी रह गई दुम—हाथी निकल गया, केवल उसकी पूंछ रह गई है। जब कोई भारी काम तो ठीकठाक हो जाय और उसी का कोई साधारण भाग न हो पाए तो कहते हैं। तुलनीय: पंज० निकल गया हाथी फँस गई दुंब।

निकली हलक़ से चली खलक़ में—बात मुँह से निकलते ही दूर-दूर तक फैल जाती है। आशय यह है कि गुप्त बात को किसी से भी नहीं कहना चाहिए क्योंकि उसके फैलते देर नहीं लगती। तुलनीय: ब्रज० निकरी हलक, परी खलक।

निकली होंठों चढ़ी कोठों—ऊपर देखिए।

निकले हुए दांत फिर अन्दर नहीं जाते—जो रहस्य एक बार प्रकट हो जाए वह छिपाया नहीं जा सकता।

निकसो चंदा तो अंधेरो भयो मंदा—चन्द्रमा के निकलते ही अंधेरा दूर हो जाता है। आशय यह है कि सत्य के सामने झूठ नहीं ठहर सकता, उसकी पोल शीघ्र खुल जाती है।

निकालते-निकालते कुएँ भी खाली हो जाते हैं—निकालने से तो कुएँ का पानी भी समाप्त हो जाता है। अर्थात् कितना भी अधिक द्रव्य हो वह व्यय करने से एक दिन अवश्य समाप्त हो जाता है। (क) जब कोई व्यक्ति कमाना न चाहे और पैतृक संपत्ति पर मौज करे तो उसको समझाने के लिए कहते हैं। (ख) जब कोई बेफ़िक्री से धन खर्च करता है तब भी कहते हैं।

निकाही न ब्याही मुंडी बहू कहाँ से आई—न निकाह हुआ और न ब्याह, फिर यह मुंडी बहू कहाँ से आ गई। (क) झूठा संबंध जोड़ने पर कहते हैं। (ख) स्वार्थ सिद्ध करने के लिए अपनी घनिष्ठता जताने वाले के प्रति भी कहते हैं।

निकौड़िया गए हाट, ककड़ी देख जीवरा फाट—बिना पैसे के बाज़ार गए और ककड़ी देखकर छटपटाने लगे। जब कोई व्यक्ति ऐसी वस्तु की इच्छा करे जिसे खरीदना या पाना उसके वस का न हो तो कहते हैं।

निखट्टू आवें लड़ते, कमाऊ आवें डरते—कमाने वाले तो घर में चुपचाप आते हैं किंतु निखट्टू सबसे लड़ते-झगड़ते आते हैं। स्त्री का निखट्टू पति के प्रति कहना है कि वह काम तो कुछ नहीं करता उलटे ऊपर से तकलीफ़ देता है। तुलनीय: पंज० खट्टू आवे चुप चपीता, निखट्टू आवे गज्जदा; राज० निखट्टू आवै लड़तो कमाऊ आवे डरतो; कौर० निखट्टू आमें लड़ते, कमाऊँ आमें डरते।

निखट्टू की जोरू सदा नंगी—आलसी और निठल्ले के घर सदा दरिद्रता आई रहती है।

निखट्टू लड़े कमाऊ डरे—ऊपर देखिए।

निगल जाते हैं ऊँट और दुम से हिचकी लें—नीचे देखिए।

निगल जायं हाथी सकल, पर दुम से परहेज़—पूरा हाथी खा जाते हैं लेकिन उसकी दुम से परहेज़ करते हैं। (क) बनावटी परहेज़ करने वाले के प्रति कहते हैं। (ख) ढोंगियों के प्रति भी व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय: हरि० गुड़ खावै गुलगुलां तैं परहेज।

निगुणे के लग गुणी जाय, अपनी लाज आप गँवाय—निर्गुणी के पास यदि गुणी जाता है तो अपनी प्रतिष्ठा स्वयं नष्ट करता है। अर्थात् दुष्टों के पास रहने से सज्जन भी बदनाम हो जाते हैं। तुलनीय: राज० नुगणे कने सुगणो जाय सुगणे री पत जाय।

निचंट सोवे हेरू, जिसके गाय न गेरू—हेरू निश्चित (निचंट) होकर सोता है क्योंकि उसके पास न गाय है न बछड़ा। आशय यह है कि जिसके पास कुछ भी नहीं होता वही मस्त होकर घूमता है।

निज अघ गयउ कुमारग गामी—कुमार्ग पर चलने वाले अपने कर्मों से ही शीघ्र नष्ट हो जाते हैं। अर्थात् बुरे मार्ग का अनुसरण करने वाले का शीघ्र पतन हो जाता है।

निज कर क्रिया रहीम कहि, सिधि भावी के हाथ—कार्य का करना ही अपने हाथ में है, फल देना, न देना भगवान की इच्छा पर निर्भर है। तात्पर्य यह है कि मनुष्य को ईमानदारी से काम करना चाहिए, फल की आशा नहीं करनी चाहिए क्योंकि उसका मिलना ईश्वराधीन है।

निज भुजबल के तेज तें, विपिन भयो मृगराज—सिंह अपने बाहुबल से जंगल का राजा बन जाता है, अर्थात् वीर पुरुष अपने बल से ही सब पर शासन करते हैं।

निज मुख निज गुन कहसि न कोऊ—अपने मुख से अपने गुणों का कोई बखान नहीं करता। जब कोई व्यक्ति अपनी बड़ाई स्वयं करता है तब उसे समझाने के लिए कहते हैं।

निज सुगन्ध गुण मृग नाँहि जाने—कस्तूरी मृग को

स्वयं अपनी कस्तूरी की सुगन्ध नहीं मालूम होती। अर्थात् अपना गुण अपने को नहीं मालूम पड़ता, दूसरों या देखने वालों को ही मालूम होता है।

निज स्वारथ की मित्रता, मित्र अधम है सोय—स्वार्थवश मित्रता करने वाला व्यक्ति महानीच होता है। अर्थात् मित्र उसे ही समझना चाहिए जो बिना स्वार्थ के मित्रता करे।

निज हित अनहित पशु पहिचाना—पशु भी अपना भला-बुरा पहचानते हैं, अर्थात् संसार का प्रत्येक जीव अपना मित्र-शत्रु पहचानता है। जब कोई मूर्खतावश अपने शत्रु या दुष्ट व्यक्ति से मित्रता करता है तो उसे सावधान करने के लिए कहते हैं।

निटिया बरद छोटिया हारी, दूब कहै मोर काह उखारी—दूब (घास) कहती है कि छोटे बैल और छोटे हलवाहे मेरा क्या कर सकते हैं? अर्थात् कुछ नहीं। आशय यह है कि कठिन परिश्रम और गहरी जुताई से ही दूब जा सकती है। अत: इसके लिए मजबूत हलवाहे और बड़े बैलों की आवश्यकता होती है।

निठल्ला बनिया पत्थर तोड़े—बेकार बैठा हुआ बनिया पत्थर तोड़ता है। आशय यह है कि (क) बनिया काम न रहने पर भी कुछ-न-कुछ करता ही रहता है। (ख) बेकार होने के कारण कोई व्यर्थ का काम करे तब भी कहते हैं। तुलनीय: हरि० ठाल्ली डूम ठिकाणे ढूंड्ढे, ठाल्ली रांड काटड़े मूंड्डे; पंज० बैला डटा बट्टे पन्ने; (बैला डटा रूं तोले); बैलाकराड़ गूं तोले; ब्रज० निठल्लौ बानियो पत्थर तोरै।

निठल्ला बनिया सेर-बाट तोलता है—ऊपर देखिए। तुलनीय: बुंद० ठालो बनिया का करै, सेरई बांट तौले।

निडर की सदा जीत—जो किसी से डरता नहीं उसी की सदा विजय होती है। अर्थात् साहसी ही सदा उन्नति करते हैं और विजयश्री भी उन्ही का साथ देती है। तुलनीय: राज० नागाईरो लाल तुर्रो।

नित का पाहुना, अनभावना—रोजाना रिश्तेदार के यहाँ जाने से मान कम हो जाता है। तुलनीय: पंज० नित दा पाहुना अनभावना; फ़ा० मेहमान अजीज़स्त मगर ता सेह रोज; अर० जुर्री-ए-ग़िब्बन तरद्दुद हुब्बन।

नित्तै खेती दूसरे गाय, नाहीं देखै तेकर जाय; घर बैठल जो बनवै बात, देह में बस्त्र न पेट में भात—खेती की देखभाल प्रतिदिन तथा गाय आदि पशुओं की एक दिन छोड़कर देखभाल न करने से ये नष्ट हो जाते हैं। जो व्यक्ति काम-काज न करके घर मे बैठकर बातें करते हैं उनको न तो खाने के लिए अन्न मिलता है और न पहनने के लिए वस्त्र।

निद्रा निवार सार, आदर सार बैरी का—निद्रा का निवारण और शत्रु का आदर करना ही सार है, अर्थात् नींद को रोकना या न सोना तथा शत्रु का निरादर करना मूर्खता है। तुलनीय: राज० निद्रा सो निवार सार, आदर सार बैरियाँ।

निन्नानवे के फेर में पड़ गए—जब कोई व्यक्ति अपनी सुख-सुविधा को त्याग कर धन-संचय में जुट जाता है तो कहते हैं। इस लोकोक्ति के संबंध में विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न कहानियाँ प्रचलित हैं। कुछ प्रमुख कहानियाँ यहाँ दी जा रही हैं: (1) दो बहिनें एक ही नगर में ब्याही गई थीं। एक बहिन का विवाह धनी परिवार में हुआ था और दूसरी का निर्धन परिवार में। एक बार निर्धन बहिन को आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ा और स्थिति इतनी जटिल हो गई कि उसे अपनी धनवान बहिन के सम्मुख हाथ फैलाना पड़ा। धनी बहिन जानती थी कि मेरी बहिन निर्धन होने पर भी अपने परिवार के साथ निश्चित और सुखी जीवन बिताती है; जबकि मैं सब प्रकार का सुख होने पर भी रात-दिन चिंतित रहती हूँ। यह सब सोचकर उसने दो-चार रुपये के स्थान पर इकट्ठे निन्यानवे रुपये अपनी बहिन के हाथ में रख दिए। बहिन इतने रुपये देखकर बहुत प्रसन्न हुई और खुशी-खुशी घर आकर गिनने लगी। गिना तो वे निन्यानवे थे। अब जिस कार्य के लिए वह धन लेकर आई थी उसे तो भूल गई और यही चिंता उसे सताने लगी कि किस प्रकार यह सौ रुपये हो जायें। किसी प्रकार पेट काट कर उसने एक रुपाया बचाया और पूरे सौ हो गए और जब सौ हो गए तो उसे सवा सौ करने की चिंता लगी। इसी प्रकार डेढ़ सौ, दो सौ, तीन सौ तक बढ़ती ही गई और वह अपनी और परिवार की सुख-शांति धन-संचय के पीछे नष्ट कर बैठी। (2) किसी नगर में एक संतोषी ब्राह्मण और उसकी पत्नी रहते थे। ब्राह्मण की दैनिक आय केवल चार पैसे थी, किंतु दोनों मियाँ-बीवी उसी में गुजर करते थे और प्रसन्न मन भगवान का भजन किया करते थे। ब्राह्मण के बड़े भाई की पत्नी बहुत धनाढ्य थी, और वह इन दोनो के सुखी जीवन को देखकर जला करती थी। एक दिन धनाढ्य स्त्री ने उनकी झोंपड़ी में निन्नानवे रुपयों की एक थैली फेंक दी। ब्राह्मण ने रुपये गिने और गिनकर अपनी पत्नी से कहा कि क्या ही अच्छा होता यदि ये पूरे सौ होते, भगवान ने दिए भी तो एक कम सौ। अब दोनों पति-पत्नी इसी चक्कर में लगे

कि किस प्रकार सौ किए जायँ और उन्होंने चार की जगह तीन पैसों में गुज़ारा करना आरंभ कर दिया। दो माह में एक रुपया हुआ और उनके पास पूरे सौ गए, किन्तु सौ हो जाने पर उनकी तृष्णा और बढ़ी तथा वे दो पैसे में ही गुज़र करने लगे। धीरे-धीरे उनको खाना-पीना भी बुरा लगने लगा और धन इकट्ठा करने के लिए वे दिन-रात हाय-हाय करने लगे। इस प्रकार ब्राह्मण की भाभी की इच्छा पूरी हुई और उस सुखी दंपति के जीवन की सुख-शांति समाप्त हो गई। (3) एक नगर मे एक धनाढ्य सेठ की हवेली के सामने, सड़क के दूसरी ओर एक भिखारी की झोंपड़ी थी। भिखारी दिन-भर भीख माँगता और रात-भर अपने संगी-साथियों के साथ गांजा पीकर भजन गाता तथा ढोलक मजीरे आदि बजाता था। ढोल-मजीरों की आवाज़ तथा भजन गाने के कारण सेठ की नींद प्रतिदिन टूट जाती थी। अंत में परेशान होकर सेठ ने निन्यानवे रुपये की युक्ति अपनाई। उसने भिखारी की झोंपड़ी में निन्यानवे रुपये की एक थैली रखवा दी। भिखारी ने थैली के रुपये गिने और उसे सौ पूरे करने की चिंता हुई। अब वह रात देर तक भीख माँगता। उसने गांजा पीना भी छोड़ दिया इसलिए उसके मित्रों की संख्या कम हो गई। धीरे-धीरे उसने सबका साथ छोड़ दिया और रात-दिन रुपया जमा करने में जुट गया। इस तरह सेठ अब रात-भर सुख की नींद सोने लगा। तुलनीय: गढ़० निन्नाणवे का फेर माँ पड़िगे; अव० निन्नानबे के फेर मा परि गयें; राज० निन्नाणवेरो फेर, पंज० नड़ीनवें दे पिछे फस गए; ब्रज० निन्यानवै को फेर।

निन्नानबे घड़े दूध में एक घड़ा पानी—जब सब लोग किसी बात को एक ही ढंग से सोचें या सब एक ढंग से ही काम करें तो कहते हैं। इस लोकोक्ति पर एक रोचक कथा कही जाती है: एक बार अकबर बादशाह ने बीरबल से पूछा कि किस पेशे के करने वाले अधिक बुद्धिमान है। बीरबल ने उत्तर दिया, 'ग्वाले सबसे अधिक बुद्धिमान है।' अकबर ने प्रमाण मांगा। बीरबल ने उसी समय नगर के सौ ग्वालों को बुलवाया और उन्हें आज्ञा दी कि इस हौज़ को दूध से भरना है, इसलिए सब ग्वाले रात में एक एक घड़ा दूध लाकर इसको भर दें। ग्वाले 'जो हुक्म' कहकर घर आ गए। घर पहुँचकर प्रत्येक ने सोचा कि सौ घड़े दूध में एक घड़े पानी का क्या पता चलेगा? कौन देखेगा रात में दूध है कि पानी? रात हुई और प्रत्येक ग्वाला पानी से भरा घड़ा लाकर हौज़ में उँडेल गया। प्रातः अकबर और बीरबल ने हौज़ को पानी से भरा पाया। दूध का कहीं नाम भी नहीं था। सम्राट अकबर ग्वालों की चतुरता का लोहा मान गए और साथ ही बीरबल के ज्ञान का भी।

निन्ने पानी जे पिएँ, हर्रे भूज के खायँ; दूधन ब्यारू जे करें, तिन घर बैद न जायँ—प्रातः खाली पेट पानी पीने, हर्रा भूंज कर खाने तथा रात को सोते समय दूध पीने से मनुष्य सदा नीरोग एवं स्वस्थ रहता है।

निपूती का घर सूना, मूरख का हृदय सूना, दलिद्री का सब सुना—निःसंतान का घर सूना रहता है, मूर्ख का हृदय सूना रहता है और निर्धन का सब कुछ सूना रहता है। आशय यह है कि निर्धनता बहुत बुरी चीज़ है।

निपूती का मुँह देखते सात उपास—निःसंतान का मुँह देखने से सात टाइम भोजन नहीं मिलता। (ऐसा लोक विश्वास है)। आशय यह है कि निःसंतान दंपति को अच्छा नहीं समझा जाता।

निपूती धन को आग लगाए—निःसंतान स्त्री धन को आग लगाती है। जब कोई निःसंतान होने के कारण, यह सोचकर कि इस धन को रखने से कोई लाभ नहीं होगा धन का दुरुपयोग करता है तब उसके प्रति कहते है। तुलनीय: गढ० निमुत्ती फूफू भतीज्यूं कू दे जौ।

निपूते को धन प्यारा, कोढ़ी को जी प्यारा—जिस व्यक्ति के आगे-पीछे कोई नहीं होता उसे धन संचय करने की बहुत इच्छा रहती है और जिनको जीने में किसी रोग के कारण बहुत कष्ट उठाना पड़ता है उनकी जीने की इच्छा बहुत तीव्र होती है। ऐसे लोगों के प्रति यह लोकोक्ति कही जाती है जो किसी वस्तु से बिना कारण या बिना लाभ के केवल लोभवश चिपके रहना चाहते हैं। तुलनीय: गढ़० औता धन प्यारो, कोढ़ीज्यू प्यारो।

निबला के लिए दो असाढ़—दो आषाढ़ पड़ जाने पर ग़रीब आदमी को काफ़ी परेशानी उठानी पड़ती है। जब किसी पर एक विपत्ति के बाद दूसरी विपत्ति आती रहती है तब उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय: छत्तीस० दुब्बा बर दू असाढ़।

निबले की भौजाई, सारे गाँव की लुगाई—निर्बल या ग़रीब की भाभी (भौजाई) पूरे गाँव के लोगों की स्त्री (लुगाई) लगती है। आशय यह है कि निर्बल या ग़रीब को सभी परेशान करते है। तुलनीय: बुंद० गरीब की लुगाई, सब की भौजाई; ब्रज० मिसक की लुगाई, सबरे गाँव की भौजाई; भोज० निबरा क मेहरी गाँव भर क भौजी; अव० निबेर के मेहरिया जवरि भर कै भौजी।

निबुआ नून चाट के रह गए—कोई लाभ नहीं मिला।

जब किसी को कहीं से बड़े लाभ की आशा हो किन्तु उसे वहाँ कुछ भी न मिले तब व्यंग्य में कहते हैं।

निमसे की मेहरारू, गाँव-भर की भौजाई—दे० 'निबले की भौजाई······'। (निमसा = निर्बल)।

निम्बू निचोड़—(क) उस मनुष्य को कहते हैं जो किसी कार्य या वस्तु मे अपनी ओर से साधारण-सा भाग मिलाकर बराबर का हिस्सेदार बन बैठता हो। (ख) मुफ़्त-खोरों को भी कहते हैं। इस कहावत का संबंध लोग निम्न-लिखित कहानी से जोड़ते हैं: मुगलों के शासनकाल में लखनऊ के कुछ लोग काम-धंधा न करके मुफ़्त की रोटियाँ तोड़ा करते थे और इसके लिए उन्होने ढंग भी बहुत अच्छा सोचा था। वे लोग जेब में नीबू और छुरी रखकर नगर की सराय और मुसाफ़िरखानों में घूमा करते थे और जब किसी यात्री को भोजन करने की तैयारी करते देखते तो उससे बात-चीत आरम्भ कर देते तथा बातों-ही-बातों मे भोजन की चर्चा आरम्भ कर देते। इस चर्चा में घुमा-फिराकर नीबू को अवश्य लाया जाता कि नीबू के बिना तो भोजन बिल्कुल बेकार लगता है। इस पर यात्री कहता कि बात तो ठीक है, किन्तु इस परदेश मे मै नीबू ढूँढ़ने कहां जाऊँ? यह सुनकर महाशय तुरन्त जेब से नीबू और छुरी निकालकर हाज़िर कर देते। यात्री नीबू लेकर खिचड़ी आदि भोजन में निचोड़ लेता और उसको भी निमंत्रित करता। वे साहब तो इसी क्षण के लिए तैयार बैठे रहते थे और यह कहकर, 'खाना तो घर मे भी बना होगा, लेकिन आपका कहना कैसे टालूं?' जुट जाते तथा पेट भरकर ही उठते थे। इस प्रकार एक नीबू की बदौलत वे प्रतिदिन पेट-भर भोजन किया करते थे।

नींबू महँगे हो जाएँगे—जब खरीदने जाओगे तो नींबू महँगे हो जाएँगे। अर्थात् सब शेखी भूल जाओगे। जिस व्यक्ति ने किसी काम को कभी न किया हो और न ही उसके सम्बन्ध में कुछ जानता हो, किंतु उसी काम के संबंध में बढ़-चढ़कर बातें करे तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते है कि जब करना पड़ेगा तो 'नीबू महँगे हो जाएँगे।' अर्थात् तुम्हारी सारी शेखी काफ़ूर हो जाएगी। तुलनीय: राज० नींबूड़ा मूंघा हु ज्यासी।

नियम न धर्म, चमड़ी पाक—कोई नियम, धर्म नहीं है केवल शरीर से साफ़ है। आशय यह है कि व्यक्ति अच्छे कर्मों मे ही पवित्र एवं महान् बनता है, दिखावे या आडम्बर से नहीं। तुलनीय: मग० नेम न धरम चमरे पाख।

निरक्षर भट्टाचार्य हैं—ज़रा भी पढ़े-लिखे नही हैं। अनपढ़ लोगों के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय: गढ़० निरक्षर भट्टाचारज।

निरामयस्य किमायुर्वेदविद्या—रोगहीन व्यक्ति को आयुर्वेद निष्णात की क्या आवश्यकता है? अर्थात् कुछ भी नही। जब किसी व्यक्ति को किसी वस्तु की आवश्यकता नही होती तब वह उसके प्रति कहता है।

निरोग लड़का वैद्य को अंगूठा दिखावे—नीरोग बालक वैद्य को अंगूठा दिखाता है। आशय यह है कि (क) स्वस्थ व्यक्ति को वैद्य की आवश्यकता नहीं। (ख) जिसे जिस चीज़ की आवश्यकता नहीं, उसका विशेषज्ञ उसके लिए महत्त्वहीन है।

निर्गुण गावे धक्का पावे, बात बनावे पैसा पावे—निर्गुन (ज्ञान की बात) सुनाने से लोग अपमान करते है और इधर-उधर की बातें करने मे पैसा देते है। आशय यह है कि आज के संसार में साधुओं की इज्जत नही होती पर बात बनाने वाले धूर्तों की होती है।

निर्धन के धन गिरधारी—ग़रीब का धन परमेश्वर होता है, क्योंकि उसके अतिरिक्त उसकी सहायता और कोई नही करता।

निर्धन के धन राम—ग़रीबों के लिए भगवान ही धन हैं। तुलनीय: राज० निर्धनरा धन राम; मेवा० गरीब का बेलू राम; पंज० गरीब दा बैहा राम।

निर्बल की बीवी, गाँव भर की भाभी—दे० 'निबले की भौजाई······'। तुलनीय: ब्रज० निबल की बहू, सब गाम की भाभी।

निर्बल के बल राम—जो निर्बल है उनका बल भगवान हैं। अर्थात् जिसकी कोई सहायता नही करता उसकी सहा-यता ईश्वर करते हैं। तुलनीय: राज० नहिं बेलीरो राम बेली; निरबलरा बल राम; मरा० दुर्बलांचे बल राम आहे।

निर्बल को जबर, जबर को सबर—कमजोर को बल-वान मारता है और बलवान को उससे बलवान मारता है। आशय यह है कि एक से बढ़कर एक पड़े है। जो किसी को तंग करता है उसे भी तंग करने वाला कोई मिल जाता है।

निर्वंश अच्छा बहुवंश नहीं—बुरी संतान होने से निःसंतान रहना ही अच्छा है। नालायक़ बच्चों से ऊबकर ऐसा कहा जाता है। तुलनीय: भोज० निरबंस नीक बहुबंस नाँ नीक।

निष्फल वृक्ष पर कोई ढेला नहीं चलाता—(क) बिना

लोभ या स्वार्थ के कोई किसी कार्य को नहीं करता या किसी के पास नहीं जाता। (ख) जिनमें कुछ आकर्षण या रस होता है उन्ही को लोग सताते हैं। दूसरे शब्दों में अपने स्वार्थ-साधन के लिए ही लोग दूसरों को कष्ट देते हैं। प्र० फर बिनु बिरिख कोई ढेल न बाहा। –जायसी

निस-दिन खाना, काम को असकताना – रात-दिन खाते हैं और काम करने के समय आलस्य करते हैं। जो खाय बहुत और काम बिल्कुल न करे या न करना चाहे, उसके लिए कहते हैं।

निहंग लाड़ला सदा सुखी – (क) स्वतंत्र व्यक्ति सदा सुखी रहता है। स्वाधीनता की प्रशंसा पर कहा गया है। (ख) बहुत ही निर्धन व्यक्ति के प्रति भी कहते है क्योंकि उसके पास कुछ होता ही नही जिसकी उसे चिंता रहे।

निहचै जानो सिंहवल स्यार न कबहूँ खाय- यह निश्चय है कि सिंह का भाग सियार कभी नही खा सकता। आशय यह है कि बलवान की वस्तु पर निर्बल कभी अधिकार नही जमा सकता।

निहपछ राजा मन हो हाथ, साधु परोसी नीमन साथ; हुक्मी पूत धिया सतवार, तिरिया भाई रखे विचार; कहै घाघ हम करत विचार, बड़े भाग से दे करतार—घाघ कहते हैं कि निष्पक्ष राजा का होना, हृदय का वश मे होना, पड़ोसी का सज्जन होना, मित्रों का विश्वासी होना, पुत्र का आज्ञाकारी होना, पुत्री का चरित्रवान होना तथा भाई और पत्नी का विचारवान् होना बड़े भाग्य से होता है। (नहिपछ=निष्पक्ष; नीमन=पुष्ट, विश्वस्त; धिया=पुत्री, कन्या; सतबार=सच्चरित्रा; तिरिया=पत्नी; करतार=ईश्वर)।

निहाला बनिया भर-भर तोले –बनिया प्रसन्न होने पर ही पूरा तौलता है, अर्थात् बनिया कभी-कभी ही पूरा तोलता है नहीं तो प्रायः कम ही तौलता है।

नींद के आगे खहर क्या, सूल के आगे बासी क्या?—नींद आने पर बिस्तर (खहर) का ध्यान नहीं रहता और भूख लगने पर बासी नही देखा जाता। आशय यह है कि नींद आने पर जैसा भी बिस्तर मिलता है उसी पर लोग सो जाते हैं और भूख लगने पर जैसा भोजन मिलता है उसे खा लेते हैं। तुलनीय : भोज० नीद के आगे खरहर का? भूख के आगे बासी का?

नींद न देखे टूटी खाट, इश्क न देखे जात-कुजात — नींद आने पर अच्छी-बुरी चारपाई नही देखी जाती और प्रेम में जाति-कुजाति का ध्यान नहीं रखा जाता। आशय यह है कि नींद आने पर व्यक्ति कहीं भी (अच्छे-बुरे स्थान पर) सो जाता है और प्रेम (इश्क़) में प्रेमी-प्रेमिका परस्पर जाति का भेद-भाव नही रखते।

नींद फाँसी के तख्ते पर भी आ जाती है –नींद उसको भी आ जाती है जिसे यह पता होता है कि उसकी मृत्यु कुछ क्षण बाद ही उसे सदा के लिए संसार से दूर ले जाएगी। तात्पर्य यह है कि नींद बड़ी से बड़ी चिंता में भी आ जाती है। तुलनीय : पंज० नींदर फांसी दे तख्ते उत्ते वी आ जांदी है।

नींद बिस्तर नहीं देखती, भूख पकवान नहीं देखती — नींद आने पर मनुष्य स्थान नही देखता, वह भूमि पर ही सो जाता है तथा भूख लगने पर मनुष्य खाद्य-अखाद्य नही देखता, उसके सामने जो कुछ भी भला-बुरा आ जाता है उसी से पेट भर लेता है।

नीक-नीक मेरे भाग, एक-एक मछलिया की दो-दो मछलियाँ –मेरा भाग्य इतना अच्छा (नीक) है कि मुझे एक की जगह दो मछलियाँ प्राप्त हो गई। जब किसी को एक की जगह दो मिले, अर्थात् आशा से अधिक मिले तब खुशी में कहता है।

नीक लगे ससुराल की गारी -ससुराल की गाली भी प्यारी लगती है। आशय यह है कि चूंकि पत्नी से लगाव होता है, वह पति को प्रिय होती है इसलिए उसके घरवालों अर्थात् ससुराल वालों की गाली (गारी) भी प्यारी लगती है। अन्य किसी जगह कोई गाली नही सुनना चाहता। तुलनीय : भोज० नीक लागे ससुरार क गारी; अव० नीक लागै ससुरार कै गारी।

नीको पै फीको लगे, बिन अवसर की बात, जैसे बरनत युद्ध में रस-शृंगार न सुहात— बिना अवसर पर कही गई अच्छी बात भी बुरी लगती है ठीक उसी प्रकार जबकि वर्णन युद्ध का हो रहा हो और वहाँ शृंगार रस की बात अच्छी नहीं लगती।

नीके को सब लागत नीको—(क) सुन्दर व्यक्ति के शरीर पर सभी चीज़ें अच्छी लगती हैं। (ख) अच्छे को सब अच्छे दिखाई देते हैं।

नीच को भाभी कहा तो चौके चढ़ने लगी—नीच जाति की स्त्री को भाभी कहकर संबोधित किया तो वह चौके में आने लगी। जब कोई निम्न कोटि का आदमी दिए हुए सम्मान का दुरुपयोग करता है तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : माल० बलाण ने भाभी कई तो चोके चढ़वा लागी।

नीच जात एक न एक उत्पात—नीच कुछ-न-कुछ उपद्रव करते ही रहते हैं। नीचों की नीचता पर कहा जाता है। तुलनीय : गढ़० होंची जात करो उत्पात।

नीच जात छछूंदरी नाक धरे पछिताय—जिस प्रकार छछूदर को छूकर हाथ सूंघने से पछताना पड़ता है उसी प्रकार नीच जाति को मुँह लगाने से पछताना पड़ता है। तात्पर्य यह है कि नीच व्यक्ति से संबंध या घनिष्ठता करने से हानि और अपमान के अतिरिक्त और कुछ नहीं मिलता। तुलनीय : गढ़० हिलकायो गंगाड़ी ऐ लग्यो पेंगाड़ी।

नीच न छोड़ें निचाई, नीम न छोड़े तिताई—नीच नीचता को और नीम कड़वाहट (तिताई) को नहीं छोड़ता आशय यह है कि किसी का स्वभाव नहीं बदलता। (क) जब कोई नीच मनुष्य उपकार का बदला अपकार से देता है तो कहते हैं। (ख) बार-बार मना करने पर भी जब कोई अपने बुरे कर्मों से बाज नही आता तब भी कहते हैं। तुलनीय : अव० नीच न छोड़े निचाई, नीम न छोड़ै तिताई।

नीचन से व्यवहार बिसाहा, हँसि के मांगत दम्मा; आलस नींद निगोड़ी घेरे, घग्घा तीनि निकम्मा—घाघ कहते है कि नीच के साथ संबंध या लेन-देन करने वाला, हँस कर दाम अर्थात् अपना धन माँगने वाला तथा सदा आलस्य से सोने वाला, ये तीनों मूर्ख होते हैं।

नीच निचाई नहिं तजै सज्जनहू के संग—नीचे देखिए।

नीच निचाई ना तजे जो पावे सतसंग—अच्छी संगति पाकर भी नीच नीचता नहीं छोड़ता।

नीचे ओद ऊपर बदराई, घाघ कहैं गेरुई अवधाई—खेत में नमी और आकाश में बादल होने पर घाघ कहते है कि फ़सल में गेरुई नामक रोग दौड़ता है। आशय यह है कि उपरोक्त दशा होने पर रबी की फ़सल में 'गेरुई' नामक रोग लगने की संभावना रहती है।

नीचे की साँस नीचे, ऊपर की साँस ऊपर—बहुत दुःख की बात सुनने पर या अचानक किसी भयंकर घटना को देखकर स्तब्ध हो जाने पर कहते हैं। तुलनीय : अव० नीचे कै साँस नीचेन और उपरा कै साँस उपरै रह गय; मरा० खालचा श्वास खालीं नि वरचा वर; पंज० थले दा सा थले उत्ते दा सा उत्ते; ब्रज० नीचे कौ दम नीचे, ऊपर कौ दम ऊपर।

नीचे पड़ा रोए नहीं, ऊपर पड़ा रो-रो दे—नीचे पड़ा अर्थात् कष्ट पाने वाला तो चुपचाप सह रहा है और जो ऊपर चढ़ा है वह रो रहा है। जब पीड़ित कुछ न कहे और पीड़ित करने वाला अपने को बहुत कष्ट में बताए तो व्यंग्य से कहते हैं।

नीचे रखे तो कौआ चील खाय, ऊपर रखें तो शार्दूल ले जाय—जब कोई भी रास्ता न हो या किसी भी हालत में अपनी भलाई न हो तो कहते हैं। या जब हर ओर मुसीबत हो तब कहते हैं।

नीचे से जड़ काटे ऊपर से पानी दे—नीचे से जड़ काटते हैं और ऊपर से पानी देते हैं। दिखावे के लिए मित्र बनने वाले किन्तु गुप्त रूप से नुक़सान पहुँचाने वाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : अव० नीचे से जड़ काटैं तो ऊपर से पानी देयँ।

नीति न तजिय राजपद पाए—राजपद पाने पर भी नीति का त्याग नहीं करना चाहिए। अर्थात् सशक्त होने पर भी अनुचित कार्य नहीं करना चाहिए।

नींबू जितना गारो उतना तीता होगा—आशय यह है कि सज्जन व्यक्ति भी अधिक परेशान किए जाने पर बुरे स्वभाव के हो जाते हैं। तुलनीय : मग० लेमू के जितना गारऽ उतने तित्ता हो तो; भोज० नीब्रू के जेतने गरब्र ओतने तीत होई या नेबुआ के जेतने गरबऽ ओतने तीत होई।

नीम का कीड़ा नीम में ही खुश रहता है—आशय यह है कि जो जिस स्वभाव का होता है उसे उसी स्वभाव के लोगों के साथ रहने में आनन्द आता है।

नीम का कीड़ा नीम में ही रहता है—जो जिसका स्थान होता है वह वहीं रहता है, दूसरे स्थान पर नहीं। आशय यह है कि बुरी प्रकृति के व्यक्ति बुरे स्थान में और भली प्रकृति के व्यक्ति भले स्थानों में ही रहना पसन्द करते हैं।

नीम का फल निमकोड़ी—(क) दुष्ट का पुत्र भी दुष्ट ही होता है। (ख) बुरे काम का फल भी बुरा ही होता है।

नीम के कीड़े को नीम ही अच्छा लगता है—बुरी प्रकृति वालों को बुरी चीज़ें ही अच्छी लगती हैं। आशय यह है कि जिसकी जैसी अच्छी-बुरी प्रकृति होती है उसे उसी प्रकार की वस्तुएँ अच्छी लगती हैं।

नीम गुण बत्तीस, हर्र गुण छत्तीस—नीम में रोगों को दूर करने के बत्तीस गुण पाए जाते हैं, किंतु हर्र में छत्तीस गुण अर्थात् उससे भी अधिक। आशय यह है कि हर्र नीम से अधिक गुणकारी होती है।

नीम जैसी छाया—(क) नीम का पेड़ छोटा होता है, इसलिए उसकी छाया शीघ्र ही समाप्त हो जाती है। थोड़े समय तक सुख या सम्पत्ति आदि पाने पर कहते हैं। (ख)

नीम की छाया गुणकारी होती है, उसमें रोगों को दूर करने की शक्ति होती है। बिना कुछ व्यय किए लाभ देने वाली वस्तु या व्यक्ति के प्रति भी कहते है।

नीम न मीठा होय खाओ गुड़-घी से — नीम का स्वाद मीठा नही होता चाहे उसे गुड़ जैसी मीठी और घी जैसी स्वादिष्ट वस्तु से क्यो न खाया जाय। आशय यह है कि प्रकृति-प्रदत्त गुण या दुर्गुण अथवा जन्मजात स्वभाव प्रयत्न करने पर भी नही छूटता। तुलनीय : मल० काक्क कुळिचवाल् कोक्काकुकयिल्ल; अव० नीम न मीठा होय केतनौ सीचौ घिउ गुड मे; राज० नीम न मीठा होय सीचो गुड घी सूँ; मेवा० गुड घी सूँ सींचे तोई नीम न मीठा होय; माल० पड्या लखण मर्‌या मटसी।

नीम न मीठा होय चाहे सींचे गुड़-घी से — ऊपर देखिए।

नीम न मीठा होय सींचे गुड़-घी से— देखिए 'नीम न मीठा होय खाओ ········'।

नीम मुल्ला खतरा-ए-ईमान यदि पंडित कम ज्ञानी हो तो वह धर्म के लिए खतरा है। अर्थात् कम ज्ञान खतरे की चीज़ है। नीचे भी देखिए।

नीम हकीम खतरा-ए-जान — पंडित चिकित्सक (हकीम) के कारण रोगी के प्राण संकट मे पड़ सकते हैं। अपूर्ण ज्ञान चाहे किसी भी विषय का हो, बहुत हानिकर होता है। जब कोई व्यक्ति बिना पूरा ज्ञान प्राप्त किए हुए किसी काम मे हाथ डालता है और वह बिगड़ जाता है तब कहते है। तुलनीय : अव० नीम हकीम खतरे जानौ; सं अल्पविद्या भयकरी; राज० नीम हकीम खतरे जान, नीम मुल्ला खतरे ईमान; कश्म० नीम हकीम गव खतरे जान; मल० अर वैद्यन आळे कोल्लुम्; अं० A little knowledge is a dangerous thing.

नीयत की बरकत है - अर्थात् ईमानदारी से धन बढता है। जब बेईमानी करने से किसी की हानि हो तब कहते है। तुलनीय : राज० नीयत जिमी बरकत; अव० जस नियत तस बरकत; हरि० नीत गैलां बरकत सै; पंज० नीत दी बरकत है।

नीयत की मुराद —जैसी नीयत होती है वैसा ही फल मिलता है। तात्पर्य यह है कि जो दूसरों का भला चाहता है, उसका भला और जो दूसरों का बुरा चाहता है उसका बुरा होता है।

नीयत में तांबा है—अर्थात् नीयत में बुराई है। जिस व्यक्ति की नीयत साफ नहीं होती उसके प्रति कहते हैं। (सोने में ताँबा मिलाने से सोना खोटा हो जाता है)। तुलनीय : राज० नीयत ताँबो है।

नीयत साबित मंजिल आसान —विचार (नीयत) साफ होने पर दूरी आसानी से तय हो जाती है। जो ईमानदारी से काम करता है उसके सभी काम आसानी से हो जाते हैं। तुलनीय : अव० निअत सबूत रहै तौ रस्ता सहज है।

नीयत से बरक्कत होती है—जिसके विचार अच्छे होते हैं वही उन्नति करता है। तुलनीय : ब्रज० नीयति ते बरक्कत होय।

नीर निमाने, अन्न कुठारे पानी गहराई का तथा अन्न कुठार में रखा गया अच्छा होता है। (कुठार - कुठिला जो मिट्टी का बना होता है और जिसमें अनाज रखा जाता है)। तुलनीय : ब्रज० नीम निमाने, धरम ठिकाने।

नील का टीका और कोढ़ का दाग—ये कभी नहीं छूटते। जब किसी के चरित्र में ऐसा कलंक लग जाय कि मिटाए न मिटे तब कहा जाता है। तुलनीय : अव० नील का टीका औ कोढ का दाग; पंज० नील दा टिक्का अते कोड दा दाग।

नील टाँस जिस सिर मँड़रावे, मुकुटपती सूँ लाभा पावे — लोगों का ऐसा विश्वास है कि नील टाँस (नीलकंठ एक पक्षी विशेष) जिसके सिर पर से उड़ जाता है उसे राजा से (राज्य की ओर से) बहुत लाभ होता है।

नीला कंधा बैंगन खुरा, कबहूँ न निकले कंता बुरा - हे स्वामी, जिस बैल का कंधा नीले रंग का हो और खुर बैंगनी रंग का हो वह कभी बुरा नही निकलता। अर्थात् इस प्रकार के बैल मजबूत और काम में अच्छे होते हैं।

नीव परी सरवर नहीं, मगरा डेरा कीन्ह -तालाब की नीव नही पडी कि मगर ने अपना डेरा जमा लिया। किसी काम के प्रारम्भ होने से पूर्व ही जब उससे लाभ लेने वाले आ जायें तब कहते हैं।

नेंनुवे के नाते परवल लगे देवर— बहुत दूर का नाता जोड़ने पर ऐसा कहते हैं। संस्कृत में इसे 'बादरायण सम्बन्ध' कहते हैं।

नेक अंदर बद, और बद अंदर नेक—भले लोगों के बुरे और बुरे लोगों के भले पैदा होते हैं। (क) जब सज्जन व्यक्ति की संतानें बुरी और दुष्ट व्यक्ति की संतानें अच्छी हों तब कहते हैं। (ख) अच्छे लोगों में भी कुछ बुराई और

बुरे लोगों में भी कुछ अच्छाई अवश्य होती है।

नेक की बनी देख सब जलें—सज्जन व्यक्ति की उन्नति और आदर को देखकर लोग जलते हैं। जब कोई किसी की उन्नति और सम्मान को देखकर ईर्ष्या करता है तब कहते हैं। तुलनीय : भीली—हाऊ हरखू देखाये तो हारां नी आँख फूटे।

नेकी और पूछ-पूछ—भलाई करने में पूछना क्या? अर्थात् पूछना नहीं चाहिए। जब कोई किसी से पूछे कि मैं आपका अमुक काम कर दूं तब कहते हैं। तुलनीय : अव० नेकी औ पूछ-पूछ; मरा० कोणाचें कल्याण करायचें तर त्यांत काय विचारायचें; भोज० नेकी अ पूछ-पूछ।

नेकी कर कुएँ में डाल—नीचे देखिए।

नेकी कर दरिया में डाल—किसी का उपकार करके उसे कहना नहीं चाहिए। जो लोग अपने किए हुए उपकार का ज़िक्र बार-बार करते हैं उनके शिक्षार्थ यह कहावत है। तुलनीय : अव० नेकी कर कुआँ मा डार; मरा० सत्कर्म करा नि समुद्रांत टाका; पंज० पला कर खू बिच सुट; ब्रज० नेकी करि दरिया में डारि।

नेकी करो खुदा से पाओ—उपकारी को ईश्वर फल देता है। ऐसा साधुओं का कहना है। तुलनीय : पंज० पला करो रब तो लवो।

नेकी का फल बदी—भलाई के बदले बुराई ही मिलती है। जब कोई किसी की भलाई करे और वह उसके साथ बुराई करे तब कहते हैं। तुलनीय : भोज० नेकी क फल बदी; अव० नेकी का बदला बदी; बुंद० नेकी कौ फल बदी; बंग० भाल करते मंद हय; ब्रज० नेकी कौ फल बदी।

नेकी का बदला नेक है, बद से बदी की बात ले—किसी की भलाई करने से अपनी भी भलाई होती है और बुराई करने से बुराई। अर्थात् भलाई के बदले भलाई मिलती है और बुराई के बदले बुराई। तुलनीय : पंज० पले दा बदला पला हुंदा है।

नेकी की जड़ पाताल में/सदा हरी—अर्थात् बहुत गहरी है। आशय यह है कि नेक व्यक्ति को निःसंदेह उसका फल मिलता है।

नेकी नेक राह बदी एक राह—दे० 'नेकी का बदला···'।

नेकी नौ कोस, बदी सौ कोस—भलाई नौ कोस तक फैलती है तो बुराई सौ कोस तक। आशय यह है कि अच्छाई की अपेक्षा बुराई का अधिक प्रचार होता है। तुलनीय : कौर० नेकी नौ कोस बदी सौ कोस; गढ़० नैकी नौ कोस बदी सौ कोस।

नेकी-बदी रह जाती है—आदमी के मरने के बाद उसकी भलाई और बुराई अर्थात् यश-अपयश ही संसार में रह जाता है। तुलनीय : अव० नेकी बदी रहि जात है।

नेकी-बदी संग जाती है—मनुष्य चाहे अच्छा कर्म करे या बुरा उसके साथ वे ही जाते हैं। आशय यह है कि हमेशा अच्छे कर्म करने चाहिए। तुलनीय : भोज० नेकिये बदी संग जाला और केहू नां; एक एव सुहृद्धर्मो निधनेऽप्यनुयाति यः, शरीरेण समं नाशं सर्वमंन्यत्तु गच्छति; पंज० पला कीते दा नाल जांदा है; ब्रज० नेकी बदी संग जायँ।

नेकी बरबाद गुनाह लाजिम—नेकी का फल बुरा होता है। प्राय. लोग नेकी के बदले बुराई से बदला चुकाते हैं। इसी से ऐसा कहा जाता है।

नेकों को शूल और बदों को फूल—दे० 'नेकी का फल बदी'।

नेबुआ नून चाटि के रह गए—'दे० 'निबू नून चाट···'।

नेमी पांडे कमर में जटा—व्यर्थ का ढोंग करने वाले के लिए कहते हैं।

नेवतल ब्राह्मण शत्रु बराबर—ब्राह्मण का नेवता देना घर में दुश्मन बुलाने के बराबर है। ब्राह्मण के लालची स्वभाव पर व्यग्य किया गया है।

नेस्ती में बरखुरदारी—ग़रीबी में बाल-बच्चों का पालन-पोषण करना माँ-बाप के लिए कठिन हो जाता है।

नेह घटत नित पर घर जाए—रोजाना किसी के घर जाने से प्रेम घट जाता है। आशय यह है कि किसी के यहाँ बार-बार जाना अच्छा नहीं होता।

नेह भरो दीपक तऊ गुन बिन जोति न होत—दीपक में कितना भी तेल क्यों न हो, बिना बत्ती के प्रकाश नहीं हो सकता। अर्थात् अतुल धनराशि के होते हुए भी निर्गुणी मनुष्य की प्रतिष्ठा नहीं होती या कोई उसका सम्मान नहीं करता।

नैॠत भूई बूंद न पड़े, राजा परजा भूखों मरें—नैॠत्य कोण की हवा चलने पर पानी नहीं बरसता जिससे राजा और प्रजा दोनों भूखों मरते हैं। आशय यह है कि नैॠत्य कोण से वायु चलने पर वर्षा नहीं होती जिससे फ़सल सूख जाती है और जीवन कष्टमय हो जाता है।

नैहर ऐसे क्यों जाय कि खुद लौटना पड़े- इस प्रकार नैहर क्यों जायें कि स्वतः लौटना पड़े अर्थात् अपमानजनक

कार्य नहीं करना चाहिए। तुलनीय : मैथ० एहन नैहर जायब किय अपनेसं आयब किय; भोज० एइसन नइहर काहें जाईं कि अपने लउट आवे के परे।

नो खल्वन्धा : सहस्रमपि पान्थाः पन्थानम् विदन्ति—हज़ार अंधे भी मार्ग को (जिस पर चलना है) नहीं जान सकते। आशय यह है कि मूर्ख व्यक्ति बुद्धिमानी के कार्य को सम्पन्न नहीं कर सकते।

नोखे की नाउन बाँस की नहरनी—दे० 'नई नाइन बाँस की···'।

नोखे के गुंडा खलीसा में गाजर—नए गुंडे और जेब में गाजर भरे फिर रहे हैं। जब कोई व्यक्ति मूर्खतापूर्ण दिखावा करे या किसी तुच्छ वस्तु का प्रदर्शन अपनी बड़ाई कराने के लिए करे तो व्यंग्य से कहते हैं।

नोनिया की बेटी को न मैके सुख न ससुरे में—नोनिया प्रधानतः मिट्टी खोदने का काम करने वाली एक जाति है। इस जाति की स्त्रियाँ भी परिश्रम करती है। उसी पर कहा जाता है कि उन्हें पीहर या ससुराल कहीं भी सुख नहीं मिलता। जिस व्यक्ति को प्रत्येक स्थान पर परिश्रम करना पड़े या कष्ट सहना पड़े तो उसके प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : मैथ० नुनिया के बेटी का न नइहरे सुख न ससुरे।

नोनिया क्या जाने दुनिया का हाल—नोनिया को दुनिया का कुछ ज्ञान नहीं होता। आशय यह है कि सदा सीमित क्षेत्र में रहने वाला व्यक्ति ससार की बातों से अपरिचित रहता है। तुलनीय : भोज० नुनिया ता जाने दुनिया क हाल।

नौआ के घर चोरी भेल तीन चोंगा बार गेल—नाऊ के घर चोरी हुई और उसका तीन चोंगा बाल चोरी गया। अर्थात् निर्धन व्यक्ति के घर चोरी करने मे चोरों को कोई लाभ नहीं होता।

नौआ देखले काँखे बार—दे० 'नाई को देख हजामत···'।

नौ कनौजिए तेरह चूल्हा—कान्यकुब्ज (कनौजिए) ब्राह्मण छुआछूत का भेद-भाव अधिक रखते हैं। इसीलिए उनके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० आठ पुरबिया, नव चूल्हा; ब्रज० नौ कनौजिया तेरह चूल्हे।

नौकर आगे चाकर, चाकर आगे कूकर—नौकर का नौकर कुत्ते के समान माना जाता है। अर्थात् नौकर का नौकर होना बहुत बुरा समझा जाता है। तुलनीय : माल० नौकर आगे चाकर ने चाकर आगे कूकर।

नौकर का चाकर, मड़ई का ओसारा—किसी नौकर का चाकर रखना वैसे ही हास्यास्पद है जैसे किसी झोपड़ी के आगे बरामदा बनाना। जब कोई नौकर होकर भी खुद नौकर रखता है तब कहते हैं।

नौकर बन कमाओ, रानी बन खाओ—आशय यह है कि धन कमाने में पूरा परिश्रम करना चाहिए और खाने-पीने में कोई कोर-कसर नहीं रखनी चाहिए। तुलनीय : गढ़० किसाण ह्वैक कमोणो, राणी ह्वैक खाणो; पंज० लागण बन कमा ते शाह बण खा।

नौकर मरा, घड़ा फूटा—नौकर का मरना घड़े का फूटना बराबर है। जिस प्रकार घड़ा फूटने पर दूसरा घड़ा ख़रीद लेते हैं उसी प्रकार नौकर के मरने पर दूसरा नौकर रख लेते हैं। आशय यह है कि ग़रीबों के जीवन का कोई मूल्य नहीं होता। तुलनीय : गढ़० भुड़त्या मर्‌या तुमड़ा फूट्या; पंज० नौ लागण मरया कड़ा पज्या।

नौकर मालिक के हैं बैंगन के नहीं—हाँ में हाँ मिलाने वालों अर्थात् खुशामद करने वालों के प्रति कहते है। इस लोकोक्ति का संबंध एक रोचक कथा से है : एक बार एक राजा साहब भोजन कर रहे थे। बैंगन की सब्ज़ी अच्छी नहीं बनी थी इस पर उन्होंने नौकर से कहा, 'बैंगन बहुत बेकार सब्ज़ी है, पता नहीं लोग इसे बोते क्यों हैं ?' नौकर ने तुरन्त उत्तर दिया, 'महाराज ठीक कहते हैं। इसी से इसका नाम बैंगन अर्थात् बेगुन पड़ा है।' कुछ दिन पश्चात् भोजन में फिर बैंगन बने, किंतु इस बार सब्ज़ी स्वादिष्ट थी। राजा साहब ने फिर उसी नौकर से कहा, 'यह बैंगन भी खूब सब्ज़ी बनाई है। इतनी अच्छी सब्ज़ी तो बड़े पैमाने पर बोनी चाहिए।' नौकर ने इस बार उत्तर दिया, 'सरकार आप ठीक कहते हैं। बैंगन तो सब्ज़ियों का राजा है, तभी तो इसके सर पर मुकुट रखा गया है।' इस पर राजा ने पूछा, 'कुछ दिन पहले तो तुम इसकी बुराई कर रहे थे इसे बेगुन बता रहे थे।' इस पर नौकर ने उत्तर दिया, 'सरकार मैं नौकर तो आपका हूँ, आपको प्रसन्न रखना ही मेरा कर्त्तव्य है। बैंगन से मेरा क्या सम्बन्ध ?'

नौकर लाट कपूर के होंठ मलें और हक़ लें—लाट कपूर के नौकर जबरदस्ती हक़ लेते हैं। ढीठ नौकर पर कहते हैं। अकबर के समय में लाट कपूर नामक एक बड़े गवैये थे। जब वे किसी के यहाँ मुजरा सुनाने जाते और वह उन्हें इनाम देता तथा आदर से यह कह देता कि यह आपके नौकरों के वास्ते है तो उनके नौकर ढिठाई करके यह रकम उनसे ले लेते कि यह हम लोगों को मिली है।

नौकर से काम बने तो मालिक के पास क्यों जायँ ?—

जब सेवक से ही काम निकल जाय तो स्वामी के पास जाने की क्या आवश्यकता है ? अर्थात् कुछ भी नहीं। जब किसी मामूली साधन से काम हो जाए तो बड़े साधन का प्रयोग नहीं करना चाहिए। तुलनीय : माल० गाम बताई तीं काम बणे तो पटेल रे पास नी जाणों।

नौकर है तो नाचा कर, ना नाचे तो ना चाकर—नौकर हो तो जल्दी-जल्दी काम करो। यदि जल्दी-जल्दी काम नहीं कर सकते तो तुम्हारी आवश्यकता नहीं। आशय यह है कि नौकरी में कष्ट उठाना पड़ता है, जो कष्ट नहीं उठा सकता वह नौकरी नहीं कर सकता।

नौकरी अरंड की जड़ है—जिस प्रकार अरंड की जड़ बहुत कमज़ोर होती है और ज़रा से झोंके से उखड़ जाती है उसी प्रकार नौकरी भी साधारण-सी बात पर समाप्त हो जाती है।

नौकरी करना तलवार की धार पर चलना है—नौकरी करना अत्यधिक कठिन कार्य है। जो व्यक्ति नियमित, परिश्रमी, खुशामदी, हँसमुख और अनुशासन-प्रिय होने के साथ-साथ स्वामी की सीधी बातें और अपमान भी सहन कर सकता हो वही नौकरी कर सकता है। स्वाभिमानी व्यक्ति नौकरी में सफल नहीं हो पाता। तुलनीय : भीली—नौकरी तलवारे नी धार।

नौकरी की आमदनी ताड़ की छाँह—नौकरी की आय ताड़ के पेड़ की छाया की भाँति क्षणिक होती है। आशय यह है कि नौकरी वाले का पैसा बहुत शीघ्र समाप्त हो जाता है। तुलनीय : मैथ०, भोज० नोकरी क आमद तरकुल क छाँह; मैथ० नोकरी ताड़ के छाँह छीक।

नौकरी की जड़ आसमान में—आकाश में कुछ नहीं है इसलिए नौकरी की जड़ भी कहीं नहीं है। आशय यह है कि नौकरी को कभी स्थायी नहीं समझना चाहिए। तुलनीय : पंज० नौकरी दी जड़ असमान बिच।

नौकरी की जड़ ज़बान पर—ऊपर देखिए। तुलनीय : अव० नौकरी कै जड़ जबान पर।

नौकरी की जड़ धरती से सवा हाथ ऊपर—नौकरी की जड़ धरती से सवा हाथ ऊपर रहती है जबकि अन्य वृक्षों की जड़ें धरती के नीचे रहती हैं। आशय यह है कि नौकरी का कुछ भी ठिकाना नहीं होता, वह कभी भी समाप्त हो सकती है। तुलनीय : हरि० नौकरी की जड़ धरती तै सवा हाथ ऊपर; पंज० नौकरी दी जड़ तरती तों सवा हथ उते।

नौकरी की तो नख़रा कैसा ?—जब नौकरी कर ही ली तो नखरा कैसा, मालिक जो भी काम कहेगा करना ही पड़ेगा। अर्थात् नौकर को मालिक का प्रत्येक कार्य करना पड़ता है चाहे वह अच्छा हो या बुरा। तुलनीय : राज० नौकरी रे नकारे रो बेर है; गढ़० चाकरी मां नाकरि कख छ।

नौकरी ख़ालाजी का घर नहीं—नौकरी सरल काम नहीं इसमें नियमितता, समयपालन, अनुशासन आदि का पालन करना अनिवार्य होता है।

नौकरी ताड़ की छाँह है—दे० 'नौकरी अरंड की···'।

नौकरी, नौ करी और एक न की—नौकरी का अर्थ है नौ+करी अर्थात् नौ बातें या काम करने हैं और यदि इनमें से एक भी नहीं हुआ तो नौकरी समाप्त हो जाती है। आशय यह है कि नौकर चाहे दिन-भर काम करता रहे पर उससे एक काम छूट जाय तो उसे फटकार सुननी पड़ती है। तुलनीय : राज० नौकरी, नौ करी'र एक नहीं करी।

नौकरी बड़ी कीमिया है—नौकरी रसायन शास्त्र से बढ़कर है क्योंकि इसमें सोते-जागते, उठते-बैठते वेतन चढ़ता रहता है। (कीमिया=सोना बनाने की विद्या)।

नौकरी बर तरफ़ रोज़ी हर तरफ़—यदि किसी व्यक्ति की नौकरी छूट जाती है तो उसे निराश नहीं होना चाहिए, एक द्वार बंद होता है तो हजार खुल जाते हैं।

नौकरी में नख़रा कैसा ?—दे० 'नौकरी की तो नखरा कैसा ?'

नौकरी रोटी का लट—दे० 'नौकरी की जड़ धरती से···'।

नौकरी सदा बुरी—दूसरों की नौकरी करना सदा ही बुरा है। स्वतंत्र प्रकृति के स्वाभिमानी पुरुष के लिए नौकरी करना बहुत कठिन होता है। तुलनीय : भीली—पारकी चाकरी सदा खोटी।

नौकरी है कि भाई-बंदी—जब नौकर प्राय: अनुपस्थित रहा करे या ठीक से काम न करे तो उसके प्रति कहते हैं। आशय यह है कि भाई-बंदी में मनमानापन चलता है, नौकरी में नहीं। तुलनीय : राज० नौकरी है क भाई-बंदी।

नौका, दूती, वैद प्रवीन, काम सेर पुछियत नहीं तीन—नाव, दूती और वैद्य को काम निकल जाने पर कोई नहीं पूछता।

नौ की लकड़ी नब्बे ख़र्च—नौ रुपये की लकड़ी है और उस पर नब्बे रुपया खर्च हो गया। (क) जितने की मूल वस्तु न हो, उससे अधिक उस पर अन्य खर्च पड़े तब कहते हैं। (ख) ज़रा से काम के लिए बहुत आडंबर करने पर

भी कहते हैं। तुलनीय : अव० **नौ कै लकड़ी नब्बे खरच**; मरा० नऊ रुपयांचे लाकूड त्याला नव्वद रुपये आणणावल; भोज० नौ क लकड़ी नब्बे खर्च।

नौ की लकड़ी, नब्बे ढुलाई— ऊपर देखिए।

नौ कुंडे दस नेगी—केवल नौ कुंडे हैं और उन्हें चाहने वाले दस हैं। (क) जिस काम में जितनी प्राप्ति न हो उतना या उससे भी ज़्यादा ख़र्च करना पड़े तो कहते हैं। (ख) जब चीज़ से उसे लेने वाले अधिक हों तब भी कहते हैं।

नौ खायें, तेरह की भूख—भूख तो तेरह रोटी की है, किंतु नौ रोटी ही खाएँगे। पेटू और लालची पर व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : कनौ० नौ खाय तेरह की भूँक।

नौ खाय नब्बे की भूख—बहुत असंतोषी व्यक्ति के लिए कहते हैं। ऊपर देखिए।

नौ गिहथिन, माठा पातर—नौ औरतों के मिलकर काम करने से मट्ठा पतला हो गया। आशय यह है कि जिस कार्य को कई व्यक्ति मिलकर करते हैं, वह अच्छा नहीं होता। तुलनीय : भोज० नौ गिहिथिन माठा पातर; अं० Too many cooks spoil the broth.

नौ चूल्हे की राख उड़ती है—घर में केवल राख उड़ती है। जिस व्यक्ति के घर में कुछ भी न हो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० नौ चूल्हा री राख उडै।

नौ दिन चले अढ़ाई कोस—नौ दिन में केवल ढाई कोस चलते हैं। (क) जो बहुत सुस्ती से काम करता है उस पर कहते हैं। (ख) केदारनाथ से बद्रीनाथ की यात्रा पर कहते हैं। दोनों स्थानों का अन्तर केवल ढाई कोस है पर रास्ता सीधा न होने के कारण पचास मील चलना पड़ता है जिसमें नौ दिन लगते हैं। तुलनीय : गढ़० गथू की बीज लेण गैंठ्यों सोंटू का फला खादी आयो; अव० **नौ दिन चलै अढ़ाई कोस**; भोज० नव दिन में चलेल अढ़ाई कोस; मरा० नऊ दिवसांत अडीच कोस चलला; बुंद० तनक-सी कानियाँ, सबरी रात; कनौ० नौ दिन चलें अढाई कोस।

नौ नकटों में नाक वाला भी नकटा— नौ नकटों में एक नाकवाला भी नकटा ही कहलाता है। आशय यह है कि बुरे लोगों के साथ रहने वाला सज्जन व्यक्ति भी बुरा कहलाता है। तुलनीय : हरि० नौ नकट्यां मे एक नाक आला नक्कू ए बाज्जै।

नौ नक़द न तेरह उधार—तेरह रुपये में उधार बेचने से नौ रुपये में नक़द बेचना अच्छा है। अर्थात् नक़द कम दाम में बेचना अच्छा है किन्तु उधार अधिक दाम मिलने पर भी बेचना ठीक नहीं। तुलनीय : राज० **नव नगद ना तेरह उधार**; अव० **नौ नगद न तेरा उधार**; गढ़० **नौ नकद तेरह उधार**; हरि० **नौ नगद आच्छे तेरहां उधार कुच्छ ना**; बुंद० **नौ नगद न तेरा उधार**; मेवा० नो नगद तेरा उधार; सं० वरमध्य कपोत: श्वो मयूरात्; मल० किट्टुवान् पोकुन्न तन्कत्तेक्काल् किट्टिय नाकम् नल्लतु; तेलु० अप्पु आरु माडलकन्नु रोरकं रेंडु बंदलु गेलु; पंज० सारी उधार नालो अद्धी नकदी चंगी; फ़ा० सैले-नक़्द बेह अज़ हवाल्य-ए-नसिया; अर० क़लीलो फ़िल हबीब ख़ैरुन मिन कसीरुन फ़िल ग़ैब; अं० A bird in hand is worth (better than) two in the bush.

नौ नसी एक कसी— खेत को नौ बार जोतने के बाद एक बार फावड़े से भी गोड़ देना चाहिए। इस प्रकार खेती अच्छी होती है।

नौ नेज़ा पानी चढ़ा, तोउ न भीजी कोर— नौ नेज़ा पानी चढ़ाने पर भी कोर तक नहीं भीगी। ऐसे निर्लज्ज व्यक्ति के प्रति कहते है जिस पर अधिक डांट-फटकार का भी कोई प्रभाव नहीं पड़ता। (नेज़ा - भाला)।

नौ महीने माँ के पेट में कैसे रहा होगा?— बहुत चंचल और उत्पाती लड़के के लिए कहते है। तुलनीय : अव० नौ महीना महतारी कै पेट मा कइसे रहा होई।

नौमी गोगा पीर मनाऊँ, ना चरखे को हाथ लगाऊँ— काम न करने के लिए जब कोई झूठा बहाना करे तो व्यंग्य से कहते हैं। (गोगा पीर एक पीर थे जिनकी याद में भादों कृष्ण 9 को मेला होता है)।

नौमी गोगा पीर मनाऊँ, ना चरखे के लग्गे जाऊँ— ऊपर देखिए।

नौमी माघ अधेरिया, मूल रिच्छ को भेद; तो भादों नौमी दिवस, जल बरसै बिन खेद— यदि माघ मास के कृष्ण पक्ष की नवमी तिथि को मूल नक्षत्र पड़े तो भादों बदी नवमी को अवश्य ही वर्षा होगी।

नौ लीजे न तेरह दीजे— न किसी से नौ लिए जायँ और न तेरह दिए जायँ। अर्थात् न किसी से क़र्ज़ लिया जाय और न ब्याज देना पड़े। क़र्ज़ की बुराई करने के लिए कहते है। तुलनीय : राज० नव लीजै न तेरह दीजै; पंज० न नों लवो न तेरां दो; ब्रज० नौ ले न तेरह दे।

नौ सौ चूहा खाकर बिलाई चली हज को— नीचे देखिए।

नौ सौ चूहे खाय के बिल्ली चली हज को— (क) जब कोई जन्म-भर घोर पाप करता रहे और बुढ़ापे में भक्त बन

जाय तो कहते हैं। (ख) वेश्याएँ या भ्रष्ट स्त्रियाँ जब भक्ति करने का ढोंग करें तो उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० नव सौ ऊंदरा मार र के दाररो कांकण पहर्यो है; अव० सत्तर चूहा खाय के बिलाई चली हज करै; भोज० नव सौ मूंस मार के बिलारि भइली भगतिन; पंज० नौ सौ चूहे खा के बिल्ली चल्ली हज्ज नूं; बुद० नौ सौ चूहा खाकें बिलाई तप कों चली; ब्रज० सौ-सौ मूंसे खाइ बिल्लईया तप पर बैठी; मरा० नऊशें उंदीर मटकावले नि आतां मनी (मांजरी) चालली तीर्थयात्रेल; ब्रज० नौ सौ मूंसे खायरे बिल्ली हज्ज कूं चलीं।

नौह भर खाया तो खाया, भर मुंह खाया तो खाया— दे० 'नह भर खाया तो...'।

नृपनापित पुत्र न्याय—एक राजा ने एक दिन अपने नाई से कहा कि नगर के सबसे सुन्दर बालक को हम देखना चाहते हैं। तुम जाओ और खोज कर लाओ। अपनी सन्तान मनुष्य को सबसे सुन्दर लगती है, इसलिए नाई के साथ भी यही हुआ और वह अपने पुत्र को लेकर राज-दरबार में जा पहुँचा। राजा ने उस काले-कलूटे लड़के को देखकर नाक-भौं सिकोड़ी और क्रोधित होकर पूछा कि यह किसका लड़का है। नाई ने डरते-डरते कहा, 'सरकार यह मेरा पुत्र है और नगर में मुझे इससे सुन्दर बालक दूसरा नहीं दिखाई दिया। इसीलिए इसको लेकर सेवा में उपस्थित हुआ हूँ।' राजा यह सुनकर समझ गए कि नाई को मोहवश यही बालक सबसे सुन्दर लगता है, इसलिए उसे क्षमा कर दिया। जब मनुष्य मोह में फँसकर भले-बुरे की पहचान भूल जाता है तो इस न्याय का प्रयोग करते हैं।

न्याय की तराजू ईश्वर के हाथ—ईश्वर सबसे न्याय करते हैं। उनके न्याय में विलंब हो सकता है, किन्तु उसमें त्रुटि नहीं हो सकती। जब कोई सबल या धनी किसी निर्बल को सताता है तो कहते हैं। तुलनीय : भीली—ताकड़ी तणी रामना हाथ मांये है।

न्याय न कोऊ पाइ हैं, परैं लालची काम—लालची न्यायाधीश से न्याय की आशा नहीं की जा सकती। अर्थात् निष्पक्ष न्याय ईमानदार व्यक्ति ही कर सकता है।

न्यारा पूत पड़ोसी दाखिल—अपने से अलग होने पर अपना लड़का भी पड़ोसी के समान हो जाता है। तुलनीय : अव० बाँटा पूत परोसी दाखिल; कौर० न्यारा पूत पडौस बराबर; ब्रज० न्यारौ पूत परोसी दाखिल।

न्यौते गाँव पास नहिं कौड़ी—पूरे गाँव के लोगों को निमंत्रण दे रहे हैं और पास में एक कौड़ी भी नहीं। व्यर्थ की डींग हाँकने वाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : भोज० नेवते के गाँव भर पास में कउड़ी ना।

प

पंक प्रक्षालन न्याय—कीचड़ यदि लग गया तो धो डाला जायगा, यह सोचने से अच्छा है कि कीचड़ लगने ही न पाए। आशय यह है कि बुरा काम करके उसका प्रायश्चित करने की अपेक्षा बुरा काम न करना अधिक अच्छा है।

पंगु भयो मृगराज आज नख रद के टूटे—आज जंगल का राजा नाखून और दांत टूट जाने से पंगु हो गया है। (क) साधनरहित हो जाने पर जब शक्तिशाली व्यक्ति भी किसी का कुछ नहीं बिगाड़ पाते तब कहते हैं। (ख) जब कोई शक्तिशाली या दबदबे वाला व्यक्ति वृद्धावस्था या अन्य किसी कारण से श्रीहत हो जाता है तो भी कहते हैं।

पङ्ग्वन्ध न्याय—लंगड़े और अंधे का न्याय : किसी स्थान में एक अंधा और एक लँगड़ा रहता था। दोनों आपस में मित्र थे। लँगड़ा चलने में असमर्थ था तो अंधा देखने में। अतः कहीं जाने की आवश्यकता होने पर लँगड़ा अंधे के कंधों पर बैठकर उसका मार्गदर्शन करता और अंधा उसको लेकर अपने गन्तव्य स्थल की ओर चला जाता। आशय यह है कि परस्पर सहयोग से कठिन कार्य भी हल हो जाते हैं।

पंच कहें बिल्ली, तो बिल्ली ही सही—अगर पंच लोग किसी चीज़ को बिल्ली कहें तो बिल्ली ही समझना चाहिए। अर्थात् जिसको सब मानें उसको ठीक ही मानना चाहिए। अपनी अनिच्छा रहने पर भी यदि कोई कार्य सबकी सलाह से किया जाय, तब कहते हैं। इस पर एक कहानी इस प्रकार है : रात के समय किसी बनिये ने एक चोर पकड़ा। चोर बिल्ली की तरह म्याऊँ-म्याऊँ करने लगा तो बनिये ने कहा यदि सवेरे पंच तुझे बिल्ली कहें तो तू बिल्ली समझकर ही छोड़ दिया जाएगा। अभी तो मैं तुझे चोर समझकर घर में बंद किये देता हूँ। तुलनीय : भोज० पंच कहे कि मूस, त मूसे ही सही; मरा० पंच म्हणतात मांजर, बरं तर मांजर म्हणा; मग० पंच कहे बिल्ली तऽ बिल्ली; पंज० पंच आखण बिल्ली ते बिल्ली सही; ब्रज० पंच कहैं बिल्ली तौ बिल्ली ही सही।

पंच के मुंह परमेश्वर—नीचे देखिए।

पंच जहाँ परमेश्वर—पंच में परमेश्वर का वास होता

है। अर्थात् पंच ईश्वर के बराबर होते हैं। जब सत्यवादी पंच निर्णय करते हैं तो न्याय ही होता है, और तब यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : गढ़० जख पंच तख परमेश्वर; राज० पंचां में परमेश्वररो वास है; अव० पंच परमेसर है; मरा० पांचांमुखी परमेश्वर; पंज० पंचा दे मुह परमेसवर; ब्रज० पंच जहाँ, म्हां परमेसुर।

पंचन के मुख हैं परमेश्वर —पंच में ईश्वर की छाया रहती है इसलिए वे न्याय ही करते है। जब सत्यवादी पंच इकट्ठे होकर न्याय करते है तब कहते हैं।

पंच बराबर टाट पर, है अमीर कंगाल—पंच के टाट पर अमीर-ग़रीब सब बराबर हैं। सबके साथ बिना भेद-भाव के न्याय किया जाता है, उनके लिए न तो कोई जाति में ऊँचा है और न नीचा, न अमीर है और न ग़रीब और न ही कोई अपना है न पराया। पंच के निष्पक्ष न्याय पर कहा जाता है।

पंच बहुत, चौपाल छोटी -- पंच अधिक हैं और पंचायत का स्थान छोटा। (क) जब छोटे-से स्थान पर बहुत भीड़ हो जाय तो व्यंग्य से कहते है। (ख) पंचायत में निर्णय सुनने के लिए प्राय: बहुत भीड़ इकट्ठी हो जाती है और इस कारण स्थान की कमी हो जाती है तब भी कहते है। तुलनीय : भीली० पच घणां ने चोवरा हांकड़ा; पंज० पेंच बडे थां निक्का; ब्रज पंच बौहत चौपारि छोटी।

पंच माने ख़ुदा, ख़ुदा माने पंच -- पंच ईश्वर में विश्वास रखते है अत: ईश्वर को भी उनका निर्णय मंजूर होता है।

पंच मिल ख़ुदा, ख़ुदा मिल पंच—पंचों की इच्छा से या उनके परामर्श के अनुसार कार्य करना ईश्वर की इच्छा के अनुरूप होना है।

पंच और मसालची दोनों की उलटी रीति, और दिखाए चाँदनी आप अँधेरे बीच —पच और मशालची दोनों दूसरों को तो प्रकाश दिखाते है किन्तु स्वयं अँधेरे में भटकते रहते हैं। जब कोई व्यक्ति दूसरों को उपदेश दे और स्वयं बुरे काम करे तब उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : मरा० पच नि मशालजी, दोघांची उलटी रीत, दुसऱ्यांना प्रकाश देतो, आपण स्वत: अंधेरांत।

पंचों का कहना सिर माथे पर मगर परनाला यहीं रहेगा - पंच का फ़ैसला मुझे स्वीकार है लेकिन परनाला अर्थात् मोरी यही पर रहेगी। उस हठी मनुष्य को कहते हैं जो किसी का कहना नही मानता। इस पर एक कहानी इस प्रकार है : किसी मनुष्य के घर की मोरी का पानी उसके पड़ौसी के घर में जाता था। जब पड़ौसी के कहने पर उसने अपनी मोरी नहीं हटाई तो इस झगड़े के निर्णय के लिए पाँच पंच नियत किए गए। पंचों ने फ़ैसला किया कि तुम अपनी मोरी इधर से हटाकर दूसरी तरफ़ बनवा लो। जिसके उत्तर में उसने उक्त मसल कही। तुलनीय : अव० पंचन केर कहब मूड़े माथे; मरा० पंचाची आज्ञा शिर सामान्य, पण मोरी जेथे आहे तेथेंच राहणार; कौर० पंचो का कहणा सिर माथे पतनाळा यहंई गिरेगा। ब्रज : पंचन की बात सिर माथे परि पनारौ ह्यांई रहैगौ।

पंचों का जूता और मेरा सिर - मैं पंचों का निर्णय मानने को तैयार हूँ, जो दण्ड पंच मुझे दे मैं भोगने को तैयार हूँ। प्राय: निर्दोष मनुष्य अपने को निर्दोष दिखाने के लिए ऐसा कहते है। तुलनीय : अव० पचन के जूता औ मोर मूंड़; पंज० पंचा दी जूती मेरा सिर।

पंचों के मुख परमेश्वर— दे० 'पच जहाँ...'।

पंचों मिलता कीजे काज, जो हारे जीते न आवे लाज -- दे० 'पाँच पंच मिलि...'।

पाँचों शामिल मर गए, जानो गए बरात— सबके साथ मिलकर कष्ट भोगना अच्छा होता है क्योंकि वह वैसे ही दु:खदायक नहीं होता जैसे बारात में सभी को कुछ-न-कुछ कष्ट होता है पर साथ के कारण मालूम नही होता। आशय यह है कि जो कष्ट सभी को हो वह अखरता नही।

पंछी के पिए नदी नहीं सूखती —पक्षियों के पानी पीने से नदी नही सूखती। अर्थात् निर्धन या असहाय को दान देने से धनवान का धन समाप्त नही होता। तुलनीय : बुंद० पंछियन के पियें समुद हिलोरे नहीं घटतो; पज० पंछिया दे पीण नाल नैर नई सुकदी।

पंज ऐब शरई हैं- उसमें पाँचों दोष (ऐब) हैं। चोरी, व्याभिचार, मदिरापान, जुआ और झूठ बोलना ये पाँचो अवगुण (जो क़ुरान के अनुसार निषिद्ध हैं) जिस व्यक्ति मे होते हैं ऐसा बदमाश।

पंजरचालन न्याय—पिंजरे को हिलाने का न्याय। पिंजरे में बैठे हुए अनेक पक्षी एक साथ ज़ोर लगाकर पिंजरे को हिला देते हैं। यद्यपि उनमें से प्रत्येक अपना अलग-अलग प्रयास करता है, पर एक साथ समवेत प्रयास होने पर गुरु-तर भार वाला होता हुआ भी पिंजरा सचालित हो जाता है। तात्पर्य यह है कि एकता में बहुत बल है। एकता होने पर कठिन कार्य भी संपन्न हो जाते हैं।

पंजावा का पंजावा खंजर है—जहाँ पर सबके सब मूर्ख और अयोग्य हों वहाँ कहते हैं।

पंडित और मसालची, दोनों उलटी रीत; और दिखावे

चाँदनी आप अँधेरे बीच—इस संसार की उलटी रीत है जो दूसरों को रोशनी दिखाता है वह स्वयं अँधेरे में रहता है, और पंडित जो दूसरों को ज्ञानोपदेश देता है वह भूखा रहता है या कुकर्म करता है। संसार की उलटी रीति पर कहते है। तुलनीय : बुंद० पंडित, वेद, ममालची इनकी उलटी रीति औरन गैल बतायकें आपुन नाकें भींत। दे० 'पच और ममालची⋯'।

पंडित जी! मेंढकी कब अंडे देती है?—किसी देहाती ने पंडित जी मे पूछा कि मेंढकी किस ऋतु में अंडे देती है। जब कोई व्यक्ति किसी ऐसे व्यक्ति से कोई प्रश्न पूछता है जिससे उसका कोई संबंध न हो और न ही वह उसके संबंध में कुछ जानता हो तो प्रश्न करने वाले के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० बारट जी! परड़ किना वेम ब्यावै?

पंडित जैसी सीख—पंडित लोग स्वयं चाहे कितने भी कुकर्म क्यों न करते रहें किंतु दूसरों को उपदेश देने से कभी नहीं चूकते। जो व्यक्ति दूसरों को उपदेश दे परन्तु स्वयं वैसा न करे उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : भीली बामण वालो बबराहो है।

पंडित तेरी गाय को शेर ने मार दिया, तो कहा—उसको भगवान मारेंगे—(क) ब्राह्मणों को बलवान एवं पुरुषार्थी नहीं समझा जाता; वे स्वयं अपने शत्रु को दंड न देकर ईश्वर पर टालते रहते हैं, इसीलिए उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। (ख) जो निर्बल को कष्ट देता है उसे ईश्वर कष्ट देता है। तुलनीय : माल० बामण थारी गाय ने नार मारे, तो के वण ने राम मारेगा; ब्रज० पंडिज्जी तुम्हारी गाय नाहर नें मारि दई—वामें भगमान मारैगो।

पंडित दूसरे को ही प्रबोधते हैं अपने बैंगन खाते हैं—जो व्यक्ति स्वयं अनुचित या निन्द्य कार्य करे और दूसरों को वैसा करने से मना करे उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : भोज० अपने पांड़े भन्टा खालं दुसरा के परबोधं।

पंडित दूसरे को ही बुद्धि देता है—ऊपर देखिए। तुलनीय : भोज० आने के पांड़े बुद्धि देलं; अपने पांडे घुलटिया लैलं; पंज० पंडत दूजयां नूं ही मत देंदा है।

पंडित दूसरे को ही सुदिन बताते हैं—आडम्बरी व्यक्ति के लिए व्यंग्य से कहते हैं जो स्वयं बुरा काम करे और दूसरे को उपदेश दे। तुलनीय : मैथ० अनका के पांड़े दिन देस अपने सुखले बुकावस; भोज० पांड़े आनके साइत बतावेंलं, अपने सुख करैलं।

पंडित सोई जो गाल बजावा—आजकल पंडित वही माने जाते हैं जो बहुत बोलते हैं, अर्थात् आजकल गप्पें झाड़ने वालों या झूठ बोलने वालों का अधिक आदर होता है। तुलनीय : पंज० पंडत ओह जेड़ा मना बाले।

पंसारी का नौकर, कसाई का कूकर—इन दोनों को खाने की कमी नहीं रहती है।

पंसेरी में पाँच सेर का धोखा—पसेरी (पाँच सेर का बाट) में पाँच सेर का धोखा हो गया। (क) जिस व्यक्ति के साथ कोई बहुत बड़ा धोखा हो जाय तो उसके प्रति कहते हैं। (ख) जब कोई किसी के साथ छोटे काम में भी अधिक ठगी कर जाता है तब भी कहते हैं। तुलनीय : राज० पंसेरी में पाँच सेर रो धोखो।

पंसेरी में पाँच सेर की भूल—पंसेरी में पांच सेर की भूल हो गई अर्थात् बहुत बड़ी भूल हो गई। जो व्यक्ति कोई बहुत भारी भूल कर बैठे उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० पंसेरी में पाँच सेररी भूल; ब्रज० पहंसेरी मे पाँच सेर की भूल।

पकने पर निबौली मीठी—पकने पर निबौली भी मीठी हो जाती है। अर्थात् (क) समय आने पर प्रत्येक वस्तु अच्छी लगती है। (ख) बुढ़ापा आने पर बुरे लोग भी अच्छे हो जाते हैं। तुलनीय : ब्रज० पकी निबौरी मीठी लगै।

पकवान खाने को होता है तो स्त्रियां देवी पूजन को चलती हैं—स्त्रियों की पकवान खाने की इच्छा होती है तो वे पूजा करने का बहाना बनाती है और पूजन की आड़ में खूब पकवान पकाती हैं। स्त्रियों पर व्यंग्य मे कहते हैं। तुलनीय : अव० पकवान खायका भवा तो गोरिया चली देवी पुजन का।

पकवान में लाडू सगों में साढू—पकवान मे लड्डू और संबंधियों में साढू (साली का पति) सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। अन्य संबंधियों की अपेक्षा साढू से अधिक संबंध रखने वाले के प्रति व्यंग्य में कहते है। तुलनीय : छत्तीस० कलेवा मां लाड़ू, सगा मां साढ़ू; ब्रज० पकमान में लाड़ू, सगै न में साड़ू।

पकाई खीर हो गया दलिया—अर्थात् किया तो अच्छा काम था परंतु हो गया बुरा। अच्छे काम का बुरा फल मिलने पर यह लोकोक्ति कही जाती है।

पका कर दे तो खा लूं, सवारी लेके आए तो संग चलूं—पका कर खिलाएगा तो खा लूंगा और यदि सवारी लेकर आएगा तो साथ भी चला जाऊँगा। जब कोई व्यक्ति किसी की सहायता करने के लिए उससे बहुत खुशामद कराना चाहता है तो उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : गढ़०

ओली, बटि देंद त खाँदु छौं, घूघू घाली ल्यांद त औंदु छौं।

पका बड़ा या पीलूं तेल —या तो बड़ा (दहीबड़ा) पका कर दे नही तो मैं तेल ही पी लूंगा। (क) कुछ नही से जो कुछ मिल जाय वही अच्छा है। (ख) मेरा काम नही करते तो मैं अपनी मर्जी के अनुसार करूँगा, इस भाव को दर्शाने के लिए भी इसका प्रयोग करते हैं। तुलनीय : बुद० पऊत बरा, कै पीलऊँ तेल।

पकाय और खाय फिर कहीं जाय —खाना पकाकर खा लेने के पश्चात् ही कहीं जाना चाहिए। (क) जिस कार्य में परिश्रम किया जाय उसका भोग करके ही वहाँ से टलना चाहिए नहीं तो हो सकता है कि कोई दूसरा ही आकर उसे भोग ले और और अंत में हाथ मलते ही रह जाओ। (क) कहीं जाने से पहले भोजन करना बहुत आवश्यक माना जाता है, क्योंकि दूसरे स्थान पर खाना न मिले या घर लौटने में देर हो जाय तो भूखे रहना पड़ता है। तुलनीय : भीली—राँदी ने रमण नी जावो।

पकायेगा सो खाएगा - अर्थात् परिश्रम करने वाला ही फल भोगेगा। तुलनीय : भोज० पकाई से खाई; पंज० पकाणवाला ही खायेगा।

पका पान खाँसी न जुकाम—दे० 'पका पान खाँसी ...'।

पका फोड़ा हो गया है - अर्थात् बहुत कष्ट दे रहा है। जिस व्यक्ति या वस्तु से बहुत कष्ट मिलता है उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० पक के फोड़ा बन गया।

पकाय सो खाय— जो पकाएगा वह खाएगा। आशय यह है कि बिना परिश्रम के सुख नहीं मिलता।

पकी-पकाई और बिछी-बिछाई कौन छोड़े ?—पका-पकाया भोजन और बिछी हुई सेज कौन छोड़ता है ? अर्थात् कोई नहीं। आशय यह है कि बिना परिश्रम के लाभ मिलने पर सभी उसे लेने के लिए तैयार हो जाते हैं। तुलनीय : गढ़० रीघा की अर बीघा की बिच्छन कख छ ?

पकी पकाई खाय सो हरजाई — जो परिश्रम करके न खाय उसे हरजाई समझना चाहिए। आशय यह है कि दूसरे के बल पर सुख करना अच्छा नही। तुलनीय : पंज० परौंठा खा गया लौटा।

पके आम सोहावन, पके मर्द छिनावन—पका आम सुंदर लगता है पर पका मनुष्य अर्थात् वृद्ध मनुष्य घृणा का पात्र हो जाता है। (क) वृद्ध मनुष्य को कोई नहीं चाहता। (ख) एक ही स्थिति किसी के लिए अच्छी होती है और किसी के लिए बुरी।

पके आम हैं —दे० 'पक्के आम के टपकने का...'।

पके गूलर तो कौए की नींद हराम—गूलर (एक फल) जब पकता है तो कौए को नींद नही आती। वह उसी को खाने की बात सोचता रहता है। जब कोई अपनी पसंद की वस्तु के लिए उतावली करे तो व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : भोज० पकले गुलर कौआ के नीद ना आवेले; पंज० गुलां पकियां ते काँ जागे।

पके बर्तन में जोड़ नहीं लगता —मिट्टी का कच्चा बर्तन जब आग में पक जाता है तब उसमें जोड़ नहीं लगता। आशय यह है कि प्रौढ़ हो जाने के बाद किसी के स्वभाव में परिवर्तन नहीं लाया जा सकता। जब बचपन में अधिक प्यार के कारण किसी का बच्चा बिगड़ जाता है और सयाना होने पर वह उसे सुधारने का प्रयत्न करता है तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मेवा० पाका हाँडा गार नी लागे; राज० पाके घड़ैरै कानो का लागै नी; पंज० पक्का पांडा नहीं जुड़दा।

पके बेर तले भी भूखा मरे—पके बेर पेड़ के नीचे भी भूखा मरता है। (क) जो व्यक्ति साधन होते हुए भी उनका लाभ न उठाएँ उनके प्रति व्यंग्य से कहते है (ख) आलसी व्यक्ति के प्रति भी व्यंग्य से कहते है जो थोड़ा भी परिश्रम नही करना चाहता। तुलनीय : मेवा० पाकी बोरड़ी नीचे भूखाँ मरेगा; सं० नहि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशंति मुखे मृगा:।

पक्का पान खाँसी न जुकाम - पक्का पान खाने से खाँसी और जुकाम नहीं होता। पके पान की उपयोगिता पर कहा गया है। तुलनीय : भोज० पक्का पान खाँसी न जोखाम।

पक्का होना चाहे तो पक्के के संग खेल - अच्छा खिलाड़ी बनना चाहते हो तो अच्छे खिलाड़ी के साथ खेलो। किसी कार्य में कुशल व्यक्ति से सम्पर्क करने पर ही कोई कुशल बन सकता है।

पक्के आम के टपकने का डर है वृद्ध मनुष्य पर कहा गया है क्योंकि वह किसी समय भी मर सकता है जिस प्रकार कि पका हुआ आम किसी समय पेड़ से टपक सकता है। तुलनीय : राज० पक्का पान तो खिरणरा ही है; अव० पक्का आम है न पता कब चू परै; ब्रज० पके आम के टपकिबे कौ डर है।

पक्के घड़े में जोड़ नहीं लगता—दे० 'पके बर्तन में...'।

पक्षियों के पीने से सागर का जल घटता नहीं —आशय यह है कि दान देने से धनिकों के धन में कमी नही होती।

पक्षे चोरी, पक्षे न्याय, पक्ष बिना सो मारा जाय—चोरी पक्ष से ही होती है, पक्ष से ही न्याय होता है और जिसका पक्ष लेने वाले नहीं होते वह बेमौत मारा जाता है। आशय यह है कि जिसके सहायक होते हैं उसी को सफलता मिलती है, बिना सहायक के सफलता नहीं मिलती।

पखाल का लादना और डाँक चलाना एक-सा—पखाल लादने और डाँक में जल्दी की जाती है, इसीलिए ऐसा कहा जाता है।

पग आगे में पत रहे, पग पाछे पत जाय—पैर आगे बढ़ाने में इज़्ज़त होती है और पीछे हटाने में बेइज़्ज़ती। अर्थात् (क) शत्रु का सामना करते रहने में बड़ाई और पीछे हटने में बुराई होती है। (ख) किसी कार्य को प्रारम्भ करके पीछे नहीं हटना चाहिए।

पगड़ी गई ऐसी तैसी में, सिर तो बच गया—पगड़ी (इज़्ज़त) गई तो कोई परवाह नहीं सिर तो बच गया। (क) जो व्यक्ति इज्ज़त से अधिक जान की परवाह करते हैं उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। (ख) जिस व्यक्ति की थोड़ी हानि हो और बाक़ी माल सही-सलामत बच जाय उसके प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : राज० पागड़ी गयी आगड़ी, सिर सलामत चायीजै।

पगड़ी गई भैंस की गाँड़ में—रिश्वतखोर अधिकारी के प्रति कहते हैं जो घूस तो दोनों पक्षों से लेता है पर जो अधिक घूस देता है उसी के पक्ष में न्याय करता है। इस लोकोक्ति के सम्बन्ध में एक लघु कथा प्रचलित है : एक बार एक घूस-खोर न्यायाधीश के पास एक झगड़े का मुक़द्दमा पहुँचा। दोनों पक्षों को उसके घूसखोर होने का पता था। एक पक्ष ने उसे बहुमूल्य पगड़ी भेंट की। दूसरे पक्ष वालों ने देखा कि मामला बिगड़ने वाला है तो उन्होंने एक दुधारु भैंस लाकर भेंट कर दी। निर्णय भैंस देने वालों के पक्ष में हुआ। बाद में जिसने पगड़ी दी थी उसने पूछा, 'सरकार मैंने तो आपको इतनी क़ीमती पगड़ी दी थी फिर भी आपने मुझे हरवा दिया।' इस पर अधिकारी ने उक्त कहावत कही।

पगड़ी दोनों हाथों से थामी जाती है—प्रतिष्ठा (पगड़ी) की ध्यानपूर्वक रक्षा करनी चाहिए। या बहुत सावधानी से रहने पर ही मर्यादा क़ायम रहती है।

पगड़ी में फूल रखा गया—बदनाम हो गया, लांछन लग गया। जब कोई व्यक्ति अपने आचार-व्यवहार के कारण आलोचना या भर्त्सना का भाजन बने तो व्यंग्य में कहते हैं।

पगड़ी रख घी रख—पगड़ी बचाकर घी खाना चाहिए। आशय यह है कि (क) पहले इज़्ज़त की तरफ ध्यान देना चाहिए उसके बाद सुख सुविधाओं की तरफ़। (ख) इज़्ज़तदार का सभी सत्कार करते हैं।

पगड़ी वाले से घूंघट काढ़े, करधन वाली के पाँव लागै—जिस मनुष्य ने पगड़ी बाँध रखी है उसी के सामने घूंघट काढ़ती है तथा जिस स्त्री की कमर में करधनी हो उसी का पाँव छूती है। आशय यह है कि धन वालों का ही मान होता है, निर्धन का नहीं। तुलनीय : माल० छोंगावारा रो छेड़ों काढ़े ने, वींछा वारी रे पगे लागे।

पग बिन कटै न पंथ—बिना चले रास्ता तय नहीं होता। आशय यह है कि बिना किए कोई कार्य नहीं होता। तुलनीय : गढ़० पग चलो पंथ कटो; राज० पग बिन कटै न पंथ।

पगली सबसे पहली—पगली सबसे पहले। (क) जब मूर्ख व्यक्ति बिना सोचे-समझे ही सबसे पहले काम करना आरम्भ कर देते हैं और हानि उठाते हैं तब उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। (ख) किसी यज्ञ आदि में मूर्ख व्यक्तियों को पहले ही कुछ देकर टाल देना चाहिए नहीं तो वे कुछ-न-कुछ उत्पात खड़ा कर देते हैं। तुलनीय : रा० गैली सबसूं पैली।

पगिया नेवत—ऐसा निमन्त्रण जिसमें केवल 'पगड़ी' (पगिया) अर्थात् एक व्यक्ति को निमन्त्रण दिया जाता है। यह 'चुल्हिया नेवत' का विलोम है।

पचफूला रानी बनी हैं—बहुत सुकुमार है और अपनी सुकुमारता पर बहुत गर्व करती है।

पचीस की भैंस ली, दूध की साध में मरे जा रहे हैं—पच्चीस रुपए की भैंस खरीदकर दूध पीना चाहते हैं। थोड़ा धन व्यय करके सुख चाहने वाले के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

पचै सो खाना, रुचै सो बोलना—भोजन ऐसा करना चाहिए जो शीघ्रता से पच जाय और बात ऐसी करनी चाहिए जो सबको अच्छी लगे। तुलनीय : बुंद० पचै सो खावे, रुचे सो बोले।

पच्छिम जाओ कि दक्खन वही करम के लक्खन—जीविका अर्जित करने के लिए जो चाहो करो और जहाँ जी चाहे जाओ किन्तु मिलेगा वही जो भाग्य में होगा।

पच्छिम बायु बहै अति सुन्दर, समयो निपजै सजल बसुन्धर—यदि पछुआ हवा बहे तो समय, उपज तथा बर-सात अच्छी होती है।

पच्छिम समै नीक करि जान्यो, आगै बहै तुषार प्रमान्यो—पश्चिम की हवा बहने पर समय अच्छा रहेगा किन्तु बाद

में पाला (तुषार) पड़ेगा।

पछताए का होत है जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत—दे० 'अब पछताए का होत⋯'।

पछवाँ चले खेती फले—पछुआ हवा से फ़सल को लाभ पहुँचता है। तुलनीय : मरा० चाले पश्चिमेचा वारा, तर शेती फले भरा-भरा।

पछयाँव का बादर, लबार का आदर—झूठे तथा धूर्त आदमियों के सम्मान में कोई तथ्य नही रहता जिस प्रकार पछुवा हवा से उठने वाला बादल व्यर्थ होता है। (पश्चिम की हवा से या पश्चिम की ओर से उठने वाला बादल बरसता नहीं)।

पछिवाँ हवा ओसावै जोई, घाघ कहें घुन कबहूँ न होई—घाघ कहते है कि पछुवाँ हवा में अनाज ओसाने से उसमें घुन कभी नही लगता। तुलनीय : मरा० पश्चिमेच्या वार्-याँत जें धान्य वारविले जाई, वृद्ध म्हणतात कीड कधीं न होई।

पजावा का पजावा खंजर है—दे० 'पंजावा का पंजावा⋯'।

पटको तुम मूछें हम उखाड़ें—तुम गिरा दो उसके बाद में मूंछ उखाड़ूंगा। ऐसे लोगों के प्रति व्यंग्य में कहते हैं जो परेशानी या परिश्रम का काम दूसरों से कराकर बाद में सम्मिलित होकर यश स्वयं कमाना चाहते हैं।

पठान का पूत, घड़ी में औलिया घड़ी में भूत—पठानों का स्वभाव स्थिर नही होता। वे क्षण में औलिया और क्षण में भूत हो जाते हैं, अर्थात् वे शीघ्र प्रसन्न और शीघ्र ही अप्रसन्न हो जाते हैं। तुलनीय : अव० पठान का पूत, घडी मा औलिया घडी का भूत। (औलिया = महात्मा, ऋषि)।

पठान लड़ाई मारें, और बहिनें दाढ़ी फटकारें—पठान लड़ते हैं और उनकी बहिनें दाढ़ी फटकारती हैं। अर्थात् पठान जाति में स्त्री-पुरुष सभी झगड़ालू होते हैं।

पठानों ने गाँव मारा, जुलाहों की चढ़ बनी—पठानों ने गाँव जीता तो जुलाहों का भी भाग्य जग गया कि उन्हें नौकरी मिल जाएगी। अर्थात् बड़ों को जब लाभ होता है तो छोटों को भी थोड़ा-बहुत मिल जाता है।

पड़ली पिया तोरे बस, जिन्ने चाहा तिन्ने घस—ऐ पति जी! अब तो मैं आपकी शरण में हूँ जैसा जी चाहे वैसा मेरे साथ व्यवहार करें। भली और आज्ञाकारी स्त्री का पति के प्रति कहना है।

पड़वा के हगे बढ़िया नहीं होते—पड़वा (प्रतिपदा) को उत्पन्न सन्तान अच्छी नहीं मानी जाती है।

पड़वा गमन न कीजिए, जो सोने की होय—पड़वा (प्रतिपदा) को कहीं भी यात्रा नहीं करनी चाहिए, चाहे कितना ही लाभ क्यों न हो क्योंकि यह तिथि यात्रा के लिए बहुत अशुभ और अनिष्टकारी मानी जाती है। तुलनीय : ब्रज० परिबा गमन न कीजिये जो सोने की होय।

पड़िया मोल भैंस सुगौना—पड़िया ख़रीदते हैं और भैंस शकुन में अर्थात् मुफ्त मगाते हैं। जब कोई थोड़े दाम की चीज़ ख़रीदे और अधिक दाम की वस्तु मुफ्त में मांगे तब कहते हैं। तुलनीय : अव० पंडिया कै मोल भइंस घैलउना मा।

पड़ी गरज मन और है, सरी गरज मन और—ग़रज़ रहने तक तो ख़ूब ख़ुशामद की जाती है किंतु काम हो जाने पर कोई बात भी नहीं करता। स्वार्थी व्यक्ति जब स्वार्थ सिद्ध करके सीधे मुँह बात भी नही करते तब कहते है।

पड़ी बिछौना फूहड़ सोवे, रांधा खाए कुत्ता—जो खाना पकाकर रखा था उसे कुत्ता खा रहा है और पकाने वाली बिस्तर पर सो रही है। आलसी और फूहड़ व्यक्ति जब अपने आलस्य और मूर्खता से हानि उठाते है तो कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० परी खाट पै फूहरि सोवै, रांधे गे खाय गयौ कुत्ता।

पड़ी सड़े, चले सो बढ़े—पडी-पड़ी वस्तु नष्ट हो जाती है और प्रयोग में लाने से अधिक दिन तक चलती है। (क) कोई भी यंत्र प्रयोग में न लाया जाय तो बेकार हो जाता है और प्रयोग में लाने से उत्तरोत्तर लाभदायक होता जाता है और ठीक चलता है। (ख) धन प्रयोग में लाने (व्यापार मे लगाने) से बढ़ता है, रखे रहने से कोई लाभ नही देता। तुलनीय : भीली—वापरय्यो वदे, हगरय्तो हले; पंज० पेदी सड़े चलदी बदे।

पड़ी हुई भी काम आ जाती है—वस्तु चाहे कैसी भी हो कभी-न-कभी काम आ ही जाती है। आशय यह है कि किसी भी वस्तु को बेकार समझकर फेंक नही देना चाहिए। तुलनीय : पंज० पेदी बी कम आंदी है।

पड़े जो चढ़े—जो चढ़ता है वही गिरता है। जो चढ़ेगा नहीं वह गिरेगा क्या ? गिरने में कोई शर्म नहीं, यह बहादुरों का काम है। उर्दू का एक शेर है :

गिरते हैं शहसवार ही मैदाने-जंग में।
वो तिफ़्ल क्या गिरेंगे जो घुटनों के बल चलें।

(तिफ़्ल = बच्चा)। तुलनीय : अं० It is better to have loved and lost than not to have loved at all

पड़े भटकते हैं लाखों पंडित, हजारों मुल्ला करोड़ों स्याने; जो खूब देखा तो यारो आखिर खुदा की बातें खुदा ही जाने—इस दुनिया में लाखों पंडित, हजारों मुल्ला और न जाने कितने चतुर लोग दर-दर की ठोकरें खाते हैं और पेट के मुहताज हैं। आशय यह है कि ईश्वर की इच्छा को कोई नहीं जानता।

पड़ो अपावन ठौर में, कंचन तजत न कोय—अपवित्र जगह पर भी पड़ा हुआ सोना कोई नही छोड़ता। आशय यह है कि (क) अच्छी वस्तु यदि बुरी जगह हो तो भी ले लेना चाहिए। (ख) यदि बुरे मनुष्य से भी ज्ञान की बात मिले तो ग्रहण कर लेना चाहिए।

पड़ोसिन की नाक दूर कि हंसिया— दोनों ही नजदीक या उपलब्ध हैं। काम चटपट हो सकता है।

पड़ोसिन कूटे धान, मेरी जाए जान—मेरी पड़ोसिन धान कूट रही है और उसके कूटने की आवाज़ से मेरी जान निकली जा रही है। (क) दूसरों के घर में खुशहाली देख कर जलने वालों के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। (ख) अपने आप को बहुत सुकुमार जताने वाले के प्रति व्यंग्य में कहते है। तुलनीय : राज० पाड़ोसण छड़ें खोंच, धमको पड़ें म्हारै सीस।

पड़ोसी कान ही भरते हैं, पेट नहीं—पड़ौसी केवल चुगली करते है, खाने को नही देते। जब कोई व्यक्ति पड़ौसी की चुगली में आकर अपनी हानि कर बैठता है तो उसे समझाने के लिए कहते हैं। तुलनीय : भीली—पड़ोसी कान भर हैं, पेट नी भर है; पंज० गुंआडी कन ही परदे हन टिड नई।

पड़ोसी का बेटा खाए पर नाम न ले—पड़ौसी का लड़का खाता है लेकिन बड़ाई नही करता। (क) जब कोई किसी से लाभ उठाकर भी उसकी प्रशंसा नहीं करता तब कहते हैं। (ख) पड़ौसी का उपकार करने से प्रतिष्ठा में कोई खास वृद्धि नहीं होती। तुलनीय : पंज० गुंआडी दा पुतर खांदा पर नां नई लेंदा।

पड़ोसी की दो फोड़ और मेरी एक—(क) नीच व्यक्ति के प्रति यह लोकोक्ति प्रयुक्त होती है, क्योंकि वह पड़ौसी की हानि करवाने के लिए अपनी हानि भी करवाने में पीछे नहीं हटता। (ख) स्वार्थी व्यक्ति के प्रति भी कहते हैं जो दूसरों की अधिक हानि चाहता है और अपनी कम। तुलनीय : पंज० गुंआडी बल दो पन मेरे बल इक।

पड़ोसी के मेंह बरसेगा तो बौछार यहाँ भी आवेगी—पड़ौसी के यहाँ वर्षा होगी तो छींटे मेरे घर तक भी आएँगे। मालदार के पास रहने से किसी न किसी तरह का लाभ हो ही जाता है। अच्छी संगत पर कहा गया है। तुलनीय : राज० पाड़ोसीरै बरससी तो छांटयां अठैई पड़सी; पंज० गुंआडी दे मीं बरेगा ते इदे भी बरेगा।

पड़ोसी को भले ही गीदड़ काटे अपने तो चैन से रहे—दूसरों के हानि-लाभ की चिंता न करके अपना ही भला चाहने वालों के प्रति कहते हैं। तुलनीय : भोज० अपने भल भला परोसी के कुक्कुर काटे।

पड़ोसी जूठन दें या दें सीख—पड़ौसी या तो बचा-खुचा देते हैं या कोरी शिक्षा। पड़ोसियों से किसी भी वस्तु की आशा करना मूर्खता है और जो ऐसा करते हैं वे धोखा खाते हैं। तुलनीय : भीली—पाड़ोसी भाग ना आलवानो, कै ते चालन, भालवन।

पड़ोसी देख कमाइए, घर देख खाइए—पड़ोसी को धन अर्जित करते हुए देखकर अधिक से अधिक धन अर्जित करना चाहिए पर अपनी स्थिति को ध्यान में रखते हुए उसे खर्च करना चाहिए। तुलनीय : हरि० पड़ोसी देखख कमाइए घर देख्य खाइए; पंज० गुआडी नू देख के कमाओ कर देख के खाओ!

पड़ोसी बत्तीस कुल का नाम जाने—पड़ौसी बत्तीस पीढ़ी (पुश्त) का नाम जानता है। आशय यह है कि पड़ौसी सभी भेद जानता है।

पढ़त विद्या, करत खेती लगातार पढ़ने से विद्या और परिश्रम करने से ही खेती होती है। तुलनीय : राज० झिखत विद्या किसत खेती।

पढ़ना-लिखना साढ़े बाईस—ऐसे पढ़ने वालों के प्रति व्यंग्य में कहते हैं जिन्हें कुछ भी ज्ञान नहीं होता।

पढ़ना है तो पढ़ो, नहीं तो पिंजड़ा खाली करो—तोते से कहते हैं कि यदि पढ़ना है तो पढ़ो नहीं तो पिंजरा खाली कर दो। जब कोई व्यक्ति लाभ या वेतन लेता जाय पर काम कुछ भी न करे तो कहते हैं कि काम करो नहीं तो रास्ता पकड़ो। तुलनीय : पंज० पढनाह ते पढ़ो नई ता अपणा राह फड़ो।

पढ़ाए पढ़े ना खूसर, नवाए नवे ना मूसर—जिस प्रकार मूसल झुकाने से नहीं झुकता उसी प्रकार मूर्ख पढ़ाने से नहीं पढ़ सकता। जब किसी को पढ़ाने के सभी प्रयत्न विफल हो जायें तो कहते हैं। (खूसर = मूर्ख)।

पढ़ाए पूत से दरबार नहीं होता—सिखा-पढ़ाकर भेजा गया व्यक्ति सफल नहीं होता, क्योंकि जिसमें अपनी बुद्धि नहीं होती वह दूसरों की बुद्धि से अधिक देर तक काम नहीं

चला सकता ।

पढ़ा कितनो बौराई तो अपनी जड़ ना नसाई—पढ़ा कितना भी पागल या मूर्ख क्यों न हो वह कम से कम अपनी जड़ नहीं खोदेगा । अर्थात् पढ़ा-लिखा मूर्ख या पागल भी होगा तो भी अनपढ़ चतुर से बुद्धिमान ही होगा ।

पढ़ा तो है पर गुना नहीं दे० 'पढ़े तो हैं पर···'। तुलनीय : ब्रज० पढ़्यौ ए परि गुन्यौ नायें ।

पढ़ा न लिखा नाम विद्याधर—दे० 'पढ़े न लिखे नाम···'।

पढ़ा-लिखा पाठ, सोलह दूनी आठ—मूर्खों के प्रति ऐसा तब कहते हैं जब उनसे पूछा कुछ जाए और उत्तर कुछ दें । तुलनीय : गढ़० पढ़ायो गुणायो जाट मोल दूणी आठ; पंज० जट भई जट सोलाँ दुनी अठ ।

पढ़ा है, गुना नहीं—दे० 'पढ़े तो है···'।

पढ़िए भाई सोई, जामें हंड़िया खुदबुद होई-वह पढ़ाई पढ़िए जिससे हँड़िया खुदबुद हो अर्थात् घर का खर्च चले । जब कोई व्यर्थ के काम मे दिन बिताता है तब कहा जाता है। तुलनीय : राज० भाई ! भिणज्यो सोई, ज्यांमें हंडिया खदबद होई ।

पढ़े उसकी विद्या—जो व्यक्ति पढ़े विद्या उसी की है । अर्थात् पढ़ने से ही ज्ञान की प्राप्ति होती है । विद्या पढने के लिए धनी या उच्च कुल का होना आवश्यक नही है उसके लिए परिश्रम और लगन की आवश्यकता है । तुलनीय : राज० भणै जकैरी विद्या ।

पढ़े की विद्या किए की खेती—विद्या पढ़ने से आती है और खेती परिश्रम करने से होती है । तुलनीय : हरि० झखत विद्या, पचत खेती ।

पढ़े के आगे टोकरा डाला, उसने कहा मुझे उपलों को भेजा---शिक्षित आदमी के सामने केवल टोकरा रख देने से ही वह समझ गया कि मुझे उपला लाने के लिए कह रहे हैं । आशय यह है कि बुद्धिमान के लिए इशारा ही काफ़ी होता है ।

पढ़े को गुणा चराए-पढ़े-लिखे अनुभवहीन व्यक्ति को अनपढ़ अनुभवी मूर्ख बना देते हैं । आशय यह है कि विद्या के साथ सांसारिक अनुभव भी आवश्यक है। तुलनीय : भीली— अणभण्यों भण्या ए ठगे ।

पढ़े घर की बिल्ली भी पढ़ी—शिक्षित घर की बिल्ली भी पढ़ी-लिखी होती है । अर्थात् (क) अच्छी संगति का असर सब पर पड़ता है ।(ख) शिक्षित परिवार के सामान्य लोग भी सभ्य होते हैं । तुलनीय : भोज० पढ़ला क घर क बिलरियो पढ़ला ।

पढ़े तोता, पढ़े मैना, कहीं सिपाही का पूत भी पढ़ा है—तोता पढ़ता है, मैना पढ़ती है लेकिन क्या सिपाही का पुत्र भी पढ़ता है ? अर्थात् नहीं हिन्दुस्तान के सिपाही प्राय: बहुत कम पढ़े होते हैं इसीलिए ऐसा कहते है ।

पढ़े तो हैं पर गुने नहीं—विद्या तो पढ़े हैं पर उस पर चिंतन नही किया । (क) जब पढ़ा-लिखा मनुष्य अपनी शिक्षा का उद्देश्य न समझे तब कहते हैं । (ख) जब कोई मनुष्य पढ़-लिखकर भी सांसारिक कार्य-व्यापार को न समझे तब भी कहते है । इस पर एक कहानी यों है : एक ज्योतिषी का लड़का ज्योतिषशास्त्र में निपुण होकर अपनी परीक्षा देने एक धनी के यहाँ गया । धनी ने अपने हाथ मे अँगूठी लेकर पूछा कि मेरी मुट्ठी में क्या है । ज्योतिषी ने गणित लगाकर बताया कि वह चीज़ धातु की बनी है, उसमें छेद है, पत्थर भी है । यहाँ तक ठीक कहा । उसने कभी अँगूठी नहीं देखी थी । अपने घर में चक्की देखी थी, इसलिए वह झट से बोल पड़ा कि आपके हाथ में चक्की है । तुलनीय : गढ़० पठ्यात पढ्या पर गुण्या नी; माल० भण्या पण गुण्या नी; राज० पढ्या पण गुण्या कोनी; मरा० शिकले खरे पण आचरणाँत शिक्षण उतरलें नाही; हरि० पड्ढया तै सै पर गुण्या नही; कनौ० पढ़े तो हैं, पै गुने नाही; बुंद० पड़ो तो है, पै गुनो नइयां; ब्रज० पढ़्यौ ऐ परि गुन्यों नायें ।

पढ़े धोखा खाते हैं—अपने को विद्वान और चालाक समझने वाले प्राय: धोखा खा जाते हैं । तुलनीय : भीली— भणन्या ना आँखाँ मांये धूलो पड़े; पंज० पढे तोखा खांदे हन ।

पढ़े न लिखे ऊपर चढ़े—पढ़े-लिखे तो है नही, और सिर पर चढ़े आ रहे हैं । जो व्यक्ति विद्वान न होने पर भी बहुत बढ़-चढ़कर बातें करे और अपनी धाक जमाने की कोशिश करे उसके प्रति व्यंग्य से कहते है । तुलनीय : अव० पढ़ा न लिखा उपरन चढ़ा; पंज० पड़े न लिखे उते चड़े ।

पढ़े न लिखे नाम विद्यासागर---पढ़े-लिखे एक अक्षर नही हैं पर नाम है विद्यासागर अर्थात् विद्या का समुद्र । जब नाम के अनुसार गुण न हो तब व्यंग्य में कहते है । तुलनीय : राज० भण्यो न गुण्यो, नांव विद्यासागर; मल० पठिप्पिल्लेन्किलुम् पेरो विद्यासागर; भोज० पढ़ा न लिखा नाँव विद्याधर ।

पढ़े फ़ारसी जोते खेत---फ़ारसी पढ़कर खेत जोतते हैं । पढ़-लिखकर भी अनपढ़ों जैसे काम करने पर कहा जाता है । तुलनीय : गढ़० पढ़ें फ़ारसी ज्वातें ख्यात ।

पढ़े फ़ारसी झोंके भाड़, यह देखो करमन का हाल—पढ़े-लिखे विद्वान भी भाग्य के सम्मुख कुछ नहीं कर पाते और दर-दर की ठोकरें खाते हैं। जब कोई विद्वान पुरुष जीविकोपार्जन के लिए निकृष्ट कार्य अपनाता है तो कहते हैं।

पढ़े फ़ारसी बेचें आटा, यह देखो क़िस्मत का घाटा—ऊपर देखिए। तुलनीय : राज० पढ़ै फारसी बेचै आटो, ओ देखो किसमतरो घाटो।

पढ़े फ़ारसी बेचे तेल—नीचे देखिए।

पढ़े फ़ारसी बेचें तेल, यह देखो क़ुदरत का खेल—भाग्य बड़ा प्रबल है। इसके सामने विद्या को भी झुकना पड़ता है। तुलनीय : गढ़० पढ़ोन फारसी बेचोन तेल; अव० पढ़े फारसी बेचै तेल, कुदरत कै देखौ या खेल; राज० पढ़ै फारसी बेचै तेल, ए देखो कुदरतरा खेल; मरा० फारसी भाषा शिकला पण तेल विकण्याचा धंदा करतो, काय सृष्टीची लीला आहे पहा; ब्रज० पढ़े फारसी बेचें तेल, ये देखौ कुदरति के खेल।

पढ़े माँगें भीख, अनपढ़ करें सवारी—पढ़े-लिखे भीख माँगते हैं और अनपढ़ घोड़े की सवारी करते हैं। (क) जो लड़के पढ़ते नहीं हैं वे पढ़ने वालों के प्रति चिढ़ाने के लिए कहते हैं। (ख) भाग्य के सम्मुख किसी की नहीं चलती विद्वान भूखे मरते है और अनपढ़ मौज उड़ाते है। तुलनीय : राज० भण्या माँगै भीख, अणभण्या घोड़ै चढै।

पढ़े-लिखे की चार आँखें होती हैं—पढ़ा-लिखा मनुष्य चतुर होता है। (क) विद्वान की दृष्टि प्रत्येक गतिविधि पर रहती है और वह प्रत्येक कार्य को समझबूझ कर करता है। (ख) पढ़े-लिखे को ठगना आसान नहीं होता। तुलनीय : राज० पढ्योड़ैरै च्यार आंख्यां हुवै, भण्योड़ैरै च्यार आँख्यां हुवै; बुंद० पड़े-लिखे की चार आँखें होतीं; पंज० पड़े लिखे-दियाँ चार अखाँ हुँदिया हन।

पढ़े-लिखे की ऐसी-तैसी जोतब खेत चराउब भैंसी—पढ़ना-लिखना व्यर्थ है। मैं हल चलाऊँगा और भैंस चराऊँगा। जिसकी पढ़ने-लिखने में रुचि नहीं होती वह इस प्रकार कहता है।

पढ़े-लिखे कुछ नहीं, नाम मुहम्मद फ़ाज़िल—नाम के अनुसार गुण न होने पर कहते हैं। (फ़ाज़िल = विद्वान)।

पढ़े-लिखे घर की बिल्ली भी पंडित—तात्पर्य यह है कि शिक्षा तथा वातावरण का प्रभाव मूर्ख-से-मूर्ख व्यक्ति पर पड़ता है। तुलनीय : मैथ० पढ़ला घर के बिलैया पढ़ली; भोज० पढ़ल घर क बिलरियो पंडित।

पढ़े-लिखे बेवक़ूफ़—जब कोई पढ़ा-लिखा मनुष्य मूर्खता की बातें या मूर्खों का-सा काम करे तब कहते हैं। तुलनीय : अव० पढ़ा-लिखा बेकूफ।

पढ़े-लिखे मूर्ख—ऊपर देखिए।

पढ़े-लिखे में साढ़े बाइस—पढ़ने-लिखने में साढ़े बाइस हैं अर्थात् कुछ नहीं पढ़े हैं। न पढ़ने वाले लड़कों को कहते हैं।

पढ़े-लिखे से कुछ न होई, हर जोते कोठिला भर होई—पढ़ने-लिखने से कोई फ़ायदा नहीं होगा। हल चलाने से अनाज से कोठिला भर जाएगा। जो पढ़ना-लिखना नहीं चाहते वे ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० पढ़े-लिखे ते कुछों ना होई हर जोते कोठिला भरि होई।

पढ़े सुआ को बिल्ली खाय—इस प्रकार की पढ़ाई से क्या लाभ जिससे मनुष्य ज्ञानी तथा विवेकी न हो? तोता इतना पढ़ता है किन्तु बिल्ली से अपनी रक्षा नहीं कर पाता। आशय यह है कि केवल पुस्तकें पढ़ने से कोई लाभ नहीं होता जब तक कि उनका मनन-चिंतन न किया जाय। तुलनीय : बुंद० पड़े सुआ बिलइयन खाये।

पढ़े से गुने अच्छे—पढ़े-लिखों से अनुभवी व्यक्ति अधिक सफल रहते हैं। केवल पुस्तकें पढ़ने से ही कोई व्यक्ति ज्ञानी नहीं कहा जा सकता, जब तक कि वह संसार का ज्ञान प्राप्त न कर ले। तुलनीय : राज० भण्यै विचै गुण्या वत्ता; पंज० पड़े तो कामी चंगे; अं० Experience is better than learning.

पढ़ोगे-लिखोगे होगे नवाब, खेलोगे कूदोगे होगे ख़राब—जो पढ़ता-लिखता है वह नवाब (बड़ा आदमी) बनता है और जो खेलकूद में अपना समय नष्ट करता है उसका जीवन नष्ट हो जाता है। छोटे बालकों में पढ़ने की रुचि उत्पन्न करने के लिए ऐसा कहते हैं। शरारती बच्चे इसको इस प्रकार भी प्रयोग करते हैं—पढ़ोगे-लिखोगे होगे खराब, खेलोगे कूदोगे होगे नवाब। तुलनीय : भोज० पढ़बऽ लिखबऽ होइबऽ नवाब, खेलबऽ कुदबऽ होइबऽ खराब; अव० पढ़या लिखब्या होबा नवाब, खेलब्या कुदब्या होबा खराब।

पढ़ो तो पढ़ो, नहीं तो पींजरा खाली करो—दे० 'पढ़ना है तो पढ़ो...'।

पढ़ो बेटा फ़ारसी जोरू जूता मारसी—फ़ारसी पढ़ने वालों के प्रति व्यंग्य से कहते हैं कि अपनी भाषा छोड़कर दूसरों की भाषा पढ़ोगे तो और तो और पत्नी भी जूते मारेगी। अर्थात् विदेशी भाषा अपना कर अपने को विद्वान् समझने वाले की इज्जत कोई नहीं करता। तुलनीय : राज०

पढ़ो, बेटा फ़ारसी, जोरू जूता मारसी।

पढ़ो बेटा फारसी तले पड़ो सो हारसी—चाहे फ़ारसी पढ़ो या कोई और विद्या किन्तु जो व्यक्ति दुर्बल होगा वह सबल से सदा हारेगा। अर्थात् विद्या के साथ-साथ बल का होना भी आवश्यक है। तुलनीय : राज० दबसी सो हारसी, यही मियाँ की फारसी।

पढ़ो बेटा सीताराम, कहा—हम तो पढ़े पढ़ाए हैं—जब कोई व्यक्ति किसी धूर्त को उपदेश या शिक्षा देने का प्रयत्न करे और वह उस पर ध्यान न दे तो कहते हैं। तुलनीय : बुंद० पड़ौ पट्टू मीताराम कई—हम तौ पढ़े-पढ़ाये हैं।

पढ़ों में अनपढ़ा, जैसे हंसों में कौवा—शिक्षितों के बीच में अशिक्षित मनुष्य वैसे ही लगता है जैसे हंसों के बीच में कौवा। आशय यह है कि शिक्षित समाज में अशिक्षित की कोई क़ीमत नहीं होती।

पतला कपड़ा जल्दी फटे, गहरा प्रेम जल्दी टूटे, डगमगाता घड़ा जल्दी फूटे—पतला वस्त्र शीघ्र ही फट जाता है, गहरा प्रेम ज़रा-सी बात पर ही घृणा में परिवर्तित हो जाता है तथा ठीक स्थान पर न रखा गया घड़ा शीघ्र ही फूट जाता है। किसी से बहुत हल्का और बहुत गहरा संबंध नहीं रखना चाहिए क्योंकि ऐसी स्थिति में संबंध अधिक समय तक नहीं चलता। तुलनीय : भीली०—पातरू फड़ूकवा नूं, गाढ़ा हेत टूटवाना, डूणी डगाडग बेड़लू फूटवा नू।

पतला देख कर लड़ना मत, मोटा देखकर डरना मत—नीचे देखिए।

पतला देख लड़ना नहीं, मोटा देख डरना नहीं—किसी को दुबला-पतला देखकर लड़ना नहीं चाहिए और न ही मोटा देखकर डरना चाहिए। (क) ऊपरी तौर पर देखने से ही किसी की शारीरिक शक्ति का ठीक अनुमान नहीं लगाया जा सकता। प्रायः देखा जाता है कि दुबले व्यक्ति मोटों की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली होते हैं। (ख) बाहरी रूप को देखकर किसी वस्तु के गुणों का अनुमान नहीं लगाना चाहिए। तुलनीय : राज० पतळो देख'र भिड़नो नहीं, मातो देख'र डरणो नहीं, पंज० पतला दिख के लड़ना नई मोटा दिख के डरना नई; ब्रज० पतरौ देखि कें लड़ैना, मोटो देखि कें डरैना।

पतली छाछ और ऊपर से पानी पड़ा—छाछ तो पहले ही पतली थी ऊपर से और पानी मिला दिया गया। जब किसी बुरे व्यक्ति या वस्तु में और दोष उत्पन्न हो जाय तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० पतळी छाछ भळे पाणी पड्यो।

पतली पेंडुली मोटी रान, पूंछ होय भुइँ में तरियान; जाको होवै ऐसी गोई वाको तकै और सब कोई—पतली पेंडुली, मोटी रानें तथा भूमि तक लटकती हुई पूंछ वाले बैल जिसके पास होंगे उसकी तरफ सब की निगाहें उठेंगी। अर्थात् इस प्रकार के बैल बहुत अच्छे माने जाते हैं।

पतली मेंड़ खेत का नाश—खेत की मेंड़ यदि कमज़ोर हो तो वह टूट जाती है और वर्षा का पानी बह जाता है और फ़सल अच्छी नहीं होती। तुलनीय : ब्रज० पतरी मेंड़ खेत कौ नाम।

पता नहीं पल का, कौन जाने कल का—क्षण-भर का तो कुछ पता नहीं कल की बात कौन जानता है? अर्थात् कोई नहीं। जब कोई भविष्य के विषय में बहुत सोचता-विचारता है और बड़ी-बड़ी योजनाएँ बनाता है तब उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : देखिए 'सामान सौ बरस का है पल की खबर नहीं'।

पति और परमेश्वर बराबर—हिंदू स्त्रियाँ पति को ईश्वर के समान मानती हैं। (क) इसमें पति-पद की प्रतिष्ठा को दर्शाया गया है। (ख) स्त्री पति के सामने अपनी सच्चाई प्रकट करने के लिए भी कहती है। तुलनीय : अव० पती और परमेसर बरोबर हैं; पंज० खसम ते रब इक बराबर।

पतिबरता पति को भजै, और न आन सुहाय—पतिव्रता स्त्री को पति के अतिरिक्त और कोई पुरुष अच्छा नहीं लगता।

पतिबरता भूखे मरे, पेड़ा खाय छिनार—(क) जब अच्छों को कष्ट होता है और बुरे मौज से रहते हैं तो ज़माने की गर्दिश की ओर लक्ष्य करके कहा जाता है। (ख) वेश्यागामी पुरुष को लक्ष्य करके भी कहा जाता है जब वह पत्नी को भोजन भी न देता हो और वेश्या को काफ़ी सुख-सुविधा देता हो।

पतिबरता मैली भली, काली कुचित कुरूप—पतिव्रता स्त्री मैली, कुरूप और अच्छे स्वभाव की न होने पर भी अच्छी होती है।

पति बिना पल नहीं, अन्न बिना चैन नहीं—स्त्री के लिए पति का अभाव बहुत खटकता है तथा मनुष्य को अन्न का अभाव बेचैन कर देता है। तुलनीय : मैथ० अन बिनु कल नहिं साँय बिनु पल नहिं; भोज० सइयाँ बिना पल ना, अनाज बिना कल ना।

पति भूखा तो माथा बूखा, अपने भूखा चूल्हा फूंका—

पति को भूख लगने पर तो पत्नी कहती है कि मेरे सिर में दर्द हो रहा है और जब उसे भूख लगती है तो चूल्हा जलाती है। (क) केवल अपना ही स्वार्थ चाहने वाले की ओर व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। (ख) कुलटा स्त्रियों के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : मैथ० अपन भूख तऽ चूल्ही फूंक साँयक भूख तऽ माथा दूख, भोज० मइयाँ क भूख त माथा दूख, आपन भूख त चूल्ह फूंक।

पतीली में होता तो पत्तल में आता—(क) कुछ जानते-बूझते तो बिना बोले न रहते। (ख) निर्धन व्यक्ति के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० पतीली बिच हुंदा ते पत्तल विच आंदा।

पतुरिया रूठी धर्म बचा—(क) वेश्या के रूठने से लाभ ही होता है क्योंकि उससे धर्म और धन दोनों की रक्षा होती है। (ख) जब कोई दुष्ट (नीच) मनुष्य किसी से रूठ जाय तब भी कहा जाता है। तुलनीय : भोज० बेसवा रूठी धरम बचा; अव० पतुरिया रूठी धरम बचा।

पतुरियों का डेरा जैसे ठगों का घेरा—वेश्या और ठग दोनों बराबर हैं, क्योंकि रंडियाँ भी ठगों की भाँति फँसाकर लूटती हैं।

पत्तल फाड़ी और चल दिए—जिस पत्तल में खाया उसे फाड़ा और चल दिए। स्वार्थी व्यक्तियों के लिए कहा जाता है जो मतलब पूरा होने पर किसी का साथ नहीं देते।

पत्ता खड़का, बंदा सड़का/सरका—जब किसी के ऊपर कोई आपत्ति आने वाली हो और वह चतुरता से उससे बचकर निकल जाए तब कहते हैं। तुलनीय : अव० पत्ता खड़का बंदा भड़का।

पत्थर उछाल कर सर पर नहीं लोकना चाहिए—पत्थर को ऊँचा उछालकर सिर पर नहीं रोकना चाहिए। अर्थात् जान-बूझकर अपनी हानि नहीं करनी चाहिए। तुलनीय : भीली उचो भाटो दड़ीन मूंड नी मांडवी।

पत्थर की नाव नहीं चलती—पापी का निस्तार नहीं होता या बलपूर्वक ली गई वस्तु लाभ नहीं देती। तुलनीय : भोज० पथरे क नाइ नाहीं चले ले; पंज० बट्टे दी नाव नईं चलदी; ब्रज० पत्थर की नाव तौ डूबै ईगी।

पत्थर की लकीर—जो कभी नहीं मिटती। सच्चों की बात पर कहते हैं जो अपनी बात पर डटे रहते हैं। तुलनीय : अव० पथरे कै लकीर; पंज० बट्टे दी लीक; ब्रज० पत्थर की लकीर।

पत्थर को जोंक नहीं लगती—जोंक वहीं लगती है जहाँ से उसे कुछ न कुछ खून मिल सके। पत्थर बहुत सख्त और नीरस होता है इसलिए उसमें जोंक नहीं लगती। (क) मूर्ख को उपदेश देना व्यर्थ है। (ख) दुष्ट या बली को कोई तंग नहीं करता उससे सब डरते हैं। (ग) निर्दयी के आगे रोने से कोई लाभ नहीं होता क्योंकि उसमें दया नाम-मात्र को नहीं होती। तुलनीय : हरि० पत्थर के क्या जोख लागै सै? बुंद० पथरा कों जोंक नईं लागत; मरा० दगडाला जळू लागत नहीं।

पत्थर क्या पसीजेगा?—पत्थर कभी नहीं पसीजता। आशय यह है कि (क) कठोर हृदय वाले से दया की आशा नहीं करनी चाहिए। (ख) कंजूस से कभी दान की आशा नहीं करनी चाहिए। तुलनीय : पंज० बट्टे ने की खुरना; ब्रज० पत्थर कहा पसीजैगो?

पत्थर डारे कीच में उछरि बिगारे अंग—पत्थर कीचड़ में डालोगे तो छींटें अवश्य पड़ेंगे। आशय यह है कि दुष्टों के मुँह लगने से अपमानित होना पड़ता है।

पत्थर तले हाथ दबा—(क) किसी ऐसे संकट में फँस जाने पर कहते हैं जिससे छुटकारा पाने का कोई रास्ता न सूझता हो। (ख) किसी के पास रकम फँस जाय और प्रयत्न करने पर भी न मिले तब भी कहते हैं। तुलनीय : बुंद० पथरा तरें हाथ दबो; पंज० बट्टे थले हथ रख; ब्रज० पत्थर के नीचें हात दब्यौ ऐ।

पत्थर तले हाथ दबे तो चतुराई से काढ़े—पत्थर के नीचे यदि हाथ दब जाये तो उसे युक्ति से निकालना चाहिए। जबरदस्ती करने से हाथ में चोट लग सकती है। आशय यह है कि विपत्ति में फँस जाने पर उसका युक्ति से सामना करना चाहिए। तुलनीय : बुंद० पथरा तरें हाथ दबै तौ स्यान से काड़ लेवें।

पत्थर नहीं पिघलते—दे० 'पत्थर मोम नहीं···'।

पत्थर पर का मारना चोखो तीर नसाय—पत्थर पर तीर मारने से तीर बेकार हो जाता है। अर्थात् दुष्टों और मूर्खों को उपदेश देना व्यर्थ है क्योंकि उससे अपनी ही हानि होती है।

पत्थर पर जामें गुरम्हो तब भी न हो अपरा कुरमी—यदि पत्थर पर किसी प्रकार कुछ पैदा भी हो जाय तब भी कुरमी (एक जाति) अपना नहीं हो सकता। (ख) कुरमी कुरमी को देखकर जलता है।

पत्थर पानी में गलता नहीं, भाग्य का कहीं जाता नहीं—असंभव बात नहीं होती और भाग्य के विपरीत भी कुछ नहीं हो सकता। भाग्यवादियों का कहना है।

पत्थर पूजे हर मिले, मैं पूजूं संसार—यदि चापलूसी से मतलब पूरा हो जाए तो मैं दुनिया भर की चापलूसी कर लूं। तात्पर्य यह है कि बिना निष्ठा और आस्था के किसी की सेवा करने से कुछ प्राप्ति नहीं होती।

पत्थर मारे मौत नहीं आती—पत्थर से मारने पर भी मृत्यु नहीं होती, जब तक कि मौत न आ जाय। अर्थात् मृत्यु ईश्वर की इच्छा के बिना नहीं हो सकती। जब कोई आत्मघात करने पर भी नहीं मरता तब कहते हैं। तुलनीय : पंज० बट्टे मारण नाल मौत नईं आंदी; ब्रज० पत्थर मारे तऊ मौनि नायें आवै।

पत्थर में चले न हल, ठूंठ कभी न देवे फल—पथरीली धरती में हल नहीं चल सकता और जो वृक्ष सूख चुका है वह कभी फल नहीं दे सकता। जिस स्थान से कुछ मिलना संभव न हो और वहाँ से कुछ लेने की आशा की जाय तब आशा करने वाले को समझाने के लिए ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० धौ ल्याणू बागमर्नी, अर कखर्या ल्यू अक्ल कख छ।

पत्थर मोम नहीं होता—पत्थर मोम की तरह मुलायम नहीं हो सकता। अर्थात् जिसका हृदय कठोर है वह दयालु नहीं बन सकता। तुलनीय : अव० पथरा मोम न होई; पंज० बट्टा मोम नई बणदा; ब्रज० पत्थर मौम नायें होय।

पत्थर से ईंट नरम होती है—होते तो दोनों ही कठोर हैं, किंतु पत्थर की अपेक्षा ईंट कुछ कम होती है। जब किन्हीं दो बुरी वस्तुओं में से एक को लेना हो तो जो कम बुरी हो उसे ही लेना चाहिए। तुलनीय : बुद० पथरा से ईंट कौरी होत; मरा० दगडापेक्षा वीट मऊ।

पदनी आइल, न पेठिया लागल—बिना वेश्या के बाजार नहीं लगता। बाजार लगने के लिए वेश्याओं का होना बहुत ज़रूरी है।

पनिहारी की लेज से, सहज कटे परवान—पनिहारी की रस्सी से पत्थर पर भी निशान पड़ जाता है। आशय यह है कि अभ्यास से सब कुछ हो जाता है या मूर्ख भी विद्वान बन जाता है।

> करत-करत अभ्यास के जड़ मति होत सुजान,
> रसरी आवत जात तें सिल पर परत निसान।
>
> —रहीम

पनिहा सांप, जरिहा नौकर; न उनके विष न उनके रिस—पानी के साँप में विष नहीं होता और रोगी सेवक को क्रोध नहीं आता। आशय यह है कि इन दोनों से हानि की कोई संभावना नहीं रहती। (जरिहा = जिसे ज्वर आता हो।

पर आस, नित उपास—जो दूसरे के भरोसे रहता है उसे प्रायः भूखा ही रहना पड़ता है। मनुष्य को स्वावलंबी होना चाहिए। तुलनीय : अव० दुसरे के आसा, नित उपासा; पंज० दूजे सहारे रोज कवारे।

पर उपकारी, धरमधारी—दूसरे की भलाई करने वाले धर्मात्मा होते हैं। कभी-कभी व्यंग्य के रूप में भी प्रयुक्त होता है।

पर उपकारी पुरुष जिमि, नवहिं सुसंपति पाय—दूसरों की भलाई करने वाले व्यक्ति अधिक संपत्ति पाकर और अधिक नम्र एवं उपकारी बन जाते है।

पर उपदेश कुशल बहुतेरे—दूसरों को उपदेश देने वाले संसार में भरे पड़े हैं, किंतु उन्हीं उपदेशों पर स्वयं आचरण करने वाले बहुत कम मिलेंगे। जब कोई व्यक्ति किसी काम को करने से दूसरे को मना करे और स्वयं वही करे तो कहते हैं। तुलनीय : भोज० आन के मियां मति-बुधि देय, अपने ढमनियां खायं; राज० आप व्यासजी बैंगण खावे, औराने परमोथ बतावै; भूवाजी आप तो सासरे जाय कानी भतीजी ने सीख देवै; आप न जावै सासरै औराने सिख देय; गढ़० एक कोढ़ी हैका कोढ़ी तरको; मरा० दुसऱ्याला उपदेश करण्यांत पुष्कळ जण कुशल असतात; फ़ा० खुदरा फ़ज़ीहत दीगरां नसीहत; स० परोपदेशे पाण्डित्य सर्वेषां सकरं नृणाम्; पंज० आप न बस्सी सौह्‌रे ते लोक्कां मत्ती दे; बुद० आप न जावे सासरे औरन खां सिख देय।

पर कल घोड़ भुसौले ठाढ़—परचा हुआ घोड़ा पुनः आकर भुसौल में खड़ा होता है। (ख) जब कोई किसी की एक-दो बार सहायता कर दे और बाद में वह बार-बार उसी के यहाँ जाय तब कहते हैं। (ख) जिसका कहीं ठिकाना न हो और घूम-फिर कर उसी जगह आ जाय तब कहते है। तुलनीय : अव० परचा घोड़ भुसौले ठाढ़; भोज० परकल घोड़ी भुसउले ठाढ़।

पर का धन गौरैया मार—दूसरे के धन को गौरैया खाए मुझसे क्या मतलब? दूसरे की क्षति की चिंता न करने वाले के प्रति कहते हैं।

पर की आसा सदा निरासा—दूसरे की आशा नहीं करनी चाहिए क्योंकि उससे निराश ही होना पड़ता है। तुलनीय : पंज० दूजे दी आसा सदा निरासा।

पर की खेती पर की गाय, वह पापी जो मारन जाय—किसी एक के खेत में किसी दूसरे की गाय खा रही हो तो

से मारने या हाँकने वाला पापी समझा जाता है। आशय यह है कि बिना ज़रूरत किसी के मामले में हस्तक्षेप करना अच्छा नहीं होता।

पर की घोड़ी भुसौले ठाढ़—दे० 'परकल घोड़···'।

पर की भैंस कुलेंदा खाए, बार-बार मछुआ तर जाय—दे० 'परकल घोड़ी···'।

पर के धन पर चोर रोवे—जब चोर से धन छिन जाता है तो वह रोता है यद्यपि वह चोरी का ही होता है। जिससे अपना कुछ प्रयोजन न हो उसके लिए चिन्तित होने पर कहते हैं। तुलनीय : पंज० दूजे दे पैहे उते चोर रोण।

पर को औगुन देखिहैं अपनों दृष्ट न होय—दूसरों के अवगुण देखते हैं पर अपने अवगुण उन्हें दिखाई नहीं देते। अपने दोष को न देखकर दूसरों के दोषों को देखने वाले के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० एक कोढ़ी है का कोढी तरको; पंज० आप किसे जही नही ते गल्ल करन नां रही नहीं।

पर घर कबहुँ न जाइए, गए घटत है ज्योति—दूसरे के घर कुछ माँगने के लिए कभी नहीं जाना चाहिए क्योंकि बार-बार ऐसा करने से अपनी ही इज्जत घटती है।

पर घर कूदें मूसलचंद—दूसरे के घर में ज़बरदस्ती जाना। जो बिना बुलाए किसी के यहाँ जाय या बिना कहे उसके काम में दखल दे तब कहते हैं। तुलनीय : बुंद० पर घर कूदें मूसरचंद; ब्रज० पर घर कूदें मूसर चंद।

पर घर नाचे तीन जन, बैद वकील दलाल—वैद्य, वकील और दलाल ये तीनों दूसरे के धन पर ही नाचते हैं या मौज उड़ाते हैं। तुलनीय : माल० पर घर नाचे तीन जणा, वेद वकील दलाल।

पर घर नाचें तीन जने, कायथ, वैद्य, दलाल—ऊपर देखिए।

परची भइंस कुलेंदा खाए, बार-बार महुआ तरे जाय—दे० 'परकल घोड़ी···'।

परचे परतीत है—देखने से या जानने से ही विश्वास पड़ता है। तुलनीय : ब्रज० परचे ते परतीति है।

पर छेद पदे-पदे, आपन छेद आँख मुदे—दूसरों की बुराई पग-पग पर देखते हैं और अपनी बुराई पर आँख बंद कर लेते हैं। जो व्यक्ति अपनी बुराइयों की तरफ ध्यान न दे और दूसरों की बुराइयों की बार-बार चर्चा करे उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : असमी—पर् छिद्र पदे पदे, आपोन् छिद्र नेदेखय; सं० आत्मछिद्रं न पश्यन्ति, पर छिद्रं पदे पदे; अं० If you laugh at a crooked man, you need walk very straight.

परजा मरन, राजा को हँसी—प्रजा को कष्ट होता है और राजा को हँसी सूझती है। (क) जब राजा या अधिकारी सुखी हो और प्रजा कष्ट भोग रही हो तब कहते हैं। (ख) जब राजा या अधिकारी अपने सुख के लिए ऐसा कार्य करे जिससे प्रजा को कष्ट हो तब भी कहते हैं। तुलनीय : अं० When Rome was burning Nero was laughing.

परजा मोट गोसैयाँ दूबर—आज के युग में सेवक, छोटे या दुर्बल तो बली या मुँहज़ोर हो गए हैं और मालिक, राजा या बड़े लोग कमज़ोर या दब्बू हो गए हैं।

परदा रहे तो पुण्य, खुल जाए तो पाप—अनुचित कार्य छिपे रूप से होने पर पाप नहीं कहा जाता, खुल जाने पर ही उसे पाप कहा जाता है। आशय यह है कि संसार के अधिकांश व्यक्ति कुकर्म करते हैं, किंतु चूंकि वे छिपकर करते हैं इसलिए उन्हें कोई दोष नहीं दे पाता। जब कोई भला आदमी किसी अपराध में रंगे हाथों पकड़ा जाता है तो उसका पक्ष लेने वाले ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भीली—ढांकयो धरम ने उघाड़्यो पाप।

परदे की बीबी और चटाई का लहँगा—बीवी जी रहती तो हैं परदे के अंदर लेकिन लहँगा पहनती हैं चटाई का। हैसियत के मुताबिक़ पोशाक न हो तब कहते हैं। तुलनीय : अव० परदा की बीबी, चटाई का लहँगा।

परदेश कलेश नरेशन को—परदेश में राजाओं को भी कष्ट होता है। अर्थात् घर से बाहर जाने पर सभी को कष्ट भोगना पड़ता है। तुलनीय : माल० परदेश में क्लेश नरेशन को; बुंद० परदेस कलेस नरेसन कों; ब्रज० परदेस कलेस नरेसन कूँ।

परदेश गया जीता या मरा ?—दूर गया हुआ आदमी जीता है या मर गया, किसी को इस संबंध में कुछ पता नहीं होता। आशय यह है कि बाहर गए हुए आदमी की क्या स्थिति है इस संबंध में कोई कुछ नहीं कह सकता। तुलनीय : राज० गाँव गयो सूतो जागै।

परदेस जमाई फूल बराबर, गाँव जमाई आधा; घर जमाई गधा बराबर, दिल आया तब लादा—ससुराल से दूर रहने वाला जामाता फूल की तरह आदर पाता है क्योंकि वह कभी-कभी ही ससुराल आ पाता है। एक ही ग्राम में रहने वाला प्राय: आता रहता है, इसलिए उसका आदर कम होता है तथा घरजमाई का कोई भी आदर नहीं करता। उससे सभी तरह का काम लिया जाता है। आशय यह है कि हमेशा ससुराल में रहने वाले की कोई इज्जत

नहीं करता। तुलनीय : माल० परदेस जमाई फूल बराबर, गाम जमाई आधो; घर जमाई गधा बरावर, मन आवे जब लादो।

परदेसी की प्रीत फूस का तापना, दिया कलेजा काढ़ हुआ नहिं आपना —परदेशी की प्रीति उसी प्रकार अस्थायी अर्थात् थोड़ी देर की होती है जिस प्रकार फूस का तापना। न फूस की आग देर तक रहती है और न परदेशी से किया हुआ प्रेम बहुत समय तक बना रह सकता है। तुलनीय : माल० कइ फूस रो तापणो, कइ परदेसी की प्रीत; बुंद० परदेसी की प्रीत, रैन कौ सपनो; भोज० परदेसी क प्रीत फूंस क तापल, देहली करेजा काढ नबोना भइल आपन।

परदेसी की प्रीत, रैन का सपना —परदेशी की प्रीति रात के स्वप्न के समान झूठी होती है। ऊपर देखिए।

परदेसी बालम तेरी आस नहीं, बासी फूलों में बास नहीं —विदेशी प्रेमी की प्रतीक्षा करना बेकार होता है क्योंकि उसका आना अनिश्चित होता है या वह दूसरे देश में जाकर अपनी प्रेमिका को भूल जाता है।

पर द्रव्येषु लोष्टवत—दूसरे का धन ढेले के समान समझना चाहिए। आशय यह है कि पराए धन की उम्मीद नहीं करनी चाहिए।

पर धन जोगवें मूरखचंद- दूसरे के धन को अपने पास रखकर उसकी देख-भाल करना मूर्खता है।

पर धन नाचे तीन जन, बैद वकील दलाल --दे० 'पर घर नाचे तीन जन…'।

पर धन पर लक्ष्मी नारायण - दूसरे के धन पर मौज उड़ाने वाले या इतराने वाले के प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

पर धन बाँधे कपड़ा फाटे —दूसरे का धन बाँधने पर कपड़ा फटने लगता है। आशय यह है कि दूसरे का धन लेने में कोई संकोच नहीं करता।

पर धन बाँधे मूरखचंद —नीचे देखिए।

पर धन राखे मूरखचंद—जो दूसरे के धन को अपने पास रखता है, वह मूर्ख होता है क्योंकि उससे लाभ कुछ नहीं होता ऊपर से खो जाने पर अपने पास से भरना पड़ता है। तुलनीय : बुंद० पर धन बाँधें मूरखनाथ; अव० परधन राखै मूरखनाथ।

पर निन्दा सम अघ न गिरीसा---दूसरे की निन्दा से बढ़कर कोई पाप नहीं है।

पर पतरी को नीक बरा - दूसरे के पत्तल का भोजन बड़ा अच्छा मालूम होता है और अपनी पत्तल का खराब। अर्थात् पराई चीज़ अपनी से अच्छी मालूम होती है और उस पर मन सहज ललचा जाता है। तुलनीय : अव० दुसरे के पतरी के बड़ा बड़ा भात।

पर पीड़ा सम नहिं अधमाई —किसी को पीड़ा पहुँचाने से बड़ी और कोई नीचता (अधमता) नहीं है।

परबत की जड़ परबत जाने —पर्वत की जड़ पर्वत ही जानता है, मनुष्य नहीं जानता कि वह कितनी गहरी है। अर्थात् (क) मनुष्य प्रकृति की गूढ़ बातों को नहीं समझ पाता। (ख) बड़े लोगों की बातों को बड़े लोग ही जानते हैं, उन्हें सामान्य लोग नहीं जान सकते। तुलनीय : पंज० परबत थां परबत नूं पता।

परबत को राई करे, राई परबत मान—ईश्वर पर्वत को राई जैसा छोटा और राई को पर्वत जैसा महान बना देता है। (क) ईश्वर की विचित्रता पर कहा गया है। (ख) जब कोई धनवान निर्धन हो जाय या निर्धन धनवान हो जाय तब भी कहते हैं।

परबत पर खोदे कुआँ कैसे निकसे तोय --पहाड़ पर कुआँ खोदने से पत्थर के सिवा और कुछ (पानी) कैसे निकल सकता है? व्यर्थ में परिश्रम करने पर कहते है।

परबस का जीना बुरा— दूसरे के अधीन रहकर जीवित रहना बहुत बुरा होता है। तुलनीय : बुंद० परबस को जीवो बुर ओ; पंज० किसे उत्ते जीणा पैड़ा।

परबस जीव स्वबस भगवंता—जीवधारी दूसरों के बस में रहते हैं, किंतु ईश्वर स्वतंत्र है। तात्पर्य यह है कि ईश्वर किसी के कहे या दबाव से कोई काम नहीं करता।

परभाते मेह डंबरा, दोफारां तपंत; रातू तारा निरमला, चेला करो गंछत—प्रातः आकाश में बादल दौड़ें; दोपहर को कड़ी धूप हो तथा रात को आकाश निर्मल रहे तो अकाल पड़ता है अर्थात् वर्षा नहीं होती। अतः वहाँ से दूसरे देश को चल देना चाहिए।

परभाते मेह डंबरा, साँजे सीला बाव; डंक कहै हे भड्डली, काला तणा सुभाव - डंक भड्डरी से कहते हैं कि यदि प्रातः बादल दौड़ते दिखाई दें और सायंकाल मौसम ठंडा हो जाय तो वर्षा न होने से अकाल पड़ता है।

पर मरी सासु पासों आउ आँसु—पिछले साल सास मरी थीं और इस साल आँसू आ रहे हैं। झूठा प्रेम दिखानेवाले के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : अव० कब मरहीं सास कब अइहैं आस।

परम स्वतंत्र न सिर पर कोई—(क) जिसके आगे-पीछे कोई नहीं है, वह बिलकुल स्वतंत्र है। (ख) जो जी में आवे सो करो, कोई ताड़ना देने वाला नहीं है। जब कोई

व्यक्ति स्वतंत्र होने के कारण उच्छृंखलता करे तो कहते हैं।

परमारथ के कारने, साधुन धरा सरीर—साधु या सज्जन लोग दूसरों की भलाई के लिए ही जन्म लेते हैं। तुलनीय : तेलु० परोपकारार्थं मिथ शरीरं।

पर मुंडे फलहार—दूसरे के खर्च पर फलाहार करना जो दूसरे के बल पर या खर्च पर काम चलाता है उसके प्रति कहते हैं।

पर मुई सासू, एसों आए आंसू—दे० 'पर मरी सासु…'।

पर मुख देखि अपना मुख गोवें चूरी कंकन बेसरि टोवें; आँचर टारि के पेट दिखावें, अब का छिनारि डंका बजावें—जो स्त्री दूसरे के मुख को देखकर अपने मुख को ढक लेती है; चूड़ी (चूरी), कंगन (कंकन) और बेसर (नथ) को टोने लगती है, आँचल हटाकर पेट दिखाने लगती है, वह क्या अब डंका बजाकर कहेगी कि मैं छिनाल (व्यभिचारिणी) हूँ। अर्थात् उपरोक्त लक्षण व्यभिचारिणी स्त्रियों के हैं।

परमेश्वर जो करता है सो अच्छा ही करता है—ईश्वर जो कुछ भी करता है अच्छा ही करता है। (क) ईश्वर-वादियों और संतोषी व्यक्तियों का कहना है। (ख) जब किसी पर कष्ट पड़ता है तो उसे धीरज बँधाने के लिए भी कहा जाता है। इस पर एक कहानी कही जाती है : एक राजा अपने मंत्री सहित शिकार के लिए जंगल में गया। वहाँ पर किसी अस्त्र से राजा की उँगली कट गई। राजा ने मंत्री को दिखाया। मंत्री ने कहा जो कुछ ईश्वर ने किया है अच्छा ही किया है। इस पर राजा ने क्रोधित होकर मंत्री को निकाल दिया। कुछ दूर जाने पर चोरों के एक गिरोह ने राजा को गिरफ्तार कर लिया और उसे देवी के पास बलि देने के लिए ले गये। चोरों में जो पंडित था उसने कहा इसका अंग भंग है अर्थात् एक उंगली कटी हुई है, इसलिए इसकी बलि देना ठीक नहीं है। इस प्रकार राजा की जान बच गई। जब राजा लौटा तो उसने मंत्री को बुलाकर कहा, 'आपका कहा सच है। यदि मेरी उंगली कटी न होती तो मेरी जान नहीं बच सकती थी। मुझे बहुत दुःख है कि मैंने आपको अपमानित करके निकाल दिया।' मंत्री ने कहा 'यह भी भगवान ने अच्छा ही किया, नहीं तो आपके साथ होने पर मेरी बलि अवश्य ही दी जाती।' तुलनीय : गढ़० परमेश्वर जो कुछ कर्द सब भला का ही वास्ता कर्द; अव० परमेश्वर जउन करत है उ अच्छे करत है; पंज० रब जो करदा है चंगा ही करदा है।

पर रुचि कपड़ा स्वरुचि भोजन—कपड़ा दूसरे की पसंद का पहनना चाहिए और भोजन अपनी इच्छानुसार करना चाहिए। तुलनीय : असमी—पर रुचि काछान्, स्व-रुचि भोजन्; अ० Eat as you please dress as pleases others.

पर साल मरीं सास, यह साल आए आँस—दे० 'पर मरी सासु…'। तुलनीय : अव० पर मरी सासु, आंसो आवा आँस; भोज० पर साल मरी सास असों आयल आँस।

परहत बनज, संदेसन खेती, कड़वारे के दाम; सजन सावगत जिन करौ, घर हठकट है बास—दूसरे के हाथों से व्यापार, संदेशों से खेती और दूसरे से धन लेकर साहूकारी नहीं करनी चाहिए। ऐसा करने से हानि ही होती है, लाभ कभी नहीं होता।

परहथ बनिज, संदेसे खेती, बिन वर देखे ब्याहैं बेटी; द्वार पराए गाड़ें थाती, ये चारों मिलि पीटें छाती—दूसरे के लाभ के लिए व्यापार कराने वाला, घर बैठकर खेती कराने वाला, बिना वर को देखे पुत्री का ब्याह तय करने वाला तथा दूसरे के द्वार पर धरोहर गाड़ने वाला—ये चारों बाद में बैठकर छाती पीट-पीट कर रोते हैं अर्थात् पछताते हैं।

परहेज बड़ी दवा है—रोग में परहेज़ दवा से बढ़कर काम करता है। (क) जब रोगी परहेज़ न करे तब कहते हैं। (ख) परहेज़ करने से जब किसी को काफी फ़ायदा होता है तब वह परहेज़ की विशेषता बतलाने के लिए कहता है। तुलनीय : अव० परहेजै सबसे बड़ दवाई अहै; पंज० परेज बड़ी दवा है; ब्रज० परेज बड़ी दवाई ऐ अं० Prevention is better than cure.

परहेज भी आधा इलाज है—ऊपर देखिए। तुलनीय : ब्रज० परेज आधौ ऐलाजै।

पराई आँखें काम नहीं आतीं—दूसरे के सहारे रहकर कोई काम पूरा नहीं किया जा सकता। जो अपनी सामर्थ्य से हो सके वही अच्छा होता है।

पराई आस, सदा निरास—दूसरे की आशा करनेवाले को निराश होना पड़ता है, अर्थात् जो व्यक्ति स्वयं उद्योग न करके दूसरे के भरोसे बैठा रहता है उसे सदा दुःख भोगना पड़ता है और उसका काम कभी सिद्ध नहीं होता। तुलनीय : मेवा० पराई आस सदाई निरास।

पराई आसा, नित्त उपासा—दूसरे के भरोसे रहनेवाला भूखों मरता है। तुलनीय : बुंद० पराई आसा मरै उपासा।

पराई कोठी का टेढ़ा मुंह—दूसरे के भरोसे पर क्या रहना? स्वावलंबी बनने के लिए उपदेश दिया जाता है।

पराई गाँड़ में मूसल देना सुई जैसा लगता है—आशय यह है कि दूसरों को बड़ी क्षति पहुँचाने या कष्ट देने में भी लोगों को कोई दुख नहीं होता। तुलनीय : राज० परायी गाँड में मूसळ देवै जरां सूई सो लागै।

पराई गेहूँ पर कंडा बीनें दूसरे का गेहूँ देखकर कंडा बीनना आरंभ कर दिया कि इसी में से थोड़ा-बहुत हम भी लेकर रोटी पका लेंगे। दूसरे के धन पर दृष्टि रखनेवाले या दूसरे के भरोसे कोई काम करने वाले को व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : बुंद० पराई कनक पै कंडा बीनवो; पंज० दूजे दी कनक उते गोटे पथे।

पराई चीज़ किसे अच्छी नहीं लगती ? किंतु जब वह माँग लेता है, कौआ बनना पड़ता है—दूसरे की चीज़ भले ही खराब हो, किन्तु अच्छी लगती है और जब वह अपनी वस्तु वापस ले लेता है तब शर्म आती है। अर्थात् किसी दूसरे से कोई वस्तु न लेकर अपने घर जो कुछ हो उसी से काम चलाना चाहिए। तुलनीय : मग० अनकर चीज झमकउआ छीन लेलक तऽ जान भे गेल कउआ; भोज० आन की चीज झमकउआ छीन लेइ तऽ कउआ।

पराई जेब से अपनी जेब में धरना मुश्किल है—दूसरे का धन लेना सहज नहीं है। आशय यह है कि दूकानदारी और नौकरी में बहुत होशियारी की ज़रूरत पड़ती है। तुलनीय: पंज० दूजे दी जेब नालों अपनी जेब बिच रखना औखा है।

पराई तोंद का घूंसा—दूसरे की तोंद में घूंसा लगने का अनुभव उसी को होता है दूसरे को नहीं। जब कोई दूसरे के कष्ट को कुछ न समझे तब कहा जाता है।

पराई थाली के लड्डू बड़े-बड़े—दूसरे की थाली के लड्डू अपनी थाली के लड्डुओं से बड़े दिखाई देते है। दूसरे का लाभ, सुख या धन सबको अधिक दिखाई देता है। तुलनीय : राज० परायी थाली में घी धणो दीसै; बुंद० पराई पतरी कौ बड़ो बरा; पंज० दूजे दी थाली दे लड्डू बड़े।

पराई थाली में घी बहुत—ऊपर देखिए।

पराई थैली का मुंह सँकरा—दूसरे के पास से पैसा लेना बहुत कठिन कार्य है। अर्थात् दूकानदारी और नौकरी बहुत होशियारी के साथ की जाती है।

पराई नौकरी करना और साँप का खिलाना बराबर है—साँप के खिलाने में हमेशा खतरा रहता है क्योंकि वह किसी समय भी काट सकता है, उसी प्रकार दूसरे की नौकरी से आदमी किसी भी समय निकाला जा सकता है। दोनों खतरे के काम हैं।

पराई नौकरी साँप खिलाने के बराबर है—ऊपर देखिए।

पराई पतरी का बड़ा-बड़ा—दे० 'पराई थाली के…'।

पराई पतरी का भात बड़ा-बड़ा—दे० 'पराई थाली के…'।

पराई पतरी का भात मीठा—दे० 'पराई थाली के…'। तुलनीय : बुंद० घर की खाँड किरकिरी लागै, बाहर कौ गुर मीठो; ब्रज० पराई पत्तल का भात मीठा।

पराई पीर परदेस बराबर—दूसरे का दुख ऐसा होता है जैसे किसी को परदेश में हो जाए जिसे कोई नहीं जानता। अर्थात् दूसरे के दुख और कष्ट की कोई परवाह नहीं करता। तुलनीय : राज० परायी पीड़ परदेस बराबर; पंज० दूजे दी पीड़ परदेस बरगी।

पराई बदशकुनी के वास्ते अपनी नाक कटाए—दूसरे का अशुभ चाहने के लिए अपनी नाक कटा ली। दुष्टों पर कहा गया है जो दूसरों के अहित के लिए अपना भी नुक़सान करते हैं।

पराई लड़की की शादी किसी ग़ैर से नहीं करनी चाहिए—दूसरे की लड़की की शादी किसी ग़ैर जाति के लड़के के साथ नहीं करनी चाहिए। आशय यह है कि किसी पराई लड़की पर अपना अधिकार समझकर उसे किसी कुपात्र को नहीं सौंपना चाहिए। दूसरे शब्दों में किसी के साथ विश्वासघात नहीं करना चाहिए। तुलनीय : भीली—पारकी पामणी पारके नी पण्णावाणी।

पराई सराय में कौन धुआँ करता है—दूसरे की कोई सहायता नहीं करता, सब अपना ही भला करते हैं। जब कोई किसी की सहायता न करे तब कहते हैं। (धुआँ करना = आग जलाकर मदद पहुँचाना)।

पराई हाँसी गुड़-सी मीठी—दूसरे की हँसी गुड़ जैसी मीठी लगती है। आशय यह है कि दूसरों की खिल्ली उड़ाने में बहुत आनंद मिलता है पर अपनी हँसी होती है तो रोना आता है। तुलनीय : पंज० दूजे दी हसी गुड़ बरगी मिठी।

पराए आगे रोना, लाज-शरम को खोना—अपनों को अपना दुख बताने में कोई बुराई नहीं है, किंतु दूसरों को अपना दुःख नहीं बताना चाहिए, क्योंकि वे हंसी ही उड़ाएँगे। आशय यह है कि सहानुभूति न रखने वालों के सम्मुख अपना दुख नहीं कहना चाहिए। तुलनीय : गढ़० बीड़ मूरोई ना, अपणी पती खोईना; पंज० दूजे अगे रोणा

लाज-सरम नूं तोणां।

पराए का जन्मा अपना क्या होगा ? अर्थात् (क) दूसरे की संतान कभी अपनी नहीं हो सकती। (ख) दूसरे की वस्तु अपने काम नहीं आती। तुलनीय : मग० अनकर जलमल अप्पन होई ? भोज० आन क जनमल का आपन होई ?

पराए का बही-चूरा जय जगरनाथ—दूसरे के सहारे जीना; स्वयं परिश्रम करके न खाना। दूसरे के धन पर मौज उड़ानेवाले के लिए व्यंग्य में कहते है। तुलनीय : मैथ० अनकर चूड़ा-दही पर जय जगरनाथ; भोज० आन क दही-चूरा जै जगरनाथ।

पराए का दाना हक लगाकर खाना—दूसरे की वस्तु का खूब उपभोग करना चाहिए क्योंकि ऐसे अवसर कम आते हैं। पेटू के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : मग० अनकर दाना हक लगा के खाना; भोज० आन क दाना हक लगा के खाना; पंज० दूजे दा दाना दम लगा के खाना।

पराए का धन मिले तो नौ मन तौला जाय— दूसरे का धन मिले तो नौ मन लेलिया जाय। दूसरे की चीज़ के लेने मे भी संकोच न करने वाले के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : मैथ० अनकर धन पाबी तऽ नौ मन तौलाबी; भोज० आन क धन पाईत नौ मन तउलाइं।

पराए का सिर पसेरी बराबर— दे० पराया सिर पसेरी...'।

पराए का सेंदुर देख अपना सिर फोड़ना—दूसरे के सौभाग्य से जलने या ईर्ष्या करने वाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : भोज० आन क सेनुर देख आपन कपार फोरे।

पराए का हजार मेरे चूल्हे की राख—पराया कितना भी धनी क्यों न हो, मेरे किस काम का ? मेरे लिए उसका कुछ भी महत्त्व नहीं। अर्थात् अपनी धन-संपत्ति ही अपने काम आती है, उसी से संतोष करना चाहिए। तुलनीय : मैथ० अनकर हजार हमर चूल्हिक पजार; भोज० आन क हजार चूल्ही क पजार।

पराए के मँड़वा में भड़भड़—अर्थात् (क) दूसरे के ब्याह-शादी में जब कोई दखल देता है तब ऐसा व्यंग्य में कहते हैं। (ख) दूसरे की बदनामी में जब किसी को आनंद आता है तब भी व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मग० अनकर मँड़वा में भड़भड़, भोज० आन के मँड़वा भड़भड़।

पराए खसम पर सत्ती होय—दूसरे के पति के मरने पर सती होती है। (क) दूसरे से जबरदस्ती संबंध जोड़ने या दूसरे के लिए झूठी सहानुभूति दर्शाने पर कहा जाता है। (ख) दूसरे के लिए व्यर्थ कष्ट झेलने पर भी कहा जाता है। तुलनीय : बुंद० पराये खसम के लानें सत्ती होवो।

पराए घर का ईंधन—ऐसी वस्तु जिसे अपने प्रयोग में लाया जा सके। नीचे देखिए।

पराए घर की थाती—ऐसी वस्तु जिसे अधिक समय तक घर में न रखा जा सके। प्रायः युवा लड़कियों के लिए कहते हैं। तुलनीय : बुंद पराये घर की थाती।

पराए घर में लगी आग कोई नहीं देखता—दूसरे के घर में लगी हुई आग को कोई नहीं देखता। आशय यह है कि दूसरे की हानि की कोई चिंता नहीं करता। तुलनीय : पंज० दूजे दे करूदी लग्गी अग्ग नूं कोई नईं देखदा।

पराए दर पर हगें और पादें भी—दूसरे के घर के सामने बैठकर पाखाना करते हैं और ज़ोर से पादते भी हैं। (क) ऐसे व्यक्ति के प्रति कहते है जो किसी की हानि भी करता है और उसे धमकाता या चिढ़ाता भी है। (ख) निर्लज्ज व्यक्ति के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : माल० पराया चांदा नीचे जाड़े बैठणों ने फेर कराज्जणों।

पराए दुख से दुबले कम, पराए सुख से दुबले बहुत—दूसरों के दुःख से बहुत कम लोग दुःखी होते हैं किंतु दूसरों के सुख से दुखी होने वाले बहुत अधिक हैं। अर्थात् दूसरों के सुख से जलने वाले बहुत होते हैं, किंतु उनके दुख में हमदर्दी रखने वाले बहुत कम मिलते हैं। तुलनीय : राज० परायै दुख दूबळा थोड़ा, परायै सुख दूबळा घणा।

पराए धन पर झींगुर नाचे— दूसरे के धन पर घमंड करना। जो दूसरे के धन की बदौलत शेखी मारता है उसके लिए कहते हैं।

पराए धन पर लक्ष्मीनारायण—दूसरे के धन से मौज करना। दूसरे के धन से मौज करने वाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : बुंद० पराये धन पै लक्ष्मी नारायन; अव० दुसरे कै धन पर लक्ष्मी नारायन; भोज० पराया धन पर लछमी नरायन; राज० परायै धन माथे लिछमीनाथै; मरा० पर भारा नि पावणे बारा।

पराए पर तीन टिकुली—दूसरे के पति पर तीन टिकुली लगाती है। दूसरे की संपत्ति पर अत्यधिक शौक़ या अभिमान करने वाले पर व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : मग० अनकर भतार पर टिकुला; भोज० आन के भतारे पर तीन टिकुली। (टिकुली—टिकुली=माथे पर लगाने की बिंदी)।

पराए पीर को मलीदा, घर के देवता को धतूरा—दूसरे के देवता को मलीदा देते है और अपने को धतूरा।

कोई अपनों को छोड़कर दूसरों की खातिरदारी करता है तब कहते हैं।

पराए पूत की आस—दूसरे से किसी प्रकार की आशा करना मूर्खता है। जब कोई किसी बाहरी व्यक्ति से किसी प्रकार की सहायता की आशा करता है तो कहते हैं। तुलनीय : पंज० दूजे दे पुतर दी आस; ब्रज० पराये पूत की आसा।

पराए पूतन सपूती होवे—दूसरे की वस्तु को अपना समझ लेना। दूसरे की वस्तु या पुत्र को अपना समझ लेने से ही वह अपना नहीं हो जाता या अपना समझ लेने से ही वह समय पर काम नहीं देता। जो व्यक्ति दूसरों के बल पर ऐंठते हों उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० पराये पूत-नते सपूती होय।

पराए पूत से सपूती बने—ऊपर देखिए।

पराए बरधे आज़ाद करते हैं—दूसरे के बैलों से मौज करते हैं। दूसरे के धन पर मौज उड़ाने वाले के प्रति कहते हैं। (बरध -बैल)।

पराए माथे पर सिल फोड़े—दूसरे के सिर पर सील फोड़ते हैं। (क) दूसरे की हानि की चिंता न करने वाले के प्रति कहते हैं। (ख) दूसरे को विपत्ति में फँसा देने वाले को भी कहते हैं। तुलनीय : बुंद० पराये माथे सिल फोरवो; बंग० परेर माथाय काँठाल भांगा; ब्रज० पराये माथे पै सिल फोरैं।

पराए माल पर लाल दीदे—दूसरे की वस्तु पर लोभ करना व्यर्थ है।

पराए मूँड़ लछमीनरायन—दे० 'पराए धन पर···'।

पराए शगुन के लिए अपनी नाक कटाई—दूसरे को नुकसान पहुँचाने के लिए अपना बड़ा नुकसान करने पर कहते हैं। तुलनीय : अं० Do not cut off your nose to spite your face.

पराधीन अरु धर्म को, कहो कहा संबंध—पराधीन व्यक्ति का धर्म के साथ क्या संबंध हो सकता है? तात्पर्य यह है कि पराधीन व्यक्ति धर्म का पालन नहीं कर सकता या सच्चाई पर नहीं चल सकता।

पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं—दूसरे की अधीनता में स्वप्न में भी सुख नहीं मिलता। आशय यह है कि पराई नौकरी करने वाले तथा दूसरे के अधीन रहने वाले को कभी भी सुख प्राप्त नहीं होता। तुलनीय : बुंद० परबस को जीवो बुर ओं; राज० पराधीन सपनै सुख नाही; भोज० पराधीन सपनेहु सुख नाहीं; मरा० परतन्त्राला स्वप्नांतहि सुख मिळणार नाहीं; मेवा० पराधीन सपने सुख नाहीं।

परान्नं दुर्लभं लोके शरीराणि पुनः पुनः—यह शरीर तो बार-बार मिलेगा पर दूसरे का अन्न दुर्लभ है। अतः दूसरे के अन्न का खूब उपयोग करना चाहिए। पेटू एवं लालची के प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

परान्नं विष भोजनम्—एक का भोजन दूसरे के लिए विष के समान है। अर्थात् (क) एक ही वस्तु एक के लिए लाभप्रद और दूसरे के लिए हानिप्रद हो सकती है। (ख) दूसरे का अन्न खाना अर्थात् मुफ़्त का खाना विष खाने के समान है। तुलनीय : अं० One man's meat is another man's poison.

पराया आगे रोई ना, आपनि पति खोई ना—दे० 'पराए आगे रोना, लाज शरम···'।

पराया खाइए गा-बजा, अपना खाइए टट्टी लगा—दूसरे की चीज़ हँस-हँसकर खाना चाहिए और अपनी चीज़ को दरवाजा बंद करके खाना चाहिए। ऐसे लोगों के प्रति व्यंग्य से कहते है जो दूसरे का माल खूब खाते हैं, पर अपना किसी को नहीं खिलाते। तुलनीय : अव० दुसरे के खायँ गाय बजाय, अपने परैं तौ दिहेन टटिया लगाय।

पराया घर थूक का भी डर—दे० 'दूसरे का घर थूक का···'। तुलनीय : माल० परायो घर थूकवा डर, आपणो घर हांगी ने भर; राज० पारको घर, जहै थूकणरो ही डर; बंग० परेर घर ढकते डर निजेर घर हेगे भर; कौर० पराया घर, थूकणो का डर; पंज० दूजेदा कर थुक करण दा वी डर; ब्रज० परायौ घर थूक कौ डर।

पराया घर थूकने का डर—ऊपर देखिए।

पराया दिल परदेश बराबर—दूसरे का दिल, जिसका हाल न मालूम हो उसी प्रकार है जैसे बिराना देश। दूसरे के मन की बात को जाना नहीं जा सकता। (ख) दूसरे के दुःख को न समझने वाले के प्रति भी कहा जाता है। तुलनीय : गढ़० परायो दिल परदेस; पंज० दूजे दा दिले परदेस बराबर; ब्रज० परायौ मन परदेस बराबरि।

पराया पूत कमा कर नहीं देता—दूसरों के पुत्र कमा कर नहीं खिलाते। (क) अपना काम स्वयं ही करना चाहिए, दूसरों पर भरोसा करके बैठने से कोई लाभ नहीं होता। (ख) अपने चाहे कितने भी बुरे हों किन्तु गाढ़े समय में वही काम आते हैं। (ग) गोद लिया हुआ पुत्र यदि बुढ़ापे में सेवा न करे तो उसके प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : राज० पराया पूत कमार, थोड़ी ही दै; बुंद० पराये पूतन की आसा; पंज० बगाना पुतर कमा के नहीं देंदा।

पराया बड़ा ज्यादा मजेदार—दे० 'पराई थाली के ···'। तुलनीय : अव० पराई पतरी का बारा जादा नीक लगत है; भोज० दुसरे पतरी क बारा बड़ा नीक लागेला; पंज० बगाना बडा मता सोहना।

पराया माल, जी का जंजाल—दूसरे का सामना जी के लिए जंजाल होता है। आशय यह है कि दूसरे का सामान पास रखने से उसकी सुरक्षा के लिए काफ़ी परेशानी उठानी पड़ती है और यदि ग़ायब हो जाय तो बदनामी भी होती है। तुलनीय : गढ़० बिराणा मोना नाक दुखौणो; पंज० बगाना माल जी दा खौ।

पराया माल ठीकरी जान—दूसरे की संपत्ति को मिट्टी के समान समझना चाहिए। अर्थात् मनुष्य को अपनी ही संपत्ति का भरोसा रखना चाहिए और उसी पर संतोष करना चाहिए।

पराया माल लावैं खोज, बैठे घर में उड़ावैं मौज—दूसरों का धन खोजकर लाते हैं और घर में बैठकर मौज उड़ाते हैं। जो व्यक्ति दूसरों के धन पर मौज उड़ाते हैं उनके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : राज० पारकै पईसै परमानन्द, लाल कंवर करै अनंद।

पराया लड़का पहाड़ चढ़ाया—दूसरे के लड़के को पहाड़ पर चढ़ा दिया। दूसरे की संतान को संकट में डालने या दूसरे की वस्तु का दुरुपयोग करने पर कहते हैं।

पराया लाख सुंदर हो काम तो अपना ही आएगा—पराई वस्तु चाहे कितनी भी सुंदर हो उससे क्या फ़ायदा? समय पर अपनी चीज़ ही काम आती है, भले ही वह बुरी हो। आशय यह है कि अपनी ही वस्तु का भरोसा रखना चाहिए चाहे वह कैसी भी हो। तुलनीय : भोज० आन क केतनो सुधर होई काम त अपने न आई; पंज० बगाना लख सोहना होवे कम ते आपना ही आवेगा; अं० One's own little (part) is better than another's whole.

पराया सिर कद्दू बराबर—दूसरे के सिर में और कद्दू में कोई अंतर नहीं, वह फूट जाय या कट जाय अपने को क्या फ़र्क़ पड़ता है? दूसरे के दुख या कष्ट को कुछ न समझने वाले के लिए कहते हैं। तुलनीय : पंज० बगाना सिर कदू बराबर।

पराया सिर क़ुरान की जगह—क़सम खाने के लिए क़ुरान के स्थान पर किसी व्यक्ति की ही क़सम खा लेते हैं। आशय यह है कि दूसरे की बड़ी हानि की कोई परवाह नहीं करना। तुलनीय : पंज० बगाना सिर कुरान दी थां।

पराया सिर पसेरी बराबर—दूसरे का सिर पसेरी जैसे होता है जिधर चाहो पटको। दूसरे के दुख की ज़रा भी परवाह न करने वाले पर कहा जाता है।

पराया सिर लाल देख, अपना सिर फोड़ डालेंगे—(क) जब कोई दूसरे की उन्नति देख कर जलता है तब कहते हैं। (ख) जब कोई दूसरे का अशुभ चाहता है तब भी कहते हैं। तुलनीय : राज० परायो माथो लाल देखर आपरो माथो थोड़ो ही फोड़ीजै; अव० दुसरे कै ऊंचा लिलार देखकै आपन लिलार न फोड़ो; बुं० पराये सेंदुर पै मूंड़ फोखो।

'पराये' से आरंभ होने वाली लोकोक्तियों के लिए देखिए 'पराए'।

परिका चोर भुसौले धौवे—जिस व्यक्ति को जिस चीज़ की आदत पड़ जाती है वह उससे बाज़ नहीं आता।

परिश्रम का फल मीठा होता है—(क) श्रम कभी व्यर्थ नहीं जाता। (ख) श्रम से उत्पन्न चीज़ काफ़ी आनंद-दायी होती है। तुलनीय : पंज० मेहनत दा फल मिठा हुंदा है; अं० Labour has a bitter root but a sweet taste.

परी तेरे वश चाहे कोदों दराव—मैं तुम्हारे अधिकार में हूँ जो चाहो कराओ। निर्दयी पति के प्रति पत्नी का कथन।

परु मरी सास, एसों आए आंस—दे० 'पर मरी सास यासो···'।

परे झोंपड़ी देखहीं सत महलों का स्वप्न—रहते तो हैं झोपड़ी में पर स्वप्न देखते हैं महलों का। ऊँची आकांक्षा करने वाले दरिद्र को कहते हैं। तुलनीय : अव० रहै झोपड़ी मा सपन देखें महलन का; हरि० रहणा झूपड़ियाँ का महलाँ के सपणो।

परों में मेंहदी लगी है—इसलिए उड़ नहीं सकते या उड़ना नहीं चाहते। जो व्यक्ति बिना कारण ही काम करने में आनाकानी करे या कोई तुच्छ बहाना बनाए तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : पंज० पैरां बिच मैंदी लगी है।

परोपकाराय संतां विभूतयः—साधुओं अर्थात् सज्जनों की कीर्ति दूसरे की भलाई करने में है—सज्जन ऐसा कहते हैं।

परोपदेशे पांडित्यं—दूसरे को उपदेश देने के लिए सभी विद्वान बन जाते हैं, किंतु स्वयं उन्हीं उपदेशों पर चलने की चेष्टा नहीं करते। जो व्यक्ति स्वयं कुकर्मी होते हुए भी दूसरों को सत्कर्म करने का उपदेश दे उसके प्रति कहते हैं।

पर्यो अपावन ठौर में, कंचन तजत न कोय—दे०

'पड़्यो अपावन ठौर में···'।

पर्वत दूर से ही अच्छे लगते हैं— जब दूर स्थित किसी व्यक्ति या वस्तु की काफी प्रशंसा सुनी जाय पर संपर्क में आने पर यह वैसा न हो तब व्यंग्य में कहते है। तुलनीय : बुंद० पारवा दूर केई सुहावने लगत; ब्रज० दूर के ढोल सुहावने लगत हैं; राज० डूंगर दूर सूं ही मुहावणा लागे; मेवा० डूंगर दूराऊं ईज आछा लागे; पंज० पहाड दूरों ही चंगे लगदे हन।

पल का चूका कोसों दूर— क्षण भर देर कर देने से आदमी कई कोस पीछे रह जाता है। जब कोई आलस्यवश या लापरवाही के कारण किसी काम को उचित समय पर नही करता और बाद मे वैसा अवसर जल्दी उसे नहीं मिलता तब उसके प्रति कहते हैं। आशय यह है कि मनुष्य को सतर्क रहना चाहिए और मौक़े का फ़ायदा उठाना चाहिए, क्योंकि अच्छे मौक़े बार-बार नहीं आते। तुलनीय : मेवा० अणी चूक्याँ बीसाँ सौ।

पल-पल बीता जाय— जो व्यक्ति काम को टालते जायं या करने में आलस्य करें उनको समझाने के लिए कहते है कि यह समय फिर लौटकर नहीं आएगा।

पल में परलय होत है—क्षण भर में पता नहीं क्या हो जाय? मनुष्य को आनेवाले समय के संबंध में कुछ भी पता नहीं होता, इसलिए जो काम करना हो उसे तुरंत कर डालने के लिए कहते हैं। तुलनीय : बुंद० पल में परलय होत; पंज० पल विच परलय हुंदी है।

पल में राजा रंक और रंक राजा हो जाता है— भाग्य सबका बदलता है, राजा भिखारी बन जाते हैं और भिखारी राजा। जो व्यक्ति अपने धन या बल पर घमंड करके लोगों को कष्ट देता है उसके शिक्षार्थ कहते हैं। तुलनीय : पंज० पल बिच राजा रंक अते रंक राजा हो जांदा है।

पलालकूटस्य सादृश्यं कुंजरादिना— घास के ढेर की हाथी इत्यादि से समानता करना। जब कोई किसी सामान्य व्यक्ति या वस्तु की तुलना किसी बड़े व्यक्ति या वस्तु से करता है तब व्यंग्य में कहते हैं।

पलास के तीन पात— पलाश (ढाक) के पत्ते सदा तीन की संख्या में रहते हैं, कम या अधिक नहीं। घनिष्ठ मित्रों को जो सदा एक साथ रहते हों कहते हैं। (ख) जब कोई बात या काम प्रयत्न करके संवारा जाय किंतु थोड़े समय बाद वह फिर पहले की स्थिति में आ जाय तो भी व्यंग्य से कहते हैं। (ख) सदा एक स्थिति में रहने वाले के प्रति भी कहते हैं।

पलाश के फूल में रूप ही होता है—पलाश का फूल देखने में ही सुंदर होता है, उसमें सुगंध ज़रा भी नहीं होती। जो व्यक्ति देखने में बहुत सुंदर हो किंतु उसमें गुण नाम-मात्र को भी न हो तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० रूप-रूड़ो गुण बायरो रोहीड़ैरो फूल, सं० सभा मध्ये न शोभन्ते निर्गंधामिव किंशुकाः; पंज० पलास दा फुल दिखण विच मोहणा हुंदा है।

पल्ले अक़्ल न गाँठ रुपैया, हम तो अलग रहेंगे भैया— न तो सांसारिक अनुभव है और न ही पास में धन है और कह रहे हैं अलग रहने के लिए। (क) घर से अलग होकर रहने के लिए सांसारिक अनुभव और गृहस्थी चलाने के लिए धन की आवश्यकता होती है। जो व्यक्ति इन वस्तुओं के न होने पर भी अपनी गृहस्थी अलग करना चाहे तो उसके प्रति व्यंग्य मे कहते हैं। (ख) जब कोई बिना धन और अनुभव के किसी भारी काम को करना चाहता है तब उसके प्रति भी व्यंग्य मे कहते हैं। तुलनीय : भीली—जाणे वीणे तो कई नी, ने आव रांड जुवा रेयां।

पल्ले टका नहीं नाम लखपतिसिंह—पास में तो एक रुपया भी नहीं है और नाम है लखपति सिंह। नाम के अनुसार स्थिति न होने पर व्यंग्य में कहते हैं।

पवन गिरी छूटै पुरवाई, ऊठे घटा छटा चढ़ आई; सारो नाज करै सरसाई, घर गिर छोलौ इंद्र छपाई—यदि पूरब की हवा बहे, बिजली की चमक के साथ घटा चढ़े तथा फ़सलें हरी होने लगें तो भूमि और पर्वत को इंद्र तृप्त कर देगा अर्थात् बहुत वर्षा होगी।

पवन जगावत आग को दीपहिं देत बुझाय—वायु आग को उत्तेजित करती है और दीपक को बुझा देती है। अर्थात् शक्तिशाली की सब सहायता करते हैं और निर्बल को सभी कष्ट देते हैं।

पवन थक्यो तीतर लवै, गुरुहिं सवेवै नेह; कहत भड्डरी जोतिसी, ता दिन बरसै मेह—भड्डरी कहते है कि हवा रुकी हो और तीतर मैथुन कर रहे हों तो उस दिन वर्षा होगी।

पवन बाजै पूरियो, हाली हलाबकीम पूरियो—यदि उत्तर-पश्चिम की हवा चले तो किसान को खेत नहीं जोतना चाहिए; क्योंकि वर्षा शीघ्र होगी। आशय यह है कि उत्तर-पश्चिम की हवा चलने से शीघ्र वर्षा होती है।

पशु तो मालिक के, ग्वाल की तो लकड़ी है—पशु तो मालिक के हैं ग्वाले की तो केवल लाठी है। जब किसी को किसी चीज़ की देख-भाल का काम सौंप दिया जाय और वह

उसे अपना समझकर प्रचार करे तब व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : मेवा० धन तो धण्याँ का ग्वाला का हाथ में लाकड़ी।

पश्चिम बहै नीक कर जानो, परै तुसार तेज डर मानो —पश्चिम की हवा बहने पर उपज अच्छी होगी परन्तु जाड़े की ऋतु में पाले का डर रहेगा।

पश्यस्यद्रो ज्वलदग्निं न पुनः पादयोरधः—पर्वत पर जलती आग को देखते हो, पर अपने पैरों के नीचे की आग को नहीं देखते। जो दूसरों की बुराई की चर्चा करते हैं किंतु अपनी बुराई की ओर ध्यान नहीं देते उनके प्रति कहते हैं।

पसीना टपके तो मोती बने—परिश्रम करते समय जो पसीने की बूँदें गिरती हैं वे मोती बन जाती हैं। आशय यह है कि जितना अधिक परिश्रम किया जाएगा उतना ही अधिक धन उत्पन्न होगा या अच्छा परिणाम होगा। तुलनीय : पंज० परसा डिगे ते मोती बने।

पसीना बहे तब पेट भरे —पेट भरने के लिए अर्थात् धन कमाने के लिए पसीना बहाना पड़ता है। जो व्यक्ति मुफ्त में धनवान बनने का स्वप्न देखते हैं उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय : परमा वगे तां टिड परोये।

पसीने की कमाई —परिश्रम करके या ईमानदारी से कमाए गए धन के लिए कहते हैं। तुलनीय : पंज० परसे दी कमाई।

पसीने की कमाई यूँ ही गँवाई—जब कोई व्यक्ति परिश्रम से उपार्जित धन को व्यर्थ में गँवा देता है तो कहते हैं।

पसु पच्छी हू जानहीं, अपनी-अपनी पीर—पशु-पक्षी भी अपनी पीड़ा तो जानते हैं, अर्थात् प्रत्येक प्राणी अपने कष्ट को जानता है और उसे दूर करने का प्रयत्न करता है। जब कोई अपनी हानि-लाभ की चिंता नहीं करता और मस्त पड़ा रहता है तब उसे संभलने के लिए संकेत में कहते हैं।

पसेरी उठे ना, तौलाई का ठेका माँगें—पसेरी भर वज़न तो उठता नहीं है और तुलाई का ठेका लेना चाहते हैं। जो व्यक्ति सामर्थ्यहीन होने पर भी बड़ा काम करना चाहे उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : बुंद० पसेरी उठे ना, ब्याई कों मूँड़ मारै।

पसेरी भर का सिर हिला दिया, टके भर की जीभ नहीं हिलती— जब कोई व्यक्ति, विशेषतया छोटा बच्चा किसी प्रश्न का स्पष्ट उत्तर न देकर सिर हिला कर 'हाँ' या 'ना' करे तो कहते हैं। तुलनीय : बुंद० पसेरी भर कौ मूँड़ तौ हलाउत, पइसा भर की जीव नई हला पाउत।

पहनने को आँटे नहीं, सोहरल जाय—धोती ठीक से पहनने लायक तो है नहीं पर उसे ज़मीन पर घसीटते चलते हैं। कोरी शेख़ी मारने वाले के प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

पहनने में तो पराए का पहनावा अच्छा लगता है, मगर छीन ले तो लाज भी कम नहीं—दूसरे की पोशाक पहनने में अच्छी तो अवश्य लगती है, किन्तु यदि वह माँग ले तो लज्जा भी कम नहीं आती। आशय यह है कि दूसरे की पोशाक नहीं पहननी चाहिए। तुलनीय : मैथ० अनकर पहिरक साज बड़ छीन लेलक तऽ लाज बड़; भोज० आन क पहिरल शोभेला खूब लेला त बनेला खूब।

पहने ओढ़े नारी, लिपे-पुते घर—पहनने-ओढ़ने से अर्थात् साज-शृंगार से स्त्री सुंदर लगती है और लीपने-पोतने से घर अच्छा लगता है। आशय यह है कि साज-शृंगार और सफ़ाई से सामान्य चीज़ें भी सुंदर लगती हैं। तुलनीय : बुंद० पैरी ओढ़ी धन दिपै, लिपौ पुतौ घर खिलौ; बंग० लेपले पूछले बाड़ी, सजले गुजले नारी; गुज० लीप्युं गूंप्युं आँगण ने पहेरी ओढी नार।

पहला ग्राहक परमेश्वर बराबर —दुकानदार पहले ग्राहक को ईश्वर के समान समझते हैं। ऐसा विश्वास किया जाता है कि पहला ग्राहक यदि अच्छा हो तो दुकानदारी दिन-भर बहुत अच्छी होती है और यदि बुरा हुआ तो दिन भर पैसे का भी लाभ नहीं होता।

पहला ताप तुरइया बसे, खीरा देख खिलखिला हँसे; जब लिया फूट का नांव, डंका दे के घेरे गाँव —ज्वर का प्रथम प्रकोप तुरई (एक सब्ज़ी) के साथ होता है, खीरे को देखकर ज्वर बहुत प्रसन्न होता है और फूट का आगमन होते ही ज्वर डंके की चोट पर सारे गाँव को घेर लेता है। लोक विश्वास है कि तुरई, खीरा और फूट के खाने से ज्वर आता है। तुलनीय : बुंद० पैली ताप तुरइया बसी, खीरा देखें खिलखिला हँसी; जब लओ फूट कौ नाव, डंका दैकें घेरो गाँव; गुज० ताव कहे हुं तुरिया मां वसुं ने गलकुं देखी खडखड हंसु जेने घेर जाडी छास, तेने घेर माहरो वास।

पहला पवन पुरब से आवै, बरसै मेघ अन्न भूरि लावै —यदि आषाढ़ माह की प्रथम वायु पूर्व से बहे तो जानो कि वर्षा तथा अन्न दोनों ख़ूब होंगे।

पहला पीछे हो गया, पिछला आगे—जब छोटा भाई बड़े भाई से उन्नति कर जाता है तब कहते हैं। तुलनीय : भोज० जेठ भइलं हेठ बइसाख भइलं उप्पर; पंज० पैला पिछे होया पिछला अग्गे।

पहला मूरख फाँदे कुआ, दूजा मूरख खेले जुआ; तीजा

मूरख बहन घर भाई, चौथा मूरख घर जमाई—कुएं को फांदने वाला, जुआ खेलने वाला, बहिन के घर में रहने वाला भाई तथा घर जमाई ये चारों ही मूर्ख होते हैं।

पहला संभाल तो दूसरा उठा—पहला क़दम अच्छी तरह जमाने के बाद ही दूसरा क़दम उठाना चाहिए। बहुत सोच-समझकर आगे क़दम बढ़ाना चाहिए। अर्थात् (क) किसी नए कार्य के करने और पिछले को छोड़ने में अच्छी तरह विचार कर लेना चाहिए। (ख) जो एक काम को अच्छी तरह न संभाल सके और उसी के साथ दूसरा काम भी करना चाहे तो उसके प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : भीली—मोर लो जमावी ने फायलो मेलवो; पंज० पैला संबाल ते दूजा चुक।

पहला सुख निरोगी काया—शरीर का नीरोग होना ही सबसे बड़ा सुख है। क्योंकि स्वस्थ रहने पर ही मनुष्य कोई कार्य ठीक ढंग से कर सकता है। अस्वस्थ व्यक्ति को हमेशा मानसिक परेशानी रहती है। तुलनीय : राज० पहलो सुख नीरोगी काया; सं० शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम्; अं० Health is wealth

पहला सुख नीरोगी काया, दूजा सुख होय घर माया; तीजा सुख पुत्र अधिकारी, चौथा सुख पतिव्रता नारी—पहला सुख नीरोग शरीर का होना है, दूसरा सुख घर में धन-धान्य का होना है, तीसरा सुख गुणी पुत्र का होना तथा चौथा सुख पतिव्रता पत्नी का होना है।

पहली आँधी चमार के घर—पहले आँधी चमार के घर आती है। अर्थात् मुसीबत पहले ग़रीबों पर ही पड़ती है। तुलनीय : मैथ० पहिल का आन्ही चमारे का घर; भोज० आन्ही पहिले चमारे के घरे आवे ने; पंज० पैली हनेरी चमैर दे कर।

पहली खेती और पहला पुत्र दोनों सुख देते हैं—पहले आरम्भ किया हुआ कोई भी कार्य पहले ही फल या सुख देता है। तुलनीय : भोज० आगे क खेती अगिला लइका एही दुनो क असरा करे के चाहि।

पहली छेरी, दुसरी गाय, तिसरी भैंस दुही न जाय—जिस बकरी ने पहली बार बच्चा जना हो उसका, गाय के दूसरा बच्चा होने के बाद तथा भैंस के तीसरा बच्चा होने के बाद दूध बहुत अधिक होता है इसलिए उनका दूध दुहना बहुत परिश्रम का काम होता है।

पहली जीत मँगावे भीख—पहली बार जीतने से जुआरी का लोभ बढ़ जाता है और अन्त में उसकी दशा इतनी हीन हो जाती है कि उसे भीख तक माँगनी पड़ती है। जुआरी को कहते हैं।

पहली बहुरिया, दूसरी पतुरिया, तीसरी कुकरिया—पहले विवाह की स्त्री ही स्त्री होती है, दूसरे विवाह की पतुरिया और तीसरे विवाह की कुतिया के समान है। (पतुरिया = वेश्या)। तुलनीय : अव० पहिली बहुरिया, दुसरी पतुरिया, तिसरी कुकरिया भोज० पहली बहुरिया, दूसरी पतुरिया, तीसरी कुकरिया।

पहली बिपत बड़ा होय नाँव, दूजी बिपत सड़क का गाँव; तीजी बिपत धन से हीन, सब बिपतन में बिपता तीन—पहली विपत्ति है कि नाम बड़ा हो, दूसरी सड़क अर्थात् मुख्य मार्ग पर गाँव हो और तीसरी विपत्ति है कि धन न हो। क्योंकि सड़क पर गाँव और बड़ा नाम होने से अतिथि आते ही रहेंगे किन्तु धन न होने से उनका सत्कार नहीं हो पाएगा इसलिए बदनामी होगी। तुलनीय : बुंद० पैली बिपत बड़ो होय नाव, दूजी बिपत सड़क को गाँव, तीजी बिपत धनऊ से हीन, सब विपतन में बिपता तीन; बंग० एक दुखेर दुखी आमि गाँयेर कूले बाड़ी, एक दुखेर दुखी आमि धेलो वयसे रांडि, एक दुखेर दुखी हई आमि धार करि, एक दुखेर अमि शेषे बिया करि।

पहली बोहनी गुसैंयाँ की आस—दूकानदार और जुआरी लोग ऐसा कहते हैं क्योंकि पहली बोहनी में जीत होने से आगे भी जीत की उम्मीद होती है। तुलनीय : भोज० पहिली बोहनी गुसइयां क आस; अव० पहिली बोहनी गोसैंयां कै आस।

पहली मंज़िल राजा भी डरे—पहली चढ़ाई में राजा भी डरता है। आशय यह है कि किसी भी नए कार्य के प्रारम्भ करने में सभी डरते हैं। प्रत्येक कार्य की प्रारम्भावस्था में कष्ट उठाना पड़ता है इसीसे कहते हैं। तुलनीय : माल० पेली मंजिल बादशा ने भी मुश्किल।

पहली मार बिचौलिया खाय—दो व्यक्तियों के आपसी झगड़े में झगड़ा छुड़ाने वाले को पहली चोट लगती है। तुलनीय : भोज०, मैथ० पहिल मारि धरहरिया खाए; ब्रज० पहली मार बिचौल्या खाय।

पहली रोहन जल हरे, दूजी बहोतर खाय; तीजी रोहण तिण हरै, चौथी समंदर जाय—यदि पहली रोहिणी (एक नक्षत्र) में वर्षा हो तो सारी वर्षा ऋतु सूखी जाती है, दूसरी में पड़ने से बहत्तर दिन वर्षा नहीं होती, तीसरी में पड़ने से घास तक पैदा नहीं होती और चौथी में होने से बहुत वर्षा होती है।

पहली वर्षा खेती, पहली बेटा-बेटी—पहली वर्षा पर

बोई गई फ़सल अच्छी होती है और पहली सन्तान हृष्ट-पुष्ट होती है। प्रथम बार किया गया कार्य प्राय: अच्छा ही होता है। तुलनीय : भीली—पेल कोलेनो ते वाबड़ो, पाना खोली नोडा वड़ेज।

पहले अपनी आँख से मूसर तो निकालो— (क) पहले अपने दोष तो दूर कर लो फिर दूसरों को देखना। (ख) पहले अपनी मुसीबत से तो छुटकारा पा लो फिर दूसरों की सहायता करना। जो व्यक्ति अपनी बुराइयों और परेशानियों की तरफ़ ध्यान न देकर दूसरों की बुराइयों और परेशानियों को देखता है उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : बुंद० पैलें अपनी आँख कौ मूसर तौ काड़ो।

पहले अपनी ही दाढ़ी की आग बुझाई जाती है—पहले अपना ही काम सँभाला जाता है या पहले अपनी विपत्ति से छुटकारा पाया जाता है फिर दूसरे की सहायता की जाती है। तुलनीय : राज० मियाँ! थारी बुझाऊं कै म्हारी ? हरि० पहल्याँ दो मसो से अपणी ऐ डाड्ढी कै दूंगा।

पहले अपने गिरेबान में झांक कर देखो—दे० 'पहले अपनी आँख ···'।

पहले अपने मुंह पर मुसीका दो—पहले अपना मुँह बन्द करो। जो व्यक्ति स्वयं तो बहुत बकबक करे और दूसरे को चुप कराना चाहे उसके प्रति कहते हैं। (मुसीका=रस्सी की जाली जो बैलों के मुँह पर बाँधी जाती है ताकि वे खा न सकें)।

पहले आए, दाम कमाए—जो पहले आते हैं वही धन कमाते हैं। अर्थात् जो व्यक्ति किसी नए काम को प्रथम बार आरम्भ करते हैं वे ही अधिक धन कमाते हैं। तुलनीय : राज० पहली आवै जकैरी गोरी गाय; पंज० पैले आओ पैहा कमाओ।

पहले आत्मा पीछे परमात्मा—पहले आत्मा को प्रसन्न करना चाहिए और बाद में ईश्वर को। आशय यह है कि जब तक मनुष्य की आत्मा प्रसन्न नही होती उसका ध्यान किसी ओर नहीं जाता या चित्त स्थिर नही होता। जब कोई व्यक्ति भूख से व्याकुल होकर भोजन करने का प्रबन्ध करे और उस समय उसे कोई आवश्यक कार्य करने को कहे तो वह कहता है। तुलनीय : अव० आगे आत्मा पाछे परमात्मा; मरा० प्रथम आत्मा मग परमात्मा।

पहले आत्मा फिर परमात्मा—ऊपर देखिए। तुलनीय : सं० आत्मन सततं रक्षेत्; मल० लन्ने पूजिच्चिट्टु-वेणम् तेवरे पूजिकरान्; अं० Self-preservation is the first law of nature.

पहले आप, पहले आप—झूठे शिष्टाचार में समय नष्ट करने पर कहते हैं। तुलनीय : बुंद० चढ़ोददा जू, चढ़ो कका जू, कोमक घुरिया रीति गई।

पहले आरसी में अपना मुंह तो देख लो—तुम जाकर पहले आईने (आरसी) में अपना मुँह देख लो। ऐसे व्यक्ति के प्रति व्यंग्य में कहते हैं जो स्वयं बुरा होते हुए भी दूसरों की बुराई करता है। तुलनीय : पंज० पैले (सीसे) नाले बिच अपणा मुँह तो केआ।

पहले उतारा कुएँ में, पीछे काटी रस्सी—पहले कुएँ में उतार दिया और फिर पीछे से रस्सी काट दी। विश्वासघात करने वाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : भीली—कूड़ा भाँये उतारी ने नेज वाड़ दी।

पहले करे सेवा, पीछे मिले मेवा—मेवा पाने के लिए पहले सेवा करनी पड़ती है। अर्थात् परिश्रम करने से ही आदमी को सुख मिलता है। तुलनीय : भीली—पेल तो गाम नो चाकर ने फेर ठाकर; पंज० पैले करो सेवा पिछों मिले मेवा; ब्रज० पहले सेवा पीछें मेवा।

पहले काँकर पीछे धान, उसको कहिए पूर किसान—उसी को चतुर किसान कहना चाहिए जो पहले ककड़ी बोकर फिर धान की बोवाई करता है। आशय यह है कि ककड़ी धान से पहले बोई जाती है।

पहले का झगड़ा अच्छा, पीछे का झगड़ा बुरा—किसी भी काम में पहले सफ़ाई कर लेना अच्छा है ताकि पीछे विवाद न हो।

पहले की गई उनके साथ—पहले समय की बातें, रिवाज और वस्तुएँ पहले लोगों के साथ ही चली गई। आशय यह है कि समय के अनुसार सभी चीज़ें परिवर्तित होती रहती हैं। जब कोई पुरानी बातों या वस्तुओं की चर्चा करता है तब कहते हैं। तुलनीय : भीली—मोरली बात गई मोरला हाते।

पहले कौर ही मक्खी गिरी—पहला कौर उठाते ही थाली में मक्खी गिर गई। जब कार्य आरंभ करते ही विघ्न उपस्थित हो जाय तो कहते हैं। तुलनीय : बुंद० पैलेई कौर माछी परी; सं० प्रथम गासे मक्षिकापात:।

पहले खाना, पीछे बात करना—(क) जो काम सामने पहले उसे पूरा करना चाहिए बाद की बातें बाद में देखी जाएँगी। (ख) पहले भोजन मिलना चाहिए उसके बाद कोई बात क्योंकि भूख होने पर कुछ भी अच्छा नहीं लगता। तुलनीय : अव० पहिले खाय, पाछे बात करै; हरि० पहलाँ पेट पूजा और काम दूजा।

पहले घड़ा फूटे कि मटकेना—कोई यह निश्चित रूप से नही कह सकता कि पहले घड़ा फूटेगा या मटका अर्थात् पहले बड़ा नष्ट होगा या छोटा। जब कोई छोटी आयु का किसी वृद्ध को मरने की बात कहकर चिढ़ाता है तो वह इस लोकोक्ति का प्रयोग करता है।

पहले घर पीछे बाहर— नीचे देखिए।

पहले घर में तो पीछे मस्जिद में—पहले घर में चिराग़ जलाना चाहिए उसके बाद में मस्जिद में। पहले घर की आवश्यकता पूरी करके बाहर की ओर ध्यान देना चाहिए। जो लोग घर की आवश्यकता पूरी न करके दूसरे की आवश्यकता पूरी करते है उनके प्रति कहा जाता है। तुलनीय : बुंद० पैलें घर, पाछे बाहर; राज० पहली घर में, पछै मसीत मे; अं० Charity begins at home.

पहले चुम्मे ओठ टेढ़ा—पहला चुंबन लेते समय ही होंठ (ओठ) टेढ़ा हो गया। अर्थात् जब काम आरंभ करते ही कोई आपत्ति करे या बुरा माने तो कहते हैं। तुलनीय : भोज० पहिलही चुम्माँ ओठवे टेढ़।

पहले चुम्मे गाल काटा— (क) जब कोई आरंभ में ही काम बिगाड़ दे तब कहते हैं। (ख) पहली बार किसी को रुपया उधार दे और वह रक़म मार बैठे तब भी कहते है। (ग) किसी अवसर का अधिक से अधिक लाभ लेने के लिए उतावली करने पर जब सारा काम चौपट हो जाय तो भी कहते है। तुलनीय : अव० पहलेन चुम्मा मा गाल काटेन; बुंद० पैलेई चूमा गाल काट खायें; ब्रज० पहले चुम्मा पैई गाल काट्यौ।

पहले छावे तीन धरा, सार भुसौला और बड़हरा—पशुओ के रहने, भूसा रखने और कडे आदि ईंधन रखने वाले इन तीन घरो को वर्षा ऋतु से पूर्व ही छा लेना चाहिए।

पहले जन्म का फल भोगना ही पड़ेगा—भारतीय दर्शन के अनुसार पूर्व जन्म के कर्मों के अनुसार ही इस जीवन में दुख-सुख मिलते हैं। जब कोई व्यक्ति अकारण ही दुख भोगे तो उसके प्रति कहते है। तुलनीय : भीली—मोरे आगला भव ना लेख भगवना पड़े।

पहले तोल पीछे बोल—पहले सामान तौलो उसके बाद बात करना। आशय यह है (क) पहले आवश्यक कार्य को करना चाहिए उसके बाद अन्य कार्यों की तरफ़ ध्यान देना चाहिए। (ख) जब कोई किसी से ज़बरदस्ती कुछ लेना चाहता है और उसकी बातों को नही सुनता तब भी कहते है। तुलनीय : पंज० पैले तोल मगरों बोल; ब्रज० पहलें तोलि पीछें बोलि।

पहले दिन पाहुन दूसरे दिन ठहेन तीसरे दिन कहेन—अतिथि एक दिन तो अतिथि रहता है और उसका स्वागत करना चाहिए, दूसरे दिन वह साधारण व्यवहार की अपेक्षा रखता है पर तीसरे दिन भी यदि वह रुका है तो हाथ से धक्का देकर उसे निकाल देना उचित है। आशय यह है कि अतिथि बनकर अधिक दिन किसी के घर रहने से वहाँ आदर नहीं होता। तुलनीय : बुंद० पैलें दिना को पाउनो, दूसरे दिना को पई, तीसरे दिना रये तौ बेसरम सई।

पहले न सोचे सो पीछे पछताय—जो पहले नहीं सोचता वह बाद में पश्चाताप करता है। आशय यह है कि काफ़ी सोच-विचार कर कोई काम करना चाहिए। तुलनीय : मग० आगु चेती ने पीछु पछताय; भोज० जे आगे ना सोचे ला उ पीछे पछताला।

पहले नहाना, पीछे खाना—हिन्दू पहले नहाते हैं पीछे खाते हैं। ऐसा हिन्दुओं के धर्मशास्त्र कहते हैं। तुलनीय : अव० पहिले नहाय, पाछे खाय; पंज० पैले नाणा मगरों खाना।

पहले पहर सब कोई जागे, दूजे पहर भोगी, तीजे पहर चोरा जागे, चौथे पहरे जोगी—रात के पहले पहर में सब कोई जागते हैं, दूसरे में भोगी, तीसरे में चोर और चौथे में योगी जागता है। इसमें थोड़ा पाठ भेद भी पाया जाता है —'तीजे पहर चोर जागे' के स्थान पर 'तीजे पहर रोगी जागे' भी कहते हैं।

पहले पानी नदी उफनायें, तौ जानियो कि बरखा नायँ—यदि पहली ही वर्षा के पानी से नदी उमड़ आए तो समझ लेना चाहिए कि अच्छी वर्षा न होगी।

पहले पीवे भकवा, फिर पीवे तमखवा, पीछे पीवे चिलमचट—तंबाकू या गांजा पीने वालों का कहना है कि पहले मूर्ख (भकवा) पीता है, फिर जो तंबाकू का स्वाद जानता है वह पीता है और सबसे बाद में चिलमचट (चिलम चाटने वाला) पीता है। शुरू में केवल धुआँ निकलता है, बाद में थोड़ा तंबाकू जल जाने पर पीने का स्वाद आता है और अंत में केवल राख बचती है जिसमें कोई स्वाद नहीं होता, इसीलिए ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० पहिले पियैं भकुआ, फिर पियैं तमुखवा, पाछे पियैं चिलम-चट।

पहले पेट, पीछे सेठ—अपने पेट को पहले देखा जाता है, स्वामी को बाद में। (क) जहाँ पेट भरता हो वहाँ स्वामी चाहे कैसा भी क्यों न हो मनुष्य टिक जाता है और जहाँ पेट न भरता हो वहाँ मालिक चाहे कितना भी अच्छा

क्यों न हो मनुष्य कभी नहीं रहता। ऐसे लोगों के प्रति भी कहते हैं जो अपने खाने की व्यवस्था पहले करते हैं और दूसरों की बाद में। तुलनीय : राज० पहली पेट, पछै सेठ; पंज० पैंले टिड मगरों सिद्ध।

पहले पेट पूजा, पाछे काम दूजा—पहले भोजन करना चाहिए उसके बाद अन्य कोई काम। आशय यह है कि भोजन करना बहुत ही आवश्यक है, बिना उसके मनुष्य कुछ भी नहीं कर सकता। तुलनीय : राज० पहली पेट पूजा, पछै काम दूजा; सं० शतं विहाय भोक्तव्यं; पंज० पैलाँ पेट पूजा, फेर कम्म दूजा; हरि० पहल्यम पेट पूज्जा, पाच्छै काम दूज्जा।

पहले बात को तोलो, फिर मुँह से बोलो—पहले किसी बात पर खूब ग़ौर कर लेना चाहिए उसके बाद उसे कहना चाहिए। आशय यह है कि काफ़ी सोच-विचार करके कुछ कहना चाहिए। तुलनीय : मल० वीणुम् मुन्पे निल्लम् नोक्कणम्; अं० Look before you leap for snakes among sweet flowers do creep.

पहले बो पहले काट—जो पहले बोता है वही पहले काटता भी है। अर्थात् जो पहले काम करता है उसे ही पहले फल मिलता है। तुलनीय : अव० पहले बोवे पहिले काटे।

पहले भित्तर, तब देवता पित्तर—पेट भरा होने पर देवता और पितरों की याद आती है। आशय है कि (क) पेट खाली होने पर किसी की याद नहीं आती या कोई काम नहीं किया जा सकता। (ख) पेटू व्यक्ति के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : अव० पांच कौर भित्तर, तब देव और पित्तर; मैथ० पांच कवर भीतर, तब देवता पीतर।

पहले भीतर तब देवता और पीतर—ऊपर देखिए।

पहले मार पीछे सँभाल—पहले शत्रु पर वार कर देना चाहिए बाद में अपने को बचाना चाहिए। आशय यह है कि अपनी चिंता छोड़कर शत्रु को मारना चाहिए और उसे पहले वार करने का अवसर नहीं देना चाहिए। तुलनीय : अं० Offence is the best defence.

पहले मारे सो मीर—जो पहले मारता है, जीत उसी की होती है। (क) लड़ाई-झगड़े में जो पहले हाथ उठाता है, उसी की जीत होती है। (ख) किसी नए काम को जो व्यक्ति पहले करता है लाभ और यश उसी को मिलता है। तुलनीय : माल० पेलां मारे सो मीर; हरि० पहलां मारै वोहे जीतै; ब्रज० पहले मारै सोई मीर।

पहले मूंड़ कटौवल, फिर धरमराज—(क) पहले तो मारपीट करते रहे और अब धर्मराज बन कर बैठे हैं। धूर्त व्यक्तियों के प्रति कहते हैं जो बुरा काम भी करते रहें और सज्जन भी बने रहते हैं। (ख) किसी कार्य में लाभ उठाने के लिए पहले परिश्रम करना पड़ता है।

पहले योग्य बनो, फिर माँगो—आशय यह है कि बिना योग्यता प्राप्त किए किसी वस्तु को पाने की इच्छा नहीं करनी चाहिए। तुलनीय : मल० आग्रहिक्कुन्नतिनु मुन्पु अर्हिक्कुक; अं० First deserve then desire.

पहले रहते यों, माल गँवाते क्यों?—पहले से ही सावधान रहते तो हानि क्यों होती? जो व्यक्ति हानि हो जाने के बाद अत्यधिक सावधानी बरतते हैं उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० पहली रहती यूँ, तो तवलो जातो क्यूँ?

पहले रोटी पीछे पोथी—दे० 'पहले पेट पूजा...'।

पहले लिख और पीछे दे, कमती हो तो मुझसे ले—कागज़ कहता है कि पहले बही-खाते में नोट कर लो उसके बाद किसी को कुछ दो और यदि हिसाब में घाटा आता है तो मैं देने को तैयार हूँ। आशय यह है कि लिख कर दिया गया रुपया या सामान भूलता नहीं, इसलिए घाटा होने का प्रश्न ही नहीं उठता। तुलनीय : बुंद पैलें लिख, पाछें दै, भूल परै तौ मोमे लै; अव० पहिले लिख पीछे दे, भूल परै तौ मोसे ले; मरा० आदी लिह मग दे, कमी आले तर माझ्या जवळ न घे।

पहले लिख पीछे दे, भूल गए तो किससे ले?—पहले खाते में नोट कर लेना चाहिए उसके बाद किसी को कुछ देना चाहिए; यदि नोट करना भूल गए तो वह नहीं मिलेगा।

पहले से निपटे नहीं दूसरा सिर पर तैयार—पहले से तो छुटकारा मिला नहीं और दूसरा भी आ धमका। विपत्ति में फँसे व्यक्ति पर दूसरी विपत्ति आने पर कहते हैं। तुलनीय : भीली—मोरला दलवा जे ते खूटा नी है; उर्दू—

एक आफ़त से तो मर-मर के हुआ था जीना,
आ पड़ी और यह कैसी मिरे अल्लाह नई।

पहले सोच-विचार, पीछे कीजे कार—पहले सोच-विचार कर लेना चाहिए उसके बाद काम करना चाहिए। आशय यह है कि किसी कार्य को करने से पूर्व उसके विषय में भली भाँति सोच-समझ लेना चाहिए। तुलनीय : अव० पहिले ले विचार, पाछै ठानै कार; राज० पहली सोच-विचार कर पीछै कीजै कार।

पहले सोचे दुख को मोचे—जो पहले सोचता है वह दुख को समाप्त कर देता है। आशय यह है कि पहले से

सोचकर काम करने वाले को दुखी होने का अवसर नहीं आता।

पहले हँस ले फिर बात करना—पहले तुम दिल भर कर हँस लो फिर बात करना। जो व्यक्ति बात करते समय अधिक हँसते हैं उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० पहली धाप' र हंसलै पछै बात करयै। ब्रज० पहले हंसिलै फिरि बात करियौ।

पहले ही कौर मक्खी पड़ी—दे० 'पहले कौर ही···'।

पहले ही गस्से में बाल आया— ऊपर देखिए।

पहले ही था बुरा हवाल, ऊपर से अब पड़ा अकाल—पहले से ही खाने-पीने की परेशानी थी उसके ऊपर से अकाल पड़ गया। जिस व्यक्ति पर विपत्ति के ऊपर विपत्ति आए उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० ननी निछंदा घर, ननी चौमासी जर।

पहले ही बहू बावरी, दूसरे खाई भाँग—बहू तो पहले से ही बावली थी और ऊपर से भाँग खाली। जब कोई व्यक्ति पहले से ही मूर्ख हो और साथ ही कोई ऐसा काम भी कर बैठे जिससे उसकी मूर्खता और बढ़ जाय तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : माल० पेलां तो वऊ बावरी ने पछे खादी भांग।

पहले ही मैं तगादे में ढीला, और गाँव के लुच्चे आदमी—मैं तो पहले ही से तगादा करने में झिझकता हूँ और फिर इस गाँव के लोग दुष्ट हैं, देने का नाम ही नही लेते। अर्थात् सीधे आदमी को सभी मूर्ख बना लेते हैं और यदि कहीं वह दुष्टों के हाथ पड़ गया तो उसकी बुरी हालत हो जाती है। सीधे आदमी के प्रति कहते हैं जब वह लफंगों के हाथ पड़ जाता है। तुलनीय : माल० पेलाइ मूं मनवार री काची फेर गांव रा लोग लुच्चा।

पहाड़ की उतराई चढ़ाई, दोनों पर लानत है—पहाड़ पर चढ़ने उतरने दोनों में तकलीफ़ होती है। बुरे स्वभाव वाले आदमी पर कहते हैं क्योंकि वह हर तरह से दुःख ही पहुँचाता है।

पहाड़ दूर से ही सुहावने लगते हैं—दे० 'पर्वत दूर से ही···'।

पहाड़ पर जलती आग सबको दिखाई पड़ती है, घर को नहीं—अपना घर जलता हुआ नहीं दिखता, किंतु दूर पहाड़ पर जलती हुई आग सब को दिखाई पड़ जाती है। अर्थात् अपने बड़े दोष किसी को नहीं दिखाई पड़ते और दूसरे के छोटे-मोटे दोष भी दिख जाते है। जो व्यक्ति स्वयं दुर्गुणी होने पर भी दूसरों की बुराइयाँ करे उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। (ख) बड़े आदमियों के दुःख या कष्ट के विषय में सबको तुरंत पता चल जाता है, किंतु निर्धनों के कष्ट की ओर कोई ध्यान नहीं देता। तुलनीय : राज० डूंगर बलती दीख ज्याय धर बलती को दीसै नी।

पहाड़ सुहावनो दूरते लागै—दे० 'पर्वत दूर से ही··· '।

पहाड़ से टक्कर खाएँ, घर की सिल फोड़ें—ठोकर या टक्कर लगी पहाड़ से और तोड़ रहे हैं घर की सिल। किसी बलवान का गुस्सा किसी निर्बल पर उतारने पर कहते हैं। तुलनीय : भोज० उदुक (ठोकर) पहाड़ क, फोरैं सील घर क; छत्तीस० हपटे बन के पथरा, फोरे घर के सील।

पहाड़ी गधा पूर्वी रेंक- पहाड़ी गधा है और बोली बोलता है पूर्वी देश की। जब कोई मूर्ख विदेशी भाषा बोले तब कहते हैं। तुलनीय : भोज० पहाड़ी गदहा पूर्वी रेक; ब्रज० पहाड़ी गधा पूरबी रेंक।

पहाड़ों को किसकी छाया होती है?—पहाड़ किसी की छाया में नहीं रहते। आशय यह है कि जो व्यक्ति स्वयं परिश्रमी और स्वावलंबी होते हैं उन्हें किसी की छाया या सहायता की आवश्यकता नहीं होती। जो व्यक्ति तुच्छ होने पर किसी शक्तिशाली व्यक्ति को सहायता देने का प्रयत्न करे तो उसके प्रति कहते है। तुलनीय : राज० डूंगराने किसी छियाँ हुवै।

'पहिले' से आरंभ होने वाली लोकोक्तियों के लिए देखिए 'पहले'।

पहुंचे चंग अकासलों, जो गुन संयुत होय—जिस तरह पतंग डोरी के सहारे आकाश में पहुँच जाती है, वैसे ही गुणवान मनुष्य ऊँचे से ऊँचे पद पर पहुँच जाता है। (चंग= पतंग; गुन = डोरी)।

पहुँचे हुए साधु हैं- महान संत (साधु) के प्रति कहते हैं। चालाक व्यक्ति के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० मन्नै होये साधु हन।

पहुना आएँ घर बसे, गए न ऊजड़ होय—अतिथि के आने से न तो घर बसता है और न ही जाने से उजड़ जाता है। आशय यह है कि अतिथि के आने-जाने से कोई विशेष फ़र्क़ नहीं पड़ता।

पाँच उँगची पहुँचो शोभै—पाँच उँगलियों से ही हाथ अच्छा लगता है। अर्थात् बड़े आदमी अपने सेवकों के साथ ही शोभा पाते हैं। तुलनीय : पंज० पंज उंगलां सोहनियां लगदियां हन।

पाँच का लाभ पन्द्रह का खर्च—पाँच रुपए का फ़ायदा होता है और पंद्रह रुपए खर्च होते हैं। जब लाभ से अधिक

व्यय हो तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० पाँचरो लाभ, पनरैरो खरच; पंज० पंज दा नफा बीदा खर्चा।

पाँच का मालिक, पचास का नौकर—पाँच माल का मालिक है और पचास साल का नौकर। आशय यह है कि स्वामी भले ही छोटी आयु का हो और नौकर वृद्ध हो तो भी उसे स्वामी की आज्ञा का पालन करना पड़ता है। तुलनीय : राज० पाँचरो, मालक पचासरो गुमास्तो; पंज० पंज दा मालिक पंजा दा नौकर।

पाँच की लकड़ी एक का भार, पाँच की लात एक का बेड़ा पार—दे० 'दस की लाठी एक का···'।

पाँच के तीन कर दो, पर नाम दारोगा रख दो—वेतन पाँच के स्थान पर तीन ही मिले, किंतु पद दारोगा का मिलना चाहिए। जो व्यक्ति धन से अधिक पद या सम्मान को महत्त्व देते हैं उनके प्रति कहते है। तुलनीय : माल० तीन रा ढाई कर्दो पर नाम दारोगा धर दो।

पाँच कौर भीतर तब देवता और पितर—दे० 'पहले भित्तर तब···'।

पाँच जूतियाँ और हुक्के का पानी—(क) किसी को धिक्कारना हो तब कहते हैं। (ख) जब कोई उचित भाग से अधिक माँगे तब भी कहते हैं। तुलनीय : गढ़० पाँच जुत्ता अर होक्का को पानी; हरि० पाँच जूत अर हुक्के का पाँणी; ब्रज० पाँच पनहाँ और हुक्का को पानी।

पाँच दिन नौकरी, तीन दिन नागा—पाँच दिन काम करता है और तीन दिन आराम करता है। आलसी या कामचोर व्यक्ति के प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

पाँच पंच मिलि कीजे काज, हारे जीते नाहीं लाज—पाँच आदमी मिलकर जो काम करते है उसमें हार-जीत होने पर भी लज्जित नहीं होना पड़ता। आशय यह है कि सामूहिक रूप से किए गए कार्य में हानि या हार होने पर कोई दुःख या बेइज्जती नही होती। तुलनीय : गढ़० पंचू पूछीक करनां काज, हारो-जीतो नि औ लाज; माल० पाँच जणा के कीजे काज, हार्या जीत्या रीनी है लाज; अव० पाँच पंच मिलि कीजै काज, हारे जीते नाही लाज; राज० पाँच पंच मिलि कीजै काज, हारे-जीते नाँही लाज; मरा० पांच पंच मिळून काम केलें तेथे यशापयाशाची लाज नाहीं।

पाँच पसेरी बिगहा धान तीन पसेरी जड़हन मान—कुहारी (धान) पच्चीस सेर प्रति बीघा तथा अगहनी धान (जड़हन) पन्द्रह सेर प्रति बीघा बोना चाहिए।

पांच पांडव और छठे नारायण—पांच पांडव थे और उनमे छठे श्रीकृष्ण जी (नारायण) भी सम्मिलित हो गए। आशय यह है कि जब कुछ चतुर या शक्तिशाली व्यक्तियों में उनसे भी चतुर या शक्तिशाली व्यक्ति सम्मिलित हो जाय तो ऐसी दशा में कार्य में सफलता या विजय निश्चित है। तुलनीय : ब्रज० पांचों पंडा छठे नारायन।

पाँच भील न पच्चीस बनिया—पाँच भील पच्चीस बनियों के बराबर शक्ति रखते हैं। आशय यह है कि बनिए बहुत कमज़ोर होते हैं। तुलनीय : मेवा० पाँच भील पच्चीस वाण्यां, मती मारो बावजी लेड़क वाण्यां।

पाँच मंगरो फागुनो, पौष पाँच सनि होय, काल पड़ै तब भड्डरी, बजि बवौ मति कोय—भड्डरी कहते हैं कि यदि फाल्गुन के महीने में पाँच मंगलवार और पूस के महीने में पाँच शनिवार पड़ें तो बहुत बड़ा अकाल पड़ता है इसलिए बीज नहीं बोना चाहिए। आशय यह है कि ऐसी स्थिति में वर्षा बिल्कुल नहीं होती इसलिए कुछ भी बोना बेकार हो जाता है।

पाँच महीने ब्याह को बीते पेट कहाँ से लाई—अभी केवल पाँच माह ब्याह के बीते है तो पेट कैसा ? बच्चा ब्याह से 9 माह बाद पैदा हो सकता है, अतः यदि पाँच माह में ही बच्चा पैदा होने को हो तो आश्चर्य की बात है। इसका अर्थ है कि ब्याह से पूर्व उसके गर्भ रह गया था। दुश्चरित्रा स्त्री पर कहते हैं।

पाँच में तीन उठा लूं और दो में हिस्सा लूं—पाँच में से तीन तो वैसे ही ले लिये और बाकी दो में भी हिस्सा माँगते हैं। ऐसे स्वार्थी व्यक्ति के प्रति व्यंग्य में कहते हैं जो सब प्रकार से अपना ही भला चाहता है। तुलनीय : राज० पाँच में तीन उठाऊं और दो में सीर राखूं।

पाँच में पंच बसें—पाँच व्यक्तियों में पंचों का वास होता है। अर्थात् पाँच आदमी मिल जाते हैं तो उन्हें पंचों के बराबर समझा जाता है और उनकी बात सर्वमान्य होती है। तुलनीय : राज० पांचां में पंचांरो वास।

पाँच में परमेश्वर बसें—पाँच आदमियों में परमेश्वर का वास होता है। अर्थात् पाँच व्यक्ति जो निर्णय देते हैं उसे ही ठीक मानना चाहिए। तुलनीय : राज० पांचां में परमेश्वररो वास।

पाँच रुपया शंकर, पचीस रुपया नंदी—भगवान शंकर को चढ़ाने के लिए पाँच रुपए और उनके वाहन नन्दी बैल के लिए पच्चीस। जब सेवक स्वामी से अधिक लाभ या सम्मान कराना चाहे तो व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : भोज० पाँच रुपया संकर जी क पच्चीस नंदी बैल क।

पाँच सनीचर पाँच रवि पाँच मंगर जो होय; छत्र

टूटि धरनी परै, अन्न महँगो होय—यदि एक माह में पाँच शनिवार या पाँच रविवार या पाँच मंगलवार पड़ें तो राजा का विनाश हो जाता है और अन्न महंगा हो जाता है। आशय यह है कि उपर्युक्त दशा बहुत अनिष्टकारी होती है।

पाँच-सात की लाकड़ी, एक जने को बोझ—दे० दम की लाठी एक का···'। तुलनीय : राज पाँच-सातरी लाकड़ी, एक जणैरो बोझ; कौर० पाँच-सात की लाकड़ी, एक जणो का बोज्झ।

पाँचहि मारि न सौ सके, सबै निपाते भीम—पाँच पांडवों को सौ कौरव मिलकर भी नहीं मार सके और उन सबको अकेले भीम ने मार दिया। आशय यह है कि कई कमज़ोर व्यक्तियों की अपेक्षा एक ही शक्तिशाली व्यक्ति किसी कार्य के लिए पर्याप्त होता है।

पाँचे आम पचीसे महुआ, तीस बरस में इमली और कहुआ—पाँच वर्ष में आम, पच्चीस वर्ष में महुआ और तीस वर्ष में इमली तथा कहवा (कहुआ) तैयार होते है अर्थात् फलते है। यद्यपि यह कहावत काफी प्रचलित है लेकिन महुआ, इमली और कहवा के फलने में इतना समय नहीं लगता। तुलनीय : अव० पाँचे आम पचीसै महुआ, तीस बरस मां अमिली कै फहुआ; मरा० पाँच वर्षात आंबा, पंचवी मांन महुआ, तिसात फळे चिंचनि कहुआ।

पाँचे आम पचीसे महुआ, तीस बरस में इमली का फहुआ—ऊपर देखिए।

पाँचे मीत पचासे ठाकुर—पाँच रुपए के लिए मित्र से और पचास रुपए के लिए स्वामी से बिगाड़ नहीं करनी चाहिए।

पाँचों उँगलियाँ एक सी नहीं होतीं—दे० 'पाँचों उँगलियाँ बराबर···'। तुलनीय : मल० बहूनाम बहुविधम्; ब्रज० पाँचो उँगरिया एक सी नायें होयें।

पाँचों उँगलियाँ क्या बराबर होती हैं—दे० 'पाँचों उँगलियाँ बराबर···'।

पाँचों उँगलियाँ घी में तर—चारों ओर से लाभ ही लाभ होने पर कहते हैं। तुलनीय : माल० पाँच ही आँगला घी में न सर कढ़ाई में; राज० पाँचू आंगळ्यां घी मे; गढ़० पाँचों अंगुली ध्यू मां सिर कढ़ाई मां; पंज० पंजों उंगला की विच सिर कड़ाई विच!'

पाँचों उँगलियाँ घी में, सर कढ़ाई में—ऊपर देखिए।

पाँचों उँगलियाँ पाँचों चिराग—अर्थात् बहुत योग्य है और गुणवान है।

पाँचों उँगलियाँ बराबर नहीं होतीं—आशय यह है कि सब मनुष्य एक समान नहीं होते। संसार में अच्छे-बुरे सभी हुआ करते है। तुलनीय : माल० पांचई आंगर्‌यां एक हरी की नी वे; राज० पांचू आंगलयां सरीसी को हुवैनी; गढ़० पांच्चि आंगली बराबर नि होंदी; हरि० पांचो अंगुलियाँ के बराबर होत्ती है; मरा० पांचों बोटे सारखी नसतात; अव० पांचो अंगुरी बराबर नहीं होत; तेलु० ऐदु व्रेल्लु ओकटिया युडुना; असमी—पांचो आङ्गुलि समान नहय्; अं० Diversity is the rule of universe.

पाँचों उँगलियों में एक सी पीड़ा होती है—चोट किसी भी उँगली में लगे दर्द तो हाथ में ही होता है। इसी प्रकार सब बच्चों के लिए मां-बाप का प्यार समान होता है। तुलनीय : गढ़० पांचू अंगुली पिड़ा बराबर; पंज० पंजों उंगला दी पीड़ बराबर।

पाँचों उँगलियों से पहुँचा भारी—(क) पाँच के सहारे एक की प्रतिष्ठा होती है। (ख) पाँच उँगलियों के रहने से ही हाथ मे शक्ति होती है अर्थात् शक्ति एकता द्वारा ही ही संभव है। तुलनीय : हरि० पांच् आंगलियां तै पौहचा भारी।

पाँचों ऐब शरई—चोरी, व्यभिचार, झूठ, शराब और जुआ ये पाँचों दुर्गुण इस्लामी क़ानून में वर्जित हैं।

पाँचों पंडे / पांडव छठे नारायण—दे० 'पाँच पांडव और···'।

पाँचों माल पराए, दूल्हा राजा कहाए—दूल्हे की पाँचों वस्तुएँ कपड़े, गहने, घोड़ी, तलवार, बाजे दूसरों के हैं, किन्तु वह राजा कहलाता है। जब कोई व्यक्ति दूसरो की वस्तुओं पर अपने को बड़ा बताए या शौक़ करे तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : माल० पांचई पराया, लाड़ा मरड़ घणी।

पांडे का नाम फ़रीदख़ां जानो कुल का भेद—पांडे का नाम फ़रीदख़ां है इसी से कुल का भेद मालूम हो गया। अर्थात् मनुष्य की अच्छाई-बुराई या जाति-कुल का पता उसके नाम से ही चल जाता है।

पांडे के घर बिल्ली भगतिन—आशय यह है कि अच्छे वातावरण में बुरे भी अच्छे हो जाते हैं। तुलनीय : मग० पांड़े घर बिलइयो भगतिन; भोज० पांड़े क घरे बिलरियो भगतिन।

पांडेजी दोनों दीन से गए—ऊपर देखिए।

पांडे दोऊ दीन से गए—पांडे जी दोनों ओर से मारे गए। जब कोई ऐसा काम करे जिससे वह इधर का रहे न

उधर का तब कहते हैं। एक ब्राह्मण मुसलमान धर्म को अच्छा समझकर मुसलमान हो गया। कुछ दिन पश्चात् उसने फिर हिन्दू होने की इच्छा की। परंतु हिंदुओं ने अपनी प्रथा के अनुसार उसे हिंदू बनाना अस्वीकार कर दिया। अत: वह दोनों ओर से गया।

पांडेजी दोनों से गए हलवा मिला न मांडे—कोई लाभ नहीं हुआ। जहाँ दोनों उद्देश्य विफल हो जाएँ वहीं कहते है।

पांडेजी पछताएंगे, चने की रोटी खाएँगे—नीचे देखिए। तुलनीय : बुंद० पांडेजू पछतेयं, बेई चनन की खेयं; ब्रज० पांडेजी पछिताओगे चना मटर की खाओगे; पंज० पंडे जी पछताण छोले दी रोटी खाण।

पांडेजी पछताएँगे, वही चने की खाएँगे—पांडेजी पश्चात्ताप करेंगे और अन्त में वही चने की दाल खाएँगे। जब कोई मनुष्य हार कर वही काम करे जो पहले बहुत समझाने पर भी अपनी जिद से न किया हो, तब व्यंग्य से कहते हैं। इस लोकोक्ति के मूल में यह कहानी है : किसी ब्राह्मण को चने की दाल अच्छी नहीं लगती थी। एक दिन और कोई दाल घर में न रहने के कारण ब्राह्मणी ने चने की ही दाल बनाई। पांडेजी ने रोटी खाने से इन्कार कर दिया। पंडाइन के बहुत समझाने पर भी वे राज़ी न हुए। इस पर उसने उक्त लोकोक्ति कही। जब उनकी भूख लगी तो उन्हें विवश होकर वही दाल खानी पड़ी। तुलनीय : राज० पांडे जी पिस्तावैला, झक मार खीचड़ो खावैला, अव० अस्तायंगे पस्तायंगे मियां जी ओही चने कै दाल चबायंगे; गढ़० झख मारे झंगोरो खाए; बुंद० पांडेजू पछतेयं, बेई चनन की खेयं; ब्रज० पांडेजी पछिताओगे वेई चना को खाओगे।

पांडे मरे जान से पंडाइन मांगे मीठा—पांडेय जी का प्राण जा रहा है और उनकी पत्नी मीठा माँग रही है। उक्त कहावत उन स्वार्थियों को लक्ष्य करके कही जाती है जो किसी के कष्ट में पड़े रहने पर भी अपना ही स्वार्थ देखते हैं। तुलनीय : मैथ० पांड़े मरस जान से पंड़ाइन मांगस मीठा।

पांडे सैयां तिवारी की बीवी—पत्नी तो थी तिवारी की और उसका स्वामी बने थे पांडेयजी। दूसरे की संपत्ति पर अधिकार करने पर उक्त कहावत कही जाती है। तुलनीय : भोज० पांड़े सइयां तिवारी क बीबी।

पांडे ही पछताएँगे, सूखे चने चबाएँगे—दे० 'पांडेजी पछताएँगे वही…'।

पांत में दो भांत—एक ही पंक्ति में या समाज में दो तरह का व्यवहार। जब कोई व्यक्ति एक ही समाज के लोगों के साथ दो ढंग का बर्ताव करता है तब उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० पाँति में दु भाँति।

पांव के नीचे की मिट्टी भी ऐसी न होगी—दो वस्तुओं में जब भारी अंतर हो तो तुलना करते समय कहते हैं।

पांव के नीचे आया रोड़ा, तले सवार ऊपर घोड़ा—घोड़े के पैर के नीचे कंकड़ पड़ गया जिससे घोड़ा गिर पड़ा और उसका सवार नीचे पड़ा तथा वह उसके ऊपर हो गया। आशय यह है कि कंकड़ पर घोड़ा दौड़ नहीं सकता।

पांव गोर में लटकाए बैठे हैं—मरने को तैयार हैं, मरणासन्न हैं। जब कोई बहुत बूढ़ा व्यक्ति ऐसी बात करे जिसकी उसमें सामर्थ्य न हो तो व्यंग्य या उपहास से कहते हैं।

पांव नहीं जूत, हम ठाकुर के पूत—पाँव में जूता तक नहीं है और अपने को ज़मींदार का बेटा कहते हैं। डींग हाँकने वाले के प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

पांव में जूती न सिर पर टोपी—न तो पाँव में पहनने को जूती है न सिर पर टोपी। (क) बहुत निर्धन व्यक्ति के प्रति कहते हैं। (ख) जो सिर पर टोपी पहने रहे और नंगे पैर हो तब भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० पैर बिच जुती न सिर उते टोपी।

पांव में भौंरी है—जो एक स्थान पर टिक कर नहीं बैठ सकता उसके या घुमक्कड़ प्रकृति के मनुष्य के प्रति कहते हैं।

पांव में शनीचर है—ऊपर देखिए।

पांव लौं बिनती, सो लौं गिनती—जिस प्रकार सौ से ज्यादा गिनती नहीं होती उसी प्रकार पाँव पड़ने से बढ़कर कोई बिनती नहीं होती। जब कोई अपना क़सूर माफ़ कराने के लिए किसी के पाँव पड़े और इस पर भी वह न माने तब कहते हैं।

पांव से लगी सर में बुझी—बहुत अधिक क्रोध आने पर कहा जाता है। किसी से ईर्ष्या करने पर भी कहते हैं।

पांस परे तो खेत नहीं तो कूड़ा-रेत—खाद (पाँस) पड़ने से ही खेत ठीक रहता है और उसमें फ़सल अच्छी होती है। यदि खाद न डाली जाए तो खेत खराब हो जाता है और उसमें फ़सल अच्छी नहीं होती।

पांसा पड़े अनाड़ी जीते—पाँसा पड़ने से अनाड़ी व्यक्ति की भी विजय हो जाती है। आशय यह है कि भाग्य अनुकूल होने पर साधारण व्यक्ति भी कठिन कार्य सिद्ध कर लेता है। तुलनीय : गढ़० पाँसो पड़ो अनाड़ी जीतो; राज०

पड़ै पासो तो जीतै गँवार; बुंद० पांसो परै, अनाड़ी जीते।

पाँसा पड़े सो दाँव, राजा करे सो न्यांव —दांव वही जिसमें पाँसा पड़ जाय और न्याय वही जिसे राजा कर दे। अर्थात् भाग्य और राजा के सामने किसी की नहीं चलती।

पाई पूरता-सा घूमता है —बिना कारण इधर से उधर बार-बार आने-जाने वाले या काम में रुकावट डालने वाले शरारती लड़के के प्रति कहते हैं। (कपड़ा बुनने के लिए ताना बनाने के लिए थोड़ी-थोड़ी दूर पर लकड़ियाँ गाड़ी जाती हैं। और उन लकड़ियों पर सूत भरने को 'पाई पूरना' कहते हैं। इस काम को स्त्रियाँ या बच्चे करते हैं जो शीघ्रता से चारों ओर घूमते हैं। तुलनीय : बुंद० पाई-पुरिया सी पूरत फिरत।

पा-ए-रफ़्तन न जा-ए-मांदन —न कहीं जाने की शक्ति है और न कहीं रहने का स्थान। अर्थात् न कहीं जाते बनती है न रहते।

पाक नाम अल्लाह का —निष्कलंक नाम अगर किसी का है तो ईश्वर का है।

पाक रह, बेबाक रह —सदाचरण करो तो निर्भय होकर घूमो। आशय यह है कि सच्चे या निर्दोष व्यक्ति को किसी प्रकार का डर नहीं होता।

पाखंडा पूजिते लोक, साधु नैवच नैवच —लोग पाखंडियों की पूजा करते हैं और सच्चे साधुओं को कोई नहीं पूछता। आज के युग में सज्जन व्यक्ति की अपेक्षा पाखंडियों की अधिक इज़्ज़त होती है, इसलिए ऐसा कहते हैं।

पागल की भैंस बियाय, गाँव चले दुहने —पागल की भैंस ब्याती है तो गाँव के सब लोग उसे दुहने पहुँच जाते हैं। आशय यह है कि मूर्ख की वस्तु से सभी लाभ उठाते हैं। तुलनीय : पंज० पागल दी मज सूई पिंड चल्या चोण।

पा-ए-गदा लंग नेस्त मुल्के-ख़ुदा तंग नेस्त —न भिखारी लँगड़ा है और न परमात्मा की सृष्टि संकीर्ण। भीख माँगकर खाने वाले के लिए कोई कठिनाई नहीं है।

पागल कुत्ता हिरन के पीछे भागे —बावले कुत्ते हिरन के पीछे भागते हैं जो उनकी पकड़ में कभी नहीं आ सकते। मूर्खों के प्रति तब कहते हैं जब वे किसी ऐसे कार्य को करने का प्रयत्न करते है जो उनकी पहुँच से बाहर हो या जिसे करना संभव न हो। तुलनीय : राज० गैला कुत्ता हिरणां लारे दौड़े; पंज० पागल कुत्ता हिरण दे पिछे नठे।

पागल कुत्ता हिरन को दौड़ावे —ऊपर देखिए।

पागल हाथी गाँव चगोटे —पागल हाथी गाँव चगोटता है। अर्थात् मूर्ख व्यक्ति बेकार परिश्रम किया करते हैं। तुलनीय : भोज० बौराइल हाथी गाँव चगोटे। (चगोटना = चारों ओर घूमना)।

पागलों के क्या सींग होते हैं? —पागलों के सींग थोड़े ही होते हैं वे भी सामान्य मनुष्यों की तरह होते हैं। और अपने व्यवहार तथा बातचीत से ही पहचाने जाते हैं। मूर्खों के प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० गैलांटे किसा सींग लागै।

पागलों के सिर सींग नहीं होते —ऊपर देखिए।

पाटच्चर लुण्ठिते वेश्मनि यामिक जागरणम् —चोरों द्वारा घर में चोरी कर लेने के पश्चात् चौकीदार का जाग पड़ना। जब कोई व्यक्ति उचित समय पर कोई कार्य न करके बेमौके करता है तब ऐसा कहते हैं।

पाठ न पूजा भर मुँह तंबाकू —पाठ-पूजा न करने वाले किंतु नशा आदि के शौकीन ब्राह्मणों पर व्यंग्य है। तुलनीय : छत्तीस० पाठ पूजा जैसे-तैसे, बिन चोंगी के बम्हना कैसे (चोंगी = चिलम); भोज० धरम न करम, जाने बस सुरती-चूना क मरम।

पात तैरते हैं, पत्थर डूबते हैं —ग़रीब और निम्न स्तर के लोग मौज करते हैं और धनी तथा प्रतिष्ठित लोग कष्ट उठाते हैं।

पातरता को गजी नहीं, बेसवा ओढ़े ख़ासा —अच्छे कष्टमय जीवन बिताते हैं और बुरे आनंद से रहते हैं।

पाथर डारे कीच में, उछरि बिगारे अंग —कीचड़ में पत्थर डालने से अपने ही ऊपर छींटे पड़ते हैं। अर्थात् नीच को न छेड़ना चाहिए, उससे अपनी ही हानि या अपमान होता है।

पाद, छींक, डकार, तीनों गुणकार —पाद, छींक, और डकार तीनों ही स्वास्थ्य के लिए लाभदायक हैं। तुलनीय : राज० पाद, छींक, डकार—तीनू गुणाकार।

पादने का दम नहीं, तोपची रख लो —पादने योग्य भी शक्ति नहीं है और कह रहे हैं कि मुझे तोपची रख लो। जिस व्यक्ति में थोड़ी भी शक्ति न हो और वह बहुत परिश्रम और शक्ति का काम करना चाहे तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० पादणरी पोंच नहीं, गोलंदाजा में चेरो करो।

पादने वाले के घर मुश्क कितने दिन? —सदा पादने वाले के घर कस्तूरी की सुगंध कितने दिन चलेगी? आशय यह है कि जिस व्यक्ति की प्रकृति ही दुष्टता करने की हो उस पर सदुपदेश का प्रभाव अधिक देर नहीं रहता और वह

शीघ्र ही पुराने ढर्रे पर आ जाता है। तुलनीय: राज० पादण घर कस्तूरी किता क दिन ?

पाद लो चिड़ियो सावन आ गया—ऐ चिड़ियो ! पाद लो, अब तो सावन आ गया। जब किसी दुष्ट और अयोग्य व्यक्ति की मनचाही हो जाय तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० पादो, ए चिड्यां ! सावण आयो।

पाद से काम चले तो जंगल कौन जाय ?—पादने से ही काम बन जाय तो शौच कौन जाए। अर्थात् जब मामूली काम करने से या बैठे रहने से ही गुज़ारा चल जाय तो परिश्रम करके कौन रोज़ी पैदा करना चाहेगा ? जब कोई व्यक्ति परिश्रम किए बिना ही धन अर्जित करना चाहे तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० पाद्यां ही सर ज्याय तो झाड़ै कुण जाय; पंज० पद मारण नाल कम होजाए तां हगण कौण जाए।

पान और ईमान फेरे से ही अच्छा रहता है—पान फेरने से ठीक रहता है और यदि न फेरा जाय तो वह सड़ जाता है। पान फेरने के अर्थ में ईमान फेरने का यह मतलब है कि जिस प्रकार कोई वस्तु एक स्थान पर पड़ी रहती है तो उस पर धूल जम जाती है और वह खराब हो जाती है, इसलिए उसे उलट-पलट कर साफ़ करना ज़रूरी होता है। उसी प्रकार ईमान को भी दूषित होने से बचाने के लिए उलट-पुलट कर साफ़ करना आवश्यक होता है।

पान के साथ परासे के पत्ते की भी इज्ज़त—नीचे देखिए।

पान के साथ पलास भी बड़ों के पास पहुँचता है—बड़ों के साथ रहने से छोटा भी बड़े-बड़े स्थानों पर पहुँच जाता है या बड़ों के साथ रहने से छोटों को भी सम्मान मिलता है।

पान नहीं तो पान का डंठल ही सही—इच्छित वस्तु के अभाव में तुच्छ वस्तु से ही काम चलाने पर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मैथ० पान नै ते पान के डंटीये सही; भोज० पान नइखे तऽ पान क डंटिये सही; सं० अभावे शालिचूर्ण वा।

पान पीक ओंठन बने, काजर नैनन जोग—पान से होंठों की शोभा होती है और काजल से आँखों की। आशय यह है कि जहाँ की चीज़ होती है वहीं अच्छी लगती है।

पान पीक सोहै अधर, नैनन काजर जोग—ऊपर देखिए।

पान पुराना, घी नया और कुलवंती नार; चौथी पीठ तुरंग की, स्वर्ग निशानी चार—पुराना पान, नया घी, पतिव्रता स्त्री और घोड़े की सवारी यदि ये चारों मिलें तो समझिए कि स्वर्ग-प्राप्ति हो गई। इसी की उलटी लोकोक्ति यह है—बड़े बाल और मैले कपड़े और करकसा नार; सोने को धरती मिलै, नरक निसानी चार।

पान पुराना घृत नया अरु कुलवंती नार, ये तीनों तब पाइए जब प्रसन्न करतार—पुराना पान, नया घी और कुलवंती स्त्री ये तीनों तभी मिलते हैं जब भगवान प्रसन्न हों। अर्थात् ये भाग्यवान को ही मिलते हैं।

पान से पतला चाँद से चकला—अत्यन्त सुकुमार और सुंदर व्यक्ति के लिए कहा जाता है।

पानी आया तो सूखी फ़सल भी बहा ले गया—जब पानी की आवश्यकता थी तब तो पानी आया नहीं और जब फ़सल सूख गई तो इतना अधिक आया कि सूखी फ़सल को भी बहा ले गया। हानि में और अधिक हानि होने पर कहते हैं।

पानी का मोल सूखे में—पानी का मूल्य सूखा पड़ने पर पर ही मालूम होता है। अर्थात् किसी भी वस्तु के मूल्य का पता उसका अभाव होने पर ही चलता है। तुलनीय : राज० पाणीरी पीक दुमारमें देखो।

पानी का सा बुलबुला है—(क) नाशवान वस्तु पर कहते हैं। (ख) जीवन की क्षण-भंगुरता पर भी कहा जाता है। तुलनीय : अव० पानी कै बुलबुला है; ब्रज० पानी कौ सौ बबूला।

पानी का हगा ऊपर आता है—बुरा काम या बुराई कभी छिपती नहीं। जब कोई छिपकर किसी की बुराई करे और वह प्रकट हो जाय तब कहते हैं। तुलनीय : अव० पानी का हगा उपरै उतरात है; भोज० पानी में क हग्गल ऊपर आ जाला; हरि० पाणी का पाद्या ओड़ ऊप्पर आया करै; अं० Ashes can't conceal the fire.

पानी की कमाई पानी में गमाई—अनुचित साधनों से पैदा किया हुआ धन ठहरता नहीं वह उसी प्रकार ख़र्च भी हो जाता है। तुलनीय : फ़ा० माले-हराम बूद ब जा-ए-हराम रफ़्त; अं० Ill gotten ill spent.

पानी की क़ीमत पानी न बरसने पर मालूम होती है—दे० 'पानी का मोल सूखे में।' तुलनीय : अं० We never know the worth of water till the well is dry.

पानी कुएं में, अनाज गोदाम में रहता है—पानी कुएँ में सुरक्षित और पीने योग्य रहता है तथा अनाज गोदाम में ही। अर्थात् उपयुक्त स्थान में ही वस्तुएँ सुरक्षित रहती हैं अन्यथा प्रयोग करने योग्य नहीं रहतीं। तुलनीय : भीली—

नीर नवाणां, धान कोटारां ठरे है।

पानी केरा बुदबुदा, अस मानुस की जात—मनुष्य का जीवन पानी के बुलबुले के समान होता है। आशय यह है कि मनुष्य का जीवन अस्थायी और क्षणभंगुर है।

पानी के लिए तलवार का वार क्या—अर्थात् वह व्यर्थ है। जब कोई व्यक्ति ऐसा कार्य करे जिससे कोई लाभ न हो या अपेक्षित उद्देश्य की प्राप्ति न हो तब कहते हैं। प्र० पानिहि काह खरग कै धारा। लौटि पानि सोई जो मारा। -जायसी।

पानी गए न ऊबरे, मुकता / मोती मानुस चून—पानी उतर जाने पर मुक्ता (मोती) मनुष्य और चूना बेकार हो जाते हैं। मनुष्य के लिए पानी का अर्थ इज्जत से है जिसकी एक बार इज्जत उतर जाती है उसे पुनः इज्जत नहीं मिलती। इज्जत के महत्त्व को बतलाने के लिए कहते है।

पानी ढाल की ओर ही बहता है--जिस ओर ढाल होगा पानी उसी ओर बहेगा। (क) प्रत्येक व्यक्ति अपनी प्रकृति के अनुसार कार्य करता है। भला मनुष्य भले और बुरा मनुष्य बुरे काम अपनी प्रकृति के अनुसार करता है। (ख) प्रत्येक कार्य को करने का उसका अपना ढंग होता है और वह उसी ढग से सही होता है। तुलनीय : राज० पाणी पाणीरी ढाल वैवै; पंज० पाणी तराई वल वगदा है।

पानी तक नहीं पहुँचे, बालू में ही हाथ मार रहे हैं—पानी तक नहीं पहुँचे, वह तो अभी दूर है। अर्थात् लक्ष्य बहुत दूर है अभी तो फ़ालतू काम ही कर रहे हैं। जब किसी से उसके ऐसे काम की प्रगति के संबंध में पूछा जाय जो अभी आरंभ ही किया हो तो वह मज़ाक़ से इस प्रकार कहता है। तुलनीय : बुद० पानी नों पौंचे नइयाँ, रेवता से बेमा घाँटन।

पानी तेरा रंग कैसा ? जिसमें मिला दो वैसा—पानी का अपना कोई भी रंग नहीं होता। उसे जिस रंग में डाल दिया जाय वह उसी को ग्रहण कर लेता है। (क) जो व्यक्ति प्रत्येक क्षेत्र में सफलतापूर्वक काम करे उसके प्रति प्रशंसा से कहते हैं। (ख) जो व्यक्ति सभी तरह के आदमियों से मिलजुल कर रहता हो उसके प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : माल० पाणी थोरा रंग कस्यो के—जण में मलावे जस्यो।

पानी दीपक में पड़े चिड़चिड़ात है तेल—दीपक के तेल में पानी पड़ जाने पर तेल चिड़चिड़ाने लगता है, अर्थात् क्रोधित होता है। आशय यह है कि व्यर्थ किसी के बीच मे नहीं पड़ना चाहिए।

पानी नीचे को ही बहेगा--दे० 'पानी ढाल की···'। तुलनीय : असमी—पानी तललै है वय; अं० Water will flow downwards.

पानी पर की लिखावट—पानी पर की लिखावट तुरंत नष्ट हो जाती है। ऐसे कार्य के प्रति कहते हैं जिससे कोई लाभ न हो सके या जो तुरंत नष्ट हो जाय।

पानी पर पत्थर तैरते हैं—पत्थर भी पानी पर तैर सकते हैं। जब कोई असंभव कार्य संभव हो जाय तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० पाणी पर पत्थर तिरै; पंज० पाणी उत्ते पत्थर तैरदे हन।

पानी पीए छान के, दोस्ती कीजे जान के—पानी छान कर पीना चाहिए और मित्र बनाने में बहुत सावधानी बरतनी चाहिए, क्योंकि संसार में प्रायः स्वार्थी मित्र ही मिला करते हैं। तुलनीय : ब्रज० पानी पीजै छानि कै, मित्र कीजिए जानि कै।

पानी पीए छाना, काम करे पहचाना—दे० 'पानी पीजे छान कर काम···'।

पानी पीकर जाति पूछते हैं—पानी पीने से पहले जाति पूछने का लाभ है, किंतु जब पानी पी ही लिया तो पिलाने वाले की कोई भी जाति हो क्या अंतर पड़ता है? आशय यह है कि कोई काम करने से पहले ही उसके संबंध में जाँच-पड़ताल कर लेना चाहिए, करने के बाद पूछने से कोई लाभ नहीं हो सकता। तुलनीय : गढ़० पाणी पीक जात क्या पूछणी; अव० पानी पी कै जात पूछै; राज० पाणी पी' र जात नहीं बूझणी; मरा० पाणी प्याल्यावर जात विचारायची; पंज० पाणी पीके जात की पुछनी; ब्रज० पानी पीकें जाति पूछै।

पानी पीकर पूछे जात—ऊपर देखिए।

पानी पीकर मूत तौलता है—पानी पीने के बाद जितना पेशाब आता है उसको तौलता है कि कहीं पानी से कम तो नहीं हो गया। (क) जो व्यक्ति बहुत ही कंजूस हो उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। मूर्ख व्यक्ति के प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० पाणी पी' र मूत तोलै; पंज० पाणी पी के मूतर तोलदा है।

पानी पीजे छान कर, काम कीजे जान कर—पानी छान कर पीना चाहिए और काम वही करना चाहिए जिसे अच्छी तरह करने का ढंग मालूम हो। अर्थात् उसी काम को हाथ में लेना चाहिए जिसे करने की क्षमता हो। तुलनीय: राज० पाणी पीजै छाणियो, कीजै मनरो जाणियो।

पानी पीजे छानकर, गुरु कीजे जानकर—पानी को

छानकर पीना चाहिए और भली-भाँति परख कर ही किसी को अपना गुरु मानना चाहिए । तुलनीय : अव० पानी पीजै छानि कै गुरु कीजै जानि कै ; भोज० पानी पीऐ छानि के गुरु बनावें जानि के; राज० पाणी पीजै छाण, गुरु कीजै जाण ।

पानी पीजे छान के, गुरु कीजे जान के—ऊपर देखिए ।

पानी पीने को पुरवा नहीं, आबदस्त को गडुआ—पानी पीने के लिए मिट्टी का एक पुरुआ अर्थात् एक कुल्हड़ भी नहीं है और धोने (आबदस्त) के लिए गड़ुआ अर्थात् लोटा माँगते हैं । हैसियत से ज्यादा माँग पर कहते हैं ।

पानी पीवें छान के , जीव मारे जान के—जैनी पानी छानकर इसलिए पीते हैं कि जीव-हत्या न हो, किंतु छानने पर कपड़े में आए हुए कीड़े मर जाते हैं । जैनियों को व्यंग्य में कहते हैं जो मिथ्या आडंबर करते हैं । तुलनीय : राज० पाणी पीवें छाण, जीव मारै जाण ।

पानी बहे पुल बाँधे क्या ?—पानी बह जाने पर पुल बाँधने से कोई लाभ नहीं । अर्थात् अवसर निकल जाने पर यत्न करना व्यर्थ है ।

पानी बिन ज़िन्दगी किस काम की—पानी अर्थात् इज्जत के बिना जीवन किसी काम का नहीं होता । जिस व्यक्ति की इज्जत न हो वह मुर्दे के समान है ।

पानी भी गिरा, घड़ा भी न बचा—घड़े को बचाने के लिए पानी की चिंता नहीं की और उसे गिर जाने दिया किंतु पानी के साथ-साथ घड़ा भी फूट गया । जब एक कार्य को संभालने के लिए दूसरे की चिंता छोड़ दे और दोनों ही नष्ट हो जायं तो कहते हैं । तुलनीय : भीली—दई ने दूणो हारो ग्यो ।

पानी भीतर मछली, फिरती उछली-उछली—पानी के अंदर मछली प्रसन्न होकर उछलती रहती है । अर्थात् अपने स्थान या घर पर सब प्रसन्न रहते हैं ।

पानी मथने से घी नहीं निकलता—(क) कंजूस की सेवा करने से कुछ प्राप्ति नहीं होती । (ख) मूर्ख को उपदेश देने से कोई लाभ नहीं होता । (ग) असंभव कार्य या बात पर भी कहते हैं । तुलनीय : अव० पानी मथे घिउ न निकरी; मरा० पाणी घुसळलें म्हणून लोणी निघत नाहीं; पंज० पाणी रिड़कन नाल की नहीं बनदा; ब्रज० पानी मथे ते घ्यौ नायें निकसै ।

पानी में आग नहीं लगती—पानी में आग नहीं लगती बल्कि पानी से तो आग बुझती है । जो व्यक्ति असंभव बात को संभव कहे या उलटी बात करे उसके प्रति कहते हैं । तुलनीय : भीली—पाणी में आग बाले, भाटा ना बेला पाड़े ज्यांहो है; पंज० पाणी विच आग नईं लगदी ।

पानी में का हगा उतराए बिना नहीं रहता—आशय यह है कि बुरा काम अवश्य सामने आता है । तुलनीय : अव० पानी का हगा उतराए बिना नहीं रहत; भोज० पानी में क हग्गल जरूर उपराई ।

पानी में गिरा सूखा नहीं निकलता—पानी में गिरने पर कोई भी सूखा नहीं निकलता, वह अवश्य ही भीग जाता है । आशय यह है कि बुरा काम करने का फल अवश्य भुगतना पड़ता है । तुलनीय : बुंद० पानी को डूबो सूको नई कड़त ।

पानी में जो मूते, वही उसे जाने—पानी में घुसकर जो मूतता है उसे मूतने वाला ही जान सकता है । अर्थात् प्रायः बुरे काम करने वाले के कार्य वह स्वयं ही जानता है और किसी को पता नहीं लग पाता । तुलनीय : राज० जलमे मूतै जको जाणै ।

पानी में डूबा सूखा नहीं निकलता—दे० 'पानी में गिरा सूखा⋯'।

पानी में पत्थर नहीं गलता / सड़ता—(क) किसी धनी के यहाँ रुपया बाक़ी हो तब कहते हैं । (ख) जब निर्दयी व्यक्ति किसी तरह न पसीजे तब भी कहते हैं ।

पानी में पैर न डालूँ, पहली मछली मेरी—पानी में तुम्हीं घुसो और मछलियाँ मारो किंतु पहली मछली मैं ही लूँगा । जब कोई व्यक्ति बिना परिश्रम किए ही लाभ लेना चाहता है तो व्यंग्य में कहते हैं । तुलनीय : भोज० पानी में गोड़ न परे पहिला मांगर मोर ।

पानी में पैर न पड़े, मगर मार दो—पानी में पैर भी न पड़े और मगर को मार भी दो । (क) जो व्यक्ति काम भी कराना चाहे और कुछ अड़ंगा भी लगा दे उसके प्रति कहते हैं । (ख) बिना परिश्रम सफलता चाहने वाले के प्रति व्यंग्य से कहते हैं ।

पानी में बस के मगर से बैर—दे० 'पानी में रहकर⋯'।

पानी में मछली नौ नौ टुकड़ा हिस्सा—मछली अभी पानी में ही है और उसके बँटवारे के बारे में पहले ही विचार हो रहा है । काम होने के पूर्व ही उसके लाभ या फल का विचार करने वालों पर व्यंग्य है ।

पानी में मीन पियासी—मछली पानी के भीतर रहकर भी प्यासी रहती है । जब कोई व्यक्ति धन-वैभव के होते हुए भी उसका भोग न कर पाए तो उसके प्रति कहते हैं । तुलनीय : राज० पाणी मे मीन पियासी ।

पानी में रहकर मगर से बैर—जिसकी अधीनता में रहना हो या जिससे सदैव काम पड़े उससे शत्रुता करने से हानि ही होती है। तुलनीय : अव० पानी मा बसिकै मगर ते बैर; पंज० दरया विच रेह् के मगरमच्छ नाल बैर; भोज० पानी मे रहि के घरियार से बयर; अं० It is ill sitting at Rome and striving with the Pope.

पानी में रहे प्यासे मरे— दे० 'पानी में मीन···'। तुलनीय : असमी— पानीत् थाकि पियाहत् मरा; अं० Living in water he dies of thirst.

पानी में हगा ऊपर उतराता है—दे० 'पानी का हगा ऊपर···'।

पानी-सा ठंडा और हवा-सा पतला रहे सो सुख पाय—संसार में जो व्यक्ति जल-सा शीतल और वायु जैसा सूक्ष्म होकर रहता है वही सुख पाता है। जो व्यक्ति जल और वायु जैसा शीतल अर्थात् क्रोधरहित और दूसरों को सुख देने वाला बनता है, वही सफलता प्राप्त करके भोगता है। तुलनीय : भीली—पाणी हरका ठंडा, पवन हरका पातला थाई न रेवू।

पानी से पतला क्या ? – अर्थात् कुछ नहीं है। जो व्यक्ति बहुत बुरा हो उससे अधिक बुरा क्या हो सकता है ? अति नीच और दुष्ट के प्रति कहते है। तुलनीय : व्रज० पानी ते पतरो कहा ए।

पानी से पहले पाल नहीं बनानी चाहिए—पानी आने से पहले ही नाव के लिए पाल नही बनानी चाहिए, क्योंकि पानी का क्या पता कि नाव चलाने योग्य आता भी है या नहीं। अर्थात् साधन पाए बिना परिश्रम करना व्यर्थ होता है। तुलनीय : भीली—पाणी पेली पाल ने बाधणी।

पानी से पहले पुल बाँधते हैं—अभी पानी आया भी नहीं और पुल बाँधना शुरू कर दिया। काम होने से पहले ही उसके नतीजे पर विचार करने वाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० पाणी तों पैले पुल बनौ।

पाप उभड़े पर उभड़े—पाप अवश्य सामने आ जाता है। आशय यह है कि पाप छिपाए नहीं छिपता। उसको छिपाने का जितना प्रयत्न किया जाता है वह उतना ही उभरता है। तुलनीय : राज० पाप फूटै पण फूटै; अव० पाप छिपाए छिपत नाही; अं० Murder will out.

पाप करै कोई, मार खाय कोई— पाप कोई करता है और उसका दंड किसी और को मिलता है। जब दंड अपराधी को न मिलकर किसी निर्दोष व्यक्ति को मिलता है तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० पाप करे कोई कुट खाय कोई।

पाप का घड़ा जल्द फूटता है—पाप बहुत दिन तक नही चलता उसका (पापी का) बहुत शीघ्र पतन हो जाता है। तुलनीय : पंज० पाप दा कडा छेती पजदा है; ब्रज० पाप कौ घड़ा जल्दी फूटै।

पाप का घड़ा भर कर डूबता है – पापी की पहले तो उन्नति होती है किन्तु बाद में उसका जड़ से नाश हो जाता है। तुलनीय : अव० पाप कै घड़ा भर कै बूड़त है; पंज० पाप दा कडा पर के डुबदा है।

पाप का बाप लालच अर्थात् लालच सभी पापों का मूल है। तुलनीय : मैथ० पाप के बाप लालच; पंज० पाप दा पिओ लालच।

पाप छिपाए, ना छिपे, जैसे लहसुन की बास—जिस प्रकार लहसुन की गंध छिपाने से नहीं छिपती, उसी प्रकार पाप भी छिपाने से नहीं छिपता। अर्थात् अपराध हर हालत में प्रकट हो जाता है। तुलनीय : हरि० पाप का भांडा जरूर फुट्या करै; मेवा० पाप को भांडो फूट्यां बिना नी रेवे।

पाप डुबोवे धरम तिरावे, धरमी कभी दुख न पावे – पाप डुबो देता है, धर्म डूबने से बचाता है तथा धर्म करने वाले को कभी दुःख नहीं मिलता। आशय यह है कि धर्म करने वाले सदा सुखी रहते हैं।

पापड़ की गिनती कौन पकवान में, तूंती की गिनती कौन से बरतन में—पापड़ को पकवान नही माना जाता और तूबी को बरतन नहीं माना जाता। जब कोई व्यक्ति किसी साधारण वस्तु की बहुत तारीफ़ करे तो व्यंग्य से कहते हैं।

पाप पहाड़ चढ़के पुकारे—पाप छिपाने से छिप नही सकता। तुलनीय : माल० पाप मगरे चढ़ी न बोले; अव० बड़ेरी चढ़िकै चिल्लात है।

पाप-पुण्य का कोई भागी नहीं होता—पाप या पुण्य का कोई हिस्सेदार नही होता, अर्थात् पाप और पुण्य का फल करने वाले को ही मिलता है। जब कोई किसी के लिए पाप करता है या बुरे ढंग से धन कमाता है तो उसे समझाने के लिए कहते हैं। तुलनीय : बुंद० पाप-पुन्न कौ कोऊ भागी नई होत; पंज० पाप करो तां अपने लई, पुन्न करो तां अपने लई।

पाप प्रकट, धर्म गुप्त—अच्छे काम दुनिया की दृष्टि से छिप सकते हैं, किन्तु पाप या बुरे काम कभी-न-कभी प्रकट

हो ही जाते हैं। किसी छुपे रुस्तम का जब कोई कारनामा खुल जाए तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : गढ़० पाप प्रकट धर्म गुप्त।

पाप मारे या बाप मारे—किसी भी व्यक्ति को या तो उसके किए हुए बुरे काम ही नष्ट करते हैं या उसके माँ-बाप। आशय यह है कि माँ-बाप की लापरवाही से ही प्रायः संतान बिगड़ जाती है और उन्हें जीवन भर बचपन की ग़लतियों की सज़ा भुगतनी पड़ती है। तुलनीय : गढ़० बाप मानो छाप मारो; पंज० पाप मारे या पिओ मारे।

पापियों के मारने को पाप महाबली – अपराधियों को मारने के लिए अपराध सबसे शक्तिशाली है। आशय यह है कि अपराधी अपने अपराधों से ही मिट जाते हैं।

पापी का धन अकारथ जात—नीचे देखिए।

पापी का माल अकारथ जाय—ग़लत तरीक़े से इकट्ठा किया हुआ धन ग़लत रूप में ही खर्च हो जाता है। तुलनीय : अव० पापी का धन अकारथ जाय।

पापी का माल पराछित जाय, दंड भरे या चोर ले जाय—ऊपर देखिए।

पापी की नाव भरके डूबे—दे० 'पाप का घड़ा भर ··'।

पापी की नाव मंझधार में डूबे – पापी को उसके चरमोत्कर्ष पर पहुँचने के बाद दंड मिलता है।

पापी के पैर पानी में भी दिखें—पापी के पैरों के निशान पानी में भी दिखाई पड़ते है। आशय यह है कि पापी दंड से बचने के लिए चाहे कितना भी प्रयत्न करे किन्तु वह एक दिन अवश्य पकड़ा जाता है और उसे अपने किये का फल भोगना पड़ता है। तुलनीय : भीली—पाप नां पगां पाणी में देखें।

पापी के मन में पाप ही बसे—आशय यह है कि बुरे व्यक्ति के मन में सदा बुराई ही रहती है। तुलनीय : अव० पापी के मन में पाप बसा; राज० पापीरे मन मे पाप वसै; पापी करो बिराणा घर की टापी; पंज० पापी दे दिल बिच पाप ही बसे।

पापी से पापी मिले, यह बचे न वह बचे—जब कोई दुष्ट व्यक्ति किसी दूसरे दुष्ट के साथ दुष्टता करता है तो वह भी उसके साथ उसी तरह का व्यवहार करता है और परिणामस्वरूप दोनों एक दूसरे से लड़कर समाप्त हो जाते हैं। आशय यह है कि अपराधी को प्राय. अपराधी ही मारा करते हैं। तुलनीय : माल० पापो पाप समाप्ता।

पाबंद फँसे, आज़ाद हँसे—पराधीनता में दुःख और आज़ादी में सुख मिलता है।

पाबंदी एक की भली—अधीनता एक की अच्छी होती है, बहुतों की नहीं।

पायं कुल्हाड़ी आपने, मारत मूरख हाथ – मूर्ख अपने हाथ से अपने ही पैर में कुल्हाड़ी मारता है। अर्थात् मूर्ख अपनी हानि स्वयं करता है।

पाय सोने की छुरी पेट न मारत कोय —सोने की छुरी को पाकर कोई उसे पेट में नहीं मारता। आशय यह है कि मूल्यवान वस्तु मिलने पर भी कोई उसका ऐसा प्रयोग नहीं करता जिससे अपनी हानि हो।

पाया सो खाया – (क) जो वस्तु कहीं पड़ी मिल जाय उस पर अपना ही अधिकार हो पाता है और उसका प्रयोग भी स्वयं ही किया जाता है। (ख) बहुत संतोषी व्यक्ति के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : राज० लाधो माल खाधो; पंज० लबा सो गुआचा।

पार उतरूँ तो बकरा दूँ —जब कोई तकलीफ़ के समय तो देवी-देवता मनावे पर काम निकल जाने पर भूल जाय तब कहते है। एक मुसलमान नाव में बैठकर नदी पार कर रहा था। जब बीच में पहुँचा तो बड़े ज़ोर से तूफ़ान आया। उसने किसी पीर की मन्नत मानी कि यदि सकुशल पार पहुँच जाऊँगा तो बकरा चढ़ाऊँगा। जब तूफ़ान बंद हुआ तो उसने कहा मुर्ग़ी अवश्य चढ़ाऊँगा। जब सकुशल पार पहुँच गया तो अपने कपड़े से एक चीलर निकालकर मार डाला और यह कहकर अपनी मन्नत को पूरा किया कि जान के बदले में जान ही तो दी।

पार भए तो पार है, डूब गए तो पार —यदि नदी के उस पार पहुँच गए तो कहना ही क्या और यदि बीच में ही डूब गए तो मर जाने पर संसार के झंझटों से छुटकारा मिल जाएगा। परिणाम दोनों ही तरह अच्छा होगा —यह सोचकर कठिन काम को करने का दृढ़ निश्चय करने वाले पर कहते हैं।

पारवाले कहें वारवाले अच्छे, वारवाले कहें पारवाले अच्छे उस पार के लोग समझते है कि इस पार के लोग सुखी हैं और इस पारवाले उस पार के लोगों को सुखी समझते हैं, जबकि सुखी कोई भी नहीं है। आशय यह है कि संसार में कोई भी सुखी या संतुष्ट नहीं है और दूसरों को सभी सुखी समझते हैं।

पारस के छूने से लोहा सोना हो जाता है—अर्थात् अच्छी संगत से बुरे भी अच्छे हो जाते हैं।

पारसनाथ से चक्की भली जो आटा देवे पीस, कढ़

नर से मुर्गी भली जो अण्डे देवे बीस—ऐसे व्यक्ति से जो और सम्पन्न होते हुए भी किसी के काम न आ सके वह विपन्न निर्धन अच्छा है जो कष्ट उठाकर दूसरों को लाभ पहुँचाए।

पारस पत्थर उनके घर में लोहा छुअत सोन हुइ जाय—उनके घर में पारस पत्थर है जिसके स्पर्श से लोहा भी सोना हो जाता है। जिसकी हर प्रकार से उन्नति हो उस पर यह लोकोक्ति कही जाती है।

पालने वाला न मरे, चाहे सब मर जायें—घर के सभी आदमी यदि मर भी जाएँ तो कोई हानि नही किन्तु परिवार का पालन-पोषण करनेवाला न मरे क्योंकि उसके मरने पर बाक़ी सब बिना मौत ही मर जाएँगे। परिवार के किसी कमाने वाले सदस्य के अस्वस्थ होने पर उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : माल० पांच मरजो पण पांच ने पालवा वालो मरो मती; व्रज० पारिवे वारौ न मरै, चाहै सब मर जायँ।

पाल पाल तेरे जी का होगा काल—पालो, यह तुम्हारे जी का काल होगा। नालायक़ सन्तान का कैसा ही पालन-पोषण क्यों न करो वह समय पर काम नही आती। अर्थात् अपात्र की सहायता करना अपना ही नुक़सान करना है। तुलनीय : अव० पाल पाल मोरे जिउ का जवाल।

पालव बैठि पेड़ु एहि काटा—इसने डाल पर बैठकर स्वयं उसे काटा है। जब कोई अपने हाथ से अपनी हानि करता है तो उसकी मूर्खता पर कहते हैं।

पावक, बैरी, रोग, रिन, सेसहु रखिए नाहिं—अग्नि, शत्रु, रोग और ऋण को कभी शेष नही रखना चाहिए अर्थात् इन्हें जड़ से समाप्त करना चाहिए।

पाव की देवी नौ पाव की पूजा—छोटे कद का व्यक्ति जब औक़ात से बहुत अधिक भोजन करता है तब उक्त कहावत कही जाती है। तुलनीय : भोज०, मैथ० पाव भर के देबी नव पाव के पूजा।

पाव पलक की खबर नहिं, करत कालि की बात—(क) जो वर्तमान का ख़याल न करके भविष्य के बारे में लंबी-लंबी योजनाएँ बनाते है उन पर यह लोकोक्ति कही जाती है। (ख) मनुष्य की क्षणभंगुरता पर भी कहा जाता है क्योंकि उसको अपने जीवन के अगले क्षण तक जीवित होने का पता नही होता और बातें वह सालों आगे की सोचता है। तुलनीय : उ० सामान सौ बरस का है पल की ख़बर नहीं।

पाव-भर आटा रसोई अटारी—अर्थात् पास में आटा तो एक पाव ही है, किंतु रसोई अट्टालिका पर बनाना चाहते हैं। साधनशून्य व्यक्ति जब बहुत बड़ी इच्छाएँ करे या किसी भी तरह साधनसम्पन्न व्यक्ति जैसा आचरण करे तो व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : कनौ० पाव चून चौबारे रसोई।

पाव सेर चावल, चौबारे रसोई—थोड़ी-सी हैसियत से बड़ा ठाट-बाट। शेख़ी बघारने वाले के लिए कहते हैं।

पाषाणेष्टक न्याय—ईंट भारी होती है, किंतु उससे भी भारी पत्थर होता है। अर्थात् संसार में एक से बढ़कर एक लोग पड़े है।

पास एक कौड़ी नहीं, दौलतखाँ है नाम—नाम के अनुसार गुण या स्थिति न होने पर कहते हैं।

पास एक कौड़ी नहीं नाम किरोड़ीमल—ऊपर देखिए।

पास एक कौड़ी नहीं नाम लक्ष्मीचन्द—दे० 'पास एक कौड़ी नहीं दौलत खां ....'। तुलनीय : अव० पास मा कौड़िउ नाहीं, नाव लछमी चन्द।

पास का कुत्ता दूर का भाई—दूर के भाई से पास का कुत्ता अच्छा होता है क्योंकि वह हमेशा काम आता है। आशय यह है कि जो अपने पास रहता है वह पराया या बुरा होने पर भी दूर के सगे या अच्छे लोगों से अच्छा होता है। तुलनीय : मरा० दूरदेशी अगलेल्या भावापेक्षां जवळचा कुत्रा बरा; पंज० कौल दा कुत्ता दूर दा परा।

पास का तोसा, तिसका भरोसा—दे० 'बगल में तोसा ...'।

पास की ससुरार, रात-दिना की रार—जिसकी ससुराल समीप होती है उसका ससुराल वालों के साथ कोई-न-कोई झगड़ा होता ही रहता है। ससुराल सदा दूर ही बनानी चाहिए यह बताने के लिए इस लोकोक्ति का प्रयोग किया जाता है। तुलनीय : भीली-हांगणी हगाई बमण वैर।

पास कौड़ी न बजार लेखा—न पास में पैसे थे और न बाज़ार का भाव पूछा। उस आदमी को कहते हैं जिसे न किसी को कुछ देना हो न किसी से लेना।

पास तो है नहीं दूसरे का ठीक नहीं—जब कोई व्यक्ति पराए व्यक्ति की ऐसी वस्तु की नुक्ताचीनी करता है जो उसके पास नही होती तब व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : मैथ० अपन थीक ने आनन्द नीक ने; भोज० दूसरा के पसन्ने नइखे अपना पास हइये नइखे।

पास नहीं कौड़ी, नाम करोड़ीमल—नाम के अनुसार गुण या स्थिति आदि न होने पर या झूठी शान दिखानेवाले

पर व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० कनै कोडी कोनी, नाँव किरोड़ीमल।

पास नहीं धेला, भतार चले मेला—एक धेला भी पास नहीं है और जा रहे हैं मेला देखने। गप्पी, झूठे और शेखी-खोरों के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : गढ़० टका न पैसा, गौं-गौं भैसा; पंज० कौल नईं तेला दिखण चले मेला; ब्रज० पास नहीं धेला, भरतार चले मेला।

पास नहीं धेला मैं बड़ा अलबेला—ऊपर देखिए।

पास नहीं माल, हो गए बेहाल—पास में धन न होने से बुरा हाल हो जाता है। आशय यह है कि धनाभाव में बड़ी परेशानी उठानी पड़ती है।

पास में न पैसा, सुख-चैन कैसा ?—ऊपर देखिए। तुलनीय : अं० A light purse makes a heavy heart.

पास में लड़का गाँव गोहार—दे० 'गोद में लड़का शहर···'।

पासा पड़े अनारी जीते—दे० 'पाँसा पड़े···'।

पासा पड़े सो दाँव, हाकिम करे सो न्याव—दे० 'पाँसा पड़े सो···'।

पाहन पूजे हरि मिलें, तो मैं पूजौं पहार—यदि पत्थर (मूर्ति-पूजा) पूजने से भगवान मिलते हों तो मैं पहाड़ की पूजा करूँ। मूर्तिपूजा तथा आडंबर की बुराई करने के लिए कहते हैं। तुलनीय : पंज० बट्टे पूजण नाल रब नईं मिलदा।

पाहन में को मारबो, चोखा तीर नसाय—पत्थर पर तीर चलाने से एक अच्छा तीर बरबाद होता है। आशय यह है कि मूर्ख को उपदेश देने से कोई लाभ नहीं होता।

पाही जोते तब घर जाय, तेहि गिरहस्त भवानी खाय—जो किसान दूसरे गाँव में खेती (पाही) करता है और खेत जोत-बोकर अपने गाँव आ जाता है उसे भवानी खा जाती है। अर्थात् खेती तभी हो सकती है जब किसान खेत के पास रहे, दूर रहने से खेती नष्ट हो जाती है।

पाहुना प्यारा, पर एक-दो दिन—मेहमान एक या दो दिन तक ही प्यारा लगता है। अधिक दिन ठहरने वाला अतिथि सबको बोझ लगने लगता है।

पाहुने जीमते रहेंगे, राँडें रोती रहेंगी—अतिथि आते रहेंगे और भोजन करते रहेंगे तथा राँड़ें रोती रहेंगी। अर्थात् काम करने वाले अपना काम करते रहेंगे और विरोध करने वाले विरोध करते रहेंगे। तात्पर्य यह है कि किसी नीच के विरोध करने से कोई काम रुकता नहीं।

पाहुने जीमते ही जाते हैं, राँडें रोती ही जाती हैं—ऊपर देखिए। तुलनीय : पावणा जीमता ही जाय, राँड़ाँ रोवती ही जाय।

पिंड पूरे सो गया जया—पितरों को पिंड अर्पण करने के लिए गया जाना पड़ता है। आशय यह है कि जो काम जिस स्थान पर जाने से या जिस व्यक्ति से हो सकता है उसी के पास जाना पड़ता है। तुलनीय : मेवा० कान फड़ायो तो लादूवास जावो।

पिंड मुत्सृज्य करं लेढि—मधुर ग्रास को छोड़कर वह हाथ चाटता है। ऐसे व्यक्ति के प्रति व्यंग्य में कहते हैं जो किसी लाभदायक काम को छोड़कर कोई व्यर्थ का काम करता है।

पिंड में सो ब्रह्मांड में—जो ईश्वर शरीर में है वही संपूर्ण ब्रह्मांड में है।

पिए रुधिर पय ना पिए, लगी पयोधर जोंक—नीच मनुष्य दूसरे के गुण को ग्रहण न करके अवगुण को ही ग्रहण करता है; जैसे स्तन में जोंक लगा देने पर वह दूध न पीकर खून ही पीती है। तुलनीय : मरा० जळू लावली पयोधराला पी ना, शोषी रक्ताला।

पिछड़ गए तो रोना कैसा ?—पीछे रह गए तो रोने-धोने से क्या होगा ? अवसर निकल जाने पर पश्चात्ताप करने वाले के प्रति कहते हैं, क्योंकि पछताने से कोई लाभ नहीं मिलता। तुलनीय : भीली—फायले रेई ने पड़ी ने पचताणें हूँ थाये; पंज० रह गए ते रोणा की।

पिछली चँदिया खाई है—अर्थात् पीछे सोचते हैं। जो व्यक्ति काम बिगड़ जाने पर उसे सँवारने का प्रयत्न करे किंतु बिगड़ने से पहले उसका जरा भी ध्यान न रखे उसके प्रति कहते हैं।

पिछली रोटी खाय, पिछली मत आय—पिछली रोटी जो खाता है उसकी मत अर्थात् बुद्धि भी पिछली (खराब) हो जाती है। स्त्रियों का ऐसा विश्वास है कि जो सबसे पीछे की बनी रोटी खाता है वह मूर्ख हो जाता है। इसीलिए वह प्रायः कुत्तों को खिला दी जाती है। तुलनीय : अव० पाछे कै रोटी औ आगे कै रोटी न खाय चाही; पंज० पिछली रोटी खा पिछली मता पा; ब्रज० पिछली रोटी खावै, पिछली मति आवै।

पिछलो पाँव उठाइये, देखि धरनि को ठौर—आगे राह देखकर ही क़दम उठाना चाहिए। अर्थात् दूसरा सिलसिला लग जाने पर ही पहले सिलसिले का त्याग करे, उसके पहले नहीं।

पिटारी में बंद रखने के क़ाबिल—बहुत ही अद्भुत

या दुर्लभ वस्तु को कहते हैं।

पितरी क नथुनी सों बहुत गुमान, सोनवां क मिलती चलतू उतान—दे० 'पीतली की नथिया पर इतना···'।

पितरों का मुंह अंधी कैसे देखे ?—जिसको दिखाई न देता हो वह किसी का मुँह कैसे देख सकता है ? जब किसी को अनजान और अजनबी लोगों में ले जाया जाय तो वहाँ जाने वाला इस लोकोक्ति का प्रयोग करता है। तुलनीय : राज० आँधी ना देखें पितरांरा मूंढा; ब्रज० पितरन कौ मुँह आँधरी कैसें देखै।

पिता का जन्म नहीं पुत्र गए पिछवारे—जब कोई छोटी आयु का लड़का लंबी-चौड़ी हाँकता है तो व्यंग्य से कहते हैं।

पिता का नाम साग-पात, पुत्र का नाम परोरा—पिता का नाम तो साग-पात जैसा साधारण था और पुत्र का नाम परवल (परोरा) जैसा विशेष है। जब किसी साधारण परिवार का व्यक्ति अपने को बहुत बड़ा समझने लगे या अभिमान करने लगे तो कहते हैं।

पिता न मारे मेढक पुत्र तीरंदाज—दे० 'बाप न मारी मेंढकी···'।

पिदरम सुल्तान बूद—मेरे पिता राजा थे। जब कोई व्यक्ति स्वयं कुछ न हो और अपने पूर्वजों की बड़ाई करे तो व्यंग्य से कहते हैं।

पिद्दी न पिद्दी का शोरबा—नगण्य या महत्त्वहीन वस्तु के प्रति कहते हैं। (पिद्दी—एक छोटी चिड़िया)। तुलनीय : कौर० पिद्दी न पिद्दी का सेरुआ।

पियवा क चटकन, मोरे लेखे लटकन—प्रियतम का थप्पड़ मेरे लिए आभूषण के समान है; अर्थात् अपने प्रिय द्वारा दिया गया कष्ट भी सुख पहुँचाता है।

पिया वियोग सम दुख जग नाहीं—संसार में प्रियतम या पति के वियोग से बड़ा दुःख और कुछ नहीं है।

पिराय पेट फोड़े माथा—पीड़ा पेट में हो रही है और फोड़ रहा है सिर को। मूर्खतापूर्ण काम करने वाले के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : राज० दूखै पेट कूटै माथो।

पिशाचानां पिशाच भाष्यैवोत्तरं देवम्—पिशाचों को पिशाच भाषा में ही उत्तर देना चाहिए। तात्पर्य यह है कि जो जैसा हो उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए।

पिष्टपेषणन्याय:—पिसे हुए पदार्थ को पुनः पीसने का न्याय। तात्पर्य है किसी तथ्य की अरचनात्मक आवृत्ति व्यर्थ है।

पिसनहारी का बेटा और केसर का तिलक—केसर का तिलक केवल धनी व्यक्ति ही लगाते हैं यदि पिसनहारी का बेटा भी उसी का तिलक लगावे तो उसे शोभा नहीं दे सकता। जब कोई ग़रीब आदमी बड़े की बराबरी करता है तब कहते हैं।

पिसनहारी के पूत को चबेना ही लाभ—आटा पीसने वाली के पुत्र को चबेना ही बहुत बड़ा लाभ दिखता है। अर्थात् निर्धन के लिए साधारण वस्तु भी बहुत मूल्य रखती है।

पिसी दवा और मुड़ा संन्यासी—पीसी गई दवा के गुण-दोष या वास्तविकता को कोई नहीं बता सकता तथा मुड़े संन्यासी की वास्तविकता का भी पता नहीं चलता, क्योंकि बाल मुँड़ाकर तो कोई भी आदमी तुरंत साधु बन सकता है किंतु जटा रखने के लिए तो सालों चाहिए। तुलनीय : ब्रज० पिसी दवाई और मुड्यौ सन्यासी।

पीए भैंस का दूध, जाए कूदा-कूद—भैंस का दूध पीने-वाला शक्तिशाली होता है क्योंकि भैंस का दूध बहुत पौष्टिक होता है। तुलनीय : राज० धीणों भैंसरो हुवो भलां ही सेर ही।

पीए भैंस का दूध, रहे ऊत का ऊत—जो व्यक्ति भैंस का दूध पीते हैं उनको बुद्धि नहीं आती, वे सदा ऊत (मूर्ख, गंवार) ही रहते हैं। भैंस के दूध की बुराई करने के लिए ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० जो खौ भैंसा को दूध तैं अकल न बुध।

पीओ और जीओ—शराबियों का कहना है कि पीए बिना जीना बेकार है। तुलनीय : पंज० पिओ अते जिओ।

पीच पी निमात खाई—माँड़ खाया और उसे दुनिया-भर की नियामत (नेम) समझा। जब कोई कष्ट उठाकर दूसरे की सहायता करे और वह उस पर ध्यान न दे तब कहते हैं।

पीछे जल-भर सहस घट, डारे मिलत न प्रान—प्यासे के मर जाने पर यदि हज़ारों घड़े पानी उस पर उँड़ेला जाय तो भी वह जीवित नहीं होता। आशय यह है कि अवसर बीत जाने के बाद सभी प्रयत्न और परिश्रम व्यर्थ होता है।

पीछे से क्या मेरी झोली बुझाने आओगे ?—बाद में क्या मेरी चिता की राख बुझाने आओगे ? जो व्यक्ति काम के समय फिर आने का बहाना बनाकर जाना चाहे उसके प्रति कहते हैं।

पीठ की मार मारे, पर पेट की न मारे—किसी का अपमान कर ले या मारपीट ले किंतु किसी की जीविका

न छीने। किसी की जीविका छीनना बहुत बड़ा पाप है। तुलनीय : गढ़० नेगी मान्नो पर नेगचारो नि मान्नो; बुंद० पीठ की मार मारँ पेट की न मारँ; ब्रज० पीठि मारँ परि पेट न मारँ।

पीठ पर डेरे डंडे वाला—पीठ पर सारा सामान लादकर चलने वाला। जिस व्यक्ति का कोई घर-द्वार न हो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : माल० पीठ पछाड़ी ठाहरा वारो।

पीठ पर मार ले, पेट पर न मारे—दे० 'पीठ की मार मारे…'।

पीठ पर मारे पेट पर न मारे—दे० 'पीठ की मार मारे…'। तुलनीय : बुंद० पीठ की मार मारँ पेट की न मारँ।

पीठ पर मैल जम ही जाती है—पीठ पर जहाँ कि दृष्टि नहीं पहुँचती वहाँ मैल जम ही जाता है। अर्थात् जो कार्य अपनी दृष्टि के सामने नहीं होता उसमें दोष रह ही जाते हैं। तुलनीय : माल० मोरां पाछे मोकल्योइ मेल; पंज० पिठ उते मैल जम ही जांदी है।

पीठ पीछे कुछ भी हो—मरने पर चाहे जो कुछ हो। मरने वाले को मरने के बाद कुछ भी पता नहीं चलता। (ख) आड़ में कौन क्या कहता है इसे कोई नहीं जानता। तुलनीय : राज० पछै घोड़ो दौड़ो'र घोड़ी दौड़ो, बुंद० पीठ पाछें कछू होबे; पंज० पिठ पिछे कुज बी आखा।

पीठ पीछे जाने क्या हो?—हमारे जाने के पश्चात् या अनुपस्थिति में न जाने क्या हो? आशय यह है कि जो कार्य आँखों के सामने न किया जाय उसके संबंध में संदेह बना रहता है। तुलनीय : राज० पछै घोड़ो दौड़ै क घोड़ी दौड़े।

पीठ पीछे राजा को भी गाली—पीठ पीछे शासक को भी लोग भला-बुरा कहते हैं। जब कोई व्यक्ति किसी भले या बलवान आदमी की बुराई उसके पीठ पीछे करता है तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : माल० पीठ पाछे तो राजा जी ने भी बके।

पीठ मारो पर पेट नहीं—दे० 'पीठ की मार मारँ…'।

पीठ में लट्ठ भवानी करे, सगरो घर पूजा को चले—जब देवी पीठ पर लाठी से मारती है तभी देवी की पूजा करने की याद आती है। अर्थात् (क) विपत्ति में ही भगवान या देवी-देवता याद आते हैं। (ख) बिना भय के कोई किसी का मान नहीं करता है। तुलनीय : ब्रज० पीठि पै लट्ठ भवानी कौ परँ, सबरौ घर पूजा कूं चलँ।

पीठ ही ठोक सकते हैं—केवल शाबाशी ही दे सकते हैं। (क) जो व्यक्ति केवल शाबाशी देकर ही काम कराता रहे पारिश्रमिक कुछ न दे उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। (ख) जो व्यक्ति स्वयं न काम कर सकते हों और दूसरों को शाबाशी देकर काम कराएँ उनके प्रति भी व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : भीली—सेबासी देई सके भण करी नी सके; पंज० पिठ ही ठोक सकदे हो।

पीतल की पीतलता नहीं जाती—प्राकृतिक गुण-दोष रहता ही है। 'सोने सिंगारहु सोंधे चढ़ावहु पीतर की पित राई न जाई।'—केशवदास।

पीतली की नथिया पर इतना गुमान, सोने की रहती तो चलती उतान—पीतल की नथ पर इतना गर्व है, यदि सोने की होती तो शायद भूमि की ओर देखती भी नहीं। जब कोई ओछा व्यक्ति थोड़े धन या सम्मान पर फूला नहीं समाता और अभिमान करने लगता है तो कहते हैं।

पीते-पीते कुआँ भी खाली हो जाता है—पानी निकालने से एक दिन कुआँ भी खाली हो जाता है। अर्थात् चाहे कितनी भी बड़ी सम्पत्ति हो और उसे यदि केवल व्यय ही किया जाय तो वह एक दिन अवश्य ही समाप्त हो जाती है। जो व्यक्ति केवल व्यय करते हैं, कमाते कुछ भी नहीं उनको समझाने के लिए कहते हैं। तुलनीय : राज० पीवतां-पीवतां समंदर ही खूट ज्याय; पंज० कड़दे कड़दे खू खाली; ब्रज० पीमत पीमत कूआ ऊ खाली है जायँ।

पीने को पानी नहीं खाने को मलाई—दिखावटी शान के लिए सामर्थ्य से अधिक खर्च करने पर उक्त कहावत कही जाती है। तुलनीय : मग० पीये के पानी नँ खाय के मलाई; भोज० खाए के मलाई पीये के पानी नां; पंज० पीण नूं पाणी नई खाण नूं मलाई।

पीने को पानी नहीं छिड़कने को गुलाब—पीने को पानी नहीं मिलता पर छिड़कते हैं गुलाब जल। बाहरी दिखावे तथा आडंबर पर कहते हैं। तुलनीय : अव० पियँ का पानी नाहीं अटत, छिरकँ का गुलाब जल; पंज० पीण नूं पाणी नई तरोकन नूं गुलाब; ब्रज० पीबे कू पानी नायें और गुलाब कौ छिरकाब करँ।

पीनेवाले का आँगन, खाने वाले का घर; सूंघने वाले के कपड़े, ये तीनों बराबर—तम्बाकू पीने वाले के आँगन में चारों ओर राख बिखरी रहती है, तंबाकू खाने वाला पूरे घर में थूकता रहता है तथा सूंघने वाला नाक पोंछ-पोंछकर अपने कपड़े गंदे करता रहता है। तम्बाकू का प्रयोग करने वालों की बुराई करने के लिए कहते हैं। तुलनीय : माल०

पीवे वेरा आँगणा, ते खावे वेरो घर; सूँघे वेरा छींतरा, ते तीनई बराबर।

पीपर पात सरिस मन डोला—पीपल के पत्ते के समान हृदय काँप उठा। एकाएक किसी बड़ी विपत्ति के आ जाने पर कहते हैं।

पी प्याला मार भाला—प्याला पी लो तो युद्ध करो जिससे शक्ति और उत्तेजना मिले। शराबियों का कहना है।

'पीये' से आरंभ होने वाली लोकोक्तियों के लिए देखिए 'पीए'।

पीर ग्राप ही दरमांदा, शफ़ात किसकी करेंगे—पीर खुद ही पीड़ा से मरे जा रहे हैं, दूसरे की पीड़ा क्या दूर करेंगे? जिसकी सहायता चाहें वह स्वयं विपत्ति में फंसा हो तब कहते हैं। (दरमाँदा=विवश; शफ़ात=शफ़ाअत=सिफारिश)।

पीर की सगाई मीर के यहाँ—पीर का सम्बन्ध मीर से होता है। आशय यह है कि भलों या बड़ों का सम्बन्ध भलों या बड़ों से ही होता है।

पीर को न शहीद को पहले नकटे देव को—(क) जब कोई छोटा आदमी ऐसी वस्तु पहले ही खाने के लिए माँगे जो अन्य बड़े या सम्मानित व्यक्तियों के लिए तैयार की गई हो तब कहते हैं। (ख) नीच या बेहया को कुछ दे-दिलाकर टाल देने के लिए भी कहते हैं क्योंकि उसके रहने से हानि के अतिरिक्त और कुछ नही होता। तुलनीय: ब्रज० पीर कूं न मीर कू पहले नकटे फक़ीर कू।

पीर, बावरची, भिश्ती, खर—ब्राह्मणों के प्रति व्यंग्य से कहते हैं क्योंकि वे पंडिताई या ज्योतिषी का काम करना, खाना पकाना, पानी पिलाना तथा संदेश या सामान यजमानों के संबंधियों के यहाँ पहुँचाना, ये चारों काम करते हैं। ऐसे व्यक्ति के लिए भी कहते हैं जो ऐसे पद पर हो जहाँ उसे अपने नियत कार्य के अतिरिक्त छोटे-बड़े दूसरे लोगों का भी काम करना पड़ता हो। तुलनीय: राज० ला कोई बीरबल ऐसा नर, पीर बबरची मिस्ती खर; मरा० ब्राह्मणाचे उपयोग चार, भट, आचारी, भिस्ती नि खर; ब्रज० पीर बबरची भिस्ती खर।

पीर शौ, बियामोज—बूढ़ा होने पर भी ज्ञान प्राप्त करते रहना चाहिए। यह कहावत फ़ारसी की है।

पीला-पीला सभी सोना नहीं होता—पीले रंग की सभी धातुएँ सोना नही होतीं। अर्थात् बाहर से सुन्दर और लाभदायक दिखने वाली सभी वस्तुएँ वस्तुतः वैसी नहीं होती। तुलनीय: राज० पीळो-पीळो सगळो सोनो को हुवै नी; पंज० पीला-पीला सारा सोना नईं हुंदा; अं० All that glitters is not gold.

पीसने को चार कन, गाने को सीता हरन—चार कण पीसने के लिए हैं और गाना चाहती है सीता हरण (स्त्रियाँ प्रायः चक्की पीसते समय गीत गाया करती हैं)। जहाँ दिखावा अधिक और काम कुछ न हो वहाँ कहते हैं। तुलनीय: बुद० पीसवे कों चल्लोसन, गावे कों सीता हरन।

पीसने को चोकर गाने को मल्हार—ऊपर देखिए।

पीसनेवालियाँ पीस ले जायेंगी, कुछ हत्था थोड़े ही उखाड़ ले जायेंगी—अर्थात् पीस लेने से आपकी चक्की ज्यों-की-त्यों रहेगी आपकी कोई हानि न होगी। परोपकारियों का कहना है। एक स्त्री ने दूसरी से चक्की माँगी, तीसरी ने देने के लिए रोका, तब दूसरी ने यह मसल कही।

पीसनेवाली को मजूरी ही मिलती है आटा नहीं—पीसने वाली अनाज पीसने की मज़दूरी ही लेती है। यदि वह आटे को जो उसने पीसा है चाहे तो कोई नहीं देगा। मज़दूर को केवल मज़दूरी ही मिलती है। तुलनीय: मेवा० पीसाई लोकन पीसणों ई राखा।

पीस-पास मिन्हाज मरे, करामत मुहम्मद झंडे को—परिश्रम कोई करे और फल कोई और पावे तो कहते हैं।

पीस मुई, पका मुई, आए लौंठे खा गए—माँ का अपने बेकार लड़के के प्रति कहना है जो खाने के सिवा कोई भी कार्य नहीं करता।

पीस लूँ तो पीटूँ—अर्थात् जीविका की चिन्ता मृतक के शोक से भी बढ़कर होती है।

पीसे हुए को क्या पीसना—पीसे हुए आटे को दोबारा पीसना बेकार है। किसी काम को पूरा करने के पश्चात् फिर उसी को करने वाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय: माल० पीस्या वे कई पीसणों।

पीहर के भरोसे ओढ़नी भी जला दी—इस भरोसे पर कि पीहर से कपड़े आयेंगे अपनी ओढ़नी तक जला डाली। जो व्यक्ति भविष्य की आशा पर वर्तमान वस्तुओं और सुविधाओं को नष्ट कर देता है उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय: राज० पीररे भरोसे घाबलियो ही बाळ्यो; मेवा० पीहर के भरोसे घाघरो मत बाल; ब्रज० पीहर के भरोसे ओढ़नी ऊ जराइ दई।

पीहर के भरोसे घाघरा नहीं फाड़ना चाहिए—ऊपर देखिए।

पुण्य की जड़ पाताल तक—पुण्य का फल कभी नष्ट

नहीं होता, वह अवश्य मिलता है।

पुण्य ही आड़े आता है—विपत्ति में या परलोक में पुण्य ही काम आता है।

पुक्ख पुनरबस बोवै धान, असलेखा जोन्हरी परमान—धान को पुष्य तथा पुनर्वसु नक्षत्र में बोना चाहिए और मक्का को अस्लेषा नक्षत्र में बोना ठीक है। तुलनीय : मरा० पुष्य, पुनर्वसु नक्षत्रीं सालीचा पेरा आश्लेषीं जोंधळा प्रमाण।

पुक्ख पुनरबस भरे न ताल, फिर बरसेगा कोटि असाढ़—अगर पुष्य तथा पुनर्वसु नक्षत्रों में वर्षा से तालाब न भरे तो फिर समझना चाहिए कि अब वर्षा काफ़ी न होगी और होगी तो फिर अगले वर्ष आषाढ़ मास में ही होगी।

पुचकारा कुत्ता सिर चढ़े—जिस कुत्ते को अधिक पुचकारा जाय वह ऊपर ही चढ़ बैठता है। अर्थात् नीच व्यक्ति मुँह लगाने पर उसका अनुचित लाभ उठाते है, और अपने को बहुत बड़ा और शक्तिशाली समझने लगते हैं। तुलनीय : राज० सैंधो कुत्ता घररांनै खावै; ब्रज० पुचकार्यौ कुत्ता सिर चढ़ै।

पुटिया समझे कि आकाश उसी पर टिका है—पुटिया (एक पक्षी विशेष जो आकाश की ओर टाँगें उठाए रखता है) समझता है कि आकाश उसी के पैरों पर टिका है। जब कोई अयोग्य व्यक्ति समझे कि काम उसी के बल पर हो रहा है जबकि उससे काम में कोई अंतर न पड़ता हो तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० पुटियो जाणै आभो म्हारै ही ताण ऊभो है।

पुड़ी न पापड़ी, पटाक बहू आ पड़ी—(क) दावत या शादी-ब्याह का कुछ पता नहीं और घर में स्त्री आ गई। अचानक किसी के विवाह हो जाने पर कहते हैं। (ख) कहीं से जब कोई व्यक्ति किसी स्त्री को भगा लाता है तो भी कहते हैं। (ग) किसी काम के अचानक हो जाने पर भी कहते हैं।

पुत्र ऐसा पंडित भया सब यजमान सर्ग ले गया—पुत्र की मूर्खता की ओर लक्ष्य करके ऐसा कहा जाता है। तुलनीय : मग० अइसन पूत पंडित भेलन सब जजमान के सरग लेले गेलन; भोज० लड़का अइसन पंडित भइल कुल जजमानन के सरग लेले गइल।

पुत्र के भाग से माँ जीए—पुत्र के भाग्य से माँ को भी खाने-पीने को मिल जाता है। जब किसी दूसरे बहाने से कोई लाभ उठाए तो कहते हैं। तुलनीय : पंज० पुतर दे भाग नाल मां जीवे।

पुत्र भी प्यारा, पति भी प्यारा, क़सम किसकी खाएँ—नीचे देखिए।

पुत्र भी मीठा पति भी मीठा क़सम किसकी खाऊँ—सब तरह से अपना लाभ सोचने तथा कुछ भी न त्यागने वाले व्यक्ति को ध्यान में रखकर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० पूतवो मीठ भतरो मीठ किरिया केकर खाईं।

पुन चंदन पुन पानी, सालिगराम घुल गए तब जानी—दिन-रात एक वस्तु के पीछे पड़े रहने के कारण जब वह नष्ट हो जाय तो बैठकर पछताने वाले पर कहते है। इस लोकोक्ति के मूल में एक रोचक कथा है : एक सेठजी शालिग्राम के बहुत भक्त थे और दिन का अधिकांश भाग वे उसी की पूजा में बिता देते थे। उनकी पत्नी इस पूजा-पाठ से बहुत परेशान थी क्योंकि व्यापार में घाटा हो रहा था, इसलिए एक दिन उसने शालिग्राम उठाकर उनके स्थान पर एक पका जामुन रख दिया। जब सेठजी शालिग्राम को नहलाने लगे तो वह घुलकर बह गया और सेठजी चिल्ला-चिल्लाकर पत्नी को बुलाने लगे। पत्नी आई तो उन्होंने बताया कि शालिग्राम तो घुल गए, अब क्या होगा? पत्नी ने कहा, 'घुलते नहीं तो क्या करते। दिन-भर तो तुम नहलाते रहते थे सो वे नरम होकर घुल गए।' सेठ जी को घबराता देख उसने फिर कहा, 'चलो कोई बात नहीं, घुल गए तो घुल जाने दो। पंडितजी से इसका प्रबंध करा लिया जायगा, किंतु तुम भविष्य में अब इस तरह की कोई मुसीबत मत पालना।'

पुन्न करते होय जो हानि, तो भी न छोड़े पुन्न की बानि—धर्मात्मा लोग अच्छा काम करना नहीं छोड़ते चाहे उससे हानि ही क्यों न हो।

पुन्न की जड़ सदा हरी—अर्थात् कभी नही सूखती। पुण्यात्मा कभी दुःख नही पाता वह सदा सुखी रहता है। अब पुन्न कं जर सदा हरी; हरि० धरम की जड़ सदा हरी; पंज० पुन दी जड़ सदा हरी; ब्रज० पुन्न की जर सदा हरी ऐ।

पुन्ननि मिलै मनिच्छित भोग—मनचाहा सुख बड़े पुण्य से प्राप्त होता है।

पुन्न ही आड़े आता है—दान-पुण्य ही मनुष्य की इस लोक और परलोक में रक्षा करता है। इस लोकोक्ति का उद्गम इस कहानी से माना जाता है : एक बार काशी जा कर एक राजा ने बहुत दान दिया। उनके दान-पुण्य की चारों ओर धूम मच गई। उसी राजा के राज्य का एक निर्धन घसियारा भी काशी में रहता था। वह बेचारा दिन-

भर घास खोदता और संध्या को बेचकर जो रूखा-सूखा पाता उसी पर संतोष करके कहीं सड़क के किनारे सो रहता। उसको भी राजा के दान का समाचार पहुँचा; उसने सोचा कि जब हमारे राजा इतना दान करते हैं तो थोड़ा बहुत हमें भी करना चाहिए। लेकिन उसके पास था ही क्या जिसे वह दान कर देता ? मरता क्या न करता, उसने अपनी खुरपी और घास बाँधने का जाल ही बेचकर दान कर दिया। खुरपी तो बेच दी अब खाने के लिए कहाँ से मिले ? जब कोई काम नहीं तो घसियारे घर अर्थात् गाँव को चल दिया। भाग्यवश राह में राजा भी सपरिवार जा रहे थे। राजा का तथा उसके परिवार का गर्मी से बुरा हाल था। धूप इतनी तेज़ थी कि आंखें खोलनी कठिन हो गई। इधर घसियारे को कोई परेशानी नहीं थी उसके ऊपर एक बादल का टुकड़ा राह भर छाँव किए रहा। धीरे-धीरे साथ चलने वाले राहगीरों को भी इस बात का पता चला कि इन श्रीमान के ऊपर तो सदा छाँव रहती है तो बात राजा तक भी पहुँची। राजा ने अपने पंडित से पूछा कि 'क्या बात है ? हम राजा होकर भी गर्मी से परेशान हैं और एक निर्धन मनुष्य इस प्रकार आराम से यात्रा कर रहा है।' पंडित ने कहा, 'महाराज इस व्यक्ति ने बहुत दान-पुण्य किया है। इसी से यह सुखपूर्वक चल रहा है।' राजा यह सुन क्रोधित हुए और पंडित से बोले, 'दान तो मैंने भी बहुत किया है, क्या उसने मुझसे अधिक दान दिया है जो इस प्रकार भगवान उसकी रक्षा कर रहे हैं।' तब पंडित जी ने बताया कि महाराज वह अपना सर्वस्व दान कर आया है आपने तो कुछ लाख रुपए ही दान किए हैं, अभी तो आपके पास लाखों रुपए बाकी है।

पुरखा मर गए क्वाँरे, नातियों के नौ नौ ब्याह — पूर्वज तो क्वाँरे ही मर गए और नातियों या पोतों के एक की जगह नौ-नौ ब्याह हो रहे हैं। जब कोई निर्धन व्यक्ति अपने को बहुत धनवान जताए या कोई साधारण व्यक्ति अपने को बहुत बड़े घराने से संबद्ध बताए तो कहते हैं।

पुरवा बादर पच्छिम जाय, वासे वृष्टि अधिक बरसाय; जो पच्छिम से पूरब जाय, बरसा बहुत न्यून हो जाय - पूरब से पश्चिम की ओर जाने वाले बादल अधिक वर्षा करते हैं और पश्चिम से पूरब की ओर जाने वाले बादल कम वर्षा करते हैं।

पुरवा में जिन रोपो भइया, एक धान में सोलह पइया —हे भाई ! पूर्वा नक्षत्र में धान मत रोपना नहीं तो एक धान में सोलह पैया होगी। आशय यह है कि पूर्वा नक्षत्र में धान रोपने से पैदावार बहुत खराब होती है।

पुरवा में जो पछुवा बहै; हंसि के नारि पुरुष से कहै; उ बरखे इ करै भतार; घाघ कहै यह सगुन विचार —घाघ कहते हैं कि यदि पुरवाई तथा पछुवाँ हवा साथ-साथ बहे और कोई स्त्री पर-पुरुष से हँस-हँसकर बातें करे तो निश्चित समझो कि हवा तो पानी बरसाएगी पर स्त्री भी दूसरा पति कर लेगी।

पुराण मित्येव न साधु सर्वम् —सभी पुरानी वस्तुएँ अच्छी नहीं होती।

पुराना ठीकरा और कलई की भड़क —पुराने ठीकरे अर्थात् बर्तन पर क़लई अच्छी नहीं आती। जब बूढ़ी औरत जवानी का शृंगार करे तब कहते है। तुलनीय : राज० पुराणो देगचो, कलीरी भड़क; मवा० पुराणी डेगची के कल्ली की भड़क; पंज० पुराना ठीकरा अते कीती दी कली।

पुराना पंसारी, नया बजाज —पंसारी पुराना होने के कारण अनुभवी होता है तथा उसके पास दवाएँ आदि भी बहुत पुरानी होती है, इसलिए उसी से सौदा लेना चाहिए। नए बजाज के पास नए ढंग के कपड़े आते हैं, इसलिए उस से ही कपड़ा खरीदना चाहिए। तुलनीय : माल० जूना कन्टोरियो ने नवो कापड़ियो फाइदा मे रै; ब्रज० पुरानों पसारी नयौ बजाज।

पुराना पान, खाँसी न जुकाम—पुराना पान खाँसी तथा जुकाम के लिए बहुत लाभदायक होता है।

पुराना वैद्य नया ज्योतिषी - वैद्य पुराना अच्छा होता है क्योंकि वह अनुभवी होता है, उसी प्रकार ज्योतिषी नया अच्छा होता है क्योंकि उसको नक्षत्रों की गणना करने के नए-नए ढंग मालूम होते हैं और वह परिश्रम भी करता है। तुलनीय : अव० पुराना वैद, नवा जोतिसी।

पुरानी जूती काटे पैर—घिस जाने या फट जाने के बाद जूती पैर को काटने लग जाती है। आशय यह है कि पुरानी वस्तु कष्ट पहुँचाती है इसलिए उसकी मरम्मत कराना चाहिए या बदल देना चाहिए। जो व्यक्ति पुरानी वस्तुओं की प्रशंसा करते हों उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय : माल० पुराणी पगरखी काटवा लागे।

पुरानी डेगची पर कलई की भड़क—दे० 'पुराना ठीकरा और…'।

पुराने गुम्बद पर नई कलई—जिस प्रकार पुराने गुम्बद पर क़लई करने से कोई लाभ नहीं, उसी प्रकार बुढ़ापा आ जाने पर जवान बनने का प्रयत्न करना व्यर्थ है। जब कोई

वृद्ध जवान बनने की कोशिश करे या कोई पुरानी चीज़ को नई बनाने की वृथा कोशिश करे तब कहते है ।

पुराने चावल अच्छे होते हैं—(क) पुराने चावल खाने में अच्छे लगते हैं। (ख) वृद्ध लोगों से शिक्षा अधिक मिलती है। तुलनीय : भोज० पुरान चाउर नीक होला; पंज० पराने चौल चंगे हुंदे हन; अं० Old is gold.

पुराने चावलों में मज़ा होना है ऊपर देखिए। तुलनीय : अव० पुरान चउरन से बतिताय मा मजा आवत है; पंज० पराने चौलां बिच मजा हुंदा है ।

पुराने मठ पर नई कलई—दे० 'पुराने गुम्बद पर···'।

पुरानों को झिड़की नयों को प्यार- पुराने नौकरों को डाँटा-फटकारा जा सकता है क्योंकि उनके कहीं जाने का डर नहीं होता। किंतु नये नौकर को प्यार से ही रखना चाहिए नहीं तो वह किसी दूसरे के यहाँ चला जायेगा ।

पुरुष की माया वृक्ष की छाया—जिस प्रकार वृक्ष से छाया उत्पन्न होती है और पुनः उसी में विलीन हो जाती है उसी प्रकार मनुष्य ही माया पैदा करता है और उसी से वह नष्ट भी हो जाती है। तुलनीय : पंज बंदे दी माया बूटे दी छाँ ।

पुरुष परिखियहि समय सुभाये --समय आने पर मनुष्य स्वभाव की पहचान होती है ।

पुरुष पुरुष में होवे अंतर; कोई हीरा कोई कंकर -सब मनुष्य एक तरह के नहीं होते। कोई हीरा अर्थात् अच्छा होता है, कोई कंकड अर्थात् खराब ।

पुरुष वो ही जो एक दंता होई—बूढ़े मनुष्यों के प्रति व्यंग्य है। इस लोकोक्ति का संबंध निम्नलिखित कहानी से जोड़ा जाता है : एक बूढ़े सिपाही ने नौकरी से पेंशन ले अपना विवाह किया। रास्ते में आते समय उसे अपनी स्त्री से बातचीत करने की इच्छा हुई। उसने सोचा कि कहीं वह वृद्ध जानकर निरादर न करे अतः उसने कहा, 'पुरुष वो ही जो एक दंता होई।' इस पर स्त्री ने घूंघट खोलकर कहा, 'नारि रूपवती वोई जाके मुंह में दंत न होई।' बूढ़ा सिपाही यह देखकर भौंचक्का रह गया कि उसकी पत्नी भी उसी की तरह वृद्ध और बिना दाँत की है ।

पुरुष ही पारस है—मनुष्य ही पारस है जो सभी प्रकार के काम करके धन उत्पन्न करता है। जो व्यक्ति देवी-देवताओं या पीरों-फ़क़ीरों के पीछे घूमते हैं उनको समझाने के लिए कहते हैं ।

पुरोडास चह रासभ खावा— यक्ष के भाग को गधा खाना चाहता है। जब कोई अयोग्य व्यक्ति किसी अच्छी वस्तु की इच्छा करे तो व्यंग्य से कहते हैं ।

पुश्तों बाद कबूतर पाले, आधे गोरे आधे काले --कई पीढ़ी बाद तो कबूतर पाले उनमें भी आधे सफेद हैं और आधे काले। जब कोई बहुत दिन के बाद कोई काम करे किंतु वह भी मूर्खतापूर्ण तब व्यंग्य में कहते हैं ।

पूंछ झम्पा औ छोटे कान, ऐसे बरद मेहनती जान—गुच्छेदार पूंछ और छोटे कान वाले बैल को मेहनती जानना चाहिए ।

पूंजी में घास नहीं, कुंजी का झाबा--धन तो कुछ भी नहीं है लेकिन कुंजियों या चाभियों का गुच्छा लेकर चलते हैं। ढोंग करने वाले पर व्यंग्य से ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मैथ० पूंजी घास ने कूंजी क झाबा ।

पूछता नर पंडित—पूछने वाला व्यक्ति विद्वान बन जाता है। अर्थात् ज्ञान दूसरों से ही मिलता है ।

पूछते-पूछते खुदा का घर मिल जाता है—नीचे देखिए ।

पूछते-पूछते दिल्ली चले जाते हैं –जब किसी आदमी से कहीं जाने के लिए कहा जाय और वह कहे कि मुझे पता नहीं मालूम तब कहते हैं। आशय यह है कि दूसरों से पूछने पर प्रत्येक बात या स्थान के संबंध में पता लग जाता है। तुलनीय : राज० पूछतो पूछतो दिल्ली जाय परो; अव० मनई पूछत-पूछत डिल्ली चला जात है; बुंद० पूंछत पूंछत लंकै चले जात; मरा० विचारीन विचारीत दिल्ली सुद्धां गाँठतात ।

पूछने में क्या लगता है --किसी बात को पूछने में या स्थान का पता करने में कोई दाम थोड़े ही लगते हैं ? जब कोई व्यक्ति संकोचवश कुछ न पूछे तो कहते हैं। तुलनीय : बुंद० पूंछबे में का लगत ? पंज० पुछन बिच की जांदा है।

पूछे खेत की, बतावे खलिहान की—दे० 'कहे खेत की···'। तुलनीय : ब्रज० पूछे खेत की बतावै खरिहान की।

पूछे खेत की सुने खलिहान की --दे० 'कहे खेत की···'।

पूछे जमीन की तो कहे आसमान की--दे० 'कहे खेत की···'।

पूछे न ताछे मैं दुलहन की चाची -ज़बरदस्ती रिश्ता जोड़ने वाले को लक्ष्य करके ऐसा कहते हैं ।

पूछो महादो का रास्ता, बतावे गोरे का पच्चीस—कोई व्यक्ति बैलों को लेकर बाजार में बेचने जा रहा था। किसी ने उससे महादो (एक गाँव) का रास्ता पूछा तो उसने कहा कि सफेद बैल की क़ीमत पच्चीस रुपये है। जब कोई किसी से पूछे कुछ तथा वह बतावे कुछ और तब कहते हैं। (ख) बहरे व्यक्ति के प्रति भी कहते हैं। (ख) जब

कोई अपने काम के आगे दूसरे की न सुने तब भी कहते हैं। तुलनीय : कौर० बुज्झा महादो क रस्ता, कहै गोरे के पच्चीस।

पूजले देवता छोड़ले भूत—पूजा करे तो देवता हैं, नही तो भूत अर्थात् कुछ नहीं। आदर करने से आदमी बड़ा हो जाता है और निरादर करने से तुच्छ।

पूजा के समय बकरी ग़ायब—अवसर पर प्रमुख व्यक्ति या वस्तु के नदारद हो जाने पर कहते हैं। तुलनीय : पंज० पूजा वेले बकरी गुआची।

पूजो तो देव नहीं तो पत्थर—आशय यह है कि जिसके प्रति जैसी धारणा होती है वह वैसा ही नजर आता है। तुलनीय : गुंज० पूजे तो देव, नहि तो पत्थर; ब्रज० पूजौ तौ देव नही पत्थर।

पूत अपना, न्याय बिगाना—पुत्र अपना ही समय पर काम आता है और जो न्याय दूसरों से कराया जाता है, उसी को सब ठीक मानते हैं। जब किसी के झगड़े का निर्णय वादी के विपक्ष में हो जाता है तब उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय . गढ़० पूत अपणो न्यौ बिराणो।

पूत आपनो सब कहूं प्यारो—अपना लड़का सबको प्यारा होता है चाहे वह बुरा ही क्यों न हो। तुलनीय : पूत के नाव पुतांड़ी भली; अव० पूत आपन सबका पियार लागत है; मरा० आपलें पोर सर्वांनाच आवडतें; मल० तन् कुञ्जु पोन् कुञ्जु; पंज० अपणा पुतर सब नू पयारा; अं० A potter praises his pot; Every cook praises her own stew.

पूत एसा पंडित भया, ईट बाँध कचहरी गया—अयोग्य पुत्र पर व्यंग्य। तुलनीय : मग० अइसन पत पंडित भेलन, ईंट बान्ह कचहरी गेलन; भोज० अइसन लइका पंडित भइल, ईंटा बान्ह कचहरी गइल।

पूत कपूत पालने में ही पहचाने जाते हैं—अच्छे-बुरे की पहचान बचपन में ही हो जाती है। तुलनीय : मल० शिशु युवाविन्टे पितावाणु; अं० Coming events cast their shadows before.

पूत कपूत हो जाए पर माता कुमाता नहीं होती—पुत्र माँ का सम्मान या आदर भले ही कम करे पर माँ का पुत्र के प्रति स्नेह कम नही होता। आशय यह है कि किसी भी दशा में माँ की ममता कम नहीं होती। तुलनीय : कौर० पूत कपूत हो जा, मा कुभा न होती।

पूत कपूत हो तो हो, पर माँ कुमाँ नहीं होती—ऊपर देखिए। तुलनीय : पंज० माप्ये कुमाप्ये नहीं हुंदे, पूत कपूत हो जांदे; अव० पूत करै, भतार के आगे आवै; हरि० बेटा बेटी कपूत होज्यां पर मां बाप तै नाह होया जाता।

पूत करे, भतार के आगे आवे—पुत्र की करनी, पिता को भोगनी पड़ती है, क्योंकि उसी की ढील से पुत्र ख़राब होता है। तुलनीय : अव० पूत करै भतार कै आगे आवै।

पूत का मूत प्रयाग का पानी—पुत्र का मूत्र संगम के जल के समान होता है। इस लोकोक्ति में पुत्र के प्रति स्नेह को दर्शाया गया है। (क्योंकि मूत्र एक गंदी चीज़ है लेकिन उसकी तुलना संगम के पावन जल से की गई है)। तुलनीय : कौर० पूत कौ मूत पिराग का पाणी।

पूत के नाम पुताड़ी भली—पुत्र के नाम पर तो पुताड़ी (चौका आदि पोतने की हाँडी) भी भली होती है अर्थात् पुत्र बुरा या निकम्मा भी हो तो भी किसी को बुरा नही लगता अथवा न होने से बुरा पुत्र ही अच्छा है।

पूत के पाँव पालने में पहचाने जाते हैं—दे० 'पूत-कपूत पालने···'। तुलनीय : भोज० लइका कऽ गोड़ पलने में पहिचानल जाला; अव० पूत कै गोड़ पलनै मा जाना जाता है; हरि० पूत के पांह पालणे में पिछाणे जाया करैं; राज० पूतरा पग पालणैं में पिछाणी जैं; बुंद० पूत के पांव पलना में दिखा परत; ब्रज० होनहार बिरवान के होत चीकने पात; मरा० मुलांचे पाय पाळण्यांत दिसतात।

पूत के लक्षण पालने, बहू के लक्षण द्वार—पुत्र के लक्षण पालने में ही और बहू के लक्षण द्वार-प्रवेश करते समय ही मालूम हो जाते हैं। अर्थात् पुत्र के भविष्य का अनुमान उसकी बाल्यावस्था की गतिविधियों से ही लग जाता है तथा बहू के चरित्र और स्वभाव का पता उसके गृह-प्रवेश के समय ही लग जाता है। तुलनीय : राज० पूतरा लखण पालणै, बहूरा लखण बारणैं; माल० पूतरा लक्खण पालणे ने वऊरा लक्खण आंगणे।

पूत जाया सुंदरी, बाल छोटे जूं बड़ी—सुंदरी ने बेटा पैदा किया जिसके बाल कम और जूएँ अधिक हैं। जो व्यक्ति बहुत मैला-कुचैला रहता हो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० पूत जाया; हे पदमणी! जटा थोड़ी, जूंवा घणी।

पूत तो गाय का और पूत किसका, राजा तो मेघराज और राज किसका—किसान कहते हैं, क्योंकि उनके लिए बैल और वर्षा ही सब कुछ है।

पूत न मानै आपन डाँट, भाई लड़ै चहै नित बाँट; तिरिया कलह ही करकस होइ, नियरा बसल बुहुट सब कोइ; मालिक नाहिन करै विचार, घाघ कहैं ई विपति अपार—

पुत्र डरता न हो, भाई लड़ता हो और अलग होना चाहता हो, पत्नी कर्कश और लड़ाकी हो, पड़ोसी दुष्ट हों तथा स्वामी अविवेकी हो तो घाघ कहते हैं कि पुरुष के लिए इससे बड़ा कोई दुःख नहीं ।

पूत पाला बहू को, सूत काता जुलाहे को—पुत्र का पालन-पोषण किया कि वृद्धावस्था में सेवा करेगा, किंतु विवाह होते ही वह बहू के साथ अलग रहने लगा । इसी प्रकार सूत काता तन ढकने के लिए किंतु वह भी जुलाहे के ही काम आया । जब परिश्रम करने वाले को कुछ न मिलकर दूसरे को ही सब मिले तो परिश्रम करने वाले के प्रति कहते हैं । तुलनीय : गढ़० पूत गेंनो ब्वारी की भौंदी, सूत काती कोलि कि भौंदी ।

पूत फ़क़ीरनी का, चाल अहदियों की-सी—भिखारिन का पुत्र होकर अहदियों जैसी चाल चलता है । जब कोई ग़रीब होकर भी अमीरों की बात करे तब कहते है । अकबर के समय अहदी उन अमीरों को कहते थे जिन्हें बादशाह के यहाँ से गुज़ारा मिलता था और कोई काम नहीं करना पड़ता था । जब राज पर कोई मुसीबत पड़ती थी तभी ये युद्ध के लिए बुलाए जाते थे ।

पूत बातों से भी भगेगा—पुत्र निकम्मा हो गया तो क्या बातें भी नहीं बना सकेगा । निकम्मे लड़के पर व्यंग्य है। तुलनीय : अव० पूत बतनौ के भागी ।

पूत बेगाने चूमिए, मुँह रालों भरिए—दूसरे की संतान को पालें और वह वफ़ादार न निकले तो शिक्षार्थ कहते हैं ।

पूत भए सयाने, दुःख भए विराने—लड़के जब बड़े हो जाते हैं तो दुख दूर हो जाते हैं, क्योंकि पुत्र बड़ा होने पर काम-धंधा सँभाल लेते हैं, इसलिए वृद्ध माँ-बाप निश्चिंत होकर आराम करते हैं। तुलनीय : अव० पूत भयें सयाने, सब दुख हेराने; ब्रज० भये स्याने, दुख भये विराने ।

पूत माँगे गईं, भतार लेती आईं—पुत्र माँगने गई थीं और पति लेकर आईं । उन स्त्रियों पर कहा जाता है जो लड़का होने के लालच से फ़क़ीरों के यहाँ जाती हैं और वहाँ से भ्रष्ट होकर आती हैं। तुलनीय : अव० पूत माँगै गईं, भतार लै आईं ।

पूत मीठ, भतार मीठ, किरिया केहि की खाऊँ—दे० 'पुत्र भी मीठा पति भी…'।

पूत लड़ाया ज्वारी, धी लड़ाई क्वारी—अधिक प्यार करने से जुवारी लड़का और कुमारी लड़की दोनों बिगड़ जाते हैं । यह ब्रज प्रदेश की कहावत है ।

पूत सपूत तो क्यों धन संचय, पूत कुपूत तो क्यों धन संचय—पूत सपूत होगा तो स्वयं पैदा कर लेगा, और कुपूत होगा तो बरबाद कर देगा इसलिए धन संचय करना किसी के लिए भी उचित नहीं । तुलनीय : गढ़० बाबू की कमें न कपूत खौ न सपूत सांजो; अव० पूत होय तौ सपूत होय, कपूत पूत से निरबंस भला; राज० पूत सपूता क्यूं धन संचै, पूत कपूता क्यूं धन संचै ?

पूतो मीठ भतारो मीठ किरिया किसकी खाऊँ—दे० 'पुत्र भी मीठा…'।

पूनो परवा गाजे, तो दिन बहत्तर बाजे—अगर आषाढ़ की पूर्णिमा तथा प्रतिपदा को बिजली चमके तो समझ लेना चाहिए की बहत्तर दिन तक वर्षा होगी । तुलनीय : ब्रज० पून्यों परिबा गाजै, दिना बहत्तरि बाजै ।

पूरब का बर्धा उत्तर का नीर, पच्छिम का घोड़ा दक्षिण का चीर—पूरब का बैल, उत्तर का पानी, पश्चिम का घोड़ा तथा दक्षिण की साड़ी, ये चारों अच्छे माने जाते हैं ।

पूरब का बादर पच्छिम जाय, पतली पकावे मोटी खाय; पछुआँ बादर पूरब को जाय, मोटी पकावे पतली खाय—पूरब के बादलों को यदि पश्चिम जाते देखो तो समझो कि खूब वर्षा होगी और अन्न पैदा होगा । अतः तुम खूब मोटी रोटी बनाकर खाओ । इसके प्रतिकूल पश्चिम के बादल पूरब जायँ तो वर्षा न होगी और अन्न की कमी होगी । अतः पतली रोटी बनाकर मितव्ययिता से काम चलाओ ।

पूरब को घन पश्चिम चलै, रांड़ बतकही हँसि-हँसि करै; ऊ बरसै ऊ करै भतार, भड्डर के मन यही विचार—भड्डरी का यह विचार है कि यदि पूरब दिशा से बादल पश्चिम की ओर जाते हों तो वर्षा अवश्यमेव होगी और यदि विधवा किसी पुरुष से हँस-हँसकर बातें करे तो वह उसके साथ भाग जाएगी ।

पूरब गुधुली पश्चिम प्रात, उत्तर दुपहर दक्खिन रात; का करै भद्रा का करै दुग सूल, कहें भड्डर सब चकनाचूर—भड्डरी कहते हैं कि यदि पूरब दिशा में यात्रा पर जाना है तो गोधूलि के समय अर्थात् संध्या में, पश्चिम के लिए प्रातः, उत्तर के लिए दोपहर में तथा दक्षिण दिशा में रात्रि में जाना चाहिए । इससे दिशाशूल तथा भद्रा आदि कुछ भी नहीं बिगाड़ पाते ।

पूरब जाओ या पच्छिम वही करम के लच्छन—पूरब की दिशा में जाओ या पश्चिम की, भाग्य के लक्षण वही रहेंगे । आशय यह है कि मनुष्य कहीं भी जाय भाग्य उसके साथ ही जाता है। अर्थात् जो भाग्य में लिखा रहता है वही

होता है। तुलनीय : अव० पुरुब जाय चहैं पच्छिम होउँ करम के लच्छन; कौर० पूरब जाओ पच्छम, वोई करम के लच्छन।

पूरब दिशि की बहै जो बाई, कछु भीजैं कछु कोरी जाई—पूरब की हवा चलने पर कुछ स्थानों पर वर्षा होती है और कुछ स्थान सूखे ही रह जाते हैं।

पूरब धनुहीं पच्छिम भान, घाघ कहें बरखा नियरान—शाम को यदि पूर्व में इंद्र धनुष हो तथा पश्चिम मे सूर्य हो तो समझना चाहिए कि वर्षा निकट है।

पूरा गाँव जल गया बीबी को खबर ही नहीं—अपने विनाश से भी अपरिचित रहने वाले या बिल्कुल निश्चित व्यक्ति को लक्ष्य करके ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मग० सौंसे गाम जर गेल बीबी कमाल के खबर ना; भोज० सज्जी गाँव जरि गइल दुलहिन के खबरिए नां।

पूरा घर जल गया, अंधी कहे कहीं चिथरा गन्धाता—सब कुछ नष्ट होने पर भी बेखबर रहने पर व्यंग्य। तुलनीय : भोज० कुल घर जर गइल अन्हरी कहे कि कही चिरकुट महकत बा; पंज० मारा कर सड़ गया ते अन्नी आखे कपड़ा सड़ा दा।

पूरा तोल, चाहे महँगा बेंच—सामान पूरा तौलो भले ही महँगा दो। वज़न या माप में कम न देना चाहिए। जब कोई दूकानदार कम तौलता है तब ग्राहक कहता है। तुलनीय : अव० पूरा तौल चाहै महँगा दे; पंज० पूरा तोल पावें मेंगा दे।

पूरी खेती उनकी कहें जो हल अपने हाथ गहें, आधी खेती उनकी कहें जो नित हल के संग रहें, बोये बीज उपजे नहीं तहाँ जो पूछें कि हल है कहाँ—पूरी खेती उन्हीं की होती है जो अपने हाथ से जोतते-बोते हैं। जो मजदूरों के साथ रहकर खेती कराते हैं उनकी आधी खेती होती है और जो दूसरों के भरोसे बैठे रहते हैं उनकी खेती में कुछ भी नहीं होता। आशय यह है कि खेती अपने हाथ से करने से ही अच्छी होती है।

पूरी खेती जो हर गहा, आधी खेती जो संग रहा, जो पूछा हरवाहा कहाँ, घर ते बीज गँवाए तहाँ—ऊपर देखिए।

पूरी न पापड़ी पटाक बहू आ पड़ी—न तो पूरी (पूड़ी) बनी और न पापड़, बहू झट से आ गई। बिना किसी व्यय के वांछित कार्य के पूर्ण हो जाने पर कहते हैं। तुलनीय : कौर० पूरी न पापड़ी पटाक बहू आ पड़ी।

पूरी पड़े तो सपूत कहावे—जो पुत्र घर सँभाल ले वही सुपुत्र कहलाता है।

पूरी बिपत महँथी आई लगन राम से छूटी—(क) किसी कार्य की जिम्मेदारी ले लेने पर मनुष्य काफ़ी परेशान रहता है। (ख) अधिकार या संपत्ति मिल जाने पर ईश्वर से प्रेम नहीं रहता या उसकी पूजा कोई नहीं करता, उसे तो केवल विपत्ति में ही याद किया जाता है।

पूरी रामायण हो गई सीता किसका बाप—मूर्ख व्यक्ति के प्रति कहते हैं जो सब कुछ सुन लेने के बाद भी कुछ नहीं समझ पाता। तुलनीय : असमी—सातकाण्ड रामायण पढ़ि सीता कार बाप; सं० शास्त्राण्यधीत्यप भवन्ति मूर्खा.; अं० John went to school to become a fool.

पूरी लपसी घर में खाय, झूठी देवी से आश लगाय—पूड़ी (पूरी) और लपसी तो लोग स्वयं खाते हैं और व्यर्थ में देवी से अपनी मनोकामनाओं के पूर्ण होने की उम्मीद करते हैं। नास्तिक का आस्तिक पर व्यंग्य।

पूरी से पूरी परै तो सभी न पूरी खायँ—यदि पूरी खाने से पूरा पड़ जाय तो सब पूरी ही न खायँ। आशय यह है कि हमेशा पूरी (पूड़ी) नहीं खाई जा सकती।

पूरे गुरुघंटाल हैं—चालाक और अनुभवी व्यक्ति को कहते हैं।

पूरे हैं वही मर्द जो हर हाल में खुश हैं—जो कभी चिन्ता नहीं करते और दु:ख-सुख को बराबर समझते हैं वे ही सच्चे अर्थों में मर्द है।

पूर्व जन्म का फल भोग रहे हैं—रोग से पीड़ित या विपत्ति में पड़े मनुष्य के प्रति कहते हैं। तुलनीय : बुंद० पूरब जनम के फल भोग रये।

पूर्वजों की कमाई सट्टे-बट्टे में गँवाई—पूर्वजों की संपत्ति को बरबाद कर दिया। पूर्वजों की संपत्ति का दुरुपयोग करने वाले पर यह लोकोक्ति कही जाती है।

पूले तले गुजरान करते हैं—पुल के नीचे समय बिता रहे हैं। जब कोई बहुत ग़रीबी की हालत में हो तब कहते हैं।

पूले पूले आँच है—कष्ट सभी को होता है। सबको अपने समान समझना चाहिए, यह बताने के लिए इस लोकोक्ति का प्रयोग करते हैं।

पूस अँधेरी तेरसी, चहुँ दिशि बादल होय; सावन पूनो मावसैं, जल धरनी में होय—यदि पौष मास की कृष्णपक्ष की तेरस तिथि को आकाश बादलों से आच्छादित हो तो सावन मास की पूर्णिमा और अमावस्या को वर्षा अवश्य होगी।

पूस उजेली सप्तमी, अष्टमी नौमी गाज; मेघ होय तो जान लो, अब शुभ होइ है काज—पौष मास के शुक्लपक्ष की सप्तमी, अष्टमी और नवमी को यदि बादल घिरे रहें तो समझना चाहिए कि समय अच्छा आने वाला है।

पूस का दिन फूस—पूस महीने में दिन बहुत छोटा होता है। तुलनीय : मैथ० पूसक दिन फुस; भोज० पूस क दिन फूस।

पूस कोने घूस—पौष में जाड़ा काफ़ी पड़ता है जिससे बचने के लिए लोग घर के अंदर रहते हैं।

पूस घर का घूंस—पौष मास का दिन बहुत छोटा होता है और ठंडक अधिक रहती है, इसलिए लोग घरों में बैठे रहते हैं। तुलनीय : कौर० पूस घर की घूंस; ब्रज० फूंस घर में घूंस।

पूस जाड़ा न माघ जाड़ा, जभी पानी तभी जाड़ा—आशय यह है कि सर्दी तभी अधिक पड़ती है जब वर्षा होती है। तुलनीय : बुंद० पूस जाड़ो न माघ जाड़ो, जबं पानी तबई जाड़ो।

पूस न बोए, पीस खाए—पौष मास में बोना नहीं चाहिए बल्कि उस बीज को पीस कर खा लेना चाहिए। आशय यह है कि पौष में बोने से कुछ उत्पन्न नहीं होता। तुलनीय : बुंद० पूस बोवे, पीस खावे।

पूस मास दसमी अंधियारी, बदली घेर होय अधिकारी; सावन बदि दसमी के दिवसे, भरे मेघ चारों दिसि बरसे—पौष की दशमी को यदि बादल उमड़ें तो सावन की दशमी को चारों ओर भारी वर्षा होती है।

पूस में दिन फुस माघ में दिन बाघ—पूस माह में दिन छोटा तथा माघ में बड़ा होता है।

पूसे जाड़ न माघे जाड़, जठे बयरिया तब्बे ताड़—नीचे देखिए।

पूसे जाड़ न माघे जाड़ जब हवा तबे जाड़—जाड़ा न तो पौष में पड़ता है और न माघ में बल्कि जब हवा चलती है तभी पड़ता है। तुलनीय : राज० ना शी पो ना माये, शी जद बाजन्ती वाये; अव० पूसै जाड़ न माघै जाड़, जबहीं बरखा तबहीं जाड़।

पेट का जेठ के लिए नहीं होता—अपना बच्चा कोई दूसरे को नहीं देता। सभी व्यक्ति अपने सुख के लिए परिश्रम करते तथा कष्ट सहते हैं। तुलनीय : मवा० जेठ मारू पेट कोय ने; पंज० टिड दा जेठ लई नइँ हुंदा।

पेट काटने से धन नहीं इकट्ठा होता—भूखे रहकर धन इकट्ठा करने से धन नहीं होता। जब कोई व्यक्ति धनवान बनने के लिए ठीक से भोजन भी न करे तब उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : अव० पेट काटे धन न जुरी; पंज० सरधा करण नाल पैंहा कट्ठा नइँ हुंदा।

पेट की आग पेट ही जानता है—जो भूखा हो वही भूख का कष्ट जानता है। अर्थात् (क) जिसे कष्ट होता है वही उसको जानता है। (ख) निर्धन का दुःख निर्धन ही जानता है। तुलनीय : बुंद० पेट की आग पेटई जानत; पंज० टिड दी लग्गी टिड ही जाणदा है।

पेट की आशा सब करते हैं—मनुष्य पेट के लिए ही दुनिया-भर के काम करता है। जब किसी को परिश्रम करने पर भी उचित पारिश्रमिक नहीं मिलता तो कहते हैं। तुलनीय : बुंद० पेट की आसा सब करत।

पेट की मेरी, थाल की तेरी—जो खा चुका हूँ उसे देना तो संभव नहीं किंतु जो थाली में है उसे तुम ले सकते हो। मित्र या संबंधी के प्रति अपनत्व जताने के लिए कहते हैं। तुलनीय : भीली—मुंडा मांयली म्हारी ने हाथां मायली थारी; पंज० टिड दी मेरी थाली दी तेरी।

पेट कुई मुंह सुई—मुंह सुई जैसा पतला या छोटा है पर पेट कुएँ जैसा गहरा है। जब कोई छोटी आयु का लड़का अधिक खाता है तब उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

पेट के आगे 'ना' है—पेट भरने पर लोग ना कह देते हैं। तुलनीय : अव० पेट के आगे 'नाहीं'।

पेट के आगे सब हेठ—पेट के सम्मुख सब कुछ व्यर्थ है। आशय है कि भूख के सामने प्रत्येक वस्तु बेकार है। तुलनीय : बुंद० पेट के आंगे सब हेट।

पेट के पत्थर भी प्यारे—अपने बच्चे चाहे मूर्ख और निकम्मे ही क्यों न हों किंतु माँ-बाप को प्रिय होते हैं।

पेट के लिए पसीना बहाना पड़ता है—पेट भरने के लिए परिश्रम करना पड़ता है। आशय यह है कि परिश्रम किये बिना उदरपूर्ति संभव नहीं। तुलनीय : भीली—मेनत सार है पेट हारू करवी पड़े; पंज० टिड लई परसा बगाना पैंदा है।

पेट के वास्ते परदेस जाते हैं—पेट भरने के लिए ही लोग घर छोड़कर बाहर जाते हैं। तुलनीय : ब्रज० पेट कूँ ई परदेस जावें।

पेट खाय तो आँख लजाय—जिसका खाया जाता है उसका लिहाज़ तो करना ही पड़ता है। जो आदमी किसी को कुछ देता नहीं खाली अपना काम कराना चाहता है उसे कहते हैं।

पेट खाय मुंह लजाय—अच्छा भोजन करने से स्वास्थ्य

भी अच्छा रहता है।

पेट खाली, गठरी भारी—भूखे हैं, किंतु गठरी भरने में अर्थात् संचय करने को फिर भी तत्पर हैं। खाने-पीने में भी जो व्यक्ति कंजूसी करते हैं उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय : माल० डाचा में हुणया; पंज० टिड खाली गंड पारी।

पेट खाली तो दिमाग़ खाली—पेट खाली हो तो दिमाग़ भी काम नहीं करता। आशय यह है कि भूखा व्यक्ति कुछ सोच-विचार नहीं कर सकता। तुलनीय : पंज० टिड खाली ते दमाग खाली; ब्रज० पेट खाली तौ सब खाली।

पेट चले और सराय में डेरा—दस्त लगे हुए हैं और सराय में ठहरता है। जो व्यक्ति अपनी स्थिति के अनुसार कार्य न करता हो या मूर्खतापूर्ण कार्य करता हो उसके प्रति व्यंग्योक्ति। तुलनीय : राज० गांड झरै'र सराय में डेरा।

पेट चले मन बल्तों को—दस्त लग रहे हैं और दाल खाने की इच्छा हो रही है। जब कोई विपत्ति में फँसा व्यक्ति ऐसा काम करना चाहे जिससे उसकी विपत्ति और बढ़ जाय तब उसके प्रति कहते हैं।

पेट चांडाल है—आशय यह है कि पेट ही सब बुराइयों की जड़ है। इसी के लिए सब प्रकार के अच्छे-बुरे कर्म करने पड़ते हैं। तुलनीय : अव० पेट पापी है; पंज० टिड चंडाल है।

पेट जरे तो उठके चरे—भूख लगने पर उठकर चरता है। आशय यह है कि भूख मनुष्य को परिश्रम करने पर मजबूर कर देती है।

पेट जो चाहे सो करावे—जब पेट के लिए कोई बुरा काम करे तब कहते हैं। तुलनीय : अव० पेट चाही जउन करावै; मरा० पोट माणसाला वाटेल तें करायला लावते; हरि० पेट जो चाव है सो करा दे; पंज० टिड जो चाहदा है करांदा है; ब्रज० पेट सब कछु करावै।

पेट तो भरा है पर नीयत नहीं भरी—पेट तो भर गया है पर इच्छा पूरी नहीं हुई। जो व्यक्ति पेट भरकर खा लेने पर किसी स्वादिष्ट वस्तु को देखकर फिर खाने बैठ जाय उसके प्रति कहते है।

पेट नरम, पैर गरम, सर ठंडा, हकीम आए तो सर में मारो डंडा—पेट नरम हो, पैर गरम हों और सिर ठंडा हो तो मनुष्य बिल्कुल स्वस्थ होता है।

पेट पड़ी गुन देती—पेट में पड़ी रोटी ही काम आती है, अर्थात् जो वस्तु अपने अधिकार में हो वही अवसर पर काम आती है। तुलनीय : ब्रज० पेट परी गुन करै।

पेट पड़े वह अपना—जो वस्तु खा ली जाय वही अपनी होती है क्योंकि समय का कुछ पता नहीं होता कि कब क्या हो जाय। (क) कंजूस व्यक्तियों को खाने-पीने में व्यय करने के लिए यह कहकर उकसाते हैं। (ख) भोजन भट्टों के प्रति भी व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : माल० पेटे पड़े जो पतीजा।

पेट पर दुश्मन के भी लात न मारे—शत्रु के भी पेट पर लात नहीं मारना चाहिए। आशय यह है कि किसी की भी जीविका नहीं छीननी चाहिए।

पेट पापी है—क्योंकि इसी को भरने के लिए सभी अनुचित काम किए जाते हैं। पेट यदि न होता तो संसार में कोई बुरा कर्म नहीं करता। तुलनीय : राज० पेट पापी है; सं० बुभुक्षित: किं न करोति पापम्; पंज० टिड पापी है।

पेट पालना कुत्ता भी जानता है—स्वार्थी मनुष्य के लिए कहा गया है जो अपने पेट के आगे किसी की परवाह नहीं करता। तुलनीय : अव० पेट पालै तौ कुत्तौ जानत है; मरा० पोट काच कुत्रे सुद्धां भरतें; पंज० टिड्ड भरना ते कुत्ता वी जानदा है।

पेट पिटारी, मुंह सुपारी—दे० 'पेट कुई···'।

पेट पीठ एक हो रहा है—(क) भोजन न मिलने के कारण बहुत दुर्बल हो जाने पर कहते हैं। (ख) बहुत भूखा होने पर भी कहते हैं। तुलनीय : अव० पेट पीठ एक होय गवा; पंज० टिड पिठ इक हो गया है।

पेट बड़ा है तो अपने बल से, पड़ोसियों के बल से नहीं—यदि हमारा पेट बड़ा है तो हमारे कमाए धन के कारण ही, किसी दूसरे ने हमें कुछ दे नहीं दिया है। (क) जब कोई किसी की तोंद को देखकर मज़ाक़ करे तो मज़ाक़ करने वाले के प्रति कहते है। (ख) जो व्यक्ति अपने परिश्रम से धन अर्जित करे और दूसरा कोई उसके धन से जले तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : भीली—पेट पाड़ोसी माते नी बादारय्यो है, भजा माते वदारय्यो है।

पेट भर और पीठ लाद—पेट में भर ले तब पीठ पर लाद, अर्थात् बिना पेट भरे काम नहीं होता।

पेट-भर खाना, नींद-भर सोना—बिना पेट-भर भोजन किए तथा नींद-भर सोए काम नहीं चलता। सब प्रकार सुखी और निश्चिंत व्यक्ति के प्रति कहते हैं। तुलनीय : अव० पेट-भर खाय, नींद-भर सोवै; पंज० टिड पर के खाना पूरी नीदर सोना।

पेट भरता है पर आँख नहीं—आशय यह है कि पेट भर जाता है पर इच्छाएँ पूरी नहीं होती। तुलनीय : असमी—चकुक् नाटे पेटक् आटे; पंज० टिड रजदा है अखां नईं;

अं० The eyes are larger than the belly.

पेट भरने से काम, रोटियाँ किसी की भी हों—(क) मुफ़्तखोरों के प्रति कहते हैं जो केवल पेट भरने से ही मतलब रखते हैं रोटी चाहे किसी से भी मिले। (ख) निर्धन व्यक्ति के प्रति भी कहते है जो केवल पेट भरने से मतलब रखता है, रोटी चाहे किसी भी अनाज की हो। तुलनीय : बुंद० पेट भरे से काम गकरिया काऊ की।

पेट-भर मिले तो जो चाहे कर—मनुष्य को पेट-भर भोजन मिले तो वह जी चाहा काम कर सकता है। अर्थात् (क) जिस व्यक्ति को भोजन-वस्त्र की चिंता नही होती वह अपना मनचाहा काम करके उसमें सफलता प्राप्त कर लेता है। (ख) बिना भर पेट भोजन किए कोई व्यक्ति ठीक से काम नही कर सकता। तुलनीय : भीली—मन के धाई ने खावे भले, जो धारे जो करे।

पेट भरा जानो तब, कुत्ता कौरा पावे जब—जब कोई कुत्ते को ग्रास (कौरा) दे तब समझना चाहिए कि इस आदमी का पेट भरा हुआ है, क्योंकि जिसका पेट भरा होता है वही कुत्ते को कौरा देता है। भूखे व्यक्ति को तो अपने ही पेट की चिंता लगी रहती है वह कौरा कहाँ से देगा।

पेट भरा, पेड़ा सड़ा—पेट भर जाने पर अच्छा-से-अच्छा खाद्य पदार्थ भी रुचता नही। तुलनीय : भोज०, मग० पेट भरल तऽ पेड़ा सड़ल।

पेट भरा हो तो सभी खाने को पूछते हैं—भोजन किया हो तो सभी भोजन को पूछते हैं और भूखा रहने पर कोई नही पूछता। अर्थात् भूखे और निर्धन को कोई नही पूछता, जिसका पेट पहले से ही भरा हो उसी को सब पूछते हैं। तुलनीय : भीली—धाप्या माते डूमड़ी खीर राद; पंज० घरों जाओ खा के, अग्गे मिलन पका के।

पेट भरे की बातें—जब कोई काम के लिए अनुचित पारिश्रमिक माँगे या नखरे दिखाए तो कहते हैं। तुलनीय : राज० पेट-भर्यैरी वातां है; अव० पेट भरा होय तौ बात सूझत है; भोज० पेट भरले कऽ बाति है; पंज० टिड परोण नाल गलां आउंदियां हुन।

पेट भरे के खोटे चाले—(क) पेट भरने पर बुराई ही सूझती है। (ख) धनियों का धन प्रायः बुरे कार्यों में ही व्यय होता है। तुलनीय : भीली—धागड़ियो धान करे मनख नी करे।

पेट भरे के गुन—जब पेट भरा हो तो किसी काम करने को दिल नहीं चाहता। अर्थात् आवश्यकता न होने पर कोई भी परिश्रम करने को तैयार नहीं होता। नौकर के भुनभुनाने पर कहा जाता है।

पेट भरे पर दूर की सूझे—बिना पेट भरे कुछ नहीं सूझता। पेट भरने पर ही आदमी बड़ी-बड़ी बातें करता है।

पेट भरे रिज़ाले और भूखे भले मानस से डरिए—यदि नीच मनुष्य धनी हो जाय और धनी निर्धन हो जाय तो इन दोनों से डरना चाहिए। आशय यह है कि नीच मनुष्य धनवान होने पर और धनी ग़रीब होने पर कष्टदायी हो जाते हैं।

पेट भरो अति भूख में नहीं करें संभोग—पेट बहुत खाली या बहुत भरा हो तो संभोग नहीं करना चाहिए।

पेट भारी सिर भारी—(क) उक्त कहावत निकम्मे व्यक्ति को लक्ष्य करके कही जाती है जो काम के समय भूख लगने का बहाना करते हैं तथा खाने के बाद सिरदर्द का; (ख) यदि पेट साफ़ न हो तो सिर में दर्द या भारीपन होता है। तुलनीय : आंत भारी तौ मूंड भारी।

पेट भी खाली गोद भी खाली—(क) संतान और धन दोनों से विहीन होने पर कहा जाता है। (ख) जब बच्चा न पेट में हो न गोद मे तब भी कहते है।

पेट में अन्न नहीं ऊँची डकार—रोटी तो खाई नही पर ज़ोर से डकारते हैं। दिखावटीपन पर व्यंग्य। तुलनीय : भोज०, मैथ० पेट में अन्न नहि ऊपर ढेकार।

पेट में आँत, न मुँह में दाँत—अति वृद्ध को कहते है।

पेट में कतरनी है—पेट में क़ैंची रखना है। जो व्यक्ति ऊपरी तौर पर बहुत सज्जनता दिखाए किंतु भीतर से वह शत्रुता और दुष्टता का भाव रखता हो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० पेट में छुरी-कतरणी है।

पेट में कैसे रहा होगा ?—चचल या उपद्रवी लड़के को कहते हैं।

पेट में गया चारा तो कूदने लगा बेचारा—तात्पर्य यह है कि (क) भोजन करने पर शरीर में शक्ति आ जाती है। (ख) पेट भरा होने पर ही शरारत सूझती है। तुलनीय : अव० पेट मा पड़ा चारा, तौ कूदा बेचारा।

पेट में गया चारा, तो नाचं लगा बेचारा—ऊपर देखिए।

पेट में घुसे तो भेद मिले—पेट में घुसने से ही भेद मिलता है। आशय यह है कि बिना घनिष्ठता स्थापित किए किसी का भेद नहीं मिलता। तुलनीय : राज० पेट में वड़र कणी को देख्यो नी; अव० पेट मा घुसं तौ भेद मिलै; पंज० टिड बिच बडे ते सब लबे।

पेट में चूहे कलाबाजियाँ खा रहे हैं—अधिक भूख लगने पर कहा जाता है। तुलनीय : राज० पेट में ऊँदरा धड़्या करै, पेट में ऊँदरा कूदै है; अव० पेट मा मूस लोटत है; पंज० टिड बिच चूहे लड़दे हन; हरि० पेट में तै मूस्से कूद्दे सैं।

पेट में चूहे कूदते हैं—ऊपर देखिए। तुलनीय : ब्रज० पेट में मूंसे कूदें।

पेट में चूहे दौड़ते हैं—दे० 'पेट में चूहे कलाबाजियाँ···'।

पेट में चूहे लड़ते हैं—दे० 'पेट में चूहे क़लाबाज़ियाँ···'।

पेट में दाढ़ी है—जब कोई अल्पायु कोई बुद्धिमत्ता का कार्य करता है तो कहते हैं। तुलनीय : पंज० टिड बिच दाड़ी है; ब्रज० पेट में डाढ़ी ऐ।

पेट में पड़ा अन्न तो उमगने लगा मन—दे० 'पेट में गया चारा तो···'। तुलनीय : मग० पेट में पड़ल अन्न तो उमके लागल मन; भोज० पेट में गइल अनाज त चेहरा भइल उजास।

पेट में पड़ा चारा, तो कूदन लगा बिचारा—दे० 'पेट में गया चारा···'।

पेट में पड़ी बूंद, नाम रक्खा महमूद—काम होने के पहिले ही फल का हिसाब-किताब लगा लेने पर कहा जाता है।

पेट में पीर, आँख की दवा—तकलीफ़ है पेट में और दवा कर रहे है आँख की। इस प्रकार लाभ की कौन कहे उलटे हानि ही होती है। (क) जान-बूझकर अनहित करने पर यह लोकोक्ति कही जाती है। (ख) मूर्खतापूर्ण काम करने वाले के प्रति भी कहते हैं।

पेट में बिल्लियाँ लड़ती हैं—बहुत भूख लगने पर कहते हैं। तुलनीय : राज० पेट में मिनक्या लड़ै।

पेट में रई सी घूम रही है—बहुत घबरा रहे हैं। किसी बात या काम का परिणाम जानने के लिए बेचैनी दिखाने वाले के लिए कहते है। तुलनीय : बुंद० पेट में रई सी फिर रई।

पेट मेट, कार समेट—(क) जब किसी से कम वेतन पर अधिक काम कराया जाय तब कहा जाता है। (ख) जब कम वेतन पाने वाला नौकर काम बिगाड़ देता है तो भी कहते हैं।

पेट लगा फटने, ख़ैरात लगी बटने—जब विपत्ति आती है तभी लोग दान-पुण्य करते हैं। तुलनीय : पेट लग्यौ फटिबे, ख़ैरात लगी बटिबे।

पेट लगी आग, चहिए न साग—पेट में आग लगी हो अर्थात् ज़ोर की भूख लगी हो तो रोटी की तुलना में साग-भाजी की आवश्यकता नगण्य हो जाती है। भूख की प्रबलता दिखाने के लिए कहते हैं। तुलनीय : गढ़० पेट लगी आग, क्या चैंद का साग।

पेट सदा ख़ाली—पेट को चाहे जितना भी भर लें वह कुछ समय बाद फिर खाली हो जाता है। तुलनीय : राज० पेट थोथो है; पंज० टिड सदा खाली।

पेट सब कराता है—रोटी के लिए मनुष्य को उचित-अनुचित सभी कुछ करना पड़ता है। तुलनीय : बुंद० पेट सब कराउत; पंज० टिड सब कुज करांदा है; ब्रज० पेट सब कराइ ले यै।

पेट सबके लगा है—धनी-निर्धन सबको रोटी की आवश्यकता रहती है और उसकी चिंता सभी को करनी पड़ती है। तुलनीय : बुंद० पेट सबकें लगो; पंज० टिठ सब दे लगा है।

पेट सब रखते हैं—खाना सबको चाहिए। जब कोई किसी की रोज़ी में बाधा डालता है तब कहते है।

पेट से सीखकर कोई नहीं आता—प्रत्येक कार्य परिश्रम और अभ्यास से आता है। जब कोई व्यक्ति किसी काम को न जानने के कारण लज्जित हो तो उसे दिलासा देने के लिए कहते हैं। तुलनीय : बुंद० पेट से कोऊ सीक कें नई आऊत; अव० पेटै मा से सिख कै केउ नाही आवत; पंज० अंदरों कोई सिख के नईं आंदा।

पेटहा चाकर, घसहा घोड़ खाय बहुत काम करे थोड़—पेटू नौकर अर्थात् वेतन न लेकर केवल रोटी पर काम करने वाला, और घास खाने वाला घोड़ा ये खाते अधिक हैं और काम कम करते है। तुलनीय : अव० पेटहा नौकर घसहा घोड, खाय बहुत काम करै थोर।

पेट है या कुठार—अधिक खाने वाले को कहते हैं। तुलनीय : अव० पेट है आय भड़ार; पंज० टिड है या टोया।

पेट है या कूड़ागाड़ी—नीचे देखिए।

पेट है या बेईमान की क़ब्र—बहुत खाने वाले को कहते हैं।

पेट है भरसाँय—नीचे देखिए।

पेट है या भाड़—(क) बहुत अधिक खाने वाले के लिए कहते हैं। (ख) जो सभी प्रकार का अल्लम-ग़ल्लम खाते रहते हों उनके प्रति भी कहते हैं।

पेटू मरे पेट को, नामी मरे नाम को—पेटू मनुष्य को

अपने पेट की ही पड़ी रहती है, किन्तु नामी अपनी इज्ज़त के लिए परेशान रहता है। जब कोई मनुष्य अपने पेट के आगे इज्ज़त का ख़याल न करे तब कहा जाता है। तुलनीय : अव० पेटू मरै पेट का, नामी मरै नाव का; भोज० पेटू मरे पेट को नामी मरे नाम को।

पेड़ काट के पल्लव सींचा—पेड़ को काट देने से पल्लव का सींचना बेकार है। अर्थात् मूल के नष्ट हो जाने पर उसका जीवित रहना असंभव है। (क) जब कोई किसी की बड़ी हानि करके साधारण-सी सहायता देता है तब कहते हैं। (ख) मूर्खतापूर्ण कार्य करने वाले के प्रति भी व्यंग्य से कहते हैं।

पेड़ की ओट पहाड़ साधारण वृक्ष के पीछे पहाड़ भी छुप जाता है, अर्थात् साधारण-सी आड़ में बहुत बड़ी-बड़ी बातें हो जाती है। जब कोई व्यक्ति साधारण बात मे गूढ़ अर्थ की बात कहे तो उसके प्रति कहते है, अथवा साधारण कार्य के बहाने बहुत बड़ा कार्य करे तो उसके प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : भीली - पाना आड़ी परथमी वसे।

पेड़ को कुल्हाड़ी ही काटती है—कुल्हाड़ी का बेंट पेड़ की लकड़ी का ही होता है और वही उसको काटता है। आशय यह है कि अपने ही लोग अनिष्ट किया करते हैं। तुलनीय : पंज० बूटे नू कुआड़ी बडदी है।

पेड़ न रूख तहाँ रेंड़ प्रधान—जहाँ अन्य वृक्ष नही होते वहाँ रेंड़ (अरंड) का पेड़ ही अच्छा समझा जाता है। आशय यह है कि जहाँ अच्छे विद्वान नही होते वहाँ सामान्य व्यक्ति ही बड़ा समझा जाता है। तुलनीय : भोज० पेड़ न रूख तहाँ रेंड पर धान; सं० निरस्त पादपे देशे एरण्डोऽपि द्रुमायते।

पेड़ पर कटहल, हाथ में तेल—कटहल अभी पेड़ पर ही है और हाथ में तेल लेकर तैयार हैं। (कटहल काटते समय हाथों में तेल लगाया जाता है ताकि उसका रस हाथों पर चिपकने न पाए)। समय से बहुत पहले किसी काम की तैयारी करने वाले के लिए कहते हैं। तुलनीय : मैथ०, भोज० गांछे कटहर ओटे तेल।

पेड़ पर रंग-बिरंगे फूल-फल पर किसके ?—संसार में नाना प्रकार के रंग, रूप, रस आदि हैं, किंतु वे हैं किसके भाग्य में ? सभी सुख किसी एक को नहीं मिल पाते, इसलिए प्रत्येक सुख-सुविधा को देखकर मुंह में पानी भरना ठीक नहीं है। तुलनीय : भीली—रूखड़ा माथे धणा फल-फूल रूपाला, आपणा नी है।

पेड़ से बैर, पत्तों से नाता—पेड़ जिससे कुछ लाभ मिलने की संभावना है, उससे शत्रुता है और पत्तों से जिनसे कोई लाभ नहीं मिल सकता मित्रता गाँठे हुए हैं। जो व्यक्ति लाभदायक वस्तु को छोड़कर निकृष्ट वस्तु को चाहे उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : बुंद० पेड़े से बैर, पतोरन से नातो।

पेड़े कटहल ओठे तेल—दे० 'पेड़ पर कटहल···'।

पेशाब की गर्मी ख़त्म हुई—जब कोई नीच व्यक्ति एकाएक धन पाकर अभिमान करने लगे और अपने को धनवान जताने के लिए संपत्ति को समाप्त करके फिर पहले की तरह कंगाल हो जाय तो उसके प्रति कहते हैं।

पेशाब के झाग से बैठ गए—(क) जब कोई व्यक्ति बहुत बढ़-बढ़कर बातें करे किंतु अवसर पर पीठ दिखा दे तो उसके प्रति कहते हैं। (ख) थोड़े समय रहने वाली वस्तु के निकल जाने या समाप्त हो जाने पर उसके मालिक के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : गढ़० मूत को निवात्तो।

पेशाब के दिये जलते हैं - बहुत रोब-दाब वाले व्यक्ति के प्रति कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० पेसाब में दीयौ जरै।

पेशाब देख रोग बताय सो हकीम—यूनानी चिकित्सा करने वाले चिकित्सक रोगी का पेशाब देखकर ही रोग का विवरण दे दिया करते हैं।

पेशा हबीबुल्लाह, जो न करे सो लानतुल्लाह—काम-काजी का ईश्वर भी सहायक है और कामचोर का ईश्वर भी साथ नही देता।

पैंठ लगी नहीं गठकटे पहले आ गए—अभी बाज़ार नहीं लगा लेकिन पाकेट मारने वाले आ गए। जब किसी कार्य के होने से पहले ही उससे लाभ उठाने वाले तैयार हो जायँ तब उनके प्रति व्यंग्य मे कहते हैं। तुलनीय : कौर० पेंठ लगी ना गठकटे पहले आ गए।

पैदल और सवार का क्या साथ ?—दोनों का साथ नहीं निभता। अर्थात् (क) ग़रीब और अमीर की दोस्ती नहीं निभ सकती। (ख) दो ढंग के लोगों में मेल नहीं बैठता।

पैदा करना आसान पर पालना कठिन—(क) संतान उत्पन्न करना तो बहुत सरल हैं किंतु उसका पालन-पोषण करना बहुत कठिन है। (ख) किसी कार्य को शुरू करने की अपेक्षा उसको पूरा करना अधिक कठिन है। तुलनीय : ब्रज० पैदा करिबौ सरलै परि पारिबौ कठिन।

पैदा हुआ नाश के वास्ते—जो पैदा हुआ है उसका अवश्य नाश होगा। यह प्रकृति का नियम है।

पैदा हुई बेटी, बाप की हुई हेठी—जिस पिता के घर

पुत्री जन्म लेती है उसकी हेठी ही होती है। कन्या पक्ष के कारण पिता को सदा दबना पड़ता है या अपने अपमान का भय रहता है। तुलनीय : राज० बेटी जायी रे जगनाथ, ज्यांरो हेठै आयो हाथ।

पैर उठाते ही छींक दिया—यात्रा आरंभ करते ही छीक हुई। किसी काम को आरंभ करते ही कोई विघ्न खड़ा हो जाने पर कहते हैं। तुलनीय : राज० सिधश्री में ही खोट; पंज० पैर चुकदे छिक दित्ता।

पैर और भाई का जोड़ा ही ठीक रहता है—एक पैर टूट जाने पर आदमी अपंग हो जाता है और भाई न रहने पर कोई सहायक नहीं रहता, इसलिए इन दोनों का जोड़ा ही ठीक रहता है। तुलनीय : भीली—पग नी जोड़ी ने भाई नी जोड़ी राम नी तोड़े ते ठीक रे।

पैर का जूता—जिसकी कोई इज़्ज़त न करे उसके प्रति या किसी निकृष्ट वस्तु के लिए कहते हैं। तुलनीय : पंज० पैर दी जुत्ती।

पैर गर्म सर ठंडा डाक्टर अपने मारे डंडा—जिसका सर ठंडा तथा पैर गर्म है वह पूर्णतः स्वस्थ है।

पैर गिरावे, जीभ पिटावे—पैर की असावधानी से मनुष्य कीचड़ आदि में फिसल पड़ता है और भी असावधानी के कारण कभी-कभी मुँह से ऐसी बातें निकल पड़ती हैं जो बाद में बहुत कष्ट देती है और बदनामी का कारण बनती हैं। राह चलने और बोलने में सावधानी रखने के लिए ऐसा कहते है। तुलनीय : गढ़० पैरड़ो जीभ डंडो।

रहिमन जिह्वा बावरी कह गई सरग पताल,
आपु तो कह भीतर भई जूती परत कपाल।

पैर तो उठता नहीं चले हैं हाथी पछाड़ने—किसी अत्यधिक कमज़ोर व्यक्ति के व्यर्थ के मनसूबे बाँधने पर ऐसा कहते है। तुलनीय. भोज० गोड़ त उठत नइखे चलतानऽ बाघ मारे।

पैर में जूता न सिर में टोपी—निर्धनता पर कहते हैं। तुलनीय : हरि० पाँह में जूती नाँ सिर पै लूगड़ी; ब्रज० पांम में पनहां न सिर पै पगा।

पैर में लगी, सिर में बुझी—एक चीज़ की हानि, किसी अन्य चीज़ में पूरी करने पर यह लोकोक्ति कही जाती है।

पैर में शनीचर हैं—पैर में शनिश्चर देवता हैं जिनके कारण सदा मारा-मारा घूमता है। जो व्यक्ति सदा ही व्यर्थ में इधर-से-उधर घूमता रहे उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० पग में चक्कर है; ब्रज० पांम में सनीचर है।

पैराक ही डूबता है—बुद्धिमान व्यक्ति ही धोखा खाता है। जब कोई अनुभवी व्यक्ति अचानक कोई नुक़सान उठाए तो कहते हैं।

पैरों जलती नहीं दिखती, पहाड़ पर जलती दिख जाती है—दे० 'पहाड़ पर जलती आग सबको···'। तुलनीय : राज० पगां बलती को दीसैनी, डूंगर बलती दीस जाय।

पैरों पर तेल, मस्तक को चैन—(क) पैर में तेल लगाने से मस्तक को आराम पहुँचता है। (ख) छोटों को प्रसन्न रखने में लाभ रहता है।

पैरों बाँधी दाँतों न खुले—नीचे देखिए। तुलनीय : राज० पगां सूं दियोड़ी दांतां सूं को खुलैनी।

पैरों से बाँधी, हाथों नहीं खुलती—पैरों से बाँधी हुई गाँठ हाथों से नहीं खुलती। (क) चतुर व्यक्ति जिस काम को बिना किसी कठिनाई के कर लेता है उसी काम को साधारण व्यक्ति बहुत परिश्रम करने पर भी नहीं कर पाता है। (ख) सबल व्यक्ति जिस कार्य को एक बार कर देते हैं उसे निर्बल व्यक्ति पूरा ज़ोर लगाने पर भी नहीं बिगाड़ पाते। तुलनीय : राज० पगांरो बांध्योड़ो हाथां सूं को खुलैनी।

पैसा आते भी दुख देता है और जाते भी—धन आने पर मनुष्य विलासी और अकर्मण्य हो जाता है, इसलिए जब धन नहीं रहता तो उसे बहुत दुःख और कष्ट होता है। तुलनीय : पंज० पैहा आंदे वी दुख देंदा है जांदे बी।

पैसा करे काम बीबी करे सलाम—पैसा रहता है तो बीबी भी अदब करती है। आशय यह है कि पैसे ही से सब आदर करते हैं और उसी से सब काम बनते हैं। तुलनीय : गढ़० पैसा धाणी पैसा पाणी; पंज० पैहा होवे बीबी सोवे; ब्रज० पैसा करै काम, बीबी करै सलाम।

पैसा कहीं डाल में नहीं लगता—दे० 'पैसा कहीं पेड़···'।

पैसा कहीं झाड़ पर नहीं फलता—नीचे देखिए।

पैसा कहीं पेड़ पर नहीं फलता—पैसा परिश्रम करने से ही प्राप्त होता है, मुफ़्त में नहीं मिलता। (क) जब मित्र-परिचित समय-कुसमय उधार माँगने चले आते हैं तो उनको इन्कार करने के लिए ऐसा कहते हैं। (ख) अपव्ययी बच्चों को भी शिक्षार्थ माँ-बाप ऐसे कहते हैं। तुलनीय : पंज० रुपइय्ये किते टैह्नियाँ ते नहीं फलदे; बुंद० पइसा कितऊँ डारन में नई फरत।

पैसा का कोई पूरा नहीं, अक्ल का कोई अधूरा नहीं—

सभी अपने पास पैसे की कमी बतलाते हैं और अपने को सभी बुद्धिमान समझते हैं। तुलनीय : बुंद० पइसा कौ कोऊ पूरो नईं, और अक्कल कौ कोऊ अधूरो नईं।

पैसा गाँठ का, जोरू साथ की—पैसा वही अपना समझना चाहिए जो अपने हाथ में हो और पत्नी वही अपनी समझनी चाहिए जो अपने साथ रहे। आशय यह है कि धन और पत्नी अपने अधिकार या घर में रहने पर ही अपनी रहती है। तुलनीय : ब्रज० पैसा गांठि को जोरू साथ की।

पैसा गाँठ का, विद्या कंठ की—जो धन अपनी गाँठ में हो और जिस विद्या में पारंगत हो वही समय पर काम आती है। अर्थात् दूसरे की सम्पत्ति और दूसरे की विद्वत्ता अपने काम नही आती। तुलनीय : भीली—पूंजी गाँठ नी, विद्या कंठ नी वे ते काम आवे।

पैसा गुरु और सब चेला—पैसा गुरु है और सभी शिष्य हैं। आशय यह है कि धन के सामने सभी माथा झुकाते हैं।

पैसा दे दे अक्ल न दे—पैसा दे देना चाहिए पर सुझाव या उपदेश नहीं देना चाहिए। मूर्खों के प्रति कहते हैं, क्योंकि सुझाव या उपदेश देने पर मूर्ख व्यक्ति उसका उलटा अर्थ लगाते हैं। तुलनीय : अव० पइसा दै देय मुला अकिल न देय; पंज० मत्त दे दे अक्ल (मत्त) न दे; ब्रज० पैसा दै दे, अकलि न दे।

पैसा न कौड़ी कान छिदावैं दौड़ी—पास में पैसा तो है नही कान छिदाने को दौड़ी आई हैं। जब कोई व्यक्ति सामर्थ्य के अभाव में कुछ करने चले तब कहते हैं। तुलनीय : अव० पैसा न कउड़ी कान छेदावैं दउड़ी।

पैसा न कौड़ी, बजार जाय दौड़ी—ऊपर देखिए। तुलनीय : अव० पैसा न कउड़ी, बजार करैं दउड़ी।

पैसा न कौड़ी बजार दौड़ा-दौड़ी—दे० 'पैसा न कौड़ी कान…'। तुलनीय : छत्तीस० पैसा न कौड़ी, हुदक दे लौठी।

पैसा न कौड़ी, बाँकीपुर की सैर—दे० 'पैसा न कौड़ी कान…'।

पैसा न कौड़ी भतार गए होली—रुपया पैसा कुछ है नहीं और गए हैं शराबखाने (होली) में। झूठी शान दिखाने वाले के लिए व्यंग्य से कहते हैं।

पैसा नहीं तो न अक्ल न बुद्धि—पास में पैसा न होने पर बुद्धि भी काम नही करती। आशय यह है कि पैसे से ही सब कुछ होता है, पैसा न होने पर आदमी बुद्धू बन जाता है। तुलनीय : छत्तीस० अकल है बुध है, पैसा नइ ए, त कुछु नइ ए।

पैसा नहीं पास चले नवाब के साथ—पास में पैसा तो है नहीं और नवाब के साथ जा रहे हैं। हैसियत से बाहर काम करने पर कहते हैं।

पैसा नहीं पास तो कैसे सूंघे बास—पास में पैसा नहीं है तो सुगंध कैसे पा सकते हैं। आशय यह है कि धन के बिना भोग-विलास संभव नहीं।

पैसा न हो तो आदमी चरखे की माल है—आशय यह है कि बिना पैसे के आदमी की इज्जत नहीं होती। तुलनीय : माल० पइसा वारारी पैसी ने गरीबरी ऐसी तेसी। पहली पंक्ति यह है : 'पैसा ही रंग रूप है पैसा ही माल है।'

पैसा न हो पास तो मेला लगे उदास—पैसा न होने से मेला भी फीका लगता है, अर्थात् पैसा न होने पर घूमघाम में या त्योहार में भी दिल नहीं लगता। तुलनीय : गढ़० टक्का त टकटका नी त झकझका या पैसा नी पास त मेला लगे उदास; ब्रज० पैसा नहीं पास, मेला लगै उदास।

पैसा पास का, घोड़ी रान की काम आती है—पैसा और घोड़ा अपने अधिकार का ही काम आता है। आशय यह है कि जो वस्तु अपने अधिकार में हो उसी का भरोसा करना चाहिए।

पैसा पास का हथियार हाथ का—ऊपर देखिए।

पैसा पैसा कमाया चप्पनी भर उठाया—बहुत परिश्रम करके अर्जित धन थोड़े समय में खर्च करने या लुटा देने पर कहते हैं।

पैसा पैसा तुम बचा लो रुपया अपनी फ़िक्र खुद कर लेगा—आशय यह है कि थोड़ा-थोड़ा धन इकट्ठा करने से एक दिन वह लंबी पूंजी हो जाता है।

पैसा फट पड़ा है—आकाश फाड़ कर पैसा गिर पड़ा है। जब किसी को अचानक बहुत बड़ा लाभ हो जाय तो कहते हैं।

पैसा बिन माता कहे, जन्मा पूत कपूत—माँ को बेटा बहुत प्यारा होता है लेकिन यदि वह पैसा नहीं कमाता तो माँ भी उसे कपूत कहती है। आशय यह है कि पैसे के बिना कोई आदर नहीं करता; तुलनीय : भीली—दुकड़ा बगर मोटा मोटा रूकाई जाय।

पैसा माँ और पैसा बाप, पैसे बिन बड़ा संताप—धन ही माँ-बाप हैं, धन के बिना संसार में बहुत दुःख उठाना पड़ता है। आशय यह है कि धन होने पर ही सुख मिलता है। धन के अभाव में आदमी को बहुत कष्ट झेलना पड़ता है। तुलनीय : राज० रुपियो माँ, अर रुपियो बाप, रुपियै बिना धणो संताप, बुंद० पइसा आई, पइसा बाई, पइसा

बिन न होय सगाई।

पैसा माँ, पैसा भाई पैसे बिन न होय सगाई—ऊपर देखिए।

पैसा मिले न कौड़ी, घर-घर दौड़ा-दौड़ी—सब घरों में दौडते-फिरते हैं फिर भी कुछ लाभ नहीं होता। जो व्यक्ति जगह-जगह धक्के खाने पर भी कुछ लाभ नहीं उठा पाता उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : माल० पइसो मिले न कोड़ी और बाई फरे दोड़ी।

पैसा ले ना गए हाटे, ककड़ी देख के जिया फाटे—खाली हाथ बाज़ार गए हैं और ककड़ी देखकर ललचाते हैं। (क) जब कोई खाली हाथ कही बाज़ार या मेले में जाय ओर खरीदने की इच्छा हो तो कहते हैं। (ख) बिना धन के किसी वस्तु की इच्छा करने पर भी कहते हैं।

पैसा हाथ का मैल है—पैसा हाथ के मैल के समान है। जिस प्रकार हाथ के मैल को धोकर फेंक दिया जाता है उसी प्रकार धन को भी व्यय कर देना चाहिए। आशय यह है कि पैसा तो आता-जाता रहता है उसके व्यय में कंजूसी करना शोभनीय नहीं है। कंजूसों के प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० पईसो हाथ रो मैल है; हरि० पैसा / पइसा हात्थां का मैल हो सै; पंज० पैहा हथ दी मैल है।

पैसा है तो अनेकों मिलेंगे—धन होने पर काम करने वालों की कमी नही रहती। जब नौकर मालिक से अकड़ दिखाता है या काम करने में आना-कानी करता है तब कहते हैं। तुलनीय : भोज० पइसा रही त केतने जाना पीछे-पीछे घुमिहें; पंज० पैहा है तो बड़े मिलणगे।

पैसा हो हाथ तो सबसे ऊँची जात—धनवान की जाति या धर्म कोई नही पूछता तथा उसका सभी आदर करते हैं। जब कोई निम्न जाति का मनुष्य अपने धन के बल से किसी उच्च जाति से विवाह आदि के संबंध स्थापित कर ले तो धन की महत्ता दिखाने के लिए उसके प्रति इस लोकोक्ति को कहते है। तुलनीय : गढ़० पैसा कि जात अर पैसा कि थात।

पैसे का कोई पूरा नहीं, अक़्ल को कोई अधूरा नहीं—दे० 'पैसा का कोई पूरा नही···'।

पैसे का बूढ़ा, टका मुड़ाई—दे० 'टके की बुढ़िया नौ···'।

पैसे का सब खेल है—आशय यह है कि संसार के सभी काम और मौज-मज़े पैसे से ही होते हैं। तुलनीय : बुंद० पइसा को खेल हैं; पंज० पैहे दी सारी खेड़ है; ब्रज० पैसा को सब खेल ऐ।

पैसे की इमली क्या खट्टी क्या मीठी—सस्ती वस्तु में गुण-दोष देखने वाले के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। आशय यह है कि सस्ती वस्तु के गुणावगुणों पर अधिक ध्यान देना मूर्खता है।

पैसे की रूई, दो पैसे धुनाई—रूई की क़ीमत तो एक पैसा है, किन्तु धुनाई उसकी दुगुनी (दो पैसे) है। जब किसी वस्तु की क़ीमत की अपेक्षा उस पर अन्य खर्चे अधिक हों तब ऐसा कहते हैं. तुलनीय : भोज० पइसा क रूई दू पइसा धुनइये।

पैसे की हाँडी गई कुत्ते की जात पहचानी गई—दे० 'टके की हाँडी गई···'।

पैसे की हाँड़ी भी ठोक-बजा कर ली जाती है—दे० 'टके की हाँडी भी···'।

पैसे के कोदों, टका पिसाई—दे० 'पैसे की रूई···'।

पैसे के लिए आकाश में थींगरा लगाते हैं—आशय यह है कि धन के लिए मनुष्य संभव-असंभव, अच्छे-बुरे सभी काम करता है। तुलनीय : बुंद० पइसा के लाने सरगे थींगरा लगाउत।

पैसे के लिए सब करम करने पड़ते हैं—ऊपर देखिए। तुलनीय : ब्रज० पैसा कूँ सब करम करने परें।

पैसे के लिए समुंदर भी पार करना पड़ता है (क) धन-प्राप्ति के लिए मनुष्य को बहुत दूर-दूर जाना पड़ता है। (ख) लालची व्यक्तियों के प्रति भी व्यंग्य से कहते हैं जो धन के लिए सागर पार भी जाना स्वीकार कर लेता है। तुलनीय : राज० पईसरी खातर दिल्ली जाय परो।

पैसे के सब सगे—धन होने पर पराए भी अपने बन जाते हैं किंतु धन न होने पर अपने भी बेगाने हो जाते हैं। तुलनीय : पंज० पैहे दे सारे सक्के; ब्रज० पैसा के सब सगे।

पैसे के सब साथी—ऊपर देखिए। तुलनीय : ब्रज० पैसा के सब साथी।

पैसे के सौ गुलाम—(क) धन होने पर मन चाहे सेवक रखे जा सकते हैं। (ख) धन के सभी गुलाम होते हैं। तुलनीय : बुंद० पइसा के सौ गुलाम; पंज० पैहेदे सौ गुलाम।

पैसे बिन अक़्ल रोती है—धन न होने से बुद्धि का उपयोग नहीं हो पाता। अर्थात् कितना भी बुद्धिमान व्यक्ति क्यों न हो किंतु धन बिना आगे नहीं बढ़ पाता या नाम नहीं कमा पाता। तुलनीय : राज० पईसे बिना बुध बापड़ी; पंज० पैहे बगैर मत रोंदी है।

पैसे बिना कुछ नहीं होता—स्पष्ट है। तुलनीय : सिं० उत्थव नाणो वे हब नाणो नाणें बिना नर वेगाणों; पंज० पहै बगैर कुज नहीं हुंदा।

पैसे बिना परसाद भी नहीं मिलता—पैसे के बिना

प्रसाद भी नहीं मिलता। आशय यह है कि धन के अभाव में आदमी की कोई क़ीमत नहीं होती। तुलनीय : सिं० पैसे बिना परसाद हरवा दिए न हत्थ में; ब्रज० पैसा बिना परसाद ऊ नायें मिलै।

पैसे से पैसा आता है—अर्थात् जो व्यक्ति धनवान होते हैं उन्हें ही खूब धन मिलता है। निर्धनों को कुछ नहीं मिलता वे सदा अभाव में ही रहते हैं। तुलनीय : राज० धन कने धन आवं, या पइसे सूं पईसो हुवे; बुंद० पइसा से पइसा आउत। पंज० पैहा पैहे नूं खिचदा है।

पैसे से सब अक्ल आ जाती है—पैसा हो तो प्रत्येक काम करने की बुद्धि आ जाती है। आशय यह है कि धनवान के सभी काम हो जाते है। तुलनीय : बुंद० पइसा में सबरी अक्कल आऊत; पंज० पैहे नाल सारी मत आ जांदी है।

पैसों की ही खीर है—धन से ही खीर मिलती है। अर्थात् अपनी अभीप्सित वस्तु प्राप्त होती है। धन से ही भोग-विलास किया जा सकता है। तुलनीय : राज० पईसारी खीर है।

पोखरा खुदा नहीं घड़ियाल आ गया किसी कार्य के पूरा न होने से पहले ही जब उससे लाभ उठाने वाले तैयार हो जाते हैं तब व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मैथ० अब ही पोखरा खनयबे न कयल तबले घरियारडेरा डालल; भोज० पोखरा अबहीं खंनही के बा तबले घरियार डेरा डाल देहसल।

पोतड़ों के अमीर—(क) जो व्यक्ति जन्म से ही धनवान हो उसके प्रति कहते हैं। (ख) जो व्यक्ति धनी होने की झूठी शान दिखाए उसके प्रति भी व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : माल० पोतडा रा अमीर; अं० Born with a silver spoon in the mouth.

पोतड़ों के नशेड़ी हैं—बचपन से नशा करने वाले के या जिसके पूर्वज नशेड़ी हों उसके प्रति कहते हैं।

पोथा सो थोथा, पाठ सो साथै—मनन की हुई तथा कंठस्थ विद्या ही विद्या है, पोथी में लिखी कुछ नहीं, क्योंकि समय पर कंठस्थ विद्या ही काम आती है। तुलनीय : राज० पोथा सैं थोथा।

पोथी न पत्रा देखें चलें यात्रा—पंडितजी के पास पत्रा-पोथी तो है नहीं, चलें हैं मुहूर्त बताने। (क) साधनहीन व्यक्ति जब कोई कार्य सम्पन्न करने चलता है तब ऐसा कहते हैं। (ख) ढोंगी पंडितों के प्रति भी व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० पोथी न पतरा देखे चललन जतरा।

पोथी न पत्रा, विद्या जाने सत्रा—पोथी-पत्रा तो कुछ है नहीं और अपने को सत्तरह विद्याओं का विद्वान बताते हैं। अनपढ़ व्यक्ति विशेषतया ब्राह्मण जब किसी से झूठ ही कहत है कि वह पढ़ा-लिखा है तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : गढ़० पोथी न पातड़ी गल क्या बामण।

पोपले से हड्डी नहीं चबती—जिसके मुंह में दांत नहीं हैं वह हड्डी नहीं चबा सकता। अर्थात् निर्बल व्यक्ति से कठिन कार्य नहीं हो सकते।

पोपाबाई का राज है—कुशासन या दुर्व्यवस्था होने पर कहते हैं। इस लोकोक्ति के संबंध में कहते हैं कि पोपाबाई गुजरात की एक छोटी सी जागीर की स्वामिनी थी। उसके राज्य में इतनी कुव्यवस्था थी कि उसका नाम ही कुशासन और अंधेरगर्दी का प्रतीक बन गया। तुलनीय : ब्रज० पोपा बाई कौ राजै।

पोपाबाई राम-राम! नाम कैसे जाना? कहा शकल देखकर—किसी ने पोपाबाई से राम-राम कहा तो पोपाबाई ने पूछा कि तुमने मेरा नाम कैसे जाना। उसने उत्तर दिया कि तुम्हारी सूरत देखकर। जिनकी सूरत से ही मूर्खता टपकती हो उनके प्रति व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : राज० पोपाबाई राम-राम, नाँव कियाँ जाण्यो? उणियारो देख' र।

पोह सबिभल पेख जे, चैत निरमल चंद; डंक कहै हे भड्डली, मणहूता अन मंद—डंक भड्डरी से कहते हैं कि यदि पौष मास में घने बादल और चैत्र में चद्रमा हो अर्थात् बादल न हों तो अन्न रुपए के एक मन से भी अधिक सस्ता बिकता है। अर्थात् ऐसी स्थिति में खेती की उपज बहुत होती है।

पौनी (पूनी) को बछिया मारी, गौना सुंघाते फिरे—एक पौनी (कपास का एक छोटा टुकड़ा जो धुनकर कातने के लिए बनाया जाता है) को बचाने के लिए बछिया को मारा किंतु अब उसी को सूत का बड़ा बडंल (गौना) सुंघा रहे हैं। जब कोई साधारण हानि से बचने के प्रयत्न में किसी बड़ी विपत्ति में फँस जाय या उसे लेने-के-देने पड़ जायँ तो कहते हैं। इस लोकोक्ति के संबंध में एक कहानी कही जाती है : एक जुलाहा बैठा सूत कात रहा था कि एक बछिया पीछे से एक पौनी उठा कर भागने लगी। जुलाहे को यह देखकर क्रोध आ गया और उसने पास पड़ा डंडा उठा कर बछिया को मार दिया। बछिया चोट को सह न सकी और मूर्छित हो कर गिर पड़ी। यह दृश्य देखकर जुलाहा घबरा गया और सोचने लगा कि यदि किसी हिंदू ने यह दृश्य देख लिया तो उसकी जान बचनी कठिन हो जायगी। उसने उसे खड़ा करने का प्रयत्न किया किंतु बछिया जरा भी नहीं हिली-डुली।

तैबं वह घर के अंदर से सूत का बड़ा बंडल निकाल कर लाया और उसके नाक के पास रख कर कहने लगा कि यह पूरा बंडल तू खा ले, पर जल्दी उठकर खड़ी हो जा। बछिया अब धीरे-धीरे होश में आने लगी और थोड़ी देर में उठकर एक ओर चल दी तो जुलाहे की जान में जान आई। वह ख़ुदा का नाम लेकर अपने घर आया और फिर कभी ऐसा न करने की उसने क़सम खाई।

पौबारा हैं—चौपड़ के खेल में 'पौबारा' का दाँव बहुत अच्छा माना जाता है। किसी को बड़े लाभ के मिलने या किसी बिगड़ी बात के बन जाने पर कहते हैं।

पौस अध्यारी सत्तमी जौ पानी नहि देइ; तौ आद्रा बरसै सही, जल थल एक करेइ—पूस मास के कृष्ण पक्ष की सप्तमी तिथि को यदि वर्षा न हो तो समझ लेना चाहिए कि आद्रा नक्षत्र में ख़ूब जल गिरेगा।

पौस अध्यारी सत्तमी, बिन जल बादर होय; सावन सुदि पूनो दिवस बरषा अवसिहि होय—पौष के कृष्ण पक्ष की सप्तमी तिथि को यदि बिना पानी वाले बादल हों तो श्रावण की पूर्णिमा को अवश्य वर्षा होगी।

पौस अमावस मूल को, सरसै चारों बाय; निश्चय बांधो झोंपड़ो, बरषा होय सिवाय—पौष मास की अमावस्या को यदि मूल नक्षत्र हो और वायु चारों ओर की चलती हो तो अधिक वर्षा होना निश्चित समझना चाहिए, इसलिए छप्पर इत्यादि छाने में देर नहीं करनी चाहिए।

पौस मास दसमी दिवस, बादल चमकै बीज; तौ बरसै भर भादवो, साधौ खेलो तीज—पौष मास की दशमी को यदि बादल हों और यदि बिजली चमके तो भाद्रपद के पूरे महीने ख़ूब वर्षा होती है, इसलिए लोगों को निश्चित होकर त्योहार मनाने चाहिए।

पौह जाड़े का छोह—पौष मास शीतकाल का सबसे ठंडा महीना माना जाता है।

प्याज़ के छिलके उतारना अच्छा नहीं है—प्याज़ के छिलके तो जितने उतरेंगे उतने ही उतरते जाएँगे। (क) किसी बात को बढ़ाने से कोई लाभ नहीं होता बल्कि निपटाने से ही होता है। (ख) किसी के भेद को नहीं खोलना चाहिए क्योंकि किसी का भेद खोलने पर अपने भेद भी कोई-न-कोई अवश्य खोल देता है। तुलनीय : राज० कांदेरा छूंतरा उतारणा चोखा कोनी; पंज० गडे दे सिकड़ उतारना चंगा नहीं हुँदा।

प्याज़ के छिलके जितने उतारो, उतने उतरें—प्याज़ के छिलके जितने भी उतारें वे समाप्त नहीं होते। अर्थात् किसी झगड़े को जितना बढ़ाना चाहो वह उतना ही बढ़ जाता है। झगड़ा करने वालों को समझाने के लिए कहते हैं। तुलनीय : राज० कांदैरा छूंतरा उतारे जिता ही उतर आवै। पंज० गंडे दे सिकँड जिन्ने उतारो उन्ने उतरण।

प्याज़ के से छिलके उखाड़ दिए—किसी के रहस्य को खोल देने पर कहते हैं। तुलनीय : हरि० ढक्के ढोल उघाड़णा।

प्याज़ न बेसन, खाएंगे पकौड़े—न तो प्याज़ है और न बेसन लेकिन पकौड़े खाना चाहते हैं। साधनहीन व्यक्ति जब बड़ी-बड़ी आकांक्षाएँ करता है तब उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : बघे० पियाज न बेसन, खाव फुलउरिन।

प्याज़ भी खाए, मुक्के भी खाए और रुपए भी दिए—जब कोई व्यक्ति लालचवश बिना सोचे-समझे कोई काम करके लाभ के स्थान पर हानि करा बैठे तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। इस लोकोक्ति का सम्बन्ध एक रोचक कथा से बताया जाता है : एक बार दो व्यक्तियों में किसी काम को करने की शर्त लगी; न कर पाने पर दण्डस्वरूप तीन बातें रखी गईं जिनमें से एक को करने का प्रण किया गया। पहली सौ प्याज़ खाने की थी, दूसरी सौ मुक्के खाने की तथा तीसरी और अंतिम थी सौ रुपये देने की। एक व्यक्ति जब उस काम को नहीं कर पाया तो दूसरे ने उससे पूछा कि वह तीनों बातों में से किसको पूरा करेगा। जो व्यक्ति हारा था, वह बहुत लालची था। उसने सोचा कि रुपए देना तो मूर्खता होगी और मुक्के खाने पर तो शरीर का भूसा बन जाएगा इसलिए अच्छा यही है कि प्याज़ खाए जायँ। यह सोचकर वह प्याज़ खाने को तैयार हो गया। प्याज़ गिनकर मँगवा लिए गए और लालची साहब एक-एक करके खाने लगे। थोड़े से प्याज़ खाने के बाद उसकी आँखों और नाक से पानी बहने लगा, किन्तु वह जी कड़ा करके खाता रहा। धीरे-धीरे खाते-खाते नब्बे प्याज़ तक खा गया किन्तु उससे अधिक खाना उसे असम्भव दिखने लगा। उसने देखा कि अधिक खाने पर प्राण जाने का भय है तो उसने सोचा कि मुक्के खा लिए जाएँ तो रुपये भी न देने पड़ें और इन प्याज़ों से भी पीछा छूटे। अतः उसने कहा कि प्याज़ तो मुझसे खाए नहीं जा रहे, इसलिए तुम सौ मुक्के मार लो और मेरा पीछा छोड़ो। दूसरे व्यक्ति ने कहा कि एक बार फिर सोच लो कहीं ऐसा न हो कि सौ मुक्के न खा पाओ और बाद में रुपए भी देने पड़ें। वह बोला, 'मुक्के खाने में क्या ज़ोर लगता है ? तुम मारो मैं सह लूँगा। मेरे

पास सौ रुपए नहीं हैं जो तुम्हें निकालकर दे दूं।' अब उसके मुक्के पड़ने शुरू हुए। पचास तक तो किसी प्रकार वह सहता रहा किन्तु उसके बाद उसने चिल्लाना शुरू कर दिया। किसी प्रकार नव्वे तक पहुँचा किन्तु उसके बाद न सह पाया और बेहोश होकर गिर पड़ा। थोड़ी देर बाद होश में आया तो उससे बाक़ी दस मुक्कों को खाने के लिए कहा गया, किन्तु उसमें इतना साहस बाक़ी नहीं बचा था कि दोबारा बेहोश होता। उसके अंग-अंग में दारुण पीडा हो रही थी सो और कोई चारा न देखकर उसने सौ रुपए देकर पीछा छुड़ाना उचित समझा। इस प्रकार उसे लालच में फँसे होने पर प्याज़ भी खाने पड़े, मुक्के भी खाने पड़े तथा रुपए भी देने पड़े।

प्यादे ते फर्जी भयो, टेढ़ो-टेढ़ो जाय—शतरंज में प्यादा फ़र्जी हो जाने पर टेढ़ी चाल चलने लगता है। अर्थात् नीच व्यक्ति बड़ा हो जाने पर घमण्ड करने लगता है।

प्यार कहा नहीं, किया जाता है—यथार्थतः जो कहता है कि मैं प्यार करता हूँ वह प्यार नहीं करता और जो सच-मुच प्यार करता है वह कभी कहता नहीं। तुलनीय : पंज० पयार कहके नई करके हुँदा है।

प्यास लगने पर कुआं नहीं खोदा जाता—जब प्यास लगे तभी कुआँ नहीं खोदा जाता है क्योंकि कुआँ खोदने में बहुत समय लगता है और उतने समय में प्यासा प्राण ही त्याग देगा। आशय यह है कि किसी काम को करने के उपाय पहले से ही तैयार रखने चाहिए नहीं तो उससे पार पाना कठिन हो जाता है। तुलनीय : राज० तिस लाग्यां कूवो थोड़ो ही खुदै; पंज० तरे लगण उते खू नई कड्या जांदा।

प्यासा कुएँ के पास जाता है, कुआं प्यासे के पास नहीं आता—अर्थात् जिसकी ग़रज़ होती है वही दूसरे के पास जाता है। जब कोई ग़रज़ी आदमी दूसरे के पास स्वयं न जाकर उसके आने की प्रतीक्षा करे तब कहा जाता है। तुलनीय : अव० पिआसा कुआँ कै लगे जात है, कुआँ पिआसे कै लगै नाहीं जात; मरा० तहानेला विहीरी जवळ जातो, विहिर तहानेल्याकडे जात नाहीं; भोज० पियासल इनारे के पास आवेला इनार पियासल के पास नहीं जाला; ब्रज० प्यासौ कूआ पै जायै न कि कूआ प्यासे पै।

प्रकृत बीर कौ अंतहूं, परतु मंद नहिं तेज—प्रकृति से अर्थात् जन्मजात वीर मरते समय तक तेजयुक्त रहते हैं, उनका तेज कभी मद्धम नहीं होता, अर्थात् वे मर जाते हैं किन्तु अपने यश और मान पर आँच नहीं आने देते।

प्रत्यक्षं किमनुमानम्—प्रत्यक्ष की उपस्थिति में अनु-मान की क्या आवश्यकता है? आशय यह है कि जब कोई चीज सामने उपस्थित हो तो उसके विषय में अनुमान लगाना व्यर्थ है।

प्रथम ग्रासे मक्षिका पातः—पहले कौर में ही मक्खी पड़ी। जब किसी कार्य को प्रारम्भ करते ही विघ्न पड़ जाय तो कहते हैं।

प्रदीप न्याय—जिस प्रकार दीपक, तेल और बत्ती के सहयोग से जलकर प्रकाश उत्पन्न करता है उसी प्रकार शरीर सत्व, रज और तम गुणों को धारण करके सांसारिक कर्म-व्यापार करता है। प्रायः अच्छी या लाभदायक वस्तु विभिन्न वस्तुओं के योग से बनती है और उस योग के कारण ही उसमें विचित्र गुण उत्पन्न होते हैं।

प्रधानमल्लनिर्वहणन्यायः—प्रधान शत्रु को नष्ट करने का न्याय। सर्वाधिक शक्तिशाली शत्रु के पराजित होने के पश्चात् कम शक्तिवाले शत्रु अपने आप जीत लिए जाते हैं।

प्रपानकरसन्याय—शर्बत का न्याय। प्रस्तुत न्याय का प्रयोग अनेक वस्तुओं के मिश्रण से उद्भूत नई वस्तु के सन्दर्भ में किया जाता है। शर्बत भी कई वस्तुओं के मिश्रण का ही फल है।

प्रभु की माया कहीं धूप कहीं छाया—ईश्वर की लीला बड़ी विचित्र है। कोई सुखी है तो कोई दुखी, कोई धनी है तो कोई ग़रीब।

प्रभुता पाय काहि मद नाहीं—प्रभुता अर्थात् अधिकार पाकर किसको अभिमान नहीं होता? अर्थात् सभी को हो जाता है। तुलनीय : मरा० सत्तेचा मद कोणाला येत नाहीं।

प्रमाणवत्त्वदापातः प्रवाहः केन वार्यते—प्रामाणिकता-पूर्वक उपस्थित प्रवाह को कौन रोक सकता है? आशय है, जिस तर्क को प्रमाण-पुरस्सर उपस्थित किया जाता है, वह मान्य होता है।

प्रयोजनमनुद्दिश्य न मन्दोऽपि प्रवर्तते—मन्द बुद्धि वाला पुरुष भी बिना उद्देश्य के किसी कार्य में प्रवृत्त नहीं होता। आशय यह है कि प्रत्येक व्यक्ति किसी उद्देश्य से ही कोई कार्य करता है।

प्रश्न गेहूँ उत्तर जौ—ऊटपटाँग जवाब देने पर कहते हैं। तुलनीय : मल० अरि एलप, पयरू अन्जाषि; फ़ा० सवाल गंदुम जवाब चीनम।

प्रसन्न हुई भवानी, जूठन लागी खान—भवानी प्रसन्न

हुई तो जूठन तक खाने लगीं और पहले अच्छे भोजन की ओर देखती नहीं थी। जो व्यक्ति प्रसन्न होने पर ओछे से ओछा काम कर डाले किन्तु अप्रसन्न होने पर अच्छा भी काम न करे उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : बुंद० परसन भई भवानी, कौरन लागी खान।

प्राण जाई पर वचन न जाई –बात वाले बात के आगे अपनी जान की परवाह नही करते। (क) दृढ़प्रतिज्ञ व्यक्ति के प्रति कहा गया है। (ख) व्यंग्य से हठी को भी कहते हैं। तुलनीय : गढ़० प्राण जांय पर वचन न जाई।

प्राण बचे लाखों पाए—किसी बड़ी विपत्ति से छुटकारा मिलने पर कहते है। तुलनीय : मल० धनत्तेक्काळ ज़ीवन् प्रधानम्; पंज० जाण बची लखां पाए; अं० Life is better than bags of Gold.

प्रातःकाल करो असनाना, रोग दोष तुमको नहिं आना – प्रातःकाल स्नान करने से किसी प्रकार का रोग नही होता।

प्रातःकाल खाट ते उठि कै पिअइ तुरतै पानी, कबहूं घर में बैद न अइहैं, बात घाघ कै जानी—घाघ कहते है कि यदि प्रातः सोकर उठते ही पानी पिया जाय तो घर में कभी वैद्य नही आते। अर्थात् शरीर में कोई रोग नही होता।

प्रापाणक न्याय– जिस प्रकार घी, शक्कर, मैदा आदि कई वस्तुओं के एकत्र करने से पकवान बनते हैं उसी प्रकार कई उपादान एक स्थान पर हो जाने से उनके योग से कई सुन्दर वस्तुएँ तैयार हो जाती हैं। साहित्यिक विभाव, अनुभाव आदि द्वारा रस का परिपाक सूचित करने के लिए इसका प्रयोग किया करते थे।

प्रायोगच्छति यत्र भाग्य रहित स्तत्रैव यान्तापदः—भाग्यहीन जहाँ भी जाता है आपदा आ ही जाती है।

प्रारम्भ ठीक तो अन्त ठीक—ऐसा विश्वास किया जाता है कि यदि किसी चीज़ का आरम्भ अच्छा होता है तो उसका अन्त भी अच्छा होता है। तुलनीय : सिं० अगियारी तदहिं सरहीं जदे पछारी सरहीं; अं० Well begun is half done.

प्रासादवासि न्याय–महल में रहने वाला यद्यपि चौबीसों घंटे महल में नही रहता, उससे बाहर भी रहता है। किन्तु फिर भी लोग उसे महल में रहने वाला ही कहते हैं। आशय यह है कि जहाँ जिस विषय या वस्तु की प्रधानता रहती है वहाँ उसी का उल्लेख किया जाता है।

प्रीत करे का यह फल पाया, आप थुके और हमें थुकाया—प्रेम करने का यह फल मिला कि तुम पर भी लोगों ने थूका और मुझ पर भी। प्रेम करने की व्यर्थता पर कहते हैं क्योंकि उसमें दोनों की बदनामी होती है।

प्रीत का निबाहना खांड़े की धार पर चलना है—मित्रता का निर्वाह करना तलवार की धार पर चलने के समान है। आशय यह है कि मित्रता का निभाना बड़ा मुश्किल है। किसी की मित्रता अधिक दिन तक नहीं निभती। तुलनीय : हरि० यारों के घर मौत दूर सं; अव० परीत निबाहब जइ से गंड़ासा कै धार। (प्रीत का निबाहना खाँड़े की धार है)।

प्रीत की रीत निराली—प्रेम का ढंग कुछ और ही होता है।

प्रीत छिपाए ना छिपे—प्रेम छिपाने से नहीं छिपता। तुलनीय : राज० प्रीत छिपाई ना छिपै; ब्रज० प्रीति छिपाये ना छिपै।

प्रीत न टूटे अनमिले, उत्तम मन की लाग; सौ जुग पानी में रहे, चकमक तजे न आग –भले तथा सच्चे लोगों की प्रीति स्थायी होती है जिस प्रकार कि चकमक पत्थर हज़ारों वर्षों तक पानी में पड़ा रहता है फिर भी रगड़ से उसमें आग निकल जाती है।

प्रीत तो ऐसी कीजिए जैसे लुटिया डोर, अपना गला फँसाय के पानी लावे बोर—प्रेम करे तो ऐसा करे जैसा लोटा-डोर करते हैं। मित्र के लिए लोटा अपना गला फँसाकर भी पानी भर लाता है। आशय यह है कि मित्र के लिए कष्ट सहने वाला व्यक्ति ही सच्चा मित्र है।

प्रीति न जाने जात कुजात, नींद न जाने टूटी खाट; भूख न जाने बासी भात, प्यास न जाने धोबी घाट—प्रेम जात-पात, नींद, बिस्तर, भूख स्वादिष्ट-अस्वादिष्ट तथा प्यास शुद्ध-अशुद्ध की पहचान नही करती। अर्थात् इनकी तीव्रता होने पर मनुष्य को उचित-अनुचित नही सूझता।

प्रीति बिना नहिं भगति दृढ़ाई—बिना प्रीति के सच्ची-भक्ति नहीं होती। ढोंगियों के प्रति कहते हैं।

प्रेम और खुशबू छिपाने से नहीं छिपती—ये दोनों अपने आप ही प्रकट हो जाते हैं। प्र० निस्चै यह ओहि कारन तपा; परिमल पेम न औछे छपा—जायसी। मूलतः यह लोकोक्ति फ़ारसी लोकोक्ति 'इश्क़-ओ-मुश्क रा नतवां नहुफ़्तन' का अनुवाद है। कदाचित् जायसी ही हिन्दी में इसके प्रथम प्रयोक्ता हैं। तुलनीय : पंज० पयार अते खसबू-लुकान नाल नईं लुकदी।

प्रेम के आँखें नहीं होतीं—इश्क़ में लोग जाति-धर्म आदि का भेद-भाव नहीं रखते, इसीलिए ऐसा कहते हैं।

तुलनीय : मल० कामत्तिनु कण्णिल्ल; पंज० पयार दिआं अखां नईं हुंदियां; अं० Love is blind.

प्रेम छिपाने से नहीं छिपता—यदि कोई चाहे कि प्रेम छिप जाए तो यह असम्भव बात है। प्रेमी की हरकतें ही उसका भेद खोल देती हैं। तुलनीय : राज० प्रीत छिपायोड़ी को छिपेनी।

प्रेम न देखे जात-कुजात, भूख न देखे जूठा भात—दे० 'प्रीत न जाने जात-कुजात······'। तुलनीय : बुंद० प्रेम न देखे जात-कुजात, भूख न देखे जूठो भात।

प्रेम न बाड़ी ऊपजै, प्रेम न हाट बिकाय—प्रेम न तो खेत में उत्पन्न होता है और न ही बाज़ार में बिकता है। अर्थात् प्रेम का सम्बन्ध दिल से है और यह दिल में ही उत्पन्न होता है।

प्रेम पंथ ऐसो कठिन, सब सों निबहत नाहिं—प्रेम का मार्ग इतना कठिन है कि प्रत्येक व्यक्ति इस पर नहीं चल पाता, केवल वही चल पाते हैं जो जान देने के लिए भी तैयार हों।

प्रेम बड़ा या पकवान?—प्रेम श्रेष्ठ है पकवान से, क्योंकि अच्छे-से-अच्छा भोजन भी यदि प्रेम से न दिया जाय तो वह स्वादिष्ट नही लगता, उसमें अपमान की कटुता आ जाती है और साधारण भोजन भी यदि प्यार से दिया जाय तो वह बहुत स्वादिष्ट लगता है। जब किसी निर्धन का प्रेम से खिलाया गया भोजन बहुत स्वादिष्ट लगता है तो कहते हैं। तुलनीय : भीली—परेम बड़ो के पकवान; पंज० पयार बड़ा या पूड़ा।

प्रेम बिबस मुख आव न बानी—प्रेम में विवश मनुष्य के मुख से बोल भी नहीं निकलता। वह आँखों से ही बातें करता है। तुलनीय : अं० Words are few when heart is full.

प्रेम में नेम कहाँ—प्रेम में कोई नियम-क़ानून नहीं चलता। प्रेमी सदा से अपनी मनमर्जी करते आए हैं और करते रहेंगे। तुलनीय : मरा० प्रेमांत नेम कुठला टिकायला; अव० परेम मा नेम नाही; ब्रज० प्रेम में नेम कहाँ।

फ

फ़क़त तावीज़ से ही काम नहीं निकलता, कुछ कमर में भी बूता चाहिए—केवल तावीज़ से ही काम नहीं चलेगा कुछ कमर में भी दम होना चाहिए। आशय यह है कि (क) केवल देवी-देवताओं को मनाने से काम नहीं चलता कुछ परिश्रम भी करना चाहिए। (ख) केवल यंत्र-तंत्र से ही मनोरथ सिद्ध नहीं होता, पुंसत्व और शक्ति भी आवश्यक है।

फ़क़ीर अपनी कमली में ही खुश—फ़क़ीर या साधु अपनी कमली (कंबल) में ही खुश रहता है। (क) फ़क़ीर बहुत संतोषी होते हैं। (ख) किसी निर्धन व्यक्ति के संतोषी होने पर भी कहा जाता है जो थोड़ा मिलने पर भी खुश रहता है।

फ़क़ीर क़र्ज़दार, लड़का तीनों नहीं समझते—जब तक कि इन तीनों की इच्छा पूरी न की जाय ये कुछ समझने या स्वीकार करने के लिए सहमत नही होते।

फ़क़ीर की ज़बान किसने कीली है?—फ़क़ीर की ज़बान को किसने बंद किया है? अर्थात् उसकी ज़बान पर कोई ताला नहीं लगा सकता, वह जो चाहे कहने के लिए स्वतंत्र है। तुलनीय : पंज० फकीर दी जीब नूं किन बनया है; ब्रज० फकीर की जुबान कौने कीली है।

फ़क़ीर की झोली में सब कुछ—(क) फ़क़ीर जो भी चाहे दे सकता है। अर्थात् वह अपनी आध्यात्मिक शक्ति के बल पर जो कुछ भी माँगा जाए वह दिलवा सकता है। (ख) फ़क़ीर की सारी संपत्ति उसकी झोली में ही होती है। तुलनीय : पंज० फकीर दी झोली विच सबकुज; ब्रज० फ़कीर की झोरी में सब कछू।

फ़क़ीर की सूरत ही सवाल है—फ़क़ीर के कहीं जाने या दिखाई देने का ही अर्थ है कि वह कुछ माँग रहा है। अर्थात् फ़क़ीर को देखते ही कुछ दे देना चाहिए, उसके मांगने की प्रतीक्षा न करनी चाहिए।

फ़क़ीर के लिए तीन बात रियाज़, फ़ाक़ा और क़नाअत—फ़क़ीर के लिए उपवास (फ़ाक़ा), संतोष (क़नाअत) और परिश्रम या साधना (रियाज़) ये तीन चीज़ों की आवश्यकता है। 'फ़क़ीर' में ये तीन अक्षर होते हैं। इन्हीं तीनों से फ़ाक़ा, क़नाअत और रियाज़ बनते हैं)।

फ़क़ीर को कंबल ही दुशाला—(क) विरक्त, साधु या मस्त मौला के लिए ऐसी चीज़ होनी चाहिए जिससे काम चल जाय। अच्छी-बुरी से क्या मतलब? (ख) निर्धन के लिए सामान्य चीज़ें ही बहुत महत्त्व की होती हैं। तुलनीय : पंज० फ़कीर दा कंबल ही शाल।

फ़क़ीर को जहाँ रात हो गई वहीं सराय है—फ़क़ीर या मस्त मौला संसार में कहीं भी ठहर सकता है।

फ़क़ीर रा ब मुजावला चे कार—संतों को लड़ाई-झगड़े

से क्या काम ? अर्थात् कुछ भी नहीं।

फ़क़ीरी शेर का बुरक़ा है— साधु हो जाने पर आदमी में बहुत शक्ति और निर्भीकता आ जाती है और उसकी वेश-भूषा के आतंक से ही लोग डरते हैं क्योंकि वह कभी भी अपनी आध्यात्मिक शक्ति से किसी को भी हानि पहुँचा सकता है।

फ़जर फ़जर को नाह कुछ नहीं—सुबह के समय किसी बात पर 'नहीं' कर देना अच्छा नहीं होता। खासकर जब कोई ग्राहक सुबह-सुबह सौदा लेने से इनकार कर देता है तब दूकानदार ऐसा कहते हैं।

फटक चंद गिरधारी, जिनके पास न लौटा थारी— नीचे देखिए। तुलनीय : मरा० फटकचंद गिरधारी जवळ नहीं भांड़ें ची थाली।

फटकचंद गिरधारी, जिनके लोटा न थारी—बिल्कुल तनहा आदमी को कहते हैं जिसके पास कुछ भी न हो। तुलनीय: अव० फटकचन्द गिरधारी न घर लोटा न घर थारी; ब्रज० फटक चन्द गिरधारी लोटा न थारी।

फटती पर चाचा छुए भतीजे के पाँव—आपत्ति आने पर चाचा भतीजे के पाँव पड़ता है। आशय यह है कि बुरे दिन आने पर छोटों की भी ख़ुशामद करनी पड़ती है। तुलनीय : राज० काका करै भतीजने गांड फाटतो गोठ।

फटती है तो बाप याद आते हैं—आपत्ति आने पर पिता की याद आती है। विपत्ति में अपने याद आते हैं। जो व्यक्ति सुख के समय में अकेला मौज उड़ाता रहे और विपत्ति आने पर घर वालों की सहायता चाहे तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : भीली—मार आवे न मामा चीते आवे, हाऊ आवे ने खूब भावे; पंज० फटदी है ते पिओ याद आंदा है।

फटा कपड़ा, बूढ़ा बाप, काली जोरु, तीन चीज की शर्म नहीं— आजकल लोग प्राय: इन चीजों को अपनाने में शरमाते हैं। उन्हीं से कहा गया है कि इनसे शर्म न आनी चाहिए।

फटा दूध और फटा मन जुड़ते नहीं—अर्थ स्पष्ट है। तुलनीय : भोज० फाटल दूध आ फाटल मन जूटे ला।

फटा दूध जमता नहीं—आशय यह है कि जिस व्यक्ति से दिल टूट जाता है फिर उससे मेल नहीं हो पाता। तुलनीय : भोज० फाटल दूध नाँ जमे; पंज० फटया दुद जमदा नई।

फटा मन और फटा दूध—ये दोनों फिर अपनी स्थिति में कभी नहीं आ सकते। तुलनीय : भोज० फाटल मन अउरी फाटल दूध कब्बो ना मिलेला; हरि० टूट्या ओड़ फेर मिल ज्या पर जोड़ तँ दीक्खँगा; मरा० बिघडले मन नि नासले दूध पुन: जुळत नाहीं।

फटी जूती पग्ग पुरानी, ढाई घर की यही निशानी— खत्रियों का एक जातिभेद 'अढ़ाई घर' है जो प्राय: गरीब होते हैं। उन्हीं के विषय में पंजाबियों में यह कहावत प्रसिद्ध है। अब इसका प्रयोग किसी भी ग़रीब के लिए यदि वह विशिष्ट जाति (ग़रीब जाति) का हो तो किया जाता है जैसे 'फटा पजामा' का अर्थ कम्युनिस्ट हो गया है।

फटे अकास कहाँ लग सीवें—(क) असंभव काम नहीं किया जा सकता। (ख) अपने वश का ही काम किया जा सकता है। (ग) थोड़ा बिगड़ा काम सुधर जाता है पर अधिक बिगड़ा नहीं।

फटे कपड़े मत देखो, जात के क्षत्री हैं—फटे कपड़ों की ओर मत देखो, इनकी जाति क्षत्री है। जब कोई संभ्रांत कुल का व्यक्ति मामूली कपड़े पहने हो और कोई अजनबी व्यक्ति उसको साधारण व्यक्ति समझे तो उसके प्रति कहते है। तुलनीय : राज० फाट्या कपड़ा मत देखो, जातरी इंदी है।

फटे दूध को भूमि में गाड़े—जो दूध फट जाय उसे भूमि में गाड़कर छुटकारा पाना चाहिए। यदि किसी अच्छी वस्तु या अच्छे व्यक्ति में कोई ऐसी बुराई उत्पन्न हो जाय जिसका उपचार न हो सके तो उससे छुटकारा पाने में ही भलाई है। तुलनीय : भीली—वगड़य्यों दूध वाड़े वरोवणां।

फटे न फूटे, जान न छूटे—किसी चीज़ से जी उक्ता जाने पर कहते हैं। कभी-कभी अपना घड़ा या जूता जब बहुत दिनों का हो जाता है और जान नहीं छोड़ता है तो कहा जाता है। उसी मूल से यह कहावत निकली है पर अब इसका प्रयोग अन्य संदर्भ में भी होता है।

फटे में पाँव, दफ्तर में नांव—जो लड़ाई-झगड़ा करता है उसे ही अदालत में जाना पड़ता है। (क) झगड़ा करने वालों के पड़ोस में न रहे तो अदालत में न जाना पड़े। गवाही के लिए वही जाता है जो पास-पड़ोस में रहता है। (ख) झगड़े में पड़ने पर ही गवाह होकर जाना पड़ता है। अर्थात् जो झगड़े से दूर रहें वे ऐसे झंझटों से दूर रहेंगे। तुलनीय : अव० फाटे मा गोड़ डरता है।

फटे से कपड़े मत देखो, घर बिल्ली है—होशियार आदमी के सीधे-सादे वेश में या साधारण ढंग से रहने पर कहते हैं।

फ़तह और शिकस्त ख़ुदा के हाथ है—हार-जीत भगवान

देते हैं। मनुष्य को कर्त्तव्य करते जाना चाहिए। (फ़तह = विजय, जीत; शिकस्त = पराजय, हार)।

फ़तह खुदा के हाथ है मार किए जाओ—कार्य करना हमारा कर्त्तव्य है फल देना ईश्वर का।

फ़तह तो खुदा के हाथ है मार मार तो किए जाओ—ऊपर देखिए।

फ़तह दादे-इलाही है—जीत भगवान की देन है। अर्थात् जीत में इन्सान का कोई चारा नहीं। इसका प्रयोग न जीतने वाले को संतोष देने के लिए या जीतने वाले को घमंड न करने के लिए किया जाता है।

फरइ कि कोदव बालि सुसाली, मुक्ता प्रसव कि संबुक ताली—क्या कोदों के पेड़ में चावल लग सकते है? और तलैया के घोंधे में मुक्ता उत्पन्न हो सकती है? अर्थात् कदापि नही। छोटों में बड़े गुण नही होते।

फरति न हिम्मत श्वेत में, बहति न असि व्रतधार—हिम्मत खेत में नही पैदा होती और तलवार पर चलने के व्रत की धारा बहती नही। अर्थात् ये दोनों सब में नही पाए जाते।

फग्गा फरी बगीचा नाम—झूठी शेखी बघारने पर कहा जाता है। यदि फल ही नहीं फलेगा तो बगीचे के नाम से क्या फ़ायदा?

फरसा न कुदाल बड़ा खेत हमार—दे० 'फरसा न कुदार…'।

फरा सो झरा और बरा सो बुताना—जो फलता है वह झड़ता भी है और जो जलता है वह बुझता भी है। आशय यह है कि जिसकी उन्नति होती है उसका पतन भी होता है। तुलनीय: असमी--लागिल्ने सरे, जन्मिले मरे; सं० जातस्यहि ध्रुवोमृत्यु; तेलु० पेरुगुट विरुगुट कोरके; मरा० लहडले तें झडेल; अं० Birth indicates death.

फरिया ना सारी, बड़ी सोभा हमारी—न घघरा (फरिया) हे और न साड़ी फिर भी कहती हैं कि मैं बहुत सुंदर लग रही हूँ। झूठी शेखी मारने वाले को कहते हैं।

फ़रिश्तों के भी पर जलते हैं—ऐसी जगह के लिए कहते हैं जहाँ पहुँचने या काम करने में बड़े-बड़े लोग भी घबड़ाते हैं।

फ़रिश्तों को भी खबर नहीं—बहुत गुप्त बात के लिए कहते हैं। (फ़रिश्ता = देवदूत या देवता)।

फ़रीद शकरगंज, न रहे दुःख न रहे रंज—यह एक प्रकार का आशीर्वाद है। फ़रीद शकरगंजी सूफ़ियों के एक प्रसिद्ध पीर या औलिया हुए हैं।

फ़र्रुखाबादी फ़रक़ की छाहीं, आप तो खायें और को नाहीं—फ़र्रुखाबादी लोग स्वयं खाते हैं पर अपनी स्त्री तक को नहीं खिलाते, अर्थात् स्वार्थी होते हैं या स्वागत और मेहमानदारी करने से जी चुराते हैं।

फल खाना आसान नहीं—आशय यह है कि बिना मेहनत के कोई काम सम्भव नही। तुलनीय: पंज० फल खाना सोखा नईं।

फल खा लेते हैं गुठलियाँ फेंक देते हैं—दे० 'गोश्त खा लेते हैं…।'

फलवत्सन्निधावफलं तदङ्गम्—फलवान् वस्तु की सन्निधि में फलहीन वस्तु उसका अंग (अप्रधान रूप से) बन जाती है। आशय यह है कि गुणी के साथ गुणहीन भी सम्मान पा जाता है।

फलवत्सहकार न्यायः—फलों से युक्त आम्रवृक्ष का न्याय। फलवान् आम्र का वृक्ष हमें फल तो देता ही है, इसके अतिरिक्त वह छाया भी प्रदान करता है।

फलेगा सो झड़ेगा—दे० 'फरा सो झरा…।'

फलेन परिचयते—फल ही से पेड़ पहचाना जाता है। आशय यह है कि काम ही से आदमी की परख होती है।

फले सो नवे—जो फलता है वह झुकता है। आशय यह है कि आदमी जब उन्नति करता है तो उसमें विनम्रता आती है।

फ़ाक़ाकशी की नौबत पहुँची—भोजन भी मिलना दुश्वार हुआ। खाने के लाले पड़ गए।

फ़ाक़ों से मरिये, पर न कोई काम कीजिए दुनिया नहीं अच्छी है ज़माना नहीं अच्छा—खाने को भले ही न मिले पर काम नहीं करना चाहिए क्योंकि ज़माना अच्छा नहीं। ऐसा आलसी और सुस्त लोग कहते हैं।

फाग का फाग खेल लिया, अंग भी बच गए—होली भी खेल ली और कोई हानि भी नहीं हुई। बिना हानि उठाए कोई काम कर लेने पर कहते हैं।

फाग के पिटे और दिवाली के लुटे को कोई नहीं पूछता—स्पष्ट है।

फागुन की सुदूज दिन, बादर होय न बीज; बरसै सावन भादवा, साधो खेलो तीज—हे सज्जनो! यदि फागुन (फाल्गुन) बदी द्वितीया को बादल हों पर बिजली न चमके; अथवा न बादल हों न बिजली तो सावन-भादों के महीने में खूब बर्षा होगी और लोग आनन्द से तीज का त्यौहार मनाएँगे।

फागुन मास बहे पुरवाई, तब गेहूँ में गेरुई धाई—

अगर फागुन के महीने में पुरवा हवा चले तो गेहूँ में गेरुई नामक रोग लगता है। तुलनीय : मरा० शिमग्यांत सुरेल पूर्वेचा वारा तर गव्हावर पडेल तांबेरा।

फागुन रोज नहीं आता—फाल्गुन का महीना वर्ष में एक बार ही आता है। (क) फाल्गुन में फ़सलें कटती है और किसान कुछ दिनों के लिए खुशहाल हो जाते हैं। (ख) फाल्गुन में ही होली का त्योहार आता है। (ग) अच्छे अवसर बार-बार नहीं आते। तुलनीय : भीली—हालुवा हगाल नी व्ले।

फाटक टूटा गढ़ लूटा—फाटक टूटने से क़िला (गढ़) लुट जाता है। अर्थात् मोरचा मारा कि विजय हुई।

फ़ातिहा न दरूद खा गए मरदूद—फ़ातिहा मुसलमानों के यहाँ किसी मृतक की आत्मा को लाभ पहुँचाने के लिए पढ़ी जाने वाली प्रार्थना है तथा दरूद हज़रत मुहम्मद साहब की स्तुति में पढ़ा जाने वाला सलाम है। आशय है कि न खुदा को याद किया न उसके पैग़ंबर को और कोई नीच व्यक्ति रखा हुआ भोजन खा भी गया। जब कोई किया हुआ काम निष्फल हो जाय तो कहा जाता है।

फ़ायदा जाने, न क़ायदा जाने—ऐसे मूर्ख व्यक्ति के प्रति कहते हैं जो अपने लाभ-हानि, नियम, व्यवस्था आदि के सम्बन्ध में कुछ भी न जानता हो। तुलनीय : भीली—फायदो कायदो नी जोवे।

फारखती लिखवा ली—(क) देने से छुटकारा पाने के लिए काग़ज़ लिखवाने को फ़ारखती लिखवाना कहते हैं। (ख) सम्बन्ध विच्छेद करने के लिए भी कहते हैं। किसी बनिए ने किसी को क़र्ज़ा चुकाने के लिए अपने घर पर बुलाया। जब वह बही खाता लेकर अपना हिसाब लेने आया तो बनिये ने अपने दरवाज़े पर बाजा बजाने का हुक्म दिया और उसी बीच में बनिये ने महाजन को पीटना शुरू किया और यहाँ तक पीटा कि उससे फारखती लिखवा ली। तुलनीय : अव० फारखती लिखवाय लिहेन।

फ़ारसी रा टाँग तोड़म ताकि ऊ लँगड़ी शवद—मैं फ़ारसी की टाँग तोड़ता हूँ जिससे कि वह लँगड़ी हो जाए। अर्द्धशिक्षित फ़ारसीदाँ पर कहा जाता है जो ठीक से न जानने पर भी बोलकर फ़ारसी की टाँग तोड़ता है। (मध्ययुग में फ़ारसी अधिक लोग जानते थे, अतः यह कहावत चली। इधर उसके स्थान पर अंग्रेज़ी थी अतः अंग्रेज़ी की टाँग तोड़ना कहा जाता है)।

फाल की कौड़ियाँ मुल्ला को हलाल—उचित रूप से पैदा किया हुआ धन सभी को पचता है।

फ़ालूदा खाते दाँत टूटें तो बला से—फ़ालूदा (एक कोमल खाद्य पदार्थ) खाने से दाँत टूटना नहीं चाहिए, लेकिन यदि टूट जाय तो कोई बात नहीं। आशय यह है कि जो दुःख अकारण अपने ऊपर आवे उसके लिए शोक करना व्यर्थ है। तुलनीय : मरा० फालूदा (बर्फानील खीर) खातांना दांतांन कळा निघतील तर निघूं देत।

फावड़ा न कुदार, बड़ा खेत हमार—झूठे या शेखी मारने वाले पर कहते हैं। जब फावड़ा या कुदार कुछ भी पास में नहीं है तो बड़े खेत के स्वामी कैसे हो सकते है। (यह कहावत किसानों में कही जाती है। क्योंकि बड़े-बड़े ज़मींदार जिनको खेती से कोई वास्ता नहीं बिना फावड़े-कुदार के भी एक नहीं हज़ारों बड़े खेतों के स्वामी होते हैं। तुलनीय : अव० फरुआ न कुदार, बड़का खेतवा हमार; भोज० फरसा न कुदार बड़का खेत हमार।

फावड़े का नाम गिलसफ़ा—फावड़ा नहीं है, गिल (मिट्टी) को साफ़ करने वाला है। जब कोई व्यक्ति किसी सही बात को सीधे से न मानकर थोड़ा घुमा-फिराकर स्वीकार करे तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। बिलकुल अज्ञान व्यक्ति को भी कहते हैं। तुलनीय : राज० फावड़ेरो नांव गिलसफो।

फ़िक्र और ज़िक्र दोनों चाहिए—ध्यान और आराधना दोनों ही करनी चाहिए। फ़क़ीरों के प्रति कहते हैं।

फ़िक्र करे क्या होता है, होना था सो हो गया—चिंता करने से कुछ नहीं होता जो होना था वह हो गया। जब कोई किसी हानि पर चिन्ता करता है तब उसे समझाते हुए ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० फ़िकर करण नाल की हुंदा है जो होणा सी हो गया।

फ़िक्र बुरी फ़ाक़ा भला, फ़िक्र फ़क़ीरां खाय—फ़िक्र फ़ाक़े से भी बुरी है। फ़क़ीरों पर फ़ाक़े का कोई असर नहीं होता पर फ़िक्र उन्हें भी खा जाती है। अर्थात् चिन्ता बहुत बुरी चीज़ है।

फ़िज़ूल घास घूर पे उगे—व्यर्थ में घास घूरे पर उगती है। किसी के निरर्थक काम करने पर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० अण्हू तो घास अकूरड्याँ ऊग।

फिट बाका जीना जो तके पराई आस—जो दूसरों के बल पर जीवन व्यतीत करते हैं उनकी ज़िन्दगी कोई ज़िन्दगी नहीं होती अर्थात् दूसरों के बल पर जीने वालों को धिक्कार है।

फिर क्या मुड़लो बेल तर जाई—सिर मुँड़ाई हुई स्त्री एक बार बेल के पेड़ के नीचे चोट खा चुकी है, पुनः वह

कैसे जा सकती है? कहने का आशय यह है कि एक बार धोखा खाया हुआ व्यक्ति धोखे से बचता है। तुलनीय : मग० फनु मूड़लो बेल तर; भोज० फेर सियार तरकुल तर जइं हैं। नीचे भी देखिए।

फिर क्या सियार ताड़ तर जाई—एक सियार एक दिन एक ताड़ के पेड़ के नीचे बैठा था, ऊपर से एक ताड़ का फल गिरा और उसे चोट आई; तब से उसने ताड़ के पास जाना ही छोड़ दिया। कहावत का आशय यह है कि एक बार धोखा खाने के उपरान्त मनुष्य सजग हो जाता है।

फिर बन्दा मोची का मोची – जैसा पहले था वैसा ही फिर हो गया। कोई कुछ कोशिश करके भी उन्नति न करे तो कहा जाता है। तुलनीय : गढ़० फिर मोची का मोची।

फिरबे घोड़े यहीं से– ऐसे व्यक्ति के लिए कहते है जो अभी एक बात कहे और तुरन्त ही उससे मुकर जाए।

फिर मुड़इली बेल तले—दे० 'फिर क्या मुड़ली…'।

फिर वही मोची का मोची दे० 'फिर बन्दा मोची ……'।

फिर सियार ताड़ तर नहीं जाएँगे, यदि जाएँगे भी तो चुन-चुनकर खाएँगे—एक सियार रोज एक ताड़ के पेड़ के नीचे जाता और वहाँ ऊपर की ओर सर उठाकर मुँह खोलकर खड़ा रहता था। ज्योंही ताड़ का पका फल गिरता अपने मुँह में ले लेता। एक दिन फल ऐसा गिरा कि वह सँभाल न सका और उसके गले में फंस गया। बड़ी कठिनाई के बाद सियार उसे मुँह से निकाल सका। उस दिन से उसे होश आ गया। अब या तो ताड़ के पेड़ के नीचे जाएगा नही और यदि जाएगा भी तो उस तरह न खाकर ज़मीन से उठाकर फल खाएगा। जब कोई अपने गर्व, शेखी या मूर्खता के कारण कष्ट सह लेता है तो आगे के लिए सतर्क हो जाता है। ऐसे लोगों पर यह कहावत है।

फिरेगा सो चरेगा, बँधा भूखा मरेगा—जो पशु घूमता-फिरता रहता है उसका पेट घास चरकर भर जाता है और जो बँधा रहता है वह भूखा मरता है। जो व्यक्ति घर में ही घुसकर बैठे रहते हैं वही भूखे मरते हैं और जो व्यक्ति घूम-फिरकर काम ढूंढ़ते हैं वे कभी भूखों नही मरते। तुलनीय : राज० फिरै सो चरै, बंध्यो भूखां मरै; ब्रज० फिरै तौ चरै नही भूखो मरै।

फिरे तो चरे नहीं भूखा मरे—ऊपर देखिए।

फिसल पड़ा तो हर गंगा—नहाने की इच्छा तो नही थी पर फिसलकर गिर पड़े तो 'हर गंगा' कह उठे। (क) अवसरवादी मनुष्य की अवसरवादिता पर व्यंग्य है। (ख) जब किसी का भूल से काम बिगड़ा हो और वह ज़ाहिर करे कि उसने उसे जानकर बिगाड़ा है तो व्यंग्य रूप में कहते हैं। तुलनीय : मरा० घसकन पडलें (पाण्यांत) की हरगंगे; पंज० तिलक पएते हरगंगा।

फिसल पड़े की हरगंगा—ऊपर देखिए।

फीकी पै नीकी लगै, कहिए समय विचारि, सबको मन हर्षित करै ज्यों विवाह में गारि—कभी-कभी बुरी बातें भी अच्छी मालूम होती हैं यदि समय देखकर कही जाएँ, जैसे विवाह के अवसर पर 'गाली' भी भली लगती है।

फीको परे न बरु फटे रंगो बोर रंग चीर—गहरे (पक्के) रंग में रंगा कपड़ा चाहे फट जाय पर उसका रंग फीका नही होता। आशय यह है कि सज्जनों की मित्रता मरने पर ही छूटती है।

फुई-फुई तालाब भरता है—थोड़ा-थोड़ा करके ढेर-सा हो जाता है। धीरे-धीरे प्रयत्न करते रहने पर लाभ या सफलता अवश्य मिलती है।

फ़ुरसत रा ग़नीमत शुमार– जो भी समय मिल जाए उसी पर सन्तोष करना चाहिए। अर्थात् अवसर का अधिक से अधिक फ़ायदा उठाना चाहिए।

फ़ुरसत घड़ी की नहीं, आमदनी कौड़ी की नहीं—काम से एक घण्टे की भी फ़ुरसत नही मिलती लेकिन एक कौड़ी का भी लाभ नही होता। दिन-रात परिश्रम करने के बावजूद जब कोई लाभ नही होता तब ऐसा कहते हैं।

फुरतीला सो सुरतीला—फुर्तीले आदमी की स्मरण-शक्ति अच्छी होती है।

फूंक-फूंककर पग/क़दम रखना चाहिए – आशय यह है कि काफ़ी सोच-समझकर कोई कार्य करना चाहिए। तुलनीय : मल० आषमरियाननटेत्तु कालु वय्क्करुतु वीषुम मुन्ये निलम् नोक्कणम्; भोज० फूंक-फूंक के गोड़ धरे के चाही; अव० फूंक-फूंक कै गोड़ धरो।

फूंक मसाल, उठा चौपाल– मशाल जलाओ और पालकी उठाओ। काम को जल्दी करने के लिए कहा जाता है।

फूंक मारकर धूल उड़ाएँ हम ऐते बलवान—मैं इतना शक्तिशाली हूँ कि फूंक मारकर धूल उड़ा देता हूं। जब कोई बहुत मामूली-सी सफलता पर फूला नही समाता तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते है।

फूंक मार कर पेड़ नहीं गिराया जाता—पेड़ तो कुल्हाड़ी से काटने पर गिरता है। जो व्यक्ति परिश्रम किए बिना ही लाभ उठाना चाहते हैं, उनके प्रति व्यंग्य से कहते

हैं।

फूंकी दवा और मुंडा फ़क़ीर—दोनों को पहचानना बहुत मुश्किल है।

फूंके ना फाकें टांग उठा के तापे—स्वयं तो आग को फूंकता तक नहीं और दूसरे फूंक देते हैं तो अपने को सर्दी से बचाने के लिए टांग उठाकर यानी निश्चिन्त होकर तापता है। अर्थात् वेश्या, आलसी और स्वार्थी मनुष्य स्वयं कुछ नहीं करते, पर दूसरे के परिश्रम पर आनन्द लेना चाहते हैं। तुलनीय : भोज० फूंके के ना फोकेके, टाँग उठाके तापेके।

फूंसया की छान पर फूंस का टोटा—जिसके यहाँ फूस का व्यापार होता है (फूंसया) उसके छप्पर पर फूस की कमी है। जब कोई सम्पन्न होते हुए भी ग़रीबों जैसी हालत में रहता है तब उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : कौर० कबाडी की छाण पै फूंस का टोट्टा।

फूट हिन्दुस्तान का मेवा है—यह फल भारत में ही उत्पन्न होता है। यह एक व्यंग्योक्ति है क्योंकि भारत के विभिन्न सम्प्रदायों में प्रायः वैर भाव और फूट रहती है।

फूटा सहा जाय, आंजा नहीं—दे० 'फूटी सही जाती है······'।

फूटी आंख का तारा—बिना माता के लड़के को कहते हैं।

फूटी आंख नाम कंकड़ का—आँख तो पहले से ही फूटी हुई थी, किन्तु कहते है कि आँख कंकड़ लगने से फूट गई है। जब कोई अपने दोष को छिपाने के लिए बहाना बनाता है तब कहते हैं। तुलनीय : माल० आँख री फूटणो ने धोका रो लागणो।

फूटी डेगची क़लई की भड़क—(क) बनावटी चीज़ जो ऊपर से शानदार लगे पर भीतर से या यथार्थतः गई-बीती हो तो यह कहावत कही जाती है। (ख) जब कोई वृद्धावस्था में काफ़ी शृंगार करता है या करती है तब भी व्यंग्य में कहते हैं।

फूटी तकदीर जुड़ती नहीं—भाग्य एक बार बिगड़ जाने पर सुधरता नहीं। भाग्यवादी भाग्य को अपरिवर्तन-शील मानते हैं, उनके अनुसार भाग्य में जो है वही होगा, मनुष्य के किए कुछ नहीं होगा। तुलनीय : भीली—तगदीर ने थीगलो नी लागे।

फूटी सही जाती है, आंझी नहीं सहीं जाती—अन्धा रहना ठीक है, पर अंजन की कड़वाहट नहीं सही जाती। (क) किसी की कड़वी बात सहने से, उससे सम्बन्ध विच्छेद ही कर लेना अच्छा है। (ख) भविष्य में आने वाले बड़े कष्ट की तनिक भी परवाह न कर लोग सामयिक थोड़ा भी कष्ट सहने को तैयार नहीं होते।

फूटी सहें, पर रांझी न सहें—ऊपर देखिए। तुलनीय : ब्रज० फूटी सहै, आंजी न सहै।

फूटी हांडी की आवाज़ छिपती नहीं—फूटी हांडी की आवाज़ बजाने पर तुरन्त अपना भेद खोल देती है। दुष्ट या मूर्ख का पता उसके बोल-चाल के ढंग से ही चल जाता है। तुलनीय : राज० फूटी हांड़ी आवाजसूं पिछाणीजै।

फूटे कपार तब सूझे गँवार—सिर फूटने पर ही मूर्ख को दिखाई देता है। आशय यह है कि ठोकर खाने पर ही मूर्ख को ज्ञान होता है।

फूटे घड़े में जल नहीं टिकता—अयोग्य व्यक्ति से कार्य नहीं होता। तुलनीय : मल० ओट्टच्चक्कुं धान्यम् पिटिक्क-यिल्ल; पंज० पज्जे कड़े बिच पाणी नईं खलोंदा; अं० Broken/torn sacks will hold no corn.

फूटे भाग फकीर का, भरी चिलम गिर जाय—फ़क़ीर का भाग्य खराब होने के कारण भरी हुई चिलम भी गिर जाती है। आशय यह है कि जब मनुष्य के बुरे दिन आते हैं तो उसके बने-बनाये काम भी बिगड़ जाते हैं। तुलनीय : राज० फूटा भाग फकीर का भरी चिलम गुड़ ज्याय।

फूफा रूठेंगे तो फूफी को रख लेंगे—फूफाजी रूठेंगे तो बुआ को ही रख लेंगे, इसके अतिरिक्त और क्या कर सकेंगे? जब कोई ऐसा व्यक्ति नाराज़ हो जाय जिससे किसी प्रकार की हानि की आशंका न हो तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० फूफोजी रूससी तो भूवाजी नै राखसी।

फूफी मिस देना, भतीजे मिस लेना—एक सम्बन्ध से तो देना और दूसरे से ले लेना। ले-देकर बराबर करना। यह कहावत तब कही जाती है जब कोई किसी को कुछ दे पर दूसरे रूप में या दूसरे रास्ते उतना ले ले।

फूल आए हैं, तो फल भी लगेंगे—(क) ऋतुधर्म होने से सन्तान की आशा की जाती है। (ख) किसी काम के होने का तनिक-सा भी आसार दिखाई पड़ता है तो लोग पूरे काम होने की भी आशा करने लगते हैं। (ग) थोड़ा हुआ तो धीरे-धीरे सब होगा। तुलनीय : पंज० फुल लग्गे ने ते फल बी लगण गे।

फूल की जगह पंखुड़ी—अधिक आवश्यकता होने पर थोड़ी-सी वस्तु मिले तब कहते हैं। तुलनीय : राज० फूलरी जागां पाखंडी।

फूल की डाल नीचे को झुके—गुणी हमेशा विनम्र होता

है। उसमें अकड़ नहीं दिखाई दे सकती। तुलनीय : अव० फरी डार तरे नय जात है।

फूल की फाँस लगे और दीये की लू—फूल की पतली खपच्ची (फाँस) से घायल हो जाते हैं और दीपक की लौ लू (गर्म वायु) के समान झुलसा देती है। बहुत सुकुमार बनने वाले के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : माल० फूलाँ री फाँस लगे ने दीवा री लू लागे।

फूल की बैरिन धूप घी का बैरी कूप—धूप फूल का और कूप घी का शत्रु होता है। अर्थात् धूप में फूल और कुप्पे में घी खराब हो जाता है।

फूल कुआँरा और कली कहे मेरा ब्याह कर—फूल जिसका यौवन हिलोरें ले रहा है उसका तो विवाह हो नहीं पाया और अल्पायु कली कह रही है मेरा विवाह करो। जो कार्य आवश्यक है और पहले होना चाहिए वह तो हो नहीं पा रहा ऐसे में अनावश्यक कार्य कैसे किया जा सकता है? जिसे किसी चीज़ की आवश्यकता न हो और वह उसे पहले लेना चाहे तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : भीली—फूल फूल्या ते कुँवारा रे मद्यो कै मोगे पण्ना वो।

फूल झड़े तो फल लगे—(क) बिना एक के गिरे दूसरा नहीं उठता। (ख) श्रेष्ठ व्यक्ति अपना उत्सर्ग करके संसार की सेवा करते है। (ग) स्त्री को मासिक धर्म होगा तभी गर्भ रहेगा।

फूल टहनी ही में अच्छा लगता है—अपने स्थान पर ही हर चीज़ शोभा देती है। तुलनीय : मरा० फूल फाँदी वरच खुलून दिसतें; पंज० फुल डाली उते ही चंगा लगदा है।

फूल तो कपास का और फूल किसका, दूध तो माँ का और दूध किसका—आशय यह है कि कपास का फूल अन्य फूलों की अपेक्षा काफ़ी लाभप्रद होता है और माँ का दूध बच्चे के लिए अन्य (गाय, भैंस आदि) के दूध से अधिक पौष्टिक होता है।

फूल न पाती, देवी हा-हा—पूजा के लिए फूल-पत्ती तो कुछ नहीं यों ही 'हा-हा' करना। बिना कुछ लिए-दिए चापलूसी या खुशामद करने पर कहा जाता है।

फूल नहीं पंखुरी ही सही—ज्यादा न तो थोड़ा ही सही। 'ज़ौक़' ने लिखा है—

गर रुख़ का बोसा देते नहीं लब का दीजिए
है मस्ल वो कि फूल नहीं पंखड़ी सही।

तुलनीय : फूल नहीं तो फूलरी पाँखड़ी।

फूल-फूल करके चंगेर भरती है—एक-एक फूल से चंगेर भर जाती है। अर्थात् थोड़ा-थोड़ा करके बहुत हो जाता है।

फूल मुरझा जाता है पर उसकी खुशबू नहीं जाती—आशय यह है कि मरने के बाद भी यश रहता है। तुलनीय : प्र० फूल मुएउँ पै मुई न बासा। —जायसी।

फूल वही जो महेश चढ़े—(क) फूल वही है जो देवता पर चढ़ाए जाएँ। (ख) उपाय वही ठीक है जो काम आ जाए।

फूल सुगन्ध से, मनुष्य यश से—अच्छे फूल की गन्ध भी अच्छी होती है तथा अच्छे मनुष्यों का यश चारों ओर फैला रहता है और इन्हीं बातों से उनको पहचाना जाता है। भले आदमियों के गुणों का सबको पता रहता है। (क) जब कोई व्यक्ति किसी सज्जन मनुष्य की बुराई करे और दुर्जन की बड़ाई करे तो उसको झूठा सिद्ध करने के लिए या पुचकारने के लिए इस प्रकार कहते हैं। (ख) सुगन्ध से फूल की और अच्छे कर्मों से मनुष्य की इज्ज़त होती है। तुलनीय : गढ़० भला फूलू की भली वासना, भला मनखी की भली नामना।

फूल सूंघकर रहते हैं—(क) बहुत कम खाने वाले को कहा जाता है। (ख) जो यह कहता है कि मैं बहुत कम खाता हूँ, उसके प्रति भी व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : अव० फूल सूँघते हैं; पंज० फुल सुंघदे हन।

फूली-फूली गौने को, ठसक निकल गई रोने को—गौने के लिए बड़ी आतुर थी पर जब गौना आया तो रोते-रोते सारी ठसक निकल गई। यह कहावत तब कही जाती है जब कोई किसी काम के लिए बहुत आतुर हो पर उस काम के आने पर उससे परेशान हो जाय।

फूले फले न बेंत जदपि सुधा बरसहिं जलद—यदि बादल से अमृत बरसे तब भी बेंत में फूल-फल नही लगते। अर्थात् अपात्र के साथ उपकार करने का सुफल नही मिल सकता।

फूल्यो अनफूल्यो भयो, गँवई गाँव गुलाब—गाँव में गुलाब का फूलना न फूलने के बराबर है, क्योंकि वहाँ पर उसकी कोई क़द्र नही होती। अर्थात् मूर्खों में गुण की पूछ नही होती।

फूस का तापना, उधार का खाना—दे० 'उधार का खाना···'। तुलनीय : पंज० काह ता सेकना उदारदा खाना।

फूस की आग परदेशी के प्रीत—दे० 'परदेशी की प्रीत···'।

फूहड़ उठी दुपहरी सोय, हाथ में झाड़ू दीन्ही रोय—फूहड़ स्त्री सोकर बारह बजे दिन में उठी। उसके हाथ में

सफ़ाई करने के लिए झाड़ू दी गई तो रोने लगी। उस निकम्मे व्यक्ति के प्रति कहते हैं जो कुछ भी करना न चाहे, बस खाना और सोना चाहे। तुलनीय : अव० फूहड़ उठी दुपहरी सोय, हाथ बढ़निया दीहिसि रोय।

फूहड़ करे सिंगार मांग ईंट से भरे—फूहड़ स्त्री शृंगार करने चली तो सिंदूर के स्थान पर ईंट के चूरे से मांग भरने लगी। तुलनीय: अव० फूहड़ करैं सिंगार माँग ईटा ते भरऽ।

फूहड़ करे सिंगार मांग ईंटों से फोड़े—फूहड़ या मूर्ख स्त्री का हरएक काम बेढंगा होता है। तुलनीय : राज० फूड करैं सिणगार माँग ईटामूँ फोड़ै।

फूहड़ का माल हंस हंस खाइए—(क) मूर्ख का माल खुशामद से ही उड़ाया जा सकता है। (ख) मूर्ख की वस्तु से सभी लोग लाभ उठाते हैं। तुलनीय : अव० फुहरी का माल हंस हंस खाय।

फूहड़ का मैल फागुन में उतरे—फूहड़ जाड़े भर ठंड से डर कर नहीं नहाती और फागुन में होली के त्योहार पर ही नहाकर मैल छुड़ाती है। गंदे रहने वालों के प्रति व्यंग्य। तुलनीय : राज० फूड़रा मैल फागण में उतरे।

फूहड़ के घर उगी चपेरी, गोबर मांड उस पिट गेरी—फूहड़ के घर चमेली का पौधा उगा तो वह उसी पर माँड़ और गोबर फेंकने लगी। आशय यह है कि फूहड़ अर्थात् भद्दा काम करने वाली या गंदी औरतें अच्छी चीजों का भी दुरुपयोग करती है।

फूहड़ के घर खिड़की लागी सब कुत्तों में चिन्ता जागी, बाँड़ा कुत्ता बांच साँन लागी तो पर देगा कौन?—खिड़की का अर्थ छोटा दरवाजा है। कुत्तों को चिंता इसलिए हुई कि अब बड़ा दरवाजा बंद रहेगा अत: जाने में असुविधा होगी। पर फिर बाँडे (बिना पूँछ के) कुत्तों ने बतलाया कि मूर्ख चीज़ का उपयोग नही करते। खिड़की लगी तो है पर बंद कोई न करेगा।

फूहड़ के घर खुली किवाड़ी सारे कुत्ते चले रिवाड़ी—मूर्ख स्त्री के घर के फाटक खुले रहते हैं और ऐसी स्थिति में कुत्ते इकट्ठे होकर उसके घर में घुस जाते हैं। आशय यह है कि मूर्ख स्त्री के घर की व्यवस्था ठीक नहीं रहती जिससे उसका नुक़सान होता रहता है। तुलनीय : हरि० फूहड्य के घर खुली किवाड़ी, सारे कुत्ते चले रिवाड़ी।

फूहड़ के घर खाना पके, कुत्तों झुंड उधर ही चले—फूहड़ के घर में खाना पकते देखकर कुत्तों के झुंड उसी ओर चल दिए। उन फूहड़ स्त्रियों के प्रति कहते हैं जिनकी लापरवाही का दूसरे खूब फ़ायदा उठाते हैं। तुलनीय : राज० फूड रांडरे हुई तयारी, कुत्ता चाल्या रेवाड़ी।

फूहड़ चाले नौ घर हाले—मूर्ख या फूहड़ स्त्री के लिए यह कहा गया है कि वह जब बाहर निकलती है तो फ़साद होकर ही रहता है। फूहड़ का अर्थ गंदा होता है। पर यहाँ लाक्षणिक अर्थ 'मूर्ख' है। तुलनीय : हरि० फूहड्य चाल्लै, नौ घर हाल्लै।

फूहड़ चाले, नौ घर हिले—ऊपर देखिए।

फूहड़ चाले, सब घर हाले—ऊपर देखिए।

फहड़ जोरुआ, साग में शोरुआ—फूहड़ स्त्री साग (सब्ज़ी) को भी रसदार बनाती है। आशय यह है कि मूर्ख या फूहड़ से सभी काम खराब हो जाते हैं।

फूहड़ देवी को कुरथी का अच्छत—जैसे देवता हों, उनकी वैसी ही पूजा भी होनी चाहिए। (कुलथी एक अन्न है जो बुरा समझा जाता है)।

फूहड़ नार से मुर्गी भली जो अंडे देवे बीस—फूहड़ स्त्री से तो मुर्गी ही अच्छी है जो बीस अंडे देती है। आशय यह है कि फूहड़ या मूर्ख किसी भी काम के नही होते।

फूहड़ ने बनाई खीर बन गई और—फूहड़ स्त्री खीर पका रही थी लेकिन वह कुछ और ही बन गई। आशय यह है कि फूहड़ या मूर्ख द्वारा किया हुआ कोई भी कार्य ठीक नहीं होता। तुलनीय : भोज० फूहर बनौली जाउर हो गइल कुछ आउर।

फूहड़ सीने, बैठे जब, तागा ही उलझे या सूई टूटे तब—फूहड़ स्त्री जब सीने के लिए बैठती है तब या तो तागा उलझ जाता है या सूई ही टूट जाती है। आशय यह है कि मूर्ख जो भी काम करता है वह बिगड़ जाता है।

फेरफार चुटिया पर हाथ—घुमा-फिराकर चोटी पर ही हाथ रखते हैं। (क) घुमा-फिराकर एक ही बात पर आ जाने वाले के प्रति भी कहते है। (ख) रसिकों के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० आजा के फिर उथे।

फेरों की गुनाहगार है—इसका अपराध यही है कि यह भाँवर घूम चुकी है। हिन्दू बाल-विधवा के प्रति कहते हैं जो हिन्दू रीति-रिवाज के अनुसार पुन: विवाह नही कर सकती। तुलनीय : राज० फेरांरो दोस मती लाग्या।

फ़ौज की अगाड़ी, आँधी की पिछाड़ी—इनको सँभालना आसान नहीं है।

फ़ौज वकील, बे साहब बे फ़ील—बिना दूत के सेना और बिना हाथी के सरदार बेकार होता है।

ब

बंगाल जादू का घर है—प्राचीन काल में बंगाल जादू-टोने के लिए प्रसिद्ध था, इसीलिए ऐसा कहा जाता है।

बंजर गाँव में अरंड ही पेड़—जिस गाँव में कोई भी पेड़ न हो वहाँ पर अरंड ही वृक्ष समझा जाता है, जबकि अरंड का पौधा बहुत ही छोटा और पतला होता है। जहाँ योग्य व्यक्ति न हो वहाँ अयोग्य को ही योग्य समझते हैं। तुलनीय : गढ़० बाँजा गों की छेदुड़ो पधान; राज० कुगाँग में अरंडियाँ रूख।

बंडी कहे मैं पूँछ उठाऊँ—बाँडी (बंडी) कहती है कि क्या मैं अपनी पूँछ उठाऊँ? (जबकि उसकी पूँछ है ही नहीं)। झूठी शान दिखाने वाले के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : पंज० लंडी आखे मैं दुब चुका।

बंडी गाय, नाम चंबरी—पूँछ तो जड़ से कटी हुई है और नाम है 'लंबी तथा सुंदर पूँछ वाली। जिसके गुण नाम से विपरीत हों उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : गढ़० पूछ भी खुस्यण पर नौचौ याहीं छ; पंज० लंडी गाँ नाँ दुब वाली; ब्रज० बंडी गाय नाम चौरी।

बंडे कुत्ते का आग में क्या जले?—दुम-कटे कुत्ते की दुम तो है ही नही आग में जलेगा क्या? (क) जो व्यक्ति पहले से ही निर्धन है उसकी आगे हानि क्या हो सकती है? (ख) जो व्यक्ति पहले से ही अच्छी तरह बदनाम हो चुका हो उसे अब क्या बदनाम करना है? तुलनीय : राज० बाँडे कुत्तेरा लायमें काँई बळै? पंज० लुंडे कुत्ते दा अग्ग विच की सड़े।

बंड़वा चले ना, चले त भेड़िए ओवारे—बाँड़ा बैल (जिसकी पूंछ कटी हो) हल नही खींचता और यदि खींचता है तो मेंड़ को ही तोड़ता है। बुरे व्यक्ति के प्रति व्यंग्य में कहते हैं जो कुछ काम-धाम नहीं करता और यदि कुछ करता भी है तो बुरा काम ही करता है या किए को बिगाड़ देता है।

बंद के जाये बंद में नहीं रहते—ग़रीबी में पैदा हुए सदा ग़रीब ही नहीं रहते। आशय यह है कि किसी के सब दिन एक समान नहीं बीतते।

बंदगी ऐसी और इनाम ऐसा—किसी भी भलाई करने पर यदि उससे उलटे अपनी बुराई या बड़े काम के बदले में सामान्य लाभ हो तो कहते हैं। एक बार एक ब्राह्मण किसी बादशाह के दरबार में गया और वहाँ बजाय तीन बार सलाम करने के केवल एक बार सलाम किया। इस पर बादशाह ने अपने को अपमानित समझा और ब्राह्मण को तीन तमाचे की सज़ा दी।

बंदगी बेचारगी—नौकरी करना लाचारी का काम है।

बंद मुठी लाख की खुल जाए तो ख़ाक की—मुट्ठी जब तक बंधी या बंद रहती है तब तक तो वह एक लाख की होती है; लेकिन जब खुल जाती है तब वह कुछ भी नहीं रहती। आशय यह है कि जब तक किसी की असलियत का पता नही चलता तब तक लोग उसे बड़ा समझते हैं, लेकिन जब भेद खुल जाता है तब लोग उसका पहले जैसा मान नहीं करते। तुलनीय : बुंद० बंदी मुठी लाख की, खुले पाछें खाक की; मरा० झाँकली मूठ सव्वा लाखाची; हरि० बंधी मूआरी लाख की, खुली खाक की; पंज० बज़ी मुठ लख दी खुल जाए ते कख दी।

बन्दर का क्रोध तबेले के ऊपर—क्रोध तो बन्दर पर हुआ या किया गया है पर उसे तबेले के ऊपर प्रकट करते हैं। जब कोई किसी बलवान का कुछ न बिगाड़कर अपना क्रोध किसी निर्बल पर प्रकट करता है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० बांदर दा गुस्सा तपले उते।

बन्दर का जख़म—वह घाव जो जल्दी न अच्छा हो। बन्दर अपने घाव को बार-बार नोच लेता है इस कारण वह जल्द ठीक नही होता।

बन्दर का धन गाल में—बन्दर के पास जो कुछ होता है उसे वह मुँह में डाले फिरता है। जब कोई छोटा व्यक्ति अपनी अल्प संपत्ति का प्रदर्शन करता फिरे तो कहते हैं। तुलनीय : अव० बाँदर का धन गाल मा।

बन्दर का हाल मछंदर जाने—साथी ही एक-दूसरे की बातें जानते हैं। (मछंदर = बन्दरों को नचाने वाला, मदारी)

बन्दर की आशनाई, घर में आग लगाई—बन्दर की दोस्ती करने से घर में आग लगने की सम्भावना रहती है। आशय यह है कि मूर्ख को मित्र बनाने से केवल हानि ही होती है।

बन्दर की तुरत फुरत सूरत मशहूर—बन्दर की चंचलता मशहूर है। अर्थात् वह चंचल होता है।

बन्दर की दोस्ती जी का जियान—आशय यह है कि मूर्ख से मित्रता करना आफ़त मोल लेना है। तुलनीय : अव० बन्दरे के दोसती जिये का जंवाल।

बन्दर क पगड़ी मछन्दर के सिर—एक का दोष दूसरे

के सिर मढ़ने पर कहते हैं।

बन्दर के गले में मूंगे की माला—(क) अयोग्य के पास बहुत अच्छी चीज़। जिसे वह कभी भी बर्बाद कर सकता है। (ख) दुष्ट के पास अच्छी चीज़। बन्दर माला तोड़-कर फेंक सकता है। तुलनीय : राज० बांदरे रै गळै में फूलां रो हार, बंग० बानदेर गलाय मूगार माला; अं० A jewel in a hog's neck.

बन्दर के गले में मोतियों की माला—ऊपर देखिए। तुलनीय : राज० बांदरे रै गळै में फूलांरो हार।

बन्दर के धन केवल गाल—दे० 'बन्दर का धन…'।

बन्दर के हाथ आइना—किसी के पास ऐसी चीज़ हो जो उसके लिए व्यर्थ हो तो कहते हैं। तुलनीय : अव० बांदर का अइना देखाउब है; गढ़० बांदर का कपाल टोपले निस्वाद; मरा० माकडाच्च हाती आरसा।

बंदर के हाथ नारियल—ऊपर देखिए।

बंदर के हाथ में लाठी हो तो वह भी भैंस हाँक ले जाय—किसी भी व्यक्ति को चाहे वह कितना भी निर्बल क्यों न हो यदि अधिकार दे दिया जाय तो वह उसका प्रयोग निर्बलों को सताने के लिए अवश्य करता है। तुलनीय : माल० बाँदरा रे हाथ में लकड़ी दो तो भी हुकूमत करे।

बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद—जब किसी के पास कोई ऐसी चीज़ हो जिसका महत्त्व वह न समझे या जिसके योग्य वह न हो तो कहा जाता है। तुलनीय : अव० बाँदरू का जाने अदरख का स्वाद; हरि० मेढ के जाणै बिनोल्या की सार; गढ़० बांदर क्या जाणो आदा को सवाद; या अंधा डोमन खाई मांग, उँदों मुँह उबो टाँग; बुंद० गंवार कों पापर; ब्रज० बन्दर क्या जाने अदरख को स्वाद; छत्तीस० बेंदरा कई जाणे अदरक रो हवाद; कन्न० मंगनिगेनु गोन्नु माजिक्वयद बेले; माल० वंदर कई जाणे अदरक रो हवाद; भीली—ग्वाँखरा नी खली, हूँ जाणे हग ना हवाक; तमि० कप देक्कु तैरियुमा कपूर बासनै; मरा० बांदराला काय कळे आल्याशास्वाद; असमी—बान्दरे कि जाने नारिकलर् मोल्; सं० किं मिष्टमन्नं एवरशूकरानां; पंज० बाँदर की दस्से अदरक दा सुआद; अं० Do not cast pearls before swine.

बदर घुड़की या बंदरभबकी—नक़ली भय दिखाना।

बंदर नचाना और अंगरेज की नौकरी दोनों बराबर हैं—क्योंकि दोनों में थोड़ी-थोड़ी बात में बदनाम होने तथा परेशान होने का डर रहता है।

बंदर नाचे ऊँट जल मरे—बंदर नाचता है तो ऊँट उसे देखकर जलता है। किसी को प्रसन्न देखकर जब किसी को ईर्ष्या हो तो कहा जाता है। तुलनीय : अव० बांदर नाचै ऊँट मिललिाय।

बंदर मरें तो चौबे हों, चौबे मरे तो बंदर हों—दे० 'चौबे मरे तो बंदर हों…'।

बंदर जोड़े पली पली रहमान/राम लुढाये कुप्पा—कोई एक-एक पली तेल इकट्ठा करता है और कोई तेल से भरे बर्तन को ही लुढका देता है। जब कोई थोड़ा-थोड़ा करके धन संचय करता है और दूसरा उसे बरबाद कर देता है तब कहते हैं। तुलनीय : मरा० माणूस जामबी पळी पली नि देव साँडतो बुधला; मेवा० बाण्याँ ठगे बार बार, राम ठगे एक बार।

बंदा बशर है—आदमी ही तो है। किसी से कोई भूल-चूक हो जाने पर या मानवोचित व्यवहार करने पर कहते हैं।

बंदी जब शादी करती है, तब ऐसी ही करती है—किसी के विवाह आदि के अवसर पर कुप्रबंध करने पर व्यंग्य।

बंदे का चाहा कुछ नहीं होता, अल्लाह का चाहा सब होता है—मनुष्य के चाहने से कुछ भी नही होता लेकिन ईश्वर के चाहने से सब कुछ हो जाता है। आशय यह है कि ईश्वर जो चाहता है वही होता है। तुलनीय : सं० ईश्वरेच्छा बली यसी; अं० Man proposes God disposes.

बँधी मुट्ठी लाख की, खुले तो प्यारे खाक की—दे० 'बंद मुट्ठी लाख…'।

बंधी मुट्ठी लाख बराबर—गुप्त चीज़ का प्राय: अंदाज़ नहीं मिलता और वह जितनी रहती है उतनी से अधिक समझी जाती है। दे० 'बंद मुट्ठी लाख की…'। तुलनीय : अव० बंधी मूठी लाखु बराबर।

बँधी रहे, न टके बिकाय—न तो यह रखने पर सुरक्षित रह सकती है और न एक रुपये में बिक सकती है। जब कोई किसी वस्तु को बेचना भी चाहे और यह भी चाहे कि उसमें हानि न हो तब असमंजस की स्थिति में ऐसा कहता है।

बंधी लाख की खुली खाक भी—दे० 'बंद मुट्ठी लाख…'।

बंधु मध्य धनहीन ह्वै बसिबो उचित न होय—अपने बन्धुओं के बीच ग़रीब बनकर जीवित रहना ठीक नहीं होता।

बंभोला को आक धतूर—शिवजी को मदार (आक) और धतूरा ही चाहिए। आशय यह है कि जो जैसा होता है

उसकी पूजा के लिए वैसी ही चीज चढ़ाई जाती है।

बंसुला अस मुंह रुखानी अस पैर—भद्दी शक्ल वाले पर कहा जाता है। (यह कहावत काष्ठ-कला से संबद्ध है)।

ब अन्दाज़े गलीम पाव रा ज़कुन्—कंबल के अंदाज़ से अर्थात जितना लंबा कंबल हो उतने पाँव फैलाना चाहिए। अपनी आमदनी-औक़ात के अनुसार ही खर्च करना चाहिए।

बकबंधन न्यायः—बगुले को पकड़ने का न्याय। मूर्खतापूर्ण कार्य करने पर इस न्याय का प्रयोग करते हैं। प्रस्तुत न्याय का आधार एक कहानी है: कोई मनुष्य एक बगुले को पकड़ना चाहता था। उसने बगुले के सिर पर मक्खन रख दिया ताकि धूप से पिघल कर मक्खन उसकी आँख में चला जाए जिससे वह अंधा हो जाए और मैं उसे पकड़ लूं।

बकरा मुटाय तब लकड़ी खाय—बकरा मोटा होने पर मार खाता है। जब कोई तगड़ा होकर या बड़ा होकर उद्दण्डता करे तो कहते हैं। तुलनीय: अव० बोकरा मोटाय तो लाठी खाय।

बकरा मेढ़ा का बैर—मेढ़े से बैर करने पर बकरे को हानि उठानी पड़ती है क्योंकि मेढ़ा बकरे से बहुत शक्तिशाली होता है। अर्थात् शक्तिशाली से शत्रुता करने पर निर्बल की हानि होती है। जब कोई अपने से अधिक सबल से शत्रुता करता है तब कहते हैं।

बकरा रोवे जान को, क़साई रोवे खाल को—बकरा अपने जीवित रहने के लिए रोता है और क़साई उसकी खाल खींचने के लिए तत्पर है। (क) जब कोई अपने स्वार्थवश दूसरे की बहुत बड़ी हानि करने को तैयार हो तो कहते हैं। (ख) सबको अपना ही स्वार्थ नज़र आता है। तुलनीय: माल० बकरो रोवे जी ने, कसाई रोवे खाल ने; पंज० बकरा रोवे जाण नूं कसाई रावे खल नूं।

बकरा रोवे जीव के, कसाई रोवे खाल के—ऊपर देखिए।

बकरी अपनी जान से गई, खाने वालों को मज़ा नहीं आया—बकरी जान से चली गई लेकिन खाने वालों को पूरा आनन्द नहीं मिला। जब कोई किसी की तन-मन से सेवा करे और वह उसकी सेवा से संतुष्ट न हो तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय: मरा० शैली गेली जिबानिशी खाणार म्हण तो वातड? भोज० बकरी क जान गइल खबरया के सवादे ना आइल; मैथ० पठवा केर जान जाय खवैया कहै सवादे नय; भोज० खसी क जान गईल खवइया के सवादे नां।

बकरी करे घास से यारी तो चरने कहाँ जाय—यदि बकरी घास से दोस्ती कर ले तो वह चरेगी क्या? अर्थात् किसी काम के लिए जो कुछ प्राप्त करना आवश्यक हो उसे छोड़ देने पर काम नहीं हो सकता। तुलनीय: अव० बोकरी घासे से आरी करै तो चरै कहाँ; हरि० घोड़ा घास त यारी करैगा त खागा के? पंज० कौड़ा का नाल यारी करेगा ते खावेगा की।

बकरी का कान मालिक के हाथ—बकरी को मालिक जैसे चाहे वैसे रखता है। आशय यह है कि निर्बल सदा अपने आश्रयदाता के अधीन रहता है। (ख) नौकर मालिक की इच्छानुसार ही काम करता है। तुलनीय: भोज० छेरिया क कान गोसयाँ के हाथ में।

बकरी का जीव जाय खाने वाले को स्वाद नहीं—दे० 'बकरी अपनी जान से गई…'।

बकरी का दूध नहीं देखना, लड़ा कर देखना है—बकरी खरीदते समय यह नहीं देखना कि कितना दूध देती है, यह देखना है कि वह लड़ती है या नहीं। (क) जो व्यक्ति बिना कारण ही झगड़ते रहते हों उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। (ख) मूर्खतापूर्ण काम करने वाले के प्रति भी व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय: राज० बकरीरो दूध नही देखणो, लड़ाक देखणी।

बकरी का पालना, न लेना न देना—बकरी को पालने में कुछ भी व्यय नहीं होता क्योंकि वह स्वयं ही पत्ते आदि खाकर पेट भर आती है। जिस कार्य में व्यय कुछ भी न हो और लाभ बहुत हो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय: भीली० भींल चाली नू हूँ राखवू ने हूँ दूखबू।

बकरी का-सा मुंह चलता ही रहता है—दिन-रात खाते ही रहते हैं। तुलनीय: अव० बोकरी अस मुँह चलतै रहत है; हरि० बकरी की ढाल सारी होण मुंह चाल्याँह जा सै।

बकरी की जान गई खाने वाले को मज़ा न आया—दे० 'बकरी अपनी जान से गई…'।

बकरी की जान गई खाने वाले को स्वाद ही नहीं—दे० 'बकरी अपनी जान से गई…'। तुलनीय: ब्रज० बकरिया जानि ते गई, मीयाँ जी यँ स्वाद ई न आयौ।

बकरी की तरह मुंह चलता रहता है—दे० 'बकरी का सा…'।

बकरी के नसीब में छुरी ही है—बकरी के भाग्य में चाकू ही रहता है। (क) अच्छा काम करने से भी यदि बुरा फल मिले तो कहते हैं। (ख) निर्बल और निर्धन सदा सताए जाते हैं।

बकरी के प्राण गए खाने वाले को स्वाद ही नहीं—दे० 'बकरी अपनी जान से गई···'।

बकरी के मुँह के काशीफल—बकरी के मुँह के लिए काशीफल बहुत बड़ा होता है। उसे पूरा-का-पूरा दे भी दें तो वह खा नहीं सकती। जब कोई वस्तु, पद, सम्मान आदि किसी के लिए बहुत बड़ा हो और वह उसका ठीक उपयोग करने में असमर्थ हो तो कहते हैं। तुलनीय : अव० छेरी के मूँह का कुम्हड़ा; भोज० छेर के मुँह के कोंहड़ा।

बकरी के मुँह में तरबूज कौन छोड़ता है ?—बकरी यदि मुँह में तरबूज़ उठाकर भागना चाहे तो उसे कौन ले जाने देगा ? (क) ग़रीब मनुष्य को कोई भी लाभ नही लेने देता। (ख) ग़रीब के पास कोई भी अच्छी और लाभदायक वस्तु नहीं छोड़ता। तुलनीय : राज० बक्री रैं मूंढ़े में मतीरो कुण खटण दे ? पंज० बकरी दे मुँह बीच दुआना कौण छडदा है।

बकरी के मोल ले मा भइंस का घेलौना—बकरी खरीदते हैं और भैंस मुफ्त में (घेलौना में) माँगते हैं। जब कोई कम क़ीमत की वस्तु खरीदता है और उससे अधिक क़ीमत की वस्तु मुफ्त में लेना चाहता है तब उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

बकरी जान से गई, खवैया को स्वाद नहीं—दे० 'बकरी अपनी जान से गई···'।

बकरी जान से गई पर खाने वाले को स्वाद न आया—दे० 'बकरी अपनी जान से गई···'।

बकरी ने दूध दिया पर मेंगनी डालकर—बकरी ने दूध दिया तो पर बड़े कष्ट से। जब कोई किसी को कष्ट पहुँचा कर कोई चीज़ देता है तब कहते हैं। तुलनीय : मरा० शेली ने दूध दिलें खरे, पण लेंड्या घालून; राज० बकरी दूध देव पण मीगण्याँ रला'र देव; गढ़० बिट् मि वाट् मीं 'बाबुबुढो' सराध; पंज० बकरी ने दुद्द देना है पर मींगना पाके।

बकरी-भेड़ हल खींचे, तो बैल रखकर क्या होगा ?—यदि भेड़-बकरी से हल खीचने का काम चल जाय तो बैलों की क्या आवश्यकता है ? (क) जब कोई कम बुद्धि का व्यक्ति विद्वानों की बराबरी करना चाहता है तब उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। (ख) जब कोई कम आयु का या निर्बल व्यक्ति किसी बड़े काम को करना चाहता है जो उसके वश का न हो तब भी व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : भोज० छेरी-मेरी हर चले तो बरौधा रख के का होई।

बकरी मींगन करे पर रो-रो के—बकरी मेंगनें (मींगन) तो करती है किंतु रो-रोके। जब कोई व्यक्ति किसी के दबाव देने पर ही अनिच्छापूर्वक काम करे तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० बकरी मीगण देवै पण रोय-रोय देवै।

बकरी या सस्से की तीन ही टाँगें—सरासर झूठ बोलने पर या जब कोई झूठ भी बोले और उसे सत्य साबित करने के लिए प्रयत्नशील भी रहे तो कहते हैं।

बकरी रोए जान को, कसाई रोए मांस को—दे० 'बकरा रोवे जान को क़साई रोवे···'।

बकरे की माँ कब तक खैर मनाएगी—क्योंकि उसका मारा जाना निश्चित है। जो हानि अवश्यभावी हो उससे बचने की कोई कोशिश करे तो कहते हैं। तुलनीय : मैथ०, भोज० बकरा क माई कब तक खैर मनाई; अव० बोकरा कै भाई कै दिन खैर मनाई; हरि० बकरे की माँ कद ताँही खैर मनावैगी; राज० बकरैरी मा कद ताणी खैर मनासी; गढ़० जदकद गंगा सौंरों पार; मरा० बकऱ्याची आई कुठवर जपणार; ब्रज० बकरा की मा कब तक परसाद बांटेगी। राज० बकरैरी मा कितना थावर टालसी।

बकरे की माँ कितने शनिवार टालेगी—ऊपर देखिए।

बकरे की माँ बच्चे की कब तक खैर मनाए—(क) निर्बल अपनी रक्षा नहीं कर सकता। (ख) अवश्यंभावी विपत्ति नहीं टाली जा सकती। (ग) उपद्रवी अधिक दिन तक जीवित नहीं रह सकते।

बकुला क्या तू लावे दीठि, कितने जाल छुड़ाए पीठि—मछली बगुले से कहती है तू क्यों मेरी ओर ध्यान से देख रहा है ? मैंने तो कई जालों से अपने को बचा लिया है। तात्पर्य यह है कि धोखेबाज़ की चाल धोखा खानेवाला समझ जाता है। तुलनीय : भोज० का बकुला तूँ लावऽ दीठ केतना जाल छोड़वलीं खींच पीठ।

बक्सो बिल्ली मुर्गा बाँड़ ही रहगें—दे० 'बख्शो बीवी बिल्ली चूहा···'।

बखत पड़े की बात है—समय की बात है। जब कोई संपन्न या नेक व्यक्ति समय-परिवर्तन के कारण बुरी स्थिति मे आ जाता है तब उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० मौके दी गल है।

बखतावर का आटा गीला कमबख्त की दाल गीली—दे० 'कमबख्त की दाल गीली बख्तावर का···'।

बख्शो बीवी बिल्ली चूहा लडूँरा ही जिएगा—बिल्ली बीबी क्षमा कीजिए मैं बिना पूंछ का होकर ही रहूँगा। जब कोई किसी को धोखे से फँसाना चाहता है तो वह कहता है। इस संबंध में एक कहानी है : एक बार एक बिल्ली ने किसी

चूहे को पकड़ लिया। बिल्ली से छूटकर चूहा बिल में चला गया और खाली पूंछ उसके मुंह में शेष रह गई। तब बिल्ली ने कहा, आओ। तुम्हारी पूंछ जोड़ दूंगी। इस पर चूहे ने यह कहावत कही। तुलनीय : अव० बिलाई किरपा करे, मूस बंडबै रही; हरि० मूस्सा तै लांडा-ए कमा खा लेगा; भोज० बकस बिलार, मुरगा बाँड़े होके रइहें।

बखानल धिया डोम घर जायें—जिस लड़की की बहुत प्रशंसा की जाती है वह डोम से शादी कर लेती है। (क) प्रशंसनीय व्यक्ति जब कोई निंदनीय कर्म करता है तब उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। (ख) जिन बच्चों का अधिक दुलार होता है वे बरबाद हो जाते है।

बखेड़ा करे बनिये का, मारा जाय मुखिये का—झगड़ा वणिक पुत्र करता है और कष्ट मुखिया के पुत्र को उठाना पड़ता है। (क) साहूकार रुपए के लेन देन पर झगड़ा करते हैं और उसका निर्णय शासक को करना पड़ता है इसी कारण उसे कष्ट मिलता है। (ख) जब बुराई कोई और करे और दंड किसी और को मिले तब भी कहते हैं। तुलनीय : भीली—बखेरो करे वाणियानी नो ने मरे रच-पुनाणी नो।

बख्त उड़ गए, बुलंदी रह गई—समय चला गया अब केवल रोब ही रह गया है। सत्ता और प्रभाव समाप्त हो गया अब केवल नाम ही नाम शेष है। जब कोई संपन्न व्यक्ति निर्धन होने पर भी तड़क-भड़क एवं रोब-दाब से रहता है तब उसके प्रति कहते हैं।

बख्तों के बलिया, पकाई खीर हो गया दलिया - भाग्य की खराबी ऐसी है कि खीर पका रही थी और बन गई दलिया। बदनसीब के प्रति कहते हैं जिसे अच्छा कर्म करने पर भी बुरा फल मिलता है।

बगड़ बिराने जो रहे, माने त्रिया की सीख; तीनों यों ही जायँगे, पाही बोवे ईख—जो दूसरे के घर में रहता है, जो स्त्री की बातों को मानता है और जो दूसरे गांव में ईख की खेती करता है—ये तीनों नष्ट हो जायँगे।

बगड़ में बगड़ तीन घर, तेली, धोबी, नाई—नीची जाति के लोगों का संग रखने वाले के लिए कहते हैं।

बग़ल का सिपारा, तो पूत था हमारा; जब कमर हुआ कटोरा, तो कंत हुआ तुम्हारा—सास अपनी बहू से कहती है—जब लड़का पढ़ता था तो मेरा लड़का था। जब बड़ा और काम योग्य हुआ तो तुम्हारा हो गया। ऐसे लड़के के लिए कहते हैं जो पत्नी के वश में हो और माँ-बाप को न पूछे। (सिपारा=क़ुरान का तेरहवां हिस्सा सिपारा कहलाता है)।

बग़ल में ईमान दाब कर बात करते हैं—बेईमानी की बातें करने वाले के लिए कहते हैं।

बगल में छुरी, चोर को मारें तिनकों से—बग़ल से छुरी निकालकर चोर को नहीं मारता, तिनके उठा-उठाकर मारता है। जो व्यक्ति अपने पास साधन या वस्तु होते हुए भी उसका उपयोग न करे उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० खाख में कटारी चोर ने घोंचासूं मारं।

बग़ल में छुरी, मुंह में राम—(क) बाहर से मित्रता करना और अन्दर से शत्रु बना रहना। (ख) बाहर से साधु पर असल में कपटी या धूर्त। तुलनीय : अव० बग़ल मा छुरी मुँहना से राम राम; हरि० जीभ पै त शहद धरा भीतर जहर भरा; मरा० खाकेत सुरी, तोडांत राम; मल० अट्टिन् तोलिट्ट चेन्नायु; पंज० बगल बिच छुरी मुंह बिच राम राम; ब्रज० बगल में छुरी मुंह में राम; अं० A wolf in lamb's skin.

बगल में छोरा, गांव में ढिंढोरा—पास में या गोद में ही लड़का (छोरा) है और उसे ढूंढ़ने के लिए पूरे गांव में ढिंढोरा पिटवा रहे हैं। जब कोई अपने समीप या सामने पड़ी हुई वस्तु न देखकर चारों ओर उसे खोजता फिरे तब उसके प्रति कहते है। तुलनीय : राज० बगल में छोरो, गांव में हेरो; हाड़० खांक में छोरो, गांव में हेरो; निमाड़ी—काकम छोरो, गांव ढिंढोरो; भोज० बगल में लइका भर गाँव खोजहट; तेलु० चंकलो पिल्ली नुंचुकोनि संतंता वेतिकि-नट्लु; राज० बगल में छोरो, गाँव में ढींढोरो; पंज० कुडी टिढोंरा सहर।

बगल में छोरा, नगर में ढिंढोरा—ऊपर देखिए।

बगल में तूती का पींजड़ा 'नबी जी भेजो'—तोते को पढ़ा रहे हैं कि हे भगवान, मुफ्त का माल भेजो। धूर्त या लालची व्यक्ति के प्रति कहते हैं।

बगल में टोसा, किसका भरोसा—दे० 'कमर में तोसा …'।

बगल में तोसा, मंज़िल का भरोसा—दे० 'कमर में तोसा…'।

बग़ल में मुंह में डालो—ज़रा अपने अंदर झांक कर देखो। दूसरे की बुराई करने वाले के प्रति कहते हैं कि ज़रा अपनी ओर देखो, तुममें भी बुराइयां हैं।

बग़ल में लड़का, शहर में ढिंढोरा—दे० 'बग़ल में छोरा…'।

बग़ल में सोटा नाम ग़रीबदास—गुण परिस्थिति या

शक्ति के विपरीत नाम होने पर कहते हैं।

बगला भगत बना है—पाखंडी, कपटी, धोखेबाज़ आदि को कहते हैं। तुलनीय : अव०, गढ़० बगुला भगत।

बगला भी धोबी का भाई है—क्योंकि वह भी दिन-भर पानी में ही खड़ा रहता है। तुलनीय : पंज० बगला पी तोबी दा परा है; ब्रज० बगुला तौ धोबी कौ भैया ऐ।

बगला मारे डैना हाथ—बगुला मारने से केवल पंख ही हाथ लगेगा और कुछ नहीं। अर्थात् (क) छोटा काम करने पर परिणाम भी छोटा ही होता है। (ख) निर्बल को सताने से कोई लाभ नहीं होता। तुलनीय : अव० बगुला मारे पखनै हाथ।

बगले को क्या नहलाना ?—बगुला तो स्वयं ही स्वच्छ और दूध जैसा सफेद होता है उसे नहलाने से क्या लाभ ? जब कोई व्यक्ति किसी ऐसे व्यक्ति को कोई काम समझाए जो उसे बहुत अच्छी तरह आता हो तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : भीली—बगलाए हाबू हूँ देवो; पंज० बगले नूं की नोआना।

बगलों की लड़ाई में चोंचों की खटाखट—बगुले जब आपस में लड़ाई करते हैं तो चोंच से ही एक-दूसरे को मारते हैं। आशय यह है कि निर्धनों के पास साधन भी छोटे ही होते हैं।

बचने किं दरिद्रता—बचन में क्या दरिद्रता ? अर्थात् किसी को अपने कार्य से नहीं तो कम-से-कम बचन से तो अवश्य ही प्रसन्न रखना चाहिए।

बचनों का बांधा खड़ा है—आसमान को कहते हैं जो अपनी बात पर या सत्र पर खड़ा कहा जाता है।

बच बे जुम्मा, आंधी आई—आने वाले कष्ट या आफ़त से होशियार होने के लिए कहते हैं।

बचाया सो कमाया—जो जितना धन बचा सके, समझना चाहिए कि उतना ही उसने कमाया है क्योंकि संचित धन ही समय पर काम आता है। तुलनीय : मल० मिच्चम् बच्चतु सम्बाद्यमू; अं० A penny saved is a penny got.

बचे तो आप से न बचे तो सगे बाप से—स्त्री यदि स्वयं चरित्र-भ्रष्ट नहीं होना चाहती तो उसे कोई भ्रष्ट नहीं कर सकता और यदि खुद ही उस मार्ग पर जाना चाहे तो उसका अपना पिता भी उसे नहीं रोक सकता।

बचे नर हज़ार घर—सच्चे मर्द की रक्षा करना हज़ार घरों की रक्षा के बराबर होता है। क्योंकि सच्चे मर्दों से समाज का काफ़ी फ़ायदा होता है।

बच्चा गधे का भी सुंदर—बच्चा गधे का भी सुंदर दिखाई देता है। बच्चे चाहे पशु के या पक्षी के या मनुष्य के हों सभी सुंदर लगते हैं। तुलनीय : राज० छोटो बछियो गधेरो ही चोखो; पंज० खोता दा बी बच्चा सोहना।

बच्चा पैदा नहीं हुआ, ढोल बजने लगा—जब कोई परिणाम से पहले ही खुशियाँ मनाने लगता है तब उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० बच्चा जम्मया नईं टोल बजण लग्गा।

बच्चा भगवान का रूप होता है—क्योंकि उसका हृदय निष्कपट होता है।

बच्चे का हाथ और बुड्ढे का मुंह खुजलाता है—बालक उपद्रव किए बिना और वृद्ध बड़बड़ाए बिना नहीं रहता, इसलिए इन दोनों के ऐसा करने पर यदि कोई क्रोधित हो तो उसे समझाने के लिए कहते हैं। तुलनीय : गढ़० बाला को हाथ खज्यो, बुड्या को गिच्चो खज्यो।

बच्चे पेट में लात मारते हैं—जब बच्चा गर्भ में होता है तब भी लात मारता है। अर्थात् संतान माँ-बाप को सदा कष्ट देती है। तुलनीय : मेवा० टाबर पेट में ई लात मारे; पंज० बच्चे ठिड बिच लत मारदे हन।

बच्चे बड़ों को लड़ाकर फिर एक—बच्चे अपनी लड़ाई से बड़ों को लड़ाकर आपस में फिर घुलमिल जाते हैं। बच्चों के लड़ाई-झगड़े को बड़ों तक नहीं खींचना चाहिए और न ही बड़ों को उसे गंभीरता से लेना चाहिए। तुलनीय : भीली—नाना चोरा माँटी मराबी ने मेरा।

बच्चों का चाटा घर और बकरियों का चाटा बन—जिस घर में बच्चे अधिक हों उस घर में ग़रीबी आ ही जाती है, और जिस बन में बकरियाँ नित्य चरती हों तो उस बन में भी घास और पत्ते आदि समाप्त हो जाते हैं। तुलनीय : गढ़० बैट्यूं को चाट्यूं घर, अर खरको चाट्यूं बण।

बछड़ा खूंटी के ही बल कूदता है—आशय यह है कि छोटा, निर्बल या निर्धन बड़े का सहारा पाकर ही अकड़ दिखाता है।

बछड़े से लगती नहीं, खाल से लगा दो—गाय बछड़ा होने पर तो लग नहीं रही और कहते हैं कि खाल दिखाकर लगा लो। नासमझी या मूर्खता की बातें करने वाले के प्रति कहते हैं।

बछिया के पेट में, न गाय के थन में—दूध गाय के थन में भी नहीं है और न ही बछिया ने पिया है। जब किसी वस्तु को बहुत यत्न से रखकर उसके वास्तविक अधिकारी को भी न दी जाय तथा वह किसी तीसरे व्यक्ति द्वारा रहस्यमय ढंग

से ग़ायब कर दी जाय तो आश्चर्य प्रकट करने के लिए ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० न बाछरू को पोटगा, न गोरू का टोटगा।

बछिया के बाबा, पड़िया के ताऊ—बैल और भैंसा। मूर्ख को कहते हैं।

बछिया छोटी, हत्या बड़ी—बछिया छोटी हो या बड़ी उसके मारने से गो-हत्या का दोष लगता है। (क) जब किसी व्यक्ति का छोटा-सा दोष भी बड़ा अपराध माना जाय तो उसके प्रति इस प्रकार कहते हैं। (ख) बुरा काम बुरा ही होता है चाहे वह छोटा हो या बड़ा, इस पर भी ऐसे कहते हैं। तुलनीय : गढ़० बाछी छोटी हत्या बड़ी।

बजड़ा क पीसनहारी गोहूं क गीत गावे—बाजरा पीसने वाली गेहूँ पीसने के गीत गाती है। हैसियत से बाहर काम करने वाले के लिए कहते हैं।

बजत बजत आखिर तो नंद ही के द्वार आवेगी—नौबत बजते-बजते अन्त में नंद के दरवाज़े पर ही आएगी। जिससे बात का संबंध हो और उसी से वह छिपाई जाय तो कहते हैं। क्योंकि अन्त में बात उस पर तो अवश्य ही प्रकट हो जाएगी।

बजरंगबली का सोटा, फूट जाय भंगी का लोटा—भाँग पीने वालों के प्रति चिढ़ाने के लिए कहते है। (भंगी = भंगेड़ी या भाँग पीने वाला)। तुलनीय : राज० बजरंग बीरका सोटा, फूट जात भगी को लोटा।

बजा कहे जिसे आलम उसे बजा समझो—जिस बात को दुनिया अच्छी कहे, उसे अच्छी ही समझनी चाहिए।

बजाज का बेटा कपड़े की भीख माँगे—जिस वस्तु की जिसके यहाँ अधिकता हो उसी वस्तु को उसके बच्चे या परिवार के लोग दूसरों से माँगें तो कहते हैं। तुलनीय : असमी—ओंठत् धा, भाइ शहुर् ओजा; अं० Sore in the lip though the husband's elder brother is a physician.

बजाज की गठरी पर झींगुर राजा—कपड़ों का गट्ठर बजाज का है। लेकिन झींगुर उसे अपना समझकर अपने को राजा समझता है। दूसरे की वस्तु पर घमंड करने वाले के प्रति कहते हैं।

बजाज बदज़ात—बजाज की जाति बुरी होती है, क्योंकि वे अक्सर लोगों को ठगते हैं।

बजाजी की कमाई, सराफ़ी में गँवाई—बजाजी में जितना लाभ हुआ, सराफ़े में उतनी ही हानि हुई। एक वस्तु में जितना लाभ हो यदि दूसरी वस्तु में उतनी ही हानि हो तब यह लोकोक्ति कही जाती है।

बजा दे, खनिया ढोलकी, मियाँ खैर से आए—खनिया-ढोलकी बजा दे, मियाँ साहब कुशलपूर्वक घर आ गए। जब कोई किसी कठिन कार्य को करने का बीड़ा उठाए और वह असफल हो जाए तो उसके प्रति मज़ाक़ में कहते हैं। (खनिया = खान की पत्नी, एक याचक जाति)।

बज़ार लगा नहीं, उचक्के पहुँच गए—अभी बाज़ार नहीं लगा लेकिन उचक्के माल चुराने के लिए आ गए। जब किसी कार्य के पूर्ण होने से पहले ही उससे लाभ उठाने के लिए कोई तैयार हो जाता है तब उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : पंज० हट्टी पायी नईं चोर आ गये।

बज़ार लगा नहीं, उचक्कों ने डेरा डाल दिया—ऊपर देखिए।

बज्र पड़े कहाँ, तीन कायथ जहाँ—जहाँ पर तीन कायस्थ होते हैं वहाँ बज्र पड़ जाता है। कायस्थों के प्रति व्यंग्य है। तुलनीय : अव० बज्जर पड़े कहवाँ तीन कायथ जहवाँ।

बज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि—जिसका हृदय बज्र से भी कठोर हो और फूल से भी कोमल हो, वह न्याय-शील या मुनसिफ़ है। न्यायप्रिय व्यक्ति को कहते हैं।

बटबट जोगी अनबट चोर—जोगी राह पकड़कर जाता है और चोर बिना राह के। आशय यह है कि साधु या सज्जन पुरुष निश्चित होकर स्वच्छंद घूमते हैं जबकि चोर या अपराधी ऊबड़-खाबड़ रास्ते से या छिपकर चलते हैं।

बटिया आऊँ बटिया जाऊँ, खेत न रौंदूँ फली न खाऊँ—राह पकड़कर आता हूँ और राह पकड़कर जाता हूँ, लेकिन न तो खेत को रौंदता हूँ और न फ़सल की फली तोड़कर खाता हूँ। सज्जन पुरुष का कथन है जो बिना किसी को हानि पहुँचाए अपना काम करता रहता है। (बटिया = बाट, राह)।

बटिया की राह, बे निरबाह—पगडंडी का रास्ता विश्वसनीय नहीं होता।

बटिया खेती साँट-सगाई, यामें नफ़ा कौन ने पाई—बटाई की खेती और बुरी स्त्री से शादी करने में किसको लाभ होता है? अर्थात् किसी को नहीं। आशय यह है कि बटाई की खेती नहीं करनी चाहिए और न बुरे के साथ वैवा-हिक संबंध स्थापित करना चाहिए।

बट्टे खाते डालो—जब रक़म मिलने की उम्मीद नहीं होती तब कहते हैं। तुलनीय : अव० बट्टा खाता मा डारौ; हरि० बट्टे खात्ते में डाल्लो या गया बट्टेखाते में।

बड़ तले का भूत—ऐसे व्यक्ति के लिए कहते हैं जो जल्दी पिंड न छोड़े। तुलनीय : अव० पिपरे तरे का भूत।

बड़ रोवे बड़ाई के, छोट रोवे पेट के—बड़ा आदमी इज्जत के लिए परेशान रहता है और छोटा पेट भरने के लिए। आशय यह है कि सबको कोई-न-कोई परेशानी लगी रहती है। तुलनीय : अव० बड़कवन रोवें बड़ाई के बरे, छोटकवन रोवें पेटे बरे।

बड़सिंगा जनि लीजो मोल कुएँ में डारो रुपिया खोल—बड़े सींग वाले बैल न खरीदना चाहिए, इससे अच्छा है कि रुपये को कुएँ में डाल दे। आशय यह है कि बड़े सींग-वाले बैल अच्छे नहीं होते।

बड़ा घाऊ घप्प है—बहुत घूमखोर है। छिपकर काम करनेवाले तथा बहुत रिश्वत लेने वाले पर यह लोकोक्ति कही जाती है।

बड़ा जस कर लिया—बहुत अधिक यश (जस) प्राप्त कर लिया। जब कोई बुराई करके काफ़ी खुश होता है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

बड़ा जाने किया, बालक जाने हिया—बड़े होने पर लोग काम से खुश होते हैं किन्तु बच्चे प्यार से ही खुश होते हैं। तुलनीय : ब्रज० बड़ो जाने कीयो, बालक जाने हीयो।

बड़ा टूटकर भी बड़ा रहता है—बड़े लोग निर्धन हो जाते हैं तब भी उनके पास काफ़ी धन होता है। जब कोई नया धनी किमी धनी व्यक्ति के निर्धन हो जाने पर अपने को उससे बड़ा समझता है तब उसे समझाने के लिए ऐसा कहते हैं। तुलनीय : असमी—भाङ क् छिङक् बर् नाओर् खोला; पंज० बडा टुट के वी बडा रेंदा है; अं० A big boat remains big even if it is broken.

बड़ा तो खजूर भी होता है—खजूर का पेड़ भी बहुत बड़ा होता है, किन्तु न तो उसकी छाया ही होती है और न ही उसका फल साधारण मनुष्य प्राप्त कर पाता है। किसी व्यक्ति में यदि बड़ी आयु होने पर या बड़े घराने में जन्म लेने पर भी गुण न हों तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० बडा तो भाठा ही घणा हुवै; पंज० बड़ी ते खजूर हुंदी है।

बड़ा निवाला खाइए बड़ा बोल ना बोलिए—बड़ा कौर खाइए मगर बड़ा बोल न बोलिए। आशय यह है कि (क) संपन्न होने पर भी किसी को कटु वचन नहीं कहना चाहिए। (ख) खुद कष्ट झेल लेना चाहिए पर दूसरों को न देना चाहिए।

बड़ा, पकौड़ा, बानिया, तातो लीजे तोड़—ये तीनों गर्म ही अच्छे रहते हैं। बड़े और पकौड़े गरम ही स्वादिष्ट लगते हैं, और बनिए की जिस समय ग़रज़ अटकी हो और वह गर्मी में हो तो तुरंत अपना मतलब हल कर लेना चाहिए नहीं तो ग़रज़ पूरी होते ही वह किनारा कर लेगा। आशय यह है कि बनिए को अवसर पर ही क़ाबू में किया जा सकता है। तुलनीय : राज० बडो, पकोड़ो, वाणियो, तातो लीजै तोड़।

बड़ा बोल क़ाज़ी का प्यादा—बड़ा बोल बोलने से क़ाज़ी का प्यादा सामने खड़ा है। अर्थात् न्याय होने से क़लई खुल जाती है।

बड़ा मरे बड़ाई को, छोटा मरे दुलार को—बड़ा सम्मान चाहता है तो छोटा प्यार। जब कोई अपने छोटों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं करता और उनसे सम्मान पाना चाहता है तब उसके प्रति कहते हैं।

बड़ा मैदान जीत लिया—बहुत बड़ी विजय प्राप्त कर ली। जब कोई साधारण-सी सफलता पर फूला नहीं समाता तब उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

बड़ा रण जीत लिया—ऊपर देखिए।

बड़ा रोवे बड़ाई के, छोट रोवे पेट के—दे० 'बड़ रोवे बड़ाई के···'।

बड़ा लाड़ मेरी मौसी करें, छिनक-छिनक दोनों कोने भरें—मेरी मौसी मुझे बहुत प्यार करती है, थोड़ा-थोड़ा सम्मान मेरी दोनों थैलियों में डाल देती है। थोथा प्यार जताने वाले के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

बड़ियरा चोर सेंध में गावे—बली चोर सेंध में गीत गाता है। अर्थात् समर्थ या बलवान अपराध करके भी डरता या दबता नहीं। तुलनीय : फ़ा० चे दिलावरस्त दुज़्दे कि बकफ़ चिराग़ दारद (चोर का साहस तो देखो कि हाथ में चिराग़ लेकर आया है)।

बड़ियरा मारे रोने न दे—दे० 'जबरा मारे और···'।

बड़ी आँख फूटन को, बड़ा प्रेम टूटन को—बड़ी आँख फूटने के लिए और बड़ा प्रेम टूटने के लिए ही होता है। आँख बड़ी होने के कारण उसमें चोट लगने का डर अधिक होता है और अधिक प्रेम होने से संबंध-विच्छेद का भय रहता है। तुलनीय : राज० बडी आँख फूटणने, घणो हेत टूटणने।

बड़ी आसामी, बड़ी फ़रमाइश—धनवान व्यक्ति से मूल्यवान वस्तु ही माँगी जाती है। (क) जब कोई व्यक्ति किसी से कुछ माँगने जाता है और उसको धनवान देखकर अपनी माँग को बहुत अधिक बढ़ा-चढ़ा कर रखता है तो उसके प्रति कहते हैं। (ख) बड़े आदमियों से बड़ी वस्तुएँ

ही माँगनी चाहिए क्योंकि साधारण वस्तुएँ तो दूसरों से भी मिल सकती हैं। तुलनीय : गढ़० मोटा देखिक मोटी सूल।

बड़ी कमाई पर तेल-उबटन—बहुत धन पैदा करते हैं, इसलिए तेल-उबटन लगवाना चाहते हैं। जब कोई निकम्मा व्यक्ति अपनी सेवा कराना चाहता है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। खासकर स्त्रियाँ अपने निकम्मे पति के प्रति ऐसा कहती हैं। तुलनीय : भोज० बड़ी कमाई पर तेल-बुकवा; अव० बड़ी कमाई पँ तेल बुँकबा।

बड़ी कमाई पर नोन बिकवा—बहुत कमाई की तो नमक बेचा। धनी होकर छोटा काम करने पर कहते हैं।

बड़ी गुहार पे छोटी मनुहार—बहुत ज़ोर की आवाज़ लगाकर छोटी-सी वस्तु माँगना उचित नहीं है। जो व्यक्ति छोटी वस्तु के लिए बहुत बड़ा प्रदर्शन करते हों उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : भीली—लांबो हैलो ने चोटी मनुबेर।

बड़ी तोंद वाले आयेंगे तो पता चलेगा—बड़े पेट वाले सेठ आएँगे तो आटे-दाल का भाव पता चलेगा। जो व्यक्ति सिर पर क़र्ज़ लदा होने पर भी अकड़े उसके प्रति क़र्ज़ वसूल करने वालों का भय दिखाने के लिए कहते हैं। तुलनीय : भीली—रातो पागड़य्या वाला फरवे दियो; पंज० वडे टिड वाले आण गे ते पता लगेगा।

बड़ी ननद शैतान की छड़ी, जब देखो तब तीर-सी खड़ी—बड़ी ननद शैतान की छड़ी जैसी होती है; उसे जब देखो वह तीर के समान खड़ी रहती है। (क) किसी की दुष्टता पर कहा जाता है। (ख) ननद भावज को परेशान करती है, इसलिए भावज उसके प्रति ऐसा कहती है।

बड़ी नाक वाले हैं—बहुत इज्ज़तदार बने फिरते हैं। जब कोई व्यक्ति अपने स्वाभिमान की डींग मारे और दूसरों का एहसान न लेने का झूठा दावा करे तो उसे कहते हैं। तुलनीय : अव० बड़ी नाक वाली बनी हैं; पंज० बड़े नक वाले।

बड़ी नाँद के टूक—बड़ी नाद के टुकड़े हैं। किसी प्रतिष्ठित कुल का व्यक्ति जब दीनावस्था में हो जाता है तो कहा जाता है। तुलनीय : ब्रज० बड़ी नांद को ठीकरा।

बड़ी फ़जर चूल्हे पर नजर—बहुत सुबह ही चूल्हे पर नजर आती है। सवेरा होते ही खाने की फ़िक्र करने वाले के लिए कहते हैं। तुलनीय : मरा० सकाळच्या प्रहरीं चुली कडे डोळे।

बड़ी बड़ाई गोड़ की, तीन कोस को कोस—जो तीन कोस को एक कोस माने, निस्सन्देह वह पैर प्रशंसा का पात्र है। बड़े काम करने वाले असाधारण लोगों के प्रति कहते हैं। (कोस = दो मील)।

बड़ी-बड़ी बही जायँ गड्डर थाह माँगें—दे० 'बड़े-बड़े बह जायँ चींटी कहे ...'।

बड़ी-बड़ी महफ़िलों से भगाए गए हैं—अच्छी-अच्छी सभाओं से निकाल दिए गए हैं। बेशर्म व्यक्ति के प्रति कहते हैं जिसे अपने मानापमान का कोई ध्यान नहीं रहता।

बड़ी बहू को बुलाओ जो खीर में नमक डाले—जब किसी बड़े-बूढ़े से कोई भूल हो जाय तो उस पर व्यंग्य से ऐसा कहते हैं।

बड़ी बहू ने काढ़ी कार, सारी उतरी उससे पार—बड़ी बहू ने जैसी रीति निकाली है, छोटी बहुएँ भी उसी का अनुसरण करती हैं। आशय यह है कि जैसा बड़े कहते हैं वैसा छोटे भी करते हैं। तुलनीय : हरि० बड्डी भऊ ने काड्ढी कार, सारी उतरी उस्सै पार्‌य।

बड़ी बहू बड़ा भाग, छोटा लाढा घणा सुहाग—बड़ी बहू बड़ी भाग्यशाली है क्योंकि उसका पति उससे छोटा (कम आयु का) है जिससे वह अधिक दिनों तक सुहागिन रहेगी। जब बहू की उम्र वर से अधिक होती है तब वर पक्ष के लोगों की तसल्ली के लिए ऐसा कहते हैं।

बड़ी बात से बड़े नहीं बनते—बड़ी-बड़ी बातों से ही बड़ा व्यक्ति नहीं बना जा सकता, महान बनने के लिए बड़े-बड़े काम करने पड़ते हैं। जो व्यक्ति लंबी-चौड़ी हाँककर अपने को बहुत बड़ा दिखाते हों और काम-धाम कुछ न करते हों उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : भीली—अणानो कायदो चपाने, मोटी-मोटी बात भलं करो; ब्रज० बड़ी बातन ते कोई बड़ो नायँ होयँ।

बड़ी भाभी माँ के थानक—बड़ी भौजाई माता के समान है। (थानक = स्थान, समान)।

बड़ी मछली छोटी को खाती है—(क) सबल निर्बल को कष्ट देते ही हैं। (ख) बड़ों का पेट छोटों से ही भरता है। तुलनीय : भोज० बड़ मछरी छोट मछरी के खाले; अव० बड़किन मछरी छोटकिन मछरिन का खाय जात है; पंज० बडी मछी निकी मछी नूं खांदी है, ब्रज० बड़ी मछली छोटी ऐ निगलि जायो।

बड़ी रात का बड़ा भोर—लंबी रात का भोर भी लंबा होता है। बड़े आदमियों की सभी बातें बड़ी ही होती हैं। किसी धनवान को दिल खोलकर खर्च करते देखकर उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० मोटी रातांरा मोटा ही झांझरका।

बड़े अन्नपूरना बने हैं—बड़े दानी बने हैं। जो कभी-कभी दिखावे के लिए किसी को कुछ दे देता है और उसे सबसे कहता फिरता है उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : अव० बड़े दाता दानी बने हैं।

बड़े अपनी जगह, छोटे अपनी जगह—सब व्यक्ति समाज में अलग-अलग स्तर पर रहते हैं। (क) सबसे एक-सा व्यवहार नहीं किया जा सकता। बड़ों से आदर-युक्त व्यवहार करना पड़ता है। (ख) अपने स्थान पर सबका महत्त्व होता है। तुलनीय : भीली—मोटा चोटा नूं कायदो राखबू पड़े; पंज० वड़े अपनी थां निक्के अपनी थां।

बड़े अपनी लाज को मरें—बड़े अपनी प्रतिष्ठा का हनन होने के कारण डरते हैं। बड़े व्यक्ति अपने सम्मान की रक्षा के लिए प्राण भी दे देते हैं। तुलनीय : राज० बड़ा लाजरा खातर मरै।

बड़े आए रसिया गुंजे की माला—रसिया बनकर आए हैं और पहने हैं गुंजे की माला। जब कोई व्यक्ति किसी काम को करने जाय पर उसकी वेश-भूषा अवसर के उपयुक्त न हो या उसकी तैयारी अच्छी न हो तब उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० बड़े आय रसिया मचवन कै माला; भोज० बनि के अइलें रसिया घुंघुची क माला।

बड़े आदमी की सीख, छोटों को श्रद्धा—बड़े आदमियों की नाराज़गी छोटों के लिए श्रद्धा की चीज़ होती है। आशय यह है कि बड़े आदमियों की सामान्य बातें भी छोटों के लिए बहुत बड़ी होती हैं। तुलनीय : भोज० बड़ मनई क खीस, छोट मनई क सरधा।

बड़े आदमी की पीठ काली, गरीब का मुंह काला—आशय यह है कि बड़ों की निन्दा पीठ पीछे की जाती है और ग़रीबों की उनके मुँह पर ही। तुलनीय : पंज० बडे बंदे दी पिठ काली निके दा मुँह काला।

बड़े आदमी ने दाल खाई तो कहा हुजूर का सादा मिज़ाज है और ग़रीब ने दाल खाई तो कहा साला कंगाल है—जिस काम के लिए अमीर आदमी की स्तुति होती है उसी के लिए ग़रीबों की निन्दा होती है। तुलनीय : अव० बड़ मनई दाल खायँ तो कहेन मन बहिरावत है, और गरीब दाल खाइन तौ कहेन ससुरा कंगाल है; मरा० मोठ्या माणसाने वरण खाल्ले तर म्हणे किती साधेपण नि गरिबाने वरण खालें तर म्हणे दरिद्री लेकाचा।

बड़े कहें सो कीजिए, करें सो करिए नाहिं—बड़े जो करने को कहें उसे तो करना चाहिए पर उनके द्वारा किया गया काम नहीं करना चाहिए क्योंकि उनके द्वारा किए जाने वाले सभी काम छोटों के लिए शक्य या लाभकर नहीं होते। तुलनीय : राज० बड़ा कैवै ज्यूं करणो, करै ज्यूं नहीं करणो।

बड़े की बड़ाई न छोटे की छोटाई—न बड़ों का आदर करता है और न छोटों को प्यार करता है। अपनी मर्यादा पर न चलने वाले के प्रति कहते हैं।

बड़े की बात बड़े पहिचाना—बड़े या ऊँचों की बातें, ऊँचे या बड़े ही समझते हैं। तुलनीय : भोज० बड़वरे क बात बड़वरै जानेंलं; गढ़० आखिर बड़ान बड़ो पछाणों; अव० बड़कवन कै बात बड़कनै जानै; ब्रज० बड़ेन की बात बड़े ही जाना।

बड़े के आगे और घोड़ा के पीछे न जाना चाहिए—क्योंकि दोनों दशाओं में हानि की संभावना रहती है।

बड़े के कहे का और आँवले के खाए का स्वाद पीछे से आता है—बड़े के कहने का और आँवला खाने का स्वाद बाद में मिलता है। जब कोई बड़ों के उपदेश या उनकी डाँट-फटकार का बुरा मानता है तब उसे समझाने के लिए ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मरा० बडिलाचे सांगणें नि आंवळयाचें खाणें याची चव मागून कळते।

बड़े गाँव के नंबरदार—अर्थात् बड़ा आदमी। तुलनीय : कन्नौ० बने गाँव को लम्मर।

बड़े गाँव जाए, बड़े लड्डू खाए—बड़े गाँव में जाने से बड़े लड्डू खाने को मिलते हैं। आशय यह है कि (क) बड़ों की संगति से बड़े लाभ प्राप्त होते हैं। (ख) छोटे गाँव की अपेक्षा बड़े गाँव का महत्त्व अधिक होता है। तुलनीय : हरि० बड्डे गाम जा बड्डे लाड्डू खा।

बड़े घड़े के ठीकरे किस काम के—बड़े घड़े के टुकड़े किसी काम नहीं आते। जब कोई व्यक्ति बड़े खानदान में जन्म लेकर भी नीच काम करे तो उसके प्रति घृणा प्रदर्शित करने के लिए कहते हैं। तुलनीय : भीली—मोटा घराणां ना ठीकरा हाऊ खरेहा बे।

बड़े घर के ठीकरा—ऊपर देखिए।

बड़े घर पड़िए, पत्थर ढो-ढो मरिए—बड़े घर में पड़ने पर पत्थर ढो-ढो कर मरना पड़ता है। आशय यह है कि पैदा होने पर या विवाहित होकर बहू के रूप में बड़े घर में जाने पर काम बहुत करना पड़ता है।

बड़े घर में घुसना आसान निकलना मुश्किल—आशय यह है कि बड़े घर के लोगों से मेलजोल करना आसान है, किंतु उसके बाद उनसे पीछा छुड़ाना बहुत कठिन है। तुलनीय : राज० बंडारी गांड में बड़नो सोरो, निसरणो दोरो।

बड़े घर में सत्तर छेद—बड़े घर की दीवारों में बहुत छेद होते हैं। बड़े घरों में प्रायः बहुत दोष पाए जाते हैं, उन्हीं के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : भीली—मोटा घरे मा चादा मांये चेकलू देखाय; पंज० बडे कर बिच पंजा मौर।

बड़े घोड़े की बड़ी चाल—बड़े घोड़े की चाल अधिक तीव्र होती है। आशय यह है कि ऊँचों के काम भी ऊँचे ही होते हैं। तुलनीय : राज० गढांरे गढ पावंणा; पंज० बडे कौडे दी बडी चाल।

बड़े चोर का हिस्सा नहीं—बड़े चोर का कोई निश्चित हिस्सा नहीं होता क्योंकि वह तो मनमाना ले लेता है। सबल की मनमानी पर कहते हैं। तुलनीय : अव० बड़के चोरवा के हिंसवै नाही; मार० मोठ्या चोराला बांटणी द्यावी लागत नाहीं।

बड़े-छोटे मिलें तो काम चले—प्रत्येक काम को सफल बनाने के लिए बड़े-छोटे सभी व्यक्तियों की आवश्यकता होती है। सबके एक साथ मिलकर काम किए बिना सफलता नहीं मिलती। तुलनीय : भीली—मोटा-चोटा मेला रेवा हूँ फायदो है; पंज० बड़े निक्के मिलण ते कम चले।

बड़े तीर मार लिए—बहुत बड़ी सफलता प्राप्त कर ली। जब कोई साधारण-सी सफलता पर फूला नहीं समाता तब उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

बड़े तीसमारखाँ बने हो—झूठी शान दिखाने वाले के प्रति कहते है।

बड़े धनी को बड़े दुःख—अधिक धन वाले पर दुःख भी अधिक ही आते हैं। बड़े लोगों की परेशानियाँ भी बड़ी ही होती हैं। तुलनीय : भीली—घणा वाला ए घणों दुःख; पंज० मते पैहे वाले नूं मते दुख।

बड़े पूत पढ़ैया, सोलह दूनी आठ—बेटा पढ़ने में इतना अच्छा है कि सोलह दूनी आठ बतलाता है। मूर्ख लड़के के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : पंज० बड्डे पुत पढ़ाकड़े सोलाँ दूनी अट्ठ।

बड़े बड़ाई ना करें, बड़े न बोलें बोल—बड़े आदमी अपनी बड़ाई नहीं करते और न बढ़-बढ़कर बोलते ही हैं।

बड़े-बड़े नाग पड़े, ढोंढ़ माँगे पूजा—बड़े-बड़े नागों (सर्पों) को तो कोई पूछता नहीं, ढोंढ़ (छोटा नाग) पूजा माँग रहा है। जहाँ बड़ों की कोई पूछ न हो वहाँ जब छोटे सम्मान पाने की उम्मीद करें तो उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

बड़े-बड़े बह जायँ, गदहा कहे कितना पानी—नीचे देखिए। तुलनीय : छत्तीस० बड़े-बड़े बोहा जायँ गडरी कहे मोका पार लगाव; भोज० बड़-बड़ बहल जाँ, गदहवा कहे केतना पानी; अव० बड़े-बड़े बहे जायँ गड़रेक थाह माँगे।

बड़े-बड़े बह जायँ, चींटी कहे मुझे थाह दो—जिस काम को बड़े या सबल न कर सकते हों, उसी को जब कोई छोटा या निर्बल करने का साहस करता है तब यह लोकोक्ति कही जाती है।

बड़े बनने के लिए बड़ा दुःख सहना पड़ता है—काफ़ी श्रम और परेशानियों के बाद आदमी बड़ा बनता है। तुलनीय : सिं० नरा कहावण बरा दुख पावण, छोटे का दुख दूर; पंज० बड़े बनण लई बड़ा दुख सहना पैंदा है।

बड़े बरतन की खुरचन भी बहुत है—बहुत बड़े या खानदानी मनुष्य के लिए कहते हैं कि उसका बहुत कम देना भी बहुत बड़ा होता है। तुलनीय : माल० मोटा हाँडा री घरचण ही भली; मरा० मोठया भांडयाची खरबडसुद्धां पुष्कळ निघते।

बड़े बर्तन का खंगराबन बहुत—ऊपर देखिए। तुलनीय : अव० बडवार बरतन कैर खंगराबने बहुत।

बड़े बात से छोटे लात से—बड़े आदमी बात से ही मान जाते हैं पर छोटे बिना पिटे नहीं मानते।

बड़े बोल का मुंह काला—नीचे देखिए।

बड़े बोल का सिर नीचा—घमण्डी को जब उससे बढ़-कर व्यक्ति परास्त करता है तो उसे झुकना पड़ता है या नीचा देखना पड़ता है। तुलनीय : अव० बड़े बोल का मूंड नीचे; बुंद० बड़े बोल को मों कारो; ब्रज० घमण्डी को सिर नीचों; मरा० गर्वाचें घर खाली; अं० Pride goes before a fall.

बड़े वृक्ष की छाया चोखी—बड़े वृक्ष की छाया अच्छी होती है। आशय यह है कि सहारा बड़ों का ही अच्छा होता है।

बड़े भाग से मानुस तन पावा—बड़े भाग्य से मनुष्य का शरीर मिलता है, इसलिए इसका अधिक से अधिक अच्छे कार्यों में प्रयोग करना चाहिए।

बड़े भाग होत है, दाद, खाज और राज—राज तो अवश्य भाग्य से मिलता है पर लोगों का यह भी विश्वास है कि दाद और खुजली भी भाग्यवान को ही होते हैं।

बड़े मियाँ तो बड़े मियाँ, छोटे मियाँ सुबहान अल्ला—जहाँ एक बुरा हो, दूसरा उससे भी बढ़ जाए या जब बाप से बेटा कहीं बढ़ जाय या जब बड़े से छोटा बढ़ जाय तो

कहते हैं। तुलनीय : अब० बड़े मियाँ तो बड़े मियाँ, छोटे मियाँ, सुभान अल्ला; हरि० छोट्टे बड्डे समं टीरीखाँ; ब्रज० बड़े मियाँ तो बड़े मियाँ, छोटे मियाँ सुभानल्ला।

बड़े रोवें बड़ाई के, छोटे रोवें पेट के—दे० 'बड़े रोवे बड़ाई के···'।

बड़े लोगों के कान होते हैं, आँख नहीं—बड़े लोग प्रायः चाटुकारों की झूठी बातों का बिना देखे ही विश्वास कर लेते हैं, इसलिए उन पर यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : पंज० बड़े लोकाँ दे कनँ हुँदे हन अखाँ नईं।

बड़े शहर का बड़ा ही चाँद—बड़े शहर का चाँद भी बड़ा ही होता है। बड़े शहरों में बहुत बड़े-बड़े ठग भी रहते हैं। तुलनीय : गढ़० सामसा की कुलौं सम्मी साम्मी।

बड़े सहज ही बात सो रीझ देत बकसीस—बड़े लोग सामान्य बातों पर ही प्रसन्न होकर इनाम दे देते है। अर्थात् बड़े लोग जल्द ही प्रसन्न हो जाते हैं।

बड़े से व्याहना, छोटे से खिलाना—खाना पहले घर के छोटे बच्चों को देना चाहिए और विवाह पहले बड़े बच्चे का करना चाहिए। तुलनीय : गढ़० जेठा बिटी बेओणो, अर कांणमा बिटी खवोण।

बड़े सो बाप समान, छोटे सो भाई समान—अपने से बड़ों को पिता-तुल्य और छोटों को भाई के समान मानना चाहिए और उसी के अनुसार व्यवहार करना चाहिए। तुलनीय : भीली—मोटा जतरा बाप, चोटा जतरा भाई।

बड़े ही कड़ाही में तले जाते हैं—बड़ों को ही अधिक बड़े काम करने पड़ते हैं। उम्र अथवा धन-सम्पत्ति की दृष्टि से किसी बड़े आदमी को बुरा कहने के लिए कहते हैं (बड़े शब्द में श्लेष है।) तुलनीय : ब्रज० बड़े तो करहैया में तले जाएँ; पंज० बड़े ही कडाई बिच तलोंदे हन।

बड़े होय पर जानिए, बहू, बछेड़ा, पूत—बहू, बछड़े और सन्तान के गुणावगुण का पता बड़ा होने पर ही चलता है। (क) किसी भी व्यक्ति के चरित्र का पता तुरन्त ही नहीं चल जाता उसके जानने के लिए समय लगता है। (ख) किसी भी कार्य के फल का पता उसके पूर्ण होने से पूर्व नहीं लगता। तुलनीय : राज० बहू, बछेरा, ठीकरा, नींवड़ियां परवाण।

बड़ों का काम, छोटों की बान—घर पर बड़े लोगों को अच्छी बातें और अच्छे काम करने चाहिए ताकि घर के छोटे बच्चे भी अच्छे काम करें और अच्छे बन सकें। बुरे काम करने वालों को शिक्षा देते हुए ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० छोट्टा की बाण ठुला की धाण।

बड़ों का क्रोध बिल के अन्दर—बड़े लोग अपने क्रोध को छिपाए रहते हैं। आशय यह है कि गम्भीर पुरुष सहनशील होते हैं। तुलनीय : गढ़० बड़ा को रोष पूठा भूड़े।

बड़ों का बड़ा ही भाग—बड़ों का भाग्य भी बड़ा होता है। तुलनीय : भोज० बड़हने क भगियो बड़हन होले; अव० बड़कवनकै बड़ा भाग; गढ़० बड़ू का बड़ा भाग; पंज० बडयाँ दे बड़े पाग।

बड़ों का बड़ा ही मुंह—बड़ों का मुँह भी बड़ा होता है। अर्थात् बड़ों की माँग भी असाधारण होती है। तुलनीय : अव० बड़कवन के बड़ मुँह; पंज० बडयाँ दा बडा मूँ।

बड़ों की आँखें नहीं कान काम करते हैं—आशय यह है कि बड़े लोग कानों से सुनी बातों का ही विश्वास कर लेते हैं, स्वयं जाँच-पड़ताल नही करते। तुलनीय : राज० बडाँरे कान हुवै, आँख्यां को हुवै नी; मरा० मोठ्या लोकानां कान असतात पण डोळे नसतात; पंज० बडे बंदयां दी अखाँ नईं कन कम करदे हन।

बड़ों की कर बात, मारा जाय बेबात—जो बड़े आदमियों के सम्बन्ध में बातें करता है वह बिना कारण ही मारा जाता है। बातें करते हुए यदि किसी बड़े के विरुद्ध कोई शब्द मुँह से निकल जाय तो उसका भयंकर परिणाम भुगतना पड़ता है, इसीलिए बड़ों के सम्बन्ध में किसी प्रकार की भी बातचीत नही करनी चाहिए। तुलनीय : राज० मोटाँरी बात करै सो बिना मौत मरे।

बड़ों की बड़ी बात—(क) बड़ों के विचार भी बड़े होते हैं। (ख) बड़ों की योजनाएँ भी बड़ी होती हैं। तुलनीय : गढ़० बड़ की बड़ी बात; मल० मूत्तवर् चोल्लुम् मुत् नेल्लिक्का; ब्रज० बड़ेन की बड़ी ई बात; पंज० बड़े बं दिआँ बडियाँ गलाँ; अं० Great men have grea views.

बड़ों के कहे का और आँवलों के खाए का पीछे सवा आता है—इन दोनों का अच्छा फल बाद में दिखाई पड़त है। दे० 'बड़े के कहे का···।' तुलनीय : गढ़० दाना क अढ़ती भर औल्यूं को सवाद पिछने औंद।

बड़ों के कान होते हैं आँखें नहीं—दे० 'बड़ों की आँ नहीं···।'

बड़ों के बटखरे भी बड़े—बड़े आदमियों के तोलने बाट भी बड़े-बड़े होते हैं। अर्थात् बड़ों की सभी बातें ब होती हैं। तुलनीय : राज० मोटाँरी पंसेरी ही भारी।

बड़ों के बड़े काम—बड़े लोगों के काम भी बड़े हो हैं। (क) बड़े लोगों की प्रतिष्ठा भी बड़ी होती है। (ख

जब कोई बड़ा आदमी कोई नीच काम कर बैठे तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० बडांरा बड़ा ही काम; ब्रज० बड़ेन के बड़ेई काम।

बड़ों से रखे आस, न जाएँ पर उनके पास—बड़ों से आशा तो रखें पर उनके पास न जायें।

बढ़ और बढ़ खजूर के पेड़ !—ऐ खजूर के पेड़, और अधिक बढ़ो। अधिक लंबे व्यक्ति के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : राज० बध-बध, रे चंदणरा रूंख ! ऊँचो बध।

बढ़े तो अमीर, घटे तो फ़क़ीर, मरे तो पीर—धन बढ़ने पर अमीर, घटने पर फ़क़ीर और मरने पर पीर कहलाते हैं। मुसलमानों के लिए कहते हैं। वे चाहे किसी दशा में रहें पदवी से खाली नहीं रहते।

बढ़े बाल और मैले कपड़े, और करकसा नार; सोने को धरती मिले, नरक निसानी चार—बढ़े बाल, मैले कपड़े, दुष्टा स्त्री तथा सोने के लिए ज़मीन ये चारों नरक-तुल्य हैं।

बताएँ बाढ़, मिले न कीचड़—बताया था कि बाढ़ आई हुई है, किन्तु वहाँ पर कीचड़ तक नहीं मिली। जो व्यक्ति झूठ बोले या जिसकी बात में कुछ तथ्य न हो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : माल० पाणी बतावे बटे गादो नजरे नी आवे।

बतासा कहने से ही मुंह में नहीं पड़ जाता मुंह से कहने भर से ही कोई वस्तु मिल नही जाती। कोरी बातें करने से ही कोई वस्तु नहीं मिलती वरन् परिश्रम करने से मिलती है। जो व्यक्ति केवल मन के लड्डू फोड़ते रहें उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० मिसरी कह्यां सूं मूं मीठो को हुवैनी।

बत्तीस दाँत की भाषा खाली नहीं जाती—रोज का शाप देना भयंकर रूप धारण कर लेता है और अवश्य पड़ता है।

बत्तीस दांत में जीभ—जीभ बत्तीस दाँतों के बीच घिरी हुई है। ऐसे व्यक्ति को कहते हैं जो शत्रुओं से या विरोधी स्वभाव वालों से घिरा हो। तुलनीय : अव० बत्तिस दाँतन के बीच मा जीभ; मेवा० दाँता बचली जीभ व्हे ने रेणो है।

बत्तीस दाँतों में जीभ अकेली—ऊपर देखिए। तुलनीय : माल० दो मोटा बचे ईंट न दाँता बचे जीब।

बथुए का साग किन सागों में, ललिया सास किन सासों में—साधारण वस्तु का कोई मूल्य नहीं होता और दूर का रिश्ता-नाता कोई रिश्ता नहीं होता। किसी छोटे साधन से अपना लक्ष्य सिद्ध करने के परामर्श पर दूसरे से ऐसा कहा जाता है।

बद अच्छा बदनाम बुरा—बुरा आदमी होता तो बुरा है ही किन्तु कुकर्म करके कुख्याति प्राप्त करना (बदनाम) उससे भी बढ़कर बुरा होता है। तुलनीय : अब० बद अच्छा बदनाम बुरा; गढ़० बद् भलो, पर बद्दो बुरो; माल० बद हाऊ ने बदनाम बुरो; मरा० वाईटपणा पत्करेल, पण आळ येणें वाईट; मल० दुष्पेरिनेक्काल उत्तमम् दुष्टन्; ब्रज० वही; अं० A bad man is better than a bad name.

बद घोड़े की मेख—बदनाम घोड़े का खूँटा। अति दुष्ट या पापी मनुष्य को कहते हैं।

बदन में दम नहीं नाम जोरावर खाँ—नाम के विपरीत गुण होने पर व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : सि० बदन में दम न ठे नालो ज़ोराबर खान नाम; अव० देहीं मा जोर नाहीं नाम गामा।

बदन में नहीं लत्ता पान खायँ अलबत्ता—शरीर पर वस्त्र नहीं है लेकिन पान अवश्य खाते हैं। ऐसे व्यक्तियों पर कहते हैं जिन्हें धन का अभाव रहता है पर ऊपर से बड़े बने-ठने रहते हैं। तुलनीय : अव० देही पै लत्ता नाहीं पान खाँय अलबत्ता।

बद बदी से न जाय तो नेक नेकी से भी न जाय—बुरा यदि बुराई नहीं छोड़ता तो भले को भलाई भी नहीं छोड़नी चाहिए। अपना नियम, सिद्धान्त या स्वभाव किसी को भी न छोड़ना चाहिए। तुलनीय : अव० बद बदी से नाहीं जात, तो नेकिब से नाहीं जात।

बदबू जितनी छिपावें उतनी ही फैले—अर्थात् दोष या या दुर्गुण जितना ही छिपाया जाता है उतना ही और बढ़ता है। तुलनीय : भोज० ऐब जेतने छिपइब ओतने फइली या बोय जतुने छिपाइब ओतुने फूटी।

बदली की घाम, निखट्टू की चोट—बदली की धूप बहुत तेज़ होती है, उसी प्रकार निखट्टू पति यदि पत्नी को मारे तो उसकी उसे बहुत चोट लगती है। यदि कोई निखट्टू पति अपनी पत्नी को किसी कारण मारे-पीटे और पत्नी उसे छोड़कर चली जाए तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : गढ़० बदल्यों द्यो की घाम तड़ाक, ढाँटुला खसम की जाँठा भड़ाक।

बदली की छाँह क्या—अस्थायी या अस्थिर लाभ पर कहते हैं। तुलनीय : अव बदरी कै छाँव का ?

बदली की धूप जब निकले तब तेज—बदली की धूप जब निकलती है तो तेज ही निकलती है अर्थात् छिपी चीज बाहर आती है तो बड़ी तेज महसूस होती है। तुलनीय :

अव० बदरी कै घाम जब निकरै तबै तेज।

बदली में दिन न दीसे, फूहड़ बैठी चक्की पीसे--रात में चक्की चलाई जाती है। बदली के कारण कुछ अँधेरा हुआ तो मूर्खों ने समझा कि रात है और चक्की चलाने लगी। मूर्ख को साधारण बातों का भी पता नही चलता। फूहड़ का अर्थ गंदा है पर यहाँ उसका अर्थ मूर्ख है।

बदली से धूप दिखे ना, फूहड़ बिस्तर से उठे ना---बादलों के कारण धूप दिखाई नही पड़ती और फूहड़ यही समझ रही है कि दिन अभी निकला नहीं है इसलिए सो रही है। आलसी और मूर्ख व्यक्ति जब समय पर कोई काम नहीं करते और बहानेबाज़ी करते हैं तो उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० बादल में दिन दीसे न फूड़ दलै ना पीमे।

बदले की सगाई गहने का साहू---बदले की क्या सगाई और गहने (गिरवी) का क्या साहूकार? अर्थात् अपनी बेटी या बहन देकर दूसरे की बेटी-बहन लेना अच्छा नहीं समझा जाता और दूसरे के ज़ेवरों को रखकर रुपया देने वाला साहूकार नही कहा जाता। तुलनीय : हरि० सांटै की कै सगाई, अर गहणे का के साहू?

बदाऊँ के लाला---मूर्ख को कहते हैं। (बदायूं के रहने वाले बलिया तथा शिकारपुरियों की तरह ही आसपास के ज़िलों में मूर्ख कहे जाते हैं)।

बधिया मरी तो मरी आगरा तो देखा---हानि तो हुई पर अनुभव या ज्ञान तो हुआ। जब कोई लाभ के लिए कहीं जाय और उलटे घर से भी कुछ गँवाकर आए तब उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। इस लोकोक्ति का स्रोत यह घटना है : एक बनजारा आगरे गया। वहाँ उसका कुछ भी माल न बिका, उलटे बैल भी मर गया तब उसने ऐसा कहा। तुलनीय : ब्रज० बधिया मरी तौ मरी आगरौ तौ देखौ।

बधिरकर्णजपन्याय:- बहरे आदमी के कान में धीरे से कहने का न्याय। व्यर्थ में प्रयास करने पर इसका प्रयोग किया जाता है।

बधू माष मापन न्याय---वधू के द्वारा माष (उड़द) को नापने का न्याय। जब कोई लाभ के लिए कंजूसी करे और उलटे हानि हो तब कहते हैं। एक कंजूस बूढ़ा आदमी अपनी स्त्री के हाथ से उसके द्वार पर आने वाले प्रत्येक भिखारी को एक मुट्ठी भीख दिलवाया करता था। कुछ दिनों के बाद उसके पुत्र की शादी होने पर उसकी सुंदर पुत्र-वधू आई। कंजूस बूढ़े ने सोचा कि यदि स्त्री के बजाय पुत्र-वधू के सुन्दर हाथ से भीख दिलाई जाय तो अन्न कम खर्च होगा। अतः वह अपनी पुत्र-वधू से यह काम करवाने लगा। पर परिणाम यह हुआ कि जो भिखारी नहीं थे, वे भी पुत्र-वधू की सुन्दरता का लाभ उठाने के हेतु भिक्षार्थ आने लगे। फलत: अन्न तो कम देना पड़ता था, पर सर्वांग रूप से विचार करने पर भिखारियों को अधिक लाभ होता गया।

बध्य घातकन्याय---मारने और मारे जाने वाले का न्याय। प्रस्तुत न्याय का प्रयोग उन दो पदार्थों के संबंध में किया जाता है जो साथ-साथ नही रह सकते।

बन आई कुत्ते की जो पालकी बैठा जावे---कुत्ते के अच्छे दिन आ गए हैं, वह पालकी में बैठकर जा रहा है। किसी तुच्छ व्यक्ति को सम्मान का पद मिल जाता है तो कहते हैं।

बन का गीदड़ जायेगा किधर---जंगल का सियार कहाँ जाएगा? असहाय व्यक्ति अपराध करने पर बचकर कहाँ जायेगा? अर्थात् क़ब्जे में ही रहेगा।

बन की पत्ती बन का खर, केलि करे बरई का बेटा---बन की पत्ती और बन के खर पर बरई का लड़का किलोल कर रहा है। (क) दूसरे की संपत्ति पर मौज उड़ाने वाले के प्रति कहते हैं। (ख) निर्धन लोग सामान्य चीज़ों से ही आनंद मनाते हैं।

बन के गए फ़क़ीर, पूरी मिली न खीर---किसी दावत में कोई मनुष्य फ़क़ीर बनकर बहुत आशा से गया कि अच्छा भोजन मिलेगा, किंतु उसे वहाँ से लोगों ने भगा दिया और वह भूखा ही घर लौट आया। जब कोई किसी जगह बहुत बड़ी आशा लेकर जाय और वहाँ से निराश लौट आए तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : गढ़० भोज की राशी, सअद न बासी।

बन के पात बनहि के खरिका, केलि करत बारी क लरिका---दे० 'बन की पत्ती बन का खर...'।

बन के पैदा बन में ही नहीं रहते---जो जंगल में पैदा होते हैं, वे सदा जंगल में ही नहीं रहते। आशय यह है कि स्थिति बदलती रहती है। कोई सदा एक ही स्थिति में नहीं रहता। तुलनीय : पंज० जंगल दे जम्मे जंगल बिच नईं रैंदे

बन गए के लाला जी औ बिगड़ गए के चूतिया---धन कमाने पर व्यक्ति होशियार कहा जाता है पर वही जब कुछ नहीं कमाता तो लोग उसे मूर्ख समझते हैं। आशय यह है कि धनाभाव में व्यक्ति की इज्ज़त नहीं होती। तुलनीय अव० बनी रहै तौ लाला जी, बिगड़ जायँ तो चूतिया; मरा जिकला तर शिवाजी, हरला तर पाजी।

बनज करे सो बनिया, चोरी करे वह चोर---जो व्यक्ति

व्यापार करते हैं उनको बनिया तथा जो चोरी करते हैं उन्हें चोर कहते हैं चाहे वे किसी भी जाति या धर्म के मानने वाले हों। अर्थात् मनुष्य कर्म से नाम पाता है, जाति से नहीं। तुलनीय : माल० बणज करे सो बाणियो ने चोरी करे सो चोर।

बनज करेंगे बानिए और करेंगे रीस; बनज किया था जाट ने सौ के रह गए तीस-व्यापार वास्तव में बनियों का ही काम है दूसरे तो केवल देखादेखी या स्पर्धा में व्यापार कर बैठते हैं। एक जाट ने व्यापार किया तो सौ रुपए के तीस ही बचे, शेष पूँजी गँवा दी। जो व्यक्ति अपना काम छोड़-कर दूसरे का काम करता है और उसमें उसे हानि होती है तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० विणज किया था जाट ने सौ का रहग्या तीस।

बनज में क्या भाई-बंदी—व्यापार में भाई-चारे का संबंध नहीं चलता। अर्थात् लेन-देन में या व्यापार में शील या तकल्लुफ़ आदि से काम नहीं चलता। तुलनीय : हरि० बखशीश लाख की हिसाब बाप-बेटे का।

बनते को बिगाड़ें सब—सभी व्यक्ति बनते काम को बिगाड़ने में तत्पर रहते हैं। अर्थात् किसी की उन्नति देख कर दुष्ट व्यक्ति जल-भुन जाते हैं और उसमें रोड़ा अटकाने का प्रयत्न करते हैं। तुलनीय : भीली—वणे वगत जणी दन हारा अबला फरे।

बनते देर लगती है बिगड़ते देर नहीं लगती—किसी काम के बनाने में देर लगती है पर बिगाड़ने में नहीं। तुलनीय : अव० बनत बेर लागत है, बिगरत देर नाहीं लागत; ब्रज० बनत में देर लगै बिगरत में नायें लगै।

बन-बन की लकड़ी जुटी है—जहाँ पर अनेक जगह के व्यक्ति इकट्ठे हों वहाँ कहते हैं। तुलनीय : राज० बन-जनरा काठ भेळा हुया है; पंज० थाँ-थाँ दी लकड़ी कट्ठी होई दी है।

बन-बनिहार बैल अरु बीया, पंच में बुद्धि होंहि कर-नीया—मजदूरी, बनिहार, बैल, बीज और बुद्धि हो तभी खेती ठीक से हो सकती है। यह बड़े लोगों के लिए ही बनाई गई कहावत जान पड़ती है। उत्तम खेती तो वह है जिसमें बन और बनिहार या मजदूरी और मजदूर का प्रश्न ही न उठे और किसान स्वयं काम करता हो।

बन बालक और भैंस उखारी जेठ मास यह चार दुखारी—गर्मी से बन, बालक, भैंस और ऊख ये चारों व्याकुल रहते हैं।

बन में मोर नाचा किसने देखा ?—जब कोई गुणवाला अपना गुण ऐसी जगह दिखाए जहाँ उसके पारखी या प्रशंसक न हों तो कहते हैं। तुलनीय : अव० बन मा मोर नाचा केउ देखेस; पंज० जंगल बिच मोर नचया किन दिखया।

बनरे क मारे भर हाथ गुह—बंदर को मारने से हाथ में गंदा ही लगता है। आशय यह है कि नीच से उलझने से अपनी ही हानि होती है।

बनले मल्ल बिगड़ले कुरमी—बने पर जो मल्ल कह-लाते हैं वही बिगड़ने पर कुरमी कहलाते हैं। आशय यह है कि मनुष्य की स्थिति के परिवर्तन के अनुसार उसके मान-सम्मान में भी परिवर्तन होता रहता है।

बनाने में देर लगती है, पर बिगाड़ने में नहीं—दे० 'बनते देर लगती है···'। तुलनीय : सि० अदिंदे दिह लगन, डाहिंदे बेरम न लगे; ब्रज० बनिबे में देर लगै बिगरिबे में नायें लगै।

बना बनिया माल काटे—दिखावा करनेवाला बनिया लाभ उठाता है। जो बनिया अपने को निर्धन और सीधा दिखाता है वही लोगों को मूर्ख बनाकर अधिक लाभ उठाता है। तुलनीय : भीली० भलगालू बाणियो मांये पड़ी न मारे।

बना रहे थे गणेश बन गया बंदर—जिस उद्देश्य से कोई कार्य किया जाए यदि वह न होकर कुछ और हो जाय तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : सं० विनायकं प्रकुर्वाणो रचयामास वानरम्।

बनिआए की बनिआई है—आशय यह है कि जिस पर ईश्वर की अनुकम्पा होती है उसी का काम बनता है।

बनिआए की बात रे ऊधो—जिसका जमाना अच्छा हो उसके लिए कहते हैं।

बनिए का उल्लू—किसी बेकार वस्तु को यदि कोई हिफ़ाजत से रखे तो कहते हैं।

बनिए का गिरे तो सवाया उठे, तेली का गिरे तो छाती पीटे—बनिए का अनाज गिर जाय तो धूल-पत्थर आदि मिलकर उसका सवाया हो जाता है, किंतु तेली का तेल गिर जाय तो उसके हाथ कुछ भी नहीं आता है। (क) जहाँ एक ही काम में एक का लाभ और दूसरे की हानि हो वहाँ कहते हैं। (ख) बनिया हर तरह से फ़ायदे में रहता है। तुलनीय : माल० हाजी पड्या हवाया उठे, ने तेली पड्या छाती कूटे।

बनिए का छैला आधा उजला आधा मैला—व्यापारी अपने काम में इतना व्यस्त रहता है कि उसे अपने शौक़ पूरे करने की भी मोहलत नहीं मिलती।

बनिए का जो धनिए बराबर—दे० 'बनिया का जीव···'।

बनिए का बहकाया, और जोगी का फिटकारा—बनिए के बहकावे से और सन्तों के शाप से बचना मुश्किल है। बनिया किस प्रकार बहकाता है इस सम्बन्ध में एक कहानी इस प्रकार है : किसी मनुष्य के पास एक अशर्फ़ी थी, उसे वह बेचना चाहता था। एक बनिये ने उसे सस्ते दाम में ख़रीदना चाहा। उसने अशर्फ़ी का दाम पाँच रुपये लगाया। जब वह इतने दाम पर बेचने को राज़ी न हुआ तब बनिए ने क्रमशः बढ़ते-बढ़ते उसके दाम चौदह रुपए तक लगा दिए। उस व्यक्ति के मन में शंका हुई कि यह अवश्य अधिक दाम की चीज़ है। तभी तो इसने पाँच रुपए से बढ़ते-बढ़ते चौदह रुपए तक इसके दाम लगाए हैं। यह सोचकर उसने बनिए से कहा कि मैं सर्राफ़ को दिखाए बिना नही बेचूंगा। बनिए ने उसका यह रुख़ देखकर आत्मीयता दिखाते हुए कहा कि यह तीस रुपए का माल है, इससे कम क़ीमत में इसे न बेचना। वह सारे बाजार में उसे लेकर घूमा और सबसे तीस रुपए दाम कहता, पर किसी ने भी उसे न ख़रीदा। अन्त में निराश होकर उसने उसी बनिए को चौदह रुपए में अशर्फ़ी दे दी।

बनिए का बेटा कुछ देख ही के गिरता है—बिना मतलब के बनिया कोई काम नही करता। तुलनीय : हरि० बांणियां का बेट्टा कुछ देख कै ऐ पड़ैगा; अव० बनिया के बेटवा जौ गिरा तौ कुछ देखिन कैं गिरी।

बनिए का मुंह ग्राह और पेट मोम—बनिया भूखा रह-रहकर रुपया इकट्ठा करता है।

बनिए का साहु भड़भूंजा—जैसे को तैसा मिलने पर कहते हैं।

बनिए को उचापत और घोड़े की दौड़ बराबर है—दोनों बड़ी शीघ्रता से बढ़ते हैं।

बनिए की अक्ल रखे सो कमाय—बनिया-बुद्धि रखने वाला व्यक्ति धन कमाता है। बनिया अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए भला-बुरा सभी सहता है और अन्त में धनवान बन जाता है। तुलनीय : भीली० बाणन्या वाली मत राखी ने कमावो।

बनिए की कमाई मकान या ब्याह ने खाई—बनिया अपना धन केवल इन दो कामों में ख़र्च करता है।

बनिए की बकरी मरखही ?—क्या बनिए की भी बकरी मारती है ? बनियों के प्रति व्यंग्य है, क्योंकि वे बहुत डरपोक और सरल स्वभाव के होते हैं। जब कोई बनिया किसी से झगड़ा करता है तब कहते हैं। तुलनीय : भोज० बनिया क छेर मरकही।

बनिए की सलाम बेग़रज़ नहीं होती—बिना मतलब के बनिया कोई भी काम नहीं करता। अन्य जाति के भी उन दुष्टों के प्रति कहते हैं जो घोर स्वार्थी होते हैं।

बनिए की सीख दूकान तक—बनिया जो शिक्षा देता है वह उसकी दुकान पर ही रह जाती है। बनिया बहुत समझदार होता है, किंतु किसी दूसरे की बुद्धि से कोई कब तक और कहाँ तक काम करेगा ? दूसरों की बुद्धि के बल पर काम करने वालों के प्रति कहते हैं। तुलनीय : माल० हाजी री हीख झोपा तक; पंज० बनिये दी मिखया हट्टी तक।

बनिए के पेशाब में बिच्छू पैदा होता है—दे० 'बनिया के पेशाब में···'।

बनिए को देखकर सूखी नहीं खाई जाती—बनिए को देखकर सूखी रोटी खाने को मन नहीं करता। आशय यह है कि लाभ की उम्मीद होने पर कोई कष्ट नही सहना चाहता। तुलनीय : पंज० बनिये नूं वेख के सुकी नई खादी जांदी।

बनिए को पासंग की भी आशा—बनिए को पासंग से भी उम्मीद रहती है। आशय यह है कि बनिया थोड़ा-थोड़ा करके धन संचय करता है।

बनिए से जो बेसी हुसियार, उसका बेवकूफ में सुमार—बनियों से जो अधिक चालाक होने का दावा करता है उसकी गणना मूर्खों में होती है। अर्थात् सबसे होशियार बनिए होते हैं। उनसे अधिक होशियार व्यक्ति संभव नहीं।

बनिए से सयाना सो कौआ—ऊपर देखिए।

बनिए से सयाना सो दीवाना—बनिया बहुत सयाना होता है। जो उससे भी सयाना हो वह पागल है। तुलनीय : गढ़० जो बाणियां स्याणो सो बावलो।

बनिया पुत्र जाने कहा गढ़ लेने की बात—बनिये का बेटा किला (गढ़) नहीं जीत सकता। बनिए डरपोक होते हैं, इसीलिए उनके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मरा० वाण्याच्या पोराला किल्ले जिंकल्याच्या गोष्टींत काय कळणार।

बनिज करे सो बनियाँ, चोरी करे सो चोर—देखिए 'बनज करे सो ·····'।

बनि मेला ठेला फिरें तेली कंसे बैल—तेली के बैल की तरह मेलों में सज-धजकर इधर-उधर अकेले घूमते हैं। आशय यह है कि बिना इष्ट मित्रों के मेला अच्छा नहीं लगता।

बनिय क सखरच ठकुर क हीन, बइदक पूत ब्याधि नहिं चीन; पंडित चुपचुप बेसबा भइल, कहे घाघ पांचों घर गइल – वणिक पुत्र शाहखर्च (अपव्ययी) हो, ठाकुर का पुत्र श्रीहीन हो, वैद्य का पुत्र दोनों से अनभिज्ञ हो, पंडित कम बोलने वाला हो और वेश्या मैली हो तो घाघ कहते हैं कि इन पाँचों का घर नष्ट ही समझो।

बनिया अग्रिम बुद्धि और जाट पच्छिम बुद्धि तुर्क सद्य बुद्धि और ब्राह्मण सफाचट – बनिए को पहले से पता चल जाता है, जाट को उसकी मूर्खता के कारण बाद में। मुसलमान को शीघ्र और ब्राह्मण को होता ही नहीं। अर्थात् बनिया सबसे चालाक होता है, उससे कम मुसलमान, उससे कम जाट और ब्राह्मण सबसे कम बुद्धिवाला होता है। तुलनीय: पंज० कराड़ अग्गे दौड़ जट पिछे चौड़ तुर्क मत वाला अते पंडत बेमत्ता।

बनिया अपना गुड़ भी छिपाकर खाता है—बनिया अपना भेद किसी पर प्रकट नहीं होने देता। तुलनीय: पंज० कराड़ अपना गुड़ वी लुका के खांदा है।

बनिया अपने बाप को/सो ठगत न लागे बार—बनिया अपने पिता को भी ठगने से नहीं चूकता। अर्थात् बनिया बहुत बड़ा ठग होता है, वह किसी को नहीं छोड़ता।

बनिया आए तो सौदा तोले– जब बनिया दुकान पर आयगा तभी सौदा तोला जायगा। जब कोई व्यक्ति किसी एक ही व्यक्ति से सम्बन्ध रखना चाहता है, किसी अन्य व्यक्ति से नहीं तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय: माल० हाजी हाट पै पधारै जदी कापड़ो बधारे।

बनिया का जीव धनियां जैसा –बनिए का जी छोटा होता है। कोई वस्तु किसी को देने में उसे संकोच होता है। तुलनीय: भोज० बनियां क जिउ धनियाँ; अव० बनिया का जिउ धनिया बरोबर; गढ़० तुमड़ी को धयू अर बण्या को ज्यू।

बनिया का बेटा गिरेगा भी तो कुछ देखकर—देखिए 'बनिए का बेटा कुछ देख···'।

बनिया की सलामी भेद-भरी—दे० 'बनिए की सलाम ···'।

बनिया के पेशाब में बिच्छू पैदा होते हैं – अर्थात् बनिए के बच्चे बड़े होशियार होते हैं। तुलनीय: हरि० बाणिया के पिसाब में बीच्छू पैदा हों; पंज० कराड़ दे मूतर विच बिच्छू जमदे हन।

बनिया क्या जाने खाना, कुत्ता क्या जाने सोना—बनिए अधिकतर कंजूस होते हैं, इसी कारण वे खाने-पीने में भी कंजूसी करते हैं तथा कुत्ता बहुत चौकन्ना होता है, इसलिए वह कभी भी अच्छी तरह नहीं सो सकता। तुलनीय: गढ़० डोम खै नि आणदो, काठी बाखरो पड़नि जाण दो।

बनिया चाहे बैठा खाय, मूल धन कहीं न जाय—बनिया चाहे कुछ भी काम न करे तो भी ब्याज पर धन देकर अपनी जीविका चलाता है। जब कोई बनिया किसी से यह कहे कि आजकल कोई काम-धंधा नहीं कर रहा हूँ तो उसके प्रति कहते हैं। बनिया कभी भी पैसा कमाना नहीं छोड़ता। तुलनीय: माल० गंदी बेटा बैठा खाय, मूर दाम कठे नी जाय।

बनिया जब बोलता है, ज्यादा ही बोलता है—बनिया बोलता भी है तो निस्वार्थ नहीं बोलता। उसके लिए तो लाभ ही मुख्य उद्देश्य है।

बनिया जिसका यार उसको दुश्मन का क्या दरकार?—बनिया जिसका मित्र है उसे दुश्मन की क्या आवश्यकता? अर्थात् दोस्त बनिया भी दुश्मन के बराबर होता है, क्योंकि वह बिना ठगे किसी को नहीं छोड़ता। बनियों पर व्यंग्य। तुलनीय. अव० बनिया जेकर आर, औका दुसमन कै का दरकार।

बनिया तो करे सवाया, ड्योढ़ा करे बजाज—बनिया सवाया करता है तो बजाज ड्योढ़ा। अर्थात् बजाज बनिए की अपेक्षा बड़ा ठग होता है। बजाजों के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय: माल० हाजी तो हवाया करे, डेढ़ा करे बजाज।

बनिया देता ही/है नहीं, कहे जरा पूरा तोलियो—बनिया सामान दे नहीं रहा और कहते हैं कि पूरा तोलना। अर्थात् जहाँ कुछ भी न मिलने की आशा हो और फिर भी बहुत माँगा जाय तो वहाँ कहते हैं। तुलनीय: गढ़० डाकरी बोद पूरो तोल बणियां बोद हाट्टी ना बैठ।

बनिया पहले पैसा ले पीछे सौदा तोले—बनिया पहले पैसे लेता है बाद में सौदा देता है। दुकानदार बिना पैसे लिए सौदा नहीं देता। बनिए बहुत चालाक और स्वार्थी होते हैं इसलिए उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय: माल० हाजी रोकड़ा हमाले जदी कामड़ो बधारे।

बनिया बहुत खुश हुआ तो सड़ी सुपारी दिया—कोई बनिया किसी से बहुत प्रसन्न हुआ तो उसने उसे खाने के लिए सड़ी सुपारी दे दी। बनियों की कंजूसी पर व्यंग्य है। तुलनीय: छत्तीस० साव बहुत रीझिन त दीन सरहा सुपारी; ब्रज० बनियां बहुत खुस होयगौ तौ सड़ी सुपाड़ी देगौ।

बनिया बाह्मन बन जाय तो सौदा तोले कौन—बनिया

यदि ब्राह्मण बनकर हाथ में माला लेकर दुकान में बैठ जाय तो दुकान का माल कौन बेचेगा। अपना काम छोड़कर दूसरों की नक़ल करने वालों की मूर्खता जतलाने के लिए कहते हैं। तुलनीय : भीली०—बाण्यो बामण थाइने बेहबानू हूँ काम चालवानो; ब्रज० बनिया बाम्हन बनि आयें तौ सौदा कौन तोलैगौ।

बनिया भी अपना गुड़ छिपाकर खाता है—यदि कोई किसी बुरे काम को खुलेआम करे तो उस पर कहते हैं। तुलनीय : अव० बनिया गुड चोराय के खात है; मरा० बाणीसुद्धां आपली हातचलाखी लपवून ठेवतो।

बनिया मारे जान, ठग मारे अनजान—बनिया जान-पहिचान वालों को और ठग अपरिचित या अनजान लोगों को मारते या ठगते हैं। तुलनीय : हरि० जाणं मारै बाणियां पिछाण मारै जाट; मैथ० बनिया जान-पहचानी के काटेला आ कुत्ता बेजान-पहचानी के।

बनिया मारे बानिया या मारे करतार—बनिए को बनिया मार सकता है या भगवान कोई और उसे मारने में समर्थ नहीं। तुलनीय : हरि० बानियां को मारे बानियां या मारे करतार; भोज० बनिया के कित बनियां मारे की मारे भगवान।

बनिया मीत न बेस्वा सती—बनिया कभी किसी का मित्र नहीं होता और वेश्या सती नहीं होती। तुलनीय : अव० बनिया मींत न बेस्वा सती; राज० बाण्यो मित्र न वैस्या सती; मेवा० बाण्यो मित्र न वेश्या सती; ब्रज० बनियां मित्रं न बेस्या सती।

बनिया रीझे हर्रे दे- बनिए खुश होते हैं तो हर्र देते हैं। बनिए बड़े ही कृपण होते हैं। किसी पर बहुत रीझेंगे तो छोटी-से-छोटी चीज़ दे देंगे। तुलनीय : अव० बनिया खुशी होय तो हर्रै का दान करै; ब्रज० बनिया रीझै हर्र दे।

बनिया लिखा पढ़ें करतार—बनिए का लिखा भगवान ही पढ़ सकते हैं। आशय यह है कि बनिए का लिखा सुपाठ्य नहीं होता। (बनिए प्राय: कैथी लिपि में या मुंड़िया आदि में लिखते हैं जिनमें मात्राएँ आदि नहीं होती। इसी कारण इसे सभी लोग आसानी से नहीं पढ़ सकते हैं)। तुलनीय : राज० वाण्यो लिखै पढै करतार; ब्रज० बनियो लिखै पढ़ै करतार।

बनिया लेखा पूरा करके ही छोड़े—(क) बनिया अपना हिसाब करके ही पीछा छोड़ता है। (ख) बनिया गिरवीं रखी वस्तु को अपने अधिकार में करने के लिए ऐसा लेखा-जोखा मिलाता है कि गिरवीं रखने वाले के पास इसके अतिरिक्त और कोई चारा ही नहीं रहता कि वह उसे बनिए को ही सौंप दे। तुलनीय : भीली० हाजी हैरा न लेखा पूरा।

'बनिये' से आरम्भ होने वाली लोकोक्तियों के लिए देखिए 'बनिए'।

बनी के सब यार हैं—जो व्यक्ति सम्पन्न है उसके सभी मित्र बन जाते हैं। तुलनीय : भोज० बनले के सब साथी हैं; अव० बनी के सब आर हैं; हरि० बणी बणी के सब कोय साथी बिगड़ी का कोय साथी नाय; राज० बणीरा सै सीरी।

बनी के सब साथी हैं बिगड़ी में कोई नहीं—ऊपर देखिए।

बनी के सौ यार—ऊपर देखिए।

बनी के सौ साले, बिगड़ो का एक बहनोई भी नहीं—सम्पन्न व्यक्ति से लोग अपनी बहन ब्याहने को तैयार रहते हैं पर ग़रीब की बहिन से शादी करने को कोई तैयार नहीं होता। आशय यह है कि ग़रीब को कोई नहीं पूछता। तुलनीय : राज० बणी-बणी रा सै संगाती, बिगड़ी रा कोई नांय; अं० Success has many fathers while failure is an orphan.

बनी तो बनी नहीं तनी तो है ही—बन गया तो ठीक है, नहीं बिगड़ा तो है ही। कोई काम बिगड़ जाने पर या किसी से सम्बन्ध-विच्छेद हो जाने पर पुन: उसे बनाने का प्रयत्न करते समय कहते हैं। तुलनीय : अव० बनी तो बनी नहीं तनी तो हई है।

बनी तो बनी, नहीं दाउद खाँ पनी—यदि एक जगह काम न होगा या नौकरी न मिलेगी तो दूसरी जगह देखूँगा।

बनी तो भाई नहीं दुश्मनाई—यदि अपने से बने तो भाई नहीं तो दुश्मन बराबर। अर्थात् जिससे पटे वही अपना है।

बनी न बिगाड़ें तो हम किस काम के—बने काम को यदि मैं न बिगाड़ूँ तो मेरे लिए दूसरा काम ही क्या ? दुष्टों के प्रति व्यंग्य मे कहते हैं।

बनी फिर बेसवा खोले फिर केसवा—जो स्त्रियाँ केश खोलकर घूमती हैं, वे वेश्या बन जाती हैं। (यह कहावत पहले कही जाती थी पर आजकल ऐसा नहीं है)।

बनी बनावे सो बनिया—बनी हुई को जो और बनाए वह बनिया है। अर्थात् बनिया प्रत्येक वस्तु और कार्य को नियमानुसार और अच्छे ढंग से करता है। तुलनीय : राज० बणी बणावे सो बणियो।

बनी बनी के सब साथी—दे० 'बनी के सब यार हैं।'

बनी सराहे सकल संसार—सम्पन्न व्यक्ति की सभी प्रशंसा करते हैं। तुलनीय : ब्रज० बनी सराहै सब संसार।

बने के साहू बिगड़े के मोटिया—बनने पर सेठ और बिगड़ने पर मोटिया कहलाते हैं। अर्थात् सफल होने पर सभी इज्जत करते हैं और असफल हो जाने पर कोई भी नहीं। (मोटिया = बोरा ढोने वाला)।

बने के सौ साले, बिगड़ी में एक बहनोई भी नहीं—दे० 'बनी के सौ साले···'।

बने तो किसी के हो रहिए, नहीं किसी को अपना बना रखिए—या तो किसी का मित्र बनकर रहना चाहिए या किसी को मित्र बनाकर रखना चाहिए। आशय यह है कि कुछ लोगों से संपर्क अवश्य बनाए रखना चाहिए, अकेले रहना अच्छा नहीं होता।

बने तो हमारा बिगड़े तो तुम्हारा—बन जाएगा तो मेरा रहेगा और यदि बिगड़ जाएगा तो तुम्हारा। स्वार्थी व्यक्ति के प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

बने बने के सब हैं साथी--दे० 'बनी के सब यार हैं।'

बने मकान, पले लड़के—बने-बनाए मकान और कमाने योग्य लड़के जिसे मिल जाएँ उसे और क्या चाहिए? जिस व्यक्ति को अनायास ही धन या अच्छे साधन मिल जाएँ उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० चिण्यां कूड़ा अर जण्यां नौना।

बने सबही सराहे, बिगड़े कहें कम्बख्त—जिसकी बनती है या जिसे सफलता मिलती है उसकी सब सराहना करते हैं और जिसकी बिगड़ती है उसकी निन्दा करते हैं। तुलनीय: अव० बने का सबै सराहैं, बिगड़ जाये पर कम्बखत कहैं।

बबूल बोकर खाना चाहें आम—बबूल बोकर आम खाना चाहते हैं। बुरा काम करके अच्छे फल को चाहने वाले के प्रति कहते हैं।

बब्बर खाँ के राज की बातें—बब्बर खाँ के शासन-काल की बातें करते हैं। बहुत पुरानी या अपने वैभव और सम्पन्नता की बातें कहने वाले के प्रति कहते हैं।

बम्हने बचने गड़रे कुश, अहिर दक्षिणा कंडा भुस—यदि ब्राह्मण के रहने से गांडर (एक घास) कुश हो जाय तो अहीर के कहने से दक्षिणा के लिए कंडा भूसा भी हो सकता है। जो दूसरे को ठगेगा या जो दूसरे की हानि करेगा, दूसरा भी उसकी हानि करेगा या उसे ठगेगा।

बयार चले ईसान, ऊँची खेती करो किसान—यदि आषाढ़ मास में ईशान दिशा (कोण) से हवा चले तो कृषि अच्छी होती है।

बर का यह हाल तो बारात का कौन हाल--अर्थात् (क) जब वर (प्रमुख पात्र) को ही कोई नहीं पूछता, तब बरातियों (गौण पात्रों) की क्या दशा होगी? या जब वर ही कुरूप है या दुश्चरित्र है तब और बरातियों की क्या गति होगी। (ख) जब मुख्य व्यक्ति ही बुरा है तब उसके अधीनस्थ लोग कैसे होंगे? तुलनीय : मैथ० बरक ई हाल तऽ बरियातिक कौन हवाल; भोज० जब वर कऽ ई हाल तऽ बरियात के के पूछे। (बर = दूल्हा, श्रेष्ठ)।

बर के न मिले भूसा, बराती माँगे चूड़ा—दूल्हा (वर) को तो भूसा भी खाने को नहीं मिल रहा और बराती चूड़ा माँग रहे हैं। अर्थात् जहाँ पर मुख्य व्यक्ति का कोई सम्मान न हो और उसके सहायक या साथी सम्मान चाहें तो उनके प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

बरखा लागी ऊतरा, अन्न न खाएँ कूतरा—उत्तर की की ओर से हवा चलने पर इतनी वर्षा होती है कि कुत्ते भी अनाज को नहीं खाते। आशय यह है कि उत्तर की हवा चलने से वर्षा खूब होती है जिससे पैदावार अच्छी होती है। है।

बरखा लागे हाथी, गेहूँ टिके छाती—हस्त (हथिया) नक्षत्र में वर्षा होने से गेहूँ की उपज छाती तक होती है। अर्थात् हस्त नक्षत्र में वर्षा होने से रबी की फ़सल अच्छी होती है।

बर जबाँ तस्बीह ओ दर दिल गाव खर—बाह्यतः भला किन्तु अन्दर से दुष्ट। ऊपर से भला किन्तु अन्दर से कुटिल लगने वाले के लिए कहते हैं।

बरतन का मुंह बड़ा हो तो खाने वाले को तो शरम चाहिए—जब कोई किसी की मुफ़्त में मिली वस्तु का निस्संकोच प्रयोग करता है तब उसके प्रति कहते हैं।

बरतन चार, खड़-बड़ दिन-भर-चार बरतन माँजने में दिन-भर का शोर। जो व्यक्ति छोटे काम के लिए बड़ा आडंबर करता हो उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : गढ़० तेल थोड़ा चिबड़ाट भौत।

बरद बिसाहन जाओ कंता, खैरा को जनि देखो दंता; जहाँ परै खैरे की खुरी, तो कर डारै बापर पुरी; जहाँ परै खैरा की लार, बढ़तो ले के बुहग्रो सार— एक स्त्री अपने पति से कहती है कि कंत! जब बैल खरीदने जाना तो कत्थई रंग के बैल खरीदना; क्योंकि कत्थई रंग वाले बैलों की खुरी (पैर) जहाँ पड़ती है वहाँ पूरी बरबादी आ जाती है। जहाँ इस बैल के मुंह से लार गिरे उसे साफ़ कर

देना चाहिए। अर्थात् ऐसा बैल बहुत ही दोषपूर्ण और हानिकर होता है।

बरद बेसाहन जाओ कंता, कबरा का जनि देखो दंता —हे स्वामी! जब बैल खरीदने जाना तो चितकबरे बैल का दाँत न देखना अर्थात् चितकबरा बैल न खरीदना। चितकबरे बैल अच्छे नहीं होते।

बरधा एक गांव दुइ जोत, कछल बटिया लागल पोत—दो गाँव में खेती है और पास में एक ही बैल है, इस प्रकार कैसे खेती हो सकती है? साधन की कमी में जब कोई बड़ा कार्य करना चाहता है तब कहते हैं।

बरधा कुएँ में गिरा, बधिया करो—बैल कुएँ में गिर गया है, अब इसे बधिया कर दो। (क) मूर्खतापूर्ण बात करने पर कहते है। (ख) किसी की बुरी दशा हो जाने पर जब कोई अपना मतलब साधना चाहता है या उसे तंग करना चाहता है तब भी कहते हैं।

बर न बियाह छट्ठी के लिए धान कुटाय विवाह हुआ ही नहीं और लड़के की छठी के लिए धान कुटवा रहे हैं। (क) मूर्खतापूर्ण काम करने पर व्यंग्य में कहते हैं। (ख) बिना आधार के किसी काम की तैयारी करने पर भी व्यंग्य में कहते है। तुलनीय: छत्तीस० बर न बिहाव, छट्ठी बर धान कुटाय; अव० बरु न बिआहु छठी खातिर धान कूटैं। (छठी=किसी भी नवजात के छह दिन का होने पर किया जाने वाला संस्कार)।

बर न बिवाह छठी के लिए धान कूटे—ऊपर देखिए।

बरनै दीनदयाल कौन सतसंग न सोहा—दीनदयाल कवि कहते हैं कि अच्छे के साथ में रहने से कौन शोभा नहीं पाता है? अर्थात् अच्छी संगति से सभी शोभित होते हैं।

बरनै दीनदयाल प्रेम को पैंडो न्यारी—दीनदयाल कवि कहते हैं कि प्रेम का मार्ग सब मार्गों से न्यारा है।

बर पीपर बिन हो रहे ज्यों अरंड अधिकार—बड़ (बर) और पीपल के अभाव में अरंड ही बड़ा समझा जाता है। अर्थात् बड़ों के अभाव में छोटे ही अधिकारी बड़े बन बैठते हैं या बड़े समझे जाते हैं।

बर मरे चाहे कन्या दच्छिना से काम—नीचे देखिए।

बर मरे चाहे कन्या मुझे दक्षिणा से काम—चाहे दूल्हा मरे या दुल्हन मुझे तो केवल दक्षिणा से मतलब है। स्वार्थी व्यक्ति के प्रति व्यंग्य से कहते है जो दूसरे की हानि की परवाह न करके अपने स्वार्थ की बात करता है। तुलनीय: बुंद० बर मरें चायं कन्या, हमें तो दच्छना से काम; ब्रज० बूढ़ा मरे चाहे ज्वान मोइ हत्या से काम।

बर मरे, पटवासी न टूटे—पति मर गया है फिर भी माँग सँवारना नहीं छोड़ती। बुरे चरित्र वाली विधवा के प्रति कहते हैं।

बर मरे या कन्या, हमें तो दक्षिणा से काम—दे० 'बर मरे चाहे कन्या मुझे…'।

बरमे का काम छिदना नहीं होता—बरमा दूसरों में छेद करता है, उसमें छेद नहीं होता। अर्थात् ठग ठगता है, वह ठगा नहीं जाता। तुलनीय: पंज० ठग दा कम ठगोना नईं।

बररं बालक एक सुभाऊ—बालक और बर्रे का स्वभाव एक समान होता है। अर्थात् दोनों बहुत जल्दी बिगड़ जाते हैं या क्रुद्ध हो जाते हैं।

बरस दिन गणेश जी कूदते हैं—व्यापार करने के प्रथम बरस में लाभ हो, किन्तु फिर हानि होने लगे तो लोग उक्त मसल कहते हैं।

बरसने का बादल और होता है—जो व्यर्थ में लंबी-चौड़ी बातें करते हैं, उनके प्रति कहते है।

बरस भर में सखी सूम का लेखा बराबर—सूम या कृपण का नुक़सान होने पर लोग कहते है। ऐसा लोगों का विश्वास है कि सूम और दानी का साल में पड़ता बराबर पड़ता है। दानी का जितना दान में खर्च होता है, सूम का उतना ही नुक़सान हो जाता है।

बरस भर में सखी और सूम बराबर हो जाते हैं—ऊपर देखिए।

बरसाऊ बादल पुरवा पछवा नहीं गिनता—पानी वाले बादल किसी भी हवा में वर्षा करते हैं। अर्थात् वीर पुरुष शकुन-अपशकुन नहीं देखते।

बरसात में कड़ाही घर-घर—(हिन्दुओं के यहाँ) बरसात में त्योहार बहुत पड़ते हैं। तुलनीय: पंज० बरसाती कड़ाई कर कर।

बरसात में घोंघे का मुँह भी खुल जाता है—किसी समय-विशेष पर जब बहुत बड़ा मूर्ख भी कुछ बोल देता है तब व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय: मग० बरसात में घोंघों के मुँह खुल जा है; भोज० घोंघों का मुंह बरसात में खुल जाला।

बरसात बर के साथ—वर्षाऋतु पति के साथ ही सुखकर होती है।

बरसाती नदी और कागज की नाव—वर्षा ऋतु में प्राय: नदियों में बाढ़ आ जाती है और ऐसे समय यदि कोई

उन्हें कागज की नाव से पार करना चाहे तो उसका परिणाम मृत्यु के अतिरिक्त और कुछ नहीं होता। (क) बहुत बड़ी योजना के लिए छोटा-सा अनुष्ठान करने वाले के प्रति ऐसा कहते हैं। (ख) बहुत बड़ी आपत्ति के लिए साधारण-सा उपाय करने वाले के लिए भी कहते हैं। तुलनीय : गढ़० फांड फूटली तऽ करदोड़ क्या थाम ली।

बरसाती दरजी हो रहे हैं—बरसात में दर्जी बेकार रहते हैं। किसी को बेकार देखकर कहते हैं। तुलनीय : अव० बरसाती मेघा होय गए हैं।

बरसा थोड़े भभरौटी बहुत—(क) पानी कम बरसने मे सूखा पड़ता है। (ख) जो उछल-कूद बहुत करें और काम कम उनके प्रति भी व्यंग्य मे ऐसा कहते हैं। (भभरौटी= धूल उड़ना, गरज-तरज)।

बरसाव शहर का, खेत नहर का—शहर का घर और नहर के किनारे का खेत अच्छे होते है।

बरसे अषाढ़ तो होजा ठाढ़—आषाढ़ में पानी ठीक से बरसने से किसानों को बड़ा लाभ होता है।

बरसे आसोज, हो नाज की मौज—क्वार की बारिश खेती के लिए अमृत के समान है।

बरसे की बात बटोही कह देंगे—यदि कहीं पानी बरसेगा तो उसकी सूचना आने-जाने वाले यात्री दे ही देंगे। कोई बड़ी या सर्वविदित घटना छिपी नहीं रहती। तुलनीय : राज० बठैरी बात तौ बटाऊ कँवैला।

बरसेगा बरसावेगा पैसे सेर लगावेगा—अच्छी बरसात होती है तो पैदावार अधिक होने के कारण अन्न सस्ता हो जाता है।

बरसेगा मेह होंगे अनंद, तुम साह के साह, हम नंग के नंग—वर्षा होने से पैदावार अच्छी होगी, सबको सुख मिलेगा; लेकिन तुम साहूकार हो साहूकार ही रहोगे और हम नंगे के नंगे ही रहेंगे। निर्धन किसान का व्यवसायियों के प्रति कहना है। तुलनीय : पंज० बरैगा मीह होण गे नंद तुसीं साह दे साह असीं नयंग दे नयंग।

बरसे भरणी, छोड़े परणी—यदि भरणी नक्षत्र बरसे तो विवाहिता स्त्री को छोड़कर अन्यत्र जाना पड़े। अर्थात् पानी के आधिक्य से अकाल पड़ेगा और विदेश की शरण लेनी होगी।

बरसे षाढ़ तो होजा ठाढ़—दे० 'बरसे अषाढ़ तो...'।

बरसे सावन, तो हो पाँच के बावन—सावन में यदि बारिश ठीक से हो तो अन्न बहुत पैदा होता है। तुलनीय : मरा० श्रावणात पाऊस पडेल तर पीक पाँचावे बावन घडे।

बरसो राम झड़ा झड़ियां, खाए किसान मरें बनियां—हे भगवान! खूब पानी बरसाओ जिससे अच्छी पैदावार हो, किसान आराम से रहें और बनिए भूखों मरें। (अच्छी पैदावार होने से अन्न सस्ता होता है जिससे बनियों को मन-चाहा लाभ नहीं होता है)।

बरसो राम धड़ाके से बुढ़िया मर गई फ़ाक़े से—आवश्यकता से अधिक पानी बरसने पर बच्चे कहते हैं। तुलनीय : अव० बरसौ राम धड़ाके से बुढ़िया मरै पड़ाके से।

बरात का छैला, सावन का खैला—बारात में खुशी उसी प्रकार बहुत होती है जैसे सावन में हरियाली।

बरात की सोभा बाजा, अरथी की सोभा स्यापा—बारात की शोभा (इज़्ज़त) बाजे से होती है और मृतक की रोने से। अर्थात् अपने-अपने समय पर सभी चीजें और सभी बातें शोभा देती हैं। (स्यापा=मरे हुए के शोक में कुछ समय तक स्त्रियों के प्रतिदिन इकट्ठे होकर रोने और शोक मनाने की प्रथा)।

बरात पीछे पत्तल भारी—बरात बिदा हो जाने पर पत्तल का खर्च भी अखरता है। अर्थात् अवसर या उत्सव के बाद मामूली खर्च भी भारी मालूम पड़ता है। तुलनीय : पंज० जंज पिछों पत्तला पाँरियाँ।

बरातियों को खाने की चाह दुलहे को दुलहिन की चाह—बराती अच्छा भोजन चाहते हैं और दूल्हा अच्छी दुल्हन। अर्थात् अपना-अपना स्वार्थ सभी देखते हैं। तुलनीय : अव० बराती चाहै अच्छा खाय का, दुलहा चाहै अच्छी दुलहिन।

बराती किनारे हो जायेंगे काम दूल्हा दुल्हन से पड़ेगा—(क) बाहर के असंबद्ध लोग तो दूर हो जाते हैं, भुगतना दो ही को पड़ता है। (ख) लड़ाई कराने वाले लड़ाकर हट जाते हैं और दोनों पक्ष वाले लड़ते रहते हैं।

बराती तो अपने-अपने घर चले जाएंगे, काम दूल्हा दुल्हन से पड़ेगा—ऊपर देखिए।

बराले-आशिक़ां बर शाखे-आहू—असंभव बात। उद्देश्य पूरा होना संभव नहीं है।

बरेखागर कसरत करै, दई न मारैं अपने मरै—जो दो-दो चार-चार दिन के अंतर से कसरत करता है वह अपने मरने का साधन करता है। आशय यह है कि लगातार व्यायाम न करने से लाभ के बजाय हानि होती है।

बरेली जाने का काम करते हो—पागल का-सा व्यवहार करने पर कहते हैं। (बरेली में पागलखाना है)।

बरेली रूपा रेली—बरेली में चाँदी का ढेर है। अर्थात्

वहाँ रुपये अधिक हैं। (बरेली में व्यापार भी अच्छा होता है तथा खेती भी अच्छी होती है, इसी कारण यह कहते हैं)।

बरे-संगे-गर्दां न रोयद नबात—चलते-फिरते पत्थर पर घास नहीं उगती। यह कहावत साधुओं के लिए है। उन्हें कहीं एक स्थान पर नहीं रहना चाहिए। तुलनीय : अं० A rolling stone gathers no moss.

बरोबरी तें कीजिए ब्याह बैर अरु प्रीति—विवाह, बैर और प्रीति अपने स्तर के लोगों से ही करना उचित है। तुलनीय : अव० बिआह औ परीत बरोबर वाले से करै।

बर्रें कोदों सेर बोआओ डेढ़ सेर बीघा तीसी बाओ—बर्रें और कोदो प्रति बीघा एक सेर और तीसी प्रति बीघा डेढ़ सेर बोना चाहिए।

बलई मिश्र को लड़की हुई न मुझे न मेरे बेटे को—बलई मिश्र को लड़की हुई है, वह न मेरे काम आएगी और न मेरे बेटे के। ऐसी वस्तु के प्रति कहते है जिससे अपना कोई लाभ न हो।

बल जाय राज को, मोती लागें प्याज को—जिस देश या राज्य में प्याज़ और मोती के दाम बराबर हों वह राज्य नष्ट हो जाय।

बल तो अपना बल, नाहिं जाय जल—अपनी ही शक्ति काम आती है। दूसरे के बल से अपना कोई लाभ नहीं होता।

बल बिक्रम की बोरियाँ, बिकति न हाट बजार—बल एवं पराक्रम से भरी हुई बोरियाँ बाज़ार में नहीं बिकतीं। अर्थात् बल एवं पराक्रम सब स्थानों पर और सब में नहो पाया जाता या ये चीज़ें खरीदने से नही मिलतीं।

बलवान् का हल भूत चलाता है—अर्थात् शक्तिशाली का काम वे लोग भी करते हैं जिनसे साधारण लोग डरते हैं। तुलनीय : भोज० बड़ियारा क भूतो हर हाँकेला; मैथ० बनला के भूतो हर जोतऽ ले।

बलवान के झगड़े में अबला का नाश—शक्तिशाली लोगों के लड़ाई-झगड़े में मध्यस्थता करने वाला कमज़ोर मारा जाता है। जब दो शक्तिशाली लोगों के परस्पर वैमनस्य से किसी तीसरे असहाय की हानि हो तो कहते हैं। तुलनीय : हरि० झोट्टे-झोट्टे लड़ें, झाडां का खो।

बलवान के बीस बिस्से मारे और रोने न दे—दे० 'जबरा मारे और···'।

बलवान मारे और रोने भी न दे—दे० 'जबरा मारे और···'।

बलवान से सभी डरते हैं—शक्तिशाली व्यक्ति से सभी भय खाते हैं। तुलनीय : राज० आकरे देबने सै कोई नमैं; पंज० जोरवाले तों सारे डरदे हन।

बलि का बकरा भी हँसे, ओछी पूजा देख—ओछी पूजा देखकर बलि का बकरा भी, जिसके प्राण कुछ ही समय बाद समाप्त हो जाएँगे, हँस रहा है तो औरों का क्या हाल होगा? जब कोई मूर्ख बहुत ही मूर्खतापूर्ण काम करे और साधारण मनुष्य भी उसका मज़ाक़ उड़ाएँ तो उस मूर्ख के किए हुए काम के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : गढ़० होंची पुनै देखी क बोगठ्या हैंस; ब्रज० बलि कौ बकरा ऊ हँसै ओछी पूजा देखि।

बलिहारी इस भाग्य की—भाग्य से ही राजा रंक और रंक राजा हो जाते हैं। जब कोई व्यक्ति एकाएक धनी हो जाए तो उसके भाग्य के प्रति कहते हैं। तुलनीय : गढ़० भागै, बल्यारी छल।

बली का जूता सर पर—सबल से सभी डरते हैं। तुलनीय : पंज० बली दी जुत्ती सिर उत्ते।

बली का राज और खुशी का काज—काम वही करना चाहिए जो स्वयं को अच्छा लगता है और राज्य वही कर सकता है जो बलवान हो। (क) जब कोई व्यक्ति अपने बल के आधार पर उचित-अनुचित सभी काम करता है तो उसके प्रति कहते हैं। (ख) जिस व्यक्ति को पूछने-कहने वाला कोई नहीं होता और वह भले-बुरे काम करता है तो उसके प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : गढ़० रड़ी को राज खुशी को भोज।

बली का रास्ता सिर पर से—बलवान सिर के ऊपर से जाता है। आशय यह है कि शक्तिशाली उचित-अनुचित सब कुछ कर सकता है। तुलनीय : हरि० ठाड्डे का सिर पै कै राह; पंज० जोरबाले दी राह सिर उत्ते।

बली चोर सेंध में गावे—दे० 'बड़ियरा चोर सेंध···'।

बसंत की खबर ही नहीं—वास्तविक अथवा यथार्थ के संबंध में ज्ञान-शून्य होने पर कहा जाता है। तुलनीय : अव० बसंत कै खबरै नाहीं।

बसंत जाड़े का अंत—वसंत आने पर जाड़े का अंत हो जाता है। तुलनीय : ब्रज० बसंत, जाड़े कौ अंत।

बस कर मियाँ बस कर, देखा तेरा लश्कर—रहने दीजिए मियाँ जी अब मैंने आपकी फ़ौज को देख लिया। बहुत डींग हाँकने वाले के लिए कहा जाता है।

बसत ईश के सीस तऊ, भयो न पूर्ण मयंक—शंकर के सिर पर बिराजने पर भी चन्द्रमा पूर्ण नहीं हुआ। अर्थात् भाग्य हर जगह काम करता है।

बस न चलत कुम्हार सों, खर के ऐंठत कान—कुम्हार पर बस नहीं चलता तो गदहे के कान ऐंठ रहे हैं। बलवान पर बस न चलने पर निर्बल को सताने वाले के लिए कहा जाता है। तुलनीय : ब्रज० बस नहिं चलत कुम्हार ते ऐंठत खर के कान।

बसन नील के माठ में, कबहूँ लाल न होय—नील के संग रहकर कभी लाल नहीं हो सकता। बुरा संग करने से या बुरी जगह बैठने से किसी की इज़्ज़त नहीं बढ़ती।

बस नमाज़ हो चुकी मुसल्ला उठाइए - नमाज़ समाप्त हो गई अब मुसल्ला ले जाइए। काम ख़त्म हो जाने पर कहा जाता है। (मुसल्ला=वह बिछावन जिस पर बैठकर नमाज़ पढ़ी जाती है)।

बस नहीं चलता नहीं तो आसमान में छेद कर दे—बहुत उपद्रवी व्यक्ति के प्रति कहते हैं।

बसनी और बेखर्च—क्या बिना आवश्यकता के ही बसनी बाँधकर घूम रहे हैं। प्रमाण होते हुए भी बात को छिपाने पर कहते हैं।

बस हो चुकी नमाज़ मुसल्ला उठाइए—दे० 'बस नमाज़ हो चुकी···'।

बसाव सहर का और खेत नेहर का—दे० 'बरसाव शहर का···'।

बसीकरण यह मंत्र है परिहरु बचन कठोर—वशीकरण मंत्र यही है कि कठोर बात कहना छोड़ दो। अर्थात् प्रेम से सबको अपना बनाया (या वश में किया) जा सकता है।

बसै बुराई जासु मन ताही को सनमान—जिसके हृदय में बुराई रहती है लोग उसी का भयवश सम्मान करते हैं। यह आजकल की उलटी रीति है।

बस्ती के साथ बस्ती है—(क) लोग आबादी में रहना पसंद करते है आबादी से दूर नहीं। (ख) जहाँ लोग आबाद होते हैं, वहीं आबादी हो जाती है।

बहती गंगा धो ले पाँव—बहती नदी में पैर धो लेना चाहिए। यदि कोई चीज़ सभी के लिए हो तो अपना भी काम बना लेना या अपना भी लाभ कर लेना चाहिए। सबके लिए सहज-सुलभ वस्तु के होने पर कहा जाता है। तुलनीय : अव० बहत गंगा मा हाथ धोय लेब; हरि० ताते तवे पै और दो सेकली जां; पंज० बगदी गंगा तो लै पैर।

बहती गंगा में हाथ धोलो—ऊपर देखिए।

बहते दरिया में जिसका जी चाहे, हाथ धोले—दे० 'बहती गंगा में धोले पाँव···'।

बहम कहते-कहते राँड़ कहने लगता है—जो व्यक्ति शीघ्र ही प्रसन्न और शीघ्र ही अप्रसन्न हो जाय उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० बाई-बाई कहता रांड कहण लाग जावै; सं० क्षणे रुष्टाः क्षणे तुष्टाः; पंज० पैण कंदे रंडी कंण।

बहन कहे मेरा बीर है प्यारा, काल कहे मेरा है यह चारा—बहन कहती है कि मेरा भाई मुझे बहुत प्रिय है, लेकिन काल कहता है कि यह मेरा भोजन है। अर्थात् प्यारे से प्यारे भी मरते हैं। जो जन्म लेता है, वह अवश्य मरता है।

बहन के घर भाई कुत्ता, सासरे जमाई कुत्ता—इन दोनों की क़दर नहीं होती। बहन के घर जाकर रहने वाले भाई का तथा ससुराल में बसने वाले व्यक्ति का समुचित आदर नहीं होता।

बहन के फूल बहन को चढ़ें—बहन के लगाए हुए फूल बहन को ही चढ़ाए जाते हैं। बहन का धन बहन को ही दिया जाता है, अपने ऊपर ख़र्च नहीं किया जाता। कोई वस्तु जिस व्यक्ति से मिले उसी को लौटा दी जाय या उसी के लिए रख दी जाय तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० बाई रा फूल बाई रै चढ़ै।

बहन बत्तीस, भाई छत्तीस—बहन में बत्तीस गुण हैं और भाई में छत्तीस। जहाँ पर एक से एक बढ़कर दुर्गुणी हों उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० बाई बत्तीसी, बीरो छत्तीसो; पंज० पैणां बत्ती परां छत्ती।

बहन मरी तो जीजा किसके ?—जब बहन ही मर गई है तो जीजा और साला या साली का रिश्ता किस बात का ? (क) किसी व्यक्ति से संबंध टूट जाने पर यदि उससे किसी प्रकार का मतलब न रखा जाए तो उसके प्रति ऐसा कहा जाता है। (ख) स्वार्थी व्यक्ति जब स्वार्थ सिद्ध हो जाने के बाद बात भी न करना चाहे तो उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० दीदी मरी भेना कीको।

बह बह जायें हज़ारों, पौने दो सौ को कहाँ धरूँ—हज़ारों रुपये बह गए और पूछते हैं कि पौने दो सौ रुपये को कहाँ रक्खूँ। जो बड़ी हानि की कोई चिंता न करके थोड़े से लाभ के लिए परेशान हो तो उसके प्रति कहते हैं।

बहम की दवा तो लुक़मान के पास भी नहीं—शंका (वहम) की दवा किसी के पास नहीं होती। जब कोई झूठ में किसी बात की शंका करे और विश्वास दिलाने पर भी न माने तब कहते हैं। तुलनीय : हरि० बहम की दवाई लुकमान कै भी नाह पाई; ब्रज० बहम की दवा तौ हकीम लुकमान पै ऊ नाईं।

बह मरे बैल बैठे खायें तुरंग—काम करते-करते बैल परेशान हो जाते हैं और घोड़े बैठकर खाते हैं। एक के खटने या काम करने तथा दूसरे के आराम करने पर कहा जाता है। तुलनीय : अव० मर मर करें बैलवा बैइठे खायें तुरंग।

बहरा कहे बहरी से, रोटी खाएँ दही से—बहरा बहरी से कहता है कि दही के साथ रोटी खा लें। जब दो बहरे आपस में असंबद्ध बातें करें तो उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० बोळो पूछ बोळीनै, कांई संधां होळीनै ? पंज० बोला आखै बोली नाल रोटी खाण बोली नाल।

बहरा खसम घर में लड़ाई—बहरा पति घर में ही झगड़ा करता है। मूर्ख व्यक्ति अपनी ही हानि करते हैं। तुलनीय : पंज० बौला खसम कर बिच लडाई।

बहरा खोदे कांदो मेंह गिने न आंधी—आँधी-पानी की चिंता किए बिना बहरा मिट्टी खोद रहा है। बिना कुछ सोचे-समझे अंधाधुंध काम करने वाले के प्रति कहते हैं।

बहरा बहिश्ती अंधा दोजखी—अन्धा क्रूर होने की वजह से नरकगामी होता है और बहरा परनिन्दा न सुनने से स्वर्ग को जाता है।

बहरा राग स्वाद क्या जाने ?—बहरा व्यक्ति राग के आनन्द को नहीं जानता। अर्थात् गुणहीन व्यक्ति गुण का महत्त्व नहीं जानता। तुलनीय : पंज० बोला बंदा राग नू की समजे।

बहरा सुने धरम की कथा—धर्म का उपदेश बहरा व्यक्ति कैसे सुन सकता है ? (क) व्यर्थ प्रयास करने वाले के प्रति व्यंग्य मे ऐसा कहते हैं। (ख) किसी झूठी या गैर-मुमकिन बात पर कहते हैं। तुलनीय : पज० बोला सुणे तरम दी कथा।

बहरा सो गहरा—बहरे व्यक्ति श्रवण-हीनता के कारण गंभीर होते हैं, अतः उनके मन का थाह जल्द नहीं लगती। तुलनीय : पंज० बोला जिहड़ा डूंगा।

बहरे आगे गाए, अपना मूंड़ पिराए—बहरे के सम्मुख गाना गाने से अपना ही सिर दुखने लगता है। बहरे के सम्मुख गाना-रोना सभी बेकार है। जो व्यक्ति किसी की बात पर ध्यान न देता हो और अपनी मनमर्जी करे उसके प्रति कहते हैं।

बहरे आगे गावना, गूंगे आगे गल्ल, अंधे आगे नाचना तीनों अल्ल बिलल्ल—बहरे के आगे गाना, गूंगे के आगे बात करना और अंधे के आगे नाचना ये तीनों ही व्यर्थ हैं। बहरा सुनता नहीं, गूंगा बात नहीं कर सकता तथा अंधा देख नहीं सकता। तुलनीय : पंज० वोळे अग्गे गाना, गूंगे अग्गे गल्ल, अन्ने अग्गे नच्चना, तिन्नों अल-बिलल्ल।

बहादुर की याद लड़ाई में आवे—वीर पुरुषों का स्मरण युद्धक्षेत्र में होता है। (क) आपत्ति आने पर ही सामर्थ्यवान की याद आती है। (ख) अवसर विशेष पर ही व्यक्ति-विशेष याद आता है, उससे पूर्व नहीं। जब कोई गुणी व्यक्ति का अनादर करता है तब कहते हैं। तुलनीय : भीली—रांगड़ रात पड़य्ये रण में आद आवे।

बहु गुणी बहु दुःखी—बहुत गुणी व्यक्ति को प्रायः कष्ट रहता है। तुलनीय : भीली—घणी चतराई घणी भूंडी; पंज० मता मत्ती मता सत्ती।

बहुत अतिथि मठ की खराबी—दे० 'बहुत जोगी मठ का···'।

बहुत कथनी थोड़ी करनी—कहना बहुत और करना थोड़ा। ऐसे स्वभाव के व्यक्ति पर कहा जाता है जो कहता तो बहुत है पर करता थोड़ा है। तुलनीय : अव० कथनी बहुत, करती कुछौ नाहीं; पंज० मता आखणा कट करणा।

बहुत कमाय सो खुद ही खाय—जो व्यक्ति अधिक धन पैदा करता है वह किसी और को देकर राजी नहीं होता, वह स्वयं ही उसका भोग करता है। (क) जो व्यक्ति अधिक धन अर्जित करता है उस पर अधिकार भी उसी का माना जाता है, इस कारण वह और किसी को न देकर स्वयं ही उसे व्यय करता है। (ख) अधिक अर्जित करने वाले प्रायः लालची बन जाते हैं और किसी को कानी कौड़ी भी नहीं देना चाहते। तुलनीय : भीली—बत्तू मलबा बालू पेट पाल हैं, परवार नी पाले; पंज० मता कमा आप ही खा।

बहुत करै सो और को, थोड़ो करै सो आपको—अधिक खेती करने से दूसरों को लाभ होता है परन्तु थोड़ी खेती करने से केवल अपने को लाभ होता है।

बहुत करो तो अपने लिए, कम करो तो अपने लिए—बहुत धन उपार्जन करोगे तो अपने लिए और कम करोगे तो अपने लिए। अधिक होने पर कोई दे नहीं देता और कम होने से कोई माँगने नहीं निकलता या उसे कोई ग़रीब समझकर दे नहीं देता। मनुष्य अधिक परिश्रम करता है तो अपने लिए और कम करता है तो अपने लिए इसमें न तो किसी पर अहसान लादा जा सकता है और न ही दोष दिया जा सकता है। तुलनीय : भीली—घणो करे, थोड़ो करे आपणे आपणे घेरन् वोज पूरी पाड़े, बीजू कोनी पाड़े; पंज० मता कर ते अपणे लई, कट कर ते अपणे लई।

बहुत खाय, बहुत मुटाय—जितना अधिक भोजन किया जाय, शरीर भी उतना अधिक बढ़ता है। जिसका शरीर

अधिक बड़ा या मोटा होता है उसमें बुद्धि कम होती है। मोटे शरीर वालों के प्रति उपहास करने के लिए कहते हैं। तुलनीय : राज० घणो खावै घणो मेद; पंज० मता खा मता फट।

बहुत गई थोड़ी रह गई है--अधिक उम्र बीत गई है अब थोड़ी और है। बूढ़े आदमी के लिए या बुढ़ापे में लोग कहते हैं। तुलनीय : अव० बहुत बीत गई, थोर रहि गय; राज० घणी गई थोड़ी रही सो भी जावणहार; पंज० मती गई कट रह गयी।

बहुत गाँव को चौधरी बहुत गाँव को राव; अपने काम न आव तो अपनी ऐसी तैसी में जाव--दे० 'बारह गाँव का चौधरी···'।

बहुत घमंड लंका नाशे--रावण के अधिक अभिमान करने से लंका नष्ट हो गई। आशय यह है कि अभिमानी का पतन निश्चित है। तुलनीय : असमी—अति दर्पे हत लंका; सं० अति दर्पे हता लंका अति दर्पे च कौरवा; पंज० मता दमाग लंका फूके; अं० Pride goes before a fall.

बहुत घरों का मेहमान भूखा मरे--बहुत से घरों के मेहमान के भोजन के संबंध में सब यही सोचते हैं कि वह दूसरे के घर खा लेगा और कोई भी उसके लिए भोजन नहीं बनाता। अर्थात् जो काम कई लोगों को करना होता है, वह पूर्ण नहीं होता। तुलनीय : राज० नणा घरांरों पावणों भूखां मरै।

बहुत घी घर लीपने के लिए नहीं होता--यदि घर में घी बहुत अधिक है तो उससे घर नहीं लीपा जाता। किसी वस्तु की अधिकता होने पर उसका दुरुपयोग नहीं किया जाता। तुलनीय : राज० घणो घी भींतरे [illegible]णने को हुवैनी।

बहुत चालाक के गले में फंदा—नीचे देखिए।

बहुत चालाक बहुत फंसता है--जो बहुत अधिक चालाक बनते हैं, वे बड़ी हानि उठाते है। तुलनीय : असमी—अति बुद्धिर गलत् जरी; सं० घातयन्ति हि कार्य्याणि दूताः पण्डितमानिन; ब्रज० बहुत चालाक केई गरे में फंदा परै; पंज० मता चलाक मता फसदा है; अं० Too much cunning overreaches itself.

बहुत जोगी, मठ का उजाड़—एक मठ जब बहुत-से जोगियों के अधिकार में आ जाता है और वे सभी अपनी मनमानी करने लगते हैं तो वह शीघ्र ही उजड़ जाता है। (क) जब कोई काम अधिक व्यक्तियों द्वारा किए जाने के कारण बिगड़ जाए तो करने वालों के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। (ख) अधिक लोगों द्वारा किए जाने के कारण जब किसी काम के बिगड़ जाने की आशंका हो तब भी चेतावनी रूप में इसका प्रयोग होता है। तुलनीय : भोज० ढेर जोगी मठ क उजार, सात जोगी मठ क उजार, ढेर गिहथिनी मंठा पातर, सात गिहथिनी मंठा पातर; माल० एक री मां ने खंखेरी ने बाले, सात री मां ने सियार खावे (अर्थात् एक पुत्र की मां का दाह-संस्कार हो जाता है, सात पुत्रों की मां को गीदड़ ही खाते हैं।); मरा० फार योगी मिळाले, मठ सोडून पळाले; ब्रज० बहुत जोगना, मठ को उजार; अं० Too many cooks spoil the broth.

बहुत झुकाने से डाल टूट जाती है किसी डाल को अधिक झुकाया जाय तो वह टूट जाती है। किसी व्यक्ति के ऊपर उतना ही दबाव डालना चाहिए जितना वह सह सके, अधिक दबाव डालने से या तो वह लड़ने को तैयार हो जायगा या छोड़कर चल देगा। तुलनीय : राज० घणी खांची टूटे।

बहुत दाइयाँ जच्चा का नाश--बहुत दाइयाँ होने से सब अपनी-अपनी चतुराई प्रदर्शित करती हैं और अपनी बुद्धि के सामने दूसरे को कुछ नहीं समझतीं। एक-दूसरे को नीचा दिखाने की होड़ में जच्चा और बच्चा दोनों की दशा बिगड़ जाती है। जब किसी एक कार्य को बहुत से करने वालों को सौंप दिया जाता है तो वह कार्य बिगड़ जाता है। तुलनीय : राज० घणी दाया जार्प रो नास करै; पंज० मतियां दाइयां करण विगाड़; अं० Too many cooks spoil the broth.

बहुत दे तो धरै कहाँ, कम दे तो खाँय कहाँ?—यदि अधिक देता है तो घर में रखेंगे कहाँ और यदि कम देता है तो खाने भर को भी नहीं होता। भगवान के प्रति कहते हैं कि जैसे अब दे रहा है, वैसे ही देता जा, कम या अधिक मत दे अर्थात् वर्तमान स्थिति को ही सदा बनाए रख। तुलनीय : भीली—घणू आले ते मेलू क्या, योडूं आले ते जाडुं क्यां?

बहुत धनी, बहुत रोए—जिस व्यक्ति के पास जितना धन होता है वह उसे और अधिक करने के लिए ही रोता रहता है। धन की प्यास कभी बुझती नहीं। तुलनीय : भीली—घणा वाला ए घणा रोए; पंज० मता पैहै वाला मता रोवे।

बहुत नकटों में एक नाक वाला नक्कू—जहाँ सभी दोषयुक्त या बुरे हों तो एक निर्दोष या भला दोषी समझा जाता है।

बहुत नौकर, कोठी फिर भी सूनी—बहुत-से नौकरों

के रहते भी कोठी सूनी है। जिस स्थान पर स्वामी न रहे वह स्थान नौकरों के रहने पर सूना लगता है। तुलनीय : राज० धणां गोलां कोटड़ी सूनी।

बहुत पकाई खिचड़ी दाँतों से चिपक जाती है—अधिक पकी हुई खिचड़ी दाँतों से चिपकने लगती है। परस्पर बहुत अधिक घनिष्ठता भी मनमुटाव का कारण बन जाती है। अर्थात् किसी भी चीज़ की अति अच्छी नहीं होती। तुलनीय : राज० घणी सराही खीचड़ी दांतां खूं चिप ज्याय।

बहुत बुद्धिमान तीन ठाँव गिरे—बहुत चतुर बनने वाला बहुत ग़लती करता है, या बहुत हानि उठाता है। तुलनीय : मैथ० जे बड़ बुधियार से तीन ठाम माखे; भोज० ढेर हुंसियार तीन जगह बुड़ेलं।

बहुत बोलना मूरखताई—अधिक बोलने वाला मूर्ख होता है।

बहुत बोले औ बहुत खाय, काम सहज भी न कर पाय—बहुत बात करता है और बहुत खाता है, लेकिन साधारण काम भी नहीं कर पाता। तुलनीय : भीली—घणू बोले ने घणू खाए ज्यो कई काम थोड़ू करे।

बहुत भूंकने वाला कुत्ता काटता नहीं—जो बहुत कुछ कहते हैं वे करते कुछ नहीं। तुलनीय : असमी—भुका कुकुरे नाका मोरे; सं० सम्पूर्ण कुम्भो नकरोति शब्दं; पंज० मतां पौकने वाला कुता नईं वडदा; अं० Barking dogs seldom bite.

बहुत भोग बहुत रोग—अत्यधिक भोजन करने अथवा भोग-विलास से शरीर रोगी हो जाता है। तुलनीय : पंज० मता खा मता गवा।

बहुत मामों का भानजा भूखा रहे—बहुत मामों का भानजा बिना खाए जाता है। अर्थात् जिस कार्य को कई लोगों को सौंप दिया जाता है वह कार्य बिगड़ जाता है। तुलनीय : मेवा० घणा मामा को भाणेज भूखो रे जावे।

बहुत मिठाई में कीड़ा पड़ जाता है—आवश्यकता से अधिक वस्तु नष्ट ही होती है।

बहुत मिले ताको बात न पूछे—जो व्यक्ति बहुत ज़्यादा मिलता है उसकी कोई बात भी नहीं पूछता है। जिस स्थान पर व्यक्ति बार-बार जाता है वहाँ उसका आदर नहीं किया जाता। तुलनीय : राज० सैंधो मगो सूठरो गांठियो।

बहुत सयाना जूता खावे—अधिक चतुर मनुष्य जूते खाता है। जब कोई अत्यधिक चतुर मनुष्य किसी कार्य में अनुभव न होने के कारण हानि उठाता है तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० घणी चतराई चूल्हे में पड़े; पंज० मता सयाण जूतियां खावे।

बहुत से जोगी मठ उजाड़—दे० 'बहुत जोगी···'।

बहुत होशियार तीन जगह डूबते हैं—जो अपने-आपको बहुत चालाक समझते हैं और किसी की बात नहीं मानते, वे जब कहीं हानि उठाते हैं या ग़लती कर बैठते हैं तब उनके प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

बहुवृकाकृष्ट न्याय—एक हिरन पर यदि बहुत से भेड़िए लगें तो उसके अंग एक स्थान पर नहीं रह सकते। किसी वस्तु के लिए जब बहुत-से लोग खींचा-खींची करते हैं तो उसकी दुर्दशा निश्चित है।

बहुरत्ना वसुन्धरा—पृथ्वी पर बहुत से रत्न हैं। अर्थात् संसार गुणी व्यक्तियों से भरा पड़ा है।

बहू आई तो सबने जानी—बहू आई तो सभी लोग जान गए। झगड़ालू औरत के प्रति कहते हैं जो ससुराल जाते ही सबसे लड़ने-झगड़ने लगती है।

बहू और भैंस का खिलाया कभी वृथा नहीं जाता—इन दोनों को खिलाने-पिलाने से कभी-न-कभी तो फल मिल ही जाता है। तुलनीय : माल० लाड़ी रो ने पाड़ी रो खादो अवरथा नी जाय।

बहू का बड़ा दुलार, पर बरतन कपड़े को हाथ न लगाना—बहू को बहुत प्यार करती हैं पर कहती हैं कि बर्तन और कपड़े न छूना। झूठा प्यार जताने वाले के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : भोज० बहुरिया क बड़ा दुलार, हांड़ी-बासन छुए न पावे।

बहू का सिंगार, ससुर का आधार—बहू के गहने श्वसुर के लिए आधार होते हैं। क्योंकि विपत्ति में उनसे उन्हें सहायता मिलती है। गहनों को बेचकर या गिरवी रखकर वे अपना काम चलाते हैं।

बहू के लक्षण द्वार से—बहू के घर में प्रवेश करते ही उसके लक्षणों का पता चल जाता है। किसी के स्वभाव की विशेषताएँ तुरंत मालूम हो जाती हैं। तुलनीय : राज० बहूरा लखण बारणै सूं ओळखीजै।

बहू चुस्त और कुआँ पास—बहू तो पहले से ही फुर्तीली है और फिर कुआँ पास ही है। अब पानी की कमी नहीं रहेगी। जिस व्यक्ति के पास साधन और दक्ष कार्यकर्त्ता दोनों ही हों उसके प्रति कहते हैं या जब किसी परिश्रमी व्यक्ति को साधन भी सुलभ हों तब भी कहते हैं। तुलनीय : भीली—आँखों कुड़ों ने बऊ चाचली; पंज० बौटी चंगी अते खू कोल।

बहू नवेली और गऊ दुधेली—नई स्त्री और दूध देने

वाली गाय अच्छी होती है। तुलनीय : अव० नई दुलहिन, दुधारी गाय।

बहू ने कूटा-पीसा, सास ने हाथ साने—बहू ने तो सारा आटा पीसा और सास ने हाथों को आटे में सान लिया ताकि उसका नाम भी काम करने में हो जाय। जब कोई किसी के किए हुए काम में कुछ थोड़ा-बहुत करके अपना नाम करना चाहता हो या लाभ लेना चाहता हो तो ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० ब्वारि का कूट्या मां सासू को रगर्राट।

बहुत सोना दरिद्रता की निशानी—अधिक सोना दरिद्रता की निशानी माना जाता है। अर्थात् अधिक सोना अच्छा नहीं होता।

बहू बड़ी बड़ा भाग, दूल्हा छोटा बड़ा सुहाग—यदि बहू वर से आयु में बड़ी हो तो उसका भाग्य अच्छा होता है, क्योंकि दूल्हा आयु में छोटा होने के कारण उसके जीवित रहने तक तो जीवित रहेगा ही। बड़ी आयु की कन्या के साथ छोटी आयु के वर का विवाह होने पर कहते हैं। तुलनीय : राज० बड़ी बहू बड़ा भाग, छोटो लाडो घणो सुवाग।

बहू बहुत सीधी है जो तेरे साथ ही चल देगी!—बहू इतनी भोली-भाली है कि तुमने कहा चलो और वह तुम्हारे साथ चल देगी। इतनी सीधी मत समझना। उस व्यक्ति के प्रति कहते हैं जिसे लोग बहुत सीधा समझें किंतु वस्तुतः वह ऐसा न हो। तुलनीय : राज० बहू भोळी घणी जको भूतां भेळी सोवै।

बहू बेटी को ऐसी जगह बैठाए, जहाँ से रोके उठे, हँस के न उठे—इन्हें पूरी तरह अपने दबाव में रखना चाहिए।

बहू बेटी सब रखते हैं—जब कोई दूसरों की बहू-बेटी पर कुदृष्टि डालता है तो कहते हैं।

बहू काली, धन घर खाली—शौक़ीन बहू से घर का और धन का नाश हो जाता है। तुलनीय : पंज० बौटी काली, पैहा दा कर खाली।

बहू शरम की बेटी करम की—शीलवान बहू तथा भाग्यवान पुत्री अच्छी होती हैं। तुलनीय : पंज० बौटी सरम दी कुड़ी करम दी।

बहू से चोर मरावें, चोर बहू के भाई—बहू को कहते हैं कि चोरों को मारो और चोर बहू के ही भाई हैं। जब कोई शत्रुओं से मिला हो या उनका संबंधी-मित्र हो और उसी को उनके विरुद्ध कोई कार्य सौंपा जाय तो व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० बहू कनां सूं चोर मरावे चोर बहूरा भाई।

बहे जात कर भइसि आधारा—आप बहते हुए का सहारा हो गए। निराश्रित को आश्रय मिल जाने पर कहा जाता है।

बाँगर क मरद बाँगर क बरद—बाँगर (ऐसी भूमि जो नदी के कछार से बहुत दूर हो) के बैलों और किसानों को साल में एक दिन भी आराम नहीं मिलता, उन्हें सदा ही काम करना पड़ता है।

बाँझ अच्छी इकौंज बरी—एक लड़के वाली स्त्री से बाँझ अच्छी है क्योंकि एक लड़के का कुछ भी भरोसा नहीं, जाने रहे या मर जाय।

बाँझ कि जान प्रसव कै पीरा—बाँझ स्त्री को पुत्र-उत्पत्ति के समय की पीड़ा का अनुभव नहीं हो सकता। अर्थात् जिसने जो दुःख भोगा नहीं, वह दूसरे पर पड़े उस दुःख का अनुभव नहीं कर सकता।

बाँझ क्या जाने प्रसूत की पीर—ऊपर देखिए। तुलनीय : अव० बाँझ का जानै सोअरी की पीर; राज० बाँझ कांई जाणै जिणनरी पीड़; बाँझ जिणनरी पीड़ सार कांई जाणै; सं० नहिबन्ध्या विजानाति गुर्वी प्रसव वेदनां; असमी—बाजीये नुबुजे पेंबनीर् मोल्; हरि० बाँझ के जाणै जाप्पे की पीड़? गढ़० बांडी लोकेण क्या जाणो परसव पिड़ा; मरा० बांझेला काय माहीत बाळंतिणीच्या वेणा।

बाँझ गाय से घी की आशा—बाँझ गाय से घी प्राप्त करने की उम्मीद लगाए बैठे हैं। व्यर्थ की उम्मीद करने वाले के प्रति कहते हैं।

बाँझ न जान प्रसव की पीड़ा—दे० 'बाँझ कि जान...'। तुलनीय : अव० बाँझ का जानै पेटु पिराव।

बाँझ न बियाय तो क्या बूढ़ी न कहाय?—जिस स्त्री को बच्चा नहीं होता तो क्या वह बूढ़ी नहीं कहलाती? अर्थात् कहलाती है। आशय यह है कि किसी का कोई कार्य हो या न हो समय तो बीतता जाता है।

बाँझ बँझौटी, शैतान की लँगोटी—बाँझ बड़ी दुष्टा होती है।

बाँझ बियाई, सोंठ हेराई—अर्थात् बाँझ को बच्चा हुआ तो उसे ओछवानी आदि देने के लिए सोंठ ही न मिली। जब किसी अनुपयुक्त व्यक्ति से कुछ अच्छा काम हो जाय पर उस काम के अनुरूप आवश्यक सामग्री आदि न मिले तो ऐसा कहते हैं। अभागे के साथ उसका अभाग्य सदैव लगा रहता है, यह भी आशय है। तुलनीय : कनौ० बाँझ बियानी तब सोंठ हिरानी।

बाँझ बियानी, सोंठ उड़ानी—ऊपर देखिए। तुलनीय : अव० बांझ बिआनी, सोंठ उड़ानी।

बाँझ स्त्री प्रसूती का दुःख नहीं जानती—दे० 'बांझ कि जान...'।

बाँट खाओ या सांट खाओ—किसी भी वस्तु को मिलकर या बाँटकर खाना चाहिए। स्वार्थी व्यक्तियों के शिक्षार्थ ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० बांटिक खाणो कि सांटिक खाणो; पंज० बंड खाए, खंड खाए, बिल्ला खाए।

बाँट खाय, राजा कहलाय—जो बाँटकर खाता है वह राजा कहलाता है। कोई भी वस्तु मिल-बाँटकर प्रयोग में लानी चाहिए। तुलनीय : राज० बांट खाय बैकूंठां जाय; पंज० बंड खाय खंड खाए।

बाँटल भाई परोसी बराबर—जब अपना सगा अपने से अलग हो जाता है तो वह भाई न होकर पड़ोसी हो जाता है। तुलनीय : अव० बांटा पूत परोसी दाखिल।

बाँटा पुत्र पड़ोसी बराबर—ऊपर देखिए।

बाँड़ गए, चार हाथ रस्सी ले गए—बाँड़ा बैल खुद तो गया ही साथ में चार हाथ रस्सी भी लेता गया। ऐसे व्यक्ति के प्रति व्यंग्य से कहते हैं जो अपने नुक़सान के साथ-साथ दूसरों का भी नुक़सान करता है या कुल की मर्यादा को भी नष्ट करता है। तुलनीय : भोज० बांड़ गइलं तऽ गइलं नवहाथक पग हो लेले गइलं।

बाँडा बरध नेबघती माहीं, लड़का मरले आवा-जाहीं—बाँड़ा बैल (जिसकी पूंछ कटी हो) हल में नाथते समय ही मर जाता है और लड़का आने-जाने में ही मर जाता है। आशय यह है कि कमज़ोर लोग सामान्य काम से ही थक जाते हैं।

बाँड़ी बिस्तुइया बाघन से नजारा मारे—बाँड़ी छिपकली (बिस्तुइया) बाघों से नज़र लड़ा रही है। जब कोई निर्बल व्यक्ति किसी शक्तिशाली से टक्कर लेता है तब उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

बाँदरी के हाथ नारियल—दे० 'बंदर के हाथ आइना।' तुलनीय : ब्रज० बंदर के हाथ नारियल।

बाँदी के आगे बाँदी आई लोगों ने जाना आँधी आई—नौकर के नौकर काम करने में शैतान होते हैं। अर्थात् खूब काम करते हैं।

बाँदी के आगे बाँदी मेंह गिने न आँधी—नौकर का नौकर काम करने में मेंह-आँधी की परवाह नहीं करता, अर्थात् खूब काम करता है।

बाँधकर ले जाया गया कुत्ता कभी शिकार नहीं करता—जिस कुत्ते को जबरदस्ती बाँधकर शिकार करने के लिए ले जाया जाता है वह कभी शिकार नहीं मारता। इच्छा के विरुद्ध सुविधाएँ देकर भी किसी व्यक्ति से काम नहीं लिया जा सकता है। तुलनीय : भीली—उपाड़्यो कूतरो आयड़े नीचड़े; पंज० बनया कुत्ता कदी सिकार नईं करदा।

बाँध कुदारी खुरपी हाथ, लाठी हँसुआ राखै साथ काटै पार औ खेत निरावै, सो पूरा किसान कहवावै—जो मनुष्य सदैव हाथ में खुरपी और कुदाल तथा अपने साथ लाठी और हँसिया रखता है, खेत को भी निराता है और साथ-साथ घास भी काटता है ऐसा सभी सबद्ध कार्यों को करने वाला पूरा किसान कहा जाता है।

बाँध के मारे, कहै बहुत सऊत है—बाँधकर मारते हैं और कहते हैं कि बहुत सहनशील (सऊत) है। जो किसी के साथ निर्दयता का व्यवहार करते हैं और उसकी खिल्ली भी उड़ाते हैं उनके प्रति कहते हैं।

बाँध खीसा, ले हीसा—थैली ठीक करो तो हिस्सा मिलेगा। बिना अपने पास कुछ रहे अपना हिस्सा भी नहीं मिलता।

बाँध रे मुए तू हींग की पुड़ी, मेरी बेटी काते नौ ककड़ी—अपनी तुच्छ-सी वस्तु की प्रशंसा करके उसको ठिकाने लगाना।

बाँधा तो बैल भी नहीं रहता—बैल को जब तक घुमाया-फिराया न जाय तब तक उसे भी चैन नहीं पड़ता। अर्थात् बंधन में रहना किसी को भी अच्छा नहीं लगता, सभी लोग स्वतन्त्र रहना चाहते हैं। तुलनीय : राज० बांध्या बळद ही को रँवै नी।

बाँधा बछड़ा जाय पठाय, बैठा ज्वान जाय तुंदियाय—बैठा हुआ बछड़ा सुस्त हो जाता है और बैठा हुआ जवान तोंद वाला (बड़े पेट वाला) हो जाता है। आशय यह है कि बैठे रहने से आलस्य बढ़ता है और शरीर ढीला हो जाता है।

बाँधे लँगोटी, नाम पीताम्बरदास—पहनते तो लँगोटी हैं और नाम है पीताम्बरदास। (क) निर्धन होते हुए भी जो अपने को धनवान सिद्ध करे उसके लिए व्यंग्य में प्रयुक्त। (ख) मूर्ख अथवा अनपढ़ होते हुए भी जो अपने को विद्वान कहे उसके लिए भी व्यंग्य में इसका प्रयोग होता है। (ग) नाम के अनुसार स्थिति न होने पर भी कहते हैं।

बांधे सकेला, फिरे अकेला—सिकड़ (सकेला) बांधकर अकेले घूमता है। अर्थात् साधन-सम्पन्न व्यक्ति को कहीं किसी प्रकार का भय नहीं रहता।

बांबी पास मरे, सांप का नाम बदनाम—सर्प की बांबी के पास मरने से सर्प को ही दोष लगाया जाता है। आशय यह है कि बदनाम व्यक्ति के आस-पास कोई घटना होती है तो उसका नाम अवश्य लिया जाता है, भले ही वह उसमें सम्मिलित न हो या उसकी जानकारी उसे न हो। (बांबी = सांप का बिल)। तुलनीय : पंज० वरमी कोल मरया सप दा नां चड़्या।

बांबी पीटने से सांप थोड़े ही मरता है—सांप को मारने के लिए बांबी को नहीं सांप को पीटने की आवश्यकता होती है। किसी भी बुराई को दूर करने के लिए उसकी जड़ खोदनी चाहिए। ऊपरी उपचार से वह कभी दूर नही होगी। तुलनीय : राज० बांबी कूट्या सांप थोडो ही मरै; पंज० वरमी कुटण नाल सप नईं मरदा; ब्रज० बमई पीटे ते का स्यांप मरै।

बांबी में हाथ तू डाल, मंत्र मैं पढ़ूं—सर्प के बिल में हाथ तुम डालो मैं मंत्र पढ़ता हूँ। दूसरो को विपत्ति मे डालकर तमाशा देखने वाले के प्रति कहत हैं। तुलनीय : मरा० सापाच्या बिळांत हाथ तू घाल मी मंत्र म्हणतो; पंज० वरमी बिच हथ तू पा, मंत्र मैं पड़ना; ब्रज० बांबी में हाथ तू दै मंतुर मैं पढ़ूं।

बांमन साठ बरस तक पोंगा रहत है—ब्राह्मण साठ वर्ष तक मूर्ख रहता है। आशय यह है कि ब्राह्मण में व्यावहारिक बुद्धि का अभाव रहता है।

बांस की खूंट से बांस—बांस की जड़ स बांस ही निकलता है। अर्थात् जो जैसा होता है उसके बच्चे भी वैसे ही होते हैं। तुलनीय : ब्रज० बांस के बिरे में बांस।

बांस की जड़ में बांस ही होता है—ऊपर देखिए। तुलनीय : भोज० बांस क जरी बांसे होला।

बांस की बांस खाए उतराई की उतराई दो—मार भी खाई और उतराई भी दी। दो-दो कहानियां साथ-साथ हों तो कहते हैं। तुलनीय : अव० बांस का बांस खाएन, उतराई उपरी से दिहेन।

बांस के बांस मल्लाही की मल्लाही—पूरे खर्च करने पर भी अपमानित होने पर कहते हैं।

बांस गुन बसोर, चमार गुन अघोर—बांस के गुण का पता उसके सामान बनने पर चलता है और चमार के गुण का पता चमड़ा पकाने पर चलता है। आशय यह है कि काम करने या काम में लाने पर ही किसी व्यक्ति या वस्तु के गुणों का पता चलता है।

बांस चढ़ी गुड़ खाय—बांस पर चढ़कर गुड़ खाती है। वेश्या, निर्लज्ज या भ्रष्टा स्त्री पर कहते हैं। तुलनीय : पंज० बंज ते चड़ी गुड खादा।

बांस डूबे बाउरी थाह मांगे—बांस डूब जाता है और मूर्ख पानी की थाह लगाना चाहता है। अर्थात् जब बड़े जिस काम को न कर सकें उसे करने का छोटे साहस करें तो कहते हैं।

बांसड़ औ मुंह घोरा, उन्हें देख चरवाहा रोरा—उभड़ी हुई रीढ़ और सफेद रंग के मुंह वाले बैल को देखकर चराने वाला भी रो उठता है अर्थात् वह बहुत ही सुस्त होता है।

बांस बढ़े झुक जाय, अरंड बढ़े टूट जाय—बांस बढ़ता है तो झुक जाता है और अरंड बढ़ता है तो टूट जाता है। आशय यह है कि बड़ा आदमी उन्नति करने से नम्र हो जाता है पर छोटा आदमी बढ़कर इतराने लगता है और नष्ट हो जाता है।

बांह गहे की लाज—जिसका हाथ पकड़ लिया, उसका साथ निभाना चाहिए। भगवान से भी भक्तों ने कहा है। तुलनीय . अव० बांही पकरै कै लाज; मरा० कोणाचा हात धरला की शेवट पर्यंत सोडतां कामानये।

बा अदब बा नसीब बेअदब बेनसीब—दे० 'बेअदब बेनसीब ·'।

बाई खा लें तो ब्राह्मणों को दें—बाईजी भोजन कर लेंगी तो ब्राह्मणों को भोजन कराया जाएगा। जहाँ बड़ों का अनादर और छोटों का सम्मान हो वहाँ कहते हैं।

बाई जाने अपनी-सी हाई—बाई अपने जैसी मुझे भी समझती है। अर्थात् जो जैसा खुद होता है वह वैसा ही औरों को भी समझता है।

बाकी का मारा गांव और चिलमों का मारा चूल्हा—यदि किसी गाँव के लोग लगान आदि नहीं दे पाते हैं तो वसूली वालों के तगादे से उस गाँव के लोग परेशान हो जाते हैं और जिस चूल्हे से बार-बार आग निकाली जाती है वह चूल्हा बुझ जाता है। अर्थात् ये दोनों ही नष्ट हो जाते हैं।

बाकी सब मर गए केवल तुम्हीं बचे हो—अन्य लोग तो मर गए केवल तुम्हीं रह गए हो। बहुत अधिक झूठ बोलने वाले को कहते हैं। तुलनीय : पंज० बाकी सारे मरे तूं ही रहयां है।

बाग में बेल पका कौए को क्या ?—बेल पकने पर कौए को कोई लाभ नहीं होता क्योंकि वह उसे खाता नहीं

है। असमर्थ होने पर जब व्यक्ति उदासीन हो जाता है तब ऐसा कहा जाता है। या जिस वस्तु से कोई लाभ नहीं होता उसके प्रति कहते हैं।

बाग लागल न मंगन डेरा देल—दे० 'बज़ार लगा नहीं उचक्के···'।

बाघ का डर बकरी को, ननद का डर बहू को—जिस गाँव में बाघ आता हो वहाँ बकरियाँ सदैव डरा करती हैं और जिस घर में ननद हो उस घर में बहुओं का जीना कठिन हो जाता है। तुलनीय : गढ़० भैस्यूं मोठ गौड्यूं को नाश, नणदू घर बौड्यूं को नाश।

बाघ की मौसी बिलाई—बिल्ली बाघ की मौसी होती है। ये दोनों एक ही जाति के हैं। समान प्रकृति के व्यक्तियों पर कहा जाता है। तुलनीय : अव० बघवा कै मौसी बिलैया; ब्रज० बाघ की मौसी बिल्ली।

बाघ न मारे बकरी, ना कुत्ता हड्डी खाय—यदि बाघ बकरी को न मारे तो कुत्ता हड्डी कहाँ से खाएगा? (क) जब किसी बड़े को बुरा काम करते हुए देखकर छोटा भी बुरा काम करे तो उसके प्रति कहते हैं। (ख) बड़ों की आड़ में छोटे भी फ़ायदा उठा लेते हैं। तुलनीय : गढ़० बागनि लिजांदो बाखरी त कव्वा नि लिजांदो हाड।

बाघ ने मारी बकरी औ कुत्ता हड्डी खाय—बाघ शिकार मारकर पेट पालता है और कुत्ते आदि छोटे जीव उन्हीं की जूठन से काम चलाते हैं। जब कोई बलवान पुरुष कहीं से कुछ कमाकर लाता है और उसमें से कुछ अपने निर्बल या निर्धन संबंधियों को भी दे देता है तो उनके प्रति भी ऐसा कहते हैं।

बाघ-बकरी एक घाट पानी पीते हैं—अच्छे शासन या प्रबन्ध पर कहते हैं। तुलनीय : अव० शेर बोकरी का एकै घाट मा पानी पियत है; गढ़० बाग बकरी एक घाट पाणी पेंदान; पंज० मेर बकरी इक खू दा पाणी पीदे हन।

बाछा बैल बहुरिया जोय, ना घर रहे न खेती होय—जिस गृहस्थ का बैल बछड़ा हो और पत्नी नई आई हो जिसे गृहस्थी के कार्यों का पूर्ण अनुभव न हो, तो उसकी खेती और घर की व्यवस्था दोनों ख़राब हो जाएँगी।

बाछा हर चले बैल कौन खरीदे—बछड़ा यदि हल खींच ले तो बैल की क्या आवश्यकता? अर्थात् यदि छोटों से काम चल जाय तो बड़ों की क्या आवश्यकता? यानी बड़ों के बिना कार्य नहीं हो सकता। तुलनीय : अव० बछवन हरु चरै तो बैल को बेसाहै; पंज० वछा हल वाए ते टग्गा कौण लवे।

बाजन लागी ढोलकी नाचन लागा भांड़—ढोलकी बजते ही भांड़ नाचने लगा। संकेत पाते ही काम में लग जाने पर यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : ब्रज० बाजन लागी ढोलकी, नाचन लागे भांड़।

बाजरा कहे मैं बड़ा अलबेला, दो मूसल से लडूं अकेला; जो तेरी नाजो खिचड़ी खाय, फूल-फाल कोठी हो जाय—बाजरा कहता है कि मैं बहुत अलबेला हूँ। दो मूसलों से अकेला ही लड़ता हूँ। यदि तेरी नाज़ुक पत्नी मेरी खिचड़ी खाय तो वह फूलकर अनाज की कोठी की तरह मोटी हो जाय। आशय यह है कि बाजरा पुष्टिकर होता है।

बाजरा कहे मैं हूँ अलबेला, दो मूसल से लडूं अकेला, जो मेरी नाजो खिचड़ी खाय, तो तुरत बोलता खुश हो जाय—ऊपर देखिए।

बाजरे की टट्टी, गुजराती ताला—साधारण बाजरे की झोंपड़ी में गुजराती ताला लगा है। (क) साधारण बात के लिए बहुत बड़ा आडंबर करने पर यह लोकोक्ति कही जाती है। (ख) बेमेल काम या बेमेल वेश-भूषा पर भी कहते हैं।

बाजरे की पीसनहारी होहूँ के गीत गावे—दे० 'बजड़ा क पीसनहारी···'।

बाजरे की बिनाई, कचरे की मजदूरी—बाजरा बहुत बारीक होने के कारण बीनने में बहुत परिश्रम लेता है तथा उस पर भी उसी में से निकले कूड़े की मज़दूरी। जब कोई व्यक्ति परिश्रम के काम को बिना कुछ दिए ही करा लेना चाहे तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : माल० मूंग रो वीणनो ने लूण तमाखू भेली।

बाजरे की रोटी हाथ से ही पोई जाती है—मोटे अनाज की रोटी हाथ से बनाना पड़ता है, इसीलिए उसमें समय और परिश्रम अधिक लगता है। (क) जब किसी ओछे व्यक्ति की किसी कार्यवश बहुत खुशामद करनी पड़े तो उसके प्रति कहते हैं। (ख) प्रत्येक कार्य को करने का अलग-अलग ढंग होता है इसलिए भी कहते हैं। तुलनीय : माल० मकी रो रोटो माते पोवे; पंज० बाजरे दी रोटी हथ्थ नाल ही पकदी है।

बाज़ार उसका जो ले के दे—जो उधार लेकर शीघ्र पैसा दे देता है उसी की बाज़ार में इज्ज़त होती है और उसे ही दुबारा उधार पर सौदा मिलता है।

बाज़ार का सत्तू बाप भी खाय बेटा भी खाय—बाप-बेटा दोनों ही वेश्यागामी हों तो कहते हैं।

बाज़ार किसका जो लेके वे उसका—दे० 'बाज़ार उसका जो···'।

बाज़ार की गाली किसकी, जो फिर के देखे उसकी—सड़क या बाज़ार में किसी की गाली को अपने ऊपर नहीं समझना चाहिए जब तक कि वह अपने पर लक्ष्य करके न कही गई हो। तुलनीय : अव० बजार लिहे दिहे को।

बाज़ार की छींक ससुराल की गाली—बाज़ार में होने वाली छींक और ससुराल में दी गई गाली को बुरा नहीं मानना चाहिए। तुलनीय : अव० बजार की छींक औ ससुरार की गारी।

बाज़ार की मिठाई से निर्वाह नहीं होता—वेश्यागामियों पर कहा जाता है। तुलनीय : अव० बजार के दोनवा चाटें गुजर न होई।

बाज़ार लगा नहीं गठकटा तैयार—दे० 'बाज़ार लगा नही उचक्के···'।

बाज़ारू औरत रेतीला खेत—इन दोनों से ही किसी प्रकार की आशा नहीं करनी चाहिए। इन दोनों से सम्बन्ध रखने वालों को समझाने के लिए ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० छोड्या नौना अर बग्यां पुंगड़ा कखछया भला।

बाज़ी बाज़ी बारीश-ए-बाबाहम बाज़ी—बाप की दाढ़ी से भी खेलता है। जब कोई छोटा अपने बड़े से उद्दंडता का व्यवहार करे या उससे झगड़ा करे तो भर्त्सना करते हुए कहते हैं।

बाज़ू टूटे बाज़ को बाज़ ही लुक्मा दे—सहजातीय को कष्ट या क्षति पहुँचने पर सजातीय ही सहायता करता है।

बाजे तांत राग तब बूझे—जब ताँत बजती है तब उसके राग का पता चल जाता है। अर्थात् बोलने पर आदमी की योग्यता का पता चल जाता है। तुलनीय : अव० तांत बोली राग का पता चलिगा।

बाजे न गाजे, दूल्हा आन बिराजे—बाजा आदि कुछ नहीं है और दूल्हा जी पहुँच गए। (क) बिना किसी संकेत या सूचना के किसी के कहीं पर पहुँच जाने पर कहते हैं। (ख) किसी के कही पर खाली हाथ जाने पर भी कहते हैं।

बाजे पर सबका पैर उठता है—जब बाजा बजता है तो सबका मन नाचने को करता है। अच्छी चीज़ को देख या सुनकर सबको प्रसन्नता होती है एवं उसके प्रति आकर्षण बढ़ता है।

बाट चले जानिए या बाहा पड़े जानिए—साथ-साथ रास्ता चलने या व्यावहारिक रूप में संबंध होने पर ही किसी व्यक्ति की वास्तविकता का पता चलता है।

बाटे घाटे कुतिया मरी, नाथ कहे मेरी बाचा फरी—किसी दैवी घटना के कारण या अपनी मृत्यु से कुतिया मरी पर किसी नाथपंथी साधु ने कहा कि मेरा शाप पड़ा है। जब लोग किसी स्वभाव या दैवी घटना को अपना प्रभाव कहें तो कहते हैं। निराधार अपना महत्त्व प्रदर्शित करने वाले व्यक्ति के लिए कहा जाता है।

बाढ़े पूत पिता के धर्मा, खेती उपजे अपने कर्मा—पुत्र पिता के पुण्य से उन्नति करता है पर खेती में अपना ही परिश्रम फलता है। तुलनीय : अव० बाढ़ें पूत पिता के धरमें, खेती उपजै अपने करमें।

बाड़ सहारे बेल चढ़े—बाड़ के सहारे बेल ऊपर चढ़ती है। सबल का अवलंब पाकर ही निर्बल और निर्धन उन्नति करते हैं। तुलनीय : भीली—बाड़ ही जेरां वेलो चढ़ग्यो; पंज० बाड़ उत्ते बेल चड़दी है।

बाड़ ही जब खेत को खाय, तब रखवाली कौन करे—रक्षक ही भक्षक हो जाय तो रक्षा कैसे हो। तुलनीय : गढ़० पाणी का ही धारा बणांग लगिगे; माल० बाड़ उठी ने बेलड़ा ने खाय घोड़े ही; पंज० बाड़ ही खेत नूं खाण लग्गी ते राखी कौण करे।

बाड़ी में बाड़ी करे, करे ईख में ईख; वे घर यों ही जाएँगे, सुनें पराई सीख—जो कपास वाले खेत में कपास, ईख वाले खेत में ईख बोता है तथा दूसरे की ही सीख लेता है उसका घर अपने आप ही नष्ट हो जाता है।

बाड़ी में बारह आम, हट्टी में अठारह आम—उलटी बात पर कहते हैं। असल में तो हट्टी की अपेक्षा बाड़ी में ही आम सस्ते होने चाहिए। तुलनीय : अव० बारी मा बारा आम, सट्टी मा अठारा आम।

बात और बाट को जिधर चाहे मोड़ दो—बात को जिधर दिल चाहे उधर घुमाया जा सकता है तथा मनुष्य भी इच्छित राह पकड़ सकता है। बात और राह के घुमाने में केवल इच्छा की ही आवश्यकता होती है। तुलनीय : माल० बात और वाट में फेरे बें फेरे।

बात और मठा जितना चाहो उतना—बात और मठे को जितना भी चाहो बढ़ाते जाओ उसमें कुछ खर्च नहीं करना पड़ता। बिना कारण झगड़ा करने वालों को समझाने के लिए ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० छुई अर छांच जतनै बढ़ावा; पंज० लड़ाई ते लस्सी चाए जिन्नी बदा लओ।

बात करने के क़सूरवार हैं—बात करने का ही क़सूर

किया है। जिस व्यक्ति की किसी व्यक्ति को चर्चा करने का ही दंड मिले तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० बात करणरी गुनैगारी है।

बात करें निरकेवल, भतार हो या देवर—प्रत्येक व्यक्ति से बिना किसी शील-संकोच के बात करनी चाहिए। तुलनीय : भोज बात करीं निरकेवल भतात होखस चाहे देवर।

बात करें सौ भूखे मरें, काम करें सौ मौज करें – जो बैठकर गप्प लड़ाते हैं वे बिना खाने के मरने लगते हैं और जो परिश्रम करते हैं वे आराम से रहते हैं।

बात कही और पराई हुई—बात या भेद कहने से चारों ओर फैल जाता है। मुंह से निकलते ही बात फैल जाती है। तुलनीय : पंज० गल्ल कीती ते गई।

बात कहे की लाज रखनी चाहिए—वचन निबाहना या प्रतिज्ञा का पालन अवश्य करना चाहिए। तुलनीय : पंज० गल दी मरम रखणी चाहिदी है।

बात का घाव नहीं भरता, तलवार का भर जाता है—कड़वी बात का धाव इतना गहरा होता है कि वह जीवन-पर्यन्त बना रहता है, तलवार की चोट का घाव कुछ दिनों बाद ठीक हो जाता है। तात्पर्य यह है कि कटु बचन मारने से भी गम्भीर प्रभाव करता है। तुलनीय : भोज० तरुआरि का घाव भरा जाई बाकी बात कऽ घाव नां भराई; अं० Wounds caused by words are hard to heal.

बात का चूका आदमी, डाल का चूका बंदर बराबर है—बात के चूके आदमी का विश्वास जाता है, और डाल का चूका बन्दर आश्रयविहीन होकर हानि उठाता है। एक को बेइज़्ज़त होना पड़ता है तथा दूसरा बुरी तरह घायल होता है। भरमक अपने वचन को पूरा करना चाहिए।

बात का चूका मर्द और डाली का चूका बन्दर—'दे० बात का चूका आदमी···'।

बात का जीता करतब का हारा—बातें करने में जीत जाता है और काम करने में हार जाता है। लफंगों के प्रति व्यंग्य में कहते हैं जो बातें तो बहुत बड़ी-बड़ी करते हैं पर किसी काम के नही होते।

बात का बतंगड़—ज़रा सी बात को बहुत बढ़ाकर कही गई बात।

बात का बासन—(क) आनुषंगिक रूप से कही गई बात। (ख) सार, लुब्बेलुबाब। (इस कहावत का प्रयोग दोनों अर्थ में होता है यद्यपि ये दोनों प्रायः विरोधी हैं)।

बात की करामात—बात से बड़े से बड़े काम भी संभव हैं। केवल 'बात' का ही करिश्मा हो तब कहा जाता है। तुलनीय : पंज० गल दी खेड़।

बात की बात ख़ुराफ़ात की ख़ुराफ़ात, बकरी के सींगों को चर गए बेरी के पात—(क) बात ठीक भी है और उलटी भी है। (ख) दूसरों की हानि करने वालों की स्वयं हानि हो जाती है। एक बकरी बेर के पत्तों को खाने के लिए उचकी पर टहनी में लगकर उसके सींग टूट गए। इसी पर यह लोकोक्ति है।

बात क्या है कटे पर नमक है—जब किसी पीड़ित व्यक्ति को कोई किसी बात या मन से और कष्ट पहुँचाए तो कहते हैं।

बात गई फिर हाथ न आती—मुँह से निकली हुई बात पुनः वापस नहीं आती।

बात गए कुछ हाथ नहीं है—ऊपर देखिए।

बात चले जो सभा में ताको राखिए कान—अपनी उपस्थिति में जिस समाज में जो बात चले उस पर काम रखना चाहिए। अर्थात् सभा के मध्य शांतिपूर्वक बैठकर बातें सुननी चाहिए।

बात चूका लात खाय—दे० 'बात का चूका आदमी···'।

बात छीले रुखड़ी और काठ छीले चीकना—बात छीलने (बहम करने) से रूखी होती है और काठ छीलने से चिकना होता है। मीनमेख निकालने से मनमुटाव बढ़ता है लेकिन छीलने से लकड़ी चिकनी हो जाती है। अर्थात् जिस वस्तु के साथ जो व्यवहार उपयुक्त हो वही करना चाहिए।

बात छोटी, बहस बड़ी—छोटी सी बात पर बहुत बड़ा विवाद। (क) छोटी सी बात पर जब लोग बहुत गर्मी से विवाद आरम्भ कर दें तो कहते हैं। (ख) छोटी बात को भी विवाद द्वारा बहुत तूल दिया जा सकता है और उसको बहुत बड़ा बनाया जा सकता है। तुलनीय : राज० बात थोड़ी, वैदो घणो।

बात जो चाहे आपनी तो पानी माँग न पी—यदि अपनी इज़्ज़त चाहते हो तो पानी भी माँग कर न पीओ। छोटी-से-छोटी चीज़ माँगने से भी इज्ज़त में कमी आ जाती है। माँगने से मान नष्ट होता है।

बातन बिंजन कौन अघाए—बातों के व्यंजन से किसका पेट भरता है? अर्थात् केवल थोथी बातों से कुछ नहीं होता। यदि जीवन में सफलता अभीष्ट है तो बातें कम और काम अधिक करना चाहिए।

बात पर बात याद आती है—प्रसंगवश बात का स्मरण हो जाता है। तुलनीय : अव० बात कहे पर बात

कही जात है।

बात पूछे बात की जड़ पूछे—बात पूछता है और बात की जड़ भी पूछता है। बहुत हुज्जत करने वाले कहते हैं। तुलनीय : अव० बात का पूछैं बात की जड़ पूछत हैं।

बात बदली साख बदली—एक बार बात से फिर जाने पर दूसरों का विश्वास उठ जाता है और मुकरने वाले की प्रतिष्ठा का हनन होता है।

बात बनाए, कागज नासै—बात और हवा काग़ज़ को नष्ट कर देती हैं। अर्थात् बात करने से और हवा चलने से काग़ज़ नहीं लिखा जाता ऐसा मुनीम लोग कहते हैं।

बात बात में छुरी कटारी – नीचे देखिए।

बात बात में बात बढ़ जाती है—बात बात में ही झगडा हो जाता है। बातचीत बहुत सोच-समझकर करनी चाहिए नही तो परिणाम भयंकर भी हो जाता है। तुलनीय : भीली—बात-बात में बगरो लागे; पंज० गल नाल गल बददी है।

बात बीत जाने पर कुछ हाथ नहीं आता—दे० 'बात गई फिर…'।

बात में बात ऐब है –किसी की बात के बीच में बोलना अशिष्टता है।

बात मर्म की आढ़त धर्म की—धर्म का ख़जाना ही सबसे अच्छा है और बात वही अच्छी होती है जिसमें कुछ सार हो।

बात रह जाती है वक्त निकल जाता है—समय व्यतीत हो जाता है लेकिन बात नहीं भूलती। जब कोई व्यक्ति किसी से अपनी आफ़त में सहायता की आशा रखता हो और वह न मिले तो कहता है। तुलनीय : अव० बात रहि जात ही, बखत निकर जात है; पंज० गल रहि जांदी है मौका नई रेंदा।

बात रहे तो लाज बचे—किसी प्रकार कही हुई बात रह जाय तो लाज बचे या कही बात पूरी हो जाय तो इज़्ज़त रहे। अर्थात् वचन देकर उसे पूरा करना चाहिए। तुलनीय : भीली—वाते वाली बात रेई जावे ते ठीक।

बात लाख की करनी खाक की—बात तो एक लाख की करते हैं लेकिन काम कुछ भी नहीं करते। अर्थात् जो केवल बात करे और काम कुछ भी न करे उसके लिए कहते हैं। तुलनीय : हरि० बात लाख की करणी खाक की; पंज० गल लख दी कम कख दा।

बात वाले बात करें, मजे वाले मजे करें—जो बातें करते हैं वे बातें ही करते रह जाते हैं, और मजे करने वाले मजे करके चल देते हैं। जब कुछ व्यक्ति दूसरों को बातों में फँसा देखकर लाभ उठाकर चले जायँ तो व्यंग्य से कहते कहते हैं। तुलनीय : भीली–बातां बलद स्या गोटा चणाय्या।

बात, सगाई, नौकरी, राजी ही से होय—बातचीत, सगाई और नौकरी ज़बरदस्ती से नहीं की जाती। इन तीनों को कोई जबरन नहीं कर सकता, ये राज़ी-ख़ुशी से ही हो सकती है। तुलनीय: राज० वैण, सगाई, चाकरी राजी पेरो काम।

बात से ही दीपक नहीं जलता—अर्थात् केवल कहने से काम नहीं होता, हाथ-पैर हिलाने से होता है। प्र० नद-दास ने लिखा है—कथनी नाहिन पाइये, पैयँ करनी सोई। बातन दीपक ना बरैं, बारें दीपक होई। तुलनीय : पंज० गलां नाल दीवा नई बलदा।

बातें अगली करती हैं ख्वार—बीती हुई बातों की याद मनुष्य को दुखी बना देती हैं।

बातें आयें बातें जायें, बातों के बल रोटी खायें; बातें चूके पीटे जायें—आते-जाते समय बातें करते रहते हैं, बातों की ही रोटी खाते है और बात चूक जाने पर मार भी खाते हैं। उस आदमी को कहते हैं जो केवल बात के ही बल पर अपनी जीविका चलाता है।

बातें करें मैना की सी, आँखें बदलें तोते की सी—बातें तो मैना जैसी करते हैं लेकिन तोते की तरह आँखें फेर लेते हैं। मधुर भाषी किन्तु कपटी आदमी को कहते हैं। तुलनीय : अव० बात करें मैना अस, आंखी बदले तोता अस।

बातें कहिए जग भाती, रोटी खाइए मन भाती – बात वही कहनी चाहिए जो दुनिया को पसंद हो और भोजन वही करना चाहिए जो ख़ुद को पसंद हो। अर्थात् खाना अपनी पसंद का ठीक होता है और बात संसार की पसद की।

बातें हाथी पाए बातें हाथी पाएँ—बातों से ही मनुष्य को हाथी पुरस्कार मिलता है और बातों से ही मनुष्य हाथी के पैरों तले रौंदा जाता हैं। आशय यह है कि अपनी बातों से ही मनुष्य सम्मानित और अपमानित होता है।

बातों का चक्कर बुरा—बातों के चक्कर में फँसकर मनुष्य को कभी-कभी बहुत बड़ी हानि भी उठानी पड़ती है। चिकनी बातें करने वालों से सावधान रहना चाहिए। तुलनीय : भीली—मनख वातां वातां में बलूं वावी दिए; पंज० गलां दा फेर माड़ा।

बातों के ही किले बनाते हैं—जो व्यक्ति केवल डींगें

ही हाँकें उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : भीली—अते खाली अलापण्या दड़े हैं; पंज० गला नाल ही पाड बनांदे हो।

बातों चिकना कामों खवार—बातें तो बहुत करते हैं पर काम कुछ भी नहीं। जो व्यक्ति केवल लंबी-चौड़ी बातें ही करते हैं और कुछ भी नहीं करते उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

बातों चीतों मैं बड़ी, करतूतों बड़ी जिठानी—बातों में मैं बड़ी हूँ और काम में जेठानी। यह निकम्मी देवरानी को कहते हैं जो बातों मे अपने को बड़ा समझती है और काम में अपने आलस्य या निकम्मेपन का कारण जेठानी को।

बातों बूढ़ा, करतब ख्वार—दे० 'बातों चिकना कामों···'।

बातों में बात निकल जाती है—बातों में ही कोई गुप्त बात भी मुँह से निकल आती है। बातचीत में बहुत सावधानी बरतनी चाहिए क्योंकि बातों में लग जाने पर हृदय की बात मुँह से निकल जाती है जो बाद में कष्ट पहुँचाती है। तुलनीय : भीली—बोल्ये बोल्ये कई बात बोलाई जाये।

बातों से काम नहीं चलता—काम करने से काम चलता है, केवल बात करने से नहीं चलता। तुलनीय : अव० बातें से काम नहीं चलत; मरा० गप्पानी पोट भरत नाहीं; पंज० गलाँ नाल कम नईं चलदा।

बातों से पेट नहीं भरता—केवल बातें करने से पेट नहीं भरता, पेट भरने के लिए भोजन चाहिए। (क) जो व्यक्ति सारा दिन बैठकर गप्पें लड़ाए उसको समझाने के लिए कहते हैं। (ख) जो व्यक्ति दूसरों की केवल बातें करके ही टरकाना चाहे उसके प्रति भी परिहास से कहते हैं कि अब तो कुछ दिखलाओ-पिलाओ बातों से तो पेट भरने से रहा। तुलनीय : राज० वाताँ सूँ किसी पेट भरीजै; भीली—मीठी-मीठी बात कीदें पेट नी भरा हैं, वेट की देज पेट भरा हैं; मल० नावु कोण्टु वयरु निरया; पंज० गलां नाल टिड नईं परोंदा।

बातों से फूल झड़ते हैं—इनकी बातों से फूल झड़ते हैं। (क) मृदुभाषी व्यक्ति के प्रति कहते हैं। (ख) कटु-भाषी के प्रति भी व्यंग्य में कहते हैं।

बातों से मैना, आँखों से तोता—दे० 'बातें करे मैना की सी··'।

बातों से रईस, लक्षण से सईस—बातचीत तो रईसों जैसी करता है, किंतु काम सईसों जैसा। (क) जो व्यक्ति केवल ऊपरी तड़क-भड़क रखते हैं उनके प्रति कहते हैं। (ख) जो व्यक्ति कमाते कुछ न हों और खर्च खूब करते हों उनके प्रति भी कहा जाता है। तुलनीय: माल० वांता बबाररी ने लक्खण दीवारिया।

बातों से रईस शक्ल से सईस—ऊपर देखिए।

बातों हाथी पाइयाँ बातों हाथी पाँव—दे० 'बातें हाथी पाए बातें ··'।

बाद अज़ मुर्दने सुहरा बनोश दारू—मारने के बाद दवा करना। किसी बुरे काम के हो जाने पर जब उसके लिए उपाय करें तो कहते हैं।

बादर ऊपर बादर धावै, कह भड्डर जल आतुर आवै—भड्डरी कहते हैं कि जब बादल के ऊपर बादल दौड़ने लगें तो समझना चाहिए कि बहुत जल्दी ही वर्षा होगी।

बादल और धरती जैसा बनना चाहिए—बादल जिस प्रकार बड़े-छोटे ग़रीब-अमीर, अच्छे-बुरे आदि सभी प्रकार के व्यक्तियों के लिए समान पानी बरसाता है और धरती जिस प्रकार सभी का बोझ सहन करती है उसी प्रकार मनुष्य को अपना दृष्टिकोण सबके लिए समान रखना चाहिए। तुलनीय : भीली—अन्दर हरको गेरो, धरती हरको भारी वेई ने रेवो।

बादल देखकर घड़ा नहीं फोड़ा जाता—बादल को देखकर घड़ा नहीं फोड़ना चाहिए। आशय यह है कि किसी अच्छी चीज के पाने की उम्मीद में साधारण चीज़ को त्यागना या नष्ट नहीं करना चाहिए। तुलनीय : पंज० बदल दिख के कड़ा नई पनया जांदी।

बादल देखि मौतला फोड़—ऊपर देखिए।

बादल फटे तो कहाँ तक थकेला/थिगली—यदि बादल फट जाय तो उसमें कहाँ तक चकती (थिगली) लगायी जा सकती है? अर्थात् (क) बड़ा काम बिगड़ता है तो बनाना असंभव हो जाता है। (ख) बहुत बिगड़ जाने पर काम का बनाना मनुष्य की सामर्थ्य से बाहर हो जाता है। तुलनीय : मरा० आकाश फाटलें तर ठिगळ कुठवर देणार।

बादला मढ़े से नीम नहीं छिपता—बदला (एक प्रकार का रेशमी वस्त्र जिस पर सोने, चाँदी की कढ़ाई होती है) मढ़ने से नीम की कड़वाहट नहीं छिपती। अर्थात् (क) खोटा काम छिपाने से नहीं छिपता। (ख) बुरे व्यक्ति छिपते नहीं।

बादशाहत रिआया से है—प्रजा से ही राज्य टिकता है। जो शासक प्रजा पर ध्यान नहीं देते उनके प्रति कहते हैं।

बादशाहों की बातें बादशाह ही जानें—बादशाहों की

बातों को बादशाह ही जानते हैं। अर्थात् बड़ों की बातों को बड़े ही जानते हैं या जान सकते हैं।

बाध कुदारी खुरपी हाथ, हंसुया लाठी राखे साथ, काटे घास, निराबे खेत वही किसान करे निज हेत--जो रस्सी, कुदाली, खुरपी, हंसिया और लाठी साथ रखे, घास काटे और खेतों की निराई करे उसी किसान का भला होता है। अर्थात् सब साधनों से युक्त दिन-रात श्रम करने वाला किसान ही सुखी रहता है। तुलनीय : मरा० कुदली खुरपे एका हाती, विला लाठी दुसर्‌या हाथी कापी गवत निंदीरेत तोच शेतकरी निजहेत।

बाध बियां बेकहल बनिक बारी बेटा बैल, ब्यौहर, बढ़ई बन बबुर बात सुनो यह छैल, जो बकार बारह बसैं सो पूरन गिरहस्त, औरन को सुख दे सदा आप रहे अलमस्त
--बाघ, बीज, बेकहल (ढांक की जड़ की छाल) वनिया-बारी (फुलवाड़ी) बेटा, बैल, व्यवहार (सूद पर उधार देना) बढ़ई, वन, बबूल और बात ये बारह बकार ('ब' से प्रारम्भ होने वाली वस्तुएँ) जिनके समीप हों वही पूरा किसान है। ऐसा व्यक्ति स्वयं तो प्रसन्न रहेगा ही दूसरों को भी प्रसन्न करेगा।

बान जल गया पर बल न गए--रस्सी जल गई पर ऐंठ न गई। समृद्धिशून्य होने पर भी वैभवजन्य शक्ति-प्रदर्शन करने वाले व्यक्ति को कहा जाता है। तुलनीय : अव० रसरी जर गय, पर ऐंठन न गय; हरि० जेवड़ी जलगी पर ऐंठ नाह गई।

बान पड़ी नहीं छूटती—जो आदत पड़ जाती है वह नहीं छूटती। तुलनीत : अव० बान जऊन पड़ जाय छूटत नहीं।

बानर की सगाई घर में आग लगाई--बंदर (बानर) से सम्बन्ध जोड़ने पर वह घर को जला देता है। आशय यह है कि दुष्ट से सम्बन्ध करने पर हानि उठानी पड़ती है। तुलनीय : पंज० बाँदर दी कडमाई कर बिच आग लाई।

बान वाले की बान न जाय, कुत्ता मूते टांग उठाय—नीचे देखिए।

बानौड़े की बान न जाय, कुत्ता मूतै टांग उठाय—जिसकी जो आदत होती है वह कभी नहीं जाती। जैसे कुत्ता सदा टांग उठाकर मूतता है।

बाप अन्यायी बेटा आततायी—बाप बुरा होगा तो उसकी बुराई बेटे में भी कुछ-न-कुछ अवश्य आएगी। लोकोक्ति है 'जैसा बाप वैसा बेटा' या 'जैसी ककड़ी वैसी बीया।' तुलनीय : छत्तीस० बाप अन्यायी पूत कुन्यायी, येमां के कसर ओमां आई; भोज० बापे पूत परापत घोड़ा (घोड़े और आदमी के गुणावगुण उसकी सन्तान में भी होते हैं); बाप अन्यायी, पूत आततायी, बाप चोर, बेटा छिछोर। बाप चोरकट, पूत गिरहकट।

बाप ओझा माँ डाइन, बेटा बेटी सब ही खाइन—पिता ओझा है और माँ राक्षसी। वे अपने सभी बच्चों को खा गए। जिसके सभी लड़के मर जाएँ उसके लिए कहते हैं। (ओझा=भूत-प्रेत झाड़ने वाला)।

बाप और बात एक—बाप एक ही होता है और कही हुई बात भी एक ही होती है। (क) जो वचन दिया जाय उसका पालन करना चाहिए। (ख) बाप और वचन का एक जैसा आदर करना चाहिए। तुलनीय : राज० बाप और जबान एक है।

बाप कंटक पूत हातिम या हातिमताई—बाप कंजूस है और बेटा उदार या ख़र्चीला। यदि कंजूस बाप का बेटा शाहख़र्च निकले तो कहते हैं। (हातिम=अरब का प्रख्यात दानी)।

बाप कर गए मजा, बेटा पाए सज़ा—बाप तो दुनिया-भर के मज़े कर गए और उनके मज़े की सज़ा बेटा भुगत रहा है। जो बाप अपने सुख के लिए क़र्ज़ आदि लेकर ठाठ से रहे और उसके पुत्र को क़र्ज़ चुकाना पड़े तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : भीली—करवा वाला तो कीदूं, चोरां ना गाबड़ा अमलाना।

बाप करे बाप के आगे, बेटा करे बेटा के आगे—बाप जैसा करता है वैसा वह भुगतता है और बेटा जैसा करता है वैसा वह भुगतता है। अर्थात् जो जैसा करता है वह उसका वैसा फल पाता है।

बाप करे सो बेटा करे—जैसे काम बाप करता है वैसे ही बेटा भी करता है। बड़ों की देखादेखी बच्चे भी करते हैं। या पिता का प्रभाव पुत्र पर भी पड़ता है। तुलनीय : मेवा० देखे बाप के सो करे आपके; पंज० पिओ करे सो पुत्तर करे।

बाप कहत सकुचत जुपै चाचा किमि कहि जाय—जो अपने बाप को बाप कहने में संकोच करता है वह दूसरों को चाचा कैसे कहे? ऐसे लोगों पर व्यंग्य है जो अपने संबंधियों का उचित आदर-सम्मान नहीं करते।

बाप का कहा करे सो सुख पाय—पिता की आज्ञानुसार कार्य करने वाला सदा सुखी रहता है। पिता अपने पुत्र का कभी बुरा नहीं चाहता और अनुभवी होने के कारण उसकी योजनाएँ सफल भी हो जाती हैं। अपनी मर्ज़ी से काम करने

वाला पुत्र हानि उठाता है। तुलनीय : भीली— बेटा करे तो बाप को दो करजे, आप के दो हके करने।

बाप का कुआँ है तो क्या खारा पानी पीना है?—(क) घर पर यदि गुजारा न हो सके तो तो दूसरी जगह प्रबन्ध करना उचित है। (ख) बुरी वस्तु का प्रयोग नहीं करना चाहिए चाहे वह अपनी ही क्यों न हो।

बाप का नाम उआपुसा, बेटे का नाम जीत खाँ—दे० 'बाप का नाम सागपात···'।

बाप का नाम दमड़ी बेटे का नाम छकौड़िया, नाती का नाम पचकौड़िया, तीन प्रश्न बीती छदाम न पूरा हुआ—जहाँ बहुत-से व्यक्ति मिलकर भी कोई अदना काम न कर सकें, वहाँ व्यंग्य में कहा जाता है।

बाप का नाम भिखारीदास, बेटे का नाम करोड़ीमल—नीचे देखिए।

बाप का नाम सागपात, पूत का नाम परोरा—(क) बाप से बेटे का नाम अच्छा होने पर कहते हैं। (ख) पुत्र यदि अधिक उन्नति कर जाय तो भी कहा जाता है। (परोरा - परवल, एक प्रकार की तरकारी)।

बाप का बेटा बनकर सब कोई आता है, बाप का बाप बनकर कोई नहीं आता—सब काम क़ायदे से अच्छा होता है। तुलनीय : अव० बाप बने कै केउ नाहीं खाय सकत, बेटवा बन के सबै खाय सकत हैं।

बाप का बेटा सिपाही का घोड़ा, कुछ न होवे तो थोड़ा-थोड़ा—पिता का पुत्र पर और सिपाही का घोड़े पर यदि बहुत नहीं तो कुछ प्रभाव अवश्य पड़ता है।

बाप का मरन और काल का परन—पिता के मरने से बच्चों पर विपत्ति आ जाती है।

बाप की कमाई पर तागड़धिन्ना—जो लोग स्वयं तो किसी काम के नहीं होते, पर पिता की कमाई पर खूब मौज उड़ाते हैं उनके प्रति कहते हैं।

बाप की टाँग तले आई और माँ कहलाई—बाप की रखैल को भी माँ कहना पड़ता है। अर्थात् न चाहने पर भी विवश होकर उसे सम्मान देना पड़े तो उसके लिए कहते हैं। तुलनीय : अव० बाप के तरे आयगय तौ महतारिन कहाई।

बाप की पोखर है तो क्या कीच खानी है—दे० 'बाप का कुआँ है तो···'।

बाप की बारात बेटा जाय—बाप की शादी में बेटा जाता है। (क) बेमेल या असंगतिपूर्ण बात पर कहा जाता है।(ख) बुढ़ापे में की गई शादी पर भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० पिओ दी जंज पुतर जावे।

बाप की मूड़ी काटे और पूत से हाथ मिलावे—दिखावे के लिए मित्रता प्रकट करने वाले पर व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

बाप की रखैल माँ कहावे, पंचों की बात फ़ैसला कहावे—जिस स्त्री को बाप रख ले उसे पुत्र माँ ही कहता और समझता है तथा पंच जो भी बात कह देते हैं वही निर्णय माना जाता है। सौतेली माँ को माँ तथा पंचों के निर्णय को ठीक समझने के लिए ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० बाबू ल्यौं स्याब्बैं, ठाकुर करो स्या सै।

बाप की हेठी, जो पैदा हो बेटी—लड़की पैदा होती है तो पिता का सिर झुक जाता है। क्योंकि लड़की की शादी करने के लिए पिता को लड़के वाले के सामने झुकना पड़ता है।

बाप के गले में मोंगरे पूत के गले में रुद्राक्ष—पिता के गले में घुंघुची की माला है और पुत्र रुद्राक्ष की माला पहने हुए है। (क) जब निर्धन बाप का लड़का अधिक शौक़ीन होता है तब कहते हैं। (ख) जब साधारण व्यक्ति का लड़का काफ़ी उन्नति कर जाता है तब भी कहते हैं।

बाप के घर बेटी गूदड़ लपेटी—पिता के घर लड़की को सादे ढंग से रहना चाहिए। लड़कियों के लिए साज-शृंगार पीहर में अच्छा नहीं लगता। शृंगार पतिगृह में ही अच्छा लगता है। तुलनीय : हरि० बाप कै बेट्टी, गूद्दड़ लपेट्टी; कौर० बाप घर बेट्टी गूदड लपेटी।

बाप के पादे न आवे, बेटा शंख बजावे—बाप को पादने का भी ढंग नहीं आता है और बेटा शंख बजा रहा है। जब किसी सामान्य व्यक्ति का पुत्र बहुत गुणी या विद्वान हो जाता है तब उसके प्रति ऐसा कहते हैं।

बाप के बैरी से बदला और पड़ोसी की ज़मीन मौक़े से मिलती है—अपने पिता के शत्रु से बदला मौक़े से लिया जाता है तथा पड़ोसी की ज़मीन भी अवसर से ही अपने हाथ में आती है। तुलनीय : माल० बापरो बैर ने पड़ोसी री जगा मौकातीज हाथ आवे।

बाप को आटा न मिले जो ईंधन को भेजे—नीचे देखिए।

बाप को आटा न मिले तो अच्छा है, नहीं तो मुझे लकड़ी बीननी पड़ेगी—भिखारी का पुत्र कहता है कि पिता को आज आटा न मिले तो अच्छा रहे नहीं तो रोटी पकाने के लिए मुझे ही लकड़ी बीनने के लिए जाना पड़ेगा। ऐसे आलसी व्यक्ति जो भूखे मरना स्वीकार करते हों किंतु हाथ-

पैर हिलाना नहीं, उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : माल० मारा बाप ने आटो मलो मती, नी तो मने छाणा बीणबा जाणा पड़ेगा।

बाप को नाऊ, चोर को साहू—(क) उसके प्रति कहते हैं जो गुणी का सम्मान न करे और दुर्गुणी को आदर दे। (ख) जो व्यक्ति अपने संबंधियों को न चाहे या उनसे मेलजोल न रखे और बाहरवालों से घनिष्ठता रखे उनके प्रति भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ० आऊ को नाऊ, चोर को साहू।

बाप को नाचन न आवे पुत्र टमकी बजावे—बाप नाच भी नहीं सकते और बेटा बाजा बजाते हैं। यहाँ नाचने से बजाना कठिन कार्य माना जाता है। तुलनीय : दे० 'बाप न मारी मेंढकी बेटा तीरंदाज़।'

बाप को पादना न आवे, बेटा शंख बजावें—दे० 'बाप के पादे न आवे ...'।

बाप को पूत पढ़ाए, सोलह दूनी आठ—पिता को पुत्र पढ़ाता है कि सोलह दूनी आठ। मूर्ख लड़के के प्रति व्यंग्य में कहते है।

बाप को भौन न भूलत बेटी—पिता के घर को लड़की भूलती नहीं है। (क) लड़कियों को पिता के घर काफ़ी आनंद मिलता है। (ख) अपना घर कोई नही भूलता।

बाप को मारे, पूत गवाही—किसी व्यक्ति को मारकर अपने को निरपराध सिद्ध करने के लिए उसीके पुत्र को गवाह के रूप में अदालत में पेश करना। जब कोई व्यक्ति किसी के विरुद्ध कुछ करे और उसमें या अपने को निर्दोष सिद्ध करने में उसी के किसी सबंधी या मित्र से सहायता लेने का प्रयास करे तो व्यंग्य से ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० बापे मारे पूते साखी; छत्तीस—बापे मारे, पूते साखी दे।

बाप घर बेटी गूदल लपेटी—दे० 'बाप के घर बेटी ...'।

बाप घर लड़की भार, बासी भात में घी बेकार—विवाह के बाद लड़की मायके वालों को भार-स्वरूप मालूम पड़ती है और बासी चावल (भात) में घी डालना अच्छा नहीं होता।

बाप चुपचुप पूत लपलप—शांत और गंभीर बाप का पुत्र जब बातूनी और तेज़ हो तो कहते हैं।

बाप जनम न खाए पान, दाँत निपोरे गए परान, उड़ गई चुटिया रह गए कान—दे० 'बाप राज न खायब पान ...'।

बाप टेमी माँ कुलंग, लड़के निकले रंग-बिरंग—जारज या दोगली संतान पर कहते हैं।

बाप डोम और डोम ही दादा, कहें मियाँ मैं सरीफ़-जादा—कोई छोटा जब व्यर्थ में शेखी बघारता है तो कहते हैं।

बाप दहेज देता है, भाग्य नहीं—पिता अपनी पुत्री को विवाह में आभूषण इत्यादि देता है, किंतु यह उसका भाग्य है कि वह उनका भोग कर सके या न कर सके। जब कोई लड़की अपनी शादी के वस्त्राभूषण आदि का किसी कारण-वश प्रयोग नहीं कर पाती तो उसका पिता उसके भाग्य के प्रति कहता है। तुलनीय : गढ़० बाबू गहणो देंद लहणो थोड़ी देंद; पंज० पिओ दांज दिंदा है पाग नईं।

बाप-दादा के घोड़ नहीं दरभंगा तक लगाम—बाप-दादा ने कभी घोड़ा तक तो ख़रीदा नहीं और कहते हैं कि दरभंगा तक लंबी लगाम है। झूठी शेख़ी बघारने वाले के प्रति उक्त कहावत कही जाती है।

बाप दिखा या गोर बता, बाप दिखा या पिंडा पार—चीज़ खोने पर कहते हैं। या तो हमारी चीज़ लाओ या नहीं तो उसका पता बतलाओ। यदि किसी की कोई चीज़ खो जाय और किसी दूसरे से उसे खोजने के लिए वह ज़बरदस्ती करे तो व्यंग्य में कहते है। तुलनीय : अव० बाप का देखाव नाहीं पिंडा पार।

बाप देवता, पूत राक्षस—बाप देवता के समान है और लड़का राक्षस के। सभ्य पिता की बुरी संतान के प्रति कहते है।

बाप न दादे, मारखाँजादे—नीचे देखिए।

बाप न दादे सात पुश्त हरामज़ादे—जब कोई छोटा बहुत शेखी बघारे तो कहते हैं। तुलनीय : अव० बाप न दादे, सात पुरखा हरामजादे।

बाप न मारो पीड़रो बेटी तीरंदाज—दे० 'बाप न मारी मेंढ़की ...'।

बाप न मारी पेड़की बेटा तीरंदाज—नीचे देखिए।

बाप न मारी मेंढ़की बेटा तीरंदाज—बाप ने तो कभी मेंढ़की तक नहीं मारी और बेटा तीरंदाज़ बना घूमता है। जो व्यक्ति बहुत बढ़-बढ़कर बातें बनाएँ और शेख़ी बघारें उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० बाप न मारी ऊँदरी, बेटो वरकंदाज; कौर० बाप न मारी पोदणी बेटा तीरंदाज; छत्तीस० बाप मारिस मेंढ़की बेटा तीरंदाज; अव० बाप न मारी पेंड़की बेंटवा तीरंदाज; मरा० बाप जन्मी कधी चिमपींच पिल्लू मारलें नाहीं, मुलगा धनुर्धारी झाला आहे।

बाप न मारी लोमड़ी बेटा तीरंदाज—ऊपर देखिए।

तुलनीय : बुंद० बाप न मारी लोखड़ी, बेटा तीरंदाज।

बाप न मैया सबसे बड़ा रुपैया—दे० 'बाप भला न मैया…'।

बाप ने घी खाया, हाथ सूंघो मेरा—व्यर्थ के गर्व (विशेषत: पारिवारिक प्रतिष्ठा के लिए) पर कहते हैं। जब कोई व्यर्थ के तर्क द्वारा अपनी प्रतिष्ठा सिद्ध करे तब भी कहते हैं। तुलनीय : छत्तीस० मोर बाप घीव खाइस, मोर हाथ का सूंघ देखो; भोज० बाप मोर घीव खहलंऽ, हाथ सूंघा हमरा।

बाप ने जितनी बख़्शीश दी, बेटे ने उतनी भीख माँग ली—पिता ने जितना इनाम दिया पुत्र ने उतना भीख माँग कर इकट्ठा कर लिया। (क) दयालु पिता की ठग संतान के प्रति कहते हैं। (ख) जब किसी संपन्न परिवार का लड़का स्थिति खराब हो जाने के कारण ओछे कर्म करने लगता है तब उसके प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : कौर० बाप नैं जितणी बकसीस दी, बट्टे नैं उतणी भीख् माँग ली।

बाप ने जोड़ा थोड़ा-थोड़ा, बेटों ने लिया एक ही घोड़ा—पिता ने थोड़ा-थोड़ा करके धन एकत्र किया और लड़कों ने उससे एक घोड़ा ख़रीद लिया। जब कोई थोड़ा-थोड़ा करके धन एकत्र करे और दूसरे उसे निस्संकोच खर्च करें तब उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय : अव० बाप जोडेसि थोड़ा-थोड़ा, लरिका लीन्हेसि एकुई घोड़ा।

बाप पंडित पूता छेनरा—योग्य पिता की अयोग्य संतान पर कहते है। तुलनीय : अव० बाप पंडित, पूत छिनरा।

बाप पापी और पति हत्यारा—जिस स्त्री को पीहर तथा ससुराल दोनों स्थानों पर कष्ट मिले उसकी स्थिति बहुत दयनीय हो जाती है। जब किसी की ऐसी स्थिति हो जाय तो यह लोकोक्ति कहते हैं। तुलनीय : माल० हारो मल्यो हत्यारो, ने पीर मल्यो पापी।

बाप-पूत जोतें, आँतर कौन करे—बाप-बेटा दोनों मिलकर हल चला रहे हैं पर आँतर करने का ढंग किसी को मालूम नही। जब किसी कार्य को कई व्यक्ति मिलकर आरंभ करें पर उसके करने का ढंग किसी को न मालूम हो तो व्यंग्य मे ऐसा कहते हैं।

बाप पेट में और पूत ब्याहन चलें—असंभव बात पर कहते हैं। तुलनीय : हरि० गांम नांह् बस्या मँगते फिरगे; पंज० पिओ टिड विच पुतर विआण चलै।

बाप पै पूत जाति पर घोड़ा और नहीं तो थोड़ा-थोड़ा—पुत्र पर पिता का और घोड़े पर जाति का प्रभाव कुछ-न-कुछ अवश्य पड़ता है। आशय यह है कि रक्त और जाति का प्रभाव थोड़ा-बहुत अवश्य पड़ता है। तुलनीय : हरि० माँ पै पूत, पिता पै घोड़ा, घणा नहीं तै थोड़ा-थोड़ा।

बाप बनियाँ पूत नवाब—दे० 'बाप भिखारी, पूत…'।

बाप-बेटे ने धान लिए, एक थैली दाम दिए—बाप-बेटे ने अलग-अलग धान लिए, किंतु दाम तो एक ही थैली या बटुए में से दिए। जब एक परिवार के व्यक्ति एक काम के लिए एक ही पूंजी में अपनी-अपनी ओर से अलग-अलग ख़र्च करें तो उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : गढ़० सासू बुवारिन माछा लीन्या एकू कोन्नी का साट्टी दीन्या।

बाप-बेटों की लड़ाई क्या?—इन दोनों का झगड़ा स्थायी नहीं होता। तुलनीय : अव० बाप बेटवा की लडाई का।

बाप बोले कड़वा, मीठा बोलें लोग—बाहर के लोग तो मीठा बोलते है पर अपना बाप कड़वा बोलता है। (क) बुरे काम करने के लिए लोग तो मीठी बातें करके उकसाते हैं, किंतु पिता डाँटते-फटकारते हैं। (ख) अपनों की अच्छी बातें भी बुरी लगती हैं और परायों की गालियाँ भी मीठी। तुलनीय : राज० मीठा बोला लोक तें कड़वी बोली मां।

बाप भला ना भैया, सबसे भला रुपैया—न बाप अच्छा होता है और न भाई, पैसा सबसे अच्छा और प्यारा होता है। तुलनीय : अव० लाला न भइय्या, सबसे बड़ो रुपइय्या; मरा० बाप नाहीं, भाऊ नाहीं कोणी चांगला नाहीं रुपया सर्वात श्रेष्ठ आहे; बुंद० गुरु न गुरु भैया, सब सें बड़ा रुपैया; ब्रज० टका माइ और बाप टका त्रईयन को भैया टका सास और सुसर टका सिर लाडलडैया।

बाप भिखारी पूत भंडारी—बाप भीख माँगता है और बेटा भंडारी बना हुआ है। (क) जब साधारण स्थिति का या ग़रीब आदमी बहुत बने तो कहते हैं। (ख) अपनी-अपनी क़िस्मत है। जब ग़रीब बाप का बेटा बड़ा आदमी हो जाय तो कहते हैं।

बाप भी किसी बाप का बेटा होता है—अर्थात् एक से बढ़कर एक होते हैं। या सबके ऊपर कोई होता है। तुलनीय : असमी—बापरो बाप् थाके; पंज० पिओ बी किसे पिओ दा पुतर हुंदा है; अं० The fox is cunning but he is more cunning who takes him.

बाप मरा घर बेटा भया, इसका टोटा उसमें गया—बाप मरा और घर में लड़का पैदा हुआ, इस प्रकार एक का नुक़सान दूसरे से पूरा हो गया। जब एक काम का घाटा

दूसरे से पूरा हो जाय तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० मा मरी, बेटी हुई, रह्या तीन-रा तीन; बाबो मर्यो गीगली जायी रैया तीन रा तीन।

बाप मरा तो मरा, प्रयागराज तो देख आए—ऐसे व्यक्ति के प्रति व्यंग्य में कहते हैं जो थोड़े से लाभ के लिए बड़ी हानि उठाता है।

बाप मरा बहू बेटा जाया, वाका घाटा यामें आया—दे० 'बाप मरा घर बेटा भया ···'।

बाप मरिहैं तब पूत राज करिहैं—बाप के मरने पर पुत्र राज्य करेगा। सुदूर भविष्य में मिलने वाले सुख या लाभ की आशा करने वाले के प्रति कहते हैं।

बाप मरे पर बैल बटेंगे—ऊपर देखिए।

बाप मारे का बैर है—जानी दुश्मनी होने पर कहते हैं।

बाप राज न खायब पान, दाँत निपोरे निकले प्राण—बाप ने कभी पान नहीं खाया और दाँत फाड़कर मर गया। (क) जब कोई व्यक्ति डींग हाँकता हो तो उसके लिए ऐसा कहते हैं। (ख) कृपण व्यक्तियों के लिए व्यंग्य में भी इसको कहते हैं।

बाप राम ना देखी पोय, ताके घर गुरवाई होय—जिसके पिता ने पोय तक नहीं देखा उसके घर में गुरवाई हो रही है। (क) शेखी बघारने वालों के प्रति व्यंग्य। (ख) जब ग़रीब बाप के बच्चे उन्नति कर जाते हैं तब भी कहते हैं। (गुरवाई=गुड़ बनाने का काम, खेतिआई; पोय=बच्चा)।

बाप वाक्य बेद वाक्य—बाप का कहा वेद वाक्य की तरह मान्य है। अर्थात् पिता या बुजुर्गों की बातों पर ध्यान देना चाहिए। तुलनीय : उड़ि० बाप के शब्द बुद्धि की आँख होते हैं।

बाप पूत ज्ञानी, मछली मारे गले-भर पानी—बाप से बेटा चालाक है जो गले भर पानी में मछलियाँ पकड़ रहा है। जब पुत्र पिता से भी अधिक मूर्ख होता है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

बाप से बेटा सवाया—बाप से (किसी गुण या अवगुण में) जब बेटा बढ़कर निकले तो कहते हैं। तुलनीय : अव० बाप से बेटबना, दूगुन; पंज० पिओ तो पुतर बडा।

बाप से बैर पूत से सगाई—मूर्खों या बेढंगे काम करने वालों के प्रति कहते हैं जो बाप से बैर करें और उसके पुत्र से सगाई करें।

बाप ही मारे और बाप ही बाप पुकारे—पिता ही मार रहा है और उसी को सहायता के लिए बार-बार पुकार रहा है। कष्ट देने वाले को ही सहायक के रूप में बुलाने पर कहते हैं।

बापै पूत पढ़ावे सोरा दूनी आठ—दे० 'बाप को पूत पढ़ाए···'।

बापै पूत सिपाह पै घोड़ा, बहुत नहीं तो थोड़ा-थोड़ा—दे० 'बाप पे पूत जाति पर···'।

बाबा आएँ न दम लगे—न बाबाजी आएँगे और न ही चिलम के दम लगेंगे। (क) कोई व्यक्ति किसी की झूठी आशा पर बैठा रहे तो उसके प्रति कहते हैं। (ख) जब कोई किसी की आड़ में काम करने से बचना चाहता है तब भी कहते हैं। तुलनीय : राज० बाबो आवै न ताळी बाजै।

बाबा आए तो रोटी लाए—बाबा आएँगे तो रोटी लाएँगे। जो व्यक्ति दूसरों की आशा में हाथ-पर-हाथ धरकर बैठा रहे उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० बाबो आवै जरां बाटियो लावै।

बाबा आदम के बाबा—बाबा आदम के बाबा हैं। बहुत बूढ़े और अनुभवी आदमी को कहते है।

बाबा आदम के वक्त की—बहुत पुरानी चीज़ या बात पर कहते हैं। तुलनीय : अव० बाबा आदिम की बखत कै चीज़।

बाबा आवें न घंटा बजे—न बाबा आ रहे हैं और न घंटा बज रहा है। जब किसी व्यक्ति के बिना कोई काम रुका रहता है तब उसके प्रति ऐसा कहते हैं।

बाबा आवें न ताली बजे—ऊपर देखिए।

बाबा उठे और हिसाब साफ—साधु लोग जब एक स्थान को छोड़कर दूसरी जगह जाते है तो उनका लेना-देना या उधार आदि चुकता समझा जाता है, चाहे उनसे किसी को कुछ भी लेना-देना हो; क्योंकि उनके अस्थायी जीवन में फिर कुछ मिलने की आशा नहीं होती। तुलनीय : माल० बाबा उठ्या ने लेखा पूरा।

बाबा कमावे बेटा उड़ावे—बाबा कमाते है और बेटा उसे उड़ाता है। जब बाप या कोई बड़ा पैदा करे और बेटा या छोटा उसे निस्संकोच खर्च करे तो कहते हैं। तुलनीय : पंज० बाबा कमाण पुतर अडाण।

बाबा की कुदाली बहुत हल्की—तात्पर्य यह है कि जब तक लड़कियाँ पिता के घर रहती हैं, कठिन-से-कठिन काम भी आसानी से कर लेती हैं, किंतु जैसे ही अपने पति के घर जाती हैं प्रत्येक काम में बहाना करती हैं और प्रत्येक काम को दुष्कर बताती हैं। तुलनीय : मैथ० बाबाक कोदारि बड़ हलुक; ब्रज० बाबा को कुदार बहुत हलको।

बाबा की दौड़ धूनी तक—दे० 'मुल्ला की दौड़ मस्जिद

तक।' तुलनीय : भीली—नाटा बाबा नी धूणी तक धाम।

बाबा के माल पर सबकी आँख—बाबा का धन उड़ाने के लिए सब चौकस रहते हैं। निस्सहाय या निर्बल व्यक्ति के धन को सभी लोग लेना चाहते हैं। तुलनीय : भीली—काका नी खाटकाई खावा हारू हाराई आँख में खटके; ब्रज० बाबा के माल पै सबकी आँखि।

बाबा के हैं पूत अनेक, बाँटन लागे एकई एक—बाबा के इतने लड़के हैं कि जब वे उनमें कोई चीज़ बाँटते हैं तो प्रत्येक को एक ही मिलती है। ऐसे व्यक्ति के प्रति कहते हैं जिसके अधिक बच्चे होते हैं जिसके कारण उन्हें कोई चीज़ पर्याप्त मात्रा में नहीं मिल पाती।

बाबाजी कबर जोग, बीबीजी सेज जोग—बाबाजी तो क़ब्र के योग्य हैं और बीबीजी सेज के योग्य। (क) वृद्ध पुरुष का युवती के साथ विवाह होने पर वृद्ध के प्रति कहते हैं। (ख) अच्छी और बुरी वस्तु के मेल पर भी कहते हैं। तुलनीय : राज० बाबोजी घोर जोगा, बीबीजी सेज जोगा।

बाबाजी का ठेवस बड़ा—बाबाजी का अँगूठा बड़ा है। (क) दूर तक सोचने वाले व्यक्ति को कहते हैं। (ख) ऐसे व्यक्ति के प्रति भी कहते है जो किसी को कुछ भी देने से इनकार कर देता है। (ठेवस=अँगूठा)।

बाबाजी की जटा आशीर्वाद में ही गई—बाबाजी की जटा (चोटी) आशीर्बाद में ही चली गई। जब किसी की कोई वस्तु मुफ्त में ही समाप्त हो जाय, तब उसके प्रति कहते हैं।

बाबाजी की दाढ़ी वाहवाही में पार—ऊपर देखिए।

बाबाजी के चेले, जी चाहे जहँ खेले—बाबाजी के शिष्य (चेले) जहाँ जी चाहता है वहाँ खेलते हैं। जिस व्यक्ति के लिए कहीं रोक-टोक न हो या जो व्यक्ति उच्छृंखल हो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० बाबैजी रा छोकरा, च्यारूँ मारग मोकळा; पंज० बाबाजी दे चेले जिथेजी करण खेडे।

बाबाजी के बाबाजी, बजंत्री के बजंत्री—एक चीज़ से दो काम निकलते हों या एक व्यक्ति दो काम करे तो कहते हैं। तुलनीय : राज० बाबोजी-रा-बाबोजी, तरकारी-री-तरकारी।

बाबाजी के बाबाजी बजनियाँ के बजनियाँ—ऊपर देखिए।

बाबाजी खाकर बरतन ही छोड़ेंगे—बाबाजी सारा खाना खाकर केवल बरतन ही छोड़ेंगे। (क) अवसर निकल जाने के बाद काम करना बहुत कठिन हो जाता है। जो काम करना हो उसे तुरंत कर लेना चाहिए नहीं तो बाद में जूठे बरतनों की तरह केवल जूठन ही मिलती है। भोजन-भट्टों के प्रति भी व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० बाबोजी जीम्या पछै ठीया रहसी।

बाबाजी चलें न फिरें, बैठे-बैठे मौज करें—बाबाजी न कहीं आते हैं न जाते हैं, बस बैठे-बैठे मौज उड़ाते हैं। (क) साधुओं के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। (ख) जो व्यक्ति घर में बैठे रहकर खाते-पीते हैं, कमाते नहीं उनके प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : राज० बाबो हालै न चालै, बैठो ही घर घालै।

बाबाजी चेले बहुत हो गए हैं, बच्चा भूखे मरेंगे तो आप चले जायँगे'—मुफ्तखोरों के इकट्ठा होने पर कहते हैं।

बाबाजी ढोलकी फोड़ेंगे ही—बाबाजी ढोल का क्या करेंगे? उनके किसी काम का न होने के कारण वे उसको फोड़ेंगे ही। जब किसी व्यक्ति को कोई ऐसी वस्तु मिल जाय जो उसके ज़रा भी उपयोग की न हो तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० बाबो ढोलरो काँई करै? फाड़ै।

बाबाजी धूनी तापते हो? कहा—बेटा दिल ही जानता है—किसी ने बाबाजी से पूछा कि क्या धूनी ताप रहे है? तो उन्होंने उत्तर दिया—बेटा मेरा ही दिल जानता है। (क) जो व्यक्ति जिस कार्य को करता है वही उसका सुख-दुःख जानता है। (ख) जब कोई किसी तरह अपना समय व्यतीत कर रहा हो और कोई कहे कि ख़ूब मौज कर रहे हो तब वह ऐसा कहता है। तुलनीय : राज० बाबाजी! धूणी तापो हो? कै—बेटाजी! जी जाणै है।

बाबाजी! लँगोट गंधाती है, कहा—रहती कहाँ है?—एक चेले ने बाबाजी से कहा आपकी लँगोट में से दुर्गन्ध आ रही है तो उन्होंने कहा कि रहती कौन-सी जगह है, अर्थात् गंदी जगह रहती है तो दुर्गन्ध आएगी ही। अर्थात् बुरे आदमियों के साथ रहने से उनके दुर्गुण आ ही जाते हैं। तुलनीय : राज० बाबाजी! कोपीन वासै है, तो कै—रह किसी जाग्यां है?

बाबा-बाबा ऊँट बिकाऊ—बेटा बहुत महँगा; बाबा-बाबा ऊँट बिकाऊ—बेटा बहुत सस्ता—ग़रीबी में सस्ती चीज़ भी महँगी और अमीरी में महँगी चीज़ भी सस्ती मालूम होती है।

बाबा बैठे इस घर में, पाँव पसारें उस घर में—दे० 'बाबा सोवें इस घर में…'।

बाबा भीख मत दे, कुत्ता थाम—दे० 'अपना कुत्ता

बाँधो हम भीख से···'। तुलनीय : गढ़० भाई अपणी भिच्छया ना दे पर अपणो कुत्तो थाम।

बाबा मरे निहाल जन्मे वही तीन के तीन—दे० 'बाप मरा घर बेटा भया···'।

बाबा सोवें इस घर में और टाँग पसारें उस घर में—बाबाजी इस घर मे सोते है और उस घर मे पैर फैलाते है। (क) दो काम एक साथ नही हो सकते। (ख) जब कोई काम कई स्थानो पर फैला हो तब भी कहते है। तुलनीय राज० बाबो बैठो इयै घर मे, टाँग पसारे उवै घर मे।

बाबू न भइया जो है सो रुपैया—अर्थात् रुपये का महत्त्व ससार मे सभी चीजो से बढकर है। तुलनीय . स० टका धर्म टका स्वर्ग टका हि परम तप ; यस्य गेहे टका नास्ति स नर टकटकायते।

बामन का बेटा, बावन बरस तक पोंगा—दे० 'बाभन साठ बरस तक · '।

बामन की बेटी कलमा पढ़े ब्राह्मण की लडकी कलमा पढती है। रीति-रिवाज और धर्म के विपरीत काम करने वाले के प्रति कहते है।

बामन, कुत्ता, बानिया, जाति देख गुर्राय—दे० 'बाह्‌मन, कुत्ता, बनिया·· '।

बामन जीमें ही पतियाय (क) ब्राह्मण खाने के बाद ही विश्वास करता है। (ख) ब्राह्मण जब भोजन कर ले तभी उस पर विश्वास करना चाहिए, क्योकि कुछ कार्यों मे दक्षिणा या मनमाना नेग लिए बिना भोजन नही करता। तुलनीय : अ० The proof of the pudding is in its eating.

बामन जो चोरी करे, विधवा पान चबाय, छत्री जो रण से भगे, जन्म अकारथ जाय—जो ब्राह्मण चोरी करता है, जो विधवा स्त्री पान खाती है और जो क्षत्रिय रण-भूमि से भाग जाता है उसका जन्म व्यर्थ होता है। अर्थात् ब्राह्मण के लिए चोरी करना, विधवा के लिए पान खाना और क्षत्रिय के लिए रण-भूमि से भागना अच्छा नही होता।

बामन नाचे धोबी देखे—ब्राह्मण नाचता है और धोबी देखता है। उलटे काम या उलटी बात पर कहते हैं। तुलनीय : पंज० बामण नचण तोबी दिखण।

बामन बचन परमान—ब्राह्मण की बात को प्रामाणिक मानना चाहिए। इस संबंध में एक कहानी है जो इस प्रकार है : एक ब्राह्मण किसी जाट को गंगा-किनारे श्राद्ध कराने गया। चंदन के अभाव में उसने जब उसके ललाट पर मिट्टी का तिलक लगाया तब जाट ने कहा, चंदन का टीका लगाना चाहिए था। ब्राह्मण ने कहा, 'बाभन बचन परमान, गगाजी का रेणुका, तू चदन करके जान।' जाट चुप रहा। जब दक्षिणा का समय आया और ब्राह्मण ने उसमे गोदान का सकल्प करने को कहा तो वह एक मेढकी हाथ मे लेकर उसे देने लगा तो ब्राह्मण ने कहा कि यह क्या कर रहे हो ? तुम्हे गाय या उसका उचित मूल्य देना चाहिए। तब उत्तर मे जाट ने कहा, 'जाठ बचन परमान, गगाजी की मेढकी, तू कपिला करके जान।'

बामन बेटा लोटे-पोटे, मूल ब्याज दोनों घोटे—ब्राह्मण का लडका लोट-पोट कर मूलधन और ब्याज दोनो ले लेता है। अर्थात् ब्राह्मण जब तक ब्याज सहित अपना पावना ले नही लेता तब तक साथ नही छोडता।

बामन मन्त्री, भाट खवास, उस राजा का होवे नास—जिस राजा का मंत्री ब्राह्मण और सेवक भाट होता है उसके राज्य का नाश हो जाता है।

बामन रोवें गए श्राद्ध—श्राद्ध बीत जाने पर ब्राह्मण रोते है। श्राद्ध के दिनो मे ब्राह्मणो को बहुत-सी वस्तुएँ दान की जाती है और उन्हें भोजन भी कराया जाता है, अत· श्राद्ध के बीतने के बाद उन्हे दु ख होता है। आनद के दिन बीत जाने पर सबको दु ख होता है। तुलनीय · पज० गये सराद आए नराते बामण बैठे चुप चपाते।

बामन सब काम में आगे, आफ़त में पीछे—ब्राह्मण खाने-पीने और लेने मे तो आगे रहते है पर लडाई-झगडा या किसी अन्य परेशानी के काम में पीछे रहते हैं। ब्राह्मणो की चालाकी पर कहते है। तुलनीय राज० अग्रे-अग्रे ब्राह्मणा, नदी नाला वर्जन्ते।

बामसू भंडार मैखंडा में ताली—नजदीक रहने योग्य प्रयोजनीय वस्तु का दूर होना। यह कहावत मूलत गढवाली भाषा की है। गढवाली लोगो द्वारा ही यह हिंदी मे प्रयुक्त होती है। बामसू एक स्थान है जहाँ केदारनाथ के पडे रहते हैं। बामसू मे जो भडार है उसकी कुजी वहाँ से दूर मैखडा (केदारनाथ) मे रहती है। इसी आधार पर यह कहावत चली है।

बामन हुए तो क्या हुए, गले लपेटा सूत—केवल जनेऊ पहन लेने से कोई ब्राह्मण नही होता। उसके लिए वैसा कर्म भी करना चाहिए। बाह्‌य दिखावा करने वाले के प्रति कहते हैं।

बाम्हन का पूत पढ़ा भला या मरा भला—ब्राह्मण का लड़का या तो शिक्षित हो तब ठीक है या मर जाय तब। क्योंकि अशिक्षित ब्राह्मण किसी काम का नही होता और न

उसका कोई महत्त्व ही होता है। तुलनीय : कौर० बांभण का पूत पढ़ा भला, अक् मरा भला।

बाम्हन का बेटा बावन वर्ष तक पौंगा—दे० 'बामन का बेटा बावन बरस...'।

बाम्हन का बैरी बाम्हन—ब्राह्मण का शत्रु ब्राह्मण ही होता है। आशय यह है कि एक ही जाति के लोगों में परस्पर दुश्मनी होती है। तुलनीय : सं० ब्राह्मण ब्राह्मणम् दृष्टवा श्वानवत् घुरघुरायते।

बाम्हन की बरात में खाने को लड़ाई—ब्राह्मणों की बारात में भोजन के लिए लड़ाई होती है, क्योंकि वे भोजन-भट्ट होते हैं। तुलनीय : मेवा० बामणां की बरात में बाट्याँ की राड़; पंज० बामण दी जंज विच खाण दी लड़ाई; ब्रज० बाम्हन न की बरात में खाइबे पै लड़ाई।

बाम्हन की लहर सवा पहर—अर्थात् ब्राह्मण का क्रोध क्षणिक होता है। तुलनीय : मैथ० बाभनों के लहर सवा पहर; भोज० बाभन क विरोध सवा घरी; पंज० वामण दी लैर सवा पैर।

बाम्हन, कुक्कुर, शेर जाती जाती बैर—ब्राह्मण, कुत्ते और शेर अपनी जाति से द्रोह रखते हैं। दो ब्राह्मणों, दो कुत्तों और दो शेरों में नहीं पटती।

बाम्हन, कुत्ता, बानियाँ जात देख गुर्रायँ—दे० 'बामन' कुत्ता, बानियाँ...'।

बाम्हन, कुत्ता, हाथी, अपने जात के घाती—दे० 'बामन कुत्ता, बानियाँ...'।

बाम्हन कुत्ता हाथी, ये नहीं जात के साथी—दे० 'बामन, कुत्ता, बानियाँ...'।

बाम्हन, कुकुर, भाट, जाति जाति खात—दे० 'बामन कुत्ता, बानियाँ...'।

'बाम्हन कूकुर, हाथी, जाति जाति को खाती—दे० 'बामन, कुत्ता, बानियां...'।

बाम्हन जीमें ही पतियाय—दे० 'बामन जीमें ही...'।

बाम्हन जो चोरी करे बिधवा पान चबाय; क्षत्री जो रण से भगे, जनम अकारथ जाय—दे० 'बामन जो चोरी करे...'।

बाम्हन नाचे धोबी देखे—दे० 'बामन नाचे धोबी...'।

बाम्हन बचन परमान—दे० 'बामन बचन...'।

बाम्हन बाम्हन को यों देखे जैसे खर को आगी—ब्राह्मण ब्राह्मण को ऐसे देखता है जैसे खर-पतवार को अग्नि। अर्थात् ब्राह्मण ब्राह्मण से बहुत जलता है।

बाम्हन बेटा लोटे पोटे, मूल ब्याज देखों घाटे—दे० 'बामन बेटा लोटे पोटे...'।

बाम्हन भए तो क्या भए, गले लपेटे सूत—दे० 'बामन हुए तो क्या हुआ...'।

बाम्हन, भैंस और हाथी, तीनों जल के साथी—भैंस और हाथी को जल बहुत अच्छा लगता है और ब्राह्मण पूजा-पाठ के लिए कई बार स्नान करता है। तुलनीय : मेवा० बामण भैंस अर हाथी तीन ही जल का साथी।

बाम्हन मंत्री भाट खवास, उस राजा का होवे नास—दे० 'बामन मंत्री, भाट खवास...'।

बायु चलेगी उत्तरा, माँड़ पिएँगे कुत्तरा—उत्तर की हवा चलेगी तो कुत्ते भी माँड़ पिएँगे। आशय यह है कि उत्तर दिशा की हवा बहने से वर्षा अधिक होती है जिससे धान पैदावार अच्छी होती है।

बायु चलेगी दखिना, माँड़ कहाँ से चखना—दक्षिण की हवा चलेगी तो माँड़ चखने को भी नही मिलेगी। अर्थात् दक्षिण की हवा से वर्षा बहुत कम होती है जिससे धान की पैदावार नाम-मात्र की होती है।

बायु चलेगी पुरवा, पियो माँड़ का कुरवा—पूरब की ओर से हवा चलेगी तो घड़ों माँड़ पीने को मिलेगी। अर्थात् पूरब की हवा चलने से वर्षा खूब होती है जिससे धान की पैदावार अच्छी होती है।

बायू में जब बायु समाय, घाघ कहें जल कहाँ समाय—घाघ कहते हैं कि जब एक साथ आमने-सामने की हवा बहने लगती है तो जल कहाँ समाता है, अर्थात् बहुत वृष्टि होती है।

बार-बार उपहास करि हँसि-हँसि परिए नाहिं—बार-बार हँसना या किसी का उपहास करना अच्छा नहीं।

बार-बार चोर की, एक बार साह की—चोर कई बार चोरी करता है लेकिन यदि वह एक बार भी पकड़ा जाता है तो उसका सारा भेद खुल जाता है और उसे दंड भी भुगतना पड़ता है। अर्थात् अपराध, दुष्टता या चालाकी खुलकर ही रहती है। तुलनीय : अव० तीस दिन चोरवा की एक दिन साह की; हरि० सौ दिन चोर के एक दिन साह का; मरा० पुष्कल वेळां चोरो (साध ली) एखाद वेळ तरी सावकार धरी।

बार-बार नटे, उसका क्या घटे, क्या बढ़े ?—जिस व्यक्ति की वचन देकर बदल जाने की आदत हो उसका किसी से कहने-सुनने से क्या बनता-बिगड़ता है ? निर्लज्ज व्यक्ति के लिए मानापमान का कोई मूल्य नहीं होता। तुलनीय : भीली—नटे तीने हूँ कटे ने हूँ बटे।

बारह अभरन सोलह सिंगार—स्त्रियों का पूरा शृंगार।

बारह गाँव का चौधरी, अस्सी गाँव का राव, अपने काम न आय तो ऐसी तैसी में जाव—चाहे कितना भी बड़ा क्यों न हो जो अपने काम न आये वह अपने लिए व्यर्थ है। तुलनीय : अव० बारा गाँव का चउधरी अस्सी गाँव का राव, अपने काम न आवै तो ऐसी की तैसी मा जाय; मरा० बारा गाँवाचा पाटील नि अश्शी गाँवाँचा धनी।

बारह घाट का पानी पिए हैं—बहुत चालाक आदमी को कहते हैं।

बारह वफ़ात की खिचड़ी आज है तो कल नहीं—(क) अस्थायी सुख या आनन्द पर कहते हैं। (ख) सुख सर्वदा नहीं रहता और न रोज़-रोज़ आता है। (बारह वफ़ात ता० 12 सफ़र को होती है, जो मुहम्मद साहब के जन्म और मरने का दिन है। उस दिन सभी मुसलमानों के यहाँ उनकी यादगार में खिचड़ी बाँटी जाती है)।

बारह बरस का कोढ़ी, एक ही इतवार पाक—बारह वर्ष का कोढ़ी एक ही इतवार को नहाने या व्रत रहने से ठीक हो गया। असंभव या आश्चर्यजनक बात या घटना पर कहा जाता है। तुलनीय : भोज० बारह बरिसक कोढ़ी एके अतवार में पाक; अव० बारा बरिस का कोढ़ एकै ऐतुआर या धोय गय।

बारह बरस काठ में रहे, चलती वफ़ा पाँव से गए—12 वर्ष तक क़ैद रहे और जब छूटे तो मारे खुशी के ऐसा गिरे कि पैर ही टूट गया। दुर्भाग्य पर कहते हैं।

बारह बरस की कन्या और छठी रात क बर, मन माने सो कर—बारह वर्ष की लड़की है और छह दिन का दूल्हा। बेमेल विवाह करने वालों पर व्यंग्य है। तुलनीय : अव० बारा बरिस की पठिया, बीस बरिस की टटिया।

बारह बरस की पठिया, बीस बरस की टटिया—ऊपर देखिए।

बारह बरस दिल्ली में रहकर भाड़ ही झोंका—ऊपर देखिए।

बारह बरस दिल्ली में रहकर भाड़ ही झोंका—ऊपर देखिए। तुलनीय : अव० बारा बरिस दिल्ली मा भार नाहीं झोंका; राज० बारह बरस दिल्ली में टै' र भाड़ ही भूँजी; गढ़० बार बार्स दिल्ली रया भाड़ ही झोंके; कौर० बारह बर्स दिल्ली रह्या के भाड़ झोवखा; मरा० बारा वर्षे राजधानी दिल्ली राहिले पण भडभुजेच राहिले; ब्रज० बारह बरस दिल्ली में रहे, भारई झोंक्यौ।

बारह बरस दिल्ली में रहे, महसूल नहीं दिया, क्या करते थे? भाड़ झोंकते थे—किसी ने कहा कि मैं बारह वर्ष तक दिल्ली में रहा लेकिन किराया नहीं दिया। दूसरे ने पूछा कि क्या करते थे? उसने उत्तर दिया कि मैं भाड़ झोंकता था।

बारह बरस पीछे घूरे के भी दिन फिरते हैं—बारह वर्ष बाद घूर का भी समय बदल जाता है। अर्थात् सभी के अच्छे दिन कभी-न-कभी लौटते हैं। तुलनीय : अव० बारा बरिस पीछे घुरवौ कै दिन फिरत हैं; हरि० बाराह साल पाच्छै ते कुरड़ी की भी बाहवड़्या करै; कौर० बारह बर्स में कूड़ी के दिण फिरैं; बुंद० बारा बरस में तौ घूरेई की रती फिरत; मरा० उकिरड्याची देना बारा वर्षानी देखील फिरतें।

बारह बरस में कूड़े, घूरे के भी दिन फिरते हैं—ऊपर देखिए।

बारह बरस सेई काशी, मरन गए मगहर की पाटी—नीचे देखिए।

बारह बरस सेई काशी, मरने को मगहर की माटी—बारह वर्ष तक तो काशी में तपस्या करते रहे और मरने के समय मगहर चले गए। अर्थात् (क) सत्कर्म करने पर भी जब अंत में दुर्दशा हो तो कहते हैं। (ख) अपने लाख प्रयत्न भी भाग्य में लिखे को नहीं मेट सकते। तुलनीय : अव० सेव सेव काशी, मरत कै दहि निमहुर कै पाटी।

बारह बाट अठारह पैंड़े—बारह रास्ते और अठारह पगडंडियाँ हैं, किस पर चले? बहुत से काम सामने आ जाने पर कोई घबड़ा जाय तो कहते हैं।

बारह बाम्हन तेरह चूल्हे—ब्राह्मणों के प्रति व्यंग्य से कहते हैं क्योंकि वे छुआछूत का बहुत भेद मानते हैं और आपस में भी एक दूसरे का छुआ नहीं खाते। तुलनीय : मेवा० बारा बामण ने तेरा चूला; छत्तीस० बारा बाँमन, तेरा चूल्हा; पंज० नौ तेली तेरहं चुल्ले; नौ पूरबिए तेरहं चुल्ले।

बारह बाम्हन बारह बाट, बारह खाती एकै घाट—बारह ब्राह्मणों के बारह रास्ते होते हैं और बारह खातियों (राजों) का एक ही घाट होता है। आशय यह है कि ब्राह्मणों में एकता नहीं होती जबकि खातियों (राजों) में काफी एकता होती है। तुलनीय : हरि० बाराह बाहमण बाराह बाट, बाराह खात्ती एक्कै घाट।

बारह भाई तेरह चूल्हे—बारह भाई हैं और उनके चूल्हे अलग-अलग हैं। जिन व्यक्तियों में आपस में पटती न हो या वे कोई काम एकमत होकर न करें तो उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० बारह पूरबिया तेरह

चौका।

बारह महीने की राह जाएं, छह महीने की राह न जाएं—बारह महीने के रास्ते जाना चाहिए लेकिन छह महीने के रास्ते नहीं जाना चाहिए। अर्थात् अच्छे रास्ते पर चलना चाहिए भले ही अधिक समय लग जाय, पर कम समय में तय होने वाले विकट रास्ते पर नहीं चलना चाहिए। तुलनीय : फ़ा० राहे-रास्त बि रौ अगर्चे दूर अस्त।

बारह माली तेरह हुक्के—माली तो केवल बारह हैं और उनके हुक्के तेरह हैं। जब कुछ व्यक्ति एकमत होकर किसी काम को न करें या सब अपना-अपना काम अलग-अलग करें तब उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० बारह माली तेरह होका; पंज० बारां माली तेरां हुक्के; ब्रज० बारह माली तेरह हुक्का।

बारह में तीन गए तो रही क्या खाक?—अगर तीन महीने बरसात में पानी न हो तो पूरा साल ख़राब समझो। खेती नही होगी। तुलनीय : अव० बारा मासे तीन गयें; बाकी रहा खाक।

बारह साल का पुत्ता और छह मास का कुत्ता, हुआ तो हुआ नहीं गया निउत्ता—पुत्र की योग्यता 12 वर्ष की उम्र में तथा कुत्ते की छह महीने की उम्र में जान ली जाती है।

बारह हाथ की काकड़ी और तेरह हाथ का बीज—झूठी या असम्भव बात पर कहते हैं। तुलनीय : अव० बारा हाथ ककरी, नौ हाथ बिया; ब्रज० बारह हात की कांकरी, तेरह हाथ को बीज; पंज० बारां हथ्थ दी ककड़ी तेरां हथ्थ दा बी।

बारह हाथ लंबी गरदन—बारह हाथ लंबी गरदन है। बहुत ही अभिमान करने वाले के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० बारह गाडा बड़ाई है।

बाराखड़ी न जाने, भागवत का मर्म पूछें—पढ़े-लिखे कुछ नही हैं और पूछते हैं भागवत की बात। योग्यता से बढ़कर बात करने पर यह लोकोक्ति कही जाती है।

बारि मथे घृत होइ बरु, सिकता ते बरु तेल, बिनु हरि भजन न भव तरहिं, यह सिद्धान्त अपेल—चाहे जल को मथने से घृत उत्पन्न हो जाय और बालू के पेरने से तेल निकल आये किन्तु यह एक अटल सिद्धान्त है कि कोई बिना भगवान की भक्ति के संसार-रूपी समुद्र से पार नहीं हो सकता है।

बारी का पटुआ तीत—अपने खेत का पटुआ अच्छा नहीं लगता। अर्थात् अपने घर की चीज़ें दूसरों की चीज़ों की तुलना में अच्छी नहीं लगतीं। पटुआ के नरम पत्ते का साग बनता है।

बारी पर लँगड़ी भी नाचे—अपनी बारी पर लँगड़ी भी नाचने के लिए तैयार हो जाती है। अपने क्रम पर अशक्त व्यक्ति भी कार्य करने को तत्पर हो जाता है। तुलनीय : राज० बारी आयां बूढली ही नाचै; पंज० बारी आयी लंगी नच्ची।

बारे की मां, और बूढ़े की जोरू न मरे—छोटे बच्चे की मां तथा वृद्ध व्यक्ति की पत्नी (जोरू) न मरे। इनके मरने से दोनों को कष्ट होता है। तुलनीय : अव० बच्चा कै महतारी औ बुढवा कै जोरी मरे दुखै दुख।

बारे की मां मरे न बूढ़े की जोरू—ऊपर देखिए।

बारे पूत हरीरी खेती, ह्वैं है कबधौं किनने देखी—छोटे लड़के और हरी खेती के विषय में कोई यह नही कह सकता कि होगी या नहीं। अर्थात् छोटे लड़के और हरी खेती का कुछ ठीक नही कि इनसे सुख मिलेगा या नहीं। तुलनीय : भीली—हरी खेती गाँभण भेंस नों हूँ भरोसो?

बारे पूत हरीरी शाखा, इन्हें देख न गरबो माता—ऊपर देखिए।

बाल उखड़ता नहीं नाम बलवान खां—नाम के अनुसार योग्यता या शक्ति न होने पर व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० बार उखरे नाँ बरियार खाँ नाँव।

बाल उखाड़ने से मुर्दा हलका नहीं होता—बड़े काम में बहुत छोटी सहायता कोई सहायता नहीं है। तुलनीय : राज० केसाँने काट्या किसा मुड़दा होळा हुवै; माल० केस मुण्डवा ती कई मुर्दा हलका वे; अव० बार उखाड़े मुरदा हलुक न होई; कौर० झांट उखाड़े ते क्या मुर्दे हळके हों; बुंद० बार उखारै मुरदा हलको भई होत।

बाल उखाड़े मुर्दा हलका—ऊपर देखिए।

बालक का दर्द कौन जान सकता है?—जो बच्चा बोलने योग्य नहीं होता उसकी पीड़ा कौन जान सकता है। मूक की पीड़ा कोई नहीं जान सकता, इसी कारण कहते हैं। तुलनीय : गढ़० बालकि वेदना को जाण सकद; पंज० मुंडे दी पीड़ किन्नूं पता।

बालक की वेदना कौन जाने—ऊपर देखिए।

बालक को कहो बताना मत तो वह ज़ोर-ज़ोर से बताता है—बच्चे को यदि कोई गोपनीय बात बताकर कहा जाय कि इसे किसी को मत बताना तो वह सबको ज़ोर-ज़ोर से सुनाकर आता है। गोपनीय कार्य या बात बच्चों को नहीं बतानी चाहिए। तुलनीय : भीली—चानो काम चोराए करावहो ते रो पोड़े घणो करहें; पंज० मुंडे नूं आखो नां

दसीं ते उह जोर-जोर नाल दसदा है।

बालक जाने हीया, मानस जाने कीया—बालक प्यार से और आदमी काम से प्रसन्न होते हैं। तुलनीय : राज० बाळक देखे हीयो, बूढो देखै कीयो।

बालक बादशाह के बराबर होता है—(क) बालक राजा की भाँति अपनी ही मर्ज़ी का काम करता है। (ख) बालक किसी की परवाह और चिन्ता नहीं करता। (ग) बालक किसी से भी नही डरता। तुलनीय : राज० बाळक बादस्या बरोबर हुवै; ब्रज० बालक बास्या के बराबरि होयँ; पंज० मुंडा बादसाह वरगा हुँदा है।

बालक मूँछ अरु नारी, छुटपन से ही जाए सँवारी—बालक, मूँछ और पत्नी को आरम्भ से ही सँवारना चाहिए नहीं तो बाद में ये बिगड़ जाते हैं।

बालक राजा की सेवा कीजे, ढलती लीजे छाँव—छोटी आयु के स्वामी की खूब सेवा करनी चाहिए ताकि वह प्रसन्न रहे और उसके साथ बहुत समय तक रहकर लाभ उठाया जा सके। छोटी आयु का स्वामी शीघ्र ही प्रसन्न हो जाता है और वह नौकरों को अधिकार भी बहुत दे देता है। इसी प्रकार ढलती हुई छाँव भी बहुत समय तक सुख देती है जबकि वढ़ती छाँव धीरे-धीरे कम होकर एकदम सीमित हो जाती है। तुलनीय : राज० बाळो ठाकर सेविये, ढळती लीजे छाँह।

बाल की खाल हिन्दी की चिन्दी—बहुत खोज-बीन या तर्क-वितर्क को कहते हैं।

बाल के हाथ में सींग ससाको—खरगोश का सींग बच्चे के हाथ में है। झूठी या असम्भव बात पर कहते हैं। (ससा=खरगोश, जिसके सीग होते ही नही)।

बाल जंजाल, बाल सिंगार—कभी बाल जंजाल मालूम होता है तो कभी शृंगार। अर्थात् एक ही चीज़ कभी अच्छी लगती है, कभी भार बन जाती है।

बाल थोड़े, जुएँ बहुत—सिर पर जितने बाल नहीं हैं उससे अधिक जूएँ हैं। बहुत गन्दे व्यक्ति के प्रति व्यंग्य से कहते हैं जो सफाई पर ध्यान नही देता। तुलनीय : राज० आ रे म्हारा घररा धणी, जट्टा थोड़ी जूवां घणी; ब्रज० बार थोरे और जूआँ ज्यादा; पंज० बाल कट जुआं मतियां।

बाल दोष गुन गर्नाहि न साधू—साधु या बड़े आदमी बालक की ग़लती को ग़लती नहीं मानते।

बाल बांधा गुलाम—ऐसा ग़ुलाम या नौकर जो कभी न छूट सकता हो।

बाल बांधा चोर—चालाक चोर को कहते हैं।

बाल बाँधी कौड़ी मारता है—अच्छा निशाना लगाता है।

बाल-बाल गुनहगार है—नम्रतापूर्वक अपना दोष स्वीकार करने को कहते हैं।

बालम तेरे घर कभी न सुख पाया, रोते ही जनम गँवाया—जिस स्त्री ने कभी सुख न पाया हो वह अपने पति के प्रति कहती है। तुलनीय : भीली-- -रोई रोई ने जमारो पूरो की दो थारे घर में कई सुख नी दीठो।

बाल मराल कि मंदर लेहीं—सुकुमार आदमी कठिन काम नहीं कर सकता।

बाल मूंछ अरु नारी, जे बारेंहि काहे न सँभारी—दे० 'बालक मूँछ अरु नारी···'।

बालस्य प्रदीप कलिका क्रीडयैव नगरदाह:—बालक द्वारा दीपक की कलिका (बत्ती का अग्रिम दग्धभाग) के खेल से ही नगर का जल जाना। जब कोई अज्ञात मनुष्य मनोरंजन के लिए कोई ऐसा काम करे जिससे बहुत बड़ी हानि हो जाय तब इस न्याय का प्रयोग करते हैं।

बाल हठ तिरिया हठ राज हठ—ये तीनो ही जल्दी नही छूटते।

बाली छोटी भई काहें, बिना असाढ़ की दो बाहें—गेहूँ तथा जौ में छोटी-छोटी बालें क्यों लगी? क्योंकि खेत आषाढ़ के मास में दो बार नहीं जोता गया था। अर्थात् आषाढ़ में खेत को कुछ-न-कुछ अवश्य जोत देना चाहिए तभी फ़सल अच्छी होती है।

बाली मोटी भई काहें, आषाढ़ के दो बाँहें—रबी की फ़सल की बालें क्यों मोटी है? तो कहता है कि आषाढ़ में दो बार खेतों की जुताई करने से। आशय यह है कि आषाढ़ में खेतों की जुताई करने से रबी की फ़सल अच्छी होती है। तुलनीय : मरा० ओंबी जाडकशी झाली आषाढ़ा दोन वेळाँ नागरली (भूमि)।

बालू का रास्ता, दिन-रात झाडू—बालू के रास्ते पर झाड़ू लगाना व्यर्थ है। व्यर्थ परिश्रम करने पर कहते हैं। तुलनीय : छत्तीस० अंधरी बछिया पैरा के गोड़ायत; भोज० बलुई सड़क पर झाड़ू-कूंचा; पज० रेत दा राह दिण रात बारी; ब्रज० बारु को रस्ता राति-दिन झरनो परै।

बालू की भीत, ओछे को संग; पुतरिया की प्रीत तितली का रंग—रेत (बालू) की दीवार, नीच की मित्रता, वेश्या का प्रेम और तितली का रंग ये चारों अस्थायी होते हैं। तुलनीय : अव० बारू की भीत, ओछा का साथ, पतुरिया की परीत तितली का रंग नाही रहत।

बालू पेरे पाय क्या ?---रेत (बालू) पेरने से क्या मिलेगा ? अर्थात् कुछ भी नहीं। व्यर्थ परिश्रम करने वाले के प्रति कहते हैं।

बालेपन की आशक़ी गले पड़े जंजीर— प्रेम-प्रणय में लिप्त होना जीवन को नष्ट करना है।

बावन कर की लष्टिका बढ़े चढ़े असमान—बावन के हाथ की लकड़ी भी उनके आस आसमान तक पहुँच गई। (क) जैसा मालिक वैसा ही नौकर भी हो तो कहते हैं। (ख) बड़ों के साथ छोटे भी बढ़ जाते हैं। (बावन = वामन, विष्णु का एक अवतार जो बलि को छलने के लिए धारण किया गया था)।

बावन खेल बसावन खेलें ताहि खेलावें चाँदा—जो बड़े-बड़े होशियारों (बसावन) को भी चरका दे दे उसको साधारण व्यक्ति (चांदा) नहीं पढ़ा सकता। जब कोई अपने से समझदार व्यक्ति को धोखा देना चाहता है तब व्यंग्य में कहते हैं।

बावन तोले पाव रत्ती—बिलकुल ठीक। तुलनीय : राज० बावन तोला पाव रत्ती; मरा० बावन तोळे पाव गुंज; पंज० बारां तोले पा रत्ती।

बावन बतास, तेरा आँचल क्यों कर डोला; पूत न भतार, तेरा ढेंढ़ा क्यों कर फूला—बिना हवा के तुम्हारा आँचल क्यों उड़ रहा है? और बिना पति के तुम कैसे गर्भवती हो गई ? (क) बिना कारण इतराने वाले पर व्यंग्य में कहते हैं। (ख) व्यभिचारिणी स्त्री के प्रति भी कहते हैं।

बावन बुद्धि बकरिया में, छप्पन बुद्धि गड़रिया में---बकरी में बावन बुद्धि होती है तो गड़रिए में छप्पन। गड़रिया बकरी से थोड़ी ही अधिक बुद्धि रखता है, अर्थात् बहुत मूर्ख होता है। गड़रिए के प्रति व्यंग्य में कहते है।

बावन बुद्धि बनियाँ तिरपन बुद्धि सुनार—बनिए में बावन बुद्धि होती है तो सोनार (स्वर्णकार) में तिरपन। अर्थात् सोनार बनिये से भी बढ़कर चालाक होता है। तुलनीय : हरि० बावन बुद्धि बाणिया, तरेपन बुद्धि सुनार।

बावरे गाँव में ऊँट आया, लोगों ने जाना परमेश्वर आया-- दे० 'बावले गाँव में ऊँट···'।

बावला भेजी बनज को, गई डगरिया भूल; ठगवा मग में मिल गए, लाभ रहयो न मूल---मूर्खा को व्यापार के लिए भेजा गया। वह रास्ता भूल गई और दूसरे रास्ते पर चली गई जहाँ उसका सामान ठगों ने ले लिया। इस प्रकार उसका मूल धन भी जाता रहा। मूर्ख पर कहते हैं जो लाभ करने जाता है और घर का पैसा भी गँवा कर आता है।

बावली को आग बताई, उसने ले घर में लगाई—मूर्खों को किसी ने आग दिखा दी तो उसने लाकर घर में लगा दी। अर्थात् मूर्ख प्राय: चीज़ों का दुरुपयोग ही करता है।

बावली खाट के बावले पाये, बावली राँड़ के बावले जाये— बुरी चारपाई के पाये (पैर) भी बुरे होते हैं और मूर्खों की संतान भी मूर्ख ही होती है। अर्थात् जैसे के सहायक या पुत्र भी तैसे ही होते हैं।

बावले कुत्ते का काटा पानी देख डरता है—जिसको पागल कुत्ता काट लेता है वह पानी देखकर भी डरता है। आशय यह है कि विपत्ति का मारा व्यक्ति सामान्य चीज़ों से भी डरता है।

बावले कुत्ते ने काटा है—पागल कुत्ते ने काट लिया है। मूर्खता की बातें करने पर कहते हैं। तुलनीय : भोज० बउराइल कुक्कुर कटले बा; अव० पागल कुकुर नाही काटे है; हरि० बावले कुत्ते न पाउ राख्या सै; पंज० पागल कुत्ते ने कट्या है; ब्रज० कहा बाबरे कुत्ता नें काट्यौ ऐ।

बावले गाँव में ऊँट आया, लोगों ने जाना परमेश्वर आया—मूर्खों के गाँव में ऊँट आया तो वे उसे ईश्वर ही समझ बैठे। अर्थात् मूर्खों के लिए सामान्य चीज़ें भी अनोखी और बहुत बड़ी मालूम होती हैं।

बासन बासन खड़कता ही है—जहाँ बर्तन रखे होते है वहाँ वे कभी-कभी टकरा भी जाते हैं। अर्थात् जहाँ चार आदमी रहते हैं वहाँ खटपट या झगड़ा होता ही है। तुलनीय : अव० बासन जहाँ रही हुवई खड़की; हरि० जित दो बासण होंगे खडकेंगे भी।

बासी कढ़ी को में उबाल आया — (क) अनायास क्रोध करने पर या बीती बात को उभारने पर कहते हैं। (ख) उम्र ढलने के बाद इश्क़बाज़ी करने वाले के प्रति भी व्यंग्य में कहते हैं।

बासी चावल बासी साग, अपने घर खाए क्या लाज—अपने घर में बासी चावल और बासी साग खाने में कोई लाज नहीं। आशय यह है कि अपने घर में कुछ भी खाया-पीया जा सकता है। तुलनीय : छत्तीस० आज के बासी काल के साग, अपन घर माँ का के लाज।

बासी फूलों में बास नहीं, परदेशी बालम तेरी आस नहीं—बासी फूलों में गंध नहीं होती और परदेश में रहने वाले पति के आने की आशा नहीं की जा सकती। परदेशी पति के प्रति पत्नी का कथन।

बासी बचे न कुत्ता खाय—न बासी बचेगा और न कुत्ता खाएगा। (क) यदि अपना बुरा होने का कोई अवसर

न दे तो बुरा न होगा या हानि न होगी (ख) अच्छी व्यवस्था के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : अव० बासी बचै न कुत्ता खाय; भोज० बसिया बंची न कुक्कुर खाई; राज० बासी रहे न कुत्ता खाय; गढ़० कुत्ता खौ न बासी रौं; मरा० खर कटें नको राहयला नि कुत्रा न को खायला; पंज० पयी पयी नां कुत्ता खाय।

बासी भात में, खुदा का निहोरा—अपने आप मिलने वाली चीज़ के लिए खुशामद क्यों की जाय ?

बासी भात में खुदा का क्या साझा ? — ऊपर देखिए।

बासी रोटी की थोड़ी साध—बासी रोटी पाने की इच्छा नहीं। बुरी वस्तु को प्राप्त करने के लिए कोई विशेष इच्छुक नहीं होता। तुलनीय : अव० बासी रोटी के थोड़ी साध।

बाहर की एक से घर की आधी अच्छी—बाहर की पूरी से घर की आधी ही अच्छी होती है। आशय यह है कि अपने घर की थोड़ी या बुरी वस्तु भी दूसरे की अधिक या अच्छी वस्तु से बेहतर होती है। तुलनीय : पंज० बार दी पूरी नालों कर दी अदी चंगी।

बाहर के खाएँ, घर के गीत गाएँ--बाहर के खा रहे हैं और घर के गीत गा रहे हैं। जब कोई बाहर वालों के लिए खूब खर्च करे और घर वाले परेशानी में रहें तब ऐसा कहते हैं।

बाहर के तो माल मारें, घर के गावें गीत—ऊपर देखिए।

बाहर के बाहर रहें, भीतर के भीतर—जो बाहर हैं उनको बाहर ही रहने दो और जो भीतर है उनको भीतर। (क) जब कोई व्यक्ति दोनों पक्षों से मिला रहता है तो उसके प्रति कहते हैं। (ख) जो व्यक्ति दोनों ओर से लाभ उठाकर भी किसी का कोई काम न करे उसके प्रति भी व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० माँये-र-माँये रा,- बारै- बारै; पंज० बार दे बार अंदर दे अंदर रैण।

बाहर के सौ, घर के पचास—परदेश के सौ रुपए और घर में मिलने वाले पचास एक समान हैं। परदेश में व्यय अधिक होता है और कष्ट भी उठाना पड़ता है इस कारण बाहर के अधिक से घर के थोड़े ज्यादा लाभदायक हैं। तुलनीय : राज० बाहररी पूरी, सहररी आधी; पंज० बार दे सौ कर दे पंजा।

बाहर घूमे तो भीतर चूहे भागे, भीतर घूमे तो बाहर चिड़ियाँ उड़ें—बाहर घूमती है तो घर के अन्दर चूहे इधर-उधर भागते हैं और जब घर के अंदर घूमती है तो बाहर चिड़ियाँ उड़ती हैं। जो स्त्री हाथ-पैरों में बजनेवाले आभूषण बहुत अधिक पहने उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : भीली बाण्ने फरे, माँये उँदरा नाँहि, माँये फरे ने बाणने चकली उड़े।

बाहर जितना भीतर--जितना भूमि से बाहर है उतना ही भूमि के भीतर भी है। जो व्यक्ति छोटी आयु में ही बहुत समझदार या चालाक हो जाय उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। छोटे क़द के चालाक व्यक्ति के लिए भी कहते हैं। तुलनीय : राज० बारे जितरा माँय।

बाहर टेढ़ो फिरत है बांबी सूधो साँप—सर्प बाहर तो टेढ़ा रहता है लेकिन अपने बिल के अंदर सीधा रहता है। आशय यह है कि अपने घर में दुष्ट भी दुष्टता नहीं करते। तुलनीय : राज० बाहर टेढो हो चले बांबीं सीधो साँप; मरा० बाहेर नागमोड़ी चालतो पण बिलाँत जातांना साप सरळ होतो।

बाहर त्याग, भीतर सुहाग—बाहर से तो त्याग दिखाते हैं और भीतर से सुहाग लेना चाहते हैं। जो ऊपर से त्यागी बने और भीतर से पक्का स्वार्थी या कपटी हो उसके लिए कहते हैं।

बाहर बाबू तीसमारखाँ, घर में चूहेदास—घर के बाहर तो बाबू साहिब बहुत बहादुर बनकर घूमते हैं, किंतु बीवी के सामने चूहे की तरह डरते हैं। बीबी से डरनेवालों के प्रति कहते हैं। तुलनीय . राज० बाहर बाबू सूरमा, घर में गीदड़दास।

बाहर बाबू सूरमा घर में गीदड़दास—ऊपर देखिए।

बाहर मियाँ अलल्ले तलल्ले घर में चूहे पक्के—नीचे देखिए। तुलनीय : अव० बाहेर मियाँ अल्ले तल्ले घर मा मूस मरा।

बाहर मियाँ छैल चिकनियाँ, घर में लिबड़ी जोय—बाहर तो मियाँ साहब काफ़ी साफ-सुथरे वस्त्र पहन कर घूमते हैं और घर में बीबी फटे और गंदे कपड़े पहनकर रहती है। घर की स्थिति अच्छी न होने पर भी शान-शौकत दिखाने वालों के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : मेवा० आलीजाजी आज्योजी घराँ, धान बनां भूखां मरां। (जोय =जोरू, पत्नी)।

बाहर मियाँ झंग झंगाले, घर में नंगी जोय—ऊपर देखिए।

बाहर मियाँ पंज हजारी, घर में बीबी करमों मारी—दे० 'बाहर मियाँ छैल चिकनियाँ···'। तुलनीय : गढ़० भैर धवाधौ भितर बाड़ी अर पलयौ, भैर लग्यां छन ताला,

भितरनी भूसा मारन का गाला; मेवा० आओ मारा नवल बना, थांका घर की राडा रोवे अन्न बिना।

बाहर मियाँ सूबेदार, घर में बीबी झोंके भाड़—ऊपर देखिए।

बाहर मियाँ हक्क हजारी, अंदर मियाँ दुख हजारी—ऊपर देखिए।

बाहर लंबी-लंबी धोती, भीतर बाजरे की रोटी—बाहर तो बहुत टीप-टाप से रहते हैं, किंतु घर मे बाजरे की रोटी खाते है। ऊपरी दिखावा करने वालो के प्रति व्यग्य मे इस कहावत को कहते है। तुलनीय : गढ० ठाकुर की तेबारी मेर लाली लाल, भिनर पुड खाज का कुहाल, भोज० बाहर लामी लामी धोती, भितर बजरा क रोटी।

बाहर लंबी-लंबी धोती, भीतर मड़वे की रोटी— ऊपर देखिए। तुलनीय अव० देखेब लम्बी धोतिया, मरेव पेट कै रोटिया, मेवा० ऊजला धोया ने फटकन चोया कठे थाँका घर ओ जगत रा दिवाल्या।

बाहर वाले खा गये, घर के गावे गीत—दे० 'बाहर के खाएँ घर के · '।

बाहे क्यों न असाढ एक बार, अब क्यो बाहे बारम्बार—ऐ किसान! तुमने आषाढ मे एक बार खेत को नही जोता और अब तुम बार-बार क्यो जोत रहे हो? आशय यह है कि यदि आषाढ मास मे खेत की एक-दो जुताई न की जाय तो बाद मे अधिक जुताई करने से कोई विशेष लाभ नही होता। तुलनीय . मरा० आषाढात एकदाही नागरणी-नाही, आता पुन्हाँ पुन्हाँ करिसी कोई।

बाह्मन कहने से और बैल चलने से चूकता नहीं—ब्राह्मण बात को कहने से कभी नही चूकता और बैल परिश्रम करने मे। ब्राह्मण सत्य बात को कहकर ही रहता है चाहे वह कितनी ही कडवी क्यो न हो और उससे चाहे उसको हानि ही क्यो न उठानी पडे तथा बैल परिश्रम करने से कभी पीछे नही हटता। तुलनीय : राज० बामण कह छूटै, नै बळद वह छूटै।

बाह्मन काज नाई का मरन—ब्राह्मण के कार्य मे नाई की मौत हो जाती है। आशय यह है कि ब्राह्मण के यहाँ कोई कार्य पडने पर नाई को अधिक परिश्रम करना पडता है।

बाह्मन का दिल लड्डू में—ब्राह्मण का दिल लड्डुओ मे रहता है। ब्राह्मणो को लड्डू और मीठी वस्तुएँ बहुत प्रिय होती है। तुलनीय राज० बामणरो जी लाडू मे; स० ब्राह्मणो मधुर-प्रिय।

बाह्मन की 'बला' में बनिए की रोजी—ब्राह्मण जाति सीधी-सादी होती है और बनियाँ जैसे भी सौदा देता है, ब्राह्मण वैसा ही लेकर चला जाता है तथा कभी पैसा दो पैसा कम भी हो तो परवाह नही करता। यदि कोई उसे इस सबध मे सावधान करता है तो वह 'बला से' कहकर टाल देता है, यही 'बला' बनिए का काम बना देती है। तुलनीय : राज० बामणरी बलाय मे वाणियो कमाय खाय।

बाह्मण, कुत्ता नाऊ, जात देख गुर्राएँ—दे० 'बाह्मन, कुत्ता, बानियाँ · '।

बाहमन कुत्ता, बानियां जात देखे गुर्राय—ब्राह्मण, कुत्ता और बनिया ये तीनो अपनी ही जातिवालो से लडते हैं। तुलनीय मरा० ब्राह्मण, कुत्ता नि वाणी आपुल्या जाती चा बधनी, गुरकावी, अव० बाम्हन, कूकुर, बनियाँ, इ तीनो जात का गुर्राय, राज० बामण, कुत्ता, वाणिया जात देख गुर्राय।

बाह्मन, कुत्ता बानियाँ, तीनों जात कुजात—ऊपर देखिए।

बाह्मन क्या जाने गोश्त का मजा?—ब्राह्मण माँस के स्वाद को क्या जाने? वे तो खाते ही नहीं है। (क) मासाहारी शाकाहारियो के प्रति कहते हैं। (ख) किसी काम के सबध मे जानकारी न रखते हुए भी जो उसके सबध मे बाते करे उसके प्रति व्यग्य मे कहते है। तुलनीय राज० वाणियैरी बेटीनै माँसरी काँई ठा? राज० बामण नू मीट दे सुआद दा की पता।

बाह्मणग्राम न्याय—जिस गाव मे ब्राह्मणो की बस्ती अधिक होती है उसे ब्राह्मणो का गाँव कहते है, यद्यपि उसमे कुछ और लोग भी बसते है। अधिक या प्रधान वस्तु, रग या गुण के कारण ही नाम पडता है, गौण के कारण नही।

बाह्मन, नाई, कूकरा, तीनों जात कुजात—दे० 'बाह्मन, कुत्ता, बानिया···'।

बिंद का हाल गोविन्द न जाने—बिंद (मुख्यत मिट्टी खोदने वाली एक जाति) जाति के लोग बडे घाघ होते है। इनका हाल भगवान भी नही जानते। बिंदो के प्रति व्यग्य मे कहते है। (बिंद को कही-कही बिन्न भी कहते हैं)।

बिंध गया सो मोती, रह गया सो पत्थर—जो काम हो जाय वही अच्छा है और जो न हो सके, वह बेकार है। तुलनीय · हरि० बिन्धग्या सो मोती रहग्या सो पत्थर; मरा० बिधले ते मोत्ये राहे तो शिपला।

बिंभयिलीं बोले रात निभाई, छालीं बाडां बेस छिकाई; गोहाँ राग करै गरणाई, जोराँ मेह मोराँ अजगाई—यदि रात भर झींगुर बोले, बकरी बाड़ के पास बैठकर छीके, गोह जोर से आवाज करे और मोर बोले तो वर्षा होगी।

बिखेरना मत, कहा, बटोर रहा हूँ—किसी काम के

विषय में निर्देश मिलने से पूर्व करके बिगाड़ने वाले के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० खतीना, बल उकन्नू छौं; पंज० वाही ना, क्या, बीजदा हाँ।

बिगड़ा शाइर मरसिया गो, बिगड़ गवैया मरसिया ख्वाँ—जो कवि के रूप में सफल नहीं हो पाता वह मरसिया (शोक गीत) लिखकर तथा बेमुरा गायक मरसिए गा-गाकर अपना काम चलाते हैं। तुलनीय : अं० A bad poet turns critic.

बिगड़ी को भुलाना नहीं सुधरी को सुनाना नहीं—जो काम बिगड़ जाय उसको भूलना नहीं चाहिए और जो काम सँवर जाय उसे दूसरों को सुना कर प्रशंसा नहीं करनी चाहिए। बिगड़ा हुआ काम फिर से करने पर सुधर सकता है और बना हुआ काम बिगड़ भी सकता है। तुलनीय : राज० बिगड़ी ने काँई विगरावणो सुधरी काँई सरावणो।

बिगड़ी खेती, सुधरी चाकरी—बिगड़ी खेती और सुधरी चाकरी दोनों बराबर हैं। खेती अच्छी न हो तो भी नौकरी से अधिक लाभदायक है। तुलनीय : राज० बिगड़ी खेती' र सुधरी चाकरी बरोबर है।

बिगरी खेती, सुधरी नौकरी—ऊपर देखिए। तुलनीय : राज० गम्योड़ी खेती कमायोड़ी चाकरी बराबर।

बिगड़ी गाय का दूध तथा खलिहान में अँटका हुआ अन्न बड़े भाग्य से मुंह में जाता है—ऐसी गाय जो दूध निकालते समय उछलती-कूदती है उसका दूध बड़े भाग्य से मुँह लगता है। ठीक ऐसे ही जो अन्न खलिहान में पड़ा रहता है वह भी भाग्य पर ही निर्भर करता है, मिले न मिले; क्योंकि आँधी वर्षा से बचेगा तभी घर आएगा। तुलनीय : भोज० अंटकल खेती तड़कल गाय दई करं तऽ मुँह में जाय।

बिगड़ी तह फिर नहीं बैठती—जब तह बिगड़ जाती है तो दुबारा वह पहले जैसी नहीं बैठती। अर्थात् बिगड़ा हुआ काम फिर नहीं बनता। तुलनीय : अव० बिगड़ जाये पर फिर नाहीं बनत; राज० बिगड़ीरा तीवण कदे आगै ही सुधर्या हा; भीली – थाय्यू ज्याते थाय्यू, थाय्योज जाये; पंज० टुटी तेंह मुड़ के नईं लगदी; ब्रज० बिगरी फिरि नायें सुधरै।

बिगरी बात बने नहीं लाख करो किन कोय—लाखों प्रयत्न करने पर भी बिगड़ी बात फिर से नहीं बनती।

बिगड़ी लड़ाई, बखतर पोहों के लिए—लड़ाई में हार से बड़े अफ़सर की ही निन्दा होती है।

बिगड़े को बनाय, सो आदमी कहाय—बिगड़ी बात को बनाने वाला ही आदमी कहाने के योग्य है। जो व्यक्ति दूसरों के बिगड़े कामों को सँवारे और उनमें मेलजोल बनाए उसे ही सच्चा मनुष्य समझना चाहिए। तुलनीय : भीली -- खोटा नू खरू करे जणां नो नाम आदमी।

बिगड़े ब्याह में नाई—ब्याह में गड़बड़ हो जाने पर नाई बहुत परेशान दीखता है। किसी के अत्यधिक परेशान होने पर कहते हैं। अर्थात् 'तुम तो ऐसे परेशान हो जैसे बिगड़े ब्याह में नाई'। तुलनीय : कनौ० बिगरे ब्याह में नाइन; पंज० पन्ने वयाह विच नाई; ब्रज० विगरे ब्याह में नाऊ।

बिगाड़ सँवार ईश्वर के हाथ—बिगाड़ना-बनाना ईश्वर के हाथ में है। यह सब कुछ ईश्वर पर ही निर्भर है।

बिगाने गाँव जाड़ा और अपने गाँव में भूख—दूसरे के गाँव में जाड़ा तथा अपने गाँव में भूख अधिक लगती है। तुलनीय : गढ़० बिराणा गौं को जाड्डो अर अपणा गौं की भूख।

बिगाने धन को रोवे चोर—दूसरे के धन के लिए चोर रोता है। (क) झूठा प्रेम दिखाने वाले के प्रति व्यंग्य। (ख) मुफ़्तखोरों के प्रति व्यंग्य में कहते हैं जब वे दूसरे की वस्तु पाने के लिए परेशान होते हैं।

बिच्छू का काटा चोर, न हूँ करे न चूं—चोर को बिच्छू डंक मार देता है तब भी वह बोलता-चिल्लाता नहीं। आशय यह है कि अपराधी अपने अपराध को छिपाने के लिए कष्ट भी सह लेता है।

बिच्छू का काटा रोवे, साँप का काटा सोवे—जिसे बिच्छू डंक मारता है वह रोता है लेकिन जिसे सर्प काट लेता है वह सोता है। अर्थात् (क) मीठी मार खराब होती है। (ख) साँप का काटा मरता है पर उसे कष्ट अधिक नहीं होता और बिच्छू का काटा मरता नहीं पर उसे कष्ट अधिक होता है। तुलनीय : अव० बीछी के काटा रोवँ, साँप का काटा सोवँ; हरि० बिच्छू का लड़या रोवै, अक साँप का लड़या सोवे; मरा० विंचू चावला तो विवळतो, साँप चावला तो (काळ) झोंप घेतों; पंज० बिच्छू दा कट्या रोवै सप दा कट्या सोवे।

बिच्छू का मंत्र न जाने, साँप के पिटारे में हाथ दे—बिच्छू का मंत्र तो जानते नहीं और सर्प के पिटारे में हाथ डाल रहे हैं। जो अपनी योग्यता से बाहर का काम करता है उस पर कहते हैं। तुलनीय : गढ़० मंतर नि जाणनो बिच्छी को सर्प दुलत्यूँ डालनो हाथ; भोज० बिछी क मंतर नां जानीं कीरा क बिल में हाथ डालीं अव० बीछी का मंतर न जाने, साँप के बिली मा हाथ डारं; मैथ० बिच्छा के झार

न जाने आऊ साँप के विल में हाथ डाले; राज० बिच्छूरां झाड़ो को आवैनी, हाथ घालै सरपनै; बघे० बीछी क मंत्र न जानै, साँप के बिला माँ हाथ डारय; मरा० विंचवाचा मंत्रहि येईना नि सापच्या बिळांत हाथ घालतो आहे।

बिच्छू का मंत्र न जाने, साँप के बिल में हाथ डाले—ऊपर देखिए।

बिच्छू बन के आया, साँप बन के गया – आया तो था बिच्छू जैसा साधारण बन कर और गया है साँप जैसा खतरनाक बनकर। जब कोई साधारण-सा संकट जाते-जाते बहुत विकट रूप धारण कर ले तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : भीली—चोटे बीचू थाइ ने, उतरे हाँप थाइ ने जणां हूँकरें; पंज० विच्छू बण के आया सँप बण के गया।

बिच्छू-मंत्र से सर्प-विष नहीं उतरता—हर साधन की अपनी सीमा होती है; सीमा के बाहर वह कारगर नहीं होता। छोटों पर काम करने वाला साधन बड़ों के लिए बेकार हो जाता है। चतुर्भुजदास ने लिखा है : 'बीछू मंत्र साँप नहिं माने।'

बिछौना देखकर पैर फैलाने चाहिए—आय देखकर ही व्यय करना चाहिए। तुलनीय : ब्रज० बिछौना देखकें पांम फैलावै।

बिछौना देख थकावट लागे—बिस्तर को देखकर थकान महसूस होती है। आशय यह है कि साधन को देखकर उसके उपयोग की इच्छा होती है।

बिछौने से लग गया है—मरणासन्न हो जाने पर कहते हैं। तुलनीय : अव० खटिया से लाग गा; हरि० कत्तिये खाट के लागग्या; पंज० मंजे नाल लग गया है।

बिजया खैबो सहज है मौजें कठिन निदान—भंग का सेवन करना आसान काम है पर उसे सँभालना मुश्किल है। (विजया भंग)।

विजया पीवे सेज्या सोवे, ताके वैद्य पिछाड़ी रोवे—भाँग पीकर जो खूब ऐश करता है, वैद्य उसके घर के पीछे रोता है। अर्थात् भंगेड़ियों का यह कहना है कि जो भाँग पीकर खूब ऐश करता है वह सर्वदा स्वस्थ रहता है। तुलनीय : अव भाँग पिये सेज पर सोवे; ओकरे पिछवाड़ें वैद रोवै।

बिजलीक मारल, लुआठ देख भागे—बिजली का मारा लुआठ को देखकर भागता है। एक बार का सताया हुआ बहुत सम्हल कर चलता है। जैसे दूध की जली बिजली मट्ठा भी फूंक-फूंककर पीती है। (लुआठ=जलती लकड़ी)।

बिजली का मारा चिराग से डरता है—ऊपर देखिए। तुलनीय : हरि० बीजली का मार्‌या मुराड़ तै बीडरै; पंज० बिजली दा मरया दीए तो डरदा है।

बिजली काँसे ही पर गिरती है—बिजली भी काँसे के ऊपर ही गिरती है। अर्थात् कष्ट भी बड़ों पर पड़ते हैं।

बिजली चमके मेहा बरसे—जब बिजली चमकती है तो बारिश होती है।

बिजली मेहमान घर में नहीं तिनका—स्वयं दरिद्र है और संपन्न या धनी व्यक्तियों को अपने यहाँ भोज पर आमंत्रित करता है। साधनहीन होने पर बाह्य प्रदर्शन के लिए मूर्खतापूर्ण कार्य करना।

बिटिया और गाय को जोड़ा मिल ही जाते हैं—स्पष्ट।

बिटिया का कहा होवे, बहू का कहा न हो—बेटी जो कहती है वह हो जाता है, लेकिन बहू जो कहती है वह नहीं होता, क्योंकि बहू दूसरे की बेटी होती है। आशय यह है कि अपने की अपेक्षा दूसरों का ख्याल लोग कम करते हैं।

बिटिया चमार की, नाम रजरनियाँ—लड़की चमार की है लेकिन नाम है राजरानी। स्थिति, योग्यता या स्तर के विपरीत नाम होने पर व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० बेटी चमार के नांव रजरनियां; अव० बिटिया चमार कै नाम जगरनियां।

बिटियों में से ही दाई बनती है—अर्थात् (क) समाज में अच्छे-बुरे सभी तरह के लोग पैदा होते हैं। (ख) एक ही माँ-बाप की संतानें भिन्न-भिन्न ढंग की होती हैं। तुलनीय : अव० बिटिवनै ते दाई होती हैं।

बिटौरे में से उपले ही निकलेंगे—उपलों के ढेर में से उपले ही निकलेंगे अर्थात् अंश भी पूर्ण जैसा ही होगा। (बिटौरा=उपलों का ढेर)। तुलनीय : हरि० बिटीड़ें के त गोस्से ए लिकड़ेंगे।

बिड़र जोत पुराने बिया ताकी खेती छिया-बिया—यदि खेत की अच्छी जुताई न हो और पुराना बीज बोया जाय तो पैदावार नाम-मात्र की ही होगी।

बिड़ले का होइं भल मानस—बहुत कम काने भले आदमी होते हैं। अर्थात् काने अधिकतर बुरे आदमी होते हैं।

बिदा के समय सब कंठ लगावे—बिदा होते समय शत्रु भी गले लगाते हैं। तुलनीय : अव० बिदा होत सब भेंटैं; पंज० छडदे होई सारे गले लगण।

बिद्या में बिबाद बसे—विद्या में विवाद बसता है। अर्थात् ज्ञान वाद-विवाद से पूर्ण है।

बिद्या लोहे के चने हैं—ज्ञानार्जन करना बहुत कठिन

काम है। तुलनीय : ब्रज० विद्या पढ़नौं लोहे के चना चबानौं है।

बिद्या हि परमं धनम् --विद्या ही श्रेष्ठतम् धन है।

बिध गया सो मोती बाकी पत्थर---दे० 'बिंध गया सो मोती'''। तुलनीय : हरि० बिन्ध्या ग्या सो मोत्ती, बाक्की पात्थर।

बिधवा होई कै करै सिंगार, ओहि ते सदा रहो हुसियार---जो स्त्री विधवा होने पर भी शृंगार करे उससे सावधान रहना चाहिए। आशय यह कि ऐसी स्त्रियाँ व्यभिचारिणी होती हैं। क्योंकि शृंगार सुहागिनें ही करती हैं और उन्हीं के लिए बना भी है।

बिधाता के अक्षर कभी नहीं टलते---ब्रह्मा का लिखा टलता नहीं। आशय यह है कि जो भाग्य में होता है वही होता है, वह किसी के टालने से टलता नही। तुलनीय : हरि० बेहमात्ता के आँक्खे लेख ना टळैं; पंज० विदि दा लिखया नई मिटदा।

बिधि का लिखा को मेटनहारा---विधि के विधान को कोई नहीं मिटा सकता। तुलनीय : अव० दैव का लिखा केउ नाही मेंट सकत; तेलु० नोखट ब्रासिन ब्रालु चेडिये देवरु।

बिधि का लिखा न होई आन आधे चित्री फूटे धान---यह ब्रह्म-लेख है कि धान आधे चित्रा नक्षत्र में अवश्य फूटेगा।

बिधि गति बड़ि विपरीत बिचित्रा---बिधाता की गति बड़ी विपरीत और विचित्र है। ईश्वर की गति को कोई जानता नहीं।

बिधिना खूब मिलायन जोड़ी, एक अंधा एक कोढ़ी---विधाता ने बड़ी अच्छी जोड़ी मिलाई है। एक अंधा है और दूसरा कोढ़ी। दो बुरे या असहाय व्यक्तियों के मेल पर कहते हैं।

बिधि प्रपंच गुण अवगुण साना---संसार में गुण-अवगुण दोनों ही पाये जाते हैं।

बिन अवसर का बाजा---कुसमय का काम करने पर कहते हैं।

बिन आई कोई नहीं मरता---(क) बिना मृत्यु आए या बिना आयु पूरी हुए किसी के जीवन का अन्त नहीं होता। (ख) समय पर ही सब काम होते हैं। तुलनीय : अव० बिना आई केउ नाहीं मरत; मरा० न्यायाल्या वाँचून कोणी मरत नाहीं; पंज० बेमौत कोई नई मरदा।

बिन उद्यम नहीं पाइये, कर्म लिख्यो हू जौन---जो कुछ कर्म में लिखा है वह भी बिना उद्यम के नहीं मिलता। अर्थात् उद्यम या उद्योग बिना कुछ भी नहीं मिल सकता।

बिन कुटनी छिनाला नहीं---बिना कुटनी के स्त्रियाँ छिनाल नहीं बनतीं। अर्थात् (क) रोजगार में बिना दलाल के लाभ संभव नहीं। (ख) बुरा काम किसी बुरे की सहायता के बिना नहीं होता। तुलनीय : अव० बिना कुटनी कै छिनारा नाहीं होत।

बिन कुत्तों के गाँव में बिल्ली अलबेली घूमे---जिस गाँव में कुत्ते नहीं होते उस गाँव में बिल्लियाँ मस्ती से घूमती हैं। (क) जिसका भय होता है उसके न होने पर उसके अधीनस्थ स्वतंत्र हो जाते हैं। (ख) मालिक के न होने पर नौकर खूब मौज उड़ाते हैं। (ग) जिस घर में मर्द नहीं होते उस घर की स्त्रियाँ स्वतंत्र रहती हैं और बिगड़ जाती हैं।

बिन गरजे बोले नहीं, गिरबर हू को मोर---बिना बादलों की गरज सुने पर्वत पर रहने वाला मोर भी नहीं बोलता। अर्थात् स्वार्थवश ही दूसरों का निहोरा किया जाता है।

बिन गुरु घाट, बिन लुगाई खाट - गुरु के बिना मिला हुआ घाट अर्थात् ठिकाना, या कार्य तथा बिना पत्नी के चारपाई का कोई विशेष लाभ नहीं होता।

बिन घरनी का घर, जैसे नीम का तर---बिना स्त्री के घर में रहना, नीम के पेड़ के नीचे रहने के बराबर है। अर्थात् बिना स्त्री के घर अच्छा नहीं लगता।

बिन घरनी घर पावत है---बिना स्त्री के घर शोभा नहीं देता।

बिन घरनी घर भूत का डेरा---बिना स्त्री के घर भूतों का निवास लगता है। अर्थात् बिना पत्नी का घर रहने योग्य नहीं होता। तुलनीय : अव० बिन धरनी का भूत का डेरा।

बिन चूची बारह वर्ष तक लड़के को रखता है---बिना दूध पिलाए बारह वर्ष तक लड़के को रखता है। झूठी प्रतिज्ञा करने वाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : गढ़० बिना दूदी छँ मैना पालद।

बिन जाने कौन माने---बिना जाने कोई नहीं मानता। (क) बिना जाने किसी बात को कोई नहीं मानता (ख) बिना पहचान के कोई आदर नहीं करता।

बिन जुलाहे ईद---जुलाहे के बग़ैर ईद नहीं हो सकती, क्योंकि वही नमाज़ पढ़ने के लिए दरी बनाता है। अर्थात् किसी कार्य को वही कर सकता है जिसे उसकी जानकारी होती है।

बिन तापे खोटोखरो गहनो लहै न कोय---बिना तपाए

अच्छे-बुरे किसी भी गहने को कोई नहीं लेता। अर्थात् बिना परीक्षा किए किसी चीज़ का ज्ञान नहीं होता और तब तक उसे कदापि न लेना चाहिए।

बिन दबाए तिलों से तेल नहीं निकलता—बिना पेरे (दबाए) तिलों से तेल नहीं निकलता। अर्थात् बिना दंड या भय के कोई काम नहीं होता। तुलनीय : अव० बिना दाबे तिल से तेल नाहीं निकरत; पंज० तिलां नूं पेले बगैर तेल नईं निकलदा।

बिन देखा चोर भाई बराबर—जिस चोर को चोरी करते नहीं देखा वह भाई के समान होना है। अर्थात् किसी को अपराध करने हुए देखे या पकड़े बिना उसे अपराधी नहीं कहा जा सकता। तुलनीय : छत्तीस० बिन देखे चोर भाई बरोबर।

बिन देखा चोर गाह बराबर—ऊपर देखिए।

बिन पंखन ही चहत उड़ान—बिना पंखों के ही उड़ना चाहते हैं। (क) असंभव बात पर कहते हैं। (ख) जो बिना साधन के ही कार्य करना चाहता है उसके प्रति भी व्यंग्य से कहते हैं।

बिन पइसा के परखें मोल, तिनको नाम संख ढपोल—(क) पास में पैसा रहे बिना जो किसी वस्तु का दाम पूछता है वह मूर्ख कहलाता है। (ख) निरुद्देश्य बात करना ठीक नहीं होता।

बिन पति, बहुपति, बलपति पतिनी पति जहं होय, नरपुर को कहु को कहै, सुरपुर बसे न कोय -जहाँ पर उक्त चार अवस्थायें पाई जाती हैं वहाँ का प्रबन्ध ठीक नही रहता। (1. बिना मालिक का देश, 2. ऐसा देश जिसके कई स्वामी हों, 3. ऐसा देश जिसका मालिक लड़का हो, 4. ऐसा देश जिसकी प्रबंधक स्त्री हो)।

बिन परिचय परतीत नहीं -परिचय बिना प्रतीति या विश्वास भी नहीं होता।

बिन पीड़ा के रोए कौन ?—बिना कष्ट के कौन रोता है ? अर्थात् कष्ट के पड़ने पर ही सब रोते हैं। जब किसी व्यक्ति के रोने-पीटने पर विश्वास नही किया जाता तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : गढ़० बिना छारै छ्वै, अर बिना पिड़ै र्वै; पंज० पीड़ बगैर रोवे कौण।

बिन पूछा मुहुरत भला, क्या तेरस क्या तीज— तेरस और तीज दोनों ही बहुत अच्छे मूहूर्त हैं, इसमें किसी से पूछने की कोई आवश्यकता नही है। जिस कार्य की अच्छाई को जग जानता हो उसे किसी से पूछने-जाँचने की क्या आवश्यकता है ? अर्थात् कुछ भी नहीं। तुलनीय : राज० विण पूछ्यो मूरत भलो, क्या तेरस क्या तीज।

बिन पूरनता गौरव नहीं— अपूर्णता में गौरव नहीं होता। अर्थात् किसी कार्य को अधूरा नहीं छोड़ना चाहिए उसे पूरा करने में ही गौरव है।

बिन पेंदी का लोटा—अव्यवस्थित या अस्थायी चित्त वाले व्यक्ति के प्रति कहा जाता है। तुलनीय : अव० बिन पेंदी के लोटा; ब्रज० बिना पेंदी कौ लोटा।

बिन पैसा कौड़ी के तेली साहू, टूटी हाँड़ी कांदू साहू—बिना पैसे के तेली साहू कहलाता है और फूटी हांडी पर भड़भूंजा भी साहू कहलाता है। तेल तेली की, और हाँड़ी का टुकड़ा भड़भूंजे की पूंजी है।

बिन पैसा साहूकार कैसा—बिना पैसे के कोई साहूकार नहीं कहलाता। अर्थात् पैसे से ही लोग साहूकार या बड़े कहलाते हैं। तुलनीय : अव० बिना पइसा साहूकार; पंज० बगैर पैहे दा लाला।

बिन पैसे का घूमे बिचारा— बिना पैसे के घूमने वाले को लोग बेचारा (निर्धन) कहते हैं। अर्थात् बिना पैसे के व्यक्ति की इज्जत नहीं होती।

बिन पैसे का तमाशा—मुफ्त में आनन्द मिलने पर कहते हैं।

बिन बहू प्रीत नहीं—बिना बहू के प्रेम नही रहता। श्वसुर अपने जमाई को केवल अपनी लड़की के जीवित रहने तक ही प्यार करता है।

बिन बुलाई अहमक ले दौड़ी सहनक—मूर्खा स्त्री बिना बुलाए ही थाल लेकर दौड़ती है। जो बिना बुलाए कहीं जाये या बिना बुलाए दूसरे के काम में हाथ लगाये उसके प्रति कहते हैं। (सहनक = भोजन करने का थाल)।

बिन बुलाई डोमनी, लड़के वाले समेत - बिना बुलाए डोमनी बच्चों सहित आ पहुँची। जब कोई कहीं बिना बुलाए जाय और अपने साथ बाल-बच्चों को भी ले जाय तो उसकी मूर्खता पर कहा जाता है। 'मुँह लगाई डोमनी कुनबे समेत आई' भी कहा जाता है।

बिन बैलन खेती करै, बिन भैयन के रार; बिन मेहरारू घर करै, चौदह साख लबार —जो मनुष्य यह कहता है कि मैं बिना बैल खेती करता हूँ, बिना भाइयों की सहायता के लड़ाई-झगड़ा करता हूँ और बिना स्त्री के गृहस्थी चलाता हूँ वह बहुत बड़ा झूठ बोलने वाला है।

बिन बोले गुण जान न जाय—जब तक मनुष्य बोलता नहीं है तब तक उसके गुण-दोष का पता नहीं चलता है। आशय यह है कि मनुष्य की बातचीत से ही यह मालूम हो

जाता है कि अच्छा है या बुरा। तुलनीय : अव० भले-बुरे सब एक-से ज्यों लौं बोलत नाहिं; फ़ा० ता मर्द सुख़न नगुफ़्ता बाशद, ऐब-ओ-हुनरश न हुफ़्ता बाशद।

बिन भय होय न प्रीत—बिना डर के प्रेम नहीं होता। तुलनीय : बिन भय के परीत नाहीं; गढ़० भय बिना प्रीत कखछै।

बिन मधु मधुकर केहिये, गड़े न गुड़हर फूल—बिना सुगंधि के गुड़हल का फूल भौंरे को अच्छा नहीं लगता या उसके हृदय को नही बेधता। अर्थात् (क) बिना गुण के कोई भी व्यक्ति सम्मानित नहीं होता। (ख) अधिक सुखकर चीज़ की प्राप्ति के लिए दुःख भी सहा जाता है।

बिन माँगे मिले सो अमृत—जो वस्तु बिना माँगे ही स्वेच्छा से कोई दे वह अमृत के समान है। बिना माँगे मिली हुई वस्तु सबसे अच्छी होती है। तुलनीय : राज० हाथ सूं दियो दूध बराबर।

बिन माँगे मिले सो दूध, और माँगे मिले सो पानी—जो चीज़ बिना माँगे ही मिल जाती है वह दूध के समान होती है और जो चीज़ माँगने पर मिलती है वह पानी के समान होती है। जो चीज़ बिना मागे मिल जाय वह सबसे अच्छी होती है।

बिन माँगे मोती मिले, माँगे मिले न भीख—बिना माँगे मोती जैसी मूल्यवान वस्तु मिल जाती है लेकिन माँगने पर भिक्षा भी नही मिलती जो बहुत ही निकृष्ट चीज़ है। जो भाग्य में होता है वह अपने आप मिल जाता है, वैसे तो माँगने से भीख भी नही मिलती। तुलनीय : हरि०, अव० बिन माँगे मोती मिलै, माँगे मिले न भीख; राज० अण माग्या मोती मिलै, माँगी मिलै न भीख; मरा० नमागतां मिळे मोती, मागतां भीखहि न मिळल।

बिन मारे की तौबा करना—बिना मारे ही रोना या हाय-हाय करना। विपत्ति या परेशानी आने से पूर्व ही घबड़ाने या सोच करने पर कहते हैं। तुलनीय : अव० बिना मारे तोबा।

बिन मारे बैरी मरे, ठाढ़े ईख बिकाय; बिन ब्याही कन्या मरे, यह सुख सबको नाय—बिना मारे दुश्मन मर जाय, खेतों मे से गन्ना अधिक बिक जाय और विवाह से पूर्व लड़की मर जाय तो इन तीनों में काफी फ़ायदा होता है। इस तरह का लाभ या सुख सबको नहीं मिलता।

बिन रुके बैद की घोड़ी न चले—बिना रुके वैद्य की घोड़ी नहीं जाती। वैद्य की घोड़ी रोगी के दरवाज़े पर ज़रूर रुक जाती है। रोज़ की आदत नही छूटती।

बिन रोये तो माँ भी दूध नहीं पिलाती—बिना रोए माँ बच्चे को दूध नहीं पिलाती। अर्थात् बिना माँगे अपने से कोई भी कुछ नही देता। तुलनीय : हरि० मा बी रोये बिना चूच्ची नहीं देती; पंज० रोइए नां ते माँ वी दुद नईं देंदी।

बिन विद्या नर नार जैसे गधा कुम्हार—बिना विद्या के पुरुष या स्त्री कुम्हार का गदहा है। अर्थात् अशिक्षित का कोई महत्त्व नहीं होता।

बिन सुर गाय औ बिन पिय रुसाय, सो मूरख कहाय—बिना संगीत के ज्ञान के गाना और बिना प्रिय के रूठना मूर्खता के लक्षण हैं। संगीत को बिना पूर्ण ज्ञान के प्रदर्शित नहीं करना चाहिए तथा जिससे किसी तरह का संबंध न हो उससे रूठना नहीं चाहिए। तुलनीय : गढ़० बिना गली गाणो, अर बिना प्रीति, रुमाणो।

बिना अक़्ल ऊँट उघारे—बुद्धि के अभाव में ऊँट नंगे पाँव घूमते हैं। जब कोई अपनी मूर्खतावश कष्ट सहना है तब उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : हरि० बिना अक्कल ते, ऊंट उभाणे हाड्डें।

बिना अपने मरे स्वर्ग नहीं दिखता—दे० 'बिना मरे ना स्वर्ग दिखात।'

बिना अक़्ल के नक़ल नहीं होती—असल को देखकर ही नक़ल संभव है। तुलनीय : अव० बिना असिल के नकली नाहीं होत।

बिना आँख का आदमी है—अंधा आदमी है। जिस व्यक्ति को सामने पड़ी हुई चीजें भी दिखाई नही देतीं और वह दूसरों से पूछता फिरता है, उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० बगैर आखां दा बंदा है।

बिना आग के धुआँ नहीं—बिना आग के धुआँ नहीं होता। अर्थात् बिना कारण के कोई कार्य नहीं होता। तुलनीय : ब्रज० बिना आगि धूआं नायें होय।

बिना आदत का चंदन भी चर्राता है—बिना आदत के चंदन लगाने से वह भी कष्ट देता है। अर्थात् बिना आदत कुछ भी अच्छा नहीं लगता। तुलनीय : भोज० बेबान क चननों चर्राला।

बिना इष्ट ये भ्रष्ट हैं पण्डित, कवि अरु बैद—(क) बिना पैसे के ये तीनों काम नही आते। (ख) बिना अपने विषय के पूर्ण ज्ञान के ये तीनों सफल नहीं होते।

बिना कड़वी दवाई खाए रोग को आराम नहीं होता—बिना कड़वी दवा खाए रोग दूर नही होता। अर्थात् बिना तकलीफ़ के कारण आराम नहीं मिलता। तुलनीय : अव० बिन करुई दवाई खाए रोग आराम नहीं होत; कड़वी

भेषज बिन पिये मिटे न तन की ताप—वृन्द।

बिन कान देखे कौवे के पीछे दौड़ता है—मूर्खतापूर्ण बातें या काम करने वाले के प्रति कहते है।

बिना काम के बैठना बिना दांत के हंसना—यह लोकोक्ति गढ़वाली भाषा की है। जिस प्रकार बिना दांत के हँसना शोभा नहीं देता, उसी प्रकार बिना काम के बैठना भी शोभा नहीं देता।

बिना कुचन की कामिनी, बिना मूंछ का ज्वान; ये तीनों फीके लगें, बिना सुपारी पान—बिना कुच की स्त्री बिना मूंछ का जवान, तथा बिना सुपारी का पान ये तीनों ही फीके लगते है। (कुच = स्तन)।

बिना खुशी गाना, बिना प्रीति रुसाना—जिस प्रकार बिना खुशी गीत गाना व्यर्थ है उसी प्रकार जिस पर प्रीति न हो उस पर रुष्ट होना भी व्यर्थ है।

बिना गुण के कोई नहीं पूछता—जिस व्यक्ति में कोई गुण नहीं होता उसे कोई नही पूछता। तुलनीय : माल० चमत्कार वनां नमस्कार नी; ब्रज० बिना गुने कोई नायें पूछै।

बिना गोता खाए तैरना नहीं आता—बिना डूबे तैरना नहीं आता। अर्थात् (क) बिना कष्ट के आराम नहीं मिलता। (ख) बिना कुछ दिए आदमी कोई गुण नही सीखता। तुलनीय : अव० बिना बूड़े तैरे नाही आवत; पंज० डुबे बगैर तैरना नईं आंदा।

बिना घरनी घर कैसा—बिना गृहणी के घर अच्छा नही लगता। तुलनीय : हरि० बिना घरणी घर किसा? बिना बहू घर कैसो।

बिना चिनगारी के आग नहीं लगती—दे० 'बिना आग के धुआं नहीं।'

बिना चून रोटी करें—आटे के बिना ही रोटी पकाता है। (क) धूर्त व्यक्ति के प्रति कहते हैं जो दूसरों के धन पर मौज उड़ाते हैं। (ख) जो व्यक्ति बिना किसी साधन के ही कार्य आरम्भ कर दे उसके प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : राज० बिना आटै रोटी करै।

बिना जाने कौन माने—बिना परिचय के कोई विश्वास नही करता। तुलनीय : अव० बिना जाने केउ नाहीं मानत।

बिना झूठ कबीर का कम्बल भी नहीं बिका—किसी वस्तु की बिक्री के लिए झूठ बोलना अनिवार्य है। तुलनीय : भोज० कबीरदास क कमरो बिना झूठ बोलले नां बिकाइल।

बिना टेढ़ी अँगुली घी नहीं निकलता—आशय यह है कि बिना दंड या दबाव के कोई काम नहीं होता। ऐसे व्यक्ति के प्रति कहते हैं जो समझाने-बुझाने से काम नहीं करता और डाँटने-फटकारने पर करता है।

बिना ठगाए ठाकुर नहीं होता—मनुष्य बिना अपना कुछ नुक़सान किए पक्का नहीं होता। तुलनीय : अव० बिना ठगाये हुशियार नाहीं होत।

बिना डुलाए पंखा हवा नहीं देता—अर्थात् (क) बिना परिश्रम के संसार में कुछ भी नही मिलता। (ख) बिना परिश्रम किए कोई छोटी से छोटी चीज भी नहीं देता।

बिना तिलक का पांडिया, बिना पुरुष की नार; बायें भले न दायें, सोन्या, सर्प, सुनार—यात्रा के समय दायें या बाये यदि बिना तिलकवाला पंडित, विधवा स्त्री, सर्प, दर्जी और सुनार मिलें तो अच्छा नहीं होता।

बिना तेल गाड़ी नहीं चलती—तेल दिए बिना गाड़ी नहीं चलती। (क) बिना धन खर्च किए कोई काम नहीं होता। (ख) बिना साधन के कार्य नहीं होता। तुलनीय : मेवा० गाड़ी तो उवांगी ही चाले; पंज० तेल बगैर गड्डी नईं चलदी; ब्रज० बिना तेल गाड़ी नायें चलै।

बिना दबाए तिलों में से तेल नहीं निकलता—दे० 'बिना दबाए तिलों में से…'।

बिना दवा रोग नहीं जाता—स्पष्ट। तुलनीय : अव० बिन दवाई खाये मरज नहीं जात; ब्रज० बिन दबाई रोग नायें जायै।

बिना दही मथे घी नहीं निकलता—बिना परिश्रम किए कुछ प्राप्ति नहीं होती। तुलनीय : प्र० काभार जोग कहानी कथें; निकसे न घिउ बाजू दधि मथें। —जायसी

बिना दूल्हे की बारात—बिना दूल्हे की बारात अच्छी नहीं लगती। किसी कार्य में जब मुख्य व्यक्ति ही अनुपस्थित रहता है तब कहते हैं।

बिना नथ का पाड़ा—बिना नकेल (नथ) का भैंसा (पाड़ा) है। ऐसे व्यक्ति के प्रति कहते हैं जो मनमाना कार्य करता है और उस पर कोई अंकुश, दबाव या रोक नहीं होती।

बिना नाथ का बैल—जिस बैल के नथ नहीं होती वह किसी से डरता नहीं है और न ही किसी काम को करता है। उच्छृंखल व्यक्तियों के प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० बिना नाथ का बैल; पंज० वगैर नथ्थ दा टग्गा।

बिना नमक का कौन खाय?—बिना नमक के भोजन को कोई ग्रहण नहीं करता। अर्थात् बिना लाभ के कार्य को कोई नहीं करता। तुलनीय : राज० अलूणी सिला कुण चाटे।

बिना नायक की फौज—बिना सेनापति के फ़ौज कुछ नहीं कर सकती। आशय यह है कि बिना अगुआ या संचालक के कोई काम नहीं हो सकता।

बिना पंख के उड़ना चाहते हो—जब कोई बिना साधन के ही कार्य करना चाहता है तब उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

बिना पानी मोजे उतारने वाला—बिना पानी के ही मौजे उतारते हैं। अकारण लड़ने वाले के प्रति कहते हैं।

बिना पेंदी का लोटा—दे० 'बिन पेंदी का लोटा।'

बिना वसीले चाकरी बिना बुद्ध की देह, बिना गुरु का बालका सिर में डाले खेह—बिना सहारे की नौकरी, मूर्ख आदमी तथा बिन गुरु का बालक ये व्यर्थ हैं।

बिना बिचारे जो करे, सो पाछे पछताय—जो बिना सोचे-समझे किसी कार्य को करता है वह अन्त में पछताता है। तुलनीय : राज० बिना विचार्यां जो करे सो पाछे पछताय; गढ़० हाली अपणी बोल पराया।

बिना बुझे सपनेहुँ नहिं, पावस सीतल होय—अग्नि जब तक बुझ नहीं जाती तब तक उसमें शीतलता नहीं आती। अर्थात् तेजस्वी व्यक्ति मृत्यु पर्यन्त अपने तेज को नही छोड़ते।

बिना बुलाए आए, बुरे-बुरे गीत गाए—बिना बुलाए ही मेहमान आ गए इसलिए उन्हें बुरे गीत ही सुनाए। आशय यह है कि बिना बुलाए कहीं जाने पर आदर नहीं होता।

बिना बुलाए आदर नहीं चाहे जा देखे, पेट भरे स्वाद नहीं चाहे खा देखे—बिना बुलाए जाने से आदर नहीं होता और भर पेट कोई चीज़ न खाने से उसका स्वाद नहीं मिलता।

बिना भूमि दूसरा गाँव—दूसरे गाँव में जायें और भूमि भी न मिले तो वहाँ जाने से क्या लाभ ? मनुष्य उसी स्थान पर जाना चाहता है जहाँ उसे लाभ-प्राप्ति की आशा हो। जो व्यक्ति किसी को बिना किसी लाभ के अपने घर से दूसरे स्थान पर बसने के लिए प्रेरित करे उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० हर बिना ही गाँवतरो ?

बिना मन का ब्याह कनपटी सिंदूर—बिना इच्छा के विवाह करने पर कनपटी में सिंदूर लग जाता है। आशय यह है कि बिना रुचि से किया गया कार्य अच्छा नहीं होता। तुलनीय : भोज० बे मन क बिआह कनपटी में सेनुर।

बिना मरे ना स्वर्ग दिखात—बिना मरे स्वर्ग नहीं दिखाई देता। अर्थात् (क) बहुत-सी चीज़ों का सुख-दुःख जब तक मनुष्य स्वयं अनुभव न करे ज्ञात नहीं होता। (ख) बिना दुःख के सुख नहीं मिलता। तुलनीय : ब्रज० बिना मरे सरग नायें दीखै।

बिना मरे स्वर्ग नहीं दीखता—ऊपर देखिए।

बिना मार खाए मारना नहीं आता—अर्थात् बिना कुछ नुक़सान सहे ज्ञान नही होता।

बिना माघ घिउ खीचरि खाय, बिन गौने ससुरारी जाय; बिन वर्षा के पहिरे पउवा, घाघ कहैं ई तीनों कउवा—जो मनुष्य बिना माघ माह के घी और खिचड़ी खाता है तथा जो बिना गौना हुए ही ससुराल जाता है तथा बिना वर्षा ऋतु के पौला (काष्ठ का खड़ाऊ) पहनता है घाघ कहते हैं कि ये तीनों कौवे हैं अर्थात् बेवकूफ़ हैं।

बिना मिर्च की घोटे भंग, बिन भाइन के रोपे जंग; ले बेश्या जो नहावे गंग, ना वह भंग न जंग न गंग—मिर्च बिना भाँग खाना, भाई बिना लड़ाई लड़ना, वेश्या के साथ गंगा नहाना—ये सब मूर्खतापूर्ण काम हैं।

बिना मौत आए गोली नहीं लगती—जब मौत आती है तभी आदमी मरता है अन्यथा गोली लगने के बाद भी बच जाता है। आशय यह है कि जब बुरे दिन आते हैं तभी कोई दुर्घटना घटती है। तुलनीय : अव० बिना मउत आए गोलिव नाही लागत।

बिना रोये माँ भी दूध नहीं पिलाती—दे० 'बिन रोये तो माँ भी···'। तुलनीय : भोज० बिना रोअले माइयो दूध नाहीं पियावेले; अव० बिना रोये माई दूध नाहीं पिआवत; गढ़० बिना रोयाँ माँ भी दधी नि देंदी; मरा० रडल्या वाँचून आई सुद्धाँ पाजीत नाही; बुंद० बिना रोयें मतई लरका को दूद नई पियाउत; कन्न० अठ दिट्दरे अम्मनू हालुजिसठव; छत्तीस० बिन रोए दाइ दूध नई पिआवै; मल० करयुन्न कुट्टिक्के पालुळ्ळू; तेलु० तल्लैना एड्वंदे अम्म अहना पालिव्वदु; ब्रज० बिना रोये माऊ दूध नायें प्यावै।

बिनाश काले विपरीत बुद्धि—बुरा समय आने पर बुद्धि भी उलटी हो जाती है।

बिना सहारे बेल नहीं चढ़ती—बिना सहारा पाए लता ऊपर नही चढ़ती। तात्पर्य यह है कि किसी भी व्यक्ति को ऊपर उठने के लिए दूसरे का सहारा आवश्यक होता है। तुलनीय : भोज० बे अलम क बंवर नाँ चढ़े; सं० अनाश्रया न शोभन्ते पण्डिता गणिका लता; ब्रज० बिना सहारे बेल नायें चढ़ै।

बिना सींग पूंछ का बैल—मूर्ख व्यक्ति के प्रति कहते हैं। तुलनीय : अव० बिना सींग का बैल; ब्रज० बिना सींग

पूंछि कौ पसु।

बिना सुगन्ध टेसू के फूल—टेसू का फूल देखने में बहुत सुन्दर लगता है पर उसमें नाम मात्र की भी सुगन्ध नहीं होती। ऐसे व्यक्ति के प्रति कहते हैं जो देखने में सुन्दर हो पर उसमें बुद्धि बिल्कुल न हो।

बिना सेवा मेवा नहीं मिलता— अर्थात् बिना दुख सहे सुख नहीं मिलता। तुलनीय: मल० एल्लुमुरिये पणिताल् पल्लु मुरिये तिन्नाम्; पंज० सेवा वगैर मेवा नईं; अं० No pains no gains.

बिना हाथ का आदमी—बिना हाथ का आदमी है। अकर्मण्य के प्रति कहते हैं।

बिन दुख सुक्ख कबहुं नहिं होय - दुख बिना सुख कभी नहीं होता। तुलनीय: सं० नहि सुखं दुःखंबिना लभ्यते; भोज० दुख बिना सुख ना। बिनु दुख सुख कबहु नहिं होय—विद्यापति।

बिन पंखन हम चहहिं उड़ाना—दे० 'बिन पंखन ही चहत उड़ान।'

बिनु सत्संग बिबेकु न होई—बिना सत्संग के ज्ञान प्राप्त नहीं होता।

बिनु हरि कृपा मिलहिं नहिं सन्ता--बिना भगवान की कृपा के सन्तजन नही मिलते। अर्थात् सज्जन पुरुष से मिलन बड़े भाग्य से होता है।

बिनौले की लूट में बरछी का घाव—बिनौला लूटने में बरछी की मार खानी पड़ी। (क) साधारण अपराध में अधिक दण्ड मिलने पर कहते है। (ख) साधारण लाभ के लिए जब अधिक कष्ट या हानि सहनी पड़े तब भी कहते हैं।

बिपत कसौटी जे कसे सोई साँचे मीत—जो विपत्ति रूपी कसौटी पर सच्चा उतरता है वही सच्चा मित्र है। अर्थात् विपत्ति में काम आने वाला व्यक्ति ही यथार्थ मित्र है।

बिपत के समय भूंजी तालै जाती है—दे० 'बिपत समय भूंजी···'।

बिपत पड़ी जब भेंट मनाई, मुकर गया जब देनी आई—जब विपत्ति पड़ी थी तब तो देवता को भेंट चढ़ाने का संकल्प किया था लेकिन जब भेंट देने का समय आया तब बदल गया। अर्थात् सुख में मनुष्य दुःख की बाते भूल जाता है।

बिपत संघाती तीन जन, जोरू, बेटा, आप—विपत्ति में पत्नी, बेटा और अपना शरीर ही साथी होता है अर्थात् आफ़त में पत्नी, पुत्र और अपना शरीर ही काम आता है। तुलनीय: ब्रज० बिपति सँगाती तीनि हैं, जोरू बेटा आप।

बिपत समय भूंजी तालै जाती है- विपत्ति के समय भूंजी हुई मछली ताल में चली जाती है। अर्थात् विपत्ति में असम्भव दुख भी भोगने पड़ते हैं। कहा जाता है कि राजा नल के हाथ से भरी हुई और भूंजी हुई मछली कूदकर पानी में चली गई। यह कहावत उसी पर आधारित है। तुलनीय: बिपत राजा नल पै परी, भूंजी मछली जल मा परी।

बिपति भये धन ना रहे, होय जो लाख करोर—चाहे कितना ही अधिक धन क्यों न हो विपत्ति के आने पर सब नष्ट हो जाता है।

बिपद बराबर सुख नहीं जो थोड़े दिन होय- विपत्ति में मनुष्य को अनुभव हो जाता है, अतः यह थोड़े दिन के लिए हो तो सुखकर है।

बिप्र टहलुआ चीक धन औ बेटिन की बाढ़, येतहु पर धन ना घटे करो बड़े से रार—ब्राह्मण, नौकर कमाई की जीविका और पुत्र-पुत्रियों की अधिकता यदि इन तीनों से भी धन कम हो तो अपने से बड़े से झगड़ा कर लो। अर्थात् अपने से बड़ों से झगड़ा करने में आदमी बर्बाद हो जाता है।

बिप्र द्रोह पातक सो जरई—जो ब्राह्मण से विरोध करता है वह आग में जल जाता है और नष्ट हो जाता है। यानी ब्राह्मण पूज्य होते हैं उनसे लड़ाई-झगड़ा नही करना चाहिए।

बिभूषणं मौनं अपंडितानाम्--मूर्खों का मौन ही आभूषण है। अर्थात् चुप रहने में ही मूर्ख की भलाई है। तुलनीय: अं० A fool is betrayed by a spoken word.

बिरछा चढ़े किरकाँट बिराजे, स्याह सफेद लाल रंग साजे; बिजनस पवन सूरिया बाजे, घड़ी पलक महिं मेंह गाजे—यदि गिरगिट पेड़ पर बैठकर काला, सफेद या लाल रंग धारण करे और वायु उत्तर-पश्चिम से चले तो घड़ी दो घड़ी में वर्षा होगी।

बिरले कान होयें भलमानुस—काने व्यक्तियों में कोई-कोई ही अच्छे स्वभाव के होते हैं। अर्थात् काने बड़े दुष्ट होते हैं। तुलनीय: सं० काण: साधु: क्वचित्क्वचित्।

बिरही बेचारी क्या करे, भीतर रहे तो घुट-घुट मरे बाहर रहे तो सुन-सुन मरे—विरहिणी घर के भीतर रहती है तो घुट-घुटकर मरती है और बाहर रहती है तो लोगों की बातें सुन-सुनकर परेशान होती है। आशय यह है कि विरहिणी को हर जगह कष्ट ही होता है। तुलनीय: कनौ० बिरही बिचारी का करै, भीतर रहे तौ घुटि-घुटि मरै

बाहिर रहै तो सुनि-सुनि मरै।

बिरादर-ऐ-हक़ीक़ी, दुश्मन-ए-माबरजाव है—सगा भाई ही जानी दुश्मन होता है। अर्थात् यदि सगे भाइयों में लड़ाई-झगडा हो जाए तो वही एक-दूसरे के जानी दुश्मन बन जाते हैं।

बिरादरी और जहाज बिगड़ें तो सँभले मुश्किल—बिरादरी यदि किसी बात पर बिगड़ जाय तो उसे मनाना बहुत कठिन होता है, इसी प्रकार सागर में यदि जहाज़ बिगड़ जाय तो उसे ठीक करना भी बहुत कठिन होता है। अर्थात् बिरादरीवालों में सदा मिल-जुल कर रहना चाहिए। तुलनीय : भीली —जात ने जाज जांणे जो करे।

बिरादरी का मुखिया, दुनिया से दुखिया—बिरादरी के मुखिया को बहुत झंझट होते हैं। जब कोई मुखिया बिरादरी के किसी झगड़े को सुलझा नहीं पाता तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : गढ़० मौरा की सर्दारी गधा की असवारी।

बिरादरी को न खिलाया चार काँदी ही जिमा दिए—जातिवालों को न खिलाकर मुर्दा ढोने वालो को ही खिला दिया। अपनी बिरादरी के लोग मुर्दा ढोने वालों (काँदी) से अच्छे नहीं।

बिराने घर में तात का हठ—दूसरे के घर में गर्म भोजन के लिए हठ करते हैं। अनुचित कार्य या माँग करने वाले के प्रति कहते हैं।

बिल खोद चूहा मरे, साँप मौज उड़ाएँ—कठिन परिश्रम से चूहा जो बिल बनाता है, उसे साँप आकर हथिया लेता है। जब कोई व्यक्ति कठिन परिश्रम करके कोई काम करे और फल कोई और लेले तो उनके प्रति इस प्रकार कहते हैं। तुलनीय : माल० खोदी मरे ऊंदरो, मौज मारे भाग।

बिलग होइ रस जाइ, कपट खटाई परत ही—जिस प्रकार रस में खटाई के पड़ने से रस फट जाता है उसी प्रकार कपट के होने से प्रेम नष्ट हो जाता है।

बिल में हाथ तुम डालो मंत्र हम पढ़ेंगे—सर्प के बिल में तुम हाथ डालो मैं मन्त्र पढ़ता हूँ। दूसरों को विपत्ति में फँसाकर स्वयं दूर रहने वाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : बुंद० बिले में हात तुम डारौ मंतुर हम पड़त; ब्रज० बामी में हाथ तू डारि मंत्र मैं पढ़ूं।

बिलवर्ति गोधा न्याय—जिस प्रकार बिल में स्थित गोह-सा विभाग आदि नहीं हो सकता उसी प्रकार जो वस्तु अज्ञात है उसके सम्बन्ध में भला-बुरा कुछ नहीं कहा जा सकता।

बिलायत में क्या गधे नहीं होते?—अर्थात् भले-बुरे सभी जगह होते हैं। जहाँ दस विद्वान रहेंगे वहाँ दो-चार मूर्ख भी रहेंगे। तुलनीय : ब्रज० बिलाति में कहा गधा नायँ होयँ।

बिलारिन के का भइंसि लगति है—बिल्लियों के घर क्या भैंस लगती है? मुफ़्तखोरों के प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

बिलारी के भाग से सिकहर टूटा—बिल्ली के भाग्य से छींका टूट गया। अनायास लाभ प्राप्त करने वाले के प्रति कहते हैं।

बिलारी क्या जाने मोल का दही—मोल लिए गए दही की क़ीमत को बिल्ली क्या जान सकती है? जहाँ कोई किसी चीज़ की क़दर न जानकर उसे बर्बाद करता है वहाँ यह लोकोक्ति कही जाती है।

बिलारी मारा तो सब देखें, बिलारी ने दूध गिराया तो कोई नहीं—भीतरी बातों को जाने बग़ैर केवल बाहरी बातों को देख या सुनकर यदि किसी को दोषी ठहराया जाय तो यह कहावत कही जाती है। इसमें कथा यह है कि किसी बिल्ली ने दूध गिरा दिया, इस पर दूध वाला उसे मारने दौड़ा। मारते समय सबने देखा और मारने के लिए सब भला-बुरा कहने लगे, पर दूध गिराते किसी ने नहीं देखा था अतः मारने के कारण को कोई नही जानता और इसीलिए उसका कोई ख़याल नहीं करता।

बिल्ली अपना एक दाँव फिर भी छिपाकर रखती है—आशय यह है कि कोई अपने सभी गुण किसी को नहीं बतलाता। तुलनीय : ब्रज० बिल्ली अपनों एक दाब फिरिऊ छिपाकै राखै।

बिल्ली ऊँट ले गई तो 'हाँ जी हाँ जी' करना—दे० 'ऊँट बिलाई ले गई···'। तुलनीय : ब्रज० बिल्ली ऊँटै लै गई तो हाँ जी हाँ जी कहनों।

बिल्ली और दूध की रखवाली—दे० 'चोट्टी कुतिया जलेबियों की···'।

बिल्ली का खेल चूहों की मौत—चूहों की जान चली जाती है और बिल्ली उनसे खेल खेलती है। अर्थात् (क) संसार में एक के दुःख से दूसरे को आनन्द मिलता है। (ख) छोटों के दुःख पर ही बड़ों का सुख या आनन्द आधारित है। तुलनीय : अव० बिलैयन कै खेल, मुसवन कै मउत; पंज० बिल्ली दा खेड़ चुहयाँ दी मौत।

बिल्ली का गूह न लीपने का न पोतने का—बुरी चीज़ या निकम्मे आदमी किसी काम के नहीं होते। तुलनीय : अव० बिलाई कै गुंह न लीपै लायेक न पोते लायक; राज० मिन्नीरो गू चोके-पोते में ही काम को आवैनी; पंज० बिल्ली

दा गूं ना लिपणं दा ना पयण दा।

बिल्ली का बास चूहों का नाश—जहाँ बिल्ली का वास होता है वहाँ पर चूहे नहीं रहने पाते। जहाँ बड़े या शक्तिशाली लोग रहते हैं वहाँ छोटों या निर्बलों की बड़ी परेशानी होती है।

बिल्ली किसकी मौसी, साँप किसका मोत—बिल्ली किसको मौसी होती है और सर्प किसका मित्र। आशय यह है कि दुष्ट व्यक्ति किसी के नहीं होते। अवसर मिलने पर वे सबके साथ अपने हित की बात या कोई कार्य कर बैठते हैं।

बिल्ली की नजर छींके पर—बिल्ली की निगाह छीके पर ही रहती है। अर्थात् स्वार्थी की दृष्टि सर्वदा अपने स्वार्थ पर रहती है। वह किसी भी प्रकार अपना स्वार्थ साधने के फेर में रहता है। तुलनीय : गढ़० बिराला की नजर छिका पर; पंज० बिल्ली दी आख छिक्के उत्ते।

बिल्ली के क्या भैंस बँधी है?—दे० 'बिलारिन के का···'। तुलनीय : अव० बिलारिन के का भइसीं लगाति हैं।

बिल्ली के ख्वाब में चूहे कूदें—बिल्ली को स्वप्न मे भी चूहे ही कूदते हुए दिखाई देते हैं। (क) जिसे जिस वस्तु की आवश्यकता होती है उसे हर समय उसी की चिन्ता रहती है। (ख) बुरे को हर समय बुराई ही सूझती है। तुलनीय : हरि० पश्पा नै मपणे में भी गुण्डे दीखें; ब्रज० बिल्ली कूं सुपने में ई चूहा दीखे; पंज० नंगी नूं सुखने बिच वी लुच्चियाँ लबदियाँ हन।

बिल्ली के ख्वाब में छीछड़े—ऊपर देखिए।

बिल्ली के गले में मोहनमाला—(क) मूर्ख को उपदेश देने पर कहा जाता है। (ख) किसी अयोग्य के या मूर्ख व्यक्ति के पास जब बहुत बड़ी चीज़ आ जाय तब भी कहते हैं।

बिल्ली के तकिए के पास दूध नहीं जमता—दे० 'बिल्ली और दूध ···'।

बिल्ली के दाँत बिल्ली को नहीं लगते—एक बुरा दूसरे बुरे का कुछ नहीं बिगाड़ पाता।

बिल्ली के भाग से छींका टूटा—बिल्ली के भाग्य से छींका (सिकहर) टूटकर गिर पड़ा। जब संयोगवश कोई ऐसा काम हो जाय जो किसी के लिए बहुत लाभकर सिद्ध हो तो कहते हैं। तुलनीय : भोज० बिलार के भागे सिकहर टूटल; अव० सिकहर टूट बिलाई के भाग; राज० बिल्ली के भाग को छींको टूटगो; मिनकीरै भागरा छींको टूट्यो; बंग० बिडालेर भाग्ये शिका छिंडिया छे; गढ़० बिराला का भाग न छिका टूटे; ध्यू घड़ी फूटी कवों को राज; मरा० मनीच्या दैवानें शिकें तुटले; ब्रज० बिल्ली के भागि ते छींको टूट्यौ।

बिल्ली के भागों छींका टूटा—ऊपर देखिए।

बिल्ली के मेले की जरूरत हो तो वह छज्जे पर बैठ जाती है—बिल्ली के विष्ठा की आवश्यकता पड़ने पर वह छज्जे पर जाकर बैठ जाती है। नीच व्यक्ति का किसी साधारण-सी वस्तु से काम पड़े तो वह उसी का गर्व दिखाने के लिए टालता रहता है। ऐसे ही अवसरों पर इस लोकोक्ति का प्रयोग किया जाता है। तुलनीय : माल० मिंकी रा मैलती काम पड़े तो छाजा पर जाइ बैठे।

बिल्ली के रोने से कोई गाँव नहीं छोड़ता—आशय यह है कि (क) किसी के शाप देने या कोसने से कोई अपना स्थान नहीं छोड़ता। (ख) दुष्टों की धमकी से कोई अपना काम बन्द नहीं करता। तुलनीय : पंज० बिल्ली दे रोण नाल कोई पिंड नई छडदा।

बिल्ली के रोने से छींका नहीं टूटता—छींका तो जब टूटेगा तो अपने से ही, बिल्ली के रोने-पीटने से नहीं। अर्थात् नीच व्यक्तियों के चाहने या कोसने से किसी की हानि नही होती। तुलनीय : राज० मिन्नयाँरी दुरामीसमूं छींका थोड़ा ही टूटै है; पंज० बिल्ली दे रोण नाल छिक्का नई टुटदा।

बिल्ली के शाप से छींका नहीं टूटता—ऊपर देखिए। तुलनीय : हाड० बल्ली क सराप्याँ छींको न टूट।

बिल्ली के सपने में चूहे कूदें—दे० 'बिल्ली के ख्वाब···'। तुलनीय : माल० मनकी ने हपना में ऊँदराज नजर आवे।

बिल्ली के सिरहाने दूध नहीं जमता—(क) दुष्टों की उपस्थिति में कार्य नहीं होता। (ख) जो जिसका भक्षक है वह उसकी रक्षा नहीं कर सकता। तुलनीय : पंज० बिल्ली दे सिरहाने दुद्द नई जम्मदा।

बिल्ली को खाने से काम, मोल का हो या मुफ्त का—किसी को हानि हो या लाभ इससे हमें क्या? हमारा स्वार्थ सिद्ध होना चाहिए। ऐसा सोचने वाले स्वार्थी व्यक्ति के प्रति इस प्रकार कहते हैं। तुलनीय : गढ़० बिरालो क्या जाणो मोल को दे।

बिल्ली को ख्वाब में भी छिछड़े ही नजर आते हैं—दे० 'बिल्ली के ख्वाब में···'। तुलनीय : माल० बिल्ली को ख्वाब में छीछड़े ही छीछड़े नजर आते हैं; (छीछड़े—गोश्त के बेकार टुकड़े); पंज० बिल्ली नू छीछड़ियाँ दे ख्वाब; फ़ा० तिश्ना दर ख्वाब आब मी बीनद; अर० मन अहब्बा शय्यन

फ़कसरा फ़िक्रहु ।

बिल्ली को घी नहीं पचता—बिल्ली घी को हज़म नहीं कर पाती। नीच व्यक्ति किसी भी बात को छुपाकर नहीं रख पाते और तुरन्त उसका ढिंढोरा पीटने लगते हैं। तुलनीय : राज० मिनकी रै पेट में घी थोड़ो ही खटावै; ब्रज० बिल्ली ऐ घ्यौ नायें पचै; पंज० बिल्ली नूं की नई पचदा।

बिल्ली को देखा तो बाघ भी देख लिखा—जो बिल्ली को देखे वह समझ ले कि मैंने बाघ भी देख लिया। आशय यह है कि परस्पर मिलती-जुलती वस्तुओं में से एक को देखकर दूसरे के विषय में भी अन्दाज़ा कर लिया जाता है या लगाया जा सकता है। तुलनीय : असमी—बिड़ाली चाले बाघ् चाव ना लागे; सं० यथा गौः तथा गवयः; अं० An ass is known by his ears.

बिल्ली को पहले ही दिन मारना चाहिए—अर्थात् रोब जमाना हो तो पहले दिन ही जमाना चाहिए नही तो बात बिगड़ने पर नहीं जमता। (किसी दूल्हा ने अपनी नई आई हुई स्त्री पर रोब दिखाने के लिए पहले ही दिन एक बिल्ली को मार डाला ताकि वह उसके क्रोधी स्वभाव और वीरता का लोहा मानले)। फ़ारसी की लोकोक्ति है—गुरबा कुश्तन रोज़े-अव्वल ।

बिल्ली क्या जाने अछूता दूध—आशय यह है कि मूर्ख को अच्छी-बुरी वस्तु की परख या ज्ञान नहीं होता। तुलनीय : भोज० बिलार का जाने छूअल दूध ।

बिल्ली खायगी नहीं पर फैला तो जायगी ही—यदि बिल्ली खाएगी नहीं तो गिरा ही देगी। अर्थात् दुष्ट लोग अपना लाभ न होने पर भी दूसरों का नुक़सान कर देते हैं। तुलनीय : राज० मिनकी दूध पीवै नहीं तो ढोळ तो देवै ।

बिल्ली खींचे अन्दर और कुत्ता खींचे बाहर—बिल्ली अन्दर की ओर खींच रही है और कुत्ता बाहर की ओर। जहाँ सब व्यक्ति अपने ही स्वार्थ की बातें करते हों वहाँ उन लोगों के प्रति ऐसा कहा जाता है। तुलनीय : गढ़० कुक्कर ताजो भैर, बिरालो ताणो भितर; पंज० बिल्ली खिच्चे अन्दर अते कुत्ता खिच्चे बार।

बिल्ली खींचे पीछे, कुत्ता खींचे आगे—ऊपर देखिए ।

बिल्ली चूहा खुदा के वास्ते नहीं मारती—बिल्ली ईश्वर के लिए चूहों को नहीं मारती, बल्कि अपने लिए मारती है। आशय यह है कि हर एक जीव जो कुछ भी करता है अपने स्वार्थ के लिए ही करता है।

बिल्ली ने कंठी पहनी—जो व्यक्ति आयु भर दुराचार करता रहे और अन्त समय में साधु बन जाय तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० मिन्नी केदार कांकड़ पहर्‌यो।

बिल्ली बच्चा जने बिल्ला को पीर आवे—मादा बिल्ली बच्चे को जन्म दे रही है और नर बिल्ली को पीड़ा हो रही है। जब कष्ट कोई और सहे या कार्य कोई और करे लेकिन दूसरा उसे देखकर व्यर्थ में परेशान हो तो उसके प्रति कहते हैं।

बिल्ली बच्चा जो बिल्ली को पीर-आवे—दे० 'गाय बिया अ बैल···'।

बिल्ली भागन सिकहर टूटा—दे० 'बिल्ली के भाग से···'।

बिल्ली भी आँख मूद कर दूध पीती है—(क) दूध इतनी अच्छी वस्तु है कि उसे जहाँ भी वह मिले और जिस क़ीमत में मिले आँख मूंदकर स्वीकार कर लेना चाहिए, जैसे बिल्ली करती है। (ख) मुफ़्त के माल को सभी लोग आँख मूंद कर हज़म कर लेते हैं। तुलनीय : राज० मिनकी दूध पीवंती आँख्याँ मींचै; पंज० बिल्ली अक्ख मीट के दुद पींदी है ।

बिल्ली भी चिकनी हाँड़ी चाटती है—अर्थात् (क) धनी से सब मित्रता करते हैं। (ख) अच्छी वस्तु को सभी चाहते हैं।

बिल्ली भी दबकर हमला करती है—बिल्ली भी दबाव में आने पर आक्रमण करती है। अर्थात् (क) दबे को ही सब परीशान करते हैं। (ख) विनम्रता से ही किसी को वश में करना चाहिए। (ग) छिपकर गुप्त रूप से ही किसी पर आक्रमण करना चाहिए।

बिल्ली भी लड़ती है तो मुंह पर पंजा धर लेती है—अर्थात् (क) अपनी रक्षा सभी कर लेते हैं। (ख) जब कोई अपने बचाव का उपाय किए बिना ही लड़ाई-झगड़ा कर बैठता है और मार खाकर आता है तब उसे समझाने के लिए भी ऐसा कहते हैं।

बिल्ली मरी सब देखते हैं, दूध गिराया कोई नहीं—दे० 'बिलारी मारा तो सब···'। तुलनीय : गढ़० बिराली मारी सबी देखदान दूध खत्यूं कोई नि देखदो।

बिश्वासघातकी, महापातकी—विश्वासघात करने वाला बहुत बड़ा पापी होता है। अर्थात् विश्वासघात करना बहुत बड़ा अपराध है।

बिश्वासो फलदायकः—दे० 'विश्वासो फलदायकः'।

बिस का कीड़ा बिस में ही मानता है—दे० 'बिष का कीड़ा···'।

बिस की ओषधि क्या ?—ज़हर की कोई दवा नहीं।

बिस की ओषधि बिस—ज़हर की दवा ज़हर ही होता है। अर्थात् दुष्ट दुष्टों से ही शांत रहते हैं। तुलनीय : सं० विषस्य विषमौषधम।

बिस की गाँठ / पुड़िया—बहुत क्रोधी या कुटिल व्यक्ति को कहते हैं। तुलनीय : अव० जहर की गठरी।

बिस तरुवर हूँ रोपि के, कोउ न काटत हाथ—ज़हर का वृक्ष भी लगाकर कोई उसे अपने हाथ से नहीं काटता। अर्थात् बुरी से बुरी चीज़ भी जो अपने हाथ बनाई गई हो, उसे कोई खुद नहीं बिगाड़ता।

बिस देते बिसया दई ऐसे दीनदयाल—जिसका हम बुरा करना चाहें भगवान की कृपा से उसका भी भला हो जाता है। किसी ने किसी स्त्री से किसी को विष (ज़हर) देने को कहा। स्त्री की पुत्री का नाम विषया था। उसने समझा कि विषया को ही देने को कहा है अत: उसने अपनी पुत्री का उससे ब्याह कर दिया। कहाँ तो विष से वह मर जाता और कहाँ विवाह कर पत्नी साथ ले घर गया।

बिस देय बिश्वास न देय—किसी को विश्वास देकर हट जाने की अपेक्षा बिष देना कहीं अच्छा है। विश्वासघात करने पर कहा जाता है। तुलनीय : ब्रज० विस दे विस्वास न दे।

बिस निकर्‌यो अति मथन से रतनाकरहू माँहि—समुद्र का अत्यधिक मंथन करने से उसमें से विष निकला था। अर्थात् (क) अधिक बातों से लड़ाई हो जाती है। (ख) *अधिक रगड़ने से या परेशान करने से शांत व्यक्ति भी* क्रोधित हो जाते हैं।

बिसधर पकड़ जहर को चाट, पर नारी संग चल ना बाट—सर्प को पकड़ कर उसके ज़हर को चाट लेना चाहिए लेकिन पराई स्त्री के साथ राह नहीं चलना चाहिए। अर्थात् पराई स्त्री के साथ रहने से ज़हर खाकर मर जाना अच्छा *है।*

बिस मारे, ज्यावे सुधा, उपजे एकहि ठौर—एक ही स्थान (समुद्र) से उत्पन्न विष प्राणी को मारता है और अमृत प्राणी को जीवित करता है अर्थात् एक ही स्थान से [illegible] से प्राणियों के स्वभाव में बहुत बड़ा अंतर पड़ता है [illegible] बुरा या भला— रहता है वैसा ही करता है।

बिस सोने के बर्तन में रखने से अमृत नहीं होता—*[illegible]शय यह है कि दुष्ट सत्संगति पाकर भी अपनी दुष्टता छोड़ता।*

बिसनी बिलार डबरी में डेरा—बिल्ली खाने के समय बिना बुलाए ही आ बैठती है। बिना बुलाए ही यदि कोई मेहमान बनकर आ जाय तो कहते हैं।

बिसमिल्लाह के गुम्बद में बैठे हैं—अपने शरण-स्थल में सुरक्षित सुख-शांति से रहने पर कहते हैं।

बिसमिल्लाह ही ग़लत—आरंभ ही ग़लत। किसी काम के शुरू ही में भूल होने पर कहते हैं। तुलनीय : अव० बिस्मिल्लै गलत होयगा; राज० श्रीगणेशायनम: में ही डबको; श्री दाता धनकै में ही खोट।

बिस्तर से लगे सो बोझ बने—जो बिस्तर से लग जाते हैं वे बोझ बन जाते हैं। अर्थात् चिररोगी अथवा मरणशैय्या पर पड़ा व्यक्ति भार लगने लगता है।

बिस्वा बिस की गाँठ—बिस्वा ज़हर की गाँठ है। भूमि का छोटा से छोटा भाग भी लड़ाई का बहुत बड़ा कारण बन जाता है। बिस्वा-भूमि का बहुत थोड़ा हिस्सा)।

बी खैला दो जट्टी एक मेला—बीबी खैला और दो जाटनी जहाँ इकट्ठा हो जाती हैं वहाँ मेला लग जाता है। अर्थात् स्त्रियाँ जहाँ भी इकट्ठी होती हैं, शोर मचाती ही हैं।

बीघा बायर होय बाँध जो होय बँधाए।
भरा भुसौला होय बबुर जो होय बुवाए॥
बढ़ई बसे समीप बसूला बाढ़ धराए।
पुरखिन होय सुजान बिया बोउनिहा बनाए॥
बरगद बगौधा होय बरदिया चतुर सुहाए।
बेटवा योए सपूत कहे बिन करे कराए॥

यदि किसान के सभी खेतों का एक चक हो, खेत के चारों ओर बाँध बंधे हों, भुसौला (भूसा का घर) भरा हुआ हो, बबूल के पेड़ हों, बढ़ई क़रीब बसा हो और उसका बसूला तेज़ हो, गृहिणी घरेलू कार्यों में दक्ष हो और बीज को बोने योग्य तैयार करके रखे, बैल बगौधे नस्ल के हों तथा हलवाहा चालाक हो, बेटा लायक़ हो, जो बिना बाप के कहे काम करने और कराने वाला हो तो उसे अच्छा किसान कहा जाता है।

बीच की उँगली बड़ी होती है—स्पष्ट। हर बात में बीच का या मध्यम मार्ग अच्छा होता है।

बीच के चले जायेंगे कास दूल्हा दुल्हन से पहेरा—दे० *'बराती किनारे हो जाएँगे···'।*

बीचु पाई निज बात सँवारी—*मौक़ा पाकर अपनी बात* को सँवारा। मौक़ा पा कर *यदि कोई अपनी बिगड़ती बात सँवारने लगे तो कहते हैं।*

बीछी का मंत्र न जाने साँप के बिल में हाथ डाले—

दे० 'बिच्छू का मंत्र न जाने...'।

बीज बोते ही नहीं उगता—बीज बोने के बाद वह तुरंत ही नहीं उग जाता। अर्थात् प्रत्येक कार्य के पूर्ण होने और फल मिलने में समय लगता है। जो व्यक्ति किसी कार्य में हाथ लगाते ही फल चाहने लगे तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : भीली—तरत नी काकड़ी तरत नी लागे।

बीज बयो सो होय करं क्या उत्तम क्यारी—जैसा बीज बोया जायगा वैसा ही अंकुर उगेगा। क्यारी की उत्तमता कुछ भी नहीं कर सकती। अर्थात् जिसे जैसी शिक्षा दी जाती है वह वैसा ही बनता है। इसमें स्वयं वह कैसा है इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

बीजांकुरन्याय:—बीज और अंकुर का न्याय। बीज अंकुर को उत्पन्न करता है और वही अंकुर बाद में बीज को। इस प्रकार इनमें मे प्रत्येक कारण एवं कार्य है। तात्पर्य है अन्योन्याश्रय संबंध के बिना कार्यसिद्धि नहीं होती।

बीत गई सारी, रही थोड़ी सो भी जीवनहार—अधिक आयु व्यतीत हो चुकी है जो थोड़ी सी बची है वह भी जाने वाली है। वृद्ध व्यक्ति के प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० बीत गयी, थोड़ी रही, सो भी जावणहार।

बीत गई सो बात गई—जो बात बीत गई वह चली गई। व्यर्थ में भूतकाल की बातों का ज़िक्र करने वाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : अं० Let bygones be bygones; *Bury the dead past.*

बीता भर के महतो, झाड़ू जैसे पूंछ—महतो स्वयं तो एक बालिश्त के हैं लेकिन उनकी पूंछ झाड़ू जैसी लंबी है। बेमेल वेश-भूषा या साज-शृंगार करने वाले के प्रति कहते हैं।

बीती ताहि बिसार दे, आगे की सुधि लेई—बीती हुई बातों को भूलकर आगे आने वाली चीजों के विषय में सोचना चाहिए। अर्थात् बीती को भूलकर भविष्य की चिंता करनी उचित है। तुलनीय : अव० पाछे कै सुधि छोड़ कै आगे सुधि लेव; राज० *बीती ताहि बिसार दे, आगै की सुध लेय;* गढ़० जो डाढ्यो, डाढ्यो, बाकी यथ गाड्यो; भीली—ओवानूं ज्यो ते थाई ग्यू एवा हूं धावान; मरा० झाले गेलें तें विसरावें; पुढचे काहीं सुचवाव; मल० कष्ञि काय्यङ्ङलिल् नुषञ्नुम् चित्तभू कुषञ्ञुम् नाषुन्नतु मौढ्यमतें; पंज० गयी नूं छड़ अग्गे दी देख; अं० It is no use crying over spilt milk.

बीते ब्याह कुम्हार का भांड़े लै लै जाय—कुम्हार के घर जब विवाह संपन्न हो जाता है तब वह दूसरों के यहाँ बर्तन पहुँचाता या लेकर जाता है। आशय यह है कि अपनी आवश्यकता पूरी होने के बाद ही लोग दूसरों की सहायता करते हैं। तुलनीय : ब्रज० बीत्यौ ब्याह कुम्हार कौ भांड़े लै लै जाय।

बीते लगन को बाह्मन नहीं बांचता—जो लग्न के मुहूर्त निकल चुके हों उन्हें ब्राह्मण नहीं बाँचता। अर्थात् जो बात बीत चुकी हो उसके संबंध में पूछताछ से कुछ लाभ नहीं होता। तुलनीय : राज० गयी तिथि बामण ही को वांचैणी।

बी तो अपने घर का धुआं भी नहीं निकलने देतीं—बीबीजी अपने घर का धुआं भी बाहर नहीं जाने देतीं। अत्यंत कृपण स्त्री पर कहा जाता है।

बी दौलती, अपने तिहे में आप ही खौलतीं—धनी स्त्री सदा अपने धन के अहंकार में खौलती रहती है। अर्थात् जो अपने धन के घमंड में सदा चूर रहे उसके लिए कहते हैं।

बीन से तो सांप भी मस्त हो जाता है—बीन (एक प्रकार का बाजा जिसकी आवाज़ बहुत मधुर होती है) की आवाज़ को सुनकर सर्प भी मस्त हो जाता है। आशय यह है कि मधुरवाणी द्वारा दुर्जनों को भी वश में किया जा सकता है।

बी पिरागो, काम के बेले सो गई, परसाद के बेले जागी—*बीबी काम करने के समय सो गई और प्रसाद लेने के समय जग गई। काम के समय टल जाने वाले और खाने* के समय आ जाने वाले के प्रति कहा जाता है।

बीबी को बांदी कहा हंस दी ? बांदी को बांदी कहा रो दी—बीबी को नौकरानी (बांदी) कहा तो वह हँसने लगी और नौकरानी को नौकरानी कहा तो वह रोने लगी। अन्धे को यदि अन्धा कहा जाय तो उसे बुरा लगता है। सच्ची बात का सभी बुरा मानते हैं पर झूठी का कोई नहीं।

बीबीजी बीबीजी चावल गल गए, दुर कुतिया मुर्दार वे दिन टल गए—*स्त्रियाँ इस कहावत का प्रयोग ऐसी स्त्री के लिए करती हैं जो संपन्न होने के बाद अपनी विपन्नता का समय भूल जाती है।*

बीबी नेकबख्त दमड़ी की दाल तीन वक़्त—बीबीजी इतनी भली हैं कि एक दमड़ी की दाल में तीन वक़्त काम चला लेती हैं। अर्थात् (क) योग्य या अच्छी स्त्री थोड़े खर्च में ही अपना काम चला लेती है। (ख) कंजूस स्त्री के प्रति भी कहते हैं।

बीबी बकरी, नाव में खाक उड़ाती है— बकरी बीबी तुम नाव में धूल उड़ा रही हो। जो किसी स्वार्थ की सिद्धि के लिए व्यर्थ में ही लड़ाई करने के लिए बहाना ढूंढ़ता है उस पर कहते हैं।

'बीबी बीबी ईद आई' चल मुरदार तुझे टिकिया से काम- —नौकरानी कहती है कि बीबीजी ईद आ गई तो वह कहती हैं कि तुम्हें इससे क्या मतलब? तुम्हें तो रोटियों से ही काम है। यह बीबी और नौकरानी का संवाद है। आशय यह है कि खर्चे वाला काम बताने से कंजूस व्यक्ति चिढ़ जाता है।

'बीबी बीबी ईद आई' 'चल हरामजादी' तुझे क्या'— ऊपर देखिए।

बीबी मक्के न गई, लाड़ली हो आई —बीबी मक्के नहीं गई फिर भी बहुत प्रिय बन गई है। मन जिसे चाहे, वह बुरा होने पर भी अपने को भला लगता है। ऐसी स्थिति पर इस कहावत को कहते हैं।

बीबी बारे बाँदी खाय, घर की बला कहीं न जाय— बीबीजी ने बला को दूर करने के लिए पकवान 'वारा' और उसे नौकरानी को ही खिला दिया। इस प्रकार घर की मुसीबत घर में ही रह गई। जब कोई अपनी परेशानी अपने ही परिवार या संबंधी के ऊपर ठेलकर अपनी जान बचा ले तो उसके प्रति कहते हैं। (बच्चों की नज़र या बीमारी दूर करने के लिए पकवान या आटे की लोई सिर पर से घुमाकर बाहर फेंक देते हैं; इसी को 'वारना' (न्यौछावर करना) कहते हैं।

बीबी से पार न पाए मियाँ से करे झगड़ा—बीबी से नहीं निपट पा रहे तो मियाँ से झगड़ा करते हैं। जब कोई सबल का गुस्सा निर्बल पर उतारे तब कहा जाता है।

बीबी है भरमाली, कान पीतल की बाली—बीबीजी अपनी पीतल की बालियों में ही भूली हुई हैं। तुच्छ व्यक्ति के प्रति कहते हैं जो थोड़े से धन पर इतराते फिरते हैं।

बीमार की रात पहाड़ बराबर—(क) रोगी की तकलीफ़ रात को बढ़ जाती है तथा रात में अकेला रहना पड़ता है अतः स्वाभाविक है कि रात बहुत बड़ी

बीर अधीर न होहिं —वीर कभी उतावले (अधीर) नहीं होते। अर्थात् बहादुर लोग धैर्य को नहीं खोते।

बीर बिहीन मही मैं जानी —मैंने जान लिया कि पृथ्वी वीरों से खाली हो चुकी है। जब कोई योग्य व्यक्ति न मिले तो कहते हैं। (सीताजी के स्वयंवर के समय राजा जनक का कथन)।

बीस की उन्नीस—अर्थात् एक कम हो जाना। बहुत मामूली अंतर पड़ना। जब कोई कठिनाई या कष्ट बहुत मामूली लगे तो कहते हैं। तुलनीय : गढ़० बीस की उन्नीस।

बीस पचीस के अंदर में, जो पूत सपूत हुआ सो हुआ; मात-पिता कुलतारन को, जो गया न गया सो कहीं न गया —सपूत बेटे का सपूत होना 20 और 25 वर्ष की अवस्था के बीच में ही प्रकट हो जाता है। जो गया में अपने माता-पिता को पिंड न देकर सब तीर्थों से हो आता है उसे कोई फल नहीं मिलता।

बीस बार चोर की एक बार साहु की—चोर बार-बार चोरी करे परन्तु किसी-न-किसी दिन वह अवश्य ही पकड़ा जाता है। अर्थात् बुराई छिपती नही, कभी-न-कभी अवश्य प्रकट हो जाती है और बुरे को दंड भुगतना पड़ता है। प्रयोग : कबहुँ तौ हम देखिहैं एक संग राधा-कान्ह।
भेद हमसों कियो राधा निठुर भई निदान्ह ॥
बीस बिरियाँ चोर की तौ कबहुँ मिलिहैं साहु।
'सूर' सब दिन चोर कौ कहुँ होत है निरबाहु ॥
—सूर

बीसी सो खीसी—बीस के ऊपर की औरत वृद्धा हो जाती है। तुलनीय : अव० बीसा काढेस खीशा।

बुआ के पास गहने तो भतीजी को क्या?—बुआ के पास यदि आभूषण हैं तो भतीजी को उनसे क्या लाभ? दूसरे के पास कितना भी धन क्यों न हो उससे हमें क्या लाभ? अपनी ही संपत्ति काम आती है, दूसरे की नहीं। तुलनीय : राज० भूवाजी रै सोनेरा सींट जकैरो भतीजी नै काँई?

बुआ के मूँछें होतीं तो चाचा बन जातीं—जब कोई ऐसे कार्य के लिए प्रयत्न करे जो संभव न हो तब कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० बूआ कैं मौंछ होंती तौ काका बनि जाती।

बुज़दिल का पीर भी नहीं—डरपोक आदमी की सहायता पीर भी नहीं करते। डरपोक की कोई भी सहायता नहीं करता। तुलनीय : राज० चोदूरी सीरी माता ही कोनी; ब्रज० बुजदिले कौ पीर ऊ नायें होय।

बुझने वाला चिराग़/दीया तेज जलता है—जब दीपक को बुझना होता है तब वह भभक कर जलने लगता है। आशय यह है कि जिस राजा या अत्याचारी का नाश निकट होता है वह बहुत अधिक अन्याय-अत्याचार करता है। तुलनीय : असमी —नुमाबर आगते चाकि ज्वलि उठे; सं० निर्वाणोन्मुखः प्रदीप; उ० भड़कता है चराग़े-सुबह जब खामोश होता है; पंज० बुजण तों पैलां दीवा तेज बलदा

है; ब्रज० बुझे ते पहलें दीयौ तेज जरै।

बुड़बक एक गए बड़ गाँव, डेरा पाइन, ऊँचे ठाँव; बहे बयार आड़ नहिं पावें, फाटे गोड़ मलार गावें—किसी मूर्ख ने एक ऊँचे स्थान पर डेरा डाला जिससे तेज़ हवा चली तो उसकी बुरी हालत हो गई। गँवार आदमी के लिए कहा जाता है।

बुड़बक गइले मछली मारे टाप अइले गँवाय—मूर्ख मछली मारने गया तो बंसी खोकर आया। मूर्ख लोग यदि कुछ कमाने भी जाते हैं तो कुछ घर का ही गँवाकर आते हैं। तुलनीय : भोज० बुरबक गइल मछरी मारे बंसियो हेखेवलस; (टाप=बंसी; मछली फँसाने का काँटा)।

बुड़बक गया मछली मारने बंसी आया गँवाय—ऊपर देखिए।

बुड़बक दास गये हरवाही, दुइ बैल में एको नाहीं—दे० 'बुडबक गइले मछली मारे···'।

बुड़बक देवी के कुल्थी के अच्छत—(क) मूर्ख को बुरी चीज़ भी अच्छी लगती है। (ख) बुरा व्यक्ति बुरे सत्कार को भी अच्छा ही समझता है क्योंकि उसके योग्य वही होता है।

बुड़बक बरके साँझे बिछौना—मूर्ख दूल्हा शाम को ही बिस्तर पर जाना चाहता है। आशय यह है कि मूर्ख को हर काम की जल्दी होती है। वह समय के औचित्य-अनौचित्य को नहीं समझता।

बुड़भस लगी है—दूसरा लड़कपन आया है। बूढ़े जब लड़कों जैसी ज़िद या कोई बात करते हैं तो कहा जाता है।

बुड्ढा तोता राम-राम नहीं पढ़ता—वृद्धावस्था में कुछ सीखा नहीं जा सकता। तुलनीय : भोज० बूढ़ सुग्गा राम-राम नहीं पढ़ेला; अव० बूढ़ सुआ राम-राम नहीं पढ़त; ब्रज० बूढ़ौ तोता राम राम नायें पढ़ै।

बुड्ढा ब्याह करे पड़ोसियों का सुख होवे—(क) यदि कोई बूढ़ा व्यक्ति नौजवान स्त्री से विवाह करता है तो उसका आनंद उसके पड़ोसी ही उठाते हैं। (ख) अयोग्य या असमर्थ व्यक्ति अपनी वस्तु का भी उपयोग नहीं कर पाता उसका आनंद दूसरे ही उठाते हैं। तुलनीय : अव० बुढ़वा बिआह करै परोसियों का सुख होय; छत्तीस० बूढ़ बिहाव परोसी सुख।

बुड्ढा मरा, झगड़ा मिटा—जब तक घर में कोई वृद्ध होता है तब तक उसका उचित-अनुचित दबाव सहन करना ही पड़ता है। उसका सिर पर एक भय-सा सदा सवार रहता है, जब वह मर जाय तो फिर जो चाहे सो करो कोई कुछ नहीं कह पाता। ऐसे वृद्ध के प्रति कहते हैं जो परिवार वालों को बहुत तंग करता है। तुलनीय : भीली—डोकरो मुवो ने डग डगारो मटक्यो; ब्रज० बूढ़ौ मर्‌यौ, झगड़ौ मिट्यौ।

बुड्ढा हाथ से नहीं दिमाग़ से काम करता है—बूढ़ा मनुष्य शारीरिक शक्ति से काम नहीं कर पाता, किंतु उसका अनुभवी मस्तिष्क बहुत काम करता है। आशय यह है कि बूढ़े शक्तिहीन किंतु बुद्धिमान होते हैं। तुलनीय : भीली—गडू जोई ने गुण ने घाल्य, तौ काम आधूं; पंज० बुड्डा हथ्थ नाल नईं दमाग नाल कम लेंदा है; ब्रज० बूढ़ौ हात की जगह, दिमाक ते काम करै।

बुड्ढी के मरने का ग़म नहीं है लेकिन फ़रिश्तों ने घर देख लिया—बुड्ढी के मरने का दुख नहीं है, डर इस बात का है कि मौत का फ़रिश्ता बार-बार न आने लगे। अर्थात् हानि का भय नहीं है पर इस बात का भय है कि हानि करने वाले ने रास्ता देख लिया और अब कभी भी हानि कर सकता है।

बुड्ढी घोड़ी लाल लगाम—बुड्ढी घोड़ी को लाल रंग की लगाम लगाई है। (क) बेमेल शौक़ या बेमेल बात पर कहा जाता है। (ख) बुड्ढे जब जवानों जैसे वस्त्रादि पहनें या शौक़ करें तो भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० बुड्डी कौडी लाल लगाम; ब्रज० बूढ़ी घोड़ी लाल लगाम।

बुड्ढी बकरी और हुंडार से ठट्ठा—बूढ़ी बकरी भेड़िये (हुंडार) से लड़ाई करती है। अर्थात् जब कोई अत्यंत निर्बल व्यक्ति किसी बहुत सबल व्यक्ति से शत्रुता करे तो कहते हैं।

बुड्ढी हुई नायका इस हाल को पहुँची, सिर हिलने लगा छातियाँ पताल को पहुँची—बुढ़ापे में नायिका की हालत यह हो गई है कि उसका सिर हिल रहा है और छाती धँस गई है। अर्थात् बुढ़ापे में सभी अंग बेकार और बेडौल हो जाते हैं।

बुड्ढे की औलाद कमज़ोर होती है—जिस परिवार के व्यक्ति शरीर के दुबले-पतले होते हैं उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय : अव० बुढ़वा कै औलाद; पंज० बुड्डे दी ओलाद।

बुड्ढे की सीख करे काम को ठीक—बूढ़ों की सलाह से काम बन जाता है। अर्थात् बूढ़ों की शिक्षा बड़ी सहायक होती है। तुलनीय : ब्रज० बूढ़े की सीख, काम करै ठीक।

बुड्ढे तोते राम-राम नहीं पढ़ते—बुड्ढों को कुछ नहीं सिखलाया जा सकता क्योंकि उनकी बुद्धि मंद पड़ जाती है। तुलनीय : पंज० बुडडा तोता राम राम नईं पड़दा।

बुड्ढे ने कहनी जवान ने सहनी, लाख-लाख बरस रहनी—वृद्ध व्यक्ति की बात को जवान यदि मान लें या बर्दाश्त कर लें तो वे लाख वर्ष तक रहेंगे। आशय यह है कि यदि बूढ़ों की बात मानकर या सहकर नौजवान रहें तो वे काफ़ी दिनों तक सुख से रहेंगे।

बुड्ढों को ना मारे कोई, युवकों को ना पाले कोई—बूढ़े मनुष्य को बेकार समझकर कोई मारता नही और युवकों को कोई कमाऊ समझकर गोदी में नहीं खिलाता। मर्यादा की रक्षा करनी चाहिए, इसीलिए कहते हैं। तुलनीय : गढ़० बुड्या बोलीक मारेंदनी, तरुण बोलीक पालेंदनी।

बुड्ढों ने जो काम सिखाया – धोका मूल न उसमें पाया—बूढ़ों ने जो काम बतलाया या सिखाया उसमें कोई दोष नही मिला। अर्थात् बुड्ढों की सीख अच्छी होती है।

बुढ़वा भतार पर तीन टिकली—यद्यपि उसका पति बूढ़ा है फिर भी वह तीन टिकली लगाती है। (क) बूढ़ा पति पाकर किसी स्त्री के शृंगार करने पर कहते हैं। (ख) किसी भी प्रकार के बेमेल शृंगार या बेढंगी सज-धज पर भी कहते है। तुलनीय : अव० बुढ़वा भतार कै बरे तीन टिकुली।

बुढ़ापा दूसरा लड़कपन है—बुढ़ापे में आदमी में लड़कों की बहुत-सी प्रवृत्तियाँ जग जाती हैं।

बुढ़ापे में अक़्ल मारी जाती है—वृद्धावस्था में बुद्धि कमज़ोर हो जाती है। बूढ़े लोग बे सिर-पैर की या पागलों जैसी बातें करते हैं। तुलनीय : अव० बुढ़ापे मा अक्किल कम होय जात है; हरि० बुढ़पि मं आकै अक्ल बिगड़ जा स; भोज० बुढ़ौती में अकिल मारि जात; पंज० बुड़ापे विच मत मारी जांदी है; ब्रज० बुढ़ापे में अक्कलि मारी जायँ।

बुढ़ापे में मिट्टी खराब—बुढ़ापे में शरीर की दुर्दशा हो जाती है। बूढ़ों को कष्ट में देखकर लोग कहते हैं। तुलनीय : अव० बुढ़ापे मा माटी बरबाद; पंज० बुड़ापे विच मिट्टी खराब; ब्रज० बुढ़ापे में मट्टी ख्वार।

बुढ़ापे में सभी सीता—वृद्धावस्था में सभी स्त्रियाँ सीता जैसी पतिव्रता एवं गंभीर बन जाती हैं। बदचलन औरतों के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : तेलु० पापट्लो वेंट्रक नरिस्ते पत्तितु।

बुढ़िया की झोंपड़ी में शेर घुसा—यदि शेर बुढ़िया के घर में घुस गया है तो बुढ़िया की रक्षा कौन कर सकता है। जब कोई बलवान व्यक्ति बहुत ही निर्बल या निर्धन व्यक्ति पर आक्रमण करे तो व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : मेवा० डोकरी रा घर में नार बड़्यो।

बुढ़िया के कहे खीर कौन रांधे ?—बुढ़िया के कहने से कौन खीर पकाता है ? आशय यह है कि जिस व्यक्ति से किसी लाभ की आशा न हो उसका काम कोई नहीं करता। तुलनीय : राज० डोकरीरे कयां खीर कुण रांधै; मेवा० डोकरी के कीये खीर कुण रदे।

बुढ़िया को डायन, जवान को छिनाल तो कहते ही हैं—युवती को दुश्चरित्रा और बुढ़िया को डायन तो लोग कह ही देते हैं, किंतु जाँच-पड़ताल किए बिना इस पर विश्वास नहीं करना चाहिए। अर्थात् अंधविश्वास नहीं करना चाहिए। तुलनीय : भीली—डोकरद्ये डाकण मोट क्यारे चेनाल कॅज हैं।

बुढ़िया को पेंठ बिना कब सरे ?—बुढ़िया को बिना बाज़ार गए चैन नहीं मिलता। (क) बुढ़ापे में मन और भी चंचल हो जाना है। (ख) जीभ-चटाक और बदचलन औरतों के प्रति भी व्यंग्य में ऐसा कहते हैं जो बुढ़ापे में भी संतोष नहीं करतीं। तुलनीय : ब्रज० बुढ़िया की पेंठ बिना कब सरै।

बुढ़िया गजब की पुड़िया—बहुत लड़ने वाली बुढ़ियों पर कहा जाता है।

बुढ़िया दिवानी हुई, पराये बरतन उठाने लगी—बुढ़िया दिवानी होकर दूसरे का सामान अपने घर में रखने लगी। आशय यह है कि वृद्धावस्था में भी स्वार्थ की वृति जाती नही।

बुढ़िया मरी खटोली मिली—बुढ़िया के मरने पर एक छोटी चारपाई मिली। उत्तराधिकार में बहुत थोड़ी या नाममात्र की संपत्ति मिलने पर कहते हैं। तुलनीय : कौर० बुढ़िया मरी खटोल्ली मिल्ली; पंज० बुड्डी मरी खटोली मिली।

बुढ़िया मरी तो मरी, आगरा तो देखा—दे० 'बाप मरा तो मरा····'।

बुढ़िया मरी तो मरी फ़रिश्तों ने घर देख लिया—एक बार होने वाली हानि भावी अनिष्ट की सूचक होती है।

बुढ़िया मरी भौजी आई, रहे तीन के तीन—बुड्ढी माँ मर गई और बड़े भाई की शादी के बाद उनकी पत्नी आ गई, इस प्रकार घर के सदस्य फिर तीन हो गए। जब किसी व्यक्ति की एक तरफ से कोई हानि हो जाय और दूसरी तरफ से उतना ही लाभ हो जाय तो कहते हैं। तुलनीय : माल० डोकरी मरी ने दादो परण्यो, फेर तीन रा तीन।

बुढ़िया मरी तो मरी, जम द्वार देख आए—नीचे

देखिए। तुलनीय : मेवा० डोकरी मरगी जीं को सोचनी, पण जमराज घर को गेलो जाणग्यो।

बुढ़िया मरे का डर नहीं जम परे का डर—बुढ़िया के मरने का डर नहीं है, डर इस बात का है कि यमराज को चस्का न पड़ जाए। जब कोई ऐसा काम हो जाय जिसके बार-बार भविष्य में भी होने का डर लगा रहे तो कहा जाता है। तुलनीय : अव० बुढ़िया मरै का डेर नाहीं, जम कर परचै का डेर।

बुढ़िया मसान किनके ? आने-जाने वालों के—किसी राह चलने वाले ने किसी बुढ़िया से पूछा कि यह श्मशान किसका है तो उसने उत्तर दिया कि तुम्हारे जैसे आने-जाने वालों के ही है अर्थात् मेरे किसी का नहीं है। जो व्यक्ति स्वयं कुछ हानि न उठावे और दूसरों की हानि चाहे उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० डोकरी मसान केरा ? आयागयांरा।

बुढ़ौती में अकल मारी जाती है—दे० 'बुढ़ापे में अक्ल…'।

बुद्धि का बैल अक्ल का रासभ—बुद्धि का बैल, अक्ल का गदहा अर्थात् वज्र मूर्ख।

बुद्धि चले न बल के आगे—बुद्धि शारीरिक बल के सम्मुख काम नहीं करती। बलवान व्यक्ति जब किसी बुद्धिमान को अपने बल से डरा-धमका कर अपना उल्लू सीधा कर ले तो कहते हैं। तुलनीय : राज० बळ आगै बुध बापड़ी।

बुद्धि बड़ी या भाग्य—बुद्धि भाग्य से बड़ी होती है। तुलनीय : राज० अकल बड़ी क भैंस; पंज० अकल वडी जा मज।

बुद्धिमान को इशारा काफी—बुद्धिमान को इशारा ही बहुत है। अर्थात् बुद्धिमान आदमी थोड़े में ही पूरा भाव समझ जाते हैं। तुलनीय : राज० अकलमंद नैं इसारो घणो; फा० अक्लमंद रा इशारा काफ़ी अस्त; पंज० मत्त आले नूं सारा बड़ा; ब्रज० बुद्धिमान कूं इसारो काफी; अं० A word to the wise.

बुद्धिमान् को इशारा बहुत है—ऊपर देखिए।

बुद्धिमान को संकेत ही बहुत—ऊपर देखिए।

बुद्धि से खुदा पहचाना जाता है—(क) बुद्धि के द्वारा ईश्वर प्राप्त किया जा सकता है। (ख) बुद्धि से बड़ी से बड़ी वस्तु का ज्ञान हो सकता है। तुलनीय : पंज० अकल नाल रब दा पता लगदा है; ब्रज० बुद्धी ते खुदा पहचान्यौ जानै।

बुधई खायें हाँड़ी परई फूँच—बुधई स्वयं खाकर हाँड़ी (हंडी) परई फोड़ देते हैं। अपना काम निकल गया, अब चाहे कोई खाये-पीये या यों ही रहे। स्वार्थियों के प्रति व्यंग्य।

बुध नहिं करत अधम कर संगा—जो बुद्धिमान होते हैं वे नीच पुरुषों का साथ नहीं करते।

बुद्ध बोअनी, सुक्र लउनी—बुधवार के दिन बोना और शुक्रवार के दिन काटना चाहिए।

बुध बृहस्पत दो भलो, शुक न भलो बखान; रवि मंगल रोनी करै, द्वार न आवै धान—बुराई करने के लिए बुधवार और बृहस्पतिवार के दिन अच्छे होते हैं, शुक्रवार का दिन अच्छा नहीं है। किन्तु रविवार और मंगलवार को बोने से धान घर नहीं आता अर्थात् कुछ भी पैदा नहीं होता।

बुना जाय तो सूत नहीं तो भूत—यदि सूत से बुनने में आसानी हो तब तो ठीक है अन्यथा भूत के समान कष्ट देता है। अर्थात् यदि सूत अच्छा न काता जाय तो बुनने वाला बहुत हैरान होता है। तुलनीय : पंज० कत नियाते सूतर नई तां पूत।

बुनिवे में, न बीन बजायवे—न कपड़ा बुननेवालों में और न वीन बजाने वालों में। अर्थात् जो बिल्कुल तुच्छ हो, या जिसकी गणना किसी में भी न हो उस पर कहते हैं।

बुनूँ कमलिया गाऊँ गीता, ना जानूँ तेरी ईता सीता—कंबल बुनता हूँ और गीत गाता हूँ। मैं तेरी सीता को नहीं जानता। कर्मलीन व्यक्ति को दुःख-सुख की अनुभूति नहीं होती। वह सदा अपने कर्म में ही लीन रहता है। तुलनीय : कौर० बुणूं कमलिया गांउ गीता, ना जाणूं तेरी ईता-सीता; ब्रज० बुनूं कमरिया गाऊँ गीता, ना जानूं तेरी ईता सीता।

बुभुक्षितस्य किं निमन्त्रणाग्रह उत्कंण्ठितस्य किं केकारवश्रावणम्—भूखे आदमी को निमन्त्रण के आग्रह की क्या आवश्यकता है ? मयूर की वाणी के लिए पहले से ही उत्कण्ठा रखने वाले व्यक्ति को मयूरवाणी की ओर आकर्षित (संकेतित) करने की क्या आवश्यकता है ? अर्थात् जिसे जिस वस्तु की आवश्यकता होती है वह स्वयं उसे ढूंढ़ता है।

बुर न सुर, ले चल जबलपुर—न तो सुंदर है और न गीत ही बढ़िया गाती है फिर भी कहती हैं कि मुझे जबलपुर ले चलो। जब कोई अयोग्य व्यक्ति सम्मान प्राप्त करना चाहता है तब उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

बुरा क़ब्र तक कोसा जाए—दुष्ट व्यक्ति मरते दम तक दूसरों की नजरों से गिरा रहता है। जब कोई बुरा आदमी

मरता है तो पहले तो लोग उसके जनाज़े में सम्मिलित ही नहीं होते और यदि होते भी हैं तो क़ब्रिस्तान में उसको दफ़्न करने तक उसकी बुराइयाँ ही करते रहते हैं। बुरे व्यक्ति की सदा निन्दा ही की जाती है। तुलनीय : भीली—खोटा ना खटका मसाणा माते निकले।

बुरा कर बुरा हो—बुरे कर्म का फल बुरा ही होता है। तुलनीय : मल० तिन्म वितच्चाल तिन्म विळ्युम्; अं० Do evil and look for the like.

बुरा बेटा और खोटा पैसा भी किसी वक़्त काम आ जाते हैं—अर्थात् अपने पास की खराब से खराब चीज़ भी वक़्त-बे-वक़्त काम आ ही जाती है। तुलनीय : अव० बुरा बेटवा, खराब पइसा कौनो समयमा काम दै जात हैं; हरि० खोट्टा पीसा अर खोट्टा बेट्टा बखत पै काम आया करे।

बुरा मरता भी नहीं—बुरे व्यक्ति को कोसने के लिए कहते हैं। तुलनीय : मैथ० अपहत मरे न छुतहर फूटे; भोज० पपिया मरतो नइखे; पंज० पैंड़ा मरदा नई।

बुरा वही जो दूसरों को बुरा कहे—किसी की भी बुराई नही करनी चाहिए। बुराई करने वाला भी बुरा ही है। तुलनीय : पंज० पैंड़ा ओही जिहड़ा दूनियाँ नूँ पैंडा आखे।

बुरा हाकिम ख़ुदा का ग़ज़ब—यदि अपना शासक या अधिकारी (हाकिम) बुरा मिले तो इसे ईश्वर का शाप समझना चाहिए।

बुरी घड़ी न आवे—कोई नही चाहता उस पर विपत्ति आए। सकट या कष्ट से बचने के लिए।

बुरी नहीं ग़रीबी, बुरा होय कपूत—निर्धनता किसी को बदनाम नहीं करती अपितु संतान ही बदनाम करती है। (क) छोटे बच्चे रोटी न मिलने पर रोते हैं तभी सबको पता लगता है कि घर में रोटी नहीं है। (ख) निर्धन होने से बदनामी नही होती किंतु यदि संतान आवारा हो तो सारी दुनिया मे उसकी बदनामी हो जाती है। अर्थात् धन की नही अपितु मान की चिंता करनी चाहिए। तुलनीय : राज० काल विगोवे कोनी, बाल विगोवे।

बुरी संगति से अकेला अच्छा—बुरे आदमी के साथ रहने से अकेला रहना कहीं अच्छा है।

बुरे काम के बुरे हवाल—बुरे कर्म का परिणाम भी बुरा ही होता है। जो जैसा करेगा वैसा पाएगा, या बुरा करने वाले की दशा बुरी ही होगी। तुलनीय : अव० बुरा करम कै बुरा हवाल।

बुरे का घोड़ा सबसे आगे—दुष्ट व्यक्ति का घोड़ा सबसे आगे रहता है। उससे बचने के लिए उसे सभी राह देते हैं। अर्थात् बुरे व्यक्ति से सभी डरते हैं। तुलनीय : माल० ढेड़ री गाड़ी अगाड़ी चाले; पंज० पैंड़े दी गड्डी सब तों अग्गे।

बुरे काम का बुरा नतीजा—दे० 'बुरे काम के···'। तुलनीय : ब्रज० बुरे क़ाम कौ बुरौ नतीजा।

बुरे का मीत बुरा या अकेला—दुष्ट लोगों के मित्र या तो दुष्ट होते हैं या वे लोग होते हैं जिनको और कोई मित्र नहीं मिलता। (क) जिन व्यक्तियों को काम कराने के लिए अच्छे आदमी न मिलें और उन्हें अपने काम के लिए बुरे लोगों की भी खुशामद करनी पड़े तो उनके प्रति ऐसा कहते हैं। (ख) दुष्टों के साथी दुष्ट ही होते हैं। तुलनीय : गढ़० निमनखी करो कुमनखी की सेवा।

बुरे का लहसन भी बुरा—लहसुन, मनुष्य के शरीर पर एक भाग्यसूचक सफ़ेद, काला या लाल रंग का चिह्न होता है। बुरे को यह भी लाभप्रद नहीं होता। आशय यह है कि बुरे को कोई चीज़ नहीं फलती। तुलनीय : पंज० पैंडे दा लसण वी पैंड़ा।

बुरे का साथ दे सो भी बुरा—बुरे का साथी भी बुरा ही होता है या बुरा ही कहा जाता है। तुलनीय : पंज० पैंडे दा नाल देण वाला वी पैंड़ा।

बुरे का साथी कोई नहीं—बुरे की सहायता कोई नही करता। तुलनीय : अव० बुरा कै साथी केउ नाहीं।

बुरे कुल में शादी उपहास की जड़—बुरे खानदान में ब्याह करना हँसी कराना है। अर्थात् बुरे लोगों से संबंध जोड़ने पर बदनामी होती है। तुलनीय : मैथ० अकुलिनी बियाही कुलक उपहास।

बुरे के मुंह से बुरी बात ही निकलती है—स्पष्ट। तुलनीय : कौर० ब्रिटोड्डे के मूँ ते, गोस्से ई गोस्से निकड़ें; पंज० पैंडे दे मुओं पैंड़ी गल निकल दी है।

बुरे ख़ाविन्द का मिलना जीते जी दोज़ख़—अयोग्य पति के साथ रहने में इस जीवन में ही नरक का दुख भोगना पड़ता है।

बुरे दिन किस पर नहीं आते ?—अर्थात् सभी के जीवन में मुसीबतें आती हैं। तुलनीय : पंज० पैंडे दिन किसे उते नई आंदे।

बुरे दिन किसी के नहीं रहते—सदैव किसी के बुरे दिन नहीं रहते। अर्थात् सबके जीवन में खुशहाली आती है। तुलनीय : ब्रज० बुरे दिन काऊ के नायें रहें।

बुरे-भले की क्रोध कसौटी—क्रोध से ही बुरे-भले का पता लग जाता है।

बुरे वक़्त का अल्लाह बेली—दुःख के समय केवल

ईश्वर ही सहायक होता है।

बुरे समय में कोई साथी नहीं होता—अर्थात् जब किसी के बुरे दिन आते हैं तब बिरले ही उसके सहायक होते हैं। तुलनीय : पंज० पैंडे वेले कोई मितर नईं हुंदा।

बुरे से भगवान डरे—(क) बुरे व्यक्ति को कोई बीमारी भी नही होती, इसलिए ऐसा कहते हैं। (ख) बुरे व्यक्ति से सभी डरते हैं। तुलनीय : गढ़० बुरा देखी क कर्ता डरो; पंज० पैंडे नालों रब कंबे।

बुरो बुराई जो तजै तो चित खरो सकात—यदि बुरा आदमी बुरा स्वभाव छोड़ दे तो भी वह रूखा अवश्य रहता है। अर्थात् किसी के स्वभावगत दोष बिलकुल नही समाप्त होते।

बुर्केवाली बुआ, पीछे-पीछे चूहा—बुर्केवाली बुआ के पीछे-पीछे चूहा चलता है। आशय यह है कि पर्दे में रहनेवाली स्त्री को लोग जान-बूझकर देखने का प्रयत्न करते हैं। तुलनीय मैथ० बुर्कावाली बुआ पीछे से चूहा।

बुलबुल का-सा चोंडा—जो अपने सिर के बालों को वेश्याओं जैसे सजाती है उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

बुलाई न चलाई, मैं दूल्हे की ताई—मैंने इनसे कोई बात-चीत भी नही की फिर भी वे अपने को दूल्हे की चाची बतलाती है। (क) बिना बुलाए किसी के काम में हस्तक्षेप करने वाले के प्रति कहते हैं। (ख) ज़बरदस्ती संबंध जोड़ने वाले के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० सद्दी न बुलाई मैं लाड़े दी ताई।

बुलाने को नए घर, खिलाने को टुकड़े—नए घर में बुलाया या बैठाया है लेकिन खिलाते टुकड़े हैं। जो बाह्य दिखावा अधिक करे लेकिन वस्तु-स्थिति वैसी न हो तो उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

बुलावे न चलावे, मैं तो दुलहन की चाची—दे० 'बुलाई न चलाई ...'।

बूंट बड़ा होय तो भनसार फोड़े—चना यदि बड़ा हो जाय तो भी वह भाड़ (भनसास) को नहीं फोड़ सकता। अर्थात् अकेला आदमी सब कुछ या किसी बड़े काम को नहीं कर सकता।

बूंद का चूका घड़े ढुलकावे—एक बूंद के कारण जो हानि हो गई फिर घड़े ढुलकाने पर भी पूरी नहीं हो सकती। (क) जो व्यक्ति समय पर चूक जाता है उसे बाद में काफ़ी नुक़सान सहना पड़ता है। (ख) जो व्यक्ति समय पर कोई साधारण भूल कर देता है वह बाद में उसे अधिक प्रयत्न के बाद भी पूरा नहीं कर सकता। तुलनीय : अव० बूंद का चूका मेटा ढरकावै; माल० बूंद री चूकी होज ती नी भराय और जबान री छूटी हाथ नी आवे।

बूंद-बूंद करके तालाब भरता है—दे० 'बूंद-बूंद से तालाब...'।

बूंद-बूंद से घट भरे, टपकट रीते होय—एक-एक बूद डालने से घड़ा भर जाता है और एक-एक बूंद टपकने से खाली हो जाता है। अर्थात् थोड़ा-थाड़ा धन इकट्ठा करने से व्यक्ति धनी होता है और थोड़ा-थोड़ा धन खर्च करने से एक दिन निर्धन हो जाता है।

बूंद-बूंद से तालाब भरता है—अर्थात् पाई-पाई जोड़ने से ही धन एकत्र होता है। तुलनीय : माल० टीपे टीपे समुंदर भराय; भीली– कण कण भेलो कीदे कोटी भराय; भोज० बूने बून तालाब भरे ला; मल० पलतुळ्ळि पेरुवेलल्म्; अं० Little drops fill the ocean.

बूंद-बूंद से सागर भरता है—ऊपर देखिए।

बूंद भर तेल नहीं घोड़सार में दीया—स्थिति तो ऐसी बुरी है कि घर में एक बूंद तेल भी नहीं है, किंतु शेखी ऐसी है या इच्छा यह है कि घर को कौन कहे, अस्तबल में भी चिराग़ जलता रहे। जब कोई व्यक्ति बहुत साधनहीन होने पर भी बड़ी-बड़ी इच्छाएँ रखे या व्यर्थ में रोब की बातें करे तो ऐसा कहते हैं। अपव्ययी के लिए भी कहते हैं। तुलनीय : भोज० देहें के तेल नाहीं घूरे पर दीया घूरे; छत्तीस० खसूबर तेल नहीं घोड़सार बर दीया।

बूंद से गई सो फिर हौज से नहीं आती—(क) समय पर चूकने पर काम खराब हो जाता है। (ख) धीरे-धीरे बिगड़ी चीज एकाएक नहीं बनाई जा सकती। तुलनीय : मरा० थेंबानें गेली ती हौदाने भरून निघत नाही।

बूची को और ताव कानी को और ताव—अर्थात् सबको अपने ही काम की चिंता रहती है।

बूझ क्या चक्की का पाट—ऐसे व्यक्ति के बारे में कहते हैं जो बुद्धिमान और ज्ञानी होने के बावजूद मूर्ख हो।

बूड़ा वंश कबीर का जो उपजे पूत कमाल—योग्य पिता की अयोग्य संतान पर कहते हैं।

बूढ़ पाड़ा भांय भांय—व्यर्थ में बहुत बोलने वाले बूढ़ों को लक्ष्य करके ऐसा कहते हैं।

बूढ़ भई गुइयाँ बिमाग मोर बैसे—वृद्ध होने पर भी यदि कोई बच्चों जैसी ही बात करे तो कहते हैं। तुलनीय : अव० बुढ़वा भयें नेकुआ लागै है।

बूढ़ होय चाहे जवान, हमें हत्या से काम—दूसरे की हानि-लाभ की चिंता न कर केवल अपने स्वार्थ की ही बात

करने वाले के प्रति कहते हैं।

बूढ़ा कुत्ता पिलवा नाम—कुत्ता बुड्ढा हो गया लेकिन उसे पिल्ला ही कहते हैं। अवस्था के विपरीत नाम पर कहा जाता है। पिल्ला-कुत्ते के छोटे बच्चे को कहते हैं। तुलनीय : भोज० बूढ़ कुक्कुर पिलवा नांव।

बूढ़ा कुत्ता बाँचे सौन, लगी है तो मारेगा कौन—बूढ़ा कुत्ता शकुन देखकर कहता है कि फाटक बंद है पर सांकल नहीं चढ़ाई गई है। आलस्य या लापरवाही की चरम सीमा पर कहते हैं। इस संबंध में एक कहानी इस प्रकार है : किसी गृहस्थ के घर में कुत्ते जाकर खाने-पीने की वस्तुओं को नष्ट कर देते थे। गृहस्वामी ने उनकी इस हरकत को रोकने के लिए द्वार पर फाटक लगवा दिया। इस पर कुत्तों की सभा हुई और वे सोचने लगे कि अब कैसे पेट भरेगा। इस पर एक बूढ़े कुत्ते ने कहा कि मैं शकुन से बतलाता हूँ कि किवाड़ बंद भी हो गया है तो जंजीर बंद नहीं है क्योंकि परिवार के सभी सदस्य आलसी हैं। अतः हम लोग पहले जैसे खा-पी सकते हैं। तुलनीय : कौर० बूढ़ा कुत्ता बांचै सौन, लगी है तो मारेगा कौन।

बूढ़ा खाय गाँठ का जाय—बूढ़े को खिलाने से पास का धन भी जाता है। अर्थात् निकम्मे को खिलाना-पिलाना बेकार है।

बूढ़ा जाने किया, बाला जाने हिया—बुड्ढे काम से तथा लड़के घर से खुश होते है।

बूढ़ा तोता राम राम—बुड्ढा तोता राम-राम रटता है। जब कोई बुढ़ौती में या उम्र अधिक होने पर कोई चीज़ सीखना आरम्भ करे तब उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० बुड्डा तोता राम राम।

बूढ़ा देख लड़ना नहीं, जवान देख डरना नहीं—(क) वृद्ध व्यक्ति का आदर करना चाहिए क्योंकि वह शारीरिक शक्ति न रखते हुए भी अनुभवी और बुद्धिमान होता है तथा युवक को हृष्ट-पुष्ट देखकर डर नहीं जाना चाहिए क्योंकि उसमें केवल शक्ति ही होती है और अनुभव या बुद्धि नहीं होती। (ख) शारीरिक शक्ति का भी अनुमान केवल शरीर देखकर ही नहीं लगाया जा सकता। तुलनीय : भीली – डोकरो देखी ने अड़वो नी, भोटक्यार देखी ने बिहवो नी।

बूढ़ा, बाला बराबर होता है—बुढ़ापा और बचपन बहुत-सी बातों में एक सा होता है। तुलनीय : अव० बुढ़वा लड़कन कै बरोबर; राज० बूढ़ा सो बाळा; ब्रज० बूढ़े बारे सब बराबरि।

बूढ़ा बैल, न कंगाल यार—बूढ़ा बैल नहीं ख़रीदना चाहिए और न ग़रीब से मित्रता करनी चाहिए क्योंकि बूढ़ा बैल कोई काम नहीं कर सकता और ग़रीब मित्र से लाभ के स्थान पर हानि ही हुआ करती है। तुलनीय : गढ़० वल्द नि जोड़नो ढांगा, आबत नि जोड़नो कांगो; पंज० बुड्डा टग्गा बती रोग।

बूढ़ा बैल बेसाहै झीना कपड़ा लेय, आपुन के विचार नहीं दैवहिं दूषण देय—बूढ़ा बैल और पतला (बारीक = झीना) कपड़ा ख़रीदते है और उनके फट जाने पर अपने को दोष न देकर ईश्वर को दोष देते हैं। अर्थात् बूढ़ा बैल और पतला कपड़ा अधिक टिकाऊ नहीं होते। वे थोड़े समय में नष्ट हो जाते हैं। तुलनीय : म्हातारा बैल नि झिरझिरीत कापड़ विकत घ्यायचें, आपण विचार करायचा नाहीं देवाला बोल लावीत बसायचें।

बूढ़ा बैल रेशम की नाथ—बूढ़े बैल को रेशम की नथिया पहनाए है। (क) बेमेल काम पर कहते हैं। (ख) जब कोई वृद्धावस्था में अधिक शौक़ करता है तब भी उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते है।

बूढ़ा बैल लेना नहीं, बंजर खेत करना नहीं, और करना तो फिर डरना नहीं—वृद्ध बैल अच्छा नहीं होता तथा बंजर और पथरीली भूमि भी अच्छी नहीं होती किंतु यदि उसी में खेती करने का निश्चय कर लिया जाय तो फिर डरना नहीं चाहिए, कमर कसकर जुट जाना चाहिए। तुलनीय : माल० बूढ़ो बैल बसावणो नी, मगरे खेती करणी नी और करणी तो फेर डरनो नी।

बूढ़ा मरे या जवान तुझे तो हत्या से काम—वृद्ध व्यक्ति मरे या नौजवान तुझे तो केवल मारने से मतलब है। स्वार्थी व्यक्ति के प्रति व्यंग्य में कहते है जो अपनी स्वार्थसिद्धि के सम्मुख किसी की छोटी या बड़ी हानि का ध्यान नहीं रखता। तुलनीय : हरि० बुड्ढा मरो च जवान हत्या सेती काम; कौर० बूढा मरै या जवान्, तन्ने हत्या सू काम।

बूढ़ा रहे घर, फिकर न डर—जिस घर में वृद्ध पुरुष हो उसे किसी बात की चिंता नहीं रहती, क्योंकि वृद्ध व्यक्ति अपने अनुभवों के आधार पर घर का प्रबंध सुचारु रूप से चलाता है। जो व्यक्ति वृद्धों को बोझ समझते हैं, उनके शिक्षार्थ ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० जैको बूढ़ो तैको ऊड़ो।

बूढ़ी गैया बाह्मन के जाय, पुन्न होय औ टले बलाय—बूढ़ी गाय को ब्राह्मण को दे देना चाहिए, इससे पुण्य भी मिलता है और बला भी टल जाती है। (क) एक साथ दो लाभ उठाने वाले के प्रति कहते हैं। (ख) जब कोई किसी

बेकार वस्तु को किसी को देता है तब भी व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० बूढ़ी गाय बाम्हन कें जाय, पुन्न होय और टर्र बलाय।

बूढ़ी घोड़ी लाल लगाम—दे० 'बुड्डी घोड़ी लाल लगाम···'।

बूढ़ी जुरवा नाम खदोजा—पत्नी बूढ़ी है लेकिन उसका नाम खदीजा (नवजात) है। अवस्था के अनुसार नाम-गुण न होने पर कहते हैं।

बूढ़ी बकरी को बहकावे भेड़िया, चल नाले पर वहाँ हरी-हरी खाने को मिलेगी बुड्ढी बकरी को भेड़िया बहकाता है। कहता है कि नाले पर चलो वहाँ तुम्हें हरी-हरी पत्तियाँ खाने को मिलेगी। जब कोई किसी अनुभवी व्यक्ति को धोखा देना चाहता है तब उसके प्रति व्यंग्य मे ऐसा कहते हैं।

बूढ़ी भई बिलन्दो मूस बिरावें लाग—बिल्ली के बूढ़ी होने पर चूहे भी उसकी खिल्ली उड़ाते है। सबल के कमज़ोर होने पर जब निर्बल उसकी खिल्ली उड़ाते है तब कहा जाता है।

बूढ़े कलावंत की कौन सुने— बूढ़े गवैये का गाना कोई नही सुनता। वक्त के बिगड़ने पर कोई दाद नहीं देता। तुलनीय : राज० बूढ़ली रै क्या खीर कुण रांधै; पंज० बुड्डी दी चरखा कौण कत्ते।

बूढ़े का खाना, गठरी का डूबना बराबर है—अर्थात् बूढ़े व्यक्ति को खिलाने-पिलाने से कोई लाभ नहीं होता। तुलनीय : भोज० बूढ़ क खाइल गडरी क डूबल बरबरे हऽ या बूढ़ का खाइल नाव क भराइल एके हऽ।

बूढ़े की ज़बान में जोर होता है -बुढ़ापे में ज़बान बहुत बढ़ जाती है। अर्थात् खाने और बकबक करने मे बूढ़े तेज़ हो जाते है। तुलनीय : अव० बुढ़वन कै जबान मा जोर रहत है; पंज० बुड्डे दी जवाण विच जोर हुंदा हे।

बूढ़े की शादी पड़ोस को सुख -दे० 'बुड्ढा ब्याह करे···'।

बूढ़े के मुंह मुहासा, सब देखें तमासा—वृद्ध व्यक्ति के चेहरे पर मुहासे निकले तो सभी लोग देखने गए, क्योंकि मुहासे नौजवानो के चेहरे पर ही निकलते है। अनहोनी बात पर कहते हैं। तुलनीय : अव० बुढ़वा के मुंह मा मोहाँसा, सब देखें तमासा।

बूढ़े को खिलाना और गड्ढे में फेंकना बराबर—दे० 'बूढ़े का खाना···'।

बूढ़े को जोरू रांड को बेटा बूढ़े मनुष्य को अपनी पत्नी से और विधवा स्त्री को अपने पुत्र मे बहुत प्रेम होता है। जो वस्तु कठिनाई मे मिली हो और उसके मिलने की भविष्य में कोई संभावना न हो उसके प्रति हार्दिक प्रेम होना स्वाभाविक ही है। तुलनीय : मेवा० दूज वर की गोरड़ी क मोत्यां बचली मोरड़ी; सं० वृद्धस्य तरुणी भार्या प्राणेभ्योऽपि गरीयसी।

बूढ़े को दो बेटों, दोनों घरों की हेठी -किसी वृद्ध से किसी युवती का विवाह कर दिया जाय तो दोनों परिवारो की बदनामी होती है क्योंकि बूढ़ा असमर्थ होता है जिससे उसकी पत्नी व्यभिचारिणी हो जाती है। तुलनीय : गढ़० बुड्या बेटी दीक दुणखे पाई।

बूढ़े को बूढ़ा कहने पर बुरा लगता है -नीचे देखिए।

बूढ़े को बूढ़ा कहो तो चिढ़ मरे -(क) अन्धे को अन्धा कहने से उसे बुरा लगता है। (ख) बुरे को बुरा कहलाना बुरा लगता है। तुलनीय : पंज० अन्ने नूं अन्ना आखो ते पैड़ा लगदा है।

बूढ़े तो सबकी करें, उनकी करे न कोय --घर के बड़े-बूढ़े सबकी देखभाल करते हैं, किन्तु उनकी कोई सेवा नही करता। जो व्यक्ति अपने वृद्ध मां-बाप की सेवा नहीं करते उनके प्रति ऐसा कहते है। तुलनीय : गढ़० बूड राड़ सब मां मरो बूडमा सबै निरो।

बूढ़े ने कहनी, तरुण ने सहनी, लाख लाख बरस रहनी --बूढ़े लोग कहते रहें और नौजवान उसे माने तथा उनका कहा-सुना बर्दाश्त करते रहें तो घर मे बहुत दिनों तक शांति रहे।

बूढ़े मरे मौत से, बड़े मरे लाज से—बूढ़े तो मृत्यु से मरते है और सज्जन अपनी लज्जा से। जब कोई व्यक्ति ऐसा घृणित कार्य करे जिसे देख-सुनकर सज्जन व्यक्ति लज्जा से सिर झुका लें तो उसके प्रति कहते है। कोई ऐसा काम नहीं करना चाहिए जिससे अपने बड़ों का सिर झुकाना पड़े। तुलनीय :भीली—गहु त मरे खोजे, मोट क्यार मरे लाजे; पंज० बुडडे मौत नाल मरण, बड़े मरन नाल।

बूढ़े मां-बाप और फटे कपड़े की लाज नहीं - बूढ़े मां-बाप और फटे कपड़ों की शर्म नहीं करनी चाहिए। क्योंकि हर नई चीज एक दिन पुरानी होती है। तुलनीय : राज० फाट्या कपड़ा बूढ़ा भाईतांरी लाज नहीं करणी।

बूढ़े मुंह मुहांसा लोग देखें तमासा—दे० 'बूढ़े के मुंह मुहासा···'।

बूढ़े मुंह मुहांसे, लोग देखे तमासे—ऊपर देखिए—।

बूढ़े हुए तो क्या हुआ नखरा तिल्ला उतने ही—बुढ़ापे

में भी जो लड़कों-सी चाल रखे उस पर कहते हैं। तुलनीय : अव० बुढ़वन के नखरा तिल्ला ओतनें।

बूद हम-पेशा, बा हम-पेशा दुश्मन - एक ही पेशे के दो मनुष्य आपस में शत्रुता रखते हैं। (यह लोकोक्ति फ़ारसी की है)।

बूर के लड्डू जो खाय सो भी पछताय न खाय सो भी पछताय --(क) जो चीज़ ऊपर से भड़कदार पर भीतर से खराब हो उस पर कहते हैं। (ख) जो चीज़ बहुत अच्छी हो, उस पर भी कहते है। खाने वाला अधिक न खाने के कारण पछताता है और न खाने वाला बिल्कुल न खाने के कारण)।

बृक्ष की छाया और पुरुष की माया— दोनों ही उसी के साथ-साथ जाती है।

बृक्ष के सहारे बेल बढ़ती है—आशय यह है कि बड़ों के आश्रय से छोटे ऊँचे उठ जाते है।

बृक्ष कबहुँ न फल भखै, नदी न संचै नीर—वृक्ष अपने फल को स्वयं नहीं खाते हैं और नदी अपने स्वार्थ के लिए अपने जल को संचित नही करती उसी प्रकार सज्जन लोग अपने लिए धन एकत्र नहीं करते, बल्कि परोपकार के लिए करते है।

बृथा वृष्टि समुद्रेषु--समुद्र में वर्षा का होना व्यर्थ है। अर्थात् जिसके पास स्वयं कोई चीज़ बहुत हो उसे वही देना बेकार है।

बृद्ध छेर बगीचा चरे—बूढ़ी बकरी बाग़ को चर जाती है। (क) जब कोई वृद्ध या असहाय व्यक्ति किसी का बहुत अधिक नुक़सान कर दे तो कहते हैं। (ख) कमजोर भी हानि पहुँचाने के लिए बहुत होते है।

बृद्ध वेश्या तपश्वनिः—वेश्या बुड्ढी होने पर तप करने लगती है। अर्थात् बुरे जब असमर्थ हो जाते हैं तो अच्छे काम की ओर झुकते है। तुलनीय : भोज० बुढ़ाइल बेसवा सधुआइन भइली।

बृन्दावन सो वन नहीं, नंद गाँव सो गाँव, बंसी बट सो बट नहीं, कृष्ण नाम सो नाम - वृंदावन जैसा बन, नंदगाँव जैसा गाँव, वंसीवट जैसा वट और श्रीकृष्ण जैसा नाम मिलना असंभव है। ये चारो ही अप्रतिम हैं ऐसा साधु या भक्त लोग कहते है।

बेअदब बेनसीब बाअदब बानसीब—शिष्ट और शील-वान व्यक्ति भाग्यवान तथा अशिष्ट अभागा होता है।

बेईमान का मुंह काला बेईमान का मुँह काला होता है। आशय यह है कि बेईमान व्यक्ति की कोई क़ीमत नही होती।

बेईमान नौकर और लाडला बच्चा—बेईमान नौकर को नहीं रखना चाहिए क्योंकि अवसर पाते ही वह बेईमानी करेगा और किसी का लाडला बच्चा अपने पास नही रखना चाहिए क्योंकि वह लाड-प्यार से इतना बिगड़ा होता है कि साधारण मनुष्य उसे अपने पास नहीं रख सकता। तुल-नीय : माल० अण विश्वास्या रो हिड़ो नी करणो, हेजा रो बालक नी राखणो।

बेईमानी का मुंह काला - दे० 'बेईमान का मुंह···'।

बेऐब जात खुदा की --केवल ईश्वर ही निष्कलंक है। संसार में कोई भी दूध का धोया नही है।

बेकार करें सिंगार—जिन स्त्रियों को कोई काम-काज नही होता वे ही शृंगार में समय नष्ट करती है। जो स्त्री अपने काम की ओर ध्यान न देकर शृंगार की ओर अधिक ध्यान दे उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : भीली— नवरी नखरा करे।

बेकार खोजे भतार—जिस स्त्री को कोई काम-काज नही होता वह पति खोजती रहती है। अर्थात् बेकार व्यक्ति कोई-न-कोई खुराफ़ात करता रहता है। तुलनीय : भीली— नवरी नातरां नंगे राखै; अ० Idle man's brain is a devil's workshop.

बेकार पशु रखे, बेकार आदमी न रखे — बेकार (वृद्ध) पशु को घर में रख लेना चाहिए क्योंकि यदि वह काम न भी कर पाएगा तो जंगल की घास खाकर खाद के लिए गोबर तो देगा ही और मरने पर उसका चमड़ा भी मिलेगा, किन्तु बेकार आदमी बैठा-बैठा खुराफ़ात ही करेगा और कोई मुसीबत खड़ी कर देगा। तुलनीय : भीली— भागू चोपू हउरबूं भण भागो मनाप नी हगरबू।

बेकार बनिया क्या करे, सेर बाँट ही तोले - खाली बैठा बनिया बाटों को ही तोलता रहता है। जब कोई खाली व्यक्ति ऊटपटाँग काम करता है तो उसके प्रति व्यंग्य मे कहते हैं।

बेकार बेकार की ही बातें करते हैं - जो व्यक्ति कोई काम-धाम नही करते वे बातें भी बे सिर-पैर की करते हैं इसलिए उनके पास उठना-बैठना उचित नही है। तुलनीय : भीली— ठाला भूला भेला थाये, जे वगर ठा नी बात कर।

बेकार मबाश कुछ किया कर, कपड़े ही उधेड़कर सीया कर— बेकार मत रहो कुछ करते रहो। यदि कोई काम न हो तो कपड़ों को उधेड़कर दुबारा उनकी सिलाई करो। आशय यह है कि बेकार रहने से कुछ करना अच्छा होता है।

बेकार से बेगार भला - बेकार बैठे रहने से बेगारी में अर्थात् बिना पारिश्रमिक लिए काम करना ही अच्छा है। अर्थात् बेकार रहना बहुत बुरा है। तुलनीय , राज० निकमे सूं बेगार भली; मेवा० खाली बैठां बचे बेगार भली; गढ़० बेकार से बेगार भली; ब्रज० बेकार से बेगार भली; पंज० वेले तों कम चंगा ।

बेकार से बेगार भली -- ऊपर देखिए ।

बेकारी बिकारी—खाली बैठने से स्वास्थ्य में विकार आ जाता है।

बेकारी से बेगारी भली—दे० 'बेकार से बेगार···'।

बेकारी से शैतानी सूझती है-- बेकार रहने से खुराफ़ात ही सूझती है। तुलनीय : मल० मटियन्टे मनस्सु चेकुनान्टे पणिशाल; पंज० वेले नूं छेड़ गुजदी है; अं० An empty mind is a devil's workshop.

बेखार गुल नहीं— (क) दुख-सुख साथ रहते हैं। (ख) बिना कष्ट उठाए सुख नही मिलता। (खार— काटा; कष्ट)।

बेगाना सिर कद्दू बराबर- दे० 'पराया सिर कद्दू···'।

बेगानी आस नित उपास - दे० 'पर आसा···'।

बेगानी थैली का मुँह सकरा—दे० 'पराई थैली का मुंह···'।

बेगाने कारन लूली तोड़ना--दूसरे के लिए लूली (एक प्रकार की मिठाई) बनाना। (क) व्यर्थ मे श्रम करने वाले के प्रति कहते हैं। (ख) परमार्थी व्यक्ति के प्रति भी कहते है।

बेगाने खत्ते पर झींगुर नाचे -दूसरे की फ़सल को देखकर झींगर नाचता है। दूसरे की दौलत पर घमंड करने वालों के प्रति व्यंग्य में कहते है। (खत्ता—अनाज रखने का स्थान)।

बेगाने बर्दे आज़ाद करते हैं—दूसरे के गुलामों को छोड़कर पुण्य कमाते हैं। दूसरों के धन पर अपनी उदारता या दानशीलता दिखाते हैं ।

बेघरनी घर पावत है, है घरनी घर गाजत है—दे० 'बिन घरनी घर गाजत है···'।

बेघरनी घर भूत का डेरा—दे० 'बिना घरनी घर···'।

बेचता बनिया, खेलता जुआरी कभी घाटे में नहीं रहते—बनिया यदि सौदा बेचता रहे और जुआरी निरन्तर जुआ खेलता रहे तो उन्हें हानि नही होती क्योंकि मामूली घाटा तो उससे निकलता ही रहता है। तुलनीय : माल० बेंचतों वाणियो ने खेलवो जुआरी कदी नी हराय ।

बेच पछताना अच्छा—माल बेचकर पछताना रखकर पछताने से अच्छा होता है । आशय यह है कि व्यापारी को अधिक दिन तक माल रखना नही चाहिए। तुलनीय : अव० बेच के पसताब अच्छा है ।

बेच बेच मेरी पलनी का ब्याह—सारी सम्पत्ति बेचकर लड़की की शादी करने वाले के प्रति कहते है ।

बेचारा तो गधा होता है—गधे के ऊपर चाहे कितना भी बोझ लाद दिया जाय, भूखा रखा जाय, पीटा जाय फिर भी वह कुछ नही कहता है। गधा और अन्य पशु अपनी वकालत नहीं कर सकते, अपने दुःख-दर्द को नहीं बता सकते इसलिए वे असहाय बेचारे हैं। जो व्यक्ति किसी को बार-बार बेचारा कहे उसके प्रति हास्य से कहते है। तुलनीय : भीली बापड़ो बापड़ो करे जो वलद थांड़ी है।

बेचे के साग करे मोतियों का दाम बेचते तो सब्ज़ी है और भाव पूछते है मोतियों का। हैसियत या योग्यता से बाहर काम करने पर कहते है।

बेचे सो बंजारा, रक्खे सो हत्यारा—माल को बेच डालना अच्छा है पर अधिक दिन तक रखना ठीक नहीं। तुलनीय : अव० बेचै तौ बंजारा राखै उ हत्तिआरा।

बेजर बिसनी भड़ुवे बराबर-बिना पैसे का शौक़ीन या व्यसनी मनुष्य रंडी के भडुवे के बराबर है। (बेज़र—बिना पैसे का। बिसनी—व्यसनी)।

बेज़बान को सताना ठीक नहीं—(क) पशुओं के प्रति कहते हैं, क्योंकि वे किसी को अपना दुःख बता नही पाते और सुख सभी को देते है। (ख) सीधे व्यक्ति जो किसी को भला-बुरा न कहें उनके प्रति भी सहानुभूति से कहते हैं। तुलनीय : भीली —चोपूं आए हक दिए, वणां दक नी देवो, अण बोलनी जात है।

बेटा एक कुल का, बेटी दो कुल की--बेटा एक कुल की मर्यादा रखता है तो बेटी पीहर और ससुराल दोनों कुलो की मर्यादा रखती है। तुलनीय : बुंद० बेटा एक कुल कौ, तौ बेटी दोई कुलन की; ब्रज० बेटा एक कुल कौ और बेटी दो कुलन को नाम करै; पंज० पुतर इक कर दा पुतरी दो करां दी।

बेटा खाय बाप लखाय, कलयुग अपना बल दिखलाय—कलियुग के पुत्र बाप के सामने खाते है और बाप को पूछते तक नही। आज की दशा पर व्यंग्य है। तुलनीय : अव० बेटउना खाय, बपवा लखाय, कलजुग आपन बल देखाय।

बेटा घर का देवता है--बेटा ही घर वालों का पालन

करता है और वृद्धावस्था में माँ-बाप की सेवा करता है। तुलनीय : राज० बेटो अरणी जाझ है।

बेटा जनकर नव चले, सोना पहिनकर ढक चले—पुत्र पैदा हो तो गर्व न करना चाहिए और धन हो जाय तो उसे सबको दिखाते नहीं चलना चाहिए।

बेटा जन या घर से निकल—पुत्र उत्पन्न कर या घर छोड़कर चली जा। (क) जिस स्त्री के पुत्र न होता हो उसके प्रति उसका पति कहता है। (ख) जिस व्यक्ति से कुछ लाभ न होता हो उसके प्रति भी कहते है। तुलनीय : भीली – बेटो जण कि घरे नह।

बेटा पेट में फ़सल खेत में—दे० 'बारे पूत हगीरी खेती···'। तुलनीय : बेटा पेट मे और फसलि खेत मे- -आय जाय तब जानों।

बेटा बनकर सबने खाया है, बाप बनकर कोई नहीं खाता—शिष्ट, विनीत तथा मधुरभाषी को सभी चाहते है पर उसके विपरीत स्वभाववालों को कोई नहीं। तुलनीय : अव० बेटवा बन कै सबै खाय सकत है, बाप बन कै केउ नाही खाय सकत।

बेटा बेटी बस के अच्छे—आज्ञाकारी सन्तान ही अच्छी होती है।

बेटा मरियो पर तिस्सर न पड़ियो—तेतर (तीसरा) लड़का अशुभ कहा गया है। जीने की अपेक्षा उसका मर जाना ही अच्छा है।

बेटा लायगा चमारी वह भी बहू कहलायगी हमारी—बेटा यदि चमार की लड़की को भी अपनी पत्नी बनाएगा तो वह भी मेरी बहू कहलाएगी। बुरी चीज़ की जब कोई अपनी होने के कारण सराहना करता है तो कहते है।

बेटा से बेटी भली जो कुलवती होय—नालायक़ बेटे से सच्चरित्र लड़की ही अच्छी होती है। आशय यह है कि लायक़ संतान ही अच्छी होती है चाहे वह बेटा हो या बेटी। तुलनीय : बेटा ते बेटी भली जो कुलबंती होय।

बेटा हुआ जब जानिये जब पोता खेले बार—लड़के का होना तभी होना है जब उसे भी पुत्र हो जाय। क्योंकि पुत्र को पुत्र हो जाने से वंश-वृद्धि की उम्मीद रहती है।

बेटा होय तो बीस बिस्वा, बड़ा होय तो तीस बिस्वा—बेटा जब पैदा होता है तो उसमें किसी तरह का भी दोष नहीं होता अर्थात् वह 'बीस बिस्वे' होता है, किन्तु वही जब बड़ा हो जाता है और सीमा से बाहर अर्थात् 'तीस बिस्वे' नीच काम करता है और कुल को कलंकित करता है तो उसके प्रति कहते है। तुलनीय : माल० बेटा थया बीस बिसवा, खोज गया तीस बिसवा।

बेटी और ककड़ी की बेल बराबर है—दोनों बहुत तेज़ी से बढ़ती हैं। तुलनीय : अव० बिटिया औ ककरी कै बेल बरोबर है।

बेटी कंजूस को दे बेटा उदार को—कंजूस के घर बेटी की शादी करने से बेटी सुखी रहती है और लड़के की शादी उदार घर में करने से दहेज अधिक मिलता है। तुलनीय : भोज० लइकी बियाही कंजूस घरे लइका बिआही उदार घरे।

बेटी का धन निभाना है, आते भी रुलाय जाते भी रुलाय—लड़की के पैदा होने पर भी दुःख होता है और जब विदा होकर अपने घर जाने लगती है तब भी दुःख होता है।

बेटी का भला चाहे तो बोल जमाई लाल की जै—(क) जमाई को प्रसन्न रखने से बेटी के हक में भी अच्छा होता है। (ख) किसी को सुखी रखना चाहो तो उसके स्वामी या अधिकारी को प्रसन्न रखो।

बेटी की शादी बड़े से और राड़ करे छोटे से—लड़की की शादी सम्पन्न परिवार में करनी चाहिए जिससे वह सुखी रहे और शत्रुता (राड़) अपने से कमज़ोर से करनी चाहिए ताकि वह कुछ बिगाड़ न सके।

बेटी को कहें बहू को सुनावे—डाट तो रहे है बेटी को किन्तु डाँट वास्तव में बहू के लिए ही है। जब कोई किसी को अप्रत्यक्ष रूप से डाटे-फटकारे तो उसके प्रति कहते है। तुलनीय : गढ० बोलू बेटी सुणो ब्वारी; ब्रज० बेटी तै कहै और बहुए सुनावै; पंज० कुड़ी नूं कवे ते बोटी नूं सनावे।

बेटी गई पतोहू आई—लाभ-हानि बराबर होने पर उक्त कहावत कहते है। तुलनीय : मग० बेटिया गेलै पुतहिया अइलै सिधवा पड़लै बराबरे; भोज० लइकी गइल पतोह आइल सिधवा भइल बराबरे; मैथ० बेटी गेल पुतोहू आयल जनवा के ततवा भेल।

बेटी चमार की नाम रजरनियाँ—दे० 'बिटिया चमार की···'।

बेटी चमार की रजरनिया नाम—दे० 'बिटिया चमार की···'।

बेटी दामाद कोई धन नहीं, सावाँ कोदो कोई अन्न नहीं—बेटी-दामाद से कोई विशेष लाभ नहीं होता और सावाँ तथा कोदो को अच्छा नहीं समझा जाता।

बेटी देकर बेटा मिले—बेटी देकर ही बेटा मिलता है। जमाई के प्रति कहते है। तुलनीय : राज० बेटी दे'र

बेटे लेवणो है; ब्रज० बेटी दैकें बेटा लियौ जायँ; पंज० कुडी दे के मुंडा लवो ।

बेटी ने किया कुम्हार माँ ने किया लुहार; न तुम चलाओ हमार, न हम चलाएँ तुम्हार - बेटी ने कुम्हार को अपना पति बनाया और माँ ने लुहार को। इस तरह वे परस्पर कहती हैं कि न तुम मेरी बात कहो और न मैं तुम्हारी कहूँ। अर्थात् जहाँ दोनों बुरे होते हैं वहाँ कोई किसी को कुछ नहीं कह सकता।

बेटी पापनी तो भी आपनी—बेटी यदि बुरी होती है तब भी अपनी होती है। आशय यह है कि अपने लोग यदि बुरे होते है तब भी उनके प्रति प्रेम या लगाव होता है।

बेटी-बैल जहाँ जायँ वहीं के रहें –कन्या और बैल जिस घर में जाते है वे उसी के कहलाते है। तुलनीय : भीली —बलद बेटी जठे जाई वठे वठे बापोती।

बेटी ससुराल न जाती, मन-मन गाजती— लडकी यदि किसी कारण ससुराल नहीं जा पाती तो मन-ही-मन दुखी होती है, क्योंकि लडकिया पति के घर रहने मे अधिक सुख का अनुभव करती हैं।

बेटी रो जमाई की इज्जत - बेटी के कारण ही जमाई का आदर होता है। अर्थात बेटी की अनुपस्थिति मे जमाई को ससुरालवालों का प्यार नहीं मिलता। जब तक किसी का अपना स्वार्थ न हो तब तक कोई किसी का आदर नही करता। तुलनीय : माल० बना बेटी जमाई रो लाड़ नी वे।

बेटी सोहे ससुरार, हाथी सोहे हथसार— बेटी ससुराल में और हाथी हथसार मे सुशोभित होता है। अर्थात् सभी चीजें अपने स्थान पर ही अच्छी मालूम होती है।

बेटी हो तो तुम्हारी, बेटा हो तो हमारा—बेटी होगी तो तुम्हारी रहेगी और यदि बेटा होगा तो हमारा रहेगी। स्वार्थी व्यक्तियों को लक्ष्य करके ऐसा कहते है। तुलनीय : भोज० बेटी होई तऽ तोहार बेटा होई तऽ हमार; पंज० कुडी होई ते तुहाडी मुडा होया ते साडा।

बेटे का पालने में बहू का द्वार में - बेटे के गुण पालने में और नवविवाहित बहू के गुण उसके द्वार पर पहुँचते ही मालूम हो जाते हैं। इन दोनों के गुणों का पता तुरन्त लग जाता है। तुलनीय : भीली बेटो पाण्ने, बऊ बाण्ने परखाये।

बेटे से नाम चलता है बेटे से ही वंश आगे बढ़ता है। तुलनीय , अव० बेटवै नाव चलावत है; ब्रज० बेटा ते तौ नाम चलै; पंज० मुंडे नाल ही नां चलदा है।

बेटे हुए सयाने दलिद्दर हुए पुराने जब लड़के सयाने हो जाते हैं तो माँ-बाप के दुख दूर हो जाते हैं। क्योंकि जब तक बच्चे छोटे रहते है तब तक माँ-बाप को उनकी देखभाल करने में कष्ट उठाना पड़ता है। लेकिन जब वे सयाने होकर कमाने लगते हैं तो माँ-बाप का दुख दूर हो जाता है और उनका सुखमय जीवन व्यतीत होता है। तुलनीय : हरि० बेटे हुए स्याणे, दिलद्दर हुए पुराणे; ब्रज० बेटा भये स्याने, दरिद्र भये पुराने।

बेड़ी सोने की भी बुरी -बन्धन कितना भी अच्छा क्यों न हो फिर भी बुरा ही होता है। तुलनीय : मल० बन्धुरकाञ्चनक्कूट्टलाणेन्किलुम् बन्धनम् बन्धनम् तन्ने पारिल्; ब्रज० बेडी सोने की ऊ बुरी; अं० 'Fetters even if made of gold are heavy.

बे थांग चोरी नहीं होती बिना भेद के चोरी संभव नही। तुलनीय : अव० बिना महिआ कै चोरी नाहीं होत।

बेद तो है परन्तु लोक भी है वेद और लोक दोनों हैं। जब कोई केवल शास्त्र की ही बातें करता है और समाज की परंपराओं की ओर ध्यान नहीं देता तब उसके प्रति ऐसा कहते है।

बेदर्द कसाई क्या जाने पीर पराई क्रूर या कठोर व्यक्ति दूसरे का दर्द नहीं जान सकता।

बेदर्द कसाई, ना जाने पीर पराई - ऊपर देखिए।

बेदिल चाकर दुश्मन बराबर—अपने मालिक का बेदर्दी से खर्च करने वाला नौकर शत्रु के बराबर होता है। अर्थात् मन लगाकर काम न करने या अँधाधुंध खर्च करने वाला नौकर अच्छा नहीं होता।

बेधर्म भई और बेहना के साथ में इज्जत भी गँवाई तो बुरे के संग में। जब कोई ओछा कर्म करे और कोई लाभ भी न हो तब उसके प्रति व्यंग्य मे ऐसा कहते है।

बेपारी अरु पाहुना, तिरिया और तुरंग; अपने हाथ सँवारिए, लाख लोग हों संग— व्यापारी (बेपारी), मेहमान, स्त्री और घोडा इनको अपने हाथ से ही सँवारना चाहिए भले ही साथ मे अनेक लोग हो। अर्थात् इनकी देखभाल का काम दूसरो को न सौपकर स्वय करना चाहिए। तुलनीय : ब्रज० ब्यौपारी और पाहुनो, तिरिया और तुरंग; अपने हात संभारियै लाख लोग हो संग।

बेपारी औ पाहुना, तिरिया ओ तुरंग; ज्यों-ज्यों ये ठनगन करें, त्यों-त्यों आवे रंग –व्यापारी, मेहमान, स्त्री और घोडा जितनी ही जिद पकडते है उतना ही लाभ होता क्योंकि उन्हें खुश करने या मनाने के लिए उनके मन की करनी पड़ती है। तुलनीय . ब्रज० ब्योपारी, और पाहुनें

तिरिया और तुरंग; ज्यों-ज्यों ये ठनगन करें त्यों-त्यों आवै रंग।

बे पेंदी का लोटा—दे० 'बिन पेंदी का लोटा।'

बेफ़ैज अगर यूसुफ़े-सानी है तो क्या है—यदि कोई महान व्यक्ति है तो हमें क्या जब तक कि वह हमारे किसी काम न आए। ऐसे बड़े, धनी या महान् व्यक्ति के लिए कहते हैं जो किसी को लाभ नहीं पहुँचा सकता।

बे ब्याही खाएँ रोटियाँ और ब्याही खाएँ बोटियाँ—अविवाहित लड़कियाँ तो केवल रोटियाँ ही खाती हैं लेकिन विवाहित लड़कियाँ हाड़-मांस भी खा जाती हैं। जब लड़की ससुराल चली जाती है तो उसे समय-समय पर किसी तरह व्यवस्था करके कुछ देना ही पड़ता है। इसी बात पर यह कहावत आधारित है।

बेमन का पाहुना घी डालूं या तेल?—नापसंद अतिथि के लिए तेल में भोजन पकाया जाय या घी में। (क) जिस कार्य को दिल लगाकर नहीं किया जाता वह कभी ठीक नहीं होता। (ख) जिस व्यक्ति को कोई दिल से नहीं चाहता उसकी उचित ढंग से खातिरदारी नहीं करता। तुलनीय: राज० मन बिनारो पावणो, घी घालूं के तेल?

बेमन की शादी कनपटी में सिंदूर—बिना मन से किया हुआ काम ठीक नहीं होता। तुलनीय: भोज० बेमन क बियाह कनपटी मे सेनुर।

बे माघे घी खिचड़ी खाय, बे मेहरी ससुरारी जाय; बे भादों पेन्हाई पव्वा, कहें घाघ, ये तीनों कव्वा—घाघ के अनुसार माघ मास के अतिरिक्त किसी अन्य मास में घी-खिचड़ी खाने वाला, बिना पत्नी के ससुराल जाने वाला, बिना भादों मास के झूला झूलनेवाला मूर्ख होता है। आशय यह है कि माघ के महीने में ही घी-खिचड़ी खाने का आनंद मिलता है, पत्नी रहने पर ही ससुराल जाने में अच्छा लगता है और भादों के महीने में झूला झूलने का सही आनन्द मिलता है।

बे मीर बाज़ी अबतर—फ़र्ज़ी के पिट जाने पर शतरंज की बाजी कमज़ोर पड़ जाती है। अर्थात् बिना मालिक या अधिकारी के काम बिगड़ जाता है।

बे मेह की डामरी, घोड़ा बिना लगाम; बे माथ के लश्कर तीनों भइल निकाम—बिना पानी की खेती, बिना लगाम का घोड़ा, बिना सेनापति की सेना ये तीनों बेकार है।

बेर और लड़की के बढ़ते देर नहीं लगती—अर्थात् ये दोनों बहुत तेज़ी से बढ़ती हैं।

बेर खांसी का घर है—बेर का फल अच्छा नहीं होता। उसके खाने से खांसी की बीमारी हो जाती है। तुलनीय: ब्रज० बेर खांसी कौ घरै।

बेखार गुल नहीं—बिना दुख के सुख नहीं मिल सकता।

बेल के मारे बबूल तले, बबूल के मारे बेल तले—बेल से मार खाई तो बबूल के तले गए और बबूल तले मार खाई तो बेल के पास गए। अर्थात् बदक़िस्मत आदमी सभी जगह ठोकर खाता है।

बेलदारिन के बेटी के नइहरे सुख न ससुरे सुख—बदनसीब को कहीं भी आराम नहीं मिलता। तुलनीय: मैथ० नुनिया का बेटी का न नइहरे सुख न ससुरे सुख।

बेल पकने से कौवे को क्या लाभ—नीचे देखिए।

बेल पक्का तो कौवे के बाप को क्या?—(क) जब कोई व्यर्थ में किसी दूसरे की बात में दखल दे या दूसरे की चीज में हिस्सा चाहे तो कहते हैं। (ख) जब कोई ऐसी चीज में दखल दे जिसमें वह कुछ न कर सके (पके बेल को कड़े छिलके के कारण कौवा तोड़कर खा नहीं सकता) तो भी कहते है।

बेल फूटा राई-राई हो गया—बेल फूटा और टुकड़े-टुकड़े हो गया। जब किसी संस्था, परिवार, देश या समूह में फूट होती है तो उसकी क़द्र बहुत घट जाती है।

बेल बाड़ पर नहीं चढ़ेगी तो किस पर चढ़ेगी?—यदि बेलें बाड़ पर नहीं चढ़ेंगी, जिस पर चढ़ना उनका स्वभाव और अधिकार है तो और किस पर चढ़ेंगी। इस लोकोक्ति का प्रयोग यह बताने के लिए किया जाता है कि प्रत्येक कार्य प्रकृति के अनुसार होता है, अपनी इच्छा के अनुसार नहीं। तुलनीय: माल० वाड़ पर बेलड़ो नी चढ़े तो कण पर चढ़े।

बेलाग बेबाक—जो आदमी किसी प्रकार की लाग-लपेट नहीं रखता वह किसी से दबता नहीं। तुलनीय: पंज० नियत साफ़ ते कीसा पुर; फ़ा० आंरा कि हिसाब पाकस्त अज़ महासबा बेबाक; अर० मन लाज़नबा लहू लायूख़ाफ़ू अले।

बेवक़ूफ़ के सिर पर क्या सींग होते हैं—मूर्ख की कोई बाह्य पहचान नहीं होती।

बेवक़ूफ़ दुनिया में आएँ तो आसमान भी कांपे—मूर्ख जब पैदा होते है तो आसमान भी काँपने लगता है। मूर्खों के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय: पंज० फुद्दू जम्मन ते कंदा कम्पन।

बेवक़ूफ़ मिली बनियाइन, डाल दिए डेढ़ सेरी—बनिए की मूर्ख औरत तुम्हें मिली जिसने सेर भर की जगह डेढ़ सेर तौल दी। जब किसी के सीधेपन का नाजायज़ फ़ायदा उठाया जाय तब कहते हैं।

बेवक़ूफ़ सराहने पर चमार मारने पर—मूर्खों की जब सराहना की जाती है तब वे बात मानते हैं। चमारों को जब पीटा जाता है तब वे काम करते हैं या बात मानते हैं।

बेवक़्त की शहनाई, मुए कूढ़ने बजाई—जब कोई बेवक़्त की बात कहे तो कहते हैं। तुलनीय : अव० बिन्न बखत कै शहनाई।

बेवसीले नौकरी नहीं मिलती—बिना पहुँच या माध्यम (वसीले) के नौकरी नहीं मिलती। यह आज के युग पर व्यंग्य है। क्योंकि आजकल योग्यता के आधार पर नहीं बल्कि पहुँच या माध्यम के आधार पर नौकरी मिलती है या काम होता है। तुलनीय : अव० बिना वसील कै नौकरी नाही मिलत।

बेवसीले मौत भी नहीं आती—मौत भी किसी बहाने से आती है। अर्थात् बिना बहाने या जरिए के संसार में कोई भी काम नहीं होता।

बेवारिसी नाव डावाँडोल—बिना मालिक की नाव का कोई ठिकाना नहीं होता। आशय यह है कि जिसका कोई संरक्षक नहीं होता उसकी ज़िन्दगी सही रास्ते पर नहीं आ पाती।

बेशरम आदमी झूठ बोलने से नहीं डरता—बेहयाई की बात करने वाले के प्रति कहते हैं।

बेशरम की नाक कटी, हाथ भर रोज बढ़ी—दे० 'नकटे की नाक कटी···'।

बेशरम को दुख नहीं कंजूस को सुख नहीं—न तो बेशर्म को दुख होता है और न कंजूस को सुख।

बेश्या बरस घटावही, जोगी बरस बढ़ाय—वेश्या कम अवस्था की और योगी अधिक अवस्था का अच्छा समझा जाता है। इसलिए ही पूछने पर ये दोनों अपनी उम्र क्रमशः कम से कम और अधिक से अधिक बताते हैं। दोनों पर व्यंग्य है।

बेसब्र तेली चाटे तेल—बेसब्र आदमी पकौड़े तले जाने का भी सब्र नहीं करता पहले ही तेल चाटने को तैयार हो जाता है। उच्छृंखल व्यक्तियों के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : माल० भज्या पेली तेल चाटे।

बेसवा सती न कागा यती—न तो वेश्या सती हो सकती है और न ही कौवा संन्यासी हो सकता है। अर्थात् किसी के स्वभाव में परिवर्तन नहीं लाया जा सकता। दुष्टों के प्रति व्यंग्य।

बेश्या बिटिया नील है, बन सावाँ पुत जान; वो आई सब घर भरें, दोउ लुटावत आन—नील नामक बीज वेश्या की कन्या है और कपास तथा सावाँ वेश्या के पुत्र हैं। कन्या आयेगी तो घर को धन से भर देगी किन्तु पुत्र आयेगा तो घर का धन भी नष्ट कर देगा। अर्थात् नील को खेत में बोने से खेत की उर्वरा शक्ति बढ़ जाती है परन्तु कपास और सावाँ बोने से खेत की शक्ति कम हो जाती है।

बेहया इक गाँव बसें, घड़ी में लड़ें घड़ी में हँसे—एक गाँव में ही बेशर्म लोग रहेंगे तो शांतिपूर्वक न रहकर कुछ-न-कुछ उत्पात ही करेंगे। जिन व्यक्तियों के मिजाज का पता न लगे अर्थात् वे ज़रा-सी बात से प्रसन्न और ज़रा-सी बात से अप्रसन्न हो जाएँ तो उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय : माल० नकटा नकटी नगर बसे, घड़ीक हँसे ने घड़ीक भसे।

बेहयाई का बुरक़ा मुँह पर डाल लिया है—अत्यंत निर्लज्ज आदमी को कहते हैं।

बेहया के चूतड़ पर पेड़ लगा आओ लोगो छाँह में बैठो—किसी बेहया के चूतड़ पर पेड़ उगा तो वह सबसे कहने लगा कि छाया में आकर बैठिए। अपनी बुराई को प्रदर्शित करके गौरवान्वित होने वाले के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : कौर० बेहा की गाँड में रूख उपजा, आओ लोगो या छाँ बैठो।

बेहया के नीचे रूख जमा, उसने जाना छाँह हुई—बेशर्म खराबी को भी अच्छी समझता है, चाहे उससे उसकी इज़्ज़त में बट्टा क्यों न लगे। तुलनीय : अव० बेहा कै गाँड़ मा रूख जाया त कहेस मोका छाँह है।

बैंगनों का नौकर नहीं हूँ आपका नौकर हूँ—दे० 'नौकर मालिक के हैं बैंगन ··'।

बैठकर सैर मुल्क की करना, यह तमाशा किताब में देखा—यह तमाशा पुस्तकों में ही देखने को मिलता है कि बैठे-बैठे देशाटन हो जाता है। पुस्तक पढ़ने से सभी देशों का हाल मालूम हो जाता है, इस प्रकार देशाटन हो जाता है।

बैठ खाय हो मोटा, नफा न टोटा—जो व्यक्ति कोई काम ही नहीं करेगा तो उसे लाभ और हानि कैसे होगी? और वह बैठा-बैठा मोटा भी अवश्य हो जायगा। जिन व्यक्तियों को किसी प्रकार की चिंता और काम न हो उनके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० निगंडे मोटा नफा न

टोटा।

बैठता बनिया, उठती मालिन—दुकान पर सुबह बैठता हुआ बनिया और संध्या को दुकान मे उठती हुई मालिन सौदा सस्ता देती है। बनिया बोहनी करने के लिए सामान उपयुक्त दामों से भी कम दाम में दे देता है और मालिन अपने फूल आदि को समाप्त करने के लिए संध्या को सौदा खूब सस्ता बेचती है। तुलनीय : राज० बैठतो वाणियो, उठती माळना।

बैठते भँवरे को उड़ा देता है—भँवरे को बैठते ही उड़ा देने से वह मधु कैसे पा सकता है। मधु पाने के लिए समय लगता है। जो व्यक्ति एकाएक ही काम आरंभ करके उससे लाभ प्राप्त करना चाहे और अपनी उतावली के कारण कुछ भी न पाये उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : भीली—इ ते बेहतो भमर उडाड़े।

बैठना भला छाँव का, हो भले करील—बैठना छाँव का ही अच्छा होता है चाहे वह करील की ही क्यों न हो। (क) सदा छाँव में ही बैठना चाहिए चाहे वह घनी हो या विरल। (ख) संपन्न व्यक्ति की शरण ग्रहण करनी चाहिए भले ही वह कठोर हो। तुलनीय : राज० बैठणों छयाँ मे, हुवो भलाँई कैर ही।

बैठने को चटाई पर ताने के तम्बू—चटाई तो बैठने के लिए बिछाई है, किन्तु ऊपर से तम्बू तान रखा है। प्रस्तुत कहावत बेमेल कार्य करने पर कही जाती है। तुलनीय : भोज० बइठे के चटाई ताने के तम्मू।

बैठने को जगह दे दो, लेटने को खुद ही कर लेंगे—जो व्यक्ति थोड़ी-सी शरण पाने के बाद धीरे-धीरे काफ़ी अधिकार जमा लेता है उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

बैठा ठाला बानिया सेर बांट तोले—दे० 'बेकार बनिया क्या करे···'।

बैठा नाई पटरा मूंड़े—ऊपर देखिए। तुलनीय : मेवा० नवरो नाई कई करे बैठो बैठो पाटला मूँडे।

बैठा बनिया क्या करे, इस कोठी के धान उस कोठी में धरे—खाली बैठने वालों के लिए कहा जाता है। दे० 'बेकार बनिया क्या करे···'। तुलनीय : भोज० बइठल बनिया का करे, ये कोठिला क धन ओ कोठिला मे धरे; अव० बैठी बानिन का करै, इ कोठी कै धान ऊ कोठी मा धरै; मेवा० बैठो वाण्यो कई करे, अठी का तोला उठी करे।

बैठा बनिया क्या करे, इस बर्तन का धान उस बर्तन करे—दे० 'बैठा बनिया क्या करे···'।

बैठा बनिया सेर बांट तौले—दे० 'बेकार बनिया क्या करे···'।

बैठा बूढ़ा टमकी फोड़े—प्रस्तुत कहावत किसी ऐसे व्यक्ति को लक्ष्य करके व्यंग्य से कही जाती है जो काम कुछ भी नहीं करता, उलटे बैठा-बैठा दिल जलानेवाली बातें करता है। तुलनीय : भोज० बइठल बुढ़वा टमकी फोरे।

बैठा मजूर, मरीज बराबर—मज़दूर यदि घर में बैठ जाय या काम न करे तो वह बीमार हो जाता है। जो व्यक्ति परिश्रम करते हैं वे कभी आराम से नही बैठते और यदि बैठते है तो बीमार पड़ जाते है। तुलनीय : राज० बैठो मजूर मांदो पड़ै।

बैठा माला फेर, कभी तो लहर आयगी—बैठकर ईश्वर का भजन करो कभी तो उसकी कृपा होगी और तुम्हारा कार्य सिद्ध हो जायगा। जो व्यक्ति बारंबार प्रयत्न करने पर भी किसी कार्य में सफलता प्राप्त नहीं कर पाते उनको धीरज बँधाने और ईश्वर मे विश्वास रखने के लिए कहते है। तुलनीय : राज० बैठ्या माळा फेर, मुसाफर! कदेयक हाळो निवज्यागी।

बैठा रहकर गरुड़ भी एक क़दम नहीं चल पाता—अर्थात् बिना कुछ किए सफलता नही मिलती या कुछ प्राप्त नही होता। तुलनीय : सं० अगच्छन्नवैनेयोऽपि पदमेकं न गच्छति।

बैठी बुढ़िया मंगल गावे—वृद्ध स्त्री जो कुछ काम नही कर सकती, बैठकर गीत ही गाती है। अर्थात् काम-काजी व्यक्ति सामर्थ्य के अनुसार सदा कुछ न कुछ करते रहते हैं। तुलनीय : पंज० बैठी बुड्ढी गीत गावे।

बैठे के सामने खड़े का क्या जोर—बैठे हुए के सम्मुख खड़े की कोई बात भी नही पूछता। (क) जिस व्यक्ति ने किसी स्थान पर पहले पहुँचकर अधिकार कर लिया वहाँ दूसरे के पहुँचने पर उसकी एक नही चलती। (ख) बलवान या धनवान के सम्मुख निर्बल या निर्धन का कोई ज़ोर नही चलता। तुलनीय : राज० बैठाँ ऊभांरो काँई जोर?

बैठे जोय तो उठावे न कोय—देखभाल कर बैठने से कोई नहीं उठाता। जो व्यक्ति अपनी स्थिति के अनुसार स्थान पर न बैठकर ऊँचे स्थान पर बैठता है उसी को वहाँ से उठाया जाता है। अपनी हैसियत के अनुसार काम करना चाहिए और इच्छा भी हैसियत के अनुसार ही करनी चाहिए। तुलनीय : राज० बैठै जोय तो उठावै न कोय।

बैठे बनिया की पहचान, हेर-फेर कोठी में धान—

बनिया बेकार नहीं बैठता, कोई काम न रहने पर एक बर्तन की चीज़ दूसरे में रखता रहता है, अर्थात् कुछ-न-कुछ अवश्य करता रहता है ।

बैठे बनिया क्या करें, उस कोठे का धान इस कोठे धरें—दे० 'बैठा बनिया क्या करे···'।

बैठे बात होवे, करे काम होवे - बैठकर केवल बातें की जा सकती हैं, काम तो करने से ही होता है। परिश्रम किए बिना कोई काम नहीं होता । तुलनीय : भीली --बैठे काम नी चाले काम ते कीदे चाल है।

बैठे-ठे खाने से पहाड़ भी समाप्त हो जाते हैं— अर्थात् बैठकर खाने से बहुत बड़ी पूँजी भी समाप्त हो जाती है। जो लोग कुछ भी काम नहीं करते और संचित धन को ही खर्च करते है उन्हें समझाने के लिए ऐसा कहते हैं ।

बैठे-बैठे खाने से राजा का भंडार भी खाली हो जाता है—ऊपर देखिए ।

बैठे से तो क़ारूँ का खज़ाना भी खाली हो जाता है-- बैठ कर खाने पर बड़ा से बड़ा कोष भी खाली हो जाता है। किसी के बेकार बैठने पर कहते है । (क़ारूँ इस्लामी धर्म ग्रंथों के अनुसार एक कंजूस राजा था। मुसलमानों को दफ़नाने के वक़्त उनके मुँह मे रुपया रखा जाता है, क़ारूँ क़ब्रें खोदकर उन्हें भी निकलवा लिया था। उसका खज़ाना बहुत बड़ा था) । तुलनीय : अव० बइठे मे तौ राजा के खजानौ खाली होय जात हैं; हरि० बारा साँपडज्या पर टीड़ी नाह सापडै ।

बैठे से बेगार भली खाली बैठने से बिना मजदूरी के काम करना ही अच्छा है । अर्थात् बेकार कभी नहीं बैठना चाहिए, कुछ-न-कुछ अवश्य करते रहना चाहिए। तुलनीय : भोज० बइठले से बेगारी भल; राज० बैठ्या सू बेगार भली; छत्तीस० बइठे बिगारी मही; कश्म० बेहनअ खोनअ बेगअर्य जान; मरा० बेकारी पेक्षां बिगारी बरी; पंज० वैण नाल्यों करणा चंगा; ब्रज० बैठे ते बेगारि भली ।

बैठो काग मुँडेर पर, गरुड़ न माने कोय --मुंडेर पर बैठने से कौआ गरुड़ नहीं हो जाता। अर्थात् ऊँचे आसन पर बैठने से नीच बड़ा नहीं हो जाता।

बैठो देवल सिखर पर वायस गरुड़ न होय-- ऊपर देखिए ।

बैद करै बैदाई, चंगा करै खुदाई —ईश्वर की ओर से आदेश मिलता है और डाक्टर लोग फ़ीस लेते हैं; वैद्य तो केवल अपनी विद्या का चमत्कार दिखलाता है यथार्थतः ईश्वर ही चंगा करता है ।

बैद की बैदाई गई, कानी की आँख गई-- काम बिगड़ जाने पर दोनों की हानि होती है। बिगड़ने के कारण काम वाले का काम भी नहीं होता और काम करनेवाले को मज़दूरी भी नहीं मिलती ।

बैर प्रीति नहि दुरइ दुराये—बैर तथा प्रीति छिपाने से नहीं छिपते ।

बैरी का बोल बसूले का छोल —दुश्मन के वचन बसूले की मार की तरह कलेजे को छीलते हैं या बुरे लगते है। अर्थात् दुश्मन की बोली बहुत कष्टदायी होती है ।

बैरी का मत माने, औ तिरिया की सीख; क्वार करै हर जोतनी; तीनों माँगे भीख—दुश्मन की बातों पर विश्वास करने वाला, स्त्री के कहे अनुसार कार्य करने वाला और क्वार के महीने में जुताई करने वाला ये तीनों भीख माँगते है ! कारण कि दुश्मन सदा उलटा काम करता है, स्त्री कम बुद्धि की होती है, इसलिए वह अच्छी सलाह नहीं दे सकती और खेत की जुताई आषाढ़ मास में करने से फ़सल अच्छी होती है क्वार में नहीं ।

बैरी लजै न हाहा खाए -(क) खुशामद या चाटुकारी करने से भी दुश्मन नहीं छोड़ता। (ख) खुशामद करने से हाथ आए बैरी को नहीं छोड़ना चाहिए ।

बैरी बोल घिनावने, मरिए अपने काल - लोग मरते अपनी मौत से हैं किसी के कोसने से नहीं, फिर भी दुश्मन को कोसना बुरा लगता है।

बैरी मारिए फागुन की बहार दुश्मन को मारने से फागुन के माह जैसा सुख मिलता है । आशय यह है कि शत्रु के मारने मे एक विशेष प्रकार का आनन्द मिलता है ।

बैरी से बच प्यारे से रच --शत्रु से बचकर और मित्रों से मिलकर रहना चाहिए ।

बैरा करत नहिं तब डरेउ, अब लागे प्रिय प्रान - बैर करते हुए तो नहीं डरे और अब प्राण का मोह लग रहा है। जब कोई बैर मोल लेकर खतरे के समय पीछे हटे तो कहते हैं ।

बैल अगोतर गाय पछोतर—बैल का अगला हिस्सा तथा गाय का पिछला हिस्सा भारी होना चाहिए, तभी वे अच्छे माने जाते हैं।

बैल कहीं भी जावेगा तो हल ही खींचेगा -बैल जहाँ कहीं भी जाएगा, हल छोड़ और काम नहीं करेगा। तात्पर्य यह है कि मजदूरी करके जीविका चलाने वाले व्यक्ति कहीं भी जायँ उन्हें मज़दूरी तो करनी ही पड़ेगी। तुलनीय . भोज० बरध कतहीं जाई तऽ हरे न खींची।

बैल का बैल गया, नौ हाथ पगहा गया—बैल खुद तो गया ही साथ में नौ हाथ रस्सी भी ले गया। (क) एक नुक़सान और उसी के साथ कोई और भी नुक़सान हो जाय तो कहते हैं (ख) कोई एक व्यक्ति बिगड़ जाय और अपने साथ और किसी को भी बिगाड़ डाले तो कहते हैं। तुलनीय : अव० आप का आप गयें, नौ हाथ पगहौ ले गयें।

बैल का सींग गाय में गाय का सींग बैल में—किसी काम में इधर-का उधर करने पर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० बरध क सीघ गाई मे गाई क सीघ बरध में।

बैल को सींग भारू नहीं होते—बैल को अपने सीग भारस्वरूप नही लगते। (क) सन्तान का भार नहीं मालूम पड़ता। (ख) अपनी चीज़ किसी को बुरी नही लगती।

बैल चमकता जोत में, औ चमकीली नार; ये बैरी हैं जान के, लाज रखें करतार जोतते समय चमकने वाला बैल और चटक-मटककर चलने वाली स्त्री ये दोनों प्राण-घाती है। इनमे भगवान ही इज्जत बचा सकते है। इन दोनों को देखकर बहुतों की निगाह इन पर जम जाती है और इन्हें पाने का प्रयत्न करते हैं।

बैल चले पाँच कोस, बनिया चले दस कोस—गाँव के बनिए बहुत तेज़ चलते है इसलिए कहते हैं कि बैल जितने समय में पाँच कोस चलेगा उतनी देर में बनिया दस कोस चलेगा। तुलनीय : माल० बैल चाले पाँच कोस, हाजी चाले दस कोस; पंज० टग्गा चले पंज कोह कराड़ चले दस कोह।

बैल जोत के गाय दुह के—बैल को हल में जोतकर तथा गाय को स्वयं दुह के ख़रीदना चाहिए। पशुओं के डील-डौल या सुंदरता देखकर ही नहीं लेना चाहिए क्योंकि इसमे धोखा होने का भय बना रहता है। तुलनीय : भीली —ढाहो तो हाकी न लेवो, डोबी दोई न लेवी।

बैल तरकना टूटी नाक, ये काहू दिन देहैं दाँव—टूटी हुई नाव तथा चौंकने वाले बैल का कभी भी विश्वास न करना चाहिए क्योंकि ये किसी समय भी धोखा दे सकते हैं।

बैल तो बैल गया नौ हाथ पगहा भी लेता गया—दे० 'बैल का बैल गया ...'।

बैल दीजे जायफल क्या बोले क्या खाय—बैल को यदि जायफल दिया तो वह न तो उसे खाएगा और न कुछ बोलेगा। अर्थात् मूर्ख व्यक्ति गुण की इज़्ज़त नही करता। या मूर्ख व्यक्ति अच्छी चीजों के महत्त्व को नही समझता।

बैल न कूदा, कूदा गौन—जिससे मर्मभेदी बात की जाय वह न चिढ़े किन्तु दूसरा बुरा माने तब कहते हैं।

बैल न कूदा कूदी गौन, यह तमाशा देखे कौन ?—ऊपर देखिए।

बैल न कूदे कूदे गौन, यह तमाशा देखे कौन ?—ऊपर देखिए।

बैल बगौधा निरधिन जोय, घर ओरहन कबहुँ न होय—जिसके घर में बगौधे जाति वाला बैल तथा बिना गुण वाली स्त्री होती है उसके यहाँ उलहना कभी नहीं जाता है।

बैल बधिया, साझे अधिया—साझे के समय बैल और बधिया दोनों समान समझे जाते है। ऐसा भी समय आता है जब अच्छे-बुरे को समान दृष्टि से देखना पड़ता है।

बैल बेंच घांटी पर रार—बैल बेच दिए हैं लेकिन उसके गले में बँधी घंटी (घांटी) के लिए एतराज कर रहे हैं। जब कोई किसी को मूल्यवान वस्तु दे दे लेकिन उससे संबद्ध किसी छोटी वस्तु के देने में हील-हुज्जत करे तो उसके प्रति कहते हैं।

बैल बेसाहन जाओ कंता, भूरे का मत देखो दंता—हे स्वामी ! जब बैल खरीदने जाना तो भूरे रंग के बैल का दाँत मत देखना अर्थात् उसे न खरीदना। कहने का तात्पर्य यह है कि भूरे रंग के बैल काम में अच्छे नहीं होते।

बैल मरे और खेती खोय, ऐसा काम करो न कोय—बैल मर जाय और खेती भी न मिले ऐसा काम किसी को भी नहीं करना चाहिए। बैल से इतना अधिक काम नही लेना चाहिए कि वह काम के बोझ से मर ही जाय और साथ ही खेती भी नष्ट हो जाय। प्रत्येक से उतना काम लेना ही लाभदायक होता है जितनी उसकी सामर्थ्य हो। तुलनीय : भीली—ढाहो मरी जाये ने खेती नो नीपजे जे हू काम नी करव्।

बैल मुसरहा जो कोई ले, राज भंग पल में कर दे; त्रिया बाल सब कुछ छूट जाय, भीख माँगि के घर-घर खाय जो लटकती हुई डील वाले बैल को मोल लेता है उसका राज क्षण-भर में नष्ट हो जाता है। स्त्री, बाल-बच्चे छूट जाते हैं तथा घर भीख माँगकर खाने लगता है। अर्थात् उपरोक्त ढंग के बैल अशुभकारी होते हैं।

बैल लीजै कजरा, दाम दीजै अगरा—काली आँखों वाले बैल को पेशगी दाम देकर ख़रीद लेना चाहिए। अर्थात् इस तरह के बैल बहुत अच्छे होते हैं।

बैल सरकारी यारों की टिटकारी—बैल तो सरकारी

हैं लेकिन मित्र लोग खूब मौज से उनसे काम लेते हैं। दूसरों के साधन से मनोरंजन करने वालों पर कहते हैं।

बैल सिंगारो, ज्वान मुछारो—बैल सींगों से और मर्द मूँछों से अच्छे लगते हैं या सींग वाले बैल और मूँछ वाले मर्द सुदर लगते हैं।

बैसाख सुदी प्रथमै दिवस, बादर बिज्जु करेइ; दामा बिना बिसाहि जै, पूरा साखे मरेइ—यदि बैसाख सुदी प्रतिपदा के दिन बादल हों और बिजली चमके तो वर्षा अच्छी होगी और अन्न बिना मोल के बिकेगा। अर्थात् सस्ता बिकेगा।

बोओ गेहूँ काट कपास, होवे न ढेला न होवे घास—कपास के बाद गेहूँ को बोना चाहिए किन्तु उसमें ढेला तथा घास नहीं होनी चाहिए।

बोए आम फले भाटा—आम का पेड़ लगाया और बैंगन का फल मिला। भलाई के बदले में बुराई पाने पर कहते हैं।

बोएगा सो काटेगा, करेगा सो भरेगा—जो आदमी जैसा बोएगा, वह वैसा ही काटेगा, जो जैसा काम करेगा उसको वैसा ही फल मिलेगा। अर्थात् कर्म और श्रम के अनुसार ही फल मिलता है। तुलनीय: माल० करेगा जो भरेगा ने वावेगा जो लूणेगा; पंज० राएगा सो बडेगा करेंगा सो दरेंगा; अं० As you sow so you reap.

बोए पेड़ बबूल के आम कहां से होय—बबूल का वृक्ष लगाने से आम के फल की प्राप्ति नहीं होती। जो बुरा कर्म करके भी अच्छे फल की चाह रखते है उनके प्रति कहते हैं।

बोझ हो तो कोई बाँट भी ले—बोझ हो तो कोई सहायता करने के लिए उसमें हिस्सा बँटा भी ले किन्तु पीड़ा कोई नहीं बँटा सकता। जब किसी रोगी को अधिक पीड़ा होती है तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय: राज० भार हुवै तो वंटाय ही लेवै।

बोझा थोड़ा, शोर ज्यादा—थोड़ा-सा बोझ है, किन्तु उसके लिए शोर बहुत अधिक कर रहे है। जो व्यक्ति छोटे से काम के लिए बहुत शोर मचाते है उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय: राज० हांती थोड़ी, हलहल घणी; पंज० पार कट रोला मता।

बोटी देकर बकरा लेते हैं—खूब नफ़ा कमाने वाले पर कहते हैं।

बोटी नहीं तो शोरबा ही सही—यदि मांस के टुकड़े न हों तो उसका रसा (शोरबा) ही मिल जाय तो ठीक है। अर्थात् (क) कुछ नहीं से कुछ की प्राप्ति अच्छी है। (ख) अच्छा नहीं तो बुरा ही सही।

बोया गेहूँ उपजा जौ—बोया था गेहूँ और पैदा हुआ जौ। भलाई के बदले बुराई पाने पर कहते है। तुलनीय: अव० बोया गोहूं, भवा जवा; पंज० राई कनक जमया जौं।

बोया जोता टुकटुक देखें चोर लगावे घानी—जब कोई परिश्रम करके कुछ पैदा करे और उसका लाभ कोई और उठावे तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय: अं० One sows the seed another reaps the corn.

बोया न जोता अल्ला ने दिया पोता—नीचे देखिए।

बोया न जोता मुफ्त का पोता—खेत को जोतते-बोते तो हैं नहीं मुफ्त में लगान (पोत) माँगते है। (क) जमींदारों का लगान लेना व्यर्थ है क्योंकि वे कुछ भी परिश्रम नहीं करते। (ख) जो बिना परिश्रम के धन या रुपया आदि पावे उस पर भी कहते है।

बोया पेड़ बबूल का आम कहां से खाय—बबूल का पेड़ लगाने से तो काँटे ही मिलेंगे आम नहीं। बुरे कार्य का फल भी बुरा ही होता है। जिस व्यक्ति को उसकी दुष्टता का फल मिल जाय उसके प्रति कहते है। तुलनीय: माल० बोया पेड बबूल का आम कठे ती खाय।

बोया पेड़ बबूल का दाख कहां से खाय—ऊपर देखिए। तुलनीय: फ़ा० हरगिज़ अज शाखे-बेद बेर न खुरी; अर० मन यज़रा आ अल शूक लमा यह सुदो बिहीं इनअबन; अं० A bramble brings forth no grapes.

बोरन बिना न रोटी सोहे, गूथे बिना न चोटी सोहे—जब तक रोटी के साथ कुछ बोरन (दाल या तरकारी या दूध आदि बोरने की चीज़) न हो और चोटी गूँथी न हो तो अच्छी नहीं लगती।

बोल के घाव भरते नहीं—बात के घाव कभी नहीं भरते। कड़वी बात हृदय को सदा कचोटती रहती है। किसी को ऐसी बात नहीं कहनी चाहिए जिससे उसे चोट लगे और वह उसका प्रतिकार लेने का प्रयत्न करे। तुलनीय: राज० बोलीरा घाव को मिलै नी; पंज० बोलणनाल खू नईं परोंदे; अं० Wounds caused by words are hard to heal.

बोलत ही पहिचानिये, साहु चोर को घाट—चोर और साहु को उनकी बातचीत से ही पहचाना जाता है।

बोलता उतना नहीं जितना बोता है—जितना चुप रहता है उतना ही धीरे-धीरे हानि के बीज बोता जाता है।

जो व्यक्ति गुप्त रूप से षड्यंत्र रचता रहे और ऊपर से बिलकुल चुपचाप रहे उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : भीली- -बोले नी जतरो बोये; माल० बोले नी पण बोवे; पंज० बोलदा उना नईं जिना राँदा है।

बोलता चाकर मुनीम के आगे गूंगा— बहुत बातें करने वाला नौकर स्वामी के सामने चुप हो जाता है। कमजोर दिलवाले को कहते है।

बोलता नहीं, बोता है— दे० 'बोलता उतना नहीं…'।

बोलती पर सदमा है—बोली पर खतरा है। बहुत दुखी होने पर कहते है।

बोलती बन्द हो गई— आवाज़ बन्द हो गई। (क) किसी के मर जाने पर कहते है। (ख) जब कोई व्यक्ति भय या रौब के कारण किसी के सम्मुख कुछ बोल नही पाता तब भी कहते है। तुलनीय : अव० बोलती बद होय गय; राज० बोलती बन्द हुगी।

बोलते ही आशनाई है -जब तक मनुष्य जीवित है तभी तक प्रेम रहता है।

बोलते ही डुबोया बात प्रारम्भ करते ही कोई उलटी बात मुंह से निकल गई और काम चौपट हो गया। जो व्यक्ति सोच समझकर नहीं बोलते वे सदा हानि उठाते है। तुलनीय : राज० बोल्या'र बोया।

बोलना न सीखा सब सीखा गया धूल में --जिसे बातचीत करने का ढंग नही मालूम होता उसके सभी गुण व्यर्थ होते है। आशय यह है कि मनुष्य मे बातचीत करने का ढग होना बहुत आवश्यक है।

बोलने में दाम नहीं लगते—बोलने मे कोई धन थोड़े ही खर्च होता है। जब किसी से कुछ पूछा जाए और वह गुमसुम बना रहे तो उसे मुंह खोलने के लिए कहते है। तुलनीय : भीली बोलवा नो कई बश नी है।

बोलने में सार नहीं - बोलने मे कोई लाभ नहीं। जहां खामोश रहना ही लाभकर हो और कुछ बोलने का दूसरे पर वांछित प्रभाव पड़ने की संभावना न हो तो कहते हैं।

बोलने वाले का भुस बिकाय, ना बोले का धान सड़ाय --जो व्यक्ति अच्छा दूकानदार हो उसका भूसा भी बिक जाता है क्योंकि वह ग्राहक से अपने माल की प्रशंसा करता रहता है। इसके विपरीत जो दूकानदार अपने ग्राहकों से ठीक तरह बात नहीं करता उसके धान भी पड़े-पड़े सड़ जाते है। आशय यह है कि व्यापारी को अपने माल की प्रशंसा और निरंतर प्रचार करने मे ही लाभ होता है। तुलनीय : माल० बोले वंडा बुरा बेंचाय नी बोले वंडी जवार पड़ी रे; राज० बोले जकीरा भूंगड़ा ही बिक ज्याय।

बोलने से ही कोयल और कौए का पता चलता है— कौआ और कोयल रंग में एक ही जैसे होते हैं और उनका भेद उनके बोलने से ही खुलता है। बोली से ही मूर्ख और विद्वान् का पता चलता है। तुलनीय : भीली --कोयल कागलो एक रंग, बोल्या खबर पड़े; अव० जान परत हैं काग पिक ऋतु बसंत के माहिं; पंज० बोलण नाल ही कां अते कोयल दा पता लगदा है।

बोल भाई, आन फँसे हर गंगा—जब कोई किसी की मजबूरी से लाभ उठाता है तब उसके प्रति ऐसा कहते हैं।

बोल से ही मोल—बोलने से ही मनुष्य का मूल्यांकन होता है। (क) जो व्यक्ति सदा चुप रहता है उसकी योग्यता के संबंध में कोई कुछ नही जान पाता और बोलने वाले के संबंध मे धीरे-धीरे सभी जान जाते है और उसकी क़द्र करते है। (ख) मधुर बोली से ही मनुष्य की इज्जत होती है। तुलनीय : राज० बोलम् तोल वधै।

बोल से ही तोल - बोल-चाल से मनुष्य की योग्यता का पता चल जाता है। किसी बात को सोच-विचार कर कहना चाहिए। तुलनीय : राज० बोलम् तोल बधै।

बोली चुकी और माल पराया - किसी वस्तु को खरीदते या बेचते समय जब हम एक बार भी अपनी स्वीकृति दे देते हैं तो उसी समय उसका सौदा हो जाता है। जो व्यक्ति किसी बात को कहकर उससे इन्कार करना चाहे तो उसको समझाने के लिए कहते है। तुलनीय : माल० बोल बोल्या ने धन पराया।

बोली कोखरि फूली कासु, अब नाहीं बरखा कै आस यदि लोमड़ी बोलने लगे और कास भी फूल जाय तो वर्षा की आशा नहीं रहती।

बोलूं तो बाप को सांप खाय, न बोलूं तो मां को चोर ले जाय— धर्मसंकट की स्थिति मे कहते है जब व्यक्ति को हर दशा मे हानि की संभावना होती है।

बोले और भेद खुला—जो बोला उसका भेद खुला। आशय यह है कि व्यक्ति के बोलने से उसकी योग्यता का पता चल जाता है। तुलनीय : राज० बोल्यो र ठावा लाभा; पंज० बौले ते राज खुलया।

बोले का सड़ा भी बिके दे० 'बोलने वाले का भुस बिकाय…'।

बोले के ना चाले के मैं तो सूते को भली—मैं बोलना-चालना नही जानती। मैं तो केवल सोना जानती हूँ। न काम करने वाली और आलसी स्त्री के प्रति कहते है।

बोले तो बीबी मेरी, नहीं दरकार नहीं तेरी—बोलो तब तो तुम मेरी पत्नी हो नहीं तो तुम्हारी कोई आवश्यकता नहीं। स्वार्थी व्यक्ति के प्रति कहते हैं जो केवल अपने स्वार्थ सिद्ध होने तक ही सम्बन्ध रखते हैं।

बोलेन झूठ तो खाय जूत—जो झूठ नहीं बोलता वह जूते खाता है। हर सच्ची बात नहीं कही जाती, परिस्थिति को देखकर ही सच बोला जाता है। तुलनीय : भीली—जमाना हाई जूट नी बोले तो काम नी चाले; पंज० बोली चूठी खाई जुती।

बोले मोर महातुरी, खाटी होय जु छाछ; मेह मही पर परन को जानो काछे काछ—मोर जल्दी-जल्दी बोले और मटठा जल्द ही खट्टा हो जाय तो समझ लो कि वर्षा पृथ्वी पर पड़ने के लिए कछनी काछे है। अर्थात् बहुत जल्द ही वर्षा होगी।

बोले सो कुंडा खोले—जो बोलता है उसी को फटक खोलना पड़ता है। अर्थात् जो किसी काम में आगे आता है उसी को कार्य करना पड़ता है।

बोलो तो बोलो, नहीं तो पिंजड़ा खाली करो—बोलना हो तो बोलो नहीं तो पिंजड़ा छोड़कर चले जाओ। निकम्मे नौकरों के प्रति कहते हैं कि काम करना हो तो ठीक से करो वरना छोड़कर चले जाओ।

बोवत बर्ल तो बोइयो नहीं बरी बना खइयो—यदि उड़द बोना सभव हो तो बोओ नहीं तो अच्छा है कि बीज का बड़ा बनाकर खा डालो।

बोओ बाजरा आवै पुक्ख, फिर मन कैसे पावे सुक्ख—पुष्य नक्षत्र में बाजरा बोने में मन को सुख कैसे मिल सकता है। अर्थात् पुष्य नक्षत्र में बाजरा बोने से पैदावार अच्छी नहीं होती जिससे कृषक को प्रसन्नता नहीं होती।

बोवै चना पसेरी तीन, सेर तीन की जुन्हरी कीन—चना पन्द्रह सेर प्रति बीघा और मक्का तीन सेर प्रति बीघा बोना चाहिए।

बोहनी होनां रदु बोला—बोहनी होने से बला टल जाती है। अर्थात् उसके बाद दिन-भर दूकान ठीक से चलने की आशा हो जाती है।

बोहरे की राम-राम यम का संदेशा—बोहरे (तकाज़ा करने वाला) का नमस्कार यम के संदेश से कम नहीं होता। उससे लोग डरते हैं, क्योंकि उसका नमस्कार एक प्रकार का तक़ाज़ा ही होता है।

बौना चला आकाश छूने—बहुत छोटे क़द का व्यक्ति (बौना) आकाश छूने जा रहा है। सामर्थ्य से बाहर प्रयत्न करने पर व्यंग्य। तुलनीय : मैथ० बौना चलल आकास छुवैले; भोज० बौना चलल आकास छुवै।

बौना जोरू का खिलौना—नाटे आदमी को यह कहकर खिझाते है कि वह अपनी स्त्री के लिए खिलौना जैसा है। तुलनीय : अव० बौउना मेहरारू क खेलवना।

बौहरे की राम-राम, जम का संदेशा—दे० 'बोहरे की राम…'।

ब्याज और भाड़ा दिन-रात चलते हैं—ये दोनों दिन-रात बढ़ते रहते हैं। तुलनीय : अव० बिआज औ भारा रात-भर मा बढ़ि जात है; राज० मिनख कमावै च्यार पोर, ब्याज कमावै आठ पोर।

ब्याज के आगे घोड़ा नहीं दौड़ सकता—क्योंकि ब्याज दिन-रात बढ़ता या चलता रहता है। तुलनीय, राज० ब्याज नै घोडा ही को पूगेनी; माल० ब्याज ने घोड़ा नी पूगे।

ब्याजखोर खुदा का चोर—ब्याज खाने वाला भगवान का धन चुराने वाला है। मुसलमानों में ब्याज लेना-देना हराम (वर्जित या निषिद्ध) माना गया है।

ब्याज ब्यापार का दास है—रुपया ऋण पर देने से उतना लाभ नहीं होता जितना कि व्यापार करने से होता है। अर्थात् स्वयं व्यापार करने में अधिक लाभ होता है। तुलनीय : राज० ब्याज ब्यापार रो गोलो है।

ब्याज, भाड़ा और दच्छिना बाकी नहीं अच्छे—ब्याज, किराया और दक्षिणा का बाक़ी रहना अच्छा नहीं होता। इनका तत्काल मिल जाना या दे देना ही अच्छा होता है। तुलनीय : हरि० ब्याज भाड़ा, दिच्छणा बाक्की रही कुच्छ्य ना।

ब्याज मूल तें प्यारो होय—(क) मूल से अधिक प्यारा ब्याज होता है। (ख) बेटे से भी पोता प्यारा होता है। (ग) बेटी से प्यारी बेटी की संतान होती है। तुलनीय : अव० बिआज मूरौ से पिआरी होत है; राज० ब्याज प्यारो है, मूल प्यारो कोनी।

ब्याज मोटा जमा में टोटा—ज्यादा ब्याज पर रुपया देने से मूलधन भी डूब जाता है। अधिक ब्याज लेने वालों को समझाने के लिए कहते है।

ब्यारी कबहु न छोड़िए, ब्यारी से बल जाय; जो ब्यारी औगुन करे, तौ दुपहर थोड़ा खाय—भोजन कभी नहीं छोड़ना चाहिए। भोजन से ही शक्ति बढ़ती है। यदि भोजन से नुक़सान हो तो दोपहर में हलका भोजन करना चाहिए।

ब्याह करे कुल देख, घर ले पड़ोस देख—विवाह कुल देखकर ही करना चाहिए अर्थात् अच्छे कुल में करना चाहिए और मकान पड़ोसियों को देखकर लेना चाहिए। अर्थात् अच्छे मुहल्लों में लेना चाहिए । तुलनीय : गढ़० ब्यौ ल्यूणो कुल सोधी, पाथी ल्यूणो मूल सोधी ।

ब्याह कहे मुझे कर देख, घर कहे मुझे कर देख - ब्याहा कहता है कि मुझे करके देखो तो पता चले और घर कहता मुझे बना के या मरम्मत करा के देखो तो पता चले। अर्थात् इन दोनों कामों में अनुमान से अधिक ही धन व्यय होता है । या इन दोनों कार्यों में अधिक धन व्यय होता है । तुलनीय : राज० ब्यांव कह—मनै मांड जोय, घर कह—मनै खोल जोय; माल० मांडो के के मांडी, देख, घर के के पाड़ी देख ।

ब्याह कहे मुझे कर देख, मकान कहे मुझे चिन देख—ऊपर देखिए ।

ब्याह किसी का, गीत किसी के—विवाह किसी का हो रहा है और गीत किसी दूसरे व्यक्ति के लिए गाए जा रहे है । जब कोई प्रमुख व्यक्ति का या मुखिया का मान न करके इधर-उधर के लोगों का आदर करे तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं । तुलनीय : गढ़० जैको ब्यौ तै धोराही ना ल्यो ।

ब्याह के गीत क्या सारे सच्चे—विवाह के समय गाए गए सभी गीत सत्य नही होते । आशय यह है कि विवाह के अवसर पर कही गई बातों का जीवन में पूर्ण रूप से पालन नही किया जा सकता । तुलनीय : हरि० ब्याह के गीत के सारे साच्चे हुया करें ।

ब्याह के गीत ब्याह में ही गाए जाते हैं—प्रत्येक कार्य स्थान और समय के अनुसार ही किया जाता है । जो व्यक्ति समयानुसार कार्य नही करते उनको समझाने के लिए कहते हैं । तुलनीय : राज० ब्यांकरा गीत ब्यांव मे गाईजें ।

ब्याह गए न बरात गए—न अपना विवाह हुआ और न ही किसी के विवाह में बारात गए । किसी कार्य में बिलकुल अनुभवहीन व्यक्ति के प्रति कहते हैं ।

ब्याह गाना गाने को और खाना खाने को—विवाह गाना गाने और खाना खाने के लिए ही होता है । आशय यह है कि विवाह के अवसर पर गाने और खाने की पूरी छूट होती है ।

ब्याह तो बिगड़ा ही, घर तो खाओ—विवाह तो बिगड़ ही गया है अब घर के व्यक्ति तो बरातियों का भोजन कर लें । अर्थात् हानि तो हो ही गई अब उसमें से जितना भी लाभ उठाया जा सके उठा लो । तुलनीय : राज० ब्यांव बीगड्या पण धररा तो जीमो ।

ब्याह न कराव झूठमूठ का चाव—काम होने पर या होने के पहले यदि कोई अपना स्वार्थ साधना चाहे तो कहते हैं । किसी को जानबूझकर धोखे में रखने पर भी कहते हैं ।

ब्याह न बरात चढ़ी, डोली में बैठी न चूं-चूं हुई—न ब्याह हुआ और न डोली में चढ़कर रोई । कुमारी कन्या को कहते हैं ।

ब्याह न शादी, लड़के का नाम ढूंढ़ने लगे—अभी शादी तक तो हुई नही और भावी पुत्र के लिए अच्छा-सा नाम खोजने लगे । बिना आधार के बहुत पहले से किसी बात के लिए चिंतित होना या हवाई महल बनाना । तुलनीय : छत्तीस० बर न बिहानव छट्ठीबर धान कूटैं; भोज० बर न बियाह, बरही क तैयारी; अं० Counting chicken before they are hatched.

ब्याह नहीं किया तो क्या बारात तो गए हैं—यदि मेरी शादी नहीं हुई तो क्या हुआ ? मैंने दूसरों के विवाह में ही जाकर बारात का आनंद या अनुभव प्राप्त किया है । यदि स्वयं नही किया है तो दूसरों को करते तो देखा है। जब कोई किसी को ताने के तौर पर कहे कि तुम इसे क्या जानो तो उसके उत्तर में यह कहावत कही जाती है। तुलनीय : अव० बिआह नाहीं कीन मुला बरात कीन है; राज० परणीज्य नही तो जान तो गया हा; हरि० ब्याह नाह कराया सै त के बरात मैं भी नाह गये स; पंज० घोड़ी नईं चडे ते चड़दे तां देखे ने; मरा० आमचें लग्न नसेल पण बरातीत तरी मिरवलों आहों ना ।

ब्याह नहीं किया तो क्या बारात भी नहीं गए ?—ऊपर देखिए ।

ब्याह नहीं किया तो बारात तो गए हैं—दे० 'ब्याह नहीं किया तो क्या…'। तुलनीय : छत्तीस० बिहाव नइ होय त घुरवा मां चढ़के देखे होहि ।

ब्याह नहीं किया तो मंडप तले तो बैठे हैं—दे० 'ब्याह नही किया तो क्या…'।

ब्याह नहीं हुआ तो क्या बारात नहीं गए—दे० 'ब्याह नहीं किया तो क्या…'। तुलनीय : कौर० ब्या न हुआ तो क्या बारात तो करी एं; हरि० ब्याह नांह हुया सै तै के बारात में भी नाहे चड्ढ्या सूं; मेवा० परण्या नहीं होवां तो भी जान में तो गया होवां ।

ब्याह नहीं हुआ तो क्या बरात भी नहीं गया—दे०

'ब्याह नहीं किया तो क्या···'। तुलनीय : राज० ब्याया नही तो जनेत तो गया हां ।

ब्याह नहीं हुआ तो बारात तो की है—दे० 'ब्याह नहीं किया तो क्या···'। तुलनीय : निमाड़ी व्याव नी करयो होयगा, बारात तो गया होयगा ।

ब्याह न हुआ, तो क्या बरातें तो की हैं—दे० 'ब्याह नहीं किया तो क्या···'। तुलनीय : कौर० ब्या न हुआ तो क्या, बरात तो करी एं ।

ब्याह पीछे पत्तल भारी—ब्याह के बाद पत्तल जैसी अदना चीज का भी खर्च अखरता है। अवसर के बाद थोड़ा खर्च करना भी अच्छा नहीं लगता। तुलनीय : हरि० ब्याह पीछै किसी बढ़ार ।

ब्याह बिगड़ा सो बिगड़ा, घर वालों को तो जिमा दो—दे० 'ब्याह तो बिगड़ा ही···'।

ब्याह माँ-बाप का किया, दूध बचपन का पिया—माँ-बाप अपने बच्चे का विवाह खूब देख-भालकर ही करते है तथा लड़कपन मे खाया-पिया हुआ ही आयु पर्यन्त काम आता है। ठीक समय तथा ठीक ढंग से किए हुए काम से लाभ होने पर उसकी प्रशंसा मे ऐसे कहते है। तुलनीय : गढ़० बाबू को कर्‌यूं ब्यो अर सबेर को धायूं मुख नासी आद ।

ब्याह में खाई धूर, फिर क्या खायगी धूर—अच्छी हालत मे भी जब कष्ट सहे तो और सुख की क्या आशा की जा सकती है।

ब्याह में बीद का लेखा—हरएक चीज का अपना-अपना समय होता है।

ब्याह, सगाई, नौकरी, राजी ही से होय—ये तीनो कार्य मर्जी से ही किए जाते है, जबरदस्ती नहीं। तुलनीय : राज० ब्याव, सगाई, चाकरी राजीपेरो काम ।

ब्याह हुआ नहीं गौने का झगड़ा—विवाह तो हुआ नहीं गौने के लिए झगड़ा कर रहे है। (क) काम करने से पहले मजदूरी आदि का झगड़ा खड़ा करने वालों के लिए कहते है। (ख) जिस बात का अभी कोई आधार ही न हो, यदि कोई उसे लेकर भविष्य के संबंध मे पर झगड़ने लगे तो भी कहते है। तुलनीय : हरि० भैंस नाह आई मीत पै रौला ।

ब्याही छोड़ दे मँगनी न छोड़े—विवाहिता स्त्री को छोड़ देना चाहिए लेकिन जिस लड़की से मँगनी हो गई हो उसे नहीं छोड़ना चाहिए। अर्थात् ब्याही स्त्री से भी अधिक मँगनी की गई लड़की पर ध्यान रखना चाहिए क्योंकि यदि उससे किसी दूसरे की शादी हो जाती है तो बड़ी बेइज्जती होती है। तुलनीय : पंज० बयाह् छड दे कड़माई न छड; ब्रज० ब्याही छोड़ि दे पर मांग न छोड़ै ।

ब्याही बेटी को घर रखना और हाथी बाँधना बराबर है—ब्याही लड़की को घर रखना हाथी रखने के समान है। अर्थात् (क) लड़की और जमाई को घर रखने से ज़्यादा खर्चा बैठता है। लड़की को अपने यहां रखने मे एक विशेष उत्तरदायित्व का भी निर्वाह करना पड़ता है। तुलनीय : अव० बिआही बिटिया राखब औ हाथी कै बांधब बरोबर है।

ब्याही बेटी पड़ोसिन दाखिल—विवाहिता लड़की पड़ोसिन के समान होती है, क्योंकि वह दूसरे के घर की हो जाती है।

ब्याही मरी कुवारी भाग—किसी की पत्नी मरती है तो किसी कुआँरी का भाग्य जगता है। एक के विनाश से दूसरे को लाभ पहुँचने पर कहते है। तुलनीय : अव० बिआही मरी कुआंरी कै भाग ।

ब्रह्मा आगे वेद बाँचे—ब्रह्मा के सम्मुख वेद बाँचते हैं। जो व्यक्ति किसी कार्य के अनुभवी व्यक्ति को उसके संबंध में बताए तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : राज० ब्रह्मा आगे वेद बाचै ।

ब्रह्मा के अक्षर हैं—बिलकुल सत्य बात के प्रति कहते है।

ब्राह्मण और धान की जातियाँ अनंत हैं—ब्राह्मण और धान की असंख्य जातियाँ होती है। ब्राह्मणों के अधिक भेद-भाव रखने के कारण ऐसा कहते है।

ब्राह्मण की रसोई वही खाय कि बैल—ब्राह्मण का पकाया गया भोजन उसी के खाने योग्य होता है या पशुओं के। आशय यह है कि ब्राह्मणों को भोजन बनाने का ढंग नहीं मालूम होता।

ब्राह्मण की शादी कहारों का मरन—ब्राह्मण के घर विवाह होने पर कहार काम करते-करते मर जाते है। अर्थात् (क) जब किसी के काम मे किसी और को परिश्रम करना पड़े तो कहते है। (ख) ब्राह्मण के विवाह आदि में कहारों को अधिक श्रम करना पड़ता है। तुलनीय : गढ़० बिटाणा संगरांद, डोमाणन उकरांत ।

ब्राह्मण, ठाकुर, लाला तीनों का मुँह काला तीनों को देशनिकाला—ब्राह्मण, ठाकुर और कायस्थ ये तीनो बुरे होते है। इन्हें देश से निकाल देना चाहिए। ब्राह्मण इधर-उधर की बातें करके लोगों को ठगते है, क्षत्रिय सबल होने

के कारण लोगों को तंग करते हैं और कायस्थ बहुत रिश्वत-खोर होते हैं, इसलिए ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मरा० भटजी, जमीनदार, व्यापारी या तिघाचें तोंड काळें (होवो) तिघाना सीमा पार करावें।

ब्राह्मण, नाऊ, हाथी इन्हें न चाहिए साथी—ब्राह्मण, नाई और हाथी को मित्र की आवश्यकता नहीं होती। आशय यह है कि ये तीनों अपनी जातिवालों को नहीं देख सकते।

ब्राह्मण नीचे धोबी देखे— उलटी बात पर कहते हैं।

ब्राह्मण परिब्राजकन्याय:—ब्राह्मणों और परिव्राजकों (संन्यासियों) का न्याय। यदि यह कहा जाय कि ब्राह्मणो तथा संन्यासियों को भोजन देना चाहिए तो इसका अर्थ यह है कि संन्यासी ब्राह्मणों में होते हुए भी, उनसे अलग एक विशिष्ट स्थान रखते हैं। प्रस्तुत न्याय 'गोबली वर्यन्याय:' तथा 'ब्राह्मण वशिष्ठन्याय:' के समान ही है।

ब्राह्मण मरने पर भी खाता है और जीने पर भी—(क) ब्राह्मण का आदर मरने पर भी होता है और जीने पर भी। (ख) ब्राह्मण हर दशा में कष्ट देते हैं।

ब्राह्मण वशिष्ठन्याय:—ब्राह्मणों और वशिष्ठ का न्याय। दे० 'ब्राह्मण परिव्राजक न्याय:'।

ब्राह्मणश्रमणन्याय:—ब्राह्मण संन्यासी और बौद्ध संन्यासी का न्याय। तात्पर्य यह है कि संन्यासी इस समय शुद्ध मतानुयायी है, पर इससे पूर्व ब्रह्मवादी था। जब कोई व्यक्ति पहले किसी मत का अनुयायी रहा हो और बाद में किसी दूसरे मत का अनुयायी हो जाय तो उसके प्रति इस न्याय का प्रयोग करते हैं।

ब्राह्मण से गदहा भला, ब्रह्मा से भला कुम्हार; कायस्थ से धोबी भला, सबसे भला चमार—गधा ब्राह्मण से, कुम्हार ब्रह्मा से, धोबी कायस्थ से और चमार सबसे अच्छा होता है क्योंकि ये दैनिक जीवन मे काफ़ी सहायक होते हैं। आशय यह है कि जो दैनिक जीवन में काम आवे वही अच्छे है भले ही वे बुरे कहलाते हों।

भ

भंग पी और डंड पेल—भंग पीओ और डंड पेलो। भंगेड़ी प्राय: भाँग की तारीफ़ में ऐसा कहा करते हैं।

भंग पीना आसान है मौजें जान मारती हैं—भाँग पीना तो आसान है, लेकिन उसका नशा कष्ट देता है। बिना समझे किसी काम का कर डालना आसान है, पर उसका नतीजा भोगना कठिन है। (मौजें = तरंगें, नशे के झोंके)।

भंगी की जात क्या, झूठे की बात क्या—भंगी जाति बहुत छोटी होती है या निकृष्ट होती है इसलिए उसकी गणना किसी जाति में नहीं होती और झूठ बोलने वाले की बातों का कोई महत्त्व नहीं होता।

भंगीयाँ दर बाग़ रफ़्तन्द बेर गुठली सब खा—कोई भंगेड़ी बाग़ में गया और बेर गुठली समेत खा गया। यह भंगेड़ियों पर ताना है।

भंगेड़ों का बस चले तो भाँग ही बोवावे—यदि भंगेड़ियों को अधिकार मिल जाय तो वे पूरी जमीन में भाँग ही बोवा दें। (क) बुरे लोगो के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते है जो दिन रात ऊट-पटाँग काम की ही योजना बनाते है पर विवशता-वश सफल नहीं हो पाते। (ख) अवसर मिलने पर सभी लोग अपने मन की करना चाहते है।

भंडुआ किसका यार, रंडी किसकी नार?—भडुआ किसका मित्र और वेश्या किसकी पत्नी? अर्थात् ये किसी के नहीं होते। आशय यह है कि दुष्ट व्यक्ति अपना स्वार्थ सिद्ध होने तक ही साथी रहते हैं। तुलनीय : भीली—गंड-कडं हूँ गोठी पणा चेनाल ना हूँ संग; पंज० पडुआ किदा यार रडी किदी यार; ब्रज० भडुआ कौन को यार, रंडी कौन की नारि।

भइल ब्याह मोर करबा का?—अब तो विवाह हो गया, अब क्या करोगे? (क) अब कोई अपना काम निकाल ले और दूसरे की माँग पूरी न करे तब कहते है। (ख) किसी का काम पूरा हो जाने पर कोई उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता। तुलनीय : भोज० भइल बिआह मोर करबऽ का; अव० भवा बिआह मोर करब्या का।

भइ अँधियारी फूली छाती चोन्ह पड़े राँड़ अहिवाती—अँधेरा होते ही विधवा बहुत प्रसन्न होती है और सधवा जैसी नज़र आने लगती है। भ्रष्ट विधवा पर कहते है।

भई गति साँप छछूंदर केरी—सर्प और छछूंदर की-सी दशा हो गई है। (क) जब कोई काम न करते बने न छोड़ते, अर्थात् दोनों ही में हानि हो तब कहते हैं। (ख) ऐसी विपत्ति में पड़ जाने पर भी कहते हैं जिससे बचने का कोई उपाय न हो। नीचे देखिए। तुलनीय : मरा० साप नि चिचुंद्रीच्या सारखी गत झाली।

भइ गति साँप छछूंदर केरी, उगले तो अंधा निगले तो कोढ़ी—साँप जब चूहे के भ्रम में छछूंदर को पकड़ लेता है तो उसको विचित्र विपत्ति का सामना करना पड़ता है।

कहा जाता है कि यदि वह उसे उगल दे तो अंधा हो जाता है और यदि निगल जाय तो कोढ़ी होकर गल जाता है। अर्थात् उसके लिए बचने का कोई रास्ता नही रह जाता। यदि कोई ऐसी विपत्ति में पड़े जहाँ से निकलने का कोई रास्ता न हो तो कहते हैं।

भई गलि कीट भृंग की नाईं—भृंगी दूसरे कीड़ों को भी अपना सा बना लेता है। जब कोई अपना रूप छोड़कर दूसरे में मिल जाय तब कहते हैं।

भई छछूंदर सर्प गति, उगलत बने न खात--दे० 'भई गति साँप···'।

भई छकानी बात जब जानि जात सब कोय--जब कोई बात तीन आदमियों तक पहुँच जाती है तब उसे सभी लोग जान जाते है। अर्थात् गुप्त बात दो आदमियों तक ही छिपी रहती है, दो से अधिक लोगो के जानने पर वह गुप्त नही रह सकती।

भए विधि विमुख विमुख सब कोऊ—विधाता के विमुख होने पर सभी प्रतिकूल हो जाते हैं।

भए सुकृत सब सुफल हमारे—हमारे सुकृत सब सफल हो गए। सफलता मिलने पर कहते हैं।

भकुआ भींगे गाँव के गोंयड़ा—मूर्ख गाँव के क़रीब रहकर भी भीग जाता है। गँवार आदमी के लिए कहा जाता है जो सामान्य बात भी नही सोच सकता। तुलनीय : अव० भकुआ भीजें गांव के मोइडे।

भक्षितेऽपि लशुने न शान्तो व्याधिः—लहसुन खाने से भी रोग दूर नहीं हुआ। कभी-कभी निकृष्ट साधन अपनाने पर भी सफलता प्राप्त नहीं होती तो बड़ी कटु निराशा होती है और तब इसका प्रयोग करते हैं।

भक्ति करे सो मुक्ति पावे—भक्ति करने वाला ही मुक्ति पा सकता है। (क) संसार के आवागमन से मुक्ति पाने का एक ही रास्ता है, वह है ईश्वर-भक्ति। (ख) श्रम करने पर ही सफलता प्राप्त होती है। तुलनीय : भीली—भक्ति टाल मुक्ति ने थाये; ब्रज० भगती करै सो मुकती पावै; पंज० पगती करे उह मुकती पावे।

भगले चोर कठरिया हाथ—भागते चोर को कठौती ही हाथ लगी। अर्थात् (क) भागता हुआ चोर जो कुछ पाता है, वही ले भागता है। (ख) जहाँ कुछ भी मिलने की उम्मीद न हो, वहाँ जो कुछ मिल जाय उसी से संतोष करना चाहिए। (कठरिया = कठौती, लकड़ी का एक छोटा बर्तन)।

भगवत को भगवत ही जाने—विद्वान ही विद्वान का सम्मान करता है। या गुणी ही गुणी की परख कर सकता है।

भगवान एक के इक्कीस करें—(क) ईश्वर वंश-वृद्धि करें। (ख) ईश्वर धन-वृद्धि करें। एक तरह का आशीर्वाद है। तुलनीय : राज० नारायण एकरा इक्कीस करै।

भगवान की निराली माया, किसी ने कमाया किसी ने खाया—संसार में कमाता कोई है और खाता कोई है। (क) पूंजीपतियों के प्रति कहते हैं, क्योंकि वे दूसरों के परिश्रम से अर्जित किए हुए धन पर मौज करते है (ख) कंजूसों के प्रति भी कहते है जिनकी दौलत का उपयोग दूसरे ही करते है। तुलनीय : मा० भगवान थारी अवगी गति, कुण कमावे कडी वनी।

भगवान के घर देर है, अंधेर नहीं ईश्वर न्याय अवश्य करता है, चाहे कुछ समय उपरान्त ही करे। जो व्यक्ति दुष्टों द्वारा सताए जाएँ उनको सान्त्वना देने के लिए कहते है। तुलनीय : माल० देर है पण अंधेर नी है, गढ़० परमेश्वर का घर देर छ, पर अंधेर नीछ; छत्तीस० भगवान घर देर है, अंधेर नइ ए; ब्रज० भगवान के घर देर है अंधेर नायें; पंज० रब दे कर देर है हनेर नई।

भगवान के लिए छोटे-बड़े सब समान—ईश्वर के लिए धनी-निर्धन, छोटे-बड़े सब एक समान है। मनुष्य ही मनुष्यों में भेदभाव रखता है, ईश्वर नही। ईश्वर का न्याय सबके प्रति एक-सा ही होता है। तुलनीय : भीली—मोटा छोटा नो राम एक है, न्यारा नी है; पंज—रब लई निक्के वड्डे इको जिहे।

भगवान गंजे को नाखून न दे—नहीं तो वह खुजलाकर सिर छील डालेगा। अर्थात् भगवान उन लोगों को कोई चीज न दे जो उसका दुरुपयोग करें।

भगवान गंजे को नाखून नहीं देता—जिसका सिर गंजा होता है, भगवान् उसको नाखून नही देता क्योंकि यदि उसे नाखून दे दिए जायँ तो वह अपना गंजा सिर खुजा-खुजाकर छील डालेगा। जो व्यक्ति किसी साधन को पाकर उसका दुरुपयोग करने की सोचे किन्तु वह उसको मिल न पाए तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : माल० भगवान गंज्या ने नख नी दे, राज० परमात्मा गिजें नै नख को दियानी; ब्रज० भगवान गंजे कूं नाखून नायें दे, पंज० रब गंजे नूं नऊं नई दिदा।

भगवान जब देगा तो छप्पर फाड़कर देगा—नीचे देखिए।

भगवान जिसे देता है, छप्पर फाड़कर देता है आशय

यह है कि जब ईश्वर किसी को बनाना चाहता है तब उसे अनायास लाभ होता है। तुलनीय : ब्रज० भगमान जायँ दे, छप्पर फारि कें देयँ।

भगवान देगा तभी होगा —ईश्वर की इच्छा से ही प्रत्येक वस्तु प्राप्त होती है। संतान, सुख, धन आदि सब उसी की दया से प्राप्त होते हैं, अपनी इच्छा से नहीं। तुलनीय : भीली-- थोड़ा मांये घणो राम कर दे जेरा धां है।

भगवान देता है तो छप्पर फाड़कर देता है—(क) जब किसी को कुछ मिलना होता है तो किसी-न-किसी बहाने मिल ही जाता है। (ख) भगवान देना चाहता है तो अकारण और असम्भव रूप में भी दे देता है। तुलनीय : गढ़० परमेश्वर जब देंद तब छप्पर फोड़िक देद; भोज० भगवान जब देलंत छान्हि फार के देल; पंज० रब जदो देदा है छप्पर फाड़ के देंदा है।

भगवान देता है तो पेट भर--भगवान जब देता है तो पेट भर कर ही। ईश्वर सुख देता है तो पेट भरकर और दुःख देता है तो भी पेट भरकर ही। तुलनीय : राज० परमात्मा घण-देवो है; पंज० रब देदा ए तें टिड पर के।

भगवान दे तो दोनों हाथों में रखना चाहिए जब ईश्वर धन दे तो ठीक ढंग से संचय करना चाहिए। तुलनीय : अव० भगवान देय, तो दुइनौ हाथ मा लेय।

भगवान ने गंजे को नाखून नहीं दिया—दे० 'भगवान गंजे को⋯'।

भगवान भावना के भूखे हैं—भगवान हृदय की सच्ची भावना देखते हैं, पूजा-पाठ नहीं। तुलनीय : राज० भगवान भावनारा भूखा है; ब्रज० भगमान तौ भावना कौ भूकौ है, पंज० रब मोंदे पुखे हुन।

भगवान ही बचाए--किसी के बहुत बड़ी विपत्ति में फँसने पर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० भगमान ई बचावै, पंज० रब बचाए।

भज कलदार, भज कलदार, कलदार भज मूढ़मते—धन ही सर्वशक्तिमान है, उसी की चिन्ता और भजन करो। तुलनीय : राज० भज कलदारं, भज कलदारं, कलदार भज मूढ़मते। (कलदार - रुपया)।

भजन और भोजन एकान्त—ईश्वर-भक्ति और भोजन एकान्त में ही ठीक होते हैं। तुलनीय : अव० भजन औ भोजन अकेलेन मा।

भजने को रामनाम खाने को पेड़ा - भजते हैं राम-नाम और खाते हैं पेड़ा। (ख) धनी महन्त या मठाधीशों आदि पर कहते हैं। (ख) उस पर भी कहते हैं जिसे आराम ही आराम हो। तुलनीय : कन्नौ० भजिबे कौं रामनाम, जो खइबे कौं पेरा।

भजेगा उसका ईश्वर— (क) जो प्रभु का भजन करते हैं, उनकी आवश्यकताएँ भगवान अवश्य पूरी करते हैं। (ख) जो ईश्वर पर विश्वास नहीं करते और दुख उठाते हैं या उनके कार्य सिद्ध नहीं होते उनके लिए भी ऐसा कहते हैं। (ग) जो परिश्रम करेगा उसको फल भी अवश्य मिलेगा, इस अर्थ में भी इस लोकोक्ति का प्रयोग होता है।

भट पड़े वह जमाना, नतनी को घूरे नाना—उस जमाने को धिक्कार है जिसमें नाना अपनी नतनी (नातिन) को बुरे भाव से देखता है। भ्रष्ट वातावरण के प्रति कहते हैं।

भट पड़े वह सोना, जिससे टूटे कान -ऐसा सोने का आभूषण नष्ट हो जाय जिससे कि कानों को तकलीफ़ हो। अर्थात् कष्टदायी अच्छी चीज़ भी बुरी समझी जाती है या त्याज्य होती है। तुलनीय : माल० ऊ सोना कर्यां जो कान ने खावे।

भट भटियारी बेसवा तीनों जात कुजात, आते का आदर करे जात न पूछें बात —भट, भटियारी और वेश्या ये तीनों जातियां स्वार्थी और कृतघ्न होती हैं, क्योंकि वे आते हुए व्यक्ति का तो धन-लोभ के कारण बहुत आदर करती हैं पर जाते हुए से बात तक नहीं पूछतीं।

भटा एक को पित करे करे एक को वाय- बैंगन (भटा) किसी के शरीर में पित्त पैदा करता है और किसी में वायु पैदा करता है। जब एक ही वस्तु एक को कोई हानि तथा दूसरे को दूसरे प्रकार की हानि पहुँचाए तब कहते हैं।

भट्ट भंडारी भोजक भोई, इनको दी और पूजी खोई—भट्ट, भंडारी, भोजक और भोई इन जातियों को उधार देने से धन के लौटने की कोई आशा नहीं होती। आशय यह है कि ये जातियाँ बेईमान होती हैं। तुलनीय : मेवा० भट भंडारी भोजक भोई, इण वणज्यो सब पूँजी खोई।

भड़क भारी खीसा खाली--बाहर से ही तड़क-भड़क है पर जेब में एक पैसा भी नहीं है। आडंबर दिखाने वाले निर्धन व्यक्ति के लिए कहते हैं। (खीसा - जेब)।

भड़भड़िया अच्छा, पेट पापी बुरा— मुँह पर ही स्पष्ट कह देने वाला ठीक होता है लेकिन मन में कपट रखकर शान्त रहने वाला नहीं। आशय यह है कि दिल के बुरे बहुत बुरे होते हैं।

भड़भूजन की लड़की के सिर का टीका-- लड़की है भड़भूजे की और टीका लगाती है केसर का। (क) जाति

के अनुसार कर्म न हो तब कहते हैं। (ख) बेमेल काम पर भी कहा जाता है।

भड़ुए को भी मुँह पर भड़ुआ नहीं कहते—आशय यह है कि किसी की बुराई उसके सामने नहीं करनी चाहिए।

भद्रा वा घर होयँगे, जिनके हैं नौ सिद्ध; अष्ट कपाली दारिद्री जब चाले तब सिद्ध – भद्रा उन्हीं लोगों के लिए होता है जो सम्पन्न हैं। दरिद्र और भिखमंगे कभी भी कुछ कर सकते हैं, क्योंकि उनके पास कुछ होता ही नहीं जो नष्ट होगा। अर्थात् शुभ लक्षण या शकुन देखना भाग्यवानों के लिए है, निर्धनों और अभागों के लिए नहीं। (अष्ठ कपाली -- भीख माँग कर खाने वाले साधु)।

भय बिना प्रीत नहीं होती—प्रीति भय के बिना नहीं होती। (क) जब किसी व्यक्ति की संतान उसके अनुचित लाड़-प्यार से बिगड़ जाए तो उसे समझाने के लिए कहते हैं। (ख) जब कोई प्रेम से कहने से नहीं सुनता और भय दिखलाने पर सुनता है तब उसके प्रति भी कहते हैं। अर्थात् बिना भय के व्यवहार नहीं होता। तुलनीय : माल० भय बिना प्रीत नीं वे, ब्रज० भय बिना प्रीति नायें होयै।

भयहु बोले ना भसुर छोड़े ना– भयहु (छोटे भाई की पत्नी) कुछ कहती नहीं है और भसुर (पति का बड़ा भाई) उसे छोड़ता नहीं है। जब कोई सकोचवश कुछ न कहे और दूसरा स्वार्थवश उसके साथ अनुचित व्यवहार करता जाय तब उसके प्रति ऐसा कहते है। तुलनीय : भोज० भयहु बोलसिन, भसुर छोड़सिन; लाजे भयहु बोले न सवादे भसुर छोड़े।

भय से भूत भागता है—भूत भी डर से भाग जाता है। भय से सभी डरते हैं चाहे वे बलवान हों या निर्बल, निर्धन हों या धनवान। तुलनीय : राज० भैमू भूत भागै।

भयाँड़ अस चाटे फिरते हैं—दे० 'भ्यांड़ अस चाटे फिरत हैं।'

भरकर खेत न पाया पानी, धान मरे भरी जवानी — धानों में यदि पानी अच्छी तरह न दिया जाय तो अच्छी से अच्छी फ़सल भी सूख जाती है अर्थात् धानों के लिए पानी की बहुत आवश्यकता होती है। तुलनीय : राज० काळी फूल न पाया पाणी, धान मर्‌या अधबीच जवानी।

भर खाऊँ, मन्द कमाऊ – पेट भर कर खाने वाला और कमाने में मन्दी दिखाने वाला। जो व्यक्ति कमाए-धमाए कुछ नहीं और खाने में सबसे आगे रहे उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० मीठा खाऊ मंद कमाऊ।

भर गाँव ओझा चलीं केकरा सोझा—गाँव के सभी लोग ओझा हैं किसके पास जाऊँ ? सम्पूर्ण गाँव नीच प्रकृति के लोगों से बसा हुआ है तो किसके पास जाया जाय। अर्थात् दुष्टों से कब तक बचा जाए।

भर घर देवर भतार से ठट्ठा—परिवार में अनेक देवर हैं फिर भी पति से ठिठोली करती है। (क) जहाँ किसी काम के लिए उचित साधनों के रहते हुए भी कोई अनुचित साधन का प्रयोग करता है, वहाँ इस लोकोक्ति का प्रयोग करते हैं। (ख) बदचलन स्त्रियों के प्रति भी कहते हैं।

भर घर देवर भतार से ठिठोली – ऊपर देखिए।

भरणि बिसाखा कृत्तिका, आरद्रा मघ मूल; इनमें काटै कूकुरा, भड्डर है प्रतिकूल – भड्डरी कहते हैं कि यदि भरणी, कृत्तिका, विसाखा, आर्द्रा, मघा और मूल नक्षत्रों में कुत्ता काट ले तो प्रतिकूल अर्थात् बहुत ही बुरा परिणाम होगा।

भर दे भर पावे, काल कंटक पास न आवे – अधिक पुण्य करने से अधिक अच्छे फल मिलते हैं जिससे कोई कष्ट नहीं होता। पुण्य के माहात्म्य पर कहा गया है।

भर दे भरा दे सिर पर चढ़ा दे—मेरा सामान को बाँधकर मेरे सिर पर रख दो। बहुत अधिक आलसी को लक्ष्य करके उक्त कहावत कही जाती है।

भरने को मियाँ, सुलगाने को मियाँ; पीने को आप, टिकाने को मियाँ – चिलम भरने, सुलगाने और रखने का काम मियाँ करते हैं और उसे पीते कोई और है। अर्थात् जब कार्य कोई और करता है तथा उसका लाभ कोई और प्राप्त करता है तब ऐसा कहते हैं।

भर पेट खाना नींद भर सोना --आलसी और पेटू आदमी के प्रति कहते हैं क्योंकि खाने और सोने के सिवा उनके पास और कोई काम नहीं होता।

भर बाँह चूड़ी कि पट्ट दे राँड़ --दे० 'खायँ गेहूँ कि रहे ये हूँ।'

भर-भर कड़े छानेगी भादों को ना जानेगी – कड़ा-भर शर्बत छानती है और भादों माह की परेशानियों का ध्यान नहीं रखती। जो व्यक्ति भविष्य का ध्यान न रखकर धन का अपव्यय करता है उसकी अदूरदर्शिता के प्रति ऐसा कहते है। तुलनीय : कौर० भर-भर कूड़े छाणेगी, भाद्दों कू ना जाणेगी।

भर भुइंहार अहीर का जाना, तीनों का है एक ही बाना -- भर, भूमिहार और अहीर इन तीनों का एक ही धंधा है। अर्थात् भर, भूमिहार और अहीर लोग व विश्वास के

पात्र नहीं।

भरम खुला तो सब गया—भरम (भेद) खुल जाने पर सब कुछ चला जाता है। अर्थात् भेद खुल जाने पर इज्ज़त समाप्त हो जाती है। अतः अपने भेद को गुप्त रखना चाहिए।

भरम भारी खीसा खाली—धाक बहुत बड़ी है पर जेब (खीसा) में कुछ भी नही है। किसी को जिस रूप में जाना जाय वैसी वास्तविकता न होने पर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० भटक भारी खीसा खाली; राज० भरम भारी खीसा खाली।

भरम भारी पिटारा खाली—ऊपर देखिए।

भरम मारे, भरम जियावे—प्रतिष्ठा ही से मनुष्य जीवित रहता है और उसके गँवा देने से मारा भी जाता है।

भर माँग सिंदुर या झटपट राँड़—या तो पूरी तरह से सुहागिन ही हो नहीं तो राँड़ हो जाना अच्छा है। (क) चरित्रभ्रष्ट औरत पर कहते है। (ख) जब कोई हिसाब चुकता न करे, न तगादा सहे तब कहते हैं। तुलनीय : मग० चाहे भर माग सेनुर चाहे पट दवर राड़।

भरमा भूत शंका डायन—(क) शंका और भ्रम दोनों से हानि होती है। (ख) वास्तव में भूत और डायन कुछ नहीं है केवल भ्रम मात्र है। इस सम्बन्ध में एक कहानी इस प्रकार है : किसी वैश्य के एक लड़की थी। दीवाली के एक दिन पहले वह लोटे में गेरू घोलकर अपने पिता की खाट के पास इस विचार से रखकर सो गई कि सुबह दीवार में दीवाली काढ़ेगी। संध्या समय उसकी स्त्री रोज उसकी खाट के पास एक लोटा पानी भरकर रख दिया करती थी। उस दिन जब वह पानी रखने गई तो खाट के पास लोटा देखकर सोचा कि मेरी लडकी पानी रख गई होगी। वैश्य सवेरे उठने पर पाखाने गया और आबदस्त ले चुकने के बाद देखता है कि खून बह रहा है। वह घबड़ा गया और सोचा कि किसी ने मेरे ऊपर जादू कर दिया है या कोई बड़ी बीमारी हो गई है। वह घबड़ाकर आया और खाट पर पड रहा। उसकी स्त्री भी घबड़ा गई और डाक्टर, वैद्य बुलाने में लग गई। इतने में लडकी जागी और लोटा न पाकर रोने लगी, तब पूछने पर उसे सारा हाल मालूम हुआ। यह जानते ही कि वह केवल गेरू था, वैश्य होश में आ गया और उसकी बीमारी जाती रही। तुलनीय : अव० भरमा भूत सका डाइन।

भर हाथ चूड़ी, परसूँ राँड़—दे० 'भर माँग सिंदुर···'।

भरा कहार, खाली कुम्हार, तेज जाता है—कहार बोझ भारी होने पर और कुम्हार बोझा हल्का होने पर तेज़ चलता है। तुलनीय : अव० भरा कहार, खाली कुम्हार तेज जात है।

भरा कुम्हार और खाली कहार धीरे-धीरे चलते हैं—स्पष्ट। तुलनीय : अव० भरा कुम्हार, खाली कहार मजे-मजे चलत है।

भरा हो पेट तो रोज़ दिवाली—यदि पेट भरा हो तो रोज़ाना दीवाली रहती है। आशय यह है कि सम्पन्न व्यक्ति रोज़ाना अच्छा खाता-पीता और पहनता है तथा सुख की ज़िन्दगी बिताता है।

भरा हो पेट तो संसार जगमगाता है—पेट भरा होने पर दुनिया में बड़ी चहल-पहल नज़र आती है। अर्थात् (क) सम्पन्न व्यक्ति ही सांसारिक सुविधाओं का लाभ उठा पाता है। (ख) क्षुधा शान्त होने पर ही सब कुछ अच्छा लगता है।

भरी गाड़ी में सूप भारी नहीं होता—जो गाड़ी सामान से भरी हो उस पर यदि एक सूप रख दिया जाय तो कोई फ़र्क नहीं पड़ता। अर्थात् जहाँ अधिक खर्च हो वहाँ यदि थोड़ा और खर्च बढ़ जाय तो कोई विशेष परेशानी नही होती। तुलनीय : बुंद० भरी गाड़ी में सूप भारू नहीं होत; मरा० भरल्या गाड्यास सूप जड नाहीं।

भरी जवानी पैसा पास, कौन बचाय राम की आस—नौजवान व्यक्ति के पास यदि पर्याप्त धन हो तो उसे व्यभिचारी होने से ईश्वर के अतिरिक्त और कोई नहीं रोक सकता। अर्थात् यदि यौवन में धन की कमी न हो तो व्यक्ति का सदाचारी रहना कठिन हो जाता है। तुलनीय : राज० भरी जवानी पइसो पल्लै, राम चलावै तो सीधो चल्ले।

भरी जवानी माँझा ढीला—दे० 'नई जवानी माँझा ढीला।'

भरी जवानी में बुढ़ापे का मज़ा—जब कोई युवक किसी कार्य को कठिन या परिश्रम-साध्य देखकर न करना चाहे तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : माल० जवानी में बुढ़ापा रो मजो लेणो।

भरी जवानी में लीद के फक्के—जवानी में ही लीद खाते हैं। जब कोई नौजवान व्यक्ति अपनी अकर्मण्यता के कारण दुख सहता है तब उसके प्रति ऐसा कहते हैं।

भरी थाली में पेट नहीं भरा तो पत्तल चाटने से क्या होगा—जिस व्यक्ति का पेट भरी थाली से नहीं भरता उसको पत्ते चाटने से क्या अन्तर पड़ेगा? जो व्यक्ति समृद्ध

और वैभवपूर्ण अवस्था में तृप्त न हो पाया हो वह दूसरों से माँगकर सतुष्ट नहीं हो सकता। तुलनीय : भीली —लाटी ने नी धाय्यो एवा चाटी ने धाहे।

भरी थाली में लात मारना ठीक नहीं—जब कोई दुर्भाग्यवश अपने लगे हुए काम को छोड़ देता है, या जब कोई किसी लाभ की चीज को ठुकरा देता है तब उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० भरल थरिया पर लात मारल नीक नाही; अव० परोसी थारी मा लात मारै; मरा० भरल्या ताटाला लाथाडणें; ब्रज० भरी थारी में लात मारिबौ आच्छौ नायें; पंज० परी थाली बिच लत मारण चंगा नई।

भरी नाव में सूप भी भारी जब नाव सामान से पूरी भर जाती है तब सूप का वजन भी भारी हो जाता है। अर्थात् जब किसी व्यक्ति के पास अधिक काम करने के लिए होते हैं तब साधारण कार्य को करना भी उसके लिए मुश्किल हो जाता है। तुलनीय : अव० भरी नाव मां सुप्पू भारी।

भरी मुट्ठी सवा लाख की—(क) बात ढकी रहने से भ्रम बना रहता है। भरम न खोलने के लिए कहते हैं। (ख) गुप्त वस्तु का कोई सही मूल्यांकन नही कर सकता।

भरी हो तो ईद, खाली हो तो रोज़ा—जब भरी होने पर ईद और खाली होने पर रोज़ा मनाते है। जो व्यक्ति भविष्य की चिन्ता न करके जो कमाएँ उसे मौज से फूंक दें और बाद में फ़ाके करें उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० हुव जणा ईद, नही तो रोजा।

भरे कुएँ में पत्थर भरना ठीक नहीं पानी से भरे कुएँ को पत्थरों से भरकर बेकार करना ठीक नहीं है। किसी के बने-बनाए काम में रोड़ा अटकाने वाले या बिगाड़ने वाले को ठीक राह पर लाने के लिए कहते है। तुलनीय : भीली— भरीया समंद मांये भाटो दड़वो हाउ ने है।

भरे को भरता है—सम्पन्न व्यक्ति की ही ईश्वर भी सहायता करता है। तुलनीय : अव० भरे का भगवानो भरत है।

भरे को सब भरें जिसके पास सम्पत्ति होती है उसे ही सब भेंट-पूजा देते हैं, गरीबों की तरफ़ कोई ध्यान नही देता। अर्थात् सम्पन्न व्यक्ति की ही सब सहायता करते हैं। तुलनीय : माल० भर्‌या में सब भरे।

भरे पेट पर शक्कर भारी—पेट भर जाने पर शक्कर भी भारी अर्थात् बुरी मालूम पड़ती है। आशय यह है कि इच्छा पूरी हो जाने पर अच्छी चीज़ भी बुरी लगती है।

भरे पेट शक्कर खारी—ऊपर देखिए। तुलनीय : मरा० भरल्या पोटाला साखरहि खारट (नकोशी होते)।

भरे ब्याह में बूर खाई, तो फिर क्या धूर खाय -भरे ब्याह में जब ठीक से खाने को न मिला तब कब मिलेगा। आशय यह है कि अच्छी दशा में भी कष्ट से रहे तो सुख कब मिलेगा। (बूर लकड़ी का बुरादा, धूर धूल)।

भरे समुंदर घोंघा प्यासा - समुद्र में रहकर भी घोंघा प्यासा रहता है। जब कोई अच्छी अवस्था में रहकर भी दुःख भोगे तब उसके प्रति कहते हैं।

भरे समुंदर घोंघा हाथ—समुद्र में ढूँढने पर भी घोंघा ही मिला। बदनसीब व्यक्ति के प्रति कहते है जिसे लाभ के स्थान पर कुछ भी न मिले।

भरोसा सच्चा भुजदंडों का - अपनी बाहों का बल सबसे अच्छा होता है। मनुष्य को सदा अपने भरोसे रहना चाहिए, दूसरों पर निर्भर रहना अच्छा नही होता।

भरोसे की भैंस पड़ा बिआनी—बड़ी उम्मीद थी कि भैंस पाडी ब्याएगी लेकिन वह पाड़ा ब्याई। आशय यह है कि मनुष्य जैसा चाहता है वैसा प्रायः नहीं हो पाता। तुलनीय : भोज० भरोसा क भंइसि पाड़ा बियाइल, अव० भरोसवा कै भंइसि पड्‌वा बिआन; गढ़० भरोसा ब्याणे गुनेरो होय।

भल जनमलऽ, भल पंडित भइलऽ —बहुत अच्छा होकर पैदा हुए कि इतने बड़े विद्वान हुए। मूर्ख के प्रति व्यंग्य।

भल बिध बनी अमावट रोटी—अमावट-रोटी का संयोग भोजन में अच्छा माना जाता है। दो भले व्यक्तियों के परस्पर मिलने पर कहते है।

भल भल बके पपइयो बाणी, कूपल कैर तणो कमलाणी; जल हल तो ऊगे रवि जाणी; पहरां मायं अवसरे पाणी—यदि पपीहा चारों ओर पी-पी रटता हुआ फिरे, कैर (एक वृक्ष) की ताजी कोंपल मुरझा जाये और सूर्योदय के समय तेज़ धूप हो तो समझना चाहिए कि एक पहर के अन्दर वर्षा होगी।

भल राजा होते तो अपने ढाँकि लेते—भले राजा होते तो अपना शरीर ही ढँक लेते। जो व्यक्ति दूसरों की बुराई करता फिरे और अपनी बुराई की तरफ ध्यान न दे, उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते है।

भला अहीर को भी छाँटी बहुरी—अहीर को छाँटी हुई बहुरी की आवश्यकता नही होती। अर्थात् अहीर गँवार होते हैं उन्हें अच्छा-बुरा जो भी अन्न मिल जाय सब ठीक है। जब कोई किसी मूर्ख व्यक्ति के लिए बहुत अच्छा प्रबन्ध

करता है या करना चाहता है तब ऐसा कहते हैं।

भलाई कर बुराई से डर—सदा अच्छे कार्य करना चाहिए और बुरे कार्यों से दूर रहना चाहिए।

भला कर भला हो, सौदा कर नफ़ा हो—भलाई करने से भला होता और व्यापार आदि में लाभ होता है। अर्थात् नेक कर्म करने से ही मनुष्य उन्नति करता है। परोपकार के माहात्म्य पर कहा गया है।

भला करें भगवान, माल खाय पुजारी—भगवान को भेंट-पूजा इसलिए दी जाती है कि वे दुःखों का निवारण करेंगे, किंतु उनका चढ़ावा तो पुजारियों के ही पास जाता है। इसीलिए कहा जाता है कि भगवान किसी और का भला करें या न करें किन्तु पुजारी का भला तो करते ही है। अनीश्वरवादी लोग धर्म की खिल्ली उड़ाने के लिए भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : माल० मेरुजी तो भलो माने, ने भोपा खावे खीर।

भला किया सो खुदा ने, बुरा किया सो बन्दे ने—(क) ईश्वर अच्छा काम करता है और मनुष्य बुरा काम करता है। (ख) कृतघ्न व्यक्ति के प्रति भी कहा जाता है जो किसी के उपकार को नहीं मानता।

भला दिन दूना रात चौगना बढ़े—सज्जन व्यक्ति की बढ़ती दिन दूनी रात चौगुनी होती है। अर्थात् भले लोगों की दशा दिन-प्रतिदिन अच्छी ही होती जाती है और वे कुछ ही समय में काफी वैभवशाली हो जाते हैं। तुलनीय : भीली भलान दन दुणा रात चोगणा वद़े मण घटे नी।

भला-बुरा न देखे कोय, पेट भरे सो बढ़िया होय—(क) भोजन के सम्बन्ध में कहते हैं कि जिस वस्तु से पेट भरा जा सके और शक्ति प्राप्त हो वही बढ़िया है, उसमें स्वाद और बेस्वाद का कोई प्रश्न नहीं होता। (ख) जो व्यक्ति पेट भरने का ठिकाना करता है वही अपने लिए सबसे अच्छा है, दुनिया चाहे उसे कितना ही बुरा क्यों न कहे। तुलनीय : भीली हाऊ-भूड़ो नी जोवू, चाये जेम करीने पेटे भाड़ू आलवो।

भला-बुरा बहू के माथे—जो दोष होता है उसे बहू के मत्थे मढ़ती है। (क) जो व्यक्ति अच्छे कार्यों का श्रेय अपने ऊपर ले और बुरे कार्यों के लिए दूसरे को दोषी ठहरावे उसके प्रति कहते हैं। (ख) निर्बल या निर्धन को ही लोग दोषी ठहराते हैं। तुलनीय : राज० अडो दड़ो बऊड़ीरै सिर पड़ा।

भला भगवान समान—सज्जन मनुष्य ईश्वर समान होते हैं। वे सबकी सहायता करते हैं तथा ठीक रास्ता दिखाते हैं। तुलनीय : भीली—भलो मनख हे तो वो भगवान है।

भला साँभर में नोन का टोटा—साँभर झील में नमक अधिक होता है और वहीं पर उसकी कमी बताते हैं। जहाँ जो चीज़ ज्यादा होती हो, वहाँ उसी चीज़ का अभाव कब संभव है?

भला हुआ दीदी गौने गई, दीदी की फरिया मुझको भई—अच्छा हुआ कि बहिन ससुराल चली गई क्योंकि अब उसकी फरिया (चोली, घाघरा, साड़ी) का इस्तेमाल मैं करूँगी। किसी के कहीं चले जाने से जब किसी को लाभ होता है तब ऐसा कहते हैं।

भला हुआ मेरी माला टूटी, मैं राम भजन से छूटी—अच्छा हुआ कि मेरी माला टूट गई और मुझे राम के भजन (पूजा) से छुट्टी मिल गई। जब कोई किसी कार्य को अनिच्छा से कर रहा हो और संयोगवश साधन खराब हो जाने से कार्य बन्द हो जाय तब उस व्यक्ति के प्रति व्यंग्य से ऐसा कहते हैं।

भला हो या बुरा हमें कौन उससे रिश्ता करना है—जिस व्यक्ति से अपना कोई सम्बन्ध न हो उसके अच्छा-बुरा होने से हमें क्या मतलब? तुलनीय : भीली—हाऊ झूड़ा आवे थोड ऊवो रेवू है, पंज० चगा होए या माड़ा सानू उदे तो की लेणा है।

भली कहने में क्या जाता है?—स्पष्ट बतलाने में क्या कुछ खर्च हो रहा है? जो व्यक्ति किसी बात को स्पष्ट रूप से न कहकर इधर-उधर घुमा-फिराकर कहता है उसके प्रति कहते हैं।

भली-बुरी सभी आय समय पर काम—भली-बुरी वस्तुएँ या मनुष्य सभी समय पर काम आते हैं। किसी को बेकार समझ कर, उसका त्याग नहीं करना चाहिए क्योंकि प्रत्येक वस्तु कभी-न-कभी काम आ ही जाती है। तुलनीय : भीली—हाऊभूड़ो-हगरो तो हाऊ-भूड़ा दाड़ा में काम आवे; फ़ा० दाश्ता आयद बकार।

भली होंगी जेठानी तो रखेंगी अपना पानी—जेठानी अच्छी होगी तो अपनी प्रतिष्ठा स्वयं बचा लेगी। अपनी मर्यादा अपने हाथ होती है। छोटों से नहीं उलझना चाहिए। तुलनीय : भोज० भल होइहें जेठानी तऽ रखिहें आपन पानी।

भले आदमी की मुर्गी टके-टके—सज्जन आदमी की मुर्गी टके-टके अर्थात् सस्ती बिकती है। आशय यह है कि भला आदमी संकोच में मारा जाता है।

भले आदमी को एक बात, भले घोड़े को एक चाबुक—दोनों के लिए ये ही काफ़ी हैं, इतने से ही वे दुरुस्त हो जाते हैं। तुलनीय : अव० भल घोड़ा का एक चाबुक और भल मनई की एक बात; हरि० समझदारन तै इशारा ए मौत; अं० A word to the wise.

भले आदमी क्रोध नहीं करते—सज्जन व्यक्ति जल्दी नाराज़ नहीं होते।

भले का ज़माना नहीं—भले लोगों का युग नहीं रह गया। किसी के साथ भलाई करने का जब उल्टा फल मिले तब कहते हैं। तुलनीय : अव० भलमनई कै जबाना नाही है; हरि० भलमानसी का जमाणा कोन्या; पंज० पलमानसी दा समां नईं; ब्रज० भलाई कौ जमानों नायें।

भले का नाम रह जाता है—नेक व्यक्तियों के मरने के बाद भी लोग उनकी नेकी के कारण उन्हें अच्छे नाम से याद करते हैं।

भले का बुरा, बुरे का भला—(क) जब सज्जन की संतान बुरी और दुर्जन की संतान अच्छी हो तो उनके प्रति ऐसा कहते हैं। (ख) जब भले व्यक्ति के ऊपर दुःख और आपत्तियाँ आएँ और बुरे व्यक्ति सुख-चैन से रहें तो विधि के प्रति इस प्रकार कहते है। तुलनीय : गढ़० भलू का बुरा, बुरू का भला।

भले काम में रोड़ा अटकाय, राम उसी से निपटे आय—जो व्यक्ति भले काम में रोड़ा अटकाता है, भगवान उससे स्वयं निपटते हैं। किसी अच्छे काम में विघ्न उपस्थित करने से ईश्वर का कोपभाजन बनना पड़ता है और दुनिया वाले तो पहले ही शत्रु हो जाते हैं। इसलिए किसी अच्छे काम में यदि सहायता न दे सके तो विघ्न भी नहीं डालना चाहिए। तुलनीय : भीली—हाऊ माएं धक्को न देवो, राम देवखे।

भले के सब साथी—दे० 'भले भले का सब···'। तुलनीय : ब्रज० भले भले के सब साथी।

भले को भला कहें, बुरे को बुरा कहें—भले आदमी को लोग भला कहते हैं और बुरे को बुरा। (क) दुष्ट व्यक्ति को कोई भी सज्जन नहीं कहता। (ख) जो जैसा होता है उसे लोग वैसा कहते है। तुलनीय : भीली—भलायें भला कै, खोटाये भलो कै ज्यों कूण; पंज० चंगे नूँ चंगा कैण माड़े नूँ माड़ा।

भले घोड़े को एक चाबुक, भले आदमी को एक बात—दे० 'भले आदमी को एक बात···'।

भले दिन आयेंगे, तो घर पूछते चले आयेंगे—अर्थात् अच्छे दिन आने पर लक्ष्मी अपने आप चली आती है। तुलनीय : पंज० चगे दिन आप ही कर पुछदे आंदे हन।

भले दिन का मेहमान, बुरे दिन का दुश्मन—अच्छे दिनों में अतिथि का आना अच्छा लगता है किन्तु वही यदि परेशानी के समय में आता है तो शत्रु जैसा प्रतीत होता है। अर्थात् जब कठिन समय में कोई अतिथि आ जाय या कोई अनावश्यक व्यय करना पड़ जाये तो वह बहुत खलता है। तुलनीय : भीली—वला ना पामणा कोवला ना वेरी।

भले-बुरे का साथ क्या?—अच्छे और बुरे का साथ नहीं निभ सकता।

भले-बुरे की क्रोध कसौटी है—क्रोध करने से ही व्यक्ति के भला-बुरा होने की पहचान हो जाती है। भले लोग जल्दी क्रोध नहीं करते और बुरे लोग शीघ्र क्रोधित हो जाते हैं।

भले-बुरे के साथ उमर थोड़े ही बितानी है—संसार में सभी तरह के मनुष्य है किन्तु उनसे हमें क्या लेना है? अपने काम से मतलब रखना चाहिए, जो मिल जाय उससे मिल ले, किसी को खोजने नहीं जाना चाहिए। तुलनीय : भीली—हाऊ भोंडा ना जावे ने वेहवो है।

भले भलाई, बुरे बुराई—भलाई करने का परिणाम भला और बुराई करने का बुरा होता है। जैसा कार्य किया जाता है उसका फल भी वैसा ही मिलता है। तुलनीय : राज० भलो भलाई बुरो बुराई, कर देखो रे भाई!

भले-भले का सब कोई साथी—अच्छे व्यक्ति का सब साथ देते हैं। तुलनीय : गढ़० सेला रज्जा की घणी परजा।

भले-भले के सब साथी—ऊपर देखिए।

भले भवन अब वायन दीन्हा—अब अच्छे घर बयाना दे दिया। जब कोई अपने से बलवान के साथ बैर ठाने तब कहते है।

भले मानुष की सब तरह ख़राबी है—भले मनुष्यों को अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ता है। तुलनीय : अव० भल मनई कै सब तरह से ख़राबी है।

भले संग बैठिए, खाइए नागर पान; बुरे संग बैठिए कटाइए नाक और कान—भले लोगों के साथ रहने से पान खाने को मिलता है और बुरे लोगों के साथ रहने से नाक-कान भी कटाना पड़ता है। अर्थात् अच्छे लोगों की संगति करने से लाभ और बुरे लोगों की संगति करने से हानि होती है।

भले संग भले, बुरे संग बुरे—सज्जन के साथ सज्जनता का व्यवहार करना चाहिए और दुष्ट के साथ दुष्टता का। अर्थात् जो व्यक्ति जैसा हो उसके साथ वैसा ही व्यवहार

करना चाहिए। तुलनीय : भीली—हाऊ लारे हाऊ खोटा लारे खोटो; पज० चंगे नाल चंगा माड़े नाल माड़ा; ब्रज० भले कू भलो बुरे कूं बुरौ।

भले बुरे तो मनुष्य की क्रोध कसौटी आहि— दे० 'भले-बुरे की क्रोध···'।

भलो भयो मेरी मटुकी टूटी, मैं दही बेचन से छूटी—दे० 'भला हुआ मेरी माला टूटी···'।

भवन बनावत दिन लगे, ढावत लगे न बार—घर को बनाने में समय लगता है पर गिराने में समय नहीं लगता। अर्थात् किसी काम के बनाने में समय लगता है पर बिगाड़ने में कुछ भी समय नहीं लगता।

भसक्कड़ के दामाद को भात ही मिठाई—अधिक खाने वाले (भसक्कड़ के दामाद) को चावल (भात) ही मिठाई के समान होना है। पेटू को कहते हैं, क्योंकि उसे तो पेट भरने से काम है वह क्या जाने कि स्वाद और रुचि किसे कहते हैं। तुलनीय : अव० भसक्कड़ कै दमाद का भातै मिठाई।

भस्मन्याज्या हुतिः—अग्नि में डालने के बजाय राख पर हवन सामग्री को डालना। अर्थात् अनावश्यक प्रयत्न करने या ऊटपटांग काम करने पर ऐसा कहते हैं।

भांग कहे 'मैं रंगी जंगी' पोस्त कहे 'मैं शाहे जहाँ', अफ़ीम कहे 'मैं चुन्नी बेगम, मुझको खा के जाय कहाँ'—भाँग कहती है कि मैं रंगीली (रंगी) और लड़ने वाली (जंगी) हूँ, पोस्त कहता है कि मैं शाहजहाँ अर्थात् संसार का राजा हूँ, अफ़ीम कहती है कि मैं चुन्नी बेगम हूँ जो एक बार भी मेरा स्वाद ले लेगा वह मुझे छोड़कर कहीं नहीं जाएगा। अर्थात् अफ़ीम की लत आजीवन चलती है।

भांग के भाड़े में गया—भाँग के भाड़े में ही चला गया। जब किसी व्यक्ति को किसी व्यर्थ के कार्य में हानि उठानी पड़े तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० भांगरै भाड़ै मारीजै; पंज० भंगी भाड़े गए; ब्रज० भाँग के भारे में गयौ।

भांग खाना सहज है, पर मौज कठिन है—भाँग खाना आसान है पर उसे हज़म करना कठिन है। जब कोई व्यक्ति बिना सोचे-समझे कोई ऐसा कार्य कर दे जिससे वह परेशानी में पड़ जाय तब उसके प्रति ऐसा कहते हैं।

भांग जनि देहु गँवारन को, हँड़िया भर भात बिगाड़न को—गँवारों को भांग मत पीने को दो नहीं तो वे हंडी भर चावल खा जाएँगे। भाँग के नशे में खाया बहुत जाता है।

भांग पीना आसान है, पर होश में रहना कठिन है—भाँग तो सभी पी सकते हैं, किन्तु पीकर होश में सभी नहीं रहते। किसी बुरे काम को करना सहज है, किन्तु उसका परिणाम भुगतना कठिन है। बुरी राह पर चलने वालों के प्रति कहते हैं। तुलनीय : माल० भांग पीणी होरी है पण लेरां तेणी दोरी है।

भाँट के घर की बिल्ली पुरखिन—भाँट के घर की बिल्ली भी अनुभवी (पुरखिन) होती है। अर्थात् याचकों के घर के छोटे-बड़े सभी माँगने-खाने में तेज़ होते हैं। तुलनीय : भोज० भाँट के घर के बिलरियो पुरखिन।

भाँट के संग खेती किया गा-बजा भाँट सब कुछ किया—भाँट के साथ किसी ने साझे में खेती की, नतीजा यह हुआ कि भाँट ने सारी फ़सल गा-बजाकर समाप्त कर दी—खा डाली। कहने का आशय यह है कि धूर्त व्यक्ति के साथ साझेदारी लाभकर नहीं होती। तुलनीय : मग० भटवा संगे खेती किया गा-बजाकर भटवा लिया; भोज० भाट संगे कइलीं खेती गा-बजाके लेहलस मेती।

भाँड़ का गाता थके, न भील का रोता—भाँड़ के पुत्र को गाने का बहुत अभ्यास होने के कारण वह शीघ्र थकता नहीं है और भील का पुत्र कष्टों और असह्य परिस्थितियों में रहने के कारण सदा रोता रहता है इसीलिए वह भी रोने से कभी थकता नहीं। जब कोई व्यक्ति अभ्यासवश किसी कार्य को लगातार करता रहे और उसे उसमें कोई कष्ट न हो तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : भीली—ढोली नूं छोरू गदयो नी मरे, न भील नू छोरू रोदयो नी मरे।

भाँड़ की कौन बुआ, साँप की कौन मौसी—अर्थात् भाँड़ और सर्प किसी के मीत नहीं होते। ये अवसर पाते ही धोखा देते हैं। तुलनीय : मेवा० भांड़ा की कसी भूवा, ने साँपां की कसी मासी।

भाँड़ की चुहिया भी पादे—भांड़ के घर की चुहिया भी पादती है। अर्थात् बुरों के घर के छोटे भी बुरे होते हैं। तुलनीय : अव० भाँडन कै मुसरियौ पदनी होति है।

भाँड़ की भैंस डंडे से चले—भाँड़ की भैंस डंडे से ही चलती है। जो मार खाने पर ही काम करे उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० भांडांरी भैंस्यां सोटांरै कामरी।

भाँड़ की भैंस दुपहरी दुहे—भाँड की भैंस दोपहर में दुही जाती है। आलसी व्यक्तियों के कार्य समय पर नहीं होते। तुलनीय : राज० भांडारै भैंस्यां दुपारैरी दूझै।

भाँड़ की भैंस दुपहरी में रंभाए—भाँड़ की भैंस दोप-

हर में रंभाती है क्योंकि सुबह से किसी ने न उसे चारा दिया न पानी और न ही किसी ने दूहा। आलसी व्यक्तियों के काम समय पर नही हो पाते। आलसियो के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० भांडारै भैंसां हुवै जरां दोपारारी रिड़कै।

भाँड़ डूबा जाय, कहे नकल कर रहा हूँ—भाँड़ डूब रहा है फिर भी कहता है कि मैं वैसे ही डूबने का बहाना बना रहा हूँ। जब कोई अपनी कमी को छिपाने का प्रयत्न करता है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते है।

भाँड़न की बारात माँ गप्पन की भरमार भाँड़ों की बारात में झूठों की भरमार हो जाती है। (क) जहाँ बहुत से बुरे लोग इकट्ठे हो जाते है वहाँ बुराई अधिक होती है।

भाँड़न के संग खेती कीन, गाय बजाय कै उनहिन लीन—दे० 'भाँट के संग खेती किया···'।

भाँड़ पुकारे पीरबस, मिस समझे सब कोय—भाँड़ यदि कष्ट मे भी चिल्लाए तो भी लोग उसे नक़ल ही समझते है। नक़रेबाज़ और झूठ बोलने वाले की सही बात पर भी लोग विश्वास नही करते।

भाँड़े का मुँह बड़ा हो, तो कुत्ते को तो शरम करनी चाहिए—बर्तन का मुँह यदि बड़ा हो जिससे कुत्ता आसानी से उसमें रक्खी चीज़ को खा सके, फिर भी तो उसे शर्म करनी चाहिए। जब कोई व्यक्ति किसी को कुछ देता जाय या अधिक मात्रा में दे और लेने वाला उसे निःसंकोच लेता जाय और लेने से मना न करे तब उसके प्रति व्यंग्य से ऐसा कहते हैं तुलनीय : पंज० पाडे दा मुड़ जे बड़ा होवे ता कुत्ते नू वी सरम करनी चाहदी है।

भाँड़ों संग खेतो की, गा बजा के अपनी की—दे० 'भाँट के संग खेती किया···'।

भाँवर की बेर कन्या हगासी—भाँवर घूमने के समय लड़की को पाखाना जाने की आवश्यकता महसूस हुई। जब कोई ठीक मौक़े पर किसी कार्य को करने से बहाना बना जाय तब उसके प्रति व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : छत्तीस० भाँवर के बेरा कन्या हगासी।

भाइयों में खटापटी चलती ही है—भाइयों का आपस में कोई-न-कोई झगड़ा चलता ही रहता है। भाइयों का मन मुटाव थोड़ी ही देर का होता है, इसलिए उसमें चिंतित होने की कोई बात नहीं होती। तुलनीय : भीली—भांया ना हांडा रात दाड़ो भमड़ता रें।

भाई अपना है पर भाभी तो पराई है—भाई तो अपना है लेकिन भाभी तो दूसरे के घर से आई है। (क) जब किसी का भाई उसे प्यार करे लेकिन भाभी से उसकी न पटे तब वह ऐसा कहता है। (ख) अपने लोगों जैसा प्यार दूसरे नही करते।

भाई ऐसा हित नहीं, भाई ऐसा दुश्मन नहीं—भाई के समान मित्र तथा शत्रु कोई नही होता। हिस्सा बाँटने के समय भाई शत्रु होता है तथा शेष समय मित्र रहता है। तुलनीय : भोज०, मैथ० भाई अइसन हित न कि भाई अइसन मुदई; अव० भाई अइसा हितुआ नाही, भाई अइसा बैरिउ नाहीं; माल० भाइ हरीखो सेण नी ने भाई हरीखो दुश्मण नी; असमी—भाइर समान मित्र नाइ, भाइर समान शत्रु नाइ।

भाई की ससुराल, तलवार की धार—भाई की ससुराल में जाने में बहुत भय होता है, क्योंकि वहां जाने से कोई-न-कोई बदनामी अवश्य होती है। इस कारण भाई के ससुराल की निंदा करने के लिए कहते हैं। तुलनीय : गढ़० भाई की सौग्यास थमाला की पीठ।

भाई के काम भाई ही आता है—भाई की विपत्ति में भाई ही ही काम आता है। मित्रादि सब सुख के साथी होते है दुःख मे अपना भाई ही आड़े आता है। तुलनीय : राज० भायाँ-तणी भीड़ भायलाँ भागै नहीं।

भाई के समान न तो शत्रु न मित्र—दे० 'भाई ऐसा हित नही...'।

भाई जैसा दुश्मन नहीं और भाई जैसा दोस्त नहीं—दे० 'भाई ऐसा हित नही···'।

भाइ टोवे पेट बीबी टोवे थैली—भाई देखता है कि भाई भूखा तो नही है और बीबी देखती है कि पति मेरे लिए थैले में क्या लाया है। अर्थात् भाई का भाई के प्रति सच्चा प्यार होता है, जबकि पत्नी का स्वार्थपूर्ण। तुलनीय : असमी—माओ चाइ मुखल, घैणी चाइ हातले; सं० भार्य्या क्षीणेषु वित्तेषु जानीयात्।

भाई दूर पड़ोसी नीयर—दूर का भाई पड़ोसी के समान होता है। अर्थात् जब भाई अलग हो जाता है तब प्रेम में कमी आ जाती है।

भाई न दे भाव दे—बाज़ार भाव के अनुसार चीज़ देना चाहिए, भाई समझ कर नहीं। आशय यह है कि व्यापार में संकोच नही करना चाहिए।

भाई, भतीजा, भानजा, भाट, भाँड, भुईहार; इतने भम्भा छोड़कर फिर करिए व्यवहार—भाई, भतीजा, भानजा, भाट, भांड और भूमिहार इन सबमे होशियार रहना चाहिए नहीं तो धोखा खाना पड़ता है। तुलनीय :

अव० भाई, भतीजा, भानजा, भाट, भाँड़, भुईहार, इनका सबका छोड़िके, फेर करौ व्योहार।

भाई भले ही मरे, भाभी का सिर झुकना चाहिए—भाई चाहे मर जाय पर भाभी का घमंड अवश्य टूटना चाहिए। (क) जो व्यक्ति अपनी हानि सहकर भी दूसरों को दुःख पहुँचाना चाहे उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। (ख) जो व्यक्ति अपनी ज़िद के लिए बहुत बड़ी हानि उठाने को भी तैयार हो उसके प्रति भी कहते है। तुलनीय: राज० भाई भलां ही मर ज्यावो, भाभी रो वट निकळनो जोयीजै।

भाई-भाई अंतर, कोई हीरा कोई कंकड़—भाई-भाई में अंतर होता है। कोई हीरे के समान होता है और कोई कंकड़ के। आशय यह है कि (क) सभी भाई एक जैसे नही होते। (ख) एक ही स्थान मे उत्पन्न सभी वस्तुएँ समान गुण वाली नही होती।

भाई-भाई एक समान छोटा क्या और बड़ा क्या—भाई छोटे बड़े सभी एक समान अधिकार रखते हैं। (क) सबको एक समान मानना चाहिए, छोटे-बड़े का भेदभाव उचित नही है। (ख) एक जाति के लोग परस्पर किसी से कम नही होते चाहे वे निर्धन हों या धनी। तुलनीय: भीली—भाई कुण तो चोटो ने कूण मोटो, मारी होंड़ी पाचे आँगली बरोबर।

भाई भानजा सोई, जासे हंड़िया खुदबुद होई—भाई और भानजा वही होता है जिससे हाँडी खुदबुद होती है। अर्थात् जो कुछ कमा कर लाता है जिससे घर का काम चलता है वही भाई अच्छा माना जाता है।

भाई भाव करे, तलमारे ऊपर चाव करे—भाई प्रेम करता है। नीचे से तो वह जड़ काटता है और ऊपर से प्रेम दिखाता है। कपटी मित्र को कहते है जो ऊपर से भाई बनकर प्रेम दिखाता है पर भीतर से हानि पहुँचाता है। तुलनीय: अव० भाई भाव करै निचवा से मारै उपरा से चाव करै।

भाई भाव का नहीं अपने दाँव का—असली भाई वही है जो प्रेम करे अपना स्वार्थ न देखे। तुलनीय: अव० भाई भाव का नाहीं अपने दाँव का; हरि० भाई भा का नाह तै अपणे दा का।

भाई मरा, हिस्सा मिला—भाई मर गया और उसका हिस्सा मुझे मिल गया। स्वार्थी के प्रति व्यंग्य मे कहते हैं जो अपने स्वार्थवश प्रिय के अनिष्ट पर भी खुश होता है। तुलनीय: कौर० भाई मर्‌या लुगिया हात्थ लगी; पंज० परा मरया कम सरया।

भाई वही जो विपद सहाय—असली भाई वही है जो दुख में काम आवे। तुलनीय: अव० भाई ओही जउन दुःख मा काम आवै।

भाई सा दुश्मन नहीं, भाई सा मित्र नहीं—दे० 'भाई ऐसा हित नहीं···'।

भाई सो भाई, बाकी छींके पर—छींके पर वही वस्तु रखी जाती है जिसकी तुरन्त आवश्यकता नही होती। यहाँ भाई शब्द में श्लेष है, जिसका अर्थ क्रमशः भाई और मन-पसंद है; इसलिए कहावत के दो अर्थ है—(क) भाई ही अपना होता है शेष लोगों को दूर ही रखना चाहिए। (ख) जो पसंद आया उसे खाया और शेष को उठाकर छीके पर रख दिया।

भाई ही आड़े आते हैं—विपत्ति में भाई ही आडे आते है। अर्थात् विपत्ति में अपने ही काम आते है। तुलनीय: भीली—भीड़ भाय्या हूं भागे; पंज० मसीबत बिच परा ही कम आंदे हन।

भाखत वेद पुरान, दिए नित मिले न ऐहो—वेद तथा पुराण यही कहते हैं कि बिना दिए हुए कोई कुछ नहीं पाता।

भाखा जौ न जाने ताहि शाखा मृग जानिए—(क) जो भाषा अर्थात संस्कृत नही जानता, वह बंदर के तुल्य है। (ख) जो भाषा अर्थात् हिन्दी नही जानता वह भी बंदर के समान है।

भाग के बचें या भुगत के—किसी आपत्ति से छुटकारा या तो भागने से मिलता है या भुगतने से। विपत्ति से भागने से वह फिर कभी पड़ सकती है, किंतु सामना करने से सदा के लिए फ़ैसला हो जाता है। विपत्ति से पलायन नहीं संघर्ष करना चाहिए इसलिए कहते हैं। तुलनीय: माल० भाग्या कुटे के भुगत्या।

भाग छिपे न भभूत रमाए—भभूत रमाने से भाग्य नहीं छिपता। अर्थात् राख लगाने से कोई साधु नहीं बन जाता और न ही उससे भाग्य ही बदलता है। मात्र वेश परिवर्तन से कोई लाभ नही होता। तुलनीय: राज० भाग छिपै न भभूत रमायां।

भागते चोर की लँगोटी ही भली—दे० 'भागते भूत की···'।

भागते चोर की लंगोटी ही सही—नीचे देखिए।

भागते भूत की लँगोटी भली—भागते भूत की यदि लँगोटी भी मिल जाय तो भी ठीक है। आशय यह है कि जिससे कुछ भी मिलने की आशा न हो उससे जो कुछ मिल

जाय वही अच्छा है । तुलनीय : अव० भागत भूत कै लंगोटिन सही; हाड़० भागता क भूत की लँगोटी ई सई; मल० ओट्टमिल्लात्ततिनेक्काळ एतानुम् नल्लतु; राज० भागतै भूतरी लँगोटी ही सही; गढ़० भागदा भूत की लँगोटी हाथ; मरा० पलून जाणाऱ्या भूताची लँगोटी तेवढ़ीय; कश्म० चलत अन्यचर मंअज लंगूट्य; अं० Something is better than nothing.

भागते भूत की लँगोटी भी बहुत है - ऊपर देखिए।

भागते भूत की लँगोटी ही सही दे० 'भागते भूत की लँगोटी…'।

भागतों को दहेज कौन देता है ? —जो बाराती स्वय गाँव छोड़कर भाग रहे हों उनको दहेज कौन दे सकता है ? जो व्यक्ति स्वयं किसी की वस्तु को न लेना चाहे तो उसको ज़बरदस्ती कैसे दी जा सकती है। तुलनीय : राज-हामताने दायजा कुण देवै ?

भाग फूटे को करम फूटा सौ कोस के फेर बाद भी मिले —फूटे भाग्य वाले को फूटे कर्म वाला सौ कोस का फेर काटने के बाद भी मिल जाता है । (क) भाग्यहीन को जब दूसरा भाग्यहीन व्यक्ति मिल जाय तो उसके प्रति कहते है। (ख) जब जैसे को तैसा मिल जाय तो उसके प्रति भी व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : राज० भाग-फूटयैनें करम फूट्या सौ कोसारो अवळाई खा'र मिलै ।

भाग बिन मिले न संपत गुरु बिन मिले न ज्ञान —भाग्य के बिना धन और गुरु के बिना ज्ञान नहीं मिलता ।

भागमान के हल भूत जोतता है भाग्यशाली का हल भूत चलाता है। आशय यह है कि भाग्यशाली को अनायास ही लाभ होता है तुलनीय : छत्तीस० करम के नागर ला भूत जोतै ।

भालपुर के भगौलिए, कहल गाँव के ठग, पटने के दीवालिये, तीनों नामज़द—बिहार के भागलपुर ज़िले के लोग मोर्चे से भाग जाते हैं, कहलगाँव के लोग बहुत ठग होते है और पटना ज़िले के लोग बहुत दीवालिए होते हैं। इस प्रकार तीनों उपरोक्त कारणों के कुख्यात है ।

भागवान आए खाते हुए, अभागा आए सोते हुए - खाने के समय जो भी व्यक्ति आता है, वह भाग्यवान होता है क्योंकि साथ में वह भी खाना खा सकता है और जो रात्रि में सोने के समय आते है वे भाग्यहीन होते है, क्योंकि उन्हें उस समय भोजन कठिनता से ही मिल पाता है। ठीक समय पर किसी दूसरे के घर पर पहुँचने वालों के प्रति इस प्रकार कहते है। तुलनीय : गढ़० भगवान औं खादी दौं, निर्भाग औ सेंदी दौ; अं० Bones for the late comers.

भगवान के भूत कमाएँ —दे० 'भागमान के हल…।'

भागहीन सागर गए, जहाँ रतन का ढेर; कर परसत घोंघा भए, यही करम के फेर—भाग्य का ऐसा फेर होता है कि अभागा आदमी समुद्र के पास गया जहाँ रत्नों का ढेर था, लेकिन उसके छूते ही सब रत्न घोंघा हो गए। अर्थात् अभागे को सोना भी मिले तो मिट्टी हो जाता है। अभागे के पास आकर अच्छी चीज भी व्यर्थ हो जाती है ।

भागी को भेट कहाँ —पराए पुरुष के साथ भागने वाली स्त्री को उपहार नहीं दिया जाता। अर्थात् बुरे का सम्मान नहीं किया जाता। तुलनीय . हरि० ऊघळतियां नैं किसे कमार ?

भागे जाहि नाम रजपूत—भागते जा रहे है अर्थात् हिम्मत ज़रा भी नहीं है और नाम है राजपूत । नाम के अनुसार काम या गुण न हो तब कहते है।

भागे धन, न माँगें पूत—अधिक दौड़-धूप करने से न तो धन मिलता है और न माँगने से पुत्र मिलता है । अर्थात् अपने चाहने से कुछ नहीं होता सब कुछ ईश्वर की इच्छानुसार होता है ।

भागे-भागे जाओ, करम लिखा सो पाओ - कितना भी दौड़ो लेकिन जो भाग्य में होगा वही मिलेगा। आशय यह है कि चाहे कोई कितनी भी कोशिश क्यों न करे, लेकिन उसे उतना ही प्राप्त होता है जितना उसके भाग्य मे होता है ।

भागे भूत की मूँछ ही सही -दे० 'भागते भूत की लँगोटी…'।

भागते भूत की लंगोटी भली—दे० 'भागते भूत की लँगोटी…'।

भागे भूत की लंगोटी ही सही—दे० 'भागते भूत की लँगोटी…'।

भागे हुए लश्कर का मर्द पीछा नहीं करता —भागती हुई सेना का बहादुर पीछा नहीं करते। आशय यह है कि जो हार मान लेता है उसे बहादुर आदमी नहीं मारते ।

भाग्य की बलिहारी - जब किसी व्यक्ति के पास धन के साथ-साथ गुण और सम्मान भी हो तो उसके प्रति कहते है। अर्थात् सर्वसंपन्न व्यक्ति की प्रशंसा में कहते हैं : तुलनीय : गढ़० होनी को बल्यारी छन ।

भाग्य के आगे कौन उपाय—भाग्य के सामने किसी की नहीं चलती । जब कोई व्यक्ति हर तरह से प्रयत्न करने के बाद भी सफल नहीं होता तब कहते है । तुलनीय : गढ़०

देख माँ भेख को करी सकद; पंज० विदि अग्गे किदी चलदी है; राज० करमकारी नहीं लागण दे जद कोई हुवे; सं० भाग्यं फलति सर्वत्र न विद्या न च पौरुषम।

भाग्य के लिखें को कौन टाल सकता है—ऊपर देखिए। तुलनीय : मल० तलीयलेपुत्तु तूत्ताल् मायुमो; अं० What is lotted can not be blotted.

भाग्य न देवे साथ तो कोई क्या करे?—'भाग्य के आगे कौन उपाय।'

भाग्य में किसका हिस्सा—भाग्य में कोई हिस्सेदार नहीं होता। जब कोई व्यक्ति किसी भाग्यवान संबंधी को देखकर उससे अपना भाग भी माँगता है तो उसके प्रति कहते हैं, या जो जिसके भाग्य में होना है वह उसी को मिलता है उसमें किसी और की दाल नहीं गलती। तुलनीय : माल० भाग में कंई भागीदार; पंज० पाग बिच कदा हस्सा।

भाग्य में लिखा नहीं टलता—जिसके भाग्य में जो अच्छा-बुरा लिखा होता है उसे कोई मिटा नहीं सकता। तुलनीय : सं० नियतिः केन बाध्यते; पंज० विदि दा लिखया नई मिटदा।

भाग्यवान का हल भूत जोतता है—दे० 'बलवान का हल...'। तुलनीय : ब्रज० भागिवान कौ हर भूत जोतें।

भाग्यवान के आकाश में खेत हैं—धरती के खेतों वाले किसान जी-तोड़ परिश्रम करते हैं, किंतु फिर भी निर्धन और दुःखी रहते हैं तथा धनवान बिना किसी परिश्रम के आराम से बैठकर सुख भोगते हैं इसीलिए उनके प्रति कहते हैं कि उनके तो आकाश में खेत है, वहीं से उनको सब कुछ मिल जाता है। तुलनीय : माल० भागवानां रे आकाश में हल चाले।

भाग्यवान के खेत जोत जात है भूत—दे० 'बलवान का हल...'। तुलनीय : राज० भागी है भूत कमावै; माल० भागवानां रे भूत कमावै, अण कमायो आवे।

भाग्यवान के घूरे के भी गाहक—भाग्यवान को कूड़े तक के भी ग्राहक मिल जाते हैं; अर्थात् उसको सब प्रकार से लाभ ही होता है। जिस व्यक्ति को सब तरह से लाभ हो उसके प्रति ऐसा कहते है। तुलनीय : गढ़० भग्वान का बल्द का द्वी लीवाल।

भाग्यहीन जब होत है, सभी होत हैं बाम—जब मनुष्य का भाग्य ही खराब होता है तब सभी उसके शत्रु हो जाते हैं। आशय यह है कि बुरे दिन आने पर सब तरह से हानि होती है और अपने संबंधी भी साथ छोड़ देते हैं।

भाजी का राजी, मक्खन का पाजी—दाल-भाजी आदि सस्ती वस्तुएँ पाने वाले स्वस्थ तथा प्रसन्न रहते हैं, किन्तु मक्खन आदि खानेवाले अस्वस्थ तथा दुःखी रहते हैं। गरीबों की प्रशंसा करने के लिए कहते हैं। तुलनीय : माल० भाजीरो जो ताजीरो, ने लूणी रो जो पूणी रो।

भाजी की भाजी, दूसरे की मुहताजी—खाने के लिए भाजी मिली (अर्थात् गोश्त का टुकड़ा नहीं मिला) तो मुहताज (मुखापेक्षी) होने की क्या आवश्यकता है? आशय यह है कि जो भी रूखा-सूखा मिले उसे खाकर संतोष करना चाहिए, अच्छी चीज़ों के पाने के लिए दूसरे का मुहताज नहीं होना चाहिए।

भाजी पत्ता जे भखें तिन्हें सतावे काम, दाल-भात जे खात हैं तिनकी जाने राम—जो साग आदि खाते हैं उन्हें काम वासना परेशान कर देती है तो जो दाल-भात खाते हैं उनकी हालत को भगवान ही जानता होगा। अर्थात् जब सामान्य भोजन करने वालों को कामवासना व्याकुल कर देती है तो अच्छा भोजन करने वालों को तो बहुत अधिक परेशान करती होगी।

भाट, जाट, तेली, बहोरा, पड़े जूता करें निहोरा—भाट, जाट, तेली और बहोरा ये चारों जूता पड़ने पर ही ठीक रहते हैं। अर्थात् ये चारों सीधी तरह समझाने से नहीं मानते। इनके साथ जब निर्दयता का व्यवहार किया जाए तभी ये सीधी राह पर चलते हैं। तुलनीय : माल० भाट, जाट, तेली, बोरा, पड़े जूता करे नोरा।

भाड़ पर गई चने भुजाने, भाड़ ही फूट गया—अर्थात् भाग्यहीन जहाँ कहीं जाता है वहीं उसे कष्ट सहना पड़ता है या उसका काम बिगड़ जाता है।

भाड़ में जाओ—तुम्हारा बुरा हो। जब कोई किसी के समझाने-बुझाने पर नहीं मानता तब उसके प्रति कहता है।

भाड़ में जाए ऐसा लड़का जो बसोर के झाड़ने-फूंकने से जिए—ऐसा लड़का मर जाय जिसकी रोज़ाना झाड़-फूंक करानी पड़े। अर्थात् (क) जिसकी रोज़ाना दवा करनी पड़े उसके जीने से मरना ही अच्छा है। (ख) जिसकी हमेशा मरम्मत ही करनी पड़े उसका नष्ट हो जाना ही ठीक है।

भाड़ लीपती जाय, हाथ काले का काला—भाड़ लीपने से हाथ काला होता है। अर्थात् बुरे के साथ भलाई करने से बुराई ही मिलती है। तुलनीय : अव० भग्साय लीपा हाथ करिया का करिया।

भाड़ लीपे हाथ काला—भाड़ लीपने से हाथ काला होता है। आशय यह है कि बुरा काम करने से बदनामी ही

होती है। तुलनीय : मरा० मट्टी माखली तर हात काले होणार; भोज० भाड़ लिपले हाथ करिया।

भाड़ा, ब्याज, दच्छना पीछे पड़े कुच्छना—इन तीनों को फ़ौरन चुकाना चाहिए क्योंकि ये बाक़ी रहने पर मिलते नहीं।

भाड़े के घोड़े, खाएँ बहुत चलें थोड़े— किराए के घोड़े खाते अधिक और चलते कम हैं। मजदूरों और नौकरों के प्रति व्यंग्य में कहते हैं जो ठीक ढंग से काम नहीं करते। तुलनीय : पंज० पाडे दा कौड़ा खाणमता चलण थोडा।

भात के लिए कलछुल नाहीं, फेंक मार तलवार—भात चलाने के लिए पास में एक कलछुल तक नहीं है और उससे तलवार फेंककर मारने को कहा जा रहा है। जब किसी व्यक्ति से ऐसा काम करने को कहा जाय जिसके लिए तो क्या, उससे बहुत ही छोटे काम के लिए भी उसके पास साधन या शक्ति न हों तो ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० भात खातिर कलछुली नाहीं, फेंक मार तरुवार; छत्तीस० भात खोंये बर करछुल नही, फेंक मार तरवार।

भात खाते बहुतेरे, काम दूल्हा दुल्हन से—भात खाने के लिए तो बरात में बहुत से लोग आते हैं पर काम केवल दूल्हा-दुल्हन से ही पड़ता है। आशय यह है कि साथी तो बहुत होते हैं पर समय पर खास लोग ही काम आते हैं।

भात खाते हाथ पिराय—भात (चावल) खाने से हाथ दर्द करता है। बहुत सुकुमार बनने वालों पर व्यंग्य।

भात छोड़ा जाता है, साथ नहीं—किसी से भले ही खान-पान न हो फिर भी उससे बातचीत तो रखनी ही चाहिए। जो किसी से खानपान छोड़ने के साथ-साथ उससे बातचीत करना भी बंद कर देते हैं उन्हें समझाने के लिए ऐसा कहते है। तुलनीय : भोज० भात छूटि जा तऽ छूटि जा बाकी साथ नाहीं छोड़े के चाही; अव० भात छूट जात है मुला साथ नाही छूटत; गढ़० भात छोड़नो पर साथ नि छोड़नो; राज० भात छोड़ देणा साथ नही छोडणा।

भात बिना है राँड रसोई, खाँड बिना अनपूती, बिन घिउ की जिन रोटी खाई, मानो खाई जूती—भात के बिना रसोई विधवा के समान और मिठाई के बिना निपूती के समान होती है और बिना घी के रोटी खाना जूती खाने के समान होता है। अर्थात् रसोई में भात, खाँड और घी लगी हुई रोटी अवश्य होनी चाहिए बिना इन सबके पूरी रसोई नहीं कही जा सकती। तुलनीय : अव० भात बिना है राँड रसोई, खांड बिना अनपूती; बिन घिउ की जिन रोटी खाई, मानो खाइब जूती।

भात बिन रह जावे पिया बिन रहा न जावे—अन्न के बिना स्त्री रह सकती है लेकिन पति के बिना नहीं। आशय यह है कि पति से दूर रहने पर या पति के न रहने पर स्त्री का जीवन कष्टमय हो जाता है।

भात होगा तो कौवे बहुत आ रहेंगे—चावल होगा तो खाने के लिए कौवे बहुत आवेंगे। अर्थात् (क) धन होने पर बहुत खाने वाले मिलते हैं। (ख) जब सौदा न पटने पर ग्राहक आवेश में आकर चला जाता है तो दुकानदार भी ऐसा कहता है। तुलनीय : अव० भात होई तो तमाम कौवा बटुर अइहैं; तेलु० नूकलू चल्लिते काकुलकु करुआ।

भात होगा तो कोए कौवे भी आएंगे—ऊपर देखिए।

भाता था और वैद ने कहा—'दिल को अच्छा पहले से लगता था और वैद्य ने भी उसी को खाने के लिए कहा। जब किसी व्यक्ति को मनचाही चीज़ मिल जाय तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० भाँवतो' र वेद कह्यो।

भादरवे जग रेलसी, जे छठ अनुराधा होय, डंक कहै हे भड्डली, चिन्त करो न कोय—डंक भड्डरी से कहते हैं कि यदि भादों बदी छठ को अनुराधा नक्षत्र हो तो खूब वर्षा होगी, कोई चिन्ता न करे।

भादों का घाम और साझे का काम—द० 'भादों की घाम...'।

भादों का झल्ला, एक सींग गीला एक सूक्खा—भादों में वर्षा ऐसी होती है कि बैल का एक सींग भीग जाता है और दूसरा सूखा रहता है। अर्थात् भादों में वर्षा कम होती है, कहीं होती है और कहीं नहीं होती।

भादों की घाम, और साझे का काम—भादों की घाम बहुत हानिकर होती है उससे बीमार होने की आशंका रहती है। उसी प्रकार साझे के काम में कुछ-न-कुछ झगड़ा अथवा हानि अवश्य हो जाती है। अर्थात् ये दो दोनों अच्छे नहीं होते।

भादों की चौथ को पत्थरों की शिकायत—भादों की चौथ को प्रायः लोगों के घरों पर ढेले पड़ते हैं। समय-दशा देखकर सब सहन करना पड़ता है।

भादों की छठ चांदनी, जो अनुराधा होय; ऊबड़-खाबड़ बोय दे, अन्न घनेरा होय—भादों सुदी षष्ठी को यदि अनुराधा नक्षत्र हो तो खराब ज़मीन में भी बीज बोने से बहुत अन्न उत्पन्न होगा। आशय यह है कि उपरोक्त दशा में पैदावार अच्छी होती है।

भादों की छाछ भूतों को, कातकी छाछ पूतों को—भादों के महीने का मट्ठा भूतों के लिए और कार्तिक माह

का मट्ठा लड़कों के लिए होता है अर्थात् भादों में मट्ठा हानिकारक और कातिक में लाभदायक होता है। (छाछ = मट्ठा)।

भादों की धूप में हिरण काले होते हैं—भादों माह की धूप में हिरण काले होने लगते हैं। आशय यह है कि भादों की धूप बहुत कड़ी होती है।

भादों की मेंह से दोनों साख की जड़ बंधती है—भादों में वर्षा होने से ख़रीफ़ और रबी दोनों फ़सलों को लाभ होता है। ख़रीफ़ की फ़सल की अच्छी सिंचाई हो जाती है और रबी की फ़सल के लिए अच्छी जोताई। तुलनीय : मरा० भाद्रपदाचा पाऊस, दोन्ही पिकाचीं गूळें पक्की होतात।

भादों के बरसे बिना, माँ के परसे बिना पेट नहीं भरता—जब तक भादों माह में वर्षा नही होती तब तक पृथ्वी की प्यास नही बुझती; और जब तक माँ भोजन नही परोसती तब तक पेट नही भरता। आशय यह है कि माँ ही सबसे अधिक ध्यान रखती है, बिना उसके खिलाए पिलाए बच्चे सुख से नहीं रहते। तुलनीय : कौर० भाद्दों के न बरसे, मा के न परसे, कहीं पेट भरया है।

भादों में जै दिन पछुवाँ ब्यारी, ते दिन माघं परं तुसारी—भादों के माह में जितने दिन तक पछुवाँ हवा चलेगी उतने दिन तक माघ में पाला पड़ेगा।

भादों दोनों साख का राजा है—क्योंकि इसी माह की वर्षा से दोनों फ़सलें अच्छी होती है।

भादों बदी एकादसी जो ना छिटके मेघ, चार मास बरसं नहीं, कहै भड्डरी देख—भड्डरी इस बात को विचार कर कहते हैं कि यदि भादों बदी एकादशी को बादल फूटे न हों तो चार मास तक वर्षा नहीं होगी।

भादों मासं ऊजरी, लखौ मूल रविवार; तो यों भाखं भड्डरी, साख भली निरधार—भड्डरी कहते हैं कि यदि भादों के महीने में रविवार को मूल नक्षत्र हो तो फ़सल अच्छी होगी।

भादों में जो बरसा होय, काल पछोकर जाकर रोय—भादों में यदि वर्षा हो तो काल पीछे जाकर रोता है। अर्थात् भादों में अच्छी वर्षा होने से पैदावार अच्छी होती है और अकाल पड़ने का भय नहीं रह जाता।

भादों से बचे तो फिर मिलेंगे—भादो के महीने में लोगों को खाने-पीने की बहुत दिक़्क़त होती है, इसीलिए ऐसा कहते है।

भानजा पाला या तोता पाला—भानजा और तोता पालना बराबर है, क्योंकि दोनों ही समय पर काम नहीं आते। कहावत प्रसिद्ध है 'तोताचश्म'। जब किसी का भानजा अच्छे दिनों मे साथ रहे और बुरे दिनों में उसे छोड़कर चला जाय तो उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० भाणजा धाणी अर तितरा पाणी कखछ या।

भानु उदय दीपक कह काम—सूर्य के निकलने पर दीपक की क़दर नही होती। अर्थात् बलवान या सुविद्वान के सामने निर्बल या मूर्ख को कोई नही पूछता। तुलनीय : मरा० सूर्य उगवल्यावर दिव्याला कोण विचारतो।

भा बिधिना प्रतिकूल जबै तब ऊँट चढ़े पर कूकर काटे—दुर्भाग्य आने पर ऊँट ऐसे ऊँचे जानवर पर रहने पर भी कुत्ता काट लेता है। आशय यह है कि भाग्य के विपरीत होने पर बहुत होशियारी से रहने पर भी हानि हो जाती है। तुलनीय : मरा० दैव प्रतिकूल झाले की उटावर बसलेल्यालासुद्धां कुत्रें चावतें।

भाभी लीपती जाय मुन्ना खेलता जाय—भाभी आँगन को लीपती जा रही है और मुन्ना (छोटा बच्चा) उसको खेल-खेल कर फिर से खराब किए जा रहा है। जब कोई व्यक्ति काम को सँवारता जाय और कोई दूसरा उसको बिगाड़ता जाय तो उनके प्रति कहते है। तुलनीय : राज० भाभी नीपती ही जाय, कोडो खेलतो ही जाय।

भामिनि भइहु दूध कर माखी—हे भामिनि! तुम तो दूध में पड़ी हुई मक्खी के समान हो गई हो। किसी कार्य के करने मे बाधक होने वाले के प्रति या नगण्य हो जाने वाले के प्रति कहते है।

भाय, भतीजा, भांजा, भर, भाँट, भुमिहार; तुलसी इन षट भकार से सदा रहो हुशियार—भाई, भतीजा, भांजा, भर (एक जाति), भांट (एक जाति) तथा भूमिहार (एक जाति) इन छह 'भ' से आरंभ होने वालों से सर्वदा होशियार रहना चाहिए। ये अपने नही हो सकते।

भार घसीटत और को; रहे ऊँट के ऊँट—सदा दूसरे का काम करते रहे और ऊँट के ऊँट ही रह गए। जो सदा दूसरों की सेवा करके भी कोई लाभ न उठा सके उसके प्रति कहते है।

भार धरे सब देश को, तऊ कहावत शेष—सारे ससार का भार अपने सर पर लिये हैं और फिर भी 'शेष' कहलाते है। अर्थात् जब बड़े काम से भी थोड़ा नाम हो तब यह लोकोक्ति कही जाती है।

भारी नाम पहाड़खाँ, जब बोलें तब पीऊँ—नाम तो पहाड़ खाँ है लेकिन जब बोलते हैं तो 'पीऊँ' की आवाज़ निकलती है। नाम के अनुसार गुण न हो तब कहते हैं।

भारी पत्थर देखा, चूमकर छोड़ दिया—किसी ने एक बड़े पत्थर को उठाने का प्रयत्न किया, लेकिन जब वह न उठा तो उसे चूमकर छोड़ दिया, ताकि लोग समझें कि उसे उठा नहीं रहा है वल्कि उसकी पूजा कर रहा है। आशय यह है कि जो काम अपनी सामर्थ्य से बाहर हो उसे करने के बजाय खामोशी से उससे दूर हो जाना चाहिए, इसी में बुद्धिमानी है।

भारी पलड़ा नीचे झुकता है—तराज़ू का जो पलड़ा भारी होगा वही नीचे झुकेगा। जो मनुष्य सज्जन होते है, वे धन-संपत्ति पाकर और भी नम्र हो जाते हैं। सज्जन व्यक्तियों की प्रशंसा के लिए ऐसा कहा जाता है। तुलनीय : गढ़० जो पलड़ा भारी होंद सो झुकद।

भारी ब्याज मूल को खाय—अधिक ब्याज मूलधन को भी खा जाता है। आशय यह है कि (क) ज्यादा सूद पर रुपया देने मे मूलधन भी वसूल नही हो पाता। (ख) जब काफी ब्याज हो जाता है तब मूलधन और ब्याज दोनों के जाने का खतरा उत्पन्न हो जाता है। तुलनीय : अव० भारी बिआज मूर को खायँ; हरि० घणा ब्याज मूल नै ले डूब्बे; पंज० मता बयाज पैहे नूं लेके डुबे।

भारैकदेशावतरणन्यायः—भार के एक भाग को उतारने का दृष्टान्त। तात्पर्य यह है कि भार के एक भाग को उतार कर भारवाही अपने भार को कम कर सकता है।

भाल का लिखा न घटता है न बढ़ता—जो भाग्य में लिखा रहता है वह लाख प्रयत्न करने पर भी घटता-बढ़ता नही। प्र० जो विधि भाल मे लीक लिखी सो बढ़ाई बढ़े न घटै न घटाई। —पद्माकर

भाव गिरे तो बनिया जबान पलटे, माल न पलटे—यदि किसी कारण बाज़ार-भाव गिर जाय तो बनिया झूठ बोल देता है किंतु धन वापस नही करता। बनिया किसी भी तरह हानि सहने को तैयार नही होता, चाहे उसका अपमान ही हो जाय। तुलनीय : भीली—मोटो रुजोलो पेट, भाव थाई ग्यो चोटो वणने पड़ग्यो टोटो।

भावज की थैली, सराफ़ी करे देवर—धन है भौजाई का और उधार देता है देवर। (क) दूसरे के धन पर नाम कमाने वाले पर कहते हैं। (ख) दूसरे के धन से लाभ उठाने वाले के प्रति भी कहते है। (सराफ़ी = उधार देना, सोने-चाँदी की दुकान करना)।

भाव न जाने राव—राजा वस्तुओं की क़ीमत नही जानता। अर्थात् जो जिस काम को करता है वही उसका हाल जानता है, अन्य कोई नहीं।

भाव बिना भक्ति नहीं, भाग्य बिना धन-मान—जब तक सच्चे हृदय से भक्ति न की जाय तो उसका कोई भी लाभ नही है। इसी प्रकार धन और सम्मान बिना भाग्य के नही मिलते। तुलनीय : गढ़० भाव बिना भगती न कर्म बिना रेख।

भाव राव की खबर नहीं—राजा के मन और बाज़ार के भाव को कोई नही जानता। अर्थात् इनके बदलते देर नही लगती।

भाव राव खुदा के हाथ—बाज़ार का भाव और राजा ये दोनों ईश्वर के हाथ में होते हैं। आशय यह है कि इन पर किसी का अधिकार नहीं होता; ये किसी भी समय बदल सकते है।

भाव से भक्ति फले—हृदय के भावों से ही भक्ति होती है। भावना यदि सच्ची हो तो भक्ति का फल ईश्वर अवश्य देता है। तुलनीय : राज० भाव सू भगती फलै।

भावी के बस संसार—संसार के जितने कार्य है वे होनहार के अधीन है। अर्थात् होनहार होकर रहती है। तुलनीय : अव० भाभी के बस मे दुनियां है।

भावी बड़ा प्रबल है—भावी बहुत बलवान है। अर्थात् होने वाला होकर रहता है। तुलनीय : उज० दूध की मटकी रोज़ नही फूटती; किंतु कभी-न-कभी अवश्य टूट जाती है; अव० भाभी बड़ परबल है।

भिक्षुपादप्रसारण न्यायः—भिक्षुक के पैर फैलाने का न्याय। इस संबंध में एक कहानी है : एक भिखारी भोजन, वस्त्र तथा आवास की व्यवस्था के लिए किसी धनी व्यक्ति के पास गया। सबसे पहले तो उसने धनी के घर मे बैठने की ही अनुमति प्राप्त की। बाद में धीरे-धीरे उसने अपना सम्पूर्ण अभीष्ट प्राप्त कर लिया। जब कोई किसी से आरंभ मे थोड़ी-सी सहायता माँगे और बाद में धीरे-धीरे अपनी सभी आवश्यकताएँ पूरी कर ले तब उसके प्रति इस न्याय का प्रयोग करते हैं।

भिखमंगे से कोई गली छुपी नहीं है—भीख मांगने-वाले नगर की सभी गलियों से परिचित होते है। (क) जो व्यक्ति जिस कार्य को करता है वह उसके संबंध मे पूरी जानकारी रखता है। (ख) नगर की गलियों-राहों आदि की बहुत जानकारी रखने वाले के प्रति भी परिहास करने के लिए कहते है। तुलनीय : राज० मंगतैसू कोई गळी छानी कोनी।

भिखारी और पछोड़ माँगे—माँगते हैं भीख और कहते है कि फटक (पछोड़) कर देना। जब कोई मुफ़्त मे मिलने

वाली चीज़ में भी अच्छाई-बुराई देखता है तब उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

भिखारी के खाय, नीच के न खाय—छोटे से छोटे तथा निर्धन से निर्धन व्यक्ति के घर में भोजन कर लेना चाहिए किंतु नीच व्यक्ति के घर भोजन नहीं करना चाहिए जो बाद में एहसान जताए। तुलनीय : माल० काट्या रो खाणो पर उगड़्या रो नी खाणो।

भिखारी भी अपने घर का राजा होता है—आशय यह है कि ग़रीब से ग़रीब व्यक्ति भी अपने घर शान से रहता है। तुलनीय : भोज० भिखरियो अपने घरे राजा होला; पंज० मंगता वी अपने कर दा राजा हुंदा है।

भिच्छु जो लक्षमी पाइहै सूधे परं न पाँव— भिक्षुक या दीन यदि धनी हो जाता है तो उसके पाँव गर्व के कारण सीधे नहीं पड़ते। आशय यह है कि ओछे लोग थोड़े में इतराने लगते हैं।

भिड़ के छत्ते में हाथ डाले सो चूतिया—भिड़ के छत्ते में हाथ डालने वाला मूर्ख होता है। आशय यह है कि बलवान या बुरे से छेड़खानी नहीं करनी चाहिए।

भिड़ को छेड़े सो दुख पावे—ऊपर देखिए।

भिड़े पहाड़ से, घर की सील फोड़ें—चोट लगी पहाड़ से और तोड़ रहे हैं घर की सिल। सबल का क्रोध निर्बल पर दिखाने वाले के प्रति कहते हैं।

भीख की भीख और ऊपर से देवी के दर्शन—भीख की भीख माँग ली और देवी के दर्शन भी कर लिए। एक साथ दो लाभ होने पर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : बुंद० गंगा की गंगा मिरजापुर की हाट; ब्रज० भीख की भीख और माई जी के दर्शन।

भीख की हंड़िया सिकहर पर नहीं चढ़ती—भीख की हंडी सिकहर पर नहीं रखी जाती क्योंकि वह कभी भरती नहीं है। तुलनीय : भोज० भीख क हाँड़ी सिकहर पर ना चढ़े; अव० भीख माँगी हंड़िया सिकहरे नाही चढ़न।

भीख के टुकड़े बाज़ार में डकार—भीख के टुकड़े खाकर पेट भरते हैं और बाजार में डकार लेते हैं जिससे मालूम हो कि बाज़ार में ही खाकर आए हैं। व्यर्थ की डींग हाँकने वाले के प्रति कहा जाता है। तुलनीय : गढ़० भीक का टुकड़ा गल्यूं मां डंकार।

भीख छोड़ी तब कुत्तों से बचे—जब भीख माँगना छोड़ दिया तब जाकर कुत्तों से जान बची। जब किसी से छुटकारा पाने के लिए किसी को अपना धंधा छोड़ना पड़े तब ऐसा कहते हैं।

भीख माँगे और आँख गुरेरे—नीचे देखिए। तुलनीय : छत्तीस० भीख माँगे, अउ आँखी गुड़ेरे।

भीख माँगे और आँख दिखावे—माँगते हैं भीख और दिखाते हैं आँख। अर्थात् (क) तुच्छ होकर भी जो दूसरों पर रोब दिखाए उस पर कहते हैं। (ख) जब कोई ज़बरदस्ती किसी से कोई चीज़ माँगे तब भी कहते हैं। तुलनीय : अव० भीख माँगै औ आँखी देखावै।

भीख में पछाड़ क्या—भीख में यह क्या देखना कि यह अच्छा है या बुरा। मुफ़्त में मिली हुई चीज़ में जब कोई ख़राबी निकलती है तब कहते हैं। (पछाड़=फटकन या हल्का अन्न)।

भीख में भीख दे, तीन लोक जीत ले—जो व्यक्ति स्वयं दूसरों से माँगकर पेट पालता है और उसी माँगी हुई वस्तु या धन में से दूसरों को दान भी देता है वह तीनों लोकों को जीत लेता है। अर्थात् उसे बहुत बड़ा फल प्राप्त होता है। तुलनीय : गढ़० भीक मां भीक, तीन लोक जीत।

भीत के भी कान होते हैं—दे० 'दीवारों के भी कान...'।

भीत को खावे आला, घर को खावे साला—दीवार को आले (ताक़) खाते हैं और घर को साले खा जाते हैं क्योंकि अधिक आलों के होने से दीवार कमज़ोर हो जाती है और घर में सालों के रहने से घर नष्ट हो जाता है। तुलनीय : राज० भीतनै खावै आळा, घरनै खावै साळा।

भीत टले, पर बात न टले—दीवार टल जाती है, लेकिन आदत नहीं टलती। अर्थात् बुरी आदत लाख प्रयत्न करने पर भी नहीं छूटती।

भीतर का घाव रानी जाने या राव—भीतर के घाव को या तो रानी जानती हैं या राजा। (क) मन की व्यथा को पति-पत्नी ही जानते हैं। (ख) किसी की गुप्त बातों के सम्बन्ध में उसके निकट सम्बन्धी के अतिरिक्त और किसी को जानकारी नहीं होती।

भीतर के पट तब खुलें बाहर के जब दे—जब बाह्य चक्षु बन्द हो जाते हैं तब अन्दर के चक्षु खुलते हैं। आशय यह है कि जब व्यक्ति सांसारिकता से दूर होकर ईश्वर की आराधना करता है तब उसे ज्ञान प्राप्त होता है।

भीतर खाय बकरा, बाहर करे नखरा—भीतर तो बकरा खाते हैं और बाहर बहुत नखरा दिखाते हैं। अर्थात् जो भीतर-भीतर बुरे काम करे और बाहर से शुद्ध बने उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० खा जाण बकरा, इदां करण नखरा।

भीतर भाँग अरु तुलसी बाहर— घर के भीतर भाँग रखते हैं और बाहर तुलसी का पौधा लगाए हुए हैं। (क) कपटपूर्ण व्यवहार पर कहते हैं। (ख) पाखंडी के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : गढ़० भितर खाणा बाखरा भैर करना माखरा।

भीतर भूजी भाँग नहीं, द्वार पर नाच नचावे—घर में तो कुछ भी नहीं है और द्वार पर नाच कराते है। झूठी शान दिखाने वाले के प्रति व्यंग्य में कहते है।

भीतर से जड़ खोदे ऊपर से पानी दें—भीतर से जड़ काटते हैं और ऊपर से पानी गिराते हैं। सामने चिकनी-चुपडी बातें करने वाले तथा आड़ में निन्दा करने वाले को ध्यान में रखकर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मैथ० तरे-तरे जड़ खोदे ऊपरे-ऊपरें पानी; भोज० भीतरें-भीतर सोर घावें ऊपर ले पानी दे।

भीतर से दही चूड़ा ऊपर से एकादशी छिप करके दही-चूड़ा खाते है और कहते हैं कि मैंने एकादशी का व्रत रखा है। पाखंडी धर्मानुयायियों के प्रति व्यग्य मे कहते है।

भीत रहेगी तो लेव बहुतेर चढ़ेंगे—हड्डी रहेगी तो मांस भी बढ़ जायेगा। किसी बीमारी के बाद जब आदमी बहुत दुर्बल हो जाता है तब उसे धीरज बँधाने के लिए कहा जाता है।

भीती लेवन, बुड्ढा जेवन—दीवार लेव लगाने से और बूढ़े खाने से ही ठीक रहते है। आशय यह है कि जब तक इनकी मरम्मत और सेवा होती है तभी तक ये ठीक रहते है।

भील का घर टोकरी में—भील जाति बहुत गरीब होती है और उनके घर का सामान बहुत थोड़ा होता है जो एक टोकरी में ही समा जाता है, इसीलिए ऐसा कहते है। तुलनीय : भीली पालविया की पड़ाई पाणनां माये।

भील का दिल भोला, बनिए का बड़ा झोला भील सीधे-सादे होते है और बनिए का झोला बड़ा होता है। भील सीधे होते है जिसमे बनिए या दूकानदार उन्हें सहज ही ठग लेते हैं। इसी बात को ध्यान मे रखकर ऐसा कहते है। तुलनीय : भीली—भील भोला ने चेला मोटा।

भील की शराब यार, फिर दुश्मन क्या दरकार ?—जब भील की शराब से दोस्ती है तो शत्रु की क्या आवश्यकता ? अर्थात् भील जाति के लोग बहुत मदिरा-प्रेमी होते हैं। वे इसी में मस्त रहते हैं और उन्नति नही कर पाते। तुलनीय : भीली—भीलनो दसमण हरो, बीजाये कर वानू हूं काम।

भील को ढील क्या—भील जाति बहुत परिश्रमी और चुस्त होती है उन्हें काम करने में देर नहीं लगती। तुलनीय : मेवा० भील के कई ढील।

भील सीधा पर तीता—भील सीधे होते है किंतु काम में बहुत तेज-तर्रार होते हैं। तुलनीय : भीली—भील भोला ने हाथ मे टोला।

भीष्म प्रतिज्ञा—कठोर प्रतिज्ञा करने पर कहा जाता है।

भुंकना कुत्ता काटे नहीं—भूंकने वाला कुत्ता काटता नही। अधिक कहने या बकनेवाला कोई काम नही करता। तुलनीय : गढ़० भुकदो कुत्ता काटदो नी; अं० Barking dogs seldom bite.

भुइं बिस्वा भर नहीं, नाम पृथ्वीपाल—भूमि तो एक बिस्वा भी नहीं है, लेकिन नाम है पृथ्वीपाल। स्थिति के विपरीत नाम होने पर व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

भुइंहार के मरे भुइं भार जाय—भूमिहार के मरने से पृथ्वी का भार हलका हो जाता है। अर्थात् जीते जी भूमिहार लोगों को परेशान ही करता है।

भुइंहार भूइं में गड़ा फिर भी खड़ा—भूमिहार को यदि जमीन में गाड़ दिया जाय तब भी वह खड़ा रहता है। आशय यह है कि भूमिहार जाति बड़ी अक्खड़ होती है। वे दबे रहने पर भी अक्खड़ से बाज नही आते हैं।

भुइ परन भूखौ मरन, जे बरात को हेत—जो बारात मे जाना है उसे जमीन पर सोना पड़ता है और भूखो भी मरना पड़ता है। आशय यह है कि बारात में कष्ट सहना पड़ता है।

भुइयाँ खेड़े हर है चार, घर होय गिहथिन गउ दुधार, अरहर की दाल जड़हन का भात, गागल निबुआ औ घिउ तात, खांड़ दही जौ घर में होय, बाँके मैन परोसे जोय, कहें घाघ तब सबही झूठा, उहां छोड़ इहवें बैकूठा—खेत गाँव के समीप हो, चार हल चलते हों, घर में गृहस्थी के कार्यों मे निपुण स्त्री हो, दूध देने वाली गाय हो, अरहर की दाल और अगहनिया धान (अगहन के मास मे पैदा होने वाला धान) का भात हो, रसदार नीबू हो, तथा गर्म-गर्म घी हो, घर में दही और खांड़ हो और भोजन परोसने वाली स्त्री सुन्दर नेत्रों वाली हो तो घाघ कहते है कि पृथ्वी पर ही स्वर्ग है और सब झूठा है।

भुजदण्ड ही आपके कहे देते हैं—आपके भुजदण्ड ही बतलाते हैं कि आप कितने शक्तिशाली है। जब कोई कमजोर व्यक्ति अपने को बहुत शक्तिशाली जताता है तब उसके

प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

भुजा उठा कहउँ पन रोपी—मैं भुजा को उठा कर अपनी प्रतिज्ञा को सुनाता हूँ। अर्थात् खुलेआम प्रतिज्ञा करता हूँ।

भुना बीज अरु बंजर भूमि— बंजर भूमि में भूना हुआ बीज बोने से कुछ पैदा नही होता। (क) स्त्री-पुरुष दोनों में खराबी होने से सन्तान पैदा नही होती। (ख) सांध्य और साधन दोनो के खराब होने पर काम नही होता।

भुस ऊपर को लीपबों, अरु बालू की भीत—भूसे के ऊपर का लीपना और बालू की दीवार दोनों ही शीघ्र खराब हो जाती हैं।

भुस के मोल मलीदा—मलीदा भूसे के भाव बिकता है। जब अच्छा माल बहुत सस्ते दामों पर बिके तब कहते है। तुलनीय : भोज० भूसा के मोल मलीदा बिके।

भुस में आग लगाकर जमालो दूर खड़ी - भूसे में आग लगाकर जमालो दूर जाकर खड़ी हो गई। दो व्यक्तियों को परस्पर टकराकर दूर से तमाशा देखने वाले के प्रति व्यग्य में ऐसा कहते है। तुलनीय : गढ़० बण्वा भागिगे का ठगो घालिगे।

भूंकते कुत्ते को रोटी का टुकड़ा- भौंकने वाले कुत्ते को रोटी का टुकड़ा डाल देना चाहिए। (क) रिश्वतखोर को कहते है, क्योंकि पहले तो वह इधर-उधर करता है पर रिश्वत पाते ही शान्त हो जाता है। (ख)परिश्रमी या अच्छे लोगों की सहायता करनी चाहिए।

भूकने वाला कुत्ता काटता नहीं -दे० 'भुंकना कुत्ता···'।

भूआ की नदी में कौन बहे ?— भूआ की नदी को कौन पार करने जाय ? (क) भ्रमवश किसी काम को न करने पर कहते हैं। (ख) सभी लोग सुखी रहना चाहते हैं, कोई दुख सहना नही चाहता। इस सम्बन्ध में एक कथा इस प्रकार है : एक जुलाहा कहीं जा रहा था। रास्ते में उसे बहुत-सा भूआ पड़ा दिखाई दिया। वह उसे नदी समझकर लौट गया। (भूआ = सेमल की रुई, मैल, फेन)।

भूख भली या पतोहू की जूठ—भूखे रहने से पतोहू का जूठा खा लेना अच्छा है। आशय यह है कि कुछ न होने या मिलने से बुरी चीज का होना या मिलना भी ठीक है। तुलनीय : भोज० उपवासे ले पतोहे कऽ जूठे भला; अब० भूख भली की पुतउ का जूठ; अं० Something is better than nothing.

भूख को भोजन क्या नींद को बिछौना क्या—भूख लगने पर चाहे जैसा भी रूखा-सूखा मिल जाय उसका ध्यान नहीं रहता। इसी प्रकार नींद आने पर बिछौने का ध्यान नहीं रहता। आशय यह है कि ज़रूरत के समय अच्छी-बुरी चीज़ नहीं देखी जाती। तुलनीय : भीली—उँध नी जोए हातरो न भूख नी जोए मावड़ो; कन्न० हसिविगे रुचि हल्ल, निद्रगे सुख विल्ल।

भूख को भोजन क्या, नींद को सवेरा क्या—ऊपर देखिए।

भूख गये भोजन मिले, जाड़ा गए कबाय; जोबन गए तिरिया मिले, तीनों देव बहाय यदि भूख समाप्त हो जाने के बाद भोजन मिले, जाड़ा बीत जाने पर कपड़ा मिले, और जवानी बीतने पर स्त्री मिले तो तीनों का त्याग देना चाहिए। आशय यह है कि जरूरत के समय कोई चीज़ न मिले तो बाद में मिलने पर कोई लाभ नही होता। (कबाय = गर्म कपड़ा)।

भूख गए भोजन मिले, जाड़ा गए रजाई; यौवन गए तिरिया मिली, किसी काम न आई—ऊपर देखिए।

भूख दाना को भी दीवाना कर देती है—भूख बुद्धिमान (दाना) को भी पागल बना देती है। आशय यह है कि भूख किसी से भी सहन नही होती। तुलनीय : सिं० बुख बुछरो टोल टानह दीवाना करे, या बुख बुछरी बला चंग न खे चर्यो करे।

भूख न जाने जूठा भात, नींद न जाने टूटी खाट—दे० 'भूख को भोजन क्या, नीद को बिछौना क्या ?' तुलनीय : हरि० भूख ना मान्नै झूट्टा भात, नीद नां जाणै टूट्टी खाट; ब्रज० भूक न जानें झूटो भात, नींद न जानें टूटी खाट।

भूख न जाने बासी भात, प्यास न जाने धोबी घाट—भूख चावल के बासी होने का ध्यान नही रखती और न प्यास धोबी घाट का। अर्थात् (क) भूख और प्यास लगने पर अच्छे-बुरे भोजन तथा पानी का ध्यान नही रह जाता। (ख) आवश्यकता के समय अच्छी-बुरी चीज़ नहीं देखी जाती। तुलनीय : भोज०भूख न जानेला बासी भात, पियास ना जानेला धोबी घाट; अव० भूख न जाने बासी भात, प्यास न जाने धोबी घाट; गढ० भूक मिट्ठी कि भोजन मिट्ठो; माल० भूख नी देखे झूठो भात, नीद नी देखे टूटो खाट, और इश्क नी देखे जात कुजात; तेलु० आकलि रुचि येरगदु निद्र सुखमेर गदु; ब्रज० भूक न जानें बास्यौ भात, प्यास न जानें धोबी घाट।

भूख न देखे तवा परात, नींद न जाने टूटी खाट, इश्क न देखे जात-कुजात—ऊपर देखिए।

भूख मीठी या खीर ?—भूख न लगी हो तो खीर भी बेस्वाद लगती है। भूख लगी होने पर सभी वस्तुएँ स्वादिष्ट लगती हैं। तुलनीय : राज० भूख मीठी क लापसी ? पंज० भुख मिठी या खीर; अं० Hunger is the best sauce.

भूख में किवाड़ पापड़— भूख लगने पर किवाड़ पापड़ जैसा लगता है। आशय यह है कि भूख लगने पर बुरी चीज़ भी अच्छी लगती है। तुलनीय : अव० भूख में केवाच पापड़ लागत है; कौर० भूख में किवाड़ पापड़; भीली — भूकत्या ना हाते भोत्र भाजी मांये; ब्रज० भूक में किबार पापर।

भूख में गूलर पकवान—ऊपर देखिए।

भूख में चना चिरौंजी—दे० 'भूख में किवाड़ ···'।

भूख में चिकना क्या ?—जब भूख लगी हो तो चिकने-चुपड़े या अच्छे खाने की आवश्यकता नहीं होती। भूख में रूखा खाना भी अच्छा लगता है।

भूख में प्याज भी मीठा—दे० 'भूख में किवाड़···'। तुलनीय : मि० वुख में बमर (प्याज) नि मिठा; पंज० पुख बिच गंडा वी मिठा; अं० Hunger is the best sauce.

भूख में मिट्टी का भोजन मीठा—ऊपर देखिए।

भूख में सत्तू पेड़ा—ऊपर देखिए।

भूख लगी तो घर की सूझी—भूख लगने पर घर याद आता है क्योंकि वहीं पर भोजन मिलता है। अर्थात् (क) किसी चीज़ की आवश्यकता होने पर, उस वस्तु के प्राप्ति-स्थान की याद आती है। (ख) जब कोई आवश्यकता पड़ने पर ही किसी से मिले, उसके पहले या बाद में नहीं तब भी उसके प्रति ऐसा कहते है। तुलनीय : मरा० भूक लागली की घर आठवतें; पंज० पुख लग्गी ते कर लब्बा।

भूख लगे पर सत्तू पूवा—दे० 'भूख में किवाड़···'।

भूख सबसे स्वादिष्ट चटनी है—दे० 'भूख में किवाड़···'।

भूख सहे पर घास को, नाहिं भाखे मृगराज—सिंह भूख सह लेता है पर घास नहीं खाता। आशय यह है कि प्रतिष्ठित पुरुष कुसमय पड़ने पर भी नीच काम नहीं करते। या वीर एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति आवश्यकता या विपत्ति पड़ने पर भी कुल की रीति नहीं छोड़ते।

भूखा उठाता है, भूखा सुलाता नहीं—जितने जीव हैं सभी भूखे उठते हैं पर कोई भूखा सोता नहीं। अर्थात् ईश्वर सबके खाने का प्रबन्ध करता है। तुलनीय : अव० भूखा उठाउत है, भूखा सोवावत नाहीं।

भूखा क्या न करता ?—अर्थात् सब कुछ करता है। भूख लगने पर मनुष्य अपनी क्षुधा-शान्ति करने के लिए बुरा काम भी कर जाता है। तुलनीय : अव० भूखा मरता का न करता; तेलु० अकलैनवाहु घर चेड गोट्टु; सं० बुभुक्षित: किं न करोति पापम्।

भूखा खाए ही पतियाय—भूखा भोजन कर लेने के बाद ही विश्वास करता है। आशय यह है कि जो बहुत परेशान रहता है, जब तक उसकी परेशानी दूर नहीं होती तब तक उसे शांति नहीं मिलती या वह किसी की बातों पर विश्वास नहीं करता। तुलनीय : अव० भूखा खायेन पतियाय; राज० भूखो तो धायां ही पतीजै।

भूखा गया जोय बेंचने, अधाना कहे बन्धक रख—कोई गरजमंद व्यक्ति अपनी स्त्री को बेचने गया तो सम्पन्न व्यक्ति ने कहा कि बन्धक रख दो। किसी के विपत्ति या मजबूरी में पड़ जाने पर जब कोई उससे अनुचित लाभ उठाना चाहता है तब ऐसा कहते है। तुलनीय : भीली—भूकत्यो वांटे भेली, धाप्यू करे एकार; गढ़० भूको बोद वली गदरी अगाणो बोद पली तुदरी; कौर० भुक्खा बेच्चै जोरू अंघाया कहे उधारी दे।

भूखा चाहे रोटी दाल, धाया कहे मैं जोड़ूँ माल—जब घर में एक की आवश्यकता पूरी न हो और दूसरा किफ़ायत करना चाहे तब कहते है।

भूखा जोरू बेचे, राजा कहे उधार लूँ—दे० 'भूखा गया जोय बेचने···'।

भूखा तुरक न छोड़िए हो जाय जी का झाड़—भूखे मुसलमान से छेड़छाड़ नहीं करनी चाहिए नहीं तो वह जान को आ जाता है। अर्थात् भूखे मुसलमान से दूर रहना चाहिए। तुलनीय : ब्रज० भूको तुरक न छेड़ियै, होय ज्यौ को जंजार।

भूखा तो भी छत्री, टूटी तो भी लाठी—भूखा है फिर भी क्षत्रिय है और टूट गई है तब भी लाठी है। आशय यह है कि (क) बलवान और उच्च कुल के लोग कमजोर और निर्धन होने पर भी सामान्य लोगों की अपेक्षा अधिक बलवान और संपन्न होते हैं। (ख) अच्छे लोग बुरी परिस्थिति में आ जाते हैं तब भी उनमें जाति और कुल का अंश रहता है। तुलनीय : राज० भूखी तो ही ईंदी, भागी तोई-डाँग।

भूखा फ़क़ीर, अघाया अमीर, मरा पीर—मुसलमानों के प्रति कहते हैं कि भूखा होने पर वे फ़क़ीर बन जाते है और धनी होने पर अमीर कहलाते है, तथा मर जाने पर पीर। तुलनीय : राज० भूखा फकीर, धाया अमीर, मर्याँ पीर; ब्रज० भूको फकीर, अधायो अमीर, मर्यो पीर।

भूखा बंगाली भात भात पुकारे—भूखा बंगाली भात भात की ही रट लगाता है। अर्थात् (क) स्वार्थी पुरुष अपने

ही स्वार्थ की बातें करना चाहते हैं। (ख) ग़रज़मन्द पुरुष अपनी ही ग़रज़ रटता है। तुलनीय : अव० भूखा बंगाली भात भात पुकारै; ब्रज० भूको बंगाली भात भात पुकारै।

भूखा बेचे जोरू, अघाया कहे उधार दे—दे० 'भूखा गया जोय बेचने···'।

भूखा मरता क्या न करता?—दे० 'भूखा क्या न···'।

भूखा मरे कि सतुआ साने—भूखे रहने की अपेक्षा सत्तू ही खा लेना अच्छा है। आशय यह है कि कहीं से कुछ मिल जाना ठीक है भले ही बुरा क्यों न हो।

भूखा मारवाड़ी गावे, भूखा गुजराती सोवे—भूखा मारवाड़ी मौज में गाता है और गुजराती लंबी तान कर सोता है। आशय यह है कि मारवाड़ी गुजराती की अपेक्षा साहसी और परिश्रमी होते है। तुलनीय: राज० भूखो मारवाड़ी गावै, भूखो गुजराती सूवै।

भूखा सिंह तृण न खाय—दे० 'भूख सहे पर घास को···'।

भूखा सो रूखा—जो भूखा होता है वह नाराज़ होता है। आशय यह है कि मूर्ख को ज़रा-सी बात पर क्रोध आ जाता है। तुलनीय : राज० भूखा सो रूखा; भीली—भूकत्यू भचे भण्टाई; मल० विशप्पुल्लवन कोपि, विशन्नाल् पिशाचु; पंज० पुखा ओ रुक्खा; अं० A hungry man is an angry man.

भूखी ने जो पाया, पल्लू में छुपा कर खाया—भूखी को जो भी खाने की वस्तु मिली, उसे उसने अपने पल्लू में छुपाकर खा लिया ताकि कोई दूसरा उसमें से हिस्सा न माँगने लगे। (क) स्वार्थी व्यक्ति जब सार्वजनिक वस्तु को अकेले ही हज़म कर जाते है तो उनके प्रति ऐसा कहा जाता है। (ख) दरिद्रों के प्रति भी इसका प्रयोग होता है क्योंकि उन्हें भी जो मिल जाए उसे अकेले ही बैठ कर खा लेते हैं इसलिए कि कोई और बाँटने वाला न मिल जाए। तुलनीय : गढ़० अपौदान पायो, गोजा घालीक खायो; पंज० पुखी नूं जो लब्बया चौली विच लुका के खादा।

भूखी धना, तो खाने लगी चना—बीबी को भूख लगी तो चना चबाने लगी। (क) भूख लगने पर जो कुछ भी मिल जाता है मनुष्य उसे खा लेता है। (ख) जब कोई उच्च कुल या सपन्न परिवार का व्यक्ति परिस्थितिवश ओछा कार्य करने लगता है तब उसके प्रति भी ऐसा कहते हैं।

भूखी रानी तो चने का मोल जानी—ऊपर देखिए।

भूखे का पेट बातों से नहीं भरता—दे० 'बातिन बिजन कौन अधाए।'

भूखे की जाति नहीं—भूखे व्यक्ति की कोई जाति नहीं होती क्योंकि भूख से व्याकुल होने के कारण किसी भी जाति का दिया हुआ भोजन ग्रहण कर लेता है। अर्थात् मजबूरी में जाति-धर्म नष्ट हो जाता है। तुलनीय : हरि० भूक्खे के जात्य कौन्या; पंज० पुखे दी जात नई हुंदी।

भूखे को अन्न, प्यासे को पानी, जंगल जंगल आबादानी—(क) भूखे के लिए अन्न और प्यासे के लिए पानी हर जगह (जंगल-जंगल) मिल जाता है। (ख) जो भूखे को अन्न और प्यासे को पानी देता है उसे हर जगह खाने-पीने को मिलता है। अर्थात् परोपकारी सदा सुखी रहता है।

भूखे को कहा 'दो और दो कै?' कहा 'चार रोटियाँ'—किसी ने किसी भूखे व्यक्ति से पूछा कि दो और दो मिल कर कितने होते है तो उसने उत्तर दिया कि चार रोटियाँ। अर्थात् (क) किसी भी बात मे जिसका जो मतलब होता है वह वही समझता है। (ख) स्वार्थी के प्रति भी व्यंग्य में कहते है जो सदा अपने स्वार्थ की ही बाते करता है।

भूखे को क्या रूखा, नींद को क्या तकिया—दे० 'भूख न जाने बासी···'।

भूखे को चना ही मेवा—दे० 'भूख मे किवाड़···'।

भूखे को भोजन क्या, नींद को सबेरा क्या—दे० 'भूख न जाने बासी···'।

भूखे घर में नोन निहारी—भूखे परिवार के लिए नमक ही अच्छी चीज़ है। आशय यह है कि ग़रीबों के लिए छोटी चीज़ें भी बहुत बड़ी होती है।

भूखे जाट को कटोरा मिला पानी पीकर मरा—भूखे जाट को एक कटोरा मिल गया जिससे पानी पीते-पीते वह मर गया। आशय यह है कि उच्छृंखल व्यक्ति सामान्य चीज़ों को पाकर इतराने लगता है। तुलनीय : पंज० माड़े जट्ट कटोरा लबया, पानी पी-पी आफरया।

भूखे ने पाया उठते ही खाया—भूखे आदमी ने सुबह सोकर उठते ही भोजन पाया और बिना हाथ मुँह धोए खा गया। किसी निर्धन या अनाड़ी को यदि कोई वस्तु मिल जाए और वह उसे तुरन्त ही बिना समझे-बूझे प्रयोग में लाए तो उसके प्रति व्यंग्य में ऐसे कहते है। तुलनीय : गढ़० निपौदि को पायों; रात्ति उठिक खायों।

भूखे ने भूखे की गाँड मारी, दोनों को ग़श आ गया—किसी भूखे व्यक्ति ने किसी दूसरे भूखे के साथ संभोग किया और दोनों को चक्कर आ गया। आशय यह है कि निर्बल

द्वारा निर्बल का शोषण करने पर दोनों की हानि होती है। तुलनीय : कौर० भूखे ने भूखे की गांड मारी, दोनों कु गम अग्या; पंज० पुखे ने पुखे दी बुंड मारी दोनां नू गम आया।

भूखे बेर अधाने गांडा – भूख लगने पर बेर और भरे पेट पर गन्ना अच्छा लगता है।

भूखे भजन न होय गोपाला नीचे देखिए।

भूखे भजन न होहि गुपाला – भूखे रहकर भगवान का भजन नहीं हो सकता। अर्थात् बिना खाए कुछ भी करना संभव नहीं। तुलनीय : अव० भूखे भजन न होउ गोपाला; राज० भूखा भजन न होय गोपाळा! ले-ले अपणी कठी-माळा; लहं० पेट न पइयाँ रोटियाँ ते सब्बे गल्लाँ खोटियाँ; मरा० उपासी पोटाने भजन होत नाही बाबा; भीली – पेटे भाटो बाँधी ने काम कोई नी करे; तमि० पसीवदड़ पयुम परंदपोस; पज० पखे पजन न होय गुपाला ले ले अपनी कंठीमाला।

भूखे भले मानस से डरिये – धनी यदि निर्धन हो जाय तो उसे डरकर रहना चाहिए क्योंकि धनी कंगाल होने पर दुःखदायी होता है।

भूखे भले या पोते की झूठ – दे० 'भूख भली या पतोहू…'।

भूखे मरें भीख न माँगें – भूखे मरना स्वीकार है, किंतु भीख नहीं माँगना है। स्वाभिमानी व्यक्ति अपनी मर्यादा के लिए प्राण दे देते हैं पर कोई ओछा कर्म नहीं करते। तुलनीय : भीली – भूखे हूं भेड़ाटी खाये पण भीख नी माँगे।

भूखे राजा चना लगे खाजा – दे० 'भूख में किवाड़…'।

भूखे सोयें भूखे जागें, फिर भी कभी न भूखे लागें – धनवान व्यक्ति भूखा सो जाय और भूखा ही उठ जाय फिर भी वह भूखा नहीं लगता; क्योंकि वह धन के कारण तृप्त रहता है। धनवानों के प्रति कहते हैं क्योंकि वह चाहे सोते रहें चाहे जागते उनका पेट सदा भरा ही रहता है। तुलनीय : माल० भूखा हुवे ने धाप्या उठे है भागवान।

भूखे स्यार को पाकड़ मेवा – भूख लगने पर निकृष्ट पदार्थ भी अच्छा लगता है। तुलनीय : मैथ० भूखला सियार के पकुओ भला।

भूखे हों तो हरे-हरे रूख देखो – यदि भूख लगी हो तो हरे-हरे वृक्षों को देखो। कंजूस मनुष्य मँगतों से ऐसा कहता है।

भूड़ के हूड़ होते हैं देहाती गँवार होते हैं। मूर्ख के लिए कहते हैं।

भूत की दोस्ती, जान की जोखम – भूत की मित्रता में अपनी जान को खतरा रहता है। आशय यह है कि बुरे व्यक्तियों से मेल-जोल रखने पर हानि का भय रहता है। तुलनीय : राज० भूतरी भाई-बंदी में जीव रो जोखम।

भूत के पत्थर की चोट नहीं लगती – क्योंकि वह दिखाई नहीं पड़ता। (क) जब कोई किसी से भला-बुरा कहे और वह वहाँ न हो, तब कहा जाता है। (ख) बहुत धूर्त या चालाक व्यक्ति के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : भोज० भूत के पत्थर क चोट नाहीं लागेला।

भूत जान न मारे हैरान करे – भूत प्राण नहीं लेता लेकिन परेशान बहुत करता है। दुष्ट पर कहते हैं। तुलनीय : अव० भुतवा जान नाही मारत, हैरान जरूर करत है।

भूतन के घर बेटा-बेटी – जिस घर में भूत रहते हैं वहाँ वंश नहीं चलता। बदनसीब और कृपण को कहते हैं।

भूतन घर संतति कैसी ? – ऊपर देखिए।

भूत न मारे, मारे भय – भूत किसी को नहीं मारता, मारता है केवल भय। वास्तव में भूत नाम की कोई चीज नहीं होती, लोग उसके झूठे भय से ही मर जाते हैं। जब कोई झूठ में ही किसी से आतंकित रहे तब उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० भूत को मारै नी, भैंसण मारै; पंज० पूत किसे नूं नईं मारदा उहदा डर ओनूं मारदा है।

भूत संग रहे तो मार से क्यों डरे ? भूत के साथ रहकर मार से क्या डरना ? भूत तो मारेगा ही। अर्थात् दुष्ट व्यक्ति के साथ रहने पर कष्ट ही मिलना है, इसलिए उससे डरने से क्या लाभ ? यानी दुष्ट की मित्रता सदा हानिकर ही होती है। तुलनीय : भीली – भूता मैल् रेनृ, फटकार भामूनी विहवृ।

भूतों के घर ऊख, और हिजड़ों के घर लुगाई – भूतों के घर गन्ना (ऊख) और हिजड़ों के घर स्त्रियों के होने से कोई लाभ नहीं होता। जब किसी को कोई ऐसी वस्तु मिल जाती है जिसका उसके लिए कोई उपयोग न हो तब ऐसा कहते हैं।

भूतों के घर बेटा-बेटी – दे० 'भूतन के घर…'।

भूतों के घर राम-राम – भूतों के घर भजन-भाव हो रहा है। असम्भव बात पर कहते हैं। तुलनीय : अव० भूतन के घर सालिगराम।

भूतों के घर सालिगराम ऊपर देखिए।

भूतों को क्या कलाबाजी दिखाना भूतों को कलाबाजी दिखाने की आवश्यकता नहीं। आशय यह है कि जो जिस काम में निपुण हो उसके सामने उसका प्रदर्शन करना ठीक नहीं।

भूतों से पूतों की याचना – भूतों से पुत्र पाने की याचना

करना व्यर्थ है। (क) दुष्टों से कल्याण की उम्मीद करने पर कहते है। (ख) निर्धन से धन की आशा करने पर भी यह लोकोक्ति कही जाती है।

भूतों से पूतों की रखवाली— भूत बच्चों को खा जाते हैं इसलिए वे रखवाली नही कर सकते। भक्षक को रक्षक बनाने पर यह लोकोक्ति कही जाती है।

भूनी भाँग न कडुआ तेल—न तो भुंजी भाँग है और न कडू (सरसों) का तेल। अत्यन्त निर्धन के प्रति कहते है। तुलनीय: भूजी भांग न करुओ तेल।

भूमिनाग सिर धरइ कि धरनी—पृथ्वी पर के सर्प पृथ्वी को धारण नही कर सकते। अर्थात् तुच्छ मनुष्य बड़ा काम नही कर सकते।

भूमियां तो भूमी पर मरी, तू क्यों मरी बटेर— किसान जमीन के पीछे लड़ते है, हे बटेर तू क्यों लड़ता है। (क) छोटा आदमी जब बड़ो के झगड़े में पड़ता है तब कहते हैं। (ख) व्यर्थ में परेशानी उठाने वाले पर भी कहते हैं। तुलनीय: हरि० भुमन्यान आपणी आई मरै तुं क्युं मरै बटेर।

भूमिरथिकन्याय: —भूमि रथिक का न्याय। इस न्याय का आशय है कोई रथिक रथवाहन कला मे दक्षता प्राप्त करने के हेतु भूमि के ऊपर चित्रकारी करता है, ताकि वह युद्ध में रथ-संचालन की कला को प्रदर्शित कर सके। अपनी कला को ठीक ढंग मे प्रदर्शित करने के लिए पहले से अभ्यास करने पर कहते हैं।

भूर का लड्डू खाय सो पछताय, न खाय सो भी पछताय—भूर का लड्डू जो खाता है वह भी पछताता है और जो नही खाता वह भी पछताता है। खाने वाला ज्यादा न पाने के कारण और न खाने वाला न खाने से। (क) किसी अच्छी चीज को खानेवाले और न खानेवाले दोनों पछताते हैं। (ख) जिस चीज़ का नाम अधिक हो और उसमें वास्तव में वैसा गुण न हो, उसका उपयोग करने वाला और न करने वाला दोनों पछताते हैं। तुलनीय: हरि० गोब्बर के रसगुल्ले खा वो भी पछतावै नांह खा वो भी पछतावै।

भूरा बैल जेठा पूत, बिरला ही होयँ सपूत —भूरे रंग के बैल और बड़े लड़के बिरले ही अच्छे होते है। आशय यह है कि ये दोनों अधिकांशत: खराब ही होते हैं।

भूरा भैंसा, चांडली जोय, पूस महावत बिरले होय—भूरे रंग का भैंसा, गंजी स्त्री और पूस में वर्षा ये तीनों बहुत कम होती हैं। (चांडली – गंजी)।

भूल गई चतुर नारि, हींग डाल दी भात में—चतुर स्त्री ने भूलकर चावल (भात) मे हींग डाल दी। (क) किसी समझदार व्यक्ति से जब अनजाने में कोई ग़लती हो जाती है तब कहते है। (ख) फूहड़ स्त्री के प्रति भी व्यंग्य में कहते हैं।

भूल गई दिन वहाड़ा, मुंडों ने सेहरा बाँधा —अपने बुरे दिनों को भूल गई और अब सेहरा बाँधकर घूम रही है। जब कोई निर्धन व्यक्ति उन्नति कर जाय और पिछले दिनों को भूल जाय तब कहते हैं।

भूल गई नार, हींग डाल दई भात में—दे० भूल गई चतुर नारि···'।

भूल गए राग रंग भूल गए छकड़ी, तीन चीज़ याद रही नोन, तेल, लकड़ी—गाना-बजाना और अन्य मनोरंजन भूल गया, अब तो दिन-रात नमक, तेल और लकड़ी की चिन्ता रहती है। गृहस्थी के फेर में पड़ जाने पर कहा जाता है। तुलनीय: अव० भूल गये राग रंग भूल गई छकड़ी, तीन चीज़ याद रही नोन तेल लकड़ी; हरि० भूल ग्ये राग रंग भूल ग्ये छकड़ी तीन चीज याद रहगी नूंण तेल लकड़ी; राज० भूल गया रागरंग, भूल गया छकड़ी तीन चीज याद रही तेल, लूण, लकड़ी; माल० भूली गया राग-रंग और भूली गया छेकड़ी, तीन बात याद री लूण, तेल लकड़ी; मरा० नाचरंग, गड्यान्या गर्व विसरलें, मीठ तेल, सर्पणाचि स्मरण राहिलें।

भूल-चूक का काम सदा कल्याण—अनजाने मे किया गया काम हितकारी ही होता है। तुलनीय: भोज०, मग० अनजान सदा कल्यान।

भूल-चूक का डर नहीं—भूल की कोई शंका नही है। सीधे और साफ़ हिसाब पर कहते हे।

भूल-चूक लेनी देनी —हिसाब चुकता करने पर कहा जाता है। तुलनीय: अव० भूल चूक लेनी देनी; राज०, माल० भूल-चूक लेणी देणी; अं० Errors and ommissions excepted.

भूला फिरे किसान जो कातिक माँगे मेह—वह किसान पागल है जो कार्तिक के महीने में वर्षा चाहता है, क्योंकि उस समय वर्षा होने से हानि होती है। जब कोई ऐसी चीज या बात की आकांक्षा करे जिससे हानि होती है तब कहते हैं।

भूला जोगी दूना लाभ —भूले हुए योगी को दूना लाभ होता है क्योंकि एक ही बार मे दो बार भीख माँगता है। जब भूल से किसी को लाभ हो तब कहते हैं।

भूले चूके कश्यप गोत्र—कश्यप गोत्र सबसे अच्छा माना जाता है इसलिए किसी से गोत्र पूछने पर जब उसको

याद नहीं रहता तो वह अपने को कश्यप गोत्र का बतलाता है। आशय यह है कि सभी श्रेष्ठ बनना चाहते हैं।

भूले बिसरे राम सहाई—भूले-चूके का ईश्वर मालिक है। हिसाब चुकता कर देने पर कहते हैं। तुलनीय : अव० भूले बिसरे राम सहाई।

भू विस्वा भर नहीं नाम पृथ्वीपति—दे० 'भुई बिस्वा-भर...'।

भूसा ओढ़ना भूसा बिछाना—भूसा ही ओढ़ते और बिछाते हैं। बहुत ग़रीबी की हालत में रहने वाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : कनौ० भुस में रहिबो, भुसको खइवो औ भुस पँ सुइबो।

भूसा लोगे तो गेहूँ दो, गेहूँ दोगे तो भूसा लो—भूसा लेना चाहते हो तो दोगे तब भूसा देंगे। केवल अपना ही स्वार्थसिद्ध करने वाले पर व्यंग्य। तुलनीय : भोज० भूसा लेबाऽ तऽ गोहूँ दऽ गोहूँ देबऽ तऽ भूसा लऽ; पंज० पौ लेणा है ते कनक दे, कनक दं ते पौ ले।

भूसी बहुत आटा कम—भूसी अधिक निकलती है और आटा कम। (क) जिस कार्य में लाभ की अपेक्षा हानि अधिक हो उसके प्रति कहते हैं। (ख) जो व्यक्ति बातें अधिक करता है और काम कम उसके प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : मल० भोपन्टे लक्षणम् पोण्णात्त वाक्कु; पंज० तूडा मता आटा कट; अं० Much cry little wool.

भूसे में आग लगा जमालो दूर खड़ी—दे० 'भुस में आग लगाकर...'।

भेस से ही भीख मिलती है—वेश-भूषा से ही भीख भी मिलती है। तात्पर्य यह है कि किसी कार्य के करने के लिए उसके अनुरूप वेश-भूषा भी होनी चाहिए। तुलनीय : मैथ० भेखे भीख मिलै छे; भोज० भेखे भीख मिलेला; अव० भेष से भीख मिलत है।

भेजा खायँ, सिर सहलायँ—मस्तिष्क (भेजा) खाते है और सिर सहलाते है। (क) पाखंडी पर कहते हे। (ख) ऐसे व्यक्ति के प्रति भी कहते हैं जो अन्दर से बुराई और बाहर से मीठी-मीठी बातें करता है।

भेड़ की लात घुटने तक—भेड़ यदि लात मारेगी तो घुटने तक ही लगेगी। आशय यह है कि कमज़ोर या निर्धन किसी का अधिक बिगाड़ नहीं कर सकता। तुलनीय : कौर० भेड़ की लात गोड्डों तक।

भेड़ की लात घुटने से नीचे—ऊपर देखिए। तुलनीय : हरि० भेढ की लात, गोड्डयां ते तलै तलै; पंज० पेड दी लत गोड्डयां तो थले।

भेड़ की लेड़ी यदि मीठी होती तो क्यों गड़ेरिया दूसरे के खेत में हिराता—अपनी चीज़ यदि अच्छी होगी तो उसे कोई क्योंकर दूसरे को देगा। अर्थात् अच्छी वस्तु कोई भी दूसरे को नहीं देना चाहता। तुलनीय : भोज० भेड़ क लेड़ी यदि मीठ होइत त गड़ेरिया दुसरा क खेत ना हिराइत।

भेड़ को तो मुड़ना ही मुड़ना—भेड़ तो हर हालत में मूंड़ी जाएगी। आशय यह है कि गँवार को तो हमेशा कष्ट सहना पड़ता है। तुलनीय : हरि० भेढ़ तै मुंडुण में ए सै; पंज० पेड नू ता मंडोना ही मंडोना।

भेड़ क्या जाने बिनौले का स्वाद—भेड़ बिनौले के स्वाद को क्या जानेगी? आशय यह है कि मूर्ख व्यक्ति अच्छी चीज़ों के महत्त्व को नहीं समझते। तुलनीय : हरि० भेढ के जाणै बिनोल्या की सार?

भेड़ जहाँ जाएगी वहीं मुंड़ेगी—दे० 'भेड़ को तो मुड़ना...'।

भेड़ तो गू से भी पेट भरे पर ऊँट क्या करे?—भेड़ विष्टा से भी अपना पेट भर सकती है, किन्तु ऊँट उसे कैसे खाए? आशय यह है कि छोटी और निकृष्ट वस्तु से निर्धन व्यक्तियों का काम तो चल जाता है किन्तु बड़ों और धन-वानों के लिए तो अच्छी वस्तु ही चाहिए। तुलनीय : राज० भेड़ ओखर कियां ही धापै पण ऊँठ कियांन धापै?

भेड़ तो मुड़ने के लिए ही होती है—दे० 'भेड़ जहाँ जायगी...'।

भेड़ पूँछ भादों नदी, को गहि उतरे पार—भादों के महीने में वर्षा अधिक होने के कारण नदी बहुत बढ आती है उस समय भेड़ की पूँछ के सहारे कोई नदी नहीं पार कर सकता। अर्थात् छोटे के सहारे बड़ा काम नहीं हो सकता। छोटे के सहारे किसी बड़े काम के होने की आशा करने पर कहते है। तुलनीय : मरा० मेढ़ीचें शेपूट धरुन कां कुणी भाद्र पदांत नदी तरेल।

भेड़ पै ऊन किसने छोड़ी—भेड़ के बाल सभी कतर लेते है, छोड़ता कोई नहीं। आशय यह है कि (क) निर्बल को सभी सताते हैं। (ख) लाभ की वस्तु को कोई नहीं छोड़ता। तुलनीय : मरा० मेढीच्या अंगावर लोकर कुणी राहू देईल का।

भेड़-भेड़ मैं तेरे लिए जाड़े के कपड़े सिलवाऊँगा, कहा मेरी ही ऊन बच जाय तो बहुत—किसी ने भेड़ से कहा कि मैं तुम्हारे लिए जाड़े के कपड़े सिलवाऊँगा तो भेड़ ने कहा कि यदि मेरी ही ऊन बच जाय तो वही मेरे लिए पर्याप्त है।

अर्थात् जब कोई किसी चीज़ का प्रलोभन देकर अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहता है और वह उसकी चालाकी को समझकर उससे दूर रहना चाहता है तब व्यंग्य में ऐसा कहते है।

भेड़ा मोट भवानी दूबर भेड़ा मजबूत है और देवी (भवानी) कमज़ोर। जब उपभोक्ता की अपेक्षा उपभोग्य सशक्त हो और ऐसी संभावना हो कि वह उसे हजम नही कर सकेगा तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भेड़ मोटी, ममानी पतरी।

भेड़िए का मुँह खाए तो भी लाल, न खाए तो भी लाल भेड़िया चाहे शिकार मार कर खाए या न खाए लेकिन उसका मुँह लाल ही रहता है। आशय यह है कि बदनाम व्यक्ति चाहे बुराई करे या न करे लेकिन बदनामी उसी के सिर आती है। तुलनीय : कौर० भेड़िया मू खाय तो लोहरा न खाय तो लोहरा।

भेड़िया धसान—आगे की चली हुई पद्धति को आँख मूंदकर या विचार-शून्य भाव से अपनाने पर कहा जाता है। तुलनीय : अव० भेड़िया धसानी; माल० भेड़ वाली चाल।

भेड़िए को आंसू नहीं आते—कठोर या निर्दयी व्यक्ति के प्रति कहते हैं।

भेद खुलो सब भ्रम मिटो, प्रगटी सारी बात— रहस्य खुल जाने पर सभी बातें स्पष्ट हो जाती हैं और भ्रम दूर हो जाता है। जब तक किसी का भेद नही खुलता तब तक उसके विषय में अनेक अटकलें लगाई जाती है।

भेदिया चोरी सनद विवाह—चोरी घर का भेद मिलने पर तथा विवाह किसी के परिचय से होता है। अर्थात् बिना भेद मिले और स्रोत के कोई काम नहीं होता।

भेदिया सेवक सुंदरि नारि, जीरन पट कुराज दुख चारि— दूसरों को अपना भेद बतलाने वाला नौकर, सुन्दरी स्त्री, जीर्ण वस्त्र और दुष्ट राजा ये चारों दुख देने वाले होते है।

भेद-भेद चमरवा पूछे पांड़े पड़वा कैसे—चमार कुरेद-कुरेद कर पूछता है कि ऐ पांडेय जी! वह पांडेय कैसा है? (क) जब कोई बुरा व्यक्ति किसी की बुराई करने के लिए किसी और से उसका भेद लेता है तब कहते है। (ख) निकृष्ट व्यक्ति जब किसी से किसी का भेद लेते हैं तब उसकी अपेक्षा (जिससे भेद लेते हैं) उसे (जिसका भेद लेते है) कम सम्मान देते हैं। (चमरवा=चमार, यहाँ इसका मतलब निकृष्ट से है)।

भेष से भीख मिलती है— दे० 'भेख से ही···'।

भेष से भीख है—दे० 'भेख से ही···'।

भैंस अपनी सूरत नहीं देखती, ऊँट को देखकर भागती है—भैंस अपनी सूरत नही देखती और ऊँट को देखकर भाग रही है। जो स्वयं कुरूप होते हुए भी दूसरे की कुरूपता की खिल्ली उड़ाता है उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : पंज० मज्ज अपनी सकल नई दिखदी ऊँट नू देखके नठदी है।

भैंस कंदेलिया पिय लासे, माँगे दूध कहाँ से आसे—स्वामी कंदेलिया जाति की भैंस लाए हैं तो दूध कहाँ से मिले। अर्थात् कन्देलिया जाति की भैंस दूध कम देती है।

भैंस का गाय से क्या रिश्ता?— भैंस और गाय का आपस में किसी प्रकार का भी संबंध नही है। जब कोई व्यक्ति दो असम्बद्ध व्यक्तियों या वस्तुओं में कोई सम्बन्ध स्थापित करे तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० भैंसरे गाय कांई लागे? कौर० भैंस का बैळ के लगै? पंज० मज्ज दा गां नाल की रिसता।

भैंस का गोबर भैंस के चूतड़ों को लग जाता है -सारा का सारा दूसरे के काम मे नही आता। अर्थात् बड़े आदमियों का अपना ही खर्च अधिक होता है। जब किसी बड़े से उसके व्यय का ध्यान न कर कोई धर्मार्थ के लिए कहे तब कहते है। तुलनीय : अव० भैंसी का गोबर भइसिन के चुतरे भर का होत है; पंज० मज्ज दा गोआ मज्ज दे टुये नाल लग जांदा है।

भैंस का दूध, नली का गूद—भैंस का दूध नली के गूदे की तरह होता है। अर्थात् भैंस का दूध शक्तिवर्द्धक होता है।

भैंस का पड़ा गाय को चूसना चाहे—भैंस का पाड़ा (नर बच्चा) गाय के स्तन का दूध पीना चाहता है। असंभव कार्य के लिए प्रयास करने वाले के प्रति कहते है। तुलनीय : पंज० मज्ज दा कट्टा गां नूँ चूगे।

भैंस का बैल क्या?—दे० 'भैंस का गाय से···'।

भैंस का सींग लफोदर नाम—है भैंस का सींग और उसका नाम 'लफोदर' रखा है। किसी साधारण या निकृष्ट वस्तु का नाम अद्भुत या सुन्दर रखा जाय तो उसके प्रति व्यंग्योक्ति। तुलनीय : राज० भैंसरो सींग लफोदर नाँव।

भैंस की सगी भैंस—भैंस की सगी भैंस ही होती है। प्रत्येक जातिवाला अपनी जातिवालों को ही अपना मानता और चाहता है। तुलनीय : राज० भैंसरी-भैंस सगी हुवै; पंज० मज्ज दी सक्की मज्ज।

भैंस की सींग भैंस को भारी नहीं होती—आशय यह है कि अपने लोगों का भार वहन करने में किसी को तकलीफ़

नही होती। तुलनीय: बुंद० भैस के सीग भैस को भारू नई होत; गुज० भैंसना सीगड़ा भैंसने भारी नहि पड़े; मरा० म्हशीची शिंगे म्हशीला जड़ नाहीत; पंज० मज्ज दे सिंग ओनूं पारे नईं लगदे।

भैंस कुठारी बैल छतारी—पिछले हिस्से की भारी भैंस और छाती के चौड़े बैल अच्छे माने जाते हैं। तुलनीय: बुंद० भैंस कुठारी, बैल छतारी।

भैंस के आगे बीन बजाओ भैंस बैठ पगुराय—नीचे देखिए।

भैंस के आगे बीन बजावे भैंस बैठ पगुराय—भैंस के आगे बीन बजाते है और वह बैठकर जुगाली कर रही है। जब किसी ऐसे व्यक्ति के सामने कोई बात कहें या ऐसा गुण दिखलावें जिसे उसका कुछ भी ज्ञान हो या जिसका उस पर कोई प्रभाव न पड़े तो कहा जाता है। तुलनीय: अव० भइंस के आगे बीन बाजै, भइंस ठाढ पगुराय; छत्तीस० भैंस के आगु बेन बाजै भैंस बैठ पगुराय; हरि० भैंस के आग्गै बीन बजाई, भैंस खड़ी टुकर टुकर जुगाळै; सं० मिष्टान्नं खरशूकराणाम्; मरा० म्हशीपुढ़े रुद्रवीणा वाजवली तरी ती शांतपणें रवंथ करीत असते।

भैंस के आगे बीन बजाते हैं—ऊपर देखिए।

भैंस के आगे भागवत, भैंस खड़ी रौंथाय—दे० 'भैंस के आगे बीन बजावे······'। तुलनीय: राज० भैंस आगै भागोत; माल० भैंस रे आगे भागवत वाचणी।

भैंस के परखा भवन चमार—भवन चमार ने भैंस की परख की। जब कोई ऐसा व्यक्ति किसी वस्तु की परख करता है जो उसके विषय में अनभिज्ञ होता है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। (भैंस की परख अहीर कर सकता है, चमार को उसके विषय में क्या पता)।

भैंस के लिए सब बराबर—भैंस के लिए सभी चीज़े समान होती है। आशय यह है कि मूर्ख व्यक्ति अच्छी-बुरी चीज़ों की परख नही कर पाता। तुलनीय: अ० Pigs grunt about every thing and nothing.

भैंस के सींग भैंस को भारी नहीं पड़ते—दे० 'भैंस की सीग···'। तुलनीय: गुज० भेंसना सीबड़ा भेंसने भारी नहि पड़े।

भैंस के सींग भैंस को भारी नहीं होते—दे० 'भैंस की सीग···'।

भैंस को अपने सींग भारी नहीं—दे० 'भैंस की सींग ···'। तुलनीय: ब्रज० भैंसि कूं अपने सीग भारी नायें होंयें।

भैंस को कोदों नहीं पचते—भैंस कोदों को खाकर हजम नही कर सकती। आशय यह है कि ओछे व्यक्ति किसी बात को गुप्त नही रख सकते।

भैंस को भूसा तो बकरी को पत्ते—भैंस को यदि बहुत-सा भूसा दिया जाता है तो बकरी को भी कुछ पत्ते आदि देने पडते हैं। संसार में सभी की अपनी-अपनी समस्यायें होती हैं किसी की छोटी और किसी की बड़ी। किन्तु पूर्ति सभी की आवश्यक होती है। किसी की समस्या को छोटा देखकर छोडा नही जा सकता। तुलनीय: भीली—डोबी नी टाटली चाली नी चाकरी; पंज० मज्ज नूं पौ अते बकरीं नूं पत्ते।

भैंस गिर गई खाई में, पूंछ रह गई हाथ—भैंस गड्ढे में गिर गई है केवल उसका पूंछ ही पकड़ मे है। जिसका सब धन समाप्त हो जाए और थोड़ा-सा ही बचे उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय: गढ़० भैंसो भेल पुछड़ो हाथ।

भैंस छाता देख बिदके—भैंस स्वयं काले रंग की होने पर भी काले रंग का छाता देखकर बिदक जाती है। (क) जो व्यक्ति स्वयं बुरे काम करे किंतु किसी दूसरे को करते देखकर चौंके और रोष प्रकट करे तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते है। (ख) जो स्वयं कुरूप होते हुए भी दूसरे की कुरूपता पर हँसता है, उसके प्रति भी व्यंग्य से कहते है। तुलनीय: राज० भैंस बांरो देख'र चमकै; पंज० मज्ज छतरी दिख के नट्ठे।

भैंस जो जन्मे पड़ना, बहू जो जन्मे धी; समै कुलच्छन जानिए, कातिक बरसे मी—भैंस को पड़ा पैदा होना, स्त्री को पुत्री होना तथा कार्तिक मे वर्षा होना तीनों ही कुसमय के लक्षण है।

भैंस तो मरी कटरे को भी ले गई—भैंस तो मरी ही उसके साथ उसका पाडा (कटरा) भी मर गया। (क) जो अपनी हानि के साथ-साथ दूसरे की भी हानि करता है उसके प्रति कहते है। (ख) किसी के पूर्णरूपेण नष्ट हो जाने पर भी कहते है। तुलनीय: कौर० भूरी तो मरग्यी घाटळ कू बी ले गई।

भैंस पकौड़े हग गई—किसी मनुष्य की असाधारण वृद्धि पर व्यंग्य से कहते है।

भैंस पै दूध किसने छोड़ा—दे० 'भेड़ पै ऊन···'।

भैंस प्रसव करे, बैल के चूतड़ फटे—भैंस को बच्चा पैदा हो रहा है, और बैल का चूतड़ फट रहा है। जब दूसरे की परेशानी को देखकर कोई व्यर्थ मे परेशान हो तब उसके प्रति व्यंग्य में कहते है। या जब किसी का भार दूसरा सहन करे और उससे किसी और को परेशानी महसूस हो तब कहते है। तुलनीय: कौर० भैंस बाम्मे, बळद के चुतड़ फटे; छत्तीस०

भैंस बियावै पंडरू के गांड़ फाटय।

भैंस बच्चा जने पड़िया के चूतड़ फटे—ऊपर देखिए।

भैंस बड़ी या अक्ल—भैंस बड़ी होती है या बुद्धि। आशय यह है कि बुद्धि बलवान और धनवान होने से भी बढ़कर है। अर्थात् बुद्धि सबसे बड़ी चीज़ होती है। तुलनीय : छत्तीस० भैंस बड़े के अक्कल।

भैंस बियानी गढ़ सम्भर में, खूंटा गड़ा फरक्काबाद—भैंस ने गढ़संभर में बच्चा दिया और उसे बाँधने के लिए फरक्काबाद में खूंटा गाड़ा गया है। जब काम कहीं पर हो और उसका प्रबन्ध किसी दूसरी जगह से हो तब कहा जाता है।

भैंस बेचि पगहा पर झौरा—पगहा उस रस्सी को कहते हैं जिससे मवेशी खूंटे में बाँधे जाते है। भैंस बेचकर उसके पगहे के लेनदेन के सम्बन्ध में झगड़ा करना मूर्खता है। जब कोई किसी को कोई बड़ी चीज़ दे दे लेकिन उससे संबद्ध किसी छोटी चीज़ के लिए एतराज़ करे तब कहते हैं।

भैंस भैंसों में या क़साई के खूंटे पर—भैंस भैंसो के बीच रहती है या क़साई के खूंटे पर। स्वार्थी के प्रति व्यंग्य से कहते है जो लाभ मिलने तक ही किसी से संबंध रखते है या धन रहने पर ही साथ करते है और निर्धन होने पर साथ छोड़ देते है।

भैंस सुखी जो डबहा भरै, रांड़ सुखी जो सबका मरै—भैंस गड्ढो के पानी से भर जाने पर प्रसन्न होती हैं और रांड, सब स्त्रियों के राँड़ हो जाने पर प्रसन्न होती है। आशय यह है कि जब एक का कुछ नुक़सान होता है तो वह सबका नुकसान चाहता है ताकि सभी समान रहें। लेकिन ऐसी भावना नुक़सान के समय ही होती है लाभ के समय नहीं

भैंसा का डो मकड़े पर—भैंसा मकड़े पर रोष प्रकट कर रहा है। बलवान पर अपना बश नहीं चलता तो उसके क्रोध को लोग निर्बल पर उतारते है।

भैंसा बरद की खेती करै, करजा काढ़ि बिरानी खाय; बधिया ऐंचत है महरी को, भैंसा ओहरी को लै जाय—हल में भैंसा और बैल को एक साथ जोतने से तो अच्छा है कि क़र्ज़ लेकर खाय। क्योंकि बैल तो मटियार भूमि की तरफ खींचता है किन्तु भैंसा दल-दल की ओर खींचता है।

भैंसा भैंसों में या, कसाई के खूंटे में—किसी वस्तु का मूल्य घट जाने पर व्यंग्य से कहा जाता है। आशय यह है कि या तो माल बन्द करके घर में रख दें और जब दाम मिले तब बेचे या बाज़ार भाव सस्ता-मद्दा बेंच दें।

भैंसि पाँच षठ स्वान, एक बैल यक बकरा जान; तीनि धेनु गज सात प्रमान, चलत मिलैं मत करौ पयान—यदि यात्रा के समय पाँच भैंसे, छह कुत्ते, एक बैल, एक बकरा, तीन गाय और सात हाथी मिले तो यात्रा न करनी चाहिए। इनका मिलना अपशकुन माना जाता है।

भैंसों की लड़ाई, खेत का नुक़सान—दो भैंसों के परस्पर लड़ने से खेत का नुक़सान होता है। आशय यह है कि दो बलवानों के झगड़े में मध्यस्थों की हानि होती है। तुलनीय : कौर० भैंसां की लड़ाई मे झुण्डों का नक्साण; पंज० सडया दी लडाई खेतां दा नुकसान।

भैंसों की लड़ाई में झुरमुट की हानि—ऊपर देखिए।

भैया और भाभी एक से—भैया और भाभी दोनो एक जैसे ही है। (क) जब दो व्यक्तियों का स्वभाव एक-सा ही हो तो उनके प्रति कहते हैं। (ख) जब कोई दो व्यक्ति एक-दूसरे से बढ़-चढ़कर हों तो उनके प्रति व्यंग्य से कहते है। (ग) जब किसी के दिल में दोनों व्यक्तियों के लिए समान प्रेम होता है तब भी वह कहता है। तुलनीय : राज० बाबो'र बहूजी एकै उणियारै है।

भैया की बात, कुत्ता चले बरात—भैया की बात कुत्तों के बारात जाने की तरह है। अर्थात् जिस प्रकार कुत्तों का पंक्तिबद्ध होकर बारात जाना संभव नहीं है उसी प्रकार भैया की बात का सत्य होना भी सम्भव नहीं। बहुत अधिक झूठ बोलने वाले के प्रति व्यंग्य में कहते है। तुलनीय : पंज० परा दी गल कत्ते वजाण टल।

भैया जा रहे हो, कहा तो तू रोक ले—कोई मिलने आया व्यक्ति वापिस जा रहा था तो घर वाले ने पूछा कि भैया जा रहे हो तो उसने उत्तर दिया—हा जा रहा हूँ। तू आकर रोक ले। जो व्यक्ति बिना किसी कारण के लड़ने को तैयार हो जाय उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० चौधरी बैठो है, तो तूं गुड़ाय दे।

भैया हो अनबोलना तब भी अपनो बाँह—भाई यदि गूँगा हो तब भी वह अपनी भुजा (बाँह) के समान होता है। आशय यह है कि भाई कितना भी बुरा क्यों न हो फिर भी उससे उम्मीद रखनी चाहिए, क्योंकि वही समय पर काम आता है।

भोंदू भाव न जानहीं पेट भरे से काम—मूर्ख व्यक्ति को किसी चीज के स्वाद का पता नहीं होता, उसे तो केवल पेट भरने से मतलब होता है। मूर्ख के प्रति व्यंग्य में कहते हैं जो अच्छी-बुरी चीज़ का ख़याल नहीं करता। तुलनीय : भोज० भोंदू भाव ना जाने पेट भरला से काम; अव० भोंदू भाव न

जानै, पेट भरे से काम।

भोग विलास जब तक सांस -जीवन का आनन्द तभी तक है जब तक जीवन है, मरने के बाद कुछ नहीं रह जाता। (क) कृपण के लिए कहते हैं। (ख) विलासी पर भी व्यंग्य से कहते हैं जो ईश्वर की आराधना कभी भी नहीं करता।

भोगी सो रोगी— विषयी सदा रोगी बना रहता है।

भोजन आप रुचि, सिंगार पराए रुचि- भोजन अपनी पसंद का और शृंगार दूसरे की पसंद का अच्छा होता है।

भोजन ऐसा लाभ नहीं, मृत्यु ऐसी हानि नहीं -भोजन के मिलने से बड़ा कोई लाभ नहीं है और मरने से बड़ी कोई हानि नहीं।

भोजन और भजन परदे में भोजन तथा पूजा-पाठ एकांत में ही करने चाहिए। तुलनीय : माल० भोजन ने भजन परदा ए।

भोजन तब भी राखै जब पेट भरा हो, कम्बल तब भी राखे जब बादल ना हो -पेट भरा हो तब भी भोजन को साथ रखना चाहिए और बादल न हों तब भी कंबल को पास रखना चाहिए। अर्थात् मनुष्य को सदैव तत्पर रहना चाहिए, न जाने कब विपत्ति आ जाय। प्रायः वृद्ध युवकों को शिक्षार्थ ऐसा कहा करते हैं। तुलनीय : गढ़० अगाणा निछोड़नो सामल; बीदा नी छोडणी कामल; पज० रोट्टी तद वी रक्खिए चाए रज्जया होवे पेट, बद्दल चाहे ना होव पर कंबल रक्खिए हेठ।

भोजन नमक से, धन दान से—बिना नमक के भोजन का कुछ लाभ नहीं, क्योंकि उससे स्वाद नहीं आता और उस धन का भी कोई लाभ नहीं जिससे दूसरों की सहायता न की जाए। दान की महिमा और प्रशंसा करने के लिए कहते हैं। तुलनीय : गढ़० सब्बी खाणा लोण मिट्ठो, सब्बी धाण देण मिट्ठो।

भोजन न भात नेंहर का समाव---न पीहर में भोजन मिलता है और न ससुराल में। अर्थात् विधवा का आदर कहीं भी नहीं होता, न तो ससुराल में और न नैहर ही में।

भोजन न भात, हर हर गीत—खाने-पीने को कुछ नहीं देते और गीत खूब सुनाते हैं। झूठे आदर पर कहते है।

भोजन सबको दिया जा सकता है, किंतु सेज नहीं — भोजन प्रत्येक मनुष्य को दिया जा सकता है किंतु यदि कोई कहे कि मुझे अपने साथ सुलाओ तो ऐसा नहीं किया जा सकता। आशय यह है कि इज्ज़त दौलत से बड़ी होती है। दौलत गँवाई या दी जा सकती है पर इज्ज़त नहीं। तुलनीय : गढ़० खाज बाँट होदी पर सेण बाट नी होदी।

भोज में ओज क्या? -भोज में कमी किसलिए? अर्थात् (क) जब बहुत खर्च का काम आरंभ कर दिया तब उसमें थोड़ी-बहुत कमी करने से कोई लाभ नहीं होता। (ख) जब कहीं पर किसी चीज की अधिकता होने पर भी कोई कंजूसी करता है तब भी व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

भोर मुरगा बोला, पंछी ने मुंह खोला -सुबह का मुर्गा बोलते ही पक्षी मुंह खोलने लगते हैं। अर्थात् (क) सबेरा होते ही सभी को भूख लग जाती है। (ख) सुबह होने पर सभी बोलने-टहलने लगते हैं। तुलनीय : मरा० पहांटे कोंबड आखला की पक्षयानें तोंड पसरलेच।

भोर समय डरडम्बरा, रात उजेरी होय; दुपहारिया सूरज तपै, दुरभिक्ष तेउ जोय --यदि प्रातःकाल बादल घिरे हों, रात स्वच्छ हो तथा दोपहर के समय सूर्य से तपे तो बहुत बड़ा दुर्भिक्ष पड़ेगा।

भोला के चलति तो भाँग बोवावत—शंकरजी (भोला) की चलती तो भाँग ही बोवाते। जो केवल अपने स्वार्थ की बात चाहता है उसके लिए कहते हैं।

भोले का रामदाता--सीधे आदमी का राम सहायक होता है। तुलनीय : अव० भोलेन का दानाराम; राज० भोळाटा भगवान।

भोले का है दाता राम -ऊपर देखिए।

भोले बामन भेड़ खाई, अब खाए तो राम दुहाई— सीधे ब्राह्मण ने ग़लती से भेड़ खा ली, अब कभी खाए तो राम जो चाहे दंड दें। जब कोई व्यक्ति धोखे से कोई अनुचित कार्य कर बैठता है और बाद में पछताता है तो उसके प्रति कहते है। तुलनीय : राज० भोले बामण भेड खागी, अब खावै तो राम दुवाई।

भौंकते कुत्ते को रोटी का टुकड़ा -दे० 'भूंकते कुत्ते को…'। तुलनीय : मरा० भुकणाऱ्या कुत्र्याला पोळीचा तुकडा।

भौंकने वाला काटता नहीं -भौंकने वाला कुत्ता काटता नहीं। अर्थात् (क) जो बहुत बातें करते हैं वे कुछ भी काम नहीं करते। (ख) जो लोग बहुत डाँटते-फकारते है वे कोई नुक़सान नहीं करते। तुलनीय : मल० अरिचे बुक्क नेरदु; पज० पौकण वाला वडदा नई।

भौंकने वाले काटते नहीं —ऊपर देखिए। तुलनीय : तेलु० मोरिगे कुक्कलु करवबु।

भौंकने वाले काटा नहीं करते--दे० 'भौकने वाला काटता नहीं।' तुलनीय : राज० भुसै जिका कुत्ता खावै कोनी।

भौंके न बराय, चुपके से काट खाय—भौंकता-चिल्लाता नहीं है बल्कि धीरे से आकर काट लेता है। ऐसे लोगों के प्रति कहते है जो मुँह से तो कुछ नही कहते लेकिन भीतर-भीतर हानि पहुँचाते है।

भौंर न छोड़ केतकी तीखे कटक- केतकी के फल में काँटा होने पर भी भ्रमर का प्रेम उससे कम नही होता। अर्थात् (क) गुणी नीच से भी गुण प्राप्त करते है। (ख) जिसका जिससे हृदय मिल जाता है वह उससे ज़रूर मिलता है चाहे कितनी भी कठिनाइयो का सामना करना पड़े। तुलनीय . मरा० केवडयाचे कांटे तीक्ष्ण असले तरी भवँरा तेथून जात नाही।

भौजी की थैली, देवरा सराफी करे धन तो भाभी का है और देवर सराफी करता है। (क) दूसरे के कारबार में जो अपना नाम चलाए उसके लिए इसका प्रयोग होता है। (ख) दूसरे के धन पर गुलछर्रे उड़ाने वालों के लिए भी इसका प्रयोग होता है।

भौतविचार न्याय:—पागल आदमी के विचार का दृष्टान्त। तात्पर्य है पागल आदमी उपयुक्तता और अनुपयुक्तता का विचार सही ढंग से नही कर सकता है।

भ्रष्टावसर न्याय: भ्रष्ट (बीते हुए) अवसर का न्याय। आशय यह है कि ठीक अवसर पर कार्य न करके, उसे बाद मे समाप्त करने का प्रयास करना व्यर्थ है।

म

मंगत को गिलास मिला तो पानी पी-पी कर मरा—दे० 'भूखे जाट को कटोरा मिला…'।

मंगता को क्या खंगता– माँगने वालों को किस चीज़ की कमी। निर्लज्ज व्यक्तियो के प्रति व्यंग्य में कहते है जो सदा इधर-उधर से माँगकर ही अपना काम चलाते हैं। तुलनीय . छत्तीस० मगता के का खगता।

मँगते से माँगे, उसकी अकल कम- भिखारी से भीख माँगना बुद्धि न होने का प्रमाण है। जो स्वय भीख माँगकर पेट पालता होगा वह दूसरों को क्या देगा ? जब कोई व्यक्ति किसी गरीब से कुछ माँगे तो उसके प्रति कहते है। तुलनीय : माल० मगता आगे मगनो माँगे जेगी अकल कम; पज० पुखे नो मगे उदी अकल घट।

मँगनी का चंदन को न लगाय मँगनी के चदन को कौन नहीं लगाता ? आशय यह है कि मुफ़्त मे मिली चीज़ का प्रयोग सभी करने लगते हैं, चाहे उन्हें आवश्यकता हो या नही।

मँगनी का चंदन घिसे मेरे नन्दन—मँगनी के चंदन को मेरा लड़का रगड़ रहा है। अर्थात् मुफ़्त मिली वस्तु का उपयोग लोग बेरहमी से करते हैं। तुलनीय : मग० मंगनी के चन्नन घस मियाँ लल्लू।

मँगनी का चावल नानी का श्राद्ध—मँगनी में चावल मिल गया तो नानी का श्राद्ध कर रहे है। मुफ़्त की वस्तु को अनावश्यक रूप में खर्च करने पर व्यग्य मे कहते है। तुलनीय . मैथ० मंगनी के चाउर नानी के सराध।

मँगनी का बैल चाँदनी रात, जोता भाई सारी रात —मंगनी के बैल थे और चाँदनी रात, इसलिए सारी रात खेत जोता। (क) मँगनी या दूसरे की चीज़ के साथ लोग बेरहमी करते है। दूसरे के दुख-सुख का कोई विचार नही करता। (ख) दूसरे की चीज़ के प्रति असहानुभूतिपूर्ण भाव रखने वाले के प्रति भी व्यग्य में कहते हैं।

मँगनी का सत्तू, सास का श्राद्ध– दे० 'मँगनी का चावल…'। तुलनीय : भोज० मगनी कद सतुआ सास के पिंडा।

मँगनी की चादर, ता पर पचास की आदर—दूसरे की वस्तु पर शान दिखाना। जो दूसरे की वस्तु पर घमंड करे अथवा अपना नाम चलावे उस पर कहा जाता है। तुलनीय : भोज० मँगनी क चादर तेवना पट पचास क आदर।

मँगनी के तेल से मंसौर नहीं बनते—आशय यह है कि बिना धन खर्च किए कोई कार्य नही होता।

मंगनी के बैल के दाँत न पूछ मंगनी के बैल के दाँत नही पूछने चाहिए। अर्थात् जो किसी से माँग कर ली जाती है उसमें दोष नही देखे जाते। इसलिए जब कोई किसी से कुछ माँगे और साथ ही उसके गुण-दोष भी जानना चाहे तो ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० माँगणी का गोरू का दाँत न खूर

मँगनी के बैल का दाँत नहीं देखते —अर्थात् मुफ़्त में मिली वस्तु की अच्छाई-बुराई नही देखी जाती। तुलनीय : मैथ० मंगनी बरदा के दाँते गिनीक की; भोज० मँगनी के बरध क दाँत नाँ देखे के या मँगनी के बैल क दाँत ना गीनल जाला; अव० मँगनी के बरधा कै दाँत नही देखा जात; मरा० उसन्या बैलाचे दाँत तपाशीत नाहीत; पंज० मुफत दे टग्गे दे दंद नई देखदे। अं० A gift horse is never looked in the mouth.

मँगनी के सतुआ सास को पिंडा—दे० 'मँगनी का

चावल···'।

मँगनी में चँगनी बिल्ली माँगे आधा---माँ कर चगनी लाया हूँ उसमें भी आधा बिल्ली माँगती है। जो स्वयं किसी वस्तु को किसी से माँगकर लाए और उसमें से कोई दूसरा माँगने लगे तब कहते हैं। जो खुद दूसरे से माँगकर लाए उससे माँगना उचित नहीं है। तुलनीय : भोज० मंगनी क चंगनी बिलरिया माँगें आधा।

मँगल पड़े तो भू चले, बुद्ध पड़े अकाल; जो तिथि होय सनीचरी, निहचै पड़े अकाल—यदि फागुन का अन्तिम दिन मंगलवार पड़े तो भूकंप आता है, बुधवार को पड़े तो अकाल पड़ता है और शनिवार को पड़े तो निश्चय ही अकाल पड़ता है।

मंगल रथ आगे चलै, पीछै चलै जो सूर; मन्द बृष्टि तब जानिए, पड़सी सगलै भूर— यदि मंगल आगे हो और सूर्य पीछे तो वर्षा कम होगी और सर्वत्र सूखा पड़ेगा।

मंगल रथ आगे हुवे, लारे हुवे जोभान; आरंभिया यूं ही रहै, ठाली रहै निवाण- यदि सूर्य के आगे मंगल हो तो सबकी आशाओं पर तुषारपात हो जाएगा और तालाब सूखे पड़े रहेंगे, अर्थात् पानी नहीं बरसेगा।

मंगलवारी पड़े दिवारी, मूंड पटक रोवें व्यापारी — मंगलवार को दीपावली पड़ती है तो व्यापारी सिर पटककर रोते है। ऐसा लोक-विश्वास है कि मंगलवार को दीपावली होने से अन्न सस्ता बिकता है जिससे व्यापारियों को हानि उठानी पड़ती है।

मंगलवारी मावसी, फागुन चैती होय; पशु बेचो कन संग्रहो, अवसि दुकाली होय - यदि फागुन और चैत की अमावस्या मंगलवार को पड़ती है तो अवश्य अकाल पड़ेगा। इसलिए पशुओं को बेच डालो और अनाज इकट्ठा करो।

मंगलवारी होय दिवारी, हँसे किसान रोवें बेपारी- दे० 'मंगलवारी पड़े दिवारी···'।

मंगल, सोम, होय सेवराती, पछिवाँ बाय बहे दिनराती घोड़ा, रोड़ा टिट्डी उडे, राजा मरे कि परती पड़े यदि शिवरात्रि मंगल तथा सोमवार को पडे और रात-दिन पछुवा हवा बहती रहे तो घोड़ा (एक प्रकार का पतिंगा), रोड़ा और टिड्डी उड़ेगी तथा राजा की मृत्यु होगी या सूखा पड़ेगा जिससे खेत बिना बोये रहेंगे।

मँगाई छींट, लाया ईट—मँगाया छींट किन्तु लाया ईट अर्थात् जानबूझकर उल्टी बात करना। (क) दूसरे की इच्छा के प्रतिकूल जब कोई कार्य करे तब कहा जाता है। (ख) बहरे व्यक्तियों के प्रति भी व्यंग्य में कहते हैं।

मँगाई हींग, लाया अदरक ऊपर देखिए। तुलनीय : अव० मँगावा हींग, लिआवा अदरक।

मंडप बाँधने सब आते हैं, छोरने कोई नहीं विवाह के अवसर पर मंडप बाँधा जाता है। मंडप बांधते तो कन्या-पक्ष के लोग हैं पर उसे दूल्हा का पिता या चाचा ही खोलता है। आशय यह है कि समस्या उत्पन्न करना सभी जानते हैं, पर उसका समाधान बिरले ही करते है।

मंडूक तोलन न्याय: एक धूर्त बनिया तराजू पर सौदे के साथ मेंढ़क रखकर तौला करता था। एक दिन मेढ़क कूद कर भागा और बनिया पकड़ा गया। आशय यह है कि छिपाकर की हुई बुराई का भंडा एक दिन फूट कर रहता है।

मंडूकप्लुतिन्याय: -मेंढ़क के उछलने का न्याय। तात्पर्य है जैसे मेंढक उछलता रहता है, वैसे कुछ लोग अपने तर्क में एक बात से दूसरी बात पर तत्काल चले जाते देखे जाते हैं। असंगत बातें करने वाले के प्रति इस न्याय का प्रयोग किया जाता है।

मंडवा में कोई बात न पूछे मैं दूलह की चाची- मँडवे में कोई पूछ भी नहीं रहा फिर भी कहती है कि मैं दूल्हे की चाची हूँ। जबरदस्ती संबंध जोड़ने वाले के प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

मंडवे के आटे में शर्त क्या ? - मंडवे के आटे में किस चीज़ की शर्त लगाई जाय। अर्थात् खराब या कम दाम की वस्तु लेने पर दूकानदार कोई शर्त नहीं रखता। जब ग्राहक सस्ती वस्तु लेने पर भी उसकी अच्छाई पूछे तब कहा जाता है।

मंत्र परम लघु जासु बस, बिधि हरि हर सुर सर्व--- मंत्र पढ़ने में बहुत छोटा होता है किन्तु ब्रह्मा, विष्णु, महेश और सब देवता उसके वश में रहते है। अर्थात् गुण देखकर ही सब अधीन रहते हैं न कि आकार से।

मंत्री बिना राजभंग- नीचे देखिए।

मंत्री बिना राज सूना --मंत्री के न होने पर राज्य सूना हो जाता है। अर्थात् प्रधान के बिना राज्य का कार्य उचित रीति से नहीं चल सकता। जब किसी घर, देश, अथवा राज्य का प्रधान पुरुष न रहे अथवा मर जाए तब कहा जाता है।

मंदर मेरु कि लेहिं मराला क्या हंस का बच्चा कहीं मंदराचल धारण कर सकता है ? कदापि नहीं। (क) बड़ी चीज़ को छोटे नहीं धारण कर सकते। (ख) अपनी शक्ति से बाहर का काम कोई नहीं कर सकता।

मंदिर और पूजा-पाठ तो दूर, कभी राम तक नहीं कहा फिर भी भगवान देता है जिस व्यक्ति ने कभी कोई पूजा-पाठ नहीं की, न ही कभी भगवान को याद किया फिर भी उसे भगवान धन-धान्य दे रहे हैं। जब किसी व्यक्ति को बिना परिश्रम और प्रयत्न के ही फल मिल जाय तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : भीली—बारे बारे बेटा जणिया, कापड़ी नोवो नी पलालयो तो चाम लियो मंही मंही आड़ी जोई रह्यो है।

मंदिर को पाँच पसेरी, पीपल को भी पांच पसेरी—मंदिर में भगवान को अर्पित करने के लिए पाँच पसेरी अन्न चाहिए और पीपल के छोटे-से देवता के लिए भी उतना ही चाहिए। (क) जब कोई व्यक्ति किसी छोटे काम के करने में अधिक धन व्यय करता है तो उसके प्रति ऐसा कहते हैं। (ख) जब कोई छोटे-बड़े सबके साथ समान व्यवहार करता है तब भी ऐसा कहते है। तुलनीय : गढ़० ढुली पुजै पांची भांडा छोटी पुजै पांची भाँडा।

मंदिर में जाने वाले सभी ईश्वर-भक्त नहीं होते—अर्थात् (क) एक जैसी दिखने वाली सभी चीजें समान गुण वाली नहीं होतीं। (ख) ढोंगी साधु के प्रति भी व्यंग्य में कहते है। (ग) किसी कार्य को सभी लोग समान रुचि से नहीं करते। तुलनीय : मल० मिन्नुन्नतेल्लाम् पान्नल्ल; पंज० मंदर बिच जाण वाले सारे रब्ब दे पगत नईं हुंदे; अं० All that glitters is not gold.

मकड़ी धामा पूरा जाला, बीज चने का भरि-भरि डाला मकड़ी जब घाम के ऊपर जाला बनाने लगे तब चने का बीज बोना चाहिए।

मकड़ी जाल में फँस गई मकड़ी अपने ही जाल में फँस गई। (क) जब कोई व्यक्ति पारिवारिक झंझटों में उलझ जाता है तब उसके प्रति कहते है। (ख) जब कोई अपने ही द्वारा किए गए कार्य से परेशानी में पड़ जाता है तब भी कहते है। तुलनीय : राज० मकड़ी जाले में फंसगी।

मकर चकर की धानी, आधा तेल आधा पानी --धूर्त तेली की धानी में आधा तेल रहता है और आधा पानी अर्थात् उसका कार्य कपटपूर्ण होता है। धूर्त और कपटी व्यापारी के लिए कहा जाता है। तुलनीय : मकर-चकर री जाणी, आधो तेल रे आधो पाणी।

मकान की नींव और दहेज बदलता नहीं --जो बात बहुत कठिन हो उसके लिए ऐसा कहा जाता है क्योंकि मकान जब एक बार बन जाता है तो उसको उठाकर दूसरी जगह नहीं रखा जा सकता। इसी प्रकार दहेज के लिए जो वचन दे दिया जाता है उससे डिगा नहीं जाता। तुलनीय : गढ़० कूड़ा को सूत अर ब्यौ को ठ्यो बदलेद नी।

मक्का जोन्हरी औ बजरी, इनको बोवे कुछ बिड़री—मक्का, ज्वार (जोन्हरी) तथा बाजरे (बजरी) को कुछ दूर-दूर बोना चाहिए।

मक्के गए, न मदीने गए, बीच ही बीच में हाजी भए—बिना मक्का-मदीना गए ही हाज़ी बन गए। आशय यह है कि बिना प्रयत्न किए ही कार्य पूरा हो गया। जब किसी का मनोरथ सहज में ही पूरा हो जाए तब कहा जाता है।

मक्के में रहते हैं, पर हज नहीं करते —मक्का में रहते हुए भी लोग हज नहीं करते जबकि हज तो वहीं पर होता है। आशय यह कि (क) जो चीज़ सरलता से मिलती है उसकी क़दर नहीं होती। (ख) जो जितना ही पुण्य स्थान के समीप रहता है उसकी भक्ति उतनी ही कम रहती है। तुलनीय : अं० Nearer the church farther from God.

मक्खन की नाक, आटे का दिया— नाक तो मक्खन की और आटे का दीपक है। बहुत भावुक व्यक्ति के प्रति कहते हैं। मक्खन की नाक जरा ठेस लगने पर टेढ़ी हो जाएगी आटे का दिया जलाने पर जल जाएगा। तुलनीय : अव० नेनू कै नाक पिसान का दिया; भोज० लोनू क नाक पिसान क ढेबेरी; पंज० मक्खन दी नक आटे दा दिया।

मक्खियाँ उड़ाने बैठे साथ ही खाने लगे -मक्खियाँ उड़ाने आए और थाली में खाने लगे। जब किसी व्यक्ति को मदद के लिए बुलाया जाय और वह आकर अपना ही मतलब पूरा करने लगे तब उसके प्रति कहते है।

मक्खीचूस—घी में पड़ी मक्खी को भी निकालकर चूस लेता है ताकि घी खराब न जाय। कंजूस को व्यंग्य से कहा जाता है। तुलनीय : अव० माखीचूस; गढ़० मक्खीचूस।

मक्खी छोड़ना और हाथी निगलना— मक्खी को तो छोड़ देते हैं परन्तु हाथी को निगल जाते हैं। आशय यह है कि छोटी वस्तु पर तो ध्यान न दे परन्तु बड़ी चीज़ पर घात लगाए। पाखंडी व्यक्ति के लिए कहा जाता है।

मक्खी नाक पर नहीं बैठने देता—मक्खी को भी अपनी नाक पर नहीं बैठने देता। (क) अत्यन्त चिड़चिड़े व्यक्ति के प्रति कहते हैं। (ख) किसी से कोई संबंध न रखने वाले के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० मखी नक उते नई बैठा देंदा।

मक्खी भिनकती है—इतनी गंदी वस्तु है कि उस पर तमाम मक्खियाँ बैठी हुई है। गंदे मनुष्य या गंदी वस्तु पर

कहा जाता है। तुलनीय : अव० माछी भिनभिनात है।

मक्खी भी कुछ देखकर बैठती है—मक्खी खाली जगह पर कभी नहीं बैठती, जहाँ उसको कुछ खाने-पीने को दिखाई पड़ता है वहीं बैठती है। अर्थात् सभी जीव-जंतु स्वार्थ से कार्य करते हैं। स्वार्थी व्यक्तियों के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : माल० घी पै माखी बैठे।

मक्खीमार बड़ा चमार—कंजूस की सभी बुराई करते हैं क्योंकि वह किसी वस्तु पर बैठी हुई मक्खी को मार डालता है ताकि उससे बदन में लगी हुई वस्तु को भी वह प्राप्त कर ले। कंजूस को व्यंग्य से कहा जाता है। तुलनीय : अव० माछीमार बड़ा चमार।

मक्षिका स्थाने मक्षिका—अक्षरश: नकल करना। जब कोई किसी की अक्षरश: नकल करे तब कहा जाता है।

मखमली जूती—मीठी बातों से किसी का अनादर करना। जब कोई किसी का मीठी-मीठी बातों द्वारा अपमान करे तब कहा जाता है।

मगर को डुबकी सिखाय सो चूतिया—मगर को डुबकी लगाना जो सिखलाए वह मूर्ख है क्योंकि वह तो इस विषय में काफ़ी कुशल होता है। किसी कार्य में कुशल व्यक्ति को जब कोई शिक्षा देता है तब उसके प्रति ऐसा कहते हैं।

मग़रूर का सिर नीचा—घमंडी (मग़रूर) का सिर नीचा होता है। आशय यह है कि घमंड करने वाले का शीघ्र पतन हो जाता है। तुलनीय : मरा० उद्धटाची मान खाली गर्वाचे घर खाली।

मगहर मरे सो गदहा होय—मगहर में मरने वालों का गदहे की योनि में जन्म होता है ऐसा लोकविश्वास है। इसीलिए ऐसा कहते हैं।

मग्गह देश कंचनपुरी, देश अच्छा भाषा बुरी—मगध देश काफ़ी संपन्न एवं अच्छा है पर वहाँ की भाषा अच्छी नहीं होती। मगध की बोली कटु होती है, इसीलिए ऐसा कहते हैं।

मग्गह मरे से गदहा होय—दे० 'मगहर मरे सो…'।

मग्गह मे मरना, अगले जन्म में गधा बनना—ऊपर देखिए।

मग्घा गरजे, हथिया लरजे—यदि मघा नक्षत्र मे बादल गरजते हैं तो हस्त नक्षत्र में पानी नहीं बरसता।

मघा के बरसे, माता के परसे; भूखा न माँगे फिर कुछ हर से—मघा नक्षत्र के पानी से तथा माता के परोसने से मनुष्य पूर्णत: संतुष्ट हो जाता है और उसकी कोई कामना शेष नहीं रह जाती।

मघादि पंच नछत्तरा, भृगु पच्छिम दिसि होय; तो यों जानों भड्डरी, पानी पृथ्वी जोय—मघा, पूर्वा, उत्तरा, हस्त और चित्रा आदि पाँच नक्षत्रों में यदि शुक्र पश्चिम दिशा में हो तो भड्डरी कहते हैं कि पृथ्वी पर पानी बरसने का योग नहीं है।

मघा न बरसे भरे न खेत, माता न परसे भरे न पेट—जब तक मघा नक्षत्र नहीं बरसती तब तक खेत जल से तृप्त नहीं होते और जब तक माता भोजन नहीं परोसती तब तक क्षुधा शांत नहीं होती।

मघा भूमि अघा—मघा नक्षत्र में पानी होने पर पृथ्वी की प्यास बुझ जाती है।

मघा माचन्त मेहा, नहीं तो उडंत खेहा; मघा मेह माचंत, नहीं तो गचछन्त—मघा नक्षत्र में या तो वर्षा ही होगी या सूखा ही पड़ेगा।

मघा मारे पुरवा सँवारे, उत्तरा भर खेत निहारे—यदि मघा नक्षत्र में जड़हन धान बो दिया जाय और पूर्वा नक्षत्र में उसकी देख-भाल कर ली जाए तो उत्तरा नक्षत्र भर खेत को हरा-भरा पाओगे।

मघा में मक्कर पुरबा डाँस, उत्तरा में भई सबकी नास—मघा नक्षत्र में मकड़ा-मकड़ी नामक कीड़े, पूर्वा नक्षत्र में में डांस नामक कीड़े उत्पन्न होते हैं और उत्तरा नक्षत्र में सबका नाश हो जाता है।

मच्छड़ को हमला भयो हाथी ऊपर आज—आज मच्छर ने हाथी के ऊपर आक्रमण कर दिया। मच्छर के काटने का हाथी के ऊपर कोई भी असर नहीं होता। आशय यह है कि निर्बल व्यक्ति यदि सबल से भिड़ जाय तो उसका प्रभाव नहीं के बराबर होता है। जब कोई कमज़ोर अधिक शक्तिशाली पर आक्रमण करता है तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : मरा० आज हत्तीवर डांसाने हल्ला केला बुवा।

मच्छर काहि कलंक न लावा—मच्छर अर्थात् दुष्ट लोग किसे कलंकित नहीं करते? अर्थात् सभी को करते हैं।

मच्छर मार के ऐंठासिंह—मच्छर को मारकर सिंह ऐंठने लगा। महान पुरुष होकर तुच्छ कार्य करके अपने को बड़ा समझने या बहुत प्रसन्न होने वाले के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : पंज० मच्छर मार के आकड़ खाँ।

मछली किमि जीवे बिन पानी—मछली बिना पानी के कैसे रह सकती है? अर्थात् मछली बिना पानी के एक क्षण भी जीवित नहीं रह सकती। (क) जब किसी स्त्री का

अपने पति से वियोग हो तब कहा जाता है। (ख) जब किसी को जीवन-रक्षक पदार्थ प्राप्त न हों तब भी कहते हैं। तुलनीय : मछी वगैर पाणी किवें जीवे।

मछली के जाये किन तैराये—मछली के बच्चे को कोई तैरना नही सिखाता। स्वभावत: हो जाने वाली चीज़ों को करने की आवश्यकता नही। तुलनीय : कौर० मच्छली के जाए, किन तैराए; भोज० मछरी के पौरे के सिखाये; तेलु० चेपल्लकु ईतनेर्पाला; मरा० माशाच्या पोराना पोहायला कोण शिकवतो; ब्रज० मच्छी के जाये तौ सबई तैरा होयें।

मछली के जाए, किसने तैराए—ऊपर देखिए।

मछली के बच्चे को तैरना कौन सिखावे—दे० 'मछली के जाये किन···'। ब्रज० मच्छी के बालकन्नें तैरिबो कौन सिखावै।

मछली को पानी पीते किसने देखा! —(क) जब किसी व्यक्ति की बात झूठी प्रतीत हो तो उसके प्रति अविश्वास प्रकट करने के लिए कहा जाता है। (ख) जब कोई आदमी छुपकर बुरा काम करता रहे और किसी को पता न लगे तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : गढ़० माछी पाणी पेंद को देखद; पंज० मछी नूं पाणी पींदे किन देखया।

मछली खाए, हाथ भी गँधाय मुंह भी गँधाय—मछली खाने से हाथ भी खराब होता है और मुँह भी। जब कोई मछली खाता है तब उसके लिए कहा जाता है। तुलनीय : अव० मछीरी खाये हाथो गँधाय मुँहो गँधाय।

मछली खाने से काम कि तालाब देखने से—जब कोई मतलब का काम न कर फ़िज़ूल बातें करे तब कहते हैं।

मछली गंदी होती है तालाब नहीं—तालाब गंदा मछली से होता है, न कि तालाब से मछली। जहाँ किसी एक व्यक्ति के अपराध का समस्त समाज को दंड मिले तो दंड देनेवाले को समझाने के लिए इस प्रकार कहा जाता है। तुलनीय : गढ़० माछो गंदो होंद ताल गंदो निहोंद; पंज० मछी गंदी हुंदी है तलाब नईं।

मछली तो नहीं कि सड़ जायेगी—मछली जल्द बेच दी जाती है अथवा खा ली जाती है अन्यथा देर तक रखने से सड़ जाती है। जब कोई ग्राहक किसी दूकानदार से कोई वस्तु सस्ते भाव से माँगे और शीघ्र बेचने को कहे तब वह कहता है। तुलनीय : अव० मछरी तौ न होय, जउन सड़ जाई; पंज० मछी नईं जिहड़ी सड़ जावेगी।

मछली पाहुन तीन दिन केहुन—मछली और मेहमान यदि तीन दिन तक रह जायँ तो वे कुछ भी नहीं रहते। आशय यह है कि मछली एक दिन तक ही काम आती है उसके बाद खराब हो जाती है और मेहमान की एक दिन ही अच्छी सेवा हो पाती है उसके बाद उसकी सेवा में कमी आ जाती है।

मछली रानी कब पियेगी पानी—मछली के पानी पीने का कोई खास समय नही, वह किसी भी समय पी सकती है। अर्थात् दुष्टों के दुष्टता करने का कोई ख़ास समय नहीं होता, वे किसी भी समय दुष्टता कर सकते हैं।

मजदूर की माँ कौड़ी ही रगड़ती है—(क) छोटे की देख-भाल अधिक की जाती है। (ख) आदमी अपनी औक़ात के अनुसार ही कार्य करता है।

मजदूरी में कोई ताना नहीं है—मजदूरी में कोई ताना नही है। अर्थात् परिश्रम करने मे कोई बुराई नही है। जो व्यक्ति परिश्रम करने से कतराते है उनको समझाने के लिए कहते है। तुलनीय : राज० चोरी जारीरो मैंणो है मजूरीरो मैंणो कोनी।

मजदूरी में दोस्ती नहीं, दोस्ती घर में है—मित्रता घर में है, काम करने के स्थान पर केवल नौकरी और उसके पारिश्रमिक मे मित्रता से कोई अंतर नहीं पड़ता। मजदूरी और दोस्ती दोनों को अलग-अलग रखना उचित है ही नही तो घाटा रहता है। तुलनीय : भीली— मजूरी नो मलाइजो नी घरे नो मुलाइजो।

मजनू को लैला का कुत्ता भी प्यारा—नीचे देखिए।

मजनू को लैला का कुत्ता भी प्यारा—प्रेमी मनुष्य को अपनी प्रेमिका का कुत्ता भी प्यारा होता है अर्थात् जिस पर आसक्ति होती है उसकी बुरी से बुरी चीज़ भी प्यारी लगती है। तुलनीय : मरा० मजनूला लैलाचे कुत्रेंसुद्धा आवडते; पंज० मजनूं नूं लैला दा कुत्ता पी चंगा।

मजबूरी पर्वत से भी भारी—मजबूरी पर्वत से अधिक भारी होती है। आशय यह है कि परिस्थितियाँ मनुष्य को दबा देती हैं या बहुत पीछे ढकेल देती हैं। तुलनीय : हरि० मजबूरी परबत तै भारी।

मजबूरी में गदहे को भी बाप कहना पड़ता है—परिस्थितिवश जब किसी तुच्छ व्यक्ति की खुशामद करनी पड़ती है तब ऐसा कहते है। तुलनीय : मरा० अड़ला हरि या नारायण गाढ़वा चे पाय धरी। पंज० फसी बिच खोते नूं वी पिओ बनाणा पेंदा है।

मज़ाक़ तो मोची करता है जो रुपये के रुपये लेता है और जूते के जूते देता है—यदि कोई व्यक्ति गंभीरता से कोई मज़ाक़ करे और श्रोता उस पर पूरी तरह विश्वास न

करके उमसे पूछे कि क्या तुम मज़ाक़ तो नहीं कर रहे हो, तो वह इम लोकोक्ति का प्रयोग करता है। तुलनीय : माल मजाक तो मोची करे जो रीप्या लेवे ने जूता दे।

मज़ा मा मज़ा—बीती ताहि बिसार दे। गई बात को भूल जाना चाहिए। जब कोई व्यक्ति बार-बार पिछली बातों को याद करके दुःखी होता है तब कहा जाता है।

मज़ा मारें ग़ाज़ीमियाँ, धक्का सहें मुजावर—ग़ाज़ीमियाँ आनंद लेते हैं और उनके बदले मुजावर को कष्ट सहना पड़ रहा है। जब किमी वस्तु का सुख किमी और को प्राप्त हो और उमकी परेशानियाँ किसी और को झेलनी पड़ें तब कहते हैं।

मजूर घर गोहूँ—गाँव में जब मजदूरों से रबी की फ़सल कटवाई जाती है तो उन्हें गेहूँ भी मजदूरी में मिल जाता है। इस कारण कुछ दिनों के लिए उनके पास भी गेहूँ हो जाते है। जब किमी ग़रीब या छोटे मनुष्य को कोई अधिकार या संपत्ति मिल जाय किंतु उसके रहने की कोई आशा न हो तब उसके प्रति कहते है। तुलनीय : गढ़० राँडी घर माँडी।

मजूरी में क्या ताना? चोरी-जारी का ताना—दे० 'मजदूरी में कोई···'।

मज़े का मज़ा, लड़का-लड़की नफ़े में—संभोग में मज़े का मज़ा मिलता है और संतान होने से अतिरिक्त लाभ होता है। एक कार्य से दो लाभ होने पर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० मजा मजे में लड़का-लड़की नफे में; पंज० मजे दा मजा कुड़ी मुंडे दा नफा।

मज़े में मौत है—आनंद में मृत्यु छुपी रहती है। विलास करने वाले बेमौत मारे जाते हैं। विलासियों के प्रति कहते हैं। तुलनीय : भीली – मोज माँय मौत है; पंज० मजे बिच मौत हुंदी है।

मज़े में सज़ा होती है—मज़े लेने में सज़ा भी भुगतनी पड़ती है। रसिया बनने के लिए बदनामी भी उठानी पड़ती है। इसी कारण युवकों को सावधान करने के लिए इस लोकोक्ति का प्रयोग किया जाता है। तुलनीय : माल० रस रे लारे झजीतो; गढ़० ठट्ठा को मट्ठा; पंज० मजे बिच सजा वी पुगतना पेंदी हैं; ब्रज० मजा में ई तौ मजा होयै।

मज्जनोन्मज्जन न्याय—तैरना न जानने वाला जल में पड़कर डूबता-उतराता है। आशय यह है कि किमी काम से अपरिचित उसमें हाथ लगावे तो उसकी हानि होती है।

मट्टी का घड़ा भी ठोक बजाकर लेते हैं—साधारण सी चीज़ भी सोच-समझकर खरीदना चाहिए। आशय यह कि बिना सोचे-विचारे किसी काम में हाथ नहीं डालना चाहिए। जब कोई व्यक्ति बिना सोचे-समझे जल्दबाजी से कोई काम करे या कोई वस्तु खरीदे और उसमें गड़बड़ी हो तब कहा जाता है। तुलनीय : अव० माटिउ कै गगरी ठोंक बजाय कै लीन जात है; पंज० मिटी दा कडा वी बजा के लवो; ब्रज० माटी के घड़ाऊ ऐ तौ ठोकि बजाइ के ले।

मट्टी में हाथ डालने से सोना होता है—भाग्यशाली व्यक्ति के प्रति कहते हैं, जब उसे साधारण काम में भी अधिक लाभ होता है। तुलनीय : अव० माटिउ मा हाथ डारे सोन होय जात है।

मट्ठा माँगने चली पीठ पीछे कमोरी—मट्ठा माँगने जा रही हैं और कमोरी को पीठ के पीछे छिपा रही हैं। जब कोई छोटा काम करे और शर्माए भी तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : कौर० मट्ठा मांगण चली, गांड पीच्छे कमारी।

मठ छोटा, जोगी बहुत—मठ छोटा है और उसमें रहने वाले साधु (जोगी) बहुत है। (क) जिस छोटे से स्थान में बहुत से रहने वाले हों उसके प्रति कहते हैं। (ख) किमी छोटी आय वाले कार्य में लाभ लेने वाले बहुत हों तो उसके प्रति भी व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : राज० मढी साँकड़ी, मोडा घणा।

मठा बिचारे का क्या बिगड़े, जब बिगड़े तब दूध—मट्ठा का कुछ नहीं बिगड़ेगा, बिगड़ेगा तो दूध ही। आशय यह है कि जिसके पास कुछ रहता है उसी का नुकसान होता है, जो पहले ही बर्बाद हो चुका है उसका क्या बिगड़ेगा?

मठा माँगन चली, और मलैया पीछे लुकाई—अपनी मलाई तो छिपा रही है और मट्ठा दूसरे से माँगती है। जब कोई अच्छी चीज अपने पास रहते हुए भी साधारण-सी वस्तु दूसरे से माँगता है तो कहते हैं।

मढ्यो दमामा जात क्यों कहु चूहे के चाम—चूहे के चमड़े से नगाड़े (दमामा) को क्यों मढ़ रहे हो? जब कोई किसी छोटे साधन से कोई बड़ा कार्य करना चाहता है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते है। तुलनीय : अव० मूसवा कै चामे से नगाड़ा नाहीं मढ़ा जाय सकत।

मड़वा मीन चीन संग दही, कोदों क भात दूध संग सही—मड़ुवे के साथ मछली, दही के साथ चीनी और कोदों (एक प्रकार का अन्न) के भात के साथ दूध खाने से अच्छा स्वाद मिलता है।

मणिना भूषिता सर्पः किमसौ न भयंकरः—मणियुक्त होने पर भी सर्प भयंकर होता है अर्थात् गुणी या धनी

व्यक्ति यदि दुष्ट है तो उसकी दुष्टता जाती नही ।

मणिविक्रय दृष्टान्तः—मणि को बेचने का न्याय। यदि मणि विक्रेता मणि विशेषज्ञ है तो वह मणियों के विक्रय से अधिक धन की प्राप्ति कर सकता है। और यदि विक्रेता मणियों के विषय में विशेष जानकारी नहीं रखना तो वह अपेक्षित लाभ पाने से बंचित रह जाएगा। आशय यह है कि किसी चीज का पारखी ही उससे लाभ उठा सकता है अन्य कोई नही।

मत कर बार, जो भुगते कार—ऐसा कार्य न करना चाहिए जिससे कारबार मे गड़बड़ी हो या उस पर बुरा प्रभाव पड़े।

मत कर सास बुराई, तेरे आगे जाई—हे बहू तू सास की बुराई मत कर क्योंकि तेरी भी बहू आयेगी तो तेरी बुराई करेगी। (क) जब बहू सास की बुराई करती है तो कहा जाता है। (ख) जो किसी को कष्ट देता है उसे भी कष्ट देने वाला कोई मिल ही जाता है। तुलनीय : अव० ना कर सासु बुराई तोरेव आगे आई; पंज० ना कर सस्स बुरा इयाँ, तेरे वी अग्गे जाइयाँ।

मत कोई लीजौ मुसरहा बाहन, खसम मारि के डोलै पायन—मुसरहे जाति (लटकते डील वाले) के बैल को नही खरीदना चाहिए। वह इतना दोषी होता है कि स्वामी को मारकर पैरो के नीचे डाल देता है।

मत बच्चे की माँ मरे, मत बूढे की नार—बच्चे की मा और बूढ़े की पत्नी मरने से दोनों को बहुत कष्ट होता है। तुलनीय : पंज० बच्चे दी मां ना मरे बुड्ढे दी रन न मरे।

मत बो चापड़, उजड़े टावड़—पथरीली ज़मीन पर खेती करने से कुछ लाभ नही होता, उलटे परिवार की हानि ही होती है। आशय यह कि पथरीली ज़मीन पर लगाया गया सारा श्रम और पूंजी बेकार हो जाती है। जब कोई व्यक्ति पथरीली तथा बेकार ज़मीन पर खेती करे तब कहा जाता है।

मतलबी यार किसके, दम लगाया खिसके—मतलबी दोस्त (यार) किसी के नही होते। वे दम लगाकर (गाँजा या भाग पीकर) अपनी राह पकड़ लेते हैं। (क) स्वार्थियों के प्रति व्यंग्य मे कहते है जो स्वार्थ सिद्ध हो जाने के बाद कोई वास्ता नही रखते है। (ख) गंजेड़ी और भगेड़ी के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : बुंद० मतलबी भाई किसके, दम लगाई खिसके; ब्रज० मतलबिया यार किसके दम लगाइ खिसके; पंज० मतलबी बंदा किदा, दम लाया उदा।

मतलबी यार किसके, माल खाया खिसके—ऊपर देखिए।

मतलबी यार, मतलब निकला हो गए पार—स्वार्थी मित्र स्वार्थ सिद्ध हो जाने के बाद साथ छोड़ देते हैं। स्वार्थी दोस्तों के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : गढ़० उकाल काटिक सरबट; पंज० चड़े चढ़ाई ते नह् से यार।

मतलबे-सादी दीगर अस्त—जाहिर बात तो यह है लेकिन मक़सद कुछ और हो।

मति अतरंक मनोरथ राऊ—भाग्य तो बहुत खराब है लेकिन इच्छाएँ राजाओं जैसी करते है। जो व्यक्ति अपनी परिस्थिति या आय-सीमा के बाहर की बातें सोचता है उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

मति अनुरूप कहउँ हित ताता—हे तात ! मैं अपनी बुद्धि के अनुसार आपकी भलाई की बात कहता हूँ। किसी की भलाई की बात कहते समय कहने वाला कहता है।

मति फिरि जाय विपत्ति में, राव रक इक रीति—दुख में राजा तथा गरीब सबकी बुद्धि नष्ट हो जाती है। आशय यह है कि (क) विपत्ति के समय में मनुष्य की मानसिक स्थिति ठीक नहीं रहती। (ख) बुरे दिन या निर्धनता में मनुष्य अच्छा-बुरा सब कुछ कर बैठता है।

मतिरेव बलात् गरीयसी—बुद्धि बल की अपेक्षा गुरुतर है। अर्थात् बुद्धि-बल शरीर-बल से बड़ा है।

मथरा दे बुंदा, लुभावे वस गुंडा—कुलटा स्त्री बिन्दी लगाकर इसलिए शृंगार करती है ताकि दूसरे पुरुष उसकी ओर आकर्षित हों। विषयी स्त्री पर कहा जाता है।

मथरा मदारी का क्या साथ? हिन्दू और मुसलमान की एक साथ नही निभ सकती क्योंकि दोनों भिन्न-भिन्न धर्म और प्रवृत्ति के होते है। जब दो आदमी भिन्न-भिन्न जाति तथा विचार के हों और उनमें आपस मे न पटे तब यह लोकोक्ति कही जाती है। (मथरा = हिन्दू; मदारी = मुसलमान)।

मथुरा का पेड़ा जो खाय वह भी पछताय, जो न खाय वह भी पछताय—न खाने वाला न खाने के कारण और खाने वाला अधिक न पाने के कारण पछताता है।

मथुरा की बेटी गोकुल की गाय, करम फूटे तो अनते जायँ—मथुरा की लड़की और गोकुल की गाय को दूसरी जगह उतना सुख नही मिल सकता अतः जब इनका भाग्य खराब होता है तभी ये दूसरी जगह जाती हैं। तुलनीय : अव० मथुरा कै बिटिया, गोकुला कै गाय करम फूटै तौ अन्तै जाय।

मथुरा तीन लोक से न्यारी—विचित्र व्यक्ति या वस्तु

के विषय में कहते हैं।

मदकी यार किसके, दम लगाया खिसके—दे० 'मतलबी यार किसके···'।

मदरसे में कंघी ढूंढें—पाठशाला में कंघी ढूंढ़ता है जब कि पाठशाला और कंघी में कोई भी सम्बन्ध नहीं है। जब कोई व्यक्ति किसी वस्तु को ऐसे स्थान में ढूंढ़े जहाँ उसके मिलने की कोई आशा न हो तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० पोसवाळ में कांगसिया जोवै।

मदिरा मानत है जगत दूध कलाली हाथ—मदिरा बेचने वाला यदि हाथ में दूध लिए जाए तब भी लोग सोचेंगे कि मदिरा लिए जा रहा है। बुरे के साथ रहने पर अच्छे भी बुरे समझे जाते हैं।

मद्य भीतर बुद्धि बाहर—मदिरा जब अन्दर जाती है तब बुद्धि बाहर निकल जाती है। आशय यह है कि मद्यपान कर लेने के बाद मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है और सोचने-विचारने की शक्ति समाप्त हो जाती है। तुलनीय : मल० कल्लु अञ्चु मदम् काट्टुम्, कज्चाव् अन्चु निरम् काट्टुम्; अ० When wine is in wit is out

मधुकर सरिस संत गुनग्राही—संत भौंरे के समान गुण को ग्रहण करने वाले होते हैं। अर्थात् जिस प्रकार भौंरे फूलों से सुगन्धि ले लेते हैं और उसकी अन्य चीजों को छोड़ देते हैं, उसी प्रकार संत अच्छी बातों को ग्रहण कर लेते हैं और खराब बातों को छोड़ देते हैं।

मधुर वचन झूमत चाल, ये आई किसका घर घाल—यह मधुरभाषी और झूमकर चलने वाली किसका घर नष्ट करने आई है। मृदुभाषी और गजगामिनी स्त्रियों को देखकर रसिकों के हृदय में हलचल पैदा हो जाती है और वे उनके धर्म को नष्ट करने के लिए सदा प्रयत्नशील रहती हैं।

मधुर बचन ते जात मिट, उत्तम जन अभिमान—मीठी वाणी से उत्तम प्रकृति के लोगों का घमंड दूर हो जाता है।

मधुर बचन है औषधी कटुक बचन है तीर—मीठी वाणी औषधि के समान है अर्थात् सुखकर है किन्तु कड़वी वाणी तीर के समान है अर्थात् कष्टकर है।

मधुरी आँचे रोटी मीठ—धीमी आंच से पकाने पर रोटी मीठी होती है। आशय यह कि धीरे-धीरे एवं सावधानी से किया हुआ कार्य अच्छा होता है। जब किसी का कार्य जल्दबाज़ी के कारण खराब हो जाता है तब उसके प्रति कहा जाता है।

मधुरी बाणी दगाबाज़ी की निशानी—मीठी बोली बोलने वाले प्रायः धोखेबाज होते हैं।

मधुरे आँच रोटी मीठ—दे० 'मधुरी आँचे···'।

मन अपनी ही करता है—मन जो चाहता है करता है। अर्थात् हृदय को बस में रखना बहुत कठिन है। तुलनीय : भीली - मन ने भाखों चावे जटे जाई ने बे है; पंज० मन अपणी ही करदा है।

मन उमराव करम दरिद्री—मन तो राजा होने का है परन्तु भाग्य में दरिद्रता है। जब कोई निर्धन व्यक्ति ऊँची आकांक्षा करता है तब उसके प्रति कहा जाता है। तुलनीय : माल० मन केवे मौज करूँ, करम केवे करमदा वीणवा जाऊँ।

मन और दूध फटने से नहीं मिलता—जब किसी से सम्बन्ध-विच्छेद हो जाता है और दूध फट जाता है तब दोनों पहले जैसी स्थिति में नहीं आते। जब कोई किसी से संबंध तोड़ लेने के बाद फिर सम्बन्ध स्थापित करना चाहता है तब वह ऐसा कहता है। तुलनीय : भोज० मन अउरी दूध फटला ते नाही मिलेला; राज० मनख तो मनख मली जाय पर कूडा तो कूडो नी मले।

मन करबे मोटा, खंबे सोंटा, मन कर बे मोहीं सगरे तोहीं—यदि मन मोटा करके चलोगे तो मार खाओगे। किन्तु यदि अच्छे मन से व्यवहार करोगे तो सभी तुम्हें चाहेंगे। जो मीठी वाणी बोलेगा उसका सभी आदर करेंगे किन्तु कठोर वाणी बोलने वाले का हमेशा अनादर होगा। जब कोई व्यक्ति कठोर वाणी बोलता है तो उसके प्रति शिक्षार्थ कहा जाता है।

मन करे पहिरन चौतार, करम लिखे भेड़ी के बार—दे० 'मन उमराव···'।

मन का अंकुश ज्ञान—मन ज्ञान ही से वश में रहता है ऐसा महात्मा लोग कहते हैं। जब किसी का मन बहुत चंचल हो गया हो और वश में न होता हो तो उसे कहा जाता है।

मन का खाय तो लड्डू ही न खाय, चने क्यों खाय ?—जब केवल मन का ही खाना है तो लड्डू ही क्यों न खाय चने खाने की क्या आवश्यकता है क्योंकि कुछ खर्च तो होता नहीं। कोरी कल्पना करने वालों के प्रति कहते हैं।

मन का टट्टू चले, पर जेब न चले—दिल तो बहुत कुछ चाहता है पर जेब साथ नहीं देती। जिस व्यक्ति की भोग-विलास में इच्छा हो किन्तु उसके पास धन न हो तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० मन टट्टू चालै पण पईसा कठै ?

मन का भ्रम न जाय---मन का भ्रम दूर नहीं होता। हृदय में जो सन्देह एक बार घर कर लेता है वह जल्दी दूर नहीं होता। तुलनीय : भीली- मन नी भरम नी भागे; पंज० दिल दा वगम नई जांदा।

मन का मौजी पत्नी को कहे भौजी—-मनमौजी व्यक्ति पत्नी को भी भाभी कहता है। तात्पर्य यह है कि मनमौजी व्यक्ति जो मन में आए सो करता है, उसे उचित-अनुचित की कोई परवाह नहीं होती। तुलनीय : मग० अपन मन के मउजी, माउग के कहे भउजी; भोज० मन क मउजी, मेहरारू के कहे भउजी।

मन का लड्डू खाय तो पेट भरके न खाय, आधे पेट क्यों खाय ?--जब मन के ही लड्डू खाने हैं तो भर पेट क्यों न खाए जाएँ। आशय यह है कि मन के लड्डू खाने में कुछ खर्च तो होता नहीं तो फिर पेट भर कर क्यों न खाया जाय। जो मनुष्य केवल ऊँची-ऊँची आकांक्षाएँ ही करता है और कार्य-रूप में कुछ नहीं करता उसे कहते हैं।

मन की बात मन ही में रखिए मन की बात अर्थात् गोपनीय बात मन ही में रखनी चाहिए किसी को बताना न चाहिए। जब कोई व्यक्ति गुप्त बात भी सबसे कहता फिरे तब उससे कहा जाता है। तुलनीय : भोज० मन क बात मन में रखे; अव० मन कै बात मनै मा राखै; ब्रज० मन की मनई में राखै; पंज० दिल दी गल दिल बिच ही रखो।

मन की मन में ही रह गई— मन की बातें मन में ही रह गई। जब किसी की अभिलाषा पूरी नहीं होती तब वह कहता है।

मन की मारी कासे कहूँ, पेट मसोसा दे दे रहूँ --मन की व्यथा किससे कही जाय। अर्थात् मन का दुख किसी से कहते नहीं बनता बल्कि पेट ही मसोसकर रह जाता हूँ। भूखे भिखारी की उक्ति है क्योंकि भिक्षाटन के सिवा उसके पास कोई अन्य साधन नहीं है जिससे कि उसकी जीविका चल सके।

मन के राजा हैं--मनमाना आचरण करने वाले व्यक्ति के प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

मन के लड्डुओं से भूख नहीं मिटती—अर्थात् कोरी कल्पना से काम नहीं चलता। तुलनीय : अव० मन कै लेडुआ फोरे भूख न पटाई; गढ़० मन लड्डू छिन खायेणा; मरा० मनचे भांड़े आऊन भूक भागत नाही।

मन के लड्डू खाता है -(क) जो व्यक्ति झूठी आशा पर पड़ा रहे उसके प्रति व्यंग्य से कहते है। (ख) जो व्यक्ति असम्भव काम करने के सपने देखता रहे उसके प्रति भी व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० मनरा लाड़ू खावै; पंज० दिल दे लड्डू खाँदा है; अं० To build castles in the air.

मन के लड्डू खाये तो कसर क्यों छोड़े ? मन के ही लड्डू खाने हैं तो कसर क्यों की जाय, पेट भरकर क्यों न खाए जाएँ। कोरी कल्पना करने वाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० मनरा लाड़ू खावणा तो कसर क्यूं राखणी; माल० मन रा लाड़ू फीका क्यूं।

मन के लड्डू खाए तो पेट भर खाए --ऊपर देखिए।

मन के हारे हार है, मन के जीते जीत—-यदि मनुष्य हिम्मत हार जाता है, तो हार है अन्यथा जीत। आशय यह कि मनुष्य को हिम्मत कभी न छोड़ना चाहिए। जब कोई आदमी किसी काम से घबड़ा जाय उस समय उसका उत्साह बढ़ाने के लिए यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : अव० मन कै हारे हार है, मन कै जीते जीत; राज० मनरै हारयां हार है, मनरै जीत्यां जीत।

मन को मन पहिचानता है - मन को मन ही जानता है। जब कोई व्यक्ति किसी को याद करे और वह उसी समय उसके पास पहुँच जाय तब कहा जाता है।

मन खूब मी शनासम पीराने-पारसा रा --मैं चालाक लोगों को बहुत अच्छी तरह जानता हूँ। जब कोई अपने को सीधा-सरल बताने का प्रयास करता है तब व्यंग्य में कहते हैं।

मन चंगा तो कठौती में गंगा - जब मन शुद्ध है तो सब कुछ शुद्ध है। जिस शुद्ध हृदय वाले व्यक्ति की धर्म में श्रद्धा तो है किन्तु धनाभाव या किसी अन्य कारण वह तीर्थाटन या कोई पुण्य कार्य नहीं करता, उस पर यह मसल लागू होती है। गुरु रामानंद के शिष्यों में से रैदास भक्त भी थे। एक बार गंगा स्नान को जाते हुए कुछ यात्रियों को उन्होंने कुछ कौडियाँ दी और कहा तभी गंगाजी को देना जब साक्षात् प्रकट हो जायँ। उसने ऐसा ही किया और गंगाजी ने उसके बदले में रैदास भक्त को देने के लिए एक सोने का कड़ा दिया, यात्री ने कड़ा रैदास भक्त को न देकर राजा को दिया। राजा ने उसे रानी को दिया। रानी ने उस कड़े की जोड़ी मिलानी चाही पर न मिली। अन्त में रैदास भक्त के पास जाने पर, उन्होंने अपराध को क्षमा किया और अपनी कठौती में भरे हुए जल को गंगाजल मानकर कड़े की जोड़ी निकाल दी। तुलनीय : मैथ०, भोज० मन चंगा तऽ कठउती में गंगा; मग० मन चंगा तऽ नाला में

गगा; अव० मन चंगा तो कठौती मा गंगा; राज० मन चंगा तो कठोतरी मे गंगा; गढ़० मन चंगा कठौती मां गंगा; मरा० मन शुद्ध तर वाडग्यांत गंगा; मल० मनस्सु शुद्धमायाल तीर्त्थयाल वेण्ट।

मन चंचल करम दरिद्री—मन तो अच्छी-अच्छी आकांक्षाएँ करता है किन्तु कर्म बहुत ही बुरे हैं अर्थात् इच्छा पूरी होने का साधन नही है। जब निर्धन व्यक्ति ऊँची-ऊँची अभिलाषाएँ करे तब उसके प्रति कहते है।

मन चलता है पर टट्टू नहीं चलता- इच्छा तो होती है, लेकिन शारीरिक शक्ति क्षीण हो गई है। (क) वृद्ध मनुष्य की विषय वासना पर कहा जाता है। (ख) जब कोई निर्धन व्यक्ति ऊँची-ऊँची आकांक्षाएँ करता है तब उसके प्रति कहते है। तुलनीय : राज० मन चालै पण टट्टू को चालैनी।

मन चले का सौदा है— अपनी पसन्द की चीज़ सभी खरीदते हैं। जब कोई वस्तु ग्राहक को न पसन्द हो और दूकानदार उसे लेने के लिए विवश करे तब कहा जाता है। तुलनीय : मरा० लहर लागली, विकत घेतलें।

मन चेती नहिं होत है, प्रभु चेती तत्काल—अपनी सोची नही होती जो ईश्वर चाहता है वही होता है। सोचे कुछ और हो जाय कुछ तब यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : अं० Man proposes God disposes.

मन चेमी सरायम-ओ-तंबूरा-ए-मनचे मी सरायद—मैं कुछ कहता हूं और मेरा मन कुछ और। एक व्यक्ति जो अपना बयान एक के बाद दूसरा बदलता रहे तो उसके प्रति कहते हैं।

मन जानत है आपको, माई जाने बाप—नीचे देखिए। तुलनीय : अव० मन जानै आप का न माई न बाप का; गढ़० माता जाणो पिता, कृष्ण जाणो गीता।

मन जाने आप, माई जाने बाप—(क) गूढ़ मनुष्यों के हृदय की बात को उनके सिवा दूसरा नही जान सकता। (ख) किसी का यथार्थतः बाप कौन है इस बात को माँ के सिवा कोई नही जानता।

मन जाने पाप, माई जाने न बाप—अपना किया हुआ पाप मनुष्य स्वयं जानता है उसे माता-पिता नही जानते। जब कोई व्यक्ति किसी प्रकार का अपराध करके अपना दोष नहीं मानता अथवा बहाना करता है तब उस पर यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : अव० मन जानै पाप, न माई न बाप।

मन तुरा हाजी बगोयम तू मरा हाजी बगो—मैं तुझे हाजी कहूँ तो मुझे हाजी कह अर्थात् जैसा व्यवहार मैं तुम्हारे साथ करूँ वैसा ही तुम भी हमारे साथ करो। अर्थात् जब दो व्यक्ति एक-दूसरे की प्रशंसा करें किन्तु उनमें गुण कुछ भी न हों तो दूसरे लोग उनके प्रति कहते हैं कि वे तो आपस ही में एक दूसरे की बड़ाई करते है।

मन तो चलता है, पर शरीर नहीं चलता- दे० 'मन चलता है पर······'।

मन थर किये सिद्धि सब पावे--मन को स्थिर करने से सभी सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती है। आशय यह है कि सन्तोष रखने एवं एकाग्रचित्त होकर काम करने से सब कुछ हो जाता है।

मन, धन, मोती, नयन, काँच, टूटने पर जुड़ते नहीं -ये पाँचों वस्तुएँ एक बार टूट जाने से फिर नही जुड़ती। तुलनीय : भीली-- काच, कटोरा, नेण, धन, मन, मोती फूटे-टूटे ज्यांका सांधा नी लागे।

मन न मिले तो मिलना कैसा, मन मिला तो तजना कैसा- जिससे मन न मिले उससे मिलने का क्या लाभ? जिससे मन मिल जाय उसे छोड़ना क्यों? जिस व्यक्ति से अपना दिल और विचार न मिले उनसे मिलना-जुलना ठीक नही है तथा जिससे एक बार दिल लगा लिया जाय उसे अंत तक नही छोड़ना चाहिए। तुलनीय : राज० मन ना मिलै ज्यांम् मिलवो कि सोरे? लागी प्रीत ज्यारां तजवो किसो रे?

मन भर का सिर हिलाते हैं, पैसे भर की जबान नहीं हिलाते—इतना भारी सिर तो हिला देते है किन्तु ज़रा-सा बोल नही सकते। जब कोई व्यक्ति प्रणाम का उत्तर मुंह से न दे और केवल सिर हिला दे तब कहा जाता है। तुलनीय : अव० मन भर का मूँड हिलाय दिहेन, पइसा भर कै जबान नाही हिलायेन, राज० मण भररो माथो हलावै पण टकै भर जीभ को हलीयीज़ै नी।

मन भर धावै, करम भर पावै--मनुष्य चाहे कितना भी परिश्रम या दौड़-धूप क्यों न करे परतु जो भाग्य मे होता है वही उसे प्राप्त होता है।

मन भला तो गावे गीत--मन प्रसन्न रहता है तभी गीत अच्छा लगता है। मन प्रसन्न रहने पर ही सब-कुछ अच्छा लगता है। तुलनीय : भोज० मन नीक रहेला तब्बे गितियो नीक लागेगे; अं० When belly is full it says to the mind sing fellow.

मन भाए तो ढेला सुपारी—पसन्द होने पर मिट्टी का टुकड़ा (ढेला) भी सुपारी जैसा लगता है। आशय यह है

कि जिस चीज में मन लग जाता है वह बुरी होते हुए भी अच्छी लगती है। तुलनीय : पज० मन (दिल) चगा ते टेला लड्डू।

मन भावे, मूंड़ हिलावे— इच्छा तो है लेकिन दिखाने के लिए ऊपर से मूंड़ हिलाते हैं अर्थात् इनकार करते हैं। (क) जब किसी मनुष्य को खिलाते समय उसकी पसंद की वस्तु देने के लिए पूछा जाय और वह मुँह से तो नही करे किन्तु देने पर खाता जाय उसके लिए कहा जाता है। (ख) स्त्रियों के प्रति भी कहा जाता है। तुलनीय : अव० मन मा आवै तौ मूंड़ हिलावै; गढ़० मन मां ऐ जो पर मुडली डगड्यो; मरा० नको नको नि पायलीचे चाखों।

मन भोगिया करम दलिद्री दे० 'मन उमराव···'। तुलनीय : कौर० मन भोगिया करम दिलद्दरी।

मन भोगी, कर्म दरिद्री—निर्धन होते हुए भी भोग-विलास की इच्छा करने वाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० मन राजा-सो, कर्म कमेड़ी-सो; गढ़० मन हौसिया कर्म गंड्या।

मन मति रंक मनोरथ राऊ—मन निर्धनों का-सा है और इच्छाएँ राजाओं की तरह बड़ी-बड़ी हैं। सामर्थ्य से अधिक विचार करने पर यह लोकोक्ति कही जाती है।

मन मन भावे मूंड़ी हिलावे दे० 'मन भावे ·····'। तुलनीय : भोज० मने मने भावे ला मूँड़िया हिलावेला।

मन मन सुमति न होत, मलैगिरि होत न बनबन—प्रत्येक मनुष्य अच्छी मतिवाला नही होता और न प्रत्येक वन में मलय पर्वत ही होता है। आशय यह है कि न तो सभी लोग समान होते हैं और न सभी चीज़ें हर जगह मिलती हैं।

मनमानी, अनजानी—जानबूझकर अनजान बनना। जब कोई व्यक्ति जान-बूझकर भी अनजान बने उसके लिए यह लोकोक्ति कही जाती है।

मन मानी, घर जानी—अपने मन की करना। जो अपने मन की करे और किसी का भी कहना न माने उसके लिए कहा जाता है।

मन माने का मेला, नहिं सबसे भला अकेला—जब सबसे आपस में प्रेम हो तब तो साथ में रहना अच्छा है नही तो अकेला ही रहना उत्तम है। जब कोई व्यक्ति गृहस्थी में आपस के झगड़ों से तंग आ जाय तब यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : अव० मन मिले का मेला, नाही सबसे भला अकेला; राज० मन मिलियारा मेला, नही तो चल अकेला।

मन मिले का मेला, चित्त मिले का चेला—मेल तभी रह सकता है जबकि आपस में प्रेम हो। उसी प्रकार गुरु किसी को शिष्य तभी स्वीकार करता है जब अपना चित्त पट जाता है। दिल पटने पर ही किसी से संबंध होता है।

मन मिले का मेला, नहीं तो चल अकेला—दे० 'मन माने का मेला···'।

मन मुड़ा नहीं माथा मुड़ा तो किस काम का—बाह्य दिखावे से कोई लाभ नही जब तक हृदय पवित्र न हो। ढोंगी साधुओं के प्रति व्यंग्य में इसका प्रयोग होता है।

मन मुड़ा बिन माथा मुढ़ा किस काम का—ऊपर देखिए।

मन में आठ पंसेरी की भूल—एक मन में आठ पंसेरी की भूल अर्थात् पूरे एक मन की भूल। जो व्यक्ति कोई ऐसी बात कहे जिसमें सत्य बिलकुल भी न हो और बाद में वह कहे कि मैंने गलती या भूल से कह दिया है तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० मण में आठ पसेरी री भूल।

मन में खटाई दिखती है—जिस व्यक्ति की बातों से चालबाजी टपकती हो उसके प्रति कहते हैं कि इसके मन में कपट दिखाई पड़ता है। तुलनीय : राज० मन में खटाई दीसै है।

मन में गाती टसटस रोवे, चूहा खसम कर सुख से सोवे—जब किसी बड़ी लड़की का ब्याह छोटे लड़के के साथ हो तो उस पर कहा जाता है।

मन में चालीस सेर का धोखा—एक मन में चालीस सेर का धोखा। जो व्यक्ति बहुत बड़ा धोखा खा जाय उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० मणमें चाळीस सेर रो धोखो; मेवा० गदेड़ा की गणती में तो मण को बादो नी।

मन में पंसेरी की भूल दे० 'मन में आठ पंसेरी···'।

मन में, बसे सो सपने दसे—जो बात मन में रहती है वही स्वप्न में भी दिखाई देती है। जब कोई व्यक्ति सपना देखने के पश्चात् उसका कारण जानना चाहे तो उसके प्रति कहा जाता है।

मन में मूरख, जीने में दुखी कोई नहीं—न तो कोई अपने को मूर्ख समझता है और न कोई शीघ्र मरना ही चाहता है। जब मूर्ख भी अपनी बड़ाई करे तथा वृद्ध और मरणासन्न व्यक्ति भी मरने की इच्छा न करे तब यह लोकोक्ति कही जाती है।

मन में भाए, मूंड़ी हिलाए—दे० 'मन भावे मूंड़···'।

मन में भावे, मूंड़ी हिलावे—दे० 'मन भावे मूंड़···'।

मन में राम, बगल में सोटा—(क) हृदय को शुद्ध रखना चाहिए, किन्तु दुष्टों को क़ाबू में रखने के लिए सोटा भी रखना चाहिए। (ख) कुछ लोग इस लोकोक्ति का प्रयोग 'मुँह में राम बगल में छुरी' (दे०) के अर्थ में भी करते हैं। तुलनीय : अव० मनमां राम, बगलमां सोटा; पंज० दिल बिच राम बखी बिच सोटा।

मन में शेख़ फ़रीद, बगल में ईट—मन में तो राम राम कहते हैं, लेकिन बग़ल में किसी को मारने के लिए ईट छिपाए हुए है। (क) जब कोई भद्र पुरुष बुरा कर्म करने पर उतारू हो तब कहा जाता है। (ख) कपटी व्यक्ति के प्रति भी कहा जाता है। एक चोर, शेख़ फ़रीद का चेला हो गया था और उसने प्रतिज्ञा की थी कि मैं कभी किसी की चीज़ नहीं लूँगा। किन्तु जब उसने रास्ते में एक सोने की ईट पड़ी देखी तो उसे लेकर उसने बग़ल में छिपा लिया। तुलनीय : गढ़० माथे बिटीपाणी सींचद तलाबिटी जड़ी काटद।

मन में हो सो ऊपर आवे—जो मन में होता है वही मुँह से भी निकलता है। जब कोई किसी को अनुचित बातें कह देता है और कहता है कि भूल से मैंने ऐसा कह दिया तब उसके प्रति इस लोकोक्ति का प्रयोग करते हैं। तुलनीय : पंज० दिल दा जो होवे उत्ते आवे।

मन मोतियों ब्याह, मन चावलों ब्याह—ब्याह तो ब्याह है चाहे मन भर मोतियों से किया जाय और चाहे मन भर चावलों से। ऐसे अवसर पर आनन्द तथा उत्साह सभी कुछ एक-सा है। जब कोई कार्य चाहे साधारण ढंग से किया जाय अथवा असाधारण ढंग से परन्तु उसका फल एक ही हो तब कहा जाता है।

मन, मोती अरु दूध, रस इनको एक सुभाव; फाटे से जुड़ते नहीं, कोटिन करे उपाय—मन, मोती, दूध और रस, इन चारों का स्वभाव एक जैसा होता है। एक बार फट जाने पर ये पुन: पहले जैसी स्थिति में नहीं आते चाहे कितना भी प्रयास क्यों न किया जाय। तुलनीय : अव० मोती, मानुष, दूध, रस, इनकर यही सुभाव—फाटे पै मिले नहीं कोटिन करौ उपाव।

मन मोदक नहिं भूख बुझाई—मन के लड्डुओं से कहीं भूख शान्त होती है ? अर्थात् नहीं। केवल विचार से काम नहीं चलता। जब कोई व्यक्ति केवल ऊँची-ऊँची कल्पनाएँ करता है और करता-धरता कुछ नहीं तो उसके प्रति कहा जाता है।

मन-मोदक से भूख नहीं जाती—ऊपर देखिए। नंद-दास कहते हैं—

मृगतृष्णा कब पानी भई,
काकी भूख मन लड्डुवन गई।

मन मौजी कर्म दरिद्री—दे० 'मन उमराव...'।

मन मौजी, जोरू को कहें भौजी—दे० 'मन का मौजी पत्नी को...'।

मन लगा गधी से तो हूरी क्या चीज़ है ?—यदि गदही के प्रति स्नेह हो जाय तो परी भी उसके सामने फीकी लगती है। आशय यह है कि जिसका जिससे प्रेम हो जाता है उसके लिए वही अच्छा होता है, भले वह बुरा ही क्यों न हो। प्रेम में अच्छे-बुरे का ध्यान नहीं रहता। तुलनीय : पंज० दिल लगया खोती नाल ते परी की चीज है; ब्रज० मन लाग्यौ गधी ते तौ परी कहा चीज है।

मनवां मर गया, खेल बिगड़ गया—हिम्मत हारने से काम बिगड़ जाता है। जब कोई व्यक्ति किसी आपत्ति अथवा कठिनाई के आने पर कार्य से हिम्मत हार जाय तो उसके प्रति कहा जाता है। तुलनीय : अव० मनुवा मर गा खेल बिगड़गा; हरि० मनवां मरग्या खेल बिगड़ग्या।

मन साँचा तो सब साँचा—दे० 'मन चंगा तो कठौती में...'।

मन से गधे का नाम ऐरावत—दिल हो तो गधे का नाम भी ऐरावत रख लो। दिल हो तो जो चाहे कर लो। मनमाना कार्य करनेवाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० मन में ही गधैरो नांव भोवनियो।

मन हमारा पास, धन उसका पास—मेरा मन मेरे पास है उसका धन उसके पास है। सन्तोषी व्यक्ति का कहना है।

मन हरामी हुज्जतों का ढेर—मन तो किसी काम में नहीं लगता लेकिन बातें बहुत करते हैं। निकम्मे व्यक्ति के प्रति कहते हैं जो केवल बड़ी-बड़ी बातें ही करते हैं, काम कुछ नहीं।

मनहुं जरे पर लोन लगावहिं—मानो जले हुए घाव पर नमक रखा जाता हो। अर्थात् कष्ट में और कष्ट दिया जाता हो। जब कोई किसी दुखी व्यक्ति को ऐसी बात कहता है जिससे उसका दुख और बढ़ जाता है तब वह ऐसा कहता है।

मनहु घाय महु माहुर देहीं—ऊपर देखिए।

मन हुलासा, गावे गीत—जब खुशी होती है तो गाना बजाना भी सूझता है। जब किसी दुखी आदमी से गाने के लिए कहा जाय तब वह कहता है।

मन हो तो दिल्ली भी जाय—दिल चाहे तो दिल्ली

जाना भी कठिन नहीं है। दिल में जिस काम को करने का निश्चय कर लिया जाय, वह चाहे कितना भी कठिन हो, हो ही जाता है। तुलनीय : राज० मन होय तो माळवै जाय परो; पंज० दिल होवे ता लहोर वी कौल।

मनुष्य अपनी संगति से पहचाना जाता है—मनुष्य का स्वभाव उसके साथियों को देखने से ही मालूम हो जाता है। तुलनीय : मल० कूट्टूकेट्टू मनुष्यन तिरिच्चरियुन्नु; अं० A man is known by the company he keeps.

मनुष्य को देखकर ही बात की जाती है—आशय यह है कि जो जैसा होता है उसके साथ उसी तरह का व्यवहार किया जाता है।

मनुष्य को मनुष्य से ही काम पड़ता है—ऐसे व्यक्तियों को समझाने के लिए ऐसा कहते हैं जो सबसे लड़ाई-झगड़ा करते रहते हैं। तुलनीय : पंज० बंदे नूं बंदे नाल कम पैंदा है।

मनुष्य ग़लतियों का पुतला है—आशय यह है कि मनुष्य से ग़लतियाँ होती रहती हैं। तुलनीय : सं० स्खलन धर्माणो मनुष्याः; पंज० मनुख गलतियां दा पुतला है; अं० To err is human.

मनुष्य देखकर बात की जाती है—दे० 'मनुष्य को देखकर⋯'। तुलनीय : पंज० बंदे नूं देख के गल्ल कीती जांदी है।

मनुष्य-मनुष्य में अंतर कोई हीरा कोई पत्थर—आदमी आदमी में अंतर होता है, कोई हीरे के समान होता है और कोई कंकड़ के। आशय यह है कि सभी मनुष्य समान नहीं होते, उनके गुणों में अंतर पाया जाता है।

मनुष्य ही मनुष्य के काम आता है—दे० 'मनुष्य को मनुष्य से⋯'।

मनुष्य में नौआ, पक्षियों में कौआ—मनुष्यों में नाई और पक्षियों में कौआ बहुत चालाक होते हैं।

मनुस बली नहिं होत है समय होत बलवान—मनुष्य शक्तिशाली नहीं होता बल्कि समय शक्तिशाली होता है। जब किसी बलवान को किसी निर्बल के सम्मुख हार खानी पड़ती है तब ऐसा कहते हैं।

मने मने मवि मुंड़िया हिलावे—दे० 'मन भावे मूंड⋯'।

मनौती आड़े आती है—ईश्वर या देवता की मनौती ही संकट में आड़े (काम) आती है ऐसा लोगों का विश्वास है। तुलनीय : भीली—मोरे बोलमा आडे आव हैं।

ममता केहिं कर जसु न नसावा—ममता ने किसके यश को नष्ट नहीं किया। अर्थात् ममता के कारण सबका यश नष्ट हो जाता है।

मम पद गहे न तोर निबाहा—मेरे चरणों पर गिरने से तुम्हारा निस्तार नहीं होगा, किसी और की शरण लो। जब कोई किसी की सहायता करने में असमर्थ होता है तब वह ऐसा कहता है।

मम मतिरंक, मनोरथ राऊ—दे० 'मन उमराव⋯'।

मर के काशी मिले तो क्या लाभ ?—जान देने पर ही काशी मिले तो उसका क्या लाभ ? (क) बहुत अधिक कष्ट उठाने पर रहने को अच्छा स्थान मिले तो उसका कोई लाभ नहीं है। (ख) समय बीत जाने पर यदि अच्छी ही चीज़ मिले तो भी कोई फ़ायदा नहीं होता। तुलनीय : भीली—मरी ने मालवे नी जावू।

मरखनी गाय खुद तो दूध दे नहीं औरों का भी फैला दे—मारने वाली (मरखनी) गाय स्वयं तो दूध देती नहीं बल्कि जो गाएँ दूध देती है उनका भी गिरा देती है। अर्थात् जो दुष्ट प्रकृति के मनुष्य होते है वे स्वय तो किसी को लाभ पहुँचाते नहीं अपितु जो अन्य कोई किसी को लाभ पहुँचाए तो उसमें भी विघ्न डाल देते है। तुलनीय : राज० खाट गाय आपरो दूध को दैनी दूजीं रो ढोलाय दै।

मरखहा बैल भला, या सूनी सार—मारनेवाले बैल से बैल का न रहना ही अच्छा है। आशय यह है कि बुरी चीज़ के होने से उसका न होना ही अच्छा है।

मरखहे को मारिए, पाप दोष न देखिए—मारनेवाले बैल को पाप का ध्यान दिए बिना मारना चाहिए। अर्थात् बुरे को निःसंकोच दंड देना चाहिए। तुलनीय : उ० मूज़ी को नमाज़ छोड़कर मारिए।

मरखहे से सब डरते हैं—मारनेवाले से सभी भय खाते हैं। अर्थात् बुरे और कड़े लोगों से सभी डरते हैं। तुलनीय : ब्रज० मरखने ते सब डरपें।

मर गई कल्लो काजल को—कल्लो काजल के लिए तरसती मर गई। जब किसी की सामान्य वस्तु को पाने की अभिलाषा भी पूरी न हो सके तब उसके प्रति ऐसा कहते हैं।

मर गई है तो भी भेद दो—मर गई है लेकिन फिर भी उससे कहते हैं कि भेद बतलाओ। व्यर्थ का कार्य करने या असंभव कार्य के लिए प्रयास करनेवाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० मरण दे मगरों वी उस दा पिछा नईं छड़दे।

मर गए मरदूद, जिनकी फ़ातिहा न दुरूद—मरदूद मर गए लेकिन उनका फ़ातिहा और दुरूद नहीं हुआ। अत्यंत दुष्ट व्यक्ति के प्रति कहते हैं जिसके प्रति कोई ज़रा

भी सहानुभूति नही रखता। (फ़ातिहा और दुरूद मुसलमानों के मरने के बाद उनकी मुक्ति के लिए की जानेवाली प्रार्थना है)।

मरघट पहुँचा कौन लौटा ?—श्मशान पर पहुँचने के बाद कोई नही लौटता। अर्थात् एक बार नष्ट हो जाने के बाद कोई चीज़ फिर नहीं मिलती। तुलनीय : पंज० मरण दे मगरों कौन आया।

मरज बढ़ता गया ज्यूं-ज्यूं दवा की ज्यों-ज्यों दवा की त्यों-त्यों रोग बिगड़ता ही गया। जब किसी काम को जितना सुधारने का यत्न किया जाय उतना ही वह बिगड़ता जाय तब कहा जाता है। यह शेर की दूसरी पंक्ति है पूरा शेर इस प्रकार है :

मरीज़े-इश्क़ पर रहमत खुदा की
मरज बढ़ता गया ज्यूं-यूँ दवा की

मर जाना पर दलिया नहीं खाना मर जाना स्वीकार है किंतु दलिया खाना स्वीकार नही। (क) पेट भरने और जीवित रहने के लिए जो व्यक्ति निम्न स्तर का काम करने को तैयार नही होता उसके प्रति प्रशंसा से कहते हैं। (ख) जो व्यक्ति अपनी ज़िद के पीछे प्राण देने को तैयार रहे उसके प्रति भी कहते है। तुलनीय : राज० मर ज्यावणो पण दलियो नहीं खाणो; पंज० मर जाणा पर दलिया नई खाणा।

मर जाय पर वचन न तोड़े—प्राण भले ही दे दे किंतु प्रतिज्ञा न टूटने दे। की हुई प्रतिज्ञा के लिए यदि प्राण भी देने पड़े तो भी पीछे नही हटना चाहिए। तुलनीय : राज० मर ज्यावणो पण वात राखणी; पंज० मर जाणा पर गल नई छडनी।

मर जावे सगो भैया, पर जाय न एक रुपैया—चाहे सगा भाई मर जाय पर एक रुपया भी खर्च न होने पावे। कंजूसों के प्रति व्यंग्य से कहते है जो बड़ी हानि सह लेते है पर धन व्यय नही करते।

मरज़ी-ए-मौला, अज़हम्द औला—भगवान की इच्छा होकर रहती है। जब कोई अनहोनी होती है तब कहा जाता है। तुलनीय : सं० हरेरिच्छा बलीयसी।

मरत प्यास पिंजरा परो, सुवा दिनन के फेर—समय के फेर से तोता (सुवा) पिंजड़े में पड़कर पानी के बिना मर रहा है। अर्थात् बुरे दिनों के आने पर गुणी भी कष्ट पाते हैं।

मरता ऊँट मारवाड़ देखे—मरते समय ऊँट मारवाड़ की ओर देखता है। (मारवाड़ को ऊँटों का जन्म स्थान मानते हैं।) आशय यह है कि मरते समय सबको अपनी जन्मभूमि याद आती है। तुलनीय : राज० ऊँट मरै जद मारवड़ सामो जोवै; ब्रज० मरतौ ऊ ऊँट मारवाड़ की ओर देखै।

मरता करे ठिठोली—मरते समय भी मज़ाक करता है। (क) जो व्यक्ति मृत्यु पर्यन्त हंसी-मज़ाक करता रहे उसके प्रति कहते हैं। (ख) जो व्यक्ति अशक्त होने पर भी किसी काम को करने की व्यर्थ चेष्टा करे उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० मरतो नरळा खावै।

मरता क्या न करता—(क) जो मरने को तैयार है वह सब कुछ कर सकता है। (ख) जब कोई मनुष्य भूख से व्याकुल होकर, भूख की शांति के लिए कोई बुरा कार्य भी कर बैठे तो उस पर भी यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : अव० मरता का न करता; राज० मरतो क्या न करतो, मरा० मेलेले कोंवडे आगीला भीत नाही; पंज० मरदा की नाँ करदा।

मरता सिवाले हाथ घाले—डूबता आदमी सिवार पकड़ता है। विपत्ति में फँसे व्यक्ति के लिए थोड़ा सहारा ही अधिक होता है। तुलनीय : अं० A drowning man catches at a straw.

मरती बछिया बाम्हन को दान—कमज़ोर (मरती) बछिया ब्राह्मण को दान दी जाती है। दान में प्रायः रद्दी या बेकार चीज़ ही दी जाती है। जब कोई किसी व्यर्थ की चीज को किसी को देकर अपना पिंड छुड़ा ले तब उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : छत्तीस० मरहो बछिया बाभन ला दान; कौर० मरी बछिया बाम्मण के सिर; पंज० मरदी वछी बामण नूँ दान; ब्रज० मरी बछिया बाम्हन के द्वार।

मरते के साथ मरा नहीं जाता—जो मर गया है उसके पीछे स्वयं मर जाना व्यर्थ है। आशय यह है। कि जो अपने वश के परे की बात है उसके पीछे परेशान होना व्यर्थ है। का कोई मर जाय और वह दिन-रात विलाप करे तब उसे जब किसी समझाने के लिए ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० मरयोड़ा लारै मरीजै थोड़ो ही; पंज० मरदे नाल मरया नई जांदा; ब्रज० मरते के संग मर्यौ ई नाये जायं।

मरते को ज़हर क्या देना ?—जो मर रहा हो उसे विष देने की आवश्यकता नही होती। अर्थात् (क) जब बिना दोषी बने या हानि उठाए दुश्मन का बुरा हो जाय तो उसे क्षति पहुँचाने की ज़रूरत नही। (ख) बिना प्रयत्न के किसी कार्य में सफलता मिल जाय तो कष्ट उठाने की क्या आवश्यकता ? तुलनीय : भील—मोता ऊँ मरे जणाये जेर देई ने नी मारवू; मरदे नूं की जहर देणा।

मरते को सब मारते हैं -- मरते हुए को इसलिए सभी मारते है क्योंकि वह किसी का कुछ बिगाड़ नही पाता और न ही किसी से बदला ले सकता है। निर्धन और निर्बल को ही सब सताते हैं। तुलनीय : राज० मरतै नै सै मारै; पंज० मरदे नूं सारे मारदे हन; ब्रज० मरे ऐ सब मारें।

मरते वक्त अपने याद आते हैं -- मृत्यु के समय अपने संबंधी याद आते हैं। (क) अंत समय में अपने याद आते हैं क्योंकि उस समय और कोई भी नही पूछता। (ख) जब कोई अच्छे दिनों में परिवार तथा संबंधियों से कोई संबंध न रखे और बुरे दिनों में उनकी सहायता चाहे तब उसके भी प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : भीली --मरती दन मामी जी खोचडी जीमो; पंज० मरदे होई अपणे याद आदे हन।

मरते समय ऊँट पश्चिम दिशा की ओर मुँह करता है --दे० 'मरना ऊँट मारवाड़....'।

मरद की बात औ हाथी का दाँत -- बाहर निकलने के बाद अंदर नहीं जाते। आशय यह है कि वीर पुरुष अपनी बात पर डटे रहते है।

मरद के खटाई, औरत के मिठाई पुरुषों के लिए खटाई और स्त्रियों के लिए मिठाई हानिकारक है। तुलनीय : ब्रज० मरदै खटाई और औरत कूं मिठाई।

मरद को रोटी बैल को घास --मर्द को रोटी और बैल को घास मिलती रहे तो ये दोनों स्वस्थ रहते है। पंज० मरद दी रोटी ते टग्गे दी का।

मरद मुछाला बैल सिंगाला-- मूछों से मर्द और सीगों से बैल अच्छे लगते है। तुलनीय : हरि० मरद मुहाळा बलध सिंगाळा।

मरदे पर कि बरधे पर- परेशानी मर्दों पर आती है या बैलों पर। खेती के कार्यों में मर्दों और बैलों को अधिक परेशानी उठानी पड़ती है, इसी बात को ध्यान में रखकर यह कहावत कही जाती है।

मरन चली औ शुक्र सामने --मरने जा रही है और कहती है कि शुक्र सामने है। मरते समय शुक्र के सामने रहने से कोई फ़र्क नहीं पड़ता। बुरे कर्म में या नाश के समय शकुन-अपशकुन का ध्यान नहीं रखा जाता। हिन्दू धर्म के अनुसार शुक्र का सामने पड़ना यात्रा के लिए (खासकर स्त्रियों के लिए) हानिकर होता है।

मरन ना जाने बैर कुबेर मृत्यु उचित-अनुचित का विचार नहीं करती, वह कभी और कहीं भी आ सकती है।

मरना जीना सबके साथ लगा है—जो मनुष्य पैदा हुआ है वह अवश्य ही मरता है। किसी की मृत्यु से दुखी मनुष्य पर सान्त्वना के रूप में यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : अव० मरब जिअब सबै के साथ है; हरि० मरणा जीणा तै सबकी गैल सै; पंज० मरना जीणा सब दे नाल लगया है; ब्रज० मरनों जीनों सब के संग लग्यौ ऐ।

मरना भला विदेश का जहाँ न अपना कोय -- विदेश में, जहाँ पर अपना कोई न हो वहाँ दुख झेलना ठीक रहता है। आशय यह कि अपनों के बीच में तकलीफ सहना बहुत ही बेइज्जती की चीज है। तुलनीय : ब्रज० मरना भलौ बिदेस कौ जहाँ अपनों नहि कोय।

मरना विचारा तो हटना कैसा ?-- जब मर-मिटने का संकल्प कर लिया तो पीछे क्यों हटें? आशय यह है कि किसी कार्य को करने का विचार करके पीछे हटना ठीक नही। तुलनीय : पंज० मरना है ते डरना की; ब्रज० मरनों ठान्यौ है तौ हटिबौ कैसौ।

मरता है तो डरना क्यों ?— जब पता है कि देर-सबेर मरना ही पड़ेगा तो भय करने से क्या होगा? मृत्यु से भय करने वालों को साहस बँधाने के लिए कहते हैं। तुलनीय : भीली-- वचार कीदे हूँ ने फायले मोरे मरवू है।

मरने का कोई डर नहीं, पड़ने का डर है मरने का तो कोई भय नहीं है, किन्तु रोगी होकर चारपाई पर पड़ने का बहुत भय होता है। जब कोई व्यक्ति अपने शरीर और स्वास्थ्य की परवाह न करे और कुछ समझाने पर कहे कि 'मैं मर नहीं जाऊँगा' तो उसके प्रति इस प्रकार कहते है। तुलनीय : गढ़० मन्ने चुली विगचणै, डर।

मरने का नहीं, यम के परकने का डर है-- जितना डर मरने का नहीं है उससे अधिक डर यम के परक जाने का है। आशय यह है कि हानि होने से जितना दुख नहीं होता उससे अधिक दुख इस बात का होता है कि हानि करने वाला कहीं बार-बार आकर न हानि पहुँचावे। तुलनीय : मरा० मरण्यांचें नाही, यमचाराशी येण्याचे भय आहे।

मरने की किसने जानी—(क) मृत्यु के विषय में किसी को कुछ पता नहीं होता। (ख) भविष्य का ज्ञान किसी को नहीं होता। तुलनीय : पंज० मरन दा किनू पता।

मरने की खुशी, न जीने का ग़म-- न तो मरने से खुशी है और न जीने से दुख। जिससे कोई मतलब न हो उसके प्रति कहते है। तुलनीय : पंज० मरण दी खुशी न जीण दा गम।

मरने की भी फ़ुरसत नहीं है—मरने के लिए भी समय नही है, बहुत अधिक काम है। जो व्यक्ति किसी महत्वपूर्ण काम में लगा हो और उसे और कोई काम या कहीं चलने

के लिए कहा जाय तो वह कहता है। तुलनीय : राज० मरणनै ही बखत कोनी; पंज० मरण दा वी वैल नईं।

मरने के पहिले क़ब्र खोदना—(क) रोग होने के पहले ही उसका उपचार करना; (ख) अकबर ने जब मथुरा के चौबों को देखा कि ये सभी बेकार हैं तो उन्हें हुक्म दिया कि जो मुसलमान मर जायँ उनकी तुम लोग क़ब्र खोदा करो। इस पर चौबों ने क़ब्रिस्तान में जाकर हज़ारों क़ब्रें खोद डालीं। अकबर बादशाह ने जब यह सुना तो उन्हें बुलाकर पूछा कि आप लोगों ने ऐसा क्यों किया। तब चौबों ने जवाब दिया कि एक-न-एक दिन तो सभी मुसलमानों को मरना ही है और यह कार्य भी हमीं लोगों को करना है, इसलिए कर डाला। इस हाज़िरजवाबी से प्रसन्न हो अकबर ने उन्हें छुट्टी दे दी। तुलनीय : अव० मरै के पहिले कबुर खोदै।

मरने के बाद किसने देखा है?—मरने के बाद किसने देखा है कि क्या होता है। अर्थात् मरने के बाद क्या होगा इस पर चिन्ता करना मूर्खता है। तुलनीय : राज० मर्यां पछै कुण देखी है ?; पंज० मरण दे मगरों किन दिखी; ब्रज० मरे पीछे कौने देख्यो ऐ।

मरने के बाद कौन देखने आता है?—(क) मरने के बाद मुर्दे से चाहे जैसा व्यवहार करो वह देखने के लिए फिर से जीवित नहीं होता। (ख) यदि कोई काम मरने के बाद सफल हो तो मरने वाले के लिए बेकार है। (ग) मरे हुए की जब कोई व्यक्ति बुराई करता है तो उसके प्रति भी कहते हैं कि अब जो चाहे सो कह लो उसे कौन-सा लौटकर आना है। तुलनीय : राज० मर्यां पछै कुण देखणने आवै, पंज० मरण दे मगरों कौन देखण आंदा है।

मरने के समय पंख निकल आते हैं—जब दुष्टों की मृत्यु समीप आती है तो वे और भी उत्पाती हो जाते हैं।

मरने को कौन गाड़ी जुतती है?—मरने के लिए क्या गाड़ी जोती जाती है? मौत का कोई ठिकाना नहीं कब आ जाय। जो व्यक्ति अपने प्रति अहंकार प्रकट करे कि मैं अभी नहीं मरूँगा उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० मरता किसा गाडा जूतै है ?

मरने को क्या हाथी-घोड़े जुड़ते हैं—ऊपर देखिए।

मरने को जी करे कफ़न का टोटा—मरने की इच्छा होती है लेकिन कफ़न ही नहीं है। (क) झूठा बहाना बनाने वाले के प्रति कहते हैं। (ख) जब कोई निर्धन व्यक्ति ऊँची-ऊँची आकांक्षाएँ रखता है तब भी कहते हैं। (ग) किसी खास मौक़े पर कंजूसी करने वाले के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : कौर० मरणें कू जी करे, कफ्फण का टोट्टा।

मरने चली, और शुक्र सामने—दे० 'मरन चली...'।

मरने जाय मल्हार गाय—मरने के लिए जावे पर गीत गावे अर्थात् तनिक भी दुखी न हो। (क) सच्चे वीर पर कहा जाता है। (ख) मरने के समय यथार्थतः दुखी होना चाहिए पर यदि कोई मल्हार गाता है तो यह उसका असमय का काम है। अतः किसी के समय के अनुसार कार्य न करने पर भी कभी-कभी यह कहावत कहते हैं। तुलनीय : अव० मरत जायं मलहार गावत जायं; राज० मरतो मलार गावै।

मरने तक का नाता है—सांसारिक नाते-रिश्ते मरने तक ही हैं। मरने के बाद कोई किसी को याद नहीं करता और यदि याद करता भी है तो केवल उसके द्वारा किए गए सुखों और लाभों को। तुलनीय : राज० मर्यां ताईंरो नातो है; पंज० मरण तक ही रिसता है।

मरने पर राम कहा तो किस काम का—मरने के बाद भगवान का नाम लिया तो उससे क्या लाभ होगा। जीवन भर तो ईश्वर का स्मरण किया नहीं और मरते समय उसे खूब याद कर रहे हैं। अवसर के पश्चात् किया गया कार्य किसी काम नहीं आता। तुलनीय : भीली– मरती दण राम राम करे ते राम ह करे; पंज० मरण लगे राम आखया ते की फैदा।

मरवे पर वैद्य आए, मुँह देखकर घर गए—आशय यह है कि किसी काम के बिगड़ जाने पर उसे सुधारने का उपाय करने से कोई लाभ नहीं होता।

मरने पर सब कोउ सहे, जीता सहे न कोय—मरने के बाद चाहे कोई कुछ भी करता रहे उससे क्या कष्ट हो सकता है, किन्तु जीते जी आँखों के सामने कोई अप्रिय घटना नहीं सही जाती। परिवार के वृद्ध छोटों की असह्य बातों और कार्यों पर टाटते हुए इस प्रकार कहते हैं। तुलनीय : गढ़० मर्या सबून सार्या ज़दा कैन नी मार्या।

मरने में क्या हाथी घोड़े जुतते हैं?—दे० 'मरने को क्या हाथी......'।

मरने वाला आक भी पीए—यदि कोई व्यक्ति मरणासन्न हो और उससे कहा जाय कि तुम आक पी लो तो ठीक हो जाओगे तो वह उसे भी पीने के लिए तत्पर हो जाता है। आक ज़हर होता है यह सभी जानते हैं। जब कोई व्यक्ति विपत्ति से बचने के लिए बहुत बड़ी जोखिम उठाने को राज़ी हो तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : माल० मरतो आकड़ो पीवे।

मरने वाला मर गया, जीना मुश्किल कर दिया—जो

परिश्रम करके धन लाता था वही मर गया। (क) जब कोई ऐसा व्यक्ति संसार से उठ जाए जिसके बहुत से आश्रित हों और उन सबकी स्थिति बहुत कठिन हो जाए तो मरने वाले के प्रति कहते है। (ख) जब कोई ऐसी स्थिति पैदा करके मर जाय कि परिवार या गाँववालों से झगड़ा हो तब भी कहते हैं। तुलनीय : गढ़० मड़ो मरिगे भगलो कूटणो करिगे; पंज० मरण वाला मर गया रैणा पुसकल कर गया।

मरने वाला मर गया रोने वाला झूठा—(क) किसी के मरने के बाद रोने-पीटने से कोई लाभ नहीं होता। (ख) कोई कार्य बिगड़ जाने के बाद पछताना या दुखी होना व्यर्थ है। तुलनीय : पंज० मरण वाला मर गया रोण वाला चूठा।

मरने वाला मर गया, साथ मुझे भी मार गया—मरने वाला जब कर्ज छोड़ जाय तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : भीली० मरवा वाला मरी ने गया, मोये फायले मारी न गया; पंज० मरण वाला ते मर गया नाल मानू वी मार गया।

मरने वाले मर गए, औलाद छोड़ गए—स्वयं तो मर गए लेकिन बच्चे छोड़ गए। (क) किसी के नालायक या शरारती बच्चों के प्रति कहते है। (ख) जब कोई अपना भार किसी और के ऊपर डालकर चला जाता है तब भी कहते हैं।

मरने वाले मर गए, हमें आफ़त कर गए—(क) कोई व्यक्ति जब अपने अधिकारी द्वारा कठिन काम पाता है और अधिकारी काम दे-देकर वहाँ से कहीं चला जाता है तथा कर्मचारी को वह काम नहीं आता तो अपने अधिकारी के प्रति ऐसा कहता है। (ख) कामचोर विद्यार्थी भी कठिन प्रश्नों को देखकर ऐसा कहते है।

मर मर न जाते तो, भर घर होते—यदि किसी के घर के लोग मरें नहीं तो कुछ ही दिन में घर भर जाय। आशय यह है कि यदि धन व्यय न किया जाय तो बहुत-सा इकट्ठा हो जाय। तुलनीय : अव० मर मर न जातें तो घर भरा होत।

मरल बछिया बाम्हन को दान—दे० 'मरती बछिया बाम्हन…'।

मराए बिना मारना नहीं आता—बिना मार खाए मारने का ढंग नहीं आता। आशय यह है कि बिना नुकसान सहे ज्ञान नहीं होता। तुलनीय : पंज० मार खादे बगैर मारना नईं आउंदा।

मरा रावण फ़ज़ीहत हो—मरने के बाद भी रावण अपमानित हुआ। आशय यह है कि बुरे मनुष्य मरने के बाद भी कोसे जाते हैं।

मरा हाथी भी लाख का—हाथी मरने के बाद भी एक लाख का होता है। आशय यह है कि बड़े लोग बिगड़ जाते है तब भी बहुत संपन्न रहते हैं। तुलनीय : बुंद० गिरा अटारी मढ़ा बिरोबर; ब्रज० मरा हाथी बिटौरे की दर देत है; सि० उट्ठ बुड्ढो तब्बा ब कंवाट लहे; हरि० मरा हात्थी सवा लाख का; पंज० मरया होया हाथी वी लख दा।

मरा हाथी भी सवा लाख का—ऊपर देखिए।

मरा हाथी लाख का—दे० 'मरा हाथी भी लाख का।'

मरा हाथी सौ मन का—दे० 'मरा हाथी भी …'।

मरियल खसम करम ढकना, कोदों की रोटी पेट भरना—कमज़ोर पति केवल कहने के लिए होता है उससे जीवन में आनंद नहीं आता। कोदों की रोटी पेट भरने के लिए होती है उससे खाने का आनंद नहीं मिलता। जिसका पति कमज़ोर होता है उसके प्रति मज़ाक़ में कहते है।

मरियल बिल्ली, जुआँ भारी—कमजोर या मरने योग्य बिल्ली के लिए जूँ भी भारी होती है। आशय यह है कि कमज़ोर या निर्धन के लिए सामान्य खर्च ही बहुत बड़ा होता है।

मरिहों पर हटिहों नाहीं—मर जायेंगे पर हटेंगे नहीं। बहुत हठी आदमी के लिए कहा गया है।

मरी कल्लन काजर देत—कल्लन काजल लगाती मरी। (क) जिसकी जिंदगी सुख से बीत जाय उसके प्रति कहते है। (ख) किसी कार्य के करते ही अशुभ हो जाने पर भी कहते हैं।

मरी क्यों ? साँस न आया—बेमतलब की बात पूछने पर कहते है। तुलनीय : राज० मरी क्यू ? साँस को आयो नी; पंज० मोई तां जे सा न आया; ब्रज० मरी कैसें साँस वायें आया।

मरीज़ का यार हकीम—रोगी का मित्र वैद्य होता है। आशय यह है कि जिसको जिससे लाभ होता है उसका वही मित्र होता है। तुलनीय : गढ़० दुखी कू बैद प्यारो।

मरी जायँ, मल्हार गायँ—दे० 'मरने जाय मल्हार गाय।'

मरीज़े-इश्क़ को दीदार काफ़ी है—इश्क़ के रोगी को प्रिय का दर्शन बहुत है। अर्थात् प्रेमी को अपने प्रिय का दर्शन ही बहुत कुछ है।

मरी बछिया पांडे के नांव—नीचे देखिए।

मरी बछिया बामन को दान—दे० 'मरती बछिया बाम्हन⋯'।

मरी बछिया बाम्हन के नाम—ऊपर देखिए।

मरी बछिया बाम्हन के सिर—दे० 'मरती बछिया बाम्हन⋯'।

मरी बछिया ब्राह्मण को दान—दे० 'मरती बछिया बाम्हन⋯'।

मरी भेड़ ख्वाजा ख़िज्र के नाम दे० 'मरती बछिया बाम्हन⋯'।

मरी भैंस का घी बहुत—जो भैंस मर गई उसके दूध में घी की मात्रा अधिक होती थी। जब कोई किसी वस्तु के नष्ट हो जाने पर वास्तविकता से अधिक उसकी प्रशंसा करता है तब व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

मरी मेंढकी को छाले पड़ गए—व्यर्थ की बात करने पर कहते हैं।

मरी यों कि साँस न आया—दे० 'मरी क्यों⋯'।

मरें खाने को मूँछों में घी चुपड़ें भोजन के बिना मरते हैं लेकिन मूँछों में घी लगाते हैं। झूठी शान दिखाने वाले के प्रति व्यंग्य में कहते है। तुलनीय : बुंद० मारे मरें निरमई के, मूँछन कों घी चुपरें; मरा० कण्या खाऊन मिशांस तूप लावणें।

मरे और मल्हार गाए—दे० 'मरने जाय मल्हार गाय।'

मरे का कोई नहीं, जीते-जी के सब लागू है—मरे हुए व्यक्ति की कोई भी परवाह नहीं करता परंतु जीते हुए आदमी की सभी खुशामद करते है। आशय यह है कि दुनिया स्वार्थ की साथी है। जब तक मनुष्य जीवित है और उसके पास धन है सभी उसकी चापलूसी करते है किन्तु मरने के बाद कोई उसके बारे में बात भी नहीं करता। तुलनीय : अव० मरत के बेरिया केउ नाही, जिअत सबै; हरि० जीवते जी के सब लाग्गू से पाच्छै कुछ जांणै सै; पंज० मरे नूं कोई नईं पुछदा जीदे नूँ सारे पुछदे हन।

मरे की आँखें हथेली जैसी—दे० 'मरी भैंस का⋯'।

मरे को क्या मारना—जो मर चुका है उसे न मारना चाहिए। आशय यह है कि ग़रीब को नहीं सताना चाहिए। तुलनीय : अव० मरे का मारै; हरि० मरे नें के मारै; गढ़० मार्यूं क्या मारनो; माल० मर्‌या ने कई मारणो; पंज० मरे नूं की मारना।

मरे को मर जाने दे, हलुआ पूड़ी खाने दे—बूढ़े आदमियों के मरने में ही कल्याण है। वृद्ध मनुष्य पर कहा गया है।

मरे को मारे शाह मदार—शाह मदार भी दुर्बल को ही मारते हैं। अर्थात् ईश्वर भी निर्बल को ही कष्ट देते हैं। तुलनीय : सं० दैवो दुर्बल घातकः।

मरे ढोर को अकेला छोड़ देते हैं—मरे पशु को अकेला छोड़कर चल देते है। (क) गिरे हुए का कोई साथ नहीं देता। (ख) बुरी चीज़ की चोरी का भय नहीं रहता, इसलिए उसे कहीं भी छोड़ या रख देते है।

मरे तो शहीद मारे तो ग़ाज़ी मरनेपर शहीद और मारने पर ग़ाज़ी कहलाते हैं। धर्म को बचाने के लिए मरने तथा मारने दोनों दशाओं में सुयश मिलता है। (मुसलमानों में धर्म-विरोधियों को पराजित करने वाले ग़ाज़ी कहलाते हैं)। तुलनीय : मरा० मेला तर हुतात्मा, जिकला तर धर्मवीर; ब्रज० मरै तो सहीद और मारै तौ गाजी।

मरे न खटिया छोड़े—न मरता है और न खटिया छोड़ता है। (क) वृद्ध व्यक्ति के प्रति कहते है। (ख) ऐसे रोगी के प्रति भी कहते हैं जो चारपाई पर पड़ा हुआ हो और जिसके ठीक होने की कोई आशा न हो। तुलनीय : अव० मरै न माचा छोड़ै; राज० मरै न, माँचो छोडं; पंज० मरे न मंजी छड्डे।

मरे न जीये हुकुर-हुकुर करे ऊपर देखिए।

मरे न पीछा छोड़े—दे० 'मरे न खटिया⋯'।

मरे न माचा छोड़े दे० 'मरे न खटिया⋯'।

मरे न माझा ले दे० 'मरे न खटिया⋯'।

मरे न मूसा सिंह ते, मारे ताहि मँजार—चूहे को सिंह नहीं मार सकता, उसे केवल बिल्ली ही मार सकती है। (क) हर कार्य सभी नहीं कर सकते। (ख) बड़े लोग या वीर पुरुष ओछा कर्म नहीं करते। तुलनीय : ब्रज० मरै न मूंसो सेर ते मारै ताहि मजार।

मरे न मोटाय—न मरता है और न मोटा होता है। सदा एक जैसा रहने वाले दुर्बल व्यक्ति के प्रति कहते है। तुलनीय : छत्तीस० मरै न मोटाय।

मरे पशु को किलनी छोड़ देती है—अर्थात् जिससे कुछ लाभ की उम्मीद नहीं होती उसका साथ कोई नहीं करता। तुलनीय : बुंद० मरे ढोर कों किलनी छोड़ देती।

मरे पशु तो चमार ही ले जायेंगे—मरे हुए पशुओं को चमार ही ले जाते हैं। (क) घृणित कार्य नीच पुरुष ही किया करते हैं। (ख) जो जिस योग्य होता है उसे उसी योग्य काम दिया जाता है। तुलनीय : राज० मर्‌योड़ा दाव तो ढेढ ही घीसैला।

मरे पीछे डोम राजा—(क) मरने के पश्चात् डोम ही

राजा होता है क्योंकि श्मशान में डोम ही कर वसूल करता है। (ख) वीर पुरुष के न रहने पर सामान्य व्यक्ति ही बहादुर बन जाता है।

मरे पुत्र की बड़ी-बड़ी आँखें — नीचे देखिए।

मरे पूत की बड़ी आँखें —जो लड़का मर गया उसकी आँखें बहुत बड़ी-बड़ी थी। दूर गए व्यक्ति या वस्तु की बहुत बढ़ा-चढ़ाकर प्रशंसा करने वाले के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : गुज० मुई भैंस ने घी घणां; मरा० मेल्याचे डोले पशाएवढ़े; पंज० माडा बाबा बड़ा बडा।

मरे बाप रोवें माँ को – मरे हैं पिता और रो रहे है माँ के लिए। मूर्खतापूर्ण कार्य करने पर व्यंग्य। तुलनीय : पंज० मरया पिउ रोण मां नू।

मरे बाबा की पस्से-सी आँखें—दे० 'मरे पूत की···'।

मरे बाबा की बड़ी-बड़ी आँखें - दे० 'मरे पूत की···'।

मरे बिन छूटे नहीं, जी से भूँड़ी बान—बिना मरे बुरी आदत नहीं छूटती। अर्थात् बुरी आदत जन्म-भर नहीं छूटती।

मरे बिना स्वर्ग नहीं दिखता—बिना अपने मरे स्वर्ग नहीं दिखाई देता। आशय यह है कि बिना श्रम किए सुख नहीं मिलता।

मरे बैल की बड़ी-बड़ी आँखें —जब किसी मनुष्य के जीवित रहने पर तो उसका आदर न किया जाय किंतु जब वह मर जाय तो उसकी प्रशंसा की जाय तो यह लोकोक्ति कही जाती है।

मरे बैल को तो किलौली (किलनी) भी छोड़ जाती है —दे० 'मरे पशु को···'।

मरे माता जीए मौसी – मां भले मर जाय पर मौसी जीवित रहे। मौसी मां से अधिक प्यार करती है, इसीलिए ऐसा कहा जाता है।

मरे मुक्ति केहि काज—यदि मनुष्य जीते-जी यश न कमा ले तो मरने के बाद मोक्ष मिलने से कोई फ़ायदा नहीं होता।

मरे लड़के के दिन क्या गिनने—जो बीत गई उसे दुहराने से क्या लाभ ? जो बीत गई सो बात गई। तुलनीय : पंज० मरे मुंडे दे दिन की गिणने।

मरे लड़के से 'हाँ' भराए – मरे लड़के से 'हाँ' कहलवाते हैं। असंभव कार्य या बात पर कहते हैं।

मरे साँप की आँख कुरेदे — मरे हुए सर्प की आँख को कुरेदते है। जब कोई किसी बलवान के गिर जाने या निर्बल हो जाने पर उसे कष्ट देता है तब उसके प्रति कहते है।

मरे सो बचे, जिए सो पिसे —मरनेवाला मर के संसार से छुटकारा पा जाता है, किंतु जीवित रहने वाले संसार की चक्की में पिसते रहते है। मरनेवाला सभी दुःखों से छुटकारा पा लेता है और जीवित कष्ट और दुःख झेलते रहते हैं। तुलनीय : भीली—मरे जणानी मोज ने जीवे जणा नी मौत।

मरे सो मरे जीते खेलें फाग—जो मर गए वे तो दुनिया से चले गए, जो जीते हैं वे फाग खेलते है। मरने वाले मर गए और जो जीवित हैं वे मज़े उड़ाते हैं। जिस व्यक्ति को किसी मृत संबंधी की बहुत बड़ी संपत्ति अनायास ही मिल गई हो और वह उससे खूब मौज उड़ाता हो उसके प्रति कहते है। तुलनीय : राज० मरिया मरिया लेखें लाग, जीवें जका खेलें फाग।

मर्ज़ बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की—दे० 'मरज़ बढ़ता गया···'। तुलनीय : मरा० औषध घेतलें तो तो रोग वाढत चालला।

मर्द औरत की लड़ाई, अभी लगी अभी बुझाई—पति-पत्नी अभी झगड़ा करते हैं और थोड़ी ही देर बाद बातें करने लगते हैं। अर्थात् पति-पत्नी का झगड़ा कुछ ही देर का होता है। तुलनीय : गढ़० स्वैण भैंसू की कल दूध भात की बेल।

मर्द-औरत राज़ी तो क्या करेगा क़ाज़ी —जब स्त्री-पुरुष एकमत हों तो क़ाज़ी कुछ नहीं कर सकता। जब दोनों पक्षों में आपस में मेल हो तो तीसरे का दखल व्यर्थ हो जाता है। तुलनीय अव० मियाँ बीबी राज़ी तौ का करै काज़ी; हरि० मीयां बीब्बी राज्जी तै के करैगा काज्जी; पंज० मीयां बीबी राज़ी ते की करेगा काज़ी।

मर्द का एक क़ौल होता है– पुरुष की एक बात होती है दूसरी नहीं। मर्द अपनी प्रतिज्ञा या वचन से नहीं डिगता। वह जो कहता है वही करता है। तुलनीय : अव० मरद कै एक बात होत है; ब्रज० मरद को एक कौल होयै।

मर्द का क्या है एक जूती पहनी एक जूती उतारी — आशय यह है कि मर्द एक शादी के बाद दूसरी शादी भी कर सकते है। एक स्त्री के मर जाने पर पुरुष दूसरी शादी कर सकता है। अर्थात् पुरुष का पक्ष स्त्रियों की अपेक्षा अधिक बलवान है, इसलिए यह लोकोक्ति कही जाती है।

मर्द का खाना औरत का नहाना, किसी ने जाना किसी ने न जाना मर्द खाने और औरत नहाने में इतनी जल्दी करते है कि कोई जानता भी नहीं कि कब यह काम हुआ। पुरुष नहाने में जल्दी करते हैं और स्त्री भोजन बनाने में

देर नहीं लगाती, इसीलिए ऐसा कहा जाता है। तुलनीय : अव० मरद कै खाव, मेहरारू कै नहाब, केउ जानेग कोउ न जानेस।

मर्द का खाना स्त्री का नहाना कोई देखे कोई न देखे—ऊपर देखिए।

मर्द का दिखाया न खाइए, मर्द का लाया खाइये—मर्द के सामने तो न खाए परन्तु उसकी लाई हुई वस्तु खाए। स्त्रियाँ पुरुषों के सामने खाने में संकोच करती हैं, इसलिए यह लोकोक्ति कही जाती है।

मर्द का नौकर मरता है, औरत का जीता है—पुरुष कठोर स्वभाव के होते हैं जिसके कारण उनके नौकरों को बहुत कष्ट होता है और स्त्रियाँ उदार होती हैं जिससे उनके नौकर मौज से रहते हैं। तुलनीय : भोज० मरद क नोकर मूवेला मेहरारू क नोकर जीयेला।

मर्द का नौकर मरे वर्ष-भर में, रंडी का नौकर मरे छः महीने में—मर्द का नौकर रंडी के नौकर की अपेक्षा देर से मरता है अर्थात् रंडी का नौकर जल्दी मरता है क्योंकि वह अधिक काम करने के अतिरिक्त विषयी भी हो जाता है।

मर्द का हाथ फिरा और लड़की उमड़ी—आशय यह है कि विवाह के बाद लड़कियाँ बहुत तेजी से स्थूलकाय हो जाती हैं। तुलनीय : अव० मरद का हाथ घूमा औ मेहरारु उभरी; पंज० बंदे ने हथ्थ फेरया ते कुडी उड़की।

मर्द की इज्जत औरत का हाथ—पति का मान रखना पत्नी के ही हाथ में होता है। तुलनीय : भीली—धणी नो कामदो धाणियाणी ने हाथ मांये; पंज० बंदे दी इजत जनानी (नाल) दे हथ्थ।

मर्द की गर्द में रहना, हीजड़े की हवेली में नहीं—वीर और उदार पुरुष के चरणों की धूल में रहना ठीक है, पर नपुंसक या कापुरुष की हवेली में रहना ठीक नहीं। आशय यह है कि मर्दों के साथ दुख का जीवन व्यतीत करना निकम्मों के साथ सुख का जीवन व्यतीत करने से अच्छा है। तुलनीय : माल० मरद री गरद वे रेणो, हीजड़ा री हीम नी रेणों।

मर्द की बात और गाड़ी का पहिया आगे ही की ओर चलता है—मर्द अपनी बात से उसी प्रकार पीछे नहीं हटते जिस प्रकार कि गाड़ी का पहिया। अर्थात् मर्द की दोहरी बात नहीं होती वे अपनी बात पर अटल रहते हैं। तुलनीय : पंज० बंदे दी गल अते गड्डी दा पहिया अग्गें नूं जांदा है।

मर्द की मदद बीबी करे, माँ दूर से देखा करे—विवाह के पश्चात् मनुष्य की सहायता पत्नी ही करती है, माँ नहीं। पत्नी ही वास्तव में जीवन-यात्रा की साथी होती है। तुलनीय : भीली—बेटानी बार वऊजी वास हैं, हाउजी ने वास हैं।

मर्द की मूंछ, कुत्ते की पूंछ—ये दोनों सदा टेढ़ी रहती हैं। प्रकृति बदली नहीं जा सकती। प्रयत्न करने पर भी जब किसी का स्वभाव बदला न जा सके तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : भीली—मरदनी मूच वे कूतरानी पूच वांकीज रे;

मर्द की मौत नामर्द के हाथ—बहादुर का निर्बल द्वारा मारा जाना। जब किसी साहसी और वीर पुरुष की किसी निर्बल व्यक्ति द्वारा धोखे से हत्या होती है तब यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : अव० मरदे कै मउत निरमदे कै हाथ।

मर्द के चार निकाह दुरुस्त हैं—यह मुसलमानों के संबंध में है, क्योंकि उनकी चार शादियाँ जायज़ हैं। हिन्दू मुसलमानों के प्रति व्यंग्य में यह लोकोक्ति कहते हैं।

मर्द को खटाई, औरत को मिठाई—पुरुष के लिए खटाई और औरत के लिए मिठाई हानिकारक है। तुलनीय : माल० आदमी ने खटाई और औरत ने मिठाई बगाड़े।

मर्द को गर्द जरूर—पुरुष को परिश्रम अवश्य करना चाहिए। जब कोई व्यक्ति गर्द पड़ने के कारण काम में परहेज़ करे तो उस पर यह लोकोक्ति कही जाती है।

मर्द को रोवे बैठ के, माल को रोवे खड़ी-खड़ी—पति के लिए तो बैठकर रो रही है, किंतु धन के लिए खड़े-खड़े ही। धन पति से भी अधिक प्रिय होता है। तुलनीय : राज० मांटीनैं रोवैं बैठी-बैठी, रिजकनैं रोवैं ऊभी-ऊभी।

मर्द जेंकरा गाँठ रुपैया—वस्तुतः मर्द वही है जिसके पास रुपया हो। यदि कमजोर व्यक्ति रुपये के बल पर किसी बड़े कार्य को पूरा कर ले तो उस पर यह लोकोक्ति कही जाती है।

मर्द जो चाहे करे, पर औरत सोच करे—पुरुष जैसे चाहे करता रहे उसे कोई दोष नहीं देता किंतु स्त्री की छोटी-सी भूल से उसका भविष्य अंधकारमय हो जाता है, इसलिए स्त्रियों को प्रत्येक कार्य सोच-विचार कर करना चाहिए। तुलनीय : भीली—लुगाई नू जमारू है जोई बचारी ने करवू पडे।

मर्द तो एक दाँत का भी भला—पुरुष के दाँत टूट भी जायँ तो भी वह अच्छा होता है। (क) औरतें बेवफ़ा होती हैं यही बताने के लिए व्यंग्य में कहते हैं। (ख) जिस

व्यक्ति के दाँत टूट जाते हैं वह भी परिहास करने के लिए कहता है। तुलनीय : राज० मरद तो एकदंता ही भला; पंज० बदा इक दंद दा वी चगा।

मर्द निकौनी बरदं दायें, दुबरी चलने में दुख पायें — पुरुष की निराई करने में, बैल को हल तथा दँवरी में दाहिनी तरफ चलने में और दुर्बल व्यक्ति या गर्भिणी स्त्री को रास्ता चलने में दुख होता है।

मर्द पर या बैल पर—परेशानी मर्दो पर पड़ती है या बैलो पर। खेती के कार्यो में मर्दो और बैलो को अधिक परिश्रम करना पड़ता है इसीलिए कहते हैं।

मर्द बिना जगत श्मशान—पुरुष के बिना संसार श्मशान जैसा सुनसान और भयावना लगता है। स्त्रियाँ पुरुषों के प्रति कहती है। तुलनीय : भीली —मरद वगर होना धके मसाण।

मर्द मरने को राजी, रोने को नहीं— मर्द पर यदि कोई आपत्ति आ जाय तो वह मरने के लिए प्रस्तुत हो जाता है, पर बैठकर रोता नही। विपत्ति मे स्त्रियाँ रोती है मर्द नहीं। जब कोई परेशानियों से ऊबकर रोने लगता है तब उसके प्रति कहते है। तुलनीय : राज० मरदां मरणा हक्क है, रोणा हक्क न होय।

मर्द मरे नाम को निमर्द मरे पेट को—वीर पुरुष अपनी मर्यादा के लिए दिन-रात कष्ट सहते और चिंतित रहते है पर निकम्मे पेट भरने की ही चिंता मे रहते है। तुलनीय : अव० मरद मरै नाव का गांडू मरै पेट का।

मर्द मरे श्मशान में—वीर व्यक्ति श्मशान में पहुँचने पर ही अपने को मरा हुआ समझते है तथा कायर सदैव मुर्दा बने रहते है। कायरो के प्रति व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : माल० मरदां रा दीवाला मसाणा मे; पंज० बदा मरे ममाण विच।

मर्द रहे बाहर औरत रहे घर में तो गाड़ी चले जग में—पुरुष बाहर का काम करे और स्त्री घर के अंदर का तभी गृहस्थी की गाड़ी चलती है। उचित ढंग से कार्य का बँटवारा करने पर ही जीवन सुखी रह सकता है। तुलनीय : भीली— लगाडय्ये हूजे मायनृ, आदमीए हूजे बार नृं।

मर्द ही कड़वा-तीखा पी सकता है—मर्द ही कष्ट सह सकते है। जो व्यक्ति वीरतापूर्ण और कष्टदायक काम करने से डरते हों उनके प्रति व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : भीली— खाटा तोरा मदरा पीवा मरदां ना काम है; पंज० बंदा ही कौड़ा तिखा पी सकदा है।

मर्द ही धरती जोतता है— पुरुष धरती में हल चला सकता है। जो व्यक्ति परिश्रम करने से कतराता हो उसे लज्जित करने के लिए कहते हैं कि मर्द ही धरती जोतता है, नामर्द क्या खाकर जोतेगा। तुलनीय : भीली— नर भमराँ भोम का भागे।

मलयागिरि की भीलनी चन्दन देत जराय—मलयागिरि पर रहने वाली भीलनी चन्दन को जलाने के काम में लाती है। (क) जो वस्तु जहाँ बहुतायत से उत्पन्न होती है, वहाँ के लोग उसकी क़दर नहीं करते। (ख) जो जिस वस्तु का गुण नही जानता वह उस वस्तु का सदुपयोग नही कर सकता। तुलनीय : कनौ० मलयागिरि की भीलनी चन्दन देत जराय; मरा० मलयगिरीची भिल्लीण, चुलीत चंदन जाळते; मल० मृयटत्ते मुल्लटक्कु मणमिल्ल।

मलहम घाव का साथी है और मित्र दिल का—मित्र और मलहम से क्रमश: दिल और घाव को राहत मिलती है। तुलनीय : उज० सूरज हवा को गर्मी देता है और मित्रता दिल को।

मल्लयगिरि की भीलनी चंदन देत जराय— दे० 'मलयागिरि की भीलनी'''।

मल्लाह का लँगोटा ही भीगता है—पानी में गिरने पर मल्लाह का केवल लँगोटा ही भीगेगा क्योंकि उसके सिवा वह और कुछ भी नही पहने रहता। अर्थात् जिसके पास जो कुछ रहेगा उसी की हानि होगी। तुलनीय : अव० मल्लाह का लंगोटिन भीजत है।

मल्लाही की मल्लाही दी बाँस के बाँस खाए— मल्लाही भी दी और ऊपर से बेइज्जती भी हुई। जब धन भी खर्च हो और अपमानित भी होना पड़े तब कहा जाता है।

मशाल की बू दिमाग़ में समाई है— ग़रीबी मे भी दिमाग अमीरों का सा ही रखते है।

मशालची अंधा होता है— दीपक लेकर चलने वाले को दिखाई नही देता। जहाँ विशेष विचार का स्थान हो वही पर अंधेर हो तब कहा जाता है।

मशालची रोवे तेल को, तमाशाई रोवें खेल को— मशालची तेल के लिए रोता है और तमाशा देखने वाले तमाशा देखने के लिए रोते हैं। आशय यह है कि सबको स्वार्थ ही नज़र आता है।

मसखरों के चूड़ा भर-भर गाल— हँसी-मज़ाक़ व मीठी बातों द्वारा प्रसन्न करना। जो केवल मीठी-मीठी बातों से ही दूसरों को प्रसन्न करता है परन्तु देता कुछ भी नही उसके प्रति कहा जाता है।

मसजिद ढह गई, मेहराब रह गई— मसजिद के गिर

जाने या नष्ट होने के पश्चात् केवल भग्नावशेष ही रह जाते है। मृत्यु के बाद केवल नाम ही रह जाता है।

मसजिद तक मुल्ला की दौड़—दे० 'मुल्ला की दौड़…'।

मस्ताई बकरी बोक का मुंह चूमती है--बकरी जब मस्ती मे आती है तो बकरे का ही मुंह चूमने लगती है। अर्थात् तरुणाई आने पर अच्छे-बुरे का विचार नष्ट हो जाता है।

महँगा रोए एक बार, सस्ता रोए बार-बार—महँगा सामान लेने में एक बार ही दुख होता है लेकिन सस्ता सामान सदा दुख देता है। अर्थात् सस्ती चीज़ कभी नहीं लेनी चाहिए। तुलनीय : बुं० दमरी की बछिया जनम की हत्या; ब्रज० तेजी रोबे एक बार, मन्दा रोबे बार-बार; राज० मुंघो रोवै एक बार सूघो रोवै बार-बार; पंज० मैंगा रोवे इक बार सस्ता रोवे बार-बार; ब्रज० मँहगौ रोवै एक बार, सस्तौ रोबै बार-बार।

महति दर्पणे महन्मुखं तदेव कनीनिका यम्म् अणु—बड़े शीशे मे (देखने पर) मुह बड़ा (हो जाता है), पर नेत्र की कनीनिका (कतरनी) में देखने पर छोटा दिखाई देता है। समय एवं परिस्थितियों के अनुसार एक ही चीज भिन्न-भिन्न रूप मे दिखाई देती है।

महतो छिपे पयाँर में, कौन कहे औ बैरी होय-- मुखिया साहब (महतो) पुआल (पयांर) मे छिपे है पर कौन बतला कर दुश्मनी मोल ले। आशय यह है कि बड़े लोगो के भेद को कोई भयवश बतलाता नहीं।

महद से लहद तक--जन्म से मृत्यु तक का समय। (महद - पालना, झूला; लहद—क़ब्र)।

महफ़िले-वीरान जहाँ भांड न बाशद- भांड़ के बिना महफ़िल वीरान लगती है। आशय यह है कि भांड़ के बिना सभा (महफ़िल) सुशोभित नहीं होती।

मुहल्ले में आई बारात पड़ौसिन को लगी घबराहट -बारात आई मुहल्ले में परन्तु घबराहट पड़ोसिन को हो रही है। जब कोई व्यक्ति किसी काम के आ पड़ने पर घबड़ा जाता है उस समय कहा जाता है। अर्थात् काम आ पड़ने पर घबड़ाना न चाहिए। तुलनीय : पंज० मल्ले बिच आई जंज, गुआंढन ने सुआए कन।

महाजनों येन गतःस पंथा-- बड़े लोग जिस रास्ते पर चल चुके हैं, वही अच्छा रास्ता है। विद्वान लोग जिस रास्ते पर चले हैं, वही रास्ता अनुकरणीय है। तुलनीय : असमी -- महाजनो येन गतःस पन्था; अं० Follow the great.

महान् महत्येव करोति विक्रमम् बड़े आदमी अपना पराक्रम बड़े को ही दिखाते है। छोटों के सम्मुख पराक्रम दिखानेवाले के प्रति कहते है। तुलनीय : अं० the brave fight with a person worth their steel.

महावट बरस और षाढ़ी सरसो-- जाड़े की वर्षा से अन्न खूब उत्पन्न होता है। जब जाड़े मे वर्षा होती है उस समय यह लोकोक्ति कही जाती है।

महिमा घटी समुद्र की जो रावण बसा पड़ौस रावण के पास होने से समुद्र का भी महत्त्व घट गया। अर्थात् बुरे की संगति करने से अच्छे को भी अपमानित होना पड़ता है।

महीना पुराया और कमेरा अघाया - महीने के समाप्त होते ही मजदूर प्रसन्न हो जाता है। क्योंकि महीने के अन्त मे ही वेतन मिलता है। (कमेरा -कमाने वाला या मजदूर)।

महुआ न सहुआ, बनाओ डोभरी----महुआ तो घर मे है नहीं और कहते है डोभरी बनाओ। जब कोई साधनहीन या निर्धन होते हुए भी ऊँची आकांक्षा करता है तब उसके प्रति व्यंग्य से कहते है।

महुओं के टपकने से धरती नहीं फटती -आशय यह है कि निर्धन या निर्बल सपन्न या बलवान का कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

माँ आवे, दही-रोटी लावे माँ जब आती है तो दही-रोटी लेकर आती है। आशय यह है कि मा से अधिक खयाल रखनेवाला दूसरा कोई नहीं होता। तुलनीय : राज० मा आवै दही-बाटियो लावै।

माँ एली, बाप तेली, बेटा शाले-ज़ाफ़रान -माँ-बाप तो तेली का कार्य करते हैं और लड़का ज़ाफ़रान (केसर) उगाने का कार्य करता है। अपनी जाति के अनुसार काम न करने वाले के प्रति व्यंग्य है। तुलनीय : गढ़० मांगि मांगिक न बाबू खांद अर तौ तौ रूप छद द्वी ब्यौ।

माँ करे कुटौनी पिसौनी बेटा का नाम संपतराय -मां तो दूसरों के यहा मजदूरी करती है किन्तु लड़के का नाम संपतराय है। नाम के अनुसार गुण और हैसियत न होने वाले के लिए कहा जाता है। तुलनीय : अव० महतरिया करैं कुटौनी पिसौनी, बेटउना कै नाव दुरगादास।

माँ करे सो बेटी करे जो काम मां करती है वही काम बेटी भी करती है। संतान के ऊपर मां के विचारों-भावनाओं के साथ कार्य का भी प्रभाव पड़ता है। तुलनीय : राज० मा करै सो धी करै; पंज० मां करे ओही धी करे।

माँ कहे तो राजी, बाप की जोरू कहे तो पाजी -यद्यपि

माँ और बाप की जोरू दोनों का एक ही अर्थ है परन्तु स्त्री को माँ कहो तो वह प्रसन्न होती है और बाप की स्त्री कहो तो वह गालियाँ देती है और मारने को दौड़ती है। आशय यह है कि अप्रिय सत्य या अश्लील बात नहीं कहना चाहिए।

माँ का अता-पता नहीं मौसी को रोवें—अपनी माँ का तो कुछ पता ही नहीं है और मौसी के लिए रो रहे हैं। जो व्यक्ति बिना मूल वस्तु का पता किए उससे संबंधित वस्तु पाने के लिए प्रयत्न करे तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : माँ रांड रो तो पतोड़ नी ने मासी ने रोवा जाय; पंज० माँ दा पता नई मासी नूं रोण ।

माँ का दिल गाई अस, पूत का दिल कसाई अस—माँ का दिल गाय जैसा होता है और पुत्र का क़साई जैसा। आशय यह है कि माँ का हृदय बहुत कोमल होता है जबकि पुत्र का कठोर। माता कुमाता नहीं होती, भले पूत कपूत हो जाय। तुलनीय : भोज० माई क जिउ गाई अस पुतवा क जिउ कसाई अस।

माँ का नाम बांदी, पूत का नाम सुलतान खाँ—माँ का नाम तो बाँदी (नौकरानी) और लड़के का नाम सुल्तान खाँ है। जब किसी सामान्य स्तर के परिवार के बच्चे का नाम बड़े लोगों जैसा रखा जाता है तब व्यंग्य मे ऐसा कहते है।

माँ का पेट कुम्हार का आवाँ—माँ का पेट कुम्हार के आवें जैसा होता है। कुम्हार के आवें में पकने वाले सभी बर्तन एक जैसे नहीं होते। आशय यह है कि एक ही माँ के बच्चे रूप-रंग और गुण में एक जैसे नहीं होते। तुलनीय : भोज० महतारी कऽ पेट कोंहार कऽ आवाँ।

माँ का पेट कुम्हार का आवाँ, इनकी कौन आज तक जाना कोई नहीं जानता कि पेट में लड़का है या लड़की। इसी प्रकार कुम्हार के आवे का कौन बर्तन कैसा पका है यह भी कोई नहीं जानता। यदि कोई ऐसा गुप्त रहस्य हो जिसका पता बिलकुल न चलता हो तो उसके प्रति भी कहते है।

माँ की बाते मौसी से—माँ की शिकायत या चुग़ली मौसी से करना। जब कोई विपक्षी की चुग़ली उसी के मित्र से करे तो उसकी मूर्खता देखकर ऐसा कहा जाता है। तुलनीय : गढ़० माँ की छवी मौस्याणी भू।

माँ की सौत, न बाप से यारी, किस नाते तौन्ह महतारी—न तो माँ की सौत है और न पिता से उसकी दोस्ती ही है तो किस तरह से वह मेरी माँ हुई। किसी के झूठा रिश्ता जोड़ने पर यह लोकोक्ति कही जाती है।

माँ के कड़वे और दूसरों के मीठे बोल—माँ के कहे हुए कटु वचन दूसरों के मीठे वचनों से अधिक हितकर होते हैं क्योंकि बाहर के लोग अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए मीठी-मीठी बातें करते हैं जबकि माँ बच्चे को बुराई से बचाने के लिए डाँटती-फटकारती है। तुलनीय : राज० खारी बोली मावड़ी मीठी बोली लोक; पंज० माँ दे कौड़े अते दूजआँ दे मिठे बोल।

माँ के न बाती, बिलाई के गांती—माँ के लिए कपड़ा नहीं और बिल्ली को गाँती बांध रहे हैं। अर्थात् ऐसे व्यक्तियों का तो खूब आदर करना जो किसी काम के नहीं हैं और जिनसे निकट का संबंध है उन्हें उपेक्षा की दृष्टि से देखना। तुलनीय : मग० आई माई के बाती न बिलाई के गाँती; भोज० माई के बाती नां बिलार के गांती।

माँ के परसे, कातिक के बरसे—बच्चे की तृप्ति माँ के खिलाने मे होती है और पृथ्वी की प्यास कार्तिक माह की वर्षा से बुझती है। कार्तिक माह की वर्षा से रबी की फ़सल अच्छी होती है, इसीलिए ऐसा कहते हैं। तुलनीय : कौर० माँ के परसे अर कात्तक के बरसे ई पेट भरे।

माँ के पेट से कोई सीखकर नहीं आता/निकलता—जन्म लेते ही कोई सारे कार्य नहीं जान लेता बल्कि सीखते-सीखते ही आते हैं। जब किसी को काम करना न आता हो, इस कारण यदि वह काम करने से जी चुरावे तो उस पर यह लोकोक्ति कही गई है। तुलनीय : अव० महतारी कै पेटे से कौनो सिख कै नाही आवत; हरि० माँ के पेट में-ऐ सीख कै कूण लिकड़ै सै; राज० मारै पेट में सीख'र कोई को आयो नी; भीली—माँ बाप ना पेट मांए कूण हीकी ने आवे; मरा० उपजतांच कोणी शहाणा नसतो; पंज० माँ दे टिड विचों कोई सिख के नई आंदा; ब्रज० माके पेट ते कोई सीखि कें नायें आवै।

माँ के प्यार से बेटी की खराबी—माँ के अत्यधिक प्यार से लड़की बिगड़ जाती है। जब अत्यंत प्यार के कारण लड़की कोई काम ठीक से न करे अर्थात् आनाकानी करे तो उस पर यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : अव० माई कै दुलार से बिटिया कै खराबी; पंज० माँ दे लाड ते ती दा बिगाड।

माँ के हाथ का भोजन अमृत हो चाहे जहर ही—माँ के हाथ का भोजन अमृत तुल्य होता है, चाहे वह जहर ही क्यों न हो। आशय यह है कि माँ के हाथ का रूखा-सूखा भोजन भी बहुत अच्छा लगता है। तुलनीय : राज० जीमणो मारे हाथरो हुवो भलांई जहर ही।

माँ को न बाप को जो बनेगी सो आपको—अच्छे या बुरे कर्मों का दायित्व माँ-बाप पर नहीं स्वयं करनेवाले पर होता है आशय यह है। कि जो जैसा करेगा वैसा ही फल उसे स्वयं भुगतना पड़ेगा।

माँ खसम करे बेटी डंड भरे—माँ पति करती है और बेटी को दंड भुगतना पड़ता है। जब बुराई कोई करे और उसका दंड किसी और को भुगतना पड़े तब व्यंग्य में ऐसा कहते है। तुलनीय : कौर० माँ खसम करे बेटी डंड भरै।

माँ खाने न दे बाप भीख माँगने न दे—माँ भोजन नही देती और पिता भीख माँगने नहीं देता। अर्थात् (क) किसी लाभ वाले कार्य के करने में यदि दूसरा बाधा उत्पन्न करे तो कहते है। (ख) दोनों ओर से परेशानी उत्पन्न होने पर भी कहते है।

माँग के खाना और मसजिद में सोना—भिक्षा माँगकर पेट भरना, और मस्जिद मे सो जाना। (क) फक्कड़ और निश्चिन्त मनुष्य को कहते है, (ख) जिसके कोई और न हो उसे कहते हैं। तुलनीय : राज० मुफतरो खावणो, मसीत मे सोवणो।

माँग के खायें, बाजार में डकारें—भीख माँग कर पेट भरते है और बाजार मे जाकर डकारते हैं। झूठी शान दिखाने वाले के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : छत्तीस० माग-मांग के खाय, अउ बाजार मां डेकारै।

माँग के लिए गई कोख गंवा आई—पति के लिए गई थी और पुत्र गंवा आई। जब कोई कहीं लाभ के लिए जाय और उलटे हानि कराकर आवे तब उसके प्रति व्यंग्य मे कहते है। तुलनीय : भोज० माँग खातिर गइली कोखिओ गँवा अइली।

माँग खाय वो भूखा न मरे, रिश्ता करे उसका नाम सदा चले—भीख माँगने वाला कभी भूखा नही मरता तथा जो अपने परिवारवालों के विवाहादि करने मे तत्पर रहता है उसके परिवार का नाम सदा बना रहता है। तुलनीय : माल० मांगी खाय अ भूखोनी मरे, ना तो करे वण्डो खोज नी जाय।

माँगत पूत भतार गंवायो—पुत्र माँगने की इच्छा मे गई परन्तु अपने पति को खो बैठी। जहाँ लाभ के उद्देश्य से कोई कार्य किया जाय, किन्तु वहाँ पर लाभ की कौन कहे घर का भी धन व्यय हो जाय उस अवसर पर यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : अव० मनावै गई पूत भतारै उप्फर परगा।

माँगन आवे भीख, तो सुरती खाना सीख—जिसको भीख माँगना न आवे, उसे सुर्ती खाना सीखना चाहिए। तम्बाकू खानेवालों को माँगने की आदत पड जाती है और वे माँगने में बिल्कुल संकोच नही करते है। इसीलिए उनके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : भोज० माँगने न आवे भीख त सुर्ती खाए के सीख।

माँगन मरन समान है—भीख माँगना मरने के बराबर है अर्थात् बहुत ही निकृष्ट कर्म है।

माँगने को भीख दिखाने को आँख—माँगते तो भीख है और दिखाते हैं आँख। जब कोई किसी से कुछ माँगता है और रोब भी दिखाता है तब उसके प्रति व्यंग्य मे ऐसा कहते है। नम्र होने से ही कुछ मिल सकता है, आँख दिखाने से नहीं। तुलनीय : भोज० माँग के भीख देखावे के आँख।

माँगने को भीख पूछने को गाँव का जमा—माँगते है भीख और जानना चाहते है गाँव का पूरा हिसाब-किताब। जब कोई अपनी औकात से बहुत बाहर की बात करे तो व्यंग्य में कहते है। तुलनीय : भोज० माँगे के भीख पूछे के गाँव कऽ जमा; अव० करी गोडयती खोजी गाँव के जमा।

माँगने गई बेटा खो आई भतार—दे० 'माँगत पूत भतार…'।

माँगने से मिलता है खड़खड़ाने से नहीं—बिना मागे किसी को कोई वस्तु नही मिलती। जो व्यक्ति माँगता नहीं किन्तु खड़खड़ाता है उस पर कहा गया है।

माँगने से मिलता है, चुप रहने से नहीं—ऊपर देखिए।

माँगने से मौत भी नहीं आती/मिलती—माँगने से तो मौत भी नही आती और क्या मिलेगा। (क) माँगने से ही कोई इच्छित वस्तु नही मिल जाती उसके लिए परिश्रम भी करना पडता है। अर्थात् बिना परिश्रम के कुछ नही मिलता। (ख) अपने चाहने से कुछ नही होता। जो कुछ होता है वह ईश्वर के चाहने से ही होता है। तुलनीय : राज० माँग्या सूं तो मौत ही को आवे नी या माँग्योडी मौत ही को आवे नी; भोज० मंगले मउतियो नाही आवेले/मिलेले; पंज० मगण नाल मौत वी नई आँदी।

माँगा मठा मोल बराबर—मट्ठा यदि माँगने पर मिले तो वह खरीदे हुए के समान ही होता है। आशय यह है कि यदि कोई बहुत साधारण चीज भी माँगने पर मिले तो कोई लाभ नही है। तुलनीय : भोज० माँगल माठा मोल बराबर।

माँगी अक्ल काम नहीं आती—किसी से माँगी हुई बुद्धि काम नहीं आती। बुद्धि अपनी ही काम आती है। जो व्यक्ति दूसरों की बुद्धि के भरोसे किसी कार्य का बोझ उठाना चाहते हैं उनके प्रति कहते है। तुलनीय : राज०

दियाड़ी अकल किता दिन काम आवै; पंज० मंगी मत कम नई आंदी।

माँगी दाल में बड़ा नहीं बनता —मागकर लाई हुई दाल से बड़ा नहीं बनता। अर्थात् बिना पैसा खर्च किए कोई काम नहीं होता। तुलनीय : अव० माँगे की धोई माँ बरा नहीं बनत; भीली मांग्या घी ऊँ चूरमो नी थाये।

माँगी मौत भी नहीं मिलती — दे० 'माँगने से मौत ···'।

माँगी मौत, मिला बुखार—माँगी थी मौत पर मिला केवल ज्वर। जब किसी व्यक्ति से अधिक वस्तु माँगी जाय और वह थोड़ी-सी देकर अपना पिंड छुड़ा ले तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० मोत वयाँ ताव हुकारै; या मोतरै कैवे, जराँ ताव हंकारै।

माँगे आवे न भीख तो सुरती खाना सीख — दे० 'माँगन आवे भीख तो···'।

माँगे के भीख पूछे गाँव की लगान— दे० 'माँगने को भीख पूछने को···'।

माँगे ताँगे काम चले तो ब्याह क्यों करे - यदि इधर-उधर से काम चल जाय तो ब्याह करने की क्या आवश्यकता? (क) व्यभिचारी पुरुष प्रति कहा गया है। (ख) जब तक अपने पास सामान न हो तब तक काम नहीं चलता। जो मँगनी के बल पर काम चाहते है और उनका काम नहीं हो पाता तब उनके प्रति भी ऐसा कहते है। तुलनीय : अव० माँगे ताँगे काम चल जाय तौ बिआह काहे करै; राज० माँग्या मिलै रे माल, जकारै काँई कमी रे लाल।

माँगे दूध से खोया नहीं बनता—दे० 'माँगी दाल में बड़ा···'।

माँगे धन, न माँगे पूत -माँगने से न तो धन ही मिलता है और न पुत्र ही। आशय यह है कि अपने चाहने से कुछ भी नहीं होता, सब कुछ ईश्वर की इच्छानुसार ही होता है।

माँगे न भीख भूखे मरे, वही नाम ऊँचा करे—जो भूख से मर जाता है, पर भीख नहीं माँगता वही मनुष्य नाम कमाता है। अर्थात् जो व्यक्ति कठिनाइयों में भी स्वाभिमान को नहीं छोड़ता वही बड़ा समझा जाता है। तुलनीय : भीली—पाना मां खाइ, पारधा माँये रेघा, जपना नाम रेघा मेवाड़ मां।

माँगे पर ताँगा, बुढ़िया की बरात—भिखारी से कुछ पाने की इच्छा बुढ़िया से विवाह करने के बराबर है। आशय यह कि भिखारी से माँगना व्यर्थ है। जो लोग निर्धन से कुछ माँगना या प्राप्त करना चाहते हैं उनके लिए कहा गया है।

माँगे बनिया भीख न देय, मुँह मारिके सरबस लेय— बनिया या साहूकार माँगने पर कुछ नहीं देता, परन्तु डराने से सब कुछ दे देता है। (क) जहां पर सीधी तरह काम न चले परंतु भय दिखाने से काम चल जाय वहाँ कहा जाता है। (ख) बनिये बहुत कंजूस होते है लेकिन भय दिखाने पर शीघ्र देने को तैयार हो जाते हैं। तुलनीय : अव० सीधे बनिया चूर न देय, मूका मारे भेली देय।

माँगे भीख और पूछे गाँव का जमा - दे० 'माँगने को भीख पूछने को···'।

माँगे भीख, नाम लक्खूसाह —मागते है भीख और नाम है लक्खू साह (जिसके पास एक लाख रुपया हो)। औक़ात या योग्यता के विरुद्ध नाम होने पर व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : अव० माँगै भीख नाँव लक्खीचन्द।

माँगे भीख, नाम लखपतिराय— ऊपर देखिए।

माँगे भीख पूछे गाँव का जमा —दे० 'मांगने को भीख और पूछने को ···'।

माँगे भीख बघारें शेखी मागते है भीख और बघारते है शेखी। व्यर्थ की शेखी या छोटे द्वारा प्रदर्शित गर्व पर कहते है। तुलनीय : छत्तीस० मही मागे जाय, पछीत ठेकआ लुकाय; भोज० मागे के भीख बघारे क सेखी।

माँगे मान न पाइए सकति सनेह न होय आदर और प्रेम, माँगने तथा ज़बरदस्ती करने से नहीं होता। जब कोई व्यक्ति किसी से अपने सम्मान हेतु प्रार्थना करता है तथा प्रेम करने के लिए ज़बरदस्ती करता है तब उस पर यह लोकोक्ति कही जाती है।

माँगे मिले न चार, पूरे-पूरे पुन्न बिन; इक विद्या, एक नार, घर-संपत्ति, शरीर सुख -बिना पुण्य कर्म किये ये चार—विद्या, पत्नी, गृह-सम्पत्ति और शारीरिक सुख - नहीं मिलते।

माँगे मौत भी नहीं मिलती दे० 'माँगने से मौत भी ···'।

माँगे हड़ दे बहेड़ा - माँगा जाता है हड़ परन्तु मिलता है बहेडा। (क) आज्ञा के विपरीत कार्य करने वाले पर यह लोकोक्ति कही गई है। (ख) बहरे व्यक्तियों के प्रति भी व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : अव० माँगै आय, मिलै अमली; राज० हिरडा मागितला तर बेहडा देतो।

माँ चाहे बेटी को, बेटी चाहे मोटे धींग को माँ लड़की को चाहती है लेकिन लड़की अपने प्रेमी को चाहती है।

अर्थात् लड़की को उसका पति या प्रेमी सबसे प्रिय होता है। तुलनीय : राज० मायडको मन धीयड़ सूं, धीयड़ को मन धींगा मूं; कौर० मां मरी धी कू, धी मरी धींगड़ों कू।

माँ छोड़ मौसी से मजाक—दुराचारी लोग मां से क्या मौसी से भी जो माँ के ही समान होती है ऐसी मजाक कर लेते हैं।

माँ जुटावे कन-कन, बेटा लुटावे मन-मन—माँ एक-एक कण लाकर इकट्ठा करती है और लड़का एक-एक मन लुटाता है। जब कोई थोड़ा-थोड़ा करके धन संग्रह करे और दूसरा उसे बर्बाद करे तब ऐसा कहते हैं।

माँ टेनी बाप कुलंग, लड़के निकले रंग-बिरंग—स्त्री-पुरुष दोनों जब दो जाति के होते हैं तो उनसे उत्पन्न संतानें भी भिन्न-भिन्न होती हैं। वर्ण-संकर लोगों के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : अव० माई टेनी बाप कुलंग, बच्चा निकरे रंग बेरंग।

माँ डायन हो तो क्या पूत को खाय—माँ यदि डायन होती है तब भी अपने बच्चे को नहीं खाती। आशय यह है कि अपना अनिष्ट कोई नहीं करता, भले ही वह स्वयं दूसरों के लिए घातक हो। तुलनीय : अव० महतारी डाइन होई तौ का बच्चवा का थोरौ खाइ जाई; कौर० मां डायण हो तो के पूत कूं खाय।

माँ तेलिन बाप पठान, बेटा शाख-ए-ज़ाफ़रान—दे० 'माँ एली, बाप तेली…'।

माँ धोबिन, पूत बजाज—(क) माँ तो धोबिन का कार्य करती है परन्तु पुत्र बजाज का कार्य करता है। योग्यता या जाति के विपरीत काम करने पर कहा जाता है। (ख) माँ तो धोबिन है और पुत्र बजाज। योग्यता या जाति के विरुद्ध नाम होने पर भी कहा जाता है। तुलनीय : अव० माई धोबइन पूत बजाज; पंज० मां तां मर गई कपफन बाजों वे पुत्त मंगावे सूट।

माँ न माँ का जाया, सभी लोक पराया—जहाँ न अपनी माँ है न भाई वह स्थान विदेश के समान है। आशय यह है कि विदेश में मनुष्य को बहुत संभलकर रहना चाहिए। जब किसी स्थान में माँ तथा भाई के अभाव में किसी को कष्ट हो उस समय यह लोकोक्ति कही जाती है।

माँ नारंगी, बाप कौला, बेटा रोशनुद्दौला—दे० 'माँ एली…'।

माँ पनिहारी बाप कंजर, बेटा मिरजा संजर—दे० 'मां धोबिन पूत बजाज…'।

माँ पर पूत पिता पर घोड़ा, बहुत नहीं तो थोड़ा-थोड़ा—माँ-बाप का बच्चों पर प्रभाव अवश्य पड़ता है, चाहे अधिक या कम। तुलनीय : कौर० माँ पर पूत पिता पर घोड़ा, भोत नईं तो थोड़ा-थोड़ा; फा० अगर पिदर न तवानद पिसर तमाम कुनाद; अ० अलवलद सिर्रुहू लि अबीही; पंज० मा पर पूत बाप पर घोड़ा बोत नईं तो थोड़ा-थोड़ा।

माँ पर बेटी पिता पर पूत—प्रायः मां के गुण-दोष एवं रूप बेटी में तथा बाप के बेटे में होते हैं। तुलनीय : गढ़० माँ जाणी धी, बाबू जाणी पूत।

माँ पिसनहारी अच्छी और बाप हफ्तहजारी कुछ नहीं—माँ चाहे पिसनहारी क्यों न हो अच्छी होती है परन्तु बाप चाहे हफ्तहजारी ही क्यों न हो उतना अच्छा नहीं होता। बाप की अपेक्षा माँ का स्नेह अपनी संतान पर दस गुना होता है, इसलिए यह लोकोक्ति कही जाती है।

माँ पिसनहारी पूत छैला, चूतर पर बाँधे बूर का थैला—माँ पीसने का कार्य करती है, इसलिए उसका लड़का भूसी के सिवा और किस चीज से शौक करेगा? आशय यह कि जिसके पास जो चीज रहती है वह उसी से अपना शौक पूरा करता है। जब कोई व्यक्ति अपने मामूली साधनों द्वारा ही अपने शौक पूरा करे तो उसके प्रति कहा जाता है।

माँ पीटी कहो चाहे बाप पीटी—दोनों का तात्पर्य गाली देना ही है केवल कुछ शब्दों में अंतर है। जो व्यक्ति एक ही बात को घुमा-फिराकर कहे उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : राज० मा पीटी कहो भावै, बाप-पीटी कहो।

माँ पै पूत पिता पै घोड़ा, बहुत नहीं तो थोड़ा-थोड़ा—दे० 'माँ पर पूत…'।

माँ प्यारी या खा प्यारी?—मां अधिक प्यारी है या खाना? अर्थात् जो खाने को दे वह माँ से भी प्यारा होता है। जिससे स्वार्थ सिद्ध होता हो वह सबसे अधिक प्रिय होता है और उसी की सबसे अधिक देख-भाल तथा परवाह की जाती है। तुलनीय : राज० माई नाबस खाई प्यारी।

माँ फिरे चोंत-चोत पूत गोहरौला छोड़े—मां तो एक-एक चोंथ के लिए घूमती है और बेटा गोहरौला को भी छोड़ देता है। जब कोई दिन-रात श्रम करके धन-संचय करे और दूसरा मस्ती से घूमे तब ऐसा कहते हैं। (चोंत (चोंथ)—पशु द्वारा एक बार में किया गया गोबर का ढेर, गोहरौला—उपलों का ढेर)। तुलनीय : कौर० मां फिरै चोंथी-चोंथी पूत बिटौड़ा बक्सै।

माँ बच्चे की, जोरू बूढ़े की कभी न मरे—बच्चे की माँ और वृद्ध की पत्नी कभी न मरे। इनके मरने से दोनों असहाय हो जाते हैं और कष्ट झेलते है।

माँ-बाप की गालियाँ, घी की नालियाँ—माँ-बाप की गालियाँ संतान के लिए घी के समान है। माँ-बाप के कठोर वचन संतान के भले के लिए ही होते हैं। जो उनके कठोर वचनों को मानकर और समझकर चलता है वही जीवन में सुख पाता है। तुलनीय : राज० माई तांरी गाळयां घीरी नाळयां; पंज० माँ-पिओ दिआं गालां की दिया नालां।

माँ-बाप जन्म देते हैं, दिमाग़ नहीं—माँ-बाप जन्म-भर देते हैं, बुद्धि मनुष्य को स्वयं परिष्कृत करनी पड़ती है। स्वयं के प्रयत्न और परिश्रम द्वारा ही विद्वान बना जा सकता है। तुलनीय : भीली—माँ-बाप जनम दिए अकल न दिए; पंज० माँ पिओ जमदे ने मत नईं देंदे।

माँ-बाप जन्म देते हैं, भाग्य नहीं—माँ-बाप केवल बच्चे पैदा करते हैं, भाग्य का बनाना उनके हाथ मे नही होता। जब किसी की संतान कष्टमय जीवन व्यतीत करती है तब ऐसा कहते हैं।

माँ-बाप पैदा करते हैं, साथ नहीं देते—माता-पिता जन्म देते हैं, जीवन-भर साथ नहीं देते। माँ-बाप के ऊपर निर्भर रहना उचित नही है। जीवन को अपने बल पर बिताना पड़ता है। स्वावलंबी व्यक्ति ही सफलता और सुख प्राप्त करता है। तुलनीय : भीली—मां-बाप जनम दियें, जमारो हाथ नी दीये।

माँ-बाप जीते कोई हराम का नहीं कहलाता—दे० 'माँ-बाप रहते कोई···'।

माँ-बाप मीठे मेवे हैं—माँ-बाप मेवे के समान लाभदायक और गुणकारी होते हैं। आशय यह है कि माँ-बाप से बहुत सुख मिलता है। तुलनीय : राज० मां-बाप मीठा मेवा है; पंज० माँ पिओ मिठा मेवा है।

माँ-बाप रहते, कोई हराम का नहीं कहलाता—यदि किसी के माँ-बाप जीवित हैं तो उसकी कुलीनता में कुछ भी संदेह नहीं है। जब कोई अपनी बात या दावे का सबूत देने देने को तैयार हो तब कहा जाता है। तुलनीय : अव० माई बाप के रहत कौनो हरामी नहो कहावत।

माँ-बेटियों में लड़ाई हुई, लोगों ने जाना बैर पड़ा—माँ-बेटी के झगड़े को झगड़ा नहीं कहते। लोग कहते हैं कि दुश्मनी हुई पर वास्तव में ऐसा नहीं होता। जब आपस में लड़ाई होने पर लोग नासमझी से उनके बीच में बैर समझ लें तब यह लोकोक्ति कही जाती है।

माँ-बेटी गाने वाली, बाप पूत बराती—माँ-बेटी गाती है और बाप तथा लड़का बरात आए है। (क) ग़रीब आदमी की शादी पर कहते हैं। (ख) जब किसी यज्ञ में घर के लोगों के अतिरिक्त और कोई सम्मिलित नहीं होता तब भी कहते हैं। तुलनीय : अव० महतारी बिटिया गौनहर, बाप-पूत बराती; कौर० माँ धी गाणहारी, बाप्प पूत बरात्ती।

माँ-बेटों में छिनाला नहीं छिपता—निकट संबंधियों या पड़ोस में रहने वालों से कोई दोष छिपाया नहीं जा सकता।

माँ बोले सो कड़वा, पड़ौसी बोले सो मीठा—माँ सच बात कहती है, इसलिए उसकी बात बुरी लगती है और पड़ौसी खुशामद करते है, इसलिए उनकी बाते अच्छी लगती हे। माँ बच्चों को सुधारने के लिए डाँटती-फटकारती है, लेकिन दूसरे लोगों को इन चीज़ों से कोई मतलब नहीं होता, इसलिए वे मीठी-मीठी बातें करते हैं। तुलनीय : मेवा० कड़वो बोल्यो मायड़ो मीठो बोल्यो लोग।

माँ भटियारी पूत तीरंदाज—माँ भटियारी है और बेटा तीर चलाता है। नीचे देखिए।

माँ भटियारी पूत फतेह खाँ—माँ तो भटियारी है और बेटा फ़तेह खाँ बना घूमता है। (क) जो व्यक्ति अपनी वास्तविकता को छुपाकर अपने को बहुत सम्मानित व्यक्ति बताए उसके प्रति व्यंग्य से कहते है। (ख) जो व्यक्ति अपनी सामर्थ्य के विरुद्ध कार्य करे उसके प्रति व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : राज० मा भटियारी, पूत फतै खा है।

माँ भी बच्चे को बिना रोए दूध नहीं देती—बिना रोए बच्चे को माँ भी दूध नहीं पिलाती। आशय यह है कि बिना माँगे कोई चीज़ नहीं मिलती। तुलनीय : तेलु० तल्लि अयिना येड़वनिदे पालिव्वदु; पंज० माँ वी बच्चे नूं रोण तो बगैर दुद नईं देंदी; ब्रज० माँ अपने बच्चाऐ बिना रोयें दूध नाय प्यावै।

माँ मर गई अँधेरे में बेटी का नाम रोशनी—माँ तो अँधेरे में ही मर गई लेकिन बेटी का नाम रोशनी है। हैसियत के विरुद्ध नाम होने पर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : कौर० मां मरगी अंधेरे में, धी का नाम रोसनी।

माँ मर गई प्यासी पूत (बेटे) का नाम जमना—ऊपर देखिए।

माँ मरे धी को धी मरे धींगड़ों को—दे० 'माँ चाहे बेटी को···'।

माँ मरे पर आन न जाए—चाहे माँ भी मर जाए किंतु अपना वचन भंग न हो। माँ से अधिक प्रिय वस्तु कदाचित ही कोई दूसरी हो। जो व्यक्ति अपनी हठ या वचन के बहुत

पक्के हों उनके प्रति प्रशंसा से इस प्रकार कहते हैं । तुलनीय : गढ़० माँ मरो पर मर्जाद ना मरो।

मां मरे मौसी जिये जो मोसी सी होय—यदि मौसी वास्तव में मौसी हो तो वह माता से भी बढ़कर है। मौसी का प्रेम प्रायः माता का-सा ही होता है, इसलिए यह लोकोक्ति कही जाती है ।

मां मरे मौसी जीवे—चाहे माँ मर जाय परंतु मौसी न मरे। मौसी का प्रेम माता से भी बढ़कर होता है, इसलिए यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : अव० महतारी मरै, मौसी जियै ।

माँ ! मां ! मक्खी काटती है, कहा—बेटा उड़ा दे; मां दो हैं—बच्चा कहता है कि ऐ माँ ! मुझे मक्खी काट रही है, मां कहती है कि बेटा उसे उड़ा दो; तो बच्चा कहता है कि कैसे उड़ाऊँ, मक्खियाँ दो है । आलसियों के प्रति व्यंग्य में कहते है । तुलनीय : राज० ए माँ ! माँ ! माखी; कै बेटा उड़ाय दे; माँ ! माँ दोय है ।

मां मां ! मैं मामा के घर जाऊं, जाना है तो जा ,पर है तो मेरा ही भाई—माता के कठोर नियंत्रण से डरकर पुत्र ने मामा के घर जाने की आज्ञा चाही। तब माँ ने कहा—जाना चाहते हो तो जाओ पर स्मरण रक्खो कि वह भाई तो मेरा ही है अर्थात् मुझसे वह कम नहीं है । एक आपत्ति से बचकर दूसरी की ओर जाने वाले के प्रति व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : माल० माँ ए माँ मामा रे जाऊँ, जान बेटा भाई तो माराज है।

मां मां ही है माता ही माता का निःस्वार्थ प्रेम दे सकती है। संसार में माँ के अतिरिक्त और सभी स्वार्थवश ही प्रेम करते हैं । तुलनीय : भीली माँ तो एक माँ है; पंज० माँ ते माँ ही है ।

मां मारे और मां ही मां पुकारे—माँ दण्ड भी देती है और रक्षार्थ उसी की दुहाई भी दी जाती है। (क) जिससे कष्ट मिले उसी की दुहाई दे तब कहा जाता है । (ख) माँ यदि बुरी होती है तब भी बहुत प्रिय होती है । तुलनीय : पंज० माँ तो कुट खा के वीर माँ आखे।

मां मारे दूसरों को मारन न दे—माँ चाहे स्वयं मार ले पर दूसरो को नहीं मारने देती । क्योंकि माँ-सा प्रेम दूसरे में नहीं है। पालन-पोषण करने वाला दण्ड भी दे सकता है, किन्तु यदि पालन-पोषण करे एक आदमी और दण्ड दे दूसरा तब यह लोकोक्ति कही जाती है । तुलनीय : पंज० माँ आप मार दी है दुजियाँ नूं नई।

मां मुझे प्रसव-पीड़ा हो तो जगा देना, कहा—बेटी ! तुम तो खुद पूरे गाँव को जगा दोगी—आशय यह है कि परेशानी या विपत्ति के विषय में किसी को सूचित नहीं करना पड़ता बल्कि जिस पर परेशानी या विपत्ति पड़ती है वह स्वयं दूसरों को उसकी सूचना देता है।

माँ मूली, बाप प्याज—माँ मूली के समान है और बाप प्याज के। जिसके माँ-बाप बुरे हों उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : मि० मा पूरी पी बसर (प्याज) बिनी खां कसर (मूली कड़वी और प्याज अगर होती है) ।

माँ रोवे तलवार के घाव से, बाप रोवे तीर के घाव से—माँ और बाप दोनों किसी-न-किसी दुख से दुखी हैं। अर्थात् माता-पिता अपने पुत्र के तरह-तरह के अत्याचारों से सताए जाते हैं।

माँ ललचाए, पड़ोसिन पूत खिलावे—जिस माँ ने पुत्र को पैदा किया वह तो उसे छूने को तरसे और पड़ोसिन पुत्र को खिलाने का आनंद उठाए, ऐसी दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति में कहते हैं। तुलनीय : अव० जी बियानी ती ललानी पड़ोसिन पूत खिलानी ।

मांस कच्चा, खाए गच्चा—बहुत उतावली करनेवालों को जब हानि पहुँचे तो उनके प्रति ऐसा कहते है। तुलनीय : गढ़० कच्चा माँसू की सी रग डग लगी छ।

मांस की मोटरी गीद्ध रखवाली—मास का खानेवाला गिद्ध मांस की रक्षा नहीं कर सकता । जब भक्षक को ही रक्षक बनाया जाय तब कहा जाता है ।

मांस के ढेर पर गिद्ध रखवार—ऊपर देखिए।

मांस दुनिया खाए, पर हड्डी कोई न लटकाए—मास सभी खाते है पर कोई हड्डी लटकाकर नहीं चलता। (क) बुराई सभी करते है पर कोई उसका प्रचार करता नहीं फिरता । अर्थात् यदि बुरे कर्म किए भी जायँ तो समाज की नजरों से बचाकर करने चाहिए । (ख) अपने मतलब की चीज को ही लोग ग्रहण करते है और व्यर्थ की चीज़ को फेंक देते है । तुलनीय : कौर० मास दुणिया खाव्वै, गळे में हड्डी कोई ना लटकाव्वा ।

माँ साग घोटनी मर गई, पूत टमाटर माँगे—माँ साग पकाते मर गई और बेटा टमाटर माँग रहा है। सामर्थ्य से बढ़कर बातें करने वाले के प्रति व्यंग्य में कहते है। तुलनीय : कौर० मां साग घोटती मरगी, मेठ् में पूत टमाटर मांगे।

माई क सीख कोहबर तक—माँ की दी हुई शिक्षा कन्या को कोहबर तक ही याद रहती है। उसके बाद उसे अपनी बुद्धि से ही काम करना पड़ता है। अर्थात् दूसरे की सीख दूर

तक हमारी सहायता नहीं करती। (कोहबर वह स्थान है जहाँ विवाह के समय देवता स्थापित किए जाते हैं)।

माई का जी गाई, पूत का जी कसाई—माँ का दिल गाय जैसा होता है और पुत्र का क़साई जैसा। अर्थात् पूत कपूत हो सकता है पर माता कुमाता नहीं होती। तुलनीय: मग० मइआ के जीउ गइआ नियर पूता के जीउ कसईआ नियर। भोज० पूत क जी कसाई माई क जी गाई।

माई के न सिन्दूर बिलाई के भर माँग—माँ के लिए सिन्दूर नहीं है लेकिन बिल्ली की माँग-भरने के लिए है। अर्थात् अपने सगे-संबंधियों की उपेक्षा करके ऐसे व्यक्तियों का आदर-सत्कार करना जो किसी काम के नहीं है। तुलनीय: मग० आई माई के टीका न बिलाई के भरमंगा; मैथ० आई माई के ठोपे ने विलाई के भरि माँग; भोज० बिलार के माँग भर सेनुर माई की टीकहु के नाँ।

माई धोबिन पूत बजाज—दे० 'माँ धोबिन पूत…'।

माई बाप को लातन मारे, मेहरी देख जुड़ाय, चारों धामें जो फिरि आवे तबौ पाप ना जाय—जो मनुष्य अपने माता-पिता को मारता है, अपनी स्त्री को देखकर खुश रहता है, ऐसा व्यक्ति यदि चारों धामों में हो आवे तब भी उसका पाप कम नहीं हो सकता। जो व्यक्ति माता-पिता का अनादर करते हों और पत्नी के कहने के अनुसार ही कार्य करते हैं उनके प्रति ऐसा कहते है।

माई-बाप चंगा, बेटी-बेटा बंगा—अच्छे माता-पिता की मूर्ख संतान के प्रति कहते हैं।

माई! माई! बहुत ब्याई—माई तुम्हारी जैसी और भी बहुत ब्याई हैं अर्थात् तुम्हारे अतिरिक्त और भी बहुत-सी माताओं ने पुत्रों को जन्म दिया है। जब एक कार्य की की सिद्धि के लिए बहुत से व्यक्ति और साधन मिलते हों तो किसी ऐसे व्यक्ति के प्रति व्यंग्य से कहते हैं जो इस कार्य को करने में आना-कानी करता हो या अपने आपको ही निपुण समझता हो। तुलनीय: राज० माई! माई! भोज बियाई।

माई मासे बाप छमासे; और लोग सब बारह मासे—लड़का एक मास का होने पर अपनी माँ को, छह मास का होने पर अपने पिता को तथा एक साल का होने पर और लोगों को पहचानता है।

माघ अँधेरी सप्तमी, मेह बिज्जु दमकंत; मास चार बरसै सही, मत सोचै तू कंत—हे स्वामी! यदि माघ बदी सप्तमी को बादल हों और बिजली चमके तो तुम सोच मत करो क्योंकि चारों माह तक अर्थात् बरसात-भर वर्षा होगी।

माघ अमावस गर्भगय, जो कोहु भाँति बिचारि, भादों की पून्यो दिवस, बरसा पहर जु चारि—माघ की अमावस्या यदि वृष्टि के गर्भ से मुक्त हो तो भादों की पूर्णिमा को चार पहर वर्षा होगी।

माघ उजेरी अष्टमी बार होय जो चंद; तेल घीव को जानिए, महँगो होय दूचंद—यदि माघ के शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि को सोमवार पड़े तो तेल और घी दूना महँगा होगा।

माघ उजेरी चौथ को, मेंह बादरो जान; पान और नारेल नै, महँगौ अवसि बखान—माघ सुदी चौथ को बादल हो और पानी बरसे तो पान और नारियल अवश्य महँगे होंगे।

माघ उजेरी पंचमी, परसै उत्तम बाय; तो जानो ये भादवौ, बिन जल कोरौ जाय—यदि माघ सुदी पंचमी को उत्तमा वायु चले तो यह समझना चाहिए कि यह भादों भी बिना जल के सूखा जायेगा, अर्थात् वर्षा नहीं होगी।

माघ उज्यारी तीज को बादर बिज्जु जु देख; गेहूँ जौ संचय करौ, महँगो होसी पेख—माघ सुदी तृतीया को यदि बादल और बिजली दिखलाई पड़ें तो अन्न महँगा होगा। इसलिए गेहूँ और जौ को इकट्ठा करो।

माघ उज्यारी दूज दिन, बादर बिज्जु समाय; तो भाखै यों भड्डरी, अन्न जु मंहगो लाय—भड्डरी कहते हैं कि माघ सुदी द्वितीया को यदि बिजली बादल में समाते हुए दिखलाई पड़े तो अन्न महँगा होगा।

माघ क ऊखम जेठ क जाड़, पहिले बरखा भरिगा ताल; काहें घाघ हम होब बियोगी, कुँआ खोदि के धोइहे धोबी—घाघ की उक्ति है कि यदि माघ मे गर्मी तथा जेठ में जाड़ा पड़े और प्रथम वर्षा में ही ताल-तलाब, भर जायं तो अवश्य सूखा पड़ेगा। यहाँ तक कि कपड़ा धोने के लिए भी पानी न मिलेगा और धोबी कुँआ खोदकर काम चलाएँगे।

माघ का जाड़ा जेठ की धूप, बड़े कष्ट से उपजे ऊख—ईख (ऊख) की खेती में बहुत कष्ट उठाना पड़ता है इसके लिए माघ की कड़ी ठंडक तथा जेठ की तेज़ धूप को भी सहन करना पड़ता है। जब कोई व्यक्ति ऊख तो बो दे परन्तु आलस्यवश उसकी ठीक से कमाई न करे तो उसके प्रति यह लोकोक्ति कही जाती है।

माघ की कन्या माघ—लोक-विश्वास के अनुसार माघ महीने में या मघा नक्षत्र में उत्पन्न हुई लड़की बड़ी ही कर्कश स्वभाव की होती है। तुलनीय: मैथ० माघ क कनिया बाघ।

माघ छठी गरजै नहीं, महँगो होय कपास; सातैं देखा निर्मली, तो नाहीं कछु आस—माघ सुदी छठ को यदि बादल नही गरजते हैं तो रुई महँगी होगी। किन्तु यदि सप्तमी को आकाश स्वच्छ रहे तो पैदा ही न होगी।

माघ जु परिवा ऊजली, बादर वायु जु होय; तेल और सुरही सबै, दिन-दिन महँगो होय—माघ सुदी प्रतिपदा को यदि हवा चलती रहे और बादल भी हों तो तेल और घी महँगे होते जाएँगे।

माघ जो सावैं कज्जली, आठैं बादर होय; तो आसाढ़ में धूरवा बरसै, जोसी जोय—ज्योतिषी को यह देख लेना चाहिए कि यदि माघ बदी सप्तमी और अष्टमी को बादल हों तो आषाढ के माह में पानी गिरेगा।

माघ तिला तिल बाढ़े, फागुन गोड़े काढ़े—माघ के महीने से दिन थोड़ा थोड़ा बढ़ने लगता है और फाल्गुन के महीने में तो काफ़ी बड़ा हो जाता है। यह लोकोक्ति दिन के बढने तथा छोटे होने के सम्बन्ध में कही जाती है। कुछ लोकोक्ति की पुस्तकों में यह गर्मी के सम्बन्धमें कही गई है। तुलनीय: अव० माघ तिला तिला दिन बाढै, फागुन झोझा काढै।

माघ नंगे बैसाख भूखे—माघ के महीने में जबकि कड़ाके की ठंडक पड़ती है उस समय बेचारे ग़रीब बिना वस्त्र के ही उसे बर्दाश्त करते है, उमी प्रकार बैशाख के महीने में वे भूखे ही रह जाते है। निर्धन और अभागे मनुष्यों की दयनीय दशा पर यह लोकोक्ति कही गई है।

माघ पाँच जो हो रबिवार, तो भी नो सी समय विचार—माघ के महीने में यदि पाँच रविवार पड़ें तो भी समय अच्छा ही होगा।

माघ पूस की बादरी और कुआरी घाम, जो एका सहै तो करे पराया काम—माघ-पूस की बदली और क्वार माह की धूप को जो सह सकता है, वही दूसरे का काम कर सकता है। अर्थात् नौकरी करना बहुत कठिन होता है। तुलनीय: अव० माघ-पूम कै बादरी औ कुआरी घाम, इ सहै तो करै पराया काम।

माघ पूस जो दखिना चलै, तो सावन के लच्छन भलै—माघ-पूस के महीने में दखिनाई बहने से सावन के शुभ लक्षण दिखाई देते हैं।

माघ पूस में बहै पुरवाई तब सरसों का माहूँ खाई—माघ-पूस में पुरवा हवा चलने से सरसों में माहूँ नाम के कीड़े लगते हैं।

माघ मँघारै, जेठ में जारै, भादों सारै, तेहर मेहरी डेहरी पारै—जो मनुष्य गेहूँ के खेत को माघ में जोतता है जिसमें कि जेठ की धूप में उसमें की घास सूख जाती है और फिर उसे भादों में भी जोतता है तो उसकी स्त्री गेहूँ रखने के लिए कोठिला बनाती है। अर्थात् इस प्रकार से तैयार किए हुए खेत में गेहूँ बहुत उत्पन्न होता है।

माघ महीना बोइए झार, फिर राखौ रबी की डार—माघ में उड़द को साफ़ करके रख दो, फिर रबी के लिए खेत तैयार करो।

माघ मास की बादरी, औ क्वार का घाम; ये दोऊ जो सहैं, करैं किसानी काम—दे० 'माघ पूस कीबादरी...।'

माघ मास की बादरी औ कुवार का घाम, यह दोनों जो कोऊ सहै, करै पराया काम—ऊपर देखिए।

माघ माह जो परै न शीत, महँगा नाज जानियो मीत—हे मित्रो! यदि माघ के महीने में सर्दी पड़े तो समझना चाहिए कि अन्न महँगा रहेगा।

माघ में गरमी जेठ में जाड़, घाघ कहैं हम होब उजाड़—घाघ कहते है कि यदि माघ मे गर्मी तथा जेठ मे जाड़ा पड़े तो हम लोग उजड़ जायँगे अर्थात् पानी नहीं बरसेगा।

माघ में बादर लाल धरै, तब जान्यो साँचो पथरा परै—यदि माघ में आकाश पर रक्तवर्ण के मेघ दिखाई दे तो निश्चय ही पत्थर पड़ेगा।

माघ सत्तमी ऊजली, बादल मेघ करंत, तो असाढ़ में भड्डली, घनो मेघ बरसंत—यदि माघ सुदी सप्तमी को बादल खूब हों तो भड्डरी कहते है कि आषाढ़ के माह में वर्षा भी खूब होगी।

माघ सुदी आठैं दिवस, जो कृतिका रिखि होय; कौ फागुन रोली पड़ै, की सावन महँगो होय—माघ सुदी अष्टमी को यदि कृत्तिका नक्षत्र हो तो या तो फागुन के मास में अकाल पड़ेगा या सावन मे महँगी होगी।

माघ सुदी जो सत्तमी, बिज्जु मेह हिम होय; चार महीना बरससी सोक करौ मति कोय—यदि माघ सुदी सप्तमी को बिजली चमके, वर्षा हो तथा सर्दी बहुत पड़े तो चार माह बरसात खूब होगी, कोई शोक न करे।

माघ सुदी जो सत्तमी, भौमवार की होय, तो भड्डर जोसी कहैं नाजु किरानो लोय—यदि माघ सुदी सप्तमी मंगलवार को पड़े तो अन्न मे कीड़े लगेंगे।

माघ सुदी जो सत्तमी, सोमवार दीसंत, काल पड़ै राजा लड़ैं, सगरे नरां भ्रमंत—माघ सुदी सप्तमी को यदि सोमवार हो तो अकाल पड़ेगा, राजा युद्ध करेंगे और लोग भोजन की खोज में घूमेंगे। अर्थात् बहुत बुरा समय होगा।

माघ सुदी पून्यो दिवस, चन्द निर्मली नोय; पशु बेंचौ कन संग्रहौ, काल हलाहल होय— माघ की पूर्णिमा को यदि चन्द्रमा स्वच्छ दिखाई दें तो समझ लो कि अकाल पड़ेगा। अतः पशुओं को बेचकर अनाज एकत्रित करना चाहिए।

माघे जाड़ न पूसे जाड़, जबै बतास तबै जाड़—न तो माघ में जाड़ा पड़ता है और न पूस में वरन् जब भी हवा चलती है उसी समय जाड़ा पड़ने लगता है। जब बिना मौसम के वायु के चलने से ठंडक बढ़ जाय उस समय यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय: अव० माघै जाड़ न पूसै जाड़, जबहीं बौखा तबही जाड़।

माछी खोजै घाव, राजा खोजै दाँव— मक्खी (माछी) घाव की तलाश करती है और राजा मौके की ताक में रहता है कि कब उचित अवसर मिले और दुश्मन से बदला ले। आशय यह है कि सबको अपना-अपना ही स्वार्थ नज़र आता है।

माजू की जोरू शैतान का घोड़ा, जितना कूदे उतना थोड़ा—दूसरे ब्याह की स्त्री और शैतान का घोड़ा जितना उछले-कूदे थोड़ा ही है। दूसरे ब्याह की स्त्री के बहुत नाज़-नखरे होते है इसीलिए यह लोकोक्ति कही गई है।

माट का माट ही बिगड़ा- जहाँ सबकी मति भ्रष्ट हो गई हो वहाँ पर यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय: हरि० आवा का आवा-ऐ खराब सै।

माटी की देवी टीके में ही गई—मिट्टी की देवी हो तो टीका लगाते-लगाते ही समाप्त हो जाएगी। कोई उपयोगी वस्तु टिकाऊ न हो तो कहते है। तुलनीय: कनौ० माटी की देवी, टीकनै-टीकन को भई।

माटी की भवानी टीका-टीका में बिलानी—ऊपर देखिए।

माटी की भवानी पीना का नौबेद—दे० 'जैसी देवी वैसी पूजा।' (पीना चावल के मामूली लड्डू)।

माटी की मूरत चंदन में ग़ायब—दे० 'माटी की देवी···'।

माठा पिए और दूध बतावे- वस्तुतः पीते है माठा परन्तु पूछने पर बताते है दूध। किसी की झूठी शेखी व घमंड पर कहा जाता है। तुलनीय: पंज० लस्सी पी के दुद दसण।

माता का प्यार पुत्र का बिगाड़—माँ के अधिक प्यार से लड़के बिगड़ जाते है। तुलनीय: पंज० मां दा पयार पुत दा विगाड़।

माता का हाथ, भाई का साथ—माता के समान प्रेम करने वाला, और भाई के समान सहायक इस संसार में दूसरा कोई नहीं है।

माता के परसे, भादों के बरसे—भोजन की तृप्ति तभी होती है जब वह माता के हाथ से मिले, क्योंकि माता के समान प्रेमपूर्वक भोजन देने वाला इस संसार में दूसरा कोई नही है। उसी प्रकार बिना भादों मास की वर्षा के पृथ्वी को तृप्ति नहीं होती। माता के अभाव में जब अन्य व्यक्ति द्वारा दिए गए भोजन से किसी का पेट न भरे, तथा भादों के महीने में वर्षा का अभाव हो उस समय यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय: अव० महतारी कै परोसे पै औ, भादों कै बरसे पै पेट भरत है।

माते पूत पिता ते घोड़ा, बहुत न होय तो थोड़मथोड़ा—दे० 'माँ पर पूत पिता पर···'।

मात्स्यन्यायः—मछली का न्याय। प्रस्तुत न्याय का उदाहरण सबल व्यक्तियों द्वारा निर्बल व्यक्तियों पर दबाव के प्रसंग में दिया जाता है।

माथ मुड़ाय फ़जीहत भये, जात-पात दोनों से गये—माथ मुड़ाकर अच्छी बेइज्ज़ती हुई क्योंकि जाति और पाँति दोनों ही तरफ से उनका बहिष्कार होने लगा। कोई ऐसा कार्य करना जिससे हर तरह से नुक़सान हो। एक मनुष्य सिर घुटाकर फ़कीर हो गया इस ख़याल से कि भिक्षा माँग कर जीविका चलाना सरल है। परंतु कुछ दिनों बाद उसे यह मार्ग पसंद न आया, अतः उसने फिर से अपनी जाति में मिलना चाहा। किन्तु जातिवालों ने उसे अपनी जति में न लिया। दे० 'पाँडे दोउदीन से गये'।

माथे चाँद ठोढ़ी तारा—सौंदर्य की प्रशंसा करते समय कहते है कि उसका माथा चाँद जैसा सुदर है और ठोढ़ी तारे की भाँति चमकती है।

माथे तिलक मधुरी बानी, दगाबाज की यही निशानी
दग़ाबाजों की यही पहचान होती है कि वे ललाट पर तिलक लगाते हैं और मीठी बोली बोलते है। ढोंगियों के प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

माथे पर टोपी नहीं कुत्ते को पैजामा—अपने सिर पर टोपी नही है और कुत्ते के लिए पैजामा सिलवाया है। झूठी शान दिखानेवालों के प्रति व्यंग्य में कहते है।

मा दरचे ख़यालेम-ओ-फ़लक दरचे ख़याल—हम कुछ सोच रहे हैं और आसमान (भाग्य) कुछ। आशा के विपरीत किसी घटना के घट जाने पर कहा जाता है।

मान का पान अपमान का लड्डू—प्रेम तथा आदर के साथ पान भी दिया जाय तो अच्छा है किन्तु अपमान के

साथ अगर लड्डू भी दिया जाय तो व्यर्थ है। (क) जब किसी मनुष्य को कोई अच्छी वस्तु अपमान तथा अनादर से प्राप्त हो उस समय यह लोकोक्ति कही जाती है। (ख) जब साधारण वस्तु भी किसी के द्वारा प्रेमपूर्वक प्राप्त हो उस पर भी यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : अव० मान कै मकुनी, बे मान कै लेड़आ; मरा० मानाचें पान, अपमाना चा लाडू।

मान का पान भी बहुत होता है—आदरपूर्वक यदि पान भी दिया जाय तो बहुत है। आशय यह है कि आदर-पूर्वक दी गई जरा-सी वस्तु भी बहुत है। जब कोई मनुष्य प्रेमपूर्वक किसी को कोई सामान्य वस्तु दे उस समय यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : ब्रज० मान कौ पानई बौहत है।

मान का पान हीरा समान— ऊपर देखिए।

मान का माहुर और अपमान का लड्डू—सम्मान के साथ मिला हुआ जहर (माहुर) भी अपमान के साथ मिले लड्डू से अच्छा होता है। अर्थात् इज्जत के साथ जो कुछ भी थोड़ा-बहुत या अच्छा-बुरा मिल जाय वह अच्छा ही होता है, लेकिन अपमान से मिली अच्छी वस्तु भी बुरी होती है।

मान घटे नित घर के जाए—प्रतिदिन किसी के घर जाने से जानेवाले का आदर कम होने लगता है। आशय यह कि किसी के घर रोजाना नहीं जाना चाहिए। जब कोई व्यक्ति अपने नाते-रिश्ते में प्राय: जाया करता है उसके प्रति यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : अव० मान घटै नित के घर जाए; सं० अतिपरिचयाद् अवज्ञा भवति; अं० Too much familiarity breeds contempt.

मान घटे नित-नित के जाए—ऊपर देखिए। तुलनीय : राज० रोज करै आव-जाव, जकैरो कोई न पूछै भाव।

मानत हैं सब लोग, लोन बिन सबै अलोना—नमक के बिना सारा भोजन अलोना (स्वादरहित) रहता है। अर्थात् नमक के बिना भोजन में स्वाद नहीं आ सकता ऐसा सभी लोग मानते हैं।

मानता है तो मान, नहीं तो यह ले घोड़ा और यह है मैदान—जब कोई व्यक्ति समझाने-बुझाने से भी न माने तो उसके प्रति कहते है कि यह ले घोड़ा और यह है मैदान चाहे जैसे दौड़ा। तुलनीय : माल० मान तो वे तो मान, नी तो ई घोड़ा ने ई चौगान।

मानते हो तो मानो नहीं अपनी राधा को याद करो—श्रीकृष्ण के प्रति गोपियाँ कहती हैं कि हमारी बात मानते हो तो ठीक है नहीं तो अपनी राधा का नाम रटते रहो। जब कोई व्यक्ति किसीके समझाने-बुझाने से न माने और अपना हित-अहित न देखे तो उसके प्रति कहते है। तुलनीय : माल० मानो तो मानो नी तो आपणी राधा ने याद करो।

मान दे मान पावे—जो दूसरों का सम्मान करता है उसे ही सम्मान मिलता है। तुलनीय : असमी मान् दिलेहे मान् पाय्; सं० अमानी मानदोमानी; अं० Do as you desire to be done by others.

मान न मान मैं तेरा मेहमान—मानिए चाहे न मानिए किन्तु मैं आपका मेहमान हूँ। जबरदस्ती किसी के गले पड़ने पर कहा जाता है। तुलनीय : गढ़० ग्वाणो गणो न गोस्य पुछो, त्वैं मेरा गौ जो तु म भलो ना मानी, माल० मान नी मान मू थारो मेमान; मरा० माना न माना मी तुमचा पाहुणा।

मान मनाई खीर न खाई, चमचा चाटने आई—विनय करने पर खीर नहीं खाई और अब आकर चम्मच चाट रही है। (क) जो व्यक्ति कहने पर कोई कार्य न करे और बाद में अपनी इच्छा से उससे भी बुरा काम करे उसके प्रति व्यंग्य में कहते है। (ख) जो निमंत्रण देने पर न आवे और बाद में बिना निमंत्रण के आवे उसके प्रति भी व्यंग्य में कहते है। तुलनीय : कौर० मान मनाई खीर न खाई, चमचा चाटण आई; राज० मान मनाया खीर न खाया, ऐंठा पातल चाटण आया।

मान मनाई खीर न खाई, जूठी पातर चाटन आई—ऊपर देखिए।

मानस कसने को मामला कसौटी है—मनुष्य की परीक्षा व्यवहार में ही होती है। यदि कोई अपरिचित व्यक्ति देखने में तो अच्छा लगे किन्तु व्यवहार में उसके विपरीत निकले तो उस पर यह लोकोक्ति कही जाती है।

मान सहित मरिबो भलो जो विष देय पिलाय—इज्जत के साथ दिया हुआ विष पीकर मर जाना भी अच्छा है। अपमानित करके दिए हुए अमृत को पीकर जीवित रहना अच्छा नहीं है।

मान सहित विष खाय के, संभु भयो जगदीस—शंकरजी सम्मानपूर्वक विष खा लेने पर भी जगत के स्वामी हुए। अर्थात् सम्मानपूर्वक दी गई हानिकर वस्तु स्वीकार करने से भी प्रतिष्ठा बढ़ती है बशर्ते कि उससे समाज का या बहुमत का लाभ हो।

मान ही सबसे बड़ा धन है—इज्जत (मान) सबसे बड़ी चीज़ है। उसकी हर तरह से रक्षा करनी चाहिए। तुलु-

नीय : सं० मान हि महतां धनम्।

मानाधीना मेयसिद्धिः—नापी जाने वाली वस्तु को जानने के पूर्व नापना सीखना चाहिए। तात्पर्य यह है कि किसी तथ्य को प्रमाणित करने से पहले प्रमाणों का ज्ञान अपेक्षित है। ऐसा होने पर ही तथ्य को सप्रमाण प्रस्तुत किया जा सकता है।

मानी दीन न हो सकै बरुक प्रान दें खोय—सम्मानी व्यक्ति किसी के सामने दीन नहीं बनता चाहे उसके प्राण तक क्यों न चले जाएँ।

मानुस जोड़े पली-पली, राम लुढ़ाए कुप्पे—मनुष्य एक-एक पली इकट्ठा करता है, राम पूरा एक ही बार में गिरा देते हैं। आशय यह है कि ईश्वर को बनाते-बिगाड़ते देर नहीं लगती। तुलनीय : पंज० बंदा जोड़े पली-पली राम रोड़े कुप्पी।

मानुस नहीं बैल का बाबा—वह मनुष्य नहीं बैल का बाबा है अर्थात् बिलकुल बुद्धू है। मूर्ख तथा अज्ञानी आदमी के लिए कहा जाता है। तुलनीय : पंज० बंदे दा नई टग्गे दा बाबा है।

मानुस में नौवा, पक्षिन में कौवा—आदमियों में नाई और पक्षियों में कौवा बहुत चालाक होते हैं। तुलनीय : हरि० माणसां मैं नव्वा पक्खियां मैं कौवा।

मानें तो देव नहीं तो पत्थर—माने तो देवता नहीं तो पत्थर है। आशय यह है कि बिना आस्था या विश्वास के कोई काम नहीं होता। मूर्तिपूजा का खंडन करने वालों के प्रति कहते हैं। तुलनीय : भोज० माने त देओता, नाहीत पात्थर; हरि० मानै तै दे, ना तै भीत का ले; बुंद० मानों तौ देव, नइ तौ पथरा; छत्तीस० मानें त देवता, नहिं त पथरा; मग० मनला तर देव, नाही तर दगड़।

माने ना स्याने की सीख, लिए खपड़िया माँगे भीख—जो बड़े की शिक्षा नहीं मानता, वह बाद में खपड़ी लेकर भीख माँगता है। आशय यह है कि जो बुद्धिमानों या बड़ों का कहना नहीं मानता वह पीछे दुख भोगता है। जब कोई व्यक्ति अपने से बड़े की शिक्षा न माने और विपरीत कार्य करने पर दुख तथा हानि उठावे तब यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : अव० मानै न सयाने कै सीख, लै कै खपरिया माँगै भीख।

मानो चाहे न मानो मैं तुम्हारा पंच—मानिए चाहे न मानिए मैं आपका पंच हूँ। जब कोई व्यक्ति बिना पूछे बीच में बोल उठता है तब यह लोकोक्ति कही जाती है।

मानो चाहे न मानो हम तुम्हारे पंच—ऊपर देखिए।

मानो तो देव नहीं तो पत्थर—दे० 'मानें तो देव...'।

मानो तो देव नहीं पत्थर—दे० 'मानें तो देव...'। तुलनीय : अव० मानै तौ देव नाही पत्थर; मग० मानी तऽ देवता ना तऽ पथर; भोज० मानऽ तऽ भोला नाहीं तऽ माटी कऽ ढेला; मैथ० मानो तऽ देवता नै मानो तऽ पत्थर; राज० मानै तो देव, नहीं भीत को लेव; माल० मानो तो देव नी मानो तो भाटो; गढ़० मानीक देवता निमानीक ढुंगों; निमाड़ी—मानो तो देव, नहीं तो दग्गड़; पंज० मनों ते रब नई तां वट्टा।

मानो तो देव नहीं तो भीत का लेव—ऊपर देखिए।

मानोहि महतां धनम्—महत्पुरुषों का धन मान ही है। अर्थात् इज्जत के आगे बड़े लोग धन को कुछ नहीं समझते।

मापा, कनियाँ औ पटवारी, भेंट लिये बिन करे न यारी—जमीन नापने वाला, कर लगाने वाला और पटवारी ये तीनों बिना कुछ द्रव्य लिये किसी से मैत्री नहीं करते। अर्थात् तीनों लालची होते हैं। (मापा = ज़मीन नापने वाला; कनियाँ = कर लगाने वाला)।

माफ़िक़ होगा व्यय तो कभी न होगा क्षय—यदि व्यय आमदनी के अनुसार रहेगा तो कभी भी हानि नहीं उठानी पड़ेगी। जो लोग आमदनी से अधिक व्यय कर देते हैं उन पर शिक्षा-रूप में यह लोकोक्ति कही जाती है।

मा बख़ैर शुमा बा सलामत—हम भी कुशल तुम भी कुशल। हममें और तुममें क्या संबंध? किसी के अपना होने के बावजूद जब उससे कोई लाभ न पहुँचे या वह सहायता न करे तो चिढ़कर ऐसा कहा जाता है।

मामा का ब्याह, रात अँधेरी और परसे माँ—मामा का विवाह है और अँधेरी रात में परसने वाली अपनी ही माँ है। जब किसी काम को करने की सभी परिस्थितियाँ अनुकूल हों तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० मामैरो ब्यांव मा पुरसगारी, जीमो बेटो रात अँधारी।

मामा के आगे ममयावरे की बातें—मामा के सामने उन्हीं के यहाँ की बातें कर रहे हैं। जो व्यक्ति किसी चीज़ या किसी वस्तु के विषय में काफ़ी जानकारी रखता है और उसी के सामने उसके (चीज़ या व्यक्ति के) संबंध में कोई अधिक बातें करता है तब वह ऐसा कहता है।

मामा के ब्याह, परोसने वाली माँ—दे० 'मामा का ब्याह...'। तुलनीय : माल० मामा रे घरे माँड़ो ने माँ परोसवा वाली।

मामा घर सुधराय, काका घर दुबराय—मामा के घर स्वस्थ हो जाता है और पिता के घर थक (दुबरा) जाता

है। ननिहाल में बच्चों को अधिक स्वतंत्रता मिलती है जिससे वे काफ़ी निश्चित और निर्भय रहते हैं। इसी बात को ध्यान में रखकर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : छत्तीस० मामा घर सुधराय, कका घर दुबराय।

मामा न होने से काना मामा ही भला—मामा ही न हो इससे अच्छा तो यह है कि काना मामा ही हो। कुछ न होने से बुरा ही हो तो ठीक है। तुलनीय : राज० नहि मामेसूं काणो मामो चोखो; मेवा० न मामा वचे काणो मामो ही ठीक; मैथ० नहीं मामा सं कनहां मामा नीक; असमी—नाइ मामात् कै कणा मामाइ भाल; अं० Something is better than nothing.

मामा न होने से काना मामा होना अच्छा है— ऊपर देखिए।

मामा समान पाहुना नहीं, गुरु समान देवता नहीं—भारतीय गुरु को भगवान से भी बड़ा मानते हैं और मामा को सबसे प्रिय संबंधी। इन दोनों के प्रति कहते है। तुलनीय . गढ़० मामा समान पौणो नी, मित्र समान देवता नी।

मामू के कान में बालियाँ, भांजा ऐंड़ा-ऐंड़ा फिरे—बालियाँ तो पहने हुए हैं मामाजी परंतु घमंड मे चलते हैं भांजाजी। दूसरे के धन पर अभिमान करने वाले के प्रति कहा जाता है। तुलनीय : राज० मामैरै कान में मुरकी, भाणजो भार्‌या मरै।

माय मरी, बेटी हुई, रहा तीन रा तीन—माँ मरी तो इधर लड़की पैदा हो गई, इसलिए संख्या तीन की तीन ही रही। जब किसी को एक तरफ से जितनी हानि हो और दूसरी तरफ से उतना ही लाभ हो जाय तब ऐसा कहते हैं।

माया का क्या जोड़ना, खल खाना, कंबल ओढ़ना—(क) साधारण अन्न एवं वस्त्र खा-पहनकर ही जीवन-यापन किया जा सकता हो तो धन इकट्ठा करना बेकार है। (ख) जो धनी कृपण केवल धन जमा करने में ही सुख समझता है उसके प्रति भी कहा जाता है।

माया का डर, काया का क्या डर ?—धन का ही डर होता है शरीर का नहीं। जिस व्यक्ति के पास धन होता है उसे ही चोर-डाकुओं का भय रहता है और निर्धन जंगल में ही निश्चित होकर सो जाता है। तुलनीय : राज० मायानै भै, कायानै भै नहीं।

माया के पास माया आती है—धन के पास ही धन आता है। धनी व्यक्तियों के पास धन जाता है, निर्धन सदा निर्धन ही रहते हैं। तुलनीय : राज० माया कनै माया आवै; मरा० पैसा कडे पैसा ओढला जातो; पंज० पैहे कोल पैहा रैंदा है; अं० Money begets money.

माया के भी पाँव होते हैं, आज मेरे कल तेरे—लक्ष्मी चंचला होती है, आज यहाँ तो कल वहाँ। अर्थात् किसी की आर्थिक स्थिति सदा एक-सी नहीं रहती। किसी की आर्थिक स्थिति बनने तथा बिगड़ने पर यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : अं० Riches has wings.

माया को माया मिले कर-कर लंबे हाथ—दे० 'माया के पास···'।

माया गाँठ, विद्या कंठ—पास का धन और कंठस्थ विद्या ही काम आती है। तुलनीय : राज० माया गंठ, विद्या कंठ; नाणो अंट'र विद्या कंठ; सं० पुस्तकस्थातु या विद्या परहस्तगतं धनम्।

माया जी का जंजाल है—धन ही मुसीबत की जड़ है। जब रुपया कमाने के पीछे तथा अर्जित धन की रक्षा में कष्ट सहना पड़े तब यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : अव० माया जीव की जंजाल।

माया तेरे तीन नाम परसा, परसी, परसराम—नीचे देखिए।

माया तेरे तीन नाम, परसू, परसा, परसराम—मनुष्य की स्थिति ज्यों-ज्यों सुधरती जाती है त्यों-त्यों उसका समाज में सम्मान बढ़ने लगता है। आर्थिक स्थिति के अनुसार मनुष्य का मान घटता-बढ़ता रहता है। तुलनीय : अव० माया के तीन नाम परसा, परसा, परसराम; हरि० टोटे तेरे तीन नाम परसी, परसा, परसराम; राज० माया थारा तीन नाम, परस्या, परसू परसराम; मरा० माये तुझी तीन नावें, परश्या, पुरशा, परशराम, पंज० पैहे तेरे तिन नां परसु, परसा, परसराम।

माया से प्यारी छाया—मकान (छाया) दौलत से भी प्यारा होता है क्योंकि रहने के लिए घर या मकान अति आवश्यक है। तुलनीय : हरि० माया तै प्यारी छ्यावा; पंज० (माया) पैहे तों मोहणी ओदी छां।

माया से माया मिले करके लंबे हाथ—दे० 'माया के पास···'। तुलनीय : राज० मायासू माया मिलै कर-कर लांबा हाथ।

माया से माया मिले मिले नीच से नीच—धन धन से मिलता है और नीच नीच से। आशय यह है कि जो जैसा होता है वह वैसे ही लोगों से संपर्क करता है।

मार के आगे भूत भागे—मारने से भूत भी भागता है। आशय यह है कि दंड से शैतान से शैतान आदमी भी भय

खाते हैं। तुलनीय : अव० मार के आगे भूत भागै; हरि० मार आगै भूत नाच्चै; गढ़० मारू का अगाड़े भूत नाचो; मरा० माराला भिऊन भूत सुद्धां पळते, पंज० कुट अग्गे बूत नठण।

मार के टर जाए खा के पड़ जाए—लड़ाई-झगड़े में मार करके भाग जाना चाहिए और भोजन करके सो जाना चाहिए। तुलनीय : छत्तीस० मार के टरक जाय, खा के टरक जाय; माल० मारी कुटी भागी जाणो, खाइ पीने हुई जाणो।

मार कर भाग जाइए, खाकर लेट रहिए—ऊपर देखिए।

मार खाता जाय और कहे जरा मारो तो सही—डरपोक मनुष्यों के विषय में विशेषकर बंगालियों और बनियों के लिए कहते है। ये लोग मारनेवाले का केवल शाब्दिक विरोध कर सकते हैं। अतः व्यंग्य मे इस कहावत को कहते हैं। तुलनीय : अव० मार खात जाय, औ कहै भल खबरदार अब न मार्‍यो, हरि० इबकेन मारलिया सो मार लिया इबकेन मार कै देख, बंग० मारली त मारली ए बार मार त देखि।

मार खाना मस्जिद में सो रहना—मार खाते है और मस्जिद में सो जाते है। धूर्त और बदमाशों के विषय में यह लोकोक्ति कही जाती है।

मार खाने से रॉड़ भली—ऐसे पति से जो मारता-पीटता हो, रांड रहना ही अच्छा है। जो पति अपनी पत्नी को मारता-पीटता हो उसकी पत्नी उसके प्रति कहती है। तुलनीय : राज० चिड़पिड़े सुवाग बिचै रंडापो चोखो; पंज० कुट खाण तो रंडी चंगी।

मार खाय मेहरी, भागे पड़ोसिन—मार खाती है पत्नी और भागती है पड़ोसिन। जब एक को दंड दिया जाय और उसे देखकर दूसरा भयभीत हो तब ऐसा कहते है। तुलनीय : अव० मारै मेहर का और भागै परोसिन।

मार गज़ीदा अज़ रसी मी तरसद—साँप का डसा हुआ रस्सी से डरता है। दे० 'दूध का जला…'।

मार ग़रीबी की, मूंछों में चुपड़े घी—आर्थिक तंगी में है फिर भी मूंछों मे घी लगाते है। झूठी शान दिखाने वाले के प्रति व्यंग्य में कहते है।

मार गाली सुनते हैं, गुमाश्ते कहलाते हैं—मार खाते हैं और गाली सुनते है फिर गुमाश्ता कहलाते हैं। जब किसी सभ्य तथा प्रतिष्ठित पुरुष की बेइज्जती होती है तब यह लोकोक्ति कही जाती है।

मार गुसैंयाँ, तेरी आश—हे मालिक ! मैं तुम्हारे ही सहारे हूँ चाहे मारो या जो चाहो करो। नौकर अपने मालिक से और स्त्री अपने पति से बिना प्रयोजन सताए जाने पर कहती है। तुलनीय : अव० मार गोसंइया तोरेन आसा।

मारजाय गृहीतोऽङ्गच्छेदं स्वीकरोति मारने के लिए पकड़ा गया आदमी प्रसन्नता से एक अंग कटाना स्वीकार कर लेता है। तात्पर्य यह है कि मरने के दुःख की अपेक्षा हस्तच्छेदन का दुःख अत्यल्प है। फलतः वह सह्य है।

मारते का हाथ पकड़ ले, बोलते की जीभ कौन पकड़े—नीचे देखिए।

मारते का हाथ पकड़ा जाता है कहते की जबान नहीं पकड़ी जाती—मारनेवाले को रोका जा सकता है किन्तु कहनेवाले को कोई नही रोक सकता। जब कोई व्यक्ति किसी की झूठी निन्दा करता है तब यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : अव० मारते कै हाथ पकरा जाय सकत है, कहब कै जबान नाही पकरी जाय सकत; कौर० मारते का हाथ पकड़ले, बोलते की जीभ कौन पकड़े; पंज० कुटण वाले दा हथ्थ फड़्यां जांदा है कहण वाले दी जीभ नईं फड़ी जांदी।

मारते की अगाड़ी और भागते की पिछाड़ी मारने वाले के आगे और भागनेवाले के पीछे नहीं रहना चाहिए, वरना दोनों दशाओं में हानि सहनी पड़ती है। तुलनीय : मरा० मारणाऱ्यांच्या पुढें नि पळणाऱ्यांच्या मागे।

मारते के अगाड़ी, भागते के पिछाड़ी—ऊपर देखिए।

मारते के पीछे और भागते के आगे—मारने वाले के पीछे और भागने वाले के आगे रहना चाहिए। अत्यन्त कायर आदमियों के बारे में कहा जाता है जिनमें हिम्मत या शक्ति नाम की कोई चीज़ होती ही नहीं।

मारते खाँ से सब डरते हैं—बदमाश और जबरदस्त से सभी काँपते हैं। जब कोई व्यक्ति किसी सीधे और सरल आदमी की कोई बात नहीं मानता और बदमाश आदमी की मान जाता है तब यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय अव० मरते खाँ से सबै डेरात है।

मारने वाले से जिलाने वाला बड़ा होता है—मारने वाले से जिन्दगी देने वाले का विशेष महत्त्व है। जब किसी दुर्घटना या घातक बीमारी से किसी की जान बच जाय तब यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : भोज० मारे वाला से जियावे वाला बड़ा होला; अव० मारै वाले से जिआवै वाला बड़ा होत है; गढ़० मारन वाला ते बचौंदारो बड़ो।

मारने वाले से बचाने वाला बड़ा है—ऊपर देखिए।

मारने से घूरना बुरा—मार खानेवाला मारनेवाले से उतना नहीं डरता जितना घूरकर डरानेवाले से। मार से कोई नहीं डरता; आँखों से सब डरते हैं। जब कोई व्यक्ति किसी का अपमान, बिना मारे-पीटे सबके सामने कर दे तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : गढ़० मारन ते मप्यायू बुरो।

मार पीछे संवार—मारने के बाद चापलूसी करना या माफ़ी माँगना। किसी को मारने अथवा हानि पहुँचाने के बाद माफ़ी माँगने और चापलूसी करने पर यह लोकोक्ति कही जाती है।

मार-पीट के भाग जाना, खा-पी कर सो जाना—दे० 'मार के टर जाए, खा के······'।

मार-मार किए जाए फ़तह दावे-इलाही है—काम करना चाहिए फल देने वाला ईश्वर है। आशय यह है कि मनुष्य को कार्य करना चाहिए, सफलता की आशा न करना चाहिए क्योंकि वह तो ईश्वर के अधीन है। तुलनीय : सं० कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन:।

मार-मार के सती करते हैं—मार-मार के परेशान करते हैं। (क) किसी की इच्छा के विपरीत जबरदस्ती काम कराने पर कहा जाता है। (ख) अधिक मारने पर भी कहा जाता है। तुलनीय : अव० मार कै सती किहे देत है।

मार मुए मार, तेरी हथड़ियाँ पिरायं, मेरी आदत न जाय—मार, तेरे हाथ ही दर्द करेंगे, मेरी आदत नहीं जाएगी। कोई ज़िद्दी और कर्कशा स्त्री बहुत मार खाने पर अपने पति से कह रही है। इस लोकोक्ति का ऐसे अवसरों पर भी प्रयोग होता है जब कोई व्यर्थ में ऐसा काम या कठोरता का व्यवहार करे जिसका कुछ भी फल निकलने की आशा न हो।

मारवाड़ मनसूबे डूबा—मारवाड़ मनसूबे में ही डूब गया। मारवाड़ के लोग मनसूबे ही बाँधते रहते हैं, काम-धाम कुछ भी नहीं करते। जो व्यक्ति केवल योजनाएँ ही बनाएँ, और उन्हें कार्य रूप न दें, उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० मारवाड़ मनसोबे डूबी।

मार विद्या-सार—मार ही विद्या का सार है। (क) गुरु की मार से विद्या आती है और शिष्य विद्वान बनता है। जो लड़के गुरु की मार का बुरा मानते हैं उनके प्रति कहते हैं। (ख) बिना मारे विद्या नहीं आती। जो लड़के बिना मार खाए पढ़ते नहीं हैं उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० मार, विद्या-सार; अं० Spare the rod and spoil the child.

मार से काम बनता है—मारने पर सभी काम बन जाते है। मार के भय से प्रत्येक व्यक्ति ठीक ढंग से काम करता है। तुलनीय : भीली —मनखनूं भाजनो खाएड़ा मांये; पंज० कुट दे डर नाल कम बन जांदा है।

मार से कुछ न करे, डाँट से कुछ करे, प्यार से सब करे—गँवार व्यक्ति मारने से ज़रा भी काम नहीं करता, डाँटने से थोड़ा-बहुत करता है, किन्तु प्यार से सभी काम कर लेता है। गँवार से प्यार दिखाकर काम कराना चाहिए यही इस लोकोक्ति का भावार्थ है। तुलनीय : माल० हाँकूँ तो चाले नी, उतरूं तो पाडे फोड़ा; थारा पगां में पागडी मेलू चाल रे मारा घोडा।

मार से भूत भागे—दे० 'मार के आगे भूत······'। तुलनीय : अव० मार से भूत भागैं; बुद० मार के आगे भूत भगत; ब्रज० मार ते भूत भागैं।

मार से भूत भी काँपता है—दे० 'मार के आगे······'। तुलनीय : छत्तीस० मार के देखे भुतवा काँपै।

मार से भूत भी डरता है—दे० 'मार के आगे······'।

मारा घोंटू फूटी आँख—मारा तो घुटने में सोचकर लेकिन फूट गई आँख। अर्थात् जब करना हो कुछ और हो जाय कुछ तो यह लोकोक्ति कहते है। तुलनीय . भोज०, मैथ० मारे ठेहुना फूटे लिलार; मग० मारे माथा टूटे टाँग; ब्रज० मारै घोंटू फूटै आखि।

मारा/मरा चे अज ई क़िस्सा कि गाव आमद-ओ-ख़र रफ़्त—गाय आई और गधा चला गया, इस क़िस्से से मुझे क्या मतलब? किसी वस्तु के प्रति अनिच्छा प्रकट करने के लिए ऐसा कहते है। (यह लोकोक्ति फ़ारसी की है)।

मारा चोर उपासा पाहुन लौटता नहीं—मार खा लेने पर चोर और उपवास कर लेने पर मेहमान पुनः नहीं आते। तुलनीय : भोज० मारल चोर उपासल पाहुन।

मारा थोड़ा, घसीटा/भगाया बहुत—मारा तो कम ही लेकिन दौड़ाया बहुत। जिसके भय से ही लोग भाग जायं उसके प्रति लोग कहते हैं। तुलनीय : राज० आरे म्हारा घररा धणी, मारी थोड़ी घीसी घणी।

मारा मगर लाल जूते से—मारा तो अवश्य किन्तु लाल जूते से अर्थात् इज़्ज़त से। निर्लज्ज व्यक्ति को व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० मरलस बाकी लाल पनही से।

मारा मुंह तबाक आगे धरा न खाय—जिसके मुंह पर तपाक से मार दिया जाता है, वह सामने रखा भोजन भी नहीं खाता। अर्थात् जो एक बार पिट चुका है या हानि

उठा चुका है वह दूसरा काम करने से प्रायः डरता है।

मारिए भटियारी, रोवे कोतवाल—मार खाती है भटियारी और रोता है कोतवाल। नखरेवालों के प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

मारि के टरि रहु, खाइ के पाई रहु—दे० 'मार के टर जाए, खा के ······'।

मारी एक मुसरी नाम तीसमारखां—मारी एक चुहिया (मुसरी) और नाम पड गया तीसमारखा। छोटे काम पर बड़ी शेखी मारने पर कहते हैं। तुलनीय : गढ़० मारू दिल्ली हगू चूल्ली।

मारी मरें मलार गावें—मार से मर रहे हैं और तिस पर भी मल्हार गा रहे हैं। (क) झूठी शेखी दिखाने पर व्यंग्य में कहते हैं। (ख) वीर एवं साहसी व्यक्ति के प्रति भी कहते है।

मारूँ हरिनी तोड़ कास, बोऊँ उर्द हथिया के आस—हरिणी नक्षत्र को मार डालूँगा और काम नामक घास को तोड़ डालूँगा। मैं तो हस्ति नक्षत्र की आशा पर उर्द बो रहा हूँ। अर्थात् हथिया नक्षत्र में उर्द बोने से हरिणी नक्षत्र तथा काम कुछ नहीं कर सकती है।

मारें मक्खी नाम तीसमारखां—दे० 'मारी एक मुसरी ··'।

मारे अरु रोने न दे—मारता भी है और रोने भी नही देता। आशय यह है कि जबरदस्त के सामने कुछ बस नही चलता। तुलनीय : अव० मारै आ रोवै न देय; हरि० ठाढ़ा मारै रोवण दे ना खाट खोसले सोवण दे ना; राज० मारै न रोवण को देवै; गढ़० मारो भी अर रोण भी निद्यो।

मारे और रोने न दे—ऊपर देखिए।

मारे और रोने भी न दे—दे० 'मारे अरु·······'।

मारे क्यों जो रोना पड़े—किसी को मार कर स्वयं भी रोना पड़े तो मारने से क्या लाभ? जिस व्यक्ति को कष्ट देने से स्वयं पर भी आपत्ति आने की संभावना हो उसे कुछ नहीं कहना चाहिए। तुलनीय : भीली—मारो ने रोवो पड़े तेया नी करवो।

मारे घुटन फूटे ललाट—दे० 'मारा घोंटू·······'।

मारे तो मीर को—यदि मारना ही हो तो किसी मीर (बड़ा आदमी) को मारो। कोई ग़लत काम करना हो तो उसे उच्च स्तर पर करना चाहिए। तुलनीय : राज० मारणो तो मीर मारणो।

मारे तो हाथी सदा लूटे भंडार—मारना हो तो हाथी जैसे बलशाली को मारे और लूटना हो तो खज़ाना ही लूटे ताकि कुछ हाथ भी लगे। आशय यह कि काम चाहे अच्छा हो या बुरा अगर करे तो ऐसा करे जिसमें नाम हो या अभाव दूर हो। अर्थात् काम करे तो ऊँचा ही करे नही तो नही। जब कोई ख़तरे तथा बेइज़्ज़ती का कार्य भी करे और उससे लाभ भी न हो तो कहा जाता है। तुलनीय : गढ़० लेंड खाणो त हाथी को खाणो।

मारे भाय दुलारे साला—भाई को मारते हैं और साले को दुलार करते हैं। आज के युग पर कहा गया है। आजकल परिवार वालों की अपेक्षा ससुराल वालों से अधिक प्रेम होता है।

मारे मेहर और भागे पड़ोसिन—दे० 'मार खाय मेहरी भागे ·····'।

मारे मेहर पादे पड़ोसिया—दे० 'मार खाए मेहरी भागे·······'।

मारे सरदार, लूटे भंडार—दे० 'मारे तो हाथी·······'।

मारे सिपाही नाम सरदार का, काटे वार नाम तलवार का—मारता है सिपाही और नाम होता है सरदार का, उसी प्रकार काटता है वार लेकिन नाम होता है तलवार का। आशय यह है कि करता है छोटा ही लेकिन नाम होता है बड़े और सामर्थ्यवान का। जब करे कोई और नाम हो किसी का तब कहते हैं।

मारे सिपाही नाम हवलदार—ऊपर देखिए।

मारे सो मीर—जो पहले मारता है वही श्रेष्ठ है। अर्थात् पहले मारने वाला धोखा नहीं खाता। मारपीट में पहले मारना चाहिए। तुलनीय : राज० मारे सो मीर; अं० Offence is the best defence.

मार्ग बदी आठें घटा, बिज्जु समेती जोइ; तो सावन बरसे भलो, साखि सवाई होइ—यदि अगहन महीने के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को बादल हो तथा बिजली चमके तो यह समझ लेना चाहिए कि सावन में अच्छी वर्षा होगी और खेती अच्छी होगी।

मार्ग बदी आठें घन दरसे, सो सघा भरि सावन बरसे—यदि अगहन बदी अष्टमी को बादल दिखलाई दे तो सावन भर पानी बरसेगा।

मार्ग महीना माहिं जो, जेष्ठा तपै न मूर; तो इमि बोलै भड्डली, निपटै सातो तूर—अगहन के महीने में यदि ज्येष्ठा और मूल नक्षत्र न तपे तो सातों प्रकार के अन्न उत्पन्न होंगे।

माल उड़े राजा का, मुखिया खेलें फाग—सरकारी माल पर मुखिया मौज करते हैं। जब सरकारी कर्मचारी धन को अपने मौज-शौक़ के लिए व्यय करते हैं तो उनके प्रति

कहते हैं। या दूसरे के धन पर मौज उड़ाने वाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : माल० माल उड़े माराज रा ने मिरजा खेले फाग।

माल कमाए कोई, रुआब दिखाए कोई—(क) जब परिश्रम करके कमाने वाले या मालिक को अपनी वस्तु या धन के लिए दूसरे के सामने हाथ फैलाना पड़े तो उसके प्रति ऐसा कहते हैं। (ख) मालिक से कुछ माँगने पर नौकर या कोई और ही व्यक्ति इनकार करे या रुआब दिखाए तो उसके प्रति भी ऐसा कहते है। तुलनीय : गढ़० ख लाका गोस्यू डडवार की स्याणी।

माल का मोह करते हैं जान का मोह नहीं करते - माल खर्च न हो चाहे शरीर को भले ही तकलीफ़ हो जाय। कंजूस के प्रति कहते है क्योंकि वह धन को प्राण से भी बढ़कर मानता है। तुलनीय : अव० माल का मुँह देखत है, जान का मुँह नाहीं देखत।

माल का हारे, गाल का जीते—जिसकी धन-दौलत है वह हार जाता है और जो ज़बान चलाने मे दक्ष है वह जीत जाता है। आशय यह है कि झगड़ालुओं से सभी डरते हैं। तुलनीय : अव० माल का हारै गाल का जीतै; गढ़० माल वालो हार जो, गिच्चा वालो जीत जौ।

माल की ज़कात है—हैसियत के अनुसार ही दान-पुण्य करना चाहिए। (ज़कात—वार्षिक आमदनी का ढाई प्रतिशत जो दान-पुण्य मे खर्च करने के लिए इस्लाम धर्म में कहा गया है)।

माल के नुकसान में जान की खैर - माल जो गया सो गया उसकी चिन्ता मत कीजिए आपकी जान तो बच गई। किसी का धन खो जाने पर उसे ढाढ़स बँधाने के लिए कहते हैं।

माल खिसका, यार भी खिसके—जब धन समाप्त हो जाता है तो मित्र भी साथ छोड़ जाते हैं। जब तक व्यक्ति के पास धन रहता है तभी तक मित्र-मंडली जमी रहती है, निर्धन होते ही सब मित्र साथ छोड़ जाते है। आशय यह है कि स्वार्थवश ही लोग मित्रता करते हैं। तुलनीय : राज० खरची खूटी यारी टूटी।

माल गँवाया, मार भी खाई—अपना माल भी गँवाया और अपमान भी सहा। (क) मूर्ख व्यक्ति जब कोई ऐसा काम करता है जिससे उसका धन और मान दोनों समाप्त हो जाएँ तो उसके प्रति ऐसा कहते हैं। (ख) जब कोई चालाक व्यक्ति कहीं बुरी तरह धोखा खाए तो उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० खस्या का खस्या भी होया, खपकं खपक भी खाई।

मालती गन्ध गुण विद्धर्भे न रमते ह्यलि वह भौरा जो मालती पुष्प की सुगन्ध की विशेषता से परिचित है, दर्भ मे रमण नही करता है। प्राणी स्वभावतः ही अधिक सुन्दर एवं उपयोगी वस्तुओं से प्रेम करता है। बड़े लोगों की संगति मे रहनेवाले छोटे लोगों के साथ रहना नहीं चाहते।

माल देख कलकत्ते भागे—कलकत्ते के वैभव से खिच कर सभी कलकत्ते पहुँचते हैं। कलकत्ते में व्यवसाय और काम मिलने के कारण वही लोग जाते हैं। अर्थात् जहाँ धन मिलता है वही सब जाते है। तुलनीय : भीली—माल भावे ने मालवो चीते आवे।

माल न मिले तो जान क्यों दे? जब लाभ ही नहीं मिलता है तो परिश्रम करने से क्या लाभ ? अर्थात् जिस काम से कोई लाभ मिलने की आशा नही होती उसे कोई भी नही करना चाहता। तुलनीय : भीली - मारे खावो नी ते पचवो हाए।

माल न राखे आपना चोरों खोरी दे दे अपने माल को स्वयं लापरवाही से रखते है और दोष देते है चोरों को। आशय यह कि यदि अपनी चीज़ को हिफ़ाज़त से रखा जाए तो चोर कुछ नही कर सकते। अपनी असावधानी से नुक़-सान हो और दूसरे के सिर दोष मढ़े तब कहते है।

माल पर ज़कात है—दे० 'माल की ज़कात है।' तुल-नीय : राज० माल माथै जगात है।

माल भी दें जूतियाँ भी खायँ—धन भी नष्ट करना है और बेइज़्ज़ती भी सहना है। आशय यह कि दुर्व्यसन से धन और धर्म दोनों नष्ट होते हैं। आचारणभ्रष्ट मनुष्य के प्रति कहा गया है। तुलनीय : अव०मालौ देय, जूती सहै।

माल-मालिक दोनों बैलों से—किसानों के प्रति कहते है कि यदि उनके पास बैल न हों तो किसान बैठा मक्खियाँ मारा करता है और फ़सल नही होती। जब फ़सल ही नहीं होगी तो धन कहाँ से आयगा और धन नहीं होगा तो उसे मालिक कौन कहेगा ? तुलनीय : भीली - धन ने धणी धोरय्यां हाथे है।

माल मालिकों का, चौकीदार के पास तो लाठी है—माल (संपत्ति) तो मालिकों का है चौकीदार के पास तो अपनी केवल लाठी ही है। जिस व्यक्ति के पास देखने के लिए दूसरों का धन तो बहुत हो, किंतु वह उसका भोग न कर सकता हो तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० धन धण्यांरो ग्वाळरे हाथ में तो गेडियो है।

माल-मुफ्त दिल-बेरहम—दे० 'माले-मुफ्त दिले-

बेरहम।'

माल लगे सरकारी मिर्जा होली खेलें—मिर्जाजी सरकारी खर्च पर होली खेलते हैं। पराया धन बुरी तरह लुटाने पर यह लोकोक्ति कही जाती है।

माल वाला हारे, गाल वाला जीते—दे० 'माल का हारे…'।

माल से मोल भारी—वस्तु से उसका मूल्य अधिक है। (क) किसी साधारण वस्तु का मूल्य बहुत अधिक हो तो कहते हैं। (ख) धन से इज्ज़त बड़ी होती है। तुलनीय: भीली—माल हूं माले भारी हैं; पंज० माल नालों मुल पारी।

माल रहे तो सब कोई, कुर्की होय तो कोई नहीं—जब धन था तब तो सभी जुटे रहते थे और निर्धन होने पर जब क़ुर्की आई है तो कोई भी नही आया। संपन्नता के सभी साथी हैं। तुलनीय: राज० खांड गळै जद सगळा आ ज्यावै गांड गळै जद कोई को आवै नी।

माला की माला ईंधन की ईंधन—जब तक अच्छा रहा तब तक माला का काम लिया और जब ख़राब हो गया तो जलाने के काम आ गया। किसी वस्तु से हर तरह से लाभ ही लाभ होने पर यह लोकोक्ति कही जाती है।

माला फेरत जुग गया, मिटा न मन का फेर—माला को घुमाते हुए बहुत समय व्यतीत हो गया किन्तु मन का संदेह नही गया। आज के माला फेरने वाले साधुओं पर व्यंग्य है।

माला फेरे हरि मिलें तो बंदा फेरे झाड़—माला फेरने से यदि ईश्वर की प्राप्ति हो जाय तो मैं पूरे झाड़ को ही फेर डालूं जिससे कि इस माला का जन्म हुआ है। आशय यह है कि केवल माला फेरने से ईश्वर की प्राप्ति नही होती। पाखंडियों के प्रति कहते हैं। तुलनीय: राज० माला फेरयां हर मिलै तो हूं फेरूं झाड़।

मालिक को नौकर बहुत—मालिक को नौकर बहुत मिल जाते है। (क) धनवान को किसी वस्तु की कमी नहीं पड़ती। (ख) जब नौकर शरारत करते हैं तब उनको डाँटते-फटकारते समय ऐसा कहते है। तुलनीय: राज० ठाकर ने चाकर घणा।

मालिक-चाकर की कौन लड़ाई—स्वामी और सेवक की कैसी लड़ाई? लड़ाई बराबर वालों मे हुआ करती है। बलवान से कोई विरोध नही करता, निर्बल को ही सब दबाते हैं। तुलनीय: राज० स्यामसू किसो संग्राम?

मालिक चोर, नौकर डाकू—मालिक चोर है और नौकर डाकू। (क) जब स्वामी से अधिक दुष्ट सेवक हों तो उनके प्रति ऐसा कहते हैं। (ख) घूसख़ोर अधिकारियों के कर्मचारी प्रायः उनसे भी अधिक लालची होते हैं, इसलिए उनके प्रति भी इसका प्रयोग होता है। (ग) जहाँ सभी एक-दूसरे से बढ़कर बुरे हों वहाँ भी कहते है। तुलनीय: गढ़० जैंको ठाकुर खड़ाखड़ी मूतो, तैंको चाकर भौंरादीक मूतो।

मालिक मेहरबान तो गदहा पहलवान—नीचे देखिए।

मालिक मेहरबान तो गधा पहलवान—स्वामी यदि मेहरबान हो तो आदमी तो आदमी गधे तक पहलवान बन जाते हैं। (क) अच्छे स्वामी के मिलने से सभी तरह के आदमी उन्नति कर लेते हैं। (ख) बलवान स्वामी के नौकर यदि हेकड़ी दिखाते हैं तो उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय: माल० मालिक मेहरबान तो गधा पेलवान।

माली चाहे बरसना, धोबी चाहे धूप, साहू चाहे बोलना, चोर चाहे चूप—अर्थात् सभी अपने मतलब की बात चाहते हैं। तुलनीय: अव० मलिया चाहै बरसना, धोबिया चाहै धूप, सहवा चाहै बोलना, चोरवा चाहै चुप।

माली देखो सुमन को बेधत गुन के हेत—माली गुण को बढ़ाने के लिए ही फूलों को छेदता है। अर्थात् अच्छे लोग दूसरों के हित के लिए या उनकी उन्नति करने के लिए उन्हें कष्ट या ताड़ना देते हैं।

माली-मूली विरली भली—माली और मूली विरल ही ठीक रहते हैं। मूली की फ़सल अधिक घनी बोने से अच्छी नही होती और अधिक माली रहने से बाग़ चौपट हो जाता है, क्योंकि वे सभी अपनी मर्ज़ी करते है। तुलनीय: राज० माली'र मूला छींदा ही भला।

माली सींचे सौ घड़ा रितु आए फल होय—माली चाहे कितना भी पेड़ को सीच ले किन्तु फल ऋतु आने पर ही लगेंगे। प्रत्येक कार्य समय पर ही होता है, उसमें जल्दबाज़ी करने से कोई भी लाभ नहीं होता। तुलनीय: राज० माली सींचै सौ घड़ा, रुत आयां फल होय; धीरे-धीरे ठाकरां धीरे सब कुछ होय।

मालूम होगा हश्र को पीना शराब का—जिस दिन ईश्वर के यहाँ जवाबदेही होगी उस दिन शराब पीने का मज़ा निकलेगा। आशय यह कि शराब पीना बहुत बुरा है, इस लत को छोड़ देना चाहिए।

माले-अरब पेशे-अरब—अपना माल अपनी ही आँखो के सामने सुरक्षित रहता है।

माले-मुफ़्त दिले-बेरहम—(फ़ा०) दूसरे की सम्पत्ति

को लोग बेरहमी से लुटाते हैं। अर्थात् उसका दुरुपयोग करते हैं। जब कोई दूसरे का माल बेफ़िक्री से खर्च करे तब कहते हैं। तुलनीय : राज० मुफत माल बेरहम; बुंद० हर ददा के, बैल ददा के, टिकटिक करतन का लगत; गुज० फोकट की गाड़ी, फोकट का बैल, और बंदे का टचकारा; भोज० करवा कोंहार क, घीव जजमान क स्वाहा-स्वाहा।

माले मोल बिकाय, नहीं बैठे भूसा खाय—माल-दाम, आने पर ही घर बेचा जाता है अन्यथा नहीं, भले ही उसे रखकर भूसा खिलाना पड़े। आशय यह कि बिना दाम आए कोई अपनी वस्तु नहीं बेचता चाहे उसे न बेचने से नुक़सान ही हो। दाम न आने पर जब कोई अपनी चीज़ को न बेचे और उसके रखने से उसे घर मे खर्च करना पड़े तो उसके प्रति व्यंग्य मे कहते है।

माले-हराम बूद बजा-ए-हराम रफ़्त—जैसी कमाई वैसे ही कामों में गंवाई।

माशूक़ की ज़ात बेवफ़ा है—प्रेमिकाओं पर विश्वास न करना चाहिए, क्योंकि वे किसी समय भी धोखा दे सकती है। अर्थात् इससे कोई अच्छा फल नहीं निकल सकता। माशूक़ों की बेवफ़ाई पर कहते हैं।

माषराषि प्रविष्ट मषीन्यायः—माष (मूंग) के ढेर मे घुसी हुई काजल की गोली का न्याय। तात्पर्य यह है कि समान आकार-प्रकार की होने से माष तथा काजल की गोली में अन्तर करना कठिन है। समान रूप-रंग की चीज़ों को पहचानने मे कठिनाई होती है।

मास ऋष्य जो तीज अँध्यारी, लेहु ज्योतिसी ताहि बिचारी; तिहि नछत्र जो पूरनमासी, निहचै चन्द्रग्रहन उपजासी—ज्योतिषी को महीने के कृष्ण पक्ष की तृतीया को विचार कर देख लेना चाहिए कि उस दिन कौन-सा नक्षत्र है। यदि उसी नक्षत्र में पूर्णिमा पड़े तो निश्चय ही चन्द्र-ग्रहण होगा।

मास बिना सब साग रसोई—मांस के बिना सारा भोजन शाक के समान है। आशय यह कि यदि रसोई में मांस न बना तो भोजन में कोई स्वाद नहीं होता। मांसा-हारियों का कहना है।

मास से नौह जुदा नहीं होता—मांस से नाखून अलग नहीं होता। अपनों से कोई अलग नहीं हो सकता अर्थात् नाता-रिश्ता छूट नहीं सकता। तुलनीय : हरि० आंगलियां त नौर दूर ना होत्ते।

माहे मंगल जेठ रवि, भादरवै सनि होय; डंक कहे हे भड्डली, बिरल जीवै कोय—यदि माघ में पाँच मंगलवार, जेठ में पाँच रविवार या भादों में पाँच शनिवार पड़ें तो डंक भड्डरी से कहते हैं कि ऐसा अकाल पड़ेगा कि लोगों का जीवित रहना भी मुश्किल हो जाएगा।

मिगसर बदवा सुद मंही, आधे पोह उरे, धँवरा धुंध मचाय दे, तो समियो होय सिरे—अगहन के कृष्ण पक्ष या शुक्ल पक्ष में या पौष के कृष्ण पक्ष में यदि प्रातःकाल धुंध छाई हो तो समय अच्छा बीतेगा, अर्थात् लोग सुखी रहेंगे।

मिगसर बदवा सुद महीं, आधे पोह उरे; धुंवर न भीजे धूल तो, करसण काह करे—अगहन बदी या सुदी में या पौष बदी में मिट्टी ओस से गीली न हो तो ज़मीन क्यों बोई जाय? अर्थात् उक्त दशा मे पैदावार अच्छी नहीं होगी।

मिज़ाज बादशाह का औक़ात भड़भूँजे की—स्वभाव राजाओं का-सा है लेकिन हैसियत भड़भूँजे की-सी है। हैसियत के खिलाफ़ किसी बड़े का अनुकरण करना। जो निर्धन होकर भी ऊँचा मिज़ाज रखे उसके प्रति कहते है।

मिज़ाज क्या है कि इक तमाशा, घड़ी में तोला घड़ी में माशा—चित्त का स्थिर न रहना। अस्थिर चित्तवाले को कहते हैं।

मिज़ाजे-आली न तोशक न निहाली—निर्धनता मे धनिकों के-से ठाठ-बाट दिखानेवाले पर व्यंग्य।

मिटे न मेटे रेख हथेली—हथेली मे जो रेखाएँ अंकित हैं वे मिटाये से नहीं मिट सकतीं। आशय यह है कि होन-हार को कोई नहीं रोक सकता। जो कुछ भाग्य मे लिखा है वह होकर रहता है।

मिटे न होनहार की रेख—ऊपर देखिए।

मिट्टी कहे मुझे छूकर तो देखो—मिट्टी कहती है कि ज़रा हाथ लगाओ तब मेरा तमाशा देखो। आशय यह है कि मिट्टी के कार्यों में काफ़ी श्रम करना पड़ता है। तुल-नीय : पंज० मिट्टी कहे मैंनू हथ ला के देखो।

मिट्टी का घर बनाया, मूरख कहे मेरा—(क) शरीर के सम्बन्ध में कहते हैं कि मिट्टी से निर्मित शरीर को मनुष्य अपना कहता है। (ख) अस्थायी चीज़ पर घमंड करनेवाले के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : राज० ला-ला मिटियां घर मांड्यो है, मूरख कह घर म्हारो; पंज० मिट्टी ला-ला कर बनाया मूरख आखे मेरा।

मिट्टी का भांडा आज नहीं तो कल फूटेगा ही—मिट्टी के बर्तन सदा नहीं रहते, एक दिन अवश्य फूटते हैं। अर्थात्

मनुष्य नाशवान है यही बताने के लिए कहते हैं। तुलनीय : भीली-- गारेना गड़या कल गलवाना है; पंज० मिट्टी दा पांडा अज नई कल ते टुटेगा ही।

मिट्टी की देवी तिलकों के लिए ही हुई—मिट्टी की देवी तिलक लगाने में ही समाप्त हो गई। सामान्य चीज़ें देखने-छूने में ही नष्ट हो जाती हैं

मिट्टी के देवता तिलक में ही ग़ायब—ऊपर देखिए।

मिट्टी छुए सोना होता है--नीचे देखिए।

मिट्टी पकड़े सोना हो - मिट्टी छूने से सोना हो जाता है। जब किसी को साधारण से कार्य में भी अच्छा लाभ हो जाय तब उसके प्रति कहते है।

मिट्टी में हाथ डाले सोना होता है— ऊपर देखिए।

मित्र बचाए, सम्बन्धी गिराए—मित्र विपत्ति में सहायता देते हैं तथा संबंधी हानि पहुँचाते है। आशय यह है कि मित्र सम्बन्धी से बड़ा होता है। तुलनीय : गढ़० आबत ठड्यावो सोगे खड्यावो; पंज० व्यार सारै, शरीक मारै।

मित्र वही जो दुख में काम आवे सच्चा मित्र वही होता है जो विपत्ति के समय सहायता करता है। तुलनीय : सं० सद्हृद् व्यसनेथ: स्यात्; पंज० मितर ओही जिहड़ा पैड़े वेले कम आवे।

मित्र वही मर जाय जो अड़ी पर काम न आय—वह मित्र मर जाय जो दुःख के समय काम न दे। उन मित्रों की निन्दा की गई है जो विपत्ति के समय अपने मित्रों का साथ नहीं देते।

मित्र वही है जो समय पर काम आवे दे० 'मित्र वही जो दुख ' '। तुलनीय : मल० सकटे रक्षिक्कुन्न मानुषनल्लोबन्धु; अं० A friend in need is a friend indeed; Adversity is the touch-stone of friendship.

मित्र से मित्र जाना जाता है—किसी व्यक्ति के मित्र को देखकर उस व्यक्ति के बारे में अनुमान लगाया जा सकता है। तुलनीय : उज० दोस्त दोस्त का आईना है।

मिथिलायां प्रदीप्रायाम् दह्यति किञ्चन—मिथिला के भस्मीभूत होने पर मेरा कुछ भी नहीं जलता। (क) निश्चिन्त व्यक्ति के प्रति कहते हैं। (ख) दूसरे की हानि पर ध्यान न देने वाले के प्रति भी कहते हैं।

मियनी बैल बड़ो बलवान, तनिक में करिहैं ठाढ़े कान --मियनी जाति के बैल बड़े बलवान होते है। वे ज़रा से इशारे पर ही कान खड़े कर लेते है। अर्थात् मियनी नस्ल के बैल बलवान और चौकन्ने होते है जो अच्छा काम देते हैं।

मियाँ का दम और किवाड़ की जोड़ी— मियां के पास दम और एक जोड़ी किवाड़ के सिवा कुछ भी नहीं है। बहुत ही निर्धन व्यक्ति को कहते है।

मियाँ का मैल ईद में उतरे—मियां (मुसलमान) के शरीर का मैल ईद के समय ही साफ़ होता है। बहुत गंदा रहनेवाले व्यक्ति के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० मींया को मैल तो ईद में ई उतरै।

मियाँ की छाती फटे, बीबी करे दावत—बीबी उदार होकर सबको दावत देती है और मियाँ की छाती फटती है। (क) पत्नी के उदार तथा पति के अनुदार स्वभावों की तुलना करने के लिए इस लोकोक्ति का प्रयोग किया जाता है। (ख) कम आयवाले की पत्नी यदि अपव्ययी हो तो उसके प्रति भी कहते है। तुलनीय : माल० मियांजी री छातो फाटे ने बीबीजी शिकार बाटे।

मियाँ की जूती कबहों पैर कबहीं सर---मिया साहब की जूती कभी पैर में रहती है और कभी सिर पर। अस्थिर चित्तवाले व्यक्ति के प्रति भी कहते है। तुलनीय : पंज० मियाँ दी जुती कदी पैर कदी सिर।

मियाँ की जूती मियाँ का सर---मियाँ साहब की जूती उन्हीं के सिर पर पड़ रही है। जब अपनी ही बात या अपनी ही चीज़ या अपना ही सिद्धांत अपनी हानि करे तो कहते हैं। तुलनीय : भोज० मियां क जूती मियां क सिर; अव० मियां कै जूती मियां कै सिर; पंज० मिया दी जुती मिया दा सिर।

मियाँ की जूती मियाँ के सिर---ऊपर देखिए। तुलनीय : हरि० अपणां ऐ लीत्तर अपणे ऐ-सिर, गढ़० तैकी जुत्ती तैके सिर; औरे खुड मेरा मुंड; माल० बाड़ रा फूल बाड़ रे मर; मरा० साहेबाचाच, बूट नि साहेबा चेच टाळकें (सडकून काढ़लें); भल० तान् कृपिच्च कुपियिल् तान् तन्ने।

मियाँ की दाढ़ी वाहवाही में गई -मियाँ की दाढ़ी उनकी तारीफ़ करने में ही समाप्त हो गई। अर्थात् झूठी तारीफ़ में धन का नष्ट कर देना। दूसरे से अपनी झूठी तारीफ़ सुनकर जब कोई अपनी दौलत उड़ा डालता है तब कहते हैं। एक बार एक मुल्ला अपने चेलों को यादगार के तौर पर कुछ चीज़ देना चाहते थे। इतने में एक मसखरे ने कहा मुल्लाजी आपकी दाढ़ी हम लोगों को हमेशा आपकी याद दिलाती रहेगी। यह कहकर उसने मुल्ला की दाढ़ी से दो बाल उखाड़ लिए। यह देखकर सब चेले टूट पड़े और

मुल्ला के लाख मना करने पर भी उनकी पूरी साफ दाढ़ी हो गई।

मियाँ की दौड़ मस्जिद तक--दे० 'मुल्ला की दौड़...'।

मियाँ के दिन बुरे, बीबी का दुरभाग--मियाँ के दिन यदि बुरे आ गए है तो यह उसकी बीवी का दुर्भाग्य है। (क) पति की ग़रीबी और मुसीबत में पत्नी को पति से अधिक कष्ट मिलता है। (ख) यदि किसी का दोष दूसरे के माथे मढा जाय तो भी व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० माँटीड़ो निरभाग, ज्यांरी बैर रो अभाग।

मियाँ के मियाँ गए बुरे-बुरे सपने--मियाँ भी मर गए तिस पर भी सभी बुरा-बुरा स्वप्न दिखाई ही पड़ता है, अर्थात् अभी और आफ़त आनेवाली है। जब किसी पर दुःख पर दुःख आता है तब कहते है।

मियाँ गए रौंद, बीवी गई पटरौंद--चरित्रभ्रष्ट दंपति के प्रति कहते है।

मियाँ गोर बराबर--जितने बड़े मियाँ ठीक उसी नाप की कब्र। ठीक-ठीक हिसाब मिलने पर कहते हैं।

मियाँ घर नहीं और किसी का डर नहीं--मियाँ साहब घर नहीं हैं इसलिए कोई चिंता नहीं है, क्योंकि किसी दूसरे से मुझे कोई भय नहीं है। मालिक अथवा अधिकारी की अनुपस्थिति में उसके अधीनस्थ लोग ऐसा कहते हैं। तुलनीय : स० न बिडाली भवेत यत्र क्रीडन्ति मूषिकाः; पंज० मियां घर नई ते किसे दा डर नई; अं० When the cat is away mice play.

मियाँ घर नहीं, बीबी को डर नहीं--ऊपर देखिए।

मियाँ छैल-छटाक, बीबी धूल फटाक--(क) जो स्वयं तो आराम से रहे और परिवारवालों का ध्यान न रखे उसके प्रति भी कहते हैं। (ख) झूठी शान दिखाने वाले के प्रति भी व्यंग्य में कहते हैं।

मियाँजी जनम के मेहरे--मियाँजी तो जन्म के ही हिजड़े हैं। डरपोक व्यक्तियों के प्रति व्यंग्य मे कहते है। तुलनीय : राज० मियाजी जिलमरा गांड़।

मियाँजी मर गए पर टाँग फिर भी ऊँची--मियाँजी मर गए पर टाँग नीची नहीं की। जो व्यक्ति बहुत बड़ी हानि सहकर भी अपनी हठ छोड़ने को तैयार न हो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० मियांजी मरया पण टांग ऊंची रही।

मियाँजी! मर रहे हो क्या? कहा झख मार के--किसी ने पूछा मियाँजी मर रहे हो क्या? तो मियाँजी ने उत्तर दिया झक मार के, अर्थात् राज़ी से नहीं, जबरन मरना पड़ रहा है। जब किसी व्यक्ति को कोई काम अनिच्छा से करना पड़े तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : राज० मियांजी! मरो हो कांई? कै झख मार के।

मियाँ तेरी दाढ़ी किसने काट ली?--मियाँ, तुम तो बहुत बुद्धिमान बनते थे, यह दाढ़ी कैसे कट गई। जब कोई चालाक व्यक्ति किसी से भारी धोखा खा जाय तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० मियाजी-मियाजी थारी जिलंपतरी, दाढ़ी-मछ्या कैण कतरी?

मियाँ तो छोड़ते हैं, पर बीवी नहीं छोड़ती--मियाँ साहब तो छोड़ देते हैं लेकिन बीबीजी नहीं छोड़ती। किसी दयालु व्यक्ति की कठोर पत्नी के प्रति कहते है।

मियाँ नए, कायदे नए--मियाँ भी नए है और उनके क़ायदे भी नए है। नए अधिकारी के आने पर उसकी मन-मानी ही चलती है। तुलनीय : राज० मियां भी नवा'र कायदा भी नवा।

मियाँन में से निकलना ही पड़ता है--म्यान से बाहर निकल जाता है। जब कोई आदमी अकारण बहुत क्रोध करता है या आपे से बाहर होने लगता है तब कहा जाता है।

मियाँ नाक काटने को फिरें बीवी कहें नथ गढ़ा दो--पति महोदय तो नाक काटने को उतारू है और पत्नी नथ गढ़ाना चाहती है अर्थात् बिलकुल उलटा और निरर्थक कार्य करना। जब कोई किसी की इच्छा के ठीक उलटा कार्य करना चाहे तब कहते हैं।

मियाँ ने बहुत हराया बंदी हारी ही नहीं--मियाजी ने तो हराने के लिए काफ़ी प्रयत्न किया लेकिन बंदी ने हार न मानी। किसी बात को गलत जानते हुए भी उस पर अड़ने, जिद करने अथवा वाद-विवाद करने पर यह लोकोक्ति कही जाती है।

मियाँ फिरें लाल-गुलाल, बीवी के हैं बुरे हवाल--दे० 'मियाँ छैल-छटाक ......'।

मियाँ-बीवी राज़ी, तो क्या करेगा क़ाज़ी--पति-पत्नी यदि आपस में मिलजुल कर रहें तो काज़ी कुछ भी दखल नहीं दे सकता। अर्थात् जब दो विपक्षी आपस में मिल जाएँ तो तीसरे की कोई चाल काम नहीं करती। तुलनीय : राज० मियाँ बीवी राजी तो क्या करेला काजी; घणियाणी राजी तो क्या करेगा काजी; कौर० तेरी-मेरी राजी, तो क्या करेगा काजी; मरा० वधू-वर राजी, मग काय करणार भट जी।

मियाँ मर गए या रोज़े घट गए?--मियाँ भी जीवित

हैं और रोजे भी उतने ही हैं। जैसी स्थिति पहले थी वैसी ही अब भी है। अब भी काम हो सकता है। तुलनीय : राज० मियां मरग्या क रोजा घटग्या ?

मियाँ मरें आफ़त की ठेल, बीवी कहें शिकारे खेल—मियाँ तो परेशानियों की ठेल-पेल मे मर रहे हैं और बीवी जी कहती है कि शिकार खेलने जाओ। जब कोई झंझटों में फँसकर परेशान हो और किसी को मौज सूझे तब व्यंग्य में वह ऐसा कहता है।

मियाँ मरें न रोजा टले—न तो मियाँ मरेंगे और न रोजा टलेगा। जब कोई किसी काम में व्यवधान-स्वरूप उपस्थित हो जाता है तब उसके प्रति व्यंग्य मे ऐसा कहते हैं।

मियाँ मुट्ठी भर, दाढ़ी हाथ भर—(क) नाटे क़द और लम्बी दाढ़ीवालों के प्रति मज़ाक़ से कहते है। (ख) औक़ात के बाहर काम करने पर भी कहते है। (ग) बेमेल साज-शृंगार करनेवाले के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : राज० मियां मुट्ठी भर, दाढ़ी हाथ भर।

मियाँ रोते क्यों हो ? कहा-सूरत ही ऐसी है—सदा उदास रहनेवाले के प्रति कहते हैं।

मियाँ से पार न पावें, बीवी का इजार फारें—मियाँ (सबल) से तो पार नहीं पाते, बीवी (निर्बल) का नाड़ा (इज़ार बंद) फाड़ते हैं। मनुष्य का जब सबल व्यक्ति पर ज़ोर नहीं चलता तो दुर्बलों पर ही अपना ज़ोर दिखाता है या ग़ुस्सा उतारता है।

मियाँ से पार न पावें, बीवी को बकोटें—ऊपर देखिए।

मियाँ हाथ अँगूठी, बीवी के कनपात; लौंडी के दाँत मिस्सी, तीनों की एक बात—मियाजी हाथ में अँगूठी पहने हुए है, और बीवी कनपात पहने हुए है तथा नौकरानी होंठों में मिस्सी लगाए हुए है, इस प्रकार तीनों एक समान है। (क) जैसा शौक़ीन मालिक वैसा नौकर। (ख) जब घर मे सभी शौकीन हो जाते है तब कहा जाता है।

मिग्राऊँ का ठौर कौन पकड़ेगा – बिल्ली का मुंह कौन पकड़ेगा ? किसी कठिन या मुसीबत के कार्य को पहले कौन करेगा ? तुलनीय : मन० पूच्चटबकु आरु मणि केट्टुम्; अं० Who will bell the cat ?

मिरगा बाव न बा जियो, रोहन तपी न जेठ, केनें बाँधो भंपड़ो, बैठो बड़लै हेठ—यदि मृगाशिरा नक्षत्र में हवा न लगे, और जेठ में रोहिणी नक्षत्र मे कड़ाके की धूप न हो तो झोपड़ा क्यों बनाते हो ? बरगद के नीचे बैठ जाओ। अर्थात् पानी बिल्कुल न बरसेगा।

मिरज़ापुरी बग़ल में छुरी, खाते-पीते नीयत बुरी—मिरज़ापुर ज़िले के रहने वाले व्यक्तियों की नीयत हमेशा बुरी रहती है यहाँ तक कि खाते समय भी वे बुरी-बुरी बातें सोचते रहते हैं। बात-बात में छुरी मारने को तैयार हो जाते हैं। मिरज़ापुर के रहने वालों पर व्यंग्य है। तुलनीय : अव० मिरजापुरी बगल मा छुरी, खायं से तुआ सतावें पूरी।

मिर्च छोटी, बबकार बड़ी—(क) कभी-कभी छोटों में भी बड़ी करामात होती है। (ख) छोटे बड़े तेज़ या तीखे होते हैं।

मिलकी क्या जाने पराए दिल की—कौन आदमी किस प्रकार सुख-दु:ख से अपना जीवन-निर्वाह करता है, यह धनी आदमी नहीं जान सकता। जब कोई धनी व्यक्ति किसी की तकलीफ़ का खयाल न करे और अपने जैसा उसे भी समझे तब कहते है।

मिलकी ना कहे दिल की, पैठे दरवाज़े निकले खिड़की—धनी अपना कार्य प्रकट रूप से नहीं करता, न अपने दिल की बात किसी को बताता ही है। वह प्रवेश करता है दरवाज़े से और निकलता है खिड़की के रास्ते से। जब कोई धनी व्यक्ति अपना काम गुप्त रूप से करे तब कहते है।

मिल गए की राम राम—मिल गए तो राम-राम कर लिया और न मिले तो कोई बात नहीं। जब किसी की किसी से कोई खास मैत्री नहीं होती तब ऐसा कहते है।

मिल गए की सलाम अलैक—ऊपर देखिए।

मिल गए की हरगंगा—जब इत्तफ़ाक़ से गंगाजी मिल जायँ तो नहा लिया या नमस्कार कर लिया नहीं तो नहीं। अर्थात् मिले तो अच्छा न मिले तो भी अच्छा। जिसका किसी से ख़ास लगाव न हो उसके प्रति कहते है।

मिल रहे सो मजे करे—मिल-जुल कर रहने से ही आनन्द मिलता है। जो व्यक्ति सबसे प्रेम करता है उससे भी सब प्रेम करते हैं। एकता बहुत अच्छी चीज़ है। तुलनीय : भीली० मलीन रेवा हूँ मजो है।

मिला वह खाया, मिला वह पहना—जैसा भी अन्न मिला वही खा लिया, और जो भी कपड़ा मिला उसे ही पहन लिया। (क) प्राय: इसका प्रयोग सादा रहने वालों के लिए किया जाता है। (ख) कभी-कभी आलसी व्यक्तियों के प्रति भी इसका प्रयोग किया जाता है। तुलनीय : गढ़० अन्न नमान् खाणो, वस्तर नमान् लाणो; पंज० मिलया ओ खाया, मिलया ओ पाया।

मिली तो मारी, नहीं बाल ब्रह्मचारी—दे० 'न मिली

नारी तो सदा…'।

मिली तो मारी, नहीं सदा ब्रह्मचारी – दे० 'न मिली नारी तो सदा……'।

मिले तो ईद, नहीं तो रोजा—धन मिल जाय तो ईद और न मिले तो रोजा। (क) जो व्यक्ति धन हाथ में आते ही दोनों हाथ से लुटाते और खूब मौज उड़ाते हों तथा खर्च हो जाने पर भूखे ही सो रहते हों उनके प्रति कहते हैं। (ख) मजबूरी से सज्जन या साधु बनने वाले के प्रति भी व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : राज० मिले तो ईद, नहीं तो रोजा; भीली० अनबाये जनरे ते खानी मानी, अनबाये नी ते खानी मानी।

मिले न गमछा चाहें धोती—रूमाल या अँगोछा (गमछा) भी नहीं मिलता और चाहते हैं धोती। व्यर्थ में ऊँचे खयाल रखनेवालों के प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

मिले मुफ्त का माल, हो जाय मोटी खाल- जिसे मुफ्त का माल खाने को मिलता है वह साँड बनकर घूमता है। (क) आजकल के लड़ने-भिड़नेवाले साधु-संन्यासियों के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। (ख) मुफ्तखोरों के प्रति भी व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय राज० मिलै मुफतरो माल, साँड रैवै गोरा।

मिश्री खाय दाँत टूटें तो कोई क्या करे यदि मिश्री जैसी नरम चीज खाने से दाँत टूट जाय तो कोई क्या करे? जब किसी को साधारण कार्य करने में भी कष्ट होता है तब उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : भीली० हाकर खाता दाँत पड़े ते हूं करवू पड़े।

मिस्सी, काजल किसको, मियाँ चले भुस को मियाँ साहब (पति) नहीं हैं तो किसके लिए मिस्सी और काजल लगा रही हो। भ्रष्ट चरित्रवाली स्त्री के प्रति व्यंग्य में कहते हैं जो पति की अनुपस्थिति में रसिकों को आकर्षित करने के लिए शृंगार करती है।

मिस्सों से पेट भरता है किस्सों से नहीं—रोटी खाने से पेट भरता है, कहानियाँ सुनने से नहीं। आशय यह कि केवल चिकनी-चुपड़ी बातों से पेट नहीं भरता जब तक कि कोई आर्थिक सहायता न की जाय। जब कोई झूठा शिष्टाचार दिखावे, कुछ दे नहीं तब कहा जाता है। (मिस्सा उस आटे की रोटी जो कई प्रकार का अन्न एक साथ मिला कर पीसा जाता है।) तुलनीय : मरा० अन्नाच्या धासानें पोट भरते गोष्टींनी नव्हे।

मीठ बहुत जहँ कीरा लागे बहुत मिठाई में कीड़े पड़ जाते हैं। अर्थात् अधिक प्रेम में दुश्मनी होने का भय रहता है। जब किसी की किसी से बहुत गाढ़ी मित्रता होती है तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० बहुत मिठाई मा किरवा परत है।

मीठ लगे सो गुड़ नहीं, तीत लगे सो नीम नहीं प्रत्येक मीठी वस्तु गुड़ नहीं होती और प्रत्येक कड़वी चीज नीम नहीं होती। आशय यह है कि किसी के बाह्य रूप-रंग एवं सामान्य बातचीत से उसकी वास्तविकता का पता नहीं लगाया जा सकता। किन्हीं दो वस्तुओं में बाह्य समता होते हुए भी उनमें आन्तरिक विषमता होती है। तुलनीय : भीली —गलियां लागे जो गोल नी, खारां लागे जो खांड।

मीठा और कटौता भर —नीचे देखिए।

मीठा और भर कठौती मीठा भी मिले और कठौत भर कर। आशय यह कि अच्छी चीज बहुत नहीं मिलती। (क) जब कोई अच्छी वस्तु अधिक मात्रा में माँगे तो उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। (ख) दुहरा लाभ होने पर भी कहते हैं। तुलनीय : भोज० मीठो आ कठवतिया भर; अव० मिठाई औ भर कठौती।

मीठा खातिर जूठा खाय- लाभ के लिए आदमी दूसरे की खुशामद करता है। जब कोई स्वार्थ के लिए दूसरे की चाटुकारी करता है तब कहा जाता है। तुलनीय : अव० मीठ के बरे जूठौ खावा जात है; राज० मीठैरै लालच ऐंठो खावै, गढ़० मिठ्ठा का लोभ खायेद जूठो, पंज० मिठा देख के जूठा खाधा।

मीठा बोल पूरा तोल- दुकानदार को चाहिए कि ग्राहक से मीठा बोले और तौल या माप में पूरी वस्तु दे। (क) दुकानदारी करने के ये दो मुख्य सिद्धान्त बताए गए हैं। (ख) जब कोई दुकानदार ग्राहक के साथ नम्रता से पेश आये या कम तौले उस पर भी कहा जाता है। तुलनीय : अव० मीठ बोल पूरा तउल।

मीठा-मीठा गप-गप, कड़वा-कड़वा थू-थू —नीचे देखिए।

मीठा-मीठा गप्प कड़ुआ-कड़ुआ थू —अच्छा-अच्छा ग्रहण कर लेना और बुरा-बुरा छोड़ देना। जब कोई लाभ का माल चुन-चुनकर ले लेता है और हानि का दूसरे के लिए छोड़ देता है उस पर व्यंग्य से कहा जाता है। तुलनीय : भोज० मीठ गब गब, तीत छीया छीया; छत्तीस० मीठ-मीठ गप-गप, करू-करू थू-थू; अव० मीठ मीठ गप्प करुआ करुआ थू; गढ़० मिट्ठा का अलड़ा नि रखदा, कड़ा का टलक नि छुदा; मरा० गोड़ गोड़ स्वाहा, कडू असेल ते तुम्ही घ्या।

मीठी कोऊ बस्तु नहिं मीठा जाकी चाह—संसार में कोई भी वस्तु मीठी नही होती है बल्कि मनुष्य की चाह के अनुसार वह मीठी-तीती होती है। अर्थात् कोई भी चीज अच्छी या बुरी नही। यह तो उसकी आवश्यकता और प्रयोग पर निर्भर है।

मीठी छुरी, जहर भरी—मीठी छुरी (चाकू) जहरयुक्त होती है। आशय यह है कि बुरे लोगों के मीठे वचन मे भी कुछ बुराई छिपी रहती है। तुलनीय हरि० मीट्ठी छुरी, झैर भरी; राज० मीठी छुरी जहर मूं भरी।

मीठी बाणी बोलि कै परत पींजरा कीर—तोता मीठी वाणी बोलने के कारण ही पिंजडे में रखा जाता है। अर्थात् इस संसार में गुणी होने के कारण भी लोगों को कष्ट सहना पडता है।

मीठी बात करे, अपनी जेब भरे—मीठी-मीठी बातें करके अपनी जेब भरते है। स्वार्थी लोगों के प्रति कहते है जो चिकनी-चुपडी बातों से दूसरो को मूर्ख बनाकर धन ऐंठते हैं। तुलनीय : भीली -मीठी-मीठी वात करी ने आपणों काम काढे।

मीठी बातों से पेट नहीं भरता—जो केवल मीठी-मीठी बातें ही करते हैं पर देते कुछ नही उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० गिठयां गलां नाल टिड़ नई परोंदा।

मीठी बानी, खतरा निशानी—मीठी बातें करनेवालों मे सावधान रहना चाहिए। धूर्त, लोगों को मीठी-मीठी बातों से फँसाकर ही अपना उल्लू सीधा करते है। धूर्तो के प्रति व्यंग्य में कहते है। तुलनीय : राज० मीठी वाणी दगा-बाजरी निशाणी।

मीठी-मीठी बात से बिगड़े बनते काम—मीठी बोल-चाल से बिगडे काम भी बन जाते है। कड़वी बात सत्य होते हुए भी बुरी लगती है और मीठी बात झूठी होने पर भी सबको अच्छी लगती है। सभी से मीठा व्यवहार करना चाहिए ताकि समय पर काम आवें। तुलनीय : भीली—टाढी हीयालो हारी हाऊ लागे, हारू काम हाऊ थाये।

मीठी-मीठी बोलि के, परठ पींजरा कीर दे० 'मीठी बाणी बोलि के…'।

मीठे के वश जूठा खायें—दे० 'मीठा खातिर…'।

मीठे पर नोन और नोन पर मीठा—भोजन में अदल-बदल का पुट देने मे रुचि बढती जाती है और भोज्य पदार्थ स्वादिष्ट होता जाता है। उसी प्रकार बात करने में सदा एक ही प्रसग की बात नही करना चाहिए बल्कि प्रसंग बदल-बदलकर बात करना चाहिए। एक ही रस की चीज खाते अथवा एक ही प्रसंग की बातें करते-करते जब जी ऊब जाता है तब उसे बदलने के लिए कहा जाता है।

मीठे से मरे तो जहर क्यों दे?—(क) समझाने से मान जाय तो दण्ड क्यों दें। (ख) सरल उपाय से यदि कार्य हो जाय तो कठिन उपाय क्यों अपनाया जाय। जो कार्य सरल उपाय से हो सके उसके करने के लिए जब कोई कठिन उपाय बताए तब कहा जाता है। तुलनीय : अव० मिठाई से मरै तौ जहर कहे का देय; पंज० मिठे नाल मरे तां जहर कैनू देणा।

मीन सनीचर कर्क गुरु, जो तुल मंगल होय, गोहूँ गोरस गोरड़ी, बिरला बिलसे कोय—यदि मीन शनिवार को, कर्क गुरुवार को, तुला मंगलवार को हो तो दूध, गेहूँ और ईख की हानि है। बिरले ही इनसे सुख पाएँगे, अर्थात् ये बहुत कम होंगे।

मीनहि पैरब कौन सिखावे—मछली के बच्चों को तैरना सिखाने की आवश्यकता नही पडती, वे प्राकृतिक रूप से ही जान जाते हैं जिसका जो स्वभाव है, उसी के अनुसार उसे काम आपसे आप आ जाता है। जहाँ पर किसी को ऐसी बात बताने या सिखाने का प्रश्न आये जिसमें वह स्वय दक्ष हो वहाँ पर कहा जाता है।

मीर साहब की जात आली है, मुंह चिकना पेट खाली है—मीर साहब अच्छे खानदान के है, इसलिए ऊपर से तो मुँह चिकनाए रहते है किन्तु पेट भर भोजन नहीं कर पाते। उन व्यक्तियों पर ताने के रूप में कहा जाता है जो ऊपर से तो बडे ठाठ-बाट से रहते है किन्तु भीतर पोल ही पोल रहता है।

मीर साहब जमाना नाजुक है, दोनों हाथों से थामिए दस्तार—मीर साहब! जमाना बहुत बुरा है, दोनों हाथो से पगड़ी (दस्तार) सँभालिए। आशय यह है कि सँभलकर रहने से ही इज्जत रहती है।

मीरां गोर बराबर—जितने बड़े मियां है उतनी ही बडी उनकी क़ब्र। ठीक-ठाक हिसाब मिलने पर कहा जाता है।

मुंडी गैया सदा कलोर—मुंडी (मुंड़ी) गाय हमेशा नई उम्र की (कलोर) जान पडती है। (क) जिन लोगों के मूंछ-दाढ़ी के बाल देर से उगते है उन लोगों के प्रति कहते है। (ख) छोटे क़द के लोगों के प्रति भी व्यंग्य में कहते है क्योंकि अधिक उम्र होने पर भी वे कम उम्र के मालूम पड़ते है।

मुंडी-मुंडा चिल्लायें, सींगों वाले मारे जायें—(क) बिना

सींग के गाय-बैल सहायता के लिए चिल्लाते हैं और सींगों वाले आपस में लड़कर प्राण गँवाते हैं। जिस व्यक्ति के पास कुछ भी नहीं होता वह संपन्न व्यक्तियों को आपस में लड़ा-कर अपने जैसा बनाने का प्रयत्न करता है और यदि कोई उसके जैसा बन गया तो उसके प्रति कहते हैं। (ख) बिना सींगवाले शोर मचाते हैं और सींगवाले दंड भुगतते हैं। अर्थात् जब कोई चुपके से कोई कार्य (बुराई) कर दे और उसकी जगह कोई बदनाम व्यक्ति अकारण दंड पावे तब भी ऐसा कहते है। तुलनीय : भीली—खांड्यू मेंड्यू घराड़ो घाले, हीगालल्या ना हीग भागे।

मुण्डितशिरोनक्षत्रान्वेषणम्—मुण्डन संस्कार करा लेने के पश्चात् उसी कार्य के लिए शुभ मुहूर्त पूछना। कार्य की सुंदर समाप्ति होने पर उसी कार्य के विधान को जानने की इच्छा उपहासास्पद एवं मूर्खतापूर्ण है।

मुंडे-मुंडे मतिर्भिन्ना—जहाँ सभी लोग अलग-अलग विचारधारा के होते है और हर बात पर मतभेद होता है, वहाँ ऐसा कहते है। तुलनीय : भीली—कापाली कपाली मत न्यारी है।

मँड़े सिर पर पानी नहीं ठहरता बेशर्म या निर्लज्ज व्यक्ति के प्रति व्यंग्य में कहते है।

मँह उठाकर चले सो ठोकर खाए—मुँह ऊपर करके चलने वाले के पैर में ठोकर लगती है। आशय यह है कि अभिमान करने वाले का पतन होता है। तुलनीय : मेवा० टसक की टारड़ी अर गारा मँई घच।

मँह ऐसा, जैसे भैंस का चूतड़—मुँह इस तरह का है जैसे भैंस का चूतड़ हो अर्थात् कुरूप है। भद्दी शक्ल पर कहा जाता है। तुलनीय : भोज० मुँह एइसन जेइसे भइँसी क चुत्तर, अव० मुँह ऐसन जैसे भँइँसी कै चूतर; पंज० मुँह इवें जिवें मज्ज दा टुआ।

मँह और थप्पड़ में क्या दूरी है?—मुँह और थप्पड़ में विशेष अंतर नहीं है। यदि कोई व्यक्ति शैतानी या दुष्टता करे तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : माल० गाल थाप रे कइ छेटी है।

मँह कहे 'खाया-खाया' हलक़ कहे 'सवाद न आया'—किसी को बहुत कम मात्रा में भोजन देना। जब कोई किसी को बहुत थोडा खाने को दे तब कहा जाता है।

मँह का कौर नहीं है—कि जल्दी निगल जाओगे। जब कोई किसी कार्य को आसान समझकर शीघ्र कर देने की बात करता है, जबकि वास्तविकता ऐसी नहीं होती तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते है। तुलनीय : अव० मुँह का कौर तौ न होय।

मँह का कौर नाक में नहीं चला जाएगा—जब कोई बहुत सीधे-सादे कार्य को न कर सके और अपनी कमी को छिपाने के लिए इधर-उधर की बातें करे तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

मँह का निवाला तो नहीं है—दे० 'मुँह का कौर…'।

मँह का मोट माथ का महुआ इन्है देखि जनि भूल्यो रहुआ; धरती नहीं हराई जोतै बैठ मेड़ पर पागुर करै—मोटे मुँह तथा पीले रंग के मुँहवाले बैल को देखकर भूल न जाइएगा। वह एक हराई भी न चलेगा और मेड़ पर बैठकर पागुर करेगा। अर्थात् उक्त ढंग के बैल अच्छे नहीं होते, अतः उन्हें नहीं खरीदना चाहिए।

मँह काला जस कोयला, पर है नाम गुलाब—मुँह तो कोयले के समान काला है किन्तु नाम गुलाब है। नाम के अनुसार रूप-रंग या गुण न हो तब कहा जाता है। तुलनीय : अव० मुँह भरसाय अग, नाव गुलबिया।

मँह काला वक़्त उजला—मुँह तो काला है लेकिन उसका समय अच्छा है। अर्थात् देखने में तो कुरूप है किन्तु भाग्य अच्छा है। (क) कुरूप भाग्यवान को कहते है। (ख) (ख) बुरे, पर भाग्यशाली के प्रति भी कहते है।

मँह किसी का नहीं पकड़ा जाता—किसी आदमी को कोई बात कहने से रोका नहीं जा सकता। (क) कोई भी बुरी बात या लोकनिन्दा रोके नहीं रुकती। (ख) जब कोई किसी भले व्यक्ति की बुराई करता है तब ऐसा कहते है। तुलनीय : माल० करारे ढांकणो देवार पर मुड़ा रे ढाकणो नी देवाय; पंज० मुँह किसी दा नईं फड़या जादा।

मँह की तरह मुँह नहीं, रुपया मुँह देखाई—मुँह सुंदर नहीं है फिर भी मुँह की दिखलाई रुपया मांगती है। जब कोई किसी बुरी चीज़ को देने या दिखाने के लिए कोई शर्त लगाता है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते है।

मँह की मीठी हाथ की झूठी—मुँह से आसरा देने की बात तो सरल है, किन्तु दे देना कठिन है। जो आसरा देने का झूठा वायदा करे पर कभी दे नहीं उसे कहते है।

मँह के आगे खंदक नहीं—मुँह इतना बढ़ गया है कि उसके सामने खन्दक भी कोई वस्तु नहीं है। बहुत बोलने-वाले या बहुत खानेवाले को कहते है। तुलनीय : अव० मुँह नाही खंदक है का।

मँह के चिकने पेट के काले—मुँह से तो मीठी-मीठी बातें बकना किन्तु भीतर से कपट रखना। कपटी मित्र को कहते हैं। तुलनीय : अव० मुँह के चिक्कन पेट कै फरिया।

मुँह को कालख लग गई - बदनामी हो गई। जब किसी के अनुचित या बुरे कार्य की समाज में निन्दा हो तब कहा जाता है। तुलनीय : अव० मुँह मा कारखा लाग गा; हरि० काला मुँह होग्या; पंज० मुँह काला कर दिता।

मुँह को रोटी दो, चाहे जूते मारो - खाने के लिए रोटी दो या जूते मारकर भगा दो। (क) निर्धन का संपन्न से अनुरोध। (ख) कर्मचारी पर जब अपनी भूल या गलती के कारण अधिकारी की डाँट पड़ती है तब वह ऐसा कहता है।

मुँह खाय आँख लजाय - मुँह खाता है पर आँख लजाती है। अर्थात् जो जिसका खाता है उसे उसके सामने झुकना पड़ता है। तुलनीय : अव० मुँह खाय पेट लजाय, गढ़० मुख खौ आँख लजौ, पंज० खावे मुँह शरमावे अख, ब्रज० मुँह खावै और आँखि लजावै।

मुँह खुला दिल खिला - मुँह के खुलने से दिल खिल जाता है। आशय यह है कि चेहरे से मन के भाव प्रकट हो जाते हैं। तुलनीय : असमी - मुख् मेलोतेइ गर्म देखि, सं० वाक्य हृदयदर्पनम्, अं० Face is the index of mind.

मुँह गैल तमाचे हैं - (क) जैसा आदमी देखे वैसा ही व्यवहार करे। (ख) जितना बोझ उठा सके उतना ही लादे। (ग) उपयुक्त दण्ड देने या मुँहतोड़ जवाब देने पर भी कहा जाता है। तुलनीय : अव० मुँह देख कै तमाचा।

मुँह चलाने से काम नहीं चलता - बातें करने से काम नहीं चलता, काम करने से ही काम होता है। जो व्यक्ति बैठे-बैठे केवल बातें ही करते हैं और काम कुछ नहीं करते उनके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : भीली — आलो ढालो कीदे काम नी चाले, पंज० मुँह चलाण नाल काम नईं चलदा।

मुँह चिकना पेट खाली - मुँह तो ऊपर से चिकनाए हुए हैं किन्तु पेट नहीं भरा है। आशय यह कि ऊपर से तो ठाटबाट बना हुआ है लेकिन भीतर से पोला है। शेखीबाज़ या केवल ऊपरी तड़क-भड़क बनाये रखनेवाले को कहते हैं। तुलनीय : अव० मुँह चिक्कन पेट खाली; हरि० मुँह चीकणा पेट खाली।

मुँह चीरा तो भरेगा भी - भगवान का भरोसा है। जब उसने मुँह बनाया है तो उसे भरने का भी प्रबन्ध करेगा। ईश्वर के प्रति आस्था रखनेवाले आलसी या निकम्मे लोग कहते हैं।

मुँह जूतियों पीटा - चेहरा उतरा हुआ है। जिसका चेहरा उतरा हुआ हो और फिटकार बरसती हो उसे कहते हैं। तुलनीय : अव० मुँह पर जस जूता परा होय।

मुँह टेढ़ा शीशे का दोष - मुँह तो टेढ़ा है लेकिन कहते हैं कि शीशा ठीक नहीं है। जो अपनी कमी को न देखकर दूसरे को दोष लगाता है, उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : असमी - निजर् मुख बेंका, दापणित चारि चर; पंज० मुँह पैंडा खराब गीगा; अं० A bad workman quarrels with his tools.

मुँह तक आया कौर भी अपना नहीं होता - मुँह के पास तक पहुँचा हुआ कौर भी तब तक अपना नहीं होता जब तक कि पेट में न चला जाय। आशय यह है कि जब तक कोई कार्य पूरा न हो जाय तब तक उसका भरोसा नहीं करना चाहिए। तुलनीय : अं० There is many a silp between the sauce and the lip.

मुँह तो मूसा और आदत इबलीस - मुँह तो मूसा जैसा सीधा-सादा है और आदतें इबलीस (शैतान) जैसी बुरी हैं। जो व्यक्ति देखने में सीधा-सादा हो किन्तु वास्तव में बुरा हो उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : सि० मुँह तो मूसा जरो आदत में अबलिस।

मुँह दूर या थप्पड़ - दे० 'मुँह और थप्पड़ में…'।

मुँह देखकर थप्पड़ - मुँह देखकर थप्पड़ मारना चाहिए। अर्थात् मनुष्य को समझकर उसके साथ बर्ताव करना चाहिए।

मुँह देखकर थप्पड़ मारना चाहिए - अर्थात् जैसा आदमी देखे उसके साथ वैसा ही बर्ताव करे।

मुँह देखकर बात — ऊपर देखिए। तुलनीय : अव० मुँह देखी बात करत हैं।

मुँह देख के टीका काढ़ा जाता है — जैसा छोटा, बड़ा मुँह होता है उसी आकार का टीका भी काढ़ा जाता है। आशय यह है कि जैसा आदमी देखे उसके साथ वैसा ही बर्ताव करे। जब कोई अपने धनवान संबंधी की अधिक खातिर करे और निर्धन की कम तब निर्धन ताने के तौर पर कहता है। तुलनीय : अव० मुँह देखे का बेउहार; राज० मूँ देखे टीको काढ़ै; मुँढ़ा देख'र टीका काढै।

मुँह देख के बीड़ा, और चूतड़ देख के पीढ़ा — मुँह देखकर पान का बीड़ा देना चाहिए और चूतड़ देखकर बैठने के लिए पीढ़ा। अर्थात् जो जैसा हो उसका वैसे ही आदर-सत्कार करना चाहिए। (बीड़ा = पान, पीढ़ा = लकड़ी का बना हुआ बैठने का आसन)। तुलनीय : अव० मुँह देख कै बीरा; गढ़० मुखड़ी देखीक टकड़ी।

मुँह देख बात, सर देख सलाम —ऊपर देखिए। तुलनीय : पंज० मुआं नू मुलाजे ते सिरां नू सलामा।

मुँह देखा व्यवहार करते हैं —नीचे देखिए।

मुँह देखी सब कहते हैं खुदा लगती कोई नहीं कहता —लोग मुँह देख-देखकर बात करते हैं अर्थात् संकोच में आकर पक्षपात करते हैं, सच्ची बात कोई नहीं कहता। (क) जब कोई न्याय की बात न करे और मुलाहिजे में आकर पक्षपात करे तब कहा जाता है। (ख) चापलूसी करने वाले के प्रति भी व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : अव० मुँह देखी सबै कहत है।

मुँह देखे की प्रीति है —नीचे देखिए।

मुँह देखे की मुहब्बत है —प्रत्यक्ष मिल जाएं तो प्रेम प्रदर्शित करते हैं अन्यथा नहीं। ऊपरी प्यार या प्रेम पर कहते हैं। तुलनीय : अव० मुँह देखे कै मोहब्बत, राज० मूँ देख्यारी प्रीत है; माल० मूंडा देख्या री प्रीत है।

मुँह धो आओ या धो रक्खो —अर्थात् तुम इसके पात्र नहीं हो। अनुचित तथा असंभव मांग पर व्यंग्य में कहा जाता है। तुलनीय : अव० मुँह धोय आवा, हरि० पहला हाथ-मुँह धो या; गढ़० मुख धवैक ऐजा।

मुँह धोवे रोजी खोवे, न्हाय नर्क में जाय —जैन सम्प्रदाय वालों की धारणा है कि मुँह धोने और स्नान करते समय भी जीव-हिंसा होती है, इससे मनुष्य नर्क में जाता है। यह जैनियों के प्रति व्यंग्य है जो जीव-हिंसा के भय से न दाँत साफ करते हैं और न स्नान ही करते हैं।

मुँह न तुंह नाम चाँद खाँ —शक्ल तो बुरी है लेकिन नाम चाँद खाँ रखा गया है। आशय यह कि नाम के अनुसार रूप नहीं है। नाम के अनुसार रूप न हो तब कहा जाता है।

मुँह नूर, न पेट सबूर —न तो मुँह सुन्दर है और न पेट में धैर्य है। अभागे मनुष्य को कहते हैं।

मुँह पर कहे सो मूँछ का बाल, पीछे कहे सो झाँट का बाल —आशय है कि मुँह पर कहना अच्छा होता है। पीठ के पीछे किसी की निन्दा करना अच्छा नहीं। निन्दक व्यक्ति के प्रति कहा गया है।

मुँह पर कुछ, और पीठ पीछे कुछ और —मुँह के सामने कुछ बात करते हैं और पीठ पीछे कुछ दूसरी बात। इधर-उधर की लगानेवाले या मुँह देखी बात करनेवाले व्यक्तियों के लिए कहा जाता है। तुलनीय : अव० मुँह पै कुछ पाछे कुछ।

मुँह पर पूत, पीछे हरामी सूत —सामने पड़ने पर पुत्र की तरह प्रेम दिखाना और पीठ पीछे बुरा-भला कहना। दिखावटी स्नेह पर कहा गया है। तुलनीय : अव० मुँह पै पूत, पाछे हरामी कै पूत; माल० मूंडा आगे हाजी हाजी पीठ पाछे काजी काजी।

मुँह पर फिटकार बरसती है या मक्खियाँ भिनकती हैं —गंदगी के मारे मुँह पर मक्खियाँ भिनक रही हैं। बद-चलन और गंदे मनुष्य को कहते हैं।

मुँह पर मीठा, पीठ पर झूठा —मुँह पर सभी अच्छा बताते हैं और पीठ पीछे झूठा। अर्थात् सामने कोई भी बुराई नहीं करता। तुलनीय : भीली —पीठे एंठा ने मुंडे मीठा हारा है।

मुँह पर मुमानी, पीठ पीछे मुअरखानी —जो मुँह पर किसी की बड़ाई करे और पीठ पीछे बुराई करे उसके प्रति कहा जाता है।

मुँह पर हँसे, पीठ पर भौंके —मुँह के सामने तो हँसता है और चले जाने के बाद बुरा-भला कहता है। मुँह देखी बात करनेवाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : भीली —मुंडे ते आहा वाला, पूठे भोंक्या वाला घणा है।

मुँह बटुआ-सा, नाक सुआ-सी —मुँह बटुआ जैसा है और नाक तोते जैसी। मुँह तो बहुत बड़ा है और नाक बहुत छोटी है। बदसूरत आदमी के लिए कहा गया है। तुलनीय : अव० मुँह बटुआ अस, नाक सुपारी अस।

मुँह महेरवाँ पीठ सिकंदरपुर —मुँह तो महेरवाँ की ओर है और पीठ सिकंदरपुर की ओर। भद्दी बनावटवाले व्यक्ति के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। (महेरवाँ और सिकंदरपुर दो गाँव हैं)।

मुँह माँगी मौत भी नहीं मिलती —चाहने से आदमी मौत को भी नहीं पा सकता। तात्पर्य यह है कि मनचाही या मुँहमाँगी चीज नहीं मिलती। जब कोई मनुष्य जितना एक बार कहे उतना ही लेने के लिए हठ करे तब कहा जाता है। तुलनीय : अव० मुँह-मांगी मउत नाहीं मिलत, मरा० मागून मरण हि मिळत नाहीं।

मुँह माँगे दाम नहीं मिलते —अपने मुँह माँगा हुआ दाम नहीं मिलता। (क) माँगने से कुछ नहीं मिलता। (ख) मन-चाहा कार्य नहीं होता। जब कोई मनुष्य जितना एक बार माँगे उतना ही लेने के लिए हठ करे तब कहा जाता है। तुलनीय : भोज० मुँह-मांगल दाम नाहीं मिलऽला; अव० मुँह माँगा दाम नाहीं मिलत।

मुँह मीठी अरु पेट कसाइन —मुँह से मीठी वाणी बोलते हैं पर भीतर से कपटपूर्ण व्यवहार करते हैं। साधु भेष में दुष्टों का-सा बर्ताव करने पर यह लोकोक्ति कही जाती है।

मुँह में आई सो कह दी—जो बात मुँह में आ गई, उसे कह दिया। बिना सोचे-समझे बात करनेवाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : अव० मुंह मा जउन आवा, तउन बक दिहेन; पंज० जो मूह आया कह दिता।

मुँह में आया कौर फिसल गया—मुँह में आया हुआ कौर फिसल कर गिर गया। जब कोई बना-बनाया काम बिगड़ जाय तब कहते हैं।

मुँह में आया सो बक दिया दे० 'मुँह में आई सो ...'।

मुँह में दाँत, न पेट में आँत—न तो मुँह में दाँत रह गए हैं और न पेट में आंत। बहुत बूढ़े आदमी के लिए कहा गया है जिसकी सारी इंद्रियां शिथिल हो चुकी है। तुलनीय : अव० मुँह मा दाँत, न पेटे मा आंत।

मुँह में दाँत नहीं और बात करे बढ़-बढ़ के—अभी मुँह में पूरे दांत भी नहीं निकले और बातें करता है बड़ी-बड़ी। जो कम आयु का होने पर भी बड़ों के सम्मुख डींग हांके उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : भीली—दाँता माँये ते दूध नी, मोटा बात करे।

मुँह में दाँत नहीं मटर का चसका—मुँह में दांत नहीं हे लेकिन मटर खाना चाहते हैं। सामर्थ्य से बाहर कार्य करने पर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० मुँह में दात ना चललऽ हँ गुल्ला माँड़े, मैथ० मुह में दाँत नेठ मोटर जलपान।

मुँह में धान डालने पर लावा नहीं फूटता—असभव कार्य के लिए ऐसा कहते हैं।

मुँह में बत्तीस दाँत है—जिस व्यक्ति के बत्तीस दांत होते हैं वह जो कह दे वही सत्य हो जाता है। जब किसी व्यक्ति का दुराशीष सत्य हो जाय तो उसके प्रति घृणा प्रदर्शित करने के लिए कहते हैं तुलनीय : राज० मूँढ़ में बत्तीस दांत है।

मुँह में मीठा, पेट में ईंटा—मुँह से तो बहुत मीठा बोलता है, किन्तु पेट में ईंट रखता है। कपटी व्यक्ति सबसे मीठा बोलता है, किन्तु अवसर पाते ही धोखा देता है। कपटी व्यक्ति के प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० मूं मीठो, पेट खोटो।

मुँह में राम बगल में छुरी—नीचे देखिए।

मुँह में राम बगल में छुरी—मुँह से तो राम-राम कहते है परन्तु बगल में छुरी रखते हैं कि मौका मिलते ही मार दें। ऐसे व्यक्ति के प्रति कहते हैं जो ऊपर से भक्त हो पर भीतर से बुरा या दुष्ट हो। तुलनीय : राज० मूँमें राम बगल में छुरी; मुख में राम बगल में छुरी; बुंद० ऊपर से राम-राम, भीतर कसाई काम; कन्न० माहोदु पारायण, आडोदु सटे (मातु); तमि० पसबद रामायणम् इड़िपद रामर कोचल; मल० अकत्तु कत्तियुम् पुरत्तु पतियुम्; असमी- मुखत् मधुर बाणी, हृदयत् क्षुरर्खाण; सं० मधु तिष्ठति जिह्वाग्रे हृदयेतु हलाहलम्; ब्रज० मुँह मे राम बगल में छुरी; अं० Beads about the neck and devil in the heart.

मुँह में राम-राम, पेट में कसाई का काम—ऊपर देखिए। तुलनीय : अव० मुहना पर राम राम, पेटवा मा कसाई का काम।

मुँह में राम-राम, बगल में छुरी—दे० 'मुँह में राम बगल...।' तुलनीय : अव०मुँह मा राम-राम बगल मा छुरी।

मुँह में राम-राम, भीतर कसाई का काम—दे० 'मुँह मे राम बगल...'।

मुँह रहते नाक से खाय मुँह रहते हुए नाक से खाता है। (क) मूर्खतापूर्ण कार्य करनेवाले के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। (ख) साधन रहते हुए कष्ट सहनेवाले के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : अव० मुँह रहैं आफत होय; पंज० मुह हुँद नक ना खावे।

मुँह लगाई डोमनी, गावे ताल-बेताल—वह डोमनी जो बहुत मुँहलगी होती है ताल से बेताल गाने लगती है। अर्थात् किसी पर अत्यधिक कृपा दर्शाने से कार्य बिगड़ जाता है। जब कोई साधारण मनुष्य किसी की कृपालुता का अनुचित लाभ उठाए और अपनी हैसियत से बाहर बातें करने लगे तब कहा जाता है। तुलनीय : अव० मुँह लागी डोमिनी, गावै ताल बेताल।

मुँह लगाया, कुत्ता मुँह चाटता है—ऊपर देखिए। तुलनीय : अव० मुँह लगाय कुकुर मुंह चाटत है; ब्रज० मुँह लगायौ कुत्ता मुँह ऐ चाटै।

मुँह लगाया, सिर चढ़े—मुँह लगाने से ही लोग ढीठ बन जाते हैं। किसी से अधिक मेल-जोल ठीक नहीं होता। जब कोई मुँह लगा हो जाने के बाद बहुत बढ़कर बातें करने लगता है तब कहते है। तुलनीय : राज० मूँढै चढाया माथै चढ़ै।

मुँह लगी और फ़ैल मेरे पेट में—छुआ नहीं और सारे अवगुण पैदा हुए। शराब पर कहा गया है जिसके छूते ही सारे दोष आ जाते हैं

मुँह लगी मिरासिन गए ताल-बेताल—दे० मुँह 'लगाई डोमनी...'। तुलनीय : कौर० मूं लाई डूमणी, गावै आळ-पताळ।

मुँह सुई, पेट कुंई—मुँह सुई जितना दुबला-पतला और छोटा है तथा पेट कुंई जैसा गहरा और बड़ा है। जो व्यक्ति बहुत दुबले तथा नाटे हों किंतु भोजन बहुत अधिक करते हों उनके प्रति कहते है। तुलनीय : राज० मूँ सूई-सो पेट कुई-सो; पंज० मूँह सूई ढिड खूई।

मुँह से कही लौटती नहीं—जो बात कह दी जाय वह वापिस नही लौटती 'इसलिए प्रत्येक बात को सोच-विचार कर कहना चाहिए। जो व्यक्ति बिना सोचे-समझे बातें करे तथा उसका बुरा फल उसे मिले तो उसके प्रति कहते है। तुलनीय : माल० खूँटा री छूटी पाछी आइ जाय, पण जबान री छूटी पाछी नी आवे।

मुँह से छूटी बात और कमान से छूटा तीर—दे० 'मुँह से निकली बात…'।

मुँह से निकली खल्क में पहुँची—मुँह से निकलते ही बात चारों ओर फैल जाती है। जब कोई बात बहुत जल्दी चारों ओर फैल जाय तब यह लोकोक्ति कही जाती है।

मुँह से निकली बात और कमान से छूटा तीर बराबर हैं—दोनों ही लौट नही सकते। मुँह से बात बहुत सोच-समझकर निकालनी चाहिए। तुलनीय : उज० कही गई बात, चलाई गई गोली; भोज० मुँह से निकलल बात बन्दूक से निकलल गोली।

मुँह से निकली बात, बन्दूक से निकली गोली—ऊपर देखिए।

मुँह से निकली, हुई पराई बात—जो बात मुँह से एक बार कह दी जाती है या निकल जाती है उसे वापस नहीं लिया जा सकता और उसकी कोई भी कीमत नहीं रह जाती। जो मनुष्य बिना सोचे-समझे कोई ऐसी बात कह देता है जिसका परिणाम बुरा हो और उसमें यदि कोई परिवर्तन या सुधार लाना चाहे तब कहा जाता है। तुलनीय : ब्रज० मुँह ते निकसी बात पराई है जायँ।

मुँह से महाबा—मुँह देखकर भय होता है। कड़ी निगाह रखने काम ठीक होता है। मजदूर इत्यादि सब मालिक के न रहने पर काम ठीक से न करें और रहने पर ठीक से करे तब कहा जाता है।

मुँह से हजार चाउर खाय, नाके से एको ना—मुँह से लोग बहुत सा खाना खाते है किन्तु नाक से बिलकुल नही खाते। आशय यह कि काम उतना ही करना चाहिए जितना आसानी से हो सके। (क) जब कोई व्यक्ति किसी के कहने से विशेष या ऐसा काम कर जाए जिससे उसे हानि उठानी पड़े तब यह लोकोक्ति कही जाती है। (ख) उचित साधन से बहुत काम हो सकता है पर अनुचित साधन से कुछ भी नही हो सकता। (ग) प्रेम से बहुत काम कराया जा सकता है पर जबरदस्ती कुछ भी नहीं।

मुँह हाले, सत्तर बला टाले—जब मुँह में कुछ गया या मुँह से कुछ कहा तो समझना चाहिए कि रोग भागा या काम करने से बच गया। (क) रोगी के लिए कहा गया है कि जब वह खाने लगे तो समझ लो कि रोग का अंत हुआ। (ख) सुस्त तथा आलसी के लिए भी कहा गया है जो कुछ न कुछ बहाना करके काम करने से बचना चाहता है।

मुँह ही मुँह मारे और तोबा-तोबा पुकारे—मुँह पर ही मारना चाहिए और डाट कर खेद देना चाहिए। तात्पर्य यह है कि ताडना देने से ही लड़के सुधरते है। जब कोई शरारती या जिद्दी बालक समझाने से न माने तो क्रोध से यह कहा जाता है।

मुँह लगाय केते, कहौ, पियत सिंहनी छीर—बतलाइए, कितने ऐसे पुरुष है जो कि सिंहनी के दूध को उसके स्तन से मुँह लगाकर पीते है? अर्थात् बहुत कम है। अपने प्राण की चिंता को छोड़कर वीरता के कार्य करने वाले बहुत कम होते है।

मुआ घोड़ा भी कहीं घास खाता है—मरा हुआ घोड़ा कभी घास नहीं खा सकता। यह असम्भव है। अर्थात् समय के प्रतिकूल कोई मनुष्य कोई कार्य नहीं कर सकता। (ख) जब कोई वृद्धावस्था में जवानी का मजा लूटना चाहता है तब कहा जाता है। अन्य धर्मी श्राद्ध करने पर व्यंग्य में कहते है।

मुई बछिया बाह्मन को दान—दे० 'मरी बछिया…'।

मुई माई टूटी सगाई—माँ के मरने पर पीहर से सबंध टूट जाता है। क्योंकि माँ ही लड़की से सबसे अधिक प्यार करती है। तुलनीय : अव० मर गई माई टूट गय सगाई।

मुई सवति सतावे, काठ क ननदि बिरावे—सौत (सवति) मरी हुई भी कष्ट देती है और ननद काठ की हो तब भी वह परेशान करती है। आशय यह है कि सौत और ननद ये दोनों बहुत कष्टदायी होती है।

मुए चाम से चाम कटावें, भुइं सकरी माँ सोवें; घाघ कहैं ये तीनों भकुवा, उढ़रि जायँ औ रोवें—जो मरे हुए चमड़े से चमड़ा कटाता (तंग जूता पहनता) है, ज़मीन पर भी संकरी जगह (सिकुड़ कर) में सोता है और जो रखैल रख-कर उसके भाग जाने पर पछताता या विलाप करता है घाघ कहते हैं कि ये तीनों मूर्ख होते है।

मुएंगे और सो रहेंगे—मरने पर निश्चित होकर

मोगेंगे। क्योंकि मरने पर सभी चीजों से मुक्ति मिल जाती है। मरने पर कहा जाता है।

मुए पर सौ दुर्रे—मरने पर भी सौ-सौ कोड़े मारना। बुरे व्यक्ति की मरने पर भी निन्दा होती है। आशय यह है कि बुरे व्यक्ति को सदा प्रताड़ना ही मिलती है।

मुए शेर से जीती बिल्ली भली—मरे हुए शेर से जीवित बिल्ली ही अच्छी है। (क) अर्थात् जीवन एक अमूल्य वस्तु है चाहे वह कितना ही क्षुद्र क्यों न हो। (ख) शक्तिशाली और डरपोक से तो शक्तिहीन और उत्साही व्यक्ति ही अच्छा है। जब कोई कमजोर आदमी कोई बड़ा और साहस का काम कर दे लेकिन एक ताकतवर और डरपोक आदमी वह कार्य न कर सके तो व्यंग्य में कहा जाता है। तुलनीय : पंज० मरे सेर नो जीदी बिल्ली चंगी।

मुकदमा बाग का बहस खलिहान की—मुकदमा है बाग के विषय में और बहस कर रहे हैं खलिहान के विषय में। किसी और बात को सिद्ध करने के लिए जब कोई असावधानी या मूर्खता के कारण ऐसे तर्क देने लगे जिससे वह बात सिद्ध न होकर कुछ और सिद्ध होने लगे तो कहते हैं।

मुक़ाबिले का आगे बढ़े, दिलजला जल कर मरे—प्रतियोगिता करनेवाला आगे बढ़ जाता है अर्थात् उन्नति करता है और ईर्ष्या करनेवाला वहीं का वहीं रह जाता है। ईर्ष्या करनेवालों की बुराई और प्रतियोगियों की प्रशंसा करने के लिए इस प्रकार कहते हैं। तुलनीय : गढ़० हुरयाली सो हुवे जो, हिरयाली भी चल जो।

मुकियाने से कटहल नहीं पकता—मुक्का मारने से कटहल नहीं पकता। अर्थात् जबरदस्ती किसी को इच्छानुकूल नहीं बनाया जा सकता। तुलनीय : भोज० मउले गूलर ना पाके।

मुक्का बाजे धम-धम, विद्या आवे छम-छम—दे० 'छड़ी लागे छमछम…'।

मुक्का बाजे धम-धम, विद्या आवे धम-धम—दे० 'छड़ी लागे छमछम…'।

मुखड़ा तलवों को न पहुँचे—यह इतना सुन्दर है कि दूसरे का मुँह इसके पैर के तलवों से भी मुकाबिला नहीं कर सकता।

मुख देखकर जलपान—मुँह देखकर जलपान कराया जाता है। आशय यह है कि जो जैसा होता है उसके साथ वैसा ही व्यवहार किया जाता है।

मुख में राम, बगल में छुरी—दे० 'मुँह में राम बगल में…'।

मुख़ादिम खाँ के साले हैं—दूसरों के बल पर लंबी-चौड़ी बातें करनेवाले के प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

मुखिया के फोड़ा हुआ, सारे गाँव को जमा किया—गाँव के मुखिया के यदि फोड़ा हो जाए तो वह सारे गाँव में समाचार पहुँचा देता है। जब कोई बड़ा आदमी छोटा-सा कष्ट होने पर शोर मचाकर सबको इकट्ठा कर लेता है तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : माल० हाजी रे गमड़ो व्यो तो पपोरी पंपोरी ने मोटो कीदो।

मुजर्रद सबसे आला, जिसके लड़का न बाला—अविवाहित व्यक्ति निश्चिन्त रहता है क्योंकि उसे किसी प्रकार का झंझट नहीं रहता। (मुजर्रद = कुँवारा, बिना ब्याहा)।

मुजर्रद सबसे आला है, न जोरू है न साला है—क्वाँरे आदमी का जीवन सबसे अच्छा होता है क्योंकि उसे न तो स्त्री की फ़िक्र होती है और न साले की। निश्चिन्त व्यक्ति के के प्रति कहा गया है जिसे किसी की चिन्ता नहीं होती और न उसके आगे-पीछे कोई होता ही है।

मुझको कोई पूछे ना, मैं हूं धन्ना सेठ—झूठी शान दिखानेवाले के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

मुझसे गोरी सो पीलिया की मारी—जो मुझसे अधिक गोरी हो समझ लो उसे पीलिया रोग हुआ है। जो व्यक्ति सुन्दर न होने पर भी अपने को बहुत सुन्दर समझे और दूसरों की सुन्दरता में दोष निकाले उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० मीस गोरी जकैनै पीलिया रो रोग।

मुझ से बचे तो कोई और पाए—ऐसे व्यक्ति के प्रति व्यंग्य में कहते हैं जो किसी चीज को दूसरों को न देकर सारा स्वयं हड़प जाता है।

मुझसे ही आग ली नाम धरा बैसंदर—मुझसे ही मांग कर आग ले गई है और उसका नाम रक्खा है बैसंदर (वैश्वानर = यज्ञ की पवित्र अग्नि)। (क) सगरों के धन पर अभिमान करनेवाले के प्रति कहते हैं। (ख) दूसरे की सम्पत्ति से नाम कमानेवाले के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : कौर० मेरे ई ते आग लाई, नाँ धर्‍या बैसुन्दर।

मुझे कोई और नहीं, तुझे कोई ठौर नहीं—नीचे देखिए। तुलनीय : मेवा० थारे मारे बणेरी अर थारे बना मारे सरेनी।

मुझे कोई ठौर नहीं, तुझे कोई और नहीं—मेरे लिए न कोई दूसरी जगह है और न तुम्हारे लिए कोई दूसरा आदमी है। जब किन्हीं दो आदमियों में पटती न हो और वे आपस

में लड़ते-झगड़ते रहते हों, किंतु फिर भी इकट्ठे रहते हों या उनका और कोई संगी-साथी न हो इसी कारण लड़ने के बाद भी साथ रहते हों तो उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय : माल० मने दूजी ठोर नी थारे कोई ओर नी; पंज० मैनू कोई थां नई तैनूं कोई और नही।

मुझे दे सूप तू हाथों फूंक —मुझे सूप दे दीजिए और आप हाथों से ही फूंक लीजिए। सूप की आवश्यकता दोनों व्यक्तियों को है किंतु स्वार्थी व्यक्ति अपना काम साधने के लिए, जिसका सूप है उससे तो सूप माँग लेता है और उसको हाथ से फूंकने के लिए कहता है। इसी ही प्रकार की आवश्यकता पड़ने पर जब कोई स्वार्थी व्यक्ति अपनी स्वार्थ-सिद्धि के पीछे दूसरे की आवश्यकता पर ध्यान न दे तब कहा जाता है। तुलनीय : गढ़ मेरी घाण ऐ जो बादइ को बल्द बाघ जीजो, माल० एमद्या री टोपी ममद्या रे माथे, एमदा फरे उघाड़े माथे।

मुझे न पूछे कोय, मैं बिटिया की मौसी—मुझे कोई पूछता नहीं है फिर भी मैं लड़की की मौसी हूँ। जहां किसी का कोई सम्मान न हो फिर भी वहां वह अपना सम्मान-जनक पद बतलावे तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते है।

मुझे न मारे तो सारे जहान को मार आऊँ यह कहना कितना गलत है कि कोई गर्वी दुनिया को मारने के लिए तैयार है, यदि उसे कोई न मारे। शेखीबाज पर कहा जाता है जो व्यर्थ की हांकता है।

मुझे बूझ, मैं खरा - मुझसे पूछो, मैं ईमानदार हूं। स्वयं अपनी प्रशंसा करनेवाले के प्रति व्यंग्य में कहते है।

मुड़ा जोगी नहीं, पहने-ओढ़े भोगी नहीं —जिन व्यक्तियों ने सिर मुँड़ा रखे रहे हैं वे सभी साधु नहीं है और जो अच्छे कपड़े पहने होते हैं वे सभी विलासी नहीं होते। आशय यह है कि व्यक्ति के चरित्र का पता उसके पहनावे से ही नहीं चल जाता। तुलनीय : राज० माथो मुंड्यां जती नही, आधो ओढ्यां गर्नी नही।

मुड़ा जोगी पिसी दवा मुंडा योगी और पिसी हुई दवा पहचानी नहीं जा सकती। जोगी जब सिर मुँडा लेता है तो यह नहीं मालूम पड़ता है कि हिन्दू है अथवा मुसलमान। उसी प्रकार दवा पिस जाने पर नहीं मालूम पड़ती कि कौन-सी दवा है। आशय यह है कि स्वरूप बदलने पर किसी चीज की पहचान करना कठिन होता है। तुलनीय : राज० मूंड्योड़ै माथैरो अर बांट्योड़ी ओखदरो कांई ठा पड़ै; गढ़० मुड्यू जोगी अर पीसी दवाइ।

मुड़े सिर पर पानी पड़ा, ढल गया घुटे हुए सिर पर पानी पड़ते ही फिसल जाता है। बेशर्म व्यक्ति के प्रति कहते हैं जिस पर किसी चीज का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

मुद्दई सुस्त, गवाह चुस्त—मुद्दई तो सुस्त है किन्तु उसका गवाह सतर्क है। (क) रिश्वत खाकर गवाही देने-वाले को कहते है। (ख) जिसका काम हो वह निश्चिन्त हो और दूसरे परेशान हों तब भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० मुद्दई सुस्त, गवाह चुस्त; गढ़० मुद्दई सुस्त गवाह चुस्त, माल० मुद्दई सुस्त गवाह चुस्त।

मुनिर्मनुते मूर्खो मुच्यते —मुनि ईश्वर का ध्यान करता है और मूर्ख मोक्ष प्राप्त करता है। जब किसी के प्रयत्नों का फल किसी और को प्राप्त होता है तब कहते है।

मुनिहि हरिअरइ सूझ —उन्हें तो हरा ही हरा सूझ रहा है। जब कोई यथार्थ स्थिति तथा कर्तव्य आदि को भूल कर अपने लिए किसी अशोभन कार्य में रत हो तो कहते है।

मुफ़लिस का चिराग़ रोशन नहीं होता—गरीब आदमी के घर में कभी दिया नहीं जलता। गरीब आदमी का कोई कार्य सफल नहीं होता। जब निर्धन व्यक्ति का साधारण कार्य भी सफल न हो उस समय यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : पंज० गरीब दा दिवा वी कद बलदा है।

मुफ़लिस का मुर्दा दरियाव में बहना है—गरीब (मुफलिस) का मुर्दा बिना जलाए फेंक दिया जाता है। (क) धनाभाव के कारण गरीब की अन्त्येष्टि-क्रिया तक नहीं हो पाती। (ख) गरीब का माल सस्ते भाव पर बिक जाता है। जब किसी गरीब का कार्य उसकी गरीबी के कारण रीति-विरुद्ध हो, उस समय यह लोकोक्ति कही जाती है।

मुफ़लिस की जोरू सदा नंगी - निर्धन की स्त्री के पास पहनने को कपड़े नहीं होते। धनाभाव के कारण आवश्यक चीजें भी नहीं मिलती। किसी गरीब की निर्धनता पर कहा जाता है जब उसे जीवन-रक्षक पदार्थ भी प्राप्त न हों। तुलनीय : पंज० गरीब दी वौटी सदा नंगी।

मुफ़लिस से सवाल हराम है —गरीब से बिलकुल न माँगना चाहिए। जब कोई किसी को गरीब से भी कोई चीज़ माँगने के लिए प्रेरित करे उस समय यह लोकोक्ति कही जाती है।

मुफ़लिस हमेशा ख्वार —गरीब का सर्वत्र अपमान होता है। किसी गरीब के अनादर पर कहा जाता है।

मुफ़लिसी और फ़ालसे का शरबत एक तो गरीबी तिस पर फ़ालसे के शरबत की चाह। फ़ालसे का शरबत महँगा होता है, यदि एक निर्धन व्यक्ति उसकी इच्छा करे तो यह उचित नहीं है। हैसियत से अधिक चाहने पर व्यंग्य में ऐसा

कहा जाता है।

मुफ़लिसी और हाट की सैर -ऊपर देखिए।

मुफ़लिसी में आटा गीला -दे० 'कंगाली में आटा ....।'

मुफ़लिसी सब बहार खोती है, मर्द का एतबार खोती है--गरीबी आने पर सारा आनंद नष्ट होता है यहाँ तक कि मनुष्य का विश्वास भी समाप्त हो जाता है। अर्थात् गरीबी बहुत बुरी चीज है।

मुफ्त का करना और दूर ले जाना—एक तो बिना मजदूरी के काम करना दूसरे दूर जाकर। जब कोई किसी से बेगारी में कठिन काम करवाता है तब वह ऐसा कहता है।

मुफ्त का चंदन, घिस मेरे नंदन —ए मेरे लड़के! मुफ्त में चंदन मिला है खूब लगा लो। (क) मुफ्त की चीज की आवश्यकता से अधिक प्रयोग करने पर कहा जाता है। (ख) मुफ्त में मिली किसी अच्छी वस्तु का दुरुपयोग करने पर भी व्यंग्य में कहते है। तुलनीय : अव० सेंत कर चदन, घस मोर लल्लन; राज० मुफत का चदन घस ले लाला तूँ भी घस, तेरे बाप को बुला ला।

मुफ्त का चन्दन घिसे जा बिलल्ली —ऊपर देखिए।

मुफ्त का चूड़ा भर-भर फाँक –मुफ्त में प्राप्त वस्तु का बेफिक्री से उपयोग करने पर कहते है। तुलनीय : भोज० मुफत क चूरा भर-भर गाल।

मुफ्त का तमाशा -बिना पैसा दिए तमाशा देखना। जब दो व्यक्तियों या दलों में झगड़ा होता है तो देखनेवाले व्यंग्य से उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय : भीली—वगर दूकड्यां तमासो है।

मुफ्त का माल किसको बुरा लगता है?----अर्थात् किसी को नहीं। मुफ्त का माल सबको अच्छा लगता है। तुलनीय : भोज० मुफ्त क माल केकरा के बुरा लागे ला; अव० सेंत का माल केका खराब लागत है; पंज० मुफत दा माल किन् पैड़ा लगदा है; ब्रज० मफ्ति को माल कौनें बुरौ लगै।

मुफ्त का लोहा सियार गढ़ावे टाँगी - मुफ्त का लोहा मिलने पर सियार भी कुल्हाड़ी (टांगी) बनवाता है। मुफ्त वस्तु का सभी उपयोग करना जानते है। मुफ्त में मिली किसी वस्तु का दुरुपयोग करने पर व्यंग्य में कहते है।

मुफ्त का सिरका शहद से मीठा वह सिरका जो बिना पैसे के मिलता है शहद से भी मीठा होता है। जो चीज मुफ्त मिले वह बहुत अच्छी न होने पर भी अच्छी लगती है। जब कोई बिना पैसे की मिली हुई खराब चीज का भी खूब उपयोग करे उस समय यह लोकोक्ति कही जाती है। (सिरका कड़वा होता है)। तुलनीय : अव० सेंत का सिरका, सहद से मीठ; गढ़० पैणा की पकोड़ी सवादी होंदी।

मुफ्त की खानेवाले हम और हमारा भाई—मैं और मेरा भाई मुफ्त खानेवाले है। जब कोई स्त्री अपने पति का धन अपने भाई को खिला दे तब कहा जाता है।

मुफ्त की गंगा हराम का गोता –मुफ्त की गंगा में हराम का गोता लगाते है। आशय यह है कि मुफ्त में मिली वस्तु की कोई क़द्र नहीं होती।

मुफ्त की दावत में फ़क़त रोटी ही गोश्त है---मुफ्त की दावत में रोटी ही गोश्त के समान लगती है। ऊपर देखिए।

मुफ्त की मुर्गी क़ाज़ी को भी हलाल—मुफ्त की मुर्गी क़ाज़ी साहब भी खा जाते है अर्थात् मुफ्त की चीज़ बुरी होने पर भी कोई छोड़ता नहीं। तुलनीय : राज० मुफतरी मुरगी काजीजी नै हलाल, मरा० फुकटात प्यायला दारू मिळेल तर काजी (धर्मशास्त्री) सुद्धा धर्म्यच म्हणेल।

मुफ्त के चिवड़ा भर-भर फाँक - जब चिवड़ा मुफ्त में मिलता है तो लोग उसे भर-भर फांक चबाते हैं। हराम के खानेवालों कहते है।

मुफ्त के बैल के दाँत क्या देखना? मुफ्त में मिले बैल के दांत नहीं देखे जाते। आशय यह है कि मुफ्त में मिली वस्तु की अच्छाई-बुराई नहीं देखी जाती। जब कोई मुफ्त में मिली वस्तु में दोष दिखाता है तब उसके प्रति कहते है। तुलनीय : हाड़० सीत का बल का काई दाँत देखण; अं० A gift horse is not looked into the mouth.

मुफ्त भी हो सिफ़त भी हो और बड़ेपने का भी हो जब कोई ग्राहक कम दाम में हर तरह से अच्छी चीज चाहता है तो कहते है।

मुफ्त में निकले काम, तो काहे को दीजे दाम –जब कोई कार्य मुफ्त में हो जाय तो पैसा क्यों खर्च किया जाय। (क) जब कोई किसी कार्य को बिना पैसे के पूरा करने का ढग बताए उस समय यह लोकोक्ति कही जाती है। (ख) जो लोग अपना कुछ सामान नहीं रखते और मंगनी से ही काम चलाते है उनके प्रति में भी व्यंग्य कहते है।

मुफ्त रा चे बायद गुफ्त— मुफ्त की चीज़ का क्या पूछना? अर्थात् कुछ नहीं। मुफ्त में मिली वस्तु में दोष दिखाने वाले के प्रति कहते हैं।

मुफ्त माल दिले-बेरहम---मुफ़्त के माल को लोग बिना सकोच के उड़ाते हैं। मुफ्त के धन का बेफ़िक्री से खर्च

करने वाले के प्रति कहते हैं।

मुरव्वत दूकानदारी में कभी न पारी—दूकानदारी मे मुरव्वत करने से कभी पार नहीं मिलता। आशय यह है कि व्यापार मे उदारता नही दिखानी चाहिए।

मुर्ग़ की एक ही टाँग—जब कोई अपनी झूठी या ग़लत बात पर अड़ा रहे और किसी तरह न माने तब कहते है वही मुर्ग़ की एक टाँग कहे जाता है।

मुर्ग़ा पशम भेड़ भसम—जो भेड़ को पचा सकता है उसके लिए मुर्ग़ा का पचा जाना बिल्कुल आसान है। (क) मांसाहारी के लिए कहा गया है। (ख) जो बड़े अपराधों को छिपा सकता है, उसके लिए सामान्य अपराधों को छिपाना मुश्किल नही है।

मुर्ग़ा बाँग न देगा तो क्या सुबह न होगी ?—जहाँ मुर्ग़ा नहीं बोलता वहाँ क्या सवेरा नही होता? मुर्ग़ा बाँग दे चाहे न दे सुबह तो होगी ही। किसी के बिना किसी का काम पड़ा नही रहता। जब किसी की आवश्यकता के समय कोई धोखा दे अथवा सहायता देने से इनकार करे उस समय यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : भोज० मुरगा बाँग ना देइ त का सबेर ना होई : अव० जहा मुर्गा न होई हुआँ भिनसार न होई, गढ़० जख कुखड़ो नि होर तख रात गी क्या नि ब्यांदी, पंज० कुकड़ बांग नई देगा ते दिन नई चढ़णा।

मुर्ग़ी अपनी जान से गई खाने वाले को स्वाद न आया—दे० 'बकरी अपनी जान से गई···'।

मुर्ग़ी अपने परों से मारी—मुर्ग़ी अपने परों के भार से दबी रहती है। आशय यह है कि जो जितने मे रहता है, वह उतने में परेशान रहता है।

मुर्ग़ी की अज़ान कौन सुनता है—मुर्ग़ी की आवाज़ कौन सुनता है ? अर्थात् कोई नहीं सुनता। (क) स्त्रियों की बात पर कोई विश्वास नहीं करता। (ख) ग़रीब की कोई परवाह नही करता। जब किसी छोटे व्यक्ति की बातों पर कोई ध्यान न दे या किसी स्त्री पर कोई विश्वास न करे, उस समय यह लोकोक्ति कही जाती है।

मुर्ग़ी की अज़ान और औरत की गवाही का एतबार नहीं—मुर्ग़ी की आवाज़ और औरत की गवाही का भी कभी भी विश्वास न करना चाहिए। मुर्ग़ी किसी भी समय आवाज़ दे सकती है। उसी प्रकार औरत का चित्त अव्यवस्थित होता है, इस लिए गवाही के समय वह कुछ-का-कुछ कह सकती है उस पर विश्वास न करना चाहिए। जब कोई व्यक्ति मुर्ग़ी की आवाज़ और औरत की गवाही पर विश्वास करता है, उस समय यह लोकोक्ति कही जाती है। स्त्रियों पर व्यंग्य है।

मुर्ग़ी की जान गई, मियाँजी को मज़ा ही न आया—दे० 'बकरी अपनी जान···'।

मुर्ग़ी के ख़्वाब में दाना ही दाना—दे० 'बिल्ली के ख़्वाब में···'।

मुर्ग़ी को एक डंडा बहुत—मुर्ग़ी के लिए एक डंडे की मार ही बहुत है। निर्बल या निर्धन के लिए थोड़ा दंड ही अधिक हो जाता है। तुलनीय : हरि० मुर्गी नै तै तावड़ का एक ताग भतेरा; पंज० कुकड़ी नूँ इक डंडा बथेरा; मरा० कोंबडीला चरख्याच्या चाकीचा धावहि प्राणघातक आहे।

मुर्ग़ी को तकले के घाव ही बहुत हैं—ऊपर देखिए।

मुर्ग़ी क्या और मुर्ग़ा का शोरबा ही क्या ?—दे० 'क्या पिद्दी और क्या···'।

मुर्ग़ी खाय किंतु पर न खोसे—मुर्ग़ी तो खाना चाहिए लेकिन उसके पंख (पर) नहीं खोसने चाहिए। आशय यह है कि यदि कोई बुराई करे भी तो उसे प्रकट नहीं करना चाहिए।

मुर्ग़ी चरे, पेट भरे—मुर्ग़ी अपने-आप चुग-चुग कर पेट भरती है, वह किसी से कुछ नहीं माँगती। जहाँ कोई सबल किसी दुर्बल को बिना किसी कारण के परेशान करे या करने का प्रयत्न करे तो उसे समझाने के लिए ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० कुखड़ो चरो घुड़चो भरो।

मुर्ग़ी जान से गई, खाने वाले को मजा नहीं आया—दे० 'बकरी अपनी जान से···'।

मुर्ग़ी जान से चली गई, खाने वाले को स्वाद नहीं—दे० 'बकरी अपनी जान से···'।

मुर्दा ब-दस्त ज़िंदा—मुर्दा ज़िन्दा आदमियों के अधिकार में रहता है। वे जो चाहे सो कर सकते हैं। जब किसी निर्बल, धनहीन या अपराधी आदमी का कार्य सबल, धनी या न्यायाधीश आदि के व्यक्तियों के हाथ में हो उस समय यह लोकोक्ति कही जाती है।

मुर्दा बहिश्त में जाय या दोज़ख़ में यहाँ तो हलवे माँडे से काम—मुर्दा स्वर्ग में जाय चाहे नरक में यहाँ तो हलवा और माँडा मिलना चाहिए। मुसलमानों में एक प्रथा है कि उनके मुर्दे के सामने मुल्ला कुरान पढ़ता है और उसे मिठाई इत्यादि मिल जाती है। स्वार्थी या मतलबी आदमी को कहते हैं।

मुर्दे के माल का सस्ता मोल—मुर्दे का माल सस्ता मिलता है, क्योंकि उसे लोग घृणित समझते हैं। निर्धन की चीज़ की जब बहुत कम कीमत आंकी जाती है तब यह

लोकोक्ति कही जाती है।

मुर्दे को बैठकर रोते हैं रोज़गार को खड़े होकर—किसी के मरने पर लोग बैठ कर रोते है परन्तु रोज़गार चले जाने पर खड़े होकर रोते हैं। अर्थात् जीव से जीविका प्यारी होती है। जब किसी की रोजी चली जाय या चले जाने का भय उत्पन्न हो जाय उस समय यह लोकोक्ति कही जाती है।

मुर्दे पर जैसे पाँच मन वैसे पचास मन—मुर्दे को क़ब्र में दफ़नाने के बाद चाहे उस पर पाँच मन मिट्टी डालो या पचास मन उस पर कोई असर नहीं होता। अर्थात् (क) मूर्ख को कम डाट-फटकार लगाओ या अधिक उस पर कोई असर नहीं होगा। (ख) जीवन भर जिसने संघर्ष करते करते अपने को कष्ट सहने का आदी बना डाला है, वह कितनी भी भयंकर विपत्ति क्यों न पड़े उसे महसूस नहीं करता। तुलनीय: मैथ०, भोज० जइसे मुरदा पर पाँच मन ओइसे पचास मन।

मुर्दे पर सौ मन मिट्टी तो एक मन और सही—ऊपर देखिए। तुलनीय: अव० जहाँ मुरदा के ऊपर सौ मन माटी तहाँ एक मन औरो सही।

मुर्दे से शर्त बाँधकर सोता है—मुर्दों से बाज़ी लगाकर सोता है अर्थात् बहुत देर तक सोता है। बहुत देर तक सोनेवाले को कहते हैं।

मुलाज़िमे-नौ, तेज़ रौ—नया नौकर फुर्ती से काम करता है।

मुल्के-ख़ुदा तंग नेस्त, पाए-मरा लंग नेस्त—ईश्वर की सृष्टि संकीर्ण नहीं है और मैं भी पाँव से लँगड़ा नहीं हूँ। उद्योगी पुरुष कहता है, जब उसे काम से जवाब मिल जाता है।

मुल्ला की दाढ़ी तबर्रुक में गई—दे० 'मुल्ला की दाढ़ी वाहवाही में'।

मुल्ला की दाढ़ी तावीज़ों में गई—ऊपर देखिए। तुलनीय: बुंद० बाबा जू की जटा आसीरवाद मेंइ गये।

मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक—मुल्ला दौड़ेगा तो मस्जिद तक जायगा। जहाँ तक जिसकी पहुँच रहती है वह वहीं तक जा सकता है। अपनी शक्ति के बाहर कोई काम नहीं किया जा सकता। परिमित शक्तिवाले मनुष्य को कहते हैं। इस संबंध में एक कहानी है: एक मुल्लाजी जब घरवालों से लड़ते तो यही कहते कि मैं दूसरे देश चला जाऊँगा। एक दिन वह दुःखी होकर बोले, 'लो मैं जाता हूँ।' और घर के नज़दीक वाली मस्जिद में जा बैठे। किसी ने पूछा कि आप तो विदेश जा रहे थे। मुल्ला ने कहा, 'तुम नहीं जानते कि मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक होती है?' तुलनीय: हरि० वही; अव मुल्ला के दौड़ मसजिद तक; राज० मियाँजीरी दौड़ मसीत ताणी; बुंद० गिरदौना की दौर मंगरे लौं; लह० मुल्लां दी दौड़ मसीत तक; मरा० मुल्लाची धाव मशिदी पर्यंत; मल० इट्टिम्म (कोट्टिलम्म) चाटियाल् कोट्टियम्पलम् वरे।

मुल्ला की मारी हलाल—बड़े लोग बुरा काम करें तो भी उसे बुरा नहीं माना जाता।

मुल्लाजी क्या कहें आख़ूँजी आगे ही समझे बैठे हैं—मुल्लाजी क्या कहेंगे, आँखू पहले ही से जान गए हैं। जब किसी को वह बात बताई जाय जो उसे पहले ही से मालूम हो उस समय यह लोकोक्ति कही जाती है। (आख़ूँ—अखुन शिक्षक, उस्ताद)।

मुल्ला न होगा तो मस्जिद में अज़ान न होगी—मुल्ला जी नहीं आवेंगे तो क्या मस्जिद में नमाज पढ़ना बंद हो जायगा, अर्थात् मुल्लाजी आवें चाहे न आवें मस्जिद में नमाज तो पढ़ी ही जायगी। एक आदमी के बिना जनता का कार्य नहीं रुक सकता। जब एक व्यक्ति किसी सार्वजनिक कार्य में किसी कारण से सम्मिलित होने तथा सहायता देने से इनकार करता है तो यह कहावत कही जाती है। तुलनीय: हरि० मुरगा नांह बोल्लैगा तै के तड़का नांह होगा।

मुश्क आँ अस्त कि ख़ुद बगोयद, न कि अत्तार ब गोयद—(फ़ा०) कस्तूरी अपनी गंध से स्वयं अपना परिचय दे देती है, गंधी को कुछ कहने की आवश्यकता नहीं होती। आशय यह है कि गुणी व्यक्तियों की पहचान उनके कर्मों से ही हो जाती है।

मुश्किले-नेस्त कि आसाँ न शवद, मर्द बायद कि हिरासाँ न शवद—(फ़ा०) कोई भी कार्य इतना कठिन नहीं है जो कि उद्योग करने से सहज न हो जाय, मर्द वही है जो कभी हिम्मत नहीं हारते। (क) जब कोई व्यक्ति मुश्किल काम आने पर हिम्मत हार जाय उस समय यह लोकोक्ति कही जाती है। (ख) कठिन कार्य आ पड़ने पर जब कोई धैर्य से काम न करे उस समय भी यह लोकोक्ति कही जाती है।

मुश्की मिट्टी भी महँगी बिकती है—मुश्क (कस्तूरी) की सुगंध से युक्त मिट्टी भी महँगी बिकती है। अर्थात् अच्छे व्यक्ति के संसर्ग के कारण सामान्य व्यक्ति भी प्रतिष्ठा पा जाता है। प्र० तुलसी मे खोटे खरे होत ओट नाम ही की, तेजी माटी मगहू की मृगमद साथ जू।—तुलसी।

मुश्ते कि बाद अज़ जंग याद आयद, बरकल्ला-ए-ख़ुद बायद ज़द—लड़ाई के बाद यदि कोई दाँव (घूसा) याद आए तो उसे अपने ऊपर ही मार लेना चाहिए। समय बीत

जाने पर यदि किसी को कोई उपाय सूझे तो वह बेकार है।

मुसटी के मुँह में मूसर नहीं जाएगा—चुहिया के मुँह मे मूसल नहीं जा सकता। जब कोई किसी छोटे साधन से बहुत बड़ा कार्य करना चाहता है तब ऐसा कहते है।

मुसटी खेले साँप से घर्रा—चुहिया सर्प के साथ घर्रा (एक-दूसरे को धक्का देकर खेलना) खेल रही है। जब कोई अपने से काफ़ी शक्तिशाली व्यक्ति से उलझता है तब उसके प्रति व्यंग्य मे ऐसा कहते है।

मुसड़ी के गेहूँ होगा तो क्या पूड़ी पकाएगी? चुहिया के पास यदि गेहूँ हो तो क्या वह पूड़ी पकाएगी? अर्थात् नहीं। आशय यह है कि अच्छी वस्तु का सदुपयोग मूर्ख या अज्ञानी नहीं कर सकता। जब किसी अच्छी वस्तु का किसी मूर्ख द्वारा दुरुपयोग होता है तब कहते है। तुलनीय: भोज० मुसटी क गेहूँ होई त० का सोहारी पकाई।

मुसलमान हुए धुना के घर—धर्म छोड़कर मुसलमान भी हुए तो निम्न श्रेणी के मुसलमान अर्थात् धुनिया। जब कोई बहुत थोड़े लाभ के लिए बुराई करता है तब उसके प्रति कहते हैं।

मुसलमान दर गोर-ओ-मुसलमानी दर किताब— नेक लोग गुज़र गए और नेकी की बातें किताबों में रह गई। अर्थात् संसार में भौतिकता और पापाचार इतना बढ़ गया है कि न कोई मुसलमान अपने को सच्चा मुसलमान कह सकता है और न इस्लाम धर्म के आदेशों का अनुसरण करता है।

मुसलमानी अबादानी—मुसलमानी में समृद्धि है। मुसलमान होना एक प्रकार का वरदान है।

मुसलमानी में आना-कानी क्या?—जब मुसलमान के यहाँ जन्म हुआ है तो मुसलमानी तो करानी ही पड़ेगी उसमें टाल-मटोल नहीं की जा सकती। (क) जब कोई निमंत्रण में आकर खाने से इनकार करे तब कहा जाता है। (ख) जब कोई परंपरा का उल्लंघन करता है तब भी कहते है।

मुसल्ला पसार बग़ल में यार—नमाज़ पढ़ने की चटाई या दरी बिछा ली पर पास मे यार-दोस्त बैठे हुए है। भाव यह है कि मन तथा कर्म शुद्ध या अच्छा नहीं है पर दिखाने के लिए नमाज़ पढ़ते है। पाखंडी व्यक्ति पर यह लोकोक्ति कही गई है। (मुसल्ला = चटाई जिस पर नमाज़ पढ़ी जाती है)।

मुसहर की बेटी न नैहर सुख न ससुरे सुख—मुसहर (एक जाति) की लड़की को नैहर या ससुराल कहीं सुख नहीं मिलता। आशय यह है कि ग़रीब को हर जगह कष्ट ही मिलता है। तुलनीय: मैथ० मुसहरा के बेटी नैं नैहर सुख नैं ससुरारिह सुख या नुनिया के बेटी का नइहरे सुख न ससुरे; भोज० कोइरी के बिटिया के न नइहरे सुख न ससुरे सुख।।

मुसीबत अकेले नहीं आती—विपत्ति कभी भी अकेली नहीं आती। जब किसी व्यक्ति पर विपत्ति पर विपत्ति आए तो उसके प्रति कहते है। तुलनीय: अं० Difficulties always come in train; It never rains but it pours

मुसीबत में काम आया सो मित्र—असली मित्र वही है जो विपत्ति मे सहायता करे। तुलनीय: मेवा० अबखी में आड़ो आवै जो ई सगो है; अं० Adversity is the touch-stone of friendship

मूंग मोठ में बड़ा कौन—मूंग और मोठ मे कोई छोटा-बड़ा नहीं है, दोनों बराबर है। अर्थात् जाति मे कोई छोटा-बड़ा नहीं होता, सभी बराबर होते हैं। एक से दर्जे या स्थिति वाले व्यक्ति जब आपस में एक-दूसरे को छोटा-बड़ा समझें तब यह लोकोक्ति कही जाती है।

मूँछ की पूँछ पर उतरी—मूंछ बच गई और पूँछ उतर गई। (क) बहुत बड़े अपमान के स्थान पर यदि छोटा-सा अपमान हो जाय तब कहते है। (ख) जब किसी बड़ी हानि की संभावना हो, किंतु छोटी-सी हानि से ही बचत हो जाय तो उसके प्रति भी इस लोकोक्ति का प्रयोग करते हैं। तुलनीय: माल० मूँछ की पूछ पर उतरी।

मूंछ बेचारी क्या करे, जब हाथ न फेरा जाय—मूंछ को यदि हाथ से न सँवारा जाय तो उसके बिगड़ जाने पर उसका (मूंछ का) कोई दोष नहीं होता। जब बच्चों के माता-पिता या अभिभावक उन पर नियंत्रण नहीं रखते और बच्चे बिगड़ जाते है तब ऐसा कहते है। तुलनीय: पंज० मुछ की करे जे हथ्थ न फेरे।

मूंछ मरोड़ा रोटी तोड़ा—आलसी मनुष्य बैठे-बैठे खाते है और मूँछों पर ताव देते रहते है इसके अतिरिक्त उन्हें और कोई काम नहीं रहता।

मूँछें की मूंछें और छन्ना का छन्ना—मूंछें तो है ही, साथ ही साथ छन्ने का भी काम देती है। बड़ी-बड़ी मूंछों-वालों के प्रति मज़ाक़ में कहते हैं।

मूँज की टट्टी और गुजराती ताला—मूंज की टट्टी में गुजराती ताला लगा है अर्थात् (क) घास की साधारण टट्टी में गुजराती ताला जो इतना क़ीमती होता है शोभित ही

देता। (ख) मूँज की टट्टी जो कमज़ोर होती है उसमें गुजराती ताला लगाना बेकार है जो बहुत मज़बूत होता है। बेमेल काम पर यह मसल कही जाती है। तुलनीय : अव० मूँज के टटिया, औ गुजराती ताला।

मूँड़ का नाम कपार कहावे– मूँड़ का दूसरा नाम कपार है, अर्थात् दोनों एक ही बात है। जब दो व्यक्ति किसी बात पर आपस में भिन्न-भिन्न तरीके से वाद-विवाद करें जिसका अर्थ एक ही हो तब यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : गढ़० मूंड को नौ कपाल।

मूँड़ दिया माँग खाओ तुम्हारा सिर घुटवा दिया गया है। तुम भिक्षाटन करके खा सकते हो। अर्थात् अब तुम्हें साधु बना दिया गया है अब अपना पेट भिक्षा द्वारा भर सकते हो। जब कोई व्यक्ति किसी को किसी कार्य के करने के योग्य बना देता है फिर भी वह स्वयं कार्य न करके उसके भरोसे रहता है तब वह ऐसा कहता है।

मूँड़ न सही, कपाल सही यदि मूँड़ को नहीं मानते हैं तो कपाल मान लीजिए। एक ही बात को घुमा-फिराकर कहनेवाले के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : बुं० मूँड़ न सई कपार सही।

मूँदे आँखि कतहु कोउ नाहीं –आँख के बन्द कर लेने पर कोई भी नहीं दिखाई देता अर्थात् मरने के बाद कोई चीज़ साथ नहीं जाती। जब कोई संसार का कोई ध्यान न रखकर कोई बुरा काम करता है तब कहते हैं।

मूँड़ मुड़ाय फ़जीहत भए, जात पाँत दोनों से गए–– सिर घुटाकर अपनी दुर्दशा करा ली, क्योंकि न जाति का बन सका न पाँत का। अर्थात् न तो इधर का हुआ न उधर का। जब कोई ऐसा काम करे कि न इधर का रहे न उधर का तब कहा जाता है। इसका निकास इस प्रकार है : एक आलसी मनुष्य सिर मुड़ाकर फ़कीर हो गया इस ख्याल से कि भीख माँगकर जीवन बिताना आसान है। किंतु उसे जब उस काम में परेशानी महसूस हुई तब उसने कुछ दिनों बाद पुनः अपनी जाति में मिलना चाहा पर जातिवालों ने अपनी जाति में न लिया। इस प्रकार वह दोनों ओर से गया। तुलनीय : अव० मूँड़ मुड़ाय कै फजीहत लिहेन, जात पाँत दुइनौं से गए।

मूँड़ मुड़ाय ओर ओले पड़े ज्योंही सिर मुँड़ाया त्योंही ओले पड़े। किसी कार्य के आरम्भ में ही विघ्न पड़ने पर ऐसा कहते हैं।

मूँड़ मुड़ाया तभी ओले पड़े ऊपर देखिए।

मूँड़ मुड़ाये तीन गुण, गई टाँट की खाज; बाबा हो जग में फिरे, पेट भर खाया नाज––मूँड़ मुड़ाने में (साधु होने में) तीन गुण है, सिर की खुजली जाती रहती है, दुनिया में मान होता है और पेट भर खाने को मिलता है। पाखंडी सन्यासियों के प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

मूँड़ मुड़ाये मुरदा हलका नहीं होता– सिर घुटा देने से मुर्दे का बोझ हल्का नहीं होता। जब कोई किसी बड़े काम में नाम मात्र की सहायता दे जिससे कोई प्रयोजन सिद्ध न न हो तब कहा जाता है।

मूँड़ मुंड़ायो सिगरे गाँव, कौन कौन को लीजे नाव – जब सारे गाँववालों ने सिर घुटा लिया है तो किसका-किसका नाम गिनाया जाय। एक मूर्ख हो तो कहा जाय, जहाँ सभी मूर्ख हों वहाँ किस किसका नाम लिया जाय। इस मसल का निकास इस कहानी से है : एक धोबी के पास गधर्वसेन नाम का एक गधा था। उसके (गधे के) मरने के बाद धोबी ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा। उसके जो मित्र थे उन्होंने यह सोचा कि इसका कोई बहुत निकट का संबंधी मर गया है, इसलिए उन्होंने भी सिर मुंडा लिए। जब कोई उनसे सिर मुंडाने का कारण पूछता तो वे कहते कि क्या आपको नहीं मालूम कि गधर्वसेन मर गए? यह समझकर कि गंधर्वसेन कोई प्रतिष्ठित व्यक्ति रहा है, वे भी सिर मुंडा लेते। इस प्रकार लोगों को देखकर कोतवाल ने, कोतवाल से सुनकर मंत्री ने और मंत्री से सुनकर राजा ने भी अपना सिर मुंड़ा लिया। जब रानी ने राजा से सिर मुंडाने का कारण पूछा तो उन्होंने कहा कि गंधर्वसेन मर गए हैं इसलिए मैंने सिर मुंडा लिया है। रानी ने पूछा, उनसे आप का क्या संबंध था? राजा ने कहा कि मैं उन्हें नहीं जानता, मुझे तो मंत्री ने बताया था। जब मंत्री से पूछा गया कि वह कौन थे; उसने कोतवाल का नाम लिया; इस तरह पूछते-पूछते अन्त में पता चला कि गधर्वसेन गधे का नाम था, तब सभी बहुत लज्जित हुए। तुलनीय : अव० मूँड़ मुड़ायो सगरे गाँव, कवन का लेय नाव।

मूँड़ी को नहिं तेल, मांगई खसम मुगौरा –सिर में लगाने के लिए तो तेल है नहीं किंतु पति महोदय मुगौरा माँगते हैं, सो कहाँ से हो सकता है। अर्थात् नहीं हो सकता क्योंकि मुगौरा के लिए अधिक तेल की आवश्यकता पड़ती है। (क) जब कोई मनुष्य एक साधारण कार्य करने में समर्थ न हो किंतु उससे बड़ा कार्य करने के लिए कहा जाय तब कहा जाता है। (ख) जब कोई निर्धन होते हुए भी ऊँची-ऊँची आकाँक्षाएँ करता है तब उसके प्रति भी व्यंग्य में कहते हैं।

मूजी का माल, निकले फुटकर खाल—कृपण का धन नहीं पचता। क्योंकि वह बहुत कष्ट उठाकर उस धन का संचय करता है, इसलिए दूसरे को वह धन लाभदायक नहीं हो सकता। आशय यह है कि किसी को कष्ट देनेवाले की बुरी दशा होती है।

मूजी को नमाज छोड़के मारे—साँप दिखाई देने पर यदि कोई नमाज भी पढ़ रहा हो तो उसे छोड़कर साँप मारना चाहिए। अर्थात् दुश्मन जब भी दिखाई दे उसे उसी दम मार देना चाहिए। जब कोई दुश्मन के दिखाई देने पर भी मारने में हिचके या आना-कानी करे तब यह लोकोक्ति कही जाती है।

मूढ़ को कलम-दवात बहुत—मूर्ख विद्यार्थी को कलम-दवात बहुत मिल जाती है। जो विद्यार्थी पढ़ने में तो सबसे पीछे रहते हैं, किन्तु अपनी पुस्तकें आदि बहुत रखते हैं उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० ठोठ पोमा लियाने बतरणा घणा।

मूढ नरन संग जो रहै घर जैहे बुधि ताहि—मूर्खों के साथ रहने से होशियारों की भी बुद्धि घट जाती है। मूर्खों की संगति बहुत बुरी होती है।

मूत का चुल्लू हाथ में—भलाई के बदले बुराई करने वाले के लिए कहा जाता है।

मूत की गर्मी कितनी देर—पेशाब (मूत) की गर्मी थोड़ी देर में ही समाप्त हो जाती है। थोड़ा-सा धन पाकर इतराने वाले के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : पंज० मूतर दी गर्मी किनी देर।

मूत का झाग कितनी देर—मूत का झाग कितनी देर रहेगा। (क) जो वस्तु शीघ्र नष्ट हो जानेवाली हो उसके प्रति कहते हैं। (ख) जो व्यक्ति शीघ्र ही रुष्ट हो जाय या शीघ्र ही प्रसन्न हो जाय उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० मूतरो किनोक निवास ?

मूतते को कलदार मिला—पेशाब करते हुए चाँदी का रुपया मिला। जिस व्यक्ति को बैठे-बैठे लाभ हो जाय और कोई बिगड़ा काम बिना परिश्रम के ही सँवर जाए तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० मूतती नैं माधोसाही लाद्यो।

मूत में मछलियाँ नहीं मिलतीं—जब कोई व्यक्ति किसी चीज को ऐसे स्थान पर ढूंढता है जहाँ उसका मिलना असम्भव हो तब उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० मूत विचों मच्छियाँ नई लब्बदियाँ।

मूते दिया जले—पेशाब से दिया जलता है जिसका बहुत रौब, दबदबा या इकबाल हो उसके प्रति कहते हैं।

मूरख की दोस्ती जी का जियान—दे० 'नादान की दोस्ती ...'।

मूरख की सारी रैन चतुर की एक घड़ी—मूर्ख के साथ रात-भर रहने की अपेक्षा चतुर के साथ घड़ी भर रहना कहीं ज्यादा अच्छा है। आशय यह है कि बुद्धिमान व्यक्ति के साथ थोड़ी देर तक रहने से भी काफी लाभ होता है, जबकि मूर्ख के साथ अधिक समय तक रहने से भी कोई लाभ नहीं होता।

मूरख को क्या ज्ञान, गधे को क्या स्नान—मूर्ख व्यक्ति को ज्ञान से तथा गधे को स्नान से क्या प्रयोजन। जब कोई बहुत पढ़ाने-सिखाने से या उपदेश देने से भी न समझे तो उसके प्रति यह लोकोक्ति कहते हैं। तुलनीय : गढ़० मूर्ख ज्ञान अर सगस पकवान कखछौं।

मूरख को समझाइए, ज्ञान गाँठ का खोइए—मूर्ख को समझाने से अपनी बुद्धि भी समाप्त हो जाती है। जब बहुत समझाने पर भी किसी को कोई चीज समझ में नहीं आती तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० मूरख नैं समझावता ग्यान गांठरो जाय।

मूरख को समझाना कठिन, मारना सहज—मूर्ख को समझाना बहुत कठिन होता है और मारना आसान। (क) मूर्ख के साथ धृष्टता करना बहुत सहज होता है। (ख) मूर्ख मार खाने पर ही समझता है। तुलनीय : राज० मूरख नैं मारणो सोरो, समझावणो दोरो पंज० मूरख नू समझाना औखा मारणा सौखा।

मूरख को समझावता, ग्यान गाँठ को जाय—दे० 'मूरख को समझाइए ...'।

मूरख खा मरे या कर मरे—मूर्ख व्यक्ति या तो बहुत अधिक खाने से मरता है या बहुत अधिक काम से। (क) जो व्यक्ति अधिक भोजन खाते हैं और बीमार होते हैं उनके प्रति कहते हैं। (ख) किसी भी कार्य में अति करने पर हानि उठानेवालों के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : राज० मूरख खाय मरै, का उठाय मरै।

मूरख चढ़े पहाड़ पाथर से ठोकर खाय, जो नहाय नदी में तो कीचड़ में पाँव फँसाय—मूर्ख यदि पहाड़ पर चढ़ने का प्रयत्न करता है तो पत्थर से ठोकर खाकर गिर पड़ता है, और यदि नदी में नहाने जाता है तो कीचड़ में फँस जाता है। अर्थात् मूर्ख को हर जगह परेशानी ही उठानी पड़ती है। तुलनीय : गढ़० गाड जैल्यो गारो अडाल्यो, भेल जैल्यो भेलो अडालो।

मूरख जन का माल है यारों की खूराक—मूर्ख की सम्पत्ति का आनन्द दूसरे लोग उठाते हैं, वह स्वयं अपनी संपत्ति का आनन्द नहीं उठा सकता। जब किसी सीधे आदमी का धन धूर्त मनुष्यों द्वारा बुरी तरह लूटा-खसोटा जाता है तब यह लोकोक्ति कही जाती है।

मूरख पैदा होते हैं तो दीवारें काँपती हैं—मूर्खों का परिहास करने के लिए कहते हैं।

मूरख बुरी बलाय खीर में नमक मिलावे— मूर्ख व्यक्ति सदा उलटा काम ही करते हैं और उसी को ठीक समझते हैं। जो व्यक्ति कोई मूर्खतापूर्ण कार्य करके भी उसी को ठीक माने उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० मोथा बुरी बलाय, लूण घलावै खीर में।

मूरख मिलते ही दिखे—मूर्ख की मूर्खता का पता उसके मिलते ही चल जाता है। मूर्ख व्यक्ति आते ही कोई ऐसा काम कर बैठता है जिससे उसकी मूर्खता जाहिर हो जाती है। तुलनीय : राज० मूरख मिलतां ही मारे।

मूरख वैद्य की मात्रा, बैकुण्ठ की यात्रा मूर्ख तथा अज्ञानी वैद्य की दवा करना स्वयं मृत्यु को बुलाना है। रोगी को अज्ञानी वैद्य की दवा कभी न करनी चाहिए। जब रोगी किसी मूर्ख वैद्य से अपना इलाज करावे तब कहा जाता है। तुलनीय : गढ़० मूर्ख वैद की मात्रा, स्वर्गलोक की जात्रा।

मूरख मित्र मानत नहीं, सुक ज्यों पढ़ै न काग—सुग्गे को पढ़ाया जाय तो वह सुनकर याद कर लेता है पर कौवा ऐसा नहीं करता है। इसी प्रकार अच्छे लोग तो उपदेश मानते हैं पर मूर्ख नहीं।

मूरख हँसे और डूबता जाय मूर्ख हँसते-हँसते डूबता अर्थात् हानि उठाता है। आशय यह है कि मूर्ख को अपनी हानि का ज्ञान नहीं होता।

मूरख हूँ न सुहाय अमिय पिआवन मान बिनु—बिना आदर के अमृत पिलाना मूर्ख को भी अच्छा नहीं लगता। अर्थात् आदर संसार में बड़ी महत्त्वपूर्ण चीज है।

मूरख हृदय न चेत, जो गुरु मिलें विरंचि सम— मूर्ख के हृदय में ज्ञान कभी नहीं हो सकता चाहे उसे ब्रह्मा के समान ही ज्ञानी गुरु क्यों न शिक्षा दे। जब अधिक समझाने पर भी किसी को कोई चीज समझ में नहीं आती तब उसके प्रति व्यंग्य से ऐसा कहते हैं।

मूर्ख का घोड़ा सुनार का सोना जल्द नहीं पटता—ऐसे मूर्खों की ओर संकेत करके यह उक्ति कही जाती है जो अपनी जिद पर अड़े होते हैं और कोई वस्तु नहीं बेचते। तुलनीय : मैथ० अनारी के घोड़ा सोनारी के सोना न पट ले; भोज० अनारी क घोड़ा सोनारी क सोना ना पटे ला।

मूर्ख की कोई औषधि दवा नहीं—जब कोई बहुत समझाने पर भी नहीं मानता तब उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : सं० मूर्खस्य नास्त्यौषधम्; पंज० मूरख दी कोई दवा नईं हुँदी।

मूर्ख की चटखनी जल्दी बंद हो जाती है—बेवकूफ़ की बेवकूफ़ी छिपी नहीं रहती, वह प्रकट हो जाती है।

मूर्ख की दोस्ती जी का जियान—दे० 'नादान की दोस्ती···'।

मूर्ख की मित्रता से उसकी दुश्मनी अच्छी—मूर्ख व्यक्ति को मित्र बनाने की अपेक्षा दुश्मन बनाना ही ठीक है। मूर्ख मित्र से कोई लाभ नहीं होता। जब किसी मूर्ख मित्र से हानि होती है तब उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : छत्तीस० मूरख के हितवारती ले ओखर बैर बने; पंज० मूरख दी दोस्ती तो ओदी दुशमनी चंगी।

मूर्ख के क्या सींग होते हैं? किसी व्यक्ति के मूर्ख और बुद्धिमान होने का पता उसके कार्यों से चल जाता है। तुलनीय : पंज० मूरख दे सिंग नईं हुँदे।

मूर्ख के मुँह सरस्वती दे० 'अंधे का अंधेरे में···'। तुलनीय : मरा० मूर्खाच्या तोंडी सरस्वती बसली।

मूर्ख को समझाना और पत्थर पर सर मारना बराबर है—मूर्ख को समझाने में अपनी ही हानि होती है। तुलनीय असमी—अबुजनक बुजोवा, हेरूवा ठारि सिजोवा।

मूर्ख वैद्य की मात्रा, स्वर्गलोक की यात्रा—मूर्ख वैद्य से दवा कराना मृत्यु को बुलाने के समान है। अर्थात् (क) मूर्ख आदमी के हाथ में अपना काम सौंपना बर्बाद होना है। (ख) मूर्ख वैद्य की दवा कभी नहीं खानी चाहिए।

मूर्खों का क्या अलग मोहल्ला है?—मूर्ख किसी अलग स्थान पर नहीं रहते वे सभी जगह रहते हैं। जब कोई व्यक्ति किसी स्थान विशेष के व्यक्तियों को मूर्ख बताए तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० मूरखाँरा किसा न्यारा गाव बसै?

मूर्खों का फल यारों की खुराक—दे० 'मूरख जन का माल···'।

मूर्खों का माल यारों के गाल—दे० 'मूरख जन का माल···'।

मूर्खों के क्या सींग होते हैं?—मूर्खों के सींग थोड़े ही लगे होते हैं, वे भी शक्ल सूरत से बुद्धिमानों के समान ही होते हैं। मूर्ख की पहचान उसके काम और बोलने से होती है। तुलनीय : राज० मूरखां रै किसा सींग लागै?

मूर्खों के गाँव में ऊँट आया तो लोग बोले कि बलबल है—न जानने के कारण किसी वस्तु को विचित्र वस्तु समझने पर व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय: भोज०, मैथ० उजरा गाँवे ऊँट आइल तऽ लोग कहल की बलबल वा।

मूल नास्ति कुत:शाखा—यदि जड़ ही नहीं तो शाखाएं कहाँ सभव हैं? हरएक बात या चीज़ के लिए आधार आवश्यक है।

मूल गल्यो रोहिनी गली, अद्रा बाजी बाय; हाली बेंचो बाधिया, खेती लाभ नसाय—यदि मूल और रोहिणी नक्षत्र में बादल हो और आद्रा नक्षत्र में हवा चले तो खेती में कुछ भी लाभ न होगा। अच्छा है कि बैल को बेच डालो। अर्थात् उपरोक्त दशा खेती के लिए प्रतिकूल है।

मूल से ब्याज प्यारा—(क) मूलधन से ब्याज अधिक प्यारा होता है। (ख) पुत्र से पौत्र अधिक प्रिय होता है। तुलनीय: हरि० मूल तै प्यारा ब्याज हो सै; पंज० मूल नालों सूद चंगा।

मूल से ब्याज प्यारा, पूत से नाती प्यारा—ऊपर देखिए।

मूल से ब्याज प्यारा होता है—दे० 'मूल से ब्याज ...'। तुलनीय: अव० मूर से बिआज पिआर होत है; हरि० मूल ते ब्याज प्यारा हो सै; राज० मूलसू ब्याज प्यारो; माल० मूल ती ब्याज वालो।

मूल से ब्याज भारी होता है—मूलधन देने की जितनी चिंता नहीं होती उससे अधिक चिंता ब्याज चुकाने की होती है। तुलनीय: अव० मूरे से बियाज भारी होत है; पंज० मूल नालों सूद पारी हुंदा है!

मूली अपने पत्तों भारी—मूली के ऊपर स्वयं पत्तों का बहुत बड़ा बोझ है। अर्थात् जो स्वयं अपने दुख में फँसा हुआ हो वह दूसरे का दुख किस प्रकार दूर कर सकता है। हर व्यक्ति अपने भार से परेशान रहता है। तुलनीय: अव० मूरी अपने पतन से भारी है।

मूली और मूली के पत्तों पर नोंन की डली—जब कोई व्यक्ति शान बघारते हुए अपनी ऐसी वस्तुओं का नाम गिनाए जिनका कुछ भी मूल्य न हो तब यह लोकोक्ति कही जाती है।

मूली दही न खाइए उपजै तन में पीर—मूली और दही साथ न खानी चाहिए। इससे रोग पैदा होता है या शरीर में दर्द होता है।

मूली हाथ पराइयाँ जिस चाहे तिस वें—मूली दूसरे के हाथ में है तो वह चाहे जिसे भी मिल जाए। अर्थात् दूसरे के अधिकार में रहनेवाली वस्तु के पाने की आशा न रखनी चाहिए।

मूषासिक्त ताम्रन्याय—साँचे में ढले हुए ताँबे का न्याय। साँचे के अनुसार ही उसमें ढली हुई वस्तु आकृति धारण कर लेती है। आशय यह है कि व्यक्ति जिस ढंग के लोगों के बीच रहता है वैसा ही बन जाता है।

मूषिक भक्षित बीजादावङ्कुरादि जन प्रार्थना—चूहों द्वारा खाए हुए बीज आदि में अंकुर आदि उत्पन्न होने की प्रार्थना का न्याय। आशा करने पर इस न्याय का प्रयोग होता है। प्रस्तुत न्याय 'काकदन्त परीक्षा' के तुल्य है।

मूस का जाया बिल खोदे—चूहे का बच्चा बिल ही खोदता है। आशय यह है कि (क) बुरे की संतान बुरी ही होती है। (ख) जातीय गुण-दोष नहीं जाते। तुलनीय: हरि० मूस से / गोह का जाया बिल्लै खोदूदं; पंज० चूहे दा बच्चा खुड कडे।

मूस को मारा, पर महल में आग लगाकर—चूहों को मारने के लिए घर में आग लगा दी। अपना काम कर लेना पर बहुत बड़ी हानि उठाकर। या थोड़े लाभ के लिए बहुत बड़ी हानि उठानेवाले के प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

मूसल का मेह में क्या भीगे?—मूसल का वर्षा में क्या भीगना है? अर्थात् कुछ भी नहीं। बलवान या संपन्न को को किसी भी दशा में हानि या भय नहीं रहता। तुलनीय: हरि० मुसल का मीह मैं के भीज्जै?

मूसल स्वर्ग में भी धान कूटता है—आशय यह है कि (क) छोटों को हर जगह श्रम ही करना पड़ता है। (ख) जब कोई सुख या आराम की जगह पर भी सुख नहीं पाता तब भी उसकी बदनसीबी के प्रति ऐसा कहते हैं।

मूसल होता तो क्या पाहुना गुस्सा होकर चला जाता—यदि मूसल होता तो मेहमान नाराज़ होकर नहीं जाते। अर्थात् यदि साधन होता तो मैं अपना कार्य क्यों बिगड़ने देता। जब कोई किसी व्यक्ति से ऐसी चीज़ माँगता है जो उसके पास नहीं होती तब वह ऐसा कहता है।

मूसे और बिलार में, कबहुँ प्रीति नहीं होय—चूहा (मूस) और बिल्ली (बिलार) एक-दूसरे के शत्रु होते हैं। जब कोई व्यक्ति उन व्यक्तियों और जीवों में प्रीति की आशा करता हो जो एक-दूसरे के प्राकृतिक रूप से शत्रु हों तब उस पर यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय: अव० मूसवा, बिलाई में कतहु परीत होत है; भोज० मूसे बिलारी में कबहुँ यारी नहीं होले।

मृग की सी आँखें चीते की सी कमर—हिरन की आँख

और चीते की कमर उपमा रूप में बहुत ही सुन्दर मानी जाती है। किसी सुन्दरी की प्रशंसा में यह लोकोक्ति कही जाती है।

मृग, बांदरा तीतर, मोर, ये चारों खेती के चोर— मृग, बंदर, तीतर और मोर ये चारो खेती को नष्ट करते हैं। अर्थात् इनसे सदा सतर्क रहना चाहिए। तुलनीय : मरा० हरीण माकड तित्तिर मोर हे चारहि शेतीचे चोर।

मृग मृगों के ही साथ चलते हैं—हर व्यक्ति अपने स्तर के लोगों के साथ ही व्यवहार रखता है। तुलनीय : सं० मृगा: मृगै: सगमनुव्रजन्ति।

मृगसिर वायु न बाजिया, रोहिणि तपै न जेठ; गोरी बीनै कांकरा, खड़ी खेजड़ी हेठ—यदि मृगशिरा नक्षत्र में वायु (लू) न चली और जेठ में रोहिणी नक्षत्र न तपी तो बहुत बड़ा सूखा पड़ेगा। किसान की स्त्री खेजडी (एक वृक्ष) के नीचे खड़ी होकर कंकड़ चुनेगी।

मृगसिरा वायु न बादला, रोहिणि तपै न जेठ; अद्रा जो बरसै नहीं कौन सहै अलसेठ—यदि मृगशिरा नक्षत्र में वायु न चले, बादल न हो, जेठ में रोहिणी न तपे और आद्रा नक्षत्र न बरसे तो खेती के कष्ट को कौन व्यर्थ सहे। अर्थात् मौसम खराब रहेगा और पानी नहीं बरसेगा।

मृतं दुण्डुभमासाद्य काकोऽपि गरुडायते—मरी हुई छिपकली के ऊपर आकर कौआ भी गरुड बन जाता है। जब कोई किसी दुर्बल को सताकर फूला नहीं समाता तब उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

मेड़ बांध दस जोतन दे, दस मन बिगह मोसे ले—चारों तरफ के मेड़ को बांध कर दस बार जोतने पर दस मन प्रति बीघा मुझ से लीजिए। अर्थात् मेंड़ बांधकर खेती करने से पैदावार अच्छी होती है।

मेंढ़की को जुकाम—मेंढकी हमेशा पानी के अंदर रहती है इसलिए उस पर ठण्ड का असर होने का प्रश्न ही नहीं होता जब किसी व्यक्ति पर किसी ऐसी बात का आरोप किया जाए जिसका उसमें होना प्रायः असंभव हो ता कहते है। तुलनीय : पंज० डड्डू नूं जुकाम।

मेंढ़की को भी जुकाम हुआ है—ऊपर देखिए। तुलनीय : मरा० बेडकीला पण पडसें झालें; अव० चीटिव का जोखाम होय लाग; राज० मीडकनैं जुकाम हुयो, डेडरेनै जुकाम हुयो।

मेंढकी ने भी पाँव उठा दिए, मेरे भी नाल जड़—मेढ़की भी पैर ऊपर उठाकर कहती है कि मेरे भी पैर में नाल लगा दो। नाल बैलों और घोड़ों के पैरों में लगाई जाती है। जब कोई दूसरों की देखा-देखी अपनी समर्थ्य से बाहर कार्य करना चाहता है, तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय कौर० मीडकी ने बी पां ठा दिए, मेरे बी तन्नाल जड।

मेओ का पूत बारह बरस में बदला लेता है—मेओं या मेवातियों की औलादें बारह वर्ष के बाद भी अपना बदला लेती हैं। अर्थात् ये इतने खूंखार होते हैं कि कभी झुकना जानते ही नही। जब कोई व्यक्ति किसी पराक्रमी व क्रोधी आदमी से शत्रुता करके भी भविष्य में उससे अच्छा व्यवहार चाहता है तो उसे सचेत करने के लिए व्यंग्य-रूप में यह लोकोक्ति कही जाती है। मेओ या मेवाती मुसलमान होते हैं। ये बहुत पराक्रमी और क्रोधी होते है। बारह वर्ष बाद भी ये शत्रुओं से अपना बदला चुकाते हैं।

मेओ बेटी जब दे जब उखली भर रखवाले—मेओ लोग अपनी लड़की तभी किसी को देते है, जब उससे ओखली भर रुपया ले लेते हैं। अर्थात् (क) मेओ लोग अपनी लड़की की शादी मे बहुत रुपया लेते हैं। (ख) जब कोई मनुष्य बिना द्रव्य दिए ही किसी से कोई कार्य करवाना चाहता है उस समय उससे व्यंग्य मे ऐसा कहा जाता है।

मेओ मरा तब जानिए जब तीजा हो जाय—मेओ को मरा हुआ तब समझिए जब उसका तीजा (मृत्यु के तीन दिन बाद का संस्कार) हो जाय। अर्थात् किसी संदेहयुक्त बात को तब तक पूरा न समझना चाहिए जब तक कि उसकी शंका का समाधान न हो जाय। जब कोई व्यक्ति किसी बात मे भी संदेह होने पर उसको पूरा समझता है उस पर यह लोकोक्ति कही गई है। इस लोकोक्ति का निकास इस कहानी मे है : किसी बनिए का कुछ पावना एक मेओ जाति के यहां था। रुपए न देने पड़ें, इसलिए उसने बनिए के पास अपनी मृत्यु का संवाद भेज दिया। बनिया भी कुछ संदेह करता हुआ उसके घर पर गया। जब उसकी जाति के लोग उसे गाड़ने के लिए क़ब्रिस्तान की ओर ले चले तो उसका संदेह जाता रहा। लेकिन अंत में जब उसे पुन: क़ब्र से निकालते देखा तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। इस पर उस बनिए ने ऊपर की मसल कही।

मेघ समान जल नहीं, आप समान बल नहीं—बादल के पानी के समान कोई पानी नहीं होता और अपने बल के समान कोई बल नही होता। आशय यह है कि वर्षा होने से ही पृथ्वी की प्यास बुझती है और जीवों को सुख मिलता तथा अपना बल ही समय पर काम आता है।

मेटे मिटे न विधि के अंक—ब्रह्मा का लिखा हुआ अमिट है। जो प्रारब्ध में लिखा है वही होगा। तुलनीय : पंज० विधि दा लिखया नईं मिटदा।

मेदिनि मेघा भइंसि किसान, मोर पपीहा घोड़ा धान; बाढ़यो मच्छ लता लपटानी, दसौ सुखी जब बरसै पानी—पृथ्वी, मेंढ़क, भैंस, किसाना मोर, पपीहा, घोड़ा, धान, मछली और लता ये दसों पानी बरसने पर ही सुखी होते हैं।

मेरा कुत्ता मुझी को भौंके—मेरा कुत्ता मुझे ही देखकर भौंक रहा है। यदि अपना ही कोई व्यक्ति अपने विरुद्ध हो जाए तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : गढ़० मेरी नथुली मैं क्वी नकचौंला; पंज० मेरा कुत्ता मैनूं भौंके।

मेरा था सो तेरा हुआ बराय खुदा टुक देखन दे—जो मेरा था वह तेरा हो गया है, खुदा के नाम पर मुझे केवल देख लेने दे। यह लोकोक्ति सास द्वारा बहू के प्रति कही गई है, जिसने पूरी तरह से उसके लड़के को वश में कर लिया हो। दे० 'तेरा है सो मेरा था।'

मेरा दिल बेदिल हुआ देख जगत की रीत—इस संसार की रीति देखकर मुझे संसार से घृणा हो गई है। जो मनुष्य संसार की गति देखकर विरक्त हो जाय उसका कहना है।

मेरा पिय बात भी न पूछै, मेरा सौभाग्यवती नाम—मेरा पति मुझसे बात भी नहीं करता, फिर भी मेरा नाम सौभाग्यवती है। ऐसे व्यक्ति के प्रति व्यंग्य में कहते है जिसे कोई भी व्यक्ति सम्मान न दे, फिर भी वह अपने को काफ़ी सम्मानित समझकर इठलाता फिरे।

मेरा बैल न्याय नहीं पढ़ा—मेरे बैल ने न्यायशास्त्र का अध्ययन नहीं किया है। हुज्जती आदमी जब बात करने में बहुत मीन-मेख निकालता है तब उसको कहते है। इस पर एक कहानी इस प्रकार है : किसी एक नैयायिक ने एक तेली से पूछा कि तुम लोग अपने बैल के गले मे घंटी क्यों बांधते हो ? तेली ने जवाब दिया कि जब हम अपने काम पर नहीं रहते तब भी घंटी के शब्द से मालूम हो जाता है कि बैल अपना काम कर रहा है। इस पर नैयायिक ने कहा कि यदि बैल खड़ा होकर ही अपना सर हिलावे तब तुम्हें कैसे ज्ञात होगा कि वह अपना काम कर रहा है ? यह सुनकर तेली ने हँसते हुए ऊपर की मसल कही। तुलनीय : अव० मोर बरदा निआव नाही पढ़े है।

मेरा बैल मनतिक नहीं पढ़ा—ऊपर देखिए। (मनतिक—न्याय, तर्कशास्त्र)।

मेरा माथा उसी वक्त ठनका था—मेरे मन मे उसी समय संदेह हो गया था। आने वाली आपत्ति का पहले ही से संकेत मिल जाता है। जब भविष्य में आफ़त आ जाने का संदेह पहले ही हो गया हो और आफ़त वास्तव में आ पड़े तब कहा जाता है। तुलनीय : अव० मोर माथा ओही बखत ठनका; हरि० मेरा माथा ते उसे बखत ठणका था।

मेरी का तुम नाम न लो, अपनी सजी-सजाई दो—मेरी चीज़ का तुम नाम मत लो और तुम्हारी जो तैयार हो वह मुझे दे दो। स्वार्थी व्यक्ति जब अपनी किसी वस्तु के बारे में बात भी न करने दे और दूसरे की बनी-बनाई वस्तु को लेना चाहे तो व्यंग्य में उसके प्रति ऐसा कहा जाता है। तुलनीय : गढ़० अपणी त लगौणी बात भी उधारी, विराणी खोजणी माई सुधारी; पंज० मेरी दो तू गल्ल ना कर, छेत्ती अपणी नेड़े कर।

मेरी जोरू बन या नाक कटा—मुझसे शादी करो नहीं तो मैं तेरी नाक काट लूंगा। जब कोई किसी से जबरदस्ती कोई काम कराए तो उसके प्रति कहते है। तुलनीय : गढ़० हो मेरी सैण कि काटू तेरो नाक।

मेरी तेरे आगे, तेरी मेरे आगे कहना अच्छा नहीं—मेरी बुराई तेरे आगे और तेरी बुराई मेरे आगे करना अच्छा नहीं। अर्थात् एक की बुराई दूसरे के आगे करना अच्छा नहीं होता। यह लोकोक्ति चुगलखोरों के ऊपर कही गई है। तुलनीय : अव० मोर अस तोरे आगे, तोर अस मोरे आगे, कहल अच्छा नाही; मरा० माझें तुझया पुढे तुझे माझया पुढे; पंज० मेरी तेरे अग्गे, तेरी मेरे अग्गे कैणा चंगा नई।

मेरी दोनों मीठी—मेरी दोनों चीजें अच्छी है। अपनी बुरी चीज़ की भी प्रशंसा करने वाले के प्रति व्यंग्य मे कहते है।

मेरी पट्टी, मेरा गाँव, देने को होता पंक्ति पराँय—बनते तो पड़ोसी और गांव के है लेकिन जब देने का समय आता है तो रास्ता पकड़ लेते है। झूठा प्रेम दिखानेवाले के प्रति कहते है।

मेरी बिल्ली मुझी से म्याऊँ—दे० 'मेरा कुत्ता मुझी को…'।

मेरी शादी में तुम नट, तुम्हारी शादी में मै नट—दो बुरे आचरणवाले व्यक्तियों की आपसी सहायता मे उक्त कहावत कही जाती है। तुलनीय : मग० हमर ब्याह मे तू नेटुआ तोहर बियाह मे हम नेटुआ।

मेरी सिखाई लोमड़ी मुझी से लोमड़ी फंद—मेरी सिखलाई हुई लोमड़ी मुझे ही अपनी चाल दिखा रही है। जब कोई व्यक्ति किसी को ऐसी चीज़ मे धोखा देना चाहता है जिसमें वह उससे अधिक जानकारी रखता है तब उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

मेरी सोतन खाय दही, मोसे कैसे जाय सही-- मेरी सौत तो दही खाती है पर मुझे वह नसीब नही है इस स्थिति में यह मुझसे नहीं सहा जाता, क्योंकि सौतों का दर्जा बराबरी का होता है। (क) सौतिया डाह पर कहा जाता है। (ख) पड़ोसी की उन्नति को देखकर जलने वाले के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : अव० मोर सौतिया खाय दही, मोसे कैसे जाय सही।

मेरी ही बिल्ली मुझसे ही म्यांव—मेरी ही पाली हुई बिल्ली है और मुझी को काटने दौड़ती है। अर्थात् जिसका खाय उसी को आँख दिखावे तब कहा जाता है। तुलनीय : अव० मोरे बिल्ली मोसे मिआंव करै; गढ़० मेरी बिराली मैं कूही न्यू; मरा० माझीच मांजरी नि मला च गुरकावते; पंज० मेरी बिल्ली मैंनू मँयाऊँ।

मेरे आगे का गीदड़ और मुझी से अबे-तबे--मेरे ही सामने सियार बने फिरते थे और अब मुझी से उल्टी-सीधी बातें कर रहे हो। ओछे व्यक्ति के प्रति कहते हैं जो स्थिति सुधरते ही अकड़ दिखाने लगते है।

मेरे आगे का जन्मा और मुझी से अड़बी-तड़बी—जब कोई छोटी आयु का लड़का किसी सयाने या वृद्ध व्यक्ति के सामने बढ़-बढ़कर बातें करता है तब उसके प्रति कहते हैं।

मेरे आसरे रहना मत, अपने घर खाना मत--किसी व्यक्ति को असमंजस में डालना या कोई वस्तु न देने के लिए सीधे न कहकर छिपे तौर पर संकेत से कहना। तुलनीय : भोज० अपना घरे खइहऽ मत हमरा असेरे रहिहऽ मत।

मेरे खिलाए जोगनाथ मुझसे करे मसखरी--जोगनाथ मेरे ही साथ मज़ाक कर रहे है, जबकि मैंने इन्हें खिलाया-पिलाया है। जब कोई अपने से बड़ों के साथ अनुचित व्यवहार करता है तब वे कहते है।

मेरे खुदाए पोखर-ताल, मुझी से ऊंचे बोल—मेरे खुदाए हुए तालाब-ताल आदि है और मुझसे बड़ी-बड़ी बातें कर रहे हो। जब कोई साधारण व्यक्ति किसी बड़े (संपन्न) व्यक्ति से बढ़-बढ़कर बातें करता है तब वह उसके प्रति कहता है।

मेरे गांव का कूड़िया, नाम रक्खा इन्द्र जौ—कूड़िया और इन्द्र जौ दोनों एक ही पेड़ का नाम है अर्थात् गांव में तो उसे कूड़िया कहते हैं, पर बाहर के लिए इन्द्र जौ नाम रखा है। जब किसी ओहदेदार व्यक्ति का बाहर नाम और इज़्ज़त हो पर अपनी जन्मभूमि में न हो तब कहा जाता है।

मेरे घर आना मत अपने घर खाना मत--दे० 'मेरे आसरे रहना मत···'।

मेरे घर से आग लाई नाम धरा बैसंधर—दे० 'मुझसे ही आग ली···'। तुलनीय : हरि० म्हारे ए तें आग्य ल्याई, नाम धर्‌या विसंधरा।

मेरे घर से आग लाई नाम रक्खा वैश्वानर—दे० 'मुझ से ही आग···'।

मेरे पिया की उल्टी रीत सावन मास चुनावे भीत—मेरे पति का काम उलटा-पलटा ही होता है, सावन महीने में दीवार बनवाने जा रहे हैं। सावन मास में अधिक वर्षा होने के कारण घर बनवाना बहुत मुश्किल है, इसलिए सावन में गृह-निर्माण का काम नही होता। असमय काम करने वाले या अदूरदर्शी के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : कौर० मेरे पिया की उल्टी रीत, सामण मास चिनाई भीत।

मेरे बन की लोखरी और मुझी को बिलकइया काटे—जिसके अधीन रहे उसी के साथ चाल चले तब कहा जाता है।

मेरे बाट, मुझी से ठगी—ऊपर देखिए।

मेरे बाप को आटा न मिले, नहीं ईंधन लाना पड़ेगा--मेरे बाप को कहीं से आटा न मिले नही तो मुझे ईंधन के लिए जाना पड़ेगा। भूखे रहना स्वीकार है किंतु ईंधन लाना नहीं। आलसी व्यक्तियों के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : राज० म्हारे बाप नैं धान मती मिलज्यों, मने बळीतै मेलसी; ब्रज० मेरे बाप कू आटो न मिलै नही तो लकड़ियाँ लानी परिंगी।

मेरे बाप ने घी खाया मेरा हाथ सूंघो—घी खाया है मेरे बाप ने हाथ सूँघो मेरा। जो स्वयं कुछ न करके पूर्वजों की कीर्ति पर घमंड करता है, उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : गढ़० मेरा बाबू न घ्यू खाये मेरो हाथ सुंघा; ब्रज० मेरे बाप ने घ्यौ खायौ मेरौ हाथ सूँघौ।

मेरे बाबू बड़े पंडित, किसी का कहा न मानें—मेरे बाबू स्वयं बड़े विद्वान हैं वे किसी की बात नहीं मानते। मनमाने लोगों के प्रति व्यंग्य में कहते हैं जब वे हानि उठाते हैं।

मेरे ब्याह, जो जी के ठिक-ठिक--बिना प्रयोजन या बेमौक़े रुपया खर्च करना। जब कोई व्यक्ति बिना किसी मतलब और बेमौक़े रुपया व्यर्थ में नष्ट करता है उस समय यह लोकोक्ति कही जाती है।

मेरे भजूँ कि तेरे—अपने को देखूं कि तुम्हारों को ? जो व्यक्ति अपने भार से परेशान रहे और ऊपर से किसी अन्य का भी भार उसे सँभालना पड़े तब वह कहता है।

तुलनीय : पंज० अपनी देखां की तेरी।

मेरे भाग्य में होगा तो घर आकर देगा—मेरे भाग्य में होगा तो वह घर आकर दे जाएँगे। भगवान के प्रति आलसी और अकर्मण्य मनुष्य इस प्रकार कहते हैं। तुलनीय : गढ़० मैं भाग होला त कै ठुला की रांड होली; पंज० मेरे पाग बिच होवेगा ते कर ही मिलेगा।

मेरे मन कुछ और है, कर्ता के मन और—मेरे मन में कोई और बात है और कर्ता (ईश्वर) के मन में कोई और। जब अपना विचारा हुआ कार्य नहीं होता, तब मनुष्य ऐसा कहता है। तुलनीय : राज० आज मेरी मंगणी, कल मेरा ब्यांव टूट गई टंगरी, रह गया ब्यांव; अ० Man proposes God disposes.

मेरे मन कुछ और है साहब के मन और—ऊपर देखिए। तुलनीय : सि० बंदे जे मन मे हिकड़ी (एक चीज़) साहब जे मन में भी (दूसरा)।

मेरे मामा ने घी खाया सूँघो मेरा हाथ—दे० 'मेरे बाप ने घी खाया···'। तुलनीय : असमी—मामाथेर् गाइ दौवे, मोर् नाम दुधकोंवर्।

मेरे मियाँ की उलटी रीत, सावन मास उठावें भीत—दे० 'मेरे पिया की···'।

मेरे मियाँ के दो कपड़े, सुत्थन, नाड़ा बस—मेरे पति-जी के पास पहनने के लिए केवल दो ही कपड़े है सुत्थन और नाड़ा अर्थात् बहुत बुरी हालत में है। ग़रीबी की हालत पर कहा गया है।

मेरे मेरे मुँह की सी, तेरे तेरे मुँह की सी करता फिरता है—मेरे सामने मेरी तारीफ़ और तुम्हारे सामने तुम्हारी तारीफ़ करता है। चाटुकार को कहते हैं।

मेरे यहाँ आज गुर्रा है—अर्थात् आज भोजन नहीं बना। जिस दिन किसी के यहाँ चूल्हा तक न जले उस दिन कहा जाता है।

मेरे रहते पड़ोस की लड़की ससुराल चली जाय!—मेरे जीते जी पड़ोसियों की लड़कियाँ अपने ससुराल नही जा सकती। (क) मेरे रहते यह काम कभी नहीं हो सकता। इस भाव को प्रकट करने के लिए इस लोकोक्ति का प्रयोग किया जाता है। (ख) व्यभिचारी के प्रति भी व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : राज० म्हां बैठों ही पाड़ोसणरी बेटी सासरै जाय।

मेरे लड़के से जो गोरा सो कोढ़ी—मेरे लड़के से जो अधिक गोरा है, वह कोढी है। जब कोई अपनी बुरी वस्तु की भी अधिक तारीफ़ करता है तब उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

मेरे लाल के सौ सौ यार, धुनिये, जुलाहे और मनिहार—मेरे लड़के के बहुतेरे मित्र हैं जैसे धुनिया, जुलाहा और मनिहार अर्थात् उसकी संगति बुरे आदमियों से है। बुरी सगतिवाले लड़के पर कहा गया है।

मेरे लाल को न दे तो चाहे काल को दे—यदि मेरे बेटे को नही देता तो मेरी तरफ़ से चाहे काल को दे दे। जो वस्तु अपने प्रयोग में नही आ सकती वह चाहे कहीं भी जाय हमारा क्या बनता-बिगड़ता है? अपने स्वार्थ के अतिरिक्त दूसरो के हानि-लाभ की चिन्ता न करनेवाले के प्रति कहते है। तुलनीय : राज० मनै न म्हारै जायैनै, दे खाटरै पायैनै; पंज० मेरे लाल नं ना दे पावे मौत नूँ दे दे।

मेरे लाला की उलटी रीत, सावन मास चुनावें भीत—दे० 'मेरे पिया की···'।

मेरे ही घर से आग लाई नाम रखा बैसंधर—दे० 'मुझसे ही आग···'।

मेरे ही से आग लाई, नाम धरा बैसंधर—दे० 'मुझसे ही आग···'।

मेरे है सो राजा के नहीं, राजा मेरा मंगता—मेरे पास जो चीज है वह राजा के पास नही है। राजा तो मेरे यहाँ से माँग कर ले जाते हैं। थोड़े से धन पर इतरानेवाले के प्रति व्यंग में कहते है।

मेल से बने खेल—आपसी मेल से सभी काम खेल जैसे सहज हो जाते है। अर्थात् मेल मे बहुत शक्ति होती है। तुलनीय : राज० धण जीतं हो लछमणा; पंज० मेल नाल खेड होवे।

मेला भी देखा और माल भी बेचा—मेला भी देख लिया और सामान भी बेच लिया। एक साथ दो लाभ होने पर कहते हैं।

मेले में झमेला—मेले में बहुत शोर-गुल होता है। जब कोई मेले में जाकर भी शोर-गुल होने पर नाक-भौं सिकोड़े उस पर कहा गया है। तुलनीय : अव० मेला मा झमेला।

मेवा दिए मेवा मिले, फलफूल दे फल-पात ले—मेवा देने से मेवा मिलता है और फल-फूल देने से फल पात। आशय यह है कि कर्म के अनुसार ही फल भी मिलता है।

मेह और बेटे से सन्तोष कहाँ?—वर्षा और पुत्रों से किसी को सन्तोष नही होता। आशय यह है कि इनकी चाह सदा बनी रहती है। तुलनीय : हरि० मीह अर बेट्टयां तै कूण धाप्पया सै?; पंज० वरखा अते पुत विच सबर किथे।

मेह और मेहमान कभी-कभी—वर्षा और अतिथि

कभी-कभी ही आते हैं। अत: अतिथि का निरादर नहीं करना चाहिए। भाग्यवान व्यक्तियों के घर पर ही अतिथि आते हैं। तुलनीय : राज० मेह और पावणा किना दिनांरा; पंज० वरखा अते परौणे बिच कदी कदी।

मेह और मेहमान किसके आएं ? — वर्षा और अतिथि भाग्यशाली व्यक्तियों के ही घर पर आते है। जिनके घर पर खाने को मिलता है लोग भी उन्ही के घर जाते है। अतिथियों का आना अच्छे दिनों की निशानी है। तुलनीय : राज० मेह और पावणा किणरै घरे; पंज० वरखा अते परौणे किदे कर आण।

मेह झोपड़ी पर बरसे, और महल पर भी — बादल झोपडी पर भी बरसते हैं और महल पर भी। आशय यह है कि प्रकृति सबके साथ समान बर्ताव करती है। तुलनीय : राज० अकूरड़ी पर मेह बरसै, और महलां पर ही बरसै।

मेहनत आराम की कुंजी है—परिश्रम से ही आराम मिलता है। (क) जब कोई व्यक्ति आराम चाहता हो लेकिन परिश्रम न करता हो उस पर कहा जाता है। (ख) आलसी व्यक्ति को परिश्रम करने की उत्तेजना देने के लिए भी कहा गया है। तुलनीय : माल० उद्योग में कंगाली किस तर; पंज० मेहनत आराम दी चाबी है।

मेह बरसेगा तो बौछार आ ही जायेगी— वर्षा होने पर थोड़ा-बहुत उसका असर आ ही जायेगा। अर्थात यदि कोई दयालु मनुष्य खर्च करेगा तो हमें भी कुछ मिल ही जायेगा। किसी उदार हृदय के व्यय से कुछ पाने की आशा रखने वाले पर कहा जाता है।

मेहमान अजीजस्त मगर ता सेह रोज— मेहमान या अतिथि का सत्कार करना चाहिए पर तीन रोज तक। अर्थात तीन रोज के बाद मेहमान मेहमान नहीं रह जाता।

मेहमान का नाम, खाए जहान— खाना बनाया जा रहा है अतिथि के लिए और खा रहे है सब। जब कोई व्यक्ति किसी के लिए कुछ काम करे, किन्तु बहुत से लोग उससे लाभ उठाएँ तो उनके प्रति ऐसा कहते है। तुलनीय : गढ़० पौणा का नौ पाक्यो, सबुन चाख्यो; पंज० परौने दा नां खाण सारे।

मेहमानों से घर नहीं बसता— घर तो घर वालों से ही बस सकता है, मेहमानों से नहीं। जो व्यक्ति दूसरों के सहारे रहे उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : मेवा० पामणां सूं घर नी बसे।

मेहर करे तो मेह बरसाय—ईश्वर की कृपा से ही वृष्टि होती है। जब लोग आपस में पानी बरसने के सम्बन्ध में वाद-विवाद करते हैं तब कहा जाता है।

मेहर है पर बूध नहीं— झूठे तथा बनावटी शिष्टाचार पर कहा जाता है।

मेहरिया के आगे सगुन-असगुन— स्त्री के आगे चाहे अच्छी बात हो, चाहे बुरी, उसे हर बात में शंका होती है। अर्थात् स्त्रियों को सभी बातों में वहम होता है। जब स्त्रियाँ अच्छी और बुरी सभी बातों में शंका करें तब कहा जाता है। तुलनीय : अव० मेहरिया के आगे सगुन-असगुन।

मेहरी की रोक, जान के शोक— स्त्री इतना हठ करती है कि नाक में दम कर देती है अर्थात् स्त्री की जिद खराब होती है। हठीली स्त्री के प्रति कहा जाता है।

मेहरी जस बैरी न मेहरी जस मीत— स्त्री के समान कोई शत्रु और मित्र नहीं होता। स्त्री चाहे तो पति की इज्ज़त को बना दे चाहे बिगाड़ दे।

मेह, लड़का और नौकरी घड़ी-घड़ी नहीं हुआ करतीं — न तो हर समय वर्षा होती है, न हर अवस्था में लड़का ही पैदा होता है और न ही नौकरी हर समय मिलती है। जब कोई व्यक्ति वर्षा होने पर उसका पूरा उपयोग न करे, लड़का होने पर पूरी खुशी न मनावे तथा नौकरी मिलने पर काम ठीक से न करे उस समय यह लोकोक्ति कही जाती है।

मैं औ मेरा पुरस, तीजे का मुंह भुरस— मैं और मेरा पति आराम से रहूँ और तीसरे का मुंह झुलस जाय। तुच्छ विचार वाले व्यक्तियों के प्रति व्यंग्य में कहते है जो अपने लोगों के अतिरिक्त किसी और का भला नहीं चाहते। तुलनीय : कौर० मैं औ मेरा पुरस, तीजे का मूं भुरस।

मैं और मेरा मँस, तीसरे का मुँह झुलस— ऊपर देखिए।

मैं कब कहूँ कि तेरे बेटे को मिर्गी आवे है—मैंने कभी भी नहीं कहा कि तुम्हारे लड़के को मिर्गी आती है। अपनी सफाई की ओट में दूसरे की बुराई करने पर कहा जाता है।

मैं करूँ तेरी भलाई तू करे मेरी आँख में सलाई—मैं तुम्हारी सहायता करता हूँ और तुम मेरी आंख में कील चुभाते हो। जब कोई व्यक्ति भलाई के बदले बुराई करे तब कहा जाता है।

मैं की गर्दन पर छुरी— जिस मनुष्य में 'मैं' है अर्थात् जो घमंड करता है वह मारा जाता है। घमंडी का सिर नीचा होता है।

मैं क्या तेरा दबैल हूँ—क्या मैं तुम्हारे दबाव मे हूँ? अर्थात् मैं तुम्हारा आश्रित नहीं हूँ। जब कोई किसी पर व्यर्थ का दबाव डाले तब कहा जाता है। तुलनीय : अव०

मैं वा तोर दबैल हौं; हरि० मन्नै के तेरी खेर खाई सै।

मैं क्या तेरी पट्टी तले की हूँ—ऊपर देखिए।

मैं क्या तेरी रखैल हूं ?—मैं तुम्हारी रखैल नहीं हूँ, बल्कि ब्याहिता हूँ। मेरा भी कुछ अधिकार है। जब कोई किसी को अधिकारहीन समझकर उसका अनादर करता है तब वह ऐसा कहता है। प्रायः स्त्री पति के प्रति कहती है जब वह उसके साथ अनुचित बर्ताव करता है। तुलनीय : पंज० मैं तेरी रखी दी नई हाँ।

मैं गाऊँ फाग, तू गाए कजरी—मैं गा रहा हूँ होली के गीत और तू कजरी गा रहा है। (क) जो व्यक्ति बातचीत को समझे बिना ही उसमे अपना गलत मत व्यक्त कर दे उसके प्रति व्यंग्य से कहते है। (ख) जहां सब व्यक्तियों की राय भिन्न-भिन्न हो वहाँ भी व्यग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० हूँ गाऊँ दिया लीरा, तूं गावै होलीरा।

मैं चाहे मरूं, पर तुझे रांड़ कर दूंगा—मुझे चाहे प्राण ही क्यों न देना पड़े, किंतु तुझे रांड़ करके ही छोड़ूँगा। जो व्यक्ति अपनी जिद के लिए बहुत बड़ी हानि सहने को प्रस्तुत हो जाय उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० हूं मरूं पण तनै रांड कँवा' र छोड़ूं; पंज० मैं पावें मरा पर तेनूं रंडी कर देवांगा।

मैं जाऊँ काशी, तू जाय काबे—मैं कहाँ जा रहा हूँ और तू कहाँ जा रहा है मेरा-तेरा कैसा साथ ? जिस व्यक्ति से किसी प्रकार का संबंध न हो और वह फिर भी जबरदस्ती साथ चिपकता जाय तो उसे अलग करने के लिए कहते है। तुलनीय : राज० हूँ रहूँ कोलायत, तूं रहै विलायत।

मैं तुझे चाहूँ और तू काले धींग को—मैं तो तुमसे प्रेम करता हूँ लेकिन तू मेरी उपेक्षा कर दूसरे को चाहती है। जिसके लिए प्राण दे और वह उसे न चाहे तब कहते है।

मैं तुझे बाज़ार में मारूँ तो रोना मत—एक तो बाजार में सबके सामने मारेंगे और दूसरे यह भी कहते हैं कि रोना मत या शोर मत मचाना। जब कोई बलवान किसी दुर्बल को सताता भी है और किसी को बताने भी नही देता तो उसके प्रति कहते है। तुलनीय : गढ़० मैं तेरो नाक काट ला पर तू बुरा ना मानो; पंज० मैं तेनू बाजार बिच मारांगा ते रोवी नां।

मैं तेरी आँख में उँगली करूँ तू मेरे मुंह में उँगली कर—आँख भी फोड़ दी और मुँह में उँगली करने को कह रहा है ताकि उँगली भी काट ले। अर्थात् हर प्रकार से नुक़सान पहुँचाना चाहता है। हर तरह से किसी को नुकसान पहुँचाने पर कहा जाता है। तुलनीय : गढ़० मेरी आंगुली तेरा आँखू, तेरी आँगुली मेरा गिच्चा।

मैं तेरी सी कहूँ तू मेरी सी कह—मैं तेरी तारीफ़ करूँ तू मेरी कर। जब दो व्यक्ति एक-दूसरे की तारीफ़ में ज़मीन-आसमान के क़ुलाबे मिला देते है तो उनके प्रति व्यग्य से कहते हैं। तुलनीय : मेवा० आओ मारा सेंपट पाट म थन चाटू और थू मने चाट; फ़ा० मन तुरा हाजी बगोयम तू, मुरा हाजी बगो।

मैं तो तेरी लाल पगिया पर भूली रे रघुवा—मैं तुम्हारी लाल पगडी (पगिया) को ही देखकर मोहित हो गई अर्थात् बाह्य आडम्बर पर लुभा गई। जब कोई किसी के बाह्य आडम्बर को देखकर धोखे में फँस जाता है तब वह ऐसा कहता है।

मैं दूल्हे की मौसी, रख नेग का टका—मै दूल्हे की मौसी हूँ, मुझे बिदाई का रुपया दो। ज़बरदस्ती किसी से संबंध जोड़कर कुछ लेना चाहने वाले के प्रति व्यग्य स कहते है।

मै न होती तो किससे ब्याह करते ? कहा—तेरी माँ से—अशिष्ट बात कहने वाले के प्रति व्यग्य से कहते है। तुलनीय : राज० हूँ नहीं हुती तो कैनै परणीजता ? कै थारी माँ नै।

मैंने क्या उसकी खीर खाई है ?—दे० 'मैं क्या तेरा ...'।

मैंने क्या छुरी मारी थी कि कफन फाड़ के बोले—क्या मैंने आपका कुछ बिगाड़ दिया था जो क्रोधित होकर बोल रहे है ? जब कोई अच्छी बात कहने से एकाएक बिगड़ जाय तब कहा जाता है।

मैंने क्या तेरी खीर खाई है ?—मैंने क्या तेरी खीर खाई है जो तू मुझसे उसका बदला चाहता है। जिस व्यक्ति ने अपना उपकार किया हो उसी के साथ उपकार किया जाता है। जब कोई व्यक्ति किसी से कोई काम दबाव में डालकर कराना चाहता है तो उसे इनकार करने के लिए कहते है। तुलनीय : राज० किसी थारी खीर खायी है ? पंज० मैं की तेरी खीर खादी है।

मैंने क्या तेरी चोटी काटी है ?—मैंने तेरी चोटी तो काटी नहीं ? अर्थात् चेला तो बनाया नहीं है। तुम मेरे अधीन नहीं हो, जो दिल में आवे करो। जो व्यक्ति समझाने से न माने उसके प्रति कहते है। तुलनीय : राज० किसी चोटी काटी है।

मैंने खाई, पितरों पाई—मैंने खा लिया तो समझो पितरों ने भी खा लिया। जो अपने अतिरिक्त दूसरों का ध्यान नहीं रखते उनके प्रति व्यंग्य में कहते है। तुलनीय :

कौर० मैंने खाई, पितरों ने पाई।

मैंने तीन दफ़े खाया है —जब कोई स्वार्थी मनुष्य पहले ही से अपने स्वार्थ-साधन के लिए टिप्पस जमा ले तब कहा जाता है। एक ज़बान का चटोरा अपने किसी दोस्त बनिए के यहाँ गया। उसके यहाँ नया-नया गुड़ आया था उसे देखकर उसके मुँह से लार टपकने लगी। इधर-उधर की बातों के बीच में उसने कहा मैंने अपनी उम्र भर में तीन बार गुड़ खाया है। बनिए ने पूछा कब-कब? चटोरे ने कहा कि पहली बार जब मैं पैदा हुआ था घुट्टी के साथ खाया था, दूसरी बार जब हमारा कान छेदा गया था तब खाने को मिला था, और तीसरी बार अब यह नया गुड़ खाऊँगा जो आपके यहाँ आया है। बनिए ने कहा अगर मैं गुड़ न दूं तो क्या हो? चटोरे ने जवाब दिया तब दो ही दफ़े सही।

मैंने तुझे कहा, तूने और को—मैंने तुम्हें काम करने के लिए कहा और तुमने किसी और को कह दिया। जहाँ कोई किसी काम को करना नहीं चाहता, बल्कि सब किसी से करना चाहते है, वहाँ कहते हैं। तुलनीय : राज० ओठियँने पोठियो भोलायो; पंज० मैं तैनूं आखया तू अग्गे, नौकरां दे चाकर।

मैंने पिया मेरे बैल ने पिया और कुआँ टूट गिरे—मैंने पानी पी लिया और मेरे बैल ने भी पी लिया अब चाहे कुआँ टूटे या फूटे मुझे क्या? स्वार्थ सिद्ध हो जाने पर स्वार्थी व्यक्ति बात भी नहीं पूछता। स्वार्थियों के प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० मैं पिया, म्हारे बलद पिया, अबै कुवा दुड़ पड़ा।

मैं फिरूँ डाल-डाल, तू फिरे पात-पात—दे० 'तुम डाल डाल हम...'।

मैं बीन बजाऊँ तुम बिल में हाथ डालो —मैं बीन (एक प्रकार का बाजा) बजा रहा हूँ और तुम बिल में हाथ डालो। दूसरे को संकट में फँसा कर दूर से आनंद लेनेवाले के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : कौर० मैं बैन बजाऊँ, तू बिल में हाथ गेर।

मैं भाटिन पिया जात चमार—मैं भाटिन हूँ और मेरा पति चमार है। क्षुद्र व्यक्तियों के परस्पर संबंध पर व्यंग्य।

मैं भी रानी, तू भी रानी कौन भरे कुएँ से पानी?—मैं भी रानी हूँ, तुम भी रानी हो तो पानी भरने कौन जाय? जब घर में एक भी व्यक्ति काम न करना चाहे तो उनके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : राज० हूँ ही राणी, तूँ ही राणी कुण घालै चूल्हे में छाणी; पंज० मैं वी राणी तू वी राणी कम कौण करे जराणी।

मैं भी रानी तू भी रानी कौन भरेगा पानी —ऊपर देखिए। तुलनीय: मल० एल्लावरूम् यजमानन्मरायाल् भृत्य न्माराकानालु वेण्टे; अं० I stout and thou stout, who will carry the dirt out.

मैं भी हूँ पाँचों सवारों में—बड़ों में अपनी भी गणना करना। जब कोई व्यक्ति अपनी तुलना ऐसे व्यक्तियों के साथ करे जो उससे बहुत ऊँचे दर्जे के हों तब कहा जाता है। किसी समय चार सवार हथियार बाँधे खूब सजधज कर कहीं जा रहे थे। एक निहत्था मनुष्य सड़ियल टट्टू पर उनके पीछे हो लिया। जब उससे किसी ने पूछा कि तुम कहाँ जा रहे हो तब वह बोला, हम पाँचों सवार दिल्ली से आते हैं।

मैं मरूँ तेरे लिए तू मरे वाके लिए—मैं तेरे लिए मरता हूँ, और तू मेरी परवाह न कर दूसरों को चाहता है। जिसके लिए आप प्राण दे और वह किसी दूसरे को चाहता हो तब कहा जाता है। इस पर एक कहानी इस प्रकार है : एक दिन किसी ब्राह्मण ने राजा भर्तृहरि को एक अमर फल लाकर दिया, राजा ने वह फल अपनी रानी रानी पिंगला को दिया, रानी शहर के कोतवाल से फँसी, थी अतः उसने उसे दिया। कोतवाल का प्रेम एक वेश्या से था उसने उसे दिया। वेश्या की प्रीत राजा से थी उसने राजा भर्तृहरि को दिया। इस पर राजा को बहुत आश्चर्य हुआ और इसी पर उन्होंने वैराग्य ले लिया।

मैं लाऊँ छीन, तू बजा बीन—मैं छीन-झपटकर ले आया हूँ। तुम आराम से बैठकर बीन बजाओ। जो व्यक्ति कहीं से परिश्रम करके कुछ लाए और दूसरे मुफ्त में ही उसमें हिस्सा बँटाना चाहें तो उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० हूँ लायो माँग ताँग तूं लै गधैरी टांग।

मैं हगासे लड़के का मुंह पहचानता हूँ— बच्चे का मुँह देखकर ही मैं पहचान जाता हूँ कि बच्चे को टट्टी (हगास) लगी है या नहीं। (क) जब कोई वास्तविक बात को छिपाकर इधर-उधर की बातें करता है तब उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। (ख) मनुष्य के चेहरे से उसकी मनोदशा का पता चल जाता है।

मैं ही छलकरा मुष्टंडा, मोहि को मारे लेके डंठा—मैंने ही पाल-पोसकर सयाना किया और मुझे ही मारने चले हो। (क) जब कोई लड़का अपने माता-पिता को मारे या मारने पर उतारू हो तो उस पर कहा जाता है। (ख) जब कोई अपने मालिक अथवा आश्रयदाता को ही क्षति पहुँचाता है तब भी कहते हैं।

मैं हूं ऐसी चतुर सयानी, चतुर भरे मेरे आगे पानी—मैं इतनी चालाक हूँ कि बड़े-बड़े होशियार लोग मेरे सामने पानी भरते हैं। आत्मप्रशंसा करना। जब कोई अपनी प्रशंसा स्वयं करता है तब उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

मैके के महुए मीठे—नैहर(मैके) का महुआ भी मीठा होता है। (क) नैहर की सामान्य चीज़ भी बहुत प्रिय होती है। (ख) स्त्रियाँ जब अपने नैहर की ख़राब चीज़ की भी प्रशंसा करती हैं तब उनके प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

मैदे और शहाब की-सी लोई—आधा मुँह सफ़ेद और आधा लाल। (क) जब कोई व्यक्ति किसी कारण नाराज होकर चुपचाप बैठा हो तो उसके प्रति कहा जाता है। (ख) क्रोधी व्यक्ति के लिए भी कहा जाता है।

मैदे गेहूँ, ढेले चना—गेहूँ के खेत की मिट्टी मैदे की तरह होने से गेहूँ और चने के खेत में ढेले रहने से चना अधिक उत्पन्न होता है।

मैंने काटने टैंने का टिटोर—जब कोई बहुत ही दूर का संबंधी अपना नजदीकी बने तो कहते हैं।

मैल का बैल बनाते हैं—जो थोड़ी बात को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कहता है उसके प्रति कहते हैं।

मैला कपड़ा पातर देह, कुत्ता काटे कौन संदेह—गंदे वस्त्रों और दुर्बल शरीरवाले को कुत्ते काटते हैं। अर्थात् ग़रीब और दुर्बल को सभी तंग करते हैं। तुलनीय : अव० मैल कपड़ा पातर देह, कूकर काटै कउन संदेह।

मोंगरी सड़ गई है फिर भी बर्तन फोड़ने लायक़ तो है ही—डंडा (मोंगरी) सड़ गया है फिर भी बर्तन फोड़ने के लिए पर्याप्त है। आशय यह है कि हानि तो सभी पहुँचा सकते हैं चाहे वे कितने भी कमज़ोर क्यों न हों।

मोंगरी होती तो लड़के क्यों ऊँघते?—डंडा (मोंगरी) होता तो लड़के झपकी नहीं लेते। आशय यह है कि बिना भय के कोई ठीक से कार्य नहीं करता।

मोकू और न तोकू ठौर—दे० 'मुझे कोई ठौर नहीं ...'। तुलनीय : कौर० मोकू और न तोकू ठौर।

मोको न तोको, ले चूल्हे में झोंको—न मेरे काम में आई न तुम्हारे, चूल्हे में जला दी गई। आशय यह कि किसी के काम में न आई। जब कोई झगड़े की वस्तु झगड़े में ही पड़ी-पड़ी नष्ट हो जाय और किसी के काम न आए तब कहा जाता है। तुलनीय : अव० मोका न तोका, भरसाई मा झोंका।

मोचियों का झगड़ा जीन का नुकसान—दो मोचियों ने आपस में झगड़ा किया जिससे घोड़े की जीन फट गई जो उनके यहाँ सीने के लिए आई थी।

मोची की जोरू और टूटी जूती—मोची की बीवी होकर टूटी जूती पहने है। जो व्यक्ति साधन-संपन्न होने पर भी उसका उपयोग नहीं करता, उसके प्रति व्यंग्योक्ति है। तुलनीय : राज० चमार री जोरू टूटी जूती।

मोची के मोची ही रहे—जैसे के तैसे ही रह गए। जब निम्न वर्ग का मनुष्य पढ़-लिखकर भी उसी प्रकार बना रहे तब कहा जाता है। तुलनीय : हरि० चूतिया रा रहग्या।

मोज़े का घाव, मियाँ जानें या पाँव—मोज़े के घाव को या तो मियाँ साहब जानते हैं या पैर जानता है। आशय यह है कि जिस पर दुख पड़ता है वही उसके कष्ट को समझता है। तुलनीय : अं० The wearer knows where the shoe pinches.

मोटा कान का खोटा—मोटा अर्थात् बड़ा आदमी कान का कच्चा होता है। उसे जो भी कुछ कह दिया जाय वह उसी को सच मान लेता है, किसी प्रकार की जाँच नहीं करता। आशय यह है कि बड़े आदमियों के चमचों से सावधान रहना चाहिए। तुलनीय : राज० मोटा कानांरा काचा; पंज० मोटा कन द खोटा।

मोटा देख डरना नहीं, पतला देख अड़ना नहीं—किसी को मोटा देखकर डर नहीं जाना चाहिए और पतला देखकर भिड़ नहीं जाना चाहिए। सभी मोटे आदमी बलवान नहीं होते और न ही पतले आदमी कमजोर होते हैं। आशय यह है कि किसी के रूप-रंग या आकार को देखकर उसकी वास्तविकता का पता नहीं लगाया जा सकता। तुलनीय : राज० मोटो देख'र डरणो नहीं, पतलो देख'र अड़णो नहीं।

मोटी खाल दूध का हान, पतली खाल दुधारू जान—जिस गाय या भैंस का चमड़ा मोटा होता है वह बहुत कम दूध देती और जिसका चमड़ा पतला होता है वह अधिक दूध देती है।

मोटी गाँड़ में घुसना सहज, निकलना कठिन—बड़े आदमियों में घुसना आसान है, किन्तु फिर उनमें से निकलकर आना कठिन है। बड़े आदमियों से मेलजोल करना कोई कठिन नहीं है, किन्तु उसके बाद उनके फंदे से निकलना बहुत कठिन हो जाता है। वे अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए ग़रीबों को ही मोहरा बनाते हैं। तुलनीय : राज० मोठांरी गांड में वड़नो सोरो, पण निकलनो दोरो।

मोती का पानी उतरा सो उतरा—मोती का पानी

एक बार उतर जाता है तो वह पुनः नहीं आता। अर्थात् यदि इज़्ज़त एक वार उतर गई तो उसका फिर से आना संभव नही।

मोती की-सी आब उतर गई—मोती की तरह चमकनी हुई इज्ज़त चली गई। (क) जब किसी का भरी सभा में अपमान हो जाता है तब कहते हैं। (ख) जब कोई ओछा कर्म कर देता है जिससे समाज में उसकी निंदा होती है तब भी कहते हैं।

मोती के जवाहर कम होते हैं—पंडित मोतीलाल नेहरू जैसे महान् व्यक्ति के पंडित जवाहरलाल नेहरू जैसे लायक़ पुत्र बिरले ही होते हैं। आशय यह है कि लायक़ बाप के लायक़ पुत्र कम होते हैं।

मोदी की दूकान में हीरा कहाँ—मोदी (आटा-दाल का व्यापारी) की दूकान में हीरा नहीं पाया जाता। (क) ग़रीब के पास मूल्यवान वस्तु नहीं होती। (ख) सामान्य व्यक्ति मे विशेष गुण नही होते। तुलनीय : मल० वेरुकिन् पृष्ठम् नय् कूट्टिळ तिरयेण्ट; अं० Look not for musk in a dog's kennel.

मोम की नाक है जिधर चाहे घुमाओ—बहुत भोले-भाले व्यक्ति के प्रति कहते हैं जो हर बात को स्वीकार कर लेता है। तुलनीय : मरा० मेणाचें नाक हें/हवें निकडे वळवा।

मोम हो तो पिघले कहीं पत्थर भी पिघलता है—दयालु आदमी हो तो मान भी जाय कहीं कठोर आदमी भी मानता है। कठोर आदमी पर व्यंग्य से कहा जाता है।

मोर अपना पर देखकर नाचता है, पर पैर देखकर रोता है—क्योंकि जैसा सुंदर मोर होता है वैसा सुन्दर उसका पैर नहीं होता। जब कोई सब तरह से सुखी हो पर एक ही दुख ऐसा हो जिससे उसका सब सुख जाता रहे तब कहा जाता है। तुलनीय : राज० मोरियो पांखां देख'र राजी हुवै पग देख'र झुरै; माल० मोर आपणा पग देखी ने रोवे।

मोर करें किलोल पराए माल पे—दूसरों के माल पर मोर किलोल करते हैं। जो व्यक्ति दूसरों के धन पर मौज उड़ाए उसके प्रति कहते है। तुलनीय : राज० मोर्‌या करें मलार घरां परायां ऊपरै।

मोर का बोलना और बादल का बरसना—मोर के बोलने पर बादल पानी बरसाने लगते हैं। जब किसी व्यक्ति के इशारा करते ही कोई काम हो जाय तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भीली—मोर ने तो बोलवू ने अन्दर ने बरवू; पंज० मोर दा नचना अते बदल दा बरना।

मोरनियाँ तो चुग गई, फँस गया मोर—मोरनी तो चुगकर निकल गई और पकड़ा गया मोर। जब एकके अपराध का दंड दूसरे को भुगतना पड़ता है तब कहते हैं।

मोरनी हार निगल गई—किसी असंभव घटना के घटित होने पर कहते है। इस सम्बन्ध में एक कहानी है जो इस प्रकार है : राजा विक्रमादित्य को साढ़ेसाती की कृपा से किसी दूसरे राजा के यहाँ नौकरी करनी पड़ी थी। एक दिन जब वह तोशाखाने का पहरा दे रहे थे तो रात को मोरनी, जिसकी तसवीर तोशाखाने की दीवार पर टँगी थी, निकल कर दीवाल पर टँगे हार को निगल गई। सवेरे रानी को हार के खोए जाने का पता चला और वहाँ पर केवल विक्रमादित्य का पहरा होने के कारण उन्हीं को दण्ड का भागी होना पड़ा।

मोर पंख बादल उठे, राँड़ाँ काजल रेख; वह बरसे वह घर करे, या में मीन न मेख—जब मोर के पंख की तरह बादल उठें और विधवा स्त्री आँखों मे काजल दे तो यह समझना चाहिए कि बादल तो पानी बरसाएंगे और स्त्री दूसरा पति करेगी, यह बात असंदिग्ध है।

मोर बोले मीठा, खा जाय साँप—मोर की आवाज मीठी होती है पर वह साँप जैसे विषैले जंतु को भी खा जाता है। मीठी-मीठी बातें करके अपना स्वार्थ सिद्ध करने वाले कपटी मित्रों के प्रति कहते है। तुलनीय : राज० मोर बोलै मीठो, खा ज्यावै सरप नै।

मोर सइयाँ चिकनियाँ, पचास बीड़ा खायँ, आगे पीछे रिनिहा, दीवाना बने जाय—मेरे पति इतने शौक़ीन है कि ऋणी होने पर भी पचास बीड़ा प्रतिदिन पान खाते हैं। उन्हे आगे-पीछे महाजन घेरे रहते है फिर भी वे मस्त रहते है। आशय यह कि ऋणी होने पर भी फ़िज़ूलखर्ची करते है। क़र्ज़दार होकर भी जो फ़िज़ूलखर्ची करता है उस पर व्यंग्य से कहते हैं।

मोरा पिया न मान करे, मोरा सुहागिन नाम—यदि पति स्त्री की इज्ज़त न करे तो पत्नी का सुहागिन कहलाना व्यर्थ है। अर्थात् पति का होना न होना उसके लिए बराबर है। इसके अतिरिक्त यदि भाई बहिन के, पुत्र माँ-बाप के तथा भाई भाई के साथ प्रेम-व्यवहार न रखे या कष्ट दे तो भी इस लोकोक्ति का प्रयोग करते हैं।

मोरी की ईंट, चौबारे चढ़ी—मोरी की ईंट जो कि कितनी नीची और गंदी जगह पर पड़ी थी, अब चौबारे में

लग गई है। (क) जब कोई निम्न स्तर का व्यक्ति अच्छे पद पर पहुँच जाय तब कहा जाता है। (ख) जब कोई गरीब परिवार की लड़की किसी अच्छे परिवार में ब्याही जाती है तब भी कहा जाता है। तुलनीय . अव० नरदवा के पथरा मंदिरे मा लागगा; पंज० मोरी दी इट चबारे चड़ी।

मोरी के कीड़े मोरी में ही खुश रहते हैं—अर्थात् तुच्छ व्यक्ति तुच्छ वातावरण में ही खुश रहते है। तुलनीय : अव० नरदवा की किरवा को नरदवै नीक लागत है; हरि० भैंस न कितनाए नह्वादो धवादो लोटैगी गारा मैं।

मोरे बाप के उपजल कपास, मोरे लेखे पड़ल तुषार—मेरे पिताजी के खेतों में बहुत कपास पैदा हुआ है, किन्तु मेरे लिए तो वह पाले या पत्थर के समान है। आशय यह कि बाप कितना भी धनी हो जाय परन्तु उसकी संपत्ति में लड़की का हिस्सा नहीं होता।

मोहसिब रा दरूने-खाना चे कार—किसी व्यक्ति को दूसरे के घर के मामलों में हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं है! (मोहतसिब -कोतवाल)।

मोहन भोग में अंकटी किसी अच्छे परिवार में नालायक संतान उत्पन्न हो जाने पर कहते हैं। (मोहनभोग आटा, चीनी और घी से बना पदार्थ; अंकटी=कंकड़)।

मोहर की लूट और कोयले पर छाप - दे० 'मोहरों की लूट……'।

मोहर पर लूट, कोयला पर ताला—नीचे देखिए।

मोहरों की लूट कोयलों पर छाप— मोहर ऐसी कीमती वस्तु लुटी तो उसकी रक्षा नहीं की किन्तु कोयले ऐसी साधारण वस्तु की भली-भांति रक्षा की जा रही है। आशय यह कि सारी सम्पत्ति खो दी परन्तु साधारण वस्तु के लिए लड़ाई करता है। जो अपनी सारी सम्पत्ति खो दे किन्तु साधारण वस्तु के लिए लड़ाई करे उस पर कहा जाता है। अथवा जो अपनी बहुमूल्य वस्तु के नष्ट होने की ओर ध्यान न देकर तुच्छ वस्तु की विशेष खबरदारी करता है उस पर कहा जाता है।

मोहि तुम एक तुम्हे मौसम अनेक—मुझ जैसे तुम्हारे लिए सैकड़ों है पर तुम जैसा मेरे लिए एक है। स्त्री पति से या अच्छा नौकर स्वामी से या भक्त भगवान से कहता है।

मौक़ा मिला और फूटे अवसर मिलते ही भाग लिए। (क) जब किसी व्यक्ति का किसी दुष्ट से पाला पड़ जाय और अवसर पाते ही उसके चंगुल से भाग निकले तो उसके प्रति कहते हैं। (ख) कामचोर व्यक्ति के प्रति भी कहते है जो थोड़ा-सा अवसर पाते ही जी चुराकर भाग जाते है।

तुलनीय : माल० भिड़्या नी, भागी निकल्या।

मौक़े का घूंसा तलवार से बढ़कर— अवसर पड़ने पर एक घूंसा ही मार दिया जाय तो उसका प्रभाव तलवार से बढ़कर होता है। आशय यह कि साधारण बात भी यदि मौक़े पर कही जाय तो उसका बहुत असर होता है। तुलनीय : अव० मोके का घूसा तलवार से बढ़कर; राज० मोकै माथै हाथ आवै जको ही हथियार; मरा० वेळवर मारलेला गुद्दा तलवारीच्या वारा; पंज० मौके दा मुक्का कृपाण तो बद के।

मौके की बात तलवार से बढ़कर— ऊपर देखिए।

मौत आई तो कौन टाले —मौत को कोई नहीं टाल सकता। अर्थात् जो होना होता है वह होकर रहता है। तुलनीय : पंज० आई मौत नूं कौण टाले।

मौत आती नहीं, जिया जाता नहीं—मृत्यु आती नहीं है और जीवित रहने की परिस्थितियाँ और साधन नहीं है। बहुत बड़ी आपत्ति या निर्धनता आने पर कहते है। तुलनीय : भीली—जावा नू जोग नी, रेवा ना दन नी।

मौत आवे बुढ़िया को, घर बतावे पड़ोसी का -मौत तो बुढ़िया को आई है पर वह उसे बता रही है पड़ोसी का घर। (क) जो व्यक्ति अपनी मुसीबत को दूसरों के सिर मढ़ना चाहे उसके प्रति व्यंग्य में कहते है। (ख) मरना कोई नहीं चाहता। तुलनीय : राज० मोत आवै डोकरीरी, घर बतावै पाड़ोसीरो।

मौत और ग्राहक का एतबार नहीं, जाने किस वक़्त आ जाय मृत्यु और ग्राहक किसी समय भी आ सकते हैं। तुलनीय : अव० मउत औ गाहक का इतबार नाहीं, पता नाही कउने बखत आय जाय।

मौत और ग्राहक का क्या पता किस वक़्त आ जायें? —ऊपर देखिए। तुलनीय : मरा० यम(मृत्यु) नि गिऱ्हाईक केव्हां येईल याचा काय नेम!

मौत और रोजी किसके बस में है?—अर्थात् किसी के नहीं। ये दोनों ही वस्तुएँ माँगने से नहीं अपितु भाग्य से मिलती हैं। तुलनीय : माल० रजक ने मौत कड़े हाथ में।

मौत और हयात किसी के हाथ नहीं—मरना और जीना अपने हाथ मे नहीं है। किसी की मृत्यु पर उसके सम्बन्धियों को ढाढ़स बँधाने के लिए कहते है।

मौत कपार पर ही रहती है —अर्थात् मृत्यु का कोई ठिकाना नहीं। किसी भी समय किसी की मृत्यु हो सकती है।

मौत किसको छोड़ती है?—अर्थात् किसी को नहीं।

सबको एक-न-एक दिन मरना पड़ता है। तुलनीय : मेवा० काल कणी ने आशो आवे हैं; पंज० मौत किनूं छड़दी है।

मौत की दवा नहीं—जब अधिक दवा कराने के बावजूद किसी की मृत्यु हो जाती है तब कहते हैं। तुलनीय : मल० मरणत्तिनु चिकित्सयिल्ल (मरुन्निल्ल); राज० मोतरो दारू कोनी; मरा० मरणावर औषध नाही; पंज० मौत दा इलाज नईं; अं० Death defies the doctor.

मौत की दारू नहीं है—ऊपर देखिए।

मौत के आगे किसी का बस नहीं चलता—मृत्यु से सभी हार गए है। अर्थात् सबकी मृत्यु होती है। तुलनीय : अव० मउत के आगे केउ के बस नाही चलत; हरि० मोत पै किसकी पार बसावै सै; माल० आई मौत कुण फेरे; पंज० मौत दे अग्गे किसे दी नई चलदी।

मौत के आगे सब हारे हैं—मौत के आगे सबको झुकना पड़ता है। मृत्यु सबकी होती है उसे कोई नहीं टाल सकता तुलनीय : अव० मउत के आगे सब हार जात है।

मौत को आते देर नहीं लगती—किसी समय भी मृत्यु हो सकती है। (क) किसी व्यक्ति के आकस्मिक निधन पर कहा जाता है। (ख) जीवन की क्षणभंगुरता पर भी कहते है। तुलनीय : अव० मउत के आवत बेर नाही लागत; पंज० मौत आंदे देर नई लगदी।

मौत दीजो पर मौर न दीजो—विवाह से मर जाना बेहतर है। गृहस्थी के झंझटों से घबड़ा जाने पर कहा जाता है।

मौत मुँह माँगी न आवै—माँगने से मौत भी नहीं मिलती। अर्थात् निकृष्ट से निकृष्ट वस्तु भी चाहने पर या मागने पर नहीं मिलती। तुलनीय : पंज० मगी होई मौत बी नई मिलदी।

मौत सिर पर खेलती है—मृत्यु बिल्कुल सन्निकट है। (क) जब कोई व्यक्ति बहुत खतरे का कार्य करे तब उस पर कहा जाता है। (ख) बहुत उपद्रवी एवं दुष्ट व्यक्ति के लिए भी कहा जाता है। तुलनीय : अव० मउत मूड पर मँडरात है।

मौत से सब हारे—दे० 'मौत के आगे सब···'।

मौनम् सम्मति लक्षणम्—चुप रहना सम्मति का लक्षण है। जब किसी से कोई बात पूछी जाय अथवा सलाह ली जाय और वह उसका उत्तर न दे बल्कि चुप रहे तब कहा जाता है।

मौनं सर्वार्थ साधनम्—चुप रहने से सभी कार्य सध जाते है। शांत रहने से मनुष्य को काफ़ी फ़ायदा होता है।

मौनं स्वीकृति लक्षणम्—दे० 'मौनम् सम्मति······'। तुलनीय : असमी—नामाताइ सन्मतिर् चिन्।

मौन अमावस मूल बिन, रोहिनी बिन अखतीज; सावन सरवन ना मिले, वृथा बखेरो बीज—यदि मौनी अमावस्या को मूल नक्षत्र न हो, अक्षय तृतीया को रोहिणी नक्षत्र न हो और श्रावण में श्रावण नक्षत्र न हो तो बीज का बोना व्यर्थ है अर्थात् सूखा पड़ेगा।

मौन गहे बक दाँव पर, मछली लेत उठाय—चुप रहकर बगुला समय आने पर मछली को पकड़ लेता है। स्वार्थी व्यक्तियों के प्रति व्यंग्य में कहते हैं जो अपने स्वार्थ के घात में लगे रहते हैं और मौक़ा पाने पर अपना अभीष्ट पूरा कर लेते है।

मौन विद्वत्ता का भूषण है—शांत रहने से विद्वान की इज़्ज़त होती है। तुलनीय : मल० मौनम् विद्वानु भूषणम्; अं० A quiet tongue shows a wise head.

मौला यार तो बेड़ा पार—(क) ईश्वर की कृपा होती है तो सभी काम हो जाते है। (ख) जब किसी का सहायक कोई बड़ा आदमी होता है तब भी उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० रब यार ते बेड़ा पार।

मौला हाथ बढ़ाइयाँ जिस चाहे तिस दें—ईश्वर जिस को चाहता है उसी को देता है। जब कोई कार्य अनेक लोग करें और सफलता थोड़े लोगों को ही मिले तब कहते है।

मौसम बिन न तरु फलें, माँगे मिल न मेह—ऋतु से पहले या बाद में वृक्षों पर फल नहीं लगते और चाहने से वर्षा नहीं होती। प्रकृति के कार्य स्वयमेव समयानुसार हो जाते है। प्रत्येक कार्य को करने का एक समय होता है। तुलनीय : राज० रात बिन राख्ण ना फळै, माग्या मिळै न मेह।

मौसम में ही फल पकें—समय आने पर ही फल पकते है। अर्थात् प्रत्येक कार्य समय आने पर ही होता है, उससे पहले लाख प्रयत्न करने पर भी नहीं हो सकता। तुलनीय : भीली—रत आय्यां फल पाके।

मौसी का घर नहीं है—मौसी के घर में बहुत प्यार होता है और बहुत छूट भी रहती है। आशय यह है कि ज़रा सोच-समझकर काम करो। जब कोई व्यक्ति किसी अन्य स्थान पर भी बिना सोचे-समझे काम करे, तब कहा जाता है। तुलनीय : अव० मउसी केर घर न होय; पंज० मासी दा कर नई है।

म्याऊँ का ठौर कौन पकड़े ?—बिल्ली (म्याऊँ) के मुँह को कौन पकड़ेगा ? अर्थात् कठिन कार्य को कौन करेगा ?

जब किसी काम के विषय में लोग खूब लंबी-चौड़ी हाँकें और खतरे के समय चुप्पी साध लें तब कहते हैं। इस संबंध में एक कहानी इस प्रकार है : किसी बिल्ली से तंग आकर चूहों ने एक सभा की। सभा में यह बात तय हुई कि बिल्ली हम लोगों को बार-बार तंग करती है इसलिए उसके गले में एक घंटी बाँध दी जाय, ताकि जब वह आवे तो घंटी की आवाज सुनकर हम लोग सतर्क हो जायं। किसी ने कहा मैं उसका पैर पकड़ लूंगा, किसी ने कहा मैं पूंछ पकड़ लूंगा, किसी ने कहा मैं कान पकड़ लूंगा। इस तरह सभी अपनी बहादुरी दिखाने लगे। अंत में एक बूढ़ा चूहा बोला कि 'म्याऊँ का ठौर कौन पकड़ेगा?' इस बात को सुनते ही सब चूहे डरकर भाग गए। तुलनीय : भोज० मियाऊँ क मूँह के पकड़ी; अव० मिआँव का ठउर कउन पकरी; राज० म्याऊँरी जाग्या कुण पकड़ै; माल० मनकी रे टोकर कुण बांधे; मरा० मांजराला त्याच्यां धरीच कोण पकड़णार; अं० Who will bell the cat?

य

यः कारयति सः करोत्येव—जो (किसी काम को) करवाता है, वही (काम) का वास्तविक कर्त्ता है। जो दूसरों के बतलाने पर कोई कार्य करके फूला नहीं समाता उसके प्रति कहते हैं।

य एव करोति स एव भुङ्क्ते: जो करता है, वही भोगता है। आशय यह है कि जो कोई कर्म करता है वही उसका फल भोगता है। तुलनीय : पंज० जिवें करो उवें परो।

यकदर गीर-ओ-मोहकम गीर एक घर पकड़ो और मजबूती से पकड़ रखो। आशय यह है कि अस्थिर चित्त होना अच्छी बात नहीं, मनुष्य को एक काम ग्रहण करना चाहिए और उसी पर जमा रहना चाहिए। किसी का आश्रय ढूंढकर उसके प्रति वफ़ादार बना रहने के लिए भी शिक्षार्थ कहते हैं।

यक न शुद, दो शुद—एक नहीं है दो-दो हे। जब एक व्यक्ति के साथ कोई बात हो रही हो और बीच में कोई दूसरा भी उसकी ओर से बोलने लगे तब कहते है या जब कोई एक कठिनाई से जूझ रहा हो और उसी बीच उस पर कोई और विपत्ति आ जाए तब भी कहते है।

यक पानी जो बरसे स्वाती, कुरमिन पहिरें सोने क पाती - यदि स्वाति नक्षत्र में एक बार पानी बरस जाय तो इतनी पैदावार होगी कि कुरमिन भी सोने के गहने पहनने लगेंगी। (कुरमिन = एक गरीब जाति की स्त्रियां)।

यक पीरी-ओ-सद ऐब—बुढ़ापा सौ बीमारियों या दोषों की एक बीमारी है। अर्थात् वृद्धावस्था आने पर सैकड़ों बीमारियां शरीर को लग जाती हैं।

यक मन इल्मरा दह मन अक़्ल मी बायद—एक मन इल्म (ज्ञान) के लिए दस मन बुद्धि की आवश्यकता होती है। आशय यह है कि बिना बुद्धि के ज्ञान प्राप्त नहीं होता।

यकसर खेती यकसर मार, घाघ कहै ये सदहूं हार—घाघ कहते हैं जो अकेले खेती करता है तथा अकेले मार-पीट करता है वह सदैव हारता है। अर्थात् खेती के काम और लड़ाई-झगड़े के लिए अधिक लोगों की आवश्यकता पड़ती है।

यक़ीन के बंदे होगे तो सच मानोगे- यदि तुम्हें सत्य को पहचानने की क्षमता होगी तो हमारी बात पर अविश्वास नहीं करोगे।

यक़ीन बड़ा रहबर है—विश्वास से सारे कार्य सिद्ध हो जाते हैं। तुलनीय : पंज० यक़ीन नाल सारे कम हुंदे हन।

यतो धर्मः ततो जयः—जहां धर्म रहता है वहीं जय भी रहती है। अर्थात् धर्म से विजय होती है। तुलनीय : पंज० जिथे तरस हुवेगा उथे जीत भी हुवेगी।

यत्करभस्य पृष्ठे ना भाति तत्कण्ठे निबध्यते—जिस वस्तु के लिए ऊँट की पीठ पर जगह नहीं है, वह उसके (ऊँट के) गले में बांधी जाती है। प्रस्तुत न्याय को अधिकाधिक आपत्तियों में उद्भूत कष्टों की पराकाष्ठा के संदर्भ में उद्धृत किया जाता है।

यत्कृतकं तदनित्यम्—जो निर्मित है वह भंगुर है। अर्थात् हर चीज जो अस्तित्व में आई है विनष्ट होती है। जिसका उदय होता है उसका अंत भी होता है।

यत्ने कृते यदि न सिद्धयति कोऽत्र दोषः- प्रयत्न करने पर भी काम पूरा न हो तो अपना कोई दोष नहीं। तात्पर्य यह है कि किसी काम को करने के लिए यथेष्ट प्रयत्न करना चाहिए, उस पर भी यदि कार्य न हो तो मन को संतोष रहता है और किसी को कहने की भी जगह नहीं रहती।

यथा एनी तथा ओनी, एनी ओनी तथैव च- समान स्वभाव के व्यक्तियों के पारस्परिक मेल पर उक्त कहावत कही जाती है। तुलनीय : मैथ० यथा एन्ने तथा वन्ने एन्ने

वन्ने तथैव च या यथा हिन्ने तथा हुन्ने हिन्ने हुन्ने तथैव च; भोज० जइसनी एन्नी तइसनी ओन्नी एन्नी ओन्नी एक्के तार।

यथा नाम तथा गुण - जैसा नाम है वैसा ही गुण भी है। नामानुसार गुण होने पर यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : अव० जस नाम तस गुन; ब्रज० जैसो नाम वैसो गुन।

यथा राजा तथा प्रजा— जैसा राजा होता है उसी तरह की प्रजा भी होती है। आशय यह है कि राजा अच्छा होगा तो प्रजा भी अच्छी होगी और राजा बुरा होगा तो प्रजा भी बुरी होगी। तुलनीय : अव० जस राजा तस परजा; ब्रज० जैसो राजा तैसी परजा; अं० Like master like man; Like priest like people; Like father like son.

यदि कहे तो कहा भी न जाय, बिना कहे रहा भी न जाय— यह कहावत ऐसी स्थिति में कही जाती है जब कोई बात कहते भी न बने और बिना कहे भी न रहा जाए।

यदि मैं जानता कि मेरा बाप मर जाएगा तो उसे बेचकर चोकर / जौ ले लेता- स्वार्थी व्यक्ति के प्रति कहते है जो हर जगह अपना स्वार्थ ही देखता है।

यदि हाथ ही जलाना था तो कलुछी लेने की क्या आवश्यकता थी ?— साधन रहने पर भी जब कोई कष्ट उठाता है या उसका उपयोग नही करता तब उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० जे हथ्थ ही साड़ना सी ते कडछी दी की लोड सी।

यद्यपि शुद्धं लोकविरुद्धं ना करणीयं ना करणीयं - कोई कार्य भले ही ठीक जान पड़े पर यदि लोकविरुद्ध हो तो उसे कभी न करना चाहिए। अर्थात् वेदाचार से लोकाचार बढ़कर है।

यम का बुलावा चाहे आए, राजा का न आए—यम का बुलावा भले आ जाए किंतु राजा का बुलावा न आवे। यम का बुलावा आने से तो केवल मृत्यु ही आती है किंतु राजा के बुलावे से अपमान और कठोर यातनाओं के साथ मृत्यु का भय भी बना रहता है। निर्दयी शासक के प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० जमरो बुलावो आई जो पण राजरो बुलावो मत आई जो; फ़ा० हुक्मे-हाकिम मर्गे-मफ़ाजात (शासक का आदेश आकस्मिक मृत्यु के समान होता है)।

यस्य नास्ति पुत्रो न तस्य पुत्रस्य क्रीडनकानी क्रियन्ते—जिस आदमी का कोई पुत्र नहीं है, उसके पुत्र के लिए खिलौने तैयार नही किए जाते। तुलनीय : पंज० जिहड़े मनुख दा कोई पुत नई हुंदा उहदे पुत लई खडोने नई बणदे।

यस्योन्मूलनाय यस्य प्रसक्तिर्भवति ततस्तस्य बलवत्वम्:—वह जो किसी दूसरे को नष्ट करने पर तुला हुआ है, उससे वह (नष्ट किया जाने वाला) अधिक बलवान् होता है। तुलनीय : पंज० दूजे नूं मारण वाले तो मरण वाला बलवान हुंदा है।

यह अंगूर ही खट्टे हैं—न पा सकने पर किसी वस्तु का तिरस्कार करना। एक भूखी लोमड़ी किसी बगीचे में गई। वहाँ पके हुए अंगूरों के गुच्छों को देख उसके मुँह में पानी भर आया। बहुत उछल-कूद के पश्चात् जब वह उन्हें न पा सकी तो उन्हें खट्टा कहकर चली गई।

यह अन्याय कब तक ? जब तक चले तब तक—किसी ने किसी का अत्याचार देखकर पूछा—'यह कब तक चलेगा ?' उसने कहा—'जब तक चल सकेगा, तब तक।' आशय यह है कि अन्याय अधिक दिन तक नही चलता। इस संबंध में एक कहानी है : चार ग़रीब तथा मूर्ख भाई थे। एक-एक करके भिक्षा के लिए निकले। पहला एक राजा के पास पहुँचा। कुछ जानता तो था नहीं अत: 'जाप जपो' 'जाप जपो' की रट लगाना शुरू किया। कुछ दिनों बाद दूसरा भाई भी वहीं पहुँचा और वही जाप उसने भी शुरू किया। तीसरा भाई जब पहुँचा तो उसने कहा - 'यह अंत कब तक चलेगी ?' उसे तो मूर्खता के भेद खुलने का भय था। चौथा भाई भी कुछ दिनों बाद पहुँचा तथा तीसरे भाई के उत्तर में उसने कहा—'जब तक चले तब तक।' अर्थात् जब तक राजा को हमारी मूर्खता का पता न चल जाय। तुलनीय : भोज० इ अन्याय कबले आतऽ जब ले चल जा तब ले; राज० आ पोल कित्ता दिन चलसी ? चले जित्ते चलायां जावो या आ पोल कित्ता दिन ? चले जित्ता दिन; पंज० इह अनयाय कदों तक जदों तक चले अदों तक।

यह कबहू नहिं दूबरे होत, रसोई के विप्र, कसाई के कूकर—रसोई बनाने वाला ब्राह्मण और कसाई का कुत्ता ये दोनों कभी भी दुबले नही होते। रसोई बनाने वाले ब्राह्मण के प्रति व्यंग्य में कहते है।

यह काम कब होगा ? जिस दिन घोड़ी पागर करेगी—किसी काम के न करने के लिए बहाना कर देना, क्योंकि घोड़ी पागुर करती नहीं। (काम करने वाले की शर्त है कि घोड़ी पागुर करेगी तभी वह काम करेगा)।

यह किसी का भी सगा नहीं—(क) यह आदमी जिससे किसी से नहीं पटती, उसे कहते हैं। (ख) अविश्वासी को

भी कहते हैं।

यह कुत्ता नहीं मानता—पेट के ऊपर कहा गया है क्योंकि बिना उसे भरे चैन नहीं मिलता और उसी के कारण दर-दर की ठोकरें भी खानी पड़ती हैं।

यह कौवा फँसाने की चाल है—बुद्धिमान और सयाने व्यक्ति को फँसाने का यही एक मात्र उपाय है।

यह घोड़ी घास नहीं खाती—अर्थात् यह व्यक्ति सुधरने वाला नहीं है। तुलनीय : मैथ० ई घोड़ी घास नय खाय; भोज० ई घोड़ी घास ना खाइ; पंज० इह कोड़ी कॉह नईं खांदी।

यह जवानी मुझे न भावे, सींग डुलावे हँसी आवे—यह जवानी मुझे अच्छी नहीं लगती जिसमें जानवर को सींग हिलाते देखकर हँसी आती है। व्यर्थ में हँसने वाले पर कहा जाता है।

यह तीन काने, और यह पौ बारह—चौपड़ खेलते समय कहा जाता है। तीन काने नुकसान होने पर और पौ बारह लाभ होने पर कहा जाता है।

यह तो अच्छा था, इसे साथियों ने बिगाड़ दिया—कुसंग में पड़कर खराब हो जानेवाले के प्रति कहते हैं।

यह तो ऊसर भूमि है, अंकुर जमिहै नाहिं—यह ऊसर भूमि है इसमें अंकुर नहीं जमेंगे। अर्थात् मूर्ख के हृदय पर शिक्षा का कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता। जब बहुत समझाने पर भी किसी मूर्ख पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता तब उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

यह तो घूंघट में ही अच्छी लगती है—जो स्त्री कुरूप हो या अधिक आयु की हो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : भीली—ये तो गूटका माय मूंगी है; पंज० इह ता झुंड कडे तां चंगी लगदी है।

यह तो चढ़ाव पर बहती है—जब कोई बात अक्ल के खिलाफ़ कही जाए तब इसका प्रयोग किया जाता है।

यह तो छाती का पीपल है—यह छाती पर पीपल उगा हुआ है जिसके बोझ से दबा जा रहा हूँ। अत्यंत कष्ट देने वाले व्यक्ति या विपत्ति के प्रति कहते हैं। तुलनीय : भीली—इये ते चाती माते पीपली है—है जणां दड़ानी; पंज० इह ता छाती दा पिपल है।

यह तो बैठी चिड़िया उड़ाता है—जो चिड़िया चुपचाप बैठी है उसे उड़ा देता है। उस व्यक्ति के प्रति कहते हैं जो उच्छृंखल और बेकार होने के कारण बिना मतलब का कार्य करता है और सज्जनों को सताता है। तुलनीय : भीली—ये तो बेहता कागला उड़ावे; पंज० इह तां वेला कां उडांदा है।

यह दाढ़ी धोखे की टट्टी है—दाढ़ी देखकर इसको अच्छा आदमी न समझो। यह दाढ़ी केवल पाखंड़ी है। पाखंडी मनुष्य पर कहा गया है। तुलनीय : पंज० इह दाड़ी तोखे दी टट्टी है।

यह दिन सबके वास्ते है—यह दिन सबके लिए होता है। मृत्यु पर कहा गया है कि एक दिन सबको मरना है। तुलनीय : पंज० इह दिन सब लई हुदा है।

यह दीदे नदीदे हैं दीदार के—ये आँखें दर्शन की प्यासी हैं। जब कोई किसी से मिलने का काफ़ी इच्छुक होता है तब कहते हैं। (नदीदे—लोलुप; दीदार—दर्शन या मिलन)।

यह देखो क़ुदरत का खेल, पढ़े फ़ारसी बेचे तेल—यह ईश्वर की लीला देखिए कि ये फ़ारसी पढ़कर तेल बेच रहे हैं। जब कोई शिक्षित व्यक्ति दुर्भाग्यवश कोई छोटा काम करके जीविकोपार्जन करता है तब उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : कौर० ये देखो कुदरत के खेल पढ़े फ़ारसी, बेचे तेल; हरि० येह देक्खो कुदरत के खेल, पढ़ें फ़ारसी बेच्चें तेल; पंज० इह देखो होनी दी खेड पढे फ़ारसी बेचे तेल।

यह धन खा चुके हो या खाओगे—यह धन जो तुम लाए हो अपने लिए लाए हो या कर्ज़ उतारने के लिए। जो व्यक्ति बहुत कर्ज़ लेनेवाला हो और उसका वेतन क़र्ज़ उतारने में ही चला जाता हो तो उसके प्रति इस प्रकार कहते है। तुलनीय : गढ़० ये धान भूच्यां छिनकी भूचण्यां; पंज० इह पैहा खा लिया है या खाणा है।

यह ननिहाल नहीं है—यह तुम्हारा ननिहाल नहीं है कि सब तुम्हारी खातिर करेंगे और तुम्हारे सभी काम कर देंगे। जब कोई व्यक्ति किसी कार्य को दूसरों के भरोसे छोड़कर निश्चित हो जाए तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : राज० किसो नानेरो है? पंज० इह तेरे नाणके नई है।

यह नहीं तो और कर लिया, मेरा राम ने क्या कर लिया?—मैंने इस काम को छोड़कर दूसरा काम कर लिया, ईश्वर ने मेरा क्या बिगाड़ा? अर्थात् कुछ नहीं। जब एक कार्य के छूटते ही किसी को दूसरा कार्य मिल जाता है तब वह ऐसा कहता है।

यह पट्टी नहीं पढ़े—यह ढंग मैं नहीं जानता। जब कोई किसी से अनुचित काम करने के लिए प्रार्थना करे तब इनकार करने के समय कहते हैं। तुलनीय : अव० या पाटी नाही पढ़ा; पंज० इह पाठ नई पड़या।

यह प्रेम को पंथ कराल महा तरवारि की धार पै धावनो है --प्रेम के मार्ग पर चलना उतना ही कठिन है जितना तलवार की धार पर चलना। अर्थात् प्रेम का निर्वाह करना अत्यंत कठिन है। तुलनीय :

यह इश्क नहीं आसाँ इतना तो समझ लीजे,
इक आग का दरिया है और डूब के जाना है
-- 'जिगर' मुरादाबादी।

यह बड़ मिट्ठा, यह बड़ खट्टा - यह बहुत मीठा है, यह बहुत खट्टा है। मन की अस्थिरता पर कहते हैं। जब कोई किसी व्यक्ति या वस्तु की थोड़ी देर प्रशंसा और थोड़ी देर में निंदा करने लगता है तब उसमें व्यंग्य से कहते हैं।

यह बला तो क़दमों से लगी है--यह बला पैरों से चिपक गई है। जब कोई इतना पीछे पड़ जाए कि उससे पिंड न छूटे तब यह लोकोक्ति कही जाती है। इस संबंध में एक कहानी इस प्रकार है : किसी अमीर के यहाँ एक गवैया भूला-भटका आ पहुँचा। वह अमीर इतना कंजूस था कि खाना खिलाना तो दूर रहा कभी झूठे हाथ से किसी कुत्ते को भी न मारता था। गवैये ने उसे बड़ा आदमी जान तमूरे को बजाकर खूब गाया। इतने में बावर्ची ने कहा खाना तैयार है। अमीर ने कहा मेरे, सिर में दर्द है एक नींद लेकर खाऊँगा। यह कह मुँह ढककर सो रहा। गवैया यह ताड़ गया और वह भी उसके पलंग के नीचे सो रहा। दो घंटे बाद अमीर ने नौकर को बुलाकर कहा कि क्यों वह बला गई। गवैया बोल उठा कि यह बला क़दमों से लगी है बिना खाना खाए कब जाती है।

यह बाजार किसका जो ले-दे उसका-- जो माल बेचता और जो खरीदता है, बाजार उसी का होता है। आशय यह है कि बिना पैसे के मनुष्य कुछ नहीं कर सकता और न उसकी कोई इज्ज़त ही होती है। तुलनीय : भोज० इ बजार केकर जै लेइ देइ ओकर; पंज० इह बाज़ार किस दा जिहड़ा लेण देण करे उसदा; ब्रज० बजार का कौ लै कै दे वाकौ।

यह बात वह बात, टका धर मेरे हाथ --नीचे देखिए।

यह बात, वह बात टका धरो मेरे हाथ--घूम-फिरकर अपने स्वार्थ की बात करने वाले पर कहते हैं। तुलनीय : कनौ० मठा में पिरान; अथवा जा बात, वा बात टका धर मेरे हाथ।

यह बात शराफ़त से बईद है--इस बात की आशा सज्जन व्यक्तियों से नहीं की जाती। जब कोई असभ्यता की बात करे या काम करे तब कहते हैं। (बईद=दूर)।

यह बिस की गाँठ है-- यह ज़हर की गाँठ है। बहुत ही कुचकी और लोगों में झगड़ा-फ़साद करा देने वाले व्यक्ति के प्रति कहते हैं।

यह बेल मढे चढ़ती नजर नहीं आती-- यह लता (बेल) ऊपर चढ़ती हुई नहीं मालूम होती। कोई काम पूर्ण होते न दिखाई दे अथवा उसकी सफलता में संदेह हो तब कहते हैं। तुलनीय : हरि० याह बेल मड्ढै चढ़ती नांह दीखती; पंज० इह बेल उत्ते चडदी दिसदी नईं।

यह भी अपने वक्त के हातिम हैं--बड़े दाता को कहते हैं (हातिम अरब के बहुत प्रसिद्ध दानी थे)।

यह भी किसी ने न पूछा कि तेरे मुंह में कै दाँत हैं --(क) किसी की खबर न लिए जाने पर कहा जाता है। (ख) राजा के अच्छे प्रबंध पर कहा जाता है जहाँ जान-माल का खतरा नहीं रहता। तुलनीय : पंज० इह वी किसे ने नां पुछया तेरे मूँह बिच किन्ने दंद हन।

यह भी दाम गुलामों खाए, यह भी बैंगन काट पकाए --हमें हर प्रकार का अनुभव प्राप्त हो गया है और हम तुम्हारी सब चालाकियाँ पहचान गए हैं।

यह भी न पूछा कि तेरे मुँह में कितने दाँत हैं --ऊपर देखिए।

यह भी नहीं और वह भी नहीं--जब किसी को कोई शर्त स्वीकार न हो या कोई वस्तु पसंद न हो तो कहते हैं।

यह भी नहीं जानते कि भेंड़ का मुंह किधर है --अनाड़ी को या जिसे किसी बात की खबर न हो उसे कहते हैं। तुलनीय : हरि० न्यू भी नाह बेरा बेर के चैंनड़ किधा न हौस।

यह मुंह और गाजरे ?--यह तुम्हारे खाने लायक नहीं है। गाजर बहुत सस्ती होती है उसे अमीर लोग कम खाते हैं। जब कोई चीज़ किसी के खाने योग्य न हो तब कहा जाता है। प्राय: अमीरों को कहा जाता है।

यह मुंह और मसूर की दाल--मसूर की दाल महंगी होती है, गरीबों के खाने योग्य नहीं होती। अपनी हैसियत से अधिक इच्छा रखने वाले को कहते हैं। तुलनीय : अव० इ मुंह औ मसूर की दाल; पंज० इह मुंह अते मसर दी दाल; हरि० योह मूँह अर मसूर की दाल; मरा० तोंड पहायाचे नि मसूराची डाल मागता हेत।

यह मुंह पान खाने के लिए--किसी बुरे व्यक्ति को लज्जित करने के लिए कहते हैं, जब कोई उसे सम्मान देना चाहता है। तुलनीय : पंज० इह मुँह पन्नो जोगा ?

यह मुंह पोदीने की चटनी--दे० 'यह मुँह और···'।

यह मुंह मसूर की दाल--दे० 'यह मुँह और···'।

यह मेरी शिक्षा निपट है आछी, रोटी भूल न खा

अधपाची— यह मैं बिलकुल सत्य कहता हूँ कि अधपकी रोटी नहीं खानी चाहिए। अधपकी रोटी खाने से नुक़सान होता है, इसलिए ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० इह मेरी सिखया सच्ची है कि कच्ची रोटी नई खाणी चाइदी।

यह मेरी शिक्षा पिया चित लाओ, पर नारी को दूर से ताहो—हे स्वामी मेरी इस बात को मान लीजिए कि पराई स्त्री को दूर से ही त्याग देना चाहिए। अर्थात् पराई स्त्री से सदा दूर रहना चाहिए। तुलनीय : पंज० इह मेरी सिखया है कि बगानी जननी नूं दूरों ही छड दिओ।

यह मेरी शिक्षा मान रे चेला, कभी बाट मत चाल अकेला—हे शिष्य ! तुम मेरी इस बात को मान लो कि कभी भी अकेले कहीं नहीं जाना चाहिए। आशय यह है कि अकेले कहीं जाना अच्छा नहीं होता। तुलनीय : पंज० इह मेरी गल मन्नो चेला कदी राह कल्ले नई जाणा चाइदा।

यह मेरी शिक्षा मान रे चेले, वासौं मत मिल जुआ जो खेले—हे शिष्य ! तुम मेरी यह बात मान लो कि जुआ खेलने वाले के पास नहीं रहना चाहिए। आशय यह है कि जुआरी की सगत न करनी चाहिए। तुलनीय : पंज० इह मेरी गल मन्नो कि जुआरी कोल नई बैणा चाइदा।

यह मेरी शिक्षा मान सहेली, पर नर संग न बैठ अकेली—स्त्री को पराए पुरुष के साथ नहीं बैठना चाहिए। तुलनीय : पंज० इह मेरी गल मन्न सिखय दूजे बंदे नाल कल्ली न बैठ।

यह मेरी सीख मान रे मीता, भीड़ समय मत रह हथ रीता—भीड़ के समय खाली हाथ नहीं रहना चाहिए अर्थात कुछ हथियार हाथ में ज़रूर लिए रखने चाहिए। तुलनीय : पंज० इह मेरी गल मन भीड़ विच कदी खाली हथ्थ नई रैण चाइदा।

यह मेरी शिक्षा मान पियारा, सौदा बेच न कभी उधारा—उधार माल कभी न बेचना चाहिए।

यह मेरी शिक्षा मान ले बीर, कपटी संग न राखो सीर—कपटी अर्थात् बेईमान से साझा या व्यवहार नहीं करना चाहिए।

यह रहस्य काहू नहिं जाना—इस बात को कोई नहीं जान सका। कोई विशेष घटना हो जाए और उसका भेद किसी पर न खुले तब कहते हैं।

यह रास्ता बुरा निकला—जब एक को कोई चीज़ दी जाए और उसको मिलती देख सभी मांगने लगें या कोई ऐसा काम किया जाए जो सदा के लिए पक्का हो जाए तब कहते है। इस पर एक कहानी है : एक बनिया रात को सो रहा था कि एक चूहा उसके पेट पर होकर इधर से उधर चला गया। वह नींद में चौंक पड़ा और चिल्ला कर रोने लगा। उसके रोने की आवाज़ सुनकर लोग दौड़े आए और पूछा कि तू क्यों रोता है। बनिए ने सारा क़िस्सा कह सुनाया। लोगों ने कहा, चूहा चला गया बला से इसके लिए क्या रोना ? बनिए ने कहा, 'यह रास्ता बुरा निकला' आज चूहा गया है कल को साँप जाएगा तो मैं कैसे जीऊँगा।

यह वो गुड़ नहीं है जिसे चींटी खा ले—यह वह गुड़ नहीं है जिसे चींटियां खा लें। किसी कठिन काम के प्रति कहते हैं कि यह इतना आसान नहीं है कि सभी कर लें। तुलनीय : पंज० इह ओह गुड़ नई जिन्नू कीड़ी खा लवे; ब्रज० यह वह गुर नाये जाये चेंटी खाय जाये।

यह संसार काल का खाजा, जैसा गदहा वैसा राजा—काल खाजे की तरह सारे संसार को खा जाता है उसके सामने गदहा और राजा सब बराबर हैं। अर्थात् मौत किसी को नहीं छोड़ती। इसकी कहानी इस प्रकार है : किसी राजा ने किसी साधु संत से व्यग्य में कहा, 'जब देही का आया अंत, गदहा वैसा संत'। इसके उत्तर में साधु ने कहा, 'यह संसार काल का खाजा, जैसा गदहा वैसा राजा।' यह सुन राजा खिसिया गए पर चुप रहे।

यह हज़रते दिल जिधर आय उधर आय—यह मन जिधर लग जाता है उधर ही लगा रहता है।

यहाँ अच्छों के पर जलते हैं—यहाँ पर बड़े-बड़े परेशान होते हैं। कड़े अफ़सर के बारे में कहते हैं।

यहाँ उलटी गंगा बहती है—नियम-विरुद्ध काम होने पर कहते हैं।

यहाँ करे फ़ाके, ये करे शादी—यहाँ तो भूखे मर रहे है और ये शादी कराने को घूम रहे हैं। अपना खर्च चलता नहीं है तो विवाह के लिए कहाँ से आयगा ? और विवाह के पश्चात् एक व्यक्ति का बोझ और बढ़ जाएगा। जो व्यक्ति परिस्थितियां न देखकर अपनी ही हांके और व्यय करने के ही काम बताए उसके प्रति व्यग्य में कहते हैं। तुलनीय : भीली पेट माये भूखी हूं कोयरा लियासैं नें वली वली न बऊनी वात करैं।

यहाँ का बाबा आदम ही निराला है—जहाँ पर धाँधली तथा नियम-विरुद्ध काम हो वहाँ कहते है। तुलनीय : मरा० येथील मूल पुरुषच निराळा आहे।

यहाँ किसी का चारा नहीं चलता—मौत के आगे किसी का वश नहीं चलता।

यहाँ कुछ नाल तो नहीं गड़ा—यह स्थान तुम्हारी

बपौती नहीं है जिस पर इस तरह अधिकार जता रहे हो।

यहाँ कुम्हड़ बतिया कोउ नाहीं, जो तर्जनी देखत मरि जाहीं— लक्ष्मणजी का कहना परशुरामजी के प्रति। यहाँ कोई कुम्हड़े की बतिया थोड़ी है जो उँगली दिखाने से सूख जाएगी। जब कोई झूठा रोब दिखाकर डराना चाहे तब कहते है। तुलनीय : मरा० वेलीच्या कळया नव्हेती की बोटे दाविता गळोनी पड़ती।

यहाँ के रहे ना वहाँ के रहे--इधर के रहे न उधर के। दोनों ओर से निराश हो जाने पर यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : अव० हिआं के रहैन, न हुआ के रहैन; हरि० की है ओड़ का नांह रह्या; पंज० न इथों दे रहे न उथों दे।

यहाँ कोई मंतिकी नहीं है–झूठा तर्क करने वाले को कहते हैं। एक बार कुछ लोग नौका-विहार कर रहे थे। सब लोगों ने निश्चय किया कि मन बहलाने के लिए कोई कहानी कहनी चाहिए। एक ने कहा यहाँ पर कोई मंतिकी तो नहीं है। सबों ने कहा नहीं। उसने कहना शुरू किया, एक पत्ते और एक ढेले में बड़ी दोस्ती थी। जब पानी बरसता था तो पत्ता ढेले को ढक लेता और जब हवा चलती तो ढेला पत्ते को दबा लेता। इतने में उनमें से एक झट बोल उठा कि जब पानी और हवा दोनों एक साथ होते तो क्या होता? कहानी कहनेवाले ने कहा कि मैंने पहले ही कहा था कि यहाँ कोई मंतिकी तो नहीं है। (मंतिकी=तार्किक, नैयायिक)।

यहाँ क्या किसी ने न्योता दिया था जो अकड़ रहे हो--यहाँ किसी ने तुम्हें बुलाया नहीं था और जब आ ही गए तो तो चुपचाप एक किनारे बैठ जाओ। जो व्यक्ति ऐरा-गैरा होने पर भी किसी को दबाना चाहे तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : भीली---अठे कणी-मृगौ की दो जे मोटी-मोटी वोल करै, पंज० इथ्थे किसे ने सदयासी जिहड़े आकड रहे हो।

यहाँ क्या तुम्हारा खजाना गड़ा है?---जब कोई किसी स्थान पर सदा मौजूद रहे तो उसके प्रति व्यंग्य में कहते है।

यहाँ क्या तेरी नाल गड़ी है? ऊपर देखिए। तुलनीय : हरि० आडै के तेरी नाल गड़री सै; राज० अठे कांई थिमाणी गडियोड़ी है; माल० थां कइ आम्बा भउड़ा गाड्या के; पंज० इथ्थे की तेरी नाल गडी है; ब्रज० यहाँ कहा तेरौ नार गड़्यौ है।

यहाँ जरूर कुछ दाल में काला है--जब किसी बात में कुछ सन्देह उपस्थित होता है तब कहते हैं। तुलनीय : पंज० इथ्थे दाल बिच काला लगदा है।

यहाँ तुम्हारी टिक्की न लगेगी--यहाँ तुम्हारी बात नहीं चलेगी। अर्थात् हमसे किसी तरह की आशा न रखो। धूर्त व्यक्ति की चालों को समझकर उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० इथ्थे तुहाडी गल नई बनणी।

यहाँ तुम्हरी टिप्पस नहीं जमेगी--ऊपर देखिए। तुलनीय : अव० हिआं तुम्हार टिप्पस न जमी।

यहाँ तुम्हारी दाल नहीं गलेगी—अर्थात् यहाँ तुम्हारी चाल काम नहीं करेगी। धोखेबाज़ या धूर्त के प्रति कहते हैं। तुलनीय : भोज० एइजा तोहार दाल ना गली; हरि० हाडै दाळ नहीं गळै; पंज० इथ्थे तुहाडी दाल नईं गलनी।

यहाँ तो सब हारे हैं—मौत से सभी हारे हैं। किसी के मरने पर सहानुभूति दिखाने के लिए ऐसा कहा जाता है। तुलनीय : पंज० इथ्थे ते सारे हार जांदे हन।

यहाँ तो हम भी हैरान हैं--इसमें तो हम भी परेशान है। किसी कठिन काम के बारे में जब कोई किसी से सलाह पूछने जाए और वह सलाह देने में समर्थ न हो तब ऐसा कहता है। तुलनीय : पंज० इथ्थे तां असी वी हैरान हां।

यहाँ न वहाँ यह बला कहाँ–घुमक्कड़ व्यक्ति के प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

यहाँ परिन्दा पर नहीं मार सकता—यहाँ कोई नहीं आ सकता।

यहाँ फ़रिश्तों के भी पर जलते हैं—यहाँ बड़े-बड़े की नहीं चलती है। कड़े अफ़सर के बारे में कहते हैं। तुलनीय : पंज० इथ्थे बडे बडे मिट्टे हो जांदे हन।

यहाँ मियाँ मारे, वहाँ बीबी—कोई नौकर या घर का व्यक्ति जब घर की औरत तथा मर्द दोनों से तंग हो जाता है तब ऐसा कहता है। तुलनीय : भोज० ईहां मारै मिया उहां मारै बीबी। पंज० इथ्थे खसम मारे उथ्थे बौटी; इथ्थे मारे मियां उथ्थे बौटी।

यहाँ मीठा मिले तो वहाँ को कौन पूछता है—जब कोई कहीं पर आराम पाकर आगे की चीज़ों को भूल जाए तब व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० ओ भी मीठी तो आगलो कँण दीठो; पंज० इथ्थे मिट्ठा मिले तो उथ्थे कुण पुछदा है।

यहाँ सब कान पकड़ते हैं—यहाँ सब लोग भयभीत रहते हैं। कोई किसी प्रकार का दावा नहीं करता।

यहि आसा अटक्यो रह्यो अलि गुलाब के मूल; अइहें फेर बसंत ऋतु इन डारनि वे फूल–भ्रमर गुलाब की

टहनियों से इस उम्मीद के साथ चिपके रहते हैं कि पुनः बसंत ऋतु में इन टहनियों में फूल लगेंगे। आशय यह है कि अच्छे दिनों के आने की आशा पर लोग बैठे रहते है।

यहीं का चुन, यहीं का पुन—जो कुछ भी है इसी स्थान का प्रताप है।

यही गौ और यही मैदान—कारण और कार्य पर कहते हैं।

यही गौना बहुरि नहिं औना— इस जाने के बाद फिर लौटकर नहीं आना। मृत्यु पर कहते हैं। तुलनीय : पंज० मरे दा जिंदा हो के नईं आदा।

यही घोड़े और यही मैदान —दे० 'यही गौ और…'। तुलनीय : राज० ऐही घोड़ा र यही मैदान।

यही बुआ झगड़ा लगाई, यही बुआ झगड़ा मिटाई—कुलटा स्त्रियों के प्रति कहते है। जो झगड़ा लगाती भी हैं और मिटाती भी। तुलनीय : भोज० ईहे चाची अगियो लगवली हऽआ बुतइबो कइली हऽ; पंज० इही मासी ने अग्ग लाई इसे ने अग्ग बुझाई।

यही मियाँ दर-दरबार यही मियां चूल्हे के द्वार—चूल्हा भी यही मियाँ फूंकते है तथा दरबार भी देखते है। किसी व्यक्ति को घर और बाहर दोनों तरफ के कामों की देख-भाल करनी पड़ती है तब उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : भोज० चूल्हो ईहे मियां फूकँलं आ दरबारो ईहे मियां देखँलं।

यही मुंह पान यही मुंह पनही – यही मुँह पान भी खाता है और यही मुंह जूता भी खाता है। अर्थात् मीठी बातों से आदर-सम्मान मिलता है तथा कड़वी बातों से बेइज़्ज़ती होती है। तुलनीय : मैथ० यहे मुंह पान खुआवे यहे मुंह पनही; भोज० इहे मुंह पान खिआवेला इहे मुह पनहीं; पंज० इह मुँह पान वी खांदा है अते जुती वी।

या अल्लाह गौड़ों में भी कौन गौड़—कोई मुसलमान ब्राह्मण का भेष बनाकर ब्रह्मभोज में ब्राह्मणों की पंक्ति में जा बैठा। ब्राह्मणों को उस पर सन्देह हुआ तो पूछा तुम कौन हो? उसने कहा ब्राह्मण। फिर पूछा कौन ब्राह्मण? उसने कहा गौड़। जब पूछा कि कौन गौड़ तो घबड़ा के बोल उठा 'या अल्लाह गौड़ों में कौन गौड़?' तब सबको मालूम हुआ कि यह मुसलमान है। तात्पर्य यह है कि जाँच-पड़ताल से भेद खुलता है।

या इधर हो या उधर हो—या तो इधर आ जाओ या उधर चले जाओ। (क) जब कोई किसी काम अथवा बात में आगा-पीछा करता है तब कहा जाता है। (ख) जो व्यक्ति दोनों पक्षों से सम्बन्ध बनाए रखना चाहते है उनके प्रति भी कहते हैं।

या किसी को कर रहे, या किसी का हो रहे—या तो किसी को अपना बना लो या किसी के तुम बन जाओ। जब कोई मनुष्य किसी से मिलकर नहीं रहता, अपने ही मन की करता है और दुख पाता है तब कहते है। तुलनीय : राज० का केई नै कर लेणो का केईरो हो रैवणो; पंज० या ते किसे नू आपण बणा ले या किसे दा बणजा।

या कूंड़ी के इस पार, या उस पार— (क) सुस्त और आलसी व्यक्ति के प्रति कहते है। (ख) किसी काम का वारा-न्यारा करने पर भी कहते हैं। तुलनीय : पंज० या कुंडे दे इस पासे यां उस पासे।

या खाय उसल्ला, या खाय मुसल्ला—ओसवाल और मुसलमान दोनों ही अच्छी चीजें खाने के शौकीन होते है इसलिए कहते है। (उसल्ला =ओसवाल जैनियों की एक जाति, मुसल्ला = मुसलमान)।

या खाय घोड़ा, या खाय रोड़ा—घोड़ा रखने में और मकान की मरम्मत में प्रतिदिन कुछ-न-कुछ खर्च लगा ही रहता है, इसलिए कहा जाता है। तुलनीय : पंज० यां खावे कोड़ाँ या खावे रोड़ा; ब्रज० कै खाय घोड़ा कै खाय रोड़ा।

या खाय बाप घर, या खाय आप घर—लड़कियां या तो मायके में ही खुश रहती है या अपने अलग घर में, संयुक्त परिवार में नहीं। तुलनीय : गढ़० कि खाय बा-घर, कि खाव अप-घर; पंज० यां खावे पिओ कर या खावे अपण कर।

या खुदा खैर हाथ बचा और पैर मज़दूर लोग जान-जोखिम का काम करते समय इस वाक्य का प्रयोग करते है।

या खुदा तू दे, न मैं दूं—हे ईश्वर! तू मुझे न दे, ताकि मुझे भी किसी को न देना पड़े। ऐसा कंजूस का कहना है। कंजूसों के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते है। तुलनीय : पंज० यां रब तू दे, न मैं देवां।

या घरते कबहूं न टर्‌यो, पियो टूटो तवा और फूटी कठौती - हे स्वामी! इस घर से टूटा तवा और फूटी कठौती कभी नहीं गई। सुदामा से उनकी स्त्री ने ऐसा कहा था। दरिद्र पर कहा जाता है।

या घोड़ा घोड़ों में, या घोड़ा चोरों में—या तो यह घोड़ा मेरे घोड़ों में सम्मिलित हो जाएगा या इसे चोर ले जाएंगे। (क) जब कोई व्यक्ति किसी काम को करने के लिए कटिबद्ध हो जाए तो उसके प्रति कहते है। (ख) जब

कोई व्यक्ति लाभ या हानि की परवाह न करके किसी काम में जुट जाए तो उसके प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : राज० कै घोड़ा घोड़ां में कै घोड़ा चोरां में; पंज० यां कौड़ा कौडे बिच या कौडा चोरा बिच।

या जाए हजारी या जाए बजारी— मेले-ठेले में या तो धनी व्यक्ति जाएँ जो वहाँ सैर-सपाटे कर सकें या फिर भिखारी जाए जो घूमने-फिरने के अलावा कुछ माँग भी लाए।

याचितक मण्डन न्याय—मागे हुए आभूषणों का न्याय। तात्पर्य यह है कि कभी-कभी अपने पास न होने से मनुष्य दूसरों के आभूषण आदि उधार लेकर शृंगार करता है।

या तो खाय घोड़ा या खाय रोड़ा—दे० 'या खाय घोड़ा या...... '।

या तो पादें नहीं, पादे तो घर बदबू करने लगे—या तो पादते नहीं है और यदि पादते हैं तो पूरे घर में बदबू फैल जाती है। ऐसे व्यक्ति के प्रति व्यंग्य में कहते हैं जो कुछ काम नहीं करना चाहता और यदि वह कुछ करता है तो बुरा काम ही करता है। तुलनीय : अव० किनो पदबे न करै, किनो घर गध बाय दै; पंज० यां ते पद नई मारदा मारदा है ते नथ माड़दा।

या तो बैल चले नहीं चले तो मेंढ़ा ढाय- ऊपर देखिए तुलनीय : मरा० आधी कामच करीना नि केले तर शेतच काय।

या तो बैल तीस पर बिकइहै या फिर खूँटे पर तवइहै—बैल बिकेगा तो तीस रुपए में ही नहीं तो खूँटे पर ही मरेगा। हठी व्यक्ति को लक्ष्य करके ऐसा कहते है। तुलनीय : भोज० कि त बरध तीस पर बिकाइ कि त खूँटे पर मरी।

या तो बोओ कपास औ ईख, ना तो माँग के खाओ भीख—या तो कपास और ईख बोओ नहीं तो भीख माँग कर खाओ। क्योंकि दूसरी चीज में कम लाभ होता है। तुलनीय : पंज० यां ते रांओ कमाद कपां नई ता मंग के रोटी खा।

या तो भर माँग सेंदुर, या निपट ही रांड़- या तो अच्छी तरह दाम्पत्य सुख ही भोगो अथवा रांड़ ही हो जाओ। (क) चरित्रभ्रष्ट औरत के लिए कहते हैं। (ख) जब कोई किसी का कर्ज़ भी न चुकता करे और माँगने पर बुरा भी माने तब कहा जाता है कि या तो तगादा सहो या हिसाब चुका दो। तुलनीय : भोज० या त भर मांग सेनूरे या निपटे ही रांड़।

यादश बखैर—किसी अनुपस्थित मित्र या सम्बन्धी का ज़िक्र करते हुए यह वाक्य जो एक प्रकार का आशीर्वाद है कहा जाता है।

या दिन में नौ-नौ जोड़े या दिन भर नंगे दौड़े---या तो दिन में नौ बार कपड़े बदलते थे या दिन-भर नंगे ही रहते हैं। कोई धनवान व्यक्ति एकाएक धनहीन हो जाए और उसको रोटी-कपड़े के भी लाले पड़ जाएँ तो उसके प्रति ऐसा कहते है। तुलनीय : गढ़० कै दिनू नौ नौ साड़ा कै दिनू निनंग नाग; पंज० पाण ते दिन बिच नौ नौ जोड़े नई ता सारा दिन नंगे दौडे।

या दुख जाने दुखिया या दुखिया की माय- -जिस पर विपत्ति पड़ती है वह उसके दुख को समझता है या उसकी मां। आशय यह है कि (क) जिस पर मुसीबत आती है वही उसके दुख को समझता है। (ख) मां का सन्तान के प्रति अगाध प्रेम होता है। तुलनीय : पंज० दुखिया नूं दुख दा पता हुंदा है या उसदी मा नूं।

या दुनिया की उलटी बान, मूते इन्द्री बाँधे कान—इस दुनिया की दशा विचित्र है। पेशाब तो इन्द्रिय करती है लेकिन बाँधा जाता है कान। पेशाब करते समय कान पर जनेऊ चढाने पर यह लोकोक्ति आधारित है। जब अपराध कोई और करे और दंड किसी और को मिले तो यह लोकोक्ति कहते हैं।

यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी—जिसकी जैसी भावना होती है उसी प्रकार उसे फल भी मिलता है। जब एक ही तरह के काम में एक को आनन्द मिले और दूसरे को दुःख मालूम हो तब कहते है।

यादशी शीतला देवी तादृशो वाहनों खरः---जैसी शीतला देवी है उसी तरह उन्हें गधे की सवारी भी मिली है। जब एक जैसे दो बुरे व्यक्तियों में मेल हो जाता है तब कहते हैं।

यादृशो यक्षस्तादृशो बलिः—जैसा यक्ष (देवता) वैसी बलि (नैवेद्य)। आशय यह है कि जो जैसा होता है उसका उसी ढंग से आदर किया जाता है।

या बसे गूजर, या रहे ऊजड़—या तो गूजर बसेगा या खंडहर रहेगा। यह एक प्रकार का शाप है। इस संबंध में एक कहानी है : किसी समय दिल्ली के बादशाह मुहम्मद तुग़लक़ दिल्ली के पास एक क़िला बनवा रहे थे। इसके पास ही निज़ामुद्दीन नामक एक फ़क़ीर एक कुआँ बनवा रहा था। अधिकांश मजदूर कुएँ में लग गए जिससे क़िले का काम ढीला पड़ गया। यह देखकर बादशाह ने आदेश दिया कि

कोई भी मज़दूर कुएँ पर काम करने नहीं जाएगा। लेकिन मज़दूर पैसे के लालच में दिन-भर बादशाह के यहाँ और रात को फ़क़ीर के यहाँ काम करते थे। एक दिन जब बादशाह क़िले के काम का निरीक्षण करने आए तो उन्हें कुछ मजदूर ऊँघते हुए मिले। पूरा पता लगाने के बाद बादशाह ने तेल बेचनेवाले से कहा कि तुम फ़क़ीर निज़ामुद्दीन के हाथ तेल मत बेचो। संयोगवश उसी दिन फ़कीर के कुएँ में पानी का स्रोत निकल गया। तब उसने मज़दूरों से कहा कि तुम लोग हर रात काम पर आया करो, यह कुएँ का पानी ही तेल का काम देगा। ऐसा ही हुआ। यह बात जब बादशाह को मालूम हुई तब वह उसे जादूगर समझा और उसका सिर माँगा। दूसरे दिन एक आदमी बड़ा तरबूज लेकर फ़कीर के पास गया और पूरी दास्तान सुनाई। बादशाह की क्रूरता को देखकर फ़क़ीर ने शाप दिया कि तुम्हारे सिर पर वज्रपात हो और क़िले में या तो गूजर बास करें या ख़ाली पड़ा रहे। इतना कहते ही चारों ओर काली घटा घिर आई और एक वज्र किले पर गिरा जिससे बादशाह की मृत्यु हो गई। आज भी क़िला खंडहर के रूप में पड़ा है और उसके एक भाग में गूजर जाति के लोग रहते हैं।

या बात को या स्वाद को —या तो अपनी बात को रखने के लिए धन व्यय किया जाता है या जीभ के स्वाद के लिए पकवानों पर। तुलनीय : राज० का वातनै, का स्वादनै।

या बिरिया ना बा बिरिया, गधे नोन देइदे —समय-कुसमय का विचार न करके असंभव या अनुचित काम न करने के लिए कहनेवाले के प्रति कहते हैं। (देहात में सूर्यास्त के समय नमक नहीं देते। उसी पर यह लोकोक्ति आधारित है)।

या बेईमानी तेरा आसरा— किसी के बेईमानी करने पर कहा जाता है।

या बेहयाई तेरा आसरा— निर्लज्ज आदमी पर कहा गया है।

या भैंसा भैंसों में या क़साई के खूटे पर —भैंसा या तो भैंसों के झुंड में देखा जा सकता है या क़साई के खूटे पर। कुसंग में फँसे ऐसे व्यक्ति के प्रति कहते हैं जिसके उठने-बैठने के निश्चित अड्डे होते हैं। तुलनीय : पंज० या संडा मैंह्यां विच या कसाई दे थल्ले।

या मारे भादों का घाम, या मारे साझे का काम —या तो भादों की गर्मी-धूप कष्टकर होती है या साझे का काम। तुलनीय : पंज० यां मारे भादों दी गरमी या मारे साझे दा कम।

यार करूँ, प्यार करूँ, चूतड़ तले अंगार धरूँ, जल जाय तो क्या करूँ —मित्रता करता हूँ, प्यार करता हूँ, चूतड़ के नीचे अंगार धरता हूँ यदि जल जाय तो मैं क्या करूँ? धोखेबाज और कपटी मित्र के लिए कहते हैं जो ऊपर से प्रेम दिखाए और भीतर से हानि पहुँचाए। तुलनीय : पंज० यार करां पयार करां हुए थल्ले अग्ग रखां सड़ जावे ते की करा।

यार का गुस्सा भतार के ऊपर—प्रेमी का क्रोध पति के ऊपर उतारती है। (क) कुलटा व भ्रष्ट स्त्रियों पर कहते हैं। (ख) ऐसे लोगों के प्रति भी कहते हैं जो नाराज़ किसी और से हों और अपना क्रोध किसी और पर शान्त करें। तुलनीय : अव० यार का गुस्सा भतार के ऊपर; पंज० यार दा गुस्सा घर वाले (खसम) उत्ते।

यार का दिन यार रक्खे तो यार का भी राखिए; यार के घर खीर पक्के तो तनक सी चाखिए, यार के घर आग लगे तो पड़े-पड़े ताकिए —मतलबी दोस्त पर व्यंग्य में कहते हैं।

यार की न भतार की—न तो यार ही खुश है न भतार ही खुश। अर्थात् इधर की न उधर की। अस्थिर चित्त वाले पर कहा जाता है जो किसी तरफ़ का नहीं होता। तुलनीय : यार की न भतार की (यार घी न भतार घी)।

यार को यारी से काम यार के फ़ेलों से क्या काम—अपने मित्र की मित्रता ही महत्त्वपूर्ण है, उससे क्या मतलब कि उसका आचरण या काम कैसे हैं। तात्पर्य यह है कि यदि मित्र निष्ठावान है तो उसके अवगुणों पर ध्यान नहीं देना चाहिए। जब किसी के मित्र के बारे में बुराई की जाए तो मित्र निंदक से ऐसा कहता है।

यार को करूँ प्यार, खसम को करूँ भसम, लड़के को करूँ चटनी —दुष्ट औरत के लिए कहा गया है जो केवल अपने यार (उपपति) को चाहती है और अपने पति तथा लड़के का बुरा सोचती है। तुलनीय : पंज० यार नूं करें पयार खसम नूं देवे मार मुंडे नूं छडे मार।

यार को पहले खसम को पीछे —(क) जब कोई व्यक्ति किसी कार्य को सिद्ध करने के लिए सेवक की तो भेंट-पूजा करे और स्वामी की बात भी न पूछे तो उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। (ख) दुश्चरित्र स्त्रियाँ जब अपने पति को कुछ न देकर अपने प्रेमी को प्रसन्न करती हैं तो उनके प्रति भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० जारको अगिंगे, भतार को पदींगे; पंज० यार नूं पैला खसम नूं पिछों; ब्रज० यार

कूं पहलें, खसम कूं पीछें।

यार ज़िन्दा सोहबत बाक़ी—मित्र जब तक जीवित रहता है तब तक उससे मिलने की आशा रहती है। सामान्यतः दो दोस्त एक-दूसरे से विदा होते समय कहते हैं।

यार डोम ने किया रंघड़िया और न देखा बैसा हेड़िया – डोम ने रंघड़िया (एक नीच जाति के राजपूत जो चोरी के लिए बहुत प्रसिद्ध है) से मित्रता की जो बहुत ही बुरा निकला। अर्थात् रंघड़ियों से मित्रता नही करनी चाहिए।

यार डोम ने किया सिपाही, बात-बात में करे लड़ाई—डोम ने सिपाही से मित्रता की तो वह (सिपाही) बात बात पर उससे (डोम से) झगड़ा करने लगा। अर्थात् सिपाही से मित्रता न करनी चाहिए क्योंकि उससे किसी की पटती नही। तुलनीय : पंज० यार डोम ने कीता सपाई गल गल ते करण लड़ाई।

यार डोम ने कीना कजर, हर लिया पला-पलाया कूकर- -कजर को मित्र बनाया और वह पला-पलाया कुत्ता चुरा ले गया। कंजर एक जाति होती है। इस जाति के लोग कुत्तों द्वारा गीदड़ इत्यादि जानवरों का शिकार करते हैं। आशय यह है कि बुरे के साथ मैत्री करने से अपनी ही हानि होती है।

यार डोम ने कीना गूजर, चुरा-चुरा घर कर दिया ऊजड़—ऊपर देखिए।

यार डोम ने कीना नाई, कौड़ी देना बाल मुड़ाई—डोम ने नाई से मित्रता की तो उसे कौड़ी बाल कटाई देनी पड़ी। नाई से मैत्री करने से लाभ होता है क्योंकि बाल की बनवाई कम देनी पड़ती है। तुलनीय : पंज० यार डोम ने कीता नाई पैहा दिता बाल मनाई।

यार मार बानियां पहचान मार चोर—बनिया अपने मित्र से भी लाभ कमाने का अवसर नहीं छोड़ता जबकि चोर केवल धनी व्यक्तियों को देखकर ही उन्हें लूटता है।

यार वही जो भीड़ में काम आवे—सच्चा मित्र वही है जो भीर (विपत्ति) में साथ देता है। तुलनीय : पंज० यार ओही जिहड़ा मौके ते कम आवे।

यार वही है पक्का, जिसने मन यार का रक्खा—सच्चा मित्र वही है जो मित्र की बात अर्थात् उसकी आवश्यकता पूरी करे। तुलनीय : पंज० यार ओही सच्चा जिन यार दा दिल रखा।

यार से मिले यार, तीसर खाए मार—जब आपस में मित्रों के बीच मेलजोल हो जाता है तो उनके झगड़े के बीच में जो तीसरा व्यक्ति आता है वही मार खाता है। अर्थात् मित्र या घर के व्यक्ति आपस में लड़-भिड़कर फिर एक हो जाते हैं, किंतु उनके बीच में जो बाहरी व्यक्ति आ जाते हैं उनका सदा के लिए बैर हो जाता है। तुलनीय : राज० दाल-भात भेला, कोकला किनारे; पंज० यार नाल मिलया यार तीजे ने खादी मार।

या रहूं सूना, या लूं दूना—या तो खूब अधिक वस्तु हो या फिर फ़ाक़ामस्ती। ज़िद्दी व्यक्तियों के प्रति ऐसा कहा जाता है। तुलनीय : गढ़० कितल्यू दूजा, कितरौं कूणा; पंज० याँ रहां गा सुन्ना यां लया दुगना।

यारां चोरी न पीरां दग़ा—स्पष्टवादी और खरा व्यक्ति अपनी प्रशंसा में कहता है कि हम तो सत्य के पक्षधर और समर्थक हैं और बिना पक्षपात के निर्णय करते हैं चाहे इसमें कोई भला माने या बुरा।

या रिन्द रिन्दे, या फ़तहचन्दे—या तो फ़कीर हो जाए या बादशाह। बीच के लोग कष्ट ही झेलते हैं।

यारी करें सो बावरे और करके छोड़ें कूड़, याते ओढ़ निबाहिए या इनसे रहिए दूर—मित्रता करना बुरा है और करके छोड़ना उससे भी बुरा है। यदि मित्रता करिए तो उसे निभाइए नही तो मित्रता मत करिए। आशय यह है कि मित्रता करना आसान है किन्तु उसका निभा पाना मुश्किल और मित्रता निभाना ही बड़प्पन की निशानी है। तुलनीय : पंज० दोस्ती करके ओनूं निबाओ नई तां दोस्ती नां करो।

यारी में सर भी देना पड़ता है—मित्रता में प्राण तक भी देने पड़ते हैं। मित्रता में कठिन और दुष्कर कार्य भी करना पड़ता है तभी मित्रता चलती है। तुलनीय : भील० गोटी पणा मांए गोडा रगड़वा पड़े; पंज० यारी बिच जान वी देणी पैंदी है।

यारों को खीर, खसम को थूली—अपने प्रेमियों को तो खीर खिलाती है और पति को थूली। दुष्चरित्र स्त्री के प्रति कहते हैं। (थूली=दलिया)। तुलनीय : पंज० यारां नूं खीर खसम नूं दलिया।

या संसार में करम प्रधान—इस संसार में कर्म ही प्रधान है। अर्थात् मनुष्य जैसा कर्म करता वैसा उसे भी फल मिलता है। तुलनीय : पंज० इस संसार विच करम वड्डा है।

या सुख नींद सो, या माला जपो—या तो आराम से सोओ या पूजा करो। आशय यह है कि एक समय में एक ही काम हो सकता है, दो काम नहीं। जब कोई एक साथ कई काम करना चाहता है तब उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय :

पंज० यां अराम नाल सोवो यां माला जपो।

या सोए राजा का पूत, या सोए जोगी अवधूत—या तो राजा का लड़का निश्चिंत होकर सोता है या योगी। राजा का लड़का संपन्न होने के नाते निश्चिंत सोता है और योगी कुछ न रहने के कारण। निश्चिंत सोने वाले के प्रति कहते है। तुलनीय : पंज० यां सावे राजा दा पुतर या सावे जोगी दा।

या हंसा मोती चुगें या लंघन करि जायें—हंस या तो मोती चुगता है नही तो भूखा ही रह जाता है। आशय यह है कि स्वाभिमानी व्यक्ति मान के साथ ही जीवन व्यतीत करते हैं।

युग फूटे बिना नर्द नहीं मरती—दो मनुष्य यदि मिलकर रहें तो उन्हें कोई नही ठग सकता। एकता बड़ी चीज़ है। (नर्द = चौसर की गोटी)।

यूं मत मान गुमान कर कि मैं हूं शेर जवान, मुझसे इस संसार में लाखों हैं बलवान—इस तरह का घमंड नही करना चाहिए कि मैं ही सबसे बड़ा हूँ, इस दुनिया में एक से बढ़कर एक हैं। जब कोई अपने बल या धन पर बहुत घमंड करता है तब कहा जाता है।

ये आदमी थोड़े हैं, पुरखों के बुत हैं—ये आदमी नही है बल्कि पूर्वजों के पुतले है। जो व्यक्ति लकीर के फ़क़ीर है और अपने पूर्वजों के बनाए रास्ते पर चलने के कारण सभ्यता की दौड़ मे पिछड़ गए है, उनके प्रति व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : भीली— अ ते चोरा चोकली है, मनख थोड़ा है।

ये ते फूटे ना जुरें सीसा, मुकता, चित्र—शीशा, मोती और चित्र फूटने पर फिर नहीं जुड़ते। जब कोई किसी से लड़ाई-झगड़ा करने के बाद पुनः मित्रता करना चाहता है तब कहते हैं।

ये तो रंडी के नखरे हैं—जो व्यक्ति ज़रा-ज़रा-सी देर मे नाराज और खुश होते है उनके प्रति कहते है। तुलनीय : भीली—इ ते नखराली वाला नखरा है; पंज० इह तां रंडी दे नखरे हन।

ये तो लगाने-बुझाने का काम करते हैं—जो व्यक्ति दूसरों को लड़ाकर अपना उल्लू सीधा करता हो और कोई काम-धंधा न करता हो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : भीली— यह तो उपाध्यो उपाधा करे, बीजू को ने करे; पंज० इह तां अग लगाण अते बुझाण दा कम करदे हन।

ये दोऊ कहँ पाइए, सोनो और सुगंध—सोने में सुगंध नही होती। अर्थात् (क) एक ही व्यक्ति या वस्तु में कई अच्छे गुण नही पाए जाते। (ख) जब कोई वस्तु बहुत ही अच्छी हो तब भी कहा जाता है।

येन केन प्रकारेण प्रसिद्ध, पुरुषो भवेत—जिस तरह बने नाम होना चाहिए। नाम के भूखे मनुष्य को कहते हैं।

र

रंक धनद पदवी जनु पावा—मानो एक गरीब बहुत बड़े धनी की पदवी को प्राप्त हुआ हो। किसी के बहुत प्रसन्न होने या इतराने पर कहते हैं।

रंग की खुशी मन का सौदा—रंग वही ठीक होता है जो अपने को अच्छा लगे। उसी प्रकार सौदा वही अच्छा होना है जो अपनी पसंद का हो। रंग और सौदे के चुनाव तथा खरीदने के संबंध मे यह लोकोक्ति कही गई है। तुलनीय : पंज० रंग ओही चंगा जिहड़ा मन नूं चंगा।

रंग कौए का-सा नाम महताब कुँवर—रंग तो कौवे की तरह काला है किंतु नाम महताब कुँवर पड़ा हुआ है। नाम के अनुसार रूप न हो तब कहा जाता है। (महताब = चाँद)।

रंग में भंग पड़ गई—खुशी के काम मे बाधा पड़ गई। जब किसी खुशी या शुभ कार्य मे विघ्न पड़ जाय तब कहते है। तुलनीय : राज० रंग में भंग; गढ़० रग मां भंग; पंज० रंग बिच भंग पै गया।

रंग-रूप देखकर न भूलिए—ऊपरी दिखावे से प्रभावित न होना चाहिए बल्कि वास्तविकता पर ध्यान देना चाहिए। ऐसे व्यक्ति या वस्तु के प्रति कहते है जिसमें बाहरी तड़क-भड़क अधिक हो पर उसमे अच्छाई न हो। तुलनीय : राज० रंगरूड़ो गुण-बायरो रोहीड़ैरो फूल; पंज० रंग-रूप देख के न पुलो।

रंग लगते-लगते लगता है, भय भगते-भगते भगता है—आशय यह है कि किसी चीज का प्रभाव धीरे-धीरे होता है और मिटता है। तुलनीय : पंज० रंग लगदे लगदे लगदा है डर नसदे नसदे नसदा है।

रंग लाती है हिना पत्थर पै पिस जाने के बाद—पत्थर पर घिस जाने के बाद मेंहदी अपना रंग दिखाती है। आशय यह है कि परेशानियों के झेलने के बाद मनुष्य उन्नति करता है। तुलनीय : गढ़० जोन गारे सो कर वी निहारे; पंज० मेंहदी दा रंग बट्टे नाल पिस जाण मगरों आदा

रंग है उसी का, जो कहे ना किसी को—रंग उसी का रहता है जो किसी की निन्दा या बुराई नहीं करता। आशय यह है कि अच्छा व्यक्ति वही है जो किसी की बुराई न करे। गम्भीर व्यक्तियों के प्रति कहा गया है जो किसी की बुराई पर ध्यान नहीं देते। तुलनीय : पंज० रग उहदा हुंदा है जिहड़ा किसे नूं नई कहंदा।

रँगे सियार बने फिरते हैं—पाखण्डी व्यक्ति के लिए कहा गया है।

रंडियों की खरची और वकीलों का खरचा पेशगी चाहिए—रंडियों और वकीलों को अपनी फीस पहले ले लेनी चाहिए, क्योंकि काम निकल जाने के बाद लोग आना-कानी करते है। तुलनीय : अव० रंडियन कै खर्ची औ ओकीलन के खर्चा पहिले चाही; पंज० रंडिया दी खरची अते वकीलां दा खरचा पैले लवो।

रंडी का जाया बाप किसे कहे?—रंडी की संतान पिता किसे कहे? आशय यह है कि जिस वस्तु के संबंध में कोई ठोस प्रमाण न हो या जिसके संबंध में कोई भी जानकारी न हो उसके संबंध में कुछ भी नहीं कहा जा सकता। तुलनीय : राज० भगतणरो जायो कैने बाप कैवे? पंज० रंडी दा जमया पिओ किन्नू कवे।

रंडी का जोबन रकाबी में—रंडी की जवानी उसके खान-पान पर निर्भर रहती है। आशय यह कि (क) अच्छी चीजें खाने से ही रंडी की जवानी क़ायम रहती है। (ख) उसे जिससे धन मिलता है उसी से वह खुश रहती है। रंडियों के स्वार्थ पर यह लोकोक्ति कही गई है। तुलनीय : अव० रंडी कै जवानी सनाकी मा।

रंडी का दिया अब न तब—रंडीबाजी में खर्च किए हुए धन से लोक या परलोक किसी में भी लाभ नहीं होता अर्थात् दोनों नष्ट हो जाते है। रंडीबाजी पर कहा गया है। तुलनीय : अव० रंडियन कै दीन न येह लोक मा न उय लोक मा।

रंडी का दोस्त पैसा—उसे केवल पैसे से मतलब है। रंडी या धनलोलुप व्यक्तियों के प्रति कहते है। वे पैसे को छोड़कर किसी से प्रेम नहीं करते। तुलनीय : अव० रंडी पइसा कै आर; पंज० रंडी दा यार पैहा; व्रज० रंडी कौ यार पैसा।

रंडी का मीत पैसा—ऊपर देखिए।

रंडी किसकी जोरू, भड़ुआ किसका साला—रंडी न तो किसी की स्त्री हो सकती है और भँड़ुआ किसी का साला। ये दोनों मतलब के यार हैं। इन्हें धन चाहिए और कुछ नहीं। धन के लालच में झट संबंध जोड़ने और तोड़ने वाले के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : भोज० रंडी केकर जोरू भँड़ुआ केकर सार; अव० रंडी केकर मेहर औ भड़ुआ केकर सार; पंज० रंडी किस दी रन पडुआ किस दा साला।

रंडी किसकी बहू है, भँड़ुआ किसका साला—ऊपर देखिए। तुलनीय : मैथ० रंडी ककर बहू भँड़ुआ ककर सार; मग० रंडी केकी जोय भंड़ुआ किसका साला; भोज० रंडी केकर मेहरारू भँड़ुवा केकर सार; पंज० रंडी किस दी वोटी पडुआ किस दा साला; व्रज० रंडी बहू कौन की भई और भँड़ुआ किस कौ सारौ।

रंडी की कमाई, या खाय धाड़ी, या खाय गाड़ी—रंडियों के धन का विशेष भाग धाड़ियों को खिलाने और गाड़ी-भाड़ा में व्यय होता है। रंडियों के धन के दुरुपयोग पर कहा गया है। आशय यह है कि जिस प्रकार से धन आता है उसी प्रकार से खर्च भी हो जाता है। तुलनीय : अव० रंडियन कै कमाई, खाय धाड़ी, खाय गाड़ी।

रंडी की गाली और भूत के पत्थर की चोट नहीं लगती—(क) विषयवासना और अंधविश्वास में लोग इतने अंधे रहते हैं कि रंडी की गाली और भूत के पत्थर की चोट पर जरा भी ध्यान नहीं देते। (ख) जिससे अपना मतलब निकलता है उसकी बुरी बातों पर भी ध्यान नहीं दिया जाता। तुलनीय : पंज० रंडी दी गाल अते भूत दे वट्टे दी सट्ट नईं लगदी।

रंडी के घर माँड़े और आशिकों के घर कड़ाके—रंडियों के घर बढ़िया माल मिलेगा तो उनके प्रेमियों के यहाँ उपवास होगा। आशय यह है कि रंडीबाज़ अपने घर का माल ले जाकर रंडियों को देते हैं, इसलिए खुद कंगाल हो जाते हैं। तुलनीय : पंज० रंडी दे कर चढ़ा ते आशकां दे कर कड़ाके।

रंडी के नाक न हो तो गू खाय—रंडी के यदि नाक नहीं होती तो वह मैला (गू) भी खा जाती। अर्थात् जो स्त्री अपना शील और स्त्रीत्व बेच दे उसके लिए नीच से नीच कर्म करना भी असंभव नहीं होता। रंडियों की भर्त्सना करने के लिए कहते हैं। तुलनीय : अव० रंडियन कै नाक न होय तौ गुह खाँय; पंज० रंडी दी जे नक न होवे ते ओह गूँ वी खा लवे; व्रज० रंडी कै नाक न होय तौ भिस्टा खाय।

रंडी के सैकड़ों यार—स्पष्ट।

रंडी को पेशा क्या सिखाना ?— वेश्या को वेश्यावृत्ति की शिक्षा क्या देनी। जो व्यक्ति किसी कार्य में अनुभवी हो उसे वही कार्य सिखानेवाले के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० भगतणनै काँई किसब सिखावै ? पंज० रंडी नू कम की दसना।

रंडी तेरा यार मर गया कहा, 'कौन-सी गली का'—किसी ने कहा रंडी, तेरा प्रेमी मर गया तो वह पूछती है किस गली का। आशय यह है कि रंडी के एक-दो दोस्त नहीं, हजारों दोस्त होते हैं।

रंडी माँगे रुपया 'लैले मेरी मैया' फक्कड़ माँगे पैसा 'चलबे साले कैसा'—रंडी के रुपया माँगने पर लोग उसे बड़ी उदारता के साथ देते हैं, लेकिन फक्कड़ के माँगने पर उसे गाली देते हैं। आशय यह कि रंडी जो कि धन और धर्म दोनों लेती है उसे रुपया देने में लोग हिचक नहीं करते किन्तु फक्कड़ बेचारे को जो किसी अंश तक केवल धन ही खर्च कराते हैं वह भी खाने-पीने में—लोग गाली देते हैं। जो लोग खुशी से व्यर्थ में रुपया खर्च करते हैं लेकिन किसी अच्छे कार्य में खर्च करना नहीं चाहते उनके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। (फक्कड़—साधु)।

रंडी मोम की नाक होती है—रंडी मोम की तरह होती है। आशय यह है कि जिस तरह मोम को जैसा चाहे वैसा मोड़ सकते हैं उसी तरह रंडी का चित्त इतना अव्यवस्थित और कोमल होता है कि पैसे से जिधर चाहें उधर मोड़ सकते हैं। रंडियों के अव्यवस्थित चित्त पर यह लोकोक्ति कही गई है। तुलनीय : पंज० रंडी मोम दी नक हुंदी है।

रंडी रूप से, धरती खाद से—रूपवान वेश्या ही धन और नाम कमाती है तथा धरती खाद पड़ने से ही अनाज उत्पन्न करती है। कुरूप वेश्या और बिना खाद के भूमि का कोई मूल्य नहीं है। तुलनीय : भीली—रूप चावे रांडी ने धन चावे धरती ने।

रंडी रूसी धरम बचा—रंडी के नाराज़ होने से धर्म बचता है। (क) रंडी के नाराज़ होने पर कहते हैं। (ख) ऐसे व्यक्ति के नाराज़ होने पर भी कहते हैं जिससे अपना कोई लाभ न हो बल्कि उसे सदा कुछ देना ही पड़ता हो। तुलनीय : अव० रंडी रूठ धरम बचा; पंज० रंडी रूसी धरम बचया; ब्रज० रंडी रूसी धरम बच्यो।

रँड़ुआ गया सगाई को, आपको लाय कि भाई को—रंडुआ शादी करने गया तो वह अपने लिए स्त्री लाए या भाई के लिए। क्योंकि वह स्वयं भी तो बिना स्त्री के है। आशय यह है कि जो व्यक्ति स्वयं किसी वस्तु के लिए लालायित है वह दूसरे को लाकर क्या देगा ? अर्थात् वह नहीं ला सकता। जो व्यक्ति स्वयं किसी वस्तु के लिए ज़रूरतमन्द हो और वही वस्तु दूसरे के लिए लाने का वादा करे उस पर व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : पंज० रंडा गया कुड़मायी नू अपनी लयावे या परा दी।

रंधे भात का क्या राँधना और गाए गीत का क्या गाना ?—पके चावल को पुनः पकाना और गाए गीत को पुनः गाना व्यर्थ है। जब कोई एक ही बात को बार-बार कहता है तब कहते हैं। तुलनीय : पंज० रिजे पत दा कि रिनना अते गाए गीन दा की गाना।

रखा तो चश्मों से उड़ा दिया तो पश्मों से—मुझे रख लें तो अच्छी बात है, न रक्खें तो भी कुछ परवाह नहीं। स्वाधीन नौकर की उक्ति है।

रक्खे तो प्रीत, नहीं पलीत—निर्वाह कर सके तो प्रेम रहता है नहीं तो खराबी होती है। जब किसी का किसी से संबंध-विच्छेद हो जाता है और परस्पर वे एक-दूसरे के शत्रु हो जाते हैं तब कहते हैं। तुलनीय : पंज० रखो तो पयार नईं ता मार।

रखते झांपी बवंडर—झांपी रखते ही बवंडर आ गया। किसी कार्य के आरंभ करते ही विघ्न उपस्थित हो जाने पर ऐसा कहते हैं।

रख पछतावा कुछ नहीं, बेच पछतावा अच्छा—माल बेचकर पछताना अच्छा, रखकर पछताना अच्छा नहीं। जब कोई माल बेचकर पछताता है तब उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : अव० धै कै पसताव अच्छा नाही, बेच कै पसताब अच्छा है, पंज० रखन ते पछतावा नई बेच के पछतावा चंगा।

रख पत रखा पत—पहले दूसरे का पत रखिए तब अपना पत रखाने की इच्छा कीजिए। आशय यह कि जो दूसरों की इज्ज़त करता है, उसी की इज्ज़त दूसरे भी करते हैं। शिष्टाचार के संबंध में यह लोकोक्ति कही गई है। तुलनीय : अव० राख पत रखा पत; हरि० हाथ न हाथ धोवै सै; राज० राखपत रखावपत।

रखे मकान तो रखे बाड़ी, करे खेती तो रखे गाड़ी—मकान बनवाए तो पशु बाँधने के लिए बाड़ी (घिरी जगह) अलग से बनवाए तथा खेती करे तो गाड़ी भी अवश्य होनी चाहिए। इन दो कामों के लिए ये दोनों चीज़ें बहुत आवश्यक होती हैं और इनके अभाव में परेशानी उठानी पड़ती है। तुलनीय : माल० बाँधजे मकान तो राख जे बाड़ो, करजे

खेती तो राखजे गाड़ो।

रखैल की इज्जत और गँवार से लड़ाई—रखैल को कोई भी आदर नहीं देता क्योंकि वह केवल धन की भूखी होती है। जब तक धन रहेगा वह भी रहेगी और निर्धन होने पर वह दूसरे के पास चली जायगी। इसी प्रकार गंवार से लड़ने में भी सभी डरते हैं, क्योंकि वह तो उलटी-सीधी मार मारेगा। वह अपना बचाव करेगा और न दूसरे की परवाह। मूर्खों से उलझने में बडी परेशानी होती है। तुलनीय : माल० नाता री लुगाई री ने बजार री छींक री कई इज्जत; पंज० रंडी दी इज्जत अते गंवार दी लड़ाई।

रघुकुल रीति सदा चलि आई, प्राण जाहिं पर बचन न जाई—सदा से यह रघुकुल की रीति रही है कि चाहे प्राण चला जाय पर वचन नष्ट नही होने पाता, वह अवश्य पूरा किया जाता है। (क) दृढ़प्रतिज्ञ व्यक्ति कहता है। (ख) हठी मनुष्य को भी व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : मरा० रघुकुलाची हो परंपरा रे, प्राण जाओ वचन न फिरे।

रचा पर जंचा नहीं—रच तो दिया पर जँचा नही। काम हो तो गया पर अच्छा नही हुआ। जब कोई काम पूरा हो जाय, पर अच्छा न हो तब कहते है। तुलनीय : राज० रचियो पर जचियो नहीं।

रजपुत भगत न मूसर धनुही—राजपुत साधु नही हो सकता और न मूसल (मूसर) का धनुष बन सकता है। आशय यह है कि किसी के स्वभाव मे परिवर्तन नहीं लाया जा सकता।

रजपूती घुस गयी तालाब में ऊपर फिर गया पानी—राजपूती तालाब मे घुस गई और उसके ऊपर से पानी फिर गया। अर्थात् अब राजपूती नही रही केवल नाम ही रह गया है। झूठी शान दिखानेवाले के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : राज० राजपूती धोरों में रळगी, ऊपर रळगी रेत।

रजपूती पहुँची सागर पार—राजपूती समुद्र (सागर) के पार चली गई है, अब यहाँ नहीं रही। आजकल के राजपूतो के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय . राज० रजपूती रैया नही, पूगी समंदां पार।

रज हू ठोकर मारिए, चढ़े शीश पर आय—धूल पर ठोकर मारने से वह सिर पर आकर पड़ती है। (क) हीन जानकर भी किसी का अनादर न करना चाहिए। (ख) छोटों से उलझने से अपमान ही होता है।

रजील की दो, न अशराफ़ की सौ—गाली देने पर लोग कहते हैं कि नीच व्यक्ति की दो गालियाँ भी सज्जन की सौ गालियों से बढ़कर होती हैं।

रज्जा अमीर, भुक्खा फ़क़ीर, मुआ पीर, पागल औलिया, अन्धा हाफ़िज़—मुसलमान धनी हुए तो अमीर कहलाते हैं, भूखे होने पर फ़क़ीर कहलाते हैं, मर जाने पर पीर, पागल होने पर औलिया तथा अन्धे होने पर हाफ़िज़ कहलाते हैं। आशय यह कि मुसलमान की कोई भी दशा हो उसमें भी वह बड़ा कहलवाने की इच्छा करता है।

रज्जु सर्प न्याय—जब तक दृष्टि ठीक नही पड़ती तब तक मनुष्य रस्सी को साँप समझता है। इसी प्रकार जब तक ब्रह्मज्ञान नही होता तब तक मनुष्य दृश्य जगत को सत्य समझता है। ब्रह्मज्ञान होने पर उसका भ्रम दूर हो जाता है और वह समझता है कि ब्रह्म के अतिरिक्त और कुछ सत्य नही है।

रटंत विद्या, खोदंत पानी—याद करने से विद्या आती है और खोदने से पानी मिलता है। परिश्रम करने मे ही सफलता मिलती है।

रण जायँ, न राजा से जूझें—न तो लड़ाई में जाते है और न राजा से जूझते हैं। (क) कायरों के प्रति कहते हैं जो डर के मारे छिपे फिरते हैं। (ख) शात प्रकृति के लोगो के प्रति भी कहते हैं जो लड़ाई-झगड़े से दूर रहते है।

रण जीत लिया—बहुत बड़ी विजय प्राप्त कर ली। जो व्यक्ति साधारण-सी सफलता पर फूले नही समाते उनके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : पंज० मैदान मार लया।

रत्तियों जोड़े, तोलों खोवे, वाको लाभ कहाँ से होवे—जो रत्ती-रत्ती जोड़ता है और तोलो के हिसाब से खोता है तो उसको लाभ कहाँ से हो सकता है? आशय यह है कि कम कमाने और ज्यादा ख़र्च करने से लाभ कभी नही हो सकता। आमदनी से अधिक ख़र्च करनेवाले पर कहते है।

रत्ती दान न धी को दीया, देखो री समधन का हिया—समधिन का हृदय इतना कठोर है कि शादी में रत्ती-भर की वस्तु नहीं दी। दहेज में कुछ न देने पर कहते हैं।

रत्ती देकर माँगें तोला, वाको कौन बतावे भोला—जो रत्ती भर देकर तोला भर माँगता है उसे कोई भोला नही कह सकता। आशय यह कि थोड़ा देकर अधिक मांगनेवाला व्यक्ति बहुत चतुर कहा जाता है। चालबाज़ आदमियों के प्रति कहा गया है। तुलनीय : पंज० रत्ती पर दे के मंगे तोला ओनूं कौन कबे पोला।

रत्ती भर की तीन चपाती, खाने बैठे सात संगाती—रत्ती भर की केवल तीन रोटियाँ हैं और खानेवाले सात व्यक्ति हैं भला कैसे पूरा पड़ सकता है? तुलनीय : पंज० रोटियाँ तिन खाण बैठे सात जिना।

रत्ती-भर धन साथ न जावे, जब तू मरकर जीव गँवावे—मर जाने पर रत्ती भर धन भी साथ में नहीं जाता, सब यही पड़ा रह जाता है। (क) जो मनुष्य धन के मद में अंधा होकर ईश्वर की आराधना से विमुख हो जाता है उसको कहते हैं। (ख) कृपण को भी कहते हैं जो धन की ममता के पीछे अपनी जान की भी परवाह नहीं करता।

रत्ती भर नाता और गाड़ी भर आशनाई—मामूली-सी जान-पहचान भी कभी-कभी गहरी दोस्ती से बढ़कर लाभकर सिद्ध होती है। (आशनाई=परिचय)।

रत्ती भर सगाई नगाड़े पर आशनाई—दोस्त चाहे कितना भी पक्का क्यों न हो फिर भी वह उतना काम नहीं कर सकता जितना कि एक मामूली संबंधी। आशय यह है कि वक़्त पर रिश्तेदार ही काम आता है दोस्त नहीं। जो लोग दोस्तों के आगे रिश्तेदारों पर ध्यान नहीं देते, उन पर कहते हैं।

रत्ती भर हींग और आगरे में कोठी—दे० 'छंटाक भर हींग आगरे में···'।

रत्नों के आगे दीया नहीं जलता—रत्नों के सम्मुख दीपक नहीं जलता। बड़ों या विद्वानों के सामने निर्धनों या कम बुद्धिवालों की कोई क़ीमत नहीं होती। तुलनीय: पंज० हीरयां अग्गे दीवा नईं बलदा।

रन फतह हो गया—लड़ाई जीत ली गई। काम सफल हो गया। कठिन काम हो जाने पर लोग कहते हैं। तुलनीय: पंज० मैदान मार लया।

रपट पड़े की हरगंगा—अपनी असावधानी से तो फिसला और कहता है 'हरगंगा,' मानो जानकर गिरा है। जब किसी की भूल से काम बिगड़ा हो और वह ज़ाहिर करे कि मैंने जान के बिगाड़ा है तब कहते हैं। तुलनीय: अव० रपट पड़े कै गंगा; ब्रज० रिपटि परे की हरि गंगा।

रबड़ी कहे मुझे भी चबाओ—रबड़ी जिसे दाँत छुआने की भी आवश्यकता नहीं है कहती है कि मुझे चबाकर खाओ। जब कोई निम्न व्यक्ति उच्च व्यक्ति की बराबरी करना चाहे तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय: राज० राबड़ी कै मनै ही दांतांमू खावो; पंज० रबड़ी कवै मैनूं दंदां नाल खावो।

रबि उगंते भादवा, अम्मावस रविवार, धनुष उगंते पच्छिम, होसी हाहाकार—भादों की अमावस्या को यदि रविवार हो और सूर्योदय के समय पश्चिम दिशा में इन्द्र-धनुष निकले तो संसार में हाहाकार मचेगा। अर्थात् घोर अकाल पड़ेगा।

रबि के आगे सुर गुरु, ससि सुक्रा परवेस; दिवस चौथे पाँचवें, रुधिर बहंतो देस—यदि रवि के आगे बृहस्पति हो, चन्द्रमा शुक्र की परिधि में प्रवेश करे तो उसके चौथे-पाँचवें दिन देश में रक्त बह चलेगा। अर्थात् देश में अशांति फैल जाएगी और गृह-युद्ध छिड़ जाएगा।

रबि जल उखरे कमल को, जारत भारत जात—उखड़े हुए कमल को सूर्य झुलसा देता है। आशय यह कि बने पर जो मित्र रहते हैं वह भी बिगड़े पर शत्रु हो जाते हैं। समय बिगड़ जाने पर जब मित्र भी शत्रुता का व्यवहार करे तब कहा जाता है।

रबि तामूल सोम के दरपन, भौमवार गुरधनियाँ चरबन; बुद्ध मिठाई बिहफै राई, सुक्र कहै महि दही सुहाई; सन्नी बाउभिरेंगी भावै, इन्द्रो जीति पुत्र घर आवै—रविवार को पान खाकर, सोमवार को दर्पण देखकर, भौमवार को गुड़-धनिया खाकर, बुधवार को मिठाई और गुरुवार को राई खाकर यात्रा करनी चाहिए। शुक्रवार कहता है मुझे दही पसन्द है, शनिवार को बाउभिरंग अच्छा लगता है। अर्थात् शुक्रवार को दही और शनिवार का बाउ-भिरंग खाकर यात्रा करनी चाहिए। इस प्रकार से जो यात्रा करता है वह इन्द्र को भी जीतकर आता है। अर्थात् उसे हर जगह सफलता मिलती है।

रबिदिन बरस चमार घर, ससि दिन नाई गेह।
मंगल दिन काछी भवन, बुध दिन रजक सनेह।।
गुरु दिन ब्राह्मण के बसें, भृगु दिन बैश्य मंझार।
सनि दिन बेस्वा के बसें, भड्डर कहैं विचार।।—भड्डर विचार कर कहते हैं कि रविवार को चमार के घर, सोमवार को नाई के घर, मंगलवार को काछी के घर, बुधवार को धोबी के घर, बृहस्पतिवार को ब्राह्मण के घर, शुक्रवार को वैश्य के घर और शनिवार को वेश्या के घर जाकर रहना चाहिए।

रबि नहिं लखियत बारि मसाल—सूर्य को कोई मशाल जलाकर नहीं देखता। सूर्य निकलने पर तो अपने आप उजाला हो जाता है। अर्थात् गुणवान अपने गुणों ही से प्रसिद्ध हो जाता है। जब किसी गुणी पुरुष की ख्याति की बात आवे तब यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय: मरा० सूर्याला पहावयाला कोणी मशाल पेटवीत नाहीत; पंज० सूरज नूं देखण लई मशाल दी लोड नईं।

रबि-मंडल देखत लघु लागा, उदय तासु त्रिभुवन तम भागा—सूर्य देखने में ही छोटा प्रतीत होता है किंतु उसके उदय होने पर घोर अंधकार दूर हो जाता है। आशय यह है

कि ज्ञानी पुरुष देखने में छोटे लगते हैं किंतु उनकी शिक्षा से अज्ञान या मूर्खता रूपी अंधकार दूर हो जाता है। जब किसी दुबले-पतले विद्वान को देखकर कोई हँसता है तब ऐसा कहते हैं।

रवि-मंडल में जात शशि, दीन कला छबि होति—सूर्य के मंडल में जाने से चंद्रमा की कला एवं सुन्दरता क्षीण हो जाती है। अर्थात् दूसरे के घर जाने से अपना तेज तथा सम्मान कम हो जाता है।

रबि सम्मुख तम कबहुँ कि जाहीं—क्या कभी सूर्य के सामने अंधकार टिक सकता है, अर्थात् नहीं! आशय यह है कि ज्ञानी पुरुष के सामने अज्ञानी नहीं टिक सकता। जब कोई मूर्ख किसी विद्वान व्यक्ति से बराबरी करना चाहता है तब उसके प्रति कहते हैं।

रबिहूँ की इक दिवस में, तीन अवस्था होय—सूर्य की भी एक दिन में तीन अवस्थाएँ होती है। तात्पर्य यह है कि एक-सी अवस्था किसी की भी नहीं रहती। जब कोई मनुष्य समय के फेर से दुःखी हो या घबड़ा जावे तब उसे ढाढ़स बँधाने के लिए यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय: हरि० सदा दिण के एक से रह सं; मरा० सूर्याच्या सुद्धां दिवसांत तीन अवस्था होतात।

रमता राम और बहता पानी—घुमक्कड़ साधु (रमता राम) और बहते जल का कोई निश्चय नहीं होता कि वे कहाँ रुकेंगे। जिसका कोई निश्चित स्थान नहीं है वह कहीं भी रुक सकता है। घुमक्कड़ साधु ऐसा कहते हैं, या उनके विषय में ऐसा कहते है। तुलनीय: हरि० रमता राम अर बहता पाणी, बेरा ना किंत डट्टे।

रले-मिले पाँचो रहिये, जान जाय पर सच न कहिए—पंचों, मिल-जुलकर रहना चाहिए और प्राण भले चला जाय लेकिन सच नहीं कहना चाहिए। धूर्त व अन्यायी पंचों के प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

रस को स्वाद जो और खवैये—रस का स्वाद तभी आता है जब खाने वाले कई हों। आशय यह है कि जब कई लोग एक साथ बैठकर खाते-पीते हैं तो काफ़ी आनन्द आता है। तुलनीय: पंज० रस दा सुआद अदों आंदा है जदों खाण वाले मने होण; अ० The more the merrier.

रस मारे रसायन बनता है—(क) पारे को मारने से चाँदी और सोना बनता है। (ख) छोटी वस्तु का नाश करके ही महान् वस्तुएँ बनाई जाती हैं। (ग) इच्छाओं पर नियंत्रण रखने से मनुष्य प्रगति करता है। तुलनीय: फ़ा० मुगां कि दानः-ए-अंगूर आब मी साज़ंद, सितारा मी शिकनद आफ़ताब मी साज़ंद (साक़ी अंगूर के दाने को तोड़कर शराब बनाता है और सितारों को तोड़कर सूरज का निर्माण किया जाता है); पंज० रस नूं मार के रसायन बणदा है।

रस में विष घोल दिया—बना काम बिगाड़ दिया। या आनंद में बाधा उपस्थित कर दी। जब कोई बना काम बिगाड़ देता है या आनंद में बाधा उपस्थित कर देता है तब कहते हैं।

रस में विष मिला दिया—ऊपर देखिए।

रसरी आवत जात तें सिल पर परत निसान—रस्सी के बार-बार आन-जाने के संघर्ष से पत्थर पर भी चिह्न बन जाता है। अर्थात् बार-बार के अभ्यास से कठिन और असभव कार्य भी सिद्ध हो जाता है। तुलनीय: अं० Constant dropping wears away a stone.

रस से मरे तो विष क्यों दीजे—रस से मर जाय तो विष क्यों दिया जाय? आशय यह है कि (क) समझाने से मान जाय तो दण्ड क्यों दिया जाय। (ख) जब कोई कार्य आसानी से हो जाय तो उसके लिए कष्ट उठाने की कोई आवश्यकता नहीं होती। तुलनीय: भोज० रस से जे मरजा ओके जहर क कवन जरूरत; पंज० रस नाल मरे तों जहर क्यों देइए।

रस से मरे तो विष क्यों दें?—ऊपर देखिए।

रसीदा बूद बला-ए-बले बख़ैर गुज़श्त—मुसीबत तो आई थी लेकिन बच ही गए। जब कोई व्यक्ति किसी आकस्मिक संकट में फँसकर उससे सुरक्षित निकल आए तो स्वयं कहता है।

रसोई और रसान बराबर—रसोई और रसायन दोनों का बनाना मुश्किल है, यह हर एक को नहीं आता। जब किसी को रसोई या रसायन तैयार करने में कठिनाई मालूम पड़े तब यह लोकोक्ति कही जाती है।

रसोई के विप्र और क़साई के कुत्ते—रसोई बनाने वाला ब्राह्मण और क़साई के कुत्ते ये दुबले नहीं होते क्योंकि इन्हें खाने को कुछ-न-कुछ अवश्य मिल जाता है। खाना बनाने वाले ब्राह्मण के प्रति व्यंग्य में यह लोकोक्ति कही जाती है।

रस्सी का साँप बन गया—साधारण बात का बहुत बढ़ जाना। जब थोड़ी बात का बहुत विस्तार हो जाय तब यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय: अव० रजुरी कै सांप बनगा; पंज० रस्सी दा सप बन गया।

रस्सी को साँप बनाते हैं—सामान्य बात या वस्तु के विषय में बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कहनेवाले के प्रति कहते हैं।

तुलनीय : पंज० रस्सी नूं सप्प बनांदे हो।

रस्सी जल गई, ऐंठन न गई—रस्सी जल गई लेकिन उसकी ऐंठन नहीं गई। जब कोई बरबाद होने के बाद भी अकड़ दिखाता है या अपनी ज़िद पर डटा रहता है तब उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : भोज० रस्सी जल गइल बाकी एइठन नाहीं गइल; अव० रसुरी जल गय मुला ऐंठन न गय; गढ़० अफू बारा मां, शेखी घोड़ा मां; मग० जून जर जाय ऐंठन न छूटे; मैथ० जूना जरि गैल ऐंठन रहिये गैल; पंज० रस्सी कर्कों गई आकड़ (बट) नई गयी/गया।

रस्सी जल गई ऐंठन नहीं गई—ऊपर देखिए।

रस्सी जल गई पर ऐंठन न गई दे० 'रस्सी जल गई ऐंठन…'। तुलनीय : राज० मुंजेवड़ी बल ज्याय, पण बट को नीकलैनी; कनौ० रस्सी जल ऊ जाय, पर इठवो कैसे छोड़ै; गढ़० जूड़ो फूकिगे पर बट निफूकेणें; भीली० डोरी बले डोरी नो आमलो नी बले; ब्रज० जेवरी जरि गई परि ऐंठ न गई।

रस्सी जल गई पर बल न गया— दे० 'रस्सी जल गई ऐंठन…'। तुलनीय . मरा० सुभ जलाले पण पील गेला नाही; पंज० रस्सी सड़ गयी पर बट नई गया।

रस्सी जल जाय ऐंठन न जाय दे० 'रस्सी जल गई ऐंठन…'।

रहट की बाल्टी, भरी भी खाली भी—रहट की बाल्टियां कुछ भरी होती है और कुछ खाली। (क) प्रत्येक काम में हानि और लाभ दोनों की ही सभावना होती है। कोई कार्य इस विश्वास मे नहीं करना चाहिए कि उसमें केवल लाभ ही होगा। (ख) जीवन में तकलीफ़-आराम दोनों मिलते है, सदा एक जैसा समय नहीं रहता। तुलनीय : भीली –रेंटवाली घड़ग है, भरी आवे न रीती आवे; पंज० रहट दे कड़े परे वी खाली वी।

रहत न आरत के चित चेतू— खुदगरज को अपने मान और अपमान का ध्यान नही रहता। जब कोई अपनी आवश्यकता की पूर्ति के सम्मुख मानापमान का ध्यान नही रखता तब उसके प्रति व्यंग्य में कहते है। तुलनीय : पंज० गरजमंद नूँ इज्जत बेजती दा ख़याल नई रैंदा।

रहते थे बनखंड में, रखाते थे चारो; जैसो जेठ मास, तैसो बसकारो—(क) बन में रहने वाले साधु-संयासियों की उपमा देने के लिए ऐसा कहते है। (ख) गँवार या मूर्ख के लिए भी इसका प्रयोग किया जाता है।

रहने को नहीं झोपड़ी मियां मुहल्लेदार- रहने के लिए झोपड़ी भी नही है लेकिन कहे जाते है मुहल्लेवाले। हैसियत या गुण के विरुद्ध नाम रहने पर कहते हैं। तुलनीय : पंज० रैण नूं नईं छपरी मिया मुहल्लेदार।

रहने पर दिल काला, न रहने से मुँह काला –अधिक धन होने से व्यक्ति स्वार्थी तथा दुर्व्यसनी हो जाता है तथा धन न होने पर ओछा कर्म करता है जिससे कोई उसका सम्मान नहीं करता। आशय यह है कि धन की अधिकता और कमी दोनों सम्मान को धक्का पहुँचाती है। तुलनीय गढ़० गणन पर हाथ कालो, हरचण पर मुख कालो; पंज० रैण नाल दिल काला नां रैण नाल मूँह काला।

रहमान जोड़े पली पली, संतान लुढ़ावे कुप्पा दे० 'तेली जोड़े पली-पली……'।

रहा न कोउ कुल रोवन हारा कुल मे कोई रोनेवाला भी न रहा अर्थात् कुल में कोई भी शेष न बचा। सब के मर जाने पर कहते है।

रहा विवाह चापि आधीना विवाह धनुष के (टूटने के) अधीन है। जब किसी बहुत बड़ी बात का होना न होना किसी एक साधारण काम के होने न होने पर निर्भर रहता है तो कहते है।

रहिए जाके राज में ताकि तैसी कहिए—जिसके राज्य मे रहें उसके अनुकूल ही कहें। आशय यह है कि अपने आश्रयदाता या अधिकारी की बातों का विरोध नहीं करना चाहिए या उनके विरुद्ध कुछ नही कहना चाहिए। तुलनीय : पंज० जिहो जे राज विच रहो ओहो जिहीं गल कहो।

रहिमन अति न कीजिए, गहि रहिए निज कानि - रहीम कवि कहते है कि किसी भी काम में अति (अधिकता, सीमा का उल्लघन) नहीं करना चाहिए, बल्कि अपनी मर्यादा के अनुकूल ही रहना चाहिए। आवश्यकता से अधिक कुछ कहने या करने पर ऐसा कहते है।

रहिमन असमय के परे, मित्र शत्रु ह्वै जाय –रहीम कवि कहते है कि बुरे दिन आने पर मित्र भी शत्रु हो जाते हैं। अर्थात् बुरे समय मे विरले ही किसी की सहायता करते हैं वरना सभी साथ छोड़ देते है।

रहिमन असमय के परे, हित अनहित ह्वै जाय - ऊपर देखिए।

रहिमन ओछे नरन सों, बैर भलो ना प्रीत - नीच व्यक्तियों से न तो शत्रुता अच्छी है और न मित्रता। ये हर दशा में हानि ही पहुँचाते हैं, अतः इनसे सदा दूर ही रहना चाहिए।

रहिमन चाक कुम्हार को माँगे दिया न देय; छेद में डंडा मार के चहे नाँद ले जाय रहीम कवि कहते है कि

कुम्हार की चाक माँगने से दीया भी नही देती, लेकिन उस के छेद में डंडा डालकर घुमाने से नाँद मिल जाता है। आशय यह है कि नीच व्यक्ति क़ायदे से कहने से कोई साधारण काम भी नहीं करते लेकिन डाँटने-फटकारने से कठिन कार्य भी कर देते हैं।

रहिमन दानि दरिद्रतर तऊ जाँचिबे जोग—रहीम कवि कहते हैं कि दानी व्यक्ति चाहे कितना ही निर्धन क्यों न हो उससे माँगा जा सकता है। दानी व्यक्ति की प्रशंसा में कहते हैं।

रहिमन देखि बड़ेन को लघु न दीजिए डारि—रहीम कवि कहते हैं कि बड़ों को पाकर छोटो को त्याग न देना चाहिए। आशय यह है कि छोटे-बड़े सभी से प्रेम रखना चाहिए क्योंकि कभी-न-कभी सबकी आवश्यकता पड़ती है।

रहिमन निज मन की व्यथा, मन ही राखो गोय—रहीम कवि कहते हैं कि अपने हृदय के दुख को हृदय में ही रखना चाहिए दूसरों से कहना ठीक नही।

रहिमन नीचन संग बसि, लगत कलंक न काहि—रहीम कवि कहते हैं कि नीच के साथ रहने से किसको कलंक नही लगता? अर्थात् सबको कलंक लगता है। आशय यह है कि बुरों की संगति में नही रहना चाहिए। उनके साथ रहने से अपमानित होना पड़ता है।

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून—रहीम कवि कहते है कि अपनी इज्ज़त रक्खो, क्योंकि बिना इज्ज़त के सब बेकार है। मर्यादा सबसे बड़ी चीज़ है।

रहिमन प्रीति न कीजिए, जस खीरा ने कीन—रहीम कवि कहते है कि खीरे की तरह प्रेम नही करना चाहिए। अर्थात् जिस प्रकार खीरा ऊपर से एक मालूम पड़ता है किंतु उसके अन्दर तीन फाँकें होती हैं। उसी प्रकार मनुष्य को ऊपर से नही बल्कि हृदय से प्रेम करना चाहिए। कपट का व्यवहार करनेवालों के शिक्षार्थ कहते हैं।

रहिमन बसि सागर विषे, करन मगर सों बैर—रहीम कवि कहते हैं कि सागर में रहकर मगर से बैर-भाव रखना बुरा है अर्थात् किसी के अधीन रहकर उसी से शत्रुता करना उचित नहीं है। तुलनीय : पंज० पाणी बिच रहके मगर नाल बैर करना चंगा नईं; अं० To live in Rome and strife with the Pope.

रहिमन मारग प्रेम को बिन बूझे मति जाव—रहीम कवि कहते हैं कि प्रेम के मार्ग पर बिना खूब सोचे-समझे कभी न जाना चाहिए। अर्थात् खूब सोच-समझ कर प्रेम करना चाहिए।

रहिमन यह तन सूप है, लीजे जगत पछोर—रहीम कवि कहते हैं कि यह देह सूप की तरह है इससे संसार को पछोर लीजिए। अर्थात् जिस प्रकार सूप हल्की तथा व्यर्थ चीज़ को अलग कर देता है और काम की वस्तु को रख लेता है, उसी प्रकार मनुष्य को संसार से सारयुक्त बात को ग्रहण करना चाहिए और साररहित बात को छोड़ देना चाहिए।

रहिमन याचकता गहे, बड़े छोट ह्वै जात—रहीम कवि कहते हैं कि याचना करने से बड़े-से-बड़े आदमी भी छोटे हो जाते हैं। आशय यह है कि किसी के सम्मुख हाथ फैलाने से मान घट जाता है।

रहिमन रहिबो वां भलो, जौ लौं सील समूच—रहीम कवि कहते हैं कि किसी स्थान पर तब तक ही रहना चाहिए जब तक शील में कोई कमी न हो जब कोई व्यक्ति अपमानित होने के बाद भी उस स्थान को नही छोड़ता तब उसके प्रति कहते है।

रहिमन लाख भली करौ, अगुनी अगुन न जाय—रहीम कवि कहते है कि लाख प्रयत्न करने पर भी अगुणी लोगों में गुण नहीं आ सकता है, या उनका दुर्गुण नही जा सकता। जब काफ़ी प्रयत्न के बावजूद भी किसी में सुधार नही आता तब कहते हैं।

रहिमन साँचे शूर को बैरी करत बखान—रहीम कवि कहते हैं कि अच्छे वीरों की शत्रु भी प्रशंसा करते हैं। आशय यह है कि अच्छे लोगों या वीरों की तारीफ़ सभी करते है।

रहिमान को रहिमान, शैतान को शैतान—अच्छे को अच्छा और बुरे को बुरा मिल जाता है। आशय यह है कि जो जैसा रहता है उसे वैसे लोग मिल जाते हैं। जब किसी अच्छे का अच्छा और बुरे का बुरा साथी हो तब यह लोकोक्ति कही जाती है।

रही बात थोड़ी, ज़ीन लगाम घोड़ी—किसी व्यक्ति को कहीं पर एक गिरा हुआ चाबुक मिल गया तो उसने कहा कि अब तो केवल ज़ीन, लगाम और घोड़ी खरीदना ही शेष रह गया, अन्य चीजें तो हो ही गई हैं। जब थोड़ा काम होने पर ही करनेवाला उसे पूरा समझे तब उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

रहूँ सुख से, मरूँ भूख से—भले खाने को न मिले पर आराम से बैठने को मिले। आलसियों के प्रति व्यंग्य में कहते हैं जो तकलीफ़ सहते हैं पर काम करना नहीं चाहते। तुलनीय : गढ़० रौं सुख, मरू भुक्ख; पंज० रैण सुख नाल मरना पुख नाल।

रहें कलकत्ता, तन पर न लत्ता— रहते तो कलकत्ता में हैं पर शरीर पर वस्त्र नहीं है। (क) कलकत्ते जैसे बड़े और धनवान नगर में रहकर भी जिसके पास धन न हो अर्थात् भाग्यहीन लोगों के प्रति ऐसा कहते हैं। (ख) झूठी शान बघारने वाले के प्रति भी व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : गढ़० जौ नैपाल, साथ जौ कपाल; पंज० रैण कलकत्ता, सरीर उते न लत्ता।

रहे अंत मोची के मोची—अन्त तक मोची ही रह गए अर्थात् जैसे थे वैसे। (क) अत्यन्त परिश्रम करने तथा घोर कष्ट सहने के बाद भी जब किसी की स्थिति में सुधार न हो तब यह लोकोक्ति कही जाती है। (ख) पढ़-लिखकर तथा अच्छों की संगति में पड़ने पर भी जब किसी नीच की प्रकृति से ओछापन न जाय तब भी कहते हैं। तुलनीय : माल० घर करवत मोची रो मोची; पंज० रहे फिर वी मोची (चमैर) दे मोची (चमैर)।

रहेगा नर, बनाएगा घर—पुरुषार्थी व्यक्ति जीवित रहेगा तो किसी-न-किसी दिन घर की स्थिति को ठीक कर ही लेगा। निर्धन व्यक्ति पुरुषार्थी हो तो वह सभी तरह की विपत्तियाँ सहकर भी अपना मान बनाए रखता है तथा उत्तरोत्तर उन्नति करता है। तुलनीय : माल० रेगा नर, तो करेगा घर।

रहेगा बाँस न बाजेगी बाँसुरी—जब बाँस ही न रहेगा तो बाँसुरी कहाँ से बजेगी? अर्थात् बाँसुरी नहीं बन सकती। तात्पर्य यह कि जब कारण ही नहीं रहेगा तो कार्य कैसे होगा? लड़ाई-झगड़े की जड़ को मिटा देने के लिए कहते हैं ताकि सदा शांति बनी रहे। तुलनीय : भोज० रही बाँस न बाजी बाँसुरी; अव० रही न बाँस न बाजी बाँसुरी; ब्रज० न रहेगो बाँस, न बजैगी बाँसुरी।

रहे झोपड़ी में ख्वाब देखे महलों का—रहते हैं झोपड़ी में और स्वप्न देखते हैं महलों का। हैसियत से बढ़कर आकांक्षा रखने पर कहते है। तुलनीय : अव० रहै का झोपड़ी मा ख्वाब देखै महलन केर; हरि० झूपड़ी में रहै अर सपने महलां के देखै; पंज० रवै टपरी बिच सुपने लवे मैलां दे।

रहे तो आपसे, नहीं जाय सगे बाप से—लड़की ठीक ढंग से रहना चाहे तो वह अपने आप रह सकती है लेकिन यदि वह चरित्रभ्रष्ट है तो अपने पिता के साथ भी अपना धर्म खो सकती है। आशय यह है कि स्त्री अपने-आप ही रहना चाहे तो सच्चरित्र रह सकती है किसी के दबाव से नहीं। तुलनीय : राज० रवै तो आपसूं, नहीं तो जाय सगै बापसूं।

रहे तो टेक से, जाय तो जड़ बेख से—जीए तो इज्जत से नहीं तो जड़ से मिट जाय। आशय यह है कि अपमान की जिन्दगी कोई जिन्दगी नहीं होती। जब किसी स्वाभिमानी पुरुष का अपमान हो तब कहते हैं। तुलनीय : भोज० रहे त सान से जाइ त जान से।

रहे तो भी बुरा जाय तो भी बुरा—जब कोई किसी से रात-दिन लड़ाई-झगड़ा करे और उसके न रहने पर बेचैन हो जाय तब कहते है। तुलनीय : भोज० रहल करिमना तब घर गइल, गइल करिमना तब घर गइल।

रहे बिरादरी में भले हो बैर—अपने बधु-बांधवों में रहना चाहिए चाहे आपस में बैर ही क्यों न हो। विपत्ति में अपने भाई-बन्धु ही काम आते हैं इसलिए ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० रैवणे भायां में, हुवो भलां ही वैर ही; पंज० रवो बरादरी बिच पावें होवे वैर।

रहे महमूद के और अंडे देवे मसूद के—रही है महमूद के यहाँ किन्तु जब अंडे देने होते हैं तो मसूद के यहाँ चली जाती है। जब कोई खाए-पीए किसी का और काम करे दूसरे का तब यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : अव० रहैं का कोरिआने भूकैं का चमराने।

रहैं भुइं चाहें बादर—रहते तो जमीन पर है और छूना चाहते हैं बादल। (क) जब कोई किसी असम्भव काम को करना चाहता है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। (ख) औक़ात से अधिक इच्छा रखनेवाले के प्रति भी व्यंग्य से कहते हैं।

रहै निरोगी जो कम खाय, बिगरे काम न जो गम खाय—जो व्यक्ति कम भोजन करता है वह सदा स्वस्थ रहता है और जो सहनशील होता है उसका कोई कार्य बिगड़ता नहीं।

रहै बाँस न बाजे बाँसुरी—न बाँस रहेगा न बाँसुरी बजेगी। अर्थात् न मूल या कारण शेष रहेगा और न काम होगा।

राँघड़ गूजर दो, कुत्ता बिल्ली दो, ये चारों न हों तो खुले किवाड़ों सो—राँघड, गूजर, कुत्ता और बिल्ली ये चारों न हों तो किवाड़ खोलकर सोओ। आशय यह है कि ये चारों निगाह के चूकते ही चीजें चुरा लेते हैं या खा जाते हैं। राँघड़ और गूजर बहुत चोट्टे होते हैं, उन्हीं के लिए कहते हैं। (राँघड़ = राजपूतों की एक नीच जाति जो चोरी के लिए प्रसिद्ध है)।

राँड़ और खाँड़ का यौवन रात को—विधवा स्त्री

और मिठाई की जवानी रात को आती है। चरित्रभ्रष्ट विधवा के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : राज० रांड अर खांड रो जोबन रातरो; अव० राँड़ औ खाँड़ कै जवानी रात कै; पंज० रंडी अते खंडी दी जवानी रात नूं।

राँड़ और खाँड़ की जवानी रात को --ऊपर देखिए।

राँड़ और राँड़ क्या होगी --जो स्त्री एक बार विधवा हो गई वह फिर क्या विधवा होगी। अर्थात् जिसका सब कुछ नष्ट हो चुका है उसका अब क्या बिगड़ेगा? अर्थात् कुछ नहीं। अत्यन्त निर्धन या परास्त व्यक्ति के प्रति कहते हैं। तुलनीय : माल० रांड री कई रांड वे, पंज० रंडी और की रंडी होवेगी।

राँड़ का गाँव बना रक्खा है?—विधवाओं का गांव समझ रखा है। जब कोई किसी दूसरे गाँव में जाकर उलटी-सीधी बातें करता है तब ऐसा कहते हैं।

राँड़ का पति चरखा--विधवा का पति चरखा है। विधवा स्त्रियाँ प्राय: चरखा कातकर जीविकोपार्जन करती हैं, इसीलिए उनके प्रति ऐसा कहा जाता है। तुलनीय : माल० राँडी राँड़ रो रेंट्यो माटी।

राँड़ का बेटा साँड़ जैसा—विधवा का लड़का साँड की तरह उद्दंड होता है। विधवाओं के बच्चे, अनुशासन न होने के कारण प्राय बिगड़ जाते हैं, इसलिए व्यंग्य मे ऐसा कहते है। तुलनीय : भोज० राँड़ क लइका साँड़ एइसन; छत्तीस० रांड के बेटा साँड़।

राँड़ का बेटा साँड----ऊपर देखिए।

राँड़ का यौवन रात को—दे० 'रांड और सांड़ का यौवन...'।

राँड़ का रोना और पुरवा का बहना व्यर्थ नहीं जाता - विधवा स्त्री रोकर जिसे शाप देती है उसका बुरा अवश्य होना है और जब पूरब की हवा बहती है तो वर्षा अवश्य होती है। तुलनीय : ब्रज० राँड़ि क रोअल अ पुरुआ क बहल बिरिथ नाई जात; पंज० रंडी दा रोणा अते पुरवा दा चलना बेकार नई जांदा।

राँड़ का रोना व्यर्थ नहीं जाता ऊपर देखिए।

राँड़ का साँड़ और छिनाल का छिनरा --विधवा का लड़का खुलेआम और छिनाल का लड़का लुक-छिप के रहता है। आशय यह कि जिसकी जैसी माता होती है उसका वैसा ही लड़का भी होता है। विधवा और छिनाल स्त्री के लड़कों के लिए कहा गया है। तुलनीय : अव० राँड़ कै साँड़ औ छिनार कै बाँका; गढ़० रांड का दिन जौन, छोटा का दिन औन; माल० राँडी पुतर शाहजादा।

राँड़ का साँड सौदागर का घोड़ा, खाय बहुत चले थोड़ा --राँड़ का लड़का और सौदागर का घोड़ा ये दोनों खाते बहुत हैं और काम बिल्कुल नही करते। राँड के लड़के और सौदागर के घोड़े की आज़ादी पर कहा गया है। तुलनीय : पंज० रंडी दा पुत सौदागर दा कौडा खाण मता चलण कट; ब्रज० रांड़ कौ सांड़ बंजारे कौ घोड़ा, खावै बहुत चलै थोड़ा।

राँड़ की गाँठ में माल का टूक --विधवा की गाँठ में चर्खे की माल का टुकड़ा ही रहता है। अर्थात् वह बहुत निर्धन और असहाय होती है।

राँड की दुराशीष से कोई मरता नहीं राँड के शाप दे देने से कोई मर नही जाता। अर्थात् किसी के अनिष्ट चाहने और दुराशीष देने से ही किसी का अनिष्ट नहीं होता। तुलनीय : राज० राँडरी दुराशीश सू टाबर को मरै नी; पंज० रंडी दे साप देण नाल कोई नई मरदा।

राँड के आगे गाली क्या---सुहागिन स्त्री के लिए रांड कह देना ही सबसे बड़ी गाली है। जब कोई सुहागिन स्त्री को राँड़ कहे तब यह लोकोक्ति कही जाती है। तुलनीय : अव० राँड़ कै आगे गारी का, हरि० रांड़ तै फालतू गाली कै; पंज० रंडी अग्गे गाल की।

राँड़ के घर कपिला गाय-- रांड के घर में कपिला गाय का होना। कपिला गाय बड़ी सौभाग्यशाली और शुभ मानी जाती है। जब किसी विपत्ति में फँसे आदमी को सहायता और सुविधा मिल जाती है तो कहते है। या जब किसी निर्धन व्यक्ति को अनमोल वस्तु मिल जाए तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : माल० राँडी रे घरे भीडी।

राँड़ के चरखे की तरह चलता रहता है—विधवा स्त्री हमेशा चरखा चलाती रहती है। जो काम सदा चलता रहे या जो व्यक्ति दिन-रात काम में लगा रहे उसके प्रति कहते हैं।

राँड़ के दिन रेड़ तर भारी--रेड़ (अरंड) के वृक्ष के लिए भी राँड़ भारी होती है। अर्थात् विधवा की कोई सहायता नही करता।

राँड़ के पाँव सुहागिन लागी, हो ओ बाई मेरी-सी —किसी विधवा स्त्री का कोई सधवा स्त्री पैर छुए तो वह कहती है कि तुम भी मेरी तरह हो जाओ, अर्थात् तुम भी विधवा हो जाओ। आशय यह कि जिसका बुरा होता है वह चाहता है कि सबका बुरा हो जाए।

राँड़ के पैर सुहागिन लगी हो जा बहिना मुझ-सी—

ऊपर देखिए। तुलनीय : कौर० राँड के पैर सहागणा लाग्गी, होज्जा भैणा मां सी।

राँड़ के साथ अहिबाती रोवे—विधवा के साथ सधवा भी रोती है। अर्थात् (क) अपने पर दु:ख न पड़ने पर भी लोग दूसरे के साथ उसके दु:ख में रोते हैं। (ख) पास-पड़ोस या अपने संबंधी का दु:ख-सुख में साथ देना ही पड़ता है।

राँड़ को बेटी का बल, रँडुए को रुपये का बल—राँड़ को बेटी का बल इसलिए है कि वह रँडुए के साथ उसका विवाह करके अधिक से अधिक पैसा ले सकती है और रँडुए को धन का बल इसलिए है कि वह किसी विधवा को अधिक-से-अधिक धन देकर उसकी बेटी से विवाह कर सकता है। तुलनीय : अव० राँड़ का बिटिया का जोर, रँडुआ का रूपिया का जोर।

राँड़ को माँड़ ही सुख विधवा के लिए माँड़ मिल जाए तो भी सुख है। आशय यह है कि निर्बल के लिए सामान्य सहारा ही बहुत है।

राँड़ को रोने से ही काम– राँड़ को जीवन-भर दु:ख ही मिलता है, इसलिए जीवन-भर उसे रोना पड़ता है। जब कोई व्यक्ति सदा अपने को बिना कारण ही दुःखी बताए उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० राँडनै रोवण सूं ही काम; पंज० रंडी नूं रोण नाल कम।

राँड़ चाहे हो जाऊँ, पर सपना सच होना चाहिए – पति के मरने का सपना सच होना चाहिए, राँड हो जाऊँ तो कोई ग़म नहीं। हानि चाहे जितनी हो जाय पर हठ नहीं टूटनी चाहिए। जो व्यक्ति अपनी मामूली हठ को रखने के लिए भारी हानि सहने को भी तैयार हो जाए उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० राँड हुईगे धोको नहीं, सपनो तो साचो करणो; पंज० रंडी पावें हो जावां पर सुखना सच होवे।

राँड़ तो बहुतेरी रहें, जो रँडुए रहने दें –रँडुओं से ही विधवाओं का चरित्र बिगड़ता है। आशय यह कि यदि रँडुए अपना चरित्र ठीक रखें तो विधवाओं का चरित्र खराब न न हो। (क) जब किसी को कोई ग़लत काम करने के लिए बाध्य कर देता है तब कहते हैं कि वह ग़लत कार्य न करे यदि लोग बाध्य न करें। (ख) जब कोई विधवाओं के चरित्र पर दोष लगाए और रँडुओं के विरुद्ध कुछ भी न कहे तब कहते हैं। तुलनीय : अव० राँड़ तौ बैइठ रहै, मुला रडुअन जब बैइठैय देंय; हरि० राँड तै रँडापा काट लै पर रंडुवे बी काटूँण दें; राज० राँडां तो रँडापो काढै, पण रँडुवा काढण को दैनी; गढ़० राँड त रैजो पर रंडुआ नी रण देंदा; माल० राँड तो रँडापो काटे पर रँडवा नी काटव दे।

राँड़ तो बहुतेरी सोए रँड़वे भी सोने दें—ऊपर देखिए। तुलनीय : कौर० राँड भतेरी सोव्वै, रँडवे सोण दें।

राँड़ पीछे गाली ना, साँझ पीछे दिन ना -यदि किसी स्त्री को विधवा (राँड) कह दिया जाय तो इसके बाद उसे गाली देने के लिए कुछ रह ही नहीं जाता और सांझ कहने का मतलब है कि अब दिन समाप्त हो गया। तुलनीय : हरि० राण्ड पाच्छै गाल ना, सांझ पाच्छै वार नाँ; पंज० रंडी पिछ्छे गाल नई तरकाली पिछ्छों दिन नई।

राँड़ भइला के सुख कवन, जो निश्चिन्त सो अलन — विधवा स्त्री स्वतंत्र होती है। (क) यदि कोई विधवा होने पर भी स्वतंत्र न हो तो कोई लाभ नहीं। (ख) जब बहुत बड़ी हानि उठाने के बाद भी किसी को कोई लाभ न हो तब भी कहते हैं।

राँड़ भाँड़ अरु **नकटा भैंसा, ये बिगड़ें तब होवे कैसा**—(क) बुरे तो यों ही बुरे होते है, बिगड़ने पर तो उनके बुरे होने की कोई सीमा नहीं रह जाती। (ख) रंडी, भांड, और नकटे भैंसे यों ही दुष्ट हैं और बिगड़ने पर इनकी दुष्टता और भी बढ़ जाती है।

राँड़, भाँड़ औ उलटत गाड़ी, इनकी समझ न आय नाड़ी राँड, भांड और उलटती हुई गाड़ी के संबंध में कुछ पता नहीं चलता। ये तीनों वस्तुएँ किसी के वश की नहीं होती। चरित्रभ्रष्ट विधवा के प्रति व्यंग्य में कहते है। तुलनीय : राज० राँड, भांड उलट्यो गाडो कैरै सारै थोड़ा ही रैवै है?

राँड मरे न खँडहर ढहे विधवा स्त्री जल्दी मरती नहीं और खंडहर जल्दी गिरता नहीं। तुलनीय : अव० राँड मरै न खँडहर ढहै, पंज० रंडी मरे न कार डिगण।

राँड़ माँड़ में ही खुश -दे० 'राँड़ को माँड़ ही सुख…'।

राँड, भाँड, साँड बिगड़े बुरे --इन तीनों के साथ शत्रुता नहीं करनी चाहिए क्योंकि राँड (विधवा) भाग जाती है, भाँड़ बदनामी करता है और सांड मारता है।

राँड़ सौगी साँड़—विधवा स्त्री सांड की तरह होती है। आशय यह है कि विधवा स्वतंत्र होने के कारण उद्दंड हो जाती है।

राँड़ रँडापा तब काटे, जब रँडुए काटन दें दे० 'राँड़ तो बहुतेरी…'।

राँड़-राँड़ बैठीं तो किसको दे असीस -जहाँ कई

विधवाएँ इकट्ठी हो जायँ तो वहाँ कौन किसे आशीर्वाद देगी। अर्थात् कोई किसी को आशीर्वाद नहीं देगी। आशय यह है कि जहाँ पर कई दुखियारे इकट्ठे हो जाते हैं वहाँ दुख के सिवाय कोई अन्य चर्चा नहीं होती।

रांड़-रांड़ नहीं तो सांड—विधवा या तो शांत प्रकृति की होती है या धृष्ट स्वाभाव की। तुलनीय : भोज० रांड-रांड़ नाहीं तऽ साँढ़।

राँड़-राँड़ रोवें साथ में कुमारी भी रोवे कि मुझे बर नहीं मिलता—विधवा तो विधवा होने के कारण रो रही है लेकिन उसके साथ में क्वाँरी लड़की भी रो रही है कि मेरी शादी नहीं हुई। जब कोई विपत्ति में पड़ने के कारण दुखी हो और दूसरा भोग-विलास के लिए दुखी हो तो दूसरे के प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

राँड़ रोए तो रोए, सधवा क्यों रोए—विधवा का रोना तो ठीक है लेकिन सधवा का रोना ठीक नहीं। जब कोई साधन-संपन्न होते हुए भी असहायों जैसे गिड़गिड़ाता फिरता है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : छत्तीस० राँडी रोय त रोय, संग भतारी कस रोय; पंज० रंडी रोवे तां रोवे, सुहागन कैनूं रोवे।

राँड़ रोवे, कुंवारी रोवे, साथ लगे सत खसमो रोवे—विधवा और क्वाँरी तो रो ही रही हैं साथ में वह भी रो रही है जिसके सात पति हैं। (क) किसी के प्रति अधिक सहानुभूति प्रदर्शित करने पर कहा जाता है। (ख) जब कोई सपन्न होकर भी दुखियों जैसा रोता फिरता है तब उसके प्रति भी व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० रांड रोवै, क्वारी रोवे, साथ लगी सतखसमी रोवे; पंज० रंडी रोवे कुआरी रोवे नाल लग के खसम वाली रोवे।

राँड रोवे माँग खातिर निपूती रोवे कोख खातिर—विधवा स्त्री पति के लिए रोती है और निःसंतान स्त्री बच्चे के लिए। आशय यह है कि अपनी-अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए सभी परेशान होते हैं।

राँड रोवें सेर-सेर, सधवा रोवें दो-दो सेर—विधवाओं से अधिक सधवाएँ रोती हैं। जब कोई धनी व्यक्ति निर्धन से भी अधिक रोता फिरता है तब उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

राँड़, साँड़ अरु नकटा भैंसा, ये बिगड़ें तो होवें कैसा—दे० 'रांड़, भाँड़ अरु नकटा···'।

राँड़ साँड़ बिगड़े बुरे—दे० 'राँड़, भाँड़ अरु नकटा···'। तुलनीय : अव० राँड़ साँड बिगरे बुरे।

राँड़ साँड सीढ़ी संन्यासी, इनसे बचे तो सेवे काशी—काशी-निवास के लिए इन चारों से सचेत रहने की आवश्यकता है। काशी में सीढ़ियाँ बहुत ऊँची और पत्थर की होती हैं जिन पर से गिरने का सदैव डर रहता है, वहाँ की गलियों में साँड़ भी अधिक घूमते हैं, साधु एवं विधवा संन्यासिनियों की भी वहाँ कमी नहीं होती। तुलनीय : अव० राँड़, साँड, सीढ़ी, संन्यासी, इन तीनौं से बचै तौ सेवै काशी; राज० राँड, साँड, सीढ़ी, सन्यासी, इणसू बचै तो सेवै काशी।

राँड से बढ़कर कोसना नहीं—दे० 'राँड के आगे···'।

राँड़ी का ब्याह चुपके-चुपके—(क) विधवा स्त्री की शादी छिपे तौर से जाती है। (ख) दुःख के कार्य का प्रदर्शन नहीं किया जाता। तुलनीय : छत्तीस० रांडी के बिहाव चुप्पे-चुप्पे।

राँडी के घर माँड़ी—विधवा के घर माँड़ ही मिल सकता है। आशय यह है कि निर्धन व्यक्ति के यहां अच्छी वस्तु नहीं मिल सकती।

राँधने वाली एक बार तो चख ही लेती है—जो स्त्री खाना पकाएगी वह एक बार प्रत्येक वस्तु को अवश्य ही चखेगी। जो व्यक्ति स्वयं किसी काम को करता है वह उसमें से अतिरिक्त लाभ अवश्य उठाता है। स्वयं काम करनेवालों को प्रोत्साहित करने के लिए घर की बड़ी-बूढ़ी स्त्रियां कहा करती हैं। तुलनीय : माल० राँधवा वारी एक दाण चाखेज; पंज० रिनन वाली ता इक बार ही चख लैंदी है।

राँधे सो रानी भरे सो लौंड़ी—जो भोजन पकाती है वह रानी कहलाती और जो पानी भरती है वह दाई। अर्थात् (क) रसोई बनाना मालकिन का और पानी भरना दाई का काम है। (ख) कर्म के अनुसार ही मनुष्य का सम्मान होता है। तुलनीय : अव० राँधै तौ रानी, भरै तौ लौड़ी; पंज० रिने ओह रानी लौंडी वरे पाणी।

राँधें ते रानी पानी भरें ते लौंडी—ऊपर देखिए।

राई अस बिटिया भाँटा अस आँखि—राई के दाने जैसी छोटी लड़की की बैंगन (भाँटा) जैसी बड़ी-बड़ी आँखें हैं। अनुपातहीनता पर व्यंग्य।

राई का सौदा रात ही गया—राई का सौदा जो रात को हो रहा था वह रात में ही समाप्त हो गया; अब वह समय बीत चुका। अवसर निकल जाने पर काम खोजने वाले के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० रायाँरा भाव राते गया।

राई को पर्वत करे और पर्वत राई समान—ईश्वर छोटे को क्षण में बड़ा-से-बड़ा और बड़े को छोटे-से-छोटा

बना सकता है। ईश्वर की महिमा पर लोग कहते हैं। तुलनीय : राज० राईनै परबत करै, परवत राई मान।

राई घटे न तिल बढ़े—मनुष्य के घटाने से न तो राई-भर घट सकता है और न ही तिल भर बढ़ सकता है। मनुष्य के करने से कुछ नहीं हो सकता। भाग्य में जो वस्तु जितनी होगी उतनी स्वयं ही मिल जायगी। भाग्यवादियों का कहना है कि अधिक दौड़-धूप करने से कुछ नहीं होता। तुलनीय : राज० राई घटै न तिल वधै, रह रै, जीव निसंक; पंज० राई कटे न तिल बदे।

राई भर नाता, न गाड़ी भर आशनाई—दे० 'रत्ती भर नाता...'।

राउर आयसु सिर सब ही के—आपकी आज्ञा सबको शिरोधार्य है। बड़े के प्रति कहा जाता है।

राख आग को छिपा नहीं सकती- अर्थात् झूठी बातों द्वारा सत्य को नहीं छिपाया जा सकता, वह अवश्य प्रकट होता है। तुलनीय : असमी—छाइरे जुइ ढाका नाथाय्; पंज० सुआ अग्ग नूं लुका नईं सकदी; अं० The truth will come out.

राखनहार भए भुज चार तो क्या बिगड़े भुज दो के बिगाड़े—जब चार भुजाओंवाला जिसका सहायक है तो दो भुजाओंवाला उसका क्या बिगाड़ सकता है? अर्थात् कुछ नहीं। आशय यह है कि ईश्वर जिसकी सहायता करता है, मनुष्य उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता। तुलनीय : अव० राखनहार भयां भुजचारी तौ का बिगरी दुइ भुज कै उखारी; राज० राखणहार भया भुज च्यार तो क्या बिगड़ै भुज दो के बिगाड़े।

राख पत रखाव पत—दे० 'रख पत रखा पत।'

राख पत सो रखा पत—ऊपर देखिए।

राखेहु नयन पलक की नाईं—जैसे पलकें नेत्र की रक्षा करती है उसी तरह किसी व्यक्ति या वस्तु की बहुत मुस्तैदी से रक्षा करने के लिए कहते हैं।

राखो मेल कपूर में, हींग न होय सुगन्ध—कपूर के साथ हींग रखने पर भी हींग में सुगन्ध नहीं आती। अर्थात् तुच्छों के साथ रहने पर भी बुरों की बुराई नहीं जाती। जब कोई अच्छी संगति में पड़कर भी नहीं सुधरता तब उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

राग का घर वैराग—वैराग्य धारण करने पर ही मनुष्य भजन-भाव में लगता है। तुलनीय : राज० रागरो घर बैराग।

राग ताल का हाल न जाने, दोनों हाथ मजीरा—गाना-बजाना बिलकुल नहीं जानते लेकिन दोनों हाथ में मजीरा लिए हुए हैं जैसे सब कुछ जानते हों। बाहरी दिखावे या आडंबर पर कहते हैं।

राग, रसोई, पगड़ी कभी-कभी बन जाए—भोजन, पगड़ी और गीत ये सर्वदा अच्छे नहीं बनते है। संयोग से ही कभी-कभी बहुत अच्छे बन जाते है। तुलनीय : हरि० राग, रसाई, पागड़ी कदे-कदे बण्य ज्या।

राग, रसोई, पागड़ी कभी-कभी बन जाए—ऊपर देखिए।

राग से रोय ओ राग से गाय, दिल के सबके वही सुहाय—राग से गाना और रोना ही सबको अच्छा लगता है। प्रत्येक कार्य चाहे वह साधारण हो क्यों न हो ढंग और समयानुसार ही अच्छा लगता है। तुलनीय : भीली—रागे गाव ने रागे रोवो ते हाऊ लागे; पंज० राग नाल रोवे राग नाल गावे सब दे दिल नूं ओही सुहावे।

राचें का पान बिरांचे की मेंहदी—यदि कोई वस्तु प्रेम व आदर के साथ दी जाय तो पान के समान है नहीं तो मेंहदी है। जब किसी को कोई वस्तु श्रद्धा से न दी जाय तब कहा जाता है।

राज का राज में, ब्याज का ब्याज में, नाज का नाज में—राजा का धन राज में, सर्राफ़ का क़र्ज़ देने में और गल्ले वाला धन गल्ले मे ही व्यय होता है। आशय यह है कि जहाँ की कमाई होती है वहीं पर खर्च होती है।

राज की आस करे पर सामना न करे- राज्य से लाभ की आशा करना तो उचित है किन्तु युद्ध करना उचित नहीं। राज्य का सामना या विरोध करने में हानि ही होती है। बड़ों से संघर्ष करने में अपनी ही क्षति होती है। तुलनीय : राज० राजरी आस करणी, पण आसंगो नहीं करणो।

राज तो पोपाबाई का पर लेखा पाई-पाई का—पोपाबाई का राज्य होने पर भी पैसे-पैसे का हिसाब-किताब रखा जाता है। किसी बदनाम या गड़बड़ीवाले स्थान पर भी सजगता रखनेवाले की प्रशंसा करने के लिए कहते है। तुलनीय : माल० राज तो पोपाबाई रो पर लेखो राई-राई रो; पंज० राज ते पोपाबाई दा पर लेखा पाई-पाई (पैहे-पैहे दा)।

राज नहीं है पोपाबाई का—पोपा बाई का राज्य नहीं है। मनमाना कार्य करने से रोकने के लिए कहते है। तुलनीय : ब्रज० पोपा बाई कौ राजै।

राजपुर प्रवेशन्याय—राजा के नगर मे प्रवेश करने का दृष्टान्त। यहाँ तात्पर्य यह है कि राजाओं के नगर में

शिष्टता तथा अनुशासन के साथ प्रवेश करना चाहिए।

राजपूत अगहन, अहिर आषाढ़, भादों भैंसा, चैत चमार— राजपूत अगहन में, अहीर आषाढ़ में, भैंसा भादों में, और चमार चैत में अकड़ दिखाते हैं। तुलनीय : भोज० रजपूत अगहन अहिर असाढ़, भादो भंइसा चइत चमार।

राजपूत को 'अरे' गाली जैसा—राजपूत को 'अरे' संबोधन गाली जैसा मालूम पड़ता है। राजपूत अपमान-जनक संबोधन सहन नहीं करता। तुलनीय : राज० रजपूतनै रे कारैरी गाळ।

राजपूत, जाट, मूसल के धनुहीं, टूट जात नवे नहिं कबहीं—राजपूत और जाट दोनों मूसल के धनुष के समान है जो झुकाने से झुकते नहीं भले ही टूट जायें। आशय यह है कि ये दोनों बड़े अकड़बाज़ होते है। दोनों की ज़िद और कट्टरपन पर कहते हैं।

राजहंस बिन को करै, छीर नीर को दोय – राजहंस के बिना दूध और पानी को कोई अलग नहीं कर सकता। आशय यह कि बिना पारखी के गुण व दोष का विचार कौन कर सकता है, अर्थात् कोई नहीं कर सकता। अच्छे और बुरे की पहचान पर कहा गया है। तुलनीय : मरा० राज हंसा वाचून दूध पाणी वेगळे वेगळे कोण करणार।

राजा आगे राज, पीछे चलनी न छाज –पति के सामने ही जो कुछ सुख है, मिल जाता है उसके मरने के बाद तो दु.ख के सिवाय कुछ नहीं मिलता। विधवाओं का कथन है।

राजा इतर लगावहीं, लेत सभाजन बास –इत्र तो राजा लगाते है पर उसकी सुगंध सभा के सभी लोग प्राप्त करते हैं। भले आदमियो की सगति से स्वतः ही लाभ हो जाता है।

राजा करे सो न्याय, पांसा पड़े सो दांव—फ़ैसला करने वाला उलटा-सीधा जो भी कह दे वही न्याय है और जो पासे मे पड़ जाय वही दाँव है। तुलनीय : अव० राजा करै उ निआव, पासा पलटै उ दांव; राज० राजा करै सो न्याव, पाँसो पड़ै सो दांव; ब्रज० राजा करै सो न्याव, पासा परै सो दाव।

राजा कर्ण का पहरा है— अर्थात् बहुत कड़ा पहरा है। तुलनीय : ब्रज० राजा कर्न कौ पहरौ।

राजा कहें, वही रानी –राजा जिस स्त्री को रानी कहेगा सभी उसे रानी कहेंगे। बड़े आदमी जिसका आदर करेंगे तो उसका आदर छोटों को भी करना पड़ेगा। अर्थात् बलवान या धनवान की बात सभी को माननी पड़ती है। तुलनीय : राज० राणांजी थापै जकी ही राणी; पंज० राजा कवे ओही राणी।

राजा का खज़ाना और गुंडों के मुँह -राजा का धन तथा गुंडों की बातें अर्थात् गाली-गलौज कभी समाप्त नहीं होते। जब कोई बदमाश किसी सज्जन मनुष्य को गालियाँ दे तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : गढ़० रज्जा का भंडार अर संकलूका गिच्या; पंज० राजे दा पैहा अते गुंडयो दा मूं।

राजा का गाँव मूसहर बाँटे -गाँव है राजा का और उसे मूसहर (एक निम्न जाति) बाँट रहे हैं। अर्थात् जिसका धन हो वह कुछ न बोले और दूसरे मालिक बनकर उसका उपयोग करें तब कहते है।

राजा का तेल जले मसालची का पेट फूले- तेल जलता है राजा का और पेट फूल रहा है मशालची का। अर्थात् जब खर्च किसी और का हो और उसे देखकर दूसरा व्यर्थ में परेशान हो, तब उसके प्रति व्यंग्य मे कहते हैं। तुलनीय : कौर० राजा का तेल जले मसालची की गाँड जले।

राजा को तेल जले मसालची की गाँड फटे- ऊपर देखिए।

राजा का तेल पल्लू में ही भला –राज्य की ओर से मिलने वाला तेल बर्तन न होने की दशा में पल्लू मे ही ले लेना अधिक उचित है ताकि लेने वालो की गणना में उसका नाम भी आ जाय और भविष्य मे भी मिलता रहे। एक बार थोड़ी-सी हानि सहकर भी यदि भविष्य में लगातार लाभ मिले तो हानि के संबंध में सोच-विचार नहीं करना चाहिए। तुलनीय : राज० रावळै रो तेल पलै में ही चोखो।

राजा का दान, प्रजा का स्नान- जो पुण्य राजा को दान देने मे मिलता है वही पुण्य प्रजा को केवल स्नान करने से ही मिल जाता है। अर्थात् सबको अपनी सामर्थ्य के अनु-सार दान-पुण्य करना चाहिए। सामर्थ्य के अनुसार देने पर कहा जाता है। तुलनीय : गढ़० राजा को दान, अर पार जा को अस्नान; पंज० राजा दा दान अते परजा दा नान; ब्रज० राजा कूं दान, परजा कूं असनान।

राजा का दूजा, बकरी का तीजा, दोनों खराब—राजा का दूसरा लड़का और बकरी का तीसरा बच्चा ये दोनों बेकार होते हैं। क्योंकि राजा का बड़ा (पहला) लड़का ही राज्य का अधिकारी होता है, दूसरे लड़के का कोई महत्त्व नहीं होता तथा बकरी के दो ही स्तन होते हैं जिससे तीसरे बच्चे को कष्ट होता है। तुलनीय : पंज० राजा दा दूजा, बकरी दा तीजा दोनों माड़े।

राजा का धन तीन खाए, रोड़ा, घोड़ा और दंत निपोरा

—राजा का धन रोड़ा, घोड़ा और याचक ही खाते हैं।

राजा का परचाना, और साँप का खिलाना बराबर है —राजा से विशेष परिचय बढ़ाना और सांप को भोजन देना दोनों खतरनाक है। क्योंकि राजा किसी को अपराधी पाने पर बिना दंड दिए नहीं छोड़ सकता और सांप भी मौक़ा पाने पर बिना काटे नहीं रह सकता। तुलनीय : भोज० राजा क परिकावल अ साँप क रिक्यावल बराबर हऽ।

राजा किसके पाहुने, और जोगी किसके मीत – राजा और योगी किसी के मित्र नहीं होते है क्योंकि ये स्वतन्त्र विचार के होते है। राजा कुछ भी कर सकता है और योगी कहीं भी जा सकता है। राजा और योगी से मित्रता करने पर कहते हैं। तुलनीय : भोज० राजा केकर हित जोगी केकर मीत; अव० राजा केकर महिमान, औ जोगी केकर मीत।

राजा की कही सबने सही राजा कटु से कटु बात भी कह दे तो सभी सहन कर लेते है। जब कोई बलवान किसी को अनुचित बात कहे और वह कुछ भी उत्तर न दे पाए तो उसके (बलवान) प्रति इस प्रकार कहते है। तुलनीय : गढ़० रज्जा मारो, जगतर मारो; पंज० राजा दी कही सबने लई।

राजा की प्रीत बालू की भीत राजा की प्रीति रेत (बालू) की दीवार की भांति होती है। जिस तरह रेत की दीवार कभी भी गिर सकती है उसी प्रकार राजा की प्रीति कभी भी टूट सकती है। अर्थात् राजा की मित्रता अस्थायी होती है। तुलनीय : पंज० राजा दा पयार रेत वरगा; अं० Repose no confidence in princes.

राजा की बुधि जात है किए निबुधि परधान- -मूर्ख मंत्री रखने से राजा की भी बुद्धि चली जाती है।

राजा की बेटी करमों की हेठी -लड़की तो राजा की है लेकिन भाग्यहीन है। जब किसी सम्पन्न परिवार की लड़की का विवाह संयोगवश किसी निर्धन परिवार मे हो जाय तब कहते हैं।

राजा की बेटी, खाने को भूजा-बनउर– बड़े लोग जब कंजूसी करें, छोटा या साधारण काम करे या कोई भी ऐसा काम करें जो उनकी स्थिति के लिए बहुत छोटा हो तो कहते है।

राजा की बेटी से मंगते का ब्याह- -साहस और परिश्रम से प्रत्येक कार्य सम्भव हो सकता है। (ख) जब कोई निर्धन व्यक्ति अपने साहस और परिश्रम के द्वारा बहुत बड़ी सपत्ति अर्जित कर लेता है तो उसके प्रति प्रशंसा या आश्चर्य व्यक्त करने के लिए कहते हैं। (ख) जब किसी ग़रीब परिवार के लड़के का विवाह संपन्न परिवार की लड़की से हो जाय तब भी कहते हैं। तुलनीय : राज० बादस्यारी बेटीसूं फकीर रो व्यांव; पंज० राजे दी धी मंगते नाल ब्याह।

राजा की राह सिर के ऊपर भी - राजा यदि चाहे तो प्रजा के सिरों के ऊपर से भी राह बना लेता है। राजा या बलवान जो चाहे सो कर सकता है। तुलनीय : राज० राजरा मारग माथै ऊपर; पंज० राजे दा राह सिर उत्ते वी।

राजा की रोटी खाते हैं राजा की रोटियां खाते है अर्थात् मुफ्त की खाते है। जो व्यक्ति कमाते-धमाते न हों और दूसरों की कमाई पर मौज उड़ाते हों उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० रावळै रोट्यां पावो हो; पंज० राजे दी रोटी खंदे हन।

राजा की सभा नरक में जाए- -क्योंकि ऐसी सभा में चाटुकारिता बहुत की जाती है। जब किसी के पास बैठकर खुशामद की बाते करें और उसको प्रसन्न करने के लिए झूठ बोलें तब कहते है।

राजा के अगाड़ी घोड़ा के पिछाड़ी राजा के सामने और घोड़े के पीछे चलने से हानि का भय बना रहता है। तुलनीय : पंज० राजे दे अग्गे घोड़े दे पिच्छे।

राजा के एक गाँव प्रजा के सौ गाँव—राजा की प्रतिष्ठा केवल उसके राज्य तक ही सीमित रहती है जबकि प्रजा का सम्मान हर जगह हो सकता है, यदि वह ईमानदारी से अपना काम करे।

राजा के कान होते हैं आँखे नहीं शासक बात को सुनकर ही विश्वास कर लेते है। वे स्वयं किसी बात की जाँच तो करते नहीं, अपितु कोई जो कुछ बता देता है उसी पर विश्वास कर लेते है। चुग़ली सुननेवाले शासकों के प्रति कहते है। तुलनीय : माल० राजा रे कान वे, शान नी वे; पंज० राजा दे कन हुंदे हन अखाँ नई।

राजा के घर आई और रानी कहलाई --जिस स्त्री को राजा अपना लेता है वह रानी कहलाने लगती है। संगति का बहुत असर होता है। अच्छे लोगों की सगति में आने पर सामान्य व्यक्ति का भी सम्मान होने लगता है। तुलनीय : अव० राजा के घर गय औ रानी भय; पंज० राजे दे घर आयी ते रानी खुआई।

राजा के घर काज और हमारे घर ठक-ठक—ब्याह पड़ा है राजा के यहां और परेशानी होती है हम लोगों के यहाँ। आशय यह कि राजा के घर शादी-विवाह पड़ने पर प्रजा से ज़बरदस्ती कर वसूल किया जाता है। जब प्रजा से राजा के यहाँ शादी पड़ने पर ज़बरदस्ती कर वसूल किया

जाय तब प्रजा कहती है। तुलनीय : अव० राजा कँ घर मा कारज, हमरँ घर मा ठक ठक।

राजा के घर में मोती का अकाल—जिसके यहाँ जिस चीज़ के होने की पूरी संभावना हो और न मिले तो कहते हैं। तुलनीय : राज० राजारै घरै मोत्यांरो काळ; अव० राजा कँ घर मोतिअल कँ काल; गढ़० राजो का घर मौत्यू अकाल कखछो; पंज० राजा दे कर विच मोतियां दा काल।

राजा के घर मोतियों का काल—ऊपर देखिए।

राजा के घर मोती का अकाल—दे० 'राजा के घर में मोती…'। तुलनीय : छत्तीस० राजा के घर मोती के का दुकाल।

राजा के नौकर महाराज—राजा के नौकर महाराजा के समान होते है। प्रायः बड़े लोगों के नौकर-चाकर अधिक रोब दिखाते हैं, इसीलिए ऐसा कहते है।

राजा को मोती का दुख—दे० 'राजा के घर मे मोती…'।

राजा खावं सत्तू घोल, नौकर खावं लड्डू मोल—राजा सत्तू खाते है और नौकर लड्डू। जहाँ मालिक की आर्थिक स्थिति सोचनीय हो किंतु नौकर मज़े उड़ाते हों ऐसी स्थिति के प्रति कहते हैं। तुलनीय : माल० ठाकर खावे ठीकरी ने चाकर खावै चूरमो; पंज० राजा खावे सत्तू कोल के नौकर खाण लड्डू तोल के।

राजा जी मर गए, बुरा काम कर गए—बुरा काम भी किया और उसका लाभ मिलने से पहले ही मर भी गए। जब कोई व्यक्ति संपत्ति आदि के लिए बुरे काम करे किंतु लाभ मिलने से पहले ही उसकी मृत्यु हो जाए तो उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० जेठाज्यू मरिग्या कुकर्म करिग्य।।

राजा छूए और रानी होय—साधारण स्त्री को भी यदि राजा चाहे तो रानी हो जाती है। आशय यह कि (क) जिस पर बड़े की कृपा-दृष्टि हो जाय वही बड़ा आदमी बन सकता है। जब किसी बड़े आदमी की बदौलत कोई छोटा आदमी ऊपर उठ जाय तब कहते हैं। (ख) जब कोई किसी बड़े या बलवान आदमी के संपर्क में आकर अनुचित कार्य करे और भयवश कोई उसे कुछ कह न सके तब भी कहते हैं। (ग) चरित्रभ्रष्ट स्त्री के प्रति भी व्यंग्य में कहते हैं जो किसी बड़े के संपर्क में आकर इठलाती फिरती है। तुलनीय : अव० राजा छुए रानी होए; पंज० राजा हथ लावे अते रानी होवे।

राजा छोड़े नगरी जो चाहे सो लेवे—राजा ने नगर को छोड़ दिया अब जिसकी इच्छा हो वह उसे अपना ले। जिस वस्तु से अपना कोई मतलब नहीं है उसे जो चाहे सो ले सकता है। निष्प्रयोजनीय वस्तु पर कहते हैं।

राजा जोगी किसके मीत—दे० 'राजा किसके पाहुने…'।

राजा थे सो चले गए रह गए देस के चोर—राजा तो सभी चले गए और रह गए देश भर के चोर। आजकल के धनी लोग बहुत कंजूस और शोषक हैं। उन्ही के प्रति व्यंग्योक्ति है। तुलनीय : राज० ठाकर गया ठग रहया मुलकरा चोर।

राजा नल पर विपत्ति पड़ी, भुनी मछली जल में गिरी—नीचे देखिए।

राजा नल पर विपत्ति पड़ी, भूजी भूनी मछली जल में पड़ी—जब एक दुःख आता है तो और भी बहुत से दुःख आने लगते हैं। और दुखिया पर ऐसे दुःख भी आते हैं जो साधारणतः सह्य नहीं लगते। (राजा नल पर जब विपत्ति पड़ी तो भूजी हुई मछली भी कूदकर पानी में चली गई, ऐसा प्रसिद्ध है)। तुलनीय : छत्तीस० राजा नल पर विपत परी, भूंजे मछरी दहरा मां परी।

राजा न्याय न करेगा तो घर तो आने देगा—दे० 'काजी न्याव न करेगा…।' तुलनीय : ब्रज० राजा न्याव न करैगौ तौ घर तौ जान देगो।

राजा, बादल एक समान—राजा और बादल दोनों एक समान होते हैं, क्योंकि दोनों ही प्रसन्न होने पर धन-धान्य से परिपूर्ण कर देते हैं और अप्रसन्न होने पर दाने-दाने को तरसा देते है। दोनों ही अप्रत्याशित रूप से आते है और चले जाते हैं। तुलनीय : गढ़० रज्जा को चलणो अर मेघ को बरसणो; पंज० राजा बदल इको जिहे; ब्रज० राजा बादर एक समान।

राजा बिन नगरी सूनी—राजा के बिना नगर सूना हो जाता है। राजा जहाँ जाता है वही उसका वैभव और फ़ौज भी साथ जाती है, इसी कारण उसकी नगरी सूनी हो जाती है। अर्थात् धनी और वैभवशाली व्यक्तियों से ही नगर की शोभा होती है। तुलनीय : राज० राजा बिना नगरी सूनी; पंज० राजा बगैर नगरी सुन्नी।

राजा बुलावे, ठाढ़े आवे—राजा की आज्ञा पाने पर लोग जिस दशा में रहते हैं उसी में फ़ौरन चले आते है। आशय यह कि शक्तिशाली का कार्य तुरंत होता है। जब किसी बलवान का कार्य जल्द हो और किसी ग़रीब का बहुत विलंब में हो तब कहते हैं।

राजा बुलावे, दौड़े आवे—ऊपर देखिए।

राजा बोले, सब काँपे राजा की आवाज़ सुनते ही सब कांप जाते हैं, क्योंकि न मालूम वह कैसी आज्ञा दे। बलवान से सभी डरते हैं, इसी से कहते हैं। तुलनीय : माल० राजा बोले ने ठाड़ी आवे।

राजा भीम की कजा, राम की रजा—राम (ईश्वर) की इच्छा से ही भीम भी मरे। आशय यह है कि ईश्वर की मर्ज़ी के खिलाफ़ कोई काम नही होता।

राजा भोज भरम के भूले, घर-घर है मिट्टी के चूल्हे - व्यर्थ में किसी को भ्रम में नहीं रहना चाहिए कि वह बहुत महान है। हर व्यक्ति किसी न-किसी दृष्टि से छोटा भी होता है।

राजा माने सो रानी छानी बीनती आनी—जिसको राजा मान ले, वही उसकी रानी हो जाती है। आशय यह कि बड़े की कृपादृष्टि जिस पर हो जाती है वही बड़ा हो जाता है। जब किसी छोटे मनुष्य पर बड़े की कृपादृष्टि हो तब कहते हैं। तुलनीय : राज० राजा माने जकी राणी, और भरी पाणी; माल० राजा माने जो राणी, छाणां बीणती आणी।

राजा योगी किसके मीत—दे० 'राजा किसके पाहुने'।

राजा रखे रानी खावे --राजा पैदा करता है और रानी ख़र्च करती है। अर्थात् पुरुष कमाता है और स्त्री ख़र्च करती है। पुरुष कमाए और स्त्री खर्च करे तब कहते हैं।

राजा राज प्रजा चैन/सुखी - जब राजा न्यायी होता है तो प्रजा सुख से रहती है। राजा के निष्पक्ष न्याय पर कहते है।

राजा रूठेगा, अपनी नगरी लेगा—राजा बहुत गुस्से में आवेगा तो अपना राज्य लेगा यानी अपने राज्य से निकाल देगा और क्या करेगा। जब कोई आदमी अपनी स्वाधीनता रखने के लिए सब तरह के कष्ट सहने को तैयार हो जाता है तब कहते हैं। तुलनीय : अव० राजा रूठि है आपन राज लेइ हैं, औ रानी रूठि है आपन सोहाग लेइहैं।

राजा रूठेगा अपनी नौकरी लेगा—राजा रूठ भी जायगा तो अपनी नौकरी से अलग कर देगा। जब कोई व्यक्ति अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए रोज़ी पर भी लात मारने को तैयार हो जाय तो कहते हैं। तुलनीय : राज० रानी रूठसी तो आपरो सुवाग लैसी; पंज० राजा रुससेगा अपनी नौकरी लवेगा।

राजार्थोपयिकं नित्ययुष्ट्रो बहति कुंकुमम्—कुंकुम (लाल रंग) ऊँट द्वारा ढोया जाता है (अतः यह ऊँट की पीठ पर स्थित रहता है)। परन्तु इसका (कुंकुम) राजा द्वारा उपयोग किया जाता है। तात्पर्य यह है कि कुंकुम का का संबंध राजा से अधिक और ऊँट से कम है। वस्तु का प्रयोक्ता वस्तुवाहक की अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण है।

राजा लटे तो किससे कहे—यदि बड़े आदमी की अवनति हो तो वह किससे कहे? अर्थात् वे किसी से नही कह सकते।

राजा सिर का मालिक है, नाक का नहीं—शासक या स्वामी अपने अधीन व्यक्ति का सिर कटवा सकता है, किंतु किसी की इज्ज़त नही उतरवा सकता। जब कोई सबल होने के कारण किसी की आबरू पर प्रहार करना चाहता है तब उसके प्रति कहते है। तुलनीय : माल० राजा माथा रो धणी है पर नाक रो धणी नी है।

राजा से डरूँ, मौत से नहीं --राजा से डरता है, मृत्यु से नहीं। कठोर या निर्दयी शासक के प्रति कहते हैं।

राजा हरिश्चंद्र पर बिपत्ति पड़ी भूजी मछली जल में गिरी (या पड़ी)—दे० 'राजा नल पर विपत्ति…'।

राजा होकर खाऊँगा क्या ?--किसी बड़े पद पर पहुँचने पर बहुत बननेवाले के प्रति कहा जाता है। अर्थ यह है कि राजा के पद पर जाकर भी अनाज ही खाया जाता है अर्थात् बड़े होने पर भी कोई प्रकृति के नियमों को नही बदल सकता। अतः ऐसी बातें दिमाग़ में लाना मूर्खता है।

राज़ी का काम सबसे अच्छा—खुशी से व्यक्ति जो कुछ कर दे वही सबसे अच्छा है। आशय यह है कि किसी से दबाव देकर कुछ कराना अच्छा नहीं होता। तुलनीय : पंज० राज़ी दा कम सबतो चंगा।

राज़ी से दूध न पीए, जबरन पीए मूत -प्रेम से कहने से दूध नहीं पीता और ज़बरदस्ती पिलाने से मूत्र (मूत) पी जाता है। जो व्यक्ति प्रेम से कहने से अच्छा कार्य न करे और दंडित होने पर घृणित काम भी करने को तैयार हो जाय उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : भीली --ऊबा ऊबा दूध पाए ते नी पीए, आड़ो पाड़ी ने मूत पाए ते पीए; पंज० राजी नाल दुद न पीवे जबरदस्ती पीवे मूतर।

राजी से सब कोउ नवै, जबरन नवै न कोय - मित्रता या प्रेम से संसार के सभी काम हो सकते हैं, किंतु बलपूर्वक नही हो सकते। जब कोई किसी सहज काम को कराने में उद्दंडता या उग्रता दिखाए और उसमें असफल रहे तो उसके शिक्षार्थ कहते हैं। तुलनीय : गढ़० मैंसी पर वदाली भी बुणी जामेंद कुमैसी निगालो भी नि बुभेंद; पंज० राजी नाल सब मनन जबरदस्ती मने न कोई।

राणाजी कहैं वही उदयपुर—राणाजी जिस स्थान को

कहेंगे उसी को उदयपुर मानना पड़ेगा। (क) महान् व्यक्ति जो बात कहते हैं उसी को सब मानते है। (ख) बलवान व्यक्ति जिस बात को मनवाना चाहें उसे मनवा लेते हैं। तुलनीय : राज० राणोजी थरपै जठे ही उदैपुर।

राणाजी रूठेंगे अपना उदयपुर रखेंगे—दे० 'राजा रूठेगा अपनी नगरी ...'। तुलनीय : राज० राणो जी रूठसी आपरो उदैपुर राखसी।

रात अँधियारी परसैया घर का – परसनेवाला घर का है और रात भी अँधेरी फिर डर किसका है ? जहाँ कोई सार्वजनिक संपत्ति या धन को समुचित ढंग से न बाँटकर अपने सगे-संबंधियों में बाँट दे या उनको ही लाभ पहुँचाए तो उसके प्रति ऐसा कहा जाता है। तुलनीय : गढ़० अपणो देंदारो, कोणो अंध्यारो।

रात अँधेरी और हरजाई का क्या भरोसा ?—अँधेरी रात मे सब बुरे काम होते हैं तथा दुश्चरित्र व्यक्तियों का भी कोई भरोसा नहीं होता। अंधकार में कोई कब क्या कर डाले कुछ कहा नहीं जा सकता तथा दुष्ट लोग कब क्या कर डाले या कब कौन सी मुसीबत खड़ी कर दें नहीं कहा जा सकता। तुलनीय : भीली—रात रांका ना हूँ भरोसा करवा; पंज० हनेरी रात बिच हरजाई दा की परोसा।

रात करे छाप धूप दिन करे छाया, कहैं घाघ अब बरखा गया– घाघ कहते है कि अगर रात मे बादलों की घटा हो तथा दिन में बादल बिखर जाएँ और उसकी छाया पृथ्वी पर पड़े तो समझ लो कि अब बरसात बीत गई।

रात की कपास दिन में भी पड़ी —जो कपास रात को कातने के लिए रखी थी वह रात के साथ दिन में भी पड़ी रही। जो व्यक्ति आलस्यवश कार्य को निश्चित समय में पूरा नहीं कर पाते उनके प्रति व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : भीली -राती नो दणू दाड़े नी खूटे।

रात की मालजादी और दिन की खूजादी—केवल रात को वेश्याएँ वेश्यावृत्ति करती हैं दिन को वे गृहस्थिन बन जाती है। वेश्याओं पर कहते हैं।

रात को जोगी जागे या भोगी—रात्रि में योगी जागता है योग साधने के लिए और भोगी विलास करने के लिए। जब कोई व्यक्ति किसी कार्य को प्रतिदिन विशेष समय में ही करे और पूछने पर न बताए तो उसके प्रति हास्य से कहते हैं। तुलनीय : भीली —राते कूण जागे, कै ते जोगी ने कै भोगी; पंज० रात नु जोगी जागे या भोगी; ब्रज० राति कू जोगी जागै कै भोगी।

रात गई बात गई—रात भी बीत गई और कोई काम भी न हुआ। समय निकल जाने के बाद कुछ भी नहीं हो सकता। किसी काम के होने का समय बीत जाने पर जब कोई उसे पूरा करने की आशा करे तब कहते हैं। तुलनीय : राज० रात गयी, बात गयी; पंज० रात गयी गल गयी।

रात थोड़ी, कहानी बड़ी—समय थोड़ा है पर काम बहुत करना है। जब कोई व्यर्थ की बातें करके समय नष्ट करे या काम में विघ्न डाले तब कहते हैं। तुलनीय : अव० रात थोड़ किहानी बड़; राज० रात थोड़ी, मांग घणा; गढ़० रात थोड़ी, बात बड़ी; पंज० रात निक्की कहानी बड्डी।

रात थोड़ी बात बड़ी –समय कम हो और कहना बहुत अधिक हो तो इसका प्रयोग करते है। ऊपर देखिए।

रात थोड़ी स्वांग बहुत – किसी कार्य के लिए पर्याप्त समय न मिलने पर कहते है। ऊपर देखिए।

रात-दिन खाएँ जूत, फिर कहें आया था भूत सदा तो जूतों से पीटे जाते है और बाद में कहते है कि हमारे ऊपर तो भूत आता है इसलिए लोग हमे मारते है। जब कोई व्यक्ति अपने कुकर्मों को छिपाने के लिए बहाना बनाए तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : गढ़० रात दिन की पदाड़, पकोड़ू भगार।

रात-दिन घमछाहीं घाघ कहें अब बरखा नाहीं कभी धूप तथा कभी छाया का होना वर्षा न होने की निशानी है।

रात नर्मदा उतरी, सुबह कुआँ देख डरी रात को नर्मदा नदी पार कर गई और सुबह कुआं देखकर डर रही है। दुश्चरित्र स्त्रियों पर व्यंग्य में कहते है जो रात को कठिन से कठिन काम कर लेती हैं पर दिन में सामान्य काम के लिए भी अपने को असमर्थ बताती है।

रात निबछर दिन को घटा, घाघ कहें अब बरखा हटा —रात में बादल का न होना तथा दिन में घटा का घिरना वर्षा न होने की पहचान है।

रात निर्मली दिन को छाँही, कहें भड्डरी पानी नाहीं —भड्डरी कहते हैं कि यदि रात बादलरहित हो और दिन में बादल दिखाई दें तो पानी नहीं बरसेगा।

रात पड़ी बूंद नाम रखा महमूद—रात को संभोग किया और समझ गया कि लड़का ही होगा इसलिए उसका नाम महमूद रख दिया। किसी कार्य के पूरा होने से पहले ही अपनी इच्छानुसार उसका परिणाम सोच लेने पर व्यंग्य में कहते है।

रात पड़े उपासी दिन में खोजे बासी – रात को बिना खाए सो जाते हैं और सुबह बासी टुकड़ा माँगते फिरते हैं। ग़रीबी पर कहा जाता है।

रात पिया गोद सोवे दिन घूंघट कैसा —रात में तो पति की गोद में सोती है और दिन में घूंघट करती हैं। छिप-कर बुरे कर्म करने तथा समाज की लाज के कारण अपने को सच्चरित्र दिखानेवाली स्त्री पर व्यंग्य से ऐसा कहते है।

रात भर कथा सुनी, सुबह पूछा कि सीता किसका बाप था –सारी बात सुन लेने के बाद भी जब कोई उसके विषय में कुछ समझ नहीं पाता तब उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

रात भर किया कतौनी, ले गई चूत मरौनी (क) जब कोई श्रम करके कुछ उत्पन्न करे और उसका उपभोग कोई और करे तब कहते हैं। (ख) वेश्यागामी पुरुष के प्रति भी व्यंग्य में कहते हैं।

रात-भर क्या घास खोदते रहे—जो व्यक्ति किसी कार्य को ठीक समय पर नहीं कर पाते, उनके प्रति व्यंग्य में कहते है।

रात भर क्या चने दले – ऊपर देखिए।

रात-भर गाई बजाई लड़के के नूनी ही नहीं —रात-भर खुशी में गाना-बजाना हुआ और सुबह देखा तो उसमें लड़के का चिह्न ही नहीं था। जिस कार्य के लिए आडंबर किया जाय वह काम ही न हो तब कहा जाता है। तुलनीय : भोज० रात भर गाइ-बजाई लड़का के नुनिए नाहीं; अव० रात भर गाइन-बजाइन, भिसार लउंडा कैं नूनिन नाहीं।

रात-भर पीसेन परई माँ उठायेन–रात-भर पीसा और सुबह परई में उठाई। अर्थात् जब अधिक परिश्रम का बहुत थोड़ा फल मिलता है तब कहा जाता है।

रात भर मिमयानी, एक बकरा बियानी –रात भर चिल्लाने के बाद एक बकरा पैदा किया है। (क) जो बातें अधिक करे और काम कम उसके प्रति कहते है। (ख) अधिक श्रम का कम परिणाम मिलने पर भी कहते है। तुल-नीय : पंज० रात पर रोयी एक बकरी होयी; ब्रज० राति भरि मिमियानी, एक बकरा ते बियानी।

रात भर रामलीला देखी, सुबह कहने लगा सीता कौन था —दे० 'रात भर कथा सुनी···'। तुलनीय : हरि० रात्यूं रामलीला देक्खी, तड़कै हैं बोल्या सीता कूण था।

रात भर रोए, मरा एक भी नहीं—आशय यह है कि किसी के कोसने से कुछ नही बिगड़ता। तुलनीय : पंज० सारी रात रोंदे कटी मरया कोई पी नई; ब्रज० राति भरि रोये, एक ऊ न मर्यो।

रात माँ का पेट—रात माँ के पेट की तरह है। अर्थात् (क) निद्रा के समय सारा कष्ट दूर हो जाता है। (ख) रात सभी बुरे कर्मों को छिपा लेती है।

रात में कौन जागे, चोर, मोर या ढोर —रात्रि में चोर, मोर और पशु ही जागते है। तुलनीय : भीली राते कूण कूण जागे, कै तो चोर, के मोर, के ढोर।

रात रात का पड़ रहना, भोर भये का चल देना—रात को मुसाफ़िर या साधु कहीं भी पड़कर सो जाते है और सुबह वहाँ से कूच कर जाते है। यात्री या साधु को कहते है।

रात रानी, बहू कानी – रात तो रानी के समान सुन्दर है पर बहू कानी है। जब अवसर के अनुकूल वस्तु न मिले तो उसके प्रति कहते है। तुलनीय : राज० रात राणी, बहू काणी।

रात सारी जलाया तेल, नहीं हो सका फिर भी मेल – सारी रात दिया जलाए रखा पर समझौता नहीं हो पाया। परिश्रम और धन व्यय करने पर भी कार्य सिद्ध न हो तो कहते है। तुलनीय : राज० रात्यू बाल्यो तेल अधेलो इयोड गयो; पंज० सारी रात सड़्या तेल नईं हो सकया तां वी मेल।

रात हटाई, तड़के ही आई, भूख वेदना बुरी रे भाई – रात को तो किसी तरह भूख को टाल दिया लेकिन सुबह होते ही फिर लगने लगी। अर्थात् भूख बहुत बुरी चीज है उसे टाला नहीं जा सकता।

रातों काता कातना, सिर पर नहीं नातना – रात भर सूत काता लेकिन इतना भी न कत सका कि सिर ढक लिया जाए। जब परिश्रम करने पर भी कार्य सफल नहीं होता तब कहते है।

रातों रोई एक ही मुआ –सारी रात रोया पर एक ही मरा। जब बहुत परिश्रम करने पर भी थोड़ा ही लाभ हो, तब कहते है। तुलनीय : मरा० रात भर शाप दिला पण एक च मेला।

रात्यो बोलै कागला, दिन में बोलै स्याल, तो यों भाखै भड्डरी, निहचे परे अकाल – भड्डरीजी कहते है कि यदि रात में कौवा और दिन मे स्यार बोलते हैं तो अवश्य ही अकाल पड़ेगा। रात मे कौवा और दिन में स्यार का बोलना अशुभ माना जाता है।

राधावेधोपमा – लक्ष्य के मध्य बिन्दु को बेधने का न्याय। प्रस्तुत न्याय का प्रयोग कठिन कार्य के संपादन तथा उसके लिए अपेक्षित दक्षता के संदर्भ मे किया जाता है।

रानी को कानी कह दिया— (क) जब कोई नीच व्यक्ति अपने को बहुत बड़ा समझने लगे और कोई उसे उसकी सच्ची स्थिति की जानकारी करा दे तथा इसी कारण वह क्रोधित हो उठे तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। (ख) बड़ों का अपमान नहीं करना चाहिए। या बड़ों के दोषों को नही देखना चाहिए। तुलनीय : राज० राणी नै काणी कह दी; पंज० रानी नूं कानी कह दिता।

रानी को कानी क्यों कह दिया—रानी यदि कानी भी है तो भी उसे कानी नहीं कहना चाहिए। रानी का क्रोध प्राण ले सकता है। बड़े आदमियों के दोषों को बताना ठीक नहीं है उनका तो केवल गुणगान ही करना चाहिए। ऊपर भी देखिए। तुलनीय : राज० राणी नै काणी क्यू कह दी; पंज० रानी नूँ कानी क्यों कह दिता।

रानी को कौन कहे 'आगाढक'—रानी को कोई नहीं कह सकता कि आपके शरीर का अगला भाग बेपर्दा है किन्तु यदि एक साधारण स्त्री होती तो सभी टीका-टिप्पणी करते। अर्थात् बड़े आदमी के दोष को कोई उसके मुँह पर नहीं कहता।

रानी को बाँदी कहा हँस दी, बाँदी को बाँदी कहा रो दी—शरीफ को कमीना कहो तो वह बुरा नही मानता लेकिन नीच को यदि नीच कहो तो वह बिगड़ जाता है।

रानी को मांड नहीं, लोकनी को बुनियाँ—रानी को मांड भी खाने को नहीं मिलता और लोकनी बुनियाँ (एक प्रकार की मिठाई) खाती है। परस्त्रीगामी पुरुष के प्रति व्यंग्य से कहते हैं जो अपनी पत्नी का ख्याल नहीं रखते और वेश्याओं को काफ़ी सुविधा प्रदान करते हैं।

रानी राजा प्यारा, कानी को काना प्यारा—यदि रानी को अपना राजा प्यारा है तो कानी स्त्री को अपना काना पति ही प्यारा है। अर्थात् अपनी-अपनी चीज सबको प्यारी होती है, चाहे वह अच्छी हो या बुरी।

रानी गई हाट, लाई रीझकर चक्की के पाट—रानी बाजार गई तो खुश होकर चक्की के पाट ले आई। क्योंकि उन्हें मालूम ही नहीं था कि आटा कैसे पिसता है अतः वही चीज अनोखी लगी। (क) जो वस्तु न देखी हो उसे ही देखने की इच्छा होती है। (ख) किसी मूर्ख के ऊट-पटाँग काम पर भी व्यंग्य में कहते है।

रानी जब तक करें सिंगार, तब तक सो जाएं सरकार—जब तक रानीजी का शृंगार समाप्त होगा तब तक तो सरकार सो भी जायेंगे। बहुत सुस्त व्यक्ति के प्रति व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : राज० सोढी जी सिणगार करसी, जितै रावळ जी पाढै ज्यासी।

रानी दीवानी हुई, औरों को पत्थर अपनों को लड्डू मारकर—रानी दीवानी हुई तो अपने को तो लड्डू से मारा और दूसरों को पत्थर से। आशय यह कि पागलपन की दशा में अपने और दूसरों का भेद नही रह जाता किन्तु यदि रहे तो उसे हम पागल नहीं कह सकते। दिखावटी पागल पर कहते हैं।

रानी बनकर खाओगी क्या—दे० 'राजा होकर···'।

रानी रूठेंगी, अपना सुहाग लेंगी नीचे देखिए।

रानी रूठेंगी अपना सोहाग लेगी, क्या किसी का भाग लेगी—रानी गुस्से में होगी तो अपना सुहाग लेगी, किसी का भाग्य तो ले नही लेगी। अर्थात् मालिक रूठेगा अपनी नौकरी लेगा। जब कोई आदमी अपनी आजादी रखने के लिए सब तरह के कष्ट सहने को तैयार हो जाता है तब कहते हैं। तुलनीय : छत्तीस० रानी रिसाहै त सोहाग लेहै, राजा रिसाहै त राज लेहै; बुंदे० गौर रूठें तो अपनौ सुहाग लें, का कोऊ कौ भाग ले (ए); ब्रज० रानी रूठेगी तो अपना सुहाग लेगी; राज० गवर रूससी तो आपरो सुवाग लेसी, भाग तो को लेवैनी; मरा० राणी रागावली तर बिची लेणी काढून घेईल।

रानी सो बाँदी, बाँदी सो रानी—जो रानी थी वह नौकरानी हो गई और जो नौकरानी थी वह रानी बन गई। समय के परिवर्तन पर कहते है।

राबड़ी का नाम गुलमफा दे० 'फावड़े का नाम···।'

राम कह के, रहीम न कहे—जब एक बार राम कह दिया तो फिर रहीम नही कहना चाहिए। (क) जो बात एक बार कह दी जाय या मान ली जाय उससे फिरना नहीं चाहिए। (ख) अपने धर्म के प्रति सदैव निष्ठा रखनी चाहिए। तुलनीय : राज० राम कै र रहीम नही कैणो; पंज० राम आख के रहीम न आखे।

राम कह दिया तो रहीम थोड़े कहेगा—एक बार जब राम कह दिया तो रहीम थोड़े ही कहेगा। (क) जो व्यक्ति अपने वचन से कभी फिरते नहीं हैं उनके प्रति कहते हैं। (ख) जो व्यक्ति अपनी हठ से न टले उसके प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : राज० राम कह दियो, अबै रहीम थोड़ो ही कहसी; पंज० राम आख दिता ते रहीम ते नई आखेगा।

राम का खाय रावण का गीत गाय—खाता है राम का और प्रशंसा करता है रावण की। जब कोई पले किसी के आश्रय में और गुणगान किसी और का करे तब उसके प्रति

कहते हैं। तुलनीय : असमी— रामर् खाय्, रावणार् गीत् गाय्; पंज० राम दा खांदा रावण दे गीत गांदा।

राम की जै और रावण की भी जै—राम और रावण दोनों की जयकार। (क) जो व्यक्ति सभी से मिलकर रहे उसके प्रति कहते हैं। (ख) जो व्यक्ति शत्रु तथा मित्र दोनों से ही अपना स्वार्थ सिद्ध करे उसके प्रति भी व्यंग्य में कहते है। तुलनीय : पंज० राम दी वी जै रावण दी वी जै; भोज० रामों क जै रावनों क जै; उ० बाग़बाँ भी खुश रहे राज़ी रहे सैयाद भी।

राम की दया है— अर्थात् सब कुशल है। तुलनीय : राज० घर में राम रम; पंज० कर विच रबदी दया है।

राम के न रहीम के— कहीं का न होना। न राम के हुए न रहीम के। जो व्यक्ति किसी तरफ या किसी काम का न हो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० राम दे न रहीम दे।

राम खबरिया लेबै करिहैं, दाया लगे कछु देबै करिहैं— ईश्वर को जब दया आएगी तो खाने-पीने का प्रबन्ध करेंगे ही। कायर और अपाहिज आदमी ऐसा कहते हैं।

राम चाहे बुला ले पर राजा न बुलाए— मृत्यु चाहे आ जाय, किन्तु राजा का बुलावा न आए। मृत्यु तो केवल प्राण लेकर ही छोड़ देगी किन्तु राजा प्राण तो ले ही सकता है किन्तु उसके साथ ही वह यन्त्रणाएँ भी दे सकता है और अपमान भी कर सकता है। तुलनीय : राज० रामरै घररो आयीजो, पण राजरै घररो मती आयीजो।

राम छांड़ेन अयोध्या जेहि भावे सो लेय—राम ने तो अयोध्या छोड़ दी। अब जिसकी जो इच्छा हो ले। जब कोई किसी पद या वस्तु आदि का त्याग कर दे और लोग उस पद या वस्तु आदि के सम्बन्ध में मनमानी करें या करना चाहें तो कहते हैं। तुलनीय : उ० बुलबुल ने आशियाना चमन से उठा लिया, उसकी बला से बूम बसे या हुमा रहे। (बूम- उल्लू और हुमा एक कल्पित पक्षी जो उल्लू की ही शक्ल का होता है और उसके बारे में यह प्रसिद्ध है कि वह जिसके सिर के ऊपर से गुज़र जाए वह राजा बन जाता है)।

राम छोड़ी अयोध्या मन चाहे सो लेय —ऊपर देखिए।

रामजी का आसरा है —मुझे केवल ईश्वर का भरोसा है। जिसके कोई नहीं होता विशेषतः जिसके लड़का नहीं होता वह कहता है। तुलनीय : अव० राम जी का भरोसा।

रामजी का दिया सब कुछ है— भगवान ने सभी कुछ दे रखा है। घर धन-धान्य और दूध-पूत से भरा-पूरा है। सर्वसम्पन्न व्यक्ति का कथन। तुलनीय : राज० रामजीरा दीन है; पंज० रामजी दा दित्ता सब कुज है।

रामजी की माया, कहीं धूप कहीं छाया— ईश्वर की माया बड़ी विचित्र है कहीं पर तो धूप है और कहीं पर छाया। ईश्वर की लीला पर कहा गया है कि कहीं पर लोग सुखी हैं और कहीं पर दुखी। तुलनीय : हरि० रामजी की माया किते धूप किते छाया; गढ़० रामजी की माया करनी धाम, करनी छाया।

राम झरोखा बैठ के सबका मुजरा लेत, जैसी जाकी चाकरी वैसा बाको देत —ईश्वर बड़ा न्यायी है वह सबका ठीक हिसाब रखता है। जो जैसी सेवा करता है उसको वैसा फल देता है। आशय यह है कि मनुष्य को कर्म के अनुसार ही फल मिलता है। तुलनीय : अव० राम झरोखे बइठ के सबका मुजरा लेय, जेइसी जाकी चाकरी वइसन ओकर फल देय।

राम तुम्हारी माया, कहीं धूप कहीं छाया—दे० 'राम जी की माया…'। तुलनीय : बुंद० अलख पुरुखन की माया, कऊं धूप कऊं छाया; ब्रज० राम तुम्हारी माया कहूं धूप कहूं छाया।

रामदास के भाई किशनदास (क) दो समान व्यक्तियों के प्रति कहते है। (ख) भाई-भाई के जैसा हो जब भी कहते है। (ग) किसी मूर्ख व्यक्ति की किसी दूसरे मूर्ख से तुलना करते समय भी परिहास में कहते हैं। तुलनीय : राज० अब्बूरो भाई ढब्बू।

रामदेवजी को जितने मिले सब चमार के चमार— रामदेव जी को जितने मिले सभी चमार अर्थात् एक भी अच्छा आदमी नहीं मिला। जब किसी व्यक्ति का नीच और दुष्ट व्यक्तियों के अतिरिक्त और किसी से पाला ही न पड़े तो उसके प्रति कहते है। तुलनीय : राज० रामदेवजी नै मिल्या जका ढेढ-ही-ढेढ।

राम न मारे आपै मरे, देय कुमति चढ़ाय –जिसको दुःख मिलना होता है ईश्वर उसकी बुद्धि पहले ही से नष्ट कर देते हैं। जिसको अपनी ही गलती से कष्ट मिले उस पर कहते हैं। तुलनीय : अव० राम न मारै अपुवै मरै।

राम न रूठे, सब जग रूठे — ईश्वर न नाराज हो और सब भले नाराज हो जायँ। आशय यह कि यदि ईश्वर खुश हो तो अन्य लोग नाराज़ होकर किसी का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। तुलनीय : पंज० राम न रूसे सारा जग रुस्से; ब्रज० राम न रूठे चाहै सब रूठे।

राम नाम की माया कहीं धूप कहीं छाया—दे० 'राम जी की माया ...'।

राम नाम के आलसी, भोजन को तैयार—ज़रा-सी ज़बान डुलाकर राम का नाम लेने में आलस्य करते है किन्तु भोजन के लिए झट तैयार हो जाते है। कामचोर तथा आलसी व्यक्ति को कहते हैं। तुलनीय : अव० राम नाम के आलसी, भोजन का तैयार; पंज० राम नाऊँ दे आलसी खाण नूँ तैयार।

राम नाम जपना, पराया माल अपना—राम नाम जपते है और दूसरे के धन को हड़प करते जाते है। जो लोग भक्त बनकर दूसरे को ठगते है उनके लिए कहा जाता है। तुलनीय : राज० राम नाम जपणा पराया माल अपणा; मरा० राम नाम जपलें दुसऱ्याचेतें आपले; पंज० राम नाऊँ लेणा बगाना माल लैणा।

राम नाम ले सो धक्का खावे, चूतड़ हिलावे सो टक्का पावे—इस दुनिया में भगवान का नाम लेने वाली धक्का खाती है और बुरा कर्म करने वाली धन पाती है। वेश्याओं को धन मिलता है, सच्चरित्र स्त्रियों को कोई बात भी नहीं पूछता। दुनिया की उलटी रीति पर कहते हैं।

राम नाम सत्य है—केवल ईश्वर का नाम ही सत्य है और सब झूठा है। हिन्दू लोग मुर्दा ले जाते समय कहते है। तुलनीय : अव० राम नाम सत्त है; पंज० राम नाऊँ सच्च है।

राम ने मिलाई जोड़ी एक अन्धा एक कोढ़ी—दो बुरों के पटने पर या जोड़ी मिलने पर इस लोकोक्ति का प्रयोग होता है। तुलनीय : पंज० राम ने बनाई जोड़ी इक अन्ना इक कोढ़ी।

राम पड़े कुकुरे पाले खींच खाँच के किया खाले—राम कुत्ते के वश में पड़ गए तो वह उन्हें घसीट कर नीचे ले गया। अर्थात् बुरों या छोटों की अधीनता में, (पाले) या साथ पड़ने से बड़ों की भी दुर्दशा होती है।

राम बनाई जोड़ी, कोई अन्धा कोई कोढ़ी—दो समान रूप से बुरे व्यक्तियों के समागम या मित्रता पर कहते हैं।

राम बने है तो बन जैहैं बिगरी बनत बनत बन जाय—अर्थात् ईश्वर चाहें तो बिगड़ी बात भी बन सकती है। तुलनीय : अव० राम बनावें तो बन जावै, बिगरी बनत बनत बन जाय।

रामबाँस जब गड़ै अचूका तहँ पानी की आस अखूटा—यदि राम बाँस किसी कुएँ में बिना रुकावट के धँस जाता है तो उसमें पानी की कमी नहीं होती।

राम बिना दुःख कौन हरे, वर्षा बिन सागर कौन भरे, माता बिन आदर कौन करे—ईश्वर के सिवाय दूसरा कोई कष्ट को मिटा नहीं सकता, वर्षा के सिवाय दूसरा कोई समुद्र को भर नहीं सकता और माँ के समान दूसरा कोई स्नेह-भाव नहीं रख सकता। तुलनीय : अव० राम बिना दुख कौन हरै बरखा बिन सागर कौन भरै, माता बिन आदर कौन करै।

राम भए जेहि दाहिने, सबै दाहिने ताहि—राम की कृपा जिस पर होती है उस पर सबकी कृपा होती है। आशय यह है कि संपन्न, सबल और बुद्धिमान का ही सब साथ देते हैं।

राम भजो हे राँड़ो, खसमों को क्यों भाँड़ो—राँडो! राम भजो, पतियों की निंदा क्यों करती हो? जो स्त्रियाँ एक दूसरे की चुगली किया करती है उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० राम भजो, ए रांडो! खसमांने क्यूं भांडो।

राम भरोसे गाड़ी चले—भगवान के बल पर ही सब काम किए जाते है। (क) साधन न होने पर भी काम में सफलता मिलने पर कहा जाता है। (ख) जो व्यक्ति केवल भगवान के भरोसे ही बैठे रहते है वे भी इसी प्रकार कहते है। तुलनीय : राज० राम भरोसे ऊकलै ईंधण ईसरदास। पंज० राम आसरे गड्डी चले।

राम भाई पतुकी, सलाम भाई चूल्हा—स्वार्थी व्यक्ति के प्रति व्यंग्य में कहते है जो काम निकल जाने के बाद साधनों का तिरस्कार कर देते है।

राम मिलाई जोड़ी एक अन्धा एक कोढ़ी—राम ने दोनों को अच्छा साथ दिया है, एक अन्धा है और दूसरा कोढी है। जब दो दुष्टों का आपस में सम्पर्क हो तब कहते हैं। तुलनीय : अव० राम मिलायेन जोड़ी एक अन्धरा एक कोढ़ी; गढ़० राम न मिलाई जोड़ी, एक अंधे एक कोढ़ी; माल० करम पंसेरी का जोड़ा ठीक मिल्या; पंज० रब्ब मिलाई जोड़ी, इक अन्ना इक कोढ़ी।

राम रसोइयाँ पागड़ी, कभी-कभी बन जाय—पगड़ी और रसोई सर्वदा ठीक नहीं बनती, कभी-कभी बन जाती हैं।

राम रसोई एक जाने—एक व्यक्ति के लिए बनाया गया भोजन ही अच्छा होता है।

राम राखे उसे कौन चाखे—ईश्वर जिसको बचाता है उसे कौन मार सकता है? अर्थात् कोई नही। ईश्वर की इच्छा के बिना कोई किसी का कुछ नहीं बिगाड़ सकता। तुलनीय : माल० राम राखे वणाने कोई नी चाखे; पंज०

राम जिनूं बचावे ओनूं कौण मतावे।

राम राम जपना पराया माल अपना — दे० 'राम नाम जपना···'।

राम राम तू क्या करे, तू ही तो है राम —राम राम जपने से क्या लाभ ? तुम स्वयं ही राम हो। आत्मा ही परमात्मा है। राम आत्मा में निवास करते हैं। तुलनीय : भीली—राम राम हूं करो, तां हारा राम।

राम-राम ना आए, माला दम ना पाए माला तो हर समय फेरते है परंतु अब तक 'राम-राम' कहना नहीं आया। बहुत ही मूर्ख व्यक्ति के प्रति कहते है जो किसी काम में दिन-रात लगे रहने के बावजूद उसके विषय में प्रारंभिक जानकारी भी न प्राप्त कर सके।

राम राम भजना यही काम अपना सांसारिक कार्यों को त्याग कर केवल राम भजन करना है। साधु लोग कहते हैं।

राम-राम में टें-टें— राम-नाम में विघ्न डालना। जहाँ कोई अच्छी बात होती हो वहाँ बुरी बात करने पर या अच्छे कार्य में बाधा उपस्थित करने पर कहते है। तुलनीय : अव० रामौ राम मा विआधा।

राम राम सत्य है, सबकी यही गत्य है - ईश्वर का नाम ही इस संसार में सत्य है बाक़ी और सब झूठा है। जो पैदा हुआ है वह अवश्य मरेगा। मुर्दा ले जाते समय कहते है। तुलनीय : अव० राम राम सत्त है, सत बोलो मुक्त है, सबकी यही गत्त है।

राम-राम हँड़िया सलाम भाई चूल्हा दे० 'राम भाई पुतकी···'।

राम-लक्ष्मण की जोड़ी — दो सुंदर व्यक्तियों या वस्तुओं के मेल पर कहते है।

राम सहाय करें तो कोई क्या कर सके— जिसका सहायक ईश्वर है, उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

राम सो रहीम— जैसे राम वैसे रहीम। दोनों बराबर हैं। (क) हिंदू एवं मुसलमान की एकता पर कहा जाता है। (ख) एक वस्तु को कई नाम से पुकारते है। तुलनीय : अव० राम औ रहीम एकै।

राम स्वर्ग में और रहीम बहिश्त में रहते हैं —जो व्यक्ति बात-बात में राम या रहीम की दुहाई दे या उन्हीं के संबंध में चर्चा करता रहे उसके प्रति व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : भीली—देव दुवारका ने पीर भखा।

राम ही निबटेंगे, आदमी नहीं —राम ही इनसे निबटेंगे यह आदमी के वश के नही हैं। जिस दुष्ट व्यक्ति का उसके बल के कारण कोई कुछ बिगाड़ न पाए उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० राम बारै आसी, बंदा को आ वैनो।

राम ही मालिक है —ईश्वर ही सबका मालिक है। वह जिसे चाहे बना-बिगाड़ सकता है।

रामागति आवे नहीं दे भाई पोथी —मूर्ख के प्रति व्यंग्य में कहते है।

रामायण सारी हो गया सीता केका बाप — जो मूर्ख सारी बात सुनकर भी कुछ नहीं समझता उसके लिए कहते है। इस संबंध में एक कहानी है : एक बार कहीं रामायण की कथा हो रही थी। सुननेवालों में एक अहीर भी आता था। जब पूरी कथा समाप्त हो गई तो लोग पंडितजी से शंका समाधान कराने लगे। अहीर किससे कम था। उसने भी उठकर पूछा, 'पंडितजी···ऊ जो सीता रहेन ऊ केका बाप रहेन ?' इस पर सभी लोग हँसने लगे। उस मूर्ख ने कथा सुनी थी पर और कुछ समझना तो दूर रहा वह यह भी न समझ सका था कि सीता किसी स्त्री का नाम था या पुरुष का।

राय एक तो जात एक—यदि आपस में सभी मतभेद दूर हो जाएँ तो जाति भी एक ही हो जाती है। दो भिन्न-भिन्न जातियों के मतभेद दूर हो जाने पर परस्पर मेल-जोल बढ़ता है और वे धीरे-धीरे एक हो जाती है। तुलनीय : भीली—मत मलली ने जात मलली; पंज० मत इक ते जात इक।

रार आगे बाड़ भली — दे० 'रार से बाड़ भली।'

रार करो तो बोलो आड़ा कृषी करो तो रक्खो गाड़ा यदि झगड़ा करना हो तो टेढ़ी-बेढ़ी (झगड़ालू) बातें बोलो और खेती करना हो तो गाड़ी रखो।

रार लावे जोलहा जूझे पठान— झगड़ा तो जुलाहा पैदा करता है मगर लड़ना पठान है। दूसरे की परेशानी में फँस कर मरनेवाले के प्रति कहते हैं।

रार से बाड़ भली—रार से बाड़ भली होती है। झगड़ा करने से अच्छा उसको रोक देना है। कोई कारण होने पर भी झगड़े में बचना श्रेयस्कर है। तुलनीय : राज० राड़ सूं बाड़ भली।

रावन का साला — उस अत्याचारी को कहते है जिसका साथ देनेवाला कोई बड़ा आदमी हो।

राव न रावड़ी ले उठे खावड़ो - मैंने कुछ कहा भी नहीं और वह तलवार लेकर मारने के लिए तैयार हो गया। बिना कुछ कहे जब कोई लड़ने को तैयार हो जाय तब कहते

रास्तगा मुफ़लिस मजलिस में झूठा—ग़रीब आदमी सच्चा होने पर भी अदालत में झूठा ठहरता है। क्योंकि धनी आदमी उसके विपक्ष में लोगों को रुपया देकर झूठी गवाही दिला देता है। सच्चे ग़रीब पर कहते है।

रास्ता में हग के आँख दिखावे—एक तो रास्ते में पाख़ाना किया है दूसरे आँख भी दिखा रहा है। जो व्यक्ति ग़लती करता है और क्षमा माँगने के बजाय उलटे झगड़ा भी करता है, उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : अव० मा हगैं औ आखी लड़कें; हरि० राह में हगैं अर दीद्दे काउटै।

रास्ते की खेती, रांड़ की बेटी—ये दोनों सुरक्षित नहीं रह पातीं। तुलनीय : छत्तीस० रास्ता के खेती, रांड़ी के बेटी पंज० राह दी खेती रंडी दी ती।

रास्ते में हगे और आंख दिखावे—दे० 'रास्ता में हग के···'।

राह और बैरी काटने से ही कटते हैं—निरंतर चलने से ही दूरी समाप्त होती है तथा निरंतर लड़ने से ही शत्रु का नाश होता है। इन दोनों के साथ ढील नहीं बरतनी चाहिए। तुलनीय : माल० वाट ने वैरी काट्यो ही कटे।

राह की बात है—सच्ची बात है। ठीक बात पर कहते है। तुलनीय : अव० रस्ता कै बात है।

राह के पत्थर और बंदूक का पहरा—राह में पड़े पत्थरों के लिए बंदूकधारी पहरेदार। साधारण वस्तु के लिए कड़ी निगरानी करने या छोटी-सी बात को बहुत महत्त्व देने वाले के प्रति व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : भीली—खाली तजारा माजे चो की; पंज० राह दे बट्टे अते बंदूक दा पैरा।

राह छोड़ कुराह चले, तुरत धोखा खाय—सही राह को छोड़कर ग़लत राह का अनुसरण करनेवाला धोखा खाता है। अर्थात् ग़लत रास्ते पर चलने से हानि उठानी पड़ती है। तुलनीय : अव० रस्ता छोड़, कुरस्ता चली, तुरते धोखा खाई।

राह देख चले तो ठोकर क्यों खाय—देखभाल कर चलनेवाला ठोकर नहीं खाता। आशय यह है कि खूब सोच-समझकर कोई कार्य करने से हानि नहीं होती। जो व्यक्ति बिना सोचे-समझे कोई कार्य करके हानि उठाते है उनके प्रति कहते है। तुलनीय : भीली—पगां आड़ी जोई ने नी हीडे ते ठोकर लागे।

राह पड़े जानिए, या बाह पड़े जानिए—संग करने से या काम पड़ने से आदमी की परख होती है। किसी अपरिचित मनुष्य के स्वभाव की परख के संबंध में कहते हैं।

राह बंद की जा सकती है, मुँह नहीं—शक्ति से किसी का अपने इलाक़े में आना-जाना तो रोका जा सकता है, किंतु मुँह किसी का बंद नहीं किया जा सकता। जब कोई किसी सज्जन व्यक्ति पर कीचड़ उछालता है तब उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : भीली—गोलान मूंडे गण्णू दिए, दनया मूडे हूँ दिए; पंज० राह बंद कीती जांदी है मुँह नईं।

राह बतावे सो आगे चल—जो रास्ता बतावे वही पहले उस पर चले। अर्थात् जो किसी को किसी बात की अच्छी राय दे वही पहले करके दिखावे। (क) जब कोई किसी अच्छी राय देनेवाले को ही करके दिखाने के लिए कहे तब उस पर कहते हैं। (ख) नेताओं के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : अव० रस्ता बताव तो आगे चले; पंज० राह दसण वाला अग्गे चले।

राह में हगे और आँख दिखावे—दे० 'रास्ता में हग के···'।

रिक्ता तिथि अरु क्रूर दिन, दुपहर अथवा प्रात, जो संक्रान्ति सो जानियो, संबत महंगो जात—रिक्ता तिथि और क्रूर दिन (जैसे शनिवार-मंगलवार आदि) को यदि दोपहर या प्रातःकाल में संक्रान्ति पड़े तो समझना चाहिए कि यह संवत् महँगा व्यतीत होगा। अर्थात् उस वर्ष महँगी रहेगी।

रिज़क़ है न मौत—अभागे को कहते हैं कि न इसे खाने को भोजन मिलता है और न ही इस जीवन से छुटकारा अर्थात् मृत्यु।

रिज़ाले का लट्ठ—कुरूप और बेढंगे आदमी को कहते हैं।

रिज़ाले की जोरू को सदा तलाक़—बदमाश और नीच की स्त्री रोज़ त्यागी जाती है। आशय यह कि लुच्चे का मन चंचल और विषयी होने के कारण वह रोज़ अपनी स्त्री को बदलता रहता है। नीच प्रकृति के व्यक्ति के प्रति कहते हैं।

रिज़ाले के नाख़ून हुए—सताने का सामान मिला। जब किसी अत्याचारी को कहीं से सहायता मिले जिससे वह अधिक उपद्रव कर सके तब कहते हैं।

रिन कर्ता पिता शत्रु—ऋण करने वाला पिता शत्रु के सामान है।

रिन कै फिकिर न धन का सोच, इसी कारण धमधूसर मोट—न तो ऋण चुकाने की चिंता है और न धन एकत्र करने की, इसी कारण धमधूसर मोटे हैं। निश्चित व्यक्ति के प्रति कहते है।

रिपु रुज पावक पाप, प्रभु अहि गनिय न छोट करि -- शत्रु, रोग, आग, पाप, स्वामी और सर्प को चाहे वे छोटे ही क्यों न हों छोटा नही समझना चाहिए।

रिपु सन प्रीति करत नहिं लाजा — शत्रु से प्रीति नही करनी चाहिए।

रियासत बग़ैर सियासत नहीं होती—बिना रौब (डर) ज़मीदारी नही चल सकती। ज़मीदारी या रियासत के प्रबन्ध पर कहा गया है। तुलनीय : अव० रिआसत बिना सिआसत नाही चलत।

रिवाज देख कर घर नहीं फूंकना चाहिए--रीति-रिवाज का पालन करने के लिए अपना घर नहीं फूंक देना चाहिए। जो व्यक्ति प्राचीन रिवाजों पर चलकर हानि उठाता है उसके प्रति कहते है। तुलनीय : भीली--- रीत देखी ने गोवे नी बेहवो; पंज० रिवाज देख के कर नई फूकना चाइदा।

रिश्ता बराबर का, इंसाफ़ सबका — शादी-ब्याह का रिश्ता तो अपने बराबरवाले में ही करना चाहिए और न्याय सबके साथ। जब कोई ग़रीब किसी झगड़े आदि में किसी धनवान से जीत जाए तो धनवान के प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० ठाकुर दगड़ी ब्यौ नि लगदत क्या न्यौ भी नि लगद।

रिश्वतख़ोर ख़ुदा का चोर नीचे देखिए।

रिश्वतख़ोर भगवान के चोर --रिश्वत लेनेवाले भगवान की चोरी करते है। अर्थात् रिश्वत लेना पाप है। रिश्वत लेनेवालों के प्रति कहते हैं। तुलनीय : गढ़० रिश्वत-खोर दैव को चोर; पंज० रिश्वतखोर रब दे चोर।

रिस आप खाए, बुद्धि और खाए —क्रोध अपने आपको खाता है, अर्थात् अपना ही नुकसान करता है, और बुद्धि दूसरे को। आशय यह है कि क्रोध बुरी चीज है, मनुष्य को क्रोध नही करना चाहिए। प्र० उतर धाई तब दीन्ह रिसाई; रिसि आपुहि बुद्धि औरहि खाई।—जायसी

रिस के बस ना हूजिए कीजे बचन विचार —क्रोध नही करना चाहिए। बात विचार कर करनी चाहिए। क्रोध बुरी चीज़ है इससे बचने का प्रयत्न करना चाहिए।

रिस खाय रसाय नबने---क्रोध को शांत कर लेना या गुस्से को पी जाना शरीर के लिए रसायन की तरह हितकर होता है। तुलनीय : पंज० गुस्सा खाणा नाल रसायन बनदा है।

रिसानी बाई पुंआर नोचे—जब कोई व्यक्ति अपने से बलवान द्वारा सताए जाने पर क्रोधित हो जाय और उसका कुछ भी बिगाड न सके तथा अपनी आत्मतुष्टि के के लिए अपने से दुर्बल लोगों को कष्ट दे तो इस प्रकार कहा जाता है।

रिसानी बाई नाल लोचे---दुष्ट या तुच्छ व्यक्ति क्रोधित होकर अपने समान या अधीन आदमी को ही कष्ट देते है।

रीछ का एक बाल भी बहुत है रीछ का बाल बच्चों को नज़र से बचाने के लिए बाँधते है। इसलिए उसका एक बाल भी पर्याप्त है। टोटका थोड़ा हो वह भी पर्याप्त है। नज़र से बचाने के लिए किए गए टोटके पर कहते है। तुलनीय : पंज० रिछ दा इक बाल वी बड़ा है; ब्रज० रीछ कौ तौ बार ई बौहत है।

रीछ के तन पर बालों की क्या कमी रीछ के शरीर पर बालों की अधिकता होती है। जहाँ जिस वस्तु की उत्पत्ति बहुत अधिक हो वहाँ उसके प्रति कहते है। तुलनीय : माल० रीछ की जाघ में बाल को कई टोटो; पंज० रिछ दे सरीर उते बालां दा की काटा ; ब्रज० रीछ के सरीर पै बारन की कहा कमी।

रीझा बनिया रूठा राजा—रीझा हुआ बनिया और रूठा हुआ राजा एक बराबर है। बनिया रीझ कर ग्राहक की जेब साफ़ कर देता है और राजा रूठने पर सभी कुछ कर सकता है। बनिए और शासक दोनों से ही बचकर रहना चाहिए। तुलनीय : राज० तूठो बाणियो रूठो राव।

रीझेंगे तो पत्थर ही मारेंगे खुश होंगे तो भी पत्थर से मारेंगे अर्थात् बुराई ही करेंगे। दुष्टों को कहते है जो खुश होने पर भी बुराई ही करते हैं। तुलनीय : पंज० रीझन गे ते बट्टे ही मारण गे; ब्रज० रीझिंगे तौ पत्थर ई मारिंगे।

रीत की एक कौड़ी न ऊत बिलाव को ढेगे सच्चे रूप से यदि एक कौड़ी मिल जाय तो वह अच्छी है किन्तु यदि दुष्टों तथा मूर्खो से बहुत धन मिले वह अच्छा नही। बुराई से मिलनेवाले धन पर कहा गया है।

रीति का रायता देना ही पड़ता है—समाज मे रहकर समाज के रिवाजों के अनुसार ही चलना पड़ता है। तुलनीय : राज० रीतरो रायतो करनो पड़ै।

रीते भरे भरे दुलकावै, मेहर करे तो फिर भर जावै -- ईश्वर की लीला विचित्र है वह खाली को भर देता है और भरे को खाली कर देता है, तथा यदि उसकी मेहरबानी हो तो वह फिर भर देता है। ईश्वर की मर्ज़ी पर कहते है।

रीते सरवर पर गए, कैसे बुझत पियास—सूखे तालाब पर जाने से प्यासे की प्यास की तृप्ति नही हो सकती अर्थात्

निर्धन से आशा पूरी नहीं हो सकती। जब कोई निर्धन किसी निर्धन से सहायता मांगे तब कहते हैं। तुलनीय : पंज० तर-याये तालाव उते गए ते तरे किवें मिटे।

रीस भली हवस बुरी—स्पर्धा अच्छी होती है पर द्वेष बुरा होता है।

रुआँ रुआँ दुआ देता है –किसी के उपकार के प्रति आभार प्रकट करते हुए कहते हैं कि आपने ऐसी कृपा की है कि मन और शरीर हर समय आपके भले की प्रार्थना करते हैं।

रुई, दुई या धुई जाड़ा रजाई ओढ़ने से, दो व्यक्तियों के साथ सोने से या आग के पास बैठने से जाता है।

रुचे, जुरे, पचे—जो चीज़ रुचि की हो, आसानी से मिल जाय तथा पच जाय वही खानी चाहिए।

रुचे सो पचे - जिस भोजन में रुचि होगी, वह पच भी जायगा। मनचाहे भोजन पर कहते हैं। तुलनीय : भोज० जे रुचे से पचे; अव० रुचै तौ पचै।

रुधिर सम्पर्कवतो विषस्य शरीरे प्रसर्पणम् –रुधिर से सम्पर्क हो जाने पर विष शरीर में फैल जाता है। तात्पर्य यह है कि बुराई का किंचित् अंश भी फैल कर बढ़ जाता है। अतः मानव को बुराइयों से सावधान रहना श्रेयस्कर है।

रुपए का काम रुपए से चलता है- रुपएवाला काम रुपए से ही पूरा होता है केवल बातों से नहीं। जब कोई बात बनाकर तगादा टालना चाहता है तब कहते हैं। तुलनीय : अव० रुपिया का काम रुपिया से चली; पंज० रुपये दा कम रुपये नाल चलदा है; ब्रज० रुपैया को काम रुपैया ते ई चलै।

रुपए की खीर है रुपए से ही खीर बनती है। आशय यह है कि रुपए द्वारा सारी वस्तुएँ प्राप्त हो सकती हैं। तुलनीय : राज० रुपियांरी खीर है; ब्रज० रुपैया न की खीर है; पंज० रुपये दी खीर है।

रुपए की जात है –तात्पर्य यह कि जाति-पाँति रुपए के आगे कुछ नहीं है। नीच जाति का मनुष्य भी जब रुपए के जोर से ऊँची जातिवालों जैसा रोब-दाब दिखाए और सम्मान प्राप्त कर ले तब कहते हैं।

रुपए की ढाल टाल दे बवाल—रुपए की ढाल परेशानियों को मिटा देती है। अर्थात् रुपए से सभी समस्याओं को समाप्त किया जा सकता है। तुलनीय : पंज० दौलत हराम हलाल; फ़ा० जरे-सुफ़ेद बराए-रोजे-सियाह अस्त; अर० अल नक़ीदु मुखल्लुल अक़ूदी; अं० A bribe in the lap blinds one's eyes.

रुपए के लिए रात-दिन एक करना पड़ता है—धन के लिए रात-दिन परिश्रम करना पड़ता है। तथा उसकी रक्षा करने के लिए भी रात-दिन सावधान रहना पड़ता है। धन प्राप्त करने तथा उसकी रक्षा करने के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है। तुलनीय : भीली रूपो भाई काली राते उठाड़े; पंज० रपै लई दिन-रात इक करना पैंदा है।

रुपये को ठीकरी कर दिया - रुपये को ठीकरी की तरह समझ लिया। किसी कार्य में बहुत अधिक रुपए खर्च करने पर कहते हैं। तुलनीय : अव० रुपिया कै टिकरा कै दीन; पंज० रपै नूं ठीकरा कर दिता।

रुपए को पानी की तरह बहाया - ऊपर देखिए। तुलनीय : अव० रुपिया का पानी अस बहावा; पंज० रपै नूं पाणी वरगा रोड़या।

रुपए को रुपए ऐसा नहीं समझा—किसी कार्य में बहुत अधिक रुपया खर्च करने पर कहते हैं। तुलनीय : अव० रुपिया का रुपिया न समझा।

रुपए को रुपया कमाता है - रुपए से रुपया पैदा होता है। इस संबंध में एक कहानी है : किसी मनुष्य के पास एक रुपया था। उसने सुना था कि रुपए को रुपया कमाता है। वह उस रुपए को लेकर एक सर्राफ़ की दूकान पर गया। वहाँ रुपयों का ढेर देखकर उसने अपना रुपया ढेर के पास रख दिया। थोड़ी देर बाद जब सर्राफ़ का ध्यान उस ओर गया तो उसने यह समझकर कि रुपया छिटककर ढेरी से अलग जा गिरा है, वह अपने ढेर में मिला लिया। उस मनुष्य ने कहा कि यह रुपया मेरा है। मैंने सुना था कि रुपए को रुपया कमाता है हमारा तो गांठ का भी चला गया। सर्राफ़ ने कहा, तुम्हारा सुनना ठीक था। मेरे रुपयों ने रुपया कमाया। तात्पर्य यह कि धन से धन मिलता है। तुलनीय : राज० रुपियै नै रुपियो आवै; छत्तीस० रुपयाला रुपया कमाथे; ब्रज० रुपैया ते ई रुपैया कमायौ जावै; पंज० रपै नूं रपया कमांदा है; अं० Money begets money.

रुपए वाला, मूँछों वाला, बातों वाला सबका साला— मूँछ पुरुषत्व और बड़प्पन की द्योतक मानी जाती है। धन-वान बड़ा और वीर है तथा जो केवल बातें ही करते हैं वे सबके साले हैं। अर्थात् धनवान व्यक्ति आदर और निर्धन निरादर पाते हैं। तुलनीय : भीली— रुप्या ने मोढ़े मूच है बातन मोड़े नी हैं।

रुपए वाले की हमेशा पूछ है—सब लोग रुपए वाले की ही खुशामद या तलाश में लगे रहते हैं। जब किसी ग़रीब, को कोई न पूछे और धनी को सब पूछें तब कहते हैं। (पूछ

=तलाश करना, उसके पास जाना)। तुलनीय: अव० रुपिया वाले कै सदै पूछ है।

रुपए वाले को रुपए की आश, मोको राम की आश—धनी को अपने धन का सहारा रहता है किन्तु ग़रीब या भक्त को ईश्वर का भरोसा रहता है। ग़रीब या भक्त कहते हैं।

रुपया आनी जानी शय है—रुपया किसी के पास नहीं टिकता। धन की चंचलता पर कहा गया है। तुलनीय: हरि० रुपया-पीसा त आणी-जाणी चीज स आज मेरे धोरै कल तेरे धोरै; पंज० रपया पैहा किहे कौल नई टिकदा।

रुपया गाँठ में, मंगल जंगल में- गाँठ में रुपया होने पर जंगल में भी मंगल किया जा सकता है। आशय यह है कि धन होने पर कहीं भी सुखपूर्वक रहा जा सकता है। तुलनीय: राज० रुपली पल्लै तो रोही में चल्लै; ब्रज० रुपैया गांठि मे मंगल जंगल में; पंज० रपया गंढ बिच जंगल बिच मंगल।

रुपया गुरु और सब चेले—रुपया ही सबका गुरु है। (क) रुपया सबसे बड़ा है। (ख) रुपया होने पर मूर्ख भी बुद्धिमान समझा जाता है। (ग) रुपए से ही सब विद्याएँ सीखी जाती हैं। तुलनीय: राज० रूपलाल जी गुरु, बाकी सब चेला; पंज० रपया गुरु सारे चेले।

रुपया जान ले लेता है—दौलत बहुत प्यारी होती है उसके लिए लोग प्राण भी गँवा देते हैं। तुलनीय: अव० रुपिया जान लै लेत है; पंज० रपया जाण ले लैंदा है।

रुपया ठीकरा कहे ठीकरा नहीं होता- रुपए को यदि मिट्टी का ठीकरा कहें तो वह ठीकरा नहीं हो जाता, रुपया ही रहता है। (क) किसी भले व्यक्ति को बुरा कह देने से ही वह बुरा नहीं हो जाता। (ख) केवल कहने से ही कोई उपयोगी वस्तु अनुपयोगी नहीं हो जाती। तुलनीय: भीली —रुपाए कतीर कैय्ये कतीर नी थागे।

रुपया तो शेख़ नहीं तो जुलाहा—रुपया हो तो शेख़ है नहीं तो जुलाहा है। आशय यह कि रुपया ही सब कुछ है। रुपए वाला यदि नीच जाति का भी हो तो ऊँची जाति का बन सकता है। रुपए की शक्ति तथा करामात पर कहा गया है।

रुपया परखे बार-बार आदमी परखे एक बार- रुपए की तो बार-बार परख की जाती है किन्तु मनुष्य की एक बार। एक बार के कार्य से ही मनुष्य के स्वभाव का पता चल जाता है। जब कोई किसी के साथ अनुचित व्यवहार करके बाद में क्षमा माँगे और कहे कि आगे ऐसा नहीं करूँगा तब उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय: मरा० रुपयाची पाराख वारंवार माण साची एकदाँच।

रुपया बिना मर्द बिल्ली, चाहे घर रहे चाहे दिल्ली- रुपए के बिना मनुष्य बिल्ली जैसा होता है चाहे वह घर रहे या दिल्ली जैसे बड़े शहर में। आशय यह है कि रुपए के अभाव में मनुष्य की बुद्धि काम नहीं करती और हर जगह वह दब कर रहता है।

रुपया हाथ-पैर का मैल है—रुपया हाथ-पैर के मैल की तरह आता है और चला जाता है इसकी चिन्ता न करनी चाहिए। (क) जब किसी का रुपया निकल जाता है तब कहते हैं। (ख) उदारतापूर्वक ख़र्च करने के लिए भी कहते हैं। (ग) स्वाभिमानी व्यक्ति अपने स्वाभिमान के सम्मुख रुपए को कोई महत्व नहीं देते। तुलनीय: अव० रुपिया पइसा हाथ गोड़ कै मैल है; राज० रुपियो हाथरो मैल है; ब्रज० रुपैया हात कौ मैल है; पंज० रपया हत्थ पैर दा मैल है।

रुपया हो तो टट्टू चले- रुपए से ही टट्टू चलता है। धन से ही प्रत्येक कार्य होता है। जो व्यक्ति बिना धन के ही अभीष्ट कार्य सिद्ध करना चाहे उसको समझाने के लिए कहते हैं। तुलनीय: राज० रुपिया हुवै जद टट्टू चालै; पंज० रपया होवे ता टट्टू वी तुरे; अं० Money makes the mare go.

रुमाक्षिप्त काष्ठन्याय: -रुमा (नमक की झील) में फेंके हुए काष्ठ का न्याय। जिस प्रकार नमक की खान या झील में पड़ा हुआ काठ नमक बन जाता है, वैसे ही अपने से विपरीत संस्कृति के सम्पर्क में आने से कोई भी बच्चा उसी संस्कृति का माननेवाला बन जाता है। संगति का प्रभाव अवश्य ही पड़ता है। तुलनीय: फा० हर कि दर काने-नमक रफ्त नमक शुद (जो वस्तु भी नमक की खान में जाती है नमक बन जाती है)।

रुलाते को सभी देखते हैं हँसाते को कोई नहीं—जब किसी की बुराइयों की तरफ़ ही केवल ध्यान दिया जाय, उसकी अच्छाइयों की तरफ़ नहीं तब कहते हैं। तुलनीय: पंज० रुआण वाले नूँ सारे वेखदे हन हसाण वाले नूँ नईं।

रुंधे-बाँध के फाग दिखाए, सो किसान मोरे मन भाए - ईख कहती है कि जो किसान होली (फाग) तक मुझे रुंध देता है उसी को मैं अधिक पसन्द करती हूँ। (होली तक ईख उग आती है इसलिए तब तक रुँध देने से उसके नुक़सान का भय नहीं रहता)।

रूख न परास वहाँ रेण प्रधान—जहाँ पेड़ नहीं होते वहाँ अरंड ही पेड़ समझे जाते हैं। आशय यह है कि जहाँ

बड़े नहीं होते वहां छोटे या अदना ही बड़े समझे जाते हैं।

रूख न वृक्षा वहाँ रेण प्रधान– ऊपर देखिए।

रूखा खाना धरती सोना, नान्ह सुहेला फक्कड़ होना—साधु होना सरल नहीं है, क्योंकि फ़क़ीरों को रूखा खाना और जमीन पर सोना पड़ता है। आशय यह कि इस अवस्था में बड़े कष्ट झेलने पड़ते है। जब कोई गृहस्थी से ऊबकर शान्ति के लिए साधु होने को कहता है तब कहते हैं।

रूखा सो भूखा— रूखा-सूखा (बिना घी का) खाने से भूख जल्दी लगती है। घी से युक्त भोजन से कम भूख लगती है। तुलनीय : राज० रूखा सो भूखा।

रूखी खाएँ, मूंछों को घी से चुपड़ें – खाते हैं रूखी रोटी (बिना घी की) और मूंछों में घी लगाते है। झूठी शान दिखानेवाले के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : पंज० रूखी खाण मूछाँ उते की लाण।

रूखी मिले ना, चुपड़ के चाहें—रूखी रोटी तो खाने के लिए मिल नहीं पा रही और खाना चाहते है घी लगी रोटी। हैसियत से अधिक इच्छा रखनेवाले के प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

रूखी-सूखी (मिस्सी) खाय के, ठंडा पानी पीव –यह एक दोहे की प्रथम पंक्ति है। दूसरी पंक्ति है : देख पराई चूपड़ी मत ललचाए जीव। अर्थात् व्यक्ति को अपने में संतुष्ट रहना चाहिए। दूसरों की आकर्षक स्थिति के प्रति ललचाना नहीं चाहिए। संतोष पर कहा गया है। तुलनीय : हरि० देख बिरानी चोपड़ी क्यों ललचाया जी, लूक्खी सूक्खी खा कै ठंडा पाणी पी; पंज० देख बगानी टपरी कैनूं ललचाया जी रुक्खी मुकी खा के ठंडा पाणी पी।

रूठा राजा, खुश बनिया—दे० 'रीझा बनिया रूठा ...'।

रूठे को मनावे न, फटे को सीये न, तो काम चले न—बिना फटे को सिये और रूठे को मनाए काम नहीं चलता।

रूठे बाबा दाढ़ी हाथ – वृद्ध आदमी क्रोध करता है तो अपनी ही दाढ़ी नोचता है। तात्पर्य यह कि कमज़ोर किसी का कुछ न कर सकने के कारण अपने ही ऊपर क्रोध करता है। तुलनीय पंज० रुसे बाबा दाढ़ी हत्थ।

रूप की रोवे, करम की खाय– नीचे देखिए। तुलनीय : राज० रूप रोवै, भाग खावै।

रूप की रोवे, भाग की सोवे –रूपवती विरह-वियोग से तड़पती है और भाग्यवाली रति-सुख प्राप्त करती है। जब बुरा समय होने के कारण सज्जन कष्ट सहें और अच्छा समय होने के कारण बुरे सुख उठाएँ तब कहते हैं। तुलनीय : कौर० रुप की रावै, भाग की मांवै; ब्रज० रूप की रोवै, भागि की हँसै।

रूप चुड़ैलों का, मिजाज परियों का रूप तो चुड़ैल जैसा है पर नखरे परियों की तरह हैं। झूठी शान दिखानेवाले के प्रति कहते हैं।

रूप रोवे, करम हँसे—दे० 'रूप की रोवे···'। तुलनीय : हरि० रूप रोवै, करम खाँ (करम हसै)।

रूप की रोवै, करम की हँसे—दे० 'रूप की रोवे, भाग···।'

रूप देख रीझे सो पाछे पछिताय– मात्र रंग-रूप देखकर किसी के प्रति रीझ जानेवाला पछताता है। जब कोई केवल किसी की बाह्य सुन्दरता को देखकर ही उसके प्रति आकर्षित हो जाय और उसे अपना ले और बाद में व्यर्थ सिद्ध होने पर पश्चात्ताप करे तब उसके प्रति कहते हैं। आशय यह है कि किसी के गुणों को देखकर उसे अपनाना चाहिए न कि उसकी सुन्दरता को देखकर। तुलनीय : भीली — रूपाली देखी ने रीजवो नी।

रूयश बबीं हालश मपुर्स सूरत देखने से ही वस्तुस्थिति का पता चल जाता है, फिर भला हाल पूछने की क्या आवश्यकता है।

रूसल बहुड़िया उदगारल आग, दोनों ठैरैं बड़े हैं भाग—रूठी हुई स्त्री और प्रज्वलित अग्नि बड़ी मुश्किल से शान्त होती है।

रेड़ी का डंडा घड़े के लिए वज्र अरंड (रेड़ी) का डंडा भी घड़े के लिए वज्र के समान होता है। आशय यह है कि निर्बल या निर्धन को सामान्य लोग भी नष्ट कर सकते हैं।

रेड़ी के उपजे तेली को क्या?– –ऐसी वस्तु के प्रति कहते हैं जो अपने काम की न हो।

रेड़ी के खेत में बगंडी का खम्भा –किसी कमज़ोर की रक्षा के लिए जब उससे भी कमज़ोर व्यक्ति नियुक्त हो तो व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मैथ० अंडी के खेत मे बगंडी का खम्हा।

रेख में मेख मारे—भाग्य रेखा में मेख मारता है। भाग्य को बदलने का प्रयास करता है। उद्योगी व्यक्ति परिश्रम से भाग्य को भी बदल देता है। तुलनीय : राज० रेख मे मेख मारै।

रेखा गवयन्याय:—रेखा और गवय (एक जंगली पशु) का न्याय। किसी ग्रामीण ने वन में रहनेवाले से पूछा कि

गवय कैसा होता है। जंगली आदमी ने गवय की रेखा बनाकर बताया। आगे जाकर ग्रामीण ने रेखानुसार गवय को देखा और तब रेखागत गवय को अपने मस्तिष्क से निकाला। इस प्रकार की लौकिक कथा प्रचलित है।

रे गंधी मति अंध तू, अतर दिखावत काहि—हे गंधी, तू अंधा होकर किसको इत्र दिखला रहा है? अर्थात् हे गुणी, तुम किसके सामने अपने गुण को दिखला रहे हो। अयोग्य लोगों के आगे जब योग्य कुछ कहता या करता है तब यह कहावत कही जाती है।

रेवड़ी के लिए मस्जिद ढा दिए अपने छोटे से लाभ के लिए दूसरे की बहुत बड़ी हानि करने पर कहते है।

रेशम पशम बराबर नहीं उत्तम तथा निकृष्ट वस्तु में तुलना करने पर ऐसा कहते है। तुलनीय : भोज० रेसम पसम बराबर।

रेशम फट भी जाय तो रेशम कहलाएगा—आशय यह है कि बड़े लोग गरीब भी हो जाते है तब भी उनका सम्मान होता है। तुलनीय : मग० रेसम केतनो फट जाय तइयो रेसमे कहावे; भोज० रेसम केतनो फट जाई तबो रेसमे कहाई; पंज० रेसम फुट्टण दे मगरों वी रेसम ही कहां दा है।

रोई क्यों? कहा ननद ने देख लिया कोई स्त्री किसी कारणवश रो रही थी। किसी ने उससे रोने का कारण पूछा तो वह बोली कि ननद ने मुझे देख लिया, इसलिए रो रही हूँ। जब किसी कार्य का कारण कुछ और हो और उसके लिए कोई झूठा बहाना बनाए तब कहते हैं।

रोउनी को भैया मिला- एक तो रोनेवाली थी ही फिर पर भाई भी आ गया। (क) सहारा मिलते ही दुख प्रकट करने पर यह लोकोक्ति कही जाती है। (ख) काम न करने का बहाना मिलने पर यह लोकोक्ति कही जाती है।

रोए बने ना गए, महता जी मुँह बाएँ -महतो मुखिया जी मुँह बाए खड़े हैं उनसे न रोते बनता है और न गाते। धर्म-संकट की स्थिति मे पड़े व्यक्ति के प्रति कहते है।

रोए बिना माँ भी दूध नही देती--बिना रोए तो माँ भी बच्चे को दूध नही देती और कोई क्या देगा? चुपचाप बैठने पर कोई कुछ नही देता, प्रयास करने पर ही कुछ मिलता है। जो व्यक्ति बिना प्रयास किए ही कुछ पाना चाहते हों उनके प्रति कहते है। तुलनीय : राज० रोयां बिना मा ही बोबो को देवै नी; भीली—रोय्या वगर माँ मीनी आले; छत्तीस० जलघस लइका नइ रोवै, तलघस दाई दूध नहीं पियावै; ब्रज० बिना रोयें मा अ दूध नायें प्यावै; अं० A clorsd mouth catches no flies.

रोए बिना माँ भी दूध नहीं पिलाती ऊपर देखिए।

रोए बिना माँ भी बच्चे को दूध नहीं पिलाती—दे० 'रोए बिना माँ भी···'।

रोके पूछ ले हँस के उड़ा दे—कपटी मित्र झूठी सहानुभूति दिखाकर और मन का भेद लेकर अंत में उसे हँसी में उड़ा देता है अर्थात् साथ छोड़ देता है। तुलनीय : अव० रोय कै पूछ लेय, हँस कै उड़ा देय; हरि० रो के बूझ ले हँस के उड़ा दे; पंज० रो के पुछ ले हस के उडा दे; ब्रज० रोइ कें पूछिलें, हँसि कें उड़ाइ देइ।

रोग का घर खाँसी, और लड़ाई का घर हाँसी -रोग का आरंभ खाँसी से होता है और लड़ाई का हँसी से। आशय यह है कि बहुत हँसी-मज़ाक करना ठीक नहीं होता है। तुलनीय : अव० रोग का घर खाँसी औ लड़ाई का घर हाँसी; राज० रोगरो घर खाँसी, लड़ाई रो घर हांसी; गढ़० रोग की जड़ खाँसी, झगड़ा की जड़ हाँसी; मरा० रोगाचें घर खोकला, भाडणचें मूल हँसणे।

रोग का हाल बैदे जाने वैद्य ही रोग का हाल जान सकता है, दूसरा नही। आशय यह है कि किसी चीज का ज्ञाता ही उसके संबंध मे कुछ बतला सकता है।

रोग गया और बैद्य बरी रोग ठीक हुआ और वैद्य शत्रु के समान हो गया। गरज़ पूरी हो जाने के बाद कोई बात भी नही पूछता। स्वार्थियों के प्रति कहते है। तुलनीय : राज० गरज सरी' र वैद वैरी; पंज० बमारी गयी ते वैद दुसमन।

रोग बहुत तो रोना क्या, कर्जा बहुत तो देना क्या?—अधिक रोगग्रस्त व्यक्ति के विषय मे परेशान होने की जरूरत नहीं होती और जो क़र्ज़ के बोझ से दबा होता है वह क़र्ज़ चुका नही सकता इसलिए उसे भी चिंता नही करनी चाहिए। (क) असाध्य रोगी के विषय में कहते है क्योंकि उसका मरना निश्चित है। (क) अधिक कर्ज से दब जाने पर व्यक्ति की नीयत खराब हो जाती है। तुलनीय : गढ़० भौत ऋण हाल न भौत जुकं खाज; पंज० बमारी मती ते रोणा की करजा मता ते देना की।

रोगिया को जो भावे बैद बतावे —रोगी को जो अच्छा लगता है वही चीज उसे खाने की वैद्यजी सलाह दे रहे हैं। किसी के इच्छानुसार कार्य होने पर ऐसा कहते है। तुलनीय : अव० रोगिया का जउन भावै तउन वैद बतावै।

रोगी को रोगी मिला कहा -'नीम पी' -जो जिस बात को जानता है वही सलाह दूसरे को भी देता है। जब

कोई व्यक्ति दूसरे की परिस्थिति के अनुसार उसे भी सलाह दे तब कहते है । तुलनीय : अव० रोगीया का रोगी मिला, कहै, निमौरी पिउ ।

रोगी सो भोगी—जो व्यक्ति रोगी हो उसके विषय में यह अनुमान लगा लेना चाहिए कि यह विषयी (भोगी) है । आशय यह है कि अधिक भोग-विलास से व्यक्ति रोगी हो जाता है । तुलनीय : अव० रोगी तौ भौगी; पंज० रोगी ओह पोगी ।

रोगी ही वैद हो जाता है—रोगी व्यक्ति ही वैद्य हो जाता है । क्योंकि इलाज कराते-कराते उसे अनेक दवाइयों के विषय में जानकारी हो जाती है । आशय यह है कि व्यक्ति जिस चीज़ के संपर्क में रहता है उसे उसके सबंध में काफ़ी जानकारी हो जाती है । तुलनीय : अव० रोगिहै वैद होय जात है; पंज० रोगी ही बैद बन जांदा है ।

रोज़ कुआँ खोदना और रोज़ पानी पीना—रोज़ मज़दूरी करना और खाना । निर्धन व्यक्ति के प्रति कहते हैं जो प्रतिदिन मज़दूरी करके अपना जीवन-यापन करता हो । तुलनीय : अव० रोज कुआँ खोदै, रोज पानी पियै; कनौ० रोज को खुदिबो, रोज को पीबो, मरा०रोज विहीर खण नि रोज पाणी पिप्यास न्या; पंज० रोज खू कढ़ना रोज पाणी पीना; ब्रज० रोज कुआं खोदनों और रोज पानी पीनों ।

रोज़गार और दुश्मन बार-बार नहीं मिलते—रोज़गार मिल जाने पर उसे छोड़ना न चाहिए नहीं तो बाद में पछताना पड़ता है, उसी प्रकार दुश्मन मौके से मिल जाय तो उसे भी छोड़ना न चाहिए नहीं तो बाद में धोखा खाना पड़ता है । आशय यह है कि अवसर का लाभ उठाना चाहिए । अच्छे अवसर कम मिलते हैं । तुलनीय : अव० रोजगार औ दसन फिर नहीं मिलत; पज० रोजगार (कम) अते दुसमण मुड़ के नई मिलदे; ब्रज० रोजगार और बैरी बार-बार नायें मिलें ।

रोज-रोज की दवा भी गिज़ा हो जाती है—जो दवा नित्य खाई जाती है वह खुराक हो जाती है । अर्थात् फिर उसके खाए बिना नहीं रहा जाता । जो रोज़ाना दवा खाने का आदी हो जाए उसे कहते हैं ।

रोज-रोज खीर, पूड़ी परब के दिन दाँत निपोड़ी—प्रतिदिन खीर और पूड़ी खाते हैं और त्योहार के दिन माँगते फिरते है । (क) अवसर विशेष पर खर्च न करनेवाले पर व्यंग्य में ऐसा कहते है । (ख) कुप्रबन्ध पर भी ऐसा कहते है ।

रोज़ा को गए, नमाज़ पड़ी गले—दे० 'गई थी नमाज़ बख़्शवाने···'।

रोज़ा रोज़-रोज़ ज़िन्दगी चंद रोज़—प्रतिदिन रोज़ा क्या रखे यह ज़िन्दगी बहुत दिन की है। आशय यह है कि परम्परागत चीज़ों के चक्कर में पड़कर जीवन के आनन्द को नहीं खोना चाहिए। यह ज़िन्दगी थोड़े समय की होती है, इसलिए जीवन का भरपूर आनन्द उठाना चाहिए ।

रोज़ी का मारा दर-दर रोवे, पूत का मारा बैठ के रोवे—जिसका पुत्र मर जाता है वह तो बैठकर रोता है किन्तु जिसकी जीविका चली जाती है वह दर-दर की ठोकर खाता फिरता और रोता है । आशय यह कि जीव से जीविका प्यारी होती है । (क) जब किसी की रोज़ी चली जाय तब कहते है । (ख) जब कोई अपनी रोज़ी के साथ लापरवाही बरतता है तब उसे समझाने के लिए भी कहते है। तुलनीय : अव० रोजी कै मारा दर दर रोवै, पूत कै मारा घर मा रोवै ।

रोज़ी रुजिग बहाना मौत—जीविका किसी की सिफ़ारिश (रुजिग) से तथा मृत्यु किसी-न-किसी बहाने से होती है ।

रोज़े को गए, नमाज़ गले पड़ी—दे० 'गई थी नमाज़ बख़्शवाने···'। तुलनीय : अव० रोजा खोलै गये, नमाज गले मा पड़ी; हरि० गये थे रोज्जे छुड़ावण नमाज गले पड़ी; राज० रोजा छुड़ावण नै गया निवाज गलै पड़ी ।

रोटिया चाकर घसहा घोड़, खाय बहुत चले थोड़—जिस नौकर को तनख्वाह नहीं मिलती केवल खाने ही पर रहता है और जिस घोड़े को दाना नहीं मिलता केवल घास ही मिलती है, वे खाते बहुत हैं लेकिन काम कम करते है । केवल घास खानेवाला घोड़ा अथवा केवल भोजन पाने वाला नौकर काम कम करे तब कहते है । तुलनीय : अव० रोटिहा चाकर, घसहा घोड़, खाय बहुत चलै थोर; गढ़० घास्सी घोड़ा कापल्या पैक ।

रोटियों पर नौकर रहे उसमें भी झोल-झाल—केवल खाने पर नौकर रखना चाहते हैं, वह भी बचा-खुचा देकर । कंजूस व्यक्ति के प्रति कहते हैं जो साधारण काम में भी आना-कानी करता है । (झोल-झाल = बचा-खुचा) ।

रोटी ऊपर साग, मेरे तो नित फाग—रोटी-साग खाते है और कहते हैं कि हमारे यहाँ रोज़ाना अच्छा भोजन बनता है । झूठी शान दिखानेवाले के प्रति व्यंग्य में कहते हैं । (फाग = होली का त्यौहार) ।

रोटी कहे मैं मंज़िल पहुँचाऊँ, बाटी कहे मैं फेर ले आऊँ; दाल-भात का हल्का खाना, इसको खाकर कहीं न

जाना—रोटी कहती है जो मुझे खाकर कहीं जाय तो रास्ते में उसे भूख नहीं लगेगी, बाटी कहती है कि जो मुझे खाकर जाएगा उसे लौटकर आने तक भूख नहीं लगेगी; लेकिन चावल-दाल बहुत हल्का होता है इसे खाकर बाहर नहीं जाना चाहिए। आशय यह है कि चावल जल्दी पच जाता है, रोटी देर में पचती है और बाटी उससे भी अधिक देर में पचती है।

रोटी किस्मत की हुक्का पांव दौड़ी का—रोटी भाग्य से मिलती है पर हुक्का उद्योग से मिल जाता है। किसी के यहाँ जा पहुँचो तो वह हुक्के-तम्बाकू से खातिर करता ही है।

रोटी की जगह उपला खाते हैं—बेहूदगी की बात करने अथवा जानबूझकर भोला बनने पर कहते हैं।

रोटी को छोड़ना क्या और बेटी को रोना क्या—रोटी को कौन छोड़ता है तथा बेटी के ससुराल जाने पर रोने से क्या लाभ? क्योंकि उसका जाना तो आवश्यक होता है। आशय यह है कि जीविका के साधन को छोड़ना नहीं चाहिए और लड़कियों के ससुराल जाने पर रोना नहीं चाहिए। तुलनीय : पंज० रोटी नूँ छड़ना की अते ती नूँ रोना की; गढ़० रोटी को क्या घोणो, अर बेटी को क्या रोणो।

रोटी को टाटी, पानी को बिल्ला, खसम जो दावा—रोटी को टाटी कहती है, पानी को बिल्ला और पति का दादा कहती है। (क) भोंड़ी या भोली स्त्री को कहते है। (ख) जो जान-बूझकर भोला बनता है उसे भी कहते है।

रोटी को ठुकराएगा दुख सदा वह पाएगा—जो व्यक्ति अपनी जीविका के साधन को छोड़ देते हैं वे सदा कष्ट सहते हैं। आशय यह है कि (क) जीविका के साधन को कभी नहीं छोडना चाहिए। (ख) खान-पान में छुआछूत माननेवाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : भीली—धूल मांये धनाई नीपजे, भोग लागे भगवाने ता' दोष हणानो; पंज० रोटी नूँ ठोकर मारण वाला सदा दुख पावेगा।

रोटी को रहोगे, कि वह भी छोड़ोगे—रोटी का खयाल रखोगे कि उसका भी सहारा नष्ट करोगे। जब कोई अपनी रोज़ का खयाल न करके मनमानी चाल चलता है तब कहते हैं।

रोटी को रोवे, खपड़ी को टोवे—रोटी के लिए रोता है और घूम-घूम कर हँड़िया में हाथ डालकर ढूँढ़ता है। किसी की बहुत ग़रीबी पर कहते हैं। तुलनीय : अव० रोटी का रोवै, खपरिया का टोवै।

रोटी को रोवे, चूल्हे पीछे सोवे—ऊपर देखिए।

रोटी खाइए शक्कर से, दुनिया ठगिए मक्कर से—रोटी को शक्कर से खाना चाहिए और लोगों के साथ छल का व्यवहार करके अपना मतलब पूरा करना चाहिए। आजकल जो छल-कपट या धूर्त्तता करता है वही आराम से रहता है। तुलनीय : हरि० रोट्टी खाई शक्कर तैं, दुनिया ठग्गी मक्कर तैं; राज० रोटी खाणी शक्कर सूं, दुनिया ठग्गी मक्कर सूं; गढ़० रोटी खाणी शक्कर से दुनिया खाणी मक्कर से।

रोटी खाते हैं, रेत नहीं—हम भी रोटी खाते हैं, रेत नहीं खाते। (क) हम भी तुमसे कम नहीं तुम रोटी खाते हो तो हम भी रोटी ही खाते हैं। तुमसे दबेंगे नहीं। (ख) हम भी सब समझते है, हमें मूर्ख मत समझो। हम भी रोटी खाते हैं इस तरह का भाव प्रकट करने के लिए भी कहते हैं। तुलनीय : राज० धान खावां हां धूळको खांवानी; पंज० रोटी खांदे है रेत नई।

रोटी खानी शक्कर से, दुनिया खानी मक्कर से—दे० 'रोटी खाइए शक्कर से···'।

रोटी खानी शक्कर से, दुनिया ठगें मक्कर से—दे० 'रोटी खाइए शक्कर···' तुलनीय : हरि० रोट्टी खाणी शक्कर तें दुनिया ठगणी मक्कर तें; अव० रोटी खाय घिउ सक्कर ते दुनिया ठगै मक्कर तै।

रोटी तवे से उतरी और बाबू पहुँचे—रोटी पकने की ही देर थी, बाबू साहब तो ताक में घूम रहे थे। (क) जो व्यक्ति फल की ओर या मतलब की बात की ओर दृष्टि लगाए रहे उसके प्रति कहते हैं। (ख) जो व्यक्ति काम के समय तो इधर-उधर घूमता रहे और खाने के समय तुरन्त पहुँच जाए उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० खीरांमली खीचड़ी टोलो आयो टच्च; पंज० रोटी तवे तो उतरी ते टोली आयी।

रोटी दोनों हाथ से बनती है—तात्पर्य यह है कि कोई भी काम—बुरा हो या भला—दो व्यक्तियों के संयोग से होता है। जब किसी कार्य के सम्बन्ध में किसी एक ही व्यक्ति को दोषी ठहराता है या एक ही व्यक्ति को कुछ करने के लिए कहता है तब कहते हैं। तुलनीय : मग० रोटी दुन्हू हाथ से; पंज० रोटी दोनां हथ्था नाल पकदी है।

रोटी न कपड़ा, सेंत का भतरा—खाना दे न कपड़ा दे केवल नाम का पति है। (क) जो अपने आश्रितों के साथ अपना कर्त्तव्य पूरा नहीं कर पाता उसके प्रति आश्रितों का कहना है। (ख) जो अपने पद के अनुसार कर्त्तव्य न कर सके उस पर भी कहते है। तुलनीय : भोज० रोटी न कपड़ा

सति का भतरा; अव० रोटी न कपड़ा सेंत-मेंत का भतरा।

रोटी न दाल, उधेड़ें खाल — काम करा-कराकर नसें ढीली कर दीं और भोजन के लिए पूछा तक नहीं। जो व्यक्ति परिश्रम तो खूब कराते हों और देते कुछ न हों उनके नौकर-चाकर ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० खाणी न पेणी घुंड़ु घुंड़ु टेणी।

रोटी पकाई बारा, लहंगा फूंका सारा — केवल बारह (बारा) रोटी पकाई और इतने में सारा लहंगा जला दिया। फूहड़ स्त्री के प्रति कहते हैं। या जो काम कम और नुकसान अधिक करे उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : गढ़० गोठ नि धरी एक रात, ख्वंतडी फूकी पांच हात; पंज० रोटियां पका-इयाँ बारां सुथण फूकी सारी।

रोटी पर का घी गिर गया, मुझे रूखी ही भाती है — रोटी पर का घी गिर गया तो कहते हैं कि मुझे रूखी रोटी ही अच्छी लगती है। मजबूरी में सन्तोष करनेवाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : अव० दाल अड़ाय गय, सूखै नीक लागत है।

रोटी पोई बारा, लहंगा फूंका सारा — दे० 'रोटी पकाई बारा···'।

रोटी वहाँ खाओ तो पानी यहाँ पीओ — जल्दी करने के लिए कहते हैं। (क) विदेश से किसी को जल्दी बुलाना हो तब ऐसा लिखा जाता है। (ख) किसी आवश्यक काम की खबर लाने के समय नौकर को भी कहते हैं। तुलनीय : अव० रोटी हुआं खाव, पानी हिअं पिऔ, हरि० रोट्टी हुड़े खाना हो तै पाणी हाडे पीवै; गढ़० रोटी तख खै पाणी यख पै; पंज० रोटी उथ्थे खावो ते पाणी इथ्थे पीवो।

रोटी संसार घुमाती है — रोटी के लिए मनुष्य को दुनिया का चक्कर लगाना पड़ता है। (क) जब किसी को बहुत परेशानी के बाद नौकरी मिलती है तब वह कहता है। (ख) जब कोई नौकरी के लिए बहुत परेशान होता है तब उसके प्रति भी कहते हैं।

रोटी सबसे मीठी — भोजन सबसे प्रिय चीज है। भूख लगने पर सिवाय भोजन के दुनिया की कोई भी चीज़ अच्छी नहीं लगती।

रोटी सबसे मोटी — रोटी सबसे मोटी होती है अर्थात् उसके सामने और कुछ नहीं दिखता। संसार का प्रत्येक जीव-जन्तु पेट के सम्मुख हार मान लेता है। तुलनीय : राज० रोटी मोटी बात, जाळा काटै जीवरा; पंज० रोटी सारियां तो मोटी।

रोड़ा मीठा हो तो सियाल न छोड़ें — यदि कंकड़ (रोड़ा) मीठा होता तो उसे सियार (सियाल) छोड़ते नहीं। अर्थात् दुष्ट व्यक्ति स्वार्थ या स्वाद के लिए सब कुछ स्वीकार कर लेते हैं।

रोता न जा, सुबकता जा — रूठता हुआ जा, रोता हुआ न जा। किसी व्यक्ति को थोड़ा-बहुत दे दिलाकर प्रसन्न करने का प्रयत्न किया जाय तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : गढ़० रोंदो ना जा, गंगजांदो जा।

रोती को पुचकारा तो कहा — साथ ले चलो — रोती हुई को पुचकार के चुप कराया तो कहने लगी कि मुझे अपने साथ ही ले चलो। जब कोई किसी की थोड़ी सहायता कर दे और उसके बाद वह उसका पीछा न छोड़े तब व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : राज० रोवती नै राखी तो कै सागै ही ले चालो; पंज० रोंदी नूं चुप कराया ते कैंदी नाल लै चलो।

रोती को पुचकारी तो बोली साथ चलूँगी — ऊपर देखिए। तुलनीय : हरि० रोवती पुचकारी तै, गैल ए चाल्लूँगी।

रोती पहले ही थी, फिर ससुराल में मिली — एक तो पहले से ही बहुत रोनेवाली है दूसरे ससुराल में मिली है इसलिए और अधिक रोएगी। इच्छानुसार परिस्थिति होने पर व्यंग्य में कहते हैं।

रोते क्यों हो ? कहा 'शकल ही ऐसी है' — सदा उदास रहनेवाले के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : राज० मियाँ, रोते क्यूँ हो ? कै बन्दे की सकल ही ऐसी है, गढ़० रोणू किलै च ? बल सूरत ही इन्नी च; पंज० रोनी कयों है कैंदी सकल ही इहो जिही है।

रोते क्यों हो ? बोले 'शक्ल ही ऐसी है' — ऊपर देखिए। तुलनीय : मरा० अहो रडता कां? म्हणे चेहराच तसा आहे।

रोते गए मरे की खबर लाए — आशय यह है कि जिस कार्य को खुशी से नहीं किया जाता वह अच्छा नहीं होता। जब कोई बहुत दबाव के बाद कार्य करने जाय और वह कार्य ठीक न हो तब कहते हैं। तुलनीय : हरि० रोंवती जा मरयां की खबरय ल्यावैं; अं० He that asks faintly begets a denial.

रोते गए, मुए की खबर लाए — ऊपर देखिए। तुलनीय : अव० रोवत गयें मरे कै खबर लै आयें; हरि० रोवते से गये मरां की खबर ल्यो; राज० रोवतो जोवं जको मर-यैरी खबर लावै; पंज० रोंदे जाण ते मोयां दियां खबरां लयाण।

रोते जाय मरे की खबर लाए — दे० 'रोते गए

मरे···'। तुलनीय : कौर० रात्ते जां, मरों की खबर लाव्वे।

रोना चाहते थे आँख में चोट लग गई—मनचाहा अवसर मिलने पर कहते है। तुलनीय : मैथ० एक छीलऽ कानै के मन, दोसरे आँखी गड़लऽ खुट्टी; भोज० रोवे के रहली अँखिए खोदा गइल; पंजा० रोणा चाहंदे दी अख विच सट्ट लग गई।

रोने को तो थी ही इतने में आ गए भइया—ऐसी स्त्री के लिए कहते हैं जो अपनी ससुरालवालों से लड़ाई होने पर रोना ही चाहती थी कि इतने में उसका भाई पहुँच गया, अब क्या था उसे बहाना मिल गया और वह और ज़ोर-ज़ोर से रोने-चिल्लाने लगी।

रोने को थी आए गए भैया—जब किसी व्यक्ति की इच्छा कोई काम करने की हो और अनुकूल अवसर भी मिल जाय तब ऐसा कहते है। तुलनीय : पंज० रोण लग्गी ते आ गया परा; भोज० रोवहि के रहलि कि भइया आ गइलं।

रोने को थी और खसम ने मारा—ऊपर देखिए।

रोने को थी कि आंख में चोट लग गई—दे० 'रोना चाहते थे···'।

रोने से राज नहीं मिलता—अधिक परेशान होने से राज्य नहीं मिल जाता। आशय यह है कि व्यक्ति को सन्तोष एवं धैर्य से काम लेना चाहिए। तुलनीय : राज० रोयां किसो राज मिलै।

रोने से राम नहीं मिलता—ऊपर देखिए। तुलनीय : छत्तीस० रोए मा राम नइ मिलें।

रोने से रोज़ी नहीं बढ़ती—रोने तथा दुखी होने से रोज़ी या व्यापार में तरक्की नहीं होती। यदि तरक्की चाहो तो अधिक मेहनत करो। उद्योगहीन मनुष्य के प्रति कहते है जो रोज़ी या व्यापार की उन्नति के लिए केवल शोक करता है उद्योग नहीं।

रो-रो बुढ़िया गीत गाए, लड़कों को हँसी आए—कोई बूढ़ी औरत रो-रोकर गीत गा रही थी। उसे देखकर बच्चों को हँसी आ रही थी क्योंकि गीत हँस कर गाए जाते है, न कि रोकर। बेतुका कार्य करनेवाले के प्रति कहते है। तुलनीय : पंज० रो-रो बुड्ढी गीत गावे मुंडिया नूं हस्सा आवे।

रोवे चोर विराने धन को—चोर दूसरे के धन के लिए रोता है। जिससे अपना कोई प्रयोजन न हो उस पर व्यर्थ की चिन्ता करने पर कहते हैं। तुलनीय : अव० रोवै चोर विराना धन का; पंज० रोवे चोर बगाने पैहे नूं; ब्रज० रोवै चोर पराये धन कूं।

रोवे रुई वाला, पींजने वाले को क्या—रुई में कितना भी कूड़ा निकले पीजनेवाले को क्या अन्तर पड़ता है, हानि तो रुईवाले की ही होती है। जिस व्यक्ति को अपनी वस्तु के कारण किसी दूसरे से हानि मिले उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : माल० रोवे रुई वालो, पीजरा रे कई जाए; पंज० रोवे रूँ वाला पिंजन वाले नूँ की।

रोष मारे अपने को, संतोष मारे दूसरे को—क्रोध करने से अपनी ही हानि होती है तथा संतोष करने से दूसरे लोग दबकर रहते है। क्रोध करना अच्छा नहीं होता। क्रोध करनेवालों को समझाने के लिए कहते है। तुलनीय : गढ़० रोष खौ अपणी मौ, संतोष खौ बिराणी मौ।

रोहणाचललाभे रत्नसम्पद् सम्पन्ना—रोहण नामक पर्वत को प्राप्त कर कर लेने पर रत्न-धन प्राप्त हो जाता है।

रोहन गाजे मृगला तपै, राजा जूझै परजा खपै—यदि रोहिणी नक्षत्र में आंधी चले और मृगशिरा में धूप हो तो राजा लोग लड़ेंगे और प्रजा का नाश होगा। अर्थात् समय बुरा होगा।

रोहन तपै ने मिरगला बाजे, अदश में अनचीतियो गाजे—रोहिणी में कड़ाके की गर्मी पड़े और मृगशिरा में आंधी चले तो आर्द्रा नक्षत्र में मेघ खूब गरजेगा।

रोहन रेली, रुपया री अकेली—रोहिणी में वर्षा हो तो फसल रुपए में आठ आने भर रह जाएगी।

रोहिनी खाट मृगसिरा छउनी, अद्रा आवे धान की बोउनी—किसान को रोहिणी नक्षत्र में चारपाई और मृगशिरा में छप्पर की छवाई कर लेनी चाहिए जिससे आर्द्रा नक्षत्र में धान बोने के समय खाली हो जाय।

रोहिनी जो बरसे नहीं, बरसे जेठा मूर, एक बूंद स्वाती पड़ै लागे तीनों तूर—यदि रोहिणी नक्षत्र में पानी न बरसे, पर ज्येष्ठा और मूल में पानी बरसे और स्वाति नक्षत्र में भी एक बूंद बरस जाए अर्थात् थोड़ी वर्षा कर दे तो तीनों फ़सलें अच्छी होंगी।

रोहिनी बरसै मृग तपै, कुछ कुछ अद्रा जाय; कहै घाघ घाघिनी से, स्वान भात नहीं खाय—घाघ कहते है कि यदि रोहिणी में वर्षा हो तथा मृगशिरा नक्षत्र में खूब गर्मी पड़े और आर्द्रा के शुरू होते-होते पानी बरस जाय तो इतना धान होगा कि कुत्ते भी भात नहीं खाएंगे।

रोहिनी बहे मिरग तपे, छांड़ खेती काहे खपे?—रोहिणी नक्षत्र में हवा बहे और मृगशिरा में गर्मी पड़े तो फ़सल बर्बाद हो जाती है, इसलिए खेती में परिश्रम करना बेकार है। तुलनीय : राज० रोहण बाजै मग तपै, गैला

खेती क्या ले खपै ?

रोहिनी माहीं रोहिनी, एक घड़ी जो दीख; हाथ में खपरा मेदनी, घर-घर माँगे भीख—यदि चैत में एक घड़ी भी रोहिणी का प्रभाव रहे तो बहुत बड़ा अकाल पड़ेगा और लोग खपड़ा लेकर भीख माँगेंगे।

रोहिनी मृगसिर बोये मका।
उड़द मडुवा-नहि टका॥
मृगसिर में जो बोये चना।
जमींदार को कुछ नहीं देना।
बोये बाजरा आपो पुख।
फिर मन मन भोगो दुख॥

यदि मक्का, उड़द, मडुवा की फ़सल रोहिणी तथा मृगशिरा नक्षत्र मे बोई जाती है तो कुछ भी पैदा न होगा। यदि मृगशिरा में कोई चना बोता है तो ज़मींदार को लगान देने भर के लिए भी अन्न उत्पन्न न होगा। इसी प्रकार यदि बाजरा पुष्य नक्षत्र में बोया जाता है तो मन कभी भी सुखी नही रहेगा। अर्थात् उपरोक्त चीजें बोने से कुछ भी नहीं होता।

रौताई आ कुसल क्षेम—अकड़ और व्यवहार साथ नही चलते। प्रो० रौताई औ कूसल खेमा— जायसी।

रौन गोरई की कुतिया—रौन और गौरई गाँव की कुतिया की तरह। जब कोई मनुष्य अधिक लालच में पड़कर सारा लाभ लेने के लिए बहुत दौड़-धूप करे परंतु उसे सफलता प्राप्त न हो तब कहते हैं। इस पर एक कहानी है: रौन और गौरई दो गाँव रियासत ग्वालियर जिला भिंड में हैं। एक बार एक ही दिन दोनों गाँव में ज्योनार हुई। वहाँ की कुतिया ने सोचा कि दोनों गाँवों की ज्योनार खाना चाहिए। यह सोचकर वह पहले रौन गई वहाँ देखा कि लोग भोजन कर रहे हैं इसलिए अभी देर है। उसने सोचा कि तब तक गौरई हो आऊँ। वहाँ जाने पर देखा कि वहाँ पर भी यही हाल है। फिर लौटकर वह कुतिया रौन गाँव में आई तब तक देखा कि लोग खाकर चले गए और जूठन भंगी उठाकर ले गया। फिर वह उलटे पैर गौरई भागी वहाँ पर भी यही हाल था। अंत में निराश हो भूख के मारे दोनों गाँवों के बीच में आकर मर गई। तब से यह कहावत प्रसिद्ध

ल

लंका छोड़ पलंका धावै—जो अपने काम को छोड़ कुछ और करे उसे व्यंग्य से कहते हैं।

लंका जीत आए—बहुत बड़ी विजय कर आए। जो व्यक्ति साधारण-सी सफलता पर इतराता फिरता है उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

लंका निश्चर निकर निवासा, यहाँ कहाँ सज्जन कर बासा—लंका में तो राक्षस रहते हैं। यहाँ पर सज्जन व्यक्ति नहीं रहते। किसी बुरे स्थान पर संयोगवश यदि अच्छी वस्तु मिल जाय तब कहते हैं। (ख) किसी (बुरी) जगह अच्छी वस्तु तलाश करने पर भी न मिले तब भी व्यंग्य से कहते हैं। (हनुमानजी ने लंका में राम नाम लिखा हुआ देखकर यह कहा था)।

लंका में एक तू ही दरिद्र रहा—सोने की लंका में केवल तुम ही निर्धन हो। (क) जब कोई व्यक्ति किसी लाभदायक कार्य या स्थान में भी कोई लाभ न उठा पाए तब कहते हैं। (ख) जब अनेक संपन्न लोगों के बीच कोई एक व्यक्ति निर्धन होता है, तब उसके प्रति भी कहते हैं।

लंका में कोई बनिया नहीं होगा नहीं तो इस तरह राज न जाता—बनिया बहुत चालबाज तथा नीतिज्ञ होता है, इसी कारण उसके प्रति कहते हैं कि यदि तुम लंका में होते तो रावण कभी न हारता। तुलनीय: माल० लंका में वाण्यो नी थो जो यों राज चल्यो गयो; पंज० लंका विच कोई बनिया नही होवेगा नईं तां इये राज नां जांदा।

लंका में क्या ग़रीब नहीं होते? लंका जो सोने की बनी हुई थी, वहाँ क्या ग़रीब नही थे। अर्थात् वहाँ भी ग़रीब थे। आशय यह है कि धनी-ग़रीब हर जगह रहते हैं। तुलनीय: राज० लंका में किसा दालद्री को हुवै नी; पंज० लंका विच की गरीब नईं हुंदे।

लंका में छोटा सो बावन ही गज का—दे० लंका में सब....'।

लंका में जो छोट हैं बावन गज़ के सोउ—लंका में जो राक्षस सबसे छोटे हैं उनकी भी ऊँचाई बावन गज़ से कम नहीं है, बड़ों का तो कुछ कहना ही नही। जहाँ छोटे भी बड़ों के कान काटे उस स्थान या घर के संबंध में कहते हैं। तुलनीय: गढ़० लंका भा जो सबसे छोट्टो सो बावन गज लंबो।

लंका में सब बावन गज़ के—ऊपर देखिए।

लंका में सब बावन हाथ के—दे० 'लंका में जो छोट हैं....'। तुलनीय: बुंद० लंका में सब बावन गज के; भोज० लंका के जे बड़ छोट से हो ओन्चास हाथ के; हरि० लंक्का में बस्सै, वोह् ए बावन हाथ का।

लंका में सभी बावन हाथ के—दे० 'लंका में जो छोट हैं...'।

लंका में सोने की क्या कमी—अर्थात् लंका में सोने की कोई कमी नहीं है। जब किसी को किसी ऐसी जगह किसी वस्तु के होने के विषय में संदेह हो जहाँ उसकी अधिकता हो तब कहते हैं।

लंका पड़ले, उधार के पाले—निर्लज्ज नंगे के पाले पड़ गया, अब वह ठीक हो जाएगा। जब किसी दुष्ट की टक्कर उससे बड़े दुष्ट से हो जाती है तब कहते है।

लँगड़ा क्या चाहे दो पैर—लँगडे की यही चाह रहती है कि उसके दोनों पैर ठीक हो जायें। अर्थात् जिस वस्तु का जिस व्यक्ति के पास अभाव रहता है, वह उसे ही पाने के लिए इच्छुक रहता है। तुलनीय : मग० लँगड़ा चाहे दु गोड़; भोज० लंगड़ा के का चाही दुगो गोड़; पंज० लगे नूं की चाइदा दो पैर।

लँगड़ी आँगन लीपे दो जनीं सहारा दें—लंगड़ी अकेली तो चल नहीं सकती इसलिए उसे लिपाई के काम में दो औरतें सहारा भी दे रही हैं। (क) ऐसे व्यक्ति के प्रति व्यंग्य से कहते हैं जो काम थोड़ा और साधारण करे किंतु सहायक बहुत से चाहे। (ख) ऐसे व्यक्तियों के प्रति भी कहते हैं जो थोड़े से काम को बहुत बड़ा दिखाएँ और अपनी अयोग्यता को छिपाने के लिए किसी साथी को भी अपने साथ काम पर लाएँ। (ग) अयोग्य से कार्य कराने पर नुक़सान ही होता है। तुलनीय : मेवा० खोडी बऊ वायदो करे अर मान जणा टाँग जमावे।

लँगड़ी कट्टो आसमान/पर में घोंसला गिलहरी (कट्टो) है लँगड़ी पर उसका घोंसला आसमान में है। शेखीबाज़ को कहते हैं।

लँगड़ी घोड़ी मसूर का दाना लँगड़ी घोड़ी को मसूर का दाना खिलाते हैं। अयोग्य व्यक्ति के सम्मान पर कहते हैं। तुलनीय : अव० लंगड़ी घोड़ी मसुरी के दाल।

लँगड़ी झाड़ू दे तो एक सहारा दे—दे० 'लँगड़ी आँगन लीपे...'। तुलनीय : राज० लूली झाड़ू दे जद एक टाँग पकड़नाको चाहीजे।

लँगड़े ने चोर पकड़ा दौड़ियो मियां अंधे—जहाँ काम करनेवाले तथा उनके सहायक दोनों उस काम के करने में असमर्थ हों वहाँ पर कहते हैं।

लँगड़े-लूले गए बरात, अगवानी में खाएं लात—किसी बरात में लँगड़े और लूले व्यक्ति ही गए। परिणाम यह हुआ कि द्वार-पूजा (अगवानी) के समय उन्हीं को मार खानी पड़ी। आशय यह है कि अयोग्य लोगों को सम्मान नहीं मिलता।

लँगड़े-लूले गए बरात, दो-दो जूते दो-दो लात—ऊपर देखिए।

लँगड़े-लूले गए बरात, भात की बिरियाँ खेलन लात—दे० 'लंगडे-लूले गए बरात अगवानी...'।

लँगड़े लूले सब एक ही घर में—जहाँ पर सभी तरह के बुरे लोग हों वहाँ कहते हैं। तुलनीय : गढ़० लोला लोला सब एकी खोला; पंज० लंगे लूले सब इको कर बिच।

लँगोटी में फाग खेलते हैं—लँगोटी पहन कर होली खेलते हैं। पास-पल्ले कुछ न होने पर भी जब कोई उत्सव मनाता है या रंगरेलियाँ करता है तब कहते हैं।

लँघन मीत मँगता बैरी—उपवास (लंघन) मित्र के समान है और क़र्ज़ (मांगना) शत्रु के। आशय यह है कि क़र्ज़ या उधार लेकर खाने की अपेक्षा भूखे रह जाना अच्छा है। उधार या क़र्ज़ लेना बहुत बुरा है। तुलनीय : हरि० लंघण मीत, कढारा वैरी।

लंबकूर्चो मूर्खो भवति जिसकी दाढ़ी लंबी होती है वह मूर्ख होता है।

लंबा टीका मधुरी चाल, यह आई किसका घर घाल—माथे पर बिंदी लगाए, मधुरी गति से चलनेवाली यह किस-का घर बर्बाद करने आई है। भ्रष्ट स्त्री के प्रति कहते है।

लंबा टीका मधुरी बानी, दग़ाबाज़ की यही निशानी—लंबा टीका लगाकर मीठी-मीठी बातें करने वाले धोखेबाज़ होते हैं। पाखंडी संन्यासियों के प्रति भी कहते हैं। तुल-नीय : अव० लंबा टीका मधुरी बानी, दगाबाज कै यहै निसानी; राज० लांबा तिलक, माधुरी, बाणी, दगैबाजरी आई निसाणी; ठाठ तिलक और मधुरी वाणो, दगाबाज की यही निसाणी, मरा० कपाळ भर गंध मधुर वाणी धायक्याची ही चिन्हें जाणी; पंज० लमा टिका मीठी वाणी धोखेबाज दी इही निसानी; अं० Too much courtesy too much craft.

लंबी दाढ़ी बेवक़ूफ़ की—दे० 'लंबकूर्चो'...'।

लंबी धोती मुख में पान, घर का हाल गोसैंया जान—अच्छे वस्त्र पहनकर पान खाते हुए घूम रहे है लेकिन इनके घर की दशा तो भगवान जानता है। जो निर्धन होते हुए भी बड़ों जैसे ठाट से रहता है उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

लंबे की अकल एड़ी में—आशय यह है कि लंबे व्यक्ति कम बुद्धिमान होते हैं। तुलनीय : पंज० लमे दी मत अड्डी

बिच।

लंबे की अकल घुटनों में—ऊपर देखिए।

लंबे घूंघटवाली से डरिए— क्योंकि वह बहुत खतरनाक होती है। भ्रष्ट चरित्रवाली स्त्रियों के प्रति कहते हैं जो चरित्रहीन होते हुए भी अपने को सती जताने के लिए लंबा घूंघट काढ़े गंभीर चाल से चलती है, या किसी को देखकर लंबा घूंघट काढ़ लेती है।

लंबे लंबे कान और ढीला मुतान, छोड़ो-छोड़ो किसान न तो जात है प्रान –हे किसान! लंबे-लंबे कान तथा लटकती हुई इंद्रिय वाले बैल को शीघ्रातिशीघ्र अलग कर दो नहीं तो वह तुम्हारे प्राण ले लेगा। अर्थात उपरोक्त ढंग के बैल अच्छे नही होते।

लइकन के हम छूई नाहीं, जवान लगें सगे भाई; बुढ़वन के हम छोड़ी नहीं कितनो ओढ़ें रजाई—जाड़ा कहता है कि मैं बच्चों को छूता नही हूँ, जवानों के पास जाता नही क्योंकि वे मेरे सगे भाई लगते है और बूढ़ों को छोड़ता नहीं हूँ चाहे वे कितनी भी रजाई क्यों न ओढ़ें। आशय है यह कि बच्चों और जवानों की अपेक्षा बूढ़ों को अधिक ठंड लगती है।

लकड़ी की तलवार काई से निडर—लकडी की तलवार में काई लगने का भय नही रहता। आशय यह है कि नीच या बेशर्म पर डाँट-फटकार का कोई प्रभाव नही पड़ता। तुलनीय: पंज० लकड़ी दी तलवार ते काई दा की डर।

लकड़ी की देवी, कुल्हाड़ी से पूजा—लकड़ी की देवी की पूजा कुल्हाड़ी से की जाती है। लकड़ी का कुल्हाड़ी से ही चीरा-फाड़ा जाता है। जैसा व्यक्ति हो उसके साथ वैसा ही व्यवहार किया जाता है, अच्छे के साथ अच्छा और बुरे के साथ बुरा। तुलनीय: राज० लाकड़ारे देव ने खूसड़ैरी पूजा।

लकड़ी के बल बंदर नाचे—लकड़ी के बल पर ही बंदर नाचता है। (क) जो डाँटने-फटकारने पर ही कार्य करते है उनके प्रति कहते हैं। (ख) जो दूसरों के बल पर बहुत लंबी-चौड़ी हाँकते है उनके प्रति भी व्यंग्य में कहते है। तुलनीय: अव० डंडा के बल बाँदर नाचै; हरि० भय के नाण तै भूत भी नाचै; बुंदे० खूंटा के बल बछरा नाचे; कौर० लकड़ी के बल बंदरी नाचै; मरा० काठीच्या बलावर वानरी नाचते; तेलुगु० कोलाडिने कोति आडुनु; पंज० सोटी नाल बंदर नचण।

लकड़ी के बल बंदरिया नाचे—ऊपर देखिए।

लकीर के फ़क़ीर हैं– रूढ़िवादी है। पुरानी चाल पर चलनेवालों को कहते हैं। तुलनीय: राज० लकीर क फकीर हुआं; अव० लकीर कै फकीर; गढ़० लकीर का फकीर; पंज० लकीर दे फ़कीर नै।

लक्षणप्रमाणाभ्याम वस्तुसिद्धिः— लक्षणों और प्रमाणों से किसी वस्तु की प्रकृति का ज्ञान प्राप्त किया जाता है। यथा, गन्धवत्वादि प्रमाण का प्रत्यक्ष प्रमाणादि से पृथिवी आदि की सिद्धि होती है।

लक्ष्मी उद्यमी की दासी है—स्पष्ट। तुलनीय: पंज० उद्धम अग्गे लच्छमी पक्खे अग्गे पौन।

लक्ष्मी और सरस्वती में नहीं पटती – दे० 'लक्ष्मी सरस्वती का बैर है।' तुलनीय: असमी– लक्ष्मी सरस्वतीर् मिल् नाइ।

लक्ष्मी कहकर आय, न कहकर जाय - लक्ष्मी न तो बता कर आती है और न ही बता कर जाती है अर्थात् स्वेच्छा से आती-जाती है। जब किसी व्यक्ति को अकस्मात् धन प्राप्त हो और एकाएक ही लुप्त हो जाय तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय: भीली -लचमी केई ने नी आए ने केई ने नी जाए; पंज० लसमी कह के नई आंदी ते नई जांदी।

लक्ष्मी चंचला है - लक्ष्मी किसी के यहा स्थिर नही रहती। आज के पास है तो कल दूसरे के यहां चली जाती है। (क) किसी के धन के निकल जाने पर कहा जाता है। (ख) जब कोई निर्धन धनी हो जाता है तब भी कहा जाता है। तुलनीय: अं० Riches has wings.

लक्ष्मी दो दिन की मेहमान संपत्ति दो दिन ही रहती है। अर्थात् धन किसी के पास सदा नही रहता। तुलनीय. भीली- -लचमी पांच दाड़ा नी पामणी; पंज० लसमी दो दिन दी परौनी।

लक्ष्मी बिन आदर कौन करे ?— लक्ष्मी के बिना कोई आदर नही करता। अर्थात् धनवानों का ही संसार मे आदर किया जाता है। तुलनीय: राज० लक्ष्मी बिन आदर कूण करै; पंज० लसमी बगैर कौण पुच्छे।

लक्ष्मी बिन चतुर लबार—लक्ष्मी के बिना चतुर भी मूर्ख और झूठा कहलाता है। धनवान ही गुणी और बुद्धिमान होने पर भी मूर्ख समझा जाता है। तुलनीय: राज० लछमी विनारो लपोड़; पंज० लसमी बगैर चतुर वी चूढा;

लक्ष्मी सरस्वती का बैर है - लक्ष्मी और सरस्वती मे पटती नही है। आशय यह है कि धनवान व्यक्ति विद्यार्जन के प्रति उदासीन होता है और जो विद्या या सरस्वती का पुजारी होता है उसके पास धन कभी नहीं आता।

लक्ष्मी से भेंट ना, दरिद्र से बैर – घर में कुछ नही है

फिर भी दरिद्र से दुश्मनी करते है। अर्थात् जो लाभ का काम नहीं करता और व्यर्थ की दुश्मनी करता फिरता है उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय . अव० लच्छमी से भेंट नाही दलिद्दर से बैर नाहीं।

लग गई जूती, उड़ गई खेह फूल-पानसी हो गई देह—जूती लगने से मैल (खेह) उड़ गया और शरीर पान-फूल जैसा हलका हो गया है। निर्लज्ज को कहते हैं जिसे अपनी बेइज़्ज़ती का ज़रा भी ध्यान नहीं रहता।

लग गया तो तीर नहीं तो तुक्का - (क) अंदाज़ से काम करने पर कहते हैं कि बन गया तो ठीक, नहीं तो कोई बात नहीं। (ख) कार्य करने पर कुछ-न-कुछ होता ही है। तुलनीय : बुं० लग गओ तौ तीर नई तौ तुक्का; पंज० लग गया तीर नई ता तुक्का।

लगन बिच तक़दीर नहीं—बिना लगन से कोई कार्य किए तक़दीर नहीं बनती। अर्थात् परिश्रम करने से ही अच्छा परिणाम मिलता है और जीवन सुखी रहता है। कामचोरों या आलसियों को समझाने के लिए कहते हैं। तुलनीय : पंज० लगण बगैर तकदीर नई बनदी।

लगन बिन तकदीर फूटी—ऊपर देखिए।

लगन बिन धन नहीं—बिना परिश्रम से कार्य किए धन नहीं मिलता। कामचोरों के शिक्षार्थ कहते हैं।

लगन बुरी होती है - किसी काम के करने तथा किसी चीज के पाने में जब किसी की लगन लग जाती है तो जब तक वह काम न हो जाय तथा वह वस्तु प्राप्त न हो तब तक चित्त बेचैन रहता है। तुलनीय अव० लाग बहुतै बुरा है।

लगन लगे का राम साथी चित्त लगाकर जो कार्य करता है उसी की ईश्वर भी सहायता करता है। तुलनीय : अं० God helps them who help themselves

लगन हो तो बिगड़ी सुधरे—यदि ध्यान से किया जाय तो बिगड़ा हुआ कार्य भी ठीक हो जाता है अर्थात् परिश्रम बहुत बड़ी चीज़ है। तुलनीय . पंज० लगण होवे तां बिगड़ी बणे।

लगा जो ज़ख़्म ज़बाँ का रहा हमेशा हरा—बात का घाव हमेशा हरा रहता है। आशय यह है कि कडुवी बात कभी नहीं भूलती। तुलनीय : अं० Wounds caused by words are hard to heal.

लगा तो तीर नहीं तो तुक्का - दे० 'लग गया तो तीर···'। तुलनीय : अव० लाग तो तीर नाही तुक्का; हरि० लाग ग्या तै तीर नां तै तुक्का; गढ़० लगीग्यो त मुत्या, नी त चुत्या।

लगा तो तीर नहीं तुक्का ही सही दे० 'लग गया तो तीर···'।

लगाम और कोड़ा तो हो गए अब घोड़ा ही बाकी है—मामूली साधन होने पर जब व्यक्ति बड़े-बड़े मनसूबे बाँधना शुरू करता है तब व्यंग्य में उसके प्रति यह कहावत कही जाती है। तुलनीय : भोज० लगाम कोड़ा त हो गइल अब घोड़ा बाकी बा।

लगा सो भगा—जो काम शुरू हुआ उसकी समाप्ति भी निश्चित है। जीवन की अस्थिरता तथा क्षणभंगुरता पर कहा जाता है। तुलनीय : अव० लागा सो भाग; पंज० लगया सो नढ्या।

लगी तो लगी नहीं तो बैंगन रोटी सही भैंस या गाय लग गई तो दूध-रोटी खाई जाएगी और यदि नहीं लगी तो बैंगन से ही रोटी खाई जाएगी। आशय यह है कि यदि काम बन गया तो मौज है और यदि नहीं बना तो पुरानी दशा में ही रहना पड़ेगा। प्रयत्न करने के लिए कहते है।

लगी पैर में, पट्टी सिर में चोट तो पैर में लगी है और पट्टी सिर में बाँध रहे है। असगत या मूर्खतापूर्ण काम करनेवाले के प्रति व्यंग्य में कहते है। तुलनीय : राज० पगाँर लागी अर पाटी बाँधे माथैर; पंज० लग्गी पैर बिच पट्टी सिर विच।

लगी बुरी होती है—दे० 'लगन बुरी होती है।' तुलनीय : अव० लाग बुरा होत है।

लगी में और लगती है- चोट पर ही चोट लगती है। जिस पर विपत्ति पर विपत्ति पड़ती रहती है उसके प्रति कहते है। तुलनीय : अव० चोट पै चोट बटठन आत है, हरि० चोट पै चोट लाग्या करै; पंज० लग्गी बिच होर लगदी है।

लगी हल्द हुई बल्द पतली-दुबली भी कमारी लड़की शादी होने पर मोटी-ताज़ी या स्वस्थ हो जाती है। (यह ब्रज प्रदेश की कहावत है)।

लगे अगस्त फूले बन कासा, अब छोड़ो बरखा की आसा - यदि आसमान में अगस्त तारा तथा जंगल में कास (एक घास) सपुष्प नज़र आये तो समझ लेना चाहिए कि अब वर्षा न होगी।

लगे उसी का नाम ओषधि -जो दवा फ़ायदा कर जाय वही सबसे अच्छी दवा है। आशय यह है कि जिससे अपना लाभ हो वही सबसे अच्छा है।

लगे को बिडारिए ना, बिन लगे को हिलाइए ना—परिचित को त्यागना नही चाहिए और अपरिचित को मुँह नही लगाना चाहिए।

लगे खुशामद सब कहँ प्यारी—खुशामद सबको अच्छी लगती है। खुशामद बहुत बड़ी चीज़ है और इससे हर काम बन जाता है। यहाँ तक कि ईश्वर भी इससे प्रसन्न हो जाते हैं। तुलनीय : अव० खुशामद सबै का पियार लागत है; पंज० चमचागिरी सब नू चगी लगदी है।

लगे तो तीर नहीं तो तुक्का ही सही—दे० 'लग गया तो तीर···'।

लगे तोते भीतों बोलने—तोते भी तो (दीवारों) पर बोलने लगे। किसी गुप्त बात के प्रकट हो जाने पर कहा जाता है। तुलनीय : पज० तोते लग्गे कंदा ते बोलण।

लगे दम मिटे ग़म—गाँजा पीने से दुख दूर हो जाता है। गजेडियों का कहना है। तुलनीय : अव० लागे दम, मिटै गम।

लगे दाम बने काम- रुपये खर्च करने से काम बनता है। (क) जो बिना कुछ खर्च किए ही किसी काम को करना चाहता हो उसके प्रति कहते हैं। (ख) घूसखोर अधिकारी भी ऐसा कहते है। तुलनीय : अव० लागै दाम तौ बनै काम; पज० पैहा खरचो कम बनाओ।

लगे रगड़ा मिटे झगड़ा—भाँग रगडकर पीओ, सारा झगड़ा मिट जाएगा। भगेड़ियों का कहना है। तुलनीय : अव० लागै रगड़ा, मिटै झगड़ा।

लघु मति मोरी चरित अवगाहा—मेरी बुद्धि थोड़ी या छोटी है और चरित्र या बात बड़ी है। जब कोई किसी कथा या किसी की करनी को बहुत अकथनीय कहना चाहता है तो कहता है।

लच्छन एक कुलच्छन चार—गुण एक है और अवगुण चार है। जिसमे अच्छाई कम और बुराई अधिक होती है उसके प्रति कहते है।

लच्छन एक, कुलच्छन दो—ऊपर देखिए।

लजाउर बहुरिया सराय में डेरा—कहते हैं कि बहू बहुत शर्मीली है और उसने जाकर सराय में अपने रहने का इन्तजाम किया है। (क) व्यभिचारिणी स्त्री के प्रति व्यंग्य मे कहते है जो शर्मीली होने का दिखावा करती है। (ख) ऐसे व्यक्ति के प्रति व्यंग्य में कहते है जिसकी लोग बहुत तारीफ़ करें पर वह वास्तव में बुरा हो।

लजाधुर बहुरिया, सराय में डेरा—ऊपर देखिए।

लजाना बोलू मुँह बिदोरे—शरमाई बकरी दांत दिखाती है। बेशर्मी की हँसी पर कहते हैं।

लजाया लड़का पेट खुजलावे—शरमाया हुआ लड़का पेट खुजलाता है। आशय यह है कि लज्जित व्यक्ति निगाहें ऊपर नही करता। तुलनीय : भोज० लजाइल लइका टोंढी टोवे या लजाइल लइका ढेंढकी खजुआवे; पंज० सरमाया मुंडा टिड खुरके।

लजुवा बाम्हन खसुआ चोर—शरमानेवाला ब्राह्मण और खाँसनेवाला चोर सदा हानि उठाते है। जब कोई ब्राह्मण दक्षिणा माँगने मे शरमाता है तब कहते है। तुलनीय : असमी—लाजुआ बामुण्, काहुवा चोर्, दुयोरो काज्र् परे ओम; पंज० शरमांदा पंडत खंगदा चोर।

लटा हाथी बिटौरे बराबर—आशय यह है कि रईस आदमी बिगडने पर भी छोटों से बड़ा ही रहता है।

लटे की जोय, सारे गाँव की सरहज—कमज़ोर या ग़रीब की स्त्री (जोय) पूरे गाँव के लोगों की सरहज लगती है। साले की स्त्री के साथ हँसी-मज़ाक़ करने का रिवाज है। आशय यह है कि निर्धन को सभी कष्ट देते हैं। (सरहज—साले की पत्नी)।

लठ, मुँह फट—(क) बिना सोचे-समझे बोलनेवाले के प्रति कहते हैं। (ख) जिसके हाथ में लाठी होती है अर्थात् जो सबल होता है वह जो चाहता है सो करता है। तुलनीय : अव० लठ गंवार।

'लड्डू' कहे मुँह मीठा नहीं होता—'लड्डू' कहने मात्र से ही मुँह मीठा नही हो जाता बल्कि लड्डू खाने से मुँह मीठा होता है। आशय यह है कि केवल बड़ी-बड़ी बातें करने से कोई लाभ नही होता बल्कि परिश्रम करने से लाभ होता है। जो केवल बातें करते हैं और श्रम नही करते उनके प्रति व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : पज० लड्डू कैण नाल मुंह मिट्ठा नई हुंदा।

लड्डू कहाँ से मीठा, कहाँ से खट्टा?—लड्डू का कौन सा भाग मीठा होता है और कौन-सा खट्टा? लड्डू तो सब ओर से मीठा ही होगा। (क) सभी व्यक्तियों को एक समान मानना चाहिए, धन या जाति आदि के आधार पर भेदभाव करना अनुचित है। (ख) किसी भी बात का निर्णय तटस्थ रहकर करना चाहिए, अपनों का पक्ष लेकर गया निर्णय कुछ दिन ही चलेगा। तुलनीय : राज० लाडूरी किया कोर में कुण खारो, कुण मीठो; ब्रज० लड्डू कहाँ मीठौ कहाँ खट्टौ; पंज० लड्डू किथो मिट्ठा किथों खट्टा।

लड्डू का कौन हिस्सा मीठा और कौन खट्टा—लड्डू तो सभी तरफ़ से मीठा होता है। माँ-बाप के लिए सभी बच्चे

एक-से होते हैं। बच्चों को समझाने के लिए कहते हैं कि हमारे लिए सभी बराबर हैं, कोई कम या अधिक प्यारा नहीं है। तुलनीय : माल० लाडू री कोर कसी खाटी ने कसी मीठी।

लड्डू टेढ़ा भी मीठा होता है—(क) अच्छी चीज़ हर दशा में अच्छी ही होती है। (ख) संतान कुरूप हो या सुन्दर मगर प्यारी होती है। तुलनीय : पंज० लड्डू डीगा वी मिट्ठा हुंदा है।

लड्डू तो कड़वे हैं—जब कोई व्यक्ति किसी का नक़द पैसा चुरा ले और उन्हीं पैसों से उसे लड्डू लाकर खाने को दे तो वह खाते समय इस प्रकार कहता है।

लड्डू न तोड़ो चूरा झाड़ खा लो—(क) मूल न बिगाड़ो ब्याज खा लो। (ख) कंजूसों के प्रति व्यंग्य में भी कहते हैं जो किसी को अच्छी चीज़ न देकर घटिया चीज़ ही देना चाहते हैं।

लड्डू फूटेगा तो चूर झरेगा—दो बड़े आदमियों की लड़ाई में दूसरों का लाभ होता है।

लड्डू लड़े चूरा झड़े—ऊपर देखिए।

लड़का अपना ब्याहें, मूंछें यहाँ मरोड़ें—विवाह अपने लड़के का करते हैं और रोब यहाँ दिखाते हैं। जब कोई अपना कार्य करे और दूसरों पर रोब दिखावे तब उसके प्रति कहते हैं।

लड़का किसी का क्वांरा नहीं रहता—किसी का लड़का अविवाहित नहीं रह जाता। आशय यह है कि (क) अच्छी या बुरी शादी सबके लड़के की हो जाती है। (ख) किसी का कोई काम हुए बिना नहीं रहता, भले वह अच्छा न हो।

लड़का के बल लड़के की माँ मौज उड़ावे—(क) लड़के के लिए माँ जब किसी से कुछ माँगती है और स्वयं उसे खा डालती है, तब उक्त कहावत कही जाती है। (ख) दूसरों की आड़ में अपना मतलब पूरा करने वाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : भोज० लरिक क बहन्ने लरकोरी जीये, लरिकवा के भरोसे लरकोरिया जीयें, लरिका लाथे लरकोरियो जीयेला, लइका के बहाने लइकोर जीएला।

लड़का बने बीबी, पट्टी बाँधे मियाँ—बीबी को बच्चा होता है और पट्टी बाँधते हैं मियाँजी। जब कष्ट में कोई हो और दूसरा अकारण परेशान हो तब उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : मुंडा जन्मे बीटी अते पट्टी बन्ने मियाँ।

लड़का ठाकुर, बूढ़ दीवान, मामला बिगड़े साँझ बिहान—यदि बालक राजा हो और उसका मंत्री बूढ़ा आदमी हो तो काम शाम और सुबह के बीच बिगड़ जाएगा। आशय यह है कि अयोग्य व्यक्तियों के ऊपर किसी काम की ज़िम्मेदारी सौंप देने से कार्य शीघ्र बिगड़ जाता है। (बिहान = प्रात: काल)। तुलनीय : मैथ० छोडा मांड़र बूढ़ दिवान ममला बिगड़े सांझ बिहान; भोज० लइका ठाकुर बूढ़ दिवान ममिला बिगरे सांझ बिहान।

लड़का न देखो उसके यार देखो—आशय यह है कि किसी व्यक्ति के आचरण का पता उसके दोस्तों के देखने से ही चल जाता है।

लड़का पहने जोड़ा, दुनिया देखे थोड़ा—जिसको कभी जूता पहनने को न मिला हो और उसको मिल जाय तो उसके पाँव ज़मीन पर नहीं पड़ते। जब कोई व्यक्ति गरीबी से एकाएक धनवान होने के बाद सबको तुच्छ समझने लगे तो उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० छोरा न पैन्या जोड़ा मानै देखी थोड़ा।

लड़का बगल में ढिंढ़ोरा शहर में—दे० 'बगल में लड़का...'।

लड़का मालिक, बूढ़ दीवान, मामला बिगड़े साँझ बिहान—दे० 'लड़का ठाकुर, बूढ़ दिवान...'।

लड़का रोवे खसम चिल्लाय, मेरी समझ में कुछ न आय—इधर लड़का रो रहा है और उधर पति बुला रहा है, मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि मैं क्या करूं? (क) गृहस्थी के झंझटों के प्रति कहते हैं। (ख) जब एक साथ किसी के सामने कई समस्याएं आ जाती हैं और वह निर्णय करने में असमर्थ हो जाता है तब कहते हैं।

लड़का रोवे खसम चिल्लाय, लइकोरी में हरिया फजीहत होय—ऊपर देखिए।

लड़का रोवे बालों को, नाई रोवे मुँड़ाई को—लड़का अपने बालों के लिए रो रहा है और नाई बाल मुड़ाई के लिए। आशय यह है कि सभी को अपना-अपना स्वार्थ सूझता है।

लड़की अपने घर पर ही अच्छी लगती है—लड़की का ससुराल में रहना ही अच्छा होता है। आशय यह है कि उचित स्थान पर रहने से ही उसकी प्रतिष्ठा क़ायम रहती है।

लड़की किसी की क्वांरी नहीं रहती—दे० 'लड़का किसी का क्वांरा...'।

लड़की की सगाई और झूठ की सफाई—लड़की का विवाह करना ही पड़ता है और झूठ को छिपाने के लिए बहाना बनाना ही पड़ता है। जब कोई अपने झूठ को छिपाने

का प्रयत्न करता है तब उसके प्रति कहते हैं।

लड़की को रोटी भी नहीं, लड़के को दूध-भात— लड़के को दूध-भात खिलाते हैं और लड़की को सूखी रोटी भी नहीं देते। गाँवों में लोग लड़के की अपेक्षा लड़की को कम प्यार करते है तथा उसके खाने-पीने पर भी कम ध्यान देते हैं, इसलिए कहते हैं।

लड़की चमार की नाम रजरनियाँ—चमार की लड़की है और नाम है राजरानी। स्थिति या गुण के विपरीत नाम होने पर व्यंग्य।

लड़की राजा की भी घर नहीं बैठती आशय यह है कि सबको अपनी लड़की किसी दूसरे को देनी पड़ती है।

लड़की राजा के भी होती है—बुरे दिन सबके जीवन में आते है।

लड़कीवाले का सिर नीचा—लड़कीवाले लड़केवालों के सम्मुख झुककर रहते हैं: (यह कहावत पुरानी है, आजकल ऐसा नही रह गया)।

लड़के का खिलौना चारपाई पर कभी भूमि पर—लड़का अपने खिलौने को कभी चारपाई पर रखता है तो कभी ज़मीन पर। अस्थिर चित्तवाले व्यक्ति के प्रति व्यंग्य मे कहते है।

लड़के की दोस्ती जी का जंजाल—दे० 'नादान की दोस्ती···'। तुलनीय: भोज० लइका क दोस्ती जिउ क जंजाल, पंज० मुंडयां दी यारी, जी दा जंजाल।

लड़के की यारी, गधे की सवारी—अनुभवहीन या मूर्ख की दोस्ती गधे की सवारी की भाँति इज्ज़त खराब करने वाली है। तुलनीय: भोज० लइकन क यारी गदहा क सवारी; अव० लड़कन कै आरी जान का खतरा।

लड़के के बहाने लरकोरी जीवें - नीचे देखिए।

लड़के के भाग से लड़कोरी जीये लड़के के कारण ही उसकी माँ का भी आदर होता है। दे० 'लड़का के बल लड़के ·।' तुलनीय: भोज० लइका के भागे लइकोरि जीएं; अव० लड़कै कै भाग से लड़कोर मेहरिया जिअत ही; पंज० बच्चे दा पजन, मां दा रजन; गढ़० पौणा का नौ खाणे वाला कानां सेणा।

लड़के को जब भेड़िया ले गया तब टट्टी बाँधी—जब कोई काम बिगड़ जाने पर सावधानी करे तब कहते है। तुलनीय: अं० It is too late to shut the stable-door after the horse has bolted.

लड़के को मुंह लगाओ तो दाढ़ी खसोटे—लड़के को मुंह लगाने से वह दाढ़ी नोचने लगता है। आशय यह है कि तुच्छ व्यक्तियों को मुँह नही लगाना चाहिए क्योंकि मुंह लगाने से वे बदमाशी करने लगते हैं। तुलनीय: अव० लड़का का मुँह लगावै तो डाढ़ी खसोटै; पंज० मुडे नू मुह लगाओ ते ओह दाढ़ी पुरे।

लड़के शैतान के कान काटें—आशय यह है कि बच्चे शैतान से भी बढ़कर दुष्ट होते है।

लड़के हुए सयाने, दलिद्दर गए मियाने—आशय यह है कि जब बच्चे सयाने होकर कमाने लगते हैं तो परेशानियाँ समाप्त हो जाती हैं।

लड़कों का खेल नहीं है—जब कोई ऐसा व्यक्ति किसी काम को करने के लिए तैयार हो जो उसके वश का न हो तब उसके प्रति ऐसा कहते है।

लड़कों का जाड़ा केकड़ा खाय—लड़कों की ठंड को केकड़ा खा जाता है। अर्थात् लड़कों को जाड़ा नही लगता। (केकड़ा - पानी का एक कीड़ा)। तुलनीय: भोज० लड़िकन क जाड़ा केकढ़ा खाय।

लड़कों को भगवा नहीं बिल्ली को गाँती लड़कों के पहनने के लिए वस्त्र नही है और बिल्ली के लिए गाँती की व्यवस्था कर रहे है। जो घरवालों की तकलीफ़ का ख्याल न करे और दूसरों की सहायता करे उस पर कहा जाता है। तुलनीय: अव० लड़कवन के बरे भगवा नाही, बिलाई के बरे ओढ़नी।

लड़कों को मैं छूऊँ नहीं, जवान मेरे भाई; बुड्ढों को मैं छोड़ूं नहीं कितना भी ओढ़ें रज़ाई - दे० 'लइकन के हम छूई नाही···'।

लड़कों में लड़का, बूढ़ों में बूढ़ा—(क) समय और स्थान के अनुसार अपने को बना लेनेवाले के प्रति कहते हैं। (ख) सीधे और भोले-भाले व्यक्ति के प्रति भी कहते है। तुलनीय: अव० लड़कन मा लड़का, बुढ़वन मा बुढ़वा; पंज० मुंडयां बिच मुंडा बुढयां बिच बुढा।

लड़कों से चोर मरवाते हैं—बच्चों से चोर को मारने के लिए कहते है। (क) छोटे साधन द्वारा बड़ा कार्य सिद्ध करने का प्रयास करनेवालों के प्रति व्यंग्य से कहते है। (ख) किसी मूर्ख अथवा दुर्बल व्यक्ति से किसी कठिन या बुद्धिमत्तापूर्ण कार्य कराने का प्रयत्न करनेवाले के प्रति भी व्यंग्य से कहते है। तुलनीय: माल० छोटा होते चोर मरवणों; पंज० बउआं कोलों चोर मरवाणा।

लड़कों से जा घर बसे तो बाबा बुढ़िया क्यों लाएँ—लड़कों से ही यदि घर बस जाय तो बाबा विवाह कर बुढ़िया

को क्यों लाएँ ? अर्थात् यदि नए लोगों से काम चल जाय तो पुराने अनुभवी लोगों को कोई क्यों पूछे ? अनुभवी लोग स्वयं के प्रति कहा करते हैं। तुलनीय : राज० टाबरियां ही घर बसे तो बाबो बुढली क्यूं लावै।

लड़कों से ही बाबा बनते हैं -आशय यह है कि धीरे-धीरे ज्ञान होता है। तुलनीय : अव० लरिकई ते बाबा होत है; पंज० मुडयां तो ही बाबा बणदे हन; अं० Child is the father of man.

लड़ते तो नहीं मुए मारते हैं —लड़ नहीं रहे बल्कि मरे हुए लोगों को मार रहे हैं। (क) चुगलखोर को कहते हैं। (ख) कायरों के प्रति भी व्यग्य में कहते हैं। तुलनीय : पंज० लडदे नई तां मोययां नूं मारदे हन।

लड़तों के पीछे और भागतों के आगे - डरपोक आदमी के प्रति कहा जाता है। तुलनीय : अव० लड़तकै दाई पाछे, भागत दाई आगे; गढ़० लड़दी दौं पिछाडी, अर भागदी दौ अगाडी, पंज० लड़दियां दे पिछे ते नठदियां दे अग्गे।

लड़ना दे पर बिछुड़ना न दे—आपस में वाद-विवाद या थोड़ा लड़ाई-झगड़ा ठीक है पर आपस में फूट होना या अलग हो जाना ठीक नहीं। तुलनीय . अव० लड़न रात आवै, मरन रात न आवै; राज० लड़नरी बखत करै बिछड़न वेला मत करै।

लड़ना सिर फोड़ के, खाना जांघ जोड़ के—ऊपर देखिए। तुलनीय : अव० लड़ै तौ मूड़ फोरकै, खाय जाँघ मा जाँघ जोर कै।

लड़ने के लिए भी एक चाहिए—आशय यह है कि अकेले कोई भी कार्य नहीं किया जा सकता। तुलनीय : असमी - दन्द्व करिबलैओ लग लागै; पंज० लड़न लई वी इक चाइदा है।

लड़ाई और आग का बढ़ाना क्या ?—लड़ाई और आग को बढ़ते देर नहीं लगती। तुलनीय : अव० लड़ाई औ आगी बढ़तै जात है; पंज० लड़ाई अते अग्ग दा बदाना की।

लड़ाई का घर हाँसी, और रोग की घर खाँसी—हँसी-हँसी में लड़ाई हो जाती है और खाँसी आते-आते रोग हो जाता है। तुलनीय : भोज० झगरा क घर हाँसी, रोग के घर खाँसी; अव० लड़ाई कै घर हाँसी, औ रोग कै घर खाँसी; माल० लड़ाई रो घर हाँसी, रोग रो घर खाँसी; मरा० भांडणाचें मूल दुमरयाला हँसणे नि रोगाचें घर खोकणें; पंज० लड़ाई दा कर हसी ते बमारी दा कर खग।

लड़ाई का मुँह काला - लड़ाई-झगडे का फल हमेशा बुरा होता है।

लड़ाई की जड़ हांसी —हँसी-दिल्लगी लड़ाई-झगड़े की जड़ है।

लड़ाई की जड़ हाँसी, रोग की जड़ खाँसी —दे० 'झगड़ा की जड़ हाँसी···'।

लड़ाई पीछे सभी सूरमा —लड़ाई बीत जाने पर सभी वीर होते हैं। मौका बीत जाने पर जब कोई बहुत लम्बी-चौड़ी बातें करता है कि मैं रहता तो 'यह करता, वह करता' तब उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : मल० तुणम् चारि निलकुन्नोल पयट्टान तोन्नुम; पंज० लड़ाई मगरो मारे सूरमे, अं० In a calm sea every man is a pilot.

लड़ाई में कुछ लड्डू नहीं बँटते—लड़ाई-झगड़े में मिठाई नहीं मिलती। आशय यह है कि लड़ाई में हानि के सिवा तनिक भी लाभ नहीं होता। तुलनीय अव० लड़ाई मा कुछ धरा नाहीं; हरि० लड़ाई में के लाड्डू बट्टया करै, पंज० लड़ाई बिच लड्डू नई बडौंद, अं० Keep aloof from quarrels, be neither a witness nor a party.

लड़ाई में कौन से लड्डू बँटते हैं ? ऊपर देखिए। तुलनीय : राज० लड़ाई में किसा लाडू बँटे है, पंज० लड़ाई बिच किहडे लड्डू बडौंदे हन।

लड़ाई से कुछ नहीं मिलता—लड़ाई-झगड़ा करने से कोई लाभ नहीं होता।

लड़ाका दीवारों से भी लड़े—लड़नेवाले दीवारों से भी लड़ते चलते हैं। व्यर्थ में सबसे झगड़ा करने वाले के प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

लड़ाकी के मुँह कौन लगे ? -अर्थात् लड़ाई-झगड़ा करनेवालों से दूर ही रहना चाहिए। तुलनीय : पंज० लड़ाकी दे मूँह कौन लग्गे।

लड़ाकी घूमे लड़न को —झगड़ा करनेवाली झगड़ा करने के लिए सदा घूमती रहती है। बहुत झगड़ालू स्त्री के प्रति कहते हैं।

लड़ाकी मुहल्ले की रानी —लड़ाई करने वाली औरत मुहल्ले की रानी होती है। आशय यह है कि झगड़ालू स्त्री से सभी डर कर रहते हैं।

लड़ाकी से खुदा भी डरे झगड़ालू स्त्री से ईश्वर भी डरता है। अर्थात् झगड़ालू स्त्री से सभी डरते हैं। अधिक झगड़ा करनेवाली स्त्री के प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

लड़ाके के चार कान—जिसे लड़ने की आदत हो वह लड़ने के लिए कोई-न-कोई बहाना तलाश कर ही लेता है।

लड़ाके पड़ोसी से अकेला भला—स्पष्ट।

लड़ाके से भगवान भी डरे—दे० 'लड़ाकी से खुदा भी ···'।

लड़ें न भिड़ें, तरकस पहिने फिरें—लड़ते तो हैं नहीं लेकिन तरकस लेकर सदा घूमते रहते हैं। डींग हाँकने वाले को कहते हैं।

लड़ें लोह पाहन दोऊ, बीच रुई जरि जाय—लोहे और पत्थर के संघर्ष से अग्नि पैदा होती है जिसके कारण रुई जल जाती है। बड़ों की लड़ाई में छोटों की हानि होती है।

लड़ें सिपाही नाम सरदार का—लड़ते सिपाही हैं और नाम (यश) सरदार का होता है। आशय यह है कि छोटे परिश्रम से काम करते हैं और बड़े उस यश के स्वय भागी बन जाते है। तुलनीय : अव० लड़ैं सिपाही नाम होय सरदार का; राज० लड़ै सिपाही, नांव सिरदारो; लड़ैं सिपाही जस जमादारनै; बुंद० लड़ैं सिपाही नांव सरदार कौ; गढ़० लोड़ सिपाही नौ (गुलजार) सरदार को; पंज० लड़न सपाई नाँ सरदार दा; अं० The blood of the soldier makes the glory of the general.

लड़े फ़ौज नाम सरदार का—ऊपर देखिए।

लड़े सांड़ बारी का भुरकस—सांड़ों के लड़ने से खेत का सत्यानाश हो जाता है। जब दो की लड़ाई में तीसरे का नुक-सान हो तब कहते है। तुलनीय : अव० लड़ैं सांड खेतन के खगबी; हरि० झोट्टे झोट्टे लड़ैं झाँडा का खोह।

लबलबी क बियाह कनपटी में सेनुर—जल्दबाज़ी के कारण सिंदुर माँग में न लगाकर कनपटी में लगाते हैं। जल्द-बाज दूसरों के या अपने सामान्य काम की कौन कहे, अपना अत्यावश्यक काम भी ठीक से नहीं करता। जल्दबाज़ी का काम ठीक नहीं होता।

लरत काल सों लाख में, कोइ माइ को लाल—(क) लाखों माताओं में किसी बिरली माता का पुत्र ही काल से लड़ता है अर्थात् इतना वीर होता है कि अपनी जान की पर-वाह नहीं करता। (ख) लाखों व्यक्तियों में कोई एक ही माई का लाल वीर होता है।

लला के पैर पलना में ही दीख गए—होनहार व्यक्ति का पता उसके बचपन में ही चल जाता है। तुलनीय : कनौ० लला के पाँय पलना मैं इ दिखात है; अं० Coming events cast their shadows before.

लल्लू मरे या जगधर हमें क्या ?—जो अपने अतिरिक्त दूसरों के हानि-लाभ की कोई चिन्ता नहीं करता उसके प्रति कहते है। तुलनीय : पंज० लल्लू मोया यां जगधर साणू की।

लवण बिना बहुव्यंजन जैसे—लवण (नमक) के बिना जैसे सब व्यंजन व्यर्थ हैं। किसी चीज़ या व्यक्ति के बिना जब किसी उत्सव का सौन्दर्य खराब होता हो या कोई चीज़ खराब होती हो तो कहते है।

लश्कर की अगाड़ी और आंधी की पछाड़ी—ये दोनों भयानक होती हैं।

लश्कर में ऊँट बदनाम—समाज में अव्यवस्था होने पर बड़े लोग ही बदनाम होते हैं। तुलनीय : भोज० लस्कर में ऊँट बदनाम।

लहँगा न फरिया मेरी को लाड़ लाड़—न लहँगा लाई और न चोली (फरिया) फिर भी कहती है कि मुझे बहुत प्यार करते है। जिससे कोई बात भी न करे फिर भी वह अपने को सम्मानित समझे उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

लहसुन भी खाया और बीमारी भी ठीक न हुई—जब किसी लाभ के लिए घृणित या बुरा कर्म भी किया जाय फिर लाभ न हो तब कहते है। तुलनीय : पंज० लसण वी खादा अते बमारी वी ठीक नई होई।

लहू लगा शहीदों में मिले—खून लगाकर शहीदों की श्रेणी में मिल गए। झूठी नेकनामी चाहनेवालों पर कहा जाता है। दे० 'उँगली काट शहीदों में दाखिल।'

लाङ्गलंजीवनम्—हल जीवन है। तात्पर्य यह है कि हल जीवन का साधन है। क्योंकि हल से भूमि में वपनादि क्रिया करके अन्नोत्पादन किया जाता है। अन्न से जीवन प्राप्त होता है। प्रस्तुत न्याय 'आयुर्घृतम्' के समान है।

लाओ भाई चार ही सही—जो मिले वही ठीक है। किसी मूर्ख को सही क़ीमत क्या मालूम ? उसके लिए जो मिले वही ठीक है। तुलनीय : भोज० लाव भाई चारी गो सही।

लाख कही पर एक न मानी—बहुत ज़िद्दी व्यक्ति के प्रति कहते हैं जो काफ़ी समझाने-बुझाने के बावजूद अपनी ज़िद नहीं छोड़ता। तुलनीय : पंज० लँख आखया पर इक न मनया।

लाख का घर खाक में मिला दिया—घर नष्ट कर दिया। नालायक़ व्यक्ति के प्रति कहते हैं जो घर की संपत्ति और मर्यादा को समाप्त कर देता है। तुलनीय : हरि० वही; अव० लाहे कै घर माटीमा मिलाय दिहेन; पंज० लख दा कर कख विच रला दिता।

लाख चूहे खाकर बिल्ली हज को चली—दे० 'सौ-सौ चूहे खाय···'।

लाख जाय पर साख न जाय —धन भले चला जाय पर इज़्ज़त नहीं जानी चाहिए। मर्यादा दौलत से बड़ी होती है। स्वाभिमानी व्यक्ति का कथन। तुलनीय : राज० लाख जाय, साख ना जाय; गढ़० लाख जौ पर साख ना जौ; माल० जाजो लाख ने रीजो हाक; ब्रज० लख जाय परि साख न जाय; पंज० लख जाय पर इज़त न जावे।

लाख तदबीर एक तरफ़, और एक तक़दीर एक तरफ़ —लाख उपाय एक तरफ़ हैं और तक़दीर एक तरफ़। भाग्य के सामने उद्योग कोई चीज़ नहीं है। जब अधिक प्रयत्न करने पर भी किसी को सफलता नहीं मिलती तब उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : अव० लाखो तदबीर एक ओरी ओ भाग एक ओरी।

लाख तदबीरें करो खसलत बदल सकती नहीं, नल से पानी चढ़के आखिर आता है सू-ए-ज़मीं – नीच प्रकृति का व्यक्ति यदि संयोगवश बड़ा बन भी जाए तो भी उसकी नीचता या बुरा स्वभाव बदल नहीं सकता। जिस प्रकार नल के ज़रिए ऊपर तो चढ़ा हुआ पानी जमीन की ओर ही आता है उसी प्रकार वह भी देर-सवेर अपनी नीचता प्रदर्शित कर देता है।

लाख तहाँ सवा लाख— दे० 'जैसे छप्पन वैसे गप्पन।'

लाखन में कोई एक सपूत —लाखों में कोई एक सपूत होता है। आशय यह है कि बिरले ही सपूत होते हैं। तुलनीय : अव० लाखन मा एकै सपूत; ब्रज० लाखन में कोई एक सपूत।

लाखनु बीच सराहिए, प्रकृति बीर सो एक—लाखों में कोई एक ही वीर होता है। आशय यह है कि बिरले ही वीर पुरुष होते हैं।

लाखपती का झूठ से दो कौड़ी हो मोल झूठ के कारण बड़े-से बड़े भी छोटे गिने जाते हैं। अर्थात् झूठ बोलने से व्यक्ति का महत्त्व घट जाता है चाहे वह कितना भी धनी क्यों न हो। तुलनीय : पंज० लखपती दा चूठ दो पैहे दा मुल।

लाख बात की एक बात —लाख बात की जगह एक बात। काफी सोच-विचार कर उचित बात कहनेवाले के प्रति कहते हैं।

लाख रुपया धनिक के घर में ना तो लबरा के मुँह में — रुपए की अधिक मात्रा या तो धनी व्यक्ति के पास होती है या झूठ बोलनेवाले की ज़बान पर। झूठी शान बघारनेवाले के प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

लाख लालच पाए भील न बँधे – भीलों को चाहे कितना ही बड़ा लालच क्यों न दिया जाय वे एक स्थान पर बँध कर नहीं रह सकते क्योंकि वे प्रकृति से ही घुमक्कड़ होते हैं। एक स्थान पर न टिकनेवालों के प्रति हास्य मे कहते हैं। तुलनीय : भीली—पाली पपोली मनाव राखवू घणो मुसकल है।

लाख सर पटके कोय, राम करे सो होय —चाहे कोई कितना भी प्रयत्न क्यों न करे पर होना वही है जो ईश्वर चाहता है। भाग्यवादियों का कहना है कि मनुष्य चाहे कितना भी प्रयत्न क्यों न कर ले किंतु ईश्वर की इच्छा के प्रतिकूल वह कुछ भी नहीं पा सकता। तुलनीय : भीली —लाखूं उपाये कीदे लखपती नी थाये, राम करहें जेरा थाहें।

लाखों के वारे-न्यारे कर दिए —बहुत ख़र्च करने पर कहते हैं। तुलनीय : अव० लाख कै बारा न्यारा होयगा।

लागइ लघु बिरंचि निपुनाई ब्रह्मा की चतुराई तुच्छ प्रतीत होती है। किसी के बहुत कुशल कार्य को देखकर कहते हैं।

लाग बसन्त, ऊख पकन्त —वसंत ऋतु आ गई अब ईख पक गई। आशय यह है कि वसंत के आगमन तक गन्ना पूर्ण रूप से तैयार माना जाता है।

लाग लगी तब लाज कहाँ? —किसी से प्रेम हो जाने पर लज्जा या शर्म दूर हो जाती है। तुलनीय : राज० लाग लगी जद लाज किसी।

लागी लगन छूटे नहीं, जीभ चोंच जरि जाय —जिससे प्रेम हो जाता है उससे संबंध छूटता नहीं भले जीभ और चोंच जल जाय। अर्थात् यथार्थ प्रेम लाख कष्ट सहने पर भी नहीं छूटता।

लागी हलद हुई बरध—दे० 'लगी हल्द हुई⋯'। तुलनीय : हरि० लाग्गी हलद हुई बळध।

लाचार का विचार क्या? मजबूरी में व्यक्ति का कोई विचार नहीं रहता। अर्थात् विवशता में व्यक्ति आचार-विचार खो बैठता है। तुलनीय : भोज० लचारी में सोच विचार का; मैथ० लाचार के विचार कौन।

लाचारी का नाम महातमा गांधी—मजबूरी में शांत प्रकृति का बननेवाले के प्रति कहते हैं।

लाचारी पर्वत से भारी—अभाव या ग़रीबी कभी-कभी दुःसाध्य हो जाती है। तुलनीय : अव० लचारी मा सब कुछ करै परत है; हरि० लाचारी पर्वत तैं भारी।

लाज करे सो सौ दुःख पावै —जो लज्जा करता है वह बहुत दुख पाता है। जो व्यक्ति अपनी लाज का ध्यान रखता है उसे बहुत कष्ट और दुख उठाने पड़ते हैं तथा निर्लज्ज व्यक्ति किसी की परवाह न करने के कारण सदा सुखी रहता है। तुलनीय : राज० लाज वाळाने जोखम है; सं० एकां

लज्जां परित्यज्य; पंज० सरम करे ओह सो दुख पावे ।

लाज की आँख जहाज से भारी—जहाज अपनी जगह से हिल सकता है लेकिन जिसकी आँख में लिहाज है वह बेशर्मी नहीं उठा सकता । जो व्यक्ति अपनी इज्जत के कारण बेशरमी या अशिष्टता न बरते उसके लिए कहते हैं ।

लाज मारे या पीड़ा—मनुष्य को पीड़ा होने से दुःख होता है या शरम करने से । जो व्यक्ति लज्जावश कुछ-न-कुछ पावे और उसे हानि हो जाए तो उसके प्रति कहते हैं । तुलनीय : गढ़० लाज मरेंद कि पीड़ ।

लाज मरें ढीठ जीएँ—लज्जाशील व्यक्ति हानि उठाता है और धृष्ट फ़ायदे में रहता है । कारण यह है कि लज्जा के कारण लज्जालु कोई वस्तु माँगने में शर्म करता है तथा धृष्ट बेरोक-टोक माँगता है जिससे उसकी आवश्यकता पूरी हो जाती है ।

लाट साहब के साले हैं—जो व्यक्ति मनमानी करे और दुर्बलों को सताए तो उसके प्रति कहते हैं । तुलनीय : माल० इ तो राणा जीरा हारा है; पंज० राणी खाँ दा साला ।

लाठी कपास से भेंट ना बाप-बाप चिल्लाय—लाठी सिर पर लगी नहीं और बाप-बाप चिल्लाता है । बिना कुछ हुए ही व्यर्थ में शिकायत करनेवाले या रोनेवाले के प्रति कहते हैं ।

लाठी के हाथ मालगुजारी बेबाक़—लाठी से लगान जल्दी वसूल हो जाता है । आशय यह है कि बिना डर के कोई मालगुजारी जल्दी नहीं देता या कोई काम नहीं करता ।

लाठी टूटे न बासन फूटे—इस तरह काम लो कि किसी की हानि न हो, नरमी से काम लो ।

लाठी मारे पानी जुदा नहीं होता—लाठी से मारने से पानी अलग नहीं होता । अर्थात् झगड़ा होने से संबंध नहीं छूटता । तुलनीय : अव० लाठी मारे काई नाही फाटत; पंज० डंडा मारण नाल पाणी वखरा नई हुंदा ।

लाठी लिये पांव पर खाक—लाठी लेकर सड़क पर चलने से पैर पर धूल अवश्य पड़ती है । बुरे के संग रहने से हानि अवश्य होती है ।

लाठी सर भेंट ना बाप बाप चिल्लाय—दे० 'लाठी कपाट से भेंट ना···' ।

लाठी हाथ की, भाई साथ का—हाथ की लाठी, और साथ का भाई ही आवश्यकता पड़ने पर काम आता है । आशय यह है कि जो वस्तु या व्यक्ति अपनी होती है, वही समय पर काम आती है ।

लाड़ में आवे कूकड़ी, बल बल जावे कौवा—जब कौआ मुर्गी के प्रेम में फँसता है तो अपने को न्यौछावर कर देता है आशय यह है कि जब कोई किसी सुंदरी के प्रेम-पाश में फँस जाता है तब वह उसके लिए अपना सब कुछ न्यौछावर कर देता है ।

लाडला पूत कटोरे मूत—लाड़ला बेटा खाने के बाद कटोरे में पेशाब कर देता है । आशय यह कि ज्यादा लाड़-प्यार से संतान अशिष्ट और उद्दंड हो जाती है ।

लाड़ला लड़का जुआरी, और लाड़ली लड़की छिनाल—बहुत प्यार से लड़का जुआरी और लड़की चरित्रभ्रष्ट हो जाती है । आशय यह है कि प्यार अधिक करने से बच्चे खराब हो जाते हैं ।

लात का आदमी बात से नहीं मानता—जो व्यक्ति प्रेम से कहने से कोई काम नहीं करता और मारने या डाँटने-फटकारने से वही काम करता है उसके प्रति कहते हैं । आशय यह है कि नीच या दुष्ट व्यक्ति दंडित होने पर ही ठीक से रहते हैं । प्र० लात का आदमी समझ देखो, बात से मान किस तरह जाता ।—हरिऔध

लात का देव बात से नहीं मानता—ऊपर देखिए । तुलनीय : मैथ० लात के देवता बात से ना बुझमु; भोज० लात क देवता बात से नाँ माने या लाते के देवता बात से नाहीं माने लं; छत्तीस० लात के देवता, बात मां नइ मानै; पंज० लत दा देवता गलाँ नाल नई मनदा ।

लात का भूत बात से नहीं जाता—दे० 'लात का आदमी···' । तुलनीय : कनौ० लातन के भूत, बातन तैं नाहीं मान्त ।

लात के देवता बात से नहीं मानने—दे० 'लात का आदमी···' । तुलनीय : अव० लातन के देव बातन ते नहीं मानत ।

लात खाय पुचकारिए, होय दुधारु धेनु—यदि दूध देने वाली गाय है तो उसकी लात खाकर भी उसे पुचकारना चाहिए अर्थात् अच्छे आदमी की डाँट भी सहकर उसका साथ न छोड़ना चाहिए । दे० 'दुधियाली गाय की लात···' ।

लात मार के पापड़ तोड़ें और मूंछ पे फेरें हाथ—लात से पापड़ तोड़कर बहादुरी दिखाने के लिए मूंछ ऐंठते हैं । जो व्यक्ति छोटा काम करके बहुत डींग मारे उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं । तुलनीय : भीली—चोड़ोजी चंचदरी मारी ने घुमाई गया; पंज० लत मार के पापड़ तोड़ण अते मुछाँ ते हत्थ फेरण ।

लात मारी झोपड़ी, चूल्हे मियाँ सलाम—नीचे देखिए ।

लात मारी झोपड़ी, सलाम मियाँ चूल्हे—(क) उस

मनुष्य के प्रति कहा गया है जिसका कोई निश्चित स्थान नहीं होता, जो आज यहाँ है तो कल कहीं और। (ख) स्वार्थी व्यक्ति के प्रति भी कहते हैं जो स्वार्थ सिद्ध हो जाने के बाद साधनों की परवाह नहीं करता। तुलनीय : अव० लात मारी झोंपरी चूल्हे मियाँ सलाम; पंज० लत मारी टपरी सलाम मियाँ चुल्ले।

लातर पनही फूहर जोय, या घर खतरा कभौ न होय —(क) जिसके घर फटा जूता और फूहड़ (भद्दी शक्ल वाली) स्त्री होती है उसके घर किसी नुक़सान की संभावना नहीं रहती। (ख) बुरी चीजों को कोई नहीं चाहता।

लातहु मारे चढ़ति सिर नीच को धूर समान —धूल जो कि देखने में अत्यन्त तुच्छ चीज़ है वह भी लात की रगड़ से सिर पर उड़कर पड़ती है। उसी प्रकार छोटा-से-छोटा व्यक्ति भारी संघर्ष करने में या परेशान किये जाने पर हानि पहुँचा सकता है। जब कोई किसी को कमज़ोर समझकर बहुत परेशान करता है तब उसके शिक्षार्थ कहते हैं।

लातों की देवी, बातों से नहीं मानती —दे० 'लातों के देवता···'।

लातों के देव बातों से नहीं मानते —दे० 'लातों के देवता···'। तुलनीय : अव० लातन का देव बातन से नाहो मानत; हरि० लातां के भूत बातां न नाह मान्य करें; राज० लातां को देव बातांसू थोड़ो ही मानै; गढ़० लातू की देवी बातुन नि मानदी; मरा० लाथेने पूजण्याचे देव, ते समजुती ला भीक घालीत नाहीत; मल० अटियाणिळळ पठिया; अं० Rod is the logic of fools

लाँददे, लदादे, लादन वाला साथ दे —अनुचित रूप से माँग पेश करने पर कहा जाता है। (क) किसी को कोई वस्तु दी जाय और वह कहे कि मेरे घर पहुँचा दो तब कहते है। (ख) जब किसी को कोई उपयोगी काम बताया जाय और वह कहे कि साथ चलकर करवा दो तब भी कहते है। तुलनीय : अव० लाद दे लदाय दे, लादन वाला साथ दे···; राज० लाददो, लदाय दो, लादन वाळो साथ दो; पंज० लद्द दे, लदा दे, लद्दन वाला नाल दे; बुंदे० लाद देओ, लदाउन देओ, लादन वारो संग दो; गुज० लाद दे, लदावन दे, लादन वाला संग दे, बैठने कुं टट्ट को दे, और ओढ़ने को पट्टू दे।

लाद दो लदा दो घर तक पहुँचा दो —ऊपर देखिए।

लाद दो लदा दो छः कोस तक पहुँचा दो —दे० 'लाद दे लदा दे···'। तुलनीय : छत्तीस० लाद दे, छै कोस अमरा

लाद दो लदावन दो, लादन वाला संग दो —दे० 'लाद दे लदा दे···'।

लाद ली तब लाज किसकी —जब गर्भ धारणकर लिया तो लज्जा किस बात की। चरित्रभ्रष्ट स्त्री के प्रति कहते हैं जो गर्भवती होने के बाद उस अपराध को छिपाने का प्रयत्न करती है।

लादे पादे और औंधाय, साँच न कहे जीव चह जाय —माल लादने वाला, पादने वाला और ऊँघनेवाला, ये सदा झूठ बोलते हैं। किसी ऊँघनेवाले से पूछो कि क्या सोते हो, झट कहेगा, नहीं तो। ऐसे ही शेष दोनों का भी हाल है।

लादे बाँदी ऐसा नर, पीर बबर्ची भिश्ती खर —ऐ बाँदी! तुम मेरे लिए ऐसे पति की तलाश करो जिसमें पीर (साधु) बावर्ची (रसोइया), भिश्ती (पानी लाने वाला) और खर (गधा) के गुण हो। अर्थात् जो स्त्री पति को उँगलियों पर नचाती है उसके प्रति व्यंग्य में कहते है। तुलनीय : हरि० ल्याद्-बाद्दी ऐसा नर, पीर ववरची भिस्ती खर।

लाभ को पड़े ढाब —लाभ के पीछे लोग खतरे में पड़ जाते हैं। लालच बुरी बला है।

लाभ बिना नहीं हर के —(क) भगवान को भी कोई बिना लालच के नहीं पूजता। (ख) भगवान की सहायता के बिना कोई कार्य स्वयं लाभ नहीं पहुँचा सकता।

लाभे लोहा ढोइम बिन लाभ न ढोइस रुई —लाभ हो तो लोहा भी ढोना चाहिए और यदि लाभ न हो तो रुई भी नहीं ढोना चाहिए। आशय यह है कि लाभदायक कार्य यदि कठिन हो तब भी करना चाहिए और बेकार कार्य सरल हो तब भी नहीं करना चाहिए। सदा सार्थक श्रम करना चाहिए।

लायक ही सों कीजिए ब्याह, बैर अरु प्रीति —ब्याह, शत्रुता और प्रेम योग्य पुरुष के साथ ही करना चाहिए। तुलनीय : पंज० वयाह, दुसमनी अते पयार चंगे मनुख नाल करना चाहिदा है।

लायगा दारा तो खायगी दारी न लायगा दारा तो पड़ेगी ख़्वारी —पति कमावेगा तो स्त्री खायगी नहीं तो लड़ाई होगी। गृहस्थी के झंझट पर कहा गया है।

लारा लीरी का यार कभी न उतरे पार —जो व्यक्ति सदा टाल-मटोल या हीले-बहाने के भरोसे रहता है उसकी आशा कभी पूरी नहीं होती।

लाल किताब उठ बोली यों, तेली बैल लड़ाया क्यों? खल खिलाकर किया मुसंड, बैल का बैल और दंड का दंड —किसी तेली के बैल ने एक क़ाज़ी के बैल को मार डाला।

इस पर क़ाज़ी ने तेली से कहा कि तुमने अपने बैल को क्यों खिला-पिलाकर संड-मुसड किया कि उसने मेरे बैल को मार डाला। इस पर तुम्हें बैल का बैल और दण्ड दोनो देना होगा। पर जब क़ाज़ी ने सुना कि मेरे ही बैल ने मार डाला है तो अपना दोष हलका करने के लिए कहा कि आखिर जानवर ही तो है, उसे समझ नही होती। इस पर तेली ने अपने मन में कहा वाह जी क़ाज़ी साहब एक ही अपराध में अपने लिए कुछ कानून और मेरे लिए कुछ दूसरा ही। अर्थात् दूसरे को दोषी ठहराने में लोग बहुत तेज़ होते है पर अपने दोष की तरफ ध्यान नही देते। (लाल किताब =क़ानून की पुस्तक)। तुलनीय: राज० लाल किताब में लिक्खा यू तेली बैल लड़ाया क्यू? खली खवाय कै किया, मुसंड बैल का बैल साठ रुपिया डंड।

लालखाँ की चादर बड़ी होगी तो अपना बदन ढकेगा हमको क्या—जब कोई दूसरे के धन अथवा वस्तु की तारीफ़ करे तब कहते हैं कि उसकी चीज़ उसी के काम आयगी दूसरे के नहीं।

लाल गुदड़ी में नहीं छिपता—अर्थात् अच्छे लोग बुरी स्थिति में भी नही छिपते। तुलनीय: अव० लाल गुदरिन मा नाही छिपत; मरा० रत्न गोधड़ींत लपविले तरी त्याचे तेज लपत नाही, पंज० लाल गुदड़ बिच नई लुकदा; ब्रज० लाल का गूदरी मे छिपें।

लाल गुदड़ी में भी मिलता है-ग़रीब या पिछड़े परिवार मे भी अच्छे लोग होते हैं। जब किसी ग़रीब या पिछड़े परिवार का कोई लड़का बहुत उन्नति कर जाता है तब कहते है। तुलनीय: पंज० लाल गुदड़ी बिच वी लबदा है।

लालच गुण घर विनाश—अधिक लालच करने से घर नष्ट हो जाता है। तुलनीय: लालच करण नाल कर रुड़ जांदा है।

लालच पशेमान है—लालच मनुष्य को निर्लज्ज बना देता है। लालच बुरी चीज़ है

लालच बिस परलोक बसाए- लालच इंसान को नरक मे भेज देता है। लालच का परिणाम बहुत बुरा होता है।

लालच बुरी बला है—लालच बहुत बुरी होती है। लालच मे पड़ने से आदमी को बहुत हानि उठानी पड़ती है। तुलनीय: अव०, बुंद०, राज० लालच बुरी बलाय; गढ़० लबा खौमबूब; मल० कोति मनम् केटुत्तुम्; अं० No vice like avarice.

लालची को जहान तंग—लोभी व्यक्ति को संसार छोटा (तंग =संकरा) मालूम होता है। आशय यह है कि लालची व्यक्ति को कभी संतोष नहीं होता। तुलनीय: पंज० लालची लई जहान निक्का।

लालची फँसे दलदल में-लालच करनेवाला कभी-कभी ऐसी विपत्ति में फँस जाता है जिसमें से उसका निकलना बहुत कठिन हो जाता है। तुलनीय: गढ़० लाभ को पड़े ढाब पंज० लालची फ्सया गारे बिच।

लाल जन्मे हैं—माता-पिता के नाम को डुबानेवाले पुत्रों के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय: राज० निध जनम्या है।

लालन की नहिं बोरियाँ, साधु न चले जमात—लालो से भरे हुए कई बोरे नही पाए जाते और साधु भी पक्तियों में नही चलते हैं। अर्थात् बहुमूल्य वस्तु और साधु पुरुष आदि कम पाए जाते है।

लाल पियर जब होय अकास, तब नाहीं बरखा के आस—वर्षा ऋतु में जब आकाश का रंग लाल-पीला हो तो वर्षा की कम आशा रहती है।

लाल प्यारा तो उसका ख़याल भी प्यारा—जो मन में भा जाए उसकी हर बात पसंद आती है।

लाल लाल पैसा इधर उधर कैसा?—यदि नक़द मज़दूरी दी जाय तो काम करनेवाला इधर-उधर क्यों करे? अर्थात उसे अवश्य ठीक से काम करना चाहिए। जब नक़द मज़दूरी देने पर भी कोई ठीक ढग से काम करना नही चाहता तब उसके प्रति व्यंग्य में कहते है। तुलनीय: पंज० लाल लाल पैहा ते इदर उदर कैहा।

लाल लाल पैसा तो कसर मसर कैसा—ऊपर देखिए।

लाल लाल पैसा, तो तिगिर बिगिर कैसा?—दे० 'लाल लाल पैसा…'।

लाल साड़ी फट जाएगी, चमकना छूट जाएगा—(क) जब कोई वैभव पाकर बहुत इठलाता है तब उसके प्रति व्यंग्य मे कहते है कि एक समय ऐसा आएगा कि तुम भी ग़रीब हो ओगे और तब सारी शेखी भूल जाएगी। (ख) जब कोई यौवनावस्था में काफ़ी अकड़ दिखाता है तब उसके प्रति भी व्यंग्य में कहते है कि अधिक अकड़ मत दिखाओ क्योंकि यह जवानी थोड़े दिन की होती है। इसके ढलने पर तुम्हारी सारी अकड़ समाप्त हो जाएगी।

लाला का घोड़ा, खाय बहुत चले थोड़ा—लालाजी का घोड़ा खाता बहुत है पर चलता कम। बड़े लोगों के सेवकों पर व्यंग्य में कहते हैं। जो खाने-पीने में तो तेज़ होते हैं पर काम से जी चुराते हैं। तुलनीय: पंज० लाले दा कौड़ा खाय मता चले थोड़ा।

लाला का चबेना कोइरी खाय—लाला के चबेने को कोइरी (एक छोटी जाति का व्यक्ति) खाता है। जब किसी की वस्तु का उपभोग कोई दूसरा करे तब कहते है।

लाला का लावा कोइरी खाय—ऊपर देखिए।

लाला गुलाला पचास रोटी खायं, एक रोटी जल गई सरकार दौड़ें जायं—लालाजी पचास रोटी खाते थे। संयोगवश किसी दिन एक रोटी जल गई तो उसके लिए राजा के पास माँगने पहुँच गए। (क) असंतोषी व्यक्ति के प्रति कहते है। (ख) कायस्थ जाति बहुत लालची होती है, इसीलिए उनके लिए भी कहते है।

लाला जी आज मर गये, बड़ी बहू को भेज दो—किसी सेठ ने चिट्ठी में यह लिखकर भेजा कि 'लाला जी अजमेर गए बड़ी बहू को भेज दो।' पर वहाँ पर उपरोक्त बात पढ़ी गई जिससे बड़ी बहू रोती-पीटती चली आई। मुड़िया अक्षरों या उर्दू लिपि पर व्यंग्य से कहते हैं, क्योंकि इसमें मात्रा नहीं होती। तुलनीय : माल० वणिज पुत्र कागज लिखे, काना मात नही देत; हीग, मरच, जीरो लिखे, हगे, मग, जर लिख देत।

लिखत सुधाकर, लिखगा राहू—लिखने जा रहा था सुधाकर और लिख दिया राहू। अत्यंत भुलक्कड़ एवं मद बुद्धि व्यक्ति के प्रति व्यग्य से कहते है। तुलनीय : मरा० चंद्र लिहित होते, लिहिले गेले राहू।

लिखते न बने क़लम टेढ़ी—लिखना तो आता नही और कहते है क़लम टेढी है। आशय यह है कि अज्ञानी कार्य को करने की क्षमता न होने पर साधन को ही दोषी बतलाता है। तुलनीय : भोज० लिखे न आवे कलमिए टेढ़; अव० लिखै न आवै कलमियै टेढ़; पंज० लिखना आंदा नई ते कलम टेड़ी।

लिखना आवे नहीं, मिटावे दोनों हाथ—लिखना आता नही और मिटाते है दोनों हाथो से। (क) नालायक़ आदमी पर कहते हैं। (ख) आडम्बरी व्यक्ति के प्रति भी व्यंग्य में कहते है। तुलनीय : पंज० लिखना आंदा नई मिटादा दोनां हाथ्थां नाल।

लिख लोढ़ा, पढ़ पत्थर—लिखता है लोढ़ा और पढ़ता है पत्थर। मूर्ख के प्रति व्यंग्य में कहते है। तुलनीय : मैथ० लिख लोढ़ा पढ़ पथल सोलह दूनी आठ; मरा० लिही लोखंड, वाच दगड़।

लिखितमपि ललाटे, प्रोञ्झितुं कः समर्थः—कर्मरेख पर कौन मेख मार सकता है? अर्थात् कोई नही। आशय यह है कि ललाट की लिखी भाग्यरेखा को कोई नही मिटा सकता।

लिखें ईसा पढ़े मूसा—ईसा के लिखे को मूसा ही पढ़ सकते है। जब किसी का लिखना इतना बुरा या घसीट होता है कि नही पढा जाता तब कहते हैं। तुलनीय : पंज० लिखण ईसा पढ़ण मूसा।

लिखे न पढ़े कान में कलम—लिखना-पढ़ना जानते नही लेकिन कान में कलम खोंसकर चलते हैं। झूठा पाखंड करनेवाले के प्रति कहते है। तुलनीय : भोज० लिखे के न पढ़े के काने में कलम; अव० लिखै पढ़ै न जानै कान मा कलम खोंसे, पंज० लिखण न पडण कन विच कलम।

लिखे न पढ़े, दूध मारे कढ़े—जो लड़का लिखता-पढ़ता नही, केवल अच्छी-अच्छी चीजें खाना चाहता है उसके प्रति कहते है। तुलनीय : पंज० लिखदा ना पड़दा दुद दा वनया खंदा।

लिखे न पढ़े नाम मुहम्मद फ़ाज़िल—नाम के विपरीत गुण होने पर व्यंग्य में कहते हैं।

लिखे मूसा पढ़े खुदा—मूसा का लिखा ईश्वर ही पढ़ सकता है। बहुत खराब लिखनेवाले पर कहते है। इस संबंध में एक कहानी है. किसी सिपाही ने एक कायस्थ के पास जाकर कहा कि मुझे एक चिट्ठी लिख दीजिए। कायस्थ ने कहा मेरे पाँव में दर्द है। सिपाही ने कहा कि चिट्ठी तो हाथ से लिखी जाती है पाँव से नही। कायस्थ ने कहा तुम्हारा कहना ठीक है, परन्तु जब मैं किसी के लिए चिट्ठी लिखता हूँ तो मुझे ही जाकर पढ़ना भी पड़ता है क्योंकि मेरा लिखा कोई दूसरा नही पढ सकता। तुलनीय : मरा० मूसा लिहितो नि खुदा वाचतो।

लिट्टी-गंडेरी का साथ क्या?—अनमेल बात पर कहा जाता है।

लिपा-पुता आँगन और पनही ओढ़ी नार—लिपे-पुते आँगन में स्त्री सिर पर जूता (पनही) रखे बैठी है। (क) किसी उच्च पद पर अयोग्य व्यक्ति के पहुँच जाने पर व्यंग्य में कहते है। (ख) सुन्दर पुरुष की कुरूप पत्नी होने पर भी कहते हैं।

लिया-दिया आड़े आता है—अच्छे संबंध ही काम आते है। आशय यह है कि मेल-जोल और सद्भाव रखने वाले की विपत्ति मे सभी दिल खोलकर सहायता करते है। तुलनीय : राज० लियो-दियो आडो आवै; पंज० लिता-दिता अग्गे आंदा है।

लिया न दिया बन बैठे पिया—दे० 'रोटी न कपड़ा सेंत...'।

लिहाज की आँख जहाज से भारी—(क) संकोचवश जब कोई किसी से कुछ माँग न सके तब कहते हैं। (ख) जब संकोचवश कोई किसी को किसी चीज़ के लिए मना कर दे तब भी कहते है।

लीक छोड़ि तीनहिं चलें, सायर, सूर, सपूत—कवि, वीर और अच्छे लोग लकीर के फ़क़ीर नहीं होते। अर्थात् प्रयत्नशील मनुष्य अपने लाभ के लिए नया मार्ग चुनते है।

लीजे ससा अखेट पर, नाहर के सामान—ससा (खरगोश) के शिकार (आखेट) के लिए शेर (नाहर) के शिकार का सामान लेकर जाते हैं। (क) जब साधारण कार्य के लिए बहुत बड़ा इन्तजाम किया जाय तब कहते हैं। (ख) जब कोई छोटे से शत्रु को परास्त करने के लिए बहुत बड़ी तैयारी करता है तब उसके प्रति भी कहते है।

लीद ही खानी है तो हाथी की खाओ गधे की क्यों?—जब लीद ही खानी है तो गधे जैसे साधारण पशु की क्यों खाई जाय, हाथी जैसे बड़े पशु की क्यो न खाई जाय? अर्थात् जब बुरा काम ही करना हो तो बड़ा करना चाहिए जिससे कुछ समय तक के लिए निश्चित होकर खा-पी सके या कोई बड़ा स्वार्थ सिद्ध हो। तुलनीय : राज० लीद खाणी तो हाथी री गधेरी क्यों खावणी; पंज० लिद ही खाणी है तं हाथी दी खावो खोते दी क्यों।

लीपा घर सुख आगर—लीपा हुआ घर सुख की खान होता है। स्वच्छ घर मे दुख-दरिद्र नहीं रहते। तुलनीय : भोली—लेपयू लोययू झूपडो रूपालो लागे।

लिपा-पुता आँगन, पहनी-ओढ़ी नारि—लीपा-पुता हुआ घर और वस्त्राभूषण पहने हुए नारी सुन्दर लगती है। अर्थात् (क) घर को स्वच्छ रखना चाहिए और स्त्रियों को सँवरे रहना चाहिए। (ख) सफ़ाई और शृंगार से सुन्दरता बढ़ जाती है। तुलनीय : राज० लीप्यो धोयो आगणो पहरी ओढी नार; अव० लीपी पोती देहरिया पैन्ही ओढ़ी मेहरिया।

लीपू ओटा मरे मोटा—महापात्रों के घर में ओटा नाम की प्रतिमा रहती है जिसका वे सदा पूजन करते हैं ताकि किसी धनी की मृत्यु हो जिससे पर्याप्त धन हाथ लगे। जब कोई धनी आदमी के मरने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता है, ताकि उससे उसका लाभ हो तब कहते हैं।

लीपे पोते डेहरी, पहिने ओढ़े मेहरी—लीपने-पोतने से कुठला (डेहरी) और पहनने-ओढ़ने से स्त्री सुन्दर लगती है। दे० 'लीपा-पुता आँगन…'।

लुक़मान को हिकमत सिखाते हैं—जो व्यक्ति किसी विषय या कार्य स्वयं बड़ा पंडित या ज्ञाता हो उसे उसी का पाठ सिखाने पर व्यंग्य से कहते हैं। हकीम लुक़मान बहुत प्रसिद्ध हकीम हुए हैं।

लुगाई और चोर का साथ कौन करे?—स्त्री और चोर का साथ कोई नही करता क्योंकि दोनों ही स्वार्थी और धोखेबाज़ होते हैं। तुलनीय : भीली—नार चोर ना कुण करे सग; पंज० बौटी ते चोर दे नाल कौन रबे।

लुगाई और मछली की उल्टी रीति—स्त्री और मछली सदा उल्टा काम करती है। मछली पानी की धार के विपरीत चलती है और स्त्री अवसर के विपरीत आचरण और व्यवहार करती है। स्त्रियों पर व्यंग्य। तुलनीय : भीली—माचली लगाई उल्टी मन, उल्टे पाणी चढ़े; पंज० बौटी अत्ते मच्छी दी पुठी रीत।

लुगाई का दाँव खाली न जाय—स्त्री का दाँव खाली नहीं जाता है। धोखेबाज़ औरतों के प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

लुगाई किसकी जो दाब राखे उसकी—जो दबाकर रखते हैं उन्हीं की औरतें अच्छी होती हैं। आशय यह है कि दबाव मे रखने से ही औरतें ठीक रहती है। स्वतन्त्र छोड़ देने से वे बिगड़ जाती है। तुलनीय : बौटी किसदी जिहड़ा दबाके रखे उसदी।

लुगाई किसीकी सगी नहीं होती—अर्थात् औरतें स्वार्थी और धोखेबाज होती है इन पर विश्वास नही करना चाहिए। तुलनीय : पंज० बौटी किसे दी सक्की नई हुंदी।

लुगाई की माने सीख, दर-दर माँगे भीख—औरत की सीख माननेवाले को दर-दर की भीख माँगनी पड़ती है। जब किसी व्यक्ति को स्त्री की मन्त्रणा से बड़ी हानि उठानी पड़े तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : गढ़० राड का पाजा गौं पड़्या बांजा; पंज० बौटी दा कहणा मनन वाला दर-दर पीख मंगदा है।

लुगाई के आँसू में बड़े-बड़े बह गये—औरतों के नखरो से सावधान रहना चाहिए। वे ऐसे नखरे दिखाती हैं कि लोग उनमें उलझ जाते हैं। तुलनीय : पंज० बौटी दे अथरूआं बिच बड़े-बड़े रुड़ गए।

लुगाई के पेट में बात कहाँ पचे—औरतों के पेट में बात नहीं पचती। आशय यह है कि औरतें किसी बात को गुप्त नहीं रख सकती। तुलनीय : हरि० लुगाई के पेट में बात ना पाच्चै; पंज० बौटी (जनानी) के टिड बिच गल किथे टिकदी है।

लुगाई पिटवाए बीच बजार—स्त्री बाज़ार के बीच में पिटवा देती है। स्त्री के आकर्षण में फँसकर उसके साथ मेल-

जोल नहीं करना चाहिए क्योंकि ऊपर से वह बहुत भोली दिखती है, किन्तु भीतर से बहुत चालाक होती है। स्त्रियों के जाल में फँसने से अपमानित होना पड़ता है। तुलनीय : भीली—लगाई न चालां ने लागव्, हेंडनी हेंडती गेर काडे; पंज० जनानी फमावे बिच बजार।

लुगाई रहे तो आपसे, नहीं तो जाय सगे बाप से —दे० 'रहे तो आप से···'।

लुगाई हल को ही हाथ नहीं लगाती - हल के अतिरिक्त और सभी कृषि के कामों में स्त्री पुरुष की सहायता देती है। हल चलाना भारतीय परम्परा के अनुसार स्त्रियों के लिए वर्जित है। पुरुषों के प्रति स्त्रियाँ कहती हैं कि हम केवल हल को ही नहीं हाथ लगातीं और सब तो करती ही हैं। तुलनीय : भीली लगाई हल माते हाथ न दिये, बीजू हाळू करे; पंज० जनानी हल नू ही हथ्थ नई लांदी।

लुट जाने पर कैसा डर—धन रहने पर तो लुटने का भय रहता है, किन्तु लुटने के बाद किस बात का भय है। (क) हानि हो जाने के पश्चात डरने का कोई कारण नहीं होता। (ख) निर्लज्ज व्यक्ति के प्रति भी व्यंग्य में कहते हैं जो सदा बुरे कर्म करता है। तुलनीय : राज० लूटी ज्यां पछै काई डर; उ०

न लुटना दिन को तो कब रात को यूँ बेखबर सोता,
रहा खटका न चोरी का दुआ देता हूँ रहज़न को।
—ग़ालिब

लुटा बनिया नमक बेच के सेठ बने बनिए का यदि दिवाला भी पिट जाए या वह कंगाल हो जाय फिर भी वह कुछ समय में नमक जैसी सस्ती वस्तु बेच-बेचकर अपना व्यवसाय खड़ा कर लेता है। (क) बनिए व्यवसाय के क्षेत्र में अद्वितीय माने जाते हैं। (ख) परिश्रम और धैर्य द्वारा खोई हुई प्रतिष्ठा और सम्पत्ति प्राप्त की जा सकती है। तुलनीय : भीली—भागू भील वालरे हंदाये के चाल्या; पंज० लुटया बनिया लूण बेच के सेठ बनया।

लुटिया डूबी रे हरदास, घोड़ा दाना खाय न घास — घोड़ा दाना-घास नहीं खा रहा, लगता है कि वह मर जाएगा। जब किसी कार्य के बिगड़ने का लक्षण दिखाई दे तब कहते हैं।

लुटे के लुटे और पत्थरों से पिटे—लुट भी गए और पत्थरों की मार भी खाई। किसी की दुहरी हानि होने पर कहते हैं।

लुहार की कूंची कभी आग में कभी पानी में- आशय यह है कि किसी की दशा सदा एक-सी नहीं रहती। दुख-सुख सबके जीवन में आता है।

लूट का क्या भाव, मरने का क्या चाव — जो वस्तु लूटी जा रही हो या मुफ्त में मिल रही हो तो उसका भाव क्या पूछना और संसार से मरने का किसी को भी चाव नहीं होता। जो व्यक्ति मुफ्त के माल में भी मीन मेख निकाले उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : गढ़० लूट को क्या भौ, झूट को क्या न्यौ।

लूट का माल मूत में - चोरी का माल पेशाब (मूत) में चला जाता है। आशय यह है कि गलत ढंग से अर्जित धन से किसी को लाभ नहीं मिलता। तुलनीय . पंज० लुट दा माल मूतर बिच।

लूट का मूसल भी बहुत —लूट में यदि मूसल भी मिल जाय तो बहुत है। आशय यह है कि मुफ्त में जो भी चीज मिल जाय वह बहुत होती है। तुलनीय : पंज० लुट दा मुसल वी बड़ा।

लूट कोयलों की मार बर्छों की - कोयलों के लूटने में बर्छी की मार सहनी पड़ी। जब थोड़े से लाभ के लिए या सामान्य वस्तु को प्राप्त करने के लिए बहुत कष्ट सहना पड़े तब कहते हैं।

लूट में चरखा ही भला — लूटने में छोटी-से-छोटी चीज भी मिले तो लाभ ही है। तुलनीय : भोज० लूट में चरखवे नफा; पंज० लुट दा चरखा ही चंगा।

लूट लाए कूट खाया - लूटकर ले आते हैं और कूटकर खा जाते हैं। (क) कारगर चोर या ठग को कहते हैं। (ख) बुरा कर्म करनेवाला सुखी नहीं रहता।

लूता तंतु न्याय - जिस प्रकार मकड़ी अपने शरीर से ही सूत निकालकर जाला बनाती है और फिर आप ही उसका संहार करती है, इसी प्रकार ब्रह्म अपने से ही सृष्टि करता है और अपने में उसे विलीन कर लेता है।

लूहर मारा कूकरा, बिजली देख डराय दे० 'दूध का जला···'। (लूहर —चूंवाती)।

लेऊ पंडित हैं देऊ पंडित नहीं—पंडितजी केवल लेना जानते हैं देना नहीं। स्वार्थी व्यक्ति के प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

लेऊ सिपाही नाम कप्तान का— कप्तान के नाम पर सिपाही रिश्वत लेता है। जब बड़ों की आड़ में छोटे बुराई करते हैं तब उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० लैंण सपाई नाँ कपतान दा।

ले एक पापी डूबता है नाव को मझधार में —दे० 'एक पापी सारी नाव को···'।

लेके दिया कमा के खाया, ऐसी तैसी जग में आया — किसी के कुछ लेने के पश्चात् पुनः उसे देना पड़े और काम करने पर ही भोजन मिले तो जन्म लेना बेकार है। जो किसी से कुछ लेने के पश्चात् वापस नहीं करते उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० लेके दिया, कमा के खाया, झख मारणँ जगत में आया; ब्रज० लै कै दियौ कमाय कें खायौ, ऐसी तैसी जग में आयौ।

लेख लिखे को भाल के मेट सके ना कोय—भाग्य की रेखा मिटाए नहीं मिट सकती। अर्थात् जो भाग्य में होता है वह होकर ही रहता है। तुलनीय : पंज० मथ्थे उते लिखया होया कोई मिटा नईं सकदा।

लेखा-जोखा चाहें, लड़के डूबे काहें—हिसाब-किताब ठीक है तो बच्चे कैसे डूब गए। मूर्खतापूर्ण कार्य करनेवाले के प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

लेखा जौ-जौ बख़्शीश सौ-सौ—हिसाब-किताब तो एक जौ (एक अन्न) का भी साफ होना चाहिए, भले कोई अपनी इच्छा से सौ रुपया भी दे दे। आशय यह है कि व्यवहार निभाने के लिए लेन-देन का हिसाब साफ़ रखना आवश्यक है। तुलनीय : हरि० लेक्खा जौ का बख्सीस सौ की; ब्रज० लेखौ जौ जौ कौ —बकसीस सौ सौ की।

ले गए गठरी चोर चुराई, सकल बेगारन छुट्टी पाई— दे० 'गठरी ले गए चोर…'।

लेता भूले न देता—न तो लेनेवाला भूलता है और न देनेवाला। हिसाब-किताब ठीक रहने पर कहा जाता है। तुलनीय : पंज० लेण वाला न पुले देण वाला।

लेता मरे कि देता लेनेवाला मरता है कि देनेवाला। जो अपना ऋण नहीं चुकाना चाहता उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : अव० लेता मरै की देना; पंज० लेण वाला मरदा है कि देण वाला।

लेते कुछ और, देते कुछ और—(क) जब कोई लेते समय खुशामद करके लेले और देते समय बहाना करे तब कहते हैं। (ख) जब कोई लेते समय सवाया करके ले और देते समय रुपये के बारह आने दे तब कहते हैं। इस सम्बन्ध में एक कहानी है : किसी बनिये के यहाँ एक लड़का नौकर था। उसके उसने दो नाम रखे थे—एक तो लिब्बा और दूसरा दिब्बा। जब किसी से माल खरीदना होता था तो वह लिब्बा नाम से पुकारता था तो लड़का सवा सेर का सेर लाता था, और जब किसी को माल देना होता था तो दिब्बा कहकर पुकारता था तो लड़का तीन पाव का सेर उठा लाता। कोई इस बात को ताड़ गया और उक्त मसल कही। तुलनीय : अव० लेत बखत कुछ और देत बखत कुछ और; गढ़० लिजांदी दौं हलमुंगा, देंदी दौं काठगो; पंज० लेंदे कुछ और देंदे कुज और।

लेते-देते की टाँग खींचे, गधावास कहावे—किसी के लेन-देन में रोड़ा अटकानेवाले को लोग मूर्ख कहते हैं। जो व्यक्ति किसी से किसी का सम्बन्ध-विच्छेद कराना चाहे उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : अव० लेते-देते भेंड़ मारै, बेटीचोद कहावै।

ले दही और दे दही में अन्तर है—आशय यह है कि जब कोई अपनी ग़रज़ (आवश्यकता) से कोई काम करता है तब उसे उसमें कम लाभ होता है और जब वही कार्य दूसरे की ग़रज़ से करता है तब उसे अधिक लाभ होता है। तुलनीय : पंज० लेण-देण बिच टंग अडावे खोते दा पुन कहावे।

ले दे आटा कठौती में—घूम-फिर कर आटा कठौती में ही आया। जब कोई घुमा-फिराकर कोई वस्तु अपने ही पास रख ले और देने का झूठा दिखावा करे तब उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : पंज० आ-जा के आटा परात बिच।

लेन-देन पर खाक, मुहब्बत रक्खो पाक—लेन-देन हो या न हो पर प्रेम में बट्टा नहीं आना चाहिए। जो लोग वैसे तो प्रेम भाव दिखाएँ किन्तु जब किसी को कुछ लेना-देना हो तो किनारा कर लें तब उनके प्रति व्यंग्य में कहा जाता है।

लेना उसका देना नहीं—जिससे कोई चीज़ ले उसे पुनः देना नहीं चाहिए। जो किसी से कुछ लेकर वापस नहीं करता उसके प्रति व्यंग्य में कहते है। तुलनीय : अव० लेना एक न देना दुई; पंज० लेणा इक न देणा दो।

लेना एक न देना दो (क) बिना लाभ या बिना कुछ प्रयोजन के किसी काम या झगड़े के करने पर कहते हैं। (ख) किसी से कोई सम्बन्ध न रखनेवाले के प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : हरि० लेणा एक ना देणे दो; राज० लेणो एक न देणा दोय; गढ० लेणी एक न देणी द्वी; मरा० घेणं नास्ति देण नास्ति।

लेना-देना कुछ नहीं, लड़ने को मजबूत—ऐसे व्यक्ति के प्रति कहते हैं जो थोड़ी भी सहायता या भलाई नहीं करता और रोब अधिक दिखाता है। तुलनीय : अव० लेय का न देय का लड़ै का तैयार; माल० देवा लेवा ने कइ नी, लड़वा ने मौजूद; पंज० लेण देणा कुज नई लड़नां नूं पक्के।

लेना-देना गांडू का काम लड़ने को मौजूद—(क) कंजूसों के प्रति व्यंग्य में प्रयुक्त करते हैं। (ख) जब कोई

बलवान किसी से ऋण लेकर लौटाए नहीं तो उसके प्रति भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : पंज० लेणा देणा कुत्ते दा कम लड़ण नूं तैयार।

लेना देना चूतिया काम, बिरहा गाओ---लेना-देना मूर्खों का काम है, तुम बिरहा गाओ। कोई व्यक्ति किसी के पास इस विश्वास से जाय कि वहाँ उसकी आवश्यकता पूरी हो जाएगी किन्तु वह उसे यूं ही टाल दे तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० देणो लेणो गांडूरो काम, पन्ना-मारू गावो; पंज० लेणा देणा चूतिया कम।

लेना-देना साढ़े बाइस जिस प्रकार साढ़े बाइस अधूरी संख्या है उसी तरह मोल-भाव करके माल न लेना अधूरा सौदा करना है। जब कोई मोल-तोल बहुत करे पर खरीदे कुछ नहीं तब कहते है। तुलनीय : गढ़० ल्यू न द्यूं भौ ख्वै द्यूं।

लेना-देना साहूकार का काम– (क) रुपये का लेन-देन साहूकार कर सकते है दूसरा व्यक्ति नही। (ख) किसी के उधार मांगने पर उससे पीछा छुड़ाने के लिए हास्य से भी कहते है। तुलनीय : भीली लेबू देबू हाऊकारानो काम है; पंज० लेण देण सेठ दा कम।

लेना न देना 'गाड़ी भर चना'-- लेना कुछ नही है फिर भी कहते है कि 'गाड़ी भर चना' तौल दो। झूठी शेखी बघारनेवाले के प्रति व्यंग्य में कहते है।

लेना न देना, झूठों मुंह छुटौवल---अकारण या व्यर्थ में झगड़ा करने पर कहते हैं। तुलनीय : गढ़० से ठाकुर की देणी न लेणी आख्वा घराई कीर्का।

लेना न देना, दौड़े-भागे हुसेना--मिलनेवाला कुछ नहीं है लेकिन हुसेना भाग-दौड़ कर रही है। व्यर्थ मे परेशान होने पर कहते है। तुलनीय : अव० लेना न देना कादै फिरै हुसैना।

लेना न देना बजाओ जी बजाओ देना कुछ नही चाहते लेकिन कहते हैं कि बाजा खूब बजाओ। मुफ्त मे आनन्द चाहनेवाले के प्रति व्यंग्य में कहते है। तुलनीय : पंज० लेणा न देणा बजाओ और बजाओ।

लेना न देना बातों का जमा खर्च -व्यर्थ की बात बनानेवाले या कुछ काम-धाम न करके केवल बात करनेवाले या कुछ लाभ न करके केवल बातों से खुश करनेवाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० लेणा न देणा इवे ही गलां करना।

लेना लक्कड़ देना पत्थर -- लेने में लक्कड़ जैसे और देने में पत्थर जैसे हैं। जिस व्यक्ति का लेन-देन या व्यवहार ठीक न हो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : माल० लेणा लक्कड़ न देणा पत्थर; पंज० लेणा लकड़ देणा बट्टे।

लेने आई आग, बन बैठी घरवाली--आग लेने के लिए आई थी और घर की मालकिन बन गई। जो किसी के यहाँ कुछ सहायता माँगने के लिए जाय और धीरे-धीरे उसी की सम्पत्ति पर अपना अधिकार स्थापित कर ले तब उसके प्रति कहते है। तुलनीय : पंज० लेण आयी अग्ग बण बैठी करवाली।

लेने के देने पड़ गए जब कोई लाभ के लिए कुछ करे और उसमें उसे लाभ के बजाय हानि हो जाय तब कहते है। तुलनीय अव० लेय की देय पड़ गई; पंज० लेणे दे देणे पै गए।

लेने को सब कुछ देने को कुछ नहीं --जो दूसरों की चीज मांगकर लाता है पर अपनी चीज किसी को नहीं देता उसके प्रति कहते है। तुलनीय : अव० लेय कर सब देय कर कुछ नाही; पंज० लेण नूं सब कुज देण नूं कुज नई।

लेने गई परथन, कुत्ता पेड़ा ही उठा ले गया (क) जब कोई थोड़ा-सा मौका पाते ही किसी की चीज चुरा लेता है तब उसके प्रति कहते है। (ख) जब कोई थोड़े लाभ के लिए कहीं जाय और उससे अधिक उसका घर का ही नुकसान हो जाय तब भी कहते है।

लेने गई पूत, दे आई भतार पुत्र के लिए गई थी और पति को भी गँवा आई। जब कोई लाभ के लिए कहीं जाय लेकिन लाभ के बजाय उसकी बहुत बड़ी हानि हो जाय तब कहते हैं। तुलनीय : पंज० लेण गयी पुत दे आई खसम।

लेवा-लेवा यार, कभी न उतरे पार केवल लेनेवाला मित्र कभी अच्छा मित्र नहीं बन पाता। दोस्ती में लिया भी जाता है और दिया भी। स्वार्थी के प्रति कहते है। तुलनीय : हरि० लेवा-लेवा का यार, कदे ना से रे पार; पंज० ले-दे यार कदी न उतरे पार।

ले लिया पल्ला और बिनने लागी सिल्ला बिना आज्ञा पाए जो काम करने लगता है उस पर कहते हैं। (सिल्ला रबी की फसल काटने पर खेत में जो बालियाँ गिरी रहती है उन्हें सिल्ला कहते है, पल्ला चट)।

ले लुगड़ी, चल गुदड़ी - जो तुम्हारा काम है वह तुम्हें करना चाहिए। जो अपनी औकात मे बाहर की बाते करता है उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : अव० ले लुगरी, चल बुजरी तोर नैहर मोर जाना है।

लैला प्यारी तो लैला का कुत्ता भी प्यारा---जिससे जिसका प्रेम होता है उसकी बुरी-से-बुरी चीज भी उसके

लिए प्रिय होती है। तुलनीय : पंज० लैला पयारी ते लैला दा कुत्ता वी पयारा।

लोक का डर न परलोक का डर—पापियों पर कहा गया है जो न तो बदनामी से डरें न ईश्वर से। खुलेआम बुराई करनेवाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : अव० लोक कै डेर न परलोक कै डेर; मरा० जनाला भीत नाही नि ईश्वराला मानीत नाहीं; पंज० न इथों दा डर न उथों दा डर।

लोक में मजा करे सो परलोक में दंड भरे—जीवन में अनुचित उपायों द्वारा सुख भोगनेवालों को मृत्योपरांत दंड भोगना पड़ता है। बुरे काम कितना भी सुख दें किन्तु उनका फल बुरा ही मिलता है। तुलनीय : भीली—राम मोरे लेका हे, मूंड़ मीठ् पले करो; पंज० इथे मजा करे ते उथे (परलोक विच) दंड परे।

लोगों की होली, जलें पेड़—लोग तो होली मनाते है, किन्तु वृक्षों की जान जाती है। जब कोई व्यक्ति अपनी प्रसन्नता के लिए दूसरों को कष्ट देता है तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० खावण पीवणनें दीवाली कूटीजणने आज।

लोढ़ा कहे महादेव के भाई—लोढ़ा कहता है कि मैं महादेव का भाई हूँ। छोटे जब बड़े की बराबरी करते हैं तब व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मग० लोढवो कहे महादेव के भाई, भोज० लोढ़ो कहे महादेव क भाई।

लोन केरि पुतला चल्यो, थाह सिन्धु की लेन—नमक का पुतला जो पानी में पड़ते ही गल जाता है समुद्र की थाह लगाने जा रहा है। किसी छोटे आदमी के अनुचित साहस पर व्यंग्य में कहा जाता है।

लोनिए का लोन गिरा दूना हुआ, तेली का तेल गिरा हीना हुआ—यह जरूरी नहीं कि जिस काम मे एक को लाभ हो उसमें दूसरे को भी लाभ ही हो।

लोनी सोइ कंत जेहि चाहा—सुन्दर पत्नी वही है जिसे पति प्यार करे। अर्थात् सौंदर्य देखनेवाले के मन पर भी निर्भर करता है, बाह्य रूप पर नहीं। तुलनीय : फ़ा० लैला रा बचश्म-मजनू बायद दीद (लैला का सौंदर्य देखना हो तो मजनू की आँखों से देखो।) जायसी कहते हैं—लोनी बिलोनि तहा को कहा, लोनी सोइ कंत जेहि चाहा।

लोभ का पेट सदा खाली—लालची व्यक्ति की इच्छा कभी पूरी नहीं होती। तुलनीय : मल० कांतियनु मतिवरा; पंज० लालच दा टिड सदा खाली; अं० A covetous man is ever in want.

लोभ के आगे दीवार नहीं होती—लोभ की कोई सीमा नहीं होती। आशय यह है कि लोभी को कभी संतोष नहीं होता। तुलनीय : माल० लोभ आगे थोभ नी; पंज० लोब दे अग्गे कोई कंद नईं हुंदी।

लोभ गला कटावे—लोभ कभी-कभी मनुष्य की जान तक ले लेता है। अर्थात् लालच बहुत बुरी चीज होती है। लोभ करने से मना करने के लिए इस लोकोक्ति का प्रयोग करते हैं। तुलनीय : माल० लोभ गलो कटावे; पंज० लोब गला कटांदा है।

लोभ पाप का बाप है—लालच बहुत बुरी चीज है। यह मनुष्य का पतन कर देती है। अतः मनुष्य को लालच नहीं करना चाहिए। तुलनीय : असमी लोभे पाप, पाप मृत्यु; सं० लोभः पापस्य कारणम्।

लोभ से कुछ नहीं मिलता—लालच करने से कुछ प्राप्त नही होता बल्कि पास से भी गंवाना पड़ता है। तुलनीय : मल० अतिमोहम् चक्रम् चविट्टुम; पंज० लोब नाल कुज नईं मिलदा; अं० All covet, all lost.

लोभी और सांप बराबर—ये दोनों समान होते है। इनका कभी विश्वास नहीं करना चाहिए। ये किसी भी समय हानि पहुँचा सकते है। तुलनीय : पंज० लोबी ते सप इको जिहे; ब्रज० लोभी और स्यांप एक से।

लोभी का जी बेईमानी में—स्पष्ट।

लोभी का धन गैर खांय—लालची के धन का दूसरे लोग ही उपभोग करते है तुलनीय : तेलु० लोभुल सोम्मु लोकुल पालु; पंज० लोभी दा पैहा लालची खान।

लोभी का धन लफंगे खाएं—ऊपर देखिए।

लोभी के गाँव में अगड़िया भूखा नहीं मरता (क) लोभी मनुष्य ही जुआरी और चोरों से ठगा जाता है। (ख) ऐसे लोगो के प्रति भी कहते हैं जो ठगी पर ही जीवन निर्वाह करते हैं।

लोभी खाय न खाने दे—लोभी मनुष्य न स्वयं खाता है और न दूसरों को खाने देता है।

लोभी गुरु लालची चेला—बुरे आदमी को बुरा शिक्षक या गुरु मिले तो कहते है।

लोभी गुरु लालची चेला, दोऊ नरक में ठेलमठेला—लोभी व्यक्ति का शिष्य भी लोभी ही होता है। दोनों नरक में जाकर एक-दूसरे को धक्का देते है। अर्था लोभ करनेवाले की बुरी दशा होती है। तुलनीय : भोज० लोभी गुरु औ लालची चेला, दुइनौ मा ठेलम ठेला; राज० लोभी गुरु लालची चला, दोऊ नरक में ठेलम ठेला।

लोभी गुरु लालची चेला मतलब सधे रहे अकेला— लोभी गुरु और लालची चेले की आपस में पटती नहीं क्योंकि वे एक-दूसरे को धोखा देने के प्रयत्न में रहते हैं। इसी कारण स्वार्थ सिद्ध होते ही वे एक-दूसरे से अलग हो जाते हैं। तुलनीय : माल० हाट रा गुरु ने वाट रा चेला जदी मूंड्या जदी अकेला।

लोभी भूखा मरे—लोभी मनुष्य भोजन में भी कंजूसी करते हैं। जो व्यक्ति साधन होते हुए भी खाते-पीते नहीं हैं उनके प्रति इस लोकोक्ति का प्रयोग करते है। तुलनीय : मेवा० अन्त लोभी महा दुखी।

लोभी सबका दुश्मन— क्योंकि उसकी सम्पत्ति को पाने के लिए सभी लोग ध्यान लगाए रहते हैं।

लोभी से कोई पार न पाय लोभी मनुष्य बहुत चालाक होता है। उसको आसानी से ठगा नहीं जा सकता। तुलनीय : माल० लोभी आगे दूतारो।

लोमड़ी के शिकार को जाय तो शेर का सामना कर ले आशय यह है कि छोटे-से-छोटे काम के लिए भी अच्छी तैयारी करना चाहिए।

लोमड़ी को अंगूर खट्टे— लोमड़ी को अंगूर खट्टे लगते है। आशय यह है कि किसी चीज़ के न प्राप्त होने पर लोग उसे बुरी दृष्टि से देखते है या बुरा कहते हैं। तुलनीय : पंज० लोमडी नूं अंगूर खट्टे।

लोमड़ी पादे, गीदड़ गवाही दे—लोमड़ी ने पादा तो गीदड़ ने उसकी गवाही दे दी। जब कोई किसी की झूठी बात मे हाँ मिलाए तो व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : राज० लूकड़ी पाद दियो, सिमियँ साख भर दी; पंज० लोमड़ी ने पद मारया गिदड़ ने गवायी दिती।

लोमा फिरि फिरि दरस दिखावे, बाएं ते दहिने मृग आवे; भड्डर ऋषि यह सगुन बतावे, सगरे काज सिद्ध होइ जावे— भड्डरी कहते है कि लोमड़ी का बार-बार दर्शन हो तथा मृगा बाईं तरफ से दाहिनी तरफ आवे तो कार्य सिद्ध हो जाएगा।

लोष्टप्रस्तारन्याय: उलट-पलट तथा संयोग की विधि का न्याय। तात्पर्य यह है कि जीवन मे संयोग एवं वियोग होते ही रहते हैं।

लोष्ट लगुड़ न्याय—ढेला तोड़ने के लिए जैसे डंडा होता है उसी प्रकार जहाँ एक का दमन करने वाला दूसरा होता है वहाँ यह कहावत कही जाती है।

लोह चुंबक न्याय— लोहा गतिहीन और निष्क्रिय होने पर भी चुंबक के आकर्षण से उसके पास जाता है। जहाँ किसी के आकर्षण से ही कोई काम हो वहाँ कहते हैं।

लोहा करे अपनी बड़ाई, हम भी हैं महादेव के भाई— लोहा कहता है कि मैं भी महादेव का भाई हूँ। जब कोई नीच मनुष्य किसी प्रतिष्ठित मनुष्य से अपना संबंध जोड़ता है तब उसके लिए व्यंग्य में कहते है। तुलनीय : अव० लोहा करै आपन बड़ाई, हमहूं अही महादेव कै भाई।

लोहा जाने लुहार जाने धौंकनेवाले की बला जाने— धौंकनेवाले को तो केवल धौंकनी चलाने से मतलब होता है। लोहे की क्या दशा है इसे लोहार क्या जाने। अपने कार्य के अतिरिक्त दूसरी चीज़ों से मतलब रखनेवाले के प्रति कहते है। तुलनीय : अव० लोहा जानै लोहार जानै, धउकन वाले कै बलाय जानै; राज० लोह जाणै लोहार जाणै, खातीरी बलाय जाणै।

लोहा तांबा ऐसा तो सोना-चांदी कैसा— भाव यह है कि जहाँ के सामान्य लोग इतने अच्छे या समझदार हैं वहाँ के बड़े लोगों का क्या पूछना? अच्छी जगह पर सामान्य लोग भी समझदार या सभ्य होते है। तुलनीय : पंज० लोहा तांबा इहो जिहा ते सोना चांदी किहो जिहा।

लोहार का बैल कोहार लेकर सती हो— लोहार के बैल को लेकर कुम्हार परेशान होता है। व्यर्थ मे परेशान होनेवाले के प्रति कहते है।

लोहार की कूंची आग पानी दोनों में— (क) किसी व्यक्ति के सुख-दुख दोनों अवस्थाओं में साथ देने पर उक्त कहावत कही जाती है। (ख) मनुष्य के जीवन मे सुख-दुख दोनों आते है। किसी की भी दशा सदा एक-सी नहीं रहती। तुलनीय : भोज०, मैथ० लोहारक कूंची आगि-पानी दुनू मे।

लोहा, लकड़ी चमड़ा, करे ही पतियाय, बहू बछेड़ा औलाद बडे होय जनाय लोहा, लकड़ी और चमड़े की वास्तविकता का पता प्रयोग करने पर ही चलता है तथा बहू, बछेड़ा और संतान की अच्छाई-बुराई का पता उनके वयस्क होने पर ही चलता है। तुलनीय : राज० लोहा लकड़ा चामड़ा, पहली किसा बखाण ? बहू बछेरा नीकड़ियां परवांण।

लोहे की मंडी में मार ही मार—लोहे की मंडी मे केवल हथौड़े की आवाज आती है। अर्थात् जहाँ जैसा समाज होता है वहाँ वैसी ही चीज देखने-सुनने को मिलती है।

लोहे को लोहा ही काटता है— (क) किसी शक्ति को दबाने के लिए उसके समान शक्ति की आवश्यकता होती है।

(ख) अपना ही अपने को मारता है। (ग) जाति का बैरी जातिवाला ही होता है। तुलनीय : मल० अरखुम अरखुम कूटियाल किन्नरम्; पंज० लोहे नूं लोहा कटदा है; अं० Diamond cuts diamond.

लोहे से लोहा टकराए तो आग निकले—लोहे से लोहे के टकराने पर आग ही निकलती है। समान शक्तिशाली व्यक्तियों के झगड़े में उनकी हानि तो होती ही है साथ ही उनकी क्रोधाग्नि में निर्बल भी भस्म हो जाते हैं। तुलनीय : राज० लोवैसू लोवो घसीजता आग नीकळै; पंज० लोहे नाल लोहा मारो ते अग्ग निकले।

लौंडी और के पैर धोए अपने पैर धोती लजाए—जो व्यक्ति दूसरों का काम करता फिरे किन्तु अपने काम की तरफ से लापरवाही बरते उसके लिए व्यंग्य से कहते हैं।

लौंडी की खुशामद से ससुराल में वास—नौकरों को खुश रखने से मालिक भी राज़ी रहता है।

लौंडी की जात क्या? रंडी का साथ क्या? भेंड़ की लात क्या? औरत की बात क्या?—इनकी कुछ भी परवाह न करनी चाहिए। अर्थात् इनका कोई मूल्य नहीं है।

लौंडी को लौंडी कहा रो दी, बीवी को लौंडी कहा हँस दी—कुलीन और नीच में यही अन्तर है कि उच्च कुल का व्यक्ति विशाल हृदय रखता है जबकि नीच का दिल बहुत छोटा होता है और वह छोटी-छोटी बातों पर बिगड़ खड़ा होता है।

लौंडी बनकर कमाना और बीवी बनकर खाना—अर्थात् मेहनत से कमाना चाहिए और उसे सम्मानपूर्वक खाना चाहिए। तुलनीय : पंज० रडी बनकर कमाना अते बौटी बन के खाना।

लौंद मसूदा खसम खुदाई—ऐसी स्त्री के लिए कहते हैं जो हर प्रकार से स्वतंत्र हो और उसे रोकने-टोकनेवाला कोई न हो।

लौकी डूबे सील उतराय—लौकी डूब गई और सील तैर रही है। अनहोनी बात पर कहते हैं।

लौटे बराती गुज़रे गवाह—(क) इन दोनों को कोई नहीं पूछता। (ख) मतलब निकल जाने पर लोग भूल जाते हैं। तुलनीय : छत्तीस० लहुटे बराती, अउ गुजरे गवाही।

व

वकीलों का हाथ पराई जेब में—वकीलों का हाथ दूसरों की जेब में रहता है। आशय यह है कि दूसरों की बदौलत ही वकीलों की रोज़ी चलती है। तुलनीय : मरा० वकीलांचे हात दुसऱ्याच्या खिशांत; पंज० वकीलां दा हथ्थ बगानी जेब विच; अव० वकीलन कै हाथ पराये कै खलीसा मा।

वकीलों का हाथ पराए की जेब में—ऊपर देखिए।

वक़्त उड़ गया बुलंदी रह गई—समय निकल जाता है पर यश रह जाता है।

वक़्त और जवानी कब तक?—समय और यौवन स्थायी नहीं है, ये सदा क्षीण होते रहते हैं केवल इनकी याद रह जाती है। तुलनीय : भीली—आधो जमानो जोवन जावानो है; पंज० मौका अते जवानी कदों तक।

वक़्त का गुलाम और वक़्त का ही बादशाह—समय मनुष्य को कभी गुलाम और कभी बादशाह बनाता है। आशय यह है कि समय मनुष्य को जैसा चाहता है वैसा बना देता है, मनुष्य कुछ नहीं कर सकता। तुलनीय : पंज० मौके दा गुलाम अते मौके दा बादशाह।

वक़्त का चक्कर, आज तेरा तो कल मेरा—आज तेरा समय है तो कल मेरा भी आएगा। अर्थात् समय सदा बदलता रहता है। सबके जीवन में अच्छे-बुरे दिन आते हैं। तुलनीय : पंज० दिनां दा फेर अज तेरा कल मेरा।

वक़्त का रोना बेवक़्त के हँसने से बेहतर है—अर्थात् वक़्त पर किया गया हर एक काम अच्छा है चाहे वह कष्टकर ही क्यों न हो। तुलनीय : पंज० मौके दा रोना बेमौके दे हसन नालों चगा है।

वक़्त की ख़ूबी है—(क) जब किसी के साथ नेकी की जाय और वह बदले में बदी करे तो कहते हैं। (ख) समय के कारण जब विपत्ति आए या कोई विचित्र घटना घटे तब भी कहते हैं। तुलनीय : अव० बखत की खूबी है; पंज० मौके दी गेड़ है।

वक़्त की रागिनी है—ऊपर देखिए। तुलनीय : राज० वेळा-वेळा री राग है।

वक़्त को ग़नीमत जानिए—जिस कार्य के लिए जो भी समय मिल जाए उसी को सौभाग्य समझकर पूरा लाभ उठाना चाहिए।

वक़्त गुज़र गया बात रह गई—जब कोई अपने बुरे दिनों में किसी से सहायता माँगे और वह न दे तो समय बीत जाने पर वह व्यक्ति उसको या उसके बारे में दूसरों से कहता है कि मेरी मुसीबत तो टल गई लेकिन उस व्यक्ति का सहायता न देना याद रहेगा।

वक़्त चला जाता है, बात रह जाती है—समय तो बीत जाता है लेकिन बात सदा याद रहती है। (क) जब कोई किसी की सहायता करने का वचन देकर समय पर इनकार कर जाता है तब वह उसके प्रति कहता है। (ख) जब कोई किसी के बुरे दिन में उसे उल्टी-सीधी बातें कह देता है तब भी वह उसके प्रति कहता है। तुलनीय : अव० बखत बीत जात है बात कहै का रैह जात है; राज० वखत जाय परो, बात रह ज्याय; गढ़० वक्त चल जांदा बात रै जांदी; माल० वगत चली जाय ने वात रेड जाय; पंज० मौका चला जांदा है गलां रह जांदियां हन।

वक़्त देख ना करे व्यापार, वह बनिया लट्ठ गँवार—जो बनिया समय के अनुसार व्यापार नहीं करता वह महा गँवार समझा जाता है। आशय यह है कि प्रत्येक कार्य समय, साधन और परिस्थितियों के अनुसार करना चाहिए। जो व्यक्ति इसके विपरीत चलते हैं वे मूर्ख कहलाते है। तुलनीय : राज० बखत देख नहीं विणजै जको बाणियो गवार।

वक़्त दे पाणी तो कर घोड़े असवारी, वक्त ना वे पारी तो करखा चरबेदारी—अगर भाग्य ठीक है तो घोड़े की सवारी करनी चाहिए और यदि कुसमय में घोड़े का साईस बनना पड़े तो उसे भी सहर्ष अपनाना चाहिए। अर्थात् जब जैसा वक्त पड़े वैसा ही करना चाहिए।

वक़्त पड़ने पर गधे को भी बाप बनाना पड़ता है—नीचे देखिए। तुलनीय : राज० वखत आवे बांका तो गधे कु कहेना काका; पंज० मौका पैण ते खोते नूं वी पिउ बनाणा पैंदा है।

वक़्त पड़े पर गधे को भी मामा कहा जाता है—अपनी ग़रज़ पर छोटे की भी खुशामद करनी पड़ती है। तुलनीय : पंज० मौका पैण ते खोते नूं वी मामा कैण पैंदा है।

वक़्त पड़े पर जानिए, को बैरी को मीत—समय पड़ने पर ही पता चलता है कि कौन शत्रु है और कौन मित्र। अर्थात् कष्ट में ही शत्रु-मित्र मालूम पड़ते हैं। तुलनीय : भोज० वखते पर जानत जाला कि के बैरी ह अ के मीत; अव० बखत पड़े पर बैरी और मीत के पहिचान होत है; मरा० प्रसंगानें परिक्षा होते मित्र कोण नि शत्रु कोण।

वक़्त पड़े पर सिंह भी मुरदा मांस खाता है—वन के राजा सिंह पर जब बुरा वक़्त आता है तो वह भी मरे हुए पशुओं का मांस खा लेता है। कहा जाता है कि सिंह स्वयं ही शिकार मारकर खाता है। आशय यह है कि वक़्त के सामने किसी की नहीं चलती। तुलनीय : माल० वगत पड्या रे बांदरा भू पड्या फल खाय; पंज० मौके ते सेर वी मरे नूं खांदा है।

वक़्त पड़े बांका तो गधे को कहै काका—दे० 'वक़्त पड़ने पर गधे को भी मामा...'। तुलनीय : भोज० बखते पड़ला पर गदहो के चाचा कहल जाला; अव० बखत पड़े पर गदहो का मामा कहे परत है; बुंद० अपनी अटकें गदा मे ददा कनें परत; निमाड़ी—बखत पर वाको तो गदड़ा ख कय काको; हाड़० काम पड्या गधा न बी बाप बणाव छ।

वक़्त पर आम को इमली बताना पड़ता है—आशय यह है कि समय आने पर झूठ भी बोलना पड़ता है। तुलनीय : भीली—वगत पड़े आबो आमली भालवे पड़े, पंज० मौका पैण ते अंब नूं इमली दसना पैंदा है।

वक़्त पर कुछ बन नहीं आता—कुसमय पड़ने पर सोचने की शक्ति खत्म हो जाती है। अर्थात् विपत्ति में बुद्धि भी काम नहीं करती।

वक़्त पर कोई काम नहीं आता—ज़रूरत पर विरले ही सहायक होते हैं या अवसर पर कोई सहायक नहीं होता। तुलनीय : गढ़० वक्त पर क्वै काम नि औंद; पंज० मौके ते कोई कम नई आंदा।

वक़्त पर गदहे को बाप कहते हैं या बनाते हैं—आशय यह है कि मतलब पड़ने पर आदमी को नीच से नीच व्यक्ति की भी खुशामद करनी पड़ती है। तुलनीय : हरि० बखत पड़े पै गधा भी बाप बणावणा पड़्या करै।

वक़्त पर गाँठ का पैसा ही काम आता है—ज़रूरत के समय केवल अपने पास रखा धन ही काम आता है। तुलनीय : अव० बखत पर गाठी का पइसै काम देत हैं; पंज० मौके उत्ते अपना पैहा ही कम आंदा है।

वक़्त पर जो बन जाय वही बढ़िया—समय पर जैसा भी काम अच्छा-बुरा हो जाय ठीक रहता है। परिस्थिति के अनुकूल कार्य कर देना चाहिए चाहे वह ठीक न भी हो तो भी उसका मूल्य होता है और समय निकल जाने के बाद चाहे कितना भी अच्छा काम हो कोई कौड़ी को भी नहीं पूछता। तुलनीय : भीली—वणी जे वगत; पंज० जिहो जिहा मौका होवे उहो जिहा बणो।

वक़्त पर जो हो जाय सो ठीक है—ऐसा कहकर आलसी लोग संतोष करते है। ऊपर देखिए।

वक़्त पर बोए तो मोती उपजे—(क) फसल समय पर बोने से ही अच्छी होती है। (ख) सही समय पर किया गया काम ही लाभदायक होता है। तुलनीय : राज० बखतरा वाया मोती नीपजै, पंज० मौके ते बीजो ते मोती उगणा।

वक़्त पर भाग जाना मर्दानगी नहीं— संकट के समय अपनों का साथ न देना या उससे भयभीत होकर भाग जाना मर्दों का काम नही है। तुलनीय : अव० बखत पड़े भाग जाब मरदूनी नाही है।

वक़्त पर भाग जाना ही मर्दानगी है— अवसर के अनुसार कार्य करना ही बुद्धिमानी है। तुलनीय : पंज० मौके ते नट्ठ जाण वाला बंदा नईं हुदा।

वक़्त पर भागे सो दोगला— ऊपर देखिए।

वक़्त पर माँग-जाँच कर काम चलाना पड़ता है बुरे दिनों में अड़ोस-पड़ोस से माँगकर भी काम चलाना पड़ता है। अर्थात् ग़रीबी मे दूसरों की सहायता लेनी पड़ती है। तुलनीय . भीली— गरज पड्ये थारू'र मारू करवो पड़े; पज० मौका पैण ते मंग के कम चलाणा पैंदा है।

वक़्त पर सब कुछ करना पड़ता है— समय आने पर मनुष्य को विवशता में बुरा-भला सब कुछ करना पड़ता है। तुलनीय : अव० बखत पड़े सब कुछ किहे परत है; पंज० मौका आण ते सब कुज करणा पैंदा है।

वक़्ते-पीरी शबाब की बातें, ऐसी है जैसे ख्वाब की बातें - वृद्धावस्था मे यौवन की मधुर चर्चा स्वप्नवत् ज्ञात होती है।

वक़्त बड़े से बड़े घाव को भर देता है — अर्थात् समय आने पर बहुत दु:खद घटनाओं की याद भी भूल जाती है। या बहुत पुरानी शत्रुता भी मिट जाती है। तुलनीय : पज० मौका वडी तो वडी सट्ट नूं पर देदा है; अं० Time is the best healer.

वक़्त बीत जाता है, बात रह जाती है -दे० 'वक्त चला जाता है···'। तुलनीय : हरि० बखत चाल्या जा, पर बात रह ज्या।

वक़्त बुरा आता है तो कपड़ा भी बैरी हो जाता है— निर्धनता आने पर जिस तरह सभी साथ छोड़ देते हैं उसी प्रकार कपड़े भी फट जाते हैं। अर्थात् बुरे समय में कोई भी काम नहीं आता। तुलनीय : माल० वगत खराब आवे तो कपड़ा इ वैरी वे जाय; पज० दिन पैड़े होण ता टल्ले वी दुसमण हो जांदे है।

वक़्त भूलता है पर बात नहीं भूलती—दे० 'वक्त चला जाता ···'। तुलनीय : अव० बखत भूल जात है मुला बात नाही भूलत।

वक़्त-वक़्त का रंग जुदा—समय सदा बदलता रहता है। सब के ऊपर अच्छे और बुरे दिन आते हैं। तुलनीय : बखत-बखतरा रंग जुदा; पंज० मौके मौके ते रंग बदलदा है।

वक़्त-वक़्त की रागिनी है— हर काम के लिए एक समय होता है और वह उसी समय ठीक ढंग से होता है। तुलनीय : अव० बखत बखत कै बात है; राज० बखत-बखतरी रागण्यां है।

वक़्त सब कुछ कर देता है—समय के आ जाने पर कार्य अपने आप पूरा हो जाता है। तुलनीय : अव० बखत सब कुछ कै देत है।

वक़्त सब कुछ करा लेता है—समय बड़ा बलवान है वह मनुष्य से अच्छा-बुरा सभी प्रकार का काम करा लेता है।

वक़्त ही का ग़ुलाम वक़्त ही का बादशाह—दे० 'वक़्त का गुलाम···'।

वक़्ते-जरूरत चूं मानन्द गुरेज, दस्त बिगीरद सरे-शमशेरे-तेज —सीधी तरह काम न निकले तब टेढ़ी तरह निकाल लेना चाहिए।

वक़्तों के बलिया पकाई खीर हो गया दलिया दे० 'भाग के बलिया···'।

वज़न में तीन मन नाम छटंकी—वज़न तो तीन मन है लेकिन नाम है छटंकी। गुण या दशा के विपरीत नाम न होने पर व्यंग्य में कहते है। तुलनीय : अव० तौल मा तीन मन, नाम छटंकी लाल; पंज० पार तीन मण नां छटांकी।

वज्र को वज्र काटता है — दे० 'लोहा लोहे से ही कटता है या लोहे को लोहा ही काटता है।' तुलनीय : तेलु० वज्राग्नि वज्रमेकोयवले; पंज० वट्टे नूं वट्टा पनदा है।

वज़ीरे-चुनीं शहरयारे-चुनां—जैसा वज़ीर है वैसा ही बादशाह। जैसे अधिकारी वैसे ही उनके सहायक।

वज़अ कहे देती है —सूरत-शक्ल या हुलिये से ही पता चल जाता है।

वटेयक्ष न्यायः— वट वृक्ष में यक्ष का न्याय। पुराने लोगों का यह विश्वास रहा है कि प्रत्येक वट वृक्ष में यक्ष (भूत) रहा करते हैं।

वनसिंह न्यायः — जंगल और सिंह का न्याय। प्रस्तुत न्याय का प्रयोग उन दो चीजों के सम्बन्ध में किया जाता है जो आपस में एक-दूसरे की रक्षा या सहायता करती हैं।

वर के मिले भूसा बरियाती माँगे चूरा—दूल्हे (वर) को तो भूसा भी नही मिल रहा है और बाराती चूरा माँग रहे हैं। बेमेल एवं अनुचित माँग पर कहते हैं।

वरगोष्ठी न्यायः—जिस प्रकार वर पक्ष और कन्या पक्ष के लोग मिलकर विवाह के रूप में एक ऐसे कार्य का साधन

करते हैं जिससे दोनों का अभीष्ट सिद्ध होता है, उसी प्रकार जहाँ कई लोग मिलकर सबके हित का कोई काम करते हैं वहाँ यह न्याय कहा जाता है।

वरमद्य कपोतः श्वोमयूरात् —आज की तिथि में प्राप्त कपोत (कबूतर) कल प्राप्त होने वाले मयूर (मोर) से अच्छा है। आशय यह है कि जो चीज़ मिल जाय उसको ग्रहण कर लेना चाहिए भले ही वह साधारण चीज़ क्यों न हो; भविष्य में मिलने वाली अच्छी चीज़ की उम्मीद में उसे लेने से इनकार नहीं करना चाहिए।

वर मरे चाहे कन्या मेरी गोद का भाड़ा भरो —लड़का मरे चाहे लड़की मुझे अपने भाड़े से काम है। दूसरे की हानि की परवाह न कर जो केवल अपने मतलब को देखता है उस पर यह लोकोक्ति कही जाती है।

वर मरे पटवासी न टूटे—पति मर गया लेकिन माँग सँवारना नहीं छूटा। पति के न रहने पर भी विधवा स्त्री के केश-शृंगार करने पर कहते है।

वर मरो या कन्या मरो, मेरी गोद का भाड़ा भरो — दे० 'वर मरे चाहे कन्या···'। तुलनीय : अव० वर मरै चहे कन्या दच्छिना सीधा करो।

वली का बेटा शैतान—योग्य पिता के अयोग्य पुत्र पर कहा जाता है। (वली मन्त)। तुलनीय : पंज० चंगे पिउ दा पैडा पुत।

वली के घर शैतान—ऊपर देखिए।

वली को वली ही पहचानता है— भले लोगों की इज़्ज़त भला व्यक्ति ही करता है। तुलनीय : पंज० चगे लोकां दी इज्जत चंगा मनुख जाणदा है।

वली ने किया काम शैतान का —कोई नेक व्यक्ति यदि कोई कुकर्म या पाप कर बैठे तो उसके लिए ऐसा कहते है।

वली रा वली मी शनासद— दे० 'वली को वली ही···'।

वली सबका अल्ला है हम तो रखवाले हैं—धन आदि सब का स्वामी ईश्वर है, हम तो केवल उसकी रक्षा करने वाले हैं। ऐसा प्रायः कृपण लोग कहा करते हैं। उनका आशय यह है कि वे पैसा नहीं दे सकते। यह ईश्वर के हाथ में है।

वसीले बिना रोज़गार नहीं होता—बिनी किसी प्रकार के सम्बन्ध या हीले के रोज़ी नहीं मिलती। तुलनीय : अव० वसीलन के बिना नौकरी नाही मिलत।

वस्त्र होते भी जाड़े से मरता है —साधन होते भी कष्ट सहनेवाले की ओर संकेत किया गया है। तुलनीय : मैथ० अछैते लूगा जाड़े मरे; भोज० लुग्गा (कपड़ा) अछइत जाड़ में मरे के; पंज० टल्ले होण ते वी पाले नाल मरदा है।

वस्त्र होने पर भी नंगा है —ऊपर देखिए। तुलनीय : मैथ० अछैते लूगा सहोदरा नांगटि; भोज० लुग्गा अछइत उघारे रहे के; पंज० टल्ले होण ते वी नगा है।

वह ऐसे गए जैसे गधे के सिर से सींग —किसी के शीघ्र या ऐसे गमन पर कहा जाता है जिसका पता ही न चले कब गया। किसी के लम्बे समय के लिए गायब हो जाने पर भी कहते है। तुलनीय : पंज० ओह ऐवें गये जिवें खोते दे सिर तो सिंग।

वह कमली जाती रही जिसमें तिल बँधते थे—वह कमली अब नहीं है जिसमें तिल बांधा जाता था। (क) समय निकल जाने पर प्रश्न करने पर कहते है। (ख) किसी के अच्छे दिनों के बीत जाने और बुरे दिनों के आने पर भी कहते हैं। तुलनीय : गढ़० वो बुन्द बिलायत गया।

वह किसान है पातर, जो बरदा राखै गादर—जिस किसान के बैल गादर (कम चाल वाले) हों उसे कमज़ोर समझना चाहिए। क्योंकि गादर बैलों से अच्छी खेती नहीं होती जिससे उसकी दशा सुधर नहीं पाती।

वह कुछ नाहर तो नहीं है जो खा जायगा —वह शेर नहीं है जो खा जाएगा। इस प्रकार कहकर औरों का किसी से डर दूर किया जाता है। अर्थात् उससे डरने की कोई बात नहीं है।

वह कौन-सी किशमिश है जिसमें तिनका नहीं आशय यह है कि बिना दोष का कोई नहीं है। तुलनीय : पंज० ओह किहड़ी सौगी है जिदे बिच तीला नइ।

वह कौन-सी तपरी, जो हमसे छपरी कौन-सा घर है जो हमसे छिपा है? अर्थात् कोई नहीं। पूरी जानकारी का दावा करके गर्व प्रकट करना।

वह क्या मेरा ख़ाला की खलबच्ची है? -वह मेरी कोई नहीं होती। अर्थात् उससे और मुझसे कोई संबंध नहीं है। जिस व्यक्ति से अपना कोई संबंध न हो उसके प्रति कहते है। तुलनीय : पंज० ओह किहड़ी मेरी मासी दी नीं है।

वह गुड़ नहीं जो चींटे खायें—(क) अर्थात् यहाँ से तुम्हें कुछ न मिलेगा। (ख) यहाँ तुम्हारी दाल नहीं गल सकती। तुलनीय : भोज० ऊ गुर नां हई जेके चूंटा खाई; मैथ० ओ गुड़ कहाँ जे माछी खाय; अव० उ गुड न होय जेका चीटा खाय जायँ; मरा० मुंगळे चिकटतील असला इ गुळ नाही; पंज० उह गुड़ नई जिनूं कीड़िया खाण।

वह गुड़ नहीं जो मक्खी बैठे—ऊपर देखिए।

वह डूबे मझधार जिन पर भारी बोझ—जिनके ऊपर भारी बोझ रहता है वे बीच धार में डूब जाते है। पापियों के ऊपर कहा जाता है। तुलनीय : पंज० जिनां दे सिर उत्ते पार होवे ओह बिच डुबदा है।

वह तो शैतान से भी एक दर्जा ज्यादा है—बहुत उद्दंड या उच्छृंखल व्यक्ति के प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० उह तां सतान तों वी इक रत्ती वद के है।

वह तो सगे बाप को नाही—वह तो अपने बाप का भी नही हुआ। कृतघ्न मनुष्य के प्रति कहते है जो किसी का एहसान नहीं मानता। तुलनीय : अव० उ तो अपने सगे बापौ का नाही; पंज० उह तां अपणे सक्के पिउ दा वी नई।

वह दरबार गाव खुर्द हो गया—वह शान बर्बाद हो गई। किसी शानदार व्यक्ति के बुरे दिन आने पर कहते हैं। (गाव खुर्द = गाय का चरा हुआ)।

वह दरबा ही जल गया—कहीं से कुछ आशा न रहने पर कहते है।

वह दिन गए जब खलील खाँ फ़ाख़ता उड़ाते थे—अच्छे दिनों के गुज़र जाने पर कहते है। (फाख़ता=एक पक्षी)। तुलनीय : भोज० ऊ दिन चल गइल जब खलील खाँ फाख्ता उड़ावत रहलं।

वह दिन गए जब भैंस पकौड़े हगती थी—अर्थात् अब पहले की-सी मुफ्त की आमदनी नहीं रही। तुलनीय : भोज० ऊ दिन गइल जब भइंसि पकउड़ी हग्गति रहलि; पंज० उह दिण गए जदों मझ पकौडे हगदी सी।

वह दिन गए जो खलीलखाँ फ़ाख्ता मारते थे—अच्छे दिनों के गुज़र जाने पर कहते है।

वह दिन डुब्बे, जब घोड़ी चढ़े कुब्बे—वह दिन डूब जाय जब कुबड़े घोड़े पर चढ़े या अयोग्य व्यक्तियों को सुख मिले। यह शाप है। तुलनीय : पंज० उह दिन डुब्बा जदों कोठी नड्या कुब्बा।

वह दिन नहीं रहे तो ये दिन भी नहीं रहेंगे—जब अच्छे दिन नहीं रहे तो बुरे भी नहीं रहेंगे। (क) संसार की परिवर्तनशीलता दिखाने के लिए कहते हैं। (ख) जो व्यक्ति सपन्नता या समय के फेर से निर्धन हो गया हो उसे साहस बँधाने के लिए भी कहते हैं। तुलनीय : माल० वी दन नी र्‌या तो ई दन थोड़ी रेगा; पंज० ओह दिन वी नई रहे ता इह दिन वी नई रैणगे।

वह दिन हवा हुए जब पसीना गुलाब था—दे० 'वह दिन गए जब खलील खाँ...'।

वह नहीं तो उसका भाई और सही—जब कोई एक व्यक्ति किसी कार्य विशेष को करने में आनाकानी करे तो तो कहते हैं—ठीक है यह नहीं तो इसका भाई यह काम करेगा, इसी पर सब कुछ निर्भर नहीं है।

वह नारी भी दिन-दिन रोवे, जाका पुरुष निखट्टू होवे—वह स्त्री रात-दिन रोती है जिसका पति निखट्टू होता है अर्थात् निखट्टू की पत्नी को सदा कष्ट सहना पड़ता है। तुलनीय : पंज० उह जनानी वी दिन-पर रोवे जिदा बंदा नखट्टू होवे।

वह पगड़ी बाँधे जो सदा रहे—मनुष्य को उतना ही ठाट-बाट करना चाहिए जितना कि आयु पर्यन्त निभ सके। अपनी सामर्थ्य से अधिक व्यय करनेवालों के प्रति कहते हैं। तुलनीय : गढ़० स्या लाणी पगड़ी जो नीभी जी दगड़ी; पंज० पग ओह बन्ने जिहड़ा सदा रवें।

वह पानी मुलतान गया—अब वह बात नहीं रही। वह मज़े नहीं रहे। जब किसी रोग से कोई व्यक्ति कोई वस्तु न ले पर बाद में फिर उसी को चाहे, पर देने वाला इनकार करे तो कहते हैं। तुलनीय : राज० बो पाणी मुलतान गया; पंज० उह पाणी मुलतान गया।

वह पुरखा एक दिन पछतावे, दया-धरम जो जीसे ताहवे—जो दया-धर्म को जी से निकाल देते है, उन्हें एक दिन अवश्य पछताना पड़ता है।

वह पुरखा तो फले और फूले, जो दाता को मूल न भूले—वह व्यक्ति सदा सुखी रहता है जो ईश्वर को कभी नहीं भूलता। अर्थात् ईश्वर का भक्त ही फलता-फूलता है।

वह पुरखा दिन-दिन पछतावे, जो आमद से दुगना खावे—आमदनी से अधिक खर्च करने वाला अंत में पछताता है। तुलनीय : पंज० ओह मनुख दिन-दिन पछतावे जिहड़ा कमाई तों दूना खावे।

वह पुरखा भी अति दुख पावे सीख बड़ों से जो फिर जावे—जो बड़े-बूढ़ों का कहना नहीं मानता, उसे बहुत दुःख उठाना पड़ता है।

वह पुरखा भी मूल है खोटा, पावे लाभ बतावे टोटा—जो लाभ होने पर भी 'हानि-हानि' चिल्लाता है वह खोटा है। तुलनीय : पंज० ओह मनुख वी खोटा है जिहड़ा नफा होण ते टोटा दसे।

वह पुरखा ले निपट भलाई, जिसको होवे ख़ौफ़े-इलाही—भगवान से डरनेवाले का भला होता है।

वह बात कोसों गई—अवसर निकल जाने पर कहते हैं। तुलनीय : अव० वा बात कोसन गय; पंज० ओह गल

निकल गई ।

वह बिल्ली पूज के चलते हैं—बिल्ली ब्राह्मणी समझी जाती है । ऐसे पर या शक्की आदमी पर कहते हैं ।

वह बूंद मुलतान गई—दे० 'वह पानी मुलतान···'।

वह भला मानस कैसा, जिसके पास न होवे पैसा—वह कैसा भला आदमी है जिसके पास पैसा नही है । अर्थात् आजकल पैसे मे ही व्यक्ति भला समझा जाता है । तुलनीय : पंज० ओह भलामानस किहो जिहा जिदे कौल पैहा न होवे ।

वह भी कन्या जिसके अबलख बाल— (क) वह कन्या कैसी, जिसके बाल सफेद हो गए हों ? (ख) बूढ़े जब लड़के या छोटे बनते हैं तब भी कहा जाता है । (अबलख -आधा काला आधा सफ़ेद)। तुलनीय . पंज० ओह कुड़ी किहो जिदी जिदे बाल अद्दे काले अद्दे चिटटे होण ।

वहम की दवा तो लुक़मान के पास भी नहीं है—शक्की आदमी को कोई भी नहीं समझा सकता । लुक़मान एक बहुत बड़े हकीम थे । तुलनीय : हरि० भैम की दवाई, लुकमान कै बी ना पाई; गढ़० बैम की कोई दवा नी; मरा० संशयाला औषध अश्विनी कुमारा जवळ सुद्धाँ नाही ।

वह मढ़ी ही जाती रही जहाँ अतिथि रहते थे—वह स्थान अब नहीं रह गया जहाँ अतिथि रहते थे । (ख) बीती महिमा या अपने बीते हुए अच्छे दिनों पर कहा जाता है । (ख) बीते हुए समय पर भी कहते हैं ।

वह मानस तो नित सुख पावे, सीख बड़ों की जो चितलावे बड़ों की सीख मानने वाला सुख पाता है ।

वह राजा मरता भला जिसमें न्याव न हो, मरी भली वह स्त्री जिसमें लाज न हो—निर्लज्ज स्त्री और अन्यायी राजा का मरना ही अच्छा है ।

वह शैतान से ज्यादा मशहूर है (क) जो अपनी बदनामी के कारण बहुत प्रसिद्ध हो जाता है जैसे जयचद या गोडसे -उसके प्रति कहते है । (ख) अत्यंत मशहूर व्यक्ति के लिए भी कहते है ।

वह समय ही नहीं रहा बीते समय की अच्छाई पर कहा जाता है ।

वहाँ उसके घर बंसत है, यहाँ मेरे घर बंसत -दोनों ओर या दोनों के घर खुशी होने पर कहते है ।

वहाँ खाना यहाँ मुंह धोना -अर्थात् जितनी जल्दी हो सके आना । किसी को शीघ्र बुलाने के लिए कहते हैं । तुलनीय : भोज० ऊहवाँ खइह ईहवाँ अंचइह; पंज० उथे खाणा इथे मुँह तोणा ।

वहाँ गर्दन मारिए जहाँ पानी न हो बहुत ही कठोर दंड देना चाहिए । किसी व्यक्ति के अपराध को सुनकर लोग यह सुझाव के रूप में कहते है कि ऐसे व्यक्ति को तो भारी सजा देनी चाहिए ताकि याद रखे ।

वहाँ तलक हँसिए जो ना रोइए वहीं तक हँसिए कि रोना न पड़े । अर्थात् अति किसी भी चीज की अच्छी नहीं ।

वहाँ फ़रिश्तों के भी पर जलते हैं—अत्यंत कठोर शासन पर कहा जाता है ।

वह्नि धूम न्याय: धूम-रूप कार्य देखकर जिस प्रकार कारण-रूप-अग्नि का ज्ञान होता है उसी प्रकार कार्य द्वारा कारण अनुमान के संबंध में यह उक्ति है ।

वही अपना जो अपने काम आवे - जो हमारा स्वार्थ सिद्ध करे या समय पर सहायता दे वही अपना नातेदार या संबंधी है ।

वही किसानी में है पूरा, जो छोड़े हड्डी का चूरा - जो अपने खेतों में हड्डी के चूरे को छोड़ता है वही सबसे चतुर किसान है । आशय यह है कि खेत में हड्डी का चूरा डालने से पैदावार अच्छी होती है ।

वही कुल्हाड़ी वही बेंट—वही कुल्हाड़ी है और वही उसकी बेंट भी है । जैसे पहले थे वैसे ही अब भी हैं। (क) जो व्यक्ति कुछ समय तक कोई नया काम करने के पश्चात् फिर से अपना पुराना काम शुरू कर दे तो उसके प्रति व्यग्य मे कहते है । (ख) जैसी स्थिति पहले थी वैसी ही अब भी है, यह व्यक्त करने के लिए भी कहते है । तुलनीय : राज० सागी कुवाडा'र सागी डाँडा ।

वही छिनले वही डोले के संग वह एक चरित्रहीन व्यक्ति है और उसी को लड़की की डोली के साथ भेज रहा है । आशय यह है कि (क) चरित्रहीन व्यक्ति की देख-रेख में किसी की मर्यादा सुरक्षित नहीं रह सकती । (ख) भक्षक को ही रक्षक नियुक्त करने पर भी कहते है । (छिनले-चरित्र-हीन)। तुलनीय . कौर० वेई टिनले, बेई डोले के संग ।

वही जादू जो सर चढ़ बोले—वही जादू सत्य है जो सिर पर चढ़कर बोलता है । आशय यह है कि जब तक कोई चीज प्रमाणित न हो जाय तब तक उस पर विश्वास नहीं करना चाहिए ।

वही जोरू का भाई वही साला—एक ही अर्थ की कई बातों या एक ही तरह की कई बातों पर कहा जाता है । तुलनीय : पंज० ओही बीवी दा परा ओही साला ।

वही ढाक के तीन पात—दे० 'ढाक के वही तीन पात ।' तुलनीय : अव० ओहो ढाक के तीन पात; मेवा० खाखरा के तो तीन का तीन पान, गढ़० ढाक का तीन

पात।

वही तीन बीसी वही साठ, वही चारपाई वही खाट—एक ही अर्थ रखनेवाली कई बातों पर कहते हैं। दे० 'वही मामू वही बाप का साला।'

वही दुख से दूबरी वही दो असाढ़—जिसमे मैं परेशान हूँ वही दो आषाढ़ आ गया। अर्थात् जब कोई किसी मुसीबत से बचना चाहे और वह उसका पीछा न छोड़े तब कहते हैं।

वही दे वही दिलाय—वही देता है और वही दिलाता भी है। अर्थात् ईश्वर ही देता है और वही दिलाता भी है। तुलनीय : पंज० ओह देंदा ओह दिलांदा।

वही फूल जो महेश चढ़े—वही फूल अच्छा है जो शंकर जी (महेश) को चढ़ाया जाता है। अर्थात् अच्छा वही है जो अच्छों के काम आवे।

वही बाई ससुराल को वही गुना गोंठने को—वह ससुराल जानेवाली हैं और वही गुना गोंठ रही हैं। ऐसे व्यक्ति के प्रति कहते हैं जिसका कोई सहायक न हो और उसे अपना सभी कार्य करना पड़ता हो।

वही भला है सब के लेखे, हक नाहक को जो नर देखे—जिसे भले-बुरे का विचार हो वही अच्छा है। इसका एक और पाठ 'वह भला है मेरे लेखे' भी मिलता है।

वही भूत जो सिर चढ़ बोले—भूत सिर पर चढ़कर बोलता है अर्थात् छिपता नहीं। दे० 'वही जादू···'।

वही मन वही चालिस सेर—दे० 'वही तीन बीसी वही साठ···'।

वही मामू वही बाप का साला—दे० 'वही जोरू का भाई···'।

वही मियाँ के तीन कपड़े, नाड़ा, पंजामा, हाथ—मियाजी का नाम तो बहुत है, किंतु कपड़ों के नाम पर केवल एक पैजामा, उसमे पड़ा इजारबंद तथा उसे पहनने के लिए हाथ ही है। झूठी बड़ाई करनेवाले के प्रति व्यंग्य में कहते है। तुलनीय : गढ़० मियाँजी का तीन कपड़ा नाड़ा सुतण यम; पंज० ओही बीबी दे तिन्न कपड़े, नाला, सुत्थण, हत्थ।

वही मियाँ दरबार को, वही चूल्हा फूंकने को—मियाँ साहब दरबार का भी काम देखते हैं और स्वयं भोजन भी बनाते हैं। अकेले आदमी के प्रति कहते है जिसे बाहर का और घर का भी कार्य करना पड़ता है। तुलनीय : पंज० ओही मियां दरबार नूं ओही चुलहा फूंकण नूं।

वही मुंह पान वही मुंह पनही—वही मुँह पान खाता है और वही मुंह जूता भी। अर्थात आदर तथा अनादर व्यक्ति की बोल-चाल पर निर्भर करता है। तुलनीय : मैथ० वैह मुंह पान खुआवे वैह मुंह पनही; भोज० उहे मुंह पान खिआवे ला उहे पनहियो।

वही रहेगा चैन में लोभ किया जिन दूर—जो लालच नहीं करता वही आराम से रहता है। अर्थात् संतोषी के दिन चैन से कटते है।

वही मुर्गी की एक टाँग—तर्क-वितर्क करते समय जब कोई व्यक्ति अपनी ही बात को बार-बार दोहराता रहे या उसी पर अड़ा रहे तब कहते है।

वही राँड़ की राँड़, वही बाबल पिट्टी—जब दो बातों का एक ही अर्थ निकले तो कहते हैं। या एक ही बात को जब कई ढंग से कहें तो कहते हैं। (राँड़ की राँड़—विधवा की लड़की; बाबल पिट्टी—जिसका बाप मर गया हो)। तुलनीय : पंज० ओही रन्न दी रन्न ओही बावल पिट्टी।

वही राज दिवान, वही चूल्हे की जान—दे० 'वही मियाँ दरबार को···'।

वही हाथ खीर में, वही हाथ नीर में—मनुष्य कभी खीर खाता है और कभी जल पीकर रह जाता है। अर्थात् मनुष्य को सुख-दुख दोनों भोगने पडते हैं। यह शरीर सुख भी भोगता है और दुख भी। तुलनीय : सि० उहो ही हत्थ खीर में, उहो ही हत्थ नीर में; पंज० ओहो हथ खीर बिच ओही पाणी बिच।

वही होता है जो मंजूरे-खुदा होता है—भगवान को जो स्वीकार होता है वही होता है। मनुष्य का सोचा नहीं होता। तुलनीय : पंज० ओही हुंदा है जिहडा रब्ब नूं मंजूर हुंदा है।

वाकी गत बस वाही जाने—ईश्वर के लिए कहा जाता है कि उसकी बात को कोई नहीं जान सकता।

वा तिरिया तो एक दिन भाजे, जांकी आँख कभी ना लाजे—वह स्त्री एक-न-एक दिन अवश्य भाग जाती है जिसमें शर्म हया नही है। अर्थात् निर्लज्ज स्त्री अवश्य भाग जाती है।

वा तिरिया संग बैठ ना भाई, जाको जगत कहे हर-जाई—हरजाई या व्यभिचारिणी स्त्री के साथ नही बैठना चाहिए। तुलनीय: अव० वा तिरिया साथ न बैठो भाई जेका सब कहें हरजाई; पंज० उदे नाल न बैठो जिनूं संसार हर-जाई कैंदा है।

वा दिन की बतिया मैं कह दूंगी—उस दिन की बात को मैं सबसे कह दूंगी। दूसरे के ऊपर या सामान्यत: कही गई बात को अपने ऊपर कही गई समझना तथा डरकर अपना भेद स्वयं खोल देना। इस पर एक कहानी है : एक

बार एक रईस एक बारात में गए। बारात में एक रंडी भी गई थी। रईस शौच के लिए मैदान में गए तो वहाँ बेर फले थे। वे पाखाना करते समय अपने को न रोक सके और एक बेर तोड़कर खा लिया। इसी बीच वह रंडी उधर से गुजरी। रईस ने समझा कि उसने उन्हें बेर खाते देख लिया पर असल में उसने देखा नही था। दूसरे दिन महफ़िल में रंडी ने एक गाना गाया—'राजा, वा दिन की बतिया मैं कह दूंगी।' रईस ने समझा कि वह उसी बात की ओर संकेत कर रही है। उन्होंने घूस के रूप में उसे पाँच का नोट दिया। रंडी ने समझा कि रईस को वह गाना अच्छा लगा है और इसीलिए वे इनाम दे रहे है। उनकी ओर मुखातिब होकर रंडी बार-बार यह गाना गाने लगी। रईस ने दो-चार बार तो रुपए दिए पर अंत मे परेशान होकर उठे और उन्होने कहा, तू क्या बताएगी मैं खुद बता दूंगा और स्वयं अपनी बात कह दी। उनकी इस मूर्खता पर सभी लोग हँसने लगे।

वा नर से मित मिल रे मीता जो कभी मिरग, कभी हो चीता—ऐ मित्र! उस व्यक्ति से मित्रता नहीं करनी चाहिए जो कभी मृग और कभी चीते (शेर) जैसा व्यवहार करता है। अर्थात् अव्यवस्थित चित्तवाले आदमी से यथा-साध्य बचना चाहिए।

वा पुरखा की दिन-दिन ख्वारी, जाकी तिरिया हो कलहारी—कलहारी या झगड़ालू स्त्री के पति की रोज दुर्दशा होती है।

वा पुरखा तेरी चतुराई, चून बेचकर गाजर खाई—मैं तुम्हारी बुद्धि पर बलि जाता हूँ कि तुम आटा (चून) बेचकर गाजर खाते हो। उस मूर्ख को कहते है जो जानकर अपनी हानि करे या मूर्खतावश अच्छी चीज देकर बुरी चीज ले।

वारवाले कहें पारवाले अच्छे, पारवाले कहें वारवाले अच्छे—इस पार के लोग कहते है कि उस पार के लोग आराम से हैं और उस पार के लोग कहते है कि इस पार के लोग आराम से हैं। लोग अपने अलावा दूसरे सभी को अधिक सुखी समझते है।

वारी गई फेरी गई, जलवे के वक्त टल गई—आवश्यकता के समय टल या चले जाने पर कहते हैं।

वारी सोवे उठे सवेरे, वाको नाह दरिद्दर घेरे—जो देर से सोता है और प्रात: उठ जाता है वह ग़रीब नही होता। तुलनीय : पंज० देर नाल सोवें छेती उट्ठे उस दे नाल न दलिद्दर होवे; अं० Early to bed and early to rise makes a man healthy wealthy and wise.

वारे-मर्दां खाली न बाशद—मर्दों का वार (प्रहार) कभी खाली नही जाता। आशय यह है कि सच्चे मर्द जो कहते है वह निष्प्रभावी नहीं होता।

वा सोने को जारिए जासों टूटे कान—उस सोने को जला देना चाहिए जिससे कान को क्षति पहुँचती है। अर्थात् अच्छी चीज भी यदि कष्टकर हो तो वह किसी काम की नही। तुलनीय : मरा० ज्यानें कान तुटतो असलें सोनें ला घाल चुलीत; पंज० उस सोणे नूँ साड़ दिओ जिदे नाल कान टुटदे हन।

वाह पीर औलिया, पकाई थी खीर और हो गया दलिया—खीर पका रही थी और बन गया दलिया। अच्छा करे और बुरा हो जाए तब कहते हैं। कहा जाता है कि एक पीर-औलिया कही गए। एक स्त्री खीर बना रही थी। पीर ने पूछा क्या बना रही हो ? स्त्री ने इस डर से कि कहीं पीर माँग न बैठें उसे दलिया बताया। इस पर पीर ने शायद असलियत समझकर कहा, ऐसा ही होगा। और सचमुच वह खीर दलिया हो गई। तुलनीय : मरा० धन्य सत महात्मा ! खीर शिजविली तर लाडूच झाला।

वाह पुरखा तेरी चतुराई, माँगा गुड़ ला दी खटाई—मैं तुम्हारी समझदारी पर बलि जाता हूँ कि मैंने तुमसे गुड़ माँगा था और तुम लाए खटाई। जब किसी को करने को कुछ कहा जाए और करे कुछ तब कहते है।

वाह पुरखा मेरे चातुर ज्ञानी, माँगी आग उठा लाया पानी—ऊपर देखिए।

वाह बहू तेरी चतुराई, देखा मूसा कहे बिलाई—बहू, तुम बहुत चालाक हो। देखा चूहा और कहती हो कि मैंने बिल्ली देखी है। देखे कुछ और कहे कुछ या इस प्रकार का कोई बहाना करे तो कहते है।

वाह मियाँ काले, खूब रंग निकाले—काले मियाँ, आज तो आपने बहुत बढ़िया रंग निकाला है। नये कपड़े आदि पहनने पर मजाक में कहा जाता है।

वाह मियाँ नाक वाले—अपने को बहुत बड़ा माननेवाले पर कहते हैं।

वाह मियाँ बाँके तेरे दगले में सौ-सौ टाँके—मियाँ साहब बाँका बनकर घूम रहे है और उनके कुर्ते में अनेक पैबंद लगे हैं। ऊपर से बहुत शान-शौकत बनाए रखनेवालों पर कहते हैं जिनकी वास्तविक स्थिति वैसी नहीं होती। (दगले=कुर्ता)। तुलनीय : पंज० वाह मियां बांके तेरे कुरते विच सौ टाँके।

वाह-वाह गिरगट का बच्चा तानाशाह—निम्न कोटि

या स्तर का व्यक्ति और इतना दिमाग़ या घमंड ! जब कोई छोटी हैसियत का व्यक्ति बहुत बढ़कर बातें करे तो उसके प्रति कहते हैं।

वाहि बोल जिन निबंहे बचन सूर सो आहि—वीर वही है जो केवल वह बात कहे जिसे निभा सके।

विक्रीतगवीरक्षणम्—बेची हुई गाय को रख लेना। स्थापित एवं मान्य व्यवस्था के विपरीत आचरण करने पर ऐसा कहते हैं।

विद्या तो वह माल है खरचत दूना होय—विद्या वह धन है जो ख़र्च करने से दूना होता है। तुलनीय : पंज० विद्या उह माल है जिनूँ खरचो दुगना होवे।

विद्या देने से नहीं घटती—स्पष्ट। तुलनीय : असमी० विद्या बिलाले व्यय् नहय्; पंज० विद्या देण नाल नईं कटदी।

विद्या धन सबसे बड़ा—स्पष्ट।

विद्या पढ़े सो राज करे—पढ़े-लिखे व्यक्ति सुखी जीवन व्यतीत करते है।

विद्या समान धन नहीं—स्पष्ट। तुलनीय : असमी० बिद्यार समान् वित् नाइ; सं० नहि ज्ञानात् परं बलम्; पंज० विद्या जिहा तन नईं; अं० Learning is the greatest wealth.

विधवा संग रखवाले और दुल्हिन जाय अकेली—दुल्हन जो कि युवती होती है और जिसके पास आभूषण आदि भी होते है अकेली जा रही है तथा विधवा जो न युवा है और न ही जिसके पास आभूषण है रक्षकों के साथ जा रही है। (क) जिसको सहायता की आवश्यकता हो उसे न देकर ऐसे व्यक्ति को दी जाए जो उसका पात्र न हो तो व्यंग्य में कहते है। (ख) मूर्खतापूर्ण कार्य करने पर भी व्यंग्य में कहते है। तुलनीय : भीली—लाड़ी हूनी जाये ने गँडी नां वलावो; पज० बौटी जावे कली अते रंडी नू नाल ले जावे।

विधि कर लिखा को मेटनहारा—विधि के लिखे को कोई मिटा नही सकता। अर्थात् जो भाग्य में होता है वही होता है। जब किसी पर कोई बड़ी मुसीबत आ जाती है तब उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : मरा० जें बिधी ने लिहिलें तें कोण पुमणार; पंज० होणी दा लिखया कौण टाल सकदा है; ब्रज० बिधि को लिख्यौ को मेंटन हारौ।

विनाश काले विपरीत बुद्धिः—मुसीबत आने पर मनुष्य की बुद्धि उलटी हो जाती है। तुलनीय : पंज० पैंडे मौके ते अकल वी कम नईं आंदी।

विपत्ति कभी अकेली नहीं आती—जब किसी पर एक साथ कई विपत्तियाँ आ जाती हैं तब कहते हैं। तुलनीय : मल० ग्रहणिष वरून्पोळ नालुभागक्षुम् कूटे; पंज० पैंड़े दिन कदी कल्ले नईं आंदे; अं० Misfortunes never come singly.

विपत्ति में सत क्या ?—विपत्ति में फँसा व्यक्ति उचित-अनुचित का ध्यान नहीं रखता। तुलनीय : सं० आपदि नियमो नास्ति; असमी—अपदत् अयुगुत्; पंज० मुसीबत विच सच की; अं० Necessity knows no law.

विपत्ति में बुद्धि भी साथ नहीं देती—परेशानी में मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है। तुलनीय : असमी—आपद् कालत् बुद्धि भोटा; पंज० मुसीबत बिच अकल वी कम नईं करदी; ब्रज० बिपदा में बुद्धि ऊ साथ नायें दे।

विपद बराबर सुख नहीं, जो थोड़े ही दिन होय—विपत्ति अच्छी चीज़ है, मगर थोड़े दिन के लिए। उससे मनुष्य को ज्ञान होता है और वह दूसरों के कष्ट को समझता है। तुलनीय : मरा० संकटा सारखे सुख नाही कारण तें थोडेच दिवस टिकतें।

विपदा में कोई साथ नहीं—विपत्ति मे कोई किसी का साथ नही देता। आशय यह है कि विपत्ति मे बहुत कम साथी मिलते हैं। तुलनीय : मल० आपत्तुकालत्तु आरुमिल्ल; पंज० मुसीबत विच कोई नाल नईं हुंदा; ब्रज० बिपता में कोई साथ नायें दे; अं० Adversity flatters no man.

विलायत में क्या गधे नहीं होते ?—अर्थात् विलायत में गधे भी होते हैं। अच्छे स्थान मे भी बुरे आदमी होते हैं। तुलनीय : राज० विलायत में किमा गधा को हुवैनी; पंज० विलायत विच वी खोते हुंदे हन; अं० Learned fools are found everywhere.

विलूननासिकस्यादर्शदर्शनम्—जिसकी नाक कटी हुई है, उसको दर्पण दिखाना। नकटे को दर्पण दिखाने से उसका क्रोध उत्तेजित होगा। इसलिए छिन्न-नासिका वाले को दर्पण दिखाना समीचीन नहीं है। आशय यह है कि किसी के दोष को उसके सामने प्रकट करना ठीक नहीं है।

विल्वखल्लाट न्याय—धूप से व्याकुल गंजा व्यक्ति छाया के लिए बेल के पेड़ के नीचे गया। वहाँ उसके सिर पर एक बेल टूटकर गिरा। जहाँ इष्ट-साधन के प्रयत्न में अनिष्ट होता है वहाँ यह उक्ति कही जाती है।

विवाह न हुआ तो क्या बारात भी नहीं की ?—मेरा विवाह नहीं हुआ लेकिन मैं बारात गया हूँ। जब कोई किसी

को किसी कार्य में बिल्कुल अनभिज्ञ समझता है तब वह ऐसा कहता है। तुलनीय : भोज० बिआह न भयल ब्याह त मड़वो में न गयल बाटी; पंज० वयाह नई कीता पर जंज बिच ते गया हां।

विवाह नहीं हुआ तो क्या, बारातें तो की हैं—ऊपर देखिए। तुलनीय : बुंद० व्याय नइयाँ तौ बरातें तौ करी; पंज० वयाह नई होया ते की है जंज बिच ते गये हां; ब्रज० ब्याह नायें भयौ तौ कहा बरातऊ नायें करी।

विश्वासो फलदायकः—(क) यदि किसी चीज़ या व्यक्ति में विश्वास रहे तो अपने लिए वह अवश्य फलदायक या लाभकर होता है। (ख) बिना विश्वास के दवा फ़ायदा नहीं करती।

विष का कीड़ा विष में राज़ी—जो जिस स्थान का रहनेवाला होता है वह उसी स्थान में प्रसन्न रहता है चाहे वह स्थान कितना भी कष्टप्रद क्यों न हो। तुलनीय : भीली लिबड़ानो कीड़ो लिबड़ा माय राजू; पंज० जहर दा कीड़ा जहर बिच राजी; ब्रज० बिस कौ कीरा बिस में राजी।

विषकुम्भं पयोमुखम्—विष का घड़ा जिसकी ऊपरी सतह पर दूध हो। जो लोग मीठी-मीठी बातें करते हैं पर दिल से बुरे होते हैं उनके प्रति कहते हैं।

विषकृमिन्यायः—विष के कीड़ों का न्याय। यह सत्य है कि विष एक घातक वस्तु है, पर उसमें भी कीड़े उत्पन्न हो जाते हैं जो जीवधारी हैं। इन कीड़ों के लिए विष की संहारक शक्ति अमोघ सिद्ध नहीं होती। आशय यह है कि जो चीज़ किसी के लिए हानिकारक होती है वह किसी के लिए लाभदायक भी होती है।

विषवृक्ष न्यायः—विष के पेड़ का न्याय। प्रस्तुत न्याय का तात्पर्य यह है कि यदि किसी का पालन-पोषण अपने द्वारा होता है और वह आगे चलकर दुष्ट बन जाता है तो भी संरक्षक को उस स्वयं-पालित एवं संरक्षित दुष्ट का नाश नहीं करना चाहिए।

विष सोने के बरतन में रखने से अमृत नहीं होता—आशय यह है कि दुष्ट व्यक्ति अपनी दुष्टता नहीं छोड़ते चाहे वे कितने भी सज्जन व्यक्ति के संपर्क में रहें। तुलनीय : मरा० सुवर्णपात्री विष ठेविजे तरी तें का अमृत होइल ? पंज० जहर सोने दे पांडे बिच रखण नाल वी अमरत नई हुंदा।

वीचि तरंग न्याय—एक के उपरांत दूसरी। इस क्रम से बराबर आनेवाली तरंगों या लहरों के समान।

बीजांकुर न्याय—बीज से अंकुर है या अंकुर से बीज है यह ठीक नहीं कहा जा सकता। न बीज के बिना अंकुर हो सकता है न अंकुर के बिना बीज। बीज और अंकुर का प्रवाह अनादि काल से चला आता है। दो संबद्ध वस्तुओं के नित्य प्रवाह के दृष्टांत में वेदांती इस न्याय को कहते हैं।

वीर कभी न मुँह मोड़ें, गांडू कभी न सर फोड़ें—वीर पुरुष रण से कभी मुँह नहीं मोड़ते और कायर अपमान सहकर भी नहीं लड़ते। वीर प्राणों की परवाह कभी नहीं करते और कायर प्राण बचाने के लिए सब कुछ सह लेते हैं। तुलनीय : भीली—रॉंडिया केरॉं रण चड़े, रॉंगड़ा ना केरॉं वे रायता।

वीर भोग्या वसुंधरा—पृथ्वी वीरों के उपभोग के लिए है। तुलनीय : असमी—वीरभोग्या बसुन्धरा; तेलु० राज्यमु वीर भोग्यमु।

वीरान गाँव का लँगड़ा सरदार—उजड़े गाँव में लँगड़ा व्यक्ति ही सरदार होता है। (क) जहाँ स्वस्थ और बली मनुष्य नहीं रहते, वहाँ दुर्बल और अपंगों का ही राज्य होता है। (ख) जहाँ विद्वान नहीं होते वहाँ मूर्ख ही विद्वान समझा जाता है। तुलनीय : गढ़० बांजा गाँव को मूसो पदान; पंज० अजडे पिंड दा लंगा सरदार।

वेश्या का पति पैसा—वेश्या का पति पैसा ही होता है, क्योंकि उसी से उसे प्रेम होता है। प्रस्तुत कहावत एकदम व्यावसायिक मनोवृत्ति के लोगों को लक्ष्य करके कही जाती है। तुलनीय : भोज० बेसवा क भतार पइसा; पंज० रंडी दा खसम पैहा।

वेश्या को एकादशी क्या ?—वेश्या को एकादशी से कोई मतलब नहीं होता। आशय यह है कि बुरे लोग अच्छी चीज़ों से कोई संबंध नहीं रखते। तुलनीय : असमी—बेश्यार कि एकादशी; पंज० रंडी नूं कादसी की।

वेश्या पाले शील, तो कैसे पूरे आश—वेश्या यदि संकोच करे तो उसकी जीविका कैसे चले। आशय यह है कि (क) जिससे जीविका चलती है वह बुरा होने पर भी नहीं छोड़ा जाता। (ख) चरित्रभ्रष्टा के प्रति भी कहते हैं।

वेश्या बरस घटावहीं, जोगी बरस बढ़ाव—वेश्याएँ अपनी उम्र वास्तविक उम्र से कम बतलाती हैं और साधु (योगी, जोगी) लोग अधिक। क्योंकि नई (जवान) वेश्या और पुराने (वृद्ध) साधु या योगी (जोगी) की इज़्ज़त अधिक होती है।

वेश्या रूठी धर्म बचा—वेश्या रूठ गई तो धर्म ही

बचा। तात्पर्य यह है कि दुष्ट से पिंड छूट जाय तो अच्छा ही है। तुलनीय : भोज० मैथ० बेसवा रूसल धरम बचल; पंज० रंडी रूसी तरम बचया।

वेही मियाँ दरबार को, वे ही मियाँ चूल्हा फूँकने को — दे० 'वही मियाँ दरबार को···'।

वैरागी की संतान कभी न आवे काम—वैरागी गृहस्थ साधुओं को कहते है। वैरागी की सतान भी कोई काम-धंधा न करके अपने पिता के समान ही वैरागी बन जाती है। जो व्यक्ति अपने पिता के समान ही निखट्टू हो उसके प्रति व्यंग्य मे कहते है। तुलनीय : राज० वैरागीरो जाम, कदै न आवै काम; पंज० वेरागी दी ओलाद कदी कम नईं आदी।

वो दिन लद गए जब खलील खाँ फ़ाख्ता उड़ाया करते थे —दे० 'वह दिन गए जब···'।

वो बूँद विलायत गई—इस कहावत का प्रयोग ऐसे मौके पर होता है जहाँ कोई उपयुक्त समय पर चूक जाता है या कोई ऐसी गलती कर बैठता है जिसका सुधार कभी न हो सके। कहा जाता है कि एक बार किसी सेठजी के यहाँ कोई जलसा था। इत्र बाँटने समय इत्र की एक बूँद जमीन पर गिर गई, इस पर उन्होने उसे तुरत उठा लिया। एक मेहमान ने इसे देख लिया और हँस पड़ा जिससे सेठजी लज्जित हो गए। अपनी लज्जा दूर करने के लिए दूसरे दिन उन्होंने एक हौज़ मे इत्र भरवा दिया। इस पर वह मेहमान हँसता हुआ बोला —इस हौज़ में इत्र तो भरा है पर कल वाली बूंद नहीं दिखाई पड़ती। क्या वह विलायत चली गई? यह लोकोक्ति तभी से प्रसिद्ध है।

व्यापार से धन बढ़ता है—धन व्यापार से ही मिलता है, नौकरी आदि से नहीं। व्यापार की प्रशंसा करने के लिए कहते है। तुलनीय : राज० व्योपारे वधते लक्ष्मी; सं० व्यापारे वर्धते लक्ष्मीः; पंज० व्यापार नाल पैहा वददा है!

व्यालनकुलन्यायः—साँप और नेवले का दृष्टान्त। इन दोनों की पारस्परिक शत्रुता प्रसिद्ध है। दो प्राणियों या वस्तुओं की स्वाभाविक घृणा के सन्दर्भ में इसका प्रयोग किया जाता है।

वृक्षप्रकम्पनन्याय—वृक्ष को कंपित करने का न्याय। वृक्ष के नीचे खड़े रहनेवालो मे से एक ने वृक्ष पर चढ़े हुए आदमी से कहा कि एक डाल को हिला दो। उसी समय दूसरों ने कहा कि उस डाल को हिला दो। वृक्षारोही ने समूचे पेड़ को प्रकंपित करके सभी को संतुष्ट कर दिया। तात्पर्य यह है कि ऐसे ढग से कार्य करना चाहिए जिससे अधिकांश आदमी संतुष्ट हो सकें।

वृद्ध कुमारिका न्याय या वृद्धकुमारी वाक्य न्यायः—कोई कुमारी तप करती-करती बूढ़ी हो गई। इन्द्र ने उससे कोई एक वर माँगने के लिए कहा। उसने वर माँगा कि 'मेरे बहुत से पुत्र सोने के बर्तनों में खूब घी, दूध और अन्न खायें।' इस प्रकार उसने एक ही वाक्य में पति, पुत्र, गोधन, धान्य सब कुछ माँग लिया। जहाँ एक की प्राप्ति से सब कुछ प्राप्त हो या जहाँ बहुत सारगर्भित बात कही जाए वहाँ यह कहावत कही जाती है।

वृद्धिमिष्टवतो ते मूलमपि नष्टम्—वृद्धि चाहनेवाले तुमने तो अपना मूल अर्थ भी नष्ट कर दिया। जब कोई व्याज के लालच मे मूलधन भी गँवा देता है। तब उसके प्रति कहते हैं।

वृन्दावन सो वन नहीं, नन्द गाय सो गाम वंशीवट सो वट नहीं, कृष्ण नाम सो नाम—ये अद्वितीय है।

वृश्चिकयिया पलायमान आशीविषमुखे निपतितः—बिच्छू के भय से भागनेवाला सर्प के मुह मे पड़ गया। जब कोई एक विपत्ति से बचने का प्रयत्न करे और उससे भी बड़ी विपत्ति में फँस जाए तब उसके प्रति कहते है।

श

शंका डाइन मनसा भूत—शंका ही डाइन है और मन ही भूत है। अर्थात् इन्हें ही अपनी असली बीमारी समझना चाहिए। भूत और डाइन से जो लोग बीमार पड़ते है, असल में उनकी बीमारी का कारण उनकी शंका तथा मन है।

शंख और खीर भरा—एक तो शंख सुंदर और मूल्य-वान वस्तु है, दूसरे उसमें खीर भी भरी हुई है। किसी अच्छी वस्तु का किसी ऐसी वस्तु से मेल हो जाय जिससे उसकी सुंदरता और बढ़ जाय या और अधिक लाभ मिले तो कहते है। तुलनीय : राज० संख फेर, खीर भरयोड़ो; पंज० संख बिच खीर परी दी; सोने बिच सुहागा।

शंख बजा तो पर बाबा जी को रुला कर—नीचे देखिए।

शंख बजा पर पांडे को रुला कर—अर्थात् उद्देश्य की प्राप्ति तो हुई किंतु बड़ी मुश्किल से। तुलनीय : मग० आखिर संखवा बजल पांडे के पदा के पंडियाइन के रोवा के; भोज० सख बाजल बाकी पांड़े के पदा के; पंज० संख बजया पर पंडत नूं रोआ के।

शकल चुड़ैल की मिजाज परियों का—रूप तो चुड़ैल जैसा है लेकिन नखरा परियों जैसा दिखाती है। नीच कुल में पैदा होकर या बदशक्ल होकर भी नाज़-नखरा दिखाने या बनने पर यह कहावत कही जाती है। तुलनीय : अव० शकल चुड़ैल अस, मिजाज परिजन अस; पंज० सकल चुडेल दी ते नखरा परियां दा।

शकल चुड़ैलों की, चाल परियों सी—ऊपर देखिए।

शकल देख गधा बिदकता है—सूरत देखकर गधा भी बिदक जाता है, आदमी की तो बात ही क्या है। कुरूप या डरावनी सूरतवालों के प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० सिकल देख'र गधा भिड़कै; पंज० सकल देख के खोता वी डर जांदा है।

शकल न सूरत गधे की मूरत—इसमें कोई सुंदरता नहीं है। यह गधे जैसा है। कुरूप के प्रति कहते हैं। तुलनीय : अव० शकल न सूरत गदहा कै मूरति; पंज० सकल न सूरत खोते दी मूरत।

शकल न सूरत, बंदर की मूरत—ऊपर देखिए।

शकल भूत की, नाम अलबेले लाल—नाम के अनुसार रूप न होने पर यह परिहासपूर्ण कहावत कही जाती है।

शक्करखोर को शक्कर ही मिलती है—शक्कर खाने वाले को शक्कर मिल ही जाती है। अर्थात् जिसकी जिसके प्रति चाह होती है वह उसे मिल ही जाता है। तुलनीय : मरा० साखरेचा खाणार त्याला देव देणार; पंज० सक्कर खाण वाले नं सक्कर ही मिलदी है।

शक्करखोरे को शक्करखोरा मिलता है—व्यक्ति को अपने स्वभाव के अनुरूप व्यक्ति मिल ही जाता है। जैसे को तैसा मिलने पर कहते हैं। तुलनीय : राज० सक्कर खोरैनै सक्करखोरो मिलै, भीलों धनस्याए सारे राम धानूज मिलवहो।

शक्करखोरे को शक्कर, मूजी को टक्कर—शक्कर खानेवाले को शक्कर और दुष्ट (मूज़ी) को धक्का मिल जाता है। अर्थात् जो जिसके योग्य होता है, उसे वही मिलता है। तुलनीय : हरि० सक्कर खोर नै सक्कर, मूज़ी नै टक्कर; गढ़० शक्कर वाल कू शक्कर मूज़ी कू टक्कर।

शक्कर दिए मरे तो जहर क्यों दें—जो शक्कर देने से मर जाय उसे जहर क्यों दिया जाय। अर्थात् जो काम मृदुलता से हो सकता है वहाँ कुटिलता की आवश्यकता नहीं। तुलनीय : राज० सक्कर दियां मरै जकेनै जहर क्यू देणो; पंज० सक्कर देण नाल मर जावे ते जहर क्यों देइये।

शक्कर वाले को शक्कर, टक्कर वाले को टक्कर—दे० 'शक्करखोर को शक्कर, मूज़ी...।' तुलनीय : छत्तीस० सक्कर वाले ला सक्कर, टक्कर वाले ला टक्कर।

शक्ति और भक्ति का कैसा जोड़ा—भक्ति और शक्ति का मेल नहीं बैठता। शक्ति प्राप्त करने के लिए ईश्वर-भक्ति आवश्यक नहीं है और भक्ति के लिए भी शक्ति आवश्यक नहीं है। शक्ति और भक्ति परस्पर विरोधी हैं। तुलनीय : भीली शक्ति ने भक्ति जोर सी है, पंज० सकती अते भगती विच की मेल।

शठ सन विनय कुटिल सन प्रीती—दुष्टों से विनय और कुटिल या टेढ़ों से प्रेम कभी भी नहीं करना चाहिए।

शतपत्र भेद न्याय—सौ पत्ते एक साथ रखकर छेदने से जान पड़ता है कि सब एक साथ, एक काल में ही छिद गए। पर वास्तव में एक-एक पत्ता भिन्न-भिन्न समय में छिदा। कालान्तर की सूक्ष्मता के कारण इसका ज्ञान नहीं हुआ। इस प्रकार जहाँ बहुत से कार्य भिन्न-भिन्न समयों में होते है वहाँ यह दृष्टांत वाक्य कहा जाता है।

शतरंज नहीं सदरंज है—शतरंज रंजों से भरा होता है। शतरंज में बहुत सोचना पड़ता है, इसी कारण ऐसा कहा जाता है। कुछ लोग इसके बहुत मनहूस खेल होने के कारण भी ऐसा कहते है। तुलनीय : मरा० बुद्धिबळे हे फिरवण्याचा खेळ आहे।

शते पञ्चाशत्—सौ में पचास (है)। तात्पर्य यह है कि महत्तर लघुतर को अपने अन्तराल में समाहित किए रहता है।

शत्रु देख के साँस न आवे नाम धरा शत्रुघ्न—शत्रु को देखते ही साँस बंद हो जाती है और नाम है शत्रुघ्न (शत्रुओं का विनाश करनेवाला)। नाम के अनुसार गुण न होने पर व्यंग्य में कहते है।

शत्रोऽपि गुणाः वाच्या दोषा वाच्या गुरोरपि—(क) गुण चाहे शत्रु का ही क्यों न हो और अवगुण चाहे अपने गुरु का हो क्यों न हो, स्वीकार करना चाहिए। (ख) साहित्य के यथार्थ आलोचक के लिए भी यह कहा जाता है। बिना इसके वह उचित आलोचना नहीं कर सकता। आशय यह है कि जो जैसा हो उसका उसी रूप में वर्णन करना चाहिए।

शब्द बराबर धन नहीं, जो कोइ जानै मोल—यदि कोई शब्दों के मूल्य को समझता है तो उसके समान धन नहीं है। यहाँ शायद 'शब्द' का अर्थ शब्द-ब्रह्म है।

शब्द-भेद को लखा नहीं तो क्या हो पुस्तक चीन्ह लिए—यदि ज्ञान न हुआ तो पुस्तक पढ़ने से क्या लाभ

हुआ ? वह व्यर्थ है।

शब्दाकांक्षा शब्देनैव पूर्यते:— शब्द-संबंधी आकांक्षा शब्दों के ही द्वारा पूर्ण होती है।

शमा की पुश्त और रूह बराबर है- मोमबत्ती की रोशनी का आगा-पीछा दोनों बराबर हैं। उसकी चिराग़ की तरह छाया नही पड़ती। भले आदमियों के लिए कहते ह।

शमा कुछ और है जिधर भी घुमाओ एक सी, चिराग़ कुछ और है घूमे श्रौ बदलता जाय—शमा का आगा-पीछा नहीं होता। जिधर भी घुमाओ रोशनी एक-सी होती है, पर चिराग़ एक ओर अंधेरा और दूसरी ओर उजाला करता है। इसका अर्थ यह है कि शरीफ़ शमा की तरह सर्वदा एक से रहते है पर बुरे चिराग़ की तरह एक ओर प्रकाश देते हैं तो दूसरी ओर अंधेरा।

शमा के सामने चिराग़ की क्या जरूरत— बड़े के रहते उसी काम के लिए छोटे की आवश्यकता नहीं। जैसे सूरज के आगे दीपक की क्या आवश्यकता। (चिराग़ में रोशनी कम होती है)।

शरकत की हांडी बाजार में फूटे—साझे (शिरकत) की हंडी बाजार में ही फूट जाती है। आशय यह है कि साझे का कार्य ठीक नहीं होता। तुलनीय : अं० Every body's business is no body's business.

शरपुरुषीन्याय: - मनुष्य और बाण का न्याय। इस संबंध में एक कहानी है : एक बार ज्योंही धनुष से बाण छूटा, त्योंही एक आदमी दीवार के पीछे से उठ खड़ा हुआ। फलत: बाण उस आदमी के सिर पर लगा। प्रस्तुत न्याय का प्रयोग असंभावित एवं आकस्मिक घटना के संबंध में किया जाता है। यह न्याय अजाकृपाणीय तथा खल्वाटविल्वीय न्यायों के समान है।

शरमदार अपनी शरम से डरे, बेशरम कहे मुझसे डरे— जब कोई सज्जन मनुष्य किसी दुष्ट मनुष्य को क्षमा कर दे किंतु वह उसका अनुचित लाभ उठाए तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : गढ़० शरमदार अपनी शरम से डरो बेशरम बोलो मैं मे डरो।

शरमदार को शरम, बेशरम को बेशरमी - इज्ज़तदार अपनी इज्जत को देखकर ही कोई काम करते हैं, किंतु बेशरमों को मानापमान से कोई सरोकार नही होता। जब कोई नीच व्यक्ति दुष्टता से बाज़ न आए तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : गढ़० शरमदार कू शरम बेशरम कू दुर्बलइ; पंज० सरम वाले नूं सरम वसरम नूं वसरमी।

शरमीला माँगे नहीं, बेशरम दे नहीं—जब कोई किसी की वस्तु को माँगकर ले जाता है पर लौटाने का नाम नही लेता और वह (जो देता है) संकोचवश माँगने नही जाता तब ऐसा कहते हैं।

शरह में शरम क्या - सौदे के मोल-भाव में शरम नही करनी चाहिए।

शराब कायस्थों की घुट्टी में पड़ती है—आशय यह है कि कायस्थ जन्म से ही शराबी होते हैं। (घुट्टी — छोटे बच्चों को पिलाने की दवा)।

शराबख्वार हमेशा ख्वार- शराब पीनेवाले अधिक खर्च के कारण हमेशा निरादृत ही रहते हैं। आशय यह है कि शराब पीना बहुत बुरा है। जिसे इसकी आदत पड़ जाती है वह कंगाल हो जाता है।

शराब पी जाय मुँह से श्रौर निकले गांड़ से—शराब पीते समय तो बहुत अच्छी लगती है किंतु बाद में कानों को हाथ लगवा देती है। शराब पीने के बाद ही संसार-भर के कुकर्म किए जाते हैं और प्राय: लड़ाई-झगड़े भी नशे में ही किए जाते हैं। शराबियों की दुर्दशा देखकर उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : भीली - दारू है दगाखोर, दाए आवे तो पीयो नीते राखो डीलते दूर, पंज० सराब पिओ मूँह तो ते निकले टुए चिचों।

शराफ़त का जमाना नहीं— प्राय सज्जन लोगों को अधिक कष्ट सहना पड़ता है, इसीलिए ऐसा कहते है।

शरीफ़ को दुनिया जीने नहीं देती - शरीफ़ व्यक्ति को सब परेशान करते है। संसार मे जीवित रहने के लिए किसी से भी दबना नहीं चाहिए और सबको दबा कर रखना चाहिए। तुलनीय : भीली - दन्या मांये रेवू पड़े ते हापवालो फूंफाटो राखको पड़े; पंज० चगे नूं दुनिया जीण नईं देंदी।

शरीफ़न शराफ़त में न बोलें, शोहदे आकर घूंघट खोलें—शरीफ़न तो शराफ़त और संकोच से कुछ नहीं कहती और बदमाश लोग आकर घूंघट तक खोल जाते है। जब किसी सज्जन मनुष्य की सज्जनता का दुष्ट लोग दुरुपयोग करें तो उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० बाई जी मूँढैरा भारी घणा, सहररा लोग निमाणा घणा।

शरीर और धन किसी के साथ नहीं जाते—शक्ति और वैभव पर गर्व करनेवाले के शिक्षार्थ कहते हैं। धन-बल होने पर व्यक्ति को नेक काम करना चाहिए। प्र० काया माया संग न आयी—जायसी।

शरीर गलाया, कुछ न पाया— परिश्रम करके शरीर गला दिया किंतु फिर भी कुछ न मिला। जब कठिन परिश्रम

करने पर भी कुछ लाभ न मिले तो कहते हैं। तुलनीय : भीली—वगर तोली माटी गेलवजे; पंज० सरीर गालया कुछ नईं मिलया।

शर्करोन्मज्जनीय न्याय—पत्थर के डले और स्नान का न्याय। एक आदमी जल में स्नान कर रहा था। वह ज्योंही स्नान करके जल से बाहर निकला, त्योंही एक डला उसके सिर पर आकर पड गया। इस न्याय का प्रयोग आकस्मिक घटना के संदर्भ में किया जाता है।

शर्बत के प्याले पर निकाह पढ़ाते हैं—निकाह (विवाह) तो कराते है पर उसमें कुछ खर्च नहीं करते। मुसलमानों में जो गरीब लोग अपनी लड़की की शादी करते हैं वे बरातियों को केवल शर्बत का प्याला पिलाकर ही रह जाते हैं, भोज आदि उनके बस का नही होता।

शर्म की बहू नित भूखी मरे—(क) नई बहू के लिए कहा जाता है, क्योंकि वह ज़्यादा शर्म करती है और इस कारण उसे कष्ट होता है। (ख) खाने-पीने में शर्म न करनी चाहिए। तुलनीय : अव० शरम के बहू रोजै भूखन मरै; राज० सरमरी बहू भूखी मरै; मरा० खाण्याला लाजते ती अपाशी राहते; पंज० सरमीली बौटी रोज भुखी मरे।

शलीते में मेख लश्कर में शेख—जेब में कांटे न रखे नहीं तो हाथ में अनजाने मे गड़ सकता है। फ़ौज में शेखों को न भर्ती करे, क्योंकि वे लड़ने में अच्छे नही होते। (शलीता =जेब; मेख=कील)।

शवोद्वर्तनन्याय—मृत शरीर को सुगन्धित करने का न्याय। व्यर्थ का काम करनेवाले के प्रति कहते हैं।

शशक, सियार, लोमड़ी, तेली, विधवा नारि जो मिले अकेली; मग में मिले बिप्र जो काना, जियत लौट के घर नहीं आना—कहीं जाते समय यदि रास्ते में खरगोश (शशक), सियार, लोमड़ी, तेली, विधवा स्त्री और काना ब्राह्मण, ये सभी मिल जायँ तो समझना चाहिए कि जीवन खतरे में है, और कोई बहुत बड़ी आपत्ति आनेवाली है। आशय यह है कि इनका मिलना बहुत अशुभ माना जाता है।

शशि तारा निशि हैं तऊ रबि बिन रहत मलीन—यद्यपि रात को चंद्रमा भी निकलता है और तारे भी जगमगाते हैं किन्तु सूर्य के बिना इन सबकी शोभा धुँधली रहती है। (क) बिना बड़े की उपस्थिति के छोटों से सभा या मंडली की शोभा साधारण ही रहती है। (ख) अज्ञान दूर करने के लिए बड़े विद्वान् की आवश्यकता होती है।

शहद उतारना और गाँव जलाना—मधुमक्खियों के छत्ते में से शहद निकालना और गाँव को आग लगाना एक समान है, क्योंकि दोनों में ही बहुत अधिक जीव-हत्या होती है। पाप और हिंसा न करने के लिए ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० फर काटणो, अर शहर फूकणो।

शहद, सुहागा, घी मरी धात का जी—शहद, सुहागा और घी मरी हुई धातु को जीवित कर देते हैं। इन तीनों से धातु पुष्ट होती है। (इस लोकोक्ति का संबंध स्वास्थ्य-विज्ञान से है। यदि ठीक से देहात की सारी कहावतों को इकट्ठा किया जाय तो रोज के प्रयोग के लिए बहुत से आसान, कमखर्च और सफल नुस्खे मिल सकते हैं)।

शहर का उजड़ा बनिया, गाँव में बस कर सेठ—शहर से जो बनिया दीवाला निकाल कर आता है, वह यदि गाँव में बस जाय तो उसे इतना लाभ होता है कि लोग उसे सेठ कहने लगते हैं। अर्थात् जिस बनिए को नगर में भारी प्रतियोगिता का सामना करना पड़ता था, जिससे वह अपने व्यापार में सफल नही हो पाया वही किसी छोटे गाँव में आकर अपनी धाक जमा लेता है। बड़ों मे न निभने पर लोग छोटों पर रोब गाँठने लगें तब भी कहते हैं। तुलनीय : माल० शेर में टुटो वाण्यो गामड़ा मे हदरे।

शहर का सलाम, देहात का दाल-भात—शहर में लोग केवल अभिवादन आदि (सलाम) से खातिरदारी करते हैं और देहात मे भोजन से। अर्थात् शहर का स्वागत केवल बात का है, पर देहात का स्वागत असली स्वागत है। (यह कभी था अब तो देहात मे भी प्रायः यही दशा है)। तुलनीय : अव० शहर कै राम, दिहात कै दाल-भात बराबर; गढ़० शहर की सलाम, गौं की दाल-भात।

शहर की दवा, जंगल की हवा—दोनों एक समान हैं। नगर मे स्वास्थ्य को ठीक रखने के लिए औषधि लेनी पड़ती है, किंतु बन की स्वच्छ वायु ही स्वास्थ्य को ठीक कर देती है। बनों की जलवायु की प्रशंसा करने के लिए कहते हैं। तुलनीय : भीली—सेर नी दवा ने जंगल नी हवा; पंज० सहर दी दवा अते जंगल दी हवा।

शहरी ठगे गँवारन को—शहर के लोग पढ़े-लिखे होने के कारण अनपढ़ गाँववालों को ठग लेते है। अपनी योग्यता का अनुचित लाभ उठानेवाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : भीली—भण्यो अणभण्या ने ठगे; पंज० सहरी ठगण गवारां नूं।

शांते कर्मणि वेतालोदयः—कर्म (प्रेतादि बाधा को दूर करने के हेतु सम्पन्न किए जानेवाले कृत्य) के समाप्त होते ही भूत-प्रेत का उदय हो जाता है। सतत प्रयत्न के बावजूद असफल होने पर इस न्याय का प्रयोग किया जाता है।

शाखामृग की यह मनुसाई, शाखा ते शाखा पर जाई — थोड़ी दूर तक पहुँच रखनेवाले आदमियों को कहते हैं। जब वे यहाँ से वहाँ, वहाँ से यहाँ किसी काम के लिए उसी अपनी पहुँच के घेरे में दौड़ते रहते हैं।

शागिर्द क़हर उस्ताद ग़ज़ब— जब मालिक और नौकर या गुरु और चेला दोनों ही बहुत अत्याचारी या बात-बात में कुपित होते हो तो कहते हैं।

शागिर्द रफ़्ता-रफ़्ता बा उस्ताद मिरा शुद —धीरे-धीरे चेला भी गुरु हो जाता है। आशय यह है कि अभ्यास से पूर्णता आती है।

शाद बायद ज़ीस्तन नाशाद बायद ज़ीस्तन – जब कोई व्यक्ति अपने जीवन से ऊब प्रकट करता है तब उसे कहते हैं।

शादी और लड़ाई में बहुतों ने धूल उड़ाई— विवाह और झगड़े में इतना खर्च होता है कि बहुत से लोगों को अपना घर-बार तक छोड़ना पड़ता है या उनको अपनी जमीन-जायदाद बेचनी पड़ती है। विवाह और मुक़द्दमेबाजी की बुराई करने के लिए ऐसा कहते है। तुलनीय : गढ़० झुट्टा झगड़ा मच्चा ब्यौ, कनुकनू की खूदीन भौ।

शादी ख़ानाआबादी— ब्याह से ही घर (खाना) आबाद होता है।

शादी ग़मी सब के साथ हैं — विवाह और मृत्यु सबके यहाँ होती है। अर्थात् दुःख और सुख सभी को सहना पड़ता है।

शादी नहीं की तो बारात तो गए हैं —दे० 'ब्याह नहीं हुआ तो क्या…'।

शादी नहीं हुई तो क्या, बारातें तो की हैं —दे० 'ब्याह नहीं हुआ तो क्या…'। तुलनीय : गुज० परण्या नहि पण जाने तो गया।

शादी है कुछ गुड़ियों का ब्याह थोड़े ही है – ब्याह या शादी में कम खर्च का अनुमान लगाने पर या कम खर्च करने पर कहते है। तुलनीय : अव० शादी है गुड़ियन कै बिआह थोरै है; पंज० सादी कीना है गुडियां दा व्याह थोड़ा कीना है।

शान बड़ी घर कोलिया माँ - दे० 'शौक़ बड़ा घर…'।

शान बड़ी घर झोंपड़ी में – दे० 'शौक़ बड़ा घर…'।

शाबाश मियाँ तुझको, तूने मोह लिया मुझको – (क) तूने मुझे मात कर दिया। (ख) तूने मुझे आकर्षित कर लिया। इन दोनों ही स्थितियों मे कहते है।

शाम का भूला सुबह घर आए तो उसे भूला नहीं कहते —यदि कोई व्यक्ति अपना वचन नियत समय के कुछ देर बाद भी पूरा कर दे तो उसे अपनी बात से फिरनेवाला नहीं कहा जाता।

शाम के मुर्दे को कब तक रोवे — मुर्दा तो शाम से पड़ा है और सुबह उसे दफ़नाया जाएगा, भला रात भर उसे कौन रोता रहेगा ? उम्र भर के झगड़े की शिकायत कब तक की जाए या उस पर कब तक विलाप किया जाए ? तुलनीय : हरि० रात के मरे ओड नै कर ताही रोवैं।

शामते-आमाले मा सूरते-नादिर गिरफ़्त—हमारे पापों के दंड ने नादिर का रूप धारण कर लिया। ऐसे अवसर पर कहते हैं जब किसी जाति के कर्म इतने बुरे हों कि उन पर कोई अत्याचारी शासक शासन करने लगे।

शाह का माल भुई पड़े दूना –(क) धनियों के धन में दान देने से और वृद्धि होती है। (ख) साहूकार या बनिए का माल यदि जमीन पर गिर जाय तो उसे दूना लाभ होता है क्योंकि वह सामान के साथ-साथ मिट्टी-कूड़ा आदि भी उसी में उठाकर बेच देता है। आशय यह है कि बनिए को हर तरह से लाभ होता है। तुलनीय : अव० शाह कै माल भुई पड़े दूना।

शाह की मुहर आने-आने पर, ख़ुदा की मुहर दाने-दाने पर—ईश्वर की सत्ता के प्रमाण सभी चीज़ों से मिलते हैं। प्रेमचंद ने 'कुत्ते की कहानी' पुस्तक मे इस कहावत का अर्थ इससे भिन्न निकाला है। उनके अनुसार जो दाना (या जो भी वस्तु) ईश्वर जिसे देना चाहता है उसी को मिलता है किसी अन्य व्यक्ति को नहीं।

शाह के सवाए कमबख़्त के दूने – जो कम लाभ खाता है वही साहूकार है, जो अधिक खाता है वह कमबख़्त है क्योंकि उसका रोज़गार नहीं चल सकता।

शाहजहाँ बूढ़े बग़ल में दड़ी, खाते-पीते विपत्ति पड़ी— बुढ़ापे में कष्ट होता है तो कहा जाता है। शाहजहाँ को औरंगजेब के कारण बुढ़ापे में बहुत कष्ट झेलना पड़ा था।

शाहिद बार बार, मुकद्दमे वाले पार-पार—दो आदमियों के मुक़द्दमे मे बार-बार व्यर्थ की परेशानी गवाहों को होती है।

शिकार के वक़्त कुतिया हगासी—काम के वक़्त जब कोई बहाना करे या जी चुराए तो उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : अव० शिकार के बेरिया कुतिया हगासी; हरि० सिकार कै बखत कुतिया हगाई; कौर० सिकार के बखत कुतिया हगासी; राज० सिकाररी बखत कुतिया हगायी; छत्तीस० सिकार के बेरा कुतिया गायब; मरा०

शिकारीच्या वेळेच कुत्र्याला परसाकडे ।

शिकार के समय कुतिया हगासी— ऊपर देखिए।

शिकार को गए और खुद शिकार हो गए किसी को हराने या मात देने की गरज से कोई जाय किंतु उलटे खुद मात खा जाय तो कहा जाता है।

शिकारी शिकार खेलें चूतिया साथ फिरें—शिकारी तो शिकार करते हैं किंतु मूर्ख उनके साथ वैसे ही घूमते हैं। कामकाजी लोगों के साथ यदि व्यर्थ में कोई घूमता फिरे तो कहते हैं। तुलनीय : गढ़० शिकारी शिकार खेलो चूतिया गैल फिरो।

शिरोवेष्टनेन नासिका स्पर्शन्यायः— सिर से पीछे हाथ को घुमा कर नाक छूना। प्रस्तुत न्याय का प्रयोग किसी काम को सरल ढंग से न करके टेढ़े ढंग से करने पर किया जाता है।

शिव-शिव रटे तो संकट कटे—'शिव-शिव' की रट लगाने से कष्ट दूर हो जाते हैं। भगवान् का या शंकर का नाम लेने से संकट दूर हो जाते हैं।

शिवसम्पति रीति यही जग की बिन स्वारथ प्रीति करै कोउ नाहीं— शिवसम्पति कवि कहते हैं कि संसार की यही रीति है कि कोई बिना स्वार्थ के प्रीति नहीं करता है।

शिविकोद्यच्छन्नरवत् पालकी को ढोनेवाले लोगों की तरह। लोग एक साथ प्रयत्न करके पालकी को आगे ले जाने में समर्थ होते हैं किन्तु अकेला व्यक्ति पालकी को नहीं ले जा सकता। आशय यह है कि एकता में बहुत बल है। एकता से कठिन कार्य भी सम्भव हो जाते हैं।

शीत के लिए कपड़ा, भूख के लिए टुकड़ा ठंड से बचने के लिए कपड़ा और भूख मिटाने के लिए भोजन अति आवश्यक है। तुलनीय : हरि० सीत निवारण कपड़ा, खुदध्या निवारण टुकड़ा; पंजा० ठंड लई कपड़ा अते भुख लई टुकड़ा।

शीन के शटक्के— जो 'स' की जगह हमेशा 'श' कहते हैं उन पर व्यंग्य में इस लोकोक्ति को कहते हैं।

शीन के शड़प्पे— ऊपर देखिए।

शीरनी किसी की फ़तवा किसी के नाम—शीरनी (दूध-चावल से बनी, खीर) किसी दूसरे की है और फ़तवा (धार्मिक उपदेश) किसी दूसरे को दिया जा रहा है। जब माल खर्च हो किसी और का और उसका लाभ किसी और को मिले तब कहते हैं।

शीर्षे सर्पो देशान्तरे वैद्यः— साँप सिर पर और वैद्यजी विदेश में। तात्पर्य यह है कि कभी-कभी आकस्मिक रूप से कार्य आ जाता है, पर साधन नहीं होते। फलतः साधनाभाव में कार्य सफल नहीं हो पाता।

शुकर भोज समधियाने को नहीं तो फिरती दो-दो दाने को— समधियाने का शुक्र मनाइए नहीं तो दाने-दाने के लिए मोहताज होना पड़ता। दूसरों के बल पर अकड़ दिखानेवाले के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : कौर० सुकर भेज समधियाने कू, नहिं फिरती दो-दो दाने कू।

शुक्रवार की बादली, रहै शनीचर छाय, ऐसा कहते भड्डरी बिनु, बरसे न जाय -नीचे देखिए।

शुक्रवार की बादली, रहै शनीचर छाय; घाघ कहें सुन भड्डरी, बिनु बरसे ना जाय शुक्रवार को उठी हुई बदली यदि शनिवार तक बनी रहे तो पानी जरूर बरसता है ऐसा घाघ का विचार है।

शुभ कार्य जितना शीघ्र हो है नित्य उतना ही भला—शुभ कार्य को यथाशीघ्र कर डालना चाहिए। तुलनीय : पंजा० चंगे कम नूँ जिन्ना छेती करो उनना ही चंगा है।

शुभस्य शीघ्रम्- शुभ कार्यों में देर नहीं करनी चाहिए।

शूच्यग्रम् नैव दास्यामि बिना युद्धेन केशवः- किसी के बिना लड़ाई के कुछ भी न देने पर कहा जाता है। (दुर्योधन ने कृष्ण से कहा था कि हे केशव ! बिना युद्ध के सुई की नोक के बराबर भूमि भी मैं पांडव को न दूँगा)।

शेख क्या जाने साबुन का भाव शेख को साबुन के भाव का ज्ञान नहीं होता। (क) मूर्ख को गुणों की पहचान नहीं होती। (ख) किसी कार्य को जो करता है उसे ही उसके संबंध में जानकारी होती है अन्य को नहीं। तुलनीय : पंजा० जट की जाणे लौंगा दा भाव, फा० ने दानद बूज़ना लज़्ज़ाते-अद्रक, अर० ला तदरा हुआ अद्‌दररअ फ़ी अफ़वाहिल केलाब: अं० A blind man can not judge colours.

शेख चंडाल, न छोड़े मक्खी न छोड़ बाल गरीब शेख मक्खी और बालों को भी निगल जाता है। पेटू मनुष्य को व्यंग्य में कहते हैं।

शेखचिल्ली का विचार - ऐसा विचार जो अनिश्चित और अयथार्थ हो।

शेखचिल्ली वाली गप्प है—जो व्यक्ति कोरी गप्प झाड़ जाय या काम की बड़ी-बड़ी बातें ही करे, काम कुछ भी न करके दिखाए उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : भोजी—चेलचकी वाली बात है, थावू करवू तो कई ने।

शेख ने कौवे को भी दग़ा दी है कौवा जानवरों में सबसे ज्यादा चतुर माना जाता है पर शेख उससे भी अधिक

चतुर होते हैं। इस संबंध में एक कहानी है : एक बार एक शेख एक कौवे को पकड़ने के लिए अपने मुँह में एक रोटी लेकर ज़मीन पर मुर्दे की भाँति पड़ रहा। कौवे ने रोटी पर ज्योंही अपनी चोंच लगाई शेख ने मुँह में उसकी चोंच पकड़ ली। कौवे ने एक चाल चली। उसने बड़ी कठिनाई से मुँह हिलाते हुए पूछा कि तुम कौन जात हो ? शेख समझ गया कि कौवा चाहता है कि मैं ज़ात बताने के लिए मुँह खोलूँ और वह उड़ जाय। शेख ने मुँह बंद किए हुए कहा, 'शेख हूँ शेख'।

शेखी और तीन काने— शेखीबाज़ों पर कहते हैं।

शेखी का मुँह काला— शेखीखोर की बेइज़्ज़ती होती है। यह बुरी चीज़ है।

शेखीखोर से कहा 'तेरा घर जलता है' उसने जवाब दिया 'बला से मेरी शेखी तो मेरे पास है'— शेखीखोरों की बेवक़ूफ़ी और शेखी के बारे में यह व्यंग्य में कहा जाता है।

शेखी सेठ की धोती भाड़े की— शेखी सेठ की तरह बघारते है पर धोती किराए पर लेकर पहने हुए है। झूठी शेखी पर कहते हैं।

शेखों की शेखी, पठानों की टर— यह शेख और पठानों के स्वभाव पर कहा गया है। शेखों में शेखी बहुत होती है और पठान टर्रे या खरे बहुत होते हैं। कहीं-कहीं इस लोकोक्ति के साथ एक पंक्ति 'यहाँ न धोवेंगे धोवेंगे घर' भी जोड़ दी जाती है। इसमें एक अंतर्कथा है : जिसमें कोई पठान साहब पाखाना होकर आबदस्त लेने किसी तालाब पर गए। वहाँ किसी मेढक ने 'टर' कर दिया। इस बात पर आप क्रोधित होकर यह कहते हुए लौटकर आए कि 'यहाँ न धोवेंगे धोवेंगे घर'।

शेर अपना मुँह नहीं धोता— गंदे रहनेवाले अपने गंदे-पन की तारीफ़ करते हैं कि शेर मुँह नहीं धोता फिर भी वह शेर है। उसका आशय यह रहता है कि वीर आदमी इन सब चीज़ों की परवाह नहीं करते।

शेर और शस्त्र बाँधे— (क) शेर तो स्वयं ही बहुत बलवान है। उसे भला कोई हथियार लेने की क्या आवश्यकता ? अर्थात् शक्तिशाली को किसी शस्त्र की आवश्यकता नहीं। (ख) एक तो शेर स्वयं बली, ऊपर से यदि हथियार भी ले ले तो क्या पूछना ? जब कोई बलवान हो और साथ में हथियार भी लेकर किसी को मारने या लड़ाई में जाय तो उसकी दोहरी मज़बूती के लिए कहा जाता है।

शेर का एक ही भला— योग्य आदमी का एक ही पुत्र अच्छा होता है। यदि बहुत हुए तो एक-न-एक अवश्य नालायक़ निकलेगा और इस प्रकार उस योग्य आदमी की भी बदनामी होगी।

शेर का खाजा बकरी— शेर का आहार बकरी है। बड़े छोटों को हड़प कर ही जाते हैं। तुलनीय : अव० शेर कै खाझा बोकरी।

शेर का जूठा गीदड़ खाय— शेर की जूठन को खाकर सियार (गीदड़) भी अपना काम चला लेता है। आशय यह है कि बड़ों के पीछे छोटों का भी गुज़र हो जाता है। तुलनीय : अव० शेर कै जूठन सियार खायँ; पंज० सेर दा जूठा गिदड़ खावे।

शेर का बच्चा शेर ही होता है—वीर पुरुष के वीर ही पुत्र पैदा होते हैं। तुलनीय : भोज० शेर क बच्चा शेरे होला; अव० शेर का बच्चा शेरै होत है; पंज० सेर दा बच्चा सेर ही हुंदा है।

शेर के बुरक़े में छीछड़े खाते हैं— शेर की खाल में रखकर छीछड़ा खाते हैं। (क) जो लोग अपना जीवन अपमानित होकर व्यतीत करते हैं उन पर यह कहावत कही जाती है। (ख) बड़े का झूठा रूप धारण कर छोटे काम करनेवालों के प्रति भी कहते हैं। (छीछड़ा—मांस का बेकार टुकड़ा जो कुत्तों और बिल्लियों के खाने के लिए फेंक देते है।

शेर के मुँह में हाथ नहीं डालना चाहिए— (क) अपने से अधिक शक्तिशाली से शत्रुता नहीं करनी चाहिए क्योंकि उसमें अपनी ही हानि होती है। (ख) जान-बूझकर मुसीबत मोल नहीं लेनी चाहिए। तुलनीय : भीली—नार न मूंडा माँये हात नी दड़वो; पंज० सेर दे मुँह बिच हथ्थ नईं पाणा चाइदा।

शेर क्या छोटा और क्या बड़ा— (क) सिंह तो सिंह ही होता है चाहे वह छोटा हो या बड़ा। (ख) वीरों की उम्र नहीं देखी जाती। तुलनीय : राज० नाररो कांई छोटो; पंज० सेर निक्का की ते बडा की।

शेर पूत एकहि भलो, सौ सियार के नाहि— शेर का एक बच्चा अच्छा होता है लेकिन सियार के सौ नहीं। अर्थात् सैकड़ों कायर पुत्रों की तुलना में एक ही वीर पुत्र बहुत अच्छा है।

शेर पूत एकहि भलो, सौ सियार के नाहि—ऊपर देखिए।

शेर बकरी एक घाट पानी पीते हैं— शेर जैसा प्रबल और हिंसक पशु भी बकरी जैसे निर्बल को राज्य और न्याय

की अच्छाई के कारण नहीं सताता। न्यायी राजा के सुंदर शासन के संबंध मे कहा जाता है। तुलनीय : अव० शेर बोकरी एकै घाट पानी पियत हैं; मेवा० नार अर छाली एक घाट पाणी पीवे; पंज० सेर अते बकरी इको थां पाणी पींदे हन।

शेर मारे तो साँड़ बकरी क्यों मारे ?—शेर मारता है तो साँड़ को बकरी को नहीं। आशय यह है कि बड़े लोग छोटा काम नही करते। तुलनीय : भीली—चालो नार नूं हूँ भाखू, नार तो हाँड़ ना हाँड़ मारे; पंज० सेर मारे तां संडे नूँ बकरी नूँ कनूँ मारे।

शेरशाह की दाढ़ी बड़ी, या सलीम शाह की—साधारण या व्यर्थ की बातों में परस्पर लड़नेवालों के प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

शेरों का मुँह किसने धोया—दे० 'शेर अपना मुँह…'। तुलनीय : हरि० सेर का मुँह किसने धोया सै।

शेरों के शेर ही होते हैं—योग्य व्यक्ति की संतान योग्य होती है। या बहादुर के बच्चे बहादुर ही होते है। तुलनीय : अव० शेरन कै शेरै होत है।

शेरों के सियार नहीं होते—वीर का लड़का कायर नही होता। या लायक का लडका नालायक नहीं होता।

शेरों के ही शेर होते हैं—कायरों के बच्चे वीर नही होते। वीर जब भी जन्म लेंगे तो वीर के घर।

शेरों को शेर बहुत मिलते हैं—आशय यह है कि दुनिया मे एक मे बढ़कर एक शक्तिशाली है। तुलनीय : हरि० सेराँ नै सेर भतेरे; पंज० सेरां नूँ सेर बडे मिलदे हन।

शैतान के कान काटे—शैतान का कान काटता है। कठिन से कठिन कार्य करनेवाले पर यह मसल कही जाती है। तुलनीय : अव० शैतानो कै कान काटै; मरा० सैतानाचे कान कापले; पंज० सैतान दे कन कटे।

शैतान के कान बहरे—यह एक प्रकार की प्रार्थना है कि ईश्वर करे चुगलखोर के कान बहरे हो जाएँ ताकि यह बात न फैले।

शैतान के मुँह में वेद पुराण—आशय यह है कि दुष्ट असली बात को आडम्बर मे दबा देता है। तुलनीय : मग० सैतान के मुँह पुरान; पंज० सेताण दे मुँह विच वेद पुराण; अं० Devil quotes scriptures.

शैतान जान न मारे तो हैरान जरूर करे—शैतान यदि प्राण नहीं लेता तो कम-से-कम परेशान तो अवश्य करता है। अर्थात् दुष्ट बिना थोड़ा-बहुत सताये बाज नहीं आता। तुलनीय : अव० शैतान जान न मारै, हैरान करै।

शैतान तूफ़ान से ख़ुदा निगहबान—शैतान से और तूफ़ान से ईश्वर ही रक्षा करे। बहुत अत्याचार करनेवालों पर कहते है।

शैतान ने भी लड़कों से पनाह माँगी—लड़कों से शैतान भी हार गया है। आशय यह है कि दुष्टता मे लड़के शैतान से भी दो क़दम आगे होते हैं। इस संबंध में एक कहानी है : किसी शैतान को लड़को के साथ खेलने में बहुत आनंद आता था। एक दिन वह गदहे की शक्ल में उनके बीच खेलने गया। लड़कों ने उसे देखते ही उसकी पीठ कर सवारी करनी शुरू कर दी। चार लडके तो उसकी पीठ पर चढ़ गए और जब पाँचवें को कही जगह न मिली तो उसकी पूँछ में बाँस बाँधकर चढ गया। यह दुख शैतान से न सहा गया और वह हार मानकर चला गया। तुलनीय : अव० शैतानौ लड़कन से पनाह माँगत है।

शैतान मजे में रहे—शैतान सदा मजे उड़ाता है। दुष्ट व्यक्ति सदा सुखी रहता है। जब सज्जन व्यक्ति दुख और दुर्जन सुख पाएँ तो कहते है। तुलनीय : भीली—सैतान सदा सुखी; पंज० सेताण मजे दिच रहे।

शैतान सिर पर चढ़ा सवार है—आशय यह है कि बुद्धि ठिकाने नही है। बहुत क्रोध में जब कोई उल्टा-सुल्टा काम करने या बकने लगना है तो कहा जाता है। तुलनीय : अव० शैतान सवार है; पंज० सेताण सिर उते बैठा है।

शैतान से भगवान भी डरता है—आशय यह है कि दुष्ट से सभी डरते हैं। तुलनीय : मग० सैतान के डर से भगवानो डरऽहे; भोज० नंगा खुदा से बड़ा या शैताने से भगवानो डेराल।

शैतान से भी ज्यादा मशहूर—(क) किसी बहुत मशहूर आदमी के विषय में कहा जाता है। (ख) कभी-कभी बुरे अर्थ में भी इसका प्रयोग होता है। शैतान मशहूर नही है बल्कि बदनाम है। अतः शैतान से ज्यादा मशहूर का अर्थ बहुत बदनाम भी होना है।

शोख लड़की वर की आँख फोड़े—अत्यधिक लाड़-प्यार से पाले हुए बच्चे कभी-कभी प्रसन्नता में भयंकर नुक़सान कर बैठते है। तुलनीय : भोज० अगराइल लइकी बर क आँख फोरे। (वर—दूल्हा; शोख—चंचल)।

शोभा संसार की लक्ष्मी सुनार की—गहनों से लोग अपने को सजाते है पर अंत में वह सुनार के पास ही जाता है। उससे कोई खास लाभ नहीं होता। जब लोग उसे बेचने ले जाते हैं तो उसे खोटा और पुराना आदि कहकर वह कम मूल्य देता है। इस लोकोक्ति में गहने की अनुपयोगिता को

दर्शाया गया है। तुलनीय : कौर० सोभा संसार की, लछमी सुनार की।

शौक़ का विवाह, सनौरों के उजियाले—विवाह तो बहुत शौक़ से कर रहे हैं, किंतु रोशनी के लिए सनकी लकड़ी (सनौरो) जलाई जा रही है। जब कोई किसी काम को बहुत उत्साह से करे किंतु धन व्यय करने में कंजूसी दिखाए तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते है।

शौक़ दादे-इलाही है- शौक़ भगवान् की देन है। वह जिसे देता है वही शौक़ करता है, सब नहीं।

शौक़ बड़ा घर कोली में—शौक़ तो बहुत है लेकिन घर गली (कोली) में है। जब चाहते हुए भी किसी कारण-वश कोई अपनी इच्छाओं को पूरा नहीं कर पाता तब ऐसा कहता है, या उसके प्रति कहते है। तुलनीय : अव० सौख बड़ा घर कोलियाँ मां।

शौक़ में जौक़ दस्तूरी में लड़का एक के बदले दो मजे मिले। प्रयास केवल एक ही के लिए किया था दूसरा मुफ़्त में मिल गया।

शौक़ीन गुंडा, रेंट का इत्र- दे० 'नया गुंडा'''। तुलनीय : बुं० सौकीन गुडा, रेंट को अतर।

शौक़ीन चढ़वैया पालकी पर अँगीठी—अशोभनीय कार्य पर व्यंग्य में ऐसा कहते है। तुलनीय : भोज०, मैथ० सौकीन चढ़वैया पालकी पर बोरसी; भोज० सौखिन बुढ़िया पालकी पर बोरसी।

शौक़ीन बीबी कंबल की चोली—नीचे देखिए।

शौक़ीन बुढ़िया चटाई का लहँगा (क) बेमेल बात या काम पर कहा जाता है। चटाई का लहँगा बेमेल है। (ख) पहले नंबर के शौक़ीन या नये शौक़ीन शौक़ में जब बेमेल या बेढंगा काम कर डालते है तब भी कहते है। तुलनीय : राज० शौकीन बुढ़िया, चटाई क लहँगा; अव० शौखीन बुढ़िया चटाई का लहँगा; कौर० सौकीन बुढ़िया चटाई का लहँगा; बुं० नये गुडा अंडी को फुलेल; ब्रज० शौकीन डुकरिया चटाई को लेहगा; गढ़० सौकीन बुढ़िया चटै का लहँगा, छत्तीस० बाप बेटा सौकीन, कमरा के उरमाल; मरा० नाचरी म्हातारी, चटईचा लहंगा।

श्मशान पहुँचे मुरदे भी कभी लौटे हैं?—श्मशान पहुँचकर मुर्दे कभी नहीं लौटते। मर जाने के बाद मनुष्य कभी संसार में नहीं आता। जो बात बीत चुकी हो उसे लौटाया नहीं जा सकता। तुलनीय : राज० मसाणां गयोड़ा मुड़दा आगे ही पाछा आया हा?

श्मशान में चखने-भर को बहुत- श्मशान में यदि चखने-भर को ही कुछ मिल जाय तो बहुत है। ऐसे स्थान में जहाँ कुछ भी मिलने की आशा न हो वहाँ यदि थोड़ा-सा भी मिल जाय तो उसे बहुत समझना चाहिए। तुलनीय : राज० मसाणाँ मे मीठैरो सवाद जोयी जै; मसाणाँ है लाडवाँ में इळायचीरो सवाद जोयीजै।

श्मशान में पहुँची, लकड़ी भी कभी लौटी है श्मशान में जो लकड़ियाँ चिता के लिए जाती है उनमें से कभी वापस नहीं लौटती। अर्थात नीच व्यक्ति किसी वस्तु को पाकर उसे वापस नहीं करते। तुलनीय : राज० मसाणाँ गयोड़ा लाकड़ा कदे ही पाछा आया हा? पंज० समसान विच गई लकड़ी वी कदी मुड़दी है।

श्यामरक्तन्याय जिस प्रकार कच्चा काला घड़ा पकने पर अपना श्याम गुण छोड़कर रक्त गुण धारण करता है उसी प्रकार पूर्व गुण का नाश और अपर गुण का धारण सूचित करने पर यह उक्ति कही जाती है।

श्यालक शुनक न्याय -किसी ने एक कुत्ता पाला था और उसका नाम अपने साले का नाम रखा था। जब वह कुत्ते का नाम लेकर गालियाँ देता तब उसकी स्त्री अपने भाई का अपमान समझकर बहुत चिढ़ती। जिस उद्देश्य से कोई बात नहीं की जाती वह यदि उससे हो जाती है तो यह कहावत कही जाती है।

श्येनकपोतीयन्याय बाज और कबूतर का न्याय। एक कबूतर कहीं पर दाने चुग रहा था। अचानक एक बाज़ उसके ऊपर झपटा और उसे पकड़ ले गया। प्रस्तुत न्याय का प्रयोग आकस्मिक दुर्योग के संदर्भ में किया जाता है।

शृंगग्राहिकान्याय- सींग पकड़कर बैलों को पकड़ने का न्याय। तात्पर्य यह है कि असभ्य लोगों को धीरे-धीरे अधीन किया जा सकता है। जैसे बिगड़े हुए बैल को वश में करने के लिए पहले उसके एक सींग को पकड़ा जाता है, फिर दूसरे को, तत्पश्चात् उसके गले में रस्सी डालकर उसे बाँध दिया जाता है।

शृंगार परी का रूप चुड़ैल का—जब कोई कुरूप स्त्री काफी शृंगार करती है तब उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : कनौ० सिंघार परियन को, रूप चुड़ैल को; पंज० संगार परी दा रूप चड़ैल दा।

श्रीगणेश अच्छा हो तो आधा काम हो गया -यदि किसी कार्य का आरंभ ठीक हो तो समझना चाहिए कि आधा काम हो गया। आशय यह है कि जिस कार्य का आरंभ अच्छा होता है वह सुगमता से पूरा हो जाता है। तुलनीय : मल० नन्नाय तुटङ्ङियाल् पकुतियुम् तीर्न्नु; पंज० सुरुआत

चंगी होवे ता अधा कम हो गया; अं० Well begun is half done.

श्वः कार्यम् धकुर्वीतः— कल का काम आज करना चाहिए। आशय यह है कि जो काम कल करना है, उसे आज ही करना चाहिए क्योंकि मानव को यह ज्ञान नहीं है कि कल क्या होने वाला है। कार्य-संपादन जितना शीघ्र हो अच्छा है।

श्वः सहस्रादद्य का किनी श्रेयसी —कल के हजार से आज की कौड़ी ही भली। दे० 'ना नक़द न तेरह उधार।'

श्वपुच्छोन्नामनन्यायः -कुत्ते की पूंछ को सीधा करने का न्याय। व्यर्थ प्रयत्न के सन्दर्भ में प्रस्तुत न्याय का प्रयोग किया जाता है।

श्वलीटमिव पायसम्—कुत्ते से चाटी हुई खीर का न्याय। अपवित्र वस्तु की अग्राह्यता के संबंध में प्रस्तुत न्याय प्रयोग में आता है।

श्वश्रूनिर्गच्छोक्तिन्यायः— —उस सास का न्याय जिसने कहा- 'चले जाओ'। सास ने अपनी पुत्र-वधू से कहा कि वह भिखारी को भीख न दे। जब बेचारा भिखारी कुछ दूर चला गया, तब उसे फिर बुलाया। जब वह वापस उसके पास आ गया तब उसने (सास ने) उससे कहा 'यहाँ से चले जाओ, भीख नहीं है।' प्रस्तुत न्याय का प्रयोग अनुपयुक्त कार्य विधान के अवसर पर किया जाता है।

श्वा कर्णे ना पुच्छे वा छिन्नेश्वैव भवति नाश्वो-न गर्दभः —कान अथवा पूंछ के छिन्न होने पर भी कुत्ता कुत्ता ही रहता है, वह घोड़ा या गधा नहीं बन जाता। रूप परिवर्तित होने से किसी की जाति नहीं बदलती।

श्वेत श्वेत सब एक-सी सफ़ेद, सफेद सभी एक-सी दिखाई दे रही है। बहुत-सी चीजों के ऊपर से प्राय: एक-सी होने के कारण या किसी अन्य कारण से भी जब अच्छी बुरी की पहचान न की जा सके तो यह मसल कहते हैं।

श्वो मयूरादद्य कपोतो वरः—कल के मोर से आज का कबूतर अच्छा है। दे० 'ना नक़द न तेरह उधार।'

स

संख बाजे सत्तर बला भाजे—हिंदुओं का विश्वास है कि घर में शंखध्वनि होने से अनेक विपत्तियां दूर हो जाती हैं।

संग आमद-ओ-सख़्त आमद—पत्थर की चोट बड़ी कड़ी होती है। विपत्ति पर विपत्ति पड़ने पर कहते हैं।

संगत का असर पड़ता ही है—मनुष्य पर संगति का प्रभाव ही सबसे अधिक पड़ता है। (क) जब कोई व्यक्ति बुरे आदमियों के साथ अधिक मेलजोल बढ़ाए तो उसे समझाने के लिए इस प्रकार कहते हैं। (ख) जो जैसी संगति में पड़ता है वह वैसा ही बनता है। तुलनीय: गढ़० संगत का गुण लगी ही जांदन; पंज० संगत दा असर ते पैदा ही है; ब्रज० संगति कौ तौ असर परै ई है।

संगत की फूट का अल्लाह बेली—संगति की फूट से ईश्वर बचाए तो बचाए नहीं तो कोई चारा नहीं है। आशय यह है कि मित्रों में फूट पड़ने से परस्पर नुकसान का भय बना रहता है क्योंकि वे एक-दूसरे की हरकत से परिचित होते हैं।

संगत फल देखिय ततकाला—संगत का फल तुरत दिखाई पड़ता है। सत्संग के माहात्म्य पर महात्मा तुलसीदास ने कहा है।

संगत से फल होत है संगत से फल जाय—अच्छों की संगति से अच्छा फल प्राप्त होता है और बुरों की संगति से बुरा। आशय यह है कि जो जिस तरह के लोगों के बीच रहता है उसका वैसा ही आचरण होता है। तुलनीय: अव० संगत ते गुन होत है, संगत ते गुन जाय; पंज० संगत नाल गुण मिलदे हन संगत नाल गुण जांदे हन।

सगति सुमति न पावही, परे कुमति के धंध—बुरे के साथ में अधिक दिन रहने से थोड़े दिन के अच्छे साथ का कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता।

संग सोई तो लाज क्या—जब एक बार किसी से सहवास कर लिया तो फिर शर्म काहे की? अपना से शर्म करने पर या पत्नी के पति से शरमाने पर कहते हैं।

संघर्ष से क्या नहीं हो सकता? चंदन से आग उत्पन्न हो जाती है—संसार में परिश्रम से प्रत्येक काम सफल हो सकता है; चंदन जैसी शीतल लकड़ी भी कुछ समय तक घिसने से जलने लगती है। (ख) शांत स्वभाव का व्यक्ति भी बार-बार कष्ट दिए जाने पर क्रुद्ध हो जाता है। तुलनीय: अव० अति संघर्ष करे जो कोई अनल प्रकट चंदन ते होई; भोज० चनना में रगरला से आगि हो जाले।

संतहृदय नवनीत समाना—संत (सज्जन) का हृदय मक्खन की तरह कोमल होता है। आशय यह है कि सज्जन पुरुष किसी के कष्ट को देखकर झट द्रवित हो जाते हैं।

संतों को क्या स्वाद?—साधु-संतों को स्वाद से क्या मतलब? उन्हें तो केवल पेट भरने के लिए दो मुट्ठी अन्न

चाहिए। जो साधु बेस्वाद वस्तु भीख या दान में नहीं लेते और बढ़िया चीज लेना चाहते हैं उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० साधां रै किसा सवाद; पंज० संता नूं सुआद की।

संतोषं परमं सुखम्— संतोष ही में यथार्थ सुख है। तुलनीय : हरि० संतोख मं ए सब कुछ सै।

संदंशपतित न्याय—संड़सी जिस प्रकार अपने बीच में आई हुई वस्तु को पकड़ती है उसी प्रकार जहाँ पूर्व और उत्तर पदार्थ द्वारा मध्यस्थित पदार्थ का ग्रहण होता है वहाँ इस न्याय का प्रयोग होता है।

संदिग्धस्थ वाक्यशेषान्निर्णय—संदिग्ध (अभिव्यक्ति) का अर्थ सन्दर्भ से निश्चित हो जाता है।

संदिग्धे न्यायः प्रवर्तत इति न्यायः– संदिग्ध वस्तु में न्याय की प्रवृत्ति होती है। तात्पर्य यह है कि जो सदिग्ध एवं सुप्रयोजन है वही विचारणीय है।

संदूक को हाथ मत लगाना, वैसे घर तुम्हारा है— घर तो तुम्हारा ही है, पर संदूक को छूना मत। कहने के लिए दिखावटी अधिकार दे दिए जायँ किंतु वस्तुतः कुछ भी न दिया जाय तो कहते हैं। तुलनीय : राज० बहूए बहू, घर थारो है, ढक्योड़ो मती उघाड़गे; पंज० सदूख नूं हथ ना लाणा वैंस कर तुहाडा है।

संदेशन खेती नहि होय—संदेश से खेती नहीं होती, उसे तो स्वयं करना पड़ता है। तुलनीय : अव० सदेशन खेती नाही होन, राज० सदेसां खेती को हुवैनी; पंज० संदेस नाल खेती नई हुंदी।

संध्या के मरे को वहाँ तक रोया जाय—दे० 'शाम के मरे…'।

संध्या देह सवेरे पावे, पूत भतार के आगे आवे– बुराई करने पर बुरा फल अवश्य मिलता है। यदि वह ठीक अपने को नहीं मिलता तो अपने निकट संबंधियों के सामने आता है।

संपत से भेंट नहीं दलिद्दर से टंटा–धन देखा नहीं और दरिद्र में झगड़ा करना शुरू कर दिया। बिना लाभ या निष्प्रयोजन झगड़ा करने पर कहते हैं। तुलनीय : अव० संपत से भेंट नाही, दलिद्दर से चूकै न।

संपत्ति की जोरु विपत्ति का यार—स्त्री संपत्ति की साथी है पर मित्र विपत्ति का साथी है।

संपति जाय पर मति न जाय—धन चाहे समाप्त हो जाय, किंतु बुद्धि समाप्त नहीं होनी चाहिए। धन से ही व्यक्ति समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करता है और सुखों का भोग करता है इसी कारण निर्धन हो जाने से प्रायः लोगों की बुद्धि विचलित हो जाती है। जब किसी व्यक्ति की वस्तु चोरी चली जाय और वह अपने परिवार के या दूसरे विश्वास-पात्र व्यक्तियों पर संदेह करे तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : माल० धन जा वण्डी मत जा; पंज० पैंहा पावें जावे पर अकल न जावे।

संपत्ति से भेंट नहीं, बातों के लठा लठे किसी मूर्ख के निष्प्रयोजन झगड़ा करने पर कहते हैं।

संपत्ति हो तो सब साथी—जब तक मनुष्य के पास धन रहे तब तक सभी उसके मित्र बनने का प्रयत्न करते हैं। तुलनीय : गढ़० संपदा का दगड़्या सबी होंदा विपना का क्वै नि होंदा।

संभाल अपनी घोड़ी, मैंने नौकरी छोड़ी–किसी मालिक ने अपने सेवक को भला-बुरा कहा तो सेवक ने उपर्युक्त वाक्य कहा। तभी से इस वाक्य ने लोकोक्ति का रूप धारण कर लिया। जब कोई स्वाभिमानी व्यक्ति अपने मालिक की खोटी बात को न सहकर तुरंत नौकरी छोड़कर चल देता है तो कहते हैं। तुलनीय : माल० हमार थारी घोड़ी, बंदा ए नौकरी छोड़ी।

सँवर जाय सो काम, पल्ले पड़े सो दाम—जो काम पूरा हो जाय, वही काम है और जो धन अपने पास आ जाय उसी को धन समझना चाहिए। तुलनीय : अव० संभर जाय तौ उ काम, टेंट मा रहै ओही दाम।

संसार में गुणियों की कमी नहीं, कमी है गुण ग्राहकों की—स्पष्ट।

सइयाँ के अरजन, भैया के नावं, पहन ओढ़ मैं सासुर जावं—उस स्त्री पर जो अपने पति की कमाई को भाई की मानकर ससुराल ले जाती है यह कहावत कही जाती है। तुलनीय : भोज० सइयाँ क पइसा भइया क नावं; अव० सइयाँ कै बिढ़ता भइया कै नाउँ, पहिन ओढ़ ससुरे जाउँ।

सइयाँ गए परदेश अब डर काहे का—पति परदेश गए तो अब किसका डर है? दुराचारिणी स्त्री के प्रति कहते हैं जो घर में पति के न रहने पर स्वतंत्रता से यारों का स्वागत करती है। अंकुश में रखनेवाला जब चला जाता है तब स्वच्छदता से आचरण करनेवालों पर कहा जाता है। तुलनीय : भोज० सइयाँ गइलन परदेश अब डर काहे का; अव० सइयाँ गयेन परदेश अब डेर काहे की।

सइयाँ गए लदनी, लदाइन झड़ाझड़, सौ के पचास किए, चले आए घर—मेरे पति व्यापार करने गए और सौ रुपए के पचास करके घर आ गए। व्यापार में हानि उठानेवाले

पर व्यंग्य है ।

सइयाँ परदेश मजा लूटत होइ हैं, चूतर उठाय चूल्हा फूंकत होइ हैं; खिचड़ी खात नोक लागत होइ हैं; बर्तन माजत जीव जात (गाँड फाटत) होइ हैं - परदेश में बिना स्त्री के रहने पर बड़ा कष्ट होता है । उसी पर यह कहावत कही गई है । तुलनीय : अव० प्रीतम परदेश मजा लूटत होइ हैं, चूतर उनाय चूल्हा फूंकत होइ है; खात-पिअत नीक लागत होइ हैं, बासन माँजत गाँड़ फाटत होइ हैं ।

सइयाँ भए कोतवाल अब डर काहे का---प्राय: जब कोई किसी बड़े पद पर पहुँच जाता है और उसके आश्रित या संबंधी मनमानी करने लगते हैं तो उनके लिए कहा जाता है । इसका कारण यह है कि जब कोई अपना बड़े पद पर पहुँचता है तो अपने भले या रक्षा की संभावना बनी रहती है । तुलनीय : भोज० सइयाँ भइल कोतवाल अब डर काहे क; अव० सइयाँ भयें कोतवाल अब डेर काहे का; मरा० घरचेच कोतवाल, मग भय कसले ।

सईस के बेचने से घोड़ा नहीं बिकता—सईस के बेचने से कोई घोड़ा नहीं खरीदता । क्योंकि जब तक उसका स्वामी नहीं बेचता कोई कैसे खरीद सकता है । जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे की वस्तु का मोल-भाव करे तो व्यंग्य से उसके प्रति कहते है । तुलनीय : माल० बलाई रो बेच्यो घोड़ो नी बेचाय ।

सईसों का काल, मुंशियों की बहुतात - आजकल अशिक्षितों को नौकरी मिलती है और शिक्षितों को दर-दर भटकना पड़ता है । बुरे ज़माने पर यह कहावत है । तुलनीय : मरा० मातेदार मिलेना नि लिपिकाँचे तांडे ।

सईसों के बख्शे घोड़े किसे मिल जाते हैं ?—साईसों के बख्शने से किसी को घोड़े नहीं मिलते । आशय यह है कि जब तक वस्तु का स्वामी स्वयं वस्तु न दे दे तब तक वह दी हुई नहीं समझनी चाहिए, दूसरे चाहे कितना भी कहते रहें । तुलनीय : राज० साण्याँरा वगसीज्या किसा घोड़ा अगसीजै ?

सकरे में समधियाना— बहुत बड़ी मुसीबत पड़ने पर समधियाने से मदद ली जाती है । अर्थात् समधियाने से मदद लेना ठीक नहीं है । जब कोई सामान्य स्थिति में भी समधियाने से मदद माँगता है तब कहते हैं । तुलनीय: अव० सकरे माँ समधियान; कनौ० सकरे मैं समधियानो ।

सकल तीर्थ कर आई तुमड़िया, तो भी न गई तिताई—तुमड़ी सभी तीर्थस्थानों में घूम आई फिर भी उसकी कड़वाहट नहीं गई । आशय यह है कि जन्मजात अवगुण या दोष लाख कोशिश करने पर भी दूर नहीं होते । तुलनीय : मरा० कडू भोंपळा सर्व तीर्थयात्रा करुन आला तरी त्याचे कडूपण जात नाही ।

सकल भूमि गोपाल की या में अटक कहाँ, जाके दिल में अटक है सोई अटक रहा— संसार में कहीं भी अटक या बाधा नहीं है । यदि किसी को शुभ काम में कोई बाधा पड़ती है तो अवश्य ही वह उसके दिल की कमज़ोरी है और वह स्वयं चाहे तो उससे पार हो सकता है ।

सकल रमायन हो गई सीता केकर बाप ? - दे० 'रामायण सारी हो गई सीता···' ।

सकल रामायण हो गई सीता किसका बाप—दे० 'रामायण सारी हो···' । तुलनीय : छत्तीस० रात भर रमायन पढ़िस, बिहनिया पूछिस राम सीता कौन ए, त भाई बहिनी ।

सकुची पूछ बसत विष, मस्तक बसे भुजंग, केहरि के नख में बसे तिरिया आठो अंग - सकुची (एक प्रकार की मछली) की पूँछ, सर्प के मस्तक और सिंह के नख में विष रहता है परंतु स्त्री के सभी अंगों में रहता है । स्त्री अन्यतम विषधारिणी है ।

सक्सेना कायथ बुरा, खत्री बुरा सरीन, वेश्या सुत बाम्हन बुरा, मुग़ल बुरा तुरीन - सक्सेना कायस्थ, सरीन खत्री, रंडी का लड़का ब्राह्मण तथा तुरीन (तूरानी) मुग़ल बुरे होते हैं ।

सखा धर्म निबहइ केहि भाँती - मित्र-धर्म का कैसे पालन हो । संकट में पड़ने पर कहा जाता है ।

सखा बचन मम मृषा न होई—मेरी बात झूठ न होगी । जब कोई किसी बात के विषय में भविष्यवाणी आदि करता है तो कहता है ।

सखि विधि गति कहि जाति न जानी - हे सखि ! विधाता की गति न तो कही जा सकती है और न जानी जा सकती है । विधाता की गति विचित्र होती है ।

सखी, करोम पड़े एड़ियां रगड़ते हैं, बखील मूसलों से मोतियों को तोड़ते हैं - दाता और उदार दु:ख पाते है पर सूम और कंजूस मौज उड़ाते है । आज का ज़माना उल्टा है ।

सखी का ख़ज़ाना कभी खाली नहीं होता --दानी का कोष दान देने के कारण और भरता जाता है । तुलनीय : अव० सखी कै खजाना कबहू नाहि खाली रहत; पंज० सखी दा खजाना कदी खाली नहीं हुंदा ।

सखी का बेड़ा पार, सूम को मिट्टी ख्वार--दानी सुख से पार हो जाता है और सूमों को कष्ट उठाना पड़ता है ।

सखी का बोलबाला, सूम का मुँह काला- सखी या

दानी का बोलबाला रहता है और सूम कलंकित होता है। तुलनीय : अव० सखी कै बोलबाल, सुमवा कै मुँह काला; राज० सखी का बोलबाल, सूम का मूं काला।

सखी का सर बुलंद मूज़ी की गोर तंग—दाता का सिर ऊँचा रहता है और सूम की क़ब्र भी तंग हो जाती है। (यह मुसलमानों का विश्वास है कि मूज़ी (कंजूस) मरने के बाद जब क़ब्र में रक्खा जाता है तो उसकी क़ब्र धीरे-धीरे तंग होने लगती है और इस तरह उसे बहुत कष्ट देती है)।

सखी की कमाई में सबका साझा-क्योंकि वह जो कमाता है उसे बाँटकर खाता है। तुलनीय : अव० सखी कै कमाई मा सबका हीसा।

सखी की नाव पहाड़ चढ़े—दाता की नाव पहाड़ पर चढ़ जाती है। अर्थात् दाताओं को हर काम में सफलता मिलती है।

सखी के माल पर पड़े सूम की जान पर पड़े—दाता की धन पर बीतती है, सूम की जान पर बीतती है। दानी अपने ऊपर आई हुई विपत्ति को धन के सहारे टाल देता है किन्तु कंजूस पर पड़ी मुसीबत उसकी जान लेकर ही जाती है।

सखी दास की डलिया ढोवें, अपना काम करत ही रोवें—सखी दूसरे की टोकरी ढोती है लेकिन अपने घर का काम करते समय रोने लगती है। जो अपने घर का कुछ भी काम नहीं करता और दूसरों का करता है उसके लिए कहा जाता है।

सखी दे और शरमाए, बादल बरसे और गरमाए—दानी दान देते समय एहसान नहीं जताता किन्तु जब बादल बरसता है तो गरज के साथ बरसता है। आशय यह कि बड़े लोग क्षुद्र व्यवहार नहीं करते।

सखी न सहेली, भली अकेली-अकेली स्त्री के लिए कहा जाता है। स्त्रियाँ अकेली ही अच्छी तरह रहती है।

सखी सख़ावत से फलता है अदू अदावत से जलता है-दानी दान से फलता है और ईर्ष्यालु डाह से जलता है। बुरे का बुरा, भले भले का भला होता है। (अदू—शत्रु)

सखी सूम का लेखा बराबर—किसी सूम की हानि पर कहते हैं। सखी दान में गंवाता है और सूम हानि में। तुलनीय : अव० सखी सूम के लेखा बराबर।

सखी से भेंट नहीं तो सूम से क्यों बिगाड़े-यदि दानी व्यक्ति नहीं मिलता तो कंजूस से क्यों संबंध बिगाड़े जाएँ। कुछ नहीं से तो कुछ अच्छा ही होता है। तुलनीय : अव० सखी से भेंट नाही सुमवा से चूकै न; अं० Something is better than nothing.

सखी से सूम भला जो तुरत दे जवाब—ऐसे दानी से जो देने में बहुत टाल-मटोल करे साफ़ इनकार करनेवाला सूम अच्छा है। तुलनीय : अव० दाता से सूमै भला जौन तुरतै देय जवाब; मरा० दान देण्याचा वायदा करणाऱ्यापेक्षां कृपण बरा।

सखुए के घर में रेंड का खंभा—अनुचित या बेमेल कार्य पर व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

सगरी रैन बन बन फिरी भोर भए कुएँ से डरी—सारी रात जंगल-जंगल घूमती रही और सुबह होने पर कुएँ को देख कर डरती है। बनावटी सतीत्व पर कहते हैं।

सगों बिन सगाई कैसी, भलों बिन भलाई कैसी?—यदि सगे रिश्तेदार न हों तो वह कोई रिश्ता नहीं है और भलाई बिना भलों के संभव नहीं हैं। तुलनीय : अव० सगा बिन सगाई केस, भला बिन भलाई केस।

सच और झूठ में चार अँगुल का फ़र्क़ है—आँख और कान में सिर्फ़ चार अंगुल का फ़र्क़ है। आँख का देखना सत्य होता है और कान का सुना हुआ झूठ होता है। तुलनीय : अव० सच औ झूठ मा चारै अंगुरी कै फरक है; राज० साच-कूड़ में च्यार आंगलरो फरक; पंज० सच अते कूड़ विच चार उंगला दा फ़र्क़ है।

सच कहना आधी लड़ाई मोल लेना है-सत्य कहने पर लोग बुरा मानते है। दो व्यक्तियों में लड़ाई होने पर तीसरा आदमी यदि सत्य का पक्ष ले और वे उससे लड़ने को तैयार हो जाएँ तो ऐसा कहा जाता है। तुलनीय : अव० सच कहब लड़ाई मोल लेब है; राज० साच बोलणो लड़ाई मोल लेवणी है; माल० साँची केतो पूत भ जावे; हरि० साच्ची कहणा आधी लड़ाई मोल लेणा से; पंज० सच बोलण अद्दी लड़ाई मुल लेणा है।

सच कहने से माँ भी मारती है-सच्ची बात कहने से माँ भी मारती है औरों की तो बात ही अलग है। सच्ची बात को अपने चाहनेवाले भी सहन नहीं करते। या सच्ची बात सबको बुरी लगती है। तुलनीय : राज० साची कैव जद मा ही माथै में देवै; पंज० सच कैण ते माँ वी मारदी है

सच कहे सो मारा जाय—सही बात कहनेवाला मार खाता है। अर्थात् सही बात कहनेवाला सदा हानि उठाता है। तुलनीय : अव० सच कहै तो मारा जाय; राज० साच बोलै सत्यानास जाय; पंज० सच आखे ते मारा जावे।

सच को माने नहीं, झूठे जग पतियाय-सत्य बात को कोई नहीं मानता, झूठी बात पर लोग तुरन्त विश्वास कर लेते हैं। सच्चे व्यक्ति सदा दुःख पाते हैं और झूठे सदा सुखी

रहते हैं। तुलनीय : राज० साच कही मानै नहीं, झूठै जग पतियाय; पंज० सच नूं मनदा नई चूठ नूं मनदा।

सच की सँड़सी बुरी होती है—कभी-कभी कोरा सत्य भी बुराई का कारण हो जाता है। जैसे किसी के सामने उसके दोष को प्रकट करने से वह बुरा मान बैठता है।

सच बराबर पुण्य नहीं, झूठ बराबर पाप सत्य के बराबर पुण्य और झूठ के बराबर पाप नहीं है। तुलनीय : अव० साँच बरोबर पुन्न नहीं, झूठ बरोबर पाप; पंज० सच जिहा पुन नई चूठ जिहा पाप।

सच बात कड़वी लगती है - सच्ची बात आम तौर पर असह्य होती है। तुलनीय : अव० सच्ची बतिया नीकै नाहीं लागत, गढ़० सच्ची बात कड़ी लगदी; पंज० सच्ची गल्ल कौड़ी लगदी है।

सच बोलना सुखी रहना सत्य बोलने से मनुष्य सुखी रहता है। तुलनीय : अव० सच बोल, सुखी रहै; हरि० साच्चा बोलणा सुखी रहणा, राज० साच कहणा, सुखी रहणा; पंज० सच बोलणा सुखी रेणा।

सच बोलने से माँ भी मारती है दे० 'सच कहने से माँ...'। तुलनीय : मालo हाची बात के तो भाई भी मारे।

सच बोल, पूरा तोल सदैव सत्य बोलना चाहिए और पूरी तोल तोलनी चाहिए। तुलनीय : अव० सच्ची बोलै पूरा तौउलै; पंज० सच बोल पूरा तोल।

सचाई में खुदा की सूरत है - सत्य ही परमेश्वर है। तुलनीय : भीली - सत मे सायबो है, पंज० सचाई विच रब दी सकल है।

सच्चा कहनेवाला दाढ़ीजार सही बात कहने वाला बुरा होता है।

सच्चा जाय, रोता आय, झूठा जाय, हँसता आय - न्यायालय में झूठा ही विजयी होता है। आज के न्याय पर व्यंग्य है। तुलनीय अव० सच्चा जाय रोवत आवै, झूठा जाय हँसत आवै।

सच्चा मित्र सगे भाई से बढ़कर है स्पष्ट। तुलनीय : उज़० सच्चा मित्र सगा भाई है।

सच्ची बात सदुल्ला कहें, चित्त से सब के उतरे रहें - आज के संसार में सच्ची बात कहनेवाले को कोई भी नहीं चाहता।

सच्ची बात सदुल्ला कहें, सबके मन से उतरे रहें – ऊपर देखिए।

सच्ची बात सबको कड़वी लगती है —स्पष्ट।

सच्चे का जमाना नहीं- इस जमाने में सच्चों का गुजारा नहीं। तुलनीय : गढ़० सच्चों का जमानो नी; पंज० सचाई दा समां नईं।

सच्चे का बोलबाला, झूठे का मुँह काला—सच्चे का ही बोलबाला रहता है। झूठों को तो मुँह की खानी पड़ती है। तुलनीय : अव० सच्चे कै बोलबाला, झुठवा कै मुँह काला; गढ़० सच्चा को बोलबालो झूठा को मुख कालो; मरा० सत्याचा जय जयकार, खोट्याचें तोंड काले; पंज० सच्चे दा बोलबाला चूठे दा मुंह काला।

सच्चे का रंग रूखा --सच्ची बात सबको रूखी लगती है। या सत्य बोलनेवाले को कोई भी पसंद नहीं करता।

सच्चे की बावड़े, झूठे की न बावड -सच्चे की बारी बार-बार आती है पर झूठे की एक बार आकर कभी नहीं आती। तुलनीय : राज० साचैरी बावड़ै, झूठैरी को बावड़े नी।

सच्चे पास दुनिया जाय— (क) सच्चे व्यक्ति के पास सभी पहुँचते हैं। (ख) सिद्धि प्राप्त साधु के प्रति कहते हैं। तुलनीय : भीली —हाच वे ते हो वो मारे हू आवे, पंज० सच्चे कोल सारे जाण।

सच्चे लोग कसम नहीं खाते कसम प्रायः झूठे ही खाते हैं। जब किसी व्यक्ति के कथन पर दूसरा उससे प्रमाण-स्वरूप कसम खाने का अनुग्रह करता है तो वह ऐसा कहता है।

सजन बिन ईद कैसी स्त्रियों के लिए पति के बिना सभी पर्व त्यौहार और उसकी खुशियाँ फीकी लगती हैं।

सजनी हम हूँ राजकुमार झूठ में बड़ा बननेवाले के प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

सट्टे की **सगाई, तेल की मिठाई** सट्टे की सगाई (अपने परिवार की लड़की की सगाई जिस परिवार में की जाय उसी परिवार की लड़की की सगाई अपने परिवार के किसी लड़के से की जाए, तो उसे सट्टे या बट्टे की सगाई कहते हैं) और तेल की बनी मिठाई दोनों ही बुरी होती हैं। तुलनीय : राज० सट्टैरी सगाई, तेल री मिठाई।

सड़क का कुत्ता कभी इसके साथ और कभी उसके - (क) जो व्यक्ति मारा-मारा फिरता हो और उसके घर-द्वार न हो उसके प्रति कहते हैं। (ख) जो किसी का मीत न हो या मतलबी यार हो उसके प्रति भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० ढाकर्यूं को कुकर औंदू दगड़ी औंद जांदू दगड़ी जाद; पंज० सड़क दा कुत्ता कदी इस दे नाल कदी उस दे नाल।

सड़क का घर जल्दी उजड़ता है—राह में पड़नेवाला घर सदा अतिथियों से भरा रहता है, इसलिए उसका धन शीघ्र ही समाप्त हो जाता है। आशय यह है कि जिसका घर रास्ते में होता है उसे हानि उठानी पड़ती है। तुलनीय : मेवा० गेला को घर राम-राम में ही जावे।

सड़क पर मार गली में दोस्ती—जो अकेले में तो आदर और प्रेम करे, किंतु सबके सामने मारे-पीटे और बेइज़्ज़ती करे उसके प्रति कहते हैं।

सड़ी गदहिया, पीतल की खुरखुरी—नीचे देखिए।

सड़ी घोड़ी लाल लगाम—दे० 'बूढ़ी घोड़ी लाल लगाम।'

सड़ी साहिबी और गचका सोना—हैसियत के बाहर काम करने पर कहते है।

सत मत छोड़े सूरमा, सत छोड़े पत जाय—वीर सत्य कभी नहीं छोड़ते। सत्य छोड़ने से इज्जत चली जाती है। तुलनीय : हरि० सत मत छोड्यै, सूरमा, सत छोड्यां पत जाय।

सतयुगी न कलयुगी—(क) जो व्यक्ति किसी भी तरफ़ न रहे, उसके प्रति ऐसा कहते है। (ख) किसी व्यक्ति को दो तरफ़ से लाभ की आशा हो और दोनों तरफ़ से ही हानि हो जाए तो उसके लिए भी ऐसा कहते है। तुलनीय : गढ़० ए जुग न वै जुग, कखी का नि रया।

सतरा बहतरा—बेकार आदमियों को कहते है। इस कहावत का आधार यह है कि सत्तर-बहत्तर वर्ष की अवस्था में आदमी बेकार हो जाता है। तुलनीय : अव० सहतरा, बहतरा; गढ़० बर्स होया साठ अकल गै नाठ।

सतवंती की लाज बड़, छिनारी की बात बड़—सती स्त्रियाँ लज्जाशील तथा व्यभिचारिणी स्त्रियां बतक्कड़ और बेहया होती हैं। तुलनीय : अव० सतवंती कै लाज बड़, छिनारी कै बात बड़।

सतवादी धक्का खाय चाटुकारी सम्मान पाय—चापलूस व्यक्ति का समाज सम्मान करता है और सत्यवादी का अनादर।

सत हारा गया मारा—जो अपना सत छोड़ देता है वह सताया जाता है, या नष्ट हो जाता है।

सति कुच और भुजंग मणि, सिंह केश गज दंत, सूर कटारी विप्रधन हाथ लगे जब अंत—सच्चरित्र स्त्री का स्तन, सर्प की मणि, शेर के बाल, हाथी के दांत, योद्धा की कटार और ब्राह्मण का धन—ये चीजें बिना इनके मरे नहीं मिलतीं।

सती श्राप दे नहीं, हरजाई का लगे नहीं—सती नारियाँ शाप देती नहीं और जो हरजाई हैं उनका शाप किसी को लगता नहीं है। किसी की बातों की परवाह न करके अपने काम से काम रखना चाहिए। बहुत लड़नेवाली स्त्रियों को चिढ़ाने के लिए कहते हैं। तुलनीय : माल० सती सराप देईनी, ने कर्कसा रो सराप लागेईनी।

सत्तर करे, पिछत्तर छोड़े—(क) व्यभिचारिणी स्त्री के प्रति कहते हैं। (ख) अस्थायी संबंध रखनेवाले के प्रति भी कहते है।

सत्तर खेल बसंति खेले उसे खेलावे चंदो—बसंती तो सत्तर खेल खेलती है, भला उसे चंदो क्या खिलाएगी। या चंदो इतनी होशियार है कि सत्तर खेल खेलनेवाली बसंती को भी खिला सकती है। जब कोई सामान्य व्यक्ति किसी बहुत काइयें को ठगना चाहे, अथवा बड़े-बड़ों को नाच नचाए तो कहते है। तुलनीय : कनौ० सत्तर खेल बसन्तो खेलैं, तिन्है खिलावै चन्दो।

सत्तर चूहा खाकर बिलाई चलें हज करे—जब कोई बहुत पाप करके भक्त बने या कोई पापी बुढ़ौती में भक्त का जीवन बिताने चले तो उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

सत्तर चूहा खाकर बिल्ली चली हज को—ऊपर देखिए। तुलनीय : भोज० सत्तर चूहा खाके बिलार भइली भगतिन; अव० सत्तर चुहिया खाय कै बिलारि भइन भक्तिन; मरा० सत्तर उंदिर पंचविले आता मनी मावशी तीर्थयात्रेला निघाली आहे।

सत्तू खा के शुक्र क्या करना?—(क) तुच्छ वस्तु पाकर तारीफ़ क्या? (ख) साधारण चीज़ के लिए क्या धन्यवाद।

सत्तू बिसान की गठरी चलो तड़कों ददरी—यदि साधन हो तो सब कुछ किया जा सकता है।

सत्तू बाँधि परयो हैं पीछे—बुरी तरह पीछे पड़े हैं।

सत्तू मन भत्तू जब घोले जब खाय, धान विचारे भल्ले कूटे खाए चल्ले—सत्तू में धान से ज़्यादा सुविधा होती है। वह तो बने-बनाये भोजन के समान रहता है। आशय यह है कि अच्छी चीज़ पाने के लिए अधिक परिश्रम अपेक्षित होता है। तुलनीय : अव० सतुआ, लपेटुआ सानै तो खाय, धान बिचारा भला, कूटा कांड़ा खावा चला।

सत्यं ब्रूयात प्रियं ब्रूयात न ब्रूयात सत्यमप्रियं—सत्य बोलो, मीठा बोलो, ऐसा सत्य न कहो जो दूसरों को अप्रिय लगे।

सत्य और सत्य का धन कभी नहीं डूबता—परिश्रम से

कमाया हुआ धन कभी नष्ट नहीं होता तथा सच्चाई कभी नहीं छिपती। (क) जब कोई व्यक्ति किसी सत्य को छिपाने का प्रयत्न करे तो उसके प्रति कहते हैं। (ख) जब कोई धनी किसी अविश्वासी व्यक्ति को क़र्ज़ देने से इनकार कर दे तो उसे राज़ी करने के लिए भी इस प्रकार कहते हैं। तुलनीय : गढ़० सच्चो पुत्र मर्दनी सच्चो रिण वगदनी।

सत्य की सदैव विजय होती है—स्पष्ट। तुलनीय : सं० सत्यमेव जयते नानृतम्; पंज० सच सदा जितदा है।

सत्य सत्य पन सत्य हमारा—हमारी प्रतिज्ञा सत्य है इसमें लेशमात्र भी संदेह नहीं है। लोग प्रण करने के बाद कहते हैं।

सत्य सत्य ही है और झूठ झूठ ही—जब कोई सच्चा आदमी जीत जाए या झूठा हार जाए तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : गढ़० सच्च सच्ची च अर झूठ झूठ च; पंज० सच सच ही है अते चूठ चूठ ही।

सत्य समान धर्म नहिं दूजा—सत्य के समान दूसरा धर्म नहीं।

सत्य हमेशा कटु होता है—स्पष्ट। तुलनीय : हरि० साच्ची बात सबनै कड़वी लाग्या करै; पंज० सच सदा कौड़ा हुंदा है।

सत्ये नास्ति भयं क्वचित्—सत्य में कोई भय नहीं।

सदका दिए रद्द बलाय, उधार दिये गाहक जाय—दान-दक्षिणा देते रहने से विपत्ति दूर रहती है और उधार माल बेचने से गाहक भाग जाते हैं। नक़द दाम पर बेचते रहने से दूकानदार या बेचनेवाला झंझट से दूर रहता है पर उधार देने से झंझट पैदा होता है और दूकान के ग्राहक धीरे-धीरे कम हो जाते हैं।

सदा ईद नहीं जो हलुआ खाय—रोजाना ईद नहीं होती जिसमें कि हलवा खाने को मिले। ऐसे पेटू पर व्यंग्य है जो हमेशा अच्छी-अच्छी चीज़ें ही खाना चाहता हो।

सदा एक ही रुख नहीं नाव चलती—किसी के सब दिन एक-से नहीं होते। अर्थात् जीवन में अच्छे-बुरे दिन आते रहते हैं।

सदा कागज की नाव नहीं बहती—झूठी बातों से काम नहीं चलता। उसका भेद कुछ समय बाद खुल जाता है। तुलनीय : मल० चतिवेन्नुम कतिरकशिल्ल; अं० Treachery will not last long.

सदा किसी की नहीं रहती—सबके दिन पलटते रहते हैं। तुलनीय : राज० सदा-सदा चानणी रांता को हुवैनी; गढ़० सदा कै की निरई; पंज० सदा किसे दी नई रैंदी।

सदा की पदनी उरदा दोष—सदा से पादनेवाली है और उड़द को दोष देती है। जो अपने स्वाभाविक दोष को बहानों द्वारा छिपाने की कोशिश करे उसके प्रति कहते हैं।

सदा के उजड़े नाम बस्तीराम—गुण या प्रकृति के विपरीत नाम। तुलनीय : अर० मुतल अलइ अल असदि कवलतअ इन्न्ल नक़दी।

सदा के दानी मूसल के नौ टके—इतने बड़े दानी हैं कि एक टके की चीज़ का नौ टके देते हैं। यह कंजूसों पर व्यंग्य है।

सदा के दुखिया नाम चंगेखाँ—हैसियत या स्थिति के प्रतिकूल नाम होने पर व्यंग्य में कहते हैं।

सदा के दुखी, नाम बख़्तावर—ऊपर देखिए।

सदा दिन एक से नहीं रहते—सर्वदा अवस्था एक-सी नहीं रहती। तुलनीय : अव० सदा दिन एकै बरोबर नाही जात, हरि० सारे दिन बराब्बर थोड़े हुआ करै; पंज० सदा दिन इको जिहे नई रैंदे।

सदा दिवाली संत घर जों गुड़ गेहूँ होय—जहाँ खाने-पीने की कमी नहीं है वहाँ रोज़ ही त्योहार है। तुलनीय : अव० घर गोहूँ तो सदा देवारी; राज० सदा दियाळी संत कै, आठूं पाहेर अनंद; माल० सदा दीवाली सन्त की बारह मास बसंत; मरा० गळ निगरुडु असले की सनाधरी रोज दिवाळी।

सदा दिवाली संत घर तीस दिन त्योहार—ऊपर देखिए। तुलनीय : हरि० सदा दिवाली साध कै, तीस्स दिन तिव्हार; ब्रज० सदा दिवारी सी रहै, तीसों दिन त्योहार।

सदा दिवाली संत जहँ जो घर गेहूँ होय—दे० 'सदा दिवाली संत घर'। तुलनीय : ब्रज० सदा दिवारी सी रहै जो घर गेहूँ होय।

सदा न फूले तोरई, सदा न सावन होय, सदा न जोबन थिर रहे, सदा न जीवे कोय—हमेशा एक-सा समय किसी का नहीं रहता न हमेशा कोई जीवित रहता है।

सदा नाव कागज की बहती नहीं—कागज़ की नाव जल्द नष्ट हो जाती है। अर्थात् कच्चा काम थोड़े दिन का होता है, अधिक दिन नहीं चलता। तुलनीय : अव० सदै कागद कै नाव न बही; मरा० नेहमीच कागदाची होडी तरत नाही, पंज० कागज दी नाव सदा नई चलदी।

सदा फूली-फूली चुनी है—भाग्यवान व्यक्ति सुख से

ही जीवन बिताते हैं। जिनका जीवन सुख से व्यतीत हो जाए उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय : हरि० सदा फोल्ली फोल्ली मार्ई सै।

सदा मियाँ घोड़े ही तो रखते थे—जब कोई अपनी औक़ात से बाहर की चीज़ पाने का इसरार करता है या लालायित रहता है तो उसके प्रति व्यंग्य में यह कहावत कही जाती है।

सदा रहेउ पुर आवत जाता—ग्राम में सदैव आते-जाते रहिएगा। किसी बड़े व्यक्ति के गाँव से बाहर जाते समय या किसी के भी विदा के समय कहते हैं।

सदा रोते ही रहे—जिस व्यक्ति की सारी उम्र परेशानियों या कष्टों में ही गुज़र जाती है उसके प्रति कहते हैं।

सदा ही मेहमानदारी कहाँ है?—जब कोई व्यक्ति किसी संबंधी या मित्र के पास बिना कारण पड़ा रहे और उसका आदर न हो, किंतु वह उसी प्रकार जिस प्रकार आरंभ में आदर होता था चाहे तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : गढ़० सात दिनों पौणो कखळ्यो।

सदैव दशमि. पुत्रं : भारं वहति गर्दभी—यद्यपि गर्दभी (गधी) दस पुत्रोंवाली है, पर भार वही वहन करती है। आशय यह है कि विद्या (ज्ञान) के अभाव में न सहयोग दिया जा सकता है और न ही प्राप्त किया जा सकता है।

सधुवै दासी चोरवै खाँसी, प्रेम बिनासै हाँसी, घग्घा उनकी बुद्धि बिनासै, खायँ जो रोटी बासी—साधु को दासी, चोर को खाँसी और प्रेम को हँसी नष्ट कर देती है। घाघ कहते हैं कि इसी प्रकार बुद्धि को बासी रोटी नष्ट कर देती है।

सन के डंठल खेत छिटावै तिनते लाभ चौगुना पावै—यदि खेत में सन के डंठलों को छींट कर उसमें सड़ाया जाए तो चौगुनी उपज होगी। आशय यह है कि खेत में सन का डंठल सड़ाने से फ़सल अच्छी होती है।

सन घना बन बेगरा, मेढ़क फंदे ज्वार, पैर-पैर पर बजरा, करै दरिद्रं पार—यदि सन को घना, कपास को बिरल, ज्वार को मेढ़क के कुदान पर, बाजरे को क़दम-क़दम पर बोया जाए तो दरिद्रता दूर हो जाती है। अर्थात् ऐसे बोने से इनकी पैदावार खूब होती है।

सनि आदि औ मंगल, पौष अमावस होय; दुगुनो तिगिनो चौगुनो, नाँज महँगो होय—यदि पौष माह की अमावस्या शनिवार, रविवार और मंगलवार को हो तो अन्न क्रमशः दुगुना, तिगुना और चौगुना महँगा होगा।

सपना देख रहे मन गोय आन का देखे अपना होय—ऐसी जनश्रुति है कि स्वप्न छिपाने पर, दूसरों पर घटी हुई बुरी घटनाएँ अपने ऊपर घटती हैं।

सपना है संसार—यह जगत स्वप्न की तरह मिथ्या है।

सपनेउ संत सभा नहिं देखी—स्वप्न में भी सज्जन लोगों के समाज में नहीं गया है। असज्जन पर कहते हैं।

सपने की-सी संपत्ति झूठी—संसार की सम्पत्ति स्वप्न की भाँति अवास्तविक है।

सपने के सात से सामने के दो भले—स्वप्न के सात रुपये से प्रत्यक्ष मिलनेवाले दो अधिक ठीक हैं। प्रत्यक्ष लाभ कम होने पर भी आशा से अधिक लाभ से ठीक है। तुलनीय : राज० सपनैरा सात, प्रतखरा पाँच।

सपने भी कभी सच्चे होते हैं?—सपने कभी सत्य नहीं होते। (क) जो व्यक्ति दिन-रात सपनों की ही बातें किया करते हैं उनके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। जो बहुत ऊँची-ऊँची कल्पनाएँ करता है जो कभी पूरी नहीं होतीं उसके प्रति भी कहते हैं।

सपने में राजा भय दिन को वही हवाल—(क) थोड़े दिनों के आनन्द पर कहा जाता है। (ख) ख़याली पुलाव पकाकर आनंदित होने पर भी कहा जाता है।

सपूत की कमाई में सभी का साझा—भले लोगों की संपत्ति सबके लिए होती है। तुलनीय : हरि० सपूत की कमाई मे सभ का साझा; ब्रज० सपूत में सबको साझो।

सपूत को क्या धरना, कपूत को क्या भरना—सपूत के लिए धन रखने से क्या लाभ, क्योंकि वह तो स्वयं ही बहुत पैदा कर सकता है और कपूत को धन देने से क्या लाभ, क्योंकि वह उसे बेकार में नष्ट कर देगा। पुत्रों के लिए धन बचाकर रखनेवालों के प्रति कहते हैं। तुलनीय : गढ़० सपूत कु क्या साँजणो, कपूत कु क्या पाजणो।

सपूती रोवे टूकों को और निपूती रोवे पूतों को—सब कुछ सब के पास नहीं होता। किसी को किसी चीज़ की कमी होती है तो किसी को किसी चीज़ की। तुलनीय : अव० सपूती रोवै टूका का, निपूती रोवै, पूत का।

सपूतों के कपूत और कपूतों के सपूत—प्रायः अच्छे पिता की बुरी संतान होती है। और बुरे पिता की अच्छी संतान होती है। तुलनीय : अव० सपूत कै कपूत औ कपूत कै सपूत होत हैं; माल० सपूत रे सदा कपूत वेता आया है।

सफलता का मूल विश्वास है—अविश्वासी को कभी भी सफलता नहीं मिलती।

सफेद बाल, जवानी का जवाल—बाल पकने का अर्थ है जवानी का ढलना। नीचे देखिए।

सफ़ेद बाल मौत का पैग़ाम—सफ़ेद बाल का अर्थ है बुढ़ापे का आना अत: मौत का समीप होना। (यह कहावत शायद उस समय की है जब वृद्धों के बाल सफ़ेद होते थे। आज तो 10 वर्ष के बच्चे के भी बाल सफ़ेद हो जाते है, अत: अब यह लागू नही होती)।

सफेद-सफेद सब दूध— सभी सफ़ेद चीज़ें दूध होती हैं। सबको एक समान माननेवाले के प्रति कहते है। तुलनीय : राज० धोलो धोलो सो दूध है।

सफेद-सफेद सभी दूध नहीं होते सफेद रंग की सभी वस्तुएँ दूध नही हुआ करती। आदमी सभी एक से नही होते, रंग एक न होने पर भी गुण अलग-अलग होते है। तुलनीय : राज० धोलो धोलो सो दूध को हुवैनी; पंज० चिट्टे रंग बिच सारा दुद नई हुदा; अं० All that glitters is not gold, They are not all saints who use holy water.

सफेदी तो धर्म की है— बालो की सफेदी तो धर्म के लिए है। जो व्यक्ति वृद्ध होने पर भी कुकर्म करता है,किंतु उसकी अवस्था और सफेद बालों को देखकर उससे कोई कुछ नही कह पाता तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : राज० धोला तो धरम रा है।

सफेदी पर स्याही लग गई-- किसी की इज्जत पर धब्बा लगने पर कहा जाता है। तुलनीय : अव० सफेदी पै सिआही आय गय; गढ़० सफेदी मां स्याही; पंज० सफेदी उत्ते सयाही लग गयी।

सफेदी सबके घर होती है—प्रत्येक घर पर सफ़ेदी होती ही है, इसमें कोई विशेष बात नही है। किसी सामान्य बात को जब कोई बढ़ा-चढ़ाकर कहता है तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : माल० सब रा घर पोरी लीप्यां है; पंज० सब दे कर सफेदी होंदी है।

सब अपनी रोटी को ही सेंकते हैं आशय यह है कि प्रत्येक व्यक्ति अपना लाभ और स्वार्थ ही देखता है। तुलनीय : राज० सै आप-आपरी रोट्यां नीचे खीरा देवै; पंज० सब अपणी रोटी नूँ सेकदे हन।

सब आदमी एक-से नहीं होते—सभी आदमी रूप, स्वभाव या योग्यता आदि में एक तरह के नही होते। तुलनीय : अव० सब मनई एक बरोबर नाहीं होत; पज० सारे आदमी इको जिहे नईं हुंदे।

सब उस्तरे बांधो, कोई तलवार न बांधो कर दो यह मुनादी, कोई दस्तार न बांधे अंग्रेजी राज्य के आर्म्स ऐक्ट पर ताना है, जिसके मुताबिक बिना इजाजत कोई बड़ा हथियार नही रख सकता। (दस्तार = पगड़ी)।

सब एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं— (क) सब एक ही बाप के लड़के हैं (ख) सब एक ही घर के रहनेवाले है (ग) सब एक ही तरह के या एक ही मत के है। तुलनीय : पंज० सारे इक थैली दे चट्टे-वट्टे नें, अव० सब एकै थैली का चट्टा-बट्टा है; हरि० सारे एकै लंबी के तोड़े ओड़ सं।

सब एक ही रस्सी में बांधने योग्य है जहां सभी बुरे होते है, वहाँ ऐसा कहते है। तुलनीय : पंज० सारे इको थाँ मारने जोगडे ने।

सबक़ और तबक़ दोनों मौजूद हैं - पाठ और भोजन दोनों ही है। (क) प्राय: गुरु और मौलवी लोग विद्यार्थियो से ही भोजन आदि के सारे कार्य करवाते है। (ख) जिसे बिना परिश्रम के खाना आदि मिल जाए उस पर भी कहते है।

सब कछु नाहि जाने जग कोऊ—संसार में कोई भी सर्वज्ञ नही।

सब कहूँ तो रहूँ कहाँ—जिसके दिये से पालन-पोषण होता है यदि उसकी सारी बाते कह दूं तो रहने की शरण भी न मिलेगी। अर्थात् आश्रयदाता की शिकायत नही करनी चाहिए। तुलनीय भोज० कुल कही देहब त रहब कहाँ।

सब काज दाई का नाँव भौजाई का सारा काम दाई करती है और उसका श्रेय भाभी को मिलता है। जब काम कोई करे और नाम दूसरे का हो तब व्यंग्य में ऐसा कहते है।

सबका दौड़ना गणेश का खिसकना गणेशजी का खिसकना ही और सब देवताओं के दौड़ने के बराबर है। बड़े लोगों का थोड़ा करना भी सामान्य लोगों के अधिक करने से अधिक महत्त्व रखता है। तुलनीय : मैथ० सब देवता के उछल कूद गनपती के घुड़कुनिया।

सबका भाग्य, सबके साथ— सब लोग अपने भाग्य का खाते-पीते है। यदि कोई व्यक्ति, किसी पर इस बात का अहसान लादे कि मेरे कारण तुझे यह लाभ हुआ या मेरे कारण ही तुम भोजन पा रहे हो तो उसके प्रति ऐसे कहा जाता है। तुलनीय : गढ़० जैकोनाला सो खालो, पंज० सब दे भाग सब दे नाल।

सब काम थक्का तो, बुरा काम तक्का— सब अच्छे काम करके जब लोग थक जाते है और उनका काम नही चलता तो बुरे कामों पर दृष्टि जाती है।

सब कामों में पूरी, कोई न कहे अधूरी—सभी कार्यों में दक्ष है किसी भी काम में कम नहीं है। (क) अभिमानी स्त्री पर व्यंग्य है। (ख) जो स्त्री कुछ न जाने और जानने का व्यर्थ में अभिमान करे उसके लिए भी कहते है।

सब कार हर तर, जो खसम सीर पर—यदि स्वयं सीर के सब कार्यों को करे तो खेती दूसरे सब व्यापारों से उत्तम है।

सब काहू भूलिकें करज दीजिए नाँहि—भूलकर भी सबको ऋण नहीं देना चाहिए। इससे दुश्मनी होती है।

सब की दवा है आदत की दवा नहीं—जो बार-बार समझाने पर भी किसी बुराई को नही छोड़ते उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० सारियां दी दवा है आदत दी नईं; अं० Habit is the second nature of man.

सबकी माँ साँझ—नीचे देखिए। तुलनीय : हरि० सभ की मइया सांझ।

सबकी मैया साँझ—संध्या ही सबको विश्राम देती है। दिन-भर काम करने के बाद संध्या को सभी आराम करते हैं।

सब कुछ लौट आता है पर वक्त नहीं लौटता—धन आदि खोने के बाद पाया जा सकता है, किंतु समय फिर हाथ नही आता। समय का उपयोग करने के लिए कहते हैं। तुलनीय : माल० नाणो मली जाय पर ताणो नी मले; पंज० सरा कुज आ जांदा है पर समां नई आंदा; ब्रज० सब कछु लौटि आवै परि बखत नायें लौटे।

सब कुतियाँ गंगा नहाने लग जाएँ तो हंडिया कौन चाटेगा—दे० 'सब ही कुत्ते काशी ...'। तुलनीय : कौर० सबी कुतियाँ गंगा नहाने लगी, तो हंडिया कौन चाटेगा।

सब कुत्ते गंगा नहायें तो हाँडो कौन ढूँढ़ै—ऊपर देखिए।

सब कुत्ते स्वर्ग को जाएँ तो जूठी पत्तल कौन चाटे—दे० 'सब ही कुत्ते काशी जायँ तो... '। तुलनीय : अव० सबै कूकर सरगै जइही तौ पतरी कवन चाँटी।

सब के कर हर को तर—भगवान के अधीन सब कार्य है अथवा सारे कार्य हल (खेती) पर ही निर्भर हैं।

सबके गुरु गोबर्धन चेला—सब से चतुर होने पर या बहुत चतुर के प्रति कहते है।

सब के गुरु गोबरधन दास—(क) किसी बुरे काम में रहनेवाले गिरोह के सरगने को कहते हैं जो सबसे खराब समझा जाता है। (ख) जो व्यक्ति झगड़े की जड़ हो या दो पक्षों को लड़ानेवाला हो उसे भी कहते हैं। तुलनीय : गढ़० सब का गुरु गोवर्द्धन दास; पंज० सारियां दे गुरु गोबरन दास।

सबके दाँव अंडे, हमारे दाँव कुड़का—अपने असफल होने और सबके सफल होने पर कहा जाता है। तुलनीय : अव० सब कै दाँव अंडा बच्चा, हमारे दाँव कुड़ुक।

सबके दाता राम—ईश्वर ही सबका मालिक है। वही सबकी रक्षा करता है। तुलनीय : अव० सबकै दाता राम; गढ़० सबको दाता राम, पंज० सबदे दाता राम।

सबके पाँव नउनियाँ धोवे, आपन धोवत लजाय—नाइन सबके पैर धोती है लेकिन अपने पैर धोते समय लजाती है। जो दूसरे का काम तो करता है लेकिन जब अपना काम हो तो करते हुए शरमाता है उस पर कहते हैं। तुलनीय : अव० सबके गोड़ नउनियां धोवै, आपन धोवत लजाय।

सबके प्रिय सेवक यह नीती—यह नीति है कि सेवक सबके प्यारे होते हैं। अर्थात् जो अपनी सेवा करेगा अपने को अवश्य प्रिय होगा।

सबके सामने जिसने थामा हाथ, वही है सच्चा नाथ—जो व्यक्ति सबकी उपस्थिति में स्त्री का हाथ पकड़ता है वही उसका स्वामी होता है। जिस पति-पत्नी का संबंध सबके सामने होता है वही सत्य माना जाता है और अंतिम क्षण तक निभाया जाता है। तुलनीय : भीली पांच जणा नी चौरी भांये हाथ दाईन ले जाये जीधणी।

सब कोई झूमर पहिने लंगड़ी कहे हमकूं—सबको झूमर पहनते देखकर लँगड़ी कहती है कि मैं भी झूमर पहनूंगी। जो जिस वस्तु के योग्य न हो उसे पाने की इच्छा करें तब कहते हैं।

सब कोई मिलियो लंगोटिया न मिलियो—(क) सबसे मिलना चाहिए पर लंगोटिये यार से नही क्योंकि वह अपना सारा भेद जानता रहता है। (ख) लंगोटिया यार से कभी शत्रुता न करनी चाहिए, या लड़ाई मोल न लेनी चाहिए।

सब कोई मूँछे रखेंगे तो चूल्हा कौन फूंकेगा—(क) यदि सभी बड़े बन जाएँगे तो छोटा काम कौन करेगा। (ख) दुष्टों के प्रति भी व्यंग्य से कहते हैं जो सदा ओछे कर्म ही करते हैं, कभी नेक कर्म करने का नाम नहीं लेते।

सब कोउ बोले त नीक लागे कपूर बहू बोले त टिहुक बेर—सास अपनी उस पतोहू पर कहती है जो न पटने के कारण उसे पसंद नहीं रहती। आशय यह है कि जो आदमी किसी कारण हमें पसंद नही होता उसका बोलना-चालना आदि कोई काम हमें अच्छा नहीं लगता।

सबको एक लाठी से नहीं हाँकते - अर्थात् सबके साथ एक जैसा व्यवहार नहीं किया जाता। जो जैसा हो उसके साथ वैसा बर्ताव करना चाहिए। तुलनीय : पंज० सारियां नूं इक लाठी नाल नई मारदे; अं० All are not hunters that blow the horn.

सबको ठेल, मैं अकेल - सबको दूर कर दो मैं अकेला ही रहूँगा। स्वार्थियों पर व्यंग्य से कहा जाता है। तुलनीय : अव० सबै सकेली, सही अकेली।

सबको दाता राम - ईश्वर ही सबको देने वाला है।

सब गहनों में चंदर हार - चंद्रहार सभी गहनों में अच्छा होता है। जब कोई सब लोगों से अच्छा या सब लोगों में बुरा या दुष्ट हो तो कहा जाता है। तुलनीय : पंज० सारे गहनयां बिच चदरहार।

सब गुड़ गोबर हुआ—नीचे देखिए। तुलनीय : अव० सब गुड़ माटी होयगा।

सब गुड़ मिट्टी हुआ - जब बना-बनाया काम बिगड़ जाय या बिगड़ने लगे तो कहते हैं।

सब गुण की आगर धीया नाक बिना बेहाल - सब गुण से भरी है केवल नाक के बिना लड़की सुंदर नहीं लगती। जो काम कम करे और बोले बहुत, उस पर कहते हैं। तुलनीय : अव० सब गुण मा भरी है, बिटिया नाक बिना बेहाल।

सब गुण की आगर फूटल गागर— सब गुणों से युक्त है किन्तु घर में केवल फूटी गगरी है। जब कोई सभी गुणों से युक्त हो पर भाग्य के कारण बहुत गरीब हो तो कहा जाता है।

सब गुण की पूरी कौन कहे अधूरी - मूर्ख, गंदी या चालचलन की भ्रष्ट स्त्री पर व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : अव० सब गुनन मा भरी है केउ कहै आधी।

सब गुण भरा ठकुरवा मोर, अपने पहरु अपने चोर — मेरे ठाकुर सभी गुणों से युक्त है। स्वयं पहरा भी देते हैं और स्वयं चोरी भी करते हैं। रक्षक का ही भक्षक हो जाने पर व्यंग्य से कहा जाता है।

सब गुण भरी बैतरा सोंठ— बैतरा सोंठ बहुत फायदेमंद है। (क) जो व्यक्ति सभी गुणों से युक्त होता है उस पर कहते हैं (ख) व्यंग्य में अवगुणों से भरे मनुष्य पर भी कहते हैं।

सग घर अंधा द्वारे कुआँ —घर पर अंधा है और दरवाजे पर कुआँ है। चारों तरफ से परेशानियों से घिरे व्यक्ति के प्रति कहते हैं।

सब चतुराई चूल्हे पड़ी - सारी चालाकी चूल्हे में चली गई। जब कोई चालाक व्यक्ति किसी मुसीबत में फँस जाता है तब उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : पंज० सारी चलाकी चुलहे पयी।

सब छोड़ दे पर सत न छोड़े - सब-कुछ छोड़ देना चाहिए पर सत्य कभी नहीं छोड़ना चाहिए। सत्य के माहात्म्य पर कहा गया है। उसका परित्याग कभी न करना चाहिए। तुलनीय : अव० सब छोड़ देय, मुला सत का न छोड़ै; गढ़० सत त टूटो ना अर पत त जौना; पंज० सारा कुज छड़ दे पर सच न छड़।

सब जग रूठा तो रूठने दे, एक वह न रूठा चाहिए - चाहे दुनिया अप्रसन्न हो जाय लेकिन ईश्वर को अप्रसन्न नहीं करना चाहिए, अगर वह प्रसन्न है तो सब कुछ ठीक है। तुलनीय : अव० सगरिउ जग रूठ जाय, प भगवान भर न रूठै।

सब जहाज एक ही जगह लंगर करते हैं - सब जहाज एक ही जगह रुकते हैं। ईश्वरवादियों के प्रति कहा जाता है। वे चाहे जिस मत, जिस धर्म के हों एक ही ईश्वर तक पहुँचना उनका ध्येय होता है।

सब जीते जी के झगड़े है, यह तेरा है यह मेरा है; जब चले गए दुनिया मे ना तेरा है ना मेरा है - 'मेरे तेरे के झगड़े' जब तक जीवन है तब तक के लिए ही है। मरने के बाद यह सारा अपने आप समाप्त हो जाता है।

सब्जी मत देव गँवारन को, हँड़िया भर भात बिगारन को— गँवारों को साग नहीं खिलाना चाहिए क्योंकि साग से ज्यादा भूख लगती है, अतः यदि वे साग भी लेंगे तो उन्हें खाने को बहुत देना पड़ेगा।

सब झूठे तो मर गए, तुम्हें न आई ताप —सभी झूठ बोलनेवाले मर गए लेकिन तुम रह गए। बहुत अधिक झूठ बोलनेवाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : हरि० पहला झूठ बोल्लण आले मर जाया करते ईन ताप भी नाह चढ़ता।

सब ठाठ पड़ा रह जायगा जब लाद चलेगा बंजारा —जब कोई यमदूत (बंजारों की जाति) लूट कर ले जाएगा तो यह सारा ऐश्वर्य और वैभव धरा रह जाएगा। (क) जब कोई व्यक्ति धन-संपत्ति के मद में खूब रंगरेलियाँ मनाता है और भविष्य की चिंता नहीं करता तब कहते हैं। (ख) जब कोई भौतिक सुख-सुविधाओं में लाभ उठाते समय अपने अंत (मृत्यु) का ध्यान नहीं रखता उसके लिए भी कहते हैं। तुलनीय : राज० सब ठाठ पड़या रह जावेगा जब लाद चलेगा बनजारा; मरा० बंजारी माल

घेऊन जाईल तेव्हां सर्वथा थाटवाट जागच्या जागी राहील।

सब तीरथ बार-बार गंगा सागर एक बार – सब तीर्थ बार-बार किए जा सकते है पर गंगा सागर एक बार ही किया जाता है क्योंकि वहाँ कष्ट ज्यादा होता है। ज्यादा कष्टकर काम चाहे उसमें बहुत लाभ भी हो, मनुष्य को बार-बार नही करना चाहिए। तुलनीय : अव० सब तीरथ बार-बार, गंगा सागर एकै बार।

सबतें कठिन जात अपमाना — जाति का अपमान नही सहा जाता।

सबते कठिन राज मद भाई—पद या राज का मद सब से भयंकर होता है।

सब तोड़े मेरा एक रब न तोड़े—सब संबंध तोड़ ले या रूठ जायँ पर एक भगवान दया रक्खे रहे तो बहुत है।

सब दिन चंगा त्योहार के दिन नंगा—दे० 'सब दिन चंगे ...'। तुलनीय : अव० सब दिन चगर, तेवहार कै दिन नगा।

सब दिन चंगी, त्योहार के दिन नगी—नीचे देखिए।

सब दिन चंगे तिवहार के दिन नंगे —और दिन तो ठीक-ठाक रहते हैं लेकिन त्योहार के दिन नगे घूमते है। आम दिनों में ठीक हो पर जब विशेष आयोजन हो तो साधारण वेशभूषा पहने जो अवसर के अनुकूल नही तब कहते है। तुलनीय : पंजा० सारे दिन चगे, तयोहार दिन नगे।

सब दिन चोर के एक दिन साहुकार का—अर्थात् चोर किसी-न-किसी दिन अवश्य पकड़ा जाता है।

सब दिन जात न एक समान सभी दिन एक जैसे व्यतीत नहीं होते। अर्थात जीवन मे सुख-दुख दोनों आते है। तुलनीय : अव० सब दिन एक समान नाही जात; माल० सब दन हरीखा नी वे।

सब दिन बरसे दखिना बाय, कभी न बरसे बरखे पाय —दक्षिण की हवा अन्य मौसमों मे तो वर्षा करती है परंतु वर्षा ऋतु मे उससे पानी नही बरसता।

सब दिन हम खाएँ साग, कौन लगाए घर में बाग - साग तो खाने को मिल ही जाता है, फिर उसे बोने की क्या आवश्यकता है। जब कोई व्यक्ति किसी वस्तु को जिसकी सदा ही आवश्यकता हो बार-बार माँग कर ले जाए तो उसके प्रति व्यंग्य मे कहते हैं। तुलनीय : गढ़० रात दिन को खाणो साग क्या लाणो।

सब दिन होत न एक समाना—दे० 'सब दिन जात न...'। तुलनीय : मरा० सगळे दिवस सारखे नसतात।

सब दुःख सहे जायँ पर पेट का दुख न सहा जाय – सभी कष्ट और असुविधाएँ सहन की जा सकती हैं किंतु भूखे नही रहा जा सकता। अर्थात् पेट भरने के लिए अन्न अवश्य ही चाहिए, और चाहे कुछ भी न मिले। तुलनीय : भीली—हारी आंटी देवीमण पेटे पाव आटा नी आंटी नीदे वी।

सब धड़ कढ़िगो अटकी पूंछ - पूरा शरीर बाहर आ गया केवल पूंछ अटकी हुई है। जब किसी कार्य का अधिकांश भाग हो जाय और केवल थोड़े के होने में कठिनाई पड़े तो कहते है। तुलनीय : अव० सब धड़ निकर गय, पूँछिया मैं अटकी है।

सब धरा रह जायगा—मरने के बाद सब कुछ यहीं रह जाएगा कुछ भी साथ नही जाएगा। कंजूसों के प्रति कहते हैं।

सब धान बाइस पंसेरी—चाहे वह पंडित हो चाहे मूर्ख, चाहे राजा, चाहे गरीब सबके साथ एक व्यवहार करने पर कहा जाता है। तुलनीय : अव० छत्तीस सबै धान बाइस पसेरी; राज० धान बाईस पसेरी; मग०, भोज० बुंद० सब धान बाइस पसेरी, राज० धान बाईस पसेरी, मेवा० खल गुड़ एक ई भाव, गढ़० कोण चाहि धान्य क्या बाईस पासरी।

सब धान बारह पँसेरी—ऊपर देखिए। तुलनीय : गढ़० छोट्टी पुजें पाँची भाँडा, ठुली पुजें पाँची भाँड़ा; या ग्यूं माली जौ मोल।

सब नर होत न एक समान संसार के सभी मनुष्यों के रूप-रंग, शक्ल-सूरत, रीति-रिवाज, बोल-चाल आदि में अंतर होता है। तुलनीय : गढ़० सबी नर निहोदा एक सर।

सब पंचन मिलि कीजै काज, हारे जीते न आवे लाज दे० 'पंचों मिलना कीजै काज...'। तुलनीय : अव० सब पंचन मिलि कीन्हे काज, हारे जीते नाही लाज।

सब पापी मर गए तुमको ताप भी न आई - दे० 'सब झूठे तो मर गए...'।

सब पीर छूटे पकड़ी गई बीबी नूर—बड़े-बड़े दोषी तो बच गए और छोटा दोषी बेचारा पकड़ लिया गया।

सब बन तौ चंदन नहीं, सूरा का दल नाहिं—प्रत्येक वन में चंदन नहीं मिलता और प्रत्येक जगह अधिक वीर नही पाए जाते है। अर्थात् गुणी और बहादुर लोग प्रत्येक जगह नही होते है या उनकी बहुत बड़ी संख्या कही नही मिलती।

सब मद मद हैं विद्या मद उनमाद सब गर्वों में विद्या का गर्व सबसे बड़ा है। थोड़ी विद्या भी मनुष्य को पागल बना देती है। तुलनीय : अव० सब मद मदै है, विद्या मद उनमाद।

सब मर जायें और मैं सबका लड्डू खाऊँ— सबका बुरा चाहकर अपना भला चाहनेवाले के प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

सब सदके मैं अलग— सिवा मेरे और जो कुछ है, सब तुम पर न्यौछावर है। कृत्रिम प्रेम-प्रदर्शन पर कहा जाता है।

सब समुद्र मोती नहीं, योंसाधु जग मांहि— जिस प्रकार सब समुद्र में मोती नहीं होते उसी प्रकार सब जगह सच्चे साधु नहीं होते।

सब सुख के साथी यहाँ, दु ख के साथि न कोय—संसार में सुख में साथी सभी हैं पर दुख में कोई भी नहीं। तुलनीय : अव० सुख कै साथी सबै है, दु खे का केउ नाही; पंज० दुख बिच कोई मितर नईं सुख बिच सारि।

सबसे कठिन जाति अपमाना— जातीय अपमान सहना बहुत मुश्किल होता है। तुलनीय : अव० सबसे कठिन जात कै अपमान।

सबसे चतुर बानियाँ, उनसे चतुर सोनार, लासा-लूसी लगा के ठगे जाति भुइँहार— बनिये बहुत चालाक होते हैं लेकिन सुनार उनसे चालाक होते है और भूमिहार इधर-उधर की बाते करके ही लोगों को ठग लेते है। अर्थात् भूमिहार बहुत चालाक होते है।

सबसे प्यारा पेट— स्पष्ट। तुलनीय : मग० सबसे दुलरुआ पेट; भोज० पेट सबसे पियारा है।

सबसे बड़ी भूख, जो पावे सो चूख— भूख मे जो कुछ भी मिल जाता है, लोग मज़े से खा लेते है। तुलनीय : राज० सबसूं मोटी भूख; पज० सब तों बड़ी भुख का लब्बे चुक; अ० Hunger is the best sauce

सब से बना कर रहना चाहिए—संसार में सभी व्यक्तियों से मित्रता रखकर रहना चाहिए। धनवान-निर्धन, बड़े-छोटे सभी से काम पड़ सकता है, इसलिए किसी से शत्रुता नहीं करनी चाहिए। तुलनीय : भीली दुनिया में हबलू-नबलू हारु है, हाराए नबावणो पड़े।

सब माने देखीं, कही-सुनी न मान कोय— देखी हुई बात को सभी सच मानते है किंतु सुनी बात को कोई सच नहीं मानता।

सब माया आदमी से है— संसार की सभी चीजें मनुष्य से ही हैं। मनुष्य न हो तो संसार में कुछ भी न रहे। आशय यह है कि मनुष्य बहुत ही महत्त्वपूर्ण प्राणी है। तुलनीय : राज० मिनखाँरी माया हैं; पंज० सारी माया मनुख होवे तां है।

सब रात पीसा ढकनी में उठाया— बहुत अधिक परिश्रम करने पर भी जब बहुत थोड़ा लाभ हो तो कहते है। ढकनी एक छोटा सा मिट्टी का बर्तन होता है। रात भर चक्की मे आटा पीसने पर काफ़ी होना चाहिए पर यदि वह ढकनी मे उठाने भर का ही हो तो कुछ भी नहीं है। तुलनीय : अव० सगरिव रात पीसा, ढकनी मा उठावा।

सब रामायन पढ़ गए सीता केकी जाय—जब कोई सब बात सुनकर भी, उसके विषय में कुछ समझ नही पाता, तब उसका परिहास करने के लिए ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० सगरिव रामयेन खतम हो गय सीता केकर मेहरारु; हरि० सारी रात रामायण पढ़ी तड़के बूझे सीता कूण था; मरा० सगळे रामायण वाचून टाकले तरी सीता कोणाचे बाप होतो, पज० सारी रमैण पड गये सीता कूण थी।

सब रामायण हो गई सीता किसके बाप—ऊपर देखिए। तुलनीय : बुंद० सबरी रामायन हो गई, इने जोई पतो कै राम राच्छस हते कै रावन।

सब शकल लंगूर की एक दुम की कसर है— भद्दी शक्ल के आदमी पर या बेढंगी पोशाक पहननेवाले के लिए कहते है। तुलनीय . अव० सब सकल लँगूरे के सिरिफ पूँछै बाकी है।

सब शनिश्चर गाँव नहीं जलते— प्रत्येक शनिवार को गाँव मे आग नहीं लगती। (शनिवार को शनि देवता का प्रकोप रहता है)। अर्थात् प्रत्येक घटना सदा ही नहीं होती रहती। तुलनीय : राज० थावररा थावर गाँव थोड़ा ही बळे; पंज० सारे सनिचर पिड नईं सड़दे।

सबसे बेहतर हैं, मियां, साहब-सलामत दूर की— दूर रहना और दुआ-सलाम कर लेना अच्छा होता है, अधिक घनिष्ठता का फल अच्छा नहीं होता।

सब से भला अकेला— दे० 'सबसे भले अकेले।'

सबसे भला किसान, खेती करे और घर रहे— विदेश जानेवाले लोगों का कहना है कि घर की जीविका सबसे अच्छी है। तुलनीय . अव० सबसे मजे मा किसनवै हैं, खेती करै अपने घर रहै।

सबसे भला चुप— चुप रहने में बहुत भलाई है। तुलनीय: मल० मौनम् विद्वानु भूषणम्; पंज० सारीयां तो चंगा चुप; अ० Silence is golden.

सबसे भली चुप— कम बोलना सबसे अच्छा है। तुलनीय : अव० सबसे भल छुप्पी साधब, राज० सबसूं भली चुप, गढ़० सबसे भली चुप, स० मौनं सर्वार्थ साधनम्; पंज० सारीयां तो चंगी चुप।

सबसे भली माँ तो धरती है— जो धरती विश्व का बोझ संभाले है वही सबकी सबसे भली मां है। तुलनीय : राज०

भलाभली माना जमी है जका सगळो सैवै ।

सबसे भली ससुरार, जो रहे दिना दो-चार, जो रहे मास पखवारा, हाथ में खुरपी सिर पर जाला—उसके लिए ससुराल बहुत अच्छी होती है जो दो-चार दिन रहता है लेकिन जो पंद्रह-बीस दिन या महीना भर रहता है उसके हाथ में खुरपी और सिर पर जाला दिखाई देता है। आशय यह है कि ससुराल में थोड़े दिन रहनेवाले की बहुत इज्जत होती है लेकिन जो अधिक दिनों तक ससुराल में रहता है उसकी कोई इज्जत नहीं होती।

सबसे भले अकेले - संसार में अकेले रहनेवाले सदा प्रसन्न रहते हैं। जो व्यक्ति किसी से किसी प्रकार का संबंध नहीं रखते उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय: गढ़० यक्लो बाटा झगड़ को नाश; पंज० मारिया तो बड़े कल्ले; ब्रज सबते भलौ अकेलौ।

सबसे भले भीख के रोट- -(क) मुफ्तखोरों पर व्यंग्य में कहते हैं। (ख) सूखी-रूखी रोटी खानेवाले को आनन्द ही आनन्द रहता है।

सबसे भले विमूढ़ जिन्हें न व्यापे जगत गति -मूर्ख ही सबसे अच्छे हैं जिन्हें संसार में कहाँ क्या हो रहा है कुछ भी पता नहीं है। ज्ञानियों या चालाक व्यक्तियों की अपेक्षा मूर्ख आनन्द से रहते हैं क्योंकि कम ज्ञान होने से उनकी इच्छाएँ तथा आवश्यकताएँ कम होती हैं। उनके पास जितना कुछ होता है वे उतने ही में मस्त रहते हैं।

सबसे मीठा वह लड्डू जो मिला नहीं - जो चीज मिल नहीं पाती उसके प्रति आकर्षण सर्वाधिक होता है। तुलनीय. असमी थोवा माछटो डाङर; पंज० मारियां ता मिट्ठा ओह लड्डू जिहड़ा खादा नईं, अ० Forbidden fruit is the sweetest.

सबसे मीठी भूख—भूख लगने पर जो भी चीज खाने को मिल जाती है वह बहुत अच्छी लगती है।

सब सोवें त फक्कड़ रोटी पोवें - असमय में कार्य करनेवाले के प्रति कहते हैं।

सब स्वाँग बनते हैं पर रुपये का स्वांग नहीं बनता — रुपए के काम रुपए से ही पूरे होते हैं। अर्थात् पैसे का स्थानापन्न पैसा ही है।

सब ही कूकर काशी जाएँ, तो पत्तल चाटे कौन दे० 'सब कुत्ते स्वर्ग···'।

सबेरे का भूला सांझ तक आ जाए तो भूला न समझो — जो अपनी भूल को जल्दी सुधार लेता है उसे बुरा नहीं कहते। तुलनीय : पंज० सवेर दा पुलया शाम नूँ घर आवे तां ओनूं पुलया न कहो।

सबै दिन जात न एकसमान— दे० 'सब दिन जात··'।

सबै सहायक सबल के, कोऊ न निबल सहाय - बलवान पुरुष के सभी सहायक होते हैं। किन्तु निर्बल का कोई भी नहीं। तुलनीय : पंज० जोर वाले दे नाल सारे कमजोर दे नाल कोई नईं।

सब्बल की चोरी सुई का दान -सब्बल की चोरी करके सूई का दान करते हैं। जब कोई बड़ा अपराध करके किसी छोटे पुण्य कर्म द्वारा उससे मुक्त होना चाहता है तब उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : छत्तीस० सावर के चोरी करै, अउ सूजी के दान दै।

सब्र कर मन में, तो सुख लहे तन में सब्र करने से सुख मिलता है। तुलनीय : स० संतोष परम सुखम्।

सब्र का फल मीठा धीरज का फल मीठा होता है। धैर्य रखने से सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं और मनुष्य सदा लाभ में रहता है। तुलनीय : राज० सबूरीरा फल मीठा या धीरज़ा फल मीठा; मरा० सबुरीचे फल गो··, पंज० सबर दा फल मिट्ठा।

सब्र की डाल में मेवा लगता है -सब्र का फल अच्छा होता है। तुलनीय : अव० सबुर के फल मीठे होत हैं; पंज० सबर दे फल मिट्ठे हुंदे हन।

सब्र की दाद खुदा देगा --सब्र करनेवाले की सहायता खुदा करता है।

सब्र तल्ख अस्त, वलेकिन समर शीरीं दारद--धैर्य कड़ुआ होता है पर उसका फल मीठा होता है।

सभा का चूका मर्द, डाल का चूका बंदर---ये दोनों हानि उठाते हैं। तुलनीय . भोज० सभा के चूकल मरद, डाढि के चूकल बानर।

सभा बिगारें तीन जन चुगल, चूतिया, चोर -चुगल, चूतिए और चोर से समाज बिगड़ता है। तुलनीय : अव० सभा बिगारैं तीन जन, चुगुल चूतिया औ चोर।

सभी उँगलियाँ बराबर नहीं होतीं आशय यह है कि सभी लोग समान नहीं होते। तुलनीय : छत्तीस० सबै आँगरी बरोबर नइ होय; ब्रज० सब उँगरिया बराबरि नायँ होयँ।

सभी कुतिया गंगा नहाने लगीं तो हँड़िया कौन चाटेगा---दे० 'सब कुतियां गंगा···'।

सभी दाढ़ीवाले तो आग कौन फूँके – (क) जब किसी भयवश किसी कार्य को करने से सभी कतराते हैं, तब उनके प्रति कहते हैं। (ख) जहाँ सभी अपने को बड़ा समझते हैं

और उनमें से कोई भी छोटा काम करना नहीं चाहता वहाँ भी व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : छत्तीस० सबे डढ़ियारे डूढ़ियार, बागी कोन फूंकै।

सभी भाग्यवान नहीं होते -- यदि सभी भाग्यवान हों तो अभागा कोई न रहे। जब किसी व्यक्ति विशेष से ही पूर्ण परिवार को सुख-सुविधा मिलती है और उसके पश्चात सभी निर्धन हो जाएँ तो उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय : गढ़० पुरुष् लगदा भाग होंदा।

सभी वनों में चंदन का वृक्ष नहीं होता अर्थात् (क) अच्छी चीजें सभी जगह नहीं मिलती। (ख) अच्छे गुण सभी व्यक्तियों में नहीं मिलते। तुलनीय : प्र० बन बन बिरिख चंदन नहि होई तन तन बिरह न उपजै सोई।

—जायसी

सभी सीपों में मोती नहीं होते - (क) अच्छी चीजें सभी जगह नहीं मिलती। (ख) अच्छे गुण सभी व्यक्तियों में नहीं मिलते। प्र० थल-थल नग न होइ जेहि, जोती जल-जल सीप न उपजै मोती। जायसी।

सबै दिन नाहिं बराबर जात हमेशा एक जैसा समय नहीं रहता। जीवन में सुख-दुख दोनों सहने पड़ते हैं। तुलनीय : मल० ओरु वेनलकु ओरु मष, अं० After a storm comes calm

समझ का घर दूर है -सभी में समझ होना आसान नहीं होता। तुलनीय : गढ़० समझ का घर दूर छ, पंज० समज दा कर दूर है, ब्रज० समझ के घर दूरि है।

समझदार की मिट्टी खराब है क्योंकि उसी पर सब काम लादे जाते हैं और अंत में भलाई-बुराई सब कुछ उसी को लगती है। तुलनीय : अव० समजदार कै माटी पलीत है; राज० समझूनै मार है; पंज० समजदार दी मिट्टी पलीत है।

समझदार की ही मौत होती है समझदार व्यक्ति को ही हानि उठानी पड़ती है, क्योंकि जो मूर्ख होते हैं उन्हें लोक-लज्जा का कोई खयाल नहीं होता। तुलनीय : हरि० समझणियाँ की मरय, पंज० समजदार दी ही मौत हुंदी है, ब्रज० समदझार की मौति है।

समझदार को इशारा काफ़ी - बुद्धिमान व्यक्ति संकेत से ही किसी चीज़ को समझ जाते हैं। तुलनीय : मल० चोटियुळ्ळ कुतिरक्कु ओरटि, चोटियुल्ल पुरुषनु ओरु वाक्कु : पंज० समझदार नू इशारा बड़ा; ब्रज० समझदार कू इसारौ काफ़ी; अं० A word to the wise.

समझने वाले की मौत है -- (क) जो समझता है उसी पर परेशानी रहती है। (ख) परिवार में समझदार व्यक्ति को ही परेशानी उठानी पड़ती है क्योंकि वही मालिक होता है। इस पर अकबर-बीरबल का एक किस्सा भी प्रसिद्ध है : एक बार दरबार में गाना हो रहा था, सभी लोग सर हिला रहे थे। अकबर को यह बुरा लगा और उसने सब को मना कर दिया। जो संगीत नहीं समझते थे वे तो चुप रहे पर एक समझनेवाले से बिना सर हिलाए न रहा गया। उसने सर हिलाते हुए कहा, 'हुज़ूर और लोगों के लिए तो ठीक है पर समझनेवाले की मौत है। उनसे बिना सर हिलाए नहीं रहा जाता।' तुलनीय : राज० समझूरी मोत है; गढ़० समझण वाला की मौत छ।

समझ-बूझ के करना काज, हारे-जीते न आवे लाज -- जिस कार्य को सभी तरह से या हानि तथा लाभ दोनों दृष्टियों से देखभाल कर किया जाए और उसमें यदि हानि भी हो जाए तो कोई पछतावा नहीं होता। तात्पर्य यह है कि किसी भी काम को सब प्रकार से सोच-विचार कर करना चाहिए। जो व्यक्ति किसी नए काम में हड़बड़ी या जल्द-बाज़ी करते हैं, उनको समझाने के लिए कहते हैं। तुलनीय : गढ़० समझी बूझी करनो काज, हार्‌यो जित्यो नि आ लाज।

समझा और पत्थर हुआ --(क) जो बात ठीक से समझ में आ जाती है वह दिल में पत्थर की तरह बैठ जाती है, फिर हट नहीं सकती। (ख) समझदार के मन में जो बात जम जाती है उस पर से वह टस-से-मस नहीं होता।

समझेगे मियाँ तब जब धुनना पड़ेगा - जब कोई बिना समझे-बूझे किसी कठिन कार्य को करने का बीड़ा उठा लेता है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० जब धुने के परी तब मिया जनिहें।

समझे सो गदहा, अनाड़ी की जाने बला - समझनेवाले ही को हानि होती है, जो नहीं समझता वह मस्त है। दे० 'सबरो भले विमूढ़ जिन्हहि व्यापै जगत गति।'

समझे न बूझे, खूंटा लेके जूझे बिना समझे-बूझे किसी बात में पड़ना मूर्खता है। ऐसा करने वालों पर यह कहावत कही जाती है। तुलनीय : अव० समझै न बूझै कठौता लैइके जूझै; गढ़० जाणो न नाणों बल भैंस को सिंग।

समधिन का टंकला चुभ-चुभ जा, चोरी का लपका कभी न जा जिस व्यक्ति को एक बार बुरी आदत पड़ जाए तो चाहे उसे उसके कारण कितना ही कष्ट क्यों न उठाना पड़े उसकी आदत छूटती नहीं।

समधी हुंडा फूटा है, कहकर क्या बदलवा लिया— व्यर्थ में इज़्ज़त गँवानेवालों के प्रति कहते हैं।

समय का चूका आदमी, डार का चूका बंदर—ये दोनों नही सँभलते।

समय को घोड़ा भी पकड़ नहीं पाता—बीते समय को घोड़ा भी नही पकड़ पाता। (क) जो बात हो चुकी उसको वापस नही लौटाया जा सकता। (ख) समय बहुत तेजी से बीतता है, इसलिए किसी काम के करने में विलंब नही करना चाहिए। तुलनीय: राज० गयी वाताँने घोड़ा ही को नावड़ैनो; पंज० गये समे नूं कौड़ा वी नई फड़ सकदा।

समय देखकर बात करनी चाहिए—समय और परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए ही कुछ कहना चाहिए। तुलनीय: पंज० मौका देखके गल करनी चाइदी है।

समय न बार बार—अच्छा समय बार-बार नही आता।

समय पड़े की बात बाज पर झपटे बगुला—समय पड़ने पर बगुला भी बाज पर झपट्टे मारने लगता है। अर्थात् जब समय खराब हो जाता है तो निर्बल से निर्बल भी सबल पर आक्रमण कर बैठता है। तुलनीय: मरा० वेळे वेळे चा गुण तो ससाण्यावर बगळा झडप घालतो।

समय पड़े पर जानिए जो नर जैसा होय—मनुष्य की पहचान समय आने पर होती है।

समय पर किसी की पहचान होती है—ऊपर देखिए। तुलनीय: अं० The tree is known by the fruit it bears.

समय परे ओछे वचन, सबके सहउ रहीम—रहीम कवि कहते हैं कि समय पड़ने पर नीच आदमियों के भी दुर्वचन सह लेने चाहिए।

समय पाय तरुर फले केतिक सींचो नीर—समय आने पर ही वृक्ष में फल लगते हैं। उसके पहले कितना भी पानी क्यो न डालो पर फल नहीं लगते। अर्थात् सभी काम अपने समय पर होते हैं, चाहे लाख प्रयत्न करें वे समय से पहले नहीं हो सकते। तुलनीय: मरा० कितीहि पाणी घाला, ऋतु आल्याखेरीज झाडाला फल येणार नाही।

समय-समय की छाया है—समय के साथ ही छाया घटती-बढ़ती रहती है। अर्थात् समय के साथ मनुष्य की दशा बदलती रहती है। तुलनीय: राज० वेळा-वेळारी छियाँ है।

समय समय की बात—आशय यह है कि समय कभी एक-सा नहीं रहता। तुलनीय: अव० समय-समय कै बात है; हरि० बखत-बखत की बात सै; राज० समै-समैरी बात है; पंज० मौके मौके दी गल।

समय-समय सुन्दरि सबै रूप कुरूप न कोय—अपने-अपने समय पर सभी चीजें सुन्दर लगती है और यों तो कोई भली है, न बुरी।

समरथ को नहिं दोष गोसाईं—समर्थ या सबल को दोष नही लगता। वह दोषी होते हुए भी निर्दोष है। तुलनीय: हरि० ठाह्डे का सिर पै कै गाह; राज० समरथ हू नहि दोस गुसाईं; मरा० थोराना दोष लागत नाहीं महराज।

समुझइ खग खग ही कै भाषा—पक्षी की बोली ही समझते है। अर्थात् जो जिस वर्ग या वातावरण का रहता है वह उसी वर्ग के लोगों को ठीक से समझ सकता है, दूसरों को नही।

समुझे मीत मीत के बैन—मित्र की मनोदशा मित्र ही पहचानता है।

समुन्दर क्या जाने दोजख का अज़ाब—आग का कीड़ा नरक के कष्ट को क्या जाने। अर्थात् जो बहुत दुख सहता है उसे उससे छोटा कष्ट कुछ नहीं लगता।

समुंदर सोख को दरिया क्या?—जो समुद्र को सोख सकता है उसके लिए नदी (दरिया) को सोखना कुछ भी नहीं है। अर्थात् जो बड़े-बड़े काम कर लेता है उसके लिए छोटा काम क्या है? अर्थात् कुछ नही है।

समुद्र में रहना, मगर से बैर—दे० 'जल में रहकर…'।

समुद्रवृष्टिन्याय—समुद्र में पानी बरसने से जैसे कोई उपकार नहीं होता, उसी प्रकार जहाँ जिस बात की कोई उपयोगिता, आवश्यकता या लाभ न हो वहाँ यदि वह की जाए तो यह उक्ति चरितार्थ होती है।

सयाना कौवा खे खाय—कौवा जो बहुत चालाक होता है, गंदा खाता है। अर्थात् बहुत सयाना आदमी धोखा खाता है। तुलनीय: अव० सयाना कौआ गुह खाय; हरि० घणा स्याणा काग गूह मैं चूंच मार्या करै; राज० सैणपमें किर-किर पड़ै; पंज० जादा सयाना काँ गूं ते डिगदाए; भीली—घणो हुसझणो धूल खावे।

सयाना कौआ गू पर गिरे—ऊपर देखिए। तुलनीय: राज० घणो स्याणो कागलो जको गू में चाँच डबोवे।

सयाना सो दीवाना—बहुत सयाना पागल समझा जाता है। तुलनीय: अव० सयाना तौ देवाना।

सयाने का गू तीन जगह—जो अपने को बहुत चालाक समझते हैं वे धोखा भी बहुत खाते है। इस संबंध में एक कहानी है: दो मित्र कहीं जा रहे थे, एक होशियार था और एक सीधा। रास्ते में दोनो के पैर में पाखाना लग गया। सीधे ने चुपचाप उसे घास में रगड़कर साफ़ कर डाला पर

होशियार ने सोचा कि पता नहीं पाखाना है या नहीं। यह सोचकर उसे उसने हाथ से छूकर देखा, फिर भी संदेह हुआ अतः सूंघ कर उसने निश्चय किया। इस प्रकार उसके पैर, हाथ और नाक तीनों में गन्दगी लग गई। तुलनीय : अव० सयाना तीन जगहा गह बूड़त है; राज० सैणप में भीजें है; पंज० सयाणे दा गूँ तिन थां।

सयाने-सयाने एकमत—सयाने सभी एकमत होते हैं। चतुर पुरुष शीघ्र ही किसी समस्या का हल निकाल लेते हैं और सभी उसको मान भी लेते हैं। तुलनीय : राज० स्याणां स्याणां एक मत; पंज० सयाणे-सयाणे इको जिहे।

सय्यद कंगाल होगा तो क्या सूअर चटायेगा ?—अर्थात् बड़े गिरकर भी बहुत नीचा काम नहीं करते।

सर कटावें बघेले माल जावें चौहान—सर किसी ने कटाया, और माल किसी ने खाया। जब परिश्रम कोई करे और उसका फल कोई भोगे, तब यह लोकोक्ति कही जाती है।

सरकने तक ही फैलाना चाहिए—आशय यह है कि अपनी शक्ति के भीतर ही काम करना चाहिए जिससे सफलता मिल सके। तुलनीय : भोज० ओतने पसरे के चाहि कि सकम सकी।

सरकार से मिला तेल, पल्ले ही में मेल—किसी बड़े या राजा से छोटी-सी वस्तु भी मिले तो अपना सौभाग्य समझना चाहिए।

सरकारी साँड़ है—सरकारी साँड़ सड़कों पर घूमता रहता है और आते-जाते लोगों को परेशान करता है तथा जहां कुछ खाने को पाता है वहीं जबरन खा लेता है। जो व्यक्ति शक्तिशाली होने के कारण सबको तंग करे उसके प्रति व्यंग्य में कहते है। तुलनीय : भोजी सरकारी ना हांड है; पंज० सरकारी सांड ए।

सर गंजा और दो जोड़ा कंघी—दे० 'आंख एक भी नहीं कजरौटा नौ'।

सरग से गिरी खजूरे अंटकी—(क) एक दुःख से छुट्टी मिली कि दूसरे का आगमन हो गया। कभी-कभी अप्रत्याशित रूप से बाधा पड़ जाने पर भी कहा जाता है। (ख) किसी काम के बड़ी-बड़ी जगहों से ठीक होकर किसी छोटी जगह में थोड़ी रुकावट के कारण न होने पर भी यह कहावत कहते हैं। तुलनीय : अव० सरग से गिरा खजूर मा अटका है; मरा० स्वर्गातून पडला, खजुरीत अडकला; पंज० असमान तो डिगी ते खजूर बिच अड़की।

सरदारी का डंडा अटका है—जो अपनी पुरानी प्रतिष्ठा की जगह-जगह दुहाई देते है उनके प्रति यह कहावत कही जाती है। वर्तमान को देखकर ही कुछ कहना या करना अच्छा होता है।

सरदी का मारा पनपता है, अन्न का मारा नहीं—यदि ठण्ड लग जाए तो मनुष्य उसे सहन कर लेता है और इलाज करके स्वास्थ्य-लाभ भी कर लेता है किन्तु यदि उसे भूखा रहना पड़े तो उसका शरीर दुबला होता जाता है और वह उसकी कमी को सहज पूरी करके अपना पहले जैसा स्वास्थ्य नहीं बना पाता। आशय यह है कि यदि अन्न न मिले तो मनुष्य का जीना दूभर हो जाता है। तुलनीय : अव० सरदी का मारा पनपत है, अन्न का मारा नाहीं पनपत।

सरधा ढाल जो पहले खावे, वाके टोट कबहुँ न आवे—जो अपनी सामर्थ्य के अनुसार रहता है उसे कभी अभाव नहीं होता।

सरधा लागै कइलों भतार, अहो निकलल जात के चमार—बड़े शौक से पति किया वह भी चमार मिला। अर्थात् जल्दी में किए हुए काम का बुरा परिणाम निकलता है। जो कुछ भी करना हो सोच-समझ कर और देख भाल कर करना चाहिए।

सर पटकने पर भी मौत नहीं आती—भूमि पर सर पटकने पर भी मौत नहीं आती। (क) जो व्यक्ति संसार की कठिनाइयों, दुःखों और असुविधाओं से निराश हो चुका हो वह स्वयं के प्रति कहता है। (ख) चाहने से कुछ नहीं होता। तुलनीय : राज० माठा मारयां ही मौत को आवे नी; पंज० सिर पटक नाल वी मौत नईं आंदी।

सर पर घूमे बाँध कफ़न, आज नहीं तो कल दफ़न—जो सिर पर कफ़न बांधकर घूमता है वह आज नहीं तो कल दफ़ना दिया जाता है। जो व्यक्ति सदा मरने-मारने को तैयार रहता है वह अधिक दिन तक जीवित नहीं रहता। तुलनीय : भोजी सरे मौत लेई न फेरे-जणांग हूँ कर वो।

सर पर बोझ बसंत की गीत—सिर पर बोझ लेकर बसंत के गीत गाते हैं। कष्ट में फँसा या भार से लदा व्यक्ति जब प्रसन्नता में मग्न रहे या आनन्दित होकर गाना गाए तो कहते है। यह दोनों चीजें उल्टी है। सर पर बोझवाले व्यक्ति को ग़मगीन होना चाहिए। तुलनीय : पंज० सिर उते भार अते बसंत दे गीत।

सरबस जाता जो दिखे तो आधा दीजे बखंट—जहाँ पूरी हानि की आशंका हो वहाँ आधा बाँट लेना चाहिए। अर्थात् जो कुछ मिल जाए उसी से संतोष कर लेना चाहिए।

सरबस देखिस जात, त आधा देइस बाँट—ऊपर

देखिए।

सर-सर हस न होत, बाजि गजराज न दर दर – प्रत्येक तालाब में हंस नहीं होता और प्रत्येक स्थान पर हाथी और घोड़े नहीं होते। अर्थात् प्रत्येक जगह गुणी तथा बलवान नहीं होते।

सरवस्ती और लक्ष्मी में बैर है – विद्वान प्रायः निर्धन और धनवान प्रायः विद्या विहीन होता है। प्र० जेहि सुरसति लच्छि किन होई। – जायसी।

सरस्वती और लक्ष्मी में नहीं पटती—ऊपर देखिए।

सरस्वती लक्ष्मी में बैर है दे० 'सरस्वती और लक्ष्मी···'।

सर हथ खेती पर हथ बान –व्यापार दूसरे से कराया जा सकता है पर खेती अपने हाथ से ही अच्छी तरह हो सकती है।

सराफ़ की थैली में खोटा-खरा एक – सराफ़ की थैली में असली और नक़ली सभी सिक्के समान होते हैं। अर्थात् (क) कुलीन घर में नीच का संबंध हो जाता है तो वह भी कुलीन ही समझा जाने लगता है। (ख) भले के आश्रय में रहनेवाले बुरे भी भले समझे जाने लगते हैं।

सराय का कुत्ता हर मुसाफ़िर का यार—सराय में रहने वाला कुत्ता प्रत्येक मुसाफिर का दोस्त होता है। सेंत-मेंत के खानेवाले सभी के दोस्त न बनें तो उनका काम न चले। मुफ़्तखोरों के प्रति यह कहावत कही जाती है। तुलनीय : पंज० सरां दा कुत्ता हर मुसाफिर दा यार।

सराय में डेरा बाज़ार में भीख – सराय में रहते हैं और बाजार से भीख माँगकर पेट पालते हैं। जिन व्यक्तियों का कोई घर-द्वार नहीं होता या जो व्यक्ति परिश्रम करके नहीं कमाते उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : गढ़० महल तो आसरो पाटणी की भीख, पंज० सरा विच डेरा बजार विच भीख।

सराहल धिया डोम घरे जायँ –नीचे देखिए।

सराहल बहुरिया डोम घर जाय – बहू को सराहने से नतीजा खराब होता है। (ख) सराहने से या बहुत प्रशंसा करने से मनुष्य खराब हो जाता है। तुलनीय : छत्तीस० सहराय बहुरिया डोम घर जाय।

सराही खिचड़ी दाँत मे चिपके – अधिक सराही (पकाई गई) खिचड़ी दाँतों में चिपकने लगती है। (क) जब कोई व्यक्ति अपनी प्रशंसा सुन-सुनकर गर्व का अनुभव करे और बुरे काम करने लगे तो उसके प्रति कहते हैं। (ख) जिसकी अधिक तारीफ़ की जाती है वह खराब हो जाता है। तुलनीय : राज० सराही खीचड़ी दाँता चढ़ै।

सराही बहुरिया डोम घर जाय—दे० 'सराहल बहुरिया ···'।

सराही लड़की डोम घर जाय—दे० 'सराहल बहुरिया ···'।

सरेसे का टट्टू बना फिरता है – निकम्मे आदमी को कहते हैं (सरेसा-दरभंगे जिले का एक परगना है जहाँ के टट्टू बड़े प्रसिद्ध हैं)।

सर्दी अमीरों की, गर्मी ग़रीबों की – शीत ऋतु धनवानों के लिए अच्छी होती है क्योंकि वे उसमें बढ़िया गर्म कपड़े पहनते हैं और पौष्टिक भोजन करते हैं। किंतु ग्रीष्म ऋतु निर्धनों के लिए अच्छी होती है क्योंकि उसमें उन्हें न कपड़े की चिंता करनी पड़ती है और न ही मकानादि की; तुलनीय : राज० सीयालो सोभागिया।

सर्व बलवतः पथ्यम् –शक्तिशाली के लिए सब कुछ उपयुक्त है। बलवान जो चाहे कर सकता है।

सर्व. स्वार्थं समीहते—सभी अपना स्वार्थ चाहते हैं।

सर्व तपै जो रोहिणी, सर्व तपै जो मूर; परिवा तपै जो जेठ की, उपजै सातों तूर – यदि रोहिणी, अच्छी तरह तपे, मूल पूरा तपे और जेठ की प्रतिपदा भी पूरा तपे तो सातों प्रकार के अन्न उत्पन्न होंगे। अर्थात् अन्न अधिक होगा।

सर्वनाशे समुत्पन्ने अर्द्ध त्यजति पण्डित – सर्वनाश की स्थिति आने पर बुद्धिमान् मनुष्य आधे का त्याग कर देता है। अर्थात जहाँ कुछ भी मिलने की उम्मीद न हो, वहाँ जो कुछ मिल जाए वही ठीक है।

सर्वापेक्षा न्याय – बहुत से लोगों का जहाँ निमंत्रण होता है वहाँ यदि कोई सबसे पहले पहुँचता है तो उसे सबकी प्रतीक्षा करनी होती है। इस प्रकार जहाँ किसी काम के लिए सबका आसरा देखना होता है वहाँ यह उक्ति कही जाती है।

सर्व गुणा काञ्चनमाश्रयन्ति – धन के अधीन सभी गुण रहते हैं। (क) धनवान में सभी गुण प्रवेश कर लेते हैं। (ख) हर गुणी को धनवान का आश्रय ग्रहण करना पड़ता है। (ग) केवल धन प्राप्त हो जाने से भी मनुष्य गुणी समझा जाता है और उसकी इज़्ज़त होने लगती है।

सलामत रहे बहू जिसका बड़ा भरोसा है—बहू कुशल-पूर्वक रहे क्योंकि उस पर बहुत कुल निर्भर है। जिसका लड़का मर जाता है उसे ऐसा कहकर लोग धैर्य दिलाते हैं।

सलाह न शुद, बला शुद्ध -जब किसी का अच्छा कहा या किया भी अपने लिए बुरा या कष्टकर सिद्ध हो जाए तब कहते है।

सलीम शाह की दाढ़ी बड़ी या शेरशाह की - छोटी-छोटी बातों के लिए लड़ने पर व्यंग्य में कहा जाता है। लड़के प्रायः छोटी-छोटी बातों पर लड़ा करते है, उनके लिए भी इसका प्रयोग होता है। सचमुच यह कोई लड़ाई की बात थोड़े है कि सलीमशाह और शेरशाह में किसकी दाढ़ी बड़ी थी।

सवाब न अज़ाब, कमर टूटी मुफ़्त में न ऐसा करने से पुण्य हुआ और न पाप, हानि अलबत्ता हो गई। व्यर्थ और निष्फल परिश्रम पर कहा गया है।

सवारी की सवारी ज़नाना साथ घोड़ी की सवारी पर मजाक में कहा जाता है।

सवारी गाजियो, नै सापुरस रो बोलियो एल्यो नहीं जाय सवेरे की गर्जना और सत्पुरुष की बातें निष्फल नहीं जातीं।

सवाल अज़ आसमाँ जवाब अज़ रीसमाँ —नीचे देखिए।

सवाल दीगर जवाब दीगर पूछा जाय कुछ और जवाब मिले कुछ तब ऐसा कहते है। तुलनीय: अव० सवाल कुछ जवाब कुछ।

सवामन अटकावे ब्याह सवामन का अर्थ ब्याह में नेग लेनेवाले जैसे नाई, ब्राह्मण आदि से होता है। जब कोई व्यक्ति उस कार्य में जिससे उसको भी कुछ लाभ होनेवाला हो विघ्न उपस्थित करे तो उसके लिए इस लोकोक्ति का प्रयोग करते है। इस लोकोक्ति को 'सवामन के अटके ब्याह' भी कहते हैं।

सवा सेर बीघा साँवां मान, तिल्ली सरसों अंजुरी जान —साँवा सवा सेर प्रति बीघा तथा तिल्ली और सरसों को एक अंजुली प्रति बीघा बोना चाहिए।

सवेरे का भूला शाम को घर लौट आवे तो भूला नहीं कहलाता दे० 'सुबह का भूला...'। तुलनीय: अव० सवेरे के भूला साँझि कै घर लउटै तौ ओका भूला नाहीं कहा जात।

सवेरे का मेह साँझ का मेहमान -सुबह वर्षा का होना और शाम को मेहमान का आना ठीक नहीं होता। तुलनीय: तेलु० मध्याह्न वच्चिन वान सग पोद्दुन वच्चिन चुट्टु।

ससुर को पड़ी हल बैल की, बहू को पड़ी हंसुली तेल की—श्वसुर को हल-बैल की चिंता लगी है और बहू को हंसुली और तेल की। आशय यह है कि सबको अपनी ही आवश्यकता की वस्तु की चिंता होती है।

ससुर घर जमाई कुत्ता, बहन घर भाई कुत्ता —ससुराल में रहनेवाले दामाद की और बहन के घर रहनेवाले भाई की कोई इज्जत नहीं होती। तुलनीय: मेवा० पाँच कोस को आवण जावण, दस कोस का घी घलावण, बीस कोस माथा को मांड, घर जमाई गढ़का की ठोड़।

ससुर जो पकड़े साड़ी, तो बहू क्यों छोड़े दाढ़ी ससुर जब बहू की साड़ी पकड़ता है तो बहू उसकी दाढ़ी क्यों छोड़े? जब कोई व्यक्ति किसी का अपमान करने पर कमर बाँध ले और दूसरा भी उससे बदला लेने का मौका प्राप्त रखे तो उसके प्रति कहते हैं जो दूसरे का अपमान करता है तो दूसरा भी उसका अपमान करता है। तुलनीय: गढ़० सौरो नि रख साड़ी त ब्वारी क्या रख दाड़ी; पंज० सोहरा जे फड़े साड़ी ते बौटी कयों छड्डे दाड़ी।

ससुरार सुख की सार जो रहे दिना दो चार ससुराल आनंद की जगह है पर वहाँ बहुत कम दिन रहना चाहिए। या ससुराल आनंद की जगह तभी है जब वहाँ थोड़े दिन रहा जाए।

ससुरारि पियारि लगी जब तें, रिपु रूप कुटुंब भये तब ते जब ससुराल प्रिय हो जाती है तब अपना कुटुंब शत्रु लगने लगता है।

ससुराल का रहना, गधे का चढ़ना ससुराल में रहना गधे की सवारी करने के समान है। आशय यह है कि ससुराल में रहना ठीक नहीं होता। तुलनीय: पंज० सोहरियां नित रैणा खोते उते चढ़ना; ब्रज० ससुरारि को रहनो और गधा को चढ़बो बराबर है।

ससुराल जाती को छिनाल कोई नहीं कहता —मायके में सभी बुरे काम करनेवाली भी यदि ससुराल चली जाए तो उसे कोई छिनाल नहीं कहता। अर्थात् अच्छी जगह पर यदि बुरा आदमी भी रहे तो उसे कोई बुरा नहीं कहता। तुलनीय: राज० सासरै जावती नै छिनाल कोई को कैवैनी।

ससुराल तो जाना ही है आज क्या और कल क्या? ससुराल तो लड़की को भेजना ही पड़ेगा, दुखी होने से क्या होगा। आनेवाली विपत्ति का सामना करने के लिए तत्पर होनेवालों के प्रति ऐसा कहते है। तुलनीय: गढ़० पर घर यूं त्यूं जाण, दुख सा जीक क्या पौण; पंज० सोहरे ते जाणा ही है अज की कल की।

ससुराल नहीं है यहाँ अपनी ससुराल न समझो। जो व्यक्ति दूसरों पर बहुत रुआब जमाए उसको ठीक रास्ते पर

लाने के लिए कहते हैं। तुलनीय : राज० सासरो कोनी, भाया।

ससुराल में ब्याह, बीबी परसनेवाली—ससुराल में विवाह है और परस रही है अपनी पत्नी। जिस व्यक्ति को किसी कार्य को करने का अवसर और साधन एक साथ ही प्राप्त हो जाए उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० नानाणे ब्यांव माँ पुरसणारी, जीमो बेटा रात अधारी।

ससुराल में सुभाव ना, पीहर में समाय ना—ससुरालवालों को अच्छी नहीं लगती और पीहर में रह नहीं सकती। (क) जो स्त्री ससुराल तथा पीहर दोनों को तंग करती हो उसके प्रति कहते हैं। (ख) सभी से लड़ने-झगड़नेवालों के प्रति भी व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : माल० सासरा में सभाय नी और पीयर मे समाय नी।

ससुराल में सौ बंधन—ससुराल में पति-पत्नी को आपस में मिलने-जुलने नहीं दिया जाता। जहाँ किसी कार्य के करने में अनेक बाधाएँ उपस्थित हों, वहाँ ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भीली सासरी ना हतरे कायदा।

ससुराल सुख का सार—ससुराल में ही सुख मिलता है। ससुराल की प्रशंसा में कहते हैं। तुलनीय : राज० सासरो सुख वासरो, पंज० सौहरे सुख दा सार; ब्रज० सुसरारि सुख को आधार।

ससुराल सुख की सार, जो रहे दिन दो-चार—जो दो-चार दिन तक ही ससुराल में रहता है उसे काफी सुख मिलता है। आशय यह है कि जो थोड़े दिन तक ससुराल में रहता है उसे वहाँ बहुत इज्जत मिलती है। तुलनीय : ससुरार सुख की सार, जो रहे दिना दुइ चार; कौर० ससुरार सुख की सार, दिन दो चार, फिर जूतियों की मार; राज० सासरो सुखवासरो दो दिनां रो आसरो, हरि० ससुरार सुख की सार, जो रये दिना दो चार, ब्रज० ससुरार सुख की सार, पै रहे दिना दो चार, जो रहे मास पखवार हाथ में खुरपी बगल में फार; सं० श्वसुर गृह परमसुख त्रिरात्रमधिकमसमानः, बंग० असार संसारे सार श्वशुरेर घर, गुज० सासरा, सुखवासरा ने बे घड़ीना आसरा, तीजें दहाडे रहे तो खासडा; मरा० सासुरवाडी नि चार दान दिवस गोडी।

सस्ता ऊँट महँगा पट्टा—ऊँट सस्ता है और उसका पट्टा महँगा। जितने का माल न हो उससे ज्यादा उसमें अन्य खर्च आने पर कहा जाता है। तुलनीय : पंज० सस्ता ऊँट महँगा पट्टा।

सस्ता गेहूँ घर-घर पूजा—जब कोई चीज सस्ती हो जाती है तो उसका उपयोग घर-घर में होने लगता है। तुलनीय : मग० मैथ० सस्ता गहूम घर-घर पूजा; भोज० सस्ता गोहूँ घर-घर पूजा।

सस्ता चावल मौसी का सराध—चावल सस्ता मिलने पर मौसी का श्राद्ध करते हैं। सस्ती या मुफ्त में मिलने वाली वस्तु का जब कोई दुरुपयोग करता है तब उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : छत्तीस० सस्ती के चाँउर, अउ मौसी के स्राध।

सस्ता भाड़ा और तीर्थ-यात्रा—एक तो तीर्थयात्रा और दूसरे सस्ता भाड़ा, तो और क्या चाहिए ? जब कोई लाभ का काम कम खर्च में हो जाए तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० सस्तो भाड़ो, पोकर जात।

सस्ता रोवे बार-बार, महँगा रोवे एक बार—सस्ता खरीदनेवाला बार-बार रोता है क्योंकि सस्ती चीज़ अच्छी नहीं होती पर महँगी चीज खरीदने में अच्छा रहता है क्योंकि वह टिकाऊ होती है इसी कारण उसका खरीददार केवल खरीदते समय अधिक दाम देने के कारण दुखी होता है, फिर नहीं। तुलनीय : अव० सस्ता रोवै बेर बेर, महँगा रोवै एकै बेर, हरि० सस्ता रोवै बार बार महँगा रोवै एक बार; राज० सस्तो रोवै बारबार, महँगो रोवै एक बार, गढ़० सस्ती रोव बार-बार महँगी रोव एकी बार, माल० सस्ता रोवे बार बार महंगा रोवे एक बार; मरा० स्वस्त मिळते तें रोज रोज बिघडते, महाग मिळते ते कोन्हातरी बिघडते; पंज० ससता टुटे बार-बार महँगा टुटे एक बार।

सस्ता रोवै बार-बार महँगा रोवै एकै बार—ऊपर देखिए।

सस्ता हँसावे, महँगा रुलावे—चीज़ों की सस्ती पर लोग प्रसन्न रहते हैं और महँगी पर दुःखी हो जाते हैं। तुलनीय : अव० सस्ता हँसावै, महँगा रोवावै; पंज० ससता हसावे महँगा रुआवे।

सस्ती भेड़ की टाँग उठाकर देखते हैं—अर्थात् सस्ती चीज को लोग बार-बार परखते हैं क्योंकि उसमें दोष होने की विशेष आशंका रहती है। तुलनीय : अव० सस्ती भेंड़ी टांग उठाय कै देखी जात है; पंज० ससती पेड दी लत चुक के देखदे हन।

सस्ती भेड़ की पूंछ सभी उठा-उठा देखें—ऊपर देखिए। तुलनीय : कौर० सस्ती भेड़ की पूछ, सभी ठा-ठा देक्खे।

सस्ते को देखभाल कर लेना चाहिए—सस्ती चीज प्रायः खराब होती है अतः उसे लेने में बहुत सावधानी बरतनी

चाहिए। तुलनीय : अव० सस्ता का देख गुन कै लेय; पंज० ससते नूँ देख सुण के लेना चाइदा है।

सहकी गौरैया भाड़ में लगावे घोंसला --मन बढ़ने के कारण जब कोई अनुचित कार्य करता है तब उसके प्रति कहते है।

सहज को सब हाथ बढ़ांय --सहज काम करने के लिए सभी तैयार हो जाते है या सहायता देने को खड़े हो जाते है। कठिन काम को कोई भी नही करना चाहता। तुलनीय : भीली-- हीदा माते हारा चाटू दिये।

सहज पके सो मीठा जो काम आसानी से हो जाए वही अच्छा है। तुलनीय गढ़० ठंडो पाको मिट्ठो होओ; भीली--धीरा नी चतरी ने आगत ना पालल्या; मरा० नैसर्गिकरीत्या पिकते तें गोड होते।

सहजाइल कुतिया मुँह चाटे--मुँहलगी कुतिया मुँह तक चाट लेती है। अर्थात् नीचों के साथ बहुत मेल-जोल नही रखना चाहिए नही तो वे औचित्य की सीमा पार कर लेते है।

'सहजो' नीचे कारने, सब कोउ पूजै पाँव --सहजो बाई कहती है कि नम्रता के कारण ही सब कोई चरण की पूजा करते है। अर्थात नम्र व्यक्ति ही सर्वत्र पूजे जाते है।

सहता सहे, न सहता छाती दहे --जो बात सही जा सकती है वह सही जाती है और जो असह्य होती है उसे छाती सहती है। अर्थात् बुरा या भला जो अपने ऊपर आ जाता है सुखी या दुखी होकर सहना ही पड़ता है।

सहनाई का बजाना और सत्तू का फाँकना एक साथ नही होता --(क) दो विपरीत कार्य एक साथ नहीं हो सकते। (ख) दो कार्य साथ-साथ नही किये जा सकते।

सहरी खाय सो रोज़ा रक्खे मुसलमान लोग रमजान के दिनों में बहुत सुबह ही खा लेते है। उस सुबह के खाने को सहरी कहते है। इसे खाकर ही तो लोग रोजा रहते है। कहावत का आशय यह है कि जो किसी चीज का आनंद लेगा उसे उससे सबंधित कष्ट भोगना ही पड़ेगा।

सहसा करि पछिताय बिमूढ़ा मूर्ख व्यक्ति कार्य जल्दी में करके उसे बिगाड़ देता है और फिर पछताता है, किसी भी काम में जल्दी नही करनी चाहिए।

सहस्र गोपी एक कन्हैया हजारों गोपिया है और एक कृष्ण। एक पद के लिए जब बहुत से प्रार्थनापत्र आते है या एक ही वस्तु के जब अनेक प्रत्याशी होते है तो कहते है। तुलनीय : फ़ा० यक अनार सद बीमार।

सहिजन अति फूले-फलै डार-पाति की हानि --सहजन के अधिक फूलने फलने से उसकी टहनियाँ और पत्तियाँ ही नष्ट होती है। अति करनेवाले का नाश हो जाता है। तुलनीय : बुंद० अन की फूली गोजनों डार पात मे जाय।

सही गए सलामत आए जो कुछ कमाने-धमाने विदेश जाकर, खाली हाथ लौटता है उसी से कहकर व्यंग्य करते है।

सहेजा घड़ा बाजार में फूटे - सहेज कर रखा घड़ा बीच बाजार फूटता है। जिस वस्तु को बहुत सम्हाल कर रखा जाए या बहुत अधिक देख-भाल की जाए वह शीघ्र ही नष्ट हो जाती है। तुलनीय : राख० साँभी हाँडी चौवट फूटे है।

सहेली कानी को प्यार करे किंतु कानी ईर्ष्या करे --जब कोई किसी के साथ अच्छा व्यवहार करे किंतु वह उसके साथ बुरा व्यवहार करे तब व्यंग्य में ऐसा कहते है।

सहै तौन लहै जो सहता है वही प्राप्त करता है। अर्थात् संतोषी और सहनशील व्यक्ति ही लाभ प्राप्त करते हैं।

साँच कहे सह मारा जाय, झूठ कहे तो जग पतियाय --सत्य कहनेवाले को संसार मारता है और झूठ कहनेवाले का विश्वास करता है। यह आज की उलटी रीति है।

साँच कहें सो पनही पावे, झूठा बहुविधि पदवी पावे - आज के संसार में सच्चे की बेकद्री और झूठे की इज्जत होती है।

साँच कहे सो मारा जाय, झूठ कहे सो लड्डू खाय/पूजा जाय सत्य कहने पर लोग बुरा मान बैठते, और झूठे की सब जगह पूजा होती है। जमाने के बेढंगेपन पर कहा गया है। तुलनीय : पंज० सच आखे ओह मारा जावे चूठ आखे ओह लड्डू खावे, ब्रज० साच कहैगा मार्यो जाय, झूठ कहे सो पुज्यौ जाय।

साँच को आँच कहाँ या साँच को आँच नहीं --सच्चे को किसी का भय नही रहता। सच्चे का कोई कुछ नही बिगाड़ सकता। तुलनीय : अव० साच को आच नाहीं; राज० साचनै आंच कोनी, स० सत्ये नास्ति भयं क्वचित्; मरा० सत्याला मरण नाही, मल० सत्यत्तिनु नाशमिल्ल; अ० Honesty is the best policy.

साँच को आँच नहीं ऊपर देखिए।

साँचहूँ ताको न होय भलो, जो कहो नहीं मानत चार जने की -- जो चार आदमियों या पंच का कहना नहीं मानता उसका कभी भला नही होता।

साँचो कहे खुश रहे -जो लोग सत्य बोलते है वे सदा सुखी रहते है। झूठे बोलनेवालों के शिक्षार्थ यह कहावत

कही जाती है।

सांची बात गोपालहिं भावै—सच्ची बात को ही भगवान पसंद करते हैं।

सांची बात सदुल्ला कहें, सबके मन से उतरे रहें—आशय यह है कि खरी बात कहनेवाला सबकी निगाहों में बुरा होता है। तुलनीय : अव० साँची बात सदुल्ला कहै, सबके मन से उतरे रहैं।

सांची होत न भूत मिठाई—सत्य कोई कल्पना की चीज़ नहीं है। सत्य सत्य ही है।

सांचे का रंग रूखा—सच्ची बात प्रायः प्रिय नहीं होती।

सांचे गुरु का बालका, मरे न मारा जाय—सच्चे गुरु का शिष्य अवश्य तर जाता है या अमर हो जाता है। तुलनीय : पंज सचे गुरु दा चेला मारण नाल वी न मरे।

सांचो कहो न मानहीं, झूठों जग पतियाय—दे० 'साँच कहे मंह मारा...'।

सांझ के मरे को कहां तक रोवे?—दे० 'शाम के मरे को कहां तक...'।

सांझ जाय और भोर आय, वह कैसे न छिनाल कहाय—यदि स्त्री शाम को कहीं जाया करे और रोज़ सवेरे आया करे तो उसे छिनाल या चरित्रहीन अवश्य कहेंगे। जब किसी चीज के लक्षण स्पष्ट रहें तो वैसा कहना स्वाभाविक है और सत्य भी।

सांझी चाली सांझ से, माथ बसंता पूत, माधो भी तो जात हैं बांध कमर के सूत—जब कोई कहीं फँसा हो पर धोखा देकर साफ निकल जाए तो कहते हैं। इस संबंध में एक कथा है : माधो नामक किसी व्यक्ति पर बहुत क़र्ज हो गया। सांझी उसी की स्त्री थी तथा बसंता लड़की थी। लोग उसे भागने नहीं देते थे। एक बार होली आई तो एक शाम को उसने अपनी स्त्री और पुत्री को भेज दिया और दूसरे दिन स्वयं होली का स्वांग बनाकर इस मसल को कहता हुआ निकल गया। उसके जाने के बाद लोगों ने उसकी कही लोकोक्ति का अर्थ समझा। महाजन लोग पछताते रह गए।

सांझे खेती, बिहाने गाय—फ़सल शाम को और गाय सुबह देखने में अच्छी लगती है।

सांझे दे सकारे पावे, पूत-भतार के आगे आवे—दान-पुण्य के माहात्म्य पर कहते हैं। (ख) बुरे कर्म करने वालों के प्रति भी कहते हैं। आशय यह है कि जो जैसा कर्म करता है उसका वैसा परिणाम उसे या उसके संबंधियों को अवश्य मिलता है। तुलनीय : अव० साँझै देय सकारे पावै, पूत भतार के आगे आवै।

सांझे धनुक सकारे मोरा, यह दोनों पानी के बोरा—यदि शाम को इंद्रधनुष तथा प्रातः मोर बोलता दिखाई दे तो समझना चाहिए कि वर्षा खूब होगी।

सांझै धनुक बिहानै पानी, कहें घाघ सुनु पंडित ज्ञानी—घाघ ज्ञानी पंडितों से कहते हैं कि यदि शाम को इंद्रधनुष दिखाई दे तो प्रात अवश्य वर्षा होगी।

सांझै से परि रहती खाट, पड़ी भड़े हरि बारह बाट; घरू आँगन सब घिन-घिन होइ, घग्घा गहिरे देव डबोइ—जो स्त्री शाम ही से चारपाई पर पड़ जाती है, जिसके घर के सब बर्तन तितर-बितर पड़े रहते हैं और जिसके घर के आँगन में मक्खियां भिनभिनाती रहती हैं, घाघ कहते हैं उस स्त्री को गहरे पानी में डुबो देना चाहिए, अर्थात् मार डालना चाहिए।

सांटे की सगाई और ब्याजू रुपए का क्या एहसान?—बदले का ब्याह (जिसमें दो आदमी एक दूसरे को अपनी बहिन देते हैं) और ब्याज के रुपए में किसी का एहसान नहीं है। आशय यह है कि जब उपकर्ता का भी अपना कोई स्वार्थ हो तो वह उपकार नहीं है अत: उसके लिए कृतज्ञ होने की क्या आवश्यकता?

सांटे की सगाई सेंधे तेल की मिठाई सेंधे—बदले का ब्याह और तेल की मिठाई दोनों ही खराब हैं।

सांड-सांड लड़ें, खेत का नाश—सांड लड़ते तो हैं आपस में किंतु दूसरों के खेत बरबाद हो जाते हैं। जब दो बड़ों के झगड़े में छोटों की हानि हो तब कहते हैं। तुलनीय : राज० गोधा गोधा अड़बड़ै'र बांठारो खोगाळ।

सांड-सांड लड़ें बाड़ का भुरकस होत—ऊपर देखिए।

सांड़ों की लड़ाई में बाड़ी का नुकसान—दे० 'सांड-सांड़ लड़ें...', तुलनीय : बुंद० लड़ें सांड़ बारी को झुरकन।

सांप और चोर की बहुत धाक होती है—आशय यह है कि दोनों से लोग बहुत डरते हैं।

सांप और चोर दबे पर चोट करते हैं—बिना दबे ये दोनों चोट नहीं करते अर्थात् स्वयं भयभीत रहते हैं।

सांप का काटा पानी भी नहीं मांगता—अर्थात् (क) वह तुरंत मर जाता है। (ख) जिसे दुष्ट मनुष्य बहका देता है वह उचित रास्ते का अनुसरण नहीं करता।

सांप का काटा रस्सी से डरता है—एक बार किसी से खतरा उठाने के बाद लोग उस जैसी व खतरा पैदा न करनेवाली चीज से भी डरते हैं। तुलनीय : असमी एबेलि सापे

खाले दोवा देलि ले जुत् भय; पज० सप दा बड़या रस्सी तो डरदा है; अं० A burnt child dreads the fire; Once bitten twice shy.

साँप का काटा सोवे, बिच्छू का काटा रोवे - बिच्छू के काटने से आदमी रोता है और साँप के काटने से मर जाता है। तुलनीय : राज० सांपरो सोवै बिच्छूरो रोवै; पंज० सप दा बड्या सोवे बिच्छू दा बड्या रोवे।

साँप काटना छोड़ दे पर फुफकार न छोड़े—सर्प यदि काटना छोड़ दे तब भी फुफकारना नहीं छोड़ता। अर्थात् (क) दुष्ट दूसरों का बुरा भले न करे पर दूसरों के प्रति द्वेष अवश्य रखता है। (ख) शत्रु नुक़सान भले न करे पर शत्रुता अवश्य रखता है। अर्थात् साँप, दुष्ट तथा शत्रु से होशियार रहना चाहिए है। तुलनीय : अव० साप काटब छोड़ देत है पै फुफकारब नाहीं छोड़त; पज० सप बड़ना छड़ देवे पर फूकर मारन नई छड्डे।

साँप का चक्कर और बाघ का फेरा- साँप और बाघ ये दोनों देखते-ही-देखते अदृश्य हो जाते हैं। जब कोई व्यक्ति बहुत ही चुस्त या फुर्तीला हो तो उसके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० बाग का फेर अर सर्प का घेर।

साँप का दाँव नेवला जाने साँप का प्रत्येक दाँव नेवला जानता है, इसीलिए वह साँप से कभी हारता नहीं है जब किसी दुष्ट मनुष्य को उससे बड़ा वश में कर ले या मार डाले तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : माल० सांपरा री गत बदगुण्डो जाणे।

साँप का बच्चा सँपोलिया (क) साँप के पोवे में साँप से भी अधिक जहर होता है। (ख) दुश्मन का लड़का दुश्मन से भी खतरनाक होता है, अतः उसे लड़का समझकर छोड़ना न चाहिए। तुलनीय : अव० सांपे के बच्चा सपोलिया, माल० पकड़ा रो भुजंग वे, पज० सप दा बच्चा सपोलिया।

सांप का बिल भी नहीं मिलता, जहाँ भाग जाऊँ— कोई बहुत लज्जित या दुखी होकर अपने जीवन का अन्त करना चाहता है तब ऐसा कहता है। आशय यह है कि समय इतना प्रतिकूल है कि मरने के लिए साँप के बिल जैसी छोटी जगह भी नहीं मिलती जिसमें छुपकर अपने जीवन का अन्त कर लूं।

साँप का बेटा, क्या छोटा क्या मोटा—साँप का बेटा तो साँप ही होता है छोटा हुआ या मोटा। आशय यह है कि शत्रु या दुष्ट छोटा या निर्बल भी हो तो भी उससे सावधान रहना चाहिए। तुलनीय : राज० सरपरै बच्चैरो काँई छोटो काँई मोटो ?

साँप का मन्तर न जाने, बिल में हाथ डाले- बिना बचाव का मार्ग ढूंढ़े किसी खतरनाक काम के करने पर कहते हैं।

साँप का रिश्ता कैसा ? - साँप का किसीसे कौन-सा रिश्ता? दुष्ट व्यक्ति सबंधियों या मित्रों का लिहाज कभी नहीं करते और अवसर पाते ही स्वार्थवश उन्हें नुकसान पहुँचा देते हैं। तुलनीय : राज० सांपाँरै किसा सागा ?

साँप का सिर ही कुचलते हैं क्योंकि जहर उसके सिर में होता है और उसको कुचलने से उसके डसने की आशंका खत्म हो जाती है। इसका आशय यह है कि बुरे को बुरी तरह मारकर उसे हमेशा के लिए खत्म कर देना चाहिए।

साँप की तो भाप भी बुरी - बुरे की और चीज़ों की कौन कहे हवा भी बुरी होती है।

साँप की मौसी कौन ? साँप अपनी मौसी किसको मानता है ? अर्थात् किसी को नहीं। नीच व्यक्ति केवल स्वार्थ सिद्ध करते हैं वे रिश्तेदारी या मित्रता की परवाह नहीं करते और अवसर मिलते ही नाश कर देते हैं। तुलनीय : राज० सरपारै किसी मासी ? पज० सप दी मासी कूण ?

साँप की केंचली झाड़ दो (क) किसी रोगी के अच्छे होने पर कहते हैं। (ख) किसी के फटे-पुराने कपड़े छोड़कर नवीन कपड़े पहनने पर भी कहते हैं। तुलनीय : अव० सांपे कै केंचुली अस हरियाय दिहेन।

साँप के काटे को चैन कहाँ जिसको साँप ने डसा हो वह चैन से कैसे बैठ जाय, उसे तो अपने प्राणों का भय सताता है। जब तक साँप के डसे का उपचार आरम्भ न हो जाए उसे चैन नहीं पड़ता। अर्थात् जिस पर विपत्ति आती है। वह उसका उपाय करने के पश्चात् ही आराम से बैठता है। तुलनीय : राज० सापरै खायो नैं नी अर्दानवार कद आवै ?

साँप के नीचे का बिच्छू बहुत ही अत्याचारी व्यक्ति के लिए कहते हैं। बिच्छू स्वयं काट ले तो भारी कष्ट होता है और वह बिच्छू जो साँप के नीचे पला हो और भी अधिक खतरनाक होता है।

साँप के पाँव पेट में होते हैं - दुष्ट की दुष्टता प्रकट नहीं होती।

साँप के विष की लहर मरते दम तक आती है—दुष्ट द्वारा की गई बुराई आयुपर्यन्त खलती है।

साँप को दूध पिलाने से केवल विष ही बढ़ता है (क) दुष्ट को कभी भी उत्तम शिक्षा नहीं देनी चाहिए, नहीं तो वह भी वहाँ जाकर बुरा उपदेश बन जाती है। (ख) अच्छी चीज

भी बुरे के पास जाकर बुरी हो जाती है। संगति का प्रभाव अवश्य पड़ता है। तुलनीय : अव० साँप को दूध पिआउब है; माल साँप को कलरोई दूध पावे तो भी जेर उगलेगा; सं० भुजगाना पय पानम केवलम विष वर्धनम।

साँप छछूंदर का बैर—ऐसा बैर जिसमें बलवान का ही हर हालत में नुकसान हो। दे० 'भई गति साँप छछूंदर केरी।'

साँप टेढ़ा चले पर बाँबी में सीधा—स्वतंत्र रहने पर दुष्ट सदैव टेढ़े चलते है किन्तु पराधीन होने पर सीधे रहते है।

साँप नहीं जो पिटटी चाटकर रहें—हर व्यक्ति या प्राणी अपना भोजन ही करता है दूसरे की पसंद ही वस्तु उसे नहीं भाती।

साँप निकल गया लकीर को पीटते रहो—समय बीत जाने के बाद व्यर्थ में परिश्रम करनेवाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : छत्तीस० साँप निकल गे लकीर ल पीटत रह; अव० साप निकरगा रस्ता पीटौ; राज० साप नीकलग्यो लीक पीट है।

साँप निकल गया लकीर पीटने से क्या लाभ?—ऊपर देखिए।

साँप मरे, न लाठी टूटे—(क) काम भी सिद्ध हो जाए और अपना कुछ नुकसान भी न हो तो कहते है। (ख) युक्ति से काम निकालने पर भी कहते है। तुलनीय : अव० साप मरे न लाठी टूटे, राज० साप मरै न लाठी टूटै, तेलु० करं विरग-कुंडा पामनु चावालि; मरा० साँप नर मरावा नि लाठी नर मोडू नये, ब्रज० स्याप मरै न लाठी टूटै।

साँप मरे न, लाठी टूटे—जिस प्रयोजन से कोई काम किया वह भी सिद्ध न हो उलटे अपनी हानि भी हो तो कहते है।

साँप मरे न लाठी टूटे—अर्थात् न तो साँप मरे न लाठी टूटे। जब दोनो विपक्षियों में सुलह हो जाती है और किसी की कोई हानि नहीं होती तो कहते है।

साँप सिर पर बूटी पहाड़ पर—जब दुःख देनेवाला समीप और रक्षा करनेवाला दूर हो तो कहते है।

साँप हर जगह टेढ़ा मगर बांबी में सीधा जाता है—दे० 'साँप टेढ़ा चले पर...'।

साँपे क पोवा कयथे क पूत, दुनो मिलि भुइंहार सपूत—भूमिहार के लड़के की शरारत या कटुता की बराबरी साँप और कायस्थ दोनों के बच्चों का कटुता मिलान पर हो सकती है। आशय यह है कि भूमिहार साँप और कायस्थ से भी बढ़कर घातक होता है।

साँपों की मौसी का क्या विश्वास?—बुरे के संबंधी भी बुरे होते हैं अतः उनका विश्वास नहीं करना चाहिए। तुलनीय : हरि० सांपा की मौस्सी की के सारा?

साँपों की लड़ाई में जीभों की लपालप—आशय यह है कि जब मूर्ख व्यक्ति परस्पर लड़ते-झगड़ते है तो उलटी-सीधी बातें ही करते है। तुलनीय : अव० साँपन कै झगरा मा जिभिअन के लपालप।

साँपों की सभा में जीभों की लपालप—जब बहुत-से बेकार मनुष्य कहीं जमा होते है तो व्यर्थ की बकवास ही करते है।

साँपों के ब्याह में जीभ की लपालपी—ऊपर देखिए। तुलनीय : हरि० सांप्पां के ब्याह मे, जीब्भां की लपालपी; पंज० सप्पा दे व्याह विच जीभां दी लपालपी, ब्रज० स्यांपन के ब्याह में जीभ की लपालप।

साँभर जाय अलोना खाय—साँभर नामक नमक की झील के पास जाकर भी बिना नमक का खाना खाते है। जो चीज़ जहाँ बहुतायत में होती हो वहाँ रहकर उसी चीज के बिना कोई कष्ट पाए तो कहते है। तुलनीय : राज० साँभर जाय अलूणी खाय, मरा० सांभरला जाते नि अलणी जेवतो।

साँभर में नोन का टोटा—ऊपर देखिए। तुलनीय : राज० साँभर मे लूणरो टोटो।

साँभर में पड़ा और गला—साँभर झील में जो भी चीज़ गिर जाती है वह गलकर नमक बन जाती है। अर्थात् व्यक्ति जैसे संग में पड़ता है बन-बिगड़कर वैसा ही हो जाता है। तुलनीय : राज० सांभर मे पड़ै सो सांभर हुवै, फ़ा० हर कि दर काने-नमक रफ़्त नमक शुद।

साँवा दे के पूत पढ़ाए सोलह दूनी आठ—यदि साँवा देकर लड़की को पढ़ाया जायेगा तो वह आठ दूनी सोलह न जानकर सोलह दूनी आठ ही जानेगा। तुलनीय : कनौ० कोदी देकै लला पढ़ाए, सोरा दूनी आठ।

साँवाँ साठी साठ दिन, जब पानी बरसै रात दिन—यदि रात-दिन वर्षा हो तो साँवाँ और साठी धान (भदई) साठ दिन में तैयार हो जाते है। तुलनीय : राज० सावाँ साठी साठ दिन, जब बरखा होरवे रात-दिन।

साँवे का चावल क्या छोटा क्या बड़ा?—साँवे का चावल चाहे छोटा हो या बड़ा साँवे का ही कहलाता है। आशय यह है कि जो जिस जाति का होता है वह उसी जाति का कहलाता है चाहे वह ग़रीब हो या अमीर।

साँस का क्या, आए तो आए न आए तो न आए—

श्वास का क्या विश्वास, आए या न आए। अर्थात् जीवन का कोई ठिकाना नहीं है, इसलिए जो कुछ खाना-पीना या आनंद उठाना हो वह समय रहते क्यों न उठा लिया जाए। तुलनीय : राज० सासरो सांई विसास आवेर आवेई कोयनी।

साँस के साथ आस है दे० 'जब तक साँसा तब···'।

साँस नकारा कूँच का बाजत है दिन रैन मौत का कुछ ठीक नहीं कि कब आ जाए। साँस जो चल रही है उसी का नक्कारा है जो दिन-रात हमें आगाह करता रहता है।

साँसा भला न सोस का, और बात भला न कांस का — एक क्षण भर की भी चिंता काम (एक घास) की बनी हुई रस्सी के समान बुरी है। अर्थात् दोनों खराब है, इनसे बचना चाहिए।

साइत से सुनार भला किसी कार्य का मुहूर्त देखने की अपेक्षा मौका मिलते ही उसे कर लेना अच्छा होता है। तुलनीय : ब्रज० साइत ते सुनार भलो।

साईं अपने चित्त की भूलि न कहिये कोइ अपने हृदय की बात किसी से भूलकर भी नहीं कहनी चाहिए।

साईं अपने भ्रात को कबहुं न दीजै त्रास अपने भाई को कभी भी दुख नहीं देना चाहिए।

साईं अवसर के पड़े, को न सहै दुख द्वन्द्व —समय पड़ने पर कौन दुख नहीं सहता ? अर्थात् सभी सहते है।

साईं इस संसार में भाँति-भाँति के लोग, सबसे मिलके बैठिए नदी नाव संयोग जैसे नदी पार करते समय संयोग से नाव में लोग इकट्ठे हो जाते है उसी प्रकार संसार में सब लोग संयोग से इकट्ठे हो गए है पता नहीं फिर मिलें या नहीं अतः सब।। आपस में मिल-जुल कर अर्थात् मेल में रहना चाहिए।

साईं की कुदरत है भगवान की लीला है। ईश्वर की ही सारी सृष्टि है। तुलनीय : राज० सांई री कुदरत है; पंज० सांई दी लीला है।

साईं के सौ खेल है ईश्वर की रीति विचित्र है न जाने कब वह क्या करे ?

साईं को साँच प्यारा, झूठ का मालिक न्यारा – ईश्वर सच्चे को प्यार करता है, झूठे का ईश्वर तो कोई दूसरा है, अर्थात् उसका कोई स्वामी या ईश्वर नहीं है।

साईं घोड़न के अछत गदहन पायो राज—घोड़ों के रहते हुए गदहों को राज्य मिला है। अर्थात् योग्य व्यक्ति के होते हुए अयोग्य या अपात्र व्यक्ति को सब कुछ मिल गया है। आज के संसार पर व्यंग्य है।

साईं तेरा आसरा, छोड़े जो अनजान, दर-दर होड़े माँगता, कौड़ी मिले न दान जो ईश्वर में विश्वास नहीं रखता उसे माँगने पर भीख भी नहीं मिलती। (होड़े भीख)।

साईं मोर आप विरूझल लोग दिहल पोचारा मेरा मालिक तो वैसे ही नाराज है दूसरे लोग उसे और भड़का कर नाराज कर रहे है। जो कोई पहले रुष्ट हो और दूसरे उसे शह देकर और भी रुष्ट कर दे तो कहा जाता है।

साईं राज बुलंद राज, पूत राज भूत राज विधवा स्त्री का यह कथन है। क्योंकि जब तक पति रहता है तब तक तो उसकी सारी इच्छाएँ पूरी होती है पर उसके बाद पुत्र के राज में वह बात नहीं रह जाती। पति के बराबर पुत्र अपनी माता से प्यार नहीं करता यद्यपि माता उसे बहुत प्यार करती है।

साईं सब संसार में मतलब को व्यवहार इस संसार में सारा व्यवहार स्वार्थ या मतलब का है। बिना स्वार्थ का कोई भी व्यवहार नहीं।

साईसी इल्म दरियाव है, जामे सौ सौ बमसुआ लगत हैं—साईस के कार्य में भी बहुत हुनर की आवश्यकता है। अर्थात् सभी पेशों में हुनर की आवश्यकता होती है।

साईसों का अकाल मुंशियों की बहुतायत साईसों की कमी और लिखने-पढ़नेवालों की अधिकता है। जब शिक्षित जनों की अधिकता हो और छोटे-मोटे काम करनेवाले या कारीगरों की कमी हो तो कहा जाता है।

साक्ष: पुरुष: परेण चेन्नीयते नूनमक्षिभ्यां न पश्यति—यदि कोई आँखोंवाला आदमी किसी अन्य व्यक्ति द्वारा ले जाया जाता है तो यह स्पष्ट है कि वह अपनी आँखों से नहीं देखता।

साख गए फिर हाथ न आए विश्वास या इज्जत के जाने पर, फिर उसका लौटना संभव नहीं। तुलनीय : अव० साख गये फिर हाथ नाहीं आवत।

साख लाख से अच्छी लोगों का अपने पर विश्वास हो, या लोगों में अपनी इज्जत हो यह अपने पास लाख रुपया होने से भी अच्छा है। (साख का अर्थ इज्जत और व्यापार आदि में विश्वास होता है)।

साखवाले का काम कभी न रुके –जिस व्यक्ति की सबमें साख हो उसका कोई काम धन बिना नहीं रुकता। विश्वासपात्र या इज्जतवाला माँगने पर तुरन्त धन, वस्तु आदि पा जाता है। तुलनीय : भीली—हाऊ।री हैसा तो काम हारे।

साग में शोरबा अंडे में पानी, क्यों बीबी पठानी –साग

और अंडे पकाने पर यदि उसमें रस रहता है तो वह अच्छा नहीं होता। किसी के फूहड़पन पर कहा जाता है।

सागर को नहिं पैये पार—समुद्र को कोई पार नहीं कर सकता। बहुत बड़े काम को सिद्ध कर पाना सभव नहीं।

सागर गागर में भर दीनो— बहुत बड़ी बात को थोड़े में कहनेवाले के प्रति कहते हैं।

सागर सीप कि जाहि उलीचे—कहीं सीप से समुद्र का जल उलीचा जा सकता है? कदापि नहीं। अर्थात् छोटे मनुष्य किसी बड़े कार्य को नहीं कर सकते। या छोटे साधन से बड़ा कार्य नहीं किया जा सकता।

सागर सीप को जाय उलीची ऊपर देखिए।

साजन-साजन मिल गए, झूठे पड़े बसीठ झगड़े के बाद दोनों पक्षों में मेल हो जाता है तो झगड़ा करानेवाला बहुत शर्मिंदा होता है।

साजन हम तुम एक हैं देखत ही के होय मन ले मन को तौल ले दो मन कभी न होय—यदि पति-पत्नी एक-दूसरे के मन को तौलकर चलें तो सर्वदा मेल रहता है

साझ, सगाई चाकरी, सब राजी से होय—नीचे देखिए।

साझ, सगाई, चाकरी, राजी ही से होय—ये तीनों काम राजी-खुशी से ही होते हैं, जबरदस्ती से नहीं। तुलनीय: राज० सीर, सगाई, चाकरी, राजी पै को काम।

साझा भला न बाप का, ताव भला न ताप का—साझा चाहे अपने बाप का ही क्यों न हो अच्छा नहीं होता और ताव (गर्मी या रोब) चाहे बुखार का ही क्यों न हो वह भी भला नहीं। अर्थात् न तो किसी का साझा करे और न किसी का ताव सहे। तुलनीय: राज० साझो बापरो ही खोटो।

साझी की नजर फ़सल पर मालिक की नजर सब पर—साझीदार तो फ़सल को ही देखता-भालता है क्योंकि उसका हिस्सा होता है, किंतु खेत का मालिक फ़सल के साथ-साथ खेत, जमीन, लगान आदि की भी चिंता करता है। अर्थात् जिसका किसी वस्तु से जहाँ तक मतलब होता है वह वहाँ तक उससे संबंध रखता है। तुलनीय: भीली—हालिए हूझे खेत न, धणी ए हूज बार न।

साझे का काम उखाड़े चाम साझे का काम चमड़ी उधेड़ देता है। अर्थात् साझे के काम में बड़ी परेशानी हुआ करती है। तुलनीय: अव० साझा का काम उखारै चाम।

साझे का बैल कीड़ा पड़े साझे के बैल में कीड़े पड़ जाते हैं। आशय यह है कि साझे की वस्तु नष्ट हो जाती है। तुलनीय: छत्तीस० साझी के बइला किराके मरै; पंज० साझे दे टग्गे बिच कीड़े पैण।

साझे का माल लबार खाय—साझे का धन, बदमाश और चोर ही खाते हैं। जिस संपत्ति पर किसी एक का अधिकार न होकर बहुत से लोगों का अधिकार होता है वह दूसरों के ही काम आती है, क्योंकि उसकी कोई देख-भाल नहीं करता। तुलनीय: राज० सीरगो धन स्यालिया खाय; पंज० साझे दा माल चोर खाण।

साझे की खेती गदहा खायँ—साझे की खेती को गदहे खा जाते हैं। आशय यह है कि साझे का कार्य ठीक नहीं होता। तुलनीय: ब्रज० साझे की खेती गदहा खाये; पंज० साझे की खेती गदहा खाये।

साझे की खेती सुअर न खायँ—साझे की खेती पर दोनों की निगरानी रहती है अत: उसे सूअर नहीं खा पाता। कई आदमी मिल कर जो काम करते हैं अच्छा होता है। यह लोकोक्ति 'साझे की सूई से गए पर चले' की प्राय: उलटी है। तुलनीय: अव० साझे कै खेती गदहौ न खायँ, पंज० साझे दी खेती सूर न खाण; अं० To make several bites of cherry; Every body's business is no body's business.

साझे की भैंस भूखी मरती है आशय यह है कि साझे की चीज नष्ट हो जाती है क्योंकि उस पर कोई ध्यान नहीं देता।

साझे की माँ को सियार खाते हैं—नीचे देखिए।

साझे की माँ को स्यार खायँ—कई बेटों की माँ को स्यार ही खाते हैं, उसकी दाह-क्रिया नहीं हो पाती। अर्थात् जिस काम के करने की जिम्मेदारी बहुत से लोगों पर होती है वह कभी पूरा नहीं होता। तुलनीय राज० सीरगी माँनै स्यालिया खाय; पंज० साझे दी मा नू गिदड़ खाण।

साझे की माँ गंगा न पावे—जिस स्त्री के कई लड़के होते हैं उसे मरने के बाद गंगा में पहुँचने का भी सौभाग्य प्राप्त नहीं होता। साझे की कोई भी चीज अच्छी नहीं समझी जाती। इस कहावत को लोगों ने बंगाली कहावत 'भागेर माँ गंगा पाय ना' से प्रभावित या अनूदित माना है। तुलनीय: पंज० साझे दी माँ न् गंगा नई मिलदी।

साझे की सूई साँग में चले—दे० 'साझे की सुई सेंगरा पर चले।'

साझे की सूई साँगे में जाती है नीचे देखिए: तुलनीय: छत्तीस० साझी के सूजी साँग माँ जाय।

साझे की सूई सेंगरा पर चले—साझे के काम में बहुत परेशानी होती है और फिर भी वह ठीक से नहीं होता। इस

एक कथा है : एक बार दो आदमियों ने मिलकर एक सूई खरीदी। खरीदकर ज्योंही एक उसे थोड़ी दूर लेकर चला उसे कुछ याद आया और रुक गया। उसने दूसरे से कहा— भाई, यह सूई दोनों आदमी की है तो केवल मैं ही क्यों ढोऊँ ? दूसरे ने मान लिया और उस रत्ती भर वज़न की सूई को ले जाने के लिए एक बड़ा-सा बाँस लाया गया जिसके बीच में सुई बाँधी गई और फिर उस बाँस के एक सिरे को एक और दूसरे को दूसरे साहब अपने कंधे पर लेकर चले। (इस तरह ढोने के काम में लाए जाने वाले बाँस या लकड़ी को सेंगरा कहते हैं)।

साझे की हंडी चौराहे पर फूटे—नीचे देखिए।

साझे की हंड़िया चौराहे पर फूटती है—प्राय: देखा गया है कि साझी वस्तु आपसी छीना-झपटी में नष्ट हो जाती है। आपस में साझा करनेवालों के शिक्षार्थ इस तरह कहते हैं। तुलनीय : माल० पाँती होली भेली; ब्रज० साझे की हंड़िया चौराहे पै फूटै।

साझे की होली चौराहे पर—साझे की होली चौराहे पर जलती है। आशय यह है कि सामूहिक कार्य को करने में कोई विशेष रुचि नहीं रखता। तुलनीय : हरि० साज्झे की होली चुराहे पै ए मंगलै।

साझे की होली सबसे भली—दस आदमी मिलकर जो उत्सव करते है वह अच्छा होता है। पर्व और उत्सव आदि साझे के अच्छे होते हैं। उसमें एक आदमी रहे तो आनंद नहीं आता। तुलनीय : सीररी होली हुव।

साझे के घोड़े को कीड़े खाते हैं—साझे की वस्तु के प्रति लोगों का लगाव कम होता है जिससे वह नष्ट हो जाती है। तुलनीय : मरा० भागीचें घोड़ें किवणानें मेलें।

साझे के देव / देवता को भोग नहीं मिलता—साझे के काम में एक व्यक्ति जिम्मेदारी दूसरे पर डाल देता है और परिणामस्वरूप वह काम पूरी ही नहीं होता। इसी प्रकार साझे के देवताओं को भोग भी नहीं लग पाता। तुलनीय : बंग० भागेर ठाकुर भोग पाय ना।

साझे के बाप को सियार खाते हैं—दे० साझे की माँ को स्यार खाते हैं।'

साझे के बाप को स्यार खाते हैं—दे० 'साझे की माँ को स्यार खाते हैं।' तुलनीय : बुंद० सोंज को बाप लड़इयन खाओ; राज० सीरीरी माँ नै स्यालिया खाय; बंग० भागेर ठाकुर भोग पाय ना; गुज० भाग्यानी भेंस भूखी मरे; मरा० भागीचें घोड़ें किवणानें मेलें; पंज० साझे दे पिउ नूं गिदड़ खांदे हुन।

साझे में मुरौवत क्या—जिस वस्तु पर एक व्यक्ति का अधिकार होता है उसमें तो मुरौवत हो जाती है लेकिन जिस पर कई लोगों का अधिकार होता है उसमें कोई मुरौवत नहीं हो पाती। तुलनीय : सि० शरीकत में मरीकत छाजी (मुरौवत—मरीकत, छाजी = नहीं है)

साठ के सठियाएँ, अस्सी के पगलाएँ—साठ वर्ष की आयु होने पर मनुष्य की बुद्धि मंद हो जाती है तथा और अधिक बूढ़ा होने पर वह प्राय: पागल हो जाता है। जहाँ बूढ़े व्यक्ति अशोभनीय काम करें या किसी को मूर्खतापूर्ण मंत्रणा दें वहाँ कहते हैं। तुलनीय : गढ़० मनखी आयो अस्सी अकल मति गै नस्सी; मनखी आयो साठ, अकल मति गै नाट; ब्रज० साठि के सठ्यामैं, अस्सी के पगलामैं।

साठ कोस पे पानी बारह कोस पे बानी—साठ कोस पर जलवायु और बारह कोस पर बोली में अंतर पड़ जाता है। तुलनीय : राज० साठे कोसे पाणी, बारह कोसे वाणी।

साठ गाँव बकरी चर गई—कोई असंभव या विचित्र घटना घटित होती है तो कहा जाता है। इसकी एक कथा है : एक बार एक जंगल में एक राजा किसी गरीब के यहाँ ठहरे। चलते समय उनकी सेवा से प्रसन्न होकर उन्होंने एक पत्ते पर लिखकर साठ गाँव की माफी का फ़रमान दिया और उसे लेकर दरबार में आने के लिए कहा। राजा के जाने पर उस ग़रीब ने पत्ते को कहीं रख दिया और उसकी बकरी उसे खा गई। बेचारे को बहुत चिंता हुई, साठ गाँव बकरी चर गई थी। वह फिर दरबार में पहुँचा और पूरा क़िस्सा सुनाया। एक मत के अनुसार राजा ने हँसकर कहा कि जब साठ गाँव बकरी चर गई तो जाओ जाने दो, पर दूसरे मत के अनुसार उन्होंने फिर से दूसरा पत्र लिखवा कर दे दिया। तुलनीय : राज० साठ गाँव बकरी चरगी।

साठ पर सठियाए—साठ वर्ष की आयु हुई और मनुष्य की बुद्धि बेकार हुई। प्राय: वृद्धावस्था में बुद्धि कम हो जाती है। तुलनीय : राज० साठी, बुध नाठी।

साठ सास ननद हों सौ माँ की होड़ न इन सों हो—स्त्रियाँ अपनी सास और ननद से बढ़कर माँ को चाहती है। और माँ भी हज़ारों सासों और ननदों से कहीं अधिक उन्हें प्यार करती हैं।

साठा तब पाठा बीसो तब खीसो—पुरुष साठ वर्ष तक काम करने लायक रहते है तथा स्त्रियाँ बीस वर्ष के बाद बेकार हो जाती है।

साठा सो पाठा—(क) साठ वर्ष में पुरुष जवान होता है। (यह कहावत बहुत पुरानी ज्ञात होती है क्योंकि आज-

कल तो 40 वर्ष के बाद लोग वृद्ध हो जाते हैं)। (ख) उत्तर प्रदेश के पूर्वी ज़िलों में यह कहावन पुरुष के बारे में न कही जाकर हाथी के बारे में कही जाती है। वहाँ इसका अर्थ है—हाथी साठ वर्ष पर जवान होता है। तुलनीय : बुंद० जब के बूढ़े अब के जवान, अब के हूंहे और निकाम; ब्रज० साठी सो पाठी।

साठी बुद्धि नाठी—साठ वर्ष का होने पर अर्थात् वृद्ध होने पर बुद्धि नष्ट हो जाती है। बुढ़ापे में लोग उल्टा-सीधा कहने लगते हैं इसलिए ऐसा हैं। तुलनीय : तेलु० अरवै येंड्लइते वरुलु मरुलु।

साठी में साठी करै, बाड़ी में बाड़ी; ईख में जो धान बोवै फूक बाकी दाढ़ी—जो साठीवाले खेत में साठी, कपास के खेत में कपास और ईख के खेत में धान बोता है उसकी दाढ़ी फूंक देनी चाहिए अर्थात् फ़सल अच्छी न होगी।

साठी होवै साठवें दिन, जब पानी पावै आठवें दिन—साठी धान को अगर आठवें दिन पानी मिलता जाए तो वह साठ दिन में तैयार हो जाता है।

साठे पाठे का क्या संग—साठ वर्ष के बूढ़े और नौजवान का क्या संग। तुलनीय : अं० Crabbed age and youth can not live together.

साढ़ू के आगे ससुराल की बरवान—जो व्यक्ति जिस चीज को भली प्रकार जानता हो उसी के आगे उस चीज का वर्णन या उसकी बड़ाई यदि कोई और करे तो कहते हैं। (दो सगी बहनों के पति एक दूसरे के साँढ़ू होते हैं)।

सात की माँ को सियार खायँ—दे० 'साझे की माँ को स्यार खायँ।'

सात खाए, सात लटकाए—सात को खा गए और सात को मारकर लटका लिया है। वीभत्स एवं भयानक रूप धारण कर लोगों को आतंकित करनेवाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : कौर० सात खाये, सात लटकाये।

सात गिहथिन माठा पातर—दे० 'ढेर गिहथिन माठा पातर।'

सात जोगी मठ का उजाड़—दे० 'बहुत जोगी मठ का उजाड़।'

सात दाँत उदन्त को, रंग जो काला होय; इनको कबहूँ न लीजिए, दाम चहै जो होय—काले और उदन्त बैल को तथा जिसके सात दाँत हों कभी न ख़रीदना चाहिए चाहे वे कितने ही सस्ते हों।

सात पाँच की लाकड़ी एक जने का बोझ—थोड़ा-थोड़ा करके बहुत हो जाता है। कई आदमियों द्वारा थोड़ा-थोड़ा दिलाकर एक का उपकार कराने के लिए कहा जाता है। तुलनीय : भोज० सात-पाँच के लाठी, एक आदमी के बोझ; अव० सात पाँच कै लकड़ी एक जने का बोझ; राज० सात-पाँचरी लाकड़ी, एक जणँरो बोझ; गढ़० सात पाँचू की लाठी एक जणा को बोझ; कौर० सात-पाँच की लाकड़ी, एक जणे का बोझा; छत्तीस० सात-पांच के लाकड़ी एक झने का बोझा; मरा० सात पाँचाच्या लाठ्या एका जणाला भार।

सात-पाँच की लाठी एक का बोझ—ऊपर देखिए।

सात पाँच पकुआ न एक गूलर—पकुवा (एक जंगली फल जिसका स्वाद फीका होता है) के बहुत से पेड़ों से गूलर का एक पेड़ अच्छा है। आशय यह है कि बहुत से अयोग्य पुत्रों से एक ही योग्य का होना अच्छा है।

सात पाँच मिल कीजै काज, हारे-जीते नाहीं लाज—दे० 'पंचों मिलता कीजै…'।

सात बार, नौ त्योहार—सात दिनों में नौ त्योहार। हिंदुओं के त्योहारों की संख्या बहुत अधिक होने के कारण व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० सात बार नव तिवार।

सात भाइयों की बहिन भूखी मरे—सात भाई उसे सबकी बहन समझकर एक दूसरे के भरोसे छोड़ देते हैं और वह बेचारी भूखी ही रह जाती है। जिस काम को करनेवाले बहुत से हों वह पूरा नहीं होता। तुलनीय : राज० सात भायाँरी बहन भूखी मरै; मेवा० धणाँ भायाँ की बेन अलूणी रेवे; पंज० सतां परां दी वैण पुखी मरै।

सात मामा का भानजा भूखा ही भूखा पुकारे—बहुत निरीक्षकों के रहने पर प्राय: काम छूट जाता है। जैसे यदि घर में सात मामा हों और भानजा आए तो एक सोचता है कि दूसरा उसे खिला देगा और दूसरा सोचता है कि तीसरा खिला देगा। इसी प्रकार सोचते सभी हैं और खिलाता कोई नहीं, अत: उसे भूखा रहना पड़ता है। तुलनीय : राज० सात मामांरो भाणजो भूखो मरै; पंज० सतां मामियां दा पानजा पुखा ही मरे।

सात मामों का भानजा न्योता ही न्योता फिरै—यदि घर में एक ही सवांग (आदमी) हो और बहुत से रिश्तेदार हों तो उसका प्राय: न्योता देते-देते समय बीत जाता है। तुलनीय : हरि० सात घराँ का भाँणजा न्योता ऐ न्योता फिरै; कौर० सात मामा का भाणजा न्योता-न्योता डोल्लै।

सात मूस खाय कै बिलारी बनी भगतिन—दे० 'सत्तर चूहा खाकर…'।

सात शूर और एक सूअर—सात शूर (वीर) और एक सूअर एक समान बल रखते हैं। अर्थात् सूअर बहुत बलवान

होता है। तुलनीय : भीली —हात हूरा भांजी ने एक हूरों गड़्यो है; पंज० सत वीर इक सूर।

सात सेवात ? धान उपाठ—स्वाति नक्षत्र के सात दिन व्यतीत होने पर धान पक जाता है।

सात सौ चूहे खाके बिल्ली हज को चली —दे० 'सत्तर चूहा खाकर···'।

सात सौत औ इक सौतेला -सात सौतें और एक सौतेला लड़का बराबर होते है क्योंकि वह अकेला ही उन सातों से अधिक दुख देता है। अर्थात् सौतेले लड़के बहुत दुखदायी होते हैं। तुलनीय : गढ़० सात सौत अर एक सौतेलो।

सात हाथ हाथी से रहिए, पांच हाथ सिंगवारे से, बीस हाथ नारी से रहिए, तीस हाथ मतवारे से—हाथी, सींग-वाले जानवर, स्त्री और पागल आदमी से दूर रहना चाहिए।

साते पाँच तृतीया दसमी, एकादसि में जीव; एहि तिथिन पर जोतहु, तौ प्रसन्न हो सीव—सप्तमी, पंचमी, तृतीया, दशमी और एकादशी को खेत में जीव रहता है इस दिन जोतने से शिवजी प्रसन्न होते है।

साथ कोई आय न साथ कोई जाय -मनुष्य अकेला जन्म लेता है और अकेला मरता है।

साथ कौन किसी के जाता है ?— अर्थात् मरने पर कोई किसी के साथ नही जाता। तुलनीय : राज० सागै कुण कैर जावै ?

साथ जोरू खसम का—जोरू और खसम या पति-पत्नी का ही साथ आदर्श साथ है। ये जल्दी अलग नहीं होते। तुलनीय : पंज० जोड़ बौटी अते खसमदा।

साथ तो हाथ का दिया ही चलता है -मनुष्य जो कुछ दान करता है वही आक़बत (परलोक) मे काम आता है।

साथ सोना और मुंह का छिपाना—जिससे किसी भी बात का पर्दा न हो उससे सामान्य बातें छिपाने पर कहते है।

साथ सोना तो मुंह का छिपाना क्या ?—(क) जिससे अपना कोई पर्दा नही उससे साधारण बात नहीं छिपानी चाहिए। (ख) पुराने ढंग के परिवारों प्रमुखतः देहातों में स्त्रियाँ अपने पति के आगे मुँह नही उघाड़ती। पति से पर्दा करने पर यह सुंदर व्यंग्य है।

साथ सो, पेट का दुःख—साथ सोने से पेट का दुख होता है। पति के साथ सोने से ही पत्नी को गर्भ रह जाता है।

साथी ऐसा चाहिए जो सारा साथ निभाए, साथ न उसका कीजिए जो दुख बिच काम न आए—जो कष्ट मे भी साथ दे वही साथी है जो दुःख में काम न आवे उसे मित्र नही बनाना चाहिए या उसका साथ नही करना चाहिए।

साध चले बैकुंठ को बैठ पालकी माँहि, रस्ते में से आए फिर भांग, तमाखू नाँहि —(क) भंग और तंबाकू के प्रेमी इन दोनों के लिए स्वर्ग को भी छोड़ सकते है। (ख) भंग और तंबाकू खानेवाले माधु भी स्वर्ग नहीं जाते, साधारण व्यक्तियों की तो बात ही क्या ?

साध-भगत की करे जो सेवा, पार तुरत हो वाको खेवा —साधुओं की सेवा करनेवाले का बेड़ा तुरत पार हो जाता है।

साध भगत दे जिना असीस सुखी रहे वे बिस्से-बीस—जिन्हें साधु आशीर्वाद देते हैं वे अवश्य सुखी रहते है।

साध भगत हो जिस पर छो, भूल भला न उसका हो—साधु-महात्मा के शाप अवश्य पड़ते है। जिसको वे शाप देते हैं उसका भला नही होता।

साधवो नहि सर्वत्र -सज्जन पुरुष सब जगह नही होते।

साध मे सिद्धि नहीं मिलती -इच्छामात्र से उद्देश्य की पूर्ति नहीं होती। उद्देश्य की प्राप्ति के लिए इच्छा के अतिरिक्त प्रयत्न भी आवश्यक है। प्र० साधन तें सिधि पाइए किबा होइम होइ, जे दिढ़ ग्यान न ऊपजै अहटि मरै जानि कोइ रे। —कबीर

साधु की फटकार बुरी—साधु का शाप सत्य हो जाता है, इसलिए यथाशक्ति उसको नाराज नही करना चाहिए। तुलनीय : भीली— साधू नो फटकारो खोटो।

साधु खुटाई ना करे ना मूरख मो प्रीत—साधु से शत्रुता और मूर्ख से प्रीत कभी न करनी चाहिए।

साधू का बेटा गाँव पर बोझ—जो व्यक्ति कुछ अर्जित न करता हो तो उसकी संतान का पालन गाँववालों को ही करना पड़ता है क्योंकि साधु तो कुछ कमाते नही। अकर्मण्य मनुष्यों की संतान के प्रति कहते है। तुलनीय : माल० बाबा रे छोरो वे ने गाम रो भार।

साधू की जिन संगत कीनी, उन्हें कमाई पूरी कीनी —जो साधु-संत की संगति करते है उन्ही का जीवन सफल है।

साधू को स्वाद से क्या ? —जो सच्चे साधु है वे भोजन में स्वाद या रस नही देखते। साधु होकर जो स्वाद चाहे उसे साधु नही स्वादू समझना चाहिए। तुलनीय : माल० साधु रे कस्यो स्वाद।

साधु जन रमते भले, दाग न लागे कोय—साधु को

रमता होना अच्छा है। एक स्थान पर रहने से बदनामी का डर रहता है।

साधू तो वो ही भला जो कर साधू का भेष, पूजा करता रब्ब की होड़े देश-विदेश—साधू का रूप धर, भगवान की पूजा करता जो देश-विदेश फिरे वही साधू है। (रब्ब= ईश्वर; होड़े=फिरे)।

साधू बच्चे बहुत झूठे थोड़े सच्चे—साधु के बच्चे अधिकांश झूठे ही होते है, सच्चे बहुत कम होते हैं। बहुत कम साधु सच्चे होते हैं।

साधू भूखा भाव का, धन का भूखा नाहि—साधु सच्ची भावना का भूखा होता है, धन का नही।

साधू वही सराहिए जा के हृदयें गाँठ, लड्डू ले भीतर धरे चरणामृत दे बाँट—आज के साधुओं पर व्यंग्य है जो हृदय में गाँठ रखते हैं तथा प्रसाद का लड्डू तो खुद खाते हैं और चरणामृत बाँट देते हैं।

साधू संत कर बैठ जा, वही साधु है ठीक, वाको साधू मत कहो जो घर-घर माँगे भीक—सत्य का पल्ला पकड़ा एक स्थान पर रहकर भक्ति में लीन होनेवाला साधु है। घर-घर भीख माँगने वाला कदापि साधु नही है।

साधू होके कपट जो राखे, वह तो मजा नरक का चाखे—कपटी साधु को नरक मिलता है। तुलनीय : अव० साधू होय के कपट जो करै, तो नरक मा परै।

साधू होकर करे जो चोरी उसका घर है नरक की मोरी—जो साधु चोरी करता है उसे नरक में नहीं नरक की नाली में अर्थात् नरक के भी नरक में स्थान मिलना है।

साधू होकर करे जो जारी उसकी हो दो जग में ख्वारी—साधु होकर जो व्यभिचार करता है वह दोनों लोकों मे कष्ट पाता है।

साधू होकर देवे बुत्ता, उसको जानो पेट का कुत्ता—साधु होकर भी जो धोखा दे वह कदापि साधु नही है। वह तो कुत्ता है जो पेट के लिए इधर-उधर फिरता है।

साधो काम सधापन से कुत्तन काम कुत्तापन से—अपने-अपने स्वभाव के अनुसार सबका अपना अलग-अलग काम होना है।

साधो को क्या सवाद, गुड़ नहीं बताशेही सही—उन बनावटी साधुओं के प्रति व्यंग्य है जो अपने को संसार से विरक्त बतलाते है पर यथार्थत. संसार में लिप्त रहते हैं। (गुड़ से बताशा अधिक स्वादिष्ट होता है)। तुलनीय : हरि० साधानें किसी सवाद गुड़ नहि हो तै पता ग्याह तें काम चला लेंग; राज० साधारै किसा सवाद, बिलोया नहीं तो अणविलोया ही सही; पंज० संतानूं की सवांदा नाल सने भलाई आण दे।

सान खाई सतुआ पका खाई रोटी—सत्तू सानकर खाया जाता है और रोटी पकाकर। किसी वस्तु विशेष का उपयोग एक विशेष रीति से करना चाहिए।

साने सदा सनेह में जीभ न चिकनी होय—जीभ सर्वदा रूखी ही रहती है। (क) बुरे अपना स्वभाव अच्छे वातावरण में भी नहीं छोड़ते। (ख) लाख कोशिश करने पर भी बुरे अच्छे नहीं बनते। तुलनीय : मरा० कितीहि प्रेमाने वागलें तरी कृतज्ञते चा शब्द तोंडावाटे निघेल तर शपथ।

साफ कहना, मगन रहना—स्पष्ट बात कहनेवाला सदा प्रसन्न रहता है और दिल में ही रखनेवाला जलताभुनता रहता है। तुलनीय : राज० साफ कहणा, मगन रहणा; पंज० साफ कैणा मस्त रैणा।

साबित कदम को सब जगह ठाँव—परिश्रमी को किसी जगह भी ठिकाना मिल सकता है।

साबित नहीं कान, बालियों का अरमान—कान तो ठीक नही और बालियाँ पहनना चाहें। जब कोई ऐसी चीज ग्रहण करने या पाने की इच्छा करता है जिसके वह योग्य नही है तो कहते हैं।

सामने कुछ न कहे पीठ में छुरा मारे—कपटी व्यक्ति के प्रति कहते हैं जो सामने मीठी-मीठी बाते करते है और आड़ में षड्यंत्र रचते हैं। तुलनीय : पंज० सामने कुछ नई पिठ बिच छुरी मारे।

सार के सार लबड़ धों धों या लबड़ धू—बहुत दूर के सम्बन्ध जोड़ने पर कहते हैं। (सार= साला, पत्नी का भाई)।

सार पराई पीर का क्या जाने अनजान—एक की तकलीफ़ दूसरा नही जानता।

सारस की सी जोड़ी—बहुत घनिष्ठ और अन्तरंग मित्र। (कहा जाता है कि सारस के जोड़े सदा साथ रहते हैं, यहाँ तक कि उड़ते समय भी अगल-बगल में होकर अपने पंखों को आपस में उलझाए रहते हैं)। तुलनीय : हरि० सारस के सी जोड़ी; पंज० सारस जिही जोड़ी।

सारस को दावत, थाली में खीर—थाली मे से सारस कुछ खा नही सकता क्योंकि उसकी चोंच बहुत लंबी होती है और थाली से कुछ भी उठाया नहीं जाता। जब किसी व्यक्ति से सहायता मिले किंतु उससे लाभ न हो तो उसके लिए कहा जाता है। तुलनीय : गढ़० मेंढ़ा लोण दीने ओंखला डालीक।

सारस पंखि न जियं निनारे—ऐसी किंवदंति है कि सारस पक्षी अपने जोड़े से अलग होकर नहीं जीता। जब कोई व्यक्ति अपने मित्र से, पति पत्नी से या पत्नी पति से अलग होने पर या एक दूसरे की मृत्यु से इतने दुःखी हों कि मृतप्राय होजाएँ तो इस लोकोक्ति का प्रयोग करते हैं। जायसी के यहाँ भी आता है :

एहिं देवस हों चाहित नाहाँ।
चलौं साथ बाहों गले बाँहा।।

सारा खेल तक़दीर का—भाग्य में जो लिखा होता है वही होता है। अपने ऊपर आए सुख-दुख में किसी दूसरे का कोई दोष नहीं। तुलनीय : अव० सारै खेल तकदीर केर है; हरि० तकदीराँ बाजी से; पंज० सारा खेल तकदीर दा।

सारा गाँव जल गया तो काला मेघा पानी दे—जब पूरा गाँव जलकर राख हो गया तो बादल से बरसने को कह रहे है। जब किसी काम के पूरी तरह बिगड़ जाने पर या उसके ठीक होने का समय बीत जाने पर कोई बनाने या ठीक करने जाता है तो कहते हैं। तुलनीय : गढ़० सारा-दिन रयो पोड़ी, पिछवाड़ी दां ल्यायो कमर तोड़ी।

सारा घर जल गया तब चूड़ियाँ पूछीं—ऐसे ओछे व्यक्ति के संबंध में कहते हैं जो अच्छे वस्त्र या आभूषण पहनकर लोगों को दिखाने की इच्छा करे और उससे अपना ही नुकसान कर ले। इस पर एक कहानी है : किसी स्त्री ने सोने की चूड़ियाँ पहनी परन्तु जब किसी ने उन्हें देखा ही नहीं जो प्रशंसा करता इसलिए उसने घर में आग लगा दी। जब लोग आग बुझाने आए तो वह अपने हाथों को फैला-फैलाकर बताती कि इधर भी पानी डालो, इधर भी बुझाओ। ऐसा करते में किसी की दृष्टि उसकी चूड़ियों पर पड़ी तो उसने पूछा ये सोने की चूड़ियाँ तुमने कब पहनीं? इस पर उसने यह लोकोक्ति कही।

सारा जाता देख के आधा दीजे बाँट—यदि अपना पूरा जा रहा हो और दूसरे को आधा दे देने से वह बच जाए तो आधा हिस्सा दे देना ही उचित है। क्योंकि ऐसा करने से अपना आधा तो बच जाता है। तुलनीय : पंज० सारा जांदा देख अद्दा देओ बंड।

सारा धड़ देख नाचै मोरवा, पाँव देख लजाय—मोर अपने शरीर को देखकर खुश होकर नाचता है लेकिन जब पैरों को देखता है तो लज्जित हो जाता है क्योंकि मोर का पैर बहुत भद्दा होता है। जब किसी को केवल एक दोष या घर में एक के बुरे रहने के कारण बुरा बनना पड़े लेकिन वैसे हर तरह से सुखी और ठीक हो तो कहते है।

सारा धन जाता देखिए, तो आधा दीजिए बाँट—'सारा जाता देख के...'। तुलनीय : सं० सर्वनाशे समुत्पन्ने अर्द्ध त्यजति पण्डितः।

सारा नरबदा फिर दी, कुआँ देख कर डर दी—जंगल में फिरती रही तो कुछ नहीं और कुआँ जैसी साधारण चीज को देखकर डरने लगी। स्त्रियों के त्रिया चरित्र पर कहते हैं। (नरबदा = जंगल)।

सारा बन काटा हँसते, झाड़ी के लिए हाय-तोबा—पूरा बन तो हँसते-खेलते काट दिया और एक झाड़ी काटने के लिए हाय-तोबा मचा रहे है। जब कोई व्यक्ति अधिकांश काम को तो ठीक से कर दे और जब थोड़ा-सा रह जाए तो शोर-शराबा करे या कोई झगड़ा खड़ा कर दे तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : गढ़० सारी ढेबरी मूंडी पुछड़ा की दौं धीण; पंज० सारा जंगल हसदे बड्या झाड़ी लई हाय तोबा।

सारा यश तो मीराबाई ले गई, तुम सब साधु क्या करोगे?—मीरा ने संसार त्यागकर स्वयं को ईश्वर में विलीन कर दिया तभी उनका नाम संसार-भर में विख्यात हुआ, किन्तु सभी साधु ऐसा नहीं कर सकते। आजकल के साधु जो केवल नाम और पहनावे से ही साधु होते है उनके प्रति व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : भीली – मीरांबाई काम करी ने नाम कीद, तो हारा बावा थाइने हूँ करो।

सारा शहर जल गया बीबी फ़ातमा को खबर नहीं—ऐसे स्वार्थी मनुष्य के प्रति कहा जाता है जिसे अपने पास-पड़ोस की कुछ भी खबर नहीं रहती।

सारी उमर पीस के भी ढकनी में ही रखा—उम्र-भर पीस कर ढकनी में ही रखती रही, उससे अधिक कभी हुआ ही नहीं। जो व्यक्ति जीवन भर परिश्रम करके भी कुछ जमा न कर पाए या कंगाल रहे तो उसके प्रति कहते है। तुलनीय : राज० सारी उमर पीस्यो'र ढकणी में उगार्यो।

सारी उमर भाड़ ही झोंका—भाग्यहीन मनुष्य को कहते है। तुलनीय : अव० सगरिउ उमिर भारै झोंका।

सारी उम्र काठ में रहे चलते वक़्त पाँव से गए—अभागे मनुष्य को कहते हैं जीवन-भर जेल में थे। बुढ़ौती में छूटे तो पाँव में लक़वा मार गया। अर्थात् कुछ भी नहीं कर सके।

सारी उम्र का क्वाँरा, सपने में फेरे ले—आजीवन अविवाहित रहनेवाला स्वप्न में ही फेरे लेता है। जिसकी इच्छाएँ स्वप्न और कल्पना में ही पूरी होती है, वास्तव में नहीं उसके प्रति कहते है। तुलनीय : कौर० सारी उमर

का क्वारा, रातों फेरे ले; पंज० सारी उमर कवांरा रिहा सुखने बिच फेरे लिते।

सारी कुड़ियाँ मर गयीं नानी से राह चले—क्या संसार की सारी जवान औरतें मर गईं जो तुम नानी के पीछे लगे हो? अनुचित एवं अशोभनीय कर्म करने वाले के प्रति कहते हैं।

सारी ख़ुदाई एक तरफ़, जोरू का भाई एक तरफ़—ईश्वर की दी हुई सभी चीज़ें एक तरफ हैं और साला एक तरफ़। अर्थात् संसार में साला ही सबसे प्यारा होता है। तुलनीय : अव० सारी खोदाई एक तरफ, जोरू का भाई एक तरफ; पंज० सारी खुदाई इक पासे जोरु दा परा इक पासे।

सारी ख़ुदाई एक तरफ़ फ़ज़ले-इलाही एक तरफ़—ईश्वर सर्वशक्तिमान है, उससे बढ़कर कोई नही है।

सारी चोट निहाई के सिर—घर में जो बड़ा होता है उसी के सिर पर सब बोझ पड़ता है। तुलनीय : अव सारी चोट निहाईनमा लागी।

सारी देग में एक ही चावल टटोला जाता है—एक ही चावल टटोलकर देखा जाता है कि पक गया है या नही। अर्थात् (क) नमूने को देखकर सारे माल का अनुमान लग जाता है। (ख) एक ही बात से मन का सारा हाल जाना जाता है। तुलनीय : अव० सारी बटुई मा एकै चाउर टोवा जात है; माल० चोखा रो कण दबाई ने देखणो; मरा० भाताच्या हंडी तलि एकच शीत चाँचपतात।

सारी रात कहानी सुनी और सुबह को पूछा जुलेखा औरत थी या मर्द—मूर्ख पर कहते हैं जो सुनकर भी किसी बात को नही समझता।

सारी रात जलाया तेल, नहीं हो सका फिर भी मेल—सारी रात चिराग़ जलाकर इन्तज़ार करता रहा फिर भी भेंट न हो सकी। अधिक परिश्रम के बाद भी जब सफलता नही मिलती तब कहते है।

सारी रात पीसा और उठाया ढकनी में—दे० तुलनीय : मेवा० आखी रात पीस्यो ने ढांकणी में सावर्‌यो।

सारी रात मिमियानी, एकौ बच्चा ना बियानी—सारी रात चिल्लाई मगर एक भी बच्चा पैदा नहीं किया। जो शोर-गुल बहुत करते है पर काम कुछ भी नही उनके प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

सारी रात मिमियानी और एक ही बच्चा बियानी—शोर-गुल ज्यादा और काम बहुत थोड़ा हो तो कहते हैं। अधिक परिश्रम का थोड़ा लाभ मिलने पर भी कहा जाता है। तुलनीय : अव० सगलिउ रात चिचियानी, पै एकै बच्चा बियानी; मरा० सारी रात्रकेकाटली नि एकच पोर व्याली।

सारी रात रोते रहे, मरा एक भी नहीं—सारी रात रोने पर भी कोई नहीं मरा। (क) जब कठिन परिश्रम विफल हो जाए तो उसके प्रति कहते हैं। (ख) बिना किसी काम के ही बहुत बड़ा आडंबर और शोर-गुल किया जाए तो उसके प्रति भी व्यंग्य से कहते हैं। (ग) किसी व्यक्ति को कोई बात बहुत अच्छी तरह समझा दी जाए किंतु वह उसे तुरंत ही भुला दे तो उसके प्रति भी व्यंग्य से कहते हैं। (घ) जब कोई किसी को शाप देता है या कोसता है पर उसका कुछ भी नही बिगड़ता तब भी कहते हैं। तुलनीय : राज० रात्यूं रोया पण मर्‌यो एक ही कोनी; ब्रज० सबरी राति रोये एक ऊ न मर्‌यौ।

सारी रामायण सुनकर पूछा कि सीता किसकी बहू थी—नीचे देखिए। तुलनीय : राज० सारी रामायण सुण ली और पूछै सीता केंकी भू।

सारी रामायण सुनकर पूछे कि सीता किसकी जोरू थी—मूर्ख को कहा जाता है जो सब कुछ सुनने पर भी बात नही समझता। तुलनीय : हरि० सारबन रात रामलीला देखी तड़कै है बोल्लया 'सीता' कूण था; राज० सगली रामायण सुण'र पूछी कं सीता कुण ही; कन्नड़—बेलतनक रामायण केठि सीतेगु रामनिगु एनु संबंध एंद हागे।

सारी रामायण हो गई सीता किसका बाप—ऊपर देखिए। तुलनीय : कनौ० रात भर रामायन पढ़ी, सबेरे पूछौ कि सीता किनके पिता हते; तेलु० रामायणमता विनि रामुडिकि सीत एमि कावलेनु अनि अडिगिनटलु; या सात्रंता रामायण विनि पोहुन्ने सीतकु रामुडेमि कावालन्नुट्लु।

सारी रामायन हो गई सीता किसकी जोय—मूर्ख को कहते है जो सब कुछ सुनने के बाद भी किसी चीज़ को नही समझ पाता। तुलनीय : भोज० कुछ रमायन हो गइल सीता केकर मेहरारू; राज० सारी रामायण सुणली और पूछै सीता कंकी भू।

सारी सुइयाँ निकाले वह कोई नहीं, जो आँख की निकाले वह सब कुछ—दे० 'आँखों की सुइयाँ निकालनी···'।

सारे डील/बदन में ज़बान ही हलाल है—केवल ज़बान से ही सत्य बोला जा सकता है। जैसे सारे डील में ज़बान ही हलाल है, और तुम्हारी ज़बान को झूठ बोलने से फ़ुरसत नहीं। फिर तुम सच बोलो भी तो कैसे?

सारे नगर में केवल तीन, धुनक्कड़ या बुनक्कड़ या

भुनक्कड़— नगर-भर में केवल तीन हैं, धुनियाँ, जुलाहा या भड़भूंजा। जब कोई व्यक्ति नीचों की ही संगति करता है और एतराज़ करने पर कहता है कि आखिर किसके साथ रहें तो यह कहा जाता है।

सारे बनियों की एक मत—कंजूस सभी एक जैसे होते हैं।

सालगराम की बेटियां जैसी छोटी वैसी बड़ी—एक जात और एक स्तर तथा एक योग्यता के आदमियों में शारीरिक छोटाई-बड़ाई का कोई अन्तर नहीं, छोटे-बड़े दोनों एक से हैं।

सालगराम जैसे सोए वैसे बैठे - हर एक परिस्थिति में जो एकरस रहे उसके लिए कहते है।

साला तीरथ ससुर तीरथ तीरथ छोटी साली, मातु पिता की लाज न कीजे तीरथ है घरवाली- ऐसों पर कहा जाता है जो घरवालों की फ़िक्र न करके ससुरालवालों का ही कहना मानते है और उन्हीं की फ़िक्र करते हैं। तुलनीय : अव० सार तीरथ, ससुर तीरथ, तीरथ छोट सारी, माई बाप कै लाज न कि हेन तीरथ है घरवाली।

साली साधी निहाली, सरहज पूरी जोय—साली अपनी आधी स्त्री है और सरहज पूरी। इन दोनों से हँसी मज़ाक़ कर सकते है। साली-सरहज से मजाक किया जाता है इसीलिए कहते हैं।

साली छोड़ सास से मज़ाक़--साली से मजाक न करके सास से ही मज़ाक़ करते है। जो व्यक्ति मूर्खतापूर्ण काम करे उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० साली छोड़ सासू सूं ही मसकरी; पंज० साली छड के सँस नाल मजाक; ब्रज० सारी छोड़िकें सास ते मजाक।

साली निहाली चहिए ओढ़ी चहिए बिछाली--साली के साथ हर प्रकार की हँसी-ठिठोलकर सकते है।

साले का साला पटाक साला – दे० 'मैंने के टैंने, टैंने के टिटोर'। तुलनीय : अव० सारे का सारा पटाक सार; पंज० साले दा साला पटाक साला; ब्रज० सारे कौ सारौ, पटाक सारौ।

साले के ससुर और ससुर के लबड़ धौं-धौं—जब कोई बहुत दूर का नाता जोड़ कर अपने किसी स्वार्थ को साधने के लिए अपना बने तब कहते हैं। कायस्थों और मुसलमानों में यह बात विशेषत: पाई जाती है। भोजपुरी में 'मैंने के टैंने, टैंने के टिटोर' इसी को कहते हैं। तुलनीय : अव० सार कै ससुर, औ ससुर कै लबड़ धौं-धौं।

साले बिन ससुराल कैसी?—साले के बिना ससुराल का कोई मूल्य नहीं होता क्योंकि बहनोई की आवभगत साले ही करते हैं। तुलनीय : राज० साले बिना कांयरो सासरो; मेवा० जाबना बना खेत, ने साला बना सासरो आछो नी लागे।

साथ की साथ भला और रात का घात भला—संग धनवान का अच्छा होता है और खोटे कार्यों के लिए रात का समय अच्छा होता है।

साव के पछुवाँ दिन दुइ चार, चूल्ही के पाछा उपजै सार -यदि श्रावण में दो-चार दिन भी पछिवाँ हवा चल जाए तो चूल्हे के पीछे भी अनाज होता है अर्थात् इतनी वर्षा होती है कि सूखी जमीन में भी खेती होती है।

सावन उख में भादों जाड़, बरखा मारे ठार कछाड़ -- यदि सावन में गर्मी और भादों में ठण्डक मालूम हो तो वर्षा अधिक होगी।

सावन का सपूत क्या, भादों का कपूत क्या--दो वस्तुओं में जब विशेष अंतर न हो तब ऐसा कहते है। तुलनीय : गढ़० क्या सौण सपूत, क्या भादौं कपूत।

सावन की ना सोत भली जातक की न पीत भली — सावन में दही खाना और तुरन्त के पैदा हुए लड़के से प्रीति जोड़ना ठीक नहीं होता। एक हानिकर होता है और दूसरा दुःखकर होता हैं, क्योंकि उसका अभी क्या ठीक जाने रहे जाने मर जाए।

सावन की-सी झड़ी --वर्षा से इतर ऋतु में जब मूसलाधार पानी बरसता है तो कहते हैं। तुलनीय : अव० सावन कै अस झरिआर; पंज० सौण जिही झड़ी।

सावन के अन्धे को हरा ही हरा सूझता है --जो सावन में अन्धा हो जाता है उसे सब कुछ हरा-हरा ही दिखाई देता है क्योंकि उसकी स्मृति वही सावन की हरियाली की बनी रहती है। यह उस पर व्यंग्य है जो खुद सुखी होकर संसार को भी सुखी समझता है। तुलनीय : भोज० सावन क अन्हरा के हरिअरे हरिअर सूझेला; मैथ० अन्हरा के लउके हजारी बाग; अव० सावन क हरियरी सूझी है; राज० सावणरै आंधैने हर्यो-ही-हर्यो सूझै; या सावण रे (जायोड़े) गधै नैं हरियो-हरियो दीसै; गढ़० जैका आँखा सौण का मैना फूटो न तैं हरी-ही-हरी सूझो; या सौण का अंधा कू हरी-हरी सूझ; बुंद० बसकारे के आदरे को हरांई हरो सूजत; ब्रज० सावन के अन्धे को हरा-हरा ही दीखता है; हाड़० सावण का चरया न हरयोई-हरयांई दीस; छत्तीस० सावन मां आंखी फूटिस, हरियर के हरियर; पंज० सौण दे अन्ने नू हरा ही हरा लबदा है।

सावन के रपटे और हाकिम के डपटे की कुछ शर्म नहीं—सावन में सभी लोग फिसलते हैं अत: फिसलने में कोई शर्म नहीं है। इसी प्रकार हाकिम की डाँट में कोई शर्म नहीं है क्योंकि वह सभी को डाँटता है। तुलनीय : अव० सावन कै रपटे औ हाकिम कै डपटे का कुछ डेर नाही।

सावन केरे प्रथम दिन उगत न दीखै मान; चार महीना बरसै पानी, याको है परमान—श्रावण बदी प्रतिपदा को यदि सूर्य निकलता हुआ न दिखाई दे तो चार माह तक पानी का बरसना निश्चित समझना चाहिए।

सावन कैसा साँथरा पूस माघ कैसा पाँखड़ा—सावन में चटाई (साँथरा) और पूस-माघ के महीनों में (पाँखड़ा) बेकार है।

सावन कृष्ण एकादशी, गर्जि मेघ घहरात, तुम जाओ पिय मालवै, हम जावें गुजरात—श्रावण बदी एकादशी को यदि बादल गरजते रहें तो हे स्वामी तुम मालवा जाओगे और मैं गुजरात जाऊँगी। अर्थात् वर्षा तनिक भी न होगी और अकाल पड़ेगा इसलिए दूसरे प्रदेशों में जाकर रहना ही हितकर होगा।

सावन कृष्ण पक्ष में देखौ, तुल को मंगल होय बिसेसौ; कर्क राशि पर गुरु जो जावै; सिंह राशि में सुक सुहावै; ताल सो सोखै बरसै धूर; कहूँ न उपजै सातो तूर—सावन के कृष्ण पक्ष में यदि तुला पर मंगल हो, कर्क राशि पर बृहस्पति हो, सिंह राशि पर शुक्र हो तो तालाब सूख जाएँगे, धूल की वर्षा होगी और कहीं भी कोई अन्न उत्पन्न नहीं होगा।

सावन क्या सपूत, भादों क्या कपूत—दे० 'सावन का सपूत क्या…'।

सावन खीर जो खाय सकारे, मिरग डाल कुरचालें मारे—सावन की खीर खाने से लोग हिरन की तरह उछलते है। अर्थात् स्वस्थ हो जाते हैं।

सावन घोड़ी भादों गाय, माघ मास जो भैंस बियाय, कहे घाघ यह साँची बात, आप मरै कि मलिकै खाय—घाघ कहते हैं कि यदि सावन मास में घोड़ी, भादों माह में गाय, माघ में भैंस बच्चा दे तो या तो वे होकर मर जाएँगी या उनका स्वामी मरेगा।

सावन घोड़ी भादों गाय, माघ मास में भैंस बियाय, जी से जाय या खसमें खाय—लोगों का विश्वास है कि अगर ये जानवर इन महीनों में बच्चा देते है तो या तो खुद मर जाते है या उनके मालिक मर जाते हैं। तुलनीय : अव० सावन घोड़ी भादौ गाय, माघ मास या भइंस बिआय जिउ से जाय आय खसमै खाय।

सावन तो सूतो भलो, ऊभो भलो अषाढ़—द्वितीया का चन्द्रमा सावन में सोता हुआ अच्छा है और आषाढ़ में खड़ा हुआ।

सावन पछिवां भादों पुरवा, आसिन बहे इसान, कातिक कंता सींक डोलै, गाजै सबै किसान—हे कंत! यदि श्रावण के मास में पछुवाँ, भादों में पूर्वा, आश्विन में ईशान दिशा की हवा चले तो कार्तिक में हवा न चलेगी और किसान सुखी रहेंगे।

सावन पहली चौथ में जो मेघा बरसाय, तो भाखै यों भड्डली, साख सवाई जाय—यदि सावन बदी चौथ को वर्षा हो तो भड्डरी कहते हैं कि उपज सवा गुनी होगी।

सावन पहली पंचमी, जो बाजे बहु बाय, काल पड़े सहु देस में, मिनख मिनख नै खाय—सावन बदी पचमी को यदि तेज़ हवा चले तो देश में ऐसा अकाल पड़ेगा कि मनुष्य मनुष्य को खा जायगा।

सावन पहली पंचमी, जोर की चलै बयार, तुम जाना पिय मालवा, हम जावै पितुसार—यदि श्रावण बदी पंचमी को हवा तेज़ बहे तो हे स्वामी! तुम मालवा जाओगे और मैं पिता के घर जाऊँगी अर्थात् बहुत बड़ा अकाल पड़ेगा।

सावन पहली पचमी, झीनी छाँट पड़ै, डंक कहै हे भड्डली, सफलाँ रूख फलै—यदि सावन बदी पंचमी को छीटे पड़ें तो डंक भड्डरी से कहते हैं कि वर्षा अच्छी होगी और पेड़ों में फल लगेंगे।

सावन पहले पाख में, जे तिथ ऊणी जाय, कंयक कंयक देश में, टाबर बेचै माय—श्रावण के पहले पक्ष में यदि कोई तिथि टूट जाय या तिथि की हानि हो तो किसी-किसी देश में ऐसा अकाल पड़ेगा कि माताएँ अपना बच्चा भी बेचने लगेंगी।

सावन पहिले पाख में, दसमी रोहिणी होइ, महँग नाज अरु अल्प जल, बिरला बिलसै कोइ—श्रावण बदी में दशमी को यदि रोहिणी नक्षत्र हो तो अन्न महँगा होगा, वर्षा कम होगी और बिरले ही सुखी रहेंगे।

सावन बदि एकादसी जेती रोहिणी होय, तेतो समया ऊपजै, चिन्ता करो न कोय—श्रावण कृष्ण एकादशी को जितने दंड तक रोहिणी रहेगी उसी परिमाण में उपज होगी अत: व्यर्थ की चिन्ता न करो।

सावन बदी एकादसी, तीन, नखत्तर जोय, कृतिका होवे किरवरो, रोहन होवे सुगाल। टक यक आरै मिरगलो, पड़ै अचिन्त्यो काल॥—श्रावण बदी एकादशी को तीन

नक्षत्र देखो। यदि कृत्तिका हो तो साधारण वर्षा, रोहिणी हो तो सुकाल और मृगशिरा नक्षत्र हो तो अकाल पडेगा। किसी ने ऐसा सोचा भी न होगा।

सावन भादों खेत निरावैं तब गृहस्थ बहुतैं सुख पावै -- यदि कृषकगण सावन तथा भादों के मास में खेत को निराते हैं तो वे बहुत ही सुख पाते हैं। अर्थात् सावन और भादों के माह में निराई करने से पैदावार अधिक होती है।

सावन मास बहे पुरवाई बरघा बेचि लिहा धेनुगाई— अगर संयोगवश श्रावण मास में पुरवा हवा चले तो समझो कि महान सूखा पडेगा। अतः पहले ही से बैल बेचकर गाय खरीद लो।

सावन मास बहै पुरवैया खेले पूत बला ले मैया सावन में पुरवा हवा चलने से पानी अच्छा बरसता है।

सावन मास सूरियो बाजे भादर वे परवाई आसोजां में समदरी बाजे, काती साख सवाई -यदि श्रावण में उत्तर-पश्चिम की, भादों में पूर्व की और क्वार में पश्चिम की हवा चले तो कार्तिक में फ़सल अच्छी होगी।

सावन में पुरवाई चलै, भादों में पछियाइं, केते डंगरवा बेचि के, लरिका जाइ जियाव—हे स्वामी! यदि श्रावण में पुरवा हवा और भादों में पछुवाँ बहे तो बैल इत्यादि को बेचकर लड़कों का पालन-पोषण करो। अर्थात् वर्षा कम होगी खेती न करो।

सावन में ससुराल गए, पूस में खाए पुआ; चैत में छैला पूछन डोले, तुम्हरे केतिक हुआ --जो सावन में ससुराल में जाकर आनंद लेते है, पूस में बैठकर मौज उड़ाते है वे चैत में सबसे पूछते फिरते है कि तुम्हारी फसल कैसी हुई। अर्थात् ऐसे लोगों की खेती चौपट हो जाती है।

सावन में हुए सियार, भादों में आई बाढ़, कहें ऐसी बाढ़ देखी नहीं—छोटी उम्रवाला जब कभी बूढ़ों जैसी बातें करे तो कहते है।

सावन शुक्ला सप्तमी छिपके ऊगे भान, कहे घाघ सुन घाघिनी बरखा देय उठान -श्रावण शुक्ला सप्तमी को यदि बदली फट के सूर्य निकल आए तो वर्षा का अन्त समझो।

सावन सावाँ अगहन जवा, जितना बोवें उतना लवा— सावन के महीने में जितना जौ बोया जाता है उतना ही काटा भी जाता है। अर्थात् कुछ लाभ नही होता है।

सावन साग न भादों दही; क्वार दूध न कातिक मही; अगहन जीरा, पूसे धना माघे मिसरी फागुन चना; चैत गुड़ बैसाखे तेल, जेठे राई, असाढ़े बेल, इन बारह से बचे जो भाई ताके घर में बैद न जाई—सावन मे साग, भादों में दही, क्वार मे दूध, कातिक मे मट्ठा, अगहन में जीरा, पूस मे धनिया, माघ में मिश्री, फागुन में चना, चैत मे गुड़, बैसाख में तेल, जेठ में राई, आषाढ़ में बेल का सेवन वर्जित है। ये अस्वास्थ्यकर हैं। तुलनीय : अव० सावन साग न भादों दही, कुआर करैला, कातिक मही, अगहन जीरा, पूसै धान, माहरे मिसरी, फागुन चना; चैत गुड बैसाखै तेल, जेठ राई, असाढ़ै बेल; इन बारों से बचै जउन भाई ओहके घर बैद न जाई।

सावन सिवा उपास --हिन्दू लोग सावन के महीने में महादेव जी के व्रत आदि के कारण विशेष उपवास करते है। तुलनीय : अव० सावन मा सिवा उपास।

सावन सुक्र न दीसै, निहचै पड़े अकाल--यदि सावन में शुक्र न दिखाई दे तो निश्चय ही अकाल पड़ेगा।

सावन सुकला सप्तमी, उगत जो दीखै भान; या जल मिलिहैं कूप में, या गंगा स्नान— श्रावण सुदी सप्तमी को यदि आकाश स्वच्छ हो और सूर्य निकलता हुआ दिखाई दे तो बहुत बड़ा अकाल पड़ेगा और या तो जल कुएं में मिलेगा या गंगा जी में।

सावन सुकला सप्तमी; गगन स्वच्छ जो होय; कहैं घाघ सुन घाघिनी, पुहुमी खेती खोय--घाघ अपनी स्त्री से कहते है कि यदि श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की सप्तमी को आकाश निर्मल दिखाई दे तो समझो कि वर्षा न होगी और भूमंडल की कृषि नष्ट हो जाएगी।

सावन सुकला सप्तमी छिपि कै ऊगे भान; तब लगि देव बरीसि हैं, जब लग देव उठान -श्रावण सुदी सप्तमी को यदि सूर्य निकलता हुआ न दिखाई दे तो देवोत्थान एकादशी तक बरसात होगी।

सावन सुकला सप्तमी, जो बरसे अधिकात, तू पिय जावो मालवा हम जाये गुजरात -दे० 'सावन कृष्ण पक्ष दशी...'।

सावन सूखा न भादों हरा—सदा एक जैसा रहने वाले के प्रति कहते है। तुलनीय : हरि० साढ़ सूखा ना, सामण हरी; सावण सूखा न भादवो हरयो।

सावन सूखा स्यारी, भादों सूखा उन्हारी सावन मे पानी न बरसे तो खरीफ को, और भादों में न बरसे तो रबी की फ़सल को हानि होगी।

सावन से भादों कम नहीं--(क) जब कोई किसी की बराबरी (विशेषतः ऐसे काम में जो अच्छा न हो) के ख्याल से कोई काम करे तो कहा जाता है। (ख) जब दो में प्रत्येक एक दूसरे से बढ़कर हों तो भी कहा जाता है।

सावन सोवे ससुर घर, भादों खाये पुवा; चैत में छैला

पूंछत डोलें, तोहरे केतिक हुआ— दे० 'सावन में ससुराल गए···'।

सावन सोये सांथरे, माघ निखरी (खुर्री) खाट; आपहि वह मर जायेंगे जो जेठ चलेंगे बाट— सावन में चटाई पर न सोये, माघ में खाली चारपाई पर बिना बिछावन न सोये तथा जेठ में रास्ता न चले। नहीं तो तीनों में क्रमशः सील, सर्दी और गर्मी से बीमार पड़ने का भय रहता है।

सावन हरे न भादों सूखे सदा एकसा रहनेवाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : गढ़० सोण सूखा न भादो हरा; मरा० श्रावणात टवटवत नाही नि भादव्यांत सुकत नाहीं।

सास उघलिया बहू छिनलिया, ससुरा भाड़ चुकावे, फिर भी दूल्हा सास-बहू को सीता सती बतावे - सास और बहू दोनो भ्रष्ट हैं, श्वसुर दलाली करता है। इस पर भी अपनी सास और बहू को सती स्त्री कहते हैं। अपने घरवाली की, खासकर स्त्रियों की कोई भी बुराई नहीं करना।

सास झांगरी बहू पांगरी, कौन बजावे घर की झांझरी —सास और बहू दोनों कार्य करने में असमर्थ है तो घर का काम कौन करे ? जहाँ सभी किसी काम के करने में अयोग्य होते हैं वहाँ ऐसा कहते हैं। तुलनीय : कौर० सास आँगरी बहू पाँगरी, कौन बजावे घर की झाँझरी।

सास का ओढ़ना बहू का बिछौना - सास की ऐसी बेक़द्री कि बहू का बिछौना उसका ओढ़ना हो जाए। आज के संसार में बहुएँ प्रायः ऐसी आती है, उसी पर कहा गया है। तुलनीय : अव० सास कै ओढ़ना, दुलहिनी कै बिछौना।

सास का कलेजा कितना बड़ा है जिसने दहेज में बड़ी थाली दी—कंजूस व्यक्ति की ओर लक्ष्य करके कहा गया है। तुलनीय : भोज० अइसन सास के केतहन करेज, बड़की थरिया देहली दहेज।

सास का काम सुनाना, बहू का काम सुनना -सास का काम डाँटना है और बहू का सुनना। आशय यह है कि बड़े छोटों को या शक्तिशाली लोग निर्बलजनों को सताते हैं। तुलनीय : मेवा० कीजे धीड़ी मुणजे बऊड़ी।

सास का धन जमाई पुन्य करे— दूसरे का धन दान कर अपने को पुण्यात्मा समझनेवाले या दूसरे को धन देकर अपने को दाता समझनेवाले के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : तेलु० अत्त सोममु अल्लुडु दानमु चेयुट।

सास की सीख दरवाजे तक सास बहू को शिक्षा देती है किन्तु बहू उसे उस कमरे के दरवाज़े पर ही छोड़ आती है। बहुएँ प्रायः अपनी ही बुद्धि से काम करती है। सास के प्रति बहुएँ आपस में इस प्रकार व्यंग्य करती हैं। तुलनीय : माल० हाऊ री सीख ओटला तक।

सास कोठे पर की घास- -जब बहू सास का अनादर करती है तो कहा जाता है।

सास कोठे बहू चबूतरे—सास जो कुछ करे छिप कर और बहू खुल्लम खुल्ला। (क) बहू के बेहया होने पर कहते हैं। (ख) बड़े तो बुरे काम छिपे-छिपे करें और छोटे बेशर्म होकर खुल्लमखुल्ला तो ऐसी स्थिति में कहते हैं।

सास के बिना ससुराल क्या- सास के बिना ससुराल अच्छी नहीं लगती। तुलनीय : हरि० सास्सू बिना, किसा सासरा ?

सास को नहीं पांयचे, बहू चाहे तम्बू और सरांचे — बहू के आने पर पुत्र माँ को दुख देने लगता है, या बहू घर की मालकिन होने पर अपने लिए तो बेकार की भी चीजें खरीदती है और सास को आवश्यक चीजें भी नहीं देती है। (पांयचे - पायजामा का एक भाग; सरांचे =परदा)।

सास को पड़ी भाजर की, बहू को पड़ी काजर की- - सास को गृहस्थी के सामान की चिंता लगी है और बहू को श्रृंगार प्रसाधनों की। (क) सबको अपनी-अपनी आवश्यकता की चीज़े ही सूझती हैं। (ख) उम्र-भेद के अनुसार इच्छाएँ भी भिन्न-भिन्न होती हैं। (भाजर =गृहस्थी का सामान)।

सास गई गांव, बहू कहै मैं क्या-क्या खाऊं — सास का डर न रहने पर बहू जो मन चाहे सो करती है। तुलनीय : अव० सास गई गाँव कहै मैं का खाँव।

सासड़ करन वैद बुलाया, सोत कहे तेरा धगड़ा आया - सास के लिए वैद्य बुलाया जाए और सौत कहे तेरा यार आया है। सौतिया डाह पर कहा जाता है।

सास ताके टुकुर-टुकुर बहू चली बैकुंठ जब सास को घर में छोड़कर बहू तीर्थ-यात्रा करने जाती है तो कहा जाता है।

सास न नन्द खूब आनंद—वह बहू स्वच्छंद हो जाती है जिसके घर सास-ननद नहीं होती। तुलनीय : मैथ० सास ने ननद आपनै आनंद।

सास न न नन्दी, आप ही अनन्दी— जो सास और ननद से दुख पाती है वह अकेली रहने पर कहती है। सास ननद के न रहने पर बहू को आनंद और आज़ादी रहती है।

सासु के खांसी ननद के ऊपर दम्मा के करे घरक कम्मा—घर के सभी लोग यदि बीमारी का बहाना बनाएँगे तो घर का काम कौन करेगा ? जब काम करने से सभी व्यक्ति जी चुराते हैं तब ऐसा कहते हैं।

सास ने बहू से कहा, बहू ने कुत्ते से कहा और कुत्ते ने

पूंछ हिला दी— जब किसी से कोई बात कही जाए और वह उस पर ध्यान न दे या किसी और पर टाल दे तो कहते हैं।

सास पतोहू में मूसर गायब –जब आपस में ही कोई चीज़ गायब हो जाए तब कहते हैं।

सास पतोहू में हँसिया गायब- --ऊपर देखिए।

सास परोसे आठ, जी हुआ काठ; जब परोसें अस्सी तब आई हंसी—सास ने जब आठ रोटियाँ दी तो बड़ी चिन्ता हो गई लेकिन जब अस्सी रोटियां दीं तब हँसी आ गई। अधिक खानेवालों के प्रति व्यंग्य में कहते है।

सास बनावे बहू बिगाड़े, कौन आवे उनके आड़े- सास काम बना रही है और बहू उसी को बिगाड़ रही है तो उनके बीच समझाने के लिए कौन पड़ सकता है। किसी के घरेलू झगड़ों या समस्याओं में मध्यस्थ बनना न तो उचित है और न ही सहज। तुलनीय : भीली—हाऊ वगरे ने वऊ बखरे हे तो बीजो कूण वगड़ू करे।

सास बहू में हुई लड़ाई, करे पड़ोसी हाथा-पाई —दूसरे की लड़ाई मे पड़कर जब कोई अपनी हानि कराता है तो कहते है।

सास बिन कैसी ससुराल लाभ बिन कैसा माल—सास बिना ससुराल व्यर्थ है और लाभ बिना किसी माल का लेना या रोजगार करना व्यर्थ है।

सास भी रानी बहू भी रानी, कौन भरे कुएँ का पानी - दे० 'तू भी रानी, मैं भी रानी…'।

सास मर गई अपनी आत्मा तँबे में छोड़ गई -सास तो मर गई लेकिन उसकी आत्मा का प्रभाव बहू पर आज भी शेष है। डराने के लिए भी इसका प्रयोग किया जाता है।

सास मरी बहू को राज— सास के मर जाने के बाद बहू का राज्य हो जाता है और वह मनचाहे ढंग से काम करती है। तुलनीय : बुंद० सास मरी, बऊ को राज।

सास मरी बहू ब्यानी, वे फिर तीन के तीन—सास मर गई लेकिन बहू को बच्चा पैदा हुआ, इस प्रकार पुनः संख्या तीन-की-तीन हो गई। जब एक तरफ से कोई हानि हो और दूसरी तरफ से उतना ही लाभ हो जाए तब ऐसा कहते हैं।

सास मरी राज आया—दे० 'सास मरी बहू को…'।

सास मुई, बहू बेटा आया, वा का पलटा या मैं आया —दे० 'सास मरी बहू ब्यानी…'।

सास मेरी घर नहीं, मुझे किसी का डर नहीं—जिसका डर था जब वही मौजूद नहीं है तो क्यों न गुलछर्रे उड़ाए जाएँ।

सास, मेरे लड़का हो तो मुझे जगा देना; मैं तुझे क्या जगाऊँगी तू आप ही सारे मुहल्ले को जगा लेगी—बहू ने सास से पहले कहा, जिसका उत्तर सास ने शेषांश में दिया है। जिसे लड़का हो रहा हो उसे जगाने की आवश्यकता नही। वह तो स्वयं दर्द के मारे चिल्लाएगी तो सारा मुहल्ला जग जाएगा।

सासरा सुख बासरा—लड़कियों के लिए ससुराल में रहना ही सुखकर है।

सासरे जानेवाली छिनाल नहीं कहलाती—जो स्त्री अपनी ससुराल चली जाती है उसे भ्रष्ट नही कहते। अर्थात् उचित कार्य करने पर निन्दा नही होती।

सास लुक्का-लुक्का, बहू बुक्का-बुक्का- दे० 'सास कोठे बहू चबूतरे।'

सास से तोड़ बहू से नाता—सास से सम्बन्ध तोड़कर बहू से सम्बन्ध जोड़ते हैं। घर के मालिक से सम्बन्ध तोड़-कर, नीचेवालों से सम्बन्ध करने पर कहते हैं।

सास से बैर पड़ौसिन से नाता—अपनी सास से दुश्मनी रखनी है और पड़ोसिन से सम्बन्ध जोड़ती है। दुष्ट स्त्री एसा ही करती है। तुलनीय : अव० सास से बैर परोसिन से नाता; राज० सासू सू वैर, पाड़ोसण सू नातो।

साससरे तेरे साग, माथे तेरे भाग, बाप के तेरे राज, तू बैठी-बैठी झाल—ससुराल तो तुम्हारी गरीब के घर मे है लेकिन तुम भाग्यशालिनी हो तुम्हारे पिता के घर काफ़ी सम्पत्ति है उसी का इन्तज़ार करो। जो बहू अपने पिता के धन पर गर्व करती है उसके प्रति सास कहती है। हिन्दू लड़कियों का पिता के धन पर कोई अधिकार नही, अतः पिता के धन पर गर्व करना व्यर्थ है।

सासू छोटी बहू बड़ी -सास छोटी और बहू बड़ी है। जब कोई पुरुष, बेटा पतोहू के रहते हुए भी किसी अत्यन्त अल्पवयस्का लड़की से शादी करता है तब कहते है।

सासू जितरे सासरो, आस जितरे मेह - जब तक सास जीवित रहती है तब तक ससुराल मे आनन्द रहता है, इसी प्रकार आश्विन तक वर्षा की आशा बनी रहती है।

साह का दांव हाट में, चोर का दांव बाट में –साहूकार की चालाकी बाज़ार में काम करती है और चोर की राह (बाट) मे। या साहूकार को बाज़ार मे कमाने का मौक़ा मिलता है और चोर को रास्ते में लोगों को लूटकर। अर्थात् हर स्थिति सबके लिए लाभदायक नही होती। भिन्न-

भिन्न परिस्थितियों मे भिन्न-भिन्न लोगों को लाभ होता है। या सबके लाभ की परिस्थितियाँ भिन्न होती है। तुलनीय : छत्तीस० साव के दांव हाट मां, अउ चोर के दांव बाट मां।

साह के सवाये कमबख्त के दूने—कम नफ़ा लेने से रोज़गार में बढ़ती होती है और ज्यादा लेने से वह खराब हो जाता है। तुलनीय : अव० साल के सवाई बहैर के दून।

साहब का कुछ दोष नहीं, अमले गड़बड़ करते हैं—मालिक तो ठीक ही प्रबन्ध करता है, उसके नीचे के कर्मचारी गड़बड़ा देते है।

साहूकार को किसान, बालक को मसान—साहूकार के लिए किसान उतना ही दुःखदायी है जितना कि मसान बालक के लिए क्योंकि वे बहुत मुश्किल से रुपया चुकाते है।

साहूकार को सब पूछे,आदमी को कोई नहीं—रुपए का लेन-देन करने के लिए ईमानदार व्यक्ति की सभी इज़्ज़त करते है। तुलनीय : भीली—हाऊकारा ए हारा पूचे, आदमी ए को नी पूचे।

साहू बट्टे वह भी साहू—जो दाम के दाम पर अपना माल बेचता है वह भी साहूकार है। माल को व्यर्थ मे अधिक दिन रखने से खरीद के दाम पर बेच डालना अच्छा है।

साहू बहे जायँ, गौ जायँ—साहू जी बह नही रहे बल्कि किसी लाभ के लिए जा रहे है। आशय यह है कि साहु लोगों की हर एक बात मे कोई राज छिपा रहता है। एक बार एक साहु नदी मे नहाने लगे तो सहायता के लिए चिल्लाए इस पर एक मजाकिया आदमी ने यह उक्ति कही। तुलनीय : अव० साव बहें न जायं अपने गौ से जायँ।

सिन्धु तैर के सरस्वती में डूबना—बहुत कठिन काम करके भी जब कोई साधारण काम में असफल हो जाता है तो कहते है।

सिंह अकेला मारे खाय—सिंह अकेला ही जिस पशु को चाहे मार कर खा लेता है, अर्थात् न वह किसी से डरता है और न अपने भोजन के लिए किसी की सहायता लेता है। जब कोई व्यक्ति समर्थ होने के कारण अकेला ही अपनी आजीविका अर्जित करे और दूसरे का मुखापेक्षी न हो तो उसके प्रति इस लोकोक्ति का प्रयोग करते हैं। तुलनीय : माल० एकलो भीमड़ो घोड़ा री लाठ।

सिंह का बच्चा सिंह ही होय—आशय यह है कि वीर का पुत्र वीर ही होता है।

सिंह कितना भी भूखा होगा तो घास नहीं खाएगा—स्वाभिमानी व्यक्ति भले ही भयंकर कष्ट सह ले, किन्तु छोटा काम नहीं करते। उनका स्वभाव जैसे का-तैसा ही रहता है। तुलनीय : भोज० सिंह केतनो भुखाई तऽ घास थोड़े खाई।

सिंह की आँख स्यार पहचाने—सिंह के स्वभाव को स्यार ही पहचानता है। आशय यह है कि जिस व्यक्ति से जिसका वास्ता पड़ता है वही उसके स्वभाव और चरित्र की जानकारी रख पाता है। तुलनीय : भीली—हरणो नी गत हींयारू जाणे, बीजू कूण जाणे।

सिंह की शरण जाने पर/से वह भी शरण देता है—यदि शेर से शरण माँगी जाए तो वह भी इनकार नहीं करता और शरणागत की रक्षा करता है। जब कोई किसी को शरण देने से इनकार कर देता है तब उसके शिक्षार्थ ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० साम्मो ह्वै क स्यू नि खांद।

सिंह के उपजा सियार—सिंह का बच्चा स्यार हुआ। वीर या योग्य व्यक्ति का पुत्र जब कायर या अयोग्य निकल जाता है तो कहते है। तुलनीय : मरा० सिंहाच्चा वंशात कोल्हा निपजला।

सिंह के बच्चे सिंह ही होते हैं—दे० 'सिंह का बच्चा…'।

सिंह के वंश में उपजा स्यार—दे० 'सिंह के उपजा सियार'। तुलनीय : ब्रज० सिंघन के घर उपजे स्यार।

सिंहन के लहड़े नहीं हंसन की नहिं पांत—सिंहो के झुंड और हंसो की पंक्ति नहीं होती अर्थात् बहादुर और गुणी मनुष्यों के समूह या वर्ग नहीं होते वे अपनी जातिवालों मे विरले ही होते है।

सिंह घास नहीं खाता—दे० 'सिंह कितना भी भूखा होगा…'। तुलनीय : असमी—बाघे घाह नाखाय; सं० मनस्वी म्रियते कामं कार्पण्यं नतु गच्छति; अं० An eagle does not catch flies.

सिंह पकड़ा स्यार ने, जो छोड़े तो खाय—स्यार ने सिंह पकड़ तो लिया किंतु उसे मार नहीं पाता और यदि उसे छोड़ता है तो वही उसे मार डालेगा। जो व्यक्ति बिना सोचे-विचारे किसी ऐसे काम को आरम्भ कर देता है जिसे वह न तो कर पाता है और न ही छोड़ पाता है क्योंकि उससे हानि बहुत अधिक होती है उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० सिंह पकड़ियो स्यालियै जे छोडै तो खाय।

सिंह पराए देश में नित मारे नित खाय—चोर-डकैतों को विदेश में ही चोरी करने में आनन्द रहता है, क्योंकि वहाँ उन्हें पूरी आज़ादी रहती है।

सिंह बचा जो लंघना तौ भी घास न खाय—सिंह का बच्चा उपवास करने पर भी घास नहीं खाता। अर्थात् बहा-

दुर लोग चाहे मर भले ही जाएँ किंतु वे अपने स्वभाव को छोड़कर तुच्छ काम को नही करते या कुल की रीति विपत्ति में भी नहीं छूटती। तुलनीय : राज० सिंघ-बचा जो लंघणा लोय न घास चरंत; मरा० सिंहाचा छावा भुकेलेला असला-तरी गवत खाणार नाही।

सिंह भूखा मर जाय, पर घास कभी न खाय— ऊपर देखिए।

सिंह मृग खाय या भूखा ही रहे— शेर स्वयं मृग मार कर खाता है, और यदि मृग न मिले तो वह भूखा ही रह जाता है। (क) उच्च कुल के व्यक्ति उच्च कोटि की वस्तुओं का ही प्रयोग करते है, निम्न कोटि की वस्तु पर नहीं रीझते। उच्च कुल के व्यक्ति कुल के विपरीत कार्य नहीं करते भले ही उन्हें कष्ट सहना पड़े। (ख) सच्चे मनुष्य ईमानदारी की वस्तु का प्रयोग करते हैं, बेईमानी की नहीं। तुलनीय : माल० हंसा तो मोती चुगे कै लंघन कर जाय।

सिंह से सरबर कहे सियार— स्यार शेर से बराबरी करता है। (क) बेजोड़ मुक़ाबले पर कहा जाता है। (ख) कभी-कभी मूर्खता में छोटे भी बड़ो से झगड़ा कर बैठते है यद्यपि इसमें उनकी हानि ही होती है।

सिंह गरजै, हथिया लरजै— यदि सिंह नक्षत्र में बादलों की गरज अधिक रहे तो हस्थ (हथिया) नक्षत्र में निश्चय ही कम पानी बरसता है।

सिंहावलोकन न्याय— सिंह द्वारा देखने का न्याय। सिंह शिकार मारकर जब आगे बढ़ता है तो फिर-फिर कर देखता जाता है। इसी प्रकार जहाँ अगली और पिछली सब बातों पर एक साथ दृष्टिपात या आलोचना होती है वहां इस उक्ति का व्यवहार होता है।

सिंहासन छोड़ घूर पर बैठा— सिंहासन छोड़कर कूड़े के ढेर (घूर) पर बैठता है। जब कोई ऊँचा पदाधिकारी निम्नकोटि का काम करे तो कहते है।

सिंहों के कौन से नाते-रिश्ते ?— सिंह किसको अपना रिश्तेदार मानते हैं ? वे जिसको पाते है उसी को मारकर खा जाते हैं। जो व्यक्ति अपने स्वार्थ के सामने नाता-रिश्ता कुछ भी नहीं समझते उनके प्रति कहते है। तुलनीय : राज० सिंघांरै किसी सास्यां हुवै।

सिअनि सुहाव न टाट पटोरे— टाट के कपड़े में रेशम की सिलाई अच्छी नही लगती। कम मूल्य की चीज़ पर अधिक व्यय करना मूर्खता है।

सिकताकूपवत्न्याय— बालुकामय प्रदेश में (खने हुए) कूप की तरह। तथ्यहीन तर्क के संदर्भ में इस न्याय का प्रयोग किया जाता है।

सिकतातैलन्याय— रेत से तेल (निकालने) का न्याय। असम्भव वस्तु के सम्बन्ध में प्रस्तुत न्याय का प्रयोग होता है।

सिकहर पर चढ़ तो जाओगे, किन्तु टूटने पर नीचे ही आना होगा— धोखा-धड़ी, छल-फरेब से यदि कोई काम हल हो भी जाए तो खतरा बना ही रहता है। अर्थात सामर्थ्य से बाहर काम करने पर हानि उठानी पड़ती है। तुलनीय : मैथ० अढ़व गढ़व सिक्का चढ़ब सिक्का टूटत भूइयां खसब, भोज० सिकहर टूटी त भुइयें अइहन।

सिकारी सिकार खेले चूतिया साथ फिरे— जब कोई अपने लाभ के लिए इधर-उधर भाग-दौड़ करे और दूसरा उसके साथ व्यर्थ में रहे तब उसके (दूसरे के) प्रति ऐसा कहते है।

सिखाई बुद्धि अढाई घरी— दूसरे की सिखलाई गई बात थोड़ी देर में ही भूल जाती है। सदा अपनी ही बुद्धि काम आती है। तुलनीय : भोज० सिखावल बुद्धि अढ़ाई घरी।

सिखाई हुई बुद्धि ढाई घड़ी— ऊपर देखिए।

सिखाये पूत दरबार नहीं चढ़ते— (क) गवाह को सिखाने-पढ़ाने से कभी भी मामला नहीं बनता। (ख) सिखाई चीज देर तक नहीं ठहरती। (ग) सिखा-पढ़ाकर जो गवाही दिलवाता है उसकी जीत कभी नहीं होती।

सिखाते-पढ़ाते भी मूर्ख, सान पर लगाकर भी वैसे का वैसा— बहुत सिखाया-पढ़ाया लेकिन मूर्ख ही रहा और सान पर चढ़ाया फिर भी तेज नहीं हुआ। किसी कार्य में पूर्ण प्रयत्न के बाद भी सफलता न मिलने पर ऐसा कहा जाता है। प्राय मूर्ख विद्यार्थियों के प्रति इसका प्रयोग किया जाता है। तुलनीय : गढ़० अड़े अड़ै पढ़ो पल्यैं पल्यैं खड़ो।

सिजदे से गर बहिश्त मिले दूर कीजिए, दोज़ख ही सही सिर का झुकाना नहीं अच्छा— कर्मठ या वीर पुरुष नरक में रहना पसंद करते है पर किसी के आगे सर झुकाना नहीं। तुलनीय : अं० It is better to rule in hell than to serve in heaven

सिधरी उछले-कूदे बीते बरारी पर— किसी तालाब में मछली होने की सूचना छोटी मछलियों की उछल-कूद से मिलती है, किन्तु जाल डालने पर पकड़ी जाती हैं बड़ी मछलियां। आशय यह है कि उपद्रव छोटे करते हैं, किन्तु परिणाम भुगतना पड़ता है बड़ों को। तुलनीय : भोज० सिधरी चाल करे रोहू के सिरे बीते या सिधरी चाल चले

भोथरा के सिर बीते।

सिद्ध को साधक पुजाते हैं—आपस की सहायता से ही हर एक काम होता है।

सिपहगरी के छत्तीस फ़न हैं—युद्ध-कौशल में बहुत-सी कलाओं की आवश्यकता पड़ती है।

सिपाही की जोरु हमेशा राँड़—सिपाही के प्राण हमेशा खतरे में रहते है अतः उसकी स्त्री का सौभाग्य सर्वदा खतरे मे रहता है। तुलनीय : अव० सिपाही कै मेहरारू सर्द राँड़।

सिपाही को रोटी शिर बेचे को—सिपाही अपनी रोटी प्राण हथेली पर रखकर कमाता है। अर्थात् उसकी नौकरी जान-जोखिम की है।

सिफ़ले की मौत माघ—माघ ग़रीबों की मौत है। इस महीने में बहुत जाड़ा पड़ता है, अतः ग़रीब लोगों के लिए यह मौत का महीना है।

सिफ़ारश की घोड़ी इराक़ी को लात मारे—जब कोई अयोग्य व्यक्ति मालिक का समर्थन पाकर किसी योग्य पुरुष का अपमान करे तो कहते हैं। छोटे अपनी सिफ़ारिश के बल पर बड़ो का भी अपमान करते है। (क) सिफ़ारिश बहुत बड़ी चीज़ है। (ख) छोटे ही सिफ़ारिश कर सकते हैं, वह बड़ों के स्वभाव के प्रतिकूल है।

सिफ़ारिश की गधी घोड़े को लात मारे—ऊपर देखिए।

सिफ़ारिश के बिना रोज़गार नहीं लगता—बिना सिफ़ारिश के नौकरी नही मिलती। (इस कहावत को देखने से ऐसा लगता है कि इस राज्य में जिस सिफ़ारिश का बोलबाला है वह बड़ी पुरानी चीज़ है)।

सियार के मन्त्री कौवा, छोड़ दिहले हाड़ चाम खाय लिहलें ममवा सियार के मंत्री कौवे ने स्वयं मांस खाकर हाड़ और चाम दूसरो के लिए छोड़ दिए। जब कोई अच्छी चीज़ तो अपने लिए ले ले और ख़राब औरों के लिए छोड़ दें तो कहते हैं।

सियाल कोटी, हराम बोटी—पंजाब के सियालकोट के लोग हराम के खानेवाले होते हैं।

सियाह करो या सफ़ेद—काला करो या सफेद इच्छानुसार चाहे जो करो। तुलनीय : अव० सियाह करौ चाहे सफेद करौ, हरि० स्याह कर च सफेद; पंज० सयाह कर या चिट्टा।

सियाही बालों की गई दिल की आरज़ू न गई—बालों की कालिमा समाप्त हो गई पर दिल की इच्छाएँ नहीं गई। आशय यह है कि आदमी बूढ़ा हो जाता है पर उसकी वासना या इच्छाएँ बूढ़ी नहीं होतीं।

सिर कटे काहू का लड़का सीखे नाऊ का—सिर किसी और का कटता है और सीखता है नाई (नाऊ) का लड़का दूसरों के सिर पर ही बाल बनाना सीखता है। (ख) जब कष्ट कोई सहे और उसका लाभ किसी और को मिले तब भी कहते है। तुलनीय : छत्तीस० मूंड़ कटावैं काहू के, लइका सीखे नाऊ के।

सिर का नहाया पाक—सिर धो लेने से शरीर पवित्र हो जाता है। सबसे ऊँचे हाकिम द्वारा फ़ैसला सुनाए जाने पर सभी को संतोष हो जाता है।

सिर का पाँव और पाँव का सिर—उलटी-सीधी बात कहने पर कहते है।

सिर का बोझ पैर ढोएँ—सिर का बोझ पैरों को ही ढोना पड़ता है। (क) परिवार का मुखिया यदि क़र्ज़ लेता है तो उसे उसके पुत्र ही अदा करते है दूसरा कोई नही। (ख) बड़े चाहे कोई भी हानि कर दे उसका फल छोटो को भुगतना पड़ता है। (ग) छोटों को सदा बड़ों की सेवा करनी पड़ती है। तुलनीय : राज० माथै रो भार पगाँ नै।

सिर का मारा बिच्छू कहाँ तक जाएगा—जिस बिच्छू के सिर पर डंडा मार दिया जाएगा वह कहाँ तक भाग कर जाएगा। अर्थात् जिस पर तेज़ प्रहार हो जाएगा वह बच नहीं सकता।

सिर की पगड़ी हाथ, कर ले दो-दो हाथ—सिर की पगड़ी तो उतार कर हाथ में ले ली है अब चाहे कोई भी लड़-झगड़ ले। (क) जो व्यक्ति अपने मान-सम्मान की परवाह न करके दूसरों से लड़ने-झगड़ने को सदा तैयार रहे उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। (ख) बेशर्म व्यक्ति के प्रति भी व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : राज० माथैरी पागड़ी बगल में लियाँ पछै काँई डर ?

सिर गाड़ो पैर पहिया करे तो रोटी मिलती है—अर्थात् जीविकोपार्जन के लिए बहुत श्रम करना पड़ता है। बिना श्रम किए जीवन-यापन मुश्किल है।

सिर घुटाते ही ओले पड़े—दे० 'सिर मुँड़ाते ही…'। तुलनीय : राज० मूंड़ मुँडाता ही ओला पड्या।

सिर छुपाने को जगह तो चाहिए ही—चाहे कोई कितना भी निर्धन क्यों न हो फिर भी उसे घर की आवश्यकता होती है। आशय यह है कि संसार में प्रत्येक व्यक्ति को घर की आवश्यकता होती है। तुलनीय : भीली—भागू टूटू झूंपडू वे ते ठालू बूलू आवी ऊबू।

सिर झाड़ मुँह पहाड़—सिर झाड़ जैसा है। विशालकाय और भयानक शक्ल वाले को कहते है।

सिरतोड़ मेहनत, मुँहतोड़ जवाब—मिरतोड़ मेहनत करना और मुँहतोड़ जवाब देना ठीक होता है। आशय यह है कि कोई खूब मेहनत से अपना काम करने के बाद मालिक के ग़लत बात कहने पर मुँहतोड़ उत्तर देगा। परिश्रम से काम करने पर किसी से दबने की आवश्यकता नहीं।

सिर तो नहीं खुजा रहा है—मार खाने की इच्छा तो नहीं हो रही है जब कोई लड़का शरारत करता है तो कहते हैं। तुलनीय : राज० माथो ममाला मांगै है।

सिर तो नहीं फिरा है?—व्यर्थ की बातें करनेवाले को कहते हैं।

सिर-दर्द होने पर भो दूसरे की मटर चबा सकते हैं—अर्थात् मुफ़्त में मिली चीज़ को सभी अपनाना चाहते है, भले ही उसकी आवश्यकता न हो। तुलनीय : भोज० आन क केराय कपार दुखइलो पर चबा जाइ।

सिर नक़द नौकरी उधार—जो काम तुरत करा लेते हैं परन्तु पैसा समय से नही देते उनके प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

सिर नहीं या सिरोही नहीं—वीर युद्ध में मारने या मरने की प्रतिज्ञा यही कहकर करता है। आशय यह है कि या तो मर जायेंगे या जीतकर अपनी इज्ज़त रखेंगे।

सिर पर आरे चल गए तो भी मदार मदार—सिर पर आरा चल जाने के बाद भी अपनी टेव नहीं छोड़ी। जो व्यक्ति भयंकर संकट या विपत्ति के आने पर भी अपनी बात पर अड़े रहते है उनके प्रति इस लोकोक्ति का प्रयोग किया जाता है।

सिर पर जूती हाथ में रोटी—बहुत अपमानित होकर रोज़ी कमाने वाले व्यक्ति पर कहते हैं।

सिर पर टोपी न पाँव में जूती—अत्यत निर्धन व्यक्ति के प्रति कहते हैं। तुलनीय : छत्तीस० गरीब गत्ता फटी लत्ता।

सिर पर पड़ी बजाए सिद्ध—विपत्ति जब सिर पर आ जाती है तो चाहे जैसी भी हो झेलनी ही पड़ती है।

सिर पर बोझा, दरबार में जाने दो—सिर पर तो बोझ लादे हुए हैं और चाहते हैं राजा के दरबार में जाना। जो व्यक्ति अयोग्य होने पर भी कोई उच्च स्थान प्राप्त करना चाहे उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० सिर पर मींटकांरी खेई, तबू में बड़न दो।

सिर पर लादे घास कहे मैं भी चौके में जाऊँगी—ऊपर देखिए। तुलनीय : माल० माथा पै भरी ने मने इ चौका में आवा दीज्यो।

सिर फोड़ लड़ना, जाँघ जोड़ खाना—आपस में चाहे कितना भी लड़ाई-झगड़ा हो जाए परंतु फिर भी इकटठे रहना चाहिए। किसी परिवार के सदस्यों के आपस में लड़ने के बाद अलग रहने पर बड़े-बूढों द्वारा उपदेशार्थ ऐसा कहा जाता है।

सिर बड़ा सपूत का, पैर बड़ा कपूत का—बड़ा सिर अच्छा और बड़े पैर बुरे समझे जाते है। तुलनीय : राज० सिर बडो सपूतरो, पग बडा कपूतरा।

सिर बड़ा सरदार का, पैर बड़ा गँवार का—बुद्धिमान का सिर और गँवार का पैर बड़ा होता है। तुलनीय : अव० सिर बड़ा सरदार का, पैर बड़ा गँवार का, हरि० सिर बड्डा सिरदार का, पाँह बड्डे पलदार के; राज० सिर बडो सरदार रो, पग बडो गंवार रो।

सिर मुड़ाए मुरदा हल्का नहीं होता—दे० 'बाल मूड़कर मुर्दा...'।

सिर मुड़ा के क्या घुटा मुड़ावेगा?—जो कुछ होना था हो चुका और अधिक क्या होगा?

सिर मुड़ाते ही ओले पड़े—किसी काम के प्रारम्भ में ही विघ्न या कोई गड़बड़ हो तो कहते है। तुलनीय : अव० सिर मुड़उतै ओला पड़ा; गढ़० छोरा को मुडणो अर ढांडा को पड़नो; मरा० डोक्याचा गोटा केला नि नेमका त्यावर गारांचा भारा झाला; तेलु० अडुगुळोने हम पाद।

सिर मुड़े उस रांड का जो खसम से पहले खाय—जो स्त्री पति के भोजन करने से पहले स्वयं भोजन कर ले वह विधवा हो जाए। अर्थात् पति को खिलाकर फिर स्त्री को खाना चाहिए।

सिर में दिमाग़ नहीं गोबर भरा है—सिर मे मस्तिष्क के स्थान मे गोबर भरा है। मूर्ख व्यक्तियों के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : भीली- मनखा ने पेढां माथे अकल ने भरद्यो है, भाटा चरद्या है।

सिर में बाल नहीं भालू से लड़ाई—जो बिना तैयारी या शक्ति के ही किसी बलवान से लड़ता है उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं।

सिर मोटा, घर में टोटा—मोटा या बड़ा सिर होना भाग्यवान की पहचान मानी जाती है। सिर मोटा होने पर भी घर में टोटा है। जो व्यक्ति ऊपरी लक्षणों से बहुत धनवान दिखाई देते हों किन्तु वस्तुतः वैसे न हों तो उनके प्रति कहते है। तुलनीय : राज० माथो मोटो, घर मे टोटा।

सिर सलामत तो पगड़ी पचास—सिर रहेगा तो पचासों पगड़ियाँ मिल जाएँगी। (क) मूल रहेगा तो ब्याज

बहुत आएगा; (ख) जड़ रहेगी तो बहुत से पेड या डाली-पत्ते निकलेंगे। तुलनीय : गढ० शिर रयू रजो त पगड़ी कनी होइ जाली; मरा० जंगलों तर सुख मिलण्याची आशा।

सिर सलामत तो पगड़ी बहुत— ऊपर देखिए।

सिर सहलावें, भेजा खावें—जो ऊपर से मीठी बातें करें और भीतर से द्वेष रखें उनके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : अव० सिर सुहरावैं, भेजा खावैं।

सिर सिजदे में मन बदियों में—ऊपर से तो सिजदा या ईश्वर की प्रार्थना करें और मन बुराइयों में लगा हो। बगुला भगत के लिए कहते हैं।

सिर से उतरे बाल, गू में जाए या मूत में—जब चीज अपने पास से चली गई या अपने लिए बेकार हो गई तो उसका चाहे जो भी हो, अपने से क्या मतलब ?

सिर से कफ़न बाँधे फिरते हैं—मरने को सदा तैयार फिरते हैं। जान हथेली पर लिए फिरते हैं। ऐसे आदमी के प्रति कहते हैं जिसे प्राणों की परवाह न हो।

सिर से गंजे, पत्थर पर कलाबाजी—सिर गंजा है और पत्थरों पर कलाबाजियाँ खाते हैं। जब कोई व्यक्ति अपनी सामर्थ्य से अधिक कार्य करे तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० माथे में गिंज, कांकरां मे कलाबाजी खावै।

सिरे दाल-रोटी, सब बात खोटी—जीवन में यथार्थ खाना ही है और बातें तो बेकार है। खाने को महत्त्व देने के लिए, या खाने को सर्वाधिक महत्त्व देनेवाले के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहा जाता है। तुलनीय : भोज० असल दाल रोटी, अउर बात खोटी।

सिरे ही की भेड़ कानी—पहली ही भेड़ कानी। आरम्भ में ही गलती। बिसमिल्लाह ही गलत।

सिसकते गए बिलखते आए—बेमन से काम करनेवाले आदमी के प्रति कहते हैं। जो काम पर बिना मन के या उदास मन से जाता है और उसी प्रकार लौटता है। द० 'रोते गए मरे की खबर लाए।'

सिहबंदी के प्यादे का आगा पीछा बराबर—तीन आने रोज के मनुष्य का भूत भविष्य दोनों बराबर है।

सींक न समाय तहाँ मूसल घुसेड़ दे—(क) जहाँ कुछ भी गुंजाइश न हो, वहाँ बहुत-सा। (ख) किसी भी तरह की जबरदस्ती पर कहा जाता है। (ग) छोटी बात को बहुत बढ़ाकर कहने पर भी कहा जाता है। तुलनीय : अव० सीक न समाय तुआ मूसर घुसेड़े।

सींक सड़प्पे तो लालाजी के संग गए अब तो देखो और खाओ—कंजूस के लड़कों के और भी कंजूस हो जाने पर कहते हैं। इसकी कथा यों है : एक लालाजी थे। उन्होंने घरवालों को आज्ञा दे रखी थी कि खाने जाओ तो सींक पर घी ले जाया करो। जब लालाजी मरे तो उनके योग्य लड़के ने घी के डिब्बे में ताला बन्द कर दिया और घरवालों को हुक्म दिया कि सींक का घी तो लालाजी के साथ गया अब तो केवल उस डिब्बे को देखकर ही संतोष कर लिया करो।

सींग की कसर पूंछ में—सींग की कसर पूंछ में निकल गई। सींग से सभी डरते हैं और पूंछ को सभी पकड़कर खींचते हैं। (क) बलवान से दबकर उसकी कसर निर्बल से निकालनेवाले के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। (ख) एक स्थान की हानि दूसरे स्थान पर पूरी होने पर भी कहते हैं। तुलनीय : राज० सींगरी कसर पूँछ में निकली।

सींग की केहवू और अरंड के रूख—सींग का हुक्का और रेंड का वृक्ष, दोनों किसी काम के नहीं। बेकार चीज़ पर कहते हैं।

सींग गिरैला बरद के, औ मनई का कोढ़, ये नीके न होयँगे, चाहे बद लो होड़—बैल का गिरा हुआ सींग और मनुष्य का कोढ़ कभी अच्छे नहीं होते चाहे कोई इस बात पर शर्त लगा ले।

सींग पूछ गांड़ में घुस गई गज बंदूक समेत; रजपूतो धूल चाटे ऊपर फिर गई रेत—कायर राजपूतों के प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० सींग पँछ गांड में बड़ग्या गज बंदूक समेत राजपूती रुळ तो फिरै ऊपर फिरगी रेत।

सींग मुड़े माथा उठा, मुँह का होवे गोल; रोम नरम चंचल करन, तेज बैल अनमोल—मुड़ी हुई सींगवाला, उठे हुए माथेवाला, गोल मुँहवाला, नरम रोएँवाला और चंचल कानवाला बैल बड़ा तेज चलनेवाला और अनमोल होता है।

सींचा हम हित जानके इत न करी कछु कान, छाती पै पैड़ा किया, ओछे की पहचान—जल का कहना है कि मैंने तो इस काठ के पिता वृक्ष को सींचा लेकिन वही उसे भूलकर मेरी छाती पर नाव बनकर चलने लगा। कृतघ्नता पर कहा जाता है।

सीख उसी को देनी अच्छी जो तेरी शिक्षा माने अच्छी—जो बात माने उसी को सलाह देनी चाहिए।

सीख तो वाको दीजिए जाको सीख सुहाय; सीख न दीजे बाँदरा जो बये का घर जाय—जो सीखने के योग्य हो, उसी को सीख देनी चाहिए। इस पर एक कथा है : एक

बया ने बंदर से कहा---बरसात आ रही है अपने लिए एक घर बना लो। बंदर ने कहा--नहीं आता। इस पर बया ने उसे घर बनाना सिखा दिया और बंदर ने बया का घोंसला उजाड़कर अपना घर बना लिया।

सीख दी घरवालों को, चतुर हुए पड़ोसी---परिश्रम किया घरवालों के लिए किंतु लाभ पड़ोसियों को हुआ। जहाँ परिश्रम करे कोई किंतु लाभ कोई और उठाए तो लाभ उठानेवालों को व्यंग्य में ऐसा कहते है। तुलनीय: गढ़० ओबरा का अड़ाया बौंड का सट्ट।

सीख देत औरन को पाँड़ा आप भरें पापों का भांड़ा -- पांडेय जी दूसरों को शिक्षा देते हैं और स्वयं बुरा कर्म करते हैं। दूसरों को उपदेश देना और खुद उस पर न चलना।

सीख बचन ओखद कटुक हरत बुद्धि गदगात---अच्छा उपदेश कड़ुवा होता है पर शरीर और बुद्धि के रोग को दूर कर देता है।

सीखो सीख पड़ोसिन को, घर में सीख जिठानी को--- पड़ोसिन के लिए उपदेश ग्रहण किया और घर में अपनी जेठानी को ही उपदेश देने लगी। जिससे सीखे हो उसी को सिखाने जाने पर कहते है। तुलनीय: अव० सिखै सीख परोसिन का, घर भा सीख जेठानी का।

सीढ़ी-सीढ़ी छत पै चढ़ते हैं---(क) काम धीरे-धीरे पूरा होता है। (ख) किसी चीज़ पर क्रम से ही चढ़ना चाहिए।

सीत दूध जिसको दे साइं, वाको तो बैकुण्ठ यहाँई--- ईश्वर जिसे खाने-पीने का सुख दे उसके लिए तो बैकुण्ठ यही है। अर्थात् खाने-पीने का सुख बहुत बड़ा सुख है।

सीधा की बीबी सबकी भौजाई सीधे की पत्नी को सभी भाभी कहते हैं। अर्थात् सीधे को सभी परेशान करते है। तुलनीय: छत्तीस---सोझवा के टौकी सब के भौजी।

सीधा घर खुदा का---ईश्वर का घर स्वच्छ होता है। वहाँ सबके साथ उचित न्याय होता है। तुलनीय: अव० सीधा घर खोदाय का।

सीधी उँगलियों घी नहीं निकलता - संसार में बिना कड़ाई किए कुछ नहीं होता।

सीधी उँगली से घी नहीं निकलता---आशय यह है कि बिना कड़ाई किए कोई कार्य नहीं होता। तुलनीय: भोज० सीधी अँगुरी से घीव न निकलै; राज० सीदी आंगलियां घी कोन्या नीकलै; बुंदे० सूदी उँगरियन घी नईं निकरत; निमाड़ी सीधी आंगलई घी नी निकलतो; छत्तीस० सोझ अँगठी माँ घी नइ हिटै; मैथ० सोझ अँगुली घी न निकलै; अव० सीधे अँगुरी घिउ नहीं निकरत; गढ़० साम्भी आँगुली घ्यू नि औंद, अगमी---पोन् आङुलिरे घिउ नोलाय, मरा० सरल बोटानें तूप वर निघत नाही; तेल० एलु वंकर वेट्टिते गानि वेन्नरादु।

सीधी अँगुली घी नहीं निकलता---ऊपर देखिए।

सीधी अँगुली घी निकले तो टेढ़ी क्यों कीजे?---सीधी अँगुली से ही यदि घी निकल जाए तो टेढ़ी करने की क्या आवश्यकता? (क) आपस में यदि निर्णय हो जाए तो अदालत क्यों जाएँ? (ख) नरमी से काम हो जाए तो कड़ाई करना व्यर्थ है।

सीधे का मुँह कुत्ता चाटे अर्थात् सरल स्वभाववाले व्यक्ति को सभी कष्ट देते है। तुलनीय: भोज० सीधवा क मुँह कुक्कुर चाटे या सोझवा कु मुँह कुक्कुर चाटैं, अव० सीधे का मुँह कुकुर चाटै।

सीधे की गाँड़ कुत्ता चाटे - सीधे आदमी की गांड को कुत्ते चाटते रहते है। सीधा आदमी किसीको कुछ कहता नहीं और इसी कारण लोग उसे बहुत परेशान करते है। तुलनीय: राज० सूधै माथै तो नहै।

सीधे के भगवान - सीधे-सादे आदमी की सहायता ईश्वर करता है। जिसकी कोई सहायता नहीं करता उसकी सहायता ईश्वर ही करते हैं। तुलनीय: भीली---भोला ना भगवान हैं।

सीधे को सौ दुःख सीधे आदमी को सौ दुःख मिलते हैं। सीधे आदमी को सब सताते है। तुलनीय: राज० सूधैने सौ दुख।

सीधे घोड़े के सभी सवार जो घोड़ा चुपचाप चलता है उस पर छोटे-बड़े सभी सवारी करते है, दुष्ट घोड़े के समीप कोई नहीं जाता। जब लोग किसी सज्जन और सीधे व्यक्ति को परेशान करें तो उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय: राज० सीरै ऊँट माथै सै-कोई बैठे।

सीधे-सीधे काटिए बाँके तरु बच जायँ- लोग सीधे पेड़ों को काम का समझकर काटते है पर टेढ़े पेड़ को व्यर्थ समझकर कोई नहीं काटता। आशय यह है कि सीधे व्यक्ति के ही पीछे सब पड़ते है, टेढ़े के पीछे कोई नहीं।

सीनेवाले और फाड़नेवाले की क्या बराबरी--- फाड़नेवाला सीनेवाले से सदा आगे रहेगा क्योंकि फाड़ने में जरा भी समय नहीं लगता है और सीने मे बहुत समय लगता है। काम को करने मे बहुत समय लगता है और बिगाड़ने मे देर नहीं लगती। काम बिगाड़नेवालों के प्रति व्यंग्योक्ति है। तुलनीय. राज० फाड़न वाले नैं सीवण वालो को पूगै

नी।

सीमा तक जोतना, बाँटकर खाना—सदा सब वस्तुएँ बाँटकर लेनी चाहिए और प्रत्येक कार्य सीमा तक ही करना चाहिए। वृद्ध लोग युवकों के शिक्षार्थ ऐसा कहते है। तुलनीय : गढ़० ओडा तें लौणो, बाँटा तें खाणो।

सीस काटे बाल की रक्षा—सिर काटते हैं और बालों की रक्षा करते हैं। जड़ काटकर शाखाओं की रक्षा नही हो सकती।

सुंदर बीबीजी का जवाल—यदि स्त्री सुंदर हो तो पति को उसके प्रति सदा चिंता रहती है। तुलनीय . असमी —माटि बेटियें कन्दलर् मूल्; सं० कान्ता रूपवती शत्रुः; अं० Wine and women are the sources of trouble.

सुंदोपसुंद न्यायः- सुंद और उपसुंद दोनों बड़े बली दैत्य थे। एक स्त्री पर दोनों मोहित हुए। स्त्री ने कहा दोनों में जो अधिक बलवान होगा उसी के साथ मैं विवाह करूँगी। परिणाम यह हुआ कि दोनों लड़ मरे। आशय यह है कि आपसी फूट से बलवान से बलवान मनुष्य नष्ट हो जाते हैं।

सुअर का पैदा क्या साफ़ क्या गंदा - जो पैदा ही गंदगी में हुआ है वह गंदा ही होगा उसके साफ़ होने का तो प्रश्न ही नही है। आशय यह है कि स्वभाव या प्रकृतिजन्य बुराई दुष्टता सहज दूर नहीं की जा सकती।

सुई-भर छान, मूसल-भर अंधेर- जहां छोटी छोटी बातों पर बहुत बारीकी से विचार किया जाता हो, किंतु बड़ी-बड़ी बातों को कोई सुनता भी न हो वहां इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

सुई सुहागे से सदा सीखो पर उपकार, घूस-मूस की बात तुम कभी न सीखो यार -सुई और सोहागे का काम दो को जोड़ना है इसीलिए उसी जैसा परोपकारी बनना चाहिए और मूस काटकर किसी चीज के टुकड़े कर देता है, अतः उसका अनुकरण नही करना चाहिए।

सुकुमार बीबी चटाई का लहँगा -बेमेल काम करने पर कहते है। बीबी के लिए चटाई का लहँगा यों ही बेमेल है, और जब सुकुमार बीबी हो तब तो असमानता और भी बढ़ जाएगी। तुलनीय : अव० सुकुवार बीबी चटाई का लहँगा।

सुख और दुख की जोड़ी है सुख और दुःख एक-दूसरे के आगे-पीछे ही रहते है। एक के बाद दूसरा आता-जाता रहता है। विपत्ति में फँसे किसी व्यक्ति को ढाढ़स बँधाने के लिए कहते हैं। तुलनीय : राज० सुख-दुखरों जोड़ो है; भीली —सुख दुख नी जोड़ी है।

सुख कहना जन से दुख कहना मन से—अपना सुख सबसे कहना चाहिए क्योंकि उसमें दूसरे भी हिस्सेदार बन जाते है किंतु दुख को अपने हृदय ही में छिपा रखना चाहिए क्योंकि दुख को किसी से कहने से कोई उसे बाँटता नहीं अर्थात् उसे दूर करने में सहायक नहीं होता।

सुख का एक भला, न दुख के दो--सुख से मिली थोड़ी वस्तु भी मिलनेवाली अधिक वस्तु से अच्छी होती है। आशय है कि पुत्र यदि सुखकर हो तो एक ही अच्छा है और दुःखदायी संतान यदि दो भी हों तो बेकार। तुलनीय : भीली -- सुखनो तो एक भलो, दुःख ना बे खोटा।

सुख की आधी अच्छी, दुख की पूरी नहीं—सुख या सरलता से मिलनेवाली आधी रोटी दुख से मिलनेवाली पूरी रोटी से अच्छी होती है। आशय यह है कि थोड़ी चीज मिले किन्तु कष्टकर न हो। ऊपर भी देखिए। तुलनीय : हरि० सुख की आद्धी आच्छी, दुख की पूरी कुछ्यना।

सुख के बड़े योधा रखवाले हैं अर्थात् सुख बड़ी कठिनाई से मिलता है।

सुख के सब साथी हैं —सुख में सभी अपने हो जाते है, पर दुख में कोई किसी को नहीं पूछता। तुलनीय : अव० सुख कै सबै साथी हैं।

सुखन उन्हीं पर डारिए जो हँस-हँस राखे मान -- माँगना उसी से चाहिए जो मान रखे अर्थात् दे। (सुखन -- बात, याचना करना)।

सुखनगोई मुशकिल नहीं सुखनफ़हमी मुशकिल है - (क) बात कहने से उसका समझना कठिन होता है। (ख) बड़ी बातों को या विद्वानों, कवियों या दार्शनिकों के उद्धरण कहते तो सभी हैं पर यथार्थतः उन्हें समझते बहुत कम हैं।

सुखनफ़हमी-ए-आलम-ए-बाला मालूम शुद -- जब कोई व्यक्ति अपने को काव्य-मर्मज्ञ बताए और किसी बात का अर्थ ग़लत समझे तो उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

सुख न स्वारथ देह जली अकारथ—कोई फ़ायदा नहीं हुआ, व्यर्थ में परेशान हुए। जब परिश्रम निष्फल जाता है तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० सुख न सुवारथ देह जरल अकारथ।

सुख नहिं जग संतोष समाना संतोष के समान संसार में कोई सुख नही।

सुख पाके मर गया कोई दुख पाके मर गया, जीता रहा न कोई हर एक आके मर गया— कोई ज़िंदगी में सुख

पाकर और कोई दुःख पाकर मर जाते है। अर्थात् जीवन के साथ सुख और दुःख दोनों लगे हुए हैं और जो संसार में उत्पन्न होता है वह एक दिन मरता भी अवश्य है।

सुख बढ़े बुढ़ापा चढ़े—सुख मिलने पर आदमी स्वस्थ या मोटा होता है। तुलनीय : अव० सुख बाढ़ै मुटापा चढ़ै।

सुख मानो तो सुक्ख है दुख मानो तो दुक्ख, सच्चा सुखिया वही है जो माने दुख न सुक्ख—सुख और दुख मानने पर है। वास्तव में वही सुखी हो सकता है जो एकरस हो, अर्थात् सुख में सुखी न हो न दुख में दुखी।

सुख में निद्रा दुख में राम—सुख मे नीद आती है और दुख में ईश्वर की याद। सुख आराम से कटता है पर दुख में ईश्वर की याद सूझती है। तुलनीय : अव० सुख मा निंदिया, दुख मा राम; मरा० सुखाच्या वेली आराम नि दुःखांत मात्र राम आठवतो।

सुख में पड़ी सभागी भुस में लोटन लागी—गाय को सुख मिला तो वह भूसे में जाकर लोटने लगी। अच्छे दिन आने पर यदि कोई इतराने लगे तो कहते है।

सुख में बाप, दुख में माँ, धन में बहिन और विपत्ति में मित्र काम आता है—स्पष्ट।

सुख में सुमिरन जो करे तो दुख काहे को होय—यदि इन्सान सुख-समृद्धि मे भी ईश्वर का स्मरण करे तो कभी दुखी न हो।

सुख में हर को भजे तो दुख काहे को हो—ऊपर देखिए।

सुखली गुलरी होय उपासा, ओद आद भी जरै परासा—गूलर की लकड़ी यदि सूखी रहे तब भी नही जलती अत: उपवास करना पड़ता है। पर पलाश की लड़की गीली भी खूब जलती है। अर्थात् पलाश की लकड़ी जलाने के लिए अच्छी होती है।

सुखली मिरचइया तितैया तोरी उतनों—(क) सूखने पर भी मिर्च की कड़ुवाहट नही जाती। (ख) बुरे कमज़ोर होने पर भी बुरे ही रहते हैं।

सुख संपत्ति और औदसा सब काहू पर होय, ज्ञानी काटे ज्ञान से और मूरख काटे रोय—सुख-दुख सभी पर पड़ते हैं किन्तु समझदार लोग जीवन खुश रहकर काटते है और मूर्ख उसे रो-रोकर गुजारते है।

सुख संपत्ति का सब कोई साथी—जब किसी के पास धन-दौलत आ जाती है तो सभी लोग उसके मित्र और साथी-संगी बन जाते हैं।

सुख सब चाहें दुक्ख न चाहे कोय—प्रत्येक व्यक्ति सुख ही चाहता है, दुख कोई नही चाहता। तुलनीय : भीली — सुख हारां चावे दुःख को नी चावे।

सुख से किया सनेह पड़ा दुख दूना—अधिक सुख चाहनेवालों को अधिक दुःख मिलता है। संसार में मन-चाही चीज़ प्राय: नही मिलती बल्कि जो इच्छा की जाए उसके विपरीत होता है।

सुख से सोवे कुम्हार जाकी चोर न लेवे मटिया—नीचे देखिए।

सुख से सोवे, जिसके पास गाय-भैंस न होवे—जिसके पास गाय-भैंस नही होती वह आराम से सोता है। अर्थात् बिना गृहस्थीवाले ही चैन से सोते हैं। तुलनीय : भोज० सुख खोवैं घोड़स जेकर गाय न भइंस।

सुख से सोवें शेख जिनके टट्टू न मेख—सुख मे वही व्यक्ति सोता है जिसके पास चोरी लायक कुछ भी नही है। साधु-सन्त या ईश्वर-भक्तों के पास क्या है जो कोई चुराएगा।

सुख से सोवे शेख जिसके चोर न भाँड़े ले—दे० 'सुख से सोवे शेख···'।

सुख से सोवे होरू, जाके गाय न गोरू—ऊपर देखिए।

सुखार दुहार आसमानी फ़रमानी है—कम पानी बरसना और ज्यादा पानी बरसना दोनो ही ईश्वर के अधीन रहता है।

सुखी मिले तो हँसे, दुःखी मिले तो रोए—सुखी व्यक्ति परस्पर मिलकर प्रसन्न होते है और दुखी व्यक्ति दुख की चर्चा करके रोते है। दुखी व्यक्ति को चैन नही मिलता। तुलनीय : भीली—राजू ना तो मलवा दुखल्या ना बलवा।

सुखी सुख देवे, दुखी दुःख देवे—सुखी व्यक्ति मिलता है तो सुख की बातें करके प्रसन्नता बढ़ाता है और दुखी व्यक्ति अपने दुखों की चर्चा करके दुख पहुँचाता है।

सुखे सिहुवा दुखे दिनरा—सिहुवा सुख में होता है और दिनाय (दिनर) दुख में। अर्थात् सिहुवा सुख का और दिनाय दुख का सूचक है।

सुघड़-सुघड़ हँस गई फूहड़ों को आया हाँसा—बुद्धिमान केवल मुस्करा देते है ठठाकर या खूब ज़ोर से तो मूर्ख लोग या फूहड़ लोग हँसते है।

सुजात मनाए पैरों पड़े, कुजात मनाए सिर चढ़े—ऊँची जाति मनाने से पैरो पड़ जाती है और नीच जाति मनाने से और भी माथे चढ़ती है। अर्थात् दुष्ट आदर पाने पर बिगड़ जाते है। तुलनीय : राज० जात मनायां पगां पड़ै कुजात

सनायां सिर चढ़ै।

सुजान की पूजा अजान करे—(क) देवी-देवताओं को पूजते समय ऐसा कहते है। (ख) किसी अतिथि के घर से जाते समय उसके प्रति क्षमा-प्रार्थना के रूप में भी ऐसा कहा जाता है। (ग) सज्जन व्यक्ति को सभी सम्मान देते हैं। तुलनीय : गढ़० अजाण की पूजा अजाण मानी।

सुत मान हिं मात पिता तब लौं, अबला नहीं डीठ परी जब लौं—पुत्र अपने माता-पिता को तभी तक मानते हैं जब तक अपनी स्त्री के मुख को नही देखते हैं। आज की दशा पर व्यंग्य है।

सुथना पहिरे हर जोतै, औ पोला पहिरि निरावै; घाघ कहै ये तीनों भकुवा, सिर बोझा औ गावै—जो सुथना (पाजामा) पहनकर खेत जोतता है, पौला पहन कर निराई करता है और सिर पर बोझा लेकर गाना गाता है, घाघ कहते हैं कि ये तीनों मूर्ख हैं।

सुदि अषाढ़ की पंचमी गरज धमधमो होय, तो यों जानो भड्डरी मधुरी मेघा जोय—भड्डरी कहते है कि यदि आषाढ़ सुदी पंचमी को बादल गरजे और बिजली चमके तो वर्षा अच्छी होगी।

सुदि अषाढ़ नौमी दिना, बादर झीनो चन्द; जानै भड्डर भूमि पर, मानो होय अनन्द—भड्डरी कहते है कि यदि आषाढ़ सुदी नवमी को चन्द्रमा के ऊपर हलका बादल हो तो पृथ्वी पर आनन्द रहेगा।

सुदि आषाढ़ में बुध को, उदै भयो जो देख; सुक अस्त सवन लखो, महाकाल अवरेख—यदि आषाढ़ सुदी मे बुध उदय हो तथा सावन मे शुक्र अस्त हो तो बहुत बड़ा अकाल पड़ेगा।

सुनते-सुनते कान बहरे हो गए—एक ही चीज़ जब बार-बार कही जाए तब सुननेवाला उकताकर कहता है।

सुनना सबकी करना मन की—किसी काम मे बहुत से आदमी जब भिन्न-भिन्न प्रकार की राय दें, तो सबकी बात न मानकर जिससे अपना लाभ हो वही करना चाहिए। तुलनीय : माल० हुणनी हो री ने करनी मनरी।

सुन रे ढोल बहू के बोल—किसी को चेतावनी देना। एक घर मे माँ, बेटा और पतोहू रहते थे। पतोहू का चाल-चलन बुरा था। माँ बेटे से शिकायत करती थी पर वह ध्यान न देता था। वह एक बार बीमार पड़ी। पंडित देखने आए तो उन्होंने उससे कहा कि तुम्हारा अब अन्तिम समय है अपनी सब गलतियों को प्रकट कर दो नहीं तो नरक में जाओगी। वह पंडित और अपनी सास के सामने गलतियों को प्रकट करने पर राज़ी हुई। सास ने ऐसा ही होने दिया और बहू के पति को अर्थात् अपने पुत्र को एक ढोल में छिपा कर उसी कमरे में रख दिया। बहू ने केवल दो आदमियों को वहाँ देखकर अपने पाप बतलाना शुरू किया। ढोल मे लड़का भी था अत: माँ बीच-बीच में कहती जाती थी सुन रे ढोल बहू के बोल। अर्थात् ऐ पुत्र मैंने कहा तो तुमने नहीं सुना अब उसी के मुंह से सुनकर चेत जाओ।

सुन-सुन गीता फूटे कान, तऊ न उपजा रंचक ज्ञान—गीता सुनते-सुनते कान फट गए फिर भी थोड़ा भी ज्ञान नही हुआ। अत्यन्त मूर्ख व्यक्ति के प्रति व्यंग्य मे कहते हैं जिस पर समझाने-बुझाने या उपदेश देने का कोई प्रभाव नही पड़ता।

सुनाड़ी बेचे काँतू अनाड़ी बेचे मांछू—सुनारों की चालाकी पर कहा गया है। मछली तो मूर्ख बेचते है। होशियार तो सुनार है जो हड्डी बेच कर अर्थात् ठगकर ही पैसा पैदा कर लेता है। (कांतू—हड्डी; माछू—मछली)।

सुनार अपनी माँ की नथ से भी चुराता है—सुनार किसी के भी सोने की चोरी करने से बाज़ नहीं आ सकता। तुलनीय : अव० सोनार अपने माई का नाहीं होत; राज० सोनार आपरी मांरा ही हांवळ काट लेवै, हरि० सुनार तै अपणी मा की मैं वी ना टलै।

सुनार की खटाई और दरजी के बन्द—सुनार और दर्ज़ी यही कहकर अपने ग्राहकों को टालते हैं। सुनार कहता है कि सब कुछ ठीक है केवल खटाई करना बाकी है दर्ज़ी कहता है कि सब ठीक है बन्द लगाने या बटन लगाने का काम रह गया है। तुलनीय : अव० सोनार के खटाई और दरजी कै काज।

सुनार अपनी माँ में भी खोट मिलाता है—दे० 'सुनार अपनी माँ···'।

सुनार सगे बाप को भी चोट देता है—दे० 'सुनार अपनी माँ···'।

सुनिए दो तो करिए एक—दो बाते सुनने के बाद एक बात कहनी चाहिए अर्थात् मनुष्य को चाहिए कि सुने अधिक और कहे कम।

सुनिए सबकी करिए मन की—अपनी किसी समस्या पर परामर्श सभी का सुन लेना चाहिए पर अच्छी तरह सोच-समझकर अपने मन के अनुसार करना चाहिए। तुलनीय अव० सुनै सबकी करै मन की; बुंदे० करिये मन की,

सुनिए सब की; छत्तीस० सुनै सबकै करै अपन मन कै; गढ़० सुणनी सबकी करनी मन की; व्रज० सुनेगौ सबकी करैगौ अपनै मन की; असमी० पररपरा शुना, किन्तु निजर मतै करा; मरा० ऐकावें जनाचें करावें मनाचें।

सुनिए सब ही की कही, करिए सहित विचार — ऊपर देखिए।

सुनिए हजार जो कोई सुनावे, कीजिए वही जो समझ में आवे —अपने किसी काम के विषय में लोगों के हजार परामर्श सुन लीजिए पर कीजिए वही जो अपनी समझ में लाभकर हो।

सुनि सुनि गीता फूट्यो कान, तऊ न उपज्यो रंचक ज्ञान—दे० 'सुन सुन गीता…'।

सुने सबकी, और करे मन की— दे० 'सुनिए सबकी करिए…'। तुलनीय : हाड़० सुण सबकी, अर कर मन की।

सुने सब की करे मन की दे० 'सुनिए सबकी करिए…'।

सुन्दरता बनावट से दूर रहती है - सुन्दर स्त्री के लिए आभूषण या श्रृंगार की आवश्यकता नहीं होती। तुलनीय : मल० पोन्निन् कुटतिनु पोट्टु बेणमो; अं० Beauty needs no ornaments.

सुन्नी न शिया जी में आया सो किया न सुन्नी है न शिया जो मन में आया है वही करता है। (क) किसी एक धर्म का पाबंद न होकर अपनी इच्छानुसार आचरण करनेवाले के प्रति कहते हैं। (ख) अब कोई धर्म के अतिरिक्त किसी और काम में लोगों के द्वारा बतलाए गए रास्ते के अनुसार न कर, मनमानी करता है तो भी व्यंग्य में इस कहावत को कहते है।

सुपने में राजा भये जगकर वही हवाल दे० 'सपने में राजा भए दिन को वही हवाल।'

सुपुर्दम बतो माय-ए-ख़ेशरा, तो दानी हिसाब-कम-ओ बेशरा—मैंने अपनी पूंजी तुम्हारे सुपुर्द कर दी है अब कम या ज़्यादा का हिसाब तुम ही जानते हो। (क) ऐसे अवसर पर इसका प्रयोग किया जाता है जब कोई व्यक्ति अपना सारा काम किसी दूसरे को सौंप दे। (ख) विवाह के समय कन्या का पिता वर से या उसके पिता से भी कहता है।

सुबह का भूला शाम तक घर आ जाए तो भूला नहीं कहा जाता —दे० 'शाम का भूला…'।

सुभागे का मुंह चले, अभागे के हाथ-पांव—सौभाग्यशाली मुँह से कहकर ही सब कुछ पा लेते हैं किन्तु अभागों को प्रत्येक वस्तु के लिए हाथ-पांव से परिश्रम करना पड़ता है। तुलनीय राज० सभागियांरी जीभ, अभागियांरा पग।

सुमिरन कर में, सुरत न हरि में, कहो भेष यह कैसा है? ऊपर से सिद्ध बन बैठा भीतर पैसा पैसा है —आजकल के बनावटी साधुओं के लिए कहा गया है जो ऊपर से सिद्ध बनते हैं पर पैसे के पीछे दीवाने रहते हैं।

सुर नर मुनि सब कर यह रीती, स्वारथ लागि करहिं सब प्रीती —देवता, मनुष्य और ऋषि सभी स्वार्थ के कारण प्रीति करते हैं अन्यथा नहीं।

सुरमा सब लगाते है पर चितवन भाँति-भाँति -एक ही चीज़ का गुण स्थान के प्रभाव से सर्वत्र एक नहीं होता।

सुर में ईश्वर बसे —संगीत से ईश्वर प्रसन्न होता है। संगीत के प्रेमी संगीत की तारीफ़ में कहते है।

सुरही की कोख में हुरही- सज्जन व्यक्ति की बुरी संतान के प्रति कहते है।

सुरा सुरापी ना तजे यदपि विकल गति होय -शराबी शराब को नहीं छोड़ता चाहे उसकी कितनी ही बुरी दशा हो जाए। अर्थात् जिसकी जो आदत पड़ गई है वह लाख प्रयत्न करने पर भी नहीं छोड़ता, चाहे उसे उसके कारण अनेक कष्ट हो।

सुर्ख़रू होता है इन्सां ठोकरें खाने के बाद कष्ट उठाकर ही आदमी उन्नति करता है या पक्का होता है।

सुलफई यार किसके, दम लगा के खिसके—दे० 'गजेड़ी यार किसके…'। (सुलफाई —गांजा, तम्बाकू या चरस पीनेवाला)।

सुलफ़िया यार किसके दम लगाया खिसके- ऊपर देखिए।

सुस्ती बुरी रे बालके, या कूं जी से टार, रत्ती बोझा सुस्त को लागे बोझ पहाड़—सुस्ती बुरी चीज है। ऐ बालकों! इसे हृदय से हटाओ। सुस्त के लिए एक रत्ती का बोझ एक पहाड़ सा बोझा हो जाता है।

सुस्ती मुफ़लिसी की माँ है—सुस्ती और आलस के कारण आदमी ग़रीब हो जाता है।

सुहागिन का पूत पिछवाड़े खेले —सुहागिन का लड़का मर जाता है तो उसे ऐसा भान होता है कि मेरा पुत्र पिछवाड़े खेल रहा है क्योंकि उसे आशा रहती है कि फिर पुत्र उत्पन्न हो जाएगा। तुलनीय : अव० सोहागिन कै पूत पछवारे खेलै।

सुहाते की लात सही, अनसुहाते की बात नहीं हितकारी व्यक्ति की गाली तथा मार भी सहन की जाती है है किन्तु अहितकारी व्यक्ति की बात भी नहीं सही जाती

है।

सुहाते की लात न सुहाते की बात—जो अपने को अच्छा लगता है उसकी तो लात भी लोग सहते है, पर जो नहीं सुहाता उसकी बात भी नहीं सहते। या सुहाते की लात और न सुहाते की बात बराबर है।

सूँड़ कटे गनेस—मोटे आदमी के प्रति कहा जाता है क्योंकि वह देखने में बिना सूड़ का गणेश लगता है।

सूअर का बिष्टा न लीपे में न पोते में—दे० 'कुत्ते का विष्टा न लीपे में न पोते मे।'

सूअर की खोभार—गन्दी जगह को कहते हैं।

सूई का मुंह तो लुहार बनाता है लेकिन काँटे का मुंह कौन बनाता है—जाति की विशेषताएँ प्रत्येक मनुष्य मे अपने आप आती है। जब किसी व्यक्ति में दोष अपने आप ही उत्पन्न हों और वह दोष दूसरों को दे तो उसके प्रति कहते है। तुलनीय : गढ़० स्यूणी को मुखल्वार पल्योंद, कीडा को मुख को पल्योद।

सूई कहे मैं छेडूं छेदूं पहिले छेद कराय—सूई अपना छेद नहीं देखती दूसरो के छेद में जाती है। जब मनुष्य अपना ऐब नही देखता और दूसरो के ऐब को दिखाता है तो कहते हैं।

सूई का भाला—थोड़ी-सी बात को बहुत बढ़ाकर कहने पर कहते है। तुलनीय : गढ़० स्यूणो को साब लो।

सूई के नाके से सबको निकालता है—किसीके गुण-दोष पर विचार न करके, सबको एक समान समझनेवाले या सबके साथ एक-सा व्यवहार करनेवाले मनुष्य के प्रति कहते है।

सूई चोर, सो बज्जर चोर—सूई का चोर भी बड़ा चोर है। अर्थात् चोरी तो चोरी ही है चाहे छोटी हो चाहे बड़ी। तुलनीय : अव० सूई चोर तो बज्जर चोर।

सूई न जाय तहाँ मूसल घुसेड़ दे—जहाँ सूई नही जाती वहाँ मूसल घुसेड़ते है। थोड़ी-सी बात को बहुत बढ़ाकर कहने पर कहते है। तुलनीय : अव० सुई न जाय हुआ फार घुसेरे।

सूई भर छान्ह मूसल भर अँधेर—(क) जब न्याय थोड़ा हो और अन्याय बहुत तो कहते है। (ख) जब कोई न्याय थोड़ा करे और उसी की ओट मे अन्याय अधिक करे तब भी कहते है। (ग) असंभव बात। यदि छप्पर सूई भर का है तो उसके अन्दर मूसल भर का अँधेरा कैसे सभव है। (छान्ह—छप्पर; अंधेर—अँधेरा)।

सूके सोमे बुद्धे बाम यहि स्वर लंका जीते राम; जो स्वर चले सोई पग दीजै काहे क पंडित पत्रा लीजै—शुक्रवार, सोमवार और बुधवार को बाएँ स्वर में कार्य प्रारम्भ करने से कार्य सिद्ध होता है। रामचन्द्र इसी स्वर से लंका में विजयी हुए। जो स्वर चलता हो उसी तरफ़ का पैर पहले उठाकर आगे रखना चाहिए, इससे कार्य सिद्ध होगा। आदमी इतना जानता हो तो पत्रे की क्या आवश्यकता है? (स्वर चलना—साँस चलना)।

सूक्तवाकन्याय:—प्रशंसा के गीत का न्याय।

सूखा ढाक बढ़ई का बाप—पलाश की लकड़ी सूखने पर बहुत कड़ी हो जाती है।

सूखी के संग गीली जले—चूल्हे मे सूखी लकड़ियों के साथ यदि गीली लकड़ियाँ भी हो तो वे भी जल जाती हैं। जब किसी दोषी के साथ निर्दोष व्यक्ति भी दंड पा जाए तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : गढ़० सूखा दगड़ी काचो भसम।

सूखी मिले नहीं, चुपड़के और चार—सूखी रोटी तो कोई देता नही और कहते हैं कि घी लगाकर चार रोटी देना। जहाँ किसी की कोई कद्र न हो और वहाँ से वह बहुत कुछ पाने की आशा करे तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं।

सूखे चनाई नहीं होती—सूखे या बिना चूना-गारे के ईंट नहीं चुनी जाती। (क) बिना पेट भरे कोई काम नही हो सकता। (ख) बिना पारिश्रमिक दिए किसी से काम लेना संभव नही है।

सूखे टुकड़ों पर कौवों की मेहमानी—मुफ़लिसी और ग़रीबी मे ऐशो-इशरत की बातें करने पर कहते हैं। आशय यह कि जब तक किसी को कोई प्रलोभन न दिया जाए कोई किसी की बात को नही मानता।

सूखे माँ झड़बेर घने हों—जब अन्न कम पैदा होता है अर्थात् सूखा पड़ता है तो झरबेरी की भी बहुत अहमियत हो जाती है।

सूखे शंख बजे दिन रात—झूठे दिन-रात शंख बजाते हैं। ऊपर से टीमटाम हो पर भीतर रात-दिन में एक बार भी खाने को न मिलता हो। व्यर्थ में ऊपर से ठाठ रखनेवाले पर कहते हैं।

सूखे सर में हंस न जाय—सूखे तालाब (सर) में हंस नही जाता। (क) जहाँ कुछ मिलने की आशा नही होती वहाँ बुद्धिमान व्यर्थ में नहीं जाते। सूम के यहाँ कोई माँगने नहीं जाता। (ग) दुनिया मतलब की है जहाँ मतलब सिद्ध होने की कोई आशा न हो कोई नही जाता।

सूखे सावन रूखे भादों—सावन में पानी न होने से, भदई आदि भादों में होनेवाली फ़सलें अच्छी नहीं होती। तुलनीय : अव० सूखे सावन रूखे भादों।

सूचीकटाहन्यायः—सूई और कड़ाही का न्याय। तात्पर्य यह है कि जब सूई और कड़ाही बनाने की आवश्यकता हो तो पहले सुई बनानी चाहिए क्योंकि वह (सूई) कड़ाही की अपेक्षा अधिक सुविधापूर्वक तथा सरलता के साथ बन जाएगी। कहने का भाव यह है कि पहले सरल काम करके ही कठिन काम करने का उपक्रम करना चाहिए।

सूची प्रवेशी मुसल प्रवेशा—जहाँ सूई का प्रवेश संभव हो वहाँ मूसल घुमेड़ दें। थोड़ी बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहने पर कहते हैं।

सूझै न बाजै, नैनसुख नाम—दिखाई तो देता नहीं और नाम है सुन्दर आँखोंवाला। जब नाम के अनरूप गुण नहीं होता तब ऐसा कहते है। तुलनीय : भोज० सूझै न उझै, नयन सुख नांव।

सूझे न बिटौरा चाँद से राम-राम—बिटौरा जो पास की चीज है वह तो दिखाई नहीं पड़ता और चाँद को 'जै राम' करने चले हैं। अपने सामर्थ्य से बाहर अनुचित साहस करने पर कहा जाता है। बिटौरा—गोबर का ढेर)।

सूझे नहीं और गुलेल का शौक—दिखाई तो देता नहीं और चाहते हैं गुलेल चलाना। जब कोई अयोग्य मनुष्य अपनी सामर्थ्य से बाहर के किसी काम को करने का शौक करे तो कहते है।

सूत की आंटी और यूसुफ़ की खरीदारी—थोड़ी पूंजी से बहुत दाम की चीज़ खरीदने की इच्छा करने पर कहा जाता है। इस सम्बन्ध में एक अंतर्कथा है : एक यूसुफ़ नाम का व्यक्ति किसी बाज़ार में बेचे जाने के लिए ले जाया गया। वहाँ एक बुढ़िया ने जो एक सूत की आँटी बेचने आई थी, उसी आँटी को देकर यूसुफ़ को लेने की इच्छा प्रकट की। उसी पर यह कहावत बनी।

सूत का दिया न कपास कोरी से सर फोड़ौवल—दे० 'सूत न कपास कोरी से ...'।

सूत दिया न तार कोरी से तकरार—दे० 'सूत न कपास कोरी से ...'। तुलनीय : अव० सूत न कपास जोलहा से झटापटी; हरि० सूत न पूंणी जुलाहे तें लट्ठम लट्ठा।

सूत न कपास कोरी से लट्ठम लट्ठा—अनायास ही लड़ाई करने पर कहते हैं। तुलनीय : मरा० सूत नाहीं कापूस नाही, विणकऱ्यांची मारामारी; तेलु० चेलो प्रति चेलो उंडगाने भीकु मूरडु नाकू वारडु।

सूत न कपास जुलाहा से लड़ाई—बिना मतलब या व्यर्थ का झगड़ा करने पर कहते है।

सूत न कपास जुलाहे से लट्ठम लट्ठा—ऊपर देखिए। तुलनीय : कौर० सूत न कपास, कोलिया ते लट्ठम लट्ठा।

सूत न पोनी कोरी ते लट्ठम-लट्ठा—ऊपर देखिए।

सूता सरप जगावे ना, गोबर पाँव लगावे ना—सोए साँप को जगाना और जानकर व्यर्थ में पाँव गोबर में डालना उचित नहीं।

सूत्रबद्ध शकुनिन्यायः—सूत में बँधे पक्षी का न्याय। धागे में बँधा हुआ पक्षी अनेक दिशाओं में उड़ने का प्रयत्न करके पुनः बन्धन-स्थान को ही जाता है।

सूधे का मुंह कुत्ता चाटे—बहुत सीधापन भी खराब होता है क्योंकि लोग उसका बेजा फ़ायदा उठाते है। तुलनीय : अव० सूधे का मुँह कूकुर चाटै; मरा० अति मज्जनाचे तोंड कुत्राहि चाटतो।

सूना खेत कुलच्छना, हिरना ही चुग जाय खेत बिराना होय के, बीज अकारथ जाय—जिस खेत की पूरी रक्षा नहीं हो पाती उसे हिरना जैसा सीधा पशु भी चर जाता है। दूसरे के खेत में की हुई खेती बेकार हो जाती है और बीज भी व्यर्थ हो जाता है। इस प्रकार लाभ के बदले हानि होती है।

सूना खेत पहरुआ सोवे, क्यों न खेती ऊजड़ होवे—अगर पहरेदार सो गया तो खेत सूना हो जाएगा और ऐसी स्थिति में खेती का उजड़ जाना स्वाभाविक है। जिस पर रक्षा का भार हो, वही ढिठाई करे तो रक्षा हो चुकी। तुलनीय : अव० सून खेत पहरुआ पावै, कहे न खेती ऊजड होवै।

सूना घर चोरों का राज—अरक्षित घर में ही चोरी होती है। तुलनीय : अव० सून घर चोरन का राज; गढ़० सूना घर चंडाल को वास।

सूना घर भीड़ों का राज—खाली घर में बर्रें अपना छत्ता लगाती है।

सूनी शाला से मरकही गाय अच्छी—घर सूना रहने से मारनेवाली गाय ही अच्छी है। अर्थात् पत्नी विहीन रहने से बुरी स्त्री का साथ होना अच्छा है। तुलनीय : गढ़० सूनी माल से मार्खु बल्द भलो; अं० Something is better than nothing.

सूनी सार से मरखना बैल अच्छा—ऊपर देखिए। तुलनीय : कौर० सूणी सार तें, मरखणा बैल अच्छा।

सूनी सेज से मरकहा बैल अच्छा—ऊपर देखिए।

सूने घर को पाहुनो ज्यों आवे त्यों जाय—सूने घर में कोई मेहमान जैसे आता है वैसे ही लौट जाता है, अर्थात् उसे कोई नहीं पूछता। आशय यह है कि जाना वहीं चाहिए जहाँ कोई हो। तुलनीय: माल० हूँना घर रो पामणो ज्यूँ आवे ज्यूँ जाय।

सूप का बैंगन कभी इधर कभी उधर—सूप में रखा हुआ गोल बैंगन जैसे स्थिर नहीं रहता वैसे ही किसी सिद्धांत पर न चलनेवाले व्यक्ति भी इधर-उधर ढुलकते रहते हैं। तुलनीय: मैथ० सूपक भाँटा जेम्हर सँ दाऊ तेम्हर ओंधरा दिए।

सूप के फटके सूप नहीं रहते—(क) जहाँ की चीज रहती है वह वहीं अवश्य चली जाती है। (ख) पराया पराया ही है और अपना अपना ही है। पराया कभी अपना नहीं हो सकता। तुलनीय: अव० सूप कै ओलारा सूपै मा नाहीं रहत।

सूप के बजाए ऊँट नहीं भागते—सूप या छाज बजाने से ऊँट डरकर नहीं भागता। (क) किसी छोटे प्रयत्न से कोई बड़ा काम नहीं हो सकता। (ख) साधारण रूप से डराने से बड़े भयभीत नहीं होते या नहीं भागते। तुलनीय: अव० सूप के बजाये ऊँट न भागी।

सूप तो सूप हँसे, चलनी भी हँसे जिसमें बहत्तर छेद
दे० 'सूप बोले तो बोले चलनियों बोले...'।

सूप तो सूप चलनी भी बोले जिसमें बहत्तर छेद
नीचे देखिए। तुलनीय: बुंदे० सूप बोलै तो बोलै, चलनी का बोलै, जीमें बहत्तर छेद; राज० छाज न बोले छाबड़ी तू क्या बोले चालनी थारे अठोतर सौ बेज; बंग० बले-छुँचनोर पोंदे केन छेदा, आपन दोष देखेना जार मारो गई चालुनि बेधा. भोज० सूप हँसे त हँसे चलनियों हँसे जवना का सहस्त्रन गो छेद; अव० सूपवा बोलै तौ बोलै, चलनिओ बोलै जेहि बहत्तर छेद; कौर० छाज बोले तो बोले, चलणी बी बोल्ले, जिसमें बहत्तर छेद; हरि० छाज तै बोल्लै, छालणी बी के बोल्लै जीह में हजार छेक; राज० छाज न बोलै छाबड़ी तूं क्यां बोलै चावनी थारे चालनी थारे अठोतर सौ बेज, कनौ० सूप बोलै तो बोलै, छलनी का बोलै जामें बहत्तर छेद, मरा० सुपाला कोंही तरी सांगता येईल, त्याला एकच्चनाड चाळणीला छिद्रे तो काय सांगणार।

सूप बोले त बोले चलनियों बोले जामें बहत्तर छेद—कोई अच्छा बुरे की शिकायत करे तो ठीक है पर जो स्वयं बुरा या अवगुणी है वह दूसरे को क्या कहेगा?

सूप से कहीं सूरज ढकता है—जब कोई किसी छोटे साधन से कोई बड़ा कार्य करना चाहता है तब उसे समझाने के लिए ऐसा कहते है।

सूम का दूना खर्च—कंजूस समय पर कुछ भी खर्च नहीं करता, किन्तु चोर-डाकुओं के चंगुल में पड़ने पर कई गुना दे देता है। तुलनीय: मैथ० सोम के दुन्ना खर्च।

सूम का धन शैतान खाय—कंजूस की संपत्ति का उपभोग दूसरे लोग ही करते हैं। तुलनीय: मैथ० सूम के धन खोटा खाय; भोज० सूम क धन सइतान खाला; फ़ार० माले-मूज़ी नसीबे-ग़ाज़ी, अं० Devil takes care of his own.

सूम का माल अकारथ जाय—सूम का धन व्यर्थ जाता है। न तो वह स्वयं उसका उपयोग करता है और न दूसरे ही कर पाते है। तुलनीय: अव० सूम का धन शैतान खाय।

सूम की थाती—कृपण के जमा किए हुए धन को कहते है। यह बड़ा मनहूस समझा जाता है क्योंकि बड़ी कृपणता से इकट्ठा किया जाता है। तुलनीय: अव० सूम कै थाती।

सूम के घर में कुत्ता पड़ा जाय न जाने दे—कंजूस के नौकर भी कंजूस होते है न खुद कोई फायदा उठाते है और न दूसरों को उठाने देते है।

सूम के घर शैतान का अखाड़ा—कंजूसों के घर शैतानों (दुष्टों) की ही बैठक रहती है।

सूमिन पूछे सूम से 'काहे बदन मलीन, का गाँठी से कछु गिरा, या कछु काहू दीन?' 'ना गाँठी से कुछ गिरा, ना काहू कुछ दीन, देते देखा और को, ताते बदन मलीन—कंजूस की पत्नी अपने पति से पूछती है कि आप क्यों उदास है? आपके पास से कुछ खो गया है या आपने किसी को कुछ दे दिया है? तब वह कहता है कि न तो मेरा कुछ खोया है और न मैंने किसी को कुछ दिया है बल्कि कोई किसी को कुछ दे रहा था उसे देखकर मैं उदास हूँ। सूम खुद तो किसी को कुछ देता नहीं है, दूसरे के देने पर भी दुःखी होता है।

सूर उगे पच्छिम दिसा, धनुष उगन्तो जान; दिवस जो चौथे पाँचवें, रुंड-मुंड महिमान—यदि इन्द्रधनुष सूर्योदय के समय पश्चिम दिशा में निकला हो तो उस दिन के चौथे-पाँचवें दिन पृथ्वी रुंड-मुंड से भर जाएगी।

सूरज अस्त और मजूर मस्त—शाम होते ही काम करनेवाला प्रसन्न हो जाता है। एक तो काम से छुट्टी मिलती है और दूसरे दिन-भर की मजदूरी मिल जाती है।

तुलनीय : राज० सूरज अस्त, मजूर मस्त; पंज० सुरज लुकया मजूर सुत्ता।

सूरज के आगे दीपक की क्या आवश्यकता—बड़े के रहते उसी काम के लिए छोटे की कोई आवश्यकता नहीं।

सूरज को क्या आरसी लेकर देखते हैं—तेजस्वी मनुष्य को परिचय की आवश्यकता नहीं पड़ती। वह अपने आप चमकता रहता है। तुलनीय : भीली—दाडो वावची ऊगाजे कणहूँ अण चाना ने हे।

सूरज को क्या दोष जो उल्लू को न दीखे—दिन में यदि उल्लू को न दिखाई दे तो उसमें सूरज का कोई दोष नहीं है। आशय यह है कि यदि मूर्ख सिखाने से भी न सीखे तो गुणी का कोई दोष नहीं।

सूरज धूल डालने से नहीं छिपता—(क) अच्छा आदमी, बुरों के कहने मात्र से बुरा नहीं हो जाता। (ख) किसी के गुण को यदि बुरे दुर्गुण कहें तो भी वह गुण ही रहता है और देखने वालों को स्पष्ट दिखाई देता है। तुलनीय : मरा० सूर्यावर धूल फेंकली तरी तोलपत नाही।

सूरत ने भान उभारी, रैन घर को सिधारी—(क) सूर्योदय होते ही रात भाग जाती है। (ख) ज्ञान के आगे अज्ञान नहीं टिकता। (ग) विद्वान के आने पर सभा से मूर्ख उठ जाते है।

सूरज पर थूका मुंह पर आता है—दे० 'चाँद पर थूका'।

सूरज पर थूका मुँह पर पड़ता है—ऊपर देखिए। तुलनीय : राज० सूरज सामैं थुक्योड़ो आपरै ही माथै पड़ै।

सूरज पर धूल डालने से अपने सिर पर ही गिरती है—ऊपर देखिए।

सूरत बैरी ग्रहण है, दीपक बैरी पौन, जी का बैरी काल है, आवत रोके कौन—सूर्य का शत्रु ग्रहण, दीपक का शत्रु वायु और जीवन का शत्रु काल है उसे कोई रोक नहीं पाता। अर्थात् काल बली है, वह प्राण अवश्य लेता है और उसे कोई रोक नहीं सकता।

सूरज सिर पर आ गया—सूर्य सिर पर आ गया अर्थात् दोपहर हो गई। किसी कार्य में देर हो जाने पर कहते हैं कि दोपहर हो गया किन्तु काम कुछ भी नहीं हुआ। तुलनीय : भीली—अणना रुमका माते आद्या।

सूरत और सीरत—सुंदरता और गुण। इन दोनों का किसी एक में होना मुश्किल है।

सूरत को क्या चाटे जब सीरत ही नहीं है—जब कोई सुंदर तो हो किन्तु गुणवान न हो तो उसके प्रति कहते है।

तुलनीय : माल० गोरी वे तो कई, गुण वे जदी।

सूरत चुड़ैल-सी मिज़ाज परियों का-सा—ऐसी नखरेबाज और शौकीन औरत को कहते है जो देखने में सुंदर न हो। तुलनीय : अव० सूरत चुड़ैलिन अस, मिजाज परिअन जस।

सूरत न शकल भाड़ में से निकल—बदशकल मनुष्य पर कहते हैं जो ऐसा काला हो जैसे भाड़ में से निकला हो। तुलनीय : अव० सूरत न सकल बदर की नकल।

सूरत फूल-सी, क़िस्मत धूल-सी—सुंदर तो कुसुम के समान है, किंतु भाग्य धूल जैसा है। जो स्त्री बहुत रूपवान होने पर भी कष्ट भोगे या किसी सुंदर स्त्री को कुरूप पति मिल जाए तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : भीली—रूड़ी रूपाली कर्मे कजोड़ी।

सूरत में ऐसे सीरत में ऐसे—न देखने में ही अच्छे हैं और न गुण में ही। भीतर-बाहर हर तरह से बुरे मनुष्य पर कहते हैं।

सूरत में जन्मे और काशी में मरे—सूरत प्राचीन काल में बहुत वैभवशाली नगर था इसीलिए वहां जन्म लेनेवाले को बहुत भाग्यशाली माना जाता था और काशी में मृत्यु होने से स्वर्ग मिलता है इसी कारण काशी में मरनेवालों को भी भाग्यशाली समझा जाता है। जिस व्यक्ति का जीवन सुखमय व्यतीत हो और उसका अंत भी अच्छा हो तो उसके प्रति कहते है। तुलनीय : माल० सूरत रो जनम ने काशी रो मरण।

सूरत में वैसे सीरत में ऐसे—ऊपर से तो देखने में बहुत सुंदर पर भीतर या स्वभाव से बुरे।

सूरत से क़ीमत बड़ी—(क) स्वरूप से भी मूल्य बढ़ जाता है। (ख) रूप से गुण का मूल्य अधिक होता है।

सूरदास की कारी कमरिया चढ़े न दूजो रंग—काले कम्बल पर दूसरा कोई रंग नहीं चढ़ता। (क) किसी दुष्ट को कितने ही उपदेश क्यों न दिए जाएं सब बेकार है। (ख) जन्मजात अच्छी या बुरी प्रकृति नहीं छूटती। तुलनीय : भोज० सूरदास क कारी कमरिया चढ़े ना दूसर रंग; राज० काली ऊन कुमाणसां चढ़ै न दूजो रंग, या सूरदास काळी कामळ पर चढ़ै न दूजो रंग।

सूरदास खलकारी कामरी चढ़े न दूजो रंग—ऊपर देखिए। तुलनीय : मरा० सूरदास म्हणतात दुष्ट म्हणजे काळें घोंगडें, त्यावर दुसरा रंग चढणार नाहीं।

सूरदास मनमौजी मेहरी के कहे भौजी—मस्त आदमी आदमी के मन का कुछ ठीक नहीं रहता।

सूर न चूकत दाँव निज, कूर बजावत गाल—दुष्ट लोग गाल बजाते रहते है या बकबक करते रहते हैं और वीर लोग अपने अवसर से नही चूकते। अर्थात् वे बड़-बड़ नही करते बल्कि जो कुछ उन्हें करना होता है उसे कर दिखाते है।

सूर न तान, खाएँ कान– बेढंगे और बेसुरे गानेवालों के प्रति व्यंग्य। तुलनीय : गढ़० भौण न भाम जिय को नाम।

सूरमा चना भाड़ नहीं फोड़ सकता—एक व्यक्ति चाहे कितना ही शूरवीर और बलशाली क्यों न हो वह अकेला कई लोगों को परास्त नही कर सकता।

सूर समर करनी करहिं, कहि न जनावहिं आप--शूरवीर रण-क्षेत्र में वीरता दिखलाते हैं पर उसे स्वयं कहते नही फिरते। आशय यह है कि वीर पुरुष अपनी प्रशसा नही करते।

सूर सूर तुलसी शशी, उड़गन केशवदास; अब के कवि खद्योत सम जहँ-तहँ करत प्रकास---हिन्दी कवियों पर उक्ति है। सूरदास सूर्य हैं, तुलसी चन्द्रमा है और केशव तारे हैं। आज के युग के कवि तो जुगनू है जो कहीं-कहीं प्रकाश कर पाते हैं। नए और प्राचीन कवियों की कोई तुलना नही।

सूरा काटे और बिल में घुस जाय—वीर मनुष्य अपना रास्ता अपने आप बना लेते है।

सूरा सो पूरा—वीर सब कुछ कर सकता है।

सूली ऊपर सेज पिया की अर्थात् बिना कष्ट सहे आराम नहीं मिलता।

सूली पर की रोटी ऐसी रोटी या कमाई जिसे जान पर खेलकर पैदा किया जाए।

सूली पर भी नींद आ जाती है नींद बड़ी विचित्र है। बड़े से बड़े दुःख मे भी यह आ जाती है। (यद्यपि कवि प्रसिद्धि के अनुसार विरहिणियों को नींद नहीं आती वे तारे गिनकर रात बिताती है)। तुलनीय : मरा० सुलावर सुद्धां झोप येन।

सूआ सेमल देखके, सभी गंवाई बुद्धि; फूल देखि के रम रहे, फल की रही न सुद्धि--तोता सेमल के फूल को देखकर ज्ञान को खो देता है और उसे परिणाम की चिन्ता नही रहती। अर्थात् धोखे की टट्टी जब सामने आती है तो सभी धोखा खा जाते है।

सू सू से सुमरी अच्छी-- सू सू कहने से तो स्पष्ट रूप से सुसरी (एक प्रकार की गाली) कह देना अच्छा है। आशय यह है कि जिसके बारे में जो मत हो वह स्पष्ट रूप से व्यक्त कर देना ही अच्छा है। तुलनीय : हरि० सू सू तै तै सुसरी ए आच्छी हो।

सूहे की रीति नहीं, मसरू की तौफ़ीक़ नहीं—जो करने योग्य है उसे करना नहीं, जो करने के लायक़ नही उस पर मन दौड़ाना। उलटा काम करने पर व्यंग्य में कहते हैं।

सेंत का चंदन घिस मेरे नंदन—मुफ़्त का चदन है बेटा खूब रगड़कर लगा लो। मुफ़्त मिली वस्तु का निःसंकोच प्रयोग करने पर व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० सेंति को चंदन घिसि मेरे नंदन।

सेंत का चूना दादा की क़ब्र—मुफ़्त में चूना मिला उसे दादा की क़ब्र पर भी लगाने लगे। (क) मुफ़्त का सामान इस्तेमाल करने के लिए अधिक सोचना नही पड़ता। (ख) मुफ़्त का माल लोग दिल खोलकर खर्च करते हैं।

सेंत का माल हृदय निर्दयी—मुफ़्त की चीज़ का इस्तेमाल मनमाना किया जाता है, उसमें लोग रू-रियायत नही करते। तुलनीय : फ़ा० माले-मुफ़्त दिले-बेरहम।

सेंत की गंगा, हराम का गोता—जब मुफ़्त की चीज़ मिलती है और लोग मनमाना खर्च करते है, ऐसे अवसर पर यह कहावत कही जाती है। तुलनीय : भोज० सेंत क गंगा हराम क गोता; अव० सेंत की गंगा हराम के गोता; गढ़० सेत को माल पिड़ा के की।

सेंत की नौकरी घर का खाना, कपड़े फाटे घर को आना-- वेतन के बिना ही नौकरी की और जब कपड़े भी फट गए तो घर वापस आ गए। जो व्यक्ति दूसरों के यहाँ मूर्खतावश मुफ़्त मे काम करते हैं उनके प्रति व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : गढ़० सेंत की चाकरी गाँठ का खाना, झगुली फाटी घर ह्वै जाणा।

सेंत के धान मौसी का श्राद्ध—मुफ़्त में धान मिल गया तो मौसी का श्राद्ध करते हैं। मुफ़्त की चीज़ का दुरुपयोग करने पर कहते है। तुलनीय : बुंदे० सेंत के धान में मौसिया को सराध।

सेंत मेत का गेहूँ घर-घर पूजा—मुफ़्त की चीज़ मिले तो उसे खर्च करने को सभी तैयार हो जाते हैं।

सेंदुर टिकुली जरल, अब पेटों में बज्जर पड़ल- यह भोजपुरी की कहावत है। कोई स्त्री अपने कष्ट के सम्बन्ध में कह रही है कि शृंगार की चीजें तो पहले से ही नहीं मिलती थीं अब खाने के भी लाले पड़ गए। अर्थात् बहुत

कष्ट हो रहा है। अत्यावश्यक चीजों के लिए भी कष्ट होने पर कहा जाता है।

सेज की मक्खी भी बुरी—सेज पर का प्रतियोगी चाहे वह मक्खी ही क्यों न हो स्त्रियों के लिए बहुत बुरा होता है। स्त्री अपनी सौत के ऊपर कहती है। तुलनीय : राज० सेजरी माखी ही बुरी।

सेज चढ़ते ही रांड—विवाह के बाद ही जिसका पति मर गया हो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : अव० सेजिया चढ़तै राड।

सेठ कहें सो सब सही—सेठ जो कुछ भी कहें सब ठीक होता है। बड़े आदमी यदि कुछ ग़लत भी कहते हैं तो भी लोग उनकी हाँ-में-हाँ मिला देते हैं। तुलनीय : राज० सेठ बोलै सो सवा वीस।

सेठ क्या जाने साबुन का भाव?—दे० 'शेख क्या जाने…'।

सेठजी जात क्या है? कहा—चोपड़ा, आपकी शकल से ही दिखता है—किसी ने पूछा सेठजी, आपकी जाति क्या है? तो सेठजी ने उत्तर दिया कि चोपड़ा। इस पर प्रश्न करनेवाले ने कहा कि वह तो आपकी शक्ल से से ही पता लग रहा है। जब कोई व्यक्ति अपनी झूठी बड़ाई करे तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० सायजी, जात कांई? चोपड़ा। पशम ही दीखै नी।

सेठजी सूरा, लेखा पूरा—सेठ जी शूर हैं, हिसाब बराबर हो गया। जिस व्यक्ति का लाभ और व्यय बराबर हो उसके प्रति परिहास से कहते हैं। तुलनी : राज० सायजी सूरा, लेखा पूरा।

सेत की दवा पुनर्नवा—किसी को मुफ्त की दवा देने पर व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : भोज० सेतहा क दवाई गधपुरना।

सेत सेत सब एक सी—दे० 'श्वेत श्वेत सब एक सी।'

सेंती का चन्दन घिस मेरे नन्दन—जब मुफ्त की चीज़ मनमानी या फ़िजूल में खर्च की जाती है तब कहते हैं।

सेर की हँडिया में सवा सेर कहाँ समाए—एक सेर की क्षमता वाली हंडी में सवा सेर चीज़ नहीं रखी जा सकती। आशय यह है कि (क) अपनी क्षमता से अधिक चीज को कोई संभाल नहीं सकता। (ख) छोटे लोग अपनी औक़ात से थोड़ा भी अधिक धन पा जाते हैं तो इतराने लगते हैं। तुलनीय : हरि० सेर की हांड्डी में, सवा सेर ना समावै।

सेर की हांडी में सवा सेर पड़ा और उफनी—ऊपर देखिए।

सेर के बाबा सवा सेर का शंख—बाबाजी खुद सेर भर के हैं और शंख लेरखा है सवा सेर का। अपनी सामर्थ्य से परे दिखावा करनेवाले या बेमेल काम करनेवाले के प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अव० सेर भरे के बाबा सवा सेर क संख; ब्रज० सेर कौ बाबाजी सवा सेर कौ संख।

सेर को कभी सवा सेर भी मिल जाता है—(क) अत्याचारी को कभी उससे भी बड़ा अत्याचारी मिल जाता है। (ख) चालाक को कभी-न-कभी उससे भी बड़ा चालाक मिल जाता है जिसके आगे उसे झुकना पड़ता है।

सेर दे तो सवा सेर ले—थोड़ा दे और अधिक ले। पाप और पुण्य का फल किए से अधिक ही मिलता है। जो दूसरों को दुःख देते हैं प्रकृति उन्हें उससे भी अधिक दुःख देती है। तुलनीय : राज० सेर री दे, सवा सेर री ले।

सेर में पसेरी का धोखा—(क) असंभव बात पर कहा जाता है। (ख) बहुत अधिक हानि हो जाने पर कहा जाता है। इतनी हानि जितने की संभावना न हो सके। तुलनीय : राज० सेर में पसेरी रो धोखो।

सेर में पूनी भी नहीं कती—एक सेर रूई में अभी एक पूनी भी नहीं काती गई। अर्थात् अभी कुछ भी काम नहीं हुआ। तुलनीय : राज० सेर में पूणी ही को कती नी।

सेर-सेर का मोल बिकाय, सवा सेर का गदहा खाय—अच्छी और मूल्यवान वस्तु गधे खा रहे हैं और बुरी वस्तुएँ जिनका कुछ भी मूल्य नहीं होना चाहिए, लोग दाम देकर खरीद रहे हैं। जब कोई अच्छी वस्तु अयोग्य व्यक्ति को मिले और पात्र व्यक्ति रद्दी वस्तुओं से काम चलाएँ तो कहा जाता है। तुलनीय : अव० सेर-सेर का मोलऊ जायँ स्वारा सेर गला ने खाय!

सेर सोने की क्या क़ीमत—एक सेर सोने की भी क्या कोई अधिक क़ीमत है? (क) लखपतियों के प्रति कहते हैं क्योंकि उनके लिए यह कोई बड़ी बात नहीं होती। (ख) जो निर्धन होने पर भी डींगें मारें उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० सेर सोनेरी कोई वणियाट है।

सेरे मर्द पसेरी बैल—मर्द के लिए सेर भर का बोझ भी बहुत है और बैल के लिए पाँच सेर भी कम। एक व्यक्ति के लिए जो कुछ उपयुक्त है वही दूसरे के लिए भी उपयुक्त हो ऐसा आवश्यक नहीं।

सेवई के बिना ईद कैसी—सेवई के बिना ईद अच्छी नहीं लगती अर्थात् जिस समय के लिए जो चीज़ आवश्यक

है उसके बिना उस समय की शोभा नहीं होती।

सेवक के लिए थोड़ा ही बहुत है—गरीब के लिए थोड़ा सहारा भी काफ़ी हो जाता है। (मालिक खा रहा था। अंत में उसने कहा कि अब तो थाली में बहुत थोड़ा रह गया तुम्हारे लिए क्या छोड़ें? इस पर नौकर ने कहा—सेवक के लिए थोड़ा ही बहुत है)।

सेवक सुख चह मान भिखारी, व्यसनी धन, शुभ गति व्यभिचारी—सेवक के लिए सुख, भिखारी के लिए मान, व्यसनी के लिए धन और व्यभिचारी के लिए शुभ गति असंभव है। किसी असंभव बात के चाहने पर कहते हैं।

सेवक सोई जानिए, रहे विपत्ति में संग, तन छाया ज्यों धूप में रहै साथ इक रंग—असली सेवक वही है जो दुःख में छाया की तरह साथ दे। छाया शरीर का साथ धूप (दुःख) में नहीं छोड़ती।

सेवा करने से मेवा मिलता है दे० 'कर सेवा···'।

सेवा करे सो मेवा पावे—सेवा का फल बहुत अच्छा होता है। तुलनीय : अव० सेवा करै मेवा खाय; राज० सेवा में मेवा है; गढ़० सेवा का मेवा; भीली—करे चाकराई सो करे ठाकराई; पंज० सेवा करे ओ मेवा पावे।

सेवा बिना मेवा नहीं—अर्थात् बिना परिश्रम किए सुख नहीं मिलता। तुलनीय : मल० कय्यालिट्टेनिकले वायाट; अं० He that would eat the kennel must crack the nut.

सैयां का गुस्सा सौत पर—क्रोध का कारण कोई और हो और जब वह किसी और पर प्रकट किया जाए तब व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मैथ० सांय के लहर सौतिनी पर।

सैयाँ का पैसा भैया का नाम—पैसा है पति का और बतलाती है भाई का। स्त्रियों को अपने पीहर में अधिक प्रेम होता है इसलिए वे वहां की अधिक बड़ाई करती हैं।

सैयाँ के मरने का दुःख नहीं है, दुःख है इस बात का कि अब मछली-भात नहीं मिलेगा—निरी स्वार्थवादिता पर उक्त कहावत कही जाती है।

सैयाँ गए परदेश अब डर काहे का—पति जब घर नहीं है तो किसका डर? अर्थात् किसी का नहीं। जब प्रमुख व्यक्ति की अनुपस्थिति में उसके अधीनस्थ लोग मनमानी करने लगते है तब उनके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते है।

सैयाँ जिसे चाहे वही सुहागिन—जिसको पति अधिक प्यार करता है वही सच्चे अर्थों में सुहागिन है।

सैयाँ भए कोतवाल अब डर काहे का—जब अपना संबंधी ही अधिकारी हो तो जो चाहे करो कौन पूछनेवाला है। तुलनीय : कनौ० सैया भये कुतवाल हमे डिर काहे को।

सोंटा बल बिन काक न आवे, बैरी छीन उलट गदकावे—बिना बल के लाठी भी काम नहीं करती। दुश्मन उसे छीनकर उलटे लाठीवाले को मारने लगता है। अर्थात् शस्त्र ही सब कुछ नहीं, बल भी विजय के लिए अपेक्षित है।

सोंटा हाता देह में होंगा, उसने भेंटे सब कुछ मांगा—जिसके शरीर में शक्ति और हाथ में लाठी है उसे मांगने से ही सब कुछ मिल जाता है।

सोआ सो खोआ—जो सो जाता है या ग़फ़लत में पड़ जाता है वह हानि उठाता है या खो देता है।

सोआ सो खोआ, जागा सो पावा—जो व्यक्ति सोता है वह अपना भी खो देता है और जो जागता है वह लाभान्वित होता है। लौकिक अर्थ में ज़माने को ठीक से देखते रहना जागना, और न देखते रहना सोना है। आध्यात्मिक अर्थ में मोहमाया में पड़ा रहना सोना और इनसे अलग हो ज्ञान प्राप्त करना जागना है। इन दोनों अर्थों के आधार पर इसके दो अर्थ और दो प्रयोग होते है।

सोआ सो चूका—जो सो जाता है वह स्वर्ण अवसर चूक जाता है। आशय यह है कि जो ठीक से आंख खोलकर ज़माने को नहीं देखता रहता वह उचित अवसर पर चूक कर अपनी हानि कराता है।

सोइ सयान जो परधन हारी, जो करु दंभ सो बड़ आचारी—आजकल जो दूसरे का धन हरण करता है वही चतुर और जो पाखंड करता है वही सदाचारी समझा जाता है। आज के संसार की उलटी रीति है।

सो घर सत्यानाश जहाँ अति बल नारी—जिस घर में स्त्री का शासन या ज़ोर हो उसे नष्ट हुआ समझना चाहिए।

सोच के चलना मुसाफ़िर यह ठगों का गाँव है—(क) संसार में माया-मोह जो ठगों जैसे है उनसे बचना चाहिए। (ख) संसार में सभी अपने स्वार्थ के कारण दूसरों को ठगने के लिए तैयार रहते है अतः उनसे होशियार रहना चाहिए।

सोचना जी मोचना—चिन्ता करने से मन को कष्ट होता है। सोच बड़ी कष्टदायिनी है।

सोचने, कहने और करने में बहुत अंतर है—किसी कार्य के संबंध में सोचने या बातें करने से ही वह कार्य हो नहीं हो जाता उसके करने में परिश्रम भी करना पड़ता है। जो व्यक्ति केवल योजना बनाकर खूब हो-हल्ला मचाते हों

किंतु मूर्त रूप न देने के कारण लाभ कुछ भी न पाते हों उनके प्रति कहते है। तुलनीय : भीली—धारज्ये ने धावन्ये काम नी थाय, काम धीरे हूँ थाय।

सोचनेवाला सोच मरे, करनेवाला काम करे – सोच-विचार करने वाले सोचते ही रह जाते है और काम करने वाले काम करके चल देते हैं। सोचने से नहीं काम करने से ही काम होता है। तुलनीय : भीली –वचार करवा हूँ कई थावा नो नी, करवा हूँ थावा नो।

सोत का पानी पाक- नदी-नाले का बहता हुआ पानी साफ़ और पवित्र होता है। उसके पीने में कोई दोष नहीं।

सोता नाग जगावनो अहै न आछी बात – भयानक और खतरनाक शत्रु यदि सो रहा हो तो व्यर्थ में उससे छेड़छाड़ करना या उसे जगाना उचित नहीं है। संभव है जागने पर वह जगानेवाले का अहित कर बैठे।

सोती भीड़ जगाओ अपना मुँह मराओ – (क) सोती हुई या शांत बर्रे (भिड) के छत्ते को खोदना जानकर अपनी दुर्दशा करानी है। (ख) दुष्टों को भरसक छेड़ना नहीं चाहिए।

सोती रार जगाओ मत– दबे हुए झगड़े को फिर उभारना नहीं चाहिए।

सोते का कटड़ा जागते की कटिया दे० 'जागते की कटिया…'।

सोते का मुँह कुत्ता चाटे सोना मनुष्य मरे के बराबर है। उसका कोई कुछ करे उसे पता नहीं चलता। तुलनीय : अव० सोवत का मुँह कूकुर चाटै।

सोते को काटड़ा जागते को काटिया दे० 'जागते की कटिया…'।

सोते को जगावे मचलों को क्या जगावे –सोए आदमी को जगाया जाता है पर जो मचलकर झूठ-मूठ सोने का बहाना करके पड़ा हो उसे नहीं जगाया जा सकता। तुलनीय : हरि० सूतै नें जगावै, दड़ मारे आटने के जगावै, अथवा सूते नै जगावै, जागते नै क्यू कर जगावै।

सोते को तो जगा दे, जगते को कौन जगाए –ऊपर देखिए। तुलनीय : कौर० सात्ते कूँ तो जगा दे, जागते कूँ कौन जगावै।

सोते को सोता कब जगाता है - जो स्वयं मूर्ख है वह दूसरे मूर्ख को कैसे सुधार सकता है।

सोते लड़के का मुँह चूमा, न माँ खुश न बाप खुश – (क) व्यावहारिकता और सांसारिकता यही कहती है कि उपकार या भला उसी का करे और तभी करे जब कुछ उस पक्ष में आशा हो। लड़का सो रहा है। वहाँ बाप-माँ कोई नहीं है। किसी ने चुंबन दिया। न माँ ने और स्वयं लड़के ने भी सोते रहने के कारण नहीं जाना। अतः वह चूमना व्यर्थ हुआ। (ख) बेकार काम करना मूर्खता है। लड़के को चुम्बन बच्चे को या उसके माँ-बाप को खुश करने के लिए देते है पर ऐसी स्थिति में किसी के खुश होने की संभावना नहीं अतः व्यर्थ है। तुलनीय : गढ़० सेया नौना की मुक्की।

सोते साँप को न जगाओ - जानबूझकर खतरा न मोल लो।

सोते सिंह से भोंकता कुत्ता अच्छा सोते हुए शेर से भूँकने वाला कुत्ता कहीं अच्छा है। न करनेवाले से कुछ करनेवाला अच्छा है।

सो तो जाऊँ जो यह कूबड़ सोने दे—सोने को तो दिल बहुत चाहता है, किन्तु यह कूबड़ सोने नहीं देता। जब कोई इच्छा रहते हुए भी किसी कारणवश कोई कार्य न कर सके तो उसके प्रति कहते है। तुलनीय गढ़० बूढ़न स्यौ पर कूब नि सेण देदी।

सोन जानिए कसकर, मानुष जानिए बसकर - सोने को कसौटी पर कसने से ही पता चलता है कि वह कैसा है और मनुष्य के साथ रहने से उसकी वास्तविकता का पता लगता है। तुलनीय : बुंद० सोनो जानिए कसे, मानुष जानिये बसे; मरा० सोने पाहावे कसून, माणस पाहावे वसून।

सोना उछालते चले जाओ – किसी राज्य में प्रबन्ध के अच्छे होने पर कहते हैं। आशय यह है कि किसी लूटमार या चोरी का खतरा नहीं है।

सोना गया दानी कर्ण के साथ – जो सोना दान दिया जाता था वह कर्ण के साथ ही चला गया। आजकल के कंजूसों के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० सोनो गयो करण रै साथ।

सोना-चाँदी आग ही में परखे जाते है आदमियों की परीक्षा दुःख या कष्ट पड़ने पर ही होती है। तुलनीय : अव० सोना चाँदी आगिन मा परखा जात है।

सोना-चाँदी से अन्न धन बढ़कर है- - दे० 'अन्न धन अनेक धन सोना-रूपा कतेक धन।' तुलनीय : भोज० अनाज के आगे सोना रूपा कवन धन हउ।

सोना जरे जो कान दुखावै वह सोना जल जाए जो कानों को कष्ट दे। हानिकारक या कष्टकर मूल्यवान वस्तु का उपयोग करना मूर्खता है।

सोना जाने कसे और मानुष जाने बसे—दे० 'सोन जानिए कसकर⋯'।

सोना पाना और खोना दोनों बुरा—ऐसी जनश्रुति है कि जो सोना पाता है या खो देता है उसके घर का कोई-न-कोई अवश्य मर जाता है। तुलनीय: अव० सोना पाउब, सोना खोउब दुइनौ खराब है।

सोना धूल में भी चमकता है—(क) गुणी व्यक्ति बुरी-से-बुरी दशा में भी ज़ाहिर हो जाता है। (ख) गुण किसी बुरे के पास हो तो भी लोग उस पर आकर्षित होते है तथा उसकी इज्जत करते है। तुलनीय: अव० सोना माटिप मे चमकत है।

सोना देखे जग डिगे—सोने को देखकर सभी लोगों की नीयत ख़राब हो जाती है। धर्मात्मा और ज्ञानी भी धन को देखकर बेईमान बन जाते हैं। तुलनीय: राज० सोनो देख अर मुनीरो मन हाग्न।

सोना बिगड़ा सुनार घर बिटिया बिगड़ी बाप घर—सोना सुनार के घर जाने से खराब हो जाता है क्योंकि वह उसमें कुछ-न-कुछ मिलावट अवश्य कर देता है। और लड़की बाप के घर रहकर खराब हो जाती है; क्योंकि पिता के राज्य मे उस पर नियत्रण कम रहता है। तुलनीय: बुंद० सोनो बिगरो सुनार घर, बिटिया बिगरी बाप घर; बंग० बापरे बाड़ी झी नष्ट पान्तो भाते गी नष्ट।

सोना नाली में सपना स्वर्ग का—निराधार हवाई क़िले बनानेवाले या अयोग्य होते हुए भी बड़ी-बड़ी योजनाओं की शेखी बघारनेवाले के लिए कहते है। तुलनीय: भोज० भुइयाँ सुत्त के, आ सपना सरग क; छत्तीस० धूरमां सूतै, सरग के सपना।

सोना देनेवाली मुर्गी मर गई—लाभदायक वस्तु के नष्ट हो जाने पर कहते है। तुलनीय: सि० उहा कुकुरि मरि गई जा सोना आना दीदी हुई; अ० The goose that laid golden eggs is dead.

सोना नीकत कान फरावे के?—यदि कोई चीज बहुत अच्छी हो पर उसके अपनाने या प्रयोग करने से कष्ट होता हो तो उसे छोड़ देना ही बुद्धिमानी है।

सोनार की सौ लोहार की एक—जब कोई निर्बल सबल से टक्कर ले तब उसके प्रति कहा जाता है।

सोना लेकर मिट्टी भी नहीं देता—इतना लिया और अब कुछ भी नही देता। नादेहंद के लिए कहते है।

सोना सुनार का भूषण संसार का—सोना सुनार का होता है पर उसमे शोभा दूसरों की होती है। किसी के धन अथवा वस्तु से दूसरे की शोभा अथवा कीर्ति बढ़े तब यह लोकोक्ति कही जाती है।

सोना छुए मिट्टी हो—कर्महीन मनुष्य को कहते हैं जिसके हाथ लगने से ठीक काम भी बिगड़ जाता है।

सोने का गड़ुआ और पीतल की पेंदी—(क) किसी गुणी में कोई छोटा-सा ऐब। (ख) अच्छी चीज़ में थोड़ी-खराबी। तुलनीय: अव० सोने का गेड़ुआ औ पीतर कै पेंदी; माल० सोना री थाली में पीतल री मेख।

सोने का निवाला खिलाइए और शेर की नजरों से देखिए—लड़कों को लाड़-प्यार तो करें पर साथ ही कड़ी निगाह भी रखें ताकि वे खराब न होने पावें।

सोने की अँगूठी पीतल का टाँका—दे० 'सोने का गड़ुवा⋯'।

सोने की अंगूठी पीतल का टांका, मां छिनाल पूत बांका—वेश्या के पुत्र को कहते है। तुलनीय: अव० सोने कै अंगूठी, पीतर का टांका, मांई छिनार बेटवा बांका।

सोने की कटारी पेट में नहीं मारी जाती—नीचे देखिए।

सोने की कटारी पेट में नहीं रखते—धन से प्राण अधिक प्यारा होता है। तुलनीय: राज० सोनेरी कटारी पेट में को मारीनै नी; सोनैरी कटारी पेट मे खावणनै को हुवैनी; गढ़० सोना की छुरी पेट थोडी ही मारें दी।

सोने की कटोरी में कौन भीख न देगा—(क) सुंदर कन्या को वर बहुत जल्दी मिल जाता है। (ख) धनी को ऋण आसानी से मिल जाता है।

सोने को खोभार में स्वप्न देखे महल का—सोते है खोभार (सुअर के रहने का स्थान) में और स्वप्न देखते हैं कि मैं महल में हूँ। ग़रीब या छोटे स्तर के आदमी का ऊँची या बड़े स्तर की बातें सोचना या ख़याली पुलाव पकाना।

सोने की चिड़िया हाथ लगी है—कोई बढ़िया माल या देनदार आसामी हाथ लगने पर कहा जाता है। रंडियाँ दूकानदार, वकील, ज़मींदार आदि इसका प्रयोग करते हैं। किसी सुन्दरी के पाने पर बदमाश भी इसका प्रयोग करते हैं। तुलनीय: अव० सोने की चिरैया हाथ लाग गय।

सोने की चिड़िया हाथ से निकल गई—जब कोई अच्छा माल या खूब रुपये देनेवाला ग्राहक हाथ से निकल जाए तो कहते हैं। इसका प्रयोग दूकानदार, वकील, रंडियां जमीदार आदि करते हैं। तुलनीय: अव० सोने कै चिरैया हाथ से निकर गए।

सोने की थाली में पीतल का टाँका—(क) अमूल्य और निर्मूल्य वस्तु में सम्बन्ध होने पर व्यंग्य से ऐसा कहते हैं। (ख) धनवान और निर्धन के रिश्ता होने पर भी कहते हैं। (ग) किसी अच्छी चीज़ या किसी गुणी व्यक्ति में थोड़ा-सा दोष होने पर भी ऐसा कहते है। तुलनीय : राज० सोनैरी थाली में लोरो मेख।

सोने की छुरी भी पेट में नहीं मारी जाती धन से प्राणों का मोह अधिक होता है।

सोने की छुरी हो तो पेट में नहीं मारते ऊपर देखिए। तुलनीय : कौर० सोने की छुरी हो तो क्या पेट में मारी जा।

सोने की बड़ेरी फूस का छप्पर- बेजोड़ काम या बेजोड़ बात पर कहते हैं। बिना जोड़ की चीज़ अच्छी नही लगती। 'अरहर की टट्टी गुजराती ताला' का भी यही भाव है।

सोने की बिल्ली तो बना दी, पर म्याऊँ कौन करे— जब कोई अयोग्य व्यक्ति अपने धन और पहुँच के कारण किसी बड़े पद पर पहुँच जाए पर उसे ठीक ढंग से सँभाल न सके तब उसके प्रति व्यंग्य मे कहते है। तुलनीय : गढ़० सून की बिरालिन मि कल्लो पर म्यों को कल्लो।

सोने की लंका दूर है, गाँठ का ही काम आएगा—सोने की लका तो बहुत दूर है, तब तक गाँठ का धन ही काम आ सकता है। (क) अपने पास का धन ही काम आता है। (ख) यदि कहीं से बहुत धन मिलने की आशा हो तो भी अपने पास कुछ धन रहना ही चाहिए, उसके मिलने तक जीवित रहने के लिए। तुलनीय : भीली० कोड़े जो काम आवे, होना नी लंकाचे टी है।

सोने को गढ़ाना बैल को खिलाना—सोना गढ़वाने मे ही आभूषण बनकर शोभा देता है तथा बैल खिलाने से ही स्वस्थ होता है। तुलनीय : भोज० सोना गरल बरध खिअवले।

सोने को दाग नहीं लगता—(क) अच्छे मनुष्य दोष-रहित होते हैं। (ख) भलों को कोई बदनाम नहीं करता। तुलनीय : अव० सोने का दाग़ नाही लागत; राज० सोनैने काट को लागै नी।

सोने में पीली और मोतियों में धौली—सोने-मोती से लदी हुई औरत पर कहते हैं।

सोने में सुगंध—अच्छी वस्तु में या अच्छे व्यक्ति में अतिरिक्त गुण, जिनके कारण वह और भी अच्छा या महान माना जाए। तुलनीय : राज० सोनो र सुगंध; गढ़० सोना मा सुगंध।

सोने में सुहागा—ऊपर देखिए। तुलनीय : अव० सोने मा सोहागा; गढ़० सोना मां स्वागो।

सोने से गढ़ाई महँगी- जितने का सोना नहीं है उससे अधिक गहने की बनवाई लग गई। किसी चीज के दाम से उसकी मजदूरी अधिक हो तब कहते है। 'डबल की मुर्गी टका (दो डबल) ज़बह कराई' का भी यही अर्थ होता है। तुलनीय : अव० सोना से महंग गढ़ाई।

सो पंछी पिंजरे परे जो बोले बहु मीठ—जो पक्षी बहुत मीठा बोलता है वही पिंजड़े मे बन्द किया जाता है। गुण भी कभी-कभी अपनी बुराई या दुख का कारण बन जाता है।

सोपानारोहण न्याय—सीढ़ियों से चढ़ने का न्याय। छत पर या ऊपर जाने के लिए एक-एक पीढ़ी क्रम से चढ़ना होता है। या उन्नति करने मे धीरे-धीरे ऊपर उठना होता है।

सोपानावरोहण न्याय—सीढ़ियाँ जिस क्रम से चढ़ते हैं उसी के उलटे क्रम से उतरते है। इसी प्रकार जहां किसी क्रम से चलकर फिर उसी के उलटे क्रम से चलना होता है। (जैसे एक बार एक से सौ तक गिनती गिनकर फिर सौ से निन्नावे, अट्ठानबे इस उलटे क्रम से गिनना) वहाँ यह न्याय कहा जाता है।

सो फल कोऊ न ले सके, जहाँ कटीली डार—जहाँ कटीली डार होती है वहाँ से फल पाना मुश्किल होता है। अर्थात् (क) सुरक्षित चीज़ को कोई भी नहीं ले सकता। (ख) जिसके नजदीक कोई कंटक या दुःखदायी चीज होती है उसके पास जाने की कम लोग हिम्मत करते है।

सोभा रण की सूरमा, घर की सोभा वीर, रज की सोभा चाँदनी भोजन सोभा खीर—युद्ध की शोभा वीर से, घर की स्त्री से, रात की चाँदनी से और भोजन की खीर से होती है। (वीर = स्त्री; रज = रात्रि)।

सोम भूखे न मंगल अघाए—सोमवार को न तो भूखे रहते हैं और न ही मंगलवार को अधिक पेट भरा रहता है। जो व्यक्ति सदा एक जैसी स्थिति में रहते हो उनके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० सोम साजा न मंगळ मादा।

सोम सनीचर पुरब न चाल, मंगर बुध उतर दिसकाल। जो बिहफै को दक्खिन जाय; बिना गुनाहें पनहीं खाय। बुद्ध कहै मैं बड़ा सयाना, मोरे दिन जिन किह्यो पयाना।

कौड़ी नहि भेंट कराऊँ, कुल कुसल से घर पहुँचाऊँ। एक पहर जो परखै मोहि, सोने क छत्र धराऊँ तोहि—सोमवार और शनिवार को पूर्व दिशा के लिए और मंगलवार और बुधवार को उत्तर दिशा के लिए दिशाशूल है। जो गुरुवार को दक्षिण दिशा को जाएगा वह बिना किसी अपराध के जूता खाएगा। बुध कहता है कि मैं बड़ा चतुर हूँ मेरे दिन कहीं भी प्रस्थान न करो, मैं कौड़ी से भेंट नहीं होने देता। हाँ यह अवश्य है कि कुशलपूर्वक घर पहुँचा देता हूँ। पर यदि एक पहर तक प्रतीक्षा करके यात्रा करोगे तो मैं सोने का छत्र सिर पर चढ़ाऊँगा। अर्थात् तुम्हारा कार्य सिद्ध कर दूँगा।

सोम सुक्र सुर गुरु दिवस, पौष अमावस होय, घर-घर बजे बधावड़ा, दुखी न दीखे कोय—यदि पौष अमावस्या को सोमवार, शुक्रवार और गुरुवार पड़े तो घर-घर बधाव बजेगा और कोई दुखी न रहेगा।

सोमाँ, सुकराँ, सुरगुराँ, जे चन्दो अगंत, डंक कहै हे भड्डली, जल-थल एक करंत—यदि आषाढ़ में चन्द्रमा, सोमवार, शुक्रवार या गुरुवार को उदय हो तो ऐसी वर्षा होगी कि जल और थल एक हो जाएँगे। अर्थात् अधिक वर्षा होगी।

सोमाँ सुकराँ बुधगुराँ, पुरबाँ धनुष तणं; तीजे चौथे दोहरैं समदर ठेल मरै—यदि सोमवार, शुक्रवार, बुधवार और गुरुवार को इन्द्रधनुष पूर्व दिशा में उदय हो तो उसके तीसरे-चौथे दिन इतनी वृष्टि होगी कि समुद्र भी भर जाएगा।

सोया जगाया जाता है जगा नहीं—दे० 'सोते को तो जगा दे…'।

सोया जागता है, जगा नहीं—ऊपर देखिए। तुलनीय : भोज० सूतल जागे ला जागल न जागे, मैथ० जागल जागे कि सूतल जागे।

सोया सो चूका—जो सो जाता है वह हानि उठाता है। अर्थात् असावधान रहने से हानि उठानी पड़ती है। तुलनीय : अव० सोआ तौ खोवा; मरा० झोपला तो मेला।

सोरठ मीठी रागिनी, रण मीठी तलवार; जाड़े मीठी कामली, सेजों मीठी नार—सोरठ रागिनी, रणभूमि में तलवार, जाड़े में कंबल और शैया (सेज) पर स्त्री अधिक प्रिय होती है। यों मीठा कोई नहीं है अपने-अपने स्थान और समय पर सभी चीजें अच्छी लगती हैं।

सोरह दराड एकादशी—सारे दिन उपवास। किसी के दिन-भर भूखा रह जाने पर कहते हैं। तुलनीय : अव० सोलहौ डंड एकादसी।

सोलह आने सच्ची बात—एक रुपए में सोलह आने सच बात है। (क) सत्य बात के लिए कहते हैं। (ख) झूठी बात के लिए भी व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० सोलह आना साची।

सोवें चटाई पर इच्छा पलंग की—स्पष्ट है। मैथिली में यह लोकोक्ति है 'ओछाओन खंडतरि पलिया चाह' अर्थात् बिछावन तो टूटी चटाई का और चाह पलंग की। विद्यापति के यहाँ आता है : ओछावन खंडतरि पलिया चाह, आओर कहन कत अहिरिन नाह।

सोवें पुवाल पर बात करें पलंग की—ऊपर देखिए।

सोवन को कुंभकरना भोजन को भीम—सोने में कुंभकरन और भोजन में भीम के समान है। उस व्यक्ति के प्रति कहते हैं जो कुछ काम नहीं करता पर खूब खाता है और खूब सोता है।

सोवेगा सो खोवेगा, जागेगा सो पावेगा—सोनेवाला या ग़फ़लत करने वाला हानि उठाता है और जागनेवाला या चैतन्य रहनेवाला लाभ उठाता है। तुलनीय : अव० सोवै तौ खोवै, जागै तौ पावै, राज० सोवै सो खोवै।

सोवे भाड़ में सपना देखे महल का—जब ग़रीब मनुष्य बड़ी-बड़ी इच्छाएँ करता है तो कहते हैं। (भाड़—भड़भूँजे की भरसाई)। तुलनीय : राज० सूवै अकूटरी पर, सपना आवै महलाँरा।

सोवे राजा का पूत या जोगी अवधूत—राजपुत्र और विरक्त योगी ये दो ही सो सकते हैं क्योंकि ये दोनों बिना चिंता के होते हैं।

सोवे संसार, जागे परवरदिगार—केवल ईश्वर ही जगा है। सारा संसार मोह या अज्ञान की नींद में सो रहा है।

सोवे सो खोवे, जागे सो पावे—दे० 'सोवेगा सो खोवेगा…'। तुलनीय : छत्तीस० सोवे तोन खोवै, जागै हौन पावै।

सोहत संग समान को, इहै कहत सब लोग—बराबर या समान व्यक्ति से ही मित्रता अच्छी लगती है।

सोह न नारि पती बिन जैसे—नारी की शोभा पति के बिना नहीं होती।

सोहन सीयन टाट पटोरे—टाट में पटोरे (रेशम) की सीवन अच्छी नहीं लगती। बेमेल काम पर कहते हैं।

सोहबत का असर है—जब किसी पर संगति का बुरा

या अच्छा प्रभाव दिखाई देता है तो कहते हैं। तुलनीय : अव० सोहबत के असर परत है; राज० सोबतरो असर है; गढ़० सोहबत को असर ह्वं ही जांद।

सोहै दूल्हा संग बराता—दूल्हा के साथ ही बारात की शोभा होती है। बिना प्रधान या सरदार के शोभा नहीं होती।

सौंख कहै देख मोर कला, बे मेहरी का करौं घरा—सौंख (माथे पर एक निशान) वाला बैल कहता है कि मेरी करामात देखो मैं किसान की औरत को मार डालूंगा। आशय यह है कि सौंखवाले बैल हानिकारक होते हैं।

सौ अज्ञात न एक सुजान—एक चतुर मनुष्य सैकड़ों मूर्खों से अच्छा है। तुलनीय : अव० सौ अनजान एकै सुजान; राज० सौ अजाण, एक सुजाण; गढ़० सौ अजाण एक सजाण।

सौ ऐबों की एक ऐब नादारी है—ग़रीबी सारी बुराइयों मे बढ़कर है। ग़रीबी बहुत बुरी है। (नादारी = ग़रीबी)। तुलनीय : अं० Poverty is the greatest sin.

सौकन गई और आंख छोड़ गई—सौत के मर जाने पर सौत के लड़के के लिए कहते हैं।

सौकन चून की भी बुरी—सौत आटे की भी बुरी होती है।

सौ कपूत में एक सपूत भला—सौ कुपुत्रों से एक सपूत अच्छा है। तुलनीय : अव० सौ कपूत एकै सपूत।

सौ कपूत से एक सपूत भला—ऊपर देखिए। तुलनीय : गढ़० सौ कपूत एक सपूत।

सौ कसाई में एक हिंदू क्या बसाई—सौ क़साइयों में एक हिंदू कुछ नहीं कर सकता। एक प्रकार की प्रकृतिवालों के बहुमत में दूसरी प्रकृति के अल्पसंख्यकों का कोई वश नहीं चलता।

सौ कालियों का एक काला—बहुत कपटी आदमी को कहते हैं। तुलनीय : अव० सौ करियन मा एक काला।

सौ की लाठी एक का बोझ दे० 'सात पाँच की लकड़ी एक जने का बोझ।'

सौ की हानी सहस्र बखानी—सौ रुपए की हानि हुई और उसे एक हज़ार बताया। बात को बहुत बढ़ाकर कहना।

सौ के पीछे राजा क्यों?—सौ मरते हैं तो मरें राजा को क्या, वह उनके पीछे क्यों मरने जाए। जो व्यक्ति अपने ऊपर किसी तरह का ख़तरा न लेकर दूसरों को ही आगे रखे उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : राज० सौ पछै ही मायनी क्यूं?

सौ कोस दूर रहे—जो व्यक्ति परिश्रम या कठिन काम करने से सदा कतराए उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं कि यह तो सौ कोस दूर रहता है। तुलनीय : राज० सौए कोसे निरवाला।

सौ कोस पे पूरी-कचौरी, समझें न यह लंबी दूरी एक सौ कोस के अन्तर पर यदि पूरी-कचौरी खाने को मिले तो यह दूरी कोई विशेष नहीं है। मुफ़्त का खानेवालों और भोजन भट्टों के प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० सौए कोसे लापसी साठे कोसे सीरो, कदे न छोड़े भूलसु, नणदलबाई को वीरो।

सौ कोसा और एक मसोसा बराबर है—सौ गाली देना और एक ग़म खाना बराबर होता है। ग़म खाना या सब्र कर लेना बहुत बड़ी चीज़ है, उसका प्रभाव गाली से अधिक पड़ता है।

सौ कौवों में एक बगुला भी नरेश है—मूर्खों में एक थोड़ा भी होशियार रहे तो उसका आदर होता है। तुलनीय : अव० सौ कौवन मा बकुला राजा।

सौ खोटों का वह सरदार जिसकी छाती एक न बार—जिसकी छाती में एक भी बाल न हो तो वह बहुत खोटा समझा जाता है।

सौ गज पानी में रहै, मिटे न चकमक साग—जन्मगत या स्वाभाविक गुण या दोष किसी का कैसी भी परिस्थिति में नहीं छूटता। गहरे पानी में रहने पर भी चकमक की आग नहीं बुझती।

सौ गज बारूँ और गज-भर न फाड़ूँ—कहे बहुत और यथार्थ मे कुछ न करे तो कहते है।

सौ गाथा सूगा पढ़े अंत बिलाई खाय—तोता (सूआ) बहुत 'राम-राम' रटता है पर अंत में उसे बिल्ली खा जाती है। आशय यह है कि प्राणियों में जो जिसका शिकार करके खाता है वह अपने भक्ष्य के गुणावगुण नहीं देखता। जिसे हानि पहुँचाना अभीष्ट होता है वह दूसरे की भलाई को नहीं देखता। तुलनीय : अव० सौ पोथा सुवा पढ़ै, फिर बिलाई खाय।

सौ गालियों का एक गाला बनाया और उड़ा दिया—धीर आदमी ऐसा कहते हैं। अर्थात् धीरों या ग़मख़ोरों पर गालियों का कोई असर नहीं होता।

सौ गुण्डा न एक मुछमुण्डा—एक मुँछमुण्डा सैकड़ों गुण्डों के बराबर होता है, अर्थात् बहुत बड़ा गुंडा होता है।

मूँछ मुडाने का विरोध करनेवाले इसका प्रयोग करते हैं। तुलनीय: अव० सौ गुण्डा न एक मोछमुण्डा; राज० सौ गुडा एक मुछमंडा।

सौ गुलाम घर सूना – घर के मालिक के न रहने पर सौ गुलामों के रहते भी घर सूना है। अर्थात् नौकर और मालिक में बहुत अंतर होता है।

सौ घड़े पानी पड़ गए—बहुत शर्मिंदा हो गए। तुलनीय : अव० सौ गगरा पानी पड़गा, हरि० सिर लर्कोण न जंघा नाह पाई।

सौ चंडाल न एक कंगाल—कंगाल चंडाल से भी बुरा होता है। तुलनीय : अव० सौ चंडाल न एक कंगाल; गढ़० सौ चंडाल अर एक कंगाल।

सौ चटकन एक पटकन— उठाकर पटक देना सौ थप्पड़ के बराबर है। अर्थात् चटकन मारने की अपेक्षा पटक देने पर अधिक चोट लगती है। तुलनीय : भोज० सौ चटकन न एक पटकन।

सौ चमार न एक भूमिहार--दुष्टता या चमारपन में एक भूमिहार सौ चमारों की बराबरी करता है। अर्थात् भूमिहार बहुत दुष्ट या चमार होता है।

सौ चाकर पर भी घर सूना –दे० 'सौ गुलाम घर सूना···'।

सौ चूहे खाकर बिल्ली बैठी तप को---दे० 'सत्तर चूहा खाकर···'।

सौ चूहे मार कर बिल्ली हज को चली—दे० 'सत्तर चूहा खाकर···'।

सौ चोट सुनार की न एक चोट लुहार की –दे० 'सौ सुनार की न एक···'। तुलनीय : अव० सौ चोट सोनार कै, एकै चोट लोहार का।

सौ चोर न एक उठाईगीर—एक बटमार सौ चोरों से ज्यादा घातक होता है। तुलनीय : अव० सौ चोर न एक उठाईगीर।

सौ जनों के तिनके एक जने का बोझ— दे० 'सात जने की लाकड़ी···'।

सौ जीवों का एक बचाव—सौ जीवों की एक रक्षा करनेवाला है। जहाँ एक कमानेवाला हो और बहुत खानेवाले हों वहाँ कहते है।

सौ जूता खाएँ तमाशा घुस के देखें –जब कोई व्यक्ति बहुत अधिक अपमानित होने के बावजूद किसी कार्य को करने से बाज नहीं आता तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते है। तुलनीय : बुंद० सौ-सौ जूता खाये तमासो घुसकें देखें।

सौ जूते और हुक्के का पानी—किसी को धिक्कारना हो तो कहते हैं। तुलनीय : हरि० सौ जूत अर होक्के का पाणी।

सौ डण्ड न एक लिपटंत—सौ डण्ड करने से अधिक कसरत एक बार कुश्ती लड़ने में हो जाती है। तुलनीय : अव० सौ डंड न एक लपटण्ड।

सौ डंडी, न एक बुन्देलखंडी—बुन्देलखंडी बड़े ही बलवान होते हैं। सौ डण्डियों के बराबर एक बुन्देलखण्डी क्षत्रिय होता है।

सौत का लाना जी का जलाना – सौतन का लाना पहली पत्नी के लिए अत्यंत त्रासदायक होता है।

सौत की बात रसौत – सौत की बातें कड़वी होती है। (रसौत = कड़वी)। तुलनीय : अव० सवत कै बात रसौत।

सौत की मूरति भी बुरी—नीचे देखिए।

सौत चून की भी बुरी —आटे की भी सौत बुरी होती है। सौत किसी भी हालत में अच्छी नहीं होती, चाहे वह कमज़ोर और सीधी ही क्यों न हो। तुलनीय : सौत चूना की भी बुरी होंदी; हरि० सौकण तै चून की खोट्टी; राज० सौक माटी री ही खोटी।

सौत जाय, सौत का नाड़ा न जाय – स्त्रियाँ चाहती है कि उनकी सौत तो चली जाए पर उसका नाड़ा (इजारबंद) अर्थात् पति न जाय। तुलनीय : अव० सवत जाय सवत का नारा न जाय।

सौत तो चून की भी बुरी --दे० 'सौत चून की···'।

सौत पर सौत और जलापा– एक सौत तो पहले से ही थी अब दूसरी सौत आ गई जिससे और अधिक कष्ट बढ़ गया। जब दुःख पर दुःख आए तो ऐसा कहते है।

सौत बुरी सौतेला बुरा – सौत से भी बुरा सौतेला लड़का होता है।

सौत बुरी है चून की –दे० 'सौत चून की···'।

सौत भली सौतेला बुरा – सौत का लड़का सौत से भी बुरा होता है। तुलनीय : अव० सवत भली सौतेलवा बुरा।

सौतों में खटपट सास बदनाम – अपराध कोई करे और बदनामी किसी और की हो तब उक्त कहावत कही जाती है। लड़ाई-झगड़ा सौतें करती हैं और बदनामी सास की होती है। तुलनीय : भोज० मैथ० सौतिन में खटपट सास बदनाम।

सौ दवा न एक संयम – अर्थात् संयम बहुत बड़ी चीज़ है। बिना संयम से रहने पर मनुष्य को कोई फ़ायदा नहीं

होता, तुलनीय : भोज० सौ गो दवाई एगो परहेज; सं० पथ्ये सति गदार्त्तस्य किलौषधिनिषेवणम्; अं० Prevention is better than cure.

सौ दवा न एक हवा— हवा की खूबी पर कहा गया है। आरोग्य के लिए वह सौ दवाओं के बराबर है। तुलनीय : भोज० सौ दवाई न एक बेयार (हवा); अव० सौ दवा न एक हवा; माल० हो दवा ने एक हवा।

सौदा अच्छा लाभ का, राजा अच्छा दाब का—सौदा वही अच्छा है जिसमें लाभ की आशा हो और राजा वही अच्छा होता है जिसका खूब रोब-दाब हो। तुलनीय : अव० सौदा अच्छा फायदा का और राजा अच्छा दाब का; मरा० लाभ होईल तर सौदा नि करडा राजा चाँगला।

सौदा कर नफ़ा होगा—अच्छा काम करने से फल अवश्य अच्छा होगा। तुलनीय : अव० सउदा करो नफा होई।

सौदा का सौदा बात नफ़े में— ग्राहक को बड़ा लाभ है। रुपया देने पर सौदा तो मिलता ही है साथ में दुकानदार जो उसे फँसाने के लिए चिकनी-चुपड़ी बातें करता है उसका सुनना नफ़े में है। यह दुकानदारों पर व्यंग्य रूप में कहते है।

सौदा बिक गया और दूकान रह गई— जवानी निकल गई ठठरी रह गई। यह मसल प्रायः बूढ़ी वश्याओं पर कही जाती है। तुलनीय : अव० सौउदा बिक गवा दुकान रहि गै।

सौदा शान से मिलता है— जिस व्यक्ति की तड़क-भड़क अच्छी होती है उसी को उधार सौदा मिलता है। फटेहाल लोगों को चाहे वे कितने भी ईमानदार हों कोई भी नहीं पूछता। तुलनीय : माल० सौदा शान तो मळे।

सोदा सौदाइयों बात नफ़े में— दे० 'सौदा का सौदा बात नफ़े में।'

सौ दिन चोर का एक दिन शाह/साह का— (क) जब आदमी कई बार अपराध करके बच जाए पर एक बार ऐसा पकड़ा जाए कि उसे सब कुछ भरना पड़े तो कहा जाता है। (ख) चोर कभी-न-कभी तो पकड़ा ही जाता है और तब साहुकार की बन आती है। तुलनीय : अव० सौ दिन चोरवा का, एक दिन सहवा का; ब्रज० सौ दिन चोर की, एक दिने साह की; हरि० सौ दिन चोर के तै एक दिन साह का; राज० सौ दिन चोररा, एक दिन साहूकार रो; गढ़० सौ दिन चोर का एक दिन साहू को।

सौ दिन सास का, एक दिन बहू का— सास की सदा की ज्यादतियों की कसर बहू एक दिन में निकाल लेती है। जो व्यक्ति सदा किसी को अनुचित रूप से दबाता रहे और किसी दिन अवसर पाते ही दबनेवाला कसर निकाल ले तो उसके प्रति व्यंग्य में कहते है। तुलनीय : राज० सौ दिन सासूरा, एक दिन बहूरो; ब्रज० सौ दिन सास के, एक दिन बहू का।

सौ धन में धन दोस्ती है—मित्रता बहुत बड़ी संपत्ति है। तुलनीय : उज० दोस्ती सबसे बड़ी दौलत है।

सौ धोती, एक गोती— सौ पड़ोसियों की अपेक्षा अपनी जाति का या कुल का एक भी व्यक्ति अच्छा होता है, क्योंकि अपना होने के नाते वह समय पर पड़ोसियों की अपेक्षा अधिक सहायता करता है। तुलनीय : हरि० सौ धोती अर एक गोती बरोब्बर्‌य।

सौ नार, एक सुनार— सौ नारियाँ और एक सुनार बराबर है। एक सुनार जितना बेवफ़ा, धोखेबाज़ और चालाक होता है उतनी सौ स्त्रियाँ मिलकर भी नहीं हो पातीं। सुनारों के प्रति कहते है। तुलनीय : राज० सौ नार एक सुनार।

सौ नीच, एक अँखमीच— सौ नीच और एक अँखमीच अर्थात् काना बराबर है। काना व्यक्ति बहुत नीच और दुष्ट होता है। तुलनीय : राज० सौ नीच, एक अखमीच।

सौ पढ़ा न एक प्रतापगढ़ा— प्रतापगढ़ का एक रहने वाला सौ पढ़े-लिखों के बराबर होता है। प्रतापगढ़ के रहनेवाले बड़े चतुर होते है। तुलनीय : अव० सौ पढ़ा न एक परतापगढ़ा।

सौ पढ़ा न एक बूढ़ा— आयु से अर्जित ज्ञान शिक्षा से अर्जित ज्ञान से कहीं बड़ा होता है। तुलनीय : अं० Years know more than books.

सौ दिल्ली उजड़ गई तौ भी सवा लाख हाथी— दिल्ली चाहे कितनी भी बिगड़ गई है फिर भी सवा लाख हाथी है। अर्थात् बिगड़ने पर भी बड़ों की शान कुछ-न-कुछ तो रहती ही है और वह छोटों से बहुत बड़ी रहती है।

सौ बात की एक बात— मूल, असली बात, तत्व। किसी चीज की असलियत बतलाने पर कहते है। तुलनीय : अव० सौ बात कै एक बात है; राज० सौ बातांरी एक बात; गढ़० सौ बात की एक बात।

सौ बार चोर की, एक बार साहु की— दे० 'सौ दिन चोर का, एक दिन साह का।'

सौ बार तुम्हारा एक बार हमारा—अर्थात् एक-आध बार सुअवसर सबके हाथ लग ही जाता है। तुलनीय :

भोज० सौ बेर तोर एक बार मोर।

सौ बार तेरी तो एक बार मेरी—चोर को कहते हैं। क्योंकि अन्ततोगत्वा तो वह पकड़ा ही जाता है। तुलनीय : अव० सौ बेरिया तोर तौ एक बेरिया मोर।

सौ बेर चोर की एक बार साह की—दे० 'सौ दिन चोर का···'। तुलनीय : बुंद० सौ बेर चोर की एक बेर साव की।

सौ बोलता एक चुप हरावे—एक चुप रहनेवाला सौ बोलतों को हरा सकता है। मौन में बड़ा गुण है।

सौ भड़ुवे मरे तो एक चम्मचचोर पैदा हो सौ भड़ुवों के मरने पर एक चम्मचचोर पैदा होता है। चम्मच-चोर अंग्रेज़ों के खानखामे को कहते हैं। अंग्रेज़ों की आयाओं की तरह ये भी बड़े बदचलन होते हैं और रंडियों के सौ भड़ुओं का बदचलनी में मुक़ाबला कर सकते है।

सौ मन धान की एक मुट्ठी बानगी --सौ मन धान की क़िस्म का पता लगाने के लिए केवल एक मुट्ठी धान बहुत होता है। थोड़े से नमूने से पूरी वस्तु के गुण-दोषों का पता चल जाता है। तुलनीय : सौ मण धान की, एक मुट्ठी बानगी।

सौ मन सोना रत्ती हुकूमत—बड़ों पर जब छोटे हुकूमत करते है तो यह मसल कहते हैं।

सौ मारे और निन्नानबे से भूल जाय—सौ मारकर 99 भूलने का अर्थ है सौ बार मारे तो 1 बार मारा समझे (100—99=1) अर्थात् खूब मारे। तुलनीय : अव० सौ तक गिनै निन्नाबे भूल जायँ।

सौ मारे तो एक गिने—खूब मारे। किसी आदमी पर जब कोई बहुत रुष्ट होता है तो कहता है तुम तो ऐसे आदमी हो कि सौ मारे तो एक गिनें। अर्थात् तुम्हें खूब मारें।

सौ मारे बैद, हजार मारे महाबैद—सौ की जान लेने से वैद्य बनते है और हज़ार की जान लेकर महावैद्य। अर्थात् चिकित्सा का अनुभव बहुत अभ्यास से होता है। तुलनीय : मग० सौ के मारे बइद हजारे मारे दइब; सं० शतमारी भवेद्वैद्य सहस्रमारी चिकित्सक.।

सौ मुँह हजार बातें— (क) एक विषय पर न मालूम कितने प्रकार के परामर्श मिलते है। (ख) एक ही बात अफ़वाह मे तरह-तरह से सुनी जाती है। (ग) किसी एक ही बात को एक आदमी दस जगह दस तरह से कहता है। इस प्रकार एक बात सौ मुँह मे हज़ार रूप धारण कर एक हज़ार बातें हो जाती हैं।

सौ में फुल्ली, हज़ार में काना सवा लाख में ऐंचा ताना—आँख में फुल्लीवाला मनुष्य सौ आदमियों में दुष्टता में अकेला होता है, इसी प्रकार काना हज़ार आद-मियों में और ऐंचाताना (जो जिस ओर देखे उधर देखता न दिखाई दे) सवा लाख में एक होता है। अर्थात् क्रम से इनमें दुष्टता की मात्रा बढ़ती जाती है। तुलनीय : अव० सौ मा सूर सवा मा काना, सवा लाख मा ऐंचाताना; राज० सौ में सूर सवा में काणो, सवा लाख में आंचाताणो।

सौ में सती, करोड़ में यती—नीचे देखिए।

सौ में सती लाख में यती सैकड़ों स्त्रियों में एक ही सती-साध्वी होती है और लाखों में एक ही यथार्थतः यती (विरक्त) होता है। तुलनीय : गढ़० सौ मां सत्ती, लाख मां जत्ती; छत्तीस० सौ मां सती, कोट मां जती

सौ में सूर हजार में काना, सवा लाख में ऐंचा ताना—दे० 'सौ में फुल्ली···'।

सौ रंडी मरे तो एक आया—अंग्रेज़ों की दाई को आया कहते हैं। ये सौ रंडियाँ जितनी अकेली बदचलन होती हैं अर्थात् बहुत बदचलन होती हैं।

सौ रंडी मरें तो एक भड़ुआ पैदा हो—सौ रंडियों के मरने के फलस्वरूप उनके स्थान पर एक भड़ुआ पैदा होता है। एक भड़ुआ सौ रंडियों के बराबर दुष्ट और बदमाश होता है।

सौ रांड़ मरे तो एक रंड़ुआ पैदा हो—सौ विधवाओं के मरने के पश्चात् एक विधुर जन्म लेता है। दुष्टता और दुश्चरित्रता में एक ही विधुर सौ विधवाओ की बराबरी करता है। तुलनीय : राज० सौ रांडांने भांगर एक रंड़वो घड्यो।

सौ लगी तो क्या, हजार लगी तो क्या?— (क) निर्लज्ज आदमी को सौ या हजार लाठी लगने या गाली लगने की परवाह नही रहती। (ख) जब कोई चीज़ लगी तो सौ और हज़ार में कोई खास अन्तर नही।

सौ लठैत न एक पटैत--सौ लाठीवालों को एक पटे-वाला हरा सकता है। पटा तलवार से मिलती-जुलती कुछ और लम्बी चीज होती है जिससे वार और बचाव दोनों किया जाता है। तुलनीय : अव० सौ लठैत न एक पटैत।

सौ वक्ता एक चुप—सौ बोलनेवालों को एक चुप रहनेवाला हरा देता है। अर्थात् चुप रहना आदमी के लिए लाभदायक होता है। तुलनीय : भोज० सौ बोलता न एक चुप।

सौ सयाने एक मत—सभी सयानों की एक राय होती

है। इस सम्बन्ध में दूध डालने की आज्ञा पर सभी आदमियों का पानी डालने का किस्सा प्रसिद्ध है। तुलनीय : अव० सौ सयायेन कै एकमत; राज० सौ स्याणा एक मत; गढ़० सौ सयाणे की एक अक्कल।

सौ सयानों का एक मत—चतुर (विचारवान्) व्यक्तियों के विचार एक समान होते है। तुलनीय : भोज० सौ सयान क एगो मति; अं० Great men think alike.

सौ सयानों की एक अक्ल - किसी एक समस्या के बारे में सभी बुद्धिमान प्रायः एक ही बात सोचते है। इसी पर एक अन्तर्कथा है : एक बार एक राजा से उसके मंत्री ने यह बात कही पर उन्होंने न मानी। वे 'मुंडे-मुंडे मतिर्भिन्ना' के माननेवाले थे। अपनी बात को सिद्ध करने के लिए मंत्री ने सभी दरबारियों से एक कुंड में रात को एक-एक लोटा दूध डालने को कहा। दूसरे दिन देखा गया तो कुंड में जल ही जल था। प्रत्येक ने सोचा था कि इतने ज्यादा आदमी दूध डालेंगे तो उसमें एक लोटा पानी भी खप् जाएगा। राजा यह देखकर मंत्री की बात मान गए।

सौ साइत न एक सुतार-- अच्छा अवसर मिलने पर उसे छोड़ना नही चाहिए। जो लोग साइत (शुभ घड़ी) पूछ कर ही कोई काम करते है उनके प्रति ऐसा कहते हैं।

सौ साल पर सदी होती है— सौ वर्ष के पश्चात् शताब्दी होती है। अवसर कभी-कभी ही मिलता है, प्रतिदिन नही। वर्तमान अवसर को छोडकर दूसरे अवसर की प्रतीक्षा करनेवाले के प्रति ' हते है। तुलनीय: राज० सौए बरसे सईको हुवै।

सौ सुनार की, न एक लुहार की - सोनार के हथौड़ी की सौ मार से लुहार के घन (बड़े हथौड़े) की एक मार अधिक होती है। निर्बल का सौ बार मारना बलवान के एक बार मारने के बराबर नहीं होता है। जब कोई निर्बल बार-बार किसी बलवान पर चोट करता है तो बलवान कहता है 'सौ सोनार को न···' अर्थात् सबका बदला मैं एक बार में ले लूंगा या एक बार में ही तुमसे अधिक कर लूंगा। तुलनीय : मग० सौ सोनरवा के तऽ एक लोहरवा के; मैथ० सौ चोट सोनारी एक चोट लोहारी; भोज० एक लोहार क सौ गो सोनार क; राज० सौ सोनाररी एक लोहार-री; बंग० सेकवार ठूक-ठाक कामारेर एक धा; बुंद० सौ सुनार की, एक लुहार की; गढ़० सौ सुनार की एक लुहार की; निमाड़ी—सौ सुनार की, एक लुहार की; हाड़० सो सुनार की, अर एक ल्वार की; छत्तीस० सोनार में सौ घां, लोहार के एक घां; मरा० सोनाराचे शंभर घाव नि लोहाराचा एकच घाव (मारखाच)।

सौ सौ चूहे खाई के बिलाई चली हज को दे० सत्तर चूहे खाय के···'।

सौ सौ जूते खायँ तमाशा घुसके देखें – (क) तमाशबीन लोग शर्म या मानापमान की परवाह नहीं करते। (ख) जब कोई व्यक्ति किसी काम को असफल हो जाने पर भी बार बार करता रहे तो भी कहते है। तुलनीय : कनौ० सौ-सौ जूता खाय, तमाशा घुस के देखे।

सौ सौ धक्के खायँ तमाशा घुसके देखे - ऊपर देखिए। तुलनीय . अव० सौ सौ जूता खांय, तमासा देखे घुस के; ब्रज० सौ सौ धक्का खाये तमासौ घुसे कैं देखें।

सौ स्याने एक मत दे० 'सौ सयाने एक मत।' तुलनीय . मरा० शंभर शाहाण्याचे एकच मत।

सौ हाथ मारें तब पचास हाथ चालें - सौ हाथ मारने पर पचास हाथ चलता है। सुस्त आदमी बार-बार के कहने पर भी पूरा कार्य नहीं करते।

स्तन का शौक अंगुली से नहीं जाता –किसी चीज का शौक उसी चीज के मिलने पर पूरा होता है दूसरी वस्तु से नहीं। जब कोई अपनी इच्छा की पूर्ति के लिए ऐसी वस्तु का प्रयोग करता है या ऐसा कार्य करता है जो उसके लिए उचित न हो तब ऐसा कहते है।

स्त्रियों की बुद्धि सिर के पीछे होती है प्रायः स्त्रियाँ कम बुद्धि की होती है, अतः उनसे जब कोई काम बिगड़ जाता है तब ऐसा कहते है। तुलनीय : राज० लुगाई री अक्कल गुद्दी में हुया करै।

स्त्री की नाक न रहे तो विष्टा खाय--स्त्रियां जब कोई बहुत अनुचित कार्य कर बैठती है तब उनके प्रति ऐसा कहते हैं।

स्थविरलगुड न्याय बुड्ढे के हाथ से फेंकी हुई लाठी जिस प्रकार ठीक निशाने पर नहीं पहुँचती उसी प्रकार किसी अपुष्ट बात के लक्ष्य तक न पहुँचने पर यह उक्ति कही जाती है।

स्थान भ्रष्टा न शोभन्ते दन्ता केशा नखा नराः --दाँत, बाल, नाखून और आदमी स्थान भ्रष्ट हो जाने पर शोभा नहीं देते।

स्थालीपुलाकन्याय—बटलोई के चावलों का न्याय। बटलोई या भगोने में पकते हुए चावलों में से जब एक या दो चावलों को अलग करके देखने पर पका हुआ पाया जाता है, तब यह सहज अनुमान लगाया जाता है कि पात्र के सभी चावल पक गए है। थोड़ी वस्तु के परीक्षण से पूरे के विषय

में ज्ञान हो जाता है।

स्थूणानिखनन्याय:—स्तंभ गाड़ने का न्याय। तात्पर्य है जैसे स्तंभ को भूमि के अंदर गाड़ने के लिए अनेक बार खुदाई की जाती है तब वह ठीक ढंग से गड़ पाता है, उसी प्रकार किसी तथ्य को पुष्ट करने के हेतु अनेक तर्क प्रस्तुत करने होते हैं।

स्थूलारुंधती न्याय— विवाह हो जाने पर वर और कन्या को अरुंधती तारा दिखाया जाता है, जो दूर होने के कारण बहुत छोटा और जल्दी दिखाई नहीं देता। अरुंधती दिखाने में जिस प्रकार पहले सप्तर्षि को दिखाते हैं जो बहुत जल्दी दिखाई पड़ता है और फिर उँगली से बताते हैं कि उसी के पास अरुंधती है देखो! इसी प्रकार किसी सूक्ष्म तत्त्व का परिज्ञान कराने के लिए पहले स्थूल दृष्टांत आदि देकर क्रमश: उस तत्त्व तक ले जाते हैं। इस प्रकार बतलाने या समझाने के लिए इसका प्रयोग होता है।

स्यार के रोने से बैल नहीं मरता—गालियाँ देने या शाप देने से किसी का कुछ नहीं बिगड़ता। जो बहुत बक-बक करते हों, गालियाँ या शाप आदि देते हों, उनके प्रति ऐसा कहते हैं। तुलनीय : गढ़० गाल्यून मनखी नि मरदा, ताता पाणीन कूड़ा नि फुकेंदा।

स्वप्न महल का देखहीं रहैं झोपड़ी माहिं—रहते हैं झोपड़ी में और स्वप्न देखते हैं महल का, या है तो साधारण स्तर के और आकांक्षाएँ उच्च स्तर की। साधारण स्तर के आदमियों का दिमाग जब ऊँचा हो जाता है और उनकी आकांक्षाएँ आसमान पर ही पहुँचने लगती है तो कहते हैं।

स्वभावोदुरति क्रम— स्वभाव पर विजय प्राप्त करना कठिन है। जब बार-बार प्रयत्न करने पर भी किसी के स्वभाव में परिवर्तन नहीं होता तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : अ० Habit is the second nature of man.

स्वर्ग की मातहती से नरक की दारोगाई भली— नीचे देखिए।

स्वर्ग के दास से नरक का मुखिया अच्छा— स्वर्ग जैसे स्थान में भी गुलाम बने रहने से नरक का मुखिया होना कहीं बेहतर है। तुलनीय : हरि० सुरग मैं टहलै ढोवण तैं, निरक की लम्बरदारी आच्छी, अ० It is better to rule in h ll than to serve in heaven

स्वर्ग छोटा, भक्त बहुत—छोटे स्वर्ग में बहुत अधिक भक्त। (क) जब किसी छोटे से स्थान में बहुत भीड़ हो जाए तो कहते हैं। (ख) जब वस्तु थोड़ी हो और उसके चाहनेवाले अधिक हों तो भी ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० वैकुंठ छोटो'र भगतांरी भीड़।

स्वर्ग तक कभी सीढ़ी नहीं लगी—स्वर्ग में अभी तक कोई सीढ़ी लगा कर नहीं पहुँचा। असंभव बात करनेवाले को समझाने के लिए कहा जाता है। तुलनीय : माल० सरग में कदी नीसणी नी लागै।

स्वर्ग-नरक किसने देखा है?—आज तक किसी ने भी स्वर्ग या नरक इस संसार से बाहर नहीं देखा। जो भी सुख-दु:ख मनुष्य संसार में पाता है वही स्वर्ग-नरक है। तुलनीय : राज० सरग-नरक कुण देखे र आयौ है?

स्वर्ग में भी चमार, बेगार को तैयार हो जाता है—दे० 'चमार को स्वर्ग में भी...'।

स्वर्ग में रहकर आटे का घाटा—स्वर्ग में रहकर भी खाने के लिए आटा नहीं पाता। सुख के स्थान में रहकर भी दु:ख उठाने पर यह लोकोक्ति कही जाती है।

स्वर्ग से उतरा, बबूल में अटका—कोई बड़ा काम होते-होते अन्त में किसी साधारण बाधा के कारण होने से रुक जाए तो कहते हैं। तुलनीय : ब्रज० सरग ते उतरयौ खिजूरि में अटक्यौ।

स्वर्ग से कौन लौटा है?—स्वर्ग में जाकर कोई नहीं लौटा। (क) स्वर्ग जाकर कोई लौटा तो है नहीं जिसने वहाँ की जानकारी दी हो। स्वर्ग है भी या नहीं इसका भी पता कैसे चल सकता है? जब तक वहाँ से कोई लौट कर न आए तब तक कैसे विश्वास किया जा सकता है? (ख) मृत्यु के उपरान्त संसार में कोई लौट कर नहीं आता। तुलनीय : भीली—राम ने घरे कुण जाई ने आव्यौ।

स्वर्ग से गिरे बबूल में अटके—दे० 'स्वर्ग से उतरा...'।

स्वमिषमूर्च्छितो भुजंग: आत्मनमेव दशति—अपने विष में मूर्छित हुआ साँप अपने को ही काटता है। जब कोई अज्ञानवश स्वयं को ही हानि पहुँचाता है तब ऐसा कहते हैं।

स्वसुर पुर निवास : स्वर्ग तुल्यो नराणाम्—मनुष्य के लिए ससुराल स्वर्ग के समान सुखदायी है।

स्वांग भी लाये तो कोढ़ी का—(क) कुछ किया भी तो गन्दा काम। (ख) कहीं भी तो बेमौके की बात। तुल- अव० सवांगौ बनायँन तौ गदहा का।

स्वांग बहुत रात थोड़ी—(क) जब समय कम हो और कार्य अधिक हो तो कहा जाता है। (ख) जीवन थोड़ा है और काम अधिक करना है। तुलनीय : गढ़० स्वांग भौत रात थोड़ी।

स्वांग स्वव्यवधायकं न भवति—अपना अंग अपने कार्य

में बाधक नहीं होता। तात्पर्य यह है कि जिनमे अपनी आत्मीयता है वे अपने उद्देश्य में साधक होते हैं, बाधक नहीं।

स्वाति बिसाखा चित्रा, जेठ सु कोरा जाय; पिछलो गरम गल्यो कहो, बनी साख मिट जाय—यदि स्वाति, बिसाखा और चित्रा नक्षत्र जेठ में बिना पानी के व्यतीत हो जाएँ तो वृष्टि का पिछला गर्भ गला हुआ समझें। अर्थात् वर्षा कम होगी और खेती नष्ट हो जाएगी।

स्वाति बूंद सीपी मुकत, कदली भयो कपूर; काटे के मुख विख भयो संगत के गुण सूर—स्वाति की बूँद सीपी में पड़ने से मोती, केले में पड़ने से कपूर और साँप के मुख में विष हो जाती है। सूरदास कहते हैं यह संगति का प्रभाव है अर्थात् संगति बहुत बड़ी चीज़ है। अच्छी संगति से आदमी अच्छा और बुरी संगति से बुरा हो जाता है।

स्वाती दीपक जो बरै, खेल बिसाखा गाय, धना गयंद रन चढ़ै, उपजी साख नसाय—यदि दिवाली स्वाति नक्षत्र में कार्तिक शुक्ल पक्ष प्रतिपदा को बिसाखा नक्षत्र मे चन्द्रमा हो तो बड़ी लड़ाई होगी और खेती को भी हानि होगी।

स्वाते दीपक प्रजले, बिसाखा पूजे गाय; लाख गयंदा घड़ पड़े, या साख निस्फल जाय—यदि दिवाली स्वाति नक्षत्र में हो और दूसरे दिन गोपूजन के दिन बिसाखा हो तो लड़ाई होगी जिसमे लाखो हाथी मारे जाएँगे या फ़सल नष्ट होगी।

स्वान धुनें जो अंग अथवा लोटै भूमि पर; तौ निज कारज भंग, अतिहि कुसगुन जानिए—यदि यात्रा के समय कुत्ता कान फड़फड़ाए अथवा भूमि पर लोटता हुआ दिखाई दे तो कार्य सिद्ध न होगा। इसे अपशकुन जानो।

स्वारथ के सब ही सगे बिन स्वारथ कोउ नाहिं—स्वार्थ के कारण तो सभी अपने सगे-संबंधी बनते है पर बिना स्वार्थ के कोई भी अपना नहीं बनता। यह संसार की रीति है।

स्वारथ न परमारथ—जब कोई ऐसा व्यर्थ का काम करता है जिससे न तो कोई अपना लाभ (स्वारथ) हो और न दूसरे का (परमारथ) तो यह कहावत कही जाती है।

स्वारथ मीत सकल जग माहीं—सारे संसार मे स्वार्थ के कारण ही लोग मित्रता करते है।

स्वार्थ और दोस्ती में दोस्ती कैसी—स्वार्थ और मित्रता का कोई साथ नहीं या तो आदमी स्वार्थी ही बन सकता है या फिर मित्र ही। तुलनीय : उज़० स्वार्थ और दोस्ती एक म्यान में दो तलवार हैं; उज़० जो दस्तरखान की ओर देखता है वह दोस्त नहीं है।

स्वार्थो दोषन्न पश्यति—स्वार्थी दोष को नहीं देखता।

ह

हँडिया का क्रोध पुरवे पर—हँडी का क्रोध पुरवे पर उतारती है। जब कोई किसी से नाराज हो और उस क्रोध को किसी दूसरे कमज़ोर पर उतारे तब उसके प्रति व्यंग्य मे ऐसा कहते हैं। तुलनीय : हरि० हाड्डी का छोह, बराल्नी पै। (पुरवा)

हँडिया में कुछ नहीं समधिन चलीं जेने—हँडी मे कुछ भी नहीं है और समधिन भोजन करने जा रही है। व्यर्थ मे दिखावा करनेवाले के प्रति व्यंग्य में कहते है। तुलनीय : भोज० हाँडी न डाली समधिन चलली जेवे।

हंस का मंत्री कौआ—किसी भले व्यक्ति का सलाहकार जब कोई दुष्ट होता है तब ऐसा कहते है। तुलनीय : भोज० हंस क मंत्री कउआ।

हंस की चाल टिटिहरी चली, टाँग उठाके भू में पड़ी—जब कोई छोटा व्यक्ति किसी बड़े व्यक्ति की नकल करता है और उसमे हानि उठाता है तब उसके व्यंग्य में ऐसा कहते है।

हंस के घर कौवा—जब किसी अच्छे कुल में कोई बुरी संतान पैदा हो जाती है तब ऐसा कहते है : तुलनीय : बंद० बाग के भिरे मे घगोय; ब्रज० हँसों मे कऊँआ पैदा होना।

हंस मोती चुगे या भूखा मर जाय—दे० 'भूखा शेर घास···'।

हँसता जाय, रोता आय, रोता जाय हँसता आय—अदालत पर कहा गया है। वहाँ जो रोता जाता है अर्थात् किसी के विरुद्ध कुछ करने या कहने जाता है वह तो लौटता है हँसता हुआ क्योंकि उसके विरोधी को दंडित होना पड़ता है पर उस पर अत्याचार करने वाला हँसता जाता है और दंडित होने के कारण रोता हुआ लौटता है। यह सर्वकालिक सत्य नहीं है। तुलनीय : अव० हँसत जाय रोवत आवै, रोवत जाय हँसत आवै।

हँसता ठाकुर खँसता चोर, इन दोनों का आया छोर—हँसने से मालिक का रौब जाता रहता है और खाँसने से चोर चोरी करते समय पकड़ा जाता है। अतः दोनों को इन दोनों बातों से बचना चाहिए।

हँसता बाह्मन, खंसता चोर, कुपढ़ कायथ कुल का बोर —हँसनेवाले ब्राह्मण, खाँसनेवाले चोर और अशिक्षित कायस्थ अच्छे नहीं होते। ब्राह्मण को गम्भीर रहना चाहिए। चोर को चोरी के वक्त खाँसना नहीं चाहिए तथा कायस्थ को पढ़ा-लिखा होना चाहिए। तुलनीय : अव० हँसना बाम्हन, खसना चोर, अनपढ़ कायेथ कुल कर बौर।

हँसती खेलती सामने ही आती है - (क) बुरे काम का फल शीघ्र ही मिल जाता है, अर्थात् जैसा दूसरों के साथ करोगे वैसा ही तुम्हारे सामने आएगा। (ख) किसी काम का फल या किसी निर्णय के जानने में यदि कोई व्यक्ति जल्दी मचाए तो उसे तसल्ली देने के लिए ऐसा कहा जाता है। तुलनीय : गढ़० नाच दी खेलदी मुखै पर औंदी।

हँसते घर बसते— (क) हँसी-मज़ाक करते-करते विवाह हो जाना है या लक्ष्य सिद्ध हो जाता है। (ख) वही घर सचमुच बसा हुआ माना जाता है जहाँ हँसी-खुशी का वातावरण रहता है, नहीं तो उसे उजड़ा हुआ समझना चाहिए।

हँसते देर न रोते देर— स्त्रियों के लिए या ऐसे आदमी को कहते है जो एक क्षण में रोता हुआ और एक क्षण में हँसता है। तुलनीय : अव० हँसते बेर न रोवते बेर।

हँसते ही घर बसते हैं—दे० 'हँसते घर बसते।'

हँसना है या दाँत निकालना -(क) जब कोई बनावटी हँसी हँसे तो उसके प्रति कहते है। (ख) जब कोई व्यंग्य की हँसी हँसे तो उसके प्रति भी कहते है। तुलनीय : गढ़० हगण च कि निकसणो।

हँस-हँस खाइए फूट का माल --मूर्ख का धन उसे मूर्ख बनाकर व्यय करना चाहिए।

हंसा के मोती चुगै कै लंघन करि जाय —दे० 'भूखा शेर घास···'।

हंसा घर बसा —दे० 'हँसते घर··'। तुलनीय : भोज० हँसले घर बसेला।

हसा चला भाग, कोऊ न संगे लाग - हँस भाग गया कोई उसके साथ नहीं गया। मर जाने पर कोई साथ नहीं देता। तुलनीय : भोज० हँसा चलल भाग केयो ना संगे लाग।

हंसा तो सरवर गए भए काग परधान—हँस तो सरवर चले गए और उनकी जगह कौवे ही प्रधान बन गए। किसी सज्जन के स्थान पर दुर्जन का आधिपत्य हो जाने पर कहा जाता है। तुलनीय : हरि० हँसा थे वे दिण गये कागा भये दिवान, मरा० हँस होते ते उडून गेले, आतां कावळो वा दिवाण झाले।

हंसा थे सो उड़ गए कागा भये दिवान—ऊपर देखिए।

हंसा पय को काढ़ि लै, छीर नीर निखार - हँस पानी को छोड़ देता है और दूध को ग्रहण करता है। अर्थात् गुणीजन गुण को ग्रहण कर अवगुण को छोड़ देते हैं।

हँसिया अपनी ओर ही खींचता है—अपना स्वार्थ ही सर्वोपरि होता है। यहाँ तक कि निर्जीव हँसिया भी इसका अपवाद नहीं। वह भी अपनी ही ओर खींचता है। तुलनीय : असमी—काचि जालं टाने।

हँसिया के ब्याह में खरपे का गीत—नीचे देखिए। तुलनीय : मग०, भोज० हँसुआ के बिवाह में खुरपी के गीत।

हँसिया के ब्याह में पहँसुल का गीत --असंगत कार्य या बात पर उक्त कहावत कही जाती है। तुलनीय : मग० हँसुआ के बिआह औ पसुनी के गीत।

हँसी और फँसी—हँसना सम्पत्ति का लक्षण है। स्त्रियों के विषय में कहा जाता है। तुलनीय : पंज० हसी ते फसी।

हँसी में खाँसी --(क) अधिक हँसने से खाँसी आने लगती है। (ख) अधिक हँसी से भी बिगाड़ हो जाता है।

हँसुआ के ब्याह में सरपा के गीत—दे० 'हँसिया के ब्याह में खरपे···'।

हँसुआ चोख न सरपा मोथर—जब दोनों निकम्मे होते है तो कहा जाता है। अधिक हँसने वाले और कुंद खुरपे अच्छे नहीं होते।

हँसुआ ठाकुर खसुआ चोर, इन्हें ससुरवन गहिरे बोर -- हँसकर बोलने वाले ठाकुर और खाँसी वाले चोर इन ससुरों को गहरे पानी में डुबो देना चाहिए अर्थात् मार डालना चाहिए, क्योंकि दोनों अपने कार्य में सफल नहीं होते।

हँसे तो औरों को रोवे तो अपने को--मनुष्य अपने पर रोता है और दूसरों पर हँसता है। यह कितनी बेढंगी बात है।

हँसे सो फँसे -जिस स्त्री ने देखकर हँस दिया उसे चंगुल में आया समझो।

हँसोड़े की जोरू बेहया—बहुत हँसने वाले की स्त्री भी बेशर्म हो जाती है।

हँसो या बात करो—अर्थात् एक साथ दो काम नहीं हो सकते।

हँसों के बीच बकुला—सभ्य लोगों के बीच में जब कोई मूर्ख आ जाता है तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : असमी —इन्द्र सभात् फेंचार कुरुली; सं० हंम मध्ये बको यथा; अं० A triton among minnows.

हंसों के बीच बगला—ऊपर देखिए।

हंसों में बगला—देखिए 'हँसों के बीच बकुला।'

हक़ कर हलाल कर, दिन में सौ बार कर नेकी और ईमानदारी का काम दिन में हजार बार किया जा सकता है।

हक़ कहने से अहमक़ बेज़ार मूर्ख सत्य कहने पर चिढ़ता है।

हक़दार तरसे अंगार बरसे—जो किसी का हक मारता है उसका अवश्य बुरा होता है।

हक़ नाम अल्लाह का—सत्य नाम परमात्मा का है।

हक़ हक़ है और नाहक़ नाहक़ सत्य सत्य ही है और असत्य असत्य। किसी को समझाने के समय ऐसा कहते हैं।

हकीम के यार, सदा बीमार—वैद्य के मित्र सदा बीमार ही रहते हैं। (क) जो व्यक्ति मुफ्त की वस्तु देखकर उसे ले लेते हैं चाहे उससे कोई काम हो या न हो उनके प्रति व्यंग्योक्ति। (ख) जो व्यक्ति कष्ट-निवारण का साधन देखकर जबरन कष्ट में पड़ते हैं उनके प्रति भी कहते है। तुलनीय : माल० हकीम रो दोस्त रोज बीमार वे।

हकीम को क़ारूरे से लाज—अपने पेशे में शरमाने पर कहा जाता है। (हकीम रोग का निदान रोगी के मूत्र को देखकर करते है)।

हगते में मुंह मारता है—जो व्यक्ति अनुचित ढंग से किसी के निजी काम में हस्तक्षेप करे उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० हिगतारे बीच में मूंढो दे है।

हगते हुए बेर खाया—एक व्यक्ति बेर के पेड़ के नीचे बैठकर पाखाना कर रहा था। अनजाने में उसने एक बेर उठाकर खा लिया और उसको बेर खाते हुए किसी व्यक्ति ने देख लिया। अब जब भी कोई बात होती तो दूसरा व्यक्ति बेर खाने की घटना सबको बताने का भय दिखाकर अपना उल्लू सीधा कर लिया करता। इसी प्रकार बहुत दिन तक वह व्यक्ति उससे लाभ उठाता रहा। एक दिन तंग आकर सब व्यक्तियों से उसने स्वयं ही सारी घटना बता दी और रोज-रोज की परेशानी से छुटकारा पाया। जो व्यक्ति किसी की अनुचित बात को देखकर उससे लाभ उठाए उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० हिगते बोर खायो।

हग न सकें पेट को पीटें—टट्टी तो कर नहीं पा रहे हैं उल्टे पेट पीट रहे है। स्वयं कार्य न कर सकना और व्यर्थ में दूसरों को दोष देना। तुलनीय : अव० हग न सकें, पेट पीटैं; मरा० हगायला होईना नि पोटाला मारतोय।

हग नहीं तो पेट फाड़ता हूँ—जल्दी से हग नहीं तो पेट फाड़कर निकाल लूंगा। अर्थात् जो कुछ तूने खाया है उसे उगल दे या निकाल दे। पैसों के लेन देन पर भी कहा जाता है कि जो कुछ लिया है अदा कर दे। जो व्यक्ति किसी से जबरन कोई ऐसा काम कराए जो उसके बस का न हो या उसकी इच्छा न हो तो उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० हिग, रे छोरा! पेट फाड़।

हगा न घर रखा, न इधर के रहे न उधर के—इस सम्बन्ध में एक कथा है : एक बार एक जाट से एक राजा ने हार मान ली और उसे मनमाना करने की स्वतन्त्रता दे दी। वह राजा के बिस्तर पर हगने को तैयार हो गया। राजा ने प्रण कर लिया था, अतः चुप रहे। मन्त्रियों ने कहा कि हगना पर पेशाब न करना। यदि पेशाब करोगे तो तुम्हारा घर जब्त कर लिया जाएगा। जब जाट बिस्तर पर गया तो पाखाना होने के पहले ही उसने पेशाब कर दिया। इस पर वह गिरफ्तार कर लिया गया। उसका घर भी ज़ब्त कर लिया गया। बेचारा हग भी न पाया और घर भी खो बैठा।

हगासा लरिका चुतरैन ले देखात है—दुखी व्यक्ति मुँह देखने से ही पहचान में आ जाता है।

हगासे लड़के के नथने पहचाने जाते है—आर्त मनुष्य की पहचान उसके मुँह से हो जाती है। तुलनीय : ब्रज० हगासे लला की पतौई आंखें।

हगे थोड़ा पादे बहुत—जो व्यक्ति काम कम करे और दिखावा अधिक उसके प्रति व्यंग्य में कहते है। तुलनीय : अव० हग हग थोरो पिटपिट बहुत।

हज का हज और बनिज का बनिज—हज के लिए जाने से धर्म भी हुआ और वहाँ से चीजें लाकर बेच दी तो व्यापार भी हो गया। एक पंथ दो काज।

हजामत बन गई—(क) अच्छी तरह ठगे गए। (ख) खूब पीटे गए। (ग) खूब बेवकूफ़ बनाए गए या शर्मिन्दा किए गए।

हज़ार आफ़तें हैं एक दिल लगाने में—प्रेम में अनेक बाधाएँ आती है।

हज़ार इलाज एक परहेज—रोगी के लिए खाने-पीने

का परहेज़ या संयम हज़ार दवाओं के समान है।

हज़ार जूतियाँ लगीं और इज्जत न गई—बेशर्म के लिए कहते हैं। तुलनीय : अव० हजारन जूता लगा ओ इज्जत न गय।

हज़ार दवा और एक दुआ—एक बार सच्चे हृदय से ईश्वर की वन्दना करना अगणित सामाजिक उपचारों से श्रेयस्कर है।

हज़ार नेमत और एक तंदुरुस्ती—दे० 'तनदुरुस्ती हज़ार नेमत'।

हज़ार बरस का रेजा और नन्हा नाम—हज़ार वर्ष का हो गया और नाम है नन्हीं। (क) जब कोई बड़ा-बूढ़ा किसी काम में अनभिज्ञता प्रगट करे तो कहते है। (ख) वयोवृद्ध होकर भी जब कोई किसी साधारण बात को न जाने तब भी कहा जाता है।

हज़ार बार भी धोया जाय तो भी हाथी कीचड़ में सना रहता है—बुरे व्यक्ति की बुराई दूर नहीं की जा सकती। तुलनीय : प्र० सहस बार जों धोवहुँ तबहुं गयंदहि पंक।

—जायसी

हज़ार लाठी टूटी हो तो भी घरबार के बासन तोड़ने को बहुत है—(क) बूढ़े कुत्ते पर कहते हैं। (ख) कमज़ोर या निर्बल व्यक्ति भी हानि पहुँचा सकते हैं।

हज़ारों घड़े पानी के पड़ गए—बहुत लज्जित हुआ। जब किसी व्यक्ति को अपने ही किए पर शर्मिन्दा होना पड़े तो उनके लिए कहा जाता है।

हज़ारों टाँकी सहकर महादेव बनते हैं—नीचे देखिए।

हज़ारों टाँकी सहकर महादेव होते हैं—बिना कष्ट उठाए, मनुष्य ऊँचे दर्जे पर नहीं पहुँचता। तुलनीय : मरा० टाकीचे घाव सोसावे तेव्हां देवपण येनें; मल० कष्टम् सहिक्काते महत्वम् लभिक्का; अं० No pains no gains.

हज्जाम का उस्तरा वही मेरे सिर पर वही तेरे सिर पर—नाई का एक ही उस्तरा सबके सिर पर चलता है सबके साथ समान बर्ताव पर कहा जाता है।

हज्जाम का टका—ऐसा पैसा जो ज़रूर मिले।

हज्जाम का लड़का पहले उस्ताद का सिर मूँड़ता है—जब कोई पहले उस्ताद से ही चालाकी शुरू करे तो कहते हैं।

हज्जाम के आगे सबका सिर झुकता है—ग़रज़ सभी को झुका देती है। तुलनीय : मरा० हाव्याचे पुढे सगळया पुरुषाना डोकें वाकवातें लागतें।

हठ कीन्हें अंतहु उर-दाहू—हठ करने से अन्त में निश्चय ही हृदय को दुख होता है।

हठ न छूट छुटई बस देहा—चाहे प्राण निकल जाएँ किन्तु हठ नहीं छूट सकती। जब कोई अपनी हठ के कारण अपना बड़ा-से-बड़ा नुक़सान कराने को तैयार हो जाता है तब कहते हैं।

हड्डी खाना आसान पर पचाना मुश्किल है—(क) घूस लेना आसान लेकिन उसे पचाना मुश्किल है। (ख) हराम का पैसा पैदा करना आसान पर उससे अपना भला करना मुश्किल है। तुलनीय : भोज० हाड़ खइला से पचावल गारह हऽ; अव० हड्डी खाब सहज है पै पचाउब मुश्किल है।

हड़ खाय उगले बहेड़ा—जब करे कुछ और फल कुछ पाए तो कहा जाता है।

हड़बड़ का काम गड़बड़—जल्दबाज़ी में किया गया काम प्रायः बिगड़ जाता है।

हड़बड़ी का ब्याह कनपटी में सिन्दूर—उतावली में किए गए कार्य में गलती अधिक होती है।

हड़ लगे न फिटकरी रंग चोखा—बिना खर्च के जो काम बहुत अच्छा कराना चाहता है उस पर यह कहावत कही जाती है। तुलनीय : अव० हर्रे लागै न फिटकरी रंग चोखा होय; मरा० हिरडा न को नि तुरटी न को पण रंग मात्र पक्का उतरावा।

हत्थों लगावे पैरों बुझावे—दो विपक्षियों को लड़ाने के लिए उसकाते रहनेवाले मनुष्य के प्रति कहा जाता है।

हथिया चले न पैयाँ, बैठे दे गुसैयाँ—आलसी मनुष्य के लिए कहा जाता है जो चाहता है कि बिना हाथ-पैर चलाए खाना मिल जाए।

हथिया पूछ डोलावे, घर बैठे गेहूँ आवै—यदि हस्तिनी नक्षत्र (हथिया) समाप्त होते-होते पानी बरस जाए तो समझना चाहिए कि गेहूँ की पैदावार बिना परिश्रम के होगी।

हथिया बरसे चित्रा मँडराय, घर बैठे किसान रिरियाय—ऐसी वर्षा से खेती में असुविधा होती है।

हथिया बरसे तीन होत हैं शक्कर, साली, माश; हथिया बरसे तीन जात हैं तिल्ली, कोदों, कपास—हथिया नक्षत्र में पानी बरसने पर प्रथम तीन होते हैं और दूसरे तीन नष्ट हो जाते हैं।

हथिया में हाथ गोड़ चित्रा में फूल, चढ़त सेवाती

सम्पा मूल—हस्तिनी नक्षण में धान (जड़हन धान) में बालें उत्पन्न हो जाती हैं, चित्रा नक्षत्र में फूल लग जाता है और स्वाति नक्षत्र में बालें लहराने लगती हैं।

हथेली का फफोला—ऐसा मनुष्य जो हथेली के फफोले की तरह कष्टदायक हो। तुलनीय : अं० A thorn in one's side.

हथेली पर जान लिए फिरते हैं—मरने से तनिक भी नही डरते। तुलनीय . अव० हथेलिया मा जान लिहे फिरत हैं।

हथेली पर सरसों नहीं जमती—(क) बात कहते ही कोई काम नहीं होता। हर एक काम में कुछ-न-कुछ प्रतीक्षा करनी पड़ती है। (ख) किसी काम का लाभ तुरन्त नही दीखता। तुलनीय : अव० गदोरी पै सरसों नाहीं जमत; हरि० गादउ की तावल ते के बेर पाक्यां करें; मरा० तळ हातावर मोहरया तात्काळ ठरत नाहीत।

हथौड़े की चोट निहाई के माथे—हथौड़े की चोट को निहाई ही बर्दाश्त कर सकती है। सबल या बडे लोग ही बड़ी परेशानियों को झेल सकते है। तुलनीय : छत्तीस० हथौड़ा के घाव निहइ के माथे।

हनता को हनिए पाप दोष न गिनिए (क) पापी को दोष तथा पाप का ध्यान न करते हुए मार डालना चाहिए। (ख) जो अपने को मारे उसे अवश्य मारना चाहिए। तुलनीय : अव० हने का हने, दोष पाप न गने।

हने पर हनिए दोष पाप ना गनिए—ऊपर देखिए।

हनोज गाव-ओर-खररा न शिनाख्त- अभी गदहे और बैल की पहिचान नही हुई ? किसी बूढ़े आदमी की अस्वाभाविक अनभिज्ञता पर कहा जाता है। (गाव = बैल; खर = गदहा)।

हनोज दिल्ली दूर अस्त—सफलता मिलने मे अभी देर है। या गतव्य तक पहुँचने मे अभी कुछ समय और लगेगा।

हनोज रोजे-अव्वल—अभी तक काम का अनुभव नही हो पाया है। जब किसी काम को करते-करते बहुत समय बीत जाए और फिर भी कर्ता को अनुभव न हो तो कहते हैं।

हम आए थे अपना जान, तुम्हीं खींचने लागे कान—हम तो तुम्हें अपना जान कर ही सहायता के लिए तुम्हारे पास आए थे और तुम हमारा अपमान कर रहे हो। जब कोई व्यक्ति कोई आशा लेकर अपने किसी सबंधी या परिचित के पास जाए और वह उसका अपमान करके उसे कोरा ही लौटा दे तो उसके प्रति कहते है। तुलनीय : गढ़० हम आया तुम जाणी, तुम बैठ्या आँखा ताणी।

हम आए थे बन मेहमान, यहाँ न पूछा पानी-पान—ऊपर देखिए। तुलनीय : गढ़० हम आया पौणा की रासी, तख निपायो मड़दो न बासी।

हमको क्या पड़ी है कहने की?—जब कोई व्यक्ति अपने लाभ की बात भी न सुनना चाहे या उस पर कान न दे तो उसके प्रति कहते है। तुलनीय : भीली—आहें कणनी अड़यी है, कै वानी।

हम खुरमा-ओ-हम सवाब—(क) खाने का खाना और पुराय का पुराय। (खुरमा अर्थात् छुहारा मुसलमानों के यहाँ पवित्र चीजें मानी जाती है)। (ख) एक पंथ दो काज।

हम चरावें दिल्ली, हमें चरावे गाँव की पिल्ली—चतुर व्यक्ति को जब मूर्ख कोई सीख देता है तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मग० हम चराऊँ दिल्ली हमरा चरावे घर के बिल्ली; भोज० हम चराई दिल्ली हमारा के चरावे पिल्ली; पंज० असी चालइए दिल्ली सानूं चलावे पिंड दी बिल्ली।

हम चौड़े, गली सकरी, सड़क किधर है?—हम बहुत चौड़े हैं और यह गली बहुत सँकरी है, इसलिए सड़क का रास्ता बताओ जिस पर हम आसानी से चल सकें। (क) अहंकारी व्यक्ति के प्रति व्यग्य से कहते हैं जो दूसरो को बहुत तुच्छ और स्वयं को बहुत महान् समझता है। तुलनीय : राज० हम बड़ा गली साकडी बाजार का रस्तां किधर ?

हम चौड़े बाजार सकरा—जो खुद तो बड़ा बने, और ससार मे सभी को अपने से छोटा समझे उसके लिए कहा जाता है। तुलनीय : राज० हम चवड़े, गली साँकड़ी; गढ़० हम चौड़ा बजार साग्ड़ा।

हम तुम दोनों हैं महरानी, कौन किसी को देवे पानी—दे० 'मैं भी रानी तू भी रानी ...'।

हम तुम राजी तो क्या करेगा काजी—दे० 'मियां बीवी राजी ...'।

हम ना जइबे उहि बैकुंठे जहँवा चिलम तमाखू नाहिं—मैं उस स्वर्ग में नही जाऊँगा जहाँ चिलम और तंबाकू नही हैं। तम्बाकू के प्रेमी लोग ऐसा कहते है। उन्हें तंबाकू स्वर्ग से भी अधिक प्रिय है।

हमने क्या गधे चराये हैं—बुद्धिमान कहलाने का दावा करने वाले कहते है। अर्थात् हम बेवकूफ़ नही हैं।

हमने पिया, हमारे बैल ने पिया, अब चाहे कुआँ गिर

पड़े—हमने पानी पी लिया और हमारे बैल ने भी, अब चाहे कुआँ गिरे या पड़े हमसे क्या ? जब अपना काम निकल जाने के बाद कोई उस वस्तु के हानि-लाभ की चिंता नहीं करता तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। तुलनीय : राज० हम पिया, हमारा बैल पिया अब कूवा दुड़ पड़ो।

हम परदेशी पाहुने आन किया विश्राम संसार में सभी अस्थायी हैं।

हम प्याला, हम निवाला—घनिष्ठ मित्र या एक साथ खानेवालों को कहते हैं।

हम भले मर जायें, हमें जिलाने वाला जीता रहे हम भले मर जाएँ किंतु हमारा भरण-पोषण करनेवाला जीवित रहे। जब पालन करनेवाला मर जाता है तो जीवन कठिन हो जाता है। अपने पोषक या आश्रयदाता की भलाई चाहनेवाले के प्रति कहते हैं। तुलनीय : भीली—जीव जाज्यो भण जीवाई हके जाज्यो।

हम मरे जग प्रलय—यदि मैं मर जाऊँगा तो मेरी बला से संसार रहे या नष्ट हो जाए। स्वार्थी या व्यक्तिनिष्ठ लोग दूसरे के भले-बुरे के प्रति चिंतित नहीं होते। उनके लिए संसार का अस्तित्व केवल उन्हीं के बल पर है।

हमरे जनमे दीनानाथ हमसे कहें कहानी—किसी वयोवृद्ध या अनुभवी व्यक्ति के सम्मुख ज। कोई कम उम्र या कम अक्ल का व्यक्ति शेखी बघारता या पांडित्य-प्रदर्शन करता है तब उक्त कहावत कही जाती है। तुलनीय : भोज० हमरे जनमल दीनानाथ हमरे से कहम कहनी या हमरे बेटा प्रबोधनाथ।

हमरे मर्द न तोहरे जोय, अस कछु करो कि लारका होय—न तो मेरा पति है और न आपकी पत्नी, आइए कुछ ऐसा उपाय किया जाए जिससे बच्चा उत्पन्न हो। आशय यह है कि परस्पर सहयोग से ही काम बनता है।

हम रोटी को नहीं खाते खोटी हम को खाती है—पारिवारिक चिंता में रत रहनेवाला मनुष्य ऐसा कहता है। अर्थात् उसे दिन-रात रोटी की चिंता खाती रहती है।

हम साँप नहीं हैं कि जियें चाट कर मिट्टी—जब किसी को भर पेट खाना या मजदूरी नहीं मिलती तो वह ऐसा कहता है। अर्थात् मनुष्य को जीने के लिए भोजन मिलना आवश्यक है। तुलनीय : मरा० मानी चाटून जगायला आम्ही काही साप नाही।

हमसे और चौसर—(क) जब छोटे-बड़ों के साथ मज़ाक़ करते हैं तो बड़े कहते हैं। (ख) बड़ों से चाल चलना उचित नहीं।

हमसे पायें तो सर पे बैठायें—हमसे कुछ पाकर ही हमारा आदर किया जा रहा है। जिस व्यक्ति को कुछ लाभ पहुँचाया जाए या जिसका आदर किया जाए तो वह हमारा आदर भी अवश्य ही करेगा। किसी का आदर कराना हो तो उसे कुछ लाभ पहुँचाना चाहिए और स्वयं भी उसका आदर करना चाहिए। तुलनीय : भीली—आपणो घेर मोरे पूगो के आपह हारा पूचे।

हमहु कहब अब ठकुर-सोहाती, नाहिं तो मौन रहब दिन-राती—अब मैं भी स्वामी को अच्छी लगनेवाली बात कहूँगा नहीं तो मौन धारण किए रहूँगा। स्पष्टवादिता के कारण उत्पन्न विक्षोभ पर उक्ति।

हमाम में सब नंगे—स्वाभाविक कमज़ोरियाँ सब में होती हैं।

हमारा काम हो बीता जाहाँ से मैं चला रीता—मेरा कर्त्तव्य पूरा हो गया, मैं अब संसार से खाली हाथ जाता है। वृद्ध मनुष्य कहते हैं।

हमारा घर जाय तो जाय पर, तुम्हारा न जाय—परोपकारी अपनी हानि करके भी दूसरे की भलाई करता है। तुलनीय : अव० हमार घर जाय तौ जाय, मुला तोहार न जाय।

हमारा भी भगवान है—निर्बल को जब कोई कष्ट पहुँचाता है तब वह ऐसा कहता है। तुलनीय : राज० सासूजी ! थे जावो, म्हारे ही कोई राम है।

हमारी बिल्ली हमीं से/को म्याऊँ—नीचे देखिए। तुलनीय : कौर० हमारी बिल्ली हमी कू म्याऊँ।

हमारी बिसमिल्लाह और हमसे ही छू—जिसके आश्रय में रहें उसी से बैर ? तुलनीय : राज० से खाँरी तलाई' र से खाँसँ ही टर्र।

हमारी भैंस भी कभी पड़िया देगी—हमारी भैंस ने सदा पड़े ही दिए हैं, किंतु कभी तो पड़िया देगी ही। प्रत्येक व्यक्ति के दिन सदा एक समान नहीं रहते। सभी के जीवन में बुरे और अच्छे दिन आते रहते हैं। तुलनीय : माल० माणी भैंस रे भी कदी पाड़ी केगा।

हमारे-उनके सात सुख—हमारे और उनके मेलजोल से सात सुख मिलते हैं। हम लोगों में बहुत प्रेम-भाव है। किसी व्यक्ति का यदि किसी से बहुत प्रेम हो तो उसके प्रति कहता है। तुलनीय : राज० म्हारे-बांरे सात सुख।

हमारे घर आओगे तो क्या लाओगे ? घर आवेंगे तो क्या खिलाओगे ?—हर हालत में अपना स्वार्थ देखनेवाले के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : अव० हमरे घर अउब्या

तो काऊ लिअउब्या, तोहरे घर अउबें तो काउ खिअउब्या; **गढ़०** हम तुमारा घर औला त तुम क्या देला अर तुम घर हमारा औला त हमुक क्या ल्यौला।

हमें खुदा के बंदे चाहिए और कुछ नहीं—हमे धन-वैभव नहीं चाहिए, केवल सज्जन व्यक्ति चाहिए। (क) जो दुष्ट व्यक्ति अपने धन का लालच देकर किसी सज्जन मनुष्य से अपना काम कराना चाहे उसके प्रति कहते है। (ख) जब कोई सज्जन मनुष्य किसी दूसरे सज्जन से कुछ सहायता माँगने जाए तो उसको यह बताने के लिए कि मनुष्यता धन से बहुत बड़ी होती है और उसे सहायता के साथ ही सहानुभूति देने के लिए भी कहते है। तुलनीय : भीली -आपणे कई न चावे रामजी नू धड़धू मनख चावे।

हमें स्वर्ग का साथ नहीं देना है—हम तुम्हारे साथ मर नही सकते। (क) जो व्यक्ति ऊपर से बहुत प्रेम जताए किंतु भीतर से शत्रुता रखे उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। (ख) जो व्यक्ति किसी असंभव कार्य के होने की आशा करे उसके प्रति भी व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : भीली आपणे हणगे हात ने करवो।

हम्माम की लुंगी जिसने चाहा बाँध ली —सर्वसाधारण के काम आने वाली चीज़ पर कहते हैं।

हम्माम के भीतर सब नंगे—दे० 'हमाम मे सब नगे।'

हर आदमी दोस्त नहीं होता, और न हर आदमी दुश्मन—बहुत समझ-बूझ कर किसी को अपना दोस्त या दुश्मन मानना चाहिए। तुलनीय : उज़० हर एक को दोस्त मत समझो, ख्याल को तन मत समझो।

हर एक बात की कुछ इंतिहा भी है -हरएक चीज़ की एक सीमा होती है। हद से ज्यादा बात करने पर कहते हे। तुलनीय : अव० हर बात कै कुछ हद्द होत है।

हरकट नारि बास एकबाह, परुवा बरद सुहुत हरवाह; रोगी होइ इकलन्त, कहें घाघ ई बिपत्ति क अन्त—कर्कशा स्त्री, अकेले बसना, पराया बैल, सुस्त हलवाहा, रोगी होकर अकेले रहना, घाघ कहते हैं कि इनसे बढ़कर कोई दुख नही है।

हर कमाले रा जवाले जो फूलेगा सो झड़ेगा, हर उत्कर्ष का अपकर्ष और उत्थान का पतन प्रकृति का नियम है।

हर कस बलयाले-खेश खब्ते दारद—हर व्यक्ति अपनी ही राय को सही मानता है।

हर कसे मसलिहते-खेश निको मी दानद -हर एक आदमी अपना ही लाभ देखता है।

हरका माने परका न माने- कोई नया आदमी रोकने से मान जाता है पर जो परच जाता है या हठधर्मी का अभ्यस्त हो जाता है वह नही मानता। तुलनीय : भोज० हरिकल मान जाला बाकी परिकल ना माने ला।

हर कारे ब हर मर्दे—हरएक व्यक्ति हरएक काम नही कर सकता। जिसमें जिस कार्य को करने की क्षमता या सामर्थ्य होती है वही उसे संपन्न कर सकता है।

हर्कि आमद इमारत नौ साख्त—हर व्यक्ति अपनी ही धारणा और विचारधारा के अनुसार काम करता है।

हर कौर लक्ष्मी नारायण—खाने मे तेज़ और काम करने मे सुस्त। तुलनीय : अव० हर कौरै बिसमिल्ला।

हरखे पितर तिलांजली पाये- पितृ तिलांजलि पाने पर हर्षित होते है। जिसके योग्य जो चीज़ होती है उसे पाकर वह खुश हो जाता है।

हरगुन गावे धक्का पावे, चूतड़ डुलावे टक्का पावे—भक्तों का आदर नही होता पर नाचनेवालों का होता है। अर्थात् संसार से धर्म उठ गया। आजकल की उलटी दशा पर कहा गया है।

हर चिड़िया को अपना घोंसला प्यारा- अपनी चीज़ चाहे अच्छी हो अथवा बुरी सबको अच्छी लगती है।

हर चीज़ अपनी असल की तरफ रुजू करती है—जैसा जिसका स्वभाव होता है उसकी प्रवृत्ति या रुचि भी वैसी वस्तुओं के प्रति होती है।

हर (चीज) कि दर काने-नमक रफ्त नमक शुद —जो जैसी संगति मे रहता है वैसा ही बन जाता है।

हर चे गीरद मुख्तसर गीरद- थोड़े पर संतोष करना चाहिए, अधिक लोभ-लालच करना ठीक नही।

हर जा कि गुलस्त खारस्त -(क) जहाँ फूल होता है वहाँ काँटा अवश्य होता है। (ख) भले-बुरे हर जगह होते है।

हर जैसे को तैसा (क) जो जैसा करता है वह वैसा फल पाता है। (ख) जो जैसा हो उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना उचित है।

हर दफ़ा गुड़ मीठा ही मीठा -गुड़ का जब भी देखो मीठा ही होगा। भले आदमी की हमेशा अच्छाई ही उभर कर आती है।

हरदम ईख की ही राह—हर समय लोभ की बात करने वाले के प्रति कहते है।

हरदी जरदी ना तजै खटरस तजै न आम, जो हरदी जरदी तजै तो औगुन तजै गुलाम—नीच या गुलाम मनुष्य

अपनी नीचता कभी नहीं छोड़ते। हरएक मनुष्य अपनी प्रकृति के अनुरूप कार्य करता है।

हर देगी चमचा—अविश्वासी पति पर कहते हैं। इसका प्रयोग मुसलमान स्त्रियाँ करती हैं।

हर निवाले बिसमिल्लाह—जो खाने को हमेशा तैयार रहे पर काम कुछ न करे। (निवाला=कौर)।

हर पर्वत में रत्न नहीं होता—(क) अच्छी चीजें सब जगह नहीं मिलती। (ख) अच्छे गुण सभी व्यक्तियों में नही मिलते। प्र० थल जल रग न होइ जेहि जोती। जल जल सीप न उपने मोती। —जायसी

हर फ़न मौला—वह मनुष्य जो सब कलाओं प्रवीण हो। तुलनीय : अव० हरफन्द मौउला।

हर फ़िरऔन रा मूसा—संसार में एक से बढ़कर एक है। हर अत्याचार को उससे बढ़कर ज़ालिम मिल जाता है।

हर भूमि का राज—अत्याचारपूर्ण राज पर कहा जाता है। 'हरभूमि' इलाहाबाद के निकट एक ग्राम है, वहाँ का राजा अत्याचारी था। तुलनीय : अव० हरभुम का राज।

हर मुल्के-राह रस्मे—जैसा देश हो वैसा ही वेश भी धारण करना चाहिए।

हर यके रा बहर काम रे साख़्तंद—खुदा ने हर शख़्स को ख़ास काम के लिए बनाया है।

हर रोज़, ईद नेस्त कि हलुआ ख़ुरद कसे—हर चीज़ के लिए उचित समय होना है। हमेशा जमाना एक-सा नही रहता।

हर लगा पताल तो टूट गया काल—यदि खेत गहराई से जोता जाएगा तो सूखे का डर नही रहेगा।

हर शब शबेरात है हर रोज़ रोज़े-ईद—सर्वदा बहुत ठाट-बाट से रहनेवाले पर कहते है।

हरष समय बिसमउ कत कीजे—हर्ष के अवसर पर विषाद क्यों करते हो? जब कोई खुशहाली के मौके पर उदास रहता है तब कहते हैं।

हरसट्टे गुड़ मीठा—जब कोई हर बार अपनी जीत चाहता है तब कहते हैं। इसके साथ ही एक अंतर्कथा है : एक बनिए का नौकर रोज़ गुड़ खाता था। बनिये को शुब्हा हुआ तो उसने गुड़ की जगह बिरोजा रख दिया। उस दिन नौकर ने वह बिरोजा ही खा लिया और उसका मुँह चिपक गया। इसी पर यह कहावत कही गई। तुलनीय : अव० हर सट्टे गुड़ मीठ; मरा० प्रत्येक सद्यांत गुळा सारखें गोड।

हर साल जुलाब हर माह क़य—वर्ष में जुलाब, महीने में एक बार वमन स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है।

हर हफ़्त हम्माम हर रोज़ मय—हफ़्ते में एक बार स्नान तथा दवा के रूप में शराब का रोज़ सेवन हकीमों के अनुसार स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है।

हर हर गाओ, ढोल बजाओ—ईश्वर का नाम लो और आनन्द करो। (क) निश्चित रहनेवाले के प्रति व्यंग्य में कहते हैं। (ख) सांसारिक मोह-माया से दूर रहनेवाले भी ऐसा कहते हैं।

हरही गाय के गले में लटकन—दुष्ट का स्वभाव दंड से ही बदलता है। तुलनीय : भोज० हरही गाय के लटकन।

हरही संगे कपिली जाय दुनू मार बराबरि खाय—बुरे के साथ भला व्यक्ति भी दंड का भागी होता है। तुलनीय : मग० हरहा और सुरहा जाय लात मुक्का बराबर खाय; मैथ० हराही सगे सुराही जाय घी खिचड़ी बरोबर खाय; भोज० हरही सुरही दुनों बराबर।

हराम का बोल उठता है, हलाल का झुक जाता है—सज्जन जहाँ लज्जा करता है और कुछ नही बोलता वहाँ निर्लज्ज बोल उठता है।

हराम का माल हराम में जाय—जो चीज़ जैसी आती है वैसे ही खर्च भी होती है। तुलनीय : मल० वेरुते किट्टियतु वेरुते पोयि; अं० Ill got ill spent.

हराम की कमाई हराम में गवाँई—अन्याय की कमाई बेकार कामों में ही खर्च हो जाती है। तुलनीय : अव० हराम कै कमाई हरामैं मा जात है।

हरामज़ादा चालीस घर लेकर डूबता है—दुष्ट अपने साथ-साथ अड़ोसी-पड़ोसी को भी ले डूबते है।

हरामज़ादी कहो या हराम की कहो, की बात एक ही है—हरामज़ादी कहो चाहे हराम की औलाद कहो बात एक ही है। जब कोई व्यक्ति अपनी किसी बात को मनवाने के लिए उसी बात को कई बार घुमा-फिरा कर कहे तो उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० बाप-पीटी कहो भावें मा-पीटी कहो, बात एक-री-एक।

हरामज़ादे की रस्सी दराज़ है—दुष्टों से सभी डरते हैं।

हरामज़ादे से ख़ुदा भी डरता है—अर्थात् सभी डरते हैं।

हराम पुकारे छत पर से—बुरी बात छिपती नही, वह अपने आप प्रकट हो जाती है।

हरि इच्छा भावी बलवाना—भगवान की इच्छा या होनहार बहुत बलवान है। उसके आगे किसी की कुछ नहीं चलती।

हरि खेती गाभिन गाय मुंह पड़े तब जानी जाय—दे० 'हरियर खेती…'। तुलनीय : हरि० हरि खेती अर ग्याभण भैंस मुँह पड़ले ज्यब की आम।

हरिन छलाँगन काकरी पंगे पंग कपास; जाय कहो किसान से, बोवें घनी उखार---जाकर किसान से कहो कि वह ककड़ी को हरिण की छलाँग के बराबर दूरी पर, कपास को पग-पग की दूरी पर तथा ऊख को खूब घनी बोए।

हरि बिनु मरहिं न निसिचर पापी---बिना भगवान के मारे पापी राक्षस नही मरेंगे। भगवान ही दुष्टों को मारते हैं।

हरियर खेती गाभिन गाय बड़े भाग से मुँह में जाय--(क) हरी खेती तथा गाभिन गाय का लाभ भाग्य से ही प्राप्त होता है, क्योंकि इनसे हानि की काफ़ी आशंका रहती है। (ख) जब तक कोई चीज़ हाथ में न आ जाए तब तक उसका विश्वास नहीं करना चाहिए। तुलनीय . भोज० हरियर खेती गाभिन गाय मुँह पड़े तबे जानल जाय।

हरिया हाथी हाकिम चोर, दोनों के बिगरे ओर न छोर—जगली हाथी और चोर हाकिम से डरते रहना चाहिए। ये बिगड़ने पर अपनी सीमा तोड़कर किसी का बुरा कर सकते हैं। तुलनीय : अव० हरिया हाथी हाकिम चोर, दुइनों बिगरे ओर न छोर।

हरि सेवा सोलह बरस गुरुसेवा पल चार, तो भी नहीं बराबरी, वेदों किया बिचार—वेदों में ऐसा कहा गया है कि यदि गुरु की थोड़े समय तक ही सेवा की जाए और ईश्वर की आराधना लंबे समय तक की जाए फिर भी वह उसके बराबर नहीं होती। गुरु सेवा का माहात्म्य दर्शाया गया है कि वह हरि-सेवा से भी बड़ी है।

हरी खेती गाभिन गाय, मुंह पड़े तब जानी जाय—खड़ी हुई लहलहाती खेती जब तक पकपका कर घर में नहीं पहुँच जाती, और ग्याभन गाय जब तक बिया नहीं जाती तब तक निश्चित रूप से कुछ भी नही कहा जा सकता। इन दोनों का जब तक फल सामने न आ जाए कोई ठिकाना नहीं। तुलनीय : अव० हरियर खेती, गाभिन गाय मुँह पड़े तो जानी जाय; हरि० हरी खेती अर ग्याब्भण्य धीणू, मूंह पड़्यजा जिब की आस; मरा० पिकलें शेत नि गाभण गाय तोंडी लागे तेव्हाँ खरें।

हरे पेड़ पर सभी पक्षी आ बैठते हैं, ठूंठ पर कोई नहीं बैठता—संपन्न या गुणवान को सभी चाहते हैं निर्धन और मूर्ख को कोई नहीं चाहता। तुलनीय : मल० एतानुमुण्टेन्किल् आरानुमुण्टु; अं० In times of prosperity friends will be plenty.

हरे राम तो देगा कौन, दे राम तो हारेगा कौन—ईश्वर जिसका बुरा चाहेगा उसका कोई भला नही कर सकता और ईश्वर जिसका भला चाहे उसका कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता।

हरे रूख पर सबकी आँख—धनिकों के सभी साथी होते हैं। धनिकों की ओर सभी देखते हैं दीनों की ओर कोई नही।

हर्दी न छोड़े जर्दी, बुलबुल न छोड़े रंग—किसी की प्रकृति में सहज परिवर्तन नहीं आ सकता।

हर्र बहेड़ा आँवला घी शक्कर संग खाय, हाथी दाबे काँख में सात / साठ कोस ले जाय—आशय यह है कि उपरोक्त चीज़ों का सेवन बहुत फायदेमंद होता है।

हर्र लगे न फिटकरी, रंग चोखा आवे—दे० 'हल्दी लगे न फिटकरी…'।

हर्रे लगे न फिटकरी रंग चोखा होय—दे० 'हल्दी लगे न फिटकरी…'।

हलक़ का न तालू का, यह माल मियां लालू का—(क) बुरे ढंग से प्राप्त चीज या अन्याय से उपार्जित धन पर कहते हैं। (ख) जो वस्तु न खाई जाए न पी जाए यों ही कुत्ते को डालकर नष्ट कर दी जाए तब भी कहते हैं।

हलक़ के कोतवाल—वे लड़के जो माता-पिता के भोजन में से बिना कुछ लिए उन्हें खाने नहीं देते।

हलक़ रोवे जीभ टोवे—किसी को बहुत थोड़ी-सी चीज खाने को दी जाए तब कहते है। तुलनीय : अव० हलक रोवै, जीभ टवै।

हलक़ से निकली खलक़ में पड़ी—बात मुंह से निकली नहीं कि दुनिया में फैल जाती है।

हलका सो छलका—हल के बरतन में से पानी छलकता रहता है। (क) तुच्छ व्यक्ति अपने वैभव का प्रदर्शन करने के लिए अवसर ढूंढते रहते है और अवसर पाते ही उसे सबको दिखाने लगते हैं। (ख) नीच व्यक्ति किसी बात को गुप्त नही रख पाते और संसार भर में ढिंढोरा पीट देते हैं। तुलनीय : भीली - हलका जे झलका।

हलके पिछाड़े उड़ उड़ जायं—दे० 'थोथे फटके उड़ उड़ जायं।' तुलनीय : हलुक पछोरे उड़-उड़ जाय।

हल के लहू से चल निकले है—बहुत ही ढीठ और अवज्ञाकारी बन गए हैं।

हल चले न चले कुदारी, बैठे भोजन देहिं मुरारी—न तो हल चलाता हूँ और न फावड़ा, ईश्वर बैठे-बैठे खाने को दे देता है। निठल्ले व्यक्तियों के प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

हल दे हलवाह दे, हल हाँकने को पैना दे दे० 'लाददे लदादे ···'।

हल न बैल अंकवार भर पैना - जब कोई ऐसी व्यर्थ की चीज बहुत बड़ी मात्रा में एकत्र करे जिसकी उसे तनिक भी आवश्यकता न हो तो उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

हलवाई की जाई, और सोवे साथ क़साई -हलवाई की लड़की कसाई के साथ सोती है। (क) बेजोड़ बात पर कहा जाता है। (ख) जब कोई अपने कुल के विरुद्ध आचरण करता है तब भी कहा जाता है।

हलवाई की दूकान पर दादा जी का फ़ातिहा—जब कोई दूसरे का धन अपना समझकर निस्संकोच भाव से ख़र्च करता है तब व्यंग्य में कहते हैं।

हलवा खाने को मुंह चाहिए -अच्छी वस्तु पाने के लिए वैसा गुण भी चाहिए।

हलवा ख़ुरदनरा रूए बायद -ऊपर देखिए।

हलवा पूरी बाँदी खाय पोता फोरन बीबी जाय-- बाँदियाँ आराम करें और बीबी को काम करना पड़े। जो किसी के कारण आराम करे पर उसका काम न करे और जिसे उसके कारण आराम न हो पर उसका काम करना पड़े तो कहते हैं।

हलवा बीबी खाय, पुड़ा पिटावन बाँदी जाय—पति के धन से उसकी बीबी आराम करती है अत: कष्ट भी उसी को भोगना चाहिए पर कष्ट बाँदी (दासी) भोगती है। आराम कोई भोगें कष्ट दूसरों को सहना पड़े तो यह कहावत कष्ट भोगने वाला या दूसरे कहते है। तुलनीय : ब्रज० हलुआ पूरी बीबी खायँ, मुँड़पिटावन मीयाँ जाय।

हलवाहा बिना हल घरनी बिना घर बिना हलवाहे के हल और स्त्री के बिना घर बेकार लगता है। तुलनीय : मैथ० बिनु हरवाहे हर की बिनु घरनिये घरकी; भोज० हरवाहा बिना हर मेहरारू बिना घर।

हलवाही चरवाहे को - हल चलाने का काम पशु चरानेवाले को देते है। जो जिसका काम न हो उसको वह काम देने पर कहते है।

हलवाहे को हल का ताव, बीबी को काजल का ताव -- अपने अपने काम की चिंता सभी को लगी रहती है। तुलनीय : अव० हर हरवाहे ताव बहुरिया कजरे का ताव।

हल हाँके भूखे मरे, बाबा लड्डुआ खायँ—जो हल चलाते हैं वे भूखे मरते हैं और बाबा (साधु) जी लड्डू खाते हैं। जब श्रम करनेवाले कष्ट सहें और बिना श्रम करने वाले मौज करें तो कहते है।

हलाल में हरकत, हराम में बरकत- यह दुनिया ऐसी उलटी है कि अच्छा काम करनेवाले दुःख पाते हैं और बुरा काम करनेवाले फलते-फूलते है।

हलुवा मिला न माँड़े, दोनों दीन से गए पाँड़े—दे० 'आधी छोड़ सारी को धावे ··'।

हल्दी का रंग, परदेसी का संग पक्का नहीं होता—स्पष्ट है। तुलनीय : छत्तीस० जस हरदी के रंग तस परदेसी के संग।

हल्दी की एक गाँठ से कौन पंसारी बना है--नीचे देखिए। तुलनीय : राज० एक सूँठरै गाँठियासूँ पसारी को हुईजै नी।

हल्दी की गाँठ से पंसारी नहीं बनते हल्दी की एक गाँठ से पंसारी नहीं बना जाता। छोटे-मोटे कामों से अधिक धन या अधिक नाम नहीं कमाया जा सकता। तुलनीय : राज० सूठ को गाँठिया ले'र पसारी को वणीजै नी।

हल्दी लगी न फिटकरी पटाख बहू आन पड़ी -बिना परिश्रम के फल मिल जाने पर कहते है।

हल्दी लगे न फिटकरी, रंग चोखा ही आवे—बिना व्यय किए अच्छा काम चाहनेवाले के स्वभाव के लिए कहा जाता है। तुलनीय : हरि० हलद लाग्गी ना फटकड़ी, गमदे सी नै भऊ आइयो; कौर० हलदी लगै फिट्कड़ी, रंग चोक्खा; छत्तीस० हर्रा लगे न फिटकरी, रंग चोखा; बुंद० हर्रा लगे न फिटकरी, रंग चोखो आवे; मरा० हिरडा नको तुरटी नको, रंग पक्का झाला पाहिजे।

हवा न बयार अनरीत की वर्षा --न तो हवा चल रही हैं और न ही वर्षा का कोई लक्षण दिखाई देता है, फिर भी वर्षा हो गई। संभावना न रहते भी जब कोई कार्य सपन्न हो जाए तब कहते है। तुलनीय : भोज० आन्ही न बतास अन्हेर क बरखा।

हवा से आए, फूंक से जाए हवा के साथ आती है और फूँक से जाती है। (क) जो वस्तु किसी के पास ठहरती नहीं उसके प्रति कहते है। (ख) जो व्यक्ति बहुत ही चंचल हो, एक पल भी कहीं टिक कर न बैठता हो उसके प्रति भी व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : राज० बाये आवै, फूंका जाय।

हवेली और झोपड़ी का क्या संग ?---(क) बेमेल सबध अच्छा नहीं होता। (क) छोटे और बड़े का क्या साथ ?

हस्त-ओ-नेस्त बराबर है—किसी का जीना और मरना किसी के लिए बराबर हो तो वह उसके लिए ऐसा ही कहता है। जब लड़का कुछ कमाता-धमाता नहीं तो उसका होना या न होना (हस्त-ओ-नेस्त) बराबर है।

हस्त न बजरी चित्र न चना, स्वाति न गेहूँ बिशाख न धना—हस्त (हथिया) नक्षत्र में बाजरा, चित्रा नक्षत्र में चना, विशाखा नक्षत्र में धान और स्वाति नक्षत्र में गेहूँ बोने से बहुत कम पैदावार होती है।

हस्त बरसे तीन होय साली, सक्कर, मास; हस्त बरसे बीन जायँ तिल, कोदो, कपास—हथिया के पानी से धान, गन्ना तथा उर्द की फ़सल अच्छी होती है परंतु तिल, कोदो और कपास की पैदावार नष्ट हो जाती है।

हस्ती का क्या भरोसा?—जीवन का कुछ भी ठिकाना नहीं है।

हाँ करो या ना करो—किसी से साफ़ कहलाना।

हाँजी की नौरी नाजी का घर—नौकरी खुशामद करने से ही सुरक्षित रहती है, वरना शीघ्र छुटकारा मिल जाता है। तुलनीय: हरि० हाँजजी की नौकरी, नाँहजजी का घर।

हाँड़ी का भात छुपे मुँह की बात न छुपे—मुँह से निकली हुई बात गुप्त नहीं रह सकती। तुलनीय: अव० हाँड़ी कै जात है, मुँह कै निकरी बात नाहीं छिपत।

हाँड़ी का मुँह चौड़ा हो तो कुत्ते को शरम करनी ही चाहिए—देने वाले यदि कुछ न कहें तो लेनेवाले को तो शर्म करनी ही चाहिए। जो व्यक्ति देनेवाले को सीधा देखकर उसे लूटते-खसोटते हैं उनके प्रति इस प्रकार कहते हैं। तुलनीय: गढ़० हाँडी को मुख चौड़ो होयो त बराला कू भी त शरम चेंद।

हांडी चाटी होगी—जब किसी के विवाह के समय में मेंह बरसे तो दुल्हा को छेड़ते हुए कहते हैं।

हाँड़ी न डोई घर-घर हमारी रसोई—मेरे लिए बर्तन आदि की आवश्यकता नहीं है क्योंकि मेरा भोजन तो घर-घर में बना हुआ है। ऐसा साधु-सन्त लोग कहा करते हैं क्योंकि उन्हें दूसरों के यहाँ से ही खाने भर को मिल जाता है, रसोई बनाने के लिए बर्तन आदि रखने की आवश्यकता नहीं होती।

हांडी में अच्छत ना, चला समधी जेंवे—हँडी में कुछ भी नहीं है और समधी से कह रहे हैं कि चलिए भोजन कर लीजिए। पास में कुछ न हो और दूसरों को देने का वादा करे तब कहते हैं। तुलनीय: अव० हाँड़ी मा अच्छत नाहीं, चलो समधी जेवें बरे। (अच्छत=अक्षत, चावल)।

हांडी में एक चावल टटोला जाता है—(क) नमूना देखने से सारे माल का हाल मालूम हो जाता है। (ख) ढेर में से एक को जानकर सबका पता लगाया जा सकता है। तुलनीय: अव० हँड़िया मा एकै चावल टोवा जात है।

हाँडी में होगा, सो डोई की में आयेगा ही—जो मन में रहता है वह मुँह से अवश्य ही निकलता है। तुलनीय: मरा० भांडयांत असेल तर डावांत येईलच।

हांड़े से वांड़ा भला—बेकार घूमने से क़ैद होकर रहना अच्छा है। अर्थात् बेकारी बुरी चीज़ है।

हाँसी के गल फाँसी—हँसी-दिल्लगी की बातें करते-करते लड़ाई-झगड़ा हो जाता है तो कहते हैं।

हाकिम की अगाड़ी और घोड़े की पिछाड़ी कभी न जाय—दोनों में नुक़सान होने का डर होता है। घोड़ा लात मार देगा और हाकिम कोई हुक्म दे देगा। तुलनीय: अव० हाकिम कै अगाड़ी, औ घोड़ा कै पछाड़ी न जाय; माल० हाकम रे आगे, ने घोड़े रे पछाड़ी नी जाणो; मरा० वैद्याच्या पुढें नि घोड्याच्या मागें उभें राहणे नव्हे।

हाकिम के आंख नहीं होती कान होते हैं—न्यायाधीश सुनकर ही न्याय करते हैं, देखकर नहीं। तुलनीय: अव० हाकिम के आँखी नाहीं होत, कान होत है।

हाकिम के डपटे और कीचड़ के रपटे—अपने से बड़े के डांटने पर और कीचड़ के कारण गिरने पर बुरा नहीं मानना चाहिए। अर्थात् यह स्वाभाविक है। तुलनीय: अव० हाकिम का डपटा औ कीचड़ का रपटा कौउनो बुरा नाहीं मानत।

हाकिम के तीन और शहना के नौ—हाकिम के तीन और नौकर के नौ हिस्से होते हैं अर्थात् हाकिम के पास जो रक़म पहुँचती है उसकी तिगुनी रक़म रास्ते में नौकर-चाकर खा जाते है।

हाकिम के तीन, प्यादे के नौ—ऊपर देखिए।

हाकिम टले पर हुक्म न टले—हाकिम के चले जाने पर भी उसका फ़ैसला नहीं टलता। उसे लोगों को मानना पड़ता है। तुलनीय: अव० हाकिम टरै पै हुकुम न टरै; ब्रज० हाकिम टरै परि हुकम न टरै।

हाकिम दो जाननेवालों में एक अनजान—वादी और प्रतिवादी ही झगड़े का सच्चा हाल जानते हैं तीसरा हाकिम जो फ़ैसला करता है बिल्कुल अनजान है। आशय यह है कि ऐसी स्थिति में हाकिम क्या न्याय कर सकता है।

हाकिम-ओ-महकूम की लड़ाई क्या—स्वामी और नौकर की लड़ाई कोई लड़ाई नहीं होती। लड़ाई तो बराबर-वालों में होती है।

हाकिम से दूर, चिंता से दूर—यदि आदमी हाकिम (अदालत, कचहरी) से दूर रहे तो वह चिंता से भी दूर रहता है। कचहरी चिंता की जड़ है। तुलनीय: अं० Away from court, away from care.

हाकिम से महकूम बड़ा—बड़ों के नौकर उनसे भी अधिक रोब वाले और घमंडी होते हैं। तुलनीय : अव० हाकिम से हाकिम का चपरासी बड़ा।

हाकिम हारे तो मुहँ में करे—अर्थात् अधिकारी या बलवान् हार जाने पर भी रोब दिखाते हैं। तुलनीय : भोज० बड़ियरा हारे मुँह में मारे; मैथ० हाकिम हारे तऽ मुँह में मारे या बरिआ हारे मुँह में मारे।

हाकिम हारे मुँह में मारे—ऊपर देखिए।

हाकिमी गरम बनियाई नरम—हाकिम का काम बिना रोब के नही चल सकता और दूकानदारी का काम बिना नरम बने नही चल सकता। तुलनीय : गढ़० हाकिमी गरम, बणियाई नरम।

हाजते-मश्शाता नेस्त रू-ए दिलआराम रा—सुन्दर मुखाकृति के लिए शृंगार की आवश्यकता नहीं पड़ती। (हाजते-मश्शाता—कंघी की आवश्यकता; रू-ए दिल-आराम—सुन्दर मुख)।

हाज़िर को लुक़मा ग़ायब को तकबीर—अच्छे मनुष्य को कहा जाता है। वे जीवित लोगों को खिलाते है और मरो के नाम पर दान देते है। अच्छे आदमी जिंदा और मरे सभी का भला करते है।

हाज़िर मारे ग़ाफ़िल/ग़ायब रोएं—जो अवसर पर रहता है वह लाभ उठाता है जो मौजूद नही रहता उसे रोना पड़ता है। वक़्त पर हाजिर न रहने से हानि उठानी पड़ती है।

हाज़िर में कोई देर नहीं—जो पास में है उसके देने में कोई इनकार नहीं है। जो वस्तु अपने पास हो उसे तुरंत दे दिया जाए तो कहते है। तुलनीय : माल० हाजर जो नाजर।

हाज़िर में हुज्जत नहीं, ग़ैर की तलाश नहीं—जो वस्तु सामने है उसे देने में संकोच कुछ नहीं और जो नहीं है उसे खोजना नहीं। अर्थात् जो चीज सामने है वह तो देने को तैयार हूँ पर कोई ऐसी चीज न माँगना जो हाज़िर न हो, नहीं तो मैं खोजने नही जाऊँगा। तुलनीय : अव० हाजिर मा हुज्जत नाही गैर के तलास नाही।

हाजीजी हज करते फिरे नामे-खुदा लिया नहीं—हाजी जी हज करते रहते है पर कभी खुदा का नाम नहीं लिया। ऊपर से साधु और भीतर से असाधु के लिए कहते है। आशय यह है कि हज या तीर्थयात्रा से अधिक महत्त्व ईश्वर की नियमित आराधना का होना है।

हाट भली न सोर की, सगत भली न वीर की—साझे की दूकान और स्त्री की संगति अच्छी नहीं होती।

हाट हाट पुकारे वैसा, जैसा करे सो पावे तैसा—जो जैसा करता है वह वैसा ही पाता है।

हाड़ो थका व्योहारों थका—बूढ़े आदमी को कहते है जो हर प्रकार से थका रहता है।

हातिम की गोर पर लात मारते हैं—हातिम से भी बढ़-कर दानी हैं। व्यंग्य में सूम के लिए इसका प्रयोग होता है।

हाथ कंगन को आरसी क्या—हाथ में पड़े कंगन को देखने के लिए आइने की क्या आवश्यकता? प्रत्यक्ष बात के लिये पूछने की क्या आवश्यकता? तुलनीय : अव० हाथ कंगना का आरसी का; बुंद० हात कगन कों आरसी का; गढ़० हाथ कंकण कू आरसी क्या; मरा० हाताच्या कांकणाला आरस काशाला; ब्रज० हात कंगन कू आरसी कहा; प्र० देखे दसा किन आपनी तूं अब हाथ कंगन कों कहा आरसी—पद्माकर

हाथ कसीदा आसमान दीदा—हाथ से कशीदा काढ़ रही हैं और देख रही है आसमान की तरफ़। एक काम को करते समय जब किसी का ध्यान दूसरे काम की ओर रहता है तो उसके लिए कहते है।

हाथ का चूहा बिल में पैठा—(क) हाथ में आए हुए काम का बिगड़ जाना। (ख) हाथ मे आई आमदनी किसी गड़बड़ से चली जाना। तुलनीय : गढ़० हाथै लगे चाँत।

हाथ का दिया आड़े आय—दान ही ढाल का काम करता है, अर्थात् मनुष्य को कष्टों से बचाता है। दान के लिए ऐसा कहते है। तुलनीय : राज० हाथरो दियो आडो आवै।

हाथ का दिया साथ खाने लगा—नीच भी बराबरी का दावा करने लगे। जिसे हमी ने पाला-पोसा वह हम ही से टक्कर लेने लगा।

हाथ का दिया साथ चलेगा—जो कुछ मनुष्य दान देता है अंत में वही उसके काम आता है। तुलनीय : अव० हाथेन का दाने साथे जाई।

हाथ का पैना और बैर बिसाना—उधार देने से दुश्मनी पैदा हो जाती है।

हाथ का हथियार—पास की चीज़। वह चीज जिसका उपयोग चाहे किया जा सके। तुलनीय : माल० जण्डे हाथ में वे वण्डो हथियार।

हाथ का हथियार, पेट का आधार—हाथ की कला या हाथ का हथियार ही पेट का आधार है या रोजी देने वाला है। यदि हाथ का हथियार न हो तो संसार में कुछ पूछ नही होती। तुलनीय : अव० हाथ कै हथियार पेट के रोजी।

हाथ की तेरी, आग की मेरी—दे० 'तवे की तेरी ...'।

हाथ की मेरी, तवे की तेरी—जो पक चुकी है वह मेरी

और जो तवे पर पक रही है वह तुम्हारी। स्वार्थी व्यक्ति के प्रति व्यंग्योक्ति। तुलनीय : गढ़० हाथै मेरी, तवै तेरी;

हाथ की लकीरें कौन मिटा सकता है? —जो भाग्य में है उसे कोई मिटा नहीं सकता। तुलनीय : कौर० हात्तों की लकीर के मिटे।

हाथ की लकीरें नहीं मिटतीं—होनहार होकर ही रहती है। तुलनीय : अव० हाथ के लकीर नाही मिटत।

हाथ के कंगन को आरसी क्या—दे० 'हाथ कंगन को ...?'

हाथ को हाथ धोता है—परस्पर सहयोग से ही काम होता है। तुलनीय : कौर० हात्थ कू हात्थ धाव्वे।

हाथ को हाथ नहीं सूझता—बहुत अन्धकार रहने पर कहा जाता है। तुलनीय : गढ़० हाथ कू हाथ नी सूझत।

हाथ को हाथ पहचानता है—जिससे लिया जाता है उसी को दिया जाता है, दूसरे को नहीं। यदि कोई किसी और का रुपया माँगे तो इस लोकोक्ति का प्रयोग करते हैं। तुलनीय : अव० हाथ का हाथ पहिचानत है।

हाथ कोड़ी न बाज़ार लेखा—ऐसा आदमी जिसके पास कुछ नक़द भी न हो और जिसका लोग बाज़ार में भी विश्वास करें। तुलनीय : अव० हाथ कौड़ी नाही हाट मां लेखा।

हाथ गोड़ पतुही पेट नदकोला, एक हांड़ी होला त पेवे के होला—बहुत खानेवाले पतले-दुबले आदमी पर कहा जाता है।

हाथ गोड़ लकड़ो, पेट बकरी—ऐसा आदमी जो पतला-दुबला होने पर बकरी की तरह दिनभर खाता रहे। तुलनीय : अव० हाथ गोड लकड़ी अरु खाय का बोकरो अस।

हाथ गोड़ सरई पेट नदकोहा—पतला-दुबला आदमी जब बहुत खाता है तो उस पर कहते हैं। कभी-कभी इसमें 'एक हाँड़ी होवे त पेटवे के होला' पंक्ति और जोड़ लेते हैं।

हाथ गोड़ सिर की पेट नदकोला—दे० 'हाथ गोड़ पतुही...'।

हाथ चले ना पैयाँ, घर बैठे देय गुसैयाँ—जिसके हाथ-पाँव नहीं चलते उसे ईश्वर घर बैठे ही खाने को देते हैं: ईश्वर सबको देता है ऐसा आलसियों का कहना है।

हाथ चोरी का माल मियाँ ईमानदार—चोरी का माल हाथ में है, किन्तु फिर भी अपने को ईमानदार बताए जा रहे हैं। प्रत्यक्ष दोष या अपराध दिखाई देने पर भी जो व्यक्ति उन्हें स्वीकार न करे उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : गढ़० हाथ पर चोरी सेंदिख सच्चो।

हाथ जलाए, गर्मी खाई, रोटी फिर भी न पाई—रोटियाँ बनाते हुए गर्मी भी सही, हाथ भी जलाए किन्तु रोटी फिर भी नहीं मिली। परिश्रम किया, कष्ट भी उठाया किन्तु लाभ कुछ भी नहीं मिला। तुलनीय : राज० हाथ ही बल्या, होला ही हाथ को आया नी।

हाथ जोड़े से कहीं बूढ़े ब्याहे जाते हैं—दे० 'हा-हा करके बूढ़े...'।

हाथ टूटा पर हाथ का हिलना न छूटा—तंगदस्ती आई पर अकड़ दूर न हुई। आदत से मजबूर व्यक्ति के प्रति कहते हैं।

हाथ ढीला, बने वसीला—हाथ ढीला करने से सब काम हो जाते हैं। धन व्यय करने से सभी कुछ मिल जाता है। तुलनीय : राज० हाथ पोलो, जगत गोलो। (गोलो = दास)।

हाथ न गले, नाक में प्याज़ के डले—हाथ और गले में कुछ नहीं है और नाक में प्याज के बराबर का गहना पहने हैं। बेहूदा गहना पहिनने पर कहते हैं: जहाँ गहना पहिनना चाहिए वहाँ तो एक भी गहना न हो और नाक में प्याज़ के बराबर भद्दा गहना हो।

हाथ न मुट्ठी, फड़फड़ा उट्ठी—नीचे देखिए।

हाथ न मुट्ठी, खिलखिलाती उट्ठी—वस्तु खरीदने का शौक़ तो हो, पर पास में पैसा न हो तब कहते हैं।

हाथ-पाँव की काहिली मुँह में मूंछें जायँ—हाथ न हिलाने से मूँछें मुँह में जाती हैं। आलसियों के प्रति व्यंग्य में कहते हैं जो सामान्य कार्य में भी आलस्य दिखाते हैं। तुलनीय : अव० हाथ के अलसाई मोछा रहे टेंढ़; राज० हाथरै आलस मूंछ मूंढै में आवै।

हाथ पाँव बचाइए, मूंजी को सरकाइए—अपने को सुरक्षित रखते हुए (हाथ-पाँव बचाते हुए) किसी तरह शत्रु को अपने पास से हटा देना चाहिए। (मूंजी = शत्रु, सूम, साँप)।

हाथ-पाँव टूट गए, चाल फिर भी वही—हाथ-पाँव टूट चुके हैं, किन्तु चलते हैं उसी तरह झूमकर। जो व्यक्ति निर्धन हो जाने पर भी पहले जैसी तड़क-भड़क से रहे उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : गढ़० हाथ टूटिगे पर बौछड़ा निछूटे।

हाथ पांव दीयासलाई बात करने को फज़्ले-इलाही—कोरे बातूनी को कहते हैं।

हाथ-पाँव बचाइए मूजी को टरकाइए—ऐसी कुशलता से काम कीजिए कि काम भी हो जाए और शत्रु भी परास्त

हो जाए।

हाथ-पांव सटका, पेट मटका—हाथ-पैर तो कमज़ोर हैं मगर पेट घड़े जैसा हो। जब कोई दुर्बल व्यक्ति अधिक भोजन करता है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते है।

हाथ-पैर के आलस्य से मुँह में मक्खी चली जाती है—दे० 'हाथ पाँव की काहिली···'। तुलनीय : कौर० हाथ-पाँव की कायली मूं में माखी जाय।

हाथ-पैर सरई पेट नदकाहे—दे० 'हाथ गोड़ पतुही···'।

हाथ बेचा है, कुछ जात नहीं बेची है—मालिक अपने नौकर को जब कोई अनुचित काम करने को कहता है तो नौकर इस प्रकार उत्तर देते हैं। अर्थात् काम कराने का अर्थ जाति-धर्म छोड़कर काम करना नही है। तुलनीय : अव० हाथ बेचा है, कुछ जात नाही बेचा; मरा० हात तुम्हाला बिकला आहे काँही जात नाही बिकली।

हाथ भर की ककड़ी नौ हाथ का बीया—बेतुकी बात पर कहते हैं। तुलनीय : बुंद० हाथ भर के ज्वान सवा हात की डाढ़ी।

हाथ भर के जवान, सवा हाथ की दाढ़ी—ऊपर देखिए।

हाथ भरे का अहै लड़ेया नौ गज की है मूंछ—(क) किसी छोटे आदमी के खूब डींग हाँकने पर कहते है। (ख) बेमेल शृंगार पर भी कहते हैं।

हाथ मां न गात मां मै धनवंती जात मां—मेरे हाथ मे न तो कोई कला या शिल्प है और न मेरे शरीर में कोई गुण, मैं तो अपने उच्च कुल के कारण धनी हूँ। अपनी उच्च जाति या कुल पर गर्व करनेवाले के प्रति कहते हैं जो जीवन फूहड़पन से व्यतीत करता है।

हाथ माला, पेट कुदाला—हाथ में तो माला है किंतु पेट मे कुदाल है। नक़ली धर्मात्माओ के प्रति व्यंग्य से कहते है। तुलनीय : राज० हाथ में माला, पेट कुदाला।

हाथ में आटा लगाकर भंडारी बने—जब कोई कुछ न करके भी ऊपरी दिखावे से किसी काम का करनेवाला बनना चाहे तो उसके प्रति व्यंग्य में कहते है।

हाथ में न गात में मैं धनवंती जात में—दे० 'हाथ मां न गात मां···'।

हाथ में माला कांख में कतरनी—दे० 'हाथ सुमिरनी···'।

हाथ में माला, दिल में माला—दे० 'हाथ सुमिरनी···'।

हाथ में दे रोटी, सिर पर मारे जूती—ऐसे ओछे व्यक्ति के बारे में कहा जाता है जो किसी का उपकार करता है लेकिन साथही बार-बार उसे जताता भी जाता है। तुलनीय : राज० मूंढ में कवो माथै में जूती।

हाथ में सुमरनी, बगल में कतरनी—दे० 'हाथ में माला···'।

हाथ लिया कांसा, तो रोटियों का क्या सांसा—जब भीख ही माँगनी है तो रोटी की क्या कमी ? बेशर्मी के प्रति व्यंग्य। तुलनीय : राज० हाथ में लिया काँसा, माँगण का क्या माँसा ? हरि० हात्थ लिया काँस्सा, माग्गण का के सांस्सा ?

हाथ लिया तो कांसा तो मागन में क्या सांसा—ऊपर देखिए।

हाथ सुमरनी, पेट कतरनी—हाथ मे माला लिए हैं और पेट में कैंची रखे है। ऊपर मे साधु भीतरी से बुरे के लिए कहते है। तुलनीय : अव० हाथ सुमिरनी, पेट कतरनी; कौर० हात्थ सुमरणी पेट कतरणी; राज० हाथ सुमरनी, पेट कतरणी।

हाथ सुमरिनी बगल कतरनी—ऊपर देखिए। तुलनीय : गढ़० हाथ सुमरनी बगल कतरनी।

हाथ सूखा फ़क़ीर भूखा—निर्धन के यहाँ फ़क़ीर या मँगता जाएगा तो उसे अवश्य भूखा लौटना पड़ेगा। किसी निर्धन के द्वार पर याचक के आने पर ऐसा कहते हैं।

हाथ सूखा, बच्चा भूखा—खाना खाने के बाद हाथ धोए गए और उनके सूखते ही बच्चे को फिर भूख लग आई। (क) बच्चों को बहुत भूख लगती है और वे दिन भर खाते ही रहते है। (ख) बहुत अधिक या बारबार खानेवालों के प्रति भी व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय: राज० हाथ सूखो, टाबर भूखो।

हाथ सूखा ब्राह्मन भूखा—एक यजमान के यहाँ खाकर ब्राह्मण जब हाथ धोते हैं और थोड़ी देर मे जब हाथ सूख जाता है, तब पुन: उन्हें भूख लग जाती है। पेटू व्यक्ति पर व्यंग्य।

हाथ से मारे, भात से न मारे—किसी को दंड दे ले पर उसकी रोज़ी न छीने। दे० 'पीठ मारे पेट न मारे'।

हाथ से लगाय, पैर से बुझाय—हाथ से आग लगा कर फिर पैर से बुझाता है। जो व्यक्ति इधर की उधर और उधर की इधर लगाकर आपस में लड़ाई करा दे तथा बाद में मेल कराने का प्रयत्न भी करे उसके प्रति व्यंग्य से कहते हैं। तुलनीय : राज० हाथे लगावै, पगै बुझावै।

हाथ हिलाऊँ धर बैरी पीहर भी पाऊँ—(क) जो स्त्री परिश्रम करतो है उसे ससुरालवाले पीहरवालों की तरह

ही प्यार करते हैं। (ख) परिश्रम करनेवाला **व्यक्ति हर** जगह लाभ प्राप्त कर लेता है। तुलनीय : मेवा० डावो ह हिलाऊँ पर बैठी पीयर पाऊँ।

हाथ होते मूँछ टेढ़ी—साधन होने पर भी यदि कार्य बिगड़ जाए तब ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मग० हाथ अछतें मोंछ टेढ़; भोज० हाथ रहते मोंछ टेढ़।

हाथी अपना बल नहीं देख पाता—हाथी को स्वयं का बल मालूम नही होता। अपनी शक्ति अवसर के बिना कोई नही जान पाता। तुलनीय : राज० हाथारो जोर हाथने को दीसैनी।

हाथी अपनी हथियाई पर आ जाय तो आदमी भुनगा है अगर जबरदस्त अपनी जबरदस्ती दिखाए तो सभी परेशान हो जायेगे। तुलनीय : अव० हाथी अपने हथियाई पै आय जाय तो मनई भुनगा अमर है।

हाथी अपने पाँवे भारी चींउटी अपने पाँवे भारी— अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति अपनी समस्या से परेशान है।

हाथी आई हाथी आई, हाथी ने किया भों—किसी के आने का बड़ा शोर हो पर आने पर वह वैसा न निकले जैसी आशा थी या उसमे केवल ऊपरी आडंबर मिले तो कहते हैं।

हाथी आगे टोकरी चारा—दे० 'ऊँट के मुँह में जीरा।'

हाथी आय और घोड़ा जाय—हाथी जब किसी स्थान पर आता है तो घोड़े को वह स्थान छोड़ना पड़ता है। बड़ों के सामने छोटों के तथा बलवानों के सामने निर्बलों को हार माननी पड़ती है। तुलनीय : माल० हाथी आया ने घोड़ा उठाया।

हाथी का कधा खाली नहीं रहता—जब कोई नही रहता तो महावत ही बैठता है। यह कहावत उस पर कही जाती है जिसके साथ हमेशा कोई न कोई लगा रहे।

हाथी का जग साथी कोड़े, पाहन, बेड़ी—सबल के सभी साथी हैं और निर्बल के सभी शत्रु।

हाथी का दाँत, कुत्ते की पूँछ और चुगलखोर की जीभ सदा टेढ़ी रहती है—चुगलखोर कभी चुगली का अवसर नहीं छोड़ता। तुलनीय : राज० हाथीरा दाँत, कुत्तेरी पूँछ, कुमाणसरी जीभ, सदा आँठी रैवै।

हाथी का दाँत, घोड़े की लात मूज़ी का का चंगुल— हाथी के दाँतों से, घोड़े की लातों से और शत्रु के जाल से बचना चाहिए।

हाथी का दाँत निकला, जहाँ निकला, वह फिर भीतर नहीं जाता—एक बार आचरण बिगड़ जाने पर फिर सुधार की सम्भावना प्रायः नही रहती।

हाथी का दाँत मरद की बात—ये दोनों कभी वापस नही होते। जो अपनी बात के पक्के होते हैं वे ऐसा कहते हैं। तुलनीय : मैथ०हाथी क दाँत मरद क बात, भोज० मरद क बात हाथी क दाँत।

हाथी का पैर अंकुश—हाथी अंकुश से ही वश मे आता है। यदि हथियार हो तो बड़े-बड़े विद्रोही या शत्रु को वश में किया जा सकता है।

हाथी का पेट पूड़ी से नहीं भरता—अधिक खानेवाले को जब कोई थोड़ी अच्छी चीज़ देता है तब कहते हैं। तुलनीय : छत्तीस० हाथी के पेट सोहारी माँ नइ भरय।

हाथी का बोझ हाथी उठाता है—बड़ों के काम बड़े ही करते है। शक्तिशाली व्यक्ति से निपटने के लिए स्वयं शक्तिशाली होना आवश्यक है। तुलनीय : ब्रज० हाती के बोझै हाथी ई उठावै।

हाथी की पीठ पर रूई का फाहा—रूई के फाहे का वजन हाथी के लिए क्या है? अर्थात् अधिक शक्तिशाली व्यक्ति के लिए थोड़ा भार या थोड़ी वस्तु कुछ भी नहीं है। तुलनीय : मैथ० हाथी के पीठ पर रूई का फाहा।

हाथी के खाए कैथ—भीतर से खोखला। (कहा जाता है कि हाथी यदि कैथ को निकल जाए और लीद मे गिरा कैथ देखा जाए तो ऊपर से तो वह ज्यो-का-त्यो रहता है पर भीतर से खोखला रहता है)।

हाथी के चाहे सागर उथला नहीं होता—हाथी सागर को उथला करना चाहे तो भी सागर उथला नहीं होगा। हाथी शक्तिशाली होता है किंतु सागर उससे भी अधिक शक्तिशाली होता है। अपने से अधिक शक्तिवान को झुकाया नही जा सकता। तुलनीय : भीली—हाथी ने कीदे समद ने अडो लावे।

हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और—धोखेबाज़ लोग बाहर से कुछ और भीतर से कुछ और होते है। तुलनीय : अव० हाथी के दाँत खाय कै अउर, देखावै कै अउर; राज० हाथी रा दांत देखावण रा और खावण रा और; गढ़० हाथी का दाँत खाण का और होंदा अर दिखौण का और; निमाड़ी हत्थी का दाँत खाण का कई न बतावण का कई; हाड़० हाती का दाँत खावा का ओर, बतावा का ओर होव छ; छत्तीस० हाथी के दाँत खाय के आन, देखाय के आन; बुंद हाती के दाँत दिखाउत के और खात के और; मरा० हत्तीचे खाण्याचे दात निराले, दाखविण्याचे

निराले।

हाथी के दांत बाहर जल्दी आवें नहीं और यदि आजायें तो फिर भीतर जावें नहीं—(क) किसी ऐसे व्यक्ति पर कहते हैं जो या तो किसी काम के करने पर तैयार न हो या फिर तैयार हो जाए तो उसे करना छोड़े नहीं। (ख) जिद्दी या टेक पर अड़े रहनेवाले पर भी कहा जाता है।

हाथी के दांत में रांड़ा—राँड़ा एक प्रकार की घास होती है। हाथी जैसे बड़े पशु को राँड़ा घास देने से उसका पेट कभी नही भर सकता। (क) जब किसी बड़े आदमी को छोटी-मोटी वस्तु भेंट में दी जाती है तो व्यंग्य में कहते है। (ख) बहुत अधिक भोजन करनेवाले को यदि थोड़ा भोजन दिया जाए तब भी व्यंग्य मे कहते है। (ग) कोई बलवान पुरुष जब छोटा सा काम करके प्रशंसा सुनना चाहे तब भी व्यंग्य में इस लोकोक्ति का प्रयोग किया जाता है।

हाथी के पांव में सबका पाँव समाय—(क) बड़ों के साथ छोटों की भी निभ जाती है। (ख) बहुत बड़े स्थान में छोटे चाहे कैसे भी हो अंट ही जाते है। तुलनीय : अव० हाथी के गोड़ मा सबकै गोड़ समाय; राज० हाथी 'र पग मे सगळा रो पग; सं० सर्वे पदा हस्ति-पदे प्रविष्टा; हरि० हात्थी के पाँह में सभ का पाँह; बुद० हाती के पाँव मे सब को पाँव समात; मरा० सगळ्याची पावलें हत्तीचे पावलाँत।

हाथी के पीर गदहा दागा जाय—किसी बड़े के अपराध में किसी छोटे को दंड देने पर कहा जाता है।

हाथी के पेट में टोना पचे—अर्थात् महान व्यक्ति अशुभ अमंगल भी पचा लेता है।

हाथी के मुंह आता है चींटी के मुंह जाता है—धन पर कहा जाता है क्योंकि इसे आते सभी देखते है पर जाते या खर्च होते कोई नहीं देखता।

हाथी के मुंह में गन्ना नहीं बचना—जब कोई निर्बल व्यक्ति सबल के पंजे में फँसकर पिस जाए तो उसके प्रति कहते है। तुलनीय : भीली—हाथी ने डाड़ा माँये डालाँ नी रे।

हाथी के मुंह में लकड़ी पकड़ाते हैं—सबल को संपत्ति देकर वापस लेना चाहते है।

हाथी के साथ गाँड़े खाय—हाथी के साथ गन्ना खाता है। अपने से अधिक बड़े की बात मे बराबरी करने पर कहा जाता है।

हाथी को गन्ने ही सूझते हैं—जब कोई सदा स्वार्थ की ही बातें करता है तब उसके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते

हाथी को पीर, गधा दागा जाय—दे० 'हाथी के पीर…।'

हाथी को मन, चींटी को कन—ईश्वर के प्रति कहा जाता है कि वह हाथी जैसे बड़े जानवर को भी पेट भरकर चारा देता है तथा चींटी जैसे छोटे से कीड़े को भी। ईश्वर सबको बराबर समझता है, यही इस लोकोक्ति का तात्पर्य है तुलनीय : माल० हाथी ने मण ने कीड़ी ने कण देवे।

हाथी को हल में जोता—(क) जब किसी दुष्ट मनुष्य से कोई काम करा लिया जाए तो आश्चर्य प्रकट करने के लिए कहते है। (ख) किसी बड़े आदमी से यदि कोई मामूली काम कराया जाए तो उसके प्रति भी कहते है। तुलनीय : राज० हाथी नै हल जोतिया।

हाथी घूमें गाँव-गाँव जिसका हाथी उसका नाम—दे० 'घूमे हाथी गाँव-गाँव…'।

हाथी घोड़े बहते जायें, गदहा कहे कितना पानी—दे० 'ऊँट डूबे भेड़े…'।

हाथी चढ़े पर कुत्ता काटे—दे० 'ऊँट चढ़े पर…'।

हाथी चले बाजार कुत्ता भौंके हजार—अर्थात् ताक़तवर और सच्चरित्र व्यक्ति समाज की छोटी-मोटी बातों पर ध्यान नही देते। तुलनीय : मैथ० हाथी के पीछे पीछे कुत्ता भूँकबे करेला, अव० हाथी चला जाय, कुकुर भूकत रहे; राज० हाथी लारै कुत्ता भोकला मुसै, पंज० हाथी चले बजार कुत्ते भौंकण हजार। अं० The moon does not hear the barking of dogs

हाथी झूमें, कुत्ते भौंकें—हाथी झूमता रहता है। और उसे देखकर कुत्ते भौंकते रहते हैं। (क) जिन्हें जो काम करना होता है वे विरोध करनेवालों की परवाह न करके अपना काम करते रहते हैं। (ख) मौज उड़ानेवाले मौज उड़ाते रहते है और उनको देखकर जलनेवाले जलते रहते हैं। तुलनीय : राज० हाथी हीडत देख कूकर लव-लव कर मरै।

हाथी डोले गाँव-गाँव जिसका हाथी उसका नाम—दे० घूमे 'हाथी गाँव-गाँव…'। तुलनीय : कौर० हात्ती डोलै गाँव-गाँव, जिसका हात्ती उसका नाम।

हाथी तुले जहाँ, गधा पासंग वहाँ—हाथी के सामने गधा पासंग के बराबर होता है। अर्थात् बड़ों के सम्मुख छोटे कुछ भी नही होते।

हाथी निकल गया पर दुम रह गई—(क) जब काम का बहुत अंश हो गया हो और थोड़ा शेष हो तो कहते हैं। (ख) पूरा काम करके थोड़े के लिए हिचकने पर भी इसे

कहते हैं। तुलनीय : मरा० हत्ती गेला शेपूट राहिले; ब्रज० हाती निकरि गयौ परि पूँछि रहि गई।

हाथी पर चढ़के गधे पर क्या चढ़ना बड़े काम के बाद कोई छोटा काम करना ठीक नहीं। तुलनीय : अव० हाथी पै चढ़के, गदा पर काउ चढ़ी; हरि० सिराहणे बैठ कै पात्याँ बैठण।

हाथी पर मक्खी का बोझ कैसा— हाथी पर यदि कोई मक्खी बैठ जाए तो उसे पता भी नही चलता। (क) शक्तिशाली का निर्बल कुछ नही बिगाड़ सकता। (ख) छोटे-मोटे काम का बडों पर कोई असर नही पड़ता। तुलनीय : भीली --हाथी ने कानाँ माये मच्छर पूं पूं करे ने पू पू की दे हूँ वे।

हाथी फिरे गाँव-गाँव, जिसका हाथी उसका नावं-- दे० 'घूमे हाथी गाँव···'।

हाथी बेच करत कोड अंकुश हेतु विवाद— हाथी बेचकर अंकुश के लिए झगड रहें हैं। बहुत बडी चीज पर से अधिकार छोड़कर उसके किसी छोटे भाग के लिए विवाद करना मूर्खता है।

हाथी बेंचके दुलठी पर लड़ाई —दुलठी एक रस्सी होती है जो हाथी के गले में उसे चलाने की आसानी के लिए बँधी रहती है। हाथी का दाम कई हजार रुपया और दुलठी का दो-चार आने। अतः हाथी बेचकर उसके गले में बँधी दुलठी के लिए लड़ाई करना मूर्खता है।

हाथी भी फिसलता है —बड़े लोग भी परेशानी मे पड़ते है। तुलनीय : असमी -आचले बिचले हाती ओ पिछले; सं० मुनीनांच मतिभ्रमः।

हाथी मरा भी तो नौ लाख का-- हाथी का मूल्य मरने पर भी नौ लाख होता है। रईस बिगड़ने पर भी छोटों से बड़े रहते हैं। तुलनीय : ब्रज० हाती मर्‌यौ नौ लाख कौ।

हाथी लड़ें, बाग का नास—हाथी लड़ते है तो उन्हें तो हानि होती ही है किंतु बाग या वह स्थान जहां वे लड़ते है मुफ्त मे बरबाद हो जाता है। दो शक्तिशालियों की लड़ाई में निर्बल मुफ्त में मारे जाते हैं। तुलनीय : राज० हाथी-हाथी लड़ै, बीच में झाड़रो खो।

हाथी निकल गया है दुम अटकी रह गई है—जब सारा काम हो जाए केवल उसका थोड़ा अंश शेष रह जाए तब कहते हैं।

हाथी सूंड़ न हाथिहिं भारी—हाथी का सूंड़ हाथी को भारी नहीं लगता। अपना बोझा अपने को नही मालूम होता।

हाथी से हजार और बदमाश से लाख क़दम दूर रहे -- हाथी और बदमाश का कोई भरोसा नही कि कब और किस बात पर बिगड़ जाएँ और प्राणो पर बन जाए। इसलिए इनसे दूर रहना ही उचित है। तुलनीय : भीली —लूचा हूँ लाख पाँवड़ा, हाथी हूँ हजार पाँवड़ा।

हाथी हज़ार लुटे तो भी सवा लाख टके का – हाथी कितना भी खराब हो जाए तब भी एक लाख का होता है। बड़ा आदमी कितना ही गरीब हो जाए तो भी साधारण जनों से ऊँचा ही रहेगा। तुलनीय : अव० हाथी हज़ार गवा गुजरा होई, तबौ सवा लाख टका कै।

हाथी है या अमरूद—ऐसे अवसर पर कहते है जब किसी व्यक्ति ने दो नई भिन्न वस्तुएँ देखी हों और उनमें से किसी एक के बारे में पूछने पर यह शंका प्रकट करे कि वह ऐसी है या वैसी।

हाथी होगा तो महावत बहुत मिलेगा—अर्थात् धन-दौलत या गुण रहेगा तो उसके पूछनेवाले भी बहुते होंगे। तुलनीय : भोज० हाथी होई ता महावत केतने मिलिहि।

हाथों मेंहदी, पावों मेंहदी अपने लच्छन औरों देंदी – (क) खुद हाथ पाव में मेंहदी लगाकर बैठ गए ताकि कोई काम न करना पड़े और दूसरों को सब काम सौंप दिए। (ख) अपने दोष दूसरों पर मढ़ कर स्वयं आराम करने वालों पर भी कहते है।

हाथों से नाखून कहां दूर हो सकते हैं— जिनसे बहुत निकट का संबध है उन्हें छोड़ा नहीं जा सकता। तुलनीय : हरि० हात्थाँ ते के नोह दूरय हों से?

हाथों हाथ बिक गया -तुरंत बिक गया। तुलनीय : अव० हाथों हाथ बिक गवा।

हाय रे करम, जहाँ टटोलो वहीं नरम—दे० 'ऐ मेरे करम, जहां···'।

हाय रे करम जहाँ तो वे तहाँ नरम- -दे० 'ऐ मेरे करम···'।

हाय-हाय करते प्राण निकल जायगा-- हाय-हाय ही करते रहोगे और प्राण निकल जाएगे। कष्ट हाय-हाय करने से दूर नही होता अपितु उपाय करने से ही दूर होता है। बैठ कर रोने-पीटने मे केवल समय ही नष्ट होता है। तुलनीय : भीली -हाये-हाये करता हा निकली जागे।

हार जीत क़िस्मत के हाथ —अपना बुरा-भला, हार-जीत या हानि लाभ भाग्य पर ही निर्भर करता है। तुलनीय : अव० हार-जीत भाग कै हाथ।

हार-जीत सब में रहे, हारे नहिं दातार-- परमात्मा को

छोड़कर सभी हारते-जीतते है या हानि लाभ देखते हैं।

हार मानी झगड़ा जीता—जो हार मान ले, वही झगड़े को जीत लेता है क्योंकि वही झगड़े को शांत कर देता है, और इसी में उसकी विजय है। तुलनीय : अव० हारी मानै झगरा जीते।

हार मानी, झगड़ा टूटा—ऊपर देखिए।

हार माने, झगड़ा टूटा— (क) एक बार के हार मान लेने से सारा झगड़ा समाप्त हो जाता है। (ख) अपनी ग़लती मान लेने पर सारा झगड़ा ख़त्म हो जाता है। तुलनीय : ब्रज० हार मानी झगड़ो टूट्यो।

हार में हार न घर में खेती—नुक़सान पर नुक़सान होने पर कहते हैं।

हारा जुआरी दूना खेले—असफल हो जाने के बाद सफलता प्राप्त करने के लिए व्यक्ति दूना परिश्रम करता है। तुलनीय : हरि० हार्या जुआरी दूण खेल्लै।

हारा जुवारी बाघ बराबर—हारने पर जुवारी बाघ के समान हो जाता है। (क) हारने के बाद जुआरी को बहुत क्रोध आता है। (ख) हारने के बाद जुवारी पुनः खेलने के लिए काफी इच्छुक रहता है। अतः उसके जो साथी खेलने से इनकार करते हैं उनसे वह बुरी तरह लड़ बैठता है। तुलनीय : छत्तीस० हारे जुवारी बाघ बरोबर।

हारा झक मारा सारा जंगल बुहारा—लड़कों का खेल जब कोई लड़का हार जाए तो उससे यह वाक्य कहलवाते हैं।

हारा हाकिम जमानत माँगे—हारने पर अफ़सर भी ज़मानत माँगते है। हारने पर व्यक्ति वह काम भी करने को तैयार हो जाता है जो उसे पहले स्वीकार्य नहीं होता। तुलनीय : अव० हारा हाकिम जामिन माँग; हाड़० हार्यो हाकिम जमानत माँगे।

हारा हाकिम ज़ामिन मांगे—ऊपर देखिए।

हारिए न हिम्मत, बिसारिए न राम नाम—धीरज कभी नहीं छोड़ना चाहिए और भगवान को भी कभी नहीं भुलाना चाहिए। साहसी व्यक्ति सदा सफल होता है। तुलनीय : राज० हारिये ना हिम्मत बिसारिये ना राम नाम।

हारिल की लकड़ी पकड़ी सो पकड़ी—ज़िद्दी लोगों के लिए कहते हैं। कहा जाता है कि हारिल (पक्षी) लकड़ी पकड़ कर फिर नहीं छोड़ता।

हारे का नाम विश्राम—हारने या थक जाने का नाम विश्राम है। (क) थक जाने पर अंत में विश्राम करना ही पड़ता है। (ख) जब कोई किसी काम में असफल होने के बाद हार मानकर बैठ जाता है और कहता है कि मैंने यों ही थोड़े समय आराम के लिए काम छोड़ दिया है तब उसके प्रति भी व्यंग्य में कहते हैं। तुलनीय : हरि० हारी का नां विसराम।

हारे को हरि नाम—जब मनुष्य सब तरह से हार मान जाता है तब ईश्वर की आराधना करता है। तुलनीय : बुंद० हारे को हरनाम।

हारे जुआरी को तनिक कल नहीं—हारे जुआरी को चैन नहीं मिलता। तुलनीय : अव० हारा जुआरी मुंह काला।

हारे तो हूरे जीते तो थूरे—अर्थात् ज़बरदस्त हर हालत में कमज़ोर को कष्ट देता है।

हारे भी हरावे, जीते भी हरावे—हारने पर भी हराता है और जीतने पर भी! जो दोनों तरह से अपनी जीत रखे। बलवान आदमी के लिए कहते हैं।

हारों भी हार, जीतों भी हार—हारने पर तो हार होती ही है, जीतने पर भी हार ही है क्योंकि रुपया बहुत खर्च हो जाता है। अदालत के मुक़द्दमों पर कहते हैं।

हाल का न काल का, टुकड़ा रोटी दाल का—किसी काम के नहीं हैं पर खाने के लिए रोटी दाल चाहिए। निकम्मा कोई भी काम नहीं करता पर खाने के लिए उसे अवश्य चाहिए। निकम्मों के प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

हाल का न रोज़गार का—किसी भी काम लायक नहीं। ऊपर देखिए।

हाल गया, अहवाल गया, दिल का ख़याल न गया—सर्वनाश हो जाने पर भी बुरी आदत नहीं छूटती।

हाली अच्छा हांगला और बलया अच्छा चांगला—(क) हलवाहा अगर बैल को कोंचता रहेगा तो बैल अच्छी तरह चलेगा। (ख) काम करानेवाला मुस्तैद रहेगा तो काम करनेवाला अच्छी तरह काम करेगा।

हाली का पेट सुहाली से नहीं भरता—हलवाहे का पेट सुहाली (खरता) से नहीं भरता। जो आदमी जिस योग्य हो उसे वैसी ही चीज़ देनी चाहिए। तुलनीय : हरि० हाली का तेट कदे सुहाली तै भर्या करै।

हासिद का मुँह काला—द्वेष या डाह करनेवाले बुरे समझे जाते हैं।

हाहा करके बूढ़े नहीं ब्याहे जाते—असंभव कार्य विनती करने पर भी सिद्ध नहीं होता। जब कोई अपना असंभव काम कराने के लिए बहुत विनती करे या चाटुकारिता करे तब ऐसा कहा जाता है। तुलनीय : कौर० हात्थ जोड़े

ते कहीं बूढ़े ब्याहे जा हैं।

हा-हा खाए बूढ़े का ब्याह नहीं होता—ऊपर देखिए।

हा-हा खाए बूढ़े की सगाई नहीं होती—दे० 'हा हा करके···'।

हा हा खाते को कोई नहीं मारता--विनयी स्वभाव वाले को कोई नहीं सताता।

हिजडे का अल्ला मियां ने अठन्नी का भी एतबार नहीं किया—हिजड़े का कोई भरोसा नहीं होता।

हिजड़े की कताई मुड़ोनी में जाई- हिजड़ा अपने को जनाना बनाने के लिए नित्य हजामत करवाता है। अतः उस का कमाया उसी में खर्च हो जाता है। जब किसी की पूरी कमाई उसके एक खास खर्च में ही खत्म हो जाती है तो कहते हैं।

हिजड़े की मदद हिजड़ा करे—नामर्दों की सहायता उन्हीं के संगी-साथी करते है। (क) कायरों की सहायता वीर नहीं करते। जो निर्बल है उसकी मदद बली कभी नहीं करते। (ख) एक ही काम को करनेवाले चाहे वह काम बुरा ही क्यों न हो आपस में सहयोग अवश्य करते है। तुलनीय: मेवा० गतराड़ा के पूंछड़े गाती मांडे।

हिजड़े के घर बेटा हुआ—किसी असंभव काम के होने पर कहा जाता है। तुलनीय : मरा० नपुंसकाच्या घरी पुत्र-जन्म।

हिजड़े को नाहिं नारि सुहाई--हिजड़े को स्त्री अच्छी नहीं लगती। जिसे जिस चीज की आवश्यकता नहीं रहती वह उसे अच्छी नहीं लगती। तुलनीय : ब्रव० हिजरा का न चाही लुगाई।

हिजड़े जी फलो-फूलो, कहा--मेरे तक ही है—किसी ने हिजड़े को आशीर्वाद दिया कि तुम फलो-फूलो। हिजड़े ने उत्तर दिया कि फलना-फूलना मेरे तक ही रहेगा क्योंकि हिजड़ों के संतान नहीं होती। झूठे या अनुचित रूप से किसी के प्रति सहानुभूति दिखानेवाले के प्रति कहते है। तुलनीय : राज० नाजरजी बेल बधज्यो, के म्हाँ ताणी ही है।

हिजड़ों ने कब गाँव लूटे?—नपुंसक व्यक्ति कोई वीरता का कार्य नहीं कर सकते। कायरों के प्रति कहते हैं जब वे अपनी झूठी बहादुरी की डींग हाँकते हैं। तुलनीय : मेवा० गतराड़ाई कठे गाम लूट्या है?

हिंदी न फ़ारसी, लालाजी बनारसी—न तो हिन्दी जानते हैं और न फ़ारसी लालाजी पूरे विद्वान हैं। जो पढ़ा-लिखा नहीं रहता उसके सम्बन्ध में यह व्यंग्य से कहते हैं। बनारसी का आशय बनारस का संस्कृतज्ञ है।

हिंदुस्तान, भेड़िया धंसान—जिस प्रकार जहाँ एक भेड़ जाती है वहाँ सभी भेड़ें पीछे हो लेती है उसी प्रकार भारत-वासी बिना सोचे-समझे जो एक करता है उसी को सभी करने लगते हैं चाहे वह बुरा ही क्यों न हो।

हिंदू बढ़े नेती, मुसलमान बढ़े कुनेती--हिन्दू अच्छे विचारों से उन्नति करते हैं और मुसलमान बुरे विचारों का होने से। मुसलमानों के प्रति व्यंग्य।

हिंदू बोलता शरमाए, पर लड़ता नहीं--हिंदू बात करने में ही शरमाता है, लड़ने में नहीं। किसी झगड़े के आरम्भ में गर्मागर्मी करते हुए भी झिझकता है, किन्तु जब लड़ाई आरम्भ हो जाती है तो कमर कसकर मैदान में कूद पड़ता है। कम बोलनेवाले किन्तु लड़ने में तेज़ हिन्दुओं के प्रति कहते हैं। तुलनीय : राज० हिंदू कैवनो सरमावै, लड़तो को सरमाव नी।

हिंदू मुसलमान का चोली दामन का साथ है—दोनों में घनिष्ठ सम्बन्ध है क्योंकि दोनों आसपास रहते हैं।

हिकमते-चीन, हुज्जते-बंगाला--हिकमत में चीन और हुज्जत में बंगाल प्रसिद्ध है। अर्थात् चीनी हिकमती (शिल्प या कला में प्रवीण) और बंगाली हुज्जती (तर्कशील या झगड़ालू) होते है।

हिचकी, खाँसी, उबासी, यहै रोग के मांसी--हिचकी, खाँसी और उबासी ये तीनों रोग के सूचक हैं। तुलनीय : राज० हिचकी खांसी उबासी, तीनू कालरी मासी।

हितं मनोहारि च दुर्लभं च:--हितकारी और प्रिय वचन दुर्लभ हैं। ऐसी बात जो लाभकर होने के साथ-साथ मधुर भी हो अत्यन्त दुर्लभ है।

हिमायती की घोड़ी ऐराकी के लात मारे--हिमायती की घोड़ी एराकी को लात मारती है। अर्थात् किसी शक्ति-शाली के सहारे छोटे भी अपने से बड़ों से लड़ बैठते हैं। तुलनीय : राज० हिमायत री गधी हाथी रै लात मारै; मरा० मोठ्या माणसाचें घोडे इराकी घोड्या ला लाथ मारते।

हिम्मत की क़ीमत है—साहसी का ही मूल्य है। साहसी व्यक्ति का सब आदर करते हैं और साहस से कठिन कार्य भी सिद्ध हो जाता है। तुलनीय : राज० हिम्मत किम्मत होय।

हिम्मती आकाश चूमे या धरती--साहसी मनुष्य या तो बहुत धनवान हो जाता है या बिल्कुल निर्धन। साहसी व्यक्तियों के प्रति कहते हैं। तुलनीय : गढ़० मांसा की भौ ह्वौ कि जौ।

हिम्मते-मरदाँ मददे-खुदा--जो साहसी होता है ईश्वर

उसी की मदद करता है। तुलनीय : राज० हिम्मते मरदां मददे खुदां; हरि०हीम्मत का राम हिमाती; माल०हिम्मत री किम्मत; मरा० धैर्यानें पुरुषार्थ करणाऱ्यास ईश्वर साहाय्य करतो; अं०God helps those who help themselvs.

हिये तराजू ताले के, मुख से बाहर आन— बात विचार कर कहनी चाहिए। जो बिना सोचे-समझे कुछ कह जाते हैं उनके प्रति कहते हैं।

हिरन अपनी घात, शिकारी अपनी घात— हिरन अपने अवसर की प्रतीक्षा में हैं और शिकारी अपने। जहां सभी अपने-अपने लाभ का अवसर ढूंढ़ते फिरें वहां कहते हैं।

हिरन मुतान औ पतली पूंछ, बैल बेसाहो कंत बेपूंछ— हे कन्त ! हिरण की तरह मूतने वाले तथा पतली पूंछ वाले बैल को बिना पूछे ही खरीद लेना।

हिरनी के मट्ठर कहां ?—हिरनी के बच्चे सुस्त (मट्ठर) नही होते। जिसके सभी बच्चे बहुत चालाक होते हैं उसके प्रति कहते हैं। तुलनीय : कौर० हिन्नी केन में कोई मट्ठा नांय।

हिरस का पेट खाली—द्वेष करनेवाला सदा भूखा रहता है। उसे शान्ति कभीन हीं मिलती।

हिरी फिरी बल गई, जलवे के वक्त टल गई—जो लेने के समय तो मौजूद रहे पर देने के समय हट जाए उस के प्रति कहते है।

हिरे फिरे खेत में रोहे—सब कुछ देख रहा है फिर भी खेत के रास्ते जाता है। उजड्ड या मूर्ख के लिए कहते हैं जो अपनी बुरी आदत से लाख कहने पर भी बाज़ नहीं आता।

हिल न सकूं मोर तीन बखरा- -हिलते तक नहीं हैं और कहते हैं कि तीन हिस्से मेरे हैं। काम न करने पर भी हिस्सा पूरा मांगना। आलसी लोग ऐसा ही चाहते हैं। या जो काम कुछ भी न करे और लाभ अधिक चाहे उसके प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

हिलाओ न डुलाओ चुपचाप खिलाओ—मुझे हिलाओ डुलाओ मत केवल धीरे से खिला दिया करो। आलसी व्यक्ति पर व्यंग्य। तुलनीय : भोज० टकमावऽ न हिलावऽ बइठले खियावऽ।

हिलाने से दाल जाय, लाड़ से लाल जाय -- हिलाने से दाल बिगड़ जाती है और लाड़-प्यार से लड़का। बच्चों से अधिक लाड़-प्यार नहीं करना चाहिए और पकती हुई दाल में कलछी नही चलानी चाहिए। तुलनीय : राज० हिलायां सूं दाल जाय, लडायां सूं पूत जाय;

हिलाव न डुलाव मुझे बैठे ही खिलाव—हिलाओ-डुलाओ नहीं केवल मुझे बैठे-बैठे खाना खिला दिया करो। कामचोर मनुष्य के लिए कहा गया है। वह बैठे-बैठे बिना कुछ किए ही खाना चाहता है। तुलनीय : भोज० हिलावऽ न डूलावऽ हमके बइठले खियावऽ; अव० हिलाव न डोलाव, मो का बैइटे खिआव।

हिल्ले रोजी बहाने मौत— दे० 'हीले रिज़्क बहाने मौत।'

हिसके हिसके गैया बिआय, गैया क बछवा मर-मर जाय—ईर्ष्या से किया हुआ काम खराब हो जाता है।

हिसाब-ए-दोस्तां दर-दिल— मित्रों का हिसाब दिल में होता है।

हिसाब-किताब बाप-बेटे में भी होता है— उधार लेना-देना तो मां-बाप के साथ भी किया जाता है। जब मित्रों अथवा सम्बन्धियों के बीच लेन-देन की बात आ जाए और कोई मित्र लिया हुआ धन वापस दे तथा जिसने दिया हो वह मित्रतावश न ले तो उसके प्रति इस प्रकार कहते हैं। तुलनीय : गढ़० बाप पूत लेखो जोखो, मां घी ऊंजो पैछो।

हिसाब कौड़ी का, बख़शीस लाख की— नीचे देखिए।

हिसाब जौ-जौ, बख़शीश सौ-सौ —हिसाब तो एक-एक जौ का होना चाहिए भले ही इनाम में सैकड़ों रुपए मिल जाएँ। यों इनाम देना हो तो चाहे जितना दे दे, पर हिसाब ज़रा-ज़रा-सी रक़म का भी करना चाहिए। आशय यह है कि सदा ईमानदारी से काम करना चाहिए। तुलनीय : गढ़० हिसाब जौ-जौ, बकसीस सौ-सौ; माल० हिसाब कौड़ी रो बक्षीस लाख की; मरा० कवडी कवडीचा हिशेब ठेवावा पारितापिक हवें तें द्यावे।

हिसाब ज्यों का त्यों, कुनबा डूबा क्यों – हिसाब तो ठीक है परिवार क्यों डूबा ? कम पढ़ना-लिखना खतरनाक होता है। इस संबंध में एक कहानी है : एक मुंशीजी एक बार अपने पूरे परिवार के साथ कहीं जा रहे थे। सबकी लंबाई नापकर औसत निकाला तो नदी की गहराई से अधिक हुआ। अत: नदी में सबके साथ चल पड़े और पूरा खानदान डूबा और बह गया। इसी पर यह कहावत है। मुशी पढ़े-लिखे थे पर केवल हिसाब लगाने भर। इतना दिमाग़ न था कि यह सोचते कि इस प्रकार औसत लगाना यहाँ काम न देगा।

हिसाब नित नया - हिसाब को रोज़ नया रखना चाहिए। नही तो भूलने का डर रहता है।

हिसाब लेब कि बनियां डांड़ब—हिसाब लोगे या बनिए को बांधोगे। हिसाब लेते हो या धींगाधींगी करते हो। जो हिसाब-किताब में बहुत नाच-कूद करते हैं उनके प्रति कहते

हींग जाय पर बास न जाय—मनुष्य के न रहने पर भी उसकी नेकनामी या बदनामी रह जाती है । तुलनीय : राज० हींग ओराजाला बाकी ओकर महक ना ओराला; अव० हीग निकर गय डेब्बा महकत है; राज० हींग जावै पण बास को जावैनी ।

हींग बिके और घोड़े खाँय—थोड़ी आमदनी पर ज्यादा खर्च करने पर कहा जाता है । (हींग महँगी चीज़ है)।

हींग बिके तो घोड़े खाँय—हींग की ख़ूब बिक्री हो तो इतना लाभ होता है कि घोड़ों को भी खिलाई जा सकती है ।

हींग लगै न फिटकरी रंग चोखा आ जाय—(क) जो लोग कम खर्च में अच्छा इन्तज़ाम चाहते हैं, उनके लिए कहते हैं । (ख) कम दाम में अच्छी चीज़ चाहने पर भी कहा जाता है । तुलनीय : राज० हींग लगै न फिटकड़ी, रंग चोखो ही आवे; गढ़० लौंग लगो न फटकड़ी ।

हींग लगे न फिटकिरी रंग हो चोखा—ऊपर देखिए । तुलनीय : कौर० हलदी लगे न फिटकड़ी, रग चोक्खा ।

हींग हग रहे हैं—जब कोई अपने कर्मों का फल बुरी तरह भोगता है तो कहते हैं । तुलनीय : अव० हीग थोरो हगत है ।

'हीजड़े' से आरंभ होने वाली कहावतों के लिए देखिए 'हिजड़े' ।

हीनी पुड़िया छत्तिस रोग—सस्ती पुड़िया छत्तीस रोगों को जन्म देती है । सस्ती चीज़ प्राय: हानिकारक सिद्ध होती है ।

हीरा कीचड़ में गिरकर भी हीरा ही रहता है—भले लोग बुरी स्थिति में आ जाते हैं तब भी अपना स्वभाव नही बदलते । तुलनीय : माल० माणिक्यम् पन्तीराण्टु कुप्पयिल् किटन्नालुम् माणिक्यम् तन्ने; अं० A myrtle among thorns is a myrtle still.

हीरा तहाँ न खोलिये जहँ खोटी है हाट—जहाँ का बाज़ार बहुत ख़राब है वहाँ पर हीरे की गठरी न खोलो । अर्थात् जहाँ पर गुण के पहचाननेवाले नहीं हैं वहाँ पर गुण दिखाना व्यर्थ है ।

हीरा मुख से ना कहे लाख हमारा मोल—हीरा स्वयं नही कहता कि मेरा मूल्य लाख रुपये है । उसका मूल्य तो उसके परखनेवाले ही लगाते हैं । सज्जन और महान् व्यक्ति कभी भी अपनी बड़ाई नही करते । जो व्यक्ति अपने मुँह अपनी प्रशंसा करते हैं उनके प्रति व्यंग्य से कहते हैं । तुलनीय : राज० वड़ा बड़ाई ना करें, वड़ा न बोले बोल ।

हीरा हीरे को काटता है—हीरे को हीरा ही काट सकता है और कोई वस्तु नही काट पाती । (क) बलवान व्यक्ति ही बलवान को पछाड़ता है । तुलनीय : राज० हीरो हीरै सूं कटै; हीरै सूं हीरो बींधीजै; अं० Diamond cuts diamond

हीरा हीरे से ही कटता है—ऊपर देखिए ।

हीरे की क़दर जौहरी जाने—गुण का मान गुणी ही करता है । तुलनीय : अव० हीरा कै कदर जौहरि जाने ।

हीरे की परख जौहरी जाने—ऊपर देखिए ।

हीरे ठोकरें मारने के लिए नहीं होते—हीरे बहुमूल्य होते हैं, उन्हें ठोकरें नहीं मारी जातीं । (क) बुद्धिमानों से झगड़ा नहीं करना चाहिए, उनसे मित्रता रखने में ही लाभ है । (ख) मूल्यवान वस्तुएँ सहेज कर रखनी चाहिए । तुलनीय : राज० हीरा पथरांसूं फोड़नने थोड़ा ही हुवे ।

हीले रिजक़ बहाने मौत—किसी सिलसिले से रोज़ी और बहाने से मौत होती है । मतलब यह कि ईश्वर ही रोज़ी देता है और वही मारता भी है । सामने जो रोज़ी लगने या मौत होने का कारण दिखाई देता है वह तो बहाना मात्र है । तुलनीय : भोज० हीले रोजी बहाने मअउति; अव० हिल्ले रोबी बहाने मउत; छत्तीस० हीले रोजो बहाना मौत ।

हुंडी आवे हुंडी जाय, हुंडी को सौ हुंडी खाय—जहाँ बहुत लेन-देन या कारबार होता है वहाँ थोड़ा-बहुत ग़ायब भी हो जाता है । तुलनीय : अव० हुंडी आवै हुंडी जाय, सौ हुंडी का हुंडी खाय ।

हुंडार चीन्हें बाह्मन का पूत—हुंडार ब्राह्मण के लड़के को पहचानता है । (क) दुष्ट सज्जनों को भी कष्ट देते हैं । (ख) सरल स्वभाववाले को सभी कष्ट देते हैं ।

हुआ ब्याह मेरा करेगा क्या—लड़की की जब शादी हो जाती है तब लड़कीवाला लड़केवाले से ऐसा कहता है । काम हो जाने पर जब कोई बात नही सुनता तब व्यंग्य में ऐसा कहते हैं । तुलनीय : भोज० भइल बिआह मोर करबे का ।

हुआ सौ भागा डर, हुए हज़ार फिरे बज़ार—सौ रुपए जेब में हो गए तो भय दूर भाग गया और हज़ार हो गए तो छाती तान कर बाज़ार में घूमने लगे । धन आने पर ही मनुष्य भोग-विलास निःशंक होकर करता है । तुलनीय : राज० हुआ सौ भागा भौ, हुआ हजार फिरो बजार ।

हुई फ़ज़र चूल्हे पर नज़र—सुबह होते ही चूल्हे पर

ध्यान गया (क) प्रातःकाल होते ही खाने की चिंता हो जाती है। (ख) उठते ही खाने-पीने के चक्कर में पड़ जाने वाले के प्रति व्यंग्य में भी ऐसा कहते है।

हुए तो जैसे न हुए तो जैसे—जिससे अपना कुछ फ़ायदा न हो उसका रहना और न रहना, होना या न होना दोनों ही बराबर हैं। तुलनीय : गढ़० जना होया तना नि होया।

हुकूमत की घोड़ी छह पसेरी दाना—बुरे शासन में फ़िज़ूलखर्ची बहुत होती है। जैसे घोड़ी के नाम छह पसेरी दाना लिखा जाता है। दो-एक सेर तो वह खाती है और शेष बीचवाले खा जाते हैं। कुशासन पर व्यंग्य। तुलनीय : अव० हाकिम कै घोड़ी छह पसेरी दाना।

हुकूमत की छड़ी तलवार को काटे—शासक की छड़ी भी प्रजा की तलवार को काट देती है। अधिकार पास होने पर निर्बल भी बड़े बलवानों को दबा लेता है। तुलनीय : राज० हकूमत को डोको डांग फाड़ै।

हुक्क़ा अफ़ीमी का—अफ़ीमची को हुक़्क़ा बहुत प्रिय होता है।

हुक़्क़ा चार वक्त अच्छा, सोके, मुंह धोके, खाके, नहाके; और चार वक्त बुरा, आंधी में, अंधेरे में, भूख और धूप में—हुक़्क़ा पीने और न पीने का समय या अवसर बतलाया गया है।

हुक्क़ा पांव दौड़ी का—मेहनत करने पर ही खातिर होती है।

हुक्क़ा पीना उसका जो रखे तमाखू पास—(क) उसी का अहसान लो जिसके पास कुछ हो। (ख) बड़ों से ही कुछ लेना उचित है। (ग) असल में हुक़्क़ा उसी को पीना चाहिए जिसके पास तम्बाकू हो। जिसके पास तम्बाकू ही न हो उसको हुक़्क़ा पीना क्या?

हुक़्क़ा-पानी बन्द है—जाति से बहिष्कृत कर दिए गए है। तुलनीय : अव० हुक्का पानी बंद।

हुक्क़ा भर बड़ों को दीजे, जब सुलगे तब आप भी पीजे—शिष्टाचार के अनुकूल हुक़्क़ा बड़ों को दिया जाता है। सुलगने अर्थात् थोड़ा पीने के बाद जब बड़े दे तो फिर छोटों को पीना चाहिए।

हुक्क़ा हुक्म खुदा का, चिलम बहिश्त का फूल; पीवें मर्द खुदा के, घूरें नामाक़ूल—हुक्क़े की तारीफ़ में कहा गया है। हुक्क़े पीनेवाले ऐसा कहते है।

हुक्क़े का मजा जिसने जमाने में न जाना वो मर्दे-मुख़न्नस है न औरत न जनाना—हुक़्क़ा पीनेवाले ऐसा कहते हैं। उनके लिए हुक़्क़ा न पीना एक अवगुण है।

हुक्क़े की मारी आग बाक़ी का मारा गाँव—हुक्क़े का बुझी हुई आग और उधार देकर खोखला हुआ गाँव ये दोनों फिर नही पनप सकते। तुलनीय। अव० हुक्का के मारी आगी, बाकी मारा गाँव नहीं पनपत।

हुक्क़े से मुंह झुलसा के विदा किया मेहमान—मेहमान की मेहमानदारी केवल हुक़्क़ा पिला के की। किसी कृपण के आतिथ्य पर कहा गया है। दे० 'आव गया आदर गया'।

हुक्म निशानी बहिश्त की, जो मांगे सो पाय—राजा, अफ़सर, बड़े या हुक्म देनेवाले से सब कुछ मिल सकता है।

हुक्मी बन्दा जन्नत में—आज्ञाकारी को स्वर्ग मिलता है। अर्थात् नेक व्यक्ति ही सुख प्राप्त करते है।

हुक्मे-हाकिम मर्गे-मफ़ाजात—हाकिम का हुक्म अकस्मात् मृत्यु के समान है।

हुज़ूरी की मजदूरी भली—(क) नज़र के सामने का किया हुआ काम अच्छा होता है। (ख) आज्ञाकारी को अच्छी मज़दूरी मिलती है।

हुज्जती ला उम्मती—हुज्जती आदमी वहमी होता है।

हुनर बकार न आमद, चुं बख़्त बद बाशद—भाग्यहीन मनुष्य के गुण भी बेकार हो जाते है।

हुनर में चीन हुज्जत में बंगाल—दे० 'हिकमते-चीन…'।

हुन्न बरस गई / गए—आशातीत लाभ होने पर कहते हैं। (हुन्न नाम का एक पुराना सोने का सिक्का था, उसी पर यह कहावत आधारित है)।

हँस से रीस चली—दिन-रात हँसते रहने से क्रोधित होना अच्छा है। इससे दोनों का भला होता है।

हूँसा सो मूँसा—जिस पर लोग बहुत हूँसते रहते हैं वह उन्नति नही कर पाता। लड़कों को हूँसना नही चाहिए।

हूर भी सौत को डायन से बुरी है—सौत यदि परी जैसी हो तो भी सौत को डायन से बुरी लगती है। सौतिया डाह पर कहा गया है।

हृदनक्रन्याय:—तालाब और घड़ियाल का दृष्टान्त। परस्पर सहयोगी वस्तुओं के सम्बन्ध में इस न्याय का प्रयोग किया जाता है।

हेंगा देखकर तांवर आवे भूसा देख आनंद—हेंगा (पाटा) देखकर तांवर (ज्वर) आता है और भूसा देखकर हर्षित होते है। जब कोई काम के नाम पर दुबक जाए और

खाने के नाम पर बहुत प्रसन्न हो तो कहा जाता है।

हे पिक पंचम नाद को, नहिं मलिन को ज्ञान—हे पिक ! तुम्हारी मीठी बोली के गुण को जंगली लोग नही समझ सकते है। अर्थात् मूर्ख ज्ञानियो के सदुपदेश को या गुणी के गुण को नही समझ सकते।

हेमदान गजदान से बड़ो दान सनमान—किसी को सम्मान देना संसार में सबसे बड़ा दान है।

हे मेरे राम जी तेरे बिना मेरी क्या गत होगी – (क) आलस्य मे अँगड़ाई लेते समय लोग कहते है। (ख) अपने यथार्थ सहायक के न रहने पर बड़ी दुर्दशा होती है। तुलनीय : अव० हे मेरे राम तोरे बिना हमार कवन गत होई।

है आदमी है काम, नहीं आदमी नहीं काम—(क) सच्चे आदमी को काम की कमी नही है। (ख) आदमी रहें तो कोई-न-कोई काम निकलता ही रहता है।

है उत्तम खेती वाकी, होय मेवाती गोई जाकी—उस किसान की खेती अच्छी होगी जिसके पास मेवाती जाति का बैल होगा।

है कछु कपट भाव मन माहीं—मन मे कुछ कपट की भावना अवश्य है। जब किसी के प्रति कोई सदेह होता है तब ऐसा कहते है।

है कहो तो नाहीं है, और नाहीं है तो है; है नाहीं के बीच में जो कुछ है सो है—जिसे कहते हो 'है' वह 'नही' है और जिसे कहते हो कि 'नही है' वह 'है'। है और नही के बीच में जो है वही सत्य है। आस्तिक और नास्तिक के झगड़े पर कहते है। ईश्वर 'है' और 'नही' के बीच में है।

है घरनी घर गाजत है, नहिं घरनी घर पादत है—स्त्री के रहने से ही घर अच्छा लगता है, उसके न रहने पर घर उदास-सा लगता है। बिना स्त्री के घर की शोभा नहीं रहती।

है तो पागल मगर बात पते की कहता है—जब कोई साधारण या अशिक्षित आदमी बुद्धिमानों जैसी बात कहे तो कहते हैं। तुलनीय : अव० है तो पागल मुला बात पते की कहत है।

है दूजे की नौकरी ज्यों साँपन की खेल—दूसरे की नौकरी करना सर्प से खेलना है। अर्थात् दूसरे की ताबेदारी करना कठिन काम है।

है वो उसी माँ का पूत धेली दे न दे—ये भी तो उसी माँ के लडके हैं पैसे देंगे या नही इसका कुछ पता नहीं। संदेहास्पद चरित्रवाले के प्रति कहते है जिसकी बातो का कोई ठिकाना नही होता। तुलनीय : कौर० है तो बाई माँ के पूत, धेल्ली देदगे अक् ना।

है सबका गुरु देव रुपैया—रुपया ही सबका गुरु है। अर्थात् रुपया ही सबसे श्रेष्ठ है। तुलनीय : मरा० पैसा सर्वाचा गुरु आहे।

होंठ चाटने से प्यास नहीं बुझती—थोड़ी चीज से बहुत अधिक चीज की इच्छा शांत नहीं होती। तुलनीय : अव० ओंठ चाटे पियास न बुझी।

होंठ मलूँ तो दूध निकल पड़े—अभी दूध-पीते बच्चे हो। अर्थात् कम अक्ल या नादान हो।

होंठ से निकली हुई पराई बात—बात मुंह से निकलने पर दूसरों की हो जाती है, फिर उसे गुप्त नही रख सकते।

होंठ हिले न जिभिया खोली, फिर भी सास कहे बड़बोली—न तो होंठ हिले और न कुछ कहा फिर भी सास कहती है कि बहू बहुत बोलती है। अच्छी बहू को भी जब सास फटकार सुनाती है तो इस कहावत का प्रयोग करते हैं।

होंठों कढ़ी, कोठों चढ़ी—नीचे देखिए।

होंठो निकली कोठी चढ़ी—मुँह से निकली हुई बात बहुत जल्द दूर-दूर तक फैल जाती है। तुलनीय : राज० नीकली होठे चढ़ी कोठे; होटाँ ने बंधगी पोटा; कौर० होटेटों कढी, कोटेटों चढ़ी।

होंठों से अभी दूध की बू न गई—अभी निरे बच्चे हो। जो व्यक्ति प्रौढ़ होने के बाद भी बच्चों जैसी बाते करता है, उसके प्रति व्यंग्य मे कहते हैं।

होइन अपने धर्म में सो तुम करहु न भूल—जो तुम्हारे धर्म में नहो उसे भूल कर भी न अपनाओ। स्वधर्मे निधन श्रेयः परधर्मो भयावह—गीता।

होई न मृषा देव रिषि भाखा—देवता और ऋषि के द्वारा कही हुई बातें झूठी नही होती।

होओ, न बाई, मोर सरीखी—(क) कोई दुखी व्यक्ति, किसी अपने मे छोटे को आशीर्वाद देते हुए ऐसा कहते हैं कि तुम मेरे जैसे कभी मत होना। (ख) कुछ दुष्ट मनुष्य दूसरों को अपने जैसा दरिद्र अथवा दुखी करना चाहते हैं, उनके लिए भी ऐसा कहते है। (ग) सज्जन व्यक्ति भी दूसरो को अपने जैसा सुखी-समृद्ध देखना चाहते हैं तब भी ऐसा कहा जाता है।

हो गई डड्डो, ठुमक चाल कैसी—(क) बुढ़िया हो गई अब यह ठुमुक-ठुमुक कर क्या चलना। (ख) बड़े होने पर लड़कपन की आदत अच्छी नही लगती। (ग) हर एक चीज़ या चाल का अपना-अपना समय होता है।

हो जा पड़ोसिन मेरी सी—(क) जब कोई दुश्चरित्र औरत अपनी पड़ोसिनों को भी अपने जैसा बनाने का प्रयत्न करे तो उसके प्रति कहते हैं। (ख) जब कोई स्वयं बुरी दशा में हो और अपने परिचितों-मित्रों को भी बुरे हाल में देखना चाहे तो उसके प्रति भी कहते हैं। तुलनीय : गढ़० हो पड़ोसी में सार क्या।

होड़ का कार, जी का भार—मुक़ाबले के कार्य या व्यापार में सर्वदा चिंता लगी रहती है। तुलनीय : राज० होड करयाँ लोड फूटे।

होड़ लीजे गोड़ उधार दीजे छोड़—उधार दिया हुआ छोड़ दें, पर जीता हुआ धन कभी न छोड़ें। तुलनीय : उधार दिलेलें एक वेळ सोडा पण जिकले तें कधी सोडू न का।

होत का बाप अनहोत की माँ—संपत्ति में पिता और विपत्ति मे माँ काम आती है। निर्धनता में भी माँ माँ ही बनी रहती है। तुलनीय : अव० होत के बाप अनहोत की माई।

होत की जोत है—जब तक तेल है तभी तक ज्योति रहेगी। वैसे ही जब तक धन रहता है तभी तक सब कुछ है।

होत निबाह न आपको लीन्हें फिरत समाज—अपना निर्वाह होता ही नही साथ में समाज को लिए फिर रहे हैं। झूठी शेखी दिखाने पर यह लोकोक्ति कही जाती है।

होत बिहान बिलखन्नो—आवश्यकता पड़ने पर काम हो जाता है पर आवश्यकता समाप्त होने पर नही हो पाता। भोजपुर प्रदेश में लोगों का अंधविश्वास है कि लोमड़ी जाड़े की रात मे सर्दी से ठिठुरने के कारण 'होत बिहान बिलखन्नों' कह-कहकर इधर-उधर घूमती है, पर सवेरे धूप लगने से जाड़ा खतम हो जाता है, अतः बिल खोदना भूल जाती है। इसी प्रकार रोज़ रात में तो उसे बिल का खोदना याद रहता है पर दिन में भूल जाती है और पूरा जाड़ा इसी तरह बीत जाता है पर बिल नही खोद पाती।

होता वही है जो मंजूरे-खुदा होता है—ईश्वर की इच्छा के खिलाफ़ कुछ भी नही होता। तुलनीय : असमी—मानुहे पाडे; इश्वरे भाडे; सं० भाग्यं फलति सर्वत्र:; अं० Man proposes God disposes.

होते की नीउन न होते की फूहड़—धन होने पर कहा जाता है अच्छा काम किया। गरीब आदमी के काम को फूहड़ स्त्रियों की तरह किया गया काम कहा जाता है। तुलनीय : अव० होते कै निऊन न होते कै फूहर।

होते की बहन अनहोते का भाई—जिसके पास धन होता है उसका साथ उसकी बहन देती है और जिसके पास धन नहीं होता उसका साथ बहन नहीं देती। लेकिन भाई ग़रीब या दुखी भाई का भी साथ देता है। आशय यह है कि बहन की अपेक्षा भाई अधिक अच्छा होता है जो हर परिस्थिति में साथ देता है। तुलनीय : हरि० होत्य की भाण, अणहोत्य का भाई।

होते के तीन नाम परसू, परसा, परसराम—दे० 'माया तेरे तीन नाम…'।

होते के बहिन ओ बाप हैं होते की ही जाये—रुपया पास हो तो बहिन बाप और स्त्री सब कोई हैं और नहीं तो कोई नहीं। आशय यह है कि बने का ही सभी साथ देते है।

होते निपुण न होते मूरख—धन होने पर सभी चालाक हो जाते हैं और धन न होने पर लोग मूर्ख बने फिरते हैं। आशय यह है कि दौलत बहुत बड़ी चीज़ है।

होते ही न मर गये जो कफ़न भी थोड़ा लगता—पैदा होते ही यदि मर गए होते तो कफ़न भी थोड़ा ही लगता। अयोग्य संतान पर कहते हैं। तुलनीय : अव० होते ना मर गयोव।

हो तो धोती नहीं तो लंगोटी—अगर पैसे हों तो धोती पहने नही तो लंगोटी से काम चला ले। समयानुसार चलने वाले पर कहते हैं। तुलनीय : छत्तीस० होती के धोती, जाती के लिंगोटी; भोज० होय त धोती, जाय त निगोटी।

हो न पड़ौसिन मेरी सी—दे० 'हो जा पड़ोसिन मेरी सी।'

होनहार पर किसका बल—दैवी घटना पर किसी का वश नहीं होता। जब किसी का बहुत बड़ा नुक़सान हो जाता है तब उसे ढाढ़स बँधाने के लिए लोग कहते है।

होनहार पूत के पाँव पालने में ही देख पड़ते हैं—दे० 'पूत के पाँव…'। तुलनीय : मरा० होणारें तें चुकेना कदा काली; हरि० पूत के पांह त पालने मं ए पिछाणे जां सैं; अं० Coming events cast their shadows before.

होनहार बिरवान के होत चीकने पात—उन्नतिशील पौधों के पत्ते चिकने होते है। अर्थात् उन्नति करनेवाले व्यक्तियों के शुभ लक्षण पहले से ही दिखाई पड़ने लगते हैं। तुलनीय : अव० होनहार बिरवान के होत चीकने पात; छत्तीस० होनी बिरवा के चिक्कन पात; गढ़० होणत्याली डाली का चल चला पात; मरा० उभाडयाचें रोप असेल तर त्याची पानें गुळगुळीत असतात; मल० मुलयिलरियाम् मुलयुटे करुत्तु; अं० Coming events cast their sha-

dows before; As the seed so the sprout.

होनहार मिटती नहीं—विधि या विधान टलता नहीं। मटवा नू नी; गढ़० होन्यार नि टलदी।

होनहार मिटती नहीं, होवे बिस्से बीस—जो होने वाला है वह होकर ही रहता है। उसे कोई रोक नहीं सकता।

होनहार हिरदै बसै बिसर जाय सब सुद्ध, जैसी हो भवितव्यता तैसी उपजे बुद्ध—जब जैसा होने को होता है वैसी बुद्धि भी हो जाती है। उस समय सुध-बुध काम नहीं करती। तुलनीय : अव० होनहार हिरदे बसे, बिसर जाय सब सुध, जैसन होय होतवता, तैसन उपजै सुध।

होनहार होके ही रहती है—स्पष्ट।

होनी अपने बल चलावे—मनुष्य परिस्थितियों का दास होता है। भाग्य जैसी परिस्थिति उत्पन्न करता है मनुष्य को उसी के अनुसार रहना होता है। तुलनीय; हरि० होणी हूणी अपणो बल चलावे।

होनी किसने देखी है—भविष्य के संबंध से कौन जानता है ? अर्थात् कोई नही। दुर्घटनाओं की आशंका करते हुए कहते है। तुलनीय : गढ़० होणी होन्यार कैल देखे।

होनी के सामने सभी झुकते हैं—होनहार के सम्मुख किसी की नहीं चलती। तुलनीय : राज० होण हारनै नमस्कार।

होनी थी सो हो ली—जो होने को था सो हो गया। अब उस पर सोचना व्यर्थ है।

होनी तो होके रहे, मेट सके ना कोय—होनेवाली बात होकर रहती है उसे कोई मिटा नहीं सकता।

होनी ही होती है—ऊपर देखिए। तुलनीय : असमी—दाताइ दिलेओ विधाताई निदिये; सं० यद्भविष्यति तद्-भवतु; अं० Man proposes God dirproes.

होनी होने के लिए है—जो भाग्य मे होता है वह होकर ही रहता है। तुलनीय : हरि० होणा नै होण नै ए बणी सै।

होनी होय सो होय—जो होने को हो वह हो। उसके लिए क्या किया जा सकता है ? तुलनीय : मरा० होणार तें चुकेना।

होम करते हाथ जले—भलाई करते हुए बुराई या अपयश मिले तो कहते है। तुलनीय : अव० होम करत हाथ जरै।

होम न धूप देवी हा हा—न होम करते हैं और न धूप जलाते हैं लेकिन देवी की बड़ी प्रशंसा करते है। कोरी सहानुभूति दिखानेवाले के प्रति व्यंग्य में कहते हैं।

होय जो राजा-रंक समान, दुख न पाय कोई इंसान—संसार में यदि सभी समान स्तर पर रहने लगें तो किसी भी मनुष्य को कोई दुःख न रहे। तुलनीय : भीली—हरा हरखावे तो चावे हूं।

होय बड़े न हूजिए कठिन मलिन मुख रंग; मर्दन बंधन छत सहत कुच इन गुनन प्रसंग—जो लोग बढ़कर या उच्च पद प्राप्त कर कठोर तथा मलिन हो जाते हैं उनकी कुच जैसी दुर्दशा होती है। अर्थात् बंधन में रहना पड़ता है और क्षति सहनी पड़ती है।

होय भले के अनभले, होय दानी के सूम; होय कपूत सपूत के, ज्यों पावक में धूम—संसार की रीति उलटी है। आग में धुएँ की तरह भले का पुत्र बुरा, दानी का सूम और सपूत का कपूत होता है।

होला खाए मुँह हाथ दोनों काले—अर्थात् बुरा काम करने पर कलंक अवश्य लगता है। (होला = सेका हुआ चना) तुलनीय : अव० होरहा खाये हाथ मुंह दुइनो करिया।

होला न खाया मुंह में कालिख लगाया—होला भी नहीं खाया और झूठे मुंह पर कालिख लगा लिया। व्यर्थ में कलंक लेनेवाले के प्रति कहते हैं। तुलनी : अव० हो रहा न खायेन मुंह करखा लगायेन।

होली भड़ुआ है—(क) बहुत तरह के रूप बदलने वाला है। (ख) सिद्धांतहीन है। तुलनीय : अव० होली का भड़वा है।

होली का भड़ुआ तेल बेंचे कड़ुआ—लड़कों को यही कहकर होली में चिढ़ाते हैं।

होली सूक सनीचरी, मंगलवारी होय; चाक चहोड़े मेदिनी, बिरला जीवै कोय—होली यदि शुक्रवार, शनिवार, मंगलवार को हो तो पृथ्वी पर भयंकर समय उपस्थित होगा और बिरले ही जीवित रहेंगे।

होश की दवा करो—अपने चित्त को ठिकाने लाओ। जरा होश में आओ।

होश फाख्ता हो गए—किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गए। घबरा गए। अक्ल मारी गई। तुलनीय : अव० होश ठेकाने लाग गय।

होशियार तो घनी पर रांड़ कैसे हो गई—चतुर तो बहुत है लेकिन विधवा (राँड़) कैसे हो गई। जब किसी कुशल व्यक्ति को असफलता मिलती है तब कहते हैं। तुलनीय : कौर० हुस्यार तो घणी पर रांड कैसे होग्गी।

हौज जैसा पेट—अधिक बड़े पेटवालों को कहा जाता

है या अधिक खानेवाले को। तुलनीय : अव० होदा अस पेट।

हौज भरे तो फौव्वारे छूटे—हौज भर जाएगा तब फव्वारे छूटेंगे। अर्थात् (क) आमदनी होने पर खर्च होता है। (ख) आमदनी हो तो खर्च किया जाय। तुलनीय: मरा० हौद भरेल तर कारंजी उडतील।

ह्वै है क्यों करि सिंह यों, करि शृगाल के काम—स्यार के काम को कर के सिंह कैसे हुआ जा सकता है? अर्थात् कायर का काम करके कोई वीर नही बन सकता।

ह्वै है वाके भाग सों भली कहत का जाय? होगा वही जो उसके भाग्य में होगा परन्तु अच्छी बात कहते में अपना क्या लगता है? अर्थात् किसी को बुरा शब्द नहीं कहना चाहिए।

ह्वैहै सोई जो राम रचि राखा—भगवान ने जो करने की सोची है वही होगा, अन्यथा नहीं। जब कोई किसी काम के लिए बहुत दौड़-धूप करता है, या उसके भावी परिणाम से घबराता है तब ऐसा कहते है।

□□□